आर्यमित्र



शांति-प्रकरण

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवा शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥१८॥

द्यौ (प्रकाशमान लोक लोकान्तर) अन्तरिक्ष (पार्थिव लोको के चतुर्दिग् नभ मण्डल जहाँ मेघ बनते और जल भडता है) पृथिवी (प्रकाश शून्य लोक लोकान्तर) जल (सागर सरिता तडाग तथा ऊचे पर्वतों के हिमसागर) औषधियाँ (बात पित्त कफ का हरने वाली जडी बूटिया अन्न शाक कन्द मूल आदि) बनस्पतियाँ (फलों के वृक्ष) विश्वे देवा (मनुष्य योनि एव हाथी से कीडी पर्यन्त शरीर में रमण करने वाले जीव) ब्रह्म (मानवी सृष्टि के आदि म उपलब्ध होने वाला प्रभु का ज्ञान अमर वाक्य वेद) हमारे लिए सुख शान्ति को प्रथक् प्रथक् और सामूहिक रूप से देने हारे हो। शान्ति जो हमे प्राप्त हो अथवा जिसे हम प्राप्त करे वास्तविक होनी चाहिए कायरता अकर्मण्यता युक्त श्मसान की निरवता न हो।

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम् शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥१९॥

सर्वज्योतिर्मय परमात्म देव जो बाह्य एव आन्तरिक शान्ति के प्रदाता है और जो सदा सत्पुरुषों की नाना विध सहायता करते है मेरे मानस नेत्रो के समक्ष विद्यमान है। हम अपने जीवन में शतवर्ष पर्यन्त उनका दर्शन करन हारे बनगे। हम उनके आदेश अनुसार अपना जीवन यापन करेंगे। हम उनकी दिव्यवाणी का सदा श्रवण करेंगे। हम सदा सत्य का ही अपनी वाणी द्वारा प्रकाश और प्रचार करगे। हम कदापि अपने जीवन म दीनता को नहीं अपनावेंगे। निश्चय हम कभी दीन बनकर नहीं रहगे।

—शिवदयालु

...क प्रार्थना

... सोअमन्ति यो विपश्यति य ... शृणोत्युक्तम्। अमन्तवो मा ... श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि ... से ही वह अन्न खाता है, देखता ... है और बोले हुए शब्द को ... जो लोग मुझे नहीं मानते वह ... हो जाते हैं। हे मनुष्य, मैं ... कथन करता हूं, तू इसे ...

ऋ० १०।१२५।४

इस अंक के आकर्षण

मानवता का महत्व

–श्री मङ्गलदेव जी शास्त्री–

'अणोरणीयान् महतो महीयान्' अर्थात् परम सत्य रूप परमात्मा का स्वरूप अणु से भी सूक्ष्म और महान् से भी महान् है। उपनिषदों के इस कथन को हम इस रूप में भी ले सकते हैं कि सूक्ष्म से सूक्ष्म पदार्थ में या सत्य में महत्तम पदार्थ या सत्य निहित होता है।

वट वृक्ष का बीज कितना छोटा होता है, अणु मे किस महती शक्ति का निवास है, क्रौञ्चमिथुन के करुणा जनक दृश्य से महर्षि वाल्मीकि के मन मे वाल्मीकि रामायण के लिखने की प्रेरणा मिली थी, एक सेब को वृक्ष से गिरते देख मनीषी न्यूटन के मन मे पृथ्वी के आकर्षण का महान् सिद्धान्त प्रकट हो गया था, इसी प्रकार शिवरात्रि के महोत्सव के अवसर पर एक चूहे की चेष्टाओं से महर्षि दयानन्द के मन मे सच्चे शिव के दर्शन की उत्कण्ठा जागृत हुई थी। उसी के फलस्वरूप ऋषि ने शिव को पहचाना और साथ ही मानव के महत्त्व को भी समझा।

वास्तव मे मानव का महत्त्व और सत्य शिव का साक्षात्कार दोनो साथ चलते है। भारतवर्ष के लम्बे इतिहास में ऋषि दयानन्द का उक्त तथ्य के प्रतिपादन मे अद्वितीय स्थान है। फिर भी आज देश मे 'भगवान विश्वनाथ' के दर्शन का अधिकार मनुष्य मात्र को है—इस पर काशी जैसी विद्या की नगरी मे आपत्ति उठाई जा रही है। इसी प्रसङ्ग मे 'मानवता का महत्त्व' इस विषय पर निम्न संस्कृत रचना विशेष रूप से सामयिक है। हिन्दी अनुवाद के साथ ही उसको हम नीचे देते हैं।

बड़े खेद की बात है कि भारत के इस अभिनव जागरण के युग में भी उसकी एक विचारधारा जो अपने को महान् व्यामोह के कारण, भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधि समझती है मानवता के वास्तविक महत्व को भूली हुई है। मानव के ही सम्पर्क से मानव द्वारा प्रतिष्ठापित देवता के भ्रष्ट हो जाने का सिद्धांत, उस व्यामोह का ही फल है। व्यवहार में पशुओं से भी मानव को नीचा स्थान देने में उक्त विचारधारा को सकोच नहीं होता।

वास्तव में भारतीय संस्कृति की परम्परा के अनुसार, मानवता का महत्व वर्णनातीत है। उसी महत्व का दिग्दर्शन वेदादि मान्य शास्त्रों के अपने अध्ययन के आधार पर, नीचे किया गया है। आज की परिस्थिति मे इस दिग्दर्शन का महत्व स्पष्ट है—

उत्पाद्य सकलां सृष्टि-
मसन्तुष्टः प्रजापतिः।
सृष्टवानात्मरूपेण
मन्ये मानुष्यकं महत् ॥१॥

समस्त सृष्टि को उत्पन्न करके प्रजापति (ब्रह्मा) को सन्तोष नहीं हुआ तब उन्होने हमारे मत मे, अपने रूप मे महान् मानवता की सृष्टि की।

परात्मनः स्वरूप तदा-
नन्दरसनिर्भरम्।
निर्मलं शाश्वत शान्त प्रेम
कारुण्यसुन्दरम् ॥२॥
कुत्राप्यन्यत्र सुस्थान न
दृष्ट्वा खिन्नमानसम्।
स्वस्थ तिष्ठति यत्रतन् मन्ये
मानुष्यक महत् ॥३॥

आनन्द रस से परिपूर्ण, निर्मल, शाश्वत, शान्त और प्रेम तथा करुणा से सुन्दर परमात्मा का वह स्वरूप मानवता से अन्यत्र कहीं भी अपने योग्य सुन्दर स्थान को न पाकर, खिन्न मनस्क होकर, जहां आराम से रह सकता है, हमारे मत में, वह महान् मानवता ही है।

अभिप्राय यह है कि परमात्मा के उक्त परम पवित्र स्वरूप का साक्षात्कार मानव ही कर सकता है तथा मानवता में ही वह स्वरूप मूर्तिमान् होकर दृष्टिगोचर हो रहा है।

इसी अर्थ को नीचे स्पष्ट किया गया है—

केवल तत्र पश्यन्ति
महात्मानो मनीषिणः।
योगिनस्तत्त्ववेत्तारस्तस्मा
त्स्वान्तःस्थमव्ययम् ॥४॥
भास्वर परमं तद्रव
सर्वक्लेशविवर्जितम्।
तन्नूनं सुतरां पुण्य
मन्ये मानुष्यकं महत् ॥५॥

उक्त कारण से ह मनीषी महात्मागण तथा तत्ववेत्ता योगीजन अपने अन्तःकरण मे अवस्थित अव्यय, प्रकाशस्वरूप तथा सर्वक्लेशों से रहित उस परम तत्त्व को मानवता मे ही देखते हैं। इसलिए हमारे मत मे, मानवता अत्यधिक पवित्र और महान् है।

विश्वस्मादुत्तरं तस्मात्
सास्वद् विश्वतोमुखम्।
विश्वभुन् विश्वदृक्तत्पदे
नित्य प्रतिष्ठितम् ॥६॥
आश्चर्यमद्भुतं दिव्य-
गुणग्रामनिकेतनम्।
अपरोत्तरमुत्कर्षि
मन्ये मानुष्यकं महत् ॥७॥

इसलिए, हमारे मत में, महान् मानवता का महत्त्व सबसे अधिक है। सारी सृष्टि का वह सार है। उसकी दृष्टि चारों ओर फैली हुई है। वह विश्व का उपभोग करती है और सदा विश्व के द्रष्टा के पद पर वह अवस्थित है। वह आश्चर्य रूप और अद्भुत है। दिव्य गुणों का स्थान है। अर्थात् उसके विकास का क्षेत्र अनन्त है।

धन्यास्ते तत्त्वमेतद्
येऽसशयेन विजानते।
अन्तरायशतेऽप्यमा नात्मा-
नमवजानते ॥८॥
किञ्च मानवमात्रस्य
मानमातन्वते सदा।
नृषु सर्वेषु पश्यन्तो मन्ये
मानुष्यक महत् ॥९॥

जो इस तत्त्व को निस्संशय रूप से जानते ह, वे धन्य ह। वे अनेकानेक विघ्नों के आने पर भी अपने आत्मा की अवज्ञा नहीं करते हैं, अपने में हीन भावना नहीं आने देते हैं। किन्तु वे सब मनुष्यों में रहने वाली महान् मानवता को ध्यान में रखते हुए सदा प्रत्येक मनुष्य को सम्मान की दृष्टि से देखते हैं।

नरनारायणौ नित्यं केवलं
यत्र तिष्ठतः।
भ्रातृभावं समापन्नौ परमं
सख्यमाश्रितौ ॥१०॥
देवानामपि सर्वेषां
स्थितिर्यत्रैव लभ्यते।
धर्मस्य तदधिष्ठानं मन्ये
मानुष्यक महत् ॥११॥

जिस मानवता मे ही भ्रातृभाव को प्राप्त होकर अथवा अत्यन्त सखिभाव से नर और नारायण दोनों एक साथ रहते हैं, समस्त देवताओं की स्थिति का अनुभव जिसमें होता है, तथा जो धर्म का भी अधिष्ठान...

(शेष पृष्ठ १६ पर)

ऋषि बोध और हमारा कर्तव्य

(श्री वेंकटेश्वर शास्त्री, आचार्य गुरुकुल घटकेश्वर (सी०आर०)

आज से ११९ वर्ष पूर्व शिवरात्रों के दिन महर्षि दयानन्द ने जब बालक मूलशंकर के रूप में मंदिर के महेश्वर की पाषाण प्रतिमा समझा था और अपने चाचा व भगिनी की मृत्यु से शरीर की अनित्यता का बोध प्राप्त किया तब उन्हें परम वैराग्य हुआ। उस वैराग्य के कारण ही बालक मूल ने स्वजनों के स्नेहपाश को छिन्न भिन्न करके गृह त्याग किया और साधना पथ का पथिक बना। ससार मे अति जटिल दो ही प्रश्न हैं, वे हैं आत्मा और परमात्मा का ज्ञान। जो व्यक्ति इन दो प्रश्नों का सत्य समाधान सम्प्राप्त किया हो, उन्हे इस विनश्वर विश्व में अन्य ज्ञातव्य कुछ नहीं रहेगा। इन्हीं दो समस्याओं को जानने के लिए भारतीय ऋषि निवृत्ति मार्ग को अपनाते थे। भौतिकता उनके लिये भव बन्धन कारी थी। महा साध्वी मैत्रेयी के शब्दों में उनका कहना यह था कि—

"येनाऽहं नाऽमृतास्यां तेनाऽहं किं कुर्याम"

अर्थात् जिससे अमृतत्व प्राप्त न हो उससे मैं क्या करू ? इसलिये वे आत्म व परम तत्वों के अन्वेषणार्थ गिरि गुहायें, निर्जन वन, नदी के तट व पर्वतीय प्रदेश की उपत्यकाओं का आश्रय लेते थे। स्वादिष्ट खाद्य के स्थान पर कंद मूल फलादि भक्षण करते हुए, कौपीन कटि बन्धधारी होकर सर्वदा सत्संग में यह विचार करते थे कि मृत्यु के पश्चात् जीव की क्या दशा होगी ? क्या वह पुनर्जन्म लेगा ? यदि जन्म लेता तो किस प्रकार ? पाप पुण्य क्या है ? पूर्व और पर जन्म का होना सम्भव है ? यह दृश्य मान जगत् एक ही है, या अन्य लोक लोकांतर हैं ? आवागमन के चक्कर से हम कैसे गुजरते हैं ? सांसारिक दुःखो से छूटने का क्या उपाय है ?

इस प्रकार के विचारों में तल्लीन होकर ताप तप्त ऋषि मुनि अपनी साधना किया करते थे। ऋषि दयानन्द (बालक मूल शंकर) को भी इन्हीं दो समस्याओं को सुलझाने निमित्त उपरोक्त विचार धारा उनके मन में प्रवाहित हुई। तब बालक मूल भव बन्धनों को तोड़ने के निमित्त घर से भाग निकले। वर्षों की तपस्या के पश्चात् उन्होंने आत्मा और परमात्मा का साक्षात्कार किया। आत्मा और परमात्मा का भेद, प्रवृत्ति और निवृत्ति श्रेय और प्रेय मार्ग, भौतिकता एव आध्यात्मिकता, परा और अपरा विद्याओं का सम्यक समाधान हुआ। तब उन्होंने अपने प्राप्त किये हुये ज्ञान से, अनुभूत सिद्धान्तों से संसार को जगाने का यत्न किया। भौतिकता के चकाचौंध से पथ भ्रष्ट पांथों को पथ-प्रदर्शन करने के लिये सत्यार्थ प्रकाश किया। जिस बोध से बोधित होकर ऋषि ने संसार को सन्मार्ग दिखाया वह बोध (ज्ञान) हमारे सम्मुख है, और बोध रात्री भी। अब आवश्यकता है कि हम स्वयं बोधित होवें और संसार को बोधित करें।

★

आर्य्य जगत में सब से अधिक छपने वाला आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

ओ३म्

आर्य्य मित्र

वर्ष ६० | अङ्क ८

लखनऊ— तिथि फाल्गुन ४, शक संवत् १८७९, फाल्गुन १० ५, वि० २०१४ (२३ फरवरी १९५८) दयानन्दाब्द १३३ सृष्टिसंवत् १९६०८५३०५८

सम्पादकीय

हिन्दी रक्षा आन्दोलन का क्या परिणाम निकला ?

आर्यसमाजों के विभिन्न कार्यकर्ता तथा हमारे सत्याग्रही बन्धु और बहिनें प्रायः यह जिज्ञासा करती हैं कि आन्दोलन का क्या परिणाम निकला उनका ऐसी जिज्ञासा करना स्वाभाविक भी है।

आन्दोलन को स्थगित हुए डेढ़ मास का समय व्यतीत हो चुका है। सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के माननीय अध्यक्ष बाबू घनश्याम सिंह जी गुप्त इस बीच में अनेक बार श्री पं० गोविन्द बल्लभ पन्त गृह मन्त्री भारत सरकार से मिल चुके हैं और उन्होंने अपने वायदों को यथावसर शीघ्र पूरा करने का आश्वासन दिया हुआ है। इस दिशा में कुछ पग भी सरकार ने उठाये है ऐसा बतलाया जाता है। क्या ही अच्छा हो कि उनका ज्ञान जनता को भी गुप्त जी द्वारा करा दिया जाय।

पिछली एक घोषणा मे गुप्त जी ने यह भी कहा है कि अपनी मांगों के सम्बन्ध में सरकार से समझौता सन्तोषजनक हो जाने का पूर्ण विश्वास है और सत्याग्रह दुबारा करने की आवश्यकता न पड़ेगी।

दो फरवरी को देहली में सिखों ने जो प्रदर्शन किया है उसका कोई प्रभाव भारत सरकार पर पड़ा है ऐसा अनुमान भी नहीं लगाया जाता। ८ फरवरी को जालन्धर में श्रीयुत् गुप्त जी के विशाल जुलूस पर गुरुद्वारे मे सिखों ने पथराव किया है और पुलिस ने गोलियाँ चलाई है जिसके फलस्वरूप दो हिन्दी प्रेमी जान से मारे गये और २८ आहत हुए हैं। इस घटना ने सिखों की आन्तरिक निराशा को ही व्यक्त किया है। मास्टर तारासिंह और उनके अनुयायी एक बार फिर हुल्लड़बाजी करके और आतङ्क फैला कर नेहरू और उनकी सरकार को अपनी ओर झुकाना चाहते हैं किन्तु अनुमान यह है कि भारत सरकार अब उनकी ऐसी भूल न करेगी।

अकाली सिख हरकतों की प्रतिक्रिया

सिखों की इस प्रकार की गुंडागर्दी और हुल्लड़बाजी वेग के साथ हिंदुओं को उनसे पृथक् करती जा रही है। पंजाब के अधिकतर हिन्दू परिवार गुरुओं के सामने से अपनी पहली सन्तान को गुरुओं के अर्पण करते आए हैं अर्थात् अमृत छकवा कर उनको सिख बनाते आए हैं। सिखों के दुर्व्यवहार ने अब इस प्रथा का सर्वथा अन्त कर दिया है। अधिकतर हिन्दू ग्रन्थ साहब को गुरुद्वारों में जाकर मस्तक नवाते थे और चढ़ावा चढ़ाते थे और इस प्रकार लाखों रुपया प्रतिमास गुरुद्वारों मे चढ़ता था अब वह भी इन्हीं सिखों की करनी के कारण बन्द होता जा रहा है।

सिखों के गुरुद्वारों के निर्माण में जो अधिकतर पैसा हिन्दू ही लगाते थे आज वह स्थिति भी इन गुरुओं के अयोग्य शिष्यों ने समाप्त कर दी है। आज का अकाली सिक्ख हिन्दुओं का रक्षक नहीं भक्षक बन गया है। वेद, यज्ञ, गौ, ब्राह्मण शिखा सूत्र का सन्मान अब इन सिखों के हृदयों से प्रायः उठ गया है और वह इन सबके प्रति दुर्मति के कारण द्वेष भाव प्रकट करने लगे हैं।

सिख, जो मुगलकाल मे गुरुओं द्वारा सगठित हिन्दुओं मे से ही हिन्दुत्व की रक्षा हेतु, सेना तैयार की थी वह अब हिन्दुत्व से बगावत करने लगे हैं और कूटनीतिक अंग्रेजों के माया जाल के पूर्णतया शिकार बनकर अपने को हिन्दुओं से पृथक एवं एक जाति के रूप मे संगठित करने की बात तो बहुत दिनों से प्रचलित की हुई थी किन्तु अब तो वह हिन्दुओं के साथ रहना तक भी पसन्द नहीं करते। सिखों के सरफिरे नेता मास्टर तारासिंह कहते हैं कि पंजाब में सिख ही रहेंगे या फिर आर्य समाजी ही रहेंगे। उनका इस पागलपने की बैढ़ का परिणाम सिखों में संकुचितता, द्वेष, घृणा, अनीति और अनाचार की वृद्धि का होना ही है।

हमें विश्वास है कि पंजाब का हिन्दू प्रतिक्रिया के वशीभूत होकर कोई गलत कदम नहीं उठावेगा और शान्ति, धैर्य, उदारता, का कभी साथ न छोड़ेगा और वह पूर्ण सजग और संगठित होकर अपने ध्येय मार्ग पर आरूढ़ रहेगा।

प्रतिक्रिया के शिकार विदेह

न्याय नामक साप्ताहिक समाचार पत्र के गत् किसी अंक में श्री विद्यानन्द जी विदेह ने एक लेख प्रकाशित किया है जिसमें आपने लिखा है कि वेद धर्म नहीं और ना ही वेद का पढ़ना-पढ़ाना सुनना सुनाना परम धर्म है।

प्रतीत होता है कि श्री विदेह जी अब खीज कर और मानसिक सतुलन खोकर आर्य समाज के मूल आधार पर ही चोट करने पर उतारू हो गये हैं। यदि वेद का पढ़ना-पढ़ाना धर्म नहीं है तो आपने अपने जीवन के ३५वर्ष जो वेद के पढ़ने और भाष्य करने मे व्यतीत किये हैं वह व्यर्थ ही गंवाए हैं। आपका यह सब कार्य कलाप भी धर्म शून्य ही सिद्ध होता है।

हमे आश्चर्य होता है कि श्री विदेह जी सन्यास आश्रम में पहुंच कर भी इस प्रकार की बातें करते हैं। आप कहते है कि वेद धर्म नहीं सत्य है हम पूछना चाहते है कि सत्य धर्म से भिन्न कैसे है "नहिं सत्यात्परो धर्मः" सत्य से भिन्न धर्म नाम की कोई वस्तु नहीं है और न सत्य से शून्य धर्म का अस्तित्व हो है। सत्य का जानना और मानना धर्म है। सत्य का प्रचार और प्रकाश करना धर्म है। सत्य पर आधारित मानव जीवन को दिव्य बनाने वाले नियमों का आचरण करना धर्म है। इसलिये सनातन सत्यों एवं मानव जीवन को उच्च बनाने वाले नियमों का नाम ही धर्म है। ऐसा शास्त्रो मे प्रतिपादित किया गया है।

धारणाद् धर्म मित्याहु.

धर्म धारण करने से ही सिद्ध होता है। इसका वास्तविक अर्थ ही यह है कि सनातन सत्यों को विवेक की कसौटी पर कसकर मानव अपने मस्तिष्क मे धारण करे और सत्य से अनुप्राणित नाना यम नियमो को अपने जीवन मे परिणत करे।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म है ऐसा आर्य समाज के नियमों में प्रतिपादित किया है। हम जानना चाहते हैं कि विदेह जी को इसमें क्या त्रुटि दिखलायी देती है।

वेद में सर्व सत्य शास्त्रों का मर्म सूत्र रूप मे प्रतिपादित किया गया है। लोक में प्रचलित जो फलित ज्योतिष, तन्त्र विद्या, सामुद्रिक ज्ञान आदि असत् विद्याएं है इनका विधान वेद में नहीं है। क्या विदेह जी इससे भिन्न मत रखते है ? यदि रखते है तो स्पष्ट करें। वेद पढ़ने और पढ़ाने को, भाषणो द्वारा वेद कथा करने को तथा वेद मन्त्रो पर व्याख्या लिखने को विदेह जी धर्म नहीं मानते तो इस धर्म शून्य व्यापार मे उन्हे नहीं लगना चाहिए।

हम विदेह जी के परिश्रम और पुरुषार्थ की अवहेलना करना नहीं चाहते किन्तु दुःख है कि वह अपने ही शब्दो मे उस पर पानी फेर रहे है। हम विदेह जी की कतिपय मानवी त्रुटियो की ओर यदि सकेत करते है तो उनको अन्तर्दृष्टि होकर उन पर मनन करना चाहिये न कि मानसिक सन्तुलन खोकर वह प्रतिक्रिया का शिकार बन जाव।

विदेह जी अब सन्यास आश्रम मे प्रवेश कर गये है। हम तो प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं कि विदेह जी लोकैषणा जनित दोषों से ऊपर उठकर अपने वेद प्रचार रूपी धर्म कार्य में सलग्न रहे।

नाथद्वारा मन्दिर की गुप्त सम्पति में भारी गोलमाल

पता चला है कि राजस्थान के प्रसिद्ध वल्लभ सम्प्रदाय के नाथद्वारा मन्दिर के गुप्त धनागार मे २६ बड़े लाल थैलों में सोने चांदी के सिक्के तथा २८ सन्दूकों मे हीरे जवाहरात भरे हुये थे। यह धनागार ६×६ फुट छोटे कोठरे में निहित था। उस कोठरे के आगे एक बड़ी अलमारी रखा हुआ था। इस मन्दिर को ट्रस्ट कमेटी को इस धनागार का पता न था।

यह भी कहा जाता है कि राजस्थान सरकार द्वारा नियुक्त मन्दिर के मुख्य प्रबन्धक श्री केसरसिंह राणावत, मंदिर के धनागार अधिकारी तथा श्री कन्हैया लाल भगवानदास और मंदिर

[शेष अगले पृष्ठ पर]

[पिछले पृष्ठ का शेष]
के मुख्य पुरोहित श्री गोविन्दलाल जी को इसका पूर्व से पता था। श्री कृष्णगुज थाकरसी मन्दिर ट्रस्ट कमेटी के अध्यक्ष तथा अन्य प्रमुख सदस्यों ने किसी प्रकार रहस्य का पता चलाने के सम्बन्ध मे आवश्यक जानकारी की और जांच का कार्य आरम्भ किया।

यह भी पता चला है कि २५ दिसम्बर सन् १९५७ को यह कोष गुप्त धनागार से मुख्य पुरोहित के भवन मे ले जाया गया और १५ दिन बाद अर्थात् १० जनवरी सन् ५८ को इसको बहीखाते मे जमा दिखाई गई और इस रहस्य को गुप्त रखा गया।

अब मुख्य पुरोहित इस कोष को अपनी निजी सम्पत्ति बतलाते है और उन्होंने अध्यक्ष के सुझाव को कि इस कोष को बैंक मे सुरक्षित रखा जाये ठुकरा दिया है।

नाथद्वारा पश्चिम भारत का सब से धनी मन्दिर है। इसकी करोड़ों रुपयों की सम्पत्तियां है। अकेले बम्बई नगर में इसकी ४४ बड़ी बड़ी कोठियां है जो भक्तों ने कभी दान की थीं। नाथ जी के भक्तों ने १९५२ मे इस मन्दिर के प्रबन्ध के लिए २१ सज्जनों की एक समिति बनाई थी जिसे मुख्य पुरोहित गोविन्द लाल जी ने तोड़ दिया और अपनी मनमानी एक कमेटी का निर्माण कर दिया। आश्चर्य यह है कि राजस्थान के मुख्य मन्त्री श्री सुखाड़िया ने इस मनमानी कमेटी को सरकारी गजट मे मान्यता प्रदान कर दी। सुना जाता है कि श्री सुखाड़िया को इस मन्दिर के मामले मे भारी दिलचस्पी है। उनकी शिक्षा का व्यय भी इसी मन्दिर के ट्रस्ट से किया गया था और उनकी माता जी जी प्रायः यहाँ ही रहती है। यह भी कहा जाता है कि जिस दिन इस गुप्त धनागार को पुरोहित भवन मे ले जाया गया है उसमे पूर्व दिन श्री सुखाड़िया अज्ञात रूप से अपनी राजधानी से बाहिर चले गये थे। कहा जाता है कि वह नाथद्वारे ही पधारे थे। यह भी कहा जाता है कि वह मन्दिर के मुख्य पुरोहित श्री लाल जी के पास दो घण्टे तक बैठे रहे और एक अधिकारी नाथद्वारे से भारी सामान के पुलन्दे जयपुर राजधानी को ले गये। इस प्रकार राजस्थान के समाचार पत्रों में नाना प्रकार की चर्चाएं की जा रही हैं। कहा जाता है कि करोड़ों रुपयों का गुप्त धन योजनाबद्ध रूप मे उड़ा दिया गया है। और यह धन प्रमुख पुरोहित, उनके साथी तथा राजस्थान के उच्च सत्ताधिकारियों में बांटा गया है। हम समझते हैं कि इसकी जांच केन्द्रीय गुप्तचर विभाग द्वारा तुरन्त करायी जानी चाहिए और सत्य का दोहन होने पर जो व्यक्ति इस गोलमाल में भागीदार हों उनको कड़ा दण्ड दिया जावे।

मूंदड़ा-काण्ड

सुनते हैं कि मालाबार हिल्स के औद्योगिक हरिदास मूंदड़ा के व्यवसायों में जीवन बीमा निगम का १॥ करोड़ रुपया भारत के अर्थ मन्त्री श्री कृष्णमाचारी द्वारा लगाया गया और इसके कारण अनुमानतः ३५ लाख रुपयो का निगम को घाटा उठाना पड़ा।

जब यह रहस्य खुला तो भारत सरकार ने छागला जांच कमीशन नियुक्त किया। जांच का कार्य होगया है। भारत के महान्यायवादी श्री सीतलवाद ने जिस प्रकार से श्री कृष्णमाचारी से जिरह की है उससे बीमा पालसी वाले सन्तुष्ट नहीं है। ऐसा कहा जाता है कि अनेक महत्वपूर्ण प्रश्न जो अर्थ मन्त्री से किये जाने थे छोड़ दिये गये ह और सत्य का दोहन जिस प्रकार साक्षियों से जिरह द्वारा किया जाना चाहिए था वह नहीं किया गया।

अब पता चला है कि श्री कृष्णमाचारी अर्थ मन्त्री भारत सरकार ने देहली पहुँच कर अपने पद से त्याग पत्र दे दिया है और त्याग पत्र स्वीकार कर लिया गया है आपके सचिव पटेल भी इस समय कार्यालय नहीं जा रहे हैं। अर्थ विभाग प्रधान मंत्री जी ने स्वयं सम्हाल लिया है। इस प्रकार के काण्ड शासन के लिए भारी अपमानजनक है यदि शासक वर्ग मे अर्थ-शुचि नहीं रही तो जनता का आर्थिक दृष्टि से नैतिक स्तर ऊँचा नहीं उठ सकता। हमारी दृष्टि में जो व्यक्ति अर्थ शुचि से हीन है चाहे वह कितना भी बड़ा नेता अथवा उच्चाधिकारी हो उसको कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए। इसी मे शासन और राष्ट्र का हित है।

देहली में अकाली सिखों का जलूस

आर्य समाज के विरुद्ध प्रदर्शन

दिनांक २ फरवरी ५८ को मध्याह्न १२ बजे से लालकिले के मैदान से अकाली सिखों का एक जलूस निकाला गया। जलूस मौन था किन्तु अनेक पट्टों पर आर्यसमाज और हिन्दी सत्याग्रह के विरुद्ध वाक्य लिख लिख कर प्रदर्शन किया गया।

जलूस में लगभग ५० हजार अकाली स्त्री पुरुष थे। प्रदर्शनकारी अधिकतर बाहर के स्थानों से रेल व ट्रकों द्वारा लाये गये थे। कहते हैं इन प्रदर्शनकारियों पर भारी मात्रा में धन व्यय किया गया था। जलूस के देखने वाले भी प्रायः सिख ही थे। हिन्दू मुस्लिम जनता ने इसकी पूरी पूरी उपेक्षा की।

पुलिस का प्रबन्ध सुन्दर था। हथियारबन्द पुलिस स्थान-स्थान पर तैनात थी। गुरुद्वारे मे सिगरेट के डिब्बे डालने के विरोध में यह प्रदर्शन किया गया है। डिब्बे डालने के संबंध में पंजाब पुलिस के गुप्तचर विभाग ने जो जाँच की है उससे स्पष्ट है कि इस कृत्य में आर्यसमाजी अथवा किसी हिन्दू का हाथ नहीं है। यह भी पता चला है कि किसी सरफिरे सिख ने ही यह कार्य किसी षड्यन्त्र के मातहत किया है समाचार पत्रों का यह भी अनुमान है कि पाकिस्तान के किसी एजेन्ट ने हिन्दू सिखों मे वैमनस्य बढ़ाने की भावना से यह कार्य किया है। इस स्थिति मे इस प्रकार के प्रदर्शन करना सर्वथा अवांछनीय है।

हम समझते है कि सिख पन्थ को बदनाम करने वाले उसके वर्तमान नेता मास्टर तारासिंह आर्यसमाज के सफल हिन्दी सत्याग्रह आन्दोलन से खीजकर यह सबकुछ प्रदर्शनादि करा रहे है। अब इस प्रकार के प्रदर्शनो का प्रभाव न आर्य हिन्दू जनता पर पड़ने वाला है और न भारत सरकार पर ही। बुद्धिमान सिख नेताओं को वीरता के साथ आगे आना चाहिये और इस वर्तमान गलत नेतृत्व से पन्थ को बचाना चाहिये।

डा० ग्राहम की दिल्ली-करांची के बीच आवाजाई

विश्व सुरक्षा परिषद के मनोनीत प्रतिनिधि श्रीयुत डा० ग्राहम पिछले दिनों भारत पधारे जब कि किसी मिशन को लेकर यहां आने का कष्ट न करने के लिये उनको स्पष्ट कह दिया गया था। यहां २ व ३ दिन ठहर कर आप करांची चले गये। वहां से आप पुनः लौटकर भारत पधारे और श्री देसाई आदि से मिले। पता चला है कि आप पुनः करांची गये और अब अपने देश को चले गये है।

आप के इस आवागमन का प्रभाव अब भारत पर पड़ने वाला नहीं। युद्ध विराम की घोषणा करके और कश्मीर के एक तिहाई भाग पर पाकिस्तानी फौजों का अधिकार बना रहने देकर भारत ने जो अनुचित उदारता दिखलाई है और बिना रक्तपात किये उसको खाली कराने की सुरक्षा परिषद् से मांग करने की भूल की थी उसको सुधारने के लिये अब कड़ाई से काम लेने की दिशा में भारत सरकार सोच रही है ऐसा पता चला है।

हम डा० ग्राहम से अनुरोध करेंगे कि वह वृथा श्रम करने की कृपा न करें और साथ ही भारत सरकार से भी हमारा यह अनुरोध है कि वह अब ध्रुव पद उठाने में आना-कानी न करें। शत्रु के अनीति अन्याय, अत्याचार को सहते जाना और उसका प्रतिकार न करना नीति की दृष्टि से महान् पाप है और राष्ट्र के लिये घातक कृत्य है हम तो अपने राष्ट्र के नेताओं से कहेंगे कि वह पाकिस्तान को अविलम्ब काश्मीर से अपनी सेनाएं हटाने के लिये कहें और यदि वह न माने तो अगला कदम उठाने के लिए तैयार रहें।

शेख अब्दुल्ला भारत से बाहर जाने की तैयारी में

पता चला है कि शेख जी अब काश्मीर में अपनी दाल गलती न देख बाहर जाने की कोशिश कर रहे है। उनके अनेकों समर्थक निराश होकर घर बैठते जा रहे हैं। बहिन मृदुला सारा भाई जो शेख जी की बड़ी भक्त थीं और उनको कारागार से छुड़ाने मे एड़ी से चोटी तक का जोर लगा रही थीं वह भी अब सर्वथा निराश होकर देहली वापस आ गई हैं। शेख जी अपने को भारत की प्रजा नहीं मानते और इसलिए उनको विदेश जाने का परिपत्र भी भारत सरकार नहीं दे सकती यह उनकी विदेश यात्रा में बाधा है।

इधर भारत के सुरक्षामन्त्री माननीय कृष्णमेनन तथा कश्मीर के मुख्य मंत्री बख्शी गुलाम मुहम्मद की कड़ी फटकार और झाड़ ने शेख जी के पांव तले से मिट्टी खिसका दी है। पता चला है अपने किसी साथी को पत्र लेकर देहली भेजा है। अपने देश द्रोहात्मक कुकृत्यों के लिए यदि शेख जी क्षमा-याचना करते है और भले आदमी बनकर कश्मीर मे रहते हैं तब तो ठीक है नहीं तो उनके लिए पाकिस्तान भाग जाने या भारत की जेल नापने के सिवा और कोई चारा नहीं।

—शिवदयालु

आ० स० बुलन्दशहर

जालन्धर में ८ फरवरी को हुए हत्याकांड पर इस समाज ने सार्वजनिक रूप से रोष, शोक और क्षोभ प्रकट किया तथा दिवंगत शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि भेंट की। सरकार से प्रस्ताव द्वारा मांग की गई कि वह साम्प्रदायिक गुंडागर्दी को बलपूर्वक दबावे अन्यथा इसका परिणाम देश के लिए भयंकर होगा।

ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण

(भला और बुरा)

[श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट पूर्व प्रधान आ०प्र० सभा, उत्तरप्रदेश]

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव।
५।२५

प्रत्येक मनुष्य अपनी भलाई चाहता है, सुखी रहना चाहता है, स्वरक्षा और सम्पत्ति का इच्छुक, सब प्रकार के दुखों से बचा रहना चाहता है। वह यह नहीं चाहता कि कोई उसके विचारों को आघात पहुँचाये उसके शरीर को किसी प्रकार का कष्ट दे और वह यह भी नहीं चाहता कि कोई उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधक हो। सुखी रहने के अन्तर्गत सारा कार्यक्रम जीवन निर्वाह के नियम और उप नियम आ जाते हैं। सारी जीवन मर्यादा भी उसके लिये ही है। भला मन दो भावनायें रखता है। जब भला कर्म के साथ जुड़ जाता है तो उसका अर्थ परिणाम, वैसा हो जाता है। एक ही शब्द दो अर्थ रखता है और दोनों अर्थों को एक साथ मिलाकर विचार कर लेने से सारी समस्या स्पष्ट हो जाती है। यदि हम अपना भला चाहते है तो हमें व्यवहार में भला, सज्जन, चरित्रवान बनना पड़ेगा, इस वेद मन्त्र में यह उपदेश है कि यदि मनुष्य अपना भद्र और कल्याण चाहता है तो उसको यह आवश्यक है कि वह ईश्वर से यह प्रार्थना करें कि उसकी सारी बुराइयां दूर हो जाये। जब तक बुराइयां दूर न होंगी, उस समय तक उसका कल्याण नहीं हो सकता। वेद मन्त्र के पहले हिस्से में यह प्रार्थना है कि "विश्वानि दुरितानि परासुव" अर्थात् पहली शर्त यह है कि कोई भी दुर्गुण बुराई, पाप, त्रुटि चरित्रदोष, अनुचित व्यवहार शेष न रह जाये। बुराइयों के छोड़ने में कोई संकोच नहीं हो सकता। यह धारणा नहीं हो सकती कि कुछ बुराइयाँ छोड़ दें और कुछ चरित्र का अंग बनी रहे और यह आशा की जाये कि भद्र, कल्याण हो जायेगा। वेद के दूसरे पद में एक सुन्दरता है और वह यह कि जहाँ बुराइयों के सम्बन्ध में यह उपदेश है कि सब बुराइयों को छोड़ना अनिवार्य है कि भद्र के सम्बन्ध मे यह नहीं कहा जा सकता कि सारे भद्र प्राप्त हो जायें। भद्र का प्राप्त होना या न प्राप्त होना कर्म के फल के स्वरूप में है। मनुष्य कर्म करने मे स्वतन्त्र है परन्तु फल प्राप्त करने में दैविक मर्यादा से बन्धा हुआ है। क्योंकि यदि वर्तमान परिस्थिति मे कोई पाप न किया जा रहा हो फिर भी पूर्व हुए पापों के आधार पर किसी न किसी रूप में कपट अभद्र प्राप्त हो ही जाता है। पूर्ण रूप से सुखी रहने की आशा करने के लिये कर्म व्यवस्था की मर्यादा पर विचार करना अति आवश्यक है और कर्म की व्यवस्था को ठीक रखने के लिये ईश्वर की उपासना अचूक उपाय है और ईश्वर की उपासना को क्रियात्मक रूप से लाभदायक समझने के लिए यह आवश्यक है कि ईश्वर सर्व व्यापक है, रचाता है और उसका न्याय अटल है। जब कभी चरित्र दोष का प्रश्न आता है तो वह रचित पदार्थों के प्रयोग के सम्बन्ध में ही उत्पन्न हो सकता है, यदि प्रत्येक रचित पदार्थ के प्रयोग के समय रचयिता का ध्यान और उसकी न्याय व्यवस्था अपने सन्मुख रहे तो रचना का दुरुपयोग नहीं होगा और न प्राणी जगत् के साथ दुर्व्यवहार होगा। ईश्वर उपासना के इस मन्त्र में सबसे अधिक विचारणीय और माननीय दो शब्द है अर्थात् देव और सविता। सविता का सम्बन्ध रचना से है और देव का व्यापकता से और न्याय व्यवस्था से, इन दोनों शब्दों को मिलाकर अथवा साथ साथ विचार करने से यह परिणाम निकलता है कि ईश्वर न केवल रचयिता और स्वामी है परन्तु इतना परिपूर्ण परिपक्व और अटल रूप से स्वामी है कि उसकी व्यवस्था का कोई उलंघन नहीं कर सकता। यदि ईश्वर की उपासना करने वाला क्रियान्वित रूप से इस बात का अभ्यासी हो जाये कि वह जीवन भर संसार के रचित पदार्थों को प्रयोग में लाते समय रचयिता का और रचना की व्यवस्था को ध्यान मे रखे तो वह दुरुपयोग से पाप की वासना से सब प्रकार की दुरितानी से बचा रहेगा।

यह मन्त्र दैनिक उपासना का प्रथम मन्त्र इसीलिये बताया गया कि इस मन्त्र में उपासना सम्बन्धी मौलिक सिद्धान्त ओतप्रोत है। रचना को देखते हुए, कभी-कभी रचना के अन्वेषण में उसकी जांच और पड़ताल मे तत्सम्बन्धी परीक्षणों मे विचारक इतना व्यस्त हो जाता है कि वह रचना को देखता रहता है, काम में लाता रहता है, रचयिता तक उसका ध्यान नहीं जाता। गायत्री मंत्र में भी सविता और देव शब्द दोनों ही इसी अभिप्राय से प्रयोग में लाये गये हैं। इस मन्त्र में भी चरित्र निर्माण की दृष्टि से ईश्वर को सविता, रचयता बताया गया है और उसको अपना संचालक व अधिष्ठाता बताया गया है और उसके दिव्य गुण युक्त तेज से अपनी बुद्धि को पवित्र बनाने का उपदेश है और जो उपदेश के दिव्य गुण से बुद्धि युक्त हो वही बुद्धि कर्म को प्रेरणा देती रहे यह गायत्री मन्त्र का वास्तविक उद्देश्य है। इन उपासना सम्बन्धी ८ मन्त्रों में जो भाव है वह गायत्री मन्त्र में एक ही मन्त्र में ओतप्रोत हैं इसलिये गायत्री मन्त्र की महिमा सबसे अधिक है दूसरे मन्त्र से लेकर ८ वें मन्त्र तक जिन मन्त्रों का संग्रह किया गया है उनमें देव और सविता शब्द की व्याख्या है, उपासक के हृदय मे देश की दृष्टि से, काल की दृष्टि से, व्यापकता की दृष्टि से, और महत्व की दृष्टि से व्यापकता को दर्शाया गया है। देव और सविता की व्याख्या को समझने के लिये हमें इस प्रकार समझना होगा कि दूसरे मन्त्र में कारण रूप प्रकृति से ईश्वर का देव और सविता रूप बताया गया है जब तक कार्य रूप को देखकर कारण का ध्यान न आये और कारण को देखकर आदि कारण का निमित्त कारण का, ध्यान न आये उस समय तक रचना की विवेचना नहीं हो सकती, तीसरे मन्त्र मे देव और सविता शब्द को अपने से सम्बन्धित करके बताया गया है। आत्मा को शरीर से पृथक मानने और समझने से और ईश्वर को परम आत्मा जान लेने से ईश्वर का दिव्य गुणयुक्त तेज हमारे सन्मुख आ जाता है और जब आत्मा अपने को आत्मा के रूप मे ईश्वर के प्रकाश में देखने का अभ्यासी हो जाए तो वह यह कह सकता है कि ईश्वर का नाम लेने से ही आत्मिक बल प्राप्त होता है। कारण जगत् से सम्बन्ध समझ लेने पर और अपने सम्बन्ध से ईश्वर का महत्व अनुभव कर लेने पर चौथे मन्त्र मे चेतन जगत् के साथ सविता और देव की व्याख्या की गई अर्थात् यह बताया गया कि जितने भी चेतन प्राणी हैं चाहे दो पैर वाले हों चाहे चार पैर वाले हों जितने भी प्राणी व जीवधारी हैं सबका संचालन वही ईश्वर है और इस भावना से चेतन जगत से देव और सविता की व्याख्या समझ में आ जाती है। कार्य जगत् को हम दो दृष्टि से समझ सकते हैं एक चेतन और एक जड़। चौथे मन्त्र में चेतन जगत् से सविता की व्याख्या समझाई गई है। पांचवें मन्त्र में कार्य जगत् जड़ रूप में अर्थात् केवल प्राण रहित रचना के रूप में हमारे सम्मुख रक्खा गया है। अर्थात् दिव्य लोक, अन्तरिक्ष व पृथ्वी लोक के रूप में सारा जगत हमारे सन्मुख उपस्थित किया जाता है और इस संसार के सुख से भरे हुए सब स्थान और दुख से भरे हुए सब स्थान ईश्वर की ही व्यवस्था मे है और इस मन्त्र में यह बताया गया है कि जो स्थान खाली सा दीखता है वह बड़े मूल्य का है क्योंकि आकर्षण ऐसी प्रबल शक्तियाँ उसके द्वारा ही सचालित हो रही है। जड़ जगत और चेतन जगत से ईश्वर की देव और सविता रूप में व्यवस्था समझ में आ जाने पर अब हम इस योग्य हो जाते हैं कि संसार के एक-एक पदार्थ को पृथक रूप से अपने सन्मुख रखकर हम ईश्वर को देव और सविता के रूप मे समझ सकें। हम जब किसी चेतन प्राणी या प्रजा को देखते हैं तो हमें ईश्वर को प्रजापते के रूप में समझना चाहिये। जब संसार में किसी ऐश्वर्य को देखें तो हमें ईश्वर को सचालक और पति रक्षक स्वामी मानना चाहिए। जब ईश्वर प्रजापति और ऐश्वर्य के स्वामी के रूप में हमारे सन्मुख होगा और यह बात हमारे हृदय में अंकित होगी कि कोई भी प्राणी छोटा या बड़ा कोई भी पदार्थ कितना ही सुन्दर और विचित्र हो ईश्वर के संचालन और व्यवस्था से बाहर नहीं है तो हम प्राणी मात्र के साथ दुर्व्यवहार नहीं करेंगे और किसी ऐश्वर्य का दुरुपयोग नहीं करेंगे और हम एक ओर धनवान, वैभवशाली बनने की प्रार्थना करेंगे उसके साथ ही हम यह प्रयत्न करते रहेंगे कि ईश्वर की व्यवस्था को न भूलें और चरित्रवान बने रहें।

आर्यसमाज आगरा नगर

प्रधान–म० मोहनलाल जी आर्य
उपप्रधान०–म० परमेश्वरी सहाय जी
" " —म० रामपालसिंह आर्य
मंत्री विश्वम्भर नाथ जी आर्य
सहकारी मंत्री—म० भगवतसरूप जी
उपमंत्री म०–मदनमोहन जी आर्य
कोषा०–म० हरीगोपालसिंह जी आर्य
पुस्तका०–प्रोफेसर दयाशंकर जी आर्य
निरीक्षक–म० रामसिंह जी आर्य,
अमरसिंह जी आर्य
मंत्री–श्री मदयानन्द बाल मन्दिर
म० शिवनारायन जी आर्य
मंत्री–आर्य कन्या विद्यालय
म० सरदारी लाल जी आर्य
मंत्री–विधवा आश्रम
म० रामदयाल जी आर्य

आर्यसमाज और हिन्दी-भाषा

– श्री पं० प्रकाशवीर शास्त्री –
[प्रचार मन्त्री सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति]

आर्यसमाज ने जन्मकाल से ही राष्ट्रीय एकता के जिन जिन प्रश्नो के समाधान का दायित्व अपने हाथों मे लिया उनमे हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना भी था। हिन्दी हितों के सर बक सम्मेलन और सभाये उस समय अपने गर्भ मे भी नहीं आई थी जब ऋषि दयानन्द जी ने राष्ट्रीय एकता की सूत्रिका हिन्दी भाषा का उद्घोष किया था। तत्कालीन और आज के भी भारतीय नेताओ की पीढ़ी को अगर देखें तो राष्ट्रीय एकता को लक्ष्य करके चलन वाला मे भाषायी दृष्टि से सब बिखरे हुए थे। योगी अरविन्द रवीन्द्रनाथ ठाकुर, लोकमान्य तिलक, और महात्मा गान्धी से लेकर प०नहरू तक लगभग सब ने ही अपने मूल ग्रन्थो म अग्रेजी, बगला, मराठा और गुजराता भापा का व्यवहार किया है। उस समय के भी बकिम चन्द्र चटर्जी राजा राममाहन राय आदि महानुभाव बगला आदि भाषाओ म अपना लेखना चला रहे थे। परन्तु क्रान्ति के इन्ही क्षणो म दारुण भारत का वीर भूमि काठियावाड म ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उनकी मातृभाषा गुजराता थी और सस्कृत मे उनका अध्ययन हुआ था। पर जब भाषण और ग्रन्थ निर्माण का प्रश्न आया तो हिन्दी भाषा म हा अपन ग्रन्थो का उन्होने निर्माण किया। भारत के किसी भा भाग म वह गय उन्होन भाषण सदा हिन्दा मे हा दिए। ऋषि की इस पावत्र थाती का आर्यसमाज ने बडे यत्न से सभाल कर रखा।

शिक्षा के क्षेत्र मे आर्यसमाज ने जो अद्भुत् कार्य किया है, उसे राष्ट्रीय उत्थान का इतिहास लिखने वाले निष्पक्ष लखक कभी नहीं भूल सकेंगे। पजाब म ता शिक्षण सस्थाओ का जाल सा आर्यसमाज न पूर दिया था। ... ... शिक्षित किया जाय ... ... म जब आर्यसमाज न ... ... हा सबम पहल स ... ... इसा तरह अमर ... स्वा० श्रद्धानन्द जा व तराग स्वामी दर्शनानन्द जी ने गुरुकुला का स्थापना का और महात्मा हंसराज जा आदि महानुभावो ने डी० ए० वी० कालेज और स्कूलो का ताना बाना पूर दिया। यह सब ही सस्थाये कालेज हा चाहे गुरुकुल हिंदी के माध्यम से शिक्षा देती रही। लार्ड मैकाले जा अग्रेजा भाषा के द्वारा अग्रेजियत भारतायो के मस्तिष्को तक पहुचाकर भारत की आत्मा का खरी दना चाहता था, आर्यसमाज का शिक्षा विस्तार का पुरोगम उसे एक खुली चुनौती थी। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के रजतजयन्ती समारोह मे भाषण करते हुए महात्मा गान्धी जी ने कहा था—लोग मुझे महात्मा कहते हैं, मैं महात्मा नहीं हू। महात्मा तो आर्यसमाज का नेता स्वामी श्रद्धा नन्द था जिसने सन् १९०१मे कागड़ी के जगलो में गुरुकुल खोलकर हिन्दी के माध्यम से शिक्षा देना आरम्भ किया। न केवल उत्तर भारत मे अपितु दक्षिण भारत मे भी हिन्दी ने व्यापक रूप आर्यसमाज की कृपा से ही धारण किया। १८७५ से लेकर जब से आर्यसमाज की स्थापना हुई और आज तक आर्यसमाज के मचो की भाषा हिन्दा हा रहा है।

स्वतन्त्र होने पर राष्ट्र की भाषा क्या हो? जब यह प्रश्न निर्णय का विषय बनने लगा तो यह लाग जा आज अग्रेजी का आड म देश को फिर एक बार सघर्ष म डालना चाहते ह बुरा तरह अड गए। और ता और स्वय प्रधान मन्त्री नेहरू जी ने भी जयपुर काग्रेस मे तमक कर यह बात कही थी, मैं जब तक पार्लियामेन्ट मे हू हिन्दी को राष्ट्रभाषा नहीं बनाया जा सकता। आर्यसमाज जिसने आरम्भ से हिन्दी के बिरवा को पानो देकर पुष्ट किया था वह लोकतन्त्र मे ऐसा भाषा सुनकर हिल उठा। हिन्दा ही राष्ट्रभाषा के सिंहासन पर बैठने की क्षमता रखती है—का आन्दोलन शिष्ट और व्यवस्थित भाषा मे आर्य समाज के मच से और तीव्रतर कर दिया गया। उधर काग्रेस के भीतर भी जहा राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन जमे हिन्दा भक्त अथक परिश्रम उस दिशा म कर रहे थे वहा दूसरी ओर श्री घनश्यामसिंह गुप्त दक्षिण भारतीयो का समर्थन हिन्दा का दिलान म व्यस्त थे। स्वय श्री गुप्त न इस प्रश्न पर ... ... मे राष्ट्रभाषा हिन्दा स्वीकृत हानेपर सविधान का हिन्दा अनुवाद करन वाली समिति का अध्यक्षता भी श्री घनश्याम सिंह गुप्त को हा राष्ट्रपति ने सौंपी।

पजाब के हिन्दी सत्याग्रह का सचालन आर्यसमाज और उसके नेता श्री घनश्यामसिंह जा गुप्त द्वारा होता देखकर बहुत से लोग आश्चर्य मे थे। कोई कहता था प्रान्तीय भाषाओ को यह सर्वथा समाप्त करना चाहते है। और बहुत से यह भी कहते थे दक्षिण मे जा प्रतिक्रिया है वह पजाब सत्याग्रह की ही है। सबसे अधिक आश्चर्य तो यह था कि स्वय नेहरू जी भी उन कहने वालों मे थे। परन्तु जब यह सचाई सामने आई आर्यसमाज का आन्दालन तो भाषा स्वातन्त्र्य का आन्दोलन है। वह किसी भाषा को समाप्त कर हिन्दी को उसका स्थान दिलाने के लिए नहीं अपितु क्षेत्रीय भाषा और राष्ट्रभाषा दोनो के यथोचित विकास के लिए है। इस पर आलोचको का चुप होना स्वाभाविक था। पजाब के एक करोड एकसठ लाख व्यक्तियो मे से एक करोड २१ लाख की मातृभाषा जब हिन्दी है तब मुट्ठी भर पजाब को और क्षेत्र बनाकर हिन्दू से उसका भाषा छीनना अन्याय था।

दक्षिण में चल रहा हिन्दी विरोधी आन्दालन यदि उत्तर और दक्षिण भारत का राजनैतिक चाल न होकर विशुद्ध भाषायी आन्दोलन है तो आर्य समाज का स्पष्ट मत है वह सुगमता से हल हो सकता है। प्रान्तीय भाषाये सब अपने स्थानो पर फले और फूले। केवल जिन कार्यों के लिए अब तक इङ्गलिश का प्रयोग होता था वह स्थान हिन्दी ले ले। भारत की सब ही भाषायें चाहे वह उत्तर की हों या दक्षिण की संस्कृत की उपज है। व्याकरण और छन्दशास्त्र आदि भी सबके समान ही है। हिन्दी इनमे सस्कृत के सबसे अधिक निकट है। फिर जितनी सुगमता से दक्षिण भारतीय बालक सीख सकता है उतनी अग्रेजी कैसे सीख सकेगा? और फिर जिस भाषा ने अब तक हमसे हमारी सस्कृति सभ्यता छीनने का ही कार्य किया हो और विशेषकर दक्षिण मे उसे देर तक चिपटाये रहना यह कहां की बुद्धिमत्ता है। सचाई यह है कि यह आन्दोलन अगुलियो पर गिने जाने वाले कुछ आग्ल भाषा भक्तो की मानसिक दासता का ही या ता परिणाम है या फिर उत्तर और दक्षिण के राजनैतिक झगडे इस आड मे उकसाये जा रहे हैं। दोनो ही बातें शोचनीय है। आर्य समाज का अनुमान है दक्षिण की धर्मपरायण जनता को जब यह सारे तथ्य पता लगेगे तो स्वत ही यह झाग बैठ जायेगे। राष्ट्रीय एकता मे इस आधार पर दक्षिण म दरार न पड़ने पाये इसके लिए आर्यसमाज प्रयत्न वान है। बहुत शीघ्र ही आर्यसमाज के वह प्रयत्न सामने आ जायेंगे।

सत्यार्थ प्रकाश महिमा

(मुनि श्री मेधाव्रताचार्य आर्य कवीन्द्र कुसूर पो० येयवला (नासिक)

वसुन्धरावासिविदां धुरन्धरा
मति समालम्ब्य विनिर्मलामकम्।
इदं तु मे सत्यहृदा सदाशयाः
पिबन्तु वाक्यामृतमात्मनमगलम् ॥१॥

हे भू मण्डल पर वसने वाले उदाशय, धुरन्धर विद्वद्वर महानुभावों! आप आज निर्मल सुमति को धारण कर सच्चे अन्तःकरण से मानव मगल कारी मेरे इस वचनामृत का पान तो कीजिये ॥ १ ॥

युगं सुविज्ञानविभाकर प्रभा–
प्रभासित विश्ववरेण्य मण्डितम्।
असत्य लाला मतवाद मण्डनं
न शोभते सत्य सुधर्म खण्डनम्॥२॥

यह युग विज्ञान का है। उत्तम विज्ञानरूपा दिवाकर अपनी चमक से ससार को चकित कर रहा है। अनेक विज्ञानी विद्वद्वर इस युग की शोभा को बढ़ा रहे हैं। ऐसे उज्वल युग में असत्य पाखण्ड लालामय मतो का समर्थन एव सत्य वैदिक धर्म का तिरस्कार करना आप जैसे वैज्ञानिक प्रवरो को शोभा नहीं देता ॥ २ ॥

करेऽतुलां न्यायतुलां सदर्चितां
मुदा समादाय महोदयैर्बुधैः।
महर्षिणा लोकहितैषिणा कृत
सुपुस्तक तत् परीक्ष्यतां वरम्॥३॥

संसार हितकारी आदित्य ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानवमात्र की मंगल कामना से "सत्यार्थ प्रकाश" नामक उत्तम ग्रन्थ निर्माण किया है। प्रसन्नता से अनेक सज्जनों ने इस ग्रन्थ को अपना माननीय धर्म ग्रन्थ माना है। निष्पक्ष कतिपय मुस्लिम महाशयों ने भी इसे सराहा है। आर्यों का तो सर्वस्व है ही !! भारतीय प्रजा के शासक साम्राज्यवादी परिषन्मण्डल के विज्ञानी विद्वन्महोदय सभ्यगण ! आप अपने हाथ मे अनुपम न्यायतुला को पकड़ कर अच्छी तरह इस ग्रन्थ का परीक्षण तो कीजिये। पश्चात् मुस्लिम परिषद् के सदस्यगण को सुसम्मति दीजियेगा कि यह ग्रन्थ मानव मंगलकारी है ॥ ३ ॥

न केवलं यावन धर्म पुस्तको–
दितोचिताक्षेपनमत्र वर्त्तते।
परं स्वधर्मोत्थित दोष दर्शनं
हिताय नृणां विहितं पदे पदे ॥४॥

महर्षि ने इस ग्रन्थ मे न केवल कुरान में विद्यमान दोषयुक्त बातों की ही बोम्बरीति से समालोचना की है; अपितु मानव हित की दृष्टि से निष्पक्ष भाव से स्थल स्थल पर शैव, शाक्त, वैष्णव, बौद्ध, जैन, वाममार्गी और नवीन वेदान्ती आदि हिन्दू सम्प्रदायों की एवं ईसाई मत की भी बुरी, मिथ्या सृष्टिनियम विरुद्ध बातों की समीक्षा की है, अतः हमारे मुस्लिम बन्धुओं को उत्तेजित होने का कोई कारण नहीं है ॥ ४ ॥

समग्र संसार समान दृष्टिना
न पक्षपातो मुनिना मनागपि।
व्यधायि नैजान्य मतानृतादिन
प्रकाशने सत्य पथ प्रदर्शिना ॥५॥

सारे ससार को समदृष्टि से देखने वाले संन्यासि सम्राट् दिव्य ऋषि दयानन्द ने अपने आर्यावर्त्तीय सम्प्रदायों एवं विदेशीय मतों की मिथ्या कुरीतिपूर्ण अज्ञानजन्य बातों तथा पोलो को खोलने मे जरा भी पक्षपात न करके अपने को सन्मार्ग दर्शक सिद्ध कर दिखाया है ॥ ५ ॥

सत्यार्थानां प्रकाशार्थं
सर्व वाद प्रदर्शिनी।
पृथ्वीस्थ मुख्य धर्माणां
राजते यत्र पुस्तके ॥६॥
सौकर्येण जना यत्र
श्रेयः प्रेयश्च वर्त्म तत्।
विज्ञाय मानवं देहं
सफलीकुर्युरिच्छाया॥७॥

अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में ऋषिवर ने सत्य-सत्य अर्थों के प्रकाशनार्थ संसार के मुख्य मुख्य धर्मों=मतो की शास्त्रार्थकारिणी बड़ी प्रदर्शनी भरकर मानवों की आँखें खोल दी है। उस प्रदर्शनी में विश्वजन सरलतापूर्वक आ आकर अपनी इच्छा के अनुसार श्रेय=मोक्षमार्ग एवं प्रेय=सांसारिक सुख कारक मार्ग को ग्रहण कर मानव जन्म सफल बना सकें ॥ ६ ७ ॥

बृहता पुण्यपण्येन प्राप्यते मानवं वपुः।
सत्य मार्गं ततो ज्ञात्वा
लभ्यतां मुक्तिरात्मभिः ॥ ८ ॥
एकेश्वरात्मजा स्सर्वे
भूखण्ड मनुजायतः।
सर्गादि भूत सद्धर्मे
श्रद्धया संश्रयन्तु ते ॥९॥

बड़े पुण्य रूपी मूल्य से यह मानवदेह मिलता है; अतः इस ग्रन्थ रूप-प्रदर्शनी द्वारा सत्य ज्ञान मार्ग जानकर मानवात्माओं को मुक्तिलाभ करना चाहिए। क्योंकि भूलोकवासी मानवगण एक ही परमात्मा के अमृत पुत्र हैं, अतः मानवमात्र को सृष्टि प्रारम्भ में प्रकाशित वैदिक धर्म का आश्रय श्रद्धापूर्वक लेना चाहिए। ॥ ८९ ॥

सत्यार्थ सम्प्रकाशाख्य
स्सन्दर्भ स्सत्यदर्पणः।
कल्याणाय नृणां दत्तो
येनासौ वन्द्यतां मुनिः॥१०॥

जिस मुनिवर ने जन कल्याण के लिए सत्यार्थप्रकाश रूप सत्य का दर्पण (शीशा) ग्रन्थ दिया है, उस ऋषि की सदा वन्दना करनी चाहिए ॥ १० ॥

यो दम्भ दुर्ग दल ने नियतं शतघ्नी
गोलो दुराचरण पर्वत पर्वभेदे।
दम्भोलिखे खलु यो ह्यनृतद्रु माली
दावानलो लसति यो यतिराजसृष्टः ॥ ११ ॥

यतिराज का बनाया हुआ यह ग्रन्थ पाखण्ड रूपी किले को उड़ाने वाला सचमुच तोप का गोला, दुराचार रूपी पर्वतमाला को भेदन करने वाला साक्षात् वज्र एवं असत्य वृक्षावली को भस्म करने वाला प्रत्यक्ष वनाग्नि है ॥ ११ ॥

सत्यासत्य विवेक दिव्य नयनं
योऽज्ञानरात्र्रतमो।
नाशे ज्ञानदिवाकरो भववन
भ्रान्ताध्व-ानाब्ध यः।
प्रेम्णा सत्पथदर्शकोऽस्ति मदन
ज्वालावलीशान।
वैराग्यामृतमेव संयमिनृणां
कल्याण चन्द्रोदयः ॥ १२ ॥

यह ग्रन्थ सदसद् विवेकशाली दिव्य नेत्र है। अज्ञानमयी रात्रि को नष्ट करने वाला ज्ञान सूर्य है। भवारण्य में भटकने वाले पान्थजनों का स्नेही सन्मार्ग दर्शक है। कामाग्नि की ज्वाला को शान्त करने वाला वैराग्य का अमृत ही है। एवं सयम शील महानुभावो के लिए कल्याण का चन्द्रोदय है ॥ १२ ॥

अद्वैत द्विप मर्दने मृगपति–
र्वेदाब्धिमन्थाद्धृतं।
पीयूषं भवरोगिणां भयहरं
यो मोक्षलक्ष्मी प्रदः।
चातुर्वर्ण्य सुधर्म वर्णनचणः
ससारातापान्तकृद्–
यः सत्यार्थ प्रकाश आर्य रुचिरो
ग्रन्थोत्तमो राजते ॥ १३॥

आर्य जनों का रुचिकर उत्तम ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" अद्वैतवादी मतगज के मदमर्दन करने में मृगराज है। यह वेदसागर के मथन से निकला हुआ भवरोगिजन भयहारी पीयूष=अमृत है। चारो वर्णों के उत्तम धर्मों का सम्यग्रूप से प्रतिपादन करने वाला; संसार के त्रिविध तापों का विनाश करने वाला तथा मोक्ष लक्ष्मी का दान करने वाला सर्वोपरि सहायक रूप से विराजमान है ॥ १३ ॥

श्रुतीनां स समुल्लास
श्चन्द्रहासोऽहसां ध्रुवम्।
सुहासो मुक्ति नारीणां
विलासः पुण्यसम्पदाम् ॥१४॥
सत्यार्थ कौमुदी रम्या
दयानन्द सुधांशुना।
वसुधायां लता स्निग्धैः
पायतां सच्चकारकैः ॥ १५ ॥

'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रन्थ मानो चारो वेदो का हृदयोल्लास; सकल पाप जाल का कृपाण; मुक्ति सुन्दरी का मधुर मन्द हास्य और पुण्यलक्ष्मी का विलास है ॥ १४ ॥

मुनीन्द्र दयानन्द रूपी चन्द्रमा ने सारे संसाराकाश मे मनोहर सत्यार्थ प्रकाश रूपिणी चन्द्रिका फैला दी=छिटका दी है। प्रेम मुग्ध सन्तरूपी चकोरगण उसका पान=आस्वादन करें ॥ १५ ॥

प्रांत के समस्त आर्यसमाजों से

(श्री सुखदेव सिंह शास्त्री, संचालक प्रान्तीय आर्य वीर दल)

पंजाब हिन्दी आन्दोलन में विगत ७ मासों से अत्यन्त व्यस्त होने के कारण आप के साथ निरन्तर सम्पर्क न बना सका। दो मास पटियाला के कारावास में रह कर मैंने जो अमूल्य अनुभव प्राप्त किये हैं उनके आधार पर मुझे जो आप से कहना है वह यह कि इस महान विजय के बाद सम्पूर्ण भारत आर्य समाज की ओर आशा भरी निगाहों से निहार रहा है। सम्पूर्ण भारत आज आप के सुदृढ़ सुव्यवस्थित और शक्तिशाली नेतृत्व में रहने के लिये उत्सुक हो उठा है। उसने आज देख लिया है कि उसके भावी अधिकारों की रक्षा भी आर्य समाज के अतिरिक्त और कोई नहीं कर सकेगा। उसकी यह आशा आपके द्वारा सफलतापूर्वक पूर्ण होती रहे। इसके लिये आर्य समाज के पास एक शक्तिशाली संगठन की आवश्यकता है, जो हर प्रकार से आर्यसमाज का हो जिसे समय पड़ने पर आप आन्दोलनों की धधकती हुई भट्टियों में अधिकार पूर्वक झोंक सकें और वह हो आप की अपनी शक्ति वह संगठन आर्यवीर दल ही हो सकता है। पर आप यदि इस महान आन्दोलन में किये गये त्याग एवं बलिदानों की कुछ भी कीमत समझते हैं तो उसके लिये आपको अभी से आज ही से अपने-अपने नगर और उसके उपरान्त गांव गांव में आर्य वीर दलों की स्थापना कार्य प्रारम्भ कर देना चाहिये। सन् १६५८ का प्रमुख कार्य एक वर्ष आपका यह होना चाहिये कि आप आर्य वीर दलों की स्थापना करें। अगर आप को सत्याग्रह संग्राम में भाग लेने का सुअवसर प्राप्त हुआ है तब तो भविष्य में किसी भी आंदोलन के प्रारम्भ होने पर जेल जाया करने के लिये आप कृत सकल्प स्वयं हो ही चुके होंगे किन्तु अपने साथ अधिक से अधिक विश्वासपात्र कुशल साथियों का जत्था भी तैयार करें और यदि किन्हीं घरेलू विषम परिस्थितियों के कारण आप आन्दोलन में न जा सकें हों तब आप के इस पाप का एक मात्र प्रायश्चित यही होगा कि आप आर्यवीर दलों की स्थापना में तन, मन, धन से जुट जांय। आप स्मरण रक्खें आर्य समाज के हाथ मजबूत बनें इससे बढ़कर आज कोई काम नहीं अभी साथ ही आप इस बात का भी निश्चय कर लें कि आर्य समाज के हाथ मजबूत करने के लिये आर्य वीर दल का संगठन व्यापक और सुदृढ़ करने के सिवा कोई अनिवार्य कार्य नहीं है।

आर्य वीर दल की स्थापना के पवित्र कार्य में मैं आप की हर प्रकार की सहायता और सेवा करने के लिये आपको साधन प्रस्तुत करने के लिये और उचित सम्मति प्रदान करने के लिये प्रति क्षण तत्पर रहूंगा। १ जून से २५ जून तक का एक प्रान्तीय शिक्षक शिक्षा शिविर नकुड़ जिला सहारनपुर में लग रहा है। आप अपने यहाँ के योग्य चरित्रवान और शिक्षित नवयुवकों को इस शिविर में भेजें, और शिविर में भाग लेने वाले सज्जनों को अभी से नकुड़ जिला सहारनपुर के पते पर पत्र-व्यवहार करना प्रारम्भ कर देना चाहिये जिससे समय से पूर्व आपको प्रति उत्तर देकर आपको प्रवेश पाने के नियमों की विधिवत् सूचना दी जा सके।

मान्य भाइयों! आपके पंजाब हिन्दी आन्दोलन में आर्य वीर दल ने गौरवपूर्ण सेवा की है आप के प्रदेश के प्रत्येक जिले से दल मण्डलपति शिक्षक सैनिक अधिक से अधिक संख्या में पहुँचे हैं। आपके प्रान्त से बाहर के हैदराबाद, बिहार, बगाल, बम्बई, राजस्थान, पजाब, मध्यभारत और स्वराष्ट्र के सुदूर प्रदेशों से आकर बड़ी संख्या में भाग लिया है फिरोजपुर काण्ड के अमर शहीद स्वर्गीय आर्यवीर श्री सुमेरसिंह रोहतक आर्य वीर दल के शाखा नायक थे और इसी प्रकार के अन्य बहुत से बीर भी जख्मी हुए हैं। मैं आर्य वीर दल के सुयोग्य युवकों की इन महान सेवाओं का हृदय से अभिनन्दन करता हुआ उनके उत्साह की प्रशंसा करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप अब आर्य वीर दल की स्थापना के अपने सुन्दर विचार को अतिशीघ्र कार्य रूप में परिणित करने की कृपा करें। और आप अपने इस दिशा में किये गये पवित्र प्रयत्नों की सूचना मेरे प्रधान कार्यालय सर्वोदय यज्ञ भवन नकुड़ जिला सहारनपुर के पते पर देते रहने का कष्ट करें। मुझे आशा है कि आप आर्य वीर दलों की स्थापना करके आर्य समाज के गौरव की, महर्षि दयानन्द के चक्रवर्ती स्वराज्य की, वैदिक धर्म को राज्य धर्म बनाने की, मेरी मनोकामना की, और निरीह भारत के अनेक नागरिकों के अधिकार रक्षा की, तथा कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की किंवा सार्वभौमिक सुख शांति की स्थापना वाली सुखद योजनाओं की, सफलता के लिये महान सेवा और निर्माण कार्य आर्य वीर दलों की स्थापना की दिशा में आप उत्सुकता पूर्वक लग जायेंगे। भगवान आप की सहायता करें।

★

चलचित्र और उसका कुप्रभाव

(ले०—कालीचरण गुप्ता विनोद सुगन्धि स्टोर, चौक बाजार पीलीभीत)

चलचित्र हमारे सामने कम खर्चीला मनोरंजन के रूप में आता है। लोगों में आज इसके प्रति काफी दिलचस्पी है। इसके द्वारा हम प्रगति भी कर सकते हैं और साथ ही कुसंस्कारों के आदि भी हो सकते हैं। इन दोनों बातों का निर्णय श्लील और अश्लील चित्रों पर निर्भर करता है। परन्तु आजकल जितने भी चित्र बनते हैं वे प्रायः अश्लील और गन्दे होते हैं, जिससे हम में कुसंस्कार भरता जा रहा है। हमारा समाज गन्दी भावना का शिकार होकर पतन की ओर जा रहा है।

पांच छः वर्षों के अन्दर बने चित्रों में ६० प्रतिशत चित्र अश्लील ही बन पाये है, जो अश्लीलवाद की नींव को मजबूत कर रहे है। फिल्मों में तारिकाओं को अर्द्ध नग्नावस्था में दिखाना गन्दे संवाद कहाना, आम रास्ते बाहुपास में कसना, अश्लील और भद्दे गीतों का गाना (नयादौर, करवट, नया आदमी) जो दिखाये जाते हैं उसका कुप्रभाव समाज पर पूर्ण रूप से पड़ता है।

आज सरे आम बच्चे 'रेशमी सल्वार कुरता जाली का·····' अश्लील गीत गाते नजर आते हैं और बच्चियाँ 'उड़ें जब जब जुल्फें तेरी, क्वारियों का दिल मचले' जैसे भद्दे और लज्जा जनक गीत की धुन अलापती दिखती हैं।

इससे ही अन्दाजा लगाया जा सकता है कि हम कितनी प्रगति कर रहे हैं, हमारे देश में चारित्रिक उत्थान कितना हो रहा है। इन सारे अश्लील गीतों का बड़ों पर तो कुप्रभाव पड़ता ही है साथ ही बच्चों और भोली नवयुवतियों पर भी इसका गहरा और अमिट बुरा असर पड़ता है। जो देश के चरित्र के लिए 'मीठे जहर' के समान है।

इसके अतिरिक्त कितनी ही फिल्मों में चोरी, डकैती, अपहरण का बाजार बुलन्द रहता है जिसको सम्मिलित रूप में दर्शक मि० एक्स में देख सकते है, फिल्मों में जो अपहरण आदि करने के ढंग दिखाये जाते है, उससे प्रभावित हो कर इसका प्रयोग अपने रोजमर्रे में लोग करने लगे हैं, जिसका नतीजा होता है कि हमारी माँ बहिनों की इज्जत खतरे में पड़ी रहती है।

आज देश में अनेक महत्व पूर्ण समस्यायें हैं। हमारे निर्माता उन सारी समस्याओं को अपनी फिल्मों के जरिये सुलझा सकते हैं। वे अश्लील फिल्म को बनाने के बजाय श्लील, शिक्षाप्रद समस्यामूलक चित्र बनायें तो कितना अच्छा हो। आज देश को 'प्यासा', 'मदर इण्डिया', 'जागृति' व 'शारदा' जैसी फिल्मों की आवश्यकता है।

आज आवश्यकता है कि दर्शक दोष पूर्ण और अश्लील चित्रों को न देखने का प्रण करले। तब देखें कि अश्लील चित्र बनाने वाले निर्माताओं की मौत होती है कि नहीं। अपने अन्दर श्लील चित्र देखने की प्रवृत्तियों को जागृत करें। इसके लिए उन्हें अपने अन्दर फौलादी इरादा भरना होगा।

इसके साथ ही चित्र निर्माताओं को पैसे का लोभ छोड़कर ऐसी फिल्में बनानी चाहिए जिससे देश उन्नत हो देश का चरित्र उज्ज्वल हो। भारतीय सेन्सर बोर्ड को भी अश्लील चित्रों के प्रति आज सचेत होने की आवश्यकता है। तब ही देश से अश्लील चित्रों का उन्मूलन हो सकेगा।

आर्यसमाज की भूल

(रजीलाल आर्य मन्त्री आर्यसमाज चोहड़पुर (देहरादून)

कुछ आर्य मित्रों का कथन है कि आर्य समाज के नेताओं ने सबसे पहली भूल यह की है कि उन्होने अपनी अदूरदर्शिता के कारण सस्ती प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए स्वय को गाधी और काग्रेस के चरणों मे समर्पित कर सारी आर्य जाति को ही गाधी और काग्रेस के नेतृत्व म फसा दिया, जबकि गाधी जी का कोई भी विचार वैदिक कसौटी पर सगत नहीं था, अपितु विपरात ही था।

प्रश्न यह है कि 'ईश्वर अल्ला तेरे नाम, गाता कुरान एक समान' शुद्धि का विराध, खिलाफत आन्दालन, अहिंसा के नाम पर हिन्दुआ का नपुसकता का सदेश, मुस्लिम भक्ति के प्रवाह म मुसलमाना के गाय की कुर्बाना के अधिकार तक की मान्यता, वेद, सत्यार्थ प्रकाश, महर्षि दयानन्द, अवतारवाद, मूर्तिपूजा आदि पर विचार, अछूतोद्धार के नाम पर हरिजन वर्ग की पृथक् स्थापना, राष्ट्र भाषा के नाम पर उर्दू प्रधान हिन्दुस्तानी का प्रचलन, गीता आदि का ऐतिहासिकता से इन्कार, भारत म मिश्रित सस्कृति को मान्यता, 'रङ्गीला रसूल' आदि पुस्तकों पर मुसलमानो के धार्मिक पागलपन को भडकाना आदि विषयो पर गाधा जी का दृष्टिकाण क्या सर्वथा आर्य समाज का मान्यताओ तथा विश्वासा के पूर्णत विपरात हा नहीं था ?

उपर्युक्त सभा वातो का जानते हुए भा आर्य समाज के नेताओ न समस्त आर्य जाति का काग्रेस म तथा गाधा के चरणो पर डाल दिया और आर्य समाज की समस्त शक्ति गाधी और काग्रेस के गुणानुवाद म लगा दी। जबकि ऐसे समय म, जब सारी जाति हा अग्रेज विरोधी भावना के प्रवाह म बह कर गाधा की विडम्बना मे फसी जा रही था। आवश्यकता इस बात की था कि आर्य समाज उस समय गाधा और काग्रेस के अवैदिक दृष्टिकाण का प्रबल विराध कर आर्य जाति का इस अशुद्ध नेतृत्व से बचाता और पृथक् हा केवल आर्य विचार धारा पर आधारित सगठन को प्रेरणा प्रदान करती, किन्तु किया गया सर्वथा इसके विपरीत। जिसका परिणाम हिन्दू जाति अनेक आपदाओं के रूप में भुगत रही है।

दूसरो बार आर्य समाज ने उस समय भूल की, जब उसने नेहरू और भारत की पूर्णरूपेण धर्म विरोधी, वेद विरोधी और हिन्दू विरोधी सरकार के नेतृत्व मे निष्ठा की प्रेरणा दी और यह क्रम आज भी ज्यों का त्यों चल रहा है। आर्य समाज की सस्थाओ के सभी जलसों, उद्घाटनों तथा आयोजनों पर मन्त्रिगण तथा काग्रेसी नेताओं को निमन्त्रित करने के साथ साथ आर्य समाज के अधिकाश समाचार पत्र, प्रचारक एव उपदेशक आदि आर्य समाज के मञ्च से नेहरू और काग्रेस का गुणगान करते हुए धर्म प्रधान आर्य जनता का निरन्तर इस धर्म विरोधी शासन के प्रति निष्ठा एव विश्वास का सन्देश देते रहते ह जबकि सभी जानते हैं कि नेहरू के धर्म और वेद के विषय म क्या विचार हैं और भारत सरकार द्वारा परिचालित 'हिन्दू कोड', गावध की मान्यता', मासाहार का व्यापक प्रचार एव प्रयत्न इसाई मिशनरियों के षड्यन्त्रो को सरक्षण बौद्ध धर्म का राज्य सहायता के द्वारा पुनर्स्थापन मुसलमान, सिख आदि सम्प्रदायो की हिन्दू विरोधी प्रवृत्तियो को प्रोत्साहन सह शिक्षा का सवर्धन सस्कृति के नाम पर गन्दे गीतो एव नगे नाचों का प्रदर्शन, राष्ट्र भाषा एव लिपि पर कुठाराघात तथा यज्ञ आदि पवित्रतम हिन्दू भावनाओ का घृणापद उपहास आदि समस्त व्यवहार सारी आर्य जाति, आर्य राष्ट्र तथा आर्य सस्कृति के अपमान का सज्ञान प्रत्यक्ष प्रयत्न है।

इतना सब कुछ जानते हुए भी आर्यसमाज पिछले दस वर्षो से आर्य जनता को सतत इस आर्य विरोधी सत्ता के नेतृत्व म विश्वास की ही प्रेरणा देती रहा। जबकि होना यह चाहिए था कि आर्य समाज अपनी समस्त शक्ति से हिन्दू जाति को काग्रेस सरकार के इन राष्ट्र विरोधी कृत्यो के प्रति जागृत कर समर्थ विरोध की प्रबल प्रेरणा प्रदान करती, किन्तु सब कुछ इसके विपरीत ही किया गया। जिसका फल यह हुआ कि काग्रेस सरकार को हिन्दुओं की भावना से खुलकर खेलने का साहस हुआ और वह निरन्तर हिन्दू विरोधी कृत्यो की ओर अग्रसर होती रही। इसी शृखला के अनुसार उसने शुद्ध साम्प्रदायिकता के आगे घुटने टेक कर पजाब मे बहुसख्यक आर्य जनता की मातृभाषा पर कुठाराघात किया।

पूर्व से ही पीड़ित हिन्दू की आत्मा भारती माँ पर अत्याचार देखकर तड़प उठी और उसने शान्ति पूर्ण प्रतिरोध किया किन्तु ससार ने देखा कि सहानुभूति, सहयोग तथा अहिंसा की प्रचारक सरकार ने महात्माओं, सन्यासियों एव ब्रह्मचारियों के आध्यात्मिक प्रयत्नों का भी डण्डे से सम्मान किया। न्याय की आशा से निराश आर्य जनता न सत्याग्रह का समारम्भ कर दिया जिसका नेतृत्व आर्यसमाज ने सम्भाला।

सत्याग्रह आरम्भ होने से पूर्व आर्य समाज के नेताओ का विश्वास था कि सत्यमेव, सहअस्तित्व और पचशील की पताका फहराने वाली नेहरू की सरकार पर जिसका वे जीवन भर यशोगान गाते रहे हैं बडा प्रभाव है किन्तु सत्याग्रह के दौरान म सरकार के व्यवहार से पता चला कि जितना अत्याचार हिन्दी सत्याग्रहियो पर किया गया उतना कभी किसी अन्य आन्दोलन के सत्याग्रहियो पर नहीं किया गया। आर्य समाज के द्वारा देश रत्न राष्ट्र नायक, भारत गौरव आदि सम्मान युक्त विशेषणों से सम्बोधित राज्य के सर्वोच्च पुरुष ने उसी आर्य समाज को मुसलिम लीग मन्द बुद्धि साम्प्रदायिक, मूर्ख, देश द्रोही आदि आदि अनेक उपाधियो से अलकृत किया और साथ ही भीषणतम अत्याचारों द्वारा सत्याग्रह को कुचलने की क्षमता ही नहीं दिखाई बल्कि आर्य समाज के मन्दिरो और वेदो आदि का अपवित्र करने की सुनियोजित दृढ़ता का भी समर्थन किया।

आज आर्य समाज के नेतागण सरकार के अन्याय, अत्याचारों एव अनैतिकता का रोना रोते हैं। किन्तु यह सब क्यों हुआ ? क्या यह सब आर्य समाज की अपनी उसी भूल का फल नहीं जिसके द्वारा उसने अपनी समस्त शक्ति से आर्य जनता को काग्रेस गाधी और नेहरू के नेतृत्व को आर्य विरोधी ज्वाला में झोंका और आज भी यह प्रवृत्ति निरन्तर गतिमान है। यहाँ तक कि सत्याग्रह आन्दोलन मे भी कुछ बड़े आर्य समाज के नेताओं ने नेहरू और काग्रेस के प्रति पक्षपात पूर्ण अन्ध भक्ति का परिचय दिया। सारे आन्दोलन मे अन्याय, अत्याचार तथा सिखों के साथ पक्षपात के समस्त आरोप कैरों के ही सिर थोपे जाते रहे पर वास्तविक रूप मे अन्याय एव अत्याचार के लिए उत्तरदायी नेहरू का नाम विरले ही लोगों ने लिया। प्रश्न यह है कि क्या मास्टर तारासिंह के साथ कैरों ने समझौता किया था कि पजाबी रीजन म हिन्दी न पढ़ाई जायगी आदि। रीजनल फार्मूला तो केन्द्रीय सरकार और अकाली दल के बीच सीधा समझौता है, जिसके लिए प्रत्यक्ष नेहरू ही उत्तरदायी है और जो आज सत्याग्रह स्थगित हो जाने पर भी पुन आग लगाने के लिए घोषणा करते फिरते ह कि 'रीजनल फार्मूले म कोई परिवर्तन नहीं होगा फिर क्या समस्त अन्याय, अत्याचार एव अनैतिकता के लिए नेहरू और काग्रेस का उत्तरदायी नहीं ठहराया गया ? जबकि यह स्पष्ट है कि काग्रेस को जीवन दान देने के लिए ही अकालियो के आगे नाक रगडी गई है।

गुरुग्रन्थ साहब में वेद की चर्चा

(ले०—शास्त्रार्थ केसरी पं० अमरसिंह जी आर्य पथिक सिद्धान्त मार्तण्ड)

गुरु ग्रन्थ मे गुरुओं की वाणी पढ़ने से यह पता लगता है कि उनकी वेदो शास्त्रों और स्मृतियो मे श्रद्धा थी उन का इन पर विश्वास था। यद्यपि वेदो को सिक्खों के गुरुओं ने पढ़ा नहीं था उनमे से एक ने भी संस्कृत नहीं पढ़ी थी उन्होंने वेदार्थ को सुना भी नहीं था तो भी साधु सन्तों की सगति में वेद का नाम आता था उस समय भी लोग वेद की महिमा गाते थे इसलिए इनके हृदयों में भी वेद की महिमा बैठी थी गुरुओं ने भी अपनी वाणी मे सैकड़ों बार वेद का नाम लिया है।

मैंने हिन्दी भाषा में छपी सुखमनी पांचवे गुरु अर्जुनदेव जी की वाणी को पहिले पढ़ी। यह ग्रन्थ साहब में भी है और पृथक भी किन्ही ने छपाई थी। उसके पीछे पंजग्रन्थी को पढ़ा यह भी ग्रन्थ साहब मे से कुछ भागों को लेकर पृथक छपाई गई है इसमे—

१ जपुजी २ शब्द हजारे, ३ रहिरास ४ कीर्तन सोहिला ५ दखणी ओंकार ६ सिध गोसटी ७ अनन्द ८ बावन अखरी ९ सुखमनी १० आसादीवार ऐसा समरु हिन्दी भाषा में अमृतसर से छपा है यह आद्योपांत पढ़ा।

फिर पूरा ग्रन्थ साहब प्रयत्न पूर्वक प्राप्त किया यह हिन्दी भाषा मे सर्वहिन्द सिक्ख मिशन अमृतसर ने प्रकाशित किया है इसको पढ़ा।

इनमे से कुछ उदाहरण देता हूं पढ़ें और लाभ उठावें।

(१) गुरुमुख नादं गुरुमुख वेद गुरुमुख रहिआ समाई "ग्रन्थ पृष्ठ २ पज ग्रन्थ" ५

(जपुजी)

(२) सुणिए जाग जुगत तनिभेद सासत सिमृति वेद 'ग्रन्थ २ ३ पंज० ६

(जपुजी)

गुरुमुख में नाद है गुरुमुख में वेद है गुरुमुख मे ब्रह्म समा रहा है ॥१॥ योग युक्ति के भेद सुनने चाहिए शास्त्र स्मृति और वेद सुनने चाहिए। ।२।

(३) ओढ़क ओढ़क भालि थके करुन एक बात ॥ जपुजी ॥ ग्रन्थ ५ पंज० २० ढ़ड़ २ खोख २ थक गये पर एक बात मे सब कुछ जनाते हैं। (३)

(४) आटवरि वेद पुराण। ग्रं० ५ पंज० २५ वेदपाठ और पुराज कहते हैं। (४)

(५) जतु पाहारा धीरज सुनार। अहरन मति वेद हथियार। (जपुजी) ग्रन्थ पृ० ८ पंज० ३८ ॥ जत सत वस्तु है धैय सुनार है बुद्धि की अहरन पर रखकर उसके वेद के हथौड़े से कूटता है।

(६) गावन पण्डित पढ़न रिखासर जुग २ वेदा नाले। ग्रं० ६ पज० २८

जुग २ मे वेदों के साथ पण्डित गाते हैं ऋषीश्वर पढ़ते हैं अर्थात् वेदो का पठन पाठन और गायन पण्डितों और ऋषियों द्वारा युगों से होता है।

(७) वेद पुराण साध मग सुनकर निमिष न हरि गुण गाये। ग्रन्थ २२० वेद पुराण साधुओं के मार्ग द्वारा सुन कर एक पल प्रभु गुण नहीं गाये तो जीवन और पठन पाठन सुनना सुनाना व्यर्थ गया।

(८) वेद पुराण पढ़े को इह गुन सिमरे हरि को नामा। ग्रन्थ २२० वेद और पुराण पढ़ने का यही लाभ है कि प्रभु का नाम जपे।

(९) सुरति हो कन्नी मुंदर। ग्रन्था सा० पृ० ३३४ श्रुति=वेद और स्मृति दोनों कानों मे दो मुद्रा हैं।

(१०) पढ़िया के सिमृत वेद अभिआस। ग्रं० ३७१ स्मृति और वेद पढ़ पढ़ के और अभ्यास कर २ के थक गये पर किया कुछ नहीं (कई मनुष्य ऐसे भी होते हैं।)

(११) विसमाद नाद विसमाद वेद। विसमाद जीड विसमाद भेद। आसा दी वार ग्रं० ४६३ पंज० ४९७ नाद भी आश्चर्य है वेद भी अद्भुत है जीव भी अचम्भा है जीवों जीतों का भेद भी आश्चर्य है।

(१२) जोग सबदं गिआन सबदं बेद ब्राह्मणह। खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं पराकृतह। योग शब्द है ज्ञान शब्द है वेद शब्द है (शब्द प्रमाण है) ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ये शब्द ही हैं। यह गुरु नानक जी की संस्कृत का नमूना है ऐसे बहुत नमूने हैं पर यहाँ उनको दिखाने का अवसर नहीं है।

गुरु जी के वेद ज्ञान का अद्भुत नमूना अवश्य देखिए।

(१३) सामवेद के विषय में—

सामी कहे सेतम्बर सुआमी सचि महि आछे साचिरहे। सभको सच समावे।

सामवेद कहता है कि श्वेताम्बर स्वीमी=परमेश्वर श्वेतवस्त्र धारी है। वह सत्य में अच्छा सत्य सब में समाया हुआ है।

(१४) ऋग्वेद का विषय—

रिगु कहे रहिआ भरपूर।
राम नाम देवा महि सूर ॥
नाइ लइऐ पराछत जाय।
नानक तउमोखन्तर पाय ॥

ऋग्वेद कहता है कि वह ब्रह्म सब में भरपूर है राम नाम में देव देव में सूर में। उसका नाम लेने से पाप नष्ट हो जाता है और नानक कहते हैं कि तब मोए मिलता है।

(१५) यजुर्वेद का विषय—

जुज में जोरि छली चन्द्रवलि कान्त कृसनु जादम भइआ। पराजात गोपीले आया बिन्द्रावन में रंग किआ।

यजुर्वेद में लिखा है कि—कान्ह कृष्ण यदुवंशी हुआ उसने जोर से चन्द्रावलि नाम की गोपी को छल लिया। पारजात और गोपी ले आया और उसने वृन्दावन में होली खेली या रास लीला की।

१६—अथर्व का विषय—

कलि मे वेद अथर्वण हुआ।
नाउ खुदाई अलतु भइआ।
नील वस्त्र के कपडे पहिरे,
तुरक पठाणी अमल किया ॥

अथर्व वेद कलियुग मे हुआ तब से खुदा का नाम अल्लाह हो गया नीले कपड़े का पहनावा हुआ तुरक पठाणी अमल किया गया।

पता—आसा दो वार ग्रन्थ सा० पृ० ४७० पंज० ५३१।

इससे पता लगा कि वेद उन्होंने पढ़े नहीं थे किसी से ऐसा सुना होगा वैसा ही लिख दिया। इस पर भी वेदों मे उनकी श्रद्धा थी। चारों वेदों के विषय में लिखा है कि—

चारे वेद होये सचिआर,
पढ़े गुणे तिन्ह चार विचार।
भाउ भगत करि नीच सदाए,
तउ नानक मोखन्तर पाए ॥

—आसा दी वार ग्रं ४७० पंजग्रन्थी४३१

१७-कलि मे नाम एक किरपानिधि,
जाहि जपै गति पावै।
अउर धरम ताकै समि नाहिन.
इह विधि वेद बतावैं ॥ ग्रं६३१

कलियुग मे कृपानिधि परमात्मा का ही एक नाम है जिसके जपने से सद्गति मिलती है। और धर्म इसके समान नहीं है वेद यही विधि बतलाता है।

१८—ओंकार सैल जुग भये।
ओंकार वेद निरमये।
ओंकार सबद उधरे।
रामकली महिला १ दखणी
ओअंकार ग्रन्थ ९२८ पंज० ११७

ओंकार से पहाड़ और युग हुए ओंकार ने वेद बनाये, ओंकार ने शब्द का उद्धार किया।

१९—वेद पुराण सिमृति सुधाखर।
कीने रामनामइक आखर ॥

ग्रन्थ२६२ पंज ग्रन्थी ३०६सुखमनी पृष्ठ५

वेद पुराण स्मृति ने राम नाम का एक अमृत रूपी अक्षर बनाया है।

२०—हरि सिमरन करि भगत प्रगटाये
हरि सिमरन लग वेद उपाये ॥

ग्रन्थ २६३ पेज ३१२ सुखमनी पृ० १

२१—वेद पुराण सिमृति बूझै मूल।
सूखम महि जाने असथूल ॥
चहुवरना को दे उपदेश।
नानक उस पडित को सदा अदेश।

ग्रन्थ सा० २७४ पंज ग्रन्थी ३७१
सुखमनी ४१

वेद पुराण स्मृतियों का अर्थ जानने सूक्ष्म में ही स्थूल को समझ ले अर्थात् थोरे मे बहुत जाने और सूक्ष्म ब्रह्म मे स्थूल जगत को समझे। और चारों वर्णों को उन उन के धर्म का उपदेश करे तो नानक जी कहते हैं कि ऐसे पण्डित को सदा ही नमस्कार हो।

२१—कई कोटि वेद के सोते।
कई कोई तपीसर होते ॥

ग्रन्थ २७५ पंज० ३७६

कई करोड़ वेद को सुनने वाले हैं कई करोड़ तपस्वी होते हैं।

२२—कई कोई राजस तामस सातक।
कई कोटि वेद पुराण सिमति सासत ॥

ग्रन्थ २७६ पंज ग्रन्थी ३७९ सुखमनी

भगवान ने करोड़ों रजोगुणी तमोगुणी सतोगुणी बनाये। अनन्त वेद पुराण और स्मृतियो में ज्ञान दिये।

२३—गुरु गोविन्द नाम धुन बाणी।
सिमृति सासत वेद बखाणी ॥

ग्रन्थ सा० २९६ पज ४८८ सुखमनी

गोविन्द परमात्मा के गुणों और नाम की ध्वनि रूपवाणी, स्मृति शास्त्र और वेदों ने वर्णन की है।

२४—धोखे सासत वेद सभ,
आनन कथतउ कोय।
आदि जुगादि हुण होवत,
नानक एकै सोय ॥

बावन अखरी पज ग्रन्थी पृष्ठ २६०

शास्त्र और वेद सब रट लिये इसके सिवा और कोई कुछ नहीं कहता है सृष्टि आदि के युग युग के आदि मे एक परब्रह्म ही होता है और कोई सदा रहने वाला नहीं ऐसा नानक कहते हैं।

ऐसे सैकड़ो प्रमाण हैं लेख विस्तार भय से थोड़े से लिखे है कभी पुस्तक रूप मे और प्रमाण भी लिखे जायेंगे।

हमारे विचार में सिखों के दश गुरु साधु सन्त सज्जन और भगवान् के भक्त थे वेदों शास्त्रों स्मृतियों पर उनका पूरा विश्वास था। रामायण महाभारत और पुराणों पर भी उनका विश्वास था इनकी भी बहुत सी कथाएं गुरुओं की वाणियों में हैं।

अकाली पन्थ का गुरुओं और ग्रन्थ साहब से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है ये उनसे सर्वथा स्वतन्त्र पन्थ के प्रचारक हैं। इनका बाबा आदम निराला है।

★

अंगरेजी को बनाये रखने का आन्दोलन अंगरेजों को भारत में फिर शासन के लिए बुलाने से भी बदतर है

सभा मंत्री पं० शिवदयालु जी का वक्तव्य

भारतीय लोकसभा के अध्यक्ष श्री अनन्तशयनम् आयंगर ने ९ फरवरी रविवार को मद्रास की एक सार्वजनिक सभा में भाषण देते हुए कहा कि भारत की जनता प्रजातन्त्र मे विश्वास रखती है। और भारत की एकता की हृदय से कामना करती है इसलिए उसके पास देश की राजभाषा हिन्दी को मानने के सिवाय और कोई चारा नहीं।

आपने अपने भाषण में श्री राजगोपालाचार्य के अङ्गरेजी आन्दोलन की कड़ी भर्त्सना की आपने दक्षिण-भारत की जनता को चेतावनी देते हुए कहा कि इस बूढ़े राजनीतिज्ञ का समर्थन करना देश की विघटनकारी शक्तियो को आश्रय देना है।

आपने यह भी कहा कि इस अंग्रेजी आन्दोलन तथा पृथक तामिलनाड बनाने की मांग के पीछे किसी विदेशी शक्ति का हाथ हो तो आश्चर्य नहीं।

हम श्री आयंगर के इस भाषण का समर्थन करते हैं और ऐसा अनुमान लगाते हैं कि श्री राजगोपालाचार्य अधिक आयु हो जाने के कारण यह बातें कर रहे हैं और अनजाने में देश द्रोह के पथ का अनुसरण करने लगे है।

दक्षिण-भारत की और विशेषकर तामिलनाड की जनता को सतर्क हो कर कार्य करना चाहिए "राष्ट्र भाषा हिन्दी के विस्तार में भारत को सच्ची स्वतन्त्रता एव एकता है" इस तत्व को हृदयगम करना चाहिए।

मास्को का महान् विश्वविद्यालय

रूस देश मे मास्को नदी के तीर लेनिन पर्वत पर विश्व के महान् विश्व विद्यालयो म अग्रगण्य यह विश्व विद्यालय स्थित है।

विश्वविद्यालय का भवन ३३ मंजिल का है जिसकी ऊँचाई ७५० फिट है। इसमे २०००० कमरे हैं तथा १६ विशाल सभा भवन हैं, सन् १९४७ में इस विश्वविद्यालय के बनाने का निश्चय हुआ और सन् १९५१ मे इसके द्वार छात्रो के लिए खोल दिये गये।

इस विश्वविद्यालय मे २४००० छात्र शिक्षा पाते है तथा १८०० उपाध्याय शिक्षण कार्य करते हैं, इन उपाध्यायो मे से ८०० विश्वविद्यालय में ही रहते हैं।

इस विश्वविद्यालय मे भिन्न भिन्न विषयो के १८ महाविद्यालय हैं, इसके महान् पुस्तकागार मे १० लाख पुस्तके हैं। पुस्तकालय तथा सभा भवनो मे आने जाने के लिए लिफ्ट लगी हैं।

८५ प्रतिशत विद्यार्थियो को छात्र वृत्तियां मिलती है। १५) रु० से ७५०)रु० मासिक तक की व्यवस्था है गीता तथा श्री नेहरू जी की आत्म कथा का इस पुस्तकालय मे स्थान मिला है।

—शिवदयालु

शास्त्रार्थ का खुला चैलेंज

इस विज्ञापन द्वारा, आर्य जगत् के उन समस्त विद्वानों को जो "वृक्षों को सजीव प्राणी" मानते हैं मैं शास्त्रार्थ का खुला चैलेंज देता हूं। शास्त्रार्थ का समय व स्थान गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आगामी ११ से १४ अप्रैल के बीच रहेगा ठीक समय तथा शास्त्रार्थ के नियम आदि मुझसे निम्नलिखित पते पर पत्र द्वारा निश्चित किये जा सकते है, आने वाले प्रतिपक्षी महोदय उक्त स्थान पर अपने व्यय से पधारेंगे, भोजनादि की व्यवस्था वहीं से हो जायेगी।

—ओम्प्रकाश शास्त्री
खतौली मुजफ्फरनगर

आ० स० बिजनौर

आर्यसमाज बिजनौर का हीरक जयन्ती महोत्सव जो १७ से २३ फरवरी तक होने वाला था वह स्थगित हो गया है।

Book-Review

MAHATMA BUDDHA AN ARYA REFORMER

Author & Publisher—Pandit Dharmadeva Vidya Vachaspati Gurukul Kangari, U. P.

Pages 132, Price Re. 1/8/-

'Mahatma Buddha an Arya Reformer' is the latest English publication of Pandit Dharmadeva jee, one of the famous author of the Aryan world. The Subject matter of the book has been highly praised in the foreword, written by Pandit Ganga Prasad ji M. A. Retd. Chief justice, Tehri Garhwal.

With so many original quotations from various Vedic literatures and the Dhamampada, the learned author has very successfully proved that Mahatma Buddha was really an Arya Reformer, The author has also proved that Mahatma Buddha never preached of any new religion. Even his four noble Truths and the Eightfold noble paths have been traced directly with the Mantras of the Vedas. This has been very scholarly explained in this book by the author. Buddha's life shows that he had studied the Vedas and the Upanishads and whatever he preached was simply reforming the Aryan religion. So he was not the founder of a new religion but the reformer of the ancient Aryan religion.

I must say with faith that this book will prove of much use to every class of readers. The libraries of the Arya Samajes must have a copy of this valuable book. Seth Jugal Kishore Birla must be warmly thanked with whose donation the book has been published.

—B. Sharan

आर्यसमाज काशी के संबंध में

★

आर्य समाज बुला नाला काशी फरवरी ५७ मे एक वर्ष के लिए स्थगित कर दी गई थी उसके पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के अन्तरङ्ग सभा ने ६ अक्टूबर ५७ को मुझे पूरा अधिकार दिया कि मैं उक्त समाज के झगड़े इत्यादि का फैसला कर दूं और चुनाव करा दूं। इस प्रस्ताव के पश्चात् मैंने ३० नवम्बर ५७ को निर्णय कर दिया और १२ जनवरी ५८ को आर्य सभा सदों की सूची बनाई और २ फरवरी ५८ को अपनी देखरेख में वार्षिक चुनाव आर्य सभासदों द्वारा कराया। चुनाव पूर्ण शांति के साथ हुआ जिसमे पं० विद्यानन्द जी प्रधान व सूरजप्रसाद जी बी० ए० मन्त्री सर्वसम्मति से चुने गये। श्री राजीतसिंह जी व रणधीरलाल जी व श्री रामखेलावन जी व श्री आनन्द स्वरूप जी जो किन्हीं कारणों से पृथक कर दिये गये थे वह मेरे निर्णय के अनुसार आर्य सभासद माने गये और श्री राजीतसिंह जी व श्री रणधीर लाल जी व श्री रामखेलावन जी ने दिसम्बर ५७ तक का अपना चंदा जमा करके चुनाव मे भाग लिया और पूरा सहयोग दिया। मेरे निर्णय के अनुसार व उपरोक्त चुनाव के पश्चात इस समाज पर कोई वन्धन या प्रतिबन्ध नहीं रहा। अब इस समाज के अधिकारी दुकानों व मकानों का किराया वसूल कर सकते है और धन व चन्दा भी एकत्रित कर सकते हैं और बैंकों व डाकखानों में धन जमा कर सकते हैं और धन उठा भी सकते है। और हर तरह की उचित कार्यवाही और पत्र व्यवहार समाज की ओर से कर सकते हैं।

—उमाशंकर
मुख्य उपप्रधान सभा

जालन्धर गोलीकाँड पर

श्री बालरेड्डी का वक्तव्य

हैदराबाद। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद के मन्त्री श्री ए० बालरेड्डी ने जालन्धर गोली काँड पर कहा है कि पंजाब के अकाली इस प्रकार के आक्रमणों द्वारा हिन्दू जनता पर रोब जमाना चाहते हैं। यह अत्यन्त खेद की बात है कि पंजाब की अन्याई पुलिस ने उपद्रवकारियों पर गोली चलाने की अपेक्षा शान्त जलूस पर गोली बरसाई जिसके परिणाम स्वरूप दो व्यक्ति शहीद हुये और २८ घायल हुए। विचार करने से यह स्पष्ट पता चलता है कि यह दुर्घटना अकालियों और पुलिस की गहरी साजिश का परिणाम है। स्मरण रहे कि इससे पूर्व भी पुलिस ने एक बार इसी गुरुद्वारे से एक हिन्दू जलूस पर आक्रमण किया था। पंजाब सरकार के प्रति अब पंजाब के हिन्दुओं का विश्वास समाप्त हो गया है। अतः अब राष्ट्रपति को चाहिये कि इस दिशा में उचित पग उठायें।

आ० स० शाहजहांपुर

प्रधान—श्री चोखेलाल सत्यपाल
उपप्रधान—श्री तिनकूलाल, डा० शांतिदेव
मन्त्री—श्री श्याम बिहारी लाल
उपमंत्री—श्री महेन्द्र कुमार वर्मा, ब्रजकुमार अस्थाना
कोषा०—श्री राम वर्मा
निरीक्षक—श्री शंकरप्रसाद
प्रतिनिधि—श्री चोखेलाल, तिनकूलाल ज०

स्त्री आ० स० शाहजहांपुर

प्रधाना—श्रीमती देवकी देवी
उपप्रधाना—„ „ कौशल्या देवी सचदेव
मन्त्राणी—„ „ सरस्वती देवी
कोषा०—„ „ रूपदेवी
निरीक्षक—„ „ कुसुम कान्ता सक्सेना
प्रतिनिधि—„ „ देवकीदेवी, महेश्वरीदेवी

आ० स० जगतपुर पुरानाशहर बरेली

इस समाज में २१ से ३१ जनवरी ५८ तक स्वामी विशुद्धानन्द जी ने कथा और प्रवचन किया, उनके प्रवचन से समाज में नई चेतना आई और लोग पुनः संगठित हो गये।

आ० स० दर्शनपुरवा, कानपुर

इस समाज ने दयानन्द सप्ताह और शिवरात्रि का पर्व बड़े उत्साह से मनाया। चुनाव निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान—स्वामी हर विलास जी
उप प्रधान—श्री रामदयालु वैद्य
मन्त्री—श्री ओंकारनाथ जी
उप मन्त्री—श्री रामरंजन जी
कोषा०—श्री मूलचन्द जी
पुस्तका०—श्री सियाराम जी
निरी०—श्री नन्दकुमार वकील
प्रांतीय प्रति०—श्री कुंवर बहादुर जी
नगर प्रति०—श्री मूलचन्द सिंह

लखनऊ में ऋषि बोध पर्व

१६ फरवरी को शिवरात्रि के दिन आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज का पावन बोध पर्व लखनऊ नगर में बड़े समारोह के साथ मनाया गया।

लखनऊ के सब आर्य समाजों ने प्रातःकाल साप्ताहिक अधिवेशन के साथ पृथक-पृथक पर्व मनाया। आर्य समाज चौक में अधिवेशन की समाप्ति पर गो कृष्यादि रक्षिणी सभा को संगठित करने की दृष्टि से सभा संयोजित की गई। सभा मंत्री श्री पं० शिवदयालु जी का आरम्भिक भाषण हुआ जिसमें उन्होंने सांस्कृतिक, आर्थिक, शारीरिक एवं नैतिक आदि दृष्टिकोणों से गोवंश के महत्व पर प्रकाश डाला और इस दिशा मे प्रचार के अतिरिक्त क्रियात्मक पग उठाने पर बल दिया।

श्री डा० कुन्दनलाल जी अग्निहोत्री का भी एक ओजस्वी भाषण हुआ। अग्निहोत्री ने इस दिशा में लखनऊ में सक्रिय पग उठाने का दृढ़ संकल्प किया हुआ है। आप इस दिशा में ग्रन्थों तथा लेखों द्वारा भी कार्य कर रहे हैं। शीघ्र ही लखनऊ में एक आदर्श गो-दुग्ध शाला एवं गो संवर्धन केन्द्र बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। सभा के आप ही सर्व सम्मति से अध्यक्ष चुने गये हैं।

मध्याह्न को आर्य समाज गणेशगंज से नगर की समस्त आर्य जनता की ओर से शोभायात्रा निकाली गई थी। बैंड के पीछे हाथी पर ओ३म् का झण्डा शान के साथ फहरा रहा था। दयानन्द कालेज तथा स्कूल के छात्रों तथा आर्य कन्या विद्यालयों की छात्राओं ने तथा स्त्री आर्य समाजों की बहिनों ने भी विशेष भाग लिया। जुलूस की समाप्ति पर गणेशगंज आर्य मन्दिर में सार्वजनिक सभा श्री तेजनारायण जी वकील की अध्यक्षता मे की गई जिसमें श्री स्वामी त्यागानन्द जी महाराज तथा पं० शिवदयालु जी के विशेष भाषण ऋषि जीवन पर हुए।

आ० स० दीनानगर

प्रधान—श्री डा० देवदत्त ओहरि
उपप्रधान—श्री डा० हरिदास मेहता, भद्रसेन जी, शकरदास जी
मन्त्री—श्री ऋषिव्रत उपाध्याय
उपमंत्री—श्री बलदेवराज, ब्रह्मदत्त गुप्ता
कोषा०—श्री देवेन्द्रनाथ
पुस्तका०—श्री महगामल

इस समाज की ओर से ऋषि-बोधोत्सव बड़े समारोह सहित मनाया गया।

जिला सभा अलीगढ़

जिला सभा अलीगढ़ का निर्वाचन ९ मार्च ५८ रविवार को १२ बजे से आर्य समाज अलीगढ़ मे होगा। सब समाजें अपने प्रतिनिधि भेजे।

—सरदारसिंह

प्रान्तीय दल संचालक दौरे पर

आर्यवीर दल उ० प्र० के संचालक श्री सुखदेव शास्त्री प्रान्त के दौरे पर निकले हुए है। आपने अनेकों स्थानों का दौरा किया और दल मे प्रगति लाने का प्रयास किया। निकट भविष्य मे दल को और अधिक प्रभावशाली बनाने का आप प्रयास कर रहे हैं।

आ० स० गवां के प्रस्ताव

★

—प्रो० किशोरीलाल, आचार्य चंद्रबलि पांडेय और बाबा राघवदास के निधन पर इस समाज ने शोक प्रकट किया।

—हिन्दी सत्याग्रह मे हुए शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित किया।

—पंजाब सरकार से मांग किया कि हिन्दी सत्याग्रह के समय हुए कांडों के अपराधियों को कठोर दंड दिया जाय।

—२६ जनवरी को यहाँ ससमारोह राष्ट्रीय पर्व मनाया गया।

—जालन्धर कांड पर विरोध प्रकट किया और शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि तथा घायलों के प्रति समवेदना प्रकट किया।

—इस समाज का वार्षिकोत्सव २१ फरवरी से होने वाला था जो किसी कारणवस स्थगित कर दिया गया है।

गुरुद्वारा सिह सभा जालन्धर में घायल होने वाले सिपाही पर अपना वक्तव्य बदल देने के लिए दबाव

जालन्धर १४ फरवरी। गुरुद्वारा सिंह सभा मे यहाँ आठ फरवरी को अकालियों के आक्रमण से घायल होने वाला पुलिस सिपाही बैजनाथ अब सिविल अस्पताल से खारिज कर दिया गया है। विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि उसके अस्पताल से जाने के परचात् शीघ्र पुलिस का एक उच्चाधिकारी जीप मे उसे बिठाकर अपने साथ ले गया। पता चला है कि उक्त सिपाही को उच्चाधिकारियों द्वारा बाध्य किया जा रहा है कि उसने सिविल अस्पताल मे जो यह वक्तव्य दिया था कि उस पर गुरुद्वारा के अन्दर अकालियों ने आक्रमण कर दिया और उसे जान से मारने का प्रयत्न किया, अब वह उस वक्तव्य को वापिस ले ले। यदि वह ऐसा करेगा तो उसे तरक्की दे दी जायेगी। इस प्रसग में यह भी मालूम हुआ है कि उस पर भाति भाति के दबाव डाले जा रहे हैं और उसे अपना वक्तव्य वापस लेनेपर वाध्य किया जारहा है।

यह भी सुनने मे आया है कि इससे भी बडा कोई जघन्य काड गुरुद्वारे के अन्दर अकालियों ने किया है और किसी ऐंग्लो इण्डियन उच्चाधिकारी ने गुरुद्वारे में प्रवेश कर अन्दर से पूरी तलाशी ली है जिससे और भी रहस्यमय और सनसनी खेज बाते खुलने की सम्भावना है। सरकार को चाहिये कि निष्पक्ष उच्च पुलिस अधिकारी द्वारा इन सारी बातो का पता लगावे और अपराधियो को कठोरतम दण्ड दे।

स्मरण रहे कि ८ फरवरी को जालन्धर में हिन्दी रक्षा सम्मेलन के अवसर पर श्री घनश्यामसिंह गुप्त प्रधान सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति का जब जलूस निकाला जा रहा था तो नक्क गुरुद्वारे के अन्दर ईट पत्थर लेकर हजारो की सख्या म एकत्रित अकालियो ने पूर्व निश्चित योजनानुसार हिन्दी सम्मेलन के जलूस पर पथराव किया था जिसम अश्रु गैस और गोली भी चला था तथा जिसम दो व्यक्ति शहीद हो गये थे और २८ व्यक्ति घायल हो गये थे। अदालती जाच हो रही है।

सिंगारनगर में दयानन्द सप्ताह

१४ से १८ फरवरी ५८ तक आ स सिंगारनगर लखनऊ मे ससमारोह दयानन्द सप्ताह मनाया गया। प्रत्येक दिन आध्यात्मिक विषयो पर विद्वानो के भाषण हुए। १६ फरवरी को विशेष रूप से ऋषि बोधोत्सव मनाया गया इसमे प० हरवश लाल मेहता का प्रवचन हुआ। अन्य दिनो भी आप का भाषण हुआ। और भी कई विद्वानो के भाषण यहाँ हुए जिसमे समाज के सदस्यो तथा महल्ले के अन्य लोगो ने बडे उत्साह के साथ भाग लिया। १६ से २३ फरवरी तक आ०स० चन्द्रनगर म भी इसी प्रकार प्रचार का आयोजन किया गया है।

लखनऊ में गोरक्षणी सभा की स्थापना

१६ फरवरी शिवरात्रि को आ स चौक की ओर से नगर में गो कृषि रक्षणी सभा की स्थापना हुई जिसके प्रधान डा०कुन्दनलाल अग्निहोत्री और मन्त्री श्री कुन्दनलाल आर्य चुने गये।

आ० स० देवरिया

प्रधान—श्री फूलचन्द गुप्त इन्जिनियर
उपप्रधान—श्री डा० छेदीलाल प्रसाद
मन्त्री—श्री इन्द्रासन पाडे
उपमत्री—श्री डा० माणिक लाल
कोषा०—श्री सेठ विश्वम्भर लाल
निरीक्षक—श्री सरजू प्रसाद

नोट—इस समाज का वार्षिकोत्सव, ८, ६, १०, ११ मार्च ५८ को हो रहा है।

आर्य वीर दल काशी के प्रस्ताव

८ २ ५८ को जालधर मे पजाब पुलिस द्वारा जो हत्याकाड किया गया उसके सम्बन्ध मे आर्य वीर दल काशी ने एक प्रस्ताव मे कहा कि इसकी जिम्मेदारी पजाब सरकार पर है और केन्द्रीय सरकार को चाहिए कि वह अविलम्ब इसके अपराधियो को कड़ा से कड़ा दड दे। प्रस्ताव मे यह भी कहा गया कि पजाब की वर्तमान सरकार वहा शासन चलाने मे सर्वथा असमर्थ है अत अब वहा राष्ट्रपति शासन लागू किया जाना अनिवार्य है।

एक दूसरे प्रस्ताव मे इस काड के शहीदो के प्रति श्रद्धाजलि और घायलो के प्रति सहानुभूति प्रकट की गई।

आ.स. नारायणस्वामी भवन लखनऊ

प्रधान—श्री रोशनदास जी
उपप्रधान—श्री बाबूराम भारती
मन्त्री—श्री भगवत शरण
उपमत्री—पन्नालाल शर्मा
कोषा०—श्री ईश्वर शरण जी
पुस्तका०—श्री चिरजी लाल जी
प्रातीय प्रतिनिधि—श्री इन्द्रदेव शर्मा

आ० स० जौनपुर

प्रधान—श्री रामावतार
उपप्रधान व पुस्तका श्री विश्वनाथ
मन्त्री—श्री रामनारायण
उपमत्री—श्री तारानाथ
कोषा०—श्री सीताराम
स० पुस्तका०—श्री विश्वमित्र

आ० स० मदुराई

आ० स० मदुराई, मद्रास मे स्वामी दयानन्द बोधोत्सव बडे समारोह के साथ मनाया गया स्थानीय कार्यकर्ताओ के भाषण हुए।

आ० स० चौक, लखनऊ

प्रधान—श्री हवेलीराम भाटिया
उपप्रधान—श्री सुखदेव विद्यालकार
मन्त्री—श्री कुन्दन लाल आर्य
उपमत्री—श्री सत्यपाल जी
कोषा०—श्री दीनानाथ शर्मा
पुस्तका०—श्री मदनगोपाल

हिन्दी रक्षा समिति लखनऊ की अगली बैठक

हिन्दी रक्षा समिति लखनऊ की अगली बैठक रविवार २३ २ ५८ को प्रात ६ बजे आर्य समाज हसनगज पार मे होगी। सदस्यगण अवश्य पधारे। —मन्त्री

लखनऊ जिला सभा की ओर से होली मिलन सम्मेलन

लखनऊ जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा की ओर से होली के अगले रविवार ६ ३ ५८ को होली मिलन सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है जिसमे नगर के १५ आर्य समाजो के अधिकाश आर्य बन्धु पधारेंगे। उस दिन के लिए एक रोचक कार्यक्रम तैयार किया जा रहा है। इसी सम्बन्ध मे विचार करने के लिए जिला सभा की एक बैठक रविवार २३ २ ५८ को साय ६॥ बजे से आर्य समाज गणेशगज मे होगी। सदस्य अवश्य पधारे। —जगन्नाथप्रसाद प्रधान

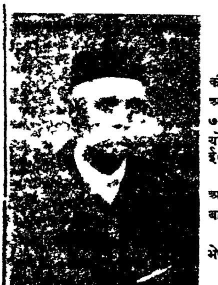
स्व० प्रिंसिपल सेन दास की स्मृति में

डी० ए० वी० कालेज चण्डीगढ़ की प्रबन्ध कारिणी समिति ने निश्चय किया है कि प्रसिद्ध समाज सेवी और देश प्रेमी प्रि० सेन दास की स्मृति मे चण्डीगढ़ डी०ए०वी० कालेज का विज्ञान विभाग स्थापित किया जाय। सन् १९०२ से जीवन पर्यन्त वे आर्य समाज की सेवा करते रहे अत धनी मानी सज्जनो से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य के लिए वे दिल खोलकर सहायता करे। —मन्त्री डी ए वी कालेज प्रबन्ध कारिणी समिति चित्रगुप्त रोड, नयी दिल्ली

आ० स० शेरकोट

इस समाज की ओर से समारोह के साथ दयानन्द सप्ताह और ऋषि बोधोत्सव मनाया गया। जालधर हत्याकाड म शहीद वीरों के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

विश्वकर्मा वंशज बालकों को ७०००) का दान





श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिरनिधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिज्जोदेवी भवानीलाल शर्मा ककुहास की पुण्यस्मृति म श्री भवानीलाल जी शर्मा अकबरपुर जिला कानपुर वर्तमान अमरावती (विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वशीय बालकों के हितार्थ ७०००) की धनराशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद स० २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को प्रस्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक व्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वशज गरीब, असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओ के शिक्षण मद मे व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुक को ।) के स्टाम्प भेजकर सभा से छपे फार्म मगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

४—दान दाता की इच्छानुसार विश्वकर्मा वशीय मनु, मय, त्वष्टादि गरीब प० त्रा० बालक बालिकाओ के लिए प्रथम सहायता दी जायगी।

५—उपर्युक्त सम्पूर्ण योजना आर्यमित्र पत्र म प्रोत्साहनार्थ अधिकतर सूचनार्थ प्रतिमास सचित्र प्रकाशित होती रहेगी और दान दाता को 'मित्र' पत्र के प्रत्येक अङ्क बिना मूल्य मिलते रहेंगे।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

आर्य समाज लश्कर

प्रधान—श्री बाबूलाल जी गुप्त एम० एस० स०, भू० पू० शिक्षा सचालक, उपप्रधान—श्री इन्द्रसेन जी गुप्त बी.ए, श्री हरबंस लाल जी, मन्त्री—श्री ओम् प्रकाश जी आर्य एम० ए० सि० शास्त्री, उपमंत्री श्री गुलाब चन्द जी बंसल श्री बसन्त सिंह जी त्यागी, कोषा०—श्री प्रेमनारायण जी बी०एस० सी०एल०एल०बी० रिटायर्ड उपकोषाध्यक्ष जगदीश चन्द्र आर्य पुस्तका०—श्री गोकुल प्रसाद जी शास्त्री साहित्य रत्न अन्तरङ्ग सदस्य—श्री डा० महावीर सिंह जी भू० पू० सि० सर्जन श्री भारत भूषण जी त्यागी एम० ए०, सा० रत्न सि० शास्त्री, श्री रघुवीर स्वरूप जी मिश्र एम० ए०, श्री हर भगवान जी, श्री डा० अशोक कुमार जी वेदालंकार, श्री प्रेम प्रकाश जी गर्ग बी०ए०, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए चुने गये सदस्य.—

श्री भारत भूषण त्यागी

श्री डा० महावीर सिंह जी

श्री बाबूलाल जी गुप्त

१०००) दान

श्री सुवर्णसिंह अवैतानक उपदेशक सभा ग्राम नगौला अलीगढ़ ने नगौला विद्यालय के भवन निर्माण के लिए १०००)रु० प्रदान किया है। आ०स० नगौला के सदस्य तथा ग्रामीण जनता ने आपको हार्दिक धन्यवाद दिया।

आर्य वीर दल सिन्ध नगर

नगरनायक—श्री लालचन्द

उप ,,—श्री दुन्नीचन्द

मन्त्री—श्री बाधूराम मेघराज

उपमन्त्री—श्री लक्ष्मणदास आर्य

प्रचार मन्त्री—श्री बद्धाराम

कोषा० श्री सगुनाचन्द

आ० स० बस्ती

प्रधान—श्री श्यामनारायणलाल

उपप्रधान—श्री जगदम्ब सहाय

मन्त्री—श्री रामदास

उपमन्त्री—श्री रामप्रसाद

कोषा०—श्री रामप्रसाद साहु

पुस्तका०—श्री कृष्णदेव वर्मा

आ० स० मेंहू

प्रधान—श्री जमुनाप्रसाद

उपप्रधान—श्री किशोरीलाल शर्मा

मन्त्री—श्री सूर्यपालसिंह वर्मा

उपमन्त्री—श्री सुखपालसिंह

कोषा०—श्री मन्सुखलाल

पुस्तका०—श्री सोनपाल जी

निरी०—श्री रामप्रसाद आर्य

आ० स० हांसीपुर, मिरजापुर

प्रधान—श्री जयनन्दनसिंह

मन्त्री—श्री गंगासिंह

कोषा०—श्री अवधनारायणसिंह

आ० स० शाहजहाँपुर

प्रधान श्री चांदेलाल सत्यपाल

उपप्रधान—डा० रतनकूलाल, शान्तिदेवी

मन्त्री—श्री श्यामबिहारी लाल

उपमन्त्री श्री महेशकुमार, ब्रजकिशोर

कोषा०—श्रीराम वर्मा

पुस्तका० श्री राजकिशोर

स०पुस्तका०—श्री बलवीर वर्मा

आ० स० गोवर्धन मथुरा

इस समाज का प्रथम वार्षिकोत्सव १६, १७ फरवरी को सम्पन्न हुआ जिसमें आर्यजगत के अनेको विद्वान् पधारे।

आ० स० सासनी अलीगढ़

प्रधान—श्री देवीप्रसाद आर्य

उपप्रधान—श्री रायप्रसाद आर्य

मन्त्री—श्री महेशचन्द्र गर्ग

उपमन्त्री—श्री ओ३म्प्रकाश आर्य

कोषा०—श्री देवप्रसाद गर्ग

निरीक्षक—श्री लक्ष्मणप्रसाद मास्टर

आ० स० कन्टूनमेन्ट, लखनऊ

प्रधान—श्री डा० त्रिलोक नाथ गुप्त

उपप्रधान—श्री रामलाल मुन्शी

मन्त्री—श्री सच्चिदानन्द आर्य

(प्रबन्धक दयानन्द हरिजन पाठशाला)

उपमन्त्री—श्री भूपेन्द्रनाथ पाल

कोषा०—श्री रामअचल आर्य

पुस्तका०—श्री दयाशंकर वर्मा

निरीक्षक—श्री गोपालदास

आ० स० नौसेना

इस समाज ने श्री रामबहादुर वर्मा वानप्रस्थी के निधन पर शोक प्रकट किया।

आ० स० कटरा प्रयाग

प्रधान—श्री जगनन्दनलाल एडवोकेट

उपप्रधान—श्री डा० लक्ष्मीनारायण
श्री अम्बासहाय

मन्त्री—श्री कमलापति वर्मा

उपमन्त्री—श्री ज्वालाप्रसाद मनोहरलाल

कोषा०—श्री बुद्धूलाल

पुस्तका०—श्री महावीरसिंह

स०पुस्तका०—श्री देवीप्रसाद

निरीक्षक—श्री कृष्णमुरारी

आ० स० पुरानी मंडी सहारनपुर

प्रधान—श्री कृष्णलाल आढ़ती

उपप्रधान—श्री मगनलाल

मन्त्री—श्री फूलचन्द

उपप्रधान—श्री निरंजनप्रसाद

कोषा०—श्री अमोलकराम

पुस्तका०—श्री दीपचन्द

जिला सभा बुलन्दशहर

जिला की सभा आर्य समाजें यथाशीघ्र अपनी समाजों का चुनाव कर लें और सभा के प्राप्तव्य धन के साथ सभा को पूरा विवरण भेजें। एक प्रस्ताव द्वारा सभा ने हिन्दी आन्दोलन में भाग लेने वाले वीरों को धन्यवाद दिया और दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना की।

आ० स० फिरोजाबाद

प्रधान—पं० चिरंजीलाल शर्मा

उपप्रधान—श्री शिवसहाय तैलंग

मन्त्री—श्री ओंकारदत्त आर्य

उप मन्त्री—श्री राधामोहन आर्य

कोषा०—श्री गिरजाशंकर सक्सेना

पुस्तका०—श्री महावीरप्रसाद वर्मा

निरी०—श्री रामजीदास गुप्त

पं० सुरेशचन्द्र जी का पता

प० सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार गोरखपुर, डी० ए० वी० कालेज नहीं बल्कि डी० वी० कालेज के अध्यापक हैं। उन्हें अपने उत्सवों पर निम्न पते से आमन्त्रित कीजिए। प० सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम० ए० एल० टी०, १७५ जाफरा बाजार, गोरखपुर।

आ० स० मीरजापुर

प्रधान श्री विश्वनाथप्रसाद द्विवेदी

उपप्रधान—श्री रामरतन तिवारी

मन्त्री—श्री जगन्नाथप्रसाद गुप्त

उपमन्त्री श्री सुरेन्द्र शर्मा

कोषा०—श्री लक्ष्मीनारायण श्रीवास्तव

पुस्तका०—रामानन्दनसिंह

गुरुकुल झज्जर

गुरुकुल झज्जर रोहतक का ३६ वां वार्षिकोत्सव १५, १६ फरवरी को मनाया गया जिसमें आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान् व सन्यासी पधारे। ५ से १६ फरवरी तक ऋग्वेद महायज्ञ भी हुआ।

लखनऊ में जालन्धर कांड विरोध दिवस

११ फरवरी को सायं आर्यसमाज गणेशगंज में हिन्दी रक्षा समिति लखनऊ की ओर से डा० प्रकाशवती जी की अध्यक्षता में जालन्धर गोली कांड विरोध दिवस मनाया गया जिसमें श्री भगवतशरण जी, श्री राजबहादुर जी, व श्री राधेश्याम तिवारी के भाषण तथा श्री पृथ्वीराज विरमानी के भजन हुए।

गुरुकुल सिकन्दराबाद

गुरुकुल सिकन्दराबाद का ६० वां वार्षिकोत्सव १४ से १७ फरवरी ५८ तक मनाया जायगा। स्वामी आनन्द भिक्षु जी महाराज ध्वजारोहण करेंगे। किसान सम्मेलन व आर्य भाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आर्यजगत् के अनेकों प्रसिद्ध विद्वान पधारेंगे। गुरुकुल का उपाधि वितरण समारोह भी साथ ही होगा।

आ० स० बलरामपुर

८ से १२ मार्च ५८ तक आ०स० बलरामपुर अपना वार्षिकोत्सव मनाने जा रहा है जिसमें स्वामी अभेदानन्द जी महाराज, प० रामचन्द्र देहलवी, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री सुखलाल जी, श्री महिपालसिंह, श्री यशपाल जी आदि के पधारने की सम्भावना है।

आ० स० भर्थना

प्रधान—श्री रामेश्वरदयाल

उपप्रधान—श्री भगवतदयाल

मन्त्री—श्री धर्मपाल गुप्त

उपमन्त्री—श्री बुद्धदेव जी

कोषा०—श्री मोतीलाल जी

पुस्तका०—श्री उत्तमचन्द जी

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद की परीक्षाएं

इस वर्ष भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् की परीक्षायें २३ फरवरी से २ मार्च ५८ तक होगी। —सुरेन्द्रनाथ मिश्र

आ० स० औरैया, इटावा

इस समाज का वार्षिकोत्सव ९, १०, ११ मार्च ५८ को होगा।

आ० स० भूड़ बरेली

प्रधान—श्री जीवनराम जी

उपप्रधान श्री डा०अर्जुनदेव जी, ,, जगदम्बा प्रसाद जी

मन्त्री—श्री ओम्प्रकाश शर्मा

उपमन्त्री—श्री सुरेन्द्र बहादुर, ब्रह्मप्रकाश

कोषा०—श्री रामजी

पुस्तका०—श्री दयास्वरूप जी

मनेजर कन्या विद्यालय—श्री मुकुट बिहारीलाल इण्टर कालेज भूड़ बरेली मैनेजर संस्कृत हिन्दी विद्यालय—श्री रामकुमार वरेश आ०स० भूड़

निरीक्षक—श्री जगदम्बाप्रसाद वर्मा

आ० स० चौकीबाजार बस्ती

प्रधान—श्री शिवनारायण जी

उपप्रधान—श्री रामदास जी

मन्त्री व कोषा०—श्री श्यामनारायणजी

उपमन्त्री—श्री कन्हैयालाल

पुस्तका०—श्री रामकुमार

आ० स० हरिपुर

प्रधान—श्री रामाशंकर तिवारी

उपप्रधान—श्री केशवप्रसाद शर्मा

मन्त्री व पुस्तका० म० प्रसाद शर्मा

उपमन्त्री—श्री केदारनाथ गुप्ता

कोषा०—श्री जगदीशप्रसाद

निरीक्षक—श्री वासुप्रसाद

आ० स० दातेथाना

प्रधान—श्री गिरवरसिंह

उपप्रधान श्री पिरथीसिंह

मन्त्री—श्री रिसालसिंह

उपमन्त्री—श्री मक्खनसिंह

कोषा०—श्री लालसिंह

पुस्तका०—श्री [illegible]

निरी०—श्री फूलसिंह

आ० स० मेरठ शहर

प्रधान—डा० भगवतदत्त गायक

उपप्रधान—श्री श्यामलाल, दीवानसिंह

मन्त्री—श्री इन्द्राज जी

उपमन्त्री—श्री वेदप्रकाश, श्री रामेश्वर दयाल, रघुनाथप्रसाद

कोषा०— ,, आत्माराम

पुस्तका०—डा० बाबूराम

निरीक्षक—श्री जानकीप्रसाद

पंजीकरण सं. ए. ६०

४ फाल्गुन १८७९ (२३ फरवरी ५८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष्य : ५५५३ तार : 'आर्यमित्र'

राष्ट्र-भाषा हिंदी के प्रचार के लिए अंग्रेजी का मोह त्यागें

पं० मौलीचन्द्र शर्मा की गर्जना

देहली प्रादेशिक साहित्य मण्डल की एक विशेष सभा मे जिसम श्रीमती राजलक्ष्मी जी, श्री भट्ट जी श्री बसन्त राव भोक आदि के भाषण हुए, अध्यक्ष पद से बोलते हुए अखिल हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री प० मौलीचन्द्र शर्मा जी ने कहा कि "स्वराज्य आ गया है और गणराज्य का पर्व हम धूम धाम से मनाते हैं पर उसमे हम अंग्रेजी का मोह नहीं छोड़ते। पता नहीं हम स्वतन्त्र भी हुए हैं या नहीं। भगवान् जाने यह प्रवृत्ति कब तक रहेगी, इस प्रवृत्ति के कारण हम इतने पीछे चले गये हैं कि जितने २०० वर्ष अंग्रेजों की दासता के समय भी नहीं थे।

अहमदाबाद नैतिक स्वास्थ्य सम्मेलन में श्री पूर्णचन्द जी ऐडवोकेट का भाषण

ता० ३१ १ ५८ से १ २ ५८ तक अहमदाबाद में हुए 'अखिल भारत-वर्षीय नैतिक स्वास्थ्य सम्मेलन' में श्री पूर्णचन्द्र जी ऐडवोकेट पधारे थे। आपने तारीख २ २ ५८ को आर्य समाज काकरिया रोड मे ता० ४ २ ५८ को ला कालेज अहमदाबाद कामर्स आर्टस् एव सायकाल लुमसावाडा वेदज्ञान प्रचारक मडल आर्यसमाज मे सर्वत्र 'चरित्र निर्माण' के विषय मे बहुत ही सार गर्भित व्याख्यान दिये, चरित्र निर्माण की क्यों आवश्यकता है? चरित्र निर्माण किस प्रकार हो सकता है उसके क्या उपाय हैं? इस पर आपने प्रकाश डाला। —धर्मेन्द्र

आर्यसमाज पिम्परी कालोनी (पूना)

प्रधान—श्री वेडहराराम सन्तराम जी
उपप्रधान—श्री डा. सगतराम टी. बुलद
मंत्री श्री कृष्ण वेडहाराम जी
उपमंत्री—श्री राजलदास जगतराय जी
सह. कोषा०—श्री टोपणलाल बीसचन्द जी
पुस्तका०—श्री पहलाज राय टवरमल जी

आर्य वीर दल, पूना

नगरनायक—श्री सदारामम वेडहोमल
शाखानायक—श्री सेवूराम उत्तमचन्द जी
शिक्षक—श्री केवलराम वेडहाराम जी
उपशिक्षक—श्री टोपणलाल बीसचन्द जी
बौद्धिक नायक—श्री राजलदास

पंजाब सरकार की नृशंसता

जो घटना जालन्धर में घटी उसे समाचार पत्रो में पढ़कर महान दुःख हुआ। बहु अकबरपुर एव फीरोजपुर जेल की पाशविकता से भी पजाब सरकार का दिमाग अभी शांत नहीं हुआ मुझे तो लगता है अभी हिन्दी प्रेमियों को बलिदान देना शेष है। सुमेरसिंह, श्री किशोरीलाल गुप्त और अम्बाला ट्रेन दुर्घटना में ७ व्यक्ति पहिले ही शहीद हुए तो और मर चुके हैं। दर्जनों घायल हैं, जिला मजिस्ट्रेट की विज्ञप्ति कितनी शरारत-पूर्ण है, शांत प्रदर्शनकारी छुरा भोंक रहे थे! अन्ततः यही कहना पड़ता है जब किसी तरह वश नहीं चल रहा तो गोली है। जस्टिस कपूर की रिपोर्ट प्रकाशित हुए एक मास से ऊपर हो गया पर अभी तक उत्तरदायी व्यक्तियों पर उचित कार्यवाही न करना नृशंसता नहीं तो और क्या है?

—रूपपाल सिंह गौतम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रसारित विज्ञप्ति

१—गुरुकुल वृन्दावन के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर मथुरा जिला हिन्दी सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के सम्माननीय प्रधान श्री घनश्याम सिंह गुप्त ने मथुरा जिले से आये हुए उन २५० वीर सत्याग्रहियों का स्वागत किया जिन्होंने पजाब हिन्दी सत्याग्रह में भाग लिया था। इस अवसर पर मथुरा जिले की आर्य समाजों के प्रमुख सगठन कर्ता श्री ईश्वरी प्रसाद जी प्रेम एम० ए० की उन सेवाओं का विशेष रूप से उल्लेख किया जो कि उन्होंने मथुरा जिले से सत्याग्रह में अपना सराहनीय योग देकर कीं। इस अवसर पर आर्यप्रतिनिधि सभा बम्बई के मन्त्री श्री वेणी भाई जी पटेल ने भी सत्याग्रहियों का स्वागत किया।

श्री गुप्त जी ने इसी अवसर पर मथुरा मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के पूज्य गुरुवर स्वामी विरजानन्द की कुटिया का भी निरीक्षण किया जहाँ आर्यसमाज की ओर से 'गुरु विरजानन्द स्मारक' बनाने का विशाल आयोजन चल रहा है। उन्होंने स्मारक निर्माताओं को सम्मति दी कि यह स्मारक गुरु विरजानन्द के गौरव के अनुकूल ही होना चाहिए और समस्त आर्य जगत् इस स्मारक के निर्माण में यथाशक्ति अपना योग दे।

(पृष्ठ २ का शेष)

हमारे मत में, वह मानवता महान है।

अभिप्राय यह है कि नर और नारायण अर्थात् मनुष्य और उसके आदर्शदेव का योग मानव को छोड़ और कहीं नहीं हो सकता। इसी प्रकार मनुष्य को छोड़ देवता अथवा धर्म भी और कहीं नहीं रह सकते।

ऋषयस्तत्त्वमर्मज्ञा मुनयो गतमत्सराः ।
विक्रान्तवराः शूराः सन्त
श्चारित्र्यभूषणाः ॥१२॥
स्वोत्कर्षं यदवाप्यैव प्राप्तुं
शक्यं असंशयम् ।
तदेव परमोत्कृष्टं मन्ये
मानुष्यक महत् ॥१३॥

पदार्थों के मर्म को जानने वाले ऋषिगण मद तथा मात्सर्य से रहित मुनि जन, पराक्रमशील शूर वीर और चारित्र्य से भूषित सत्पुरुष जिस स्थिति में रह कर ही अपने अपने उत्कर्ष को पा सकते है, हम उस मानवता को महान् और परम उत्कृष्ट मानते हैं।

आ० स० नरही, लखनऊ

प्रधान—श्री रघुनाथ दास आनन्द
उपप्रधान—श्री शिवनारायण शर्मा
मन्त्री—श्री इन्द्रप्रकाश
सह मन्त्री—श्री रघुनाथ लाल
कोषा०—श्री प्राणनाथ
पुस्तका०—श्रीमती सुशीला देवी
आय व्यय निरीक्षक—श्री रणजीतसिंह
डा० सरयू प्रसाद, श्री शिव प्रसाद, श्रीमती ओमवती — अन्तरङ्ग सदस्य

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।



2-12-14

शांति-प्रकरण

ओ३म् यस्मिन्नृचः सामयजूंषि यस्मिन्, प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः ।
यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानाम्, तन्मे मनः शिव सङ्कल्पमस्तु ।२४।

ज्ञान भक्ति एवं कर्म तीनों ही रथ की नाभी के अरों के भांति इस दिव्य मानस में सन्निहित हैं। मानव के समस्त विचार और सङ्कल्प इस मन ही में सदा निवास करते हैं इस प्रकार का वह मेरा मन पवित्र भावनाओं और दिव्य सङ्कल्पों से सदा भरपूर रहे।

ओ३म् सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान् नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव ।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मन: शिव सङ्कल्पमस्तु ।२५।

जिस प्रकार एक चतुर सारथी हाथों में बागडोर लेकर घोड़ों को चलाता है उसी प्रकार यह ध्वनि नामक मनस्तत्व हृदय देश में स्थित रहता है और और जो कभी थकान मानने वाला नहीं है मानवों को सदा चलाता रहता है ऐसा यह मेरा मन सदा शिव अर्थात् कल्याणकारी सङ्कल्पों से युक्त होवे।

ओ३म् मन परस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते । शं राजन्नोषधीभ्यः ।।२६।

वह ज्योति स्वरूप परमात्मा हमारी बुद्धि और मन को पवित्र करें जिससे हम अत्यन्त उपकारी गोवंश की रक्षा और संवर्धन में संलग्न हों जनता जनार्दन की सेवा में संलग्न हों अश्व आदि उपकारी पशुओं की रक्षा करने वाले बन जावें। हम अपने राष्ट्र की कल्याणकारी योजना में संलग्न हों तथा प्रचुर मात्रा में औषधि उत्पन्न करें और उनके यथोचित संरक्षण और संयोजन करने वाले बन जावें।

ओ३म् अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावा पृथिवी उभे इमे ।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ।।२७।।

हम अन्तरिक्ष से निर्भयता प्राप्त हों अर्थात् विद्युत् तुषार ओले उल्कापात घन मेघादि हमारे राष्ट्र को हानि न पहुँचा सकें, सूर्य तथा अन्य ज्योतिर्मय नक्षत्र तथा पृथिवी चन्द्रमा आदि ग्रह उपग्रह हमारे लिए निर्भयता का साम्राज्य विस्तृत करने वाले हों हमारे पीछे और सामने निर्भयता का साम्राज्य हो और इसी प्रकार नीचे ऊपर सर्वत्र निर्भयता का निर्माण हो।

—शिवदयालु

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् ... इन्द्राय ... मुझ ... इन्द्राय। ... समर ... पृथिवी का विवरा ।। ऋ०

मैं विद्वानों ज्ञानियों से द्वेष करने वाले ... वाले, उन पर तीर चलाने वाले ... मारने वाले पर धनुष को खींचता हूं। ... प्राणियों के लिए सुख सामग्री उत्पन्न ... हूं। मैं द्युलोक और पृथ्वी के भीतर ... हूं।

सम्पादक—
शिवदयालु, सभामन्त्री
सह० सम्पादक—
भगवत शरण

इस अंक के आकर्षण

निश्चित उद्देश

(पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०)

★

अभी आर्य मित्र मे श्री माननीय प० नरदेव जी काव्यतीर्थ का लेख छापा है, जिसमें दो बाते मुख्यतया प्रदर्शित का गई हैं। एक तो वर्तमान भारतीय शासन की धर्म निरपेक्षता, दूसरी गुरुकुलीय शिक्षा। श्री काव्यतीर्थ जी आर्यसमाज के प्रमुख नेता, संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित, देश के उच्चकोटि के त्याग पूर्ण हितैषी तथा वयोवृद्ध विचारक हैं। उनके विचारपूर्ण लेख समाज के पत्रो और विशेष कर आर्य मित्र को तो सदैव अलकृत करते हैं। यों तो मैं सभी प्रकार के लेख पढा करता हू परन्तु एसे महानुभावो के लेख केवल इसी दृष्टि से पढता हू कि इनके द्वारा काई ऐसी चीज मिल सके जा मेरी भावनाओ और प्रगतियो मे कुछ उचित परिवर्त्तन कर सके।

जब हम यह शिकायत करते है कि भारतीय शासन म सबसे बडी त्रुटि है धर्म निरपेक्षता की तो इसके दा उद्देश हा सकते ह। एक ता यह कि जा हमका शासन द्वारा प्राप्त नहीं है उसका हम वैयक्तिक या सामाजिक साधनो से सम्पादित करे। उदाहरण के लिए यदि सरकार सध्या सिखान पर बल नही देती ता हम घरो मे धार्मिक वातावरण उत्पन्न करें। यह दृष्टिकोण उचित और आवश्यक है। और शायद प्रशसित लेखक का यही उद्देश है, परन्तु सर्व साधारण ऐसा नहीं साचता। और नैतिक दल उसका दूसरा ही लाभ उठाते है। उनका तात्पर्य यह होता है कि हमारे वर्त्त मान शासको की यह शरारत है कि वह शासन को धर्म निरपेक्ष बनाये हुये हैं। यदि हमारे अधिकार म होता ता हम शासन को वेदिक धर्मी घोषित कर देते ऐसी शिकायते शासन के विरोधी वातावरण का उत्पन्न किया करती हैं। सन् १९४७ में लोगो की ऐसी ही माग थी। कहा जाता था कि यदि पाकिस्तान म इस्लामो शासन हो गया तो भारत मे हिन्दू शासन क्या न हा? जब विधान न ऐसा स्वीकार न किया ता एक बडी जनता को काग्रेस के विरुद्ध यह शिकायत पैदा हो गई। आर्यसमाज के प्रेस प्लेटफार्म से इस शिकायत का कभी प्रबल और कभा पराक्ष रूप से विशेष प्रदर्शन हुआ और अभा हाता चला आया है। जब कभो हिन्दू काड बिल आदि काई सुधारक कानून पेश हुय ता धर्म निरपेक्षता का राग बहुत जार से अलापा गया और नैतिक दलों ने इसका अनुचित लाभ उठाया। निर्वाचनो म ता इसकी धूम मच गई। श्रा प० नरदेव जी पुराने और वर्तमान काग्रेसा हैं। अत उनकी नियत पर लाछन नहीं लग सकता। परन्तु यह एक प्रश्न है कि आर्यसमाज का दृष्टिकोण क्या होना चाहिये। आर्यसमाजी की इच्छा तो तभी पूर्ण होगी जब राज्यपद्धति सर्वाङ्ग में वैदिक होगी और वह बात तभी हो सकेगी जब भारत पूर्ण रीति से वैदिक हो जाये। या तो एक वैदिक धर्मी सम्राट हो और वह अपनी आज्ञा से एक कलम के इशारे पर शासन को वैदिक धर्मी घोषित कर देवे। या देश के कम से कम सत्तर अस्सी प्रतिशतक आर्यसमाजी हो और जनतन्त्र के सिद्धान्तो के अनुसार शासन पद्धति वैदिक हो। पहली प्रकार के साम्राज्य वाद के तो महर्षि दयानन्द भी विरोधी हैं। दूसरी स्थिति का सर्वथा अभाव है। ऐसी दशा म आर्य समाज का दृष्टिकोण क्या होना चाहिय? क्या यदि हिन्दू राज्य ह ता तो आर्यसमाज की स्थिति अच्छी हाती? हिन्दू राज्य का अर्थ वैदिक राज्य नहीं, अपितु बहु सख्यक हिंदुओं की भावनाओ का राज्य! यदि ऐसा होता तो शासन का विधान क्या होता? पाकिस्तान का विधान क्या है? वहा के शासन का १९४७ मे पता न था। आज ११ वर्ष के अनुभव से पता चल गया है। वहा मुल्लाओं का प्राबल्य है जो शासन के मार्ग मे घातक बाधायें उपस्थित करते रहते हैं। आज भारत मे करपात्रियों की तो कमी नहीं है। भारतवर्ष की वर्तमान जनवर्गीयता को देखते हुये क्या वैदिक या धर्म सापेक्षिक शासन सम्भव भी है हितकरता की तो बात ही दूर रही? और क्या आर्यसमाज के लिए ऐसा शासन लाभदायक होगा? यदि नही तो मन के शीशे मे यह बात क्यो? जो राजनैतिक दल ह उनका तो एक उद्देश है। वह यह कि किसी न किसी ऐसी बात को उठाते रहे कि काग्रेस सरकार न रहे और वह पदोपर आरूढ हो जाय। ऐसा होना असम्भव नहीं है यदि समस्त या अधिकाश भारतीय जनता के विचार बदल जाय तो शीघ्र ही काग्रेस सरकार न रहकर हिन्दू सभा, जनसघ, सोशलिस्ट या कम्यूनिस्ट सरकार बन सकती है परन्तु क्या यह भी सम्भव है कि वह राज आज की तरह धर्म निरपेक्ष न रहे? और सरकार का रूप बदल जाय? 'धर्म निरपेक्ष' शब्द 'सैक्यूलर' का ठीक पर्याय नहीं हैं। परन्तु अर्थ तो सभी समझते हैं। इस विषय मे आर्यसमाज को अपनी भावनायें निश्चित करनी चाहिये साधारण आर्यसमाजी इन बारीकियों को समझता नहीं, वह भी नारों के जोश मे बह जाता है। वह यह समझता है कि यदि धर्म निरपेक्ष राज न रहा ता वैदिक पद्धति चालू हो जायगी। वह पद्धति क्या हागी और वर्तमान पद्धति से कितना उसमे अन्तर होगा इसका उसने कभी हिसाब नहीं लगाया। कल्पना कीजिये कि आज समस्त भारतवर्ष एक स्वर से श्री नरदेवजीको सर्वाधिकारी(डिक्टेटर) बना दे। और शपथ साथ घोषित करे कि जो वह करेंगे या कहगे वहा सबका स्वीकार हागा। ता उनके बनाये हुय धर्मनिष्ठ शासन म चार कराड मुसलमानो एक कराड ईसाइया कुछ अभा हुय या आगे हान वाले बौद्धा का क्या स्थान हागा? कानून के निर्माण म किसका कितना हाथ हागा? गत शताब्दियो म दूसरे देशा को ऐसा अनुभव हा चुका है। इङ्गलैंड म जब राजा बदलता था ता उपासना पुस्तक भा बदल जाती था। परन्तु अब यदि शासन पद्धति नहीं बदली ता उसकी कढाई अवश्य नाम मात्र रह गई है। आज सब लाग दिल से उस दृष्टिकोण के दोषो का अनुभव कर चुके है, मुसलमानो पिछडे हुय देशों में भो एक नई लहर उत्पन्न हो गई है। आर्यसमाज को सोचना यह है कि उसको अपनी भावनायें निश्चित करनी हैं अथवा वातावरण को धु धला रखकर भविष्य और वर्तमान दोनों को अन्धकारमय बनाना है। हमको सोचना यह है कि कौन हमारा विरोधी है और कितनी मात्रा में, जिससे उस मात्रा तक हम उसके विरोध से सुरक्षित रहे और उसके सहयोग से लाभ उठावें। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो नित्य नई उलझने हमारे सामने आती रहेंगी और हमारी शक्ति का अपव्यय और हमारा क्षय होगा जैसा वतमान मे हो रहा है। हमको यह नहीं सोचना कि हमारा शासन विधान भारतीय है या विदेशीय। हमको सोचना यह है कि कौन सा अवगुण है, चाहे देशी हो या विदेशी और कैसे और किस मात्रा मे हम उसको दूर कर सकते हैं। 'भारतीयता' और विदेशीयता' का नारा लगाकर हम अपने दृष्टिकोण को एकाम न करके फैला देते हैं और उसका एकमात्र परिणाम होता है वातावरण को दूषित करना।

गुरुकुलीय शिक्षा के विषय मे भी ऐसी ही बात है। जब गुरुकुल खुले थे



तो उनकी सर्वप्रियता बढ़ रहा थी। दिन दूनी और रात चौगुनी बढी परन्तु अब वह बात नहीं है। सब कहते है कि श्रद्धा नहीं है। कोई नहीं पूछता कि क्यो नहीं है। मैं अपना उदाहरण लेता हू। मेरे ज्येष्ठ पुत्र डा० सत्यप्रकाश का जन्म अगस्त १९०५ म हुआ था। पिता बनते हा मेरे दिल म उमग उठी कि इसको गुरुकुल भेजू गा जब ६ ७ वर्ष का हुआ तो मेरी आर्थिक अवस्था ऐसी न था कि गुरुकुल भेज सकता। गुरुकुल न भेज सका। और प्रचलित पद्धति से ह' शिक्षा होती रहा। आज ५२ साल के अनुभव के बाद मुझे पछतावा नहीं हुआ। न मैंने अपने पौत्रो का गुरुकुल भेजने का विचार किया। यही नहीं गुरुकुल के माननीय स्नातकों को सन्तान भी गुरुकुल मे नहीं जाता। यद्यपि गुरुकुल भेजनेवालों की आज भी पर्याप्त सख्या है। जा उद्घाष १९०५ मे पर्याप्त समझे जा थे वे आज अर्थशून्य समझे जात ह। यह प्रश्न नहीं कि गुरुकुल की शिक्षा पद्धति की अच्छाइयाँ क्या हैं। प्रश्न यह है कि निश्चित रूप से कहा भेद है? और यदि गुरुकुलीय शिक्षा के आन्दोलन ने दूसरा सस्थाओं का वही उद्देश अपनाने के लिए प्रभावित कर दिया है ता अभा क्या कमा रह गई है और उसको कैसे पूर्ण कर सकते ह।

मेरा अभिप्राय यह है कि हमारे उद्देश और साधन निश्चित हो चाहे कुछ भा हा। अनिरुक्त न हो जिससे हर आदमी समझ सके कि इस मार्ग पर जाना है और यहा पहुँचना है।

★

आर्य्य जगत में सब से अधिक छपने वाला आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

ओ३म्

आर्य्यमित्र

वर्ष ६०

अङ्क १०

लखनऊ—रविवार फाल्गुन २५, शक संवत् १८७९, चैत्र कृ० ११, वि० २०१४ (१६ मार्च १९५८) दयानन्दाब्द १३३ सृष्टिसंवत् १९७२९४९०५८

सम्पादकीय

धोखा या रण निमंत्रण

★

भारत के गृह मन्त्री श्री गोविन्द वल्लभ पन्त ने भारतीय लोक सभा में ३ मार्च को एक प्रश्न के उत्तर मे कहा है कि हमने हिन्दी रक्षा आन्दोलन वालों को किसी भी प्रकार का कोई आश्वासन नहीं दिया है। हम पन्त जी की इस घोषणा को पढ़कर अचम्भे में रह गये। चण्डीगढ़ में प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने स्पष्ट घोषणा की थी कि आर्य समाज की ९० प्रतिशत मांगें सरकार ने मान ली है। और शेष दश प्रतिशत मांगों के सम्बन्ध में सत्याग्रह बन्द होने पर सद्भावना पूर्ण वातावरण में हल निकाला जावेगा। इसी बात को पन्त जी ने भाषा-स्वातन्त्र्य समिति के अध्यक्ष के सामने दोहराया है। कांग्रेस के अध्यक्ष श्री ढेवर भाई ने भी इसका समर्थन किया है। फिर लोकसभा में पन्त जी का साफ मुकर जाना क्या तात्पर्य रखता है। राष्ट्र के नायक भी यदि इस प्रकार घोषणा करके मुकर सकते हैं तो फिर इस राष्ट्र का ईश्वर ही बेली है।

ब्रिटिश नौकरशाही से हमारे सत्याग्रह के नेता महात्मा गांधी को कई बार धोखा हुआ किन्तु वह विदेशी सरकार थी और कूटनीति के आचार्य उसके चालक थे। किन्तु क्या हम अपनी सरकार से और अपने देश के तपे तपाये सेनानियों से इस प्रकार की स्वप्न में भी आशा कर सकते थे। आशा है शीघ्र ही हमारे सत्याग्रह के नेता गुप्त जी इस सम्बन्ध में आवश्यक प्रकाश डालेंगे।

हम पहिले भी लिख चुके हैं कि सत्याग्रही को अनेक बार धोखा हो सकता है किन्तु उससे सत्याग्रही को कोई हानि नहीं होती, अन्ततोगत्वा धोखा देने वाला ही नीचा देखता है।

हमने सत्याग्रह केवल स्थगित किया है और इस प्रकार के सत्याग्रह स्थगित भी हुआ ही करते हैं।

हमें विश्राम लेने का अवसर मिला है, थकावट दूर करने का मौका मिला है। आन्दोलन के दिनों की अपनी कमियों को दूर करने का समय मिला है। हम पहिले से अधिक शक्तिशाली बन कर और अधिक सजग रहकर सत्याग्रह संग्राम में पुनः उतर सकते हैं।

आर्य समाज की बेल सदा बलिदानों से ही बढ़ी है फूली और फली है। महान् क्रान्तिकारी नेता आचार्य दयानन्द के अनुचर बलिदानों से पीछे हटना नहीं जानते। वह तो प्रसन्न वदन बलिदान के पथ पर प्रगति करना अपना पावन कर्तव्य समझते हैं।

विशेष रूप से विचार करना है। विदेशी ईसाई मिशनों द्वारा आर्य संस्कृति पर जो नित्य प्रति आघात हो रहे हैं और भारत की स्वतन्त्रता को पंचमार्गी तत्वों द्वारा खतरे में डाला जा रहा है इस पर भी गम्भीरता पूर्वक विचार कर कार्य की दिशा निर्धारित करनी है। किन्तु भारत के गृहमन्त्री श्री पं० गोविन्द वल्लभ पन्त के लोक सभा के हाल के भाषण के कारण जो बेचैनी आर्य जगत् में उत्पन्न हो गई है और पंजाब की भाषा समस्या जिसके लिये अभी आर्य जगत् ने सात मास तक व्यापक आन्दोलन किया था ज्यों की त्यों उलझन में दिखलाई पड़ने लगी है। इस बेचैनी को दूर करने के लिये तथा भाषा समस्या को हल करने के लिये वीरोचित निर्णय लेने की ओर सम्मेलन का [illegible] रूप से स्वाभाविक रूप में आकृष्ट हो गया है। हम समझते हैं कि श्री पन्त जी ने अपने भाषण द्वारा इस विषम परिस्थिति को उत्पन्न कर दिया है। ऐसी स्थिति में आर्य समाज को विवश होकर एक बार पुनः बलिदान के पथ को अपनाना होगा और राष्ट्र भाषा की रक्षा हित एकबार पुनः सत्याग्रह समर में जूझने का निर्णय लेना होगा।

अब की बार सत्याग्रह का संग्राम पंजाब में नहीं देहली में छेड़ना होगा क्योंकि अब लड़ाई केन्द्रीय शासन की वायदे खिलाफी के विरुद्ध लड़ी जानी है। यदि समय रहते माननीय पन्त जी ने अपने भाषण में उचित और आवश्यक संशोधन न किया और आर्य समाज की १० प्रतिशत मांगों को अविलम्ब पूरा न किया तो सत्याग्रह संग्राम अवश्यम्भावी है।

सम्मेलन में हमें इसकी घोषणा करनी पड़ेगी और सत्याग्रह की पूरी पूरी तैयारी में लग जाना होगा।

आर्य समाज अपनी पूरी पूरी शक्ति मिशन के प्रचार सामाजिक क्रान्ति एवं रचनात्मक कार्यों में ही लगाना चाहता है किन्तु परिस्थिति से विवश होकर यदि उसको एकबार पुनः सत्याग्रह समर में कूदना पड़ा तो उसमें लेशमात्र भी वह आनाकानी न करेगा और बड़े से बड़े बलिदान के लिये तैयार होगा।

रूढ़िवाद से टक्कर लो

राजनैतिक दासता से मुक्ति पाने के उपरान्त हम मानसिक दासता से मुक्ति पाने का पूरा पूरा प्रयत्न करना चाहिए था किन्तु हम ऐसा कर नहीं रहे। यह चिन्ता का विषय है।

हमारा देश जन्म मूलक वर्णवाद, जाति भेद, सवर्ण अवर्ण स्पृश्यास्पृश्य, प्रान्तीयता आदि अनेक रूढ़ियों का दास बना हुआ है। और ज्यों २ इन रूढ़ियों के विरुद्ध नेताओं द्वारा मंच से चर्चा की जाती है यह रूढ़ियाँ और घर करती चली जा रही हैं। दलित वर्ग तथा परिगणित जाति आदि भेदों की सृजना तो हमारे नेताओं ने ही की है। और चुनावों के समय में इन का पूरा पूरा नग्न नृत्य देखने को मिलता है। इन वर्गों के जिन व्यक्तियों का उच्च शिक्षा द्वारा शासन आर ये वकील प्रोफेसर डाक्टर आदि बनाया गया और जो [illegible] इन रूढ़ियों से ऊपर जाने [illegible] हरिजन बन गये। इतना ही नहीं अनेक स्वार्थी जन भागे से अपने को हरिजन सिद्ध कर वैधानिक सुविधाओं का अनुचित लाभ उठा रहे हैं।

देश के अन्दर आदिवासी आन्दोलन कजगम आन्दोलन जैसे अराष्ट्रीयता के विधायक आन्दोलनों का जन्म स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त ही हुआ है।

अनेक सूझ बूझ वाले राजनैतिक नेता जैसे राजगोपालाचार्य तक प्रतिक्रिया के वशीभूत हो इस प्रकार के

(शेष अगले पृष्ठ पर)

सभा का ७१ वाँ वार्षिक अधिवेशन

१७, १८ मई १९५८ को

पूर्व निर्धारित तिथियों में दिल्ली में नवम आर्य महासम्मेलन होने के कारण अब ९ मार्च ५८ को बरेली में हुई सभा की अन्तरङ्ग सभा के निश्चयानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का ७१वां वार्षिक अधिवेशन शनि रवि १७ १८ मई १९५८ को नारायण स्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ में होगा। —शिवदयालु [illegible] सभा मन्त्री

नवम सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन

आगामी अप्रैल मास की १९, २०, २१ तारीखों में भारत की राजधानी देहली में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर आर्य महा सम्मेलन करने का निश्चय किया गया है। एतदर्थ तैयारियां आरम्भ हो गई हैं। आर्य जगत् के वृद्ध महारथी श्रीयुत महाशय कृष्ण जी की अध्यक्षता में स्वागत समिति का संगठन भी किया जा चुका है।

इस सम्मेलन में आर्य समाज के मिशन को देश देशान्तरों में ले जाने तथा दक्षिण भारत में रूढ़िवाद के कारण उत्पन्न हुई विषम परिस्थिति का सामना करने के सम्बन्ध में

(पिछले पृष्ठ का शेष)

आन्दोलनों की पीठ थपेड़ने लगते हैं और टिकट बांटते समय तो जातिवाद के समक्ष घुटने ही टेक देते हैं। और गद्दी पर बैठकर बिरादरी का खुला पक्षपात करने में भी नहीं शरमाते हैं।

दूसरों को साम्प्रदायिक कहने वाले लोग ही प्रायः घोर साम्प्रदायिकता के शिकार अपने नित्य के व्यवहार में दिखलाई देते हैं।

अपने को सुशिक्षित समझनेवाले और ऊंची २ बातें बनाने वाले तथा धरती पर पांव न रखकर राशि फल फलित ज्योतिष, हस्तरेखालीला, तन्त्र-वाद तथा पोंगापन्थ का शिकार बनते देखा जाता है।

नेहरू के पचशील का ढोल पीटने अन्तरराष्ट्रीयता का ढींग हांकने, व समाज के निर्माण का स्वम ठाकने तथा समाजवादी व्यवस्था स्थापित करने का दावा करने का अधिकार इन रूढ़ि वादी [illegible] मुलाओं को कहाँ से प्राप्त है यह हम जानना चाहते हैं। अनेकों आर्य समाजियों को हम इस रूढ़िवाद का शिकार देखते हैं स्वार्थी व हो वैदिक आदर्शों की हत्या करते इन्हे लेश लज्जा नहीं आती। देश में बुद्धिवाद एवं मानवता का सही विकास करना है तो हमें सर्वत्र इस मानसिक दासता से लोहा लेना होगा।

श्री विदेह जी की वेद व्याख्या ग्रन्थ माला

श्री विदेह जी की वेद व्याख्या ग्रन्थमाला के प्रथम तथा द्वितीय पुष्पों को पढ़ने का हमें अवसर प्राप्त हुआ। आपकी भाषा सुन्दर सरस है। एवं लेखनशैली भी अच्छी है किन्तु कुछ मौलिक आश्चर्यजनक बातें है जिनका उल्लेख करना हम आवश्यक समझते है।

आपने प्रथम पुष्प मे अंकित अपनी योजना न वेद के अभिप्राय को पाने के लिए षडग अर्थात् शिक्षा कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष विज्ञान की मान्यता का निषेध किया है।

यह हम मानते हैं कि षडग की रचना संहिताओं के प्रादुर्भूत होने के बहुत बाद की है। किन्तु जब तक यह सिद्ध न हो जाये कि षडग वेदों का रहस्य खोलने मे साधक नहीं, बाधक हैं श्री विदेह जी के मत का समर्थन नहीं किया जा सकता। जिन मुनियों एवं ऋषियों ने षडग का निर्माण किया था उनका वेद सम्बन्धी ज्ञान विदेह जी की अपेक्षा बहुत अधिक था और इनके बनाने में उन ऋषियों का एकमात्र तात्पर्य वेद ज्ञान का सम्यक् विस्तार करना ही था। अतः वेदों की गहराई में पैठने वाले मानव को इसका सम्यक ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। अनिवार्य है। यदि विदेह जी को षडग का ज्ञान नहीं है तो उनको वेदों पर लेखनी उठाने से पूर्व उनका अध्ययन कर लेना चाहिये था।

विदेह जी आगे लिखते हैं कि— "कोरे वैयाकरण, कोरे बुद्धिवादी, शुष्क, साधनाहीन, तार्किक या याज्ञिक एवं मीमांसक कभी भी वेद के यथार्थ अर्थ तक पहुंचने मे सफल नहीं हुये।

हम विदेह जी की इन पंक्तियों को पढ़कर बहुत खेद हुआ। आप व्याकरण, तर्कशास्त्र, मीमांसा आदि के आचार्यों को जिन शब्दों में याद करते हैं यह उनका अहमन्यता का स्पष्ट द्योतक है। बिना व्याकरण, तर्क शास्त्र तथा मीमांसादि शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त किये वेदों म प्रयास करना विद्वानों की दृष्टि म क्या मूल्य रखेगा, इस पर विदेह जी का एक बार विचार तो कर लेना चाहिए था। आप कोरे विशेषण लगाकर आक्षेप से बच निकलना चाहते हैं किन्तु आपका यह कृत्य दुष्प्रयास ही केवल माना जावेगा। पाणिनी, कात्यायन पतञ्जलि गौतम आदि मुनियों की, जिन्होंने व्याकरण, न्याय दर्शनादि लिखे हैं इस प्रकार अवहेलना करना सर्वथा अनुचित है। इन महापुरुषोंको आपने यह कैसे मान लिया कि वह कोरे थे। अर्थात् उनको और कुछ नहीं आता था। और वह साधना शून्य थे। आपकी अपेक्षा उनका तप त्याग एवं वेद भक्ति कहीं ऊंची थी। यह हम दावे के साथ कह सकते हैं।

हां, महीधर ज्वालाप्रसाद मिश्र आदि से आपका तात्पर्य केवल हो, तो हमे कोई आपत्ति नहीं। आपने एक स्थल पर यह भी लिख दिया है कि छः अङ्गों का वेदाध्ययन में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। इससे हम कुछ सन्तोष हुआ किन्तु आपका साथ ही यह भी लिखना कि किन्तु वेद के प्रतिपाद्य विषय तक पहुँचने के लिए साधना अत्यावश्यक है। इससे ऐसी झलक आती है कि षडग के प्रणेता आपकी दृष्टि मे साधना सम्पन्न न थे यदि आपका ऐसा मत नहीं होता तो आप किन्तु के साथ यह पंक्ति न लिखते। श्री विदेह जी को अपनी साधना पर जितना गर्व है हमे पाणिनी, गौतम आदि की साधना पर आपकी अपेक्षा सहस्रों गुणा अधिक गर्व है।

आपने एक स्थल पर ऋषि देवता की आवश्यकता को वेदभाष्य के करने में मान्यता दी है इससे हमें कुछ संतोष हुआ किन्तु साथ ही यह भी लिख दिया कि जन साधारण के लिए इनकी कोई उपयोगिता नहीं है और सम्भवतः आपने अपने इसी मत के आधार पर ऋषि तथा देवता को बादाम के छिलके की उपमा दे डाली है।

हम समझते हैं कि ऋषि और देवता के सम्बन्ध मे प्रत्येक वेद के स्वाध्यायी मानव को ज्ञान करना नितान्त आवश्यक है। यदि स्वाध्याय शील मानव इनका ज्ञान रखेंगे तो वेद के साथ खिलवाड़ करनेवाले व्यक्तियों की लीला से वह सावधान रह सकते है।

आगे आप लिखते हैं कि वेदार्थ का मार्ग प्रशस्त करने मे दर्शन शास्त्रादि की कोई उपादेयता नहीं, यह भी आप की भारी भूल है। वेद का मार्ग प्रशस्त करने के लिए तो तर्क ऋषि का आश्रय लेना नितान्त आवश्यक है, वेद [illegible] तर्क शास्त्र के सम्यक ज्ञान बिना वेदों मे प्रवेश ही असम्भव है, इसी प्रकार योग दर्शन के ज्ञान बिना आप जिस साधना की चर्चा करते है, वह भी थोथी है, किन्तु आप निरुक्त तथा ब्राह्मण ग्रन्थ की वेदार्थ करने में आवश्यकता अनुभव करते हैं सो तो ठीक है किन्तु साथ ही आप यह भी कहते है मन्त्र मन्त्र, सूक्त सूक्त, अध्याय अध्याय और वेद वेद की संगति लगाने में यह तनिक भी सहायता नहीं कर सकते।

हम जानना चाहते हैं बिना निरुक्त एवं ब्राह्मण ग्रन्थों का अध्ययन किये क्या कोई सफलता पूर्वक वेदों मे गति भी कर सकता है, शृङ्खलाबद्ध अर्थ का करना तो दूर रहा, हम ब्राह्मण ग्रन्थों की प्रत्येक पंक्ति पर आंख मींचकर विश्वास करने के विरुद्ध हैं, किन्तु यह निश्चय रूप से कह सकते हैं कि वेदों मे घुसने के लिए ब्राह्मण साहित्य का ज्ञान आवश्यक है, और इसी प्रकार निरुक्त, तर्कादि शास्त्र वैदिक व्याकरण, मीमांसा आदि का ज्ञान भी आवश्यक है, इनकी उपेक्षा करना वेदज्ञ ससार के समक्ष अपना हलकापन प्रकट करना है।

आर्यसमाज स्थापना-दिवस

२१ मार्च ५८ शुक्रवार

इस वर्ष २१ मार्च १९५८ शुक्रवार चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया जायगा, आज से ८३ वर्ष पूर्व महर्षि स्वामी दयानंद जी महाराज ने भारत के प्रसिद्ध नगर बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी। इस ८३ वर्ष के जीवन में आर्य समाज ने अस्पृश्यता, अन्धविश्वास एवं रूढ़िवाद के विरुद्ध जो महान् क्रान्तिकारी कार्य किये हैं, जब समाज-निर्माण एवं शिक्षा के क्षेत्र में जितने मौलिक पग उठाए हैं और अपने देश भारत में जो राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न की है वह उसके इतिहास में नहीं नहीं भारत के इतिहास में सदा अमर रहने वाली वस्तुएं हैं।

आर्यसमाज का ध्येय महान् है। आर्यसमाज का लक्ष्य भी अत्यन्त उच्च है तथा आर्यसमाज का कार्य-क्रम भी बहुत व्यापक है। आर्यसमाज को आनेवाले युग में और अधिक शक्तिशाली बनकर तथा तपःपूत होकर कार्य करना है। विदेशियों द्वारा प्राप्त मानसिक दासता से भारत में गहरी टक्कर लेनी है और भारतीय संस्कृति को एक बार पुनः उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँचाना है तथा वैदिकज्ञान का विश्व भर में विस्तार करना है।

किन्तु इस महान् लक्ष्य का पूर्ति के लिए आर्यसमाज को वैदिक ज्ञान के प्रकाण्ड पण्डितों की, तपस्वी विद्वानों की आवश्यकता है। आवश्यकता है दयानन्द मिशन के दीवानों की और आध्यात्मिक साधना से संयुक्त प्रचारकों की।

आज आवश्यकता है विपरीत परिस्थितियों में ध्येय मार्ग पर आरूढ़ रहकर निरन्तर प्रगति करने वाले सफल नेतृत्व की।

आओ आर्यसमाज के इस महान् स्थापना पर्व पर हम अन्तर्दृष्टि होकर आत्म निरीक्षण करें और अपने महान् आचार्य के महान् मिशन के उपयुक्त पात्र बनने का व्रत धारण करें।

—शिवदयालु

आ० स० बड़हलगंज

प्रधान—श्री विद्याधर वैद्य
मन्त्री—श्री विद्यासागर आर्य
कोषा०—श्री अवधविहारी जी

समाज का वार्षिकोत्सव ५, ६, ७, अप्रैल को होगा। दयानन्द सप्ताह सोत्साह मनाया गया।

आ० स० गांधी धाम

इस समाज का उत्सव १० से १६ फरवरी तक हुआ जिसमें अनेकों आर्य नेताओं के भाषण हुए। पोर बन्दर निवासी दानवीर श्री नान जी कालीदास जी मेहता ने १५१) इस समाज को दान दिया।

आ० स० नीमच म० प्र०

प्रधान—श्री शोभाराम गुप्त
मंत्री—श्री भगवान लाल
कोषा०—श्री अर्जुनलाल

आ० स० जगतपुर बरेली

प्रधान—श्री कविराज शांतिस्वरूप वैद्य
मन्त्री—श्री यशपाल जी
कोषा०—इन्द्रदेव जी

महर्षि दयानन्द और वास्तविक आस्तिकता

[पं० शिवचन्द्र जी आजीवन सदस्य तथा भूतपूर्व उपमन्त्री, सार्वदेशिक सभा]

आज से ११० वर्ष पूर्व शिवरात्रि के दिन १४ वर्ष के बालक मूलशंकर को अपने नगर के एक छोटे से शिव मन्दिर में वास्तविक शिव का ज्ञान प्राप्त करने की उत्कट लालसा उत्पन्न हुई थी। भविष्य में वह उसमें पूर्ण रूपेण फलीभूत हुए और उस सफलता के फलस्वरूप उन्होंने धार्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जगत् में जीवन के प्रत्येक विषय को लेकर एक महान् क्रान्ति का सूत्रपात किया। इस छोटे से लेख में शिव के वास्तविक स्वरूप पर ही प्रकाश डाला जायगा।

सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक अर्थात् पांच सहस्र वर्ष पूर्व तक समस्त संसार में प्रभु की उपासना निराकार के रूप में ही होती थी। इससे पूर्व किसी भी ऋषि, मुनि, आचार्य अथवा महापुरुष ने प्रभु का अवतार लेना अर्थात् उसे स्वयं शरीर धारण करना, दुःख सुख भोगना और जन्म तथा मृत्यु के चक्कर में पड़ना नहीं माना और न इसका प्रमाण किसी प्राचीन आर्ष ग्रन्थ में ही मिलता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम तथा योगिराज भगवान् कृष्ण यदि स्वयं ईश्वर के अवतार होते तो उन्हें स्वयं ईश्वर उपासना करने की आवश्यकता नहीं थी। इन दोनों महापुरुषों के जीवन चरित पढ़ने से स्पष्ट विदित होता है कि वे नियम से दोनों संधिकाल में ईश्वर उपासना में निमग्न होते थे। हां, यह तो ठीक है कि प्रभु जब भी उचित और आवश्यक समझते हैं वह किसी दिव्य आत्मा को जन-कल्याणार्थ किन्हीं विशद उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस संसार में भेज देते हैं।

महाभारत काल के पश्चात् संसार से जब वैदिक धर्म लोप हुआ तो समय समय पर कुछ महानुभावों ने अपने-अपने नाम से संसार में मत, पन्थ, सम्प्रदाय तथा मजहब प्रचलित किये। इनके अनुयायियों ने अपने इन गुरुओं की मूर्तियां बनाकर उनको पूजना आरम्भ कर दिया।

सबसे प्रथम इस प्रकार मूर्ति पूजा की परिपाटी बौद्ध मत तथा जैन मत से आरम्भ हुई। कुछ ही काल में यह मूर्ति पूजा जड़ पकड़ गयी। इसके लगभग ५०० वर्ष के पश्चात् स्वामी शंकराचार्य जी द्वारा "अहं ब्रह्मास्मि" वाले नवीन वेदान्त को जन्म दिया गया जो बाद को पौराणिक हिन्दू मत के नाम से प्रसिद्ध हुआ, जिसे कभी कभी कोई लोग अज्ञानतावश सनातन धर्म के नाम से पुकार देते हैं। वास्तव में वेद का धर्म ही अनादि होने के कारण सनातन धर्म है। इस नवीन वेदान्त एवं पौराणिक हिन्दू मत के आचार्य तथा अनुयायी बौद्ध तथा जैन मत को देश से निर्मूल करना चाहते थे। उन्होंने ऐसा करना तब ही सरल समझा यदि वे देशवासियों से भगवान् बुद्ध तथा महावीर स्वामी की मूर्तियों के स्थान पर भगवान राम, भगवान् कृष्ण तथा कुछ एक अन्य स्त्रियों और पुरुषों की मूर्तियां देवी और देवताओं के रूप में बनवा कर पुजवा सकें। इस प्रकार पौराणिक मत के आचार्यों को, विशेषतया स्वामी शंकराचार्य तथा स्वामी रामानुजाचार्य को बड़ी सफलता प्राप्त हुई। बौद्ध मत तो इस देश से समूल नष्ट हो गया परन्तु जैन मत कुछ कुछ बना रहा। मूर्ति पूजा की अवैदिक प्रथा देश भर में व्यापक हो गयी और उसकी जड़ें बहुत गहरी चली गयीं।

इस अवैदिक प्रथा मूर्ति पूजा से देश तथा राष्ट्र को उसके जीवन के प्रत्येक क्षण में क्या-क्या और कितनी हानि पहुँची-यह एक लम्बे इतिहास का विषय है। इस लेख में तो इतना ही संकेत करना पर्याप्त होगा कि यवन आक्रमण कारियों ने इन पौराणिक हिन्दुओं के इस मूर्ति पूजा के निर्बल तथा मर्मस्थान को भली प्रकार जान लिया था और उन्होंने सदैव ही सर्व प्रथम इसे अपना निशाना बनाकर विजय प्राप्त की। सोमनाथ, काशी और मथुरा के मन्दिर अब भी इस ऐतिहासिक तथ्य की साक्षी दे रहे हैं।

महर्षि दयानन्द से पूर्व गुरु नानक महात्मा कबीर तथा राजा राममोहन राय ने भी मूर्ति पूजा के विरुद्ध आवाज उठायी थी परन्तु उनमें से किसी को भी सफलता प्राप्त नहीं हुई। इसका एक मुख्य कारण यह था कि इन महानुभावों में से किसी को भी वेद का ज्ञान नहीं था।

वेद के अद्वितीय विद्वान् होने के नाते यह तो महर्षि दयानन्द के ही भाग्य में बदा था कि वह इस अवैदिक मूर्ति पूजा प्रथा के गढ़ पर भारी प्रहार करके वास्तविक आस्तिकता तथा सच्ची प्रभु भक्ति के प्रशस्त मार्ग और साधनों का प्रचार करते। उन्होंने पौराणिक हिन्दुओं के गढ़ काशी में पहुँच कर मूर्ति पूजा के विरुद्ध सिंहनाद किया और वहां के उस समय के पौराणिक महारथी विद्वान् विशुद्धानंद को मूर्ति पूजा के विषय पर शास्त्रार्थ में परास्त किया। उस समय बनारस का जिलाधीश जो कुछ-कुछ संस्कृत जानता था वह भी उस शास्त्रार्थ में उपस्थित था और शास्त्रार्थ की समाप्ति पर उसे यह शब्द कहने पड़े "स्वामी दयानन्द की आज विजय हुई। महर्षि दयानन्द ने निस्सन्देह मूर्ति पूजा की जड़ों को केवल इस देश में ही नहीं किन्तु समस्त विश्व में हिला दिया।

महर्षि दयानन्द ने बताया कि जीवात्मा ही प्रभु का साक्षात्कार करना चाहता है, न कि यह पञ्च भूतों से बना हुआ यह शरीर जो जड़ और नाशवान् है। जीवात्मा निराकार, नित्य, एक देशीय तथा सीमित शक्ति वाला है और प्रभु निराकार, नित्य, सर्व व्यापक और सर्व शक्तिमान है। अतः जीव को चाहिए कि वह प्रभु को निराकार, नित्य, सर्व व्यापक और सर्व शक्तिमान के रूप में समझ कर ही प्राप्त करे, न कि उसे जड़ रूपी मूर्ति के रूप में अथवा उसके द्वारा। मनुष्य के शरीर के हृदयस्थान में जीवात्मा का निवास है और प्रभु भी सर्व व्यापक होने के कारण उस हृदयस्थान में स्थित है अर्थात् जीवात्मा और प्रभु एक ही स्थान पर उपस्थित है जब कि मूर्ति में प्रभु ही केवल उपस्थित है, न कि जीवात्मा जो कि प्रभु को प्राप्त करना चाहती है। अतः सनातन काल से प्राचीन सभी ऋषि, मुनि और योगियों ने जीवात्मा द्वारा प्रभु की प्राप्ति के लिए इस मानव शरीर को ही प्रभु का मन्दिर माना है और उस हृदय स्थल को ही जहां जीवात्मा और प्रभु दोनों एक साथ ही विद्यमान हैं जीवात्मा द्वारा प्रभु प्राप्ति का स्थान माना है। प्रभु प्राप्ति के इसी अटल और सनातन सिद्धान्त का महर्षि दयानन्द ने प्रतिपादन किया है। जब मनुष्य इस प्रकार प्रभु के दर्शन करने की चेष्टा करता है तो वह प्रभु की सत्ता को प्रतिक्षण अपने जीवन व्यवहार में सर्व व्यापक, सर्वज्ञ तथा सर्व शक्तिमान के रूप में अनुभव करता है और फिर मनसा वाचा-कर्मणा वह किसी भी प्रकार की कुचेष्टा का शिकार नहीं बनता। यही वास्तव में सच्ची आस्तिकता है जिसको महर्षि दयानन्द ने वेद के आधार पर पुनर्जीवित करने के लिए अपनी समस्त शक्ति लगा दी और महान् प्रलोभनों को ठुकरा कर और जबर्दस्त विरोधों का मुकाबला कर आस्तिकता के वास्तविक स्वरूप को संसार के सम्मुख लाकर रखा।

महाराणा उदयपुर श्री सज्जनसिंह के निमन्त्रण पर महर्षि दयानन्द उदयपुर पहुंचते हैं। कुछ दिनों तक महर्षि के चरणों में बैठ कर महाराणा उपदेश ग्रहण करते हैं और राजकीय कार्यों में महाराणा का जीवन पलट जाता है। महाराणा ने एक बात को छोड़ कर महर्षि दयानन्द द्वारा दिये गये अन्य समस्त उपदेशों को अपने जीवन में धारण कर लिया था। वह एक बात थी—मूर्ति पूजा के सम्बन्ध में। एक दिन महाराणा ने हाथ जोड़ कर बड़े विनम्र स्वभाव से महर्षि से प्रार्थना की—भगवन्! आपकी समस्त आज्ञायें मुझे शिरोधार्य हैं केवल एक ही विनम्र प्रार्थना है कि चाहे आप मूर्ति पूजा का समर्थन न करें परन्तु आप उसका खण्डन भी न करें। मेवाड़ का यह सारा राज्य एक लिंग महादेव के मन्दिर के आधीन है। मैं आपको उस मन्दिर का महन्त बनाये देता हूं और यह मेवाड़ राज्य की गद्दी आपके चरणों में अर्पित है। आप ही इसके स्वामी बनें मैं तो आपका सेवक बनकर आपके आदेशों का पालन करता रहूंगा। महर्षि ने उत्तर दिया-राजन्! तुम मुझे गद्दी का क्या प्रलोभन देते हो? यदि मुझे सांसारिक सम्पत्ति में ही प्रेम होता तो मैं अपने स्वयं पिता की सम्पत्ति को ही क्यों तिलांजलि दे देता? तुम्हारे इस मेवाड़ के राज्य में से मैं एक दौड़ में बाहर निकल जा सकता हूं परन्तु बताओ प्रभु के सर्व व्यापक राज्य में से मैं निकल कर बाहर कहाँ जा सकता हूं? मैं प्रभु की आज्ञा पालन करूं अथवा तुम्हारी इच्छा पूर्ति करूं? क्या मैं प्रभु को प्रसन्न करूं अथवा तुम्हें? मैंने तो अपना समस्त घर बार, माता-पिता और सम्पत्ति केवल एक ईश्वर की आज्ञा पालन करने के लिए ही छोड़ा है और उसी को जीवन भर निभाऊँगा।

श्री उपाध्याय जी के लिए

[श्री पं० विहारीलाल जी शास्त्री काव्यतीर्थ]

★

आर्यसमाज के उत्सव के क्रम में इलाहाबाद आया तो कई दिन तक श्री उपाध्याय जी से बातचीत का सौभाग्य मिला।

आर्यसमाज के उच्चकोटि के मनीषी विद्वान् को इस वृद्धावस्था में आर्यसमाज के लिए कितनी प्रबल लगन है यह देखकर इनके चरणों पर मस्तक झुक जाता है।

अभी चीनी भाषा में सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशित कराया अब बर्मी में छपवाया है। रूसी और अरबी अनुवाद की चिन्ता मे हैं। कोई धनी, दानी इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए व्यय करने को उद्यत हो जांय तो उक्त दोनों भाषाओं मे भी स्वामी जी का युगान्तरकारी सन्देश अरब और रूस में पहुंच जायें।

एक पुस्तक लिखकर तो वेद विषय की बहुत बड़ी भ्रान्ति श्री उपाध्यायजी ने दूर की है।

पुस्तक का नाम है "सायण और दयानन्द" सायण भाष्य के उद्धरण दे देकर इसमे दिखाया गया है कि अधिकतर शब्दार्थों में ऋषि दयानन्द से सायणाचार्य जी एक हो रहे हैं पर विनियोगों एवं कथानकों के चक्कर मे फंसकर सायणाचार्य जी भूमिका में किये हुये अपने दावे के विरुद्ध वेदार्थ कर डालते है। यौगिक शब्दों को रूढ़ि बनाकर नित्य वेद को अनित्य सिद्ध कर देते है।

अपनी लिखी चारो वेदों की भूमिकाओं मे सायण महोदय ने मीमांसा, निरुक्त और व्याकरण के प्रमाण दे देकर वैदिक शब्दो को यौगिक और सार्वकालिक सिद्ध किया है पर भाष्य मे वेदों को सूत्राधीन करके, कथानको के पीछे चलाकर वेदों के महत्व को गिरा दिया है।

अश्वमेध पर भी इस पुस्तक में बहुत अच्छे प्रमाण प्रस्तुत हैं। पुस्तक का यह प्रकरण पढ़ने से अश्वमेध मे घोड़े के बलिदान की गन्ध तक दूर हो जाती है। यह पुस्तक सनातनी, आर्य समाजी एवं धर्म निरपेक्ष जनो के भी पढ़ने योग्य हैं। जो व्यक्ति वैदिक साहित्य को समझने का इच्छुक है उसे यह पुस्तक (सायण और दयानन्द) अवश्य पढ़ना चाहिये प्रत्येक आर्य समाज और संस्था का पुस्तकालय इस पुस्तक से सुभूषित होना चाहिये।

एक पुस्तक और इन्होंने अभी छपाई है—

एक "सच्ची कहानी" इसे पढ़ने से प्रतीत होता है कि पुराने आर्यों में अपने धर्म प्रचार की कैसी गरम लगन थी।

इस पुस्तक में उपाध्याय जी की पत्नी माता कलादेवी जी के जीवन की कुछ घटनायें है। पर प्रत्येक घटना वर्तमान युग की बहू बेटियों के मानस पर अत्युत्तम प्रभाव डालने वाली है।

शतपथ ब्राह्मण का भाष्य पूर्ण तैयार रक्खा है और पूर्व मीमांसा जैसे दुरूह ग्रन्थ का अनुवाद करने मे लगे हुये है। लगभग आधा जगल पार कर चुके है। मीमांसा का हिन्दी भाष्य सहारा का मरुस्थल पार करना है।

ऐसे विचारक उद्योगी विद्वान् से हम कैसे उऋण हो यह विचार हमें कभी उठता है क्या ?

यदि उपाध्याय जी ने लौकिक साहित्य लिखा होता जिसके लिखने की उनमें पर्याप्त क्षमता है तो प्रभूत अर्थोपार्जन के साथ साथ वे वतमान समाचार पत्रो मे चमक जाते। पर उन्हे लगन है आर्यसमाज की, धुन है वैदिक सिद्धान्त समर्थन की, और इधर हमारा समाज अपने विद्वानों से उपेक्षा रखता है।

मेरा तो प्रस्ताव है कि ७६ वर्षीय इस वैदिक भारती के पुजारी का शीघ्र ही कोई सार्वजनिक अभिनन्दन किया जाय। सभा के वृहदधिवेशन पर ही धूमधाम से सत्कार करें। कोई अभिनन्दन ग्रन्थ विद्वानों से तैयार कराकर इनको भेंट करें। अथवा इनके ग्रन्थों के प्रकाशनार्थ एक महत्वपूर्ण धनराशि इनको भेंट करें। आर्यजनो को विचारना चाहिये कि किस रूप मे हम अपनी श्रद्धा भक्ति श्री उपाध्याय जी के प्रति प्रकट करें ताकि अन्य विद्वानो को प्रोत्साहन मिले।

उपाध्याय जी को इस सत्कार्य की जरा भी चाह नही उन्होने जो कुछ लिखा है "स्वान्तः सुखाय" लिखा है। पर हमे कृतघ्नता का दोष न लगे इस लिए एक समारोह करके उपाध्याय जी को सत्कृत और पुरस्कृत करना हमारा कर्तव्य है।

श्री स्वामी दर्शनानन्द जी, श्री पं० लेखराम जी, श्री पं० शिवशंकरजी काव्यतीर्थ आदि विद्वानों की हम उपेक्षा करते रहे अब तो इन्हें भुलाते जा रहे हैं। इनके ग्रन्थ रत्न अब विस्मृत होते जा रहे हैं। यह उपेक्षा हमे दोषी बनाती है। हम कृतज्ञ होने का प्रमाण दें इसलिए ऐसा प्रस्ताव मैंने किया है।

★

सुधा

दाँत के रोगों की भयंकरता

[श्री विजेश्वरदयाल सक्सेना, बहराइच]

★

मनुष्य के शरीर को स्वस्थ बनाये रखने में दांतों की सफाई और उनकी रक्षा विशेष स्थान रखती है। क्योंकि जबतक हम भोजन को भली प्रकार चबा चबा कर न खाएं उस समय तक उसका पाचन नहीं होता और उससे तरह तरह की बीमारियां पैदा होती हैं। दांत गन्दे रहने से मुख से दुर्गन्ध आना, मसूढ़ों में दर्द होना, और पस व रुधिर का आना साधारण सी बातें हैं।

हमारे जीवन में दांत दो बार निकलते हैं। एक तो छः या सात वर्ष की आयु मे दूध के दांत जो कि कुछ वर्ष बाद गिर जाते है। दूसरे १८-२० साल की आयु मे स्थायी दांत उन्हीं की जगह निकल आते है। दांत डेन्टीन नामक पदार्थ के बने होते हैं। यह पदार्थ बहुत सख्त होता है। दांत के सबसे ऊपर के भाग मे एक अत्यन्त चमकदार पर्त चढ़ी रहती है जिसे एनेमिल कहते हैं।

दांतों को ठीक से साफ न करने से अत्यन्त गर्म व ठन्डी चीजें व अन्य मीठी व चरपरी चीजें दांतों में लगे रहने से दांतों की रक्षा करने वाला श्वेत चमकीला एनेमिल गलने लगता है। और उसके गलने से नाना प्रकार की भयंकर व्याधियां उत्पन्न हो जाती हैं।

भोजन के पश्चात् दांतों को साफ न करने से अन्न के छोटे छोटे टुकड़े जो दांतों के बीच की जगह में रह जाते है वह सड़कर के कीड़े उत्पन्न करते है, और खून और पीब आने से पायरिया रोग हो जाता है। इस सड़न क्रिया का दूसरा दुष्परिणाम यह होता है कि दांतो मे से निकलती हुई विषैली मवाद भोजन के साथ मिलकर पेट मे पहुँची है, जिससे भयकर रोग के कीटाणु शरीर मे प्रवेश कर जाते है। दांतों की ही खराबी से मनुष्य कभी-कभी पागल भी हो जाता है।

प्रातःकाल शौचादि से निवृत्त हो कर स्नान करने से पूर्व दांतों की सफाई करनी चाहिए। भोजन के पश्चात और सोने से पूर्व दांतों की सफाई बहुत आवश्यक है। दांतों को साफ करने के लिए अनेक प्रकार के 'टूथ पाउडर', 'टूथ पेस्ट' और ब्रुश उपलब्ध हैं परन्तु वास्तव में यह सब सफाई के उद्देश्य में असफल ही हैं।

नीम व बबूल की दातून दांतों के लिए सर्वोत्तम हैं। क्योंकि इनके कड़ुए और कसैले स्वाद से कीटाणु भी मर जाते हैं। नमक और सरसों के तेल को दांतों में मलने से लाभ होता है। पान, तम्बाकू और सिगरेट आदि के सेवन से दांत गन्दे तथा जल्दी टूटने वाले भी हो जाते है। अतः इनका त्याग करना चाहिए।

तुलसी के पत्तों को कभी भी दांतों से चबा कर नहीं खाना चाहिए, क्यों कि तुलसी के रस मे एक विशेष अवगुण यह है कि वह दांतों के सम्पर्क में आते ही वह दांतो के एनेमिल को नाश कर देता है।

इसलिए प्रत्येक इन्सान को चाहिए कि वह दांतों की रक्षा उसी प्रकार करे जिस प्रकार कोई मनुष्य अपने धन की रक्षा करता है यदि बचपन में ही दांतों की देखभाल की जाये तो वह मजबूत बने रहते हैं

आर्यवीर दल काशी

नगर आर्य वीर दल काशी का वार्षिकोत्सव मनाया गया। नवीन वर्ष के लिए श्री प्रेमचन्द आर्य नगर नायक नियुक्त हुए और श्री भीष्म सिंह मन्त्री, गङ्गाप्रसाद आर्य कार्यालय मन्त्री, बुद्धदेव आर्य शिक्षक, रामकृष्ण जी कोषाध्यक्ष, सत्यदेव जी शास्त्री बौद्धिक नायक तथा श्री शिवनाथ प्रसाद आर्य निरीक्षक चुने गये।

आ० स० गोला

आ० स० गोला की ओर से आयोजित एक सार्वजनिक सभा में जालन्धर गोली कांड की घोर निन्दा की गई।

आ० स० भभुआ

इस समाज की ओर से ऋषि दयानन्द बोध दिवस सोत्साह मनाया गया।

भारतीय स्वराज्य के प्रयत्न

डा० सूर्यदेव प्राणाचार्य, जीवन शक्ति फार्मेसी, आर्यसमाज रोड,गोरखपुर]

अपनी इच्छा के अनुसार जीवन यापन करने की भावना प्राणीमात्र के अन्दर स्वाभाविक है। सोने के पींजरे में बन्द रहने वाला पक्षी भी जिसका स्वभाव स्वच्छन्द आकाश में विचरण करना है, दीन-हीन और उदासीन प्रतीत होता है। स्वाधीनता वह सुख स्वप्न है जिसकी कल्पना भी आनन्द की अनुभूति कराती है। स्वाधीन देश में लेखन, भाषण और मत प्रकाशन की स्वतन्त्रता के साथ स्वराज्य तो स्वर्गीय सुख है। वे जातियाँ जो कुछ समय तक पराधीन रह चुकी हों एवं अपनी खोई स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए लाखों प्राणों को स्वाधीनता देवी के चरणों पर अर्पण कर चुकी हों, वे उसके मूल्य को समझ सकती हैं। पराधीन समाज स्वाधीनता का प्रयत्न करता है क्योंकि वह उसका जन्म सिद्ध अधिकार है।

भारत ने अतीत में अपने गौरवशाली दिन देखे थे। हूणों, शकों, तुर्कों और यूनानी आक्रान्ताओं ने भारत पर आक्रमण किए थे परन्तु वीरवर विक्रम, चन्द्रगुप्त तथा तत्कालीन अन्य शासकों के शौर्य के सामने उनके पैर इस पवित्र भूमि पर न जम सके। काल चक्र घूमता गया। पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष, अविश्वास, अन्ध विश्वास छुआछूत के विचार और अशिक्षा ने जाति के जीवन को अल्प प्राण कर दिया। अवसर का लाभ उठाकर बाबर ने मुट्ठी भर अपने लुटेरे साथियों के साथ भारत पर आक्रमण किया और सुसंगठित मुगल राज्य की स्थापना की। दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा, के तुमुल निनाद से भारतीय वायुमण्डल व्याप्त हो गया। अकबर के समय महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी के समराङ्गण में स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी परन्तु मानसिंह जैसे देश द्रोहियों के कुचक्रों से सफलता न मिली। इस बीच संत तुलसीदास के नतृत्व में अनेक सन्तों ने देश, जाति, धर्म, भाषा और संस्कृति की रक्षा के लिए जन जागृति के महान् प्रयत्न किए। समर्थ गुरु रामदास ने तो महाराष्ट्र केसरी छत्रपति शिवा जी का ही निर्माण कर दिया। वीर शिवा के सिंहनाद से दिल्ली का सिंहासन हिल उठा परन्तु शोक! उस वीरकुल शिरोमणि के प्रयत्नों के पश्चात् भी स्वतंत्रता का सूर्योदय न हो सका। दोष प्रयत्न में न था, दोष था हमारे जातीय जीवन में। इस समय भी हम अस्त-व्यस्त और असंगठित थे।

तुर्क मुगल और अरब लुटेरे भारत के वैभव की कहानियां सुनकर यहाँ आये थे। भारत का स्वर्णिम ऐश्वर्य देख कर उनमें से कुछ यहीं बस गए। उस समय भी यहां के निवासी हिन्दू असंगठित थे अतः अपने कूटनैतिक चक्रों के सहारे संपूर्ण भारत पर अधिकार करके वे यहां ऐशोआराम की जिन्दगी बिताने लगे। औरंगजेब के समय यहां के निवासियों पर अश्रुत पूर्व अत्याचार हुए। आज भी उस अत्याचार की कहानी मथुरा, काशी, अयोध्या की मस्जिदें मूक स्वर से सुना रही हैं। न जाने कितने देवालयों को तोड़कर मस्जिदें बनाई गईं। तलवार के भय से अनेकों हिन्दू बलात् धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य किए गए। गुरु गोविन्दसिंह के मासूम बच्चों की कहानी सुन कर मानवता भी चीख उठती है। बन्दा वैरागी पर किए गए अत्याचारों से मानवता भी कांप उठती है। इन सब अत्याचारों से यहाँ का राष्ट्रीय हिन्दू त्राहि-त्राहि कह उठा। अत्याचार अत्याचारी को ले बीतता है। इसी समय यूरोप से डच,पुर्तगीज फ्रेञ्च आदि विदेशी व्यापारी भारत आने लगे थे उन्होने औरङ्गजेबी अत्याचारों से असन्तुष्ट भारतीयों की कथा भारत के धन-धान्य के वैभव की कहानी अपने-अपने देशों में जाकर सुनाई। परिणामतः अधिकाधिक सख्या में यूरोपीय व्यवसायी व्यापार के घात से भारत में घुसने लगे। अवसर देख कर उनमें से सबसे चतुर समुद्री ब्रिटिश दस्यु ने इस सोने की चिड़िया को अपने लोह शिकंजे में जकड़ ही लिया। पदलित भारत पर यूनियन जैक फहराने लगा! विधि का विधान देखिए! संसार को सभ्यता संस्कृति, ज्ञान तथा विज्ञान का पाठ पढ़ाने वाला जगत्गुरु भारत एक के पश्चात् दूसरे पराधीनता के पाशों में आबद्ध होता गया।

पतन उत्थान के लिए होता है। चरम सीमा पर पहुंच कर पतन उत्थान की ओर अग्रसर होता है। १८५७ का स्वाधीनता संग्राम पीड़ित अतः जागृत जनता की अंगड़ाई थी। देश में रक्त की नदियां बह गईं परन्तु क्रान्ति असफल रही। महर्षि दयानन्द, राजा-राम मोहनराय आदि महानुभावों के जन जागृति के प्रयत्न प्रारम्भ हुए। गीता रहस्य के लेखक लोकमान्य तिलक ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की पताका ऊंची की। कुछ अमर शहीद क्रान्तिकारियों ने राष्ट्रमाता के चरणों पर अमर बलिदानों की परंपरा प्रारम्भ की। सावरकर ने समुद्र सतरण किया। समय बीतता रहा प्रयत्न होते गए। १९२०, २१ में महात्मा गांधी असहयोग और अहिंसात्मक क्रान्ति का झण्डा लेकर भारत के राजनैतिक आकाश में उदित हुए। नमक सत्याग्रह तथा वैयक्तिक सत्याग्रह किए गए। १९४२ में करो या मरो (Do or die) तथा भारत छोड़ो (Quit India) का गगनभेदी नारा लगाया गया। यह सब हो रहा था कि प्रसिद्ध देशभक्त नेता जी सुभाषचन्द्र बोस ने एक साहसपूर्ण नाटक खेला। आध्यात्मिक साधना में लीन वीर सुभाष अफगानी पठान के वेष में अफगानिस्तान और ईरान होता हुआ स्थल मार्ग से जर्मनी पहुँच गया। वहां के भारतीयों को संगठित कर के आजाद हिन्द फौज का निर्माण किया। जर्मनी से वे जापान पहुंचे। वहां भी युद्ध बन्दियों और भारतीयों को संगठित कर आजाद हिन्द सेना का निर्माण किया गया। देखते ही देखते यह सेना मलाया, सिंगापुर, बर्मा होते हुए भारत की उत्तर पूर्वीय सीमा पर, आसाम के पहाड़ी प्रदेशों में स्थित मणिपुर तथा कोहिमा के खण्डों पर गरजने लगी। इधर ब्रिटिश सेनापति के नतृत्व में अंग्रेजी भारतीय सेनाओं ने कोहिमा के पर्वत य मोरचे पर अपने वीर सेनानी सुभाषचन्द्र बोस को 'जय हिन्द' और 'दिल्ली चलो' का तुमुल जयघोष करते सुना तो उनके हाथों की रायफलें गिर गईं। तोपों का घोर गर्जन शान्त हो गया। भीमकाय टैंकों ने आग उगलना बन्द कर दिया। एक बार भारतीय इतिहास ने पुनः रणाप्रताप और शक्तिसिंह के इतिहास की पुनरावृत्ति की। एक भारतीय भाई के सामने दूसरा भारतीय भाई खड़ा था। भाई अपने दूसरे भाई का रक्त बहाने के लिए तैयार नहीं था। बड़ी संख्या में इस मोर्चे पर लड़ने वाली किराए की भारतीय फौजें अपने समस्त शस्त्रास्त्रों और गोला बारूद के साथ नेता जी सुभाषचन्द्र बोस से जा मिलीं।

इधर सुदूर पूर्व में ऐटम बम के प्रभाव से होने वाले हिरोशिमा और नागा साकी के नर संहार से डरकर १९४५ में जापान ने हथियार डाल दिए और अपना पराजय स्वीकार कर ली। दूसरी ओर रूस स्टैलिन ग्राड की लड़ाई में जर्मनों के भी पैर उखड़ गए और परिणामतः द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हो गया।

द्वितीय युद्ध के पश्चात् भारत के अंग्रेज शासकों ने अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों और आजाद हिन्द सेना के कारनामों को देखकर यह निश्चय कर लिया कि भारत में अब आगे किराए के भारतीय सैनिकों द्वारा साम्राज्यवादी शोषण नहीं किया जा सकता है। इसी समय बम्बई के बन्दरगाह में शाही भारतीय नौसेना के सैनिकों ने ब्रिटिश सेनापति के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। अंग्रेजों की रही सही आशा पर भी तुषारपात हो गया। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् ब्रिटेन अपने देश की आन्तरिक समस्याओं में बुरी तरह व्यस्त था। भारत की यह क्रान्ति उसके सिर का दर्द हो रही थी। ऐसी विषम परिस्थिति में अंग्रेजों के लिए यही सरल मार्ग था कि वे भारत में अपने हितों की पूर्ण रूप से रक्षा करते हुए भारत के अपने साम्राज्य को छोड़ दें। क्योंकि अच्छी राजनीति यही है कि जहां सर्वनाश की आशा हो वहां बुद्धिमान आधा छोड़ दे। ब्रिटिश शासक यह भी जान गये थे कि भविष्य में होने वाले महायुद्ध में भारतीयों का ऐच्छिक सहयोग इनको बिना राजनैतिक स्वतंत्रता दिए, नहीं प्राप्त किया जा सकता है। अतः अपनी सुविचारित योजना के अनुसार उन्होंने भारत छोड़ दिया।

हमारे सुनहरे सपनों का—

'आर्य-राष्ट्र'

श्री वेदप्रकाश आर्य, बी.ए. लखनऊ वि०विद्या०, प्रचारमन्त्री आर्यवीर दल यू०पी०

★

पंजाब की जलती हुई धरती की ओर प्रयाण कर रहे अटूट साहस और अदम्य उत्साह भरे हुये, आर्य रक्त के प्रतीक ओम् पताका हाथों में लिए आर्य वीरों की टोलियां बढ़ रही थीं ? सत्य, धर्म और संस्कृति के लिए जीवन उत्सर्ग कर देने वाले इन वीर वांकुरों के मुख पर भय की रेखायें कभी भी खिंच नहीं पाती थीं ? भारत माता और वैदिक धर्म का जय जय कार कर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर इन मां भारती के लाड़ले सपूतों को देखकर मेरे हृदय में गूंज उठते थे नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के वे शब्द "परमात्मा उनकी सहायता करता है जिनकी श्वास में तूफान और पसलियों में भूचाल होता है।" और मेरे मस्तिष्क में उछल कूद कर यह विचार टकराने लगते कि "दयानन्द ! सन् १८७५ ई० में भारत की वैभव नगरी बम्बई में तूने जो आर्यसमाज का पौधा लगाया था वह फल फूल रहा है।" तभी मन के एक कोने से यह विचार लहरी उठती, वेदना और ग्लानि के साथ; "ऋषिराज ! परन्तु जो सपना तू ने सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में आर्य राष्ट्र का, आर्य सार्वभौम साम्राज्य का देखा था, वह भी क्या कभी साकार हो सकेगा। वह भी क्या कभी मूर्तरूप ले सकेगा ?

एक बार हिमालय की चोटी पर खड़े होकर हमने जगद्गुरु का शंख फूंका था, विश्व को मानवता का पाठ पढ़ाया; आदि पुरुष मनु की वह घोषणा दुहराई थी; "एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः। स्वं स्वं चरित्रम् शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः" परन्तु यह सब किस लिए ? इसलिए जिससे बर्बरतात्मक और ध्वंसात्मक प्रवृत्तियां पनप हा न सके ! और संसार भारतीय विप्रों के चरणों में बैठकर नैतिकता का पाठ पढ़ सके। धरती के गर्भ में छिपे हुए वे भग्नावशेष; ब्रह्मा, जावा, सुमात्रा, श्याम, मलाया, जापान (जयपाण) आदि देशों के नाम और उनके अन्तराल में आज भी बिखरी हुई आर्य सांस्कृतिक संस्मृतियां इस बात की साक्षी है कि अवश्य ही कभी हमारे घोड़ों की टापें नील नदी की घाटियों पर पड़ी होंगी। परन्तु समय के थपेड़ों ने हमें क्या रूप दे दिया; यह सात सौ साल मुगलों और पौने दो सौ साल अंग्रेजी की दासता में रहने वाले उस भारत के कंकाल से पूछो जिसका बसन्त, पतझर में परिवर्तित है। लूले, लंगड़े इस देश में आए जिन्होंने इस आर्य जाति की लाश पर अपना झंडा फहराया और हमारी माताओं व बहनों को अपने घोड़ों और ऊँटों की पूंछों से बांध कर ले गये; उन्हें गोरी और गजनी की बाजारों में दो-दो कौड़ियों पर नीलाम किया। आज जब हमारे देश में स्वराज्य आया तो देश का वैभव नष्टप्राय था; एवं कण-कण में दासता के, आत्म हीनता के विकार थे जिनका प्रमाण देश की विदेशी अनुकरण की नीति से मिलता है।

परन्तु अब प्रश्न यह है कि जिस आर्य राष्ट्र निर्माण के लिए उस ऋषि ने संकेत किया वह कैसे पूरा हो ! उसे पूरा करने के लिए अवश्य ही कोई सशक्त, सबल, पथ अपनाना होगा और उस पर दृढ़ता के साथ बढ़ना होगा।

आर्य संस्कृति के महान् विचारकों ने जो मूलतत्व हमारे सामने रखे उनके आधार पर कहा जा सकता है कि आज की हमारी समस्त सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का समाधान एक ही व्यवस्था में निहित है; यदि इस व्यवस्था को राष्ट्रीय स्तर पर अपनाया जाय तो संसार के लिए वह आज के युग में एक नवीन आदर्श होगी ही साथ ही साथ भारत अपने पूर्वजों की उस अक्षय निधि की भी सुरक्षा कर सकेगा। वह है वर्णाश्रम व्यवस्था' क्या ही सुन्दर होता यदि पश्चिमी चमक दमक से चकाचौंध न होकर फिर से भारत में बस्तियों से दूर मनोहर उपत्यकाओं की गोद में उन गुरुकुलों का निर्माण किया जाता जिनके आगे कल कल करती हुई सरिताएं पवित्रता की साक्षिणी हों। शुचि वातावरण के प्रतीक इन गुरुकुलों में, अनिवार्य शिक्षा प्रणाली के आधार पर संस्कृत और संयम निष्ठ गुरुओं के चरणों में बैठकर ये भारतीय संतानें शिक्षा लें। जब अलग अलग गुरुकुलों में छात्र और छात्रायें पूर्ण शिक्षा ग्रहण कर लें और गृहस्थ जीवन के लिए अपने अन्दर बलवती भूख पैदा कर लें तो योग्यतानुसार वर्णों में दीक्षित हो के वह जीवन यापन करते। ब्राह्मणों को पेट की भूख न सताती और न उसकी विद्वता ही बिकती। क्षत्रियों की शूरताई को कोई न खरीद सकता क्योंकि उनके आर्थिक जटिलताओं के लिए वैश्य जुटा हुआ है। वह भामाशाह है। वैश्य राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था है। तब ही जिस धन के पीछे, आज, खाद्य समस्या के पीछे राष्ट्र के कर्णधार चिन्तातुर हैं; इन आर्य संस्कृति के विचारकों ने स्पष्ट घोषणा की थी; "आर्थिक समस्या; हमारी पहली समस्या है पर अन्तिम नहीं। आज मरते समय भी मनुष्य अपने सम्पत्ति और प्रियजनों के वियोग में आंसू बहाता है पर उस आर्य राज्य में तो वानप्रस्थ से ही इस बात का अभ्यास किया जाता था कि सांसारिक तृष्णा का परित्याग हो। सन्यास उस स्थिति का नाम है जब मानव को संसार से मोह नहीं। हंसते-हंसते मनुष्य इह लोकलीला समाप्त करता है। आज शक्ति नहीं रहती पर वासना बनी रहती है। चारपाई पर पड़ा हुआ मरणासन्न कंकाल भी किसी यौवना को देखकर वासनामय हो जाता है पर उस व्यवस्था में शक्ति बनी रहे पर वासना न रहे; तृष्णा न रहे। इस दूषित शिक्षा-प्रणाली में गौतम, कपिल नहीं निकल सकते इसके लिए सरकारी स्तर पर वह सांस्कृतिक पद्धति प्रारम्भ हो जो राष्ट्र की सारी समस्याओं का समाधान है यही आर्य दृष्टिकोण है।

परन्तु इस ओर बढ़ने के लिए संघर्ष करना होगा। और अपने विकास के प्रति निष्ठा जागृत करनी होगी। स्थान-स्थान पर आर्य संस्कृति के दुर्ग, 'आर्य वीर दल' की युवक शक्ति को स्थापित करना होगा। याद रहे संघर्ष का स्वागत करने वाला जीवन पाता है ! संघर्ष से डरने वाला कुचल दिया जाता है। आर्य राष्ट्र निर्माण के लिए—"उठो-उठो सो रहे हो नाहक प्यामे बागे—जिरस तो सुन लो। बढ़ो कि कोई बुला रहा है, निशाने मंजिल दिखा दिखा कर।

हवन यज्ञ और नेहरू जी

—श्री कुन्दनलाल अग्निहोत्री एम०डी०, एक्स मेडिकल आफिसर—

[टी० बी० सेनेटोरियम, सगत, शाहगंज लखनऊ]

★

उपरोक्त शीर्षक से मेरा [illegible] १-२-५८ के 'आर्यमित्र' में [illegible] हुआ था उसकी प्रशंसा [illegible] मुझे [illegible] अनेक पत्र प्राप्त हुए हैं। [illegible] सब सज्जनों का आर्यमित्र द्वारा धन्यवाद देता हूं। साथ ही निवेदन करना चाहता हूं कि यज्ञ चिकित्सा का विषय अब इस अवस्था में बहुत आगे बढ़ गया है कि उस पर केवल लेख ही लिखे जावें। मैंने उस की खोज का कार्य सन् १९०४ ई० में आरम्भ किया था। और २५ वर्ष के खोज एवं परीक्षण के उपरांत अब मुझे इस की सफलता पर पूर्ण विश्वास हो गया है। सन् १९२६ ई० में मैंने एक लेखमाला आर्यमित्र तथा अन्य पत्रों में लिखी थी। अब उस चिकित्सा से सैकड़ों क्षय रोगी प्राणदान पाकर अनेकों स्थानों पर दूसरे रोगियों को आरोग्य प्रदान कर रहे हैं, सेनेटोरियम में परीक्षण हो चुके हैं जहाँ ८० प्रतिशत रोगी आरोग्यता प्राप्त कर चुके है। रोगी स्वयं अथवा उनके चिकित्सक उस विधि से चिकित्सा कर सकें इस विचार से 'यज्ञ चिकित्सा' पुस्तक लिखी जा चुकी है। अतः उस विषय पर मैं लेख लिखने के स्थान पर अपना समय उन विघ्न बाधाओं के हटाने में लगाना चाहता हूं जिनके कारण क्षय रोगी इच्छा रखते हुए भी यज्ञ-चिकित्सा नहीं करा पाते और मृत्यु का ग्रास बनते हैं जिसका दुख जितना मुझे होता है मैं ही जानता हूं।

यज्ञ-चिकित्सा कराने वालों को [illegible] देश में गो दुग्ध तथा घृत की कमी [illegible] रही है। वैसे तो हवन सामिग्री भी [illegible] सारी टैक्सों के कारण इतनी महंगी है कि जो जायफल कभी ॥) या ।॥) सेर बिकता था वह आज ६५) रु० सेर है। पर वह किसी प्रकार खरीदा जा सकता है। गो-घृत जो यज्ञ के लिए परमावश्यक वस्तु है बाजार में किसी भाव को भी प्राप्त नहीं है और गोचर भूमि न होने तथा दुधारु गऊओं की कमी के कारण रोगी अवस्था में घर पर गऊ रखने का प्रबन्ध साधारण स्थिति के गृहस्थ को कठिन ही नहीं असम्भव हो जाता है, इस असमर्थतावश चिकित्सा करने से इन्कार करने पर जहाँ रोगी दुख से रोते हैं वहां अनेकों बार मेरी आँखें भी डबडबा आई है। इस प्रकार इधर

(शेष पृष्ठ ६ पर)

विदेशगमन और भक्ष्याभक्ष्य

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम०ए० एल०टी०, डी० वी० कालेज, गोरखपुर]

भारतवर्ष के इतिहास मे एक ऐसा समय था जब इस देश के जहाज ससार के सभी कोनों मे जाकर अपना व्यापार किया करते थे। किन्तु जब पतन का युग आया तब पाखडियो ने यह धार्मिक नियम बनाया कि आर्यावर्त देशवासियो का आर्यावर्त देश से भिन्न २ देशों म जाने से आचार नष्ट हो जाता है। परिणाम यह हुआ कि भारतवर्ष के हिन्दुओ ने अपने को इस देश तक ही सीमित कर लिया और भारतीयो की वही दशा हुई जो एक कूप मडूक की होती है। हम दूसरे देशो से अपना सबध गवा बैठे। ज्ञान, विज्ञान, आदान प्रदान से बढते ह। हमने उस आदान प्रदान की जड ही काट दी और फल यह हुआ कि अन्य देशो से सम्बन्ध न रहने से हम अवनत हो गये। वास्तव म भारतवर्ष पर विदेशी मुसलमानो एव अग्रेजो के आधिपत्य का कारण पाखडियो द्वारा सचालित यही धार्मिक नियम थे। क्योकि विदेश गमन आदि कार्यों से धर्म और अधर्म का कोई बखेडा नहीं खडा हो सकता। स्वामी जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश म लिखा है क्योकि जो बाहर भीतर की पवित्रता करनी सत्य भाषणादि आचरण करना है वह जहा कहीं करेगा आचार और धर्मभ्रष्ट कभी न होगा और जो आर्यावर्त म रहकर भी दुष्टाचार करेगा वही धर्म और आचार भ्रष्ट कहावेगा। स्वामी जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश मे व्यास और शुक सवाद म आर्यों के अमेरिका आदि देशो म जाने का उल्लेख किया है। उन्होंने बतलाया है कि बाहरी देशो से आर्यों के सम्बन्ध भी होते थे। धृतराष्ट्र का विवाह कधार म हुआ था। माद्री पाडु की स्त्री ईरान के राजा की कन्या थी। अर्जुन का विवाह अमेरिका की उलोपी के साथ हुआ था और युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ म भूगाल राजाओ को निमन्त्रण देने के लिए भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव चारो दिशाओ में गये थे। इसलिए स्वामी जी का मत है कि धर्म हमारे आत्मा और कर्तव्य के साथ है, जब हम अच्छे काम करते है तो हमको देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर म राज्य व व्यापार किये स्वदेश की उन्नति कभी हो सकती है? वास्तव मे पाखडियों ने यह बाते इसलिए बनाई थीं कि यदि लोग विद्या पढेंगे, देशदेशान्तरो म जायेगे तो वे बुद्धिमान होकर हमारे पाखड जाल में न फसेंगे और इस प्रकार हमारी प्रतिष्ठा और जीविका नष्ट हो जायेगी। इसलिए यह नियम बना। इस प्रकार विदेश गमन मे कोई हानि नहीं।

दशम समुल्लास म स्वामी जी महाराज ने भक्ष्याभक्ष्य विषय पर भी प्रकाश डाला है। सबसे पहले उन्होंने चौके आदि की प्रथा का विरोध किया है अर्थात् यदि कोई आदमी चौके का छूत छात म विश्वास करता है तो यह अनुचित है। आज यद्यपि चौके का छूतछात का कोई बडा विकट प्रश्न नहीं परन्तु जब स्वामी जी ने अपना कार्य क्षेत्र प्रारम्भ किया तब यह बिमारी बहुत फली हुई थी इसी प्रकार कच्चे पक्के खान की बात को भी स्वामी जी ने महत्व नहीं दिया। सखरी निखरी क्या है? जो भोजन जल आदि पकाये जाते ह और निखरी उसे कहते है जो दूध आदि पकाये जाते हैं। सखरी के खाने में पाखडियो ने दोष माना है परन्तु निखरी को खाने मे कोई दोष नहीं मानते क्योंकि वह पदार्थ खाने म स्वादिष्ट होते ह। अत कोई सखरी खिलाएगा तो आनद नहीं आएगा। यही कारण है कि कच्चे पक्के के आडम्बर भी उसने चलाये। अब इसके बाद प्रश्न उठता है द्विज अपने हाथ से भोजन बनाकर खाय अथवा शूद्र के हाथ को बनाई खावे? स्वामी जी ने वर्णाश्रम व्यवस्था के प्रकरण म ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के लक्षण किये ह और उसी सिद्धान्त को सामने रख कर व कहते ह। शूद्र के हाथ की बनाई खावे क्योकि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वर्णस्थ स्त्री पुरुष विद्या पढाने, राज्य पालन और पशुपालन, खेती, व्यापार के काम म तत्पर रह। परन्तु उन्हे स्वच्छ साफ, साफ, सुथरा रहना चाहिय। स्वामी जी ने इस जातिभेद, सम्प्रदाय भेद, भाषा और प्रान्त भेद को भी दूर करने की अपील की है और लिखा है 'विदेशियो के आर्यावर्त म राज्य होने के कारण आपस का फूट मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना विद्या न पढना पढाना, बाल्यावस्था म अस्वयबर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्या भाषणादि कुलक्षण, वेद विद्या का अप्रचार आदि कुकर्म हैं, जब आपस म भाई भाई लडते है तभी तीसरा विदेशी आकर पच होकर बैठता है।"

भक्ष्य भक्ष्य दो प्रकार का होता है १—धर्म शास्त्र—जैसे "धर्म त्याशि द्विजातीना अमेध्य प्रभवाणिच" द्विज अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों को भी मलिन, विष्ठा मूत्रादि के ससर्ग से उत्पन्न शाक, फल, फूल मूलादि न खाना चाहिय। और—

वर्जयेन्मधुमास च। [मनु २ १७७] मास, मद्य, गाजा, अफीम आदि का सेवन नहीं करना चाहिय। मदकारी द्रव्य की परिभाषा करते हुये आयुर्वेद के ग्रन्थ शार्ङ्गधर सहिता के आधार पर बतलाया है 'बुद्धि लुम्पति यद् द्रव्य मदकारी तदुच्यते' अर्थात् जिससे बुद्धि का नाश हो वह मदकारी द्रव्य है।

सत्यार्थप्रकाश म गगादि कारणो से जूठ आदि भक्षण का भी निषेध किया है तथा स्नान बतलाया है कि भोजन के समय मनुष्य को शात पवित्र और प्रसन्न रहना चाहिये सुन्दर स्थान म बैठकर भोजन करना चाहिय। मास मदिरा आदि का सेवन उचित नहीं और आयुर्वेद शास्त्रोक्त भोजन करना चाहिय। अपने स्वास्थ्य और जलवायु के अनुकूल भोजन करना चाहिय। इस प्रकार दशम समुल्लास म व्यावहारिक बातो पर प्रकाश डालते हुए स्वामी जी ने राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तियो का उन्नत होना आवश्यक माना है। और व्यक्तियो की उन्नति भोजन पर निर्भर है अत सूत्र रूप में इस विषय पर भी प्रकाश डाला है।

हवन यज्ञ और नेहरू जी

(पृष्ठ ८ का शेष)

ध्यान जाने से गऊ माता का विषय ही मेरे मनन की वस्तु बन गई और अन्त को मैं इस निश्चय पर पहुँचा कि जब तक देश म गोधन की वृद्धि नहीं होती न तो क्षय व अन्य रोग जा सकते हैं, न देश का धन बढ़ सकता है, न कोई बौद्धिक उन्नति हो सकती है। इस विषय को पूर्णरूप से समझाने के लिए मैं एक लेखमाला आर्यमित्र मे 'गऊ और उसकी रक्षा' विषय पर प्रकाशित कराना चाहता हू जिसका कुछ अश यज्ञ विषयक भी होगा। जो सज्जन उसे पढना चाहे वह आगामी सप्ताह से 'आर्यमित्र' के ग्राहक बन कर अथवा जिस प्रकार उसके पढने का प्रबन्ध कर सके, करें। अन्यथा उन ही बातो पर फिर मुझसे लेख लिखने का आग्रह करेंगे तो उस का पालन कठिन हो जायगा। इस लेखमाला म गऊ रक्षा का सुगम व तुरन्त कर सकने योग्य उपाय भी बताया जायगा।

वह भूखा था : इन्सान था

वह मिला था मुझे
हैवानियत की गली घूमता था।
वह आया और बोला—
"मैं भूखा हूं बाबू
कुछ खाने को दो।"
हट्टा कट्टा नौजवान था।
मैंने पूंछा—
"काम करोगे ?
या केवल आराम करोगे।"
फौरन बोला—
"बाबू जी मैं काम करूंगा
पेट भरूंगा।"
\+　　+　　+
उसकी आंखें चमक उठीं,
ओठों पर मुस्कान दौड़ गई।
शायद—
उसका कोई स्वप्न प्रत्यक्ष हुआ जाता।
बोला बेसब्री से—
"बाबूजी, काम दिलाओगे !"
मैं बोला—"हाँ"
"सच !"
वह झूम उठा।
\+　　+　　+
एक दिन वह फिर मिला मुझे।
वह आया—
झुककर मेरे पाँव खड़ा हो गया।
बोला—'मुझे आपने जीवन दान दिया'
उस जिन्दी मौत से
पशु से भी बदतर जिन्दगी से बचा लिया।"
कैसा मूरख था वह।
लेकिन मैंभी दिक् था—
उसके अन्दर के परिवर्तन पर,'
वह इन्सान बन चुका था।
उसके कपड़ों पर—
कल–पुर्जों के काले निशान थे,
उसकी बांहों में कम्पन था।
मैंने पूंछा—"क्या करते हो ?"
"करता क्या हूं, बाबूजी दिन पूरे करता हूं।"
वह शायद साहस खोता था।
उसकी आंखें भर आई।
मैं चुप था
पूंछा, तो बोला—
"मील बन्द हो गया,
मैं अब बेकार हो गया,
बेकारी में काम नहीं मिलता।"
मुझे उससे घृणा हो गई,
मैंने फटकारा -
"तुम इन्सान हो,
हो चार हाथ पांव वाले;
बुद्धि भी रखते हो,
फिर भी साहस खोते हो।
ढूंढो देखो. धैर्य न खोओ
काम मिलेगा।
काम करोगे उदर भरेगा,
अगर नहीं तो—
दर दर की ठोकर खाओगे।"
वह चीख उठा—
"नहीं ! नहीं !
मैं भीख नहीं मांगूंगा, मर जाऊंगा,
(शेष कालम ४ पर)

तीर और समीर

उन अपने प्रिय के हाथों से छूटा हुआ तीर हूं मैं-
जो निर्धारित लक्ष्य उसी के पाने को अधीर हूं मैं।
उनके उस अकाट्य गुण से ही देख सका मैं अपना ध्येय
एक उसी का पाना ही है इस सारे जीवन का श्रेय।
लक्ष्य-प्राप्ति कर सका तीर से तो दौड़े प्रिय आयेंगे-
तुम तो हो प्रथम ही तीर हम भी अब दूर न जायेंगे,
बार बार कह कर के मुझको बार बार अपनायेंगे-
ललक भरे मेरे जीवन के स्वप्न सत्यता पायेंगे।
और कहीं यदि लक्ष्य भ्रष्ट हो गया तो न फिर आऊंगा-
लज्जा से मिट्टी में गड़ जाऊंगा, मुंह न दिखाऊंगा।
इतना कहा तीर ने तो सन सन स्वर में समीर बोला -
घूमा फिरा बहुत मैं पर तुम सा न मिला कोई भोला -
मैं भी एकबार ही में क्या यों अम्बर तक उड़ आया--
कितनी बार उठा बैठा, जाने कितना चक्कर खाया ?
अब भी देख रहे हो चलते-चलते पथ जाता हूं भूल--
क्रोधभरा तब मैं अपने पर ही उछालने लगता धूल।
आज नहीं तो कल अवश्य ही लक्ष्य सामने नाचेगा--
कब तक यह दुर्दैव हमारे अडिग धैर्य को जाँचेगा ?
लक्ष्य भ्रष्टता ही तो बतलाती है लक्ष्य प्राप्ति की राह--
है कितनी न्यून्यता कहाँ पर ? कितनी कहाँ तीव्र हो चाह ?
जितनी बार निशाना चूको- साहस करो! न खेद करो !
सावधान रह कर के अपना लक्ष्य अन्त में भेद करो ॥
—श्री कुंवर हरिश्चन्द्र देव 'चातक' कविरत्न, जाफराबाद (फर्रुखाबाद)

ऐश्वर्य के लिए प्रार्थना

श्री हमें श्रेयस्करी दो इन्द्र हे वैभव।
दीजिए हमको दयालु सुलक्षण लक्ष्मी धनी ॥
दो हमें वाणिज्य की समृद्धि सुख की प्रेरणा।
हे धनेश प्रजापति निर्विघ्न जीवन पथ बना ॥
हों सुरक्षित अर्थअर्जन मार्ग हों सुख शांतिमय।
दुग्धघृत धन धान्य से परिपूर्ण हो जीवन अभय ॥
लाभ हमको सर्वदा हो धर्ममय व्यवहार में।
सत्य ऋत हो सरलता हो प्रेम हो व्यवहार में ॥
हों सुलभ जलयान जल नभ भूमि पथ गामी हमें।
वृषभ गज हम वाहनों के दो बना स्वामी हमें ॥
दोग्ध्री गौ हे प्रजापति प्रचुर पशु धन दीजिए।
स्वस्थ सुन्दर तेज बलशाली प्रजा में कीजिए।
धर्म एवं अर्थ द्वारा पूर्ण हो सब कामना।
सिद्धियां हो प्राप्त सब हो स्वस्थ तन उन्नत मना ॥
हिरण्य गर्भ कुबेर भगवन् आपसे है प्रार्थना
स्याम् पतयो रयाणाम् ऋचा वचन सार्थक बना ॥
—रामनिवास एम० ए०

सैनिकों से

सत्याग्रह के वीर सैनिकों।
विजय मिली विश्राम न समझो ॥
प्रगति-पन्थ पर इन चरणों को।
यश का पूर्ण विराम न समझो ॥१॥
रवि किरणों का अरुण जाल से स्वर्णिम कुंकुम बिखरा देता।
नील निशा के तम बादल को चीर चीर कर छितरा देता ॥
होती रहती शाम धरा की।
रवि की अन्तिम शाम न समझो ॥२॥
लता-अङ्क में कुसुम खिले जो शनैः शनैः मुरझाते जाते।
किन्तु सुरभि के मेरे खजाने हंस हंस स्वयं लुटाते जाते ॥
जीवन की परिभाषा यह है।
इसको नश्वर या मन समझो ॥३॥
अभी शेष है लक्ष्य बेधना और अमृतमय घट का पाना।
असुरों का संहार शेष है अखिल विश्व को आर्य बनाना ॥
मथो साधना के सागर को।
युग जागृति को काम न समझो ॥४॥
—"प्रणव" शास्त्री फीरोजाबाद

गद्य-गीत

आर्य !
नयन उघारो
देखो:—
हिन्दी, क्या कहती है ?
तूफान
उठ रहा
अभिमानी गरज रहे—
हिन्दी नहीं रहेगी !
सोच रहा हूं
क्या सचमुच
हिन्दी नहीं रहेगी ?
\+　　+
यदि—
ऐसा है।
तो क्या ?
अब भी आर्य हृदय
नयनों पर ही पट्टी
बांधे है !
भय से छिप कर
घर में बैठे है
यदि !
ऐसा है.
तो !
चुल्लू भर
पानी में डूब मरो !
नहीं।
तो !
हिन्दी का
लेकर नारा
कुटिल पाथों पर
दौड़ चलो
\+
साम्राज्य रहेगा,
हिन्दी का।
व्यापार न होगा,
हिन्दी का।
बढ़े चलो।
रुकते क्यों ?
पीछे मत देखो !
बीत गया,
रहा में—
आगे कदम बढ़ाओ !
हिन्दी की
रक्षा करना
धैर्य लगन से
है मानव कर्तव्य तुम्हारा !
—राममिलन द्विवेदी 'उन्मत्त' बहराइच

[कालम एक का शेष]

काम करूंगा-पेट भरूंगा;
पशु नहीं, इन्सान हूं मैं !"
भीगी आखें होते ही—
वह चला गया।
\+　　+　　+
वह नहीं मिला उस दिन से मुझको,
पर मुझे विश्वास है—
वह अपनी बलिष्ठ भुजाओं—
के आधार पर
अपना जीवन सुखी बनायेगा,
बेकारी की संख्या में कुछ कमी करेगा,
पशुता को समझेगा,
इन्सानियत को सोचेगा-समझेगा-
जिन्दा रक्खेगा।
—रजनीश ६४५, अशोक मार्ग हाथरस



मूर्तिपूजा का जन्म विकाश और खंडन

(अनिरुद्धसेन श्रीवास्तव बी० ए० (द्वितीय वर्ष) अध्यक्ष, आर्य छात्र सघ
हसईपुर (गढा) फतेहपुर)

★

स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश में मूर्ति पूजा के सम्बन्ध में जैनमत के खंडन मे प्रश्न का उत्तर देते हुए बतलाते हैं।

प्रश्न—मूर्तिपूजा कहाँ से चली ?

उत्तर—जैनियों से।

प्रश्न—जैनियों ने कहाँ से चलाई?

उत्तर—अपनी मूर्खता से।

स्वामी जी के ये शब्द अगर इतिहास देखा जाय, तो पूर्णत सत्य उतरते हैं। स्वामी जी के शब्दों के साथ ही साथ अगर यह भी जोड़ दिया जाय कि मूर्ति पूजा का जन्म अज्ञानान्धकार में कुबुद्धियों के विकृत मस्तिष्क से हुआ तो अत्युक्ति न होगी। मूर्तिपूजा कुछ ढोंगियो, स्वार्थी पड़े पुजारियों के भारी पेटो को भरने के हेतु चलाई गई। इसमे सदेह नहीं है कि मूर्ति पूजा की आड़ मे ये पडे पुजारी धर्म के ठेकेदार बनकर भोली जनता को ही नहीं, बल्कि आज के युग के कुछ पढ़े लिखे लोगो को भी ठग रहे है। मूर्तिपूजा ऐसे ही पाखंडी पूर्वजो की कुबुद्धि की उपज है। इसमे केवल स्वार्थ सिद्धि के अतिरिक्त और कोई भी तथ्य नहीं है।

मूर्ति पूजा के जन्म के विषय मे कुछ लेख लिखा प्रस्तुत करने के लिये यह आवश्यक है कि हम थोडा अपने इतिहास के पन्ने उलटें। जिस समय हिन्दू धर्म मे कुछ बुराई आने लगी यज्ञ का अर्थ लोग गलत समझने लगे, झूठ, बालना अधिक होने लगा लोग ब्रह्मचर्य का पालन न करने लगे उस समय जैन, बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महावीर और गौतम बुद्ध समाज सुधारक के रूप मे हमारे सामने आते हैं। इन्होने एक समाज सुधारक के रूप मे कार्य किया। इन्होंने कोई धर्म नहीं चलाया, बल्कि समाज मे फैली हुई बुराइयों की ओर इंगित किया। इन्होंने सत्य बोलने ब्रह्मचर्य का पालन करने की शिक्षा दी। इन्होंने कभी भी इस बात को नहीं कहा कि मूर्ति की पूजा करो। इन्होने स्वय तपस्या करके ज्ञान प्राप्त किया। अत इससे साफ सिद्ध होता है कि ये मूर्ति पूजा के लिये नहीं रहते हैं। इन्होंने केवल सादा जीवन व्यतीत करने की शिक्षा दी। इनके मरने के बाद ही इनके मत वालो ने मूर्ति पूजा शुरू कर दी। इनके अनुयायियो ने (अनुयायी न कह कर स्वार्थी कहना चाहिये क्योंकि वे सादा जीवन नहीं व्यतीत करते थे) जगह-जगह मठ स्थापित किये जहाँ पर अपार धन था। वहाँ पर स्त्रियाँ भी रहती थी। इनका जीवन विलासी मय था। तपस्या और सादा जीवन की कौन कहे। इनका कार्य तो समाज की बुराइयां दूर करना था परन्तु बुराई दूर करने को कौन कहे स्वय बुराई के जन्म दाता बनने लगे। मठों का जीवन व्यभिचार से पूर्ण था। वे अपने प्रवर्तकों की मूर्ति स्थापित करने लगे। बुद्ध और महावीर की मूर्ति पाँचवीं शदी मे ही बनी। ये लोगों को यह बता कर कि इनमे अलख शक्ति है ठगने लगे। यहाँ के पुजारी इन धर्म सुधारकों के नाम पर ठगने लगे। उनका भगवान का अवतार मानकर उनकी पूजा होने लगी। अगर किसी को कुछ कष्ट होता तो ये मूर्तियों को भगवान बताकर मठो में बुलाते थे। उनसे मूर्तियो में धन चढ़ा कर पूजा करने को कहते थे। पहिले तो जो खुशी खुशी जो कुछ देता था उसे ले लेते थे परन्तु बाद मे अधिक धन देने के लिये बाध्य करते थे। लोग अन्धविश्वास मे पड़कर मूर्तियों को शक्तिशाली, वर देने वाली समझ बैठते थे। इस तरह पड़े पुजारी अपने भारी पेट को भरने के लिये सुधारको देवो के नाम पर लूटने लगे और अन्धविश्वास फैलाने लगे।

यह तो हुआ मूर्तिपूजा का जन्म।

अब इसका विकाश शुरू हुआ। अगर कोई स्त्री पुरुष देश, समाज के लिये शहीद हो जाता था तो उसके कार्यों के लिये श्रद्धा प्रकट ही करना चाहिये। उस समय कार्यों के संग्रह का साधन सर्व साधारण के लिये कुछ न था। अत पत्थर पर उनकी मूर्ति स्थापित कर दी जाती थी क्योंकि उस समय पत्थर की कला बढ रही थी। मूर्ति तो इसलिये स्थापित की जाती थी कि यहा पर वार्षिक उत्सव हो लोग उनके कार्यों का अनुशरण करें परन्तु कार्यों का अनुशरण कहाँ रहा। पुजारी उनमे अलख शक्ति बता कर अपना घर भरने लगे। जैसे जैसे उनका इतिहास लुप्त होता गया, शिक्षा की कमी होती गयी लोग अपने त्यागी पूर्वजों के कामो को भूल गये और उन मूर्तियो को ही त्याग करने वाले समझ कर उनको शक्तिवान मानने लगे। उन आँख के अन्धे गांठ के पूरे की समझ मे यह न आया कि वे जब शक्तिशाली थे तब वे अब कहाँ हैं। वे जीवित अवस्था में शक्तिशाली थे। मरने के बाद उनके शरीर मे क्या रह गया। फिर इस मूर्ति से उनका क्या सम्बन्ध ? इसको कारीगर ने बनाया है तब तो मूर्तियो को बनाने वाला कारीगर ही अधिक शक्तिशाली न होना चाहिये। इससे साफ सिद्ध होता है कि मूर्ति पूजा को अज्ञानान्धकार के वातावरण मे पनपने बढने का अवसर मिला। पुजारी लोगो से उनके चमत्कार के विषय में झूठी अफवाह उड़ा देते थे जिससे लोग मूर्तियो मे आकर कुछ चढावें। अब तो मूर्तियो के नाम पर खूब लूट मची। पन्डे पुजारी समाज के नेता बनने लगे। ढोंगी पाखंडी अपना स्वार्थ सिद्ध करने लगे जिस प्रकार अन्धकार मे चोर उचक्कों को चोरी आदि करने का मौका मिलता है, उल्लू तथा दूसरे ऐसे ही पशु पक्षियो की बन आती है उसी तरह अज्ञान रूपी अन्धकार के फैलते ही इन पडे, पुजारी, ढोंगियो का तथा बुराइयो को स्वतंत्र रूप से फैलने का अवसर मिला और देश बरबाद होता गया।

भारत मे यवनो के आगमन के समय मूर्तिपूजा और अन्धविश्वास अपने यौवनावस्था मे थे। जिस समय मुहम्मद गजनवी ने सोमनाथ के मन्दिर को लूटा तो मूर्ति की शक्ति की पोल खुल गयी। मूर्ति पूजको के ही कारण गजनवी सफल हुआ। पुजारियो ने वीर राजाओं को युद्ध करने से रोक दिया और कहा कि देवी जी लड लेगी। पर देवी जी ने एक मक्खी भी न मारी। इस पर भी आँख के अन्धों की समझ मे यह न आया कि जो मूर्ति अपनी दुर्दशा करने वाले को नहीं मार सकती वह दूसरो के दुख क्या दूर करेगी। मूर्ख जनता पडे पुजारियों के बहकावे मे आती रही।

इसके बाद कबीर आदि सुधारको ने मूर्ति पूजा का खूब खंडन किया। कबीर ने निर्भीक होकर हिन्दुओ को फटकारा। परन्तु, दुख है कि स्वार्थी पुजारियो के कारण कुछ न हो पाया। इसके बाद लगभग चार सौ वर्षों तक कोई भी व्यक्ति ऐसा न था जो इन ढोंगियों को ललकारे। जैनी तो पीछे ही रह गये ये पुराणी मूर्ति पूजा में और आगे बढ गये। 'गुरु गुड ही रह गये, चेला शक्कर हो गये'। इन पुराणियो ने साहित्य को कितना चौपट किया वह किसी से छिपा नहीं। आखिरकार एक सूर्य निकल ही पड़ा जिसने अपने प्रकाश से अन्धकार को दूर हटाया। एकबार के देखे ही इसने मूर्तिपूजा का विरोध किया। वे थे स्वामी दयानन्द सरस्वती। इस तेज पुज ने अज्ञानान्धकार को दूर हटा कर ज्ञान का प्रकाश दिया सत्य बात की घोषणा के लिये सत्यार्थ प्रकाश रचा। इस वीर ने गरज कर मूर्ति पूजा का विरोध किया उन्होंने इसकी पोल खोलकर लोगों को जगाया। लोग जगे। सूर्य के प्रकाश से जगना ही पडता है। इस कोढ को उखाड़ फेंकने के लिये आर्य वीर डट कर सामने आये, और उखाड़ फेंका भी। कुछ विष धारियो ने उन्हें अपने कार्य से विलग करने के लिये बाध्य किया परन्तु क्या आर्य वीर किसी के सामने झुके हैं। शिवरात्रि के दिन आर्यवीर ने प्रतिज्ञा की थी कि इसका नाश करूंगा। उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। आज भी आर्य उनके छोड़े हुये कार्य को कर रहे है। परन्तु हम वीर कुछ मन्द गति से चल रहे है अथवा उनके कार्य को अधूरा ही छोड रहे हैं। आर्य वीरों, उठो, आज भी हम देवी देवो के नाम पर लूटे जा रहे हैं। क्या हम आर्य वीर इसी तरह मौन धारण किये रहेंगे। हम आर्यवीर किसके सामने झुके हैं। हमने सिंध मे सत्याग्रह किया, हैदराबाद गये और अभी अभी पंजाब पर विजय पाई है। जो आर्य समाज को निष्क्रिय समझते थे, आज उनकी आँखे खुल गई है कि आर्यवीर अभी जग रहे है। आर्यवीरो, उठो। अभी हमारा काम पूरा नहीं हुआ है आज भी धर्म के दलाल ढोंगी पन्डे पुजारी धर्म के नाम पर भोली भाली जनता को लूट रहे हैं। आज हम तीर्थ स्थानो मे लूटे जा रहे हैं। क्या हम आर्य वीरो का यही कर्तव्य है कि उसे देखें और सहन करें। आर्य वीरों का रास्ता सरल नहीं है इसी मे पग पग पर विघ्न पड़े है। उठो, आज न थ कह न न वाने स्थानो पर पडे और उनके गुट अत्याचार, व्यभिचार कर रहे हैं। क्या हम आर्य वीर मौन ही रहेंगे ?

वैश्य महिला की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन की व्यापक तैयारियाँ

चार लाख रुपये एकत्रित करने की योजना

२३ फरवरी ५८ को सायंकाल ४ बजे आर्य समाज दीवान हाल में दिल्ली के १०० आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों की एक विशेष बैठक श्री पं० नरेन्द्र जी की अध्यक्षता म दिल्ली मे आगामी १६, २० और २१ अप्रैल को होने वाले नवम सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन के लिए स्वागत समिति के गठन हेतु बुलाई गई जिसमें निम्न प्रकार चुनाव हुआ :—

स्वागताध्यक्ष—श्री महाशय कृष्ण जी बी० ए०

उप ,, ,, १— प० नरेन्द्र जी

२—श्री प्रो० रामसिंह जी एम० ए०

३—श्री आचार्य भगवान दास जी एम० ए०

४—श्री प्रिन्सिपल ईश्वर दास जी एम० ए०

स्वागत मन्त्री—श्री लाला रामगोपाल जी शाल वाले। और ५ सहायक मन्त्री तथा एक कोषाध्यक्ष का भी निर्वाचन हुआ।

यह भी निश्चय किया गया कि महा सम्मेलन के लिए ४ लाख रुपये एकत्रित किये जायें। यह महा सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य मे आयोजित किया जा रहा है।

पूर्वी उत्तर प्रदेशीय आर्यवीर दल

मेवालाल आर्य मन्त्री, उमाकान्त शिवनाथप्रसाद आर्य उपमन्त्री, कृष्णदत्त जी, अमरनाथ वर्मा तथा कृष्ण नारायणसिंह जी दलपति, छोटेलाल आर्य, रामचरण आर्य, ठाकुर हरदेवसिंह, कन्हैयालाल आर्य, बदलूराम आर्य, मण्डलपति. श्यामलाल वर्मा उप मण्डलपति, बेचनरामआर्य कोषाध्यक्ष, सत्यदेव जी शास्त्री बौद्धिक नायक रामगोपाल आर्य मुख्य शिक्षक तथा छांगुर जी उप शिक्षक। कार्य समिति के सदस्य-श्री होतीलाल आर्य (गोरखपुर), नन्दलाल जी (गाजीपुर) हरिदास वर्मा (दिलदार नगर), राम अवतार जी (जौनपुर), रामानन्द जी (सहतवार), विशेश्वरनाथ जी (शाह गंज), कैलाशनाथ आर्य (बलिया) नरसिंहकुमार आर्य (देवगांव), सूरज प्रसाद आर्य, नानकचन्द आर्य तथा गंगाप्रसाद आर्य (बनारस), ग्रीष्म शिविर लगाने के सम्बन्ध मे निश्चय हुआ कि १६ मई से २५ मई तक बनारस मे शिविर लगाया जाये।

आ० स० ऊँचाडीह बस्ती

इस समाज का १८ वां वार्षिकोत्सव १६, १७, १८, फरवरी को हुआ। श्री राम लखण शास्त्री, श्री शिवनारायण जी वेदपाठी, श्री अवध बिहारी, श्री लालबिहारी शर्मा आदि के भजन व भाषण हुए। सीताराम आर्य प्रधान तथा श्री रामदास आर्य मन्त्री व कोषाध्यक्ष चुने गये।

आ० स० बहजोई

प्रधान—श्री दरबारी लाल इन्जिनियर

मन्त्री—श्री रामनारायण आर्य

कोषा०—श्री द्वारिकाधीश आर्य

आ० स० सहपऊ, मथुरा

प्रधान—श्री वैद्य राजबहादुर आर्य

मन्त्री—श्री बद्रीप्रसाद दिव्य

कोषा०—श्री अम्बिका प्रसाद आर्य

समाजें सावधान रहें

पिछले दिनों आर्यसमाज शामली में मौलवी मुहम्मद इब्राहीम नामक एक मुसलमान शुद्ध हुआ था जिसका नाम धर्मचन्द रखा गया था। अब पता चला है कि इससे कुछ पूर्व वही व्यक्ति आ० स० हापुड़ मे शुद्ध हो चुका था। यह भी बताया जाता है कि वह वास्तव में धोखेबाज है और पाकिस्तानी जासूस मालूम पड़ता है। अतः सर्व साधारण को तथा विशेष कर आर्य समाज को उससे सावधान रहना चाहिए।

आ० स० मिलक

प्रधान—श्री पुरुषोत्तम शरण

मन्त्री—श्री नत्था राम आर्य

कोषा०—श्री राधावल्लभ शरण

शुभ विवाह

नारसन गुरुकुल के संस्थापक श्री शरसिंह वर्मा की पुत्री कुमारी सन्तोष वर्मा का शुभ विवाह श्री रामपालसिंह बी० ए० एल० एल० बी० पचेड़ा कलां निवासी के साथ वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ।

दहेज रहित विवाह

आचार्य प्रेम शरण के पुत्र डा० दिनेशचन्द्र एम०ए० का विवाह संस्कार आगरा में सुश्री चन्द्र प्रभा रानी के साथ वैदिक रीत्यानुसार दहेज रहित सम्पन्न हुआ।

कच्छ में वेद प्रचार

गांधी धाम मे दो सप्ताह यज्ञ और प्रचार के बाद गांव लुडवा में श्री विजयसिंह प्रचारक बम्बई सभा ने वैदिक धर्म का प्रचार किया।

आ० स० फतहगढ़

आ० स० फतहगढ़ मे स्त्रियों के बीच मे माता जगभाग्री देवी ने दो घन्टे तक सदाचार और ज्ञान की बातों का प्रचार किया।

गुरुकुल वृन्दावन

वृन्दावन के कुलवासियों की एक सभा में मौलाना आजाद के निधन पर शोक प्रकट किया गया।

आ० स० पिपराइच

आ० स० पिपराइच का २५ वां वार्षिकोत्सव १३, १४, १५, मार्च को होगा। यहां आर्य वीर दल का कार्य भी प्रारम्भ हो गया है।

आ० स० औरङ्गाबाद

आ० स० औरङ्गाबाद का ग्यारहवां वार्षिकोत्सव १५, १६, १७ मार्च को होगा। इस समाज के चुनाव में श्री रादूसिंह प्रधान, श्री बलवन्तसिंह मंत्री और श्री मुकन्दसिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

पन्त पर विश्वासघात का आरोप

पुनः सत्याग्रह आरम्भ करने की तैयारी

आर्य समाजी नेताओं द्वारा गृह मंत्री पन्त जी पर यह आरोप लगाया जा रहा है कि उन्होंने हिन्दी आन्दोलन के नेता श्री घनश्यामसिंह गुप्त को पूरा-पूरा आश्वासन देकर आन्दोलन को स्थगित तो करा दिया पर अभी तक समिति की बातें मानने की घोषणा नहीं की। इससे आर्य जगत मे बहुत रोष और क्षोभ फैल रहा है। सार्वदेशिक समिति के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री प० नरेन्द्र जी का कहना है कि देश भर से आर्य नर नारियो के सैकड़ो पत्र, टेलीफून और तार समिति को प्राप्त हो चुके है कि पजाब मे सात मास तक चलने वाले सत्याग्रह को पुन प्रारम्भ किया जाय। आर्य समाज के नेता इस दिशा मे विचार कर रहे हैं। कहा जाता है कि यदि आर्य समाज ने पुन. सत्याग्रह प्रारम्भ किया तो सरकार की इज्जत मिट्टी मे मिल जायेगी।

यदि पुनः सत्याग्रह हुआ तो अकेले हरियाना ३० हजार सत्याग्रही देगा—शेरसिंह

पंजाब के भूतपूर्व मन्त्री व हरियाना के नेता श्री शेरसिंह ने अभी अपने एक वक्तव्य मे कहा है कि यदि हिन्दी रक्षा समिति की मांगो को मनवाने के लिए आर्य समाज को पुन. सत्याग्रह करने की आवश्यकता पड़ी तो अकेले हरियाना प्रान्त इस सत्याग्रह के लिए ३० हजार सत्याग्रही देगा। आपने सिंह गर्जना करते हुए कहा कि हरियाना अब जाग उठा है और वह किसी भी स्थिति मे अन्याय को सहने के लिए तैयार नही है।

आ० स० शशिपुर, मैनपुर

प्रधान—श्री रामचन्द्र वर्मा
मन्त्री—श्री रामाकान्त त्रिवेदी
कोषा०—मदनलाल जी

आर्य समाज स्थापना दिवस (२१ मार्च) का कार्यक्रम

१—प्रात. नगर में प्रभातफेरी
२—समाज मन्दिर मे सम्मिलित यज्ञ
३ दिन मे सदस्य बनाने का कार्यक्रम
४—अपराह्न बच्चों के खेलकूद, प्रतियोगिताएं और पुरस्कार वितरण
५—साय सार्वजनिक सभा मे आर्य समाज की उपयोगिता पर भाषण
६—प्रसाद वितरण और शान्ति पाठ

— शिवदयालु सभा मंत्री

लखनऊ में होली मिलन सम्मेलन

लखनऊ जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा की ओर से ९ मार्च को सभा भवन मे एक वृहद होली मिलन सम्मेलन का आयोजन श्री जगन्नाथ प्रसाद जी की अध्यक्षता मे हुआ जिसम नगर के सैकड़ो आर्य नर नारियों ने भाग लिया। श्री वाचस्पति शास्त्री का इस अवसर पर एक विशेष भाषण हुआ। बच्चों के खेल कूद, अन्यान्य प्रतियोगिताएं व पुरस्कार वितरण भी हुआ।

आ० स० बादशाहनगर लखनऊ

प्रधान—श्री रामाशंकर लाल
मन्त्री व पुरोहित—श्री रामेश्वर सहाय
कोषा०—श्री वेदप्रकाश गुलाठी
प्रांतीय प्रतिनिधि—श्री रामेश्वर सहाय
श्री रिसालसिंह

आ०स० सिंगारनगर लखनऊ

आ० स० सिंगार नगर लखनऊ का वार्षिकोत्सव ११, १२, १३ अप्रैल को होगा। स्वामी अमृतानन्द जी महाराज जहां कहीं भी हों उन्हें इन तिथियो मे लखनऊ आ जाना चाहिए, इससे पूर्व भी यदि वे पधारें तो श्री मूलचन्द जी सिंगारनगर के यहा ठहरे। समाज के सदस्य आपसे लाभ उठायेंगे। — वेदप्रकाश

नामकरण संस्कार

आरा आर्य समाज के उत्साही कार्यकर्ता श्री राम गुलाम जी के पुत्र का नामकरण संस्कार ७ मार्च को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आरा आर्य समाज के अनेकों सदस्यो को आपने भोजन भी कराया।

नवम सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आगामी १६ ० और ०१ अप्रैल को भारत की राजधानी दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन का नवम् अधिवेशन करने का निश्चय किया है जो सभा के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का अंग होगा।

समारोह और ठोस कार्य दोनों ही दृष्टियों से इस सम्मेलन को अधिकाधिक सफल बनाने के लिए प्रयत्न आरम्भ कर दिया गया है। सम्मेलन के लिए तैयारियाँ प्रारम्भ हो गई हैं। सम्मेलन में लगभग ५ लाख नर नारियों के सम्मिलित होने का अनुमान है। प्रधान का विराट जलूस इस सम्मेलन का अत्यन्त आकर्षक विशेषता होगा। आर्य नर नारियों को अभी से सम्मेलन में अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित होने की तैयारियाँ प्रारम्भ कर देनी चाहिए और दिल्ली में मथुरा शताब्दी का दृश्य पुनः उपस्थित हो जाय ऐसा प्रयत्न करना चाहिए।

आर्य महासम्मेलन में आर्य समाजों के लिए भावी कार्यक्रम की रूपरेखा भी प्रस्तुत होनी है जिससे आर्य समाज देश के सम्मुख उपस्थित अनेक सांस्कृतिक तथा धार्मिक जटिल समस्याओं की दिशा में सही मार्ग प्रदर्शन करके अपने कर्तव्य का समुचित रीति से पालन कर सकें।

इस अवसर पर विदेश तथा दक्षिण प्रचार की एक महत्वपूर्ण योजना बनाकर उसे आर्य समाज के भावी कार्यक्रम का आवश्यक अङ्ग बनाना है। विदेश प्रचार का तात्पर्य प्रवासी भारतीयों में प्रचार के अतिरिक्त विदेशी देशों के मूल निवासियों में प्रचार की भी व्यवस्था की जायगी।

इस अवसर पर विविध सम्मेलनों के करने का भी विचार है पर अन्य भी अनेक योजनाएं सार्वदेशिक सभा के समक्ष हैं। आर्य जनता अपने गाढ़ सुझाव भेजना चाहें तो वह भेजें उन पर सहर्ष विचार किया जायगा।

—नरदेव उप स्वागताध्यक्ष

आवश्यकता है

आर्य परिवार के एक २७ वर्षीय सुन्दर एवं स्वस्थ युवक मार्डनिंग इंजीनियर के लिए एक सुन्दर सुशील एवं शिक्षित कन्या की आवश्यकता है। वर इस समय सरकारी मोड़न में मैनेजर के पद पर नियुक्त है और लगभग ६००) मासिक की आय है। जाति पाँत का कोई बन्धन नहीं है।

पता—विग्न द्वारा आर्यमित्र कार्यालय ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

मेरठ में होली पर्व पर सभा मन्त्री पं० शिवदयालु जी की गर्जना

दिनांक ५ मार्च को आर्य समाज मन्दिर सदर मेरठ में बड़े उत्साह के साथ होली पर्व मनाया गया। समाज का विशाल हॉल जनता से खचाखच भरा हुआ था। पं० शिवदयालु जी की अध्यक्षता में नवसंवत्सरारम्भ यज्ञ गम्भीर वातावरण में सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् नगर के प्रसिद्ध कवि एवं गायकों ने कविता पाठ किया एवं सुन्दर गायन प्रस्तुत किये।

अन्त में सभा मन्त्री श्री पण्डित शिवदयालु जी ने भाषण देते हुए कहा कि होली पर्व जाति की धमनियों में नवीन रक्त का संचार करता है और क्रान्ति पथ पर प्रगति करने का सन्देश देता है। आर्य जाति ने अपने महान् भूतकाल में अनगिनत होलियां खेली हैं। शक और हूणों के रक्त से होलियां खेली हैं मुगलों एवं डायर वंशियों के रक्त से होलियां खेलीं। भारत की स्वतन्त्रता हित अनेक बार विदेशियों द्वारा जनता अपने ही रक्त की गंगा में अवगाहन किया है।

भारत का कण कण भूमि आर्य वीरों और वीरांगणाओं के रक्त से रंजित है। आर्य समाज अपने जन्म काल से खूनी होली खेलता आया है धर्म की रक्षा एवं प्रचार हित आर्य समाज ने अनगिनत बलिदान दिये हैं। धर्म के जल सम्मुख बलिदानों से ही बढ़ा, फूला और फला है। अभी ७ मास तक निरन्तर पंजाब की वीर भूमि में राष्ट्र भाषा हिन्दी की रक्षा हेतु आर्य समाज ने भारी बलिदान किया है और अभी भी इस निमित्त आगे बलिदान करने के लिए तैयार है। आगे भी आर्यसमाज को निरन्तर तप त्याग और बलिदान के लिए तैयार रहना चाहिए। इस होली के पर्व पर हम एक बार पुनः बलिदानों के लिए जान देने का आवाहन करते हैं और इसके लिए हम तैयार रहेंगे।

बरेली में शहीद सुमेर सिंह बलिदान नाटक

६ मार्च को आर्य समाज अनाथालय बरेली के कलामन्दिर में श्री बा० चन्द्रनारायण सक्सेना की अध्यक्षता में शहीद सुमेरसिंह बलिदान का सुन्दर प्रभावशाली अभिनय किया गया। भारत के सुप्रसिद्ध नाटककार कविवर पं० राधेश्याम शर्मा कथा वाचक ने इस नाटक का उद्घाटन किया।

रंगमंच पर उपस्थित होकर शहीद सुमेरसिंह के भाई अमार सिंह जी ने स्वर्गीय सुमेरसिंह जी के फिरोजपुर जेल में हुए बलिदान और उनके ग्राम में पुलिस द्वारा शव की दुर्दशा करने सम्बन्धी पैशाचिक कृत्य का अपने शब्दों में चित्रण किया।

नाटक में काँग्रेस सरकार की साम्प्रदायिक घृणित टेक नीति की खरी समालोचना की गई है। सिक्ख गुरुओं के हिन्दी प्रेम का सुन्दर ढंग से दर्शाया गया है और स्थल स्थल पर हिन्दू सिक्खों में भ्रातृ भाव उत्पन्न करने पर विशेष बल दिया गया है नाटक बहुत प्रभावोत्पादक एवं रोमांचकारी है। हम श्री चन्द्रनारायण जी सक्सेना के इस परिश्रम की सराहना करते हैं। सक्सेना जी ने नाटक के अन्त में शहीद सुमेर सिंह के स्मारक के लिए धन की अपील भी जनता से की है आशा है एक अच्छी राशि बरेली से इस पुण्य कार्य के लिए उपलब्ध हो गी।

गुरुकुल हरयाना

गुरुकुल हरयाना का उत्सव २१ २२ २३ फरवरी को मनाया गया। श्री जगदेव सिद्धान्ती चौधरी सूरजमल श्री रघुवीरसिंह शास्त्री श्री शान्ति प्रकाश जी श्री रामस्वरूप जी श्री देवव्रत जी आदि के भाषण हुए। उत्सव पर इस वर्ष (१६ ०) रु एकत्रित हुए।

आर्य समाजें धोखेबाजी से सावधान रहें

श्री रामकृष्ण जी जो कि अपने को हिन्दी सत्याग्रही भी कहते हैं मु० परामट मकान नं० ६४ कानपुर ने गुरुकुल के धन संग्रहार्थ ३ रसीद बाहियां संख्या ४१ ४६ और ७६ जिसमें क्रम से १००१ से १०२५ १३७६ से १४ तथा १६५१ से १६७५ तक की रसीदें ले गये हैं। उक्त सज्जन ने मन्त्री आर्य समाज उन्नाव जि उन्नाव की सूचनानुसार रसीद से १०५ के अनुसार धन संग्रह किया है। किन्तु अभी तक गुरुकुल वृन्दावन के कोष विभाग को संग्रहीत धन नहीं भेजा है। उनके लिखाये हुये पते के अनुसार उन्हें कानपुर के पते से धन तथा रसीद भेजने को लिखा भी गया किन्तु वहां से हमारा पत्र वापस आ गया है। अतः ऐसी अवस्था में कोई भी सज्जन उन्हें तथा इन रसीदों पर धन न दें और जिन्होंने पहले दिया हो वह कृपया गुरुकुल को सूचित कर दें।

—नरदेव स्नातक एम०ए० मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन मथुरा

धधकता पंजाब

!! एकाङ्की नाटक !!

! प्रथम दृश्य !

(स्थान सितारा सिंह की बैठक)

सितारासिंह, करमारसिंह, महिपालसिंह, सतापसिंह, सतनामसिंह आदि सरदार बैठे हैं।

मि० सितारा०—गया, सब कुछ गया हमारे हाथ से लाहौर मुलतान, स्यालकोट, सरहदी सूबा गया हमारे धार्मिक तीर्थ-स्थान सब गये ? जानते है आप यह सब क्यों हुआ ?

सब सरदार —हमारी आपस की फूट से।

मि० सितारा०—नहीं नहीं इसमें फूट कारण नहीं। इसमें लामजहबी ख्यूरानमजहबी जनूनियों के आगे सिजदा किया। कांग्रेस हम निरपेक्षता का राग पढ़ाता रहा और यह यकीन दिलाती रही कि पाकिस्तान हरगिज नहीं बनेगा। पाकिस्तान हमारी लाशों पर हमारी हड्डियों पर बनेगा हमारे जिन्दा रहते रहते पाकिस्तान नहीं बन सकता। हम सब इन कांग्रेस वालों का भरोसा करते रहे और वह हो गया जिसका हम ख्वाब में भी यकीन न था। हमारी मां बहनों की इज्जत लूटी गई, हम बेइज्जत से निकाले गया, हम वो मकान वे मकान हो गये और वे मकान वाले मकान बन बैठे, हम इसका बदला लेना होगा।

सब सरदार —जरूर जरूर। हम इसका बदला लेना होगा पर बदला लें कैसे सरदार जी ?

मि० सितारा०—हम यहाँ एक सिक्खस्थान बनाना होगा।

सत् नाम०—यहां सिक्खस्थान बनाने से बदला पाकिस्तान से कैसे हो सकता है यहां तो सब अपने ही भाई हैं।

मि० सितारा० हैं सब अपने भाई हैं। अरे ! इस भाईचारे के चक्कर में पड़कर सिक्ख फिर गये याद हम हिन्दुओं से अपने को पहिले से अलग कहते तो यह आफत हम पर नाजिल न होती। हिन्दू मुस्लिम नफरत में हम हिन्दुओं से मुस्लिमों में और नफरत पैदा करते और अपने आपको हिंदुओं से अलग दरशाते।

सतनाम०—यह तो कायरता बुजदिली है। गुरुओं के आचरण के सर्वथा विरुद्ध है। क्या आपको याद नहीं कि गुरु तेगबहादुर ने काश्मीर के हिन्दुओं के खातिर अपना सिर दिया, दसवें बादशाह गुरुगोविन्द सिंह जी ने अपने बच्चों को जिन्दा दीवारों में चुनवाया। क्या हमें सिक्खी पर बट्टा लगाने को आप कहते हैं।

सितारा०—(बात बदलकर) अरे ! आप ठीक कहते है सरदार जी। पर आप मेरी बात समझे नहीं मेरे कहने का मकसद यह है कि सिक्खों ने हिन्दुओं की सदा रक्षा की पर हिंदुओं ने सिक्खों के साथ क्या किया ? नेकी का बदला सदा बदी से दिया। अरे ! जिन हिन्दुओं के खातिर नवें पादशाह ने अपना सिर दिया दशवें पादशाह ने महा जहमत उठाई उन्हीं के बच्चों को गंगू बामन ने सरहिन्दी नवाब से कहकर दिवार में चुनवा दिया।

सत् नाम०—यह कुछ नहीं पर गंगू बामन के खातिर कुल हिन्दू कौम नफरत के काबिल हो गई। हिंदुओं में वैरागी बन्दा भी तो था जिसने गुरु की आज्ञा से मुस्लिम सलतनत की सलतनतें छानकर सिक्खों का बदला और आखिर उस सर हन्दी नवाब ने बच्चे बच्चे तक को जिन्दा न छोड़ा महल खुदवा कर तालाब बना दिया। सरहिन्दी नवाब से बदला किसी सिक्ख ने लिया था क्या ? उसका बदला लेने वाला भी तो एक हिन्दू ही था आपकी इस नफरत फैलाने वाली आग से मैं बचना चाहता हूं ऐसे सिर फिरे लोगों में बैठना भी मैं गुनाह मानता हूं। मैं जाता हूं (सतनाम नाम चला जाता है।)

सब सरदार—सतनाम चला गया चलो, अच्छा ही हुआ नहीं तो यह हम सबका भंडाफोड़ ही कर देता।

मि० सितारा०—दीवाना है गुरुओं के चलन की दुहाई देता है। यह नहीं सोचता कि उस समय के हालात इस वक्त से बिलकुल बरक्स थे मैं कहता हूं इस वक्त अगर गुरु भी होते तो वे भी ऐसा ही करते।

महिपाल०—कैसे बरक्स सरदार जी !

सितारा०—अरे यह ही न कि उस वक्त हिन्दू महकूम था और मुस्लिम हाकिम मुस्लिम हाकिमों ने हिन्दुओं पर जालिमाना तूफान बरपा किये जो उन तूफानों से गुरुओं ने टक्कर ली और हिन्दुओं को उस आफत से बचाया। अब तो हिन्दू हाकिम है हम पर हुकमरां हो रहे हैं। मैं हिंदू की हुकूमत कभी बर्दाश्त नहीं कर सकता।

सतापसिंह —तो अब तक अंग्रेज की हुकूमत को कैसे बर्दाश्त किया गया।

सितारा०—वह परदेशी था। उस की हुकूमत को पलटने के लिए मैं और मेरा साथी मिस्टर जिन्ना कांग्रेस में गये। परन्तु कांग्रेस में भी आधली पाई वहां हम दोनों को कोई ठिकाना न मिला। आखिर कार हम दोनों कांग्रेस से वापिस आये मिस्टर जिन्ना ने अंगरेजों से मिलकर २ थ्यूरी का प्रचार किया जिन्ना की पीठ थपथपाने वाला मिस्टर चर्चिल और उनकी कन्जरवेटिव पार्टी थी जिसकी बदौलत जिन्ना पाकिस्तान ले बैठा पर मेरे हाथ कुछ न आया। मैंने ब्रिटिश हुक्मरां के आगे बहुत मन्न पच्ची किया अपना सिर धुना सन् १८५७ के गदर की याद दिला सिक्खों की अंग्रेजी सलतनत के साथ किये हुए अहसानों का रक्खा पर उसने मुझे सिक्खस्थान न दिया।

करमार —उन्होंने क्या कहा ?

सितारा०—उन्होंने कहा कि हिन्दू और मुस्लिम मजहब एक दूसरे के बरक्स हैं उनका पैगम्बर बाहर अरब का था मुस्लिम बाहर से आये और हिन्दोस्तां पर हुकमरां हुये उनके रीति रिवाज हिन्दुओं से नहीं मिलते हिन्दू गौ को गौ माता कहकर उसकी पूजा करता है उसकी रक्षा करना अपना मजहबी उसूल मानता है लेकिन मुस्लिम उसी को काट कर खा जाता हैं। हिन्दू पूरब की ओर जाता है तो मुस्लिम सदा पश्चिम को शिज्दा करता है, हिन्दू और मुस्लिम कभी एक नहीं हो सकते इसलिए हमें हिन्दोस्तां की सलतनत सौंपने के वास्ते दोनों कौमों के साथ इन्साफ करना चाहिए ताकि दोनों ही अपने २ मार्गों में रहकर तरक्की कर सकें। तुम्हारा केस तो ऐसा नहीं तुम्हारे सब गुरु यहां के ही जिन्हें हिन्दू भी अपना गुरु मानते हैं तुम्हारे उनके रिश्तेदार रस्मोरिवाज सब एक दूसरे से मिलते हैं तुम्हारे पूर्वज और हिन्दुओं के पूर्वज एक ही हैं, इसलिए तुम्हें अलग सिक्खस्थान नहीं मिल सकता। मैं उस समय चुप रह गया मेरे सिक्खस्थान बनने में हिन्दू सिक्ख एक होना हायल है यह सोचकर मैंने सिक्खस्थान के खातिर यह तय कर लिया है कि मैं पन्थ के दीवानों को इकट्ठा करूं और हिन्दुओं से सिक्खों में नफरत बरपा करूं। जब हिन्दू सिक्ख अलग २ कहलावेंगे तब सिक्खस्तान बन पायेगा। मैंने सिक्खस्तान के खातिर क्या २ पापड़ नहीं बेले पर अभी तक सब जगह से अपना सा मुंह लिए वापिस आना पड़ा।

सताप० —आपने इसके लिए और क्या २ उपाय किए ?

सितारा०—मैं जब अङ्गरेजों से विमुख किया गया तो मिस्टर जिन्ना से मिला उससे मैंने कहा हम तुम एक ही थैला के चट्टे बट्टे हैं, दोनों एक ही नाव पर सवार हैं, तुमने अपना मकसद हल कर लिया अब तुम मेरी भी कुछ इम्दाद करो मुझे सिक्खस्तान चाहिए।

महिपाल० —तो मिस्टर जिन्ना ने क्या कहा।

सितारा० —उसने कहा आपके सिक्खस्थान में कौन २ से जिले होंगे मैंने उसे पटियाला, कपूरथला, अमृतसर, लाहौर आदि नाम गिनाये लाहौर का नाम सुनते ही वह आग बबूला हो गया और बोला वाह ! आप तो मेरे हिस्से में हो हिस्सा बटाना चाहते है मैं आपकी कुछ इम्दाद नहीं कर सकता।

महिपाल० – तो फिर ?

सितारा० —तो फिर क्या ? मैं भला ऐसे मानने वाला था मैंने पटेल के आगे अपनी दरख्वास्त रक्खी पटेल ने मुझे सिक्खस्थान देने को बुलाया पर—

महिपाल० —पर क्या ?

सितारा०—उन्होंने मुझसे सिक्खस्थान के लिए जिले पूछे मैंने जब उन्हें गिना दिये तो बोले हमने आप को सिक्खस्तान दिया पर एक शर्त है ?

सताप० यह शर्त क्या रक्खी ?

सितारा०—पटेल बोले सरदार जी आपको सिक्खस्थान में देश के कुछ भागों में सिक्खों को रखना होगा और सिक्खस्तान का कुल खर्च आप को उठाना होगा। हिन्दोस्तां के और किसी भाग में सिक्ख नहीं रह सकता। हमने पाकिस्तान बनाकर भी हिन्दोस्थान में मुसलमानों को रहने दिया, है यह गलती अब फिर न दोहराई जावेगी, सिक्खस्तान की सुरक्षा का भार भी सब आपको ही करना होगा यह सब सुनकर मैं दंग रह गया लेकिन मेरे दिमाग से सिक्खस्थान का भूत उतरता नहीं। मुझे सिक्खस्तान चाहिए सिक्खस्तान।

करतार —हम सिक्खस्थान हासिल न सकता है।

सितारा —हासिल हो सकता है ना उसका क्या उपाय है इसी को हम सबको सोचना है।

करमार—पहले हम यह वायवेला मचाना चाहिये कि हम इस मन्त्रि मण्डल पर विश्वास नहीं, मैं विधान सभा में हूं ऐसा जोड़ तोड़ लगाऊं कि सच्चर और भार्गव एक न हो सकें, इन्हें हटाकर किसी सिक्ख को पंजाब का मुख्य मन्त्री बनाया जावे।

सब लोग—हाँ बिलकुल ठीक इस काम को करमारसिंह भलीभांति कर सकते हैं अरे ! जब मुख्यमन्त्री हो गया तो फिर शासन अपना ही है। (शेष अगले पृष्ठ पर)

पंजीकरण सं. ए. ६०

२५ फाल्गुन १८७९ (१६ मार्च ५८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

पता—
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

दूरभाष्य : ५११३ तार :

(पिछले पृष्ठ का शेष)

सितारा—सिर्फ मुख्यमन्त्री बनाने से ही काम न चलेगा। इसके लिए और भी बहुत से पापड़ बेलने होंगे।

सब लोग—वह क्या ? और क्या क्या हमे करना होगा हम सिक्खिस्तान के लिए सब कुछ करने को तैयार हैं।

शाबाश बहादुरो ! मुझे तुमसे यह ही उम्मीद थी हम अपना मकसद हल करके मानेंगे। मंजिल दूर है मुश्किलें भी बहुत हैं लेकिन मुश्किल शिकन भी हमारे साथ है।

सब- क्यों न हो जहां आप सा रहबर हमारा हो।

सितारा-(मुस्कराकर भारसिंह से) देखो करमार सिंह तुम कांग्रेसी वेष के अकाली हो तुम केन्द्र में जाकर जोड़-तोड़ लगाओ और अपना भरोसा बैठालकर पाकिस्तान में हम अपने तीर्थों के दर्शन करना चाहते हैं १००-२०० आदमियों के परमिट बनवाओ (कान मे कुछ कहकर) समझे ऐसा वहा करना होगा। (सतापसिंह से) सन्तापसिंह तुम्हें हम मुख्य मन्त्री बन जायेंगे तुम्हे वह करना होगा जैसा मैं कहूगा।

सताप—मुझे मन्जूर है।

करमार—एक बात और हमे सिक्खिस्तान के नाम पर केन्द्र वाले हमें सिक्खिस्तान नहीं देंगे हमे यह आवाज उठानी चाहिये कि पंजाब द्विभाषी प्रान्त है, पजाब की भाषा पजाबी है, जो गुरुमुखी मे लिखी जाती है। पजाबी और गुरुमुखी के नाम पर हमारा सिक्खिस्तान का मकसद हल हो जावेगा और इस माँग को हमारी सरकार मान भी लेगी। वह सीधे नाक पकड़ते डरता है, पर घुमाकर हमेशा नाक पकड़ती है असाम्प्रदायिकता का ढोंग पीटती है, पर साम्प्रदायिकता के आगे सदा झुकती है, घुमा फेरके।

सितारा—बहुत ठीक। यह रास्ता अच्छा है। यह सरकार शक्ति के आगे झुकती है हमें इसलिए इकट्ठे होकर एक तूफान बरपा करके इसे दिखा देना है कि अगर हमारी बात न मानी तो सिक्ख गदर मचा देंगे सिक्ख एक बहादुर कौम है उसकी बात मानो नहीं तो हम पाकिस्तान से मिलकर हिन्दुस्तान में तबाही पैदा कर देंगे।

सन्ताप—बिल्कुल ठीक सरदार गुरुगोविंद सिंह जी के दोनों बच्चे जोरावरसिंह, फतहसिंह के बलिदान का मेला होने वाला है उसमें प्रधान मन्त्री माणिक्य लाल को बुलाया जावे और ऐसा प्रदर्शन किया जावे जिसमें उन्हें बोलने भी न दिया जावे।

करमार—यह काम मोहिकम को सौंपा जावे वह उन्हें बुलावें और आप ऐसे प्रदर्शन का इन्तजाम करलें।

सितारा—मैं सब कर दूंगा अगर इतने से भी प्रधान मन्त्री न माने तो अमृतसर मे कांग्रेस के सामने ही एक बड़ा सिक्खी दरबार किया जावे जिसमे नगी तलवारों से १ लाख आदमियों का जलूस निकाला जावे कांग्रेस का इजलास कामयाब न होने दिया जावे। सिक्खों की इस ताकत को देखकर हर कांग्रेसी दहसत खा जावेगा और उसे हमारी बात माननी ही होगी।

(सब जाते हैं) क्रमश.

आ०स० अमरावती

आ० स० अमरावती विदर्भ की ओर से १६ फरवरी को ऋषिबोधोत्सव मनाया गया। जिसमे श्री मोहनलाल जी का भाषण हुआ।

सामान-चोरी

श्री सुरजीतसिंह जी प्रचारक आर्य का एक झोला जिसमे सफा, कमीज, तौलिया, लगोट, किताब, डायरी आदि था अलीगढ़ से चन्दौसी जाते हुए गाड़ी में चोरी हो गया है। जिन्हें मिले वह ग्राम नगौला, पो० कर्णवास जिला अलीगढ़ के पते से लौटाने का कष्ट करें।

आ० स० रामगढ़

इस समाज की ओर से इस वर्ष भी ऋषि बोध पर्व मनाया गया जिसमे प्रभातफेरी, भाषण आदि का आयोजन हुआ।

आ० स० फैजाबाद

आ० स० फैजाबाद की ओर से १० से १६ फरवरी तक दयानन्द सप्ताह मनाया गया और जालन्धर गोलीकांड पर विरोध प्रस्ताव पास किया गया।

आ० स० रायबरेली

आ० स० रायबरेली की ओर से विभिन्न स्थानों पर समाज का प्रचार किया गया। १६ फरवरी को यहाँ दयानन्द बोधोत्सव मनाया गया। सहभोज भी हुआ जिसमें ५० व्यक्ति भाग लिये। चुनाव भी हुआ जिसमें श्री रणवीरसिंह प्रधान, श्री रामगुलाम वर्मा मन्त्री, और श्री जगदेव प्रसाद कोषा० चुने गये। श्री योगेन्द्रपाल जी तथा श्री रघुवीर सिंह प्रतिनिधि चुने गये।

आ० स० लखीमपुर

प्रधान—श्री हरिश्चन्द्र वानप्रस्थी
मन्त्री—श्री शिवनारायण वानप्रस्थ
कोषा०—श्री योगेन्द्रपाल गुप्त

आ०स० सहपऊ

यहाँ ऋषि बोध पर्व सानन्द मनाया गया। एक प्रस्ताव द्वारा जालन्धर गोली काड की निन्दा की गई। दूसरे प्रस्ताव मे अम्बाला ट्रेन दुर्घटना मे दिवगत वीरो के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

आ०स० बहराइच

आ० स० बहराइच का वार्षिकोत्सव १३, १४, १५, १६, मार्च का होगा।

आ०स० पानीपत

इस समाज ने श्री टेकचन्द जी के देहावसान पर हार्दिक शोक प्रकट किया।

आ०स० बुलन्दशहर

बड़े समारोह के साथ इस समाज की ओर से दयानन्द सप्ताह मनाया गया। प्रभातफेरी, यज्ञ, भाषण नित्य होता रहा। स्वामी योगानन्द जी की वेद कथा हुई। जलूस भी निकला डी० ए० वी० कालेज के अध्यापकों व छात्रों ने पूरा भाग लिया।

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

संस्थापित १८९८

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



आर्यमित्र

अग्निहोत्र

ओ३म् उद् बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते संसृजेथामयंच अस्मिन्त्सधस्थेऽध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ।

यजु० अ० १५ म० ५४

हे अग्नाद अग्ने ! तुम प्रवुद्ध हो जाओ और इस यज्ञ कुण्ड म अथवा यज्ञ वेदी में जग उठो । हे यज्ञाग्ने तुम मेरे जीवन की साधना अर्थात् आध्यात्मिक उत्थान की साधिका हो तथा नाना प्रकार के परोपकार कर्मों का सिद्ध कराने वाली हो तथा मेरे इस मानव जीवन का यज्ञीय बनाने वाली हो । इस यज्ञ स्थली में तथा इसके चहुँ ओर सब विद्वान् पुरुष एव विदुषी देवियाँ तथा कुमार, कुमारिकाए, बाल बालिकाए एव यजमान स्वस्थ चित होकर बैठें ।

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जात वेदस्तेने ध्यस्व वर्द्धस्य चेद्ध वर्धय चास्मान्प्रजया पशुभि र्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ।।

आश्वलायन गृह्य सूत्र १।१०।१२

हे अन्नाद आहवनीयाग्ने ! यह समिधाए तेरी आत्मा है तेरा जीवन है । इनको पाकर तू प्रज्ज्वलित हो और सप्त जिह्वा वाली लपटो को प्राप्त हो और इस विधि प्रवुद्ध होकर हम याज्ञिकों को सुन्दर प्रजा, गौ आदि पशुओं से युक्त करो । हम सब यत्न करने वाले ब्रह्म तेज के धनी बन जाँय और जीवनोपयोगी सात्विक खाद्य पदार्थों का सम्पादन करने वाले बनें ।

ओ३म् समिधाग्नि दुवस्यत घृतै र्बोधयतातिथिम् आस्मिन्हव्या जुहोतन । यजु० अ० ३ मं० १

हे ससार के मनुष्यों ! तुम यज्ञ करने वाले बनो और अन्नाद आहवनीय यज्ञ वेदी की अग्नि में समिधाओं का आधान करो और इस अतिथि अग्नि का जो अपनी लपटों को निरन्तर ऊपर को फेंकने वाला है, गौ आदि पशुओं के घृत से सिंचित करो और इसमें सुन्दर सुगन्धिवर्धक पौष्टिक औषधी अन्नादि शाकल्य की आहुतियाँ दो ।

—शिवदयालु

वैदिक प्रार्थना

ओं आ रोहतायुर्जरस वृणाना अनुपूर्वं यत माना यतिष्ठ । इह त्वष्टा सुजनिमा सजोषा दीर्घमायु करति जीवसे व ।।ऋ० १०।१८।६

हे मनुष्यों ! कर्म पूर्वक यत्न करते हुए पूर्ण आयु और वृद्धावस्था को प्राप्त करो, कुशल का रचने वाला उत्तम जन्म और उत्तम पदार्थों का देने वाला परमेश्वर इस संसार में जीवित रहने के लिए तुम्हें दीर्घ …

सम्पादक—
शिवदयालु, सभामन्त्री
सह० सम्पादक—
भगवत शरण

इस अंक के आकर्षण

कठोपनिषद् कथा (२)—

सर्व मेध यज्ञ

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम०ए० एल०टी०, डी० वी० कालेज, गोरखपुर]

(गताङ्क से आगे)

पिछली बार हमने उपनिषदों की महत्ता और कठोपनिषद् नाम क्यो पड़ा इस विषय की चर्चा की थी। आज कठोपनिषद् की कथा प्रारम्भ करेंगे। कथा इस प्रकार है—

उशन् ह वै वाजश्रवस सर्व वेदस ददौ। तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस ॥१॥

त ह कुमार सन्त दक्षिणासु नीयमानासु श्रद्धाऽऽविवेश सोऽमन्यत ॥२॥

पीतोदका, जग्धतृणा, दुग्ध दोहा निरिन्द्रिया। अनन्दा नाम ते लोका स्तान् स गच्छति ता ददत् ॥३॥

(ह वै) कहते हैं कि (वाजश्रवस) वाजश्रवा के पुत्र न (उशन्) मुक्ति की कामना से (सर्ववेदसम्) सब कुछ (ददौ) दान दिया (तस्य) उसका (ह) प्रसिद्ध (नचिकेता नाम पुत्र आस) नचिकेता नाम का पुत्र था। (कुमार सन्त ह) बालक होते हुए भी (त) उसको (दक्षिणासु) दान किए हुए पदार्थों के (नीयमानासु) विभाग करते समय (श्रद्धाऽऽविवेश) आस्तिक बुद्धि उत्पन्न हुई (स) वह (अमन्यत) सोचने लगा।

(पीतोदका) जो गाए जल पी चुकी है (जग्धतृणा) जो तृण भक्षण कर चुकी है (दुग्ध दोहा) जिनका दूध दुहा जा चुका है (निरिन्द्रिया) बच्चा पैदा करने में असमर्थ हो चुकी हैं (ता) उन्हें (ददत्) जो दान करता है (स) वह (अनन्दा नाम ते लोका) आनन्द रहित जो लोक हैं (ता) उनको (गच्छति) जाता है।

इन तीन श्लोकों मे तीन बातें विचारणीय है। पहली बात तो यह है कि सर्वमेध यज्ञ का क्या तात्पर्य है? दूसरी बात यह समझनी चाहिए कि श्रद्धा बुद्धि से क्या मतलब है और क्या यह सबको उत्पन्न होती है और यदि सबको उत्पन्न होती है तो क्यो नहीं सब नचिकेता बनते? तीसरी बात जिस पर हम विचार करना है वह है दान की महत्ता, दान किस पदार्थ का करना चाहिए और दान किसको देना चाहिए। इन तीनो विषयों पर क्रमश विचार करते हुए जब हम सर्वमेध यज्ञ के विषय मे सोचते है तो हम भारतीय संस्कृति या वैदिक विचारधारा एक पूर्ण विचार धारा प्रतीत होती है। हमारी विचार धारा की विशेषता यह है कि इसमे व्यक्ति और समाज का इतने सुन्दर ढग से समन्वय किया गया है कि आजकल के समान वर्ग संघर्ष पैदा हो नहीं हो सकता। पूंजीवाद का समर्थन तो पूंजीपति स्पष्ट रूप मे नहीं कर सकते अत इस बुराई को दूर करने के लिए मार्क्स का साम्य वाद उत्पन्न हुआ। परन्तु योरोप की विचारधारा का इस पर भी प्रभाव रहा। जिस प्रकार वहां व्यक्तिगत जीवन को 'प्राइवेट' समझ कर सामाजिक जीवन से अलग कर दिया गया है वैसे ही सम्पत्ति मे व्यक्ति का प्रभुत्व हटाकर उस पर समाज का अधिकार कर दिया गया। अर्थात् व्यक्ति के व्यक्तित्व को समाप्त कर उसे मशीन के पुर्जे के समान बना दिया गया और समझा गया कि सब बुराइयों की चिकित्सा यही है। परन्तु 'मर्ज बढता ही गया ज्यों ज्यों दवा की' के कथनानुसार साम्यवाद या समाजवाद ने मानव को मानव न रहने दिया।

उसने उसे एक ऐसा प्राणी बना दिया जो तोते के समान अपने मुख्य अधिकारी के शब्दों को दुहराता है। जिन्होंने स्टालिन का जीवन चरित्र पढ़ा होगा वे जानते होंगे कि स्टालिन का प्रभाव वहां की मूर्तिकला, संगीत, भवन निर्माण, चित्रकारी और साहित्य पर किस रूप मे पड़ता है और किस प्रकार जनता उसके इन विचारों को मानने को बाध्य होती है। प्रसिद्ध रूसी संगीत लेखक शोस्ताकोविच द्वारा तैयार किए 'लेडी मैकबेथ आफ मत्सेन्सक' नामी संगीत प्रधान नाटक को देखने के लिए एकबार स्टालिन गए। इस नाटक की 'प्रवदा' और 'इजवेस्तिया' जैसे बड़े बड़े समाचार पत्रों में तथा अन्य दैनिकों व साप्ताहिकों और थियेटर सम्बन्धी पत्रिकाओं मे अत्यन्त शानदार आलोचनाएं प्रकाशित हो चुकी थीं। कई सालों से यह नाटक मास्को के नाट्यगृहों में दिखाया जा रहा था। लेकिन स्टालिन ने इसको पसन्द न किया और अगले दिन से वे ही पत्र पत्रिकाएं, प्रवदा और इजवेस्तिया जैसे समाचार पत्र उसकी निन्दा करने लगे और बेचारे शोस्ताकोविच पर अनेक आक्रमण हुए। कहने का तात्पर्य यह है साम्यवादी देशों में शासक की इच्छा ही कानून हो जाता है जो व्यक्तित्व के विकास को समाप्त कर देती है अत भारतीय संस्कृति ने, वैदिक विचार धारा ने मनुष्य की उन्नति के लिए व्यक्तित्व के विकास को आवश्यक माना था और उस विकास मे सर्वमेध यज्ञ उसकी अंतिम सीढ़ी था। सर्वमेध यज्ञ मे मनुष्य को त्याग की महत्ता समझाई जाती थी और उसे बताया जाता था कि यदि तुम आध्यात्मिक पथ के पथिक बनना चाहते हो तो उसकी तैयारी के लिए वानप्रस्थ आश्रम मे जाओ और सम्पूर्ण वस्तुओं से आसक्ति हटाकर सन्यास की—मोक्ष की तैयारी करो।

मोक्ष के मूल मे क्या भावना थी? वहाँ का मूलभूत विचार एक था—प्रकृति है, परन्तु प्रकृति ही सब कुछ नहीं, प्रकृति के पीछे आत्मतत्व है, वही तत्व जिसे कुछ लोग परमात्मा कहते हैं, शरीर है परन्तु शरीर ही सब कुछ नहीं, शरीर के पीछे भी आत्म तत्व है, वही तत्व जिसे कुछ लोग जीवात्मा कहते हैं। प्रकृति और शरीर का खेल संसार है संसार है तो संसार का भोगना भी टल नहीं सकता परन्तु जैसा सत्य यह है कि संसार को हमें भोगना है वैसा ही अटल सत्य यह भी है कि उसे हमें छोड़ना भी है। अत आर्य संस्कृति का यह विश्वास था कि जब प्रत्येक व्यक्ति को संसार किसी न किसी दिन छोड़ना है, तब संसार मे रमे रहना, इसी के लोभ मे लिप्त रहना किसी का अन्तिम लक्ष्य नहीं हो सकता। और इसलिए अन्त मे सर्वमेध की प्रथा रखी गई कि मनुष्य अपना सम्पूर्ण सम्पत्ति धन, दौलत पात्रों को प्रदान कर दे। इस लिए मोक्ष की अभिलाषा से वाजश्रवा ने अपनी सम्पूर्ण संपत्ति, धन, दौलत, गौ आदि पशु इस विचार से कि जब तक सम्पूर्ण पदार्थों को न छोड़ दे मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता दान कर दिया।

इस प्रकार हमने देखा कि भारतीय संस्कृति या वैदिक संस्कृति ने जीवन का एक ऐसा उत्तम रूप खोजा था जिसमे रहता हुआ मनुष्य सृष्टि का संसार का भोग भी करता था और उससे ऊपर उठकर आत्मा और परमात्मा की प्राप्ति करने की चेष्टा भी। इसीलिए हमारे यहाँ कहा गया है कि संसार को भोगो, परन्तु त्यागपूर्वक, संसार मे रहो परन्तु निर्लिप्त होकर, निस्संग होकर, इसमे रहते हुए भी इसमे न रहने के समान, पानी मे कमल दल की तरह घी मे पानी की बूंद की तरह, यह सब इसलिए क्योंकि यथार्थवादी दृष्टि से जैसे संसार का हमसे छूटना भी सत्य है। 'भोगना और त्यागना' इन दोनो सत्यों का सम्मिश्रण संसार की और किसी संस्कृति मे नहीं। संसार की किसी विचारधारा ने त्यागवाद का आश्रय लिया है तो किसी ने भोगवाद का, किसी ने प्रकृतिवाद को जन्म दिया भोग और त्याग का समन्वय, भौतिकवाद और अध्यात्मवाद का मेल केवल आर्य संस्कृति मे पाया जाता है और यही कारण है कि गृहस्थ आश्रम मे भोगों को भोगने के बाद सब वस्तुओं का दान कर वानप्रस्थाश्रम में जाकर सन्यास और मुक्ति के लिए सर्वमेध यज्ञ का विधान किया गया है।

बस आज इतना ही। क्रमशः

त्रैतवाद

गोरख धन्धा नहीं विश्व की एक पहेली आम है
अक्षयवट पर विहग बन्धु का युग युग से विश्राम है ॥१॥
स्वर्ण पखेरू लिए साधना
मिलकर बैठे मीत दो
दृष्टि सृजन में स्वस सुशील
रूप अनुपम गीत गीत दो
किन्तु, काल भी लगा न पाया सीमा बद्ध विराम है ॥२॥
एक मस्त तो अक्षयवट के
फल खाने मे लीन है
और एक तो बिन खाये ही
नित्य निराह नवीन है
एक क्षितिज के पार एक का आवागमन ललाम है ॥३॥
यह ससीम निःसीम शक्ति का
अद्भुत् मंजुल मेल जो
या दोनों का चारु चिरन्तन
पुण्य परस्पर खेल जो
सूक्ष्म सृजन का मधुर मनोहर दृश्य जगत् परिणाम है ॥४॥
"प्रणव"

आर्य्य जगत में सब से अधिक छपने वाला आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

ओ३म्

आर्य्य मित्र

वर्ष ६० | अङ्क १०

लखनऊ–रविवार चैत्र ९, शक संवत् १८८०, चैत्र शुक्ला १०, वि० २०१५ (३० मार्च १९५८) दयानन्दाब्द १३४ सृष्टिसंवत् १९७२९४९०५८

सम्पादकीय

आर्यसमाज तिराहे पर

आर्यसमाज ने अपने ८३ वर्षों के जीवन में बड़े बड़े रंग देखे। परिवर्तन और क्रांतियां देखीं। प्रचार एव शास्त्रार्थ के युग में मतमतान्तरों की मीनारें हिलती और डगमगाती देखीं। मतान्धता और अन्धविश्वासों को बुद्धिवाद और मानवता की ओर झुकते देखा। विदेशी साम्राज्यवाद और दासता के भवनों को चकनाचूर होते देखा।

आर्यसमाज इन क्रान्तियों में केवल दर्शक रहा हो, सो बात नहीं है। वह तो निश्चय इस क्रांति का अग्र सेनानी बनकर रहा है। विदेशी दासता के युग में आर्य समाज ने सैकड़ों बड़े बड़े शिक्षणालयों को जन्म दिया। विदेशी और स्वदेशी पद्धतियों से संस्थाओं का संचालन किया। भारत मे विदेशियों की कृपा से प्रचलित शिक्षा पद्धति मे क्रांति करने की तीखी भावनाओं को हृदय में धारण कर आर्य समाज ने कार्य किया। किन्तु इस दिशा में आर्य समाज लक्ष्य भ्रष्ट हो गया। इन संस्थाओं को मिशन के प्रचार का साधन मानकर आर्य समाज उनमें जुटा था किन्तु भूल से, असावधानी से इन्हें साधन के स्थान पर साध्य मान बैठा। परिणाम जो अभीष्ट था उससे विपरीत दृष्टिगोचर होने लगा। विचारों की क्रांति का प्रशस्त मार्ग अवरुद्ध हो चला।

इधर राज्य क्रांति के उपरान्त नव निर्माण की दिशा में जितनी संलग्नता और सूझ बूझ से कार्य करने की आवश्यकता थी उसको भी आर्य समाज ने दुर्भाग्य से भुला सा दिया राजनीति से हटकर क्लीवता पूर्ण सन्यास की दिशा में आर्य समाज गति करने लगा।

परिणाम यह हुआ कि अपनी इस ८३ वर्ष की अल्प आयु में आर्य समाज एक ऐसे स्थान पर जा पहुंचा है जहाँ उसको गम्भीरता पूर्वक आगे चलने से पूर्व कोई वीरोचित निर्णय लेना होगा। एक मार्ग है विचारों की क्रांति का। यदि इस पर उसे चलना है तो संस्थावाद से ऊपर उठ कर अपनी सारी शक्ति वैदिक मिशन के प्रचार में अब उसे झोंकनी होगी। और योग्य से योग्य व्यक्तियों को इस प्रचार कार्य में लगाना होगा। यह है ब्राह्म मार्ग और निश्चय ही श्रेयस्कर मार्ग है।

दूसरा है राज मार्ग। यदि इस पर चलना है तो अवैदिक राजनैतिक वादों से टक्कर लेते हुए राष्ट्र को वैदिक राजधर्म का पावन संदेश सुनाना और भारत मे वैदिक आदर्शों के अनुरूप शासन स्थापित कर उसके सहयोग से वैदिक मिशन का संसार मे फैलाना होगा। अथवा संन्यास अथवा क्लैव्य मार्ग इस तिराहे पर आकर समाप्त हो जाता है। यदि ब्राह्म अथवा राज मार्ग में से किसी एक को आर्य समाज ने न चुना और तिराहे पर ठिठक कर रह गया तो उसका भविष्य उज्ज्वल नहीं कहा जा सकता।

राष्ट्रिय नव वर्ष कामना

ईश दया आनन्द प्रदायक नया वर्ष हो।
पचशील का सर्वोदय हित समुत्कर्ष हो।
प्राणिमात्र मे प्रेम भाव हो, विश्व शान्ति हो,
भारत उन्नति करे पूर्ण विधि, दिव्य कान्ति हो।
शुचि मनसा वाचा कर्मणा, सभी 'रणंजय' आर्य हों।
सद्वैदिक धर्म प्रसार के, उत्तम उत्तम कार्य हो॥

रणंजयसिंह
एम० एल० सी०, प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश।

कलकत्ते में हिन्दी तथा भारत विरोधी तत्वों का सम्मेलन

दिनांक ८ व ९ मार्च को कलकत्ते में भाषा सम्मेलन के नाम से एक आयोजन किया गया। सम्मेलन का वातावरण अत्यन्त उत्तेजना पूर्ण था सम्मेलन में राष्ट्र भाषा हिन्दी के विरोधी और गुलामी की भाषा अंग्रेजी के भक्त श्री राजगोपालाचार्य, सिखिस्तान के सूत्रधार मास्टर तारा सिंह, ब्राह्मणत्व के शत्रु कजगम आन्दोलन के नेता सम्पथ तथा अन्ना मलाई विश्व विद्यालय के भूतपूर्व उप कुलपति श्री रतन स्वामी मंच पर विशेष रूप से शोभायमान थे। दूसरे शब्दों मे यदि कहा जाय तो भारत का विघटन करने वाली शक्तियों का ही यह सम्मेलन था।

श्री राजगोपालाचार्य ने हिन्दी और अहिन्दी भाषा भाषियों का मानचित्र नाटकीय ढंग से सभा में उपस्थित किया। और कहा कि यदि अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाई गई, तो भारत दो भागों मे विभक्त हो जायगा।

मास्टर तारासिंह ने कहा कि यह हिन्दी आन्दोलन हिन्दू सभाइयों का आन्दोलन है जो पंजाब से सिखों को निकालना चाहते हैं।

यह सम्मेलन यथार्थ मे हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान की एकता के विरोधियों का जमघट था। इस प्रकार के प्रतिक्रियावादी तत्वों का खुलकर सामना करने की नितान्त आवश्यकता है। मौन साधकर बैठना पाप है और अपनी राष्ट्र भाषा, अपनी भारतीय संस्कृति एवं अपने राष्ट्र की एकता को विघटित होने के लिए अवांछनीय तत्वों को प्रोत्साहन देना है। आर्यसमाज को सजग होकर इस दिशा में अपना ठोस पग उठाना चाहिए।

बख्शी गुलाम मुहम्मद की पेशकश

काश्मीर के मुख्य मन्त्री बख्शी गुलाम मुहम्मद ने अपने कई भाषणों में शेख अब्दुल्ला को यह पेशकश की है कि यदि वह अपनी विरोधी नीति छोड़ दें और काश्मीर को भारत का अविभाज्य अंग पूर्ववत मानने लगें तो वह उनके लिए काश्मीर की गद्दी खाली कर सकते हैं।

हमारी समझ में यह बात नहीं आई कि प्रजातन्त्र मे आस्था रखने वाला व्यक्ति इस प्रकार की असगत बातें कहने की कैसे हिम्मत करता है। बख्शी साहब न तो काश्मीर के परम्परा से कुलागत राजा है और न वहाँ के अधिनायक (डिक्टेटर)। वह तो जनता के प्रतिनिधियो द्वारा निर्वाचित होकर ही इस मुख्य मन्त्री पद पर है। हम बख्शी साहिब से अनुरोध करेंगे, कि वह इस प्रकार की बातें करके प्रजातन्त्र का अपमान न करें। उनको कोई अधिकार नहीं कि वह अपना स्थान शेख जी को देने की बात कहें।

काश्मीर अर्थात् भारत का शत्रु नम्बर १, एक रात मे न देश भक्त बन सकता है और न भारत का वफादार। उसकी किसी भी बात का विश्वास करना राजनीति का दिवाला ही निकालना कहा जावेगा।

काश्मीर समस्या

उच्च अधिकारी वर्ग के क्षेत्र में यह अनुमान लगाया जा रहा है कि अमरीका और इङ्गलैण्ड काश्मीर समस्या के हल करने में अब कोई बाधा उपस्थित नहीं करेंगे यदि काश्मीर के वर्तमान विभाजन को समझौते का आधार मान लिया जाए। गत मास लोक सभा मे गृह मन्त्री पण्डित पन्त ने कहा था कि मुझे विश्वास है कि काश्मीर की समस्या अपने आप शीघ्र सुलझ जाएगी और कोई कड़ कदम उठाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। अनुमान लगाया जा रहा है कि पंत जी के इस कहने के पीछे कोई

(शेष अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

सबल आधार है। अभी कुछ दिन हुए भारत के प्रधानमन्त्री और ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री के बीच देहली में काश्मीर समस्या पर विचार हुआ था और बृटिश प्रधान मन्त्री ने इङ्गलैण्ड में जाकर भारत और उसके नेताओं की बड़ी प्रशंसा की है। इसी प्रकार मिस्टर ह्यू गेटस्केल मजदूर दल के नेता जब वह पिछले दिनों भारत आये थे तो यहाँ के नेताओं से काश्मीर समस्या के सम्बन्ध में काफी विचार किया था। इसी प्रकार अमरीका के राष्ट्रपति आइजन होवर का व्यक्तिगत सन्देश श्री कैबट लाज द्वारा पं० नेहरू जी के पास भेजा गया था जिसने भारत की प्रशंसा और भारत की प्रजा तन्त्रीय भावनाओं की सराहना की गई है।

इधर पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री श्री नून महोदय ने ब्रिटेन के व्यवहार के प्रति बहुत खेद प्रकट किया है, और कहा है कि जब अनुदार दलीय शासन का यह व्यवहार है तो मजदूर दल के हाथ में हकूमत की बागडोर आने पर तो न जाने क्या होगा। मजदूर दल के नेता ने तो स्पष्ट कहा है कि काश्मीर भारत का अंग है और हम इस विवाद में सर्वथा तटस्थ हैं। मिस्टर नून पिछले दिनों जब अमरीका गये थे और डलेस से मिले थे तो उनको यह आश्वासन दिया गया था कि यदि भारत ने पाकिस्तान पर हमला किया तो वह उसकी मदद करेगा। पाकिस्तान के नेता ने यह भी कहा है कि अमरीका की वर्तमान डलेस सरकार यदि चुनाव में हार जाती है और प्रजातन्त्रीय दल विजयी हो जाता है तो यह आश्वासन निर्मूल हो जाएगा यदि अमरीका और ब्रिटेन के विचारों में यह क्रान्तिकारी परिवर्तन सही है तो काश्मीर की समस्या उचित दिशा में हल होने की सम्भावना हो सकती है। किन्तु हम अपनी सरकार से इतना अवश्य अनुरोध करेंगे कि समझौता करते समय वह काश्मीर के उस भाग को जो आक्रान्ता पाकिस्तान ने अपने कब्जे में किया हुआ है हस्तगत करना न भूल जाए।

राजकीय आयुर्वेदिक कालिज लखनऊ की हड़ताल

विदित हुआ है कि दि० २५ फरवरी से इस कालिज के छात्रों ने हड़ताल की हुई है। जब से उत्तर प्रदेश की सरकार ने इस कालिज को शुद्ध आयुर्वेद का केन्द्र बनाने की घोषणा की, तब से छात्रों में उत्तेजना एवं निराशा का वातावरण उत्पन्न हो गया है। उत्तेजना इसलिए कि सरकार ने समय-समय पर जो नाना प्रकार के आश्वासन दिए हैं और बतलाया है कि यहां की उपाधियां एम० बी०बी० एस० के तुल्य होंगी और स्नातकों का वेतनक्रम तथा मान्यता भी समान होगी, उन आश्वासनों से सरकार अब फिर रही है। और निराशा इसलिए है कि जब यह कालिज अन्य आयुर्वेदिक कालिजों के समान ही बनाया जा रहा है तो इन छात्रों पर इतना अधिक व्यय क्यों कराया गया। यह छात्र प्रान्त के किसी भी अन्य आयुर्वेदिक कालिज में इन्टर साइन्स तक दो साल बर्बाद न करके केवल मैट्रिक पास होते ही भर्ती हो सकते थे और थोड़ा सा व्यय करते हुए स्नातक बन सकते थे।

यह भी पता चला है कि उत्तर प्रदेश की सरकार ने आठ वर्षों में इस कालिज पर लगभग १ करोड़ रुपया व्यय किया है और आज तक जैसे तैसे करके केवल एक स्नातक ही निकाला है। सरकार की इस ढुलमुल नीति के कारण छात्रों ने कालिज में अनेक बार पहले भी हड़तालें की हैं।

हम आयुर्वेद के प्रबल समर्थक हैं और चाहते हैं कि शासन उसका उत्थान करे किन्तु उन नगण्य यूनानी आयुर्वेदिक कालिजों और मेडिकल कालिज के पुच्छलग्गे इस आयुर्वेदिक कालिज के द्वारा आयुर्वेद का उत्थान नहीं हो सकता और न इन कालिजों से एलोपैथी के ही अच्छे डाक्टर व सर्जन निकल सकते हैं। संस्कृत से शून्य मैट्रिक या इन्टर पास छात्रों का आयुर्वेद में गति करना सर्वथा असम्भव है। सरकार को चाहिए कि संस्कृत विश्वविद्यालय अथवा संस्कृत महाविद्यालयों के साथ आयुर्वेद विद्यालय संचालित करे और इस लखनऊ कालिज के छात्रों का समय व रुपया बरबाद न करके, अपने आश्वासनों के अनुकूल शीघ्र उचित व्यवस्था करे।

—शिवदयालु

दिल्ली निगम चुनाव

इस बार दिल्ली निगम चुनाव में कांग्रेस की स्थिति शोचनीय हो गई। ८० स्थानों में से कांग्रेस को केवल ३१ सीटें मिली। जनसंघ २५, कम्युनिस्ट पार्टी ८, स्वतन्त्र १४ हिन्दू सभा १, प्रजा समाजवादी १, यह कुल स्थानों का परिणाम है। कांग्रेस की इस हार से दिल्ली के कांग्रेसी नेताओं में बड़ी चिन्ता है और इस पर उनकी स्थिति जांच किये जाने की सम्भावना है। जनसघ और साम्यवादी दल की बढ़ती हुई प्रगति से कांग्रेसी घबड़ा गये हैं।

रेडक्लिफ निर्णय

प्रधान मन्त्री नेहरू ने लोक सभा में कहा कि भारत पाक सीमा निर्धारण रैडक्लिफ निर्णय के अनुसार किया जायेगा। बीच में नदी नाले आदि के आ जाने पर दोनों में पारस्परिक समझौते से मार्ग तय कर लिया जायेगा।

साप्ताहिक समाचार समीक्षा

भारतीय स्पुतनिक

अलेप्पी (दक्षिण भारत) में कार्त्तिका पल्ली मन्दिर के वार्षिकोत्सव पर यहाँ एक आतिशबाज ने एक राकेट हवा में उड़ाने का सफल प्रयोग किया जिसमें एक कुत्ता बैठा हुआ था। कुत्ते को ३८" गहरे एक डिब्बे में रख कर राकेट के साथ उड़ाया गया था। राकेट उड़ाते समय काफी आवाज हुई और करीब ५०० फीट ऊपर जाकर डिब्बे में बैठा हुआ कुत्ता साथ में बंधी हवाई छतरी के साथ चार मिनट में ही नीचे आ गया। इसके साथ ही खाली डिब्बा भी जमीन पर गिर पड़ा।

धारा १४४ समाप्त करने की मांग

लोक सभा में सम्प्रति एक गैर-सरकारी विधेयक रखा गया है जिसमें मांग की गई है कि भारतीय दंड विधान संहिता से धारा १४४ हटा दी जाय। अनेकों प्रमुख संसद सदस्यों ने बल पूर्वक रखे गये इस मांग का समर्थन किया। श्री जगदीश अवस्थी ने यह विधेयक उपस्थित किया।

शिखर सम्मेलन

भारतीय प्रतिरक्षा मन्त्री श्री वी०के० कृष्णमेनन ने इन्दौर में कहा कि छः मास पहले की अपेक्षा शिखर सम्मेलन सफल होने की अब अधिक आशा हो गई है। विश्व मामलों की भारतीय परिषद् की इन्दौर शाखा द्वारा आयोजित समारोह में भाषण करते हुए आपने विश्व शांति, काश्मीर गोवा और प्रतिरक्षा पर विचार प्रकट किया। आपने कहा कि विश्व शान्ति अमेरिका और रूस के परस्पर सद्भावना पर निर्भर करता है।

ला० में महिलाओं पर लाठी चार्ज

पुलिस ने लाहौर में एक हजार महिलाओं के एक जलूस पर लाठी चार्ज किया। महिलाओं का यह जलूस पश्चिम पाकिस्तान विधान सभा की एक सदस्या के मुसलिमलीग छोड़ कर रिपब्लिकन पार्टी में शामिल होने के विरोध में निकाला गया था, लाठी चार्ज हल्का था।'

नहरी पानी विवाद

उच्च पाकिस्तानी सूत्र के अनुसार पाकिस्तान ने विश्व बैंक के उपाध्यक्ष श्री इलिफ के सुझावों को अस्वीकार कर दिया है। सिन्धु नदी के पानी विवाद पर गत दिसम्बर में उन्होंने कुछ सुझाव दिये थे। स्मरण रहे कि यह विवाद गत ११ वर्ष से भारत और पाकिस्तान के बीच चल रहा है। लोगों का कहना है कि श्री नेहरू की लचर नीति के कारण भारत की बातों को पाकिस्तान स्वीकार नहीं करता।

'अंग्रेजी हटाओ' आन्दोलन

समाजवादी नेता डा० राममनोहर लोहिया ने जयपुर में कहा कि आज देश भर में 'अङ्गरेजी हटाओ' आंदोलन करने की आवश्यकता है, सरकार को चाहिए कि वह प्रत्येक विभाग में ऊपर से नीचे तक हिन्दी का प्रयोग तुरन्त प्रारम्भ कर दे और जनता को भी अपना अधिकाधिक कार्य यथासम्भव हिन्दी में ही करना चाहिए। आपने कहा कि आज हमारे देश में समस्या अङ्गरेजी हटाने की है, हिन्दी प्रस्थापित करने की नहीं। हिन्दी तो राष्ट्र भाषा है ही और स्थापित ही है।

राजदूत सम्मेलन

वाशिंग्टन से समाचार मिला है कि निकट भविष्य में अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, और फ्रांस, इन चार बड़े राष्ट्रों के राजदूतों का एक सम्मेलन वाशिंगटन में राजदूतीय स्तर पर होने वाला है। कूटनीतिक पर्यवेक्षकों के अनुसार उक्त सम्मेलन पूर्व पश्चिम गतिरोध दूर करने के सम्बन्ध में तथा शिखर सम्मेलन के पक्ष में होगा। यदि ढंग से सम्मेलन सफल हुआ तो इसका परिणाम अच्छा हो सकता है।

संक्षिप्त समाचार

—डा० सम्पूर्णानन्द ने २२ मार्च को संस्कृत विश्व विद्यालय वाराणसी का उद्घाटन किया।

—श्री मुरार जी देसाई ने वित्त मन्त्रालय का कार्य भार सम्भाल लिया।

—अमेरिका में बर्फीले तूफान से ४० व्यक्ति मरे और लाखों की क्षतिहुई।

—हरिदास मूंदड़ा के विरुद्ध ४२० का मुकदमा बम्बई में चल रहा है।

—श्री देवीलाल चौधरी पंजाब प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

—सोवियत रूस ने सायबेरिया में पुनः एक उद्जन बम का विस्फोट किया।

—भारत सरकार पुनर्वास मन्त्रालय का बन्द कर रही है और संस्कृति मन्त्रालय नाम से एक नया मन्त्रालय खोलने जा रहा है।

—आचार्य विनोबाभावे ने महाराष्ट्र में कहा कि भाषाई विवाद देश की आजादी के लिए हानिकर है।

—केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री श्री करमरकर ने कहा कि वृहद शिक्षा योजना द्वारा ही परिवार नियोजन सम्भव है।

—भगवत शरण

धर्म-संस्थापना

[श्री मधुसूदन वाजपेयी, कनखल, सहारनपुर]

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश में वैदिक शासन व्यवस्था का जो निरूपण किया है उससे भारत की वर्तमान शासन-व्यवस्था की तुलना करते हुए हम देखते हैं कि राजा के समानान्तर यहां पर राष्ट्रपति का पद है, विद्यार्य सभा के समानान्तर शिक्षा मन्त्रालय है तथा राजार्य सभा के समानान्तर अन्य समस्त मन्त्रालय हैं: परन्तु धर्मार्य सभा के समानान्तर हमारी वर्तमान शासन-व्यवस्था में कोई मन्त्रालय नहीं है। यह बात हमारी शासन-व्यवस्था की एक आधारभूत त्रुटि है कि धर्म-मन्त्रालय जैसी कोई चीज इसमे नहीं है।

वैसे यह प्रसन्नता की बात है कि हमारे राज नेताओं ने सम्राट अशोक के धर्म चक्र को राष्ट्रीय प्रतीक में केन्द्रीय स्थान दिया है तथा भारत के राष्ट्रपति जिस जगह बैठते हैं, उस सिंहासन के ऊपर लिखा है—"धर्म चक्र प्रवर्तनाय"। भारत के राष्ट्रपति "धर्म चक्र-प्रवर्तन" के लिए है। राज्य का उद्देश्य "धर्मचक्र-प्रवर्तन"। मनु का वचन है—

अराजके हि लोकेऽस्मिन्,
सर्वतो विद्रुते भयात्।
रक्षार्थमस्य लोकस्य,
राजानमसृजत्प्रभुः॥

जब संसार मे कोई राजकीय संस्था न था, तो भय और आतङ्क के मारे लोग त्रस्त रहते थे। तब इस (मानव-समाज) की रक्षा के लिए भगवान ने ऐसी बुद्धि दी, जिससे मनुष्य ने संसार मे शासन सत्ता स्थापित की।

धर्म वे कर्तव्य-नियम हैं जिन पर समाज टिका हुआ है। आचार होने के कारण ही इनका नाम 'धर्म' है। जो धारण करे, वह धर्म—'धारयति इति धर्मः'। इस निरुक्ति का ही समर्थन इस लक्षण से भी होता है—

यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः
स धर्मः॥

जिससे अभ्युदय और कल्याण हो, वही धर्म है। इस लक्षण को स्पष्ट करने के लिए धर्म के दश अंग मनु जी ने गिनाये हैं—(१) धैर्य, (२) क्षमा (३) आत्मसंयम, (४) अस्तेय, (५) स्वच्छता, (६) इन्द्रिय-निग्रह, (७) बुद्धि (८) विद्या, (९) सत्य और (१०) अक्रोध। यही धर्म तत्व है। यही असली धर्म है। संसार का कोई मत-मजहब ऐसा नहीं, जो अहिंसा सत्य आदि को धर्म न मानता हो। जिसे सब एक रूप में मानें, वही ठीक। वही मानव-धर्म है। मानव-धर्म को ही भारतीय ऋषियों ने धर्म माना है।

उपरोक्त लक्षण सामान्य धर्म का है। फिर व्यक्ति-भेद, देश-भेद और काल भेद से धर्म-भेद होता है, जिसका निर्णय उपरोक्त कसौटी से होता है। धर्म निर्णय विद्या और बुद्धि के द्वारा होता है, जिनको धर्म के लक्षणों मे गिनाया गया है। हमारे धर्माचार्यों ने बुद्धि पर जोर दिया है और कहा है कि प्रत्येक नियम की बुद्धि से परीक्षा करो और देखो कि वह तुम्हारे अभ्युदय तथा कल्याण मे सहायक है कि नहीं! यदि सहायक है, तो उसे 'धर्म' कहेंगे और बाधक है तो 'अधर्म'। गायत्री-मन्त्र वेदों का सार है। उसमे बुद्धिवाद की ही कामना की गयी है जो मानव जीवन का मूल आधार है। इस बुद्धिवाद के अभाव से ही अन्ध-विश्वासों के आधार पर साम्प्रदायिकता पनपती है, जिसके कारण संसार मे अनेक बार 'कत्ले आम' हुआ है।

धर्म सर्वथा असाम्प्रदायिक होता है। कर्तव्य ही धर्म है। कर्तव्य शास्त्र ही धर्म शास्त्र है। जो धर्म नियम समाज के लिए विशेष आवश्यक समझे जाते हैं उनको ही राजनियम बनाकर राज सत्ता उनका कड़ाई से पालन कराती है और उनका उल्लंघन करने पर दण्ड देती है। इसीलिए दंड को धर्म कहा जाता है—दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः।

वस्तुतः जनता में धर्म भावना (Civic Sense या Senseof Duty) जागृत करना राज्य का मुख्य कर्तव्य है। दण्ड तो इस लोक शिक्षण में सहायक एक साधन मात्र है।

लोक शिक्षण और लोक संग्रह मुख्य कार्य है। इस कार्य के लिए दण्ड विधान के साथ-साथ शिक्षा-पद्धति तथा धर्म मन्त्रालय का उपयोग करना चाहिये। धर्म मन्त्रालय और शिक्षा मन्त्रालय को एक दूसरे का पूरक और सहयोगी होना चाहिये।

शिक्षण संस्थाओं का मुख्य कार्य धर्म शिक्षा अर्थात् छात्रों में कर्तव्य भावना जागृत करना ही है। जैसा राजा होता है वैसी प्रजा होती है और जैसा गुरु होता है वैसे शिष्य होते हैं अतः राज कर्मचारियों तथा शिक्षकों की नियुक्ति मे आचार-विचार की शुद्धता पर ध्यान देना चाहिये। अभी तो अध्यापक का विद्या-सम्बन्धी सार्टीफिकेट देखा जाता है, "क्या पास हो?" बस। उसके आचरण कैसे है; इसकी कोई परवा नहीं! जरूरत इस बात की है कि योग्य तथा सदाचारी व्यक्तियों को ही राजकर्मचारियों के तथा विशेष रूप से अध्यापकों के पद पर नियुक्त किया जाय और उनके आचरणों पर बराबर दृष्टि रखी जाय, आचरण के आधार पर ही वेतन वृद्धि हो।

किसी राष्ट्र के नागरिकों के चरित्र से ही उसका राष्ट्रीय चरित्र बनता है और चरित्र ही राष्ट्र के संगठन तथा अभ्युदय की पहली शर्त है।

आचारः प्रथमो धर्मः। 'आचार हीनं पुनन्ति वेदाः'—जिसका आचरण ठीक नहीं, वह चाहे महा विद्वान् हो, उसका ज्ञान देश को ले डूबेगा।

राष्ट्रीय चरित्र का उत्थान ही सर्वोपरि सभ्यता किंवा एक मात्र लक्ष्य है, जिसके लिए धर्म मन्त्रालय एवं उसके अन्तर्गत धर्म विभाग का गठन होना ही चाहिए, जिसका कार्य लोक शिक्षण किंवा वयस्क शिक्षण होगा। इस विभाग मे आदर्श चरित्र वाले त्यागी तपस्वी विद्वानों को रखना चाहिये, उनको इस विभाग मे सादर साग्रह आमन्त्रित करना चाहिये. तभी वास्तविक राष्ट्र निर्माण होगा। राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण ही तो राष्ट्रनिर्माण है। ईंट पत्थरों से राष्ट्र निर्माण नहीं होता है!

इस विषय में हमें स्वयं सम्राट अशोक से प्रेरणा लेनी चाहिये, जिनका आदर्श हमने अपने सामने रखा है। सम्राट अशोक ने धर्मचक्र प्रवर्तन के लिए ठोस कार्य किया था—धर्ममन्त्री एवं धर्माधिकारी नियुक्त किये थे, जो धर्म प्रचार के लिए धर्म यात्राएं किया करते थे और [illegible] आदर्श चरित्र से जनता को धर्माचरण की प्रेरणा प्रदान किया करते थे। उस आदर्श पर धर्म मन्त्रालय एवं धर्म विभाग का गठन हमारे वर्तमान शासन की एक बहुत बड़ी और अनिवार्य आवश्यकता है जिसकी पूर्ति जितनी ही जल्दी हो, उतना ही स्वदेश और संसार के लिए कल्याणकारी है।

चाहे आप उसे राम-राज्य कहें या सर्वोदय समाज कहें पर एक आदर्श समाज का अस्तित्व धर्म के आधार पर ही सम्भव है। अतः धर्म संस्थापन के लिए राज्य का एक पृथक मन्त्रालय अवश्य ही होना चाहिए; बल्कि यही उसका मुख्य अङ्ग है।

सम्प्रदाय को धर्म समझना एक व्यापक भ्रान्ति है। इसी भ्रान्ति के कारण लोग "अनेक धर्मों" की बात करते हैं और कहते है कि भारत एक "धर्म निरपेक्ष" नहीं, 'सम्प्रदाय निरपेक्ष" राज्य है। धर्मचक्र-प्रवर्तन तो राज्य का घोषित लक्ष्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए राज्य को ठोस कदम अवश्य तथा शीघ्र उठाना चाहिए।

आशा है कि आर्य विद्वान् इस विषय पर और प्रकाश डालेंगे तथा उनके नेतृत्व मे हम निकट भविष्य मे ही "धर्म मन्त्रालय" के गठन के रूप में ऋषि के स्वप्न को साकार होते हुए देखेंगे।

स्वामी दयानन्द और राष्ट्रीयता

(विश्वबन्धु वेदालङ्कार एम० ए० आगरा)

[लेखक के विचारों का उत्तरदायित्व हम पर नहीं है —सम्पादक]

इतिहासकार स्वामी दयानन्द को सामान्यतः एक समाज सुधारक ही मानते हैं, पर ऐसे बहुत कम है जो अपनी खोज के पश्चात् इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि स्वामी दयानन्द एक समाज सुधारक ही नहीं वरन् भारतीय स्वाधीनता संग्राम के प्रथम सेनानी भी थे, जिन्होंने दादा भाई नौरोजी और लोक मान्य तिलक से कई वर्ष पूर्व उस समय जबकि राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म भी नहीं हुआ था, स्वराज्य शब्द का उद्घोष किया था और अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा "कोई कितना ही करे जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात् शून्य, प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय एव दया के साथ भी विदेशियो का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है।" कुछ इतिहास कारों की यह भी मान्यता है कि स्वामी दयानन्द सन् १८५७ तक कानपुर से इलाहाबाद और फर्रुखाबाद तक गङ्गा के किनारे घूमते रहे थे और इन वर्षों के बारे में अपने जीवन की घटनायें लिखते समय वे सर्वथा मौन रहे है। हमारा राजस्थान, पृष्ठ २७५) किन्तु यह समझ में नहीं आता कि स्वामी दयानन्द जैसा महान् व्यक्ति भी किसी दूसरे के निर्देश में काम कर सकता था। परन्तु इतना स्पष्ट है कि १८५७ के राष्ट्रीय विद्रोह को स्वामी जी ने अपनी आंखों से देखा था और यह भी देखा था कि किस प्रकार धार्मिक मतभेद और जातीय विषमता के कारण एकता के अभाव में एक झंडे के नीचे एकत्र न होने से यह राष्ट्रीय समाम असफल हो गया। इसलिए उन्होंने सोचा कि जबतक धार्मिक विषमता और जातीय विभेद रूपी खाई नहीं पाटी जायगी तबतक स्वराज्य रूपी विशाल भवन खड़ा करना असम्भव है। यही सोच कर स्वामी दयानन्द ने स्वराज्य का अपना लक्ष्य बनाकर राष्ट्र और समाज सम्बन्धी बुराइयों को जड़ से उखाड़ फेंकने का प्रथम निश्चय किया।

यहाँ यह प्रश्न उठ सकता है कि यदि स्वामी जी विदेश शासन को समाप्त ही करना चाहते थे तो क्यों नहीं गांधी जी की भांति सरकार से सीधी लड़ाई छेड़ दी। परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उस समय भारत में पश्चिमी सूर्य अपनी प्रखर रश्मियों से चमक रहा था और समस्त भारतवासी उसमें चौंधिया रहे थे। यहां यह भी कि तत्कालीन समाज सुधारक राजा राममोहन राय और केशवचन्द्र सेन जैसे लोग भी ब्रिटिश राज्य की छत्रछाया में ही रहना उपयुक्त समझने लगे थे और इसीलिये उन्होंने अपना सुधार पश्चिमी सभ्यता की नींव पर ही खड़ा करना चाहा था। ये सब परिस्थितियां स्वामी दयानन्द से छिपी न थीं। वह कुशल कलाकार था और कलाकार की भांति ही उसने अपने स्वराज्य को खड़ा किया। उसने सोचा कि भारतवासी अपने स्वरूप को भूल चुके है इसलिए जबतक उन्हें प्राचीन गौरव और वैभव का दर्शन नहीं कराया जायगा तबतक भारतीय आत्मा जो प्रसुप्त अवस्था में है जागृत होना महा-कठिन है। इस भावना के प्रसार के लिए उन्होंने समस्त देश का भ्रमण किया और अपने ग्रन्थों व भाषणों में स्पष्ट घोषणा कर दी कि यह भारत देश सबसे ऊँचा देश है। यही समस्त धर्मों का आदिस्रोत है, समस्त विद्या और शिक्षा का भंडार है। यहीं के निवासियों ने समस्त संसार को सभ्यता और सदाचार की शिक्षा दी है।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्व स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः॥ मनु०।

यह आर्यावर्त देश ऐसा देश है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा देश नहीं है। जितने भूगोल में देश है वे सब इसी की प्रशंसा करते और पारसमणि समझते है। यह आर्यावर्त देश वस्तुत, पारसमणि है जिसको लोहे रूपी दरिद्र विदेशी छूते ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य बन जाते है"। (सत्यार्थ प्रकाश)

इन्हीं भावनाओं से उनके समस्त ग्रन्थ भरे पड़े है। स्वामी दयानन्द के इस प्रयत्न से भारतवासियों की प्रसुप्त आत्मा सहसा जाग उठी और हम देखते है कि स्वामी दयानन्द के बाद गांधी जी के नेतृत्व में यही राष्ट्रीय भावना अधिकाधिक बलवती होती चली गई।

इस राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने के साथ-साथ स्वामी दयानन्द ने स्वराज्य के लिये एक धर्म एक भाषा और एक विचार का होना भी नितान्त आवश्यक समझा। तत्कालीन समय में मुसलमानों और ईसाइयों की बढ़ती हुई संख्या को देखकर स्वामी दयानन्द ने पता लगा लिया था कि वे लोग कालान्तर में देश के विभाजन का कारण बनेंगे। इसीलिये उन्होंने देहरादून में मोहम्मद उमर स्वय्याम को अलखधारी बनाकर देश को यह चेतावनी दी थी कि ये मुसलमान और ईसाई हमारे ही भाई है। इन्हें अपने में मिला लेना चाहिये। यह साम्प्रदायिक दृष्टिकोण नहीं वरन् देश की एकता के लिये शुद्ध राष्ट्रीय दृष्टिकोण था, नहीं तो स्वामी दयानन्द जैसा महान् व्यक्ति जिसने अपने जहर देने वाले को भी यह कहकर छुड़ा दिया कि "मैं संसार को मुक्त कराने आया हूं कैद कराने नहीं (दयानन्द प्रकाश) इस प्रकार के झमेले में न पड़ता। स्वामी दयानन्द के असामयिक देहावसान से यह कार्य पूर्ण न हो सका, नहीं तो भारत का विभाजन न हुआ होता।

राष्ट्रीय एकता के लिए स्वामी दयानन्द एक भाषा का होना भी नितान्त आवश्यक समझते थे। आज हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा हो गई, पर स्वामी जी ने आज से सौ वर्ष पूर्व उस समय जबकि कोई भी हिंदी के राष्ट्रभाषा होने की कल्पना भी नहीं कर सकता था, उन्होंने ही सर्व प्रथम हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने की घोषणा की। स्वामी जी स्वयं संस्कृत के उद्भट विद्वान् थे और स्वकीय मातृभाषा गुजराती थी, हिंदी वे जानते भी न थे, तथापि उन्होंने हिंदी सीखकर अपने समस्त ग्रन्थ हिंदी में ही लिखकर देश का मार्ग दर्शन किया। जबकि बंगाल के बकिमचन्द्र और महाराष्ट्र के विष्णुशास्त्री चिपलूणकर जैसे महान लेखक भी अपनी रचनाएं स्वकीय प्रान्तीय भाषाओं में ही लिख रहे थे।

देश की आर्थिक दुर्दशा की ओर से भी स्वामी दयानन्द की आँखें बन्द न थीं। देश की दुदशा पर आंसू बहाते हुए स्वामी जी लिखते है कि "जबसे विदेशी इस देश में आकर राज्याधिकारी हुए है तबसे क्रमशः भारत में दुखों की बढ़ती होती जाती है। (सत्यार्थ प्रकाश) पराधीनता को ही सब दुखों की जड़ मानते हुए लिखते है जब स्वदेश में परदेशी राज्य करें तो बिना दारिद्र्य और दुख के दूसरा कुछ भी नहीं हो सकता। (सत्यार्थ प्रकाश) कितनी वेदना है इन शब्दों में। इसलिए उन्होंने तत्कालीन समय के जर्मनी के प्रसिद्ध व्यवसायी वांस महोदय को पत्र लिखकर भारतीयों को टेक्नीकल शिक्षा देने की प्रार्थना की थी। (स्वामी दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन) इसी के साथ-साथ देश की इस आर्थिक विषमता को दूर करने के लिये उन्होंने गो पालन पर विशेष जोर दिया। गांधी जी की राजनीति में जो स्थान चर्खे का है; स्वामी दयानन्द की राजनीति में वही स्थान गौ का है। वास्तव में गौ का स्थान चर्खे से कहीं अधिक है। उन्होंने अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ गौ करुणानिधि लिखकर बताया कि एक गाय अपने जीवन में हजारों मनुष्यों का पालन करती है। (गौ करुणा निधि) गोवध बन्द कराने के लिये भी उन्होंने कई लाख हस्ताक्षर करवा कर महारानी विक्टोरिया को भेजे थे। (स्वामी दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन।)

विदेशों में भी स्वामी दयानन्द ने भारतीय गौरव को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया था। स्वामी जी के प्रसिद्ध शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा जो पीछे जाकर भारतीय क्रान्तिकारियों के गुरु बने, आक्सफोर्ड विश्व विद्यालय में संस्कृत के प्रा० बनकर जाते समय पत्र लिखकर स्वामी दयानन्द ने उनको अपने पास बुलाकर कहा था कि प्रत्येक दशा में भारतीय उन्नति के लिये ही तुम्हारा प्रयत्न होना चाहिये। (स्वामी दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन) इसी आधार पर कुछ लोगों की मान्यता है कि स्वामी दयानन्द से प्रेरणा पाकर ही श्याम जी कृष्ण वर्मा ने भारत को मुक्त करने के लिये इंगलैंड में क्रांतिकारी पार्टी का निर्माण किया था।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द राष्ट्रीय जागरण के प्रथम जनक प्रतीत होते हैं। राष्ट्रीयता स्वामी दयानन्द की आध्यात्मिकता का प्राण थी। अन्य देश वासी राजा हमारे देश में न हों हम लोग पराधीन कभी न रहें (आर्याभिविनय पृष्ठ २१४) दयानन्द के इन शब्दों में पूर्ण स्वराज्य की घोषणा है भारत छोड़ो की ललकार है। परन्तु स्वामी दयानन्द ने यह राष्ट्रीय विचार पश्चिम की उस शिक्षा-दीक्षा से नहीं लिया था जिसका बहुत बड़ा अहसान अंग्रेज शासकों की ओर से हमारे सर पर लाद दिया जाता है और हम भी बड़े अदब के साथ मान लेते हैं कि इस देश में पैदा हुई राष्ट्रीय भावना, राजनीतिक आकांक्षा और स्वराज्य की इच्छा ब्रिटिश शासन की देन है। यह सौभाग्य की बात है कि स्वामी दयानन्द अंग्रेजी से सर्वथा अनभिज्ञ थे। उनका विचार शुद्ध भारतीय था और विदेशी प्रभाव से रहित था।

★

धधकता पंजाब (३)

!! एकांकी नाटक !!

! तृतीय दृश्य !

(लेखक- श्री रणजीतसिंह वैद्य प्रधान, जिला आर्य उपसभा पीलीभीत)

★

[गतांक से आगे]

(स्थान-स्वामी आत्मानन्द जी के आश्रम के बाहर का भाग)

[सतनाम सिंह का प्रवेश]

सतनाम—स्वार्थ से अन्धा हुआ इन्सान भले बुरे की कुछ पहिचान नहीं रखता। वह, वह करता है जो उससे स्वार्थ कराता है और उस स्वार्थ से वशीभूत होकर अपने किये को ठीक मानकर औरों को भी गुमराह करने में अपनी बहादुरी समझता है। इस सितारासिंह को क्या हो गया है? हिन्दू और सिक्ख जो एक ही पेड़ की दो शाखायें है उन्हे अलग करने मे डटा हुआ है। हमारे गुरुओं ने हमे अलग नहीं किया हम हिंदुओं में से हुए और अब तक एक घर में एक भाई सिक्ख है तो दूसरा हिन्दू, बेटा सिक्ख है तो पिता हिन्दू हमारे परस्पर रिश्ते एक दूसरों के घरो में चले आ रहे हैं हमारे गुरुओ को हिन्दू बराबर अपना गुरु मानते आ रहे है। हमारे पूर्वज भी राम-कृष्ण दिलीप मानधाता हैं। गुरुद्वारों मे हमारी ही तरह हिन्दू भी श्रद्धा से जाते आते हैं और पवित्र गुरु वाणी को सुनते है। यह जितने गुरुद्वार बने है उनमे हिंदुओं की गाढ़ी कमाई का धन लगा है। हमारा और हिन्दुओ का दु:ख सुख एक है। पाकिस्तान मे जो सलूक मुसलमानो ने हमसे किया वह हिंदुओं से हुआ हमने और हिन्दुओं ने कन्धा से कन्धा मिलाकर एक दूसरे का दुःख बटाया रिफ्यूर्जी होने पर भी हमसे कोई व्यवहार हिन्दुओ ने अलग नहीं किया हम रहने का, खाने का, हमारे बच्चों की देखरेख एक सी की फिर मेरा समझ मे नहीं आता कि हिंदुओ से अलग कैसे है? और कैसे अलग रह सकते है? यह सितारासिंह गुरु द्रोही है मैं गुरुओ की बात मानूंगा इस कुलघाता सितारासिंह की हरगिज नहीं। मैं वीतराग महात्मा श्री आत्मानन्द जी से जाकर अभी कहता हूं ताकि खतरे से पहले ही हिन्दू कौम सचेत हो जावे। अरे! कोई है—

(गणेश का प्रवेश)

गणेश :—(सामने देखकर) ओह! सरदार सतनाम सिंह जी नमस्ते।

सतनाम :—नमस्ते! नमस्ते गणेश जी क्या स्वामी जी आश्रम मे है? मैं उनसे मिलना चाहता हूं। मेरा दिल बैठा जा रहा है।

गणेश :—जी हां स्वामी जी आश्रम में ही हैं क्यों खैर तो है? आपका स्वास्थ ठीक तो है? दिल कैसे बैठा जा रहा है? चलिए मेरे साथ चलिये मेरे साथ चलिए मैं आश्रम में चलकर अभी सेवा सुश्रूषा करूंगा आइये! आइये!!

(दृश्य परिवर्तित स्वामी आत्म नंद जी आश्रम मे आसन पर विराजमान हैं) (सतनाम और गणेश का प्रवेश)

दोनों :—स्वामी जी नमस्ते!

स्वामी जी :- आयुष्मान भव! (सतनामसिंह की ओर देखकर) ओह! सतनाम नमस्ते कहो कैसे कष्ट किया तुम आज अकस्मात् यहां कैसे?

सतनाम :-स्वामी जी आत्मिक कष्ट मिटाने के लिए आत्मा के चिकित्सक के पास ही आया जाता है।

स्वामी जी :—क्यो खैर तो है? परिवार में सब राजी खुशी से तो हैं?

सतनाम :—परिवार सब आनंदित है मुझे परिवार से अधिक देश की चिन्ता है पंजाब सब जल जायेगा, देश मे एक भयानक आग पैदा होने वाली है।

स्वामी जी :—क्यों? कैसी? अभी तो पंजाब पाकिस्तान बनने से सीधा भी नहीं हो पाया है। क्या कोई और भयानक आफत आने वाली है?

सतनाम :—जो पंजाब सतलज, व्यास, रावी, चुनाव, झेलम से सदा हरा भरा रहता था जिसकी पैदावार न केवल अपने इलाके के लोगों की परवरिश करती थी बल्कि मुल्क के अन्य भागों की भी कमी को पूरा करती थी जिसने बंगाल के दुर्भिक्ष को दूर करने में एक बड़ा पार्ट अदा किया जो सदा सरसब्ज गुलजार था आज वहाँ खून की दुर्गन्ध आ रही है यहाँ आदमी भूख के लिए मोहताज हो रहा है हा! कैसा अभागा है यह पंजाब अब इसमें एक और नई आफत बरपा होने वाली है? नहीं, मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। स्वामी जी बचाओ बचाओ, मेरी इमदाद करो स्वामी जी!

(बेहोश होकर गिर पड़ता है गणेश स्वामी जी के कमण्डल से छींटे देकर होश में लाता पंखा करता है।)

स्वामी जी :—गणेश तुम दूध लाओ इन्हें दूध पिला कर चेतन्य करो।

(गणेश दूध लाकर सतनाम को देता है।)

सतनाम :—स्वामी जी! मुझे दूध नहीं चाहिए। आप मुझे दूध पिलाते है मेरी सेवा में सुश्रूषा करते हैं। वहां भाई, भाई के खून का प्यासा बन रहा है।

स्वामीजी :—सेवा सुश्रूषा करना मानवीय धर्म है दुखी का दु:ख हरण करना हमारा कर्तव्य है। तुम स्वस्थ हो जाओ बहकी बहकी बातें न करो कौन किस के खून का प्यासा हो रहा है।

सतनाम :—सितारासिंह मास्टर

स्वामी जी :—सितारासिंह एक समझदार व्यक्ति है, वह ऐसा कभी नहीं कर सकता। क्यों? क्या कोई उससे तुम्हारा झगड़ा हो गया है? हम उसे समझा देंगे वह तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं करेगा।

सतनाम :—मेरा नहीं, आपका कुल हिन्दुओं के खून का वह प्यासा है।

स्वामी जी :—ऐसा क्यों?

सतनाम :—आज मैं उसकी बैठक की ओर आ गया वह सन्तापसिंह, करमारसिंह आदि कई सरदार बैठे हुए थे मैं भी जाकर बैठ गया वहाँ पहिले तो उसने पाकिस्तान से बदला लेने को कहा और उस बदला लेने मे उसकी सूझ क्या हुई कि यहाँ एक सिक्खिस्तान बनाया जाये। मैंने उससे कहा कि सिक्खिस्तान यहां बनाने से पाकिस्तान से बदला कैसे होगा यहां तो सब भाई भाई हैं।

स्वामी जी :—हां, सभी भाई भाई है। सिक्खिस्तान अलग बनाने से फूट का एक नया बीज वपन होगा पाकिस्तान बनने मे जो देश को भयंकर क्षति हुई उसकी पूर्ति अभी तक हो न पाई और शायद कयामत तक पूर्ति न होगी अब यह और विद्वेष का बीज पैदा हो गया तो महानाश है। इसे अंकुरित होने मे पहिले ही मसल देना चाहिए। मैं सितारसिंह और उसके साथियों को समझाऊगा। शासकों से भी इस विषय मे बातचीत करके परस्पर सब मेल से रह सकें ऐसा रास्ता निकालूंगा। तुम घबराओ नहीं जब तुमसे अनेकों गुरुभक्त सिक्ख मौजूद हैं जो गुरु की आन, बान शान पर बट्टा नहीं लगाना चाहते तो ऐसा क्यों होगा? सिक्ख गुरु भी हमारे गुरुओं के समान हैं गुरुओं ने इस संस्कृति के लिए, इस वैदिक धर्म के लिए सब कुछ किया। अपने प्राणों की बलि दे दी पर धर्म न दिया तो गुरुभक्त सिक्ख उनके पदानुगामी बन कर देश धर्म की रक्षा के लिये क्या तत्पर न होंगे?

सतनाम :—गुरुभक्त खालसा सदा वाह गुरु की फतह कहेंगे और गुरु के चरण चिन्हों पर चलेंगे। पर यह सितारासिंह अकालियों का नया गुरु बन रहा है वह गुरुओं के नाम पर धोखा दे रहा है।

स्वामी जी :—गुरुओं का चरित्र खरे सोने के समान शुद्ध है उसमें खोट कौन मिला सकता है जो लोगों का धोखा दे दे।

सतनाम :—श्री वाह गुरु की खालसा, वाह गुरु की फतह। हम वाह के सन्देश का घर घर सुनावेगे। और बतावेंगे कि हिन्दू सिक्ख भाई भाई हैं। हम हिन्दुओं से कभी अलग नहीं हो सकते। अच्छा, नमस्ते, आप इन बातो पर ध्यान करके रास्ता बनाइए और मैं वाह गुरु की अलख जगाऊगा। (जाता है)

स्वामी जी :—देखो, यह भी सिक्ख है। इसके हृदय मे देश धर्म से कितनी प्रीति है। गुरुओ का कैसा भक्त है। हिन्दू सिक्ख एकता की कितनी तड़प है। (गणेश से) तुम यात्रा का प्रबन्ध करो। मैं अभी देहली जाऊंगा। सार्वदेशिक सभा से राय लेकर कुछ रास्ता बनाऊँगा। (सब जाते हैं) क्रमशः

आवश्यकता

एक मालाकार परिवार के स्वस्थ, सुन्दर एवं १० वां क्लास तक पढ़े हुए युवक के लिए एक स्वस्थ एवं गृह कार्य मे निपुण कन्या की आवश्यकता है। कन्या १५ से २२ वर्ष तक की हो। मालाकार परिवार के अलावा दूसरे परिवारों के भी पत्र दे सकते हैं युवक अच्छा काश्तकार है और अपना जातीय पेशा करता है। अच्छी आमदनी है। पता-डा० काशीनाथ सिन्हा प्रधान आर्यसमाज पो० चतरा जि० हजारीबाग [बिहार]

गुरु ग्रन्थ साहब में—
हिंदी, संस्कृत तथा वेदों की महत्ता

[श्री शान्तिप्रकाश शास्त्रार्थ महारथी ३६१/४ पानीपत, पंजाब]

सिखों के दस गुरू माने गये हैं। (१) गुरू नानक देव जी (२) गुरू अंगद (३) गुरू अमरदास (४) गुरू रामदास (५) गुरू अर्जुनदेव (६) गुरू हरगोविन्द (७) गुरू हरकिशन (८) गुरूहरराम (९) गुरू तेगबहादुर (१०) गुरू गोविन्दसिंह जी।

इन दस में से गुरू हरगोविन्द, गुरू हरकिशन तथा गुरू हरराम की वाणी गुरु ग्रन्थ में नहीं है। इसलिए महिला १, २, ३, ४, ५, ९, गुरु ग्रन्थ में हैं। दशम गुरू का दशम ग्रन्थ इससे पृथक् है। ईश्वर भक्ति में गुरुओं ने स्वयं को स्त्रीवत् मानकर अपने लिए महिला शब्द की प्रवृत्ति चलाई। बहुधा सिक्खों का विश्वास है कि गुरू गोविन्दसिंह जी के पश्चात् कोई गुरू देहधारी न होगा। जैसा कि जन्म साखी भाई बाला पृ० ३७४ में लिखा है:—

आज्ञा भई अकाल की,
तभी चलाइयो पन्थ।
सब सिक्खन को हुक्म है,
गुरू मानियों ग्रन्थ॥

जन्म साखी पृ० ७३४

किन्तु नामधारी सिक्ख गुरुरामसिंह जी को ग्यारहवां गुरू मान कर उनकी गुरू जैसी महत्ता स्वीकार करते हैं। गुरू रामसिंह अंगरेज सरकार के समय गोरक्षा के अपराध में पकड़े गये थे और भारत से निष्कासित किये गये थे। प्रायः नामधारी सिख अकाली साम्प्रदायिकता से शून्य स्वयं को आर्य जाति का अङ्ग मानते हैं। इनमें संस्कृत के अच्छे विद्वान् मिल जाते हैं। वेदों में इनकी आस्था आर्यों जैसी है। यह मांस खाने के विरोधी तथा कट्टर गोभक्त हैं। सहृदयधारा और देश हितैषी हैं। अकालियों के पक्षपात पूर्ण आन्दोलनों का साथ नहीं देते और आर्य जाति के साथ मिलकर रहने में श्रेष्ठता समझते हैं।

अकाली सिक्ख सम्प्रदायवादी हैं। अवसरवाद भी इनको बहुत प्यारा है, कभी हिन्दू सिखों को दो आंखें बताते हैं। और कभी हम हिन्दू नहीं, गौ तथा बकरी में कोई भेद नहीं, हमारी सभ्यता तथा भाषा हिन्दुओं से पृथक है इत्यादि की रट लगाकर आर्य जाति को आंखें दिखाते हैं। आज वह पंजाब में भाषा समस्या पर हिन्दू सिखों को ओतनातनी है, इसका उत्तरदायित्व अकाली नेता मास्टर तारासिंह जी पर ही है।

पंजाबी क्षेत्र तथा हिंदी क्षेत्र पृथक्-पृथक् बनवा कर मास्टर जी ने श्री जिन्नाह जी की विभाजन नीति का ही अनुसरण किया है। अब पंजाबी क्षेत्रीय ४७ प्रतिशत आर्यों की मातृभाषा हिंदी मानने वाली जनता तथा हिंदी क्षेत्रीय ९६ प्रतिशत जनता बलात् गुरुमुखी लिपि वाली पंजाबी के जुए के नीचे दबाई जा रही है। जिसके विरुद्ध हिंदी जनता ने सुदृढ़ मोरचा तैयार किया। हिंदी माता के लिये आर्यों के बलिदान व्यर्थ कदापि नहीं जा सकते। श्रीमान् मास्टर जी तथा सरकार को सीधी सरणी पर चलना स्वीकार करना ही पड़ेगा।

मैंने अकाली नेताओं को शास्त्रार्थ का चैलेंज दे रखा है, जोकि स्वीकार नहीं किया गया। जिससे अकालियों के पक्ष की निर्बलता स्वयं सिद्ध है। हमारा दृढ़ धारणा है कि गुरुग्रन्थ में हिन्दी को ही महत्ता प्राप्त है। वह हिन्दी जो संस्कृत निष्ठ हो। पंचानवें प्रतिशत गुरुओं की वाणी हिन्दी में है। गुरु नानक देव जी से लेकर गुरु गोविन्दसिंह जी के प्रायः सभी लेख हिन्दी में हैं। पंजाबी, फारसी, अरबी, तथा उर्दू का भाग गुरुवाणी में नगण्य है। गुरुवाणी में सर्वत्र हिन्दी संस्कृत की प्रधानता है। इस विषय पर मैं मास्टर तारासिंह जी को भारत के किसी भी नगर में सहस्रों लाखों की जनता में सत्यासत्य निर्णयार्थ शास्त्रार्थ का पुनः निमन्त्रण देता हूं। जनता के लाभार्थ कुछ प्रमाण उद्धृत कर देना भी आवश्यक समझता हूं। देखिये—

(१) गुरमुखि नादं गुरुमुखि वेदं,
गुरमुखि रहिया समाई।
गुर ईसर गुरु गोरख,
बरमा गुर पारबती माई॥

जपुजी पौड़ी ५ म० १

गुरू ईश्वर के मुख से नाद (वाणी) का प्रकाश हुआ। यह वाणी ईश्वर के मुख से निकले वेद के द्वारा ही प्रकट हुई। गुरु ईश्वर के मुख से प्रकट होने के कारण ही नाम गुरुमुख हुआ। गुरु परमात्मा ही ब्रह्मा विष्णु तथा शिव के नामों से प्रख्यात अपनी प्रकृति रूपी माया-सृष्टि की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय का कर्ता है।

(२) एक ॐ सतिगुरु प्रसादि।
ओं अकार ब्रह्मा उत्पाती।
" " संत जुग भये।
" " वेद निरमए।
" " सबद उधरे।
" " गुर मुख तरे। म०१

ओंकार ही सच्चा गुरु है। जो पवित्र सदा प्रसन्न तथा स्वच्छ है। ओंकार का नाम ही ब्रह्मा है जब वह संसार का उत्पादन करता है। ओंकार का नाम ही विष्णु है, जब वह चेतना द्वारा संसार का पालन पोषण का क्रम चलाता है। ओंकार का नाम ही शिव है, जब वह युगयुगान्तरों के पश्चात् प्रलयंकारी होता है। ओंकार ने संसार के उद्धार के हेतु वेदों का निर्माण प्रारम्भ में किया। ओंकार परमेश्वर ने ही वेदों के द्वारा शब्द या वाणी का उद्धार और प्रचार किया। ओंकार द्वारा ही गुरमुख ईश्वरीय वेद वाणी का सहारा लेने वाला गुरमुख भवसागर को पार करने में सामर्थ्य प्राप्त कर सकता है, इतर नहीं।

(३) सच नाद वेद गुरबानी।
मन राता सारंग पानी॥ म०१

वेदों के सभी नाद=शब्द ही गुरूवानी कहलाते हैं। जो मन रूपी प्यासे हिरण की मृगतृष्णा मिटाने का सामर्थ्य रखते हैं।

(४) साची कीरत साची वाणी।
होर न दिसे वेद पुराणी॥ म०१

सच्ची कीर्ति और पथ की दात्री सच्ची वाणी वेद और वेदों में पुराण संज्ञा से प्रख्यात मन्त्रों के अतिरिक्त और कोई नहीं।

(५) चाक उपाय चारे वेदा।
खानी चारे वाणी भेदा॥ म०

मोक्ष प्राप्ति के चार ही उपाय हैं। जिनको चारों वेदों में ईश्वर ने प्रकट किया है। अर्थात् ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान। स्तुति, प्रार्थना, उपासना, साक्षात्कार। श्रवण, मनन निदिध्यासनादि साधन चतुष्टय भी चार उपाय हैं। उद्भिज, अंडज, स्वेदज, जरायुज यह चार प्रकार की ईश्वर ने उत्पत्ति की। और वाणी के समस्त भेद भी ईश्वर ने प्रारम्भ सृष्टि में वेद द्वारा प्रकट किये।

(६) हरि आज्ञा हूए वेद।
पाप पुन्य विचारिया॥
ब्रह्मा विष्णु महेश।
त्रिगुण विस्तारिया॥ बारमार७

ईश्वरीय आज्ञा से प्रारम्भ सृष्टि में वेदाविर्भाव हुआ। ईश्वरीय ब्रह्मा, विष्णु, महेश नामों से ही ईश्वर के तीन गुणों उत्पत्ति स्थिति और प्रलय का विस्तार हुआ। अथवा इन ईश्वरीय नामों के द्वारा प्रकृति के तीन गुणों सत्व रज तम का उत्पत्ति स्थिति प्रलय रूपेण विस्तार हुआ।

(७) चार वेद हुए सचिचार।
पढ़े गुणोतेन चार विचार बार आसा

चार वेद ईश्वर द्वारा प्रकट होने से सच्चे हैं। अतः मुमुक्षु और संसार का भला चाहने वाला मनुष्य चारों वेदों का उच्चार कर, वेद मन्त्रों का विचार करे और वैदिक शिक्षाओं का आचार बनाये।

(८) वेद कतेब कहो मत झूठे।
झूठा सो जो न विचारे॥

प्रभाती पृ० १२४७

वेद की पुस्तक को झूठा मत कहो। झूठा वह है जो विचार नहीं करता।

(९) गुरु गोविन्द नाम धुनि वाणी।
सिमृति सासत्र वेद बखानी॥

गौड़ी पृ० ४६३

गुणों से अलंकृत ईश्वरीय नाम की ध्वनि वाली वाणी स्मृति शास्त्र तथा वेदों में कही गयी है।

(१०) सबदु सति सति प्रभु बकता।
सुरति सति सति जसु सुनता॥

गौड़ी पृ० ४६९

वैदिक वाणी के शब्द सब सच्चे हैं क्योंकि वेद वाणी के शब्दों का प्रवक्ता प्रभु सच्चा है। अतः श्रुति सच्ची तथा श्रुति के प्राप्त करने वाले ऋषि भी सच्चे हैं।

संक्षेपतः दस प्रमाण उपस्थित किये गये हैं जिनमें वेद और वैदिक बानी की महत्ता को भली भांति स्वीकार किया गया है। अनेक प्रमाण शास्त्रार्थ में उपस्थित किये जा सकते हैं। जिनका संकलन अभी के स्वाध्याय में मैंने किया है। पूरी एक कापी इन प्रमाणों से भरपूर है। जिसका एक पृष्ठ ही पाठकों के लाभार्थ उपस्थित किया गया है। गुरुनानक देव जी ने ब्रह्मा जी की वेदवाणी का गायन करते हुए जपुजी में कहा है कि—

सुअसति आथि वाणी बरमाउ।
सति सुहाणु सदा मनि चाउ॥

ब्रह्मा जी की आथर्वण वाणी कल्याणकारिणी, सच्ची सुन्दर तथा सदैव मन को प्यारी लगने वाली है।

यज्ञ में होता, उद्गाता, अध्वर्यु तथा ब्रह्मा ऋग्यजु साम तथा अथर्व के प्रतिबोधक माने गये हैं। यज्ञ में चार वेद ज्ञाता तथा अथर्व के विशेषज्ञ का नाम ही ब्रह्मा है। जिसकी वाणी की प्रशंसा गुरु जी ने की। सिख रहित मर्यादा में सिखों के विवाह संस्कार वेद वाणी की महिमा प्रदर्शन के साथ ही सम्पन्न होते हैं।

गुरुकाल में समस्त भारत तथा पंजाब की जन भाषा हिंदी को ही माना गया है। गुरु ग्रन्थ में इसका नाम बावन अखरी लिखा है। ५२ अक्षर हिंदी के हैं। गुरुमुखी के ३५ अक्षर हैं। अतः गुरुओं की वाणी हिंदी भी इसी हिंदी भाषा में ही

(शेष पृष्ठ १२ पर)

हमें क्या मिला—

पंजाब हिन्दी आन्दोलन का सुपरिणाम

-- श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी—

भारत के माननीय गृह मन्त्री श्री पं० गोविन्द बल्लभ जी पन्त के पंजाब हिन्दी आन्दोलन सम्बन्धी ३ मार्च को लोक सभा में दिए गये वक्तव्य को पढ़ कर बहुत से लोगों को भ्रान्ति होना स्वाभाविक है सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में इसी प्रकार के पत्र आ रहे है कि जिनमें स्थिति का स्पष्टीकरण करने की मांग है। अतः उनके भ्रम निवारणार्थ आन्दोलन के सुपरिणामों के सम्बन्ध में कुछ पंक्तियां लिखना अनिवार्य हो गया है।

आन्दोलन की सफलता—असफलता का ज्ञान हमें तभी हो सकता है कि जब हमे आन्दोलन से पूर्व पंजाब के विशाल वातावरण का परिचय हो। उस समय पंजाब के ७० प्रतिशत हिन्दुओं को जालन्धर डिवीज़न मे अल्पसंख्यक बनाकर उन्हे सिखों की दया पर छोड़ दिया गया था और सच्चर, पेप्सू व रीजनल आदि भाषायी बेड़ियां उनके पैरों में डाल दी गई थीं। हिंदू अपना आत्म विश्वास खोकर अपनी मौत की घड़ियां गिन रहा था या अपमानित जीवन से तंग आकर अपना घर बार छोड़कर अन्यत्र भागने की तैयारी कररहा था। उसकी आंखों के सन्मुख पुनः वही स्वप्न आने लगे थे कि जो पाकिस्तान बनने पर उसके लाखों साथियों के साथ घटित हुए थे। ऐसी अवस्था में कि जब पंजाब के हिन्दुओं की नैया भंवर में पड़कर चक्कर लगा रही थी और कांग्रेस सरकार का आशीर्वाद पाकर वहां के अकाली इसे डुबाने का प्रयास कर रहे थे आर्यसमाज ने अपने हाथ मे पतवार सभाला और इस डूबती हुई हिन्दुत्व की नौका को बांधने का प्रयास किया। लगातार ७ मास तक इसने भारत की सशक्त सरकार के सन्मुख जो अपने त्याग, धैर्य अनुशासन, बलिदान एव देश भक्ति का परिचय दिया वह भारतीय इतिहास की निधि बन चुका है।

आन्दोलन का मुख्य लक्ष्य दिल्ली की एक सरकारी बंद कोठरी में हुए सरकार व अकालियों के मध्य रीजनल फार्मूले के भाषायी अंग ६ व १० वीं कण्डिकाओं को समाप्त कर एक नये न्यायोचित फार्मूले का निर्माण कराना था। उस फार्मूले की रूपरेखा के लिए सात मांगों की रचना की गई थी। अपने इस लक्ष्य को आन्दोलन के माननीय नेता श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त ने अपनी पुस्तिका "आर्यसमाज और पंजाब की भाषा समस्या" के पृष्ठ १४ पर स्पष्ट रूप से निम्न शब्दों में लिख दिया था।

"आर्यसमाज का यह आन्दोलन क्षेत्रीय योजना की रूपरेखा के केवल भाषा सम्बन्धी भाग के विरुद्ध है। जिसका उल्लेख कण्डिका ६ व १० में है।" सुविधा के लिए कण्डिका ६ व १० उद्धृत की जाती है।

(६) वर्तमान् पंजाब राज्य के क्षेत्र में सच्चर फार्मूला लागू रहेगा और उस क्षेत्र में जो वर्तमान पेप्सू राज्य है वर्तमान व्यवस्था तब तक लागू रहेगी जब तक कि बाद मे पारस्परिक समझौते से उसके स्थान पर कोई दूसरी व्यवस्था तब तक लागू नहीं की जाती अथवा वह बदल नहीं दी जाती।

(१०) जिला स्तर और उससे नीचे प्रत्येक क्षेत्र की सरकारी भाषा क्षेत्रीय भाषा होगी।

आन्दोलन को सामयिक बतलाते हुए श्री गुप्त जी ने इसी पुस्तक के पृष्ठ १३ पर लिखा है कि बन्द कोठरी मे लिए गए समझौते का तब तक कोई मूल्य नहीं है कि जब तक उसे भारत के राष्ट्रपति की स्वीकृति प्राप्त न हो जाय और चूंकि अब वह माननीय राष्ट्रपति जी की मेज पर स्वीकृति के लिए उपस्थित है इसलिए आंदोलन के लिए यही समय सर्वोत्तम है ताकि ६ व १० कण्डिकाओं को स्वीकृति प्राप्त न हो सके।

आन्दोलन का परिणाम क्या हुआ? इसे अब आप निम्न पंक्तियों में पढ़िये—

१—४ नवम्बर ५७ को राष्ट्रपति जी ने जब पंजाब के क्षेत्रीय फार्मूले को स्वीकृति प्रदान की तो उन्होंने ६ व १० वीं धाराओं को समाप्त कर दिया और फार्मूले के शेष भाग को स्वीकृत कर लिया इस प्रकार आन्दोलन अपने लक्ष्य में ४ नवम्बर को ही पूर्णतः सफल हो गया था। राष्ट्रपति की घोषणा के पश्चात् सच्चर व पेप्सू फार्मूले की वैधानिकता एक दम समाप्त हो गई और भाषा के दृष्टिकोण से पंजाब के हिंदू और सिक्ख एक ही स्तर पर खड़े हो गये। लोक सभा में श्री पन्त जी द्वारा की गई घोषणा के अनुसार अब भविष्य में दोनों पार्टियों के समझौते से ही वर्तमान क्षेत्रीय फारमूले में कोई परिवर्तन हो सकता है। हम इस घोषणा का हार्दिक स्वागत करते हैं। और यह हमारी विजय का द्योतक है।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि इस घोषणा के तुरन्त बाद ही हमारे नेता ने आन्दोलन बन्द क्यों नहीं किया? उसके निम्न कारण थे—

१—सरकार पर दबाव डालकर अपने सत्याग्रहियों को बिना शर्त जेल से मुक्त कराना।

२—सत्याग्रहियों को अपने घर तक जाने का मार्ग व्यय सरकार से दिलाना।

३—आन्दोलन में भाग लेने के कारण जो सरकारी नौकर अपनी नौकरियों से हटा दिए गये थे उन्हें उनकी नौकरियां वापस दिलाना।

४—सत्याग्रहियों पर किये गये लाखों के जुर्मानों को माफ कराना और वसूल किए गये जुर्मानों को वापस कराना।

५—सत्याग्रहियों पर चल रहे मुकदमों को वापिस कराना।

६—अपनी सात मांगों के आधार पर पंजाब में नये फार्मूले की रचना कराना।

७—इस भय से कहीं राष्ट्रपति की घोषणा के विरुद्ध अकाली आन्दोलन प्रारम्भ कर दें और सरकार उनके अनुचित दबाव में आकर कहीं अपनी घोषणा में कुछ परिवर्तन न कर दें इसलिए भी उस समय मौन रहना ही श्रेयस्कर समझा गया।

सौभाग्य से हमारे मौन रहने का अच्छा ही परिणाम निकला। भारत के प्रधानमन्त्री माननीय श्री पं० जवाहर लाल जी नेहरू, गृह मन्त्री श्री प० गोविन्द वल्लभ जी पन्त तथा स्वर्गीय श्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की अपील और सद्भावना प्रदर्शित करने पर हमारे नेता ने आन्दोलन को वापस न लेकर स्थगित करना उचित समझा। श्री पन्त जी ने आश्वासन न देने की लोक सभा में जो बात कही है वह सत्य से कोसों दूर है क्योंकि व्यक्तिगत रूप से श्री गुप्त जी को दिए आश्वासनों के अतिरिक्त पंजाब के दौरे मे चण्डीगढ़ लुधियाना तथा करनाल की सार्वजनिक सभाओं मे उन्होंने जो आश्वासन दिए वही उनके वक्तव्य के खण्डन के लिए यथेष्ट है। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने आश्वासनों के अनुसार सत्याग्रहियों को बिना शर्त छोड़ना, उन्होंने मार्ग व्यय आदि देने की हमारी ५ मांगों को स्वीकार कर उन्हें क्रियात्मक रूप भी दे दिया है।

आश्चर्य की बात तो यह है कि भारत के प्रधान मन्त्री माननीय श्री पं० जवाहरलाल जी ने तो अपने चण्डीगढ़ के भाषण में आन्दोलन की सफलता स्वीकार करते हुए यहां तक कह डाला कि आन्दोलन की ६० प्रतिशत मांगें तो स्वीकार की जा चुकी हैं केवल १० प्रतिशत मांगें शेष रह जाती हैं। उन्हें भी आपसी बातों से सुलझाया जा सकता है, परन्तु बहुत से स्वार्थी अज्ञानी व्यक्ति इस पर भी आन्दोलन को असफल सिद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं।

राष्ट्रपति जी की घोषणा के अतिरिक्त भी हमारी सात मांगों में से लगभग सभी को पंजाब सरकार ने स्वीकार ही नहीं कर लिया अपितु उन्हें क्रियात्मक रूप भी दे दिया है, उदाहरणार्थ—

(१) सरकार ने जालन्धर क्षेत्र के बच्चों पर से हिन्दी पढ़ने पर लगे अपने प्रतिबन्ध को हटा लिया है।

(२) जिला स्तर तक कोई भी व्यक्ति हिन्दी में प्रार्थना पत्र देकर हिन्दी भाषा में ही अपना उत्तर सरकार से प्राप्त कर सकता है।

(३) विद्यार्थी ७ विषयों में से केवल ५ में उत्तीर्ण होने पर उत्तीर्ण माना जायगा अर्थात् यदि वह गुरुमुखी न भी पढ़े और उसमें फेल हो जाय तो फेल नहीं माना जायगा।

अब केवल पेप्सू फार्मूले को हटाना शेष रह गया है। उसे यदि सरकार आपसी बातों से तय न करेगी तो उसके विरुद्ध कोर्ट में रिट दाखिल की जा सकती है। यदि कोई स्कूल पेप्सू फार्मूले को न माने तो सरकार के पास कोई कानूनी अधिकार ऐसा नहीं है कि जिसके बल पर वह उसे बाध्य कर सके।

२—आन्दोलन का दूसरा क्रान्तिकारी सुपरिणाम यह हुआ कि पंजाब के हिन्दुओं का खोया हुआ आत्म विश्वास व स्वाभिमान पुनः वापिस आ गया और आज वह सिर ऊँचा कर पंजाब में रहा है। और वहां से भागने की बात उसके मस्तिष्क से बिलकुल निकल चुकी है।

३—पिछले सैकड़ों वर्षों से जो पंजाब का हिन्दू आपस में लड़ता झगड़ता चला आ रहा था और जिसके कारण उसे समय समय पद-दलित होना पड़ता रहा है आज इस आन्दोलन की कृपा से वह एक मंच पर एक नेतृत्व में आकर खड़ा हो गया है। आन्दोलन के परिणामों में सबसे अधिक आश्चर्यजनक परिणाम यही हुआ है। अब यह नेताओं की बुद्धि पर निर्भर है कि वह कहाँ तक इस परिणाम का सदुपयोग करते हैं।

[शेष पृष्ठ १२ पर]

समीर और शय्या

✱

र—

प ड़ी अगर तोड़ दे निज परिपाटी—
ानव की देह चाट जाये यह माटी।
। लो हैं चार चार तेरे पद पावन—
न वाली शय्या तू है मन भावन।"

ा -

र वर मे बोल उठी शय्या समीर से—
न शर शय्या शायी वे भीष्म वीर से।
रिपाटी पालन म ही मर जाते थे—
दान रख शान अमर निज कर जाते थे।
,द ऐश्वर्य लोक मे वे पाते थे—
रा सुरवृन्द गीत उनके गाते थे।
भार उतार सभी को कर आभारी—
रर वे कर देते थे जीवन-क्यारी।
ी ले भार हृदय हलका करती थी—
। रुक भुजाओं को निज मे धरती थी।
ो विशाल उर उर से नित्य लगाकर—
थो मैं पूर्ण तृप्ति सब भांति अगाकर।
थे वे महारथी भी पीठ दिखाते—
न जिनकी पीठ स्वप्न मे भी लखपाते।
र के गोपन रहस्य का सभी कहानी—
हा रही किसी ने कभी न जानी।
ुल गया अग लाजवन्ती का कोई—
जगती रही, रहा वह बेसुध सोई।
नता यहा हृदय मे परमेश्वर से—
प वेश्वता रहे सुरक्षित कलुषित कर से)।
र मैं चार पैर वाली कहलाती—
। दो नहीं—एक ही कर मैं पाती—
ार करवाल कुद पकड़ा सगर मे—
तो सहार दुष्ट दल का दम भर में।
ानव के मन की देखो दुर्बलता—
। भी आरोपित की निज गुरुता लघुता।
पर भाग श्रेष्ठता सूचित करता—
ा है भाग प्रतिष्ठा दूषित करता।
र हैं सभी—सभी को सुख देता हूं—
र दबकर भी न किसी से कुछ लेती हू।
। सह पाता हू उतना सह लेती हू —
भार पड़ने पर कुछ दुख कह देते हूं।
न सुनते मनुज उपेक्षा मेरा करते—
जाती टूट भू म पर ह वे गिरते।
। जाता बात सुनी अपन की दुख में—
ता रह सकता है कब राई सुख म?
ों का सहवास मुझे भी मलिन बनाता—
। स्वच्छता हाय! खटमल उपजाता।
रहे जल स तब मैं नहलाई जाती—
ार हूं मार कठिन डण्डो की खाती।
ी मैले मनुज पाठ इनसे कब लेते—
ती हूं किन्तु ध्यान वे तो कुछ देते?
का वह सग सदा रसभंग करेगा—
रते हैं उनको भी यह तंग करेगा।
ियों से पूछ मुझे कितने हैं प्राणी—
ाद में मैं बना—बनू शुभ ग्रह कल्याणी।
ुग्रह म और कुटिल जन के कुसग में—
ाकैसे है सौख्य, सौख्य तो है सुमग में।
ाना हैं सर्वनाश घर होता खाली—

एक अकेली खड़ी करू मैं घर रखवाली।
अब मेरा क्या दोष! अभागिनि हू मैं कैसे?
जैसे जिसके कर्म उसे फल मिलते वैसे?
शर शय्या पर भीष्म पितामह जब सोते थे—
सुन लो तब उस समय भाव क्या क्या होते थे—
जन्म जन्म के कहीं पुण्य संचित हो मेरे—
तो प्रभु कोमल कुसुम बनें शर प्रखर घनेरे?
दृढ़ प्रतिज्ञ की दृढ़ता से या अनी बाण की—
मुड़ जाय पड़ जाये उसका परित्राण का।
पर अब क्या है आज क्रूर मुझ पर सोते हैं—
मेरा यह दुर्भाग्य देख रिपु भी रोते हैं।
दुग्ध फेन सम धवल वस्त्र से मुझे सजाते—
कायर कामुक नेक न मन मे हाय! लजाते।
देते हैं वे नाम कुसुम शय्या का जिसको-
फिर काटों की और कहेंगे शय्या किसको?
फूल बदल जाते मेरे वे अंगारों मे—
झगते हैं क्यो आग न उनके शृंगारों में?
खण्डित माता भूमि उन्हें सूझो है क्रीड़ा—
वस्त्राच्छादित कहां? मुझे लगती है व्रीड़ा।
भूमि अङ्क मे समान पाती रह जाती हूं—
बरबश इस वेदना सिंधु मे बह जाती हूं।
नहीं जानते मैं शय्या हू उन वीरों की—
चिन्ता जिनको हुई न तलवारों तीरों की।
नहीं जानते मैं शय्या हू उन सतियों की—
जिन्हें अग्नि, या मैं, छू सकी देह पतियों की।

नहीं जानते उन पुत्रों की शय्या हूं मैं—
उन्हें अंक मे रखने वाली भय्या हूं मैं—
जिनमे थे अभिमन्यु वीर गोरा औ बादल—
जिनका शौर्य समीर उड़ाता था दल बादल
वह प्रणवीर प्रताप मुझे प्राणों से प्यारा—
बन बन भटका किन्तु न अपने मन मे हारा।
बरसो शय्या रही भूमि पत्थर पर जिसकी,
बन्य शिवाजी! बात बताऊं मैं किस किसकी?
तुम क्या जानो तब क्या मैं सोचा करती थी—
मन ही मन नख से उर को नोचा करती थी—
कहती थी मेरा यह आविर्भाव न होता—
मेरे होते हुए वीर भू पर है सोता।
जितनी शय्या मे हू सब टुकडे हो जातीं—
जिसे सुलाना आह! उसे वे सुला न पातीं?
सुला सुला कर मैं भी भू पर सोजाऊगी—
एक दिवस हाँ—इस दुनिया से खो जाऊँगी।
मिट्टी मे मिल जाऊँ इसका खेद नहीं है—
कहने को अब शेष रहा कुछ भेद नहीं है।
तुम समीर! सर्वत्र घूमते हो इस जग में—
कहना यह सन्देश मिले जब जो जिस मग में।
सम्भव है कुछ कर्ण तुम्हें ऐसे मिल जायें—
जो अतीत गौरव प्रिय हो सुन कर खिल जायें—
वे फिर चारो ओर इसे फैला ही देंगे—
मेरा क्या? सम्पूर्ण देश का वे यश लेंगे?

—श्री कुंवर हरिश्चन्द्र देव शर्मा 'चातक' कविरत्न
शान्तिनिकेतन छतरौली, फर्रुखाबाद

हिन्दी का है तुम पर भार

कठिनाइयों में पलने वाले
निर्बलों की सुनने वाले;
निज मन मे सत्य संभाले
शांत सिपाही भोले भाले
करो न भय तुम प्राणों का
कभी न मानो हार—हिन्दी..
हिन्दी कहती वीर बनो तुम
सत्याग्रह पथ में धीर बनो तुम
उजड़े बन में मधुरित करदे
ऐसा सुरभि समीर बनो तुम
आज निराशा में आशा का
कर दो फिर संचार—हिन्दी..
हिन्दी जय के गीत सुनाओ
अखिल हिंद मे प्रलय मचाओ
कम्पित कर दो मौन गगन तुम
और शत्रु का दिल दहलाओ
आज बलायें ले लेने को—
हिन्दी रही पुकार—हिन्दी..
ओ देवनागरी के दीवाने।
सत्याग्रह पथ के परवाने?
निकलो बाँध कफन जब सर मे
क्यों न विश्व भय तुम से माने
निज प्राणों की आहुति दे दो—
खुला मुक्ति का द्वार—हिन्दी.
मान कभी लेगा जग तुम को
मान कभी लेगा जग तुमको,
परिवर्तन युग के नेता
पहचान कभी लेगा जग तुम को
है राष्ट्र भाषा का आशीर्वाद—
होंगे स्वर्णकाल के सूत्रधार—हिन्दी

—किशोरीलाल गुप्त, बी०ए० लिट् प्रभाकर
आर्य समाज अलीगढ़

आर्य वीरों से

शेरों की दहाड़ हो,
नदी हो पहाड़ हो।
बन हो उजाड़ हो
मौत भी गाड़ हो ॥१॥
पृथ्वी गर फट जाय,
गगन भी सट जाय।
आग भी लपट जाय,
अङ्ग अङ्ग कट जाय ॥२॥
सागर की हिलोर हो,
अति दूर छोर हो।
आंधी झकार हो,
सैनिक भी घोर हो ॥३॥
पर, रुके नहीं टोलियाँ,
चलती रहें गोलियाँ।
हो रक्त की होलियाँ,
बोले कोई बोलियाँ ॥४॥
अत्याचार रोक कर,
शत्रु को भोंक कर।
मौत मुख झोंक कर,
तीज ताल ठोंक कर ॥५॥
किसी से न भय करो,
अन्धकार क्षय करो।
विश्व ज्योति मय करो,
आर्यों की जय करो ॥६॥

—रामप्रकाश वर्मा, आर्य वीर दल,
पीरो, शाहाबाद, (बिहार)

आर्य महिला मण्डल

आधुनिक युग में नारी

[श्रीमती सुधीरा सक्सेना, ११६/१८१ ओमनगर, कानपुर]

विधि की सर्वाग्रगण्य कृति, सतीत्व, औदार्य, दृढ़त्व एवं स्वाभिमान की प्रतीक नारी वर्तमान प्रगति वादी युग मे स्वकीय कार्य कलापों का दिग्दर्शन करा रही है।

पुरा काल में नारियो ने आदर्श स्थापित कर दिए हैं। जो कार्य पुरुष नहीं कर पाये वह नारी ने कर दिखाये। नारी इतिहास मे अनेकानेक उत्थान पतन हुए हैं। स्त्रियाँ सदैव अपने अधिकारों की माँग करती रही हैं। पूर्व काल में स्त्रियों को पुरुषो के ही समान अधिकार प्राप्त थे। मध्यकाल मे स्त्रियो की दशा शोचनीय हो गई। मध्य युग मे मुगल सभ्यता के प्रभाव से नारियो को अत्यधिक दबा दिया गया है।

युग के इस अन्याय को न सहन कर सकने पर राष्ट्र कवि मैथिलीशरण जी गुप्त की मानवता विचलित हो कर करुण के रूप मे साकार हो उठी और अबला नारी की रक्षा हेतु उन्होंने महा अस्त्र उठा लिया तूलिका उठी और अनायास ही लिपि बद्ध कर दिया—

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आंचल मे है दूध और आँखो मे पानी॥

वर्तमान स्फुतानक युग मे नारी जीवन भी प्रगति कर रहा है। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् से ही सभी देशो ने नारी जीवन की ओर ध्यान दिया है। स्त्रियाँ अपने अधिकारो की माँग कर रही हैं। अधिकांश स्त्रियां नौकरी करने का विचार करती हैं और बहुत जीविका उपार्जन करती भी हैं। क्योंकि उनका दावा है कि पुरुष एक समान हैं। इसलिए उन्हे इस क्षेत्र में जाने से न रोका जाय। नारियों को कुछ शिक्षा ही इस प्रकार की मिल रही है कि उनका यह विचार अधिक परिपक्व होता जा रहा है। विद्या अध्ययन के पश्चात् वे अपना ध्येय जीविका उपार्जन ही समझा करती हैं। इस विचार के परिपक्व होने में पाश्चात्य सभ्यता भी सहायक हुई है। भारतीय नारी आज पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंगी हुई है।

अधिकांश नारी वर्ग का विचार है उन्हे पुरुषो की तरह समान अधिकार दिए जायें। वे किसी भी तरह से अपने को पुरुषो से छोटा नहीं समझती हैं। उनका कहना है कि जब पुरुष बाहर रह कर काम करना जानते है, तो वे ही गृहस्थी के झंझटों मे क्यो पड़ें। पुरुषो से उन्हे पैसे की वजह से दबना पड़ता है। वे उनके ऊपर निर्भर रहती हैं। पुरुष जो भी अन्याय उनके ऊपर करते हैं, उन्हे सहन करना पड़ता है। खाली समय को कुछ उपयोग मे लाना बुरा ही क्या है। धन उपार्जन करने से कुछ लाभ भी हो जाता है साथ ही मनबहलाव भी रहता है। इसी तरह के अन्य कारणो से स्त्रियाँ नौकरी करना चाहती हैं। यह तो सत्य है नर व नारी समान हैं। लेकिन परस्पर समान होते हुए भी समान नहीं हैं।

वास्तविकता यही है कि नारी नौकरी के लिए नहीं बनाई गई हैं। जिस प्रकार किसी दुर्बल बल से अधिक बोझा उठवाना अन्याय है ठीक उसी प्रकार नारी से जीविका उपार्जन करवाना भी अन्याय है। वैज्ञानिकों के परीक्षणो से स्पष्ट है कि स्त्रियो में इतनी शक्ति नहीं होती कि वे घर और बाहर के दोनो क्षेत्रो का सुचारू रूप से सम्हाल सकें। स्वभाव से स्त्रियाँ कोमल होती हैं। अपने स्वभाव के कारण वे ठीक से नौकरी कर भी नहीं सकती। स्त्री और पुरुष दोनो के ही क्षेत्र अलग अलग हैं। प्रत्येक को अपने क्षेत्रो में कार्य करना उचित है।

आज कल जो स्त्रियाँ नौकरी करती हैं उन्हे लाभ की अपेक्षा हानियाँ अधिक हैं। एक तरफ तो ये जीविका उपार्जन करके धन एकत्र करती हैं तो दूसरी ओर वही धन नौकरो अथवा अन्य व्ययों के ऊपर खर्च करती हैं। प्रायः देखा जाता है कि जो स्त्रियां बाहर कार्य करती हैं वे अपने बच्चों की देख रेख करने तथा गृह के अन्य कार्यों के लिए नौकर रखती हैं। बच्चे भी सारे दिन अपनी माँ से अलग रहते हैं। नौकरों के साथ रह कर बिगड़ भी जाते हैं। ये बच्चे देश के भावी नागरिक हैं। इनको सुयोग्य बनाना ही माताओं का कर्तव्य है। लेकिन स्त्रियों को बाहरी कार्यों से ही समय नहीं मिलता। माता अपने बच्चे को ५ वर्ष तक बड़ी अच्छी शिक्षा दे सकती है। उसकी शिक्षा वह अपनी जिन्दगी में कभी नहीं भूलता है। जिन घरो में स्त्री पुरुष दोनो जीविका उपार्जन करते हैं वह गृहस्थी प्रायः सुखी नहीं रहती है। इस परिवार में नीरसता आ जाती है। प्रायः पति पत्नी के सम्बन्ध भी ठीक नहीं रह पाते हैं। सुबह होते ही दोनों अपने अपने कार्य क्षेत्रों में चले जाते है, शाम को पक्षियो की तरह बसेरा लेने के लिए घर में आते हैं। वास्तव में इस तरह की गृहस्थी में सच्चा सुख व शांति नहीं मिलती है। सच्चा सुख व शांति तब ही मिल सकती है जब नर व नारी दोनों ही अपने जीवन क्षेत्र में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सामने रखते हुए चलें।

पाश्चात्य देशों में अधिकांश स्त्रियां नौकरी करती हैं। लेकिन वहाँ की अधिकांश स्त्रियां चरित्रहीन पाई जाती हैं। प्रायः देखा जाता है कि नौकरी करने के परिणाम अच्छे नहीं होते हैं। इस सबका यह अर्थ नहीं कि स्त्रियां किसी भी परिस्थिति में रहकर नौकरी न करें। नौकरी करना या न करना अपनी अपनी परिस्थिति पर निर्भर करता है।

मध्य युग मे स्त्रियो को बहुत दबा कर रखा गया। इसी से उनकी उन्नति रुक गई थी। लेकिन अब उनकी शिक्षा की ओर ध्यान दिया जा रहा है। और वे पुरुषो की तरह पढ़ भी रही हैं। पुरुषो के समान उन्हे अधिकार भी दिए जा रहे हैं। आंग्ल देशीय स्त्रियों को राजनैतिक अधिकार नहीं प्राप्त हैं। परन्तु भारत की स्त्रियों को यह अधिकार प्रदान किए गए हैं।

स्त्रियाँ अपने मनबहलाव के लिए कोई कार्य कर सकती हैं। देश सेवा के लिए यदि वे अपने बच्चों का पालन पोषण ठीक प्रकार से कर सकें तो उनकी अपने देश के लिए महान् सेवा होगी। गृहणी को गृहस्थी के कार्य भार सम्हालने तथा अपने बच्चों को उचित रूप से बनाने में शांति रहेगा। स्त्रियो में महान् शक्ति होती है। गृहणी गृहस्थ जीवन में अधिक उन्नति कर सकती है। भारतीय नारी को अपनी संस्कृति अपनानी चाहिए। स्त्रियों के बहुत ऊँचे आदर्श हैं जिन्हे वे खुद भी नहीं समझ सकी हैं। स्त्रियो को अपनी आत्मिक उन्नति करनी चाहिए सन्तानो को सुयोग्य बनावें। इन्हीं बालकों को आगे चलकर देश की उन्नति करनी है।

भारत की नारी

हम भी हैं भारत की नारी।
निज सतीत्व की रक्षा हित,
जिसमे कूदी रजपूती बाला।
सुलगी थी चित्तौर दुर्ग मे,
जौहर की भीषण ज्वाला।
इसी पुण्य भू पर आई थी,
दुर्गा गढ़ मण्डल की रानी।
यदि दिखाती है स्वदेश की,
रक्षा हित उसकी बलिदानी।
दुश्मन को दहलाने वाली,
रानी लक्ष्मी बाई थी।
अवतार वीरता का लेकर,
मानो दुर्गा ही आई थी।
क्षत्राणी के सत्य तेज सन्मुख,
वो मुगल बादशा गया हार।
अपने प्राणो की रक्षा हित,
कर दिया बन्द मीना बजार।
निज स्वधर्म की रक्षा हित,
होती आई बलिदान सदा।
प्राणो को भी अर्पण करके,
जग मे रखती स्वाभिमान सदा।
आया संकट काल देश पर,
जब आई विपदायें भारी।
करती है सर्वस्व देश के हित,
अर्पण भारत की नारी।
हम भी हैं भारत की नारी॥

—पुष्पलता श्रीवास्तव

नारी उद्धार

पति ही है भगवान।
बहनो कभी न करना तुम अपमान।
बहने मेरी ज्ञान हीन बन
प्रकृति की पूजा करती हैं।
क्यों न उन्हे समझा दूं मैं
वे व्रत ढकोसला रचती हैं॥
सब देवो से श्रेष्ठ पति है
बहनों इसका रखना ध्यान।
पति ही है भगवान
क्यो न बहन हम पति ही पूजें
जो है मेरे सुखो का सार।
क्यो इन्हे हम तिरस्कृत कर दें
जो मेरा जीवन आधार॥
पति की पूजा से ही बहनों
नारी का होगा उद्धार।
मृत्यु लोक में जन्म के नहीं
जो पाये पति का सच्चा प्यार॥
पति सेवा की बलिवेदी पर
जीवन का कर दो बलिदान।
पति ही है भगवान॥

—अन्नपूर्णा देवी

पंजाब हिन्दी आन्दोलन

(पृष्ठ ६ का शेष)

४—जिस आर्य समाज के प्रति जनता की धारणा यह बनती जा रही थी कि आर्य समाज मर चुका है और अब उसकी आवश्यकता भी नहीं रही है, उन्हें पता चल गया कि आर्य समाज में अब भी अथाह शक्ति विद्यमान है और आर्य जाति की सांस्कृतिक रक्षा करने की तड़फ व सामर्थ्य इसी में है और इस कार्य के लिए इसके अस्तित्व की परम आवश्यकता है। इस आवश्यकता को आज भारत का पौराणिक जगत भी अनुभव करने लग गया है।

५—आर्य समाज उन कर्णधारों को कि जो वृद्धावस्था प्राप्त होने पर सदैव इस चिन्ता में निमग्न रहते थे कि उनके बाद आर्य समाज को कौन चलायेगा। उन्हें नवयुवकों द्वारा इस आन्दोलन का सफल सचालन देखकर संतोष हो गया होगा और विश्वास हो गया कि उनकी चिन्ता व्यर्थ थी।

६—आन्दोलन का सबसे बड़ा सुपरिणाम यह हुआ है कि भारत सरकार अपनी नीति निर्धारण करते समय मुसलमान, सिख, ईसाई आदि का तो ध्यान करती थी, परन्तु हिन्दुओं की सर्वथा उपेक्षा करती थी। उसका मूल कारण यह था कि वह इनके द्वारा समय-समय पर गुण्डागर्दी किये जाने से भयभीत थी और हिन्दुओं के सम्बन्ध में उसकी यह धारणा थी कि यह अपने अधिकारों की रक्षा के लिए आवाज नहीं उठावेंगे। परन्तु अब इस आन्दोलन ने सरकार की आंखें खोल दीं और अब वह भविष्य में कोई भी निर्णय करते समय हिन्दुओं के प्रतिनिधि आर्य समाज को भी ध्यान में रक्खेगी। इस प्रकार अब सरकार सभी के साथ न्याय करने पर विवश होगी।

अतः मैं आर्य बन्धुओं से प्रार्थना करता हूं कि वह अपने रोने की आदत को छोड़ें और वस्तुओं के काले पहलू को देखने के साथ-साथ उसके अच्छे पहलू को भी देखना सीखें। शोक कि अन्य संस्थाओं के लोग जहां अपने नेताओं व संस्थाओं की असफलताओं को भी नाना प्रकार की ऊलजलूल युक्तियां देकर महान् सफलतायें सिद्ध करने की चेष्टा करते हैं तो हमारे यहां लोग अपनी सफलताओं को भी असफलतायें सिद्ध करने में ही गौरव अनुभव कर रहे हैं। आशा है आर्य जगत ऐसे निराशावादी व्यक्तियों से सतर्क रहेगा और अपना वर्तमान महान सफलता के सहारे आगे बढ़ने का दृढ़ निश्चय करेगा।

हिन्दी संस्कृत तथा वेदों····

(पृष्ठ ८ का शेष)

सिखों की अरदास होती है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक-कमेटी अमृतसर ने गुरु गोविन्दसिंह जी के अमर ग्रन्थ अकाल स्तुति में गुरु जी की मातृभाषा हिन्दी स्वीकार की है। अतः आर्य समाज की यह घोषणा कि पंजाबी बोली है जो भारत की अन्य सैकड़ों बोलियों की भांति घरेलू बातचीत में पजाबी क्षेत्र के लोग काम में लाते है ठीक है। किन्तु हिंदू और सिखों की मातृभाषा हिंदी ही है। यही गुरुओं की आज्ञा है। जिसका प्रकाश गुरुवाणी में स्थान-स्थान पर मिलता है। यदि इसमें तथ्य नहीं तो श्रीमान् मास्टर तारासिंह जी, ज्ञानी करतार सिंह जी सरदार हुकुमसिंह जी आदि अकाली नेता हमारे प्रेम पूर्वक दिये गये शास्त्रार्थ के निमन्त्रण को सत्यासत्य निर्णयार्थ स्वीकार करने की कृपा करें। अन्यथा जनता में बैर वैमनस्य तथा क्षोभ फैलाकर पंजाब को युद्ध क्षेत्र न बनायें। ईश्वर से भय खा कर परमात्मा के अमृत पुत्रों हिन्दू तथा सिखों मे फूट का बीज आरोपन न करें।

आशा है मेरे नम्र विनय पर अवश्य ही ध्यान दिया जायगा।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आर्य समाज पूर्ण विजयी

रीजनल फार्मूले से सच्चर व पेप्सू फार्मूला निकाल दिया गया

गाजियाबाद—यहां नगर के प्रतिष्ठित नागरिकों की एक सभा में भाषा स्वातन्त्र्य समिति के कार्यकर्ता प्रधान आर्य नेता पं० नरेन्द्र जी ने करतल-ध्वनि के बीच घोषणा की कि पंजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आर्यसमाज ने पूर्ण विजय प्राप्त की है।

आपने कहा कि बलिदान और त्याग द्वारा आर्यसमाज ने सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमि पर पंजाब की समस्या का हल कर लिया है और इस पर राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद जी भी अपनी मोहर लगा चुके हैं।

आपने बताया कि जो रीजनल फार्मूला स्वीकृत हुआ है उसमें से धारा ९ व १० समाप्त कर राष्ट्रपति ने जो समुचित पग उठाया है उसके लिए वह बधाई के पात्र हैं। और यह आर्य समाज की पूर्ण विजय का प्रतीक है क्योंकि आर्यसमाज का आन्दोलन फारमूले की इन्हीं दो धाराओं के विरुद्ध था। इस अवसर पर जलपान का भी आयोजन किया गया। यह समारोह पं० नरेन्द्र जी के हैदराबाद प्रस्थान के उपलक्ष में किया गया था।

बछिया की हत्या

मेरी गाय की बछिया जो करीब डेढ़ साल की थी मकान के सामने चबूतरे पर खूंटे में जंजीर से बंधी थी रात में चार पाँच कसाई जो मुहल्ले के ही रहने वाले हैं मिल कर बछिया को खोल ले गये और उसको काट डाला प्रातः जब हम सोकर उठे तो देखा कि बछिया खूंटे पर नहीं है मय जंजीर के गायब है इधर-उधर बहुत तलाश करवाया परन्तु कहीं पर पता न लगा, शाम को मालूम हुआ कि बछिया कसाई के यहाँ कट गई, तुरन्त थाने में सूचना दी गई, थानेदार महोदय ने बड़ी तत्परता से बशीर कसाई के मकान को घेर लिया मकान की तलाशी हुई, तलाशी में बछिया की कान, खाल, पूंछ तथा गोश्त वगैरा सब बरामद हुआ अभी तक दो औरतें जो मौके पर मकान में मौजूद थीं पकड़ी गई हैं बाकी सब कसाई भाग गये हैं अभी पकड़े नहीं गये पुलिस सबको तलाश कर रही है।

—रामलाल आर्य टांडा [फैजाबाद]

नारायण स्वामी भवन लखनऊ में दो दिन

(समाजों के मन्त्री महोदय साप्ताहिक अधिवेशन में सुनाने की कृपा करें)

नारायण स्वामी भवन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख्य कार्यालय है। बहराइच से लौटते हुए २ दिन यहाँ ठहरना हुआ। सभा भवन के हाते की जो भूमि पड़ी हुई थी वह सब मन्त्री जी के उद्योग से हरी-भरी हो गयी है। इसमे शाक फल उत्पन्न करके सभा की आय बढ़ायेंगे। पर आवश्यकता है एक बिजली मोटर की जो कि कुएं से जल खींच सके। सिंचाई सुविधा होने पर एक सहस्र वार्षिक आय बढ़ सकती है।

सभा भवन अब उत्तर प्रदेश का केन्द्र स्थल हो गया है। राजधानी होने से प्रत्येक जिले का व्यक्ति यहां आता रहता है। गैर आर्य समाजी भी आते रहते हैं। इसलिये सभा भवन इतना भरा पूरा होना चाहिये कि उत्तर प्रदेश की समाजो की शान के योग्य हो।

सभा भवन मे दस बारह तख्त हो जो अतिथियो के काम आये और उत्सवो मे भी काम दे।

आठ दस अच्छे पलग हो जो अतिथियो के काम आते रहें पचास साठ व्यक्तियों के भोजन बनाने योग्य बर्तन भी होने चाहियें। पराते, लोटे, बालटे, शाक बनाने के देगचे चावलो के देग, तौले, पचास साठ थाल गिलास झारी, शाक दान आदि।

अच्छा फिर यह सब आयें कहा से? सभा मे तो रुपया है नहीं। सभा सहस्रो रुपयो की ऋणी है।

इस समाज के लिये तो एक ही उपाय है कि आर्य भाई ये सामान अपने अपने नगरो से दान मे इकट्ठा करे। विवाह शादियो के अवसरो पर ऐसे दान होते रहते है। एक एक दो दो वस्तुए इकट्ठा कर तो एक वर्ष मे भंडार पूर्ण हो जाय। ऐसा वस्तुओ के दान म हिन्दू जनता की रुचि है। प्राय. मन्दिरो का ऐसे दान जाते रहते हैं। केवल ध्यान देने की जरूरत है। दानदाताओ के नाम उन वस्तुओ पर खुदे रहेंगे। मैं तो अभी से प्रयत्न करूंगा प्रत्येक भाई पूरा ध्यान दे तो मेरी प्रार्थना पूरी हो जायगी।

दूसरा काम है सभा का ऋण उतारने का। यह आने वाले प्रतिनिधियो का सोचकर आना चाहिये। केवल चुनाव के लिये ही आना नहीं है। सभा को दृढ़ बनाने के लिये आना है। जो कार्य सामने रक्खा जाय उसे पूरा करने के लिये दृढ़ होकर आना चाहिये। केवल अधिकारियों के कन्धो पर भार लाद कर अलग हो जाना तो एक उपहास मात्र है।

आर्य जगत् मे आर्थिक सामर्थ्य नहीं ऐसा नहीं माना जा सकता। हिन्दी सत्याग्रह मे इस प्रात को समाजो से एक लाख के लगभग रुपया पहुच गया। सत्याग्रह के अन्य व्यय जो इससे कम न हुए होंगे पृथक् रहे। केवल उद्योग की आवश्यकता है। उपदेश विभाग की दशा आर्य जनता के लिये लज्जा की बात है।

आर्य समाज के उपदेशक प्रचारक इस जमाने का देखते हुए बहुत सस्ते है, सादे है, सहिष्णु है। पर उनके वेतन का चढ़ने रहना, उनके सेवा निवृत्ति होने पर उनके फंड को न चुका सकना कितना खेदजनक है।

प्रान्त में ऐसे भी समाज हैं जिनकी आय पर्याप्त है और काम कुछ नहीं। है भी तो निरर्थक सस्थाओं मे झोक दी जाती है। वह आय व अन्य व्ययों में बचत करके सभा को रुपया दिया जा सकता है। उपदेशक प्रचारक प्रचार भी करें और चन्दा भी मांगते रहें इसका क्या प्रभाव होगा?

आर्यों के हृदय में अगर अपने धर्म प्रचार के लिये तड़प है तो सभा की आर्थिक स्थिति दृढ़ करने मे प्रयत्न करें। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" तो उपदेश विभाग को पुष्ट करने से ही सफल होगा।

आर्यों का अपना—

बिहारीलाल शास्त्री

श्री आ०स० पीलीभीत

श्री आ०स० पीलीभीत ने २१ मार्च को नवसम्वत् आरम्भ के अवसर पर आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया, प्रभातफेरा, दिवाली, व्याख्यान, यज्ञ, प्रसाद वितरण आदि कार्यक्रम हुए।

पुस्तक-परिचय

[समालोचनार्थ पुस्तकों की दो प्रतियां भेजें।—सम्पादक]

संस्कृत साहित्य-विमर्शः

लेखक—पं० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री
प्रकाशक—भारतीय प्रतिष्ठानम्
११, आनन्दपुरी, मेरठ नगर
उत्तर प्रदेश (भारत)

संस्कृत भाषा में लिखी श्री पं० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि (प्रतिष्ठित) गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन, विद्यामार्तण्ड गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी की यह अमर कृति है। पंडित जी संस्कृत साहित्य के प्रकांड पंडित हैं संस्कृत भाषा पर आपका पूर्ण अधिकार है और आप संस्कृत भाषा के एक उच्चकोटि के कवि भी हैं।

संस्कृत साहित्य विश्वभर में सबसे प्राचीन, और गंभीर है। उसमें वैदिक एवं लौकिक उभय प्रकार के साहित्यों,व असंख्य शास्त्रों का युग-युग में निर्माण किया गया है। कौन सा ज्ञान अथवा विज्ञान है जिस पर संस्कृत में प्रौढ़ साहित्य का निर्माण नहीं हुआ है। ऐसी भाषा के उभय विधि साहित्य का परिचय और चित्रण किसी एक पुस्तक में करना पंडित द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री जी का ही कार्य है।

वैदिक एवं लौकिक विषयों के साहित्य का जिस पांडित्य पूर्ण शैली से पक्षपात् शून्य होकर चित्रण आपने इस ग्रन्थ में किया है वह सर्वथा स्तुत्य है।

इस ग्रन्थ ने संस्कृत के गौरव को बढ़ाने मे भारी कार्य किया है। संस्कृत साहित्य का यथार्थ परिचय प्राप्त करने के लिए इस ग्रन्थ का अध्ययन देश और विदेश के सब ही संस्कृतज्ञों को करना चाहिये। भारत के विश्व विद्यालयों को इस पुस्तक को एम० ए० के पाठ्यक्रम मे स्थान देने मे प्रयत्नशील होना चाहिये। तथा भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित सब पुस्तकालयों में इस ग्रन्थ का रखना नितान्त आवश्यक है।

ग्रन्थ की पृष्ठ संख्या ६८० है। कागज एवं छपाई सुन्दर है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १६ रु० है। पुस्तकालयों को कमीशन भी दिया जायगा। —शिवदयालु

आ० स० आगरा नगर सिटी

का २८ वाँ उत्सव ११, १२, १३, १४ अप्रैल को होगा। आर्य जगत के अनेकों योग्य विद्वानों को आमन्त्रित किया गया है।

लखनऊ में आर्यसमाज स्थापना दिवस

२१ मार्च को लखनऊ के भिन्न-भिन्न आर्यसमाजों की ओर से आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। श्री जगन्नाथप्रसाद जी की अध्यक्षता में आर्यसमाज नारायण स्वामी भवन की ओर से सभा भवन में यह दिवस समारोह सहित मनाया गया जिसमें सभा मन्त्री पं० शिवदयालु जी तथा सभा उपमन्त्री श्री रामजीप्रसाद गुप्त के भाषण और सभा के प्रचारक श्री प्रकाशवीर के भजन हुए।

आर्यसमाज नगर रकाबगंज, आ० स० सदर, आ०स० चौक, आ० स० गणेशगंज, आर्यसमाज बादशाह नगर आदि स्थानों में भी यह दिवस मनाया गया।

शास्त्रार्थ सूचना

आर्यमित्र के गत किसी अङ्क में श्री पं० ओमप्रकाश जी शास्त्री ने वृक्षों में जीव नहीं है इस पक्ष को सिद्ध करने के सम्बन्ध में चैलेंज दिया था।

श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी ने उसके सम्बन्ध में कुछ सुझाव दिये हैं और इस विषय में शास्त्रार्थ होने का समर्थन किया है।

श्री ओम्प्रकाश शास्त्री जी को चाहिये कि वह आचार्य जी से पत्र-व्यवहार कर शास्त्रार्थ का निश्चय करें।

आ० स० बड़ौत मेरठ

नगर आ० स० बड़ौत मेरठ के तत्वावधान मे श्री गंगाराम पंजाबी के पुत्र का नामकरण संस्कार हुआ। नाम सुशील कुमार रखा गया। समाज को १०) दान मिला। श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री ने संस्कार कराया।

आ० स० नगीना

प्रधान—श्री जयेन्द्र शास्त्री
मन्त्री—श्री श्यामलाल आर्य
कोषा०—श्री शिवकुमार जी

प्रधान और मन्त्री प्रान्तीय प्रतिनिधि चुने गए।

आ०स० कराहेड़ी

इस समाज की ओर से होली पर्व बड़ी प्रसन्नता से मनाया गया। चौधरी बलराम त्यागी का विवाह संस्कार वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। अन्य विवाह भी वैदिक रीति से हुए।

बम्बई प्रदेश के मुईगांव में

ईसाइयों द्वारा हिन्दुओं पर भीषण अत्याचार

सरकार की चुप्पी से असंतोष

ठाना। जिले के एक ग्राम मुईगांव मे गत डेढ़ वर्ष से हिन्दुओं पर ईसाइयों द्वारा जिस प्रकार के अत्याचार हो रहे है, वह भारत सरकार के माथे पर कलंक का टीका है।

मुईगाँव में ईसाइयों की काफी आबादी है। साथ ही बसई तालुका में ईसाई बहुसंख्या में होने के कारण इस क्षेत्र के लोग उनसे दबे रहते है।

दिनांक २१ ११ १९५६ के दिन मुईगाँव के श्री सखाराम महादेव पाटिल के घर कुछ ईसाइयों ने डाका डाला। दिन के १० बजे से लेकर सायं के ६ बजे तक वे बराबर लूटमार करते रहे। श्री पाटिल का हजारों रु० का सामान आदि लूटा गया। सैकड़ों मन (चावल) धान के खलियान को जला दिया गया। इस काण्ड के लिए गिरजाघर का घण्टा बजा कर आस पास के ईसाइयों को इकट्ठा किया गया। इस अवसर पर पुलिस ने अनेक फोटो लिए। व्यक्तिगत रूप से अन्य लोगो ने भी फोटो लिए। इस घटना का समाचार पत्रों में भी प्रकाशित हुआ।

इस सम्बन्ध से २६ ईसाइयों को गिरफ्तार किया गया। सेशन जज ने १७अपराधियों को एक साल से ३ साल तक की सजा दी तथा अन्य१२ लोगों को छोड़ दिया। इस निर्णय के विरोध में उन लोगों ने हाईकोर्ट में अपील की जहाँ से वे सभी लोग निर्दोष कह कर छोड़ दिये गए। मजे की बात यह थी कि उक्त काण्ड के फोटो अदालत में पेश किए गए थे तथा अपराधियों के यहां से चोरी का सामान भी निकला था।

इन छूटे हुए लोगों ने १६-१०-५७ को श्री दत्तात्रय म्हात्रे को गालियाँ देकर खूब पीटा। इस घटना की सूचना पुलिस को दे दी गई।

दिनांक २६-१-५८ को रानगाँव के रामचन्द्र बाल जी को बुरी तरह पीटा।

दिनांक ७-२-५८ को श्रीसखाराम पाटिल का छोटा लड़का यशवत (उम्र १५-१६ साल) साइकिल पर चढ़ कर जब स्कूल जा रहा था, उसे रास्ते में पकड़ कर ईसाइयों ने पीटा।

जब से अदालत से छूट कर वे लोग लौटे हैं, उनकी हिम्मतें बढ़ गई हैं। वे कहते है 'सरकार ने हमारा क्या बिगाड़ लिया ?"

ईसाइयों के अत्याचारों से आस-पास के ग्रामों में भयातक छाया है। सरकार अभी तक इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रही है इस कारण जनता में और भी असंतोष फैला हुआ है।

(पांचजन्य से साभार)

प्रिय पुत्र शीघ्र आओ

प्रिय पुत्र चिरंजीव धर्म वीर,
जहां भी हो प्रसन्न रहो !

तुम्हारे जाने से तुम्हारी माता जी तथा संपूर्ण परिवार अति चिन्तित एवं व्यथित है। तुम जो चाहोगे आगे वही करेंगे, पर यह करो और अवश्य करो कि अपना कुशलता एवं पते से तुरन्त ही सूचित कर दो, क्योंकि तुम्हारी माता जी की दशा अब शोचनीय हो गई है। तुम एक भले और आर्य पुत्र हो, इसलिए विश्वास है कि तुम अपने पिता की इस बात को अवश्य मानोगे।

सदा शुभेच्छु,
तुम्हारा दुखी पिता

वैश्य महिला की आवश्यकता

मेरे एक अग्रवाल मित्र दृढ़ आर्य समाजी, सामाजिक कार्यकर्ता अवस्था ३५ वर्ष मासिक आमदनी ४००) रु० के लिए एक जीवन संगनी आर्य महिला की शीघ्र आवश्यकता है।

पतः—डा० ओमप्रकाश वैद्य
सदस्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी
प्रेम फार्मेसी श्रीनगर रोड, अजमेर।

कभी कभी जीवन में कुछ अनोखी, अद्भुत घटनायें भी घट जाती हैं जो अनन्त की याद जन्म जन्मान्तर तक दिलाती रहती हैं। बसन्त आता है पतझड़ बीते दिनों की याद करके रोता हुआ चला जाता है। कौन क्यों आया, कब आया और कब गया इसका ध्यान मस्त लहरों को नहीं रहता। वे तो मस्ती से चली चली जाती हैं। वही कगार होता है और वे ही तरंगे, पर जाने रूप और रंग कभी बदल जाता है। गुलाब के फूल से भौंरा प्यार करता है मस्त हो जाता है। इस मस्ती का ध्यान उसे तब है जब बेदर्द पंखुड़ियां उसे अपने बाहुपाश में जकड़ कर बन्दी बना लेती हैं।

गाँव सुन्दर जीवन का एक सुन्दर दृश्य है जहाँ का भोलापन, एकाकीपन और कर्मण्येवाधिकारस्ते का महत्व अनुकरणीय होता है। इतने सीधे और सच्चे होते हैं उनको जीवन जहाँ छल कपट का पदार्पण कठिन ही क्या असम्भव है। एक दूसरे के काम आना तो कोई इनसे सीखे।

एक गाँव के, जिसे मानिकपुर कहा जाता था, हृदय में दो कोमल फूल थे। दोनों अपने अपने जीवन का अपना अपना महत्व लिए। एक था गाँव के जागीरदार ठाकुर लाखन सिंह का पुत्र राजेन्द्र और दूसरा था उसी गाँव के एक गरीब किसान का बेटा शरद्। एक को न अपने धन सम्पत्ति, मान मर्यादा, आन बान का घमण्ड था और न दूसरे को गरीब, मजबूर होने का क्षोभ। दोनों के जीवन में कर्तव्य का विशेष महत्व था। दोनों एक ही विद्यालय के, एक ही कक्षा के विद्यार्थी थे। परन्तु आश्चर्य है आपस में इतने अपरिचित थे जैसे भूला पथ और नया पथिक। उनके जीवन का अपना अपना ध्येय अलग अलग था।

दिन रात विद्या से प्रेम करने वाला, सरस्वती की वन्दना करने वाला, कभी मूढ़, अपढ़ गंवार नहीं हो सकता। विद्या रूप यौवन नहीं चाहती। विद्या पा लेने पर कुरूप भी जीवन की भांति निखर उठता है।

इन दोनों अपरिचित विद्यार्थियों की मित्रता का सूत्रपात तब हुआ जब विद्यालय में एक सभा का आयोजन हुआ। एक विषय पर बोलना था—पक्ष और विपक्ष में। दोनों ने अपने अपने विचारों को इस तरह योग्यता से स्पष्ट किया कि सुनने वाले दंग रह गये। विद्या ने विद्या को पा लिया। दोनों का आपसी परिचय हुआ और फिर मित्रता।

सदा से अपरिचित दो हृदय आज आपस में अच्छी प्रकार बंध चुके थे।

धोखा—

★

(रजनीश, हाथरस)

शरद् को शंका थी कि राजेन्द्र के पिता इस मित्रता को न पनपने देंगे। उसने अपने आप से इसका प्रश्न किया। जिसकी कृपा से शरद् के पिता की गृहस्थी चल रही हो, इतने बड़े जागीरदार के बेटे से मेरी मित्रता? यह सब उसे स्वप्न सा प्रतीत होने लगा, सत्य था। उसने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि हम दोनों की मित्रता हिमालय की चोटी पर पहुंचते पहुंचते बीच में ही फिसल कर चूर चूर हो जाय। तब ऐसी स्थिति आने से पूर्व मित्रता न करना शरद् को ठीक लगा।

और एक दिन शरद् ने अपनी शंकाओं का समाधान भी कर लिया। शाम के समय दोनों हवा खोरी के लिये निकले। बम्बई की चौपाटी, दिल्ली के कनाट प्लेस या लखनऊ के हजरतगंज की ओर नहीं अपितु गाँव के एक खेत के किनारे किनारे। कौन कह सकता था कि दोनों के हृदय में कैसी उथल पुथल मच रही है। दोनों

कहानी-कुञ्ज

काफी समय तक शान्त रहे। शरद ने ही उस मौन को भंग किया। बातें होने लगीं, विद्या विद्यालय की। यदा कदा व्यंग्य की चुटकियों से वातावरण सरस हो उठता था। दोनों ने एक दूसरे के जीवन में नया प्रवेश पाया था। वास्तव में उनके जीवन की कहानी भी यहीं से शुरू हुई। घर गृहस्थी की चर्चा प्रारम्भ होते ही शरद् ने अपनी शंकाओं को राजेन्द्र के सामने रक्खा। राजेन्द्र के हृदय को एक गहरी चोट लगी पर दूसरे ही क्षण उसने स्वतः मरहम लगा लिया। किसी शंका का समाधान करने के बजाय उस पर क्रोध करना या अनुचित ढंग से बात न करना ठीक नहीं यह राजेन्द्र जानता था और यह भी कि शरद् जो कुछ भी पूछ रहा है ठीक ही तो है। बड़े सन्तोष के साथ उसने शरद् को समझाया।

राजेन्द्र—शरद्, आज जो कुछ भी तुम पूछ रहे हो मैं सब समझता हूं। समय के साथ साथ मनुष्य के विचार भी बदल जाते हैं। आज तो मित्रता का नाम भर रह गया। इसमें दोष उनका नहीं बल्कि उनके अभिभावकों का है जो इससे अधिक अपने

रूप धन वैभव पर गर्व करते हैं। मैं तुम्हें सच्चे हृदय से चाहता हूं शरद्। मुझे मेरी मित्रता की रूप, धन वैभव नहीं चाहिए। तुम विश्वास रखो शरद् इसके लिए मैं कठोर से कठोर आघात भी सह सकता हूं।

शरद को उसके अपने विचारों के अनुकूल ही उत्तर मिल गया। उसका हृदय गद्‌गद् हो उठा। वह भी प्यार करना जानता था उसे भी ऐसे ही एक मित्र की आवश्यकता थी जो समय पड़ने पर उसके काम आ सके रूप धन से नहीं अपितु मन और कर्म से। किसी लोभ लालच से मित्रता करने वाला मित्र कभी सगा नहीं होता यह भी वह जानता था। शरद ने भी प्यार भरे शब्दों में राजेन्द्र को अपना बनाया।

शरद्—गुलाब के सुन्दर मनोरम पुष्प को हस्तगत करने के लिए पहिले कांटों से उलझना पड़ता है। कांटों से भय खाने पर उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता। मित्रता जैसे कार्य को

करने से पूर्व उस पर विचार करने को मैं अधिक महत्व देता हूं। दो मित्रों के हृदय जब आपस में भली प्रकार बंध जाते हैं तब एक के हृदय की प्रत्येक बात दूसरा जानता है। मैंने अपनी शंका को तुम्हारे सामने प्रस्तुत किया और अब उसका उत्तर भी मुझे मिल चुका है।

और फिर एकायक दो आत्माओं की दो शिरायें एक हो गईं।

इस समय ये दोनों मित्र विद्यालय के सर्वोच्च कक्षा के विद्यार्थी थे। उस विद्यालय में यह उनका अन्तिम वर्ष था। परीक्षा को एक माह शेष रह गया दोनों ने जी तोड़ मेहनत शुरू की। विद्यालय को इन्हीं दोनों पर विभिन्न प्रकार की आशायें थीं।

परीक्षा समाप्त हुई। दोनों मित्र प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।

दोनों ने अपने अभिभावकों के अतिरिक्त विद्यालय के गुरुजन तथा गाँव के अन्य प्रतिभाशाली व्यक्तियों की आशाओं को पूर्ण कर दिया। किसी मनुष्य के योग्य व्यक्तित्व से उसका अपना समूह प्रफुल्लित क्या न होगा? उनके गाँव को तथा उनके सम्पर्क में रहने वाले व्यक्तियों को इन

पर गर्व उन्हीं तक सीमित था। इन दोनों विद्यार्थियों ने अपना कार्य मन एवं लगन से पूर्ण किया और अपना परिणाम सन्तोषजनक पाया।

कुछ परिस्थितियां मनुष्य को कार्य न करने को बाध्य करती हैं। आज तक कोई भी अपने हृदय की सम्पूर्ण इच्छाओं को पूर्ण न कर सका। प्यासे व्यक्ति को दो घूंट पानी पाने से शान्ति अवश्य मिलती है लेकिन प्यास नहीं बुझती। यही दशा थी शरद् की। पढ़ने की प्रबल इच्छा होते हुए भी वह आगे पढ़ सकने में असमर्थ रहा था। घर की स्थिति उसके अनुकूल न थी। वह बिना पंख के पक्षी की भांति मन ही मन छटपटा रहा था। अभी भी वह विद्या का प्यासा था।

राजेन्द्र आज विदेश आगामी विद्याध्ययन के लिए जा रहा है। उसे सभी सुविधायें प्राप्त हैं फिर भी मानो उसके पास कुछ भी नहीं। काश आज उसका मित्र उसके साथ चलता। राजेन्द्र ने शरद् को आश्वासन दिलाया कि पैसे की चिन्ता न करो मैं सब ठीक कर लूंगा। पर मान मर्यादा का ध्यान किसे नहीं होता? यह ठीक है राजेन्द्र शरद् का अभिन्न मित्र है। पर जब अपनी स्वयं की परिस्थितियां ही प्रतिकूल हैं तो वह कैसे जायगा। उसने राजेन्द्र को हृदय से लगा के समझाया

"राजेन्द्र, तुम जो कुछ भी कह रहे हो ठीक है। तुम्हारी मित्रता आज भी मुझे चाहती है। कहने की इच्छा होते हुए भी मैं आज चुप हूं। इसके अतिरिक्त मेरे पिता वृद्ध हो चले हैं घर का कार्य भार अब उनसे नहीं सम्भलता। ये सब कुछ मुझे ही तो सम्भालना है। ईश्वर को भी यही मंजूर है। काश, मैं अपने विचारों पर विजय पा सकता।"

राजेन्द्र ने सब कुछ सुना समझा पर कह कुछ भी न सका। उसके हृदय के अन्दर ही अन्दर निराशा की अग्नि प्रज्वलित हो उठी। वह उदास हो गया, उसका चेहरा फीका पड़ गया। वह कर भी क्या सकता था।

जाने से पूर्व राजेन्द्र अपने मित्र से खुलकर गले मिला। और बच्चों की भांति फूट फूट कर दोनों ही रोने लगे। जाने से पूर्व बड़े साहस से केवल कह सका—

'आज तुमसे अलग होते हुए मुझे कितना दुःख हो रहा है, शरद शायद इससे अधिक दुःख का दिन इस जीवन में फिर न आये।" क्रमशः

पंजीकरण सं. ए. ६०
२ चैत्र १८८८ (३० मार्च ४८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष २११३ तार। 'आर्यमित्र'

उपसभाओं को सूचना

सभा कार्यालय में जिला उपसभा पीलीभीत, शाहजहापुर, बुलन्दशहर, फतेहपुर मुजफ्फरनगर, रामपुर बह राइच बदायूं को वार्षिक रिपोर्ट आई है। सभा से सम्बन्धित उपसभाओं की संख्या ३१ है। अब शेष उपसभाओं को चाहिये कि अपना २ उपसभाओं का विवरण यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें।

२—प्रतिनिधि चित्र सं० ३ सभा में किसी भी जिला उपसभा का भर कर सभा कार्यालय को प्राप्त नहीं हुआ। कृपया शीघ्र भर कर भेजने का कष्ट करें। सभा के वार्षिक अधिवेशन का समय निकट आ रहा है। शीघ्रता करना चाहिए। और अपने जिले के सभी समाजों के वार्षिक प्रतिनिधि चित्र भरवाकर भेजने का कष्ट करें।

शिवदयालु, सभामन्त्री

गुरुकुल कांगड़ी का उत्सव

अब तक गुरुकुल कांगड़ी का वार्षिकोत्सव अप्रैल मास में होता था अब कार्यकारिणी ने निश्चय किया कि भविष्य में उत्सव अप्रैल में न करके विजयादशमी की छुट्टियों में हुआ करेगा। इस बार उत्सव १९, २० २१ और २२ अक्तूबर को होगा।

आर्यवीर दल आ०स० का पहिया है

श्री ब्रह्मदत्त सिंह जी संचालक आर्यवीर दल बंगाल आसाम ने आर्य वीर दल कानपुर का निरीक्षण करते हुए सैनिकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य वीर दल आर्यसमाज का पहिया है। दल को अच्छा करके कोई समाज बढ़ नहीं सकता। अतः आर्यसमाज को चाहिये कि वे आर्य वीर दल की उन्नति के लिए आवश्यक प्रयास करें। —प्रेमचन्द आर्य

समाजों का निरीक्षण

श्री विश्वनाथ आर्य वीर मेरठ निरीक्षक सभा ने आ० स० मुजफ्फर नगर नई मण्डी आ० स० मुरादनगर आ० स० भ्रमनगर आदि का निरीक्षण किया। पता—श्री विश्वनाथ आर्य वीर मकान नं० ८७ ई० रेलवे मील गंज के समीप कैराला बाजार मेरठ।

आ०स० जगतपुर

समाज के सदस्य श्री मलक देवा राम ने अपने पुत्र के वर्षगांठ पर स्थानीय समाज को ५) दान दिया।

कुरुक्षेत्र मेले में प्रचार कैम्प

१८, १९ अप्रैल को कुरुक्षेत्र के मेले में आर्य प्रादेशिक सभा आल घर की ओर से प्रचार कैम्प लगेगा तथा लंगर भी चलेगा। अनेकों उपदेशक पहुँच कर वहाँ प्रचार करेंगे। धनी मानी सज्जनों को धन से सहायता करनी चाहिए।

नगर आर्य समाज लखनऊ

प्रधान—श्री अनन्त बिहारी निगम
मन्त्री—श्री वीरसेन आर्य
कोषा०—गिरजा शंकर दयाल

उत्सव के लिए

सभा के अवैतनिक उपदेशक श्री विश्वनाथ त्यागी सम्प्रति खाली हैं। समाजों के उत्सव पर जिन्हें आवश्यकता हो, बुलाकर उनके भाषणों से लाभ उठा सकते हैं। —शिवदयालु
अधिष्ठाता उपदेश विभाग

आ० स० सुभाषनगर बरेली

प्रधान—श्री शिवनन्दन प्रसाद एम०ए०
मन्त्री—श्री विद्याभास्कर शास्त्री
कोषा०—श्री चन्द्रप्रकाश जी

आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर

समस्त आश्रम निवासियों ने श्री श्यामबिहारीलाल वानप्रस्थी के निधन पर शोक प्रकट किया और दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना की।

आ०स० डोमगढ़ धनबाद

इस समाज का वार्षिकोत्सव १४, १५ १६ मार्च को बड़े समारोह सहित मनाया गया।

रा... शंकर स्वामी

रा... शंकर स्वामी इन दिनों थाना डिलारी जिला मुरादाबाद में प्रचार कार्य कर रहे हैं।

जिला सभा मुरादाबाद

प्रधान—श्री चौधरी शेरसिंह
मन्त्री—श्री सन्नूलाल जी
कोषा०—महाराज नारायण टंडन

रामस्वरूप आर्य कन्या पाठशाला अनूपशहर

प्रधान—श्री लल्लामल जी
मैनेजर व मन्त्री—श्री सत्यप्रकाश आर्य

स्थानीय आर्यसमाज की ओर से इन दो अधिकारियों के अतिरिक्त अन्य अधिकारियों तथा समिति के सदस्यों का भी निर्वाचन हुआ।

बाबूराम भार्गव द्वारा अमरप्रादेशिक आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित



आर्यमित्र

अग्निहोत्र

3072-4

ओ३म् अग्नये स्वाहा ।१।
ओ३म् सोमाय स्वाहा ।२।
ओ३म् प्रजापतये स्वाहा ।३।
ओ३म् इन्द्राय स्वाहा ।४।

विश्व नियन्ता ज्योतिः स्वरूप परमात्मदेव के लिए मैं आत्म समर्पण करता हूं ।१।

आन्तरिक हर्ष, उल्लास और आनन्द के देने वाले प्रभु के लिए मैं आत्म समर्पण करता हूं ।२।

प्राणीमात्र की पालना करने वाले जगन्नियन्ता के लिए मैं आत्म समर्पण करता हूं ।३।

सकल ऐश्वर्यों के भंडार जगदीश्वर के लिए मैं आत्म समर्पण करता हूं ।४।

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा ।१।
ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा ।२।
ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा ।३।
ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ।४।

पार्थिव लोकों के अधिष्ठातृ देवता ज्योतिस्वरूप सदा अखण्ड एक रस विद्यमान परमात्म देव के लिए मैं आत्म समर्पण करता हूं ।१।

अन्तरिक्ष लोकों के अधिष्ठातृ देवता, दुष्ट दुर्गुणनाशक, जीवन शक्ति के दातार परमात्म देव के लिए मैं आत्म समर्पण करता हूं ।२।

दिव्य प्रकाश युक्त लोकों के अधिष्ठातृ देवता अविद्यान्धकार नाशक आनन्द स्वरूप जगदीश्वर के लिए मैं आत्म समर्पण करता हूं ।३।

त्रिविध लोकों के नाथ दुर्गुणनाशक दिव्य ज्ञान के दाता सनातन परमात्म देव के लिए मैं आत्म समर्पण करता हूं ।४।

—शिवदयालु

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् अशितावत्यतिथावश्नीयाद् यज्ञस्य सात्मत्वाय यज्ञस्याविच्छेदाय तद् व्रतम् ॥
अथर्व० ९।६।३।८

अतिथि यज्ञ को जीवित और निरन्तर जारी रखने के लिए यह व्रत है कि अतिथि के भोजन कर लेने पर ही गृहस्थ भोजन करे।

सम्पादक—
शिवदयालु, सभामन्त्री
सह० सम्पादक—
भगवत शरण

लखनऊ, रविवार २३ चैत्र शक १८८०

इस अंक के आकर्षण

कठोपनिषद् कथा (४)—

दान माहात्म्य

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम०ए० एल०टी०, डी० बी० कालेज, गोरखपुर]

[गतांक से आगे]

भाइयों, कठोपनिषद् की कथा के प्रसंग में हमने देखा कि वाजश्रवा ऋषि ने मोक्ष प्राप्ति की इच्छा से अपना सम्पूर्ण धन, गौ आदि पशु जो कुछ था 'इस विचार से कि सर्वमेध यज्ञ किए बिना मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता' दान कर दिया। मनुष्य के सामने ज्ञान प्राप्ति और जीवन में आगे बढ़ने के अनेक अवसर आते हैं परन्तु जब तक किसी वस्तु के विषय में उसकी श्रद्धा जागृत नहीं होती उसे सफलता नहीं मिलती। अवसर का चूका नर और डाली का चूका बानर की गति कहीं की नहीं होती। परन्तु अवसर का ग्रहण करने वाले ज्ञान, धन और धर्म को प्राप्त करते हैं। वाजश्रवा के पुत्र नचिकेता ने जब अपने पिता द्वारा किए जाते सर्वमेध यज्ञ को देखा तो उसके मन में श्रद्धा बुद्धि जागृत हुई। उसने देखा कि सर्वमेध यज्ञ के समय दान देते हुए उसके पिता ने निकम्मी गायों का भी दान किया। यह देखकर उसने विचार किया कि मेरा पिता यह धर्म के स्थान में क्या अधर्म करने लगा है क्योंकि यज्ञ की दक्षिणा में जो गौएं थीं वे बूढ़ी थीं और उन गायों के दान से धर्म के स्थान पर अधर्म की सम्भावना थी क्योंकि दान दूसरों के कल्याण के लिए दिया जाता है। मनुष्य के लिए जो सबसे महान् कर्म है वह दान है। एक कथा आती है कि एकबार देव, दानव और मानव तीनों प्रजापति के पास उपदेश के लिए पहुँचे। प्रजापति ने तीनों को एक ही उपदेश दिया 'द'। देवों ने कहा हम देवता लोग कामी हैं, हमें विषय भोगों का चस्का लग गया है अतः हमें ब्रह्मा ने 'द' अक्षर के द्वारा दाम्यत इन्द्रियों के दमन की शिक्षा दी है। दानवों ने कहा हम दानव बड़े क्रोधी, दयाहीन हो गये हैं। हमें 'द' अक्षर के द्वारा प्रजापति ने दयध्वम्' दया करो यह शिक्षा दी है। मानवों ने कहा हम मानव बड़े लोभी और धन संग्रह के पीछे पागल हो गए हैं। हमें दान करने का उपदेश 'द' अक्षर से प्रजापति ने दिया है।

दान के सम्बन्ध में उपनिषद् का एक अनुपम उपदेश ... यह विचारणीय है। तैत्तिरीयोपनिषद् ने लिखा है:—

श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया देयम्। श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्। अर्थात् श्रद्धा से दान करना चाहिए अश्रद्धा से दान करना चाहिए शोभा से देना चाहिए, लज्जा से देना चाहिए, भय से दान देना चाहिए और ज्ञान से वाकिफ हो दान देना चाहिए—दान देना प्रत्येक दशा में चाहिए यह है मूल भारतीय विचार धारा का।

दान के पीछे त्याग की भावना छिपी हुई है। छिपी हुई क्या त्याग और दान को तो हम पर्यायवाची शब्द कह सकते हैं। दान का या त्याग का विपरीतार्थक शब्द स्वार्थ है। यदि संसार के मनुष्यों में त्याग न रहे और स्वार्थपरता ही स्वार्थपरता आ जाय तो जरा कल्पना कीजिए संसार का कितना भयंकर रूप हो जायगा। कोई मनुष्य किसी को पूछेगा नहीं। यह स्वार्थपरता या अदान की भावना जितनी विश्व में बढ़ेगी उतनी ही संसार में अशान्ति भी बढ़ेगी। आज के विश्व पर जरा अपनी दृष्टि डालकर देखिए। क्यों आज इतनी भौतिक एवं वैज्ञानिक उन्नति होने के पश्चात् भी मनुष्य में शांति नहीं? आज देश और काल की दृष्टि से एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के बहुत निकट आ गया है। अब तक तो हम दूर के शब्द ही कान से सुना करते थे, विज्ञान ने रूप के दर्शन करा दिए इंगलैंड के प्रधान मंत्री के भाषण को आप गोरखपुर में बैठे सुन सकेंगे, उसके हाव भाव, अंग संचालन आदि को देख सकेंगे और अब तो यह कोशिश हो रही है कि यदि आप लखनऊ में बैठकर मालदह आम खाएं तो स्वाद जो आप ले रहे होंगे उसका पता इंगलैंड में बैठे लोगों को भी हो सकेगा। जाने दीजिये इन बातों को। स्पुतनिक के करिश्मे तो आपने देखे ही होंगे। रूस ने १६००० मील की चाल से एक लायका नाम की कुतिया को बैठाकर उड़ा दिया। कहने का तात्पर्य यह है कि वैज्ञानिक आज हमसे बहुत समीप आ गए हैं पर जितना हम समीप आए हैं मानसिक दृष्टि से उतने ही दूर हो गये हैं। आज स्थान की दृष्टि से समीप बैठे रूस, अमेरिका, इंगलैंड आदि सभी देशों ... एक दूसरे ... और दूसरे ... अपने ... उठा। तब भला बताइए कैसे शांति हो कैसे सुख मिले। शांति और सुख का नाशक यही अदान का, संचय की और स्वार्थ की भावना है और यदि भावना यदि न रक्खे तो विश्व के नाश का कारण न बने। उपनिषद् के मंत्र द्रष्टा ऋषि इस तत्व को समझते थे। यही कारण है कि उन्होंने लिखा श्रद्धा से दो, अश्रद्धा से दो, भय से दो, ज्ञान से दो, लज्जा से दो, शोभा से दो, प्रतिष्ठा से दो किसी तरह से दान दो, त्याग करो। त्याग के बिना मानव शांत नहीं हो सकता—सुख नहीं प्राप्त कर सकता।

यदि त्याग न होता तो यह संसार नहीं बन सकता था। परमेश्वर ने त्याग के द्वारा ही विश्व का निर्माण किया। उसे देव कहा जाता है। देव शब्द के सम्बन्ध में सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में स्वामी जी महाराज ने ऐसे ऐसे रहस्य खोले हैं कि इन्हें देखने के पश्चात् कुछ भी समझना शेष नहीं रहता। परन्तु देव शब्द का सबसे सुन्दर अर्थ है देने वाला। सूर्य प्रकाश और उष्णता देता है अतः यह देव है. जल शीतलता और मैले कपड़ों को पवित्रता प्रदान करता है अतः जल देव है, अग्नि देव है वायु देव है परन्तु इनकी अपेक्षा ईश्वर कहीं अधिक देने वाला है इसलिए उसे महादेव कहते हैं। इसलिए प्रभु जब दान देता है—मनुष्यों के लिए तो हमें भी दुःखियों, दीनों, इच्छुकों को दान देना चाहिए। त्याग में महान् सुख है। एक कथा सुनिए—एक था कृपण। इतना कृपण कि अपने ऊपर एक भी पैसा नहीं खर्च करता। न खाता न पीता, फटे कपड़े पहनता। परन्तु वह सत्सग में जाता अवश्य था। कहते हैं कि एक दिन जब सत्संग समाप्त हो रहा था, भोग पड़ने का समय आया। सब लोग कुछ वस्तुएं दान के लिए लाए थे। वह कृपण भी एक मैले रुमाल में बांध के कुछ लाया। सब लोग अपनी लाई वस्तु रखते गए, वह भी आगे बढ़ा। अपना रुमाल खोल उसने अपनी अशर्फियां पंडित जी के समक्ष उंडेल दी और जाने लगा। पंडित जी ने कहा 'नहीं नहीं सेठ जी, वहां नहीं यहां मेरे पास बैठो।" सेठ जी ने कहा 'यह तो रुपयों का सम्मान है पंडित जी मेरा सम्मान नहीं।" पंडित जी ने कहा भूलते हो सेठ जी रुपया तो तुम्हारे पास पहले भी था। यह तुम्हारे रुपये का नहीं त्याग का सम्मान है।'

यह है त्याग या दान की महत्ता, आज विश्व शान्ति का उपाय यदि सच्चे दिल से व्यक्ति चाहता है, राष्ट्र चाहते हैं तो उन्हें अपने अन्दर त्याग की भावना लानी होगी। "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' अर्थात् वैराग्य भाव से भोग करो का उपनिषद् का व वेदों का आदर्श अपने सामने रखना होगा। तभी मानव के मन में और विश्व में शांति तथा सुख हो सकेगा। आज संसार को कणाद के यज्ञ के अनुसार अपना जीवन बनाना होगा। सुनी है आपने कणाद की कथा। एक बार कुछ व्यक्ति कणाद जी के पास शिक्षा के लिए पहुँचे। कणाद जी ने कहा कि भाइयों आज तो मैं तुम्हें कुछ न बतला सकूंगा यदि तुम सचमुच कुछ सीखना चाहते हो, मुझसे उपदेश लेना चाहते तो एक सप्ताह बाद आओ। जिज्ञासु निश्चित समय पर पहुँचे। प्रातःकाल से यज्ञ प्रारम्भ हुआ। एक दो बज गए। आगन्तुकों के पेट में चूहे कूदने लगे। कणाद जी ने कहा आप लोग घबराइये नहीं, घर जाने में देर होगी यहीं भोजन कीजिए। भोजन के लिए बैठने से पूर्व वे जब हाथ धोने बाहर गए तो कणाद जी की पूर्व निश्चित योजना के अनुसार रस्सी और लकड़ियों की पटरियों से उनकी कोहनियां बाँध दी गई और कह दिया गया कि यहां के नियमानुसार आपको भोजन करना होगा, और जाने को जबरदस्ती करने पर मार डाला जायगा। वे लोग परोसी हुई थालियों पर बैठ गए। कणाद जी ने हाथ जोड़कर खाने को कहा। उन्होंने ग्रास उठाकर मुख में डालना चाहा तो हाथ क्योंकि कोहनियों के यहाँ बंधा हुआ था मुंह में न जाकर ऊपर जाने लगा। वे बड़ी कठिनाई में पड़े कणाद जी को कोसने लगे। तब कणाद जी ने उन्हें एक मार्के की शिक्षा दी और कहा कि देखिये आप को मैं भोजन करना सिखाता हूं। आप लोग खा इसलिए नहीं पाते कि अपने अपने लिए खाना सोचते हैं। यदि आप अपने आप न खाकर अपने सामने वालों को खिलाएं, सामने वाले आपको खिलाएं तो सब खा लेंगे और कोई कठिनाई न होगी ठीक यह दशा आज विश्व की है संसार के मनुष्य और देश यदि अपने स्वार्थों को छोड़ परार्थ की चिन्ता करें तो विश्व शान्ति और सुख का मार्ग विस्तृत होगा, यही भावना थी जिसे ध्यान में रखकर सर्वमेध यज्ञ में सर्वस्व दान करने का विधान वैदिक ऋषियों ने किया था दान का उद्देश्य दूसरों को लाभ पहुँचाना है। अतः बूढ़ी गायों में इस दान न देखकर ... पर भार रूप समझ कर नचिकेता ने अपने पिता से पूछा :—

स होवाच पितरं तत कस्मै मां दास्यसीति द्वितीयं तृतीयं। तं होवाच मृत्यवे त्वा ददामीति ॥४॥

अर्थात् (सः ह) वह नचिकेता (पितरम्) पिता (उवाच) बोला (तात) हे तात (मां कस्मै दास्यसि) मुझे आप किसे देंगे ? (द्वितीयम्) दुबारा (तृतीयम्) तिबारा कहने पर पिता ने क्रुद्ध होकर कहा कि (मृत्यवे त्वा ददामीति) मृत्यु के लिए तुझे देता हूं।

बस आज इतना ही। [क्रमशः]

आर्य्य जगत मे सब से अधिक छपने वाला आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

ओ३म्

आर्य्य-मित्र

वर्ष ६०

अङ्क १४

लखनऊ—रविवार चैत्र २३, शक संवत् १८८०, वैशाख कृ० १०, वि० २०१५ (१३ अप्रैल १९५८) दयानन्दाब्द १३४ सृष्टिसंवत् १९७२९४९०५९

सम्पादकीय

पंजाब के क्षेत्रीय फार्मूले की कोई धारा नहीं हटाई गई

पन्त जी का सरदार हुकमसिंह को पत्र भाषा समस्या के बारे में नया मोड़

२ अप्रैल को अमृतसर से शिरोमणि अकाली दल ने केन्द्रीय गृहमन्त्री प० गोविन्दवल्लभ पन्त का अकाली नेता सरदार हुकमसिंह के नाम प्रेषित एक पत्र प्रकाशित किया है जिससे क्षेत्रीय फार्मूले के सम्बन्ध में पंजाब में चल रहे विवाद के नया रूप धारण कर लेने की आशंका है।

पत्र में श्री पन्त जी ने कहा है कि क्षेत्रीय फार्मूले की कण्डिका ९ तथा १० निकाली नहीं गई है तथा संसद ने क्षेत्रीय फार्मूले को अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी है।

४ नवम्बर १९५७ के सरकारी गजट में जो राष्ट्रपति ने स्वीकृति प्रदान की है उसमें कण्डिका ९ व १० का नाम नहीं है और आज तक संसद ने इस फार्मूले को मान्यता प्रदान नहीं की है अपितु उसे रद्द कर दिया है।

हम दुःख और आश्चर्य होता है कि पन्त जैसा जिम्मेदार व्यक्ति इस प्रकार की बात जो वस्तु स्थिति के सर्वथा विपरीत हैं लिखने की कैसे हिम्मत करता है।

आर्य समाजी नेता मिलते हैं तो उनको कुछ और समझाया जाता है और सिख नेता मिलते हैं तो उनको कुछ और ही बतलाया जाता है। इस व्यवहार को क्या कह कर पुकारा जाय यह हमारी समझ में नहीं आता। हम समझते हैं कि इस असत्य व्यवहार से शासन का मान दण्ड बहुत झुक जाएगा और अन्ततोगत्वा शासन के विरुद्ध सर्वत्र रोष, घृणा एवं प्रतिशोध की भावना जागृत हो उठेगी।

२७ अप्रैल को देहली में सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की बैठक होने जा रही है और वह सब परिस्थिति पर विचार कर कोई गम्भीर निर्णय लेगी।

हम श्री पन्त जी से अनुरोध करते हैं कि वह इस फार्मूला सम्बन्धी घोटाले के बारे में स्पष्ट अपना वक्तव्य प्रकाशित करें। साथ ही समिति के अध्यक्ष महोदय से भी अनुरोध करेंगे कि वह उन सब बातों को जो पन्त जी से हुई हैं और जो जो आश्वासन दिए गए हैं उनको अपने वक्तव्य द्वारा स्पष्ट करें।

हम आर्य जगत् की बेचैनी और रोष का अनुभव करते हैं। इस परिस्थिति में इनका होना स्वाभाविक है। किन्तु धैर्य के साथ २७ अप्रैल को होने वाली भाषा स्वातन्त्र्य समिति की महत्वपूर्ण बैठक के फैसले की प्रतीक्षा करें।

डाक्टर ग्राहम के सुझाव ठुकरा दिए गए

डाक्टर ग्राहम ने पिछले दिनों भारत और पाकिस्तान के अनेक चक्कर लगाए और अब अपनी एक रिपोर्ट प्रकाशित की है जिसमें काश्मीर से पाकिस्तानी फौज हटाकर सुरक्षा परिषद की फौज रखने और दोनों देशों के प्रधान मन्त्रियों की अपनी उपस्थिति में सुलह समझौते की बातें करने का सुझाव दिया है।

हमें हर्ष है कि प्रधानमन्त्री प० नेहरू ने डा० ग्राहम के इन अपमानजनक सुझावों को ठुकरा दिया है। जिस समय तक सुरक्षा परिषद द्वारा पाकिस्तान को स्पष्ट आक्रान्ता घोषित नहीं किया जाता और आजाद काश्मीर को खाली करने का आदेश नहीं दिया जाता सुरक्षा परिषद का कोई भी सुझाव माना नहीं जा सकता।

काश्मीर की चप्पा चप्पा भूमि भारत का अंग है हम किसी भी दशा में उसके किसी भी भाग पर विदेशी सेनों का पाँव रखने नहीं दे सकते।

पाकिस्तान का दिमाग अमेरिका और ब्रिटेन ने बिगाड़ा हुआ है जिस दिन उधर से उसको गहरी टक्कर लगेगी वह सीधे रास्ते पर आजावेगा और काश्मीर से अपना हाथ खेंचकर भारत के साथ आप मैत्री कर लेगा। किसी विदेशी पंच की आवश्यकता नहीं है। केवल समय की प्रतीक्षा है। यदि पाकिस्तान को शीघ्र सद्बुद्धि प्राप्त न हुई तो उसका विनाश अवश्यम्भावी है।

पाकिस्तान की डांवाडोल परिस्थिति

३१ मार्च को पूर्वी पाकिस्तान के गवर्नर श्री फजलुल हक ने २१ मास से स्थापित आवामी दल की मिली जुली सरकार को बरखास्त कर दिया। यह समाचार जैसे ही कराची पहुंचा वैसे ही कुछ घण्टों के बाद पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री इस्कन्दर मिर्जा ने उक्त गवर्नर महोदय को अपदस्थ कर दिया और पाकिस्तान के मुख्य सचिव श्री हामिद अली को हक साहिब से चार्ज लेने का आदेश दिया गया। श्री हामिद अली ने १ अप्रैल को चार्ज लिया और ३१ मार्च की रात को श्री अबूहुसैन की जो सरकार बनाई गई थी उसको अपदस्थ कर दिया। और दिन के ११ बजे श्री अताउर्रहमान खां का मन्त्री मण्डल स्थापित किया।

३ अप्रैल को कराची की एक सभा में पाकिस्तान मुस्लिम लीग के अध्यक्ष खान अब्दुलकय्यूम खाँ ने मेजर जनरल इस्कन्दर मिर्जा को राष्ट्रपति के पद से हटाने की मांग की है। उधर कायदे आजम की बहिन फातिमा जिन्ना भी नून मन्त्री मण्डल और इस्कन्दर मिर्जा को हटाने की मांग कर रही है।

इस घटना चक्र से पता चलता है कि पाकिस्तान की नौका डांवाडोल हो रही है और आश्चर्य नहीं कि किसी भी क्षण पाकिस्तान में खुली बगावत न हो जाय। नेताओं और शासकों में परस्पर अविश्वास और स्वार्थ साधना की भावना इसका मूल है। भारत के नेताओं और शासकों को पाकिस्तान की स्थिति से सबक सीखना चाहिए।

अंग्रेजी हटाओ आंदोलन

समाजवादी नेता डा० राममनोहर लोहिया ने ६ से १३ अप्रैल तक देश भर में अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन करने की जनता से अपील की है।

दक्षिण भारत में श्री राजगोपालाचार्य के नेतृत्व में जो अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा बनाने का आन्दोलन चल रहा है यह श्री लोहिया जी द्वारा प्रस्तावित उसका जवाबी आन्दोलन है। यदि कजगम दल का ध्यान ब्राह्मण विद्रोह से हटाने के लिए ही राजा जी का यह आन्दोलन है तो हमें कुछ विशेष कहना नहीं। किन्तु यदि उनका हिन्दी विरोधी आन्दोलन यथार्थ है तो हम उसका तीव्र से तीव्र विरोध करना चाहिये। दासता की भाषा अंग्रेजी किसी भी अवस्था में अब स्वीकार नहीं की जा सकती। सिद्धान्ततः श्री नेहरू जी ने यह घोषणा की है कि हिन्दी को राष्ट्र भाषा के सिंहासन से किसी भी अवस्था में अपदस्थ नहीं किया जा सकता।

हम श्री लोहिया जी के आन्दोलन का समर्थन करते हैं और जिन प्रान्तों में हिन्दी बोली व समझी जाती है वहां इस आन्दोलन को विशेष प्रगति देना अपना कर्तव्य समझते हैं। मानसिक दासता के कारण हिन्दी भाषा भाषी प्रान्तों की जनता भी अंग्रेजी का पल्ला बुरी तरह पकड़े हुए है। यहां की प्रादेशिक सरकारें तथा नगर पालिका आदि भी अंग्रेजी का मोह त्यागने के लिए अभी तक तयार नहीं।

हम उनके विरुद्ध भी आन्दोलन करना होगा और उस समय तक करना होगा जब तक अंग्रेजी को हटा कर हिन्दी को पूर्णतया प्रतिष्ठित नहीं कर दिया जाता।

अणु-परीक्षण विरोध

अणु परीक्षण ने संसार को भयंकर रूप में चिन्ताग्रस्त कर दिया है। रूस ने इस परीक्षण को न करने की घोषणा की है जिसका स्थान स्थान पर स्वागत किया जा रहा है। हमारे प्रधान मन्त्री श्री नेहरू जी इस दिशा

[शेष अगले पृष्ठ पर]

[पिछले पृष्ठ का शेष]

में बहुत दिनों से प्रयत्नशील हैं और संसार को अणु अस्त्रों की भयकर आपदों से बचाना चाहते हैं।

ब्रिटेन अमेरिका तथा रूस की सरकारों के विरुद्ध इस सम्बन्ध में अदालती कार्यवाही करने की संसार के बड़े बड़े वैज्ञानिक चेष्टा कर रहे हैं। गत वर्ष संसार के ९००० वैज्ञानिकों ने एक प्रार्थनापत्र संयुक्त राष्ट्र संघ को भी भेजा था।

४ अप्रैल को लन्दन में अणु-अस्त्रों के विरुद्ध हजारों व्यक्तियों का एक मौन जलूस निकाला गया। इस जलूस का प्रदर्शन अत्यन्त प्रभावोत्पादक बतलाया जाता है। ४ अप्रैल को जलूस ट्रैफालगर स्क्वायर से शुरू हुआ और ८ अप्रैल का एल्डर मैस्टन अणु आयुध अनुसन्धान शाला पहुँचेगा।

हम इस अणु परीक्षण का घोर विरोध करते हैं और इस दिशा में हमारे प्रधान मन्त्री श्री नेहरू जी जो भी ध्रुव पद उठायेंगे उसका खुला समर्थन करेंगे।

श्री विदेह जी की वेद व्याख्या ग्रन्थमाला

आज हम इस लेख मे श्री विदेह जी की इस मान्यता पर कि "प्रत्येक वेद मन्त्र का एक सुनिश्चित अर्थ है यथार्थ ज्ञान प्राप्त मे उसमे अन्य परिणाम भी निकाले जा सकते हैं" पर विचार करेंगे।

यह सत्य है कि अव्ययों के अतिरिक्त वेद का प्रत्येक शब्द अपनी धातु तथा प्रत्ययादि के आधार पर एक सुनिश्चित अर्थ का बोधक है। किन्तु वेद के शब्द की अर्थ व्याप्ति इतना विस्तृत है कि वह प्रकरण एव प्रसंग के अनुसार भिन्न-भिन्न भावों की द्योतिका हो जाती है। उदाहरणार्थ विष्णु शब्द विषलृ धातु से निष्पन्न होने के कारण व्याप्ति अर्थ का द्योतक है। अब प्रसग के अनुसार उसका अर्थ परमात्मा, सूर्य आदि हो जाते हैं। वेद के बहुत से शब्द बाह्य आकार में समान हैं। किन्तु कई धातुओं से उनकी उत्पत्ति होने के कारण अर्थ में विशेष विभिन्नता हो जाती है। वैदिक व्याकरण तथा स्वरों का सम्यक् ज्ञान रखने वाला ही इसके रहस्य को समझ सकता है कि कहां किस प्रसग मे प्रयुक्त शब्द में कौन सा धातु कार्य कर रही है।

गौणवृत्ति कहने से आपका क्या अभिप्राय है यह समझ में नहीं आता। प्रसगवशात् विष्णु का अर्थ परमात्मा और प्रसगवशात् विष्णु का अर्थ सूर्य गौण नहीं प्रधान ही होगा। और वहां दूसरा अर्थ करना 'बुद्धिपूर्वकम वाक् कृति वेदे' इस दृढ़ धारणा पर आघात करना होगा। दूसरी बात यह है कि वेद का प्रायः तीन धाराओं में अर्थवाद चलता है अर्थात आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक। इन तीनों धाराओं में अर्थ किया जाता है और वह अर्थ केवल किसी एक प्रकीर्ण मंत्र मात्र का नहीं अपितु समस्त सूक्त आदि का बुद्धिपूर्वक संगत होता है। इस प्रकार स्थूल, सूक्ष्म एवं सूक्ष्मतम जगत् में मंत्र की अर्थ व्याप्ति होती है। यह वेद की अपौरुषेयता का एक प्रबल प्रमाण है। प्रत्येक धारा में अर्थ प्रधान ही होगा उसको गौण नहीं कहा जा सकता।

दूसरी बात विदेह जी ने यह कही है कि क्रम-बद्ध संहिता के सूक्त, अध्याय आदि का संगत अर्थ होना चाहिये। सो ठीक ही है किन्तु जिस विद्या का प्रतिपादित सूक्त, अनुवाद वा अध्याय है उसका सम्यक् ज्ञान हुये बिना कोई उसके रहस्य का सफल उद्घाटन करने में समर्थ नहीं हो सकता। जैसे ज्योति विद्या से सम्बन्धित कोई सूक्त है तो ज्योतिषशास्त्र का परिपूर्ण ज्ञान जब तक न हो उस सूक्त के अर्थवाद में सफलतापूर्वक प्रवेश करना आज के युग में सम्भव नहीं। जो व्यक्ति वेदों का क्रमबद्ध अर्थ करने का प्रयास करते हैं उनको सब शास्त्रों एवं विद्याओं का ज्ञान होना नितान्त आवश्यक है। इसके बिना उनका प्रयास निष्फल जावेगा।

तीसरी बात यह है कि श्री विदेह जी ने अन्त:श्रवण एवं अन्तर्ज्योति की अपनी पुस्तक में विशेष चर्चा की है। हम भी यह मानते हैं कि बिना यौगिक साधना के कोई मानव वेद के अर्थ गाम्भीर्य में गोता नहीं लगा सकता। किन्तु व्याकरण, निरुक्त, मीमांसा, तर्कशास्त्र आदि की अवहेलना करके केवल अन्तर्ज्योति के आधार पर कोई वेदों में पैठना चाहे, तो सम्भव नहीं।

—शिवदयालु

आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर

स्वामी अमृतानन्द जी से यहाँ विधिवत ५ व्यक्तियों ने दीक्षा लेकर वानप्रस्थाश्रम मे प्रवेश किया। उनके नाम हैं श्री आशाराम शर्मा लाहौर निवासी, श्री गोपालकृष्ण पिपलानी, श्री इन्द्रजीत जी फर्रुखाबाद, श्री तारा चन्द जी कैरानी और श्रीमती हुकुम देवी धर्मपत्नी श्री ताराचन्द कैरानी श्री आशाराम शर्मा ने आश्रम को २१) दान दिया। स्वामी अथर्वानन्द जी, स्वामी जीवन मुनि जी, स्वामी विवेकानन्द जी, तथा स्वामी सत्यानन्द जी इस अवसरपर उपस्थित थे।

साप्ताहिक समाचार समीक्षा

नहरी पानी विवाद

पाकिस्तान को भारतीय नहरों का पानी दिए जाने के सम्बन्ध में श्री पाटिल ने लोक सभा में कहा कि १९६२ के बाद भारत पाकिस्तान को नहरी पानी देना बन्द कर देगा। इस सम्बन्ध में भारत अब अधिक झुकने को तैयार नहीं है। भारत लगातार ११ वर्षों से पाकिस्तान को पानी देता आ रहा है। पाकिस्तान को चाहिए कि वह अपने पानी का प्रबन्ध करे और शीघ्र अपनी नहर बनवाये। आपने कहा कि विश्व बैंक के प्रस्ताव द्वारा जो निर्णय हो गया है भारत उससे भिन्न नहीं करेगा।

बुलगानिन के बदले ख्रुश्चेव

सोवियत रूस के प्रधान मन्त्री श्री मार्शल बुलगानिन के त्याग पत्र देने के बाद रूस के नए प्रधान मन्त्री श्री निकिता ख्रुश्चेव चुने गए हैं। वहाँ की जनता का अनुमान है कि ख्रुश्चेव के शासन काल में व्यवस्था और भी सुन्दर होगी और देश में सामाजिक प्रगति होगी। अब स्टालिन शाही का नाम भी नहीं रहेगा।

सिनेमा कलाकारों का संघ

आज कल सभी प्रकार के नौकरी वालों ने अपना संघ बनाया हुआ है पर सिनेमा कलाकारों का कोई संघ नहीं था। अब अपने मालिकों के साथ विवादों से निपटने तथा अपनी अनेकानेक सुविधाओं के लिए इन्होंने भी अपना एक संघ बना लिया है जिसके पदाधिकारी निम्न प्रकार से चुने गए हैं—

श्रीमती दुर्गाखोटे अध्यक्षा, मुबारक उपाध्यक्ष, मनमोहन कृष्ण मन्त्री, सज्जन उपमन्त्री तथा डेविड कोषाध्यक्ष अनेकों अन्य प्रमुख कलाकार अन्तरंग सदस्य चुने गए।

राजस्थान नहर का उद्घाटन

३० मार्च को गृह मन्त्री पन्त ने राजस्थान नहर का उद्घाटन किया। इस अवसर पर १० हजार किसान उपस्थित थे। इस नहर से शीघ्र ही मरुस्थल भी उपजाऊ हो जायेगा। आशा है कि १९६०-६१ से राज्य के कुछ भाग को पानी मिलने लगेगा। यह नहर ४२६ मील लम्बी होगी और इससे लाखों एकड़ भूमि की सिंचाई होगी।

पंजाब कांग्रेस

कुछ राजनीतिक क्षेत्रों के लोगों का अनुमान है कि पंजाब कांग्रेस शीघ्र ही भंग कर दी जायेगी क्योंकि इन दिनों दलबन्दी के कारण पंजाब की हालत सोचनीय हो गई है। नये प्रदेशाध्यक्ष के निर्वाचन से और भी स्थिति खराब हो गई है। प्रधान मन्त्री नेहरू और कांग्रेसाध्यक्ष ढेबर शीघ्र ही पंजाब का दौरा करने वाले हैं। इसके बाद ही कुछ निर्णय किया जायेगा। इधर पंजाब कांग्रेस के कुछ व्यक्ति कैरो मन्त्रिमण्डल को अपदस्थ करने की पूरी तैयारी में लगे हैं।

उ०प्र० सरकार का नवगठित मन्त्रि मंडल

१—श्री डा० सम्पूर्णानन्द-साधारण प्रशासन, योजना और उद्योग।

२—श्री हुकुमसिंह—चिकित्सा, सहायता, पुनर्वास और विद्युत।

३—श्री गिरधारीलाल-सार्वजनिक निर्माण विभाग।

४—श्री चरणसिंह—राजस्व और वित्त।

५—श्री कमलापति त्रिपाठी-गृह शिक्षा, सूचना और स्टेट।

६—श्री अलीजहीर-न्याय, वन, खाद्य और नागरिक पूर्ति।

७—श्री विचित्र नारायण शर्मा-स्थानीय स्वशासन।

८—श्री आचार्य जुगुलकिशोर—श्रम और सामाजिक कल्याण।

९—श्री मोहनलाल गौतम—सहकारिता और कृषि।

नोटः—राज्य मन्त्रियों तथा उप मन्त्रियों के कार्य विभाग पूर्ववत हैं।

लक्ष्मी मेनन की घोषणा

विदेश मन्त्रालय की उपमन्त्री श्रीमती लक्ष्मी मेनन ने लोक सभा में प्रधान मन्त्री की ओर से कहा कि पाक की केवल शक्ति प्रयोग की धमकी से भारत अपने सीमा की भूमि छोड़ नहीं सकता। दोनों देशों की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया जाना चाहिए। लोक सभा में सिलहट कछार गोली काण्ड की घटनाओं का विवरण पेश किया गया जिसके सम्बन्ध में श्रीमती मेनन ने उक्त शब्द कहे।

पूर्वी पाक की स्थिति

पूर्वी पाकिस्तान में पुनः संकट आ पड़ा है। फलस्वरूप वहां का मन्त्री मण्डल भंग हो गया और पाक राष्ट्रपति श्री इसकन्दर मिर्जा ने नून मन्त्री मण्डल के परामर्श से पूर्वी पाकिस्तान के गवर्नर श्री फजलुल हक को बर्खास्त कर दिया। पूर्वी पाक सरकार के चीफ सेक्रेटरी श्री हामिद अली से गवर्नर का कार्यभार ग्रहण करने को कहा गया है। दो रोज बाद श्री अताउररहमान पुनः पूर्वी पाक के मुख्य मन्त्री बनाए गए। —स० सं०

मातृभाषा का महत्व

(आचार्य रामानन्द शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, बिहार)

मनुष्य के निर्माण मे तीन चीजों की नितान्त आवश्यकता है—मातृदेवी, मातृभूमि, तथा मातृभाषा। माता के गर्भ में जब बालक प्रवेश करता है तो माता-पिता के अनेक वर्षो के सस्कारों को संचित कर अपने अङ्ग प्रत्यङ्गों का निर्माण करता है। माता के विचारो तथा अनुभवों का वह साक्षात् प्रतिमा बनकर आता है। यदि किसी अच्छे माता पिता की बुरी सन्तान हो जाय तो समझो कि कुछ न कुछ दबी हुई वासना माता पिता के अन्दर थी जो बालक के स्वभाव मे आकर उत्पन्न हो गयी इसी प्रकार की बातें खराब माता पिता की अच्छी सतान के सम्बन्ध में कही जा सकती है। इसलिए शास्त्रकार कहते हैं कि "आत्मा वै जायते पुत्र."।

मातृदेवी के बाद मातृभूमि का स्थान उससे अधिक है क्योंकि इससे हमारा सम्बन्ध आजीवन रहता है। मनुष्यों के विचारो पर अथवा शारीरिक सस्थान पर भौगोलिक परिस्थिति का प्रभाव बहुत अधिक पड़ता है। वाल्मीकि, कालिदास तथा भवभूति आदि कवियों तथा कपिल, गौतम, कणाद आदि दार्शनिको को उत्पन्न करने का महत्व केवल उनकी जनक और जननी को ही नहीं दिया जायेगा अपितु भारत माता को भी दिया जायेगा जिसके शुद्ध वातावरण म इन महापुरुषों ने अपने विचारो को उन्नत करने म शक्ति प्राप्त की। उत्तरीय ध्रुव के निकटवर्ती मानव सभ्यता की दौरान मे पिछड़े इसलिए रह गए क्योंकि उनकी भौगोलिक परिस्थिति इसके अनुकूल नहीं जो वे सभ्यता का विकास कर सके। अन्न, जल, हवा तथा वासभूमि मनुष्य का 'परिस्थिति' प्रदान करती है। मानव उसी के अनुकूल अपने विचारों का निर्माण करता है। शरीर के निर्माण मे भी इस परिस्थिति का बड़ा ही जबर्दस्त हाथ है।

अब तीसरा स्थान मातृभाषा का होता है। मनुष्य उत्पन्न होकर अपनी पूजनीय माता से दूर हो जाता है, जीवन त्याग कर मातृभूमि को छोड़ जाता है। किन्तु अपनी मातृभाषा मे जो कुछ विचारो को छोड़ जाता है तो नयी सतति के लिए वह अपनी 'थाती' धर जाता है।

आज हमारे समक्ष वाल्मीकि, वेदव्यास अथवा कालिदास नहीं हैं। किन्तु जब कभी मुझे उनके विचारों को जानना होता है तब हम वाल्मीकि अथवा वेदव्यास से उनके ग्रन्थों द्वारा बात कर लेते हैं। यह सम्पत्ति अक्षुण्ण है। यदि हमारी यह सम्पत्ति कायम रही तो हमारा गया हुआ साम्राज्य भी पुनः प्राप्त हो सकता है। यदि हमारी यह सम्पत्ति खो गयी तो हिमालय के बराबर रत्न भी किसी महत्व का नहीं है। हम अपनी मातृभाषा के द्वारा आज तक ऋषि मुनियो एवं महात्माओं की आत्मा को अपने भीतर सुरक्षित किये हैं। कहना नहीं होगा कि भाषा का अनुवाद प्राचीन सस्कृति को सुरक्षित रखेगा।

जिस समय अपने बच्चे का नाम राम, कृष्ण अथवा अर्जुन रखते है तो केवल बुलाने अथवा संज्ञा के लिए ही ये नाम नहीं रखते हैं अपितु इन नामो से राम, कृष्ण तथा अर्जुन के चरित्रों को याद करते हैं तथा उनके गुणो का आधान अपने बालकों मे करते हैं। मातृभाषा के द्वारा उस जाति का विचार भी अवगत होता है जिसकी वह मातृभाषा है जैसे सस्कृत मे विश्व को ससार अथवा जगत् आदि नामो से पुकारते हैं। ससार शब्द का धातुगत अर्थ होता है जो निरन्तर चलता है जगत् शब्द का भी यही अर्थ होता है। इससे प्रतीत होता है कि हिन्दू भावना के अनुसार यह विश्व गत्यात्मक है इसमे निरन्तर गति है। विश्व के परमाणु परमाणु गतिशील हैं। पारसी भाषा में इस विश्व को 'दुनिया' कहा जाता है जिसका धातु 'अदना' है अदना का अर्थ हुआ 'तुच्छ इसलिए पारसियों की दृष्टि मे यह जगत् तुच्छ है। क्या इन शब्दों का प्रभाव मनुष्य के विचारो पर नहीं पड़ता है? इसी प्रकार हम अन्य शब्दो से भी उस संस्कृति का पता लगा सकते है अथवा यों कहिये कि भाषा के द्वारा ही सस्कृति का सृजन होता है।

हिन्दी हमारी राष्ट्र की भाषा है यद्यपि हमारे देश म अनेक भाषायें बोली जाती हे परन्तु सबो की आत्मा एक है अथवा इन सबो का तादात्म्य सम्बन्ध है। वह हमारी वैदिक भाषा है, जिससे भारत की सम्पूर्ण भाषाये अनुप्राणित हुई हैं। इसलिए बगला, उड़िया, मराठी, गुजराती, मलयालम, तेलगू आदि भाषाओं की वही 'आत्मा' है जो राष्ट्रभाषा हिन्दी की है। हमे इन भाषाओ की जानकारी आवश्यक है, किन्तु सबो के परस्पर व्यवहार के लिए किसी एक भाषा की आवश्यकता है जिसके द्वारा हम राष्ट्रिय कार्यों को सम्पन्न कर सकते हैं। आज सोवियत रूस मे अनेक भाषायें हैं किन्तु सम्पूर्ण राष्ट्र की एक भाषा 'रसियन' मानी गयी है। सम्पूर्ण रूस की जनता रसियन की उन्नति में लगी है। इजरायल अपनी पुरानी भाषा इब्रानी को राष्ट्रभाषा बनाकर खोई हुई राष्ट्रियता का जन्म दे रहा है। भारत की दशा विचित्र है। यद्यपि इस महान् देश की भाषा 'हिन्दी' राष्ट्रभाषा घोषित हो गयी है तथापि वयोवृद्ध नेता श्री राजगोपालाचारी अंग्रेजी को राष्ट्र भाषा का पद देना चाहते हैं। उनका कहना है कि अंग्रेजी के द्वारा भारत की एकता रहेगी, क्या अंग्रेजो के आने के पहले इस देश मे एकता नहीं थी। राजनैतिक एकता भले न हो किन्तु सांस्कृतिक एकता तो अवश्य ही थी। क्या वाल्मीकि जी ने रामायण लिखकर सम्पूर्ण भारत को एक करने का प्रयास नहीं किया? क्या स्वामी शंकराचार्य ने भारत के चारो ओर अपने पीठो को स्थापित कर भारत की एकता नहीं स्थापित की? आज भी भारत की एकता है, क्या अंग्रेजी के कारण, अंग्रेजी तो ३० लाख भारतीयो को ही विदित है, क्या इन्हीं ३० लाख आदमियो से ही भारत का ऐक्य है?

यह तर्क दिया जाता है कि अंग्रेजी भाषा समृद्ध है। अतः अणु-बम अथवा उद्जन बमों की जानकारी के लिए यह परम आवश्यक है। लेकिन रूस, जर्मनी, फ्रांस ने उन्नति की है क्या अंग्रेजी के कारण? रूस का 'स्पुटनिक' रसियन भाषा का शब्द है। जो जाति बलवती होती है, उसी की भाषा चलती है। आज 'पचशील' शब्द का व्यवहार सर्वत्र हो रहा है, क्योंकि इसका अनुवाद दूसरी भाषा मे मिलना दुर्लभ है।

लोग यह कहते हैं कि अंग्रेजी समृद्ध भाषा है, पर किस आधार पर? यहां मैं तीन शब्दो को लेता हू—"आग पानी, और सूर्य"। ससार का छोटी सी छोटी भाषा मे भी इनके लिए अवश्य शब्द होगा।

हिन्दी मे—अग्नि, वह्नि, पावक, आदि अनेक नाम उसके अनेक गुणों के कारण है। अंग्रेजी मे आग के लिए एक ही शब्द है—Fire। उसी प्रकार पानी के लिए भारतीय भाषा मे १०० शब्द हैं—पानीयम्, उदक, नीर, सलिल, जल, वारि, तोयम्—आदि गुणों के अनुसार शब्द हैं जब कि अंग्रेजी मे केवल एक ही शब्द है—Water वह भी डिक्शनरी मे लिखा है कि वाटर शब्द सस्कृत के उदक शब्द से निकला है। जिस जाति की भाषा में पानी के लिए दूसरी भाषा का शब्द लेना पड़ता है, बताओ वह जाति कितनी उन्नत होगी? अब मैं सहायक क्रिया की ओर आता हूं। अंग्रेजी में to be धातु है। इसी to be का रूप is, was, were, are है। अंग्रेजी शब्द कोष में लिखा है कि to be शब्द सस्कृत के भू शब्द से निकला है। क्या इससे यह विदित नहीं होता है कि अंग्रेजी भाषा में यह सामर्थ्य नहीं है कि वह नूतन शब्द को अपने अनुकूल कर सके। यह सामर्थ्य उन्हीं भाषाओं मे हैं जो प्राचीन हैं। अतः अंग्रेजी के द्वारा भारतीय जनता का भविष्य में कल्याण नहीं हो सकता है। अपितु इस देश की सस्कृति अनन्तकाल के गर्त मे विलीन हो जायेगी इसकी आशंका है।

कोष में कुशल शब्द का दो अर्थ लिखा है। कुशल=बुद्धिमान मेधावी तथा स्वस्थ, सानन्द। अब विचार करना है कि ये दोनों अर्थ इस शब्द से कैसे निकले। तब हम कुशल शब्द का विश्लेषण करते हैं—कुश=ल=अर्थात् कुश लाति इति कुशल. अर्थात् जो कुश को लावे उसे कुशल कहते हैं। जैसे कुश का अग्रभाग सूक्ष्म होता है उसी प्रकार जिसकी बुद्धि सूक्ष्म होती है उसे कुशल कहते है, इसी तात्पर्य को लेकर कुशल शब्द का अर्थ बुद्धिमान लिखा है। जहां पर कुशल का अर्थ स्वस्थ एव सानन्द लिखा है उसका भी कारण इस शब्द में निहित है। प्राचीन हिन्दू प्रात: ही वन मे जाकर पूजा पाठ के लिए कुश लाता था जो अस्वस्थ होता था वह नहीं ला सकता था, इसलिए हम पूछते हैं कि आप कुशल है अर्थात् आप मे कुश लाने की शक्ति है न। इससे स्वास्थ्य विदित होता है "क्या इससे भारतीय सस्कृति का पता नहीं चलता है?" यदि उसके स्थान पर दूसरी भाषा का शब्द रहेगा तो क्या वह भावना रहेगी? भाषा से इतिहास भी सुरक्षित रहता है राम, कृष्ण, अर्जुन आदि नामो का शाब्दिक अर्थ ही नहीं विदित होता है अपितु इनके चरित्र का इतिहास भी अक्षुण्ण रहता है।

श्री राजगोपालाचार्य ने अपने एक भाषण म कहा है कि दक्षिण के लिए 'हिन्दी' विदेशी है। यदि हिन्दी को विदेशी कहा जाय तो स्वयम् राजगोपालाचार्य शब्द विदेशी हो जायेगा। यहा पर मैं ऋग्वेद का प्रथम मन्त्र उधृत करता हूं—

ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितम्, यज्ञस्य देवम् ऋत्विजम्, होतारं रत्न धातमम्—

ऋग्वेद का समय अज्ञात है। प्रायः सबो को एक सम्मति है कि ऋग्वेद

(शेष पृष्ठ ११ पर)

"सच्चर और पेप्सू फार्मूला" का अब कोई वैधानिक महत्व शेष नहीं रहा

पंजाब हिंदी सत्याग्रह की पूर्ण सफलता

माननीय राष्ट्रपति महोदय ने—रीजनल फार्मूला से धारा ९ व १० को हटा दिया है

[प० नरेन्द्र जी, उपाध्यक्ष, सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति]

हिंदी रक्षा आंदोलन जिन मौलिक तत्वों के आधार पर चलाया जा रहा था उसमे पंजाब की भाषायी समस्या भी एक महत्व पूर्ण विषय था, जो एक दीर्घ काल से टलता हुआ चला आ रहा था। पंजाब में कांग्रेस दल के सत्तारूढ़ होने के पश्चात् राज्य को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से श्रीमान गोपीचन्द जी भार्गव एवं श्रीमान् भीमसेन जी सच्चर ने १ १० १९४९ को अकालियों से गठ जोड़कर एक योजना निर्माण की जो 'सच्चर फार्मूला" के नाम से प्रसिद्ध हुई। भारत सरकार की सम्मति से चार व्यक्तियों के हस्ताक्षर वाले इस गुप्त 'दस्तावेज" का पंजाब प्रांत के लिए लागू कर दिया गया। यहाँ एक बात यह स्मरण रहे कि इस योजना की स्वीकृति इंडिया एक्ट १९३५ के अनुसार प्रांतीय विधान सभा की स्वीकृति के आधीन थी।

इस योजना के सम्बन्ध से न केवल आर्य समाजी अपितु पंजाब की हिंदू जनता ने भी इसका घोर विरोध किया। इस निमित्त सार्वजनिक सभायें की गई प्रस्ताव पास किये जाकर इस ओर पंजाब सरकार का ध्यान आकर्षित करवाया गया कि इस प्रकार का फार्मूला हिन्दू जनता को स्वीकार नहीं होगा। किन्तु स्थानिक सरकार अकालियों के प्रभाव में आ चुकी थी और कांग्रेस भी राज्य को विनाश से बचाने के लिए अपने उच्च सिद्धान्तों का हनन करते हुए साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के आगे झुक गई। "रीजनल फार्मूला" का प्रारुप ३ ४ ५६ को लोक सभा के सम्मुख रख दिया गया, और भारत के संविधान की धारा ३७१ के अन्तर्गत राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिए इसे भेजा गया। इस अवस्था को आन्दोलन के लिए उपयुक्त अवसर जान कर आर्यसमाज ने भाषायी समस्या से सम्बन्धित आन्दोलन को हिन्दी रक्षा समिति की ओर से प्रारम्भ कर दिया। रीजनल फार्मूला के पूर्व आन्दोलन का प्रारम्भ करना बिलकुल असामयिक था। आन्दोलन जिस तीव्र गति और अनुशासन पूर्वक संगठित रूप से चलाया गया वह भारत वर्ष के इतिहास में अपनी अद्वितीयता स्थापित किये हुये है। स्वयं महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में चले हुए जंगल सत्याग्रह नामक सत्याग्रह व व्यैक्तिक सत्याग्रह आदि भी इतने दीर्घकाल तक शायद ही चले हो। सरकार और चाटुकार दलो के विरोध एवं साम्प्रदायिक भावों को उभारने वाली शक्तियों के दुष्प्रयत्नों के उपरान्त भी जिस शान्तिमय और व्यवस्थित पूर्वक एक नेता के पूर्ण अनुशासन मे सत्याग्रह चला वह इतिहास के पृष्ठों पर अपना एक उदाहरण छोड़े हुए हैं। और आर्य समाज के विशाल संगठन का परिचायक है।

राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिए लोक सभा की ओर से जो रीजनल फार्मूला प्रस्तुत किया गया था उस प्रारुप में ९ और १० संख्या की धाराएं सम्मिलित थी जो निम्न प्रकार हैं।

(९) वर्तमान पंजाब राज्य के क्षेत्र में सच्चर फार्मूला लागू रहेगा। और उसमे जो वर्तमान पेप्सू राज्य है वर्तमान व्यवस्था तब तक जारी रहेगी जब तक कि बाद में पारस्परिक समझौते से उसके स्थान पर कोई दूसरी व्यवस्था लागू नहीं की जाती अथवा वह बदल नहीं दी जाती।

(१०) जिला स्तर और उससे नीचे प्रत्येक क्षेत्र की सरकारी भाषा क्षेत्रीय भाषा होगी।" उपरोक्त धाराओं के वर्णन के पश्चात् आपको यह स्पष्ट कर देना चाहता हू कि राष्ट्रपति महोदय को भारतीय संविधान की धारा ३७१ के अन्तर्गत यह अधिकार प्राप्त है कि वह जो चाहे करें। धारा ३७१ इस प्रकार है —

'इस संविधान में निहित किसी व्यवस्था के होते हुए भी, राष्ट्रपति अपने आदेश से आन्ध्र प्रदेश व पंजाब राज्य के लिए विधान सभा की क्षेत्रीय कमेटियों के संगठन और कार्यक्रम की, गवर्नमेंट के कार्य व्यवस्था के नियमों में सुधारों की, राज्य की विधान सभा की कार्य प्रणाली की, और क्षेत्रीय कमेटियों के सम्यक संचालन के लिए गवर्नर की विशेष उत्तरदायिता की व्यवस्था कर सकते हैं।"

फार्मूला वैधानिकता को प्राप्त होने ही वाला था कि ठीक इसी समय आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया गया। जैसा कि 'आर्यसमाज और पंजाब की भाषा समस्या" नामक पुस्तक के पृष्ठ १३ पर श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त ने लिखा है कि "इस प्रकार हमने सच्चर फार्मूला पेप्सू व्यवस्था और क्षेत्रीय योजना की वास्तविक स्थिति जान ली।" अभी कुछ दिन हुए राष्ट्रपति ने अपने आदेश से पंजाब को २ क्षेत्रों में विभाजित किया है। जिनका विस्तार पूर्वक वर्णन किया जा चुका है। राष्ट्रपति महोदय संविधान की उक्त धारा के अनुसार अपनी आज्ञा से आगे जो करने की कृपा कर सकते हैं, वह यह है कि वे "राज्य की विधान सभा की क्षेत्रीय कमेटियो" के संगठन और कार्यों की भी व्यवस्था कर दें। राष्ट्रपति को परिस्थितियो के अनुसार जो कार्य सर्वोत्तम सूझ पड़े उसके करने मे वे पूर्ण स्वतन्त्र है। मुझे आशा है कि यह हिन्दी आन्दोलन, क्षेत्रीय योजना विषयक जनता की भावनाओं की ओर राष्ट्रपति का ध्यान आकृष्ट करने का काम कर सकता है। जैसा कि मैंने ऊपर कहा है कि कानून और संविधान की दृष्टि से क्षेत्रीय योजना का कोई भी अस्तित्व नहीं है, अधिक से अधिक केवल (ड्राफ्ट) प्रारुप की एकमात्र रूपरेखा ही है। परन्तु जिस क्षण राष्ट्रपति महोदय अपने आदेश से प्रारूप की किसी कण्डिका को समाविष्ट कर देंगे उसी क्षण उसे कानूनी स्थिति प्राप्त हो जावेगी। तब उसके मिटाने मे और भी अधिक कठिनाई होगी। वर्तमान में तो उसका कोई अस्तित्व ही नहीं। और जब हमारी आवाज राष्ट्रपति तक पहुंचेगी तो वह आज्ञा देते समय लोगो की भावनाओं का अनुभव करके उसका समुचित ध्यान रखेंगे। अतएव हमारा आन्दोलन उचित समय पर प्रारम्भ हुआ है और इसको प्रारम्भ करने का ठीक समय यही था। हमारे आन्दोलन को असामयिक बताने वाले लोग बड़ी भूल करते हैं। यदि हम राष्ट्रपति द्वारा आदेश दिए जाने के बाद आन्दोलन प्रारम्भ करते तो हम पिछड़ जाते। 'आर्य समाज का यह आन्दोलन क्षेत्रीय योजना की रूप रेखा के केवल भाषा सम्बन्धी भाग के विरुद्ध है जिसका उल्लेख कण्डिका ९ और १० में है।" (आर्यसमाज और पंजाब की भाषा समस्या ६ १० ५७ को प्रकाशित)।

अब आपको स्पष्ट होगया होगा कि राष्ट्रपति की स्वीकृति के पश्चात् ही "रीजनल फार्मूला" को वैधानिक रूप प्राप्त हुआ है। राष्ट्रपति की स्वीकृति तक रीजनल फार्मूला एक प्रारूप के अतिरिक्त और कोई अपना अस्तित्व नहीं रखता था। अब राष्ट्रपति ने ३ ४ ५६ का रीजनल फार्मूला को स्वीकृति देकर सरकारी 'गजट' में प्रकाशित कर दिया है। गजट संख्या ५१२ दिनांक ४-११ ५७ ई० देखने से स्पष्ट होगा कि राष्ट्रपति ने कण्डिका ९ और १० पृथक कर ही रीजनल फार्मूला के प्रारूप की स्वीकृति प्रदान की है। इस गजट के प्रकाशित होने के पश्चात् वैधानिक स्थितियां और अन्य विषयों के सम्बन्ध में सरकार द्वारा आश्वासन प्राप्त कर लेने के पश्चात् ही इस आन्दोलन को स्थगित किया गया, जबकि सरकार के हृदय परिवर्तन का पूर्ण विश्वास हो गया था।

केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री प० गोविंद वल्लभ पन्थ ने २१ १२ ५७ को श्री घनश्यामसिंह जी से भेंट में मौखिक कहा कि 'सब कुछ ठीक हो जायगा। और अपने दिये गये इसी मौखिक आश्वासन को चण्डीगढ़ में २२ १२ ५७ को और लुधियाना में २३ १२ ५७ को एवं कर्नाल में इन्हीं शब्दों को दुहराया कि "पंजाब के वातावरण के ठीक हो जाने पर भाषा की समस्या की पूर्ति की जा सकती है। "सर्वदल सम्मेलन (गोलमेज कान्फ्रेन्स) के आयोजन का अब यह अवसर बड़ा ही उपयुक्त है। "इस ६ मास में हिन्दी आन्दोलन वालों ने अपने वास्तविकता एवं अपनी वीरता का बड़ा ही प्रभावशाली प्रदर्शन किया है मान० प० गोविंद वल्लभ पन्थ के इन भाषणों के उपरान्त 'हिन्दुस्तान टाईम्स' ने अपने २५ १२ ५७ के अग्रलेख में लिखा है कि —

"It is only when the agitation has been given up and those arrested for taking part in it have been set at liberty that Pandit Pant can be expected to act on his offer to help in finding a solution".

"सत्याग्रह के स्थगित होने और सत्याग्रहियों के मुक्त होने के बाद ही पन्त जी से यह आशा की जा सकती है कि वह पंजाब के भाषायी समस्या को सुलझाने में अपने दिए गए आश्वासन को पूर्ति कर सकते हैं।"

इसी प्रकार दैनिक 'तेज' दिल्ली ने भी दिनांक ५ ३ ५८ को अपने

[शेष पृष्ठ १० पर]

धधकता पंजाब (५)

!! एकांकी नाटक !!

! पांचवाँ दृश्य !

(लेखक- -श्री रणजीतसिंह वैद्य प्रधान, जिला आर्य उपसभा पीलीभीत)

★

[गतांक से आगे]

स्थान—चण्डीगढ़ के सचिवालय के मार्ग में (स्वामी रामेश्वरानन्द जी के साथ ओम्ध्वज लिये हुए जत्थे का प्रवेश।

गायन

चलो चलो ऐ वीर बांकुरों !
चण्डीगढ़ चलना होगा।
हिन्दी मां की रक्षा हेतु,
बलिवेदी पर चढ़ना होगा ॥
हिन्दी में संस्कृति निहित है,
सभ्यता इसमें पोषित है।
देववाणी की यह दुहिता है,
दैवी गुण भरना होगा ॥
ऋषियों ने इसमें है गाया,
गुरुओं ने इसको अपनाया।
दयानन्द ने यह समझाया,
राष्ट्र का यह भरना होगा ॥
लोकतन्त्र का अपमान हुआ है,
शासक को अभिमान हुआ है।
सेवक कहते शासक बनते,
शासन पाठ पढ़ाना होगा ॥

स्वामी रामेश्वरानन्द—धर्म रक्षक वीर सैनिकों ! कर्तव्य पथ पर डटना सैनिक का काम है अपनी आन पर मिट जाना हम सबका काम है डेढ़ वर्ष तक हमने शासन के प्रत्येक जिम्मेदार व्यक्ति का दरवाजा खटखटाया अब मजबूरन हमने यह मार्ग अपनाया।

"सत्य की असि लिये अहिंसा का व्रत लिये, तप और त्याग साहित आगे हमें बढ़ना है। दुर्नीति जो ठानी है शासक ने मनमानी, उसे सुबोध देने का लड़ाई यह लड़ना है ॥

सब—हम सब वीर सत्याग्रही हैं। हमें सत्य को निभाना है दुर्नीति को मिटाना है।

रामेश्वरा०—सत्याग्रह में स्वयं अहिंसक रहकर हिंसक शासक शासन के जाम जब तुम्हें जेल में भरेगा तुम सब सहोगे ?

सब—सहेंगे-मार को सहेंगे पर असत्य पथ न गहेंगे।

रामेश्वरा०—देखो, हमारी न गुरुमुखी से लड़ाई है न सिक्खों से न गुरुओं से, हमारी लड़ाई सरकार की अनीति से है।

सब—गुरुओं का तो हम मान करते हैं गुरुओं पर अभिमान रखते हैं।

रामेश्वरा०—तो किसी को भी बुरा न कहकर अनीति का मुकाबला करना है।

सब—अवश्य, अवश्य।

रामेश्वरा०—तो उस न्याई प्रभु का भरोसा करके आगे बढ़ो। यह सामने सचिवालय दिखाई देता है हमें यहाँ नारा लगाना है। (सब आगे बढ़ते हैं)

रामेश्वरानन्द—हिन्दी भाषा

सब—अमर रहे।

रामे०—देश का बच्चा-बच्चा होगा

सब—हिन्दी भाषा पर बलिदान।

रामे०—जब राष्ट्र भाषा हिन्दी है

सब—पंजाब में क्यों पाबन्दी है

(चार पाँच सिपाहियों सहित सार्जेन्ट का प्रवेश)

सार्जेन्ट—(सिपाहियों से) मारो इनको, पकड़ लो बदमाशों को, बाँध दो इन सबको (सिपाही मारते हैं और बांधते हैं)।

(दूसरी ओर से देवियों का जत्था आता है।)

देवी नेता—हिन्दी भाषा

सब—अमर रहे।

देवी नेता-देश का बच्चा बच्चा होगा

सब—हिन्दी भाषा पर बलिदान

देवी नेता—कैरोंशाही

सब—नहीं चलेगी, नहीं चलेगी।

देवी नेता—दुर्नीति की चाल

सब—नहीं चलेगी, नहीं चलेगी।

देवी नेता—हमारी भाषा

सब—हिन्दी है।

सार्जेन्ट—(सिपाहियों से)पकड़ लो इन सबको (सिपाही आगे बढ़ता है)

रामेश्वरा०—(सार्जेन्ट से) होश की दवा पियो, खबरदार, किसी ने देवियों पर हाथ बढ़ाया। तुम्हें इन्हें पकड़ना है तो स्त्री पुलिस बुलाओ।

सार्जेन्ट—मारो इस बदमाश को (सिपाही रामेश्वरानन्द को मारते हैं)

रामेश्वरा०—तुम चाहे मुझे मार डालो पर किसी देवी की ओर हाथ नहीं बढ़ा सकते। मैं अपने जीवित रहते मातृशक्ति का अपमान नहीं देख सकता।

सार्जेन्ट—बड़ा आया, मातृशक्ति का अपमान नहीं देख सकता। बालों से पकड़ कर घसीट कर डाल दो सबको लारी में। (सिपाही स्त्रियों के बाल पकड़ कर खींचते हैं)

रामेश्वरा०—(आगे बढ़ कर सिपाही को हटाते हुए) नराधम ! तुम नहीं जानते कि नारी के अपमान से महाबली रावण का नाश हुआ, कंस का विध्वंस हुआ, दुर्योधन, दुश्शासन का शासन नष्ट हुआ, प्रलयकारी महाभारत हुआ, इसी प्रकार यह दुश्शासन का भी तख्ता तबाह होगा।

(नारियां हठ करके बैठ जाती हैं)

देवी नेता—अत्याचारियों, अन्यायियों, तुम्हें हमें गिरफ्तार करना है तो स्त्री पुलिस बुलाओ, इस तरह हम तुम्हारे हटाये नहीं हटेंगी।

(सार्जेन्ट सीटी बजाता है स्त्री पुलिस आता है और सबको पकड़ कर ले जाती है (दूसरी ओर से ६ वर्ष के बालक यशवीरदत्त के साथ ओ३म् ध्वज लिये हुए बच्चों के जत्थे का प्रवेश) [यशवीरदत्त आगे आगे गाता है सब उसके पीछे गाते है—

गायन

वीर प्रशस्विनी भारत मां के
वीर बालक हैं।
हिन्दी मां की रक्षा हेतु
बलिदानी यह आये हैं।
वीरों की गाथाये हमने
मातृ अंग में श्रवण किया।
गोरा बादल और हकीकत
प्राण दिया पर व्रत न दिया।
दुश्यन्त तनय वरवीर भी
हमसे ही बलवीर हुए।
भित्ती में चुनवाया उनको
जोरावर फतहसिंह हुये।
आओ-आओ वीर बांकुरों !
अपनी आन को रखना है।
जिस दिन को पय पान किया।
वह मातृशान को रखना है ॥

यश०—भले ही सिपाही हमारे सन्यासियों और माताओं को पकड़ कर ले गये पर हम भी सत्याग्रही हैं सत्य से विचलित न होंगे।

(दूसरी ओर से सतनामसिंह के साथ सिक्खों का जत्था आता है)

सतनाम—एक ओंकार सतगुरु प्रसाद।

सब सरदार—वाह गुरु की फतह, बोल वाह गुरु की जय।

यश०—सरदारो, आओ हमें तुम पकड़ने आये हो पकड़ो हमको।

सतनाम—बच्चो ! तुम धन्य हो धन्य है तुम्हारी जननी जिसने ऐसे पुत्र जाये—जो देश धर्म की रक्षा हेतु सत्याग्रह को आये। हम तुम्हें पकड़ने नहीं आये, पर तुमसे हो मिलने आये।

गायन

हम सब हैं भारत सन्तान।
इसके हित अर्पण कर दें,
तन मन धन और प्राण ॥
हिन्दू सिक्ख मुस्लिम ईसाई,
मिलकर रहें सब भाई-भाई।
द्वेष भाव मनमें न लाई,
हो जावें इसपै बलिदान ॥

यशवीर—ओह ! तो आप भी क्या सत्याग्रह को आये हैं ?

सतनाम—हाँ, सत्य आग्रह हमारा धर्म है। गुरु तेगबहादुर जी ने सत्य आग्रह के लिए अपना शीश कटाया, गुरु गोविन्द जी ने सत्य आग्रह के लिये सब सुख बिसराया, गुरु नानक देव ने सत्य पर चलना सिखाया।

यश०—तो इस सितारासिंह के मन में क्या समाया।

सतनाम—सितारासिंह अंग्रेजों का चेला है गुरुओं का नहीं, उसने गुरुओं का पाठ भुलाया और अंग्रेजों का पाठ अपनाया। अंग्रेज हमारे देश में हमारी जाति को संगठित नहीं देख सकता था वह जानता था कि हिन्दुओं की रग रग में देश भक्ति कूट-कूट कर भरी हुई है वह देश को अपना देश कहते हैं। इसलिये उसने फूट डालने के लिये पहिले हिन्दू मुस्लिम में द्वेष भड़काया फिर हिन्दुओं में से अछूत, आदि वासी, सिक्ख अलग-अलग हैं ऐसा फरमाया। उसकी नीति थी फूट डालो शासन करो। इसी नीति का यह सितारासिंह दुहरा रहा है अपनी राजनैतिक खुदगर्जी पूरी करने को भोले भाले सिक्खों का पन्थ खतरे में है कहकर भड़काता है।

सब बालक—तो क्या आप सितारासिंह की नीति पसन्द नहीं करते ?

सतनाम—हर्गिज नहीं हम तो गुरुओं के सच्चे भक्त हैं, गुरुओं ने हिन्दी में अपनी वाणी कही है इसलिये गुरुओं की वाणी के लिये हमने हिन्दी सत्याग्रह में कदम बढ़ाया है।

यश०—तो क्या आप गुरुमुखी का विरोध करेंगे ?

सतनाम—गुरुमुखी लिपि गुरु अंगददेव ने मुस्लिम राज्य के गुप्तचरों से बचने के लिए सांकेतिक लिपि चलाई। गुरुवाणी गुरुओं के उपदेश तो सब हिन्दी में ही है।

यश०—आपके सितारासिंह तो कहते हैं मैंने पांचवीं जमात तक हिन्दी पढ़ी थी मैं अब उसे भुलाना चाहता हूं।

सतनाम—सितारासिंह की आंखों के आगे स्वार्थ की पट्टी बंधी है इसलिये वह उल्टा सीधा कहते है वह यह भी तो कहते हैं कि देश की राष्ट्रभाषा अंग्रेजी हो। अंग्रेजी विदेशी भाषा को जो राष्ट्रभाषा कहे उसके मस्तिष्क में विदेशी दासता की भाव भरा है वह नहीं जानता कि राष्ट्रभाषा और संस्कृति राष्ट्र को शक्तिशाली

[शेष पृष्ठ ६ पर]

भारतेतर देशों में प्रचार की समस्या

श्री उषर्बुध आर्य, पो०बा०नं० ७०३, जार्जटाउन, ब्रिटिश गायना द० अमेरिका

> श्री पं० उषर्बुध के यह विचार विशेष रूप से मनन करने योग्य हैं। दयानन्द मिशन को संगठित करना और योग्यतम व्यक्तियों को मिशनरी बना कर देश देशान्तरों में भेजना यह युग की पुकार है। —सम्पादक

विदेश प्रचार शब्द का प्रयोग नहीं कर रहा हूं क्योंकि जो सार्वदेशिक है उसके लिए 'विदेश क्या? मुझे तो ६ वर्ष की इस यात्रा में कहीं विदेश जैसा लगा ही नहीं। १९ की आयु में भारत छोड़ा था और अब ६५ का हो गया हूं। जहां चले जाइये अपने प्रेम और सेवा से कुटुम्ब बना डालिए ऐसा कि जब चलने लगें तो ४ वर्ष के बालक और ८० वर्ष के वृद्ध आंसू बहाएं। कितने ही देश मेरे स्वदेश बने हैं और उनकी स्मृति रह गई है—इतना वात्सल्य, प्रेम सर्वत्र मानव में है। जन बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्॥

इस विषय पर बहुत कहा, सुना, लिखा जा चुका है और उस कहे, सुने, लिखे की बहुत छीछालेदर की जा चुकी है। मुझे तो अपने अनुभव के आधार पर दो चार बातें ही कहनी है।

रामकृष्ण मठ के प्रचारकों को देखिए। संसार के कोने २ में उनके केन्द्र है। कादियानी लोगों के मस्जिदें अमेरिका, हालैंड, इंग्लैंड सब जगह हैं। अभी जर्मनी में भी बन गई है हेम्बर्ग में। ये सब लोग तो आर्य समाज से बहुत पीछे पैदा हुए किन्तु क्यों संसार भर में फैल गये? आर्य समाज को क्या हुआ है? भारत से बाहर आर्यसमाजें है—शायद कुल मिलाकर पौने दो सौ। वे सब भारतीयों में हैं; उसे मैं भारतेतर प्रचार नहीं मानता। पूर्वी अफ्रीका में बीस आर्य समाजें हैं। मैं जब वहां गया था, ताले लगते जा रहे थे। वहाँ ईसाईमिशन भी हैं। जंगल २ अफ्रीकी ईसाई हो गये हैं। स्टेनले और लिविंग्स्टन के बलिदानों का यह परिणाम है; वैसे अन्वेषक प्रचारक खतरा मोल लेने वाले हमारे पास कहाँ है।

आज आर्य समाज के प्रचारक बाहर इन देशों में आते है तो पैसा कमाने के लिए-आज स्थिति यह हो गई है कि विदेशस्थ भारतीय जनता इन प्रचारकों से तंग आ गई है और "वापिस जाओ" का नारा बुलन्द है, बहुत से प्रचारकों का आचरण इतना निकम्मा है, प्रेरणारहित है कि उनके कारण आर्यसमाज की, व भारतीय जनता की अप्रतिष्ठा हो होती है।

रामकृष्ण मिशन और थियासॉफिकल सोसायटी के पास ऐसे प्रचारक हैं जो जिस देश में जायें वहाँ की भाषा धारा-प्रवाह बोल सकें, यहाँ मेरा तात्पर्य शब्द भाषा से ही नहीं अपितु मानस भाषा से है, शब्द भाषा का ज्ञान होते हुए भी मानस भाषा की समस्या (Semantic difficulty) प्रचारक को असफल कर देगी। स्वा० निखिलानन्द जैसे प्रचारकों ने आल्डस हक्सले और क्रिस्टोफर इसवुड जैसे दार्शनिकों को अपने हाथ में करके रामकृष्ण मिशन का नाम बढ़ाया है। तीन वर्ष इंग्लैंड और यूरोप में रह कर मैंने देखा कि उनके पास वह बुद्धि है जिसकी मांग आज का पश्चिम पूर्व से कर रहा है।

रोम ने सैनिक और राजनैतिक दृष्टि से Hellas (यूनान) को जीता किन्तु रोम के पास दर्शन न था; बुद्धि, भक्ति, विचार शक्ति न थी। परिणामतः शरीर हारकर भी हेलास का आत्मा न हारा, उसने रोम के आत्मा को जीत लिया और रोम के लोग हेलासके बुद्धि तत्व के पीछे पागल हो गये। आज सारा यूरोप रोमन खंडहरों में रोम के टूटे शरीर को देख सकता है और अपने सम्पूर्ण, साहित्य, कला और परम्परा में हेलास के अक्षुण्ण और जीवित आत्मा को। यह इतिहास का एक दुर्दान्त सत्य है कि हारनेवाला अपना शरीर हार कर, अनङ्ग होकर, सूक्ष्म बन कर विजेता के आत्मा को जीत लेता है। रोम ने मध्यपूर्व को जीता, इसरायल में रोमन सत्ता न होती, मध्यपूर्व रोम से न हारा होता तो वहाँ पैदा हुई ईसाइयत रोम न पहुँचती। यूरोप आज भी डायना और जानोस की पूजा कर रहा होता, लन्दन में खोदकर तीन वर्ष पूर्व निकाले गये वैदिक ईरानी देवता मित्र(मिथ्रास) के मन्दिर में आज की घण्टियों का गुञ्जन हो रहा होता।

चीन-भारत पश्चिम से हार गया; यह बड़े सौभाग्य की बात हुई आज के यूरोप का बौद्धिक जगत तो ओपेनिषद् और भगवद्गीता से कुछ सान्त्वना चाहता है। अभी गत मास मैं निकेरी से पारामारिबो आ रहा था। वायुयान के पाइलट के साथ बैठे २ उसमें चर्चा चल पड़ी। वह अमेरिकन था। मैं सदैव तहबंद और कुरते के वेष में रहता हूं। उसने जाना कि भारतीय प्रचारक हूं। बतलाना शुरू किया कि 'पहले वायुयान चलाते चलाते थकान आ जाती थी। स्वामी विवेकानन्द के राजयोग और भगवद्गीता का अनुवाद पढ़ा। कुछ योगासन सीखे। प्राणायाम और ध्यान का अभ्यास किया। वायुयान चलाते-चलाते थक जाता हूं तो दो चार प्राणायाम से स्नायुमण्डल को विश्राम दे लेता हूं। चलाते चलाते चित्त प्रभु में भी लगाये रहता हूं। कभी बीमार नहीं पड़ता। मन को शान्ति है।" कहां से उसे यह मिला?

यूरोप में भारत प्रेमियों के कई वर्ग हैं। एक वे हैं जो भारत को विश्व राजनीति में शान्ति का दाता मानते है। उनका तात्पर्य भारत की वर्तमान विदेशी नीति से नहीं; वह तो अन्य देशों की भांति उपयोगिता पर, न कि आदर्श पर, आधारित है। उनका आशय है गाँधी जी से) पंचशील और Neutrality से। समस्त विश्व की निःसैन्यता के लिए आज बहुत बड़ा आन्दोलन Pacifismके नाम से यूरोप और अमेरिका में चल रहा है। जिन देशों में प्रत्येक व्यक्ति को कानून से दो वर्ष सेना में रहना पड़ता है, बहुत से अहिंसावादी पैसिफिस्ट सेना में जाने से नकार कर जेलों में जा चुके हैं और आज भी जेलों में सड़ रहे हैं।

इनके अतिरिक्त वे भी हैं जो शाकाहारी आन्दोलन के सदस्य होने पर, यह जानकार कि भारत में बहुत शाकाहारी हैं, भारत के प्रति रुचि रखने लगते हैं।

कुछ लोग दिल से भारत को प्यार करते हैं और कुछ दिमाग से। अर्थात् कुछ विश्वविद्यालयों के छात्रों अध्यापकों की रुचि भारत के दार्शनिक बौद्धिक तत्व में हैं; जिसमें वे मुख्यतः शांकर वेदान्त के भक्त है क्योंकि वैसा ही अद्वैतवाद यूरोप के मुख्य मुख्य दार्शनिकों तथा ईसाई सूफियों (Mystics) में भी है। प्लेटो, प्लोटिनुस्, एक हार्ट, हेगेल, कांट, बर्कले आदि सभी तो अद्वैतवादी है। प्रसिद्ध भौतिकवादी Haeckel ने तो "Monism A link Between Science & Religion" ग्रन्थ ही लिख दिया। सो शांकर वेदान्त इन लोगों को प्रभावित करता है। शायद इसका कारण यह भी है कि आर्य समाज का त्रैतवाद अभी इन तक पहुँचा नहीं है।

दिल वाले वे हैं जो भक्ति रस चाहते हैं। गीता पढ़ पढ़ कर भक्ति के आंसू बहाने वाले मैंने बहुत देखे हैं। उन्हें शान्ति की, सत्य की खोज है। 'योग' शब्द एक फैशन बन गया है। (हालीवुड की फिल्म अभिनेत्रियां शारीरिक सौन्दर्य के लिए योगासन सीखती हैं) आत्म दर्शन की पिपासा बढ़ती आ रही है।

तो आर्य समाज के पास प्रचारक नहीं हैं। प्रचारक ऐसे चाहिएं जो जिस देश में जाएं वहाँ की भाषा बोल सकें—मानसिक भी। लोगों के हृदय तक पहुंच सकें। केवल अंग्रेजी में एम० ए० कर लेने से यूरोप की भाषा नहीं आती। आर्य समाज ने अंग्रेजी में पुस्तकें निकाली है पर वे पाश्चात्य मानस तक पहुंच सकें, वैसी नहीं हैं। डा० चिरंजीव भारद्वाज का अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश कुछ काम का है। मानस तक पहुंचने के लिए प्रचारकों के पास यह योग्यता चाहिए—

अमुक देश की भाषा, संस्कृति, दर्शन और इतिहास का पूर्ण ज्ञान हो। युगोस्लाविया में केवल जन्म की वर्ण व्यवस्था पर शास्त्रार्थ करने से काम न चलेगा। देश की स्थिति के अनुसार कुछ कहना होगा। आप इङ्गलेण्ड के ग्राम में भाषण दें तो भारत के ग्रामणी को Elected heed of the village Council कहें किन्तु युगोस्लाविया में Village commune कहें। अर्थ लगभग एक ही है पर देश विशेष के मानस के अनुसार शब्द भेद से प्रभाव भेद है।

आप अंग्रेजी में मन को Mind कहते है क्योंकि कोष में वैसा पढ़ा है। जब आप इङ्गलैण्ड में अपने भाषण में Mind का उपयोग करते है तो आपका आशय उस प्राकृतिक मन से है जो इन्द्रियों और आत्मा के बीच सन्देशवाहक है और जिसे निर्विषय करना ध्यान है। परन्तु ऐसा अंग्रेज श्रोता नहीं समझते। वहाँ की बौद्धिक भाषामें Mind है सम्पूर्ण चेतना संस्थान। आप नाम कह रहे है, श्रोता अदरख समझ रहा है। शब्द वही है। वहाँ "Mind over matter" का बड़ा व्यापक अर्थ है; "चेतन का अचेतन पर अधिकार।" उसके पीछे अरिस्टाटल् है। वहाँ Mind ग्रीक भाषा के Nous का अनुवाद है।

ऐसे ही यदि आप 'दिवि मे अन्यः पक्षोऽधो अन्यमचाकशम्।' मन्त्र की व्याख्या में मिस्र के साहित्य से 'शरीर निकलती हुई पक्षी वाली आत्मा' का चित्र प्रस्तुत कर सकें और उसे सॉक्रेटेस् के अन्तिम उपदेश 'फीडो' के साथ भी समन्वित कर सकें तो पाश्चात्य मानस और अधिक अच्छी

(शेष अगले पृष्ठ पर)

प्रचार की समस्या

(पिछले पृष्ठ का शेष)

स्पष्ट समझेगा। चीन में यदि आप सांख्य के पुरुष प्रकृति पर भाषण देना चाहते हैं तो भाषण का शीर्षक रखिए "यिङ्-याङ्" अर्थात् यह चीनी प्रतीक जो समस्त विश्व को पुरुष प्रकृति, नर नारी का समन्वय बताता है।

इस प्रकार भारत से बाहर जाने वाले प्रचारकों के लिए एक उच्च तुलनात्मक बौद्धिक स्तर की आवश्यकता है। इसके साथ ही चाहिए एक उच्च योगाभ्यासी हृदय जो भक्ति भाव से परिपूर्ण हो; जो पास आकर बैठे व्यक्तियों को शान्ति दे सके। इङ्गलैंड में कई बार लोग मेरे कमरे में आकर घण्टों बैठते, बिना बात किए। और रात्रि में भी वहीं सो जाते क्योंकि "यहाँ शान्ति मिलती है।" नकार मैंने कभी नहीं किया। वे लोग केवल पाण्डित्य नहीं चाहते आपके पास ध्यान और योगाभ्यास सीखने आते हैं। इङ्गलैण्ड के बौद्धों की सभा में जाकर देखा कि सभा का केवल इतना अर्थ है कि लोग जमा हों और ध्यान में बैठें। वहाँ बुद्ध की नास्तिकता पर भाषण देने से काम न चलेगा। 'बौद्धों का शून्य तत्त्व और औपनिषदिक नेति ब्रह्म तत्त्व एक ही है' इस आशय के मेरे लेखों वा व्याख्यानों ने मुझे पाश्चात्य बौद्धों को प्रभावित करने में बहुत सहायता की। सितम्बर १९५६ से मैं दक्षिण अमेरिका के ब्रिटिश गायना और सुरीनाम देशों में प्रचार कर रहा हूं। जब आया था तो ब्रिटिश गायना में २० समाजें थीं, अब ४० है। कुल मिलाकर ब्रिटिश गायना, सुरीनाम, ट्रिनिडाड में ८० आर्य समाजें हैं और कुल मिला कर चार लाख भारतीय। ९९ प्रतिशत आर्य समाजी मांसाहारी, सुरापायी हैं। लोगों ने संस्थाओं को व्यक्तिगत पैसा कमाने का साधन बनाया हुआ है। सुरीनाम में पं० देवप्रकाश जी पातंजल एम० ए० व्याकरणाचार्य निरुक्ताचार्य, पण्डित ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के शिष्य, अष्टाध्यायी प्रकाशिका के लेखक कार्य कर रहे हैं। उन्होंने प्रतिनिधि सभा, सुरीनाम के मन्त्री पर तथा मैंने अमेरिकन आर्यन लीग के मन्त्री पर कानूनी कार्यवाही हिसाब किताब के विषय में करायी हुई है। सो जब भारत के प्रचारक इधर आकर स्थिति का सुधार करना चाहते हैं तो उनका अपमान होता है।

हाँ तो, यहाँ रेड इण्डियनों की तथा कथित जंगली जातियों में जाने का अवसर हुआ। सुन्दर घाटियों में नदियों के किनारे लोग बसते हैं। ईसाई प्रभाव में वे अपना सब कुछ भूल गए हैं। जब इङ्गलैण्ड से प्रचारार्थ इधर आने का विचार कर रहा था तो मन में सोचा कि जब अफ्रीका गया था तो वहाँ की जंगली जातियों के विषय में कुछ नहीं जानता था अतः प्रचार क्षेत्र भारतीयों तक ही सीमित रह गया था। सो अमेरिण्डियन [रेड इण्डियन] जातियों का इतिहासादि सूत्र पढ़ा। सो जब इन जातियों में प्रचारार्थ गया तो उन्हीं का भूला इतिहास उन्हें सुना कर उनके हृदय को जीतने में सुगमता हुई।

यह सब इसलिए लिखा कि भारत को आज के युग की आवश्यकता का अनुभव हो। मेरा निम्न सुझाव है आर्य जगत के सामने:—

(१) सार्वदेशिक सभा भारत से बाहर आने वाले प्रचारकों पर कड़ी दृष्टि रखे और अयोग्यों को न आने दे।

(२) जो लोग प्रवासी भारतीयों में प्रचार के लिए जाएं वे कम से कम ६मास का प्रशिक्षण वहाँ के भारतीयों तथा अन्यों के इतिहास, वर्तमान परिस्थिति आदि के विषय पर लें। बुलाने वाली संस्था उन्हें निश्चित मासिक दक्षिणा दे तथा अन्य जो धन संग्रह हो वह सम्बन्धित प्रचारक की सम्मति से उसी देश में कार्य में लगे।

(३) जो लोग एशिया, अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका के भारतेतरों में प्रचार के लिए जाएं वे जाने से पूर्व कम से कम दो वर्ष का प्रशिक्षण सम्बन्धित देश की भाषा, इतिहास, दर्शन और संस्कृति पर लें।

(४) उक्त कार्यों की सिद्धि के लिए एक विशाल Missionaries Training College खोला जाए जिसमें सब देशों के इतिहास दर्शन, भाषाओं का विशाल तुलनात्मक साहित्य उपलब्ध हो और ट्रेनिंग दी जाए। इस कालेज से प्रशिक्षण देकर विद्वान्, उत्साही युवक युवतियों को ईसाई बौद्धों के तुल्य सच्ची मिशनरी स्पिरिट तथा प्रचार साधनों से सज्जित कर भारतेतर देशों में प्रचार के लिए भेजा जाए। इसी केन्द्र से अमुक देशों के लिए उपयोगी साहित्य प्रकाशित हो।

(५) व्यय के लिए पृथक् एक व्यापारिक ट्रस्ट बनाया जाए जिसकी आय से उपर्युक्त कार्य सम्पादित हो। प्रवासी भारतीयों को भी छात्रवृत्ति देकर यहाँ उनके यहाँ उनके स्थानीय प्रचारक तैयार किए जाएं जो वापिस जाकर स्वदेशस्थों के लिए काम करें।

मैं भारत आकर उक्त कार्य सम्पादित करना चाहता हूं। महर्षि दयानन्द ने भारत में आर्य समाज को गति दी। अब 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का स्वप्न कौन पूरा करेगा?—इस कार्य के लिए प्रारम्भ में दस लाख रु० की आवश्यकता होगी। क्या कोई भामाशाह आज है? क्या सार्वदेशिक सभा इस काम को अपने हाथ में लेगी?

मैं स्वयं कई भाषाओं तथा विभिन्न देशों की संस्कृति, दर्शन, साहित्य, इतिहास की तुलनात्मक शिक्षा दे सकता हूं। क्या कोई सेवा लेगा? नहीं, तो शायद अपना शेष जीवन इसी भांति देश विदेश भटकता बिता दूं।

धधकता पंजाब

(पृष्ठ ७ का शेष)

बनाने में उच्च साधन हैं जब किसी स्वतन्त्र राष्ट्र की अपनी राष्ट्रभाषा ही न हो वह विदेशी भाषा से परमुखापेक्षी बना हुआ हो तो उसकी स्वतन्त्रता का क्या अर्थ?

यश०—सत्य है। आपने तो आज बहुत सी बातें बताईं अच्छा तो चलिये यह सामने विधान सभा भवन दिखाई देता है हमें यहां ही सत्याग्रह करना है।

यश०—हमारी भाषा

सब—हिन्दी है।

यश०—गुरुओं की भाषा

सब—हिन्दी है

यश०—सन्तों की भाषा

सब—हिन्दी है।

यश०—जब राष्ट्रभाषा हिन्दी है

सब—पंजाब में क्यों पाबन्दी है

यश०—देश का बच्चा बच्चा होगा

सब—हिन्दी भाषा पर बलिदान

(सार्जेंट के साथ सिपाहियों का प्रवेश)

सार्जेन्ट—पकड़ो इन सबको,—बांध लो इन सबको—मारो इनको (सिपाही मारते हैं)

सन्नाम—(आगे बढ़कर) बच्चों पर क्या हाथ उठाता है हमें मार-मार (बच्चों को छोड़ सिपाही सरदारों को मारते हैं)।

सार्जेन्ट - (मन में) ओह! यह सन्तसिंह तो कहता है कि यह आन्दोलन साम्प्रदायिक है। इसमें तो उसी के कौम के लोग शरीक हैं।

सच्चाई छिप नहीं सकती,
कभी झूठे उसूलों से।
खुशबू आ नहीं सकती,
कभी कागज के फूलों से॥

(सबको पकड़ कर ले जाता है)

[क्रमशः]

आ० स० चान्दपुर

आ० स० चांदपुर बिजनौर का प्रचार कार्य प्रगति पर है। शिवरात्रि दीपावली, होली आदि पर्व बड़े उत्साह के साथ मनाये गये।

आ० स० कायमगंज

आ०स० स्थापना दिवस समारोह पूर्वक इस समाज की ओर से मनाया गया। अनेकों रोचक कार्यक्रम हुए

आ० स० मदरसा, फैजाबाद

का उत्सव ८, ९, १० अप्रैल को होगा अनेकों विद्वान व उपदेशक पधारेंगे

आ० स० सहपऊ मथुरा

श्री गौरीशंकर जी के पुत्र का नामकरण संस्कार २० मार्च को वैदिक रीत्यानुसार हुआ जिसका नाम यश... रखा गया।

आर्य कुमार सभा नई दिल्ली

आर्य कुमार सभा नई दिल्ली का २४ वां वार्षिकोत्सव २, ३, ४ ... ५८ को बड़े समारोह पूर्वक हो. ए. ... हायर सेकेण्डरी स्कूल चित्र गुप्त ... नई दिल्ली में होगा। कविता, गाय... भाषण, वाद-विवाद, फैन्सी ड्रेस ... मोनो ऐक्टिंग आदि की प्रतियोगि... होगा।

शहीद सुमेरसिंह

जब तक दुनियां रहेगी
तेरा कहानी कहेगी।
यह दुनियां तेरी कहानी कहेगी।
...गी अभी था सुमेरसिंह
धर्म की निशानी
मिटा दी हिन्दो हित जिन्दगानी
चरणों पर तेरे झुकेगी
यह दुनियां तेरी कहानी कहेगी।
भुला कर सब चला
चाँद सा वह लाल
चला तोड़ माया जजाल
तेरी स्वर्ग मे काया पलेगी
यह दुनियां तेरी कहानी कहेगी
ऐ, भारत के नौजवान
तुमने रक्खा है हिन्द का मान
लिया दुनियां ने यह जान
धन्य हुआ तेरा बलिदान
मर कर भी तू जीवित है
यह दुनियां तेरी कहानी कहेगी।

—ईश्वर सिंह
(शहीद सुमेरसिंह का छोटा भाई)
सांपला, नया बांस, रोहतक, पंजाब

पथ पर बढ़ता चल

तू अपने पथ पर बढ़ता चल।
तेरे इस सेवा के पथ पर,
आवें जो विपदायें भारी
उनको हंसते हसते सहकर,
निज निश्चय पर रहना निश्चल
तू अपने पथ पर बढ़ता चल॥
आंधी आवें तूफान उठें,
या विपदा के बादल काले,
किन्तु हिमालय के सदृश्य दृढ़
अपने पथ पर रहो अटल।
तू अपने पथ पर बढ़ता चल॥
हे हिन्दू वीर सन्तान,
देश के हित अपना सर्वस्व लगा,
जब आया है सेवा पथ पर
होना न मृत्यु भय से व्याकुल।
तू अपने पथ पर बढ़ता चल॥
यह तन, मन, यह सारा जीवन,
मां की सेवा के हेतु लगे,
तेरी गर्जन से गूंज उठे,
सारा अंबर, जल और स्थल।
तू अपने पथ पर बढ़ता चल॥

—पुष्पलता श्रीवास्तव

आर्य कुमारों से

बन्धुओं आपसे यह हमारी विनय,
भेद की भावनायें मिटाते चलो।
विघ्न बाधा की चिन्ता न किंचित किये
पग सुपथ पर निरन्तर बढ़ाते चलो॥
वेद संदेश घर घर मे जाये पहुँच,
आर्य सिद्धान्त ही अपनाते चलो।
ओ३म् ध्वज व्याप्त कर विश्व आकाश में
'धर्म' ऋषिवर का गौरव गुंजाते चलो॥

—'धर्म'

प्रार्थना

(आर्य कन्या पाठशाला इटावा की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत)

हे! अनन्त ब्रह्म परम प्रभु परिपूर्ण विद्या दान दो।
दो आत्म तन मन बल व जाति देश का अभिमान दो॥
माता पिता की चरण रज नित चाव से मस्तक धरें।
दो गुरु-जनन के वचन, श्रद्धा, भक्ति अमिरस पान दो॥
धन दो करें उपकार हम, निःस्वार्थ सेवा भाव दो।
विश्वास विश्व-हितार्थ दो, निज रूप का प्रभु ज्ञान दो॥
विश्वास घातक हम न हों त्यागें न मन्त्र स्वतन्त्रता।
दो रमन सत अगाध प्रीति, साम, श्रुति का ज्ञान दो॥

अमर गीत

युगों के बदलते हुए करवटों में
कहानी हमारी अमर हो रही है॥
धरा ही नहीं किन्तु आकाश के भी सितारे भले ही ढले आ रहे हों
महानाश मे डूबन के लिए ही हजारों हिमालय चले आ रहे हों
पिये प्राण की सोम प्याली निराली
जवानी हमारी अमर हो रही है॥१॥
फिर राष्ट्र निर्माण की योजनाएं नये राष्ट्र शतशः बनाये हमीं ने
सजे साम के गान गौरव रंगाले सदा तम भू को सुनाये हमीं ने
लिए जिन्दगी मौत के दो किनारे
रवानी हमारी अमर हो रही है॥२॥
सुरों को कभी आसुरी वृत्ति ने जो कहीं भी कठिन क्रूर आँखें दिखायीं
मनुष्यत्व ने आत्म-बल के सहारे तभी धूल मे शेखियाँ सब मिलायीं
सदा भौतिकी भूत के प्राण ले के
जवानी हमारी अमर हो रही है॥३॥

—कविवर "प्रणव" शास्त्री फिरोजाबाद

स्वागत, आओ हे मित्राङ्क

मित्रों के मध्य तुम शोभित अति ज्यों तारा मध्य शशाङ्क;
आर्य ज्ञान बढ़ा जग में प्रकट भयौ यह मित्राङ्क;
हिन्दी भाषा के ज्ञानार्जन हित तुम धर्यौ बहुतहि स्वाङ्ग;
कष्ट अनेकन मिटावन जग में अवतीर्ण भयौ मित्राङ्क;
इच्छुक है "गोपाल" तुम्हारे आओ हे मित्राङ्क;
स्वागत, आओ हे मित्राङ्क॥

— आयुर्वेद केशरी श्री गोपाल वैद्य आर्य आ०स०, कलाई, अलीगढ़

तीन मुक्तक

जग के कण कण में कर्म भरा मानव कर्मों को देख जरा।
केवल नाशानी के बस हो क्यों बन्धन सारे तोड़ रहा।
कर्मों की दुनियां पायी है तो कर्मों को क्यों छोड़ रहा।
क्यों अज्ञानी बनकर महान् धन वैभव सारे जोड़ रहा॥

मानव धरती का बेटा है धरती के शोक मिटाने हैं।
अपने जीवन के आडम्बर उसको तो आज छुड़ाने हैं।
मानव पत्थर मे तो अब तक भगवान समझता आया है।
इस आडम्बर मे कर्मों से सेवा के भाव जुटाने हैं॥

बीज कोई फूल बनने से प्रथम है सूख जाता।
रूप कोई प्यार पाने से प्रथम है रूठ जाता।
देखता भगवान है जब कर्म ये भी इस धरा पर।
क्या कहूं भगवान को यह गान मैं कुछ गा न पाता॥

—श्रीराम "श्री" रामपुर

गद्य गीत

प्यारे कृषक

उषा की लाली में,
मध्य की प्रखरता में,
करता किसान............
सुखाता है तन को।
स्नेह रश्मि प्यारे कृषक को...!
चिलचिलाती धूप में–
तन को जलाता है,
भूख को बढ़ाता है,
अकृशता घटाता है,
पर देता है पुण्य दान....
इस माया मय जगत् को।
धन्यवाद प्यारे कृषक को...!
वह रात्रि की–
थिरकती प्रयाग वेला में,
गाता है मौज में,
सोता है मौज में,
देखता है निशि की—
सब लीला मौज में,
देता है अमृत–
इस स्वार्थमय जगत् को,
मेरी श्रद्धाजलि प्यारे कृषक को।
करता है रखवाली शीत की रात्रि मे
कांपता है,
ठिठुरता है,
होता है वस्त्र विहीन,
सहता है नाना–
इस शीत का अत्याचार
क्योंकि वह दीन है,
वह हीन है
जो मर कर भी देता है दान,
इस छलना मय जगत् को।
पर स्वप्न सुख प्यारे कृषक को।
करता उपकार है महान इस देश का,
पर पाता प्रतिकार है,
देता है जिसे दान....
वही उसका करता प्रतिकार है,
नीच है यह जगत,
पर बना है भगत
ग्लानि! नीच क्षुद्र तू!
करता है शोषण–
तू किसका?
जो पालता है तुझे,
जो देता है प्यार
लेता है तेरा भार
अपकीर्ति का कोई सुमन दो
इस सभ्य मय जगत को,
कोटिशः धन्यवाद प्यारे कृषक को।

—'शान्ति'

[पृष्ठ ६ का शेष]

अग्रलेख "पंजाब की भाषायी गुत्थी को सुलझाने की जरूरत" के शीर्षक से लिखा है कि "आन्दोलन स्थगित कर दिया गया है तो सरकार कदापि यह न सोचे कि इस सम्बन्ध में उसका कोई उत्तरदायित्व नहीं है। इसे कोई अस्वीकार नहीं कर सकता कि रीजनल फार्मूला अपने किसी सिद्धांत पर टिका हुआ नहीं और न ही यह किसी मन्तव्य विशेष की पूर्ति ही कर सकता है। अब और मांगो के साथ आर्य जनता की मांगों पर भी विचार किया जाना चाहिए।'

इन सभी घोषणाओं के पश्चात् श्री घनश्यामसिंहजी गुप्त ने २७ १२ ५७ को सत्याग्रह स्थगित करते हुए कहा था कि—

"सत्याग्रहियों की बिना शर्त आम रिहाई के जारी रहने से मुझे यह बात स्पष्ट हो गई है कि इन सब के पीछे सद्भावना काम कर रही है। जैसा सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की २०।१२।५७ की बैठक के प्रस्ताव का अभिप्राय था। इस भावना के अनुसार आर्य समाज सद्भावना का प्रत्युत्तर सद्भावना के द्वारा देने में पीछे नहीं रह सकता। अतः उस अधिकार के अनुसार जो सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति ने मुझे दिया है मैं पंजाब के भाषा विषयक आन्दोलन से सम्बद्ध सत्याग्रह को स्थगित करता हूं। मुझे विश्वास है कि इसके पश्चात् सद्भावना और हृदय परिवर्तन का वातावरण व्याप्त हो कर सब बातो का अन्तिम समाधान हो जायगा।"

श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त के इस वक्तव्य के पश्चात् २८ १२ ५७ को पंजाब के मुख्य मन्त्री श्री प्रतापसिंह जी कैरो ने प्रेस प्रतिनिधियों को वक्तव्य देते हुए बताया था कि—

"I have no hesitation in responding to Ghanshyam Singh Gupta's sentiments with all concomitants of good-will which should flow as a result of the atmosphere now developing."

इस घटना के पश्चात् सत्याग्रह स्थगित किया गया और सभी सत्याग्रही मुक्त कर दिए गए।

अब प्रश्न यह खड़ा हो सकता है कि ४ नवम्बर १९५७ के गजट मे हिन्दी आन्दोलन के प्रभाव के परिणाम स्वरूप यदि सफलता प्राप्त करली जा चुकी थी तो स्थगन के समय ही इस बात की घोषणा क्यों नहीं कर दी गई? इसका कारण केवल नीति सम्बन्धी कुछ विवशता थी कि कुछ काल तक मौन धारण किया जाए। किन्तु यह मौन आर्य समाज के लिए बड़ा मंहगा सिद्ध हुआ। देश और सरकार दोनों को आपत्ति से बचाने की भावना से यह नीति अपनाई गई थी। इस बात की भी सम्भावना थी कि कहीं अकाली सरकार के विरुद्ध कोई ऐसी कार्यवाही या द्वन्द्व प्रारम्भ न कर दें कि जिससे सरकार को किसी और नई कठिनाई का सामना करना पड़े। परन्तु ३ ३ ५८ को पार्लियामेन्ट के सदस्य श्री माथुर और अटल बिहारी बाजपेयी के एक प्रश्न पर पण्डित गोविन्द बल्लभ पन्त गृह मन्त्री भारत सरकार ने जो उत्तर दिया है, उससे सर्व साधारण मे चिंता और प्रश्न का वातावरण बन गया है। ऐसी स्थिति मे इसका स्पष्टिकरण करना मैं आवश्यक ही नहीं अपना कर्तव्य अनुभव करता हूं। मुझे भविष्य मे अकालियों द्वारा सरकार के विरुद्ध होने वाली किसी दुर्घटनात्मक व्यवहार की सम्भावना की अपेक्षा श्री पन्त जी के उत्तर से जो जनता में भ्रम फैला है उसका निराकरण करना आवश्यक हो गया है।

पेप्सू' और 'सच्चर योजना की अब कोई वैधानिक महत्ता नहीं रही। कारण कि इसे पंजाब विधान सभा की स्वीकृति प्राप्त नहीं है। यह विषय एक प्रान्तीय प्रश्न होने के कारण अब पंजाब विधान सभा की स्वीकृति प्राप्त किए बिना कि इसकी भाषा क्या हो और इसका राज्यीय व्यवहार रूप किस प्रकार का हो? कोई निश्चय नहीं किया जा सकता। सम्भव है पंजाब सरकार लाठी और गोली के बल पर कुछ दिन और इस फार्मूला को जिसकी कि कोई वैधानिक महत्ता नहीं जनता पर थोप रखे किन्तु अधिक दिनो तक किसी अवैधानिक योजना को जनता सहन करे इस जागृत युग मे यह सम्भव नहीं है।

'सच्चर' और 'पेप्सू' योजना के शिक्षा सम्बन्धी विषयों की व्यवस्था 'राजनल फार्मूला' मे राजनल कमेटियों के आधीन की गई है और यह उस पर निर्भर है कि यह प्रारम्भिक श्रेणी से माध्यमिक श्रेणी (हायर सेकण्ड्री) तक शिक्षण की भाषा के माध्यम का निर्णय करे। हिन्दी क्षेत्र की क्षेत्रीय समिति कभी भी गुरुमुखी मे लिखी जाने वाली पंजाबी को अनिवार्यतः पढ़ाने के सिद्धान्त को किसी भी रूप मे स्वीकार नहीं कर सकती। अब रहा प्रश्न जालन्धर क्षेत्र का इसके सम्बन्ध मे कोई निश्चयात्मक अपनी सम्मति प्रकट नहीं कर सकता किन्तु यह बात स्पष्ट है कि जालन्धर मे भी एस० आर० सी० के विवरणीय निर्णय के प्रकाश में यदि किसी क्षेत्र मे ३० प्रतिशत से अधिक और किसी भाषा के बोलने वाले हो तो उनकी वह भाषा भी द्वितीय क्षेत्रीय भाषा निर्धारित होगी। इस निर्णय के अनुसार जालन्धर मे पंजाबी के साथ साथ हिन्दी का क्षेत्रीय भाषा होना आवश्यक ही नहीं अपितु स्वाभाविक है। पंजाब के इस आन्दोलन से हम इस स्थिति मे आकर खड़े हो गए हैं कि जालन्धर क्षेत्र की क्षेत्रीय समिति दोनों दलों की सहमति के बिना कोई सिद्धान्त निर्धारित नहीं कर सकती। शैक्षणिक विषयो का निर्णय तो समितियों से ही होगा। और राज्य व्यवहार की सरकारी भाषा के निर्णय को सन् १९५० के भारतीय संविधानानुसार पंजाब विधान सभा द्वारा स्वीकृत प्राप्त होना चाहिए। जैसा कि हाल ही मे मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की सरकारों ने एक बिल के द्वारा अपने अपने प्रान्त की सरकारी भाषा 'हिन्दी' होने की स्वीकृत विधान सभा द्वारा प्राप्त करली है।

अब पंजाब की जनता का कर्तव्य है कि वह पंजाबी की अनिवार्य शिक्षा और राज्य व्यवहार के लिए पंजाबी का प्रयोग प्रचलित रखने के प्रश्न पर उच्च न्यायालय अथवा सर्वोच्च न्यायालय मे इसके लिए पंजाब सरकार को चुनौती दे। और पंजाब सरकार की इस तानाशाही को अधिक दिनों तक चलने न दे। इन ९ वीं तथा १० वीं की दशा का सामना तक तो आर्य समाज ने जो आन्दोलन सत्याग्रह रूप मे प्रारम्भ किया वह पूर्ण सफलता प्राप्त कर चुका है।

(पृष्ठ ५ का शेष)

प्राचीनतम है। इस ऋग्वेद के मन्त्र में अग्नि, पुरोहित यज्ञ, रत्न आदि शब्दों को हिन्दी में क्या नहीं बोलते हैं? इस दृष्टि से "हिन्दी के वही शब्द हैं—जिन्हे हम हजारों वर्ष पहले बोलते थे। क्यों वृद्ध नेता श्री राजगोपालाचार्य का यह कथन कि हिन्दी शब्द विदेशी है, किन्तु उसी भाषण में राजा जी इस बात से प्रसन्न हैं कि यह अच्छा हुआ कि अन्तर्राष्ट्रीय रूप मे (India) शब्द का स्वीकार किया गया। क्या India शब्द विदेशियों ने हमें 'हिन्द' की जगह अपभ्रंश के रूप मे नहीं दिया है?

आवश्यकता है

आवश्यकता है,एक योग्य विद्वान की जो आर्यसमाज अलीगढ़ मे पुरोहित का कार्य कर सके। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। वानप्रस्थी महोदय को मान्यता दी जायगी। प्रार्थना पत्र ३० अप्रैल तक आने चाहिये। प्रेमनारायण पुष्प

मन्त्री आर्यसमाज अलीगढ़

धन्यवाद

हरिजन कल्याण विभाग, उत्तर प्रदेश के डायरेक्टर महोदय का मैं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की ओर से आभार प्रकट करता हूं कि उन्होने मार्च की अन्तिम तिथि को जि० खीरी मे रहने वाली निकोपित जातियो मे प्रचार के प्रबन्ध के लिए १००० रु० अनुदान स्वरूप प्रदान किया है, आशा है इस संस्था पर विभाग की इसी प्रकार सदा कृपा बनी रहेगी।

शिवदयालु, सभा मन्त्री

आवश्यकता

सुन्दर सुशील, २२-२४ २५ वर्षीया पंजाबी युवती के लिए एक २७-२८ वर्षीय खत्री पंजाबी सुशिक्षित नवयुवक की आवश्यकता है। आर्य समाजी घराने को विशेषता दी जायगी। पत्रव्यवहार का पता—

बी० डी० खन्ना सुमेर भवन

चारबाग लखनऊ

साहित्य-समीक्षण

[समालोचनार्थ पुस्तको की दो प्रतियां भेजें।]
यहाँ हम अपने ६ सहयोगी पत्र पत्रिकाओं के सम्बन्ध मे कुछ लिख रहे हैं -

प्रभात, साप्ताहिक, बिजनौर

'प्रभात', साप्ताहिक बिजनौर से प्रकाशित होता है। इसके सम्पादक श्री नेपालसिंह आर्य हैं। यह आर्य सिद्धान्त का एक साप्ताहिक पत्र है। आर्यसमाज और आर्यवीर दल के सम्बन्ध में काफी समाचार इस पत्र में मिलते हैं। इसका वार्षिक मूल्य ६) रुपये और एक प्रति का मूल्य १२ नए पैसे हैं। पश्चिमी जिलों के आर्य बन्धुओं के लिए यह एक सुन्दर प्रयास है।

वीर सन्देश, मासिक बहजोई

वीर सन्देश के सचालक श्री सुख देव शास्त्री व सम्पादक श्री दरबारी लाल हैं। यह बहजोई से प्रकाशित होता है। यह मुख्यत आर्य वीर दल का एक पत्र है। आर्य विचार के अन्यान्य लेखो को भी इसमे स्थान मिलता है। इसका वार्षिक मूल्य तीन रुपया तथा एक प्रति का चार आना है। आर्य वीरो और आर्य कुमारो के लिए यह पत्र बहुत उपयोगी हो सकता है। आर्य जनों को इसकी प्रगति के लिए प्रयास करना चाहिये। आ०स० बहजोई, मुरादाबाद म इस पत्र का कार्यालय है।

आर्यसमाज मासिक कलकत्ता

यह आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल आसाम का मुख्य पत्र है। इसके सम्पादक श्री अवधविहारीलाल एम० ए० हैं। इसका वार्षिक मूल्य तीन रुपया तथा एक प्रति का चार आना है। बगाल आसाम म आर्य समाज के प्रचार के लिए यह पत्र उपयोगी कार्य रहा है। आर्यसमाज २४/२ कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता २ म इस पत्र का कार्यालय है।

गोरक्षण, मासिक, वाराणसी

श्री महेशदत्त शर्मा के सम्पादकत्व में रामनगर वाराणसी से प्रकाशित होने वाला यह मासिक पत्र मुख्यत गोरक्षा के लिए ही है। इसका वार्षिक मूल्य पाच रुपये तथा एक अङ्क का ४४ नये पैसे हैं। प्रत्येक हिन्दू गोरक्षक होते ही हैं अत प्रत्येक गोरक्षक के लिए यह पत्रिका उपयोगी है। गोरक्षण की उन्नति के लिए इस पत्रिका का प्रचार और प्रसार अधिकाधिक हो तो अच्छा है।

तपोभूमि, मासिक, मथुरा
(नित्यकर्म विशेषांक)

यह आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला मथुरा का मासिक पत्र है। जिसके सम्पादक श्री ईश्वरीप्रसाद प्रेम एम०ए० हैं। इसका वार्षिक मूल्य २॥) है। इस वर्ष के प्रथम दो अङ्कों को मिलाकर यह नित्य कर्म विशेषांक' के रूप मे पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ है जिसका मूल्य ॥) है। इसमें सन्ध्या हवन, ईश्वर प्रार्थना, स्वस्ति वाचन, शान्ति प्रकरण आदि के मन्त्र सरल भाषानुवाद सहित दिए गए हैं। साथ ही कुछ अन्य मन्त्रो का सग्रह और कुछ भजन भी है। सब मिलकर यह अङ्क वास्तव म नित्यकर्म के लिए बहुत उपयोगी बन गया है। इस के लिए सम्पादक व व्यवस्थापक दोनों धन्यवाद के पात्र हैं।

आर्य मार्तण्ड, मासिक, जयपुर
(सत्याग्रह विशेषांक)

यह आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुख्य पत्र है। इसका कार्यालय आर्यसमाज कृष्णपोल बाजार, जयपुर मे है। इसका वार्षिक मू० २॥) और इस विशेषांक का मूल्य ॥) है। पत्रिका के सम्पादक श्री भगवतीप्रसाद जी सिद्धान्त भास्कर है।

प्रस्तुत अङ्क के मुख्य पृष्ठ पर ऋषि दयानन्द व शहीद सुमेरसिंह का रगीन चित्र है। जालन्धर गोलीकाड और मोहरी रेल दुर्घटना के अमर शहीदो तथा पजाब पुलिस के अत्याचारो के रोमाचकारी दृश्यो के चित्र भी दिए गए है। सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति तथा राजस्थान के प्रमुख नेताओं के परिचय और चित्र भी हैं। साथ ही सत्याग्रह सम्बन्धी प्रमुख नेताओं के लेखो सहित यह अङ्क कुल ७४ पृष्ठो म छपा है। राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के इतिहास के लिए यह अङ्क उपयोगी है।

—म० शरण

सार्वदेशिक सभा का वार्षिक अधिवेशन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन इस वर्ष ८ जून ५८ रविवार को दिल्ली मे होगा। सम्बन्ध महानुभाव अंकित कर लें।

उत्तर-प्रदेशीय सभान्तर्गत आर्य समाजों के मंत्रीगण तथा आर्य प्रतिनिधि महोदयों की सेवा में

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का ७० वां वार्षिक साधारण बृहदधिवेशन तिथि २७/२८ वैशाख शक १८८० तथा ज्येष्ठ कृ० १४।१५ सम्वत् २०१५ वि० तदनुसार दिनांक १७ व १८ मई १९५८ ई० दिन शनिवार व रविवार को स्थान दयानन्द वैदिक कालेज-भवन लखनऊ में होगा।

प्रथम दिवस की बैठक ३ बजे मध्याह्न से आरम्भ होगी। आशा है कि आर्य समाजों एवं उप समाओं के प्रतिनिधि महोदय नियत समय पर अधिवेशन में सम्मिलित होकर अनुगृहीत करेंगे।

विषय सूची

१—उपस्थिति, ईश्वर-प्रार्थना के उपरान्त शोक प्रस्ताव।

२—वार्षिक वृत्तान्त १ जनवरी ५७ से ३१ दिसम्बर १९५७ तक आय व्यय लेखा सहित स्वीकृत्यर्थ।

३—आगामी वर्ष सन् १९५९ ई० के लिए बजट स्वीकृत्यर्थ।

४—सभा के पदाधिकारियों एवं अन्तरग सदस्यों का निर्वाचन।

५—आय व्यय लेखा निरीक्षक की नियुक्ति।

६—गुरुकुल विद्या सभा के लिए सभा के नियम स० ४४ (इ) के अनुसार छः प्रतिनिधियों का निर्वाचन।

७—आगामी वर्ष के लिये कार्य-क्रम नियत करने पर विचार।

८—अन्य आवश्यक विषय जिन्हे सभा श्री प्रधान जी विशेष रूप से प्रस्तुत करने की आज्ञा दे, प्रस्तुत हो सकेंगी।

टिप्पणी—१—आर्य प्रतिनिधि सभासदों के निवास, भोजनादि की सुव्यवस्था आर्य समाज (गणेशगंज) लखनऊ के द्वारा दयानन्द वैदिक कालेज भवन लखनऊ में, जो रेलवे स्टेशन चारबाग के समीप आर्य नगर में है, की गई है।

टिप्पणी—२—दिनांक १७ मई सन् १९५८ को रात्रि में "प्रदेशीय आर्य सम्मेलन" भी होगा।

टिप्पणी—३—नवीन अन्तरंग, अधिवेशन की समाप्ति पर बैठेगी।

कार्य-क्रम

१७ मई ५८ दिन शनिवार	१८ मई १९५८ दिन रविवार
प्रातःकाल ६॥ से ८ तक सम्मिलित सन्ध्या यज्ञ	प्रातःकाल ६॥ से ८ तक संध्या, यज्ञादि
„ ८ से ९ . प्रतिनिधि परिचय	„ ८ से ११ तक बृहदधिवेशन की द्वितीय बैठक
„ ९ से ११ „ प्रवचन	मध्याह्न १२ बजे भोजन
मध्याह्न—भोजन विश्राम	„ ३ से ६ तक बृहदधिवेशन की तृतीय बैठक
„ ३ बजे से बृहदधिवेशन की प्रथम बैठक	सायं ६॥ से ८ तक नित्य कर्मादि
सायंकाल ६॥ से ८ बजे तक नित्यकर्म, भोजनादि	
रात्रि ८ से १०॥ तक प्रदेशीय आर्य सम्मेलन	

—शिवदयालु सभा मन्त्री

चरित्र निर्माण कार्य के लिए
श्री पूर्णचन्द जी का दौरा

श्री बाबू पूर्णचन्द जी एडवोकेट आगरा, अधिष्ठाता चरित्र निर्माण विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० ने २९ जनवरी से ७ फरवरी ५८ तक चरित्र निर्माण के कार्य के लिए अनेकों स्थानों का दौरा किया। आपने अहमदाबाद म सरकारी नैतिक स्वास्थ्य सम्मेलन मे भाग लिया और वहां एक निबन्ध पढ़ा। स्थानीय आर्य समाजों मे व्याख्यान दिया और अन्य शिक्षा सस्थाओं मे भी चरित्र निर्माण सम्बन्धी भाषण किया। इसी प्रकार आपने अजमेर मे भी चरित्र निर्माण का कार्य किया। वहाँ डी० ए० वी० कालेज व स्कूल, दयानन्द विद्यालय, पुत्री पाठशाला इत्यादि में आपने चरित्र निर्माण की आवश्यकता और महत्ता पर भाषण दिया। और भी अनेको प्रकार से आपने चरित्रनिर्माण सम्बन्धी कार्यों को प्रगति देने के लिए प्रयास किया। चरित्र निर्माण सबंधी ट्रैक्ट लिखकर तथा छपवाकर आपने हजारो की सख्या में वितरित भी कराया है।

सभा प्रधान गुरुकुल अयोध्या में

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान राजकुमार रणञ्जयसिंह एम० एल०सी० गुरुकुल अयोध्या के वार्षिकोत्सव पर गुरुकुल भूमि में पधारे। आपकी अध्यक्षता मे एक आर्य सम्मेलन हुआ जिसमे आर्यसमाज, सस्कृत भाषा तथा गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में प्रस्ताव पास हुआ। आपने गुरुकुल को १०१) दान दिया है।

अद्भुत शो

तीस चालीस वर्ष पहले तक बेतार का तार गप्प या जादू माना जाता था। आज सब देखते सुनते और समझते है कि यह केवल एक वैज्ञानिक यन्त्र है। इसी तरह हमारे यह नीचे बताये यन्त्र हैं जो सब सच्चे हैं और बिना किसी मेहनत परेशानी कौड़ियों के खर्च पर आपको न सिर्फ लखपति बना देंगे बल्कि हर समाज में आपको मान प्रतिष्ठा दिला देंगे। जादू सम्राट् का सम्मान राजा से कम नहीं होता। यह सब शो घर बैठे ही केवल एक दिन म सहज ही सीखे जा सकते हैं और फिर दूसरे ही दिन कहीं भी कभी भी दिखाये जा सकते ह। कोई सिद्धि कोई जप नहीं करना पड़ता।

प्रत्येक शो में वर्षों तक काम देने वाला उसका पूरा बना बनाया तैयार सामान उसकी सरल और पूरी विधि सहित भेजा जाता है।

• मैजिक बक्स

इस बक्स में ताश का पत्ता जलाकर डाल देने से फिर खोलकर देखने पर वह पत्ता सही और साबुत निकलेगा। सादा कागज जलाकर डालनेपर नोट और रुपया डालने पर एक बार वह गायब हो जायगा और दूसरी बार मिल जायगा। मूल्य २)

• मैजिक फनेल

इसको स्त्री ही नहीं, किसी पुरुष की भी देह से छुआई जाते ही इसम से दूध की धार निकलने लगेगी और इसका हटाते ही धार निकलना बन्द हो जायेगा। मूल्य २॥)

• मैजिक गेंद

यह रंग बिरंगी गेंद सूत की डोर म पिराई हुई है। आपके आदेश पर यह चलेगी–दौड़ेगी और रुकेगी। मूल्य १॥)

• तिरलोचनी

इस छोटी सी लकड़ी मे तीन छेद हैं। किसी से वाच के छेद म सींक डालने का कहने पर वह सींक का सिरेगाल छेद म ही डालेगा। मूल्य १)

• कागज से नोट

सादे कागज का जला कर उसकी राख से सबके देखते-देखते नोट बना देना। मूल्य १।)

• मैजिक मिरगीन

इसके द्वारा अपनी आंखो पर पट्टी बँधवाकर आप लिख सकते ह पढ़ सकते हे और मोटर साइकिल चला सकते हैं। बहुत बड़ा जादूगर जब किसी नगर म जादू विद्या का प्रदर्शन करता है तो पहले दिन अपनी आंखो पर पट्टी बँधवाकर इसी के द्वारा मोटर साइकिल से नगर के प्रमुख मार्गों पर चलकर सहज ही नागरिकों पर अपना धाक जमा देता है। मूल्य ४)

• तिब्बत का बक्स

किसी दर्शक की घड़ी इस बक्स में उसी से रखवाकर और ताला लगवाकर बक्स उसी को दे दिया जाता है। परन्तु फिर ताला खोलकर देखने पर उसमे घड़ी नहीं मिलती। वह दूर मेज पर रखी डबल रोटी के काटने पर उसके अन्दर से निकलती है। मूल्य ३॥)

• विचित्र गोला

यह एक ठोस रंगीन गोला सबके सामने देखते-देखते हाथ ही हाथ में एक से दो फिर तीन और फिर चार बन जाते है। इसके बाद चार के तीन, दो और अन्त में एक रह जाता है। मूल्य ३)

• मास्टर मैजिक

सबके सामने दर्शक के हाथ में से अँगूठी उड़कर दूर रखे गिलास म पहुच जाती है और फिर वहा से भी गायब होकर डबल रोटी के अन्दर से निकलती है। मूल्य ३॥)

• ताश का पूरा सैट

ताश के नवीन चमत्कार के इस पूरे सेट द्वारा आप ताश के बीसों खेल दिखा कर धुरन्धर विद्वानो को भी चक्कर और हैरत म डाल देंगे। मूल्य ४१)

• मैजिक सिगरेट

हवा म से दर्जनो असली सिगरेटें पकड़ लेना और चाहते हो तुरन्त सब को हवा में उड़ा देना। मूल्य २॥)

• मैस्मरेजम शो

लड़के को जमीन पर लिटाकर और चादर से ढँककर बेहोशी की हालत म उससे सारे दर्शकों के अजीबोगरीब प्रश्नों के उत्तर ठीक ठीक बता देने का गुप्त रहस्य इस कोर्स द्वारा आप घर बैठे ही केवल एक दिन में सीख जायेंगे और फिर आप दूसरे ही दिन अपने आपको मैस्मरिस्ट' प्रसिद्ध कर सहज ही धन, मान और यश प्राप्त कर सकेंगे। फीस ३)

नोट –(१) पाच रुपये से कम का माल नहीं भेजा जाता है।
(२) माल की चौथाई कीमत पहले आना चाहिए।

१६३, दी यूनाइटेड मैजिक कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड
मुरादाबाद

टेलीफोन–१६६ तार—मिस्टा

जिला सभा लखनऊ का वार्षिक चुनाव

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ का वार्षिक चुनाव इस वर्ष २४ अप्रैल ५८ को साय ७ बजे सभा के प्रधान श्री जगन्नाथप्रसाद केसरवानी पुरानी सब्जी मण्डी, अमीनाबाद के निवास स्थान पर होगा। नगर और जिला के समाजों को चाहिये कि वे शीघ्र ही अपने समाजों के प्रतिनिधियों का नाम प्रतिनिधि शुल्क सहित सभा कार्यालय मे उपरोक्त पते से भेज दें।

शुभ-विवाह

श्री बाबूरामजी भारती मुख्य लेखक आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की सुपुत्री आयुष्मति कुमारी सुषमावती का शुभ विवाह अलाली, अलीगढ़ निवासी श्री ला० अयोध्याप्रसाद जी के सुपुत्र चि० महादेव जी अग्रवाल आई० जी० डी० के साथ वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ।

आभार-प्रदर्शन

मेरे एकमात्र पुत्र विनोदकुमार के निधन का समाचार पाकर जिन जिन बन्धुओं ने समवेदना सूचक पत्र या तार भेजे है, मैं उन सबके प्रति अपना आभार प्रकट करता हू। "वह मेरा था ही नहीं" यही सोच कर सन्तोष कर लेता हू। —वेदव्रत अवस्थी, मन्त्री जिला सभा, लखनऊ

आ० स० जगदीशपुर, शाहाबाद

आ० स० जगदीशपुर, शाहाबाद, बिहार का १८ वा वार्षिकोत्सव १८, १९, २० अप्रैल ५८ को होगा।

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं, हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित "केश कल्यान" तैल के लगाने से सफेद बाल सर्वदा के लिए काले हो जाते हैं। यह तैल आँखों की रोशनी को बढ़ाकर दिमाग को ताकत वर बनाता है। एकाध बाल पका हो तो २॥) का तैल मगावें, अधिक हो तो ३॥) कुल पका हो तो ६) का तैल मगावें। गुणहीन होनेपर मूल्य वापस।

पता—एस० के० प्रसाद
पो० हबीबपुर (पटना)

कन्या की आवश्यकता

मेरे मित्र आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य भद्रसेन जी के सुपुत्र चि० वेदरत्न जी के विवाह के लिए एक स्वस्थ, सुन्दर, सुशील, सुशिक्षित तथा गृह कार्य में दक्ष लगभग १६ वर्षीया आर्य कन्या की आवश्यकता है। वर सुशिक्षित तथा बारोजगार है। विवाह वैदिक रीत्यनुसार जन्म गत जाति का विचार न कर पूर्णत गुण कर्मानुसार होगा। पत्र-व्यवहार निम्न पते पर करें। डा० सूर्यदेव शर्मा एम ए आर्य विद्या परिषद अजमेर



दिल्ली में कॉंग्रेस पार्टी की हार क्यों?

[आत्मप्रकाश पुरुषार्थी]

★

दिल्ली कारपोरेशन के चुनाव में कांग्रेस हाई कमाण्ड के लगभग सभी सदस्यों एवं लोक सभा के अनेकों प्रभावशाली वक्ताओं के सक्रिय सहयोग प्रदान करने पर भी कांग्रेस पार्टी हार जायेगी इसका किसी को स्वप्न में भी आभास न था। स्वयं विरोधी पार्टियों तक को कांग्रेस की इस हार पर आश्चर्य हो रहा है क्योंकि उन्होंने जनता से कांग्रेस के विरुद्ध मजबूत विरोधी दल बनाने के निमित्त ही वोटों की याचना की थी। उन्हें क्या पता था कि जनता उनसे भी कहीं आगे बढ़कर उन्हें सहयोग देने को तैयार है। य भा त नसमस बाहद मह सभा कुछ और समझ दारा ग गाम लत ग म ार प्र ान्त का भी ताल ला न एक मयु भा बन सर आप्र म का ार र क्रिया जाता तो मेरा विश्वास है कि कांग्रेस को इस चुनाव में १० सीट भी प्राप्त करना कठिन हो जाता। ऐसी अवस्था में भी यदि कांग्रेस अपने टिकटों पर कुछ आर्य समाजियों को खड़ा न करते तो उसे और भी अधिक पराजय का सामना करना पड़ता, क्योंकि हिन्दी आन्दोलन के कारण जनता का हृदय आर्य समाज के साथ है।

१—अचानक कांग्रेस की ऐसी बुरी पराजय क्यों हुई? यह प्रश्न कांग्रेसी नेताओं के ही नहीं अपितु दिल्ली के प्रत्येक समझदार व्यक्ति के मस्तिष्क को उलझन बन गया है। मेरे विचार में कांग्रेस की इस पराजय का मुख्य कारण है पंजाब हिन्दी आन्दोलन द्वारा उत्पन्न वह वातावरण कि जिसने जनता के हृदय में कांग्रेस और कांग्रेस सरकार के प्रति अविश्वास एवं घृणा उत्पन्न करदी है। आर्य समाज के नेतृत्व में पंजाब के ७० प्रतिशत ... हुआ क म त्रापा ... स्था ... लग ... ७ म स न पुण ... सत्याग्र ... प्रश्न ... गृह ... न ... न जिस प्रकार अपने अड़ियलपन में मुख्य मन्त्री ने पार्लियामेण्ट में घोषणा की उसने दिल्ली की जनता को कांग्रेस विरोधी बना दिया।

२—घृणित सरदार साम्प्रदायिकता की साक्षात् मूर्ति अकाली नेता मास्टर तारासिंह व उनकी अकाली पार्टी के साथ कांग्रेस पार्टी के स्वार्थपूर्ण गठबन्धन को यहाँ की जनता ने बहुत ही अनुचित व निन्दनीय माना है। दिल्ली नगर के प्रत्येक कोने में अकाली नेता के नाम से एक पोस्टर पढ़कर तो दिल्ली के हिन्दू नागरिक और भी चिढ़ गए हैं। इस पोस्टर में बिना किसी लिहाज के कांग्रेस को वोट देने की सिक्खों से सिक्खों के नाम अपील थी। इस अपील के अनुकूल दिल्ली के सिक्खों का आचरण देखकर जनता में रोष उत्पन्न होना स्वाभाविक था।

३—इसके अतिरिक्त टिकट देते समय कांग्रेस हाई कमाण्ड ने बुद्धिमता से काम नहीं लिया। जन प्रतिनिधियों की योग्यता ... ईमानदारी की ध्यान न रखकर ... किये गए। टिकट लेने वालों में ऐसे भी ... भ्रष्टाचार ... अन्य ... कांग्रेस के घोर शत्रु और अप ... एजेण्ट थे। ऐसे लोगों को टिकट देने से लोगों में ... प्रति घृणा उत्पन्न होना स्वाभाविक ही था।

४—कांग्रेस पार्टी को यह भ्रान्ति हो गई है कि वह कांग्रेस पार्टी के पिछले त्याग व बलिदान के इतिहास एवं जवाहरलाल गांधी के नाम पर विजय प्राप्त कर सकता है और यदि कांग्रेस का टिकट किसी कुत्ते के गले में भी बांध दिया जाय तो वह कामयाब हो सकता है। इसी कारण कांग्रेस के लोग जितना प्रयत्न पुरुषार्थ व त्याग कांग्रेस चुनाव बोर्ड से टिकिट प्राप्त करने के लिए करते हैं उतना जनता के हृदयों को जीतने का नहीं करते। जनता के समुख तो वह एक तानाशाह अथवा शासक वर्ग के रूप में उपस्थित होते हैं अत्याचार और दुष्कर्म करने में उन्हें भय नहीं अनुभव होता है। अन्त में ... स्थिति यह है कि कांग्रेस ... जनता ... समझ ... गया ... अपना ... हुआ ... प्रति घृणा उत्पन्न करदी है।

आशा है इस पराजय के परिणाम स्वरूप कांग्रेस पार्टी व कांग्रेस जन अपना अन्तः निरीक्षण कर आत्मशुद्धि करेंगे अन्यथा वह दिन दूर नहीं कि जब दिल्ली की भांति समूचे देश में कांग्रेस को पराजय का मुख देखना पड़ेगा।

★

आर्य जगत

नगर आर्यसमाज आगरा की डायरी

दिनांक ९.३.५८ को आर्यसमाज मन्दिर में श्री पं० धर्मेन्द्र नाथ एम० ए० पी० एच० डी० उपदेशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का गीता के विषय पर एक प्रभावशाली भाषण हुआ।

दिनांक १६.३.५८ को श्री पं० भूदेव न शास्त्री एम० ए० एल० टी० का मनोहर भाषण हुआ।

दिनांक २०.३.५८ ... आर्य समाज के ... पर ... सम्पन्न ... हुआ।

दिनांक २३.३.५८ ... आर्य उपदेशक का प्रभावशाली भाषण हुआ।

श्री मथुराप्रसाद जी पूर्ण स्वस्थ

सभा के पुराने भजनोपदेशक श्री मथुरा प्रसाद जी जो पिछले वर्ष कुछ अस्वस्थ थे अब पुनः पूर्ण स्वस्थ होकर प्रचार कार्य में लग गये हैं। पूर्वी जिलों के समाजों के अधिकारियों को चाहिए कि इन्हें अपने उत्सवों में बुला कर उनके भजनोपदेशों से लाभ उठावें।

आ० स० चौक मथुरा

प्रधान श्री हरिप्रसाद शुभ वानप्रस्थी
मन्त्री—श्री आत्मप्रकाश आर्य
कोषा० श्री विद्याराम आर्य

आ० स० ...पुर अहमदाबाद

इस समाज का ६७ वां वार्षिकोत्सव ६ से १३ अप्रैल ५८ तक समारोह से होगा। आर्य जगत् के अनेकों प्रमुख विद्वान पधारेंगे।

आ० स० हसवा फतेहपुर

आर्य समाज ... वार्षिकोत्सव ५ ... १५ अप्रैल को ... पधारेंगे।

आ० स० ...पुर, ...

इस समाज का ... वार्षिकोत्सव २८, २९, ३० मार्च को समारोह से मनाया गया। ... सम्मेलन ... श्री रामगोपाल जी की अध्यक्षता में हुआ। श्री रामगोपाल जी, पं० धर्मपाल जी विद्यालंकार पं० ... विद्यावाचस्पति श्री ओ३म् प्रकाश शास्त्री श्री विश्वबन्धु शास्त्री आदि के भाषण हुए।

आ० स० टटिया

इस समाज की ओर से २१ मार्च को सोत्साह आ० स० स्थापना दिवस मनाया गया।

आ० स० उाई

प्रधान—श्री रामा शंकर जी
मन्त्री— श्री ताराशंकर जी
कोषा०—श्री विश्वनाथ तिवारी

आ० स० बहराइच

प्रधान—श्री मथुरा प्रसाद टंडन
मन्त्री—रामशरण लाल
कोषा —श्री ... प्रसाद जी

आ० स० शाहगंज

२९ मार्च को ... रामनौमी पर्व सोत्साह मनाया गया। ... कुमार ... पुत्र ... का नामकरण संस्कार भी हुआ।

आ० स० कर्णपुर दत्त

—उपप्रधान ठाकुर भोलासिंह के निधन पर समाज ने शोक प्रस्ताव पास किया।

—समाज ने अमनपुर, कर्णपुर दत्त, नगला हूमा में इस समाज ने प्रचार कराया।

—चुनाव निम्न प्रकार से हुआ।
प्रधान—श्री शंकरसिंह
मन्त्री—श्री उदयपालसिंह

आ० स० हरदुआगंज, अलीगढ़

प्रधान—श्री देवे ,सिंह
मन्त्री—श्री मदनलाल वर्मा

आ० स० स्थापना दिवस यहाँ सोत्साह मनाया गया। इस समाज का उत्सव १४, १५, १६ मई को होगा। ... लाल जी पं० बिहारीलाल ... पं० आत्मप्रकाश शास्त्री आदि पधारेंगे।

आ० स० आरा (बिहार)

... य आर्य ... पर ... इस समाज ... प्रमुख समाज है और यहां से ... तथा ... हो गए हैं।

आ० स० ...नगर बरेली

प्रधान ... शान्ति प्रसाद जी
मन्त्री ... रामस्वरूप जी
कोषा०—श्री चन्द्रप्रकाश जी

पंजीकरण स ए ६०

२३ चैत्र १८८० (१३ अप्रल ५८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष ५११३ तार : आर्यमित्र

पं० श्री ... की ...

पं० श्री कृष्ण शर्मा ... मिशनरी ने ... में आयोजित रामनवमी के एक सार्वजनिक सभा में कहा कि ... आर्यसमाज के साथ केन्द्रीय सरकार ने ... किया है ... और ... श्री नेहरू ... पन्त और ढेबर की भी होगा।

रामनवमी पर्व

आ० स० नारायण स्वामी भवन लखनऊ की ओर से सभा भवन में २६ मार्च को रामनवमी पर्व सोत्साह मनाया गया।

आ० स० आगानगर

... मार्च को इस समाज की ओर से बड़े समारोह सहित आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। ... में पं० श्री रामचन्द्र, पं० ओम्प्रकाश शास्त्री, पं० ... शंकर शर्मा, श्री पूर्ण चन्द ... के भाषण तथा श्री प्रेम नारायण शर्मा की कविता हुई। ... थालय और आर्य कन्या पाठशालाओं की छात्राओं द्वारा गायन तथा ... पूजा पर ... विवाद हुआ। श्री सरदार लाल जी ५) श्री रामपालसिंह ५) श्री हरिगोपाल सिंह ...) तथा श्री राम ... ने १) छात्राओं को पुरस्कार दिया

आ० स० पूरनपुर की डायरी

१—इस वर्ष के नव निर्वाचन में श्री प्रेमचन्द जी प्रधान श्री रामबहादुर जी मुख्तार मन्त्री तथा श्री ईश्वरचन्द्र जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

२—आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला पीलीभीत के निर्वाचन में श्री रणजीत सिंह जी प्रधान और श्री प्रेम चन्द्र जी मन्त्री चुने गये।

३—पं० श्याम बिहारी लाल जी वानप्रस्थी के निधन पर इस समाज ने शोक प्रकट किया।

४—यहाँ आर्यसमाज स्थापना दिवस सोत्साह मनाया गया।

५—इस समाज की ओर से दो वर्ष से लगातार दैनिक सत्संग हो रहा है।

आ० स० इस्लामनगर, बदायूं

पं० ... स्वरूप जी विद्यालंकार ... गीता से आर्य सिद्धान्तों की पुष्टि नामक एक ग्रन्थ लिख रहे हैं। ... आर्य विद्वान् गीता के जिन श्लोकों को सिद्धान्त विरुद्ध समझते हो उन पर नोट लिखकर उन्हें भेजें ताकि पुस्तक में इसका समाधान किया जा सके। —मन्त्री

आ० स० राजेपुर फर्रूखाबाद

प्रधान—श्री प्रह्लाद राम
मन्त्री—...
कोषा०—श्री ... शंकर

आ० स० शिवहारा, बिजनौर

प्रधान—... चौधरी रणधीर सिंह
मन्त्री—श्री ... हरस्वरूप जी
कोषा०—श्री ... राम शास्त्री

आ० स० फतहपुर बिश्नोई, मुरादाबाद

प्रधान—श्री ... सिंह
मन्त्री—श्री लालता प्रसाद
कोषा०—... दास शरण

"आर्यसमाज साप्ताहिक का प्रकाशन

वैशाखी ३ अप्रैल १९५८ से आर्य जगत् के ... श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री के सम्पादकत्व में अखिल भारतीय स्तर का एक उच्च कोटि का साप्ताहिक पत्र आर्यसमाज पटौदी हाउस दरियागंज, दिल्ली ७ से प्रकाशित किया जा रहा है।

शान्ति आश्रम लोहरदगा

आश्रम की ओर से २१ मार्च को ... स्थापना दिवस मनाया गया साथ ही नव सम्वत् विक्रम उत्सव भी मनाया गया। रात में दीप मालिका जलाई गई।

आ० स० शेरकोट

प्रधान—श्री चौ० मनोहरसिंह
मन्त्री—श्री गजराजसिंह
कोषा०—श्री वीरेन्द्रकुमार जी

शास्त्रार्थ और आर्य सम्मेलन

ग्राम प्यारेपुर थाना ... सराय जिला ... में १८ मई ५८ को एक आर्य सम्मेलन होगा और श्राद्ध तथा अन्य विषय पर आर्य समाज के पण्डितों के साथ पौराणिक पण्डितों का शास्त्रार्थ भी होगा।

आ० स० सहतवार

आ० स० स्थापना दिवस का पर्व बड़े उत्साह से मनाया गया जिसमें ३० विद्यार्थियों ने भी भाग लिया। ... २४ मार्च को श्री रामनारायण सिंह की अध्यक्षता में ... प्रचार किया गया। श्री सुदर्शनसिंह का भाषण हुआ।

आ० स० बुलन्दशहर

प्रधान—श्री ...
मन्त्री—श्री ... लाल जी
कोषा०—श्री ... प्रसाद ...

आर्य कन्या पाठशाला बुलन्दशहर

प्रधान—श्री ...
मन्त्री—श्री ... लाल जी
मन्त्री—श्री ... लाल जी
कोषा०—श्री ... दत्त ... जी

आ० स० जरा

प्रधान—श्री रामस्वरूप जी
मन्त्री—श्री ... पाल
कोषा०—श्री विश्वम्भर दयाल

२ मार्च को सोत्साह आ० स० स्थापना दिवस मनाया गया। श्री विश्वम्भरदयाल जी उपमन्त्री के बच्चों का मुण्डन संस्कार वैदिक रीत्यनुसार हुआ।

आ० स० गोंडा, जहानाबाद

प्रधान—श्री स्वामी मयानन्द जी
मन्त्री—श्री कृपाराम आर्य
कोषा०—श्री सत्येन्द्र गुप्त

आ० स० महनगर, आजमगढ़

इस समाज का ... २४ से २५ मार्च तक मनाया गया। श्री नल्ला ... पर ... छाती पर पत्थर ... शब्दभेदी बाण चलाने का प्रदर्शन भी किया। जो समाज उन्हें बुलाना चाहें यहाँ लिखें।

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

[गतांक से आगे]

कठोपनिषद् कथा (५)

यम का मुझसे क्या काम है ?

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम०ए० एल०टी०, डी० वी० कालेज, गोरखपुर]

एक बार वाजश्रवा नामक ऋषि ने वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करने की इच्छा से सर्वमेध यज्ञ किया। उस यज्ञ में उसने अपना सब कुछ दान कर दिया। दान का महत्व यद्यपि बहुत अधिक है पर यदि वह दान, दान लेने वाले के लिए भार रूप हो जाय तो उसका कोई लाभ नहीं। वाजश्रवा ने भी निकम्मी गायों का दान किया। वाजश्रवा के पुत्र नचिकेता ने जब यह होते हुए देखा तो उसके हृदय में आस्तिक बुद्धि का सचार हुआ और उसने सोचा इस प्रकार का दान करने वाले मनुष्य उन योनियों अर्थात् उन जन्मों को प्राप्त करते हैं जिन योनियों में आनन्द का नाम भी नहीं सुनाई देता, आनन्द मिलना तो दूर रहा। इसलिए नचिकेता ने बार बार पूछा कि जब आपने सब वस्तुएं दान कर दी हैं तो मुझे किसे देंगे ? बार बार प्रश्न करने से चिढ़कर वाजश्रवा ने कहा कि मैं तुझे मौत के हवाले करता हू। इस उत्तर के दो अर्थ हो सकते हैं। एक तो नाराज होकर जैसे मां बाप भी कभी कभी अपने बच्चे को मृत्यु को देने की बात कर देते हैं वैसे ही चिढ़ कर वाजश्रवा ने कहा हो अथवा मृत्यु (यम) नाम किसी ऋषि का होगा उसको नचिकेता को देने की बात गम्भीरता पूर्वक वाजश्रवा ने कही हो। नचिकेता मे आस्तिक बुद्धि या श्रद्धा का प्रवेश हो चुका था। उसने पिता के द्वारा कहे हुए वाक्यों पर विचार किया और उसने सोचा कि मृत्यु को देने का क्या अभिप्राय है। मैंने कोई बड़ा भारी अपराध तो किया नहीं है कि मेरे पिता मुझे प्राणों से वियुक्त करना चाहेंगे। क्योंकि मैंने तो सच्चे हृदय से और पूज्य पिता के पुण्य एवं आनन्द की कामना से ही अपने को किसी को देने की बात कही है। पुत्र से बढ़कर ससार में कोई सपत्ति नहीं, कोई धन नहीं, कोई दौलत नहीं। मेरे पिता ने सर्वमेध यज्ञ मे जब सब वस्तुएं दान कर दीं तो मुझे भी किसी को दान कर देना चाहिए और यदि वे अपनी प्रियतम वस्तु का दान नहीं करते तो निकम्मी गायों के दान का क्या महत्व ? मेरा दान करने पर तो यह हो जायगा कि उनके पास अच्छा बुरा जो था सब ही दे दिया, यदि अच्छा न दिया केवल बुरा ही बुरा दिया, तो पाप लगेगा। इसलिए पिता को दु:ख से बचाने के लिए ही उसने वह प्रश्न किया और पिता ने भी उसे जब यम को सौंपने की बात कही तो उसने उसका यह मतलब लिया कि मुझे मृत्यु के नाम के गृहस्थ विद्वान् को देने के लिए पिता ने सोचा है। अब वह यमराज के घर के लिए चल पड़ा। रास्ते मे सोचने लगा कि—

बहूनामेमि प्रथमो बहूनामेमि मध्यमः
किंस्विद्यमस्य कर्तव्यं यन्मयाद्य करिष्यति

(बहूनाम्) बहुतों से तो मैं (प्रथम) श्रेष्ठ हूं और (बहूनाम् मध्यम. एमि) बहुतों में मध्यम हूं। (यमस्य) मृत्यु का (किंस्वित्) क्या (कर्तव्यम्) करने योग्य काम है (यत्) जो वह (यथा) मुझ से (अद्य) आज (करिष्यति) कराएगा।

इस ससार में यदि मनुष्य उन्नति करना चाहता है तो उसे दो प्रकार की भावनाओ से बचना चाहिए। प्रथम तो अभिमान की भावना से। अर्थात् यदि मनुष्य यह समझ ले कि ससार में मुझ से श्रेष्ठ, बड़ा और ज्ञानी कोई अन्य नहीं तो वह अपने जीवन में आगे नहीं बढ़ सकता। और उन्नति का अवरोध करने वाली दूसरी भावना अपमान है। यह अभिमान की विपरीत भावना है। वह मनुष्य जो अपने को सबसे गया बीता समझ लेता है, जो अपने को कीड़े मकौड़ों और जड़ प्रकृति से भी तुच्छ समझता है, जो संसार में प्रत्येक व्यक्ति के आगे माई, बाप कहकर हाथ जोड़ता रहता है वह भी उन्नति नहीं कर सकता है।

ज्ञान प्राप्त करने के लिए हम में ज्ञान के प्रति जिज्ञासा और उसे ग्रहण करने की योग्यता और शक्ति होनी चाहिए। नचिकेता ने अपने में यह योग्यताएं देखीं और वह यम के घर जाते हुए विचार में डूब गया कि अब यम मुझे क्या कार्य देगा। और यदि यम भयंकर ही है तो क्या हुआ ? मुझे वह जो भी काम सौंपेगा उसे मैं अवश्य करूंगा, भयकर से भयंकर कार्य में मुझे सफलता मिलेगी। 'कार्यं वा साधयेयम् देह वा पातयेयम्' या तो मैं कार्य सिद्ध करूंगा चाहे मर जाऊँगा और मृत्यु कोई अनहोनी बात तो है नहीं। जब तक मनुष्य में यह दृढ़ निश्चय नहीं होता तब तक वह किसी कार्य में सफलता नहीं प्राप्त कर सकता। जो व्यक्ति मृत्यु की परवाह छोड़कर समरांगण में कूद पड़ता है ससार की कोई बाधा उन्हें उनके उद्देश्य से विरत नहीं कर सकती देह क्या है ? शरीर तो क्षण भंगुर है, आत्मा अमर है। यह है सिद्धान्त कार्य में सिद्धि प्राप्त करने का। एक बागी गुलाम और एक बादशाह की बातचीत हुई। यह गुलाम कैदी दिल से आजाद था। बादशाह ने कहा मैं तुमको अभी जान से मार डालूंगा। तुम क्या कर सकते हो ? गुलाम बोला, हाँ मैं फांसी पर तो चढ़ जाऊँगा पर तुम्हारा तिरस्कार तब भी कर सकता हूं।' बस इस गुलाम ने दुनियां के बादशाहों के बल की हद दिखला दी। पंजाब के वीर उधम सिंह ने जालियानवाला बाग के हत्याकांड के सबसे उत्तरदायी व्यक्ति, तत्कालीन गवर्नर को जब इङ्गलैंड जाकर गोली से उड़ा दिया और उसे गिरफ्तार करके फांसी का निर्णय सुना दिया गया तो वह हंसा और जोर से हसा। उसने कहा—'मेरे काम के लिए फांसी का दण्ड ठीक नहीं। मैंने उस व्यक्ति की हत्या की है जिसने जलियांवाला बाग में हजारों बच्चे, बूढ़े, स्त्रियों और बालिकाओं को गोली का निशाना बनवाया था। जिसने माताओं की गोदियों से छीनकर उनके प्राण प्यारे अबोध बच्चों को आकाश में फेंककर गोली से उड़वाया था और इस पर भी आप मुझे फांसी की सजा देते हैं तो मैं आपके निर्णय को नहीं मानता और यह कह कर उस वीर ने अंग्रेजी साम्राज्य की ताकत को चुनौती देते हुए जज के ऊपर थूक दिया। यही है बड़े से बड़े साम्राज्य की शक्ति। बस यही शक्ति है, इसी जोर पर दुनिया के लोग राजाओं से डरते हैं, अत्याचारियों के अत्याचार को चुपचाप सहते हैं, क्योंकि सब लोग शरीर को अपने जीवन का केन्द्र समझते हैं, इसलिए जहां किसी ने उनके शरीर पर जरा जोर से हाथ लगाया वहीं वे मारे डर के अधमरे हो जाते हैं। केवल शरीर को बचाने के लिए मनुष्य भय करता है परन्तु जो मनुष्य आत्मिक शक्ति से दृढ़ होते हैं वे ही अपने उद्देश्य को पूरा करने में समर्थ हो सकते हैं। मृत्यु भी उन्हें नहीं डरा सकती। मंसूर ने अपनी फौज में आकर कहा कि "मैं खुदा हूं।" दुनिया के बादशाह ने कहा "वह काफिर है।" मगर मंसूर ने ने अपने कलाम को बन्द न किया पत्थर मार मार कर दुनिया ने उसके शरीर की बुरी दशा की परन्तु उस खून के हर बोटी से ये ही शब्द निकले "अनल हक" 'अहं ब्रह्मास्मि' मैं ही ब्रह्म हूं।

संदेह और भय तो कायरों की वस्तुएं हैं। महात्मा मुंशीराम ने गुरुकुल खोलने का निश्चय किया। शत्रुओं ने मजाक उड़ाई, मित्रों को चिन्ता हुई, अनुभवी गुरुओं ने गुरुकुल खोलने के लिए ३० हजार रुपया एकत्र न होने तक घर न आने की प्रतिज्ञा छुड़वाने का यत्न किया पर वह महात्मा डटा रहा और उसकी प्रतिज्ञा पूरी हुई। नचिकेता भी यम के घर चला यम कोई साधारण व्यक्ति नहीं था, वह नियन्त्रण का देवता था, गुरु की कठोरता उसमे विद्यमान थी। उसने सोचा यदि उसके हृदय में, मन में कमजोरी का समावेश होता है तो उसे अपने उद्देश्य मे सफलता नहीं मिलेगी इसलिए उसने सोचा कि मैं बहुतों से श्रेष्ठ हूं, मध्यम हूं और मैं चाहे कुछ भी हू मुझ मे ज्ञान ग्रहण की शक्ति है, यम का जो भी कार्य होगा वह मैं पूरा करूंगा और इस निश्चय के साथ वह आगे बढ़ा। संसार में जो मनुष्य किसी कार्य को पूरा करना चाहता है फिर उसके मार्ग मे कोई कठिनाई हो उसे ध्यान न देकर आगे बढ़ते रहना चाहिए। परमेश्वर भी उसी की सहायता करता है।—चरैवेति चरैवेति यही हमारा लक्ष्य हो। फिर यम भी कुछ न बिगाड़ सकेगा।

[क्रमशः]

विमोचित जातियों में सभा का कार्य

उत्तर प्रदेश के कई जिलों में सरकार ने विमोचित जातियों को केन्द्रित किया है, पहिले इन्हीं जातियों को जरायम पेशा कहा जाता था इनकी निगरानी पुलिस द्वारा कराई जाती थी, परन्तु अपनी राष्ट्रीय सरकार ने उन्हें निगरानी से मुक्त करके एक अच्छा नागरिक बनाने की योजना निर्धारित की है, और धीरे २ उनका सुधार भी हो रहा है, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने उनके सांस्कृतिक उत्थान के लिए एक प्रोग्राम सरकार को भेजा है और उसके आधार पर जिला खीरी की कालोनियों में सभा कार्यारम्भ करने जा रही है, इस कार्य के लिए सभा को दो ऐसे कार्य कुशल तथा अनुभवी प्रचारकों की आवश्यकता है, जो अपना सम्पूर्ण समय दे कर वहाँ रहे और अपने चारित्रय बल द्वारा उन लोगों का सांस्कृतिक उत्थान कर सकें ऐसे सज्जनों को निम्नलिखित पते पर पत्र व्यवहार करना चाहिए।

—[illegible]

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०

५, मीराबाई मार्ग, [illegible]

आर्य्य जगत मे सब से अधिक छपने वाला आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

ओ३म्

वर्ष ६०

आर्य्य मित्र

अङ्क ११

लखनऊ—रविवार चैत्र ३०, शक संवत् १८८०, वैशाख ग० १ वि० २०१५ (२० अप्रैल १९५८) दयानन्दाब्द १३४ सृष्टिसंवत् १९७२९४९०५९

सम्पादकीय

छुट्टी या काम

किसी राष्ट्र के निर्माण अथवा उत्थान के लिए आवश्यकता है अधिक से अधिक तन्मयता के साथ काम करने की कर्तव्य पालने के निमित्त नानाप्रकार की कठिनाइयों एव सकटों को सहर्ष स्वीकार करने की राष्ट्र के कार्य को व जनहित के कार्य को अपना निजी कर्तव्य समझ कर उसके पूरा करने में जुट जाने की।

अपना देश विचित्र परिस्थितियों में स्वतन्त्र हुआ है अग्रेज तब भारत से गया है जब उसने देश को लूटकर और हरप्रकार से चौपट करके रख दिया था। और चलते समय भारत के टुकड़े करके उसने भयकर स्थितिका निर्माण कर दिया था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त देश के सेवकों को राष्ट्र के निर्माण के कार्य में पूरी शक्ति के साथ जुट जाना चाहिये था। किंतु दुर्भाग्य से ऐसा हुआ नहीं। उल्टे अधिकाधिक की गई दश सेवा के सिलसिले म मागों की प्राप्ति में अधिकतर वह सलग्न हो गये। इसका परिणाम देश के भविष्य का अन्धकार पूर्ण बनाने वाला है।

इस अवाञ्छनीय प्रवृत्ति का प्रभाव देश के छोटे बड़े सब ही कर्मचारियों पर पड़ा हुआ है। देश की विभिन्न राजनीतिक सस्थाओं के कार्यकर्ताओं पर भी पड़ा है। आज कर्मचारियों में यह प्रवृत्ति जागृत हो गई है कि काम कम और वेतन भत्ता, छुट्टी सुविधाओं की माग ज्यादा।

काम के घण्टे कम होते जा रहे हैं, छुट्टियों की सख्या बढ़ती जा रही है। शायद ही ऐसा कोई देश होगा जिसमे इतनी अधिक मात्रा म छुट्टियाँ मनाई जाती हो। जबकि स्वतन्त्र देशों की देशप्रेमी जनता अधिक से अधिक काम करने और कम से कम छुट्टी मनाने में अपना गौरव समझती है। किंतु भारत में [illegible] रही है।

भारत विभिन्न मतों का केन्द्र है और उसकी सभ्यता ससार म सब से अधिक प्राचीन होने के कारण यहा पर्व और त्यौहारो का भी पारावार नहीं। यदि प्रत्येक पर्व पर छुट्टी रखी जाय और प्रत्येक महापुरुष की जयन्ती मनाई जाय तो ३६५ दिनों में कार्य के दिन ५० भी न निकलेंगे।

हमारा तो यह दृढ़ मत है कि वर्ष में १/५ से अधिक दिनो का अवकाश किसी भी अवस्था में नहीं होना चाहिये। शनिवार को आधे दिन का अवकाश सर्वथा अवाँछनीय है। वर्ष में ५२ दिन तो साप्ताहिक के अवकाश ही हो जाते हैं शेष २१ दिन का अधिक से अधिक अवकाश होना चाहिये। आज दिन जो सरकारी छुट्टियाँ हैं उनमें भी कटौती की जानी चाहिये।

महापुरुषों की जयन्तियो पर अवकाश न देकर घटा या दो घण्टा उनके जीवन पर भाषणों की व्यवस्था सब कार्यालयो शिक्षा सस्थाओं आदि में होनी चाहिये।

साथ ही देश के प्रत्येक नागरिक को दिन म ईमानदारी के साथ ८ घटे काम करना चाहिये। केवल शिक्षा सस्थाओ और कार्यालयो म काम के घण्टे ८ के स्थान पर ७ रखे जाने चाहिये। जो नागरिक काम से जी चुराता है और छुट्टियों की रट लगाता है वह निश्चय राष्ट्र के प्रति पाप करता है।

विदेशों मे वैदिक धर्म प्रचार

आर्यमित्र के गत अङ्क म पाठकों ने श्री प० उषर्बुध जी का एक मार्मिक लेख पढ़ा होगा। विदेशों म वैदिक धर्म के प्रचार कार्य को प्रगति देना नितान्त आवश्यक है। यदि इस समय पूर्णतया सनद्ध होकर आर्य समाज ने अपने विदेशी प्रचार मिशन को शक्तिशाली न बनाया और पर्याप्त सख्या में योग्य मिशनरी तैयार करके देश देशान्तरों में नहीं भेजे, तो आर्य समाज का सार्वदेशिक गौरव नष्ट हो जायगा।

भारत की राजनैतिक सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं के हल करने में आर्यसमाज की शक्ति लगनी चाहिये। किन्तु इससे भी महान् तथ्य भारत के विभिन्न क्षेत्रों में वैदिक विचार धारा का प्रसार करना है। और सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथ्य ससार के विभिन्न देशों में वैदिक मिशन सगठित करना है। आर्यसमाज के नियम और उसके प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी महाराज की प्रबल और अतिम इच्छा यही थी कि धर्म के वास्तविक स्वरूप को विश्व के मानव समाज के सम्मुख रक्खा जाय और मतान्धता तथा अन्ध विश्वासों के कारण सन्तप्त मानवता को बुद्धिवाद और मानव धर्म का दिव्य सन्देश सुनाकर शांति का मार्ग बतलाया जाय।

आर्यसमाज के विचारशील कर्णधारों को इस दिशा में गम्भीरतापूर्वक सोच कर कोई दृढ़ निर्णय लेना चाहिये।

जनसंघ के अध्यक्ष देवीप्रसाद घोष का हिन्दी-विरोध

दिनांक ४, ५, ६ अप्रैल १९५८ को अम्बाला में भारतीय जनसघ का ६ वाँ वार्षिक अधिवेशन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। अधिवेशन म कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किये गये काश्मीर पजाब एव राष्ट्रभाषा हिन्दी की समस्याओं पर अनेक महानुभावों के भाषण हुए।

मनोनीत अध्यक्ष श्री देवीप्रसाद घोष ने अपने भाषण में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने पर आपत्ति की जिसकी भारी प्रतिक्रिया कार्यकर्ताओ म पाई गई। सुना है कि डाक्टर घोष ने बाद में अपना दृष्टिकोण किन्हीं विशेष कारणों म बदल दिया है।

हम समझते हैं कि जनसघ स्पष्ट रूपेण राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रबल समर्थक एव प्रचारक है वह किसी भी दशा में अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा बनाने की बात को सहन नहीं कर सकता।

यदि डाक्टर घोष ने अपना मत न बदला होता तो उनका जनसघ में टिकना असम्भव था।

प्रतीत होता है कि पिछले दिनों कलकत्ते म जो हिन्दी विरोधी सम्मेलन श्री राजगोपालाचार्य की प्रेरणा से किया गया था उसकी छाया डा० घोष पर पड़ी थी। अच्छा है समय रहते डा० घोष सभल गये नहीं तो उनके पीछे कोई घोष करने वाला तक न रहता।

श्री चन्द्रभानु गुप्त की हार कांग्रेस की हार है

६ अप्रैल को मौदाहा (हमीरपुर) निर्वाचन क्षेत्र म उप निर्वाचन था। उत्तर प्रदेशीय काग्रेस के नेता श्री चन्द्रभानु जी गुप्त जो आम चुनाव में लखनऊ में हार चुके थे दुबारा इस उपचुनाव म खड़े हुए और हार गए। आपके मुकाबिले में श्रीमती रानी राजेन्द्र कुमारी थी। आपने देश में स्वाधीनता सग्रामों में आगे रहकर कार्य किया है और पर्याप्त त्याग किया है। आपके पति दीवान शत्रुघ्नसिंह जी भी बड़े तपस्वी त्यागी देश सेवक हैं। रानी ने गुप्त जी को ७१६० मतों से हराया है। यह हार गुप्त जी की नहीं उत्तर प्रदेश में काग्रेस की भारी पराजय है। और काग्रेस के लिए अन्धकार पूर्ण भविष्य का सूचक है। विजय भी यथार्थ में रानी की नहीं प्रदेश की समस्त काग्रेस विरोधी शक्तियों की सम्मिलित विजय है।

गुप्त जी गुणी कर्मठ एव अत्यन्त कार्य कुशल प्रभावशाली व्यक्ति होते हुए भी चुनाव में हार गए जबकि उनके पीछे प्रदेश काग्रेस की पूरी पूरी शक्ति थी। काग्रेस के नेताओं के लिए गुप्त जी की हार एक कड़ी चेतावनी है।

महात्मा गाधी के नाम की माला जपते रहने से और उन वीरों के बलिदान की गाथा गाते रहने से जिन्होंने कि देश की स्वतन्त्रता के लिए भारी बलिदान किया है, काग्रेस अधिक काल तक जीवित नहीं रह सकती। काग्रेस सगठन में सुधार की चर्चा करने अथवा प्रस्ताव पास करने से

(शेष अगले पृष्ठ पर)

[पिछले पृष्ठ का शेष]

काम चलने वाला नहीं। अवसर वादी काली भेड़ों के चक्कर से कांग्रेस को बचाने के लिए देश के सर्वोच्च नेताओं को कुर्सियां त्याग कर मैदान में आना होगा। हाकिम रहकर जन सेवक एक बार पुनः बनना होगा शासक वर्गों की पूनः छुड़वानी होगी। शासकों का दम्भ आडम्बर मिथ्याभिमान त्याग कर साधारण नागरिकों जैसा जीवन बिताना होगा, नहीं तो कांग्रेस कुछ काल बाद केवल इतिहास की वस्तु रह जावेगी।

देश का विभिन्न विरोधी संगठनाओं का भी परस्पर मिलकर गम्भीरता पूर्वक सबल विरोधी मोर्चा बनाना होगा। संयम का उदाहरण देश के सम्मुख रखना होगा। यदि कांग्रेस ने विरोधी दलों के नेता स्वर्गीय डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी, स्व० आचार्य नरेन्द्र देव जी, आचार्य कृपलानी आदि का विरोध न किया होता तो आज यह दिन देखने को न मिलता। विरोधी दलों के मनों में प्रतिक्रिया को जन्म देने का उत्तरदायित्व भी कांग्रेस पर ही है। यदि विरोधी दलों का सम्मान राष्ट्र के नेताओं ने न किया तो उनको भी भविष्य में प्रबल संयुक्त विरोधी दलों का सामना करना पड़ेगा।

राष्ट्र की रक्षा और नव निर्माण के कार्य में सब दलों एवं वर्गों का सहयोग यदि कांग्रेस और उसकी सरकार चाहती है, तो उसको विरोधी दलों को खरी खोटी सुनाने की आदत सर्वथा त्याग देनी चाहिए। और उनके दृष्टिकोण को सहानुभूति पूर्वक अध्ययन कर अपने साथ लाना होगा।

आर्य शिक्षा संस्थाओं के प्रति हमारा कर्तव्य

उत्तर प्रदेश के अन्दर लगभग ५०० शिक्षा संस्थाएं हैं जिनका सम्बन्ध आर्य समाजों से है। इन संस्थाओं में लगभग एक लाख विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। आर्य समाज ने इन संस्थाओं का निर्माण भारतीय संस्कृति में आस्था रखने वाले, बुद्धि वाद एवं मानवता के एक मात्र प्रचारक वैदिक धर्म के प्रति श्रद्धा रखने वाले, अपने देश के लिए अधिक से अधिक योग्य नागरिक बनाने के लिए किया था। आर्य समाज ने इन संस्थाओं के निर्माण पर करोड़ों रुपया व्यय किया है और भारी शक्ति लगाई है। देखना यह है कि हम इस उद्देश्य में कहां तक सफल हुए हैं। अब तक अंग्रेजी सरकार थी, परिस्थिति सर्वथा हमारे प्रतिकूल थी। किन्तु उस अवस्था में भी प्रतिकूल परिस्थिति से टक्कर लेते हुए हम अपने ध्येय की ओर इन संस्थाओं को कुछ दूर तक लेजा सके। अब अपना देश स्वतन्त्र हो गया है किन्तु परिस्थिति दुर्भाग्य से अभी भी बहुत कुछ प्रतिकूल ही बनी हुई है। किन्तु दुःख इस बात का है कि आर्य समाज ने अपने लक्ष्य को अब उतनी दृढ़ता से नहीं पकड़ा हुआ है जितना पहले पकड़ा हुआ था। हम हवा के साथ अधिक बहने लगे हैं और यह शिक्षा संस्थाएं जो वैदिक संस्कृति के प्रचार में साधन होनी चाहिए थीं, हम उसकी उपेक्षा करने लगे हैं। परिणाम यह हुआ कि यह शिक्षा संस्थाएं साधन न रहकर साध्य बन चली हैं और समाज उनके बोझ से दबने लगा है।

हम इन संस्थाओं को तोड़ने या आर्य समाज के हाथ से निकाल देने के पक्ष में नहीं हैं किन्तु साथ ही इस पक्ष में भी नहीं हैं कि इनको जिस प्रकार भी हो चलते चले जाएं और सर्वथा लक्ष्य भ्रष्ट हो जाय।

आज आवश्यकता इस बात की है कि इन संस्थाओं पर कड़ा नियन्त्रण रखा जाय और इनमें सांस्कृतिक उद्बोधन के कार्य को विशेष रूप से प्रगति दी जाय। आर्य प्रतिनिधि सभा का शिक्षा विभाग इस दिशा में जो कार्य कर रहा है उसको आज रूपान्तरित करने की आवश्यकता है। सभा के पास ऐसे योग्य, अनुभवी शिक्षा विशेषज्ञ होने चाहिए जो निरन्तर इन शिक्षा संस्थाओं में जाकर अपने भाषण और प्रवचनों द्वारा अध्यापक, अध्यापिकाओं, छात्र, छात्राओं को वैदिक संस्कृति की ओर आकर्षित कर सकें और इन पर नियन्त्रण भी रख सकें। सभा को कम से कम ऐसे दो महानुभावों की आवश्यकता है जो कुछ पारिश्रमिक लेकर अपना पूरा समय इस कार्य के लिए दे सकें। जो सज्जन इस राष्ट्र निर्माण के पुण्य कार्य में अपना समय लगाना चाहें, उन्हें निम्न पते पर पत्र व्यवहार करना चाहिए।

शिवदयालु, मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० लखनऊ

साप्ताहिक समाचार समीक्षा

सी० बी० गुप्ता पुनः हारे

उत्तर प्रदेशीय सरकार के एक प्रभावशाली भूतपूर्व कांग्रेसी मन्त्री श्री चन्द्रभानु गुप्त विधान सभा के चुनाव में मौदाहा, हमीरपुर निर्वाचन क्षेत्र से पुनः ७१६० मतों से हार गए। इस बार श्रीमती राजेन्द्र कुमारी, प्रजा समाजवादी ने इन्हें हराया और पिछली बार भी लखनऊ में श्री त्रिलोकी सिंह प्रजासमाजवादी ने ही आपको ११ हजार से अधिक मतों से हराया था। गुप्ता जी को जिताने के लिए राज्य कांग्रेस ने अपनी सारी शक्ति लगा दी थी पर व्यर्थ। इस सम्बन्ध में राजनीतिज्ञों का अनुमान है कि श्री गुप्त का राजनीतिक जीवन अब प्रायः समाप्त हो गया है और कांग्रेस की भी अब जनता की नजर में क्या प्रतिष्ठा रह गई है, इसका भी पता चल गया। अब भी कांग्रेस यदि चेते तो ठीक है अन्यथा इसका बचना अब कठिन है।

पंजाब कांग्रेस की स्थिति

पंजाब कांग्रेस की स्थिति आपसी दलबन्दी के कारण दिन प्रति दिन सोचनीय होती जा रही है। विरोधी पक्ष के लोगों ने मुख्य मन्त्री कैरों के विरुद्ध १ दर्जन ऐसे आरोप लगाये हैं जो सर्वथा अकाट्य हैं और उनकी मांग है कि कैरों को शीघ्र ही हटा दिया जाना चाहिए। आरोपों की जांच करने का आश्वासन श्री ढेबर ने दिया है। इधर समझौते का प्रयास भी जारी है पर कुछ फल निकलने की आशा नहीं है। इधर कैरों बहुत सिर पैर पटक रहे हैं कि उनके विरुद्ध आरोपों की जांच न हो। इससे पता चलता है कि वास्तव में आरोप सही हैं।

शेख अब्दुल्ला की शरारत

शेख अब्दुल्ला की शरारत अब चरम सीमा को भी पार कर रही है। अत्यन्त विश्वस्त सूत्रों का कहना है कि शेख अब्दुल्ला ने लड़ाई के बल पर काश्मीर को पाकिस्तान में मिलाने का अन्तिम निर्णय कर लिया है। इसके लिए वह रजाकारों का पुनः संगठन कर चुका है, अन्य मुसलमानों को तैयार किया है, लगभग ५ लाख रुपये भी इस युद्ध के लिए उसने एकत्रित कर लिया है, अन्यान्य प्रकार की तैयारियां भी कर ली हैं और अनुमान किया जाता है कि ईद के दिन शेख अब्दुल्ला अपनी सेना सहित काश्मीर पर कब्जा करने के लिए धावा बोल देंगे। यह सूचना काश्मीर के मुख्य मन्त्री बख्शी गुलाम मुहम्मद तथा भारत के प्रधान मन्त्री श्री नेहरू के कानों तक पहुंच गई है। अतः अनुमान है कि वे भी अब्दुल्ला के मुकाबले के लिए अवश्य तैयार होंगे। कुछ लोगों का तो यह भी कहना है कि इसके पूर्व ही शेख अब्दुल्ला पुनः गिरफ्तार कर लिए जायेंगे और उनकी तोड़ फोड़ की योजना धरी की धरी रह जायेगी। जो भी हो पर यह तो सत्य है कि शेख अब्दुल्ला की रिहाई करके भारत सरकार ने और काश्मीर सरकार ने यह खतरा जानबूझ कर मोल लिया है।

ख्रुश्चेव की घोषणा से

सोवियत रूस के नए प्रधान मंत्री श्री ख्रुश्चेव (जिन्हें आज विश्व का लौह पुरुष तथा अत्यन्त स्पष्ट भाषी नेता कहा जाता है) के विगत दो तीन घोषणाओं से सारा विश्व आज चिन्तित हो गया है। रूस की सेना पर कम खर्च करने, अणु परीक्षण रोकने, भविष्य में आणविक अस्त्र निर्माण न करने आदि घोषणाओं से अब अन्य शक्तिशाली राष्ट्र चिन्तित हैं क्योंकि वास्तव में वे ऐसा नहीं चाहते। इतना ही नहीं ख्रुश्चेव ने यह भी कहा है कि यदि अमेरिका अन्य राष्ट्रों में से अपनी सेना हटा ले तो रूस भी हंगरी आदि स्थानों से अपनी सेना हटा लेगा। इसके अतिरिक्त बड़े राष्ट्रों के राजदूतों के सम्मेलन के लिए जो शर्तें श्री ख्रुश्चेव ने रखी हैं उससे भी पाश्चात्य बड़े देशों के नेताओं को चिन्ता व्याप रही है। इस प्रकार हमें दीखता है कि प्रधान मंत्री की कुर्सी पर आते ही ख्रुश्चेव ने सारे विश्व में अपनी धाक जमा ली है और आज विश्व उसकी ओर देख रहा है।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

अनमोल बोल

शेक्सपियर ने कहा था···

(१) "मैंने समय को नष्ट किया और अब समय मुझे नष्ट कर रहा है"।

(२) आज का दिन घूमने में खो दो कल भी यही बात होगी, और अधिक सुस्ती आवेगी।

(३) "तुम्हें क्या चाहिए? तुम्हें जो कुछ चाहिए मुस्कराहट से प्राप्त करो तलवार से नहीं"।

(४) "जिस परिश्रम से हमें आनन्द प्राप्त होता है वह हमारी व्याधियों के लिए अमृत तुल्य है"।

इमरसन ने कहा था···

(१) जीवन का सबसे बड़ा पुरस्कार, जीवन की सबसे बड़ी दौलत है, किसी खास बात की ओर प्रवृत्ति लेकर जन्म लेना उसी की पूर्ति में मनुष्य को सुख मिलता है।

(२) जीवन की सबसे बुद्धिमानी की बात एकाग्रता है और सबसे बुरी बात है अपनी शक्तियों को बखेर देना।

(३) यथार्थता और ईमानदारी दोनों साथी बहनें हैं।

—राजेन्द्रकुमार सिंह लखनऊ

मीमांसा दर्शन और उसका साहित्य

[श्री पं० भवानीलाल 'भारतीय' एम०ए० सिद्धान्त वाचस्पति]

षड् दर्शनों में आकार की दृष्टि से मीमांसा सबसे विशालकाय है। इसके १२ अध्यायों में लगभग एक सहस्र अधिकरण हैं और सूत्रों की संख्या तो कई सहस्र है। यह दर्शन वैदिक कर्मकाण्ड का विवेचन करता है अतः इसे 'कर्म मीमांसा' भी कहते हैं। इसके अनुसार कर्मकाण्ड का आचरण करने के पश्चात् ही मनुष्य ब्रह्म विद्या के आगार स्वरूप वेदान्त दर्शन का अवगाहन करने का अधिकारी बनता है, अतः वेदान्त के अध्ययन से पूर्व मीमांसा का अध्ययन आवश्यक समझा गया है। इसी कारण इस दर्शन को पूर्व मीमांसा और वेदान्त को उत्तर मीमांसा भी कहा जाता है। किसी किसी आचार्य ने इसे यज्ञ प्रधान देखकर अध्वर मीमांसा के नाम से भी अभिहित किया है।

अन्य समस्त विद्याओं की भाँति कर्मकाण्ड भी अपने मूलरूप में वेदों में ही उपलब्ध होता है। यजुर्वेदीय पुरुष सूक्त का मंत्र 'यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः तानिधर्माणि प्रथमान्यासन्' प्रसिद्ध ही है जिसमें कहा गया है कि परमात्मा की पूजा विद्वानों ने यज्ञ के द्वारा की। इस प्रकार यज्ञ का सिद्धान्त वेद संहिताओं से ही निसृत हुआ और ब्राह्मणकाल में ऋषियों ने इसे और अधिक विशद किया। कुछ समय पश्चात् यज्ञ संस्था का विकास इतना समृद्ध और जटिल हुआ और यज्ञ विषयक विधि- निषेध समाज में इतने व्यापक होते गये, जिसके परिणाम स्वरूप ब्राह्मण ग्रन्थों के यज्ञ विषयक मत को सुसम्बद्ध और शृंखलाबद्ध रूप में प्रस्तुत किये जाने की आवश्यकता प्रतीत होने लगी। यह कार्य महामुनि जैमिनि के द्वारा सम्पन्न हुआ। उन्होंने मीमांसा दर्शन की रचना की और वैदिक कर्मकाण्ड को युक्ति प्रमाणानुकूल व्यवस्थित रूप देकर उसे दर्शन का सम्मान्य पद प्रदान किया।

मीमांसा दर्शन के आदि आचार्य जैमिनि कहे जाते हैं, यद्यपि सूत्रों में कुछ अन्य आचार्यों के मतों का भी उल्लेख हुआ है जो स्पष्ट ही जैमिनि के पूर्व के थे। इनमें आठ प्रमुख हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं—बादरायण, बादरि, ऐतिशायन, कार्ष्णाजिनि, लबुकायन, कामुकायन, आत्रेय और आलेखन। दुःख है कि सामग्री के अभाव में इनके विषय में हम कुछ भी नहीं जानते।

जैमिनि के विषय में यह प्रसिद्ध है कि वे महर्षि कृष्ण द्वैपायन, अपर नाम बादरायण व्यास के शिष्य थे। ऐतिहासिक दृष्टि से इस सम्बन्ध में अधिकारपूर्वक कुछ भी नहीं कहा जा सकता। जिस प्रकार वेदान्त सूत्रों में जैमिनि के मत का उल्लेख हुआ है उसी प्रकार मीमांसा में भी बादरायण के मत का उल्लेख है। हिन्दी में मीमांसा दर्शन पर प्रथम ग्रन्थ की रचना करने वाले पं० मण्डन मिश्र शास्त्री ने अपने ग्रन्थ के चतुर्थ अध्याय में यह बलपूर्वक प्रतिपादित किया है कि जैमिनि व्यास के पूर्ववर्ती हैं और उनके व्यास शिष्य होने की उक्ति भी किंवदन्ती से अधिक महत्व नहीं रखती। प्रचलित परम्परा के अनुसार जैमिनि का समय पर्याप्त प्राचीन है।

जैमिनि के सूत्रों पर सर्व प्रथम भाष्य रचना किस आचार्य के द्वारा लिखी गई यह संदिग्ध है। ऋषि दयानन्द ने अपनी पठन पाठन प्रणाली में मीमांसा दर्शन पर जिस टीका के पढ़ने का आदेश दिया है वह सम्प्रति उपलब्ध नहीं है। वर्तमान समय में मीमांसा पर सबसे प्राचीन उपलब्ध भाष्य शबर स्वामी का है। उपवर्ष नामक किसी आचार्य द्वारा लिखी मीमांसा वृत्ति का भी उल्लेख मिलता है।

स्पष्ट है कि अन्य दर्शनों की तरह मीमांसा दर्शन की व्याख्या के ऋषि कृत ग्रन्थों का पता नहीं लगता। शबर स्वामी और उनके निकटवर्ती मीमांसाचार्यों की रचनायें नितान्त आधुनिक हैं जिनमें मीमांसा दर्शन अपने मूल स्वरूप को छोड़कर परिवर्तित रूप धारण कर लेता है। शबर स्वामी का भाष्य भी एक नितान्त आधुनिक रचना है। यद्यपि भाषा की दृष्टि से शबर भी पतञ्जलि और शंकर की तरह परिष्कृत और धारा प्रवाह गद्य लिखने हैं, परन्तु केवल भाषा और शैली में ही लेखक के वैदुष्य का ज्ञान नहीं होता। विचारों की दृष्टि से शबर स्वामी मीमांसा के आधुनिक स्वरूप का ही उद्घाटन करते हैं, जहाँ यह दर्शन अपनी मूल वैदिक भित्ति को छोड़कर स्वतन्त्र रूप धारण कर लेता है।

शबर ने मीमांसा दर्शन को अनीश्वरवादी बनाया। सम्भव है बौद्ध और जैन तार्किकों से साम्मुख्य होने के कारण मीमांसकों ने अपने दर्शन को निरीश्वरवादी बना देने में ही अपना हित देखा हो, पर यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि जैन, बौद्ध और चार्वाक जैसी नास्तिक विचारधाराओं का उन्मूलन कर सामान्य वर्ग को वैदिक धर्म के प्रति आस्थावान बनाने में मीमांसकों ने अनुपम सूझ बूझ का परिचय दिया था। यही कारण है कि शंकर और कुमारिल के विचारों से शत प्रतिशत सहमति न रखते हुए भी वैदिक धर्म के प्रति की गई उनकी सेवाओं के कारण प्रत्येक व्यक्ति उनका कृतज्ञ रहेगा।

शबर स्वामी के पश्चात् मीमांसा दर्शन को कुमारिल भट्ट जैसा निस्वार्थ सेवक मिला। कुमारिल के विषय में हम इतना ही जानते हैं कि वे शंकर के समकालीन थे और अपने बौद्ध गुरु से प्रच्छन्न बौद्ध बन कर विद्या सीखने की ग्लानि के प्रायश्चित्त रूप में वे भस्म हो गये थे। शंकर इनके पास शास्त्रार्थ के लिए उस समय पहुंचे जब वे अग्नि में कूदने के लिए तैयार ही थे। किसी वेद भक्त राजकुमारी की वेदोद्धार विषयक मानसिक चिन्ता को दूर करने के लिए इनकी घोषणा प्रसिद्ध ही है। राजकुमारी के यह कहने पर कि—'किं करोमि क्व गच्छामि. को वेदानुद्धरिष्यति' कुमारिल ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा था—"मा विषीद वरारोहे भट्टाचार्यो ऽस्ति भूतले।" कुमारिल ने मीमांसा श्लोक वर्तिक तन्त्र वर्तिक और टुपटीका नामक तीन ग्रन्थ लिखे हैं जो शाबर भाष्य की ही एक प्रकार से विस्तृत और मौलिक व्याख्या करते हैं।

कुमारिल के पश्चात् मीमांसा के आचार्यों में मण्डन मिश्र की गणना होती है। 'शंकर दिग्विजय' में शंकर के मण्डन से शास्त्रार्थ करने और उसमें मण्डन के पराजित होने के पश्चात् शंकर का मण्डन की विदुषी पत्नी भारती से शास्त्रार्थ आदि के विस्तृत और मनोरंजक उल्लेख मिलते हैं। यह भी कहा जाता है कि शांकर मत को स्वीकार कर लेने के उपरान्त मण्डन मिश्र सन्यासी बनकर पर सेवा में सन्नद्ध हुये। सुरेश्वर के नाम से बृहदारण्यक वर्तिक, नैष्कर्म्य सिद्धि आदि वेदान्त ग्रन्थ लिखने से पूर्व मण्डन के रूप में वे विधि विवेक, भावना विवेक, स्फोट सिद्धि आदि मीमांसा विषयक ग्रन्थ लिख चुके थे। मण्डन के पश्चात् उम्बेक नामक किसी आचार्य ने कुमारिल और मण्डन की कृतियों पर अपनी व्याख्यायें लिखीं। कुछ उल्लेखों के आधार पर नाटककार भवभूति और मीमांसक उम्बेक को अभिन्न समझा है।

लेखक के विचारों का उत्तरदायित्व पत्र पर नहीं है। —सम्पादक]

मिथिला के प्रख्यात दार्शनिक लेखक वाचस्पति मिश्र ने अन्यान्य दर्शनों की तरह मीमांसा पर भी 'न्याय कणिका' नामक ग्रन्थ लिखा है जो मण्डन मिश्र के विधि विवेक की व्याख्या के रूप में है। इसी प्रकार पार्थ सारथि मिश्र भी मीमांसा का प्रसिद्ध लेखक था। उसने कुमारिल के वर्तिकों की व्याख्या के रूप में न्याय रत्न माला और तन्त्र रत्न नामक दो ग्रन्थ लिखे। शास्त्र दीपिका और न्याय रत्नाकर उसकी स्वतन्त्र रचनायें है। इस प्रकार मीमांसा के प्रमुख लेखकों और उनके साहित्य का हमने अत्यन्त संक्षिप्त उल्लेख किया है। मध्यकाल में मिथिला प्रदेश के अनेक आचार्यों ने मौलिक साहित्य की रचना कर इस दर्शन के साहित्य भण्डार की अभिवृद्धि की। यद्यपि यह पूर्व ही कहा जा चुका है कि मीमांसा का यह नवीन विकास इस दर्शन की प्राचीन विचार सरणि से सर्वथा विच्छिन्न हो चुका था। कालान्तर में प्रभाकर मिश्र ने मीमांसा की विचारधारा में कुमारिल से कई बातों में अपना विरोध प्रदर्शित करते हुए पृथक सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया जो प्रभाकर मत या गुरुमत के नाम से प्रसिद्ध हुआ। प्रभाकर कुमारिल का ही शिष्य था। उसने शाबर भाष्य पर दो व्याख्यायें प्रस्तुत की हैं—लघ्वी और बृहती। जैसा कि नाम से ही सूचित होता है लघ्वी छोटी बृहती बड़ी है। प्रभाकर मत कुमारिल के मत के तुल्य प्रसिद्धि और लोकप्रियता प्राप्त नहीं कर सका। इसका कारण यही है कि उसे मण्डन और वाचस्पति जैसे विशद व्याख्याकार नहीं मिले। मध्यकालीन लेखकों के कारण मीमांसा भी अन्य दर्शनों की भांति अपना आर्ष रूप खो बैठा।

कन्या की आवश्यकता

मेरे मित्र आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य भद्रसेन जी के सुपुत्र चि० वेदरत्न जी के विवाह के लिए एक स्वस्थ, सुन्दर, सुशील, सुशिक्षित तथा गृह कार्य में दक्ष लगभग १६ वर्षीया आर्य कन्या की आवश्यकता है। वर सुशिक्षित तथा बारोजगार है। विवाह वैदिक रीत्यनुसार जन्म गत जाति का विचार न कर पूर्णतः गुण कर्मानुसार होगा। पत्र-व्यवहार निम्न पते पर करें। डा० सूर्यदेव शर्मा एम०ए०
आर्य विद्या परिषद, अजमेर

'भारतीय जीवन में गौ की उपयोगिता'

(आयुर्वेदाचार्य डा०सत्यनारायण ए०एम०एस० प्राध्यापक गुरु० वि० वृन्दावन)

"कृषि गोरक्ष्य वाणिज्यं वैश्य कर्मस्वभावजम्" स्मृति के उपर्युक्त वाक्यानुकूल प्रत्येक वैश्यवृत्त्यावलम्बी को ही नहीं, अपितु हर आबाल वृद्ध के लिए अपने स्वास्थ्य के परिपोषणार्थ व बीमारियों के आक्रमण से रक्षणार्थ गायों के पालन करने की आवश्यकता है। भारत की प्राचीन संस्कृति परम्परा में भारतीय प्रजा, गो, ब्राह्मण, वट वृक्ष, पीपल वृक्ष आदि को सम्मान की दृष्टि से देखती आई है और आज भी वही परम्परा किसी अंश में अन्ध-विश्वास में परिवर्तित हो जल चढ़ाना, परिक्रमा करना आदि के विकृतरूप में दीखती है। पर इसमें है अवश्य कुछ वैज्ञानिक तथ्य भी, जिसके कारण मुगलों के अत्याचार और अङ्गरेजों के संस्कृति के भ्रष्टीकरण के बावजूद भी यह जीति जागती स्थिति में विद्यमान है।

'ब्राह्मणाश्चैव गावश्च,
कुलमेकं द्विधा स्मृतम्।
एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति,
हविरन्यत्र तिष्ठति॥
यस्यैकपि. गृहे,
नास्ति धेनुर्वत्सानुचारिणी।
मङ्गलानि कुतस्तस्य,
कुतस्तस्य तमः क्षयः॥
यत्र वेदध्वनिध्वान्तं,
यत्र गोभिरलंकृतम्।
यत्र बालैः परिवृतं,
श्मशानमिव तत् गृहम्॥

भावार्थ—एक कुल की दो शाखायें ब्राह्मण और गौ हैं। जहां प्रथम में मन्त्रों का अभिनिवास है तो द्वितीय में घृतक का। जिसके पास बछड़े सहित याने दूध देने वाली गाय नहीं उसकी मंगल कामनायें छोड़कर दूर चली जाती हैं और वह निरन्तर अन्धकार में पड़ा रहता है। जिस घर में वेदध्वनि नहीं गूंजती, सफाई गोबर से नहीं होती और बालकों के किलनाद से जो गुंजायमान नहीं, वह श्मशानवत् परित्याज्य है।

प्राचीनकाल में वर्णव्यवस्था गुण-कर्मानुकूल 'ब्रह्मजानातीति ब्राह्मणः' के अनुकूल थी जो कि अपने समय का अधिकांश भाग स्वाध्याय, अध्यापन यज्ञादिक कर्म तथा तपस्यामय परोपकारी जीवन व्यतीत करते हुये समस्त विश्व के कल्याण की अभिकामना करते थे। कहा है वह ब्रह्मकुल जिस पर कविवर बाण को गर्व है और उनकी ओजस्विनी वाणी प्रस्फुटित हो उठती है एकलय में—

'अगुगृहेऽभ्यस्त समस्तवाङ्मयैः,
सांसारिकैः पंजरवर्त्तिभिः शुकैः।
निगृह्यमाणाः बटवः पदे पदे,
यजूंषि सामानि च यस्यशंकिताः॥

भावार्थ—'जिनके घरों में ब्रह्मचारी लोग ऋक यजु और साम का मधुर गान करते थे पर उन्हें सदा डर बनी रहती थी, क्योंकि पिंजरे में बैठे हुये, सम्मत वेदों के अभ्यासी तोता मैना तनिक सी अशुद्धि पर पद २ पर टोक देते थे। पर आज समय पलट गया है। वेदपरायण का महत्व जाता रहा है। संस्कृत ऐसी प्राणमयी, विज्ञान मयी भाषा 'गड़रियों के गीत' तथा 'मृतभाषा (Dead language) बता अपने गौरवमय साहित्य से हम किस प्रकार पराङ्मुख होते चले जा रहे हैं, यह विज्ञ पुरुष से अविदित नहीं, जिसका एक मात्र कारण हमारी पाश्चात्य सभ्यता की ओर अन्धानुकरणवत् प्रवृत्ति है। पर विषयान्तर के भय से इसे यहीं छोड़ अभीप्सित विषय पर अपने विचारों को प्रिय पाठकों के सन्मुख रखता हूं। आशा है भारत की प्राचीन संस्कृति की रक्षा तथा गौरवमय इतिहास का अवलोकन करते हुए विज्ञान द्वारा पूर्णतथ्यों की अवहेलना न करने का व्रत धारण कर भावी सन्तति के सुखाय-भारतीय जीवन में ही नहीं, अपितु समस्त विश्व के प्रांगण में 'गौ की उपयोगिता' को समझ गौ की रक्षा ही नहीं अपितु समस्त प्रानवरों की रक्षा का दृढ़ व्रत धारण करेंगे।

१ दूध—गायों से समाज को प्रथम लाभ के रूप में यही मिला करता है जिससे इसके इतर मक्खन, दधि, घृतादि अन्य परिणमन होते हैं, इस भूतल पर अवतरित होते ही नवजात शिशु की जीवन यात्रा का श्री गणेश भी इसी की पीयूष धारा से कार्पास तन्तुओं द्वारा कराया जाता है और रुग्णावस्था तथा जीवन की इहलीला की समाप्ति भी इसी के स्तन्य से होती है, जो एक कठोर सत्य है।

स्वास्थ्य विज्ञान की दृष्टि से यदि हम वैज्ञानिक विवेचना करें तो धरित्री तल पर जितने भी भोज्यपदार्थ हैं उन सबमें यही एकमात्र ऐसा पदार्थ है जिसमें शरीर के पोषण के लिये आवश्यक प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और वासा, विटामिन तथा खनिज द्रव्यों में Calcium Ng आदि समस्त आवश्यक अवयव यथोचित मात्रा में विद्यमान हैं। मोटे तौर से इसे इस प्रकार जानिये कि हम भोजन में रोटी चावल दाल, शाक, घी तैलादि जिन भोज्य-पदार्थों का सेवन करते हैं उनमें रोटी चावल द्वारा तो शक्ति उत्पन्न करने वाला कार्बोहाइड्रेट, दाल द्वारा प्रोटीन और वासा की प्राप्ति घृत तैल द्वारा, विटामिन्स तथा खनिज द्रव्य मिला करते हैं। पर किसी भी भोज्य द्रव्यों में जीवन के उपरोक्त कथित समस्त आवश्यक तत्वों का सन्निवेश नहीं जिसे पूर्ण भोजन कहा जा सके। इसका परीक्षण आजकल के वैज्ञानिक अनुसन्धानशालाओं में क्रियात्मक रूपेण चूहों या खरगोशों पर प्रत्येक भोज्य पदार्थों को अलग २ रूप से लेकर देखा गया है कि चना, जौ, गेहूं, शाक आदि पर जो चूहे एकमात्र अवलम्बित रहे वे कुछ समय तक यथोचित मात्रा में वृद्धि को प्राप्त हुये पर बाद में किन्हीं के बाल झड़ने लगे व किसी को फुन्सियां निकल आईं आदि पर जो चूहा या खरगोश एकमात्र दूध पर अवलम्बित था, वह सब प्रकार से यथेष्ट वृद्धि को प्राप्त हो उचित समय (पूर्णायु) पर कालकवलित हुआ। इस प्रकार यह निर्विवाद एक कठोर सत्य है कि समस्त विश्व के उपलब्ध भोज्य पदार्थों में 'दूध ही एकमात्र ऐसा भोज्य पदार्थ है जिसमें पूर्ण भोजन से प्राप्त होने वाले समस्त आवश्यक पौष्टिक तत्व एक साथ विद्यमान हैं। अतएव ऐसी अलभ्य और सर्वगुण सम्पन्न वस्तु के विषय में Materia Medica के रचयिता Dr. Ghosh अपनी पुस्तक में लिखते हैं।

"Milk is specially rich in Calcium in a readily assimilable form and Calcium must be taken daily ....One litre (i. e. ≤१=एक सेर छटाँक) of cows fresh Milk contains 1 gm of Calcium."

याने दूध के अन्दर Cl या खरिक की अधिकता रहती है और इसका सेवन करते ही आसानी के साथ इसका पाचन होकर यह शरीर के अन्दर रस रक्त मांस मेदास्थि मज्जा शुक्रादि धातुओं में जिसकी कमी होती है तत्क्षण उसकी यथोचित पूर्ति शीघ्रता से करता है और इस प्रकार शरीर को दृढ़ करने में प्रमुख भाग लेता है। प्रत्येक को अपनी जीवन यात्रा समीचीन रूप से चलाने के लिए १ ग्राम कैल्शियम आवश्यक है जिसकी पूर्ति आसानी से एक सेर दो छटाँक की मात्रा में गाय के ताजे दूध द्वारा भली भाँति सम्पन्न हो जाती है संक्षेपतः प्रत्येक नरनारी को कम से कम अपने शरीर को स्वस्थ एवं सबल रखने के लिए ≤१ दूध अवश्य सेवन करना चाहिए। स्त्रियों को सगर्भावस्था और स्तनपायी (During pregnancy and lactation) अवस्था में इसकी मात्रा और बढ़ा दी जानी चाहिए।

इसी प्रकार यक्ष्माजन्य खून के रोकने में बकरी का दूध किस प्रकार आश्चर्य जनक कार्य करता है, देखिए बकरी के शरीर में यक्ष्मा के जीवाणुओं को घातक मात्रा (जिससे वह मर जावे) में यदि Injection द्वारा प्रविष्ट कर दिया जावे तो भी हम देखते हैं कि वह स्वस्थ ही रहती है और उसकी जन्मजात स्वाभाविक (Natural Immunity) क्षमता के कारण प्रविष्ट T. B. के जीवाणु उसके शरीर में जा स्वयं समाप्त हो जाते हैं पर बकरी का कुछ नहीं बिगाड़ पाते। ऐसी ही स्वाभाविक क्षमता मुर्गों व कबूतरों आदि पक्षियों के अन्दर Tetanus (धनुषटंकार) Paralysis (लकवा या पक्षाघात) आदि वात-व्याधिजन्य रोगों के लिये हुआ करता है तभी तो वैद्यगण यक्ष्मा से पीड़ित होने पर।

"पयश्छाग·······छाग सर्पिः सशर्करम्। छागप सेवा शयनं छाग-मध्ये तु यक्ष्मनुत्" को उपदेश देते हुये अजादुग्ध सेवन का विधान बतलाते हैं और वातव्याधिजन्य व्याधियों eg. Hemiplegia (अर्धांगवात) Facial Paralysis (अर्दित) Sciatice (गृध्रसी) Telam (धनुर्वात) आदि व्याधियों में कबूतर मुर्गों आदि पक्षियों के पंखों की हवा के व्याधि परिमुक्ति में एक विशेष सहायता मिलती है, ऐसा सभी निर्द्वन्द्व हो स्वीकार करते हैं।

आज भारत का ८०प्रति० घर यक्ष्मा, मलेरिया, फीलपांव, कालाजार आदि बीमारियों से पीड़ित हो उत्सुकतापूर्ण नेत्रों से आर्त्तमाणार्थ वैद्यों व डाक्टरों की ओर निहार रहा है पर मेरी यह अटल व्यक्तिगत धारणा है कि हम जब तलक स्वान्तः सुखाय मांस व अण्डों की प्राप्ति के हेतु गाय, बकरी, कबूतर, मुर्गों का वध करना न छोड़ेंगे तब तलक हमारे सामाजिक उन्नति सम्बन्धी सब प्रकार के प्रयास मृग-मरीचिकावत् व्यर्थ सिद्ध होंगे जिसका वैज्ञानिक रीति से समाधान निम्न पंक्तियों में संकलित है।

(क) साधारणतया अण्डे, मांसादि की प्राप्त कबूतरों या मुर्गों, बकरी,

[शेष पृष्ठ ११ पर]

धधकता पंजाब (६)

!! एकांकी नाटक !!

! छठा दृश्य !

(लेखक- -श्री रणजीतसिंह वैद्य प्रधान, जिला आर्य उपसभा पीलीभीत)

[गतांक से आगे]

स्थान-सन्तापसिंह का बंगला

[सन्तापसिंह टहल रहे हैं]

सन्ताप०-हे भगवान ! मैंने तो कहा था कि इस आन्दोलन को चुटकियों में उड़ा दूंगा दो दिन मे मसल दूंगा यह तो शहद की मक्खियों की तरह मुझे चिपट गया है। हा ! मैंने ही इन्हें ढेला मारकर छेड़ा है। ज्यों ज्यों दमन करता हूं त्यों २ आग की तरह भड़कता है। मैंने बहु अकबरपुर में आजादी के दिन जब देश के कोने-कोने में आजादी का जशन मनाया जा रहा था-सितम ढाया-बच्चों को पालनों से उठाकर जमीन पर पटका-बुड्ढे जवान औरतों को पकड़वा पकड़वा कर पिटवाया पर कोई न डरा फिरोजपुर जेल में अखलाकी कैदियों और सिपाहियों से चार-पाँच सौ सत्याग्रहियों को लाठियों से, लोहे की छड़ों से, चारपाइयों की पाटियों से, जलती हुई लकड़ियों से पिटवाकर किसी को अन्धा किसी को लूला किसी को अपायज करवा दिया यहाँ तक कि सुमेरसिंह को मौत के घाट उतार दिया तब सो इन आर्यों को कोई दहशत नहीं। देश के कोने-कोने से हर प्रान्त हर जिले से यहाँ तक कि नगर-नगर ग्राम-ग्राम से जत्थो पर जत्थे रोजाना आते है। इन जत्थों ने तो मेरी नींद हराम कर दी है। इस पर भी मास्टर सितारासिंह यह ही कहते हैं कि पंजाब सरकार सत्याग्रहियों से नरम बर्ताव कर रही है यह तंग-दिल सितारासिंह न जाने क्या चाहता है।

[दरबान का प्रवेश]

दरबान-मास्टर सितारासिंह जी आ रहे हैं। (सितारासिंह का प्रवेश)

सन्ताप०—(आगे बढ़कर) आइये आइये मास्टर जी शत श्री अकाल।

सितारा०—शत श्री अकाल। कहो सन्तापसिंह किस विचार म हो?

सन्ताप०—मास्टर जी अभी आप के ही बारे में सोच रहा था, और इस आन्दोलन के बाबत विचार रहा था।

सितारा०—सो क्या ?

सन्ताप०—सरदार जी मैं तो इस आन्दोलन से तंग आ गया हूं। खाना पीना उठना-बैठना, सोना-जागना सब हराम हो गया है। मैंने सख्ती से सख्ती करके देख ली यहां तक कि फिरोजपुर जेल में जब कि जेल के अन्दर कैदियों के हिफाजत का कुल जिम्मेदारी शासन पर होता है उसमें लाठी चार्ज कराकर सैकड़ों सत्याग्रहियों को अपाहिज कर दिया एक आदमी की जान तक ले ली इस पर भी इन आन्दोलन कारियों ने कुछ भेंप न खाकर आन्दोलन को और तेज कर दिया मुल्क के तमाम हिस्सों से रोजाना जत्थों पर जत्थे आते है मेरा लाठी चार्ज और दीगर सब सख्तियां सब बेकार हो रही है इस पर आप कहते हैं कि यह सरकार इन आन्दोलन कारियों के साथ नर्मी का बर्ताव कर रही है।

सितारा०—अरे ! तू इन हुल्लड़-बाजों से इतनी दहशत खाता है जो तेरी नींद हराम हो रही है इसी बूते पर पन्थ की खिदमत करेगा अरे ! मैं तो कहता हूं कि पन्थ के खातिर देश भी कुर्बान कर दूंगा।

सन्तापसिंह—मुल्क में इस तरह गदर मच जायेगा।

सितारा०—मच जाने दे गदर। मैं एक राई भी उस मुआयदे से अलग नहीं हूंगा जो मुआयदा मेरा माणिक-लाल से और उसकी सरकार से हुआ है।

सन्ताप०—अजी ! उसी माणिक लाल सरकार ने मेरे सिर पर डा० भार्गव को लाकर बैठाल दिया है सुना जाता है डा० भार्गव आप से और घनश्यामसिंह से मिलकर तस्फिया करावेंगे।

सितारा०—अरे ! मैं क्या कोई कच्ची गोली खाये हूं ? मुझसे भार्गव से क्या वास्ता—मैं उसकी क्या सुनने का जो तस्फिया करावेगा। अरे ! "डन्डा पीर है बिगाड़िया तिगाड़ियाँ दा' इन हुल्लड़बाजों का इलाज डन्डा है डन्डा।

सन्ताप०—डन्डा इलाज तो मैं करके देख चुका। कई बार लाठी चार्ज कराया यहाँ तक कि औरतों के जत्थे पर लाठी चार्ज हुआ बच्चों को गोदी से छीन-छान करके फेंका पर काबू में नहीं आये ज्यों ज्यों आन्दोलन को अधिक दबाता हू त्यों त्यों गेंद की तरह ऊपर उछलता है।

सितारा०—माणिक लाल तो जगह जगह इसे लेक्चरों में गालियाँ देते हैं। तुमने अपनी ओर से क्या किया ?

सन्ताप०—मैंने विधान सभा के सब सभासदों को सख्त ताकीद करदी है कि कुल पंजाब में घूमकर यह प्रोपगण्डा करें कि यह आन्दोलन महजबेहूदा और तास्सबाना है हिन्दी पर कहीं रुकावट नहीं। देहली में आकर उल्टा सीधा लोकसभा के सदस्यों को सुनाकर उनसे अपील निकलवाई कि यह आन्दोलनकारी महज अपने स्वार्थों के सिद्ध करने के लिए यह आन्दोलन चला रहे हैं हिन्दी की इससे कोई भलाई नहीं होगी हिंदी साहित्य सम्मेलन के खुशामदपसन्द कवियों और लेखकों से इसके खिलाफ अपील निकलवाई पर कोई असर नहीं ज्यों यह अपीलें निकलीं आन्दोलन ने और तेजी पकड़ी यहां तक कि अब तालबईलमों ने शोरवर्षा किया है मैंने उनके अगुओं को जेल में डाल दिया सख्ती से पिटवाया पर कोई असर नहीं।

सितारा सिंह—तुमने इसके पक्ष मे बोलने वाले अहलकारों और विधान सभाइयों को हुकूमत से निकाला या नहीं ?

सन्ताप०—अजी जो भी खटकते खटकते अहलकार या कौन्सिल के मेम्बर थे उन पर झूठे मुकद्दमे चला कर नजरबन्द कर दिया अरे। और तो और सिंचाई मन्त्री प्रो० शेरसिंह जिसने मुझे मुख्य मन्त्री बनाने में इमदाद की थी वह डेढ़ सौ आदमियों सहित जत्था लेकर सत्याग्रह करने को यहाँ आने को था मैंने उसे देहली में ही उसके साथियों सहित गिरफ्तार करके उसे जेल की हवा खिलादी। मैं तो दंग रह गया जब सुमेर सिंह का भाई (जिस सुमेरसिंह की हत्या हमने जेल में कराई थी) मेहर सिंह जत्था लेकर आन्दोलन में कूद पड़ा। सरदार जी ! इनकी आत्माओं में सत्यता का बल है यह दहशत नहीं खाते इन पर कोई तमद्दुत काम नहीं करता इसलिए आप हठ छोड़ कर दोस्ती का हाथ बढ़ाइये ताकि हिन्दू और सिक्ख दोनों भाई चारे से रहकर इस मुल्क की तरक्की में सही सही लगें। गुरुमुखी भाषा को गुरुओं की पवित्र वाणी मानकर गुरुद्वारों में ही रखिए।

सितारा०—(बीभत्स हंसी हंसकर) मैं और दोस्ती का हाथ इन आर्य समाजियों से अरे पागल ! पंजाब में या तो सिक्ख हो रहेंगे या आर्य समाजी, मैं चैन से नहीं रहने दूंगा। तू जिन्ना को क्या भूल गया जिसने पाकिस्तान हासिल करने के लिए हिन्दू और मुस्लिमों की खून की नदियाँ बहवादीं।

सन्ताप०—आपके इस हठीलेपन से सिक्खों को ही ज्यादा नुक्सान है।

सितारा०—सो क्यों ?

सन्ताप०—अब तक हर एक हिंदू गुरुओं पर श्रद्धा और भक्ति रखकर अपने हर एक घर से एक नौजवान सिंह बनाने के लिए इसलिए देता था क्योंकि हिन्दू सिक्खों को अपने से अलग न मानकर सिक्खों को अपना अंग अपना रक्षक मानता था आप ऐसी तास्सबाना बदबू फैलायेंगे तो हिन्दुओं मे भी नफरत वर्षा होगी वह क्या यह न कहेंगे कि यह बाड़ ही खेत को उजाड़ने लगी।

सितारा०—अरे ! तेरा क्या शिर फिर गया है ? क्या हुकूमत की कुर्सी पर बैठ कर हुकूमत की बू दिमाग में घुस गई है ?

सन्ताप०—नहीं सरदार जो हुकूमत की बू की बात नहीं जो माणिक लाल इस आन्दोलन को बेहूदा, बदतमीज आदि सैकड़ों गालियाँ देते हैं वही कहते हैं कि यह आन्दोलन अब दमन से काबू में नहीं आने का इसे गांधी की शिक्षा द्वारा हृदय परिवर्तन द्वारा काबू में लाना चाहिए इसलिए मैं सोचता हूं कि यह हृदय परिवर्तन बिना आपके हृदय परिवर्तन के नहीं हो सकता।

सितारा०—अरे मूर्ख ! तुझ में यह रहमदिली कहाँ से आई ? क्या तुझे हमने इसीलिए मुख्य मन्त्री बनाया था ? क्या इसी बूते पर तूने हमें पन्थ की खिदमत का भरोसा दिया था ?

सन्ताप०—मैं पन्थ की खिदमत का गुलाम हूं लेकिन क्या करूं हरिवल्लभ पन्त ने मुझे सब कुछ छोड़ने का हुक्म दे दिया है।

सितारा सिंह—(चौंक कर) छोड़ने का हुक्म दे दिया है। सच, पन्त की यह हिम्मत कि जो वह इन हुल्लड़बाजों की तरफदारी पर उतर आया है ? देखूंगा मैं इसको भी...... कुछ सोचकर फतहगढ़ साहब में एक दीवान खास लगाकर अकालियों को इकट्ठा कर एक शहीदी जत्था तैयार करूं और माणिक लाल को मोर्चा लगाने की एक धमकी दूं तो सब ठीक हो जायेगा। शहीदी जत्थे और मोर्चे की सुनकर माणिक लाल के होश फाक्ता होंगे और उन्हें मजबूर होकर वह मानना होगा जो मैं चाहता हूं। (हाथ पर घूसा मारते हुए) अरे ! माणिक लाल इसी पर तुम कहते थे कि मेरी इज्जत तुम्हारी इज्जत है और तुम्हारी इज्जत मेरी इज्जत है। खून खच्चर करा दूंगा, तूफान मचवा दूंगा अमरीका से सहायता मंगाऊँगा मैं दूसरा जिन्ना हूं जिन्ना, मुल्क चाहे गारत होवे पर मेरी बात बनी रहे।

जाता है।　　　　[परदा गिरता है]

[समाप्त]

:—★—:

भारत-विभाजन—एक कुचक्र

[डा०सूर्यदेव प्राणाचार्य, जीवन शक्ति फार्मेसी, आर्यसमाज मार्ग, गोरखपुर]

इस लेख का प्रथम भाग दि० १६ मार्च ५८ के अङ्क में "भारतीय स्वराज्य के प्रयत्न" शीर्षक से छप चुका है। लेख के शेष भाग का प्रकाशन पुनः प्रारम्भ किया जा रहा है। - सम्पादक]

२० वीं सदी के प्रारम्भ में भारत पर चिरकाल तक राजनैतिक और दासता बनाये रखने के लिए अङ्गरेजों ने एक चाल चली थी उन्होंने मुस्लिम सम्प्रदायवाद को हिन्दुओं के विरुद्ध भड़काया और यह कहा कि हिन्दू बहुमत से मुस्लिम अल्पमत को सदा सावधान रहना चाहिए क्योंकि वे लोग अल्पमत को अपना दास बना कर भारत में रखना चाहते है। यह जादू काम कर गया। मिस्टर जिन्ना के नेतृत्व में यह कपट वृक्ष खूब पनपा देश भर में हिन्दू मुस्लिम दंगे हुये। दुर्भाग्य से गांधी जी के नेतृत्व में, कांग्रेस ने, जो इस समय देश की एकमात्र ही लड़ाई लड़ने वाला सब विचार के भारतीय संस्था थी यह धारणा बना ली था कि बिना मुसलमानो के सहयोग के भारत स्वराज्य नहीं प्राप्त कर सकता है। गांधी जी ने कांग्रेस के सर्वेसर्वा के रूप में मुस्लिमलीग को प्रसन्न करने में कुछ भी उठा न रखा उन्होंने गोलमेज सम्मेलन के समय लन्दन में मिस्टर जिन्ना को कोरा कागज तक (Blank Cheque) दे डाला। उन्होंने कहा वे जो कुछ चाहें मुसलमानों के संरक्षण के लिए लिख लें फिर भी कोई समझौता नहीं हुआ। इसके परिणाम स्वरूप ब्रिटिश प्रधान मन्त्री ने भारत पर अपना पृथक निर्वाचन का निर्णय (Verdict of separate Election) लाद दिया। इस समय भी महात्मा जी से यह निर्णय करवाया Neither we accept it nor reject.

अर्थात् न हम इस पृथक निर्वाचन को स्वीकार करते न अस्वीकार। कांग्रेस संस्था की यह एक हिमालय के सदृश्य बड़ी गलती थी। यहीं पर कुशल ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने पाकिस्तान का विष वृक्ष बो दिया। १९३५, ३६ में इसी निर्णय के अनुसार चुनाव हुए। मुस्लिमलीग ने मस्जिदों में कुरान की कसमें खिला कर हिन्दू काफिरों को मत न देने के लिए मुस्लिम मतदाताओं की साम्प्रदायिक भावना को उभाड़ा इनका प्रयत्न यह था कि जो कांग्रेस अपने को हिन्दू मुसलमान दोनों की संस्था कहता है उसको केवल हिंदुओं की संस्था इस निर्वाचन के द्वारा सिद्ध किया जावे। मुसलमानों के इस प्रयत्न में प्रच्छन्न रूप से ब्रिटिश शासकों ने सहायता दी। इस प्रकार के साम्प्रदायिक दुर्भावना को रोकने के लिए तत्काल न शासकों ने कोई प्रयत्न नहीं किया अपितु बढ़ावा दिया। परिणामतः हिंदुओं के प्रायः शतप्रतिशत वोट कांग्रेस को मिले और मुसलमान प्रत्याशियों को मुसलमानों के सब मत मिले। यहां तक कि श्री किदवई को जो मुस्लिम सम्प्रदाय के होते हुए भी कांग्रेस के साथ थे उन्हें कांग्रेस साधारण मतदाता क्षेत्र से खड़ाकर जिता नहीं सकती थी क्योंकि वह जानती थी कि उसे एक भी मुस्लिम मत नहीं प्राप्त होगा अतः श्री किदवई को विधान सभा में लेने के लिए उन्हें स्नातक मतदाता क्षेत्र से खड़ा किया गया क्योंकि संख्या बल में हिन्दू स्नातक अधिक थे। इस क्षेत्र से श्री किदवई जीते और विधान सभा के सदस्य बने।

इस निर्वाचन में मुसलमानों ने खुल कर मुस्लिम मतदाताओं को हिंदुओं के विरुद्ध भड़काया और कांग्रेस को केवल हिंदुओं की संस्था सिद्ध करने में कोई कोर कसर न रखी। यथार्थ में इस चुनाव में कांग्रेस को ९५ प्रतिशत हिंदुओं के मत प्राप्त भी हुए थे। कुछ मुसलमानों को अपनी वैयक्तिक मित्रता या जिस किसी तरह अपने साथ रखकर कांग्रेस ने ब्रिटिश शासकों के सामने अपने को हिन्दू मुसलमान दोनों की संस्था सिद्ध करने का प्रयत्न किया, यहां तक कि कुछ तथाकथित प्रगतिशील लोग अपने को हिन्दू कहने में भी लज्जा अनुभव करने लगे। श्री जवाहर लाल के नेतृत्व में कुछ लोग अपने को हिन्दुस्तानी बिरादरी का कहने में गर्व का अनुभव करने लगे। यह सब मुस्लिम तुष्टीकरण के नाम पर किया गया परन्तु इन सब का कोई सन्तोष जनक परिणाम न हुआ।

इन सब कार्यों के होते हुए भी १५ अगस्त १९४७ को भारत का दुर्भाग्य पूर्ण विभाजन हो गया। इस समय और इसके पूर्व भी गांधी जी ने अनेक परस्पर विरोधी वक्तव्य दिए। जैसे "पाकिस्तान क्रियात्मक नहीं, यदि वह बना तो वह मेरी लाश पर बनेगा। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि यदि मुसलमान पृथक होना चाहें तो उन्हें कोई रोक भी नहीं सकता है इत्यादि। पाकिस्तान बनने के पश्चात् गान्धी जी ने कहा मैं नहीं चाहता था पाकिस्तान बने परन्तु कांग्रेस कार्यकारिणी का बहुमत इसके पक्ष में था कि यदि मुसलमान भारत के साथ नहीं रहना चाहते तो वे जिन प्रान्तों में बहुमत में हैं उनको लेकर पाकिस्तान बना लें जिससे अंग्रेजों को यह कहने का अवसर न रहे कि मुसलमान और हिन्दू दोनों सर्व सम्मत मांग करें तभी स्वराज्य मिलेगा। ऐसा कहा जाता है कि श्री जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में उस समय भी कांग्रेस कार्य समिति ने यह निर्णय बहुमत से किया था। यह सब आश्चर्यजनक तथ्य है कि पाकिस्तान निर्माण के निर्णय लेने के पूर्व कांग्रेस कार्यकारिणी के अनेक सदस्यों ने भाषणों में ही नहीं अपितु बड़ी बड़ी पुस्तकें लिखकर पाकिस्तान कल्पना की अव्यावहारिकता सिद्ध करने का प्रयत्न किया था। श्री राजेन्द्र प्रसाद ने 'खण्डित भारत' (Divided India) नामक एक विशाल ग्रन्थ लिखकर यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया था कि यदि पाकिस्तान बना तो वह एक वर्ष से अधिक नहीं टिक सकता क्योंकि उसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं होगी। इसी प्रकार आचार्य कृपलानी ने लखनऊ से निकलने वाले 'नेशनल हेरल्ड' में 'जनानिस्तान' नामक एक लेख लिखकर पाकिस्तान कल्पना का उपहास किया था परन्तु कांग्रेस कार्यकारिणी के अधिकांश सदस्यों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया था। कहा जाता है कि श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन और उनके कुछ साथियों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया था। वयोवृद्ध, विचित्र मति श्री राजगोपालाचारी तो पाकिस्तान निर्माण के सर्व प्रथम समर्थक थे तथा इस सम्बन्ध में भी जिन्ना से अनेक वार्ताएं भी कीं। अस्तु।

मुस्लिम लीग की मांग थी कि ६ प्रान्तों को मिलाकर पाकिस्तान बने जिसमें पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत, सिन्ध पंजाब, आसाम और बंगाल सम्मिलित हुए। 'सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डिताः'—'सर्वनाश के उपस्थित होने पर बुद्धिमान आधा छोड़कर शेष बचा लेते हैं' की नीति के अनुसार इन नेताओं के प्रयत्न बहुमूल्य सिद्ध हुए इस प्रयत्न में डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी प्रमुख थे। पाकिस्तान बना तो अवश्य परन्तु एक पंगु देश जिसका एक प्रदेश भारत की उत्तर पश्चिमी सीमा पर स्थित है, इसकी आबादी कम और क्षेत्रफल अधिक है। दूसरा भाग पूर्वीय सीमा पर स्थित है जिसकी जन संख्या अधिक और क्षेत्रफल कम है। इन दोनों पूर्वीय और पश्चिमी भूखण्डों को मिलाने वाला कोई मार्ग नहीं है इनमें हजारों मील का अन्तर है। दोनों पाकिस्तानों की भाषा भी भिन्न भिन्न है। पश्चिमी पाकिस्तान में पंजाबी, उर्दू, सिन्धी और पश्तो भाषाएं बोली जाती है जबकि पूर्वीय पाकिस्तान में बंगला भाषा बोली जाती है। सुरक्षात्मक दृष्टि से ये प्रदेश कैसे होंगे इसकी कल्पना सरलता से की जा सकती है फिर भी मिस्टर जिन्ना का चिर अभिलाषित मनोकामना पूरी हुई और एक अजीबो गरीब देश पाकिस्तान का निर्माण हो गया

साम्राज्यवादियों की यह पुरानी परिपाटी है कि जब वे किसी देश को परिस्थितियों से बाध्य होकर छोड़ने लगते हैं तो वे उसका बन्दर बांट करके उसको विभाजन जन्य अनेक समस्याओं के समुद्र में डुबाकर जाते हैं। कोरिया, आयरलैण्ड, ईरान, इराक, भारत, पाकिस्तान, बर्मा, लंका और मध्य पूर्व के अरब देश इस सत्य के प्रबल प्रमाण हैं। शासन सत्ता भी वे उन्हीं लोगों को हस्तान्तरित करते हैं जो शरीर से तो विभाजित देश के निवासी हों परन्तु नैतिक, चारित्रिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से उनके अधिक निकट हों। भारत के दुर्भाग्य से विभाजन के समय स्वतन्त्रता के पावन उद्देश्य को लेकर, भारत का बहुमत अनेक मतभेदों के होते हुए भी कांग्रेस में एकत्रित था। उदाहरणतः नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का कांग्रेस से सैद्धान्तिक मतभेद था परन्तु वे संगठन की दृष्टि से उपर्युक्त संस्था में ही रह कर देश की स्वाधीनता के लिए जब तक सम्भव था प्रयत्न करते रहे। कांग्रेस में ऐसे लोगों की कमी नहीं थी जिनकी शिक्षा दीक्षा ब्रिटेन में हुई थी और वे उसके प्रतिष्ठित नेता थे, परन्तु साथ ही वे अंग्रेजों के साम्राज्यवादी शोषण का घोर विरोध करते थे परन्तु उनके रीति रिवाज, आचार विचार तथा राजनैतिक और सांस्कृतिक मन्तव्यों के अधिक समीप थे। इनमें श्री जवाहर लाल नेहरू मुख्य थे और महात्मा गांधी के कृपा पात्र भी थे। श्री नेहरू का शरीर तो अवश्य भारतीय है परन्तु उनके आचार विचार तथा राजनैतिक और सांस्कृतिक धारणाओं पर पाश्चात्य भौतिक संस्कृति की गहरी छाप है। लिखने का सारांश यह है कि अंग्रेजों ने उस समय कांग्रेस को सत्ता हस्तान्तरित की और लगभग १ हजार वर्षों के पश्चात् विभाजित भारत में स्वराज्य आया तथा श्री नेहरू इस शासन के प्रथम प्रधान मंत्री बने। [क्रमशः]



यात्रा-प्रेमी भारतीय

क्या भारत के लोग बहुत यात्रा करते हैं ?

भारत की एक प्रतिशत, आबादी यानी लगभग ३८,०००,०० लोग हर रोज रेल से यात्रा करते हैं। सन्१९५६ ५७ म इन लोगों ने जो यात्रा की, उसका औसत हर रोज १२ करोड़ मील रहा। इतने म ४,८८० बार दुनियां की परिक्रमा की जा सकती है।

सन् १९४१ ४२ मे हर दस लाख आदमियों में से ४ ३१० लोग यात्रा करते थे। सन् १९५६ ५७ म यह अनुपात ढाई गुना बढा, यानी हर दस लाख म से १०,६५० लोग प्रतिदिन रेल से यात्रा करने लगे।

रेलगाडियां कितना काम देती हैं

भारत की रेलगाडियो से कितना अधिक काम लिया जाता है ?

सन् १९५६ ५७ मे मुसाफिर गाडियों ने हर रोज ७,३७,००० मील सफर किया। दूसरे शब्दो म भारत की रेलगाडियाँ प्रतिदिन इतना चलीं, जिससे ससार का हर रोज २५ परिक्रमाएं हो जातीं।

रेल यात्री और मुनाफा

भारत की रेलों न १९५६ ५७ मे एक यात्री को एक मील ले जाने पर औसतन ५ ३४ पाइया कमायीं, जब कि एक टन माल एक मील तक ढोने पर उन्हें ११ ३ पाइया यानी दुगने से भी अधिक रकम मिली।

सन् १९५६ ५७ में रेलों को जो आमदनी हुई, उसका एक-तिहाई हिस्सा १ अरब ३८ करोड ७० लाख यात्रियों को ढोने पर मिला। रेलो को माल की ढुलाई से कुल आमदनी का ५७ ३७ प्रतिशत हिस्सा मिला।

सन् १९५६ ५७ म मुसाफिर गाडिया कुल ११ करोड ९ लाख मील चलीं, जबकि मालगाडिया कुल ८ करोड ७० लाख मील चलीं।

इसके बावजूद मुसाफिर गाडियो की अपेक्षा, रेल विभाग को माल गाडिया से ८४ करोड रुपया की अधिक आमदनी हुई।

क्या आप जानते हैं ?

१—गृहराष्ट्र मत्रालय न १ अक्टूबर १९५५ से केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों को दिल्ली म और दिल्ली से बाहर, दफ्तर के समय म हिन्दी पढाना शुरू किया।

२—इस समय मत्रालय म १६ हिन्दी शिक्षक सात सहायक निरीक्षक और एक निरीक्षक नियुक्त हैं।

३—४९ केन्द्रो म ८६२ हिन्दी कक्षाए लगायी जा रही हैं।

४—अक्टूबर १९५५ म ९,५ कर्मचारी हिन्दी पढ रहे थे जबकि अब उनकी सख्या ०० है।

५—अक्टूबर १९५७ में स्वराष्ट्र मत्रालय की ओर से अजमेर के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने १७ केन्द्रों म हिन्दी प्रबोध और प्रवीण हिन्दी प्रश्न परीक्षाए लीं। इनम १,६७७ कर्मचारी पास हुए। जनवरी १९५८ म भी परीक्षाए ली गयीं।

६—स्वराष्ट्र मत्रालय की प्रारम्भिक योजना १९६१ ६२ तक ३ लाख कर्मचारियों को प्राज्ञ के स्तर तक हिंदी पढा देने की है। लेकिन अब यह सख्या और भी बढेगा, क्योंकि मत्रालय ने प्रतिरक्षा मत्रालय के असैनिक कर्मचारियों को भी हिंदी पढाना शुरू किया है।

७—१९५८ ५९ में ३६ नये स्थानों पर हिन्दी पढाने की योजना विचाराधीन है।

(पत्र सूचना कार्यालय भारत सरकार से

असाधारण नैमित्तिक अधिवेशन का विज्ञापन

उत्तर-प्रदेशीय समान्तर्गत आर्य समाजों के मत्रीगण तथा आर्य महोदयों की सेवा

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का असाधारण (नैमित्तिक) अधिवेशन [वार्षिक साधारण वृहद्धिवेशन के बीच) तिथि २७/२८ वैशाख शक १८८० तथा ज्येष्ठ कृ० १४/१५ स० २०१५ वि० तदनुसार दिनाक १७ व १८ मई १९५८ ई० दिन शनिवार व रविवार का स्थान दयानन्द वैदिक कालेज के भवन लखनऊ में होगा।

यदि प्रथम दिवस कार्य सख्या (कोरम) पर्याप्त नहीं होगा तो स्थगित बैठक १८ मई को प्रात काल होगा। कृपया समय से पूर्व पधार कर कृतार्थ कीजिये।

विषय सूची

१—उपस्थिति गणना ईश प्रार्थना।

२—अन्तरग सभा दि० ९ मार्च १९५८ के नि० स० ०० (०) के निश्चयानुसार श्री चन्द्रनारायण जी बरेली के निम्न प्रस्ताव सभा के नियम सशोधन के सम्बन्ध में स्वीकृत्यर्थ।

(क) सभा के नियम स०१५ मे परन्तु के आगे तथा सभा से पूर्व शब्द प्रधान के स्थान पर "अन्तरग सभा" कर दिया जावे। स्वीकृत्यर्थ।

(ख) प्रधान तथा मत्री के तीन-तीन सहायक के स्थान पर चार चार कर दिये जावे, इस प्रकार पदाधिकारी १२ के स्थान पर १४ होंगे। क्षेत्रों के ४२ सदस्य ज्यों के त्यों रहेंगे, इस प्रकार कुल ५६ सदस्य हुए तथा २ अन्तरग सभा द्वारा सहयुक्त होंगे और ३ सदस्य वृहदधिवेशन चुनेगा, इस प्रकार सम्मिलित योग ६१ होगा। स्वीकृत्यर्थ

(ग) अन्तरङ्ग सभा का (कोरम) कार्य सख्या ७ सभासद् के स्थान मे १५ उपनियम स० १० मे, सशोधन कर दिया जाय।

३—अन्तरग सभा दि० ९। ३। ५८ के नि० स० ३१ के अनुसार सभा के नियम सख्या ५० में गुरुकुल वृन्दावन के उप कुलपति का निर्वाचन ५ वर्ष के लिये हुआ करे। स्वीकृत्यर्थ।

शिवदयालु सभा मन्त्री

विश्वकर्मा बंशज बालकों को ७०००) का दान



श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिरनिधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न स्व० श्रीमती तिज्जोदेवी भवानीलाल शर्मा कोकास की पुण्यस्मृति मे श्री भवानीलाल जी शर्मा अकबरपुर जिला कानपुर वर्तमान अमरावती (विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वशीय बालकों के हितार्थ ७०००) की धनराशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद स० २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को प्रस्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक व्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वशज गरीब असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओं के शिक्षण मद मे व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को ।) के स्टाम्प भेजकर सभा से छपे फार्म मगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

४—दान दाता की इच्छानुसार विश्वकर्मा वशीय मनु, मय, त्वष्टादि गरीब प० मा० बालक बालिकाओ के लिए प्रथम सहायता दी जायगी।



५—उपर्युक्त सम्पूर्ण योजना आर्यमित्र पत्र में उत्साहार्थ अधिकतर सूचनार्थ प्रतिमास सचित्र प्रकाशित होती रहेगी और दान दाता को 'मित्र' पत्र के प्रत्येक अङ्क बिना मूल्य मिलते रहेंगे।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

हिन्दी गौरव गान

✶

सुन्दर, सजीली, मोतियो सी है पिरोई हुई।
महिमा अपार देव भाषा की हमारी है॥
राम घनश्याम का सुनाती यह पुनीत कथा।
व्यास, वाल्मीकि की सुरम्य फुलवारी है॥
सांस-सांस म जगाती ज्ञान का अमद ज्योति।
ग्राम ग्राम, धाम धाम आभा प्यारी प्यारी है॥
प्राण प्राण में समायी सूर, तुलसी की टेर।
भारत समस्त हिन्दी माता का पुजारी है॥१॥
भाषा मानसर में विराजै राजहस की सी।
मानस बसन्त में पिकी सी कूक न्यारी है॥
शब्द शतदल की पराग ले सुगन्धमयी।
करती विभोर वाटिका की छटा सारी है॥
आत्मा को ज्योति, परमात्मा का प्यार, देती।
चारुता पे राका की सुहानी छटावारी है॥
कोटि कोटि अन्तर में प्रेम की बजाती वीणा।
भारत समस्त हिन्दी माता का पुजारी है॥२॥
राष्ट्र भाषा, देव-भाषा, मातृ भाषा हिन्दी मेरी।
गौरवमयी माता, इसे हिन्दू न बिसारेंगे॥
मूक वाणी पाके जिसे, कीर सी उचारें मन्त्र।
आर्य उस स्वाति मेघ का सदा पुकारेंगे॥
वैरो की तो बात ही क्या कौरव भी जो आयें चले।
शैल से अड़े ये पग पीछे नहीं धारेंगे॥
दीप पर कोटि ज्यो पतग, देह दाहते त्यो।
एक हिन्दी भाषा पै अनेक हिन्दू वारेंगे॥३॥

—श्याम मनोहर, वर्मा "विमल" राजकरण वैदिक स्कूल फैजाबाद

निशा की चुनौती प्रभा का निमंत्रण

✶

चहके खग गगन मे मरण गीत गाते,
उठी कालिमा दूर पश्चिम दिशा में।
समय के पटल पर मचा घोर विप्लव
निशा कालिमा ले विजय गान गाती॥
रती घिर गया कालिमा सैन्य दल से,
गया डूब विचलित गगन निशि समायी
निशा का हुआ राज्य सब विश्व भर म।
तारे दृगों से विहस हस रहे हैं॥
निशाकर रहा हस दिवाकर पतन,
निशा कर रही घोषण अपनी विजय का,
बढ़ विश्व चेतन गहन वेदना म,
उठो मूंदना आँख कर सुन रहे हो॥
निशा की चुनौती प्रभा का निमंत्रण,
उठो अब सभालो विरल अस्त्र अपने,
चमकती हुई असि निशा काटने को।
करो घोष उठकर गगन थरथराये॥
तिमिर काँपती दूर निशि भाग आये,
लगे लालिमा व्योम पर नव झलकने,
पुनः फिर प्रभाकर नई ज्योति लाये।
पुनः खग निकल कर विजय गान गायें॥
धरा मुस्कराये गगन खिलखिलाये
उठो अब चलो और स्वीकार कर लो।
निशा की चुनौती प्रभा का निमंत्रण॥

—आदित्य किशोर आर्य, मन्त्री आर्य वीर दल
न्यू सिविल लाइन्स, हरदोई

आल इण्डिया सिविल लिबर्टीज़ कान्फ्रेन्स

८६, एलेगजेण्डर रोड, अम्बाला छावनी

आप सबको भली भाति ज्ञात है कि समस्त भारत में विशेषत पजाब में कानून की व्यवस्था बनाये रखने के बहाने नागरिकता के अधिकार कुचले जा रहे हैं तथा जनता पर अन्यायपूर्ण अत्याचार किये जा रहे है। किसी भी प्रजातन्त्रवादी देश में ऐसा घटनाए आज तक नहीं हुई। आज किसी नागरिक के लिए अपनी मान रक्षा करना असम्भव हो गया है। अनेक प्रतिष्ठित नागरिको को निराधार तथा कमीने आरोप लगाकर जेलो मे भर दिया जाता है। ऐसी घटनाए आज कल प्रत्येक स्थान पर प्रतिदिन हो रही हैं। इससे प्रतीत होता है कि भारत प्रजातन्त्रवाद के आदर्श से नष्ट होकर डिक्टेटरशिप की ओर बढ़ रहा है।

नागरिक अधिकार स्वातन्त्र्य समिति (सिविल लिबर्टी कौंसिल) की स्थापना, भारतीय सविधान द्वारा सुरक्षित मूलभूत नागरिक अधिकारों की प्राप्ति के लिये की गई है। इस सस्था की सदस्यता का अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को है चाहे वह किसी भी राजनीतिक अथवा धार्मिक सस्था से सम्बन्ध रखता हो। अत मेरी सबसे नम्र प्रार्थना है कि सभी नगरो, कस्बों तथा ग्रामो मे शाखाए स्थापित करके जनता इस समिति के आयोजकों के हाथ मजबूत कर तथा मानपूर्वक जीवन व्यतीत करने के अपने जन्म सिद्ध अधिकार की प्राप्ति के लिए आप जनता में नवचेतना तथा जागृति उत्पन्न कर।

अखिल भारतीय सिविल लिबर्टीज कान्फ्रेंस २६, २७ अप्रैल १९५८ को अम्बाला छावनी में हो रही है।

स्वागत समिति का सदस्यता शुल्क केवल एक रुपया वार्षिक है। आपकी महती कृपा होगी यदि आप स्वागत समिति का सदस्य बनने की स्वीकृति तथा चन्दा भेज दें।

——नारायणदत्त ग्रोवर
एम० एस० सी०
(डी० ए० वी० कालेज अम्बाला नगर)

पुरोहित की आवश्यकता

देहरादून आर्यसमाज के लिए एक कर्मनिष्ठ पुरोहित की आवश्यकता है। जो संस्कार आदि भलीप्रकार करा सके तथा भजनोपदेश का कार्य भी कर सके। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। इच्छुक महाशय मन्त्री आर्य समाज देहरादून से पत्रव्यवहार करें।

आर्य समाजों को सूचना

बृहदधिवेशन

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाज एव उप प्रतिनिधि सभाओं के मन्त्री महोदयो को सूचित किया जाता है कि सभा का वार्षिक बृहदधिवेशन १७ व १८ मई १९५८ दिन शनिवार रविवार का दयानन्द कालेज भवन लखनऊ में हागा। अधिवेशन का विज्ञापन व कार्यक्रम समाजों में भेज दिया गया है। जिनमे न पहुचा हो वो सभा से मगा लें। सभा के बृहदधिवेशन के साथ साथ असाधारण नैमित्तिक अधिवेशन भी होगा।

प्रतिनिधि चित्र फार्म

सभा कार्यालय मे आज तक १६८ आर्य समाजों के प्रतिनिधि फार्म प्राप्त हुए है। सभा में प्रविष्ट समाजें एव उप प्रतिनिधि सभाओं की सख्या ११२५ है। चित्रों की सख्या को देख कर सभा को अत्यन्त खेद हो रहा है, सभा के अधिवेशन का अभी एक मास शेष है। समाजों एव उपसभाओं के कार्यकर्ताओं का ध्यान इस ओर पुन आकर्षित किया जाता है कि अपने अपने आर्य समाज के प्रतिनिधि फार्म, जिन्होंने अभी तक न भेजे हों, उन्हे चाहिए कि अविलम्ब भेजने का कष्ट करें और सभा का प्राप्तव्य धन भी कृपया शीघ्र भेजते रहे। सभास्थ अन्तरङ्ग सदस्यों से भी निवेदन है कि अपने २ क्षेत्र के समाजों से प्रतिनिधि फार्म भरवा कर भिजवा दे।

——शिवदयालु मन्त्री

आर्यसमाज रेइन्यों, मोरेल (मारीशश) का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज रेइन्यों मोरेल का वार्षिक उत्सव चैत्र सुदी १२, १३ विक्रम स० २०१५ दिन बुधवार और बृहस्पतिवार को बड़ी धूम धाम के साथ मनाया गया।

इस शुभ अवसर पर श्री सुखराम प्रसाद जी, श्री रामेश्वर जैपाल तथा प० चिन्तामणि, प० रामलखन, प० बलराम, प० बृजमोहन मधु और श्री सीताराम जी आदि प्रतिष्ठित महानुभाव तथा सहस्रों की सख्या में जनता उत्सव की शोभा बढ़ा रही थी। वहां की जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा।

सुखदेव रतन मन्त्री
आर्यसमाज रेइन्यों, मोरेल
(मारीशश)

श्री आर्यसमाज कटरा, प्रयाग

प्रधाना—उर्मिलादेवी
मन्त्राणी—ऊषादेवी
कोषा०—शान्तादेवी

गौ की उपयोगिता

(पृष्ठ ६ का शेष)

बकरों आदि निरपराध प्राणियों (जिन का निर्माण उस जगन्नियन्ता परमात्मा ने आपके ही उपकार के लिए किया है) की नृशंस हत्या द्वारा होती हैं। जानते हैं कि बिना किसी अपराध के किसी को अपशब्द कह कष्ट पहुंचाना भी स्मृतिकारों की दृष्टि में हिंसा के अन्दर समाविष्ट होता है फिर वहां सर्वदा के लिए उसके जीवन लीला की समाप्ति सब योनियों में सर्वोत्तम योनि प्राप्त मनुष्य करता है—जिसे सदसद्विवेक शालिनी बुद्धि परमात्मा द्वारा प्रदत्त है - कहां तक उसके लिए योगक्षेमकारी व सुखावह इहलौकिक वा पारलौकिक है, इसकी न्यायसंगत विवेचना आप स्वयं कर सकते हैं।

(ख) कुछ पाश्चात्य विद्वान् डाक्टरी मत से Vitamine A और D और Calcium की अधिकता के लिए अण्डा खाने की सलाह रोगियों को प्रायः देते हैं उन्हें मैं अत्यन्त विनम्र शब्दों में सब प्रकार से भोज्य पदार्थों में सर्वश्रेष्ठ पूर्ण भोजन दूध (जिसके नियमित सेवन से शारीरिक तथा मानसिक एवं बौद्धिक विकास सम भाव से यावज्जीवन पर्यन्त होता रहता है) को सेवन करने की प्रार्थना करता हुआ कारणसहित इसके विशदीकरण का प्रयास करता हूं :—

(i)निरामिष भोजन से सात्त्विक भावों की उत्पत्ति होती है और अण्डे आदि सामिष द्रव्यों के सेवन से तामसिक भावों का उदयन होता है।

(ii)प्रोटीन भूयिष्ठ होने के कारण मांसादि द्रव्यों के सेवन से गुर्दों (पेशाब छानने वाले यन्त्रों)को अधिक कार्य करना पड़ता है जिसके कारण मांसाहारी अधिकतर गुर्दे के वृक्कशोथादि तथा मैथुन जन्य व्याधियों (Venereal diseases) से अधिकतर पीड़ित रहा करते हैं।

(iii) Alcohol आदि नशीली द्रव्यों के समान आशु गुणकारी उत्तेजन [Stimu'ation] परिणाम होने के कारण इनका स्नायुमण्डल [Nervous System] पर शीघ्र प्रभाव होता है जिससे विषयादिकों की ओर अधिक तौर से झुकाव होने के कारण Venereal diseases, e. g. Syphilis Gonorrhoea और बाद में अधिकतर [Nervous degeneration] नाड्यापक्रान्ति होने के कारण Hemiplegia, Sciatica आदि वात व्याधियों से पीड़ित होकर ऐसे पुरुषों की अधिकतर दुखदायी मृत्यु हुआ करती है।

[ग] पाश्चात्य जीवाणु विज्ञान के आधार पर अधिकांश बीमारियों Transmissim[संवहन] कीटाणुओं द्वारा ही होता है यथा मलेरिया का प्लाज्मोडियम [Plasmodium] आदि के जीवाणु से, कालाजार, कालोशमैन, डोनोवान बाडी तथा श्लीपद या फीलपांव या फाइलेरिया बैंक्राफ्टाई से। पर इन रोगोत्पादक जीवाणुओं का भी मच्छड़ों के शरीर से अधिकतर स्थायी निवास होने के कारण संवहन इन्हीं मच्छड़ों द्वारा ही होता है। मच्छड़ों का सबसे प्रियतम भोजन गाय या भैंस का विष्ठा, मल मूत्र तथा उनका रक्त है, जहाँ पर ये अधिकतर वास किया करते हैं। आप लोगों ने प्लेग के आरम्भ में देखा होगा कि इसके प्रथम प्रकोप के शिकार चूहे हुआ करते हैं। जब उनकी समाप्ति हो जाती है प्लेग के जीवाणु (बसिलस पेस्टिस) मनुष्यों पर आक्रमण करते हैं ठीक इसी प्रकार जब मच्छड़ों को घोर पशुवध के कारण गाय भैंसादि उपलब्ध नहीं होते तो वे मनुष्यों के रक्त की तलाश में घूमना शुरू कर देते हैं। यही कारण मूलभूत है कि अब प्रत्येक ऋतु में प्रत्येक स्थान (अनूपदेश से जंगल देश पर्यन्त तक) में मच्छड़दानी के बिना मनुष्यों को नींद नहीं आती और उपरोक्त सामान्य बीमारियाँ अब दिनानुदिन घातक रूप में उपस्थित हो क्रमशः बढ़ती जा रही है और इस प्रकार चिकित्सक वर्ग और राष्ट्र के लिए एक समस्या के रूप में खड़ा हो प्रतिदिन 'ज्यों २ इलाज किया मर्ज बढ़ता ही गया' उक्ति को चरितार्थ प्रत्यक्ष कर रही है। क्या अब भी भारतीय नागरिकता के नाते इस ओर देश के कर्णधार ध्यान देंगे? आशा है राष्ट्रकवि श्री गुप्त जी की अधोलिखित पद्य निबद्ध रचनाओं की ओर आकृष्ट होते हुए हम समय से पूर्व संभल इसकी रक्षा में तत्पर हो जावेंगे—

दांतों तले तृणदबाकर हैं
दीन गायें कह रहीं।
हम पशु तथा तुम हो मनुज
पर योग्य क्या तुमको यही
हमने तुम्हें मां की तरह है
दूध पीने को दिया।
देकर कसाई को हमें
तुमने हमारा वध किया।
बच्चे हमारे भूख से
रहते समक्ष अधीर है।
करके न उनका सोच कुछ
देती तुम्हें हम क्षीर हैं।
चरकर विपिन में घास फिर
आती तुम्हारे पास है।
हो कर बड़े वे वत्स भी
बनते तुम्हारे दास हैं।
पुनरस्य-जारी रहा क्रम यदि
यहाँ यों ही हमारे नाश का
तो अस्त समझो सूर्य
भारत भाग्य के आकाश का
जो तनिक हरियाली रही
वह भी न रहने पायेगी।
वह स्वर्ग भारत भूमि बस
मरघट यहीं बन जायेगी।

(२) दही—दूध के अन्दर Lactic acid (लैक्टिक अम्ल) की कालान्तर में समुत्पत्ति होने के कारण दूध का दही के रूप में परिणमन होना है जो कि आन्त्रस्थ रोगोत्पादक विकारी जीवाणुओं का विनाश कर वृद्धावस्था को दूर भगा दीर्घायु बनाने में मुख्य भाग लेता है। पाश्चात्य विद्वान डा० मेचनिकाफ ने मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया है और स्वयं इसके ही प्रभाव से इस समय भी 'जीवेम शरदः शतम्' की उक्ति चरितार्थ किया था तभी तो आयुर्वेद में कहा है—

'न तक्रसेवी व्यथते कदाचिन्नतक्रदग्धाः प्रभवन्ति रोगाः। यथा सुराणां अमृतं हिताय तथा नराणां भुवितक्रमाहुः॥'

भावार्थ यह कि मट्ठा सेवन करने वाला कभी बीमार नहीं पड़ता और जो बीमारियां मट्ठे के अनुपान से शान्त करदी जाती हैं वे दुबारा पुनः उत्पन्न नहीं होतीं। जिस प्रकार स्वर्ग में देवताओं के लिए अमृत है उसी प्रकार इस धरित्री तल पर मानव के कल्याणार्थ दही या मट्ठा का अवतरण हुआ है।

(३) घृत या घी —'आयुर्मूलमहविः' आयु का मूलभूत कारण घृत है जिसमें Fat होने के कारण शरीर में स्निग्धता बनी रहती है। यह स्वानुभूत एक निर्विवाद कठोर सत्य है कि गाय के पुराने घी को सैन्धानमक के साथ वक्ष स्थल तथा न्यूमोनिया आदि रोगों में मालिश करें तो यह एलोपैथिक की Antiphlogertine और Biphlogertine की अपेक्षा अधिक अच्छा काम करता है वह इस प्रकार कि जब तलक ये दवाइयां गरम हैं फायदा करेंगी और जैसे जैसे क्रमशः शीतलता आती जावेगी रोगी पुनः पूर्वावस्था में आ जावेगा इस प्रकार ३, ४ घण्टे के बाद ही पुनः पट्टी बदलने की नौबत आ जाती है। अतएव आर्थिक तथा गुण दोनों दृष्टि से भारतवासियों के लिए गोघृत इन बीमारियों में ज्यादा अच्छा कार्य करता है। पर आजकल के इस वैज्ञानिक युग में गोघृत की तो कौन कहे शुद्ध भैंस का घी मिलना मुश्किल है क्योंकि कृत्रिम वानस्पतिक घी के संयोग से इसे यहाँ तक विकृत कर दिया गया है कि शहरों में ही नहीं, अपितु देहातों में भी शुद्ध घी मिलना कठिन है इसलिए यदि आप शुद्ध घी प्राप्त करना चाहते हैं तो निम्न परीक्षा को न भूलिए—

'शुद्ध सरसों के तेल को चौड़े मुंह वाली शीशी में रखिये। इसमें घी की जमी डली को अंगुली से उठाकर डालिए यदि वह एक मिनट के अन्दर ही नीचे बैठ जावे तो शुद्ध घी और डालडा (वानस्पतिक घी) तैरता रहेगा, यही मुख्य पहचान है। मिलावट होने पर उसी अनुपात से देर में घी तली में बैठेगा।'

(४) गोबर व गोमूत्र—सामान्य जीवाणु नाशन के गुण के कारण इससे सफाई का मुख्य कार्य होता है जो सर्व विदित है इसके अलावा अग्न्युत्पादन की महान् क्षमता विद्यमान है गोबर में। यदि किसी को एक रुपये का नोट देकर उसे आग में जलाने को कहें तो जलाने वाले को कोई बुद्धिमान न कहेगा उसी प्रकार इनको जलानेवाले को जानना चाहिए क्योंकि भूमि को उर्वरायुत बनाने में इनका खाद सर्वोपरि श्रेष्ठ है और गोबर के इसी महान् गुण के कारण इसके जलाने के निषेध पर सब एक मत है।

दूसरे गोमूत्र से किस प्रकार आश्चर्य जनक लाभ अण्डकोश शोथ (Epidydimitis) फाइलेरिया, जलोदर, कामला, उदररोग, पाण्डुरोग और प्लीहा तथा यकृत की बीमारियों में होता है इसे विषयान्तर भय से संकलित कर उद्धृत नहीं कर रहा।

इस प्रकार इनसे होने वाले उपयोगी तत्वों के संक्षिप्त वर्णन के पश्चात् मैं अपनी दृष्टि से समस्त विश्व की समस्याओं के केन्द्रीभूत समाधान बिन्दु गाय को ही नहीं अपितु समस्त पशुओं के वध का निषेध कानून की दृष्टि से हो जाना चाहिए क्योंकि आप जिनका निर्माण नहीं कर सकते उनको बिना कारण अपना उदर पूर्ति के लिए सदा के लिए समाप्त कर देना कहाँ की बुद्धिमानी है, आप ही जरा ठण्डे दिल से विचारिये और पुनः विचारिये।

हमारे देश के अन्दर विदेशियों के आगमन ने किस प्रकार हमारी प्राचीन संस्कृति के प्राण स्वरूप वैदिक साहित्य को विध्वंस कर इन मद्य-मांसादि द्रव्यों के सेवन विधान को इतस्ततः आर्ष निर्मित ग्रन्थों में डाल उचित बतलाया है उसका यहां दिग्दर्शन विस्तार भयात नहीं करूंगा फिर भी उनकी लचर निम्न दलीलों का संक्षिप्त उत्तर देना आवश्यक समझता हूं —

(१) इसका प्रथम महानगुण ही इसका सबसे बड़ा दोष है। मांस प्रोटीन भूयिष्ठ पदार्थ है जो सामान्य-

[शेष अगले पृष्ठ पर]

गौ की उपयोगिता

[पिछले पृष्ठ का शेष]

तथा शरीर को शीघ्र शक्ति मिले इस लिए खाया जाता है। स्मरण रहे कि हमारे शरीर को इनकी एक सीमित मात्रा में ही आवश्यकता है जो आसानी से अरहर, मूंग, चना, उड़द सोयाबीन आदि दालों से भलीभांति प्राप्त हो जाता है। शेष मात्रा प्रति दिन यूरिक एसिड (भूचाल) के रूप मे हमारे पेशाब में मिलकर बाहर आ जाती है। आवश्यकता से अधिक प्रोटीन खा लेना, फिर उसका यूरिक एसिड बनना जिगर और गुर्दे पर इस प्रकार का भार डालना ऐसा है जिस प्रकार दो मन बोझ उठाने वाले मजदूर के सिर पर चार मन का बोझ रख दिया जाय, जिससे ये दोनो अङ्ग क्रमश. बीमार व दुर्बल हो जाते हैं।

(७) यदि इन पशुओं को रहने दिया जाय तो इनकी संख्या इतनी आवेगी कि इनको खाना नहीं मिलेगा और जब मनुष्यो के लिए पर्याप्त भोजन नहीं मिलता तो इन्हें कैसे मिल सकेगा। तथा धर्म निरपेक्ष राज्य में हमारी अपनी सरकार मत्स्य जाति संघ अण्डा, शूकर व मुर्गी का पालन इत्यादि नवीन योजनायें बना रही है तो क्या—

'वृक्षांश्छित्त्वा पशून् हत्वा
कृत्वा रुधिर कर्दमम्।
यद्येवं गम्यते स्वर्गे,
नरकं केन गम्यते॥'

अभद्र होकर रहेगा? नहीं कदापि नहीं। स्मरण रखिये कि उस महाप्रभु के राज्य में बाढ़, विप्लव, भूकम्प और रोगों का विभीषिका एवं जनपदाध्वंस रूप मे समुत्पात इसी का संकेत कर रही है कि यदि हम भारत भू पर स्वर्ग लाना चाहते हैं तो 'Go back to the Vedas' के अनुकूल हम पीछे हटे और उस विलास का नाश ... अपने शरीर के ... का यथार्थ सन्तुलन ज्ञात है—कि जो प्राणि ... पीछे हट चुके ताकि वर्तमान समय में विश्व शान्ति के पथप्रदर्शन में हम सफल न ... सके। ... उसके जनक ने अपने सभापतित्व में ... विश्वशान्ति सभा में उसके सभ्यों को सम्बोधित करते हुए—

"O You assembled Scholars of the earth, if you desire to keep the atmosphere of the world quiet and calm go to the Saints ... caves and forests of India, sit at their feet and learn divine wisdom from their holy lips and then propagate it in Europe and America"

ऐ भूमण्डल के एकत्रित विद्वानो यदि तुम संसार के वायुमण्डल को शांत तथा सुखदायक बनाना चाहते हो तो भारत के सन्तों के पास जंगलों और गुफाओं मे जाओ। उनके चरणो मे बैठकर ब्रह्म ज्ञान सीखो और उसी ज्ञान को योरप और अमेरिका मे फैलाकर शान्ति का राज्य स्थापित करो।'

संसार मे जीवन धारणार्थ तीन मुख्य पदार्थ हैं —

[अ] वायु—इसके बिना हम क्षण भर भी जीवित नहीं रहते और इसे हम सब प्राणी [सूक्ष्म प्राणी से मानव योनि तक के] अपने छोड़े गये श्वास से कार्बन डायक्साइड द्वारा दूषित कर डालते हैं और यह एकमात्र वृक्षों का ही कार्य है कि आपके छोड़े गये CO_2 मे से कार्बन को ग्रहण कर आपके लिए उपकारी मीठे फलादि प्रदान करते हैं और उपयोगी प्राण स्वरूप आक्सिजन को मुक्त कर देते हैं जिसे हम श्वास द्वारा ग्रहण कर शरीर में नवजीवन का संचार रक्त की शुद्धि हो जाने से करते हैं। मेरा तो व्यक्तिगत अटल धारणा है कि वृक्षों की कमी से उतना नुकसान नहीं हुआ है, क्योंकि वायुमण्डल में सामान्यतया प्रकाशादि के कारण अशुद्धि हो ही जाती है और Normal Ratio से वृद्धि हो दुर्घटनायें अपेक्षाकृत कम होना है) जितना कि कार्बन का कमी से (जो कि प्राणियों के जीवित रहने से अधिक उत्पन्न होता) फलों तथा अनाजादि के स्वादु गुण एवं परिमाण की कमी से स्वयं दृष्टिगोचर हो रहा है जो कि प्राचीनकाल में कभी होता नहीं था। इस प्रकार यह स्वयं सिद्ध हो गया है कि आपके लिए वायुमण्डल को शुद्ध करने का मुख्य कार्य इन वृक्षों का है जिसके बिना आप एक क्षण जीवित नहीं रह सकते हैं। इसलिए इनकी रक्षा करना आपका परम धर्म होना चाहिये और ... पर है। जलाने के रूप में इनका उपयोग होना चाहिये, हरे काट कर नहीं।

[आ] जल—वायु के पश्चात् इसका दूसरा नम्बर है जिसे संस्कृत में जीवन भी कहा गया है क्योंकि भोजन के बिना भी आप केवल इसे उपवास के समय सेवन कर जीवन धारण कर सकते हैं। इसमें स्नान, सफाई आदि कार्य करने के कारण आपके द्वारा उत्सर्जित द्रव्यों के सम्मिश्रण के फलस्वरूप यह बहुत गन्दा हो जाता है तो इसकी सफाई का मुख्य कार्य करते मछली आदि जलीय जन्तुओं का है जो उन्हें निर्मल बनाते हैं अतएव परमात्मा द्वारा प्रदत्त इन म्युनिसिपैलिटी डिपार्टमेन्ट के सतत जागरूक रक्षकों का दण्ड देना तथा हनन करना अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारने की उक्ति को ही चरितार्थ कर 'कालेरा Cholera' आदि महामारियों को आवाहन करना है।

[इ] भोजन—इसके विषय मे मैं प्रारम्भ मे ही कह चुका हूं कि संसार के समस्त भोज्य पदार्थों मे जितने भी भोज्य पदार्थ हैं उनमें 'दूध' ही एक मात्र ऐसा पूर्ण भोजन द्रव्य है जो बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक हरेक स्थिति में समानरूप से लाभकारी है जिसका मूल स्रोत पशुरक्षा में सन्निहित है, जिसके सामाजिक लाभों का परिगणन ऊपर की पंक्तियों में कर चुका हूं।

आर्थिक लाभों की स्पष्ट व्याख्या महर्षि दयानन्दजी ने 'गोकरुणानिधि' पुस्तक में कर दी है अतएव पाठक गण इसे वहीं से देख अनुकरण करने का यत्न करें। संक्षेपतः प्रथम लाभ यह है कि यह आपके द्वारा उच्छिष्ट द्रव्यों को खा संसार को अमृत तुल्य गुणकारी दुग्धादि से परिपोषण करती है दूसरे एक गाय के वध से केवल ८० मांसाहारी मनुष्य एक बार में तृप्त हो सकते हैं और उस जीवन से दूध, बछड़े आदि से अनेकों आदमियों का पालन एवं कृषि कार्य का सम्पादन होता है। इसी अनुपात से बकरी के वध एवं जीवन से हानिलाभ का अनुमान विज्ञ पाठक स्वयं लगा सकते हैं।

तीसरे मरने पर चमड़ा जूता आदि के निर्माण मे उपयुक्त होता है और हड्डियां खाद के रूप में। इस प्रकार इनके उपर्युक्त सामाजिक व आर्थिक लाभों की अधिकता के ही कारण मातृवत् उपकारी समझ धार्मिक रूप से 'गो माता' कहा गया है।

इस प्रकार यदि हम कबूतरों, मुर्गी बकरियों ... इन प्राणियों का वध न करने का प्रण ले लें वैज्ञानिक युक्तियों के आधार पर जिसका मैंने वर्णन किया (क्योंकि वस्तुतः हम इनके जीवन में अधिक लाभ वास्तव में है पर प्रचाराभावात् तथा राजाश्रय न पाने से अन्धकार के गर्त में विलीन हैं) तो उस ईश की सृष्टि में आपको जिस प्रकार भोजन मिलता है उन्हें भी अवश्य भोजन प्राप्त हो जावेगा, (उसके नियम में हस्तक्षेप करने की कृपा न कीजिए) आप सद्-सद्विवेक युत हो कम से कम स्वान्त. सुखाय वाली मनोवृत्ति का तो परित्याग कीजिये।

अब यदि हम भारतीय परिवार समवेत हो शान्त चित्त से विचार करें ... संवर्धन के निम्न सम्भव उपाय हो सकते हैं —

१—... सब प्रकार के धार्मिक संस्था के मान्य ज्ञानियों द्वारा रक्षण एवं हनन से होने वाले लाभ व हानियों का सम्यक्तया चित्रण द्वारा प्रदर्शन एवं प्रचार के समस्त सम्भव उपायों के आश्रय की स्वीकृति।

२—जिस प्रकार प्रत्येक भारतीय परिवार 'नित्य वृद्धोपसेविनः' के अनुकूल अपने बूढ़े माता पिता को जीवन पर्यन्त निर्वाह करने का व्रत लेता है यदि इसी प्रकार हम सब पालेंगे (क्योंकि इनकी वर्तमान संख्या टोटल भारतीय संख्या के १० के पीछे १ विद्यमान है।)

यह नहीं कि जब तक दूध देगी रक्खेंगे, बाद मे कसाई के हाथ सौंप देंगे—ऐसा नहीं जैसा कि आजकल हो रहा है तो किसी गोरक्षिणी सभा की आवश्यकता न रहेगी और सरकार के ऊपर व्यर्थ के दोषारोपण से भी मुक्त हो जावेंगे।

क्योंकि स्वतन्त्रता प्राप्ति के अभी केवल १० वर्ष व्यतीत हुये हैं। राष्ट्र के कर्णधारों का ध्यान इन छोटी छोटी बातों की ओर आकृष्ट करना हम लोगों को उचित नहीं और न पदलोलुपता के इन झगड़ों में पड़ने की ही आवश्यकता है क्योंकि धर्म निरपेक्ष राज्य मे कोई भी कानून किसी के धर्म के प्रतिकूल नहीं बनाया जा सकता है फिर ऐसी स्थिति में जबकि काश्मीर की एक प्रमुख समस्या उपस्थित है।

३—विलासिता के साधन स्वरूप क्रोम लेदर आदि चमड़े का उपयोग नहीं करने का प्रण कर लेना चाहिये क्योंकि अधिकतर इन पशुओं का वध चमड़े के लिए ही होता है।

यदि उपर्युक्त आश्रयों का अवलंबन कर सत्य का प्रचार चलचित्र पटों द्वारा सुव्यवस्थित ढंग से किया जाय तो भारत में पुनः घी दूध की नदियां घर घर बहें और हम उन्हें पान कर सबल हो पुनः भारत माता को उसी उन्नत पथ पर आसीन देंगे।

समाचार समीक्षा

[पृष्ठ ४ का शेष]

श्रीमती अरुणा दिल्ली की मेयर निर्वाचित

दिल्ली निगम के मेयर के स्थान पर श्रीमती अरुणा आसफ अली और डिप्टी मेयर के स्थान पर श्री रामचरण अग्रवाल चुन गये। श्रीमती अरुणा स्वतन्त्रता संग्राम की पुरानी कार्यकर्त्री हैं और देश के प्रमुख नेताओं में आपका स्थान है। आपने निर्वाचन के बाद कहा कि दिल्ली को आदर्श नगरी बनाने के लिए मैं पूरा प्रयत्न करेगी। श्री रामचरण अग्रवाल पहले कांग्रेस के कार्यकर्ता थे पर इस बार उन्होंने स्वतन्त्र रूप में चुनाव जीता है। वे दिल्ली के एक प्रमुख राजनीतिक नेता समझे जाते हैं।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री लोक सभा की सीट के लिए खड़े

गुड़गावा जिले से लोक सभा के एक सदस्य का जो स्थान मौलाना आजाद की मृत्यु के कारण रिक्त हुआ है उसके लिए आर्य जगत के एक प्रमुख नेता श्री प्रकाशवीर शास्त्री भी स्वतन्त्र रूप से खड़े हुए हैं। कांग्रेस की ओर से श्री मौलाचन्द शर्मा खड़े किये गए हैं जो अब जनसंघ छोड़कर कांग्रेसी बन गए हैं। हिन्दू सभा की ओर से प्रो० रामसिंह भी खड़े हैं।

वैसे तो कुल ११ व्यक्ति इस स्थान के लिए खड़े हैं जिसमें एक अखबार बेचने वाला भी है।

कैरो मन्त्रिमंडल में परिवर्तन अवश्यम्भावी

दिन प्रति दिन पंजाब कांग्रेस में बढ़ रही विषमता और फूट को देखकर अब राजनीतिज्ञों का यह अनुमान है कि कैरो मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन अवश्यम्भावी है। कैरो के विरुद्ध लगाये गये आरोपों की जांच प्रारम्भ हो गई है। यदि आरोप प्रमाणित हो गया तो वे हटा दिये जायेंगे। राज्य कांग्रेस की गड़बड़ स्थिति को देखकर ज्ञानी गुरुमुख सिंह ने पुनः राज्य कांग्रेस की अध्यक्षता स्वीकार करने में अपनी असमर्थता प्रकट की है।

दूसरा स्पूतनिक जलकर नष्ट

विभिन्न सूत्रों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर बताया गया है कि दूसरा स्पूतनिक जलकर नष्ट हो गया। बरजिन टापू से एक डच जहाज ने सूचना दी है कि आकाश से आग का एक गोला पृथ्वी पर गिरता दिखाई दिया है। रायटर ने बारबेडास के समाचार के आधार पर कहा है कि सैकड़ों लोगों द्वारा दूसरे स्पूतनिक को जल कर नष्ट होते देखा गया। सात मिनट में यह जल कर नष्ट हो गया। नष्ट होते समय यह धूमकेतु के समान था।

पाकिस्तान को विरोध पत्र

आसाम सरकार ने पाकिस्तान सरकार को एक कड़ा विरोध पत्र दिया है कि पाकिस्तानियों ने गैर-कानूनी ढंग से सुरमा नदी में मछली मारना प्रारम्भ कर दिया है। यह स्थान करीमगंज और सिलहट के आस-पास है। अबतक केवल भारतीय ही इस नदी में मछली मारते थे। यह नदी भारत की है और भारतीय सीमा में है। पाकिस्तान ने कभी इस नदी पर अपना अधिकार प्रकट भी नहीं किया है।

गुरुकुल अयोध्या

कुलपति—पूज्य स्वामी त्यागानन्द जी महाराज
प्रधान—श्री हीरालाल जी भूतपूर्व इन्जीनियर गाजीपुर
उपप्रधान—श्री जगन्नाथप्रसाद केसरवानी लखनऊ
उपप्र०—श्री महावीरसिंह बघेल फैजाबाद
मन्त्री—श्री प० रामचन्द्र वैद्य आयुर्वेदाचार्य फैजाबाद

मुख्याधिष्ठाता—श्री जगदीश्वरीप्रसाद जी मन्त्री आ० स० फैजाबाद
स० „—श्री रामसुन्दर जी उपाध्याय
निरीक्षक—श्री रामजी प्रसाद गुप्त मुगलसराय

२८।३।४८ को अन्तरङ्गसमिति ने सर्वसम्मति से श्री कृष्णदेव जी को उनके अवाञ्छनीय तथा अनैतिक व्यवहार के कारण स० अधिष्ठाता पद तथा गुरुकुल से पृथक कर दिया है। अब गुरुकुल के नाम पर उन्हें किसी प्रकार का धन नहीं दिया जाय। कार्यालय तथा औषधालय का हिसाब दिये बिना वे २०।२।४८ की रात्रि को भाग गये थे।

आ० स० बगही चुनार

२९ मार्च को विशेष रूप से इस समाज की ओर से शिवशंकरी मेले में वैदिक धर्म का प्रचार हुआ। ठाकुर बहादुरसिंह, विन्देश्वरी सिंह और रामप्रसाद जी बनारस ने भजनोपदेश द्वारा प्रचार किया। इस अवसर पर सहसराम के आर्यों का एक सम्मेलन भी हुआ। इससे पूर्व आर्य समाज स्थापना पर्व सोत्साह मनाया गया था।
प्रधान—श्री बनारसी प्रसाद आर्य
मन्त्री—श्री महादेव प्रसाद आर्य
कोषा०—श्री रामदास आर्य

आ० स० विनयनगर नई दिल्ली

आ० स० विनयनगर नयी दिल्ली का ४ था वार्षिकोत्सव समारोह सम्पन्न हुआ। महात्मा आनन्द भिक्षु स्वामी रामेश्वरानन्द, प० बुद्धदेव जी श्री श्याम जी पराशर, श्री रघुवीरसिंह शास्त्री आदि के भाषण हुए। ६ अप्रैल को महाशय कृष्ण की अध्यक्षता में राष्ट्रभाषा सम्मेलन हुआ जिसका उद्घाटन श्री अलगूराय शास्त्री ने किया। श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी का प्रभावशाली भाषण हुआ।

आ० स० सागरमिल खतौली

प्रधान—श्री फकीरचन्दजी फैक्टरी मैनेजर
मन्त्री—श्री सेवकराम
कोषा०—श्री गणपतिराम

आ० स० उरई

प्रधान—श्री रामशंकर सक्सेना
मन्त्री—श्री आराशंकर
कोषा०—श्री विश्वनाथ तिवारी

मारीशश मे हिन्दी प्रचार

मारीशश में वैदिक धर्म के प्रचार के कारण मातृभाषा हिन्दी का भी विशेष प्रचार हुआ है। सन् १९४६ में मकरसक्रान्ति पर्व के अवसर पर ३०० हिन्दी की पाठशालायें खोलने का निश्चय किया गया था और वेग के साथ चारों ओर हिंदी की पाठशालायें खोल दी गई। मारीशश के उच्च अधिकारियों ने इस हिन्दी प्रचार को विष समझा और इसकी भर्त्सना की और प्रचारकों को तरह तरह से सताना आरम्भ किया किंतु इस दमन नीति से हिन्दी का प्रचार रुका नहीं बल्कि बढ़ता ही गया और हजारों छात्र छात्राओं ने हिन्दी सीख ली है। मारीशश में हिन्दी का प्रचार खूब बढ़ रहा है और अनेक हिन्दी की पत्र पत्रिकाएं भी निकलने लगी हैं। गत मकर सक्रान्ति के अवसर पर १०० परीक्षार्थियों को प्रमाण पत्र दिए गये। ये प्रमाण पत्र केवल एक प्रान्त में ही वितरित किये गये हैं। सारे मारीशश में संख्या इससे बहुत अधिक है।

आ० स० मरघना

आर्य जगत् के सभी प्रचारकों, उपदेशकों व विद्वानों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ आने की सूचना एक सप्ताह पूर्व दें अन्यथा प्रबन्ध की व्यवस्था में कठिनाई होगी।

आ० स० सुमेरपुर

प्रधान—श्री वेदमित्र जी
मन्त्री—श्री जयपाल सिंह
कोषा०—श्री गिरिवर प्रसाद

वार्षिकोत्सव ३, ४, ५, मई का होगा। आ० स० स्थापना दिवस सोत्साह मनाया गया।

आ० स० कर्णपुरदत्त

प्रधान—श्री शंकरसिंह
मन्त्री—श्री उदयपाल सिंह
कोषा०—श्री देशराज जी

वेदप्रचार व होलिकोत्सव, पर श्री गजराजसिंह, स्वामी परमानन्द, स्वा० प्रेमानन्द जी आदि ने यहाँ प्रचार किया। अमृतपुर, कणपुर दत्त, नगला हुसा आदि गावों में प्रचार हुआ।

आ०स० दादरी

आ०स० दादरी का वार्षिकोत्सव २५, २६, २७ अप्रैल ४८ को होगा।
प्रधान—श्री महाशय छिम्मासिंह
मन्त्री—श्री यशपाल जी आयुर्वेदाचार्य
कोषा०—श्री शिवचरणदास जी

आ० स० बीबीनगर, बुलन्दशहर

प्रधान—श्री दुर्गादास मुनीम
मन्त्री—श्री बाबूलाल अध्यापक
कोषा०—श्री चौधरी हरदेव जी

आ.स. सिंगारनगर, लखनऊ

आ० स० सिंगारनगर, लखनऊ का छठवाँ वार्षिकोत्सव १८, १९, २०, २१ अप्रैल ४८ का होगा। नगर के आर्य बन्धुओं को अधिकाधिक संख्या में भाग लेना चाहिये। आचार्य विश्वश्रव श्री भद्रपाल जी आदि पधार रहे हैं। नित्य प्रातः ७ बजे अपराह्न ३ बजे और रात्रि में ७ बजे से प्रोग्राम होंगे।

आ०स० आरा, बिहार

इस समाज का ७१ वाँ वार्षिकोत्सव १९, २०, २१, २२ अप्रैल को हो रहा है जिसमें आर्य जगत् के अनेकों प्रमुख विद्वान् पधार रहे हैं। आर्य सम्मेलन, राष्ट्र भाषा सम्मेलन महिला सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध सम्मेलन आदि उत्सव के विशेष आकर्षण हैं।

गुरुकुल झज्झर

प्रधान—श्री विद्यार्थी दयानन्द
मन्त्री—श्री मनसाराम
कोषा०—श्री मातीराम

यहां साप्ताहिक सत्सग नियम पूर्वक हुआ करता है।

आ० स० नरकटियागंज

आर्यसमाज नरकटियागंज, चम्पारण ने एक मुसलिम परिवार की शुद्धि की जिसमें तीन व्यक्ति थे। शुद्धि संस्कार देखने के लिए दूर दूर से लोग आये थे। बड़े धूमधाम से संस्कार हुआ।

आ.स. मीरानपुर कटरा शाहजहाँपुर

प्रधान—श्री बाबूलाल
मन्त्री—श्री शालिगराम
कोषा०—श्री रामभरोसेलाल

आ० स० मवाना, मीरजापुर

श्री नरोत्तमसिंह जी ने १००) रु० इस समाज की स्थिर निधि के लिए दान दिया है। यह दान जलकुम्हारदेवी के यादगार में मिला है। उन्होंने अन्य संस्थाओं को भी ५५) रु० दान दिया है। वे सर्वथा धन्यवाद के पात्र हैं।

आ० स० मुमतारपुर बिजनौर

प्रधान—श्री महाराजसिंह
मन्त्री—श्री रामस्वरूप जी
कोषा०—श्री घासाराम जी

आ० स० किरियात, मीरजापुर

प्रधान—श्री यज्ञनारायणसिंह
मन्त्री—श्री बेचनरामसिंह
कोषा०—श्री मंगेलूरामसिंह

ठाकुर महावीरसिंह भजनोपदेशक की अध्यक्षता में यहाँ आर्यों का एक सम्मेलन हुआ। अगले वर्ष के लिए श्री बेचनराम सिंह मन्त्री चुने गये।

जिला आर्य उप सभा मेरठ

प्रधान—श्री रघुनन्दनलाल सुमन जी
मन्त्री—श्री दीवानसिंह आर्य
कोषा०—श्री धर्मपाल आर्य, परीक्षक

पुस्तक परिचय

FOUNTAIN Head Of RELIGION

By Pandit Ganga Pd Jee M A, M R A S Retd Chief Justice Tehri Garwal State

Publisher Arya Sahitya Mandal Ltd, Ajmer Price Rs 4/ Pages 200

Fountain head of Religion', a famous book of the religions world, written by a famous writer of the Arya Samaj Pandit Ganga Pd M A, gives a very clear conception and a beautiful introduction of the five principal religions of the world and proves at last that all the religions of the world spring from the Vedas and therefore the Vedas are the fountain head of all the religions.

The five religions are Mahommedanism, Christianity, Buddhism Judaism and Zoroastrianism which have been comparatively studied with the Vedic religion The book reaches to the conclusion that all the religions of the world are traceable to the Vedas but Vedic religion is not so traceable to any older religion or book So Vedic religion is the oldest religion and at the same time a perfect religion, based on the Vedas This is a very good book for the comparative study of all the religions

—B Sharan

आर्य उप प्रति० सभा वाराणसी

प्रधान—श्री महाशय जीवनदास
मन्त्री—श्री नानकराम, मौजूवीर
कोषा०—श्री डा० आनन्द स्वरूप सिंह
निरीक्षक—श्री ला० सतराम अरोड़ा

आर्य म० नामकुआं (जैतपुरा) वाराणसी

प्रधान—श्री विश्वनाथ प्रसाद जी
मन्त्री—श्री शिवनाथ प्रसाद जी
कोषाध्यक्ष—श्री मातीलाल जी
निरीक्षक—श्री ला० सतराम अरोड़ा

क्षेत्रीय फार्मूले में ९ वीं और १० वीं धारा का कोई स्थान, नहीं है

श्रीरामगोपाल शालवाले मंत्री सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा का वक्तव्य

समाचार पत्रों में अकाली दल ने गृहमन्त्री श्री गोविन्द वल्लभ जी पन्त के किसी पत्र का कुछ अंश प्रकाशित कराया है। कहा गया है कि यह पत्र श्री पन्त जी ने संसद के उपाध्यक्ष श्री सरदार हुकमसिंह जी को लिख कर यह आश्वासन दिया है कि माननीय राष्ट्रपति ने क्षेत्रीय फार्मूले में से संख्या ९वीं १०वीं कण्डिका को नहीं निकाला है तथा संसद ने क्षेत्रीय फार्मूले को अपनी स्वीकृति प्रदान की है। अस्तु।

दि० ४ नवम्बर ५७ के सरकारी गजट में हमारी अभी तक जानकारी के अनुसार माननीय राष्ट्रपति महोदय ने क्षेत्रीय फार्मूले को स्वीकार करते हुए उसमें भाषा सम्बन्धी ९वीं और १० वीं कण्डिका को स्थान नहीं दिया और न संसद की किसी भी बैठक ने क्षेत्रीय फार्मूले को स्वीकार किया।

सभा ने गृहमन्त्री श्री पन्त जी से उस पत्र की प्रतिलिपि जो उन्होंने सरदार हुकमसिंह को लिखा है तथा जिसका कुछ अंश अकाली दल नेसमाचार पत्रों में प्रकाशित कराया है, मांगा है।

इस परिस्थिति पर विचार करने के लिए २७ अप्रैल को दिल्ली में आन्दोलन से सम्बन्धित सदस्यों की एक मीटिंग बुलाई गई है जो इस समस्या पर विचार करके भावी कार्य क्रम निर्धारित करेगा।

राष्ट्र भाषा स्वाध्याय मण्डल

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती के प्रयास से ग्राम इसमाइलचक, पो० परमानन्दपुर जिला-सारन में एक राष्ट्रभाषा स्वाध्याय मण्डल खोला गया है जहां से हिन्दी भाषा का अधिकाधिक प्रचार और अंग्रेजी का बहिष्कार किया जायेगा।

आ०स० सम्भोर, बिजनौर

प्रधान—श्री मनोहर सिंह
मन्त्री—श्री ठाकुरसिंह
कोषा०—श्री कन्हैयासिंह

आ०स० मऊनाथ भंजन आजमगढ़

प्रधान—श्री धर्मदत्त जी
मन्त्री—श्री मंगलराय जी
कोषा०—श्री त्रिविक्रमप्रसाद जी

आ०स० सोरों, एटा

प्रधान—श्री डा० देवशरण
मन्त्री—मि० आर०डी०भारद्वाज एम०ए०
कोषा०—श्री हरिकृष्ण गुर्नाम

समाज मन्दिर निर्माणार्थ श्री राजेन्द्रदेव ने ११) तथा श्री शंकरलाल रघुवर दयाल ने ३४०) दान दिया। आपने १६०) और देकर ५००) रु० पूरा करने का वचन दिया है।

वृक्षों में जीव का प्रश्न

मन्त्री आ० स० सिरसागंज का पत्र वृक्षों में जीव विषयक मिला। इसमें महर्षि दयानन्द जी के ग्रन्थों के २ स्थलों द्वारा वृक्षों में जीव होना सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है जो कि भ्रान्तिपूर्ण है। इन दोनों स्थलों का वास्तविक भाव यह है —

(१) सत्यार्थप्रकाश के ९ वें समुल्लास का यह प्रकरण "पुनर्जन्म" की सिद्धि का है जिसमें ये स्थावर वृत्तिक यश्च इत्यादि मनुस्मृति के श्लोक महर्षि ने 'पुनर्जन्म' के पोषण में साक्षी रूप से उपस्थित किये और उनका अनुवाद भी कर दिया। मूलश्लोक या अनुवाद की सारी बातें स्वयं महर्षि का सिद्धान्त नहीं बन सकती अन्यथा इन्हीं श्लोकों से 'शूद्राम्लेच्छाश्च गार्हिता' चारणाश्च सुपर्णाश्च पुरुषाश्चैव दाम्भिका। 'झल्ला मल्ला नटाश्चैव' 'नक्षत्राणि च' आदि पदों में आये शूद्र म्लेच्छ चारण कपटी पुरुष झल्ल मल्ल नट भी योनि विशेष तथा नक्षत्रों को भी चेतन मानना होगा जो स्वामी जी की प्रसिद्ध मान्यताओं के विरुद्ध होगा।

अतः यह प्रकरण केवल पुनर्जन्म के पोषण में साक्षी रूप में ग्रहण करना चाहिए प्रमाण रूप में नहीं।

(२) दूसरे उद्धरण में भी लेखक को भ्रम रहा है। क्योंकि वह वायु के साथ रहता है, (पुनः) जल औषधि व प्राण आदि में प्रवेश करके वीर्य में प्रवेश करता है तदनन्तर योनि अर्थात् गर्भाशय में स्थिर हो के पुनः जन्म लेता है।"

इन पंक्तियों में आये जीव "जल, औषधि में प्रवेश करता है" इन शब्दों में भ्रम डाल दिया है, वस्तुतः वे यदि उपरोक्त पंक्तियों में नीचे रेखा किये वाक्य को समझ जाते तो उनका भ्रम मिट जाता। क्योंकि इस वाक्य ने यह प्रकट कर दिया, कि पुनर्जन्म तो गर्भाशय में स्थिर होने से ही होता है, उससे पूर्व जीव का जल औषधि आदि में प्रवेश वैसा ही है, जैसा मेरा लखनऊ आने के लिए रेल में प्रवेश, उससे रेल मुझ जीव के वहाँ रहते हुए भी चेतन नहीं हो जाती अतः इस स्थल से भी वृक्ष चेतन है, यह सिद्ध नहीं होता अन्यथा क्या जल को भी चेतन माना जा सकता है? क्योंकि उक्त उदाहरण में तो जल में भी जीव का प्रवेश लिखा गया है।

—ओम्प्रकाश शास्त्री

आर्य वीर दल का शिक्षण शिविर

बिजनौर। पश्चिमी क्षेत्र आर्यवीर दल के १३ जिलों का शिक्षण शिविर १५ मई से लगाने का निश्चय हुआ है। स्थान का निर्णय शीघ्र होगा। इस शिविर में ५० आर्यवीर ही शिक्षण प्राप्त कर सकेंगे। शिक्षण में प्रथम आने वाले आर्य वीर को ७०) मासिक पर सहयोग के रूप में रख लिया जायेगा। जिनकी संख्या लगभग १३ होगी। शिविर में आने वाले शिक्षार्थियों को तुरन्त प्रार्थना पत्र भेजने चाहिए। प्रार्थना पत्र आर्य समाज के किसी भी अधिकारी द्वारा स्वीकृत होना चाहिए। शिक्षार्थी को हाई स्कूल या शास्त्री पास होना चाहिए आयु १८ वर्ष से कम नहीं होना चाहिए। १०) शिविर शुल्क प्रार्थना पत्र के साथ आ जाना चाहिए। इस शिविर में उच्च कोटि की बौद्धिक शिक्षा दी जायगी। पश्चिमी क्षेत्र की समाजों का यह परम कर्तव्य है कि वह अपने यहाँ से योग्य युवकों को इस शिविर में भेजें। समय की यह मांग है। ३० अप्रैल तक प्रार्थना पत्र और शुल्क निम्न लिखित पते पर पहुँचने चाहिए।

—नैपालसिंह आर्य
उपसंचालक आर्यवीरदल (उत्तरप्रदेश)
मोहल्ला—जाटान
बिजनौर

मन्दिर निर्माण की अपील

सभी धनी मानी सज्जनों से निवेदन है कि आर्यसमाज उस्का बाजार जि० बस्ती के समाज मन्दिर के निर्माणार्थ समाज को धन की आवश्यकता है। कृपया निम्न पते से अधिकाधिक धन भेज कर अनुगृहीत कीजिए। —मोहरलाल आर्य प्रधान, आ०स० उस्का बाजार, बस्ती

आ०स० सम्भल, मुरादाबाद

इस समाज का वार्षिकोत्सव २३ से २६ मई ५८ तक मनाया जायगा जिसमें प्रसिद्ध आर्य विद्वानों के भाषण होंगे।

जिला सभा मैनपुरी

प्रधान—श्री दयाराम जी
मन्त्री—श्री सरदार सिंह
कोषा०—श्री जयपालसिंह
प्रा०प्रतिनिधि—श्री सच्चिदानन्द
" श्री जौहर सिंह
" " सरदारसिंह
" " मोहनलाल चड्ढा

जिला सभा बदायूँ

प्रधान—श्री कृष्ण स्वरूप विद्यालंकार
मन्त्री—श्री रामचन्द्र जी
कोषा०—श्री सोहनलाल जी

श्री बी०एन० पाल द्वारा सभा को १५०) का दान



श्री बी० एन० पाल बी एस सी एल एल बी, अवैतनिक उपदेशक सभा, मैजिक लैन्टर्न प्रचारक, सहा० मन्त्री आर्यसमाज सदर बाजार लखनऊ ने पिछले दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश को १५०) दान दिया है जिसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं समाज इन्हें प्रचारार्थ अपने उत्सवों पर बुलाकर लाभ उठावें।

पंजीकरण सं. ए. ६०

३० चैत्र १८८० (२० अप्रैल ५८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ५११३ तार : 'आर्यमित्र'

बालार्य सभा पसौण्डा

३०,३१ मार्च व १ अप्रैल को सभा का उत्सव ससमारोह मनाया गया। श्री नन्दलाल जी, श्री रामचन्द्र जी, व श्री विश्वनाथ आर्य वीर उपप्रधान जिला सभा मेरठ के भजन व भाषण हुए। श्री आर्यवीर ने १० नव युवकों का यज्ञोपवीत संस्कार कराया।

आ०स० रसौली बाराबंकी

का २२ वां वार्षिकोत्सव ४ से ६ अप्रैल तक ससमारोह मनाया गया जिसमें पं० गोपालदत्त शास्त्री, श्री विष्णु स्वरूप जी, श्री राजबहादुर जी श्री रामनारायण विद्यार्थी, श्री क्षेम चन्द, ब्र० परमानन्द, श्री सुरेन्द्र शुक्ल आदि के भाषण व भजन हुए।

आ०स० मण्डी धनौरा

श्री सेठ राधेलाल अग्रवाल यहां के एक प्रमुख आर्यसमाजी हैं। आप प्रति वर्ष गायत्री महायज्ञ कराते हैं। इस वर्ष २१ से २८ मार्च तक ६१००पाठ से गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। आपके स्थायी यज्ञाचार्य हैं देहली शाहदरा निवासी श्री पं० सुरेन्द्र शर्मा गौर काव्य वेदतीर्थ। इस अवसर पर देहरादून निवासी श्रीमती स्वर्णलता देवी ने भजनों से प्रचार किया। बड़े समारोह के साथ पूर्णाहुति हुई। इस कार्य के लिए सेठ जी धन्यवाद के पात्र हैं।

आ० स० फरीदनगर मेरठ

प्रधान—श्री राधेलाल बजाज
मन्त्री—श्री रवीन्द्रप्रकाश आर्य
कोषा०—श्री मुन्नालाल

आ० स० औरैया

इस समाज का वार्षिकोत्सव १०, ११, १२ मार्च को मनाया गया जिसमें प० प्रकाशवीर शास्त्री, पं० विहारी लाल शास्त्री, पं० सत्यमित्र शास्त्री के भाषण तथा श्री भद्रपाल जी व रामचन्द्र जी के भजनोपदेश हुए। आ०स० स्थापना दिवस भी सोत्साह मनाया गया। समाज के सदस्य श्री छोटेलाल जी के यहां गायत्री यज्ञ भी हुआ। रामनवमी का पर्व भी सोत्साह मनाया गया। ब्रह्मचारी देवेन्द्र जी का भाषण हुआ।

आर्यवीर दल पाथौली, मेरठ

नगरनायक—श्री किरणसिंह
उप नगर नायक—श्री रोहताश
प्रचार मन्त्री—श्री भंवरसिंह
मन्त्री—श्री वेगराजसिंह
उप मन्त्री—श्री किरणसिंह

आ० स० गंज मुरादाबाद

यहां आ० स० स्थापना दिवस ससमारोह मनाया गया। पं० सुखदेव जी का विशेष रूप से भाषण हुआ।

आ०स० गाजीपुर

प्रधान—श्री बचन राम
मन्त्री—श्री अमरनाथ शर्मा
कोषा०—श्री राजाराम आर्य

आ०स० ग्वालियर नगर

प्रधान—श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री
मन्त्री—श्री शंकरलाल आर्य
कोषा०—श्री जानकीप्रसाद

आ० स० मीरजापुर

आ०स० मीरजापुर का ७३ वां वार्षिकोत्सव २६ से २६ अप्रैल ५८ तक मनाया जायेगा। पं० विद्यानन्द जी, श्री सत्यमित्र शास्त्री, श्री ज्ञानेन्द्र देव सूफी, श्री जगनन्दनलाल एडवोकेट श्री महिपालसिंह आदि के पधारने की आशा है। पं०रामनारायण शास्त्री विहार और श्री जोरावर सिंह भी पधारेंगे।

गुरुकुल सूर्यकुण्ड बदायूँ

गुरुकुल का ५५ वां वार्षिकोत्सव २६, ३०, ३१ मार्च को मनाया गया स्वामी अभेदानन्द जी, पं० प्रकाशवीर शास्त्री, प० विहारीलाल शास्त्री, श्री ओंकार मिश्र प्रणव आदि के भाषण हुए। हिन्दी सम्मेलन, आर्य सम्मेलन वेद सम्मेलन आदि अनेकों सम्मेलन भी हुए। वाकप्रतियोगिता में दुर्गेश्वर विद्यालय पीलीभीत को शील्ड मिली।

आ०स० आर्मापुर स्टेट, कानपुर

प्रधान—श्री वेदपाल कौड़ा
मन्त्री—श्री आशादीन वर्मा
कोषा०—श्री रामपालसिंह

आ०स० गोंडा

इस समाज की ओर से निश्चित कार्यक्रम के अनुसार २१ मार्च को आ० स० स्थापना दिवस मनाया गया।

मगला में आ० स० की स्थापना

इस प्रसिद्ध ग्राम के निवासियों ने २१ मार्च को आ० स० स्थापना दिवस के अवसर पर अपने गांव में आ०स० स्थापित करना निश्चय किया और यज्ञादि करने ग्राम के प्रतिष्ठित नागरिकों की सभा हुई जिसमें आ० स० की स्थापना हुई। श्री आशाराम जी प्रधान, श्री मास्टर मानचन्द जी मन्त्री तथा श्री चन्द्रगुप्त जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

आ०स० सिमरिया, हरदोई

प्रधान श्री माधवप्रसाद आर्य
मन्त्री—श्री अनन्तराम शर्मा
कोषा०—श्री रघुवीर शरणजी

आ०स० मगहर बस्ती

प्रधान—श्री चन्द्रकिशोर आर्य
मन्त्री—श्री भागवत प्रसाद आर्य
कोषा०—श्री रामाश्रम आर्य

आ० स० मभुआ विहार

यहां आर्यसमाज स्थापना दिवस सोत्साह मनाया गया। आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द के जीवन पर उपयोगी भाषण हुए।

आ०स० लवपुरी

श्री विजय बहादुर सक्सेना के पुत्रों का कर्णभेद, वेदारम्भ और यज्ञोपवीत संस्कार प० जागेश्वरप्रसाद अवस्थी ने कराया।

बाबूराम भारता द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित



अग्निहोत्र

ओ३म् सजूर्देवेन सविता सजूरुषसेन्द्र वत्या जुषाणः सूर्योवेतु ।।

यजु० अ० 3 मन्त्र १० का प्रतीक

उदय होते हुये अरुणदेव का सेवन करते हुये, ऐश्वर्य शालिनी उषा का सेवन करते हुये उदय हुये सूर्य को हम प्राप्त हों अर्थात् उसके तेज और प्रकाश से संयुक्त हों।

ओ३म् अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा ।१।
ओ३म् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।२।
ओ३म् अग्निर्ज्योति-र्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।३।

यजुर्वेद अ० २ मन्त्र ६ का प्रतीक

अग्नि ही प्रकाश का हेतु है और प्रकाश अग्नि है, अग्नि ही तेज है और उसका प्रकाश ही तेजोरूप है।

अग्नि ही ज्योति स्तम्भ है और निशा में ज्योतिः अग्नि ही है।

(सायंकाल सूर्यदेव के अस्ताचल चले जाने पर अग्नि के महत्व को लक्ष्य करके इन आहुतियों के देने का विधान है)

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ।४।

यजुर्वेद अ० ३ मन्त्र १० का प्रतीक

अस्ताचल को जाते हुये सूर्य देवता का सेवन करते हुये और ऐश्वर्यशालिनी रजनी का सेवन करते हुये हम अग्निदेव के तेज और प्रकाश से संयुक्त हों।

—शिवदयालु

...दिक प्रार्थना

...ओं य आधाय चकमानाय पित्वोऽन्न ...रत्सन्नाफितायोपजग्मुषे। स्थिरं मनः ...रु सेवते पुरोतोचित्स मर्डितारं न विन्दते।

ऋ० १०।११७।२

...जो अन्न वाला होते हुए ऐसे दीन ...ज्ञानी के विरुद्ध अपना हृदय कड़ा कर ...ता है जो उसके पास अन्न मांगने आता ...वैसा मनुष्य किसी को अपना उपकार ...ने वाला नहीं पाता।

शिवदयालु

इस अंक के आकर्षण

कठोपनिषद् कथा (६)

मृत्यु से भय कैसा ?

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम०ए० एल०टी०, डी० बी० कालेज, गोरखपुर]

(गतांक से आगे)

वाजश्रवा का पुत्र नचिकेता जब अपने पिता को निकम्मी गायों का दान करते हुए देखता है तो सोचता है कि अनुपयोगी वस्तुओं के दान का क्या लाभ ? यह तो दान लेने वाले के लिए भार रूप होंगी। कोई किसी के आगे हाथ पसारता है अपने लाभ के लिए और यहां पिता जी ने उन गायों को जिनका दूध समाप्त हो गया है केवल दिखाने के लिए दान कर दिया और मुझे दिया नहीं। सर्वमेध यज्ञ तो तभी पूरा होगा जब वे सबसे प्रिय वस्तु मेरा भी दान करेंगे अतः उसने उनसे पूछा कि आप मुझे किसे दे रहे हैं, दो बार पूछा, तीन बार पूछा पिता ने कहा यम को। नचिकेता यम के घर चल पड़ा और सोचने लगा कि मुझसे यम क्या कार्य लेगा। यम कहते हैं मृत्यु को। मृत्यु के सामने समर्पण करना आसान नहीं परन्तु मृत्यु पर नियंत्रण एवं अनुशासन रखने वाले आचार्य तो और भी भयंकर लगते हैं। आचार्य की दो विशेषताएं होती हैं वह मधुर भी होता है और कठोर भी। कहना न होगा गुरुकुल कांगड़ी के भूतपूर्व आचार्य अभयदेव जी विद्यार्थियों को हृदय से शुभ-कामना एवं उन्नति चाहते थे परन्तु उनके समय के हम विद्यार्थी उस यम के समान आचार्य के पास पहुंचते हुए कांप उठते थे। आचार्य जी ने किसी को बुलाया है तो यह बात सारे आश्रम में फैल जाती और जब वह आता तो सब उसके पास पहुंच जाते कि क्या बात हुई और तब जान में जान आती थी। आचार्य चाणक्य के नाम से सम्राट चन्द्रगुप्त कांपता था यही तो आचार्य का महत्व है। तो नचिकेता के मन में भी यम के पास जाते हुए यह विचार उत्पन्न होना कि वह मुझसे क्या काम लेगा स्वाभाविक था। परन्तु नचिकेता दृढ़ निश्चय का मनुष्य था, उसने सोचा कि यदि यम कोई मुझसे कठोर से भी कठोर काम लेगा तो मैं उसे करूंगा क्योंकि अधिक से अधिक यही न होगा कि मेरा शरीर नष्ट हो जायगा। उसने सोचा कि मैं तो उसका सब कार्य कर ही दूंगा। हम जब यह समझते हैं कि यह साढ़े तीन हाथ का शरीर ही मेरा सार सर्वस्व है तब हम भय से कुछ कार्य नहीं कर पाते। परन्तु जब हम अपने ऊपर विश्वास रखते हैं तब हमारा उद्धार हो जाता है "उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्" मनुष्य को चाहिए कि वह अपने मन में निश्चय करे कि वह अपने को अवश्य ऊपर ले जायगा। कल्पना के पंख काट मत डालो। अपनी कल्पना को विशाल बनाओ। चण्डूल पक्षी का उदाहरण अपने सामने रखो प्रातःकाल सूर्य को देखकर चण्डूल कहता है कि मैं सूर्य तक उड़कर जाऊंगा। ऐसा ही उच्च आदर्श हमें रखना चाहिए। नचिकेता भी यम के किसी भी कार्य को पूरा करने का निश्चय करके चल पड़ा। उसने सोचा

अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथा परे सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिव जायते पुनः।

अर्थात् (यथा) जैसे (पूर्वे) पहले (हुआ उसे) (अनुपश्य) देख (तथा) वैसे ही (परे) आगे हुआ (प्रतिपश्य) देख कि (मर्त्यः) प्राणी (सस्यं इव) धान ही की तरह (पच्यते) मरता है (और) (सस्यमिव) धान ही की तरह (पुनः) फिर (आ जायते) उत्पन्न होता है।

मनुष्य किसी कार्य से भय क्यों करता है क्योंकि उसे अपने शरीर के नाश की चिन्ता होती है। यदि वह यह समझ ले कि उसे मरना है, मृत्यु अवश्यंभावी है तो वह सत्कार्यों को निर्भीकतापूर्वक करेगा और पाप के प्रति उसकी अनास्था होगी। हम तो मृत्यु के नाम से डरते हैं। परन्तु मृत्यु उतनी डरावनी है नहीं। मरण का शब्द भी हमें नहीं सुहाता। मरण का नाम ही हमें अमंगल मालूम होता है। ज्ञानदेव ने लिखा है "मर शब्द नहीं हैं सहते, मर जाते हैं तो रोते।" फिर जब कोई मर जाता है तो कितना रोना चिल्लाना मचता है। यहां तक कि किराये से रोने वाले बुलाने की बात आ पहुंची है। यदि डाक्टर ने यह कह दिया कि यह नहीं बचने का तो भी रोगी को अन्धकार में रखेंगे। किन्तु उन्हें यह डर लगता है कि कहीं इस धक्के से यह भांडा पहले ही न फूट जाय। परन्तु भला निश्चित समय से पहले यह भांडा फूटने वाला है और यदि वह थोड़ा पहले ही फूट गया तो उससे बिगड़ा क्या ? इसलिए नचिकेता ने सोचा कि संसार में वृक्ष, पौधे औषधियां पैदा होती हैं वैसे ही मनुष्य भी पैदा होता है और नष्ट होता है। सचमुच मृत्यु का स्मरण मनुष्य को पाप से बचाता है और संसार में निष्काम कर्म करने की प्रेरणा देता है।

राजा जनक का उदाहरण हमारे सामने है। दृष्टान्त के रूप में उसे सुनाता हूं। जनक जी का नाम कर्मयोगी के रूप में विख्यात हुआ। समाज में कुछ व्यक्ति दूसरों की प्रशंसा से उद्विग्न होते हैं और उनकी परीक्षा लेना चाहते हैं। नारद के विषय में भी ऐसा कहा जाता है। नारद के विषय में यह प्रसिद्ध है कि वह लोगों को लड़ाते फिरते थे। इसलिए शायद आगे चलकर समाज के ऐसे तत्व जो पारस्परिक फूट पैदा करते थे, नारद नाम से ही गृहीत होने लगे। प्रसंग वश नारद जी के विषय में एक रोचक कथा बताऊं। एकबार कहते हैं वे घूमते हुए एक गांव में पहुंचे। वहाँ एक परिवार बड़े प्रेम से रहता था। स्त्री पुरुष में कभी झगड़ा न होता था। कलह परिवार के नाश का कारण होता है और यही कारण था कि वह परिवार दिन प्रति दिन कलह न होने से उन्नति करता चला जा रहा था। पड़ोसियों में उसके प्रति द्वेष उत्पन्न हुआ और नारद जी से उन्होंने कहा कि आप यदि इन दोनों को लड़वा दीजिए तो हम आपको समझें। नारद ने चुनौती स्वीकार की और एक दिन शाम को पुरुष से मिले, बातचीत की और लम्बी बात के बाद उन्होंने कहा तुम्हारा सब कुछ ठीक है पर एक दो बात अच्छी नहीं कि वह तुम्हारी स्त्री पिछले जन्म में कुतिया थी। और जानना चाहो तो रात को देखना वह तुम्हारा शरीर प्रतिदिन चाटती है। उस स्त्री से भी नारद जी मिले और बात करने के बाद बोले कि और सब तो ठीक है, हां तुम्हारा पति पिछले जन्म में बैल था और तुम उसका शरीर रात को सोते समय चाट कर देखो तो नमकीन लगेगा। अब क्या था रात को दोनों एक दूसरे के सोने की प्रतीक्षा करते हुए जागते रहे। अन्त में जब स्त्री को विश्वास हो गया कि वह सो गया है तो वह उठी और जाकर उसकी देह चाटने लगी इधर पुरुष महोदय जागे हुए थे—झट से उठे और चिल्लाये तू कुतिया है और उसने कहा कि तू बैल है पड़ौस वाले इकट्ठे हुए और उन्होंने सूत न कपास जुलाहे में लट्ठम लट्ठा" की तरह वहां युद्ध होते देखा। और नारद जी की प्रशंसा की। वही नारद जी जनक की परीक्षा करने गये देखा कि वह तो स्त्रियों के बीच बैठा नाच गान और इसी तरह के भोग विलास देख रहे हैं। घृणा हुई वापस लौटे। पर फिर मन में आया चलो पूछें तो सही कि क्या बात है। वे गए और नारद से उन्होंने पूछा कि आप भोग भी करते हैं और योगी भी कहलाते हैं। क्या बात है ? जनक हंसे, बोले, अभी ठहरिए शाम को बताऊंगा, आराम कीजिए। शाम को जनक नारद को लेकर बगीचा घुमाने ले गए। जब नारद वहां पहुँचे तब तक जनक जी कहीं खिसक गए और दरवाजे पर एक भयंकर तलवार लिए एक जल्लाद खड़ा नारद जी को दिखाई दिया। नारद जी से उसने कहा महाराज, इस बगीचे का नियम यह है कि जो व्यक्ति इसे देखने आता है उसे यह देखना पड़ता है और देखने का नियम यह है कि उसे हाथ में पानी से भरा यह थाली रखनी पड़ती है और यदि एक भी बूंद पानी गिरेगा तो यह तलवार गर्दन पर होगी, अब जाइए, देखिए। मरता क्या न करता। सौ सुनार का और एक लुहार को। नारद जी थाली लेकर बगीचा घूमकर वापिस आए और वहां थाली रखकर जब दृष्टि उठाई तो जनक दिखाई दिए। जनक जी ने मुस्कराते हुए पूछा कि वह गुलाब का फूल कैसा था, कमल कैसा था। नारद जी झुंझला कर बोले कि कमल और गुलाब का फूल देखने की किसे फुर्सत थी अरे भाई वह तलवार वह मृत्यु मुझे दिखाई दे रही थी। इसलिए मेरा सारा ध्यान थाली पर था। न मैंने गुलाब देखा न कमल। जनक जी ने कहा कि ठीक यही बात मेरे लिए भी समझो। मुझे सदा मृत्यु का स्मरण रहता है। यही कारण है कि मैं स्त्रियों के नृत्य और गान के समय भी वैसे ही रहता हूं जैसे तुम कमल और गुलाब के होते हुए भी उनसे तटस्थ थे। क्या श्मशान भूमि में जाकर, मुर्दे को पास से गुजरते हुए देखकर यही भावनाएं नहीं आतीं। पाप का मनमें उदय होने पर मृत्यु का स्मरण, यम का स्मरण हमें पापों से छुटकारा दिला सकता है। और यही मृत्यु का निश्चित होना संसार के कार्यों में हमें लगा सकता है। जब मृत्यु निश्चित है तब किसी से डरना क्या, किसी से भयभीत क्या होना ? यही वह विचारधारा है जिसने नचिकेता के हृदय में आत्म विश्वास भरा और वह प्रसन्नता के साथ यम के घर चल दिया।

★

आर्य्य जगत मे सब से अधिक छपने वाला आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख्य पत्र

ओ३म्

आर्य्य मित्र

वर्ष ६०

अङ्क १६

लखनऊ—रविवार वैशाख १४, शक संवत् १८८०, ज्येष्ठ कृ० १, वि० २०१५ (४ मई १९५८) दयानन्दाब्द १३४ सृष्टिसंवत् १९७२९४९०५९

सम्पादकीय

क्या नेहरू जी प्रधान मंत्री पद तथा कांग्रेस छोड़ेंगे ?

★

समाचार पत्रों में आज दिन यह चर्चा है कि हमारे प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू जी अपने को बहुत थका हुआ अनुभव कर रहे हैं और कांग्रेस की गतिविधि से खिन्न हैं। १४ अप्रैल का आपने अपने मेरठ के भाषण में कहा है कि यदि कांग्रेस का काम केवल चुनाव लड़ने तक ही सीमित रहता है, तो मैं ऐसी कांग्रेस मे रहना नहीं चाहता। इधर २०अप्रैल को देहली म प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियों के मन्त्री और प्रधानों की सभा मे बोलते हुए आपने कांग्रेस संगठन का कुछ पक्ष लिया है और कहा है कि यह कहना कि कांग्रेस संगठन व्यर्थ और बेकार हो गया है, ठीक नहीं है।

दूसरे शब्दों मे वह कांग्रेस का इस सीमा तक गिरा हुआ और मरा हुआ नहीं मानते कि उसका सुधार नहीं हो सकता हो और उसका अन्त करने की ही बात सोची जाय।

किन्तु इतना उनको स्वीकार है कि कांग्रेस संगठन म स्वार्थी, अवसर वादी तथा अराष्ट्रीयतत्व का समावेश पर्याप्त मात्रा में हो चुका है। शासन की बागडोर हाथ में सम्हाल लेने के कारण तपे हुये सैनिकों का भी पर्याप्त मात्रा में नैतिक पतन हो चुका है। पदों का लोभ इतना व्यापक हो चुका है कि आज दिन जिधर देखो पद को ही लोगों ने मुक्ति का साधन जैसा मान लिया है।

पद प्रतिष्ठा से दूर रहकर निष्काम भाव से जनता जनार्दन की सेवा करना तो आज दिन मूर्खता और पागलपन माना जाने लगा है 'राजा दैवमादर्श' अर्थात् राजा का अथवा शासन का धर्म मानव को निस्तेज बना देता है। इस शास्त्र की बात को सर्वथा बिसरा दिया गया है।

इस नैतिक पतन का उत्तरदायित्व विशेषरूप से कांग्रेस के सर पर है। महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस के ध्वज के नीचे महान् बलिदान किये गये और सहस्रों व्यक्तियों ने प्रसन्न वदन देश के लिए दरिद्रता का वरण किया और नाना प्रकार की यातना सहीं किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त राजसिक भोगों की चकाचौंध से कांग्रेस के तपे हुये सैनिक तक भी बच न सके। यदि समस्त राजसिक भोग और ऐश्वर्यों को चीन के सैनिकों की भांति लात मार कर सादा, सरल और संयम का जीवन व्यतीत करते हुए शासन का संचालन किया जाता तो यह भयकर नैतिक पतन का दृश्य सामने उपस्थित न होता।

भूल तो मूल में है और जब तक उसम क्रान्तिकारी परिवर्तन न किया जाय, देश नैतिक पतन से ऊपर उठ नहीं सकता। कांग्रेस का सुधार प्रस्तावों एव योजनाओ से होने वाला नहीं, जिस समय तक शासन के इन ऊंचे ऊंचे पदों पर बैठे हुए नेता और स्वतन्त्रता के सैनिक अपने रहन सहन खान पान और व्यवहार मे पूर्ण संयम सादगी और सरलता को नहीं अपनाते, पूर्ण मितव्ययी बनकर देश के धन का अपने धन की भांति रक्षा और वृद्धि नहीं करते, देश उभर नहीं सकता। कांग्रेस के उच्चकोटि के नेताओं का कुर्सियां छोड़कर एकबार पुनः जनता म मिलकर रहना और कार्य करना होगा। अपने अध्यवसाय त्याग और तप के द्वारा जनता के हृदयों पर शासन स्थापित करना होगा तब ही देश का वातावरण बदल सकता है, अनैतिकता दूर भगाई जा सकती है और जन जन मे देश प्रेम की ज्योति जगाई जा सकती है।

हम नेहरू जी के हृदय की वेदना को समझते हैं, उसके प्रति हम अपनी संवेदना भी प्रकट करते हैं। महात्मा गांधी के उत्तराधिकारी होने के नाते उनको ही जनता के समक्ष उदाहरण बनकर आना होगा। नेहरू जी के पीछे कांग्रेस के अन्य अनेकों कार्यकर्ता भी चलेंगे यह हमें विश्वास है।

हिन्दू महासभा की तानाशाही

अभी पिछले दिनों अम्बाला म भारतीय जनसंघ का ६ वाँ वार्षिक सम्मेलन श्री देवप्रसाद घोष की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के स्वागतादि के लिये अम्बाला के नागरिको ने एक स्वागत समिति बनाई और नगर के प्रतिष्ठित सार्वजनिक कार्यकर्ता श्री कैप्टेन केशवचन्द जी को, जो पंजाब में हिन्दू महासभा के एक प्रमुख नेता हैं, को स्वागताध्यक्ष बनाया गया। इस पर हिन्दू महासभा क्रुद्ध हो गई और उसने कैप्टेन साहिब का हिन्दू महा सभा से पृथक कर दिया।

इस समाचार को सुनकर हमें महान् आश्चर्य हुआ। इस संकीर्ण मनोवृत्ति का हम किसी भी अंश में समर्थन नहीं कर सकते। स्वागताध्यक्ष का जहां तक प्रश्न है वह तो सम्मेलन स्थान का वरिष्ठ व्यक्ति हुआ ही करता है। उसका सम्बन्ध उस राजनैतिक दल से हो या न हो, उस सम्प्रदाय से हो या न हो, इसका कोई प्रश्न ही नहीं उठता। हम ज्ञात है कि एकबार देहली म हिन्दू महासभा का सम्मेलन हुआ था तो स्वर्गीय हकीम अजमल खां उसके स्वागताध्यक्ष चुने गये थे।

हिन्दू महासभा और जनसंघ तो समान संस्कृति के मानने वाली संस्थाए है। इनके बीच इस प्रकार का व्यवहार सर्वथा अशोभनीय है। हिन्दू महा सभा का यह कृत्य परस्पर विद्वेष की आग को भड़काने का काम करेगा। प्रतीत होता है कि हिन्दू सभा के वर्तमान नेताओं को अनुशासन का पीलिया हो गया है।

गो-वध पर पूर्ण प्रतिबन्ध वैधानिक है

सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय

कुछ कसाइयों तथा गो मांस, चर्म हड्डी आदि में व्यापार करने वाले मुसलमानों ने उत्तर प्रदेश तथा मध्य-प्रदेश के गोवध निषेध कानूनों के विरुद्ध भारत के उच्चतम न्यायालय में पुकार की थी। दिनांक २३ अप्रैल को माननीय न्यायाधीशों ने अपना निर्णय इस सम्बन्ध में दे दिया है और गोवंश तथा भैंसो के वध पर प्रतिबन्ध लगाना सर्वथा वैधानिक घोषित किया है। अन्य दूध के पशुओं तथा खेती व बोझ ढोनेवाले पशुओं के वध सम्बन्धी नियन्त्रणों को भी वैधानिक माना है।

हम आशा करते हैं कि भारत की वह सब प्रादेशिक सरकारें जिन्होंने गो वध बन्दी कानून अभी तक पास नहीं किया है अविलम्ब इस दिशा मे प्रगति करेंगी, और गोधन की रक्षा हित गो संरक्षण, संवर्धन आदि केन्द्र स्थान स्थान पर स्थापित किये जाएंगे।

आर्य जनता का भी कर्तव्य है कि वह गो कृष्यादि रक्षिणी सभाएं स्थान स्थान पर संगठित कर इस दिशा में सक्रिय पग उठावें। जहाँ जहाँ गोशालाएं अथवा पिंजरापोल हैं उनको उन्नत करने और अधिक से अधिक उपयोगी बनाने की दिशा म भी आर्य जनता को प्रयत्नशील होना चाहिए।

राष्ट्रपति का चुटकी फंड

भारत के राष्ट्रपति श्री डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने देश के सामने चुटकी फंड की एक योजना निर्धनता के निवारणार्थ प्रस्तुत की है, सम्भव है कांग्रेस और समाज कल्याण विभाग इस योजना को क्रियान्वित करने की ओर कुछ प्रवृत्त हों, किन्तु हम आशा नहीं कि यह योजना कार्यकर्त्ताओं को अपील करेगी।

यदि योजना को क्रियान्वित किया जाता है तो देश में नंगे भूखे और अपाहिजों की कुछ काल के लिए सेवा की जा सकेगी, किन्तु देश की गरीबी भूख और बेकारी की समस्या को हल करने का यह कोई समुचित उपाय नहीं है।

आचार्य विनोबा भावे का भूमिदान आन्दोलन इससे कुछ अच्छा है। सहस्रों दीन कृषक परिवारों को भूमि मिल जाने से उनके निर्वाह का

(शेष अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

स्थायी साधन तो हो जावेगा। किन्तु उपर्युक्त रोग की वास्तविक चिकित्सा उसको भी नहीं माना जा सकता।

आज अपने समाज में जो व्यापक विषमता विद्यमान है और जो इस बेकारी, भूख और कङ्गाली का मुख्य हेतु है उसके दूर करने के लिये शासन की ओर से सक्रिय पग उठाये जाने की आवश्यकता है।

मन्त्री, उपमन्त्रियों, विधान सभाओं और संसद के बढ़े हुये खर्चों पर नियन्त्रण करने की आवश्यकता है। राजामहाराजाओं एवं बड़े बड़े कर्मचारियों के वेतन भत्ते में भारी कटौती करने की आवश्यकता है। पूंजीपतियों के पास एवं मठ मन्दिरों मे गड़े हुए धन को इस दिशा में लगाने की आवश्यकता है। योजनाओं पर होने वाले अनापशनाप खर्चों पर कड़ा नियन्त्रण करने की जरूरत है। यदि इस ओर देश के भाग्य विधाताओं का ध्यान न गया और ऊंचे ऊंचे महलों में बैठकर चुटकी फलक की योजना बनाते रहे, तो सिवा जग हंसाई के कुछ बनने वाला नहीं।

संस्कृत को राष्ट्र-भाषा बनाने का आन्दोलन

समाचार पत्रों में प्रायः ऐसे विचार व्यक्त किये जा रहे हैं कि अंग्रेजी के स्थान पर संस्कृत को राष्ट्र भाषा बनाया जावे अथवा विधान सभा में राष्ट्रभाषा हिन्दी के साथ-साथ संस्कृत और अंग्रेजी को भी मान्यता दी जावे।

संस्कृत भारत की प्राचीनतम भाषा है इसका साहित्य भी महान् है भारतीय संस्कृति का यथार्थ स्वरूप भी संस्कृत मे ही छिपा हुआ है। विश्व ज्ञान का आदिम स्रोत वेद भी संस्कृत मे ही विद्यमान है। अतः संस्कृत का उत्थान करना और उसके शिक्षण की भारत के सर्व महा विद्यालयों म अनिवार्य रूप से व्यवस्था करना हमारा राष्ट्रीय धर्म है।

उच्च न्यायालयों के निर्णय, शासकीय घोषणा पत्र, सन्धि पत्र, संविधान आदि संस्कृत में प्रकाशित होने चाहिये और राष्ट्रभाषा हिन्दी के साथ साथ संस्कृत को भी पाठ्यक्रम मे सर्वत्र स्थान दिया जाना चाहिये।

आर्यसमाज अपने जन्मकाल से संस्कृत के पठन-पाठन पर बल देता आया है। उसने इस दिशा में पर्याप्त काम किया है। अब समय आगया है कि आर्यसमाज इस क्षेत्र में और अधिक व्यापक कार्य करने पर कटिबद्ध हो।

—शिवदयालु

दूरद्रष्टा-ऋषि दयानन्द

(विश्वबन्धु वेदालङ्कार एम० ए० आगरा)

ऋषि का निर्वचन करते हुए निरुक्तकार यास्क ऋषि दर्शनात् ऐसा कहते हैं अर्थात् जो सूक्ष्मदर्शी या तत्वदर्शी हो। औपमन्यव आचार्य के मत मे ऋषि उसे कहा जायगा जिसने वेद मन्त्रों का दर्शन किया हो। परन्तु स्वामी दयानन्द दोनों ही दृष्टियों से ऋषि ठहरते हैं। आचार्य औपमन्यव के अनुसार तो उन्होंने लुप्तप्राय वैदिक परम्परा को पुनर्जीवित किया ही है परन्तु निरुक्तकार यास्क के अनुसार भी स्वामी दयानन्द तत्वदर्शी व सूक्ष्म दर्शी थे। वस्तुतः कांटे को देखकर तो मनुष्य क्या पशु पक्षी भी पता लगा लेते है कि यह कांटा है, पर ऋषि और तत्ववेत्ता वे होते हैं जो बबूल के कोमल बीज के अन्दर कांटे के महान वृक्ष का अनुभव करते हैं। स्वामी दयानन्द ने न केवल तात्कालिक समस्याओं को ही सुलझाया बल्कि भविष्य में आने वाली उन समस्याओं की ओर भी आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व ही निर्देश कर दिया था जो आज गंभीर रूप धारण करती जा रही हैं। राष्ट्रोत्थान के लिये जहां उन्होंने कई अनेकानेक समस्याओं से देश को सावधान किया वहां उस दूरद्रष्टा ऋषि ने एक ऐसी समस्या की ओर भी देश का ध्यान खींचा था जो आज भारत का सरदर्द बनी हुई है और द्रविड़ कजगम, हिन्दी से बचाओ आदि आन्दोलनों के रूप में उत्तर तथा दक्षिण भारत में फूट डालकर अलगाव पैदा कर रही है।

लार्ड मैकाले ने १८३३ में ब्रिटिश संसद में एक विचार रखा था कि जब तक भारत के इतिहास को नहीं बदला जायगा तब तक भारत में ब्रिटिश राज्य की नींव बालू के टीले पर रहेगी। अंग्रेज इतिहासकारों ने इसका अक्षरशः पालन किया और अपनी कुटिल नीति से हमारे इतिहास में आर्य और द्रविड़ के इस विष बीज को जन्म दे दिया जो निरन्तर फैलता जा रहा है और जिसको अंग्रेजों का अन्धानुकरण करने वाले भारतीय आज भी सींच रहे हैं।

यह अन्धानुकरण किस प्रकार हो रहा है इसके लिये एक दिलचस्प उदाहरण है। अभी अभी हमारे एक मित्र की पुत्री जो दशम श्रेणी में अध्ययन कर रही है, उसे प्रसिद्ध विद्वान् डा० ईश्वरीप्रसाद के भारतीय इतिहास को पढ़ते हुए यह शंका हुई कि इसमें आर्यों के भोजन में मांस खाना क्यों लिखा है। संयोग से जब डा० साहब आगरा आये तो इस प्रश्न पर हमारी उनसे बात हुई। वे कहने लगे कि भाई हमने तो सभी इतिहासों में ऐसा ही लिखा देखा है इसलिये हमने भी लिख दिया है। यह है अन्धानुकरण जो भारत मे परस्पर फूट और वैमनस्य पैदा करने में सहायता कर रहा है।

वर्तमान युग के महान् क्रांतिकारी नेता महर्षि दयानन्द के सामने जब यह आर्य और द्राविड़ का प्रश्न आया तो उन्होंने इस समस्या के मूल ही में कुठाराघात करना चाहा था कि आर्य विजेता के रूप मे कहीं बाहर से आये थे। स्वामी जी की युक्ति यह थी कि वैज्ञानिकों के कथनानुसार भी यह पृथ्वी पहले जल में डूबी हुई थी, कालान्तर में जब जल उतरने लगा तो सबसे पूर्व जो स्थान जल से बाहर आया वह हिमालय पहाड़ का भाग ही होना चाहिए जो संसार में सबसे ऊँचा है। इस प्रकार सृष्टि का निर्माण प्रथम इसी भाग पर होना चाहिए। हमारे शास्त्रों में भी सृष्टि का प्रारम्भ त्रिविष्टप पर होना लिखा है जो सर्वथा वैज्ञानिक है। आबादी के बढ़ाव के साथ आर्य यहां से फैलते गये और संसार के भिन्न भिन्न भागों को आबाद किया। यह था स्वामी दयानन्द का वैज्ञानिक राष्ट्रीय दृष्टिकोण जिसके महत्व को उनके देशवासी समझ न सके और उनके उत्तराधिकार का दावा करने वाला-आर्यसमाज भी उसको आगे न बढ़ा सका।

अङ्गरेज इतिहासकार तथा उनके अनुयायी भारतवासी, आर्यों का मूल निवास मध्य एशिया बताते हैं। पर यह कितने आश्चर्य की बात है कि उनके समस्त साहित्य में एक भी शब्द इसके सम्बन्ध में नहीं है जबकि भारत के गुणानुवाद में उनके समस्त ग्रन्थ भरे पड़े हैं। क्या किसी ऐसी जाति की कल्पना की जा सकती है जो ज्ञान विज्ञान में इतनी बढ़ी चढ़ी हो और अपने घर को बिल्कुल ही भूल जाय। इतिहास बताता है कि अंग्रेज तथा मुसलमानोंने भारत पर शताब्दियों तक राज्य किया पर वे एक क्षण के लिए भी अपनी मातृ भूमि को न भूल सके। आज भी भारत के मुसलमान

[शेष पृष्ठ १४ पर]

स्वतः प्रमाण केवल वेद है, अन्य कोई ग्रंथ नहीं

वेद से हजारों गीता निकल सकती हैं पर गीता से वेद की सृष्टि नहीं हो सकती

वेदों के अध्ययन के बिना भारतीय संस्कृति का पुनरुद्धार असम्भव

बीकानेर में डा० सम्पूर्णानन्द का भाषण

बीकानेर, २७ अप्रैल। उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री डाक्टर सम्पूर्णानन्द ने आज वेदों के अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि हमारे देश में गीता तथा उपनिषदों के पढ़ने का चलन, कुछ फैशन—सा है किन्तु लोग यह भूल जाते हैं कि उपनिषद वेद का एक अंश मात्र है। साथ ही यह भी निश्चित है कि वेदों के अध्ययन के बिना भारतीय संस्कृति का पुनरुद्धार और उसको उसके असली रूप में समझना भी संभव नहीं। उन्होंने कहा कि गीता निश्चय ही एक महती कृति है किन्तु वह हमारे लिए स्वतः प्रमाण अथवा धर्म की सबसे बड़ी पुस्तक नहीं है। यह पद वेद को ही प्राप्त है।

बीकानेर में आयोजित गीता सम्मेलन में भाषण करते हुए डाक्टर सम्पूर्णानन्द ने कहा कि गीता की गाथा गाते रह कर वेदों की उपेक्षा



करते जाना प्रायः उसी प्रकार है जैसे दूध की तो प्रशंसा की जाय और गौ को भुला दिया जाय। यदि वेद रहें तो उनमें से हजार गीता निकल सकती हैं किन्तु गीता से वेद की सृष्टि नहीं हो सकती। गीता तो वस्तुतः यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के दो मन्त्रों की टीका मात्र है।

दक्षिण में आर्यसमाज

[श्री पं० नरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य दक्षिण, हैदराबाद]

दक्षिण भारत मे आर्य समाज की वर्तमान स्थिति तथा भविष्य मे इसे और भी प्रगति किस प्रकार दी जा सकती है, यही इस लेख का विषय है।—स० स०

यद्यपि ऋषि दयानन्द वर्तमान सौराष्ट्र प्रदेश में उत्पन्न हुए थे, तथापि उनका कार्यक्षेत्र मुख्यतः उत्तरीय भारत रहा। इसे यों कह सकते हैं कि हिन्दी भाषा से प्रभावित क्षेत्र में ही मुख्यतः ऋषि दयानन्द घूमे। मैं यह समझता हूं कि दूरदर्शी ऋषि ने इस प्रान्त को इसलिए पकड़ा कि इसमें एक राष्ट्र भाषा हिन्दी रूप में स्वतः ही विकसित हो रही थी। जो हो ऋषि पश्चिमी भारत में पूने से, मध्य भारत में नागपुर से और पूर्वी भारत में कलकत्ते से आगे नहीं बढ़े। बम्बई से कलकत्ता को मध्य-प्रदेश द्वारा जाने वाली रेलवे लाइन से वे आगे नहीं बढ़े।

वस्तुतः यही दक्षिण भारत है। कलकत्ते से आगे मद्रास लाइन पर चिकाकोल से आन्ध्र प्रदेश शुरू होता है। देहली मद्रास लाइन पर स्थित बल्हारशाह से आगे आन्ध्र भाषा भाषी प्रान्त और उधर पूना से आगे समुद्रतट की ओर एवं बम्बई, मद्रास रेल पथ पर गुलबर्गा से आगे कर्नाटक प्रदेश प्रारम्भ हो जाता है। कुछ आगे दक्षिण की ओर जाने पर तामिलनाड पूर्वी समुद्र तट पर रामेश्वरम् धनुषकोटी तिरुचेन्दूर तक, पश्चिमी समुद्र तट पर इरनाक्यूलम् से तिरुवनन्तपुरम् कन्याकुमारी तक 'मलयालम देश' है। इधर ऋषि के पद नहीं पहुँचे।

वर्तमान हैदराबाद प्रदेश भी वस्तुतः दक्षिण भारत का ही अंश है। इसे हम दक्षिण भारत का मुख द्वार कह सकते हैं। इसमें मुख्यतः आन्ध्र भाषा, उससे कम कर्नाटक और उससे कम मराठी भाषा बोली जाती है, बंगाल की बंगाली भाषा की तरह इस प्रदेश की कोई भाषा विशेष नहीं। १८वीं शदी के अन्त में मुसलमानी शासन के आधीन हो जाने के कारण यहाँ 'उर्दू' का जोर हो गया। यह प्रान्त भी ऋषि दयानन्द के पवित्र चरणों की धूलि से वंचित रहा है।

परन्तु आज से ७० वर्ष पूर्व ही इस क्षेत्र में आर्य समाज का बीज पड़ गया था। वह बम्बई पूना की ओर से और वर्तमान उत्तर प्रदेश की ओर से आया। सब से प्रथम समाज की स्थापना धारूर जिला बीड़ में हुई। श्री भगवती प्रसाद जी, कुन्दन प्रसाद जी, गोकुल प्रसाद जी, मगन लाल जी तथा बाबू सिंह जी ने समाज की स्थापना और उसके प्रचार में अनथक भाग लिया। उसमें आने वाले यू० पी० के राजपूत तथा कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। इनके किसी पूर्वज ने ऋषि दयानन्द के व्याख्यान पूना में सुने थे। इसके पश्चात् दूसरी आर्य समाज सुलतान बाजार मे मार्च सन् १८६२ में स्थापित हुई।

दक्षिण देश के द्वार इस हैदराबाद क्षेत्र में बड़ी ही तीव्रता और दृढ़ता से समाज फैला। सामान्य पढ़े लिखे लोग उर्दूदां होने के कारण हिन्दी भाषा को समझ सकते थे। आर्य समाज का सारा साहित्य हिन्दी में है प्रचार भी हिन्दी भाषा भाषी प्रान्त में हुआ, परिणामतः प्रचारक भी हिन्दी भाषा भाषी ही थे। उनकी पहुंच ही उस प्रदेश तक हो सकती थी, जहां तक हिन्दी भाषा या उससे मिलती जुलती भाषा का बोल बाला हो। इसलिए यद्यपि स्वयं ऋषि इस प्रदेश मे नहीं आए, तथापि हिन्दी भाषा के कारण यहां पर अच्छा प्रचार हो गया। और आज इसके परिणाम स्वरूप ही आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद के अन्तर्गत २१५ समाजें हैं। सभा का संगठन सुदृढ़ और शक्तिशाली है। सभा को विद्यार्य सभा,द्वारा ५ हाईस्कूल, व एक नरेन्द्र प्राच्य महाविद्यालय (कालेज) संचालित है। इसके अतिरिक्त स्व० श्री पं० वंशीलाल जी व्यास द्वारा संस्थापित गुरुकुल घटकेश्वर प्रचलित है। और बेगम पेठ में श्री पं० धारेश्वर जी शास्त्री तथा पं० मोहन शंकर जी द्वारा दो कन्या गुरुकुल भी चल रहे हैं। इस प्रकार दक्षिण में आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अतीत और वर्तमान में जो कार्य हुवा है, वह स्थानिक हिन्दू जनता में जन जागृति व अपने अधिकारों की रक्षा तथा अपने प्राचीन वैदिक धर्म के मौलिक तत्वों के अन्वेषण और उनकी जानकारी की प्राप्ति की जिज्ञासा उत्पन्न करती है। इस प्रदेश में भी जहाँ पर उर्दू हिन्दी का विशेष प्रचार नहीं था आन्ध्र प्रान्त में वहाँ पर अपेक्षाकृत समाज का बहुत कम प्रचार है। पचास वर्ष के प्रचार के बावजूद भी ९ जिलों वाले इस तेलंगाना में ७०-८० समाजें चालू हैं। मराठवाड़ा जहाँ की लिपि भी देवनागरी है, पांच जिलों वाले क्षेत्र में वहाँ सर्वत्र समाजें हैं, जिनकी संख्या सौ से कम नहीं है। इन समाजों में पुराना आर्य साहित्य भी है।

जो प्रचार की गति भारत के अन्य प्रान्तों में है, वह यहां नहीं। जितनी शक्ति उधर समाज के सर्वविध प्रचार के लिए व्यय हुई, उतनी इधर नहीं। हैदराबाद से आगे के दक्षिण भारत में आर्य समाज का नियमित प्रचार चालीस वर्ष पूर्व तक नहीं था। सबसे पूर्व मोपला विद्रोह के समय मालाबार में समाज पहुँचा। स्व० अमर जीवी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज स्वयं भी तथा महाशय खुशहाल चन्द जो (महात्मा आनन्द स्वामी जी) दक्षिण देश में प्रचारार्थ पधारे थे।

श्री पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, श्री पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, श्री पं० मदन मोहन विद्यासागर वेदालंकार, श्री पं० केशवदेव ज्ञानी इधर प्रचारार्थ रहे। ये सब गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक हैं। अभी अभी श्री पं० सत्यपाल शर्मा वेद शिरोमणि प्रचारक नियुक्त हुए हैं, जो गुरुकुल वृन्दावन के स्नातक हैं। स्व० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज, श्री नारायण स्वामी जी महाराज तथा राजगुरु धुरेन्द्र जी शास्त्री (स्वामी ध्रुवानन्द जी) ने भी प्रचार यात्रायें कीं। श्री प० गंगाप्रसाद उपाध्याय जी ने तो कई बार दौरा किया और दक्षिण प्रचार के संगठन में पर्याप्त काम किया।

इस आन्ध्र कर्नाटक तामिल, मलयालम चार भाषाभाषी विस्तृत दक्षिण भारत में कुल दो प्रचारक थे। आन्ध्र में श्री पं० मदन मोहन विद्यासागर और कर्नाटक में श्री पं० सत्यपाल शर्मा। आन्ध्र देश में प्रचार कार्य का श्रेय श्री पं० गोपदेव जी को है। आप बाल ब्रह्मचारी हैं।

इस सारे दक्षिण भारत में इस समय चार समाजें हो ऐसी हैं, जिनके पास अपने भवन हैं। आर्य समाज मद्रास, इसके मालिक ट्रस्टी हैं। आर्य समाज कूचिपूडी (वाया तेनाली) आर्य समाज बैंगलूर और मैंगलूर।

इतने बड़े दक्षिण भारत में आर्य समाज का प्रचार आसान नहीं। एक दो स्नातकों को भेज उनसे प्रति वर्ष समाजों की स्थापना की आशा समुचित नहीं। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। उत्तरीय भारत से दक्षिण भारत आचार विचार, वेष भूषा, रहन सहन, भाषा संस्कृति सब दृष्टियों से भिन्न है। प्रचार योजना बनाते समय ये सब बातें सामने रखनी चाहिए।

उत्तरीय भारत में ही भारतीयों के सब अवतार हुए हैं, परन्तु दार्शनिक 'हिन्दू दृष्टिकोण' के सभी आचार्य दक्षिण देशोत्पन्न हैं। श्री शंकर, श्री रामानुज, श्री मध्व, श्री निम्बार्काचार्य आदि सभी दाक्षिणात्य हैं। इसलिए इनके प्रतिपादित मतों का प्रचार इस प्रदेश में खूब है और जगह जगह पर इनके मठ हैं। इन्होंने अपने जीवन काल मे सारे भारत में भ्रमण किया और उत्तरीय भारत को अपने मत का बनाया और वहाँ भी अपने मठ स्थापित किए। परन्तु ऋषि दयानन्द दक्षिण और उत्तरीय भारत के मध्य सौराष्ट्र के होते हुए भी उत्तरीय भारत में अधिक रहे। दक्षिण भारत मे वे स्वयं आ न सके और उनके उत्तराधिकारियों ने अपने को अपने अपने प्रान्तों में ही ऐसा फंसाया कि 'दक्षिण प्रदेश' प्रचार की हवा से अछूता ही रहा। किन्तु दक्षिण भारत में आर्य समाज के प्रचार की व्यवस्था की जाए तो भविष्य उज्ज्वल हो सकता है।

अब समय है कि हम एक व्यवस्थित क्रमबद्ध योजना इस प्रान्त में प्रचार की बनावें। योजना की रूपरेखा—

१—इस समय आन्ध्र और कर्नाटक प्रान्त में जो प्रचार हो रहा है, उसे और अधिक व्यवस्थित किया जाना चाहिए। मध्य प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा, बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद तीनों को मिलकर इस प्रचार का उत्तरदायित्व लेना चाहिए। परन्तु यह सब सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में होना चाहिए।

२—इसके लिए नियत पुरोगम बनाकर पंचवर्षीय योजना निश्चित कर लेनी चाहिए। इस समय पूर्व योजना के अनुसार कुछ मुख्य स्थान नियत करके उन स्थानों पर क्रमबद्ध प्रचार धड़ल्ले से किया जाना चाहिए उसके लिए—

१—उच्चस्तर के वैदिक विद्वान् ही प्रचारक नियुक्त किए जावें, जो अंग्रेजी जानें या न जानें, परन्तु संस्कृत भाषा के अच्छे विद्वान् हों। वे अच्छे व्यक्तित्व वाले हों स्वभाव के मिलनसार और मधुर दृढ़ संकल्प हों सदाचारी हों।

२—ऐसा साहित्य प्रान्तीय भाषाओं में हो, जो कि प्रचलित अवैदिक मतमतान्तरों का खण्डन करे। उसके साथ साथ वेद धर्म पोषक साहित्य भी प्रचुर मात्रा में हो।

३—आर्यसमाज को चाहिए कि कुछ ऐसे विद्वान् चुनें, जो इन देशों में जाकर बस जावें। आर्य

(शेष अगले पृष्ठ पर)

अपने देश की सभ्यता

[श्री हरविलास स्वामी]

प्रागैतिहासिक काल से भी परे भारत की संस्कृति व सभ्यता की एक अनोखी परम्परा रही है जब कि दुनियां अन्धकार मे पड़ी हुई थी तब भारत की संस्कृति पनप रही थी और उसका विकास दूर दूर तक हुआ था। साधु, सन्तो ऋषि महर्षियों ने प्रभु की छाया में रहकर उसका प्रचार किया था। सभ्यता व संस्कृति का मर्म मानव जाति को समझाया था सभ्यता व संस्कृति मे आधारभूत भेद है। सभ्यता शरीर है तो संस्कृति आत्मा संस्कृति अध्यात्मवाद है तो सभ्यता भौतिकवाद है। एक आदमी पैसे वाला है—मकान वाला है लेकिन दुराचारी है शराबी है वह सभ्यता है लेकिन संस्कृति नहीं आर्य संस्कृति का दृष्टिकोण कोरा आध्यात्मिक नहीं था आर्य संस्कृति के विचारकों ने जो कुछ भी अच्छा देखा उसको सत्य मानकर चले थे। संसार सत्य है लेकिन उसके विषय टिकने वाले नहीं कोरा भौतिकवाद सचाई के एक पहलू का लिए खड़ा है और कोरा अध्यात्मवाद भी एक पहलू को लिए खड़ा है। भौतिकवादी संसार को अनित्य बतलाता है अध्यात्मवादी भी इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि संसार सत्य है। आर्य संस्कृति के विचारकों ने जीवन के हर पहलू पर विचार किया था जिससे उस प्राचीन काल मे भारत की बौद्धिक, आत्मिक, व सांस्कृतिक शक्तिका विकास दूर दूर तक हुआ था और जबकि भारत के लोग अपनी संकीर्णता से गुलाम हो चुके थे तब भी विश्व की कई विलक्षण हस्तियां भारत की संस्कृति पर मुग्ध थीं। उनमें से श्रीमती एनीबेसेन्ट एक थीं जिसने भारत में "थियोसाफिकल सोसाइटी" को जन्म दिया था और फिर भारत की संस्कृति से प्रभावित होकर इसने हिन्दुत्व के नवोत्थान व भारतीय राष्ट्रीयता के विकास के लिए बहुत कुछ किया। विदेशी होते हुए भी उसने ऊंघते हुए हिन्दू जाति मे आत्माभिमान भर दिया और जब भारत में ईसाई मिशनरी कुप्रचार करके यहां के लोगों को ईसाई बना रहे थे तो इस महिला ने खुलकर हिंदुओं का पक्ष लिया था और भारत की प्राचीन परम्पराओं को लेकर विश्व मे प्रचार किया था कि संस्कृति व धर्म की भिन्नता से एक मनुष्य दूसरे से कभी भिन्न नहीं हो। सभी मनुष्य एक ही परमसत्ता से निकले है न कोई छोटा है न बड़ा है श्रम करने वाला समाज की सेवा करने वाला महान है नीचा नहीं है छोटा नहीं है। सन् १८७५ में बम्बई मे जब आर्यसमाज संस्था का जन्म हुआ था उसके भी यही प्रमुख उद्देश्य थे। सन १८७९ में रूसी विद्वान् ब्लेवा स्कीर, अमरीकी विद्वान् अलकट बम्बई आये और इन्हीं विचारों को लेकर आये थे तो आर्य समाज ने उन दोनों का भव्य स्वागत किया। इन्होंने भी ईसाइयों के गन्दे प्रचार को रोका जो हिंदुओं को लालच से फुसलाकर ईसाई बना रहे थे बाद मे श्रीमती एनीबेसेन्ट भारत आई और भारत के सांस्कृतिक आन्दोलन में कूद पड़ीं और गाउन पहनना छोड़ कर साड़ी पहना। एक बार उन्होंने बहुत मार्मिक व हृदय को पिघला देने वाला भाषण दिया था। उन्होंने हिंदुओं को ललकारा था कि भारत व हिंदुत्व की रक्षा करना हिंदुओं का ही काम है। हिन्दुत्व ही वह मिट्टी है जिसमें भारतवर्ष का मूलधन गड़ा हुआ है यदि वह मिट्टी हटा ली गई और संस्कृति विलीन हो गई तो भारतरूपी वृक्ष सूख जावेगा। तब भारत में पलने वाले सर्व धर्म भी विलीन हो जावेंगे और इतना याद रह जावेगा कि भारत नामक कभी कोई देश था। इसलिए हिंदुओं अपने इतिहास साहित्य कला व अपनी संस्कृति की संगठित होकर रक्षा करो—आज हम शान्ति प्रेम व अहिंसा से जो कि हमारी संस्कृति के महत्वपूर्ण अङ्ग है, के बल पर स्वतन्त्र होकर विश्व में तन कर खड़े हुये हैं तो हम अद्भुत बातें देख रहे हैं। आज वैज्ञानिक जगत मे उथल पुथल मची हुई है शून्याकाश में उपग्रहों की हलचल मची है। मानव बुद्धि में संघर्ष छिड़ा हुआ है। अणुबम उद्जन बम व फारसाइड राकेट की छाया तमाम विश्व पर पड़ी हुई है। अन्तरिक्ष में नए नए अन्वेषण किए जा रहे है। दुनियां में प्रक्षेपणास्त्रों की धूम मची है लेकिन हम आज भी अपनी प्राचीनता की दुहाई दे रहे है। हिन्दू धर्म व हिन्दू संस्कृति भोग प्रधान न होकर आध्यात्मिकता प्रधान रही है आज विश्व में भोग प्रधान सामग्री एकत्र करने के हेतु एक होड़ सी लगी है। ऐसे समय में भारत के पास हजारों वर्षों के अनुभव के पश्चात विश्व को देने के लिए एक अमर संदेश है कि आध्यात्मिक शक्ति से ही विश्व में शान्ति की स्थापना हो सकती है क्योंकि इस युग के मानव ने प्रकृति के साधनों पर इतना अधिकार कर लिया है कि मानव समाज का अस्तित्व व उसकी संस्कृति व सभ्यता ही डगमगाने लगी है। तभी तो मानव हृदय से मैत्री का उद्‌घोष मुखरित हो रहा है। आज का संसार इतनी विषम परिस्थितियों मे है कि मित्रता व आपसी सद्‌भावना के बिना अब जिन्दगी नहीं चल सकती सदियों की गुलामी से देश में एक आर्थिक संकट आया हुआ है इसलिए हर एक भारतीय को मिलकर नवभारत का निर्माण करना है। अतः हमारा सब का महान् कर्तव्य है कि सब मिलकर राष्ट्रीय जीवन को गति दें भारतीय राष्ट्र के हृदय मे धड़कन पैदा करें। भारत का गौरव व अभिमान जो मृत प्राय हो गया था उसको जीवन दान दें। भारत की सब समाजें मिल कर अखण्ड भारत व हिन्दुत्व का वीरता पूर्ण आख्यान करें और यही हमारी इस युग की एक नवीन संस्कृति होगी।

गोहत्या का प्रश्न

क्या यह सत्य नहीं है कि गोहत्या की पूर्ण जिम्मेदारी सरकार पर है क्योंकि मुख्य प्रश्न यह है कि सरकार गोहत्या करनेवालों को कठोरतम दण्ड क्यों नहीं देती ? जनता को भी चाहिये कि वह आंदोलनों द्वारा सरकार को इसके लिए बाध्य करे। स० स०

हमारा देश कृषि प्रधान देश है, गोधन की वृद्धि के लिए सरकार ने गोवध कानून बनाया कि जो कोई गाय व गाय की बछिया व गाय का बछड़ा का वध करेगा उसको कानून के अनुसार दण्ड दिया जावेगा परन्तु क्या गोवध बन्द हो रहा है ? अभी दि० २७।३।५८ को विधान परिषद् मे एक प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रदेश के स्वास्थ्य मन्त्री श्री ठा० हुकुमसिंह जी ने बताया कि १९५५।५६ मे ४२ जिलों में गोवध के ६७ मामलों का पता चला २११ व्यक्तियों के विरुद्ध कार्यवाही की गई जिसमे २७ व्यक्तियो को दण्ड मिला। १९५६-५७ में ४१८ मामलों का पता लगा और उसमें १३३३ व्यक्ति पकड़े गये इनमें से ४८३ आदमी दण्डित हुए बाकी छोड़ दिए गए। इन सरकारी आंकड़ों से पता चलता है कि गोवध प्रदेश में निरंतर बढ़ता जा रहा है अभी १३।३।५८ की एक घटना है कि हमारे दरवाजे पर से हमारी गाय की बछिया को रात में कसाई लोग चुरा ले गये और उसको वध कर डाला। आश्चर्य यह है कि कसाई का मकान मेरे मकान से सिर्फ पचास गज की दूरी पर है और एक प्रकार से उसका पड़ोसी हूं, इतना घोर अपराध करने पर भी लोग उन अपराधियों की मदद कर रहे हैं जिससे सब भाग गये हैं तथा अभी पकड़े नहीं गये हैं सरकार तथा सरकार के अधिकारियों का कर्तव्य है कि कानून का उल्लघन करने वाला कोई भी व्यक्ति चाहे जिस वर्ग व जाति का हो उसको कठोर दण्ड दिलाने की व्यवस्था करना चाहिये तभी प्रदेश मे सुरक्षा व शान्ति रहेगी तथा अपराध रुकेंगे (प्रमाण मे मनु भगवान् का श्लोक भी उद्धृत है।

१—स राजा पुरुषो दण्डः स नेता शासिता च स. चतुर्णामाश्रमाणां च धर्मस्य प्रतिभूः स्मृतः।

२—समीक्ष्य स धृतः सम्यक सर्वा रञ्जयति प्रजाः, असमीक्ष्य प्रणीतस्तु विनाशयति सर्वतः।

३—दुष्येयुः सर्व वर्णाश्च भिन्द्येरन्सर्व सेवतः, सर्व लोक प्रकोपश्च भवे दण्डस्य विभ्रमात्। (मनु)

१—जो दण्ड है वही पुरुष वही राजा वही न्याय का प्रचारक और सब का शासन करता है वही चार वर्ण व चारों आश्रमों के धर्म का प्रतिभू अर्थात् जामिनदार है (२) जो दण्ड अच्छे प्रकार विचार कर किया जाय तो वह प्रजा को आनन्दित करता है और जो बिना विचारे चलाया जाय तो सबका विनाश कर देता है (३) बिना दण्ड के सब वर्ण दूषित और सब मर्यादा छिन्न भिन्न हो जाती है दण्ड के यथावत् न होने से सब लोगों का प्रकोप बढ़ जाता है।

—रामलाल आर्य उपमन्त्री
आर्यसमाज, टाण्डा, फैजाबाद

(पिछले पृष्ठ का शेष)

समाज को उनके स्थिर निवास का प्रबन्ध कर देना चाहिए।

आज का प्रचार तो दो नदियों के बीच मे बहने वाले नाले के रूप मे है। इसे नदी का रूप देना होगा, तभी दक्षिण भारत में 'मत' और 'विज्ञान' के नाम से फैले अंधविश्वास, कुप्रथायें अवैदिक मतमतान्तर और नास्तिकवाद की समाप्ति होगी और ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वेद धर्म की ज्योति से दक्षिण भारत आलोकित हो सकेगा।

भारत विभाजन और उसके दुष्परिणाम (३)

(डा० सूर्यदेव प्राणाचार्य जीवन शक्ति फार्मेसी गोरखपुर)

[गतांक से आगे]

• १५ अगस्त १९४७ के दिन स्वतंत्रता के अवतरण के साथ आनन्दोत्सव मनाया जा रहा था। नेता नाच रंग दीपोत्सव, सहभोज और उद्यान भोजों में व्यस्त थे, वहां पाकिस्तान में मुसलमान हिन्दुओं के रक्त से होली खेल रहे थे। मुसलमान पाकिस्तान को एक इस्लामी देश बनाना चाहते थे जिसे पीछे से उन्होंने अपने नव निर्मित विधान मे भी स्वीकार कर लिया है। उनको भय था कि कहीं हिन्दू हमारी अभिलाषाओं को पूरा न होने दे अतः उन्होंने "न रहे बांस न बजे बांसुरी" वाली कहावत के अनुसार पाकिस्तान में हिन्दुओं का कत्लेआम शुरू कर दिया। भारत विभाजन के साथ सेना का भी विभाजन हुआ था जिसम बिलोच और पठान फौजों के साथ सेना के मुस्लिम कर्मचारी पाकिस्तान को मिले थे। इन फौजों ने वहां पहुँच कर इस कत्लेआम में मुसलमानो का साथ दिया। पहले तो वहां के हिन्दुओं ने इस पूर्व नियोजित आक्रमण का वीरता से प्रतिरोध किया परन्तु जब आक्रमणकारियो को सेना का भी सहयोग प्राप्त हो गया और पुलिस भी उनका साथ देने लगी तब तो वहां से बचकर निकल आने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय ही नहीं था। वहां के हिन्दू अपनी मातृभूमि छोड़कर, प्राण लेकर भागे। भारत के लोगों ने वहां के अत्याचारों की कहानियां सुनीं, यहां भी पंजाब, बंगाल और बिहार में हल्की सी प्रतिक्रिया हुई। पश्चिमी पाकिस्तान से हिन्दू चुन-चुन कर निकाल दिए गये, पूर्वीय बंगाल में भी यही प्रक्रिया प्रारम्भ हुई परन्तु वहां अभी भी कुछ हिन्दू शेष हे किन्तु प्रति वर्ष आज भी लाखों की संख्या में वहां अपनी सुरक्षा और सम्मान को सुरक्षित न देखकर भारत की सोमा में प्रवेश कर रहे हैं।

जब पाकिस्तान में यह भीषण नर संहार हो रहा था उस समय कांग्रेस नेता पंजाबियों और बंगालियों को वहीं रहने के लिए कहते रहे तथा साथ ही उनकी रक्षा करने का भी आश्वासन दे रहे थे। इन लोगों ने परिस्थिति की गम्भीरता को नहीं समझा और मुसलमानों में सुबुद्धि जागृत होगी यह विश्वास करते रहे परन्तु इनके ये विचार मृग मरीचिका सिद्ध हुए। इस अवसर पर इन हिन्दुओं की पंजाब में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने अमूल्य सेवा की जो कभी विस्मृत नहीं की जा सकती है। इससे पूर्व मिस्टर जिन्ना ने आबादी के परिवर्तन का सुझाव रखा था परन्तु कांग्रेस ने इसे अव्यावहारिक बताया।

मुसलमानों की लूट मे बचने के लिए लाखों की संख्या में काफिले बनाकर विस्थापित भारत की सीमा में प्रवेश करने लगे। राजा रंक बन गया और विवश होकर उसने अपनी जन्म भूमि का परित्याग कर दिया। माता से शिशु बिछुड़ गये। पति से पत्नी विमुक्त हो गई। गुरु गोविन्द के वीर पुत्रों के समान लाखों माताओं के लाल तलवार की घाट उतार दिए गये। हजारों कुमारियों और महिलाओं का अपहरण कर उनका सतीत्व नष्ट किया गया। विश्व इतिहास में ऐसी रोमांचक घटना शायद ही कभी घटी हो। इस प्रकार असन्तोष और प्रतिशोध की भावना लिए करोड़ों विस्थापित भारत में यत्र तत्र-सर्वत्र बिखर गये।

स्वराज्य के पश्चात् यह एक ऐसी विषम समस्या थी जिसने भारत की आर्थिक और शासन व्यवस्था को उलट-पलट दिया। खण्डित भारत में जनसंख्या की अधिकता पहले से ही एक समस्या थी। करोड़ों की संख्या मे पीड़ित, उत्पादित और असन्तुष्ट लोगों को पुनर्वास देना एक महान समस्या बन गई। भारत ने शासन एव अपनी रीति-नीति से अरबों रुपये व्यय किए परन्तु क्या यह समस्या कभी हल होगी।

भारत विभाजन के फलस्वरूप नहरो द्वारा सिंचित लाखों एकड़ अत्यन्त उपजाऊ भूमि पाकिस्तान मे रह गई। ये भारत मे गेहूं के उत्पादन के सर्वोत्तम क्षेत्र थे। ऐसा अवस्था मे भारत के ३५ करोड़ लोगों को भोजन देना भी एक कठिन समस्या बन गई है।

कपड़े के सूती मिलों के कारखाने भारत के अहमदाबाद, कानपुर, नागपुर, बम्बई आदि स्थानों पर हैं परन्तु अच्छी रुई सिन्ध मे उत्पन्न होती है। परिणामतः हमारी मिलें बेकार रहने लगीं या हमको अधिक मूल्य देकर अमेरिका और मिश्र से कपास खरीदना पड़ती है जिससे वस्त्रों का मूल्य बढ़ जाता है। जिस मारकीन का मूल्य पांच-सात पैसा प्रति गज था वह १२ आने से कम में सुलभ नहीं होती है। इसकी मार निर्धन जनता पर पड़ती है वह वस्त्र खरीदने मे असमर्थ हो जाती है।

बमों से ध्वस्त ब्रिटेन की मंहगी धीरे धीरे घटकर लगभग युद्ध पूर्व की अवस्था तक पहुँच गई है। इसके विपरीत भारत मे मंहगी बढ़ती जाती है। जनता का आर्थिक जीवन विशेषतया मध्यम वर्ग का नित्य प्रति अस्त व्यस्त होता जा रहा है। परिणाम स्वरूप अन्य अनुचित और अवैधानिक तरीकों से लोग धन उत्पन्न करने का प्रयत्न कर रहे है। प्रत्येक आफिस में रिश्वत चौगुनी बढ़ गई है, किसी किसी दफ्तर म बिना कुछ दिए कोई कार्य नहीं होता। चोरी, डाके, हत्याएं दिन दहाड़े साहसिक लूट की संख्याएं बढ़ रही हैं। बेकारी अपनी चरम सीमा पर पहुँच रही है। फरीदाबाद की शरणार्थी बस्ती पर लेखक ने स्वयं शिक्षित युवकों को काम पाने के लिए अनशन करते देखा है। १५ दिन बीत जाने पर भी उनकी कोई सुनवाई नहीं हुई थी।

अंग्रेजों के समय में इन्डियन सिविल सर्विस मे ५७३ अंग्रेज औफीसर थे; पुलिस मे ३८६ बड़े और ४५० छोटे अंग्रेज कर्मचारी थे। यह संख्या जुलाई १९४२ में वायसराय के सेक्रेटरी सर जानथार्न ने अमेरिकी पत्रकार श्री लुईफिशर को दी थी। यह संख्या संयुक्त भारत की है। इससे शासन कार्य सुचारु रूप से चलता था परन्तु आज उससे कहीं अधिक कर्मचारी है परन्तु कार्य उससे अच्छा नहीं है। इसके अतिरिक्त न जाने कितने अंग्रेज, अमेरिकी और अन्य यूरोपीय विशेषज्ञ लाखों रुपये के भारी वेतन लेकर भारतीय विशेषज्ञों के ईर्ष्या के पात्र बने हुए हैं। बिना विदेशी विशेषज्ञों के भारत सरकार का कोई कार्य नहीं चल सकता है। यहां तक कि सन्तति निरोध की शिक्षा देने के लिए भी लाखों रुपये व्यय करके विदेशी विशेषज्ञ बुलाये जाते हैं जितना धन इन विदेशी विशेषज्ञों पर व्यय होता है उसका आधा भी इनकी योजना से लाभ नहीं होता है। भारतीय विशेषज्ञ स्वय इतने समर्थ हैं कि किसी भी कार्य को वे स्वयं कुछ समय की शिक्षा के पश्चात् उत्तम रीति से कर सकते हैं दस, पांच विशेषज्ञ उस कला को सीख कर हजारों लोगों को प्रशिक्षित कर सकते हैं। प्रश्न नहीं भारत सरकार इस विधि को क्यों नहीं अपनाती है। क्षय निरोध के लिए बी० सी० जी० के टीके लगवाने के लिए करोड़ों रुपये व्यय किये गए परन्तु जब तक भारतीयो को दूध, स्वच्छ वायु, अच्छे हवादार निवास, निर्मल जल, पोषक अन्न और फल खाने को न मिले तब तक क्या ससार की कोई भी औषधि क्षय का निरोध कर सकती है ? लेखक ने बीसों रोगियों को जो बच्चे हैं जिनको बी० सी० जी० के टीके लग चुके है उनको क्षय के उपद्रव से मरते देखा है। यह बी० सी० जी० तो स्वय अभी परीक्षण की अवस्था में है। यदि अमेरिका में यह क्षय निरोधक सिद्ध हुए है तो अमेरिकी और भारतीय नागरिक के जीवन स्तर में आकाश पाताल का अन्तर है यह भारत का स्वास्थ्य मन्त्रालय क्यों नहीं समझता ? यही धन जो बी० सी० जी० के टीके पर व्यय किया जा रहा है भारत में गो पालन पर व्यय करके प्रत्येक भारतीय बच्चे को १ पाव गो दुग्ध प्रतिदिन यदि शिक्षालयो में देने की व्यवस्था की जाता तो यह बी० सी० जी० से अधिक क्षयानिरोधक होता। इससे करोड़ों रुपये भारत में रहते, भारत के लोगों को काम मिलता। परन्तु भारत का स्वास्थ्य मंत्रालय इस प्रसंग को समझे तो कुछ करे भी। इसी प्रकार अधिकांश मंत्री अपने-अपने कार्यों के विशेषज्ञ नहीं है। केवल दलगत लोगों को सन्तुष्ट करने के लिए मंत्री मण्डल के कार्यों का विभाजन किया जाता है। यह कितनी विचित्र बात है कि भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी है परन्तु उसके शिक्षा मंत्रालय के प्रमुख लोग कहते हैं कि सूर और तुलसी हिन्दी भाषा के कवि नहीं थे। अयोग्य व्यक्तियों के हाथ में विभाग होने से उनके अधीनस्थ कर्मचारी जो भी उनको समझाते हैं वही वे करते हैं परिणाम जहां १ का व्यय होना चाहिए वहां १० का होता है और कार्य भी उत्तम नहीं होता है। मंत्री मण्डल में योग्यता का ध्यान न रखकर भिन्न समुदायों और वर्गों के प्रतिनिधित्व का ध्यान रखा जाता है। इस प्रकार की शासन व्यवस्था से गरीब जनता का अरबों रुपया व्यर्थ जा रहा है उससे कोई लाभ नहीं हो रहा है। महामानव मनु का यह वाणी आज के भारत में सर्वत्र चरितार्थ हो रही है—

अपूज्याः यत्र पूज्यन्ते, पूज्यानांच व्यतिक्रमः। त्रीणि तत्र भविष्यन्ति, दुर्भिक्ष मरण भयम्॥

अर्थात् जिस राष्ट्र में अपूज्यों की पूजा और पूज्यो का अनादर होता है

(शेष अगले पृष्ठ पर)

भारत विभाजन और....

(पिछले पृष्ठ का शेष)

उस जनपद में दुर्भिक्ष अकाल मृत्यु और भय सर्वत्र व्याप्त होता है।

महात्मा गांधी के स्वदेशी का बुरा हाल है। गांधी आश्रमों में खद्दर पड़ा सड़ने लगा। यह बात शासकों के कानों तक पहुँची तो उन्होंने चपरासियों, पुलिस तथा अन्य कर्मचारियों की वर्दी आदि तथा अन्य स्थानों मे उसका उपयोग कर उसे जिस किसी तरह समाप्त किया। खद्दर की वेशभूषा किसी समय त्याग और तपस्या का चिह्न समझा जाता था परन्तु आज इस भावना का लोप हो गया है अतः साधारण जनता अधिक मूल्य देकर मोटा और भद्दा वस्त्र पहने तो क्यों? अब उसमे से भावना का लोप हो गया। लोगों में विदेशी वस्तु के प्रति प्रीति बढ़ती जा रही है, धारणा यह हो रही है कि विदेशी चीज मजबूत और अच्छी होती है।

शासन का व्यय बढ़ता जा रहा है इसके साथ नित्य नए टैक्स बढ़ते जा रहे है। रेल, डाक, तार आदि के इतने टैक्स भारत में कभी किसी समय नहीं रहे जितने आज हैं। फिर भी प्रति वर्ष इनमें अनेक योजनाओं के नाम पर वृद्धि ही होती रहती है। भारत में इससे पहले जिन करों का नाम भी नहीं सुना गया उनको हमारे शासकों ने बिक्रीकर, प्रतिबिक्री कर, व्यवसाय कर, मृत्युकर आदि आकर्षक नामों से जनता पर लाद दिया है फिर भी इतना सब होने पर शासन अंग्रेजों के समय से भी निकृष्ट है। जनता और कुछ सच्चे कांग्रेसी जो राजनैतिक दलदल से ऊपर हैं कहने लगे हैं कि इससे तो अंग्रेजों का शासन अच्छा था क्योंकि शासन के प्रत्येक छोटे-बड़े विभाग में भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी अंग्रेजों के समय से चौगुनी है। शासकीय सेवाओं में भाई-भतीजावाद, रिश्वत और सिफारिश का बोलबाला है।

दूतावासों के नाम पर इस गरीब देश का करोड़ों रुपया विदेशों में शान शौकत पर नष्ट किया जा रहा है। अनेक प्रत्यक्ष दर्शियों का कहना है कि विदेशों में दूतावास अपव्यय और ऐशोआराम के निवास बने हैं। इनमें से बहुत से राजदूत भारत के हित की अपेक्षा हानि करते देखे गये है ऐसा कुछ लोगों का कहना है। जीप स्कैण्डल आदि इसके अनेक उदाहरण हैं।

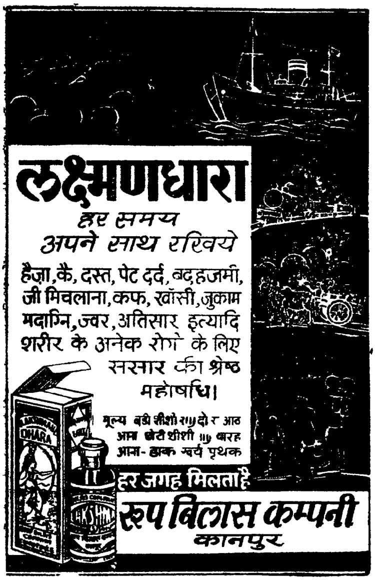
आर्थिक दृष्टि से भारत का ढांचा सुदृढ़ नहीं है अमेरिकी और विश्व बैंक के ऋणों पर हमारी योजनाएं पूरी की जा रही हैं। इतना सब होने पर भी आज के हमारे शासक अमेरिकी और ब्रिटेन जैसे सम्पत्ति शाली देशों की नकल करने में गर्व अनुभव करते है। इस प्रकार राजनैतिक दृष्टि से तो हम अवश्य स्वतन्त्र हैं परन्तु आर्थिक दृष्टि से हमारी नकेल विदेशियों के हाथों मे है। अपनी राजनैतिक स्वतन्त्रता को सुदृढ़ता के लिए हम परमुखापेक्षी हैं यह कैसी दयनीय अवस्था है।

इस प्रकार आज स्वराज्य के पश्चात् हमारे देश में हिमालय से कन्या कुमारी तक पंजाब मे बंगाल सर्वत्र दुर्गम समस्याओं का जो अव सरवादिता के परिणाम स्वरूप उत्पन्न हुई है, जाल सा बिछा है इसमें फंसी हुई जनता भूख नग्नता, गरीबी, बेकारी तथा टैक्सों के भार से अद्भुत यातना से छटपटा रही है। इस स्थिति का कुछ विघटन कारी शक्तियाँ लाभ उठा रही हैं। शोषित और शोषक वर्ग के नारे बुलन्द करके गरीब और अमीर का वर्ग भेद उत्पन्न किया जा रहा है। यहीं तक यदि यह सीमित रहता तो विशेष हानि नहीं थी दोनों वर्गों के बीच जो अपने ही देशबन्धु हैं भयङ्कर शत्रुता उत्पन्न क ', जा रही है। आवश्यकता तो क शोषकों का दृष्टिकोण राज्य की सहायता से परिवर्तित कर दिया जावे। क्या भारत में भी च्यांग काइशेक के इतिहास की पुनरावृत्ति होगी? यह एक गम्भीर प्रश्न है जिसका उत्तर आज के भारतीय शासकों को देना होगा। विगत १० वर्षों का कांग्रेसी शासन का इतिहास इस बात का साक्षी है कि विदेशीय रीति, नीति से भारतीय समस्याओं के समाधान का जो स्वप्न देखा जा रहा है वह कभी सफल नहीं होगा। आज के संक्रमण काल में प्रत्येक भारतीयता के उपासक देशभक्त भारतीय का कर्तव्य है कि वह भारतीय समस्याओं के समाधान के लिए भारतीय रीति, नीति और पद्धति से, भारत के अतीत गौरव से प्रेरणा लेते हुए, एक सुदृढ़, सुगठित सुसम्पन्न और स्वावलम्बी राष्ट्र के निर्माण में सहायक हों।

आर्य वर की आवश्यकता

एक २२ वर्षीय उच्च ब्राह्मण कुलोत्पन्न मैट्रिक व साहित्यरत्न (प्रथम खंड) पास सुशील आर्य बालिका (अध्यापिका) के लिए सुयोग्य स्वस्थ्य व शिक्षित आर्य वर की आवश्यकता है। कन्या आर्यसमाज की सुयोग्य कार्यकर्ता तथा वर्तमान में भी स्त्री आर्यसमाज की मन्त्रिणी हैं। अतः ब्राह्मण वर्ण वैदिक धर्मी आर्य नवयुवक निम्नाङ्कित पते से पत्र व्यवहार करें।

—हेतराम आर्य
मंत्री आर्यसमाज अलवर (राजस्थान)



तुलनात्मक अध्ययन विषयक अपूर्व ग्रन्थ

आर्यसमाज के सैद्धान्तिक साहित्य में अभूतपूर्व वृद्धि

पं० भवानीलाल भारतीय एम. ए. लिखित—

महर्षि दयानन्द और राजा राममोहन राय

उन्नीसवीं शताब्दी के दो महान् सुधारको और हिन्दू पुनरुत्थान के अग्रदूतों के सिद्धान्तों कार्यों और प्रवृत्तियो का तुलनात्मक अध्ययन।

कुछ महत्वपूर्ण सम्मतियाँ—

[१] तुलनात्मक लेख लिखने मे आपको विशेष योग्यता है।
प० गङ्गाप्रसाद जी रि० जज भूतपूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा

[२] पुस्तक बहुत उपयोगी है। पं० धर्मदेव जी विद्या मार्तण्ड

[३] राजा राममोहन के विचारो का सम्यक अध्ययन तथा सम्यक प्रतिपादन एवं ऋषि के विचारों से उनकी तुलना पर आपको बारम्बार बधाई है।
—डा० सूर्यदेव शर्मा एम०ए० डी० लिट०

[४] पुस्तक बहुत अध्ययन और विचार के साथ लिखी गई है।
—ठा० अमरसिंह आर्य पथिक

[५] पुस्तक काफी खोज और अध्ययन के पश्चात् लिखी गई है। इस प्रकार की तुलनात्मक रचनाओ की आज बड़ी आवश्यकता है।
—वेदप्रकाश दिल्ली

[६] साहित्य की दृष्टि से लेखक की यह एक अद्वितीय देन है।
—आर्य जालन्धर

[७] पुस्तक बड़े काम से यथासम्भव निष्पक्ष होकर लिखी गई है। इतिहास के विद्यार्थियों और धार्मिक जिज्ञासुओ के लिए उपयोगी है।—ज्वाला, उदयपुर

[८] समस्त पुस्तकों में आदि से अन्त तक एक चिन्ताशील वातावरण का साम्राज्य है। —'हिन्दुस्तान' दैनिक नई दिल्ली।

मूल्य केवल १)रु० डाक व्यय पृथक

मिलने का पता —

(१) आर्यप्रकाश पुस्तकालय, किदवई पार्क रोड आगरा
(२) आर्यसमाज, सरदारपुरा जोधपुर

दैनिक स्वाध्याय के ग्रन्थ

(१) ऋग्वेद सुबोध भाष्य—मधु छन्दा, मेधातिथी, शुन शेप कण्व, परागौतम, हिरण्यगर्भ, नारायण, बृहस्पति, विश्वकर्मा, सप्त ऋषि व्याम आदि १८ ऋषियों के मन्त्रों के सुबोध भाष्य मूल्य १६) डाक व्यय १।।)

ऋग्वेद का सप्तम मण्डल (वसिष्ठ ऋषि)—सुबोध भाष्य। मूल्य७) डाक व्यय १)

यजुर्वेद सुबोध भाष्य अध्याय १—मूल्य १।।), अष्टाध्यायी मू० २) अध्याय ३६, मूल्य ।।) सबका डाक व्यय १)

अथर्ववेद सुबोध भाष्य—(सम्पूर्ण १८ काण्ड) मूल्य २६) डाक व्यय ५)

उपनिषद् भाष्य—ईश ७), केन ।।), कठ १।।), प्रश्न १।।), मुण्डक १।।) माण्डूक्य ।।), ऐतरेय ।।।) सबका डाक व्यय २।)

श्रीमद्भगवतगीता पुरुषार्थ बोधनी टीका—मूल्य१२।।) डाक व्यय२)

वैदिक व्याख्यान—अग्नि मे आदर्श पुरुष, [२] वैदिक अर्थ व्यवस्था [३] स्वराज्य, [४] सौ वर्षों की आयु, [५] व्यक्तिवाद और समाजवाद [६] शांति. शान्ति. शान्ति, [७] राष्ट्रीय उन्नति, [८] सप्त व्याहृति, [९] वैदिक राष्ट्रनीति, [१०] वैदिक राष्ट्र शासन, [११] वेद का अध्ययन अध्यापन, [१२] भागवत मे वेद दर्शन, [१३] प्रजापति का राज्य शासन, [१४] त्रैत, द्वैत, अद्वैत, [१५] क्या विश्व मिथ्या है?, [१६] वेदों का संरक्षण ऋषियो ने कैसे किया?, [१७] आप वेद रक्षण कैसा कर रहे हैं?, [१८] देवत्व प्राप्ति का अनुष्ठान, [१९] जनता का हित करने का कर्तव्य, [२०] मानव की सार्थकता, [२१] राष्ट्र निर्माण [२२] मानव की श्रेष्ठ शक्ति, [२३] वेदोक्त विविध प्रकार के शासन। प्रत्येक का मूल्य ।=) डाक व्यय पृथक। आगे व्याख्यान छप रहे हैं।

ये ग्रन्थ सब पुस्तक विक्रेताओं के पास मिलते हैं।

पता—स्वाध्याय मण्डल किल्ला पारडी, जिला सूरत

रोजगार नहीं—केवल परोपकार है

"दमा" पुरानी खांसी के रोगियो! यह दुष्ट रोग बड़ा ही दुखदाई है। आखिर आप कब तक तड़फते रहोगे? क्यों नहीं आने वाली किसी भी 'पूर्णमासी' को यहाँ आश्रम मे आकर सैकड़ो रोगियो के साथ हमारी भारत विख्यात महौषधि (चित्रकूट बूटी) धर्मार्थ (मुफ्त) सेवन करके एक ही मात्रा में सदा के लिए इस दुष्ट रोग से पीछा छुड़ाते हैं। यदि किसी कारणवश यहाँ न आ सके तो केवल ७।।) रु० मात्र विज्ञापन रजिस्ट्री आदि खर्च तुरन्त मनीआर्डर से भेजकर मगा लें और आराम से अपने घर पर ही सेवन करके पूरा लाभ उठावे। जल्दी करें, जिसमें 'पूर्णमासी' से पहले दवा आपको मिल जावे, अन्यथा पछतावेगे, आनेवाली पूर्णमासी ३ मई सन् ५८ नोट करलें।

नोट—यदि रोग अधिक पुराना हो तो ३ खुराक (पूरा कोर्स) लगातार सेवन करे। जिसमें जड़ कट जावे, ३ खुराक (पूरा कोर्स) एक बार मगावे तो ७) भेजे। गरीबों को मुफ्त बांटने के लिए एक दर्जन का रियायती मूल्य २४) रु० है। अमीरों को सर्वदा यह दवा रखना चाहिए।

पता—रायसाहब के. एल. शर्मा रईस आश्रम(६०) 'जगाधरी'(ई०पी०)

पुरोहित की आवश्यकता

देहरादून आर्यसमाज के लिए एक कर्मनिष्ठ पुरोहित की आवश्यकता है। जो संस्कार आदि भलीप्रकार करा सके तथा भजनोपदेश का कार्य भी कर सके। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। इच्छुक महाशय मन्त्री आर्य समाज देहरादून से पत्र-व्यवहार करें।

❀ सर्व कार्यसिद्धि यंत्र ❀

तथा अनेक गुप्त रहस्यमय बातें मालूम करने के लिए केवल ।) के स्टाम्प विज्ञापन खर्च भेज 'जवरीजन्त्री' मुफ्त मगाकर मनोकामनाएं पूर्ण करें। पता—'जवरी आफिस (६०) "जगाधरी" (E. P.)

ऋषि के प्रति

★

नहीं जानते तुम तुम्हारा ही कोई,
तुम्हीं को जगाकर यहां सो गया है।
अज्ञानन्द की प्यार-माला का मोती,
सुमेरू यहीं पर कहीं खो गया है ॥१॥

लिए रम्य किरणें उषा ने सवेरे,
महा माँग थी जब सिंदूरी सभाली
दया और आनन्द की साधना ले
सुधी एक आया महा प्राण माली

विषैली विषमता की झाड़ी उखाड़ी,
सुधास्नेह की बल्लरी बो गया है ॥२॥

नयी जीवनी ज्योति दे जागरण से
मनो मन्दिरों को यहां जगमगाया
विरोधी बवण्डर उठे सैकड़ों ही
न माझो जरा भी कहीं डगमगाया

उसी को हलाहल पिलाते रहे हम,
हमारी दशा पर बहुत रो गया है ॥३॥

बसन्ती बहारें लगी झूमने थीं
चतुर चेतना की पिकी चारु चहकीं
लिए गन्ध गौरव गुलाबी क्षणों मे
सुवेदामुकी मंजरी मंजु महकीं

बहाके सुधारों की धारा दयाघन,
सभी कालिमाये वही धो गया है।
अज्ञानन्द की प्यार-माला का मोती,
सुमेरू यहीं पर कहीं खो गया है ॥४॥

—ओंकार मिश्र "प्रणव"

मन की महिमा

★

भिक्षुक बन आते हैं
सब तेरी वेदी के नीचे,
उपहार बराबर माँग रहा
तू लोभी सा आंखों को मीचे
गाँव गांव मे तेरा मन्दिर
गली गली मे तेरी महिमा
धन तेरे पैरों मे सोया
रत्नों मे लिपटी तेरी प्रतिमा।
भाव न समझ पाते
इतना लेकर तू क्या देता है;
हा ! नए उजाले के लोगों को
इक पत्थर धोखा देता है।
रोज लहू बहा करता है
मिटता है यौवन कलियों का
कितने वायदे मर जाते
छिन जाता संगम अलियों का
तू यों , मुस्काता है
बारान बना कर क्यारी
बोल बता मेरे मन क्या ऐसा
करुणानिधि है करुणा का अधिकारी ?
सबसे अच्छी मन की प्रतिमा
जो जग की थाह बताती है
भोले बहके राहगीर को
मंजिल की राह बताती है

—योगेन्द्र "किशलय" बीकानेर

असतो मा सद् गमय

★

बहुत घूम आया, चल आया कितने स्वप्न सजाये।
पलकों मे नूतन आशा के कितने महल उठाये ॥
लिखे कल्पना पट पर कितने रंगीले आख्यान।
मिला अन्त में सूनापन, पर तू न मिला भगवान् ॥
आज पुकार उठी उर से फिर तू ही बन सबल।
भ्रान्त हुआ मै भटक भटक कर, प्रिय ! सत्पथ पर ले चल ॥

+ + +

विषय वासना की मदिरा मे मन-मधुकर भरमाया।
बहुत किया है पान तृप्ति का अन्त नहीं पर आया ॥
किस छलिया ने मुझको अगणित पाशों में उलझाया।
मैंने अपना घात किया, निज करनी पर शरमाया ॥
देखूंगा उस ओर जहां पर नहीं वेदना का स्वर।
भ्रान्त हुआ मै, भटक भटक कर प्रिय सत्पथ पर ले चल ॥
स्वर्ण पात्र से आवृत होकर, सत्य नहीं दिखता है।
विस्मृत हैं निज तत्व रूप मन माया मे रमता है ॥
मैं हूं कौन कहां से आया और कहां जाना है।
विकट अतीव प्रश्न यह सम्मुख मुझको सुलझाना है ॥
आत्मतत्व का बोध करा—जागृत कर मुझको प्रतिपल।
भ्रान्त हुआ मैं भटक भटक कर, प्रिय ! सत्पथ पर ले चल ॥

—सत्यभूषण, वेदालङ्कार एम० ए०

चार मुक्तक

★

ढोंगी मनुष्य सोचते मन्दिर में देव को रिझायेंगे,
भीत विनीत प्रार्थना से वे 'विश्व शान्ति लायेंगे;
उनके चाटु वचन और उनकी बातों के कौशल से—
उनके देवता महाकाल बन उनको ही खायेंगे।
तम के प्यार की पहिचान को चांद निकलता है,
घोर रजनी दूर करने को जुगनू चमकता है ?
जहां पर फैली है चादर घोर अमा की—
आशा संजोये निरन्तर इक दीप जलता है।
जो कलियां थीं कल तक चमन का शृङ्गार,
बसन्त था कल फुलवारी मे आज पतझार,
रोयेगा जीभर दो दिन करके प्यार—
भ्रमर ! बाह्य रूप गन्ध पर मत गुंजार।
ज्यों समानान्तर रेखाये आपस में नहीं मिल पाती
तकदीर बनो हो जैसी कभी वह बदल नहीं जाती,
दो हृदयों की मध्य गत दूरी एक रहे जीवन में—
तो उनकी आशायें नहीं कभी पूरी हो पातीं।

—गङ्गाप्रसाद वार्ष्णेय 'सुमन' शान्ति-निकेतन, खुर्जा

तीन मुक्तक

★

गर रात घिर आई है तो क्यों घबराता है ?
गर काली घटा छायी है, तो क्यों कतराता है ?
अरे ! पग रुक रहे हैं क्यो; क्या तुझे ज्ञात नहीं ?
कि रात की राह से ही, तो प्रभात आता है !
हाथ पर धर हाथ, बैठने से हार होती है !
बाहुओ की बल्ली से, नाव पार होती है !
पांव जब उठते अडिग, विश्वास लिए राही के-
तो राह देने को क्षितिज में दरार होती है !
आदमी बन जो धरा का, भार कन्धों पर उठाये !
बांट दे जग को, न अमृत बूंद अधरों से लगाये !
है जरूरत आज ऐसे आदमी की सृष्टि को फिर—
विश्व का विष सिन्धु पी जाये मगर हिचकी न आये !

—लाखनसिंह भदौरिया, भोगपुरा, मैनपुरी

ऋषि-कर्तृत्व

★

वेद ज्ञान की आज अरुणिमा,
विश्व गगन पर झलक रही है।
पंक्ति पंक्ति की अटल सत्यता,
दिन दिन अब तो ठहर रही है।
और ज्ञान की नक्षत्रावलियां,
प्रभाहीन हो कलप रही हैं।
अरू प्रपंचकों की नगरी में
कोलाहल हो सभी कहीं है ॥
भौतिकतम की सुखद नींद तज,
मधुर कामनाओं को भूल।
नहीं प्राच्य प्रतीची भी तो,
लौट रहा है अपने मूल ॥
ऋषि-कर्तृत्व मार्तण्ड यह
अपनी रश्मि बिखेर रहा है।
आदि सत्य के सत्य रूप का,
तमावरण यह भेद रहा है ॥

—नाथशरण श्रीवास्तव, प्रयाग

दुनिया की रीत

★

इस दुनियां की है यही रीत,
जो वर्तमान है आज यहां,
कल कुछ भी ना रह जावेगा,
स्मृति केवल बीते युग की,
अंकित कर जाता है अतीत।
होती जब दानव शक्ति प्रबल
बढ़ता अधम अन्याय यहां,
असुरों के अत्याचारों से,
हो जाती है दुनियां सभीत।
तब दमन हेतु अन्यायी के,
रक्षा करने को निज स्वधर्म,
पैदा होते हैं महापुरुष,
जब बढ़ जाती जग में अनीत
मिल जाया करता मिट्टी में,
उन दुष्टों का साम्राज्य सदा,
दानवता पर मानवता की,
होती आई है सदा जीत।
इस दुनिया की है यही रीत ॥

—पुष्पलता श्रीवास्तव

नारी

★

'निर्मल' नारी को कबहुं,
नहिं करिये अपमान।
नारी निरत अधोगति,
सन्मानित उत्थान ॥
सन्मानित उत्थान,
दुरित दुख दूर भगावे।
सहज सुभग सुख शान्ति,
सुगति सुभगति सरसावे।
सावित्री सरसुती,
भव्य भागीरथि भारी।
विजया कमला आदि,
सभी हैं निर्मल नारी ॥

—पूर्णचन्द्र 'निर्मल' अनूपशहर

अणुशक्ति की अनिवार्यता

आज संसार की जन सख्या दो अरब के लगभग है जिसमे लगभग एक लाख की वृद्धि प्रतिदिन हो रही है। अब से ४० वर्ष के उपरान्त संसार की जन संख्या ३ अरब पर पहुँच जावेगी।

एक विचित्र प्रकार के संसार मे आज दिन हम रह रहे हैं अधिकतर जनता अपना जीवन निर्धनता और संकटों में बिता रही है। किन्तु इस स्थिति से निकला अवश्य जा सकता है। केवल चतुर्थांश से न्यून भूमि खाद्य वस्तुओं के उत्पादन में प्रयुक्त की जा रही है। चतुर्थांश से अधिक मरुभूमि है। जिसका अधिकतर निर्माण मानव कृत है। और इस मरु भूमि का विस्तार अनेक क्षेत्रों मे आज दिन भी हो रहा है। कुछ क्षेत्रों मे सहारा की मरु भूमि ३५ मील प्रति वर्ष के हिसाब से बढ़ रही है। भूमि का एक बड़ा भाग श्वेत मरुभूमि हरित मरु भूमि, उत्तरीय ध्रुव के हिमाच्छादित टुण्ड्रा और कांगो तथा आमेजन के बीहड़ बनो में घिरी हुई है। मानव जीवन के लिए इन क्षेत्रों में खाद्य वस्तुओं का उत्पादन किया जा सकता है। किन्तु इन क्षेत्रों को तैयार करने के लिए विद्युत शक्ति की आवश्यकता है और विद्युत शक्ति की वर्तमान उत्पत्ति सर्वथा अपर्याप्त है। और इसका एक मात्र समाधान अणुशक्ति से ही हो सकता है।

जैसा नेहरू जी कहते हैं कि 'इस नई शक्ति की आवश्यकता और यह अणुशक्ति की क्रान्ति आज विश्व के लिए अनिवार्यता की सीमा तक पहुंच गई है। हम इसे चाहे या न चाहे। ठीक जिस प्रकार समार ने देखा और संसार विवश हुआ कि वह औद्योगिक क्रान्ति को स्वीकार करे, चाहो तो उसके साथ तुम प्रगति करो या फिर विनाश का मुख देखो। इसी प्रकार आज दिन अणुशक्ति का होना भी अनिवार्य है, यदि हम एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में अपना जीवन चाहते हैं। (ब्लिज से)

—शिवदयालु

आ० स० नैनीताल

इस समाज में निवास के लिए उन्हीं लोगों को स्थान मिल सकता है जो आर्य विचार के हों और किसी आर्यसमाज केअधिकारी द्वारा प्रमाण पत्र पेश करें।

आ० स० बरौठा

आ०स० बरौठा का उत्सव २४, २५, २६ मई को होगा। सम्बन्धित व्यक्ति नोट कर लें।

आरा में सफल धार्मिक मेला

१९, २०, २१, २२ अप्रैल ५८ को आर्यसमाज आरा, बिहार का ७१ वां वार्षिकोत्सव बड़े समारोह से मनाया गया जिसमें चारों दिन लगभग १५ २० हजार जनता ने भाग लिया। इस अवसर पर आर्य सम्मेलन, ईसाई प्रचार निरोध सम्मेलन, राष्ट्रभाषा सम्मेलन, महिला सम्मेलन आदि भी हुए। स्वामी अभेदानन्द जी महाराज प्रधान सार्वदेशिक सभा, डा० दुखन राम जी प्रधान विहार सभा व उप कुलपति विहार विश्व विद्यालय व श्री रघुवीरसिंह शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति दिल्ली विशेष रूप से पधारे थे। आचार्य प०रामानंद शास्त्री, श्री प० रामनारायणजी शास्त्री पं० विद्यानन्द शर्मा आदि प्रमुख महोपदेशकों के प्रभावशाली भाषण हुए। श्री रामभजन जी पटना व श्री भगवत शरण जो लखनऊ के भी भाषण हुए। भजनोपदेशकों में श्री जोरावर सिंह, श्री नन्दलाल जी, श्री यशपाल जी के नाम विशेष उल्लेखनीय है। आर्य सम्मेलन की अध्यक्षता श्री डा० दुखनराम ने, ईसाई प्रचार निरोध सम्मेलन की अध्यक्षता श्री इन्द्रदेव नारायण वकील उप प्रधान विहार सभा ने, राष्ट्रभाषा सम्मेलन की अध्यक्षता श्री परमहंस राय प्रिन्सिपल जैन कालेज आरा ने तथा एक अन्य सम्मेलन की अध्यक्षता श्री जगदीश प्रसादसिंह प्रिंसिपल महाराजा कालेज आरा ने की। जिला मे बढ़ते हुए ईसाई प्रचार को रोकने के लिए पं० कृषिचन्द त्रिपाठी की देखरेख में श्री स्वरतु गुप्त, श्री शचीकान्त, श्री जगत विहारी शर्मा, श्री दुखनसिंह, श्री सिया राम गुप्त व श्री रामगुलामसिंह की एक प्रचार समिति बनाई गई। उत्सव पूर्ण रूप से सफल हुआ। समाज के अधिकांश सदस्यों ने सहयोग से काम किया। श्री गयाप्रसाद वर्मा और श्री रामराजसिंह मुख्तार का उद्योग व परिश्रम सराहनीय रहा।

आवश्यकता

मेरे मित्र आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य भद्रसेन जी के सुपुत्र चि० वेदरत्न जी के विवाह के लिए एक स्वस्थ, सुन्दर, सुशील, सुशिक्षित तथा गृह कार्य मे दक्ष लगभग १६ वर्षीया आर्य कन्या की आवश्यकता है। वर सुशिक्षित तथा बारोजगार है। विवाह वैदिक रीत्यनुसार जन्म गत जाति का विचार न कर पूर्णतः गुण कर्मानुसार होगा। पत्र-व्यवहार निम्न पते पर करें। डा०सूर्यदेव शर्मा, एम.ए. आर्य विद्या परिषद, अजमेर

अमेठी समाचार

आर्यसमाज अमेठी का वार्षिक उत्सव १० से १२ अप्रैल तक हुआ। उत्सव का उद्घाटन राजकुमार रणंजय सिंह एम० एल० सी० प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० ने किया और अमेठी समाज को १०१)दान दिया। स्वामी इष्टानन्द जी, श्री गिरधर नारायणसिंह, श्री सत्यमित्र शास्त्री श्री श्रवणसिंह आदि के भाषण व भजन हुए।

१६ अप्रैल को रामनगर निवासी नगूराम भगी के यहा विशाल भोज तथा सभा हुई। श्रीराजकुमार रणंजय सिंह प्रधान सभा ने इस अवसर पर भाषण करते हुए कहा कि प्राणिमात्र एक प्रभु की सन्तान है। अतः सब मे परस्पर प्रेम होना चाहिए। राजकुमार जी ने ही नंगूराम को अपनी पाठशाला मे शिक्षा दिलवाई थी जबकि छुआछूत का भूत जोरों पर सवार था नंगूराम ने राजकुमार जी को ५१) की थैली भेंट की पर उन्होंने नंगूराम की ओर से वह थैली तत्काल ही रण वीर विद्यालय को भेंट कर दी।

आर्यसमाज रामनगर तथा गौरीगज का वार्षिकोत्सव १० से १३ तथा १४ से १५ मई ५८ तक क्रमश होगा अनेको विद्वान पधारेगे।

आ. स. नानपारा, वहराइच

वार्षिकोत्सव ८, ९, १०, ११ मई ५८ को होगा। पं० शान्तिप्रकाश जी, पं० विद्यानन्द जी, प० सुरेशचन्द्र जी श्री धर्मदत्तआनन्द, स्वामी इष्टानन्द आदि पधारेंगे।

श्वेत कुष्ठ की जड़ी

एक महात्मा की बताई हुई जड़ी जिसको केवल तीन दिन लगाने से और खाने से सफेदी के दाग पूर्ण आराम। अगर आप अनेक दवा लगा कर निराश हो चुके है, तो भी एक बार लगा कर देखें। गुणहीन होने पर दुगना मू० वापस मू० लगाने का ५) खाने का ५)

—गिरजाप्रसाद ३१
पो० कतरी सराय (गया)

बन्द मासिक— फौरन जारी

मासिक धर्म किसी कारण से बन्द क्यों न हो गया हो हमारी आश्चर्य जनक "अक्सीर मन्थली" बिना कष्ट हर प्रकार के बन्द मासिक को खोल कर साफ कर देती है। मूल्य ५।) साधारण स्पेशल कोर्स मू० २५) डाक खर्च अलग।

खबरदार—गर्भवती स्त्री हरगिज सेवन न करें, निश्चय गर्भ गिर जावेगा
ओंकार केमिकल वर्क्स हरदोई उ.प्र.

साहित्य समीक्षा

आर्यसमाज साप्ताहिक, दिल्ली

सम्पादक—श्री पं० प्रकाशवीर शास्त्री
प्रकाशक—श्री चतुरसेन शास्त्री
कार्यालय—सार्वदेशिक प्रेस, पाटौदी हाउस, दरियागज दिल्ली ७
वार्षिक मूल्य ५ रुपये, एक प्रति का १० नये पैसे।

आर्यसमाज साप्ताहिक का प्रथमांक देखा। अनेकों बड़े नेताओं की शुभकामना लिए एक बहुत ऊंचे उद्देश्य के साथ यह पत्र प्रारम्भ हुआ है। प्रस्तुत अङ्क के लेख उपयोगी हैं और कुछ विचार भी बड़े स्पष्ट और निर्भीक हैं। सम्पादकीय विचार सामान्य जनता को प्रभावित करने वाला है। आर्यसमाज को अखिल भारतीय स्तर का पत्र बनाने मे अभी बहुत साधन की आवश्यकता है पर प्रारम्भ सुन्दर है। पत्र का सम्पादन आर्यजगत् के एक ऐसे नेता के हाथ मे है जिनसे आर्य जनता को बहुत आशायें है। अत. हमें विश्वास है कि आर्यसमाज अपने उद्देश्य मे सफल होगा। आज देश मे स्वतन्त्र, निर्भीक और स्पष्ट समाचार पत्रों की बहुत कमी है, ऐसी दशा मे आर्यसमाज की जिम्मेदारी विशेष है। आर्यसमाज चमके यही मेरी इच्छा है।

सुधारक, मासिक, झंझर

सम्पादक—श्री वेदव्रत व्याकरणाचार्य
प्रकाशक गुरुकुल झंझर रोहतक पंजाब। वार्षिक मूल्य २) एक प्रति के २० नए पैसे।

यह गुरुकुल झझर का मासिक पत्र है जो पिछले ५ वर्षों से प्रकाशित हो रहा है। आर्य सिद्धान्तो का प्रचार करके समाज मे सुधार लाना 'सुधारक' का उद्देश्य है। कुछ लेख अच्छे और स्वाध्याय योग्य भी होते हैं।—भ०शा०

आर्यवानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर

१२ से १५ अप्रैल तक वार्षिकोत्सव सानन्द सफल हुआ। स्वामी अमृतानन्द श्री धर्मदेव जी, श्री सुखदेव जी श्री नरदेव शास्त्री, आदि के भाषण हुए। महात्मा हंसराज जी का जन्म दिवस भी मनाया गया। नय वर्ष के लिए श्री गोपालकृष्ण पिपलानी प्रधान श्री देव वानप्रस्थी मन्त्री और श्री प० देवदत्त शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गये।

(T. B.) (टी०बी०) 'तपेदिक' रोग

का सहल इलाज केवल ।) के स्टाम्प विज्ञापन खर्च भेजकर हिन्दी मासिक "रंगीला मुसाफिर" (१) 'जगाधरी' (ई०पी०) मुफ्त मंगा कर पढ़े और प्रचार करें।

आर्य जगत

पूर्वी उ० प्र० आर्य वीर दल शिक्षण शिविर

पूर्वी उ० प्र० आर्य वीर दल शिक्षण शिविर १६ जून से २२जून५८ तक डी० ए० वी० कालेज वाराणसी में श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी की अध्यक्षता में लगेगा। १५ जून को सायं शिविर का उद्घाटन श्री राजकुमार रणंजयसिंह प्रधान सभा के कर कमलों द्वारा होगा। युवकों को आत्म निर्भरता, स्वास्थ्य, अनुशासन, चरित्र निर्माण आदि की शिक्षा दी जायेगी। श्री काशीनाथ जी सार्वदेशिक आर्यवीर दल के मुख्य शिक्षक, शिक्षक का काम करेंगे। पूर्वी जिलों के नवयुवकों को अधिक से अधिक संख्या में भाग लेना चाहिये। विशेष जानकारी के लिए निम्न पते पर लिखें—

मेवालाल आर्य, मन्त्री पू० उ० प्र० आर्यवीर दल, द्वारा प्रभात प्रेस, वाराणसी

आर्य उप प्रतिनिधि सभा इटावा

प्रधान—श्री सुधाकरजी आयुर्वेद शि०
मन्त्री—श्री शिवप्रतापजी सि० वाच०
कोषा०—श्री डा० मुन्नालाल मिश्र

आ० स० केराकत जौनपुर

का ३४ वां वार्षिकोत्सव ७, ८, ९, १० अप्रैल को मनाया गया जिसमे कुंवर सुखलाल जी डा० प्रकाशवती, कुमारी पुष्पावती देवी, श्री सत्यदेव शास्त्री, ठाकुर इन्द्रदेवसिंह आदि उपदेशक पधारे।

आ० स० रेल बाजार कानपुर

आ० स० रेल बाजार कानपुर का वार्षिकोत्सव ३, ४, ५ मई ५८ को मनाया जा रहा है आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् पधारेंगे।

आर्य कुमार सभा बादशाह नगर लखनऊ

आर्य कुमार सभा बादशाह नगर लखनऊ की ओर से एक कहानी व कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। कविता १६ पंक्तियों की और कहानी ७०० शब्दों की होनी चाहिए। भेजने की अन्तिम तिथि ३० जून तक है। प्रतियोगिताओं में ४४ पुरस्कार हैं।

—अशोक कुमार, बद्री कुटीर, पुराना हैदराबाद लखनऊ

स्त्री आ०स० हसनपुर, मुरादाबाद

प्रधाना—श्रीमती हसवतीदेवी
मन्त्राणी—,, शान्तिदेवी
कोषा०— ,, तारावती देवी

आ० स० असुरन, गोरखपुर

प्रधान—श्री कलाराम जी
मन्त्री—श्री सुमेश्वर पाठक
कोषाध्यक्ष—श्री अयोध्याप्रसाद

आर्य वीर दल दादरी, बुलन्दशहर

श्री सन्तोषकुमार जिला संचालक आर्यवीर दल मेरठ मडल ने इस दल का निरीक्षण किया और निम्न नियुक्तियां कीं।

नगर संचालक—श्री बाबूराम गुप्त
उप नगर स०—रेवतीप्रसाद आर्य
मन्त्री—श्री दयानन्द प्रसाद
बौद्धिक नायक—श्री जयप्रकाश शर्मा
कोषाध्यक्ष—श्री गोकुलचन्द जी

आपने आर्य वीर दल चिटहरा का भी निरीक्षण किया।

स्त्री आ० स० ब्रह्मपुरी अलीगढ़

प्रधाना—श्रीमती गायत्रीदेवी
मन्त्राणी—,, कुंवरदेवी
कोषाध्यक्ष—,, पुष्पादेवी

आ० स० स्थापना दिवस सोत्साह मनाया गया।

आ० स० हसनगंजपार लखनऊ

प्रधान—श्री हरिशरण जी एम० ए०
मन्त्री—श्री वैजनाथ शुक्ल
कोषा०—श्री चौधरी नारायणदीन

हरयाना प्रान्तीय आयुर्वेद महा विद्यालय

हरयाना प्रान्तीय आयुर्वेद महा विद्यालय गुरुकुल झज्झर रोहतक का द्वितीय वर्ष की वार्षिक परीक्षा का परिणाम इस वर्ष शत प्रतिशत रहा।

आ० स० पीरो, शाहाबाद बिहार

इस समाज का वार्षिकोत्सव, २२ २३, २४ अप्रैल को हुआ।

आ० स० रायबरेली का उत्सव स्थगित

आ० स० रायबरेली का वार्षिकोत्सव जो ४, ५, ६, ७ मई को होने वाला था, कुछ कारणों से स्थगित हो गया है। अगली तिथि निश्चित नहीं है। अतः उक्त तिथियों में आने वाले सज्जन पधारने का कष्ट न करें।

आ० स० गवां बदायूं

आर्य समाज गवां का उत्सव ११ से १४ मई ५८ तक होगा जिसमें विविध सम्मेलन होंगे। पं० बिहारी लाल शास्त्री, पं० रुद्रदत्त शास्त्री, पं० इन्द्रजीत शास्त्री, प० आशानन्द जी, आदि पधार रहे है। पंजाब हिन्दी आन्दोलन के शहीदों तथा अत्याचारों के चित्र भी दिखाये जायेंगे।

आ० स० बेरी, एटा

प्रधान—श्री मनवीरसिंह
मन्त्री—श्री भुजवीरसिंह
कोषा०—मूर्वेरसिंह

माल, लखनऊ में आर्य समाज स्थापित

१६ अप्रैल को माल, लखनऊ में श्री राजबहादुर जी की अध्यक्षता मे आर्य समाज की एक सभा हुई जिसमें ब्र० बालकराम जी, डा० प्रकाशवती, डा० श्रीकृष्ण जी, मेधार्थी शास्त्री, स्वामी इष्टानन्द, श्री क्षेमचन्द, माता शिवदासी जी आदि के भाषण हुए। तुरन्त ही आर्य समाज की स्थापना हुई और निम्न प्रकार से निर्वाचन हुआ—

प्रधान—श्री सुरेन्द्रबक्श सिंह
मन्त्री—श्री लल्लूसिंह
कोषा०—सतेन्द्रकुमार

आ० स० सिविल लाइन्स सहारनपुर

प्रधान—श्री रामजीलाल वर्मा
मन्त्री—श्री केदारसिंह रावत
कोषा०—श्री मिलखीराम

गुरुकुल गनियार, महेन्द्रगढ़

गुरुकुल गनियार, पो० अटेली, जिला महेन्द्रगढ़ का छठवां वार्षिकोत्सव ३, ४ मई ५८ को होगा जिसमें अनेकों विद्वान पधारेंगे।

स्त्री आ० स० नामनेर छावनी

प्रधाना—श्रीमती विमला देवी
मन्त्राणी—,, विद्यावती जी
कोषा०— ,, कृष्णा रानी

दक्षिण भारत में प्रथम हिंदी दैनिक का प्रकाशन

दक्षिण भारत मे अब तक हिन्दी भाषा का दैनिक समाचार पत्र नहीं निकलता था पर अब जून ५८ से पं० विनायकराव जो विद्यालङ्कार संसद् सदस्य के सम्पादकत्व मे हैदराबाद से "दैनिक क्रान्ति दूत" का प्रकाशन होना निश्चित है। दक्षिण भारत की हिन्दी प्रेमी जनता को इसमें अधिक से अधिक सहयोग करना चाहिए।

नगर समाज आगरा

४ से ९ अप्रैल तक नित्य प्रभात फेरी हुई। १० से १४ अप्रैल तक श्री मोहन लाल जी प्रधान आर्य समाज की अध्यक्षता में २८ वां वार्षिकोत्सव हुआ। १० को नगर कीर्तन निकला श्री पूर्णचन्द जी एडवोकेट, श्री विश्व बन्धु वेदालङ्कार, श्री सत्यप्रिय जी, स्वामी विशुद्धानन्द जी, प्रो० रतनसिंह जी, प० ज्ञानेन्द्र सूफी, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, पं० अमरसिंह, श्रीमती हेम लता जी आदि के भाषण हुए।

आ० स० चाकन्द गया

इस समाज का ८ वां वार्षिकोत्सव १५, १६, १७ मार्च को सोल्लास मनाया गया। पं० गंगाधर शास्त्री, पं० हरिप्रसाद शास्त्री, श्री रामनारायण जी, श्री बाल मुकुन्द सहाय, श्री दीनेश्वर प्रसाद, श्री वीरेन्द्र आदि के भाषण और भजन हुए।

पूराकलां में प्रचार

ग्राम पूराकलां, इटावा में पं० रामचन्द्र उपदेशक ने प्रचार किया और १० उपनयन संस्कार कराये। दसों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली।

गो हत्या रोकी जाय

आ० स० बुलन्दशहर का प्रस्ताव

यद्यपि गऊ वंशज के बध को रोकने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कानून बना हुआ है और जिला बोर्ड ने भी पूरी रोक लगा रक्खी है किन्तु फिर भी हर सप्ताह कई सौ की तादाद में इधर उधर से इकट्ठा करके गऊ ग्राम बसी व उसके निकट ले जाई जाती है और कुछ को गंगा पार जिला मुरादाबाद में व रामपुर इत्यादि जगह ले जाकर बध की जाती है जिससे कि न केवल कानून की अव हेलना होती है बल्कि देश की हानि होती है और हिन्दू जनता के हृदय को ठेस पहुंचता है।

आर्य समाज बुलन्दशहर का साधारण अधिवेशन जिला अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकर्षित करता है और इस प्रस्ताव द्वारा अनुरोध करता है कि गऊ वंशज के इस बध को रोकने के लिए कार्यवाही करें।

आ.स. बड़हलगंज गोरखपुर

इस समाज का उत्सव ५, ६, ७, अप्रैल का हुआ। आर्य सम्मेलन व हिन्दी रक्षा सम्मेलन बड़ा आकर्षक रहा। प० विद्यानन्द जी, पं०सुरेशचन्द्र जी, श्री डा० सत्याचरण जी भूतपूर्व राजदूत, व श्री रामजीप्रसाद गुप्त मुख्य उप मन्त्री सभा, के भाषण हुए तथा श्री महिपाल जी के भजनो पदेश हुए। श्री रामजीप्रसाद गुप्त के भाषण से स्थानीय समाज का मनोमालिन्य भी दूर हो गया। श्री हांती लाल जी भूतपूर्व इन्जीनियर प्रधान आ०स० गोरखपुर ने विशेष रूप से उत्सव को सफल बनाया।

आ० स० अरनियाँ बुलन्दशहर

इस समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता महाशय रामचन्द्र जी का पिछले दिनों निधन हो गया। उन्हें पागल कुत्ते ने काट लिया था। समाज ने शोक सभा भी किया।

श्री रघुवीरसिंह शास्त्री सभा भवन में

सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के मन्त्री श्री रघुवीरसिंह शास्त्री २३ अप्रैल को जब आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के कार्यालय में पधारे तो सभा मित्र और प्रेस के कर्मचारियों ने आप का स्वागत किया। श्री रामश्रीप्रसाद गुप्त मुख्य उप मन्त्री सभा ने सभी कर्मचारियों से आपका परिचय कराया। इस अवसर पर एक संक्षिप्त भाषण में शास्त्री जी ने कहा कि आर्य बन्धुओं को यम, नियम के आधार पर अपना जीवन बनाना चाहिये। आपने कहा कि आर्यों का चरित्र एक उदाहरण होना चाहिये। हमारा धर्म और चरित्र एक राष्ट्रीय चरित्र के रूप में विकसित होना चाहिये।

आ.स.पिम्परी कालोनी पूना

इस समाज की ओर से आर्यवीर दल, दयानन्द हिंदी विद्यालय, तिलक साधना मन्दिर व्यायामशाला और सुभाष पुस्तकालय तथा वाचनालय का संचालन होता है। आर्यवीर दल के स्वयंसेवकों ने अभी स्टेशन मार्ग बनाया है। इससे पूर्व उन लोगों ने विद्यालय मार्ग बनाया था। नगर में आवश्यकतानुसार ये बराबर सेवाकार्य भी करते ही रहते हैं। समाज के लोग अब कन्या पाठशाला और शिशु विकास मन्दिर खोलने पर विचार कर रहे हैं जिसके लिए लगभग ४०००) रु० की आवश्यकता है। धनीमानी लोगो से इस ओर विशेष निवेदन है कि वे इस पुण्य कार्य में कुछ सहयोग करे। साप्ताहिक सत्संग, उत्सवादि यहां नियमित रूप से होता है। हिन्दी आन्दोलन में इस समाज ने काफी सहयोग दिया।

मध्यप्रदेश आर्य वीर दल शिक्षण शिविर

म० प्र० आर्यवीर दल सांस्कृतिक शिक्षण शिविर इण्टर कालेज विदिशा (भेलसा) में ३ मई से १३ मई ५८ तक लगेगा। चरित्र निर्माण, गांव की सफाई, प्राथमिक चिकित्सा, स्वास्थ्य रक्षा, स्वावलम्बन आदि की शिक्षा दी जायगी। शिक्षार्थी शीघ्र ही १०) रु० भोजन शुल्क सहित अपना नाम पता भेज दें। अपने साथ लोटा, थाली, बिस्तर, खाकी नेकर, सफेद हाफ कमीज, सफेद जूते, मोजे तथा नोट बुक भी अवश्य लावें। प० रामचन्द्र देहलवी, प्रो० रामसिंह, श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, आदि से पधारने की प्रार्थना की गई है।

आर्य शिक्षा सम्मेलन तथा विद्यार्य सभा की बैठक

दिनांक १७ मई १९५८ शनिवार को साय ७॥ बजे से दयानन्द वैदिक कालेज लखनऊ में उत्तरप्रदेशीय विद्यार्य सभा का अधिवेशन तथा सम्मेलन होगा जिसमें आर्य विद्यालयों के अध्यापको, अध्यापिकाओ तथा प्रबन्धकों के सगठन पर और छात्रों की धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था आदि पर विचार होगा। सभा से सम्बद्ध आर्य हायर सेकेन्डरी स्कूलो के १० १० के समुदायों की ओर से एक एक प्रतिनिधि के हिसाब से विद्यार्य सभा के लिए सदस्यों का निर्वाचन भी होगा।

सभा से सम्बद्ध बालकों तथा कन्याओ की समस्त आर्य शिक्षा सस्थाओं के प्रबन्धकों तथा प्रधानाचार्यों से प्रार्थना है कि वे कृपया इस अधिवेशन में स्वयं सम्मिलित हो, अथवा अपनी सस्था के प्रतिनिधि को भेजें। सम्मिलित होने वाले व्यक्ति अपने आने की सूचना शीघ्र देने की कृपा करें। —वीरेन्द्र शास्त्री एम०ए० अधि० शिक्षा विभाग आ० प्र० सभा उत्तरप्रदेश, रायबरेली

जिला सभा लखनऊ का निर्वाचन

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ का वार्षिक निर्वाचन इस वर्ष ८ मई ५८ बृहस्पतिवार को साय ७ बजे सभा प्रधान श्री जगन्नाथप्रसाद केसरवानी के निवास स्थान पर पुरानी सब्जी मंडी, अमीनाबाद में होगा। नगर तथा जिला के प्रतिनिधियों को ठीक समय पर अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होना आवश्यक है।

आ० स० खागा की अपील

आ० स० खागा का समाज मन्दिर बनना प्रारम्भ हो गया है। दानी सज्जनों से प्रार्थना है कि वे धन भेजकर सहयोग करें।

—मन्त्री आ०स० खागा, फतेहपुर

गुरुकुल काँगड़ी का उत्सव

उत्सव की तिथि में इस वर्ष परिवर्तन हो गया है पर सन्देह की कोई बात नहीं है कि उत्सव नहीं होगा। विजयादशमी पर गुरुकुल का उत्सव अवश्य होगा। दीक्षान्त समारोह भी उसी समय सम्पन्न होगा। सभी गुरुकुल प्रेमी उस समय पधारें। उस समय रेल में रियायती टिकट भी मिलते हैं। —रामसिंह

आर्य कुमार सभा गुरुकुल झज्झर

प्रधान—श्री वेदव्रत जी
मन्त्री—श्री वेदपाल जी
कोषा०—श्री सोमदेव जी

आवश्यकता है

आवश्यकता है, एक योग्य विद्वान को जो आर्यसमाज अलीगढ़ मे, पुरोहित का कार्य कर सकें। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। वानप्रस्थी महोदय को मान्यता दी जायगी। प्रार्थनापत्र १५ मई तक आने चाहिये।

प्रेमनारायण पुष्प
मन्त्री आर्यसमाज अलीगढ़

आ०स० बिहारीपुर बरेली

प्रधान—श्री चन्द्रनारायण वकील
मन्त्री—श्री कृष्णचन्द्र जौहरी
कोषा०—श्री कृष्ण बिहारीलाल जौहरी

आर्य नाट्य समिति बरेली

प्रधान—श्री बलबीर सहाय जौहरी
मन्त्री—श्री लक्ष्मणदास

समिति अपना प्रसिद्ध नाटक "हिन्दी विजय या शहीद सुमेरसिंह" लखनऊ डी०ए०वी० कालेज में १७-१८ मई १९५८ को सभा के बृहदधिवेशन के अवसर पर दिखाने की तैयारी कर रही है।

कन्या की आवश्यकता

एक सुशिक्षित कमाऊ २२ वर्षीय विश्वकर्मा युवक के लिए स्वस्थ्य, सुन्दर शिक्षित तथा गृह कार्य में दक्ष लगभग १६ वर्षीया कन्या की आवश्यकता है। आर्य कन्या को विशेषता दी जायगी। पत्र व्यवहार का पता—भगवानसिंह उपमन्त्री आर्यसमाज कालपी

साप्ताहिक समाचार समीक्षा

नागा क्षेत्रों में राष्ट्रपति कानून लागू

उपद्रवी नागा पहाड़ी क्षेत्रों म सेनाओं को अब विशेषाधिकार दिया गया है और ५ अप्रैल १९५८ से वहाँ राष्ट्रपति कानून लागू हो गया है। यह कानून १९५६ मे आसाम के राज्यपाल द्वारा लागू किए गए कानून का स्थान ले लेगा। इस कानून में अन्य बातो के अतिरिक्त अशान्त क्षेत्र मे लगे हुए किसी भी कानून को तोड़ने वाले व्यक्ति पर गोली चलाने का अधिकार दिया गया है। अशान्त क्षेत्र मे ५ वा इससे अधिक व्यक्ति एक साथ नहीं एकत्रित हो सकते और न गोला बारूद आदि इकट्ठा कर सकते हैं।

सरकारी कर्मचारी और राजनीति

गृह मन्त्री प० पन्त ने लोक सभा में कहा कि सरकारी कर्मचारियों को राजनीति से सर्वथा पृथक रहना चाहिए। वे अपनी यूनियनों मे तो शामिल हो सकते हैं पर किसी ऐसे दल मे शामिल नहीं हो सकते जो अनुत्तरदायी कार्य करते हो।

कांग्रेसी सरकार को बदल दो

शेरघाटी, गया बिहार में समाजवादी नेता श्री डा० राम मनोहर लोहिया ने कहा कि आज ऊपर से नीचे तक इस कांग्रेसी राज्य में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। आपने जनता से अपील की कि जनता इस सरकार को बदल दे। श्री लोहिया ने खुली सभा मे कांग्रेस शासन पर भ्रष्टाचार और पक्षपात का खुला आरोप लगाया आपने कहा कि अगरेजी भाषा का सर्वत्र बहिष्कार होना चाहिए। अन्त में आपने कहा कि केवल समाजवादी दल ही सही ढग से आज जनता का नेतृत्व कर सकता है।

लम्बी दौड़ में गुलजारासिंह

लम्बी दौड़ म गुलजारा सिह ने एशिया का रिकार्ड तोड़ दिया। एशियाई खेलों के लिए भारतीय टीम के खिलाडी अब टोकियो जायेंगे। खिलाड़ियो का कहना है कि वे इस वर्ष भारत का सिर नीचा नहीं होने देंगे।

ब्रिटेन परमाणु परीक्षण जारी रखेगा

ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री श्री मैकमिलन ने कहा है कि ब्रिटेन परमाणु परीक्षण का कार्यक्रम अभी जारी रखेगा क्योंकि ब्रिटेन ने वैज्ञानिक परमाणु परीक्षण के बारे म अभी सारी चीजें नहीं जान पाए ह जो वे जानना चाहते हैं।

वेश्या प्रथा पर रोक

वेश्यालयों के भ्रष्टाचार को रोकने के लिए भारत सरकार ने एक ऐसा कानून बनाया है जो १ मई ५८ से लागू होगा। इस कानून के अनुसार वेश्यालय अवैध घोषित हो गए है और वेश्यालय चलाने वालो को ५ वर्ष की सजा देने की व्यवस्था है। पता चला है कि दिल्ली में वेश्याओं का व्यापार करने वाले इस कानून के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय तक लड़ने के लिए धन जमा कर रहे हैं। इतना ही नहीं वे हर प्रकार से अपने व्यापार को चालू रखने के लिए कटिबद्ध हैं। कुछ दलालों का विचार है कि वे वेश्याओं से सिविल मैरेज कर लेंगे और अलग मकान लेकर रहेंगे तथा वहीं अपना व्यापार प्रारम्भ कर देंगे। सरकार को इस पर अत्यन्त कड़ी दृष्टि रखनी चाहिए क्योंकि यदि कहीं ऐसा हुआ तो पूरे शहर और पूरे देश में यह रोग फैल जायेगा। आज अपने आप देश में भ्रष्टाचारो का साम्राज्य है और उस स्थिति मे तो शरीफ परिवारो को अपना इज्जत बचानी भी मुश्किल हो जायेगी।

अंगरेजी राष्ट्रीय एकता के लिए घातक

मराठी के भारत प्रसिद्ध साहित्यकार मामा वरेरकर न हिन्दी भवन, नयी दिल्ली मे भाषण करते हुए कहा कि अगरेजी को भारतीय समाज से निकाल कर हिन्दी प्रस्थापित करना अनिवार्य है। आपने बताया कि भारत में राष्ट्रीय एकता के लिए अगरेजी अत्यन्त घातक होगी। वरेरकर ने हिन्दी के स्थान पर उसका नाम भारती रखने का भी सुझाव दिया।

शिखर सम्मेलन बुलाने की अपील

प्रधान मन्त्री नेहरू ने अलप्पे की एक सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए कहा कि शिखर सम्मेलन पुन बुलाया जाना चाहिए ताकि विश्व मे शान्ति स्थापित हो सके। उन्होने कहा कि इस प्रकार के सम्मेलन से ठोस परिणाम निकलेंगे बशर्ते कि सभी अधिकारी ससार की समस्याओं पर इमानदारी के साथ विचार करे।

उड़ीसा में संसद सदस्य व विधायकों की गिरफ्तारी

भुवनेश्वर की पुलिस ने ससद सदस्य श्री प्रताप केशरी देव के साथ उड़ीसा विधान सभा के चार सदस्य उदित प्रताप शेखर देव, श्री श्रीधर नायक, श्री सुन्दर नायक पटेल और श्री अनूपसिंह देव को अपहरण के आयोग में गिरफ्तार कर लिया है। राज्यपाल ने अनूपसिंह देव को उप मन्त्री पद से पृथक कर दिया है। राजधानी मे उपद्रव फैलने की आशंका से शहर म पुलिस की विशेष व्यवस्था करके सेना भी बुलाली गई है। गिरफ्तार व्यक्ति अब जमानत पर रिहा कर दिये गये हैं।

यहा उल्लेखनीय यह है कि उड़ीसा में कांग्रेस की हालत चिन्ता जनक है। कांग्रेस के ७ विधान सभाई कांग्रेस छोड़कर विरोधी दल में मिल गए। अब राज्य के १३६ सदस्यों के सदन मे कांग्रेसी विधायकों की सख्या केवल ६१ ही रह गई है। अधिकाश लोगों का कहना है कि उड़ीसा में कांग्रेस शासन का पतन निश्चित है।

मृत्यु दण्ड नहीं हटेगा

गृह मन्त्री श्री पन्त ने राज्य सभा मे कहा कि मृत्यु दण्ड के प्रश्न पर पुनर्विचार नहीं किया जा सकता। यह दण्ड कायम रहेगा। वर्तमान परिस्थिति में इसे हटाया नहीं जा सकता।

राजदूत स्तरीय वार्ता

अमेरिका, ब्रिटेन व फ्रास ने सयुक्त रूप से सोवियत रूस को यह कह दिया है कि मास्को स्थित इन तीन देशों के राजदूतो से वार्ता करके शीघ्र ही शिखर सम्मेलन की भूमिका प्रारम्भ कर देनी चाहिए। सयुक्त पत्र में कहा गया है कि रूसी विदेश मन्त्री और इन तीन राष्ट्रों के राजदूतों की सयुक्त वार्ता अधिक लाभकारी सिद्ध होगी।

अमेरिका ने नया प्रक्षेपणास्त्र छोड़ा

अमेरिकी वायु सेना ने काफी ऊंचाई तक दो खण्ड वाला एक परीक्षण प्रक्षेपणास्त्र 'थोर' छोड़ा। 'छोड़ने के १५ मिनट बाद वायु सेना ने कहा कि प्रक्षेपणास्त्र का दूसरा खण्ड सफलता पूर्वक चल गया। इससे अस्त्र के सफल उड़ान की बात पक्की हो गई।

भारत पर पाक आक्रमण

सुरक्षा परिषद् में भारतीय प्रतिनिधि श्री आर्थर एस० लाल ने यह शिकायत की कि भारत पर पाक आक्रमण अब भी जारी है। लाख चेतावनी देने के बाद भी पाकिस्तानी बाज नहीं आते। आपने यह भी कहा कि काश्मीर के एक भाग पर पाकिस्तान ने गैर कानूनी ढग से अधिकार कर लिया है। —अ० श०

दूरद्रष्टा दयानन्द

[पृष्ठ ४ का शेष]

गगा जमना को नहीं आमू नदी को याद करते हैं। उन्हें यहाँ की कोयल पसन्द नहीं बुलबुल अच्छी लगती है। अभिप्राय यह है कि कोई भी जाति अपनी मातृभूमि को नहीं भूला करती। फिर आर्य जाति जैसी वीर और बुद्धिजीवी जाति ने अपनी मातृभूमि का बिल्कुल ही भुला दिया हो यह तो बुद्धि से परे की बात मालूम पड़ती है।

यदि दुर्जन तोष न्याय से यह मान भी लिया जाय कि आर्य मध्य एशिया की ओर से आये तो वह स्थान भी तो भारतीय साम्राज्य से बाहर नहीं था। महाभारत के समय तक भारतीय साम्राज्य ईरान, अफगानिस्तान और सीरिया से आगे तक फैला हुआ था। जो आज बृहत्तर भारत के नाम से प्रख्यात है। इसके अवशेष आज भी जहा तहा प्राप्त होते हैं। ईरान जो आर्यान् का अपभ्रंश है आर्यों की प्रमुख नगरी थी।

अंग्रेजी राज ने अपने शासन काल म आर्य और द्रविड़ के झगड़े को निरन्तर सुदृढ़ बनाने का यत्न किया है और उसके इतिहास तथा साहित्यिक सामग्री को जितना भी सभव था दूषित बनाया गया है। इतिहास तो कुछ ऐसा विषय बना दिया गया है कि उससे सचाई और वास्तविकता का ठीक ठीक पता लगाना कठिन हो गया है। अतएव इसका परिशोध करना नितान्त आवश्यक है आज फ्रास, जर्मनी, इटली आदि देशों के विद्वान अपने इतिहास की शोध म सलग्न हैं। जब समस्त देश अपना राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने का प्रयत्न कर रहे हैं तो हमे भी अपने देश की राष्ट्रीय भावना को सुदृढ़ बनाये रखने के लिए इतिहास को नये सिरे से क्या नहीं लिखना चाहिये।

आशा है भारतीय विद्वान अन्धानुकरण की दूषित मनोवृत्ति का परित्याग कर भारतीय सस्कृति के मौलिक ग्रन्थों का गहन अध्ययन करके आर्य और द्रविड़ के विष बीज को समूल नष्ट करने का प्रयत्न करेंगे। नहीं तो द्रविड़ कजगम जैसे एक नहीं अनेकों आन्दोलनों का सामना करना पड़ेगा।

दूरद्रष्टा ऋषि दयानन्द ने आज से सौ वर्ष पूर्व द्रविड़ रूपी विष वृक्ष और इससे उत्पन्न द्रविड़ कजगम आन्दोलन जैसे फलों का दर्शन किया था और इसीलिए इसके निर्मूलन की घोषणा की थी।

★

भारतीय संस्कृति की महानता

[लेखक—सियाराम गुप्तार्य, आरा]

गंगा सिन्धु सरस्वती सुयमुना गोदावरी नर्मदा।
कावेरी सरयू महेन्द्रतनया धर्मण्वती वेणुकाम्॥
शोणा वेत्रवती महासुर नदी ख्याताम् च या गंडकी।
पूर्ण-पूर्ण जले समुद्र सहिताम् कुर्वन्तु में मंगलम्॥

जिस भारतवर्ष के चरण कमलों को अनन्त काल से समुद्र प्रक्षालन कर रहा है, जिसको गजद्वीप, अजन्ता और एलोरा की प्राचीन गुफायें आज भी अपने अनन्त अतीत की आभा से प्रत्येक दर्शक के हृदय को बरबस आकर्षित कर अपनी प्राचीन संस्कृति एवं उच्चतम शिक्षाओं का दिग्दर्शन करा रही है जहां विशाल पर्वत राज हिमालय की ऊँची चोटी से निकलने वाली पावनमयी गङ्गा की निर्मल धारा हरद्वार के पर्वतों से टकराती, हहराती, इतराती और मचलती हुई भारत वसुन्धरा को नित्य प्रति पवित्र बनाकर इसे सुशोभित कर रही है उस शताब्दियों से पवित्र एवं परिपक्व भारतीय संस्कृति को कल के पदा हुए ईसाइयत रूपी छोकरे अपने चद चाँदी की टुकड़ों का लोभ देकर इस महान् संस्कृति को विनष्ट कर पुनः पराधीन बनाने पर तुले हैं।

इसके पूर्व भी विदेशियों ने इस की सुन्दर सभ्यता और संस्कृति को विनष्ट करने के लिए अनेकों आक्रमण किये जिसके वर्णन से आज इतिहास का एक एक पृष्ठ भरा पड़ा है। सर्वप्रथम इस स्वर्ग सदृश भूमि के स्वर्ण जड़ित मन्दिरों का वर्णन सुन कर यवनों की टोलियाँ नंगी तलवार ले 'अल्ला हो अकबर' का नारा बुलन्द कर भारत भूमि पर टूट पड़ी और सैकड़ों रत्न जटित मन्दिरों, नगरो एवं मूर्तियों को विध्वंस कर रेगिस्तानी लुटेरों ने अपनी ऊसर भूमि का परित्याग कर यहां पर स्वर्ग सुख लूटा। नालन्दा जैसे एक महान् विश्वविद्यालय को विध्वंस करके मलेच्छों ने उसकी करोड़ों पुस्तकों को धधकती हुई अग्नि की ज्वाला में भस्मीभूत कर डाला। यहाँ के सुन्दर साहित्य एवं धार्मिक ग्रन्थों के अन्दर मुसलमानों ने अपनी अवैज्ञानिक एवं अपूर्ण भाषा का समावेश कर भारतीय आदर्श एवं हमारे ऋषियों के प्राचीन गौरव को नीचा गिराना चाहा।

भारतवर्ष के हिंदुओं के हृदय मे उपनिषदों के अगाध प्रेम देख कर मुगल साम्राज्य का सबसे बड़ा इस्लाम का अभ्यान्तरिक प्रचारक सम्राट् अकबर ने दौलत के भूखे हिंदू पंडितो को रत्नों का प्रलोभन देकर उन्हीं के ग्रन्थों के अन्दर अरबी शब्दो का सम्मिश्रण कराकर "अल्लोपनिषद्" नामक पुस्तक बनाया जिसके एकाध उदाहरण मैं पाठकों के समक्ष उपस्थित करता हूं—

हेच फिक्रमलकर्तव्यं कर्तय जिकरे खुदा
खुदातालाप्रसादेन सर्व कार्यं भवह भवेत,
अस्माल्लां इल्ले मित्रावरुणादिव्यानि धत्ते
इल्लल्ले वरुणो राजा पुनर्ददुः।
हयामित्र इल्लां इल्लल्ले,
वरुणो मित्रस्तेजस्काम.।

इस प्रकार के अरबी शब्दो का संस्कृत के साथ सम्मिश्रण करा कर अकबर ने अपने प्यारे पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब एवं उनकी रचित पुस्तक कुरान को भारतीय हिन्दुओं की नजरों में ऊँचा उठाकर भारतवर्ष में इस्लाम का डंका बजाना चाहा था। पर धन्य है भारतवर्ष और धन्य है यहाँ की संस्कृति जो कि हजारों वर्षों से यवनों एवं अङ्गरेजों की दासता में जकड़े रहने के पश्चात् भी अपनी अनुपम संस्कृति को स्थिर रखने में समर्थ हो सकी। अकबर ने तो एक नया धर्म 'दीने इलाही' और एक नयी पुस्तक 'आइने अकबरी' का प्रकाशन कर इस्लाम का प्रचार करना चाहा था। परन्तु इसके विपरीत उसी के शासन काल में स्वयं मुसलमान कवियों ने भारत माता के चरणों का वन्दन किया। इसकी हृदयग्राही संस्कृति के समक्ष रहीम, रसखान, और ताज जैसी कवित्रि और कवियों ने भी अपनी प्यारे रसूल हजरत मुहम्मद एवं मूर्ति व अल्ला की इबादत को छोड़ कर भगवान कृष्ण की सौम्य मूर्ति के समक्ष नतमस्तक हो भारतवर्ष में कृष्ण भक्ति का प्रचार कर इस महान् हिन्दू संस्कृति की महत्ता का ज्वलंत प्रमाण दिया। यह है भारत की प्राचीन एवं विशुद्ध संस्कृति जिस के आगे दुनिया की सारी संस्कृति पिछड़ जाती है। अतः यही कारण था इस देश पर विदेशियों के लगातार आक्रमण होने के बाद भी इसकी संस्कृति आज भी ज्यो कि त्यो है। तभी तो मौलवी अलताफ हाली लिखते हैं—

वो दीने हुजाजी का बेबाक बेड़ा
निशाँ जिसका अकसाय आलम मे पहुँचा। न जेहूं मे अटका न कुलजम में झमका मुकाबिल हुआ कोई खतरा न जिसका। किय पै सिपर जिसने सातो समन्दर वो डूबा दहाने मे गंगा के आकर।

अर्थात् जिस इस्लाम की नंगी तलवार अपने वेग के साथ जिधर दौड़ी उधर ही इस्लाम का सितारा चमकता गया। काबुल कन्धार, अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान, मक्का, अरब, ईरान, बगदाद, टर्की, मिश्र इत्यादि सभी देश पूर्णत: इस्लाम के अनुयायी बन गये। पर जब वही इस्लाम की खूनी तलवार भारतवर्ष मे दौड़ी तो इसकी पावन भूमि पर टूक टूक होकर अपनी सम्पूर्ण रस्मोरिवाज को गंगा की निर्मल धारा मे विलीन कर डाला।

अतः यही कारण है कि सदियो से इसके साहित्य, इतिहास एवं धार्मिक ग्रंथों पर कुठाराघात होते हुए भी आज भारतीय संस्कृति के उपासको की संख्या दुनिया में सबसे अधिक भारतवर्ष मे ही है। यह भारतीय संस्कृति एवं इसकी सभ्यता की एक महान देन है जिसे गोभक्षक ईसाई प्रचारक क्या दुनिया की कोई भी शक्ति इसे मिटाने मे कभी भी न समर्थ हो पायी है न अब समर्थ हो सकेगी। पहले भारतवर्ष परतन्त्रता की बेड़ी मे जकड़ा अपने नव उत्थान का मार्ग ढूढ़ रहा था। यहां के लोग उस समय अपने आने वाले स्वर्णिम युग की प्रतीक्षा कर रहे थे। परन्तु अब परमपिता परमात्मा का असीम अनुकम्पा से यह महान् आर्य जाति स्वाधीन हो गई है। अतः अब हमें यह आवश्यकता है कि उन समस्त गोभक्षको एवं वर्तमान भारतीय राजनीति के मिथ्या शब्द जाल से हतोत्साहित न होकर अपने प्राचीन आदर्श तथा अपनी अनुपम संस्कृति को पहचाने और किसी भी लोभ में पड़कर विधर्मी बने हुए अपने भाइयों को पुनः शुद्ध करके अपनी संस्कृति की गौरव-गरिमा को उनके सम्मुख प्रस्तुत करे तभी हम सारे संसार का पथ प्रदर्शन कर सकते हैं जिसकी ओर सभी टकटकी लगाये बैठे हैं। अतः अब आवश्यकता है कि हम मानव जाति के मूल पुरुष महाराज मनु के इस उपदेश को उन समस्त ईसाइयों एवं पंचमांगी मुसलमानों को सुना दें,—

'एतद्देशप्रसूतस्य शकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्र शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः

अर्थात् इस देश मे उत्पन्न हुए अग्रजन्मा ब्राह्मणों के पास बैठ कर सारे भूमण्डल के मनुष्य अपने अपने चरित्र को उन्नत बनाने वाली शिक्षा को ग्रहण करें।

अतः इस प्रकार भगवान मनु के उपदेश जब हम भारत के कोने-कोने से गुंजायेंगे तब निकट भविष्य में वह समय आ सकेगा जबकि सम्पूर्ण विश्व इसके आगे पुन. नतमस्तक होकर इसकी महान् संस्कृति एवं उच्चतम ग्रन्थों को हृदयङ्गम करने के लिए लालायित हो सकेंगे और तब भारत का बच्चा-बच्चा एक साथ हर्षोन्मत्त हो अपनी प्राचीन संस्कृति का गान गा उठेगा :—

वही प्रेमगंगा यहां फिर बहेगी,
जो संसार की ताप-माला हरेगी।
कहेगा जगत् फिर से इक स्वर मे सारा,
यही वृद्ध भारत गुरू है हमारा।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का ५० वां वार्षिकोत्सव

कुलपति श्री नरदेवशास्त्री वेदतीर्थ ने झण्डा फहराया। ३० सहस्र रुपये [मकान, वसीयत, अन्न दान आदि के रूप में] चन्दे के अतिरिक्त वह महोत्सव अत्यन्त समुत्साह से पार हुआ। जनता इतनी अधिक एकत्रित हुई थी कि पिछले १५–२० वर्ष में इतनी भीड़ नहीं हुई। महात्माओं के प्रवचन के अतिरिक्त श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री वाचस्पति शास्त्री, श्री ओम प्रकाश पुरुषार्थी, तथा ओम्प्रकाश शास्त्री के भाषणों ने जनता को हिला दिया। स्वा० विवेकानन्द, स्वा०कृष्णानन्द, स्वा० श्रद्धानन्द, स्वा० सुखानन्द कुंवर सुखलाल, श्री इन्द्रजीतजा आदि के प्रवचन और संगीताचार्य विश्वेश्वर जी आदि गायन पर जनता मुग्ध रही इसके अतिरिक्त लगभग एक दर्जन गायनोपदेशक थे जिनमें श्री नरेन्द्र सिंह, कान्तिचन्द, वीरेन्द्र, शोभाराम श्री मुखराम प्रमुख थे।

इस वर्ष ब्र० चेतन, ब्र०महेशचन्द्र ब्र० चन्द्रशेखर शास्त्री, ब्र० रघुवीर स्नातक हुए और विद्याभास्कर बने। ८ छात्रों का आयुर्वेदभास्कर की उपाधि मिली इस वर्ष मेले मे किसानों और देवियों की संख्या बहुत अधिक थी। दीक्षान्त भाषण श्री कलगूराय शास्त्री एम० पी० का हुआ।

आर्यसमाज के हिन्दी सत्याग्रह के कारण इस वर्ष स्वर्णजयन्ती नहीं मनाई जा सकी। आगामी वर्ष मनायी जायगी।

वैद्यराज हरिशंकर शर्मा की अध्यक्षता मे स्वागत समिति बन गई है श्री देवदत्त शर्मा इन्जीनियर (स्व० स्वामी दर्शनानन्द के पौत्र) संयोजक नियत कर दिये गये। महाविद्यालय के हितैषियो मे उत्साह की लहर दौड़ रही है।

पंजीकरण सं. ए. ६०
१४ वैशाख १८८० (४ मई ५८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता– 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष २११२ तार : 'आर्यमित्र'

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के पदाधिकारियों से मेरा एक नम्र निवेदन

श्री बा० चन्द्रनारायण जी एम० ए० एडवोकेट (बरेली) जो कि आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री हैं इन्हें आर्यजगत अच्छी प्रकार से जानता है इनके बारे में दो शब्द लिख देना अपना कर्तव्य समझता हूं। सौभाग्य की बात है कि सभा के वर्तमान प्रधान मन्त्री तथा अन्य पदाधिकारी जहां रात दिन एक करके आर्यसमाज की सेवा करते रहते हैं वहाँ हमारे मध्य श्री बाबू चन्द्रनारायण जी भी एक सुयोग्य तथा कार्यकुशल व्यक्ति हैं जो निरन्तर लग्न के साथ आर्य समाज की सेवा के लिए सर्वदा एवं सर्वथा तैयार रहते हैं।

बा० चन्द्रनारायण जी जहां अन्य कई विषयों के विद्वान् हैं एक महान् साहित्यिक, एवं विशुद्ध नाट्य कला काव्यादि रचना में विशेष ज्ञान रखते हैं। आपकी रचनायें मधुरों एवं चित्ताकर्षक होती हैं। आपने हमारे सामने दो तीन दृश्य काव्य उपस्थित किये। उन अभिनयों को जिन्होंने देखा है उनकी उपयोगिता से इन्कार नहीं कर सकते। जहां तक सिद्धान्त का प्रश्न है मैं इस पचड़े में नहीं पड़ना चाहता, वह तो विद्वान् जानें, हा इतना तो मैं कह ही सकता हूं कि बा० चन्द्रनारायण जी की रचनायें प्राचीन नाट्यकला के अनुरूप हैं तथा उनमें अश्लीलता का कहीं नाम भी नहीं। अभी थोड़े दिनों की बात है कि पंजाब में हिन्दी रक्षा आन्दोलन ६, ७ मास तक चल कर बन्द हुआ। मुझसे सैकड़ों व्यक्तियों ने पूछा कि इस आंदोलन का क्या उद्देश्य है। इसका इतिहास क्या है ? इत्यादि।

इन सभी बातों का उत्तर अभी थोड़े दिन हुवे श्री बा० चन्द्रनारायण जी ने स्वरचित हिन्दी रक्षा आन्दोलन के उस अभिनय द्वारा दिया है जो कि ९ मार्च १९५८ को आर्यसमाज अनाथालय में आदर्श नाट्य समिति के मंच पर प्रदर्शित किया गया था मैं देखने गया था। सचमुच इस अभिनय द्वारा हिन्दी रक्षा आन्दोलन का आरम्भ से अन्त तक का इतिहास बड़ी सुन्दरता से दिखलाया गया है।

जहाँ पंजाब सरकार की हिन्दी भाषा के प्रति अति निन्दनीय व्यवहार फिरोजपुर जेल तथा बहु अकथपुराति के सत्याग्रहियों पर अमानुषिक अत्याचार पंजाब सरकार की हिन्दी भाषा सम्बन्धी संकुचित मनोवृत्ति का वर्णन है वहीं सरकार के कई पदाधिकारियों की सहृदयता, हिन्दू सिख का ऐतिहासिक पारस्परिक सम्बन्ध, सत्याग्रही अहिंसक वीरों तथा वीरांगनाओं की सहन शक्ति एवं अपनी प्यारी भाषा पर सर्वस्व न्यौछावर करने की भावना सूरता, वीरता का अद्भुत दृश्य, अत्याचार सहन करने की गम्भीर शक्तिशाली सुमेरसिंह का रोमांचकारी शहीदी दृश्य, हिन्दी भाषा का स्वरूप सरलता मधुरता एवं व्यापकता का बड़ी सुन्दरता के साथ वर्णन, ओजस्वी गीत, सात्विक हास्य कला से परिपूर्ण हिन्दी विरोधियों की देव भाषा और लिपि, मनगढ़न्त शब्द कोष सम्बन्धी मूर्खतापूर्ण शैली का प्रदर्शन, तथा अन्याय विरोध प्रत्यालोचक बातों का बड़ी योग्यता और सुन्दरता समन्वित हिन्दी रक्षा आन्दोलन का इतिहास उपस्थित किया गया है।

अन्ततः सभा के पदाधिकारी वर्ग से मेरा नम्र निवेदन है कि सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन लखनऊ में १७ और १८ मई को होने जा रहा है। प्रान्त भर से प्रतिनिधि आवेंगे, यदि इस अवसर पर हिन्दी रक्षा आदोलन का यह विशेष अभिनय मंच पर दिखलाया जाय और यदि सभा उचित समझे तो अन्यान्य स्थानों के लिए स्वीकृति दे देवे तो जनता हिन्दी रक्षा आन्दोलन के इतिहास से अच्छी प्रकार जानकारी प्राप्त कर सकती है। इसकी सफलता के लिए आर्थिक सहयोग भी आवश्यक है। यह मेरा अपना व्यक्तिगत विचार है।

—विद्याभास्कर शास्त्री मन्त्री
आर्यसमाज सुभाषनगर बरेली

आ० स० बरेली छावनी

इस समाज का वार्षिकोत्सव ५,६ अप्रैल को मनाया गया। अनेकों विद्वानो के भाषण हुए।

स्त्री आ० स० पूरनपुर

यहा आ० स० स्थापना दिवस सोत्साह मनाया गया। चुनाव—
प्रधाना—श्रीमती सुशीलादेवी
मन्त्राणी—" नारायणी देवी
कोषा०— " इन्द्रावती देवी

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित



अग्निहोत्र

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ।१।

ओ३म् भुवर्वायवे अपानाय स्वाहा ।२।

ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ।३।

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्नि वाय्वादित्येभ्यः प्राणापान व्यानेभ्यः स्वाहा ।४।

पृथिवी लोक का अधिष्ठातृ देवता अग्नितत्व मेरे जीवन के लिये प्राण स्वरूप है। मैं उसकी महिमा को हृदयगम करता हू।

अन्तरिक्ष लोक का अधिष्ठातृ देवता वायु मेरे जीवन में परम शुद्धि कारक है मैं उसकी महिमा को हृदयगम करता हूं।

द्यौ लोक का अधिष्ठातृ देवता सूर्य अपने तेज द्वारा मेरे अग अंग में व्यान बन कर मेरी रक्षा कर रहा है मैं उसकी महिमा को हृदयगम करता हू।

तीनों लोकों के यह तीनों अधिष्ठातृ देवता मेरे जीवन में महान् सहायक हैं मैं इन तीनो की महिमा को हृदयगम करता हू।

ओ३म् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् स्वाहा ।

कण-कण में रम रहे ज्योतिः स्वरूप, मानव जीवन के सार अमर (अविनाशी) सबसे महान् सनातन, दुःख विनाशक, आनन्द स्वरूप, परम रक्षक परमात्म देव के हाथ में आत्म समर्पण करता हू।

ओ३म् या मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु ॥ यजु० अ० ३२ म० १४

जिस ज्योतिष्मती बुद्धि की योग मार्ग के पथिक, आध्यात्मिक साधना के धनी ज्ञानीजन तथा आधिभौतिक ज्ञान के धुरीण विद्वज्जन सदा कामना करते हैं उस मेधाबुद्धि से हे विश्व नियन्ता प्रभो! आप मुझे सत्वर युक्त कर दो।

—शिवदयालु

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् न स सखा यो न ददाति सख्ये सचाभुवे सचमानाय पित्वः। अपास्मात्प्रेयान्न तदोको अस्ति पृणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत्।

ऋ० १०।११७।४

वह मित्र नहीं है जो अपने मित्र और साथी को, जो अन्न मांगने आता है, नहीं देता है। वह वह व्यक्ति हुआ कि जहां आश्रय स्थान नहीं है उससे दूर से चला जाता और अपने से परायु हो जाता है।

सम्पादक—
शिवदयालु, एम०ए०
सह० सम्पादक—
[illegible]

इस अंक के आकर्षण

आध्यात्मिक चर्चा

व्यवसायात्मिका बुद्धिः

[स्वामी अनन्तानन्द सरस्वती]

इस संसार के मूल में तीन सत्व कारण हैं जो ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति संज्ञक हैं। उनमें ईश्वर निराकार सच्चिदानन्दघन विज्ञान स्वरूप अनादि अनन्त सर्वज्ञ सर्वाधार सर्वशक्तिमान सर्वान्तर्यामी सर्वव्यापक निमित्त कारण है। जीवात्मा जन्म लेने की इच्छा करने मात्र से साधारण कारण बनता है तथा प्रकृति जगत् का उपादान कारण है। प्रकृति में सत् रजस्तम ये तीन गुण हैं। वे तीनों गुण बुद्धि के भी उपादान कारण हैं। जीवात्मा को बुद्धि तत्व अपने कर्मानुसार प्राप्त होता है। ईश्वर को सब मनुष्यों के कर्मों का ज्ञान है वह ही कर्मानुसार जीव को बुद्धि प्रदान करता है, सब कोई यह चाहता रहता है कि मुझ को सत् विवेक वाली बुद्धि मिले परन्तु बुद्धि का विभाजन कर्मानुसार ईश्वर करता है किसी की चाहना करने से वह नहीं मिलती यह ईश्वरीय दया के साथ पक्षपात रहित न्याय व्यवस्था है। बुद्धि सात हैं।

रमा सप्तशीर्षिण धियम्। यह ऋग्वेद का वचन है। ये सात शिर ये हैं—बुद्धि१, धी२ मेधा३, माया४, ऋतम्भरा५, उषा६ और प्रज्ञा७। उनमें अनुक्रम की परम्परा एक ही है जो स्वात्मा का प्रकृति पुरुष का सही सही निश्चय कराके अपवर्ग को प्राप्त कराता है। जिसके लिये गीता अ० २ श्लोक ३० में श्री योगेश्वर कृष्ण जी कहते हैं कि—

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये। बन्ध मोक्ष च या वेत्ति बुद्धि सा पार्थ सात्विकी॥ १८-३०॥

सात्विक बुद्धि का लक्षण यह है कि जो संसार के निर्माण में ईश्वर की प्रवृत्ति को जानती है और जीवात्मा इस संसार से निवृत्त किन कर्मों से होता है तथा कर्तव्य कार्य और निषिद्ध तथा विकल्प अकर्म को जानती और भयप्रद कर्म व अभय प्रद स्वभाव को जानते हुए बन्ध और मोक्ष को भी जानते हैं वह सात्विक बुद्धि है। वह—

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन। बहु शाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयो व्यवसायिनाम्॥ ३१। २ ३१॥

सात्विक कर्ता सात्विक ज्ञान, सात्विक कर्म, सात्विक धारणा धृति और बुद्धि ये सब अनुक्रम से समान होते हैं यहां ही व्यवसायात्मिका एक ही इस मनुष्य लोक में प्रशस्त रहती है शेष में उसकी बहुत सी शाखा होके पत्रों प्रमाखों अनन्त भेद हो जाते हैं।

ये त्रिसप्ता परियन्ति विश्वारूपाणि बिभ्रतः। वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे॥१॥

यह अथर्व वेद का प्रथम मन्त्र है उसमें उक्त सातों बुद्धियों के जो सत् रज तम इन तीनों गुणों के तीन तीन त्रिक बनके २१ भेद होते हैं। उनका वर्णन है। उसी के आगे तीनों गुणों के उत्तम मध्यम कनिष्ट भेद हो जाते हैं। जिनका योग ४२ आता है उन बियालीस का सम्बन्ध पांच पिता और चार वर्णों के साथ करके मनुष्य जाति ४२ प्रकार की सिद्ध होती है उनसे ८४ लक्ष योनियों तक संख्या पहुँच जाती है। वह सब कर्मभेद का वैदिक विज्ञान है इस प्रकार के विज्ञान से विद्यमान् आर्य समाज के विद्वान जन सर्वथा अनभिज्ञ हैं जो वेद के सूक्ष्म रहस्य को प्रकाशित करने में नितान्त असमर्थ हैं।

संसार में धार्मिक क्रांति का भारत में ही सर्व प्रथम आविष्कार हुआ था यहीं से सर्वत्र पृथिवी पर प्रचार हुआ था पर भारत में ही अधर्म की आज उत्पत्ति हुई है इस अधार्मिकता के प्रादुर्भाव ने वेदशास्त्रों के शब्दार्थ सम्बन्ध को विपर्य और विकल्परूप में बदल दिया है। वेद को तो छोड़िये मनुस्मृति के श्लोकों के अर्थ को भी बदल दिया है। उस बदले हुए अर्थ सम्बन्ध पर ही आधुनिक आर्य समाजी साक्षर विश्वास रखते हैं।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः।

इस उक्त श्लोक में अग्र जन्मन। एतद्देश प्रसूतस्य। ये दोनों वाक्य बड़ा महत्व रखते हैं। विशेषकर उनमें अग्रे जन्मानस्तेऽयमत्र मरन खलु विद्यते। स्वर्गादि में जिनका जन्म हुआ था वे कौन थे? यह प्रश्न होता है उसके उत्तम में (अहमिया भूमिया ददा मार्याय) मैं ईश्वर इस भूमि को आर्य के लिये देता हूं। तब वह आर्य प्रथम ऋभु वा विश्वकर्मा ही हो सकता है जिसमें तर्क यह है कि, शिल्पी विश्वकर्मा से सिवाय दूसरा द्विजन्मा दान पात्र नहीं बन सकता क्योंकि भूमि को उपयुक्त वह अग्रज मा शिल्प मेधा माया निपुण ही कर सकता है। यह सत्य सूर्यवत् है। परन्तु आजकल के विद्वान लोग अग्रजन्मन पर पूर्वापर तक से सम्बन्ध न पौराणिक अन्धाधुन्ध अर्थ का ही आश्रयण करते जा रहे हैं यह उनकी अन्ध परम्परा ही सिद्ध हो रही है जो सत्य से विमुख बात है। वास्तव में अग्र जन्मन का सम्बन्ध उसी आर्य से होता है जिसके लिये ईश्वर ने इस बहुरत्नों से स्वलंकृत भूमि प्रदान किया है।

अत वे अग्रजा ब्राह्मण शिल्पाचार्य पितर संज्ञक हैं और द्विजन्मा सब देव संज्ञक हैं। ऐसा सिद्धान्त करने पर ही द्वे सृती अशृणवम पितृणामुत देवानाम्, पितृयाण और देवयान की सृष्टि हृदय समझ में आ सकती है। न कर अग्रजन्मन का अर्थ द्विज ब्राह्मण हो सकता है वे द्विज हैं न की अग्रजन्मन. इस बात का कोई भी किसी प्रकार से सिद्ध कर सकता है कि आधुनिक द्विज ब्राह्मण अग्रजन्मन के वाचक अमुक प्रकार से बन सकते हैं। उसी का नाम पोंगा पन्थ है।

आर्य वीर से—

★

मधुर मधुर भाषा वाले
साधु सन्त श्रद्धा वाले
सदियों की आशा वाले
ओ भारत के आर्य वीर हिन्दी की मांग सवार दे।
भारत के आंगन में फैली गन्दी धूल बुहार दे॥

मार्ग सुलभ है लेकिन चलना है कांटों की राह में,
धीरज से रख कदम चमकती हिन्दी तेरी राह में,
भूल न जाना सत्य अहिंसा ऋषियों की सौगन्ध को—
पृथक नहीं आदर्श गुथा है हर मानव की आह में॥

गंगा की धारों वाले
जमुना की धारों वाले
गोद भरी प्यारों वाले
ओ ऋषियों के वरद पुत्र वेदों की ध्वनि झनकार दे।
भारत के आंगन में फैली गन्दी धूल बुहार दे॥

निश्चय पर दृढ़ता का बन्धन फिर क्या यह तूफान है,
बढ़ने वाले बढ़ता चल मन्जिल तेरी आसान है।
लहराये जा फहराये जा हिन्दी ध्वज पंजाब तक—
छोर छोर भारत का बोले बोले हर इन्सान है॥

रजत स्वर्ण खानों वाले
ऋषियों का आनों वाले
वेदों की तानों वाले
आ जन जन के हृदय राग हिन्दी का राग उभार दे।
भारत के आंगन में फैली गन्दी धूल बुहार दे॥

हिन्दी सत्याग्रह की वीणा से झंकृत हर तान है,
तो भी जुल्म सितम करने पर बढ़ा आज शैतान है।
सब सदा सहते जुल्मों को किन्तु न नारी का अपमान
होगा बच्चा बच्चा हिन्दी भाषा पर बलिदान है॥

पर्वत की छांहों वाले
अर्जुन की बांहों वाले
संयम की राहों वाले
ओ धरती के अमर वीर हिन्दी का कर शृंगार दे।
भारत के आंगन में फैली गन्दी धूल बुहार दे॥

हिन्दी भाषा अमर रहेगी प्यारे हिन्दुस्तान में,
धरती गाये गीत सितारों की सुन्दर मुसकान में।
अरे राष्ट्र भाषा की झोली आर्य वीर पंजाब से—
सूरज की दो किरण चली चन्दा को कहती कान में॥

संयम शील लगन वाले
दृढ़ता धीर पवन वाले
वैदिक वीर हवन वाले
ओ हिन्दी के प्रिय सपूत वैरी को आज उखार दे।
भारत के आंगन में फैली गन्दी धूल बुहार दे॥

—राधेश्याम पांडेय पांडेय निकेतन हरदुआगंज, अलीगढ़

आर्य्य जगत में सब से अधिक छपने वाला आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

ओ३म्

आर्य्य मित्र

वर्ष ६०

अङ्क १७

लखनऊ—रविवार वैशाख २१, शक संवत् १८८०, ज्येष्ठ कृ० १, वि० २०१५ (११ मई १९५८) दयानन्दाब्द १३४ सृष्टिसंवत् १९७२९४९०५९

सम्पादकीय

हिन्दी रक्षा आन्दोलन चालू है

आवश्यकता पड़ने पर आर्य समाज भारी बलिदान करेगा

सरकार को वायदा पूरा करने का अवसर

२७ अप्रैल को सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की एक आवश्यक बैठक बलिदान-भवन देहली में श्री घनश्यामसिंह गुप्त की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। स्थिति का दिग्दर्शन किया जाने और सरकार की ढुलमुल नीति का परिचय मिलने के उपरान्त गम्भीर वातावरण मे जो प्रस्ताव पारित हुआ है वह पाठक इसी अङ्क में अन्यत्र पढ़ेंगे।

मध्याह्न को भारत के विभिन्न प्रान्तों से आये हुए लगभग ४०० आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं का विराट सम्मेलन दीवानहाल मे संगठित हुआ, सब दिशाओं से सरकार की नीति की कड़ी भर्त्सना की गई और मांग की गई कि तुरन्त भारत सरकार को चुनौती दी जाय और सत्याग्रह आंदोलन जो स्थगित किया हुआ है उसको पूरे वेग के साथ चालू कर दिया जाय।

आन्दोलन के नेता श्री गुप्त जी ने अनुरोध किया कि रोष और आवेश से काम न लेकर देश की परिस्थिति एवं शासन की कठिनाइयों को दृष्टि मे रखते हुए आर्य समाज को गम्भीरता से काम करना चाहिए और शासन को यह बता देना ही इस समय पर्याप्त होगा कि उसके व्यवहार से आर्य समाज क्षुब्ध है और उसको जो आश्वासन दिये गये है उनमें आर्य समाज का अविश्वास तीव्रता के साथ बढ़ रहा है।

यदि आगामी डेढ़ मास में भी सरकार ने करवट न बदली तो ६ जून को होने वाली भाषा स्वातन्त्र्य समिति, सार्वदेशिक सभा एवं पंजाब हिन्दी रक्षा समिति की सम्मिलित बैठक में आगे का कार्यक्रम निर्धारित किया जायगा और आवश्यकता पड़ने पर कड़ा पग उठाने की तैयारी भी की जायगी।

इस स्थिति में आर्य समाज को अपना संगठन अधिक मजबूत बनाने की ओर ध्यान देना चाहिये। कर्मठ त्यागी कार्यकर्ताओं के हाथ मे सर्वत्र आर्य समाज की बागडोर सौंपने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। जो व्यक्ति राजनैतिक प्रतिष्ठा एवं चहल-पहल को अपने जीवन मे महत्व न देकर एकमना आर्य समाज की ही सेवा करना अपना कर्तव्य समझते हैं उनके हाथ में नीचे से ऊपर तक आर्य समाज का नेतृत्व रहना चाहिए जिससे अवसर आने पर किसी भी क्षेत्र से निर्बलता का आभास न होने पावे।

आर्य समाज को शान के साथ जीने के लिए त्याग एवं बलिदानों के लिए निरन्तर तैयार रहना चाहिए।

जनसंख्या का विस्फोटक-बम

आज संसार में सर्वत्र अणु बम की भारी चर्चा है। रूस और अमेरीका दोनों महान् देश अणु शक्ति के संवर्धन मे व्यस्त हैं एवं वायुयानों में अणु बम रख कर नभ मण्डल में चक्कर लगा रहे हैं। दोनों को एक दूसरे से भारी आशंका है। जिस दिन अणु बमों का विस्फोट आरम्भ होगा विश्व में भारी संहार का नग्न नृत्य देखने को मिलेगा।

किन्तु आज इस अणु बम से अधिक चिन्ताजनक वस्तु संसार की आश्चर्य जनक गति से बढ़ती हुई जन संख्या है। इस समय संसार की जन संख्या २ अरब ७८ करोड़ है। जो गत ७० वर्षों में बढ़कर दुगुनी हो गई है। और अब से ४२ वर्ष बाद यह ५ अरब से ऊपर पहुँच जाने वाली है। और जिस दिन यह संख्या ७ अरब पर पहुँच जावेगी संसार में व्यापक भुखमरी, कहर, महामारी फैल जावेगी और समस्त मानवी शक्तियाँ इनको रोकने में असफल हो जावेंगी।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री श्रीयुत डेविस का कहना है कि यह स्थिति इसलिए नहीं है कि जनसंख्या बढ़ रही है अपितु इसका कारण मृत्यु के अनुपात का विशेष रूप से घट जाना है।

संसार के जो देश पिछड़े हुए हैं उनमें जन संख्या की वृद्धि बहुत अधिक है अर्थात् मृत्यु संख्या में भारी कमी हो गई है। उदाहरण के लिए लंका मे मृत्यु संख्या केवल एक वर्ष में ३४ प्रतिशत कम हो गई और गत दस वर्षों में मृत्यु संख्या में ७० प्रतिशत से अधिक कमी हुई है उत्पत्ति में कोई विशेष वृद्धि नहीं हुई है।

पिछड़े हुए देशों मे जन संख्या की वृद्धि का अनुपात उन्नत राष्ट्रों की अपेक्षा दुगुना है जब कि यह देश इस बढ़ती हुई जन संख्या के लिये आवश्यक आहार को जुटाने मे सर्वथा असमर्थ हैं। आहार कम करने और खाद्य वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाने के अतिरिक्त और कोई चारा इनके पास है नहीं। सब ओर से ध्यान हटाकर खाद्य वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि करना इनका एक मात्र लक्ष होना चाहिए।

विश्व की समस्त यान्त्रिक एवं आर्थिक प्रगतियों के होते हुए भी आज विश्व मे अन्न स ५० वर्ष पूर्व की अपेक्षा कगाली अधिक है।

हमारे देश भारत में नाना प्रकार की योजनाएं चल रही हैं। अरबों रुपया उन पर प्रतिवर्ष व्यय किया जा रहा है और इन योजनाओं के पीछे भारत को विदेशों का बुरी तरह कर्जदार बनाया जा रहा है। इतना होते हुए भी खाद्य समस्या हल हो नहीं रही। खाद्य वस्तुओं की मंहगाई निरन्तर बढ़ती जा रही है।

हमें सोचना होगा कि उच्च शिक्षा पर अरबों रुपया इस प्रकार व्यय करके नौकरी तलाश करने वालो की संख्या बढ़ानाक्या देश को अशांति के गर्त में ढकेलना नहीं है? जीवन स्तर ऊंचा करने के चक्कर मे देश को कर्जदार बनाना कहाँ की बुद्धिमानी है?

हमें इस समय एक मात्र खाद्य वस्तुओं के उत्पादन पर ही सब व्यय करना चाहिए और प्रतिवर्ष न्यून से न्यून ५ प्रतिशत की वृद्धि करने का लक्ष्य सामने रखकर कार्य करना चाहिए।

राष्ट्र के औद्योगिककरण से बेकारी बजाय घटने के बढ़ेगी और जनता में अशान्ति और अव्यवस्था फैलने की आशंका है। अतः ग्राम उद्योगों, कुटीर उद्योगों को भी अधिक से अधिक फैलाना चाहिए और हर प्रकार का उन्हें संरक्षण देना चाहिए। आमोद प्रमोद भोग विलास की वस्तुओं के उत्पादन पर अधिक से अधिक कड़े प्रतिबन्ध लगा देने चाहिये।

यदि हमने सजग होकर इस दिशा में कार्य न किया तो देश को भारी कंगाली, भुखमरी और सम्भवतः दासता का मुख देखना पड़ेगा।

उर्दू का उबाल

अञ्जुमन तरक्की-ए-उर्दू की ओर से समय समय पर उर्दू को भारत के कुछ प्रान्तों में राज्य भाषा बनाने का प्रयत्न होता रहता है। अभी पिछले दिनों अंजुमन की ओर से एक शिष्ट मण्डल राष्ट्रपति से मिला था जिसमे अधिकतर सदस्य हिन्दू थे। हिन्दुओं को चुनने का अभिप्राय सरकार को यह जताना था कि केवल मुसलमान ही नहीं हिन्दू भी उर्दू को राज्य भाषा बनाने के पक्ष मे हैं। इधर भारत के प्रधान मन्त्री श्री नेहरू जी उर्दू का पक्ष बराबर करते आये हैं।

किंतु जब यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि उर्दू हिन्दी से भिन्न कोई दूसरी भाषा नहीं है और लिपि जिसमें मुसलमान उर्दू लिखते हैं वह भारतीय नहीं विदेशी है तो फिर समझ में नहीं आता कि क्यों इस प्रकार के प्रयत्न करके राष्ट्र भाषा हिन्दी का अपमान किया जाता है।

उत्तर प्रदेश मे उर्दू को द्वितीय राज्य भाषा बनवाने की बड़ी कोशिश की जा रही है। लाखों मुसलमानो ने पिछले दिनो इस सम्बन्ध मे हस्ताक्षर करके एक आवेदन पत्र भी सरकार को दिया था और श्री नेहरू जी ने उत्तर प्रदेश की सरकार को इस मांग

[शेष अगले पृष्ठ पर]

सुझाव और सम्मतियाँ

कुमार और कुमार सभायें

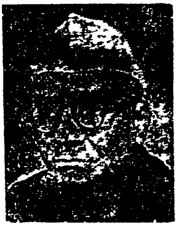
[पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०]

आर्य कुमार और आर्य कुमार सभाओं के सम्बन्ध में आर्य जगत् के अद्वितीय लेखक पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने प्रस्तुत लेख में एक स्वतन्त्र तथा क्रान्तिकारी विचार आज आर्य कुमारों और आर्य सदस्यों के सम्मुख रखा है। मैं चाहूंगा कि आर्य बन्धु इस प्रश्न पर गम्भीरता पूर्वक विचार करके इस दिशा में उचित पग उठायें जिससे आर्यकुमार सभाएं एक बार पुनः चमक उठे। —स० सपादक

अभी मिरजापुर आर्यसमाज के उत्सव से आ रहा हूं, कुछ भाइयों से निजी वार्तालाप में कई प्रश्नों पर अपने विचार प्रकट करने पड़े। डरते डरते कि कोई नाराज न हो जाय, अनुशासन की तलवार शिर पर लट कता है। वस्तुतः अनुशासन की भित्ति विचार स्वातन्त्र्य की नींव पर आधारित है। इसी बुनियाद के कमजोर होने से अनुशासन के बड़े बड़े मजबूत किले रेत की दीवार के समान धम से गिर पड़ते हैं। परन्तु प्रायः लोगों की धारणा इसके विरुद्ध है। अस्तु

एक युवक से कुमार सभाओं का विषय चल पड़ा। मुझे याद है कि १८९९ ई० में जब मैं वैदिक आश्रम अलीगढ़ में रहता था हमने बालार्य सभा खोली थी। मैं था उसका मन्त्री। जब १९०२ में मैं इलाहाबाद पढ़ने आया तो कई साथियों की सहायता से एक यंग मैन्स आर्यसमाज खोला वह पीछे आर्यकुमार सभा के रूप में परिवर्तित हो गया और चालीस वर्ष पूर्व इलाहाबाद में आर्यकुमार सभा इतनी जोरदार थी कि आर्यसमाज का प्रकाश फीका पड़ गया था। १९१८ ई० में जब मैं डी०ए०वी० हाई स्कूल का हेडमास्टर होकर आया तो कुमार सभा के सदस्यों ने मेरी पूर्व सेवाओं को दृष्टि में रख कर मुझ से कुमार सभा का काम करने के लिए कहा। मैंने स्पष्ट इनकार कर दिया। मेरा कहना था कि कुमारसभा कुमारों के लिए है। आप मेरे पुत्रों को लीजिए मेरी आयु तो आर्यसमाज में काम करने की है।

एक समय था कि आर्यकुमार सभाओं का कम से कम उत्तरप्रदेश में तो बहुत जोर रह चुका है। परन्तु उस जोर में ही कुमार सभाओं की कमजोरी निहित थी। १९०४ ई० में प्रान्तीय आर्यकुमार सभा के मुरादाबाद के वार्षिक अधिवेशन का सभापतित्व करते हुए मैंने अपने प्रवचन में इस बात का सकेत और संक्षेप से



वर्णन किया था। मेरा कहना था कि कुमार सभाओं के सचालक कुमार न होकर कुमारों के बाप या बाबा होंगे तो कुमार सभायें नष्ट हो जायेंगी। हुआ यही। पहले प्रान्तीय या अखिल भारतीय कुमार सभाएं न थीं। परन्तु स्थानीय कुमार सभाएं बहुत थीं और हजारों युवक इनमें काम करते थे। जबसे बड़े-बड़े संगठन हुए और विशाल विधानों का निर्माण हुआ कुमार सभाये मन्द पड़ गई।

यह बात स्वाभाविक नियमों के विरुद्ध नहीं हुई। करोड़ों बच्चों को उनके मा बाप पालते हैं पर अखिल भारतीय या सार्वदेशिक शिशु प्रतिनिधि सभाएं नहीं होतीं। यदि शिशुओं के विशाल संगठन बनने लगें तो शिशुओं का पालन कौन करे। चार साल के बच्चे प्रतिनिधित्व तो नहीं कर सकते, उनके प्रतिनिधि उनके बाप या बाबा ही हो सकते हैं। आज दशा यह है कि कुमार सभायें वही काम करती हैं जो आर्य समाज के हैं कहीं उनके बराबर कहीं उनसे कुछ अच्छी शैली से या कुछ बुरी शैली से। कुमार सभाओं का काम शास्त्रार्थ करना नहीं। कुमार सभाओं का काम परीक्षाओं का संचालन नहीं। कुमार सभाओं का काम परीक्षा देना है न कि लेना। कुमार सभाओं का काम बड़ों को सहयोग देना है उनका प्रतिद्वन्द्वी होना नहीं। कुमारों का काम अनुशासक बनना नहीं अनुशासित

बनना है। कोई व्यक्ति आयु भर कुमार नहीं रह सकता पौराणिक अश्विनी कुमारों के समान। अतः १८ साल से ऊपर तो किसी को कुमारसभाओं में रहने का अधिकार ही नहीं होना चाहिये। और समस्त प्रान्तीय या अखिल भारतीय कुमार सभाओं के संगठनों को तोड़ देना चाहिये। परीक्षाओं का काम सार्वदेशिक सभा के सीधे आधिपत्य में होना चाहिये जिससे परीक्षाओं के विषय में जो कठिन समस्या आ खड़ी हुई है वह बन्द हो जाय। हर समाज को चाहिये कि अपने अनुशासन में एक छोटी सी कुमार सभा चलावे जो स्वतंत्र या प्रतिद्वन्द्वी न हो। इसके केवल दो काम हों एक तो स्वयंसेवकों का जिससे समाज को सहायता मिल सके, दूसरा नीचे स्तर की सुगम धार्मिक शिक्षा का जिसमें शास्त्रार्थ, खंडन मंडन या सैनिक ढंग की कार्यवाही के लिये कोई स्थान न हो। कुमार वही काम करें जो उनकी अवस्था के अनुरूप है। यदि कुछ इस प्रकार काम किया जाय तो कुमारों को फिर आकर्षित किया जा सकता है। हर एक माता पिता अपने शिशुओं से प्यार करते हैं और उनका शिक्षण और पालन करने को उद्यत होते हैं जब तक वे शिशु-शिशु रहे। कोई मां नहीं चाहती कि उसके पेट से दाढ़ी मूंछों वाले बच्चे पैदा हों जो उसकी गोद में समा न सकें।

कुमार सभाओं के सुसवृद्ध अधिकारी इस लेख को पढ़कर चौंकेंगे। परन्तु यह लेख है उन्हीं को चौंकाने के लिये। यदि कुमारों के लिये काम करना है तो वृद्धों की सभा का कुमार नाम मत रक्खो। यह धोखा है।

[पिछले पृष्ठ का शेष]

पर सहानुभूति पूर्ण ढंग से विचार करने का परामर्श भी दिया था। उत्तर प्रदेश की सरकार ने इस सम्बन्ध में गम्भीरतापूर्वक विचार किया और यह निश्चय किया था कि उर्दू को द्वितीय भाषा बनाने का प्रान्त में कोई प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता।

१ मई को उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री माननीय बाबू सम्पूर्णानन्द जी ने एक मुलाकात में यह स्पष्ट कर दिया है कि ऐसी कोई सम्भावना नहीं है कि राज्य सरकार हिन्दी के साथ २ उर्दू को भी उत्तर-प्रदेश में राज्य भाषा स्वीकार करने के प्रश्न पर अपने विचार को बदले या बिल्कुल उलट दे।

हम माननीय मुख्य मन्त्री की इस दृढ़ता पर उनको बधाई देते हैं। साथ ही उत्तर प्रदेशीय विधान सभा के सदस्यों से भी यह आशा करते हैं कि वह इस प्रकार के अनर्गल आन्दोलन का अपने सम्मिलित वक्तव्य द्वारा खुला विरोध करेंगे।

उत्तर-प्रदेश की आर्य जनता को भी इस दिशा में बराबर सतर्क रहना चाहिए। प्रत्येक स्थानीय निकाय में हिन्दी की पूर्णतया प्रतिष्ठा कराने में उनको प्रयत्नशील रहना चाहिए। नाम पट्टों पर से विदेशी लिपि को चाहे वह अङ्ग्रेजी हो या अरबी हटाने का भरसक प्रयास करना चाहिए। विदेशी लिपि को स्थान देना राष्ट्रीय लिपि देवनागरी का खुला निरादर करना है।

वित्त मन्त्री श्री देसाई और हिन्दी

२ मई को देहली में संसदीय हिन्दी परिषद् के ७ वें वार्षिक अधिवेशन में सभापति पद से श्री मुरार जी देसाई वित्त मन्त्री महोदय ने कहा है कि जब तक केन्द्रीय सरकार तथा राज्य सरकारों का कामकाज देश की भाषाओं में नहीं चलता तब तक देश में जनता का राज्य स्थापित नहीं हो सकता। हम श्री देसाई जी के इस कथन का हार्दिक समर्थन करते हैं किन्तु आश्चर्य और दुःख इस बात का है कि केन्द्रिय शासन का लगभग सम्पूर्ण कामकाज अङ्ग्रेजी भाषा में ही अब तक किया जा रहा है। इस प्रकार के उद्गार प्रकट करने मात्र से काम बनने वाला नहीं। केवल मुरार जी देसाई ही नहीं अन्य भी कई केन्द्रिय मन्त्री हैं जो ऐसे ही उद्गार समय २ पर प्रकट करते रहते हैं किन्तु क्या कारण है कि कथनी के अनुसार उनकी करनी नहीं है। प्रतीत होता है कि केन्द्र में श्री नेहरू जी जो चाहते हैं बस केवल वही होता है। नेहरू नीति ही भारत सरकार की नीति है। इन मुरार जी देसाई जैसे मन्त्रियों में इतना नैतिक बल नहीं प्रतीत होता कि वह प्रधान मन्त्री से भाषा आदि नीतियों के सम्बन्ध में खुलकर बातें कर सकें और अपने मत के औचित्य को युक्ति व तर्क द्वारा उनसे मनवा सकें।

यदि यह सत्य है तो स्थिति बहुत भयावह है। प्रजातन्त्र की आड़ में एक तन्त्रवाद की ओर न चाहते हुए भी अपनी दीन दशा के कारण गति करनी है। —सम्पादक

कर्नल नासिर मास्को में.

संयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति कर्नल नासिर इन दिनों रूस का दौरा कर रहे हैं। वे रूसी नेताओं से अरब गणराज्य को सुदृढ़ और बृहत्तर बनाने के सम्बन्ध में वार्तालाप कर रहे हैं। पश्चिमी राष्ट्र नासिर के इस भ्रमण से चिन्तित होकर परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

आध्यात्मिक चर्चा

मानव जीवन का लक्ष्य

(श्री डा० मंगलदेव शास्त्री एम० ए०, डी० फिल० (आक्सन)

(वेद, उपनिषद् तथा भारतीय शास्त्रों के अनुसार मानव जीवन का लक्ष्य क्या है और मानव जीवन कैसा होना चाहिए—इसी का विश्लेषण प्रस्तुत लेख में विद्वान् लेखक ने किया है। हमें विश्वास है कि पाश्चात्य आचार शास्त्र भी इस लेख में वर्णित भारतीय उच्चादर्शों को अस्वीकार नहीं कर सकता। —स० सम्पादक)

'आर्यमित्र' के एक पिछले अंक में मानवता का महत्त्व शीर्षक रचना में हम दिखला चुके हैं कि वास्तव में भारतीय संस्कृति की परम्परा के अनुसार मानवता का महत्त्व वर्णनातीत है। नीचे की रचना में मानव जीवन के लक्ष्य पर कुछ विचार प्रकट किये गए हैं।

इधर कुछ काल से आने वाली हमारी पारम्परिक विचार धारा में मानव जीवन के चरम लक्ष्य को कुछ ऐसा समझा जाता रहा है जिसमें लोक जीवन, जन जीवन और लौकिक कर्तव्य पक्ष से दूर भागने और बचने की प्रवृत्ति ही प्रधानतः लक्षित होती है। परन्तु वास्तव में यह विचार धारा वस्तुस्थिति के नितांत प्रतिकूल है। जीवन का चरम लक्ष्य इसी लोक में, जीवन में ही, प्राप्त किया जा सकता है, जीवन से भाग कर नहीं।

इह चेद वेदीदथ सत्यमस्ति,
न चेदिहावेदीन् महती विनष्टिः ॥ (केनोपनिषद् २।५)

जैसे श्रुति वाक्यों का यही अभिप्राय है कि मनुष्य का कल्याण इसी में है कि वह अपने आदर्शों को अपने लोक जीवन में ही कार्य रूप में लाने का, उनको साकार करने का प्रयत्न करे।

इसी दृष्टि से मानव जीवन के लक्ष्य का प्रतिपादन हमने नीचे के पद्यों में किया है।

तत्पदं मे प्रकाशताम्

सद्भावनाप्रसूनैर्यद् वासितं सुमनोहरम्।
सर्वं लोक समाकर्षि तत्पदं मे प्रकाशताम् ॥१॥

सद्भावना रूपी कुसुमों से जो सुरभित और सुमनोहर है, जो समस्त लोक को आकृष्ट करने वाला है वह पद (स्थिति) मेरे लिए प्रकाशित हो!

नैराश्यमन्धतामिस्रं यतः सर्वं निवर्तते।
आशा प्रकाश विच्छिन्नं तत्पदं मे प्रकाशताम् ॥२॥

आशा के प्रकाश से विच्छिन्न होकर घोर अन्धकार रूपी सारा नैराश्य जहाँ से निवृत्त हो जाता है, वह पद मेरे लिए प्रकाशित हो।

सेवितं सततं सद्भिः सूरिभिर्गतमत्सरैः।
सदाचारपरैः शुद्धै स्तत्पदं मे प्रकाशताम् ॥३॥

ईर्ष्या से रहित, सदाचार में तत्पर, पवित्रात्मा और विद्वान् सत्पुरुषों द्वारा जो सदा सेवित है, वह पद मेरे लिए प्रकाशित हो!

सति दुःखेऽप्यनुद्विग्न मादर्शमनु निश्चितम्।
उत्तरोत्तर मुत्कर्षि तत्पदं मे प्रकाशताम् ॥४॥

दुःख के आने पर भी जो उद्विग्नता से रहित है, आदर्श के प्रति जो दृढ़ है और उत्तरोत्तर उत्कर्ष करने वाला है, वह पद मेरे लिए प्रकाशित हो!

सत्यानुसन्धानपरा लोक कल्याणसेतवः।
आश्रित्य यत्स्थिता धीरा स्तत्पदं मे प्रकाशताम् ॥५॥

सत्य के अनुसन्धान में तत्पर और लोक के कल्याण के लिए सेतु रूप धीर पुरुष जिसका आश्रय लेकर सदा रहते हैं, वह पद मेरे लिए प्रकाशित हो।

विषादे नावसादेन निर्मुक्तं मुक्तसंशयम्।
कर्तव्य पथमारूढं तत्पदं मे प्रकाशताम् ॥६॥

विषाद और अवसाद से जो रहित है, संशय जहाँ नहीं है, और कर्तव्य के मार्ग पर जो आरूढ़ है, वह पद मेरे लिए प्रकाशित हो!

श्रमेण तपसा नित्यं संयमेन समन्वितम्।
विनयेनापि संयुक्तं तत्पदं मे प्रकाशताम् ॥ ७ ॥

जो श्रम, तपस् और संयम से सदा समन्वित है, और विनय भी जहाँ विद्यमान है, वह पद मेरे लिये प्रकाशित हो।

येनेदं मधुमद्विश्वं स्वयं यन्मधुमत्तमम्।
मधु यन्मधु विद्याया स्तत्पदं मे प्रकाशताम् ॥ ८ ॥

जिससे विश्व का माधुर्य संपन्न होता है, जो स्वयं निरतिशय माधुर्य से युक्त है, जो मधु विद्या (बृहदारण्यकोपनिषद् २।५।१) का मधु है, वह पद मेरे लिए प्रकाशित हो।

प्रेम्णा स्नेहेन दिव्येन कारुण्येनार्जवेन च।
पृथ्वी स्वर्गायते येन तत्पदं मे प्रकाशताम् ॥ ९ ॥

जिसके कारण दिव्य प्रेम और स्नेह से तथा कारुण्य और आर्जव से यह पृथ्वी स्वर्ग बन जाती है, वह पद मेरे लिए प्रकाशित हो।

भाषा सीमामतिक्रम्य स्वरूपेणैव संस्थितम्।
यदेतच्छाश्वत तथ्यं तत्पदं मे प्रकाशताम् ॥ १० ॥

भाषा की सीमा का अतिक्रमण करके जो अपने रूप से ही स्थित है और जो शाश्वत तथ्य-रूप है, वह पद मेरे लिए प्रकाशित हो।

तत्तन्नामभिराख्यातं विभिन्नैः साम्प्रदायिकैः।
वस्तुत स्तैरसंस्पृष्टं तत्पदं मे प्रकाशताम् ॥ ११ ॥

विभिन्न सम्प्रदायों के लोग भिन्न भिन्न नामों से जिसका निर्देश करते हैं, परन्तु वस्तुतः जो उन नामों से असंस्पृष्ट है, वह पद मेरे लिए प्रकाशित हो।

मोहेन तमसा हीनमानन्दरस निर्भरम्।
दिव्येन ज्योतिषा दीप्तं तत्पदं मे प्रकाशताम् ॥ १२ ॥

मोह और अज्ञान से जो रहित है, आनन्द रस से जो आप्लावित है, और जो अलौकिक प्रकाश से प्रकाशित है, वह पद मेरे लिए प्रकाशित हो।

मनस्विनो महात्मान स्तत्त्वमव्ययमद्वयम्।
पश्यन्त्य लौकिकं दिव्यं तत्पदं मे प्रकाशताम् ॥ १३ ॥

जहां स्थित होकर महात्मा लोग दिव्य शाश्वत तथा अद्वितीय परम तत्त्व का साक्षात्कार करते हैं, वह पद मेरे लिए प्रकाशित हो। ✶

शासन के प्रति जनता का विश्वास उठ रहा है

पंजाब की भाषा समस्या के समाधान के लिए

सरकार शीघ्र ही सक्रिय पग उठाये

सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति का प्रस्ताव

समिति की अगली बैठक ९ जून को होगी

सार्वदेशिक भाषा स्वातंत्र्य समिति देहली की दि० २७ ४ ५८ की बैठक में जो प्रातःकाल ८ बजे से श्रद्धानन्द बलिदान भवन में श्री माननीय घनश्यामसिंह जी गुप्त की अध्यक्षता में हुई, पारित प्रस्ताव निम्न प्रकार है।

सार्वदेशिक भाषा स्वातंत्र्य समिति का यह अधिवेशन अनुभव करता है कि हिन्दी सत्याग्रह के स्थगन के अवसर पर सरकार तथा कांग्रेस के उच्चतम नेताओं द्वारा अपने सार्वजनिक भाषण में तथा अन्य प्रकार से पंजाब की भाषा समस्या को शांत वातावरण में सुचारु रूप से हल करने का जो विश्वास दिलाया गया था उसे कार्यान्वित करने की दिशा में सरकार ने गत चार मास में कोई सक्रिय पग नहीं उठाया जिसके फल स्वरूप जनता में बेचैनी एवं रोष बढ़ता जा रहा है और सरकार के प्रति उनका विश्वास उठता जा रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति में समिति अपने उत्तरदायित्व का अनुभव करते हुए सरकार से कहना चाहती है कि जनता की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए पंजाब की भाषा समस्या को जो कि भाई को भाई से लड़ाने का एक कारण बन गया है इस प्रकार हल करने के लिए निकट भविष्य में कोई सक्रिय पग उठावें जिससे उचित तथा न्यायपूर्ण समाधान हो सके। साथ ही समिति हिन्दी प्रेमी जनता को बताना चाहती है कि उसे इसका पूरा ज्ञान है कि आर्य समाज में और उसके समर्थकों में वास्तविक समय पड़ने पर त्याग और बलिदान का अटूट सामर्थ्य है।

आगामी ९ जून को सारी परिस्थिति को ध्यान में रखते हुये हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सम्बन्ध में भावी कार्यक्रम निर्धारित करने के लिये सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग सभा, सार्वदेशिक भाषा स्वातंत्र्य समिति तथा पंजाब हिंदी रक्षा समिति की एक बैठक होगी।

—नरेन्द्र
कार्यकर्ता प्रधान
सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति

मैं भारत कब आऊंगा

भारतवर्ष में आज अनेकों आर्य बन्धु बड़ा उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं कि कब तक स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज विदेश से स्वदेश लौटेंगे। वास्तव में स्वामी जी महाराज कब भारत लौटेंगे, आर्य बन्धुओं को यही बतलाने के लिए हम यहा स्वामी जी का पत्र प्रकाशित कर रहे हैं जो उन्होंने २६ अप्रेल ५८ को मुझे लिखा था। —स०स०

२७ जुलाई सन् १६५६ को मैं हवाई जहाज से नैरोबी पहुचा था। ५ मास और १३ दिन ईस्ट अफ्रीका में रहकर ५ जनवरी सन् १६५७ को मैं मौरिशास आ गया।

दिसम्बर सन् ५६ के अन्त में ही भारत से ऐसे पत्र आने आरम्भ हो गये थे कि भारत कब लौटोगे। तब से अब तक मैंने किसी का भी स्पष्ट उत्तर नहीं दिया था और मैंने यह सोचा था कि मैं अप्रैल सन् ५७ में भारत लौट जाऊगा। आज भी मैं स्पष्ट उत्तर देने में असमर्थ हू। आज आर्यमित्र द्वारा सूचित करने का उपक्रम इसलिए किया है कि भविष्य में इस प्रकार का प्रश्न करने का कष्ट मेरे आर्य भाइयो को न करना पड़े।

अभी हाल में श्री आनन्द स्वामी जी महाराज का एक पत्र मिला था उन्होंने मुझे विनोद में यहा तक लिख दिया था कि अब तो बहुत रह चुके हो शीघ्र ही मेरे प्यारे आ जाओ। श्री स्वामी हरिहरानन्द जी महाराज ने लिखा कि विदेश यात्रा द्रौपदी के चीर के समान बढ़ता ही जाती है। कब समाप्त होगी। श्री सेठ विश्वनाथ जी पोद्दार कलकत्ता ने लिखा कि बहुत दिन हो गए हैं अब तो लौट आना ही ठीक है। श्री सेठ छोटा भाई जी आर्य बम्बई श्री सेठ काशी प्रसाद जी पोद्दार बगलौर, श्री आनन्द जी आर्य मद्रास सिटी, श्री फकीर चन्द्र आर्य बी० ए० काठ यू० पी०, श्री सुरेन्द्र कुमार जी और श्री कृष्ण मूर्ति जी अलीगढ़, श्री गौरी शकर प्रसाद जी बी० ए० पटना, श्री प० वासुदेव जी शर्मा पटना, श्री पण्डित रामनारायण जी शास्त्री मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार और श्री प० शिवदयालु जी आर्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने भी भारत पहुँचने का समय पूछा है। विस्तार भय से अन्य नामों को छोड़ देता हू।

यद्यपि यहा मुझे शारीरिक और मानसिक उभय विधि कष्ट है तथापि अभी तक भारत न आने का कारण यह है। मौरिशास एक छोटा सा द्वीप है। यहा पर सर्वाधिक जन सख्या भारतीय हिन्दुओं की है। किसी समय यहा का आर्यसमाज सुसगठित था। उस समय आर्यसमाज का कार्य स्तुत्य था। श्री डाक्टर राम गुलाम जी मन्त्री अर्थ विभाग मौरिशास गवर्नमेंट श्री प० विजाधर जी मेम्बर लेजिस्लेटिव कौंसिल प्रधान सम्पादक दैनिक एखबास (यह समाचार पत्र यहा के प्रमुख पत्रों में है) श्री प० बद्री जी लेबर नेता आदि के मुख से मैंने कई बार सुना कि मौरिशास में जो सामाजिक और हिन्दी की समुन्नति हुई है उसमें आर्य समाज का असाधारण हाथ रहा है।

यहा दो सभाय हैं—(१) आर्य सभा मौरिशस। यह सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली से सम्बन्धित है। (२) आर्य प्रतिनिधि सभा मौरिशास। इसका सम्बन्ध सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से नहीं है।

इन दोनों को एक करने का कार्य भार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने मेरे ऊपर रख दिया है। यद्यपि मुझे अभी तक एकीकरण का सुलभ साधन समुपलब्ध नहीं हुआ है अतएव मैं अन्धेर में हो हू तथापि मैं निराश, हताश एव उदास नहीं हुआ हू।

इस विषय का जब तक मुझे सुपथ न मिले तब तक भारत आने का निश्चय भी नहीं कर सकता हू।

—स्वामी ध्रुवानन्द

आर्य अध्यापक अध्यापिकाओं की आवश्यकता

आर्य विचार के अध्यापक तथा अध्यापिकाये विशेषत जो सस्कृत और वैदिक धर्म शिक्षा के अध्ययन में निपुण हों और रुचि रखती हों। अपने प्रार्थनापत्र पूर्ण विवरण तथा कम से कम वेतन का उल्लेख करते हुए शीघ्र भेजें जिससे उन्हे आर्यशिक्षा सस्थाओ में उचित स्थान पर नियुक्त किया जा सके।

जिन आर्यसस्थाओं को आगामी जुलाई से अपने यहा जिस जिस विषय के अध्यापक या अध्यापिका की आवश्यकता हो वे भी कृपया अवश्य सूचित करें।

—वीरेन्द्र शास्त्री एम०ए०
अधि० शिक्षा विभाग आ०प्र० सभा
उत्तरप्रदेश (रायबरेली)

गुड़गावां से लोक सभा क्षेत्र के निर्वाचन में श्री प्रकाशवीर शास्त्री को सफल बनाइये

मौलाना अब्दुल कलाम आजाद के निधन के कारण गुड़गावा के लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र में दि० ३० मई तथा १ जून १६५८ को उप निर्वाचन होने जा रहा है।

निर्वाचन में १६ प्रत्याशी थे जिनमें से जनसघ, हिन्दू महा सभा के प्रत्याशियों ने तथा अनेक प्रतिष्ठित स्वतन्त्र व्यक्तियों ने अपने अपने नाम श्री प्रकाशवीर शास्त्री के पक्ष में वापिस ले लिए हैं और उनको सयुक्त मोर्चा बनाकर अपना प्रतिनिधि घोषित किया है।

इस समय निर्वाचन क्षेत्र में १६में से केवल चार व्यक्ति रह गये हैं और वास्तविक सघर्ष श्री प० मौलीचन्द शर्मा तथा प० प्रकाशवीर शास्त्री के बीच ही है। श्री प्रकाशवीर शास्त्री जहा भारतीय सस्कृति के मर्मज्ञ और राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रबल सक्रिय समर्थक हैं वहा आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता और ओजस्वी वक्ता भी हैं और सबसे बड़ी बात आपके पक्ष में यह भी है कि आप सत्तारूढ़ दल से सम्बन्धित न होने के कारण निर्भीकता एव स्वतन्त्रता पूर्वक जनता की आवाज को शासन तक पहुँचा सकते हैं।

अत प्रत्येक भारतीय सस्कृति, एव आर्य धर्म तथा राष्ट्रीयता के उपासक का कर्तव्य है कि वह श्री पं० प्रकाशवीर शास्त्री को सफल बनाने में प्रयत्नशील हों तथा इस क्षेत्र के मतदाता अपना मत देकर शास्त्री जी को सफल बनावे।

शिवदयालु
मन्त्री
सार्वदेशिक राजार्य सभा, दिल्ली

वधू चाहिये

२६ वर्षीय अग्रवाल डा०(मासिक आय (००)रुपये के लिए एक योग्य शिक्षित कन्या की। डाक्टरी के पढने वाली या डाक्टरी पास कन्या को प्राथमिकता दी जावेगी। जाति व दहेज का कोई बन्धन नहीं है। पूर्ण विवरण सहित लिखें। आ३म्
द्वारा आर्यमित्र, ५ मीराबाई मार्ग
लखनऊ

ऐतिहासिक चर्चा

यह सीनाजोरी कब तक

[श्री सत्यप्रिय सिद्धान्तशिरोमणि उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर,अम्बाला]

(इस लेख में प्रकाशित विचारों का उत्तरदायित्व लेखक पर है, सम्पादक पर नहीं —स० सम्पादक)

किसी कार्य की अच्छाई उसके परिणाम के ऊपर निर्भर है। यदि किसी फलदार वृक्ष की अच्छाई जाननी हो तो उसके फलों को चखो। ठीक यही स्थिति मानव समाज में प्रचलित मतों की है। आज भारत के जन समूह में असन्तोष छाया हुआ है और भारत के विशेषतया पंजाब प्रदेश में। वर्तमान पंजाब सरकार यहाँ की जनता के जीवन से खिलवाड़ कर रही है। यहां की जनता के स्वाभिमान तथा सतीत्व एवं गौरव को पैरों तले रौंदा जाता है। अपने को तथा अपने पूर्वजों को हिन्दुओं के रक्षक कहने वाले ये नरपिशाच आज भूखे भेड़िये बने हुवे है। इतना होने पर भी हमारे आर्य बन्धु उनके पूर्वजों के गीत गाते नहीं थकते। कभी कहते हैं कि गुरु हमारे हैं तथा दसों गुरु हिन्दुओं के रक्षक थे। और कभी कहते है कि गुरु हिन्दी तथा संस्कृत भाषा के प्रचारक तथा वैदिक आर्य संस्कृति के रक्षक एवं पोषक थे आदि आदि। नित्य प्रति आर्यों के पत्रों में ऐसे ऐसे लेख तथा वक्तव्य पढ़कर इनकी ऐतिहासिक अनभिज्ञता और भीरुता पर बड़ा दुःख होता है। जब हम सिखों के इतिहास का अध्ययन करते हैं तो इससे सर्वथा विपरीत मिलता है। गुरु हिन्दुओं के रक्षक थे या नहीं प्रथम इसी विषय पर ऐतिहासिक दृष्टि डालते है।

वैशाख सम्वत् १७५६ वि० मे गुरु गोविन्दसिंह जी ने सिखों की परीक्षा ली और पांच प्यारे चुने, उन्हें जातपात तोड़कर अमृत छकाया, फिर भविष्य के लिए प्रचार करने को आनन्दपुर मे केसगढ़ पहाड़ पर एक बड़ा दरबार लगाकर शिष्यों को आज्ञा दी—

भूठे अज्जु जतनति आगो,
खड्ग धार असि धुज पग लागो।
बिखिआकिरिया भछणाते आगा,
जटा जूट रहवो अनुरागो॥

अर्थात् तुम यज्ञोपवीत आदि को त्याग दो और जटायु बनकर सिख मत का आचरण करो। इस बात को सुनकर जो पहाड़ी हिन्दू राजा वहाँ बैठे हुए थे वे उठकर चल दिए और जाते समय कहने लगे—

यह तो रहित कठिन नहीं होई,
चार वर्ण से करहीं रसोई।
वेद लोकमत सर्व त्यागी,
श्री असिधुज के होए अनुरागी।
पूजा मन्त्र क्रिया सब कर्मा,
यह हमसे छूटत नहीं धरमा।
पित्रि दण्ड देवन के कामा,
कब छूटत हमसे अभिरामा।

(गुरु विलास पातशाही १० तवारीख खालसा द्वि० भा० पृ० ८५७)

इस प्रमाण से सिद्ध है कि गुरु गोविन्द जी ने पन्थ को चलाने के लिए ही यज्ञोपवीत आदि का खण्डन किया था इसी कारण सारे पहाड़ी हिन्दू राजा उनसे नाराज हो गए और स्पष्ट कह दिया कि हम अपने धर्म को बिल्कुल नहीं छोड़ेंगे। और वे सदा के लिए गुरु जी के शत्रु हो गए पुनः एक भी राजा सिख नहीं बना। इसी कारण को सिखों के ऐतिहासिक विद्वान् भी स्वीकार करते हुए लिखते हैं—

'कच्चे हिन्दू भड़ ग', गुरु जी ने अपने ही परिवार को सिख बनाया, राजाओं से शत्रुता होगई। इसकी चर्चा जो पत्र बादशाह को सी०आई० डी० ने लिखा है उसमें आई है। जैसा कि इस दिवान की सूचना सी० आई० डी० ने बादशाह के पास भेजी कि गुरु गोविन्दसिंह ने सब लोगों को बुलाकर कहा कि अपना धर्म छोड़ कर खालसा हो जाओ। इनका जो जुदा जुदा धर्म है उसका परित्याग कर दो। चारों वर्ण त्याग दो और एक हो जाओ और जटाजूट खालसा धर्म ग्रहण करो। तीर्थों पर न जाओ श्राद्ध तर्पणादि छोड़ दो। अकाल पुरुष के अतिरिक्त देवी देवते न मानो सब लोग अमृत छक कर एक बर्तन में भोजन करो। जंजू, टीका, धोती, नमाज, रोजा, कब्र, मढं, मठादि छोड़ दें, बस एक खालसा बन जाओ। जब यह उपदेश सुना तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, राजपूत उठ खड़े हुए और कहने लगे, हम गुरु नानक देवादि अन्य गुरुओं के धर्म को मानने वाले है आपका धर्म वेद शास्त्र के विरुद्ध है। हम इसको नहीं मानेगें आदि आदि ....'

(तवारीख खालसा ज्ञानी लालसिंह द्वि० भा० पृ० ८६०)

इससे तो बिना किसी ननुनच के सिद्ध होता है कि गुरु गोविन्द सिंह हिन्दुओं के रक्षक नहीं प्रत्युत भक्षक थे और भी प्रमाण विद्यमान है—

जब गुरु जी पटना शहर में रहते थे तो भीखणशाह ठसके वाले दो हांडियां मिठाई की लेकर वहां गए। और गुरु जी के आगे रख दी, गुरु जी ने दोनों पर हाथ धर लिए और पूछने पर बताया कि मुझे हिन्दू और मुसलमान दोनों एक से लगते हैं।

लै आयस गुरुदेव की
स्री खालस महाराज
प्रकट करया जग खालासा
हिन्दू तुर्क सरताज
भूठे पन्थ सब त्याग कै
एक पन्थ दृढ़ कीनो
परम ज्योति स्री गुरु जी
स्री मुख कह दीनो

(गुरु विलास पाठ १०)

यह तीसरा खालसा पन्थ हिन्दू और तुर्क दोनों का सरताज बताया। यानी दोनों से इसको श्रेष्ठ कहा है इतना ही नहीं प्रत्युत हिन्दू धर्म को झूठा भी बताया है पता नहीं हमारे आर्य भाई क्यों इन आस्तीन के सांपों को अपने में गिनते हैं। इनको यदि अपने में मिला लें तो कौनसी शोभा-वृद्धि हो जायेगी। इसके अतिरिक्त यह बात है कि बुधुशाह सढौरेवाला गुरु जी से मिलता रहता था। इसी के द्वारा गुरु जी की सेना में ५०० पठान नौकरी पर रखे गये थे। इनमें से बहुत अधिक भगाणी के युद्ध में प्रथम दिन ही साथ छोड़ गए थे। इन सब प्रमाणों से स्पष्ट पता लगता है कि गुरु गोविन्द सिंह हिन्दुओं के रक्षक नहीं थे और ना ही हिन्दुओं के अधिकारों की रक्षार्थ उनकी यवनों से लड़ाई थी उनका वास्तविक वैर तथा युद्ध तो पहाड़ी हिन्दू राजाओं से ३० वर्ष तक रहा, क्योंकि यवन औरगजेब की तो उन्होंने प्रशंसा की है जैसे—

कि तरतीब दानश व तदबीर तेग।
खुदावन्द देगो खुदावन्द देग ॥१

अर्थात् तू बुद्धि का सुधारक और तलवार चलाने में निपुण तथा लंगर का मालिक है।

कि रोशन जमीर असत हुमनस जमाल
खुदावन्द बखशिन्द हे मुलको माल ॥२

अर्थात् तू मन का प्रकाशमान, रूप से सुन्दर तथा मुल्क और माल का बकशने वाला है।

बबखशश कबीर असत दरजंग कोई
मलायक सिफत चू सुरमाश कोई ॥३

तू बड़ा दाता तथा युद्ध में पहाड़ के समान अचल है और देवताओं जैसे गुणों वाला एवं महा प्रतापी है।

(जफरनामा हकायत ८५ से ९५ तक)

इत्यादि बहुत प्रशंसा की है। इससे साफ प्रकट होता है कि औरंगजेब के साथ उनकी शत्रुता नहीं थी। और जो इनके हिन्दुओं के रक्षक होने का ढोल पीटते हैं वे जरा उनके विचार सुनें—

मन मकुशात नमकोहियां बुत प्रसत
कियां बुत प्रसतन्दोमन बुत शतसत

(जफरनामा हकायत पूर्वोक्त)

अर्थात् मैं मूर्ति पूजक पहाड़ी हिन्दू राजाओं का मारने वाला हूं। क्योंकि वे मूर्ति पूजक हैं और मैं मूर्तियों को तोड़ने वाला हूं।

ठीक इसी प्रकार के वाक्य महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में सोमनाथ मन्दिर को तोड़ते समय मुहम्मद गौरी के लिखे हैं। अतः ये भी उसी थैली के चट्टे बट्टे हैं। और गुरु जी को युद्धों में जितनी भी विजय मिली प्रायः वह अस्थिर थी। आनन्द पुर में तो इनके ऊपर पहाड़ी हिन्दू राजाओं ने ऐसी मार मारी कि इनको वहां से वेश बदल कर छिपकर भाग जाना पड़ा। आर्य समाज के प्रायः सर्व साधारण उपदेशक ही नहीं प्रत्युत बड़े बड़े विद्वान् और नेता भी गुरु जी के दो बच्चों की हिन्दू धर्म की रक्षार्थ दीवार में चुने जाने को बलिदान घटना को बड़े अभिमान से वर्णन करते हैं। किन्तु आश्चर्य है कि सिख इतिहास में यह घटना आज तक स्थान नहीं पा सकी। अतः आर्यों! कब तक यह सीना जोरी करोगे? जब वे अपने गुरु तथा अपने को तुम से पृथक कहते हैं फिर तुम क्यों जबरदस्ती अपने में गिनते हो। अरे भोले आर्यों! क्यों 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' की लोकोक्ति चरितार्थ करते हो। क्यों व्यर्थ ही गुलामी की जंजीरों से अपने को जकड़ते हो। क्या तुम्हारे पास महापुरुषों की कमी है? जरा अपने अतीत के इतिहास के सुनहरी पृष्ठों को देखो। क्या गौतम, कपिल, कणाद, और पतंजलि जैसे दार्शनिक तत्ववेत्ता तुम्हारे पास नहीं हैं। क्या याज्ञवल्क्य, व्यास जैसे आत्मवेत्ता तुम्हारे नहीं है? क्या मनु और चाणक्य जैसे सर्वांग पूर्ण विधानों के विधाता किन्हीं दूसरों के हैं? क्या महर्षि दयानन्द जैसा निष्कलंक ब्रह्मचारी हमारा नहीं है और शिवा, प्रताप तथा छत्रसाल जैसे वीरों को क्या भूल गये और लेखराम तथा श्रद्धानन्द जैसे कर्मठ धर्म दीवाने तुम्हारे ही तो हैं। फिर क्यों इन बहुमूल्य मणियों को विसार कर आज मूल्यहीन उस कांच को ग्रहण करते हो? क्यों इन प्रकाशस्तम्भों की उपेक्षा करके टिमटिमाते जुगनू की ओर दौड़ते हो? उनमें क्या विशेषता है जो तुम उनके गले लिपट कर रोते हो? आर्यों जागो होश सम्भालो। इस गलत रास्ते को छोड़ दो। नहीं तो पुनः कितनी सहस्राब्दियों के लिये पराधीनता का पाश जकड़ देगा।

'उत्तिष्ठत जागृत प्राप्य वरान्निबोधत।'

सामयिक चर्चा

महिला-ग्राम-विद्यापीठ प्रयाग
(वीमेन्स रूरल यूनिवर्सिटी)
(महा-विदुषी परीक्षा—रूरल इण्टर मीडिएट इक्जामिनेशन)

○ ग्रामीण क्षेत्रो की महिलाओं मे ○
○ उच्च शिक्षा के प्रसार के लिए ○
○ महिला ग्राम विद्यापीठ प्रयाग के ○
○ उप कुलपति श्री संगमलाल अग्र ○
○ वाल का यह लेख पढिए । —सं०सं० ○

प्रयाग महिला विद्यापीठ की स्थापना सन् १९२२ मे इलाहाबाद मे हुई । तब से उसने इस देश का हिन्दी भाषा भाषिनी लडकियो और स्त्रियों म अपनी प्रवेशिका, विद्या विनोदिनी, विदुषी, सरस्वती आदि परीक्षाओ तथा अपनी संस्थाओ द्वारा माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा का प्रसार करके जनता की महत्व पूर्ण सेवा की है। उत्तर प्रदेश तथा कुछ अन्य भागो म नगरो का स्त्रियों क लिये माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा के प्रसार की समस्या इसने बहुत कुछ हल कर दी है । किन्तु इससे इन कार्यों से ग्रामीण क्षेत्रो से आकर लाभ उठाने वाली स्त्रियो की संख्या बहुत थोडा एव नगण्य सा रहा है । ग्रामो म अशिक्षित स्त्रियो की संख्या अब भी ९५ प्रतिशत के लगभग है ।

ग्रामीण क्षेत्रो का लडकियो और स्त्रिया म माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा के प्रसार के लिय प्रयाग महिला विद्यापीठ के संस्थापक न ही महिला ग्राम विद्यापीठ को स्थापना की है। इस विद्यापीठ का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रो का स्त्रियों की शिक्षा सम्बन्धी, सामाजिक शारीरिक तथा सांस्कृतिक दशाओ का सब प्रकार से उन्नति करना और विधवाओ पति द्वारा त्यक्त स्त्रिया तथा धनाभाव से शिक्षा पाने म असमर्थ स्त्रियो का शिक्षित करना एव इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्रो के लिए प्रशिक्षित सेविकाओ की एक सेना तैयार कर देना है। इसके छ विभाग है १—शिक्षा सम्बन्धी, २—स्वास्थ्य तथा औषधि सम्बन्धी, ३—कुटीर व्यवसाय ४—शतप्रतिशत साक्षरता, ५ आश्रम रक्षा तथा ६—कार्य क्षेत्र के लिये प्रशिक्षा (ट्रेनिंग) ।

तीन साल के अल्प समय म इस विद्यापीठ ने इलाहाबाद शहर के निकट भूमि लेकर कालेज और छात्रावास की इमारतें बनवाई है जिनकी कीमत ५६ लाख रुपया के लगभग आंका जाता है । इसने महिला ग्राम इन्टर कालेज, खोला है जिसे उत्तर प्रदेश के बोर्ड आफ हाई स्कूल तथा इन्टरमीडिएट एजूकेशन से लडकिया के लिये उच्चतर माध्यमिक स्कूल की मान्यता प्राप्त है । एक नारी विकास गृह की स्थापना त्यक्त एव असहाय स्त्रियो के लिये की गई है। जूनियर हाई स्कूल की संगीत शिक्षिकाओ के लिये संगीत का एक ट्रेनिंग स्कूल चलाया जाता है। स्त्रियो को ग्राम और कुटीर व्यवसाय की शिक्षा देने के लिये नारी ग्राम उद्योग प्रतिष्ठान' नामक संस्था है। इसके द्वारा सीना पिरोना, आदि दर्जी के कार्य तथा हस्तशिल्प बेल बूटे काढ़ना आदि कार्य सिखाये जाते है जिससे उत्तर प्रदेश के उद्योग विभाग के द्विवर्षीय उद्योगिक शिक्षा के लिये योग्यता प्राप्त कर वे औद्योगिक शिक्षिका बन सके या अपने घर म काम करके जीविका चला सके तथा अपने पैरो पर खडी हो सके। इस विद्यापीठ की ओर से कुछ छात्रवृत्तियां निर्धना योग्य लडकिया तथा स्त्रिया को यह शिक्षा प्राप्त करने के लिये दी जाती है। प्राथमिक विद्यालयो म शिक्षिका बनने के लिये स्त्रियो का एक नार्मल स्कूल है। ६० सहायक उपचारिकाओ (नर्सों) तथा प्रसाविकाओ (मिडवाइफो) के प्रशिक्षण के लिए एक प्रशिक्षण केन्द्र चलाया जा रहा है। जिसमें प्रशिक्षण पाने वाली प्रत्येक महिला को ५०) रु० प्रतिमास दिये जाते ह। इन सब संस्थाओ को राज्य द्वारा या केन्द्रीय सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है। और उनसे सहायता (ग्रान्ट) मिलता है।

विद्यापीठ यह समझता है कि नितांत निर्धनता, पर्दा प्रथा, कट्टरता तथा प्रातिक्रयापन पीछे ढकेलने वाले सबसे बडे कारण ह जिनसे ग्रामो की स्त्रिया बडी संख्या म ज्ञान और शिक्षित होकर अपनी सांस्कृतिक और आर्थिक दशाओ का सुधारने से वंचित रह जाती हैं। यह देखा गया है कि प्रयाग महिला विद्यापीठ ने लडकियों और स्त्रियो का उनके घरों म ही उनके गार्हस्थ्य कर्तव्यो के पालन के साथ उन्हें अध्ययन का अवसर देकर उनमें शिक्षा के प्रसार एव उनके सांस्कृतिक स्तर को ऊंचा करने म विशेष सफल कार्य किया है अत इस विद्यापीठ ने 'ग्राम प्रवेशिका तथा ग्राम विनोदिनी नामक दो पर क्षाये चलाने का निश्चय किया जो क्रमश मिडल परीक्षा तथा हाई स्कूल परीक्षा के समकक्ष हैं। ग्राम विनोदिनी परीक्षा के सभी विषयों का मापदण्ड तथा पाठ्यक्रम विद्याविनोदिनी परीक्षा के विभिन्न विषयो के मापदण्ड तथा पाठ्यक्रम का ही रखा गया है। ग्राम विज्ञान नामक एक नवीन विषय का समावेश पाठ्यक्रम म किया गया और यह विषय अनिवार्य रखा गया है। प्रत्येक परीक्षार्थिनी को कुछ श्रमदान कुटीर शिल्प या कुटीर व्यवसाय का अध्ययन करना होगा और इसमें ही कुछ सामाजिक कार्य जैसे कम से कम एक निरक्षर स्त्री को साक्षर बनाने की भी आवश्यकता होगी। ग्राम विज्ञान का पाठ्यक्रम जितना भी सम्भव हो सका उतना सुविस्तृत रखा गया है। हिन्दी के पाठ्य क्रम म हाईस्कूल के मापदण्ड की १० लोक संगीतो का लाकर इसे ग्रामीण क्षेत्रो के उपयुक्त बनाया गया है। इसीलिये एक अन्य ऐसी पुस्तक जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों की पंचायत व्यवस्था आदि का वर्णन है पाठ्य पुस्तक म है जो विस्तृत अध्ययन के लिये नहीं है। नागरिक शास्त्र का एक स्वतंत्र अनिवार्य विषय न रख कर नागरिक शास्त्र के सिद्धान्तों के इतिहास वाले पर्चे के साथ और भारतीय शासन विधान तथा शासन प्रणाली का भूगोल के पर्चे के साथ कर दिया गया है। साधारण धर्म शास्त्र का भी अनिवार्य विषय रखा गया है। संगीत म ढोलक भी एक संगीत वाद्य यंत्र है और ग्रामीण गीतो तथा ग्रामीण संगीत पर जोर दिया गया है

ग्राम विनोदिनी परीक्षा के पाठ्यक्रम का भारत की केन्द्रीय सरकार ने तथा राज्यो के शिक्षा, योजना तथा जन कल्याण के सचिवालयो म सम्बन्धित मुख्य व्यक्तियो और शिक्षा उन्नायकों न पसन्द किया है। दिल्ली के सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी और वाराणसी की हिन्दू यूनिवर्सिटी ने एडवांस इंगलिश कोर्स के साथ ग्राम विनोदिनी परीक्षा को अपने हाई स्कूल या एडमिशन परीक्षा के समकक्ष मान लिया है। अन्य विश्व विद्यालय भी मान्यता के प्रश्न पर विचार कर रहे हैं।

माध्यमिक शिक्षा सम्बन्धी अपनी इन दोनों परीक्षाओ की ऐसी सफलता से उत्साहित होकर इनमे उच्चतर एक परीक्षा जिसका नाम महा विदुषी रखा गया है चलाई जा रही है। इसके पाठ्यक्रम का मापदन्ड अन्य विश्व विद्यालयों तथा इन्टर मीडिएट एजूकेशन बोर्ड के इन्टरमीडिएट परीक्षा के समकक्ष है। अध्ययन के विषय है हिन्दी ग्राम विज्ञान, अंग्रेजी, संस्कृत, गृह शास्त्र इतिहास अर्थ शास्त्र संगीत चित्रकला नागरिक शास्त्र मनोविज्ञान धर्म, उपचारकत्व तथा प्रसाविकत्व नर्सिंग मिडवाइफरी) सीना पिरोना तथा उससे सम्बन्धित शिल्प कलाये और ग्राम समाज कल्याण। हिन्दी तथा ग्राम विज्ञान अनिवार्य हैं। ग्राम विज्ञान का सुविस्तृत पाठ्य-क्रम बनाया गया है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि जो स्त्रिया ग्रामों म सेवा कार्य में लगना चाहती हैं उनके लिये इस विषय का ज्ञान बहुत ही आवश्यक है। अन्य विषय वैकल्पिक ह किन्तु जो उपचारिकत्व और प्रसाविकत्व (नर्सिंग व मिडवाइफरी) सीना पिरौना तथा तत्सम्बन्धी शिल्प कार्य और ग्राम समाज कल्याण इन तीन विषयो म से कोई एक विषय लेती ह उन्हे अन्य वैकल्पिक विषय म से दो के स्थान पर केवल एक विषय और लेना होगा। क्योंकि इन तीन विषयों म से प्रत्येक का पाठ्य क्रम अन्य दो विषयो के पाठ्य क्रमो के समान भारी है। राधाकृष्णन् यूनिवर्सिटी कमीशन ने इन तीनो विषयो उपचारिकत्व, प्रसाविकत्व (नर्सिंग व मिडवाइफरी) सीना पिरौना तथा तत्सम्बन्धी शिल्प कलाये और ग्राम समाज कल्याण—को ग्राम विश्व विद्यालय (रूरल यूनिवर्सिटी) के लिये विशेष उपयुक्त विषय माना है और उनको पढ़ाने के लिये लिखा है। अभी तक किसी अन्य भारतीय विश्वविद्यालय म इन्हे इन्टर मीडिएट परीक्षा म नहीं रखा गया है। महिला ग्राम विद्यापीठ (वीमेंस रूरल यूनिवर्सिटी) द्वारा इन तीनो विषयो का पाठ्य क्रम म सम्मिलित करना उसकी महत्वपूर्ण विशेषता है। अन्य वैकल्पिक विषय जैसे गार्हस्थ्य विज्ञान संगीत, चित्रकला भी स्त्रियो के लिये उपयुक्त विषय हैं। और अन्य वैकल्पिक विषय सांस्कृतिक तथा अन्य कारणो से आवश्यक है। हिन्दी पाठ्यक्रम का एक भाग ग्राम साहित्य तथा उसका इतिहास रखा गया है। ग्राम विद्यापीठ द्वारा संचालित या उसके द्वारा मान्य संस्थाओ में भी इन विषयो को सिखाने का प्रबन्ध किया गया है।

महाविदुषी का पाठ्यक्रम दो भागों मे विभक्त कर दिया गया है। अर्थात् प्रथम वर्ष की परीक्षा और द्वितीय वर्ष की परीक्षा। वर्ष मे दो बार परीक्षाये होंगी एक सितम्बर मे और दूसरी मार्च म। सब विषयों में एक साथ बैठ जाना आवश्यक नहीं है। केवल एक या दो विषयो म भी परीक्षा दी जा सकती है और उनमें उत्तीर्ण हो जाने पर केवल शेष अन्य विषयो की परीक्षा देनी होगी। इस प्रकार कई बार म भी सम्पूर्ण परीक्षा देकर उसमे सब विषयों में उत्तीर्ण हो जाने की सुविधा है।

—संगमलाल अग्रवाल
वाइस चान्सलर

सांस्कृतिक चर्चा

गऊ और उसकी रक्षा-२

[श्री डा० कुन्दनलाल अग्निहोत्री एम० डी० सगत-शाहगंज, लखनऊ]

गोवंश की रक्षा और वृद्धि राष्ट्र की उन्नति के लिए कितना आवश्यक है, इसी विषय पर बल देने के लिए आर्यमित्र के प्रायः प्रत्येक अङ्क मे हम गोरक्षा सम्बन्धी एक लेख प्रकाशित करते हैं। प्रस्तुत लेख का प्रथम भाग २३ मार्च के अङ्क मे छप चुका है। शेष इस अङ्क मे पढ़िए। स० सम्पादक

(२३ मार्च के अङ्क से आगे)

पिछले लेख में बताया गया था कि आदिकाल से लेकर अब तक के विद्वान् गोदुग्ध को अमृत कहते हैं। इसका कारण यह है कि संसार में जितने भी भोज्य पदार्थ हैं उनमें कोई भी ऐसा पदार्थ नहीं है केवल जिस एक पदार्थ को खाकर मनुष्य जीवित और स्वस्थ रह सके। केवल गोदुग्ध ही ऐसा पदार्थ है जिस अकेले पदार्थ को खाकर मनुष्य न केवल जीवित रह सकता है वरन् अपने स्वास्थ्य को पूर्ण रूप से स्थिर रखते हुए अपने जीवन काल को भी बढ़ा सकता है। प्राचीन समय में ऋषियों की चार-चार सौ वर्ष की आयु होने के कारणों मे जहाँ प्राणायाम और ब्रह्मचर्य सहायक होते थे वहाँ भोजन में गोदुग्ध का विशेष महत्वपूर्ण स्थान भी आयु बढ़ाने का मुख्य कारण माना जाता था।

आयुर्वेद में गोदुग्ध के गुण इस प्रकार लिखे हैं:—दूध मधुर, स्निग्ध, वात-पित्तनाशक, शीघ्र वीर्यकारी, शीतल, सब प्राणियों के अनुकूल, जीवन तथा आयु वर्द्धक, बलकारी मेधा कोर्ठक (शुद्ध बुद्धि बढ़ानेवाला) करने वाला अवस्था का स्थापक, टूटे को जोड़ने वाला, रसायन (अर्थात् धीरे-धीरे स्थायी शक्ति बढ़ाने वाला) वमन विरेचन तथा वस्ती क्रिया के तुल्य गुणकारी (अर्थात् जिस प्रकार इन क्रियाओं से मल निकल कर शरीर शुद्ध हो जाता है उसी प्रकार नित्य गो दुग्ध सेवन करने वाले के विकार नित्य निकल जाते हैं अत. शरीर शुद्ध रहता है और रोगों की कमी होती रहती है), पुराना ज्वर (टी. बी.) मानसिक रोग (क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष आदि), शोथ (सूजन), मूर्च्छा ग्रहणी दाह, पाण्डुरोग (Jaundice), तथा हृदय शूल, उदावत, गुल्म, मुत्र शय के रोग (सूजाक इत्यादि) गुदांकुर (बवासीर) रक्त-पित्त, अतिसार, योनि रोग (Female diseases) श्रम (अधिक काम की थकान) ग्लानि तथा गर्भ स्राव में हितकारी है। बालक वृद्ध, क्षत से क्षीण, क्षुधा तथा मैथुन से कृश मनुष्य को सदैव हितकर है गोदुग्ध स्त्रियों और गऊओं आदि पशुओं के दूध को खूब बढ़ाने वाला और सदैव सेवन से वृद्धावस्था तथा सम्पूर्ण रोगों का नाशक है।

धारोष्ण गोदुग्ध में उपरोक्त गुणों के साथ-साथ अन्य निम्न विशेष गुण भी बताये हैं वृष्य, धातुवर्द्धक, निद्राकारक, कान्तिप्रद, पथ्य, स्वादिष्ट अग्नि प्रदीप्त करने वाला, (Dyspepsia Cure) अमृत सदृश और सब रोगों का नाशक होता है।

यह तो हुआ हमारे प्राचीन आयुर्वेद का मत। अब इस समय के नवीन वैज्ञानिक अपनी खोजों के आधार पर कहते हैं, 'दूध एक अद्भुत द्रव्य है जिसमें निम्न प्रकार की १०१ वस्तुएं उचित मात्रा के मिश्रण में मिलती है। पर उन वस्तुओं को लेकर दूध का निर्माण नहीं किया जा सकता अर्थात् मनुष्य उन वस्तुओं को मिलाकर दूध के बराबर गुण वाला पदार्थ नहीं बना सकता। उसके बनाने की मशीन केवल गऊ है जो घास पात खाकर उससे १०१ वस्तुओं वाला दूध बना देती है। प्रभावोत्पादकता की दृष्टि से अन्य कोई भी वस्तु दूध का स्थान नहीं ले सकती। गाय के दूध में पाये जाने वाले पदार्थों के कुछ नाम इस प्रकार है।

इसके ८ प्रोटीनों में १६ एमिनो-अम्ल (Amino Acids), ६ जीवन तत्व (Vitamin) ८ फेनक-द्रव्य-पाचक रस (Eezymes) २५ खनिज (Minerals), १ चीनी दुग्ध शर्करा) ४ फासफोरस सम्बन्धी मिश्र द्रव्य (Phosph rus Compound),१४ नेत्रजनीय तत्व इत्यादि। इस सम्बन्ध में अभी अन्वेषण जारी हैं। अभी हाल ही में डाक्टर जबिन्डन (Dr. Zbinden) ने पता लगाया है कि गोदुग्ध में कई धातुएं भी होती हैं जैसे ताँबा, अभ्रक, सीसा, काँसा आदि। प्रशंसित डाक्टर साहब का कहना है कि इसमें ऊपर लिखी वस्तुएं यद्यपि थोड़ी मात्रा में होती हैं पर इससे दूध की बलवर्द्धक शक्ति और रोग निवारक शक्ति बहुत बढ़ जाती है। दूध में कंठमणि (Thyroid Glands) का रस भी मिलता है। (इसी रस के बूते पर विदेश के कुछ वैज्ञानिक बूढ़े को युवा बनाने का दम्भ भरते हैं और इस रस के लिये बन्दरों की जान ली जाती है। यदि भारत के वैज्ञानिक ऋषि बुद्धि को अपनावें तो गाय और बन्दर दोनों की हत्या बन्द कराके गोदुग्ध से बूढ़ों को युवा बना सकते हैं। (रवि हमसे पूछ सकते हैं।)

आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'चरक' ने भी सूत्र रूप में दूध के विषय में बताया है, दूध सामान्य रूप से मनुष्य तथा समस्त चतुष्पाद जानवरों के स्वास्थ्य और विकास के लिए आवश्यक होता है। गाय का दूध सबसे अच्छा होता है। यह बालकों को जीवन, जवानों को स्वास्थ्य और वृद्धों को शक्ति प्रदान करता है। (कदाचित चरक ऋषि कण्ठमाण रसों के गुणों से परिचित थे इसी से उन्होंने दूध को वृद्धों को शक्ति प्रदान' करने वाला बताया है।)

सरकारी परीक्षण

पिछलों दिनों सरकारी तौर पर मद्रास म स्कूल के बालकों पर परीक्षण किये गये। कुछ छः वर्ष के बालकों को २ मास तक एक गिलास दूध नित्य भोजन में दिया गया तो उनका भार एक पौंड लम्बाई सवा इंच बढ़ी दूसरे उसी आयु के बालको को दूध बिल्कुल नहीं दिया गया। उनका भार केवल १/४ पौण्ड लम्बाई १.१० इंच बढ़ी। यह केवल एक गिलास दूध का प्रभाव है। मनचाहा दूध मिलने वाले भारत के बालक माननीय भीम,अर्जुन भीष्मपितामह जैसे वीर योद्धा हुआ करते थे।

सन् १९४३ ई० में भारत सरकार ने दूध के व्यवसाय पर विशेषज्ञों की एक कमेटी नियत की थी। वे अपनी रिपोर्ट में लिखते हैं, मनुष्य के भोजन में दूध का व्यवहार तभी से चला आता है जब से मानव इस जगत् में आया है। जितने ऐसे खाद्य पदार्थ हैं जो अकेले आहार के काम मे आ सकते हैं उनमें दूध सबसे अधिक पूर्ण है। इसलिए वह सदा बड़ा आदरणीय समझा जाता रहा है। इसके अन्दर जीवन को स्थिर रखने तथा बढ़ाने के लिए अवश्य सभी तत्व सुपाच्य रूप मे विद्यमान है 'आज तक किसी ऐसे दूसरे स्वतन्त्र आहार का पता नहीं चला जिसका प्रयोग दूध के स्थान पर किया जा सके।' [देखिए पृष्ठ १५ तथा ८० भारत सरकार की रिपोर्ट सन् १९४३ ई० मार्केटिंग आव मिल्क इन इण्डिया]

लीग आव नेशन्स ने भी इस भोजन के विषय में खोज कराई है। उसकी सम्मति इस प्रकार है, 'भोजन के लिए जो वस्तुएं हमें प्राप्त हैं उनमें केवल दूध ही एक ऐसा पदार्थ है जो पूर्ण भोजन है। हमारी जानकारी में दूसरा कोई ऐसा पदार्थ नहीं है जो अकेला दूध के स्थान में ग्रहण किया जा सके।'

'मानव जाति द्वारा आहार के रूप में गाय तथा अन्य पशुओं के दूध का प्रयोग इतना ही प्राचीन है जितना मानव जाति का इतिहास। इस दीर्घ काल में दूध के इस रूप में प्रयोग होने के कारण इसके मूल्य को बहुत ऊंचा स्थान प्रदान किया गया है।' [लीग आव नेशन्स की न्युट्रिशन रिपोर्ट,सन् १९३७ की सीरीज देखिए]

एक और दृष्टिकोण

हमारे भोजन में उत्तम प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, चिकनाई,खनिज लवण तथा बिटामिन सम्मिलित होना चाहिये, तब ही हम जीवित और स्वस्थ रह सकते हैं। इस दृष्टि से गोदुग्ध अकेला ही पूर्ण भोजन है-क्योंकि दूध की प्रोटीन सब प्रोटीनों से बढ़िया होती है और इतनी अच्छी होती है कि स्वयं ९७ प्रतिशत पच जाती है और साथ ही गेहूं की प्रोटीन को भी तीन गुणा पचा देती है अर्थात् यदि हमे भोजन में दूध न मिले और गेहूं भर पेट मिले तो गेहूं की प्रोटीन केवल २० प्रतिशत पच पाती है पर दूध के साथ गेहूं की प्रोटीन ६० प्रतिशत पच जाती है।

इसी प्रकार दूध की चीनी भी सब चीनियों में श्रेष्ठ है जो खूब बल देने के अतिरिक्त पाचन शक्ति भी बढ़ाती है। जिन छोटे बालकों को ऊपर का दूध साधारणतः नहीं पचता उनको दूध की चीनी (शुगर आफ मिल्क) मिलाकर देने से दूध पच जाता है। दूध की चिकनाई भी अन्य सब चिकनाइयों से बहुत उत्तम है। स्वाद मे भी गाय के घी से बने पदार्थ अन्य प्रकार से बने पदार्थों से श्रेष्ठ है और गुण में भी। परीक्षण से ज्ञात हुआ है कि जिन लोगों को वनस्पति आयल का पकवान रोग उत्पन्न करता है, भैंस का घी भी नहीं पचता, उनको गाय के घी का पकवान सुगमता से पच जाता है। कृषि गवेषणा परिषद ने खोज के बाद बताया है:—

"वनस्पति की पोषण शक्ति का प्रयोग करने पर सिद्ध हुआ है कि गाय के दूध का घी अन्य सब चिकनाइयों व तेलों से जिसमे मूंगफली का बनाया तेल (वनस्पति) भी शामिल है निश्चित रूप से उत्तम है।" [देखो परिषद का वार्षिक प्रतिवेदन १९५० ५१ ई०

जबलपुर टी०बी० सेनेटोरियम मे हमने स्वय परीक्षण करके देखा कि टी०बी० के रोग मे गाय के घी से यज्ञ करने पर रोगी शीघ्र आरोग्य हुए, भैंस के घी से बहुत देर में आरोग्य

(शेष पृष्ठ १३ पर)

गीतकार से !

अब भटको अम्बर के चाँद सितारों में,
अब स्वरों में नूतन गीत सुनाओ तुम !
नभ में बादल घिरे हुए हैं बहुत,मगर—
आज धरा का कोना कोना प्यासा है।
जड़े हुए हैं चांद सितारे अम्बर में,
पर वसुधा को तुमसे कितनी आशा है
गीतकार हो जीवन की सरगम छेड़ो,
दुनिया का गम गीतों में पी जाओ तुम !
नहीं देखते आज मौत का साज छिड़ा
जीवन का सत्ता को इससे खतरा है।
एटम, उद्जन, राकेट जो भी बने हुए—
मानवता के लिए जहर का कतरा है।
कवि हो, छन्दों में जीवन कविता भरकर
धरतीपर साँसों की फसल उगाओ तुम।
प्यार चांद से करने को हैं बहुत मगर—
बदसूरत धरती पर चलना मुश्किल है।
रूप चाँदनी की गलियों में सब बहके,
पर जीवन प्रागण में पलना मुश्किल है
युग द्रष्टा हो, टूटे तारों का जोड़ा—
और उन्हीं पर युग का साज बनाओ तुम !

—श्यामलाल वशिष्ठ 'अकिंचन' एम ए,
सेवा सदन, खुरजा

शहीद सुमेरसिंह के प्रति

धन्य धन्य तेरा जन्म भू पर शहीदेमर्द,
होके बलिदान अग्नि यज्ञ की बढ़ा दिया
हृदय विदारक प्रहार लाठियों के सह,
शासकीय क्रूरता का रूप दिखला दिया
सत्य ही सुमेरसिंह तुमने सुदेह त्यागी,
भारतीय भाषा हिन्दी को अमर बना दिया
जाग उठा भाषा प्रेम, राष्ट्र प्रेम,धर्म प्रेम
सत्याग्रही भावनायें सुदृढ़ करा दिया।

—धर्मचन्द्र वर्मा 'धर्म' लखनऊ

एक चित्र

प्रातः उठते हुए रवि ने कहा—
मगर नींद में डूबे, पलकों ने न माना।
प्रात चहचहाते हुए पक्षियों ने कहा—
मगर बाहु में फसे,युगलों ने न जाना
युगों से गाते गाते कवि ने कहा—
मगर हृदय हीन दुनियाँ ने न सुना।।
प्राण देकर भी, ऋषि ने कहा—
मगर स्वार्थ में फसे जगत् ने न माना।।

दूसरा चित्र

फूल खिलखिलाते हुए
जमीं पर मुरझा गया,
तो वह फूल ही क्या है।
भजन में लगे यदि—
किसी का मन डिग गया
तो वह भजन ही क्या है।
गाते गाते यदि कवि रुक गया,
तो वह कवि ही क्या है।
श्रम करते करते यदि श्रमिक थक गया,
तो वह श्रमिक ही क्या है।
पथ पर चलते पथिक का डगर रुक गया
तो वह पथिक ही क्या है।
इस जग में जो कर्तव्य पथ से फिर गया
तो वह मानव ही क्या है।

—किशोरीलाल गुप्त बी ... लखनऊ

बढ़े चलो !

★

दिवस न हो जिसके पीछे वह कहो कौन सी रात है।
बढे चलो हे वीर आर्यो चिन्ता की क्या बात है।।

आर्य वीर तेरे ही हाथों भारत माँ की लाज है।
आर्य संस्कृति की रक्षा तेरे ही दम से आज है।।
देशद्रोहियों कुटिलजनों को कह दो यह ललकार के।
हिन्दी हिन्दू मिट न सकेंगे जब तक आर्यसमाज है।।
होंगे सब षडयन्त्र विफल, क्यों व्यर्थ लगाई घात है।
बढे चलो हे वीर आर्यो चिन्ता की क्या बात है।।

तुमने पाठ सिखा दिए साम्राज्य ब्रिटिश सरनाम के।
तुमने खट्टे दांत किए थे शासक क्रूर निजाम के।।
जौहर देख तुम्हारे हिन्दी सत्याग्रह संग्राम के।
धूर्त विरोधी पस्त हुए रह गये कलेजा थाम के।।
आत्मिक बल के सन्मुख हिंसक दल की क्या औकात है।
बढे चलो हे वीर आर्यो चिन्ता की क्या बात है।।

किन्तु रहे यह याद विजय के मद में इतराना नहीं।
दूर अभी मन्जिल है कोरी बातों में आना नहीं।।
साधु वेश में अजी ! अनेकों कालनेमि बैठे यहां।
सावधान ! अमृत के धोखे में विष पी जाना नहीं।।
ज्ञानी होता सफल सदा अज्ञानी खाता मात है।
बढे चलो हे वीर आर्यो चिन्ता की क्या बात है।।

मन में मैल भरा जिनके उनसे क्या आशा मेल की।
अजी ! न निकलेगी बालू से एक बूंद भी तेल का।।
एक बार अन्याय असुर से लेना है फिर मोरचा।
रंग अनोखा लायेगी जो गहरी चोटें जेल की।
दुख आतप के बिना कहां होती सुख की बरसात है।
बढे चलो हे वीर आर्यो चिन्ता की क्या बात है।।

बनकर राम हरो संकट पीड़ित सुर सन्त समाज का।
मचा रहा उत्पात भयंकर राक्षस रावण आज का।।
अन्यायी का सर्वनाश करने में मत चूको कभी।
है 'प्रकाश' उपदेश यही उस दयानन्द ऋषिराज का।।
जिनकी गौरव कीर्ति निर्मल, भूमण्डल में विख्यात है।
बढे चलो हे वीर आर्यो ! चिन्ता की क्या बात है।।

—प्रकाशचन्द्र कविरत्न आर्यसमाज अजमेर

कैरों का सिक्खिस्तान हटाओ

★

उठो आर्य वीरो कैरों का सिक्खिस्तान हटाओ।
आहुती अपनी देकर हिन्दी का मान बढ़ाओ।।

आर्यों का कर्तव्य यही है मानवता का रक्खें मान
मातृ भाषा के हित में कर दें अपने अर्पित प्राण
भाषा का अपमान सहो न हे वीरो तुम डटना
चाहे जान भले जावे पर अधिकारों को लेते रहना,
हिन्दी भाषा का चहु ओर आज तुम बिगुल बजाओ।
उठो आर्य वीरो कैरों का सिक्खिस्तान हटाओ।।

नहीं चलेगी मनमानी और नहीं चलेगा हिटलरशाही
पागल चाहे मचा लो जितना नहीं रहेगा कैरोंशाही,
भाषा आन्दोलन में कितने वीर सपूत कुर्बान हुए,
केवल कैरों के कारण मौत के मेहमान हुए,
नहीं चलेगी तानाशाही आर्य बन्धुओ न घबराओ।
उठो आर्य वीरो कैरों का सिक्खिस्तान हटाओ।।

—हीरालाल नन्दा 'प्रभाव' पुराना आबकारी (गोला) सदर, लखनऊ

अब पूछ जरा !

★

अब पूछ, जरा नेहरू जी से
गांधी वाला वह राज कहाँ,
पचशील किस ओर गया
धर्मी अशोक का ताज कहां ?

विश्व शांति का ढोंग रचा
दुनिया को झूठे भरमाते,
अब पूछ, गांधी के भक्तों से
घर में अशान्ति क्यों करवाते ।।

लगता मोटर में आग जहां
जलता है संविधान जहां,
अब पूछ जरा, नेहरू जी से
क्यों कहा न गुन्डागर्दी वहाँ ?

हिन्दी, हिन्दू के नारों से
जब आग बबूला हो जाते,
अब पूछ, चचा नेहरू जी से
दक्षिण में क्यों न गरज पाते ?

अब पूछ न्यायी, चण्डीगढ़ की
कण कण भूमि से पूछ जरा,
तेरा सुमेर किस ओर गया
ओ, मौन शिले तू बोल जरा?

चली लाठियां अकबर पुर में
बूढे, मां, बहनों लालों पर,
अब पूछ, विधाने वारों से
जो रहे रात में डालों पर ?

हवन कुण्ड और ओम्ध्वजों का
जब होता था अपमान वहां,
अब पूछ राष्ट्र के नायक से
धर्म निरपेक्ष था राज्य कहां ?

राष्ट्रप्रेमी हिन्दी जन पर
कैरों ने जब लाठी तानी,
अब पूछ राष्ट्र के कवियों से
क्यों मौन रही तेरी वाणी ?

पूज्य आत्मानन्द भिक्षु सा
आनन्द स्वामी से गुरुज्ञानी
पूछ आज उनसे जाकर
किस तरह हुई है नादानी ?

पूछ सुमेर की जननी के
बहते आंसू के धारों से,
जिसकी आँखों का नूर गया
निर्मम लाठी की मारों से ?

पूछ आज योद्धा प्रकाश से
वीर युवक के सेनानी,
करुण कथा चण्डीगढ की
कहती जिसकी निर्झर वाणी ?

लाखों जुल्मों को सह कर भी
टाली हरियाना अगवाई,
जग सिंह श्याम मन से पूछे
किस तरह विजय हमने पाई ?

—सियाराम गुप्तार्य, आरा

स्वास्थ्य-सुधा

पान के गुण और दोष

(ले०—विवेश्वर दयाल सक्सेना, बहराइच)

पान खाना आज पूरे देश में एक फैशन हो गया है। कितना अच्छा होता यदि पान खाने वाले इसके गुण-दोष पर एक बार विचार कर लेते। —स०स०

भारतीय सभ्यता में पान एक आदर और सम्मान की चीज है। जब कोई अतिथि या मित्र हमारे यहां आता है तो हम उसका पान से ही सत्कार करते हैं। पान के द्वारा सत्कार करने की प्रथा कब से चली, इसका पता चलाना कठिन है। भारत में कई शताब्दियों से पान का प्रचार है। पान प्रायः भारत में ही उत्पन्न होता है।

इसमें सन्देह नहीं कि प्राचीनकाल से पान का उपयोग किसी न किसी रूप में होता ही रहा है। धर्म शास्त्रों ने पान को पवित्र माना है। अनेक पूजा की सामग्रियों मे भी इसका होना आवश्यक माना गया है। इससे यह ज्ञात होता है कि प्राचीन हिन्दू सभ्यता जिस समय उन्नत अवस्था मे थी, उस समय भी लोग पान को भली भांति जानते थे। मुसलमान शासन काल में भी पान का उपयोग पाया जाता है। उस समय तो यह चरमसीमा पर पहुँच गया था। मुगल बादशाहों के दरबारों में सबको पान दिये जाते थे।

आजकल तो घर घर में इसका उपयोग होता है। और जिन घरों में इसका रिवाज कम है या नहीं है वे घर मनहूस और लोभी समझे जाते हैं।

पान के इस बढ़े हुये प्रचार से शरीर, समाज और देश की कैसी भयंकर हानि हो रही है, इस बात पर बहुत ही कम लोगों ने विचार किया होगा। आज हम इस लेख में पाठकों के सामने पान के गुण दोषों के सम्बन्ध में कुछ विचार करेंगे।

पान के गुण

पान का असली गुण उसके रस में होता है। पान के पत्ते के रस में एक प्रकार का तैल पाया जाता है उसी पर इसके गुण और दोष निर्भर है।

शरीर के बाह्य भागों में इसका प्रयोग भिन्न-भिन्न रोगों में होता है। पान के पत्तों पर सरसों का तेल या चूना लगा कर गरम करके कनपटी के पास लगाया जाय तो सिर की पीड़ा में लाभ होता है। सूजी हुई गिल्टियों पर लगाने से भी लाभ होता है। सर्दी के कारण जब फेफड़ों में पीड़ा हो या बच्चों की पसली चलती हो तो पीड़ा के स्थान पर पान का पत्ता गरम लगाने से लाभ होता है। आँख और कान के रोगों में पान के खाने से थूक अधिक मात्रा में बनता है। मुंह और गले में तरी पहुँचाने के लिए भी पान उपयुक्त सिद्ध होता है। इसके भोजन के बाद सेवन से पाचन शक्ति बढ़ जाती है, मुंह की दुर्गन्ध नष्ट हो जाती है। पान गले को साफ करता है, कफ निःसारक है तथा अम्ल रोग को दूर करता है।

पान के दोष

पान का अधिक उपयोग शरीर को हानि पहुंचाता है। संयम पूर्वक भोजन के पश्चात् एक या दो पान का खाना हानिकर नहीं है। किन्तु कुछ लोग दिन भर पान चबाते रहते हैं। उस अवस्था में पान हानिकर सिद्ध होता है। किसी समाचार पत्र में एक महाशय के दिन रात में पान खानें की संख्या १५०० तक प्रकाशित हो चुकी है।

भारत में ९० प्रतिशत लोगों को दन्त रोगों की शिकायत पान की ही बदौलत है। तीस चालीस वर्ष की अवस्था में ही लोगों के दांत गिरने लगते हैं। पान के अधिक व्यवहार से पान के रेशे सुपारी के बारीक टुकड़े और चूना दांतों के बीच में फंस जाते हैं। और वहाँ सड़कर के कीड़े उत्पन्न कर देते हैं और दाँतों को हानि पहुँचाते हैं। दांत के गिर जाने के पश्चात मनुष्य भोजन को अच्छी तरह नहीं कुचल पाता है जिससे कि वह उसे ऐसे ही निगल जाता है और दांतों का काम आंतों को करना पड़ता है। इस प्रकार कुछ समय पश्चात् पेट भी जवाब दे देता है जिससे शरीर निर्बल और क्षीण हो जाता है। कुछ लोग पान के साथ जर्दा और तम्बाकू का सेवन करते हैं। इससे मुंह के भीतर की नरम चमड़ी गल जाती है। और उसके ज्ञान तन्तुओं को नष्ट कर देती है। पान, सुपारी, चूना, कत्था आदि अधिक मात्रा में पाचन शक्ति को नष्ट कर देती हैं। कभी कभी अधिक पान खाने से जीभ और गाल में फोड़े से हो जाते हैं। और वे बढ़ कर कैन्सर का रूप धारण कर लेते हैं। पान के चूने से रक्त में कैलशियम अधिक मात्रा मे उत्पन्न हो जाता है जिससे अनेक भयानक रोग उत्पन्न होने का भय रहता है, जीवन शक्ति कम हो जाती है, रोगों के आक्रमण होने लगते हैं। पान में कुछ नशे का भी अंश होता है जो शरीर में निर्बलता उत्पन्न करता है।

इस प्रकार पान में कुछ गुण हैं तो दोष उनसे अधिक हैं। इससे धन का व्यर्थ व्यय होता है, शरीर अस्वस्थ रहता है। पान का प्रचार जितना कम हो उतना ही उत्तम है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य होना चाहिए कि वह पान के प्रचार को यथाशक्ति रोकने का प्रयत्न करे। इसके स्थान पर किसी अन्य वस्तु का आदर के लिए प्रचार किया जावे तो अच्छा है। स्वास्थ्य की दृष्टि से पान बहुत हानिकर है। उसका जितना कम प्रचार हो उतना ही अच्छा है।

साप्ताहिक समाचार समीक्षा

भारत को ५० करोड़ रुपये प्रतिवर्ष की क्षति हुई

तेल मन्त्रालय की लापरवाही से

केन्द्रीय सरकार के इस्पात, खान व ईंधन मन्त्रालय की असावधानी और लापरवाही से राष्ट्र को ५० करोड़ रुपये से अधिक की क्षति प्रति वर्ष उठानी पड़ रही है। मन्त्रालय की ओर से तेल शाखा के कार्य पर संसदीय अनुमान समिति ने अपनी रिपोर्ट में नाहोर कटिया तेल भंडार के पूर्वेक्षण में अति विलम्ब किये जाने की कटु आलोचना की है जिसके फलस्वरूप यह क्षति हुई और हो रही है। १९५३ से ही तेल निकालने का यह कार्य खटाई में पड़ा हुआ है। सरकार के इस लापरवाही की निन्दा तो सभी जगह हो रही है पर देश का लगभग २॥ अरब रुपया तो व्यर्थ चला ही गया। जानकार लोगों का कहना है कि यदि जांच करके देखा जायेगा तो अधिकांश मन्त्रालयों की यही हालत नजर आयेगी। अतः यह स्पष्ट है कि शासन के मद में चूर ऐशो आराम करने के अतिरिक्त हमारे मन्त्रियों को अपने काम की कोई चिन्ता नहीं है।

द्वितीय योजना में ३०० करोड़ रुपये की कटौती

द्वितीय योजना के प्रथम तीन वर्षों में किये गये कार्यों के अनुमानों तथा शेष दो वर्षों में प्राप्त आन्तरिक व बाह्य साधनों को दृष्टिगत करते हुए योजना की राशि में ३०० करोड़ रुपये की अधिकृत कमी किये जाने की आशा है।

दिल्ली निगम का उद्घाटन

दिल्ली निगम का उद्घाटन राष्ट्रपति श्री डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने किया। आपने सबसे अपील की कि राजधानी दिल्ली को एक आदर्श नगर बनाया जाय। नागरिक अपने दायित्व को याद रखें। राष्ट्रपति ने निगम को सरकारी सहायता देने का भी आश्वासन दिया।

संसद सदस्य हिन्दी में भाषण देना सीखें

लोक सभा के अध्यक्ष श्री अनन्तशयनम आयंगर ने संसदीय हिन्दी परिषद के सप्तम वार्षिकोत्सव पर हिंदी में भाषण देते हुए कहा कि अगले पांच वर्ष के अन्दर ससद के सभी सदस्यों को हिन्दी में भाषण देने की क्षमता प्राप्त कर लेनी चाहिये। अहिन्दी भाषा भाषी मन्त्रियों व सदस्यों को हिन्दी प्रदेश वाले सदस्यों से हिन्दी में ही बातें करनी चाहिए जिससे वे जल्दी हिन्दी सिख सकें।

पंजाब में नये आंदोलन होंगे

अनुमान किया जाता है कि शीघ्र ही पंजाब में पुनः कई नये आन्दोलन होंगे। हिन्दू उत्तराधिकार बिल के विरोध में अकाली दल आन्दोलन करेगा। जनसंघ भी इस कानून के विरुद्ध आन्दोलन करेगा। गरीब जनता पर लगाये गये विभिन्न टैक्सों के विरोध में साम्यवादी दल अलग आन्दोलन करेगा। हिन्दी आन्दोलन की कुछ गर्मी अभी पंजाब में चल ही रही है। सम्भव है कोई अन्य आन्दोलन भी पंजाब में हो जाय। इस प्रकार से एक दो महीने बाद पंजाब की कांग्रेसी सरकार को एक ही साथ कई आन्दोलनों का सामना करना पड़ेगा।

हिन्दी राज भाषा

केन्द्रीय वित्त मन्त्री श्री मुरार जी देसाई ने अपील किया कि हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया जाय। आपने कहा कि जब तक देश का काम काज जनता की भाषा में न चले तब तक देश में जनता का राज्य स्थापित नहीं हो सकता। हर्ष की बात है कि कम से कम एक कांग्रेसी नेता ने तो यह स्वीकार किया कि आज देश में जनता का राज्य नहीं है। अन्य नेता तो यूं ही अपने भाषणों द्वारा जनता को उल्लू बनाया करते हैं।

केरल में ९५ व्यक्तियों की मृत्यु का रहस्य

पता चला है कि २ अप्रैल को केरल में बिक्री के लिए कोचीन बन्दरगाह पर आटा, मैदा, सूजी, चीनी आदि एक जहाज से उतारा गया। उस जहाज पर डिब्बों में चूहे मारने वाला जहर (जिंकफास्फाइड) भी रखा था जो किसी प्रकार आटे की दो चार बोरियों में मिल गया। इस आटे को खाने से वहां अब तक ९५ व्यक्ति मर चुके हैं। अब सरकार ने केरल में आटे की बिक्री बन्द कर दी है।

अणु परीक्षण बन्द नहीं होना चाहिए

ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री श्री हारोल्ड मैकमिलन ने कहा कि अणु परीक्षण बन्द नहीं होना चाहिए। इससे युद्ध का खतरा और भी बढ़ जायेगा। उन्होंने ६१८ ब्रिटिश वैज्ञानिकों द्वारा अणु परीक्षण बन्द करने की अपील को ठुकराते हुए कहा कि इस प्रस्ताव को मानने से तीसरे विश्व युद्ध का खतरा बढ़ जायेगा।

शेख अब्दुल्ला पुनः गिरफ्तार

शेख अब्दुल्ला जो पाकिस्तान से मिलकर काश्मीर में तोड़ फोड़ का कार्य कर रहे थे को निरोधक नजरबन्दी कानून के अन्तर्गत ३० अप्रैल को रात्रि में बारह बजे श्रीनगर से ६ मील दूर उनके गांव सौरा में गिरफ्तार कर लिया गया और पुनः कुद जेल भेज दिया गया जहां से ९६ दिन पूर्व उन्हें रिहा किया गया था। शेख अब्दुल्ला के साथ उनके एक साथी कश्यप बन्धु को भी गिरफ्तार और नजरबन्द किया गया है। शेख की गिरफ्तारी से श्रीनगर में कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। जिला सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस शेख गुलाम रसूल ने शेख अब्दुल्ला को गिरफ्तारी का सन्देश सुनाया। अपना सामान बांधने तथा बीबी बच्चों से मिलने में शेख को ४० मिनट लगे। गिरफ्तारी से पूर्व उन्होंने चाय पीने की इच्छा प्रकट की और उन्हें अनुमति दे दी गई। एक मजिस्ट्रेट ने जब शेख के घर की तलाशी ली तो बहुत से आपत्तिजनक कागजात मिले। पता चला है कि गिरफ्तारी से पूर्व ४० मिनट के समय में अब्दुल्ला ने कुछ महत्वपूर्ण कागजात नष्ट कर दिये। जम्मू कश्मीर के इन्सपेक्टर जेनरल श्री मेहरा ने बताया कि राज्य में सुरक्षा बनाये रखने के लिए अब्दुल्ला की गिरफ्तारी आवश्यक थी। उन्होंने अनेकों घोषित अपराधियों को अपने घर में छिपा रखा था और ईद के दिन ईदगाह में भाषण देकर नियम ५० का उल्लंघन किया था।

दिल्ली में टेलिविजन केन्द्र

केन्द्रीय सूचना व प्रसार मन्त्री डा० केसकर ने लोक सभा में कहा कि आलोच्य वित्तीय वर्ष में दिल्ली में एक प्रयोगात्मक टेलिविजन केन्द्र स्थापित हो जायेगा। इसके लिए सभी आवश्यक सामान इसी वर्ष मंगा लिया जायेगा।

श्री मुसाफिर पंजाब कांग्रेस के अध्यक्ष

संसद सदस्य ज्ञानी गुरुमुखसिंह मुसाफिर पंजाब प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष निर्विरोध चुन लिये गये। चौधरी देवीलाल ने आपका नाम प्रस्तावित किया और योजना मन्त्री श्री गोपीचन्द भार्गव ने समर्थन किया। पर इस चुनाव से भी पंजाब कांग्रेस की स्थिति सुधरने की आशा नहीं है।

नेहरू जी के अवकाश ग्रहण करने की बात

प्रधान मन्त्री पद से नेहरू जी के अवकाश ग्रहण करने के सम्बन्ध में वही हुआ जो सब लोग आशा करते थे। प्रधान मन्त्री ने अवकाश ग्रहण करने की धमकी दी। सभी कांग्रेसियों ने कहा "नहीं नेहरू जी, नहीं नेहरू जी" ऐसा मत कीजिए। अन्त में नेहरू जी मान गए और अपना प्रस्ताव वापिस ले लिए। पिछले सप्ताह आपने कहा था कि हम अवकाश लेंगे। फिर आपने कहा अवकाश नहीं लेंगे। कांग्रेस संसदीय दल की दो दिन बैठक हुई। अन्त में आपको किसी प्रकार प्रधान मन्त्री बने रहने के लिए राजी किया गया। आपने कहा कि हमें दल, मन्त्री मण्डल और संसद की चिन्ता नहीं है बल्कि भावी भारत की चिन्ता है। अनुभवी राजनीतिज्ञों का विश्वास है कि कांग्रेस में सुधार करने के लिए नेहरू जी ने एक धमकी दी थी पर इससे कांग्रेस का सुधार नहीं होगा। अब यह आशा है कि नेहरू जी प्रधान मन्त्री रहते हुए ३४ महीनों का अवकाश लेंगे।

विषाक्त खाद से ७४ मरे

क्विलोन का एक समाचार है कि विषाक्त खाद्य पदार्थ खाने के सन्देह में यहां ८० व्यक्तियों में से ६४ व्यक्ति मर गये जो जिला अस्पताल में दाखिल किये गये थे।

(पृष्ठ ६ का शेष)

हुए और वनस्पति के प्रयोग से रोग बढ़ना आरम्भ हो गया। इस प्रकार दूध में २५ प्रकार के खनिज लवण जिनमें कैलशियम हड्डी को, फास्फोरस हड्डी व मस्तिष्क बनाने को और लोहा रक्त में लाली बनाये रखने को तथा आयोडीन शरीर में जीवट व फुर्ती लाने को और साथ ही थायोराइड ग्लैण्ड्स् को ठीक रखने को हमें बहुत आवश्यक होते हैं, ऐसी अवस्था में पाये जाते हैं कि शीघ्र ही शरीर में घुल मिल जाते हैं जिससे गोदुग्ध नित्य सेवन करने वाला ऊपर के तत्वों की कमी से होने वाले सब प्रकार के रोगों से सुरक्षित रहता है।

आज जो हमारा देश रोगों का घर बना हुआ है उसका मुख्य कारण देश में गो दुग्ध की कमी है और जब तक यह कमी दूर न की जावेगी हमारे लाख यत्न करने पर भी रोग बढ़ते ही रहेंगे। अतएव देश में गोदुग्ध बढ़ाना प्रत्येक देश हितैषी का प्रथम कर्तव्य है। गऊ राष्ट्र का धन दाता मां है, इस पर अगले लेख में विचार करेंगे। (क्रमशः)

आर्य जनता संघर्ष के लिए तैयार रहे

हिन्दी आन्दोलन के नेता स्वामी रामेश्वरानन्दजी ने गाजियाबाद आर्य समाज के वार्षिकोत्सवपर आर्यकुमारो के वाद विवाद सम्मेलन म कहा कि आर्य जनता को पुन संघर्ष के लिए तैयार रहना चाहिये। यदि हमारी मागे १ जून तक नहीं स्वीकार की गई तो आर्यसमाज पुनः सत्याग्रह करने पर विचार करेगा। यह दुख की बात है कि सरकार ने जो आश्वासन दिया वह उससे मुकर रही है।

आ०स० शाहगंज

वार्षिकोत्सव २१ से २४ अप्रैल ५८ तक मनाया गया। श्रीमती पुष्पा वती बी०ए० की अध्यक्षता में महिला सम्मेलन और श्रीओम्प्रकाश पुरुषार्थी की अध्यक्षता मे आर्य वीर दल सम्मेलन हुआ। कुवर सुखलाल जी, श्री बिहारीलाल जी, श्री राजाराम शास्त्री, श्री महिपालसिंह आदि के भाषण व भजन हुए।

आ० म० कस्तला, मेरठ

यहां श्री धर्मबन्धु जी ने ६ विद्यार्थियों का उपनयन संस्कार कराया। यज्ञोपवीत संस्कारपर भाषण भी हुआ।

आ०स० मजाका बगला, मारहर, एटा

द्वितीय वार्षिकोत्सव ९, १०, ११ १२ मई को होगा। श्री श्रवणसिंह, श्री सुवर्णसिंह, श्री भूपदेव आर्य, श्री सोन पाल, श्री मिश्रीलाल, श्री ठाकुरदत्त, श्री सच्चिदानन्द आदि पधारेंगें।

आर्य समाज गाजियाबाद का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज गाजियाबाद का ६७ वा वार्षिकोत्सव स्थानीय कम्पनी बाग मे समारोह पूर्वक २८, २९ व ३० अप्रैल को सम्पन्न हुआ। उत्सव से पूर्व दो सप्ताह तक श्री प्रोफेसर रत्नसिंह एम० ए० तथा श्री प० राम चन्द्र जी देहलवी द्वारा क्रमश ऋषि दयानन्द जीवन चरित्र तथा सत्यार्थ प्रकाश पर कथा की गई। उत्सव पर महिला सम्मेलन, चरित्र निर्माण सम्मेलन तथा आर्य कुमार सम्मेलन का आयोजन किया गया। 'पजाब हिन्दी आन्दोलन' पर रोचक वाद विवाद प्रतियोगिता श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे हुई जिसका उद्घाटन श्री प्रोफेसर रत्नसिंह जी एम० ए० द्वारा किया गया। श्री ठाकुर अमरसिंह आर्य पथिक, श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री, भाषा स्वातन्त्र्य समिति के मन्त्री श्री रघुवीर सिंह जी शास्त्री तथा पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री पं० जगदेव सिंह जी सिद्धान्ती के ओजस्वी भाषण हुए।

आ०स० मसेवी, मुरादाबाद

लाला काशीनाथ जी ने अपनी पत्नी के निधन के बाद गृह शुद्धि के लिए अपने घर पर यज्ञ किया और आ०स० को २५) दान दिया, तथा बरेली अनाथालय को ५)दान दिये। आर्यसमाज को आपने कुछ बर्तन भी दान मे दिए।

आ० स० जेवर बुलन्दशहर

श्री तेजपाल गुप्त उप प्रधान के लघु भ्राता श्री भीमसेन के पुत्र का नामकरण सस्कार स्वामी शमानन्द जी ने कराया।

आ०स० शिकोहाबाद

इस समाज का ५२ वा वार्षिकोत्सव ९, १०, ११, १२ मई को होगा। प० सत्यमित्र शास्त्री, श्री भद्रपालसिंह स्वामी ईश्वरानन्द जी, श्रीमती हेम लता देवी, श्री देशराज जी, श्री गोविंद वर्मा आदि पधारेंगे।

आ०स० रुस्तमपुर

प्रधान—श्री बहादुरसिंह सूबेदार
मन्त्री—श्री लालसिंह मास्टर
कोषा०—महाशय भोलासिंह

आर्यकुमार सभाओं को सूचना

उत्तरप्रदेश के समस्त आर्यकुमार सभाओ को सूचित किया जाता है कि २५ मई को होने वाले प्रान्तीय अधिवेशन के लिए वे अपनी सभाओं के प्रतिनिधियों के नाम शीघ्र ही भेजदे।

—वेदश्रवा बरेली

आर्यवीर दल मेरठ

जिला मेरठ मे आर्य वीर दल को प्रगति देने के लिए सदस्यता आदोलन प्रारम्भ किया गया है। जिले के अधिकारी अधिकाधिक सदस्य बनावें और कम से कम १०) जिला कार्यालय को अवस्य भेजें। —विश्वनाथ आर्य वीर

शोक समाचार

१—आर्यसमाज थानाभवन मुजफ्फर नगर ने श्री सुरेन्द्रकुमार जी पुस्तकाध्यक्ष के निधनपर शोक प्रकट किया।
२—आ०स० बिरला लाइन्स दिल्ली ने माता सत्यभामा जी के निधन पर शोक प्रस्ताव पास किया।

सभा का वृहदधिवेशन

उत्तर प्रदेश के समस्त समाजो एव प्रतिनिधि महानुभावों को विदित हो कि सभा का आगामी वार्षिक साधारण वृहदधिवेशन दि०१७ व १८ मई १९५८ दिन शनिवार रविवार को डी० ए० वी० कालेज भवन लखनऊ में होना निश्चित हुआ है। विश्रामादि की सुव्यवस्था का प्रबन्ध कालेज भवन मे ही रहेगा। प्रथम दिवस की बैठक ३ बजे से प्रारम्भ होगी। आशा है कि समाजो के अधिकारी वर्ग अपने अपने समाजो के प्रतिनिधि महानुभावो को भेजने का कष्ट करेंगे।

अन्तरङ्ग सभा की बैठक

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभास्थ अन्तरङ्ग सभासदो को सूचित किया जाता है कि अन्तरङ्ग सभा की बैठक दिनाक १०।५।५८ दिन शनिवार को प्रात ८ बजे से प्रारम्भ होगी। कृपया सदस्य गण नियत समय पर अवश्यमेव पधारने का कष्ट करेंगे। सदस्यो को दयानन्द कालेज लखनऊ जो रेलवे स्टेशन के निकट है पहुंचना चाहिये।

—शिवदयालु सभा मंत्री

आ०स०रेलबाजार छावनी, कानपुर

इस समाज का वार्षिकोत्सव ३, ४,५ मई को न होकर अब १०,११,१२ मई ५८ को होगा।

आ० स० मगहर

प्रधान—श्री चन्द्रकिशोर आर्य
मन्त्री—श्री भगवत प्रसाद आर्य
कोषा०—श्री राम आश्रय जी

आवश्यकता है

आवश्यकता है, एक योग्य विद्वान की जो आर्यसमाज अलीगढ़ में, पुरोहित का कार्य कर सकें। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। वानप्रस्थी महोदय को मान्यता दी जायगी। प्रार्थनापत्र १५ मई तक आने चाहिये।

प्रेमनारायण पुष्प
मन्त्री आर्यसमाज अलीगढ़

आर्य वर की आवश्यकता

एक २२ वर्षीय उच्च ब्राह्मण कुलोत्पन्न मैट्रिक व साहित्यरत्न (प्रथम खंड) पास सुशील आर्य बालिका (अध्यापिका) के लिए सुयोग्य स्वस्थ्य व शिक्षित आर्य वर की आवश्यकता है। कन्या आर्यसमाज की सुयोग्य कार्यकर्त्री तथा वर्तमान मे भी स्त्री आर्यसमाज की मन्त्रिणी हैं। अत ब्राह्मण वर्ण वैदिक धर्मी आर्य नवयुवक निम्नांकित पते से पत्र व्यवहार करें। —क्षेमराम आर्य मन्त्री आर्यसमाज अलवर (राजस्थान)

कहानी—

मानवता के नाता तोड़ कर आज मनुष्य, मनुष्य जाति के लिए कितना क्रूर और निर्दयी बन गया है; इसका अनुमान इस कहानी को पढ़कर लगाइएं। —स० सम्पादक

समाज का न्याय

[रामाकान्त शर्मा, धामपुर]

सारा गांव होली के गीतों में मग्न था। रह रहकर गीतों की मधुर ध्वनि वातावरण को अनूठा बना रही थी। कोलाहल एवं कहकहों से सारे गांव में हलचल मची हुई थी। सभी लड़के लड़कियाँ आपस में गुलाल खेल रहे थे, जिस ओर भी दृष्टि जाती थी हलचल ही हलचल दीख पड़ती थी। परन्तु ऐसे समय एक मन शांत था, उसमें कोई हंसी न थी, उसमें कोई उमंग न थी। वह थी बेचारी दीन हीन अरुणा।

अरुणा बाल विधवा थी। उसके जीवन में एक बार बहार आई थी जो कि समय से पहले ही समाप्त हो गई। उसने जीवन की सुनहली घड़ियों को नहीं देखा। उसका जीवन तो नीरसता से परिपूर्ण तप्त मरु भूमि के समान है। बारहवें वर्ष में पग रखते ही अरुणा के माथे का सिन्दूर धुल गया विधाता ने उसकी प्रसन्नता छीन ली। अपने क्रूर एवं नृशंस हाथो से उसने अरुणा की खुशियो का गला घोट दिया। अरुणा की नगरी वीरान हो गई। मां बाप की प्यारी बेटी पति-विहीना होने पर उनके लिए कांटा बन गई। जिस अरुणा को कभी किसी काम के लिए भी नहीं कहा जाता था, आज उसी को दासी के समान काम करना पड़ता है। माता पिता का प्रेम भी अब उसके लिए दूभर हो गया। इसलिए वह अनाथ अरुणा घर के कोने में बैठी अपने भाग्य को कोस रही थी।

धीरे धीरे समय बीतता गया। अरुणा सोलह वर्ष की हो गई। उसके जीवन की यौवन कलिका पूर्ण रूप से विकसित हो गई। उसका उन्नत ललाट, कलित कुन्तल केश, तीक्ष्ण नयन और उस पर इन्द्र धनुषाकार भृकुटियां, रक्त तप्त स्वर्ण को भी लजाने वाले कपोल, सुन्दर मुख पर प्रवाल के वर्ण जैसे ओष्ठों में मन्द मन्द मुस्कान, सुन्दरता की प्रतिमूर्ति वह अरुणा भला किसको अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकती थी। वह तो उस समय प्रत्यक्ष सौन्दर्य की देवी प्रातः कालीन भगवान भास्कर के प्रकाश के समान मनमोहक, चन्द्रमा की चन्द्रिका से भी उज्ज्वल दीख पड़ती थी।

अरुणा रूपवान तो थी किन्तु सुखी न थी। यौवन की चंचलता को अपने वशीभूत करने के लिए उसने पिता माता से अनुराग रखना प्रारम्भ कर दिया। कुमार जो कि गांव के स्कूल में अध्यापक थे, उनसे अरुणा कभी कभी पढ़ लेती थी। अरुणा के पिता कुमार को कुलरत्न मानते थे। कुमार का घर आना जाना तो पहले से ही अधिक था परन्तु अब अरुणा की पढ़ाई के कारणवश और भी बढ़ गया। इधर अविवाहित कुमार और दूसरी ओर यौवन से परिपूर्ण सुन्दरता की अधिष्ठात्री देवी अरुणा दोनो एक दूसरे की ओर आकर्षित हो गए। आकर्षण प्रेम की पहली सीढ़ी है। इसी आकर्षण ने प्रेम का रूप धारण कर लिया। दोनों समाज की चिंताओं को भूल अपने में लिप्त हो गए। धीरे धीरे प्रेम और बढ़ता गया, उधर अरुणा के भाग्य पर काले बादल मण्डराने लगे। आखिर बात कब तक छिपती अरुणा गर्भवती हुई और मां बन ही गई।

इस बच्चे के होने पर घर में गीत नहीं गाये गए। पड़ोसियों ने बधाइयां नहीं दीं बल्कि इसके होने पर किसी का भाग्य विधाता और भी अधिक रूठ गया। अरुणा के माता पिता ने समाज के भय से बच्चे को नदी में फेंक देना उचित समझा। उन्होंने साफ साफ कह दिया, कुलच्छिनी, पापिन, तुझे इस बच्चे को नदी की भेंट चढ़ाना ही होगा। अरुणा का हृदय पहिले तो घृणा से भर गया और उसने बच्चे को मृत्यु की बलि वेदी पर चढ़ाना स्वीकार कर लिया परन्तु ज्योंहि उसकी किलकारी सुनी उससे न रहा गया। माँ का मन पसीज उठा। माँ की ममता बच्चे की रक्षार्थ सभी कष्टों को सहन करने के लिए उतारु हो गई। उसने अपने माता पिता से कह दिया "एक समाज ही क्या यदि हजार समाज भी माँ की ममता को कुचलना चाहे तो नहीं कुचल सकते। मैं मां हूं, वह मेरी कोख से उत्पन्न हुआ है, मेरे हृदय का टुकड़ा है। एक मात्र वही मेरा सहारा है। भगवान के छीनने पर भी मैं अपनी जान दे दूंगी, परन्तु अपने प्राणों से भी प्यारे लाल को नहीं दूंगी। समाज चाहे बुरा कहे चाहे भला, मैं उसकी मां हूं। उसके लिए सब कुछ सहन करूंगी, घर छोड़ दूंगी, स्वर्ग छोड़ दूंगी परन्तु उस जिगर के हार को न दूंगी।"

अरुणा के माता पिता ने काफी छिपाने के प्रयत्न किए कि इस बात का पता किसी को न चले परन्तु एक दिन समाज को यह मालूम हो ही गया कि अरुणा एक बच्चे की मां है। गांव के पंचों ने निर्णय दिया और कहा 'अरुणा पापिन है, पतिता है, कुल कलंकिनी है। अतः उसे यह गांव छोड़ना ही पड़ेगा। इसने समाज का मुख नीचा किया है। धर्म की पवित्रता को नष्ट किया है। इसे सजा भोगनी ही पड़ेगी।' यह सुनकर अरुणा धर्म रक्षक कहलाने वाले पाखण्डी, ढोंगी एवं दुश्चरित्र चन्द्र पाण्डे के पांवों में गिरकर रक्षा की भीख मांगने लगी परन्तु उस दुष्ट समाज भक्त कहलाने वाले ने भी उसे खाली हाथ ही लौटा दिया। वह तो पहले से ही चाहता था कि अरुणा किसी तरह उसकी हो जावे। कई बार मार्गों व कुंओं पर पानी भरते हुए पहले भी उसने रोका था। आज इस अवसर को भला वह क्यों जाने देता। उसने अरुणा से स्पष्ट कह दिया कि रक्षा तभी हो सकती है जब वह अपना सर्वस्व उसे सौंप दे। परन्तु अरुणा ऐसी कहां थी? उसने ऐसे नीच की रक्षा भी स्वीकार न की। आखिरकार उस दोना को घर छोड़ना पड़ा। अन्त समय वह कुमार के पास गई परन्तु वह कुमार जो कभी उसकी ओर इतना आकर्षित था कि सदैव उसकी सुन्दरता का गुणगान किया करता था आज उसे पहिचान भी न सका। अरुणा ही क्या उसने तो न जाने कितनी अबलाओं का सतीत्व नष्ट किया था। उसने उसे घर से धक्के देकर निकाल दिया।

समाज त्यक्त अरुणा को अब गांव छोड़ना ही पड़ा। तीन दिन की भूखी प्यासी चली जा रही थी, अलक्ष्य की ओर। बालक भूख से व्याकुल था, जब उसकी माता को ही कुछ न मिला तो भला उसे पीने को क्या मिलता। ग्रीष्म ऋतु की कड़ी दोपहरी ने भी उस पर दया न की। उसका सर चक्कर खाने लगा और कुछ ही समय पश्चात् वह पृथ्वी पर अचेत हो गिर पड़ी। थोड़े समय पश्चात् चेतना आ गई और अरुणा उठी। वह साहस, उत्साह एवं आशा के साथ समीप के गांव में पेट भरने के लिए थोड़ी भीख मांगने गई परन्तु वहाँ भी उसे मिली, झिड़कियां, क्रूरता एवं फटकार। भगवान ने भी उसकी विनती नहीं सुनी। समाज के पोषकों ने उसे डरा धमका कर भगा दिया। अन्ततः जो होना था हुआ अरुणा के प्यारे बालक की मौत। वह चीख उठी किन्तु उसकी पुकार को किसी ने भी न सुना। चारों ओर कालिमा ही कालिमा विद्यमान थी। वहां तो दैत्यता एवं बर्बरता का अखण्ड राज हो रहा था। उससे बालक का वियोग सहन न हुआ।

आज दो वर्ष के बाद भी वह अपने पुत्र को न भूल पाई और पागल हो गई। चिथड़ों को लपेटे बाहु को हृदय में दबाए विकृत समाज की जीती जागती लाश अरुणा अब गली गली में अट्टहास करती फिरती है। प्यास से व्याकुल होती है तो कोई उसे पानी नहीं देता, भूख लगती है तो रोटी नहीं। कल सारी रात वह पानी पानी चिल्लाती रही परन्तु किसी ने पीने को पानी भी न दिया।

अगले दिन सवेरे गांव की स्त्रियाँ कुंए पर जल भरने गईं तो उनके भय का ठिकाना न रहा। एक लाश पानी में तैर रही थी। लाश को निकाल कर देखा तो पता चला कि गांव की पगली कुंए में डूब मरी। अरुणा इस तरह विदा हो गयी। वाह रे! समाज तूने उसे पीने को पानी भी न दिया। देख ली तेरी मानवता। ★

पंजीकरण सं. ए. ६०
२१ वैशाख १८८० (११ मई ५८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ४९११३ तार :] 'आर्यमित्र'

आर्य पुत्री उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सुभाषनगर बरेली

वार्षिकोत्सव ७ से १५ मई तक होगा। स्वामी ब्रह्मानन्द, प० बिहारी लाल शास्त्री, प० शिवकुमार शास्त्री, श्रीमती शकुन्तला जी, श्री नन्दलालजी आदि पधारेंगे।

बब्बशातरास मिरजापुर में आ०स०

इस ग्राम में आर्य समाज की स्थापना हुई। श्री केशवसिंह ने प्रचार किया। चुनाव—

प्रधान—श्री हरिश्चन्द्र सिंह
मन्त्री—श्री ज्वालाप्रसादसिंह
कोषा०—श्री अवितनारायणसिंह

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा बरेली

प्रधान—डा० सत्यपाल वैद्य शास्त्री
मन्त्री—प० विद्याभास्कर शास्त्री
कोषा०—रायजादा कृष्ण बहादुर जी

आ०स० गोविन्दनगर कानपुर

वार्षिकोत्सव १ से ६ अप्रैल तक हुआ। श्री वाचस्पति शास्त्री, श्री भद्र पाल जी, श्री प्रकाशवती जी, श्री देश राज जी, प्रिंसिपल दीवानचन्द जी आदि के भाषण हुए।

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

स्वर्गमय भारत, नरकमय क्यों

आज स्वर्गमय भारत नरकमय क्यों बन गया है? एक पंक्ति में इसका यही उत्तर है कि "पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण"। विशेष इस लेख में पढ़िए —सं० सं०

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति ॥ अथर्व० ११-५-१७

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः । स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

मनु० २-२०

यह सर्व विदित है कि प्राचीन भारत विश्व का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला स्थल, सम्पूर्ण देशों से अधिक उत्कर्ष, ऋषि मुनियों तथा वैज्ञानिकों का प्रादुर्भाव स्थान माना जाता था। कला-कौशल, सदाचार तथा वेद विद्या का महान् प्रचारक था। जिनके अलौकिक दर्शनों के लिए अन्य देशस्थ धर्म जिज्ञासु तथा लेखक पधार कर और दर्शन पर्सन कर अपने को भाग्यशाली समझते थे। कहने की बात क्या इतिहास साक्षी है। यहाँ की विद्या संसार को विद्वान बनाती थी। यहाँ का शिल्प संसार को चकित करता था। धन-धान्य से परिपूर्ण, शस्त्रास्त्र से युक्त योद्धाओं के बोल बाला से संसार काँप कर शिष्य बन चरण धोता था। जिससे भारतीय शांति पूर्वक ब्रह्मानन्द की प्राप्ति कर स्वर्गमय जीवन व्यतीत करते थे।

परन्तु आज वह समय है जबकि भारतीय शोक, मोह ग्रस्त, आपसी कलह फूट और दरिद्रता से ग्रसित, नग्न होकर दीन-हीन दशा का प्रदर्शन कराते हुए विदेशियों के पद्चुम्बन करते हुए अपनी रक्षा की भीख मांगते हैं। कहने की बात ही क्या वर्तमान पत्र पत्रिकाओं द्वारा जगत् विख्यात है।

मुख्य कारण

(१) ब्रह्मचर्य तथा वेद-विद्या का अभाव (२) स्वयम्वर विवाह न कर माता पिता द्वारा लड़के तथा लड़कियों का क्रय विक्रय से बालक बालिकाओं के सुख, शान्ति का हनन (३) शासक वर्ग में चरित्र भ्रष्टता, अयोग्यता तथा पदलोलुपता का होना (४) सहशिक्षा (Co-education) द्वारा लड़के तथा लड़कियों को विषय वासना के चक्कर में डाल जीवनरूपी अमूल्य रत्नों को कोयलों में बदलना (५) कल्चर (Cultural) प्रोग्राम द्वारा युवती लड़कियों को विषय वासना से युक्त पर पुरुषों के मध्य नचाकर अध पतन का मार्ग दिखाना पूज्या मातृ शक्ति को दूषित बनाना (६) युवती लड़कियों को दूषित स्वभाव वाले पर पुरुषों से नाच, गान सिखलाते हुए चरित्र भ्रष्ट बना भ्रूणहत्या, बाल हत्या, गर्भपात आदि दोषों का भरमार (७) गुरुकुलों तथा अन्य धार्मिक शिक्षणालयों और आश्रमों में अन्धविश्वासी सरकार के पिट्ठुओं को अधिकारी बना धार्मिक विचारों पर ठेस पहुँचाना (८) वेश्या सेवन शृंगार कर अविवाहित अवस्था में पशुवत अपने तथा पराये मुंह काला करते रहना तथा विषयासक्त होना (९) रिश्वत, भ्रष्टाचार, मिथ्याभाषण का बोल-बाला (१०) अयोग्यों को पदाधिकारी बनाना और होना (११) वेद विरुद्ध पाषाण मूर्तियों की पूजा कर आत्म हत्या करना (१२) पुरुषार्थ हीनता, आपसी मतभेद, अयोग्यों की पूजा तथा योग्य व्यक्तियों का अपमान (१३) ईश्वर और वेद तथा वर्णाश्रम की अवहेलना (१४) सिनेमा द्वारा गन्दे गाने और अश्लीलतापूर्ण नग्न चित्रों का प्रचारादि कुकर्म ही नरक का कारण है।

परमेश्वर से हार्दिक प्रार्थना है कि भारतवासियों को सद्बुद्धि दे जिससे उपरोक्त कुकर्मों को त्याग कर शुभ कर्मों द्वारा पुन. चरित्रवान और पुरुषार्थी बन सुख-शान्ति प्राप्त कर भारत को स्वर्गमय बना भारत का मस्तक विश्व में ऊंचा कर सकें।

—वेदव्रत वाचस्पति
अध्यक्ष—स्वाध्याय मण्डल
पो० रुड़की, जि० सहारनपुर

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्यमित्र

19-5-58

[illegible]

—शिवदयालु

आ म् मह भूमि [illegible] शुभ मर्त्याय । [illegible] म [illegible] अनु [illegible] ।

[illegible]

मैंने श्रेष्ठ पुरुषों को भूमि [illegible] है मैं [illegible] वाले मनुष्य के लिए धन तथा सुख [illegible] वर्षा करता हूं । मैं बार बार शब्द करने [illegible] जलों (नदियों) का लाता हूं । [illegible] के अनुसार चलते हैं ।

सम्पादक—
शिवदयालु, सभामन्त्री
सह सम्पादक—
भगवत शरण

एक प्रति का [illegible] लखनऊ, रविवार वैशाख २८ शक १८८० [illegible]

सांस्कृतिक चर्चा

गऊ और उसकी रक्षा-३

[डा० कुन्दनलाल अग्निहोत्री एम०, डी० संगतलालगंज, लखनऊ]

गऊ सब धन से बढ़कर है और सब सुखों के देने वाली है। कैसे ? यह इस लेख में पढ़िए। —स० सम्पादक

(गताङ्क से आगे)

हमारे वेदशास्त्र तथा पूर्वजों ने और इस समय के आधुनिक समझदार उच्चकोटि के विद्वानों ने गऊ की प्रशंसा में रत्ती भर भी अत्युक्ति से काम नहीं लिया है; किंतु परीक्षण से यही सिद्ध होता है कि वेद तो उसकी प्रशंसा से भरा हुआ ही है अन्य विद्वान् भी उसके लाभों पर विचार करते करते इतने मुग्ध हो जाते हैं कि अपने भावों को प्रकट करने को शब्द नहीं खोज पाते। आज संसार धन के लिए दीवाना हो रहा है। धन का मोह इतना बढ़ गया है कि शिष्टाचार कर्तव्य, माता, पिता, स्त्री, सन्तान, चरित्र, स्वास्थ्य यहाँ तक कि धर्म और ईश्वर तक को धन के लिए लोग त्यागने को उद्यत हो जाते हैं। हमारे देश में तो इस समय भ्रष्टाचार, चोरबाजारी, झूठ, अन्याययुक्त टैक्स, इत्यादि का जो वेग बढ़ रहा है उसका मुख्य कारण धन की कमी और उसकी वास्तविकता को न समझना ही है। अतः यहां हम यह बताने का यत्न करेंगे कि देश का वास्तविक धन इस समय केवल गऊ से ही बढ़ सकता है और साथ ही धन का वास्तविक मूल्य समझने वाली बुद्धि भी गो दुग्ध से ही उत्पन्न होवेगी।

भगवान ने हमारा देश संसार का शिरोमणि, सबसे अधिक सुखदाई पर्वत, वन, सपाट भूमि और गंगा जैसी नदियों से सुसज्जित करके ऐसा रमणीक बनाया है कि यदि यहाँ के वैश्य शूद्रों की सहायता से केवल खेती, गोपालन और व्यापार का कार्य करके आनन्द का धर्मपूर्वक जीवन बितावें तो त्यागी ब्राह्मण विद्या में रत रहकर और वीर क्षत्रिय अपने वीरत्व में व्यस्त रहते हुए देश रक्षा करके न केवल स्वयं मौज का जीवन बिता सकते हैं वरन् संसार में वैदिक नाद बजा कर प्राणीमात्र को सुख पहुंचा सकते हैं। कितना सुन्दर रमणीक वह दृश्य था जब ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र सब ही के घर सैकड़ों नहीं हजारों की संख्या में लम्बे लम्बे थन वाली हृष्ट पुष्ट गऊवें दूध जैसे अमृत को बरसाती थीं। रामायणकाल में केवल अयोध्यानगरी में चार लाख गऊवें थीं। अब से २५०० वर्ष पूर्व महाराज चन्द्रगुप्त के समय में जब यहाँ की जन संख्या १८ करोड़ थी, ३६ करोड़ दुधारू गऊएं थीं। अकबर के समय में भी २८ करोड़ गाएं थीं और दूध एक पैसे का डेढ़ सेर अर्थात् एक रुपये का ढाई मन मिलता था। उस समय गऊ केवल गोचर भूमि और खेतों में इच्छानुसार चरकर प्रातः सायं मुरली की तान में मस्त होकर थनों से दूध के सागर बहा देती थीं। अतः सब ही गृहस्थ भोजन की चिन्ता से मुक्त होकर अपने वर्णाश्रम धर्म का पालन करना ही अपना जीवनोद्देश्य समझा करते थे। भूमि का अधिक भाग गोचर भूमि के लिए छोड़ा जाता था। शेष थोड़ी भूमि में कृषि कार्य से जो अन्न होता था उसमें से ब्राह्मण के घर दान के रूप में, क्षत्रिय के यहाँ कर के रूप में और शूद्र के यहां पारिश्रमिक के रूप में वैश्य लोग स्वयं पहुंचा देना अपना परम धर्म समझते थे अतः आज कल का सा धन का मोह किसी को व्यापता ही नहीं था। तब ही तो चन्द्रगुप्त जैसे सम्राट का राजमन्त्री त्यागी ब्राह्मण चाणक्य एक पैसा न लेकर देश सेवा कर सकता था और अनेकों राजा महाराजा राज्य कोष से एक पैसा न लेकर पुस्तक लिखकर अपना जीवन निर्वाह कर लेते थे; पर प्रजा के सुख के लिए उस पर भार नहीं डालते थे। ऐसे समय में ही पंचशील अथवा निशस्त्रीकरण का सिद्धान्त चल सकता था क्योंकि समय पड़नेपर प्रजा का प्रत्येक व्यक्ति देश रक्षा के लिए स्वयं सिपाही या सैनिक था। उस समय धन का स्थान गऊ को प्राप्त था इसलिए उसे गाय न कह कर—

गऊ धन

कहा करते थे। वेद में गाय के जो अनेक नाम बताये हैं उनमें से एक नाम 'रोहिणी' भी है जिसका अर्थ 'उन्नति का साधन' है। संस्कृत साहित्य मे गो वंश को अर्थशास्त्र का मुख्य आधार बताया गया है और गोधन बढ़ाना परम पुरुषार्थ समझा गया है। यह सब कोरी श्रद्धा के आधार पर नहीं है। श्रद्धा की भावना है अवश्य पर श्रद्धा सत्य और उपयोगिता पर आधारित है। आज देश में ब्राह्मण क्षत्रिय तो नाममात्र को रह गये हैं। प्रायः सब ही धन के मोह में बिगड़े वैश्य बन गए है और गोदुग्ध नष्ट होने से अन्न का व्यय बढ़ गया है। अतः अधिक जनसंख्या खेती करती है और यही हमारी आय का मुख्य साधन है। खेती के लिए भूमि के अतिरिक्त पाँच वस्तुएं चाहिये।

(१), बीज, (२) बैल (३) खाद (४) पुरुषार्थ (५) बुद्धि।

गाय इन सब ही की दाता है; क्योंकि किसान के पास बीज उतना ही अधिक होगा जितना अनाज का खर्च उसके यहाँ कम होगा। गऊपालन और दूध, घी, मठा इत्यादि खाने से अन्न का व्यय बहुत घट जाता है यह सब ही जानते हैं। बैल गाय से मिलते ही हैं और दूध अधिक होने से खूब बलिष्ट फुर्तीले व द्रुतगामी बैल मिल सकते हैं। गोबर की खाद सर्वश्रेष्ठ खाद है क्योंकि वह जहां भूमि की उर्वरा शक्ति स्थायी रूप में बढ़ाता है वहां स्वास्थ्यप्रद अन्न व सब्जी उत्पन्न करता है। गोदुग्ध और उससे बने पदार्थों से शरीर में शक्ति व उत्साह बढ़ने के साथ विवेक बुद्धि भी बढ़ती है जिसकी सहायता से थोड़ी सी भूमि में थोड़े से बीजों से अधिक अन्न उत्पन्न किया जा सकता है।

भूमि की हमारे यहां ईश्वर कृपा से कमी नहीं; बुद्धि, पुरुषार्थ, बैल, खाद और बीज की कमी के कारण करोड़ों बीघा भूमि खाली पड़ी रहती है। बुद्धि की कमी के कारण हम करोड़ों एकड़ भूमि चाय, तम्बाकू और मूंगफली की खेती में नष्ट करते हैं। थोड़ी मात्रा में मेवा के रूप में बिना भुनी हुई कच्ची मूंगफली खाना उपयोगी है पर आज लाखों बीघा भूमि में मूंगफली वनस्पति आयल का विष तैयार करने को बोई जाती है। यदि इसका चलन जारी रहा तो देश का करोड़ों रुपया अन्धों की चिकित्सा और ऐनकों में बरबाद हुआ करेगा। अन्य भयानक रोगों की बढ़ती भी होगी जिन पर देश का करोड़ों रुपया नष्ट होगा। यह सब ही व्यय केवल गोदुग्ध बढ़ने से कम हो सकते हैं।

हमारे बैल केवल खेत ही नहीं जोतते। वे बाल से अनाज निकालते, खेती का सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाते और सवारी का काम भी देते हैं। आज बैलों की कमी से देश में मोटरों का चलन बहुत बढ़ रहा है। सवारी में मोटर, बोझ ढोने में मोटर, घास, पात, कूड़ा मैला, ईंट, पत्थर सब ही ढोने को अब बैलों के स्थान में मोटर का प्रयोग बढ़ रहा है जिनका अधिक धन विदेश जाता है और कुछ समय में मोटर बेकाम होने से उसका सब नष्ट हो जाता है। पर गाय, बैल पर व्यय किया हुआ धन सर्वदा ही बढ़ता है। मरने के पश्चात् भी वह चमड़े आदि के रूप में देश को धन दे जाते हैं।

आज देश में गोधन की कमी के कारण करोड़ों रुपये की खाद भी विदेश से खरीदी जाती है। श्री डी० एच० जानी ने अपनी पुस्तक 'रोमांस आफ दि काउ' (Romance of the cow) में हिसाब लगा कर बताया है कि यदि देश की आवश्यकता भर गोबर की खाद उत्पन्न कर ली जावे तो २२५ करोड़ रुपये का वार्षिक लाभ देश को होगा और इस के लिए ५० करोड़ पशुओं की आवश्यकता होगी। पर इस समय हैं केवल १९८४०००० । शेष संख्या यदि केवल गऊ वंश से पूरी की जावे तो भोजन, सवारी, ट्रैक्टर, खाद, चिकित्सा, निर्बलता, बुद्धि हीनता, बेकारी आदि सब ही समस्याएं हल हो जावें।

अंग्रेजों ने हमारा सर्वनाश करने को गोवध जारी किया था और शिक्षा के साथ यह विष पिलाया था कि इससे देश को आर्थिक लाभ है। उस शिक्षा के प्रभाव में रहने वाले आज हमारे देशी भाई भी कहीं धर्म निरपेक्षता की आड़ लेकर कहीं बेकार पशुओं के बहाने से धन की दाता गऊ का वध करा रहे हैं और आज अंग्रेजों के समय से भी अधिक गोवध हो रहा है। पर सरकारी रिकार्ड से ही यह बात सिद्ध होती है कि बिल्कुल नाकारा बूढ़ी गाय भी देश पर भार न होकर देश की आय बढ़ाती है। कृषि रसायन विशेषज्ञ डाक्टर लेण्डर ने सन् १९३५ ई० में हिसाब लगाकर बताया था कि एक गाय या बैल वर्ष भर में २६) रु० मूल्य का मूत्र व गोबर प्रदान करता है। सन् ३५ की अपेक्षा इस समय सब वस्तुओं का मूल्य बढ़ने से आज का मूल्य ६०) रु० वार्षिक होगा। हमारी सरकार ने जो इस समय गो सदन की स्कीम बनाई है उसके अनुसार एक पशु पर ३०) रु० वार्षिक गो सदन में व्यय होगा। इसी कारण सरकार प्राइवेट गोसदन खोलने वालों को १५) रु० प्रति पशु वार्षिक सहायता देती है। स्पष्ट है कि बूढ़ी गाय भी हमें ६०) रु० वार्षिक मूल्य की खाद प्रदान करके ३०) रु० वार्षिक का लाभ कराती है। और फिर प्राकृतिक मौत मरने पर भी सैकड़ों रुपये का चमड़ा आदि प्रदान कर जाती है। इस प्रकार हर दृष्टि से 'गाय' राष्ट्रीय हित की वस्तु है।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

आर्य्य जगत में सब से अधिक छपने वाला आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

ओ३म्

वर्ष ६१

आर्य्यमित्र

अङ्क १९

लखनऊ—रविवार वैशाख २८, शक १८८०, ज्ये० कृ० ३०, वि० २०१५ (१८ मई १९५८) दयानन्दाब्द १३४ सृष्टिसम्वत् १९६०८५३०५९

सम्पादकीय

नेहरू जी को भी मानना ही पड़ा

★

कांग्रेसी नेता अपने भाषणों में बराबर कहा करते थे और आज भी कहते हैं कि कांग्रेस ही देश को उन्नति की ओर ले जा सकती है और देश की समस्याओं का समाधान कर सकती है, इसमें कोई दोष नहीं है। नेहरू जी भी कांग्रेस की शिकायत करने वालों को केवल विरोधी ही कहा करते थे पर आज परिस्थिति ऐसी आ गई कि उनको भी मानना ही पड़ा कि कांग्रेस का सम्पर्क जनता से समाप्त हो गया है, कांग्रेस में अनेकों बुराइयां आ गई हैं, कांग्रेस नीचे की ओर जा चुकी है, जनता का कांग्रेस में कोई विश्वास नहीं रहा और सरकारी कर्मचारियों में भ्रष्टाचार भर गया है।

नयी दिल्ली में कांग्रेस महासमिति की बन्द कमरे की बैठक में प्रधान मन्त्री नेहरू ने उक्त दोषों को अनेकों बार स्वीकार किया और इसकी कटु निन्दा की। आगे उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेसियों ने इस बात के लिए कोई प्रयास नहीं किया कि आम जनता कांग्रेस और सरकारी योजनाओं की ओर आकृष्ट हो तथा इस पर विश्वास करे। आपने जातीयता, साम्प्रदायिकता और प्रान्तीयता की भी घोर निन्दा की। यद्यपि प्रधान मन्त्री ने ये बातें बन्द कमरे में स्वीकार की हैं फिर भी सारी बातें सारे देश में बिजली की तरह फैल गई हैं।

कुछ बड़े कांग्रेसी नेताओं का कहना है कि प्रधान मन्त्री ने ऐसा करके अच्छा नहीं किया। इससे जनता की दृष्टि में कांग्रेस की प्रतिष्ठा और कम हो जायेगी। समझ में नहीं आता कि आखिर पाप पर पर्दा डालने वाले ये कांग्रेसी नेता सचाई को दबा कर और छिपा कर कितने दिनों तक रख सकते हैं। एक न एक दिन तो इस पाप घट को फूटना ही था।

प्रधान मन्त्री ने अपनी सरकार तथा कांग्रेस दल का वास्तविक दोष स्वीकार करके लघुता और कमजोरी नहीं बल्कि उदारता और बड़प्पन का परिचय दिया है। इसे देश की पढ़ी लिखी जनता प्रगति का शुभ लक्षण मानती है। आश्चर्य तो यह है कि सब कुछ जानते और समझते हुए भी प्रधान मन्त्री ने अब तक इस राज को छुपाये क्यों रखा था? अस्तु। यह हर्ष की बात है कि प्रधान मन्त्री ने अब इस दृष्टि से सोचना प्रारम्भ कर दिया है। अपनी दुर्बलताओं की ओर उनका ध्यान गया तो वे अब इसे दूर करने का पूरा पूरा प्रयास करेंगे। अपने प्रयास में वे कहाँ तक सफल होंगे, सरकार और कांग्रेस की हद दर्जे की गिरावट को ध्यान में रखते हुए, अभी कुछ कहा नहीं जा सकता, यह तो समय बतलायेगा।

कांग्रेस के अनेकों हितैषी जब पहले यही शिकायत नेहरू जी से किया करते थे तो नेहरू जी उन पर बरस पड़ते थे, पर समय और परिस्थिति ने नेहरू जी को यह मानने को बाध्य कर दिया। अब हमारा अनुमान है कि शीघ्र ही एक समय ऐसा भी आयेगा जब प्रधान मन्त्री को प्रत्येक प्रश्न पर पाश्चात्य ढंग से सोचने का अपना विचार भी बदलना पड़ेगा और नेहरू जी भारतीय ढंग से सभी प्रश्नों पर सोच सकेंगे। हम चाहते हैं कि नेहरू जी दीर्घायु हों, अपने पद पर बने रहें और उनका विचार भी अब पाश्चात्य से बदल कर भारतीय हो जाय। वह दिन भारत के लिए अत्यन्त सुन्दर और सुखकर होगा।

केरल के बाद उड़ीसा, मैसूर, बंगाल व पंजाब

देश में गत वर्ष जो आम चुनाव हुआ उसमें कांग्रेस के हाथ से एक प्रान्त (केरल) निकल गया। कहने की आवश्यकता नहीं है कि केरल भारत वर्ष का सर्वाधिक शिक्षित प्रान्त है और कांग्रेस के विरोध के बाद भी केरल की सरकार ने एक वर्ष में ही काफी कुछ प्रगति और उन्नति तथा क्रांतिकारी परिवर्तन करके दिखला दिया है।

उड़ीसा में किसी प्रकार कांग्रेस की सरकार बन तो गई थी पर अत्यंत तीव्र विरोध के कारण एक भी प्रश्न पर विधान सभा में शान्तिपूर्वक विचार नहीं हो सका। सदन में १३८ सदस्य हैं जिसमें ६५ कांग्रेस ४५ गणतन्त्र परिषद, ११ समाजवाद, ८ साम्यवाद ५ झारखण्ड पार्टी, २ स्वतन्त्र और १ स्थान समाजवाद का प्राप्त है तंग आकर कांग्रेस मन्त्रि मण्डल ने त्यागपत्र दे दिया है और राज्यपाल श्री सुखथंकर ने विरोधी दल के नेता को सरकार बनाने के लिए आमन्त्रित किया है। पर विरोधी सरकार बनने की भी सम्भावना नहीं है। अतः उड़ीसा के राज्यपाल के सम्मुख एक गम्भीर समस्या उत्पन्न हो गई है। मिली जुली सरकार बनने की भी कम आशा है। कुछ राजनीतिज्ञों के अनुसार राष्ट्रपति शासन स्थापित होने की आशा है। जो भी हो कांग्रेस उड़ीसा में अब अपनी सरकार नहीं बना सकती।

मैसूर के मुख्य मन्त्री श्री निजलिंगप्पा ने त्यागपत्र दे दिया है और उनके स्थान पर श्री जेट्टी बहुमत से कांग्रेस दल के नेता चुने गये। यह अभी कहा नहीं जा सकता कि निजलिंगप्पा मन्त्रिमण्डल के त्यागपत्र का वर्तमान शासन पर क्या प्रभाव पड़ेगा पर इतना स्पष्ट है कि कांग्रेस की स्थिति वहां भी डांवाडोल है।

बंगाल सरकार में श्री रे और राय में जो विवाद हुआ वह यद्यपि सम्प्रति दबा हुआ प्रतीत होता है पर बंगाल में और विशेष कर कलकत्ता में साम्यवाद की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर कहा नहीं जा सकता कि राय सरकार में कब क्या परिवर्तन हो जाय क्योंकि बंगाल में कांग्रेस की स्थिति दिन प्रतिदिन खराब ही होती चली जा रही है।

पंजाब में मुख्यमन्त्री कैरों के अपराधों पर कांग्रेस में उच्च सत्ता ने बहुत कुछ पर्दा डाला और प्रतीत होता है कि कैरों निर्दोष प्रमाणित कर दिए जाय पर अनुभवी राजनीतिज्ञों का अनुमान है कि कैरों पंजाब के मुख्य मन्त्री रह नहीं सकेंगे और न वर्तमान मन्त्रि मण्डल ही रहेगा। इसमें भारी परिवर्तन होगा और वह समय शीघ्र आ रहा है।

श्री नेहरू, ढेबर, पंत, श्रीमन्नारायण आदि कांग्रेसी नेताओं का ध्यान इन प्रान्तों की ओर आकृष्ट करके हम कहना चाहते हैं कि वे इन राज्यों में उठ रही बहुमत जनता की आवाजों को पहचान कर कार्य करने का यत्न करें। बहुसंख्यक जनता की बातों की उपेक्षा करके इन राज्यों में कांग्रेस अब अधिक दिनों तक टिक नहीं सकती। अतः कांग्रेस उच्च सत्ता अपना दृष्टिकोण बदले, यही समय की मांग है।

अलीगढ़ विश्व विद्यालय के छात्रों की गुण्डागर्दी

अलीगढ़ विश्वविद्यालय में छात्रों की गुण्डागर्दी की बात अब इतिहास प्रसिद्ध हो चुकी है। आये दिन वहां के छात्र लड़कियों से छेड़खानी करते हैं। अभी हैदराबाद से लगभग १५० लड़कियां वहां परीक्षा देने आई हैं जिन्हें वहां के छात्रों ने परेशान कर रखा है। उन पर छींटाकशी करना, धक्के मार देना, रूमाल छीन लेना, गन्दी बात बोलना आदि तो उनके लिए साधारण बातें हैं। पुलिस की संरक्षण में रहने पर भी वहाँ के उद्दण्ड विद्यार्थी अपनी हरकत से बाज नहीं आते। विश्वविद्यालय के अधिकारी भी वहाँ के छात्रों को दण्ड देकर थक गये हैं। आवश्यक प्रतीत होता है कि अब छात्र ही ऐसे छात्रों के विरुद्ध आन्दोलन करें। हैदराबाद की बहनें भी तो उत्तर प्रदेश के छात्रों की बहनें हैं। भारत के प्रत्येक विश्व विद्यालय के छात्र संघ को चाहिए कि अलीगढ़ विश्व विद्यालय के उद्दण्ड छात्रों की इस गुण्डागर्दी के विरुद्ध वे प्रस्ताव पास करें और एक आन्दोलन करें ताकि वहाँ से सदा के लिए यह कोढ़ समाप्त हो जाय। सभ्य विद्यार्थियों के लिए यह कलंक है एक चुनौती है।

[शेष अगले पृष्ठ पर]

गीता वेदों का निरादर नहीं करती

[श्री कृष्ण स्वरूप विद्यालङ्कार, इस्लामनगर, बदायूं]

★

गीता वेदों का निरादर नहीं करती-यही इस लेख का विषय है जो शीर्षक से ही स्पष्ट है।—स०स०

कुछ विद्वानों का ऐसा कथन है कि गीता वेदों का निरादर करती है। अपने पक्ष की पुष्टि मे वह गीता अ०२ ५५ ५६ श्लोक उद्धृत करते हैं—

त्रैगुण्य विसया वेदाः निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन। निर्द्वन्द्वो नित्य सत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् ॥५५

यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके। तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥५६

वह कहते हैं कि इन दोनों श्लोकों मे वेदों को निर्गुण निर्मित संसार को बनाने वाला कह कर, और ब्रह्मानन्द प्राप्त ब्रह्मज्ञानी के लिये, वेदों को बड़े जलाशय के मुकाबिले मे छोटे जलाशय से उपमा दे कर वेदों की हीनता दिखाई है। इसके साथ २ अ० ११ श्लोक ४८ व ५३ में भी कहा है कि ब्रह्म के विराट् विश्वरूप का दर्शन, वेद, यज्ञाध्ययन, दान आदि से नहीं हो सकता। भक्ति निष्काम कर्मयोग, भगवत्परायणता व समदर्शी होने पर होता है, इत्यादि।" जिस पुस्तक मे वेदों का निरादर हो उसे हम आर्य लोग क्योंकर मान्यता दे सकते है? हमारी आर्य समाज का तीसरा नियम है कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। अतः गीता अमान्य है। मैं इस लेख मे यह दर्शाने का प्रयत्न करूंगा कि उपरिलिखित युक्ति प्रमाण से गीता को अमान्य करना ठीक नहीं है। उक्त आक्षेप के निराकरण के लिये मैं निरुक्त, वेद, मनुस्मृति इनकी महर्षि दयानन्द कृत व्याख्या तथा उपनिषदों के प्रमाण उपस्थित करूंगा कि जिनसे गीता का आशय स्पष्ट होगा और गीता तथा इन ऋषि महर्षियों के सिद्धान्तों की एक वाक्यता व समन्वय होगा। यह सभी ऋषि व वेद इस बात को ऊचे स्वर से पुकार पुकार कर घोषणा करते है कि वेद ज्ञान, वेदार्थ ज्ञान, ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म साक्षात्कार क' उत्तरोत्तर श्रेष्ठता है। केवल वेद ज्ञान की निस्सारता व वेदार्थ युक्त ज्ञान व धर्माचरण की प्रशंसा मे निरुक्त १-१८ के प्रमाण से महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश मे लिखते है कि—

स्थाणुरयं भारहारः किलाभूदधीत्य वेदं न विजानाति योऽर्थम्। योऽर्थज्ञ सकलभद्रमश्नुते नाकमेति ज्ञानविधूत पाप्मा ॥

जो वेद को स्वर और पाठमात्र पढ़ के अर्थ नहीं जानता, वह वृक्ष डाली फल फूल, और [जैसे] अन्य पशु धान्य आदि का भार उठाता है, वैसे भारवाह अर्थात् भार उठाने वाला है, और जो वेद को पढ़ता, और उनका यथावत् अर्थ जानता है वही सम्पूर्ण आनन्द को प्राप्त होके देहान्त के पश्चात् ज्ञान से पापों को छोड़ पवित्र धर्माचरण के प्रताप से सर्वानन्द को प्राप्त होता है।

ऋचोऽक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन्देवा अधिविश्वे निषेदुः। यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते।

ऋग्वेद मंत्र १ सूक्त १६४ मंत्र ३९

जिस व्यापक अविनाशी सर्वोत्कृष्ट परमेश्वर मे सब विद्वान और पृथिवी सूर्य आदि सब लोक स्थित है, कि जिसमें सब वेदों का मुख्य तात्पर्य है उस ब्रह्म को जो नहीं जानता वह ऋग्वेदादि से क्या कुछ सुख को प्राप्त हो सकता है? नहीं नहीं किन्तु जो वेदों को पढ़के धर्मात्मा योगी होकर उस ब्रह्म को जानते है, वे सब परमेश्वर में स्थित हो के मुक्ति रूपी परमानन्द को प्राप्त होते हैं। इसलिए जो कुछ पढ़ना व पढ़ाना हो वह अर्थ ज्ञान सहित चाहिए।

इसी को मनुस्मृति और उसकी व्याख्या सत्यार्थ प्रकाश मे ही देखिए—

वेदा सत्यागश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तमांसिच न विप्र दुष्ट भावस्य सिद्धिं गच्छन्ति कर्हिचित। मनु मंत्र २ ९७

जो दुराचारी अजितेन्द्रिय पुरुष है, उसके वेद, त्याग, यज्ञ, नियम और तप तथा अन्य अच्छे काम कभी सिद्धि को प्राप्त नहीं होते। इसके विरुद्ध—

यस्य वाङ्मनसे शुद्धे सम्यागुप्ते च सर्वदा। सर्वे सर्व मवाप्नोति वेदान्तोपगतं फलम् ॥ मनु मंत्र२. १६०

जिस मनुष्य के वाणी और मन शुद्ध तथा सुरक्षित सदा रहते है वही सब वेदान्त अर्थात् वेदों के सिद्धान्त रूप फल को प्राप्त होता है। इसी तरह—

आचारा द्विच्युतो विप्रो न वेद फल मश्नुते आचारेण नु संयुक्तः संपूर्ण फल भाग्भवेत्। मनु १।१०९

जो धर्माचरण से रहित है वह वेद प्रतिपादित धर्म जन्य सुखरूप फल को प्राप्त नहीं हो सकता, और जो विद्या पढ़ के धर्माचरण करता है वही सम्पूर्ण सुख को प्राप्त होता है। देखो सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ३

उपरोक्त उद्धरणों से निरुक्त, वेद मनु व महर्षि दयानन्द की सम्मति स्पष्ट है कि वेदार्थ ज्ञान बिना वेदाध्ययन व्यर्थ है और आचरणों के बिना वेदार्थ ज्ञान व वेदाध्ययन दोनों ही व्यर्थ हैं।

गीता के जिन श्लोकों पर आक्षेप किया गया है, वह भी केवल "वेद" शब्द का प्रयोग करते हैं। और इन श्लोकों में भी स्वर्ग प्राप्ति की इच्छा से किए जाने वाले कर्मकाण्ड की हीनता और आचरणों का महत्व दिखाया गया है। जिन गुणों को श्लोक ४५ में धारण करने को कहा गया है, वह सब गुण भी आदर्श सन्यासी, महात्मा साधु सन्तों के ब्रह्मज्ञानियों के निष्काम कर्मयोगियों के हैं। यथा हे अर्जुन! तू त्रिगुणातीत (लक्षण देखो गीता अ० १४ २४ से२६ तक) निर्द्वन्द्व=द्वन्द्वातीत (अ०४-२२) जहां तक भी द्वन्द्व सुख दुःख, मानापमान, हर्ष शोक, जय पराजय, हानि लाभ, पुण्य-पाप, के जोड़े हैं उन सब से ऊपर उठ; नित्य सत्व गुण में अथवा आत्मा में स्थित हो. राजस तामस दोष काम क्रोध लोभ मोहादि का त्याग कर, आत्मवान्=जितेन्द्रिय संयमी, योग क्षेम की चिन्ता से रहित हो। यह सब गुण ऊचे ब्रह्मज्ञानियों के हैं इनके बिना वेद, वेदार्थ ज्ञान वास्तव में ही व्यर्थ है।

केवल वेद ज्ञान व यहाँ तक कि ब्रह्मविद्या का ज्ञान भी बिना आत्म साक्षात्कार के आनन्द को जो कि जीवन का परम लक्ष्य है प्राप्त नहीं कराता। इसके लिए छान्दोग्य उपनिषद् की दो गाथाओं को पढ़िए। आरुणी का पुत्र श्वेतकेतु वेदों को पढ़ कर पिता के पास बड़े घमण्ड के साथ अविनय पूर्वक उपस्थित हुआ। पिता ने उसके घमण्ड को चूर करने के लिए पूंछा कि क्या तुम बता सकते हो कि किस एक के जानने से सब कुछ जाना जा सकता है? श्वेतकेतु ने चुपचाप पिता के पांव पकड़ लिये और कहा कि मैंने यह नहीं पढ़ा है। देखो छान्दोग्य अ० ६ खंड १

दूसरी कथा है कि नारद मुनि ने चारों वेद, इतिहास पुराण, सब दर्शन व अन्य भी सब विद्याएं यहां तक कि ब्रह्मविद्या भी पढ़ी परन्तु शोक से नहीं छूटे। यह देवर्षि नारद, सनत्कुमार के पास गए कि मैंने सब वेद व विद्याएं पढ़ी है परन्तु मैं शोक मुक्त नहीं हूं, सनत्कुमार ने कहा कि यह सब विद्याएं तो नाम रूप मात्र हैं यह शोक को दूर नहीं कर सकती। (देखो छान्दोग्य अ० ७ खण्ड १)

नारद जैसा पूर्ण विद्वान् वेद वेदांगों के ज्ञाता भी उपनिषद् कहती कि 'वेदानिमं लोक ममुं च परित्यज्य आत्मानमन्विच्छेत्।' वेदों को और इस लोक तथा परलोक के सब सुखों को छोड़कर परमात्मा की प्राप्ति की इच्छा करे।'

मुण्डक ३ ख० १ मं० ४ में इन आत्म ज्ञानी; ब्रह्म ज्ञानियों मे भी 'क्रियावानेस ब्रह्म विदां वरिष्ठः' क्रियावान् जो कर्म में आचरण वाला है प्रेक्टिकल ट्रेनिंग वाला है, वही वरिष्ठ सबों मे उत्तम कहा गया है। ऋषि मुनियों ने आत्म लाभ, सर्वानन्द, ब्रह्मानन्द प्राप्ति रूप मकान की छत पर पहुंचने के लिए यज्ञ; दान,

[शेष पृष्ठ १४ पर]

श्री सम्पूर्णानन्द जी और वेद

[पिछले पृष्ठ का शेष]

उत्तरप्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री बाबू सम्पूर्णानन्द जी ने २७ अप्रैल को बीकानेर में गीता सम्मेलन में भाषण देते हुए कहा है कि वेदों के अध्ययन के बिना भारतीय संस्कृति का पुनरुद्धार और उसको उसके वास्तविक रूप में समझना भी सम्भव नहीं।

आपने यह भी कहा है कि गीता स्वतः प्रमाण पुस्तक नहीं। गीता की गाथा गाते रहकर वेदों की उपेक्षा करते जाना प्रायः उसी प्रकार है कि दूध की रक्षा तो की जाय और गौ को भुला दिया जाय। वेद से हजारों गीता निकल सकती है किन्तु गीता से वेद की सृष्टि नहीं हो सकती। गीता तो वास्तव में यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के दो मंत्रों की टीकामात्र है।

हम श्रद्धेय बाबू सम्पूर्णानन्द जी के इन विचारों का हृदय से स्वागत और समर्थन करते हैं।

जो लोग गीता अथवा रामायण को ही आर्य धर्म का सर्वस्व मान बैठे हैं और वेदों की निरन्तर उपेक्षा करते आते हैं उनके लिए बाबू जी के यह विचार चेतावनी का काम देंगे

किन्तु साथ ही हम अपने माननीय मुख्य मन्त्री जी से यह अनुरोध करेंगे कि वह उत्तरप्रदेश के सूचना मन्त्री से बातें करके रेडियो पर समय समय पर वेदों के प्रवचनों के प्रसारित करने की व्यवस्था करें। प्रान्त के विश्वविद्यालयों मे वेद-पीठ स्थापित करें। प्रान्त मे वैदिक अनुसन्धान विभाग खोलें और प्रान्तीय मुद्रणालय से वेद संहिताओं का सुन्दर मुद्रण करने की व्यवस्था करें। तब ही यह समझा जा सकेगा कि श्री बाबू सम्पूर्णानन्द जी के हृदय में वेदों के प्रति वास्तविक श्रद्धा है।

कठोपनिषद् कथा ७ (आध्यात्मिक चर्चा)

यह संसार नश्वर है

(सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम० ए० एल० टी० डी० बी० कालेज, गोरखपुर)

यदि मनुष्य सदा मृत्यु का स्मरण रखे तो पाप से बच सकता है—वर्तमान युग के नवयुवक यदि नचिकेता के जीवन से पितृभक्ति व आदेश पालन की सीख ले सकें तो सभी परिवारों में सुख शांति का साम्राज्य स्थापित हो जाय—यही इस आध्यात्मिक लेख का सार है। —सं० स०

वाजश्रवा के पुत्र और नचिकेता के पिता ने सर्वमेध यज्ञ किया। उसने उसमें अच्छी और बुरी सब वस्तुओं का दान किया। नचिकेता ने अन्त में पूछा कि मुझे किसे दे रहे हैं? यह प्रश्न दो तीन बार पूछने के बाद झुंझलाकर पिता ने कहा कि तुझे मृत्यु को समर्पित करता हू। यह सुन कर तथा चलने की तैयारी करते समय पिता की ओर से कुछ अनिच्छा और अपने मन मे भी घर छोड़ने का उसे मोह उत्पन्न हुआ परन्तु नचिकेता ने सोचा कि चाहे बीते हुए समय को देखें चाहे आने वाले समय को देखें यह बात स्पष्ट रूप से मालूम पड़ती कि मनुष्य धान आदि औषधियों के सदृश नष्ट हो जाता है और उसी की तरह फिर भी पैदा होता है यह मृत्यु का स्मरण मनुष्य म अनेक प्रकार की सद्‌भावनाओ का उदय करता है। मरण का निश्चय ज्ञान पर मनुष्य अनेक प्रकार के वीरता, साहस के कार्य करने के अतिरिक्त पापो से बच सकता है। मृत्यु की भयानकता का मुकाबला किया जा सकता है। एक सज्जन ने उनसे पूछा—"महाराज आपका जीवन कितना सीधा सादा कितना निष्पाप है। हमारा जीवन वैसा क्यों नही? आप कभी किसी पर गुस्सा नहीं होते? किसी से लड़ाई झगड़ा नहीं, टंटा बखेड़ा नहीं। कितना शात कितना प्रेम पूर्ण कितना पवित्र है आपका स्वभाव"। एकनाथ ने कहा—"फिलहाल मेरा बात रहने दो। तुम्हारे विषय म मुझे एक बात ज्ञात हुई है। आज से सातवें दिन तुम्हारी मौत आ जायगी"। अब एकनाथ की बात का झूठ कौन मानता? सात दिन म मृत्यु? सिर्फ १६८ घंटे ही बाकी है। हे भगवन् यह क्या अनर्थ? वह मनुष्य जल्दी जल्दी घर भागा। कुछ सूझ नहीं पड़ता था। आखिरी समय का सब कुछ समेट लेने की बातें कर रहा था। अब बीमार हो गया। बिस्तरपर पड़ गया। ६ दिन बीत गए—सातवें दिन एकनाथ उससे मिलने आए। उसने आत्म भाव से नमस्कार किया। एकनाथ ने पूछा—'क्या हाल है? उसने कहा—'बस अब चला'। नाथ जी ने पूछा 'इन छ: दिनो म पाप के कितने विचार तुम्हारे मन में आए? वह आसन्न मरण व्यक्ति बोला—'नाथ जी, पाप के विचार की तो बिल्कुल फुरसत ही नहीं मिली। मौत एक सी आखों के सामने खड़ी रहती है"। नाथ जी ने कहा—मेरा जीवन इतना निष्पाप क्यों है—इसका उत्तर अब मिल गया न? मरणरूपी शेर सदैव सामने खड़ा रहे तो पाप सूझेगा किसे? इसलिए मृत्यु का स्मरण पापों से बचाने में सहायक होता है?

पास्कल नामक एक फ्रेंच दार्शनिक हो गया है। उसकी एक पुस्तक है—'पासे'। पासे का अर्थ है विचार। उसने इस पुस्तक में अनेक विचार दिए हैं। मृत्यु के विषय मे उसने लिखा है "मौत पीछे खड़ी है। परन्तु मनुष्य उसे भुलाना चाहता है। लड़ाई में जाने वाले सैनिक, मरण का ख्याल न आने पावे इसलिए खेलते हैं, नाचते हैं, गाते हैं सिगरेट पीते हैं। पास्कल कहता है कि 'मरण सर्वत्र प्रत्यक्ष दीखते हुए भी यह यमी, वह सिपाही उसे भूलने के लिए खाने पीने में गान तान मे मस्त ही रहेगा। परन्तु मृत्यु तो अनिवार्य है।

जब जीवन की अन्तिम घड़ी आती है तब जीवन का अन्तिम रोकड़ बाकी आत्मा याद आने लगती है। जन्म भर मे क्या क्या किया यह सब ध्यान आने लगता है। वास्तव में हमारा जीवन क्या है यह यदि हम सोचे तो हमे पता लगेगा कि जिस तरह एक व्यापारी प्रतिदिन अपना सम्पूर्ण हिसाब लिखता है महीने के अन्त म उसका सार लिखता है और वर्ष के अन्त मे हजारो तरह के वर्ष भर उखाड़ पछाड़ करने के बाद अन्त मे कुल पाच छ हजार का नफा या १० २० हजार का घाटा हाथ मे दिखलाता है वैसे ही जीवन की भी बात है। जीवन भी प्रति दिन के सस्कारो का सचय है। मरने के समय यदि खाने की वासना हुई तो समझो कि सारी जिन्दगी भर सुस्वादु भोजन करने का ही अभ्यास करते रहे। किसी माता को बेटे की याद आई तो पुत्र सम्बन्धी सस्कार ही बलवान् मानना चाहिये। कसाई की मौत बड़ी भयकर होती है। देखा या नहीं सुना है कि मरते समय वह चाकू, छुरी, बकरा बकता है और चौंकता है क्योंकि उसके जीवन भर के वही तो सस्कार भी होते हैं। इसलिए जीवन का यह अन्तिम सार मधुर होना चाहिये। अन्त की यह घड़ी मधुर हो—इसी दृष्टि से सारे जीवन के उद्योग होने चाहिये। जिसका अन्त मधुर उसका सारा जीवन मधुर। अन्त भला सो सब भला। उस अन्तिम उत्तर पर ध्यान रखकर सवाल हल करनी चाहिये। जब कोई प्रश्न सरल किया जाता है तो उसके उत्तर को ध्यान मे रखकर ही सवाल किया जाता है। अत मरने के समय क्या सस्कार दृढ़ रहें, या उठे—इस इच्छा को जानकर उसके अनुसार ही जीवन का प्रवाह मोड़ना चाहिये। हम चाहिए कि हम इस बात को याद रख कर कि जीवन का सिरा मौत की ओर गया हुआ है अन्तिम क्षण को पुण्यमय, अत्यन्त पावन व मधुर बनाने का प्रयत्न करे आज से ही इस बात का विचार करना चाहिये कि मन पर ऊचे से ऊचे सुन्दर से सुन्दर सस्कार कैसे पड़ें। परन्तु अच्छे सस्कारो के अभ्यास की पद्धा किसे है? अत: चित्त को अच्छे अभ्यासों में लगाना चाहिये तभी अन्त मधुर होगा। ईशोपनिषद् मे कहा है —

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्
ओ३म् क्रतो स्मर क्लिबे स्मर कृतं स्मर

अर्थात् शरीरों मे आने जानेवाला जीव अमर है परन्तु यह शरीर केवल भस्म पर्यन्त है, इसलिए अन्त समय मे [क्रतो] हे जीव ओ३म् का स्मरण कर, निर्बलता दूर करने के लिए प्रभु का स्मरण कर और अपने किए हुए का स्मरण कर। परन्तु यह स्मरण उस समय नहीं हो सकता। इसके लिए तो जीवन भर का सस्कार चाहिए और यह सस्कार उन व्यक्तियो को प्राप्त करना कठिन है जो 'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्' म विश्वास रखते हैं। जो इस शरीर को सदा रहने वाला समझते हैं। यह तो शरीर को क्षणभगुर मानकर कार्य करने वालो से ही हो सकता है। कहते हैं जीवात्मा एक कबूतर के समान है जैसे वह कबूतर यात्रा करता हुआ एक झरोखे से दूसरे झरोखे तक पहुचता है और कमरे से बाहर चला जाता है वैसे ही जीवात्मा की भी बात है। यह मनुष्य शरीर कमरे के समान है। यही कारण है कि हम यह समझना आवश्यक है कि मनुष्य घास आदि की तरह पैदा होता है और नष्ट होता है। जब नष्ट होना ही है तब पापा पापी के साथ सचय क्यों, झूठ क्यों, अन्याय क्यों, सत्य को खोजने में आलस्य क्यों? जिन्होंने इसे समझा वे सन्त हुए, महात्मा हुए, वे विश्व के स्वामी हुए। मरते समय सुकरात ने सत्य का उपदेश दिया, स्वामी दयानन्द ने ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो कहा, स्वामी श्रद्धानन्द ने भारत में पुन उत्पन्न हो देश के दुखी मानवों की सेवा की इच्छा की, रामप्रसाद बिस्मिल ने भारत की स्वतन्त्रता का नारा लगाया और सुमेरसिंह ने हिन्दी की रक्षा की अभिलाषा प्रकट की। यह सब तुच्छ समझ कर मोह को त्याग कर, पिता का वचन पालना चाहिए, यह मान कर तथा जीवन को नश्वर समझ सत्य की प्राप्ति की अभिलाषा से नचिकेता यम के दरवाजे पर पहुँचा और जाकर वहा डट गया। परन्तु यम उस समय घर पर नहीं थे। उनकी स्त्री ने जलादि द्वारा उस अतिथि (जिसके पहुँचने की कोई तिथि नियत न हो) की सेवा करनी चाही। परन्तु नचिकेता ने इस विचार से कि पिता ने मृत्यु के पास भेजा है और मृत्यु वहाँ पर है नहीं, मृत्यु के मिले बिना अन्य कोई काम करने से पिता की आज्ञा पूर्ण न होगी अत तीन दिन तक जब तक आचार्य नहीं आए बिना अन्न जल के उनके मकान पर निवास किया। सबके कहने पर भी पिता की आज्ञा के विरुद्ध करना उसने उचित न समझा। यह है पितृ भक्ति और आदेश पालन। क्या नचिकेता के जीवन से गुरुओं, माताओं एवं पिताओं के आदेश पालन की सीख हम ले सकेंगे? (क्रमश:)

परिचयात्मक लेख

आर्यसमाज के साहित्यकार
पं० शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ

(ले०—श्री प० भवानीलाल भारतीय एम० ए०)

★

आर्यसमाज के प्रारम्भिक काल के जिन साहित्यकारों ने अपनी विद्वत्तापूर्ण कृतियों से आर्य साहित्य के भण्डार की अभिवृद्धि की है उनमें पं० शिवशङ्कर शर्मा काव्यतीर्थ का नाम सर्वप्रमुख है। यह बड़े दुःख की बात है कि आज हम आर्य समाज की नींव के तुल्य इन साहित्यकारों की सरस्वती साधना से अपरिचित होते जा रहे हैं। इन स्वनामधन्य महान् आत्माओं की साहित्यिक कृतियों का ज्ञान प्राप्त करना तो दूर रहा हम उनका स्वल्प परिचय भी नहीं रखते।

प० शिवशङ्कर शर्मा भारत के उस प्रदेश म उत्पन्न हुए थे जो सदा से ही महान् विद्वानो और शास्त्रज्ञो की जन्मभूमि रहा है। मिथिला प्रान्त (बिहार) संस्कृतज्ञ विद्वानो का जन्म देने के लिए सदा से ही प्रसिद्ध रहा है। इसी पुण्यभूमि ने वाचस्पति मिश्र जैसे मूर्धन्य दार्शनिक विद्वान् को जन्म दिया था। इस प्रान्त के दरभंगा जिले के चिहुटा नामक ग्राम म प० शिवशङ्कर जी का जन्म हुआ। इनके गुरु प्रसिद्ध पौराणिक पण्डित और साहित्यकार प० अम्बिकादत्त व्यास थे। प० शिवशङ्कर जी, लिखित 'ओंकार निर्णय' का जो नवीन संस्करण गोविन्दराम हासानन्द ने प्रकाशित कराया है उसमें ग्रन्थारम्भ से पूर्व स्वामी अभेदानन्द जी महाराज प्रधान सार्वदेशिक सभा और स्व० स्वामी वेदानन्द जी महाराज ने प० शिवशङ्कर जी की जीवनी लिखते समय यह लिखा है कि प० अम्बिकादत्त व्यास पौराणिक होते हुए भी स्वामी दयानन्द के प्रच्छन्न भक्त थे और उन्होंने ही शिवशङ्कर जी के मन म स्वामी दयानन्द के प्रति भक्ति उत्पन्न की। मैं उपर्युक्त तथ्य को स्वीकार करने म अपने को असमर्थ पाता हूँ। काशी निवासी प० अम्बिकादत्त व्यास ने स्वामी जी के सिद्धान्तो के विरुद्ध बहुत कुछ कहा और लिखा है। ऋषि कृत 'संस्कृत वाक्य प्रबोध' की कुछ मुद्रण विषयक त्रुटियो की आड़ म उन्होंने उसका 'अबोध निवारण' नामक पुस्तक लिखकर खण्डन प्रकाशित कराया। इन तथ्यो को ध्यान में रखते हुये इस बात से सहमत होना कठिन है कि प० अम्बिकादत्त कभी स्वामी जी के प्रशंसक रहे होंगे और उन्होंने अपने शिष्य शिवशङ्कर के हृदय में भी उनके प्रति श्रद्धा भावों का सूत्र पात किया होगा। अस्तु।

कुछ भी हो स्वामी दयानन्द जी के सिद्धान्तों के प्रति शिवशङ्कर जी के हृदय में श्रद्धापूर्ण भाव उत्पन्न हुवे और उन्होंने शीघ्र ही दयानन्द वाङ्मय का अध्ययन कर अपने आपको वेदों के स्वाध्याय में लगा दिया इस प्रकार सर्व शास्त्र निष्णात होकर पण्डित जी एक कट्टर आर्य समाजी और आर्योपदेशक के रूप में लोगो के समक्ष आये मिथिला जैसे पुरातन पंथी, पौराणिक गढ़ म प० शिवशङ्कर जी का विरोध होना स्वाभाविक ही था। अत उन्होंने बिहार को अपना कार्य क्षेत्र बनाया। १८९८ से १९०० तक पण्डित जी ने रांची में निवास किया। यहाँ के आर्य नेता बाबू बालकृष्ण सहाय के सहयोग से वे वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न हुये। यहाँ रह कर उन्होंने आर्यावर्त पत्र में सिद्धान्त सम्बन्धी अनेक लेख लिखे।

बिहार से चल कर पण्डित जी ने अजमेर में १९०३ से १९०६ तक निवास किया। यहाँ परोपकारिणी सभा के तत्वावधान में राजस्थान, मध्यभारत गुजरात में प्रचार किया छान्दोग्य तथा बृहदारण्य उपनिषदों पर बृहद् भाष्य रचना की। ये उपनिषद् भाष्य पण्डित जी की अपूर्व विद्वत्ता और उनकी शास्त्रज्ञता के ज्वलन्त प्रमाण हैं। आकार की दृष्टि से शाङ्कर भाष्य के अनन्तर इतने विस्तृत भाष्य और किसी ने नहीं लिखे।

अजमेर से १९०६ की अगस्त में पण्डित जी पंजाब चले गये और वहाँ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तर्गत उपदेशक का कार्य करने लगे। इसी काल में उन्होंने निर्णय अपने प्रसिद्ध सैद्धान्तिक ग्रन्थ लिखे जिनके कारण उनकी प्रसिद्धि आर्य जगत् म सर्वत्र फैल गई। सिद्धान्त ग्रन्थो के अतिरिक्त उन्होंने ऋग्वेद के उस अवशिष्ट भाग का भाष्य किया जो स्वामी दयानन्द के असामयिक अवसान के कारण शेष रह गया था।

ग्रन्थ रचना के साथ साथ प० शिवशङ्कर जी शास्त्रार्थों म भी भाग लेते थे। वह युग शास्त्रार्थों का युग था, जबकि पौराणिक पण्डित अपनी मृतप्राय व्यवस्था का पुनरुज्जीवित करने के प्रयास म आर्य विद्वानो को बड़ाकड़ा शास्त्रार्थों के लिए आहूत करते रहते थे। पण्डित जी ने एक ऐसे ही शास्त्रार्थ का उल्लेख अपने वैदिक इतिहासार्थ निर्णय की भूमिका में किया है, जिसमें एक धूर्त पौराणिक ने यजुर्वेदीय ३०।१५ मन्त्र में 'आखु वाहन गजननाय' इतना अंश अपनी ओर से मिलाकर वेद से मूर्तिपूजा सिद्ध करने का असफल प्रयत्न किया था।

> आर्यसमाज के महान लेखक
> स्व० श्री प० शिवशङ्कर शर्मा ने
> साहित्यों द्वारा किस प्रकार आर्य
> समाज की सेवा की है—यह भार
> तीय जी के शब्दों में पढ़िए—स स

कुछ काल के लिए महात्मा मुंशी राम जी के आग्रह पर आपने गुरुकुल कांगड़ी म वेदोपाध्याय के पद पर भी कार्य किया था। भाद्र १९६६ वि० का Vedic Magazine में हम पढ़ते हैं।

The College staff consists of the following Professors.

(1)Mahashaya Ramadeva B A acting Acharya and Professor of English Literature

(2) Pandit Shiva Shanker Kavya Tirtha Professor of Vedic Literature

उस समय कांगड़ी में अच्छे २ अध्यापक कार्य करते थे। प० काशीनाथ जी शास्त्री संस्कृत के अध्यापक थे। प० बालकृष्ण इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान योगी श्री सिद्धराम जी गणित के और आज के आर्य नेता श्री घनश्याम सिंह गुप्त जी विज्ञान के अध्यापक थे।

जिन ग्रन्थों के कारण पण्डित शिवशङ्कर जी की ख्याति सर्वत्र प्रसिद्ध हुई वे निम्नलिखित हैं—

(१) ओंकार निर्णय-यह सर्वप्रथम १९०६ ई० म प्रकाशित हुआ। इसम वेद, ब्राह्मण उपनिषद्, आदि आर्ष ग्रन्थो के आधार पर ओंकार की महिमा का वर्णन किया गया है। पुराणों और तन्त्रो में भी ओ३म् का उतना ही महत्व दिया गया है जितना वैदिक ग्रन्थो म। वैदिक अनुसंधान की दृष्टि स इस ग्रन्थ का अपना महत्व है।

(२) जाति निर्णय यह ग्रन्थ भी शास्त्रीय आधार पर वर्ण व्यवस्था का अनुशीलन उपस्थित करता है। पण्डित जी ने अपने ग्रन्थो की रचना म ऐतिहासिक अनुसंधान वृत्ति को सर्वत्र स्वीकार किया। अनेक वैदिक और पौराणिक प्रमाणो के आधार पर यह सिद्ध किया गया है कि वर्ण व्यवस्था गुण कर्म पर आधारित है जन्म पर नहीं।

(३) श्राद्ध निर्णय यह पुस्तक भी पण्डित जी की मौलिक सूझ और [illegible] परिचायक है। श्राद्ध के विषय में जो वैदिक मन्त्र पौराणिक प्रमाणों के द्वारा प्रमाण रूप में प्रस्तुत किये जाते हैं उन सबका विवेचन करने के पश्चात् पण्डित जी ने यह सिद्ध कर दिया है कि मृतक श्राद्ध के विषय में वेद और वैदिक साहित्य सर्वथा मौन है।

(४) त्रिदेव निर्णय-यह पुस्तक भी पण्डित जी की एक प्रसिद्ध कृति है। १९१२ ई० में इसका द्वितीय संस्करण पंजाब प्रतिनिधि सभा के द्वारा प्रकाशित हुआ। इसकी भूमिका में लेखक ने अपने संस्कृत गुरुओं प० अम्बिका दत्त व्यास, राममिश्र शास्त्री, गंगाधर शास्त्री आदि की चर्चा की है और यह भी बतलाया है कि उनका स्वामी दयानन्द और उनकी विचार धारा से किस प्रकार परिचय हुआ। त्रिदेव निर्णय एक 'ब्रह्म प्रधान' रचना है, जिसमें शिव, विष्णु और ब्रह्मा की देवत्रयी का शास्त्रीय विवेचन है। लेखक के मतानुसार शिव आदि जिन तीन देवों की विशद कल्पना पौराणिक युग में हुई है उनका मूल वेद म आलंकारिक रूप से विद्यमान है। देवों के परिवार और उनसे सम्बन्धित अन्यान्य बातों की संगति लगाने के लिए लेखक को अनेक कल्पनाओं का सहारा भी लेना पड़ा है।

(५) वैदिक इतिहासार्थ निर्णय इसका प्रथम भाग १९०१ के लगभग तैयार हुआ। [illegible] संज्ञाओं के कारण वेदों में इतिहास विषयक विविध कल्पनायें पाश्चात्य और एतद्देशीय विद्वानों ने की हैं उनकी मान्यताओं का खण्डन करने के लिए यह ग्रन्थ लिखा गया है। इसम शुनःशेप और नरमेध कूपपतित त्रित ऋषि च्यवन को यौवन दान, दधीचि की अस्थियों से वृत्र का हनन आदि प्रसिद्ध पौराणिक गाथाओं को वेदों म दर्शाने करने वालों के आक्षेपों का समाधान किया गया है। इसी प्रकार घोषा रोमशा लोपामुद्रा, यम यमी संवाद, उर्वशी पुरुरवा विषयक आख्यायिकाओं की भी यौगिक दृष्टि से संगति लगाकर वेदो पर लगाये जाने वाले अनित्य इतिहास के आरोपो का निराकरण किया गया है। शिवशङ्कर जी ने इस प्रसंग म कहीं २ महर्षि यास्क और उनके निरुक्त की भी आलोचना की है।

कुछ भी हो यह तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि शिवशङ्कर जी आर्य समाज के महान लेखक थे। उनके ग्रन्थ आदि पुनर्मुद्रण की प्रतीक्षा कर रहे हैं। क्या आर्य प्रकाशक इस ओर ध्यान देंगे ?

★

शास्त्रीय विवाद

हिन्दू शब्द पर दिए गये तर्क और उनका खण्डन

[श्री राम एकबाल वर्मा, चतुर्भुज बरांव(शाहाबाद) विहार]

विवादास्पद 'हिन्दू' शब्द पर खोज करके दिये गये पक्ष-विपक्ष के तर्क आर्य विद्वानों के सम्मुख यहाँ हम विचारार्थ प्रस्तुत करते हैं।—स०सं०

यद्यपि हिन्दू शब्द 'आर्य भाषा' (हिन्दी) का शब्द नहीं है, तथापि इसको सिद्ध करने के लिए हमारे पौराणिक भाइयों के तरफ से अनेकों युक्ति और तर्क दिए जाते है। मैं यहां पर पाठकों के विचारार्थ कुछ तर्कों के रूप लिख रहा हूं। आशा है पाठक गण सत्यासत्य का विचार करेंगे। तर्क ये हैं—

(१) पं० श्री दामोदर सातवलेकर जी ने लिखा है 'हिंसया दूयते यस्मात् हिन्दुरित्यभिधीयते' अर्थात्-हिंसा से जिसे दुःख होता है, वह 'हिन्दू' कहलाता है। प्रस्तुत वाक्य कुलार्णवतन्त्र के हैं।

(२) हिं कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाऽभ्यागात्। दुहामश्विभ्यां पयोऽघ्न्येयं सा वर्धतां महते सौभगाय ॥ ऋ० १।१६४।२७

अर्थ—सब धनों की स्वामिनी, अपने बछड़े को दूध पिलाने की इच्छा करती हुई, हुंकार करती हुई आ रही है। यह गौ अवध्य है, अश्विदेवों के लिए यह गौ दूध देवे तथा बड़े सौभाग्य के लिए इसकी वृद्धि हो। इसमें—

हिं कृण्वती —हिंकार करने वाली पुष्ट गौ।

दुहाम् पयः—दुहकर देवे बहुत दूध को।

इन पदों के प्राथमिक दो अक्षर 'हिं'='दु' है। जिससे 'हिन्दू' शब्द बना है।

(३) 'हिंसा दुष्या, दुर्जनो...... स वै हिंदुरितिस्मृतः।

अर्थात—[१] हिंसा का निन्दा करने वाला [२] हिंसा से दुर्जनों को दूर करने वाला [३] स्वय अहिंसा का व्रत पालन करने वाला। [४] सर्व प्रकार से जो हिंसा से दूर है, वह 'हिन्दू' है। सारांश-'हिं' हिंसा से। दू-दूर जो हो। ऐसा अर्थ समझना चाहिए।

(यह उक्ति-शंकर रामचन्द्र गोड़बोले, पूना की है।)

(४) पंचजनों में मुख्य ब्राह्मण है। और ब्राह्मण का राजा 'इन्दु' है। जो 'इन्दु' के उपासक या भक्त होते है उनको 'इन्दु' कहते है। 'इन्दु' से ही 'हिन्दू' बना है।

(५) भारतवर्ष का नाम 'इन्द्रद्वीप' था; इसका अपभ्रंश इस प्रकार से है इन्द्रद्वीप=इन्ददीय= इन्दीय=हिंदीय= हिंदी और अन्त में 'हिन्दू' हुआ।

(६) सिन्धु नदी जिस देश में बहती है, उस देश का नाम 'सिन्धु देश है, उस देश के लोगों का नाम 'सिन्धुजनाः' 'सिन्धुवः' है सिन्धु से ही 'हिन्दू' बना है।

(७) आसिन्धु सिन्धु पर्यन्ता......स वै हिन्दुरिति स्मृतः। अर्थात्.....सिन्धु पर्यन्त हिन्दुस्तान देश को जो अपनी पितृभूमि और पुण्यभूमि मानता है, वह 'हिन्दू' है।

(यह वीर सावरकर जी की व्याख्या है)

(८) अमेरिका निवासी प्रो०शंकर ल० गोखले ने लिखा है—

"जो सब धर्मों को समान मानता है, वह हिन्दू है।

इस प्रकार से अनेक विचार दिए जाते हैं। परन्तु, मैं इन विचारों को खण्डन करने के पहले यही सिद्ध करना चाहता हूं कि 'हिन्दू' हमारा नाम ही नहीं है और न यह हमारे यहां का शब्द है। 'हिन्दू' शब्द फारसी का शब्द है। उन भाषाओं में 'हिन्दू' शब्द का अर्थ आप देखें—

फारसी के एक कवि ने लिखा है—

(१) अगरआं तुर्के शीराजो बदस्त आरद दिलेमरा। बखाले हिन्दू अश बख्शम समर कन्दो बुखारा ॥

अर्थात्—अगर शीराज का वह तुर्क जो मेरे दिल अर्थात् प्रेयसी को हाथ में लावे तो मैं उसके 'हिन्दू' (काले) खाल पर समरकन्द बोखारा को बख्श दूं।

(२) दो हिन्दुये अज़ पस संग सर बराबर दंद। (गुलिस्ताँ)

अर्थात्—दो हिन्दू (डाकू) एक पत्थर के पीछे से निकले। यहां पर प्रथम में 'हिन्दू' शब्द 'काला' के अर्थ मे आया है तो दूसरा में 'डाकू' के अर्थ में।

इस प्रकार से 'हिंदू' शब्द का अर्थ अरबी, फारसी में-चोर, डाकू, काला, काफिर, गुलाम इत्यादि किया है।

इससे स्पष्ट पता लगता है कि इस प्रकार के घृणित शब्द हमारे लिए कभी भी नहीं आया होगा। नहीं तो 'हिंदू' शब्द वेदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों, उपनिषदों, शिक्षा, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द निरुक्त, वेदांगों, षट् दर्शनों (शास्त्रों) स्मृतियों, रामायण, महाभारत, अमर कोष, रघुवंश, शकुन्तलादि नाटकों मे अवश्य आया होता।

अब आप उपयुक्त दिए गये तर्कों का खण्डन सुनें और उस पर पक्षपात रहित होकर सोचें। मैं क्रम संख्या के अनुसार तर्कों पर विचार करूंगा।

(१) हिंसा से जिसे दुःख हो, वह 'हिन्दू' है। अब सोचना यह कि जब 'हिंदू' का अर्थ ही काला, काफिर, चोर, डाकू है, तो फिर उसे दूसरों की हिंसा से दुःख कहाँ ? दुःख तो आर्य जनों (श्रेष्ठ पुरुषों) को ही हो सकता है।

(२) जब, 'हिंकृण्वती' और 'दुहाम् शब्द के प्रथम अक्षर से ही 'हिन्दू' शब्द बना है तो सम्पूर्ण श्लोक का क्या अर्थ हो सकता है ? पूरे श्लोक देने का तात्पर्य ही क्या रहा ? यह तो ऐसा ही है—जैसे, "कहीं के ईंट और कहीं के रोड़ा।" यह कहना तो एक थोथी दलील मात्र है।

(३) 'हिं'=हिंसा से।

'दू'=जो दूर रहता हो।

यह अर्थ मनगढंत है। ऐसे तो इस प्रकार से भी अर्थ किया जा सकता है—'हिं'=हिंसा जो।

'दू'=दूसरों का करता है।

अर्थात—जो दूसरों की हिंसा करता है, वह 'हिन्दू' है। पर, यह सब अपने मन का गड़बड़ अर्थ होगा।

(४) 'इन्दु' से ही जब 'हिन्दु' शब्द बना है, तो आज हम फिर 'इन्दु' को 'इन्दु' ही क्यों कहते है ? क्या है उत्तर ?

(५) 'इन्द्रद्वीप' शब्द को घिसटते घिसटते इस प्रकार से 'हिन्दू' बना दिया गया है कि वर्तमान समय मे 'हिन्दू' शब्द से 'इन्द्रद्वीप' मूल शब्द पकड़ा ही नहीं जा सकता है। क्या कमाल है कि शाखा को देखकर मूल का पता न लगे ? यह तो ढकोसला मात्र ही हो सकता है ?

(६) 'सिन्धु' से 'हिन्दू' का बनना तो ऐसा लगता है, जैसा कि 'इन्दु' से 'हिन्दु'। देखिए आज भी हम 'सिन्धु' और 'हिन्दू' पृथक्-पृथक् व्यवहार करते है। क्या मजाक है ?

(७) जब भारत को ही अपनी पुण्य भूमि मानने वाला 'हिन्दू' है तो फिर भी तो अफगानिस्तान, जावा, सुमात्रा आदि स्थान के मूल हिंदू धर्मीय लोग छूट ही जाते ? स्थान विशेष से सम्बन्ध कैसा ?

(८) सब धर्मों को मानने वाला ही 'हिन्दू' नहीं ? चूंकि वर्तमान समय में भी हिन्दू सब धर्मों को समान नहीं समझते। अजब है उपाय ?

अब प्रश्न उठता है कि तब हमारा नाम है क्या ? इसका उत्तर है 'आर्य'

प्रश्न—आर्य शब्द का अर्थ क्या होगा ?

उत्तर—मान्य, उदार, विनम्र, शान्त चित्त, न्याय पंथावली प्रकृताचार, शील श्रेष्ठ इत्यादि-इत्यादि। देखो किसी ने आंग्ल भाषा में लिखा है—

An Arya is a hero, devoted to the fulfil ment of high ideals and stranuous duty.

अर्थात् आर्य विशिष्ट शक्तियों का पुंज है। जो उच्च आदर्शों तथा कठोरतम कर्तव्यों की पूर्णता के लिए अपने जीवन को समर्पित कर देता है।

अब मैं सभी प्रकार के वाद विवादों को समाप्त करते हुए यह स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं कि जो हमारा नाम 'आर्य' न कहकर हिन्दू या Indian कहता है, वह लोगों में भ्रम फैला रहा है। मैं तो तुलसीकृत रामायण में भी 'हिन्दू' शब्द दिखाने वालों को इनाम देने के लिए तैयार हूं। अगर कोई सज्जन चाहें तो दिखलाने के लिए मुझे सूचित करें और मैं रामायण मे ही 'आर्य' शब्द दिखलाऊंगा।

क्या भगवान पैसे का गुलाम है? क्या वह पैसे के बल पर प्राप्त किया जा सकता है? पत्थर की पूजा पहले होना चाहिए या एक गरीब, असहाय मौत से लड़ते हुए बच्चे की सेवा? जड़ पत्थर को भुलाना सच्चा धर्म है या जिन्दगी की आखिरी सांस लेते हुए एक बालक को बचाना? इन प्रश्नों का उत्तर इस कहानी में पढ़िए।—स० सं०

कहानी—

'आत्मवंचना'

श्री महेन्द्र गोयल 'गम्भीर' ६८/१०३ रंगसाजान, सदर बाजार मेरठ कैण्ट]

★

'सुरेन ! ओ बेटा सुरेन !' साहनराय ने अपने बेटे को पुकारते हुए कहा।

'क्यों पिता जी ?'

'भाई इस कुम्भ के मेले में मेरे जाने का प्रबन्ध तो कर दे। यदि न गया तो मेरा जीना भी व्यर्थ होगा।'

'पिता जी ! हिन्दुस्तान भर में जितने भी तीर्थ स्थान हैं उन सभी की तो आप यात्रा कर चुके हैं। आखिर हर जगह भगवान तो एक ही है न ?'

'लेकिन तीर्थ स्थान तो भिन्न हैं न ?'

'तीर्थ स्थान भिन्न भिन्न भले ही हों, लेकिन भगवान तो भिन्न नहीं हैं न ? यदि आप कुम्भ के मेले में न भी जायेंगे तो भगवान आपसे रूठ थोड़े ही जाने वाले हैं।'

'नहीं, नहीं जब लाखों की संख्या में मनुष्य यात्रा के लिए प्रस्थान कर रहे हैं तब मेरा घर पर बैठा रहना उचित नहीं, समझे। जब उनका ही दिया हुआ धन है, समय है और मुंह मांगा अवसर घर बैठे ही प्राप्त हो रहा है तो भला कैसे उसे खो दूं। मैं तो जाऊंगा ही, मेरे जाने का प्रबन्ध कर दे।' कह कर साहनराय मुंह फेरते हुए अन्दर चले गए।

साहनराय एक धनी एवं धार्मिक मिल मालिक थे। वे बार बार यात्रा करने निकल पड़ते और बहुत सा धन पानी की तरह बहा देते थे। सुरेन मन ही मन अपने पिता की इस अन्ध भक्ति को देखकर कुढ़ता। फिर भी बुजुर्ग के नाते वह अपने पिता की आज्ञा का पालन करता। इस समय भी वह अपनी इच्छा के विरुद्ध प्रबन्ध करने की तैयारियां करने लगा। साहनराय ने अपने साथ पांच हजार रुपए लिए। यह देखकर सुरेन तो हैरान हो गया।

'पिता जी इतने सारे पैसे साथ लेकर क्या करेंगे ?'

'बेटा ! पुण्य तीर्थ जाकर यदि कुछ दान भी न किया जाये तो फिर पुण्य प्राप्ति भला कैसे हो ? जब भगवान ने दिया धन पास है तो फिर व्यय क्यों न किया जाय ?'

सुरेन की आंखें चमक उठीं 'धन पास है फिर व्यय क्यों न हो।' धनी मनुष्य के लिए अपना धन व्यय करने के लिए अन्य रास्ता नहीं है क्या ? क्या इस धन का कोई उचित उपयोग नहीं है ? पत्थर की मूर्ति को देव समझ कर उसकी पूजा करना। तीर्थ यात्रा और ढोंग रचाकर अपना कल्याण करना और उसके द्वारा मोक्ष की प्राप्ति करना, लेकिन लेकिन ये सब चीजें बिना पैसे के क्या प्राप्त हो ही नहीं सकती ? पैसा पास हो तभी प्रभु के दर्शन होते हैं क्या ? क्या ईश्वर पैसे के भूखे हैं ? छी मानव धर्म की यह कैसी करुण आहुति ?' और सुरेन का मन आवेग में दौड़ती गाड़ी की भांति भटके खाने लगा।

प्रति बारह वर्ष के बाद होने वाले कुम्भ के मेले में आज भीड़ अधिक है। हरि कीर्तन के साथ नाचती कूदती साधु सन्तों की टोलियां जगह जगह पर नजर आ रही हैं। बहुत दूर दूर तक लोग बनजारों की भांति पड़ाव डाले हुए हैं। त्रिवेणी के संगम पर पैर रखने तक की भी जगह नहीं है। वैष्णव, भक्त, गरीबों और धनी आदमियों का आज यहां पर मानव मेला लगा हुआ है। लोग पक्षियों के झुण्डों की तरह आते हैं और चले जाते हैं। संगम में स्नान करते हैं और मानो उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति हुई हो इतना आनन्द मनाते हुए वे प्रसन्न चित अपने घर वापिस लौट जाते हैं।

सुरेन ने भी यह कुम्भ का मेला देखा।

'यह कुम्भ मेला ?'

पौराणिकों के अनुसार 'जब से यहां इस स्थान पर अमृत कुम्भ में से अमृत का एक बिन्दु गिरा है तब से यह जगह पवित्र मानी जाती है। और यहां पर दर्शनार्थ जो लोग भी आते हैं उनका जीवन धन्य हो जाता है।' कितनी अन्ध श्रद्धा ?' इस तरह मन ही मन में सोचकर सुरेन इन अल्पजीवी पामर मनुष्यों के पागलपन पर हंसने लगा।

'सुरेन ! चलो हम भी त्रिवेणी स्नान करने चलें।'

'नहीं नहीं ऐसा कड़ाके की सर्दी में स्नान करने चलूं तो मुझे जीते ही नर्क के दर्शन करने पड़ेंगे पिता जी !'

'बिना कष्ट सहन किए मोक्ष प्राप्ति थोड़े ही होती है ?'

'जान बूझ कर कष्ट सहन करने से कभी भी भगवान के दर्शन नहीं होते हैं।'

'तू तो नास्तिक है, नास्तिक तुम लोगों से बात करना अपना सिर दुखाना है।'

'हॉ, हॉ, मैं नास्तिक और आप ! चूंकि मन्दिर में जाकर पत्थर की पूजा करते हैं, पैसा दान में देते हैं, प्रसाद बांटते हैं, भगवान के लिए गहने बनवाते हैं, आरती गान करते हैं इसलिए आप ठहरे आस्तिक, क्यों है न पिता जी ? मानव धर्म की सेवा करने से न कि पत्थर की पूजा करने से मानव अपने आपको आस्तिक कहलवा सकता है पिता जी।

साहनराय ने सुरेन को आधुनिक युग का पढ़ा लिखा नास्तिक समझकर बिना कोई उत्तर दिये अपना देह शुद्धि करने के लिए त्रिवेणी संगम की ओर चल पड़े और साथ ही साथ वे अपने बेटे की दिलाई बी० ए० की शिक्षा पर अफसोस करने लगे। अन्त में स्नान करके वापिस लौटते समय उन्होंने भगवान के मन्दिर के प्रवेश द्वार के आगे झोली फैलाये बैठे सहस्रों हृष्ट पुष्ट भिखमंगों को मुंह मांगा दान दिया, पण्डों को उनकी इच्छानुसार दक्षिणा दी और दो हजार रुपए मन्दिर में दान रूप में दे दिए।

'अब यदि मौत भी आ जाय तो भी कोई चिन्ता की बात नहीं' और प्रफुल्लित होकर वे कुम्भ के मेले से वापिस घर लौटे।

\+ + +

एक दिन आधी रात को पड़ौस में रहने वाले वृद्ध दीनदयाल ने आकर जब इस हवेली के द्वार खटखटाये तब सोहनराय के दिल की धड़कनें अति तीव्र गति से बढ़ गयीं।

'कौन ?'

'मैं हूं दीनदयाल सेठ जी दरवाजा खोलो।'

'इस समय ? इतनी रात गए ...? किस लिए ?' सोहनराय ने खिड़की खोलते हुए पूछा।

'सोहनराय ! मेरे पांच पांच बेटे मौत के शिकार हो गए यह आखिरी बेटा भी आज जान की तैयारी.. कृपा करके मुझे थोड़ा सा रुपया कर्ज दे दीजिए ताकि मैं उसके लिए दवादारू का इन्तजाम कर सकूं मैं अपनी चमड़ी के जूते बनवा कर .. जूते सेठ जी '

'नहीं नहीं तुम्हारे घर में रखा ही क्या है ? मेरे पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं '

'आप जैसे धनी आदमी के पास पैसे न हों यह नामुमकिन बात है। ईश्वर को सामने रखकर मेरे इकलौते बेटे की, जो मेरा एक मात्र सहारा है, खातिर थोड़ी सी मदद कीजिए जिन्दगी भर मैं आपका एहसान कभी न भूलूंगा सेठ जी।'

'नहीं भाई...नहीं आज तक न जाने कितने रुपये तुम्हें दिए होंगे

(शेष अगले पृष्ठ पर)

विवेक-वाटिका

जो दूसरों का ख्याल नहीं करता वह चोर है। —गीता

ऐ निर्दयी। गरीब को न सता। गरीब रो देगा। सुनेगा मालिक तो जड़ से खो देगा। - स्वामी दयानन्द

निर्धन वह नहीं जिसके पास कम है परन्तु वह है जिसकी आवश्यकतायें अधिक हैं। —विशप विल्सन

प्रत्येक मनुष्य की बात सुनो पर अपना कम सुनाओ प्रत्येक मनुष्य के द्वारा अपना प्रतिवाद सुनो पर अपना निर्णय प्रगट मत करो। —शेक्सपीयर

धन से हीन हीन नहीं, परन्तु जो विद्या से हीन है, वह सब बातों से हीन है। —चाणक्य

दुश्चरित्र आदमी से मित्रता न करो न जान पहचान। गरम कोयला हाथ जलाता है ठण्डा हाथ काले करता है। —हितोपदेश

अच्छी बातें जहां भी मिलें वहां से ग्रहण करना चाहिए और अपनी बुराइयों को बिना किसी पक्षपात के छोड़ देना चाहिए। —लाला लाजपतराय

मानवता की सेवा में मैं ईश्वर दर्शन करता हूं। —महात्मा गांधी

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति का मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय के सूल।।" —भारतेन्दु

भजन और माला को मन्दिर के एक कोने में छोड़ दो। भगवान वहां रहता है जहां किसान अपनी सख्त जमीन पर हल चलाता है और सड़क बनाने वाला मजदूर पत्थर तोड़ता है। —रवीन्द्रनाथ टैगोर

राजेन्द्र प्रकाश, हसनपुर
(मुरादाबाद)

कहानी....

(पिछले पृष्ठ का शेष)

'लेकिन तुमने अभी तक एक पाई वापिस करने का नाम तक नहीं लिया ....और इस समय मुझे भी तो पैसे की सख्त जरूरत है... एक मन्दिर जो बनवाना है।....

'सेठ जी ? आपकी मनकामना ईश्वर पूरी करे.... ...हम गरीब लोग आपको दुआ देते रहेंगे .बुजुर्ग ...माई बाप। बालक को मौत के मुंह से बचा लो।'

'मैं भला बचाने वाला कौन होता हूं, दीनदयाल ? ईश्वर का स्मरण करो वही तुम्हारी मदद करेगा.. ....

'ईश्वर का स्मरण ? सेठ जी, इस समय ईश्वर का स्मरण करने की कोई आवश्यकता नहीं, इस समय तो पैसे की सख्त जरूरत है। उसका जीवन दीप बुझने की तैयारी कर रहा है।'

'तो शीघ्र ही कुछ पुण्य दान कर डाल..... बेचारे की दुर्गति तो न होगी। और मैंने बेकार लोगों के लिए पैसे थोड़े ही इकट्ठे किए हैं ? क्या समझे दीनदयाल, तुम्हें देने के बजाय ब्राह्मणों को दान करूं तो मेरी सद्गति तो हो। नौकरी कर . नौकरी . . जा यहाँ से......

'इस बुढ़ापे में मुझे भला कौन नौकरी देगा ? आंखों से दिखता नहीं....। सेठ जी एक मर्तबा और मेरी मदद कीजिए.......आपके पांव पड़ता हूं....हाथ जोड़ता हूं।'

'नहीं नहीं....नहीं।'

और जोर से हवेली के द्वार बन्द हो गए। इतने में पिछली सीढ़ी से सुरेन को नीचे उतरते देख मोहनराय वहीं पर ही खड़े रह गये।

'पिता जी।'

'क्या सुरेन ! तू अभी तक सोया नहीं ?'

'हां- मुझे नींद नहीं आती, लेकिन पिता जी अभी अभी आप किससे बातचीत कर रहे थे ?'

'वही, अपना पड़ोसी दीनदयाल था....उसका लड़का मृत्यु शैया पर पड़ा है इसलिए मदद मांगने आया था।'

'आपने मदद की ?'

'नहीं.. उसे पैसा दूं तो फिर मैं अपना मन्दिर कैसे बनवा सकता हूं ? घर और आंगन में मन्दिर हो तो सुख और चैन के साथ ईश्वर भक्ति भी तो कर सकूं।'

'पिता जी ! यह आपको क्या पागलपन सूझा है ? इतने तीर्थ स्थानों की दूर दूर की यात्रायें कीं, बहुत सा धन पानी की तरह बहा दिया और अब घर आंगन में मन्दिर बनवाने की इच्छा रखते हैं। मैं पूछता हूं कि यह काम करने से भगवान के दर्शन हो जायेंगे क्या ? पास पैसे हैं इसलिए आप घर आंगन में मन्दिर बनवाने के स्वप्न देख रहे हैं और उस बेचारे मुहताज गरीब को पैसों के लिए आपके पैरों में पड़ना पड़ा, गिड़गिड़ाना पड़ा। पिता जी पत्थर की पूजा प्रथम होनी चाहिए या उस बेहाल मुहताज गरीब बच्चे की सेवा प्रथम होनी चाहिए ? सच्चा धर्म कौन सा है ? जड़ पत्थर को झुलाने में या चिल्लाते हुए...... .आखिरी सांस लेते बालक को बचाने में ? पिता जी ! .. ...पिता जी ! ईश्वर के साक्षात दर्शन तो आपको इस बालक में होंगे। पत्थर की पूजा करते करते आप भी पत्थर दिल न बनिये। पिता जी झूठे दम्भ और आडम्बर से अपनी आत्मा को क्यों धोखा दे रहे हैं ?'

'लेकिन मैंने उसे कितने ही पैसे दिये होंगे आज तक एक पैसा भी लौटाया ?'

आपने आज दिन तक जितने पैसे भगवान को चढ़ाये उनमें से भला कितने पैसे आपको वापिस लौटाये गए, यह भी मुझे बतायेंगे पिता जी ?'

'बेटा तुम्हें भगवान की अपेक्षा धन अधिक प्यारा लगता है क्यों ?'

'भगवान से मुझे अधिक प्रेम है, परन्तु इस पत्थर से नहीं और यह पैसे द्वारा ही तो सब कुछ हो सकता है, आप भी पैसे द्वारा ही धर्म करते हैं, मन्दिर बनाते हैं, यात्रा करने जाते हैं। चूंकि आपके पास दौलत है इसलिए धर्म करना आपके लिए बड़ा आसान काम है। खेल खेलने का एक साधन है जबकि गरीबों के लिए धर्म करना भी एक बोझ सा बन जाता है। आपने प्रत्येक तीर्थ की यात्रा की, प्रत्येक संगम पर जाकर स्नान किया और इसी काम में घर की तमाम दौलत खर्च कर डाली, फिर भी न आपको भगवान के दर्शन हुए और न ही आपके मन को शांति मिली, परन्तु पिता जी, कुछ तो सोच विचार करें। भगवान सच्ची भक्ति करने से मिलते हैं न कि पैसे के बल पर.... . लेकिन आप यह बात नहीं समझ सकेंगे।'

'हां ! हां ! हम जैसे बूढ़ों की बातें तुम भी न समझ पाओगे।'

'कैसे समझ सकूं ? आप पैसे के बल पर भगवान को प्राप्त करना चाहते हैं। यदि भगवान पैसे का गुलाम हो तो मुंह मांगे दाम देकर उसे आपके समक्ष उपस्थित कर दूं। इस तरह के फिजूल खर्च करने से न तो वह आपको इतने पैसे देने वाला है और न ही दर्शन देने वाला है.... ...उसके दर्शन के लिए तो भक्ति भाव और अखण्ड साधना चाहिए।'

'बेटा तू क्यों व्यर्थ ही अपना दिमाग खराब कर रहा है ? देने वाला तो वह हजार हाथ वाला बैठा है, वह सभी दे देगा।'

'कौन है देने वाला ? ...जो मन्दिर में छुप कर बैठा है वह।'

'हां'

'तो फिर पिता जी। आप भी तो देने वाले कहां थे ? जहां आप अपनी तीर्थ यात्रा में पांच पांच हजार रुपये खर्च कर देते हैं उस बेचारे को बीमार बच्चे के लिए पांच चार रुपये दे दिये होते तो ? जब आपको हृदय होते हुए भी उस पर दया न आई तो भला उस पत्थर का तो पूछना ही क्या ? और उसे भगवान बनाया किसने ? आपने ही न ? आपने उसे बनाया और आप ही उसकी पूजा करते हैं। लेकिन सच्चा भगवान यहां पर नहीं वह तो बसा हुआ है मानव हृदय में और यह तो स्वयं अपना ही रक्षण करने में जहाँ असमर्थ है वहाँ भला और लोगों की रक्षा कैसे कर सकेगा?'

'ऐसे शब्द मुंह से मत निकाल, सुरेन ? जो श्रद्धा से ईश्वर भक्ति करे उसे ही भगवान के दर्शन होते हैं।'

'किसकी भक्ति ? मूर्ति की ? क्या मूर्ति पूजन से भगवान राजी होते हैं ? हिन्दू धर्म ने मूर्ति पूजा, जप, तप, कथा परायण कम नहीं किये। संसार की सभी धार्मिक रीति नीतियों को हमने अपनाया है भजन कीर्तन किए हैं, बलि तक चढ़ाई है, अगणित पैसे व्यय किये हैं फिर भी हमें क्या मिला हिन्दुस्तान के धार्मिक इतिहास को देखो। कीर्ति स्तम्भ रूप सोमनाथ के मन्दिर की ओर दृष्टि पात कीजिये, उसका खण्डन किया, महमूद गजनवी ने, पाटन के मन्दिर को मटियामेट कर दिया मुसलमानों ने, देश की धर्म संस्कृति को कुचल दिया इन अंग्रेजों ने। प्रतिवर्ष दुष्काल, बाढ़, भुखमरी, बेकारी और रोग आता ही रहता है। जब पेट की आग सुलगती हो तब आप कह रहे हैं श्रद्धा रखो, विश्वास करो, लेकिन कौन से ईश्वर पर ? इस पत्थर की मूर्ति में? जिसे आपने ही बनाई है, जिसका श्रृंगार किया है, सजा कर महान् बनाया है उस पर विश्वास करूं ? और किस धर्म पर विश्वास करना ? मजदूरों के पास से उनकी पसीने की कमाई काटकर प्रभु के चरणों में न्यौछावर कर देने में पिता जी ? मानव मात्र की सेवा करना, यही सच्चा धर्म है पिता जी न कि......।'

'भाई यह तो भगवान परीक्षा कर रहे हैं।'

'परीक्षा, ऐसी परीक्षा ? इन्सान को इन्सानियत का मजाक उड़ाने को? इन्सान, इन्सान को कुचल कर पत्थर को मनाये उसे राजी करे, सच्चे को लूटे चूसे और झूठे को झुलावे, श्रम जीवियों का लहू चूस कर तगड़े बने बैठे लोगों को खुश करे, ऐसी परीक्षा? इसमें सच्ची इन्सानियत कहाँ है ? हृदय की सच्ची भावना या प्रेम कहाँ है ? एकता कहाँ है ? इसमें तो छिपी है इन्सान की क्रूरता स्वार्थ लोलुप्ता, तमाशा।'

......और इतने में ही 'राम बोलो भाई राम' के करुण विलाप से वह ऊंची हवेली कंपित हो उठी। पिता पुत्र दोनों के हृदय में एक प्रकार की धड़कन उत्पन्न हो गई। बहुत देर तक शंकित मन से दोनों एक दूसरे के सामने ताकते ही रह गये। एक के हृदय में इससे केवल दुर्बलता उत्पन्न हुई और दूसरे के हृदय में अपार वेदना।

'पिता जी ! पत्थर के देव को पूजते पूजते आपने मानव देव को खो दिया। देखो, यह देखो आपका मानव देव सदा के लिए विदा ले रहा है। लेकिन वह तो रूठ रूठ कर चला गया है। जब आप इस चेतन को प्रसन्न नहीं कर सके तो भला उस पत्थर को कैसे मनायेंगे ? आपका देव तो गरीबों की उस दुनिया में खो गया है, अनन्त अंधकार पूर्ण उस गली में न जाने कहीं पर छुप गया है ? उसके दर्शन करना आज दुर्लभ है। जिस मानव ने अपनी मानवता खोई, अपना मानव धर्म खोया उसने अपना भगवान भी खो दिया, यही समझ लीजिये, जहां पर इन्सान अपनी इन्सानियत खो बैठता है वहाँ आत्मा का स्थान कहाँ ?'

और फिर से सुनायी देती उस करुण आवाज को अपनी अश्रु अंजलि अर्पित कर, सुरेन झपट कर वहां से चला गया। पिता हत बुद्धि से खड़े रह गये। ★

गीत के स्वर

सुन लो, गीता के स्वर,
कुरुक्षेत्र की धरती बोल रही है।

[१]

मेरी मिट्टी के कण कण ने
हठधर्मी कर्तव्यपरायण
मनुज को पदों तले कुचल कर।
क्रोधित घोड़ों की टापों से
मस्त गजों की गगन भेदिनी
चिंघाड़ों से उछल उछल कर।

श्रीविदूत योगेश्वर
कृष्णचन्द्र के पावन मुख से
कर्मयोग का ज्ञान लिया था।
कायरता को त्याग, बढ़ा
कर्तव्य निभाने, उस अर्जुन का
निर्माण किया था।

पर युग प्रवर्तक रत्नों की
धरती पर सत्य अहिंसा
समता का सन्देश सुनाने वालो।
सत्ता के मद में चूर, स्वार्थपरता
की लपटों से कर्मयोग की
चिता जलाने वालो।

देखो अनाचार रत सिंहासन की,
कीली डोल रही है। सुनलो...

[२]

जब जब भी पाखण्ड पाप
अन्याय दनुजता और हिंसा का
इस धरती पर ज्वार चढ़ा है।
जब-जब भी अन्यायी शासक
शोषण के पंजे ले, बल रूप
जनता की ओर बढ़ा है।

तब कहीं जेल तो कहीं झोपड़ी में
अज्ञान अन्याय मिटाने
अद्‌भुत जोत जगी है
शोषक सत्ता के साथ, रूढ़ियों से
पोषित सड़े समाज में भी
विप्लव की आग लगी है।

निज सिंहासन रक्षण हेतु,
विस्मृत कर दो तुम गीता को
साम्यवाद और समाजवाद को
मत दो जीने का अधिकार
भव्य भावों से सज्जित दे दो
जन्म किसी भी नये वाद को

पर कंगाली उदर तुला पर,
प्रजातन्त्र को तोल रही है। सुनलो...

[३]

आ! मूक हिमालय से पूछो! जो
रोकर कहता है भारत के
गौरव की प्राचीन कहानी
गर्भ चीर धरती का देखो
मिट्टी में लिपटी मोई उस
प्रजातन्त्र की शेष निशानी।

(शेष कालम ४ पर)

ऋषिराज तुम्हारे चरणों में

रजनी ने मोती बरसाये, आज तुम्हारे चरणों में।
मधुऋतु ने पुष्प बिखेर दिया, ऋषिराज तुम्हारे चरणों में॥

हर पावन क्षण हर पर्व यहाँ, स्मृति तेरी लेकर आता।
भूमी ऊषा संग अमराई, उपवन अन्तर लहराता॥
श्यामा अर्पित करती अपनी, आवाज तुम्हारे चरणों में।
ऋषिराज तुम्हारे चरणों में॥ १॥

तुमसे अतीत था सजग हुआ, तुमसे भविष्य है उजियाला।
प्रलयंकर सा हंसते हंसते, तम का बड़वानल पी डाला॥
दिन रैन निछावर होता था, सुख साज तुम्हारे चरणों में।
ऋषिराज तुम्हारे चरणों में॥ २॥

शत शत उर में तेरी वाणी, कल्याणी बीन बजाती है।
टकराकर नीरव अम्बर में, प्रतिध्वनि तेरी आ जाती है॥
युग युग तक आश्रय पायेगी, निज लाज तुम्हारे चरणों में।
ऋषिराज तुम्हारे चरणों में॥ ३॥

—श्याम मनोहर वर्मा, विमल फैजाबाद

आर्य समाज मिटाता है

अनुचित चलन जगत के देखो, आर्य समाज मिटाता है।
घृणित कलह के भाव हटाकर, प्रेम मधुर उपजाता है॥
दुर्गुण अरु दुष्कर्म तथा सब, मादक वस्तु छुड़ा करके।
सद्‌गुण संयम त्याग में जीवन, मानव के सजवाता है॥
फंस करके पाखण्डों में, वैदिक कर्म भुला बैठे।
उनको सुन्दर उज्ज्वल पथ पर, यही घुमा कर लाता है॥
पशु हितकारी आदिक जीवों का बध बन्द कराने को।
विविध अहिंसक शान्ति भरे साधन यह सकल जुटाता है॥
फिरते अगणित कुटिल कुचाली ढोंग बना कर ठगने को।
पहरी बन कर कपटी जन से सबको यही बचाता है॥
पत्थर वृक्ष कबर मूरति की पूजा तजना बतला कर।
अमर अजन्मा रूप रहित प्रभु का चिन्तन सिखलाता है॥
मृतक जनों की श्राद्ध न करके जीवित माता पिता गुरु की।
परम सरल स्नेह से करना सेवा सदा बताता है॥
मुनियों ऋषियों की सन्तानें भ्रष्ट बनाई जातीं जो।
उनको निर्भय आर्य बना करके फिर से अपनाता है॥
जब जब संकट घेरा जाति पर दीन जनों पर आते हैं।
तब तब अश्रु बहाता रक्षा हित जन माल लुटाता है॥
दुखमय सुरभित विश्व बनाने दुनिया नई बसानें को।
दम नियमों से दसों दिशा में जीवन ज्योति जगाता है॥
अपने मिटते आदर्शों को सदा उबारा है इसने।
"सत्य" यही नव भारत का निर्माता भाग्य विधाता है॥

—सत्यनारायण उपमन्त्री आर्य समाज, अल्मोड़ा

महर्षि घोषणा

धर्मचन्द्र वर्मा 'धर्म' लखनऊ

किया था ऋषिवर ने हर्ष घोषित बने समाजें बने समाजें।
रहे न भू पर अनार्य कोई बने समाजें बनें समाजें॥
सभी जनों का है एक ईश्वर उसी के गुण सब सदैव गायें।
हृदय पटल पे हो ओ३म् अङ्कित बने समाजें बनें समाजें॥
विचार विनियम करें परस्पर बढ़ें सुपथ पर समान होकर।
बितायें जीवन को यज्ञमय कर बनें समाजें बनें समाजें॥
अछूत अबला अनाथ निर्बल रहें अभय सब समाज के संग।
न कोई इनको सताने पाये बनें समाजें बने समाजें॥
हमारे गुरुकुल की वह प्रणाली पुनः प्रचारित हो विश्व भर में।
मिटे अविद्या अनर्थकारी बनें समाजें बने समाजें॥

हिन्दी के सपूतों के नाम

ओ हिन्दी के वीर सपूतों,
आज नये कुछ गान सुनाओ!!
आज प्यार की कविताओं का—
भोले साथी नहीं जमाना,
नहीं चाल यदि तुमने बदली—
हिन्दी होगी एक फसाना।
'तुलसी' 'सूर' 'कबीरा' रोये—
और मीरा आंसू भर लाई,
बादल काले आज घिर रहे—
हिंदी मां पर आफत आई।
आज प्यार की कविताओं पर,
साथी तुम प्रतिबन्ध लगा दो!
ओ हिन्दी के वीर सपूतों,
आज नये कुछ गान सुना दो!!
ऊषा नित्य निमन्त्रण देगी—
यों अब भी सन्ध्या आयेगी,
और अली के सिर धुनने पर—
कलिका अब भी खिल जायेगी।
किंतु आज जमाना बदला—
बदलो तुम भी निज गीतों को,
स्वर ना साधो आज भुलादो—
अपने जीवन के मीतों को।
बुझे जहर में गीत लिखो कुछ,
पवन पंख पर उन्हें बिठा दो!
ओ हिन्दी के वीर सपूतों,
आज नये कुछ गान सुना दो!!
आज नये पहरेदारों ने—
गजनी को ऊंचा बैठाला,
और आज हिंदी माता को—
पिंजरे में बन्दी कर डाला।
अब एक ऐसा गीत चाहिये—
जो रग-रग में जीवन भर दे,
और अपनी अनजानी लय से—
खोया वैभव पुनः दिलादे।
हिन्दी मां की रक्षा के हित,
'वरदाई' को पुनः जगा दो!
ओ हिन्दी के वीर सपूतों,
आज नये कुछ गान सुना दो!!

—पुरुषोत्तम शरण 'शरद'
६५, शेखसराय, बुलन्दशहर

(कालम १ से आगे)

हो हरी भरी यह आर्य भूमि
धन-धान्य और सुख समता से
तो वेदों को पढ़ना होगा
शोषण वृत्ति का उन्मूलन कर
मजदूरों की मेहनत का
नव मूल्यांकन करना होगा।
लाल खून से अर्जित निर्मित
प्रासादों की पूंजी का अब
बंटवारा करना होगा।
चालीस कोटि हृदयों में
त्याग तपस्या औ निस्वार्थ
भावनाओं को भरना होगा।

निर्माण विकास तभी होगा,
यह कुरुक्षेत्र की धरती बोल रही।

—हरिश्चन्द्र भादानी
—छबीली घाटी, बीकानेर

महर्षि महिमा

[० ब्रह्मानन्द शास्त्री साहित्याचार्य, कासगंज, (एटा)

[प्रस्तुत संस्कृत भाषा में श्लोक बद्ध करके कवि ने ऋषि दयानन्द की महिमा बड़े अच्छे ढंग से वर्णन किया है।, —स० सम्पादक]

यौनाधिपे मेव मतान्तर वृद्धिवादे
म सुक मार्गमलिर्में तिरोऽभूव
अज्ञानतापात् पुनरेव बभूव भूमा
वानन्द परिपम वदरव दयामिषेव [१]
पाखण्डिनां मान विमर्दनाय
वेदोक्त धर्मस्य च रक्षणाय
विद्यावतीर्णः समुदार मूर्ति
स्वामी दयानन्दयतीन्द्रवर्यं [२]
औदीच्य सद्विजकुले, सहि जन्म लेभे
बराक्रमेणभव भक्ति समन्वितोऽभूत्
कालान्तरेण शिवरात्रि महोत्सवेऽसौ
जाग्रत्समस्त रजनी मनयद् व्रतेन [३]
देवालय स्वपितृसज्जनकेन सार्धम्
तत्रारम मूर्तिपरिकल्पित शम्भुदेवे
दैवात् कुतोऽपि मूषक समुपागतश्च
तस्यक्रिया समवलोक्य कृतो विमर्शं [४]
यो ह्यस्य सर्वजगत प्रतिपालकोऽस्ति
य सर्व भूत हृदयेषु च सन्निविष्ट
यो निर्विकार जगदीश जगन्नियन्ता
य सर्वशक्ति सहितोऽपि निराकृतिश्च [५]
चे नास्तिक जगदिद रचित स्वशक्त्या
व्याप्य स्थितोऽस्ति सकलं सचराचरं च
सोऽन्तर्यामी रक्षय विभुर्जगदन्तरात्मा
नैतस्य मूर्तिरचना भवितुम शक्या [६]
इत्थ विमृश्य मनसो प्रविचिन्तयाम.
सत्य शिव मृगयितुं सतत सुलग्न
श्रीमं वस्थाय निखिलञ्च सुखं विहाय
त्यक्त्वा स्वगृह स्वजनञ्च सैव प्रतस्थे [७]
भ्रमनेकानि वना न्युदीच्यां
नगाधिपे चापि शुचि प्रदेशो
गुहा समाश्रित्य सुदीर्घकालम्
समाधि मास्थाय तप प्रतेपे [८]
ततस्तपस्वी मृगयन महान्त
विद्वन्मणिं विज्ञगुरु प्रकाशकम्
प्रज्ञानचक्षुस्य सुपुरुष कीर्तिम्
श्रुत्वा सहर्षं मथुरा मयाम [९]
लब्ध्वा गुरू योग्यतम स भक्त्या
अनन्यवृत्या च पर सिषेवे
मेधावि शिष्यस्य विशिष्ट भक्तिम्
दृष्ट्वा गुरू सातिशय तुतोष [१०]
गुरू समाराध्य विशेष भक्त्या
अशेष विद्याश्च समाप्य वर्णी
कृतज्ञता भार भरेण नम्र
गुरू ययाचे गुरु दक्षिणार्थं [११]
अकिंचनोऽहं गुरुदेव दये
न निष्क्रातमें भवन्न कदापि
भव कृपालो ! मयका प्रदाता
ननल्लवङ्गा तुररा करातु [१२]
शिष्यस्य सद्भावम पूर्व भक्तिम
ज्ञात्वा सहर्ष गुरू रित्युवाच
वत्स ! प्रसन्नोऽस्मि सपर्ययाते
न चान्यपेक्षा गुरुदक्षिणाया [१३]
चिराद् विद्या तिमिर ग्रहेण
ग्रस्तोदय प्राज्वल भारतेन्दु
तदुद्धारणस्य क्रियता प्रतिज्ञा
इय हि स्याद् भूरि च दक्षिणाते [१४]
मन्थाश्चानार्षा रचिताश्च धूर्तें
ते षा प्रसारा विनिवार्य सम्यक
पुरातनै रामजन कृताना
लोके प्रचार कुरु वत्स ! नित्यम् [१५]
कायेन वाचा मनसा सदैव
देशस्य कल्याण मथाचरेस्त्वम
इत्थम्भवेच्चोत्तम दक्षिणाते
भद्रञ्च भूयादिति म शुभाशी [१६
गुरा रनुज्ञा शिरसाभिधार्य
प्रणम्य पादौ च मुहुर्यतीन्द्र
श्रद्धान्वित सानुनय बभाष
दिशातु माज्ञा भवता यतिष्य [१७]
गुरो ! जगत्या किमदेय मस्ति
विद्या प्रदानेन सुजन्म दात्रे
सर्वं समर्प्यापि च देहदानम
स्वल्प तथास्यार्तिकमुतान्यदानै [१८]
प्रभावतोऽह प्रतिपालयिष्ये
यावच्छरीरे मम सन्ति प्राणा

न्यायालय न्याय के लिए है या किसी को व्यर्थ परेशान करने के लिए

७ मई ५८ को सायकाल रोशनुद्दौला कचह का एक चपरासी एक समन लिए मेरे निवास स्था पर (५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ) पहुँचा कि प्रेमलाल स्पेशल मजिस्ट्रेट के इजलास म हिन्दी र समिति से सम्बन्धित कोई मुकदमा है जिसका मं मुझ से है और बताया कि ६ मई ५८ को प्रात बजे मजिस्ट्रेट साहब ने मुझे बुलाया है। किस प्रक का मुकदमा था, यह तो समन में नहीं लिखा था यह लिखा था कि इस सम्बन्ध में आप जो कुछ जानते हैं कचहरी में आकर बतावें। यह पढ़कर मै सोचा शायद किसी मुकदमे में किसी ने गवाही मेरा नाम दे दिया हो।

जब मैं ठीक समय पर कचहरी पहुँचा तो मजि स्ट्रेट साहब गायब थे। मैं बारह बजे तक बैठा र वे आये ही नहीं। अन्त मे ६ मई को पेश होन वा लगभग२० २५ मुकदमो से सम्बन्धित लोगों की पुकार गई और मेरा नाम भी नहीं लिया गया। जब मैं पेशकार साहब से अपना परिचय देते हुए इस सम्ब म पूछा तो उन्होने कहा कि यहाँ आपका कोई मु दमा नहीं है।

अत मैं जिलाधीश महोदय का ध्यान इस की ओर आकृष्ट करना चाहता हू कि कचहरी में सब क्या होता है और क्यों मुझे इस प्रकार मे व्य में बुलाकर २॥ घंटे तक रखा गया ? स्मरण रहे मैं एक पत्र (आर्यमित्र, साप्ताहिक) का स० सम्पा हू और मैं अपना दफ्तर छोड़कर कचहरी गया थ सम्पादकों का समय कितना मूल्यवान होता है एक पत्रकार ही समझ सकता है। —भगवत शर

म त्री हिन्दी रक्षा समिति, लखनऊ

एव विहस्याचेज्जगता विराग
विद्यालयिष्य मि पद प्र सत्वात् [१
इद प्रतिज्ञाय गुरुञ्च नत्वा
गतो हरिद्वार मसौ विशङ्क
आरोपयामास च तत्र कुम्भे
पाखण्ड खण्डिन्यभिधा पताकाम् [२
गुरो समक्षेच कृता प्रतिज्ञा
तथैव तस्याश्च चकार पूर्तिम्
घोराणिकष्टान्यपि चानु भूय
न्याय्यात्पथा ना विचचाल धीर [२

विश्वकर्मा वंशज बालकों को ७०००) का दान



श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिरनिधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न स्व० श्रीमती तिज्जोदेवी भवानीलाल शर्मा कोकास की पुण्यस्मृति में श्री भवानीलाल जी शर्मा अकबरपुर जिला कानपुर वर्तमान अमरावती (विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालको के हितार्थ ७०००) की धनराशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद स० २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को प्रस्तावित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक व्याज जो कुछ प्राप्त होगा उसे उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओं के शिक्षण मद मे व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को ।) के स्टाम्प भेजकर सभा से छपे फार्म मगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

४—दान दाता की इच्छानुसार विश्वकर्मा वंशीय मनु, मय, त्वष्टादि गरीब प० आ० बालक बालिकाओ के लिए प्रथम सहायता दी जायगी।



५—उपर्युक्त सम्पूर्ण योजना आर्यमित्र पत्र में उत्साहार्थ अधिकतर सूचनार्थ प्रतिमास सचित्र प्रकाशित होती रहेगी और दान दाता को 'मित्र' पत्र के प्रत्येक अङ्क बिना मूल्य मिलते रहेंगे।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

अमेठी अनाथालय का उद्घाटन

राजा भगवान बक्श अमेठी अनाथालय का उद्घाटन ४ मई को साथ शिक्षाधीश श्री विद्याप्रसाद शुक्ल ने किया और मद्यनिषेध शिशु औद्योगिक शिक्षा केन्द्र का भी शिलान्यास किया। सभा में श्री राजकुमार रणञ्जयसिंह जी एम०एल०सी० प्रधान आ० प्र० स० उ० प्र० का भाषण हुआ। हरिजन कल्याण अधिकारी श्री त्रिपाठी जी ने कहा कि अनाथालय के लिए यह भूमि अमेठी के दानवीर राजकुमार श्री रणञ्जयसिंह जी ने दी है जो उनके पिता श्री राजा भगवान बक्श सिंह जी के नाम पर यह स्थापित किया गया है।

साप्ताहिक समाचार समीक्षा

दिल्ली में भीषण विमान दुर्घटना

६ मरे, १३ घायल, ११ विमान भस्म, २० लाख की सम्पत्ति नष्ट

सफदरगंज हवाई अड्डे के निकट ८ मई को दोपहर में एक भीषण विमान दुर्घटना हो गई। इस दुर्घटना में ६ व्यक्ति मरे, १३ घायल हो गये, ११ विमान जलकर नष्ट हो गये और अनुमानतः २० लाख से अधिक की सम्पत्ति नष्ट हो गई है। भारतीय वायु सेना का जलता वेम्पायर जेट लड़ाकू विमान दिल्ली फ्लाइंग क्लब के हैंगर से जा टकराया। विमान के गिरने से हैंगर के भीतर और बाहर रखे ११ विमानों में आग लग गई और सब जल कर भस्म हो गये। विमान चालक फ्लाइङ्ग ले० ओ. पी. जेरा ने अन्तिम क्षण तक विमान को बचाने का यत्न किया पर व्यर्थ। अन्त में वह हवाई अड्डे से कूदा पर उसे गाड़ी चोट आ गई और अस्पताल पहुंचते पहुंचते ही उसका देहान्त हो गया। ५० व्यक्ति हैंगर में अन्दर काम कर रहे थे जिनमें से ४ मर गए। विमानों के फटने की आवाज मीलों तक सुनाई दी। प्रतिरक्षा मन्त्रालय ने इस दुर्घटना की जांच की आज्ञा दे दी है। इस घटना से वायुसेना की बहुत बड़ी क्षति हुई है।

उड़ीसा मन्त्रिमंडल विघटित

उड़ीसा के मुख्य मन्त्री श्री डा० हरेकृष्ण मेहताब ने अपने मन्त्रिमंडल का त्यागपत्र राज्यपाल श्री सुखथंकर को दे दिया। राज्यपाल ने त्यागपत्र स्वीकार कर लिया और वर्तमान मन्त्रि मण्डल विघटित हो गया। केन्द्रीय कांग्रेस समिति का कहना है कि उड़ीसा में यद्यपि कांग्रेस को दो तीन मतों से बहुमत प्राप्त है पर इससे शान्तिपूर्वक सरकार नहीं चलाई जा सकती। अतः इस सरकार को त्यागपत्र दे देना ही उचित है। अब नई सरकार बनने की चर्चा जोरों में चल रही है। भुवनेश्वर में सभी दल वाले जोर मार रहे हैं। आशा है मिली जुली सरकार बनेगी।

श्री जट्टी मैसूर के नेता निर्वाचित

बम्बई के एक भूतपूर्व उप मन्त्री श्री बी. डी. जट्टी को मैसूर राज्य विधान सभा कांग्रेस दल का नेता चुना गया। अब निजलिंगप्पा मन्त्रि-मण्डल शीघ्र ही त्यागपत्र दे देगा। श्री निजलिंगप्पा ने नेता पद से पूर्व ही त्यागपत्र दे दिया था।

लाहौर में डा० खान साहब की हत्या

९ मई को प्रातः रिपब्लिकन दल के संस्थापक अध्यक्ष ७६ वर्षीय डाक्टर खान साहब की उनके निवास स्थान पर छुरा भोंककर हत्या कर दी गई। पता-चला है कि तीस वर्षीय अता मुहम्मद नामक एक व्यक्ति ने उनकी हत्या की जो पहले पटवारी था और दो वर्ष पूर्व निकाल दिया गया था। हत्यारा रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया गया। खानसाहब का शव उतमनाई में दफनाया गया। खानसाहब के निधन से पाकिस्तान ने अपना झंडा झुका दिया। भारतीय राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री तथा अन्य नेताओं ने भी शोक सम्वाद भेजे। संसद ने शोक मनाया कुछ लोगों का कहना है कि उनकी हत्या के पीछे कोई राजनीतिक कारण नहीं है पर बुद्धिमान वर्ग को विश्वास है कि इसमें अवश्य ही राजनीतिक चाल है जो बाद में खुलेगी।

लोक सभा का अगला अधिवेशन

लोक सभा का वर्तमान अधिवेशन समाप्त हो गया, आगामी अधिवेशन ११ अगस्त के आस पास होने की सम्भावना है। वर्तमान अधिवेशन १० फरवरी से चालू हुआ था जो राष्ट्रपति के भाषण से प्रारम्भ हुआ और मुख्यतः बजट पर विचार किया गया।

कांग्रेसी दोषी हैं

प्रधान मन्त्री नेहरू ने एक बैठक में कहा कि आज जनता सरकार और सरकार की योजनाओं में जो दिलचस्पी नहीं ले रही है इसका दोष कांग्रेसियों पर है। उन्होंने कभी इस बात के लिए प्रयास ही नहीं किया कि जनता की रुचि सरकार, कांग्रेस और सरकारी योजनाओं की ओर बढ़े। जातीयता, प्रान्तीयता व साम्प्रदायिकता की आपने कटु निन्दा की।

शेख का कुचक्र

दिल्ली में काश्मीर के मुख्य मंत्री बख्शी गुलाम मुहम्मद ने कहा कि परिस्थिति ऐसी आ गई थी कि शेख अब्दुल्ला को पुनः गिरफ्तार करना आवश्यक हो गया था। उसने पाकिस्तान से आर्थिक सहायता लेकर अपनी एक अलग सेना बनाना प्रारम्भ कर दिया था। इतना ही नहीं काश्मीर में चारों ओर व्यापक तोड़फोड़ की भी तैयारी की जा चुकी थी जिससे राज्य की शान्ति खतरे में पड़ गयी थी। अभी भी कुछ लोगों के द्वारा यह षडयन्त्र जारी है पर उन्हें शीघ्र ही दबा दिया जायगा।

स्वामी भुवानन्द जी द्वारा मौरिशस में वेद का पावन उपदेश

माननीय श्री अनथ विजाधर जी प्रधान सम्पादक (डेली एडवांस) तथा मेम्बर लेजिस्लेटिव कौंसिल के प्रधानत्व मे पूज्यवर्य श्री स्वामी भुवानन्द जी महाराज का व्याख्यान शुक्रवार दि० ११-४-५८ ई को रिव्येर जी० रांपार के बारोडा भवन में "वेद सदेश ही मानव समाज का कल्याण है" विषय पर हुआ। एक घण्टा और बीस मिनट तक स्वामी जी के व्याख्यान को जनता ने मन्त्र मुग्ध होकर सुना उपस्थिति इतनी अधिक थी कि सभा स्थल में श्रोताओं को स्थान न मिलने पर सड़क पर खड़े होकर ही अनेक जनों को उपदेश श्रवण करना पड़ा। उनके अतिरिक्त माननीय श्री वारिस्टर राघव जी मेम्बर लेजिस्लेटिव कौंसिल श्री बेरिस्टर गोवरधन जी, श्री गौतम तिलक जी सरदार श्रीयुत महेश जी आदि भी उपस्थित थे।

स्वागत समिति का प्रबन्ध सराहनीय था जिसके प्रधान श्रीयुत् रामचरित्र जी मागन थे।

—रामलगन प्रधान उपदेशक मडल आर्य सभा मौरिशस

आ० स० कालिज विभाग, रोहतक

प्रधान—श्री रामशरण जी वकील
मन्त्री—श्री गुरुदत्त जी
कोषा०—श्री रामदित्तामल

आ० स० अरमापुर स्टेट, कानपुर

१—इस समाज के तत्वावधान मे ४ मई को श्री जयशंकर तिवारी की सुपुत्री एक वयस्क विधवा लड़की श्रीमती सुन्दर कुमारी के साथ समारोहपूर्वक श्री चन्द्रिकाप्रसाद बी.ए. के सभापतित्व में सम्पन्न हुई।

२—७ मई को सायं श्रीमती मेरी नामक ईसाई महिला को शुद्ध करके उसका नाम सावित्री देवी रखा गया और श्री वेदप्रकाश नामक नवयुवक के साथ उसकी शादी भी वदिक रीत्यानुसार करा दी गई।

आ० स० बुलन्दशहर

आर्यसमाज बुलन्दशहर ने डा० आनन्दस्वरूप शर्मा के पिता जी के निधन पर शोक-प्रकट किया।

कन्याओं को आयुर्वेद

आर्य कन्या हायर सेकेन्डरी स्कूल गंगोह (सहारनपुर) के लिए बी० ए० बी०टी०, होम साइन्स ट्रेंड बी० ए० बी०टी० या इण्टर सा०टा०, जे०टी० सी०, एस०बी०, जे० बा०, मोंटसरी ट्रेंड और मिडिल क्लासों के लिए आर्ट, साइन्स, गणित की महिला अध्यापिकाओं की आवश्यकता है। (मैनेजर को लिखें)

स्वामी त्यागानन्द जी अस्वस्थ

अयोध्या गुरुकुल के कुलपति श्री स्वामी त्यागानन्द जी महाराज विगत कई मासों से अस्वस्थ हैं। सम्प्रति उनकी चिकित्सा जिला अस्पताल फैजाबाद में हो रही है। आपका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन चिन्तनीय होता जा रहा है। जिससे कुल वासी विशेष चिन्तित है।

गुरुकुल गनियार, महेन्द्रगढ़

इस गुरुकुल का छठवां वार्षिकोत्सव ३, ४ मई को सम्पन्न हुआ जिसमें पंडित बुद्धदेव जी, पंडित सेवानन्द जी, श्री हरिश्चन्द्र जी आदि पधारे थे जिनके भाषण हुए। स्वामी शिवानन्द जी ने गुरुकुल को ५०५) दान दिया।

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ का चुनाव

प्रधान—श्री कृष्णबलदेव जी
उपप्रधान—श्री जगन्नाथप्रसाद केसरवाना
उपप्रधान—श्री विश्वेश्वरनाथ वर्मा
मन्त्री—श्री भगवत शरण
उपमन्त्री—श्री देवाप्रसाद आर्य
प्रचारमन्त्री—श्री विक्रमादित्य जी
कोषा०—श्री रामेश्वरसहाय जी

मध्य उ० प्र० आर्य वीर दल का शिक्षण शिविर

देश में आर्य सिद्धान्तों के प्रचार के लिए आर्यवीर दल के सगठन को व्यापक बनाना अनिवार्य है। इसी विचार से मध्य उ० प्र० आर्य वीर दल का एक बौद्धिक शिक्षण शिविर स्थान बख्शी का तालाब, लखनऊ में १ से ८ जून ५८ तक लगने जा रहा है जिसमे पुरुषार्थ की सजीव प्रतिमा श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी प्रधान संचालक, भाई रामसिंह प्रधान शिक्षक सार्वदेशिक आर्यवीर दल पधार रहे हैं। पांच रुपए प्रवेश शुल्क के साथ अन्य आवश्यकीय समानों सहित गणवेश में आना आवश्यक है। आर्य वीरों को अपने साथ किसी आर्यवीर दल या आर्यसमाज के अधिकारी का प्रमाणपत्र लाना आवश्यक है।

—देव प्रसाद आर्य, उपसचालक आर्य वीर दल मध्य उत्तर प्रदेश

आवश्यकता

गौड़ ब्राह्मण कुलोत्पन्न सुन्दर स्वस्थ साहित्यरत्न एवं इण्टर तक शिक्षा प्राप्त १९ वर्षीया कन्या के लिये उच्च शिक्षा प्राप्त वैदिक धर्मी व्यवसाय में लगे वर की आवश्यकता है। गुरुकुल के स्नातक व शिक्षा क्षेत्र में कार्य करने वालों को प्राथमिकता दी जावेगी। दहेज इच्छुक कृपया कष्ट न करें।

पता—मुसाफिर-द्वारा आर्यमित्र लखनऊ

गीता वेदों का....

[पृष्ठ ४ का शेष],

तप वेद वेदार्थ ज्ञान, अष्टाङ्गयोगादि के अंगों को इकट्ठा करके सीढ़ी लगाई है। गीता सिखाती है कि छत्त पर पहुंचने के लिए इस का अवलम्ब भोथ में सहारा लो और छत्त पर पहुँच जावो। यदि हम इस सीढ़ी के डण्डों से चिपक जावें तो ब्रह्मानन्द तक नहीं पहुच सकते। और यह भी निश्चय है कि छत्त पर पहुंच जाने पर फिर सीढ़ी को कोई नहीं पकड़ रखता। क्या नदी से नाव द्वारा पार आ कर नाव को छोड़ा नहीं जाता ? इसी प्रकार आत्मदर्शी भी ब्रह्मानन्द को पाकर फिर नाव व सीढ़ी रूप सब वेदादि व शास्त्रों व कर्मकाण्डादि को छोड़ कर ब्रह्मानन्द में रहता है। इसीलिए मुण्डक उपनिषद् १।१।५ में वेदों को अपरा विद्या में गिना है। तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेद सामवेदो ऽथर्वा वेद शिक्षा कल्पो व्याकरण छन्दो ज्योतिषमिति। अथ परायया तदक्षर मधिगम्यते। ब्रह्म का साक्षात कराने वाली परा विद्या वेद वेदांगों से आगे है। लोक में डाक्टरी इञ्जीनियरिंग आदि विद्याओं को पढ़ने के बाद भी प्रैक्टिकल ट्रेनिंग साल-दो साल की और लेनी पड़ती है। इसी प्रकार अपराविद्या ब्रह्म का साक्षात् कराने वाली प्रैक्टिकल ट्रेनिंग है।

परन्तु इस का यह तात्पर्य कभी भी नहीं हो सकता, कि अपराविद्या की आवश्यकता ही नहीं है। या अपरा विद्या वेद वेदांगों का तिरस्कार करना चाहिए। फिर जिस प्रकरण के यह गीता के अ० ५ के श्लोक उद्धृत किये जाते हैं वह पूर्व पक्ष है गीता का सिद्धान्त पक्ष नहीं है। प्रकरण है—

बुद्धियोग कर्मयोग की महिमा व भोगैश्वर्य के त्याग का।

१—बुद्धियोग के पालन से कर्मों से पैदा होने वाला बन्धन नहीं होता। ३९

२—जितना इसका साधन कर लेगा, वह नष्ट नहीं होगा।

३—प्रत्यवाय दोष नहीं लगेगा।

४—इसका थोड़ा सा भी आचरण बड़े बड़े भयों से रक्षा करने वाला है। ४०

५—जो बुद्धि योगी नहीं हैं, उनकी बुद्धि अस्थिर होती है। ४१

६—वे स्वर्ग भोग ऐश्वर्य आदि की कामना करने वाले उत्तम जन्म उत्तम कर्म फल की इच्छा वाले बड़ी छन्दोदार भाषा में कहा करते हैं कि वेदों में इसके सिवाय और कुछ नहीं है। वह अस्थिर मति होते हैं। ४२ से ४४ तक

इन्हीं कर्मकाण्डी पुरुषों की दृष्टि में वेद त्रिगुण विषयक हैं परन्तु हे अर्जुन ! तू त्रिगुणातीत, संयमी, निर्द्वन्द्व, योग क्षेम की चिन्ता से रहित हो जा। ४५

गीता का यह प्रकरण श्लोक ४२ से ४५ के 'त्रैगुण्य विषया वेदा' तक पूर्व पक्ष है। निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन से सिद्धान्त पक्ष है। और आचरण के महत्त्व का प्रतिपादन करता है।

गीता का यह प्रकरण महर्षि दयानन्द, मनु, वेद व उपनिषद् सब से ठीक मेल खाता है। इसलिए 'गीता वेदों का निरादर करती है' यह भ्रम मात्र है।

आर्य वीर दल सेवा शिविर

लखनऊ आर्यवीर दल की ओर से स्थानीय महावीर मेले में एक सेवा शिविर का आयोजन किया गया। भीड़ में यात्रियों को सुविधा देना, पानी पिलाना तथा खोये बच्चों को उनके अभिभावकों तक पहुंचाने का कार्य सुरूपरूप से किया गया।

आर्य कुमार सभाओं को सूचना

प्रान्तीय आर्यकुमार परिषद का जो अधिवेशन २५ मई को होने वाला था वह अधिकारियों के कार्य में व्यस्त रहने के कारण नहीं हो सकेगा।

—वेदव्रत प्रचारमन्त्री वेद मन्दिर
११ बाजार मोतीलाल बरेली

साहित्य-समीक्षण

[समालोचनार्थ कृपया पुस्तकों की दो प्रतियां भेजें —सम्पादक]

आनन्द भागवत् कथा

अर्थात् श्री सत्यनारायण व्रत कथा

लेखक—श्री आनन्द स्वामी सरस्वती; प्रकाशक—गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क देहली। मूल्य ।।=) दस आने।

पुस्तक की छपाई सुन्दर है, कागज बढ़िया है। आर्य जगत् के प्रसिद्ध तपस्वी महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने बड़े सरल और रोचक ढंग से इस सत्यनारायण व्रत कथा को लिखा है। मानव जीवन का सार प्रभु भक्ति, ब्रह्म निष्ठा और परमात्मा के प्रति आत्म समर्पण ही है। इस वैदिक तत्व को बड़े सुन्दर और रोचक ढंग से प्रतिपादित किया गया है।

बृहदारण्यक उपनिषद् कथा माला

लेखक—स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर। प्रकाशक—आर्य साहित्य भवन नई सड़क देहली, मूल्य ३) सजिल्द। पृष्ठ संख्या २३६, कागज व छपाई सुन्दर।

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान लेखक ब्रह्ममुनि परिव्राजक ने बृहदारण्यक उपनिषद् की प्रमुख सोलह कथाओं को इस पुस्तक में समाहित किया है। कथाओं के रहस्य का उद्घाटन करने में स्वामी जी का प्रयत्न सराहनीय है। स्वाध्यायशील सज्जनों के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।

भारत में मूर्तिपूजा

लेखक—श्री राजेन्द्र जी अतरौली, प्रकाशक—श्रीमद्दयानन्द ग्रन्थागार कृष्ण गंगा मथुरा। पृष्ठ संख्या २६२, मूल्य १=) मात्र।

श्री पण्डित राजेन्द्र जी ने बड़े परिश्रम से इस पुस्तक का सम्पादन किया है। आरम्भ काल से मूर्तिपूजा के इतिहास पर बहुत सुन्दर, रोचक और प्रामाणिक ढंग से प्रकाश डाला है। मूर्तिपूजा का मानव जीवन पर कितना कुत्सित प्रभाव पड़ा है। इसका विवेचन भी बहुत हृदयग्राही है। पर आत्मा की उपासना में मूर्तिपूजा साधक न होकर बाधक है इस विषय पर भी विद्वान् लेखक ने बहुत सुन्दर सामग्री पुस्तक में जुटाई है। मूर्तिपूजा के ऊपर प्रकाशित अब तक की पुस्तकों में यह सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है। प्रचार की दृष्टि से इस पुस्तक का मूल्य केवल १=) रक्खा गया है।

दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह

(प्रथम भाग)

प्रकाशक—श्री मद्दर्शनानन्द ग्रन्थागार, कृष्ण गंगा, मथुरा, लेखक—श्री राजेन्द्र जी अतरौली. पृष्ठ संख्या १५६, मूल्य ।।।) छपाई व कागज सुन्दर है।

आर्य जगत् के गौरव, प्रसिद्ध तार्किक स्वर्गीय स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती महाराज के ईश्वर, जीव, प्रकृति, ईश्वरीय ज्ञान, मुक्ति, श्राद्ध, पुनर्जन्म आदि विषयों पर लिखे गये सोलह ट्रैक्टों का यह संग्रह है। स्वामी दर्शनानन्द जी के ट्रैक्ट प्रचार की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। आर्य समाज की ओर दूसरों को आकर्षित करने के लिए यह ट्रैक्ट अपना विशेष महत्व रखते हैं।

पूर्व जन्म स्मृति

लेखक—श्री राजेन्द्र जी अतरौली प्रकाशक—श्रीमद्दर्शनानन्द ग्रन्थागार कृष्ण गंगा, मथुरा। पृष्ठ संख्या ७४, मूल्य ।=) आने।

पूर्वजन्म के सिद्धान्त को प्रतिपादित करने के विषय में लेखक का यह परिश्रम सराहनीय है। लेखक ने अनेक युक्ति और प्रमाणों से और अनेक घटनाओं का उद्धरण देकर इस विषय को सफलतापूर्वक परिपुष्ट किया है। पुस्तक मनन करने योग्य है।

नित्य कर्म विधि

सम्पादक—ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम' एम० ए०, प्रकाशक—दर्शनानन्द ग्रन्थागार, कृष्णगंगा, मथुरा, पृष्ठ संख्या १०६, मूल्य ।।) मात्र।

संध्या, अग्निहोत्र, पितृ यज्ञ तथा बलिवैश्वदेव आदि पंच यज्ञों को इस पुस्तक में प्रकाशित किया गया है। यज्ञों में प्रयुक्त मन्त्रों का पद्यात्मक अनुवाद भी इसमें दिया गया है। पुस्तक के अन्त में आर्य जीवन सम्बन्धी अनेक मन्त्रों का भी संग्रह किया गया है और ५० से अधिक सत्संगों में गाये जाने योग्य सुन्दर भजनों का भी संग्रह किया गया है।

शहीद सुमेर

प्रो० सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०
नई दिल्ली

शहीद सुमेरसिंह की कीर्ति आज भी अमर है। वह नहीं रहा तो क्या? उसका उदाहरण तो समाज के सामने है। भावी सन्तान को शहीद सुमेर से प्रेरणा लेना चाहिए। धर्म, जाति, संस्कृति और राष्ट्र भाषा पर बलिदान होने वाले सुमेर की गौरव गाथा इन पंक्तियों में पढ़िए। —स० सम्पादक

वीर सुमेर! तेरा नाम वीरों में अग्रणी है, स्वर्णिम अक्षरों में चमक रहा है। तू हिन्दी भाषा का प्रेमी था। तेरे दिल में हिन्दी भाषा के लिये एक तड़प थी, आकुलता थी, वेदना थी। तू देश, धर्म भाषा पर बलिदान हो गया। तेरे रोम रोम में हिन्दी भाषा के प्रति अटूट श्रद्धा, प्रीति समाई हुई थी। तू प्राणों का मोह न करके, उन्हें तृणवत् समझकर धर्म पर, मर्यादा पर, सत्यनिष्ठा पर डटा रहा। तुझ जैसे वीर का हम जितना भी यश गाएं, सम्मान करें, थोड़ा है।

हमने तो हिन्दी भाषा के लिये कोई त्याग नहीं किया, पर तूने जेल में अगणित लाठियां खाईं, आत्मबल, का परिचय दिया, और अपना रक्त देकर बलिदान का पाठ पढ़ाया। हमें अपने प्राणों से मोह है, ममता है, पर तू धर्म की विजय के लिये सत्य की सिद्धि के लिये प्राणों को अति तुच्छ, हेय समझता था। तूने गीता के आदर्श का अक्षरशः पालन कर दिखाया, "नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः, न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः"।

शस्त्र देहों को कभी बस काट सकते हैं नहीं। आग भी कितनी जले इसको जला सकती नहीं॥
जल अगर चाहें गलाना, तो गला सकते नहीं। वायु भी चाहे सुखाना, पर सुखा सकती नहीं॥

अहा! सोने सा शरीर, उमड़ता हुआ यौवन, नई उमंगें सब कुछ धर्म के लिये समर्पित कर दिया तूने। सच कहते हैं, किसी देशभक्त से, साधक से, तपस्वी से कम त्याग नहीं तेरा। तूने न्याय के लिये, सत्य के लिये धर्म की प्रतिष्ठा के लिये अपने को स्वाहा कर दिया। क्या यह तेरा कम त्याग है।

तेरी साधना अनुपमेय है। तू महान् साधक था। तेरा धैर्य, साहस, उत्साह अनुपम है।

तू भारत माता का सच्चा सपूत था। नए यौवन में, इठलाती उमंगों में जीवन की दिशा को मोड़कर आत्म त्याग, बलिदान की ओर प्रवृत्ति करना, धर्मक्षेत्र में सहसा कूद पड़ना, प्राणों को तृणवत् समझकर आत्म सम्मान, स्वदेशीय भाषा रक्षार्थ सर्वस्व सौंपकर पूर्णाहुति देना क्या कोई सरल कार्य है? तेरी दशा तो उस चातक पक्षी के समान थी, जिसके विषय में गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है—

रवि पाहन दामिनि गरज, अति झकोर झरखीज। दोस न प्रीतम रोस लखि, तुलसी रागहिं रीझ॥

सच है, मरते समय भी तुझे हिन्दी भाषा का ही विचार रहा।

अक्षनवेदी वसुधा कुल्या जलधिः स्थली च पातालम् वाल्मीकश्च सुमेरुः कृतप्रतिज्ञस्य वीरस्य.।

पृथ्वी आंगन के समान उसको भाती है। सागर तुच्छ सरित् सम अनुभव में आती है॥ दीख रहा पाताल उसे स्थल मान अकिंचन। और सुमेरू बाँबी तुल्य समझ ले जन-जन॥ करके प्रण जो कभी नहीं उससे टलता है। धैर्यवान् वह परम साहसी, नित बढ़ता है॥

अन्त में क्या कहूं, जिस प्रकार नृशंसता का, नर-पशुता का तूने सामना किया, जिस धैर्य से देह पर लगे घावों को सहा, उस बलिदान का, शौर्य का, आत्म समर्पण का परिचय दिया, उसके लिये शब्द नहीं हैं। वीरों का महत्व वीर ही समझते हैं, मैं क्या समझूं। अन्त में यही कहता हुआ विराम लेता हूं—

"तू सुमेर सचमुच सुमेर था, जाति वश आलोक। त्याग और बलिदान किया, मरने पर क्यों शोक॥ व्यर्थ न होगा प्राणाहुति, तेरा अनुपम अभियान। 'भूषण' तेरे नाममात्र से पावन होंगे प्राण॥

भारत में हलचल

पंजीकरण सं. ए. ६०
२८ वैशाख १८८० (१८ मई ५८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ४११२ तार : 'आर्यमित्र'

दीक्षान्त समारोह

श्री रणवीर इन्टर कालेज में परीक्षा देने के लिए आये हुए लगभग ६०० जू० हा० स्कूल के छात्रों और अध्यापकों की ओर से आयोजित सभा में राजकुमार श्री ... बी एम०एल०सी० ने दीक्षान्त भाषण दिया। सभा के अन्त में राजकुमार साहेब की ओर से सबको जलपान कराया गया।

(पृष्ठ २ का शेष)

इसीलिए महर्षि दयानन्द ने इसे मारने वाले को मनुष्यों का मारने वाला कहा है।

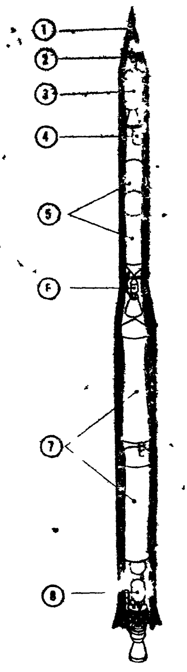
गाय से धन बढ़ने का आधुनिक कालीन प्रत्यक्ष प्रमाण:—श्रीयुत डा० जानी साहब ने अपनी पूर्वोक्त पुस्तक में ही बंगलौर नगर की 'जिन' नामी गाय का जीवन चरित्र घटनाओं के आधार पर निम्न प्रकार लिखा है:—

'जिन' गाय ने अपने १२ वर्ष के जीवन काल में १५४७०६ पौंड दूध दिया। सात बछड़े और एक बछिया प्रदान की तथा १३६५) रु० की खाद दी, सब वस्तुए जो उसने अपने जीवन में प्रदान कीं वे तेरह हजार रुपये के मूल्य की होती है। अब इसके बच्चे पृथक पृथक इसी प्रकार देश का धन बढ़ावेंगे। यदि इसको मार कर खा लिया गया होता तो केवल ७०-८० मांसाहारियों को एक समय का रोगप्रद भोजन अवश्य मिल जाता पर देश का इतनी बड़ी धन राशि से हाथ धोना पड़ता। अतः अधुना निर्धनता को दूर करने का गऊ धन बढ़ाने से बढ़कर दूसरा कोई साधन नहीं है। इसी से तो महात्मा गाधी ने कहा था। "भारत की सुख समृद्धि गौ और उसकी सन्तान की समृद्धि के साथ जुड़ी हुई है।"

गोदुग्ध से सात्विक बुद्धि बनती है जिससे ईश्वर तथा धन की वास्तविकता का ज्ञान होता है और मनुष्य में सन्तोष की भावना आती है। जहां सन्तोष आता है वहां दूसरों को हानि पहुंचा कर धन प्राप्त करने का विचार विदा हो जाता है। इस कारण गोदुग्ध के भोजन से धन की अति व्यापक अनुचित लोलुपता नष्ट हो जावेगी। और थोड़े धन में भी लोग सन्तुष्ट होने लगेंगे। इस कारण भी गऊ दुग्ध बढ़ाने की अत्यन्त आवश्यकता है। इसीलिए कहा जाता है :—

'गावः सर्वसुख प्रदाम।'

द्वितीय अमेरिकन स्पुतनिक को छोड़ने वाला राकेट



मार्टन कम्पनी, बाल्टीमूर द्वारा निर्मित यह द्वितीय अमेरिकन स्पुतनिक को छोड़ने वाले राकेट का चित्र है जो ७२ फीट लम्बा है और जिसकी गति १७००० मील प्रति घंटा है। इस के मुख्य हिस्से निम्न प्रकार हैं:—

1—Disposable Nose Cone
2—Vanguard I Setellite
3—Third stage engine
4—Guidance equipment
5—Second Stage Tanks
6—second stage engine
7—First stage tanks
8—First stage engine

आर्यवीर दल का शिक्षण शिविर

१०जून से ३० जून ५८ तक आर्य वीर दल नकुड़ जिला सहारनपुर मे दल का एक शिक्षण शिविर लगेगा। इस शिविर में अधिक से अधिक लोगों को भाग लेना चाहिए। मेरठ जिले के आर्य वीरों को इस शिविर में विशेष रूप से भाग लेना चाहिये। आर्य वीर अपने साथ बिस्तर,नोटबुक पेन्सिल, सीटी, आदि अवश्य लावें।

आ० स० जेवर

श्री रामजी लाल भूतपूर्व प्रधान के पौत्र का नामकरण संस्कार सोत्साह सम्पन्न हुआ।

भीषण अग्नि कांड

अमेठी से पश्चिम तीन मील पर स्थित झुसीवाली ग्राम मे एक अबोध बालक की क्रीड़ा के फलस्वरूप ११ घर जल कर नष्ट हो गये और लगभग १००००) रुपये की सम्पत्ति के नष्ट होने का अनुमान है।

आ० स० हाथरस

वैदिक विवाह संस्कार के सभी मन्त्रों के अर्थों को गाने के रूप में स्वामी योगानन्द दंडी ने तैयार किया है। उनसे विवाह संस्कार कराने के इच्छुक व्यक्ति इस समाज को लिखें।

आ० स० ...गंज, अलीगढ़

इस समाज का वार्षिकोत्सव १३, १४, १५, मई को होगा।

बाबूराम भार्गी द्वारा ... आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्यमित्र

राष्ट्र के नैतिक उत्थान का दायित्व आर्यसमाज पर है

★



— सभा प्रधान —

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के नवनिर्वाचित प्रधान आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् व हिन्दी साहित्य के ख्याति प्राप्त कवि, लेखक और पत्रकार श्री पण्डित हरिशङ्कर जी शर्मा ने सभा के ७१ वें वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर डी० ए० वी० कालज लखनऊ में दिनांक १८ मई को आगन्तुक प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए कहा—ऋषि दयानन्द ने विदेशी राज्य से स्वदेशी राज्य को उत्तम बताकर जिस राष्ट्रीय भावना को जन्म दिया था उसी के परिणाम स्वरूप हमारा देश आज स्वतन्त्र है परन्तु स्वतन्त्रता के दस वर्ष पश्चात् भी राष्ट्रीय चरित्र का ह्रास होता चला जा रहा है। आज सदाचार का अर्थ बहुत संकुचित हो गया है परन्तु जीवन की प्रत्येक क्रिया का आचार से सम्बन्ध रहता है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय चरित्र का पतन हो चुका है। आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं को अपने व्यक्तिगत तथा सामूहिक प्रयत्नों द्वारा राष्ट्र के नैतिक अभ्युत्थान का नेतृत्व करना होगा। आज राष्ट्र सत्ता राजनीति के पंक में निमग्न है। राष्ट्र-रथ को संकट से बाहर निकालने के लिए हमें पूर्ण प्रयत्न करना होगा। राष्ट्र की राजनीति को विमल तथा जनमत को सबल बनाकर भारत को आदर्श राष्ट्र बनाया जा सकता है।

★

वैदिक प्रार्थना

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन ॥

यजु० ३।१

हे मनुष्यो! समिधाओं से हवन करो। अग्नि को जगाओ, अतिथि के समान पूजो (सेवा करो) इसमें होम करो आहुति से।

सह० सम्पादक—

भगवत शरण

इस अंक के आकर्षण

कठोपनिषद् कथा ८ (आध्यात्मिक चर्चा)

अतिथि यज्ञ

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम०ए० एल०टी०, डी० वी० कालेज, गोरखपुर]

> भारतीय शास्त्रों मे वर्णित पंच महायज्ञों मे से एक अतिथि यज्ञ है। इसकी महत्ता का बहुत ही सुन्दर और हृदयग्राह्य दिग्दर्शन इस लेख मे कराया गया है।
>
> —सम्पादक

[गतांक से आगे]

वाजश्रवा के पुत्र की आज्ञा से नचिकेता यम के द्वार पर पहुँचा परन्तु यमराज घर से बाहर गए हुए थे। उनकी पत्नी ने नचिकेता का सत्कार करना चाहा पर पिता का आदेश यम से मिलने का था अतः यम की अनुपस्थिति मे, बिना उसके आदेश के नचिकेता ने कुछ भी करने से अस्वीकार कर दिया। जब यमराज घर पर पहुँचे तो उस स्थान के विद्वान् धार्मिक एवं प्रभावशाली व्यक्तियों ने यमराज से नचिकेता के वहां पहुँचने तथा भोजनादि का आग्रह करने पर भी बिना आपसे मिले एवं आपका आदेश लिए कुछ भी न करने की बात कही तथा उन्होने कहा—

वैश्वानर. प्रविशत्यतिथिर्ब्राह्मणो गृहान्। तस्यैतांछ शान्ति कुर्वन्ति हर वैवस्वतोदकम् ।८।

आशा प्रतीक्षे सङ्गतं सूनृताञ्चेष्टा पूर्ते पुत्र पशूश्च सर्वान्।

एतद् वृङ्क्ते पुरुषस्याल्प मेधसो, यस्मानश्नन्वसति ब्राह्मणोगृहे ।८।

अर्थात् (वैवस्वत) हे विवस्वान् के पुत्र यम (गृहान्) आपके घरों मे (वैश्वानरः) एक तेजस्वी (ब्राह्मणः) ब्राह्मण विद्वान् (अतिथिः) अतिथि (प्रविशति) प्रविष्ट हुआ है (तस्य) ऐसे अतिथि की [सद् गृहस्थ] (एता) इस (शान्ति) शान्ति को (कुर्वन्ति) करते हैं इसलिए (उदकम् हर) जल को [आतिथ्य के लिए] लीजिए।

(यस्य पुरुषस्य) जिस पुरुष के (गृहे) कर मे (ब्राह्मण) ब्रह्मविन् अतिथि (अनश्नन्) भूखा (वसति) रहता है (तस्य) उस (अल्प मेधस) अल्प बुद्धि की (आशा) ज्ञात वस्तु की कामना (प्रतीक्षे) अज्ञात वस्तु का चाहना (सगतम्) सत्सग के फल (सूनृताम्) मधुरभाषिता (इष्ट) [यज्ञादि श्रौत कर्म के] फल (आपूर्ते) तालाब आदि बनान रूप स्मार्त कर्म के फल (पुत्र पशून) पुत्र और पशु (एतत सर्वान) ये सब (वृङ्क्ते) जाते रहते हैं।

जब नचिकेता को बिना कुछ खाए तीन दिन बीत गए तो किसी धर्मज्ञ ने यम को चेतावनी दी कि नचिकेता का आतिथ्य करे। क्योंकि जिस गृहस्थ के घर विद्वान अतिथि बिना आतिथ्य के रहता है उसके पुत्रादि सभी नष्ट हो जाते हैं।

भारतीय शास्त्रो के अनुसार पंच महायज्ञो के करने का विधान किया गया है। ये पांच महायज्ञ हैं ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ तथा अतिथि यज्ञ। स्वामी जी महाराज ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और पंच महायज्ञ विधि मे इनका उल्लेख किया है। ब्रह्मयज्ञ है सध्या, सत्य का उपदेश करना, देवयज्ञ हवन। पितृयज्ञ माता पिता तथा गुरुजनों की प्रतिष्ठा, आदर एवं उनके आदेशो का पालन भूतयज्ञ कहते है प्राणियो की सेवा, उनके उपकार के लिए दान। पांचवां यज्ञ अतिथि यज्ञ है। इसका मतलब है प्राणियो की या ऐसे मनुष्यो की जो अचानक आपके यहां उपस्थित हो गए हैं सेवा करना, जल भोजनादि से उनका सत्कार करना। जब कोई व्यक्ति किसी का आतिथ्य नहीं करना चाहता तो उसकी इच्छा होती है कि उसे घर से रुखसत करे और इसके लिए उसे कुछ रुखाई से बात करनी पड़ती है। रुखाई से बात करने के फल स्वरूप मधुर भाषिता नष्ट हो जाती है, मधुरभाषिता के न रहने से कोई विद्वान् ऐसे घरों मे नहीं जाता और ऐसे व्यक्तियो को दूसरे भी अपने सपर्क से पृथक् रखते हैं परिणाम यह होता है कि उसे सत्सङ्ग नहीं मिल पाता और सत्सग के न मिलने से श्रौत और स्मार्त कर्म सब छूट जाते हैं क्योंकि यह सब कार्य विद्वानो के सहयोग से हो सकते हैं, अकेले नही। और जब विद्वानो गुणियो एव सज्जनों का अनादर होने लगता है तो पुत्र इत्यादि मूर्ख, दुराचारी हो जाते हैं और जब पुत्र मूर्ख एव दुराचारी हो गए तब धन आदि का नाश निश्चत है। इस प्रकार आतिथ्य को एक बड़ा यज्ञ ही माना गया है। विचित्र देश था हमारा। यहां दान की, दूसरों को खिला कर खाने का बड़ा महत्व है। पर्वों पर दूसरो को खिलाओ, प्रतिदिन सस्कारों पर दूसरो को खिलाओ, प्रतिदिन तब तक भोजन न करो जब तक किसी अतिथि या भिखमगे को भोजन न दे दो। इससे मनुष्य में जहां त्याग की भावना आती है वहां देश के बहुत से असहायों का भरण पोषण होता है। प्राचीन काल में आतिथ्य के लिए तीन काम करने पड़ते थे। (१) अर्घ्यपाद्य अर्थात सत्कार पूर्वक जल से पांव आदि धुलाना (२) आसन अर्थात् बैठने को उचित वस्तु देना (३) मधुपर्क अर्थात अल्पाहार (नाश्ते) के लिए कुछ देना।

वास्तव में यह तीनों वस्तुएं ऐसी हैं जो निर्धन से निर्धन व्यक्ति को भी प्राप्त हैं। आतिथ्य मे भावना की प्रधानता है। कोई व्यक्ति क्या खिला रहा है यह उतनी महत्त्वपूर्ण वस्तु नहीं परन्तु उसकी भावना कैसी है, यही महत्वपूर्ण बात होती है। कलकत्ता की विशाल नगरी में महामना मालवीय जी एक सभा मे भाषण देने के बाद हिन्दू विश्व विद्यालय के लिए धन की याचना कर रहे थे। बिड़ला ने ५ लाख दिया तालियां पिटी, गोयनका ने दिया, पोद्दार ने दिया। थोड़ी देर मे रुपयों की वर्षा होने लगी। मालवीय जी दान की राशि सुनाते जनता ताली पीटती और इस प्रकार रुपया आने लगा। यह क्या, अचानक ही मालवीय जी रुक गए। उन्होने जनता को सम्बोधित करते हुए कहा, भाइयो, मुझे एक अपूर्व धन राशि प्राप्त हुई है। एक व्यक्ति ने अपना सर्वस्व हिन्दू विश्व विद्यालय को समर्पित कर दिया है और वह दान है केवल चार आना। जनता स्तब्ध हो गई, कुछ ने मजाक समझी परन्तु मालवीय जी ने एक बूढ़ी स्त्री को मच पर खड़ा कर उसके सबको दर्शन करवाए और कहा कि दान की महत्ता सख्या पर नही भावना पर है। इस बेचारी की कमाई केवल चार आने ही थी और वह भी उसने दे दी। करोड़ो रुपयो मे से यदि किसी ने एक लाख दिया तो उसने क्या दिया, यदि कोई चार आने मे से चार आना दे देता है तो यह दान सर्वस्व दान होने से अधिक महत्वपूर्ण है। लोगों ने तालियां पीटी। सैकड़ो की आंखों मे हर्ष के आंसू उमड़ आए। ठीक यही भावना आतिथ्य सत्कार के विषय में भी होनी चाहिए। मैं तो अपने अनुभव की बात कहता हूं। कभी कभी बड़े लोगो के यहां जाने का अवसर मिलता है पर वहां वह आनन्द नहीं मिलता जो कभी अपने गरीब, निर्धन भाइयों के यहां प्राप्त होता है। अतः



अतिथि सत्कार में हमें आलस्य, या बचने की प्रवृत्ति नहीं दिखलानी चाहिए। आज हम आर्य समाजियों में भी इस दिशा मे कमी आ रही है। हमारे यहाँ विद्वानों का आदर नहीं होता, उपदेशकों को किराए का टट्टू समझा जाता है। यह ठीक है कि विद्वान् या उपदेशक भी अपने कर्तव्य का पालन सभवत. न करते हों परन्तु जिसने बुलाया है उसका तो कर्तव्य है कि उनका सम्मान करे। अस्तु—

इस प्रकार यम को जब अतिथि सत्कार की महत्ता तथा विद्वान् ब्राह्मण के तीन दिन तक भूखा रहने का समाचार मिला तो वह बहुत चिन्तित हुआ और आते ही सब काम छोड़ कर नचिकेता के पास पहुंचा और उसने कहा—

तिस्रो रात्रीर्यदवात्सीर्गृहे,
मेऽनश्नन् ब्रह्मन् तिथिर्नमस्यः।
नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मे ऽस्तु
तस्मात् प्रतित्रीन वरान् वृणीष्व ।९।

(ब्रह्मन) हे विद्वान् (अतिथि) अतिथि (नमस्य) आप सत्कार के योग्य हैं (ते) आपके लिए (नमः) प्रणाम (अस्तु) हो (मे) मेरा (स्वस्ति) कल्याण (अस्तु) हो (ब्रह्मन्) हे ब्रह्मवित्! (यत्) जो (मे गृहे) मेरे घर मे (तिस्रः) तीन(रात्रीः) रात(अनश्नन्) आप भूखे (अवात्सी) रहे हैं (तस्मात) इसलिए (प्रति) प्रति रात्रि (एक के हिसाब से) (त्रीन वरान) तीन वरों का (वृणीष्व) स्वीकार करें।

इस प्रकार अतिथि के कष्ट के बदले में नचिकेता को यम ने तीन वर देने को कहा।

आर्य वीर दल बंग आसाम का शिक्षण शिविर

बंगाल आसाम मे आर्य वीर दल को सुदृढ बनाने के लिए प्रान्तीय आर्य वीर दल की ओर से १ से १५ जून तक आ० स० चापदनी हुगली में एक शिक्षण शिविर लगेगा। प्रधान सेनापति श्री पुरुषार्थी जी तथा उत्तर प्रदेश से एक योग्य शिक्षक के पधारने की आशा है। सम्बन्धित व्यक्ति २४।२ कार्नवालिस स्ट्रीट कलकत्ता से सम्बन्ध स्थापित करें। —महादेव सिंह

प्रान्तीय सेनापति

आर्य्य जगत में सब से अधिक छपने वाला आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र।

ओ३म्

आर्य्य मित्र

वर्ष ६०

अङ्क १९

लखनऊ—रविवार ज्येष्ठ ४, शक संवत् १८८०, ज्येष्ठ शु० ७, वि० २०१५ (२५ मई १९५८) दयानन्दाब्द १३४ सृष्टिसंवत् १९७२९४९०५९

अब कुछ आँख खुली है

स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् देश में कांग्रेस की स्थिति क्रमश शोचनीय ही होती गई है—इस बात को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता। पिछले आम चुनाव के बाद से तो पाच, छ प्रान्तो म कांग्रेस की अत्यन्त शोचनीय स्थिति हो गई और एक प्रान्त कांग्रेस के हाथ से निकल भी गया। दलबन्दी, जातीयता, प्रान्तीयता, स्वार्थ तथा अन्यान्य भ्रष्टाचारो से कांग्रेस आज इस प्रकार बदनाम हो गयी है कि जनता का विश्वास कांग्रेस से उठ चुका है और अधिकाश व्यक्ति कांग्रेस के विरोधी हो गये है, कांग्रेस की चतुर्दिक शिकायतें जब चरम सीमा पर पहुच गई तो कांग्रेस का भी इस ओर बाध्य होकर ध्यान देना ही पड़ा।

विभिन्न पाच छ प्रातो म अपनी अधोगति को देखते हुए केन्द्रीय कांग्रेस कार्यकारिणी ने अभी अभी जो निश्चय किये हैं परिस्थिति का देखते हुए उसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है और हम कह सकते है कि अब कांग्रेस की कुछ आँख खुली है।

इन्हीं कालमो के अन्तर्गत आज से कुछ माह पूर्व हमने लिखा था कि जातीयता के आधार पर सरकार की ओर से जो आर्थिक सहायता देने का नियम है वह अन्याययुक्त है क्योंकि उस जाति से भिन्न गरीब व्यक्ति तो उस सहायता से वचित रह जाते हैं। अत कांग्रेस के इस निश्चय का हम स्वागत करते हैं कि भविष्य में आर्थिक सहायता किसी को भी जाति के आधार पर न दी जायेगी बल्कि विशुद्ध पिछड़ेपने के आधार पर सत्पात्रो तथा आवश्यकता वाले व्यक्तियों को दी जावेगी।

प्रशासन मे प्रचलित लाल फीता शाही को समाप्त करने का निश्चय एक दूसरा महत्वपूर्ण निश्चय है जिस के लिए कार्यकारिणी ने कांग्रेसी मन्त्रियों को आवश्यक आदेश दे दिया है और भविष्य मे मन्त्रिगण अपने दौरो पर प्रान्तीय तथा जिला कांग्रेस के कार्यकर्ताओ से मिल कर इस बिमारी को दूर करने का यत्न करेंगे।

चुनाव के सम्बन्ध मे कार्यकारिणी ने यह निश्चय किया है कि मण्डल कमेटियो की सम्मति पर पूरा ध्यान दिया जायेगा। इससे सम्भावना है कि अधिकाशत योग्य व्यक्ति ही चुनावों मे खड़े किये जा सकेंगे।

कांग्रेस कमेटी और राज्य सरकार के बीच सहयोग के लिए भी पाँच सदस्यों की एक उप समिति का निर्माण किया जाना निश्चय हुआ है जिससे आशा है कि कुछ लाभ अवश्य होगा।

इन निश्चयो के अतिरिक्त समाजवाद स्थापित करने तथा धर्म निरपेक्षता की भावना को प्रधानता देना भी निश्चय हुआ।

कार्यकारिणी के ये सभी निश्चय महत्वपूर्ण है और यदि वास्तव मे कांग्रेस इन निश्चयों पर चलेगी तो उसकी खोई हुई प्रतिष्ठा लौट सकती है और जनता का विश्वास पुन उसे प्राप्त हो सकता है। पर आज परिस्थिति इस प्रकार की है और देश की जनता विभिन्न सस्थाओ के प्रस्तावो और निश्चयो को पढ़ते पढते तथा सुनते सुनते इस प्रकार निराश हो चुकी है कि बिना कुछ तथ्य और प्रगति सामने आये आज जनता इन बातो पर विश्वास करने के लिए तैयार नहीं है।

आज हम दखते हैं कि अनेको सस्थाओ द्वारा समय समय पर अनेको महत्वपूर्ण प्रस्ताव और निश्चय किये जाते रहे हैं पर वे कागज में धरे के धरे रह जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में आम जनता को भय है कि कांग्रेस कार्यकारिणी इन निश्चयो पर आचरण कर सकेगी। यदि कांग्रेस इन निश्चयो पर आचरण करती है तो देश के लिए यह परम सौभाग्य की बात होगी। अत अब आवश्यकता इस बात की है कि कांग्रेस ने जो निश्चय किये हैं उसे कार्य रूप मे परिणत करके दिखाये।

ग्राम राज्य की पद्धति

विचार करके देखने पर प्रत्येक को यह मानना ही पड़ेगा कि यद्यपि जनता की ओर से चुने चुनाये प्रतिनिधि सदस्य राज्य विधान सभाओं व केन्द्रीय ससद म भेजे गये हैं जो शासन चलाते हैं पर वास्तव मे यह बात है नहीं। आज भारतीय शासन की बागडोर तो कुछ मुट्ठी भर नेताओं के हाथ में है। वास्तविकता यह है कि राज्य मे या केन्द्र में चाहे बीसों मन्त्री भले ही हो पर शासन तो पाच चार व्यक्ति ही चलाते हैं। अत जनतन्त्र के नाम पर इस प्रकार शासन का कुछ व्यक्तियो के हाथ मे केन्द्रीत हो जाना अत्यन्त हानिकर और खतरनाक है। इस परिस्थिति पर बड़ी गम्भीरतापूर्वक विचार करन के पश्चात् आचार्य विनोबा भावे ने अभी अभी सागला म कहा है कि आज जबकि वैज्ञानिक प्रगति ने मानव को सर्व नाश का साधन प्रदान कर दिया है, ऐसी स्थिति मे किसी भी देश का शासन कुछ मुट्ठी भर नेताओ के हाथ म रहे, यह बात खतरनाक है। लोकतान्त्रिक सरकार अच्छी अवश्य है पर सत्ता का कुछ व्यक्तियो में केन्द्रीभूत हो जाना अहितकर है, इसलिये कि केन्द्रीभूत होती हुई सत्ता दोषो को रोक नहीं सकती। इसके विकल्प मे विनोबा जी ने ग्राम राज्य पद्धति का सुझाव रखा है जिसका हम हृदय से समर्थन करते हैं। आपने कहा है कि पांच वर्ष की निर्वाचित अवधि तक सरकार के पास आज इतनी शक्ति एकत्रित हो जाती है जितनी एकतन्त्र शासन चलाने वाल महाराजाओ के पास भी कभी नहीं रही। ऐसी दशा में अनर्थ होना स्वाभाविक है। अत आज आवश्यकता है कि जनसाधारण को ग्राम राज्य पद्धति की ओर जागरूक और सजग किया जाय ताकि ग्रामवासी अपने ग्राम के सभी महत्व पूर्ण सेवाओ का भार अपने ऊपर ले लें। कुछ वर्ष बाद प्रतीत होगा कि इस ग्राम राज्य पद्धति ने पूरे देश को सुखमय बना दिया।

सभा के नये अधिकारी

१७, १८ मई १९५८ को डी ए वी कालेज लखनऊ म आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का ७१ वा वार्षिक अधिवेशन सानन्द सम्पन्न हुआ। उपस्थित प्रतिनिधियो न सोच विचार करके नये वर्ष के लिए जिन अधिकारियो को चुना है, उनका हम सहर्ष स्वागत तथा अभिनन्दन करते हैं और उन्हें हृदय से बधाई दते हैं।

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान, हिंदी साहित्य के ख्याति प्राप्त कवि और लेखक तथा एक कुशल पत्रकार प० हरिशङ्कर जी शर्मा कविरत्न आगरा को इस वर्ष सभा ने प्रधान चुन कर अपना गौरव बढ़ाया है तथा आर्य समाज के प्रति उनकी सेवाओ के अनुरूप ही उनका सम्मान किया है। उनके सहायक चारा उप प्रधान भी आर्यजगत के म ने हुए नेता हैं जिन्होंने अपने जीवन काल म आर्य समाज के आन्दोलन को बहुत आगे बढाया है। नवनिर्वाचित मन्त्री श्री ठाकुर फूलन सिह जी के सामाजिक कार्यों की प्रशसा उ० प्र० की आर्य समाजो में प्रसिद्ध हैं और उनके चारा सहयोगी भी उनके अनुरूप ही ह। अन्य स्थानो पर भी अच्छे और कर्मठ कार्यकर्ता चुने गये हैं। विशेषता यह है कि सभी अधिकारी सब सम्मति से चुन गये। अत आशा और विश्वास है कि आर्यसमाज को प्रगति देने में नव निर्वाचित अधिकारीगण विशेष रूप से सफल होंगे।

★

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के

नव निर्वाचित पदाधिकारियों एवं अन्तरङ्ग सभासदों की सूची सन् १९५८ ई०

१ श्री हरिशङ्कर जी शर्मा कविरत्न, लोहामण्डी, आगरा — प्रधान
२ ,, पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट, माईथान, आगरा — मुख्य उप प्रधान
,, जगनमनलाल जी एडवोकेट हाईकोर्ट, इलाहाबाद — उप प्रधान
४ ,, कालीचरण जी आर्य, लालकुर्ती, मेरठ — ,,
५ ,, शकुन्तला देवी जी गोयल, खैरनगर बाजार, मेरठ — ,,
६ ,, फूलनसिंह जी आर्य, शिकोहाबाद (मैनपुरी) — मन्त्री
७ ,, ईश्वरदयालु जी आर्य, मु० भाटान, बिजनौर — मुख्य उप मन्त्री
८ ,, करणसिंह जी ब्रोकर, डेम्पीयर नगर, मथुरा — उप मन्त्री
९ ,, प्रेमचन्द्र जी शर्मा, एम० एस० सी०, हाथरस (अलीगढ़) — ,,
१० ,, चन्द्रनारायण जी एडवोकेट, बरेली — ,,
११ ,, रामजीप्रसाद जी गुप्त, मुगलसराय (वाराणसी) — कोषाध्यक्ष
१२ ,, कृष्णबल्देव जी, शृङ्गार नगर, लखनऊ — सहायक कोषाध्यक्ष
१३ ,, नरदेव जी स्नातक, एम० पी०, गुरुकुल वृन्दावन — पुस्तकाध्यक्ष
१४ ,, रघुनन्दन स्वरूप जी एडवोकेट, सदर, मेरठ — सहायक पुस्तकाध्यक्ष

अन्तरङ्ग सदस्य

१५ श्री विश्वेश्वर नाथ जी वर्मा पानदरीबा लखनऊ
१६ ,, महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री एम० ए०, बड़ौत (मेरठ) उन्नाव क्षेत्र
१७ ,, प्रतिपालसिंह जी, आर्यसमाज हरदोई
१८ श्रीमती सुशीलादेवी जी जौहरी, लखीमपुर खेरी
१९ श्री मदनमोहन जी वर्मा एडवोकेट एम० एल० ए०, फैजाबाद
२० ,, मथुरा प्रसाद जी, बालक प्रिंटिंग प्रेस, बहराइच
२१ ,, आचार्य बृहस्पति जी, शास्त्री वेदशिरोमणि देहरादून (गोंडा क्षेत्र)
२२ ,, आचार्य वीरेन्द्र जी, शास्त्री, आर्य समाज, रायबरेली
२३ ,, द्विजराज जी शर्मा आर्य समाज, गोरखपुर
२४ ,, रामपलटराव जी, आर्य समाज, मऊनाथ भंजन (आजमगढ़)
२५ ,, निरंकार प्रसाद जी, आर्य समाज, बस्ती
२६ ,, विश्वनाथ प्रसाद जी, बुलानाला, वाराणसी
२७ ,, रघुनाथ प्रसाद जी, आर्य समाज गाजीपुर
२८ ,, रामावतार जी, आर्य समाज, जौनपुर
२९ ,, ऋषिपाल सिंह जी वकील, सीपरी बाजार, झांसी
३० ,, उमेशचन्द्र जी स्नातक एम० ए०, आर्य समाज, हल्द्वानी (नैनीताल)
३१ ,, रामप्रसाद जी आर्य, आर्य भवन, मैंडू (अलीगढ़)
३२ ,, बाबूलाल जी दीक्षित, एम० ए० आर्य समाज, अतरौली (अलीगढ़)
३३ ,, रत्नसिंह जी एम० ए०, आर्य समाज, गाजियाबाद (मेरठ)
३४ श्रीमती सावित्री देवी जी विद्यालंकृता, जवाहर नगर मेरठ छावनी
३५ श्री धर्मपाल जी विद्यालंकार गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी, बदायूं क्षेत्र
३६ ,, भोलेनाथ सत्यपाल जी मुख्तार, कटिया टोला, शाहजहांपुर
३७ ,, रामबहादुर जी मुख्तार, पूरनपुर (पीलीभीत)
३८ ,, मनोहरसिंह जी, प्रधान आर्य समाज शेरकोट (बिजनौर)
३९ ,, जगन्नाथ सिंगल जी, आर्य समाज गंज, मुरादाबाद
४० ,, विश्वश्रवा जी, ९९, बाजार मोतीलाल बरेली
४१ ,, शेरसिंह जी काश्यप वैद्य, शामली रोड मुजफ्फर नगर
४२ ,, सियाराम लाल जी आर्य आर्य समाज, बुलन्दशहर
४३ ,, हरप्रसाद जी आर्य, आर्य समाज, धमोरा (रामपुर)
४४ ,, मोहनलाल जी आर्य, मंडी शाहदरा, आगरा
४५ ,, गोपाल सहाय जी, डेम्पीयर नगर, मथुरा
४६ ,, दयाराम जी गौड़ शिकोहाबाद (मैनपुरी)
४७ ,, मथुराप्रसाद जी आर्य समाज, एटा
४८ ,, कृष्ण मुरारी लाल जी, ७७४, कटरा, इलाहाबाद
४९ ,, काशिराम जी आर्य समाज, फतेहपुर
५० ,, शिवदत्त जी, आर्य समाज कानपुर
५१ ,, कृष्णगोपाल जी वकील किराना बाजार, फर्रुखाबाद
५२ ,, जगत दयाल जी, आर्य समाज, भरथना (इटावा)
५३ ,, मनिरक शा जी, आर्य समाज, सावला आदि पचपुरी गढ़वाल

मौरिशस में आर्यसमाज की प्रगति

आर्यसभा मौरिशस का परिचय

मौरिशस में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए आर्य सभा मौरिशस बहुत वर्षों से कार्य करती आ रही है। इस सभा के अन्तर्गत १५० आर्य समाजें हैं। एक अनाथालय भी सभा के आधीन है जिसमें ८० हजार की सम्पत्ति है। सभा के मुख्य भवन का नाम आर्य भवन है जिसका मूल्य लगभग ८० हजार रुपये है। सभा की ओर से आर्योदय नाम का एक साप्ताहिक पत्र भी निकलता है। सभा के कोष में ४० हजार रुपये नकद जमा हैं। यहां प्रत्येक आर्य समाजों में हिन्दी की पाठशाला चलती है। प्रचार के लिए सभा ने ३५ उपदेशक रखा है।

इस समय स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज इस सभा की ओर से पूरे मौरिशस में प्रभावशाली प्रचार कर रहे हैं। उनके सभापतित्व में अब तक ६ आर्य सम्मेलन हो चुके हैं। प्रत्येक सम्मेलनों में स्वामी जी के वेदोपदेश से लाखों जनता ने लाभ उठाया। स्वामी जी का प्रचार कार्य अब भी जारी है।

सभा की ओर से आर्य भवन में एक महा विद्यालय खोलने की योजना चल रही है। सभा की ओर से हिन्दी की उच्च शिक्षा देने का भी प्रबन्ध है। विद्या विनोद, विद्यारत्न, विद्या वाचस्पति, शास्त्री आदि की उपाधियां यहां से मिलती हैं। अब तक अनेकों विद्यार्थी सफलता पूर्वक उत्तीर्ण हो चुके हैं।

बनारस, मौरिशस में धर्मोपदेश

शनिवार ता० १० मई को श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज द्वारा बनारस आर्य मन्दिर में धर्मोपदेश हुआ। पण्डाल की सजावट बहुत सुन्दर थी। दूर दूर के नर नारियों से पण्डाल में जगह का अभाव हो गया था।

पाई के प्रसिद्ध भजनीक रोहित जी के रोचक भजन के बाद ठीक ८॥ बजे श्री स्वामी जी का उपदेश शुरू हुआ। स्वामी जी की अमृत वाणी से श्रोताओं के मन गद् गद् हो उठे। डेढ़ घण्टे तक स्वामी जी का उपदेश हुआ। —बेणीमाधव

मौरिशस में आर्य सम्मेलन

मध्य मौरिशस द्वीप के आर्य समाजियों का सम्मेलन आर्यसमाज मन्दिर क्युर्पिंग में बड़ी धूमधाम से श्री मोहनलाल मोहित जी के प्रधानत्व में ता० २८ से ३० मार्च तक सम्पन्न हुआ।



—श्री मोहनलाल मोहित जी—

कार्यक्रम इस प्रकार से रहा—प्रति दिन गायत्री महायज्ञ श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में होता रहा और रात्रि में ८ बजे से १० बजे तक श्री स्वामी जी द्वारा वेद की कथा और भजनीकों के भजन होते थे।

ता० २९ और ३० मार्च को इतनी अधिक उपस्थिति रही कि नया बनाया हुआ विशाल पण्डाल भी छोटा ही रहा।

नगर कीर्तन में लगभग ५००० स्त्री पुरुषों ने भाग लिया और २५० छोटे बड़े ओम् के ध्वज थे, नगरकीर्तन आर्यसमाज मन्दिर क्युर्पिंग से शुरू हुआ और शाल रेने गली तथा रायल सड़क होता हुआ समाज मन्दिर में वापस हुआ। ईश्वर की महती कृपा से नगर कीर्तन में शुरू से अन्त तक न धूप हुई न वर्षा ही हुई।

नगरकीर्तन में उपस्थित नर नारियों को भगवतभक्ति के छापे हुए भजन भी बांटे गये।

इस सम्मेलन कार्य से जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

—रा० पूरण मन्त्री
नगरकीर्तन स्वागत कमेटी

५४ ,, मुरलीधर जी पाण्डेय, देवरामपुर (गढ़वाल)
५५ ,, युवराज रणञ्जयसिंह जी एम० एल० सी०, अमेठी (सुल्तानपुर)
५६ ,, चन्द्रदत्त जी तिवारी एडवोकेट, गणेशगंज, लखनऊ
५७ ,, शिवदयालु जी, चाणक्यपुरी सदर, मेरठ
५८ ,, श्यामलाल जी आर्य, रामनगर, मेरठ
५९ ,, कृष्णलाल कुसुमाकर जी, आर्य नगर, फिरोजाबाद (आगरा)

टिप्पणी—सहारनपुर क्षेत्र के दो अन्तरङ्ग सदस्यों के निर्वाचन की घोषणा आगामी अङ्क में की जायगी।

लखनऊ
१६।५।५८

फूलनसिंह
सभा मन्त्री

सांस्कृतिक चर्चा

हमारे पारस्परिक सम्बंध और कर्त्तव्य

[श्री धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, कांगड़ी]

> यह जानने के लिए कि मनुष्य का वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय कर्तव्य क्या है इस लेख को पढ़ डालिए।
>
> —सम्पादक

प्रत्येक सार्वजनिक कार्यकर्ता और समाज शास्त्र के विद्यार्थी के लिए व्यक्ति, परिवार, राष्ट्र और विश्व के परस्पर सम्बन्ध और उनके प्रति अपने कर्तव्य को जानना नितान्त आवश्यक है। इस ज्ञान के बिना मनुष्य अपने कर्तव्य का पालन करने में असमर्थ रहता है। अतः इस लेख में मैं इस विषय पर संक्षेप से प्रकाश डालना चाहता हूं।

वैयक्तिक कर्तव्य–

परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व सब व्यक्तियों से ही मिल कर बनते हैं। उनका अच्छा या बुरा होना बहुत कुछ व्यक्तियों के ही अच्छे या बुरे होने पर निर्भर होता है, अतः सब से पूर्व हमें व्यक्तियों के कर्तव्यों पर विचार करना चाहिए। मनु महाराज ने धर्म के जो दस लक्षण बताये हैं उनका पालन प्रत्येक व्यक्ति के लिए अत्यन्त लाभदायी है। जो व्यक्ति उन धर्मों एवं कर्तव्यों का पालन करेंगे वे निःसन्देह अच्छे परिवार, समाज और राष्ट्र को बना सकेंगे। मनु प्रोक्त धर्म के १० लक्षण हैं—

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं,
शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो
दशकं धर्मलक्षणम्॥

अर्थात् धैर्य, क्षमा, दम अथवा मन को वश में रखना, अस्तेय-चोरी न करना, पवित्रता, इन्द्रियों को संयम में रखना, बुद्धि को पवित्र रखना और बढ़ाना, विद्या अथवा ज्ञान को प्राप्त करना, सत्य के व्रत का मन, वचन, कर्म से सदा पालन करना और क्रोध न करना ये धर्म के दस लक्षण हैं। 'धारणाद् धर्म इत्याहुः, धर्मो धारयते प्रजाः।' महाभारत के इस वचन के अनुसार ये कर्तव्य धर्म के नाम से कहे जाते हैं क्यों कि इनसे व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और सम्पूर्ण विश्व का धारण होता है। वे ही उनको उन्नत करने वाले हैं। इन १० के अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति का जगदीश्वर के प्रति भी एक प्रधान कर्तव्य है, और वह है उसकी अनन्य भाव से भक्ति। वेदादि समस्त सत्य शास्त्रों में इस पर बड़ा बल दिया गया है क्योंकि ईश्वर भक्ति के बिना मनुष्य सच्ची शान्ति और आनन्द को कभी प्राप्त नहीं कर सकता।

पारिवारिक कर्तव्य–

व्यक्तियों से मिल कर परिवार बनता है। जिन नर नारियों में ईश्वर भक्ति और धैर्य, क्षमा, मन पर संयम पवित्रता, अस्तेय, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य अक्रोधादि गुण होंगे उनका परिवार भी उतना ही प्रशंसनीय बनेगा। पारिवारिक कर्तव्यों में प्रधानता परस्पर पूर्ण प्रीति और विश्वास की है। 'सं वो मनांसि सं व्रता समु चित्तान्यकरम्" (यजु०) इत्यादि मन्त्रों में अपने मनों, व्रतों और चित्तों को मिला कर कार्य करने का पति पत्नी को उपदेश है।

व्यक्ति और समाज का सम्बन्ध–

व्यक्ति और समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध है समाज व्यक्तियों से मिल कर बनता है, अतः व्यक्ति जितने अच्छे सदाचारी, पवित्र और उन्नत होंगे, समाज उतना ही प्रशंसनीय बनेगा। किन्तु व्यक्ति का पूर्ण विकास समाज के बिना नहीं हो सकता। अनेक गुणों का विकास समाज में रहते हुए ही होता है, अतः व्यक्ति को अपने को समाज की सेवा में अर्पित कर देना चाहिए। समाज को भी व्यक्तियों की सर्व विधि उन्नति में सहायक होना चाहिए। उसके व्यक्तित्व को नष्ट करने के लिए नहीं, किन्तु उसे विकसित तथा सुसंस्कृत बनाने में व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए। व्यष्टिवाद और समाजवाद का प्रायः विरोध माना जाता है, किंतु यजु० अ० ४०, ९।११ मे उनका जो सुन्दर समन्वय बताया गया है, वह सर्वथा यथार्थ है।

मन्त्रों का मुख्य तात्पर्य यह है कि जो पुरुष केवल असंभूति अर्थात् वैयक्तिक उन्नति में ही लीन हो जाते हैं वे अन्धकार में प्रवेश करते हैं और जो अपनी उन्नति न करके सामाजिक उन्नति की चिन्ता में दिन रात तत्पर रहते हैं वे उनसे भी अधिक घने अन्धेरे में जाते हैं। .... जो पुरुष सम्भूति और विनाश अर्थात् सामाजिक और वैयक्तिक उन्नति को अथवा समष्टि और व्यष्टिवाद को साथ साथ मिलाकर चलता है वह वैयक्तिक उन्नति के द्वारा मृत्यु, भय व अकाल मृत्यु को दूर करके संघ भाव से अमरत्व प्राप्त करता है। सारांश यह है कि इन दोनों क [illegible] कार्य करने से ही व्यक्ति का अपना और साथ ही समाज का वास्तविक कल्याण हो सकता है अन्यथा नहीं। सुप्रसिद्ध योगी श्री अरविन्द ने व्यक्ति और समाज के सम्बन्ध में लिखा है—

The perfect society will be that which most entirely favours the perfection of the individual. The perfection of the individual will be incomplete if it does not help towards the perfect state of the social aggregate to which he belongs and eventually to the whole of a united humanity. (The Ideal of Human Unity, by Shri Arvinda 2nd Edition P. 8)

"पूर्ण संघ या समाज वही होगा जो व्यक्ति को पूर्ण बनाने में सब तरह से सहायता देता है। एक व्यक्ति तब तक कभी पूर्ण नहीं बन सकता जब तक वह पहले अपने समाज और अन्ततः सम्पूर्ण मनुष्य समाज को एकता की ओर ले जाने में सहायक नहीं होता।"

सामाजिक कर्तव्यों को वेदों में यज्ञ के नाम से पुकारा गया है जिसमे देव पूजा, सङ्गति करण, दान इन तीन का समावेश है। बड़ों के प्रति कर्तव्यों का निर्देश देव-पूजा शब्द से, सङ्गति-करण अर्थात् प्रेम पूर्वक मेल जोल इस शब्द से और अपने से ही किया जाता है। यज्ञ का महत्त्व 'यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। (ऋ० १०।९०।१६ यजु० ३१।१६) इत्यादि में इसीलिए इतना अधिक माना गया है कि इस मे बड़ों, बराबर वालों और छोटों, तीनों के प्रति कर्तव्य का निर्देशन स्पष्टतया समाविष्ट हो जाता है। आश्रम व्यवस्था के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को वैदिक धर्म में यह अवसर दिया जाता है कि वह अपनी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों को भली भांति विकसित करे और फिर वर्णव्यवस्था के सिद्धान्तानुसार उन विकसित पवित्र शक्तियों को समाज की सेवा में लगा दे। ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त (१०, १९०) में सामाजिक धर्मों के पालन निमित्त मनुष्यों को उपदेश किया गया है कि 'तुम सब मिल कर चलो. मिल कर प्रेम पूर्वक बातचीत करो और सब अपने मनों को सुसंस्कृत बनाओ, सत्यनिष्ठ विद्वान् लोग जैसे अपने कर्तव्य का सदा पालन करते रहते हैं वैसे ही तुम भी करो। तुम्हारे संकल्प सदा पवित्र और समान हों, तुम्हारे हृदय एक [illegible] मन परस्पर मिले हुए हों जिससे तुम्हारा एक दूसरे के प्रति सच्चा सहयोग हो सके।" इन मन्त्रों मे सागर को गागर में भर दिया गया है। सामाजिक कर्तव्यों का इससे उत्तम और कोई उपदेश कहीं नहीं पाया जाता। प्रेम, सहानुभूति और सहयोग के उत्तम तत्त्वों का यहां स्पष्ट निर्देश किया गया है।

राष्ट्रीय कर्तव्य–

अनेक समाजो से मिल कर राष्ट्र बनता है। सामाजिक लोग यदि कर्तव्य परायण हों तो राष्ट्र भी उत्तम बनता है। वेद में राष्ट्रीय कर्तव्यो का भी बड़ी उत्तमता से प्रतिपादन किया गया है।

इडा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः। बर्हिः सीदन्त्वस्रिधः॥ (ऋ० १।१३।९) इस मन्त्र में तीन देवियों का वर्णन करते हुए, उन्हें कल्याण कारिणी बताते हुए, प्रार्थना की गई है कि वे प्रमाद रहित होकर हमारे हृदयों मे सदा बसें। हमें उन का सदा ध्यान रहे। वे कोई कल्पित पौराणिक देवी देवता नहीं। वे इडा (राष्ट्र भाषा) सरस्वती अथवा राष्ट्रीय उत्तम सस्कृति और मही (मातृ भूमि) ये हैं, जिनकी सेवा करना प्रत्येक देशवासी का कर्तव्य है। 'उपसर्प मातरं भूमिमेताम्' (ऋ० १०।१८।१०) इत्यादि मन्त्रों में उपदेश किया गया है कि हे मनुष्य, तू इस मातृभूमि की सेवा कर। यजुर्वेद मे भी 'नमो मात्रे पृथिव्यै नमो मात्रे पृथिव्यै॥' इत्यादि के द्वारा मातृभूमि के प्रति आदर भाव रखने का उपदेश किया गया है। अथर्ववेद का भूमि-सूक्त (१२।१) राष्ट्रीय कर्तव्यो का प्रतिपादक है, जिस मे 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' (अथर्व १२।१।१२) इत्यादि में यह भावना रखने को कहा गया है कि पृथिवी मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि या भूमि माता का पुत्र हूं। हमारा मातृभूमि के साथ वैसा ही प्रेम होना चाहिए जैसा पुत्र का माता के साथ होता है। उस सूक्त के अंतिम भाग में यह प्रार्थना है कि 'उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूता। दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम॥ (अ० १२।१।६२ अर्थात् हे मातृभूमे! हम तेरी सेवा में सदा उपस्थित रहें। हम सब प्रकार के रोगों से रहित स्वस्थ और ज्ञानी बन कर सदा तेरी

[शेष पृष्ठ ६ पर]

गोमाता की रक्षा अविलम्ब हो

(लेखक—वेंकटेश्वर शास्त्री, आचार्य गुरुकुल घटकेश्वर सो० आर०)

भारत देश में गोमाता आदिकाल से सर्वोच्च स्थान पाई है। माता के रूप में माने जाते हुए, सर्वदा सर्वत्र पूजित होते हुए, शांत एवं साधु स्वभाव से परोपकारार्थ जीवन व्यतीत करते हुए, समस्त मानव समाज को क्षीर समृद्धि से सतृप्त करके सर्व पूज्या हुई।

ऐसी पुनीत माता स्वार्थी हिन्दुओं के हाथों में मांसाहारियों के चन्द चांदी के टुकड़ों के लिये, गोमाता की निर्मम हत्या कर घर जोड़ने वालों की धन तृष्णा की आहुति होकर बिलख-बिलख कर रो रही है।

शांति एवं सत्याहिंसाओं के तप से भारतवर्ष को स्वराज्य दिलाने वाले महात्मा गांधी हमसे विलग हो गये हैं। यदि आज महात्मा जी होते तो गो माता को आंसू बहाने का अवसर ही नहीं आता। शांति के अग्रदूत महात्मा जी गोवध का निषेध अवश्य कराते। गो माता की रक्षा के लिये अपने प्राणों तक देने को कटिबद्ध हो जाते थे।

उक्त महात्मा की अहिंसा की अनुपम शक्ति से संपादित स्वराज्य के संचालन करने वाले आज के हमारे नेताओं की अहिंसा से विमुखता को भारतीय संस्कृति के कलक स्वरूप जघन्य कृत्य को देखते हुए चुप्पी साध कर बैठे रहने का यही तात्पर्य है कि अहिंसा से भारत का स्वातंत्र्य समुपार्जन करने पर भी गौ के प्रति अहिंसा की मनः प्रवृत्ति है?

जो महात्मा गो माता के प्रश्न को स्वराज्य से बढ़कर मानते थे, उन्हीं के अनुयायी आज परम पुनीत परोपकार परायणी गोमाता का वध करने वालों को निषेध करना दूर रहा, प्रत्युत गो भक्तों को धमकियां देने वाले इन शासकों का घृणित व्यवहार लज्जाजनक है।

आजीवन अगणित उपकार करके हमें उन्नतोन्नत करने वाली परम वात्सल्यमयी गोमाता के वंश को निर्वं[illegible] करने पर तुला हुआ आज का स[illegible] [illegible]र स्व जननी को आघात प[illegible]चाने में क्यों हिचकेगा?

प्रायः ऐसा कोई भारतीय शास्त्र न होगा जिसमे गौ का महत्व न दर्शाया गया हो। वेद मे लिखा है, "गावो विश्वस्य मातरः" अर्थात् गौवें विश्व की माताएं हैं। 'गवां मा हिंसीः' गायों की हिंसा मत करो। गौर्मेमाता गाय मेरा माता है। महा भारत में गो माता का वर्णन स्थान स्थान पर किया गया है। उत्तर गो ग्रहण का सारा प्रकरण गोमाता के सम्बन्ध में ही लिखा गया है।

प्राचीन काल में गोवध मनुष्य वध से बढ़कर माना जाता था। श्रुति व स्मृतियों मे गो हंतकों को मृत्यु दण्ड देने का विधान है। उस काल मे सर्व श्रेष्ठ धन गौ ही समझा जाता था।

'गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किंचिदिहाच्युत।'

हे अच्युत! मैं इस पृथ्वी में गाय के समान और कोई धन नहीं देखता। जिनके यहां गोधन अधिक से अधिक हो (न कि आज के समान चांदी के टुकड़े वैसे तो अब सिक्के चांदी के भी नहीं हैं) वही अधिक धनी माना जाता है। धर्म संहिता मे इसका प्रमाण इस प्रकार है—जिसके पास पांच लाख गाएं हों वह उपनन्द, नौ लाख गाएं हों नन्द, दस लाख गायों वाला वृषभानु, पचास लाख गायों वाला वृषभानुवर और १ करोड़ गायो वाला नन्दराज कहा जाता था।

उपनिषद् काल में भी गौ का आदर सत्कार उत्तमता से होता था। प्रत्येक आश्रम में शत-शत गौएं पाली जाती थीं। ब्रह्मचारी गण उन्हें चराते थे। आश्रमवासियों का मुख्य आहार गो दुग्ध, गोदधि, गो तक्र और गो घृत ही था। सत्यकाम जाबाल की गो सेवा विश्व विख्यात ही है। वह गौतम ऋषि की आज्ञा से गौवों को चराने ले जाता है, और उन चार सौ दुर्बल गौवों को वन में चराकर तन-मन से उनकी सेवा करके उन्हें एक सहस्र बनाता है। धन्य हो सत्य काम! तुम जैसे गो भक्तों से भारत माता का मुख सदा उज्वल रहेगा।

भगवान कृष्ण का गौवो के प्रति जो प्रेम था वह अनिर्वचनीय है। वे अपने जीवन के प्रभात काल गो सेवा में बिताये। गो का पालन करने से ही उनको भारतवासी गोपाल नाम से सादर सम्बोधित करते हैं।

रघुवश हो या रघुवश महाकाव्य हो उनके निर्माण का श्रेय गोमाता को ही है। आसमुद्रक्षितीश राजा दिलीप की गो सेवा अपूर्व है, उसे कवि कुल गुरु कालिदास के शब्दों में ही पढ़िए।

आस्वाद वाद्भिः कवलैस्तृणानां, कण्डूयनैर्दंश निवारणैश्च। अव्याहतैः स्वैर गतैः सतस्याः, सम्राट समाराधन तत्पराऽभूत॥

अर्थ—सम्राट दिलीप स्वादिष्ट तृणों के ग्रास से; खुजलाते, डांसों का निवारण करते और अप्रतिहत स्वच्छंद गतियों से गमन करने वाली नन्दिनी की सेवा सुश्रूषा में तत्पर हुआ। इतना ही नहीं आगे देखिए—

स्थितः स्थिता मुच्छलितः प्रयातां,
निषेदुषी मासन बन्ध धीरः।
जलाभिलाषी जलमाद दानां,
छायेव तां भूपतिरन्व गच्छत॥२ ६

राजा दिलीप नन्दिनी को खड़ी हुई देखकर खड़ा होता, चलता हुआ देखकर आसन बांध कर बैठ जाता है, और उसे जल की इच्छा होने पर उसे जल पिलाकर स्वयं भी जल पी लेता। इस प्रकार सेवा करते हुए छाया के तुल्य उसका अनुगामी बना।

धन्य हो! गोमाता! धन्य हो! आजन्म शुद्ध, आफलोदय कर्मी आसमुद्र क्षितीश तुम्हारी सेवा मे तत्पर रहा। किन्तु आज माँ! तुम अपने ही गोभक्त देश में गो पालकों के हाथों से, गो भक्षकों के लिये, गो वधिकों के निशित शस्त्रों से नष्ट हो रही हो। हम जो तुम्हारे पुत्र, गो भक्त गोपाल नामधारी, अहिंसा के व्रती, ऋषि मुनियों के वंशज, तुम्हारा वध, तुम्हारे वंश का आमूलोच्छेदन को देखते हुए भी अनजान रह जा रहे हैं। हमारे लिए यह कहना ही उचित है कि, पश्यन्नपि न पश्यति मूढ़ जनाः'।

क्या देश के कर्णधार यह नहीं जानते हैं कि एक बार पूज्य बापू ने कहा था कि 'गो हत्या नर हत्या के समान है' मेरे सामने गो रक्षा का सवाल स्वराज्य से बढ़ कर है, लोकमान्य तिलक ने भी जनता को यह आश्वासन दिया था कि 'जब हम स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे तब पांच मिनट में एक कलम से गोवध निषेध कानून पास कर देंगे! स्वराज्य मिले पांच मिनट के स्थान में पांच वर्ष ही नहीं पांच दुगना दस वर्ष से अधिक समय हुआ परन्तु गांधी तिलक के उत्तराधिकारी··· ·······

१९२१ में गोपाष्टमी के दिन महात्मा गांधी, पं० मोतीलाल नेहरू, आदि अनेक नेताओं ने गो हत्या के कारण असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव तक पास किया था। किन्तु उस महात्मा के अनुयायी और अहिंसा का नाम लेवा भारतीय भाग्य विधाताओं का गोमाता के प्रति होने वाले अन्याय को देखते रहना विषाद कर है। यह हमारे लिए कलक की बात है, देश के पतन का द्योतक है। यदि गोमाता का उद्धार शीघ्र न हुआ तो मानव जाति का भविष्य अंधकारमय होगा।

★

हमारे पारस्परिक सम्बन्ध....

(पृष्ठ ५ का शेष)

सेवा करते रहें। हे मातृभूमे! तुम्हारी वस्तुएं ही हमारे उपयोग के लिए हों अथवा हम स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करते रहें। हमारी दीर्घ आयु हो। ज्ञान सम्पादन और कर्तव्य पालन में सदा जागरूक रहकर हे मातृभूमे! हम आवश्यकता पड़ने पर तेरे लिये अपने प्राणों की बलि देने को उद्यत रहें। इससे बढ़ कर राष्ट्र या मातृभूमि के प्रति प्रेम का प्रतिपादन क्या हो सकता है। किन्तु वेद की देशभक्ति संकुचित, अन्य राष्ट्रों से द्वेषसूचक, राष्ट्रीयता नहीं है। वेद तो मनुष्य मात्र को एक परमेश्वर के पुत्र समझते हुये सबसे प्रेम करने और सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखने का उपदेश देते है। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे, मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।' (यजु० ३६।१८) जिस प्रकार अपनी माता के साथ प्रेम करने का अर्थ अन्यो की माताओं के साथ द्वेष करना नहीं, इसी प्रकार वेदिक देशभक्ति-सेवा का तात्पर्य है। वैदिक देशभक्ति पाश्चात्य उग्र राष्ट्रीयता के ढग की वस्तु नहीं है जिसका स्वर्गीय कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे जगद्विख्यात विचारक को इन कठोर शब्दों में प्रतिवाद करना पड़ा था कि—

'We have felt its iron grip at the root of our life, and for the sake of humanity, we must stand up and give warning to all that this nationalism is a cruel epidemic of evil that is sweeping over the human world of the present age and eating into its moral vitality. (Nationalism in the West P. 16)

अर्थात् इस उग्र राष्ट्रीयता के जीवन पर प्रभाव का अनुभव करते हुए अब हमें खड़े हो जाना चाहिए और संसार को चेतावनी दे देनी चाहिए कि यह भाव जो वर्तमान समय मे सारे जगत् में फैलता जा रहा है एक ऐसी बीमारी के सदृश है जो जगत् की नैतिक शक्ति को नष्ट करने वाली है।

सामयिक चर्चा

युग की पुकार

[श्री विश्वबन्धु वेदालंकार एम० ए०, आर्य स० हींग की मंडी आगरा]

सम्भव है कि इस लेख के महत्व पूर्ण विचार को सभी लोग बराबर महत्व न दें पर आज प्रायः सभी संस्थाओं के सम्मुख प्रश्न यह है कि केवल अपने संस्थापक के त्याग और बलिदान के नाम पर वह कितने दिन जीवित रह सकती है ? यही बात आर्य समाज के साथ भी है। अतः आर्य नेता गम्भीरता के साथ इस प्रश्न पर विचार करें। इस ओर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का ध्यान हम विशेष रूप से आकर्षित करते हैं।

—सम्पादक

१३ अप्रैल १९५८ के आर्यमित्र में श्री उषर्बुध आर्य का 'भारतेतर देशों में प्रचार की समस्या'' लेख छपा है जो वस्तुतः आर्य जगत के लिए एक चुनौती है। आर्य जगत को अब गम्भीरता से सोचना होगा कि ऋषि दयानन्द के ही त्याग और बलिदान पर वह कहां तक जीवित रह सकता है। उसे भी अब दृढ़ता से अपने पैरों पर खड़ा होना होगा।

यह बात निर्विवाद सत्य है कि आर्य समाज की सार्वभौमिकता व्यापकता और उत्तरदायित्व की दृष्टि से अभी तक आर्य समाज का कार्य अपने शैशव काल में ही गुजर रहा है। विदेशों के लिए प्रचारकों को तैयार करने की तो बात ही अलग रही, हमारे प्रकाशन का एक अच्छा केन्द्र भी तो नहीं है जहां आर्य जगत् के अच्छे विद्वान् बैठकर अपनी लेखनी का उपयोग कर सकें।

जब पिछले दिनों मैं आर्यसमाज के प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् पण्डित ईश्वर चन्द्र जी दर्शनाचार्य से मिला जो बम्बई में जैनियों के गुरुओं को पढ़ाकर अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं तो जो वेदना हुई उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। सोचा क्या आर्य समाज भविष्य में भी ऐसे दार्शनिक विद्वान् पैदा कर सकेगा स्वामी ब्रह्ममुनि जो अपने वैदिक मौलिक चिन्तन में अपना सानी नहीं रखते चन्दा करके अपनी पुस्तकों को छपाते फिर रहे हैं। पं० भगवद्दत्त, और पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु आदि विद्वानों का तो आर्य समाज पूरा उपयोग ही नहीं उठा सका। उठाता भी कैसे, कहीं विद्वानों को मिलकर बैठने की जगह भी हो। ये आर्य समाज के मनीषी अपनी अपनी शक्ति के अनुसार छोटा मोटा कार्य कर रहे हैं जो आर्य समाज के गौरव तथा उनकी विद्वता और जीवन की तपस्या के अनुकूल नहीं है।

भारत में क्या जैनी, क्या बौद्ध, क्या मुसलमान और ईसाई सबके बड़े बड़े संस्थान हैं जहां से बड़ा भारी साहित्य तैयार होकर अन्धकार को और भी बढ़ा रहा है। पर क्या आर्य समाज के पास एक भी ऐसा संस्थान है ? अभी पीछे भारतीय विद्याभवन बम्बई से 'वैदिक एज' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई तो आर्य जगत में सन सनाहट फैली। क्योंकि अभी तक तो यही समझा जा रहा था कि भारतीय संस्कृति का लिखा इतिहास अंग्रेजों की ही दूषित मनोवृत्ति का परिणाम है, स्वाधीन भारत में ऐसा अन्याय नहीं होगा। पर इस समय भी उसी दूषित मनोवृत्ति को देखकर कुछ दिल जले आर्य विद्वान लेख आदि द्वारा उसका परिष्कार करते हैं या फिर कोई छोटी मोटी पुस्तिका प्रकाशित की जाती है, पर इससे होने वाला क्या है ? काठ की तलवारों से तो युद्ध जीता नहीं जा सकता। इसके लिए तो एक शक्ति शाली संस्थान की आवश्यकता है जहां से प्रमुख विद्वानों द्वारा प्रमाणित साहित्य तैयार कराया जाय।

आर्यसमाज का दार्शनिक सिद्धांत अभी तक संसार के सामने स्पष्ट रूप में नहीं आ सका है—जैसे शंकर रामानुज आदि का। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि आर्य समाज में दार्शनिक ग्रन्थ बिल्कुल ही नहीं लिखे गए। पर जो कुछ लिखा गया है उसका ऐसी परिस्थितियों में लेखन या प्रकाशन हुआ है कि लोगों को उसकी प्रामाणिकता में सन्देह है। किसी समय आचार्य रामदेव के 'वैदिक मैगजीन' ने संसार भर के विद्वानों को अपनी ओर आकर्षित किया था पर आज उस स्तर का एक भी पत्र आर्य समाज में नहीं है। आश्चर्य होता है कि आर्य समाज जैसी क्रान्तिकारी और बुद्धि जीवी संस्था अभी तक सामूहिक रूप से एक विशाल संस्थान को स्थापित नहीं कर सकी। ऋषि दयानन्द ने परोपकारिणी सभा की स्थापना इसी उद्देश्य के लिए की थी पर लोगों की निजी स्वार्थता, पदलोलुपता और अदूरदर्शिता से वह भी कुछ न कर सकी और आज तो उसका अस्तित्व भी खतरे में मालूम पड़ता है।

उपरोक्त संस्थान के साथ ही उषर्बुध जी के अनुसार एक मिशनरी ट्रेनिंग कालिज भी सम्बन्धित रहे, जिसमें देश विदेश के लिए उच्च कोटि के प्रचारक तैयार किए जांय। जो अपना आदर्श जीवन बिताते हुए बौद्ध और ईसाई मिशनरियों की भांति काम कर सकें। अभी दिल्ली जाने पर पता लगा कि उषर्बुध जी की प्रेरणा से एक योरोपियन बहन वैदिक संस्कृति का अध्ययन करने के लिये भारत आई है। पर सुनते हैं कि वह बड़ी निराश है। आर्य समाज न उसके पढ़ने का ही समुचित प्रबन्ध कर सका है और नहीं रहने आदि का। ऐसा न हो कि यह बहन यहां से निराश लौट जाय। किसी समय स्वामी विवेकानन्द की प्रेरणा से सिस्टर निवेदिता भी भारत आई थी और वह राम कृष्ण मिशन से इतना प्रभावित होकर गई कि उसने अमेरिका और इङ्गलैंड में जो भारी काम किया वह किसी से छिपा नहीं है। उसी की बदौलत आज इङ्गलैंड और अमेरिका में राम कृष्ण मिशन की जड़ें मजबूती से जम गई है जो निरन्तर फैलती जा रही है। पर यदि आर्य समाज के पास भी ऐसा कोई स्थान हो तो एक नहीं अनेकों बहनों को तैयार किया जा सकता है।

वस्तुतः आर्यसमाज की स्थिति आज संरक्षण की सी हो गई है। ऋषि दयानन्द ने जिन प्रान्तों में काम किया, मानों हमने उन्हीं को सुरक्षित रखने का प्रयास किया है। नहीं तो क्या कारण है कि दक्षिण भारत में आर्य समाज कुछ भी विशेष काम नहीं कर सका। कहते है समस्त दक्षिण भारत में केवल चार ही आर्यसमाजें हैं जिनके पास अपने भवन हैं। मैं पिछले दिनों जब अपनी दक्षिण भारत की यात्रा पर गया तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि लोगों में आर्य समाज और ऋषि दयानन्द को समझने की बड़ी दिलचस्पी है। पर उनको समझाना आसान काम नहीं वह शङ्कर, रामानुज, माधव, और वल्लभ की भूमि है। वहाँ काम करने के लिए महान् विद्वान्, त्यागी और तपस्वी प्रचारकों की आवश्यकता है जो उन्हीं की भाषा में उनको समझा सके यह सब काम वैदिक मिशनरी ट्रेनिंग कालेज के द्वारा आसानी से हो सकता है।

श्री उषर्बुध जी ने इस काम के लिए प्रारम्भ में दस लाख रुपयों की माँग की है। पर कम से कम पन्द्रह लाख से कम में यह कार्य होने वाला नहीं है। लोग कहेंगे इतना रुपया आयेगा कहाँ से। यह विशेष चिन्ता की बात नहीं है। जिस आर्यसमाज ने करोड़ों रुपया खर्च करके देश में स्कूल और कालिजों का जाल सा बिछा दिया और जिसने हिंदी आंदोलन में बात की बात में लाखों रुपया इकट्ठा कर लिया वह इस महान और महत्वपूर्ण कार्य के लिए भी रुपया एकत्र न कर सके ऐसी बात नहीं है। यदि भारत भर के प्रत्येक आर्यसमाजी से एक एक रुपया भी लिया जायगा तो तीस लाख तो यों ही हो जायगा। फिर अधिक रुपया देने वालों की भी तो कमी नहीं है। गाजियाबाद सम्मेलन पर बम्बई के एक आर्य नेता ने हमसे कहा था कि सार्वदेशिक सभा इस कार्य को अपने हाथ में ले तो अकेला बम्बई इस कार्य में पांच लाख रुपया तक दे सकता है। आवश्यकता है इसके लिए एक आन्दोलन खड़ा करने की। सार्वदेशिक सभा को यह काम अवश्य ही अपने हाथ में लेना चाहिए। हिन्दी आन्दोलन से जो जागृति आर्य जगत् में हुई है सभा को इस महान् कार्य से उन लोगों को भी समुचित उत्तर मिल जायगा जो कहते हैं कि सभा कोई भी स्थायी काम नहीं कर रही है।

आर्यसमाज में रुपया एकत्र करने में समर्थ और प्रभावशाली व्यक्तियों की कमी नहीं है जिन्होंने अपने निजी सामर्थ्य से लाखों रुपया एकत्र किया है। फिर यह तो सार्वजनिक काम है। क्या ही अच्छा हो कि आर्य समाज के ख्याति प्राप्त विद्वान और नेता आनन्द स्वामी, स्वामी व्रतानन्द, बुद्ध देव विद्यालङ्कार और प्रकाशवीर शास्त्री आदि धन एकत्र करण के कार्य को अपने हाथ में लेकर एक डेपूटेशन के रूप में समस्त भारत की अलख जगा डालें। भारत के सभी कोनों में वैदिक धर्म के प्रेमी दानवीर लक्ष्मीपतियों की कमी नहीं है। श्री सेठ नान जी भाई कालिदास, राजा नारायण लाल जी पित्ति, श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी प्रद्युम्नसिंह जी, पं० ठाकुरदत्त जी अमृतधारा, लाला हंसराज जी गुप्ता, श्री पं० मिहिरचन्द्र जी धीमान, श्री सेठ दीपचन्द जी पोद्दार प्रभृति महानुभावों के सम्मुख यह योजना रखी जाय तो विश्वास है कि पन्द्रह लाख के स्थान पर पचास लाख भी हो सकते हैं।

यह निश्चित है कि यह कार्य आर्य समाज के अब तक किये गये कार्यों में सबसे अधिक महान और प्रभावशाली होगा। संस्थान के साहित्य निर्माण से आर्य समाज में स्थिरता आयेगी और वैदिक मिशनरियों के निर्माण और प्रचार से व्यापकता होगी। ईश्वर करे यह विचार साकार हो।

साहित्यिक चर्चा

हिन्दी गद्य का क्रमिक विकास

श्री मदनलाल शास्त्री

नाटक, उपन्यास, निबन्ध, आलोचना आदि के रूप मे हिन्दी गद्य साहित्य का क्रमिक विकास किस प्रकार हुआ—यही इस लेख का विषय है और कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक बातें कह देना इस लेख की विशेषता है।

—सम्पादक

हिंदी गद्य के विकास में सर्वप्रथम पृथ्वीराज के समय में कुछ शिला-लेख तथा ताम्र पत्रों के रूप में, फिर गुरु गोरखनाथ की 'गौरख गणेशगोष्ठ', १६ वीं शताब्दी में गोस्वामी विट्ठलनाथ जी ने 'शृङ्गार रस मंडन' तथा गोकुल नाथ जी ने '२५२ वैष्णवों की वार्ता', और '८४ वैष्णवों की वार्ता' दो गद्य की पुस्तकें लिखीं। नाभादास का 'अष्टयाम' किसी अज्ञात लेखक की 'नासिकेतोपाख्यान' खड़ी बोली का गद्य नरपतिनाल्ह ने 'बीसलदेव रासो' अमीर खुसरो की 'पहेलियाँ' गंग कवि की 'चन्द छन्द बर्णन की महिमा' तथा रामप्रसाद निरंजनी ने 'भाषायोग वशिष्ठ' पुस्तक लिखीं जो खड़ी बोली के अच्छे रूप मे थी।

खड़ी बोली गद्य के आदि चार लेखक

सदासुख लाल ने 'सुखसागर', इंशाअल्ला खां 'रानी केतकी की कहानी' लल्लू लाल ने 'प्रेमसागर' आदि पुस्तकों की रचना की।

इसके अनन्तर ईसाइयों के बाईबल का अनुवाद हिन्दी गद्य के रूप में हुआ। इसी समय अदालती भाषा उर्दू बना दी गई। हिन्दी के पक्षपाती राजा लक्ष्मणसिंह और राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द थे। तभी पंजाब में नवीनचन्द्र राय, पंडित श्रद्धाराम फिल्लौरी बंगाल मे राजाराममोहनराय तथा उत्तर मे स्वामी दयानन्द जी थे। इन्होंने 'वेदांग प्रकाश', संस्कार विधि' तथा 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखा जिसमे पंजाब जैसे देश में भी हिंदी का बोल बाला हो गया।

नाटक

हिन्दी में भारतेन्दु से पूर्व मौलिक नाटकों का कोई स्वरूप नहीं था। इन से पहले संस्कृत के नाटकों का हिन्दी में अनुवाद हुआ। इनके पिता गिरधरदास ने एक 'नहूष' नाम का नाटक लिखा था जो उपलब्ध नहीं हुआ।

हिन्दी के सर्वप्रथम नाटककार भारतेन्दु ही थे। उन्होंने अनुवादित तथा मौलिक दोनों प्रकार के नाटक लिखे। विद्यासुन्दर मुद्राराक्षस सती प्रताप, प्रेम योगिनी, वैदिक हिंसा हिंसा न भवति, चन्द्रावली आदि अनेक समाज सुधार तथा देशभक्ति सम्बन्धी नाटक लिखे। इसी समय श्रीनिवास दास ने 'संयुक्ता स्वयंवर', प्रेमघन जी ने 'भारत सौभाग्य', प्रतापनारायण मिश्र ने 'कलिकौशिक' रूपक लिखा था।

द्विवेदी युग की मौलिक नाटक में राय देवीप्रसाद पूर्ण ने चन्द्रकला भानुकुमार मिलिन्द ने 'प्रताप प्रतिज्ञा' अयोध्यासिंह उपाध्याय ने 'रुक्मणी परिणय, बद्रीनारायण भट्ट ने दुर्गावती तथा माखनलाल चतुर्वेदी ने कृष्ण अर्जुन युद्ध' नाटक लिखा।

हिन्दी नाटकों के स्वरूप तथा उस की कला मे परिवर्तन करने वाले जयशंकर प्रसाद थे। इन्होंने अतीत काल की कथा को वर्तमान से मिला कर भविष्य का मार्ग दर्शन कराया। जनमेजय का नागयज्ञ, अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त आदि नाटक लिखे। इनके पश्चात सुदर्शन ने अंजना, हरिकृष्ण प्रेमी ने 'बन्धन, 'रक्षाबन्धन' तथा उदयशंकर भट्ट ने विक्रमादित्य', अपराजिता 'अशोक अम्बा', आदि नाटक लिखे।

लक्ष्मीनारायण मिश्र का सिन्दूर की होली सेठ गोविन्ददास का कर्तव्य', 'कुलीनता' जगदीशचन्द्र माथुर का 'कोणार्क' इसके वर्तमान युग के उदाहरण हैं।

आज एकांकी का बोलबाला है। प्रसिद्ध एकांकीकार हैं—रामकुमार वर्मा सेठ गोविन्ददास, विष्णुप्रभाकर उपेन्द्रनाथ अश्क, उदयशंकर भट्ट, लक्ष्मीनारायण मिश्र आदि।

उपन्यास

उपन्यास गद्य का प्रमुख अङ्ग है। उपन्यास का आरम्भ भारतेन्दु युग में ही हुआ इनसे पहले रानी केतकी की कहानी' उपन्यास का संक्षिप्त रूप माना जाता है।

सर्वप्रथम श्री निवासदास ने 'परीक्षा गुरु' उपन्यास लिखा। बाल कृष्ण भट्ट ने सौ अजान एक सुजान' राधाकृष्ण गोस्वामी ने निःसहाय हिन्दू' आदि उपन्यास लिखे थे।

इस काल मे तिलस्मी और जासूसी उपन्यास ही अधिक लिखे गये थे जिनके प्रसिद्ध लेखक देवकीनन्दन खत्री थे। इन्होंने 'चन्द्रकान्ता' चन्द्रकान्ता सन्तति' आदि १४ उपन्यास लिखे। किशोरीलाल गोस्वामी ने ६४ उपन्यास लिखे। इनमें चरित्र चित्रण की झलक देखने को मिलती है। गोपालराम गहमरी ने हत्यारा कौन, डाकू की लड़की, जासूस का पत्र, आदि उपन्यास लिखे। अयोध्या सिंह उपाध्याय ने ठेठ हिन्दी का ठाठ' तथा 'अधखिला फूल' विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक ने "माँ" और भिखारिन आदि उपन्यास लिखे।

प्रेमचन्द्र जी वास्तव में हिन्दी उपन्यासों के प्राण हैं। इन्होंने उपन्यासों को तिलस्मी भूमि से निकाल कर वास्तविक भूमि में खड़ा किया। इन्होंने प्रतिज्ञा वरदान, सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि कायाकल्प, आदि अनेक उपन्यास लिखे जिनमें ग्राम और समाज का चित्रण है। इसी समय प्रसाद ने तितली और कंकाल' दो उपन्यास लिखे। जैनेन्द्रकुमार जैन की 'सुनीता' चतुरसेन शास्त्री का 'वैशाली की नगर वधू' उपेन्द्रनाथ अश्क का 'गिरती दीवारें'... 'दलाल' इलाचन्द्र जोशी का 'संन्यासी और मुक्तिपथ' तथा भगवतीचरण वर्मा का 'चित्रलेखा और टेढ़े मेढ़े रास्ते' प्रमुख हैं।

यशपाल का 'दादा कामरेड', अज्ञेय का 'शेखर' एक जीवनी सुन्दर उपन्यास है। ऐतिहासिक उपन्यासकार वृन्दावनलाल का झांसी की रानी' 'गढ़कुण्डार' मृगनयनी' प्रसिद्ध हैं।

निबन्ध

निबन्ध शब्द का अर्थ है कस कर बांधना। किसी विषय पर अपने भावों तथा विचारों को दृढ़ रूप से बांध देना ही निबन्ध है।

सर्व प्रथम भारतेन्दु ने अपनी पत्रिका 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' तथा 'बालबोधनी' में सामयिक वर्णनात्मक निबन्ध लिखने आरम्भ किये थे। तभी प्रतापनारायण मिश्र तथा बालकृष्ण भट्ट ने निबन्ध लिखे। भट्ट जी की 'भट्टनिबन्धावली' पुस्तक प्रसिद्ध है।

द्विवेदी जी ने निबन्ध साहित्य की बहुमुखी पूर्ति की थी। 'काव्यशास्त्र', 'भाषा', 'इतिहास' तथा 'प्रकृति' सम्बन्धी निबन्ध लिखे थे। 'कवि और कविता', 'हिन्दी भाषा' निबन्ध विद्वत्तापूर्ण हैं। प्रो० पूर्णसिंह ने दार्शनिक निबन्ध लिखे थे। चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, पद्मसिंह शर्मा तथा मिश्र बन्धुओं ने भी निबन्ध लिखे। पदुमलाल पन्नालाल बख्शी ने निबन्ध रत्नाकर', डा० श्यामसुन्दर दास ने 'निबन्ध साहित्य' लिखा था।

श्री रामचन्द्र शुक्ल आलोचना के समान ही सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार भी थे। आपके निबन्ध 'चिन्तामणि' २ भाग संग्रहीत हैं। भाव और मनोविकार श्रद्धा, घृणा प्रेम मित्रता आदि पर निबन्ध लिखे हैं। शुक्ल जी के निबन्ध विषय और शैली की दृष्टि से मौलिक होने के कारण निजी हैं।

आधुनिक युग में जब से विश्वविद्यालयों में निबन्ध अनिवार्य विषय बना है, तब से अनेक प्रकार के निबन्ध लिखे जा रहे हैं। श्री गुलाबराय, प्रो० महान, प्रो० नागेन्द्र, शांतिप्रिय द्विवेदी, डा० धीरेन्द्र वर्मा, रामबहुरि शुक्ल आदि ने निबन्ध साहित्य के भण्डार को भरा और अब भी भर रहे हैं।

आलोचना

आलोचना का शैशवकाल था। हिन्दी के प्रथम पत्र 'कवि वचन सुधा' और हरिश्चंद्र मैगजीन तथा 'चन्द्रिका' में प्रायः कुछ नोट समालोचना के नाम से प्रकाशित होते थे। भारतेन्दु ने 'मुद्राराक्षस' की भूमिका लिखी थी। बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन ने श्रीनिवास द्वारा लिखित 'संयोगिता स्वयंवर' नाटक की विस्तृत समालोचना की थी।

इनकी लेखनी का प्रभाव हिंदी साहित्य के प्रत्येक अङ्ग पर अमिट है। आपकी आलोचना का विषय ग्रन्थ विशेष नहीं भाषा का संस्कार करना होता था। आपने व्याकरण की त्रुटियों को दूर किया। गद्य और पद्य की भाषा अलग अलग निश्चित की। कालीदास की 'निरंकुशता' नाम की पुस्तक लिखकर उसमें भाषा के दोषों को व्यक्त किया।

वास्तविक आलोचना का आरम्भ मिश्र बन्धुओं से होता है 'हिन्दी नौ रत्न' 'मिश्र बन्धु विनोद' लिखी। तुलनात्मक आलोचना का श्री गणेश पद्मसिंह शर्मा ने किया। इन्होंने सभा भाषा के शृंगारी कवियों में बिहारी को ऊंचा माना। कृष्ण बिहारी मिश्र ने 'देव और बिहारी' लाला भगवानदीन ने 'बिहारी और देव' मे बिहारी को ऊंचा स्थान दिया पदुमलाल पन्नालाल बख्शी तथा डा० श्यामसुन्दर दास इनका 'साहित्य लोचन' और 'हिन्दी भाषा और उसका साहित्य।'

सर्वश्रेष्ठ आलोचक प० रामचन्द्र शुक्ल थे। इन्होंने व्याख्यात्मक तथा मनोवैज्ञानिक आलोचना को जन्म दिया। 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' 'तुलसी और जायसी का भूमिका भाग' तथा हिन्दी मे रहस्यवाद' शुक्ल जी की सुन्दर रचनायें हैं।

आज आलोचना साहित्य बहुत कुछ उन्नति कर रहा है। गुलाबरायजी ने हिंदी साहित्य, सूरदास आदि डा० नगेन्द्र ने सुमित्रा पन्त, तथा रीतिकाल, और देव कवि, डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी साहित्य का इतिहास, महादेवी वर्मा, नन्ददुलारे वाजपेयी ने प्रेमचन्द की उपन्यास कला आलोचनायें लिखीं। ★

अपने धन्धे को मेहनत और ईमानदारी से करना भी क्या पाप है ? क्या ब्राह्मण और शूद्र के शरीर के खून भिन्न-भिन्न हैं ? क्या वेद मन्त्रों से प्रत्येक वस्तु पवित्र हो जाती है ? इत्यादि प्रश्नों का एक रोचक उत्तर इस कहानी में पाठक पढ़ेंगे। —सम्पादक

कहानी—

विश्वनाथ का मन्दिर

[श्री श्यामप्रकाश आर्य]

'महाराज गजब हो गया, दुष्टों ने विश्वनाथ का मन्दिर भ्रष्ट कर डाला।"

'क्या शूद्र मन्दिर में प्रवेश कर गये"

"आप स्वयं निरीक्षण कर लें"

"हे भगवान् ! यह मैं क्या सुन रहा हूं, हम आचार्य लोगों के होते हुए शूद्र मन्दिर में प्रवेश कर गए। हे धरती माता तू फट जा मैं उसी में समा जाऊं, या आकाश फट पड़े तथा इन दुष्टों का सत्यानाश करदे।"

आचार्य कृपाशंकर जी अपने घर से नंगे पैर विश्वनाथ जी के मन्दिर की ओर बढ़े जा रहे थे। आज चार मील के रास्ते का कोई अस्तित्व ही नहीं रह गया सारी बस्ती पलक मारते ही पार हो गयी। तथा शूद्रों के बीच में पहुंच कर उनको खरी खोटी सुनाने लगे इसके पश्चात् एक अछूत नेता श्री गुलजारी लाल जी ने अपना मत स्वामी जी से कहना चाहा लेकिन उन्होंने कुछ भी सुनने से इनकार कर दिया तब उसने अपना भाषण प्रारम्भ कर दिया। वह सब तरफ से हरिजनों से घिरा हुआ था।

सवर्णों एवं हरिजन भाइयों, शराब पीना जुआ खेलना एवं दुष्कर्म करना पाप है लेकिन अपने धन्धे को मेहनत तथा ईमानदारी से करना भी क्या पाप है ? यदि ऐसा नहीं तो फिर हम लोगों को मन्दिर में जाने की आज्ञा क्यों नहीं ? क्या मैं मेरे भाई अछूत हैं इसलिये ? यदि ऐसा है, तो क्या यह न्याय है ? हम लोगों के शरीर में जो रक्त बहता है वह रक्त ही उच्चवर्ग वालों में भी बहता है। हममें कई सच्चाई से अपना जीवन व्यतीत करता हूं, लेकिन फिर भी सज्जन कहते हैं कि इनको हम छू नहीं सकते क्योंकि जन्म निम्न श्रेणी में हुआ है। आचार्य कृपाशंकर जी कहते हैं कि अब दूसरे मन्दिर का निर्माण होगा यह मन्दिर अशुद्ध हो गया है। हम निम्न श्रेणी वालों को चाहिए कि एक ऐसा संगठन बनाएं कि दूसरे मन्दिर का निर्माण करने के लिए कोई व्यक्ति न जाय। जिस भट्टे से ये ईंट चूना लें उस भट्टे में हम लोग काम छोड़ दें। कोई भी निम्न श्रेणी का मजदूर दूसरे विश्वनाथ के मन्दिर का निर्माण करने न जावे। इतना ही नहीं अपितु किसी भी अछूत भाई को किसी प्रकार का सहयोग आचार्य जी के विश्वनाथ जी के मन्दिर में न देे नहीं तो मन्दिर अशुद्ध हो जायगा। आज विश्वनाथ बाबा के मन्दिर में आकर हम लोग पवित्र हो गये तथा हम सबको यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि कभी कोई दुष्कर्म न करेंगे। तथा पाखण्ड का टन्टा उठा देंगे।

"भाइयों कितने दुख की बात है कि हमारे सवर्ण भाई हम लोगों पर इतना अन्याय करते हैं। जो ईश्वर पतित पावन है अर्थात् पापों का दूर करने वाला है जिसको स्वयं कोई पाप नहीं व्यापता हमारे सवर्ण भाई उसकी पूजा करते हैं। फिर पतित पावन ईश्वर के मन्दिर में पतितों को जाने पर रोक क्यों ? सबसे बड़ा पापी कौन ? जो पतित पावन के मन्दिर में जाने से पतितों पर रोक लगाये। क्या यह महापातक नहीं ? फिर उन महा पतितों के लिए विश्वनाथ बाबा का मन्दिर खुला है तो हम निम्न श्रेणी वालों के लिए बन्द क्यों ? क्या कोई इसका कारण बतला सकता है ? सवर्ण सनातन धर्मी भाई कहेंगे कि तुम लोगों का जन्म संस्कार निम्न श्रेणी में हुआ है। लेकिन जन्म के कारण कोई नीच या पतित नहीं एवं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य उत्तम नहीं। अतः हरिजनों को नीच मानना वेद और वैदिक शास्त्रों का अपमान करना तथा इससे वैदिक समाज शास्त्र एवं वर्ण व्यवस्था का भी अपमान होता है। इसलिए कोई भी किसी को अछूत नहीं कह सकता तथा हम लोगों को अछूत शब्द का बहिष्कार करना चाहिए। अवर्ण कौन जो मांस मदिरा एवं मादक पदार्थ का सेवन करें जुआ एवं सट्टा खेले रिश्वत ले तथा चोरी एवं व्यभिचार आदि नीच कर्म करें। हम लोग इन कर्मों से परे हैं तो फिर नीच क्यों ? सज्जनों से मेरा यह नम्र निवेदन है कि वे अछूतों के हाथ की निर्मित किसी भी वस्तु को नये विश्वनाथ के मन्दिर में प्रयोग न करे नहीं तो मन्दिर अशुद्ध हो जायगा।"

स्वामी कृपाशंकर जी अधिक सुन न सके एवं वे सवर्णों के साथ वहां से चले गये। दूसरे मन्दिर के निर्माण के लिये दान आदि आने लगे। एक सप्ताह में करोड़ों रुपये की धनराशि एकत्र हो गयी। मन्दिर के निर्माण के हेतु भूमि क्रय हुई। मजदूर तथा मन्दिर बनाने के सामान का प्रबन्ध शुरू हो गया। कार्य कर्ता लोग बड़े उत्साह से इधर उधर दौड़ रहे थे लेकिन कहीं से भी कुशल राज नहीं मिल रहे थे। भट्टे वाले मालिकों से उनके नौकरों ने अल्टीमेटम दे दिया कि यदि आपने आचार्य जी के मन्दिर के वास्ते कोई भी उत्पादित वस्तु दी तो हम लोग काम छोड़ देंगे क्योंकि मन्दिर अपवित्र हो जायगा। अतः सामग्री का भी प्रबन्ध न हो सका।

कल शिवरात्रि है प्रातः आठ बजे शिलान्यास होना है लेकिन राज तथा सामान दोनों का ही प्रबन्ध न हो सका। अब स्वामी कृपाशंकर जी स्वयं प्रबन्ध करने निकले। सारे शहर में मजदूर ढूंढते रहे न मिला ठेकेदारों ने कोरा उत्तर दे दिया और कहा कि रुपया दे सकता हूं लेकिन सामग्री व राज नहीं। निराश आचार्य अपने आश्रम को लौट रहे थे कि सामने से एक मजदूर आता हुआ दिखाई दिया।

"स्वामी जी दण्डवत"

स्वामी जी ने उसे आशीर्वाद दिया और पूछा कि क्या मजदूरी करोगे ?

राज ने कहा कि "सरकार मजदूरी करने के लिए तो हम लोग पैदा ही हुए हैं क्यों नहीं करेंगे। लेकिन क्या काम करना पड़ेगा ?"

"कल विश्वनाथ के मन्दिर का शिलान्यास है"

'स्वामी जी मैं नहीं करूंगा"

'क्यों"

'मन्दिर अपवित्र हो जायगा"

"वह मन्त्रों से पवित्र हो जायगा"

"तो क्या वेद मन्त्रों के द्वारा प्रत्येक वस्तु पवित्र हो जाती हैं।"

'हाँ"

"पुराने मन्दिर को फिर पवित्र क्यों नहीं कर लेते ?"

"उसमें अछूत नित्य जायेंगे।"

"तो क्या अछूत पवित्र नहीं हो सकते"

"नहीं"

"मनुष्य पवित्र नहीं हो सकता लेकिन पदार्थ पवित्र हो सकते हैं इसलिए मैं आपके यहाँ मजदूरी नहीं कर सकता हूं, कृपा करके यह और बतला दीजिए कि कोई जन्म से पापी होता है या कर्म से ?"

"कर्म से"

"हम लोग पाप कर्म नहीं करते फिर पापी और अछूत क्यों, बोलिए ? बोलते क्यों नहीं ?"

स्वामी जी के आँखों के सामने से कालिमा का पर्दा हट गया ऐसा प्रतीत हुआ कि आज उनको ईश्वर के दर्शन मिल रहे हों मस्तिष्क की दशा में परिवर्तन हो गया। आज तक अछूत जिसको वे नीच मानते थे गुरु मान कर पैर छूने को लपके। वह पीछे हट गया और स्वामी जी को उठा लिया। और गले मिलकर रोये।

× × ×

आज शिवरात्रि का पर्व है। बाबा विश्वनाथ के मन्दिर में बाजे तथा शहनाई बज रही है। गुलजारी लाल तथा स्वामी कृपाशंकर कन्धे से कन्धा मिलाए प्रबन्ध में व्यस्त है।

इधर सुनो !

हिन्दी भाषा अमर करेंगे,
हम अपने बलिदानों से,
डोल उठेगी कैरोशाही
वीरों की ललकारों से।
प्रश्न नहीं है एक हमारा,
है भारत की जननी का,
भरी वीरता जिसके उर में,
वीर प्रसूता अवनी का।
सत्याग्रह की एक न माने
करता अपनी मनमानी,
ऐसा राज्य हिला देंगे हम–
भारत के हैं सेनानी।
"मातृ चण्डिके ! गढ़ तेरा है"
तुझे पिपाशा शोणित की,
दानवता से उदरपूर्ति कर
सोच आर्यों के हित की।
सच्ची मांग उठाई जितनी,
पूर्ण हुईं सभी अब तक,
जब तक अमर न हिन्दी होगी
विराम न पायेंगे तब तक।
था अंग्रेजी राज्य यहां पर
जिसकी शक्ति थी भरपूर,
सत्य अहिंसा से ले टक्कर
हुआ उसी क्षण चकनाचूर।
गोली, डण्डे कितने बरसें,
होगा विजयी सत्य सदा,
आग्रह जिसका हम करते हैं
अमर रहेगा वही सदा।
—योगेन्द्रकुमार

आह्वान
★'धर्म'

उठो ऐ देश के वीरो !,
तुम्हें हिन्दी जगाती है।
अधर्मी नीति कैरों की,
उसे नीचा दिखाती है॥
हमारे मान्य नेहरू जी,
हिचकते न्याय करने में।
अवश्य ही आत्म निर्बलता,
उन्हें पथ से डिगाती है॥
कहीं पटके गये बालक,
कहीं बूढ़े गए कुचले।
मचा है घोर कोलाहल,
प्रजा अति बिलबिलाती है॥
घसीटा माँ व बहनों को,
पकड़ कर केश दुष्टों ने।
वही त्रेतायुगी स्थिति,
पुन नाटक दिखाती है॥
अहिंसा सत्य का जामा,
पहन कर शिष्य बापू के।
बहाते रक्त मानव का,
शर्म इनको न आती है॥
तुम्हीं आधार संस्कृति के,
तुम्हीं साहित्य संरक्षक।
तुम्हारे शौर्य साहस के,
स्वयं श्रुति गीत गाती है॥
पड़ी है आज मानवता,
बड़े ही धर्म सङ्कट में।
बचाओ आनि अब उठकर,
नहीं तो लाज जात है।

"हिन्दी रक्षा आन्दोलन"
★

हिन्दी भाषा अमर रहेगी देखो हिन्दुस्तान की।
नहीं मिटा सकेगा इसे कोई चाहे हवा चले तूफान की॥
यवनों ने इस हिन्दी पर क्या नहीं करके दिखलाया था.
भारत मां के लाखों को जबरन मुसलमान बनाया था,
जोरावर और फतहसिंह को दीवारों में चुनवाया था,
तेग बहादुर और हकीकत को भी फांसी पर लटकाया था,
"कैरो" है ये तुम्हारे घर की बात न है ये पाकिस्तान की।
जब भारत के कोने कोने पर ये अत्याचार मचाया था,
जो नहीं बनता था मुसलमान वहां "कत्ले आम" कराया था।
महाराणा ने रण पर फिर ये ही बिगुल बजाया था,
तब वीर शिवा भी ले तलवार मैदाने जंग में आया था,
त . गुरु गोविन्द औ नानक ने भी खाई थी सपथ कृपाण की;
जब शासन शासक यवनों का थर थर थर थर थर्राया था,
भाइयों आपस की फूट से फिर अंग्रेज यहां आया था,
चट से कुछ भूमि मांग यहाँ पर अपना जाल बिछाया था,
नवाबसाहब लखनऊ पर कुछ दिनों में रोब जमाया था,
उतार दिया गद्दी से कहा ये गद्दी होगी इङ्गलिस्तान की।
फिर अंग्रेजों ने भी यहाँ पर हिन्दी का नाम मिटाया था,
भारत के बच्चे बच्चे को देखो अंग्रेज बनाया था,
लाखों ही खोल "मिशन" दीये इसाइयत को खूब बढ़ाया था,
रोटी बेटी देकर फिर यू लाखों का धर्म मिटाया था।
देखो सुख का जीवन मांगो मत करो बात ईमान की।
मतवालों ने मत फैलाकर मतवाला देश बनाया था,
ऊंच नीच का भेद डाल आपस में खूब लड़ाया था,
हिन्दी प्रेमी गुजरात देश से तब वीर दयानन्द आया था,
ले पाखण्ड खण्डिनी ओम् ध्वजा का नाद बजाया था,
कर तर्क शास्त्र प्रमाणों से थी बाजी लगाई जान की।
बिछुड़े पिछड़े भाइयों को उसने ही गले लगाया था,
खोल समाजें दी उसने फिर सबको आर्य बनाया था,
तुम राज्य करो आर्य वीरों सुराज्य का पाठ पढ़ाया था.
जो लहू पड़ गया था ठण्डा फिर उसको उष्ण बनाया था,
ले लिया सुराज्य आर्यों ने फिर नहीं चाल चली शैतान की।

—श्री चन्द्रगुप्त जी "आर्य" प्रधान आ०कु०स० गुरुकुल गंगीरी, अलीगढ़

"बढ़ाते चलो पग"
★

न हारो तिमिर से बढ़ाते चलो पग,
शिखर का नया पथ कहीं तो मिलेगा।
नये भाव मन में सदा द्वन्द लाते,
मचलते दृगों में वितृष्णा जगाते।
पुरातन हमेशा नये का विरोधी,
विरोधी जगत् में घृणा ही सजाते॥
सफलता विफलता प्रगति के युगल चिह्न,
डरो मत इन्हीं से नया जग मिलेगा।
देखो जलधि के उमड़ते नये ज्वार,
देखो गरजतीं ये श्यामल घटायें।
नियति के करों में थिरकते सदा क्षण,
नये राग से जो धरा को सजायें॥
मिली हार भी तो अभी से हुआ क्या ?
थको मत विजयरथ कभी तो मिलेगा।
नहीं ज्ञान कब मृत्यु किसको बुलाले ?
अमिय कौन पीकर यहां आज आया।
अस्थिर विभव पर अभियान कैसा ?
मेहमान बनकर यहां प्राण आया॥
जब तक जियो प्राण उज्ज्वल बना लो,
अमर शान्ति का क्षण कभी तो मिलेगा।
न हारो तिमिर से बढ़ाते चलो पग,
शिखर का नया पथ कहीं तो मिलेगा॥
—कुमारी सरोजिनी गोरखपुर

गीत

चिर मिलन की साध लेकर,
विश्वास पथ पर बढ़ रहा हूं।
देखता जब इस जगत को
काट खाने दौड़ता है
आश की दुनियां तिमिर मय
राह अपनी खो चुका हूं
किन्तु फिर भी साध बाकी,
देव ! उसमें घुल रहा हूं।
बाधाओं का एक बवण्डर
मेरे नयनों आगे आया
विद्युत सी तड़पन लेकर
मानस बन घन, लहराया
केवल भ्रम था मानस का,
जिसका फल मैं भोग रहा हूं !
कांटों में हो पुष्प निखरते
विपदा ही में हास मुखरते
मानव के आंसु में ही
कवि जनों के भाव उमड़ते
किन्तु इन्हीं भावों के पीछे,
सदा लुटता संसार रहा है !
सत्य का दीया जला कर
झांकता हूं जब निलय में
मुखर उठती वेदना है
चाँदनी की मधु छाँह में
चाँदनी के छांव में हो,
गीत गाता जा रहा हूं।
—रामेमिलन द्विवेदी उन्मत्त"

मधुर वेद वीणा

धरा पर न मानव अभय हो विचरता
सफलता न विज्ञान की प्राप्त करता
दलित दीन दुखिया न सुख देख पाते
बिलखते सिसकते बड़ा दुख उठाते
पतित आज विधवायें अबलायें होतीं
सुमुख आंसुओं से निरन्तर भिगोतीं
कृपा दृष्टि इन पर सभी की न होती।
मधुर वेद वीणा बजी यदि न होती॥
हृदय में न गणतन्त्र का भाव भरता
न कोई किसी को यहां प्यार करता
न कटुता विषमता हृदय से मिटाते
न प्रतिशोध की भावनायें हटाते
न अध्यात्म का गुरु यही देश बनता
समुन्नत न होती यहां आज जनता
अमर प्रेम कलिका खिली पुनि न होती
सभी जन अंधेरे में फिरते भटकते
न सन्मार्ग मिलता न जीवन संभलते
न वे पाप या पुण्य को कुछ समझते
न वे 'धर्म' पथ पर कभी पैर धरते
दुखद ताप सरिता उमड़ती घुमड़ती
सुखद कार्यशैली दिनोदिन बिगड़ती
सजल नाव तट की दिशा में न होती।
न गौ वंश का मान सम्मान बनता
न अमृत सरीखा मृदुल दुग्ध मिलता
न गुरुकुल प्रणाली पुनर्जन्म पाती
न शुचि आर्य संस्कृति पुनः जगमगाती
न गुरुदक्षिणा क्रांति का रूप धरती
न अन्याय के दम्भ को चूर करती
'समानः मनः' की गुंजी ध्वनि न होती।
—धर्मचन्द्र वर्मा, लखनऊ

आर्य महिला मण्डल

सामाजिक व्यवहार के सूत्र

(विद्या वर्मा)

आपसी व्यवहार मे सामाजिकता का निर्वाह शिष्टाचार कहलाता है। हमारा व्यवहार ऐसा होना चाहिए, जिससे किसी व्यक्ति को हमारे वचनों से कष्ट न हो। यह शिष्टाचार दिखावटी नहीं होना चाहिए स्वाभाविकता उसकी अनिवार्य शर्त है। शिष्टाचार की बात बडो से लेकर छोटों तक और उठने से लेकर सोने तक चलती है।

बडो को कभी 'तुम' मत कहो, उन्हे 'आप' कहो और अपने लिए 'हम' का प्रयोग मत करो 'मैं' का प्रयोग करो।

जो बुजुर्ग घर म हैं, उन्हे सवेरे उठते ही नमस्ते करो। अपने स जो भी बडे व्यक्ति मिलें, उन्हे नमस्ते करना चाहिए।

गुरुजनो को पत्र व्यवहार म भी नमस्ते लिखना चाहिए।

जब किसी नवीन व्यक्ति से परिचय कराया जाय तब उसे नमस्ते करना चाहिए। पान इलाइची या पुरस्कार जब कोई दे, तो उसी समय नमस्ते करना चाहिए।

नमस्ते करते समय हाथ म कोई वस्तु हो तो बगल म दबा कर नमस्ते करो।

चिल्ला कर या पीछे से नमस्ते नहीं करना चाहिए शान्तपूर्वक नमस्ते करना चाहिए।

नमस्ते की उत्तम रीति दोनों हाथ जोडकर मस्तक झुकाना है। जिस समाज मे नमस्ते के समय जो शब्द कहने की प्रथा हो, उसी शब्द का व्यवहार करना चाहिए।

जब कोई भोजन कर रहा हो, स्नान कर रहा हो, या बाल बनवा रहा हो, उस समय उससे नमस्ते नहीं करना चाहिए। उसके इन कार्यों से निवृत्त होने पर नमस्ते करना चाहिए।

बच्चों को, नौकरो अथवा किसी को भी 'तू' मत कहो, तुम या आप करके बोलो।

जब कोई तुम्हे नमस्ते करे तब उसको नमस्ते का उत्तर नमस्ते कहकर, आशीर्वाद देकर या जेसे भी उचित हो अवश्य दो।

नौकरों को भी भोजन तथा विश्राम के लिए उचित समय दो। बीमारी आदि में भी उसकी सुविधा का पूर्ण ध्यान रखो। वह भोजन या स्नान मे लगा हो तो कदापि भी पुकारो मत। किसी को भी कभी नीच मत समझो।

तुम्हारे आने से, तुमसे जो छोटे हैं उन्हे असुविधा न हो—यह ध्यान रखना चाहिए। छोटे के आग्रह करने पर भी उनसे अपनी सेवा का काम कम से कम लेना चाहिए।

अपने से बडी महिलाओं को माता बराबर वाली को बहन तथा अपने से छोटी को कन्या समझो।

बिना जान पहचान की महिला से यदि बात करनी पड जाय तो दृष्टि नीचे करके बात करना चाहिये। किसी महिला को घूरना, उसमे हँसी करना उनके प्रति इशारे करना या उनका छूना असभ्यता है, पाप भी है।

घर के जिस भाग म स्त्रियाँ रहती हो, वहा पर बिना सूचना दिये नहीं जाना चाहिए। जिस मार्ग से स्त्रिया आती हों उस मार्ग से नहीं जाना चाहिए। जहा स्त्रिया स्नान कर रही हों वहाँ नहीं जाना चाहिए। जिस कमरे मे स्त्री अकेली हो, सोई हो, कपडे पहिन रही हो अपरिचित हो, या कोई पर्दा करनेवाली हो उनमे कदापि भी नहीं जाना चाहिए।

गाडी, नाव आदि मे स्त्रियों को बैठाकर बैठना चाहिए। कहीं सवारी या अन्यत्र स्थान की कमी हो और स्त्री आ जाये तो उठ कर उसके बैठने के लिए स्थान खाली कर देना चाहिए।

नङ्गी स्त्रियों को या उनके चित्र को देखना बहुत बुरा है। स्त्रियों के सामने पर्याप्त वस्त्रों में स्नान करना चाहिए। उनके सामने गुप्त रोगो की चर्चा नहीं करनी चाहिए।

महिलाओं के लिये भी ये ही नियम हो। उन्हे खिडकी या दरवाजे में खडे होकर नीचे या ऊपर की ओर झाकना नहीं चाहिए और न ही अच्छे अच्छे वस्त्र तथा गहने इत्यादि पहन कर बाजार जाना चाहिये। सादगी सबसे बडा आभूषण है।

कहानी की परिभाषा

गल्प एक कविता है, जिसमें जीवन के किसी एक अग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य होता है।

—उपन्यास सम्राट मुशी प्रेमचन्द

कहानी जीवन की प्रतिच्छाया है और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी है एक शिक्षा है जो उम्र भर मिलती है और समाप्त होती नहीं। —अज्ञेय

कहानी एक ऐसा आख्यान है जो इतना छोटा हो कि एक ही बैठक म पढा जा सके और जो पाठक पर एक ही प्रभाव के उत्पन्न करने के उद्देश्य से लिखा गया हो। उसम ऐसी सब बातों का बहिष्कार कर दिया जाता है जो उस प्रभाव को अग्रसर करने म सहायक न हो। वह स्वत पूर्ण होता है। —एडगर एलेन पो

कहानी दुनिया का सबसे प्राचीन वस्तु है इसलिए आश्चर्य नहीं कि इसका प्रारम्भ उसी समय से हुआ हो जब मनुष्यो ने घुटनो के बल चलना सीखा हो।

—प्रसिद्ध अग्रेजी उपन्यासकार रिचर्ड बर्टन

कहानी जीवन की प्रतिलिपि नहीं है वरन जीवन के कुछ अगो का एक साधारणीकरण है। —स्टीवेन्सन

कहानी वह है जो आध घटे से लेकर एक दो घटे में पढी जा सके या कहानी वह है जो एक बैठक म पढी जा सके। —पो

कहानी मनोरजन के साथ साथ अवश्य किसी न किसी सत्य का उद्घाटन करती है। यह जितना आशिक और एकदेशीय होगा कहानी भी उसी अनुपात म निम्न श्रेणी की होगी।

—कलामर्मज्ञ राय कृष्णदास

उपन्यास एक तृप्ति है तो कहानी एक उभार है। —बेरी पेन

कहानी जीवन का स्नप शाट है।

—एक आधुनिक अग्रेजी आलोचक

कहानी की परिभाषा देना उतना ही कठिन है जितना बिहारी की नायिका की तस्वीर खींचना, जो चतुर चितेरा को भी क्रूर बना देता है।

—बाबू गुलाबराय

जीवन का प्रतिक्षण एक रस गर्भित कहानी है। कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर

सकलनकर्ता—

—हेमचन्द जैन

मगहर में मुसलमानो की गुन्डागिरी

दिनाक २१ ४ ५८ को ईद के दिन ग्राम मगहर व काजीपुर के मुसलमान ईदगाह में नमाज पढ रहे थे। वहाँ पर कुछ गुण्डों ने हल्ला मचाया कि काजीपुर मुहल्ला को हिन्दुओं ने लूटना प्रारम्भ कर दिया है जिससे सभी मुसलमान दौडते हुए वहा से चल पडे और अपने अपने घरो से लाठी भाला तलवार आदि लेकर हिन्दुओ को गाली देते हुए आये और लगभग ५०० ६०० मुसलमानो ने यशोदानन्द गुप्त जो भूतपूर्व सभापति मगहर रह चुके हैं के घर को घेर लिये उनके खपड नरिये और टट्टर आदि को पीटने लगे कुछ लोग जबरदस्ती यशोदानन्द के हाते में घुस गये। थाना खलीलाबाद के अधिकारियो के सामयिक हस्तक्षेप से वातावरण शान्त हुआ और १६ आदमियो की एक अमन कमेटी थानेदार खलीलाबाद ने बनाया। सूचना प्राप्त होते ही जिलाधीश एव पुलिस अधीक्षक भी घटना स्थल पर पहुचे अब तक इस सम्बन्ध में ४३ गिरफ्तारियाँ हो चुकी हैं और ये मुलजिमान जमानत पर छूटे हैं।

शोक के साथ लिखना पड रहा है कि कम्यूनिस्ट व कांग्रेस के कतिपय कार्यकर्त्ता पुलिस पर इस बात का अनुचित दबाव डाल रहे हैं कि इस काड के सम्बन्ध म कोई कार्यवाही न की जाय। —रामनयन प्रसाद आर्य सदस्य आर्य समाज, मगहर (बस्ती)

आर्यवीर दल शिक्षण शिविर

पूर्वी उत्तर प्रदेशीय आर्य वीर दल केन्द्र काशी क्षेत्र का ग्रीष्म कालीन शिक्षण शिविर वाराणसी स्थित दयानन्द महा विद्यालय में सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी जी की अध्यक्षता मे १६ जून से २९ जून तक लग रहा है। शिविर का उद्घाटन दिनाक १५जून को सायकाल५बजे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के भू-पू०प्रधान तथा अमेठी स्टेट के महाराज श्री कुवर रणजयसिंह एम० एल० सी० के कर कमलो द्वारा सम्पन्न होगा। शिविर म शिक्षार्थियो को निम्नलिखित वस्तुए साथ लाना अनिवार्य है। एक लाठी, एक लोटा, एक कटोरा, बिछावन, पेन्सिल, नेकर, गञ्जी, गणवेश आदि। शिविर का शुल्क सिर्फ १०) रखा गया है। शुल्क तथा शिक्षार्थियो की नामावलि निम्न लिखित पते पर भेजें। श्री मेवालाल आर्य, मन्त्री पूर्वी उत्तर प्र० आ० वी० द० द्वारा प्रभात प्रेस, गोला दीनानाथ वाराणसी।

आर्य जगत

गुरुकुल वृन्दावन समाचार

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का द्वितीय सत्र समाप्त हो गया। अधिकांश ब्रह्मचारी अवकाश पर चले गये इस बीच विश्वविद्यालय के अध्यापक तथा प्राध्यापकों ने गुरुकुल के लिए मथुरा जिलान्तर्गत गांवों में जाकर अन्न संग्रह का कार्य किया है तथा कर रहे हैं। ग्रामीण आर्य बन्धुओं ने उन्हें सहयोग प्रदान किया है अत: वे बधाई के पात्र हैं।

विश्वविद्यालय का प्रथम सत्र जुलाई ५८ से प्रारम्भ होगा। उसी अवसर पर नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश भी होगा। गुरुकुल शिक्षा प्रेमी जो महानुभाव अपने बालकों को गुरुकुल में प्रवेश कराना चाहते हैं, वे गुरुकुल वृन्दावन के कार्यालय से प्रवेश नियम फार्म मुफ्त में मंगा कर अभी से स्थान सुरक्षित करा लें।

—नरदेव स्नातक
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन, मथुरा

रामनगर तथा गौरीगंज में धार्मिक मेले

आर्य समाज रामनगर का वार्षिकोत्सव ११ से १३ मई तक तथा गौरीगंज का १४ व १५ मई को धूमधाम से हुआ। ११ मई को रामनगर तथा १४ मई को गौरीगंज के उत्सव का उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व प्रधान राजकुमार श्री रणञ्जयसिंह एम० एल० सी० ने किया। इन सभाओं में काशी के शास्त्रार्थ महारथी प० विद्यानन्द शास्त्री, प० देवकलीदीन शर्मा भू० पू० अध्यक्ष जिला बोर्ड, ठा० महिपालसिंह, ठा० वेदपालसिंह, श्री बी० एन० पाल बी० एस० सी०, एल० एल० बी०, म० महावीर प्रभृति के भाषण एवं भजनोपदेश हुए। २२।५।५८ शाहगढ़ के मेले में भी धर्मप्रचार हुआ जिसमें राजकुमार श्री रणञ्जयसिंह जी तथा श्री महिपालसिंह के भाषण हुए।

जिला आर्य प्रचार मंडल एटा

३ मई को ग्राम बढ़ारी खुर्द में मंडल की ओर से एक शुद्धि समारोह किया गया जिसमें ६ व्यक्ति शुद्ध किये गये। वे मुसलमान हो गए थे। शुद्ध होने के बाद उनका नामकरण संस्कार भी किया गया और हिन्दू नाम रखे गए। २४ विभिन्न ग्रामों से लगभग १००० दर्शक भी उपस्थित थे। श्री बाबूराम, भूदेव जी, मानपाल जी, उदयप्रकाश जी, सच्चिदानन्द जी, गंगानन्द जी, नौरतराम जी आदि ने शुद्धि संस्कार कराया।

शिक्षा संस्थाओं की सभा

श्री रणवीर विद्या प्रचारिणी सभा (रजिस्टर्ड) अमेठी के अधीनस्थ समस्त इन्टर कालेज तथा विद्यालयों के छात्रों एवम् अध्यापकों की एक महती सभा राजभवन रामनगर में श्री प० देवकलीदीन शर्मा वकील की अध्यक्षता में हुई जिसमें राजकुमार श्री रणञ्जयसिंह विद्यारत्न ने भाषण देते हुये छात्रों को चरित्र एवम् अनुशासन का महत्व समझाया और अन्त में सबको जल पान कराया।

इस अवसर पर प० विद्यानन्द जी काशी का भी विद्यार्थियों के कर्तव्य पर सारगर्भित भाषण हुआ।

दयानन्द ब्राह्म महा विद्यालय हिसार

लाहौर का दयानन्द ब्राह्म महा विद्यालय डी० ए० वी० कालिज कमेटी की ओर से अब हिसार में खुल गया है। संस्कृत सहित मैट्रिक या हिन्दी भूषण पास विद्यार्थी यहां लिए जाते हैं। ४ वर्ष का कोर्स है। विद्यारत्न, विद्यानिधि, और विद्या वाचस्पति यहां की उपाधियां हैं। चौथे वर्ष में पंजाब विश्व विद्यालय की शास्त्री परीक्षा दिलायी जाती है। भोजन निवास का प्रबन्ध नि:शुल्क है। उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों की नौकरी के लिए भी कमेटी प्रबन्ध करती है। नया भवन बनना प्रारम्भ हो गया है। विद्यार्थियों का प्रवेश भी जारी है। प्रवेश होने वाले विद्यार्थी शीघ्रता करें।

—देशराज सूरी, मन्त्री

आ० स० सुभाष नगर बरेली

आ० स० सुभाष नगर बरेली का ५५ वां तथा आर्य पुत्री उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का २७ वां वार्षिकोत्सव ७ से १५ मई तक हुआ। स्वामी ब्रह्मानन्द जी, पं० विहारीलाल शास्त्री श्री विश्वनाथ त्यागी, श्रीमती शकुन्तलादेवी के भाषण और ठाकुर नन्दलालसिंह तथा श्री श्याम शर्मा के सुन्दर भजनोपदेश हुए। आर्य गुरुकुल एटा के सञ्चालक वानप्रस्थी श्री मोहन लाल पोद्दार ने पारितोषिक वितरण किया। पारितोषिक का लगभग सौ रुपए का सामान दान में दिया और १०) मासिक सहायता पाठशाला को देने का वचन दिया।

वाग्वर्धनी सभा, गुरुकुल झज्जर

प्रधान—श्री गंगाराम जी
मन्त्री—श्री प० सुदर्शनदेव जी

आ० स० शास्त्री नगर कानपुर

इस समाज का तीसरा वार्षिकोत्सव ८ से ११ मई ५८ तक ससमारोह मनाया गया। प० विहारीलाल शास्त्री श्री ओम्प्रकाश शास्त्री, लाला दीवान चन्द जी, श्री महेशचन्द्र जी, श्री महिपाल जी आदि पधारे थे। नित्य हजारों की संख्या में जनता ने यहाँ आकर उपदेशों व भजनों से लाभ उठाया।

आ० स० सावर, इन्दौर

इस समाज को पिछले १० वर्ष से समाज मन्दिर बनाने के लिए भूमि प्राप्त हो चुकी है पर धनाभाव के कारण मन्दिर नहीं बन सका। अत दानी महानुभावों से विशेष निवेदन है कि वे कृपया इस ओर ध्यान दें।

—रामकृष्ण वर्मा, मन्त्री

आ० स० ऐर, कटरा, इटावा

प्रधान—प० हरिदत्त जी
मन्त्री—श्री अवध नारायण वैद्य
कोषा०—श्री मंगलप्रसाद जी

शुद्धि सभा आगरा

७ मई को ग्राम साहूब नगर, पो० कागारौल, जिला आगरा के ठाकुर चन्द्र पुत्र श्रीचन्द मलकाने राजपूत के परिवार जिसमें ५० व्यक्ति थे की शुद्धि आगरा शुद्धि सभा की ओर से की गई।

आ० स० उस्का बाजार बस्ती

आ० स० बस्ती की ओर से बाबा अवध विहारीदास जी प्रचार करने के लिए इस समाज में पधारे। आपने १२, १३, १४ मई को बाजार में अनेकों स्थानों पर घूम कर प्रचार किया। वैदिक धर्म के इस प्रचार से लोग बहुत प्रसन्न हुए।

आ० स० सिकन्दराबाद

इस समाज का ७० वां वार्षिकोत्सव ७, ८, ९, १० मई को सम्पन्न हुआ। उत्सव से पूर्व १ से ६ मई तक स्वामी रामेश्वरानन्द जी द्वारा वेद की कथा हुई। प० बुद्धदेव विद्यालंकार, ठाकुर अमरसिंह, कुंवर सुखलाल जी, प्रो० रतनसिंह आदि के ओजस्वी भाषण हुए।

आर्य वीर दल पू० उ० प्र०

श्री उमाकान्त जी पूर्वी उत्तर प्रदेशीय आर्य वीर दल केन्द्र काशी क्षेत्र के सहायक उप सञ्चालक नियुक्त हुए हैं।

—अवधविहारी खन्ना

उ०प्र० आर्यवीर दल सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के ७१ वें वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर आर्य वीर दल की प्रगति हेतु प्रदेश के प्रतिनिधियों एवं दल के कार्यकर्ताओं का वृहद् सम्मेलन दिनांक १८ मई १९५८ को मध्याह्न डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ में श्री डा० भगवत दत्त जी मेरठ के सभापतित्व में हुआ जिसमें श्री देवी प्रसाद आर्य, उप सञ्चालक लखनऊ, विश्वनाथ आर्यवीर मेरठ श्री ओ३म् प्रकाश जी मिर्जापुर, श्री ईश्वर दयालु जी मुख्य उप मन्त्री सभा एवं श्री रामजी प्रसाद गुप्त कोषाध्यक्ष सभा आदि महानुभावों ने अपने विचार प्रकट किये। सम्मेलन ने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से यह निवेदन की कि—

१—प्रतिनिधि सभा में आर्य वीर दल का एक कार्यालय होना चाहिए।
२—सभा में आर्यवीर दल के चार प्रतिनिधि अन्तरङ्ग सदस्य के रूप में लिये जायं।
३—प्रतिवर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश अपने वार्षिक बजट के साथ आर्य वीर दल के लिए भी एक बजट स्वीकार करे।

—देवीप्रसाद आर्य
उपसञ्चालक, मध्य उ०प्र० आर्यवीर दल
लखनऊ।

आ० स० बिजनौर

२७ मई से १ जून तक मनाया जाने वाला आ० स० बिजनौर का हीरक जयन्ती महोत्सव पुन: आवश्यक कारणवश स्थगित हो गया है।

आ० स० जौनपुर

इस समाज को एक पुरोहित की आवश्यकता है। योग्य सज्जन पत्र व्यवहार करें।

आ० स० विरालसी, मुजफ्फरनगर

प्रधान—श्री मानसिंह जी
मन्त्री—श्री कालीचरण जी
कोषा०—श्री चन्द्रप्रकाश जी

आवश्यकता

श्रीमद्दयानन्द बाल मन्दिर (अनाथालय) आगरा के लिए एक उपदेशक व तीन भजनोपदेशकों की आवश्यकता है। जो वैदिक धर्म का प्रचार कर सकें और दृढ़ आर्य हों। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। प्रार्थना पत्र प्रमाण पत्रों सहित निम्न पते पर भेजें।

शिवनारायण आर्य
मन्त्री श्रीमद्दयानन्द बालमन्दिर
(अनाथालय) जमुना ब्रिज आगरा

श्री वीरसेन. वेदश्रमी

श्री वीरसेन जी वेदश्रमी महारानी रोड इन्दौर उप प्रधान आ० प्र० सभा मं० प्र०, स्नातक गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन सभा के निमन्त्रण पर बृहदधिवेशन के अवसर पर पधारे और उन्होंने यज्ञों के पश्चात् प्रतिदिन सस्वर वेदपाठ की प्राचीन पद्धति का प्रदर्शन किया। उपस्थित आर्य प्रतिनिधि बहुत प्रभावित हुए। तीन वेदों का स्मरण करके तथा सस्वर पद्धति का प्रदर्शन किया। उपस्थित आर्य प्रतिनिधि बहुत प्रभावित हुए। तीन वेदों का स्मरण करके तथा सस्वर पद्धति के अनुसार पाठ करने की क्षमता प्राप्त करके उन्होंने आर्यसमाज के अन्दर एक अभाव की पूर्ति की है। वेद प्रचार की दिशा में उनका यह रचनात्मक कार्य प्रशंसनीय है। समाजों में तथा अन्य शिक्षा संस्थाओं में उनके सस्वर वेदपाठ का कार्यक्रम रखकर इस दिशा में आर्य जनता को प्रेरित किया जा सकता है।

लखनऊ में ईसाई पादरी का जाल

विदित हुआ है कि श्री डी० बेंजमिन नामक एक ईसाई पादरी लगभग दो सप्ताह से लखनऊ मे आया हुआ है। लगभग १४ दिन यह पादरी कृष्ण नगर में रहा और अब स्टेशन रोड पर आ गया है।

यह महाशय यीशुमसीह के नाम पर, लोगों की बीमारियों का इलाज करते हैं। जो रोगी आते है उनको कोई तेल दिया जाता है और ईसा का नाम लेकर लगाने को कहा जाता है। और जिन लोगों को कोई लाभ नहीं होता उनको कहा जाता है कि तुम्हें यशु मसीह में पूरा पूरा विश्वास नहीं हुआ है इसलिए रोग दूर नहीं हुआ।

आश्चर्य यह है कि पढ़े लिखे लोग भी इस चक्कर में फंसे हुए हैं। संसार के अन्दर बड़े बड़े पोप पादरी नाना भयंकर रोगों मे फंसे हुए है पहले वह ही यीशुमसीह के नाम पर जिसकी वह नित्य माला जपते है अपने आपको अच्छा करलें।

यह व्यवहार सर्वथा कुत्सित है। अन्धविश्वासों का जनक है। शिक्षित जनता एवं सिक्यूलरिज्म का दम भरने वाली सरकार को इस प्रकार की ठगी से स्वयं को बचाना और अन्यों को बचाना चाहिए।

आ० स० गवां

इस समाज का १५ वां वार्षिकोत्सव ११ से १४ मई तक सोत्साह सम्पन्न हुआ। श्री इन्द्रजीत शास्त्री, श्री आशानन्द, ठाकुर यशवन्तसिंह, अकारावीर आदि के उपदेश और भजन हुए।

श्री ईश्वर दयालु आर्य सभा मुख्य उपमंत्री

का भ्रमण पुरोगम

२६ मई सन् १९५८ उत्सव आर्य समाज देवरामपुर गढ़वाल। २७ मई सन् ५८ निरीक्षण आ०स० कोटद्वार।

—फूलनसिंह
सभा मंत्री

'हिन्दी विजय' अथवा 'शहीद सुमेर'

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर डी० ए० वी० कालेज लखनऊ में १७, १८ मई ५८ को रात्रि में 'हिन्दी विजय' अथवा 'शहीद सुमेर' अभिनय सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। यह नाटक आर्य अनाथालय बरेली के विद्यार्थियों द्वारा श्री चन्द्रनारायण जी एडवोकेट के निर्देशन में हुआ। इस ड्रामा के लेखक भी श्री चन्द्र नारायण जी हैं। ड्रामा में अच्छा अभिनय करने वाले छः पात्रों को श्री बी० एन० शर्मा के निर्णय के अनुसार सभा के आदरणीय प्रधान पं० हरि शङ्कर शर्मा के कर कमलों द्वारा पुरस्कार वितरण किये गये।

प्रधान जी ने अपने संक्षिप्त भाषण मे बतलाया कि 'अभिनय' भी प्रचार की एक प्रभावशाली शैली है और आर्यसमाज के उद्देश्यों तथा सिद्धान्तों का प्रचार इस शैली से भली प्रकार किया जा सकता है।

श्री आ० स० ब्रह्मणपुरी अलीगढ़

श्री आ० स० ब्रह्मणपुरी अलीगढ़ ने हिन्दी आन्दोलन में ५०४) रु० विभिन्न जत्थों को दिए। हिन्दी सम्मेलन मे पं० नरेन्द्र जी को २५१), श्री रामजीप्रसाद गुप्त के जत्थे को ५१), श्री स्वामी अभेदानन्द जी को ५१) और श्री घनश्यामसिंह गुप्त को ५१) का दान प्रमुख है।

श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ की आत्मकथा का एक उद्धरण

श्री नरदेवशास्त्री वेदतीर्थ जी ने अपनी आत्म कथा की एक प्रति भेंट स्वरूप मेरे पास भेजी है। इस अनुभवी वृद्ध नेता से यों तो आर्य जगत परिचित ही है तथापि उनके कुछ बहुमूल्य कथनों को मैं यहाँ दुहरा देना पाठकों के लिए हितकारी समझता हूं। यों तो फूल वृक्ष पर ही शोभायमान होते हैं परन्तु गुलदस्ते का मजा भी कुछ अनोखा ही होता है।

अतः यहाँ एक उद्धरण दिया जाता है:—

"सार्वजनिक जीवन फुटबाल का सा जीवन है। जब तक फुटबाल में हवा रहेगी तब तक किक् करने वालों को भी आनन्द देगा। किक खाते २ कभी वह आकाश में बहुत ऊंचा जायगा, फिर नीचे ऊपर उठेगा, फिर किक् खाकर दूर जा पड़ेगा। प्रतिक्षण उभय पक्ष के खिलाड़ियों द्वारा दोनों ओर से ठुकराया जायगा। कभी खिलाड़ियों के पैरों में ही इधर उधर लुढ़काया जायगा और धक्के खाता रहेगा। सार्वजनिक कार्यकर्ता में स्पिरिट हो तो ऐसे दृश्य देखने ही पड़ेंगे। फुटबाल में हवा न रहेगी अथवा पचर (छेद) हो जायगा अथवा फट जायगा तो फिर उसको कौन पूछेगा? सारी बात हवा की है चाहे फुटबाल की हो अथवा सार्वजनिक कार्यकर्ता की। सारी बात भीतरी स्पिरिट की है सार्वजनिक कार्यकर्ता को सदैव सब प्रकार के आक्षेप व कटाक्ष सुनने व शान्ति व धैर्यपूर्वक उनका (यदि वे सत्य हों तो) निराकरण करने के लिये उद्यत रहना चाहिए। यह स्मरण रहे कि पक्षिगण मीठे फलों पर ही अधिक चोंच मारते है। नेक-नियत से काम करते रहने पर भी जब ईर्ष्यालु स्वार्थी जन आक्षेप करने लगें तो समझ लेना चाहिए कि फल मीठा होने लगा, फल में मधुरता का प्रवेश होने लगा। एक बार मैंने पण्डित मुरारी लाल शर्मा जी से कहा कि लोग दिक करते हैं काम नहीं करने देते, तब मुरारी लाल जी मुस्करा कर बोले 'राव जी घबराओ मत, फल पकने लगा है, कौवे मीठे फलों पर ही चोंच अधिक मारते हैं—"स्वर्गीय स्वामी दर्शनानन्द जी ने भी एक बार इसी प्रकार का उत्तर दिया था। एकबार मैंने उनसे कहा कि लोग व्यर्थ की डाह करते हैं, तब आपने महाभाष्य का एक वचन याद दिलाया जिसका अभिप्राय यह है कि जूओं के भय से गुदड़ी नहीं छोड़ दी जाती, भिक्षुकों के भय से कोई अपनी रसोई बनाना बन्द नहीं करता, हरिण खेत चुग जायेंगे इस भय से किसान अन्न बोना नहीं छोड़ता।"

—गंगाप्रसाद उपाध्याय

आ० स० पानीपत, पंजाब

प्रधान—श्री जय भगवानदास
मन्त्री—योगेश्वरचन्द
कोषा०—सुमेरचन्द

आर्य केन्द्रीय सभा आगरा

प्रधान—श्री पं० हरिशंकर जी शर्मा
उप प्रधान—श्री डा० कृष्ण गोपालजी
मंत्री—श्री मोहनलाल जी आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री शिवनारायण जी

आवश्यकता

३ जे० टी० सी०, २ एस० टी० सी० अर्थात् अध्यापकों की आवश्यकता है, वेतन सरकारी नियमानुसार दिया जायगा। वैदिक धर्मावलम्बियों को प्रमुखता दी जायगी। प्रार्थना पत्र दिनांक ५ ६ ५८ तक अवश्य पहुँच जाना चाहिए।

मैनेजर
दयानन्द विद्यालय बाराबंकी

आवश्यकता है

प्रायमरी आर्य कन्या पाठशाला अगराना (अलीगढ़) के लिए एक अध्यापिका की, जो कम से कम मिडल पास हो, संगीत जानने वाली हो और ६-७वीं कक्षा तक पढ़ा सके प्रार्थना पत्र ३० जून ५८ तक आ जाने चाहिये।

—मन्त्री आर्य समाज

'एक आर्य विश्व विद्यालय की स्थापना हो—सभी गुरुकुलों के नियम व पाठविधि एक से हों' यही इस लेख का सार है जिसे हम गुरुकुल से सम्बन्धित आर्य सज्जनों तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेताओं के विचारार्थ यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं। —सम्पादक

सुझाव और सम्मतियाँ

"आर्य विश्वविद्यालय एवं गुरुकुलों का एकीकरण"

[श्री वेदपति शास्त्री व्याकरणाचार्य विद्यालय नौनेर मैनपुरी]

राष्ट्र की उन्नति के लिए बालक बालिकाओं का सुशिक्षित होना अत्यावश्यक है। हमारे देश का अतीत सुशिक्षा के आधार पर देदीप्यमान था, हमारे पूर्वज सुशिक्षा पर पर्याप्त ध्यान दिया करते थे। जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त सदव शिक्षा के साथ उत्सुक रहा करते थे। राष्ट्र का उन्नति तथा अवनति सुशिक्षा एव कुशिक्षा पर अवलम्बित है।

शिक्षा के क्षेत्र में जहाँ आर्यसमाज का सवाल है वहाँ उसने पर्याप्त सेवा की प्रत्येक भारतीय शिक्षा विशारद ने उसके कार्य का भरपूर प्रशंसा की पूज्य महात्मा गान्धी ने स्पष्ट शब्दों मे स्वीकार किया—'भारतवर्ष के अन्दर बृटिश सरकार के पश्चात् यदि किसी ने शिक्षा के विषय में प्रशसनीय कार्य किया है तो वह आर्यसमाज है' ये शब्द गुरुकुल कागड़ी के उत्सव पर कहे गये।

आर्य सामाजिक शिक्षण संस्थाओं म जहाँ कि गुरुकुल प्रणाली सच्चे तौर मे है, उनको विशेषता यह है कि, उनमें पढ़ने वाले छात्र छात्राओं की मानसिक शक्तियो का बड़ी उत्तमता से विकास एव हृदयों म राष्ट्रीय भावना की अजीब जागृत होनी है। इसके साथ साथ शारीरिक एव चारित्रिक उन्नति तथा नवयुवकों म अपनी सस्कृति अपनी भाषा एव अपने देश धर्म के लिए वास्तविक स्नेह पैदा करना मुख्य विशेषता है। जिसका आधुनिक शिक्षण संस्थाओं में प्राय अभाव ही है। एतदर्थ-आर्यसमाज के ८ वें नियम का ध्यान मे रख के आर्य समाज के प्रमुख कर्णधारों ने शिक्षा के विषय मे ध्यान दिया तथा अपनी शक्ति के अनुसार शिक्षा की दिशा मे पुन सगठन के नवीन मार्ग का प्रदर्शन कराया।

भारतीय राष्ट्रीयता का लक्ष्य म रखकर स्थापित हुई शिक्षा सस्थाओं मे प्राग नवीन एव साहस पूर्ण कदम आर्य समाज का गुरुकुलो की स्थापना था। परन्तु इनके सस्थापको ने जिस उद्देश्य को लेकर गुरुकुलों की स्थापना की थी वह उद्देश्य पूरा क्यो नहीं हो रहा है? प्राचीन ग्रन्थों के पठन पाठन के विषय में महर्षि के जो विचार थे वे क्यों नहीं पूरे हो रहे? क्या किसी गुरुकुल की उन्नति वहाँ कुछ स्नातक बन जाने तक सीमित है? प्रश्न सत्य है परन्तु है कटु। आज हम विचार करें हमारी ऐसी हालत क्यो? आज के प्रगति युग मे केवल 'सगठन सूक्त' के पाठ से काम नहीं चलेगा। कार्य रूप में सगठन का होना अत्यावश्यक है।

इधर शिक्षा के क्षेत्र म यहा इतना बिखरापन है जिसका कहना क्या? प्रत्येक का नया नया पाठ्यक्रम नई स्नातक परीक्षायें, नई स्नातक उपाधिया तथा नई दीक्षान्त समाराह की व्यवस्था यह सब प्रत्येक गुरुकुल के लिए क्या उचित है?

असगठित होने के कारण छात्रों म आत्म प्रशसा एव अपने गुरुकुल की प्रशसा की न चे छिपा दूसरे को नीचा दिखाने का भाव स्पष्ट दृष्टि गोचर होता है यह उचित नहीं।

दूसरा इस बिखरेपन के कारण जो कष्ट विद्यार्थियों को झेलने पड़ते हैं वह अनुभवी ही जान सकता है एक गुरुकुल का छात्र किसी कारण वश गुरुकुल छोड़ने को बाध्य होकर दूसरे गुरुकुल में प्रविष्ट होना चाहे तो बड़ी अड़चन है क्योंकि वहा तो अपनी अलग अलग खिचड़ी बन रही है एक गुरुकुल का पाठ्यक्रम दूसरे से मिलता नहीं ऐसी अवस्था मे उस छात्र का किसी उच्च कक्षा मे प्रविष्ट होना टेढ़ी खीर है। हा यदि आरम्भ से प्रविष्ट होना चाहे तो हो सकता है, पर यदि वह छात्र दो चार गुरुकुलो को बदले तो उसका सारा जीवन मिट्टी मे मिल जावे।

इन गुरुकुलों की पाठ्यक्रम की दशा अतीव शोचनीय है। गुरुकुलो के पास इतने साधन नहीं जो कला कौशलो के पढाने की व्यवस्था कर सके। पर इन सबका अपनी पृथक पृथक यूनिवर्सिटी बनाने की धुन सवार है। उधर आज के समय के शिक्षा द्वारा कुछ कमाने की प्रवृत्ति छात्रों में है। उधर इन गुरुकुलो के उपाधियो की मान्यता कुछ भी नहीं, एक छात्र बड़ी से बड़ी उपाधि लेने के बाद भी बेकार रहता है क्योंकि उसने कोई ऐसी कला हस्तगत नहीं की जिससे घर बैठे आर्थिक दशा सुधार सके न ऐसी उपाधि ही जिससे सरकारी कार्यों म लिया जा सके। मेरे अनुभव मे ऐसे कई व्यक्ति आये जो बड़े उपाधि धारी थे परन्तु पेट के पीछे उन्हे साधारण सी सरकारी परीक्षाओं का पल्ला पकड़ना पड़ा।

इन सब कारणो का देखकर बहुत से गुरुकुल अपने यहा सस्कृत की सरकारी परीक्षाएं दिलवाने लगे। पर अभी कुछ ऐसे हैं जो पुरानी लकीर पर ही चल रहे है। उनको अपने पाठ्यक्रमो के सम्बन्ध म यह देखने की आवश्यकता है कि क्या उनका पाठ्यक्रम स्वतन्त्र भारत की परिस्थिति एव आवश्यकताओं के अनुकूल है। ४७ से पूर्व तो यह था कि गुरुकुलों के स्नातक विदेशी शासन होने के कारण सरकारी विभागो म न जाकर स्वाव लम्बी मार्ग का अवलम्बन करें तदर्थ स्नातकों को सैकड़ो कष्ट उठाने पड़े। अब स्वतन्त्र भारत में उसकी आवश्यकता है कि हमारे स्नातक देश के विभिन्न विभागों पर लगे, जिससे आर्य समाज का सहयोग देश को प्राप्त हो सके। तथा गुरुकुलो के स्नातको की उपादेयता अन्य स्नातको से किसी भी प्रकार से न्यून न हो।

यदि इन प्रश्नो का एकमात्र हल हो सकता है तो वह यह है—ऋषि दयानन्द के सिद्धान्त को लक्ष्य रख स्थापित हुई शिक्षा सस्थाएं अपनी आपस की सकीर्णताओं को छोड़कर एक हो जावें, इन सबके प्रतिनिधि मिलकर एक समिति का आयोजन करें, उसका कार्य एक आर्य विश्वविद्यालय की स्थापना करना हो, इसमें सार्वदेशिक सभा का पूर्ण सहयोग प्राप्त होना चाहिए। विश्वविद्यालय की स्थापना के विषय में दो विचार प्रस्तुत किये जा सकते है एक तो नवीन स्थान पर केन्द्र म विश्वविद्यालय स्थापित किया जावे यदि ऐसा आर्थिक बाधा के कारण न हो सके तो कांगड़ी आदि किसी बड़ी सस्था को ही विश्व विद्यालय का रूप दिया जावे आर्थिक व्यय दान द्वारा तथा सब गुरुकुलों से जो कि पाठ विधि आदि पृथक छाप कर व्यर्थ वहन कर रहे हैं पूरा किया जावे।

इस विश्वविद्यालय के आधीन दयानन्द विद्यालय, गुरुकुल, आर्य विद्यालय आदि सभी शिक्षा सस्थाएं सम्बद्ध हो जावें। इस विश्वविद्यालय की सयोजक समिति में से बड़े बड़े शिक्षा विशेषज्ञों की समिति बनाई जावे जो कि पाठ्यक्रम का निर्माण करे, जो कि सब विद्यालयों मे चले। पाठ विधि मे हस्त कौशल, दस्तकारी आदि का भी समावेश किया जावे। सब विषयों के अध्ययन का माध्यम, सस्कृत तथा हिन्दी ही हो, विदेशी भाषाओं का ज्ञान भाषाज्ञान के रूप में कराया जावे। यह विश्वविद्यालय हिन्दू विश्वविद्यालय व विश्वभारती की भांति सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हो।

यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक गुरुकुल में सब विषयों के अध्ययन का प्रबन्ध हो अपितु जितने विषयों के अध्यापन आदि का प्रबन्ध कर सके उतने विषय अपने यहा रखें, बाद मे छात्र उच्च महाविद्यालयों मे चला जावे वहा जाकर विशेष अध्ययन करे। इस विश्वविद्यालय को सभी का देश की स्थिति एव संस्कृति को ध्यान म रख विशुद्ध भारतीय सर्वोत्कृष्ट आदर्श शिक्षण सस्था के रूप म समुन्नत करने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए। और वहा से भारतीय उच्च आदर्शों म प्रभावित सदाचारी देशोन्नति के इच्छुक नागरिक शासक अध्यापक वैज्ञानिक एक एक विषय के विशेषज्ञ तैयार किये जावें। यदि यह बन सका तो शिक्षा म महान क्रान्ति लाने के साथ ही देश की महान् सेवा भी हो जावेगी। ★

आ० स० दौलताबाद व सौरिख

आ० स० दौलताबाद व आर्य समाज सौरख के वार्षिकोत्सव क्रमशः तारीख २३ अप्रल से २८ अप्रैल तक हुआ। स्वामी परमानन्द दण्डी व माता जगमाता देवी के भाषण हुए। श्री नाथूराम का भजनोपदेश हुआ।

जिला सभा मैनपुरी का सम्मेलन

आर्य उप सभा जिला मैनपुरी का नाम आर्य सम्मेलन २१ मई व १ जून ८० को ... म होगा। यहा प० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय, स्वामी रामेश्वरानन्द ब्र० प० अमर सिंह जी श्री ओम्प्रकाश शास्त्री श्री नरदेव स्नातक एम पी पण्डित दशरथ जी कुंवर जोरावर सिंह जी भद्रपाल जी, आदि पधारेंगे।

आ० स० कायमगंज

श्री लाला बाबू जी गुप्त की सुपुत्री विनोद कुमारी बी० ए० का शुभ विवाह फर्रुखाबाद निवासी सेठ रामनाथ जी के पुत्र रामशंकर जी के साथ ७ मई को प० ...राम ... की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

पंजीकरण सं. ए. ६०

ज्येष्ठ ४ शक १८८० (२५ मई ५८)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष्य :५११२ तार : 'आर्यमित्र'

आर्यसमाज की अजेय शक्ति
आर्यसमाज का संगठन अत्यन्त विशाल है

हमें अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए विशेष रूप से अनुशासित और सुसंगठित रहने की नितान्त आवश्यकता है पारस्परिक सहयोग और सहानुभूति ही उन्नति की आधारशिला है। लगभग एक वर्ष हो गये कि मैंने आर्यसमाजों की आन्तरिक स्थिति और उत्साह को जानने का यत्न आरम्भ किया। आज मैं प्रसन्नतापूर्वक कह सकता हूं कि आर्यसमाज की शक्ति अपार है। अपने महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिए पर्याप्त है। पिछले पंजाब भाषा स्वातन्त्र्य आन्दोलन" के समय आर्य प्रतिनिधि सभाओं और समाजों के कार्यकर्ताओं और अधिकारियों ने अपने संगठन, उत्साह और प्रभाव का जो प्रमाण उपस्थित किया है, वह किसी से छिपा नहीं है। उत्तरप्रदेश और बिहार के आर्यसमाजों में आने जाने का मुझे कुछ विशेष अवसर मिला। आर्यसमाज के प्रचारकों और उपदेशकों से दिल खोलकर बातचीत करने के फलस्वरूप मैं कह सकता हूं कि इस समाज की ओर सभी की दृष्टि आकृष्ट हो चुकी है। आर्यसमाज के सभी हितैषियों को अपने संगठन को पूर्व की अपेक्षा दृढ़ बनाने में लग जाना चाहिये। आज मैं आर्यजगत् के मुख्य पत्र "आर्यमित्र" के द्वारा अपना हार्दिक प्रेमोद्गार सभी आर्य नर नारियों तक पहुँचाना चाहता हूं और धन्यवाद भी देना चाहता हूं कि आपकी प्रतिनिधि सभा ने जिस तत्परता और दिलेरी से सहयोग किया है वह अनुकरणीय है। श्री प० शिवदयालु मन्त्री, तथा श्री रामजीप्रसाद गुप्त मुख्य उपमन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा उ० प्र० के तूफानी दौरों से आर्यसमाज के सगठन को बहुत बल मिला है। मुझे विश्वास है कि इतने बड़े प्रान्त को यदि संगठित करने में सभी लोग हाथ बटायें, तो समस्त आर्यजगत को भी पूर्ण शक्ति मिलेगी और आर्य समाज के द्वारा होने वाले कार्यों के करने की पूर्ण क्षमता हमारे गठन में आ जावेगी। मेरा हृदय उपर्युक्त कामना और भावना लेकर बड़े प्रेम से आप सब की गति विधि को बधाई देता है।

—अभेदानन्द
प्रधान सार्वदेशिक आ०प्र०सभा, दिल्ली

आर्य कुमार सभा बरेली

आर्यकुमार सभा बरेली का वार्षिकोत्सव २१, २२, २३, २४ मई को होगा। आर्य जगत् के प्रसिद्ध नेता पधारेंगे।

आ० स० इन्दूर, निजामाबाद

इस समाज का ७५ वाँ वार्षिकोत्सव १३, १४, १५ मई को मनाया गया। आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वानो के भाषण हुए।

आर्य वीर दल खतौली मुजफ्फरनगर

नगर आर्य समाज खतौली में ७ से १४ मई तक हिन्दी सत्याग्रह के द्वितीय सर्वाधिकारी स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज, आचार्य गुरुकुल घरौंडा को वेद कथा व उपदेश हुए।

पं० सुरेशचन्द्र जी अस्वस्थ

प० सुरेशचन्द्र जी वेदालङ्कार गोरखपुर इन दिनों अस्वस्थ हो गये हैं। वे ६० दिन तक किसी उत्सव आदि पर नहीं आ सकते और न पत्रों का उत्तर दे सकते हैं। अत आर्य जनता क्षमा करे।

—नरसिंह सहाय मत्री आ. स. गोरखपुर

आ० स० नयाबांस दिल्ली

श्रीमती विमला देवी (धर्म पत्नी, श्री बनवारीलाल शर्मा प्रधान समाज) के निधन पर इस समाज ने शोक प्रस्ताव पास किया।

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

आ० स० रामगढ़ समाचार

१—स्वर्गीय पूज्य महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ में २५ मई से १ जून ५८ तक यजुर्वेद का वृहद यज्ञ होने जा रहा है। यह यज्ञ श्रीमती प्रेम सुखमावती व आ० स० रामगढ़ तथा हल्द्वानी के सम्मिलित यत्न से हो रहा है।

२—श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक एम० ए० मन्त्री आ० स० हल्द्वानी तथा निरीक्षक आ० स० कुमायूं क्षेत्र इस सप्ताह रामगढ़ पधार रहे हैं। वे यहाँ एक मास रह कर समाजों को व्यवस्थित करने में अपना समय लगायेंगे। नारायण आश्रम के विशाल पुस्तकालय को भी ठीक करेंगे।

३—आ० स० रामगढ़, नैनीताल का वार्षिकोत्सव जून मास में होगा। उत्सव के पश्चात् निर्वाचन भी होगा। गत वर्ष से इस समाज में नव जागृति हुई है। हिन्दी आन्दोलन में इस समाज ने काफी सहयोग दिया है।

—यशवन्तसिंह, मन्त्री

आवश्यकता

गौड़ ब्राह्मण कुलोत्पन्न सुन्दर स्वस्थ साहित्यरत्न एवं इन्टर तक शिक्षा प्राप्त १९ वर्षीया कन्या के लिये उच्च शिक्षा प्राप्त वैदिक धर्मी स्वस्थ सब में लगे वर की आवश्यकता है। गुरुकुल के स्नातक व शिक्षा क्षेत्र में कार्य करने वालों को प्राथमिकता दी जावेगी। दहेज इच्छुक कृपया कष्ट न करें।

पता—मुख्याधिष्ठाता आर्यमित्र
लखनऊ

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

ओ३म्

आर्यमित्र



मनुष्य कौन है ?

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी
मरो परन्तु यों मरो, कि याद जो करें सभी
हुई न यों सुमृत्यु तो, वृथा मरे वृथा जिए
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए
वही पशु प्रवृत्ति है, कि आप ही सदा चरे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

उसी उदार की कथा, सरस्वती बखानती
उसी उदार से धरा, कृतार्थ भाव मानती
उसी उदार की सदा, सजीव कीर्ति कूजती
तथा उसी उदार को, समस्त सृष्टि पूजती
अखण्ड आत्म भाव जो, असीम विश्व में भरे
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे।

क्षुधार्त रन्तिदेव ने, दिया करस्थ थाल भी
तथा दधीचि ने दिया, परार्थ अस्थिजाल भी
उशीनर क्षितीश ने, स्वमांस दान भी किया
सहर्ष वीर कर्ण ने, शरीर चर्म भी दिया
अनित्य देह के लिए, अनादि जीव क्या डरे
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे।

सहानुभूति चाहिए, महा विभूति है वही
वशीकृता सदैव है, बनी हुई स्वयं मही
विरुद्धवाद बुद्ध का, दया प्रवाह में बहा
विनीत लोक-वर्ग क्या, न सामने झुका रहा
अहा वही उदार है, परोपकार जो करे
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे।

रहो न भूल से कभी, मदान्ध तुच्छ वित्त में
सनाथ जान आपको, करो न गर्व चित्त में
अनाथ कौन है यहाँ, त्रिलोकनाथ साथ हैं
दयालु दीनबन्धु के, बड़े विशाल हाथ हैं
अतीव भाग्यहीन है, अधीर भाव जो भरे
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे।

अनन्त अन्तरिक्ष में, अनन्त देव हैं खड़े
समक्ष ही स्वबाहु जो, बढ़ा रहे बड़े बड़े
परस्परावलम्ब से, उठो तथा बढ़ो सभी
अभी अमर्त्य अंक में, अपंक हो चढ़ो सभी
रहो न यों कि एक से, न काम और का सरे
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे।

मनुष्य मात्र बन्धु हैं, यही बड़ा विवेक है
पुराण पुरुष स्वयंभू, पिता प्रसिद्ध एक है
फलानुसार कर्म के, अवश्य बाह्य भेद है
परन्तु अन्तरैक्य में, प्रमाण भूत वेद है
अनर्थ है कि बन्धु ही, न बन्धु की व्यथा हरे
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे।

—मैथिलीशरण गुप्त

वैदिक प्रार्थना

ओं यथा सिन्धुर्नदीनां साम्राज्यं सुषुवे वृषा। एवा त्वं सम्राज्ञ्येधि पत्युरस्तं परेत्य॥

अथर्व० १४।१।४३

जैसे वर्षा करने वाला समुद्र नदियों के ऊपर साम्राज्य प्राप्त करता है, ऐसे ही हे वधु! तू पति के घर जाकर सम्राज्ञी बन।

सह० सम्पादक—
भगवत शरण

इस अंक के आकर्षण

कठोपनिषद् कथा ८ (आध्यात्मिक चर्चा)

प्रथमवर—पितृदेवोभव

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम०ए० एल०टी०, डी० वी० कालेज, गोरखपुर]

पितृ भक्ति का एक आदर्श उदाहरण नचिकेता के जीवन से सम्बन्धित इस उपनिषद् कथा में पढ़िए। —सम्पादक

(गतांक से आगे)

जब यमाचार्य ने घर पर एक ब्राह्मण को तीन दिन तक उपवास करने का हाल सुना तब उससे कहा कि हे ब्राह्मण तू जो तीन दिन तक मेरे घर में बिना खाए पिए रहा है पर अतिथि का भूखा रहना गृहस्थ के लिए बड़ा पाप है। इसलिए इस अतिथि पूजा के निमित्त मैं तुम्हारी प्रतिष्ठा करता हूं। मैं तुमको नमस्ते करता हूं। तुम इस पाप से बचाने के लिए मुझसे तीन वर मांगो। अज्ञात पाप का प्रायश्चित्त द्वारा निवारण हो जाता है। मेरी अनुपस्थिति में जो तुम्हें कष्ट हुआ है, इस पाप से बिना प्रायश्चित्त के मेरा कल्याण नहीं हो सकता। इसलिए एक-एक रात्रि के लिए एक एक वर मांगो।

मृत्यु के इस वाक्य को सुनकर नचिकेता तीन वर मांगने को उद्यत हो गया। उसने कहा—

शान्त संकल्पः सुमना यथा स्याद् वीतमन्युर्गौतमो माभिमृत्यो। त्वत्प्रसृष्टं माभिवदेत् प्रतीत, एतत् त्रयाणं प्रथमं वरं वृणे।

अर्थात् (मृत्यो) हे मृत्यु (गोतमः) मेरा पिता गोतम (मा अभि) मेरे प्रति (शान्त सकल्पः) अच्छे विचार (सुमनाः) प्रसन्नमन (वीतमन्युः) क्रोध रहित (यथा) जैसे पहले था (स्यात्) होवे (त्वत्प्रसृष्टम्) आपके भेजे हुए (मा अभि) मुझे देखकर (प्रतीत. सन) मुझ पर विश्वास करता हुआ (वदेत्) व तर्च त करे (एतत्) यह (त्रयाणाम) तीन में से (प्रथम) पहला वर वृणे मागता हू।

यम ने कहा—

यथा पुरस्तत् भविता प्रतीत औद्दालकिरारुणिर्मत्प्रसृष्टः। सुखं रात्रीः शयिता वीतमन्युस्त्वां ददृशिवान्मृत्यु मुखात्प्रमुक्तम्।

(औद्दालकिः) उद्दालक वंशी (आरुणिः) अरुण का पुत्र (मेरा पिता गौतम) (यथा) जैसा (पुरस्तात्) पहले था (मत्प्रसृष्टः) मेरे भेजे हुए तुझ पर (प्रतीत.) विश्वास करने वाला (भविता) होगा (वीतमन्युः) क्रोध रहित होकर (रात्रीः,रात्रियों में(सुखम) सुख से (शयिता) सोवेगा (त्वाम्) तुझको (मृत्यु मुखात्) मौत के मुंह से (प्रमुक्तम्) छूटा हुआ (ददृशिवान्) देखेगा।

इस प्रकार नचिकेता से उसका पिता अप्रसन्न हो ही चुका था। चाहे पिता का क्रोध अनुचित ही था तब भी उस काल की पितृ भक्ति प्रशसनीय थी। भारतीय या वैदिक विचार धारा के अनुसार माता पिता और गुरु का स्थान व्यक्ति के जीवन में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए बच्चे को प्रारम्भ से ही सिखाया जाता है "मातृ देवो भव, पितृ देवो भव' माता को देवता समझ कर पूजा कर, पिता को देवता समझ कर पूजा कर, आचार्य (गुरु) को देवता समझ कर पूजा कर। माता, पिता, गुरु आदि वन्दनीय और पूजनीय पुरुषों की पूजा तथा शुश्रूषा करना भी सर्व मान्य धर्मों में से एक प्रधान धर्म समझा जाता है। यदि ऐसा न हो तो कुटुम्ब, विद्यालय और सारे समाज की व्यवस्था ठीक ठीक कभी न रह सकेगी यही कारण है कि नचिकेता ने सबसे पहले अपने पिता की अप्रसन्नता को दूर करने के लिए कहा। वन पर्व में महाभारत में एक कथा आती है कि एक ऋषि एक बार किसी वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या कर रहे थे। इतने में किसी पक्षी ने ऊपर से उन पर बीठ कर दी। इन्होंने ऊपर ताका तो इनकी दृष्टि के प्रभाव से वह पक्षी नीचे गिर गया। यही ब्राह्मण एक दिन भिक्षा मांगते हुए किसी गृहस्थ के घर गए। वहां उन्होंने भिक्षा के लिए पुकारा। अन्दर से आवाज आई कि आती हूं। पर रुग्ण पति सेवा में लगी हुई स्त्री के आने में देर हुई। इन्होंने देरी को अपना अपमान समझा और अपनी तपस्या के अभिमान से उस पतिव्रता स्त्री को मरण कर डालना चाहा। जब वह बाहर भिक्षा लेकर आई तो इन्होंने जब उसे मरण करने का प्रयत्न किया तो उसने कहा कि यहां सब और नहीं रहते। यह सुनकर वह ऋषि उसकी शरण में गया और उसने धर्म का तत्व पूछा। स्त्री ने धर्म का सच्चा रहस्य समझ लेने के लिए उस ब्राह्मण ऋषि का व्याध के यहां भेजा। व्याध मांस बेचा करता था, परन्तु था अपने माता पिता का बड़ा भक्त। इस व्याध का यह व्यवसाय देखकर ब्राह्मण का अत्यन्त विस्मय हुआ। तब व्याध ने उसे माता पिता की सेवा का तथा धर्म का वास्तविक तत्व समझाया। श्रवण की अपने अन्धे माता-पिता की सेवा की घटना तो भारतीय संस्कृति की आत्मा है। दशरथ जैसे व्यक्ति को भी श्रवण की हत्या के बदले पुत्र वियोग सहना पड़ा। राम की पितृ भक्ति तो सर्व विदित है। मतलब कहने का यह है कि माता पिता और गुरु यह तीन आदर के पात्र हैं यदि समाज ने इनकी उपेक्षा की तो आप निश्चित समझिए कि उस समाज का भला न होगा। वर्तमान उच्छृंखलता के काल में दुःख है पुत्र और पुत्रियों को इस की (मातृ पितृ भक्ति की) शिक्षा नहीं दी जाती जिसके लिए एक उर्दू के कवि ने ठीक ही कहा है—

> हम ऐसी कुल किताबें काबिले जब्ती समझते हैं। जिन्हें पढ़कर के लड़के बाप का ख़ब्ती समझते हैं॥

पर आजकल समाज में इन तीनों का बड़ा अनादर है। परिणाम स्पष्ट है। समाज पतन की ओर जा रहा है। मनु स्मृति में गुरु, पिता और माता का अलग अलग महत्व बतलाया है। मनु जी कहते हैं—

(शेष पृष्ठ १६ पर)

संस्मरण

स्व० पंडित लोकनाथ जी के साथ तीन दिन

[पण्डित भवानीलाल 'भारतीय' एम० ए०]

पण्डित लोकनाथ जी के स्वर्गवास से आर्य जगत् के प्रतिष्ठित विद्वानों की मंडली की जो क्षति हुई है उसे सहज ही पूरा नहीं किया जा सकेगा। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आर्य समाज के दिग्गज पण्डित धीरे धीरे हमें छोड़ रहे हैं परन्तु उनके स्थान की पूर्ति नहीं हो रही है। स्व० शिव स्वामी सरस्वती, स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ और पण्डित लोकनाथ जी इसके दृष्टान्त हैं। जिस समय १९५३ में डीडवाना (राजस्थान) में सनातन धर्म के पंडित माधवाचार्य और अखिलानन्द से शास्त्रार्थ का आयोजन हुआ था, उस समय मुझे पण्डित लोकनाथ जी को निकट से देखने का अवसर मिला। आर्य समाज के पक्ष का प्रतिनिधित्व स्वर्गीय पण्डित जी एवं पण्डित बुद्धदेव जी विद्यालंकार ने किया।

पण्डित लोकनाथ जी का धार्मिक स्वाध्याय जितना गहन था और उनकी शास्त्रार्थ शैली जितनी रोचक प्रभावशाली और दृढ़ता पूर्ण थी, यह मैंने उस अवसर पर भली भांति देखा। माधवाचार्य से उनके दो विषयों पर शास्त्रार्थ हुए—मृतक श्राद्ध की अवैदिकता और ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों की वेदमूलकता। आर्य समाज के सिद्धान्त को उक्त पण्डित जी ने इतनी दृढ़ता पूर्वक उपस्थित किया कि पण्डित माधवाचार्य के छक्के छूट गये। एक बार तो संस्कार विधि के किसी प्रकरण के सम्बन्ध में गलत बयानी करने पर पण्डित लोकनाथ जी ने विपक्षी पण्डित को खुली चुनौती दी, जिसके फलस्वरूप माधवाचार्य का चेहरा फक्क हो गया और उपस्थित जनता पौराणिक मत की निर्बलता जान गई।

पण्डित लोकनाथ जी केवल शास्त्रार्थ समर के शूर सेनापति ही नहीं थे उन्होंने आर्य सिद्धान्तों को अपने जीवन में साकार रूप से धारण किया था। अपने प्रवचनों में वे संध्या, स्वाध्याय, संस्कार आदि वैदिक धर्म के क्रियात्मक स्वरूप पर आचरण करने का उपदेश प्रत्येक नर नारी को देते थे। उनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं था। वे स्वयं उच्चकोटि के ईश्वर भक्त थे। उनकी दिन चर्या का प्रारम्भिक भाग ईश्वरोपासना में ही लगता था। उनकी 'भक्ति गीत' आदि अनेक पुस्तकें उनके ईश्वरोपासक होने के ज्वलन्त उदाहरण हैं।

पण्डित लोकनाथ जी की वैदिक कर्मकाण्ड में दृढ़ आस्था थी। वे यज्ञादि के प्रत्येक कार्यक्रम में अत्यन्त भक्ति पूर्वक भाग लेते थे। यज्ञ पद्धति की पवित्रता और मर्यादा की ओर उनका सदा ध्यान रहता था। वे लोगों को यथार्थ यज्ञ विधि का पालन करने के लिए सदा आदेश देते रहते थे। स्वर्गीय पण्डित जी उच्च कोटि के कवि भी थे। उनका 'पूजनीय प्रभो' शीर्षक यज्ञ पुरुष महिमा का भजन उनकी काव्य प्रतिभा का उज्ज्वल उदाहरण है। आर्य जगत में यह कविता कितनी लोकप्रिय हुई है इसके लिये कोई प्रमाण प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है।

ऐसे तर्क कुशल, भक्त और कवि आर्य विद्वान् के उठ जाने से आर्य जगत् की जो महती क्षति हुई है, वह अवर्णनीय है। जो व्यक्ति पण्डित जी के सम्पर्क में आये वे उनकी सरलता, सादगी, सौजन्यता और निरभिमानता से प्रभावित हुये बिना न रहे होंगे। ★

आर्य्य जगत में सब से अधिक छपने वाला आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

ओ३म्

आर्य्य-मित्र

वर्ष ६०

अङ्क २०

लखनऊ—रविवार ज्येष्ठ ११, शक संवत् १८८०, ज्येष्ठ श० १५, वि० २०१५ (१ जून १९५८) दयानन्दाब्द १३४ सृष्टिसंवत् १९७२९४९०५९

सम्पादकीय

मैदान आपका है

देश की बिगड़ती हुई वर्तमान स्थिति को देखते हुए यदि कोई निष्पक्ष व्यक्ति सुधार के लिए भारत की वर्तमान सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक संस्थाओं की ओर देखना चाहे तो निश्चय ही उसका ध्यान आर्य समाज की ओर आकर रुक जाएगा। आज यही एक संस्था है जिससे जन साधारण को कुछ आशा है कि वह देश की दशा सुधारने में सफल हो सकती है।

कांग्रेस जिसके हाथ में आज शासन है उस पर से आज सर्व-साधारण का विश्वास उठ गया है और कांग्रेस स्वयं अनेकों प्रकार की बुराइयों से इस प्रकार घिर गई है कि अब उससे कुछ आशा नहीं रही। प्रजासमाजवादी दल, समाजवादी दल, साम्यवादी दल, जनसंघ आदि में इतनी शक्ति नहीं है, न उनके पास इतने साधन हैं और न उन्हें इतना जनमत प्राप्त है कि वह देश की दशा सुधार सकें। फिर राजनीतिक दल तो अपनी कुर्सी बचाने का अधिक प्रयास करते हैं, देश की स्थिति सुधारने की ओर तो उनका ध्यान प्रायः जाता ही नहीं। भारत की अन्य सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं का भी इतना व्यापक संगठन नहीं है कि वे अखिल भारतीय स्तर पर कोई सुधार कार्य कर सकें। वह साधन और शक्ति आर्य समाज के ही संगठन में आज हम देखते हैं। देश में यद्यपि राज्य तो कांग्रेस का है और सारे देश में कांग्रेस का संगठन भी है पर उसके पास इतने व्यापक साधन नहीं हैं जितने आर्य समाज के पास हैं। प्रत्येक प्रान्त में, प्रत्येक जिले में, प्रत्येक कस्बे में और बहुतेरे गांवों में आर्य समाज, आर्य वीर दल, आर्य कुमार सभाएं, समाज मन्दिर, दयानन्द स्कूल, कालेज, संस्कृत विद्यालय, पाठशाला, गुरुकुल, अनाथालय आश्रम, औषधालय, पुस्तकालय आदि के रूप में आर्य समाज का जो महान् संगठन दिखाई पड़ता है उसे नये ढंग से निश्चित योजनाबद्ध रूप में चलाने से देश का बहुत कुछ सुधार हो सकता है। आर्य समाज को इन साधनों के अतिरिक्त जो जन समर्थन प्राप्त है, जितने योग्य कार्यकर्ता, प्रचारक और विद्वान् तथा लेखक आर्य समाज के पास हैं, इनसे आर्यसमाज यदि चाहे तो देश सुधार का बहुत बड़ा कार्य कर सकता है। आवश्यकता है कि आर्य समाज के नेता एक विचार होकर केवल इस ओर कुछ ध्यान दें।

आज मैदान आर्य समाज का है। वैसे तो काम करने वाले व्यक्ति सदा आगे आते हैं और काम करने वाली संस्थाओं को स्वयं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है पर वास्तव में आज आर्य समाज के लिए ही यह अवसर है कि वह एक बार पुनः देश में कुछ करके दिखाये, जिससे भारत में पुनः नव जीवन आ जाय और हमारी सभी समस्याएं सुलझ जांय। हम चाहेंगे कि आर्य समाज के नेता अब इस प्रश्न पर गम्भीरता पूर्वक विचार करें।

नागा आन्दोलन को पाकिस्तानी सहायता

अब यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि नागा आन्दोलन को बढ़ाने के लिए पाकिस्तान विद्रोही नागाओं की हर प्रकार से सहायता कर रहा है। पूर्वी पाकिस्तान की राजधानी ढाका मे इस बात की चर्चा बड़ी जोरों से चल रही है कि कुछ ही दिनों के बाद पूरा आसाम पाकिस्तान का हो जायेगा। एक ओर से पाकिस्तानी सेना बढ़ेगी दूसरी ओर से नागा बढ़ेंगे और आसाम पाकिस्तान का हो जायेगा। हाल ही में चार नागा नेता पाकिस्तान सरकार से बातें करके अभी लौटे हैं। आज स्थिति यह है कि आसाम-पाक सीमा के ७०० मील लम्बे मोर्चे पर पाकिस्तान ने ३० हजार से अधिक सैनिक जमा कर रखा है और चारों ओर खाइयां खोदी जा रही हैं। १० मील के क्षेत्र में कर्फ्यू लगा दिया गया है और स्कूल तथा बाजार बन्द हो गये हैं। पाकिस्तान के पत्रों मे इन तैयारियों का कोई विवरण नहीं दिया जाता पर यह समाचार तो नित्य ही मिलता है कि पाकिस्तानी सैनिक इस क्षेत्र में नित्य गोलियां चलाते हैं।

इन तैयारियों का क्या अभिप्राय हो सकता है यह समझने में देर करना भी खतरे से खाली नहीं है वैसे तो पाकिस्तान की राजनीतिक स्थिति स्वयं डावांडोल है। उसे पहले तो चाहिए था कि वह अपनी स्थिति मजबूत करे। फिर पाकिस्तान के लिए यह कोई नई बात भी नहीं है। पिछले १० वर्षों से पाकिस्तान बराबर भारतीय सीमा पर नाकेबन्दी तथा गोलाबारी करता चला आया है और भारत सरकार इन हरकतों को या तो चुपचाप सहती गई है या केवल एक विरोध पत्र भेजकर अपने कर्तव्य की इति श्री समझकर बैठ गई है। हमारी सरकार की इसी ढीली नीति का अनुचित लाभ उठाकर आज पाकिस्तानी आपे से बाहर हो रहे हैं। हम अपनी सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट करके यह कहना चाहते हैं कि भारत सरकार सांप को दूध पिलाने वाली अपनी नीति अब छोड़ दे और समय रहते यथोचित कार्यवाही करके पाकिस्तान की इस दुर्भावना को कुचल दे।

चरित्र निर्माण का नारा

आज अपने देश में सबसे बढ़कर यदि किसी बात की आवश्यकता है तो वह है चरित्र निर्माण सम्बन्धी, जिसका आज समाज में सर्वथा अभाव सा है। देश में हर प्रकार से सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक सुधार करने वाला प्राचीनतम संगठन 'आर्य समाज' पर इसकी सर्वाधिक जिम्मेदारी है। आर्य समाज का जो सबसे बड़ा कार्य है वह है वेद प्रचार का और इस वेद प्रचार में ऐसी शक्ति है कि जिस अनुपात से वेद का प्रचार होता चलेगा उसी अनुपात से समाज के लोगों का चरित्र भी ऊंचा उठता चलेगा। अतः यह तो 'एक साधे सब सधे' वाली बात है। आर्य समाजों को चाहिए कि वह वेद प्रचार के कार्यों पर सबसे अधिक बल दें। फिर भी वेद प्रचार के साथ ही साथ चरित्र निर्माण का आन्दोलन भी आर्य समाज को विशेष रूप से अब अपने हाथों में लेना होगा

सम्पादकीय सूचनाएं

१—लेखकों से निवेदन है कि वे विविध (सैद्धान्तिक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक, सामयिक, आर्थिक आदि) विषयों पर अपने लेख आर्यमित्र में प्रकाशनार्थ भेजें।

२—सम्पादकीय सुविधा के लिए कृपया ध्यान रखिए कि लेख यथासंभव संक्षिप्त हों जो दो कालमों में आ सकें, कागज के एक ही ओर चौथाई छोड़ कर स्याही से खुले अक्षरों में स्पष्ट लिखे हों, या यथासम्भव टाइप किए हुए हों।

३—अपनी रचनाएं भेजते समय कहानी लेखकों और कवियों को भी यही बात स्मरण रखनी चाहिये।

४—बाल जगत्, महिला मण्डल, स्वास्थ्य सुधा, विज्ञान वार्ता, जीवन ज्योति, सुझाव और सम्मतियां आदि स्तम्भों के लिए भी दो दो कालमों के लघु लेखों की आवश्यकता है।

५—स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन की सूचना एक सप्ताह के अन्दर ही दी जायेगी और आठ नये पैसे के टिकट प्राप्त होने पर अस्वीकृत रचनाएं सात दिन के अन्दर लौटा दी जायेंगी।

६—हमारे पाठक समाजोन्नति सम्बन्धी प्रश्न भी पूछ सकते है। उनमें से उपयोगी प्रश्नों के उत्तर हम प्रति सप्ताह प्रकाशित किया करेंगे।

७—समय-समय पर किसी सामयिक प्रश्न पर हम अपने पाठकों की सम्मति भी प्रकाशित करेंगे।

८—आप अपनी कठिनाइयों को संक्षेप मे लिखकर भेजें। हम उसे सम्बन्धित अधिकारियों तक पहुंचाने का यत्न करेंगे।

—सम्पादक

सोचने की बात

○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○
यह आवश्यक है कि सभी आर्य नेता उपाध्याय जी की इस बात पर विचार करें —सम्पादक
○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○

मैं पिछले किसी अङ्क में कुमार सभाओं के विषय में लिख चुका हूं। क्या किसी ने उस बात को सोचा? आशा तो कम ही है, क्योंकि जब एक लकीर बन जाती है तो सब उसी के फकीर बन जाते हैं। उसके विपरीत सोचने का कोई कष्ट नहीं उठाता। ऐसा करना सुगम भी है, किसी का बुरा भी बनना नहीं पड़ता। परन्तु कुदरत के नियम ऐसे नहीं है। कुदरत झट उस चीज को बदल देती है जिस की उपयोगिता नहीं रहती और फिर मनुष्य भी झख मारकर कुदरत का अनुसरण करता ही है। मेरी माता जी कहती थीं कि मैं साढ़े तीन वर्ष की आयु तक घुटनो के बल चलता रहा। स्वभाव पड़ गया था उसी में आनन्द आता था। खड़ा होने का कष्ट कौन करे? परन्तु कुदरत को यह मंजूर न था। मेरे घुटनों मे फोड़े हो गये। लाचार घुटनों का सहारा छोड़ना पड़ा। अन्यथा शायद इस बुढ़ापे में भी घुटनों के बल ही चलता रहता। परन्तु यह बुद्धिमता नहीं है। जाड़े मे ओढ़ी जाने वाली रेशमी रजाई को छोड़ने का जी नहीं चाहता परन्तु वैशाख या ज्येष्ठ की गर्मी उसे भी छुड़ा ही देती है। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति या बुद्धिमती सोसाइटी वह है जो नित्य अपनी इतिकर्तव्यताओं का निरीक्षण करती रही है। जो बात सफल हो रही है उसे करते जाइये। यदि विफल हो रही है तो उसे त्याग देना चाहिए। और यदि पहले सफलता हुई भी हो और अब असमय या असफलता मे बदल गई हो तो उसको छोड़ देना चाहिए या समयानुकूल बदल देना चाहिए। यह नहीं कहना चाहिए कि ऋषि दयानद ने अमुक समय यह कहा था या पं० लेखराम ने ऐसी राय दी थी या स्वामी श्रद्धानन्द जी ने यह संस्था बनाई थी उसी का अनुसरण हम भी करते रहें। हानि उठाके भी करते रहें। बड़े लोग कई प्रकार के आदेश करते हैं कुछ सार्वकालिक होते हैं जैसे अहिंसा, सत्य, ईश्वरोपासना या अटल सिद्धान्त, इनके बदलने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। परन्तु बहुत सी चीजें तात्कालिक होती हैं। उनको बदलना ही पूर्वजों के आदेश का पालन है। उनसे चिपके रहना नहीं।

हम झट कहने लगते है स्वामी श्रद्धानन्द जी ने यह कहा था। यह नहीं सोचते कि कब कहा? कहां कहा? किस लिए कहाँ? क्या कोई धर्म देश, काल और परिस्थिति के बिना भी स्थित रह सकता है? मैं समझता हूं कि तीन चौथाई शताब्दी के अनुभवों के पश्चात् आर्य समाज की लगभग सभी संस्थायें हमारे निरीक्षण, परीक्षण, विचार, विकास या परिवर्तन की अधिकारी हैं। परन्तु इस ओर लोगों की प्रवृत्ति है नहीं। ऐसे विचार भी घृणा, नहीं तो अप्रसन्नता या उपेक्षा की दृष्टि से देखे जाते है। यह तो कोई नहीं चाहता कि जो बच्चा पैदा हो गया है वह मर जाय या मार डाला जाय। इसी प्रकार कार्यकर्ताओं को अपनी संस्थाओं से मोह हो जाता है। परन्तु मृत्यु तो फिर भी आती ही हैं। लोग सिसक सिसक और पड़कर रोते हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि आप की कितनी संस्थाये सिसक रही हैं। जी चाहता है कि एक एक संस्था का वास्तविक चित्र जनता के समक्ष आ जाय। परन्तु सब यही कहते हैं छेड़ो मत मरीज बहुत कमजोर हैं। ईश्वर के आश्रय पर छोड़ दो। क्या इससे धन और शक्ति का अपव्यय नहीं हो रहा? यदि जनता की इच्छा हो तो अधिक लिखा जा सकता है।

—गंगाप्रसाद उपाध्याय

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रेमचन्द-स्मारक

★

काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने प्रेमचन्द-स्मारक स्थापित करने का दृढ़ निश्चय कर लिया है। यह स्मारक उनके जन्म ग्राम लमही में स्थापित होगा जो बनारस शहर से बहुत दूर नहीं है। प्रेमचन्द जी हिन्दी के सर्वप्रिय और सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार और कहानी लेखक थे। उन्होंने सहस्रों पाठक पाठिकाओं के हृदय में आशा, विश्वास और आत्मबल का संचार किया है। हिन्दी क्षेत्र से बाहर भी उनकी रचनाएं आदर के साथ पढ़ी जाती हैं। यह कहने में कोई अत्युक्ति नहीं है कि प्रेमचन्द जी के कारण हिन्दी गौरवान्वित हुई है। हमारे लिए यह लज्जा की बात है कि यद्यपि उनके स्वर्गवास हुए लगभग २० वर्ष बीत गए परन्तु अभी तक उनका कोई उपयुक्त स्मारक हम नहीं बना पाए।

प्रेमचन्द तो अमर हैं, उनकी कृतियाँ सदा हिन्दी पाठकों का हृदय-हार बनी रहेंगी पर उनके साहित्य के अनुरागियों का भी कुछ कर्तव्य होता है। नागरी प्रचारिणी सभा ने इसीलिए प्रेमचन्द-स्मारक बनाने का प्रयत्न शुरू किया है। इस कार्य मे सभा सभी हिन्दी प्रेमी जनता के सहयोग की प्रार्थना करती है। सभा को आशा है कि इस पुण्य कार्य में हिन्दी की साहित्यिक संस्थाएं, देश के विद्यालय, उनके अध्यापक और छात्र, हिन्दी पत्र पत्रिकाओं के सम्पादक तथा सभी सार्वजनिक कार्यकर्ता विशेष रूप से उत्साह दिखाएंगे। वस्तुतः सभा इन्हीं कार्यकर्ताओं की सद्भावना और उत्साहपूर्ण सहयोग के विश्वास से इस बड़े कार्य को हाथ मे ले रही है।

भारत के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने भी प्रेमचन्द स्मारक योजना पसन्द की है और यह सन्देश प्रेषित किया है :—

"श्री प्रेमचन्द ने हिन्दी साहित्य की जो सेवा की है उसको दृष्टि में रखते हुए सभा का उनके स्मारक सम्बन्धी निश्चय सब प्रकार से योग्य और प्रशंसनीय है। मैं आशा करता हूं कि सभा को इस काम में सफलता मिलेगी। योजना मैंने देखी है। वह ठीक है।"

डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, उप सभापति
डा० राजबली पांडेय, प्रधान मन्त्री
नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

भगवान् बुद्ध और वैदिक धर्म

(प्रिन्सिपल अविनाशचन्द्र जी बोस एम० ए० पी० एच० डी०)

★

महात्मा बुद्ध नास्तिक नहीं थे, वे जनसाधारण को अहिंसक, धर्मात्मा और श्रेष्ठ बनाना चाहते थे। कैसे ? यह इस लेख में पढ़िए। —सम्पादक

भारत के लिए महात्मा बुद्ध की २५०० वीं जयन्ती का मनाना एक महत्वपूर्ण घटना थी। इसने इस भारत के महान् मुनि ने जिसे पौराणिक हिन्दुओं ने भी नवम् अवतार के रूप में सम्मानित किया और जिस का समग्र सुधार वादी हिन्दुओं ने उसके महान् आदर्शवाद और श्रेष्ठ व्यक्तित्व के लिए आदर किया युग निर्माता के रूप में जो कार्य किया था उसे प्रमुखता दिलाई। ऐतिहासिक दृष्टि से भगवान बुद्ध के विषय में एक बहुमूल्य साहित्य लिखा गया है जिस में स्व० श्री आनन्दकुमार स्वामी श्री और श्रीमती राइसडेविड्स और डा० राधाकृष्णन् जी द्वारा लिखित पुस्तकों का समावेश है और वर्तमानकाल में भी इस विषय पर कई लेख लिखे गये हैं किन्तु अधिक साहित्य की आवश्यकता और आशा की जाती है विशेषतः वेदों के साथ महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं की शृङ्खला के विषय में।

गत कई वर्षों से हमारे विद्यालयों की पाठ्य पुस्तकों के द्वारा यह पढ़ाया जाता रहा है कि बौद्ध मत में ब्राह्मणवाद का विरोध था और यह वैदिक धर्म के विरुद्ध एक क्रान्ति थी। साथ ही वैदिक धर्म के विषय मे जो सूचना हमारे युवक गत शताब्दी से अधिक काल से प्रतिवर्ष प्राप्त करते रहे है वह यह है कि इसमे पशुओं की बलि दी थी और भगवानबुद्ध ने गरीब पशुओं को वैदिक पुरोहितों से बचाने का यत्न किया। इस वर्णन ने वेद और वैदिक धर्म के विषय में वास्तविक तथ्यों पर आवरण डाल दिया है। हमारे विद्यार्थियों को यह नहीं बतलाया जाता कि महात्मा बुद्ध के मन में वैदिक ब्राह्मणों के चरित्र के लिए इतने आदर का भाव था कि वे सब वर्गों में से लोगों को ब्राह्मण बनाना चाहते थे जो ब्राह्मणों के गौरव में भाग ले सकें (देखो धम्मपद ब्राह्मणवग्ग) और यह बात कम महत्व की नहीं है कि महान् अशोक ने अपने शिला लेखों के द्वारा जनता को शिक्षा देते हुए बौद्ध भिक्षु प्रचारक श्रमणों से पूर्व सर्वत्र ब्राह्मणों का नाम लिया है। अब तक हमारे विद्वानों ने भारत में बौद्ध मत के इतिहास को शुद्ध दृष्टि कोण से प्रस्तुत करने का प्रयत्न नहीं किया। बहुत से विदेशी विद्वानों की कठिनाई यह है कि वे यह कल्पना नहीं कर सकते कि एक नवीन मत को जिसने पुराने धर्म की आलोचना की और लोगों को परम्परागत मार्ग से हटाया पुराने धर्म के मानने वाले किसी आदर से देख सकते हैं और नवीन मार्ग दर्शक जो कई अंश मे क्रान्तिकारी है प्राचीन परम्परागत धर्म के नेताओं मे आदर युक्त स्थान प्राप्त कर सकता है।

पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड की Mahatma Buddha an Arya Reformer (महात्मा बुद्ध एक आर्य सुधारक) यह पुस्तक एक अत्यन्त अभिनन्दनीय प्रकाशन है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का वेद के साथ सम्बन्ध की दृष्टि से अनुशीलन किया गया है और इस विषय पर नवीन प्रकाश डाला गया है उदाहरणार्थ पण्डित जी ने बताया है कि ललित विस्तर में बुद्ध के विषय मे स्पष्ट लिखा है कि—

स ब्रह्मचारी गुरु गेहवासी,
तत्कार्यकारी विहितान्नसेवी।
सायं प्रभात च हुताशसेवी,
व्रतेन वेदांश्च समध्यगाष्ट ॥

अर्थात् सिद्धार्थ ने ब्रह्मचारी बन कर गुरुकुल मे निवास किया उनकी सेवा की, शास्त्रविहित आहार का सेवन, प्रातःसायम् अग्निहोत्र तथा ब्रह्मचर्य के व्रत का पालन करते हुए वेदों का अध्ययन किया।

इस पुस्तक का सप्तम अध्याय उन लोगों की आँखें खोल देगा जो समझते रहे हैं कि बुद्ध वेदों का विरोधी था। बुद्ध की वेदगू अथवा वेदज्ञ की परिभाषा जैसे कि सुत्तनिपात श्लोक ५२९ में बताई गई है यह है कि—

वेदानि विचेय्य केवलानि
समणान यानि प अत्थि ब्राह्मणानम्।
सब्बा वेदनासु वीतरागो,
सब्ब वेदमतिच्च वेदगूसो ॥

अर्थात् जिसने वेदों का अध्ययन किया है और जो सारे संसार को अनित्य समझते हुए सब वासनाओं, आसक्ति और राग से रहित हो गया है वह वेदज्ञ है।

पं० धर्मदेव जी ने बताया है कि महात्मा बुद्ध का वेदविषयक यह विचार अङ्ग्रेजी मे बौद्धग्रन्थों के अनुवाद का अध्ययन करने वालों से इसलिए अज्ञात रहा कि उन अनुवादों में वेदगू का अर्थ, वेदज्ञ के स्थान में केवल ज्ञानी (Lore's adept) या सिद्ध (Accomplished) इत्यादि कर दिया गया है और जहाँ सुत्तनिपात श्लो. ७९२ आदि में 'विद्वां च वेदेहि समेच्च धम्मं न उच्चावचं गच्छति भूरिपञ्ञो।' यह कहा गया है कि बुद्धिमान् वेदों के द्वारा धर्म का ज्ञान प्राप्त करके डांवाडोल नहीं होता, वहाँ अंगरेजी अनुवादों में केवल Wisdom या ज्ञान ऐसा अर्थ कर दिया गया है जो यथार्थ नहीं। उन्होंने सुत्तनिपात श्लो. ५६८ को भी इस वेद विषयक प्रकरण में उद्धृत किया है जहाँ कहा है कि—

अग्गिहुत्तमुखा यञ्ञा,
सावित्ती छन्दसो मुखम्।

अर्थात् यज्ञों में प्रधान अग्निहोत्र है और वेद का मुख सावित्री या गायत्री मन्त्र है। इस प्रकार के वचनों से महात्माबुद्ध का वेद और सच्चे वैदिक विद्वानों के लिए आदर का भाव सूचित होता है। पण्डित जी ने बुद्ध की पञ्चशील अष्टाङ्ग मार्ग आदि विषयक शिक्षाओं की वेदों और वैदिक साहित्य मे दिये वचनों से समानता को भी दिखाया और इस सामान्य विश्वास का खण्डन किया है कि महात्मा बुद्ध नास्तिक थे। महात्मा बुद्ध ने वैदिक शब्द आर्य का जो बार बार प्रयोग किया है उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि उन्हें इससे कितना प्रेम था। वे भी वेदों के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' इस आदेश के अनुसार सब को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ धर्मात्मा अहिंसादि व्रत पालक बनाना चाहते थे।

श्री आनन्द कुमार स्वामी ने अपनी पुस्तक Buddha and the Gospel of Buddhism में एक स्थान पर कहा है कि बुद्ध का विशाल वैदिक विचार जगत मे एक अल्प स्थान है। विज्ञान भिक्षु के विषय में कहा जाता है कि उन्होंने बौद्ध दर्शन की सप्तम वैदिक दर्शन के रूप में गणना की थी। संयुक्त निकाय में गौतम ने एक प्राचीन नगर का वर्णन किया जो चारों ओर घने जगल से घिर गया था और एक राजा ने उस घने जङ्गल को साफ करा दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि उस नगर की शोभा द्विगुणित हो गई। इस वर्णन के पश्चात् भगवान बुद्ध ने कहा कि मैंने भी इसी प्रकार एक पुराने मार्ग को—जीवन के प्राचीन मार्ग को खोज निकाला है। प्राचीन काल के बुद्धिमान लोग इस मार्ग पर चला करते थे। (सयुक्त निकाय १२ ६५ १९-२१) मैं भी इसी मार्ग पर आगे बढ़ता जा रहा हूं। (१२ ६५-२२

पण्डित धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड ने यह सिद्ध करने का यत्न किया कि महात्मा बुद्ध सचमुच ऐसा ही कर रहे थे और उन्होने प्राचीन वैदिक आचार्यों और ज्ञानियों के मार्ग के विषय मे प्रामाणिक सूचना देने का प्रयास किया है। उन्होंने जो आवश्यक महत्वपूर्ण कार्य इस सम्बन्ध में किया है इसके लिए मैं उन्हें बधाई देता हूँ पर मैं यह भी आशा करता हूं कि विशाल वैदिक साहित्य और साथ ही बौद्ध साहित्य में जो विशारदता उन्हें प्राप्त है वे अपने इस विषय का और भी अधिक विस्तृत विवेचन कर वैदिक धर्म और बौद्ध मत के सम्बन्ध के विषय मे जो बहुत काल से भ्रान्तियाँ चली आ रही हैं उनके निवारण में सहायक होंगे।

चन्द्रमा को रोबट टैंक

★

एक सोवियत योजना ब्राडकास्ट करते हुए मास्को रेडियो ने बताया कि रेडियो नियन्त्रित रोबट टैंक चन्द्रमा पर उतारे जायेंगे। ये नकली हाथों से सुसज्जित होंगे, जिन्हें ढाई लाख मील दूर से रूसी वैज्ञानिक चालित करेंगे।

रोबट टैंकों में टेलीविजन नेत्र लगे होंगे। चन्द्रमा को जाते समय मार्ग में ये जो कुछ देखेंगे उसकी सूचना देंगे। ब्राडकास्ट मे कहा गया कि इस प्रकार चन्द्रमा की विजय आगामी पांच या दस वर्षों में सम्भव हो सकेगी।

यह योजना एक युवक रूसी वैज्ञानिक श्री यूरी क्लेप्टसेविच ने तैयार की है।

रोबट टैंकों से चन्द्रमा की जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद चन्द्रमा मे मनुष्य उतारे जायेंगे। वहां पर वैज्ञानिक स्टेशन स्थापित किये जायेंगे और मनुष्यों को समय-समय पर बुलाया तथा भेजा जायेगा।

जो अनुसंधाता चन्द्रमा में उतारे जायेंगे उन्हें प्रत्येक आवश्यक वस्तु राकेट द्वारा भेजी जायेगी।

मास्को रेडियो का कहना है कि उक्त योजना को क्रियान्वित करने में ईंधन का असम्भव व्यय नहीं होगा। इसके लिए विशेष प्रकार के ईंधन की आवश्यकता होगी।

साहित्यिक चर्चा

हिन्दी नाटक साहित्य—एक समीक्षा

[डा० दशरथ ओझा]

पारसी थियेट्रिकल कम्पनी व भारतेन्दु युग से लेकर आज तक हिन्दी नाट्य साहित्य की क्रमिक प्रगति पर एक समीक्षात्मक विचार इस लेख में डा० ओझा ने प्रस्तुत की है। —सम्पादक

आधुनिक हिन्दी नाटक का आरम्भ भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के नाटकों से होता है। भारतेन्दु ने अपना सबसे पहला नाटक १८६६ मे लिखा। उन्होंने हिन्दी में नाटक की बड़ी सुदृढ़ परम्परा डाली। इसका कारण यह भी था कि उन्होंने अपने नाटकों के लिए, पौराणिक उपाख्यानों से लेकर अपने बगल की सामाजिक कुरीतियों तक जैसे विविध विषयों को चुना। यद्यपि उनके सामाजिक नाटक उनके युग के समाज का ध्यान में रखकर लिखे गये थे, तो भी उनमें से कुछ आज के युग के भी सर्वथा अनुकूल हैं।

कहा जाता है कि भारतेन्दु ने स्वयं ही नहीं लिखा, वरन् अनेक और लेखक भी पैदा किये। उनकी लेखक-मण्डली में प्रतापनारायण मिश्र, बद्री नारायण प्रेमघन, राधाकृष्ण-दास, बालकृष्ण भट्ट, राधाचरण गोस्वामी और श्री निवासदास उल्लेखनीय हैं। श्री निवास दास को आधुनिक हिन्दी नाटक के विकास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। वे हिन्दी के सर्वप्रथम दुखान्त नाटककार हैं।

भारतेन्दु काल में जहां एक और साहित्यिक नाटकों की रचना हो रही थी, वहाँ नाटक को व्यावसायिक रूप देने के लिए पारसी नाटक कम्पनियां मैदान मे आ गयी थीं। पारसी रंग-मंच का एक मात्र उद्देश्य लोगों का मनोरंजन करना था। इसलिए इनके नाटकों में साहित्य की पूरी तरह उपेक्षा की जाती थी। इसका परिणाम यह हुआ कि साहित्यिक नाटक केवल पाठ्य सामग्री बनकर ही रह गये और इनको खेले जाने का अवसर बहुत कम मिला। वर्षों तक पारसी नाटक मण्डलियों का इतना जोर रहा कि साहित्यिक नाटकों का अभिनीत करने के प्रायः सब प्रयास विफल रहे।

सम्भवतः इसी निराशा की प्रतिक्रिया स्वरूप जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों की रचना हुई।

प्रसाद मूलतः कवि थे, किन्तु भारत के उज्ज्वल अतीत को नाटकों के रूप में उतारने में भी उनकी लेखनी किसी से कम यशस्वी नहीं रही। उनके नाटकों में अभिनय तत्व और भी कम है।

प्रसाद का भी अपने युग पर गहरा प्रभाव पड़ा और उनकी प्रेरणा तथा नेतृत्व में बद्रीनाथ भट्ट, माखन लाल चतुर्वेदी, चतुरसेन शास्त्री, गोविन्ददास, गोविन्दवल्लभ पन्त और जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द प्रभृति नाटककार सामने आये। ये सब नाटककार अपने अपने क्षेत्र मे अत्यन्त प्रतिभाशाली सिद्ध हुए।

अब तक पारसी थियेटर कम्पनियों का प्रभाव क्षीण हो चला था और प्रसाद युग के अन्तिम चरण में सिनेमा के आविर्भाव से इसे और धक्का लगा। साथ ही रंगमंच के योग्य नाटक लिखने का प्रयास बराबर चल रहा था। प्रसाद के नाटकों से भिन्न एक धारा इस समय और प्रवाहित हुई। इसके दिग्दर्शक थे—लक्ष्मीनारायण मिश्र और यह धारा थी—समस्या प्रधान नाटकों की। इनके अतिरिक्त उदयशंकर भट्ट, भगवतीचरण वर्मा और उपेन्द्रनाथ अश्क आदि के नाटक रंगमच के बहुत उपयुक्त रहे और इनका प्रायः खेला भी गया।

पिछले २०-२५ वर्षों में, थोड़े से समय में खेले जाने योग्य नाटकों की देश में काफी मांग रही है और इस स्थिति ने एकांकी नाटकों की रचना को प्रोत्साहन दिया। पश्चिम के नाटककारों से हमारे एकांकीकारों ने बहुत कुछ सीखा और बहुत लोकप्रिय तथा नाट्यशिल्प की दृष्टि से ऊंचे दर्जे के एकांकी लिखे। एकांकीकारों में गणेशप्रसाद द्विवेदी, रामकुमार वर्मा, भुवनेश्वर, अश्क और जगदीशचन्द्र माथुर उल्लेखनीय हैं। इन सभी नाटककारों ने रंगमंच की हर बारीकी और आवश्यकता को ध्यान में रखकर, अपने एकांकी लिखे हैं। आकाशवाणी ने भी एकांकी नाटकों को बहुत बढ़ावा दिया है और काफी मात्रा में मंच के अभाव को पूरा किया है। एकांकीकारों ने भी रेडियो की विशेष आवश्यकता को समझकर, रेडियो नाटक लिखने का अच्छा अभ्यास किया है। रेडियो नाटककारों में अश्क, रामकुमार वर्मा, विष्णु प्रभाकर, अमृतलाल नागर लक्ष्मीनारायण लाल और चिरंजीत ने विशेष ख्याति प्राप्त की है।

पद्य नाटक

यहां नाटक के एक और रूप, पद्य नाटक, का उल्लेख भी समीचीन होगा। यह अत्यन्त अर्वाचीन वस्तु है। रेडियो ने ही इस नाटक को आगे बढ़ाया है। सुमित्रानन्दन पन्त, उदयशंकर भट्ट, भगवती चरण वर्मा, गिरिजाकुमार माथुर, जानकीवल्लभ शास्त्री, हंसकुमार तिवारी और धर्मवीर भारती ने अच्छे पद्य नाटक लिखे हैं। हिन्दी पद्य नाटककारों को अपनी प्रतिभा दिखाने के भविष्य में बहुत अवसर आयेंगे।

अब हिन्दी नाटक साहित्य निरंतर प्रगति कर रहा है। साथ ही यह भी स्वीकार करना होगा कि देश मे अभी हिन्दी रंगमच की स्थापना म सफलता नहीं मिली है। कुछ व्यावसायिक नाटक मण्डलियों और नाटक प्रेमियो के कुछ सगठन अवश्य स्थापित हुए हैं। यह भी सच है कि अब हिंदी नाटककार को अपने नाटक को मंच पर खेलने के मार्ग मे किन्हीं बड़ी कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ेगा। ऐसी अवस्था में अधिक विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि हिन्दी नाटक साहित्य अब शीघ्र ही ठीक दिशा मे तीव्र गति से आगे बढ़ेगा।

पुरातत्व विभाग की खोज

२ हजार वर्ष पुराने गुफा—मन्दिर

औरङ्गाबाद के पास पीठलखोड़ा में

पुरातत्व विभाग की ओर से औरंगाबाद जिले के पीठलखोड़ा नामक स्थान में हाल में जो खुदाई की गई, उसमें प्रारम्भिक बौद्धकाल की शिल्पकला के अनेक नमूने मिले हैं। पीठलखोड़ा की गुफाएं द्वितीय शताब्दी की मानी जाती हैं।

इन गुफा विहारों के चौकोर खम्भों पर उड़ने वाले पशुओं की आकृतियां खुदी हैं। जिस स्थान पर ये गुफाएं हैं, वह प्राचीन समय में व्यापार का महत्त्वपूर्ण मार्ग था। यह भड़ौंच तथा नासिक को पैठन से मिलाता था। देखने से पता चलता है कि इन गुफाओं के द्वार किसी समय खूबसूरत नक्काशी से सजे थे। किन्तु कालान्तर में यह भाग गिर पड़ा और द्वार भी रुक गया

बड़ा चैत्य

इन गुफाओं का बड़ा चैत्य ऊंची कुरसी पर बना हुआ है और उसमें चढ़ने को सात सीढ़ियाँ बनी थीं। इनके अलावा चैत्य की कुरसी से नीचे तक पाँच और सीढ़ियां पत्थर काट कर बनायी गई थीं। ऊपर वाली सीढ़ियों के दोनों ओर दो यक्षों तथा एक पंखदार घोड़े की मूर्तियाँ गढ़ी हुई हैं। इनकी कला 'भाजा' की गुफाओं के शिल्प से बहुत मिलती है।

फर्श पर बने हुए खांचों तथा खुदाई में मिले पत्थर के टुकड़ों से पता चलता है कि चैत्य के सामने पत्थर की जाली थी, जिसके मध्य में द्वार था और द्वार के दोनों ओर दो यक्षों की मूर्तियां थीं।

जैन मत की अर्वाचीनता

[श्री पं० भवानीलाल 'भारतीय' एम० ए०]

'जैन मत प्राचीनतम है' —जैनियों के इस दावे को इस लेख में अनेकों प्रमाणों द्वारा असत्य प्रमाणित किया गया है। आखिर इतिहास के तथ्यों पर पर्दा भी तो नहीं डाला जा सकता। —सम्पादक

कुछ दिन पूर्व अजमेर में एक जैन मुनि का स्मृति उत्सव मनाया गया। इसी अवसर पर एक जैन सांस्कृतिक सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इसके सभापति राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष श्री नरोत्तम लाल जोशी थे। श्री जोशी ने अपने भाषण में कुछ ऐसी बातें कहीं जिनसे भ्रम फैलने की आशंका थी। आपने कहा "जैन धर्म उतना ही प्राचीन है जितना कि वैदिक धर्म और वेदों में जैन तीर्थंकरों का उल्लेख है।" (साप्ताहिक ज्वाला में प्रकाशित भाषण) मैंने जब यह समाचार पढ़ा तो जयपुर से प्रकाशित होने वाले दैनिक नवयुग में इसकी चर्चा की और जोशी महोदय से प्रार्थना की कि वे अपने वक्तव्य का स्पष्टीकरण करें तथा अपनी धारणाओं को प्रमाणों से पुष्ट करें। अत्यन्त खेद की बात है कि जोशी महोदय ने तो इसका कोई उत्तर नहीं दिया परन्तु दो सज्जनों के पत्र मेरी शंका के उत्तर में नवयुग में प्रकाशित हुये जिनमें यह सिद्ध करने का व्यर्थ और असफल प्रयास किया गया था कि जैन धर्म वैदिक धर्म जितना ही प्राचीन है। जब मैंने इन पत्रों का विस्तृत उत्तर नवयुग सम्पादक के पास प्रकाशन के लिए भेजा तो मुझे यह जानकर अत्यन्त दुख हुआ कि उक्त पत्र पक्षपात के कीचड़ में फंसा है। उसमें जैन मत से सहानुभूति रखने वाले व्यक्तियों के विचार तो प्रकाशित हो सकते हैं, परन्तु सत्यता और वास्तविकता को जनता के समक्ष रखने की सामर्थ्य उपर्युक्त पत्र में नहीं है। अस्तु! अब मैं क्रमशः उन बातों का लेता हूं जिनसे जैन धर्म की अर्वाचीनता सिद्ध होती है तथा जो लोग उसे वैदिक धर्म जितना पुराना मानते हैं उनकी शंकाओं का भी निराकरण इससे हो जायगा।

मेरे प्रश्न के उत्तर में जिन महानुभावों ने जैन मत को प्राचीन सिद्ध करने का निरर्थक प्रयास किया है, उन्होंने कुछ विचित्र युक्तियां प्रस्तुत की हैं। मैंने यह लिखा था कि जैन मत के तथाकथित २४ तीर्थंकरों में दो ही वास्तविक ऐतिहासिक अस्तित्व रखते हैं, अन्य तीर्थंकरों की तो केवल कल्पना ही की गई है। इस कथन से लगभग सभी इतिहास लेखक पूर्णतया सहमत हैं। स्वयं जैन शास्त्रों में इन तीर्थंकरों की जो आयु और उनका शरीर परिमाण बतलाया गया है वह यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि इन तीर्थंकरों का वास्तव में कोई अस्तित्व ही नहीं था। उदाहरणार्थ इनकी आयु लाखों वर्षों की और इनका शरीर सैकड़ों धनुषों के आकार का बतलाया गया है। इन बातों से जैनी लोग बच्चों का मन बहला सकते हैं, परन्तु सत्यज्ञानियों को सन्तुष्ट नहीं कर सकते।

श्री बुद्धिप्रकाश जयपुर निवासी ने मेरे पत्र के उत्तर में लिखा है कि जैनियों के २२ वें तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान कृष्ण के ताऊ के पुत्र थे। उन्होंने इसके प्रमाण में जैनियों के हरिवंश पुराण का उल्लेख किया है जो हमारे लिए कोई मान्यता नहीं रखता। जब तक वे महाभारत आदि वैदिक इतिहास ग्रन्थों से अपने कथन

सिंहावलोकन

की सत्यता सिद्ध न कर दें तब तक उनका कथन अन्य कोटि में ही गिना जायगा।

इसी प्रसंग में उक्त महाशय ने एक और विचित्र बात लिखी है। आप लिखते हैं कि महाराज दशरथ श्रमणों को आहार देते थे। इसका प्रमाण वाल्मीकि रामायण में है। प्रथम तो श्रमण का अर्थ जैन साधु से लिया ही नहीं जा सकता। संस्कृत साहित्य में श्रमण शब्द का प्रयोग सामान्य सन्यासी मात्र के लिए प्रयुक्त होता है, चाहे वह साधु वैदिक हो या वेद विरोधी बौद्ध या जैन। अतः वाल्मीकि रामायण में 'श्रमण' शब्द देखते ही वहां जैन साधुओं की कल्पना कर लेना बुद्धिप्रकाश जी में बुद्धि का अभाव सूचित करता है। यदि दुर्जनतोष न्याय से यह मान भी लिया जाय कि श्रमण का अर्थ जैन साधु है तो भी श्री बुद्धिप्रकाश जी का पक्ष निर्बल ही सिद्ध होता है। कारण यह है कि रामायण का यह प्रकरण अश्वमेध यज्ञ का प्रसंग सूचित करता है। महाराज दशरथ ने इस यज्ञ के अवसर पर ही तपस्वियों और साधुओं को भोजन कराया था। अब जैनियों की गति सांप छछूंदर वाली हो जाती है। 'उभयतोपाश रज्जु' इसे ही कहते हैं। जैन बन्धुओं के अनुसार अश्वमेध आदि यज्ञ हिंसापरक होते हैं। हम इस बात से सहमत नहीं हैं। अब यदि उक्त सज्जन के मतानुसार दशरथ जी ने जैन साधुओं को भोजन खिलाया तो वह अवश्य ही आमिष भोजन रहा होगा। और क्या जैन साधु वैदिक यज्ञों में भोजन करने के लिए तैयार हैं? यदि ऐसा है तो वे वैदिक कर्मकाण्ड और यज्ञों की निन्दा क्यों करते हैं? अतः वाल्मीकि रामायण के आधार पर जैन मत को प्राचीन सिद्ध करना आकाश पुष्प के तुल्य असम्भव है।

इसके अनन्तर आपने भागवत में ऋषभदेव के वर्णन को देखकर उससे जैन धर्म की प्राचीनता सिद्ध करने का यत्न किया है। प्रथम तो भागवत उतना प्राचीन नहीं है, जितना कि लोग समझते हैं, उसकी रचना ९०० ई० के आसपास हुई है। परन्तु यदि मान भी लिया जाय कि भागवत का कथन प्रामाणिक है तो उससे जैनमत की प्राचीनता तो कदापि सिद्ध नहीं होती। भागवत में जिस ऋषभदेव का वर्णन है वह पूर्ण विष्णु भक्त, यज्ञों तथा वेदों में श्रद्धा रखने वाला तथा ब्राह्मणों का भक्त है। यदि यही जैनियों का तीर्थंकर है तो हम जैनियों को वैदिक मतानुयायी मत प्रवर्तक पाने के लिए बधाई देते हैं। क्या वे भी अपने तीर्थंकर के आचरणानुकूल यज्ञों और वेदों के भक्त बनने के लिए तैयार हैं? भागवत में इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं लिखा है। हां, यह भविष्यवाणी अवश्य की गई है कि कलियुग में एक ऐसा सम्प्रदाय उत्पन्न होगा जो यज्ञ तथा वेद का विरोधी नास्तिक होगा। जिसके साधु केश लुन्चन आदि कार्य करेंगे। भागवत की यह भविष्यवाणी वर्तमान जैन मत पर पूर्णतया घटित होती है। हम एक बार पुनः भागवत वर्णित ऋषभदेव को जैन तीर्थंकर सिद्ध करने के लिए चुनौती देते हैं कि यदि उनमें कुछ दम है तो वे ऋषभदेव के चरित्र को जैन मतानुकूल सिद्ध करें अन्यथा स्वयं उनकी तरह वैदिक धर्मी बनने के लिए प्रस्तुत रहें।

नवयुग में श्री गुमानमल जैन का पत्र भी मेरे उत्तर रूप में छापा है। आपने अपने कथन की पुष्टि में कोई नवीन प्रमाण न देकर विनोबा भावे आदि का कथन उद्धृत किया है जिसमें कहा गया है कि जैन धर्म हिन्दू धर्म जितना ही प्राचीन है। वस्तुतः विनोबा जी के इस कथन में कोई सार नहीं है और न उन्होंने अपने मत की पुष्टि में कोई प्रमाण दिया। डा० राधाकृष्णन की सम्मति भी उद्धृत की गई है, जिसमें कहा गया है कि जैन धर्म महावीर और पार्श्वनाथ से भी पुराना है। परन्तु इससे उसके वैदिक धर्म जितने प्राचीन होने की बात सिद्ध नहीं होती।

जब जैनियों की कुछ भी दाल नहीं गली, तो उन्होंने यह कहना आरम्भ किया कि वेद मन्त्रों में तीर्थंकरों का उल्लेख है। इन्हीं श्री गुमानमल जैन का कथन है कि यजुर्वेद में ऋषभदेव, अजितनाथ और अरिष्टनेमि के नामों का उल्लेख है। अभी मुझे एक आर्यसमाज का पत्र मिला है जिसमें उन्होंने सूचित किया है कि 'अहिंसा वाणी' नामक जैन पत्र में ऋग्वेद मण्डल २। सूक्त ३ मन्त्र ४ को उद्धृत कर यह सिद्ध किया गया है कि उक्त मन्त्र में भगवान महावीर का उल्लेख है। वेद मन्त्रों में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ न समझ कर उनसे मनमाने अर्थ निकालने की प्रवृत्ति यहां तक बढ़ गई है कि मन्त्रों से मनमानी बातें निकाली जाने लगी हैं। इसी प्रकार 'ईशावास्य' से ईसामसीह और "अद्दीना स्याम" से मुसलमानों के तीर्थ मक्का तीर्थ का उल्लेख भी वेदों में बताया जाने लगा तो कोई आश्चर्य नहीं। मन्त्रों में कहीं अरिष्टनेमि या वर्द्धमान आ जाने से ही उन्हें तीर्थंकरों का वाचक समझ बैठना मन मोदक के अतिरिक्त कुछ नहीं। अहिंसावाणी के सम्पादक ने उक्त मन्त्र का जो अर्थ किया है वह और भी विचित्र है। मूल मन्त्र है—

देव बर्हिर्वर्धमानं सुवीरं स्तीर्णं राये सुभरं वेद्यस्याम्। घृतेनाक्तं वसवः सीदतेदं विश्वेदेवा आदित्या यज्ञियासः।

जैनियों ने इसका अर्थ किया है हे देवों के देव वर्द्धमान, आप सुवीर (महावीर) हैं। हम सम्पदाओं की प्राप्ति के लिए इस वेदी पर घृत से आह्वान करते हैं आइए। जैनियों ने

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सामयिक समस्या

राष्ट्र की भाषा समस्या

[श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट, आगरा]

भाषा की समस्या का समाधान ऋषि दयानन्द के बताये मार्ग पर चलने से ही होगा। —सम्पादक

सम्प्रति भारत वर्ष में भाषा समस्या ने एक चिन्ताजनक परिस्थिति पैदा कर दी है। सारे देश में अनेक भाषायें बोली जाती हैं उनमें से कई ऐसी हैं जिनमें साहित्य भी बड़ा उत्तम निर्माण हो चुका है। सारे देश को एकसूत्र में पिरोने के लिए मनोविज्ञान के आधार पर एक भाषा को सारे राष्ट्र की भाषा बनाना आवश्यक है। उस राष्ट्रीय भाषा के साथ साथ क्षेत्रीय भाषायें भी प्रचलित रहेंगी और उनकी उन्नति भी होती रहेगी। एकता की भावना लाने के लिए एक भाषा एक से भाव और एक सा भेष होना बड़ा लाभदायक है। एक सा भेष होने का तो अभी प्रश्न ही नहीं है और इस प्रश्न को अभी उठाना उपयुक्त भी नहीं है। महर्षि दयानन्द ने एकता लाने के लिए अभिवादन की विधि नमस्ते के रूप में प्रचलित करनी चाही और यदि यही एक प्रथा मानन्य हो जाय तो भी बहुत लाभ हो सकता है। देश में एकता लाने के लिए और राष्ट्रीय भावों को जागृत करने के लिए महर्षि ने हिन्दी को राष्ट्र भाषा का स्थान दिलाने का यत्न किया। उन्होंने किसी भी प्रचलित क्षेत्रीय भाषा के लिए विरोध नहीं किया। क्रियात्मक रूप से अपनी क्षेत्रीय भाषा की अवहेलना करके हिन्दी में अपनी प्रमुख पुस्तकों की रचना और इसका ही यह परिणाम हुआ कि जब महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय आन्दोलन की बागडोर अपने हाथ में ली तो उन्होंने भी हिन्दी को प्रोत्साहन देने के लिए दक्षिण भारत में जहाँ हिन्दी का सब से कम प्रचार था हिन्दी के प्रचार के लिए पूरा पूरा यत्न किया। ऋषि दयानन्द, महात्मा गांधी और नागरी प्रचारिणी सभा के कार्यकर्ताओं के प्रयत्नों का यह परिणाम हुआ कि हिन्दी सारे भारत की राष्ट्र भाषा घोषित हो गई। आवश्यक यह है कि भाषा समस्या का मनोविज्ञान के आधार पर गंभीर रूप में विचार करना चाहिए। यदि भाषा को विभाजन का आधार माना जायेगा तो एकता के स्थान में अनेकता अवश्य प्रचलित होगी, भाषा के आधार पर विभाजन का अभिप्राय क्रियात्मक रूप में यह हो जाता है कि वहां नौकरियां या मेम्बरियां अधिक मिलने की आशा हो जाती है। अधिक मेम्बरियाँ मिलने से अधिक अधिकार प्राप्त होते और अधिक नौकरियों में अधिक हिस्सा प्राप्त होने की सम्भावना हो जाती है और दोनों से स्वार्थों की सिद्धि होती है और जहाँ स्वार्थ की सिद्धि की समस्या सन्मुख आई, फूट और द्वेष की अग्नि भड़क उठती है। जब से आन्ध्र प्रान्त भाषा के आधार पर बना उस समय से महाराष्ट्र और गुजरातियों में और सिख और हिन्दुओं में मतभेद और द्वेष बढ़ता जाता है। पंजाब में पंजाबी सूबा नहीं बना यह अच्छा हुआ परन्तु पंजाबी भाषा क्षेत्र के नाम की धारणा प्रचलित हो जाने से गुरुमुखी भाषा की समस्या एक पंजाब की प्रमुख समस्या हो गई। देश में जातिवाद, सम्प्रदायवाद, भाषावाद और प्रान्तवाद की बीमारी प्रचलित है। इनको दूर करने के बजाय इनमें वृद्धि हो रही है। यदि भाषा विशेष के आधार पर अधिकार मिलने की सम्भावना हो जाती है तो भाषा का प्रश्न फूट का कारण बन जाता है। आज देश में हरिजन होने पर विशेष अधिकार मिलने आवश्यक से हो गये हैं और इसका यह परिणाम हुआ है कि व्यक्ति और समुदाय अपने को हरिजन समझने और प्रमाणित करने में लाभ का सौदा समझते हैं और इस हरिजन समस्या से जातिवाद और सम्प्रदायवाद दोनों प्रकार की समस्यायें उपस्थित हो गई। आज मद्रास में हरिजनों और अन्य जाति वालों में भयंकर विद्रोह हो रहा है। बहुत से आदमी लड़ते लड़ते मर चुके हैं। ऋषि दयानन्द एकता की भावना लाने के लिए सबको मानव निर्माण की दृष्टि से देखते थे और जिन कार्यों में एकता की भावना में बाधा पड़ती प्रतीत होती थी उनको दूर करना चाहते थे। साम्प्रदायवाद की समस्या का समाधान करने के लिये उन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार करना अपना ध्येय बनाया और यह यत्न किया कि ईसाई और मुसलमानों की शुद्धि की प्रथा से आर्य व हिन्दुओं के समुदाय में समावेश सम्भव हो जाये। इसी प्रकार मानव निर्माण के लिये एकता के लिए उन्होंने जातिवाद का घोर खण्डन किया और अछूतपन को मिटाने का यत्न किया। जन्म के आधार पर जातियाँ मानने से फूट बनी रहती है। इसी प्रकार अछूतपन की भावना प्रचलित रहने से द्वेष बढ़ता ही रहता है। देश में सच्ची एकता लाने के लिये और बलयुक्त राष्ट्र निर्माण के लिये ऋषि दयानन्द की प्रणाली को ही अपनाना आवश्यक और अनिवार्य है। यदि आर्य समाज का प्रचार आज पंजाब में उचित रूप से प्रचलित रहता और राष्ट्रीयता के नाम पर उस प्रचार में बाधा उपस्थित न होती तो आज हिन्दू और सिख आपस में भाई भाई की भाँति मिलकर रहते, हिन्दी का भी प्रचार रहता और गुरुमुखी का भी प्रचार होता रहता किसी प्रान्त का कोई निवासी राष्ट्रीय भाषा को अपनी भाषा स्वीकार करे तो राष्ट्र की ओर से उसको किसी क्षेत्रीय भाषा के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। यह अवश्य है कि जो किसी क्षेत्रीय भाषा को राष्ट्र भाषा के अतिरिक्त अपनी भाषा मानता है तो उसको भी क्षेत्रीय भाषा पढ़ने से रोका नहीं जा सकता। पंजाब में जो आन्दोलन है वह उन की ओर से है जो हिंदी को ही अपनी क्षेत्रीय और राष्ट्रीय भाषा मानते हैं और जो ऐसा मानते हैं उनको क्षेत्रीय भाषा के लिए विवश करना विधान के प्रतिकूल है। राष्ट्र की ओर से राष्ट्रीय भाषा के प्रचार के लिए अनेक उपाय किये जा रहे हैं। सरकारी न्यायालयों में और दफ्तरों में जो कर्मचारी और अधिकारी हैं उनको राष्ट्रीय भाषा पढ़ाने का प्रयत्न हो रहा है और राष्ट्रीय भाषा को अनिवार्य रूप से प्रचलित करने की अवधि बढ़ाई जा रही है। भाषा समस्या के समाधान के लिए यह आवश्यक है कि भाषा को विभाजन का आधार न माना जाये। अधिकारों की प्राप्ति से इसका कोई सम्बन्ध न हो और भाषा की समस्या को राष्ट्रीय एकता के सन्मुख बड़ा गौण रूप दिया जाय। ऋषि दयानन्द की प्रणाली ही सर्वांग पूर्ण है और अनुकरणीय है। उस प्रणाली की जितनी अवहेलना होगी उतना ही मतभेद बढ़ेगा।

अनमोल बोल

१—मुक्ति हमेशा ज्ञान से ही मिलती है। आज कल के ड्यूटी के पाबन्द स्वार्थ की खातिर दौड़ धूप करने वाले सभ्य गुलाम को कर्मकाण्ड पाप और दुःख से नहीं बचा सकता। —स्वामी रामतीर्थ

२—मेरे लिये सत्य से परे कोई चीज नहीं। —महात्मा गांधी

३—इन्सान जन्म से ही बुरा नहीं होता अपितु उसकी सोसायटी उसे बुरा बना देता है।

४—असत्य और पाखण्ड से भरे दुष्ट लोगों को ही अछूत कहा जा सकता है। —महात्मा गांधी

५—परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी अन्यायकारी अविद्वान् लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता। —महर्षि दयानन्द

६—जिस राष्ट्र में सब नेता हों, सारे पण्डित बनने का अभिमान करें और सभी ऊंचे ऊंचे पदों का लालच करते हों वह राष्ट्र शीघ्र नष्ट हो जाता है। —महा पण्डित कल्हण

७—थोड़ा पढ़ना, अधिक सोचना, कम बोलना, अधिक सुनना यही बुद्धिमान बनने के उपाय हैं। —टैगोर

८—कर्तव्य का पालन करो फल की चाह नहीं। —भगवद्गीता

—श्री चन्द्र गुप्ता, अम्बाला छावनी

(पृष्ठ ७ का शेष)

कल्पना की पोल तो इसी से खुल जाती है जबकि वे अपने तीर्थंकर का आह्वान यज्ञ वेदी पर घृत के द्वारा करते हैं। ऐसा अर्थ करते समय सम्पादक जी यह क्यों भूल गये कि जैन मत यज्ञ क्रिया का विरोधी है। यदि वे भी यज्ञों में आस्था रखते हैं तो फिर वैदिक कर्मकाण्ड का विरोध क्यों करते हैं। वस्तुतः यह मन्त्र आग्नेय परक है। इसका वास्तविक अर्थ स्वामी दयानन्द और पं० जयदेव जी विद्यालंकार आदि के भाष्यों में देखना चाहिये। इसी प्रकार "स्वस्तिनः इन्द्रो" आदि मन्त्रों में अरिष्टनेमि तीर्थंकर का दर्शन करना भी वैसा ही है जैसा वेद मन्त्रों में अन्य आधुनिक नामों को खोजना।

उक्त विवेचन से जैन धर्म की आधुनिकता अत्यन्त स्पष्ट रूप से सिद्ध हो जाती है तथा यह भी ज्ञात हो जाता है कि ऐतिहासिक तथ्यों को झुठलाने के लिए जैनमत वाले कितने निम्न स्तर पर उतर आये हैं। संसार का प्राचीनतम धर्म वैदिक धर्म है और वेद ही संसार के आदिम धर्म ग्रन्थ हैं, इसे सभी विद्वानों ने निष्पक्ष रूप से स्वीकार किया है। अन्त में हम जैन मत के आग्रही विद्वानों से यह प्रार्थना करेंगे कि वे सत्य को छिपाने की चेष्टा न करें। ऐतिहासिक तथ्यों पर पर्दा डालना कठिन है तथा सम्प्रदाय विशेष को प्रसन्न करने के लिए सत्य का अपमान करना और भी...

सामाजिक चर्चा

वर्तमान भारत और वर्तमान नेता

[श्री सियाराम गुप्तार्य, आरा]

इस लेख में लेखक ने वर्तमान नेताओं के असली स्वरूप का वर्णन करने का प्रयास किया है।
—सम्पादक

सदियों से गुलामी की जंजीरों में जकड़े रहने के बाद अभी चन्द वर्षों से यह देश स्वतंत्र हुआ है। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए हजारों नर-नारियों ने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया तथा तोपों और मशीनगनों के सम्मुख अपनी छाती को खुलनी करवा दिया, सिर्फ इसलिए कि हमारे बलिदानों से आने वाले भारत का भविष्य उज्ज्वल होगा और हमारे देशवासी अंग्रेजों की दासता से मुक्त हो स्वतन्त्र वातावरण में पल कर अपना प्राचीन संस्कृति और धर्म की रक्षा कर देश का गौरव बढ़ायेंगे। भारत पुनः सोने की चिड़िया और पारस पत्थर के अलङ्कारिक शब्दों से विभूषित होगा। जहाँ घी और दूध की नदियाँ बहेंगी, देश के बच्चे भरत और अभिमन्यु के समान सिंहों से खेलते नजर आवगे, आदर्श नारियाँ अपने शील, व्रत, नियम और लज्जा को बचा कर सीता और दमयन्ती के सदृश पातिव्रत धर्म का पालन करेंगी एवं पुरुष भी राम और नल के सदृश पत्नीव्रत बन नारी जाति की रक्षा करेंगे। देश के शासक राजा जनक की नाईं प्रजा का पुत्रवत् पालन करेंगे। व्यभिचार, अनाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार और पापाचार कहीं देखने को न मिलेगा। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक का एक अखण्ड भारत की स्वाधीनता को देख कर गौरवान्वित होंगे। भारत की कोटि कोटि जनता अपने अखण्ड हिन्दू राष्ट्र को एक ध्वज में देखकर फूले न समायेगी।

पर हाय! आज भारत की इस दुर्दशा को देखकर उन शहीदों के सुनहले अरमानों पर पानी फिर गये। बलिदान के पश्चात् उनकी समस्त अभिलाषायें मिट्टी में मिल गईं। काश! अगर वे जीवित होते तो आज अपने देशवासियों की इन करतूतों को देखकर आँसू बहाते! मगर आज वे लोग हम सबों के बीच न रहे। किन्तु उनकी धवल कीर्ति पर कलंक की कालिमा लगाने वाले छल छद्म की राजनीति में पल कर आज भी वे अपने देश को गुलाम बनाने पर तुले हैं और अपना पारस्परिक फूट, ईर्ष्या और द्वेष के कारण इस देश को भी गर्त में घसीटे ले जा रहे हैं। दलबन्दी और नेतागिरि के चक्कर में पड़कर आज भारतवर्ष के अनेक अवसरवादी अपनी पदलोलुपता और स्वार्थपरता का नग्न दृश्य उपस्थित कर जनता की आँखों में धूल झोंकते हैं। भोली-भाली जनता उनकी चिकनी-चुपड़ी बातों में पड़कर अपने अधिकार और कर्तव्य को भी भूल जाती है।

तत्पश्चात् वे जनता जनार्दन के सेवक कहलाने वाले कोटि कोटि जनता के अरमानों को कुचल कर अपने अरमानों का रंगीन महल खड़ा कर उसमें ऐश और आराम की जिन्दगी बिताते हैं। जनता की गाढ़ी कमाई के पसीने की कमाई से आज के बड़े-बड़े लीडर गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। एक तरफ जनता टैक्सों की मार से दबी जा रही है तो दूसरी तरफ वे घूसखोर और काले बाजारी शासक दबल भत्ता उठा कर अपने पेट भरने में ही व्यस्त हैं ताकि भविष्य में फिर ऐसा सुनहला अवसर प्राप्त हो या नहीं।

अतः आज यही कारण है कि सुनहले पदों की प्राप्ति के लिए प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में नेता बनने की धुन है। उनकी योग्यता क्या है, उनका चरित्र कैसा है, इसकी चिन्ता या परख न तो हमारे राष्ट्र के कर्णधारों को है और न भारतीय विधान में इसके लिये कोई कसौटी ही है। यदि है तो केवल यही कि वह जनता के बहुमत द्वारा चुना जाय। सारांश यह है कि जो किसी काम में अयोग्य हो, जो निठल्ले, निकम्मे और चरित्र से दूर हों उनके लिये आज नेता बनने के सभी मार्ग खुले पड़े हैं। मैंने भारत के ऐसे कई व्यक्तियों को देखा है जिनके सर पर पाँच वर्ष में पाँच रंग की टोपियाँ नजर आईं पर उनके दिल का काला रंग ज्यों का त्यों बना रहा है उसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सका।

अतएव मैं एक तटस्थ दर्शक के नाते अपने देश के नागरिकों को उन गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले चरित्रहीन और अवसरवादी व्यक्तियों से सचेत कर देना अपना कर्तव्य समझता हूं।

★

चयनिका

महापुरुषों के जीवन

घूमते घूमते स्वामी जी (महर्षि दयानन्द) सम्वत १९२९ के भाद्र मास में बिहार पहुंचे और उसके उपरांत जमालपुर के स्टेशन पर मुंगेर जाने के निमित्त खड़े थे। गाड़ी रात्रि के १२ बजे जमालपुर स्टेशन पर पहुँची। मुंगेर की गाड़ी में अभी देर थी, स्वामी जी उसी प्रकार केवल मात्र एक कौपीनावशेष धारण किए हुए प्लेट फार्म पर घूम रहे थे वहां पर एक अंग्रेज इंजीनियर अपनी स्त्री समेत ठहरा था। स्वामी जी को नंगा देख स्टेशन मास्टर को आदेश हुआ कि इस नंगे साधु को यहां से हटाओ। बेचारे स्टेशन मास्टर ने स्वामी जी से हटने को न कह कर नम्रता से एक ओर कुर्सी पर बैठने को कहा। स्वामी जी समझ गए और उत्तर दिया 'जाओ इससे कहदो वह उस युग का पुरुष है जब आदम व हव्वा अदन के बाग में नग्न रहते थे और तनिक भी नहीं शरमाते थे, अन्त में उस अंग्रेज ने स्वामी जी का परिचय पाकर उनसे उस अवसर का लाभ उठाया और जब तक गाड़ी आयी उनसे वह वार्तालाप करता रहा।

*　　*　　*　　*　　*

महारानी विक्टोरिया अपने आठ वर्षीय पुत्र प्रिंस आफवेल्स के साथ टहल रहीं थीं। कुमार ने अपने एक साथी को गिरा दिया। महारानी ने डाटकर पूछा ऐसा क्यों किया ?

कुमार ने कहा—वह नहीं जानता कि मैं प्रिंस आफवेल्स हूं, शरारत करता है।

विक्टोरिया ने उसे पकड़ लिया, दण्ड देकर बोलीं—तुझे भी सम्भवतः नहीं ज्ञात है कि मैं इङ्गलैंड की महारानी हूं।

*　　*　　*　　*　　*

एक बार जेल में गांधी जी भोजन में केवल दूध और पिंडखजूर लिया करते थे, दूध उबालने, पिंडखजूर साफ करने और भिगोने का कार्य सरदार पटेल के जिम्मे था।

एक दिन शाम को सरदार पटेल ने पूछा बापू कल सवेरे के लिए कितना पिंडखजूर पानी में भीगने के लिए डालूं। बापू ने उत्तर दिया, '१५ काफी रहेंगे।' सरदार बोले, 'नहीं बापू १५ नहीं २०।' बापू फिर बोले, नहीं भाई १५ ही काफी रहेंगे।'

सरदार को चिंता थी कि कहीं भोजन की अपर्याप्तता के कारण बापू दुर्बल न हो जाएं। उन्होंने कहा, 'बापू २० ठीक रहेंगे। जैसे १५ वैसे २०।'

तो फिर दस ही भिगो दो। यदि १५ और २० में कोई अन्तर नहीं है तो १० और १५ में भी क्या होगा। बापू ने अपनी सहज मुस्कान के साथ कहा।

सरदार की मुद्रा देखने योग्य थी।

*　　*　　*　　*　　*

टालस्टाय एक बार अति साधारण कपड़े पहने स्टेशन प्लेटफार्म पर घूम रहे थे। एक स्त्री ने कुली समझ उन्हें बुलाकर कहा—ऐ! देख, यह पत्र इधर सामने के होटल में मेरे पति को दे आ। आ तो तुझे दो रूबल दे रही हूं। टालस्टाय ने चुपचाप उसका काम कर दिया और रूबल ले लिया। कुछ ही क्षण बाद उनके एक मित्र वहां आये और बहुत आदर से 'काउण्ट'-सम्बोधन के साथ बातें करने लगे। उक्त महिला का माथा ठनका। उसने पास आकर उस व्यक्ति से टालस्टाय का परिचय पूछा। उस व्यक्ति ने आश्चर्य चकित होकर उत्तर दिया-'अरे, आप जानते नहीं! ये हैं काउण्ट लियो टालस्टाय।' काटो तो खून नहीं। महिला ने टालस्टाय से बार बार क्षमा मांगते हुए कहा कृपया रूबल लौटा दीजिए। मैंने आपका बहुत अनादर किया..... हे परमात्मा! मुझे क्षमा कर। टालस्टाय ने हंसकर कहा—देवी जी, क्षमा करना तो परमात्मा का कार्य है ही, पर मैंने कार्य करके पैसे लिए हैं, मैं वह क्यों वापस दूं ? क्या मैंने आपका कार्य नहीं किया है ?

जनता की आवाज

कवि कहता कविता कहती है-
जन कहता जनता कहती है-
युग कहता दुनिया कहती है-

[१]

विश्व बंधु की मर्यादा का आज उल्लंघन तुम करते हो।
भूखे निर्धन असहायों पर टैक्स लगा कर मन भरते हो
तुम कल्याणी बने किन्तु पीड़ित जनता को सता रहे हो
विक्रम वाणी वालो से भोले मानव को मिटा रहे हो
आज सभी परिचित तुम से है लाठी गोली की सरकार

[२]

हम मे से कितने वीरों ने क्रान्ति समर मे खेली होली
किन्तु तुम्हारी भव्य जलूसो मे सज कर निकली थी डोली
कितनी माताओं ने अपने पुत्रों को बलिदान किया था
कितनी बहिनों ने अपने भाई से सदा विछोह किया था
किन्तु तुम्हारी साज सजाती सार हीन ओछी पतवार

[३]

कितने ब्लैक खोर तुम मे से कितने चोर बजारी करते
कितने पुलिस दलाल और कितने मदिरा की चुस्की भरते
राष्ट्र भक्ति से शून्य किन्तु सच्चे लीडर फिर भी कहलाते
कृत्रिम वेश धार पोंगा पकके पिट्ठू बन मन बहलाते
टेढ़ी टोपी लंगा नाम के बन जाते पक्के सरदार—

[४]

आज संगठन शक्ति उमगती कर में लेकर नव धारा
सर्वोदय सर्वत्र ज्ञान का क्षेत्र दिखायेगा प्यारा
दुस्साहस आतंक मिटेगा मिट जायेगा भय भारा
सच्ची आत्म प्रतिष्ठा होगी सच्चा गांवो का नारा
सत्य प्रदीप अहिंसा बाती की ज्योति जग में विस्तार

[५]

युग निर्माता ने भारत की ज्योति जगाई जग मानी
मानव की मानवता के हित स्व की दे दी कुर्बानी
सुव्यवस्था की रीति नीति बापू के उर ने पहिचानी
किन्तु तुम्हारे कार्य कलापों में रहती है कटु वाणी
एक बार फिर सोच समझ लो नहीं छोड़ दो तुम दरबार-

[६]

जन जनता ने संकट सह प्रण पूरा करके दिखलाया
तुमको कुर्सी पर बिठलाया फिर भी हमने क्या पाया
सेवक बनना भूल गये उन्माद तुम्हारे सर छाया
राम राज्य मे रावणवाली धारा का क्यों अपनाया
इसी तरह करते जाओगे तो डूबोगे निश्चय मझधार

[७]

हमने जाना तुम बांके फिर भी अपना घर पहिचानो
निर्धन निरीह भूखी जनता पर नादिरशाही मत तानो
टेढ़ी कक्षा और मढ़ैया यह अधिकार हमारा है।
शासन कार्य चलाने का तुमने अब भार संभारा है
हमने परखा तुम्हें और तुम बता रहे कोरो खटवार-

[८]

भारत के सेवक बन कर क्यों भारत माँ को रुला रहे
जग जननी स्वतन्त्रता देवी को तलवारों पर सुला रहे
वाली जनता के कर्णधार क्या तुमने अपने उर ठानी
जो नित नवीन कर भार बढ़ा करते अपनी ही मनमानी
इतनी तान न तानो प्रिय क्यों करते हो हमसे तकरार-

[९]

शीतकाल, ग्रीषम, वसंत पतझर ऋतुयें भी आती है
अपने अपने सुख क्षेत्र में अपना कार्य निभाती है
तुम अपने कर्तव्यों पर आकर निष्ठुर बन जाते हो
जनता अन्यायों को अपनी नीति का पाठ पढ़ाते हो
अब तो अपना कार्य सम्भालो नहीं लगेगी फिर फटकार-

वेदोपदेश

आस्तिकता से लाभ

ओ३म् यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूतं देवसपर्यति तस्यस्म प्राविता भव

ऋ० १-१२-८

(हे देवाग्ने जोर हविष्पतिः) देने लेने योग्य वस्तुओं का पालन करने वाला श्रेष्ठतम कर्मों से युक्त चरित्रवान् मनुष्य (त्वां सपर्यति) आपका सेवन करता है। (तस्य) उस सेवक मनुष्य की आप (प्राविताभवस्म) अच्छी प्रकार रक्षा करते हैं।)

सबका रक्षक होने से प्रभु का नाम ओ३म् है। परन्तु जो अपने गुण कर्म स्वभाव ईश्वराज्ञा (वेदानुकूल) बनाने में यत्नशील रहता है निश्चय ही पात्र होने के कारण वह व्यक्ति ब्रह्मानन्द से आत्मिक सुख प्राप्त करता है। वेद में भक्त को बड़ा आश्वासन दिया है। यथा—

न रिष्येत् त्वावतः सखा ऋ० कभी वह प्रभु भक्त विनष्ट नहीं होता वह दून मानक प्रभु अन्तर्यामी रूप से आत्मा में ज्ञान प्रेरित करता रहता है। भक्त जब ज्ञानानुकूल कर्म करेगा तो उसका फल निश्चय ही सुख होगा। जीवन को उच्च बनाने के लिए पाप त्याग आवश्यक है पाप सदा एकान्त में ही करने की इच्छा होती है भक्त सर्व साक्षी प्रभु को व्यापक जानता हुआ आचरण करता है उसके लिए एकान्त स्थान कहां? ऐसी स्थिति में निष्पाप बनना सरल होता है निर्भयता पूर्वक धर्माचरण करते हुये ऐसे भक्तों को जो सुख होता है उसे—

"न शक्यते वर्णयितुं गिरा तदा स्वयन्तदन्तः करणेन गृह्यते"

मन्त्र में देव शब्द प्रभु का विशेषण है उस परमदेव का उपासक मानव भी देवत्व को प्राप्त कर लेता है। भगवान स्वयं प्रकाश स्वरूप और सबका प्रकाशक है अतः प्रकाश का अभिलाषी मानव तमेव शरणं गच्छ उसी आनन्दमय की शरण में जा जायस्यच्छायामृतं जिसका आश्रय ही मोक्ष सुखदायक है। उस नियता के नियमों का पालन मनुष्य का लोक तथा परलोक सफल बना देता है। ऐसे प्रभु के आज्ञाकारी भक्त को ही निरुक्त में आर्य कहा है "आर्य ईश्वर पुत्र." तथा वेद मे—"तमाहुः सुप्रजा इतियस्ते सोमाविधन्मन. ॥ ऋ० ॥११॥

अर्थात जो ईश्वराज्ञा का पालन करता है उसे विद्वान् लोग सुप्रजा कहते हैं। ऐसे सुपुत्र ही विश्व का कल्याण करने मे समर्थ होते हैं "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है" यह ईश्वराज्ञानुकूल कामना प्राणिमात्र के हितैषी परम आस्तिक ऋषि दयानन्द जी की आस्तिकता का ही फल है।

"मानव चरित्र निर्माण का मूलाधार ही आस्तिकता है" अतः उस आदि मूल परमेश्वर को जानकर तथा आस्तिकता का भाव मन में श्रद्धापूर्वक दृढ़ करके इस मानव जीवन को सफल बनाने का यत्न करना चाहिए।

—सत्यप्रिय व्रती, वैदिक साधना आश्रम यमुनानगर (पंजाब)

[१०]

तुमने मधुर मृदुल भाषण से जनता में रस बर्षाया
क्या बर्षाया सभी स्वार्थ-वश तुमने था विष सर्साया
यह पूंजी वादी धारा का बना बनाया धन्धा था
शासित का शोषित प्रति यह सजा संजोया फन्दा था
चाल चली शतरंजी तुमने भी गुटबन्दी की भरमार—

[११]

युक्त प्रान्त का पूर्व क्षेत्र अब भी अकाल की भेंट चढ़ा
भारत के प्रान्त प्रान्त में क्यों यह भाषा वादी दृश्य बढ़ा
पर दैवी संकट का प्रकोप कह कर जनता को बहलाते
आन्दोलन कारी वीरों को बन्दूकों से क्यों बहलाते
क्या यही तुम्हारे राम राज्य के नारे की है प्रिय पुकार—

[१२]

स्वार्थ वादिता के चक्कर में बढ़े आज तुम जाते हो
नागरिकों का मौन ध्यान अपने में कभी न लाते हो
मूक वेदना है हृदयों में नहीं अश्रुकण आँखों में
एक आग जो धधक रही है धीरे धीरे लाखों में
परिवर्तन के अरमानों से निकलेगी भारी हुंकार—

हम मक्कार कि तुम मक्कार—

—राधेश्याम पांडेय, हरदुआगंज, अलीगढ़।

स्वास्थ्य-सुधा

हम बीमार क्यों पड़ते हैं?

(विजेश्वरदयाल सक्सेना, बहराइच)

सर्व साधारण का, इस प्रकार का विश्वास है कि रोग अपने आप पैदा होते हैं। उनकी कुछ ऐसी धारणा होती है कि जो बात होनहार होती है, वह किसी न किसी प्रकार होती ही रहती है। इन होनहार बातों में, रोग भी एक होनहार ही हैं जो समय और असमय पैदा हो जाते हैं। यदि उनको यह मालूम हो जाए कि रोग अपने आप नहीं उत्पन्न होते, उनके उत्पन्न करने के हम ही कारण हैं तो वे, निश्चय ही फिर यह जानने की चेष्टा करेंगे कि हम अपनी बीमारी को किस प्रकार पैदा करते हैं ? और जब उनको इन बातों का यथावत रहस्य मालूम हो जायगा तो फिर वे जान बूझकर कोई ऐसी भूल न करेंगे जो उन्हीं के लिए कष्टदायक हो।

मनुष्य जीवन में कितने प्रकार के रोग पैदा होते हैं, इस बात को निश्चित संख्या के साथ यद्यपि आज तक शरीर शास्त्र का कोई भी वैज्ञानिक नहीं बता सका, और न कभी कोई कह सकेगा। परन्तु फिर भी, रोगों के सम्बन्ध में जहां तक अनुसंधान किया जा सका है, किया गया है। इस अनुसंधान में तीन बड़े बड़े विभाग पाये जाते हैं अर्थात् डाक्टरी, यूनानी और आयुर्वेदिक। अमेरिका से प्रकाशित एक पत्र का कहना है कि पेट की खराबी से और भोजन की गड़बड़ी से इन सभी रोगों की उत्पत्ति होती है, यह यूनानी और आयुर्वेदिक मत है, जिसको डाक्टरों ने भी स्वीकार किया है। मनुष्य जो खाना खाता है उसके खाने के पदार्थों में कुछ इस प्रकार का अंश भी पाया जाता है जो विकार उत्पन्न करता है। जो विकार के अंश हुआ करते हैं वे भी सभी प्रकार के भोजनों में समान रूप से नहीं होते। जिन पदार्थों में यह विकार अधिक होता है, उनका प्रभाव मनुष्य के शरीर पर विष के समान पड़ता है और जिन अवस्थाओं में वह शरीर से उचित समय पर निकल नहीं जाता, उन दशाओं में वह तुरन्त अपने प्रभाव से रोग उत्पन्न करता है। यह देखा जाता है कि जब किसी का पाखाना साफ नहीं होता तो वह बीमार पड़ जाता है। मि० हेग ने इस विकार का यूरिक एसिड अर्थात् एक प्रकार का विष निश्चित किया है। यहां पर इस विष सम्बन्ध में मैं अवश्य प्रकाश डालने की चेष्टा करूंगा। इसके साथ ही यह निश्चय किया जायगा कि कौन-कौन रोगों का श्रीगणेश किस-किस प्रकार होता है।

आजकल मनुष्यों के भोजन में विभिन्न प्रकार की चीजे हो गई हैं। फिर भी उनमें मछली, मांस, वनस्पति शराब और चाय इत्यादि अधिक उपयोग में आती है। इन सब चीजों में यह विष समान नहीं होते। भिन्न भिन्न वस्तुओं में विभिन्न परिमाण में यह विष पाया जाता है। वनस्पति पदार्थों में यद्यपि इस विष की मात्रा बहुत कम होती है, परन्तु थोड़ी बहुत अवश्य पायी जाती है। शराब में भी यह विष बहुत कम पाया जाता है। किन्तु चाय में यह विष बहुत मात्रा में पाया जाता है। अन्डा, दूध, पनीर चावल और गोभी आदि में यह यूरिक एसिड नहीं पाया जाता है।

इन पदार्थों से बना हुआ भोजन खाने से और उनका ठीक ठीक पाचन हो जाने पर यह विष साधारण तथा विशेष हानि नहीं पहुंचाता, किन्तु ठीक-ठीक उनका पाचन न होना ही बीमारी का मुख्य कारण होता है। संसार में एक ही रोग है और उस रोग का सम्बन्ध पेट की खराबी से है। यदि पेट में कोई खराबी न हो तो कभी भी कोई रोग हो ही नहीं सकता।

शरीर में इस विष के रुक जाने या एकत्र हो जाने के दो ही मुख्य कारण है। या तो यह रक्त के साथ मिश्रित हो जाता है अथवा शरीर के किसी जोड़ में फंस जाता है। इन दो अवस्थाओं में यह विष शरीर से न निकल कर विभिन्न रोगों की उत्पत्ति करता है। जब यह रक्त के साथ मिश्रित हो जाता है तो उसके मस्तक की बीमारियां, हिस्टीरिया, सुस्ती, नींद का अधिक आना, स्वांस रोग, जिगर की खराबी, अजीर्ण रोग, शरीर में रक्त की कमी आदि बहुत सी बीमारियां पैदा हो जाती है। और जब वह किसी जोड़ में रुक जाता है तो उससे वात रोग, गठिया रोग, नाक और कलेजे की दाह, पेट में विभिन्न रोग, मलेरिया, जुकाम इनफ्लुएन्जा और क्षय रोग उत्पन्न होते हैं। जिस रक्त में यूरिक एसिड मिल जाता है उसमे ठंडक पहुंचने से या किसी प्रकार की कटाई के पहुंचने से यूरिक एसिड उस रक्त से पृथक हो जाता है। मैंने इस बात को निश्चित रूप से पाया है कि यूरिक एसिड की गति में अन्तर होने से ही सूक्ष्म और बारीक नसों में रक्त का दौड़ान रुक जाता है। यह यूरिक एसिड की मात्रा बिना किसी यंत्र के ज्ञात किया जा सकता है। अपनी किसी उंगली को यदि थोड़ा सा जोर से दबाने पर वह सफेद हो जायगी और छोड़ने पर फिर लाल हो जायगी। जो लोग मांसाहारी होते हैं उनकी उंगली में इतनी जल्दी सफेदी नहीं आ सकती जितना कि वनस्पतिक पदार्थों का भोजन करने वाले की उंगली में।

शरीर में यूरिक एसिड होने न होने की पहचान बड़ी आसानी से और दूसरे ढंग से हो सकती है। परिश्रम पूर्ण कार्य करने से या व्यायाम करने से जब अधिक सुस्ती आती है तो समझ लेना चाहिए कि शरीर में यूरिक एसिड मौजूद है क्योंकि जब यह विष शरीर में नहीं होता तो परिश्रम और व्यायाम आदि करने से थकावट और सुस्ती बहुत शीघ्र दूर हो जाती है। यह बात सभी को मालूम है कि जो लोग परिश्रम और व्यायाम नहीं करते वे सदा निर्बल और रोगी रहा करते हैं। इसका क्या कारण है ? बात यह है कि परिश्रमिक कार्य करने से जो शरीर में पसीना आता है उस पसीने के साथ ही शरीर का यूरिक एसिड निकल जाता है। और रोग नहीं उत्पन्न होते।

भोजन से जो शरीर में यूरिक एसिड उत्पन्न हो जाते है उसका शरीर से निकलना बहुत आवश्यक है और उसके निकालने के लिए परिश्रमपूर्ण कार्यों और व्यायाम से बढ़कर कोई कोई अन्य उपाय नहीं है। जिससे हमारा सम्पूर्ण शरीर एक बार पसीने से खूब नहा जावे, तभी हमारा शरीर रोगी न होगा तथा शरीर की त्वचा चिकनी होगी।

आर्य्य-कुमार-संघ



'आर्य और मुस्लिम'

[श्री ओमानन्द अवस्थी शास्त्री, गुरुकुल ज्वालापुर]

आर्य जाति की यह एक विशेषता है कि सर्वदा उन्नति के पथ प्रदर्शक वेदों की शिक्षा के अनुकूल अपने समाज एवं अपनी उन्नति के साथ-साथ इसने संसार की उन्नति का सर्वोत्तम निर्माण किया है और करती रहेगी।

समय की मांग है कि योग्य व्यक्ति विश्व के शासक हों और भावी विश्व युद्ध की पूरी रोकथाम की जा सके। अतएव प्रत्येक ग्राम और नगर में आज आर्य वीर दल एवं आर्य कुमार संघ की आवश्यकता है। शारीरिक एवं अन्य उपयोगी उपाय किये जाएं जिससे समाज की समस्या सरल हो और विश्व को आर्य बनाने का कार्य प्रगति पथ पर अग्रसर हो।

आर्यों का गौरवपूर्ण इतिहास साक्षी है कि विश्व शान्ति का प्रथम प्रयास आर्य जाति का ही है। अतः पुनः विश्व को आर्य साम्राज्य की आज आवश्यकता है।

समय की मांग पूरी हो। आर्यजगत् अंगड़ाई ले। आर्यों का विकास हो वेद और ईश्वर की प्रत्येक व्यक्ति पूजा करे। समाज में सुख शान्ति हो। कुरीतियों का विनाश हो और चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य का निर्माण हो तथा विश्व फिर एक स्वर से गाये—

संगच्छध्वं संवदध्वं, सं वो मनांसि जायताम्।
देवा भागं यथापूर्वे सजानाना मुपासते॥

सम्पूर्ण संसार की सामाजिक एवं राजनैतिक दुरवस्था दूर हो और आर्य जाति के यश एवं प्रशंसा का मार्तण्ड एक बार पुनः विश्व के कोने कोने से गूंज उठे। और विज्ञान के संघातक आविष्कारों का जन निर्माण के मार्ग में उपयोग हो और तृतीय विश्व युद्ध की सम्भावना ही मिट जाए।

श्वेत दाग की अद्भुत दवा

इस दवा के थोड़े ही दिन के लगाने से सफेद दाग समूल नष्ट हो जाते हैं। अगर आप अनेकों दवा से हताश हो चुके हैं तो एक बार दवा मंगाकर अवश्य परीक्षा कर देखें।

मू० ३) डाक व्यय ३॥) है।

पता—हित कल्याण औषधालय
नं० ४ पो० शाहपुरा मेरठ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के विभागीय अधिष्ठाताओं की सूची

अन्तरङ्ग सभा दि० १८-५-५८ में निम्न प्रकार सभा के विभागों के अधिष्ठाताओं का निर्वाचन हुआ :—

१—महिला प्रचार मण्डल की मन्त्रिणी—श्रीमती शकुन्तलादेवी जी गोयल खैरनगर बाजार मेरठ।

२—सभा कार्यालय के साथ निम्न विभाग रखना निश्चित हुआ :—
(अ) उपदेश विभाग (आ) आर्यसमाज रक्षा निधि विभाग
(इ) अनाथ रक्षा विभाग (ई) शुद्धि दलितोद्धार विभाग

३—घासीराम प्रकाशन विभाग—अधि० श्री विश्वेश्वरनाथ जी वर्मा लखनऊ

४—नायक जाति सुधार विभाग— ,, श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक हल्द्वानी

५—मादक द्रव्य निषेध तथा समाजोत्थान विभाग—श्री चांखेलाल सत्यपालजी मुख्तार शाहजहांपुर

६—भू सम्पत्ति विभाग अधिष्ठाता—श्री चन्द्रनारायण जी एडवाकेट, बरेली
,, सहा०अधिष्ठाता—श्री रघुनन्दनस्वरूप जी एडवोकेट सदर मेरठ

७—शिक्षा विभाग—अधिष्ठाता श्री आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री जी रायबरेली
,, ,, सहा० ,, श्री रामबहादुर जी मुख्तार पूरनपुर

८—गौकृष्यादि रक्षिणी विभाग के अधिष्ठाता—श्री मोहनलालजी आर्य आगरा

९—जातिभेद निवारक आर्य परिवार संघ ,, ,, प्रो०रत्नसिंहजी गाजियाबाद

१०—चरित्र निर्माण विभाग—अधिष्ठाता श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट, आगरा

११—आर्य वीर दल विभाग अधि० श्री रामजीप्रसादजी मुगलसराय(वाराणसी)

१२—भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस तथा आर्यमित्र के अधिष्ठाता श्री फूलनसिंह सभा मन्त्री शिकोहाबाद (मैनपुरी)

१३—शम्भूनाथ रामेश्वरीदेवी पुस्तकालय भुवाली अधिष्ठाता श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक हल्द्वानी

१४—आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर अध्यक्ष श्री शिवदयालु जी सदर मेरठ

१५—दयानन्द गुरुकुल जूनियर हा० से० स्कूल विरालसी—प्रधान श्री शेरसिंहजी काश्यप मुजफ्फरनगर

१६—श्री विरजानन्द दण्डी धाम स्मारक मथुरा के मन्त्री—श्री कर्णसिंह जी छोंकर मथुरा

१७—श्री नारायण आश्रम रायगढ़ के अधिष्ठाता श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक

१८—स्थानिक आय-व्यय लेखा निरीक्षक निम्न सज्जन नियत हुए:—
(१) आर्यमित्र तथा प्रेस श्री कृष्णचन्द्र जी लखनऊ
(२) उपदेश विभाग—श्री शिवप्रसाद जी नरही लखनऊ
(३) सभा कार्यालय—श्री रामेश्वरसहाय जी लखनऊ
(४) गुरुकुल वृन्दावन—श्री गोपालसहाय जी मथुरा

१९—निम्नस्थ संस्थाओं के लिए निम्नप्रकार प्रतिनिधि इस सभा की ओर से नियत हुए—
(१) कन्या गुरुकुल हाथरस—श्री प्रो० बाबूलाल दीक्षित अतरौली
(२) गाजियाबाद व्यायामशाला—श्री प्रो०रत्नसिंहजी गाजियाबाद मेरठ
(३) वैदिक पुत्री पाठशाला नई मण्डी मुजफ्फरनगर—श्री पं० शेरसिंहजी काश्यप मुजफ्फरनगर
(४) पार्वती आर्य कन्या पाठशाला बदायूं—श्री सियाराम जी बदायूं
(५) ब्रजरत्न सुन्दर आर्य कन्या पाठशाला सम्भल—श्री जगन्नाथसिंघल जी
श्री हरिश्चन्द्र जी सरायतरीन
(६) आर्य विद्या सभा काशी—(१) श्री प्रि०महेन्द्रप्रताप शास्त्रीजी बड़ौत
(२) श्री जगनन्दनलाल जी प्रयाग
(३) सभामन्त्री श्री फूलनसिंह जी
(७) उ०प्र० विद्यार्य (शिक्षा विभाग)—श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी बरेली
(८) आर्य कन्या पाठशाला विरालसी—श्री रामचन्द्र जी बदायूं
श्री विशुद्धानन्द जी बदायूं
(९) आर्य कन्या पाठशाला अलमोड़ा—श्री उमेशचन्द्रजी स्नातक हल्द्वानी
श्री शङ्करलाल जी हल्द्वानी
(१०) वैदिक आश्रम अलीगढ़ मन्त्री—श्री प० रामप्रसाद जी आर्य मैन्डू
(११) आर्य कन्या पाठशाला रामनगर—श्री जितेन्द्रनाथजी मुख्तार काशीपुर

—फूलनसिंह सभा मन्त्री

रेल दुर्घटनाओं की रोकथाम

भारत सरकार ने निश्चय किया है कि रेलवे दुर्घटनाओं को रोकने के लिए रेल कर्मचारियों पर कड़ा नियंत्रण होना चाहिए और इसके लिये कड़ी आचार संहिता बनायी जायेगी। रेलवे बोर्ड अब आये दिन होने वाली रेल दुर्घटनाओं से चिन्तित है। रेल मन्त्री श्री जगजीवन राम शिमला से अब लौट आयेंगे तो इस सम्बन्ध में निश्चय किया जायेगा। विचारशील लोगों का कहना है कि अब भी यदि रेलवे बोर्ड सम्भल जाय और अपनी ज़िम्मेदारी समझे तो अच्छा ही है।

कीर्ति रेल दुर्घटना

राजकोट के समीप जो रेलवे दुर्घटना हुई थी उसमें अब तक ३२ व्यक्तियों के मरने का समाचार प्राप्त हुआ है। आश्चर्य है कि जब १० डिब्बे चूर चूर हो गये तो ३२ ही व्यक्ति कैसे मरे होंगे। रलवे विभाग की यह पूरी कमज़ोरी है कि वह रेल दुर्घटनाओं में मृतकों की संख्या ठीक ठीक नहीं बताती।

उड़ीसा मन्त्रि मण्डल

एक बार आशा हो गयी थी कि उड़ीसा का मन्त्रि मंडल अब कांग्रेस के हाथ से निकल जायेगा पर किसी प्रकार कांग्रेस पुनः वहाँ बहुमत में हो गयी। मुख्य मन्त्री महताब ने अपने मन्त्रि मण्डल का त्याग पत्र वापिस ले लिया है और राज्यपाल ने पुनः मन्त्रि मंडल को पूर्ववत कार्य करने का आदेश दे दिया है।

बीकानेर अकाल

इस जिले के ५६२ गांवों में लगभग साढ़े तीन लाख व्यक्ति अकाल से पीड़ित हैं। उनकी सहायता के लिये सरकार की ओर से आवश्यक कदम अवश्य उठाया जा रहा है पर वह अपर्याप्त है। ऐसी स्थिति में वसूली रोक देने से ही भूखों मरने वालों की जान थोड़े बच जायेगी?

जमशेदपुर में आग

भारत का प्रसिद्ध उद्योग केंद्र जमशेदपुर जहाँ मजदूरों का हड़ताल चल रहा था, के मुख्य बाजार जिसे सब्ची बाजार कहते हैं, में २२ मई की रात्रि में बड़ा गम्भीर स्थिति उत्पन्न हो गई जब कुछ उपद्रवकारियों ने सब्ची बाजार में आग लगा दिया और सारा बाजार जल कर राख हो गया जिससे करोड़ों रुपयों का क्षति होने का अनुमान है। इस सम्बन्ध में १८८ व्यक्ति गिरफ्तार किये जा चुके हैं और नगर में कर्फ्यू आर्डर लागू है। अब स्थिति काबू में है पर सभी वर्गों में सन्ताप नहीं है। अभी भी मजदूरों की हड़ताल जारी है।

साप्ताहिक समाचार समीक्षा

[हमारे समाचार समीक्षक द्वारा]

दिल्ली मास्को हवाई सर्विस

दिल्ली से मास्को तक अब सीधे हवाई सर्विस खुल जायेगी। दोनों देशों के प्रतिनिधियों में वार्ता तय हो गयी और इसी सप्ताह समझौते पर हस्ताक्षर भी हो जायेंगे। इस सर्विस से केवल सात घंटे में ही दिल्ली से मास्को पहुंचा जा सकता है। एयर इन्डिया इन्टर नेशनल और रूसी हवाई कम्पनी एरोफ्लोट की ओर से सर्विस होगी।

गुड़गांवां में कांग्रेस की स्थिति डवांडोल

विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि गुड़गांवा में कांग्रेस की स्थिति डावांडोल है। वहाँ कांग्रेस प्रत्याशी श्री मौलीचन्द शर्मा के जीतने की कोई आशा नहीं है। उनका मुकाबला एक स्वतन्त्र उम्मीदवार पं० प्रकाशवीर शास्त्री से है जिन्हें समस्त दल के व्यक्ति का समर्थन प्राप्त है। चुनाव के लिए जैसा वातावरण चाहए था कांग्रेस ने पैदा नहीं किया है अतः आशा है कि यह स्थान कांग्रेस के हाथ से निकल जायेगा। चुनाव ३० मई और १ जून को होगा। प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष ज्ञानी गुरुमुखसिंह मुसाफिर ने गुड़गांवा से लौटकर उक्त संदेह व्यक्त किया। कांग्रेसी उम्मीदवार के लिए पैसा पानी के समान बहाया जा रहा है। सबकी आँखें इस ओर लगी हुई हैं।

जापान की लिबरल पार्टी पुनः सत्ता में

जापान की वर्तमान सत्तारूढ़ लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी हाल के आम चुनाव में पुनः सत्ता में आ गई है। चुनाव में पार्टी को प्राप्त बहुमत से पता चलता है कि जापान की जनता पश्चिम के साथ सुदृढ़ सम्बन्ध कायम रखने के पक्ष में है। दूसरा स्थान सोशलिस्ट पार्टी को प्राप्त हुआ है। डेमोक्रेटिक पार्टी को २८७ और सोशलिस्ट पार्टी को १६६ स्थान प्राप्त हुए।

ट्यूनिशिया में संकट

ट्यूनिशिया ने आरोप लगाया कि अल्जीरिया से आये फ्रेंच बम वर्षकों और लड़ाकू विमानों ने आज दक्षिणी ट्यूनिशिया पर बम वर्षा की इस इस घोषणा के बाद शीघ्र ही राष्ट्रपति हबीब बुर्गीबा ने पूरे देश में संकट कालीन स्थिति की घोषणा कर दी।

अंकारा में भीषण बाढ़

सरकारी सूत्रों के अनुसार अंकारा के निकट भयकर बाढ़ में ३१ व्यक्ति मरे और ५४० मकान गिर गये। संचार व्यवस्था भंग है।

लेबनान पर आक्रमण

बेरूत का समाचार है कि लेबनान की सेना ने जिसके साथ विमान और तोपखाना भी था उत्तरी लेबनान के आकार क्षेत्र में विद्रोहियों पर आक्रमण किया।

उत्तरपूर्व एशिया संधि संगठन

जापानी राजनीति अनुसंधान परिषद के डायरेक्टर श्री काजुओ यात्सुगी की हाल की दक्षिणी कोरिया यात्रा का अर्थ चीनी क्षेत्रों में यह लगाया जा रहा है कि यह उत्तर पूर्व संधि संगठन (निएटो) जिसमें जापान दक्षिण कोरिया, और फारमोसा शामिल होंगे, के निर्माण की ओर प्रथम पग है।

अल्जीरिया की प्रतिज्ञा

यहाँ तीन सदस्यों की एक सर्वोच्च "जुन्ता" की स्थापना की गई है और विद्रोहियों ने प्रतिज्ञा की है कि "मरते दम" तक फ्रांस जेनरल दिगाल को शासनारूढ़ करने के लिए संघर्ष जारी रखेंगे। पत्रकारों का कहना है कि फ्रांस में जो सुरक्षा समितियाँ स्थापित की गई हैं उनसे अल्जीरिया के विद्रोहियों का सम्पर्क बढ़ता जारहा है, फ्रांस के प्रधान मन्त्री फ्लिमलाँ भी इस परिस्थिति से बहुत चिंतित हो गये हैं।

अल्जीरिया का विद्रोह

अल्जीरिया का विद्रोह दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा है और फ्रेंच सैनिक इसे दबाने पर तुले हैं। फ्रेंच सरकार ने एक भी उचित अनुचित उपाय उठा नहीं रखा है कि अल्जीरियाइयों को दबा दिया जाये पर वे दबते नहीं हैं। इस समय दोनों देशों की सेनाओं में खुल्लमखुल्ला युद्ध जारी है। फ्रांस अपनी तानाशाही पर दृढ़ होकर वहां अपना उपनिवेश बनाये रखना चाहता है और अल्जीरिया वासी अब स्वतन्त्र होने के लिए कटिबद्ध हो गये हैं। यह सत्य है कि आज फ्रांसिसी अल्जीरिया में दमन चक्र चला रहे हैं।

हाकी में भारत विजय

टोकियो में तृतीय एशियाई खेलों का जो समारम्भ हुआ उसमें भारत ने जापान पर आठ गोल से विजय प्राप्त किया। २०० मीटर की महिला दौड़ को भारत की स्टीफी डिसोजा ने २५.८ सेकिन्ड में पूरा किया। एशियाई रिकार्ड २६ सेकिन्ड का है।

आर्य जगत

कन्या गुरुकुल हाथरस

३० जून तक यहाँ ग्रीष्मावकाश रहेगा। अपनी बालिकाओं को प्रविष्ट कराने वाले सज्जन १५ जून तक पत्र व्यवहार करके स्थान सुरक्षित करा लें। १५ जून से प्रवेश प्रारम्भ हो जायेगा। गुरुकुल १ जुलाई को खुलेगा।

आर्ष गुरुकुल एटा

यहां ऋषि दयानन्द पाठविधि के अनुसार अष्टाध्यायी महाभाष्यादि ग्रन्थों की पढ़ाई होती है। जो सज्जन पढ़ना चाहे वे अपने भोजनादि का प्रबन्ध करके यहां पढ़ सकते हैं।

आ० स० सुभाष नगर बरेली

श्री पं० अमरनाथ शर्मा पंजाब के प्रसिद्ध उपदेशक व कथावाचक इन दिनों इस समाज में ठहरे हैं। आवश्यकतानुसार समाजें उन्हें बुलाने के लिए यहां पत्र-व्यवहार करें।

जिला बोर्ड बहराइच को मानना ही पड़ा

अन्त में जिला बोर्ड बहराइच को मानना ही पड़ा और हिन्दी आंदोलन में स्कूल छोड़कर गये बोर्ड के शिक्षक अशर्फीलाल को पुनः काम पर लेना ही पड़ा। आप नवम्बर ५७में जेल से आ गये थे और तब से फरवरी ५८ तक बोर्ड के कार्यालय में जाते रहे पर उन्हें काम नहीं दिया गया। बहुत प्रयास करने के बाद ३ मार्च ५८ को पुन. उन्हें पूर्व स्थान पर रखा गया। अब वे सानन्द कार्य कर रहे हैं। इस समय उनका पता है जूनियर हाई स्कूल, स्थान पोस्ट-लक्ष्मणपुर, जिला बहराइच।

स्त्री आ० स० पीलीभीत

श्रीमती शिवदेवी आर्या, उपदेशिका, स्त्री आ० स० पीलीभीत ने घूम घूम कर वैदिक धर्म का प्रचार करना निश्चय किया है। आवश्यकतानुसार समाजे पत्र व्यवहार करें।

आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ोदा

इस महा विद्यालय का नया साल १६ जून से प्रारम्भ होगा और उसी दिन से ३० जून तक नयी कन्याओं का प्रवेश होगा। अत. अभिभावक शीघ्रता करें।-यशोदा कुमारी आचार्या

महिला ग्राम विद्यापीठ प्रयाग

विद्यापीठ की सहायक संगीत शिक्षिका परीक्षा में १—कुमारी कान्ता शर्मा, २—कुमारी श्यामलता कुमवाहा और ३-कुमारी वीना सक्सेना उत्तीर्ण हुई हैं।

आ० स० आगरा नगर

१८ मई को प्रात इस समाज की ओर से एक जन्मजात २२ वर्षीय मुस्लिम महिला की शुद्धि करके उस का नाम सरस्वती देवी रखा गया और श्री दौजीराम के साथ उसकी शादी करा दी गई। श्रीमती सरस्वती देवी ने लगभग १२५ उपस्थित व्यक्तियों का मिष्ठान्न द्वारा स्वागत किया।

आ० स० हरदोई

आ० स० हरदोई ने बेगम हसीना नामक एक मुसलिम महिला की शुद्धि करके उसका नाम सुन्दरी देवी रखा।

आ० स० रुद्रपुर नैनीताल

इस समाज के मन्दिर का शिलान्यास १८ मई को चौधरी रामकिशन जी के कर कमलों द्वारा रखा गया। यज्ञ के पश्चात् प्रो० वेलीराम, प० शङ्करलाल श्री उमेशदत्त शास्त्री आदि के प्रभावशाली व्याख्यान हुए।

आ० स० प्रतापगढ़

प्रतापगढ़ (अवध) आर्य समाज डी० ए० वी० स्कूल को समाज मन्दिर से हटाने की डिगरी मुनसिफ सदर के न्यायालय से प्राप्त की थी। इसके विरुद्ध स्कूल ने अपील किया था जो कि दिनाक १४ ४ ५८ ई० को खारिज हो गया। स्कूल को ३१ ५ ५६ तक समाज मन्दिर खाली कर देने का समय दिया गया है।

जगन्नाथ प्रसाद, प्रधान

आ०स० आर्डिनेन्स फैक्टरी रामपुर

इस समाज का वार्षिकोत्सव १६, १७, १८ मई को हुआ। प० नरदेव शास्त्री, स्वामी सत्यदेव जी, श्री यशपाल जी,प्रभावतीदेवी,कौशल्या देवी, श्री ऋषिराम आदि के भाषण हुए।

उत्सव—

आ०स० मोगलसराय

आर्य समाज मोगलसराय का वार्षिकोत्सव १०, ११, १२ मई को श्री रामजीप्रसाद गुप्त कोषाध्यक्ष सभा की अध्यक्षता में ससमारोह मनाया गया। पूज्य स्वामी अभेदानन्द जी महाराज, पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, पं० शिवदयालु जी, प० सत्यमित्र शास्त्री आदि के भाषण और ठाकुर इन्द्रदेव सिंह, विन्ध्येश्वरी सिंह, वेदपालसिंह आदि के भजन हुए। श्री केदारनाथ आर्य ने ३६५ सत्यार्थप्रकाश मंगाकर बेचने का प्रन लिया।

चुनाव—

आ० स० टूंडला

प्रधान—श्री हुकमचन्द मलिक
मन्त्री—श्री रामसुमेर जी
कोषा०—श्री रामदास गुप्त

आ०स० हनुमानरोड नई दिल्ली

प्रधान—लाला मेलाराम
मन्त्री—श्री सरदारी लाल
कोषा०—श्री यशवन्तराय गुप्त

आ०स० देहली शाहदरा

प्रधान—श्री सीताराम जी
मन्त्री—श्री नारायणदास जी
कोषा०—श्री जयप्रकाश जी

माधुर्य की फुलवारी

(श्री शङ्करदेव विद्यालंकार, एम० ए० महिला कालेज पोरबन्दर)

(मीठे वचन से सुख मिलता है)
(और मीठे वचन बोलना ही वास्तव)
(में वशीकरण मन्त्र है। यह लेख इसी)
(विचार की पुष्टि में लिखा गया है।)
(—सम्पादक)

बादामों की एक नन्हीं सी ढेरी आपके सामने पड़ी है। उमंग के साथ आप एक के बाद एक बादाम का आस्वाद ले रहे हैं। अच्छे अच्छे बादाम खाने के बाद एकाध कड़वा बादाम आ जाने से आपका उल्लास जाता रहा। आपकी चेतना विकल हो उठी। मीठे बादामों का समस्त आस्वाद जाता रहा और आपके मस्तिष्क में एक अद्भुत अनप्रियता फैल गई।

बादाम की ढेरी में स्थित कड़वा बादाम यह बात समझाने के लिए पर्याप्त है कि एक व्यक्ति के अनेक गुणों के पीछे छिपकर बैठा हुआ एक ही दुर्गुण उन सब पर पानी फेर देता है।

कटुता मानव की अन्तरात्मा का ऐसा दुर्गुण है कि वह उसके चारित्र्य रूपी दुर्ग का धराशायी कर देता है।

× × ×

एक व्यक्ति ने दूसरे पर उपकार किया। यह उपकार अदाल रहे तभी उसका पारमल महकता है। जिस क्षण उस उपकार का नौशा बनाकर उसका प्रदर्शन प्रारम्भ होता है, उसी समय से उसकी समस्त गरिमा विलीन होने लगता है।

उपकार का केवल यही मतलब नहीं होता कि आर्थिक संकट में पड़े हुए किसी व्यक्ति को रुपये पैसे से सहायता की जाय।

जब किसी की अन्तरात्मा संतप्त होकर व्यथा पा रही हो, उस समय उसके अन्तस् पर सहानुभूति का पंखा झलने वाला व्यक्ति भी उपकार कर रहा होता है। परन्तु उपकार करने की श्रद्धा से नहीं, स्वाभाविक तौर से।।

एक आदमी ज्ञान की सुगंध से निश्चल है। परन्तु ज्ञान के प्रदेश के समीप जाने की मानसिक सुविधा उसके पास नहीं है। इस प्रकार के ज्ञान यात्री को ज्ञान के पथ पर चढ़ा देने वाला व्यक्ति अवश्य ही उस आदमी के जीवन का नया स्वरूप देने का पुण्य भागी बनता है।

× × ×

इसी प्रकार के सम्बन्धों को मानवीय सम्बन्ध कह सकते हैं। मानवीय सम्बन्ध कोई विज्ञापन का विषय नहीं है। यह कोई बुजुर्गी दिखलाने का व्याख्यान मंच भी नहीं।

मधुर दृष्टि से, सुवासित शब्दों से प्रोत्साहन की उमंग से मानव सम्बन्ध की माला गूँथी जा सकती है।

जिस व्यक्ति के मन में किसी को उतार गिराने की अपेक्षा ऊँचा उठाने की भावना रम रही होती है वह व्यक्ति सबसे पहले तो अपने को ही अज्ञात रूप से उच्च स्थान पर रख रहा होता है।

जगत् के महान् पुरुष केवल अपने उत्तम चारित्र्य के कारण अन्यों को अपना जीवन शिल्प घड़ने की प्रेरणा देते हैं। व्यक्ति मर जाते हैं पर उनकी प्रेरणा कभी नहीं मरती। एक के पीछे एक खानदान चले जाते हैं परन्तु उन के पीछे रहने वाली खानदानी सुगन्ध कभी नष्ट नहीं होती।

× × ×

छोटी छोटी बातों से भी मानवीय सम्बन्ध की मिठास बनी रहती है। आप जिसके सम्पर्क में आते हैं उसके संग वार्तालाप के वचनों में माधुर्य का संचार कीजिये। जिसे सुनकर आपके संसर्ग में आने वाला व्यक्ति अपने निर्माण के विषय में विचारशील बन सकता है।

कुमार्ग पर जाने वाले आदमी भले ही दुनियाँ को अपनी बनाने की योजना घड़ा करे। पर याद रखिए, इनका पथ कुत्सित है। जिनके वाहन भ्रष्ट हैं, जिनके कारनामे स्वार्थपूर्ण हैं, वे सब मनुष्य एक समय पर आकर रुक जाने वाले हैं।

आज प्रत्यक्ष रूप में मानवता का मूल्य भले ही कम प्रतीत होता हो परन्तु भविष्य उन्हीं के पक्ष में है। आगे उसी की कीमत होने वाली है।

मानवता का निर्झर जल रुकने वाला नहीं है। उसे अपने रोक थाम की जरा भी चिन्ता नहीं है। वह बाँध के ऊपर से होकर आगे जाने के लिये छलांग मारेगा रुकेगा नहीं।

× × ×

आप अपने छोटे से छोटे सद्गुणों को एक फुलवारी समझिए। इस फुलवारी का माली है आपका जीवन। इस माली के द्वारा आप सबके समीप मालाएं पहुँचाने का प्रयत्न कीजिए। स्मरण रखिए जिसके समीप आप फूलों का गजरा भेजते हैं, वह आपके लिए काँटों की कलगी नहीं भेज सकता मान लीजिए कोई मनहूस काँटे की कलगी भेजता है, तो भी निश्चय जानिये एक दिन वह काँटे आपकी कुसुमांजलि के आगे लज्जा से धरती में जा छिपेंगे।

मानवता की सुमन माला गूँथने मे यदि आप सफल होंगे तो स्मरण रखिये, आपके मित्रों के हृदय मे उसे आगे पहुँचाने की अद्भुत अभिरुचि और उत्साह प्रबुद्ध होगा। आप के फूल व हारों की सुवास दूर दिगन्त तक पहुँच जायेगी।

इस काम के लिए आवश्यकता होगी आपकी मृदुल वाणी की और मृदुल जीवन शैली की।

× × ×

हाथ मे लिए काम का जब तक पूर्ण विराम न आजाये तब तक उसके विषय में कोई शिकायत मत कीजिए। क्योंकि वह फरियाद ही आपके मस्तिष्क को दुखाने के लिए पर्याप्त है और एक बार मस्तिष्क में ग्लानि पैदा होते ही कार्य का रस उड़ जाता है।

आपकी उपस्थिति के कारण ही आपकी मण्डली में प्रकाश और उत्साह है यह बात सम्पूर्ण सत्य होने पर भी उस प्रकाश का विज्ञापन मत कीजिये। यह प्रकाश ही आपका विज्ञापन है।

आपके सहवास के कारण कोई भाई ऊँचा चढ़ जाय तो अंगुली दिखाकर ऐसा कभी मत कहिए—'मेरे कारण आप नहीं भूलोगे।' भी आपका अभिजात्य (खानदान) स्वयमेव उसको प्रकाशित करेगी।

अच्छी तरह समझ लीजिए आप का अभिजात्य मोटर की सवारी में, बढ़िया फर्नीचर में, रेशमी पहनने में, जलपान की सजावट में या साहेबी ठाठ में सर्वथा नहीं हरगिज नहीं।

अभिजात्य अन्तरात्मा की सुगंध है। वह गरीब की कुटीर में भी निवास कर सकती है। वह अपने सद्गुणों की सुगंध द्वारा गूँज उठनी रहती है, उसी में अपनी सच्ची मानवता निहित है। ★

सांस्कृतिक चर्चा

मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की

[ठाकुर लाल अग्रवाल मथुरा]

गाय की समस्या—अमरीका आदि देशों में जिन पशुओं का मर जाना उनके जीवित रहने में अधिक लाभदायक समझा जाता है वहाँ उनके प्राकृतिक ढंगों से मरने की राह नहीं देखते और अमानुषिक ढंगों से ही मार देते हैं। उनकी यह नीति हिंसक तो है पर वहाँ बैलों के द्वारा खेती न होने के कारण यही नीति लाभदायक भी है। हमारे देश में गायों की मृत्यु प्राकृतिक ढंगों से भले ही हो जाय पर अमानुषिक ढंगों से उन्हें मारना पाप समझते हैं। ऊँटनी घोड़ी और गधा के लिए जो अहिंसक नीति यहाँ प्रचलित है वह यह है कि यह पशु लगभग उतने ही नये पैदा होते रहते हैं जितने कि उतने समय में प्राकृतिक ढंगों से मर जाते हैं। केवल यह ही एक ऐसा ढंग है जिसे अपना कर हम बड़ी जाति के दूसरे पशुओं के विषय में भी अपनी अहिंसक नीति को सफल और लाभदायक बना सकते हैं।

गाय के विषय में जो ढंग इस समय अहिंसक समझ कर हमने अपनाया हुआ है वास्तव में वह भी एक प्रकार का हिंसक ढंग ही है। अमरीकन नीति के अनुसार १०० गायों का टोल में जितना गायें बढ़ता रहता है उतनी ही कटती भी जाती हैं। हमारे देश में जहाँ केवल १०० गायों का भली प्रकार पालन के साधन हैं वहाँ हमारी वर्तमान नीति के कारण १०० की जगह लगभग १५० गायें गिरी हुई दशा में बनी रहती हैं तो अमरीका के मुकाबले में हमारी गायों की बढ़ोतरी भी ड्योढ़ी ही होती रहती है जो हमारे लिए लगातार आर्थिक कठिनाई पैदा करती रहती है-इस कठिनाई को सहते हुए भी गायों की हत्या की संख्या घटाने का हम जितना अधिक प्रयत्न करते हैं यह कठिनाई भी उतनी ही भीषण बनती जाती है। तब साधारण गाय पालने वाला इसे सहन न करके गाय को कसाई के हाथ बेचने के लिए विवश हो जाता है। यही कारण है कि हमारे देश में भी गायों की हत्या एक बड़ी संख्या में होती रही है। हमारी इस विवशता का कारण गो हत्या पर पूरा प्रतिबन्ध का न होना ही है। क्योंकि जब नत्थू अपनी बूढ़ी गाय कसाई को बेच कर उस पर भविष्य में होने वाले व्यय से छुटकारा पा जायगा केवल तब ही बुद्धू को अपनी बूढ़ी गाय के पालने में घाटा हो सकता है और अगर नत्थू भी अपनी बूढ़ी गाय कसाई को नहीं बेच सकेगा तो बूढ़ी गायों के पालन का घाटा नत्थू या बुद्धू इन दोनों में से किसी पर भी

[शेष पृष्ठ १६ पर]

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पंजीकरण सं. ए. ६०

ज्येष्ठ ११ शक १८८० १ जून ५८)

पता– 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ४२४४१ तार : 'आर्यमित्र'

(पृष्ठ २ का शेष)

उपाध्यायान्दशाचार्यः आचार्याणां शतं पिता सहस्रं तु पितृन्माता गौरवे णाति रिच्यते ॥

"दस उपाध्यायों से आचार्य, सौ आचार्यों से पिता, एवं हजार पिताओं से माता का गौरव अधिक है।" यही [illegible] पिता का ध्यान करके नचिकेता ने कहा कि मुझे पहला वर यही दीजिए कि मेरे पिता प्रसन्न हों। नचिकेता के प्रथम वर को सुनकर यम ने कहा—

यथा पुरस्ताद्भविता प्रतीत औद्दालकिरारुणिर्मत्प्रसृष्टः। सुखं रात्रीः शयिता वीतमन्युस्त्वां ददृशिवान्मृत्युमुखात्प्रमुक्तम्

अर्थात् (औद्दालकिः) उद्दालक वंशी (आरुणिः) अरुण का पुत्र [तेरा पिता] (यथा) जैसा (पुरस्तात्) पहले था (मत्प्रसृष्टः) मुझसे भेजे हुए तुझ पर (प्रतीतः) विश्वास करने वाला (भविता) होगा (वीतमन्युः) क्रोध रहित होकर (रात्रीः) रात्रियों में (सुखम्) सुख से (शयिता) सोएगा (त्वाम्) तुझको (मृत्यु मुखात्) मौत के मुख से [illegible] (ददृशिवान्) देखेगा।

यमाचार्य ने नचिकेता को अपनी शिक्षा एवं आशीर्वाद द्वारा पिता की प्रसन्नता का वर दिया। यमाचार्य ने यह वर देते हुए इसलिए भी चिन्ता न की कि अब उसका पिता नचिकेता की इस प्रथम मांग को सुनेगा तो उसका हृदय स्वयं गद्गद् हो जाएगा और बुद्धिमानी पुत्र को देखकर वह अपने क्रोध को अवश्य समाप्त कर देगा। इस प्रकार प्रथम वर द्वारा पितृयज्ञ का महत्त्व उपनिषद्कार ने बतलाया है। आइए नचिकेता से हम भी अपनी वृद्धा माता, बूढ़े पिता और आदरणीय गुरुओं की सेवा का व्रत लेकर अपनी और समाज की उन्नति करें।

डा० प्रकाशवती का ठीक पता

सभा के वार्षिक रिपोर्ट में डा० प्रकाशवती आर्य उपदेशिका लखनऊ का पुराना पता गलती से छप गया है जो ठीक नहीं है। उनका ठीक पता है—डा० प्रकाशवती श्रीवास्तव आर्य उपदेशिका, द्वारा डा० श्रीकृष्ण की बाग मन्नु [illegible], लखनऊ।

आ० स० भोजपुर खेड़ी बिजनौर

इस समाज का वार्षिकोत्सव २, ३, ४, जून को समारोह मनाया जायेगा।

(पृष्ठ १५ का शेष)

न पड़ कर देश की समस्त जनता पर पड़ जाएगा। जिस प्रकार किसी शिकारगाह से अधिक शिकार प्राप्त करने के लिए कभी कभी वह स्थान में शिकार खेलने की [illegible] है उसी प्रकार [illegible] के [illegible] द्वारा [illegible] केवल बढ़ा देना मात्र भी कुछ [illegible] पश्चात मांस पाने [illegible] की हत्या के लिए गायें अधिक संख्या में और सस्ते मूल्य पर बेचने के लिए विवश कर देता है। तो यहां 'मर्ज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की' वाला कहावत ठीक बैठ जाती है। इस लिए हमारी वर्तमान नीति भी हिंसक ही है। हमारी यह नीति गो हिंसकों के लिये लाभदायक और गो रक्षकों के लिये आर्थिक हानि पहुंचाने वाली है।

डैंटर्नी चोंकी और गर्भी वाली अहिंसक, सफल और लाभदायक नीति गाय के विषय में आ अपनाने के लिए हमें अधिकतर गायों के ब्यांत के समय का अन्तर दो वर्ष का बनाना होगा और तब ही हमें दूध भी सस्ता मिल सकेगा। वह इस प्रकार [illegible] ग में बेचने पर उनकी लागत पैदावार नहीं मिल पाती है तो दूध बेचने वाला गाय में होने वाले घाटे को दूध का अधिक मूल्य प्राप्त करके पूरा करता है। गायों के ब्यांत का अन्तर दो वर्ष का बना देने से गाय की लागत पैदावार मिलने लगेगी तो उसे दूध का मूल्य उचित से अधिक बढ़ाना नहीं पड़ेगा। इस [illegible] हमें दूध सस्ता मिल सकेगा। इससे एक और लाभ यह भी होगा कि दूध की पैदावार अब से अधिक हो जायगी क्योंकि जब हमारे चारे दाने का अब से कम भाग गो मांस बनाने में और अब से अधिक भाग दूध बनाने में व्यय होगा तो निश्चय ही हमें अब से अधिक मात्रा में दूध प्राप्त होगा।

आ० स० असरान [illegible]

वैदिक धर्म के प्रचार के लिए इस समाज ने यहां एक कन्या पाठशाला खोला हुआ है परन्तु समाज का मन्दिर नहीं बना है। अतः [illegible] [illegible] का ध्यान इस ओर [illegible] आकृष्ट किया जाता है।

—[illegible]

आ० स० असरान, [illegible]

आ०स० विनयनगर, नयी दिल्ली

प्रधान—श्री० हरीचन्द जी
मन्त्री—श्री चन्द्रप्रकाश
कोषाध्य०—श्री बूलचन्द कत्याल

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ मे मुद्रित तथा प्रकाशित।



आर्यमित्र

हितोपदेश की शिक्षा

★

उस पुत्र से क्या लाभ जो न तो विद्वान हो और न धार्मिक हो, आखिर उस आँख से क्या लाभ जो रात दिन पीड़ा ही देती रहे।

पुत्र पैदा न होना, पैदा होकर मर जाना और पैदा हो कर मूर्ख रह जाना, इनमें प्रथम दो स्थिति में तो तुलनात्मक दृष्टि से कम कष्ट होता है पर अन्तिम स्थिति में पग पग पर पूरे परिवार को कष्ट होता है।

अयोग्य पात्र में किसी प्रकार की शिक्षा फलवती नहीं होती क्योंकि लाख प्रयास करने के बाद भी बगुला सुग्गे के सदृश पढ़ नहीं सकता।

छोटे छोटे कीट पतंग भी फूल के साथ रह कर सतों के सिर पर चढ़ जाते है उसी तरह से कुपात्र भी सुपात्र के साथ रह कर सज्जन बन सकते हैं।

सज्जन पुरुषों का समय तो काव्य और शास्त्र के अध्ययन में व्यतीत होता है पर मूर्खों का समय दुर्व्यसन, निद्रा या कलह में व्यतीत होता है।

आपत्ति काल में अपने भी पराये बन जाते हैं, बछड़े के दूध पीते समय उसकी मा की जघा ही उसके लिए बन्धन का काम करती है।

निद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध, आलस्य और दीर्घ सूत्रता—ये छ प्रकार के दोष मनुष्यों का सदा घेरे रहते हैं—हमें इनसे बचने का प्रयास करते रहना चाहिए।

यौवन, धन, प्रभुत्व और बल इनमें से जीवन में एक की अधिकता होने पर भी अनर्थ हो जाता है और जहाँ चारों की अधिकता हो वहाँ का तो कहना ही क्या है ?

दिक प्रार्थना

सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्र्वां
ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधि
।

ऋ० १०।८५।४६

(वधू !) तू श्वसुर के लिए महारानी (आदर का पात्र) हो, सास के लिए महारानी हो, ननदों के लिए महारानी हो,
देवरों के लिए महारानी हो।

सह० सम्पादक—
भगवत शरण

इस अंक के आकर्षण

एक प्रति का ... | लखनऊ, रविवार ज्येष्ठ १८ शक १८८० | विदेश में

पाठक इस लेख की पंक्तियों में विभिन्न मतों के अनुसार स्वर्ग की कल्पना और 'अग्नि' शब्द की वैदिक व्याख्या पढ़ेंगे।

—सम्पादक

कठोपनिषद् कथा १० (आध्यात्मिक चर्चा)

अग्नि का वर्णन

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम०ए० एल०टी०, डी० बी० कालेज, गोरखपुर]

(गतांक से आगे)

यमाचार्य से पिता की प्रसन्नता का वर प्राप्त करने के बाद नचिकेता की मानसिक स्थिति शांत हुई, बुद्धि में स्थिरता आई और उसने यम से दूसरा वर यह मांगा :—

स्वर्गे लोके न भय किंच नास्ति,
न तत्र त्व न जरया बिभेति।
उभे तीर्त्वा ऽशनाय पिपासे,
शोकातिगो मोदते स्वर्ग लोके॥
स त्वमग्नि स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो,
प्रब्रूहि त श्रद्दधानाय मह्यम्।
स्वर्ग लोका अमृतत्व भजन्त,
एतद् द्वितीये न वृणे वरेण॥

अर्थात् स्वर्ग लोक मे कुछ भय नहीं है न वहा मृत्यु है और न कोई बुढ़ापे से डरता है। भूख और प्यास दोनो तिरकर शोक से रहित मनुष्य स्वर्गलोक में प्रसन्न रहता है।

हे मृत्यु, सो तू स्वर्ग के साधन अग्नि को जानता है उसे श्रद्धा रखने वाले मेरे लिए वर्णन कर। स्वर्ग प्राप्त पुरुष अमृतत्व को सेवन करते हैं। यह दूसरे वर मे मांगता हूं।

सबसे अधिक सुख जिस स्थान पर मिले उसे स्वर्ग कहते हैं। स्वग के विषय मे सभी धर्मों में विचित्र विचित्र प्रकार की कल्पनायें हैं। पारसी, यहुदी, ईसाई तथा मुसलमान सभी धर्मों में स्वर्ग के रूप का वर्णन है। स्वर्ग के मार्ग पर एक पुल है जिसका नाम हजरत मुहम्मद ने अलसिरात रखा है। यह पुल नरक कुण्ड के ऊपर है, वह बाल से भी अधिक सूक्ष्म और तलवार की धार से भी अधिक तीव्र बताया जाता है। इस पुल से मुसलमान मुहम्मद साहब के पीछे पीछे सुगमतापूवक पार उतर जायेंगे परन्तु दुष्ट लोगों का पैर फिसल जायगा जिससे वे अपने नीचे के विशाल मुखोन्मुख नरक में धड़ाम से सिर के बल जा पडेंगे। यहूदी भी नरक सेतु का इसी प्रकार वणन क ते हैं। उनके मतानुसार उसकी चौड़ाई धागे से अधिक नहीं। पारसी भी इसी प्रकार के पुल को स्वर्ग तथा नरक के बीच मानते हैं और वे इस पुल का नाम चिनवद् पुल कहते हैं। स्वर्ग के वर्णन भी इन धर्मों में मिलते हैं। स्वर्ग सातवें आसमान पर है। स्वर्ग में एक सुन्दर उद्यान है जो झरनों और फव्वारों से सजा हुआ है, जिसमें जल दूध, और बेलसाम की नदियाँ बह रही हैं, वृक्षों के सुनहरी तने हैं और उन पर परम स्वादिष्ट फल लगते हैं। इससे बढ़कर स्वर्ग मे ७० सुन्दर और मनोहारिणी नवयुवतियां होंगी जो अपने विशाल श्याम नेत्रों के कारण हूरल अयून कहलाती हैं। यहूदी और पारसी भी उपयुक्त मुहम्मद साहब के अनुयायियों के मत से मिलते जुलते विचार रखते हैं। इन विचारों मे हमें एक आश्चर्य की बात यह दिखाई देती है कि स्वर्ग में भौतिक सुखों की कल्पना की गई है और इससे भी विचित्र बात यह है कि पुरुषों के उपयोग के लिए तो स्त्रियों को वहां रखा गया है परन्तु वहा ७० पुरुषों को भी रख दिया जाता तो स्त्रिया भी स्वर्ग में जातीं। क्या स्त्रियो को स्वर्ग प्राप्त करन का अधिकार नहीं ?

हिन्दू धर्म मे भी स्वर्ग की कल्पना है। तो अब प्रश्न उपस्थित होता है कि नचिकेता ने किस स्वर्ग के साधन अग्नि के विषय में पूछा था ? क्या वह भी उपर्युक्त प्रकार के किसी स्वर्ग का अभिलाषी था ? इसका उत्तर हमे अगले मन्त्रों में आए स्वर्ग के लिए दिए गये विशेषणों से ज्ञात होता है। वह स्वर्ग अर्थात् भौतिक सुखों वाले स्वर्ग के विषय में नहीं कह रहा है। क्योंकि नचिकेता ने जिस स्वर्ग का उल्लेख किया है, उसके लिए जो विशेषण दिये हैं वे ये हैं कि वहां जरा और मृत्यु नहीं है और न वहां भूख प्यास का कष्ट भोगना पड़ता है वहां निर्भीकतापूर्वक सुखोपभोग करते हुए स्वर्गवासी अमरता का सेवन करते हैं। इन प्रश्नोत्तरों से यह स्पष्ट है कि नचिकेता ने उस स्वर्ग के विषय में प्रश्न किया है वहां भौतिक सुख या दुःख नहीं है और वह स्वर्ग मुक्ति के सिवाय कोई नहीं। यह ठीक है कि मुक्ति के साधन अग्नि का उपदेश करते हुए यम ने उसे भौतिक अग्नि से यज्ञादि के द्वारा भौतिक स्वर्ग या सुख प्राप्ति का उल्लेख अवश्य किया है परन्तु इस भौतिक अग्नि के विषय में तो नचिकेता ने पूछा नहीं था अतः उसने आध्यात्मिक अग्नि एवं मुक्ति के साधन अग्नि का उपदेश दिया। यह अग्नि कौन है ? निरुक्त में अग्नि शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए लिखा है :—

अग्नि. कस्मात् ? अग्नि किस कारण से ? स अग्रणीर्भवति। अग्र' यज्ञेषु प्रणीयते। यह अग्रणी होती है इसके द्वारा मनुष्यों का इतना अधिक उपकार होता है कि यह अन्य सब जड़ देवों में मुख्य समझी जाती है। इसी प्रकार परमेश्वर, विद्वान् सेनानी राजा—ये अग्रणी होने से अग्नि कहलाते हैं। आगे लिखा है अक्नूयति सन्नममान अर्थात् यह किसी पदार्थ में रखी हुई उसे अपना अङ्ग बना लेती है। आग को जिस किसी पदार्थ मे रखेंगे उसे जलाकर या बिना जलाए अपने जैसा ताप और दीप्ति से युक्त बना लेगी। परमेश्वर का निवास जिस महात्मा में होगा वह परमेश्वर के गुणों के अधिक निकट पहुंच जाता है। विद्वान् जिसके साथ सगति करेगा उसे अपने जैसा श्रेष्ठ बना देता है। आग गतिशील है, पदार्थ व्यञ्जक है, दाहक है, गति देने वाली है अर्थात् किसी वस्तु को स्थानान्तर में ले जाने वाली है। इसी तरह परमेश्वर, क्रियावान् है सर्व प्रकाशक है, संहारक है और पदार्थ प्रकाशक है। इस प्रकार हम देखते हैं कि निरुक्त के अनुसार अग्नि शब्द का अर्थ परमेश्वर हुआ और परमेश्वर ही हमें मुक्ति प्राप्त करा सकता है अर्थात् मनुष्य जब अपने मे परमेश्वर के गुणों को धारण करेगा तभी मुक्त हो सकता है। अतः नचिकेता ने यम से दूसरा प्रश्न उस अग्नि के विषय में पूछा और यम ने कहा :—

प्रते ब्रवीमि तदु मे निबोध
स्वर्ग्यमग्निं नचिकेत, प्रजानन्
अनन्त लोकाप्ति मथो प्रतिष्ठां
विद्धि त्वमेतन्निहितं गुहायाम्॥

हे नचिकेता, स्वर्ग प्राप्ति के साधन अग्नि को जानता हुआ तुम्हारे लिए उसको कहता हूं मेरे वचन को सुन और जान और तू इस अग्नि को विविध लोकों को प्राप्त कराने वाला जगत् की स्थिति का हेतु हृदयाकाश में स्थित जान।

इसके बाद यम ने कहा :—
लोकादि यग्नि तमुवाच तस्मै
या इष्टका यावतीर्वा यथा वा
स चापि तत्प्रत्य वदद्यथोक्त
यथास्य मृत्यु. पुनरेवाह तुष्ट॥

तमब्रवीत्प्रीय माणो महात्मा
वरं तवेहाद्य ददामि भूयः
तवैव नाम्ना भवितायमग्नि.
सृङ्कां चेमामनेक रूपां गृहाण॥

अर्थात् नचिकेता के लिए सृष्टि के आदि मे उत्पन्न उस अग्नि को बतलाया। और उस नचिकेता ने भी जिस प्रकार मृत्यु ने बतलाया था उसको कहकर सुनाया तब इसके ऊपर प्रसन्न होता हुआ फिर यम बोला।

यम बोला कि और भी इस वर के प्रसङ्ग में तेरे लिए अब वर देता हूं यह अग्नि तेरे ही नाम से प्रसिद्ध होगी और तू इस अनेक रूप वाली माला को ग्रहण कर।

इस प्रकार यम ने अग्नि का उपदेश दिया उसने "हिरण्य गर्भ. समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् अर्थात् प्रभकाले पदार्थों को गर्भ में धारण करने वाले सृष्टि के पति परमेश्वर का उपदेश दिया और नचिकेता ने उसे अच्छी तरह समझ कर बतला दिया तो उसने प्रसन्न होकर उस अग्नि का नाम भी नचिकेता के नाम पर रखा। इस प्रकार यद्यपि यम ने ईंटों से यज्ञ कुण्ड बनाने की पूर्ण विधि तथा ईश्वर प्राप्ति के साधन निश्चयात्मक ज्ञान प्राप्ति के लिए नचिकेता को बतलाई, परन्तु वास्तविक रूप तो उसने प्रभु का बतलाया।

[शेष पृष्ठ १२ पर]

भावचित्र

दीपक और अन्धकार

अमावस्या की गहरी कालिमा में भीगी निशीथ के सूनेपन में एक टिमटिमाते हुए दीपक को देखकर रजनी का स्वामी अन्धकार मुस्करा उठा। अमावस्या के तम की गहनता में उसे प्रकाश पर अपनी पूर्ण विजय का आभास हो रहा था। मदान्ध अन्धकार का गर्व व्यंग बन कर मुखरित हो उठा—'जब तुम्हारा प्रकाश सिमिट कर तुम्हीं तक सीमित होकर रह गया है, तो फिर तुम क्यों व्यर्थ में मुझसे संघर्ष करके अपने जीवन को मिटा रहे हो ?' अन्धकार की गर्वोन्मत्त वाणी सुनकर निशा का मौन प्रहरी वह एकांकी दीप मुस्करा उठा उसके उद्‌गार शब्दों का रूप लेकर मुखरित हो उठे—"अपने सिद्धान्त एव अपनी मान्यताओं के लिए जीवन को मृत्यु की बाँहों में सौंप देना भी मेरी विजय ही है तुम्हें पराजित करने में मुझे सफलता नहीं मिल पाई तो क्या हुआ, मेरे जीवन से मानव संघर्ष करने की प्रेरणा तो प्राप्त कर ही सकता है' और अनन्त अन्धकार से संघर्ष करता हुआ वह नन्हा सा दीप छोर के आँचल में सिमिट कर खो गया।

—श्यामलाल वशिष्ठ 'अकिंचन' एम०ए०

आर्य्य जगत में सब से अधिक छपने वाला आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र।

ओ३म्

आर्य्य-मित्र

वर्ष ६०

अङ्क २१

लखनऊ—रविवार ज्येष्ठ १८, शक संवत् १८८०, आषाढ़ कृष्ण ७, वि० २०१५ (८ जून १९५८) दयानन्दाब्द १३४ सृष्टिसंवत् १९७२९४९०५९

सम्पादकीय

ऐसा मत सोचिए

★

पिछले कुछ दिनों से आर्य नेताओं के अनेकों ऐसे पत्र और लेख हमारे पास आ रहे हैं, जिसमें मुख्य चर्चा यही होती है कि आर्य समाज की प्रगति कैसे हो। यह सन्तोष और सौभाग्य की बात है कि आर्य नेताओं का ध्यान तो इधर गया। वे गम्भीर होकर इस प्रश्न पर सोचने तो लगे, फिर इसका परिणाम अच्छा ही होगा।

जिन समाजों में कोई कार्यक्रम नहीं होता और वर्ष भर ताला ही बन्द रहता है, उन समाजों के सम्बन्ध में अभी हमें कुछ नहीं कहना है, इस सम्बन्ध में हम फिर कभी लिखेंगे पर जिन समाजों में नियमित रूप से साप्ताहिक सत्संग और वार्षिकोत्सव तथा अन्य कार्यक्रम भी होते हैं, उन समाजों के क्रियाशील कार्यकर्ताओं व अधिकारियों को सदा यह शिकायत रहती है कि सभी सदस्य साथ नहीं देते, क्या किया जाय। यह शिकायत पूर्णतया ठीक है क्योंकि प्रायः हम देखते हैं कि लगभग सभी समाजें जो साधारण ढंग से या अच्छे ढंग से चल रही हैं, प्रत्येक उन समाजों में एक ही या दो व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनके परिश्रम से उन समाजों के कार्य होते हैं पर अधिकांश सदस्य तो उदासीन और तटस्थ ही रहते हैं। यह भी सत्य है कि सभी सदस्य समान रूप से क्रियात्मक नहीं हो सकते पर इस संगठन विशेष में स्वेच्छा से कार्य करने तथा पद प्राप्त करने के कारण अधिकांश सदस्यों को तो क्रियाशील होना ही चाहिए। आज सर्वत्र निरुत्साह व निराशा का जो वातावरण छाया हुआ है यह हमें और भी उदास और हताश बना रहा है। अतः इस नैराश्यपूर्ण दृष्टिकोण को तो दूर करना ही होगा।

सामाजिक कार्यों में कम या नहीं भाग लेने वाले व्यक्ति प्रायः यह कहा करते हैं कि "समाज का काम तो हो ही रहा है, मैं यदि एक नहीं गया तो क्या हुआ।" ऐसा दृष्टिकोण रखने वाले सदस्यों से हमारा यह आग्रह है कि वे इस प्रकार न सोचें। यह दृष्टिकोण समाज के लिए अत्यन्त घातक व अहितकर है। यह हमारा दुर्भाग्य है कि आज अधिकांश व्यक्ति ऐसा ही सोचते हैं। यदि सभी ऐसा ही सोचने लग जांय तो समाजों में ताले पड़ जांय। चाहिए तो यह कि एक एक व्यक्ति यह सोचे कि एक उसके न जाने से उसी अनुपात में समाज को क्षति पहुंचेगी। उन्हें सोचना चाहिए कि समाज में उनका जाना अत्यन्त आवश्यक है, बिना उनके गये समाज का काम नहीं चलेगा। समाज के प्रत्येक सदस्य को ऐसा सोचना चाहिए कि वह समाज का एक ऐसा अंग है जिसे पृथक नहीं किया जा सकता। 'मेरे ही कारण समाज चलता है या चलेगा'—अभिमान की इस भावना से नहीं बल्कि अपने समाज को अधिकाधिक उपयोगी व उन्नतशील बनाने के दृष्टिकोण से हमें यह सोचना चाहिए।

यह सोचना भी ठीक नहीं है कि समाज के मन्त्री और प्रधान तथा अन्य अधिकारी कार्य करें, सभी क्यों करें। सभा में बैठकर प्रस्ताव और समर्थन करके जिस व्यक्ति विशेष को आप प्रधान या मन्त्री बनाते है, उनका वर्ष भर तक प्रत्येक कार्य में सहयोग करते रहना भी तो सदस्यों का ही कर्तव्य है। एक या दो व्यक्ति कहां तक समाज का कार्य चला पायेगा? अतः यह दृष्टिकोण भी बदलना होगा।

कारण चाहे जो भी हो पर आज हिन्दू जनों में दान देने की प्रवृत्ति बहुत ही कम हो गयी है। अर्थाभाव के कारण समाजों की अच्छी से अच्छी योजनाएं धरी की धरी रह जाती हैं। अतः दान देने की भावना को भी बढ़ाना होगा। यह भी सत्य है कि अनेकों अभाव के होते हुए भी, सचाई और ईमानदारी तथा लगन से कार्य करने वाली संस्थाओं के लिए पैसों की कमी नहीं है। जिस संस्था में निःस्वार्थ व उत्साही कार्यकर्ता होंगे, उस समाज का काम पैसों के बिना रुक नहीं सकता। फिर भी समाज के अपने सदस्यों को भी दान देना ही चाहिए।

इस प्रकार से निराशा की भावना को दूर करके और यह सोच करके कि हमें व्यक्तिगत रूप से भी समाज की सेवा करनी ही है, यदि सभी सदस्य साधारण विवादों से ऊपर उठकर अपने कर्तव्य की भावना से संगठित होकर कुछ कार्य करना प्रारम्भ कर दें तो कोई कारण नहीं है कि हमें सफलता न मिले।

अल्जीरिया में फ्रांस की तानाशाही

आज प्रत्येक विचारशील राजनीतिज्ञों का यही कहना है कि अब उपनिवेशवाद का युग लद गया और तानाशाही का समय समाप्त हो गया तथा अब अधिक दिनों तक कोई बड़ा देश किसी छोटे देश को गुलाम बना कर नहीं रख सकता। स्वतन्त्र होने की प्रबल इच्छा अब प्रत्येक पराधीन देशों के नागरिकों में उग्र हो गई है और अब अपने अधिकार के लिए हर देश के व्यक्ति जागरूक दिखाई देते हैं। ऐसी दशा मे भी आश्चर्य है कि अल्जीरिया मे फ्रान्स की ओर से तानाशाही चल रही है और नित्य ही सैकड़ों अल्जीरियायी वहां मौत के घाट उतार दिये जाते है। फ्रान्स हर मूल्य पर अल्जीरिया में अपना राज्य बनाये रखने के लिए दृढ़ है और इसलिए वह अल्जीरिया मे अत्यन्त अमानुषिक अत्याचार कर रहा है। वर्षों से वहां स्वतन्त्रता की लड़ाई चल रही है और फ्रान्स उसका दमन कर रहा है। इधर अल्जीरिया भी तैयार हो गया है कि प्रत्येक स्थिति मे वह अपने देश की आजादी लेकर ही दम लेगा अन्यथा नहीं।

हर स्वतन्त्र राष्ट्र की सहानुभूति अब अल्जीरिया के साथ है और ज्यादती अत्याचार व दमन के कारण सारे विश्व में फ्रान्स की निन्दा हो रही है पर फिर भी फ्रान्स अपनी दमन नीति से बाज नहीं आता। यह निर्विवाद है कि अल्जीरिया की मांग उचित है और फ्रान्स वहां अत्याचार कर रहा है।

ऐसी दशा में हम राष्ट्र संघ का ध्यान इस बात की ओर आकृष्ट कर यह कहना चाहते हैं कि यदि इस प्रकार कोई शक्तिशाली राष्ट्र एक छोटे राष्ट्र को दबाकर अपना गुलाम बनाये रखना चाहे तो राष्ट्र संघ किस लिए है? विश्व न्यायालय किस लिए है? अतः यह आवश्यक है कि विश्व के अन्य शक्तिशाली राष्ट्र फ्रांस पर दबाव देकर अल्जीरिया की समस्या का समाधान करावें।

एक साधे तो सब सधे

वेद प्रचार, अछूतोद्धार, दलितोद्धार, विधवा-अनाथ रक्षा, शुद्धि, संस्कार, ईसाई निरोध प्रचार आदि अनेकों सामाजिक व राष्ट्रीय कार्य आर्य समाज की ओर से बराबर किये जाते रहे हैं। इन सभी कार्यों में आर्य समाज को पर्याप्त सफलता भी मिली है। यद्यपि यह मानना पड़ेगा कि इन दिनों इन कार्यों मे विशेष प्रगति नहीं है फिर भी सभी कार्य हो ही रहे हैं।

इन कार्यों में से किसी भी कार्य को बन्द नहीं किया जा सकता। सामान्यतः सभी कार्य होने चाहिए पर यदि किसी एक विशेष कार्य पर पूरे एक वर्ष तक योजनाबद्ध रूप से आर्य समाजें अपनी शक्ति लगावें तो हमारा विश्वास है कि इसमें समाज को विशेष सफलता मिलेगी।

अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार की समस्या हमारे विचार से आज एक ऐसी समस्या है जिसका रोक थाम करना शीघ्र ही अनिवार्य है। अतः इस विशेष कार्य की ओर आर्यसमाजों को संगठित होकर अपनी विशेष शक्ति लगानी चाहिए अन्य कार्य भी साधारणतया होता रहे। सन्त कबीर की इस साखी को हमे स्मरण रखना चाहिए—एक साधे तो सब सधे, सब साधे सब जाय। ★

लखनऊ में ईसाई प्रचार का गढ़ गिरने लगा

जिला सभा का प्रशंसनीय कार्य

नित्य सार्वजनिक सभाओं और प्रचार का जोर

लखनऊ। ब्रिटेन और अमेरिका के पैसों के बल पर आज भारत में ईसाइयों ने अपने प्रचार का कितना प्रबल जाल चारों ओर बिछा रखा है, यह बात अब किसी से छिपी नहीं रही। किस प्रकार वे दवा देने के बहाने ईसाइयत का प्रचार करते हैं यह बात भी सब जान गये हैं। अब तो कीर्तन द्वारा भी ईसाई मत का प्रचार होना प्रारम्भ हो गया है। हर्ष का बात है कि जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ ने अपने शहर म ईसाई प्रचार के विरुद्ध डटकर मुकाबला करना प्रारम्भ कर दिया है। ईसाइयों के अराष्ट्रीय प्रचार का रोकने के लिए जिला सभा की ओर से पिछले दिनों म नित्य ही सार्वजनिक सभाए का गई और अनेको प्रकार के परचे व टैक्ट छपा कर वितरित किये जा रहे है।

विस्तृत कहानी इस प्रकार से है कि एक भारतीय ईसाई पादरी जो अपने को एक सिद्ध महात्मा कहता है कलकत्ते से यहाँ आया और लगा तार १५ दिनों तक कृष्णनगर मुहल्ले में एक सिख सज्जन के यहा ठहर कर दवा और कीर्तन के बहाने ईसाइयत का प्रचार करता रहा। वहा जिला सभा के कुछ लोगों ने प्रचार किया तो वह वहां वहा से भागकर १२ स्टेशन रोड पर आकर उसी प्रकार प्रचार करने लगा। जिला सभा ने वहाँ भी प्रचार किया और अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार को देश के लिये घातक बताया। वह पादरी वहाँ से भी उठ गया और १७ स्टेशन रोड पर प्रचार करने लगा। जिला सभा का प्रचार जारी रहा और पादरी को वहाँ से भी भागना पड़ा। अब वह पादरी शहर में कोई चौथा स्थान खोज रहा है जहाँ पहुँच कर वह अपनी माया जाल फैलाये और गरीब हिन्दू बन्धुओं को ईसाइयत का चगुल में फास ले।

यह जानकर नगर की समस्त हिन्दू जनता म रोष फल रहा है कि प्रात काल दवा के बहाने वह सकड़ों स्त्री पुरुषों को एकत्रित करता है और आने वा आने का जतून का तेल देकर प्रत्येक लोगों स पाच छ आने वसूल भी करता है और साथ ही यह कहता है कि ईशा पर ईमान लावो तो सब रोग दूर हो जावेगा अन्यथा तुम नर्क म जावोगे। इस प्रकार रुपय को आमदनी और ईसाइयत का प्रचार दोनों हो रहा है।

सायकाल पादरी साहब की ओर से १०॥ बजे रात तक कीर्तन और भजन तथा उपदेश का कार्य चलता है। उक्त पादरी ने हिन्दुओं के पुराने भजनों को चुराकर उसमें से 'राम कृष्ण' का नाम हटा दिया है और 'ईशा' का नाम रखकर हिन्दुओं से गवाना प्रारम्भ कर दिया है। सभा के अन्त में वह बाइबिल का उपदेश करके नित्य ही ईशा पर ईमान लाने की सार्वजनिक अपील करता है। दुःख है कि हमारे कुछ हिन्दू भाई ही अपने स्वार्थ के कारण या लालच मे आकर उस पादरी का साथ दे रहे हैं और वह हिन्दू सभ्यता व संस्कृति को बदनाम करके न चा दिखाता है तथा हमारे सत्साहित्यों म मिलावट करके हमारे साहित्य का चौपट कर रहा है। कितना बड़ी धूर्तता है कि हिन्दुओं के भजन वही तर्ज हिन्दी के शब्द, भारतीय ढोलक और करताल का उपयोग करके हमारे भजनों में 'ईशा' का नाम जोड़कर हम ईशा और बाइबिल पर ईमान लाने का बाध्य किया जाता है। हमारे देश में बैठकर वह हमें बेवकूफ बना रहा है।

जिला सभा तथा हिन्दू जनता को विशेष दुःख इसलिए है कि इतना सब कुछ होते हुए भी तथा मध्य प्रदेश का नियोगी व रेगे कमीशन की रिपोर्ट सामने होते हुए भी आज काग्रेस सरकार की ओर से इन राष्ट्र विरोधी ईसाई पादरियों का सरक्षण किया जा रहा है। ऐसी दशा में जिला सभा लखनऊ ने निश्चय किया है कि इस अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार के विरुद्ध जिला सभा डट कर मुकाबला करेगी।

जिला सभा के प्रचार से इस समय लखनऊ शहर के सभी गिर्जा घरों म खलबली मच गयी है। पादरी साहब के कुछ समर्थकों ने पुलिस जिलाधीश तथा सी० आई० डी० आदि का नाम लेकर जिला सभा के अधिकारियो का धमकाने का भी प्रयास किया है पर सभा का प्रचार अबाधगति से जारी है। स्मरण रहे कि आज लगभग १ महीने स उक्त पादरी ने अपना जाल इस प्रकार फैलाया हुआ है।

अपने शहर में ईसाई प्रचार को रोकने के लिए शीघ्र ही जिला सभा की ओर से एक विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया जा रहा है। ऐसी स्थिति म नगर का हिन्दू जनता से जिला सभा का यह निवेदन है कि इस पुण्य कार्य म सभा हिन्दू भाई सभा का तन, मन धन स सहयोग द। ★

साप्ताहिक समाचार समीक्षा

★

दिगाल प्रधान मन्त्री बने

फ्रेंच नेशनल असेम्बली ने जेनरल दिगाल को प्रधान मन्त्री चुन लिया। असेम्बली के अधिकारियों ने मतदान की प्रथम गणना के अनुसार उक्त घोषणा की। जेनरल दिगाल के पक्षमें ३१० और विपक्ष में २१० मत आये।

लंका में आतङ्क

श्री लङ्का के एक सरकारी प्रवक्ता ने जाफना प्रायद्वीप की स्थिति के बारे में सम्वाददाताओं को बताया कि उत्तरी श्री लंका के सम्पूर्ण किल्स क्षेत्र में भारी आतंक फैला हुआ है। समस्त चुङ्गी चौकियों को लूट लिया गया है और नष्ट कर दिया गया है।

पंजाब में कांग्रेस की प्रतिष्ठा

बताया जाता है कि पजाब काग्रेस की प्रतिष्ठा अब भी खतरे म है। बहुत प्रयास करने के बाद भी पजाब म काग्रेस का स्थिति सुधरी नहीं जा सकी। ५ जून को काग्रेस विधान मण्डल की बैठक हो रही है। उसम सघर्ष टालने का प्रयास किया जावेगा पर इसकी सम्भावना बहुत कम है कि यह विवाद शांत हो सकेगा। इस सम्बन्ध म पजाब के काग्रेसी नेता श्री नेहरू से वार्तालाप कर रहे हैं कि किसी प्रकार काग्रेस की प्रतिष्ठा को बचाया जाय।

आवश्यकता

आर्य कन्या गुरुकुल पोरबन्दर (सौराष्ट्र) के लिए कन्या गुरुकुल देहरादून की सुयोग्य और अनुभवी स्नातिकाओं की जून १९५८ से आवश्यकता है। बी० ए० व एम० ए० पास स्नातिकाओं के लिए विशेष अवसर है। वेतन योग्यतानुसार, वेतन के अतिरिक्त फ्री क्वार्टर का सुविधा भी मिल सकेगी। प्रार्थना पत्र तुरन्त भेजें। पता व्यवस्थापक आर्य कन्या गुरुकुल पोरबन्दर (स० १ ६

आवश्यकता

विज्ञान, बीज गणित तथा रेखा गणित, संस्कृत, पी० टी० और संगीत कक्षा ८ तक पढ़ाने के लिए हर विषय का एक एक अध्यापिका की आवश्यकता है। योग्यता जे० टी० सी० अथवा एच० टी० सी०। वेतन राजकीय नियमानुसार होगा। वैदिक धर्मावलम्बी का प्राथमिकता दी जावेगा। प्रार्थना पत्र २० ६ ५८ तक स्वीकृत वेतन एव प्रमाण पत्र सहित भेजे जावें। साक्षात्कार (इण्टरव्यू) २६ ६ ५८ का ८ बजे प्रात आर्य कन्या पाठशाला भवन म होगा।

पुष्पलाल गुप्त
प्रबन्धक आ० क० पाठशाला बहराइच

गुड़गांवा लोक सभा चुनाव क्षेत्र में

पं० प्रकाशवीर शास्त्री ३७९६३ मतों से विजयी



संसद सदस्य श्री प्रकाशवीर शास्त्री
उपमन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा
प्रचारमन्त्री सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति दिल्ली

लोक सभा व इस चुनाव म विजयी होने पर 'आर्यमित्र' परिवार आपका हार्दिक स्वागत और अभिनन्दन करता है। आर्यसमाज की आवाज का आपने देश म तो बहुत गुंजाया, आशा है अब संसद भवन भी आपके ओजस्वी भाषणों से गूज उठेगा। विशेष समाचार—

नयी दिल्ली, ३ जून। मौलाना आजाद के निधन पर गुड़गावा क्षेत्र से लोकसभा के उप चुनाव म देश प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता प० प्रकाशवीर शास्त्री ने स्वतन्त्र रूप से चुनाव लड़कर काग्रेसी उम्मीदवार श्री मौलीचन्द्र शर्मा का ३७९६३ मतो से हराया। तीसरे उम्मीदवार श्री मंगल देव का ३८७९ मत मिले और उनकी जमानत भी जब्त हो गया। मतदान ३० मई और १ जून को हुआ। श्री प्रकाशवीर शास्त्री को ९४५१७ और श्री मौलीचन्द्र शर्मा को ५६५५४ मत मिले। कुल १५४३४३ मतदान हुए। मतदाताओं की कुल सख्या ४४६८६२ था। काग्रेस की इस करारी हार से दिल्ली के काग्रेसी क्षेत्र म खलबली मच गयी है कि काग्रेस की नया अब डूबने लगी। इसका अन्दाज इस तथ्य से किया जा सकता है कि इसी स्थान पर खड़े होकर मौलाना आजाद ९५-०० मतों स विजयी हुए थे और जिस काग्रेस को उस समय सवा लाख मत प्राप्त हुए थे उसे इस बार केवल ५६००० मत मिले। नौशहरा और देवीकुलम के बाद दो महीन के अन्दर ही काग्रेस की यह तीसरी करारी हार है। गुड़गावा का सीट काग्रेस के लिए अब तक सुरक्षित समझा जाता रहा था पर अब काग्रेस से जनता का विश्वास उठ चुका है।

○ लेखक के विचारों का शतप्रतिशत ○
○ समर्थन करते हुए भारत के प्रधान ○
○ मन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू से ○
○ बलपूर्वक हम यह आग्रह करते हैं ○
○ कि भारत में नवीन कसाईखाने ○
○ बनाये जाने की स्कीम को सरकार ○
○ अविलम्ब रद्द करदे अन्यथा इसका ○
○ परिणाम देश के लिये घातक होगा ○
○ और इसकी जिम्मेदारी कांग्रेस ○
○ पर होगी। —सम्पादक ○
○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○

सांस्कृतिक चर्चा

गऊ और उसकी रक्षा-४

[ले० कुन्दन लाल अग्निहोत्री एम० डी०, संगत, शाहगंज, लखनऊ]

(१८ मई के अङ्क से आगे)

गो दुग्ध के भोजन से मनुष्य में बुद्धि का विकाश होता है और सन्तोष की भावना उत्पन्न होने के कारण धन की अनुचित लोलुपता नष्ट हो जाती है। आज गोदुग्ध अप्राप्त है और जनता में अण्डा, माँस,मछली इत्यादि अप्राकृतिक भोजन का प्रचार किया जा रहा है। इसका फल यह हो रहा है कि सत्य और अहिंसा के सिद्धान्त को अपना धर्म और महात्मा गांधी को अपना आदर्श मानने वाली एक वर्तमान कांग्रेस सरकार गऊ हत्या को हिंसा नहीं समझती। जिसके कारण देश में गोधन का बराबर ह्रास हो रहा है। भारत के विधान में गोरक्षा का नियम विद्यमान होने पर भी अधिकारी गण उसकी चिन्ता न कर मनमानी कर रहे है क्योंकि इस विषय में उनको किसी बड़े अफसर की छत्र छाया प्राप्त है। इसी कारण पिछली पचवर्षीय योजना में जो बहुत थोड़ा सा धन इस काम के लिए रखा गया था वह भी खर्च नहीं किया गया और गोवध बराबर बढ़ता रहा। अंग्रेजी काल मे एक करोड़ गोवश के वार्षिक वध होने का अनुमान लगाया जाता था। पाकिस्तान पृथक होने पर यदि गोवंश का उसी रफ्तार से वध होता तो इस समय अधिक से अधिक ६६-६७ लाख हो सकता था। पर इस विषय के विशेषज्ञों का अनुमान गायों बछड़ों आदि के खालों की संख्या के आधार पर यह है कि इस समय एक करोड़ १० लाख गोवश का वार्षिक वध हो रहा है जिसका परिणाम यह है कि जितने दूध का उत्पादन सन् ४६ व ४७ ई० में था आज उससे आधा रह गया है इस तथ्य का उद्घाटन अभी अप्रैल मास में लोक सभा के प्रसिद्ध सदस्य श्री सेठगोविंद दास जी जबलपुरी ने किया है।

इस दूसरी पंचवर्षीय योजना मे भी जो स्कीम गऊ सदन आदि की बनाई गई है वह ऐसी उपेक्षा के साथ चल रही है जैसे राजकुमारी अमृतकौर के हाथ आयुर्वेद की उन्नति अथवा मौलाना आजाद के हाथों में हिन्दी की उन्नति चलती रही है। हमारा तो पूर्ण विश्वास है कि जब तक भारत के प्रत्येक व्यक्ति को भरपेट गो दुग्ध नहीं मिलता और अण्डा मांस इत्यादि दूषित भोजन हमारे नेता लोग अपनाए हैं तब तक हमारे देश का उत्थान कठिन ही नहीं नितान्त असम्भव है।

आज एक और हृदय विदारक समाचार पढ़ने को मिला है कि—'अहिंसा' 'पंचशील' तथा 'जियो और जीने दो' का ढिंढोरा पीटने वाली नेहरू सरकार बम्बई (देवनगर) और देहली में एक-एक करोड़ की लागत से दो नवीन कसाई खाने खोलने जा रही है। इस रहस्य का उद्घाटन श्री नित्यानन्द जी कानूनगो व्यापार मन्त्री ने अपने भाषण में पार्लियामेन्ट में किया है। यह समाचार जो कोई भी सच्चा राष्ट्रवादी गोभक्त सुनेगा उसका हृदय कांप उठेगा और सहसा उसके मुख से निकल पड़ेगा कि क्या यही महात्मा गाँधी की तपश्चर्या का फल रामराज्य है जिसको उन्नत करने को महात्माजी की समाधि पर फूल चढ़ाने वाले हमारे नेता असाधारण करों द्वारा जनता का रक्त चूस रहे हैं? इन कसाईखानों की आवश्यकता हमारी धर्म निरपेक्ष सरकार को क्यो पड़ी इसे जानकर एक सच्चे देश भक्त का रक्त और भी खौल जाता है। कहा जाता है कि 'फर्मास्युटिकल इन्क्वायरी कमेटी' की सिफारिश पर ऐसा किया गया है अर्थात् एलोपैथी में कुछ औषधियां ऐसी हैं जिनमें गोवंश के रक्त, हाड़, माँस आदि का प्रयोग होता है। उन औषधियों को बनाने के साधन जुटाने को यह कसाईखाने खोले जा रहे हैं। साधारण रूप से गो रक्षा के उपायों पर विचार करते हुए चिकित्सा पद्धति पर वाद विवाद उठाना असगत सा लगता है। पर कूटनीतिज्ञ, काला हृदय रखने वाले गोरों ने हमारे देश को ऐसी पेचीदी गुत्थी में उलझाया है जिसे सुलझाने के लिए सब ही ओर तीव्र दृष्टि से देखना होगा। भोले लोग समझते हैं कि आज विज्ञान की उन्नति हो रही है, उसी की देन एलोपैथी है और वह हमारे लिए आयुर्वेद से अधिक उपयोगी है। अत हमें अपने देश का भी धन व्यय करके और उससे होने वाली हानियों को उपेक्षा की दृष्टि से देखते हुए इस विज्ञान को अपनाना चाहिये। पर यह धारणा उसी समय तक रहती है जब तक कोई व्यक्ति एलोपैथी और आयुर्वेद के भीतर गहराई से प्रविष्ट नहीं होता। लेखक स्वयं इस भ्रम में पड़ चुका है पर आज ५४ वर्ष की खोज और परीक्षण के आधार पर मेरी इस विषय में जो सम्मति है उसे जो सज्जन जानना चाहें वह मेरी लिखी पुस्तकें 'आयुर्वेदिक प्राकृतिक चिकित्सा' और 'यज्ञ-चिकित्सा' पढ़ें जिन पर न केवल सरकार से पुरस्कार प्राप्त हो चुका है अपितु स्वर्गीय श्री मावलङ्कर साहब अध्यक्ष लोक सभा ने एक पुस्तक का आमुख लिखकर पुस्तक की उपयोगिता पर कांग्रेसी मुहर भी लगा दी है। इन पुस्तकों के पढ़ने से जहाँ आपको एलोपैथी, होम्योपैथी, आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा के शुद्ध रूप का दर्शन हो जायगा वहां आप विदेश के वकील, डाक्टर और नेताओं की अनभिज्ञता से भी परिचित हो जायेंगे और अपने लिए मार्ग भी खोज सकेंगे। साथ ही आपको इस विषय में स्थानाभाव के कारण लिखने में असमर्थ हैं। हाँ! यहां हम यह दिखाना चाहते हैं कि जिस एलोपैथी की उन्नति के लिए कांग्रेस सरकार गऊ जैसी उपयोगी चीज का भी बलिदान देने को कसाईखाने खोलने जा रही है उसके विषय में पूज्य महात्मा जी की क्या सम्मति है :—

"The English have certainly effectively used the medical profession for holding us. English Physicians are known to have used their profession with several polentates for Political gain. To study European medicine is to deepen our slavery."
(See India Home Rule,Chapter xII)

अर्थ—हमें दास बनाने के लिए अंग्रेजों ने एलोपैथी को आधार बनाया। अंग्रेजी चिकित्सकों ने एसिया की अनेक शक्तियों का सहारा लेकर अपने व्यवसाय द्वारा राजनैतिक प्रभुता प्राप्त की है। अत. एलोपैथी का अध्ययन हमारी दासता की जड़ों को और भी दृढ़ बनायगा।

महात्मा गांधी एक राजनीतिज्ञ के नाते जहां अपने देश में एलोपैथी के प्रचार के विरुद्ध थे वहाँ बतौर एक वैज्ञानिक के उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा को परीक्षण के पश्चात् बड़ा उपयोगी पाया था। उस प्राकृतिक चिकित्सा का आयुर्वेद के साथ तो समन्वय करने को उद्यत थे पर एलोपैथी का उसमें कुछ भी दखल वह हानिकारक समझते थे। दोनों बातों के पक्ष में हम यहां स्वयं महात्मा गांधी जी के कुछ शब्द उद्धृत करते हैं।

आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा

"मैं प्राकृतिक-चिकित्सा को पंच तत्व (आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी) पर सीमित करता हूं। पर एक वैद्य जो इससे आगे जाकर औषध रूप में ऐसी जड़ी बूटी जो उसके पास पड़ोस में उगती हैं या उगाई जा सकती हैं, केवल रोगी की सेवा के विचार से न कि व्यापारिक दृष्टि से प्रयोग करता है वह भी अपने को प्राकृतिक चिकित्सक कहने का अधिकारी है।" देखो हरिजन १९ मई सन् १९४६ ई०]

यह तो हुआ महात्मा जी का आयुर्वेद के प्रति श्रद्धा का भाव। अब एलोपैथी से घृणा का भाव देखें :—

"प्रश्न—क्या आपकी चिकित्सा में रोग निदान के लिए अणुवीक्षण यन्त्र एक्सरे इत्यादि यन्त्रों तथा ऐसी औषधियों के लिए कोई स्थान है जो किसी विशेष रोग के लिए ७५ प्रतिशत अवसरों पर सफल सिद्ध हो चुकी हैं जैसे निमोनिया के लिए पेनिसिलिन पेचिस के लिए एमेटीन,और मलेरिया के लिए कोनेन; तथा आधुनिक विज्ञान द्वारा स्वास्थ्य के नियमो का ज्ञान कराना? (महात्मा जी का उत्तर)–मेरी प्राकृतिक चिकित्सा पूर्ण तया ग्रामों और ग्रामीणों के लिए है अतः उसमें इन चीजों के लिए कोई स्थान नहीं है। प्रकृति के बनाये स्वास्थ्य रक्षा के नियमों द्वारा स्वस्थ जीवन ही प्रारम्भिक आवश्यक बातें हैं जो सबको ज्ञात हो सकती हैं। यदि वह इसमे पूर्णता प्राप्त करें तो कोई रोग ही न हो। ... .. . जो ईश्वर के सच्चे भक्त हैं (अर्थात् उसे सर्व व्यापक मान हर समय उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, किसी प्राकृतिक नियम का उल्लघन नहीं करते) उनको तो कोई रोग ही नहीं हो सकता। जन साधारण को पंच तत्व अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश की सहायता लेनी चाहिये। मैंने इसके परीक्षण किये जिसमें ग्रामवासियों को पवित्र और स्वस्थ रहने की शिक्षा दी जाती थी और रोगियों की पंचतत्व के ठीक प्रयोग द्वारा चिकित्सा की जाती थी। आवश्यकता पड़ने पर पास होने वाली आरोग्य दायक जड़ी बूटी औषधि रूप मे प्रयोग की जाती थी। पूर्ण (गोदुग्ध

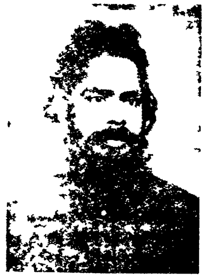
(शेष पृष्ठ ६ पर)

आज की समस्या

(प्रस्तुत लेख में यह बताया गया है कि चारित्रिक ह्रास के इस वर्तमान युग की विशाक्त परिस्थिति में समाजोत्थान के लिए एक राष्ट्रीय आन्दोलन की आवश्यकता है जिसका जयघोष हो—'ईमानदार और चरित्रवान व्यक्ति की पूजा की जावे पर धनवान बलवान चरित्रहीन की नहीं, फल साधन की कसौटी नहीं अपितु साधन फल की कसौटी हो।
—सम्पादक)

लें०—श्री रामजीप्रसाद गुप्त
(कोषाध्यक्ष, आ० प्र० सभा, उ० प्र० तथा अधिष्ठाता आर्य वीर दल)

अभी अभी आर्य प्रतिनिधि सभा के नव निर्वाचित प्रधान श्रद्धेय श्री प० हरिशंकर जी शर्मा ने विगत १८ मई को प्रान्त के कोने कोने से आये हुए आर्य समाजों के प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए नैतिक उत्थान के कार्य में कार्यकर्ताओं को जुट जाने का आदेश दिया है। आइये हम विचार करें कि इस नैतिक पतन का मूल कारण क्या है? स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् के इन दस वर्षों में जिस गति से देशवासियों का नैतिक और चारित्रिक पतन हुआ है वह निःसन्देह



एक आश्चर्यजनक घटना कहा जा सकता है। क्या राजकीय कार्यालयों क्या सामाजिक संस्थाओं, क्या धार्मिक सत्संगों सर्वत्र अन्याय, अभाव तथा अज्ञान का वातावरण छाया हुआ है। मानव त्राहि त्राहि की स्थिति में है, किसी सम्बल की टोह में है जिसके सहारे से कुछ कर सके।

आज दो प्रमुख मोटो मनुष्य के सामने हैं जिनसे वह प्रभावित तथा अनुप्रेरित है। 1—Nothing is unfair in Politics 2—The end justifies the means पहले आदेश के अनुसार वह राजनीतिक क्षेत्र पर किसी भी प्रकार का अभिनय करने में सकुचाता नहीं अपितु कार्य सिद्धि के प्रलोभन में प्रसन्न एवं प्रफुल्लित दिखता है। कार्यकर्ताओं के इस व्यवहार का गहरा छाप जनता पर पड़ता है और परिणाम स्वरूप एक नागरिक जनजन प्रकारेण समाज में अपना स्थान विशिष्ट बनाने हेतु कुछ और किसी तरह से उठा नहीं रखता। यह अनैतिकता इस प्रकार के संक्रामक रोग की भांति ऊपर से नीचे तक सभी को आक्रान्त किये हुए हैं। यही कारण है कि आज वास्तविकता का स्थान दिखावे ने ले लिया है। मानवता इन दो खोलों के बीच में कहां है किसी को पता नहीं। किसी को बाहर से देखकर भीतर का सही पता लगाना कठिन नहीं अपितु दुष्कर भी हो गया है। जन साधारण इन प्रयोगों के पीछे ही अपना समय गवां रहा है। आज एक को अच्छी जाना कल पता लगा वही आस्था हुआ, वास्तव में बुरा था। इस प्रकार आज और कल दोनों गये परिणाम कुछ भी न निकलता। सिवाय, निराशा, उदासी और मानसिक क्लेश। दूसरा आदर्श फल साधन की परख है। फल अच्छा हो फिर कोई नहीं पूछता कैसे हुआ। एक विद्यार्थी परीक्षा में सफल हो जावे। वह परिश्रमी, कुशल बुद्धि तथा चरित्रवान की संज्ञा से सम्मानित किया जाता है। यह कौन पूछता है कि नकल करके पास हुआ, पर्चा आउट हो चुका था अथवा परीक्षा भवन में अनुचित सहायता मिली थी। इसके विपरीत यदि एक असफल हो जावे तो उसे आलसी, निकम्मा आवारा कहने में कौन चूकेगा। क्या माता, क्या पिता, क्या साथी सभी उसकी असफलता पर नाना प्रकार का सन्देह प्रकट करते हैं। वह किससे कहे कि भरसक उसने पूरा पूरा परिश्रम किया प्रतिदिन नियमित रूप से विद्यालय में जाता रहा और विद्यालय से आने के पश्चात् माता पिता की आज्ञा से घर के कार्य में भी सहयोग देता रहा। एक दुकानदार ने दूध में पानी मिला कर नहीं अपितु पानी में दूध मिलाकर धन कमाया, मकान बनवाया और गृह प्रवेश के अवसर पर वृहद यज्ञ रचा ब्राह्मण भोजन कराये याज्ञिकों को पूरी पूरी दक्षिणा दी। फल के आधार पर सब एक स्वर से बोल उठे धर्मात्मा सेठ की जय हो दूसरी ओर पसीने की कमाई से ईमानदारी के साथ धार्मिक जीवन बिताने वाले दरिद्र ब्राह्मण की पूजा तो दूर रही इस विचार धारा के प्रभाव से उत्पन्न वातावरण वाले समाज में उसे खड़े होने का भी स्थान नहीं है।

आज इस विशाक्त परिस्थिति में एक आन्दोलन की आवश्यकता है उसका जयघोष हो ईमानदार और चरित्रवान की पूजा की जावे। फल साधन की कसौटी नहीं अपितु साधन फल की कसौटी है। साधन निर्मल, विमल और उज्ज्वल हो, परिणाम भले ही दैवयोग से आकर्षक और मनमोहक न हो। निःसहाय दरिद्र किन्तु धर्मात्मा हो तो उसका हम आदर करना सीखें, सिखावें और इसका प्रचार करें।

आर्यसमाज के संस्थापक युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' में इसी विचार की प्रेरणा मिलती है—मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख दुःख और लाभ हानि को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे, इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं को चाहे वे अनाथ, निर्बल और गुण रहित क्यों न हों, उनकी रक्षा उन्नति प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महा बलवान और गुणवान भी हो, तथापि उसका नाश अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे। अर्थात् जहां तक हो सके अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। साथ ही हम यह भी सबको बतावें कि चोरी करके लाये हुए कम्बल से शरद् ऋतु में शीत से त्राण तो मिल जाता है किन्तु एक नई शीत उत्पन्न हो जाती है। वह खटका, भय और आशंका जिसके परिणाम स्वरूप जब भी दरवाजा को पहला कोई खुलवाता है तो व्यक्ति चुराये हुये कम्बल को समेट कर पहले सिरहाने छिपा लेता है तब उठकर दरवाजा खोलता है। सारी रात्रि इस नव जनित जाड़े से वह पहले वाले जाड़े की अपेक्षा अधिक दुःखी चिन्तित और उद्विग्न रहता है। ✦

महर्षि दयानन्द

★

हे आर्यावर्त गौरव महान् हे आर्य जाति वैभव उज्ज्वल।
हे आर्य धर्म के ऐ सजीव, साकार चमकते भानु प्रबल॥
भारत मानस के हे मराल, अज्ञान विनाशक प्रखर ज्योति।
सच्चरित भावना के प्रतीक, भर दो मानव में अमर ज्योति॥

था एक दिवस जब झांका था प्राची से उठकर रवि उज्ज्वल।
अवतार धरा पर आप हुये पितु मात मगन पा लाल मृदुल॥
हंस पड़ा गगन जग गया विश्व, हो पुलक उठा मानव का दल।
अज्ञान तिमिर उड़ गया 'कञ्ज', लखकर प्रकाश मार्तण्ड प्रबल॥

इस आर्यावर्त के कर्णधार, थे ऋषि दयानन्द परमगुणी।
अवतीर्ण हुये ले वेद ज्ञान, बनि धन्य हुई भारत धरणी॥
पाखण्ड मिटा फैला प्रकाश चहुं ओर हुआ था तम विनाश।
लहलहा उठा वैदिक झण्डा झुक गये शत्रु होकर निराश॥

वेदोचित था खण्डन मण्डन भी दिया सभी में प्रेम मिलन।
समाज सभा को दिखलाया, छोड़ो असार प्रतिमा पूजन॥
मरु उपवन महि गिरि, सागर में याद गूंज उठे वेदों का स्वर।
तो क्या अचरज मिट गये अगर पाखण्डी बनते वीर प्रवर॥

था सम्वत् चालिस का दुर्दिन लक्ष्मी दिवाली दीप विमल।
उठ गया भानु भारत का अब, था गया छोड़ दुख दर्द प्रबल॥
चहुं ओर बढ़ गई दीपावली, थे आर्य वेदना से विह्वल।
अब मौन हुये सहसा क्षण में हो गये यत्न सब ही निष्फल॥

आनन से तेज टपकता था, नहीं डिगे धर्म से, रहे अटल।
टिक सका नहीं कोई पण्डित, शास्त्रार्थ किया जिसने निश्छल॥
थे नहीं सोचन योग्य आप, दे गये सुधा रस भर निर्मल।
कर पान जिसे सब आर्य बन्धु, फैलावे उनकी कीर्ति विमल॥

—श्री बाबूराम शर्मा 'कञ्ज' साहित्य रत्न साहित्य सदन कटरा, एटा

राष्ट्र भाषा का प्रश्न

[स्वामी सत्यदेव परिव्राजक, सत्यज्ञान निकेतन, ज्वालापुर]

"एक हिन्दी भाषा को मुख्य रखकर उसी को अपने ज्ञान प्रसार का माध्यम मान कर यदि हम चलेंगे तो हमें बहुत शीघ्र सफलता प्राप्त हो सकेगी। सभी प्रान्तीय भाषाएं नागरी लिपि में लिखी जानी चाहिए जिससे भेद की सबसे बड़ी दीवार टूट जाये।" राष्ट्र भाषा विवाद के सम्बन्ध में स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक के उक्त विचार को इस लेख में पढ़िए।

—सम्पादक

मेरे प्रेमी राष्ट्र भाषा के प्रश्न पर मेरी सम्मति पूछते रहते हैं—वे जानना चाहते हैं कि मैंने इसका क्या हल निकाला है?

ऐसी चिट्ठियाँ आने पर मैं आश्चर्य चकित हो जाता हूं। ३०,३५ वर्ष पहले जब मैं हिन्दी का सन्देश सुनाया करता था और उस अपनी छोटी सी पुस्तक की हजारों प्रतियों का प्रचार देश में किया करता था तो मेरे देश वासी बड़ी श्रद्धा-भक्ति से मेरे व्याख्यानों को सुना करते थे और मेरी पुस्तिका का प्रचार बड़े उत्साह से अपने-अपने प्रान्तों में करते थे। उस समय लोगों में राष्ट्रीयता थी उनमें गुलामी को दूर करने की उमंग थी और थी बलिदान की सच्ची भावना।

आज जब देश स्वाधीन हो चुका है और सारा खतरा दूर हो गया है तो देश के लोग पुनः स्वार्थ के वशीभूत होकर प्रान्तीयता और साम्प्रदायिकता की गन्दी विचार धारा में बहने लगे हैं।

जब मैं स्वतन्त्रता की खोज करने अमेरिका गया था तो राष्ट्र-भाषा का प्रश्न मेरे सामने बिल्कुल साफ हो गया था। न्यूयार्क से सैन फ्रांसिस्को तक एक अंग्रेजी भाषा सारे संयुक्त राज्य अमेरिका में बोली जाती है। वहाँ के सभी विश्व विद्यालयों में राष्ट्र भाषा अंग्रेजी के माध्यम द्वारा अमेरिकन छात्र एवं छात्राएं शिक्षा पाती हैं। अपने घरों में वे भले ही जर्मन, फ्रेन्च अथवा इटालियन बोलते हों, किंतु उनकी बोल-चाल का व्यावहारिक भाषा अंग्रेजी है। अमेरिका के विश्व विद्यालयों में सब विषय अंग्रेजी माध्यम के द्वारा पढ़ाये जाते हैं, परन्तु यदि आप फ्रेन्च, जर्मन, इटेलियन स्पेनिश, यूनानी, लातानी, संस्कृत अथवा अरबी पढ़ना चाहते हैं तो आप उनमें से कोई भी भाषा वहाँ पढ़ सकते हैं। अर्थात् इन भाषाओं को वे पढ़ाने से इन्कार नहीं करते, लेकिन राष्ट्र भाषा सारे संयुक्त राज्य अमेरिका में अंग्रेजी ही है।

मेरी सम्मति यह है। मैं चाहता हूं कि हिमालय से कन्या कुमारी तक और बंगाल से पूर्वी पंजाब तक इस सारे देश में एक राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रसार हो शेष प्रान्तीय भाषायें विश्व विद्यालयों में उन विद्यार्थियों को पढ़ाई जाए जो उन्हें पढ़ना चाहते हैं। यदि हम प्रान्तीय भाषाओं को अपने-अपने प्रान्तों में हिन्दी का दर्जा दे देंगे और उन्हीं के माध्यम द्वारा शिक्षा का प्रचार करेंगे तो हमारे देश की बहुत सी धन राशि प्रान्तीय भाषाओं में विश्व विद्यालयों को चलाने में खर्च हो जायगी और हमारे बहुत से विद्वान् अपने समय और योग्यता का अपव्यय कर प्रान्तीय भाषाओं के विकास में लग जायेंगे। आधुनिक युग विज्ञान का है विज्ञान ने बड़ी उन्नति की है और सब प्रकार के बड़े बड़े विभाग खुलते चले जा रहे हैं। एक हिन्दी को मुख्य रखकर, उसी को अपने ज्ञान प्रसार का माध्यम मानकर यदि हम चलेंगे तो हम बहुत शीघ्र सफलता प्राप्त हो सकेगा और हम अपने राष्ट्र को विकास की दौड़ में खड़ा कर सकेंगे। किन्तु इसके विपरीत यदि हम तामिल, तेलगू, गुरुमुखी गुजराती, मराठी, बंगाली, और उर्दू को संसार की दूसरी भाषाओं के मुकाबले में खड़ा करने के गोरख धन्धे में फंस जाएंगे तो हमारी बड़ी दुर्दशा हो जायगी और हम "धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का" की कहावत को चरितार्थ करेंगे।

लेकिन हिन्दी कैसी होनी चाहिये? यह भी सोचने की बात है हम आज प्रजातन्त्र युग में रहते हैं, पाण्डिताई बघारने के युग में नहीं। जो शब्द आम प्रचलित हैं और आसानी से जन साधारण की समझ में आ जाते हैं, उन्हें संस्कृतनिष्ठ क्लिष्ट बनाने की कोई आवश्यकता नहीं। एक उदाहरण देकर मैं इसे स्पष्ट करता हूं।

सन् १६०४ में मैं काशी में संस्कृत पढ़ता था और वीरभानु सिंह जी के बगीचे में रहता था। काशी के पं० पद्मनाभ जी उस बगीचे में बहुधा आया करते थे। एक दिन भाषा का विषय चल पड़ा और मैंने अपनी सम्मति प्रकट की कि जो शब्द अंग्रेजी, उर्दू, फारसी अथवा अरबी के हिन्दी में खप गये हैं, जिन्हें जन साधारण समझता है उनके स्थान पर नये कठिन शब्द नहीं रखने चाहिए। मैंने पं० पद्मनाभ जी से कहा कि इस जिन शब्द के लिए आप कौन सा शब्द देते हैं। तो उन्होंने झट से उत्तर दिया—'धूम्र शकट' मैंने दुबारा हंसते हुए पूछा कि रेलगाड़ी के लिए क्या कहेंगे तो पं० जी बड़े गर्व से बोले— धूम्र शकट शकट समुदाय!' मैं यह सुनकर पं० जी की बुद्धि पर बड़ी दया करने लगा इस प्रकार का मस्तिष्क रखने वाले विद्वान् हिन्दी को राष्ट्र भाषा नहीं बना सकते, क्यों के उनके अन्दर पक्षपात और असहिष्णुता घर कर गई है। हम जिस युग में रहते हैं वो भेद बुद्धि का नहीं, मिलाप करने का युग है। हमें सभी प्रान्तीय भाषाओं में से आसान और प्रचलित शब्दों को लेकर हिन्दी का भण्डार भरना चाहिए। सभी प्रान्तीय भाषाएं नागरी लिपि में लिखी जानी चाहिये जिसमें भेद की एक बड़ी दीवार टूट जाये और हम एक दूसरे के निकट आ जांय। जो लेखक चुन चुन कर कठिन संस्कृत शब्दों को हिन्दी में भरने का यत्न कर रहे हैं वे भी हिन्दी के शुभचिन्तक नहीं माने जा सकते हमारा यह होना चाहिए कि अधिक से अधिक नागरिक आपकी भाषा को समझ सकें।

हम आज जिस युग में से गुजर रहे हैं वह राष्ट्र निर्माण का युग है। हमें मास्टर तारासिंह की तरह तंग दिल, सम्प्रदायवादी और राष्ट्र विरोधी भावनाएं नहीं रखनी चाहिए और न हो राजा महेन्द्र प्रताप जी की तरह बेसमझ बातें करनी चाहिए। उर्दू भाषा का अब कोई स्थान इस देश में नहीं रहा। वह पाकिस्तान के साथ ही चली गई। अब हममें से हर एक को यह उद्योग करना चाहिए कि किस प्रकार जल्दी से जल्दी हम सुसगठित और व्यवस्थित जीवन रखने वाले हो जाएं। दक्षिण मद्रास में ऐसे भी बेसमझ लोग हैं जो श्री रामचन्द्र जी की मूर्ती को जलाते हैं महात्मा गांधी के चित्रों को फाड़ते हैं देश के संविधान का अनादर करते हैं। इस प्रकार के अराजक लोगों को जो लोग प्रोत्साहन देते हैं उन्हें देश से बाहर कर देना चाहिए। मुझे बड़ा दुःख है कि स्वाधीनता मिलने के बाद देश में जिस कठोर शासन की आवश्यकता थी, वो देश के नागरिकों को नहीं मिला। गुलामी से निकल कर हम उच्छृंखलता की ओर आ गए हैं एक पीढ़ी तक हमारे लोगों को अति कठोर शासन की आवश्यकता है जिससे हम भली प्रकार सुसंगठित हो जाएं और अनुशासन मान जांय मुझे विश्वास है कि मेरे देशवासी बड़ी गम्भीरता से राष्ट्र भाषा के विषय पर विचार करेंगे और राष्ट्र निर्माण कार्यों में अपनी पूरी शक्ति लगा देंगे।

[पृष्ठ ७ का शेष]

मिश्रित) और ठीक ठीक भोजन प्राकृतिक चिकित्सा का एक अनिवार्य अङ्ग है। [देखो 'हरिजन' ११ अगस्त१६४६]

इस प्रकार जिस एलोपथी को महात्मा जी देश के लिए इतना हानिकारक समझते थे कि उसके पर सिद्ध साधनों को अपनाने से इनकार करते हैं क्योंकि वर्तमानिक तौर पर प्रकट रूप से लाभ दिखान वाले साधन भी अपनी प्रतिक्रिया से हानिकारक हैं, उसकी उन्नति के लिए देश का सबसे अधिक धन देने वाले पशुओं के वध के लिए और नवीन कसाई खाने खोले जा रहे हैं और गऊ धन जिससे और अन्य रूप में भी बहुत से पदार्थ प्राप्त होते हैं, के नाश पर हम तुले हुए हैं; इससे बढ़कर मूर्खता और क्या हो सकती है। हम भारत के प्रधान मन्त्री से बलपूर्वक आग्रह करेंगे कि वह नवीन कसाईखाने बनाये जाने का स्कीम को रद्द कर दें।

बुल्गेरियायी कहानी

लीक पर

★ श्री एलिन पेलिन

[एलिन पेलिन बल्गेरिया के एक कहानीकार हैं। महान् साहित्यिक क्षमता का परिचय देते हुए, लेखक ने इस शताब्दी के प्रथम दशक में तबाही तथा घोर कंगाली में फंसे हुए गरीब किसानों के कष्टमय जीवन तथा दुर्दशा का चित्रण यहां किया है।] —सम्पादक

वर्षा आयी। पानी बरसता रहा पूरे सप्ताह भर धीरे धीरे, लगातार दिन और रात धरती माता की नस नस में पानी सोख गया। फिर हल्की हल्की हवा चलने लगी, आकाश साफ हो गया और शरद ऋतु का हल्का हल्का गरम सूरज चमकने लगा। खेत सूख गये और मौसम बहुत अच्छा हो गया-बिल्कुल जुताई के लायक।

बान्ने क्राइनेनिस ने फिर सिवूरका और बेल्यो को हल में जोता और हल के पीछे पीछे ढाले कदमों से चलने लगा। उसका खेत एक लम्बी चौड़ी खूबसूरत सी ढलान पर था और चारों ओर जंगलों से सुरक्षित था। मिट्टी बहुत कुरकुरी थी और शक्कर की तरह चूर चूर हो जाती थी।

अपनी छड़ी हिलाते हुए वह जोर से चिल्लाया।

"चल भैय्या, चला चल!"

जंगल से उसकी आवाज की गूंजती हुई प्रतिध्वनि सुनायी दी। बूढ़े बेल्यो ने अपनी दुम हिलायी और शांत भाव से चल पड़ा। सिवूरका ने भी, जो एक बूढ़ी मरियल गाय थी और डीलडौल में बेल्या की आधी ही रही होगी, जोर लगाया और उसके साथ चल पड़ी।

और धीरे धीरे वे लीक के बाद लीक जोतते रहे, दो, तीन-फिर पूरा चक बन्ने के चेहरे पर कुछ चमक आ गयी। अपनी मुसीबतों को भूल कर वह अपने आप सीटी बजाने लगा।

"बेल्या! जरा धीरे चल, सिवूरका तेरा साथ नहीं दे सकती। चल सिवूरका, चल, मेरी मरियल गाय, चल मेरी लाडली! तू थक गयी है, लेकिन मैं कर ही क्या सकता हूं? मैं भी बहुत थक गया हूं। चल उस सिरे तक! फिर वापस'।

बेल्यो ने, जो एक अनुभवी बूढ़ा बैल था अपने नथुने फुफकारे और बड़े सूरमा की तरह आगे बढ़ा। छोटी सिवूरका ने अपना पूरा जोर लगाया, उसका मुंह खुला हुआ था, उसकी हड्डी की रीढ़ झुकी जा रही थी और उसकी पतली दुम बिल्कुल ही सूख गयी थी। बेल्या एक कदम में जितना दूर पहुंच जाता, उतना दूर के लिए उसे दो कदम उठाने पड़ते। उसकी जबान बाहर लटक रही थी और उसे चलना दूभर हो रहा था।

आस पास कहीं कोई नहीं था। शरद ऋतु के नंगे पैरों की कोमल पदचाप जंगल में सुनाई दे रहा था और उसके कदमों के नीचे सूखी टहनियां टूट रही थीं।

'चल, सिवूरका चल मेरा लाडली।" बान्ने ने अनुरोध करते हुए कहा, वह बड़ी आशंका से देखा कि उसकी गाय थकती जा रही है और उसकी ताकत खत्म होती जा रही है।

'अच्छा रुक जाओ! थोड़ा देर सुस्ता ले।'

थके हुए मारवाही पशु ठहर गये, बान्ने आगे बढ़कर उनके पास गया और उनके माथे थपकाने लगा।

"बेल्या, तू तो बड़ा निर्दयी है! क्यों, तूने बेचारी सिवूरका को थका दिया! क्यों है न, मेरी सिवूरका?" वह उनसे बातें कर रहा था।

और सिवूरका तथा बेल्यो हांफते हुए अपनी उदास आंखों से शांत तथा निरीह भाव से घूर रहे थे। सिवूरका के मुंह से झाग निकल रहा था। उस ने अपने सफेद साथी को घूर कर देखा, फिर अपने मालिक की तरफ देखा और निराश होकर उसने अपना सिर झुका लिया।

बेल्यो थोड़ा सा जोर लगाकर चल पड़ा। सिवूरकाने भी उसका साथ देने के लिए पूरा जोर लगाया, पर व्यर्थ, और वह भी ठहर गया।

"हेइ, बस चल!" बान्ने ने ऊंची आवाज में ललकारते हुए कहा।

जंगल से उसकी आवाज की गूंजती हुई प्रतिध्वनि सुनायी दी।

बेल्या फिर आगे बढ़ा, सिवूरका ने एक बार फिर जोर लगाया पर उसके पैर जवाब दे गये, वह निढाल होकर जूए में लटक पड़ी और बड़े करुण स्वर में रंभाने लगी।

बान्ने ने भयभीत होकर छड़ी फेंक दी, जल्दी से बेल्या को जूए में से खोला और बहुत चिन्तित होकर सिवूरका के सामने आकर खड़ा हो गया। वह निश्चल पड़ी थी, उसकी गरदन ऐंठी हुई थी, उसकी थूथनी भुरभुरी मिट्टी में धंसी हुई थी, उसकी आंखें बंद थीं और वह जोर से हांफ रही थी।

'क्या बात है मेरी लाडली? बोल न! तुम्हारा जी अच्छा नहीं है क्या? सिवूरका, अरे मेरी मरियल सिवूरका! तेरा दिल खून के आंसू रो रहा है, मेरी लाडली! लेकिन आज थोड़ा काम और कर ले! कल छुट्टी है और तुम लोग सारे दिन आराम करना। बेल्या, तू मुझे क्यों देख रहा है? तू तो सूरमा है।' बान्ने ने अपने पशुओं से कहा।

पर सिवूरका ने अपना सिर नहीं उठाया। ऐसा प्रतीत होता था कि अपने मालिक के शब्दों से उसके क्रन्दन करते हुए हृदय को कोई सांत्वना नहीं मिली। उसकी मुरझायी हुई नजरों का दम फूल रहा था, और उसके पैर जार जार से कांप रहे थे।

"मुझे बता सिवूरका, मेरी मरियल सिवूरका, तुझे क्या हुआ है?" बान्ने ने चिन्तित होकर उससे पूछा और बच्चे की तरह उसे थपकाने लगा। फिर उसने हल की मूठ पकड़ कर जोर से अपने पशुओं से कहा।

"हेइ, चल! बढ़े चल!"

"उठ सिवूरका! चल उठ!" बान्ने ने उसे जूए में से खोल दिया और उसके सींग पकड़कर खींचने लगा।

सिवूरका ने अपनी आंखें जरा सी खोलीं, बड़े विनीत भाव से अपने मालिक की ओर देखा मानो उससे कहना चाहती हो। 'मुझे शांति से मर जाने दो' और फिर अपनी आंखें मूंद लीं।

बान्ने बौखलाया हुआ उसके चारों तरफ चक्कर काटता रहा, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। आधा जुता हुआ खेत लेटा हुआ धूप खा रहा था। आकाश से केवल सूरज उन्हें देख रहा था और अपने शिखर से चल कर पहाड़ियों की ओर झुक रहा था। आस पास कोई भी नहीं था। जंगल में निस्तब्धता छायी हुई थी।

"चल सिवूरका। उठ देख, बेल्या तुझ पर हंस रहा है! चल! बहुत मजाक हो चुका, मेरी लाडली! देख मिट्टी कितनी कुरकुरी है बिल्कुल जुताई के लायक!"

और गाय की सींग पकड़कर बान्ने उसे धीरे धीरे उठाने लगा। उसने अपने पांव जमीन में गड़ाकर उठने की एक अन्तिम चेष्टा की, पर वह हिल भी न सकी और वेदना से विह्वल होकर उसने अपना सर फिर भुरभुरी मिट्टी पर डाल दिया और पहले से भी ज्यादा जोर से हांफने लगी।

बान्ने उसके सामने बैठ गया और उसका सर उठा कर अपने घुटनों पर रखकर थपकाने लगा और उसके माथे पर उसने प्यार कर लिया।

"ऐसा न कर, मेरी लाडली! मुझ पर तरस खा! सुन! यही एक खेत तो बचा है। आ इसे जोत डालें तब जी भर कर आराम कर लेना। फिर मैं तुझे कभी हल में नहीं जोतूंगा तेरी नन्ही गलीत्सा बड़ी हो जायेगी और वह बेल्यो की मदद किया करेगी। तू दिन भर गोशाला में पड़े पड़े आराम करेगी और अपने जीवन की पिछली बातों पर विचार किया करेगी। बच्चे तेरे लिए तांबे के लोटे में पानी लाया करेंगे और रोज सुबह तुझे मल मल कर नहलाया करेंगे, वे तुझे चारा खिलायेंगे। तू चंगी हो जाएगी, तेरे शरीर में ताकत आ जाएगी, क्यों है न मेरी लाडली? गलीत्सा और बेल्यो सारी जुताई किया करेंगे और तू ढलान पर मजे से चरा करेगी खुश होकर उन्हें देखा करेगी, और चिल्ला कर कहेगी, 'चलो काम करो।' और शाम को जब मैं गलीत्सा को छोड़ दिया करूंगा तो वह तेरे पास आयेगी और तुझे चाट कर कहेगी 'नमस्ते, मेरी बूढ़ी मां! अब चल, लाडली! उठ।"

पर सिवूरका न तो हिली और न ही उसने आंखें खोलीं। वह बस रह रह कर जोर से कांप उठती थी।

बान्ने उठ खड़ा हुआ, उसने रोटी का एक टुकड़ा तोड़कर उस पर नमक लगाया और उसके मुंह के पास ले गया।

'ले, सिवूरका, थोड़ा सा खा ले।"

बूढ़ी गाय ने अपनी आंखें खोलीं, बड़े विनीत भाव से अपने मालिक को देखा और फिर आंखें मूंद लीं।

बान्ने ने निराश होकर आह भरी। उसने मिट्टी को देखा जो भुरभुरी थी, उसने जंगल को देखा जो शांत था, उसने बेल्यो को देखा जो चुपचाप घास चर रहा था, उसने सूरज को देखा जो आकाश पर भागा चला जा रहा था और उसे ऐसा लगा कि वह बिल्कुल अकेला है, वह कहीं से भी सहायता पाने की आशा नहीं कर सकता।

[शेष पृष्ठ १४ पर]

सभा की सूचनाएँ

निरीक्षण सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के सहायक पुस्तकाध्यक्ष श्री रघुनन्दन स्वरूप जी एम० ए०, एल एल० बी० एडवोकेट सदर मेरठ ने कमिश्नरी मेरठ (देहरादून से लगायत बुलन्दशहर तक) के समस्त आर्य समाजों का निरीक्षण करने का वचन दिया है। और वे जून मास में भ्रमण प्रारम्भ कर देंगे। अतः उनके पहुँचने पर समाजों को चाहिए कि समाज, संस्था आदि का निरीक्षण करने में उन्हें पूर्ण सहयोग प्रदान करें। और वेद प्रचारादि मद का धन (शेष दशांश, सूद कोटि) देने की कृपा करें।

अत्यावश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्य समाजों के मन्त्री महोदयों को सूचित किया जाता है कि जिन के पास प्रान्तीय हिन्दी रक्षा समिति की रसीद बुकें हैं कृपा कर उन रसीदों के मुसन्ने तथा प्राप्त धन का आय व्यय विवरण बनाकर शीघ्र ही सभा कार्यालय में भेज दें ताकि हिसाब साफ हो जावे। अन्यथा रसीदें वापिस करने का कष्ट करें और शेष धन भी सभा में भेजदें।

दो नए अन्तरङ्ग सदस्य

आर्यमित्र दिनांक २५ मई १९५८ तिथि ४ ज्येष्ठ १८८० शकः पृष्ठ ४ पर नवनिर्वाचित पदाधिकारी एवं अन्तरङ्ग सदस्यों की सूची प्रकाशित हुई है उस में सहारनपुर क्षेत्र के दो अन्तरङ्ग सदस्यों के नाम प्रकाशित नहीं किये जा सके जो अब निम्न प्रकार घोषित किये जाते है।

६०—श्री चौ० तेजसिंह जी प्रधान जिलोपसभा खाताखेड़ी सहारनपुर

६१—श्री फूलचन्द्र जी मन्त्री आर्य समाज पुरानी मण्डी सहारनपुर

भूल सुधार

आर्यमित्र दि० ११ ज्येष्ठ १८८० दि० १ जून १९५८ पृष्ठ १२ पंक्ति १९ भाग ८ में आर्य कन्या पाठशाला बिलसी (बदायूं) के स्थान मे 'विराजसी' छप गया है। कृपया पाठक गण संशोधन करलें।

—फूलन सिंह, सभा मन्त्री

उत्सव—

आ० स० गुन्नौर, बदायूं

१० से १५ जून तक इस समाज का वार्षिकोत्सव होगा जिसमें श्री अमरसिंह, प्रकाशवीर शास्त्री, ओंकार सिंह, आदि पधारेंगे।

आवश्यकता

रामप्यारी कन्या पाठशाला (जूनियर हाई स्कूल) डिबाई जिला बुलन्दशहर में पांच हाई स्कूल एच० टी०सी०, बी०टी०सी० या जे०टी०सी० की आवश्यकता है; जिन्होंने गणित, टैलरिङ्ग, आर्ट एवं इतिहास के साथ हाई स्कूल पास किया हो। अनुभवी अवकाश प्राप्त अध्यापक भी इन स्थानों पर रक्खे जा सकेंगे। वेतन दर ऐडेड विद्यालयों के वास्ते सरकार द्वारा निर्धारित क्रम मे १०) मासिक महंगाई भत्ता सहित होगा। स्थाई हो जाने पर प्रोविडेण्ड फण्ड की सुविधाएं दी जा सकेंगी। पूर्ण विवरण एवं प्रमाण पत्रों की लिपियों सहित मैनेजर महोदय से पत्र व्यवहार करें।

वाराणसी में आर्य वीर दल शिक्षण शिविर

आर्य वीर दल पूर्वी क्षेत्र उ० प्र० का शिक्षण शिविर डी०ए०वी० कालेज वाराणसी में १६ से २२ जून तक लगेगा। भाग लेने वाले व्यक्ति प्रवेश शुल्क के साथ ही शीघ्र अपना नाम भेजें। इस क्षेत्र के दलपतियों और मण्डलपतियों को चाहिये कि इस कार्य में उत्साह दिखाकर शिविर को सफल बनावें। पूर्वी क्षेत्र के आर्य समाजों के अधिकारियों से विशेष रूप से आग्रह है कि वे इस शिविर में स्वयं तथा अपने युवक पुत्रों को भेज कर सहयोग करें। उमाकान्त संचालक,

मेवालाल मन्त्री

बरेली में हिंदी रक्षा सम्मेलन

आर्य उप प्रतिनिधि सभा तथा आर्यकुमार सभा बरेली द्वारा आयोजित हिन्दी रक्षा सम्मेलन में स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने अपने दो घण्टे के प्रभावशाली भाषण में कांग्रेस राज्य की भ्रष्टाचार और कुनीति का पूरा भण्डा फोड़ किया। उर्दू का समर्थन करने के कारण तथा स्थान स्थान पर हिन्दी को उचित प्रश्रय न देने के कारण भी कांग्रेस की काफी निन्दा हो रही है। डा० सत्यधीर ने एक प्रस्ताव द्वारा राजगोपालाचारी तथा मास्टर तारासिंह आदि नेताओं की हिन्दी विरोधी नीति की निन्दा की. इस अवसर पर सर्वश्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार, राजाराम शास्त्री, प्रजापालन शर्मा, लक्ष्मीनारायण, सत्यप्रकाश स्वरूप, चन्द्रनारायण जी वकील, के भी भाषण हुए। हिंदी के समर्थन मे अनेकों प्रस्ताव और भाषण हुए और पंजाब की पाशविक अत्याचार की घोर निन्दा की गई।

—सत्यप्रकाश स्वरूप

आर्य समाज कायमगंज द्वारा

शानदार शुद्धि कार्य

आर्यसमाज कायमगंज की ओर से ग्राम पंची नगला में बड़े समारोह के साथ १७ व्यक्तियों को शुद्ध करके वैदिक धर्म में प्रविष्ट किया गया। सबों को यज्ञोपवीत भी दिए गये। इस अवसर पर लगभग २०० व्यक्ति उपस्थित थे और सभी इस शुद्धि समारोह से प्रभावित हुए।

आ० स० अमेठी में प्रचार

आर्यसमाज अमेठी के उत्सव पर श्री बी०एन० पाल ने मैजिक लैन्टन द्वारा प्रचार किया। राजकुमार रणजय सिंह ने उत्सव का उद्घाटन किया। श्री रामकृष्ण मिश्र के पुत्र के यज्ञोपवीत संस्कार पर भी श्री पाल ने मैजिक लैन्टर्न से प्रचार किया।

पं० मदनमोहन विद्यासागर अफ्रीका को

आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् व उपदेशक श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर विदेश में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए बम्बई से ११ जून को नैरोबी केनिया कालोनी, पूर्वी अफ्रीका को प्रस्थान कर रहे हैं। आप दो वर्ष वहां रहकर प्रचार करेंगे। आप गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातकों मे से हैं। इससे पूर्व आप बर्मा में काफी दिनों तक वैदिक धर्म का प्रचार कर चुके है आर्यमित्र परिवार को हार्दिक शुभकामना आपके साथ है।

शुभ विवाह

श्री डा० राजेन्द्रप्रसादसिंह छवि दलसिंह सराय बिहार का ११ मई को समस्तीपुर में पं० गङ्गाधर शास्त्री के आचार्यत्व में विवाह संस्कार हुआ।

गढ़ सिसई में आर्य सम्मेलन

गढ़ सिसई बिहार में १८ मई को एक आर्य सम्मेलन हुआ। पौराणिकों से शास्त्रार्थ भी होने वाला था पर वे तैयार नहीं हुए। पं० जे० पी० चौधरी, श्री पं० श्रीकृष्ण शर्मा आदि महोपदेशकों के भाषण हुए। श्री जयपाल और रामदेव जी के भजनोपदेश भी हुए।

आवश्यक सूचना

प्रान्त के समस्त समाजों के मन्त्री महोदयों से निवेदन है कि १५ दिन के अन्तर्गत सभा कार्यालय में अपने यहाँ के आर्यवीर दल की शाखा सम्बन्धी निम्न विवरण कृपया भेज देवें —

(अ) शाखा के दलपति का नाम तथा पूर्ण पता और आर्य समाज में उनका वर्तमान पद।

(ब) शाखा में भाग लेने वाले आर्यवीरों की पूरी सूची नाम, आयु, व्यवसाय (विद्यार्थी हों तो कक्षा तथा विद्यालय का नाम) तथा पता।

—रामजीप्रसाद गुप्त

अधिष्ठाता आर्य वीर दल व कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

मुँडन संस्कार

आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के उपमन्त्री श्री पन्नालाल गुप्तार्य आरा के पुत्र श्री अजयकुमार का मुंडन संस्कार श्री रामभजन जी पुरोहित ने सम्पन्न कराया।

आ०स० काशीपुर में शोक सभा

अपने समाज के भूतपूर्व मन्त्री श्री तुलसीराम जी ठेकेदार की निर्मम हत्या पर इस समाज ने हार्दिक शोक प्रकट किया।

(पृष्ठ १० का शेष)

वह फिर बीमार सिवूश्का की तरफ मुड़ा।

"उठ जा, लाडली! उठ जा! जल्दी कर, जंगल में एक भालू रहता है! वह आकर तुझे खा जाएगा!" वह गाय को डराने लगा।

फिर उसने गाड़ी में से पुराना फटा हुआ कम्बल निकालकर ओढ़ और जंगल में जाकर भालू की तरह गुर्राने लगा और अपने चारों हाथ-पैर के बल रेंगकर गाय की तरफ बढ़ने लगा।

"बऊ····बऊ! ···" उसने उसके निकट पहुंचकर गुर्राकर कहा।

गाय ने अपनी आंखें खोलीं। उसकी वेदना भरी करुण दृष्टि में असीम भय छुपा हुआ था। गाय ने अपना सिर उठाया और बड़े निराश भाव से रम्भाई, परन्तु वह इस बार भी उठ न सकी।

वान्ने ने कम्बल उतार फेंका, सीधा तनकर खड़ा हो गया, निराश होकर उसे देखने लगा, और फूट-फूटकर रोने लगा।

सिवूश्का अन्तिम बार रम्भाई, उसने बड़ी व्यथा से अपनी आँखें खोलीं और सांस लेना बन्द कर दिया।

आर्य जगत

एक सूचना

मैं स्वास्थ्य सुधार की दृष्टि से शाहनशाह आश्रम, पो० राजपुर, देहरादून आ गया हूं और यहीं दो मास रहूंगा। अगस्त सितम्बर मंसूरी में रहूंगा। पिछले वर्ष के अनुभव से मुझे पता चला कि राजपुर का जलवायु मेरे लिए स्वास्थ्यप्रद है।

—नरदेवशास्त्री वेदतीर्थ

आ० स० मगहर, बस्ती

इस समाज के मन्त्री श्री भगवत प्रसाद की पुत्री का विवाह संस्कार श्री हीराप्रसाद मुकाम मड्सा, पो० वासगांव, जिला गोरखपुर के साथ वैदिक रीति से श्री द्विजराम शर्मा के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ। वर कन्या तथा दो अन्य बच्चों के यज्ञोपवीत संस्कार भी हुए।

आ०स० गणेशपुर बस्ती

यहां ११ मई को आर्यसमाज की स्थापना हुई। इस समय इस समाज की ओर से आस पास के क्षेत्रों में वैदिक धर्म का प्रचार हो रहा है। बाबा अवधविहारी दास जी के व्याख्यान का अच्छा प्रभाव पड़ा।

'संस्कृतम' के विरुद्ध आर्यसमाज रामनगर का प्रस्ताव

अयोध्या से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'संस्कृतम्' के २२ अप्रैल ५८ के अङ्क में स्वामी दयानन्द सरस्वती के ब्रह्मचर्य को कलंकित करने के लिए जो भ्रमोत्पादक शब्द लिखे गये हैं, उसके विरुद्ध आर्यसमाज रामनगर अमेठी की ओर से २५-५ ५८ को साप्ताहिक अधिवेशन के उपरान्त एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें 'संस्कृतम्' और इसके सम्पादक की कुभावना के विरुद्ध एक विरोधजनक प्रस्ताव पास किया गया। प्रस्ताव में कहा गया कि आर्य जनों को इससे हार्दिक दुख हुआ है और पत्रिका के सम्पादक शीघ्र ही इस भूल का सुधार करें। ज्ञात हुआ है कि सम्पादक ने जान बूझकर ऐसा किया है जो वास्तव में अपमान जनक है।

इस अवसर पर बोलते हुए सभा के भूतपूर्व प्रधान राजकुमार श्री रणंजय सिंह ने कहा कि दयानन्द का चरित्र एक आदर्श चरित्र है। उनके विरुद्ध अंगुली नहीं उठाई जा सकती। श्री रामकिशोर शास्त्री, श्री धर्मेन्द्र जी आदि ने प्रस्ताव का समर्थन किया।

आ०स० सरदारपुरा, जोधपुर

इस समाज का २३ वां वार्षिकोत्सव २८, २९, ३० जून ५८ को ससमारोह होगा। आर्य जगत् के अनेको विद्वान् पधारेंगे और कई सम्मेलन होगे।

कन्याओं को आयुर्वेद

कन्या गुरुकुल हरद्वार के स्वस्थ पवित्र वातावरण में हिन्दी संस्कृत तथा वैदिक वांग्मय की परमोच्च परीक्षाओं की व्यवस्था के साथ अष्टांग आयुर्वेद की आचार्य श्रेणी पर्यन्त कन्याओं को शिक्षा दिलाने के निमित्त प्रवेशार्थ नियम के विवरण जानने के लिए आवेदन कीजिए।

आचार्या चन्द्रावती देवी शास्त्री

कन्या गुरुकुल कनखल (हरद्वार)

सामयिक चर्चा

भाषा विवाद साम्प्रदायिक सर्प है

इससे भागो मत, डटकर मुकाबला करो

[श्री बसन्तीलाल वैद्य, आर्य समाज उज्जैन]

० ०

० इस लेख का अभिप्राय स्पष्टतः यही है कि जनता और सरकार दोनों ही को ० भाषा-समस्या रूपी साम्प्रदायिक सर्प का डटकर मुकाबला करना चाहिये ० और इसे कुचल देना चाहिए पर दुर्भाग्य है कि हमारी सरकार तो ० स्वयं अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए इस विषैले सर्प को दुलार ० से पाल रही है। अतः सरकार से तो भले की कुछ आशा की ० नहीं जा सकती अब जनता का ही कर्तव्य है कि वह ० अगुआ बनकर मैदान में आये। —सम्पादक ०

० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

भारत में आये दिन स्वतन्त्रता के पश्चात् भी साम्प्रदायिक तत्वों को प्रोत्साहन मिलता आ रहा है। इस रोग का सर्व प्रथम आविष्कार भारत को गुलाम बनाये रखने की नीति चलने वाले अङ्गरेजों ने किया और सर्वप्रथम साम्प्रदायिक आधार पर धारासभाओं में पृथक चुनाव की सर्व क्रांति दी। तथा ईसाई सम्प्रदाय को फैलाने के लिए सरकारी नौकरियों में ईसाइयों को प्राथमिकता तत्कालीन अग्रेजी भारत में चली। भारत के भाग्य में यही दो कृतियां अङ्गरेजों को भारतीय भाग्य विधाता बनाये रखने की मृग मरीचिका सृजन कर रही थी। यह विषाक्त रोग फैलते फैलते भारतीय रियासतो के शासकों में भी अङ्गरेजों द्वारा प्रविष्ट कराया गया, फलतः मराठों राज्यों मे मराठों को, मुस्लिम राज्यों में मुसलमानों को प्राथमिकता देने के रूप में सामने आया। यहाँ तक कि जो उच्च अधिकारी जहाँ नौकरी देने का अधिकार रखता था उसने वहीं अपनी इस नीच कृति को प्रश्रय दिया। इस प्रकार यह दुष्ट रोग सारे भारत मे जब व्याप्त हो गया तब हिन्दू मुस्लिम दंगे चलना, योजना बद्ध रूप से चालू हो गये। अङ्गरेजों ने भारतीय राष्ट्र को छिन्न-भिन्न करने के लिये साम्प्रदायिकता, प्रांतीयता, भाषाई, रियासता व व्यक्तिगत विद्वेषों की ज्वाला भारत में बड़ी कूट नीति से फैलाई। इस प्रकार इस बढ़ते हुए रोग को दबाने के लिये तथा राष्ट्र को एक सूत्र में आबद्ध रखने के लिए सर्वप्रथम आह्वान महर्षि दयानन्द ने किया बाद में इस राष्ट्र यज्ञ की पूर्ति महात्मा गांधी ने करने का सम्पूर्ण रूपेण प्रयास किया, परन्तु अधूरा ही रहा। आज के युग में हमारे देश के निर्माता आदरणीय जवाहरलाल जी भी पूरे जोश के साथ करते नजर आ रहे हैं।

भारत मे इस विष वृक्ष का सर्व प्रथम फल श्री जिन्ना के रूप मे देखा गया। श्री जिन्ना ही एक ऐसे भारतीय मिले जिन्होंने अङ्गरेजों के इस विषैले मोहरे को अपने मुख मे रखकर भारतीय राष्ट्र को डसा और पाकिस्तान, राष्ट्र विभाजन की मांग की और अङ्गरेजों ने तत्काल उसका अभिषेक भी कर दिया। इस प्रकार आज भारत का एक अङ्ग ही अपने को पड़ोसी कहता हुआ भारत को ही परेशान कर रहा है।

देश में जब इस मुस्लिम साम्प्रदायिकता का ताण्डव हो रहा था तब देश मे ऐसे वीर व साहसी जन भी देखे गये जो अपना सीना खोलकर गोलियों के सामने आये—इस साम्प्रदायिकता को परास्त करने में आगे कदम बढ़ाये। इनमें सर्व प्रथम श्री गणेश शङ्कर विद्यार्थी और अन्त में स्वयं महात्मा गांधी का बलिदान हमारे सामने आदर्श है।

इस साम्प्रदायिकता के जहर से जहाँ सरकारी नौकर शाही हथियार बनी हमारी सार्वजनिक संस्थाएं भी कुछ तो खुले रूप में साम्प्रदायिक घोषणा करके ही बनी व कुछ ने अन्दरूनी, तौर पर इस विष को अपने स्वार्थ वश पनपाया। उदाहरणार्थ खुले रूप मे मुस्लिम लीग, रामराज्य परिषद, अकाली पन्थ, जैन परिषद, हिन्दू सभा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, जनसंघ, ईसाई मिशन आदि हमारे सामने हैं। और अन्दर ही अन्दर अपने आपको राजनैतिक जमात कहने वाली सभी संस्थाएं यह याद कर शर्मायेंगी नहीं कि उन्होंने भी तो “पाकिस्तान बने” के नारे का समर्थन किया? और क्या आज भी वे अपने चुनाव अभियान में मुस्लिम मोहल्लों में मुसलमान और सिख मोहल्लों में सिख की खोज नहीं करते हैं जिसे अपना उम्मीदवार बना डाले। और क्या ये संस्थाएं याद नहीं करती कि वे आये दिन चुनाव अभियान में मुस्लिमलीग, अकाली पन्थ से मित्रता न कर लें।

भारतीय सिक्खों की राष्ट्रीयता में कभी भी विश्वास नहीं किया जा सकता। क्या श्री १००८ सरदार मास्टर तारासिंह जी साहब के उनके पूरे जीवनकाल में किसी ने भी उनके साम्प्रदायिक रूप को कभी ललकारने का साहस किया? उन्होंने इस जवाहर युग में भी कई बार सिख राज्य का नारा बुलन्द किया। इस पर हमारे देश के सभी वीरवर लोगों ने चुपचाप सुनकर अपने घर में एक कोन मे अपना दिल मसोस डाला। महात्मा गांधी के बाद कोई भी ऐसा व्यक्ति सामने नहीं आया जो साम्प्रदायिकता का निष्पक्ष होकर विरोध करे। बेचारे हिन्दू मुसलमान यदि कुछ कहें तो सभी साम्प्रदायिकता के विरोध में डकारने लगते हैं पर यदि कहीं मास्टर तारासिंह जो यह कहें कि हमने पंडित जवाहर लाल जी से जो समझौता किया है यदि उसमें कोई काट कसर हुई तो भयंकर परिणाम निकलेंगे। मैं पंथ (सिख सम्प्रदाय) को प्रथम और बाद को देश को मानता हूं। यदि समझौता तोड़ा गया तो सिखिस्तान की मांग क्योंकि त्यों है ही। अर्थात् जो कुछ भी पर्दे के पीछे हुआ है उससे स्पष्ट है कि सिखिस्तान की मांग का उपरोक्त समझौते में समर्थन किया गया है।

मैं जानना चाहता हूं कि क्या यह घोषणा श्री जिन्ना साहब की पाकिस्तानी मांग से किसी प्रकार कम है? और यदि कल का पंजाब भाषा आन्दोलन इसी भावना के विरुद्ध साम्प्रदायिक खूखार भेड़िये के विरुद्ध एक सांस्कृतिक मोर्चा बना था तो उसे इस आधार पर वापस लेने मे कौन सी बुद्धिमानी हुई कि यदि पंजाब का भाषा आन्दोलन वापिस नहीं लिया गया तो पंजाब की एकता नष्ट हो जावेगा व पंजाब की एकता का नाश देश को विनाश की ओर ले जावेगा। क्या इस प्रकार के वक्तव्य सिखस्तान का अर्थात् सिख साम्प्रदायिकता की जड़ों में स्वाती नक्षत्र में सर्प मुख में पड़ा जल बिन्दु नहीं है? क्या वे ऐसी डर की बात स्वयं स्वीकार कर अपरोक्ष मे भारत विभाजन

(शेष पृष्ठ १६ पर)

विलासिता और मृत्यु का संवाद

[“काउन्ट गायाकोमो ल्योपार्डी की ‘फैशन और मृत्यु का संवाद’ नामक पुस्तक के आधार पर”]

(प्रो० सत्यभूषण वेदालंकार, एम० ए०, नई दिल्ली)

विलासिता—

हम दोनों का कार्य एक करते रहते हैं विश्व नवीन।
तुम शरीर और जीवन में परिवर्तन करने मे तल्लीन॥
लेकिन मैं तो पुरुष देह के केश, वस्त्र, दाढ़ी, सामान।
जीवन के साधन जितने हैं करती हूं उनका निर्माण॥
सदा प्रयास यही मेरा है मेरे से जो मोह करे।
तृष्णा-जनित कष्ट पीड़ा से प्रतिपल वह बस रहा घिरे॥
जितनी जग में भरी वेदना, करुणा भरी कहानी है।
मृत्यु, विनाश सभी की लीला मेरी अमिट निशानी है॥
सत्य समझ मैंने भी मानव से प्रपंच खिलवाड़ किया।
पर वह इतना दूषित तेरे से तुलना में भी कम क्या॥
मैं मानव विलास साधनों का ही साथ बढ़ाती हूं।
पर भीतर से जर्जर करने में न तनिक सकुचाती हूं॥
तुम तो एक बार आती जीवन में मैं आती बहु बार।
मैं विलास की दास्य भावना का डाले कन्धों पर भार॥

मृत्यु—

लेती हूं मैं शपथ धर्म की मुझको तेरे पर विश्वास।
तू मेरी है सच्चा भगिनी! मैं क्यों होऊं पुनः निराश॥
कथन सत्य है तेरा सचमुच माना मैंने मरण समान।
नहीं तुम्हें आवश्यक कोई प्रस्तुत करना यहां विधान॥
किसी कुल पुरोहित की पत्री यहाँ न दिखलानी होगी।
मेरी तुम हो सगी बहिन! फिर कैसे मनमानी होगी॥
भोगवाद की सफल नायिका, करती मम सेवा दिन रात।
मुग्ध किये हो जग का कण कण कोटि कोटि जन करती घात॥
मेरे संग रहो सजनि! तुम में मुझ में है अन्तर क्या?
कर दें सारा विश्व विकल कैसा है अनुपम द्वन्द्व मचा॥
मैंने अपना कार्य भार तुमको सौंपा है बारम्बार।
आओ एक साथ खेलें हम, सदा विश्व पर करें प्रहार॥

पंजीकरण सं. ए. ६०

ज्येष्ठ १८ शक १८८० ८ जून ५८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'

५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ.

टेलीफोन २४११ तार: 'आर्यमित्र'

औद्योगिक चर्चा

भारत का नमक उद्योग

स्वतन्त्र भारत में नमक के उत्पादन तथा निर्यात में सन्तोषजनक वृद्धि हो रही है। —सम्पादक

भारत में नमक के उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है। पिछले तीन साल में जितना नमक विदेशों को भेजा गया, उससे काफी विदेशी मुद्रा की आय हुई। १९५७ में सबसे अधिक निर्यात हुआ और २ करोड़ २० लाख मन नमक विदेशों को भेजा गया। १९५१-५२ से भारत में अपनी जरूरत भर का नमक तैयार होने लगा और फालतू नमक विदेशों को भी जाने लगा।

भारत में नमक का कुल उत्पादन १९५६ में ८ करोड़ ८९ लाख मन था, किन्तु १९५७ में यह बढ़कर ९ करोड़ ८३ लाख मन हो गया।

सरकार ने नमक उद्योग को बढ़ाने के लिए अनेक कार्य किये हैं। इसी लिए नमक जांच समिति भी नियुक्त की गई है। यह समिति नमक के उत्पादन, नमक पर कर, छोटे उत्पादकों की छूट, अच्छी किस्म के नमक, नमक सहकारी समितियों के संगठन तथा मजदूरों की भलाई आदि के सम्बन्ध में जांच और विचार कर रही है।

सरकार ने पिछले अप्रैल में हिन्दुस्तान नमक कम्पनी नामक एक कारपोरेशन की स्थापना की है। यह कम्पनी सांभर, खड़गोड़ा तथा मण्डी में नमक के सरकारी कारखानों को अपने हाथ में लेगी। यह नमक तथा उसके उप पदार्थों को बनाने और उनके उपयोग का प्रबन्ध करेगी।

नमक पैदा करने वाले इलाकों के क्षेत्रीय नमक मण्डल इस बात पर विचार कर रहे हैं कि नमक कर का उपयोग नमक उद्योग को बढ़ाने में किस प्रकार किया जाए।

भारत में अधिकांश नमक बम्बई, राजस्थान, मद्रास तथा आंध्र में तैयार किया जाता है। इन राज्यों में १९५७ में क्रमशः ५ करोड़ २० लाख मन, ९३ लाख मन, १ करोड़ ७२ लाख मन तथा ५५ लाख मन नमक तैयार किया गया।

सेंधा नमक केवल हिमाचल प्रदेश में मण्डी में होता है। वहां प्रतिवर्ष लगभग एक हजार मन बिना साफ किया हुआ सेंधा नमक निकाला जाता है। जांच से पता चला है कि यदि वैज्ञानिक ढंग से काम किया जाए तो मण्डी से प्रतिवर्ष ६६ हजार टन साफ किया हुआ नमक दस साल तक मिल सकता है।

सरकारी कारखानों में तैयार नमक पर प्रतिमन साढ़े तीन आना शुल्क लिया जाता है। किन्तु उन गैर सरकारी कारखानों के जिनके पास सौ एकड़ से ज्यादा भूमि है, नमक पर प्रति मन दो आना शुल्क वसूल किया जाता है।

छोटे उत्पादकों तथा सहकारी समितियों को बढ़ावा देने के लिए सन् १९५६ से शुल्क की दर इस प्रकार निर्धारित की गयी है कि बड़े उत्पादकों को अधिक और छोटे उत्पादकों को कम देना पड़े। दस एकड़ से कम क्षेत्र वालों से शुल्क बिल्कुल नहीं लिया जाता। ५० से १०० एकड़ क्षेत्र वाली सहकारी समितियों से १ आना प्रति मन की दर से लिया जाता है। इस प्रकार छोटे उत्पादकों को सहकारी समितियां बनाने की प्रेरणा मिलती है। पिछले साल बम्बई, मद्रास तथा कलकत्ता में ६ नयी सहकारी समितियां बनीं।

(सूचना विभाग, भारत सरकार)

(पृष्ठ १५ का शेष)

का बढ़ावा अपने आप स्वीकार नहीं कर रहे ह ? दूसरी बात कुछ बड़े लोग यह कहते हैं कि दूसरी भाषा के लोग इस आन्दोलन से हिन्दी भाषा पर यह आरोप लगायेंगे कि जिस प्रकार पजाबी पढ़ने से हिन्दुओं को अड़चन हो रही है वैसे ही हम हिन्दी पढ़न में है। और भाषा स्वातन्त्र्य की दृष्टि से हम भी हिन्दी नहीं पढ़ेंगे, बड़ा डर बताया जा रहा है। यदि यह डर है ता भी हिन्दी राष्ट्र भाषा बन कर कार्य साधेगी जो रियासतो व बड़ी बड़ी जमीदारी तथा जागीरदारी खत्म करके राष्ट्र वादिता के पनपने में काम आई है। मैं आशा करता हू कि राष्ट्र भाषा के गौरव की आन्च पहुँचाने वाला कोई भी व्यक्ति उतना ही निन्दनीय समझा जावेगा जितना कि राष्ट्र की सीमा पर हमला करने वाला या भारत विभाजन का भाव पैदा करने वाला चाहे जिन्ना अथवा मास्टर तारा सिंह कोई भी क्यों न हो।

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

आर्य्य जगत में सब से अधिक छपने वाला आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख्य पत्र

ओ३म्

आर्य्य-मित्र

वर्ष ६०

अङ्क २०

लखनऊ–रविवार ज्येष्ठ २५, शक संवत् १८८०, आषाढ़ कृष्ण १३, वि० २०१५ (१५ जून १९५८) दयानन्दाब्द १३४ सृष्टिसंवत् १९७२९४९०५

सम्पादकीय

प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य

सार्वभौम सुख शान्ति के लिए आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्मित आर्यसमाज के दस नियमों में से सातवां नियम यह भी है कि—'सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिये।" यह एक ऐसा नियम है जिससे विश्व की बड़ा से

सरकार रद्दी की टोकरी में फेंक कर इसे भारतीय कायरता कहे और हम पर दुगना जुल्म ढाती जाय।

पाकिस्तान भारत के साथ जो कुछ भी कर रहा है वह कोई नई बात नहीं और न कुछ आश्चर्यजनक है। पाकिस्तान की गन्दी राजनीति का सबको पता है कि वह भारत को व्यर्थ परेशान करके अशान्त बनाये रखना चाहता है और मौका मिलने पर काश्मीर तथा कुछ अन्य भारतीय भू भागों को भी अपने अधिकार में करना चाहता है। आश्चर्य यह है कि भारत सरकार सबकुछ जानकर भी अनजान बनी हुई है, नित्य ही पाकिस्तान की ओर से भारतीय सीमा पर छोटे बड़े हमले

निकला। राष्ट्र संघ में जाकर धर्मानुसार इन समस्याओं को सुलझाने के लिए भी भारत सरकार ने अत्यधिक प्रयास किया पर व्यर्थ सिद्ध हुआ।

प्रतीक्षा की भी एक सीमा होती है और धैर्य का भी एक बांध होता है अधिक समय तक प्रतीक्षा करना और आवश्यकता से अधिक धैर्य धारण करना दोनों ही का परिणाम राष्ट्र को हानि के रूप में भुगतना पड़ सकता है। अत सच्ची स्थिति यह है कि अब प्रीतिपूर्वक और धर्मानुसार कार्य करने का समय बीत गया। इन दोनों तरीकों से अब कोई लाभ होने की सम्भावना तो रही नहीं, हां हानि होने का भय अवश्य बढ़ रहा है।

है, पारस्परिक मनमुटाव कौन करे।

थोड़ी देर के लिए विशेष परिस्थिति में ऐसा सोचना ठीक भी है परन्तु आर्य समाज मन्दिर की मान-मर्यादा के लिए यह प्रथा ठीक नहीं है कि आर्य समाज मन्दिरों में बारात ठहरने दिये जांय क्योंकि आर्य समाज मन्दिर एक पवित्र स्थान है, प्रभु भक्ति और ईश्वरोपासना का स्थल है, वहां वेदपाठ और हवन यज्ञ करने की वेदी होती है। इनकी पवित्रता की रक्षा तो प्रत्येक स्थिति में होनी ही चाहिए अन्यथा मन्दिर का महत्व ही कहां रहा?

जहां तक बारात ठहराने का प्रश्न

सुनना नहीं पड़ा। ...जिले की घटना तो अभी कल की है जहां सात भारतीय पाक पुलिस द्वारा मार डाले गये। क्या बात है कि पूरब और पश्चिम दोनों ओर से पाकिस्तान की पुलिस भारतीय सीमा पर गोलाबारी करती जाय और भारतीय नेता प्रत्येक बार पाकिस्तान सरकार के पास विरोध पत्र भेजते जांय, जिसे पाक

में है कि क्या आज हिन्दू जाति में कांग्रेस की प्रतिष्ठा घटती जाती है। अत अब भी समय है कि भारत सरकार अपनी लचर नीति का त्याग करे।

पाकिस्तान के साथ अनेकों समस्याओं को सुलझाने के लिए भारत सरकार ने प्रीतिपूर्वक बहुत प्रयास किया। परिणाम इसका विपरीत ही

हुए भी समयानुसार इच्छा के प्रतिकूल कुछ कार्य करने पड़ते हैं और इसी परिस्थिति में आर्य समाज मन्दिरों के अधिकारी स्थानीय लोगों को बारात ठहराने के निमित्त समाज मन्दिर का उपयोग करने की अनुमति दे देते हैं, यह सोच विचार कर कि उन्हें आये दिन आर्य समाज के कार्यों के लिए जनता से सहायता लेनी ही

समाज मन्दिरों को बारात ठहराने के लिए न दें और प्रतिनिधि सभा की ओर से भी इस प्रकार का आदेश सभी आर्य समाजों को जाने चाहिए। हमारे पास कुछ आर्य समाजों से ऐसी शिकायतें आयी थीं जिन्हें अलग अलग प्रकाशित करना उचित न समझ कर इस विषय पर हमने यह टिप्पणी लिख दी। ★

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव

प्रधान—पूज्य स्वामी अभेदानन्द जी महाराज (बिहार)
उप प्रधान—श्री पं० नरेन्द्र जी (आन्ध्र प्रदेश)
" " पं० अलगूराय शास्त्री एम० पी० (उत्तर प्रदेश)
" , बाबू पूर्णचन्द जी एडवोकेट (उत्तर प्रदेश)
मन्त्री—श्री रामगोपाल जी (दिल्ली)
उप मन्त्री—श्री पं० प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी० (उत्तर प्रदेश)
" " प्रो० रतन सिंह एम० ए० (उत्तर प्रदेश)
कोषाध्यक्ष—श्री बालमुकुन्द आहूजा (दिल्ली)
पुस्तकाध्यक्ष—श्री नरदेव स्नातक एम० पी० (उत्तर प्रदेश)

उत्तर प्रदेशीय न्यायोप सभा

अन्तरङ्ग सभा दिनांक १८।५।५८ में उत्तर प्रदेशीय न्यायोपसभा के लिये निम्न महानुभाव न्यायाधीश नियुक्त हुए:—

१—श्री पूर्णचन्द जी एडवोकेट आगरा
२—" जगनन्दन लाल जी एडवोकेट प्रयाग
३—" उमाशंकर जी एडवोकेट फतेहपुर
४—" चन्द्रनारायण जी एडवोकेट बरेली
५—" फूलन सिंह जी शिकोहाबाद
६—" मोहनलाल जी आर्य आगरा
७—" रामप्रसाद जी आर्य मैण्डू (अलीगढ़)
८—" शिवदयालु जी सदर मेरठ
९—" आचार्य विश्वश्रवा. जी बरेली
१०—"मती शकुन्तलादेवी जी गोयल मेरठ
११—" रामबहादुर जी आर्य पूरनपुर
१२—" रामजी प्रसाद जी गुप्त मुगलसराय
१३—" शिवदत्त जी कानपुर
१४—" शिवलाल जी आर्य बुलन्दशहर
१५—" कर्णसिंह ओंकार जी मथुरा
१६—" रघुनन्दन स्वरूप जी एडवोकेट मेरठ
१७—" विश्वेश्वरनाथ जी वर्मा लखनऊ
१८—" ईश्वर दयालु जी आर्य बिजनौर

—सभा मन्त्री

गुरुकुल वृन्दावन में नए ब्रह्मचारियों का प्रवेश

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन बालकों की शिक्षा के लिए एक उत्तम शिक्षा संस्था है जो स्वल्पतम निर्वाह व्यय में उच्चतम निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करती है। शिक्षा के साथ-साथ वह ब्रह्मचारियों के चरित्र निर्माण पर विशेष बल देती है। गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने वाले बालकों को आश्रम में ही रहना होता है इसलिए उनको अपने गुरुजनों के साक्षात् सम्पर्क का अधिकाधिक लाभ उठाने का अवसर मिलता है। गुरुकुल की अधिकारी तथा शिरोमणि परीक्षाएं क्रमशः हाई स्कूल तथा बी० ए० के बराबर मान्य हैं।

ग्रीष्मावकाश के बाद १ जुलाई से गुरुकुल के नवीन शिक्षा सत्र का कार्य आरम्भ हो जायगा। इसी अवसर पर नवीन बालकों का प्रवेश होगा। आठ से दस वर्ष तक की आयु के बालक प्रविष्ट हो सकते हैं भोजन तथा व्यवस्था व्यय मिलाकर २५ रु० मासिक व्यय लिया जाता है। जो महानुभाव अपने बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट कराना चाहें वह पत्र द्वारा सूचना देकर प्रवेश पत्र मंगा लें और स्थान सुरक्षित करा लें।

—नरदेव स्नातक एम. पी.
मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन

श्री पं० शिवदयालु जी

श्री प० शिवदयालु जी भूतपूर्व मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का केन्द्र स्थान अब मेरठ रहेगा। मेरठ में आपका पता—तिलक पार्क, सदर मेरठ होगा। सार्वदेशिक व आर्य सभा का काम भी आप वहीं से करेंगे। उत्सवों पर बुलाने के लिए भी उपरोक्त पते से लिखें।

—रामजीप्रसाद गुप्त
कोषाध्यक्ष, सभा

जिला सभा अलीगढ़

समाजों की शिथिलता को दूर करने के लिए प्रचार को आवश्यक समझ कर जिला प्रचार के लिए पं० बिहारीलाल शास्त्री और श्री सच्चिदानन्द शास्त्री को मैंने राजी कर लिया है। अतः समाजें यदि ३०) का खर्च वहन करें तो एक उपदेशक और १ भजनीक द्वारा प्रचार की व्यवस्था हो सकती है। समाजें शीघ्र सूचित करें।

—महादत्त शास्त्री

मैनपुरी आर्य सम्मेलन में

मुख्य उप प्रधान सभा का भाषण

३०, ३१ मई व १ जून ५८ को आर्य समाज बेवर में मैनपुरी जिला नवम आर्य सम्मेलन बड़े समारोह के साथ आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मुख्य उपप्रधान प्रसिद्ध आर्य विद्वान्, विचारक और नेता श्री बाबू पूर्णचन्द जी एडवोकेट आगरा की अध्यक्षता में तथा सभा मन्त्री ठाकुर फूलनसिंह जी की देखरेख में सम्पन्न हुआ। आप ही ने सम्मेलन का उद्घाटन भी किया। सभा में हरिजन सम्मेलन, आर्य परिवार सम्मेलन तथा महिला सम्मेलन का विशेष रूप से आयोजन किया गया। जिला मैनपुरी, फर्रुखाबाद और इटावा के आर्य जन सम्मेलन में पधारे थे जिन्हें आपने चरित्र निर्माण के कार्य के लिए उत्साहित किया। आर्य समाज में विशेष प्रगति लाने के लिए १ जून को आपने सार्वजनिक सभा में भाषण किया। इस अवसर पर श्री पूर्णचन्द जी ने तीन व्याख्यान दिये। एक प्रभावशाली भाषण में आपने आर्य समाज की उन्नति पर तथा अगले वर्ष के कार्यक्रम पर बल दिया जिसका बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। ठाकुर फूलनसिंह ने सभा को ठीक तरह से निभाया। सम्मेलन से पूर्व स्वामी नारायणानन्द जी ने ४ रोज तक वेद की कथा कही। ३० मई को बड़े शान से साथ सभापति का जलूस नगर में निकाला गया। हिन्दी आंदोलन के नेता स्वामी रामेश्वरानन्द, पं० अमरसिंह, पं० ओ३म् प्रकाश शास्त्री, श्री देशराज जी, श्रीमती हेमलता देवी आदि के भाषणों से जनता बहुत प्रभावित हुई। आर्य समाज का अच्छा प्रचार हुआ।

—मोहनलाल मन्त्री

नकुड़ का शिविर स्थगित

नकुड़, सहारनपुर में प्रान्तीय आर्य वीर दल का जो शिक्षण शिविर १० से ० जून तक लगने वाला था वह अर्थाभाव के कारण स्थगित हो गया है। —सुखदेव शास्त्री

आर्य वीर दल उभाव मण्डल

श्रीनगर, मुहल्ला बाकीपुर, बांगर मऊ, सूबेदार खेड़ा, और बघवाकोला इन पांच स्थानों में दल की शाखाएं चल रही हैं। आगामी मास में जिले के आर्यवीरों का एक सम्मेलन करने का विचार है। —जयपाल द्विवेदी

आचार्य नरदेव शास्त्री का यह लेख आर्य समाज के नेताओं के विचारार्थ यहां प्रकाशित किया जाता है। —सम्पादक

यैसे तो आर्य समाज का उत्तरदायित्व बड़ा भारी है—आप ही समझ लीजिए कि कितना बड़ा उत्तरदायित्व है यह संसार के उपकार करने का काम अर्थात् शारीरिक मानसिक और आत्मिक उन्नति करने का काम—

राष्ट्रीय भावना के जन्मदाता स्वामी दयानन्द हैं। उनकी यह भावना धर्म निरपेक्ष नहीं थी। धर्म हीन भी नहीं थी, अपितु धर्म के दृढ़ आधार पर थी धर्म निरपेक्ष शब्द धर्म के प्रति उदासीनता दिखलाता है। धर्म हीनता नास्तिकता का द्योतक है। स्वामी दयानन्द प्रतिपादित धर्म एकांगी नहीं था, उसमें धर्म, अर्थ, काम मोक्ष यह चतुष्पाद् धर्म था, कोई नया धर्म नहीं था वही धर्म था जिसका वेदों में प्रतिपादन है। वही धर्म था जिस पर अनन्त काल से हमारे अति प्राचीन पूर्वजों की परम्परा चली आ रही थी—

उनका आदेश था कि—

येनास्य पितरो याता। येन याता पितामहाः॥ तेन यायात्सतां मार्गम्। तेन गच्छन्न रिष्यते॥

(मनु)

जिस मार्ग से हमारे पूर्वज चले, ऋषि मुनि महात्मा चले आये वही सज्जनों का मार्ग है, उसी पर चलते रहना चाहिए, उस पर चलते रहने से किसी प्रकार की हानि नहीं हो सकती।

स्वामी दयानन्द के मिशन का मुख्य तत्व यही है कि—

धर्म मुख्य है वह एकाङ्गी नहीं है उसी को आगे रखकर चलो—

मुख्य धर्म=वैदिक धर्म=प्रमुख धर्म तदनुसार ही अर्थ (संसार के ऐश्वर्य) तदनुसार ही काम अर्थात् राजपाट आदि इच्छा पूर्ति तदनुपूर्वक ही मोक्ष प्राप्ति (निःश्रेयस) (अभ्युदय) उनके इस व्यापक सार्वभौम धर्म में राजधर्म आता है राजधर्म मुख्य धर्म का एक प्रमुख अङ्ग है। जब राज्य में प्रमुख धर्म के अनुरूप चलता है तब सर्वत्र सुख ही सुख मिलता है, सर्वत्र ऋद्धि सिद्धि समृद्धि होती है। जहां राजधर्म ने प्रमुख धर्म का साथ छोड़ा कि सर्वत्र अशान्ति ही अशान्ति रहती है जैसा कि आज कल पाश्चात्य राष्ट्रों में हो रहा है। उसी की छाया आज हमारे भारत पर पड़ रही है—

सामाजिक-राष्ट्रीय चर्चा

नये प्रधान सभा का सन्देश

और

आर्य समाज का उत्तरदायित्व

(आचार्य श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, ज्वालापुर)

★

नये प्रधान जी का सन्देश

प्रधान जी कहते हैं—

(१) राष्ट्रीय चरित्र का ह्रास हो रहा है।

(२) सदाचार संकुचित होता जाता है।

(३) राष्ट्र सत्ता वर्तमान राजनीति के दुर्दुम्तर पङ्क में निमग्न है।

प्रधान जी कहते हैं—

'राष्ट्र रथ को संकट से बाहर निकालने के लिए हम पूर्ण प्रयत्न करना होगा।

"राष्ट्र की राजनीति को विमल तथा जनमत को सबल बनाकर भारत को आदर्श राष्ट्र बनाया जा सकता है—'

प्रश्न यह है कि राष्ट्र रथ को दुर्दुम्तर पङ्क से बाहर निकालने के लिए प्रयत्न कौन करेगा? इसका उत्तरदायित्व किसके सिर पर रहेगा। स्पष्ट है कि इस विषय में उत्तरदायित्व आर्य समाज पर ही रहेगा। उसी को पूर्णरूपेण प्रयत्नशील रहना पड़ेगा क्योंकि उसकी स्थापना ही इसलिए हुई थी।

प्रश्न यह है कि उत्तरदायित्व आर्य समाज का ही क्यों? इसलिए कि आर्य समाज ने ही अपना यह जो बनाइश्य ऐसा बना रखा है, उसके लिए ही प्रयत्नशील रहा है। चाहे वह इस समय परिस्थितियों के कारण किंकर्तव्य विमूढ़ होकर शिथिल सा पड़ गया है पर है सब उत्तरदायित्व उसी का।

क्या यह उत्तरदायित्व उनका नहीं है जिनके हाथों में सत्ता है?

आर्य समाज में महत्ता है चतुर्मुखी धर्म के प्रतिपादन के कारण। सत्ता है कामसियों के हाथ में पर महत्ता को छोड़ कोरी सत्ता क्या कर सकता है जो वह कर रहा है, जो वह कर सकता है जैसा कि जिस रूप में होता हुआ हमको दिखलाया पड़ रहा है, जिसकी कि हम शिकायत करते रहते हैं। आर्य समाज भी कोरी धर्म की महत्ता के नाम पर कब तक श्वास प्रश्वास लेता रहेगा क्योंकि सत्ता के बिना कोरी महत्ता अर्थ शून्य सी लगती है।

जब वर्तमान युग का धर्म शून्य विज्ञान संसार को विनाश की ओर ले जा रहा है इसी प्रकार सत्ता विहीन आर्य समाज भी स्वस्थान से खिसक रहा है। उसका प्रयत्न यही होना चाहिए कि वह कोरा धर्म निरपेक्ष अथवा धर्म शून्य सत्ता को स्वमहत्ता के साथ जोड़े।

इस आर्य समाज का प्रारम्भ महान् था। महापुरुष के हाथों प्रारम्भ हुआ था महान उद्देश्य को लेकर प्रारम्भ हुआ था, स्वामी जी के पीछे आर्य समाज का प्रचार युग सुवर्ण युग था। आर्य समाज इस जोर से उठा था कि संसार चकित रह गया था प्रचार युग तो विचार क्रान्ति का काम करता है। इस विषय में आर्य समाज सफल हो वह भारतवर्ष का मस्तिष्क बदलने में सफल रहा पर कोरे प्रचार से अधिक शिक्षा का काम अधिक महत्व का था। प्रचार युग के पश्चात् शिक्षा युग आया यह भी बड़े वेग से चला। इस शिक्षा युग ने भी संसार का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया पर ली, स्वराज्य के अन्त ही यह शिक्षा युग ढीला पड़ने लगा अर्थात् जिस यन्त्र से अथवा जिन यन्त्रों से आर्य समाज के मिशन को आगे बढ़ाने वाले यति व्रती त्यागी तपस्वी विद्वान निकलते से यन्त्र के कल पुर्जे ढीले पड़ने लगे इसलिए मशीन भी ढीली पड़ने लगी—आत्म विश्वास ढीला पड़ने लगा और लोग कह रहे हैं कि आर्य समाज अब किस युग में चरण रख रहा है—असली बात यह है कि यह आत्म निरीक्षण का काल है

यह आत्म निरीक्षण यथार्थ रूप में हो तो इसके द्वारा मार्ग शुद्धि हो सकती है फिर हमारा मार्ग निष्कण्टक हो सकता है फिर हम पूर्ववत् वेग से आगे बढ़ सकते हैं—

मैं समझता हूँ कि यदि राष्ट्रोत्थान की जिम्मेदारी आर्य समाज पर है तो मैं यह भी निःसंकोच लिखूंगा कि भारत का वर्तमान चरित्र हीनता, सदाचार की संकीर्णता, उच्छृङ्खलता आदि के लिए भी आर्य समाज ही उत्तरदायी है।

वर्तमान सरकार क्यों नहीं? वर्तमान सरकार भी है क्योंकि समस्त राजसत्ता उसी के हाथों में केन्द्रित है। उसी सरकार को सावधान करके भारतीय आचार और धर्म के अनुकूल राज्य बनाने के लिए विवश करना अब समसामयिक का काम है। यह कार्य तभी हो सकता है जब स्वयं आर्य समाज शारीरिक मानसिक आध्यात्मिक बल से लैस हो परिपूर्ण हो।

वैदिक धर्म के सिद्धान्त सब मानते हैं पर उन सिद्धान्तों को आचरण में ढालने की शक्ति=सत्ता आर्य समाज में कहाँ है?

पर आर्य समाज तो प्रारम्भकाल से ही कहता चला आया है—सदा सदा यही दुहराता रहा है कि आर्य समाज धार्मिक संस्था है उसका राजनीति से राजपाट से कोई सम्बन्ध नहीं। यह घोषणा इतनी अधिक दृढमूल हो गई है कि यदि अब आर्य समाज स्वयं इस घोषणा अथवा इस घोषणा के अर्थ को बदलकर राजनीति में कूदना चाहे तो वह यह कर नहीं सकता। तब आर्य समाज के पास एक अध्यात्मबल ही ऐसा सा रह जाता है जिसके बल पर वह क्रान्ति ला सकता है। संसार इसकी ओर आकृष्ट हो सकता है। संसार में दो ही तो बल हैं एक राज सत्ता (क्षत्र=क्षात्रबल) दूसरा अध्यात्म बल (ब्रह्म बल) हम सत्ता बल तो चाहते हैं पर उससे उदासीन रहते हैं—अध्यात्मबल है नहीं तब हममें आकर्षण ही क्या रहा है? हमारा समाज केवल समाज सुधारक अथवा कुरीति निवारक समाज कब तक बना रहेगा।



दार्शनिक चर्चा

यही जीवन है, यही जीवन का पथ है, यही मानव की कहानी है, आदि काल से यही होता आया है। इस जीवन पथ पर मोत्साह चलते रहिए और मां मेधा से प्रार्थना कीजिए कि वह अपनी गोद में आपको विश्राम दे।

— सम्पादक

जीवन-पथ

डा० मुन्शीराम शर्मा, एम. ए. पी एच० डी०, डी०-लिट्० कानपुर

न जाने कितने दिन, कितने मास कितने वर्ष, कितने युग कितने मन्वन्तर और कितने कल्प एक एक करके व्यतीत हो गये। कब से मैं इस जीवन पथ पर अग्रसर हुआ था और इस पथ का अन्त, कब होगी? चलते चलते पैर थक गये, पर थकने पर भी कोई अन्दर बैठा हुआ बराबर चलने के लिए प्रेरित कर रहा हो, उत्साह बढ़ा रहा हो और अभिनव शक्ति प्रदान कर रहा हो।

चला जा रहा हूं, पर इस चलने का क्या उद्देश्य है? मेरा गन्तव्य स्थल कहाँ है? मैं किधर जा रहा हूं? कभी कभी ये प्रश्न अन्तस्तल में उठ कर मेरे मन को झकझोर देते है। कुछ प्रकाश आता है, पर फिर अन्धकार। क्या मैं इस पथ को भी पहिचान न सकूंगा?

यात्रा में न जाने कितने भवन इन आँखों ने देखे। कितने अभिनव सुषमाशाली और कितने वीभत्स दृश्य इन आँखों के सामने आये। निन्दा एवं प्रशंसा, कोमलता एवं कठोरता, सुगन्ध एवं दुर्गन्ध, कटुता एवं मधुरता, शीत एवं उष्णता, दुःखरता आदि के न जाने कितने द्वन्द्व इस मानस ने सहन किये। न जाने कहाँ कहाँ से ठोकर कितनी ठोकरें खाकर, कितना लड़खड़ाता हुआ, कितना गिड़गिड़ाता हुआ गिरता पड़ता आज इस अवस्था को प्राप्त हुआ हूं। न पहले चैन था, न आज और न जाने कब तक ऐसा ही बेचैन बना रहूंगा। कब इस अशान्ति का शमन होगा? कब इन दुःखों का दमन होगा? कब शान्ति से बैठकर सुख की सांस ले सकूंगा।

पथ की यात्रा है। यदि इसका आदि है, तो अन्त भी एक दिन अवश्य होगा। बीच की बेचैनी से पूर्व विश्राम था, तो अन्त में भी वह अवश्य आवेगा। अतः चला चलूं। वहीं बैठे रहने से तो व्यथा एवं विषाद के बवंडर ही घेरे रहेंगे। आगे बढ़ गया, तो सम्भव है कहीं सुखदायिनी शीतल छाया की उपलब्धि हो जाय, तो चलूं।

हाँ, चलना ही है। पर यह बेबसी, यह दीनता मुझे किधर ले जायगी? इस बवंडर और अन्धकार में कहाँ कहाँ भटकूंगा? क्या कोई ऐसा प्रकाश नहीं जो मुझे सही मार्ग से चलाये? सुना है, पूर्वज पितरों और देवों ने मेधा के प्रकाश का सहारा लिया था जिससे वे इस तम के पार हो गये थे इस विनाशकारी बवंडर से बच गये थे, व्याकुलता से छूट कर आनन्द प्राप्त कर सकते थे। मेधा! ओ मंगल कारिणी मेधा! तुम्हारा ही अंचल मैं भी पकड़ता हूं। दुर्बुद्धि मुझसे दूर हो। कुमति! मेरे कोने कोने से हट जाओ सुमति! तुम्हारी ही शरण पड़ा हूं। मुझे इस दुर्द्वन्द्व परिस्थिति से निकालो मेरा उद्धार करो। तुम्हारा आलोक ही असत् एवं सत् का विवेक कराता है, मरण एवं जीवन, मरण एवं अमृत का भेद सिखाता है और ऐसा संकल्प जगाता है जिससे असत्, अन्धकार और मृत्यु के बन्धन कट जाते हैं। यही तो मुझे अब तक सताते रहे हैं। यात्रा में इनके अतिरिक्त और मुझे मिला ही क्या है? अतः इनसे त्राण करने वाली मां मेधा! अपनी गोद में विश्राम दो। मेरे जीवन-पथ को प्रशस्त करो। उस में प्रकाश भरो, इस यात्रा का अन्त तो हो।

नया चुनाव

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, एम. ए.

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का नया चुनाव हो गया। साहित्य की नीति पर विजय रही। श्री हरिशङ्कर जी शर्मा के सभापतित्व पर साहित्यिक क्षेत्रों में अवश्य आह्लाद होगा। नये अधिकारी सब, मेरे मित्र हैं जैसे कि पुराने थे, यह प्रश्न उठाना निरर्थक है कि कौन कितना अधिक मित्र है। क्योंकि मेरे ऊपर तो सभी की कृपा दृष्टि रहती है, श्री फूलनसिंह जी भी सभा की सेवा में ही बूढ़े हो गये, फिर भी मेरी दृष्टि में तो नौजवान ही है।

हां एक बात है, यदि मेरी भावनायें गत शताब्दी की होती तो चुनाव के अवसर पर मैं अपने मित्रों के सिर पर जूती भूमी उतार कर आग में डाल देता बधाई की अपेक्षा मैं इस टोने की अधिक उपयोगिता समझता हूं। चुनाव तो हर साल होते हैं और होने चाहिए इस लिए नहीं कि हम वर्तमान अधिकारियों से असन्तुष्ट हैं अपितु इसलिए कि नये लोगों को अनुभव हो और मनुष्य निर्माण का काम जारी रहे, परन्तु ऐसा होता नहीं।

क्या कभी किसी ने सोचा है कि यह क्यों होता है? हमारे अधिकारियों पर दृष्टि रखने और उनके सिर पर हाथ रखने के लिए एक विशालकाय अन्तरङ्ग सभा है, समस्त उपस्थित सदस्यों की लगभग एक चौथाई या शायद कुछ ही कम. इनके दो काम हैं। एक तो हर उचित कार्य में हाथ बटाना, दूसरे किसी अनुचित कार्य को न होने देना, चौकीदार कहना तो अशिष्ट होगा अतः यों कहना चाहिए कि हेल्थ-आफीसर भी हैं और डाक्टर भी। दोनों के होते हुए फिर रोग इतने क्यों बढ़ जाते हैं और क्यों बढ़ने दिये जाते हैं कि नये चुनाव पर ही भांडा फूटता है? इसके नैतिक कारण भी हैं और मनोवैज्ञानिक भी, क्या अभी हम अपनी वास्तविक परिस्थिति को समझ नहीं पाये? क्या हम जिसकी आशा करते हैं वह 'सम्भव' की सीमा के बाहर है? यदि ऐसा है तो हम जनता को इस विषय में सुविज्ञ क्यों नहीं बनाते? क्या हम भावुक अधिक हैं और व्यावहारिक कम? क्या वास्तविक और काल्पनिक भावनाओं के बीच में जो खाई है वह इतनी गहरी है कि हम पाट नहीं सकते? क्या बात है कि हमारा सायंकाल हमारे प्रातःकाल की अपेक्षा इतना असुखद होता है? क्या यह सत्य नहीं है कि हम आशायें दिलाने में जितने चतुर हैं उतने उनको पूरा करने में नहीं? और क्या साथ ही यह ठीक नहीं कि जनता को भी आकाश के फूल मिट्टी में उपजने वाले फूलों से अधिक प्रिय हैं इसलिए बहुत से लोगों के लिए दो और दो चार बताना नीतिज्ञता के विरुद्ध प्रतीत होता है।

> अंजुमशनास को भी,
> खलल है दिमाग का।
> पूछा अगर जमीं की,
> कहे आस्मां की बात॥

अर्थः ज्योतिषी का मस्तिष्क बिगड़ गया है, उससे जमीन की बात पूछो तो आसमान की बात बताता है।

परन्तु ज्योतिषी बेचारा क्या करे जब जनता का दिमाग ही आसमान पर हो और वह जमीन की बात सुनना ही पसन्द न करे।

सबसे पहले तो जनता के दिमाग को जमीन पर लाना है, आकाश गंगा में स्नान करने वालों को चाहिये कि पहले अपने घर के कुंआ और गांव के नदी नालों पर दृष्टि डालें।

सम्पादकीय सूचनाएं

१—लेखकों से निवेदन है कि वे विविध (सैद्धान्तिक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, साँस्कृतिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक, सामयिक, आर्थिक आदि) विषयों पर अपने लेख आर्यमित्र में प्रकाशनार्थ भेजें।

२—सम्पादकीय सुविधा के लिए कृपया ध्यान रखिए कि लेख यथासंभव संक्षिप्त हों जो दो कालमों में आ सकें, कागज के एक ही ओर चौथाई छोड़ कर स्याही से खुले अक्षरों में स्पष्ट लिखे हों, या यथासम्भव टाइप किए हुए हों।

३—अपनी रचनाएं भेजते समय कहानी लेखकों और कवियों को भी यही बात स्मरण रखनी चाहिये।

४—बाल जगत, महिला मण्डल, स्वास्थ्य सुधा, विज्ञान वार्ता, जीवन ज्योति सुझाव और सम्मतियां आदि स्तम्भों के लिए भी दो दो कालमों के लघु लेखों की आवश्यकता है।

५—स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन की सूचना एक सप्ताह के अन्दर ही दी जायेगी और आठ नये पैसे के टिकट प्राप्त होने पर अस्वीकृत रचनाएं सात दिन के अन्दर लौटा दी जायेंगी।

६ हमारे पाठक समाजोन्नति सम्बन्धी प्रश्न भी पूछ सकते हैं। उनमें से उपयोगी प्रश्नों के उत्तर हम प्रति सप्ताह प्रकाशित किया करेंगे।

७—समय-समय पर किसी सामयिक प्रश्न पर हम अपने पाठकों की सम्मति भी प्रकाशित करेंगे।

८—आप अपनी कठिनाइयों को संक्षेप में लिखकर भेजें। हम उसे सम्बन्धित अधिकारियों तक पहुंचाने का यत्न करेंगे।

—सम्पादक

सामयिक चर्चा

जन-सेवक और जन-सहयोग

★ श्री महामाया प्रसाद

★ लेखक के शब्दों में 'पुलिस के सामने उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह जनता को उसकी सुरक्षा का विश्वास दिलाये'—पर वास्तव में बात ऐसी नहीं है। सरकार की विज्ञप्तियाँ चाहे कुछ भी कहें पर पुलिस कर्मचारियों का रवैय्या आज भी लगभग उतनी ही असहयोगात्मक और अनुत्तरदायित्व पूर्ण है जितनी ब्रिटिश शासन में थी। —सम्पादक ★

उत्तर प्रदेश के वर्तमान गृह-मन्त्री ने पुलिस अफसरों के साथ विचार विमर्श करते हुए अनेक बार इस बात पर जोर दिया है कि वे अधीनस्थ कर्मचारियों तथा जनता के प्रति अपने दृष्टिकोण एव व्यवहार को बदलें। गृह मन्त्री के उद्बोधन की आवश्यकता इसलिए हुई कि ब्रिटिश शासन की अवधि में पुलिस कर्मचारियों का जनता के प्रति रवैय्या असहयोगात्मक एव अनुत्तरदायित्वपूर्ण रहा और स्वतन्त्रता मिलने के बाद भी कुछ पुलिस अधिकारी और कर्मचारी पुरानी मनोवृत्ति के परिचायक बने रहे।

स्वतन्त्रता के विगत कुछ वर्षों में पुलिस प्रशासन की कार्य कुशलता बढ़ाने के लिए अनेक प्रयास किये गए। इस सम्बन्ध में दो महत्वपूर्ण योजनाएं सन् १९५६ में चालू की गयीं। इनमें से एक योजना जन सहयोग प्राप्त करने की एव दूसरी जनता की शिकायतों पर शीघ्रातिशीघ्र कारवाई करने की थी। पहली योजना के अन्तर्गत पुलिस ट्रेनिंग स्कूल, पुलिस ट्रेनिंग कालेज एव रेंज ट्रेनिंग केन्द्रों में विशेष व्याख्यानों का प्रबन्ध किया गया। इन व्याख्यानों में भाषण कर्ताओं ने यह बताया कि पुलिस तथा जनता के बीच सम्बन्ध सुधारने की तरफ लगातार ध्यान दिया जाता रहा जिसका परिणाम काफी उत्साहवर्द्धक रहा। गोरखपुर झांसी और कानपुर में इस सम्बन्ध में अनेक सफल आयोजन किये गए और जनता ने उनकी बड़ी प्रशंसा की। बड़ी बड़ी प्रदर्शिनियों में पुलिस के सम्बन्ध में सही सूचनायें तथा जानकारी कराने के उद्देश्य से पुलिस स्टाल लगाये गये। अनेक जिलों में "विनय पक्ष तथा 'अपराध निरोधक' सप्ताह मनाये गये। जिनके फलस्वरूप पुलिस और जनता के बीच की खाई कम हुई। बाढ़ के समय बहराइच, फैजाबाद, आजमगढ़, जौनपुर, बलिया, आगरा और मुजफ्फरनगर जिलों में पुलिस कर्मचारियों ने जनता की जो प्रशंसनीय सेवा की उसने भी उन्हें जनता के निकट लाने में सहायता प्रदान की।

जनता का विश्वास प्राप्त करने के लिए इस बात के विशेष प्रयत्न किये गये कि अपराध के मामलों की सही रिपोर्ट दी जाय और उन्हें सही-सही दर्ज किया जाय। पुलिस के उन कर्मचारियों एवं अधिकारियों के विरुद्ध कड़ी कारवाई की गयी जिन्हें अपराध घटा कर दिखाने या छिपाने का दोषी पाया गया। सभी वरिष्ठ अधिकारी इस बात के लिए प्रयत्नशील रहे कि रिपोर्ट लिखने के लिए जनता से किसी प्रकार की फीस आदि न ली जाय। इन प्रयत्नों के फलस्वरूप प्रदेश की जनता का पुलिस वालों में विश्वास बढ़ा।

कहना न होगा कि जनता का जन सेवकों की नेकनीयती एवं क्षमता में विश्वास होना जरूरी है, अन्यथा प्रत्येक व्यक्ति में सुरक्षा की उस भावना का अभाव होगा जिसका संकेत गृह मंत्री ने ग्राम सुरक्षा समितियों के द्वितीय वार्षिक समारोह की अध्यक्षता करते हुए किया था। गृह मंत्री जी ने उक्त अवसर पर कहा था कि 'इस स्वतन्त्र देश के प्रत्येक नागरिक की सुरक्षा होनी चाहिए ताकि वह शांतिपूर्ण वातावरण में जीवन व्यतीत कर सके। किन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं। पुलिस के सामने उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह जनता को उसकी सुरक्षा का विश्वास दिलाये।

प्रदेश के गांवों में ग्राम सुरक्षा समितियों का संगठन उक्त उद्देश्य की पूर्ति में बड़ी सीमा तक सहायक हुआ है। रायफल क्लबों की स्थापना भी इस दृष्टि से महत्वपूर्ण रही। समय-समय पर डकैती रोकने की कार्यवाहियों का व्यावहारिक प्रदर्शन गांवों में किया गया। इसके फलस्वरूप गांव वालों को आत्म रक्षा के उपायों की प्रशिक्षा भी मिली। इस दिशा में जो सफलता मिली वह इसी से स्पष्ट है कि कितनी ही बार डाकुओं के सशस्त्र गिरोहों का गांव वालों ने सामना किया और वे उन्हें पकड़ने या मार डालने में सफल हुए।

हाल में अपराधों की जांच करने एवं शांति व्यवस्था बनाये रखने में और अधिक तत्परता लाने के उद्देश्य से राज्य सरकार ने पांच बड़े शहरों में पुलिस कर्मचारियों को दो पृथक वर्गों में विभाजित करने का एक नया प्रयोग किया है। इसके फलस्वरूप अपराधों की जांच करने वाले अधिकारी अपराध स्थल पर अधिक शीघ्रता से पहुंच जाते हैं और उन्हें अपराधों की जांच करने तथा मुकदमों की पैरवी करने के लिए अधिक समय मिल जाता है। इसी प्रकार शांति व्यवस्था बनाये रखने वाले कर्मचारियों को जनता की शिकायतों तथा कठिनाइयों को दूर करने का अधिक समय मिल जाता है। कालान्तर में इस योजना के प्रसार की पूरी सम्भावना है। भविष्य में भी यदि प्रदेश की जनता पुलिस को पूर्ण रूप से जन सेवक मान सके और इस नाते उसे अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान कर सके तो राज्य सरकार अपने को गौरवान्वित समझेगी।

कर्त्तव्य तुम्हारा बुला रहा

कब से तुमको कर्त्तव्य तुम्हारा बुला रहा,
अब तो, शैया का मोह छोड़ मानव जागो।
तुमने निन्द्रा में हो विकसित मधुवन देखा,
स्वप्नों में वंशी की मादकमय तान सुनी।
जीवन के घातों से अनभिज्ञ तुम्हारी गति
तुमने पददलितों की गाथा झूठी मानी॥

जनमन के आंसू आज हुए अनदेखे,
अपने मदमाते हास विलास अब त्यागो।
सुमनों का सौरभ आज धरा को नहीं चाहिए,
स्वर्णिम किरणों की चकाचौंध भी नहीं चाहिए।
आज देश को आवश्यकता शोलों की है,
धधके अंगारों का ज्वालाओं का ताप चाहिए॥

अन्तराल धरती मां का कुण्ठित पीड़ित,
जन-जन से वैभव तर्पण की भिक्षा मांगी।
मत भूलो चंचल लहरों के आलोड़न से,
तरणी अपना पथ मंझधारों में भी पाती।
मेघों की महिमा दिखलाती विद्युत ज्वाला,
नीरस वसुधा हिमपातों से जीवन पाती॥

बीहड़ पथ के कटु आतप से डरना कैसा,
पाना चाहो अमरत्व अगर, आलस त्यागो।
पक्षियों अधिकारों की सीमित सब सीमायें,
बन्दी अंकुर हरियाली को लाता ही कब।
मद से विच्छिन्न सदा होतो आयी मधु छवि,
धूमिल सन्ध्या मंजुल जीवन लायी ही कब॥

व्यंग्य नियति के विषमय ज्वाला ही लाये,
मत घबराओ इनसे ही शीतल रस मांगो॥

—कुमारी सरोजिनी, गोरखपुर

आवश्यकता है

आदर्श कन्या विद्यालय किरतपुर जिला बिजनौर के लिए प्रवेशिका व विद्या विनोदिनी की कक्षाओं को पढ़ाने के लिए सुयोग्य अध्यापिका की। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। अध्यापिका को गृह शास्त्र विषयक ज्ञान होना आवश्यक है।

निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।
२२-२३ मुन्शी बलदेवसिंह प्रबन्धक
आदर्श कन्या विद्यालय किरतपुर
जिला—बिजनौर

आवश्यकता है

प्रायमरी आर्य कन्या पाठशाला अगराना (अलीगढ़) के लिए एक अध्यापिका की, जो कम से कम मिडल पास हो, संगीत जानने वाली हो और ६-७वीं कक्षा तक पढ़ा सके। प्रार्थना पत्र ३० जून ५८ तक आ जाने चाहिए। —मन्त्री आर्यसमाज

ऐतिहासिक चर्चा

जरवल का इतिहास

[श्री ओंकार प्रसाद श्रीवास्तव, प्रेस प्रतिनिधि जरवल, बहराइच]

वर्तमान जरवल (बहराइच) ने अपनी आँखों से जो उत्थान और पतन देखा है, इसके आधार पर लेखक का यह कहना ठीक है कि वह अपने हृदय गह्वर में एक क्रमिक पूर्ण इतिहास छिपाये है। विशेष जानकारी के लिए पूरे लेख को पढ़ जाइये। — सम्पादक

दिन के बाद रात्रि, सुख के बाद दुःख और उत्थान के बाद पतन तो सृष्टि का एक सामान्य क्रम है। जरवल के भग्नावशेष, किलों के खण्डहर, कुओं का क्षेत्रफल तथा गहराई, तालों के विशाल कगार इस बात के साक्षी हैं कि इन्होंने भी कभी सुनहरे दिन और रुपहली रातें देखी हैं। स्वर्णिम अतीत उत्थान पतन की एक लम्बी कहानी है।

तेरहवीं शताब्दी में इस कस्बे का नाम जरवली था। भर वंश के राजाओं के हाथ यह सवारी जाती थी। प्रति वर्ष इसके शृंगार में हजारों क्या लाखों रुपये व्यय किये जाते थे। जनता सुखी थी। जरवली की गोद में रहकर वह गौरव के दिन बिताती थी। १४ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में यहां भर वंश का अन्तिम साहसी एवं धीर वीर राजा छत्रसाल राज्य करता था। इसके राज्य में जिला बहराइच का अधिकांश भाग आता था। अन्य भागों में भी भरों का राज्य था जो जरवल के राज्य वंश को श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे।

बहराइच के भूतपूर्व सब डिप्टी इन्सपेक्टर श्री अब्दुल रहमान नकवी द्वारा लिखित इतिहास से ज्ञात होता है कि जरवल के सय्यद वंशों के पूर्वज अबू तालिब, जो इरान देश के फारस शहर के रहनेवाले थे, चंगेजखाँ के अत्याचारों से पीड़ित होकर खुरासान आये। कई वर्ष यहाँ रहने के बाद कुछ अन्य व्यक्तियों के साथ उन्होंने भारत की सीमा पार की और लाहौर में बस गये।

कुछ दिनों बाद यहीं उनकी मृत्यु हो गई। अबू तालिब का बड़ा लड़का अजाजुद्दीन सन् १२८६ ई० में दिल्ली आया। अजाजुद्दीन का ज्येष्ठ पुत्र अलाउद्दीन अवध आया और जिला बाराबंकी के बदौसराय नामक स्थान पर रहने लगा। यह कस्बा वर्तमान चौकाघाट स्टेशन लखनऊ गोंडा मेन लाइन) से ५ मील दक्षिण है। अलाउद्दीन के दो लड़के थे जलालुद्दीन तथा जमालुद्दीन। ऐसा पता चलता है कि सुलतान गयासुद्दीन ने अन्याय-पूर्ण ढंग से जलालुद्दीन को कत्ल करवा दिया और इसके एवज में उसके भाई जमालुद्दीन को २५ हजार बीघा भूमि बरौली जिला बाराबंकी में तथा २५ हजार बीघा भूमि जरवली में दी। बरौली में बड़ी आसानी से जमालुद्दीन का अधिकार हो गया किन्तु जरवली में भर जाति के वीर शासक छत्रसाल के आगे उसकी एक न चली।

जमालुद्दीन ने एक विशाल सेना इकट्ठी की और छत्रसाल पर आक्रमण कर दिया लेकिन उसे मुंह की खानी पड़ी उसके हजारों सैनिक युद्ध में मारे गये और उसने भी युद्ध से भाग कर अपनी जान बचाई। किन्तु उसने हिम्मत न हारी और इस दिशा में वह लगातार प्रयास करता रहा। अन्त में उसने एक विशाल सेना पुनः एकत्र की और दूसरा जोरदार हमला किया, लेकिन छत्रसाल भी पहले से ही सचेष्ट थे। घमासान संग्राम हुआ। रणबांकुरे भरों के सामने जमालुद्दीन के सैनिक ठहर न सके और युद्ध छोड़ कर अपनी जान बचाने के लिए इधर उधर भाग निकले।

युद्ध में स्वयं जमालुद्दीन और उनके तीन पुत्र सय्यद उमरशाह, सय्यद हुद, सय्यद समसुद्दीन सहित हजारों सैनिक खेत रहे। अब सैयद जमालुद्दीन का बड़ा लड़का सय्यद जिकिया शेष बचा था। पिता के अवशिष्ट कार्य को पूरा करने का उसने निश्चय किया पर यह भली भांति ज्ञात हो गया था कि वीरता पूर्वक आमने सामने लड़ कर किसी भी प्रकार जरवली केशरी छत्रसाल पर विजय नहीं प्राप्त की जा सकती।

हिन्दू समाज में फूट की बेल सदैव फूलती फलती आई है। कई बार दिखाई पड़ा कि यह लता सूख रही है तो उस समय अम्भी और जयचन्द की परम्परा से किसी न किसी व्यक्ति का उदय अवश्य हुआ जिसने उस लता को पुनः हरियाली प्रदान की। यही दुर्भाग्यपूर्ण कहानी यहाँ की भी है।

सय्यद जिकिया ने जरवली के माली तथा बनकार जाति के दो व्यक्तियों को अपनी ओर मिला लिया और कार्य की सफलता पर मालामाल कर देने का लालच दिया।

आधुनिक जरवल के पूर्व में अब भी रानी तालाब स्थित है जिसको छत्रसाल की वीर पत्नी ने बड़ी उच्च अभिलाषाएं लेकर खुदवाया था। नागपंचमी के दिन इस सरोवर के पूर्वी तट पर बहुत बड़ा यज्ञ होता था जो एक मेले का रूप धारण कर लेता था। दूर दूर से लोग इस पुण्य अवसर पर सम्मिलित होने के लिये आते थे। कई दिनों तक यह यज्ञ बराबर चलता था। महाराजा छत्रसाल अस्त्र शस्त्र एवं कवच उतार कर यजमान का पद ग्रहण करते थे। इस आशय की सूचना उक्त राजद्रोही माली एवं बनकारों ने बदौसराय पहुँचाई। सय्यद जिकिया बहुत प्रसन्न हुआ। वह ऐसे अवसर की तलाश में था।

सन् १३४०ई० में नाग पंचमी को सय्यद जिकिया एक विशाल सेना लेकर जरवली आया और दुर्ग पर बड़ी आसानी से अधिकार कर लिया, उसके हाथ अपार कोष और अस्त्र शस्त्र का भण्डार भी लगा, यह सूचना जब रानीताल पहुँची तो वीर छत्रसाल आग बबूला हो गया अपनी समस्त सेना को लेकर वह किले की ओर आया। दुर्ग का नकशा बदल चुका था भगवा ध्वज के स्थान पर हरा झंडा लहरा रहा था। चारों तरफ मुसलमान सैनिकों का पहरा था, सैयद जिकिया अपने सेनापति को सैनिक व्यवस्था समझा रहे थे। इसी समय वीर छत्रसाल तथा उनके पुत्र त्रिलोकीनाथ ने जोरदार हमला किया और शत्रुओं को काफी दूर खदेड़ दिया। किन्तु इसी समय त्रिलोकीनाथ को धोखा देकर कुछ दुश्मनों ने पीछे से हमला कर दिया और इस प्रकार युद्ध में लड़ता हुआ वह वीर गति को प्राप्त हुआ। उसके शव को लेकर उसकी पतिपरायणा पत्नी चिता में भस्म हो गई। यह स्थान आज भी रानी सरोवर के पूर्व में स्थित सतचौरा के नाम से प्रसिद्ध है।

राजा छत्रसाल पुत्र शोक से विह्वल हो उठे और साथ ही उनमें प्रतिशोध की भावना भी जागृत हो उठी। अपने एक विश्वास पात्र सैनिक के साथ उन्होंने अन्तःपुर की स्त्रियों एवं बच्चों को नेपाल की ओर भेजा। स्वयं कतिपय सैनिकों के साथ युद्ध में प्रलयकारी रौद्र रूप धारण कर उतरे युद्ध में अकेले ही उन्होंने मारकाट प्रारम्भ कर दी। उनसे लोहा लेने का साहस किसी में न था। शत्रु तितर बितर होकर भागने लगे। अकेले हजारों के बीच कब तक लड़ सकते थे, दुश्मनों ने उन पर भी पीछे से हमला किया और वे भी वीर गति को प्राप्त हो गये। सय्यदों का प्रभुत्व पूर्णरूप से जरवली में स्थापित हो गया इस प्रकार ६८६ ग्रामों का तालुका सैय्यदों के हाथों लगा।

सन् १५६० ई० के लगभग बख्शी मुहम्मद जाफर जो जिकिया वंश के ही थे, उस समय मुगल शासनकाल में दिल्ली के मालमन्त्री थे, अवकाश प्राप्त करने पर जरवल आये। उसी समय मुहल्ला कटरा के किले पर बहराइच के एक पठान दल ने आक्रमण कर दिया। सय्यद मुहम्मद जाफर के तीन लड़के क्रमशः सय्यद मुहम्मद, सय्यद कुतबुद्दीन तथा सय्यद मुहम्मद शाकिर पठानों से लड़ते हुए मारे गये जिनका स्मारक आज भी एक चबूतरे के रूप में विद्यमान है। पठान किले में घुस गये और मुहम्मद जाफर को भी मारा पीटा परन्तु वह किसी प्रकार बच गये। मुहम्मद जाफर ने अपने सबसे छोटे लड़के अली हादी को जिसकी उम्र उस समय १२ वर्ष की थी अन्तःपुर की स्त्रियों का एक कमरे में बन्द करके बाहर से ताला लगा दिया और उसकी चाभी अन्दर के ही एक कुयें में फेंक दी (यह कुआं आज भी विद्यमान है) इस प्रकार ये की बच्चे ससम्मान सुरक्षित रह सके। मुहम्मद जाफर के बाद उनका उत्तराधिकारी उनका पुत्र अली हादी बना। इस वंश के लोग आज भी यहां कटरा मुहल्ले में रहते हैं जिनमें सय्यद हैदर महदी सबजज का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

१८ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जरवल के तालुकदारों से चौन्डी राजा ने १७२ व गोंडा जिले के कलहस छत्रवाड़ के क्षत्रियों ने ११० ग्राम लिए थे इस प्रकार १८१६ ई० में जरवल के पास २४० ग्राम रह गये थे। बाद में शासन द्वारा कुछ ग्राम जब्त कर लिए गये जिसके कारण १३८ ग्राम ही बचे।

अब युग बदल रहा था। १८५७ ई० में क्रान्ति की चिनगारी सारे देश में फैल चुकी थी। स्थान-स्थान पर क्रांतिकारी भारतीय अंग्रेजों से लोहा ले रहे थे। लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह की बेगम हजरत महल लखनऊ से लौट कर अपने नाबालिग पुत्र बिरजीस कद्र के साथ जरवल आई। साथ में रायबरेली के राणा बेनीमाधव भी आये थे। वे एक दिन यहां रही भी। सन् ५७ स्वातन्त्र्य समाम की अन्तिम लपट लखनऊ में बुझने के बाद यहां के बहादुरों ने रानी को फिर अपने यहां शरण दी और दूसरे दिन उन्हें चौन्डी के राजा बलभद्रसिंह के यहां पहुंचा दिया। महाराजा बलभद्रसिंह ने उन्हें सकुशल नेपाल पहुंचाने की व्यवस्था

[शेष पृष्ठ ६ पर]

आर्य समाज और विदेश प्रचार

[श्री पं० गंगा प्रसाद एम० ए०, जयपुर]

प्रसन्नता की बात है कि विदेशों में वैदिक धर्म के प्रचार की समस्या की ओर आर्य विद्वान अब कुछ जागरूक होकर सोचने लगे हैं। आर्य जगत के माने हुए नेता श्री पं० गंगाप्रसाद जी एम० ए० पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा का यह लेख इस दृष्टि से कुछ उपयोगी विचार व सुझाव आर्य नेताओं के सम्मुख प्रस्तुत करता है।

—सम्पादक

१३ अप्रैल १९५८ के आर्यमित्र में आर्य समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री उपर्युक्त आर्य का एक लेख "भारतेतर देशों में प्रचार की समस्या" शीर्षक से छपा है। २५-५-५८ के अंक में मैंने श्री विश्वबन्धु वेदालंकार का "युग की पुकार" शीर्षक लेख पढ़ा, योग्य लेखक ने श्री पं० उपर्युक्त के लेख का हवाला देकर इस विषय पर अपने उत्तम विचार प्रकट किये हैं।

(१) आर्य समाज के लिये इससे अधिक महत्व का कोई दूसरा कार्य नहीं है। १ या २ वर्ष हुए मैंने एक योजना परोपकारिणी सभा में भेजी थी। उसका सार यह था कि परोपकारिणी सभा व सार्वदेशिक सभा मिलकर एक दयानन्द प्रचार मिशन स्थापित करे जिसका उद्देश्य आर्य समाज के विदेश प्रचार के लिये योग्य उपदेशक तैयार करना होगा। बिना तैयारी कोई प्रचारक न भेजा जाय। मैंने रामकृष्ण मिशन का उदाहरण दिया था। उनका नियम है कि कोई प्रचारक बिना शिक्षा के न हों। वे साधारणतया शिक्षा या ट्रेनिंग के लिये शिक्षित व्यक्ति को भेजते हैं जो एम० बी० ए० एस० या अन्य डिग्री प्राप्त हो। उनकी शाखायें भारतवर्ष में भी बहुत हैं, और अमरीका व योरप में भी काफी हैं, उनकी हर शाखा में एक अस्पताल होता है जिसमें एलोपैथी से भी इलाज होता है और आयुर्वेदिक व होमियोपैथी से भी। दयानन्द प्रचार मिशन के लिये भी शिक्षित व्यक्ति छांटे जांय और बिना ट्रेनिंग या शिक्षा के कोई काम पर न लगाया जाय। जितने संन्यासी मिल सकें वे श्रेष्ठ होंगे। शेष भी विरक्त भाव के हों जो बौद्ध व ईसाई मिशनरी के समान त्याग व सेवा भाव से काम करें। याद नहीं मेरे प्रस्ताव का क्या हुआ। पर एक उप समिति बनी थी। मैंने पत्र-व्यवहार में श्री म० आनन्द स्वामी जी को एक पत्र लिखा था कि यदि वे इस कार्य को अपने हाथ में लेवें तो सफलता की आशा हो सकती है। अपने उत्तर में उक्त महोदय ने मेरे सुझाव को पसन्द किया था।

(२) सब बड़े कामों में धन की समस्या होती ही है। पर मैं योग्य लेखक से सहमत हूं कि यदि सार्वदेशिक सभा अपने हाथ में इस काम को लेवे तो धन संग्रह होना असम्भव नहीं होगा। लेखक ने अपने लेख में कुछ ऐसे दान वीर धनिकों के नाम लिखे हैं जैसे श्री सेठ नानजी भाई कालिदास, श्री राजा नारायणलाल जी पित्ती श्री प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास, श्री पं० ठाकुरदत्त शर्मा आदि। मुझे दृढ़ विश्वास है कि यदि सार्वदेशिक सभा एक योग्य कार्यकर्ताओं की समिति बना देवे और अच्छी योजना तैयार कर देवे तो धन का संग्रह हो सकता है।

(३) श्री पं० उपर्युक्त एक साधारण लेखक नहीं हैं। वे वेदों के पण्डित हैं, होनहार युवक हैं। इंगलैण्ड में उन्होंने आर्य समाज की अच्छी सेवा की। अब अमरीका में प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। उनका १० अप्रैल १९५८ का लेख भी एक प्रकार से विदेश प्रचार की योजना है। जैसा कि योग्य लेखक ने लिखा यह आर्य जगत को एक चुनौती है। मैं आशा करता हूं कि सार्वदेशिक की अन्तरंग सभा उस पर विचार करके कुछ काम करने की तदबीर निकालेगी।

जरवल का इतिहास

(पृष्ठ ८ का शेष)

की। इसी राजद्रोह के अपराध में जरवल का तालुका अंग्रेजों ने जब्त कर लिया था। रेहुवा तथा बौन्डी की तालुकेदारी भी जब्त हो गई थी। बाद में पांच हजार मालगुजारी देने वाले जमादारों के रुपये वापस कर दिए गये। इस प्रकार जरवल के दोनों वंश अपने तालुके के पुनः अधिकारी हो गये।

१९ वीं शताब्दी में जरवल शिक्षा का एक बड़ा केन्द्र था। यहां के तालुकेदारों का सम्बन्ध ईरान से था। अरबी फारसी, उर्दू आदि के अच्छे अच्छे विद्वान् यहाँ आते थे। इन भाषाओं का एक प्रेस 'अयनुल फयूज' भी था जिसका संचालन तालुकेदार जफर मेंहदी करते थे। इसमें सैकड़ों पुस्तकें तथा गजट आदि छपते थे। स्वातन्त्र्य संग्राम १८५७ के उर्दू में छपे पर्चे तथा पोस्टर जो देश के कोने कोने में बाँटे तथा चिपकाये गये थे, वे सभी इस प्रेस के छपे हुए थे। इस प्रेस से सम्बन्धित एक पुस्तकालय भी था जिसमें कुछ पुस्तकें विदेशों से भी मंगाई गई थीं। परन्तु कालान्तर में यह प्रेस तथा पुस्तकालय समाप्त हो गया। लाखों रुपये की मूल्यवान् पुस्तकें रद्दी के भाव बनियों के हाथ बेच दी गई। इन्हीं दिनों यहां फारसी उर्दू के कई एक कवि भी हुए जिनमें श्री मौलवी रहीम बख्श, मोहनलाल श्रीवास्तव 'तरब', तथा शिवनारायन लाल 'होश' के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। यह कवि परम्परा आज भी जीवित है।

छत्रसाल की मृत्यु के बाद से यहां हिन्दू मुस्लिम मतभेद प्रबल हो उठा और जब तक शासन मुसलमानों का था यह मतभेद बराबर बना रहा जिस पर विभिन्न अत्याचार किये जाते थे।

सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य संग्राम में दोनों सम्प्रदाय भाई-भाई की तरह अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े पर अंग्रेज शासन में फिर विद्वेष का युग प्रारम्भ हो गया। कई बार तलवारें चलीं। कई दंगे भी हुए जिनमें १५ अगस्त १८८४ ई० का जन्माष्टमी का दंगा और २८ दिसम्बर १९२५ ई० का मुहर्रम का दंगा विशेष दुर्भाग्यपूर्ण था। ३० जून १९०७ ई० को लाला बद्रीशाह का बलिदान हुआ। विदेशी शासन की कूटनीति के फलस्वरूप भरे विद्वेष के दिनों में जरवल में हिन्दुओं की दशहरा, दीपावली, होली आदि भी नहीं हो पाती थी। अब होली मिलन, दशहरा आदि के कार्य क्रम पूर्ववत होते हैं।

महाराजा छत्रसाल का दुर्ग आज पूर्णरूप से नष्ट हो चुका है लेकिन उनके समय के कुएँ, तहखाने, आज भी विद्यमान हैं। छत्रसाल की रानी का खुदाया हुआ 'रानी ताल' तथा राजा त्रिलोकनाथ का 'त्रिलोकी ताल' अब भी सुरक्षित है। रानी ताल के किनारे एक पुराना मन्दिर था जिसके खण्डहर आज भी हैं। 'त्रिलोकी ताल' के बारे में यह कथा प्रचलित है कि जब भरों के यहाँ लड़की का विवाह होता था तो इसी ताल की मिट्टी से चौका दिया जाता था। उसी पर विवाह होता था। जरवल के चारों ओर आज भी भरों की डीहें हैं जिनमें बीरीडीह मुख्य है। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध है कि यहीं पर राजा छत्रसाल का प्रधान सेनापति बीरसिंह रहता था और यहीं पर 'इन्दारा' कुआं था जिस पर आज भी एक पकड़िया का विशाल वृक्ष खड़ा है। इसके अतिरिक्त मुंडेरा डीह, महुरी डीह, कुरसन्डा दिसामपुर आदि आज भी स्थित हैं। कुछ दिनों पूर्व इन डीहों से कुछ सिक्के भी उपलब्ध हुए थे। नवाब अहमद अली खां का किला ध्वंसावस्था में आज भी है। राजा अली हामिद का इमाम बाड़ा भी सुरक्षित है।

इस सिंहावलोकन से ज्ञात होगा है कि जरवली (आधुनिक जरवल) जिला बहराइच का एक महत्वपूर्ण कस्बा रहा है जिसने अपनी आंखों से महान उत्थान और पतन देखा है। यह अपने हृदय गह्वर में एक कसक पूर्ण इतिहास छिपाये है।

कहानी-कुञ्ज

किसी भी दुर्व्यसन का परिणाम कभी अच्छा नहीं होता यह निश्चित है। इस उपदेश के अतिरिक्त कुछ अनुभवी विद्वानों की उक्तियाँ भी कथनोपकथन के अन्तर्गत इस कहानी में पाठक पढ़ सकेंगे। —सम्पादक

बेटा मैं तो जा रहा हूँ किन्तु तुम अपने को सुसुधार लेना।" कहकर सेठ चन्द्रभूषण के प्राण पखेरू अनन्ताकाश में विलीन हो गए

× × ×

निराशा

★ रामदत्त द्विवेदी
(द्वारा मनजर अनाथालय महोबा)

शंकर अपने कमरे में बैठा कुछ सोच रहा था। उसकी पत्नी उर्मिला उसके पास आकर बैठ गई किन्तु इस समय भी उसका ध्यान न टूटा। पन्द्रह मिनट बाद उर्मिला ने झल्ला कर पूछा—

'क्या सोच रहे हो?'

शंकर की आँखें खुलीं ध्यान टूटा और उसने मन्द स्वर से कहा—'कुछ नहीं।'

कैसे ऐसा हो सकता है? जब तक मनुष्य को दुख नहीं होता तब तक वह निष्क्रिय नहीं बैठ सकता। बताओ क्या बात है?' उर्मिला ने उसके पास आकर पूछा।

'तुम्हें मालूम होगा कि व्यक्ति को हृदय की बात हृदय में ही रखना चाहिए यह दुनिया है। जब यह किसी के दुख को सुनती है तब प्रसन्न होती है और जब किसी को सुखी देखती है तब जलने लगती है।' शंकर ने उर्मिला को उत्तर दिया।

'ठीक है आपका अभिप्राय समझ गई। आप मुझसे छिपाना चाहते हैं।'
मैं अपने कर्तव्य पथ पर चल रहा हूँ।
उर्मिला की आँखों में आँसू आ गए वह बोली—'आप कितने रुपये हार चुके हैं?"

'बचपन से?"

"नहीं जब से पिता जी मरे।"

'तब से मैं पिता की सम्पत्ति और अस्सी हजार ऋण में।'

"आह' उर्मिला पलंग पर गिर पड़ी।

तभी किसी ने बाहर से जंजीर बजाई। शंकर ने सुनकर कहा—

'कौन है? आया।

और वह नीचे चला गया। उसने दरवाजा खोला देखा कि उसी का साथी करीम है। वह बोला—

"करीम तुम?

'हाँ! आप इतने दिन क्यों नहीं आये।" करीम ने नमस्कार किया।

"बड़ा पर जरूरी काम था शंकर ने कहा।

"आज चलेंगे सुबह ६ बजे?" करीम ने पूछा।

"अवश्य" शंकर ने उत्तर दिया आज अभी ही चलता हूँ।"

'धन्यवाद। तो जल्दी कीजिए" करीम ने कहा।

'अभी आया। बैठिये इस कुर्सी पर" कहकर शंकर ऊपर गया। वहाँ पर उसने दो हजार रुपये तथा एक छोटी सी काली चीज ली। और नीचे आकर करीम से बोला 'चलिए'

× × ×

'तुम मेरे बहुत रुपये जीते शंकर ने करीम से कहा।

'हैं! करीम ने हँस कर कहा,' 'सब अल्ला की दुआ है।'

शंकर ने भाव को छिपाते हुए कहा— करीम ऐसा सोचना तुम्हारी भूल है। अच्छे कार्यों पर ईश्वर कृपा नहीं करता।'

करीम कुछ हँसा। उसने बात विषय बदलने के लिए इस प्रकार कहा— जाने दो इन बातों को। भूली हुई बातों को याद करने से दुख होता है।

शंकर ने कहा—'तुम करीम सच कह रहे हो'

'शंकर चारों तरफ देखकर बोला 'करीम आज कहाँ खेलना है।'

'नहीं रात में अड्डे यानी घर पर खेलेंगे' करीम ने कहा।

'आज घर पर न खेलो क्योंकि कल आपकी भाभी जी मुझसे उल्टी सीधी बात करने लगी थीं। शंकर ने बात बनाते हुए कहा।

करीम अपनी स्त्री से बहुत डरता था। वह बोला— तब आज कहाँ?'

'नदी के किनारे।

ठीक है। आप कितने लाए हैं?'

शंकर—'दो हजार।'

करीम— तब आज हरा न देना। कह कर करीम उसकी ओर नम्रता से देखने लगा। शंकर को यह व्यंग ठीक न लगा वह बोला—

मित्र! यह तो दुनिया है। इसमें हार जीत तो होती ही रहती है। परन्तु मनुष्य को अपनी हार पर निराशा और जीत पर अभिमान न होना चाहिए। जब मनुष्य जीत जाता है तब वह घमण्डी तथा हारने पर निराश हो जाता है। उसे याद रखना चाहिए कि जीत के बाद हार और हार के बाद जीत तो होती ही है। जो आज हार गया वह कल जीत सकता है और जो कल जीत गया वह आज हार सकता है। सफलताएं और असफलताएं जीवन की परीक्षायें हैं, और परीक्षाओं के उपरान्त ही व्यक्ति पहिचाना जा सकता है तथा पहचानने पर ही हम व्यक्ति को व्यक्ति कह सकते हैं। जिसके पास व्यक्ति के समान शरीर है वह व्यक्ति नहीं है यदि उसके पास व्यक्तित्व के गुण न हों।'

'मित्र! अब देर न करो तेजी से चलते चलो।' करीम ने कहा।

वे दोनों और तेज चलने लगे।

× × ×

सुबह ६ बजे थे। शरद् ऋतु के दिन थे। हरे भरे खेत कोहरा तथा ओस से पूर्ण थे। नदी का पानी धूप से चमक रहा था। एक पेड़ के नीचे शंकर तथा श्याम जुआ खेल रहे थे। इन दोनों में शंकर हार रहा था परन्तु करीम जीत रहा था। उन्हें खेलते खेलते अभी आधा घण्टा ही हुआ था। अभी लगभग १५ मिनट पूर्व शंकर के पास केवल पाँच सौ रुपये शेष थे। उसने एक दाव और लगाया परन्तु अभाग्य वश वह भी हार गया।

इस समय शंकर के पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी।

'और खेलना है?' करीम ने मन्द मुस्कान लेते हुए शंकर से पूछा।

शंकर—'जरूर खेलना है।'

करीम—'पास में पैसे हैं?'

शंकर—'बहुत'

करीम—'दिखाओ।'

शंकर—'तुम रुपये लोगे कि और कुछ?'

करीम—'मुझे आपके पास अमानत रखना है।'

शंकर—'यार तुम बड़े विचित्र मनुष्य हो। तुम रुपये लोगे कि और'

करीम—'पहले दिखा दो।'

शंकर—'अच्छा पत्ता परस फिर देता हूँ।'

करीम—'नगद नीचे रख दो।'

शंकर—'मैं नीचे न रखूँगा क्योंकि मुझे तुम पर विश्वास नहीं होता। पहले कभी न ऐसा कहा।'

करीम—'समझ गया बेटा! जन्म भर यही काम करता रहा हूँ। घर में नहीं हैं दाने बुढ़िया चली भुनाने। मुफ्त में खेलना चाहते हो। अब नहीं खेलना है। जब रुपये और ले आना तब खेलूँगा। अब घर जा रहा हूँ।'

ऐसा कह कर करीम अपनी जगह से उठा। शंकर ने हाथ पकड़ कर कहा—

'करीम! तुमने मुझे बड़ा धोखा दिया। मैं तुम्हें इसका फल तो अभी ही दिए देता हूँ। आज मैं कुछ सोच कर आया हूँ। मुझे खेद है कि मैं ऐसा बुरा काम करने जा रहा हूँ। मैं ऐसा कार्य न करता परन्तु बाध्य होकर ऐसा करना पड़ रहा है। प्रत्येक चीज की पराकाष्ठा होती है। ये तुम्हारे अन्तिम क्षण हैं।

'हाथ छोड़ो। देखूँ तुम मेरा क्या करते हो। तेरे अन्दर शक्ति कितनी है। मैं तुम जैसों को तो खटमल की तरह मसल देता हूँ। जो करना जो तुझे करना हो।'

कहते हुए करीम ने एक झटके के साथ हाथ छुड़ा लिया और शंकर को एक धक्का दिया। शंकर नदी में गिरते गिरते बचा। वह तुरंत उठा उसी समय करीम ने एक चाकू शंकर को मारा जिससे शंकर के बायें हाथ को गहरी चोट पहुँची। शंकर ने दायाँ हाथ पेट की जेब में डाला और एक काली चीज निकाली। करीम ने इसे देखा। वह भागना चाहा कि इसी समय शंकर ने उस पिस्तौल के कई फायर करीम पर किए। करीम वहीं ढेर हो गया।

× × ×

तीसरे दिन लोगों ने समाचार पत्रों में पढ़ा—

—चन्द्रावल नदी के किनारे एक लाश मिली। लाश महोबा के प्रसिद्ध जुआरी करीम की बताई जाती है। पुलिस जाँच कर रही है। ★



युवा शक्ति को बचाओ

[श्री सिद्धवर्मी भगवान लाल 'दमन', सह-सम्पादक 'आर्य' साप्ताहिक, जालन्धर]

लेखक महोदय का यह कहना शतप्रतिशत ठीक है कि आर्यसमाज में विद्वानों पंडितों व कार्यकर्ताओं की कमी नहीं है, कमी है तो केवल नवीन रक्त की—पर क्या आर्य समाज के आदरणीय वृद्ध अनुभवी नेताओं ने कभी सोचा है कि यह कमी क्यों है ? यदि नहीं सोचा है तो अब से भी इस विषय पर सोचिए। साथ ही इस बात पर भी विचार करना होगा कि आज के नवयुवक राजनीतिक संस्थाओं की ओर तो जाते हैं पर आर्यसमाज में क्यों नहीं आते।

—सम्पादक

आज आर्यसमाज में एक विशेष एवं महत्वपूर्ण नव जागरण नई स्फूर्ति तथा नवीन शक्ति की आवश्यकता है। आर्य समाज में बड़े बड़े सुयोग्य, विद्वान् पण्डित, उत्साही, कर्मठ कार्यकर्ता आज भी विद्यमान हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। लेकिन आर्यसमाज की वह प्रगति जो कुछ मन्द पड़ती जा रही है, ऐसा आभास हो रहा है। अब आर्य समाजी कार्यकर्ताओं का शरीर उनकी आयु के अनुसार ऐसी अवस्था में कार्य करने की आज्ञा नहीं देता, शिथिल हो जाता। लेकिन फिर भी वे श्रद्धालु अपनी श्रद्धा एवं लगनशीलता से हर समय आर्यसमाज की तन-मन-धन से सेवा निरन्तर करते ही आ रहे हैं। मैं यह कभी नहीं भूलूंगा, वह आवाज आज भी मेरे कानों में गूंज रही है। एक बार मान्य पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार वर्तमान प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्यसमाज भजु हांशियारपुर बाजार के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आए थे मैं उनके दर्शनार्थ उनकी सेवा में उपस्थित हुआ तो उन्होंने मुझे कहा कि भई चलो तुम्हारे पिता श्री सत्यव्रत जी वैद्य से मिल आवें। वह आर्यसमाज की दूसरी मंजिल से नीचे उनकी दुकान पर चले और मैं भी साथ हो लिया। श्री वैद्य जी दवाई की पुड़ियाँ बांध रहे थे, अचानक मान्य पण्डित जी को देख करके उन्हें नमस्ते किया। और बाद में उन्हें सिर से पाँव तक देखते हुए किसी प्रसंगवश कहा, पण्डित जी आप तो ६५ वर्ष की अवस्था में ही बहुत बूढ़े दिखाई देने लग गये ? तब पण्डितजी ने हंसते हुए कहा कि लोग इंगलिश में अपनी आयु बताते हुए (ओल्ड) लगाकर उत्तर देते हैं लेकिन मैं बूढ़ा होने के बावजूद भी यही कहा करता हूं (आई ऐम सिक्स्टी फाइव इयर यङ्ग) मैं बूढ़ा होते हुए भी उसी प्रकार काम कर सकता हूं जिस प्रकार २८ वर्ष की आयु में पहले करता था और अब भी २५ नौजवानों के मुकाबले में काम करने का दावा करता हूं।

यह तो हमारे सामने प्रत्यक्ष उदाहरण है कि आर्यसमाज के हित कार्य करने वाले वृद्ध महानुभाव, वृद्ध होते हुए भी अपने को जवान कहने में अपना गौरव समझते हैं, दिन रात काम करने के बावजूद भी थकान अनुभव नहीं करते। लेकिन कुछ का आयु विवश कर देती है, वे बेचारे चलने फिरने में भी असमर्थ हो जाते हैं. क्या करें वे इनके भी सामर्थ्य से बाहर की चीज है, प्रकृति के सन्मुख झुकना ही पड़ता है। ऐसी अवस्था में ऐसे मनुष्य आर्य भक्त आर्यसमाज की सेवा के लिए अपने मस्तिष्क से ही काम ले सकते हैं शरीर से नहीं। शारीरिक काम करने के लिए आवश्यकता है नौजवानों की।

आधुनिक युग में पाश्चात्य सभ्यता से पतित नवयुवक शक्ति कैसे लाई जाए ? ऐसा कई बार सोचा गया लेकिन पता नहीं किस कारण से इस विषय को अधिक महत्व नहीं दिया जा रहा।

आर्यसमाज के पास आज विद्वानों की कमी नहीं, पण्डितों की कमी नहीं कार्यकर्ताओं की कमी नहीं। कमी है तो नवीन रक्त की।

आज के नवयुवक एवं नवयुवतियां ऐसी ऐसी पवित्र निर्मल संस्थाओं से दूर हट कर अपने कर्तव्य तथा वास्तविकता को भूल कर पाश्चात्य के दुर्गन्ध भरे कूप जिसे बाहर के चमकीले भड़कीले नक्श पालिश द्वारा सुन्दर बनाकर रखा हुआ है, उस घूमने जा रहे हैं अर्थात् कुपथ पर जा रहे हैं। वे उस तड़क भड़क के पीछे अन्धाधुन्ध भागते जा रहे हैं, कूप की अन्तरिक दुर्गन्ध की ओर ध्यान न देकर उसी में आनन्द समझते हैं। उन्हें सुपथ पर लाने के लिए और उस गन्दगी से बचाने के लिए इस समय संसार की संस्थाओं की मार्केट में अब आर्यसमाज ही एकमात्र ऐसी संस्था है जो उनका पैंतरा बदल सकती है।

आर्य समाज के पुराने योग्य विद्वान वृद्ध महानुभाव जिन्होंने देश धर्म निमित्त सर मिटना सीखा हुआ है, उन्हें ऐसे समय में जबकि देश के भावी कर्णधार नवयुवक व नव युवतियों को जो अपने देश की उन्नति के लिए मानने की बजाए वर्तमान राष्ट्र नेताओं का सही प्रदर्शन न होने पर अपनी उपयोगी शक्ति का दुरुपयोग और सर्वनाश करते हुए कोई हिचकिचाहट अनुभव नहीं करते। ऐसी पवित्र शक्ति के लिए कोई ऐसे ढंग व उपाय निकालने चाहियें जिससे यह शक्ति सिनेमाघरों से बुराइयां न ले सके, शराबखानों से उसका नशा न सीख सके, जुआखानों से उसकी कला न सीख सके, क्लबों एवं सोसाइटियों में बैठकर अपनी मूल्यवान शक्ति जिस पर देश को गौरव होना चाहिये, बुरे विचारों से दूषित न हो सके अर्थात् अपने जीवन को गारत में न डाल सके अपितु उनके विपरीत जहां भी वे कोई चीज देखें वहाँ शुभ अशुभ विचार करके उसमें से पानी पानी फेंककर दूध दूध को ही ग्रहण कर सके। जहाँ भी बढ़े अपने देश, धर्म एवं जाति की उन्नति और उसकी रक्षा के लिए ही विचार कर सकें।

आज न केवल एक राष्ट्र ही अपितु समस्त जगत् और वर्तमान युग जोर से चिल्ला रहा है और पुकार रहा है कि ………बचाओ! —बचाओ !! … बचाओ !!!—इस बढ़ती और बहती जा रही गन्दी नालों में पवित्र युवा शक्ति को।

मेरा आर्यसमाज के वृद्ध, सुवृद्ध विद्वान् बुद्धिमान और विचारशील आर्य महानुभावों से नम्र निवेदन है कि दिन पर दिन बढ़ती जा रही और व्यर्थ में बहती जा रही यह शक्ति यदि अन्य कोई संस्था सम्भालने में असमर्थ हैं तो आप ही आगे बढ़ें और रोकें—यह अवश्य ही आर्यसमाज के भविष्य के लिए प्रकाशमान ज्योति सिद्ध होगी।

मैं यह नहीं कहता कि इस समय युवक शक्ति को सुमार्ग की ओर अग्रसर करने के लिए आर्यसमाज की ओर से कोई उपाय नहीं किये जा रहे किये तो अवश्य जा रहे हैं, लेकिन बहुत ही कम। जितने चाहिये उतने नहीं हो पा रहे।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि यदि आज आर्यसमाज इसी युवा शक्ति के प्रवाह को आर्यसमाज के उपयोगिता में लगाए तो यह प्राकृतिक आकाश पर चमक रहा सूर्य उसकी रोशनी से शरमा कर अपनी ज्योति चाहे लुप्त कर ले लेकिन आर्यसमाज की ज्योति कभी कम भी नहीं हो सकेगी। ★

साहित्य-समीक्षण

[समालोचनार्थ पुस्तकों की दो प्रतियाँ ही भेजें। —सम्पादक]

यहां हम मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन से सम्बन्धित सात छोटी पुस्तकों की समालोचना प्रस्तुत कर रहे हैं जो श्री विश्वम्भरसहाय प्रेमी द्वारा लिखित तथा सत्साहित्य प्रचार के उद्देश्य से केवल ६-६ आने मूल्य पर विक्रयार्थ सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली की ओर से प्रकाशित की गई हैं। सभी पुस्तकों की छपाई साफ और सुन्दर तथा मुख पृष्ठ आकर्षक है। मुख्य घटनाओं को समझाने के लिए अनेकों चित्र भी दिये गये हैं। इन पुस्तकों में गोस्वामी तुलसीदास जी के 'रामचरित मानस' के आधार पर राम की सरल एवं रोचक कहानी का सुन्दर वर्णन किया गया है। घटनाओं के वर्णन में स्थान स्थान पर पौराणिक पुट अवश्य है जो आर्य सिद्धान्त के प्रतिकूल हैं और आर्यजनों को इन पुस्तकों में वर्णित घटनाओं का पूरा वर्णन ज्यों का त्यों मान्य नहीं हो सकता पर साहित्य की दृष्टि से सभी उचित हैं। विशेष बातें निम्न प्रकार हैं :—

राम जन्म

राम के जन्म पर अयोध्या में कितनी खुशियां मनायी गयीं, राम का नामकरण संस्कार कितना समारोहपूर्वक हुआ, बचपन में राम क्या-क्या लीला करते हैं, कितनी योग्यता से वे विद्याध्ययन करते हैं, कुछ बड़े होने पर किस प्रकार विश्वामित्र आते हैं और दशरथ जी से राम लक्ष्मण को मांग कर अपने आश्रम में ले जाते हैं तथा दोनों भाई किस प्रकार दैत्यों से पवित्र यज्ञ की रक्षा करते हैं, इत्यादि घटनाओं का बड़ा ही सरल और रोचक चित्र ३२ पृष्ठों की इस पुस्तिका में उपस्थित किया गया है।

धनुष यज्ञ

राम और लक्ष्मण दोनों भाइयों का जनकपुर प्रस्थान, वहाँ उनका शानदार स्वागत, स्वयम्बर में उनकी वीरता का परिचय, सीता का प्रथम दर्शन, धनुष भंग, परशुराम सम्वाद आदि का वर्णन इस पुस्तिका में किया गया है। वर्णन सजीव, रोचक और हृदय ग्राह्य है। प्रमुख दृश्यों का वर्णन गोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों में ज्यों का त्यों किया गया है।

राम-विवाह

तुलसी राम-कथा का यह तीसरा पुष्प है। इसमें बारात की शोभा, जनकपुरी में बारात का स्वागत, विवाह संस्कार के सुखद दृश्य, जनकपुर की सुन्दरता, मण्डप की प्रसन्नता, राजकीय आतिथ्य सत्कार, हृदय स्पर्शी विदाई, अयोध्या में वापसी आदि घटनाओं का वर्णन है जिसे पढ़कर कभी हर्ष के आँसू आ जाते हैं और कभी अपने पूर्वजों के गौरव को पढ़कर मस्तक ऊंचा हो जाता है। तुलसी के शब्दों ने इन घटनाओं को अमर बना दिया है।

राम वन-गमन

राम कथा के इस चौथे पुष्प में अनेकों मार्मिक चित्र उपस्थित किये गये हैं। राम के राज्याभिषेक के सम्बन्ध में मन्थरा की कुटिलता और कैकयी का दुराग्रह, राम की कर्तव्य निष्ठा, सीता जी को वन गमन से रोकने का प्रयत्न, लक्ष्मण का तैयार होना आदि दृश्यों का वर्णन पढ़ने से आज भी नवीन ही प्रतीत होता है। राम लक्ष्मण सीता के वन गमन से पुरवासियों को जो हार्दिक कष्ट हुआ, तुलसी के शब्दों में उसे पढ़कर कोई भी सहृदय व्यक्ति अपने आँसुओं को रोक नहीं सकता। प्रेमी जी ने बड़े सरल और मार्मिक शब्दों में इन घटनाओं को चित्रित किया है।

भरत भेंट

"भरत भेंट" वैसे भी रामचरित मानस के मार्मिक दृश्यों में अपनी विशेषता रखता है। इस पुस्तिका में वर्णित निषाद मिलन, केवट की अनोखी चाह, ऋषि मुनियों के आश्रमों में राम आदि का निवास, दशरथ मरण, चित्रकूट वास, लक्ष्मण का कोप, भरत मिलाप, राम का अयोध्या नहीं लौटना आदि घटनाओं में जो उच्चादर्श की बातें हैं उनको जानकर सैकड़ों पाठक आज भी अपने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता के आँसू बहा देते हैं। वास्तव में मानस का यह खंड एक चरित्र प्रधान और आदर्श प्रधान खंड है जिस पर आज भी हिन्दू जाति को अभिमान है। साहित्यिक प्रतिभा के भी सुन्दरतम उदाहरण इस खंड में हमें मिलते हैं। राम के चरित्र को समझने के लिए यह अकेली पुस्तिका पर्याप्त है।

पंचवटी में

इस पुस्तिका में अनुसूया के उपदेश, राम की प्रतिज्ञा, अगस्त मुनि से उनका भेंट, शूपनखा का प्रपंच, खर दूषण का वध, रावण का दरबार आदि घटनाओं का सचित्र वर्णन है। दृश्यों का वर्णन करते हुए लेखक ने तुलसी के शब्दों का उद्धरण देकर चित्र को सजीव बना दिया है।

सीता हरण

यह रामकथा का सातवां पुष्प है। मारीच और रावण का प्रपंच, सीता हरण, जटायु का वीरगति को प्राप्त होना, सीता के वियोग में राम की स्थिति, शबरी की राम भक्ति, नारद जी का उपदेश आदि इस पुस्तिका की घटनाएं हैं। सीता के बिना राम की मनःस्थिति का मार्मिक और शबरी की भक्ति का हृदयग्राह्य वर्णन पढ़ने ही योग्य है।

रामकथा को कम से कम और सरल से सरल शब्दों में भली प्रकार समझने के लिये प्रेमी जी की ये सातों पुस्तिकाएं बहुत उपयोगी सिद्ध होंगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

श्री रामचरित दर्पण

(बाल्मीकीय रामायण का संक्षिप्त हिन्दी पद्यानुवाद)

रचयिता व प्रकाशक—पं० मुन्नालाल मिश्र, प्राचीन मल्लेपल्ली हैदराबाद, आन्ध्र। पृष्ठ सं० लगभग २०० मूल्य तीन रुपये आठ आने। छपाई सुन्दर और साफ। सम्पूर्ण पुस्तक १६ प्वाइंट में कम्पोज। प्रत्येक पृष्ठ बार्डरों से सुसज्जित। कपड़े की जिल्द कागज सफेद।

पं० मुन्नालाल मिश्र से पूर्व भी कुछ विद्वानों ने बाल्मीकि रामायण का हिन्दी पद्यानुवाद किया है पर वैदिक दृष्टिकोण से यह अनुवाद एक प्रथम प्रयास है और निःसन्देह कवि को इसमें सफलता मिली है। इस अनुवाद की दूसरी विशेषता यह है कि घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन होते हुए भी कुशल रचयिता व अनुवादक ने राम जीवन की किसी प्रमुख घटना व मार्मिक दृश्यों को छोड़ा नहीं है बल्कि सभी को बड़ी सुन्दरता से पाठकों के सामने ललित साहित्यिक काव्यमय भाषा में रखा है। तीसरी विशेषता यह है कि प्रत्येक पृष्ठ के अन्त में कवि ने चुनी चुनायी उक्तियां दी हैं जो उस पृष्ठ में वर्णित घटना से पूर्णतया मिल जाती हैं।

अनुवाद सुन्दर है, भाषा साहित्यिक और सरल है, पद्यों में गति और प्रवाह है, दृश्यों के चित्र सजीव हैं। कुछ घटनाओं का वर्णन बड़ा ही मार्मिक है। —सम्पादक

एक सम्मति—

पं० मुन्नालाल मिश्र द्वारा पद्यानुवादित बाल्मीकीय रामायण को 'श्री रामचरित दर्पण' के रूप में देखा। देखकर प्रसन्नता हुई और पढ़कर सन्तोष हुआ। मानस प्रेमी प्रत्येक जनों के लिए दैनिक स्वाध्याय में यह पुस्तक बहुत उपयोगी होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। वैदिक धर्मावलम्बियों के लिए भी यह पुस्तक पठनीय है।

——रामजीप्रसाद गुप्त
कोषाध्यक्ष, आ० प्र० सभा, उ० प्र०

आ० स० किसुमु, अफ्रीका

प्रधान—श्री बरुआमल खोसला
उपप्रधान—श्री शिवशरण दास गाजरी
मन्त्री—श्री विप्रबन्धु जी
उ० मंत्री—श्री राजेन्द्रपाल चड्ढा
कोषा०—श्री ईश्वरदास
पुस्तका०—श्री शिवाजी खोसला
पाठ० प्रबन्धक—श्री शिवलाल खोसला

आर्यकुमार सभा मुरादाबाद

प्रधान—श्री बलदेव अग्निहोत्री
मन्त्री—श्री कृष्णगोपाल बी० काम
कोषा०—श्री विनोद कुमार

बंग आसाम आर्य वीर दल शिक्षण शिविर

३८ क्षेत्र मित्र लेन, सलकिया, हावड़ा में १ से १५ जून ५८ तक आर्य वीर दल का शिक्षण शिविर चल रहा है जिसका कार्य बड़े सुन्दर ढङ्ग से सञ्चालित हो रहा है। श्री काशीनाथ जी शिक्षक और श्री महादेव सिंह सेनापति, सञ्चालक का कार्य कर रहे हैं।

आवश्यकता है आश्रम की

किसी मनोरम व पहाड़ी स्थान पर भूमि और भवन युक्त आश्रम की आवश्यकता है, जहा निम्न लिखित कार्य हो सकें —

१—अंग्रेजी भाषा मे वेद भाष्य तथा अन्य साहित्यकार्य।

२—मेरे अमेरिकी और यूरोपीय शिष्यो और साथियो का योगाभ्यास आदि के निमित्त आगमन और निवास।

३—विदेश जाने के इच्छुक प्रचारकों का शिक्षण।

४—ग्राम सेवा।

जब तक वहा ये कार्य होते रहेंगे सम्पत्ति मेरी रहेगी अन्यथा दानदाता की हो जायगी। मैं इस वर्ष के अन्त तक भारत लौटूंगा। कृपया पत्र व्यवहार निम्न पते पर करें।

उषर्बुध वैदिक प्रचारक

Pandit Usharbudh F R A S
Vedic Missionary P o Box 703,
Georgetowan, British Guianna,
South AMERICA.

आर्यवीर दल शिक्षण शिविर लखनऊ

आर्य वीर दल मध्य उत्तर प्रदेशीय का एक शिक्षण शिविर बक्शी तालाब लखनऊ मे १ से ८ जून ५८ तक लगा जिसमे लखनऊ, सीतापुर, हरदोई, गोंडा, कानपुर, लखीमपुर आदि जिलों के अनेको आर्य वीरो ने शिक्षा प्राप्त किया। श्री रामसिंह जी प्रधान शिक्षक द्वारा शिविर का शिक्षण सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी प्रधान सेनापति, श्री रामजीप्रसाद गुप्त अधिष्ठाता आर्य वीर दल उ० प्र०, श्री भगवत शरण सम्पादक आर्यमित्र, श्री ब्रह्ममित्र शास्त्री व श्री आदर्शमित्र शास्त्री के बौद्धिक व्याख्यान हुए। प्रबन्ध का कार्य शिविर सचालक व उप सेनापति श्री देवीप्रसाद आर्य तथा मन्त्री श्री आदित्य किशोर जी ने किया। अंतिम दिन समावर्तन समारोह मे सुन्दर भाषण के लिए श्री वेदप्रकाश आर्य, प्रथम व तृतीय मुहम्मद लतीफ, तथा श्री रघुनाथसिंह को पुरस्कार प्राप्त हुए स्वामी केशवानन्द जी ने पुरस्कार वितरण किया और जिला सभा के प्रधान श्री कृष्ण बलदेव जी ने शिविर के शिक्षण म उत्तीर्ण वीरों को प्रमाण पत्र दिये। नगर के प्रमुख आर्य बन्धु उपस्थित थे। शिविर सफल रहा।

छोटानागपुर में आर्य समाज का प्रचार

राची। स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी इन दिनों छोटानागपुर बिहार में आर्य समाज का प्रचार कर रहे हैं। आप छ मास तक बिहार म प्रचार करेंगे। राची की समाज तथा जिला सभा ने स्वामी जी को अभिनन्दन पत्र दिया। इस क्षेत्र मे ईसाई मिशनरियों का प्रचार अधिक है जिसे रोकने के लिए बल दिया गया।

सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय

साधुआश्रम, अलीगढ़ के इस विद्यालय म छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। केवल १०)रु० भोजनार्थ देना पड़ता है। १ जुलाई से पठन पाठन प्रारम्भ होगा।

मध्य उ० प्र० आर्यवीर दल की बैठक

मध्य उ० प्र० आर्य वीर दल की कार्यकारिणी की बैठक ८ जून को डालीगज लखनऊ म श्री देव प्रसाद आर्य की अध्यक्षता मे हुई जिसमें अगले वर्ष के लिए कार्यक्रम तयार किया गया और निम्न प्रकार से कार्यकारिणी समिति का निर्माण हुआ :—

श्री देवीप्रसाद आर्य—उप सचालक
श्री आदित्य किशोर आर्य—मन्त्री
श्री ब्रह्ममित्र शास्त्री—बौद्धिकाध्यक्ष
श्री देवव्रत शास्त्री—प्रचार मन्त्री
श्री वेदप्रकाश आर्य—मुख्य शिक्षक
श्री कुन्दनलाल आर्य—कोषाध्यक्ष

इन अधिकारियों के अतिरिक्त श्री भगवत शरण, श्री नानकचन्द आर्य श्री पीताम्बर सिंह तथा श्री राधेश्याम कार्यकारिणी के सदस्य मनोनीत हुए। —आदित्य किशोर

आ० स० के लिए भूमि दान

बैरगनिया, मुजफ्फरपुर के निकट नेपाल राज्य के गौर बाजार मे आर्य समाज मन्दिर निर्माण के लिए रौतहट जिलान्तर्गत मत्सरी ग्राम के प्रमुख जमीन्दार और नेपाल ससद के नव निर्वाचित सदस्य श्री प० इन्दु नारायण झा जी ने जमीनदान देने का वचन दिया है। —बालेश्वर सिंह

आ० स० अलीपुर, मेरठ

श्री विश्वनाथ आर्यवीर उपप्रधान जिला सभा मेरठ ने ३१ मई का इस समाज मे प्रचार किया और आर्य वीर दल की आवश्यकता पर बल दिया।

आ० स० बरौठा, हरदुआगंज

यहा का ३१ वा वार्षिकोत्सव २४ से २६ मई तक मनाया गया जिसमें प० अमरसिंह, श्री ओम्प्रकाश शास्त्री आदि के भाषण हुए।

आ० स० टंकारा, मोरवी

प० कालीचरण शर्मा शास्त्री इन दिनों यहा वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं। यह स्थान ऋषि दयानन्द का पवित्र जन्म स्थान है।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ARYA MITRA

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का साप्ताहिक मुखपत्र

वार्षिक मूल्य ८) | एक प्रति का २० नए पैसे
लखनऊ, रविवार, आषाढ़ १, शक १८८०
२२ जून १९५८ ई०
विदेश में १५ शिलिंग

आर्यसमाज और नैतिक अभ्युत्थान

सार्वदेशिक सभा के प्रधान का आर्य जनता के नाम सन्देश

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक वृहदधिवेशन में निर्वाचित प्रधान श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज का आर्य जनता के नाम दिया गया सन्देश निम्न प्रकार से है :—

आर्य समाज का मिशन विश्व बन्धुत्व की उदात्त भावनाओं से



आप्लावित है। ऋषि दयानन्द का मानववाद आर्य समाज की थाती है। आज के सत्रस्त विश्व को आर्यसमाज के सन्देश से ही शांति प्राप्त हो सकती है। आर्य समाज के महान् सन्देश को आचार और विचार द्वारा संसार में प्रसारित करने का दायित्व आर्य समाजियों पर सबसे अधिक है। हमें अपनी सम्पूर्ण शक्ति जीवन के नैतिक अभ्युत्थान में लगा कर राष्ट्र का पथ प्रदर्शन करना चाहिए। स्वाधीनता के दस वर्ष पश्चात् भी देश में अनैतिक जीवन व्याप्त है और दिनों दिन वृद्धि पर है। अनैतिकता के उन्मूलन में आर्य समाज की प्रबल शक्ति न किसी से पीछे रही है और नहीं उसे रहना ही चाहिये। आर्य समाज किसी भी क्षेत्र में अनैतिकता का सहन नहीं कर सकता चाहे उसका सम्बन्ध व्यक्ति से हो या राष्ट्र या राजनीति से। आर्य समाज अपने जन्म काल से ही अन्याय, अत्याचार और अनैतिकता के सभी प्रकट और अप्रकट स्वरूपों का प्रबल विरोधी रहा है।

गत वर्ष आर्य समाज की अधिकांश शक्ति पंजाब के भाषा आन्दोलन में लगी रही। पंजाब में सत्ता को हथियाये रखने के लिए जिस साम्प्रदायिकता के साथ अकाली-सरकार समझौता किया गया है आर्यसमाज उसे अनैतिक और राष्ट्रघातक मानता है।

श्री घनश्याम सिंह गुप्त की अध्यक्षता में आर्य जगत ने अपार धन जन व शक्ति के सहयोग से आन्दोलन चला कर अन्याय के विरुद्ध आर्य समाज किस प्रकार संघर्ष करने में समर्थ है इस बात को प्रत्यक्ष सिद्ध कर दिया है। आन्दोलन के प्रभावकारी फल शनै: शनैः स्पष्ट होने लगे हैं और यदि हम अपने संगठन और सद्भाव को दृढ़ बनाये रक्खें तो और भी अधिक व्यापक प्रभाव सामने आने लगेंगे।

आर्य समाज और प्रचलित राजनीति के सम्बन्ध में पर्याप्त लोगों में भ्रांति है। आर्य समाज के इतिहास में यह प्रश्न सदैव एक ज्वलन्त प्रश्न बना रहा है परन्तु इस सम्बन्ध में समय-समय पर जो भी निर्णय हुए हैं संगठन ने सदैव उनका आदर किया है। आज भी आर्य समाज अपने इस निर्णय पर दृढ़ है कि प्रचलित राजनीति में सामूहिक रूप से आर्य समाज को भाग नहीं लेना चाहिए। इसके विरुद्ध कोई भी कथन प्रामाणिक नहीं समझा जाना चाहिए।

राष्ट्र-रथ को वर्तमान राजनीति के कीचड़ से बाहर खींच कर राष्ट्र को नैतिक दृष्टि से विमल व सबल बनाने का काम आसान नहीं है इसके लिए प्रत्येक आर्य को स्वय को, अपने स्थानीय, प्रादेशिक, प्रान्तीय और सार्वदेशिक संगठनों को दृढ़ और पवित्र बनाना होगा। इसके दोषों का निराकरण करने से पूर्व हमें नैतिकता और अनुशासनप्रियता का उदाहरण प्रस्तुत करना होगा। इसके लिए हमें आर्य समाज में से दलबन्दी की भावना को समाप्त कर बन्धुत्व की भावना को बढ़ाना होगा। विश्व बन्धुत्व के अभियान के लिये हमें अपने व्यक्तित्व और संगठन को उदात्त और पवित्र बनाना होगा। यदि हम अपना सारा ध्यान और शक्ति व्यक्तित्व विकास और नैतिक अभ्युत्थान की ओर लगा दें तो हमारी सफलता असंदिग्ध और सन्निकट है।

मैं आर्य जगत के सभी संगठनों आर्य समाजों, प्रान्तीय सभाओं, आर्य कुमार परिषदों, आर्य वीर दलों, स्त्री समाजों, उपदेशकों, प्रचारकों और साधु महात्माओं से आर्यसमाज के उपर्युक्त सन्देश को व्यावहारिक रूप देने तथा पूर्ण सफल बनाने में सहयोग की आशा रखता हूं।

वर्ष ६० | अंक २१

अवैतनिक सम्पादक—
स्नातक उमेशचन्द्र एम. ए., ईश्वरदयालु आर्य, सभा मुख्य उपमन्त्री
सह० सम्पादक—भगवत शरण

सिंहावलोकन

क्या आर्यसमाज का समाज सुधार आन्दोलन जीवित है ?

[लेखक—श्री पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०]

प्रत्येक आर्य समाजी भारत में समाज-सुधार आन्दोलन के लिये आर्य समाज को अग्रदूत मानकर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है परन्तु क्या हम आज उन सभी बातों में दूसरों से पिछड़ नहीं गये हैं और बहुत सी बातों की उपेक्षा नहीं करते रहे हैं ? आदरणीय उपाध्याय जी ने इस दिशा में जो विचार प्रस्तुत किये हैं आशा है आर्य बन्धु उस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे और समाज सुधार आन्दोलन को पुनः नेतृत्व प्रदान करने में अपनी सम्पूर्ण शक्ति से जुट जावेंगे। —सम्पादक

आर्य समाज का पहला कार्य समाज सुधार से आरम्भ हुआ। इसी लिए उसको ख्याति हुई। जो धार्मिक सिद्धान्तों में आर्यसमाज के विरोधी भी थे वह इसके भक्त या कम से कम प्रशंसक बन गये। परन्तु अब आर्य समाज का ध्यान समाज सुधार की ओर जैसा होना चाहिये नहीं है। यह तो शिकायत है कि आर्यसमाज के सुधार का काम कांग्रेस, सर्वोदय या अन्य संस्थाओं ने अपना लिया। परन्तु इस बात को संतोष या प्रसन्नता के रूप में नहीं कहा जाता। शिकायत के रूप में कहा जाता है। साधारण आर्य समाजी समझता है कि हाय यह काम मुझ से छिन गया। अब मैं क्या करूं ? हम को यह हर्ष नहीं होता कि जिस काम को हम पहले अकेले करते थे अब हमारे सबल प्रचार के फलस्वरूप हमको इतने साथी मिल गये। इस शिकायत वाली मनोवृत्ति का परिणाम यह है कि हम उपेक्षा करते करते इन क्षेत्रों से बहिष्कृत से हुये जा रहे हैं दूसरों में उत्साह है हम मातम करते हैं, यदि हम किसी को कोई सुधार करते देखते हैं तो उसके काम की बहुधा कड़ी और न्याय शून्य आलोचना भी करते हैं, परन्तु हम स्वयं कुछ काम नहीं करते आर्य समाज के ग्राम सम्बन्धी या नगर सम्बन्धी किसी कार्यक्रम का ध्यान पूर्वक अध्ययन कीजिये और आप को पता लग जायगा कि समाज सुधार की ओर समाज का ध्यान ही नहीं है। जो कुछ हमारे पूर्वजों ने किया उस पर अभिमान करना ही शेष है। आर्य समाज ने विधवा विवाह का प्रचार आरम्भ किया। विधवा विवाह का विरोध मिट गया। परन्तु यदि कोई विधवा विवाह कर लेती है तो उसको साभिमान जीवन व्यतीत करने में वही कठिनाई है। विधुरों का पुनर्विवाह सामान्य बात है विधवाओं का नहीं। आर्य समाज के विवाहों में दहेज के विरुद्ध कोई विशेष घृणा नहीं। आर्य लड़कियों के विवाह में वही अड़चनें हैं। आर्य समाजियों के विवाहों में भी आडम्बर वही हैं और दिन प्रति दिन बढ़ते जाते हैं। सादगी की ओर किसी का ध्यान नहीं। नेताओं के विवाह तो हो ही नहीं सकते जब तक भारत भर के प्रसिद्ध नेताओं को निमंत्रण न दिया जाय और सहस्रों रुपये व्यय न हों। यदि कोई उपदेशक निर्धन है (और उपदेशक तो स्वभावतः निर्धन होता है) तो उसके घर में भी वही चटक-मटक होगी और हजारों रुपये खर्च होंगे। वा यह नमूना पेश नहीं करता कि निर्धनों को विवाह के लिये रिश्वत या कर्ज लेने की जरूरत नहीं, विवाह बिना खर्च के भी हो सकते हैं, कहते हैं पं० लेखराम जी का विवाह बहुत सरलता से हुआ था। न बाजा, न गाजा, न दावत। विवाह सम्बन्धी रूढ़ियां वैसी ही हैं, बुराइयां वही हैं केवल रूप बदल गया है। मोटर के साथ यदि एक हवन कुन्ड भी शामिल कर दिया गया तो इससे 'वैदिक' और 'आदर्श विवाह' तो नहीं कहा जा सकता पचास वर्ष पूर्व का युवक सुधार के लिये हाथ पैर मारता था' जी में उमंग थी, सफलता मिले या न मिले। आज का आर्य युवक वैसा ही अपेक्षा शून्य है जैसे अन्य युवक ! बारह बजे रात के विवाह संस्कार आज भी होते हैं और उन्हीं दिनों में होते हैं जो फलित ज्योतिष के आधार पर शुभ समझे जाते हैं, मृतकों की तेरहवीं भी उसी प्रकार से होती है। यदि किसी आर्य के घर में विवाह के लिये लड़कियां हैं तो उसको वही कठिनाइयां हैं जो

[शेष पृष्ठ १६ पर)

अध्यात्म धारा

प्रशस्त-पथ

[डा० मुन्शीराम शर्मा एम० ए० पी एच०डी०, डी० लिट्०, कानपुर]

क्षुद्र ऐषणाओं का पुतला बना हुआ यह मानव अपने अस्तित्व की ओर कब आकर्षित होता है? इस प्रश्न का बड़ी विद्वत्ता के साथ इस लेखमें उल्लेख है। जीवन के ऐहिक सुखों में निमग्न मानव पर परोपकार के लिए बलिदान त्याग और समर्पण करने वाले महान् व्यक्तियों का प्रभाव पड़ता है और कभी कभी यह प्रभाव दूसरों के जीवन में क्रांति उत्पन्न कर देता है। जीवन का प्रशस्त पथ क्या है, इसका उत्तर महापुरुषों की जीवनियों से मिलता है। —सम्पादक

शार्मण्य देश के प्रख्यात दार्शनिक इमानुअल कान्त ने जब कहा था कि क्या तुम इस विश्व में किसी शुभ की कल्पना नहीं करते ? क्या इस शुभ की ऊंचाई का अनुभव नहीं करते ? और क्या इस शुभ को पकड़ने की उत्कट कामना तुम्हारे अन्दर कभी जागृत नहीं होती ? तब वह निश्चित रूप से हम सब के सामने जीवन पथ की ऊंचाई का आभास दे रहा था।

यदि हम शुभ का, भद्र का, श्रेय का अस्तित्व स्वीकार करते हैं और यह सिद्धि कोरे कथन तक ही सीमित नहीं रहती, हम अपने सामने ऐसे सन्तों, भक्तों साधकों और महापुरुषों को भी देखते हैं, जो इस शुभ की ओर प्रयाण करते हैं, प्राणपण से इसे जीवन में सम्मिलित करने के लिए जुटते हैं और श्रेय में मग्न होकर ऐसी ज्योति जगा जाते हैं जो बहुत दिनों तक मानव हृदय को आकर्षित करती रहती है।

सामान्य स्तर पर मानव क्षुद्र ऐषणाओं का दास है। उसे जीवन पथ की श्रेष्ठता एवं उच्चता का भान भी नहीं होता। पर जब वह किसी व्यक्ति को देश की स्वाधीनता के लिए बलिदान करते देखता है, निर्बल व्यक्ति पर उठे हुए अत्याचारी के हाथों को पकड़ते और आर्त के दुःख को विदा रण करते हुए देखता है, किसी दीन हीन व्यक्ति की सहायता के लिए बढ़ते हुए करुणा एवं दया के हाथों को देखता है, तो उसके अन्दर निहित सद्भावनाओं का स्रोत भी अकस्मात फूट पड़ता है। वह अनुभव करने लगता है कि क्षुद्र कामनाओं की अपेक्षा उसका हृदय इन सद्भावनाओं की ओर आकर्षित हो रहा है। ऐसे अवसरों पर मानो मानव के वास्तविक अस्तित्व का उदय होता है, जीवन पथ की उच्चता अनुभूत होती है और मानव जीवन आहार निद्रा आदि में ही व्यतीत कर देने के लिए नहीं है, उसका एक महत् उद्देश्य है, एक श्रेष्ठ लक्ष्य है यह भी हृदयंगम होने लगता है।

जीवन पथ की ऊंचाई कहां तक गई है, इसे कोई जान नहीं सकता। भौतिक समृद्धि, दैवी सम्पदा, अलौकिक ऐश्वर्य, बल एवं वीर्य ओज और शक्ति, ज्ञान और विज्ञान, त्याग और बलिदान कितने ऊंचे जा सकते हैं, कौन जानता है ? दधीचि और भामाशाह, प्रताप और तेगबहादुर शिवाजी और गोविन्दसिंह, गांधी, और मेजिस्वनी, दयानन्द और शंकर चैतन्य और रामकृष्ण, सूर और तुलसी मीरा और रैदास की हम प्रशंसा करते हैं। उनके जीवन की निर्मलता, भाव प्रवीणता, वीरता, सज्जनता एवं आध्यात्मिकता हमें आकर्षित करती है, उद्बुद्ध करती है और वैसा ही बनने के लिए प्रेरणा देती है। यदि हम अदम्य उत्साह को लेकर उनके द्वारा संकेतित पथ पर चल पड़े तो हमसे नीचे स्तर पर बैठे हुए मानव हमारी ओर देखने लगते हैं। यही तो अनुक्रम है, यही तो परम्परा है, यही तो देश और काल के गर्भ में छिपी हुई वह संतति है जो चेताती है कि जहाँ जो हमारे आदर्श हैं, उनके भी कोई आदर्श थे और उन आदर्शों के भी कोई आदर्श थे। सबसे श्रेष्ठ आदर्श, जीवन पथ के सर्वोच्च कूट पर स्थित श्रेय अपनी झलक हम तक पहुंचाना चाहता है, पर हम दुर्बल मानव उस तक नहीं पहुंच पाते। उसकी प्राप्ति उसका सामीप्य, उसका सायुज्य दुर्लभ, पर असम्भव नहीं श्वेतद्वीपस्थ ऋषियों से नारद ने यही सुना था। युग युग तक एकनिष्ठ होकर जब ऋषियों ने साधना की, तब कहीं उस श्रेष्ठतम आदर्श की झलमलाती हुई ज्योति के वे क्षणिक दर्शन कर सके थे। ज्योति आई और चली गई, प्रकाश आविर्भूत होकर तिरोहित हो गया। ऋषि पुनः तपश्चर्या में जुटे तद्बुद्धि तदात्म तन्निष्ठ और तत्परायण होकर वे जब ऐकात्मक बने, ज्ञान प्रकाश निर्धूत कल्मष होकर जब सर्वात्मना समर्पित हुए अहन्ता से रोग मुक्त हुए, तब कहीं वह उत्तम ज्योति, वह श्रेष्ठ आदर्श प्रकाश उनके सम्मुख प्रकट हो सका था। इस गहन साधना के धनी यहाँ कितने हैं ? पर जितने भी हैं एक दो ही सही वही इस साधना-पथ की उत्तम बत लाने के लिए पर्याप्त हैं।

वेदोपदेश

ओं अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित्कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः ।
तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे वि चष्टे सवितायमर्यः ॥
—ऋ० १०।३४।१३

हे जुआरी, जुआ मत खेल, खेतों में खेती कर, प्राप्त धन को बहुत समझता हुआ उसी को भोग। तेरे घर मे गौवें हैं, तेरी पत्नी है, यह मुझ उपदेशक द्वारा सब का स्वामी जगदुत्पादक परमेश्वर कहता है।

आर्यमित्र

[लखनऊ—२२ जून १९५८, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टिसवत् १९७२९४९०५९]

आर्य समाज का नैतिकोत्थान आन्दोलन

आर्य समाज की स्थापना विश्व कल्याण की महान् भावना के साथ हुई थी और यही कारण है कि प्रत्येक आर्य के हृदय मे मानवोपकार की भावना सदैव विद्यमान रहती है। हम संसार का उपकार करने के महान आदर्श की ओर अग्रसर हो सकें इसके लिये हमें व्यक्तिगत चरित्र और आचार-विचार की पवित्रता की ओर ध्यान देना चाहिये। व्यक्ति के आच-रण का सम्पर्क मे आने वाले व्यक्तियों पर प्रभाव पड़ता है और एक एक व्यक्ति की पवित्रता से समाज पवित्र बनता है।

आज हमारा देश जिस सकटापन्न स्थिति में से गुजर रहा है उसका मूल कारण राष्ट्रिय चरित्र का पतन है। राष्ट्र में सर्वत्र स्वार्थान्धता का प्राबल्य है और शक्ति का साम्राज्य है। यदि हम चाहते हैं कि भारत अपने महान् गौरव को पुनः प्राप्त कर सके तो हमे देश में नैतिक क्रान्ति का नेतृत्व करने के लिये आगे आना होगा।

आर्य जगत् के माननीय नेता सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी अभेदानन्द जी का सन्देश इसी अंक में प्रकाशित है। स्वामी जी ने सम्पूर्ण आर्य जगत् को नैतिकता आन्दोलन के रूप में एक वैचारिक क्रान्ति का सदेश दिया है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान ने भी अपने पहले सन्देश में राष्ट्र चरित्र को विमल और सबल बनाने की अपील की थी। दोनों आर्य नेताओं की अपील को दृष्टि में रखते हुए इस वर्ष आर्य समाज को अपनी प्रबल शक्ति इस आन्दोलन को राष्ट्र व्यापी रूप देने में लगा देनी चाहिये। नैतिक अभ्युत्थान का आन्दोलन केवल प्रचार और पत्रों से नहीं हो सकता उसके लिये प्रत्येक को व्यक्तिगत रूप से साधना करनी पड़ेगी। यदि हमारा व्यक्तिगत जीवन अपवित्र और भ्रष्ट है तो हम दूसरों के भ्रष्टाचार और अनैतिक कार्यों का विरोध कैसे कर सकते हैं? अतः सबसे पहले हमें अपने चरित्रों के विकास पर ध्यान देना होगा। ऋषि दयानन्द ने १८६८ मे पाखण्ड खण्डिनी पताका फहरा कर जिस आन्दोलन को आरम्भ किया था उससे पूर्व उन्होंने अपने चरित्र को भी महान और दृढ़ बना लिया था और यही कारण है कि वे अपने मिशन पर अन्त तक हिमालय की भांति दृढ़ बने रहे। इसलिए अपने व्यक्तियों और समुदायों का नैतिक स्तर सदैव उन्नत रहे तभी हम दूसरों के अनैतिक जीवन पर प्रहार करने मे समर्थ और सफल हो सकते हैं।

गत वर्ष आर्य जनता ने एक आन्दोलन कर अन्याय के विरुद्ध सगठित रोष प्रकट किया था इस वर्ष हमारी सारी शक्ति से अपने और राष्ट्र के नैतिक विकास मे जुट जाना चाहिये।

आशा है आर्य बन्धु इस वर्ष इस आन्दोलन को अपने कार्यक्रम का अंग मानकर योजनानुसार कार्य आरम्भ करेंगे और राष्ट्र व्यापी वैचा-रिक एवं आचारिक क्रान्ति के दायित्व को पूर्ण करेंगे।

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

आर्य प्रतिनिधि सभा की योजनायें

गत वर्ष हिन्दी आन्दोलन में हम लोग सम्पूर्ण शक्ति से जुटे रहे सबका एकमात्र लक्ष्य आन्दोलन की सफलता रहा। फल स्वरूप सभा की विविध प्रगतियों में शिथिलता आ गयी। आज हम अपने कार्यक्रम पर पुनः विचार आरम्भ करें तभी शैथिल्य दूर हो सकेगा।

सभा ने पिछले दिनों कुछ आव-श्यक निश्चय किये थे उनमें से (१) आर्यमित्र जयन्ती (२) श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय अभिनन्दन (३) विरजानन्द स्मारक का उद्घाटन (४) गुरुकुल आन्दोलन को व्यापक रूप देना। हम समझते हैं उत्तर प्रदेश ही नहीं संपूर्ण आर्य जगत के साथ इन निश्चयों का घनिष्ट सम्बन्ध है। आर्यमित्र आर्य जगत ही नहीं हिन्दी जगत् का प्राचीन तम पत्र है और ६० वर्ष से राष्ट्र, धर्म और साहित्य की सेवा मे सलग्न है। आज आर्यमित्र एक पत्र ही नहीं बल्कि संस्था बन चुका है और उसके पीछे एक साधना का इतिहास है अतः आर्यमित्र की जयन्ती मनाने का निश्चय सामयिक और उपयोगी निश्चय है।

आदरणीय उपाध्याय जी आर्य समाज के वयोवृद्ध नेता हैं उनका सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज की सेवा मे व्यतीत हुआ है। आर्य सिद्धान्तों की व्याख्या के लिए उच्चकोटि का साहित्य लिखकर आपने हमारे ऊपर महान उपकार किया है। वैदिक धर्म प्रचार के लिये देश विदेश घूमकर आपने ऋषि सदेश प्रसारित करने मे जिस त्याग तपस्या और लगन का परिचय दिया है वह हम सबके लिये अनुकरणीय उदाहरण है। उनके प्रति कृतज्ञता प्रदर्शन करना हम सबका परम कर्तव्य है। विरजानन्द स्मारक के उद्घाटन की योजना भी इस वर्ष अवश्य पूर्ण होना चाहिये। मथुरा मे इस सम्बन्ध मे पर्याप्त कार्य हो चुका है। हमारी सम्मति है कि इस स्मारक का उद्घाटन प्रान्तीय स्तर पर न हो कर सार्वदेशिक स्तर पर होना चाहिये। आशा है उत्तर प्रदेश के आर्य किसी से पीछे नहीं रहेंगे और अपने परम गुरु के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करेंगे।

गुरुकुल आन्दोलन को व्यापक रूप देना भी हमारा इस वर्ष का मुख्य कार्यक्रम होना चाहिये। सभा के गुरुकुल वृन्दावन में छात्रों की सख्या वृद्धि तथा आर्थिक सहायता द्वारा उसे सुदृढ़ बनाने की ओर यदि सम्मिलित रूप से प्रयत्न किया जाय तो हम शीघ्र ही अपनी संस्था को सर्वोत्तम संस्था बना सकेंगे।

आशा है सभा की इस वार्षिक योजना को सफल बनाने में आर्य बन्धु तत्परता से जुट जायेंगे।

स्वर्गीय पं. रूपनारायण पांडेय

हिन्दी साहित्य जगत् के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् पं० रूपनारायण पांडेय के आकस्मिक निधन का समाचार बड़े दुख के साथ पढ़ा गया। पांडेय जी हिन्दी की पुरानी पीढ़ी के साहित्य कार थे हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि में उनका योग सदैव स्मरणीय रहेगा। 'माधुरी", "सुधा" के सम्पादक रहते हुए आपने अनेक वर्षों तक हिन्दी पत्रकला की सेवा की, बगला तथा अन्य भाषाओं के ग्रन्थों का अनुवाद कर हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि में योग दिया। पांडेय जी के निधन पर मित्र परिवार की ओर से शोक प्रकट करते हुए हम उनके शोक संतप्त परि-वार के प्रति सहानुभूति प्रकट करते है।

आर्य विद्वानों की स्मृति में पदक

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान् श्री बनारसी दास चतुर्वेदी ने सभा प्रधान को बधाई पत्र लिखते हुए संकेत किया है कि आर्य समाज की नवीन पीढ़ी के विद्वानों का नामो-ल्लेख कर उनसे प्रेरणा प्राप्त करने के लिये उन्होने आर्य विद्वानो की स्मृति मे पदकों की स्थापना का सुझाव दिया है। हम इस सुझाव का हार्दिक समर्थन करते हैं। आशा है सभा की ओर से शीघ्र ही इस सम्बन्ध में निर्णय किया जायेगा। आर्य नव-युवकों को साहित्य प्रेरणा देने और विद्वानो का आदर करने के लिए यह कार्य अविलम्ब किया जाना चाहिए।

नेतृत्व की स्वाधीनता

सभा प्रधान को लिखे पत्र में श्री बनारसी दास चतुर्वेदी ने आर्य जनता से नेतृत्व की स्वाधीनता का प्रश्न किया है। प्रजातन्त्र के साथ साथ यदि हम बुद्धितन्त्र को भी स्वीकार करें तो यह समस्या उत्पन्न ही नहीं होनी चाहिए। हमारा विश्वास है आर्य जनता अपने नेताओं का सम्मान करना जानती है और वह अपने नवीन नेताओ को नेतृत्व की पूर्ण स्वा-धीनता प्रदान करेगी। शीघ्र ही सारे प्रान्त मे नये अधिकारियों की गति-विधियो से एक नया वातावरण उत्पन्न होगा और आर्य समाज के कार्य को बल मिलेगा।

"संस्कृतम्" के सम्पादक को चेतावनी

संस्कृत के साप्ताहिक पत्र संस्कृ-तम् के सम्पादक ने २२।४।५८ के अङ्क मे महर्षि दयानन्द के पवित्र और

(शेष अगले पृष्ठ पर)

संसदीय चुनाव में विजयी होने पर आर्य समाजों की ओर से

पण्डित प्रकाशवीर शास्त्री को बधाई

गुडगावा क्षेत्र से ससदीय चुनाव में विजयी होने पर आर्य जगत् के अद्वितीय विद्वान् वक्ता व प्रसिद्ध नेता श्री पण्डित प्रकाशवीर शास्त्री उप मन्त्री सर्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को देश की अधिकाश आर्य समाजों ने बधाई के सदेश भेजे हैं साथ ही इसकी सूचना आर्यमित्र को भा प्रकाशनार्थ आई है। परिस्थिति यह है कि यदि सभी समाजों के नाम भा प्रकाशित किये जाय तब भी दो कालम स्थान देना पड़ता। अत सभा समाजो की आर से सम्मिलित रूप मे केवल यह एक नोट प्रकाशित करके हम क्षमा चाहते हैं।

—स०मम्पादक

लेखकों से निवेदन

आर्यमित्र के स्तर को उन्नत बनाने के लिए विशेष आयोजन किया जा रहा है। लेखको का सहयोग अपेक्षित है। मित्र म विविध प्रकार की सामग्री प्रकाशित कर उसे सभा वर्गों का रुचि के अनुरूप बनाया जा सके इसके लिए भविष्य म उ हीं लेखा को प्रमुखता प्रदान की जायेगी जो हमारे स्तम्भो के अन्तगत और सक्षिप्त हागे।

हमारे स्थायी स्तम्भ—सामयिक समस्याये, सुझाव और सम्मतिया, सिद्धान्त विमर्श, जीवन ज्योति, महिला मण्डल, स्वास्थ्य-सुधा, विज्ञान वार्ता, बालजगत् साहित्य चर्चा, काव्य कानन बाल विनोद, अध्यात्म धारा, भरत मिलाप (शुद्धि) आदि।

आशा है लेखक गण उपर्युक्त स्तम्भों के अन्तर्गत अपने लेख शुद्ध और स्पष्ट भाषा मे भेजेंगे।

—सम्पादक 'आर्यमित्र'

नम्र—निवेदन

श्रद्धेय श्री प० हरिशङ्कर शर्मा प्रधान सभा के आदेशानुसार हम लोगो ने 'आर्यमित्र' के अवैतनिक सम्पादक का कार्य स्वीकार कर लिया है। यद्यपि हमारा शाक्तया सीमित हैं और हम में अनेक दुर्बलतायें हैं फिर भी मित्र परिवार और आर्यजगत् की सेवा भावना से इस दायित्व का स्वीकार कर रहे हैं। आशा है आर्य बन्धुओं विद्वानों नेताओं और मित्रों के सहयाग से हम इस कार्य का सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकेंगे।

विनम्र

उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए० — अन्तरङ्ग सदस्य

ईश्वरदयालु आर्य — सभा मुख्य उपमन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

सभा मुख्य उप मन्त्री श्री ईश्वरदयालु आर्य का दौरा

आगामी २८ और २९ जून को श्री आर्य जी दुगड्डा और लैंसडौन के दौरे पर पहुचगे।

२८ जून का दुगड्डा में आर्य सम्मेलन म भाग लेंगे। दुगड्डा क्षेत्र का समाजो के अधिकारी अपनी अपना समाजा के रजिस्ट तथा प्रान्ताय वेद प्रचार क लिये समहीत धन लेकर वहा पधारें।

२९ जून का आर्य सम्मेलन लैंसडौन मे हागा। उस क्षेत्र का समाजो के अधिकारी भा उस दिन अपनी समाजो के रजिस्टरो और प्रान्ताय वेद प्रचारार्थ समहीत धन के साथ उनसे वहा भट करें।

३०जून व १ जौलाई उत्सव आर्य समाज पुरानी मण्डी सहारनपुर।

फूलसिंह सभा मन्त्री

(पिछले पृष्ठ का शेष)

महान् चरित्र पर आक्षेप किये हैं। अखण्ड ब्रह्मचारी ऋषि क सम्बन्ध में समय समय पर भ्रान्त विवरण प्रस्तुत कर जनता म उनके सम्मान का हानि पहुँचाने का प्रयत्न किया जाता है। परन्तु ऐसा काय करन वालो का समझ लेना चाहिये कि उनका यह काय सूर्य पर धूल फैंकन के समान है, भा त हा नहीं विश्व का विभूति ऋषि के चरित्र की महत्ता का कम करना मानवता का अपमान करना है।

हम 'स कृतम" के सम्पादक का चेतावना दना चाहते ह कि वे अपन लेख का वापस ल और भूल सुधार कर अन्यथा उनके विरुद्ध व्यापक आन्दोलन आरम्भ किया जायगा।

★

काव्य-कानन

सीखो ★ ['भुवन', मीरजापुर]

हे युवक वीर ! हे युवति धीर, अगारों में पलना सीखो।
कर्म क्षेत्र अरु धर्म क्षेत्र में जीवन अर्पण करना सीखो॥
दुखियो को सुखमय करना, है भूले को पथ दिखलाना,
अज्ञानी को ज्ञान दीप से सम्यक जीवन दर्शाना,
बढे हुये इस अन्धकार मे सद् प्रकाश को छितराना,
किंचित, निभृत, निर्भय होना, मिथ्या कभी न अपनाना,
हे युवक वीर ! हे युवति धीर, तुम सत्य काम बनना सीखो।
कर्म क्षेत्र अरु धर्म क्षेत्र में जीवन अर्पण करना सीखो॥
भक्षण नहीं अपितु रक्षण का ही उद्देश्य तुम्हारा है,
सत्य, प्रेम औ' शान्ति स्थापना ही कर्तव्य तुम्हारा है,
जग को आर्य बनाना ही जीवन मे ध्येय तुम्हारा है,
ऋषि के दर्शित सुगमराह से चलना लक्ष्य तुम्हारा है,
हे युवक वीर ! हे युवति धीर, तुम शूलो पर चलना सीखो।
कर्म क्षेत्र अरु धर्म क्षेत्र म जीवन अर्पण करना सीखो॥
अभिलाषा हो बडा किन्तु आशा से कभी न मुख मोडा,
निर्धन हो लेकिन जावन की अमर साधना मत छोडो,
तन शक्तिहीन है होन दो, केवल प्रभु से नाता जोडो,
रूढ़िवाद की चट्टानो का पद प्रहार से तुम तोडो,
हे युवक वीर ! हे युवति धीर, तुम नूतन युग रचना सीखो।
कर्म क्षेत्र अरु धर्म क्षेत्र मे जीवन अर्पण करना सीखो॥
ओज युक्त हो गिरा आर्य की मुख पर आभा शौर्य महान्,
जग का साहस, शक्ति समन्वित देता स्नेह दया का दान,
विद्यावान, विनम्र कृपालु, करना सदा सत्य सधान,
सच्चा आर्य वही है जिसम प्रतिबिम्बित होता भगवान,
हे युवक वीर ! हे युवति धीर, तुम कर्मवीर बनना सीखो।
कर्म क्षेत्र अरु धर्म क्षेत्र में जीवन अर्पण करना सीखो॥
सघर्षों का बजे बिगुल जब, तुम आगे बढ जाना,
देश धर्म की रक्षा मे तत्पर रहना औ, मिट जाना,
तुम करना आह्वान प्रेम से विलग हुये को अपनाना,
फिर भी यदि बाधक बन बैठें तो पगतल से ठुकराना,
हे युवक वीर, हे युवति धीर, तुम हस हस कर मरना सीखो।
कर्म क्षेत्र अरु धर्म क्षेत्र मे जीवन अर्पण करना सीखो॥
अनुशासन पालन करना नूतन चरित्र करना निर्माण,
मन में रख निष्काम भाव, बाधाओ को करना म्रियमाण,
देश जाति के गुण गरिमा पर तुम अर्पण कर देना प्राण,
फहरे यश की धवल पताका, जागरूक हो देश महान,
हे धीर वीर नातिज्ञ साहसी तुम मानव बनना सीखो।
कर्म क्षेत्र अरु धर्म क्षेत्र म जीवन अर्पण करना सीखो॥

स्वामी की याद — धर्मचन्द्र वर्मा 'धर्म' लखनऊ

स्वामी की याद हमसे भुलाई नहीं जाती।
हृदय का पीर हाय छिपायी नहीं जाती॥
आता है याद आज आवागढ़ का मामला।
सत्याग्रह की याद दुहराई नहीं जाती॥
बन्दी बने थे जेल के सिक्खों के दुख में।
परोपकार की प्रवृत्ति मिटायी नहीं जाती॥
खायी थी गोली स्वामि ने पर आह नहीं की।
निर्भीकता अदम्य बतायी नहीं जाती॥
बिछुडे अनेक बन्धु मिले 'धर्म' जाति में।
शुद्धि की युक्ति मन से हटायी नहीं जाती॥
शिक्षा प्रसार के लिये गुरुकुल किया निर्मित।
जिसका मिसाल विश्व में पायी नहीं जाती॥
खेले न कोई खेल शहीदो के खून से।
जलती लहू की आग बुझायी नहीं जाती॥

आर्यसमाज और नया हिन्दू विधान

[श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी पूर्व प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा]

पिछले दिनों आर्यमित्र में आचार्य श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ जी का एक लेख प्रकाशित हुआ था जिसका शीर्षक 'हिन्दुओं की सम्मिलित कौटुम्बिक पद्धति पर प्रहार' है। इन लेखों से उस नये हिन्दू विधान की आलोचना की गई है जिस के ३ या ४ भाग संसद से स्वीकृत हो कर प्रचारित हुए। श्री आचार्य नरदेव शास्त्री जी आर्य समाज के एक योग्य और अनुभवी नेता हैं। मैं उनका बहुत सम्मान करता हूं। सम्पूर्ण हिन्दू विधान का विषय बहुत बड़ा है। श्री आचार्य जी ने विशेष कर दो विषयों की आलोचना की है, एक 'हिन्दुओं की सम्मिलित कौटुम्बिक पद्धति' व दूसरा विषय है विवाह विच्छेद या तलाक। मुझ को श्री आचार्य जी से दोनो विषयों पर मत भेद है। मैं विशेष कर इन दो विषयों पर ही अपने विचार प्रकट करूंगा।

(१) संयुक्त परिवार पद्धति—

पहला विषय संयुक्त परिवार पद्धति है। आचार्य जी का यह कहना ठीक है कि सम्मिलित कौटुम्बिक प्रथा हिन्दुओं की एक विशेषता रही है पर उनका यह लिखना कि—'यह इस नये कानून मे जाती सी मालूम दे रही है' सर्वांश में ठीक नहीं है। हमारा भारत देश एक कृषि प्रधान देश है। कृषकों के लिये यह पद्धति अनुकूल रहती है। घर में दस पांच व्यक्ति हों तो सब मिल कर खेती के विविध कार्यों को कर लेते हैं और सब मिलकर संयुक्त परिवार के रूप में भोजन वस्त्र आदि का प्रबन्ध कर लेते हैं। अब सरकार का तथा जनता का भी ध्यान उद्योगों की ओर अधिक जा रहा है। पिछले दिनों पार्लियामेंट के आदेश से खादी व ग्रामोद्योग के लिए एक विधान स्वीकृत हुआ और एक कमीशन नियत हुआ। उस विभाग का एक मिनिस्टर नियत होने का भी विचार है। ग्रामों में उद्योगों का प्रचार करने में सरकार के दो उद्देश्य हैं। एक यह कि कृषक लोग उस समय में जब खेती का काम नहीं रहता कुछ व्यवसाय करके कुछ कमाई कर लेवें। दूसरा यह कि जिन लोगों के पास खेत नहीं या जो अन्य कारण खेती का धन्धा नहीं करना चाहते, उनको कुछ व्यवसाय मिल जाय नगरों में अधिक लोग ऐसे रहते है जो खेती नहीं करते, कुछ और व्यवसाय करते हैं, या सरकार या किसी अन्य की नौकरी करते हैं। ऐसे लोगों के लिए संयुक्त परिवार की प्रथा अनुकूल नहीं होती। एक भाई या व्यक्ति का वेतन या आय दूसरे से अधिक है। वह उसके साथ साझा करना पसन्द नहीं करेगा, इस लिए ऐसे क्षेत्रों में संयुक्त परिवार की प्रथा कम होती जा रही है। यह देश व जनता के हित की दृष्टि से बुरा भी नहीं। संयुक्त परिवार में जो आलसी हैं उनको भी भोजन वस्तु समान रूप से मिलता है इसलिये आलस्य की प्रेरणा बढ़ती है। यह एक भारी दोष है। विभक्त परिवार में हर व्यक्ति को अधिक परिश्रम के लिए उत्साह होता है। केवल भारत ही में नहीं किन्तु सारे संसार में उद्योगों की वृद्धि करने की प्रवृत्ति देखी जाती है। भारतवर्ष मे अवश्य उद्योगों की वृद्धि होगी। इसका प्रभाव संयुक्त परिवार प्रथा के विरुद्ध होगा और उक्त प्रथा कम होती जायगी। यह निश्चय ही है। पर इसमें नये हिन्दू विधान का कुछ दोष नहीं यह कृषि और उद्योग का परस्पर संघर्ष है इसका परिणाम एक प्रकार से अच्छा ही होगा। मनुष्यों में आलस्य कम हो कर परिश्रम अधिक करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी। इसलिये श्री आचार्य जी ने जो यह लिखा है—इस नये कानून से हिन्दू धर्म की सम्मिलित कौटुम्बिक प्रथा की जड़ पर भी कुठार चल गया यह तथ्य नहीं है।

(२) दूसरा विषय विवाह विच्छेद है, इस विषय पर मैं पहले भी आर्यमित्र में लिख चुका हूं। मेरे मित्र व "नामराशी" पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय जी ने कई बार लेख लिखे हैं। वे भी आर्यों में तलाक के मुख्य समर्थकों में गिने जाते हैं। इसलिए विस्तार को छोड़ कर संक्षेप से कुछ आवश्यक बातों पर लिखूंगा।

इस नये विधान को बनाने वालों ने—(जो सब शिक्षित भारतीय ही है) इस बात पर बहुत ध्यान दिया है कि योरप व अमरीका मे तलाक की प्रथा से जो अनाचार बढ़ता है, उस प्रकार भारतवर्ष मे अनाचार की वृद्धि न हो। पाराशर स्मृति का एक श्लोक बहुधा दिया जाता है :—

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीवे च पतिते पतौ
पंचस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते

अर्थ—नष्ट हो जाने पर, मृत्यु हो जाने पर सन्यासी या विरक्त हो जाने पर, नपुन्सक होने पर, धर्म भ्रष्ट हो जाने पर इन पांच दशाओं में स्त्रियों को दूसरे पति का अधिकार है।

नये विधान—हिन्दू शादी धारा २५ क १९५५ की धारा १३ में जिन दशाओं मे तलाक की आज्ञा हो गई है, उनमें (मृत्यु को छोड़कर) ऊपर लिखी सब है।

अर्थात् नष्ट होना या गुम हो जाना जिसकी मियाद ७ वर्ष रक्खी गई है, अब जिनका सन्यासी होना क्लीव वा नपुन्सक होना और पतित अर्थात् दूसरे धर्म में चले जाना। इनके सिवाय जो और दशा नये कानून मे रक्खी गई वे इस प्रकार हैं—

(१) व्यभिचार का व्यवहार रखना (२) कम से कम ३ वर्ष से पागल होना (३) तीन वर्ष से बुरे कुष्ट रोग में हो (४) तीन वर्ष से रोगी होना (५) अदालत की आज्ञा होने पर भी २ वर्ष तक संसर्ग न करना। स्पष्ट ही है कि ऊपर लिखी व्यवस्था सब प्रकार ठीक है। सब से बड़ी बात यह है कि विवाह के बाद तीन वर्ष तक किसी प्रकार तलाक की अर्जी नहीं दी जा सकती है (धारा १४) तीन वर्ष के बाद भी अदालत को आदेश दिया गया है कि यदि सम्भव हो तो पति व पत्नी मे समझौता कराने का यत्न किया जाय। तलाक सम्बन्धी सब कार्यों में केवल बड़ी अदालत (डिस्ट्रिक्ट जज) को अधिकार दिया गया है।

(३) बहु पत्नी विवाह निषेध—

मुझको दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि श्री आचार्य जी ने नये कानून के दो विषयों की आलोचना करते हुए, (जिन पर उनका प्रतिकूल मत है), कानून की दो ऐसी व्यवस्थाओं की ओर संकेत भी नहीं किया जिनके लिए हर विचारशील मनुष्य को उस की प्रशंसा करनी चाहिए। इनमें सबसे प्रथम धारा १७ का यह विधान है कि कोई पुरुष एक स्त्री होते हुए दूसरा विवाह नहीं कर सकता। यदि करेगा तो दण्ड संग्रह के धारा ४५४ व ४५५ का अपराधी होगा।

यह कितने घोर अन्याय की बात थी कि इस नये विधान से पहले एक पुरुष पत्नी होते हुए भी १, २, ३ चाहे जितनी स्त्रियों से विवाह कर सकता था पर एक १० या ११ वर्ष की विधवा (जो वास्तव मे कुमारी के सम न होती थी), दूसरा विवाह नहीं करती थी, इसलिए नये कानून का यह विधान ऐसा है, जिसके कारण छोटी छोटी मतभेद की अन्य बातों के होते हुए भी इस कानून की प्रशंसा ही करनी चाहिए। आर्य समाज को तो अवश्य ही इस पर गर्व करना चाहिए।

(४) स्त्रियों का सम्पत्ति मे पूरा अधिकार—

एक दूसरा विषय इस कानून का जो बहुत प्रशंसनीय है वह यह कि इससे पहले स्त्रियो को अपनी संपति पर पूरा अधिकार न था। सिवाय नाममात्र के स्त्रीधन के वे अपनी संपति को न बेच सकती थी और न बन्धक रख सकती थी। धार्मिक कार्यों के लिये उनको कुछ सीमित अधिकार था वह ऐसा था कि अगर वे किसी सपति को बन्धक भी रखना चाहें तो पति के सम्बन्धी उसको रोकने के लिये तैयार रहते थे। इस कारण किसी विधवा को ऐसे अधिकार के लिये भी विक्रय या बन्धक रखने का साहस नहीं होता था। यदि किसी ने ऐसा साहस किया तो बड़ी मुकदमेबाजी होती थी जिसका सब वकीलों या न्याय विभाग में काम करने वालों को अनुभव है। नये कानून मे स्त्रियों को अपनी संपति पर पुरुषों के सम न पूरा अधिकार हो गया। स्त्रियों के लिये, बहु पत्नी विवाह निषेध के बाद यह दूसरी व्यवस्था बहुत हितकारी है।

(५) कानून बनाने वालों को चुनौती—

अपने दूसरे लेख में श्री वेदतीर्थ जी ने कुछ वेद मन्त्र इस विषय के समर्थन में देकर कि मनुष्य के दाय भाग का अधिकारी पुत्र है, पुत्री नहीं है, कानून बनाने वालों को यह चुनौती दी है कि वे धर्माचार्यों की सलाह लिये बिना ऐसे विषय पर कानून बनाते हैं और पहले लेख मे यह भी लिखा है—"हमारे आर्य समाजी भाई भी जब इस प्रकार के कानून बनते हैं तब सरकार का ही पक्ष लेते रहते हैं।"

(६) आर्य समाज का कर्तव्य—

इसके उत्तर में श्री आचार्य जी से मैं निवेदन करूंगा कि पहले आर्य समाज

[शेष पृष्ठ ६ पर]

सामयिक समस्याएँ

सभा प्रधान श्री पं० हरिशङ्कर शर्मा के नाम

साहित्यकार श्री बनारसी दास चतुर्वेदी एम. पी. की चिट्ठी

आर्यसमाज नवीन नेतृत्व की सहायता करे

१९ नार्थ ऐवेन्यू, नई दिल्ली
२५ ५ ५८

प्रिय भाई हरिशंकर जी

एक बार मैंने महामान्य श्रीनिवास शास्त्री जी से कहा—'बापू इस वक्त जेल में हैं और कुछ काम स वाले आपसे यह उम्मेद करते हैं कि आप इस संकट के समय देश का नेतृत्व करें।'

शास्त्री जी ने उत्तर दिया—

The Congress people will not let me lead the country according to my own convictions They will expect me to give an idea that may be up to their liking! Besides I havn t got the iron constitution and the iron will that is required for a leader of men'

आपके आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान बनने पर मुझे शास्त्री जी का उपर्युक्त वचन याद आ गया।

क्या आर्य बन्धु आपको नेतृत्व की स्वाधीनता दे सकेंगे ? मुझे इसमें कुछ शक है। आप जानते ही हैं कि मेरा क्षुद्र जीवन आर्य समाज से काफी प्रभावित हुआ था और शायद समाज की कुछ सेवा भी मुझ से बन पड़ी थी। 'भारत सुदशा प्रवर्तक', 'नवजीवन' (काशी), तथा 'आर्यमित्र' का मैं नियमित लेखक रहा आपका सहकारी सम्पादक और महर्षि की शताब्दी पर विदेशों में वैदिक धर्म प्रचार वाला प्रस्ताव भी मेरे द्वारा ही उपस्थित किया गया था। बहुत वर्षों से मैं यह अनुभव करता आया हू कि समाज का साहित्यिक पहलू कमजोर है। आर्य समाज ने जैसे प्रभावशाली लेखक पहले उत्पन्न किये थे—यथा स्व० हरिश्चन्द्र जी, इन्द्र जी, जयचन्द्र जी, चन्द्रगुप्त जी, यशीवर जी, अमरनाथ जी, सत्यकेतु जी, सत्यदेव जी रामगोपाल जी, अवनीन्द्र जी, धर्मेन्द्र जी आदि वैसे अब इस नई पीढ़ी में क्या नहीं आगे आ रहे ? हमारे यहां साहित्यिक सुरुचि का अभाव सा हो गया है। गुरुकुल वृन्दावन के मुख्य भवन में कम से कम आर्य विद्वानों के तो सुन्दर चित्र होने चाहिये थे, पर वहां भी दीवालें नंगी थीं। स्वामी दर्शनानन्द जी का एक कलण्डर वाला चित्र वहां जरूर था।

क्या आप कुछ रौप्य पदकों का प्रबन्ध करा सकेंगे जो निम्नलिखित महानुभावों की स्मृति को ताजा बनाये रखने के लिए दिये जा सकें—

१—पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा
२—पं० काशीनाथ जी
३—पं० भीमसेन जी
४—आचार्य पद्मसिंह जी
५—महाकवि शंकर जी
६—सम्पादकाचार्य रुद्रदत्त जी
७—पं० गणपति शर्मा
८—पं० घासीराम जी आदि

स्वर्ण पदकों का प्रस्ताव मैंने जान बूझकर नहीं किया। आखिर पदकों का मूल्यांकन उनमें लगे सोने चांदी की तौल पर निर्भर नहीं। रौप्य पदकों के साथ साथ पच्चीस पच्चीस रुपयों के ग्रन्थ भेंट दिये जा सकते हैं। पचास पचास रुपये का पदक बने तो पुस्तकों सहित नौ सौ रुपये प्रतिवर्ष का व्यय है। १२ साल नौ सौ रुपये इकट्ठे कर लेना कोई असम्भव कार्रवाई न होगी। अभी ये पदक आर्य सामाजिक संस्थाओं के विद्यार्थियों तथा अध्यापकों तक ही परिमित रहें।

पदकों के नाम मैंने बिना किसी क्रम के और प्रथम बार विचार करने पर जैसा सूझा दे दिया है। इसमें परिवर्तन परिवर्द्धन करने का अधिकार आर्य बन्धुओं को है। क्या यह छोटा सा कार्य भी आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा हो सकेगा ?

विनीत—
बनारसीदास चतुर्वेदी

आर्यजन नेतृत्व की स्वाधीनता प्रदान करें

चतुर्वेदी जी की चिट्ठी पर श्री पं० इन्द्र जी के विचार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार
तिथि २९ ५ ५८

प्रियवर चतुर्वेदी जी, सप्रेम नमस्ते।

पण्डित हरिशंकर शर्मा जी को भेजे हुए पत्र की प्रतिलिपि के साथ आपका कृपा पत्र मिला। आपने शर्मा जी को लिखा है कि क्या आर्य बन्धु नेतृत्व की स्वाधीनता दे सकेंगे ? आपका यह प्रश्न सर्वथा सामयिक है। वर्तमान युग में शायद किसी भी नेता को नेतृत्व की स्वाधीनता नहीं है। प्रायः नेता अनुयायियों के आधीन ही रहते हैं। जो नेता दल बन्दी में कुशल हैं सम्भव है वे कुछ दिनों तक संसार को नेतृत्व की स्वाधीनता होने का भासा दे सकें। परन्तु वस्तुतः अब नेतृत्व का यही लक्षण रह गया है कि नेता अनुयायियों को सन्तुष्ट रख सके। बेचारे शर्मा जी तो दलबन्दी के गुणों से सर्वथा शून्य हैं। इसमें वे मुझ से भी कुछ आगे बढ़े हुए हैं। वर्तमान वातावरण में शर्मा जी एक साल निकाल दें तो बहुत है। वे न अनुयायियों को अपने पीछे लगा सकेंगे और न उनके पीछे लग सकेंगे। वे तो खरे सच्चे आदमी हैं।

आपका
इन्द्र विद्यावाचस्पति

नया हिन्दू विधान

(६४५ का शेष)

में इतनी शक्ति होनी चाहिए कि वेद शास्त्रों के ज्ञाता व विद्वानों को इतनी संख्या में विधान सभा में भेजे कि वे वेद व आर्ष सिद्धान्तों के अनुसार विधान बनावें, और उन के लिए बहुमत तैयार करके उनको स्वीकृत करावें। जब तक आर्य समाज में इतनी शक्ति नहीं है, तब तक बुद्धि संगत मार्ग यही है कि जितना भी सुधार हमारे सिद्धान्तों के अनुसार हो सकता है उसको स्वीकार करें, और आर्य समाज की शक्ति बढ़ाने का यत्न करते रहें। पार्लियामेण्ट के वर्तमान सदस्य अपने विचार व योग्यता के अनुसार ईमानदारी से जो यत्न करते हैं उसके लिये उनको साधुवाद कहें। उनकी व्यर्थ शिकायत करने से कुछ लाभ नहीं हो सकता, और यह ठीक भी नहीं है।

(७) वर्तमान हिन्दू विधान—

हिन्दू विधान अब तक जितना तैयार हुआ उसकी भी पूर्ण समालोचना करना भारी काम है और मेरी सामर्थ्य से बाहर है, उसके दो विषयों की, अर्थात्—[क] संयुक्त परिवार पर प्रहार, और [ख] विवाह विच्छेद, की आलोचना श्री आचार्य नरदेव शास्त्री जी ने अपने लेखों में की थी उसके उत्तर में मैंने अपने विचार प्रकट किये। उक्त कानून के दो और विषयों, अर्थात्—[क] बहु पत्नी विवाह निषेध व [ख] स्त्रियों की सम्पत्ति पर उनका अधिकार, इन विषयों पर श्री पं० नरदेव जी ने कुछ नहीं लिखा था पर ये विषय बड़े महत्व के हैं और भारत को स्त्रियों की दशा सुधारने में बहुत उपयोगी है इसलिये इन पर भी मैंने पाठकों का ध्यान आकर्षित करना आवश्यक समझा।

गुरुकुल वृन्दावन में नए ब्रह्मचारियों का प्रवेश

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन बालकों की शिक्षा के लिए एक उत्तम शिक्षा संस्था है जो स्वल्पतम निर्वाह व्यय में उच्चतम निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करती है। शिक्षा के साथ साथ वह ब्रह्मचारियों के चरित्र निर्माण पर विशेष बल देती है। गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने वाले बालकों को आश्रम में ही रहना होता है इसलिए उनको अपने गुरुजनों के साक्षात् सम्पर्क का अधिकाधिक लाभ उठाने का अवसर मिलता है। गुरुकुल की अधिकारी तथा शिरोमणि परीक्षाएं क्रमशः हाई स्कूल तथा बी० ए० के बराबर मान्य हैं।

ग्रीष्मावकाश के बाद १ जुलाई से गुरुकुल के नवीन शिक्षा सत्र का कार्य प्रारम्भ हो जायगा। इसी अवसर पर नवीन बालकों का प्रवेश होगा। आठ से दस वर्ष तक की आयु के बालक प्रविष्ट हो सकते हैं भोजन तथा व्यवस्था व्यय मिलाकर २५ रु० मासिक व्यय लिया जाता है। जो महानुभाव अपने बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट कराना चाहें वह पत्र द्वारा सूचना देकर प्रवेश पत्र मंगा लें और स्थान सुरक्षित करा लें।

हरिशङ्कर शर्मा
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

नरदेव स्नातक एम. पी.
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

आवश्यकता

पुराणों के नये वकील

[प० बिहारीलाल शास्त्री सुभाषनगर बरेली]

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् प० बिहारीलाल शास्त्री ने पुराणों के सम्बन्ध में एक बार फिर जो घोषणा की है उसका सार प्रारम्भ के शेर मे और उसकी व्याख्या पूरे लेख म पढ़िए। —सम्पादक

यह फटी गुदड़ी पुरानों की न हो सकती रफू।
माधवाचार्य जी से पंडित चाहे उम्रभर सीते रहें॥

पुराण मध्यकाल के उस युग मे लिखे गये थे जब कि धर्म के मामलों में बुद्धि का प्रयोग बन्द करा दिया गया था। इसी कारण पुराण ऐसी अनेक बातों से पूर्ण हैं जो बुद्धिवाद की तेज धूप में ओस की तरह उड़ जाती हैं।

प० माधवाचार्य जी पुराणो के अब एक नये वकील प्रकट हुये हैं। उन्होंने एक पुस्तक लिखी है—“पुराण दिग्दर्शन” पुस्तक सात आठ रुपये की है। इसके द्वारा उन्हें अच्छी आय हुई ही होगी। पर पुराणो की कथाओं पर आक्षेप तो ज्यों के त्यो कायम रहे हा कुछ उलझने और उत्पन्न हो गई हैं। उदाहरण के लिए आचार्य जी ने अहिल्या की कथा की वकालत की है अहिल्या गौतम का कथा को निरुक्त ने अलङ्कार बताया है। अहिल्या रात्रि है। सूर्य इन्द्र। गौतम चन्द्रमा है। रात्रि का (अहिल्या) पति गौतम (चन्द्रमा) है। सूर्य रात्रि का जार है। जार के अर्थ व्यभिचार करने वाला नहीं बल्कि जीर्ण कर देने वाला इस भाव को लेकर निरुक्त ने सूर्य को रात्रि का जार अर्थात् रात्रि को जीर्ण करने वाला नष्ट करने वाला कहा।

वेद में कथा तो है नहीं। केवल अहिल्या, गौतम, इन्द्र शब्द आते हैं।

जिनको लेकर पुराण ने कथा गढ़ी है। निरुक्त कहता है यह एक अलङ्कार है। ऋषि दयानन्द ने भी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में यास्क मुनि का अनुसरण करते हुए इस कथा का अलङ्कार ही माना है।

श्री माधवाचार्य जी ने भी अहिल्या की कथा पर आक्षेप करने वालों को पहले वही उत्तर दिया है जो कि निरुक्तकार यास्क और ऋषि दयानन्द ने दिया है। पुराण दिग्दर्शन मे स्वामी जी और निरुक्त का लेख ज्यो का त्यो उद्धृत किया गया है। इसे पढ़ कर इन्द्र और अहिल्या के चरित्र पर आक्षेप करने वालों का पूरा समाधान हो जाता है। जब इन्द्र और अहिल्या कोई शरीरधारी प्राणि देव और मनुष्य नहीं हैं तो दुराचार का आक्षेप कैसा ?

पर आगे चलकर आचार्य जी ने सब गुड़ गोबर कर दिया और इस कथा को अलङ्कार के बजाय सही घटना मान लिया। यदि पुराण की इस कथा को वेदार्थ का उपबृंहण ही मान लेते तो कितना अच्छा हो जाता पर इससे साम्प्रदायिक वे चेले जो रामचरण रज से अहिल्या का शाप मोचन मानते हैं वे तो बिदक जाते अत माधव जी लिखते हैं —

“प्रसिद्ध महर्षि गौतम और उनकी धर्म पत्नी अहिल्या मानव दम्पति थे जिनसे जनक के पुरोहित शतानन्द जी उत्पन्न हुए थे। भगवान् रामचन्द्र जी ने शिलाभूत अहिल्या का उद्धार किया था इत्यादि सब प्रसग बाल्मीकि रामायण (बाल कॉंड सर्ग ४८) में विस्तारपूर्वक आता है।” (पुराण दिग्दर्शन पृ० ४३८) सवत् २००६ का छपा अब देखिए कि आचार्य जी ने कहा आकर कमन्द तोड़ी है।

सिद्धांत विमर्श

“दो चार हाथ जबकि लबेबाम रह गया।’ कर दिया सब मटियामेट !

क्यों आचार्य जी अहिल्या का वर्णन अलङ्कार है ? अथवा ऐतिहासिक घटना ? निरुक्त सही है या आप ?

अलङ्कार है तो ऐतिहासिक घटना गयी और ऐतिहासिक घटना है तो अलङ्कार गया। और अलङ्कार गया तो आपका देवाधिदेव इन्द्र आक्षेप से बच नहीं सकता।

इन्द्र की सफाई में अचार्य जी ने पुराण के वचन प्रस्तुत किये हैं कि गौतम के तप से सब लोग घबरा गये थे अत गौतम का तप भग करने को गौतम को क्रोध दिलाने के लिए इन्द्र ने अहिल्या से व्यभिचार किया।

क्या खूब ! गौतम जी को क्रोध दिलाने का क्या बढ़िया ढग निकाला देवराज ने ! गौतम को क्रोध दिलाना था तो गौतम को डण्डे लगाता। बिचारी अहिल्या को क्यो भ्रष्ट किया ? और अपने चरित्र को भी क्यों बिगाड़ा। जब देवताओं की यह दशा हो तो उनके पूजने वाले कैसे बनेगे। पौराणिक कथाओं के अनुसार तो इन्द्र और अहिल्या दोनों ही वासनाभिभूत थे इसीलिए दोनों दण्डित हुए।

माधवाचाय जी भी लिखते हैं —

“वेद इन्द्र को जार बताते हुए भी दोषी को गोद म छिपाये रखने की सी नीति को बर्तता हुआ दीखता है वहॉं पुराण मानव मर्यादा की रक्षा के लिए दोषी व्यक्ति का दण्ड दिलाने का पक्षपाती जान पड़ता है।” (पुराण दिग्दशन प्र० ४४२ सवत २००६)

उपर्युक्त वाक्य में वेद पर स्पष्ट दोषारोपण है और पुराण की विशिष्टता वेद से उत्तम दिखाई जा रही है। यह है आचार्य जी की वेद निष्ठा श्री स्वामी जी महाराज ने इन वैष्णव पौराणिकों का खण्डन तीव्र रूप मे इसीलिए किया है कि ये लोग छिपे हुए वेद विरोधी हैं कोई भी वेद भक्त ऐसे शब्द नहीं लिख सकता जैसे कि ऊपर माधवाचार्य जी ने लिखे है। हृदय मे वेदो को अपूर्ण तुच्छ समझने वाला व्यक्ति आज सनातन धर्म का आचार्य बना हुआ है !! शोक !! वेद इन्द्र को रात्रि का जार बताता है तो जार का अर्थ क्या व्यभिचारी है ? क्या वेद इन्द्र का व्यभिचारी बताकर गोद मे छिपा रहा है ? यह ? तुम लोगों का वेद ज्ञान ? जार का अर्थ निरुक्तकार जब जर पिता (जीर्ण कर देने वाला) बता रहे हैं तो इन्द्र (सूर्य) दोषी कहॉं रहा ? “जार” का अर्थ हुआ (रात्रि को) समाप्त करने वाला पुराण इन्द्र को जार व्यभिचारी अर्थ मे बता रहा है और इन्द्र के व्यभिचार का प्रमाण भी प्रस्तुत कर रहा है अत दण्ड दिलाना ही था। साधारण नर नारी और देवराज इन्द्र तथा ऋषि पत्नी अहिल्या के चरित्र में कोई विशेषता नहीं। यह हैं पुराणो के आदर्श ! पुराणो पर आक्षेप ज्यो का त्यो रहा ? हा माधवाचार्य जी को इस पोथे के लिखने से आय अवश्य हो गयी। और साधारण मतिवालों में इतने बड़े ग्रन्थ के लेखक बन जाने की धाक जमाने का मौका मिल गया। पुराणों की बाते सुलझान चले आचाय जी तो स्वय ही और उलझ गये !

माधवाचार्य जी ने बाल्मीकि रामायण का नाम लिया है। बेशक



बाल्मीकि रामायण में अहल्या की यह कथा दी गयी है। और भी पौराणिक गपोले बाल्मीकि रामायण मे मिले हुए हैं। परन्तु अहल्या की कथा जहां बाल्मीकि रामायण में है वहाँ कहीं भी अहल्या के ‘शिलाभूत” होने का वर्णन नहीं है। आचार्य जी तीन काल मे भी बाल्मीकि रामायण में अहल्या के शिला हो जाने की बात नहीं दिखा सकते। बाल्मीकि रामायण के नाम से अहल्या को “शिलाभूत” लिखकर आचार्य जी ने अपने पाठकों को साफ धोखे म डाला है। आचार्य जी ने सोचा होगा कि कौन पढ़ने बैठेगा रामायण बाल्मीकि ? फेंक दो टूनकी। शोक, जनता को भ्रम में डालना और रुपये लेना।

बाल्मीकि रामायण में तो यह लिखा है कि गौतम न शाप दिया—

वायु भक्षा निराहारा तप्यन्ती
भस्म शायिनी अदृश्या सर्व
भूताना माश्रमेऽस्मिन्वि वत्स्यनि
बाल काड ४४८ सर्ग

वायु भक्षण करन वाला निराहार दु खित धूल म पड़ी सब प्राणियो से अदृश्य हुई इस आश्रम म रहना।

बस ऐसी ही अनर्गल, अयुक्त, अप्रमाण, परस्पर विरुद्ध बातो से यह पोथा भरा पड़ा है। जैसे आचार्य जी के कलेवर का प्रभाव पौराणिकों पर पड़ता है वैसा ही इस स्थूलकाय पोथे का भी पड़ता है और पौराणिक लोग पैसा जेब से बाहर कर देते हैं पर बुद्धि जीवी को प्रतिभा प्रेमी का इस मोटे पोथे को पढ़कर अपने समय की बरबादी पर खेद ही होगा। जनता की अन्ध श्रद्धा और मति के मोटेपन से धर्म के व्यापारी कैसे लाभ उठाते हैं

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सुझाव और सम्मतियाँ

हमारी शक्ति का स्रोत आर्य वीर दल

आर्य समाज की विचार शक्ति बड़ी प्रबल है उसके समक्ष दूसरी शक्तियाँ टिक नहीं सकती परन्तु अपने विचारो के अनुरूप कार्य करने मे आज आर्य समाज शिथिल और असमथ हो रहा है। आज हमारी वही स्थिति है जो एक लकवे के बीमार की होती है। लकवे के बीमार का मस्तिष्क तो ठीक काम करता है परन्तु शरीर के अङ्ग कार्य करने में असमर्थ रहते हैं। रोग से मुक्त करने के लिए चिकित्सक नवीन रक्त तथा अन्य रसायनों का प्रयोग कर रोगी को शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न करते हैं।

आज आर्य समाज के शरीर को लकवा लगा हुआ है। इस स्थिति के निराकरण के लिए आवश्यक है कि नई पीढ़ी के नवयुवकों को आर्य समाज की ओर आकृष्ट किया जाय।

नवयुवकों का शरीर और मस्तिष्क सबल और निर्मल बन सके इसके लिए आर्यवीर दल सगठन की योजना ही एकमात्र उपाय है। यदि हम आर्य समाज की शक्ति को सबल और भारत राष्ट्र को महान् बनाना चाहते हैं तो हमें अविलम्ब आर्य वीर दलों की स्थापना का आन्दोलन आरम्भ कर देना चाहिए। आशा है आर्य बन्धु विचार करेंगे।

—देवेन्द्र आर्य
मन्त्री आ० उ० प्र० नि० सभा इटावा

सामाजिक विकास और व्यक्ति की साधना

गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है "जियबिन देह नदी बिन वारी" इसी के अनुसार व्यक्ति और समाज का सम्बन्ध भी अनिवार्य है। व्यक्ति की उन्नति में ही समाज की उन्नति है और समाज की उन्नति में व्यक्ति का विकास निहित है। समाज में सम्मान सोपान पर आरूढ़ होने के लिए जिन कठिन साधनाओं की आवश्यकता होती है हमें उन पर सदैव ध्यान रखना चाहिए। मेरी सम्मति मे सामाजिक कार्यकर्ताओं को निम्न योग्यताओं का अर्जन करना चाहिए।

(१) चारित्रिक योग्यता (२) लोक समह की योग्यता (३) स्वभाव में मृदुता (४) संयम (५) प्रिय सत्य (६) दूसरों के सम्मान की भावना (७) विनम्रता और भूल स्वीकार (८) दृढ़ संकल्प की भावना (९) स्वाध्याय और सत्संग की प्रवृत्ति (१०) अनुशासन की भावना।

सामाजिक जीवन के लिए उपर्युक्त बातों की ओर ध्यान देकर हम व्यक्ति और समाज दोनों का उत्थान कर सकते हैं।

—धर्मदत्त आनन्द
प्रचारक यू० पी० सभा

छोटा नागपुर को ईसाई मिशनरियों के जाल से बचाइये

आर्य समाज के जन्मकाल में भारत मे जो अविद्या की शक्तियां काम कर रही थीं आर्यसमाज के प्रभाव से वे शनैः शनैः क्षीण होती गयी परन्तु आज भारत के धर्म निरपेक्षवादी एवं भौतिकता प्रधान दृष्टिकोण के कारण वे सभी शक्तियाँ पुनः सिर उठा रही हैं। आर्य समाज को उन शक्तियो का सगठित दमन करना चाहिए। उदाहरणार्थ मैं भारत मे छोटा नागपुर मे ईसाइयत के प्रचार के विषय मे निवेदन करना चाहता हूं। यह प्रदेश अकाल ग्रस्त और गरीबी से संतप्त है। यहां ईसाई मिशनरियों ने अपना जाल फैलाकर वहाँ की गरीब जनता को ईसाई बनाने का कार्य आरम्भ कर दिया है। मेरी प्रार्थना पर आर्य समाज बैंकाक (थाई लैण्ड) ने ५०) मासिक सहायता भेजना आरम्भ कर दिया है और उपदेशक द्वारा कार्य आरम्भ हो गया है। अन्य आर्य-समाजों व आर्य बन्धुओं से अपील है कि छोटा नागपुर झारखण्ड को ईसाइस्तान बनने से रोकने के लिए संगठित एवं रचनात्मक आन्दोलन आरम्भ करे।

काशीनाथ
प्रधान आर्यसमाज चतरा
हजारीबाग (बिहार)

दयानन्द योग आश्रम

ऋषि दयानन्द ने अपने उच्चतम व्यक्तित्व द्वारा देश और विश्व को सत्य और न्याय का सन्देश दिया। अपने अनुयायियों के लिए उन्होंने आश्रम व्यवस्था का निर्देश किया है। भारत में योग विद्या का प्राधान्य रहा है आज भारत सरकार का ध्यान भी योग विद्या के पुनरुत्थान की ओर गया है परन्तु आर्य समाज जो भारतीय जीवन पद्धति का समर्थक है उसकी ओर से योग विद्या के लिये कोई विशेष प्रयत्न नहीं हो रहा। जो दो चार आश्रम स्वतन्त्र रूप से कार्य कर रहे हैं उनमें सामाजिक रूप से व्यक्ति सम्मिलित नहीं होते अतः आज इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है कि आर्य समाज की ओर से योग विद्या के सम्बन्ध में प्रबल आंदोलन आरम्भ किया जाय और स्थान स्थान पर दयानन्द योगाश्रमों की स्थापनायें की जाय। आर्य सन्यासियो को इस दिशा में प्रबल जनमत तैयार करने में जुट जाना चाहिए।

—कन्हैयालाल मुमुक्षु
मन्त्री आ० उ० प्र० सभा रामपुर

साहित्य-समीक्षण

(समालोचनार्थ पुस्तकों की दो प्रतियां भेजे)

★

अर्थ-धर्म मीमांसा

लेखक—पं० ईश्वरचन्द्र शर्मा। सम्पादक—पं० मदन मोहन विद्यासागर, प्रकाशक—आर्यसमाज कूचिपूडि (तेनाली) आन्ध्र प्रदेश। पृष्ठ सं. २८७, सजिल्द मूल्य तीन रुपये। छपाई सुन्दर और साफ।

यह मुख्यतः अर्थ शास्त्र की पुस्तक है जिसमे पूंजीवाद और समाजवाद की सुन्दर समालोचना की गयी है। हमारा विश्वास है की बी० ए० के अर्थ शास्त्र के विद्यार्थियों के लिए भी यह पुस्तक उपयोगी होगी।

मूल्य का स्वरूप, विनियम का आदिक रूप, मूल्य का बीज रूप, श्रम फल पर स्वत्व का कारण, विनिमय और मूल्य का साध्य साधनभाव, मूल धन का स्वरूप, श्रम का अर्जन और हरण, पण्यों का रूपान्तर, अर्थ पर अधिकार का उद्भव, अर्थ और परिवार की व्यवस्था आदि अनेकों विषयों पर पृथक पृथक अध्याय लिख कर प्रकाश डाला गया है। विशेषता यह है कि भारतीय दृष्टिकोण से भी इन बातों पर विचार किया गया है। पुस्तक के प्रारम्भ मे २६६ पदों का पारिभाषिक अर्थ भी दिया गया है जिनका प्रयोग इस पुस्तक में स्थान स्थान पर किया गया है। इन शब्दार्थों से विषयों का अध्ययन सरल बन जाता है।

मार्क्स के 'कैपिटल' एन्जिल्स के 'ओरिजिन आफदि फेमिली, प्राइवेट प्रोपर्टी एन्ड दि स्टेट', डांगे की 'भारत' तथा अन्य प्रसिद्ध अर्थ शास्त्रियों की अन्य प्रसिद्ध प्रामाणिक पुस्तकों के आधार पर भी उपरोक्त सभी विषयों पर इस पुस्तक में विचार किया गया है। निःसन्देह हिन्दी में यह पुस्तक अर्थशास्त्र पर एक अमूल्य ग्रन्थ है।

महर्षि दयानन्द और राजा राममोहनराय के तुलनात्मक विचार

लेखक—श्री भवानीलाल भारतीय एम० ए०, प्रकाशिका—रूपकान्ता देवी दीक्षित आर्यप्रकाश पुस्तकालय, आगरा मूल्य १) पृष्ठ सं० १३८।

पुस्तक का विषय तो नाम से ही स्पष्ट है। श्री भावानी लाल जी आर्य समाज के एक अच्छे विद्वानों में से हैं। उनकी विशेषता ही यही है कि वे किसी भी विषय का तुलनात्मक अध्ययन करके उस पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। शास्त्र प्रमाणवाद, एकेश्वरवाद, मूर्तिपूजा, दार्शनिक दृष्टिकोण, षट् दर्शन समन्वय, सर्वधर्म समभाव, ईसा के उपदेशों के प्रति धारणा, शिक्षा की समस्या, समाज में नारी का स्थान, स्वराज्य भावना, मांस मदिरा और नृत्यादि, ब्राह्मसमाज और आर्य समाज आदि विषयों पर दोनों महापुरुषों के तुलनात्मक विचार को लेखक ने यहां बड़े सुन्दर शब्दों मे उपस्थित किया है। दयानन्द का दृष्टिकोण किस प्रकार से अधिक लोकोपयोगी था, यह पुस्तक को पढ़ कर जाना जा सकता है। अनेकों पुस्तकों से उद्धरण प्रस्तुत करके विषयों का खोजपूर्ण ढंग से प्रतिपादन किया गया है। एक ही साथ दोनों नेताओं के विचार जानने के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।

—सम्पादक

(पृष्ठ ७ का शेष)

इसका अच्छा उदाहरण यह पुस्तक है। पुराणों के शंकास्पद वर्णनों को सुलझाने के स्थान पर उलझाया अधिक है। निरुक्तादि के प्रमाणों से पौराणिक कथाओ की सगति कतई नहीं बैठ पाती।

अलंकारों को स्वीकार करते हुए वेदों को मानवेति हास्य से रहित मानते हुए इन पौराणिक कथाओं की संगति बैठाना असंभव है। पर पौराणिकों को वेद से क्या? पुराणों की असभव बातों को वेद से सिद्ध करने का कुप्रयत्न करते रहना। अधपढ़ों और बेपढ़ों एवं भद्धाजड़ों में तो इससे वाहवाह हो जायगी पर पूर्ण शिक्षित जनता ऐसे धर्मोपदेशको के कारण धर्म से ही उदासीन हो जायगी।

राजनैतिक चर्चा

यदि राजधर्म वैदिक हुआ तो ?

प्रस्तुत लेख में प्रसिद्ध आर्य विद्वान् आचार्य नरदेव शास्त्री ने वैदिक राज्य व्यवस्था के व्यावहारिक पहलु पर प्रकाश डाला है आर्य विद्वान् इसी आधार पर यदि विचार मन्थन आरम्भ करे तो आर्य राजनीति की व्यावहारिक रूप रेखा तैयार की जा सकती है। अब तक आर्य राजनीति के सैद्धान्तिक पक्ष की पर्याप्त चर्चा होती रही है अब समय आ गया है जब उसके व्यावहारिक पक्ष पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। आशा है आर्य विद्वान् इस दिशा मे विचार करेंगे सम्पादक



यदि राजधर्म वैदिक हुआ तो राज्य व्यवस्था किस प्रकार रहेगी इस बात का संक्षिप्त विवरण आवश्यक प्रतीत होता है क्योंकि बहुतों का विश्वास है कि यदि राजनीति आर्यों के हाथ मे आयगी तो बहुत उलट पुलट होगा।

आर्य समाज स्वयं कोई धर्म नहीं है, वह तो वैदिक धर्म का प्रचार रूप एक समाज है। आर्य समाज जिस धर्म का प्रतिपादन करता है वह धर्म तो विशुद्ध वैदिक धर्म है—ऐसे विशुद्ध धर्मियो का शासन हुआ तो क्या क्या होगा उसकी कल्पना कीजिए। ऐसे वैदिक धर्मियो के शासन मे क्या अन्य धर्मावलम्बी समुदाय सुख पूर्वक रह सकेंगे यही मुख्य प्रश्न है।

यदि वैदिक धर्मियो का शासन हो गया तो—

१—प्रत्येक धर्मावलम्बियों को धार्मिक स्वतन्त्रता रहेगा। वे अपने अपने धर्म का स्वतन्त्रता पूवक पालन कर सकेंगे राज्य उनके किसी धार्मिक कृत्य मे दखल नहीं देगा। धर्मावलम्बियों से अभिप्राय [illegible] वैदिक शाखावलम्बियों से है।

२—जो वैदिक शाखावलम्बी नहीं हैं ऐसे विधर्मियो का भी स्वधर्म पालन की स्वेच्छा पूवक पालने की छूट रहेगी।

३—गोवध पूर्ण रूपेण बन्द रहेगा।

४—सम्पूर्ण रूप से मद्य प्रतिबन्ध रहेगा।

५—राज्य की ओर से प्राचीन वर्ण व्यवस्था और प्राचीन समाज व्यवस्था रहेगी जो कि गुण कर्म स्वभाव पर आधारित रहेगा।

६—राज्य शिक्षा वदिकपद्धति की रहेगी और राजदरबार में उसी शिक्षा पद्धति मे लालित पालित पोषित परिवर्द्धित,शिक्षितों का सम्मान रहेगा।

७—राजभाषा और राष्ट्रभाषा संस्कृत रहेगी।

८—राज शासन अथवा राज आज्ञाएं संस्कृत मे होंगी।

९—प्रान्तीय अथवा प्रादेशिक भाषाओं का भी उस उस प्रदेश में पूर्ण स्वतन्त्रता रहेगी परन्तु शिक्षा दीक्षा मे संस्कृत भाषा का अध्ययन अपरिहार्य एवं आवश्यक रहेगा।

१०—जनता की शिक्षा दीक्षा के लिए नालन्दा तथा तक्षशिला की तरह स्वतन्त्र विद्यापीठ होंगे और शिक्षा स्वतन्त्र चलेगी, उस पर सरकार का आधिपत्य नहीं रहेगा जैसा कि आज कल देखा जाता है।

११—शिक्षा नि शुल्क तथा अनिवार्य रहेगी।

१२—यह जो ख्याल बैठा हुआ है कि वर्तमान आर्य समाजियो का राज हो जायगा तो हिन्दुओं के मन्दिरों, मुसलमानों की मसजिदों और गिरजाघरों की आफत आ जायगी, यह धारणा भ्रमात्मक है, निर्मूल है।

१३—चाहे आर्यों की राज्य पद्धति हिन्दू, सिख, ईसाई, मुसलमान, जैन, बौद्ध वैदिक रहे तो भी इस बात में स्वतन्त्र रहेंगे कि वे अपने धर्मानुसार बरतें—पर परस्पर अत्याचार न कर सकेंगे, जबरदस्ती धर्म परिवर्तन न कर सकेंगे, अपने अपने धर्म स्थानो मे अपना प्रचार कर सकेंगे।

१४—राजा किसी धर्म का हो अथवा राजधर्म कोई हो राजा का सब धर्मों की रक्षा करना परम धर्म है। वैदिक धर्मी शासन इस सिद्धात का पूर्ण पालन करेगा।

१५—राज्य की न्याय पद्धति वैदिक अर्थात् पूर्णरूपेण न्याय का पालन करेगी। न्याय पक्षपात रहित होगा। वैदिक धर्मी अन्याय अत्याचार करेगा तो वह भी उचित दण्ड का पात्र समझा जायगा। राज्य पद्धति अन्याय, अत्याचार, अनाचार को जड़मूल से उखाड़ फेंकेगी। राज्य के अधिकारी भी अन्याय, अत्याचार, अनाचार, भ्रष्टाचार, उत्कोच (रिश्वत) [illegible] आदि के लिए कठोर रूप से दण्डित होंगे।

१६—हिन्दुओ तथा आर्यों में (दोनो एक ही हैं) समाज व्यवस्था आश्रम और वर्ण व्यवस्था पर निर्भर रहेगी। चारो वर्णों को विवश किया जायेगा कि वर्णाश्रम के अनुसार अपना अपना स्वाभाविक कर्म करें। जो न चलेंगे उनको पतित किया जायगा, नीचे डाला जायगा। नीचे से ऊपर जाने वालों के लिए खुला द्वार रहेगा, मुक्तद्वार रहेगा।

१७—विवाह की व्यवस्था मन्वादि धर्मशास्त्रानुसार रहेगी। जहाँ तक विवाहादि सम्बन्ध रहेंगे गुण कर्म स्वभाव का ध्यान रखा जायगा और सब वर्ण के लोग सब वर्णों मे विवाह सम्बन्ध कर सकेंगे। ऐसे विवाहों के लिए दाय भाग की पृथक व्यवस्था [illegible] सवर्ण विवाहों को प्रोत्साहन दिया जायगा और इनका दाय भाग मन्वादिनिर्दिष्ट रहेगा। बहु विवाह पर प्रतिबन्ध रहेगा। बाल विवाह बन्द होगा।

१८—एक ऐसा कानून बनाया जायगा जिससे भिन्न भिन्न जाति की सब उप जातियाँ मुख्य जातियो में मिला दी जायेगी जिससे उपजातियों का बखेड़ा ही मिट जायगा। ब्राह्मण, क्षत्रिय. वैश्य, शूद्र और निषाद ये पाँच जातियाँ ही रहेगी और 'पंच जना मम होत्र जुषध्वम्' इसका पालन होगा।

१९—न्याय प्रणाली मुफ्त रहेगी।

२०—कर आय का चतुर्थांश अथवा षष्ठांश रहेगा अधिक नहीं।

२१—शासन सब प्रकार का राज्य के हाथ मे रहेगा किन्तु उद्योग व्यापार आदि प्रजा के हाथ मे रहेगा शासन कड़ी दृष्टि रखेगा कि वाणिज्य धर्मानुसार हो।

विद्या विभाग—विद्वान् ब्राह्मणों के हाथ में स्वतन्त्र रहेगा।

शासन विभाग—क्षत्रियो के हाथ में राज्य सभा द्वारा चलेगा।

धर्म विभाग—धर्मशास्त्रियों के हाथों मे धर्म सभा द्वारा चलेगा।

२२—राज्य द्वारा सम्मिलित कौटुम्बिक प्रथा (ज्वाइण्ट फैमिली सिस्टम) को प्रोत्साहन दिया जायेगा जो कि आर्य धर्म की प्रधान विशेषता थी।

हिन्दी आन्दोलन के लिये संघर्ष-समिति

★

दिनांक २४ ४ ५८ को देहली में भारत भर के आर्यों के कन्वेन्शन के निश्चयानुसार दिनांक ६ ६ ५८ को सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति तथा पंजाब हिन्दी रक्षा समिति की सम्मिलित बैठक का श्री माननीय घनश्यामसिंह जी गुप्त की प्रधानता में एक विशेष अधिवेशन श्रद्धानन्द बलिदान भवन दिल्ली मे हुआ जिसमें सर्व सम्मति से निम्न प्रकार प्रस्ताव स्वीकार हुआ—

"सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की राय है कि आर्य समाज की भाषा सम्बन्धी मांगों को शासन द्वारा क्रियात्मक रूप से मनवाने के लिये जो आन्दोलन आरम्भ किया गया था उसका जारी रहना आवश्यक है। इस कार्य की पूर्ति के लिये एक संघर्ष समिति बनायी जाय।

आन्दोलन का किस समय क्या रूप हो, समय समय पर यह समिति निर्धारित करती रहेगी।

समिति के प्रधान श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त को इस संघर्ष समिति के सदस्यों के नाम घोषित करने का अधिकार दिया जाता है।"

रघुवीरसिंह शास्त्री मंत्री
सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति

विदेश-वार्ता

बल्गेरिया की सामाजिक स्थिति

बल्गेरिया की सामाजिक स्थिति की विशेष जानकारी के लिए यहां हम यह लेख प्रकाशित कर रहे हैं। —सम्पादक

अनिवार्य राज्यीय सामाजिक बीमा

बल्गेरिया में अनिवार्य राज्यीय सामाजिक बीमे की व्यवस्था है। राज्यीय, सामाजिक, सहकारी या निजी दफ्तरों तथा प्रतिष्ठानों में काम करने वाले सभी मजदूरों तथा कर्मचारियों, सभी संगठनों तथा व्यक्तियों पर यह व्यवस्था लागू होती है, वे चाहे जितने दिन से काम कर रहे हों और उन्हें अदायगी चाहे जिस ढङ्ग से भी होती हो।

बीमे की किस्त मजदूरों तथा कर्मचारियों को नहीं देनी पड़ती बल्कि प्रतिष्ठान, दफ्तर, संगठन या व्यक्तिगत मालिक अपने पास से यह किस्त भरते हैं। मालिक को कर्मचारियों से अनिवार्य बीमे की किस्त मांगने का या उनके वेतन में से किस्त काटने का कोई अधिकार नहीं है।

राज्यीय सामाजिक बीमे के लिए पैसा इस प्रकार जमा किया जाता है, और यह पैसा मजदूरों तथा कर्मचारियों को काम के समय होने वाली दुर्घटनाओं, बीमारी, प्रसूतिकाल की छुट्टी, और रोग की शंका होने पर अलग रखे जाने की दशा में वेतन, सहायता, क्षतिपूर्ति के रूप में, स्थायी रूप से अक्षम तथा वृद्ध लोगों की पेंशनों और उत्तराधिकारियों को पेंशनों के रूप में दिया जाता है। मजदूरों तथा कर्मचारियों तथा पेंशन वालों की सांस्कृतिक, काम करने की तथा रहन सहन की परिस्थितियों में सुधार करने, प्रसवकाल में एकतरफा सहायता देने, बच्चों के लिए मासिक भत्ते देने और अंत्येष्टि क्रिया का खर्च देने के लिए भी इसी निधि में से पैसा खर्च किया जाता है।

४,०००,००० लोग प्रतिदिन मजदूरों की कैण्टीनों में खाना खाते हैं

जनता के शासन के वर्षों के दौरान में विभिन्न दफ्तरों, फैक्टरियों, कारखानों, इंस्टीट्यूटों तथा प्रतिष्ठानों में बहुत बड़ी संख्या में सार्वजनिक भोजनालय खोले गये हैं। इस समय बल्गेरिया में ३,००० ऐसे भोजनालय हैं। ४,००,००० से अधिक मजदूर तथा कर्मचारी और उनके परिवार वाले इस समय सार्वजनिक भोजनालयों में खाना खाते हैं। वे केवल भोजन पकाने के लिए व आवश्यक खाद्य सामग्री का पैसा देते हैं। बाकी खर्च इन दफ्तरों तथा संस्थानों की तरफ से दिया जाता है।

बल्गेरिया में हर तीन छात्रों में से एक छात्र को छात्रवृत्ति मिलती है

१९४४ में बल्गेरिया की मुक्ति के बाद निरक्षरता के उन्मूलन के लिए एक राष्ट्रव्यापी आन्दोलन शुरू किया गया। इस समय तक ५० वर्ष तक की अवस्था के तमाम लोगों के बीच से निरक्षरता बिल्कुल दूर कर दी गई है।

१९३९ तथा १९४० में विश्व विद्यालय के छात्रों की संख्या१०,१६९ और १९५७-१९५८ में १३,०००विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां दी गयी हैं। इसका अर्थ यह है कि विश्व विद्यालयों के हर तीन छात्र में से एक छात्र को छात्रवृत्ति मिलती है।

तंत्र-वाद्य प्रवीण

१९५७ में लीज में तंत्र वाद्यों की एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में ईवान कालोफर्स्की नामक एक बल्गेरियावासी को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। ईवान कालोफर्स्की को स्वय उसके बनाये हुए दो वायलिनों, एक वायोला तथा एक सेलो के उत्तम गुणों के लिए भी प्रथम पुरस्कार और एक सोने का तगमा दिया गया।

इस प्रसंग में मई के मध्य में सोफिया में बेल्जियम के दूतावास में एक समारोह हुआ जिसमें बल्गेरिया में बेल्जियम के कार्यवाहक राजदूत एम० लुइस कूयर्योर ने श्री ईवान कालोफर्स्की को एक प्रमाणपत्र दिया।

× × ×

गत अप्रैल में अखिल अल्जीरियाई मुस्लिम छात्र संघ के अध्यक्ष, श्री आयत शालल बल्गेरिया आये। वह दिमित्रोव लोक युवक संघ के अतिथि थे। श्री आयत शालल राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत अल्जीरियाई छात्रों के साथ भाई-चारा प्रदर्शित करने के सप्ताह के अवसर पर बल्गेरिया आये थे।

मलादूजा मठ

बल्गेरिया के वार्ना नामक नगर से लगभग १८ मील उत्तर की ओर बहुत ऊंची चट्टानों पर अलादूजा मठ (गुफा मठ) स्थित है। यह संसार के इस भाग में ईस्वी युग के प्रभात का एक रोचक स्मारक है। छानबीन से पता चला है कि इस गुफा को चौथी या पांचवीं शताब्दी में गिरजा घर में परिवर्तित किया गया था। बाइबिल की कथाओं का चित्रण करने वाली सीधी सादी चित्र कृतियां पत्थर की दीवारों को सुशोभित करती हैं। समय के क्रूर हाथों ने तथा उनके महत्व को न समझने वाले अज्ञानी लोगों ने इनमें से अधिकांश चित्रों को मिटा दिया है। आज मलादूजा मठ एक संग्रहालय है जिसे देखने हर ग्रीष्म ऋतु में बल्गेरिया से तथा विदेशों से बहुत बड़ी संख्या में लोग आते हैं।

एक दिलचस्प शौक

लेव्स्कीग्राद जिले के हिसार गांव में लोग आर्तिन गिदिकोव को लिखाई में चमत्कार करने वाले आदमी के रूप में जानते हैं। गिदिकोव अपना खाली समय बल्गेरियाई तथा विदेशी पुस्तकों को कागज के बहुत छोटे छोटे टुकड़ों पर लिखने में व्यय करता है। उदाहरण के लिए वह साधारण आकार की किसी भी पुस्तक के ४० पृष्ठ एक पोस्टकार्ड पर नकल कर सकता है।

(बल्गेरियायी दूतावास से)

आर्य्य-कुमार-संघ



क्या तुम जानते हो ?

सोने का चेहरा

खुरासान के प्रधान मन्त्री फरीदिद्दीन (८७०-९५५ ई०) को सत्रह साल की उम्र में घटनावश चेहरे पर घाव लग गया था; जिसके कारण वह ८४ साल तक अपने मुंह पर सोने का चेहरा लगाये रहा; जिसे उसने कभी नहीं हटाया। उसका असली चेहरा उसके राजा तक ने नहीं देखा था। उसकी आखिरी इच्छा के अनुसार मरने पर उसे उसके सोने के चेहरे सहित ही दफनाया गया था।

कीमती पोशाक

संसार में सबसे कीमती और भारी पोशाक फ्रांस की रानी दि मेदिसी (सन् १५७३-१६४२ ई०) पहनती थी। उसके जरी के कपड़ों का वजन २५ सेर जिनमें ३९ हजार मोती और ३००० हीरे जड़े हुए थे।

२३० भाषाओं का ज्ञाता

कोपेन हेगन विश्व विद्यालय (डेनमार्क) के प्रोफेसर रासमस क्रिश्चियन रास्क (सन् १७८७-१८३२ ई०) २३० भाषायें बोल सकते थे जिनमें भारत की संस्कृत और ५० से ज्यादा दूसरी भाषायें भी थीं।

पद-यात्री

न्यू हैम्प शायर का कर्नल रसेल फार्नम पहला पद-यात्री था जो सन् १८१२-१३ ई० में अपने साथ १० सेर वजन लेकर सेन्ट लुई मिसौरी (अमेरिका) से सेन्टपीटस वर्ग (रूस) पैदल पहुँचा था।

सन्त वाणी

किसी ने सन्त से पूछा—
कि है कब टूटती माला ?
कहा जब स्नेह-धागे को,
रगड़ता स्वार्थ मन का"।
× × ×
किसी ने सन्त से पूछा—
कि कौन है सुरमा उत्तम ?
कहा "जो धैर्य रखता है,
व गहता सहन शक्ति गुण"।
× × ×
किसी ने सन्त से पूछा—
कि क्या है रत्न परमोत्तम ?
कहा "जग भर के रत्नों से
सुविधा रत्न है अनुपम"।
× × ×

चुटकुले

१—एक विद्यार्थी शिक्षा समाप्त कर किसी दफ्तर में इन्टरव्यू के लिए गया। साहब ने पूछा—तुम्हारी राय में सबसे कन्जूस डिपार्टमेन्ट कौन सा है ?
प्रार्थी ने कहा—'एज्यूकेशन डिपार्टमेन्ट बड़ा कंजूस है। परीक्षा में बहुत कम नम्बर देता है।

२—एक गांव वाले ने किसी से पूछा—यह सड़क कहां तक जाती है ? उसने कहा—लखनऊ तक। गाँव वाला बोला—फिर लोग डेपूटेशन लेकर खुद क्यों जाते हैं ? इसी सड़क के हाथ क्यों नहीं भेज देते।

३—एक बार डाक्टर ने अपने एक मरीज से पूछा—क्या तकलीफ है आपको ?
मरीज ने बताया—"डाक्टर साहब ! सबेरे जब मैं बिस्तर से उठता हूं तो लगभग आधे घण्टे तक मुझे चक्कर आते रहते हैं"
डाक्टर साहब झट बोल उठे—"भले आदमी ! घण्टे भर बाद ही उठा करो।"

४—एक बार दो आदमियों में किसी बात पर बहस चल रही थी।
पहले व्यक्ति ने झुंझला कर कहा—"तो क्या मैं बेवकूफ हूं"।
दूसरे व्यक्तिने भी तैश में आकर कहा—"और क्या मैं बेवकूफ हूं"।
दूसरा व्यक्ति जरा संयत स्वर मे बोला—आप शायद ठीक कहते हैं मैंने अपने बारे में गलत कहा"
दूसरा व्यक्ति झेंप गया।

५—कन्या पक्ष के एक सज्जन ने विवाह में खाते समय वर पक्ष के सज्जनों से कहा यदि किसी सज्जन को नमक आदि की आवश्यकता हो तो मांग लें। एक सज्जन जो कुछ विनोदी स्वभाव के वर पक्ष की ओर थे झट बोल उठे—"अरे भई कहते क्यों नहीं लड्डुओं मे नमक नहीं है ;"

६—ठेकेदार मजदूर से "अरे सब लोग तुझ से दूनी ईंटें उठा कर ले जा रहे हैं, तू कम क्यों ले जा रहा है।"
मजदूर—"जी वे काम चोर हैं इसलिए बार बार ले जाने की मेहनत से बचना चाहते है।"

—वेदप्रभा:, बरेली

वनिता विवेक



स्त्री शिक्षा की प्रगति

★ सन्तोष कुमारी

राष्ट्र की उन्नति के लिए सबसे आवश्यक है स्त्री शिक्षा। अतः सरकार तथा देश की विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं का यह कर्तव्य है कि वह इस ओर समुचित ध्यान दे। —सम्पादक

वीर शिवा को शिवा जी बनाने का सारा श्रेय माता जीजाबाई को है, दादा भाई नैरोजी का निर्माण उनकी माता ने किया। इस प्रकार के और भी अनेकों उदाहरण भारतीय इतिहास मे भरे पड़े हैं। अतः यह सत्य है कि माता अपने पुत्र को जैसा चाहे वैसा बना सकती है। अब प्रश्न यह है कि माताओं में इस प्रकार की प्रेरणा कैसे पैदा की जाय कि वे अपने पुत्रों का निर्माण करें। निश्चय ही स्त्री शिक्षा पर यह निर्भर करता है। माताओं में शिक्षा के द्वारा यह क्षमता पैदा की जा सकती है कि वे अपने पुत्रों का निर्माण करके उन्हें आदर्श बनायें जिससे देश की सब प्रकार से उन्नति हो।

धन्य है वह आर्य समाज जिसने न केवल स्त्री शिक्षा पर लगे प्रतिबन्ध को दूर किया बल्कि स्त्रियों को उच्चतम विद्या क्षेत्र तक भी पढ़ने की अनुमति दिला दी और आज स्त्रियां सभी स्थानों पर सभी विषयों की शिक्षा पा सकती हैं। उनकी शिक्षा के लिए स्थान स्थान पर समुचित प्रबन्ध भी है। पर यह मानना पड़ेगा कि अपने देश में स्त्री शिक्षा की प्रगति बहुत धीमी है। देश की माताओं और बहनों को शिक्षित तथा योग्य बनाना अत्यन्त आवश्यक है। बिना उन्हें शिक्षित किये भावी समाज प्रगति नहीं कर सकता। स्त्री शिक्षा का इतना प्रचार होने पर भी अभी शिक्षित स्त्रियों की संख्या देश में बहुत कम है। अतः इस ओर अभी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि भारत सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ है पर वह पर्याप्त नहीं है। उप राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन ने अभी हाल में अपने एक भाषण के अन्तर्गत जो यह कहा है कि १९०० के बाद से भारत ने आज तक कोई बड़ा नेता नहीं पैदा किया, इसका अभिप्राय यही है कि उस समय के बाद से किसी माता के अन्दर ऐसी प्रेरणा नहीं हुई कि वह अपने पुत्र का निर्माण कर उसे एक आदर्श नेता बना सके। अतः यहां भी सच्ची और उपयोगी स्त्री शिक्षा की ही आवश्यकता प्रतीत होती है।

यह कहना भी सत्य है कि आज स्त्रियों को जिन विषयों की शिक्षा स्कूलों और कालेजों में दी जाती है उनमे से सभी विषय उनके लिए उपयोगी नहीं हैं। साथ ही यह भी सत्य है कि कुछ अन्य उपयोगी विषय जिसकी शिक्षा उन्हे दी जानी चाहिए था, उसकी शिक्षा नहीं दी जाती। अतः स्त्री शिक्षा का पूरा पूरा लाभ समाज को हो नहीं पाता।

एक बात और जो आवश्यक है वह है प्राइमरी तक के बच्चों की शिक्षा के सम्बन्ध मे। देश के अनेकों विचारक अब इस बात को स्वीकार कर चुके हैं कि प्राइमरी तक के बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध स्त्रियों के हाथों में होना चाहिए क्योंकि इन वर्गों में बच्चे बहुत कम उम्र के होते हैं। उन्हें शिक्षा की अपेक्षा प्यार की अधिक आवश्यकता होती है। प्यार और दुलार से ही उन्हें इस अवस्था में कुछ सिखाया जा सकता है। अतः सभी प्राइमरी विद्यालयों में स्त्री शिक्षिका रखने की व्यवस्था क्रमशः की जानी चाहिये।

प्रान्तीय शिक्षा मन्त्रालयों को जागरूक होकर इस ओर विचार करना चाहिये। क्या पुनः भारतवर्ष में वह समय आ सकता है जब अपने देश की स्त्रियाँ शास्त्रों के गहनतम विषयों पर ख्यातिप्राप्त विद्वानों से शास्त्रार्थ कर सकेंगी ? वही दिन भारत के लिये स्वर्णिम दिन होगा।

आवश्यकता है

चयनिका

मानवता की रक्षक नारी

एक ज़माना था जब स्त्रियों का क्षेत्र घर तक ही सीमित था, अब वह ज़माना नहीं रहा। घर तो उनके हाथ मे आने वाली है पुरुषो ने सत्ता का गलत उपयोग किया। दुनिया की मुक्ति स्त्रियो के हाथ से होगी, पुरुषो को आज ज्यादा सूझता नहीं, विज्ञान युग में पुरुषो की शक्ति स्तम्भित रह गयी है। अत आवश्यकता इस बात की है कि स्त्रियाँ अपनी मातृ शक्ति और संयम के साथ आगे आये और मानवता की रक्षा करें। —आचार्य विनोबा

शिक्षा और मातृ शक्ति

चरित्र निर्माण और नव दृष्टिकोण के निर्माण मे शिक्षा ही सहायक हो सकती है। भारत मे स्त्री शिक्षा की प्रगति सन्तोष जनक नहीं है ? यदि महिलाओं की शिक्षा का विकास नहीं किया गया तो देश का भविष्य अधकार पूर्ण होगा। यदि आज माता शिक्षा से दीक्षित होगी तो पुरुष निर्मित यह ससार एक मानव हितैषी ससार के रूप में परिवर्तित हो जायगा।

—डा० राधाकृष्णन

शिवाजी द्वारा अध्यात्म को प्रोत्साहन

शिवाजी ने अपने शासनकाल मे लोगो मे आध्यात्मिक और धार्मिक भावनायें पैदा करने के लिए जो पग उठाये उनके लिए उनका शासन याद रहेगा। हमें इस ऐतिहासिक तथ्य से शिक्षा लेनी चाहिए कि यद्यपि निर्धनता दूर करने के लिए भौतिक प्रगति आवश्यक है फिर भी इसके साथ २ आध्यात्मिक विकास भी होना चाहिए। यदि हमने इस ओर ध्यान न दिया तो मानवता के विनाश के अतिरिक्त इसका कोई परिणाम न होगा।

—राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद

(शोलापुर मे शिवाजी की कांस्य मूर्ति उद्घाटन के अवसर पर)

रोग निरोध में सहायक व्यक्ति महान् है

ससार में किसी का किसी रोग से पीड़ित होना चिन्ताजनक विषय है। यदि हम रोगो को मिटा सकें तो बडी अच्छी बात हो। जो लोग रोग निरोध में सहायता करते हैं वे महान् उपकार करते हैं। ईश्वर हमारी पूजा का भूखा नहीं और उसे किसी पदार्थ की कमी भी नहीं। वह तो हम पर दया करके भूखे नगे और रोगो मे सामने आता है। हम उनकी सेवा द्वारा अपना जीवन पवित्र बना सकते हैं। जो व्यक्ति रोग निरोधक कार्यों म सहायता करते हैं वे सबकी श्लाघा के पात्र हैं। —डा० सम्पूर्णानन्द

आर्यसमाजों से निवेदन

गाजियाबाद का अनुकरण करें, सभा के लिए ३०१) की सहायता

गत वर्ष हिन्दी आन्दोलन की ओर सभा और समाजों की शक्ति लगे रहने के कारण प्रान्त मे प्रचार व्यवस्था पर प्रभाव पड़ा, सभा के आर्थिक पक्ष पर इसका विशेष प्रभाव पड़ने से सभा की आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगी।

परन्तु निराशा की कोई बात नहीं है। यदि सभा के समस्त अधिकारी एव अन्तरंग सदस्य इस ओर ध्यान देकर अपने कर्तव्य का पालन करें तो शीघ्र ही आर्थिक सकट से मुक्त होकर हम अपनी समस्त शक्ति अन्य रचनात्मक कार्यों मे लगा सकते हैं। मै सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साधारण अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए ८ जून को दिल्ली पहुँचा। वहा से मै श्री प्रोफेसर रत्नसिंह एम० ए० के साथ रात्रि की ट्रेन से गाजियाबाद आया। प्रातःकाल आर्य समाज गाजियाबाद के कार्यकर्ताओ की एक बैठक बुलाकर उसमे सभा की वर्तमान स्थिति रक्खी और सभा की आर्थिक सहायता के लिए प्रार्थना की। मेरी प्रार्थना पर तत्काल समाज के कार्यकर्ताओ ने ३०१) मुझे प्रदान किए। इस कार्य म आर्य समाज के प्रधान श्री बाल स्वरूप जी, तथा कर्मठ कार्यकर्ता श्री बनवारीलाल जी ने प्रशसन य सहयोग प्रदान किया। मेरे पहुँचने से पूर्व ही वहाँ पर सभा उप प्रधान श्री जगनन्दनलाल जी एडवोकेट तथा सभा मुख्य उप मन्त्री श्री ईश्वरदयालु जी आर्य भी पहुँचे हुए थे जिन्होंने मेरी पर्याप्त सहायता की। मै गाजियाबाद आर्य समाज के सभी कार्यकर्ताओं को इस सहायता के लिए धन्यवाद देता हू और आशा करता हू कि प्रान्त की अन्य आर्य समाजें भी गाजियाबाद समाज का अनुकरण कर सभा की आर्थिक सहायता करेंगी सभा की आर्थिक सुदृढता से ही प्रान्त में ठोस कार्य सम्भव हो सकेगा।

निवेदक—

फूलनसिंह मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

श्री बालस्वरूप जी

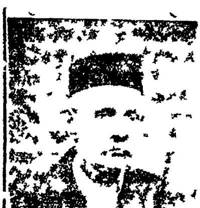
प्रधान आर्यसमाज गाजियाबाद



जिन्होंने हिन्दी आन्दोलन मे हर प्रकार से दिल खोलकर सहायता की और जो आर्यसमाज के कार्यों के लिए बराबर पुष्कल धनराशि दान के रूप म देते रहते हैं।

विश्वकर्मा वंशज बालकों को ७०००) का दान

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिरनिधि





१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न स्व० श्रीमती तिज्जोदेवी भवानीलाल शर्मा कोकास की पुण्यस्मृति म श्री भवानीलाल जी शर्मा अकबरपुर जिला कानपुर वर्तमान अमरावती (विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालकों के हितार्थ ७०००) की धनराशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद स० २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को प्रस्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक व्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओं के शिक्षण मद म व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुक को ।) के स्टाम्प भेजकर सभा से छपे फार्म मगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

४—दान दाता की इच्छानुसार विश्वकर्मा वंशीय मनु, मय, त्वष्टादि प० त्रा बालक बालिकाओं के लिए प्रथम सहायता दी जायगी।

५—उपर्युक्त सम्पूर्ण दान आर्यमित्र पत्र म प्रसारार्थ अविकल सूचन में प्रतिमास सचित्र प्रकाशित होती रहेगी और दान दाता को 'मित्र' पत्र के प्रत्येक अङ्क बिना मूल्य मिलते रहेंगे। —मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

देश-दर्शन

[साप्ताहिक समाचार समीक्षा]

गोदी श्रमिकों की हड़ताल

गोदी श्रमिकों की हड़ताल १५ जून की रात्रि से प्रारम्भ हो गई। श्री पाटिल के साथ जो वार्ता इस सम्बन्ध में हुई उसका कोई परिणाम नहीं निकला। कार्यभार के लिए सेना तैयार हो गयी है। बम्बई बन्दरगाह पर एक भी श्रमिक काम पर नहीं आया और क्रेन हिले डुले भी नहीं। कलकत्ता व मद्रास बन्दरगाह पर भी यही स्थिति है। कोचीन कॉडला और विशाखापट्टनम बन्दरगाहों में भी हड़ताल हो गई। हड़ताल की बात आज कल इतनी प्रचलित हो गई है कि परिवहन और संचार विभाग में तो प्रति सप्ताह कहीं न कहीं हड़ताल होती रहती है और परिवहन मन्त्री श्री एस० के० पाटिल इन समस्याओं को सुलझाने में सर्वथा असमर्थ रहे हैं। इस कारण से अब उनका नाम ही पड़ गया है "हड़ताल मन्त्री और उनके विभाग का नाम "हड़ताल मन्त्रालय"।

वेतन १०००) से अधिक न हो

केरल राज्य के मुख्य मन्त्री श्री नम्बूद्रीपाद ने भारत जैसे गरीब देश के लिए यह ठीक सुझाव दिया है कि किसी भी विभाग के बड़े से बड़े अफसर का वेतन भी १०००) रु० मासिक से अधिक न हो। आपने कहा कि मन्त्रियों को इस पर विचार करना चाहिये क्योंकि भारत की वर्तमान आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि श्री नम्बूद्रीपाद की इस बात पर यदि भारत सरकार अमल करे तो देश का संकट दूर हो जाय पर यहां तो सभी अफसर लूटने खसोटने पर लगे हैं। सुना तो यहां तक गया है कि विदेशों से उनको विशेषज्ञों को बुलाकर उन्हें ३००) से ६००) तक प्रति दिन दिये जा रहे हैं। इतना अपव्यय करने वाली सरकार को भला बचाये तो कौन?

बिहार में गर्मी से ३०० व्यक्ति मरे

बिहार प्रान्त में भीषण गर्मी और भयंकर लू चलने के फलस्वरूप पिछले १५ दिनों में लगभग ३०० व्यक्ति मर चुके हैं। अधिक संख्या में बच्चों की मृत्यु हुई है। पशु भी काफी संख्या में मरे हैं। दक्षिण बिहार की तो हालत खराब है। गांव गांव के कुए सूख गये हैं और पानी के बिना लोग बेचैन हैं। गया जिले में सबसे अधिक गर्मी पड़ रही है। वहाँ लगभग ६० व्यक्ति मर चुके हैं। ऋतु विशेषज्ञों का अनुमान है कि अभी एक सप्ताह तक वर्षा नहीं होगी। सब का यही कहना है कि इतनी गर्मी पिछले वर्षों में नहीं पड़ती थी। बम्बई के कुछ क्षेत्रों में भी भीषण गर्मी से लोग परेशान हैं।

प्राचीन ग्रन्थों का अनुसन्धान

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने पचमढ़ी में कालीदास समारोह समिति की प्रथम बैठक में उद्घाटन भाषण करते हुए कहा कि देश में ऐसी संस्थाएं स्थापित की जानी चाहिए जो हमारे पूर्वजों के जीवन और प्राचीन ग्रन्थों के सम्बन्ध में अन्वेषण करें जिनकी कला साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में भारी देन है। मध्य प्रदेश सरकार द्वारा कालीदास महोत्सव मनाये जाने की इस योजना की राष्ट्रपति महोदय ने सराहना की।

प्राइमरी शिक्षा का विस्तार

देश में प्राइमरी शिक्षा के विस्तार के लिए केन्द्रीय सरकार एक देश व्यापी बड़ी योजना बना चुकी है जिसके अनुसार ६०००० अध्यापक नियुक्त होंगे और तीन वर्ष के अन्दर भारत सरकार इस कार्य पर १४करोड़ रुपये व्यय करेगी। योजना का प्रारम्भ इसी वर्ष से होगा। प्रथम वर्ष में १५ हजार शिक्षक नियुक्त किये जायेंगे। स्कूल रहित गांवों में जूनियर बेसिक या प्राइमरी स्कूल खोले जायेंगे निरक्षरता मिटाने के लिए भी सरकार प्रयत्न कर रही है।

डा० लोहिया का भाषण

हैदराबाद में भाषण करते हुए समाजवादी नेता डा० राममनोहर लोहिया ने वर्तमान भ्रष्टाचारी शासन का कारण जन उदासीनता बताया, यदि जनता तैयार हो जाय तो सरकार को अपनी उदासीनता छोड़नी ही पड़ेगी आपने भविष्यवाणी करते हुए कहा कि आगामी १५ वर्ष के अन्दर देश में एक ऐसी क्रान्ति आयेगी जिसमें करोड़ों व्यक्ति भाग लेंगे और जो इस भ्रष्टाचारी शासन का अन्त कर देगी।

आर्य जगत

अब उ०प्र० में गोहत्या क्यों?

फर्रुखाबाद से यह समाचार मिला है कि महल्ला चिल्का में ९ जून को प्रातः एक कसाई के घर पर कुछ गायों और बछड़ों की हत्या किये जाने की सूचना पुलिस को मिली तो थानेदार श्री रणजयसिंह व सहायक थानेदार श्री एस० आर० गुप्त कुछ पुलिस सहित वहाँ पहुंचे। उस समय वहां ४ बैल तथा १ गाय जो काटे जा चुके थे पाई गई। ११बैल, १ गर्भवती गाय तथा एक १५ दिन की बछिया बचाकर लायी गई। पुलिस के साथ स्थानीय आर्य वीर दल के अध्यक्ष श्री ओम्प्रकाश वैद्य तथा श्री रामरक्षपाल जी भी थे। रहमुल्ला, अलीमुहम्मद शफी अजीज व अहमदीन इन पांच कसाइयों को पुलिस रंगे हाथों गिरफ्तार कर ले गई। शेष कसाई भाग गये। उनके घर से १७ छुरी, ५ बगुदा, ८कुल्हाड़ी आदि मिली। जनता में इस समाचार से बहुत रोष फैल रहा है। अब प्रश्न यह है कि उ० प्र० में जबकि गो हत्या कानूनन निषेध कर दिया गया है तो फिर आये दिन प्रान्त में इस तरह की घटनाएं क्यों होती हैं? और पता चलने पर सरकार ऐसे कसाइयों को कठोरतम दण्ड क्यों नहीं देती? यदि इससे कोई यह समझे कि सरकार ने यों ही हिन्दुओं को बहलाने के लिए गो हत्या निषेध का कानून पास कर दिया है, तो क्या बुरा है? क्या यह सत्य नहीं है कि सरकार गो हत्या को रोकने के लिए वास्तव में अप्रयत्नशील है? अतः हम यह स्पष्ट कहना चाहते हैं कि आज की जनता अब सरकार द्वारा अधिक दिनों तक बरगलायी नहीं जा सकती। याद रहे कि सरकार की इस मुस्लिम तुष्टिकरण दुरंगी नीति का परिणाम स्वयं सरकार के लिए बुरा होगा।

चुनाव—

—आ० स० चौम्पकोट—श्री हरलसिंह प्रधान, श्री मानसिंह मन्त्री, श्री शीशराम कोषाध्यक्ष।

—आ० स० जगदीशपुर, बिहार श्री राम औतार शर्मा प्रधान, श्री सत्यनारायण सिंह मन्त्री, श्री काशी नाथ आर्य कोषाध्यक्ष।

—आ० स० बगही महराजपुर—श्री बैजनाथ सिंह प्रधान, श्री शमशेर बहादुर सिंह मन्त्री श्री महनन्दसिंह कोषाध्यक्ष।

स्वामी अभेदानन्द जी द्वारा नेपाल नरेश को तार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्रीयुत स्वामी अभेदानन्द जी महाराज ने नेपाल नरेश की वर्ष गांठ पर निम्नलिखित तार दिया है—

'अपनी तथा समस्त आर्य जगत की ओर से श्रीमान की ०वें गांठ के शुभावसर पर हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। श्रीमान तथा महारानी महोदया के स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन की शुभकामनाओं के साथ।'

संस्कार—

—आ० स० चौम्पकोट के श्री शीशराम आर्य के पुत्र जयदेव जी की शादी ८ मई को वैदिक रीत्यानुसार श्री विश्वम्भर देव शास्त्री द्वारा सम्पन्न हुई।

—आ० स० कायमगंज के शाहु दयाशंकर के पुत्र वीरेन्द्र कुमार का यज्ञोपवीत संस्कार श्री नाथूराम जी ने कराया। शाहु कृपाशंकर जी की पुत्री सरला कुमारी का पाणिग्रहण संस्कार श्री सुरेन्द्र कुमार के साथ हुआ।

—आ० स० चतरा, बिहार के उपमन्त्री श्री गोविन्द सहाय जी के पिता की अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीत्यानुसार हुआ।

—आ० स० जौनपुर ने श्री राजेन्द्र नाथ गुप्त बी० ए० एल० टी० का शुद्धि संस्कार उनके निवास स्थान पर श्री सूर्यबली जी द्वारा कराया। नगर के प्रतिष्ठित सज्जन उपस्थित थे।

आदर्श दान

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य श्री शिवशंकर प्रसाद, मलाही, चम्पारण के पिता श्री परमेश्वर साहु जी का देहान्त २४ मई को हो गया। अन्त्याष्टि संस्कार वैदिक रीति से हुआ। आ० स० मलाही का भवन निर्माणार्थ १००१) व कूप निर्माणार्थ ७५१), आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार को वेद प्रचारार्थ १५१) तथा गुरुकुल वैद्यनाथ धाम को १५) श्री शिवशंकर प्रसाद जी ने दान दिये। आपने १००० दीन दुखियों को भोजन भी कराया। आपके पिता परमेश्वर साहु जी बड़े दानी व सज्जन थे।

सभा की सूचनाएँ

निरीक्षक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि निरीक्षकों की सूची आगामी अंक में प्रकाशित की जायगी। कुछेक सज्जनो से पत्र व्यवहार किया जा रहा है। सभा को अनेक ऐसे कार्य कर्त्ताओं की आवश्यकता है जो निस्वार्थ भाव से आर्य समाज की सेवा करना अपना कर्तव्य समझे। समाज, संस्थाओं का निरीक्षण करना और समाजों को जागृत करना प्राप्तव्य धन प्राप्त करना विवाद को शान्त करना, समाज के सगठन को सुदृढ़ करना इत्यादि कार्य हैं। जो सज्जन इन कार्यों का करना स्वीकार करे वह सभा को शीघ्र सूचित करने का कष्ट करें।

सभा के मुख्य निरीक्षक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वार्षिक साधारण सभा वृहद् विवेशन दि० १८ ५ ५८ को सभा के मुख्य निरीक्षक (आडीटर) पद पर श्री रामकिशोर सिंह जी रिटायर्ड सुपरिन्टेन्डेंट एकाउन्ट्स जनरल आफिस उत्तर प्रदेश सरकार १४ अन्तरसूय्या प्रयाग निवासी निर्वाचित हुए हैं।

—फूलनसिंह
सभा मन्त्री

मास जून के पुरोगम

१—श्री श्रवणसिंह जी २६ से २८ जून विवाह सस्कार भुसावर

२—श्री धर्मदत्त आनन्द २१ से २४ जून विवाह सस्कार गुठना

३—श्री महेशचन्द्र २४ से २६ जून विवाह सस्कार भोगाव

—अधिष्ठाता उपदेश विभाग

आर्य कुमार सभाओ को सूचना

उप प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद् अलीगढ से सम्बन्धित आर्य कुमार सभाओं को चाहिए कि ३० जून को सभा का वर्ष समाप्त होने के बाद १५ जुलाई तक वे अपने यहा का निर्वाचन करलें और परिषद् के लिए प्रतिनिधि चुन कर उनके नाम कार्यालय दयानन्द मार्ग, सासनी को भेज दें। —महेशचन्द्र गर्ग

आवश्यकता है आश्रम की

किसी मनोरम व पहाड़ी स्थान पर भूमि और भवन युक्त आश्रम की आवश्यकता है, जहा निम्न लिखित कार्य हो सकें —

१—अंग्रेजी भाषा मे वेद भाष्य तथा अन्य साहित्यकार्य।

२—मेरे अमेरिकी और यूरोपीय शिष्यो और साथियो का योगाभ्यास आदि के निमित्त आगमन और निवास।

३—विदेश जाने के इच्छुक प्रचारकों का शिक्षण।

४—ग्राम सेवा।

जब तक वहा ये कार्य होते रहेंगे सम्पत्ति मेरी रहेगी अन्यथा दानदाता की हो जायगी। मैं इस वर्ष के अन्त तक भारत लौटूंगा। कृपया पत्र व्यवहार निम्न पते पर करे।

उषर्बुध वैदिक प्रचारक

Pandit Usharbudh F R A S
Vedic Missionary P o Box 703,
Georgetown, British Guiana,
South AMERICA

आवश्यकता है

प्रायमरी आर्य कन्या पाठशाला अगराना (अलीगढ़) के लिए एक अध्यापिका की, जो कम से कम मिडल पास हो, सगीत जानने वाली हो और ६ ७ वीं कक्षा तक पढ़ा सके। प्रार्थना पत्र ३० जून ५८ तक आ जाने चाहिए। —मन्त्री आर्यसमाज

रेखा-चित्र

अभागिन

● रजनीश

'..पति के मरने के बाद चार दिन भी वह पेट भर भोजन न कर सकी। लेकिन इससे किसी को क्या ? इन्सान इन्सान को इन्सान समझे तब न। मनुष्य तो पराये दरबे का स्वार्थी है।..' —सम्पादक

गोद में छोटा सा बच्चा लिये, घास की गठरी सर पर रखे एक अभागिन लड़खड़ाती सी, सुनसान पगडंडियों पर चली जा रही है। कीच काँटों की उसे चिन्ता नहीं वह तो इन निर्दयी काँटों से खेलते खेलते काफी अभ्यस्त हो गई है। चेहरे पर मायूसी झलक रही है। उसकी धोती कई स्थानों पर फटी हुई है। विशेषतः सर के ऊपर तो इतनी फटी है कि उसमें से उसके बिखरे, अस्त व्यस्त केश यह प्रकट करते हैं मानों वे कई दिनों से धुले नहीं। बच्चे की अवस्था काफी दयनीय है। वैसे तो वह काफी हृष्ट पुष्ट, खूबसूरत है परन्तु उसके शरीर से सटे चीथड़ों से उसकी दयनीयता प्रकट होती है। अभागिन विधवा है। उसे तो अपनी मंजिल तक पहुंचना है। मंजिल पर पहुँचकर उसे क्या करना है वह तो वह स्वयं नहीं जानती मगर इस समय तो वह केवल इतना जानती है कि घास की गठरी में ही उसका सारा सम्पत्ति-छिपा है, और आगे समय की मेहरबानी पर निर्भर है उसका और उसके बच्चे का जीवन।

पति की अकस्मात् मृत्यु ने उसे कहीं का न छोड़ा। वह रोती-बिलखती रह गई इस संसार में। दो बातें भी न कर पाई अपने पति से, उनके मरने से पूर्व। वह अकेली होती कहीं डूब मरती या खुदकशी कर लेती लेकिन उसे इस बच्चे के लिए जीना पड़ रहा है जिसका इस संसार में उसके अतिरिक्त और कोई नहीं। उसके समय से पूर्व प्राण देने से वह नवसंचित पुष्प खिलते खिलते मिट्टी में मिल जायगा, जिस पर संसार का भविष्य निर्भर हो सकता है उसे समय से पूर्व संसार से विदा कर देना कम अनर्थ नहीं— वह जानती थी कि जमीन, मकान, जायदाद, उसका सारा भविष्य, सारा सुख उन आस लगाये लालची गिद्धों ने हड़प कर लिया। वह अपने मुख से एक शब्द भी न कह पाई। पंख होते हुए भी बेपंख पक्षी की भांति चक्कर काट रही थी अपने घरौंदे के चारों तरफ। पति के मरने के बाद चार दिन भी वह पेट भर भोजन न कर सकी। लेकिन इससे किसी को क्या ? इन्सान, इन्सान को इन्सान समझे तब न। मनुष्य तो पराये दरबे का स्वार्थी है। किसी ने उसकी बेबसी का ख्याल न किया, किसी को उस पर रहम न आया। वह न जाने कैसी कैसी मुसीबतों से दोनों समय पेट भर पाती। सुबह से शाम तक, शाम से सुबह तक हर घड़ी अपने बच्चे को बगल में दबाये घूमती फिरती। जिस समय जहाँ पड़ जाती उस समय वहाँ ही उसका घर था दिन में काम करती, रात में काम करती अपने लिए नहीं अपने बच्चे के लिये जिस पर अब बची-खुची सारी आशायें केन्द्रित थीं।

जो कभी पलंग से नीचे न उतरा, जिसकी सेवा में हर समय दास-दासियाँ हाथ जोड़े खड़ी रहतीं थीं, वह आज स्वयं औरों के सामने हाथ जोड़े खड़ी थी, उनकी सेवा करने को तैयार थी। जो भी कभी उसके पास आया भूखा नङ्गा प्यासा वह सदा आशीर्वाद देता हुआ ही वापस लौटा। आज···आज वहीं इन्सान दो टूक रोटी के लिए मोहताज, मुट्ठी भर अनाज के लिये रोती है— घिघियाती है। सब कुछ हुआ लेकिन उसने दोष किसी को न दिया, वह स्वयं जानती थी कि समय कितना परिवर्तनशील है।

उसका रूप.... ...उसके रूप की उपमा कवि चन्द्रमा से करते थे। शरीर सुडौल था, सुन्दर था। मगर भूख प्यास ने शिथिलता अवश्य ला दी थी उसके चेहरे पर। परन्तु समाज के उन भेड़ियों ने, जो अपनी वासना तृप्ति के लिए नित्य-नये नये शिकार फसाते हैं—उन्होंने प्रत्येक प्रकार का लालच दिया, वह उनसे शादी करले, अपने बिगड़ते रूप को संभाल ले, अपने संसार को सुख कर ले लेकिन वह सती सीता न थी तो क्या थी तो उसी धरा की। वह सब जानती समझती थी। अपनी इच्छा पूर्ण करने के लिये दुष्टों ने खूब सताया, डराया धमकाया। मगर उसे ईश्वर पर विश्वास था भरोसा था। ईश्वर के अटल न्याय की दुष्टों का संहार करके।

अपने गत आज्ञाभक्ति का दावा करने वाले सारे के सारे नौकर नमक हराम निकले। एक नौकर ने नमक हलाल करने की चेष्टा भी की। उसका हृदय न माना। वह अपनी मालकिन का अपमान न देख सका। जिसने सारी जिन्दगी उसकी सेवा में बिताई आज वह उसी पर हुकूमत करे, यह उससे न हुआ। सच्चे हृदय से अपनी मालकिन की लाज बचाने की चेष्टा की लेकिन समाज के दुश्मनों ने उसे ऐसा करने से रोका। मगर ऐसा करने के एवज में उसे सजा मिली। वह इतना पिटा—उसके हाथ-पाँव सूज गये। लेकिन अभागिन देख रही थी समय के बदलते रंग को। उसका सीना फटा जा रहा था केवल यह देखकर कि जब इन्सान ही इन्सान के काम नहीं आता तो बेचारा पशु क्या करे ?

देखा, उसी रास्ते से वह अभागिन वापस लौट रही है। वही घास की गठरी सर पर रखी है—शायद बिकी नहीं। बच्चा रो रहा है—शायद भूख के कारण। ★

स्वास्थ्य-सुधा

चर्म रोग और मानसिक अशान्ति

—लेखक श्री डा० के० एन० मिश्र—

'शरीरं व्याधि मन्दिरम्' के अनुसार शरीर में व्याधियाँ स्वाभाविक हैं परन्तु सुखी जीवन के लिए हमारा प्रयत्न यही है कि वे कम से कम हों। चर्मरोग के कारण स्वयं तथा अन्यों में घृणा के भाव उत्पन्न होने लगते हैं विद्वान लेखक ने चर्म रोगों का कारण मानसिक अशान्ति बताया है। इस रहस्य पर गम्भीरता पूर्वक विचार और अध्ययन कर इस उपाय से लाभ उठाया जाना चाहिए —सम्पादक

क्या मनुष्य के मानसिक विचारों का चर्म रोगों से कोई सम्बन्ध है, इस प्रश्न की चर्चा आरम्भ में कुछ असंगत सी प्रतीत होगी परंतु यदि गम्भीरता पूर्वक इस प्रश्न पर विचार किया जाय तो हमें एक रहस्य का पता चलेगा।

जर्मनी के प्रसिद्ध डाक्टर हनीमैन (१७५५–१८४७) ने भारतीय चिकित्सा शास्त्र के सम सूत्र स्वीकार किया और अधिकविश्लेषण के पश्चात एक सोरा नामक विष की मनुष्य शरीर में खोज की और बताया कि संसार के तमाम जटिल पुराने चर्म रोगों का कारण सोरा है। मन की दूषित अवस्था से सोरा की उत्पत्ति होती है यदि मनुष्य के अन्दर "सोरा" विष न हो तो उसे दुःसाध्य बीमारियाँ नहीं हो सकती क्योंकि पहले विचार फिर उसी के अनुरूप कर्म तथा वैसा ही फल। इस प्रकार यह सिद्धान्त पता चला (१) दूषित विचार (२) दूषित विचारों की विकृति शरीर में सोरा विष की उत्पत्ति (३) सोरा विष का बाह्य प्रस्फुटन चर्म रोग। सोरा विष जितना तीव्र होगा उतना ही चर्म रोग अधिक दूषित और स्थायी होगा।

आजकल कुछ रिवाज सा चल पड़ा है कि चर्म रोगों को बाह्य औषधियों के प्रयोग द्वारा दबा दिया जाता है। यद्यपि कभी कभी यह व्यर्थ और घातक भी हो जाता है। चर्म को लोगों ने एक ऊपरी वस्तु समझ रक्खा है और यही मानकर उसकी ऊपरी चिकित्सा पर विशेष बल दिया जाता है। चर्म का मन या शरीर के अन्य तत्वों से कोई सम्बन्ध नहीं माना जाता। चर्म रोगों की बाह्य चिकित्सा के साथ आन्तरिक मानसिक चिकित्सा पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। हमें एक ऐसे रोगी को देखने का अवसर मिला है जिसका अकौता (एग्जिमा) तभी उभड़ आता है जब वह मानसिक अशान्ति की स्थिति में होता है।

एक चिकित्सक ने २०० रोगियों की परीक्षा करके यह प्रमाणित किया कि मानसिक अवस्था का चर्म पर भारी प्रभाव पड़ता है और मन को स्वस्थ कर लेने पर बाह्य उपसर्ग स्वयं गायब हो जाते हैं। इस परीक्षण के सफल होते ही चिकित्सा जगत् में चर्म रोगों के लिये स्नायु मण्डल तथा मस्तिष्क को शान्त करने वाली तथा निद्रा लाने वाली दवाओं का प्रयोग आरम्भ होने लगा। इन औषधियों में भारतीय जड़ी सर्पगन्धा के प्रयोग अत्यन्त सफल और प्रामाणिक सिद्ध हुए हैं।

अब प्रश्न यह होता है कि इस अवस्था में चिकित्सा क्या और किस प्रकार की जाय। चर्म रोगों या उसके पूर्वरूप (मनोदूषण) को दबा देने से नाना प्रकार की मानसिक बीमारियाँ हो जाती हैं "शमः शमे शमयति" हमें सर्व प्रथम मानसिक शांति और शुद्धि पर बल देकर आन्तरिक उष्णता को शांत करना चाहिए। बाह्य रोग पर उसका प्रभाव अवश्यम्भावी होगा। इस प्रकार चर्म रोगों से बचने और हो जाने पर उनका निवारण करने का एकमात्र उपाय मानसिक पवित्रता ही है। बाह्योपचार सामयिक उपाय मात्र हैं।

पंजीकरण सं. ल. ६०
आषाढ़ १ सक १८८० (२२ जून ५८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष २६६२ तार . 'आर्यमित्र'

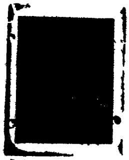
चार प्रसिद्ध अमेरिकन नागरिक



नेल्सन रॉकफेलर
न्यूयार्क अमेरिकन उद्योगपति



अल्थिया गिब्सन
प्रसिद्ध अमेरिकन टेनिस खिलाड़ी



विलियम एम० राउन्ट्री
अमेरिकन राज्य उप सचिव
(समीप पूर्व, दक्षिण एशिया और अफ्रीका के लिए)



वर्नर वान ब्रौन
अमेरिकन राकेट विशेषज्ञ

शुभ विवाह

२६ मई को श्री रामेश्वरप्रसाद भा०कृ० भागलपुर की कन्या कुमारी सुधर्मा का पाणिग्रहण संस्कार जिला गोर जिला निवासी श्री राजपालसिंह एम०ए० बी०टी० के साथ वैदिक रीति से हुआ।

यज्ञोपवीत संस्कार

मा०स० मगहर बस्ती के श्री राम आसरे प्रसाद आर्य के छोटे भाई का यज्ञोपवीत संस्कार श्री भागवत जी के द्वारा सम्पन्न हुआ।

[पृष्ठ २ का शेष]

उसके बाप को थी, विवाह के समय लड़की के बाप का वही निम्न स्थान है जो पहले था। अछूतों के व्यवहार में भी हम औरों से अब पीछे पड़ गये हैं। सबसे अधिक चिंता की बात यह है कि पहले सुधार की चाह थी अब नहीं है।

ग्रामों के सुधार में जो नई शक्तियां काम कर रही हैं उनके साथ हमारा कुछ भी सहयोग नहीं है, कहीं स्पर्धा है वह भी अति न्यून और अतिनिर्बल। इसलिये फल शून्य है। हम को अभिमान है कि हमने बीज बोया और पौधा खड़ा किया, दूसरे कहते हैं, यह ठीक है परन्तु तुम तो खेत को लावारिसी छोड़कर चले गये। हमने रक्षा की है और हम ही फसल को काटेंगे।

बाबूराम शास्त्री द्वारा अमृतानन्दीय आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ARYA आर्यमित्र MITRA

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का साप्ताहिक मुखपत्र

वार्षिक मूल्य ८) एक प्रति का २० नए पैसे	लखनऊ, रविवार, आषाढ़ १५, शक १८८० ६ जुलाई १९५८ ई०	विदेश में १५ शिलिंग

आर्यसमाज का नैतिकता आन्दोलन भारतीय संकट को हल करेगा

आर्यजन अपने कर्तव्य को समझें और कार्यक्षेत्र में आगे आवें

आज भारत के जन जीवन में एक निराशा व्याप्त है और वह यह अनुभव करने लगी है कि स्वाधीनता का उसने जिस शुभ कामनाओं के साथ अभिनन्दन किया था वे पूर्ण नहीं हो रही हैं। राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक अंग में अनैतिक आचरण और स्वार्थ भावना का प्रसार हो रहा है। राष्ट्र की आर्थिक समस्यायें संस्कृति, शिक्षा और कला के उद्धार का प्रश्न खाद्यान्न और बेकारी आदि की समस्यायें स्वाधीनता के पूर्व से भी अधिक विकराल रूप धारण कर चुकी हैं। साधनों का अभाव है और स्वार्थ पूर्ति के संघर्ष में राष्ट्र चारित्रिक पतन के पंक में निमग्न हो रहा है। हमारी शिक्षा पद्धति बेकारों को जन्म देती है, मानव चरित्र के निर्माण का दायित्व उसे स्वीकार नहीं है। फलतः बौद्धिक दृष्टि में चतुर परन्तु नैतिक मान्यताओं से शून्य शिक्षित बेकारों की संख्या बढ़ रही है। राष्ट्र के संचालक इन्हीं चारित्रिक दृष्टि से अपरिपक्व युवकों के हाथ में राष्ट्र की बागडोर सौंपने के लिये विवश हैं और यहीं से राष्ट्र व्यापी भ्रष्टाचार का आरम्भ होने लगता है। आज की हमारी प्रजातन्त्र राज्य व्यवस्था भी देश के नैतिक पतन के लिये कम उत्तरदायी नहीं है। प्रजातन्त्र में अपने लिये बहुमत प्राप्त करने के लिये राजनैतिक पार्टियाँ अनैतिक उपायों का अवलम्बन लेती हैं। जनता की गरीबी और अशिक्षा आदि का लाभ उठा जातिवाद, सम्प्रदायवाद आदि को बढ़ावा देकर अपना स्वार्थ सिद्ध करती हैं, और निर्वाचन के पश्चात् विजयी दल के लोग अपने दल, जाति और सम्प्रदाय के व्यक्तियों को योग्यता न होते हुए भी संरक्षण एवं पोषण प्रदान करते हैं। देश व्यापी भ्रष्टाचार की इस पृष्ठ भूमि में आर्य समाज का दायित्व बहुत बढ़ जाता है। क्या हम इस सबको चुपचाप सहन करते रहें या इसके विरुद्ध आन्दोलन छेड़ दें।

आर्य जगत् के दो प्रसिद्ध नेताओं श्री पण्डित हरिशंकर शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश और श्री स्वामी अभेदानन्द जी प्रधान सार्वदेशिक सभा देहली ने अपने सन्देशों में आर्य जनता से राष्ट्र व्यापी नैतिकता अभ्युत्थान आन्दोलन को सक्रिय बनाने की अपील की है। आर्य जन दृढ़ निश्चय करें और नैतिकता आन्दोलन को अपना आदि और अन्तिम लक्ष्य बनालें। हमने ऋषि दयानन्द के आदेशानुसार संसार से अन्याय, अभाव और अत्याचार के उन्मूलन की प्रतिज्ञा ली है। देश व्यापी भ्रष्टाचार ने जनता को अभावग्रस्त बना उसके अधिकारों का छीन घोर अन्याय किया है और निरीह जनता जब अपने अधिकारों की माँग करती है तब उस पर अहिंसा सिद्धान्त के समर्थक अत्याचार की वर्षा करने लगते हैं। इस प्रकार के अन्याय अभाव अत्याचार ग्रस्त भारत का उद्धार आर्य समाज के अतिरिक्त और कौन कर सकता है? आर्य वीरों, तुम्हारी शक्ति अपार है उसे पहचानो और अपने कर्तव्य पालन में जुट जाओ। भारत के नव-निर्माण में हमें यही उत्तरदायित्व प्राप्त हुआ है। हम उसमें सफल हों, यही हमारी एक मात्र भावना होनी चाहिए।

अवैतनिक सम्पादक—

[illegible] उपमन्त्री

[illegible]

अङ्क २५

> क्या आज के आर्य प्रचारक भी अपने 'मुसाफिर" के चरण चिन्हों पर चलने का कुछ प्रयास करेंगे ? —सम्पादक

जीवन-ज्योति
आर्य 'मुसाफिर'

[श्री प्रेमचन्द गुप्त अकोला' शोहरतगढ, बस्ती]

न ५ पन न र ~ 'सैन्पुर' ग्राम I~मय छा है जिसकी गाद म धर्म पर प्राणो की आहुति देने वाले एक भारतीय धर्मवीर अमर सेनानी का इतिहास निहित है हजारों वर्ष से आधी और तूफान की भीषण टक्क र सहकर अटल रहनेवाले इसी 'सैदपुर' की पवित्र भूमिपर धर्म के लिए प्राणा की बाजी लगाने वाले एक शहीद को अन्तिम शरण मिली थी। भारतवर्ष के अनेकों उत्थान और पतन को देखने वालो म से यदि आज भी कोई इस 'सैदपुर' को देखने जाय तो वहा के सूखे झाड़ियों की ओट से कोई अमूक पीडा भरे स्वर म पुकार उठता है—' पथिक क्या देखते हो ! किसी दिन हम भी तुम्हारी तरह धम पर प्राणो की आहुति देने वाले इसी 'भारत के जाते जागते नागरिक के रूप म 'मुसाफिर' थे।' उसका नाम था ५मंव र प० लेखराम, पर तु लोग उसे मुसाफिर कहते थे।

× × ×

सदियो से चले आने वाले परतंत्र 'भारत' देश के अन्दर ईसाइयो और मुसलमानो के नरककाल क्रूरनर्तन, वैदिक धर्म पर कुठाराघात तथा अत्याचार का दृश्य देखकर सन् आट्ठारह सौ त्रिसठ के लगभग एक सन्यासी की प्रतिभा से धम पर अत्या चार करने वाले पापियो का हृदय कपा। देखते हा देखते वर्षो से चले आने वाले पोप पाखंडो का वहिष्कार हुआ। भारत देश में शान्ति की स्थापना हुई। सोये भारतवासियो क 'स्वामा दयानन्द का यह पहला अमर सन्दश था जिसने सम्पूर्णत बेसुध जनता म सर्वदा के लिए चेतना का मन्त्र फूक दिया।

धर्म रक्षा पर अपना तन मन लुटाने के लिए प्रस्तुत धर्म प्रचारको और सेनानियो का दल तैयार होने लगा और तब कुछ दिन बाद 'सैदपुर' की एक छाटा सा झोपड़ी से निकल कर निर्भीक नाहर सा पैंतरे देता हुआ। धर्मवीर प० लेखराम 'मुसाफिर' ने अपना विद्वता पूर्ण शास्त्रार्थ के द्वारा पादरियो और मुसलमानों का खूब पोल खोलते हुए आर्य जगत् में भारी गर्जन किया। सारे 'भारत' म तूफान पैदा कर देने वाले इसी भारतीय धर्मवीर मुसाफिर' को मारने के लिए पादरियो तथा इन दुष्ट मुसलमानों ने खूनी पजा बढाया कि क्रातिकारी धर्मवीर मुसाफिर' ने इन पादरियो और मुसलमानो के बढे हुए खूनी पजे को अपने धर्म प्रचार से चकना चूर कर दिया।

× ×

मुसाफिर' का एक क्रान्तिकारी धार्मिक सघर्ष कादियान जिले के मिर्जा गुलाम अहमद' के साथ हुआ आर्य समाज पर आक्षेप करने वाली



'कुरआन ए अहमदिया' पुस्तक का खण्डन करके 'मुसाफिर ने अपनी क्रातिकारी भावनाओ को 'तकजीब ए बुरहान' म साकार रूप दिया। तदन्तर मिर्जा अहमद ने इसका उत्तर सुर्म ए चश्म आर्या' म दिया, तो इधर 'मुसाफिर' ने उसका बजोड क्रातिकारी उत्तर 'नुस्खे खब्त अहम दिया' से ललकार कर मिर्जा को दिया। इस प्रकार जब इन तहरीरों से 'मुसाफिर' की आत्मा का शाति न मिली ता 'कादियान जाकर 'मिर्जा अहमद' को 'मुसाफिर' ने ललकारा और बुरी तरह परास्त किया। इस पर 'मिर्जा' के होश उड गये और अपने को 'मुसाफिर' से छिपा कर आय, बाय, साय करने लगे।

इस परास्त के दुखद समाचार को पाते ही मुसलमानों के शागिर्दों ने 'मुसाफिर' को धमकाया—"ऐ आर्य जगत् के वीर कहाने वाले 'मुसाफिर' तू सम्हल ! किसी दिन ये जान से प्यारी ःमुहम्मदिया कटार तुम्हारे सीने म एक बार शेर की तरह गरज कर चुप हो जावेगी। सम्हल जा ! सम्हल जा !!

परन्तु फिर भी निर्भय 'मुसाफिर' इन धमकियों से न डरकर—प्राण प्रण से धर्म-प्रचार करता रहा। और इन धमकियो के उत्तर में कहला भेजा "विश्व के सभी पवित्र धर्म शहीदों के लाल २ रक्तों से सिंच कर फूले फले है। इसलिये मैं भी वैदिक धर्म को अपने इन्हीं लाल लाल खूना दुबारा सींचना चाहता हू।"

उन दुष्टो को क्या मालूम कि यह मधुर मुस्कान—चालीस कोटि भारतीयों म धर्म रक्षा का अमर सदेश सुना रहा है।

इधर 'कादियान' के मुसलमानों ने शरमा कर 'मुसाफिर' पर अनेको मुकदमें चलाये, परन्तु वे सब खारिज हो गये। इससे वे लोग चिढ़ कर 'मुसाफिर' की प्राण लेने की चेष्टा करने लगे।

× × ×

जब सम्पूर्ण यावत जगत निद्रा देवी की सुखद गोद में बैठना चाहता है

जब पक्षियों का कलरव, नीरव बनकर नीड़ों में चुपचाप बैठना चाहता है।

और जब सूर्य दिन भर के कार्य से थक कर रात्रि सुन्दरी के अचल मे अलसाई हुई नींद से अपना गोरा २ मुख छिपाना चाहता है

तभी

एक काला, नाटा, भीमकाय शरीर तथा विकराल रूप वाला मुसल मान अपने को वैदिक धर्म ग्रहण करने के हेतु मुसाफिर के पास आता है और उस समय प्रकृति भी थर थराकर काप उठती है—परन्तु क्या करे

मित्रो की चेतावनी भी 'मुसाफिर' को मिलती है, परन्तु उस पर विश्वास कर धर्मोपदेश देना प्रारम्भ कर देते हैं।

भगवान भास्कर की लाल सुन हली रेखाये यावत जगत पर पड़ रही है

सुनहली सध्या, मानो मुसाफिर' को अपने सुनहले आचल मे छिपान के लिए पुकार रही हो।

मुसाफिर भी उठता है—

वह ता आज अपने पूज्य का जीवनी लिख चुका है। वह जीवनी 'जगत् गुरु दयानन्द' की थी। उसी की खुशी में वह अगड़ाई लेना ही चाहता है कि वह डरावनी छाया हिलती है और उसकी कटार'मुसाफिर' के पेट मे एक बार गरज कर शात हो जाती है। और 'मुसाफिर' सदा के लिए

मुसाफिर तो है परन्तु उसकी चेतना सर्वदा क लिए सुनहली किरणों में विलीन हो जाती है। और सध्या की अरुणिम किरणे मुसाफिर' का साथ लिए हुए रात्रि सुन्दरी के अचल में अपना मुख छिपाने के लिए चल देती हैं।

और इधर

मानो मुसाफिर' की सारी कसक टीस एव वेदना इन्हीं वाक्यों में शात हो गई हों—

'आर्यसमाज से लेख (तहरीर) और व्याख्यान (तकरीर)का काम बन्द नहीं होना चाहिये।"

ओं सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथापूर्वे सञ्जानाना उपासते ॥ ऋ० १०।१९१।२

हे मनुष्यों, मिल कर चलो, मिलकर बोलो, तुम्हारे मनों के भाव समान हों, जैसे तुम्हारे पूर्वज विद्वान् समान ज्ञान रखते हुए अपना कार्य करते थे वैसे ही तुम भी करो।

आर्यमित्र

लखनऊ—६ जुलाई १९५८, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०५८

उत्तर-प्रदेश में उर्दू क्यों?

अपने देश की सेक्यूलरवादी कांग्रेस सरकार की मुस्लिमपरस्त नीति की आलोचना अनेकों बार अनेकों समाचार पत्रों तथा सभाओं द्वारा वर्षों से की जाती रही है पर न तो केन्द्रीय सरकार के कान पर जू रेंगता है और न प्रान्तीय सरकार कुछ सुनने या सोचने को तैयार है, अपनी नीति में परिवर्तन करने की बात तो दूर रही। सरकार की इस साम्प्रदायिक व पक्षपात पूर्ण नीति के जो परिणाम सामने आ रहे हैं, यह भी प्रत्यक्ष है। आज हिन्दू वर्ग का विश्वास कांग्रेस से उठ चला है, हिन्दुओं को कांग्रेस से न तो कोई आशा है और न उमीद। फलतः हिन्दू वर्ग कांग्रेस से क्षुब्ध और निराश है। इसका परिणाम मोदाहा, देवीकुलम, गुड़गांवा महुआ, सिहोर, सवाई-माधोपुर आदि के उप चुनावों में सभी देख चुके हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि सरकार हिन्दुओं को तो बात-बात पर दबा रही है और उनके अधिकारों तथा सुविधाओं को छीन-छीन कर तथा उनकी स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध लगा-लगा कर अहिन्दू सम्प्रदायों को हर प्रकार से बढ़ावा दे रही है। इसी का यह कुपरिणाम है कि आज उ० प्र०में उर्दू की आवाज उठायी जा रही है।

लाखों धन्यवाद के पात्र हैं उ०प्र० के माननीय मुख्य मंत्री श्री डा० सम्पूर्णानन्द जी जिन्होंने उ० प्र० में मुट्ठी भर मुसलमानों द्वारा चलाये जा रहे उर्दू आन्दोलन का डट कर मुकाबला किया और उर्दू की क्षेत्रीय योजना को स्वीकार करने को वे कतई तैयार नहीं हुए, पर लाखों निन्दा के पात्र हैं केन्द्रीय सरकार के वे उच्चाधिकारी जिनसे सह पाकर उ० प्र० के कुछ साम्प्रदायिक मनोवृत्ति वाले मुसलमान पुनः उर्दू को लेकर उ०प्र० में आन्दोलन चलाना चाहते है। हमें विश्वस्त सूत्रों से यह भी पता चला है कि प्रान्तीय सरकार को ऊपर से ऐसा आदेश मिला है कि वह उर्दू आन्दोलन को दबाने का प्रयास न करे और उनकी मांग पर अत्यन्त सहानुभूति पूर्वक विचार किया जाय क्योंकि हजारों मुसलमानों ने संयुक्त हस्ताक्षर सहित केन्द्रीय सरकार के पास इस आशय का प्रार्थनापत्र दिया है कि उ० प्र० की क्षेत्रीय भाषा व अदालती भाषा उर्दू कर दी जाय।

हम केन्द्रीय सरकार के सर्वेसर्वा प्रधान मन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू से पूछना चाहते हैं कि मुसलमानों के लिए अपने देश के टुकड़े करके पाकिस्तान दे देने के बाद भी क्या आप शेप हिन्दुस्तान में कोई और पाकिस्तान बनवाना चाहते हैं? कुछ चन्द मुसलमानों की उर्दू सम्बन्धी अनुचित मांग पर श्री नेहरू जी जब इतने दयालु हो गये हैं तो क्या हम पूछ सकते हैं कि आज से कुछ वर्ष पूर्व जब देश की तीन करोड़ हिन्दू जनता ने सम्मिलित हस्ताक्षर के द्वारा आपसे गो हत्या निषेध के लिए उचित प्रार्थना की थी तो उस समय आपका यह उदार विचार और दयालु चरित्र कहां चला गया था?

अतः यह स्पष्ट है कि हमारी सरकार हिन्दुओं के साथ सौतेला व्यवहार कर रही है और अहिन्दू सम्प्रदाय को उचित-अनुचित हर प्रकार से प्रश्रय दे रही है। ऐसी दशा में देश में यदि साम्प्रदायिकता फैलती है तो इसकी जिम्मेदारी केवल केन्द्रीय सरकार और इसकी साम्प्रदायिक तथा स्वार्थी नीति पर है।

एक बार हिन्दी को जब राष्ट्रभाषा स्वीकार कर लिया गया तो इसके बाद उस भाषा को हटा कर अन्य भाषाओं को स्थान देना क्या राष्ट्रभाषा और भारतीय संविधान का मजाक बनाना नहीं है? वह भी उ० प्र० में जो मुख्य रूप से एक हिन्दी भाषा भाषी प्रान्त है, वहां उर्दू के प्रति सरकार की यह पक्षपातपूर्ण साम्प्रदायिक अनीति सर्वथा अहितकर है। हम समय रहते केन्द्रीय सरकार को यह चेतावनी देना चाहते हैं कि वह उ० प्र० के इस विवाद में हस्तक्षेप करके प्रान्त की स्थिति को बिगाड़ने का प्रयास न करे और अपनी प्रान्तीय सरकार से यह निवेदन करना चाहते हैं कि वह डटकर इस उर्दू आन्दोलन का मुकाबला करे। यदि इसके बाद भी दुर्भाग्यवस कुछ अन्यथा हुआ तो प्रान्त की हिन्दी प्रेमी जनता एक व्यापक आन्दोलन चलाने के लिए बाध्य है। नेहरू सरकार की मुस्लिम पूजक नीति से तंग आकर हिन्दुओं द्वारा सत्याग्रह करने की बात तो पहले से ही चली आ रही है फिर यदि उ० प्र० में हिन्दी को दबाकर उर्दू को किसी प्रकार की अनुचित मान्यता दी गई तो सरकार की यह अदूरदर्शिता इस आन्दोलन की आग के लिए घी का काम करेगी।

सम्पादकीय टिप्पणियां

क्या पांडिचेरी भी काश्मीर बनेगा?

जब से श्री दिगाल फ्रांस के नये प्रधान मन्त्री बने हैं तब से पांडिचेरी के कुछ अवसरवादी वहाँ सिर उठाने लगे हैं और छिपे-छिपे फ्रांस के कुछ नेताओं से उनकी कुछ वार्ता चल रही है कि भारतीय बस्ती पांडिचेरी को पुनः फ्रांस में मिला लिया जाय। इस सम्बन्ध में श्री दिगाल की क्या नीति हो सकती है इसका हम सहज ही अनुमान कर सकते हैं।

पांडिचेरी में भारतीय शासन की दुर्बलता पर प्रकाश डालते हुए हमारे एक सहयोगी साप्ताहिक पत्र ने यह रहस्योद्घाटन किया है कि वास्तव में पांडिचेरी में किसी का राज्य नहीं है। न तो पूरे पांडिचेरी में भारतीय कानून लागू है और न फ्रान्स का कानून। कुछ भाग के सरकारी अधिकारी भारतीय कानून से अपना कार्य करते हैं और कुछ भाग में फ्रांसीसी कानून बर्ता जाता है। उक्त पत्र ने तो यहां तक कहा है कि वहां की सारी जनता को भी यह निश्चय रूप से पता नहीं है कि वह भारतीय राज्य के आधीन है या फ्रांस के आधीन है।

एक मुकदमें की चर्चा करते हुए उक्त पत्र ने लिखा है कि एक मुकदमा पांडिचेरी में नहीं देखा गया और फ्रांस भेज दिया गया। फ्रांस की अदालत ने भी उस मुकद्में पर विचार नहीं किया क्योंकि उसे स्वयं सन्देह था कि पांडिचेरी उस अदालत के क्षेत्र में है भी या नहीं। अतः वह मुकदमा विश्व न्यायालय हेग में भेज दिया गया। विश्व न्यायालय ने भी यह कह कर उस मुकदमें पर विचार करने से इन्कार कर दिया कि जब तक भारत और फ्रांस की सरकारें सम्मिलित रूप से प्रार्थना-पत्र नहीं देंगी तबतक विश्व अदालत इस मुकद्में पर विचार नहीं करेगी।

यदि ये सारी बातें सच हैं तो निश्चय ही यह एक उपहास की बात है और इसमे सबसे अधिक उपहास है भारत सरकार की जिसको अपनी विदेश नीति पर गर्व है। साथ ही पांडिचेरी में गुप्त रूप से चल रहे आन्दोलन से यह भी खतरा है कि कहीं पांडिचेरी की दशा भी काश्मीर के समान न हो जाय। अतः हम केन्द्रीय सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित कर यह आशा करते हैं कि सरकार इस स्थिति का स्पष्टीकरण करेगी और अपने कर्त्तव्य तथा अधिकार की सुरक्षा की उचित व्यवस्था करेगी।

आर्यसमाज में नये खून की आवश्यकता है

वह भवन कितने दिनों तक टिकेगा जिसकी मरम्मत न की जाय? वह शरीर कितने दिनों तक ठहर सकता है जिसको उचित भोजन न मिले? वह मशीन कितने दिनों तक कार्य कर सकती है जिसमें तेल न दिया जाय या जिसके घिसे पुर्जे बदल न दिए जांय? उसी प्रकार वह संस्था कितने दिनों तक टिक सकती है जिसमें नये व्यक्तियों का आना बन्द सा हो जाय?

हमारा अभिप्राय अपने आर्य समाज से है जिसमें आज नये खून का आना बन्द सा हो गया है,जिसमें तेज गति लाने के लिए कुछ नये लोगों की आवश्यकता है। बूढ़ों का होश और अनुभव हमारे पास है पर जवानों का जोश और उत्साह नहीं है किन्तु संस्था को चलाने के लिए ये दोनों ही परम आवश्यक हैं। उनमें से एक की आवश्यकता की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। सौभाग्य से बड़े बूढ़ों का होश तो आर्यसमाज के

(शेष अगले पृष्ठ पर)

सभा की सूचनाएँ

अन्तरङ्गाधिवेशन की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभास्थ अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आगामी अन्तरङ्ग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक २७ व २८ जुलाई १९५८ दिन रविवार व सोमवार को बुलन्दशहर आर्य समाज मन्दिर में होना निश्चित हुआ है। आशा है कि सर्वसदस्य गण नियत समय पर पधार कर अनुगृहीत करेंगे।

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभाओं से निवेदन

प्रचार को सुव्यवस्थित करने के सम्बन्ध में एक पत्र २१-६-५८ को भेज कर प्रार्थना की गई थी कि १ जुलाई से तारीख वार पुरोगम जिले की समस्त समाजों में प्रचारार्थ जाने हेतु बना कर सभा कार्यालय मे भेजे परन्तु किसी उप सभा ने ऐसा नहीं किया। अतः सभा पुनः आर्यमित्र द्वारा यह प्रार्थना करती है कि शीघ्र ही पुरोगम बनाकर भेजने का कष्ट कीजिए, ताकि प्रचार व्यवस्था प्रारम्भ हो सके।

बकाया धन की सूची सम्बन्धित उपदेशकों प्रचारकों को भेजी जा चुकी है और प्रथम जुलाई से प्रचार प्रारम्भ होगा।

निरीक्षक-सूची-परिवर्तन

बस्ती जिले की आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि श्री जगदम-सहाय जी के स्थान पर आर्य समाज बस्ती के मन्त्री श्री रामदास जी आर्य निरीक्षक पद पर नियुक्त किये गये हैं। उनके पहुंचने पर समाज एवं संस्थाओं को चाहिए कि निरीक्षण करने में पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

उपदेश विभाग की सूचना

सभास्थ महोपदेशकों, उपदेशकों एवं प्रचारकों को सूचित किया जाता है कि उपदेश विभाग के कार्यालय से गोपनीय (निजी) एक आदेश पत्र दि० २१ जून १९५८ को बंद लिफाफा में भेजा गया है। सभा कार्यालय में केवल २ पत्र प्राप्ति के प्राप्त हुए हैं। यदि वह आदेश पत्र किसी वजह से न मिला हो तो कार्यालय से उस पत्र को पुनः मांगकर प्राप्ति की सूचना भेजने की कृपा करें। अन्यथा यह समझा जायेगा कि सभा का पत्र आपको मिल गया है। अतः पत्रानुसार तुरन्त कार्यारम्भ होना चाहिए।

—फूलनसिंह
सभा मंत्री

उपदेशकों को आदेश

सभा के निम्न उपदेशकों एवं प्रचारकों को सूचित किया जाता है कि नीचे लिखे महीनों की डायरी बिल १७ तारीख तक अवश्य भेज दें दुख है कि उनको कार्यालय से पत्र लिखे जाने पर भी उन्होंने डायरी बिल नहीं भेजे। १७ तारीख के पश्चात् जो बिल एवं डायरियां गत् मासों की प्राप्त होंगी, सभा उनको स्वीकार करने मे असमर्थ होगी।

श्री रामचन्द्र जी शर्मा मार्च ५८ से जून ५८ तक।

श्री धर्मदत्त आनन्द जनवरी ५८ से जून ५८ तक

श्री सर्वगुणप्रसाद मार्च ५८ से जून ५८ तक।

श्री महिपालसिंह मार्च व अप्रैल ५८

श्री ओ३म्प्रकाश शास्त्री जनवरी ५८ से जून ५८ तक।

श्री रुद्रदत्त शास्त्री मार्च के डायरी बिल व अप्रैल ५८ का बिल।

श्री शिवनारायण वेदपाठी अप्रेल से जून ५८ तक।

श्री तोताराम जी मई ५८।

आवश्यक सूचना

सभा के समस्त उपदेशको एव प्रचारकों को एक आवश्यक गोपनीय तथा आर्य उप प्रतिनिधि सभा के मन्त्री महोदयो की देखरेख में प्रचार करने के निमित्त पत्र भेजे गये थे, परन्तु उन पत्रों का उत्तर दो एक महानुभावों को छोड़कर किसी ने नहीं भेजा अतः पुनः यह आदेश दिया जाता है कि उन पत्रों का उत्तर शीघ्र ही सभा कार्यालय मे भेजदें।

—फूलनसिंह
अधिष्ठाता उपदेश विभाग

आर्य वीर दल के दीक्षित आर्य वीरों को 'आदेश'

आर्य वीर दल के समस्त दीक्षित आर्य वीरों और अधिकारियों को आदेश दिया जाता है कि वह अपनी प्रतिज्ञानुसार व्यायाम, स्वाध्याय एवं ईश्वरोपासना को अपने दैनिक जीवन का अनिवार्य अङ्ग बनालें। जो आर्य वीर व अधिकारी इस नियम की अवहेलना करेगा उस पर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जायगी।

दल के प्रान्तीय संचालकों का कर्तव्य है कि वे अपने शिविरों में व्यायाम, स्वाध्याय और सन्ध्या के कराने की अवश्य व्यवस्था करें और कम से कम एक घण्टा स्वाध्याय में उत्पन्न शंकाओं के समाधान को दें।

—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी
प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्यवीरदल

चयनिका

(१) मौन ही सर्वोत्तम भाषण है अगर बोलना ही चाहिए तो कम से कम बोलो, अगर एक से चले तो आगे नहीं।

(२) पशु स्वभावतः निरंकुश है, परन्तु मनुष्य का मनुष्यत्व इसी बात में है कि वह स्वेच्छा से अपने को अकुश में रखे।

(३) प्रचार मैं एक ही तरह से करना जानता हूं—आचार के द्वारा, और आचार के साथ ही साथ जिज्ञासु के साथ वार्तालाप करके।

(४) मोह और स्वार्थ अज्ञान के पुत्र हैं, अतएव अज्ञानी पुरुष ही दुष्ट और कायर होते है।

(५) मैं हिन्दू धर्म में अस्पृश्यता को महा पाप मानता हूं और यह दुखदायी कुप्रथा पूर्ण रूप से आत्म घातक है। प्रत्येक हिन्दू का धर्म है कि वह शीघ्र इस महा व्याधि को नष्ट करने का पूर्ण प्रयत्न करे।

(६) दरिद्र वह है, जिसमे शुद्ध प्रेम की बूंद तक नहीं। धनवान वह है, जिसके प्रेम मे जन्तु से लेकर मस्त हाथी तक समा जाते है। नास्तिक वह है, जो शरीर के बाहर विश्व व्यापी आत्मा को नहीं पहचानता। आस्तिक वह है, जो हर जगह आत्मा के सिवाय कुछ नहीं देखता।

(७) जो सिर्फ ईश्वर का सहारा लेते हैं,वे मनुष्य का सहारा नहीं लेगें,यदि तुमने इसे पचा लिया तो तुम कभी शोक नहीं करोगे। —गांधी जी

संग्रहकर्ता—नन्दकिशोर अग्रवाल ८५ मुरई मह्ल्ला, संयोगितागज इन्दौर

अन्यान्य समाचार—

उर्दू का उ० प्र० में कोई स्थान नहीं है

जिला सभा इलाहाबाद का प्रस्ताव

२२ जून को आ० स० चौक इलाहाबाद मे जिला सभा इलाहाबाद की ओर से श्री शंकर दयाल श्रीवास्तव सम्पादक, भारत के सभापतित्व में हिन्दी दिवस मनाने के लिए एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें उ० प्र० में उर्दू को क्षेत्रीय भाषा बनाये जाने के विचार का घोर विरोध किया गया। प्रस्ताव में कहा गया कि कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टिकरण नीति के कारण यह सब कुछ हो रहा है। वास्तव में उर्दू का उ० प्र० में कोई स्थान नहीं है। सरकार को चाहिए कि वह इस कुविचार को छोड़ दे अन्यथा इसके विरुद्ध उ० प्र० में व्यापक आन्दोलन शुरू हो जायेगा। अब आवश्यक है कि सरकार राजनीतिक सौदेबाजी छोड़ दे और हिन्दी को सर्वत्र प्रतिष्ठित होने दे। —राजेन्द्र

—दयानन्द अनाथालय आगरा गत ५८ वर्षों से आर्य जाति के बालक बालिकाओं का संरक्षण करता आरहा है और अब तक कई हजार अनाथ बच्चों का पोशन कर चुका है। आर्य समाजों तथा आम जनता से निवेदन है कि उन्हें यदि कहीं कोई अनाथ बच्चा मिले तो उसे इस अनाथालय में पहुंचाने का कष्ट करें। उनके आने जाने का मार्ग व्यय दिया जायेगा। यदि पहुंचाने में असमर्थ हों तो अनाथालय को सूचित करें। हमारे कर्मचारी जाकर ले आयेंगे। —मन्त्री

(पिछले पृष्ठ का शेष)

पास पर्याप्त है पर जवानी के जोश की कमी है। इस ओर जब हम विचार करते हैं तो हमारा ध्यान बरबस बिना सोचे आर्यवीर दल की ओर आकृष्ट हो जाता है, वह आर्यवीर दल जो युवकों का चरित्र निर्माण करके उन्हें वैदिक सांचे में ढालकर एक आदर्श नागरिक बनाने का कार्य कर रहा है। आर्यवीर दल वह स्थान है, वह शिक्षण केन्द्र है और वह कारखाना है जहां से आर्यसमाजों के कार्य के लिए आदर्श आर्यवीर तैयार करके भेजे जाते हैं जहाँ से एक ही साथ सैकड़ों व हजारों की संख्या में कुशल व चरित्रवान आर्यवीर आर्यसमाजों को मिल जाते है।

अतः आर्यसमाज में नये खून लाने के लिए एक ही सबसे आवश्यक बात यह है कि सभी आर्यसमाजें अपने-अपने यहाँ आर्यवीर दल की स्थापना करें और इसे हर प्रकार से बढ़ाने का यत्न करें फिर दल से निकले हुए आर्यवीर आर्यसमाज को बढ़ायेंगे। समाजों को ऐसा समझना चाहिए कि जिस आर्यसमाज में आर्यवीर दल नहीं है वह आर्यसमाज अपूर्ण है। इस विचार के साथ आर्य समाज में नए खून, नया जीवन, नई ज्योति, नया उत्साह और नयी प्रेरणा लाने के लिए आर्यसमाजों के अधिकारियों को चाहिये कि वे अपने अपने समाज में अविलम्ब आर्य वीर दल का संगठन करें।

—नगर आर्य समाज, लखनऊ ने १, २ तथा ३ जुलाई '५८ को आर्य समाज मन्दिर गंगाप्रसाद रोड, लखनऊ में गायत्री महायज्ञ किया।

संयुक्त परिवार और आर्य समाज

पं. गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम. ए.

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के इस समस्यापूर्ण व विचारपूर्ण लेख को ध्यान से पढ़िए और इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करके १०-१० पंक्तियों मे अपनी सम्मति (पक्ष या विपक्ष मे) आर्यमित्र मे प्रकाशनार्थ मुझे भेजिए।

—सम्पादक

२२ जून का आर्यमित्र खोलते ही श्री पं० गगाप्रसाद जी रिटायर्ड जज टेहरी तथा भूतपूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा दिल्ली के एक लेख पर मेरी दृष्टि पड़ी। उसका शीर्षक है आर्य समाज और नया हिन्दू विधान। इस लेख मे श्री प० नरदेव शास्त्री जी के किसी लेख पर टीका टिप्पणी की गई है। मेरा दृष्टिकोण भी वही है जो श्री जज साहेब का है, 'तलाक' के पक्ष मे बहुत कुछ लिख चुका हूं और 'जीवन चक्र' मे तो मैंने विस्तारपूर्वक इस समस्या के हर पक्ष पर युक्ति और प्रमाण सहित लिखा है। अत. यहां मै भी इसको दुहराने की आवश्यकता नहीं समझता। अब तक 'तलाक' के विरुद्ध कोई ऐसी नई युक्ति नहीं मिली जिसका मैंने उस ग्रन्थ में उत्तर न दिया हो। न केवल ससार के स्वतंत्र विचारक अपितु आर्य समाज का भावी सन्तान हमारे इस युग के विद्वानो और समाओ के दुर्भाग्यपूर्ण दृष्टिकोण पर खेद प्रकट करेगी कि आर्य समाज जैसी उदार संस्था ने ऐसे उपयोगी और आवश्यक विधान । विरोध करके पौराणिक प्रतिक्रिया वादियो का साथ क्यो दिया। मुझे तलाक शब्द से न प्रेम है न चिढ़। जिस प्रकार 'विवाह' शब्द के अनेक जातियो और अनेक युगो म भिन्न भिन्न अर्थ रहे हे, उसी प्रकार तलाक के भी मुझे कुरान के तलाक और ईसाइयो के तलाक से मतलब नहीं। मुझे तो नये हिन्दू विधान को देखना है। वैदिक साहित्य मे तो वेदो से लेकर नवीनतम पुराण मालाओ तक सभी ग्रन्थ आ जाते हैं। उनको प्रमाण मानकर हम आर्य समाज के सिद्धान्तो का निर्णय नहीं कर सकते। हिन्दू नये विधान के विरुद्ध आवाज पौराणिक दल से उठी थी जो सब प्रकार के सुधार के विरोधी थे। हमारा पंडित वर्ग भी उनकी हां मे हां मिलाने लगा। अस्तु—

मैं वर्तमान सयुक्त,परिवार पद्धति को सदा ही अवैदिक और मनुष्य हित का घातक समझता रहा हूं। लगभग ३० वर्ष से अधिक हुये मैंने 'चांद' मे एक विस्तृत लेख दिया था जिसका सारांश यह था—

(१) सयुक्त परिवार प्रथा वैदिक धर्म के विरुद्ध है।

(२) कुदरत के कानून के विरुद्ध है

(३) जीवन शास्त्र के विरुद्ध है।

(४) हिन्दुओ की अवनति का घोरतम कारण रही है।

(५) जिन देशो ने इसे त्यागा उन्होने इस त्याग का बहुत अच्छा फल उठाया।

(६) वैदिक विवाह पद्धति संयुक्त परिवार की विरोधिनी है।

मैंने जब से होश सभाला है और सयुक्त परिवारो के वास्तविक रूप का अध्ययन किया है तब से मेरी यही धारणा रही है कि हम को अपने बच्चो में सयुक्त परिवार की बुराइयां पूर्ण रूप से बता देनी चाहिये जिससे उनको पता चल जाय कि—

तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणा. क्षार जल का पुरुषा पिबन्ति।

मैंने अपने परिवार मे आरम्भ से इस बात पर जोर दिया और मुझे सतोष है कि इसका फल बहुत अच्छा निकला। यदि परिवार मे सुख, शांति द्वेष शून्यता, ईर्षा का अभाव और उत्साह तथा परिश्रम शील जीवन चाहते हो तो सयुक्त परिवार की बुराई को मिटा दो। सयुक्त परिवार के जो दो चार गुण ऊपरी दृष्टि से दिखाई देते हैं वे सब भ्रान्तिपूर्ण और अतथ्य हैं। उनके स्थान मे बुराइयां बहुत हैं। मैं यहां सूत्र रूप से थोड़ा सा लिखता हूं। यदि पाठक चाहेंगे तो प्रत्येक अंग पर विचार किया जा सकेगा।

(१) विवाह होने पर मनुष्य गृहपति होता है। 'दम्पती' शब्द का अर्थ ही यह है पत्नी च पतिश्च 'पती' दमस्य गृहस्य पती दम्पती। गृह तभी होगा जब अलग हो।

(२) प्राचीन प्रथा यह थी कि प्रत्येक गृहपति और गृहपत्नी अपना स्वतंत्र अग्न्याधान करते थे, और पूर्णरूप से उसके उत्तरदाता होते थे।

(३) आजकल की बिगड़ी रस्म भी यह है कि विवाह पर वरवधू को वह सब सामान दिया जाता है जिससे वह नया घर बना सके।

(४) एक बाग का माली भली भांति जानता है और जब अमरूद की पौध लगाता है तो बीजो को एक क्यारी मे बोता है, परन्तु जब पौध बड़ी हो जाती है तो उसको दूर दूर लगा देता है। यदि बीज दूर दूर बोये जाते तो न उगते क्योंकि छोटे बीजो को सरक्षण की आवश्यकता थी। परन्तु यदि पौध उसी क्यारी मे छोड़ दी जाती तो खाद्य न मिलने से उनकी उपज कमजोर हो जाती। इसी प्रकार जब बच्चे मा बाप के साथ रहते है तो उनकी सवृद्धि होती है। परन्तु यदि बड़े होकर भी एक ही परिवार मे चिपटे रहते हैं तो वह स्वातन्त्र्य से वचित होकर ईर्षालु, द्वेषी, आलसी और असतुष्ट हो जाते है। वह बाहर जाकर हाथ पैर फैला नहीं सकते और घर मे ही लड़ते भिड़ते नष्ट हो जाते है। एक दूसरे मे चिपटे रहना प्रेम का वर्धक नहीं घातक है। भारत के लोग एक ही घर मे लड़ते भिड़ते रहे, अत. उनकी उन्नति रुक गई, इंग्लैण्ड ने पिछले चार सौ वर्षों मे सयुक्त परिवार की बेड़ियां तोड़ डालीं। इसलिये वह इतने फैल गए कि आस्ट्रेलियां, अफ्रीका, अमेरिका तथा अन्य टापू उनसे भर गए। यह सतोष की बात है कि अब यह बेड़ियाँ कम होती जाती है। इनसे उन्नति ही होगी अवनति नहीं। मेरे विचार से श्री शास्त्री जी को इस विषय मे चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं। एक बात तो सदैव याद रखनी चाहिए कि प्रत्येक वस्तु के कुछ गुण होते है कुछ अवगुण और कुछ ऐसे भी अवगुण होते है जो वस्तुत. किसी और निमित्त से पैदा होते है और समालोचको को भ्रम हो जाता है। प्रत्येक चमकीली चीज सोना नही है और न प्रत्येक न चमकने वाली चीज बुरी ही है।

परिवार के लोगो मे उचित प्रेम रखने के लिए तीन बाते आवश्यक है (१) न अत्यन्त दूरी (२) न अत्यन्त सामीप्य (३) भिन्न भिन्न अङ्गो की स्वतन्त्रता पूर्ण प्रतिष्ठा। एक परिवार के स्वतन्त्र अङ्ग यदि एक दूसरे के साथ कुछ भलाई करते है तो धन्यवाद के पात्र है। न करें तो शिकायत नहीं। सयुक्त परिवार के लोग यदि सहानुभूति नहीं करते तो शिकायत के पात्र होते है। यदि करते हैं तो धन्यवाद के पात्र नहीं होते। इससे सयुक्त परिवार के लोगो म आपाधापी,परस्पर उलहने, आलस्य, प्रमाद और ईर्ष्या द्वेष बढ़ जाते हैं।

मै चाहता हू कि हर एक युवा (बालिग लड़का) और युवती (बालिग लड़की) न केवल अपने पैरो पर खड़े होने की योग्यता प्राप्त करे अपितु अपनी कमाई का कुछ भाग जीवित पितरो को ऋण रूप मे दे सके। यह बात सयुक्त परिवार मे कभी सभव नही हो सकती। प्रत्यक्षं किं प्रमाणम् गहरे जाकर देखिये।

कुछ उद्योग ऐसे है जिनमे सयुक्त परिवार की आवश्यकता समझी जाती है। परन्तु यदि सयुक्त परिवार के स्थान मे सहयोग प्रथा जारी की जाय तो लाभ अधिक हो और हानि कम।

उत्तर प्रदेशीय आर्यसमाजों मे नम्र निवेदन

इस प्रान्त की आर्य जनता को यह जान कर अति हर्ष होगा कि मेरी प्रार्थना पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उप प्रधान व कर्मठ आर्य नेता श्री काली चरण आर्य ने अपना अमूल्य समय सभा के लिये देना स्वीकार कर लिया है। अत. वे जून मास के अन्तिम सप्ताह से समस्त प्रान्त का दौरा कर रहे हैं। उनके साथ सभा के उत्साही मन्त्री श्री फूलनसिंह जी आर्य व श्री प्रोफेसर रतनसिंह जी एम०ए० आदि भी होगे। अत. मै समस्त आर्यसमाजो के अधिकारियो से सविनय प्रार्थना करता हू कि वे इन महानुभावो के पहुँचने पर सभा की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनाने के लिए उन्हे अधिकाधिक धन भेंट कर यश और धन्यवाद के भागी बने। पूर्ण विश्वास है कि मेरी इस विनम्र विनती पर आर्यसमाज समुदाय आशा से अधिक उदार ध्यान देकर हमे अनुगृहीत करेगा।

निवेदक -

—हरिशङ्कर शर्मा

प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

चरित्र-निर्माण के लिए आदर्श शिक्षा प्रणाली

"गुरुकुल"

[श्री बाबू पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट, मुख्य उप प्रधान, आ० प्र० सभा उ० प्र०]

आज देश की सबसे प्रमुख समस्या चरित्र-पतन की समस्या है। आज की शिक्षा-प्रणाली भले ही बौद्धिक दृष्टि से समर्थ युवकों का सृजन करने में सफल रही हो परन्तु बौद्धिक विकास के साथ साथ चारित्रिक विकास में वह सर्वथा असफल रही है और यही कारण है कि देश दिनों दिन नैतिक दृष्टि से पतित होता चला जा रहा है। विद्वान् लेखक इस समस्या का समाधान गुरुकुल शिक्षा प्रणाली बतलाते हैं। हम प्रत्येक आर्य और भारतवासी से अपील करेंगे कि देश की वर्तमान समस्या के समाधान के लिए गुरुकुल आन्दोलन में सक्रिय सहायक बनें।

—सम्पादक

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि व्यक्ति निर्माण और समाज निर्माण माता के गर्भ से आरम्भ होकर ब्रह्मचर्य आश्रम की अवधि समाप्त होने तक होता है। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में शिक्षा की परू रेखा निर्धारित की है।

बालक और बालिकायें सुभाव से चन्चल होते है। उनके अन्दर प्रबल भावनायें होती है। उनका हृदय कोमल और मस्तिष्क अपरिपक्व होता है। उन पर अति शीघ्र हर घटना का प्रभाव पड़ता है। शिक्षा का उद्देश्य बालक और बालिकाओ के जीवन के लिए योग्य बनाना है। ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति के पश्चात् गृहस्थ आश्रम के प्रवेश का समय है। और गृहस्थ आश्रम में व्यवसाय, विवाह और व्यवहार की मर्यादा सुरक्षित रखनो है। इन तीनों क्षेत्रो के लिए प्रवेश के पहले प्रत्येक व्यक्ति को एक सच्चे सैनिक की भांति तैयार करना है। शिक्षा का स्थान एकान्त में हो और सांसारिक झंझटो से परे हो। वातावरण शांत और शुद्ध हो। स्वास्थ्य की दृष्टि से जल और वायु उपयुक्त हो। प्रलोभन और भ्रम उत्पादन के साधन न हों, ब्रह्मचारी का अथवा विद्यार्थी का पूरा समय गुरु के समीप और उसकी शरण में बीते और गुरु की पूर्ण देख रेख में उसका पालन और शिक्षण हो।

सम्प्रति बालक और बालिकायें विद्यालयों मे चार पांच घटे लगाते हैं उनका शेष समय अपने परिवार में व्यतीत होता है। और इसके कारण विद्यालयो मे अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ उपस्थित होती है। जिन विद्यालयों के साथ छात्रावास भी है उनमे भी गुरु और अध्यापकों की देख रेख नाम मात्र के लिए ही है। विद्यार्थी स्वयं अपन आप प्रबन्ध करते हैं। गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली की सबसे उत्तम विशेषता यह है कि इस प्रणाली के अनुसार शिक्षा के स्थान पृथक स्थानों म होगे और होते हैं। दूसरी विशेषता यह है कि गुरुकुल प्रणाली धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण को प्रमुख स्थान देती है। आजकल की प्रचलित शिक्षा प्रणाली सेकूलर गवर्नमेंट की भांति सेकूलर एजूकेशन है। शिक्षा का उद्देश्य धर्म पालन करने के लिए योग्य बनाना है। धर्म का उद्देश्य ज्ञान उत्पन्न करना और धार्मिक सिद्धांत जानकर, मानकर उनके अनुसार जीवन निर्वाह करना सिखाना है। शिक्षा संस्थाओं और विद्यालयों मे धर्म के प्रति उदासीनता बहुत अहितकर है। केवल मानसिक ज्ञान लाभदायक नहीं हो सकता। यदि केवल ज्ञान बढ़ेगा और कर्म में समन्वय की मर्यादा न होगी तो शिक्षा का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही वह प्रणाली है जहाँ आरम्भ से अन्त तक धार्मिक वातावरण मे ही सारा समय व्यतीत होता है उसका आरम्भ यज्ञोपवीत से और समाप्त समावर्तन से होती है।

इस प्रणाली की दैनिक दिनचर्या में सन्ध्या और अग्निहोत्र का पूरा प्रबन्ध है। सन्ध्या से ईश्वर की सत्ता मे आस्था और यज्ञ तप और त्याग की भावना पैदा होती है। पाठ्य विषयों मे भी धार्मिक ग्रन्थो का पूरा स्थान है। वेद और शास्त्र पढ़ाये जाने का प्रबन्ध है और उसके साथ तुलनात्मक दृष्टि से आधुनिक साहित्य का ज्ञान भी कराया जाता है। गुरुकुलों के अतिरिक्त और कोई विद्यालय अथवा शिक्षा के स्थान ऐसे नहीं है जहाँ प्राचीन साहित्य और धार्मिक ग्रन्थों के पढ़ाने पर सबसे अधिक बल दिया जाता हो और उनका प्रमुख स्थान हो। आजकल के विद्यालयों में शारीरिक उन्नति के लिए व्यायाम और खेल कूद की ओर ध्यान दिया जाने लगा है परन्तु असली शारीरिक उन्नति खेल कूद और व्यायाम से ही नहीं होती। असली शारीरिक उन्नति ब्रह्मचर्य के नियम के पालन करने से होती है। केवल विवाह न करना ही पर्याप्त नहीं, परन्तु ऐसा वातावरण होना चाहिए जिससे ब्रह्मचर्य पालन में हर प्रकार की सहायता मिले। गुरुकुल-प्रणाली की एक विशेषता यह भी है कि प्रत्येक ब्रह्मचारी का रहन-सहन एक समान रहता है उनमें गरीब और अमीर का भेद भाव, छूत और अछूत का भेद-भाव, बड़े और छोटे का भेद भाव नहीं रहता। इस समानता के वातावरण में पले हुए ब्रह्मचारी ही भारत के समानतावादी भावी समाज के निर्माण मे सफल हो सकते हैं। आज विद्यालयों मे विद्यार्थियों का रहन सहन इस प्रकार का है कि उनमें परस्पर की ईर्ष्या और कलह, भेद भाव आरम्भ से ही उत्पन्न हो जाता है। गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली मे विशेष बल इस बात पर दिया जाता है कि ब्रह्मचारी गुरु के अनुशासन में रहे। वहाँ पढ़ाने वाले आचार्य और पढ़ने वाले ब्रह्मचारी होते है। दोनो का सम्बन्ध चरित्र से है केवल शाब्दिक और मानसिक ज्ञान से नहीं। आजकल की तरह खाली प्रोफेसर और स्टूडेन्ट नहीं आते। बालक और बालिकाओं के गुरुकुल एक दूसरे से बहुत दूर होते हैं। बालक और बालिकाओ का शिक्षण और रहन सहन पृथक होना आवश्यक है। आजकल ऋषि दयानन्द के प्रतिपादित शिक्षा के भिन्न भिन्न अंगो मे से इस एक अंग की अवहेलना की जा रही है और इसका परिणाम देश और जाति के लिये बड़ा भयंकर हो रहा है। ऋषि की शिक्षा प्रणाली के अनुसार शिक्षा निःशुल्क होनी चाहिये और अनिवार्य, मातृ भाषा उसका माध्यम होना चाहिये। ब्रह्मचर्य पालन उसका आवश्यक और धार्मिक शिक्षा उसका आधार। शिक्षा को सर्वांग पूर्ण होना चाहिए। इनमें प्रायः सभी को राष्ट्र ने सिद्धान्ततः स्वीकार कर लिया है शिक्षा का माध्यम मातृ-भाषा को स्वीकार कर लिया गया है। अब ऊची से ऊची परीक्षायें हिन्दी में दी जा सकती है। धार्मिक शिक्षा अभी पूर्ण रूप से प्रचलित नहीं हुई परंतु धार्मिक वातावरण उत्पन्न करने के लिए आर्यसमाज के आन्दोलन के परिणाम स्वरूप प्रत्येक विद्यालयों में शिक्षण आरम्भ होने से पूर्व ईश्वर प्रार्थना की प्रथा प्रचलित हो गई है। यदि यह प्रार्थना की प्रथा केवल रूढ़ि का रूप न रहकर वास्तविक अंग बन जाये तो भी धार्मिक वातावरण उत्पन्न होने में बहुत सहायता मिल सकती है। महर्षि दयानन्द के अनुयाइयों ने जिस समय गुरुकुलों की स्थापना की उस समय राष्ट्रीय-शिक्षा के और कोई केन्द्र स्थान नहीं थे। गुरुकुलों के संस्थापक और संचालकों ने तत्कालीन राजसत्ता से मान्यता प्राप्त करने और सहायता लेने की चेष्टा नहीं की। और इसका परिणाम यह हुआ कि उनको सारे संसार मे मान्यता प्राप्त हुई और जनता ने तन मन धन से सहयोग दिया और सहायता दी। आज देश में अपनी सरकार है और राष्ट्रीय सरकार है। गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली को राज सत्ता से भी मान्यता प्राप्त हो गई अब तो सोना और सुगन्ध वाली बात चरितार्थ हो गई है। शिक्षा जगत् मे गुरुकुलों का अपना मौलिक स्थान है। वह अब परीक्षण की परिस्थिति मे नहीं है। उनकी उपयोगिता सिद्ध हो गई है। स्वतन्त्र भारत के नागरिकों को व भावी नागरिकों को यदि चरित्रवान् धार्मिक आस्तिक और श्रेष्ठ बनाना है तो उनको गुरुकुल की प्रणाली अपनानी होगी। वर्तमान शिक्षा प्रणाली जिसकी प्राप्ति से बालक किसी योग्य नहीं बनता उसमें परिवर्तन करना अनिवार्य है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली मे दिन दुनिया से उदासीन रखकर विद्यार्थी का दुनिया का बनाना चाहते है। परिणाम यह होता है कि न वह दिन का रहता है न दुनिया का दिन और दुनिया का घनिष्ठ सम्बन्ध है। दुनिया काम और क्रोध का क्षेत्र है, लोभ और मोह का अखाड़ा है। और अहंकार की भावना के लिये उपजाऊ भूमि है। दुनिया में काम, क्रोध, लोभ मोह से नित्य प्रति एक संग्राम छिड़ा रहता है। इस संग्राम में सैनिक को विजयी बनाने के लिये शिक्षा, दीक्षा और विशेष प्रकार के अभ्यास की आवश्यकता है।

'गुरुकुल चरित्र निर्माण की छावनियां हैं जहाँ से सैनिक तैयार होकर संसार के युद्ध में विजयी होने के लिये निकलते हैं। यदि भारत की जय या जय हिन्द का नारा चरितार्थ होना है तो गुरुकुलों को प्रोत्साहन देना चाहिये जहां जय के साधन जुटाये जाते हैं और जहाँ से जय का नारा सच्चे अर्थों में उठता है। गुरुकुल की विजय से और सफलता से राष्ट्र की सफलता है और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की जय के साथ हम ऋषि दयानन्द की जय का नारा लगाने के अधिकारी हैं।'

★

सामयिक समस्याएँ

आज देश में शील-चरित्र की समस्या प्रधान समस्या है। हमारे प्रधान मन्त्री अन्तर्राष्ट्रीय विश्वबन्धुत्व के लिए पंचशील का उद्घोष करते पाये जाते हैं। जहां तक राष्ट्रों के आन्तरिक तथा व्यक्तिगत चरित्र (शील) का प्रश्न है उसमें भी भारत सदा अग्रणी रहा है। 'एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः स्वं स्वं चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः' इस गौरव की पुनर्स्थापना का दायित्व हम भारतीयों पर ही है अतः शील के वास्तविक रहस्य एवं उसके व्यवहार के विषय में चर्चा होना आवश्यक है। —सम्पादक

शील समस्या

[श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ]

यदन्येषां हितं न स्यात्,
कर्मणा, मनसा, गिरा।
अपत्रपेत वा येन,
न तत् कुर्यात् कथञ्चन।

१—जिस कर्म से दूसरे का हित न हो, दूसरे को हानि पहुंचती हो ऐसे कर्मों को मन, वचन कर्म से त्याग देने चाहिएं—यह है शील का मुख्य तत्व।

२—जिन कर्मों को करने में लज्जाभय होता हो, शङ्का होती हो ऐसे पाप कर्मों से बचे रहना यह भी बड़ा शील है।

३—जो बात अपने को अच्छी नहीं लगती, जिस प्रकार का व्यवहार हम अपने लिए नहीं चाहते ऐसी बात अथवा ऐसा व्यवहार अन्यों से भी नहीं करना चाहिए—(आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्) यह शील व्यक्तिगत रूप में, समुदाय रूप में, देश राष्ट्र रूप में बना रहे तो फिर संसार मे कोई दुखी न रहेगा-वर्तमान पंचशील इसी तत्व की व्याख्या है। वर्तमान पंचशील कोई नया तत्व नहीं है, यह प्राचीन पुरातन तत्व है और इसी शील के आधार पर स्थित शिक्षा-दीक्षा द्वारा हमारे पूर्वज ससार भर को चरित्र शिक्षा देते रहते थे।

शील की विशेष व्याख्या शांति-पर्व "आनृशंस्य धर्म" नामक अध्याय मे की गई है।

१—रहो और रहने दो।

२—जिओ और जीने दो।

३—कोई किसी पर आक्रमण न करे।

४—कोई झगड़ा उठे तब परस्पर समझौते से काम लो।

५—परस्पर प्रेम पूर्वक व्यवहार रहे—इत्यादि

इसमें नई बात क्या है? इस तत्व पर हमारे पूर्वज अनन्त काल से चलते आये हैं, हमारे पूर्वजों ने कभी किसी का राज्य नहीं छीना, कभी युद्ध हो भी गया तो विजय हो जाने पर पराजित शत्रु को राज्य लौटा दिया जाता था।

आजकल धन और शक्ति के लिए सब कलह है-केवल त्रुटि यह है कि धन और शक्ति का धर्म से सम्बन्ध छूट गया शील नहीं रहा—

धर्म अर्थ काम मोक्ष, मनुष्य जन्म का उद्देश्य यही धर्म चतुष्टय है सबसे पूर्व धर्म-(आधार शिला सब ऐहिक्त था पारमार्थिक व्यवहारों की) फिर धर्मानुसार ही अर्थ अर्थात् धनादि की प्राप्ति, फिर धर्मानुसार ही काम अर्थात् नाना इच्छाओं की पूर्ति—

फिर हो सके, तीव्र संस्कार हों तो एक ही जन्म अथवा अनेक जन्मों के पश्चात् ब्रह्म प्राप्ति अर्थात् मोक्ष—

भगवान् कृष्ण ने भी कहा है—

धर्माविरुद्धो भूतेषु,
कामोऽस्मि भरतर्षभ।

हे अर्जुन मैं प्राणियों के काम इच्छा तथा सकल्प हूं पर वे काम धर्म से विरोधी नहीं होने चाहिए

(प्र०) शील कैसे बनता है?

(उ०) धर्माचरण के संस्कारों से—

(प्र०) जहां धर्म रहता है वहाँ शी . कि जहाँ शील रहता है वहाँ धर्म रहता है?

(उ०) शील धर्म से पृथक् नहीं। जैसे पानी की तरगे जलाशय के जल से पृथक् नहीं। पानी का बुलबुला पानी से पृथक् नहीं। जैसे अग्नि के स्फुलिंग (चिनगारियाँ) अग्नि से पृथक नहीं, पृथक दीखती अवश्य हैं। धर्म के विशेष विशेष व्यवहारों का विशेष रूपेण आचरण ही शील है—इस शील को जितने विभागों में बांटो उतने ही शील है। (खेद है कि धर्म का संपर्क छूट जाने से राजनैतिक शील भी नये बन गये हैं। धर्मशून्य विज्ञान और धर्मशून्य कोरा भौतिकवाद इन नये शीलों की पीठ पर हैं और संसार को नचा रहे हैं—भारतवर्ष का सब कुछ जाय तो चला जाय पर शील न जाय।

गुरुकुल वृन्दावन में नए ब्रह्मचारियों का प्रवेश

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन बालकों की शिक्षा के लिए एक उत्तम शिक्षा संस्था है जो स्वल्पतम निर्वाह व्यय में उच्चतम निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करती है। शिक्षा के साथ-साथ वह ब्रह्मचारियों के चरित्र निर्माण पर विशेष बल देती है। गुरुकुल मे शिक्षा प्राप्त करने वाले बालकों को आश्रम में ही रहना होता है इसलिए उनको अपने गुरुजनों के साक्षात् सम्पर्क का अधिकाधिक लाभ उठाने का अवसर मिलता है। गुरुकुल की अधिकारी तथा शिरोमणि परीक्षाएं क्रमशः हाई स्कूल तथा बी० ए० के बराबर मान्य हैं।

ग्रीष्मावकाश के बाद १ जुलाई से गुरुकुल के नवीन शिक्षा सत्र का कार्य प्रारम्भ हो जायगा। इसी अवसर पर नवीन बालकों का प्रवेश होगा। आठ से दस वर्ष तक की आयु के बालक प्रविष्ट हो सकते हैं भोजन तथा व्यवस्था व्यय मिलाकर २५)रु० मासिक व्यय लिया जाता है। जो महानुभाव अपने बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट कराना चाहे वह पत्र द्वारा सूचना देकर प्रवेश पत्र मंगा ले और स्थान सुरक्षित करा ले।

हरिशङ्कर शर्मा	नरदेव स्नातक एम. पी.
प्रधान	[illegible]
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश	गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन

साहित्य-सौरभ

भाषा विज्ञान के प्रसिद्ध विद्वान् डा० विश्वनाथ प्रसाद ने इस लेख में बताया है कि संस्कृत, द्रविड़ और आस्ट्रिक भाषा परिवारों की हमारी भाषाओं में उच्चारण की कितनी समानता है। —सम्पादक

भारतीय भाषाओं में उच्चारण साम्य

(डा० विश्वनाथ प्रसाद, दिल्ली)

इस विशाल भारत भूमि में उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम की ओर यात्रा करते हुए आपको अनेक भाषाएं और बोलियां सुनने को मिलेगी। किन्तु आपको यह निर्णय करना कठिन होगा कि कौन भाषा या बोली कहाँ शुरु हुई और ठीक कहां जाकर समाप्त हुई। भाषाओं का भी एक दूसरे पर इतना प्रभाव है कि उनके बीच में विभाजन रेखा खींचना प्राय: असम्भव है। भाषाओं के इस मेल जोल को देखकर बरबस यही कहना पड़ता है कि हमारे देश की मूल संस्कृति एक है। भाषाओं का यह परस्पर लेन देन आज का नहीं उतना ही प्राचीन है, जितना ऋग्वेद। वर्ण और जातियाँ, विवाह सम्बन्धों, देश भर मे फैले हुए असख्य तीर्थ स्थानो और देव लयों, निरन्तर भ्रमण शील साधु संतों और उनके उपदेशों, विभिन्न मत मतांतरो और राजनीतिक हलचलों के कारण हमारे देश मे कोई भी धारा किसी सीमा से बंधी न रह सकी, वरन् हिमालय से लेकर हिंद महासागर तक देश मे चारों ओर फैली। यही कारण है कि हमें देश की विविध भाषाओं और बोलियों मे अनेक बातों में अद्भुत साम्य देखने को मिलता है।

असाधारण परिवर्तनशील वस्तु

वाणी का सबसे अधिक परिवर्तन शील अङ्ग है उच्चारण। हर व्यक्ति और क्षेत्र का उच्चारण अलग अलग होता है।

भारतीय भाषाओं में एक और बड़ी समानता यह है कि वेदों की भाषा में इन हजारो सालो में जो शनैः शनैः परिवर्तन आये, वे भी सब भाषाओं और बोलियो मे परिलक्षित होते है और जिस उच्चारण विशेषता वाला जो समुदाय जहां जहां फैलता गया वहां वहां ये विशेषताएं भी उनके साथ गयीं। फिर भी प्रवृत्ति संस्कृत के समान और शुद्ध उच्चारण की ही रही। हर क्षेत्र, प्रदेश, जाति, वर्ग, श्रेणी का यही प्रयत्न रहा कि उसका उच्चारण यथा सम्भव शुद्ध या स्टैंडर्ड रहे। हर भारतीय भाषा की यही, प्रवृति रही—तामिल मे भी। इसी प्रवृत्ति के कारण उच्चारण में काफी एक रूपता रही है।

ठीक उच्चारण पर आग्रह

ईसा से सदियों पहले हमारे देश में वैदिक मन्त्रों के शुद्ध पाठ या उच्चारण पर बहुत जोर दिया गया, अन्यथा अर्थ का अनर्थ होने का डर था। 'इन्द्र शत्रु' के गलत उच्चारण के कारण असुरों को इन्द्र को मारने वाले के बजाय इन्द्र से मारा जाने वाला योद्धा मिल गया। शिक्षाओं और प्रतिशाख्यों का एक मात्र उद्देश्य उच्चारण का अनुशासन करना था। उच्चारण के इस कठोर बंधन का परिणाम यह हुआ कि प्रादेशिक और क्षेत्रीय बोलियां भी एक दूसरे से अधिक दूर नहीं जा सकीं। यहां तक कि वैयाकरणों ने समस्त प्राकृतों के लिए एक 'महाराष्ट्री प्राकृत' को ही आदर्श बनाकर व्याकरण लिखा और उसी में 'शौरसेनी' आदि प्राकृतों के उच्चारण भेदों को अपवाद रूप में लिख कर 'शेषे महाराष्ट्रीवत्' कह दिया। 'मागधी' प्राकृत के बारे में कहा गया कि यह शौरसैनी प्राकृत से निकली है और उसी मे मिलती है। प्रसिद्ध प्राकृत वैयाकरण हेमचन्द्र ने स्पष्ट कह दिया कि प्राकृत का श्रेष्ठ रूप वही है, जो संस्कृत से अधिक से अधिक मिलता हो।

द्रविड़ और आस्ट्रिक प्रभाव

भारत में आर्य, द्रविड़ और आस्ट्रिक तीनों परिवारो की सब भाषाओं मे मूर्धन्य वर्ण 'ट' 'ड' आदि समान रूप से पाये जाते है। इसे द्रविड़ प्रभाव कह सकते है। इसी प्रकार शब्द को दोहरा कर बोलना आस्टिक के प्रभाव का सूचक है।

समान स्वर और व्यंजन

भारत की भाषाओं की ध्वनियां यानी स्वर और व्यजन भी बहुत कुछ एक से हैं। उर्दू को छोड़कर उनकी लिपि और वर्णमाला एक सी ही हैं। फारसी अरबी अन्य उर्दू वर्णमाला में भी बहुत सी भारतीय ध्वनियां रखली गयी है। किसी भाषा की किसी ध्वनि विशेष को दिखाने वाले कुछ विशेष वर्णों को छोड़कर सबकी वर्णमाला और वर्णक्रम भी एकसा है। तामिल में महाप्राण वर्ण नहीं होते। फिर भी कहीं कम और कहीं अधिक जोर देकर काम चलाया जाता है। स्थान भेद के कारण उच्चारण अलग हो, पर मूल ध्वनि एक है। जैसे पंजाबी कहेगा 'कैदा है,' हिन्दी भाषी इसी को 'कहता है' और बगाली 'कौहिते छि' बोलेगा।

उच्चारण की क्रिया

कुछ उच्चारणों से ही दो भाषाओं की समानता दिखायी जा सकती है। अंगरेजी में शब्दों के पहले भाग पर जोर रहता है और आगे धीरे धीरे कम हो जाता है। भारतीय भाषाओं में उतार चढ़ाव अधिक नहीं होता। एकदम तेज और एकदम मन्द स्वर भारतीय भाषाओं में नहीं मिलते। भावावेश में स्वर ऊंचा नीचा होता है, इसके अतिरिक्त अंग्रेजी की तरह 'एक्सेंट' या स्वराघात नहीं होता।

पंजाबी के कुछ शब्दों को छोड़कर अन्य भाषाओं में स्वराघात के कारण शब्दों का अर्थ नहीं बदलता। किन्तु प्रश्न, सम्बोधन या आश्चर्य आदि प्रकट करने में 'काकु' यानी शब्दों पर जोर देने से काम लिया जाता है। हिन्दी, गुजराती, तेलगु आदि सभी भाषाओं मे 'काकु', से काम लिया जाता है, उदाहरण के लिए—

हिन्दी
साधारण स्वर—वह आया है—
अंत के शब्द पर जोर—वह आया है क्या?

गुजराती
साधारण स्वर—ते आव्यो छे—
अंत के शब्दों पर जोर-ते आव्यो छे के?

तेलगु—वच्चिनाडू—
वच्चिनाडा?

कन्नड़—बन्दानू—
बन्दाने?

तामिल—आवान् वन्दान—
आवान् वन्दोना?

ये वाक्य आम तौर से इसी ढंग से बोले जाते है और भारतीय भाषाओं के उच्चारण साम्य को दर्शाते है।

हमारी भाषाओं की यह समानता सदियो के आदान प्रदान, सम्पर्क और भारतीय जीवन की एक रूपता का परिणाम है। रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा जैसे सार्वदेशिक सचार साधनों और आवागमन के बढ़ने के साथ भाषाओं मे शब्दों और उच्चारण की समानता और बढ़ेगी। ★

सम्पादकीय सूचनाएं

१—लेखकों से निवेदन है कि वे विविध (सैद्धान्तिक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक, सामयिक, आर्थिक आदि) विषयो पर अपने लेख आर्यमित्र में प्रकाशनार्थ भेजें।

२—सम्पादकीय सुविधा के लिए कृपया ध्यान रखिए कि लेख यथासंभव संक्षिप्त हों जो दो कालमों में आ सकें, कागज के एक ही ओर चौथाई छोड़ कर स्याही से खुले अक्षरों में स्पष्ट लिखे हों,या यथासम्भव टाइप किए हुए हों।

३—बाल जगत्, महिला मण्डल, स्वास्थ्य सुधा, विज्ञान वार्ता, जीवन ज्योति, सुझाव और सम्मतियां, कहानी कुंज, साहित्य सौरभ, कविता कानन, अध्यात्मधारा सिद्धान्त विमर्श, सिंहावलोकन, ग्राम्य जीवन, सामयिक समस्याएं, सम्पादक के नाम पत्र, आपके प्रश्नो के उत्तर आदि स्तम्भों के लिए दो दो कालमो के लघु लेखों की आवश्यकता है।

४—स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन की सूचना एक सप्ताह के अन्दर ही दी जायगी और आठ नये पैसे के टिकट प्राप्त होने पर अस्वीकृत रचनाएं सात दिन के अन्दर लौटा दी जायेंगी।

५—हमारे पाठक समाजोन्नति सम्बन्धी प्रश्न भी पूछ सकते हैं। उनमें से उपयोगी प्रश्नों के उत्तर हम प्रति सप्ताह प्रकाशित किया करेंगे।

६—समय-समय पर किसी सामयिक प्रश्न पर हम अपने पाठकों की सम्मति भी प्रकाशित करेंगे।

७—आप अपनी कठिनाइयों को संक्षेप में लिखकर भेजें। हम उसे सम्पादकीय पत्र स्तम्भ द्वारा सम्बन्धित अधिकारियों तक पहुंचाने का यत्न करेंगे।

—सम्पादक मण्डल

सस्वर मन्त्रोच्चारण ही क्यों?

★ श्री पं० वीरसेन जी वेदश्रमी,
वेद सदन ७० महारानी रोड, इन्दौर नगर (म०प्र०)

इस लेख के लेखक गुरुकुल वृन्दावन के प्रतिष्ठित स्नातक एवं वेदों के विद्वान् हैं और वेदों की रक्षा के लिये व्यावहारिक एवं क्रियात्मक कार्य कर रहे हैं। देश में स्थान स्थान पर घूमकर आप वेदों के सस्वर पाठ का प्रदर्शन कर उसका महत्व प्रकट करते रहते हैं और आपने इस कार्य को अपने जीवन का आदर्श बना लिया है। इस लेख में आपने आर्य बन्धुओं का ध्यान वेदों के सस्वर सिद्धान्त की रक्षा और प्रसार की ओर आकृष्ट किया है। आशा है वेदों की रक्षा का दायित्व वहन करने वाले आर्य जन इस महत्वपूर्ण कार्य की गम्भीरता को अनुभव करेंगे। —स

यज्ञो मे मन्त्रोच्चारण सस्वर ही होना चाहिये तथा अशुद्ध मन्त्रोच्चारण नहीं करना चाहिये। यही मत प्राचीन काल से ऋषि मुनियों द्वारा समादृत है और महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने भी इसी पक्ष का मान्य करते हुए सबको यही पक्ष वाणिमात्र से अंगीकार करने के लिये ही नहीं अपितु व्यवहार रूप से भी अंगीकार करने के लिये लिखा है।

वेद समस्त सत्य विद्याओं की पुस्तक है। यदि उसमें कहीं किंचित् भी अशुद्धि वर्ण या स्वर की हो गई तो उसके कारण से विद्या एवं उसके विज्ञान मे भी दोष उत्पन्न हो जायगा और वह दोष अविद्याजन्य होने से अविद्या के प्रचार का हेतु बनेगा। मानव जाति मे अविद्या के प्रचार के हेतु आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द जी ने नहीं की है अपितु "अविद्या के नाश और विद्या की वृद्धि" के लिये ही की है। अतः आर्य जनों को वेद मन्त्रों की रक्षा बड़े परिश्रम एवं शुद्ध रूप से ही करनी होगी। इसको हृदयंगम करना होगा और वेदमन्त्रों को जैसे तैसे बोल देने की परिपाटी का त्याग कर शुद्ध रूप मे "जैसा जिस वेद का उच्चारण है" उसी परिपाटी के अनुसार उच्चारण करने का अभ्यास करना होगा।

वेदों के शुद्ध उच्चारण के अभ्यास का कार्य स्वयं नहीं होगा, जब तक कि इसके शिक्षण की व्यवस्था न होगी। संस्कृत के शब्दों के उच्चारण करने की सामर्थ्य मात्र से वेद मन्त्रों के यथार्थ उच्चारण की योग्यता हो जाती है ऐसा समझना भ्रान्तियुक्त है। तथा यह भी समझना कि २-४ मन्त्रों का सस्वर अभ्यास कर लेने मात्र से अन्य मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण का भी ज्ञान हो जायगा, यह विचार भी भ्रान्तियुक्त है। प्रत्येक मन्त्र का अभ्यास गुरु के सम्मुख, गुरुमुख से मन्त्र ग्रहण करने से ही होता है, यह अत्यन्त सुनिश्चित रूप से समझना चाहिये।

मन्त्रोच्चारण मे स्वरों का उच्चारण वाणी से और हस्तादि चालनपूर्वक स्वरो के स्थान का भी प्रदर्शन किया जाता है। "अनृचो ब्राह्मण स्तावद्या वत्स्वार न विन्दति"। जब तक मन्त्रों के स्वरो के हस्तादि प्रदर्शन पूर्वक स्थान का ज्ञान नहीं होता तब तक 'अनृच' अर्थात् ऋचा रहित ही उस का अभ्यास माना जायगा। इसका तात्पर्य यह है कि स्वर रहित मन्त्र को भी यथार्थ रूप मे मन्त्र संज्ञा नहीं। अतः मन्त्र मे स्वर की ही प्रधानता है। वह मन्त्र गत स्वर वाणी और हस्त दोनो प्रकार से प्रकट किया जाता है। दोनों का सामञ्जस्य होना ही चाहिये। "यथा वाणी तथा पाणा" जैसा कि इस वाक्य द्वारा प्रतिपादित किया गया है।

सिद्धान्त विमर्श

कुछ व्यक्ति यह समझते हैं कि हस्तादि चलाने मात्र के ज्ञान से स्वर पाठ का ज्ञान हो जाता है। ज्ञान हो जाना एक बात है और उसका क्रियात्मक रूप से अभ्यास होना पृथक बात है। हस्त चालनमात्र से ही स्वरोच्चारण की पूर्णता नहीं होती जब तक कि मुख से भी स्वरो का उच्चारण यथार्थ रूप से न हो। इसमें प्रधानता मुखोद्गत स्वर की ही है।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने ऋग्वेद का भाष्य करते हुए एक स्थल पर लिखा है कि-"विद्वद्भिर्वेदा प्रचाराय सर्वेभ्यो मनुष्येभ्यो नित्य सार्था सांगा. सरहस्या. सस्वर हस्त क्रिया वेदा उपदेष्टव्या।" इस स्थल पर महर्षि ने वेद विद्याओं के प्रचार के लिये जहाँ उनके अर्थ एवं अंगादिकों को आवश्यक बताया है वहाँ उसके स्वर और उन स्वरो के प्रदर्शनार्थ हस्त चालनादि क्रिया की भी प्रधानता स्वीकार की है। अर्थात् वेद की विद्याओं के प्रचार के लिये, उनके अर्थों के प्रकाश के लिये स्वर हस्त क्रिया भी अत्यन्त आवश्यक है। महर्षि ने अनेक स्थलों पर मन्त्रोच्चारण का ही पूर्ण रूप से प्रतिपादन किया है परन्तु इस स्थल पर तो स्वर उच्चारण हस्तादि सहित स्वर प्रदर्शन किया है भी ... स्पष्ट ... है।

इस सम्बन्ध मे महर्षि याज्ञवल्क्य एक स्थल पर लिखते हैं कि—

हस्तहीनं तु योऽधीते स्वरवर्ण विवर्जितम्। ऋग्यजु सामभिर्दग्धो वियोनिमधिगच्छति॥

इस शिक्षा वाक्य में स्वर वर्ण रहित तथा हस्त स्वरादि रहित वेदाभ्यास करने वाले को वेद से ही विनष्ट होने एवं जन्मान्तर मे भी निकृष्ट योनि प्राप्ति का फल लिखा है। यह तो अदृष्ट फल है। परन्तु इसके अतिरिक्त प्रत्यक्ष अनिष्ट फल के प्रदर्शनार्थ—'हस्तभ्रष्ट स्वर भ्रष्टा न वेद फल मश्नुते' य वाक्य भी महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहकर स्वरादि रहित मन्त्रोच्चारण की निष्फलता प्रकट की है।

उपर्युक्त दोष मन्त्रो को वर्णों की दृष्टि से और स्वर की दृष्टि मे अशुद्ध बोलने मे होते हैं और उनमे बचने का प्रयत्न करना चाहिए। परन्तु इसके अतिरिक्त यदि मन्त्रों की मात्रा में भी यत्किंचित दोष उत्पन्न हो जावे तो वह भी बड़ा भारी दोष है।

मात्र दोष का तात्पर्य यह है कि जितनी मात्रा (काल) जिस वर्ण या स्वर का उच्चारण करना चाहिए, या जितनी मात्रा जहाँ वर्णों के परस्पर उच्चारण का समय नियत है या जितना विराम अर्ध ऋचा या ऋचा के अन्त मे करना चाहिए उसकी जो व्यवस्था है उसको उसी व्यवस्थानुसार न करना मात्रा दोष मे गिना जाता है। ह्रस्व की एकमात्रा, दीर्घ की २ मात्रा, प्लुत की ३ मात्रा होती है। पदों के उच्चारण मे एक मात्रा काल, ऋचार्ध मे २ मात्रा काल, ऋगन्त मे ३ मात्रा काल नियत है। अपने मनमाने ढंग से वेद मे कहीं भी विराम कर देना यह भी दोषपूर्ण है। इस बारे मे भी मन्त्रोच्चारण कर्त्ताओं को विशेष सावधानी बर्तनी चाहिए, इसके लिए लिखा है कि—पठन्मात्रा स्वपाठात्तु पङ्क गौरिव सीदति। अर्थात् एक मात्रा के अपपाठ अर्थात् यथावत् उच्चारण न करने से जिस प्रकार कीचड़ मे फंसी गौ क्लेश को प्राप्त होती है और वह स्वयं उद्धार करने मे अपने को असमर्थ पाकर दुःखित होती है वही दशा वेद मन्त्रों के मात्रा दोष सहित उच्चारण कर्त्ता की होती है। इसलिए वेद मन्त्रों को वर्णों की दृष्टि से, स्वर की दृष्टि से और मात्रा की दृष्टि से भी शुद्ध उच्चारण करना चाहिए। इस प्रकार अभ्यास करने से वेदवाणी पवित्र ही बनी रहेगी बल्कि उसकी यथावत् रक्षा भी हो सकेगी। इससे अन्यथा करने वालों के लिए शास्त्रकारों ने वेद कण्टक की उपाधि लिखी है। और उनके लिए लिख दिया है, कि—'बिभेत्यल्प श्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यति।' इस दृष्टि से तो आज वेदों पर वेद भक्तों का ही प्रहार हो रहा है और 'कोवेदानुद्धरिष्यति'? प्रश्न बना रहता है। आज ऐसे अल्प श्रुतों से वेद भगवान भी घबराते हैं कि अब यह वेद कण्टक भक्त परम पवित्र मन्त्रो का नाना प्रकार से तोड़ मरोड़ कर, विकृत करते हुए, अशुद्ध रूप से उच्चारण करके मेरे ऊपर प्रहार करेगा। अतः वेदों का यह प्रहार बन्द करने के लिए शुद्ध मन्त्र पाठ की विधियों को अपनाना ही परम धर्म समझ कर, अग्रसर होना चाहिए नहीं तो वेद विकृत हो जावेंगे।

यह कार्य तभी होगा जब हम वेदज्ञ गुरुओं की शरण में जाकर श्रद्धा से बैठें और अध्ययन करें अवश्य सफलता की प्राप्ति होगी। विद्या की प्राप्ति के साधनों के बारे में महर्षि याज्ञवल्क्य लिखते हैं—

"गुरुशुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा। अथवा विद्यया विद्या, चतुर्थ नोपलभ्यते॥"

गुरु की सेवा से विद्या की प्राप्ति होती है और वही विद्या सफलता को भी प्राप्त होती है। यही श्रेष्ठ प्रकार है और प्राचीन परिपाटी भी यही था। जब गुरु शिष्य की सेवा से प्रसन्न होता तब वह उसे विद्या दान देता था। दूसरा प्रकार धन विशेष से विद्या प्राप्ति का है और तीसरा प्रकार अपनी विद्या दूसरे को देकर उससे उसकी विद्या प्राप्ति करना। तीनों उपायों में सर्वश्रेष्ठ प्रथम ही उपाय है। उसी से विद्या की यथार्थ रूप में प्राप्ति सम्भव है। परन्तु चौथा

[शेष पृष्ठ १२ पर]

संस्था-परिचय

कन्या गुरुकुल सासनी (हाथरस)

(श्री प० गंगाप्रसाद जी रि० चीफ जज, भू० पू० प्र० सार्वदेशिक सभा)

आर्यसमाज के गुरुकुल आंदोलन के फलस्वरूप लडकों और लडकियों की जो संस्थायें स्थायी रूप धारण कर सकीं कन्या गुरुकुल सासनी (हाथरस) उनमें से एक है। इस संस्था की प्रारम्भ कथा बडी विचित्र है।



माता लक्ष्मी देवी जी

(१) प०मुरलीधर जी हाथरस निवासी एक बडे दानी सज्जन थे। उन्होंने २ लाख रुपया किसी विशेष धार्मिक कार्य में लगाने का प्रस्ताव किया। संयोग से श्री स्वामी दर्शनानन्द जी उस समय हाथरस आर्यसमाज में ठहरे थे उनसे सलाह की। स्वामी जी ने कहा कि लडकों के लिए गुरुकुल कई स्थापित हो गये और होते जाते हैं पर कन्याओं का कोई गुरुकुल नहीं। सो एक कन्या गुरुकुल बनाओ प० मुरलीधर जी की समझ में यह बात बैठ गई। उन्होंने १ लाख रुपये से सौंग नामक एक गाव खरीदा और इस भूमि में जो हाथरस नगर से ५ मील की दूरी पर है, एक पक्की ऊंची और विस्तृत चहार दीवारी एक विशाल फाटक के साथ बनवाई। सन् १९१० में इस गुरुकुल की आधार शिला रक्खी गई। प०मुरलीधर और उनकी पत्नी स्वयं प्रबन्ध करते थे। दीवालों के भीतर कुछ कच्ची कोठरियाँ भी बन गई थी। आस पास की कुछ कन्या आकर भरती हुई। पर दुर्भाग्य से उस समय कोई अध्यापिका नहीं मिली। एक वृद्ध पंडित पढ़ाते थे। इसलिए गुरुकुल की उन्नति नहीं हुई। ४ या ५ वर्ष इस प्रकार चला। सन १९१६ में बिलकुल बन्द हो गया। प० मुरलीधर को बहुत दुख हुआ और कुछ समय पीछे उनका प्राणान्त भी हो गया।

(२) सन् १९१९ से १९३१ तक १० वर्ष तक गुरुकुल की विशाल पक्की चहारदीवारी खड़ी रही। पर गुरुकुल बिलकुल उजाड हो गया था। दीवालों के अन्दर भेडियों व सियारों की मांदे बन गईं। सांप बिच्छू फिरते थे। झाड झंखार सारी भूमि पर जम गये। पास के गाव वाले दिनमें अपने पशुओं को दीवालों के भीतर चुगने को छोड देते थे। सन् १९२१ में मैं गुरुकुल वृन्दावन का मुख्याधिष्ठाता रहा। आते जाते याद पडता है मैंने एक या दो बार इस उजड और अद्भुत दृश्य को देखा। जो विचार शील आदमी देखता था दुखी होता था। पर कोई उपाय न था।

सं० १९३१ में इस पुराने गुरुकुल के भाग्य जागे जिसका आगे वर्णन किया जाता है।

(३) श्री लक्ष्मी देवी जी का जन्म सन १८८७ ई० में बरेली जिले में हुआ। आपका बाल काल ही से आर्यसमाज से प्रेम था। आपका विवाह श्री जगदम्बाप्रसाद जी से हुआ। वे भी नये नये गुरुकुल की सेवा में लग गये थे। सन् १९४५ में उनका देहान्त हो गया। बरेली के सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री डा० श्याम स्वरूप जी की आप भावज थीं। उनकी प्रेरणा और सहायता से बरेली

> इस शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज की यह प्रसिद्ध संस्था किस प्रकार उन्नति कर रही है यह सबके लिए गर्व का विषय है। माता लक्ष्मी देवी जी वृद्धावस्था में भी जिस तत्परता से कार्य कर रही हैं, आर्य जगत् के लिए माता जी का प्रयत्न अनुकरणीय उदाहरण है।
>
> —सम्पादक

में एक आर्य कन्या पाठशाला स्थापित हुई जिसमें श्री लक्ष्मीदेवी जी मुख्याध्यापिका थीं। मैंने एक या दो बार उस पाठशाला का निरीक्षण किया। वह पाठशाला वहां अब तक चालू है।

(४) श्री लक्ष्मीदेवी जी को एक कन्या गुरुकुल स्थापित करने की लगन था। आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता श्री रोशनलाल बैरिस्टर आपके ताऊ होते थे। एक बार माता जी हरद्वार में जाकर उनसे मिलीं। स्व० महात्मा हंसराज जी भी वहां थे। श्री लक्ष्मी देवी जी ने कन्या गुरुकुल के लिए अपने विचार प्रकट किए। दोनों नेताओं ने हृदय से अनुमोदन किया और कहा कि हरद्वार भी उसके लिए अच्छा स्थान है और वहीं वे उसके लिए भूमि दिलाने का यत्न कर सकते है।

(५) श्री प० इन्द्र वर्मा जी ने श्री लक्ष्मी देवी जी को सलाह दी कि हाथरस के पास कन्या गुरुकुल के योग्य एक बना बनाया विशाल भवन खंडहर के रूप में मौजूद है। उसी का पुनरुद्धार कीजिए माता जी हाथरस गई और इक्के में बैठकर खंडहर देखने के लिए गईं। संयोग से इक्के वाला वही था जो पहले गुरुकुल में नौकर था। उसने सब हाल सुनाये। खंडहर के भीतर यज्ञशाला अब तक मौजूद थी। उस का शिखर भी था। कुछ तख्त व एक मेज टूटी हुई पडी थी, कुछ फटी पुस्तक कागज आदि मिले। माता जी को अस में आनन्द हुआ। वे हाथरस गईं वहाँ आर्यसमाज के प्रधान स्व० डा० कृष्णप्रसाद व मन्त्री आदि मिले और यह जानकर बहुत खुश हुए कि श्री लक्ष्मीदेवी जी यहां नया गुरुकुल खोलना चाहती है। स्व० प० मुरलीधर के पुत्र श्री मदनलाल बहुत प्रसन्न हुए। ७-३-४-३१ को उन्होंने एक वसीयत नामा गुरुकुल सम्बन्धी सारी सम्पत्ति का श्री लक्ष्मी देवी जी के नाम लिख दिया। वे उसका मालिक हो गईं।

(६) माता जी ने १७-३-३१ को गुरुकुल प्रारम्भ करने का निश्चय किया और उस तारीख को वे स्थान पर पहुंच गईं। उनके पास एकमात्र कन्या स्व० ठा० माधवसिंह जी की धेवती दयावती थी जो अब गुरुकुल की प्रतिष्ठित स्नातिका हैं और समाज और देश सेवा में संलग्न हैं। २५-७-३१ को स्व० श्री म० नारायण स्वामी जी व श्री रोशनलाल बैरिस्टर तथा प० जगदम्बाप्रसाद जी भी पहुंच गये, २८ जुलाई को जो व्यास पूर्णिमा का शुभ दिवस था श्री नारायणस्वामी जी के कर कमलों से इस नये गुरुकुल का उद्घाटन हुआ। पूज्य नारायण स्वामी जी पहले से श्री लक्ष्मीदेवी जी से परिचित थे। उनका आशीर्वाद इस नये गुरुकुल के साथ रहा। यह गुरुकुल के लिए और श्री माता जी के लिए भी सौभाग्य की बात है। स्व० डा० कृष्णप्रसाद प्रबन्ध कमेटी के प्रधान नियत हुए। मुख्याधिष्ठाता माता जी ही रहीं।

(७) अगले वर्ष सन् १९३२ जून में गुरुकुल में ४० ब्रह्मचारिणी हो गई थी। सन् १९३३ जून में ५८ हो गई गुरुकुल की उत्तरोत्तर उन्नति होती गई मेरे इस लेख का उद्देश्य अभिनन्दन ग्रन्थ की समालोचना करना था, गुरुकुल की उन्नति का वर्णन करना नहीं। उसके लिए पाठक गण अभि



लेखक

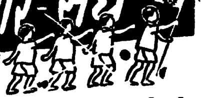
नन्दन ग्रन्थ ही को देखे जिसमें गुरुकुल की उन्नति के परिचायक अनेक लेखों के सिवाय सन्देश व श्रद्धांजलियाँ हैं जिनमें श्रीमान राष्ट्रपति जी से आरम्भ होकर भारतवर्ष के सब प्रान्तों के अध्यक्ष, व मन्त्रिगण तथा जनता के व आर्यसमाज के सब नेताओं के सन्देश हैं और जिनसे पता लगता है कि यह गुरुकुल अब तक किस प्रकार देश भर की सेवा करता रहा है।

(८) हाथरस, सासनी व अलीगढ के जिन व्यक्तियों ने इस गुरुकुल की उन्नति में विशेष सहायता दी उनके नाम अभिनन्दन ग्रन्थ में लिखे है माता लक्ष्मी देवी जी ने ५ वर्ष की आयु से श्री अक्षयकुमारी को धर्मपुत्री के समान पाला। समय पर उनका विवाह वैदिक वर्णव्यवस्था के अनुसार जात पाँत का विचार छोडकर श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री जी के साथ हुआ जो इस समय जाट वैदिक डिग्री कालेज बडौत, मेरठ के प्रिन्सिपल है, और तब आ० प्र० सभा उत्तरप्रदेश के उपप्रधान थे और आर्यसमाज के मान्य व सुप्रसिद्ध नेता हैं। इस विशेष सम्बन्ध के कारण उक्त श्रीमान् का तथा श्रीमती अक्षयकुमारी जी का इस कन्या गुरुकुल की सहायता व उन्नति में विशेष भाग रहा है।

माता लक्ष्मी देवी जी ने इस उजडे हुए खण्डहर रूपी गुरुकुल का

(शेष पृष्ठ १२ पर)

आर्य्य-कुमार-संघ



देश की आशा बच्चे

तुम्हीं से हुआ देश
आजाद अपना
तुम्हीं ने किया पूर्ण
भारत का सपना ॥
नयी राह अपनी
बनायी तुम्हीं ने,
नयी नाव जल में,
चलाई तुम्हीं ने,
नया प्रभात तुमको,
प्रगति पथ देगा !
नया गीत तुमको
नयी शक्ति देगा !
तुम्हीं पर टिकी हैं
निगाहें वतन की
तुम्हीं से खिली हैं
ये कलियां चमन की।
तुम्हीं में प्रगति की
नयी कल्पना है !
नये देश के प्रति,
नयी भावना है !
तुम्हीं बुद्ध गांधी
तुम्हीं राम-खोवा !
तुम्हीं ने रची थी
नयी ज्ञान गीता ॥
तुम्हीं को मिला है
प्रथम प्यार माँ का !
तुम्हीं पर टिका है,
भविष्य भारती का !

—जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव

सन्त वाणी

किसी ने सन्त से पूछा—
अमर जीवन यहाँ किसका ?
कहा उपकार करने से
सफल होता है जीवन जिसका।"

× × ×

किसी ने सन्त से पूछा—
सफल विद्या है किस किस की ?
कहा विद्या सफल उसकी,
कि नियत साफ हो जिसकी।

× × ×

किसी ने सन्त से पूछा,
अभागा हम किसे जाने ?
कहा पहिचान यह उसकी,
जो करता काम मनमाने।

× × ×

किसी ने सन्त से पूछा—
कि जीवन कौन है फीका ?
कहा फीका वही जीवन,
जो है आलस्य में बीता।"

क्या तुम जानते हो

जापान में एक ऐसा वृक्ष है जिससे सूर्यास्त के बाद धुआं निकलता है।

× × ×

दुनिया की सबसे छोटी पुस्तक चीनी शब्दकोष है।

× × ×

सबसे बड़ा और भारी पत्ता शुतुरमुर्ग होता है।

× × ×

समुद्र में एक ऐसी मछली होती है जिसकी दाढ़ी होती है।

× × ×

संग्रहकर्ता—रामभरोसे गोयल मेरठ

ज्ञानवर्द्धक पहेलियाँ

[१]

चाँदसा मुखड़ा सब तन जख्मी
बिन पावों वह चलता है।
सबका प्यारा राजदुलारा
साल साल में बढ़ता है॥

[२]

ऊपर चिलम नीचे चिलम
बीच कलेजा धड़के
अमीर खुसरो यों कहे
दो दो अंगुल सरके

[३]

रोटी एक लगाती चक्कर
उस पर रक्खा भाला
डायन गुन-गुन स्वर में गाती
रोटी का मुंह काला

[४]

एक नारि पश्चिम से आयी
बारह पुत्र संग में लायी
पुत्रों के संग पुत्री साठ
पुन सभी के नाती साठ

—कु० रमेश मिश्र

[५]

मध्य कटे तो भात बनूं मैं,
अन्त कटे तो भार।
आदि कटे तो रत हो जाऊं,
बूझो मेरे यार।

[६]

आदि कटे तो जल बन जाऊं
मध्य कटे तो काल
अन्त कटे तो काज बनूं मैं
बूझो मेरे बाल॥

—इन्द्र चन्द्र

उत्तर
(१) रुपया (२) कैंची (३) ग्रामोफोन का रेकार्ड (४) घड़ी (५) भारत (६) काजल।

वनिता विवेक



असहाय स्त्रियों का सहारा—घरेलू उद्योग

आज से ११ साल पहले पश्चिमी पाकिस्तान में अपना सब कुछ पति पुत्र घर द्वार खोकर हजारों स्त्रियों ने भारत में शरण गहीं। इन सब के मुंह पर यही प्रश्न था अब हम कहां जाय ? क्या करें ?

आज उनके पास घर है, काम है, अपने ऊपर विश्वास है और भविष्य की आशा भी है।

आश्रय और जीविका

पहली जरूरत थी आश्रय और रोजी देने की। उनके लिये शरण घर और काम सिखाने के केन्द्र खोले गये। पहली बात उनके दुखी दिलों को ढाढ़स देना और दूसरी बात उन्हें रोजी कमाने योग्य बनाना था। इसके लिये करीब ३८ आश्रम और अनाथालय पंजाब, बम्बई, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली और जम्मू कश्मीर राज्य में खोले गये हैं, जहां निराश्रित स्त्रियों बच्चों और अशक्तों की मदद दी जाती है। बाकी लोगों के लिये उद्योग केन्द्र हैं, जहां सिलाई, बुनाई आदि की शिक्षा दी जाती है।

स्वावलम्बन

सन् १९४७ में दिल्ली में स्त्रियों की देख रेख के लिए एक विभाग खोला गया। यह स्वावलम्बन पर जोर देता है। इसके लिये उन्हें ऐसे काम सिखाये जाते हैं जिनसे वे रोजी कमा सकें।

६ मास की शिक्षा

बहुत सी स्त्रियां कुछ भी नहीं जानती थीं। कुछ ऐसी भी थीं, जो पहले सुई में तागा डालना भी नहीं जानती थीं, परन्तु यहां से सीने पिरोने में दक्ष होकर निकलीं। ट्रेनिंग ६ महीने की होती है। सीखने की अवधि में भी वे फुटकर काम करके कुछ न कुछ कमा ही लेती हैं।

जब उनका काम चल निकलता है तब वे दुगुना या तिगुना तक कमा लेती हैं। जो पहले ७०-७५ रु० कमाती थीं, वही बाद में ७०-८० रु० महीना पैदा करने लगती हैं। जो ज्यादा तेज होती हैं, वे १५०-१७५ रु० माहवार तक पैदा कर लेती हैं। कुछ तो अपनी दूकान या कढ़ाई के स्कूल भी खोल लेती हैं।

दिल्ली केन्द्र

दिल्ली का ही उदाहरण लीजिए। यहां २० के करीब केन्द्र हैं, जहां अनेक तरह के काम सिखाये जाते हैं। १९४९-५० में इन केन्द्रों में २०,००० रु० के लगभग मजदूरी बंटी थी। अब तो यह ३ लाख रु० से भी अधिक हो चुकी होगी। साथ ही काम करने वालों की संख्या भी बढ़ी है।

केन्द्रीय सरकार इन केन्द्रों को वर्दी और बिल्ले बनाने के नियमित आर्डर देती है, जिससे इन महिलाओं को काम की कमी नहीं रहती। साथ ही जनता से भी आर्डर लिये जाते हैं। इनका बनाया माल कनाटप्लेस की शरणार्थी दूकानों पर भी बिकता है। इन सबसे उन्हें साल भर में ४ लाख रुपया तक की आमदनी हो जाती है।

सुन्दर भविष्य

एक समय की निराश्रित महिलायें आज अपना भविष्य बना रही हैं। कुछ अपने बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए चिन्तित हैं, तो कुछ लड़की की शादी के इन्तजाम में हैं। कुछ राष्ट्रीय योजनाओं सम्बन्धी कार्यों में भी पैसा लगा रही हैं, जिससे उन्हें अधिक ब्याज मिल सके।

इन आश्रय गृहों में रहने वाली स्त्रियों को कुछ अवधि तक अपने बच्चों की चिन्ता नहीं करनी पड़ती। लड़कियों की देखरेख २५ साल की उमर तक की जाती है।

बिखरे मोती

प्यार और स्नेह बुरे से भी बुरे आदमी को सुधार देता है। —गाँधी

× × ×

मनुष्य का मन ही उसे गरीब और अमीर बनाता है। —शेक्सपीयर

सुन्दर वह है जो सुन्दर काम करे। —गोल्ड स्मिथ

× × ×

धैर्य रखना बहुत कठिन है पर इसका फल बहुत मीठा होता है।

—रूसो

—सं०क० ब्रजमोहन, थापा

आवश्यकता

एक वैश्य अग्रवाल सुन्दर कन्या २१ वर्ष बी० ए० फाइनल, गृह कार्य में कुशल, सीने काढ़ने, ड्राइंग और पेन्टिंग आदि में चतुर के लिए योग्य वर की आवश्यकता है। जाति, उपजाति का बन्धन नहीं है।

—डी० बी० गोयल एम० ए०
बी०पी०पा० इन्टर कालेज नई मन्डी
मुजफ्फरनगर

स्वास्थ्य-सुधा

संयुक्त राष्ट्र संघ के विश्व स्वास्थ्य संगठन की ओर से २३ जून से ३० जून १६५८ तक देश भर में मलेरिया उन्मूलन सप्ताह मनाया गया। इस लेख में रोम की 'इंस्टिट्यूट डी मलेरियोलोजिया' के संचालक प्रोफेसर बी० रैफेले ने मलेरिया उन्मूलन का इतिहास बताते हुए भारत द्वारा किये गये कार्यों की सराहना की है। —सम्पादक

विज्ञान ने जहां मानवता को सुविधाएं प्रदान की है, वहाँ उसको नष्ट करने के साधन भी जुटा दिए हैं। यद्यपि युद्ध में मरे लोगों की अपेक्षा दूषित कीटाणुओं के खतरे से अधिक लोग बचाये जा चुके हैं, फिर भी प्लेग, सन्निपात, मलेरिया आदि को फैलाने वाले कीटाणुओं को मारने वाली दवा का आविष्कार अपना एक अलग महत्व रखता है। ये रोग सैकड़ों वर्षों से लोगों को मौत के मुंह मे डालते आये हैं।

स्वास्थ्य की सबसे बड़ी समस्या

मलेरिया सारी दुनिया में फैला होने के कारण मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु रहा है। इसने आदमी की ताकत और शारीरिक विकास को बढ़ने से रोका है। आज डी० डी० टी० के रूप में हमें इससे छुटकारा दिलाने का एक प्रबल साधन मिल गया है।

मलेरिया का भारत में भी बहुत जोर रहा है। यहां तो इसने कभी-कभी महामारी का रूप धारण कर लिया था। किन्तु आज भारत के पास इसे मिटाने के सब साधन मौजूद है। विख्यात भारतीय मलेरिया विशेषज्ञों ने इस विषय में दुनिया को बहुत कुछ बताया है। भारत सरकार के स्वास्थ्य मत्रालय ने मलेरिया नियन्त्रण का बहुत अच्छी योजनाएं बना डाली है और इसके लिए उपयुक्त धन की व्यवस्था भी कर दी गयी है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की जो बैठक १६५४ में तैपोई में हुई थी, उसमें पता चला कि भारत के मलेरिया ग्रस्त क्षेत्रों मे उस समय २,००० लाख व्यक्ति रहते थे, जिनमे से ६३० लाख व्यक्ति डी० डी० टी० आदि कीटाणु नाशक द्रव्यों के छिड़कने से मलेरिया मुक्त हो चुके है।

इसके बाद और भी अधिक डी० डी० टी० छिड़कने की योजना बनायी गयी। भारतीय मलेरिया संस्थान के उपसंचालक, डा० बी० ए० राव ने सितम्बर, १६५५ में प्रकाशित अपनी एक रिपोर्ट में लिखा है कि हमारा लक्ष्य हर २,००० लाख व्यक्तियों में से १,२५० लाख व्यक्तियों को मलेरिया से बचाना था। यह लक्ष्य १,६२० लाख तक बढ़ाया गया, किन्तु मार्च १६५५ तक ७५० लाख व्यक्ति ही रोगमुक्त किए जा सके। यह लक्ष्य अधिकतर मलेरियाग्रस्त क्षेत्रों के बारे में ही है।

भारत में राष्ट्रीय स्तर पर मलेरिया नियंत्रण की योजना १६५३ से चालू हुई-१६५५ तक इसमें कुछ प्रगति हुई। आशा है, भारत इटली की तरह ही पूरी तरह से मलेरिया उन्मूलन में सफल होगा।

चौकसी की जरूरत

मलेरिया से बीमारी की रोकथाम तो हो जाती है, किन्तु कीटाणुओं का फैलना बन्द नहीं होता। इसके लिए पूरी चौकसी की जरूरत है। मलेरिया ने भारत की आर्थिक और सामाजिक प्रगति को रोक रखा है। उसका भारत में उन्मूलन भारत के लिए ही नहीं, दूसरे देशों के लिए भी, लाभकर होगा। यद्यपि भारत की विशाल भूमि में मलेरिया फैलाने वाले मच्छर के कई रूप पाए जाते हैं, फिर भी आशा की जाती है कि भारत के मलेरिया विशेषज्ञ उन्हें मारने में सफल होंगे।

(पृष्ठ १० का शेष)

संस्था परिचय....

का पुनरुद्धार करके उसकी जो उन्नति की वह तो जगत् प्रसिद्ध है। सन् १६४५ में मध्य प्रान्त आर्य प्रतिनिधि सभा के निमन्त्रण पर आपने पूना जाकर वहाँ के तुकाराम कन्या गुरुकुल का उद्घाटन किया।

मैं इस लेख को इस प्रार्थना के साथ समाप्त करता हूं कि ईश्वर श्री लक्ष्मी देवी जी को १०० वर्ष की आयु दें जिससे वे देश का अधिकाधिक सेवा करती रहें। जो लोग इस संस्था के संचालन में सहयोग दे रहे हैं व सब भाग्यवान् की बधाई के पात्र हैं।

भावचित्र

नदी और तालाब

ग्रीष्म के प्रचण्ड ताप से सरिता की अथाह जलराशि जब धीरे धीरे कम होकर शून्य में विलीन हो गई, तो समीप ही पानी से परिपूर्ण तालाब ने व्यंग भरी मुस्कान के साथ उस नदी से कहा—'क्यों बहिन, तुम्हारी ऐसी दशा किस प्रकार हो गई........तुम तो किसी समय अपनी तूफानी लहरों से किनारे का बन्धन भी तोड़ने की कामना किया करती थीं, और ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे तुम मेरी सत्ता को भी अपने आंचल में समेट कर मुझे मिटा देगी"—तालाब की सहानुभूति में व्यंग का अभास पाकर सरिता के मुख पर एक मधुरिम मुस्कान खेल गई—अनुपम आभा से देदीप्यमान उसके मुख से केवल इतने ही शब्द सुन पड़े—"धरा की पिपासा को मिटाकर मानव जीवन को स्थिर एवं मुखरित रखने के लिए स्वयं को मिटाकर भी मैं सुखी, सन्तुष्ट एवं गौरव का अनुभव करती हूं"—और अपनी शक्ति में मदान्ध वह तालाब इस विचार में खो गया कि उसके प्रश्न का उत्तर सरिता के शब्दों में मिल पाया है अथवा नहीं? यह सोच पाना उसके मस्तिष्क से बाहर का विषय था कि अहम् से विलग होकर विश्व के लिए स्वयं को बलिदान कर देना अपने लिए जीवित रहने से कहीं अधिक गौरवपूर्ण तथ्य है! नभ में घिरे मेघ उसकी इस अनभिज्ञता पर मुस्करा उठे, और देखते ही देखते वह नदी अपनी कर्तव्यनिष्ठा के पुनीत बल पर फिर से जलमग्न होकर लहलहा उठी।

—श्यामलाल वशिष्ठ 'अकिंचन एम. ए.
सेवा-सदन, खुर्जा (उत्तर प्रदेश)

[पृष्ठ ७ का शेष]

मार्ग विद्या प्राप्ति का नहीं है। अर्थात् जो इन तीनों उपायों को त्याग कर चौथे मार्ग से विद्या प्राप्त करेंगे उसकी विद्या निस्सन्देह अविद्या युक्त ही सदा रहेगी।

दुर्भाग्य से ऐसे ही चौथी प्रकार के व्यक्तियों के हाथ में आज का कर्मकाण्ड उनके लिये कामधेनु रूप बन पड़ा है। वे इसके साथ मनमानी कर रहे है। वे कहते है कि अशुद्ध मन्त्रोच्चारण मे कोई दोष नहीं, स्वर रहित मन्त्र उच्चारण करने में कोई दोष नहीं. प्राचीन विधि विधान के उल्लंघन करने मे कोई दोष नहीं। यदि दोष है तो इनकी विधि का उल्लंघन करने में। चाहे ये महर्षियों के सारे विधि विधान को चौपट ही क्यों न कर दें। उसमें कोई दोष नहीं। ऐसी स्थिति मे "अपूज्यायत्र पूज्यन्ते दुर्भिक्ष मरण भयम्" यह परिणाम भुगतना ही पड़ेगा जिसका विश्व मे सर्वत्र साम्राज्य है।

अतः इसका एकमात्र उपाय यही है कि आर्यजन वेदों की ओर चलें। नित्य उसका विद्वानो के साथ "सार्थाः सांगाः सरहस्याः सस्वर हस्तक्रिया" इस प्रकार से अभ्यास करें तो कल्याण मार्ग पर अग्रसर हो सकते है।

देशदर्शन

देशीय साप्ताहिक समाचार समीक्षा
(हमारे समाचार समीक्षक द्वारा)

चिनारी में पुलिस संघर्ष

काश्मीर मुक्ति मोर्चा के स्वयं सेवक सैकड़ों की संख्या मे युद्ध विराम रेखा को पार कर काश्मीर मे प्रवेश करना चाहते थे जिन्हें पुलिस ने रोक लिया। पुलिस ने पांच घण्टे तक उनके साथ संघर्ष किया। बार-बार भगाये जाने पर भी वे आ जाते थे। काश्मीर मुक्ति मोर्चा के नेता अब्बास को गिरफ्तारी के बाद दूसरे दिन छोड़ दिया गया था। वे युद्ध विराम रेखा को पार करने के प्रयास में पुनः गिरफ्तार कर लिय गये। उन्हे गिरफ्तार करके पुनः रावलपिंडी जेल भेजा गया। उनकी गिरफ्तारी से काश्मीर में कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। अब्बास धमकियो से काश्मीर को पाकिस्तान में मिलाना चाहते थे। पता चला है कि पाकिस्तान के सभी नेता गुप्त रूप से अब्बास का साथ दे रहे थे यद्यपि उन्हे गिरफ्तार भी पाक पुलिस ने ही किया।

दिल्ली में गेहूँ का तस्कर व्यापार

केन्द्रीय सरकार की नाक के नीचे राजधानी दिल्ली में इन दिनों गेहूं का तस्कर व्यापार बड़ी तेजी से चल रहा है। पुलिस के लाख प्रयास के बाद भी यह व्यापार बन्द नहीं हुआ। क्या इसका अर्थ यह नहीं है कि पुलिस व सरकारी अधिकारी इमानदारी से काम नहीं करते हैं। अब पता चला है कि इसके लिए अलग से पुलिस का प्रबन्ध किया जाने वाला है और सरकार कड़ा कदम उठायेगी। पर सरकार तो तब कड़ा कदम उठायेगी जब सब कुछ बर्बाद हो चुका होगा।

कांग्रेस का प्रभाव घटती पर

देश के विभिन्न राज्यों में कांग्रेस का प्रभाव घटती पर है इसमें कोई सन्देह नहीं। लोक सभा और विधान सभाओं के उपचुनावों के आधार पर यह विश्वास पूर्वक कहा जा सकता है। कांग्रेस के हाथ से ऐसी ऐसी सीटें निकल गयी हैं जिन पर कांग्रेस को अभिमान था। मोदाहा, देवीकुलम, गुरवांवा आदि स्थान इसके प्रमाण हैं। ऐसा प्रतीत होता है जैसे देश की आम हिन्दू जनता कांग्रेस से क्षुब्ध और निराश हो चुकी है। इसका कारण है कि सरकार हर बात मे हिन्दुओं को तो दबाती है और अन्य सम्प्रदायों को जानबूझ कर बढ़ावा देती है। इससे हिन्दू वर्ग का निराश होना स्वाभाविक है। साथ ही सरकार के हर विभाग मे फैले भ्रष्टाचार को देख कर भी लोगों को कांग्रेस पर विश्वास नहीं रहा। प्रायः सभी प्रांतो में कांग्रेस की दशा गिरती पर ही है।

श्रीमती विजयलक्ष्मी स्पेन में राजदूत नियुक्त

ब्रिटेन मे भारत की हाई कमिश्नर श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित को अब भारत सरकार ने स्पेन में अपना राजदूत नियुक्त किया है।

नाटक बीच में समाप्त

धमकियों द्वारा काश्मीर हड़प लेने का पाकिस्तानी नाटक श्री अब्बास की गिरफ्तारी के साथ बीच मे ही समाप्त हो गया। काश्मीर के राजनीतिक क्षेत्रों में कहा जाता है कि पाकिस्तान सरकार ने काश्मीर पर अधिकार करने के लिये अब्बास के द्वारा एक नाटक रचा था जो बीच मे ही समाप्त हो गया।

जोधपुर सीमा पर गिरफ्तारियां

जोधपुर की सीमा पर इन दिनों सोने का तस्कर व्यापार खुले आम चालू है। पुलिस ने २६ जून को इस सम्बन्ध में अनेकों व्यक्तियों को गिरफ्तार किया और ६७० तोला सोना बरामद किया। पुलिस के साथ तस्कर व्यापारियों की मुठभेड़ भी हुई जिसमे एक व्यक्ति मारा गया और कुछ घायल भी हो गये। सीमान्त गॉगल ग्राम के सरपंच श्री उस्मान को इस सम्बन्ध मे पकड़ा गया है। ★

आर्य-जगत

गुरुकुल समाचार—

—गुरुकुल ज्वालापुर की स्वर्ण जयन्ती अप्रैल ५९ में मनायी जायेगी। महाविद्यालय का ५० वर्ष का इतिहास प्रकाशित होने वाला है। पं० हरिशङ्कर जी शर्मा कविरत्न, आगरा, प्रधान आ० प्र० सभा उ० प्र० संपादक मंडल के अध्यक्ष चुने गये हैं। इस गुरुकुल महाविद्यालय के सम्बन्ध मे जिन लोगों को जो भी संस्मरण याद हों अपने चित्र सहित कृपया भेजने का कष्ट करें। महाविद्यालय के स्नातक जहां कहीं भी हों अपने चित्र सहित अपना विवरण भेजें। इसके लिए हमें शंकर, भारतोदय, विशाल भारत, परोपकारी, आर्यावर्त, भारत सुदशा, प्रवर्तक आदि पत्रों की ३३ से ४० तक की फाइलों की आवश्यकता है। जिन सज्जन के पास हों कृपया मुझे भेजने का कष्ट करें। कार्य पूरा हो जाने पर हम उन्हें सुरक्षित लौटा देंगे।

—नन्दकिशोर शास्त्री
मुख्याधिष्ठाता

—गुरुकुल अयोध्या का नव शिक्षा सत्र १जुलाई से प्रारम्भ होगया, अपने बच्चों को गुरुकुल में प्रवेशेच्छु सज्जन पत्र व्यवहार करें।

—गुरुकुल अयोध्या की अन्तरंग सभा की बैठक १३ जुलाई ५८ को सायं ४ बजे गुरुकुल भूमि में होगी। अन्तरंग सदस्यों को अवश्य उपस्थित होना चाहिए।

—गुरुकुल चित्तौड़ गढ़ का नवीन सत्र १ जुलाई से प्रारम्भ होगया। २० जुलाई तक नये ब्रह्मचारियों का प्रवेश होगा। अभिभावक अपने बालकों को प्रवेश कराने में शीघ्रता करें।

—गुरुकुल सिकन्द्राबाद १ जुलाई को खुल गया। यहां योग्य और अनुभवी अध्यापकों की देखरेख में सभी आवश्यक विषयों की शिक्षा दी जाती है। उ० प्र० सरकार द्वारा यह आदर्श पाठशाला घोषित है। भोजन शुल्क नाममात्र को १०) मासिक लिया जाता है। प्रवेशार्थी स्वयं आकर मिलें।

आर्यकुमार सभा समाचार

—आर्य कुमार सभा पीलीभीत का पुनः संगठन हुआ। ७० आर्य कुमार इसके सदस्य बने। नियमानुसार साप्ताहिक सत्संग होने लगा है। २८ मई को यहाँ आर्य कुमारों ने वीर सावरकर की जयन्ती मनायी। यहाँ आर्य वीर दल भी स्थापित किया जाने वाला है और "सन्देश" नामक एक मासिक हस्तलिखित पत्रिका भी निकाली जाने वाली है।

आर्य वीर दल समाचार—

—आर्य वीर दल कानपुर की ओर से ५ से ११ जून ५८ तक जिले के घाटमपुर तहसील के उमरी नामक स्थान में दल का एक शिक्षण शिविर मंडलपति श्री नवलकिशोर जी द्वारा आयोजित किया गया जिसमें २५आर्य वीरों ने शिक्षा ली। यहां शाखा भी प्रारम्भ हो गया जिसके नायक श्री राजकुमार जी व शिक्षा नायक श्री संजीवनलाल बनाये गये। आ० स० उमरी के प्रधान श्री विजय नारायणजी तहसील नायक बनाये गये।

—पूर्वी उ० प्र० आर्यवीर दल बनारस केन्द्र के शिक्षण शिविर का समावर्तन समारोह २२ जून को पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु की अध्यक्षता में हुआ। श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी प्रधान सचालक ने दीक्षान्त भाषण दिया। श्री काशीनाथ शास्त्री ने आगत महानुभावों को धन्यवाद दिया। आर्यवीरों द्वारा लाठी, छूरा, सैनिक शिक्षा आदि का प्रदर्शन किया गया। शिविर मे भाग लेने वाले आर्य वीरों को प्रमाणपत्र दिया गया।

—पूर्वी उ० प्र० आर्य वीर दल केन्द्र काशी की कार्य समिति की एक बैठक श्री पुरुषार्थी जी की अध्यक्षता में हुई। गाजीपुर में शीत कालीन शिविर लगाना निश्चय हुआ। शिविर की तिथि बाद में घोषित की जायेगी। एक वैतनिक शिक्षक रखना भी निश्चय हुआ।

संस्कार समाचार—

—गुरुकुल अयोध्या के प्रधान लेखक श्री रामाधार चतुर्वेदी के पुत्र भास्कर चतुर्वेदी का शुभ विवाह श्री रामनारायण चतुर्वेदी मारोपुर, फैजाबाद की पुत्री के साथ १६ जून को सानन्द वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। वर पक्ष ने गुरुकुल को १०) दान दिया।

प्रचार समाचार—

—आ० स० सिन्दरी विहार की ओर से १६ से २२ जून तक प्रचार सप्ताह मनाया गया जिसमें भजन, प्रवचन, उपदेश आदि तथा पारिवारिक यज्ञ हुए। सिन्दरी के निर्धन, अशिक्षित, दलित, आदिम जाति वर्ग में मुख्यतः ये प्रचार हुए। रूढ़ीवाद और वर्ग जनित सम्प्रदायवाद को दूर करने का प्रयास किया गया।

—आ० स० जाहदपुर, मरहरा, एटा जो अनेकों वर्षों से शिथिल पड़ा था, को पुनः २९-५-५८ को नये रूप में संगठित किया गया। श्री मिश्रीलाल चतुर्वेदी के प्रयास से यह कार्य हुआ।

चुनाव समाचार—

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा दिल्ली का चुनाव—

प्रधान—पूज्य स्वामी अभेदानन्द जी
उप प्र०—श्री मेलाराम जी, श्री चरणदास जी, श्री पूर्णचन्द एडवोकेट आगरा।
मन्त्री—श्री नारायणदास कपूर
उप मन्त्री—श्री जगन्नाथ जी, आशानन्द जी, सुन्दरलाल जी।
कोषाध्यक्ष—श्री केदारनाथ जी।

—आ० स० जाहदपुर, मरहरा, एटा के श्री भूदेवप्रसाद जी प्रधान, श्री होरीसिंह मन्त्री और श्री देवजीत सिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आ० स० गया, विहार के श्री बुलाकचन्दराय जी प्रधान, श्री वासुदेव नारायण जी मन्त्री और श्री प्रयाग नारायण जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—विरजानन्द संस्कृत परिषद देहली में श्री स्वामी आनन्द भिक्षु जी प्रधान, श्री कृष्णवर्मा शास्त्री मन्त्री और श्री ज्ञानचन्द जी बी० काम, एल० एल० बी० कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आ० स० दीवानहाल दिल्ली के निर्वाचन में श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले प्रधान, श्री राजसिंह जी बी० ए०, एल० एल० बी० मन्त्री और श्री आश्चर्यलाल जी कोषाध्यक्ष चुने गये। चार उप प्रधान और चार उप मन्त्री भी चुने गए।

—आदर्शनगर, नैनीताल में प्रचार करके श्री रामचन्द्र जी भजनोपदेशक ने एक नये आर्यसमाज की स्थापना की। श्री नैनसिंह जी प्रधान, श्री जगदीशशरण जी मन्त्री और श्री एस० आर० वर्मा कोषाध्यक्ष चुने गये।

शुद्धि समाचार

—आ० स० जगतपुर बरेली में कुमारी स्टेला नामक एक ईसाई महिला की शुद्धि हुई और उसका पाणिग्रहण संस्कार भी पं० ओम्प्रकाश जी उपदेशक द्वारा सानन्द सम्पन्न हुआ।

—आ०स० कनखल, सहारनपुर में एक ईसाई लड़की को उसकी स्वेच्छा से शुद्ध करके वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया और उसका विवाह संस्कार प०केशवचन्द्र सनवाल मैनेजर अग्रवाल टाकीज लैंसडौन के साथ समाज मन्दिर में सम्पन्न हुआ।

उत्सव समाचार—

—केवलानन्द निगमागम संस्कृत विद्यालय गंज, दारानगर बिजनौर का वार्षिकोत्सव १९, २०, २१ जुलाई ५८ को होगा जिसमें आर्य जगत के अनेकों प्रसिद्ध सन्यासी व विद्वान पधारेंगे। इस अवसर पर अनेकों सम्मेलन भी होंगे।

—आ०स० गंगापुर, पो० कर्णवास जिला बुलन्दशहर का प्रथम वार्षिकोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ जिसमें अनेकों विद्वानों के भाषण हुए।

सिंहावलोकन

★ अनेकानेक दुःखों व गरीबी से सन्तप्त देश की शहरी तथा ग्रामीण आम जनता के हृदयों में आज कांग्रेस तथा कांग्रेसियों के लिए क्या इज्जत शेष रह गयी है, इसकी जानकारी के लिए इस लेख को एक ही सांस में पढ जाइए। ★

—सम्पादक

ये लुढ़कते पत्थर

[श्री सत्यप्रिय सिद्धान्तशिरोमणि श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्या० यमुनानगर]

"परमात्मा की सृष्टि मे अभिमानी, अन्यायकारी अविद्वान् लोगों का राज्य बहुत दिन नही चलता।"

दूरदर्शी युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी द्वारा लिखे आज से ७५ वर्ष पूर्व के ये वाक्य जैसे तब उपयोगी थे, आज उससे भी अधिक लाभदायक हैं। परन्तु देश हितैषी सन्तो के कथन का अनाचरण दुखद ही हुआ करता है। वर्तमान काल मे कांग्रेस इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। आज कांग्रेस के सीमातीत अधःपतन को देखकर कौन पाषाण हृदय होगा कि जिसका अन्तरात्मा चीत्कार न कर उठेगा। अभी श्री ०प्र प्रकाशवीर जो शास्त्री के चुनाव के सम्बन्ध मे भ्रमण करते हुए कांग्रेस की जो दुर्दशा देखी देश के कर्णधारो की आंखो को खोलने के लिए उसका वर्णन कर देना पर्याप्त होगा। गुड़गावां मे हम जहा भी घूमे सर्वत्र "शास्त्री जी जीतेंगे' यही सबके मुख से सुनाई देता था। एक जून को जब हम सागरपुर पोलिंग स्टेशन पर थे तो मध्याह्न मे वहा दो कांग्रेसी सज्जन आये। जब हम से भेंट हुई तो हमने कहा श्रीमान् जी आपने हमारे अठ्ठाईस व्यक्ति मार डाले है। फिरोजपुर जेल मे आपके गुण्डो द्वारा पीटे गये सत्याग्रहियों के घाव आज तक नहीं भरे। उससे भी बढ़कर चालीस करोड़ जनता के हृदय के जख्म अभी तो हरे हैं। आपके पन्त जी ने विश्वासघात करके अक्षम्य अपराध किया है ये प्रश्न आज उत्तर के प्यासे हैं। कुछ दूर पश्चात् एक ग्रामाण सज्जन बोले महाशय जी आपने दो चार रोटी खानी हो तो खा लीजिए परन्तु यहाँ से आपका वोट नहीं मिलगे। तब गाव के बच्चे हाथो मे शेर के चिह्न वाले झण्डे लेकर आये। और "जीतेगा भई जीतेगा शेर वाला जीतेगा।" तथा "बैलो की जोड़ी धोखा है" और हिन्दी भाषा अमर रहे" आदि नारे लगाते हुये उनके पीछे लग गये, और उनको ग्राम से दूर छोड़ कर आये। कुछ काल के पश्चात् जब शास्त्री जी की जीप वहाँ पहुची तो वे ही बच्चे झण्डे उठा २ कर तथा नारे लगा २ कर स्वागत करते थे। दूसरे एक मतदान केन्द्र पर जब कांग्रेस के कार्यकर्ता पहुचे तो उनको बैठने तक को जगह नहीं दी, तब वे बोले कि जब आप बैठने के लिए स्थान तक नहीं देते तो आपसे वोट की क्या आशा की जा सकती है। यह कह कर जिस स्थिति में आये थे वैसे ही चले गये। ऐसे ही एक स्थान पर जब कॉंग्रेस का एक कार्यकर्ता गया तो एक चौधरी जी के पूछने पर बताया कि मैं कॉंग्रेस का व्यक्ति हू। बस फिर क्या था, चौधरी जी ने उसको पकड़ा और धक्के देते हुए बहुत दूर सड़क पर लाकर कहा कि देखो यहाँ से चले जाओ। और भूलकर भी यहाँ न आना। जब चौधरी जी सत्स्वागत उनको विदा करके लौट रहे थे तो आगे एक शास्त्री जी के कार्यकर्ता खड़े थे। चौधरीजी ने उनको भी कॉंग्रेसी समझकर धक्के देने आरम्भ किये। जब उसने वास्तविकता कही तो चौधरी जी बोले भैया विश्वास नहीं होता क्योंकि तुम कॉंग्रेसी से प्रतीत होते हो। परन्तु जब उनको विश्वास हो गया तब कहने लगे कि आज मैंने कॉंग्रेसियों को गाव मे घुसने नहीं देना है। इसी प्रकार जब एक स्थान पर भूखे प्यासे कॉंग्रेसी कार्यकर्ता पहुचे और वहाँ के एक व्यक्ति के आगे अपना आटा दाल रखकर बोले कि श्रीमान् जी हमारा भोजन बनवा दीजिए। उसको जब ज्ञात हुआ कि ये कॉंग्रेस पक्ष के हैं तो उसने कहा कि यहा से तुरन्त चले जाओ अन्यथा तुम्हारा आटा दाल छीनकर तुम्हे ऐसी रोटियाँ खिलायेंगे कि तुम याद रखोगे। वे बेचारे फौरन वहाँ से चले गये। इसके अतिरिक्त यह तो प्रसिद्ध ही है कि कैरों साहब होडल गये और और वहाँ जनता द्वारा उनका पत्थरो से अभिनन्दन किया गया। और अभिनन्दन के प्रत्युत्तर स्वरूप लाठी चार्ज तथा गिरफ्तारियाँ हुई। गुड़गावां के वे मासूम बच्चे भी—

१—शेर आया, गीदड़ भागा।

२—जीतेगा भई जीतेगा, शेरवाला जीतेगा।

३—एक दो तीन, कॉंग्रेस कमीन

४—एक दो अढ़ाई, कॉंग्रेस कसाई

५—गौहत्या के तीन दलाल, ढेबर पन्त, जवाहरलाल आदि नारे अपनी तोतली बोली मे लगा कर कॉंग्रेस के अन्याय, अत्याचार तथा अधःपतन को व्यक्त कर रहे थे। गुड़गावाँ की जिस सीट को कॉंग्रेस सुरक्षित समझती थी आज वह बड़ी शान से उनके हाथो से छिन गयी है। क्योंकि कॉंग्रेस ने राष्ट्रभाषा के साथ गद्दारी की है। जिस व्यक्ति ने सपरिवार चोरी, डाके गुण्डागर्दी और रिश्वतखोरी आदि का ठेका ले रखा हो उसको पंजाब का मुख्य मन्त्री बनाकर तथा जिस देशद्रोही ने विदेशो मे राष्ट्रीय पताका को अपमानित की हो उसे पंजाब का माल मन्त्री बना कर तथा जो विदेशो से मिलकर अपना देशद्रोही मनोवृत्ति का परिचय देता हो तथा पंजाब मे साम्प्रदायिकता के शोलो को हवा देकर अपना लाहौरा ना बचाने की फिकर मे हो ऐसे देशद्रोही तारासिंह की दया पर बहुसख्यक, सत्य एव न्याय पर दृढ़ हिन्दुओं को छोड़कर एव अनेक पाशविक अत्याचार करके भी कांग्रेस चाहती है कि हमें वोट मिले। वह समय गया जब खद्दरधारी आततायी अनेक प्रलोभन देकर अपना उल्लू सीधा किया करते थे। आज की जनता अपने हिताहित को पहचानती है। ओ कांग्रेस वालो ! जनता आपके बगुला भक्ति के रूप को जान गयी है। आप भारत के उन्नति रूप भव्य भवन की नींव के पत्थर नहीं हो। आप पर्वत के शिखर से गड्ढे मे जाते हुए मार्ग से अनेक कोमल पौधे लताओ को नष्ट करने वाले उस लुढ़कते पत्थर के समान अनेक भावि भारतीय नागरिक कोमलमति बच्चो के जीवन को नष्ट करने वाले हो। गुड़गावा की बुद्धिमती जनता ने तुम्हारे मुख पर पराजय रूपी थप्पड़ मार कर तुम्हे होश मे लाने का यत्न किया है। होश मे आओ अन्यथा 'विनाश काले विपरीत बुद्धि' वाली कहावत चरितार्थ होगी।

आवश्यकता

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय, अजमेर के लिये एक कार्य कुशल योग्य अधिष्ठाता की आवश्यकता है जो दृढ़ आर्य समाजी, कम से कम ४५ वर्ष आयु के विद्वान् सज्जन हो। गुरुकुल के स्नातक अथवा शास्त्री और अनुभवी सज्जन को विशेषता दी जावेगी वेतन १००)रु० मासिक तक दिया जा सकेगा।

—देवदत्त शर्मा, एडवोकेट
मन्त्री श्रीमद्दयानन्द अनाथालय, अजमेर

पंजीकरण सं. ए. ६०
आषाढ़ १५ शक १८८०(६ जुलाई५८)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष्य ५११३ तार 'आर्यमित्र'

सुझाव और सम्मतियाँ

अमर ज्योति की रक्षा

आज हम ऋषि दयानन्द के बताये मार्ग को छोड़ बैठे हैं। यही कारण है कि भारत के स्वतन्त्र हो जाने पर भी देश की दुरवस्था ऋषि के समय स बढी ही है कम नहीं हो सकी है। आज भारत म असत्यवादी मूर्ति पूजक मास भक्षक, मद्यापी, रिश्वत लेने वाले, नास्तिक पहले से अधिक सख्या म हैं और दिनों दिन बढ़ रहे हैं सर्वत्र म्लेच्छ, दस्यु, राक्षस प्रवृत्तियो का साम्राज्य है। आर्य प्रवृत्तियों का कहीं अस्तित्व नहीं है। यह सब क्यों हा रहा है इसका एकमात्र उत्तर यही है कि हमने स्वय को ऋषि के बताये मार्गानुसार चलने वाला नहीं बनाया। हम अपने कर्तव्यों को भूल अधिकारों की मृग तृष्णा में फस गये हैं। हमें गम्भीरतापूर्वक सोचना चाहिए कि ८३ वर्ष पूर्व ऋषि ने जिस प्रकाश की ज्योति का जलाया था हम उसे कभी बुझन न द। अभी १०० वर्ष भी नहीं हुए उसका प्रकाश क्यों धीमा होन लगा यह हमारी कमजोरियों के ही कारण है। आर्यजन अपने कर्तव्यों का पालन कर और उस ज्योति की रक्षा कर। —ज्ञानश्वरानन्द वानप्रस्था,
दायानहाल देहली

तब और अब

पहले आय समाज का साधारण सभ्य भी अपन को ऋषि दयानन्द का और आर्य समाज का प्रतिनिधि मानकर उसके लिये अपनी तैयारी करता था। सत्याथ प्रकाश में बाइबिल कुरान और पुराण आदि का खण्डन है। आर्य समाजी से ईसाई, मुसलमान और पौराणिक प्रश्न करते थे और खण्डन का औचित्य प्रतिपादन करना प्रत्येक आर्य समाजी अपना दायित्व मानता था और उसके लिये परिश्रम और स्वाध्याय की आवश्यकता हाती थी। आज अवस्था दूसरी ही है। हमारी उदासीनता और उपेक्षा ही हमारे वर्तमान स्वरूप का कारण है। अवध विहार लाल एम० ए०
कलकत्ता

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

किसे मत दें

प्रजातन्त्र व्यवस्था के कारण हमारे देश में आम चुनाव और स्थानीय चुनाव होते रहते हैं। सदैव यह प्रश्न पूछा जाता है कि आर्य जन किस व्यक्ति को अपना मत दें। इस सम्बन्ध में निम्न बातें ध्यान में रखनी चाहिये और उन्हीं का पालन करने वालों को मत दिया जाना चाहिये।

१—जो चरित्रवान् सदाचारी हो, दुष्ट दुराचारी दुर्व्यसनी न हो। २—ईश्वर विश्वासी अर्थात् आस्तिक हो। ३—भारतीय सस्कृति एव सभ्यता में आस्था रखता हो और उसकी रक्षा करने वाला हो। ४—अधिनायकवाद एव पशुबल म विश्वास न रखता हो। ५—प्रजा तान्त्रिक प्रणाली का मानने वाला हो और जनता के विचारों का आदर करता हो। ६—जाति पाँति, छूत छात आदि का विरोधी हो। ७—राष्ट्र भाषा हिन्दी का समर्थक हो। ८—गा वश की रक्षा एव वृद्धि का समर्थक हा।

—शकरलाल आर्य सि० रत्न
हाथरस

अंग्रेजी का समर्थन क्यों

राज भाषा आयोग ने ससद, तथा राज्य विधान सभाओं, परिषदों आद के भाषणों का भाषावार विश्लेषण कर जा तालिका प्रस्तुत की है उसके अनुसार पजाब की विधान सभा म हिन्दी भाषणों की सख्या ५६ ७ तथा पजाबी भाषणों की सख्या ४३ ३ है। अग्रेजी भाषणों की सख्या एक प्रतिशत से भी कम ० २७ है।

अग्रेजी भाषा के समर्थक मा० तारासिंह को समझ लेना चाहिए कि उनके प्रान्त में अग्रेजी की क्या स्थिति है। जब पजाब के पढ़े लिखे निर्वाचित व्यक्तियों म अग्रेजी का यह प्रतिशत है तब वहा के जन साधारण का ता प्रश्न ही नहीं उठता। जहा तक पजाबी में भाषणों का प्रश्न है वह भी हिन्दी क मुकाबले कम है। ऐसी अवस्था में पजाबी के नाम पर हिन्दी का विराध करना और विदेशी भाषा अग्रेजी का समर्थन करना हठधर्मी ही है।

—आचार्य विश्वप्रिय शास्त्री
देहली

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ARYA MITRA

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का साप्ताहिक मुखपत्र

12-7-58

वार्षिक मूल्य ८) }
एक प्रति का २० नए पैसे }

लखनऊ, रविवार, आषाढ़ २२, शक १८८०
१३ जुलाई १९५८ ई०

{ विदेश म
{ १५ शिलिंग

हिन्दी आन्दोलन के लिए—

पुनः तैयार रहिए

२० जुलाई को प्रतिज्ञा दिवस, ६ अगस्त को विरोध दिवस, १६ अगस्त को बहुअकबरपुर दिवस और २४ अगस्त को शहीद सुमेरसिंह बलिदान दिवस मनाइए

सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति का आदेश

आर्य समाज की स्थापना भारत के सांस्कृतिक, धार्मिक, व राष्ट्रीय जीवन की सुरक्षा के दायित्व के साथ हुई थी। यही कारण है कि जब कभी इनमें से किसी भी क्षेत्र मे असुरक्षा का वातावरण उत्पन्न होता है तो आर्य समाज सदैव अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ मैदान में उतर पड़ता है। अंग्रेजों के विरुद्ध राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में आर्य समाज की गणना सदैव अग्रिम पंक्ति में रहने वालों में की जाती है। हैदराबाद और सिन्ध में धार्मिक अधिकारों के लिए उसके संघर्षों की कहानियां सदैव स्मरणीय रहेगी। इसी प्रकार सांस्कृतिक पक्ष म भी आर्य समाज अपने कर्त्तव्य का पालन करने में कभी संकोच नहीं करता है और न करेगा।

भारत के सीमान्त राज्य पंजाब में साम्प्रदायिक अकालियों के प्रति तुष्टीकरण नीति अपना कर हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने रीजनल फार्मूला स्वीकार किया। इस फार्मूले के सिद्धान्त किस आदर्श की कसौटी पर पूरे उतरते हैं यह कोई भी साहस पूर्वक नहीं कह सकता। सिक्खों को सन्तुष्ट करने के कारण वह साम्प्रदायिक फार्मूला है, पंजाब को दो रीजनों में बाटने के कारण वह एकता विरोधी है। पंजाब के बहुसंख्यकों को अल्पमत की भाषा पढ़ने के लिए बाध्य करने के कारण प्रजातन्त्र के विरुद्ध है और इसी प्रकार गुरुमुखी की अनिवार्यता स्थापित करने के कारण व संविधान के मौलिक अधिकारों की हत्या करने कारण असंवैधानिक है। इस प्रकार इस फार्मूले के द्वारा पंजाब में आज रीजनल फार्मूले के नाम से एक ऐसी साम्प्रदायिकता पूर्ण भारतीय एकता विरोधी अप्रजातान्त्रिक, एवं असंवैधानिक नीति का पालन एवं समर्थन किया जा रहा है जो भारत के सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय जीवन मे दूरगामी आघात पहुंचाने वाला है। यद्यपि इस फार्मूले की परीक्षास्थली पंजाब है पर भारत का एक अंग होने के कारण उस अंग में होने वाली प्रतिक्रिया का प्रभाव देश व्यापी होगा ही।

रीजनल फार्मूले की भाषा सम्बंधी सांस्कृतिक आघात पहुंचाने वाली धाराओं के विरुद्ध आर्य समाज के गतवर्ष एक शान्ति पूर्ण आन्दोलन ने व्यापक रूप धारण किया। २५ हजार से अधिक व्यक्ति आन्दोलन में सम्मिलित हुए। १० हजार से अधिक को सरकार ने कैद किया अनेक बलिदान हुए और अनेकों को नजर बन्द बनाया। प्राय सभी नजरबन्द निर्दोष सिद्ध हुए। अत सरकार को उन्हे छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा और कैद सत्याग्रहियों को भी शान्त वातावरण में बातचीत द्वारा समस्या का समाधान हो सकेगा इस भावना से मुक्त करने के लिये सरकार ने पहल की। हमारे आन्दोलन के अधिकारियों ने सद्भावना का उत्तर सद्भावना मे ही देना उचित समझा और आन्दोलन स्थगित कर दिया। आज छः मास बीत जाने पर भी जब आर्य समाज की मांगों के सम्बन्ध में सरकार ने कोई सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार नहीं दिखाया है और शान्त वातावरण में समस्या का समाधान के लिए प्रयत्न के अपने सार्वजनिक वचनों से हमारे नेता मुकर गये हैं, उसे देखते हुए आर्य नेताओं के लिए यही कहा जा सकता है कि वे चतुर राजनीतिज्ञों के झांसे में आ गये। व्यावहारिक रूप से इस असफलता के साथ हमारे पास एक ही चीज शेष है कि हमने शान्ति के नाम पर छः मास अपना संघर्ष बन्द रक्खा और हम सरकार द्वारा सद्भावना का व्यावहारिक उत्तर पाने के लिए प्रतीक्षा करते रहे पर आर्य समाज का शान्ति मिशन असफल हो रहा है और आज एक बार पुन संघर्ष की सम्भावना व्याप्त हो उठी है।

आर्य समाज की ओर से भाषा स्वातन्त्र्य समिति की संघर्ष समिति

(शेष पृष्ठ ४ पर)

अवैतनिक सम्पादक—
स्नातक उमेशचन्द्र एम. ए., ईश्वरदयालु आर्य, सभा मुख्य उपमन्त्री
सह० सम्पादक—भगवत शरण

वर्ष ६०

अङ्क २६

कठोपनिषद् कथा १२, (आध्यात्मिक चर्चा)

जन्म और मृत्यु को कौन तर जाता है?

(श्री सुरेशचन्द्र वेदालकार एम०ए०, एल०टी०, डी०बी० कालेज, गोरखपुर)

प्रथम तीन आश्रमो मे नियमित रूप से अग्निहोत्र करने वाला, प्रभु की उपासना करने वाला तथा यज्ञ अध्ययन और दान कार्य करने वाला सदाचारी व्यक्ति निश्चित रूप से जन्म और मृत्यु को तर जाता है। यह कठोपनिषद् का उपदेश है। —सम्पादक

(१५ जून के अक से आगे)

नचिकेता को यम ने दूसरा वर भी दिया और बतलाया कि वह अग्नि और कुछ नही—परमेश्वर है। इस अग्नि का ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद मनुष्य स्वर्ग या मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। यह अग्नि जगत् की स्थिति का कारण और हृदयाकाश मे स्थित है। इस अग्नि का ज्ञान प्राप्त करने के बिना मुक्ति की प्राप्ति असम्भव है और इसके लिए सहायता दूर करके पूर्ण निष्कामता के साथ कार्य करने से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। यम राज ने यह भी कहा कि त्रित्व को जानकर हा अग्नि को समझा जा सकता है। अब प्रश्न उठता है कि वह त्रित्व क्या है जिसे जानकर मनुष्य अग्नि का ज्ञान सकता है और अग्नि के ज्ञान से मुक्ति अर्थात् जन्म मरण के बन्धन से छुटकारा पा सकता है? इसका उत्तर अगले मन्त्रो म उपनिषत्कार ने बतलाया है। वहा लिखा है—

त्रिणाचिकेतस्त्रिभिरेत्य सन्धि, त्रिकर्मकृत तरति जन्म मृत्यु। ब्रह्म यज्ञ देवमीड्य विदित्वा निचाय्येमा शान्तिमत्यन्तमेति ॥

अर्थात् त्रित्व को समझने के लिए इस मन्त्र म कहा गया है कि (त्रिणाचिकेत) तीन बार जिस अग्नि का उपदेश नचिकेता का किया गया और जो उसके नाम से प्रसिद्ध हुआ। उस नचिकेत अग्नि का चयन करन वाला (त्रिभि) तान से अर्थात् आचार्य, माता और पिता से (सन्धि) मेल का (एत्य) प्राप्त हाकर (त्रिकर्मकृत्) तीन कर्म अर्थात् वम तीन स्कध यज्ञ, अध्ययन और दान किए हों वह (जन्म मृत्यु) जन्म मरण का (तरति) पार हो जाता है (ब्रह्मयज्ञम्) वेद को उत्पन्न करने वाले (ईड्यम्) स्तुति के योग्य (देवम्) ईश्वर का (विदित्वा) जान (निचाय्य) और निश्चय करके (अत्यन्तम्) अत्यन्त (शान्ति) शान्ति का (एति) प्राप्त हाता है।

त्रिणाचिकेतस्त्रयमेतद्विदित्वा
य एव विद्वांश्चिनुते नाचिकेतम्।
स मृत्यु पाशान् पुरत. प्रणोद्य,
शोकातिगो मोदते स्वर्ग लोके।

जो विद्वान् तीन बार अग्नि का चयन करने वाला (एतत्) इस (त्रयम्) त्रित्वको (विदित्वा) जानकर (एव) इस प्रकार (नचिकेतम् नचिकेत अग्नि को (चिनुते) चयन करता है (स) वह (मृत्यु पाशान्) मृत्यु की बेड़ियो को (पुरत) आगे से (प्रणोद्य) काट कर (शोकातिग) शोक से रहित होकर (स्वर्ग लोके) स्वर्ग लोके मे (मोदते) आनन्द करता है।

इस प्रकार त्रित्व क्या है यह हमे ज्ञात होता है। त्रित्व निम्न लिखित हैं—

(१) माता, पिता और आचार्य का सत्सग।

(२) यज्ञ, अध्ययन और दान।

(३) तीन आश्रमो मे तीनो अग्नि होत्र अर्थात् ब्रह्मचर्याश्रम में आहवनीय गृहस्थाश्रम में गार्हपत्य तथा प्रजापत्य और वानप्रस्थाश्रम मे अन्वाहार्य नाम वाली अग्नि से अग्निहोत्र करना वह इन त्रित्वों को जानकर अग्नि पर मात्मा को जान सकता है।

इन त्रित्वो मे पहला त्रित्व है माता, पिता और आचार्य का सत्सग मातृमान्, पितृमान, आचार्यवान् पुरुषो वेद के अनुसार माता, पिता और आचार्य को प्रशस्त होना चाहिए और प्रशस्त मा, बाप और आचार्य ही व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। आजकल जहा बच्चो एव विद्यार्थियो के खराब होने का उत्तरदायित्व उन पर है वहाँ माता पिता तथा आचार्यों पर भी है। आदर्शहीन अध्यापक, शराबी, बक वासी और सिनेमा आदि दुष्कृत्यो मे फसे माँ बाप का सत्सग अभिप्रेत नहीं है। सत्सग ता ईमानदार सुशील और आदर्शवान् माता पिता और आचार्यों से व्यक्तियो का निर्माण होता है। इसलिए मुक्ति के लिए सबसे पहले इनका ही सत्सग करना चाहिए। माता, पिता और आचार्य में क्रमश माता का स्थान सर्वश्रेष्ठ है और उसके बाद पिता तथा पिता के बाद आचार्य या गुरु का है। गुरु का स्थान तीसरा होने पर भी भारतीय सम्प्रदायों, सूफी आदि मतों में अत्य

(शेष पृष्ठ १५ पर)

भारत माता और शिक्षक

[श्री आर०डी० प्रभाकर चण्डीगढ़]

भारत माता पुकार रही,
बन्धन तो मेरा तोड़ दिया,
नगी भूखी और प्यासी हू,
दामन मेरा क्यो छोड़ दिया?

इसमे वीरो की शान कहाँ,
माता का ऊचा नाम कहाँ,
मैं फिर चेतावनी देती हू,
माता का तुमको मान कहाँ?

मान मेरा उन वीरो को,
राणा जैसे रणधीरो को,
अकबर ने ललकारा था,
ले गरजा था शमशीरो को।

अशिक्षित देश की जनता है,
छाई हुई निर्धनता है,
बेकारी ललकार रही,
क्या वीरो का सीना ठनता है?

जाति पाति दीवार खड़ी,
ले हाथों मे तलवार अड़ी,
इससे टक्कर वह ले सकता,
जाने जो पिरोना प्रेम लड़ी।

नैतिकता का नाम नहीं,
धर्म कर्म ईमान नहीं,
इस कारण तुम जानते हो,
सच्ची शिक्षा का दान नहीं,

माना शिक्षण कठिन महान
होता समाज में है अपमान,
पर क्या इसे भुला दोगे,
करना है भारत का नवनिर्माण।

जनता को तुम पर आशा है,
बड़ी बड़ी अभिलाषा है,
पर तेरी कर्तव्य हीनता,
देना उभाड़ निराशा है।

जनता ता दुखो की मारी है,
जिम्मेवारी तुम पर सारी है,
भारत निर्माता बनने का,
तू ही सच्चा अधिकारी है।

शिक्षक अपने को पहचान,
अपने पर कर तू अभिमान,
ऊची हो फिर तेरी शान,
इसी में भारत मा का मान।

★

संगीत

उजाला न रूठे अधेरा न आये।
नया युग सबेरा करे मुसकाये ॥

कली धूप पीकर पली जो पवन में।
खिली है हमारे तुम्हारे नयन में ॥
धरा प्यार की लोरियाँ गुनगुनाये।
हवा का हिंडोला हृदय को झुलाये।

हवा मे हिलें धान की पौध झूमें।
बड़े प्रेम से एक को एक चूमे ॥
नदी का बने जल मधुर से मधुरतम।
कि नाचे लहर की गुजरिया छमाछम।

गगन के करोड़ो चमकते सितारे।
हमारे दिलो पर रहे प्राण वारे ॥
दिगम्बर दिशाये स्वयबर रचाये।
भुजायें पुरुष की प्रकृति का सजाये ॥

परित्याग कर दे भिखारी पराश्रय।
कुदाली चलाये न बैठे निराश्रय ॥
करोड़ो करो से बहे कर्मधारा।
हमारी प्रगति का गगन हो किनारा ॥

आचार्य मेधार्थी एम०ए०, एल०टी०,
११ बी०, बापूपुरवा कालोनी, कानपुर

गीत

नई जिन्दगी में अपना,
हम नव निर्माण करेंगे।

स्वप्न रेशमी टूट चुका है,
टूट रहा पशुता का कारा।
भाग्य रेख का यह उभार रे,
फूटेगा अमृत की धारा।

धर्म और विज्ञान शील,
हम भू का भार हरेंगे।

शुभ्र ज्योति कण कण मे बिखरे,
है नूतन ससार हमारा।
आर्य वीर सतान प्रवर हम,
'मा फलेषु' का गूजे नारा।

दुर्दिन मे, कर्तव्य पथ पर,
अगणित पैर बढे गे।
नया जिन्दगी में अपना,
हम नव निर्माण करेंगे ॥

—शिवानन्द 'शिवम्'
सवन, रतसर, बलिया

●

शहीदों का महत्व

★ धर्मचन्द्र वर्मा 'धर्म' लखनऊ

वीर मिट जाते 'धर्म' वेदी पै शहीद होके,
किंतु याद उनकी अमर बन जाती है।
युग युग जनता लुटाती निज श्रद्धा शब्द,
प्रेम में विभोर हो गुणानुवाद गाती है॥

भूरि भूरि करती प्रशसा है सुसाहस की,
देवता समान मानि भक्ति दरसाती है।
कर्म का महान् फल होता प्राप्त त्याग से ही,
हिना पिस जाने पर ही तो रग लाती है॥

ओं समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम् । समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥ ऋ० १०।१९१।३

हे मनुष्यों ! तुम्हारे विचार समान हों, तुम्हारी सभा एक हो, तुम्हारे मन और चित्त एक से हों। मैं तुम्हें एक जैसा उपदेश करता हूं, मैं तुम्हें सब श्रेष्ठ कार्य मिलकर करने का आदेश देता हूं।

आर्यमित्र

लखनऊ—१३ जुलाई १९५८, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०५८

दयानन्द विश्वविद्यालय

★

आर्य समाज ने अपना आन्दोलन विश्व के अज्ञानान्धकार को नष्ट करने के लिये आरम्भ किया था, अज्ञान नाश का सर्व श्रेष्ठ साधन शिक्षा है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य पशुत्व से ऊपर उठता और मानवता के गुणों को धारण करने योग्य बन पाता है। इसीलिये आर्य समाज ने अपने आरम्भ काल से ही शिक्षा क्षेत्र में क्रान्ति करने का निश्चय किया। अपनी [illegible] का बहुत बड़ा भाग आर्य नेताओं ने शिक्षा-क्रान्ति में लगा दिया। उनकी दृष्टि में विदेशी दासता से मुक्ति का साधन शिक्षा थी, अन्ध विश्वास और रूढ़ियों से भारतीय समाज को उन्मुक्त करने का साधन शिक्षा थी और साथ ही साथ आर्य समाज आन्दोलन के लिये योग्य व्यक्तियों की परम्परा कायम रखने का साधन शिक्षा थी। अपने इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये आर्य समाज ने एक देशव्यापी रचनात्मक आन्दोलन आरम्भ कर दिया और शीघ्र ही देश के कोने-कोने में दयानन्द विद्यालय गुरुकुल, दयानन्द कन्या पाठशाला आदि शिक्षणात्मक संस्थाओं का जाल बिछ गया। आर्य जन इन संस्थाओं के द्वारा अपने आन्दोलन की सफलता के स्वप्न लेने लगे और अपनी सम्पूर्ण शक्ति से उनके उन्नयन में जुट गये।

समय समय पर शिक्षा नीतियों के सम्बन्ध में आपसी मतभेद भी प्रकट हुए परन्तु आर्य समाज अपने शिक्षा प्रचार अभियान में जुटा रहा, राष्ट्र के स्वाधीनता आन्दोलन में इसकी शिक्षा-संस्थाओं की अभिज्ञता और स्वाधीनता के पश्चात् राष्ट्र के नव निर्माण में उनके द्वारा शिक्षित दीक्षित व्यक्तियों का सहयोग किसी भी संस्था के लिये गर्व का कारण हो सकता है। आज भी जबकि देश के नागरिक उद्बुद्ध होकर राष्ट्र के नव निर्माण में सहायक बनने की भावना से शिक्षा-संस्थाओं की स्थापना में संलग्न हैं आर्य समाज अपने इस रचनात्मक कार्य में किसी से पीछे नहीं है। अब भी प्रतिवर्ष अनेकों गुरुकुलों दयानन्द विद्यालयों महाविद्यालयों की स्थापनायें हो रही हैं इस प्रकार शिक्षा क्रान्ति के अभियान में आर्य समाज को आज भी सर्व प्रथम पद का गौरव प्राप्त है।

इस स्वर्णिम अतीत और वर्तमान के साथ हमें अपने इस कार्य के भविष्य के विषय में भी सतर्क रहना चाहिये। शिक्षा का अन्तिम अर्थ है विचारों का परिमार्जन अर्थात् विशुद्धीकरण, इसी आधार पर शिक्षा को विचारों की जननी कहा गया है और यह सिद्धान्त स्वीकार किया जाता है कि शिक्षा पर राज्य का नियन्त्रण नहीं होना चाहिए अपितु राज्य को शिक्षा-विकास में सहायक का कार्य करना चाहिये। शिक्षा के सम्बन्ध में राज्य की इस स्थिति का अंग्रेजों ने भारत में कहाँ तक पालन किया यह विवादास्पद प्रश्न है क्योंकि उन्होंने यहां की शिक्षा को इस प्रकार का रूप दिया कि उससे गुलाम मनोवृत्ति के लोग पैदा हुए परन्तु यह निस्सन्देह स्वीकार किया जाना चाहिये कि राज्य के अतिरिक्त जिन सामाजिक संस्थाओं ने शिक्षा संस्थाओं को चलाना चाहा उनमें अंग्रेज शासकों ने हस्तक्षेप नहीं किया। आर्य समाज के डी० ए० वी० कालेजों का प्रारम्भिक रूप और वृन्दावन, कांगड़ी, ज्वालापुर आदि गुरुकुलों की स्वतन्त्र शिक्षा पद्धतियां इस कथन की साक्षी हैं। गांधी जी के असहयोग आन्दोलन की उपज के रूप में काशी विद्यापीठ, जामिया मिलिया देहली आदि भी इसी प्रकार की स्वतन्त्र शिक्षा संस्थायें रहीं, कवीन्द्र की विश्व भारती भी इसी प्रकार का एक परीक्षण कही जा सकती है।

जब ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत ये शिक्षा संस्थायें अपने स्वतन्त्र अस्तित्व और शिक्षा पद्धतियों को स्थिर रख सकती हैं तब यह समझ सकना सामान्य बुद्धि से परे की बात है कि भारत सरकार क्यों इस प्रकार की शिक्षा संस्थाओं के स्वतन्त्र अस्तित्व को खतरे में डालना चाहती है।

भारत सरकार ने विश्वविद्यालय अनुदान कमीशन एक्ट बनाकर इस प्रकार की शिक्षा संस्थाओं के भविष्य को खतरे में डाल दिया है। कवीन्द्र की विश्व भारती आज राजकीय विश्व विद्यालय बन चुकी है और हमारे डी० ए० वी० कालेज भी सम्बन्धित राज्यों के विश्व विद्यालयों से सहयोग कर रहे हैं परन्तु गुरुकुलों विद्यापीठों और जामिया मिलिया आदि जैसा राष्ट्रीय आन्दोलन के लिये कार्यकर्ता उत्पन्न करने वाली संस्थाओं का स्वतन्त्र अस्तित्व संकट में है।

भारत सरकार के इस विधेयक का अर्थ यह है कि बिना राज्य की स्वीकृति के कोई संस्था अपने को न विश्व विद्यालय लिखे और न उपाधि प्रदान करे। इसे हम शिक्षा पर राज्य का कठोर नियन्त्रण समझते हैं जिसे अप्रत्यक्ष रूप से साम्यवादी मनोवृत्ति ही समझा जाना चाहिये।

इस अवस्था में हम आर्य जनता से दयानन्द विश्वविद्यालय की स्थापना के लिये एक व्यापक आन्दोलन आरम्भ करने का निवेदन करते हैं। इस दिशा मे आर्य समाज के इतिहास में अनेक बार प्रयत्नों की कहानी हमने सुनी है परन्तु सफलता क्यों न मिली यह एक रहस्य ही है। इस बार यह कार्य बड़ी सजीदगी और तत्परता के साथ किया जाना चाहिए।

सरकार हमारे शिक्षा स्वातन्त्र्य की हत्या न कर सके इसके लिये हम प्रबल जनमत तैयार करें। आन्तरिक रूप से आर्य समाज के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री मिल कर बैठें और आगामी पीढ़ी के लिए स्वस्थ परम्परा कायम कर दयानन्द विश्व विद्यालय का महान् कार्य उसे सौंपा जाय। इस विश्व विद्यालय का आधार भूत आदर्श वैदिक धर्म के सिद्धान्त हों तथा प्रकाश स्तम्भ ऋषि दयानन्द हो। आर्य बन्धुओं उठो और समय की गति को पहचानते हुए संगठन के सूत्र में बंध जाओ। आर्य समाज के समस्त भारत में व्याप्त डी० ए० वी० कालेज, के आधुनिक शिक्षा पद्धति के स्वरूप का परिमार्जन करते हुए उन्नति करें और गुरुकुल प्राचीन शिक्षा पद्धति के स्वरूप का नवीकरण करते हुए शिक्षा क्षेत्र में पथ प्रदर्शन करें। इस प्रकार दोनों शिक्षा पद्धतियों का समन्वय भी हो सकेगा, हम अतीत और वर्तमान को साथ लेते हुए सुन्दर भविष्य का स्वतन्त्रतापूर्वक निर्माण कर सकेंगे।

कार्य महान् है पर हमें विश्वास है कि इस बार समाज के विद्वान् नेतागण इस महान् कार्य को अवश्य सम्पन्न कर सकेंगे। प्रभु इस कार्य को सफलता प्रदान करें। आर्य समाज का भविष्य बहुत कुछ इसी सफलता पर निर्भर है। आशा है आर्य जन इस प्रश्न पर गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे।

सम्पादकीय टिप्पणियां

स्वामी आत्मानन्द जी की प्रधान मन्त्री नेहरू जी से अपील

पंजाब में हिन्दी का प्रश्न दीर्घकालीन संघर्ष के पश्चात् आज भी एक गम्भीर प्रश्न बना हुआ है। स्वा० भाषा स्वा० समिति की संघर्ष समिति ने आन्दोलन को जारी रखने की घोषणा कर इस सम्बन्ध में जनमत की भावनाओं की अभिव्यक्ति की है। संघर्ष से पूर्व शान्ति-वार्ता की सम्भावनाओं को दृष्टि में रखते हुए श्रद्धेय स्वामी आत्मानन्द जी ने एक वक्तव्य द्वारा प्रधान मन्त्री श्री नेहरू से अपील की है कि वे पंजाब में हिन्दी आन्दोलन के सम्बन्ध में हस्तक्षेप करें और हिन्दी के सम्मान के लिये वार्तालाप करें। स्वामी जी की इस अपील का प्रधान मन्त्री किस रूप में उत्तर देते हैं यह तो वे ही निर्णय करेंगे। पर उन्हें इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि सार्वजनिक रूप से उन्होंने स्वीकार किया था कि भा० स० की ९० प्रतिशत मांगें स्वीकार हो चुकी हैं और १० प्रतिशत को भी बातचीत द्वारा सुलझाया जा सकता है। आन्दोलन स्थगित हुए ६ मास हो चुके हैं, आर्यसमाज काफी पर्याप्त प्रतीक्षा कर चुका, इसलिए

(शेष अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

समय रहते नेहरू जी इस समस्या को सुलझाने का प्रयत्न करें अन्यथा इस बार का अभियान उग्र और भयकर होगा। बुद्धिमत्ता इसी में है कि पं० नेहरू सरकार की ओर से पहल कर और समस्या का समाधान करे। आशा है स्वामी जी की अपील पर प्रधान मन्त्री के नाते पं० नेहरू गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे।

क्या पंजाब में हिन्दी प्रथम है

पंजाब के मुख्य मन्त्री सरदार करों अपने वक्तव्यों द्वारा घोषणा कर रहे हैं कि पंजाब में हिन्दी को प्रथम स्थान प्राप्त है परन्तु उनका यह कथन सचाई से उतना ही दूर है जैसे खरगोश के सिर पर सींग।

उनका कथन एक प्रकार से ठीक हो सकता है जबकि वे प्रथम स्थान का अर्थ राज्य सरकार के साथ पत्र व्यवहार की भाषा लेते हों अर्थात् पंजाब से दिल्ली सरकार की चिट्ठियों का उत्तर सबसे पहले हिन्दी में दिया जायगा बाद में दूसरी भाषाओं में अंग्रेजी उर्दू पंजाबी में। हमारी सम्मति में प्रथम स्थान उस भाषा का होना चाहिए जो मातृ भाषा हो और शिक्षा का माध्यम भी। क्या इस स्थिति में सरदार करों हिन्दी को स्थान देने के लिए तैयार हैं? कदापि नहीं। उनकी तथा कथित राष्ट्रीय एवं असाम्प्रदायिक मनोवृत्तियों के सामने सच्चर फार्मूला, रीजनल फार्मूला मोजना लाइन बनकर अड़ गए हैं। उनको विध्वंस करने की शक्ति न करों में है और न पं० नेहरू में और जब तक वह ताकत न होगी हिन्दी का पंजाब में अपमान होता रहेगा।

इमरे नागी का बलिदान

हंगरी की रक्त क्रान्ति की स्मृतियाँ अभी हृदयों में ताजी ही थीं कि उस क्रान्ति के नेतृत्व के आरोप में हंगरी की साम्यवादी सरकार ने इमरे नागी और उनके साथियों को मृत्यु दण्ड दे दिया है। मानवता इस समय जिस विनाश के संकट में से गुजर रही है उससे बचते हुए विश्व शान्ति और मानवता के नाम पर पंचशील के समर्थक राष्ट्रों की इस प्रकार की घटनाओं से बचना चाहिए। पर तु भारत में पंचशील के समर्थन की घोषणाओं के द्वारा जनता को अपने पक्ष में करने वाले रूसी नेता नागी के इस बलिदान के बाद किस मुंह से विश्व शान्ति और पंचशील के समर्थकों की श्रेणी में स्थान पा सकेंगे। इस मृत्यु दण्ड को विचार स्वातन्त्र्य पर साम्यवादी आक्रमण की ही संज्ञा दी जा सकती है। स्टालिन के पश्चात् श्री ख्रुश्चेव से जो उदारता की आशा थी वह धूमिल हो गयी है और इस प्रकार विश्व में सन्देह का वातावरण दीर्घ जीवी हो गया है। इस कार्य की समस्त विश्व में भर्त्सना की जानी चाहिये।

अन्तरङ्ग सदस्यों की कर्त्तव्य परायणता

सभा के सम्माननीय प्रधान श्री पं० हरिशंकर शर्मा ने उपप्रधानों के लिये कार्यों का उल्लेख करते हुए अपनी विज्ञप्ति में टिप्पणी की है कि वे विशेष रूप से बताएं कि किस अन्तरंग सभासद और अधिकारी ने क्या सहयोग दिया। यह एक प्रेरणा सूत्र है जिसे प्रत्येक अन्तरंग सभासद को हृदयंगम कर लेना चाहिए और अपने कर्त्तव्य को समझते हुए अपने क्षेत्र में आर्य समाज के संगठन और आन्दोलन को दृढ़ बनाने में जुट जाना चाहिए। सामान्य आर्य जनता में यह विश्वास घर करता जाता है कि निर्वाचन के समय जो लोग अन्तरंग सदस्य बन जाते हैं वे वर्ष भर कुछ काम नहीं करते। हम जनता के इस विश्वास को नष्ट करना होगा और वह तभी सम्भव है जब प्रत्येक अन्तरंग सदस्य निश्चित कार्य करके दिखावे। हमें पूरा विश्वास है कि यदि प्रत्येक सदस्य अपना कर्त्तव्य पूरा करे तो न गुरुकुल के लिये ब्रह्मचारियों की कमी रहे, न आर्यमित्र के लिए ग्राहकों की, वेद प्रचार के लिए धन की प्राप्ति तो होगी ही समाज के जीवन में एक नई हलचल मच जायगी। क्या हम अपने प्रधान के संकेत को स्वीकार कर कर्त्तव्य पालन आरम्भ कर देंगे।

स्व० माता रामेश्वरीदेवी जी

आर्य जगत् की माता रामेश्वरी देवी जी के १० जून को लू लगने की बीमारी से आकस्मिक निधन का समाचार पढ़कर हार्दिक दुःख है। माता जी बड़ी शान्त प्रकृति की रचनात्मक कार्यों में रुचि रखने वाली समाज सेविका थीं। आपके पति सीतापुर निवासी स्व० श्री शम्भूनाथ जी के उत्साहपूर्ण तप व्रत जीवन से ऐसा कौन आर्य है जो परिचित न होगा। तदमीलन्दार होते हुए भी आपने धार्मिक एवं राष्ट्रीय प्रगतियों में पर्याप्त भाग लिया था। अन्तिम समय में तो आप स्व० पं० मोतीलाल नेहरू स्व० जमनालाल बजाज, श्री पं० गोविन्द बल्लभ पन्त आदि के साथ राष्ट्रीय आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेते रहे और माता जी भी उनके साथ कदम से कदम मिला कर चलती रहीं। स्व० शम्भूनाथ जी रचनात्मक कार्यों में विश्वास रखते थे और आर्य समाज से अपना घनिष्ठ सम्पर्क होने के कारण उन्होंने अपनी सम्पत्ति का बहुत बड़ा भाग आर्य समाज (आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश) को दान में देकर अपने और अपनी पत्नी के के नाम से भुवाली (नैनीताल) में श्री शम्भूनाथ रामेश्वरी देवी सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना की। उनका यह स्मारक आज भी जनता की सेवा कर रहा है। पर्वतीय क्षेत्र में ज्ञान प्रसार एवं अन्य सभी प्रकार की सामयिक प्रगतियों के केन्द्र के रूप में यह प्रशंसनीय कार्य कर रहा है।

स्व० शम्भूनाथ जी के पश्चात् माता जी इस पुस्तकालय की संरक्षिका रहीं प्रभु ने आज हमसे उन्हें भी छीन लिया। इस अवसर पर हम उनके आदर्श जीवन के लिए समस्त आर्य जगत और विशेष कर प्रतिनिधि सभा की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवार श्री बद्रीनाथ जी बी० ए०, एल० एल० बी० जुडीशियल मजिस्ट्रेट आगरा आदि के साथ शोक समवेदना प्रकट करते हैं। प्रभु दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें शोक संतप्त परिवार को धैर्य धारण की शक्ति प्राप्त हो, यही प्रभु से प्रार्थना है।

★

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ने आन्दोलन को जारी रखने की घोषणा करके आन्दोलन का नया अध्याय आरम्भ कर दिया है। संघर्ष में पहले आक्रमण में ही सफलता मिल जाय यह प्रायः असम्भव ही होता है। इस दृष्टि से हम पिछले छः मास को शक्ति संचय का समय मानकर आगे के लिये और भी दृढ़ता के साथ तैयार हो जाना चाहिए। संघर्ष का स्वरूप क्या होगा इस विषय में अभी कुछ कहना कठिन है। आन्दोलन को गतिमय बनाये रखने के लिए संघर्ष समिति ने ४० जुलाई का प्रतिज्ञा दिवस, ६ अगस्त को विरोध दिवस १६ अगस्त को बहुअकबरपुर दिवस और २४ अगस्त को फिरोजपुर हत्याकाण्ड तथा वीर सुमेरसिंह शहीद दिवस मनाने के लिए आर्य जनता और हिन्दी प्रेमियों से अपील की है। हम इन दिवसों को व्यापक रूप से मनाने का निवेदन करते हैं।

हमारे आन्दोलन का भय पंजाब के मुख्य मन्त्री को भयभीत करने लगा है और वे हिन्दी को पंजाब में प्रथम बतलाने का झूठा प्रयत्न कर रहे हैं परन्तु हम इस बार दृढ़ निश्चय कर संघर्ष क्षेत्र में आयेंगे और अन्तिम सफलता प्राप्त करके ही विश्राम लेंगे। आर्यों के लिए वेद की प्रेरणा है—

कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।

मौरिशश के युवकों को स्वामी ध्रुवानन्द जी द्वारा वेद का सन्देश

आर्य समाज रोशन्वार मौरिशश की प्रार्थना पर पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज दो सप्ताह के लिए यहाँ पधारे। आपने दोनों दिन यहाँ 'वेद क्या सन्देश देता है' इस विषय पर भाषण दिया। उपदेश के लिए निर्मित बड़ा पण्डाल श्रोताओं से भरा हुआ था। दूसरे दिन और भी अधिक व्यक्ति स्वामी जी के उपदेश सुनने आये स्वामी जी के उपदेश का यहाँ बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। निकट भविष्य में पुनः एक सप्ताह के लिये प्रचार की योजना बनाई जा रही है।

श्री राव जी के भाजे आन्ध्र विधान परि. के सदस्य हुए

आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ के छोटे भाजे श्री कालोजी नारायणराव एडवोकेट हाईकोर्ट हैदराबाद, आन्ध्र विधान परिषद् के सदस्य चुन लिये गये हैं। आप अध्यापक क्षेत्र से खड़े हुए थे। इस विजय पर आर्य जगत उन्हें बधाई देता है।

श्री रामकृष्ण वर्मा का निधन

—आर्यावर्त मासिक के भूतपूर्व सम्पादक आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश के उप मन्त्री आर्य जगत के यशस्वी कार्यकर्त्ता वैदिक धर्म के परम उपासक श्री रामकृष्ण जी वर्मा एम० ए० साहित्य रत्न का ३० जून की रात्रि को ५ बजकर ४० मिनट पर टाइफायड से जबलपुर के अस्पताल में देहावसान हो गया। वर्तमान में वे मध्य प्रदेश शासन के ग्राम सुधार नामक पत्र के सम्पादक थे। आर्यमित्र परिवार ने आपके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया। लखनऊ की कई आर्य समाजों ने आपके निधन पर शोक प्रकट किया। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश के लिए आपका निधन वज्राघात सा ही है।

—आ० स० सीतापुर ने अपने सभासद् तथा आर्यमित्र दैनिक के भूतपूर्व सह सम्पादक श्री रामलाल आर्य एम० ए० के पिता श्री छेदालाल जी के असामयिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया।

प्रभु से प्रार्थना है कि उनके शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य तथा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा पर आर्थिक संकट !

समास्थ आर्य्यसमाजों से विनम्र विनती

आर्य्य जनता से सहयोग-भिक्षा

आइए और सहायता के लिये हाथ बढ़ाइए !

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा के गत बृहदधिवेशन के अवसर पर, १८ मई १९५८ ई० को, हम दोनो व्यक्ति, सर्व सम्मति से, सभा के प्रधान और मन्त्री निर्वाचित हुए हैं। अन्य अधिकारियो और उप अधिकारियो का चुनाव भी प्राय सर्व सम्मति से ही हुआ है। हम लोग आर्य्यसमाज के पुराने सेवक होते हुए भी, अपने इन उत्तरदायित्वपूर्ण पदो के लिये सर्वथा नये हैं। प्रधान तो कल्पना-जगत् मे विचरने वाला कलम का मामूली मजदूर मात्र है। उसके कमजोर कन्धो पर, न जाने क्या समझ कर, आग्रह पूर्वक, इतना भारी भार लाद दिया गया है। इसे वह अपने कृपालुओं का अनुग्रह और मित्रों का स्नेह ही कह सकता है, और कुछ नहीं। प्रधान के पास देश प्रदेश के अनेक आर्य्य नेताओ और आर्य्य विद्वानो ने जो बधाई सूचक कृपा पत्र भेजे हैं, उनके प्रति वह, इन पंक्तियो द्वारा, हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता है।

बृहदधिवेशन मे समवेत समस्त प्रतिनिधि भाई बहनो की अपार अनुकम्पा के लिये धन्यवाद देते हुए, हम लोग परम प्रभु परमात्मा से प्रार्थी हैं कि वह हम इस भारी भार को वहन करने की शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान करे। उत्तर प्रदेशीय आर्य्यसमाजो और आर्य्य जनता का सुदृढ़ सहयोग एवम् सबल साहाय्य ही हम अबलों का बल और अशक्तो की शक्ति है। इसी बल के आधार और शक्ति के आश्रय से, सम्भव है, हम लोग सभा समाजो की यत्किंचित् सेवा करने मे कुछ समर्थ हो सके।

हाँ, यह बात हम पहले ही बता देना चाहते हैं कि यदि आर्य्यसमाजो और आर्य्य जनता ने हमे अविलम्ब अपना सहयोग और साहाय्य प्रदान न किया तो इसे हम अपनी अयोग्यता, अक्षमता, असमर्थता, अकुशलता तथा अनुभवहीनता समझेंगे और शीघ्रातिशीघ्र अन्य सुयोग्य, समर्थ, अनुभवी, कुशल एवम् प्रभावशाली व्यक्तियो के लिये, अपने स्थान रिक्त कर देने मे, गर्व गौरव अनुभव करेंगे।

हाल ही में हमने तीन-चार दिन, लखनऊ मे रह कर, सभा की सारी आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया तो उसे अत्यन्त चिन्ताजनक पाया। सभा विभागो मे दरिद्रता का दुर्दृश्य दिखायी दिया। उपदेशको और प्रचारको के वेतनादि सम्बन्धी सहस्रों रुपये चार पाच वर्षों से प्राप्तव्य चले आ रहे हैं। उन्हे तीस पैंतीस हज़ार रुपयों का भुगतान करना है। यही दशा वृन्दावन गुरुकुल की है। 'आर्य्यमित्र' और 'आर्य्यभास्कर प्रेस' भी घाटे की घाटी मे घिरे, बड़ी कठिनता से, अपने दिन पूरे कर रहे हैं। निदान सभास्थ ऐसा कोई विभाग नहीं जिसकी आर्थिक स्थिति भयंकर न हो और धनाभाववश जिसकी गति प्रगति न रुक रही हो।

इस समय सबसे अधिक और अनिवार्य आवश्यकता धन की है। धन से ही सब साधन जुट जाते हैं। यदि सभा के अधिकारी, उप अधिकारी, अन्तरङ्ग सदस्य प्रतिनिधि सभासद् तथा आर्य्यसमाजो के अधिकारियो और सदस्यो ने इस ओर शीघ्र ही सगठित उद्योग न किया तो परिणाम बड़ा भयङ्कर हो सकता है। सभा के अधिकारियों, अन्तरङ्ग सदस्यो और प्रतिनिधि महाशयो का तो अपने-अपने क्षेत्रो मे, तुरन्त ही सहायतार्थ कार्य प्रारम्भ कर देना चाहिए। एतदर्थ आर्य्यसमाजो तथा आर्य्य सदस्य मात्र का सहयोग प्राप्त करना तो अति आवश्यक है।

एक सहस्र से अधिक आर्य्यसमाज प्रतिनिधि सभा मे प्रविष्ट है, परन्तु बृहदधिवेशन मे, ढाई तीन सौ के लगभग ही प्रतिनिधि सम्मिलित होते हैं। यह कम आश्चर्य और खेद की बात नहीं है। यदि प्रत्येक आर्य्य समाज से प्रतिनिधियो का औसत एक एक भी मान लिया जाय तो भी कम से कम, ग्यारह सौ प्रतिनिधि तो सभा के बृहदधिवेशन मे प्रतिवर्ष सम्मिलित होने ही चाहिए। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि सभा से सम्बद्ध आर्य्यसमाजो मे बहुत बड़ी शिथिलता है, जो अति शीघ्र दूर होनी चाहिए। शिथिल आर्य्यसमाजो में जीवन सचार किया जाए और जिन ग्रामो या नगरो मे आर्य्यसमाज नहीं है, उनमे वे स्थापित किये जायें। इसके लिये भी प्रत्येक तहसील और जिले के आर्य्यों को सगठित रूप से प्रचुर प्रयत्न करना पड़ेगा। ऐसा किये बिना काम नहीं चल सकता।

साधारण विभाग व्यवस्था और सामान्य कार्यों के अतिरिक्त इस वर्ष सभा को कुछ विशेष आयोजन भी करने हैं। इनमे मुख्य हैं–'श्रद्धानन्द कुटी उद्घाटन', 'आर्यमित्र' हीरक जयन्ती', 'प० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय अभिनन्दन'। साथ ही सभा भवन के कूप में मोटर लगाना है, उपदेशको का वेतन चुकाना है गुरुकुल की आर्थिक स्थिति ठीक करना है। इन सब कार्यों की सम्पन्नता के लिये, आर्य्यसमाज समष्टि से ही सादर सविनय सहयोग भिक्षा के लिये झोली पसारना हम अपना कर्तव्य समझते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य मार्ग ही क्या है! यदि उत्तर प्रदेश के आर्य्य भाई बहन क्रियात्मक सहयोग के लिये सोत्साह उदारता का हाथ बढ़ाए तो सारी आर्थिक कठिनाइयां अति शीघ्र दूर हो सकती हैं और नवीन एवम् महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम की पूर्ति द्वारा राष्ट्र की बहुत बड़ी सेवा की जा सकती है।

आज देश मे नैतिक उत्थान की अत्यन्त आवश्यकता है। वैयक्तिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, व्यावहारिक सभी क्षेत्रों मे हमारा नैतिक स्तर बड़ी बुरी तरह गिर रहा है। इसके उत्थान के लिये आर्य्यसमाज की लेखनी और वाणी को अग्रसर होना पड़ेगा। और उन सब सिद्धान्तो तथा साधनो का प्रचार प्रसार करना होगा जिनसे देश का चरित्र बल ऊंचा उठ सकता है। एक बात अवश्य है, देश का नैतिक स्तर उठाने से पूर्व आर्य्य कार्यकर्ताओ और आर्य्यसमाजो का प्रत्येक दृष्टि से अपना स्तर ऊँचा करना होगा। पद लोलुपता,

(शेष अगले पृष्ठ पर)

महर्षि दयानन्द चतुर्थमास आश्रम द्रोणासागर तीर्थ काशीपुर (नैनीताल)

काशीपुर नगर से लगभग २ फर्लांग पूर्व की ओर द्रोणासागर के तट पर आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती बद्रीनाथ की यात्रा पूर्ण होने पर रामनगर मण्डी होते हुए इस प्रसिद्ध स्थान पर क्वार मास के अन्त मे सम्वत १९१७ विक्रमी मे पधारे और चतुर्मास कार्तिक, अगहन, पूस, माघ यहीं विश्राम किया। उस समय स्वामी जी की आयु ३२ की थी। नगर के विद्वान् पण्डित श्री सदानन्द जी तथा श्री गोवरधन जी भट्ट के पिता आदि विद्वानो का स्वामी जी से बराबर शास्त्रार्थ होता रहा, कुछ समय मे ही यहाँ के शिक्षित महानुभावो पर स्वामी जी की विद्वत्ता का भारी प्रभाव पड़ा।

श्री भट्ट जी स्वामी जी के अनन्य भक्त बन गये और उन्होंने स्वामी जी के आश्रम के लिए द्रोणसागर के तट पर एक पक्की बारहद्वारी बनवा दी जिसमे स्वामी जी ऋतुकाल में रहे थे जैसा कि उनके जीवन चरित्र पृष्ठ स० ३९ छठा सर्ग श्री सत्यानन्द जी के सम्वत् १९८१ मे अंकित किया है। (रामपुर स्थान गलती से लिख गया है वास्तव मे वह स्थान रामनगर है)।

इस स्थान का महत्व इस कारण और भी बढ़ जाता है कि इसी स्थान पर स्वामी जी महाराज के हृदय मे देह त्याग की भावना के स्थान पर यह विचार उत्पन्न हुआ कि शरीर त्याग से कोई लाभ नहीं है, अपितु ज्ञान उपार्जन करके ससार का उपकार करना ही इस शरीर का वास्तविक धर्म है। यदि इस स्थान की तुलना गया के उस बोधि वृक्ष से की जावे जहा श्री गौतम बुद्ध जी को वास्तविक ज्ञान उत्पन्न हुआ था तो कोई अत्युक्ति न होगी। इसलिए ऐसे स्थान पर उस महर्षि का स्मारक बनाना केवल आर्य समाजियो का ही कर्तव्य नहीं अपितु हिन्दू मात्र को इस यज्ञ मे सहयोग देने की आवश्यकता है, अपने पूर्वजो के स्मारको से ही आने वाली सन्तति को प्रेरणा मिला करती है।

काशीपुर आर्यसमाज ने दि० ४ अप्रैल १९५४ सम्वत् २०१० वि० को नगर के विख्यातपूर्ण महानुभावो की उपस्थिति मे इस तीर्थ स्थान पर आर्यसमाज का स्थापना दिवस समारोह श्री ठा० गोविंदसिंह जी मन्त्री आर्यसमाज की अध्यक्षता मे सफलतापूर्वक मनाया। श्री रघुवीरसिंह एम०ए०, बी०टी० प्रिंसिपल सुरजन नगर इण्टर कालेज का मनोहर भजन हुआ। पाठशाला की कन्याओ ने निबन्ध तथा कविताए पढ़ी और नगर के अन्य महानुभावो के ओजस्वी भाषण हुये। शहर मे विशाल जलूस निकाला गया।

काशीपुर आर्यसमाज इस स्थान को शीघ्र ही रमणीक बनाना चाहता है जिसमे लगभग ५० हजार रुपये का व्यय इस समय समझा जाता है। उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा से प्रार्थना है कि इस स्थान पर विशाल 'दयानन्द आश्रम' के निर्माण कार्य मे आर्यसमाज काशीपुर की सहायता करे और तुरन्त इसकी व्यवस्था के लिए एक समिति का निर्माण करे जिसमे सभा के द्वारा नियुक्त कोई अधिष्ठाता, श्री ईश्वरदयालु जी सभा मुख्य उप मन्त्री, श्री उमेशचन्द्र स्नातक अन्तरङ्ग सदस्य, जिला अल्मोड़ा व नैनीताल के निरीक्षक श्री बाबूलाल आर्य एव इन्द्र वर्मा एम०ए०

(शेष अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

अधिकार लिप्सा, स्वार्थ प्रवृत्ति, अकर्मण्यता, मन्द मनोरथता नराश्य भावना आदि नष्ट करनी होगी। लेखनी तथा वाणी मे बड़ा बल होता है। ऋषि दयानन्द ने इन्हीं दोनो शक्तियो द्वारा सफलता प्राप्त की थी। इन्हीं दोनो साधनो ने भारत वसुन्धरा को पराधीनता पाश से मुक्त कराया है। जिस लेखनी-वाणी ने आर्य्य सिद्धान्तों के विस्तार के लिए इतनी शक्ति सामर्थ्य दी, वही भविष्य मे भी पूर्ण सहायक सिद्ध होगी। सद्भावना, चरित्र बल और कर्मण्यता से ही यह शक्ति सबल एवम् सफल होती है। कोरी कलम घिसौअल और थोथी व्याख्यानबाज़ी मे नहीं। किसी सिद्धान्त प्रचार का स्पष्ट अर्थ यह होता है कि जिन कार्यों को श्रोताओं से पालन कराने के लिये आग्रह किया जाता है उन्हे स्वयम् प्रचारक भी पूर्ण रीति से पालन करे और अपना उदाहरण दूसरो के सामने रखे।

आज इस विनय पत्रिका के साथ आपकी सेवा मे, नैतिक उत्थान सम्बन्धी एक विशेष कार्य क्रम भेजा जा रहा है, इसे अपनाइये और क्रियान्वित कीजिए। समाज संशोधन की दिशा में, आर्य्य समाज ने बड़ी दृढ़ता और उत्साहशीलता से काम कर महती सफलता प्राप्त की है। यदि उसी प्रकार अब यह आन्दोलन भी प्रारम्भ किया गया तो चरित्र सम्बन्धी सारी गन्दगी दूर होकर, निर्मल नागरिकता के दिव्य दर्शन होंगे। राजनीति मे सदाचार और धर्म के मौलिक सिद्धान्त समाविष्ट किये जा सकेंगे जैसा कि महर्षि दयानन्द और महात्मा गाधी चाहते थे। ऐसा होने पर निश्चय ही स्वराज्य 'सुराज्य' कहलाएगा और कोई मनुष्य भूखा नगा तथा स्थान विहीन न रहेगा। 'स्वराज्य' को 'सुराज्य' बनाने के लिये नैतिक उत्थान का ही सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसीलिये यह कार्य क्रम आपकी सेवा मे समर्पित है। इसे सफल बनाने का श्रेय शीघ्र ही प्राप्त कीजिए। राष्ट्र कल्याण, नैतिक जीवन निर्माण, मानवता उत्थान और जन जनता का त्राण होगा। आज यही परिस्थिति का प्रबल पुकार है, और यही राष्ट्र की अनिवार्य आवश्यकता है।

हम लोग निराशावादी नहीं हैं और न निराशावाद मे विश्वास रखते है हमे अपनी 'पद प्रतिष्ठा' बनाए रखने के मोहवश सभा की वास्तविक दशा पर परदा डालना भी अभीष्ट नहीं है। इसीलिये सभा की सारी स्थिति आपके सामने स्पष्ट रख दी है। दो शब्दो मे कहे तो कह सकते है कि आज सभा के सब विभागो की दशा चिन्तनीय है धन का अभाव है। ऐसी दशा मे कोई विशेष काम या आन्दोलन नहीं किया जा सकता। हाँ, कुछ संस्थाओ और समाजो के सदस्य पारस्परिक झगड़े बखेड़ो मे मस्त हो अपनी शक्ति का ह्रास अवश्य कर रहे हैं। हमारी सम्मति मे, सभा का शुभचिन्तक तथा हितैषी आप से अधिक कोई नहीं हो सकता। हम लोगो को भी ये 'पद' नहीं सेवा कार्य आपने ही सौंपे है अतएव आप हमे सहयोग दान दीजिए। आर्थिक दृष्टि से सभा को समृद्ध तथा सम्पन्न बनाइए, तभी कुछ कार्य सम्भव हो सकेगा।

हम एक बार पुनः निवेदन कर देना चाहते है कि यदि हमारी प्रार्थना पर आर्यसमाज समष्टि और आर्य्य जनता ने शीघ्र ही ध्यान प्रदान कर तुरन्त ही क्रियात्मक सहयोग न दिया तो हम समझेंगे कि जो कार्य हमे सौंपा गया है, उसके सम्पादन की योग्यता या कुशलता हम मे नहीं है। अतएव हमे अपने स्थान, अन्य सुयोग्य कार्यकर्ताओ के लिये, शीघ्रातिशीघ्र रिक्त कर देने चाहिए। साल भर तक पदो पर पड़े रहकर, अवधि समाप्ति की 'रस्म अदायगी' कदापि न की जायगी। हमने सारी कष्ट कथा सुनाकर अपनी झोली आपके आगे पसार दी है, उसे उन्मुक्त हृदय और मुक्त हस्त होकर उदारतापूवक भरिये और हम किसी कार्य करने योग्य करिए। आपका असीम अनुग्रह और अपार उपकार होगा और आर्य्य प्रतिनिधि सभा असफलता की चट्टान से न टकरा कर अपना भविष्य उज्ज्वल बना सकेगी।

हम लोग अर्थात् सभा के सेवक यानी अधिकारी और उप अधिकारी, आपके आदेश पर, निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचने का सदैव समुद्यत रहेंगे। अपनी सूझ-बूझ के अनुसार तो हम सब इस दिशा मे अपना कर्त्तव्य पालन करेंगे ही। आपके समुचित सुझावो का भी सदैव समादर किया जाएगा।

प्रार्थी—

हरिशङ्कर शर्म्मा, प्रधान — फूलनसिंह आर्य्य, मन्त्री

आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

(पिछले पृष्ठ का शेष)

तथा काशीपुर आर्यसमाज की मौजूदा समिति के सदस्य, इसके सदस्य हो इस समिति के सदस्य सितम्बर मास मे किसी निश्चित दिन काशीपुर एकत्रित हों ताकि सभी उस रमणीक स्थान को देख सकें एव विचार विमर्श कर योजना बना सके। योजना बन जाने के पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी मे रखकर इसकी स्वीकृति ले और तब उसके निर्माण का कार्य प्रारम्भ करावें (वैसे बहुत कुछ काशीपुर आर्यसमाज ने आरम्भ करा दिया है) इस स्थान का मूल्य इस समय ५०,००० रुपये से कम न होगा। इसकी रजिस्ट्री भी सभा के नाम की जावे। जो सज्जन इस निर्माण कार्य के लिए २००० रुपया दे उनके नाम का पत्थर भी लगवा दिया जावे। यदि इस स्थान को अपने अधिकार में न कर लिया गया तो सम्भवत यह अधिकार से निकल भी जावेगा। इस स्थान को देखकर प्रत्येक व्यक्ति का हृदय प्रसन्नता से गद्गद् हो जाता है। आशा है आर्य प्रतिनिधि सभा इस विषय मे शीघ्र उचित कार्यवाही करेगी।

—इन्द्र वर्मा एम०ए०

मन्त्री आर्यसमाज रामनगर (नैनीताल) तथा
निरीक्षक जिला नैनीताल व अल्मोड़ा

जीवन-ज्योति



पं० गंगाप्रसाद जी (रिटायर्ड चीफ़ जज) की

'आत्म-कथा'

[श्री प० हरिशङ्कर शर्मा प्रधान आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश]

['आत्म चरित लिखने की प्रणाली बड़ी सुन्दर, समीचीन और आवश्यक है। महर्षि दयानन्द ने भी अपनी सङ्क्षिप्त आत्म कथा लिखी थी। सम्भवत, आधुनिक युग में हिन्दी की वह पहली 'आत्म कथा' थी। उसके पश्चात् तो अनेक आत्म चरित लिखे गये। स्वर्गीय श्री स्वा० श्रद्धानन्द जी महाराज ने भी अपनी जीवनी लिखी। श्री प० गगाप्रसाद उपाध्याय ने भी अपनी जीवनी लिखी है। अन्य अनेक आर्य्य विद्वानो ने भी अपने आत्म चरित लिखे हैं। श्री प० गगाप्रसाद जी (चीफ जज) की यह आत्म कथा है। हम चाहते हैं कि अन्य वयोवृद्ध आर्य्य नेता और विद्वान् इस दिशा में अपना पग बढावें। उनके अनुभव, ज्ञान, प्रचार प्रणाली, कार्य क्षमता कठिनाइयों सघर्षों आदि से पाठकों को अच्छी शिक्षा मिलेगी और आने वाली पीढी का उनसे निश्चय ही पथ प्रदर्शन होगा।]

—लेखक

श्री प० गगाप्रसाद जी एम० ए०, एम० आर० ए० एस० (रिटायर्ड चीफ जज) आर्य्य-समाज के सुप्रसिद्ध और वयोवृद्ध विद्वानों मे से हैं। आपने अपनी छात्रावस्था से ही आर्य्य समाज की प्रशसनीय सेवा की है। आप बडे कुशाग्रबुद्धि के विद्यार्थी थे। प्रारम्भ मे आप मेरठ कालिज के अध्यापक पद पर प्रतिष्ठित हुए फिर डिप्टी कलक्टरी की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर डिप्टी कलक्टर नियुक्त हो गये। अवकाश प्राप्त करने के पूर्व आप टिहरी (गढ़वाल) राज्य के चीफ जज थे। आपने २२ वर्ष तक लगातार, अग्रेजी शासन मे सेवा-कार्य किया। उस समय आर्य्य समाज भारतीय स्वतन्त्रता की समर्थिका 'राजद्रोही' सस्था समझी जाती थी। आर्य्य समाजी सशक दृष्टि से देखे जाते थे, परन्तु गगाप्रसाद जी ने क्षण भर को भी अपना धर्म नहीं छिपाया। वे बडी निर्भयता और गर्व से अपने को आर्य्य समाजी कहते रहे और बराबर आर्य्य समाज सम्बन्धी समारोहो तथा आन्दालनो म सम्मिलित होते रहे। आर्य्य समाज स बाहर भी आपने समाज-सुधार, शिक्षाप्रसार और पचाग सशोधन सम्बन्धी कार्य किये। अगरेज सरकार की सेवा से निवृत्त होकर १७॥ वर्ष तक आपने टिहरी राज्य का सेवा की– न्यायाधीश के रूप मे। वहाँ आपने जनहित सम्बन्धी अनेक नये विधानो की रचना की। तीर्थ तथा मन्दिर सुधार सम्बन्धी कानून निर्माण कराये, जिनकी उस समय वहा बडी आवश्यकता थी। टिहरी राज्य के शासन सचालन के लिये आपके उद्योग से राज्य प्रतिनिधि सभा स्थापित हुई, साथ ही वैदिक धर्म तथा आर्य्य समाज की सेवा भी निरन्तर करते रहे। १९४७ ई० म जब अन्य राज्यो के साथ टिहरी राज्य का भी उत्तर प्रदेशीय सरकार के साथ विलयन हुआ तो आपने अवकाश प्राप्त किया। इस समय वायसराय ने आपको 'रायबहादुर' की उपाधि से सम्मानित किया था।

प० गगाप्रसाद जी ने वाणी और लेखनी दोनों के द्वारा आर्य्य समाज की महती सेवा की। हिन्दी और अंग्रेजी मे अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे। विद्यार्थि काल में आपने मेरठ मे, 'आर्य्य डिबेटिंग क्लब' की स्थापना की। इसमें धार्मिक विषयो पर वाद-विवाद होते थे। जब पण्डित जी आगरा कालिज में अध्ययन के लिए आए तो आपने छात्रों के लिये सवत् १९४४ वि० में वहा आर्य्यमित्र सभा स्थापित की, जो आर्य्य छात्रों की अकर्मण्यता से हाल ही मे मृतप्राय हुई है। आगरे मे रहकर पण्डित जी ने स्थानीय मेलो तथा बाजारो में खूब प्रचार किया। इन्हीं दिनो आपने फलित ज्योतिष के खण्डन मे, 'ज्योतिश्चन्द्रिका' नामक पुस्तक लिखी। आर्य्य समाज मन्दिर (हींग की मडी) का निर्माण १९४७ वि० म, आप तथा आप के अन्य आर्य्यमित्रो के सहयोग से हुआ। आपने भारत केसरी लाला लाजपतराय जी के साथ लङ्का यात्रा भी की तथा वहा वैदिक धर्म पर अनेक व्याख्यान दिये। आप रायल एशियाटिक सोसाइटी के सदस्य निर्वाचित हुए। कानपुर मे अखिल भारतीय समाज सुधार सम्मेलन का अध्यक्ष पद प्रतिष्ठित किया। सरजेम्स मेस्टन (लेफ्टीनेंट गवर्नर यू० पी०) से मिल कर आपने आर्य्य समाज सम्बन्धी कितने ही भ्रमों का परिशोधन किया और उन्हें वास्तविकता बताई। कोल्हापुर में महाराज से मिल कर आर्य्य समाज प्रचार और शिक्षा विस्तार के लिये आपने प्रशसनीय कार्य किया। आप वृन्दावन गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता और आचार्य भी रहे। वहाँ से आप टिहरी राज्य की सेवा मे, 'जज' होकर चले गये। श्री मद्दयानन्द जन्म शताब्दी के अवसर पर आयोजित 'सर्वधर्म सम्मेलन' के अध्यक्ष प० गगाप्रसाद जी ही थे। टिहरी के न्यायाधीश पद से अवकाश ग्रहण कर पण्डित जी 'आर्य्य विरक्ताश्रम' ज्वालापुर में रहे और उसकी उन्नति तथा अभिवृद्धि के लिये प्रशसनीय प्रयत्न किया। यह आश्रम महात्मा नारायण स्वामी ने १९२६ वि० मे स्थापित किया था। अब तो वह बडी अच्छी स्थिति में है। कितने ही अवकाश प्राप्त विरक्त वहाँ रहते हैं, खूब धर्म चर्चा तथा कथा वार्त्ता होती है।

पण्डित गगाप्रसाद जी सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा के भी प्रधान रहे और उस समय आपने दक्षिण भारत की यात्रा की। इस यात्रा मे आप योगिराज श्री अरविन्द के आश्रम और कवीन्द्र रवीन्द्र के शान्ति निकेतन को देखकर बडे प्रभावित हुए। डी० ए० वी० कालिज सोसाइटी कानपुर से तो आपका प्रारम्भ से ही सम्बन्ध रहा। आप परोपकारिणी सभा के सदस्य रहे और उसके विधान मे अनेक आवश्यक एवम् उपयोगी सशोधन कराए। सन् १९४२ ई० मे आपने बगलौर म. दक्षिण भारत आर्य्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। "आपने जाति भेद निवारक आर्य्य परिवार सघ" की स्थापना की तथा अपने पुत्र पुत्रियो के अन्तर्जातीय विवाह कराये। पण्डित जी जहाँ जिस स्थिति में रहे, वैदिक धर्म प्रचार निरन्तर करते रहे। आर्य्य समाज की प्रगति और उन्नति का ध्यान आपने क्षण भर के लिये भी नहीं विसारा। ऐसी थी आपको अपने प्यारे धर्म की लगन।

प०गगाप्रसाद जी सस्कृत, हिन्दी, अग्रेजी आदि के प्रकाण्ड पण्डित हैं। आपका स्वाध्याय बडा विस्तृत है। सारा समय चिन्तन और स्वाध्याय मे ही बिताते है, आपने बहुमूल्य ग्रन्थ साहित्यिक ससार को दिये हैं। 'फौण्टेन हेड आफ रिलीजन', 'कास्ट सिस्टम', 'प्रोब्लेम आफ लाइफ', 'प्रोब्लेम आफ यूनिवर्स' 'इनर मैन एण्ड दी इनर वर्ल्ड', केन और कठ उपनिषदो के अग्रेजी भाष्य, 'मनुष्य समाज', 'ज्योतिश्चन्द्रिका', वैदिक टैक्स्ट न० १ और न० २, कन्स्टीट्यूशन आफ ह्यूमैन सोसाइटी, सेप्टेनेरी कम्पोजीशन आफ सोलर लाइट, 'सूर्य सप्ताश्व वर्णन', पञ्चकोष व सूक्ष्म जगत्' इत्यादि। इन पुस्तकों में से अग्रेजी किताबो के हिन्दी, उर्दू, गुजराती, मराठी आदि भाषाओ में अनुवाद हो चुके हैं और उनका प्रचार भी खूब हुआ है। 'फौण्टेन हेड आफ रिलीजन' नामक पुस्तक बडी प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण है। इसके अनेक भाषाओ म सुन्दर अनुवाद हुए हैं। हिन्दी अनुवाद 'धर्म का आदि स्रोत के नाम से इन पक्तियो के लेखक ने किया है, इसके भी अनेक सस्करण प्रकाशित हो चुके है। भाषणों और ग्रन्थ रचना के अतिरिक्त पण्डित जी ने, विविध पत्र पत्रिकाओ मे भी अग्रेजी तथा हिन्दी में अनेक गम्भीर लेख लिखे जिनका शिक्षित समाज में बडा मान हुआ। नि सन्देह ये लेख भी स्थायी साहित्य मे ही परिगणित करने योग्य हैं।

अभिप्राय यह कि प० गगाप्रसाद जी ने अग्रेज सरकार और टिहरी राज्य के उच्च पदों पर प्रतिष्ठित रह

[शेष पृष्ठ १० पर]

एक संस्मरण

स्वर्गीय विद्याभास्कर श्री पं० रामावतार शास्त्री

(श्री हरिदत्त शास्त्री डी० ए०वी० कालेज, कानपुर)

जिन दिनों गुरुकुलों का प्रारम्भ काल था, उस समय गुरुकुल बदायूं में भागकर महाविद्यालय ज्वालापुर में प्रवेश की इच्छा से आये हुए विद्यार्थियों में विद्या भास्कर रामावतार शास्त्री भी एक थे। इनके पिता रत्नगढ़ जिला बिजनौर के एक प्रसिद्ध जमींदार थे। स्वर्गीय पं० पद्मसिंह शर्मा के निवास स्थल नायक नगला ग्राम से रत्नगढ़ की दूरी केवल चार पाँच मील की है। जिन दिनों लेखक चौथी या पांचवी श्रेणी में पढ़ता था, उन दिनों उनके भाई कृष्णकुमार शर्मा भी लेखक के सतीर्थ्य थे, तथा रामावतार जी वेदान्त की मध्यमा देते थे। कलकत्ते की तीर्थ परीक्षा का महाविद्यालय में तब अधिक प्रचलन था। बनारस की परीक्षाएं छात्रों को अधिक रुचिकर न थी, क्योंकि आचार्य परीक्षा की उपाधि मध्यमा कर लेने के ६ साल बाद मिलती थी, शास्त्री नाम की कोई परीक्षा न थी। यदि भाग्य से आचार्य श्रेणी में प्रथम अंक न मिल पाते थे तो बेचारा विद्यार्थी उपाध्याय बना दिया जाता था। पंडित की उपाधि प्रथमा परीक्षा उत्तीर्ण होने पर दी जाती थी। पं० रामावतार शास्त्री ने उस समय कलकत्ते से मीमांसा तीर्थ और बनारस से मीमांसाचार्य की उपाधि प्राप्त की थी। आप स्वर्गीय महामहोपाध्याय श्री गङ्गानाथ झा के प्रिय शिष्यों में से थे। गुरुकुल के अध्ययन काल में एक बार आपको वैराग्य की ललक आई, तथा आप ब्रह्मीभूत श्री अच्युत मुनि महाराज के आश्रम पर पहुंच गये। वहाँ से उनके समझाने बुझाने से फिर महाविद्यालय लौट आये। मुझे स्मरण है कि उन दिनों बाहर की परीक्षा देने वाले छात्रों को महाविद्यालय में खाने पीने की विशेषता दी जाती थी। इन्हें विशेष रूप से प्रातः काल कुछ बादाम तथा भोजन के लिए विशेष प्रबन्ध था। परीक्षा के लिए जाते समय इन लोगों के लिए लड्डुओं का पाथेय भी बनता था। ऐसे सुन्दर समय में जिन लोगों ने महाविद्यालय की कुल भूमि में शिक्षा पाई उनमें से आज महाविद्यालय की कुलमाता अपने चार पुत्रों से गोद सूनी कर चुकी है। स्वर्गीय शास्त्रार्थ महारथी श्री देवेन्द्रनाथ शास्त्री मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल सिकन्दराबाद, स्वर्गीय श्री पं० विश्वनाथ शास्त्री (पंचानन) भू० पू० मुख्याधिष्ठाता महा० वि० ज्वालापुर, स्वर्गीय पं० विश्वनाथ शास्त्री गजानन्द रत्नगढ़ निवासी आप ही के साथी थे। रामावतार जी को संस्कृत साहित्य में विशेष प्रेम था, अतएव गुरुकुल में अध्यापन कार्य भी करते थे और तब छोटे विद्यार्थी इन्हें (भ्राता जी) कहा करते थे। आप गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य श्री प० अभयदेव जी के सम्बन्धी (बहनोई) थे उनके ही कारण महात्मा गांधी के साहित्य से आपकी रुचि हुई तथा बनत निवासी श्री म० विश्वम्भर सहाय के सहयोग से एवं बंगाली बाबू श्री योगेश जी की सहायता से अपने ग्राम में ही 'बुद्धि सेवाश्रम' नाम से एक आश्रम स्थापित किया वह आश्रम पांच वर्ष तक चला और अनेक धनहीन छात्रों को वहाँ शिक्षा दीक्षा दी गई। इसके बाद शास्त्री जी की अभिरुचि वेदांत शास्त्र की ओर बढ़ी और उन्होंने 'शत श्लोकी' दश श्लोकी' 'वाक्य भारतीय शास्त्र प्रचारक मण्डल आमलनेर ने प्रकाशित किया। इस सुन्दर रचना के कारण युक्त प्रान्त की सरकार ने उन्हें पुरस्कार देकर सम्मानित किया तथा आमलनेर की ओर उनको ५०) रु० मासिक लेखन कार्य के लिए मिलने लगा। कुछ समय बाद शास्त्री जी के दो अद्भुत ग्रन्थ निकले जिनका नाम था— बोध सरकारी टीका' और 'पंचदशी की टीका' ये दोनों टीकाएं शास्त्री जी को अमर करने के लिए पर्याप्त हैं। इन ग्रन्थों में जो विचार करने की परिपाटी है वह उनकी अपनी है वह विचारपूर्ण है और कल्पना पूर्ण है। आजकल वे बृहदारण्यक वार्तिक सार तथा अन्य कई संस्कृत ग्रन्थों पर टीका करने पर

लेखकों से निवेदन

आर्यमित्र के स्तर को उन्नत बनाने के लिए विशेष आयोजन किया जा रहा है। लेखकों का सहयोग अपेक्षित है। मित्र में विविध प्रकार की सामग्री प्रकाशित कर उसे सभी वर्गों की रुचि के अनुरूप बनाया जा सके इसके लिए भविष्य में उन्हीं लेखों को प्रमुखता प्रदान की जायेगी जो हमारे स्तम्भों के अन्तर्गत और संक्षिप्त होंगे।

हमारे स्थायी स्तम्भ—सामयिक समस्यायें, चयनिका, ग्राम्य जीवन, सिंहावलोकन, सुझाव और सम्मतियां, सिद्धान्त विमर्श, जीवन ज्योति, महिला मण्डल, स्वास्थ्य सुधा, विज्ञान वार्ता, बालजगत्, साहित्य चर्चा, काव्य कानन, बाल विनोद, अध्यात्म-धारा, भरत मिलाप (शुद्धि) कहानी कुंज, संस्था परिचय आदि होंगे।

आशा है लेखक गण उपर्युक्त स्तम्भों के अन्तर्गत अपने लेख शुद्ध और स्पष्ट भाषा में भेजेंगे।

—सम्पादक मंडल 'आर्यमित्र'

सुधा' 'योग तारावली' 'आत्म बोध' आदि ग्रन्थों का अनुवाद की स्वयं प्रकाशित करवाया। श्री अच्युत मुनि जी महाराज के यहाँ भी आप अपने भाषा भाष्य को सुनाने को जाया करते थे। वहाँ स्वर्गीय गौरीशंकर गोयनका ने भी इनके भाष्यों के प्रकाशन की इच्छा प्रगट की थी किन्तु किसी कारण से यह बात आगे न बढ़ सकी। गीता के शांकर भाष्य का परिशोधन स्वर्गीय शास्त्री जी ने तथा लेखक ने मिल कर किया था, जो कि गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित हुआ है उसके भाषान्तरकार सम्भवतः श्री मुनिलाल जी हैं। इसके बाद प्रेस के कार्यकर्त्ताओं के अनुरोध से उपनिषदों के शांकर भाष्य के भाषानुवाद का भी उन्होंने संशोधन किया था। कुछ समय पश्चात् 'ज्ञानेश्वरी' के ढंग की गीता पर एक टीका लिखी जिसको लगे हुए थे। जीवन में एक बार आपको वात रक्त ने सताया था और तब पीयूष पाणि श्री वैद्यराज हरिशंकर जी शर्मा की चिकित्सा से अद्भुत लाभ हुआ था। ता० १२ जून ५८ को श्री पं० आशाराम जी शर्मा के सुपुत्र स्वराज्य प्रकाश शर्मा एम० ए० के यहाँ ठहरे और वो एक उत्तम गौ लेकर अपने गांव की ओर प्रस्थान कर चुके थे। अगले दिन वे मुजफ्फर नगर से स्वयं भी चल पड़े और विषूचिका से ग्रस्त हुए पर इस रोग ने उनका अन्त तक पीछा न छोड़ा। शास्त्री जी बड़े परिहास प्रिय भी थे। एक बार एक बारात उनके सामने से निकल रही थी बाजे बज रहे थे तथा वर मोटर पर चढ़ा हुआ जा रहा था। उसे देखकर कहने लगे जानते हो यह क्या हो रहा है? मैंने कहा नहीं। कहने लगे यह समाज की ओर से विषय भोग करने का प्रमाण पत्र दिया जा रहा है। वे अपने जीवन में गम्भीर विचारक, एकान्त अध्यवसायी, स्वतन्त्र लेखक और असहिष्णु समालोचक थे। उनके अनेक ग्रन्थ रत्न अब भी अप्रकाशित पड़े हैं। आशा है आध्यात्मिक प्रेमी जगत उन्हें प्रकाशित कर स्वर्गीय आत्मा का उचित श्राद्ध करेगा। शास्त्री जी का एक मात्र पुत्र हरिश्चन्द्र आत्रेय ए० एम०एम० नहटौर जिला बिजनौर में एक ख्याति प्राप्त चिकित्सक हैं। अन्त में भगवान से यही प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा साथ ही उनके शोक सन्तप्त परिवार को शान्ति दे। इसमें सन्देह नहीं कि उनके अकाल काल कवलित होने से अध्यात्म जगत का प्रकाश रत्न खो गया। ठीक ही लिखा है—

सृजति तावद् शेष गुणाकर
पुरुष रत्नमलंकरणं भुवः।
तदपि तत्क्षणभङ्गि करोति चेत्
अहह, कष्टमपण्डितता विधेः ॥

सभा की सूचनाएं

(१)

उत्तरप्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे निम्न ब्यौरा तुरन्त बनाकर सभा कार्यालय को भेज दें—

१—हिन्दी रक्षा आन्दोलन का कितना कितना धन उनके पास जमा है?

२—आन्दोलन की समाप्ति के बाद इस धन में से कितना व्यय किया गया? किया गया तो कहाँ?

साथ ही कोई समाज बिना सभा की स्वीकृति के इस धन में से कोई व्यय न करे, यह धन सर्वथा सुरक्षित रहना चाहिए।

(२)

आर्य प्रतिनिधि सभान्तर्गत सभास्थ विभाग जिला उप सभाएं एवं संस्थाओं को विदित हो कि सभा के वर्ष १९५- के ६ मास ३० जून १९५८ को समाप्त हो गये हैं सभा की अन्तरङ्ग २७, २८ जुलाई १९५८ को आर्य समाज मन्दिर बुलन्दशहर में होगी। उसमें षट मासिक रिपोर्ट प्रस्तुत होगी जिससे प्रचार की गतिविधि ज्ञात हो कृपया १५ जुलाई १९५८ तक सभास्थ संस्थाएं एवं उप सभाएं अपनी रिपोर्ट बनाकर भेजने का कष्ट करें।

—सभा मन्त्री

सिंहावलोकन

यह मानना ही पड़ेगा

(श्री नरदेव शास्त्री की आत्मकथा का द्वितीय पुष्प

[श्री प० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०

हमको सतोष है कि अब हम किसी आर्य समाज की किसी दलबन्दी मे नहीं हैं। सब समाज, सब दल अपने ही हैं। सबने यथा शक्ति आर्य समाज का ही काम किया है और कर रहे है। यह तो मानना ही पड़ेगा कि दल बन्दियो के कारण आर्य समाज की समष्टि शक्ति का बहुत कुछ दुरुपयोग हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है कि आर्य समाज के सगठन मे कोई त्रुटि है जिसके कारण शक्ति का सम्मिलित सदुपयोग नहीं हो रहा है। अत आर्य समाज के नियमोपनियमो मे परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव होती है। जब तक विद्या सभा राजार्य सभा धर्मार्य सभा इन नामों की तीन स्वतन्त्र सभाओं का निर्माण करके कार्य नहीं किया जायगा, ससार भर के उपकार की बात तो दूर ही रहेगी।



प्रस्तुत लेख मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् श्री उपाध्याय जी ने अपने समकालीन और समवयस्क आर्य नेता आचार्य नरदेव शास्त्री के विचारो को प्रस्तुत करते हुए आर्य समाज के पुराने नेताओ और वर्तमान कर्णधारों को आत्म दर्शन की प्रेरणा दी है। आर्य समाज के वर्तमान और भविष्य को उज्ज्वल बनाये रखने के लिए गम्भीर चिन्तन की इस चेतावनी को हमे स्वीकार करना चाहिए। —सम्पादक

आर्य समाज मे प्रजातन्त्री बहुमत के कारण शक्ति का नाश अधिक होता रहा और अज्ञ और विज्ञ के मिश्रित मत के कारण सब काम अधूरे रह गये हैं। जब तक सभा म उस उस विषय मे विज्ञ पुरुषो के बहुमत द्वारा निर्णय होकर कार्य न होगा समाज की यथार्थ उन्नति न होगी। आज आर्य समाज जमाने साज समाज बनता जा रहा है और धर्म की अपेक्षा धन को प्रधानता दे रहा है। आज आर्यसमाज मे रजोगुण की प्रधानता बढ़ रही है और आध्यात्मिकता का अस्तित्व अतिन्यून होता जा रहा है। आर्य समाज ने तर्क वितर्क द्वारा ससार के अन्य मत मतांतर वादियों का मुख तो बन्द कर दिया किन्तु ससार भर के हृदय को आकर्षित करने का साधन उसके पास नहीं है। यह तो मानना ही पडेगा कि आर्य समाज ने ससार भर को भोजन का निमन्त्रण तो दे दिया पर घर मे आकर बैठने वालों के लिये न तो पर्याप्त स्थान है, नहीं पर्याप्त भोजन सामग्री। आज आर्यों का अधिक व्यय सस्कृत विद्या की अपेक्षा अग्रेजी शिक्षा दीक्षा पर हो रहा है। और आर्य लोग 'वेद वेद' की दुन्दभि तो बजाते रहते हैं किन्तु अपने बच्चों को देते दिलाते हैं वहा जमाने की तालीम प्राचीन प्रणाली की सस्थाओ म भी अब और प्रकार का वायु बह रहा है। परिणामत आर्यों के बच्चे आर्य नहीं बन रहे हैं। यह तो मानना ही पडेगा कि जिनकी आयु वानप्रस्थ व सन्यास के योग्य हो चुकी है वे भी ससार के मोह को नहीं छोड रहे ह और आर्यसमाज का सन्यासी मण्डल भी सासारिक पद लोलुपता, लोकैषणा, वित्तैषणा से रहित नहीं ह। आर्य समाज मे शिक्षित सुयोग्य नवयुवकों की अधिकता होने पर भी वे त्याग भाव से समाज के प्रचारक उपदेशक बनने के लिए आगे नहीं आ रहे हैं। आर्य मण्डल मे आतिथ्य धर्म का नाश हो गया है। गृहकलहो के कारण समझदार शान्ति प्रिय लोग आर्य समाज से दूर रहने लगे है आर्य समाज से कृतज्ञता के परमाणु निकलते जा रहे है और शुष्क वैर और विवाद के परमाणु बढ़ते जा रहे ह।

इन समस्त रोगों का उपाय हो इस बात का गम्भीरता पूर्वक सोचने का अवसर आ गया है। आर्य नेता किस तरह अपने समय का बिताने की चिन्ता म हैं किन्तु धैर्य का दोनों मुट्ठियो से पकड़ कर विचार करने का साहस नहीं कर रहे है, यह "जब तक निभे तब तक निभे" की नीति विख्यात है।

श्री शास्त्री जी के इन अनुभवो को ध्यान पूर्वक पढ़ने और विचारने की आवश्यकता है। यह आवश्यक नहीं है कि जिसको श्री शास्त्री जी 'मानना ही पडेगा' कहते ह उसको आप अवश्य आखे मींचकर मान ही लें। स्वय मेरे लिए भी यह सुगम नहीं है। परन्तु एक वृद्ध, सवृद्ध, वयोवृद्ध अनुभव वृद्ध नेता की बाते ऐसी नहीं है कि उन पर विचार करने से भविष्य का मार्ग सुगम न हो सके।

संस्था-परिचय

अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर

(वार्षिक विवरण १९५७)

दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर १९३३ म हिन्दू जाति को विधर्मियो के जाल से बचाने तथा अपने पैतृक धर्म से पतित किये गये हिन्दुओ का पुन (वैदिक) धर्म मे लाने के उद्देश्य को लेकर स्थापित किया गया था।

गत २४ वर्ष के काल मे मिशन ने ११०४०८ स्त्री पुरुषों की शुद्धि की है और २११९ हिन्दू देवियों का विधर्मियों तथा दुश्चरित लोगों के पजो से मुक्त करवाया है। इस महान कार्य पर मिशन इस समय पर्यन्त ३०७५०३९)॥। व्यय कर चुका है।

इस वर्ष मिशन के आधीन १२ वैतनिक प्रचारक तथा ११ अवैतनिक कार्यकर्ता कार्य करते रहे है। इनके अनथक प्रयत्न से इस वर्ष १८६७ विधर्मियो को शुद्ध किया गया है और ५ देवियों की रक्षा की गई है। इसके अतिरिक्त सहस्रों हरिजनो तथा आदिवासियों को विधर्मियो का शिकार होने से बचाया है।

मिशन के आधीन रावटी (मध्य प्रदेश) नामक स्थान पर गत कई वर्षों से श्री नानकचन्द केसर राम टस्ट की ओर से एक धर्मार्थ औषधालय चलाया जा रहा है जिससे इस वर्ष ८५२७ रोगियो ने बिना मूल्य औषधि प्राप्त की है।

मिशन की ओर से निर्धन तथा योग्य विद्यार्थियों को छात्र वृत्तिया भी दी जाती हैं। इस वर्ष पाच २ रुपये की ४ छात्र वृत्तिया राय साहिब ला० चेतनदास जी तनेजा लखनऊ तथा राय साहिब ला० नारायण दास जी तनेजा धनबाद की ओर से और ४) मासिक की एक छात्र वृत्ति ला० सीताराम जी धीर शाहजहापुर की ओर से डी० ए० वी० कालेज होशियारपुर के छात्रो को दी जाती रही है।

इस समय मिशन आसाम, उड़ीसा मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा पजाब मे कार्य कर रहा है। इस कार्य पर मिशन ने इस वर्ष १८८८११६ व्यय किये ह।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन में मिशन के प्रचारक तथा अधिकारी लगातार ७ मास पर्यन्त प्रचार तथा इसके लिए धन एकत्रित करने का कार्य करते रहे हैं। मिशन उनका वेतन इत्यादि अपने कोष से देता रहा है। प्रधान मिशन इसकी सघर्ष समिति के सदस्य थे। समिति के प्रधान श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त तथा प्रिन्सिपल भगवानदास जी की आज्ञा के अनुसार महात्मा दर्शी चन्द जी तथा प० देव राज जी वैदिक मिश्नरी ने बगाल, बिहार, हिमाचल तथा पजाब प्रान्त से आन्दोलन के लिए ४० सहस्र के लगभग रुपया भी एकत्रित किया।

मिशन के प्रधान ने एक बड़े जत्था के साथ २६ दिसम्बर को सत्याग्रह भी करना था परन्तु समिति के प्रधान की ओर स २७ तारीख को सत्याग्रह के स्थगित किये जाने के तार प्राप्त हो जाने के कारण वह सत्याग्रह नहीं कर सके थे।

भारत के स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात् विदेशी ईसाई मिश्नरियों के कार्य की गति विधि दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। गत ८१० वर्ष मे ईसाई मतावलम्बियों की सख्या मे ३२ लाख की वृद्धि हुई है। करोड़ों रुपया विदेशों से भारत में ईसाई मत

(शेष अगले पृष्ठ पर)

जीवन ज्योति

[पृष्ठ ७ का शेष]

कर यह दिखा दिया कि एक आर्य्य विद्वान् परिश्रम, ईमानदारी और तन्मयता से जनता की कितनी अच्छी सेवा कर सकता है। साथ ही साहित्य रचना में भी वह कितना सक्षम और सफल हो सकता है। पण्डित जी का जीवन बड़े संयम और साधना का जीवन रहा है। उन्होंने योग का भी अभ्यास किया है। खान-पान, रहन सहन आदि में आप बड़े सतर्क तथा सात्विक हैं। आपका धार्मिक तथा सद्भावना सम्पन्न जीवन एक प्रकार से आर्य्य समाज का संक्षिप्त इतिहास है। जिस व्यक्ति ने अपने होश संभालने से लेकर आज ८८ वर्ष की आयु तक, निरन्तर आर्य्य समाज की सेवा, आर्य्य सिद्धान्तों का चिन्तन और आर्य्य आदर्शों का ही पालन किया हो, वह हमारे लिये अत्यन्त आदरणीय और अनुकरणीय है। पूज्य एवम् प्रतिष्ठास्पद हैं। पण्डित जी ने अपनी 'आत्मकथा' लिखकर आर्य्य समाज की महती सेवा की है। उसके पाठ से आर्य्य समाज सम्बन्धी अनेक अज्ञात विषयों पर प्रकाश पड़ता है। परमात्मा से प्रार्थना है कि पण्डित जी दीर्घायु और शतायु हों।

पण्डित जी के अभिन्न मित्रों और साथियों में ही विद्वद्वर प० घासीराम जी एम० ए०, स्व० श्री हरविलास जी शारदा, प० विष्णुलाल शर्मा, स्व० श्री ज्वालाप्रसाद जी आदि थे—सहपाठी और सहयोगी। हम चाहते हैं कि जिन पण्डित गंगाप्रसाद जी ने आर्य्य समाज की इतनी प्रशंसनीय सेवा की, उनकी 'आत्मकथा' को आजकल के नवयुवक आर्य्य कार्य-कर्त्ता तथा अन्य सभी आर्य्य भाई बहन बड़े ध्यानपूर्वक पढ़ें और उससे कुछ शिक्षा भी लें। जो लोग अनवकाश का बहाना बनाकर, समाज सेवा से विरत या पृथक् रहते हैं, उन्हें पण्डित जी से यह बात ग्रहण करनी चाहिए कि एक विद्वान् व्यक्ति डिप्टी कलक्टर और न्यायाधीश जैसे पदों के कार्य भार से दबा हुआ भी, अपने धर्म की सेवा के लिये किस प्रकार पर्याप्त समय निकाल सकता है। आर्य्य समाज का कर्त्तव्य है कि वह पं० गंगाप्रसाद जी (चीफ जज) और प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय जैसे उच्च साहित्यकारों के कारण अपना सौभाग्य समझे और उनके प्रति सामूहिक रूप से सम्मान प्रदर्शनार्थ शीघ्रातिशीघ्र विशेष आयोजनों की व्यवस्था करे। हमारी उपेक्षा से न जाने कितने सन्यासी, आर्य्य कार्य कर्त्ता नेता, विद्वान्, साहित्यकार आज बीती बातें बन गये हैं, उन्हें लोग भूल गये और भूलते जाते हैं। खेद है कि आर्य्य समाज की ओर से उनकी जीवनी या संक्षिप्त परिचय तक लिखने लिखाने का उद्योग नहीं किया गया। इस उपेक्षा के लिए लोग कुछ बहाना क्यों न बनावें, परन्तु हम तो उसे अपनी अकृतज्ञ भावना या कृतघ्नता ही कहेंगे।

पुरोहित की आवश्यकता

जो सज्जन उपदेश व संस्कार आदि अच्छी तरह करा सकते हों और अंग्रेजी का भी ज्ञान हो पत्र व्यवहार करें। —रामनारायण मंत्री आर्यसमाज जौनपुर

संस्था परिचय

(पिछले पृष्ठ का शेष)

के बचाव के लिए भारतीय ईसाई मिशनरियों को प्राप्त हो रहा है। इसके लिए धन तथा जन दोनों की अत्यन्त आवश्यकता है। मिशन ने २५ लाख रुपये की अपील इसी उद्देश्य को ले कर की है। प्रत्येक हिन्दू नर तथा नारी का यह मुख्य कर्तव्य है कि वह मिशन को तन मन धन से सहायता प्रदान करके पुण्य तथा यश के भागी बनें।

—सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज
उप मन्त्री दयानन्द साल्वेशन मिशन
होशियारपुर

आर्य्य-कुमार-संघ

सिनेमा—

✶ओमकुमार आर्य, नानपारा (बहराइच)

"पिता जी ! कैसी तबियत है"- सुरेश ने अपने वृद्ध और रोगी पिता से पूछा जो लगभग एक माह से मियादी ज्वर से पीड़ित थे। और जिसकी दशा निरंतर चिन्ताजनक होती जा रही थी। पिता ने कराहते हुए उत्तर दिया—"सुरेश, मैं तो अब इस संसार से जा रहा हूं, किन्तु तुम मेरी सम्पति का बटवारा करा लेना नहीं तो रमेश······।" इसके आगे वह कुछ कहना चाहता थे किन्तु शायद काल ने उन्हें आगे बोलने अनुमति न दी और यहीं पर मौन कर दिया।

× × ×

सुरेश पिता के आधे मकान मे सपत्नीक निवास कर रहा था और रमेश अपने हिस्से की जागीर बेच चुका था। उसे सिनेमा की बुरी लत पड़ गई थी। ऐसी कोई भी फिल्म नहीं थी जिसे वह अपने नगर में आने पर कम से कम दो तीन बार न देख ले और कभी-कभी तो किसी दूसरे नगर में नई फिलम के लगने पर वह वहाँ भी दौड़ जाता था। मित्र-मण्डली उसे हर समय घेरे रहती थी।

सुरेश अपने छोटे भाई की इस दुर्दशा को देखकर मन ही मन दुःखी हुआ करता था और अवसर मिलने पर उसे समझाया करता था कि, "रमेश ! आखिर तुम कब तक अपनी सम्पत्ति को बेच-बेच कर अश्लील फिल्मों के लिए धन नष्ट करते रहोगे ? खेत तो सभी बिक ही गये हैं—रह गया बाग और मकान वह भी, यदि यही दशा रही तो कुछ ही दिनों में समाप्त हो जायगा। और तब तुम्हे कोई चार पैसे पर भी न पूछेगा। दर-दर की ठोकरें खाते फिरोगे। यदि भला चाहो तो सिनेमा की बुरी लत छोड़कर मेहनत से पढ़ना आरम्भ करो। यदि तुमने किसी प्रकार हाई स्कूल भी पास कर लिया तो मैं ही तुम्हें कोई न कोई जगह दिलवा सकता हूं। नौकर होने पर तुम्हारा विवाह भी हो सकेगा और तब तुम अपना जीवन सुख के साथ व्यतीत कर सकोगे।" किन्तु रमेश इन सब बातों को व्यर्थ की बकवास समझता था और इन पर कोई ध्यान न देता था। सुरेश भी अपने मन में सोच कर रह जाता था कि यह सारी त्रुटि पिता जी की ही है। आरम्भ मे जब यह बालक था इसे सिनेमा देखने का बड़ा चाव था और इसी कारण इसका पढ़ाई मे भी मन नहीं लगता था, किन्तु पिता जी लाड़ प्यार के कारण इसे अधिक पैसा दिया करते थे और इसके सुधार की ओर कभी ध्यान ही नहीं देते थे। बाद मे तो उनको भी होश आया था किन्तु उस समय जब वह पूर्णरूपेण अवगुणो मे फंस गया था।

× × ×

अन्त में वह समय भी आया जब रमेश अपनी शेष सम्पत्ति अर्थात् बाग और मकान तक भी बेंच चुका था। इस समय उसके पास एक फूटी कौड़ी भी शेष नहीं थी। अब वह अपने बड़े भाई सुरेश के पास गया और उसके मकान में अपने रहने के लिए जगह और कुछ उधार रुपये मांगे। सुरेश ने स्पष्टत. कह दिया कि यदि वह अपने को सुधारना चाहता है, और पढ़ाई आरम्भ करना चाहता है तो वह उसकी सहायता कर सकता है परन्तु सिनेमा देखने के लिए वह उसको धन और आश्रय कदापि नहीं दे सकता है।

रमेश क्रुद्ध होकर चला गया।

× × ×

एक दिन जब कि सुरेश रात्रि के समय किसी गली से होकर कहीं जा रहा था, किसी ने अचानक उसके ऊपर आक्रमण कर दिया और उसे पिस्तौल का निशाना बना दिया। सुरेश ने अपने जीवन के अन्तिम क्षण मे उस व्यक्ति को पहचान लिया और केवल इतना ही कह सका, "र····मे······श·········।"

अछूत की आह

हम पतित हैं पद दलित है।
कर्मठ नहीं अति नीच हैं।
हम हैं न कोमल निठुर हैं।
हम इस धरा के कीच हैं।
हममे न कुछ भी राग है।
हममे न कुछ भी प्रीत है।
हममे न कुछ ऐश्वर्य है।
हम में न कुछ भवभूति है।
भगवन तुम्हीं धीवर धरा की।
पार करदो इस बला को।
दूर कर दो इस बला को।

—आर्य कुमार रजनी कान्त, लखनऊ

वनिता विवेक

वेश्यावृत्ति के निराकरण में उत्तरप्रदेश सरकार की उपेक्षा

केन्द्रीय सरकार ने १ मई १९५८ को वेश्यावृत्ति को समाप्त करने के लिए कानून लागू कर घोषणा की थी कि भविष्य मे वेश्यावृत्ति अपराध समझा जायगा। इस कानून को व्यावहारिक रूप देने का दायित्व राज्य सरकारों को सौंप दिया गया है। उत्तर प्रदेश सरकार १ मई मे अब तक मौन है। राज्य भर मे कहीं भी इस दिशा मे कोई सक्रिय कदम नहीं उठाया गया है। लखनऊ, कानपुर, बनारस, आगरा, बरेली, मेरठ आदि ऐसे केन्द्र है जहां हजारो वेश्याये इस नारकीय पेशे पर जीवन गुजार रही है।

दिल्ली के पास होने के कारण मेरठ वेश्याओं का एक बड़ा केन्द्र माना जाता है। दिल्ली मे वेश्यावृत्ति पर प्रतिबन्ध लगने पर यह स्वाभाविक था कि मेरठ पर उसका प्रभाव पड़ता। मई के प्रथम सप्ताह मे मेरठ के वेश्यालयो मे सन्नाटा छाई रहा। सैकड़ो वेश्यायें वहाँ से चली गयीं परन्तु यह सब अस्थायी था एक सप्ताह पश्चात् वेश्यालयो पर पहले जैसी ही भीड़ लगने लगी। इसमे सन्देह नहीं कि मेरठ इस समय वेश्यालय की दृष्टि से भी बढ़ गया है और राज्य सरकार को इस नारकीय पेशे को रोकने का यत्न करना ही पड़ेगा।

पिछले दिनों मेरठ में वेश्यावृत्ति की यथा पूर्व स्थिति से चिन्तित हो दिल्ली के समाज सुधारकों ने मेरठ पहुंच कर वेश्यावृत्ति रोकने के लिए मशालो का वृहद् जलूस निकाला, मेरठ के वेश्यालयो मे सन्नाटा छा गया परन्तु दलाल रात के ११ बजते बजते अपना कार्य जारी रखने मे सफल हो चुके थे।

पुलिस अधिकारियों से इस सामाजिक अभिशाप को रोकने मे सक्रियता दिखाने की जब चर्चा की जाती है तो वे कहते हैं कि पुलिस वेश्यावृत्ति को उसी समय रोक सकती है जब राज्य सरकार की ओर से उसे ऐसे व्यक्तियों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करने का अधिकार प्राप्त हो जाय। इस समय स्थिति यह है कि कानून के नाम पर पुलिस वेश्याओं को उस समय तक गिरफ्तार नहीं कर सकती जब तक सार्वजनिक रूप से उनका कार्य वर्जित न हो। पुलिस ऐसे व्यक्तियों को पकड़ने में भी कानूनन असमर्थ है जो एक तरफ दलाली करते है और दूसरी तरफ वे वेश्याओं को सगे सम्बन्धी बताकर उनसे सम्पर्क स्थापित किये हुए हैं।

राज्य सरकार के सामने एक बड़ी कठिनाई यह बताई जाती है कि उसके पास अभी संरक्षक गृह नहीं हैं जहां वेश्यावृत्ति से बचाई लड़कियों को रक्खा जा सके। जब तक ऐसी स्त्रियों और लड़कियों के रख रखाव का समुचित प्रबन्ध न होगा तब तक इस सामाजिक उत्थान के कार्य मे कठिनाई अवश्य रहेगी। परन्तु सरकार आर्य समाज जैसी सामाजिक संस्थाओं से व्यावहारिक सम्पर्क स्थापित करे तो उसे स्थान और व्यक्तियों का सहयोग अवश्य मिलेगा।

आर्यसमाज के नेताओं के प्रयत्नों से उत्तर प्रदेश मे 'नायक बालिका संरक्षण' कानून बनाया गया था जिससे वेश्यालयो के लिए छोटी आयु की लड़कियों की उपलब्धि को रोका जा सके परन्तु खेद है कि वह कानून भी अमल मे नहीं आ रहा अन्य सामाजिक कानूनों की भांति वह भी उपेक्षित है। और यही कारण है कि मेरठ मे नायक जाति की वेश्याओं के पास इस समय भी छोटी आयु की बालिकायें विद्यमान है। यदि राज्य सरकार इनकी रोक थाम का भी प्रबन्ध करे तो भी वेश्यावृत्ति की कमी होने मे सहायता मिल सकती है।

आज कल्याणकारी राज्य के बहुत ढोल पीटे जा रहे है परन्तु वास्तविक कल्याणकारी राज्य की स्थापना तभी हो सकती है जब मातृशक्ति का उद्धार होगा।

—नीलिमा, मेरठ

पंचवर्षीय योजना

धन्धे की खोज

"ऐसा लगता है कि यहाँ भी मुझे नौकरी नहीं मिल पायेगी। ये उद्गार दर्जा आठ पास बेकार नवयुवक हरनाम सिंह के हैं, जो काम पाने की उम्मीद में काम दिलाऊ दफ्तर आया था किन्तु दसवें पास नवयुवकों को चपरासी की ही नौकरी के लिए उत्सुक देखकर अपना धैर्य खो बैठा था।

यह उद्गार केवल हरनामसिंह के नहीं है किन्तु नौकरी की खोज में परेशान देश के हजारों नवयुवकों के हैं। यह कहानी केवल हरनामसिंह की नहीं, बल्कि ऐसे ही लाखों हरनाम सिंहों की है। किन्तु हरनामसिंह अन्य युवकों की तरह हिम्मत हारकर नहीं बैठ गया। वह सरकार द्वारा किये गये नौकरी दिलाने के उपायों का पूरा लाभ उठाने का निश्चय करके व्यवसाय सम्बन्धी जानकारी देने वाले केन्द्र में सलाह लेने के लिये गया।

वहाँ उसने अधिकारियों को अपनी परेशानी बतायी कि वह केवल दर्जा आठ पास है और अच्छी नौकरी चाहता है। इस पर उन्होंने उसे बहुत ही सहानुभूतिपूर्ण ढंग से समझा कर कहा, 'परेशान होने की कोई बात नहीं है, बस तुम कोई छोटा-मोटा धन्धा सीख लो।' निर्देशक सिर्फ यह जानना चाहता था कि मशीन पुर्जे आदि का काम सीखने में उसकी रुचि है कि नहीं। हरनामसिंह छोटा मोटा काम धन्धा सीखने को राजी हो गया क्योंकि उसे बचपन से ही मशीन आदि के पुर्जे खोलने और उन्हें ठीक करने का शौक था और इसी कारण उसका ध्यान पढ़ाई में बहुत कम लगता था।

हरनाम सिंह को कई धन्धों के बारे में बताया गया और कहा गया कि वह इनमें से कोई धन्धा चुन सकता है। धन्धे का चुनाव करने के बाद उम्मीदवारों को उस धन्धे की कुछ ट्रेनिंग दी जायेगी। उसके बाद वह कहीं भी बड़ी आसानी से टर्नर, ढालने वाला या मिस्त्री की नौकरी पा सकता है। देश के विभिन्न स्थानों में उद्योग शिक्षालयों और केन्द्रों में इन उम्मीदवारों को काम सिखाने की व्यवस्था है। दूसरी पंचवर्षीय आयोजना के अन्त तक इन केन्द्रों में २० हजार उम्मीदवारों को काम सिखाया जायगा।

इन केन्द्रों में प्राय: निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जायगा और योग्य उम्मीदवारों को वृत्ति भी दी जायगी, प्रशिक्षण के लिए आयु की कोई शर्त नहीं है। यह सब सुनकर हरनामसिंह को फिर से आशा बंधी और उसका मुंह खुशी से चमकने लगा। उसने कई दस्तकारियों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी जाननी चाही।

उससे कहा गया कि टर्नर को लोहे और इस्पात जैसी कठोर धातुओं को खराद मशीन पर चढ़ाकर और छील काट कर नियत आकार प्रकार के कल-पुर्जे बनाने होते है। इस काम में उस धातु की बड़ी-बड़ी सिल्लों को खराद पर सभाल कर चढ़ाना होगा और उसको बड़ी बारीकी से नाप जोख कर घिसना, छीलना या काटना होगा।

कभी कभी इस तरह बनाये गये पुर्जों को जोड़कर तरह तरह के औजार तैयार किये जाते हैं। इन पुर्जों को थोड़ा गर्म करके उन्हें आपस में जोड़ा जाता है। इस काम को झालने वाला करता है। धातुओं को बिजली या गैस से गर्म किया जाता है।

मिस्त्री विभिन्न पुर्जे बनाने वाली मशीनों को चलाने का काम करता है। हरनामसिंह को वही काम पसन्द आया, क्योंकि इसमें उसे छुटपन से रुचि रही है।

स्थानीय वर्कशाप में थोड़े दिन काम सीखने के बाद वह राज्य के उद्योग शिक्षा केन्द्र में काम सीखने गया। वहां उसे पहले गणित, ड्राइंग, धातु तथा मिश्रित धातु के गुण, धातु-विशेष के लिए आवश्यक, ताप नापना मशीनों तथा उनके पुर्जों चलाने; ठीक करने आदि की सैद्धान्तिक शिक्षा दी गयी। उसके बाद उसे कुशल कारीगर के अंतर्गत व्यावहारिक शिक्षा दी गयी।

उसे अपने काम में बड़ा आनन्द आने लगा और काम ही उसके लिये सब कुछ था। मशीनों की खड़खड़ाहट मानो संगीत हो, तेल के धब्बे मानों तमगे। ज्यों ज्यों वह काम सीखता त्यों त्यों उसमें आत्म विश्वास आने लगा और उसे अपने काम पर गर्व होने लगा। आत्मविश्वास इस लिये कि अब वह अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है और गर्व इसलिये कि अब देश के उद्योगों को चलाने में उसका भी हाथ रहेगा।

यह पाठ्यक्रम ढाई साल का है। उसे काम सीखने के लिए कोई फीस नहीं देनी पड़ी, बल्कि उसे कुछ वृत्ति ही दी गयी।

३० महीने की शिक्षा के बाद हरनामसिंह व्यवसाय सम्बन्धी जानकारी देने वाले केन्द्र में गया और अब वह एक प्रशिक्षित उम्मीदवार था। उसके सम्मुख कई नौकरियां थीं और वह इस स्थिति में था कि मनचाही नौकरी कर सके। वह मशीनों की दुकानों, रेलों, सरकारी कारखानों और मोटर गाड़ियों के कारखानों, तेल शोधक, लोहा और इस्पात और बिजली के सामान के कारखानों आदि में कहीं भी काम कर सकता है, वह चाहे तो छोटा सा अपना निजी कारखाना भी खोल सकता है।

सुझाव और सम्मतियाँ

शतांश दीजिए

प्राय: आर्य समाजों में हम देखते है कि सदस्य लोग अपनी आय का शतांश समाज को नहीं देते। स्वामी दयानंद जी महाराज ने स्पष्ट लिखा है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी आय का शतांश समाज को अवश्य दे। आर्य समाज लखीमपुर की भी यही स्थिति है हम जिसके सदस्य हैं। जो व्यक्ति शतांश भी नहीं देता है वह अपनी सभा को आर्थिक दृष्टिकोण से दुर्बल बनाने के अपराध का भागी होता है। नित्य सन्ध्योपासना आदि करने का तो कोई नाम भी नहीं लेता। हम चाहते है कि प्रतिनिधि सभाएं आर्य समाजों को आदेश देवें कि सदस्यगण लोभ कम करें और अपनी आय का शतांश समाज को अवश्य देवे।

—वेदव्रत आर्य, पुस्तकाध्यक्ष
आ० स० लखीमपुर, खीरी

आर्यसमाज के कर्णधारों से

आर्य समाज भारतवर्ष की एक जीती जागती संस्था है। शुद्ध धर्म प्रचार और सब प्रकार से विश्व के कल्याण के लिए महर्षि दयानन्द ने इस समाज की स्थापना की थी पर आज आर्य समाज से यह कार्य नहीं हो रहा है। पारस्परिक मतभेदों में पड़कर आर्य समाज भी नीचे गिर रहा है। आर्य समाज के अधिकारियों को दलबन्दी से ऊपर उठकर सोचना चाहिए। हिन्दी आन्दोलन की बात ही का लीजिए। आर्यसमाज ने इस आन्दोलन में जनसंघ का थोड़ा सा नाम मात्र का सहयोग लेकर अच्छा नहीं किया। आज वे कहते फिरते है कि यदि जनसंघ साथ नहीं देता तो पंजाब में आर्य समाजी कुछ नहीं कर सकते थे। श्री प्रकाशवीर जी स्वतंत्र रूप से खड़े होकर आर्य समाज के प्रभाव से चुनाव जीते। इस बात को जनसंघी अपनी विजय बताते फिरते हैं। पिछले दिनों महाशय कृष्ण ने भी लिखा था—'आर्य समाज ने जनसंघ का कर्जा चुका दिया है।' आज जनसंघ हिन्दी आन्दोलन से कितना अनुचित लाभ उठा रहा है पर आर्य समाज के अधिकारी पता नहीं चुप क्यों बैठे हैं?

—श्यामकिशोर आर्य

जिलासभाओं को दृढ़ बनाइए

केन्द्रीय सरकार की मशीनरी यदि पूरे देश में प्रान्तीय, जिला, नगर व ग्रामीय स्तर पर कार्य न करे तो केन्द्रीय सरकार देश पर शासन नहीं कर सकती। एक स्थान पर बैठकर सरकार दिल्ली से पूरे देश पर शासन करने में असमर्थ हो जायेगी।' यदि केन्द्रीय सरकार प्रान्तीय, जिला व नगर की सभी सरकारी व्यवस्थाओं को सीधे अपने से सम्बन्ध रखे तो सरकार कुछ नहीं कर सकेगी। यही हालत आज हम आर्य समाज में देखते है। प्रान्तीय सभाएं (धन वसूल करने के मामलों में सार्वदेशिक सभा भी) कमिश्नरी, जिला व तहसील की उप सभाओं की उपेक्षा करती हुई अपना सीधा सम्बन्ध ग्रामीय समाजों से बना लेती है और जिला का संगठन नहीं करती है। इससे प्रान्तीय सभा, जिला सभा तथा ग्रामीय समाज तीनों की स्थिति खराब हो जाती है। अतः हम चाहते है कि प्रतिनिधि सभाएं अपनी नीति में परिवर्तन करके जिला सभाओं को कुछ विशेष अधिकार दे। प्रतिनिधि सभा प्रान्त के किसी भी आर्य समाजों से अपना सीधा सम्बन्ध न रखे। सारे कार्य जिला सभा द्वारा हों और सारे आदेश जिला सभा की ओर से जांय। प्रान्तीय सभा जिला सभाओं पर पूरा अधिकार रखे पर उसके अन्तर्गत समाजों पर केवल जिला सभा की ही व्यवस्था चले। चाहे जिला सभाओं पर १००) या ५००) रु० जितना उचित समझे वार्षिक प्रतिनिधि सभा को देना अनिवार्य करदे पर जिले की समाजों की व्यवस्था का भार सीधे अपने ऊपर न रखे। इससे जिले में आर्य समाजों का संगठन सुदृढ़ हो जायेगा, आर्यसमाज की प्रगति होगी, प्रतिनिधि सभा का काम भी कम हो जायेगा धन भी अधिक मिलेगा, और अनुशासन की कमी भी दूर हो जायेगी। क्या हम आशा करें कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के अधिकारी इस दिशा में पहल करेंगे?

—रामेश्वर सहाय, लखनऊ

देशदर्शन

देशीय साप्ताहिक समाचार समीक्षा
(हमारे समाचार समीक्षक द्वारा)

शिक्षा की स्वाधीनता पर आघात

विश्वविद्यालय शब्द पर सरकारी नियन्त्रण

कुछ संस्थाएं जो वास्तव में विश्वविद्यालय नहीं हैं अपने नाम के आगे विश्वविद्यालय लिखती हैं और इस तरह भ्रम पैदा करती है कि वे केन्द्रीय अधिनियम, प्रान्तीय अधिनियम अथवा राज्य अधिनियम के अन्तर्गत संस्थापित हैं। ऐसी शिक्षा संस्थाओं के सम्बन्ध में बहुधा लोग भारत सरकार से पूछताछ करते रहते हैं।

इस सम्बन्ध में जनता तथा शिक्षा संस्थाओं को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम १९५६ को ध्यान में रखना चाहिये। यह अधिनियम ५ नवम्बर १९५६ से लागू हुआ। इस अधिनियम की धारा २३ और २४ में कहा गया है —

२३—केन्द्रीय अधिनियम प्रांतीय अधिनियम अथवा राज्य अधिनियम के अन्तर्गत संस्थापित विश्वविद्यालयों को छोड़कर कोई भी अन्य संस्था अपने नाम के साथ विश्वविद्यालय शब्द लिखने का अधिकारी नहीं है।

इस अधिनियम के लागू होने से पहले जिन संस्थाओं के नाम के साथ विश्वविद्यालय जुड़ा हुआ है उन पर अधिनियम लागू होने के दो वर्ष बाद तक यह धारा लागू नहीं होगा।"

२४—धारा २२, अथवा २३ का विरोध करने वालों पर एक हजार रुपये तक जुर्माना किया जा सकेगा। यदि विरोध करने वाला एसोसियेशन अथवा कोई संस्था होगी तो उसके प्रत्येक सदस्य पर जुर्माना किया जायगा जो एक हजार रुपये तक हो सकता है।

इससे स्पष्ट है कि केन्द्रीय अधिनियम अथवा राज्य अधिनियम के अन्तर्गत संस्थापित विश्वविद्यालय को छोड़कर कोई अन्य संस्था अपने नाम के आगे विश्वविद्यालय शब्द नहीं लिख सकती। जो इसका विरोध करेंगे उनको सजा होगी।

जो संस्थाएं अधिनियम लागू होने से पहले विश्वविद्यालय कहलाती रही हैं वे ५ नवम्बर १९५८ के बाद विश्वविद्यालय नहीं कहलायेंगी। कोई भी संस्था यदि ५ नवम्बर १९५८ के बाद धारा २३ का विरोध करेगी तो सजा की भागी होगी।

डाक विभाग की लापरवाही

इन दिनों डाक विभाग की लापरवाही से सभी व्यक्ति तंग आ गये हैं। देहातों की बात कौन कहे, शहरों में भी किसी दिन समय पर डाक नहीं बंटती। बड़े शहरों में तीन चार बार डाक बंटने की व्यवस्था होती है पर इन दिनों एक ही दो बंटती है। यहाँ तक कि एक्सप्रेस पत्र भी साधारण डाक में बंटते हैं और दूसरे स्थान के पत्र दूसरे स्थान पर अधिक संख्या में पहुंचने लगे हैं।

पूर्वी बंगाल के शरणार्थी कैम्प बन्द होंगे

भारत सरकार ने एक समाचार में बताया है कि पूर्वी बंगाल में विस्थापितों को बसाने के लिए जितने शरणार्थी कैम्प खोले गये हैं, वे सब जुलाई १९५९ तक बन्द कर दिये जायंगे। शेष एक वर्ष की अवधि में सरकार सभी शरणार्थियों को कहीं न कहीं बसा देगी और बाद में शिविरों को बन्द कर दिया जायगा। सरकार को विश्वास है कि एक वर्ष के अन्दर पूर्वी बंगाल की शरणार्थी समस्या सुलझ जायेगी पर जन साधारण का ऐसा विश्वास नहीं है।

पुनः हिन्दी आंदोलन छेड़ने का अन्तिम निश्चय

पंजाब में अनेकों स्थानों का दौरा करते हुए पत्रकारों द्वारा पूछे जाने पर श्री प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी० प्रचार मन्त्री सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति ने बताया कि समिति पुनः आन्दोलन छेड़ने का अन्तिम निश्चय कर चुकी है। चूंकि सरकार ने समिति के साथ विश्वासघात और धोखा किया है अतः आन्दोलन के सिवा और कोई उपाय नहीं है कि पंजाब में हिन्दी की प्रतिष्ठा को बचाई जाय। आपने कहा कि हिन्दी आंदोलन की तैयारी के ही लिए हम पंजाब के विभिन्न नगरों का दौरा कर रहे हैं। पंजाब की जनता में आज भी असीम उत्साह है और वह तब तक चुपचाप नहीं बैठेगी जब तक पंजाब में हिन्दी को उचित स्थान नहीं मिल जाता। आपने कहा कि इस बार का आन्दोलन पूर्व की अपेक्षा अधिक जोरदार होगा।

पाकिस्तान की डवांडोल स्थिति

जब से पाकिस्तान बना इसकी स्थिति सदा डवांडोल ही रही। चाहे पूर्वी पाकिस्तान हो चाहे पश्चिमी पाकिस्तान। पूर्वी पाकिस्तान में इस समय तो कोई सरकार बनाने वाला ही नहीं तैयार होता। आपसी झगड़े चरमसीमा पर पहुंच गये हैं। पश्चिमी पाकिस्तान में भी काश्मीर में पाक निरीक्षकों द्वारा युद्ध विराम रेखा के पार करने के प्रश्न को लेकर, सम्प्रति गर्मा गर्मी हो गई है। एकाध विचारशील पाकिस्तानी नेता इस सम्बन्ध में यद्यपि कुछ अच्छी सलाह भी देते हैं तो उनकी कोई सुनता ही नहीं है। वैसे भी आर्थिक दृष्टि से पाकिस्तान की हालत बहुत ही खराब है। आजाद काश्मीर की स्थिति और भी बुरी है। वहाँ बहुत लोग भूखों मर रहे हैं।

डेपूटेशन द्वारा प्राप्त धन की सूची

१—	श्री मन्त्री जी आ० स०	पुरानी मण्डी सहारनपुर	५१)
२	" "	खलासी लाइन सहारनपुर	११)
३—	" "	हकीकतनगर सहारनपुर	११)
४—	" "	वैदिक दैनिक सत्संग, सहारनपुर	११)
५—	" "	नकुड़ सहारनपुर	२१)
६—	"	गंगोह "	५१)
७	" "	दर्रापार "	१०१)
८		खान आलमपुरा "	११)
९		सिविल लाइन्स "	५०)
१०—	" "	अम्बहटा "	१०१)
११—		वैदिक दैनिक सत्संग सहारनपुर	१४)
१२		हिन्दी रक्षा समिति मुजफ्फरनगर	१७५)
१३		शामली मुजफ्फरनगर	१०१)

योग—६७९)

पर्युक्त धन सभा उपप्रधान श्री कालीचरण जी आर्य एवं श्री प्रो० रत्न सिंह जी एम० ए० अन्तरङ्ग सदस्य द्वारा सभा को डेपूटेशन में प्राप्त हुआ। सभा दानी सज्जनों एवं कार्यकर्ताओं की अत्यन्त आभारी है और सभा उक्त आर्यसमाजों को जिन्होंने इस कठिन समय में सभा के लिए सहायता प्रदान की है धन्यवाद देती है।

सभा कोषाध्यक्ष व संचालक प्रांतीय आर्यवीर दल

श्री रामजीप्रसाद गुप्त का भ्रमण प्रोग्राम

२०।७।५८	आर्यसमाज, अमरोहा
२२।७।५८	गजरौला
२३।७।५८	धनौरा मण्डी
२४।७।५८	गढ़मुक्तेश्वर
२५।७।५८	हापुड़
२६।७।५८	गुलावठी

उक्त स्थानों पर समाजों के निरीक्षण के साथ ही उपर्युक्त स्थानों पर आर्यवीर दल की शाखाओं में भी भाग लेंगे। २०।७।५८ को आप अमरोहा में आयोजित पश्चिमी उत्तरप्रदेशीय आर्यवीर दल के कार्यकर्ताओं की बैठक में भी भाग लेंगे। समाजें आप को सभा का प्राप्तव्य धन तथा वेद प्रचार में अधिक से अधिक धन देने का कष्ट करें। —सभा मन्त्री

'प्रतिवाद'

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री प्रो० रत्नसिंह जी एम० ए० के विरुद्ध साइक्लोस्टाइल किया एक लेख श्री भारतेन्द्रनाथ जी गाजियाबाद के नाम से वितरित हुआ है। उसके सम्बन्ध में श्री भारतेन्द्र नाथ जी लिखते हैं —

श्री प्रो० रत्नसिंह जी के सम्बन्ध में जो विज्ञप्ति मेरे नाम से वितरित की गई है, उससे मेरा किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं है— पाठक भ्रान्ति में न पड़ें।

—फूलनसिंह सभा मन्त्री

आर्य देवी की आवश्यकता

मेरे एक अग्रवाल वैश्य मित्र के लिए (जिनकी अवस्था २८ वर्ष है। पहली पत्नी से एक कन्या ५ वर्ष की है) एक आर्य विधवा की आवश्यकता है सम्बन्ध वैश्य मात्र में हो सकता है। महिला साधारण परिवार की व साधारण पढ़ी लिखी होनी चाहिये।

आर्य फार्मेसी अजमेर रोड अजमेर

पंजाब हिन्दी आन्दोलन

भारतवर्ष के सभी आर्य समाजों और हिन्दी रक्षा समितियों को सूचित किया जाता है कि शानदार सार्वजनिक सभा करके और यथा संभव जलूस निकाल कर बड़े उत्साह और जोश के साथ अपने अपने नगर में निम्न चारों दिवस मनायें और निर्धारित प्रस्ताव पास करके केन्द्रीय गृहमन्त्री, प्रधानमन्त्री मुख्य मन्त्री पंजाब, सार्वदेशिक संघर्ष समिति तथा समाचार पत्रों को भेजें।

दिनाङ्क २०-७-५८ की प्रतिज्ञा का प्रारूप

… ………………हम आर्य नर-नारी और हिन्दी-प्रेमी जन व्रतपति परमात्मा को साक्षी करके यह पवित्र व्रत लेते हैं कि पंजाब मे जब तक हिन्दी को न्यायपूर्ण स्थान प्राप्त न होगा तब तक शासन के साथ हमारा संघर्ष जारी रहेगा और हम सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की संघर्ष समिति के आह्वान पर प्रत्येक प्रकार का बलिदान और कष्ट सहन करने के लिए उद्यत रहेंगे। परमात्मा हमारी सहायता करें।

दिनाङ्क ६-८-५८ की मीटिंग के लिए प्रस्ताव का प्रारूप

…………………की हिन्दुओं और आर्यों की यह विराट् सभा गतवर्ष सत्याग्रह के काल में पंजाब राज्य की पुलीस द्वारा हुए आर्य समाज मन्दिर चण्डीगढ़ के अपमान का अभी तक समुचित प्रतिकार न होने पर रोष और क्षोभ प्रकट करती है और केन्द्रीय सरकार को प्रेरणा करती है कि वह अपराधियों को समुचित दण्ड देकर और आर्य समाज का बलात् उठाया हुआ सामान लौटाकर इस पाप का प्रायश्चित करे और ऐसा प्रबन्ध करे कि भविष्य में इस प्रकार की दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति करने के लिए किसी को साहस न हो सके

१६ अगस्त को बहुअकबरपुर दिवस भी मनायें

प्रस्ताव का प्रारूप

… … … …………की यह सभा १६ अगस्त १९५७ को पंजाब पुलिस ने ग्राम बहुअकबरपुर जिला रोहतक में अमानुषिक अत्याचार करते हुए ग्रामीण स्त्री-पुरुषों के सम्मान तथा जीवन के साथ जो निर्मम खिलवाड़ की, उसके प्रति तीव्र रोष प्रकट करती है। तथाकथित प्रजातन्त्रीय शासन के मस्तक पर यह घटना एक कलंक है। बार-बार जनता द्वारा इस का[illegible] न्यायिक जाँच मांग की परन्तु शासन ने कोई ध्यान देना आवश्यक नहीं समझा, उलटा इस काण्ड के उत्तरदायी पुलिस-अधिकारी को सरकार ने उच पदक प्रदान कर सम्मानित किया है, इससे न्याय की भावना को गहरा आघात लगा है।

यह सभा सरकार से अनुरोध करती है कि इस काण्ड की न्यायिक जाँच कराये तथा उत्तरदायी अधिकारियों के विरुद्ध उचित कार्यवाही करे, जिससे जनता में न्याय के प्रति आस्था बनी रह सके।

दि० २४-८-५८ की मीटिंग के लिए प्रस्ताव का प्रारूप

… …… … · की यह सभा फीरोजपुर जेल कांड के हुतात्मा श्री स्व० सुमेरसिंह की पुण्य स्मृति मे अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत करती है और धर्म रक्षा हेतु किए गए उनके बलिदान को आदर और गौरव की दृष्टि से देखती है।

…… · · यह सभा हिन्दी सत्याग्रह आंदोलन के अन्य १८ हुतात्माओं मोहरी ट्रेन दुर्घटना मे कालग्रस्त हुए सत्याग्रहियों तथा राज्य के अत्याचारों से पीड़ित अनेक ज्ञात और अज्ञात नर नारियों के प्रति अपनी आदर भावना प्रदर्शित करती है। भयंकर अत्याचारों, कष्टों और प्रलोभनों की परीक्षाओं में अडिग रहने और अपने को मिटा देने से ही सत्याग्रह की सफलता का मार्ग प्रशस्त हुआ था। निश्चय ही उनका उदाहरण हमारा मार्ग दर्शक रहा है और रहेगा।

—रघुवीरसिंह शास्त्री, मन्त्री

—मध्य उ० प्र० आर्य वीर दल के अधिकारियों में संशोधन करके श्री वेदप्रकाश आर्य को प्रचार मंत्री और श्री देवव्रत शास्त्री को मुख्य शिक्षक नियुक्त किया गया है।

—आर्यवीरदल लालगंज की ओर से श्री देवव्रत शास्त्री ने यहाँ आर्यवीर दल का प्रचार किया जिसका प्रभाव यहाँ के नागरिकों पर अच्छा पड़ा। आर्य वीर दल का कार्य चल रहा है।

—नोनापुर, पुखरायां, कानपुर मे मास्टर नवलकिशोर जी ने आर्य वीर दल का शिक्षण शिविर १६ से २२ जून तक लगाया। एक नयी शाखा भी प्रारम्भ हुई। अनेकों आर्य वीर वैदिक धर्म की दीक्षा लेकर तैयार हुए अनेकों विद्वान लोगों के भाषण हुए।

कन्या की आवश्यकता

मेरा लघु भ्राता शिक्षित जो इस समय सरकारी स्थाई नौकरी में है और १७५) मासिक पा रहा है, ४५०) तक ग्रेड है। इससे अधिक भी उन्नति पा सकता है—गौड़ वंशीय भारद्वाज गोत्र आयु २२ वर्ष पूर्ण स्वस्थ्य नवयुवक के लिए योग्य कन्या जो सुन्दर सुशील गृह कार्य में निपुण हो की आवश्यकता है। सम्बन्ध ब्राह्मण मात्र मे हो सकेगा।

—सुरेशचन्द्र शर्मा बी० ए०
नायब तहसीलदार द्वारा रामचन्द्रशर्मा
शर्मा निवास बांदा

पुस्तक प्रेमियों को भारी रियायत

केवल एक मास तक ।-) आने प्रति रुपया निम्न पुस्तकों पर कमीशन कम कर पुस्तकें भेजी जायेगी, थोड़ा स्टाक है शीघ्र आर्डर भेजकर लाभ उठायें। मध्य प्रदेश में पढ़ाये जाने वाली स्वीकृत पुस्तके व उनकी कुन्जीयां, पैपर्स, गाईड वगैरह भी हमारे यहाँ से किफायत से भेजी जाती है।

चुने हुए उपन्यास मद भरे नयना ५) आवाज २) चट्टान से पूछ लो ३॥) गोरा ६) प्रगति और प्यासु युग की पंगध्वनि ३) सरोज ३) तुलसीदास का मुकदमा २) पतन ३॥) राधा रानी १।) एक युग एक प्रति का ४) हिन्दी के उपन्यास कार ३) सन्ध्या ४) भूली बातें २॥) सगम ४॥) अमीरी के दिन ३) शुमदा ३) विदा ६) सितारा २) विराटा की पद्ममनी ६) उसनी कहानियाँ ३।) अन्य पुस्तकें बुद्ध मीमांसा ३) आर्य की धर्म ३।=) वैदिक लोक व्योहार १) मानव धर्म की आख्याए १।) दुर्गेश नन्दनी २) एकांकी नाटक ॥) हम सौ वर्ष कैसे जीवें २) सभ्यता के खन्डहर १।=) बाल्मीकी रामायण भाषा १५) हिन्दी मुहावरों का कोष ३) भारत मे अंग्रेजी अत्याचार ६) गीता भाषा १॥) अन्तर्ज्वाला २) दशमेश दर्शन २) राजा महेन्द्र प्रताप १॥) पश्चिमी जगत् के साहसी बच्चे २) भारत की स्वर्ग भूमि काश्मीर ३) घर का दर्जी २॥) दिल्ली चलो १) माधव निदान ६) होमियो पैथिक मेडीका ५) एलोपैथिक मेडीका ४) सराद् शिक्षा ३) वेदान्त धर्म २) बौद्धिक सार संग्रह १) बड़ा अकबर विलल २॥) सत्यनारायण की प्राचीन कथा ॥) गर्भ निरोध ॥) अशव परीक्षा २॥) छत्रपति शिवाजी ॥) कल्याण पथ ॥।) अंग्रेजी शिक्षा छोटी ।=) बड़ी १॥) सुगन्धित समह १॥) मोक्ष मार्ग ॥।) प्रगतिशील विचार ॥।) प्राणायाम विधा ।) स्वास्थ साधन १॥) शिक्षा का माध्यम ॥।) ऐतिहासिक कथायें ॥।) कबीर दोहावली ॥) मलयुद्ध अखाड़ा १) सन्त भजन माला ॥) गड़बड़ रामायण ।=) शङ्कर भजनावली ≡) गारीज्यं नार ≡) आर्य गायन ।) देशबन्धु चितरंजन ।=) मगला मुखी ॥।) शब्द रूपावली ।=) नूराना मोती ॥=) दानवीर बलि १॥) गुरु नानक देव ।≡) कृष्णावतार ॥=) शैर दिल राधा चरण ॥) पति भक्ति ॥।) वीर दुर्गादास १) श्रीमती मंजरी ॥=) श्रवण कुमार १) भगवत कृपा के चमत्कार १=) कुकडूकू १॥) कम्पाऊन्डरी शिक्षा २॥) विश्व गुरू भारत ६) आम के गुण तथा उपयोग २॥) दूध के गुण तथा उपयोग २॥) पुरुष रोग चिकित्सा स्त्री रोग चिकित्सा १) बाल रोग चिकित्सा १) स्वयं चिकित्सा धर्म शिक्षा ३) नाम करण संस्कार पद्धिती १।=) वैदिक सन्ध्या विमर्श ॥) पशु चिकित्सा ४) बूटी प्रचार २॥) पान विज्ञान ३) न्याय दर्शनम् २॥) दृष्टान्त सागर ३ भाग १॥) वीर विदुषी स्त्रियाँ १।) कथा पचीसी ॥।) हनुमान जी का जीवन चरित्र ३॥) समाजवाद और राष्ट्रीय क्रांति ४) धर्म का आदि स्रोत २) स्वाध्याय संग्रह २) वेदान्त दर्शनम् ३॥) वैदिक सत्संग ।=) वैदिक सन्ध्या-हरमोनियम रिपेयररिंग २॥) सिलाई मशीन रिपेयरिंग २॥) शरबत विज्ञान २॥) व्योपार दस्तकारी २॥) वार्निश मास्टर २॥) व्योपार बढ़ाने की तरकीब २॥) धूपबत्ती हवन सामग्री बनाने की तरकीब २॥) सत्य व्योपार लक्ष्मी भंडार ४॥) साबुन शिक्षा २॥) फिटकरी के गुण तथा उपयोग २॥) फिल्मी हरमोनियम गाईड २॥) तबला विज्ञान ३)। पुस्तक मंगाने का पता—

—मैनेजर घनश्याम दास सक्सेना विक्टोरिया मारकेट बाड़ा लश्कर ग्वालियर (मध्य-प्रदेश) Gwaliar M. P.

गोमाता पर निर्मम अत्याचार

[श्री रंगीलाल आर्य, आशाराम वैदिक इण्टर कालेज चाहडपुर देहरादून]

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

★ क्या उ० प्र० की गोभक्त संस्थाएं और गाय को माता कहने वाली हिंदू जनता सरकार द्वारा कृत्रिम गर्भाधान के नाम पर गोमाता के साथ किये जा रहे अत्याचार व बलात्कार को सहती ही रहेगी? क्या आप हिन्दुओं की पवित्र भावनाओं को सैक्युलरिज्म की क्रूरता द्वारा ग्रसित हुआ देखना चाहते हैं? यदि नहीं तो सरकार के इस कुकृत्य और पापाचार के विरुद्ध आवाज क्यों नहीं उठाते? इस लेख को पढ़िए और अपना कर्तव्य निश्चित कीजिए। —सम्पादक ★

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

श्री नेहरू के नेतृत्व में भारत की काँग्रेसी सरकार किस प्रकार गोवंश का विनाश करने के लिए कृत निश्चय है यह सभी जानते हैं। हिन्दुओं के हृदय से गाय के प्रति सम्मान की भावना नष्ट कर गोवध के लिए मार्ग निर्बाध करने के हेतु अनेक क्रूरतापूर्ण एवं नृशंस तरीकों से गोवध कराया जा रहा है। हिन्दुओं की भावनाओं को तड़पाने तथा अन्त में गोवंश को पूर्णतया समाप्त करने के लिए सरकार विभिन्न प्रयोगों का नाम लेकर गऊओं पर नित्य प्रति निन्दनीय पूर्ण पैशाचिक एवं निर्मम अत्याचार कर रही है। कृत्रिम गर्भाधान योजना इसी अत्याचार का एक उदाहरण है।

गोवंश वृद्धि तथा नस्ल सुधार के नाम पर सरकार द्वारा कृत्रिम गर्भाधान योजना चालू की गई है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गत वर्ष से जिला देहरादून के पछवादून मण्डल में अनेक स्थानों पर ऐसे केन्द्र स्थापित किये गये हैं जहां गऊओं को कृत्रिम रीति से गर्भाधान कराया जाता है। इस गर्भाधान की रीति इतनी अधिक करुणापूर्ण क्रूरताजनक अनैतिक एवं बलात्कारपूर्ण है कि उसका वर्णन ही सभ्यता एवं मानवता के विपरीत है। प्राकृतिक गर्भाधान की पवित्र इच्छा से प्रेरित गाय को लकड़ी के एक कठोरतम शिकंजे में इस प्रकार जकड़ दिया जाता है कि वह तनिक भी हिलडुल नहीं सकती। तत्पश्चात् उस मूक निस्सहाय तथा भय से त्रस्त काँपती हुई गाय की योनि को एक विशेष यन्त्र से खोलकर अनेक निर्मम क्रियाओं के पश्चात् एक लम्बी नली से गर्भ स्थान में बलात् वीर्य स्थापित कर दिया जाता है। दूसरे तीसरे महीने में गर्भ स्थिति का ज्ञान करने के लिए गाय की गुदा में पूरा लम्बा हाथ डाल कर उसका गोबर निकाला जाता है और इसी प्रकार अन्य नृशंस व अनाचारपूर्ण प्रयोग किये जाते हैं। गर्भ स्थिति तक यही क्रम चलता रहता है। प्रत्येक बार की जाने वाली इस क्रूरतापूर्ण क्रिया में बेचारी निस्सहाय और मूक पशु को जो वेदना पीड़ा तथा महानतम कष्ट होता है उसका अनुमान उस समय गाय की हृदय विदारक दशा को देख कर ही लगाया जा सकता है। बेचारी निर्बल निस्सहाय तथा विवश गाय शिकंजे में कसी तड़पती तथा सिसकती हुई टांगें फैला देती है। उसका सारा शरीर पीड़ा से क्रन्दन कर उठता है और उसकी करुणा पूरित वेदनायुक्त आंखें किसी सहायक को ढूंढती हैं किन्तु हाय रे विवशता और मानव की जघन्यता। यह है परमात्मा के पशु जगत का कल्याणकारी विधान की देन।

प्रकृति प्रदत्त नैसर्गिक [illegible] योनि गर्भाधान की पवित्रम एक कोमलतम भावना के प्रति इतना जघन्यतम पाप तथा मानव की करुणा को कलङ्कित करने के पश्चात् भी इस कृत्रिम गर्भाधान का फल यह होता है कि प्रथम प्रयोग में तो ४० से ७० प्रतिशत तक अवस्थाओं में गर्भ स्थित होता ही नहीं। अनेक अवस्थाओं में तो गाय के गर्भ स्थान में रक्तस्राव और रोग भी हो जाते हैं जिससे बहुत सी गाय सदैव के लिए पंगु बन जाती हैं और बेचारे किसान की भावी आशाओं पर तुषारापात हो जाता है। यदि ऐसा गर्भाधान सफल भी होता है तो इस प्रकार के गर्भाधान से उत्पन्न बछड़े के कंधे पर भरा हुआ भाग ही नहीं होता जिसके न होने के कारण वह सर्वथा अनुपयोगी होगा क्योंकि यह उभरा हुआ भाग ही बैल की मुख्य उपयोगिता एवं विशेषता होती है।

पछवादून मण्डल जिला देहरादून में स्थापित अनेक केन्द्रों पर कृत्रिम गर्भाधान कराई गई गऊओं पर अत्याचारपूर्ण रीति के कारण यहाँ की जनता ने इस विधि का विरोध कर प्राकृतिक रीति का ही आश्रय लिया। किंतु अनाचार अन्याय एवं बलात्कार पर स्थापित काँग्रेस सरकार यह कैसे सहन कर सकती थी कि उसकी योजना के प्रति जनता आवाज उठाये। अतः इसने जनता को कृत्रिम गर्भाधान की इस अनैतिक योजना पर विवश करने के लिए इस क्षेत्र के समस्त सरकारी और पंचायती साँडों को पकड़वाकर उन्हें अन्य स्थान पर भिजवाकर [illegible] महीने रखा गया ताकि जनता इस अनाचार की शिकार और नियंत्रित सम्मुख झुकने पर विवश हो। इतना ही नहीं किन्तु [illegible] कलकत्ता में [illegible] फूंका विधि से दूध [illegible] पानी ही उठा दिया था और उस रीति को समाप्त करने के लिए भरसक प्रयत्न करते रहे। परन्तु हाय गांधी जी के उत्तराधिकारी अहिंसक और प्रजातन्त्री सरकारों के ये क्रूर कृत्य।

शोक महान शोक

कृत्रिम गर्भाधान की इस निष्ठुरता एवं अनाचार के प्रति जनता के स्वाभाविक घृणा तथा साँडों के न होने के कारण अब स्थिति यह है कि प्रकृति गर्भाधान की पीड़ा से व्यथित बेचारी गायें अपने स्थान पर खड़ी-खड़ी [illegible] करती तथा सिर पटकती रहती और समय निकल जाने के कारण गर्भाधान से वंचित रह जाती हैं। कितना बड़ा अपराध है यह सृष्टि नियन्ता परम पुरुष की प्रेरणा के प्रति। बेचारे गरीब किसानों की विवशता वश ये गाय पंगु तथा बेकार होकर इस योजना के कारण अन्त में गोवध करने वाले कसाई के छुरे की धार की शिकार होंगी और इस प्रकार नेहरू सरकार गोवंश को समाप्त करने में अपनी पंचवर्षीय योजना में कृतकार्य हो जायगी।

किन्तु क्या उत्तरप्रदेश की गोभक्त संस्थाएं और गाय को माता कहने वाले हिंदू अपनी माता पर इस अत्याचार व बलात्कार को सहन करते रहेंगे? हाय क्या हिंदुओं की भावनाओं के पवित्र गौरव को सैक्यूलरिज्म की क्रूरता द्वारा ग्रसित कर लिया गया है? क्या अहर्निश अहिंसा का जयघोष करने वाले समस्त गांधी भक्तों के हृदय के किसी कोने में भी दया तथा मानवता का अंश शेष नहीं रहा और क्या हमारे दार्शनिक एवं धार्मिक प्रवृत्ति से प्रेरित मुख्य मन्त्री को इस योजना की वीभत्सता अनैतिकता एवं हानि का ज्ञान नहीं है? यदि ऐसा नहीं है तो आवश्यकता इस बात की है कि तुरन्त इस अनैतिक अनाचारपूर्ण तथा हानिकारक योजना को प्रान्त भर में समाप्त कर इस योजना के व्यय में चरागाहों तथा उत्तम साँडों की व्यवस्था की जावे परन्तु यदि भ्रम भरे नारों पर आधारित यह काँग्रेसी सरकार अपने निश्चित स्वार्थों की पूर्ति के हेतु योजना का परित्याग न भी करना चाहे तो इतना तो करे कि पूर्व से उपयोग किये जाने वाले साँडों को हटाने और जनता को अपने पशुओं पर अत्याचार कराने के लिए बाधित होना पड़े।

समस्त राष्ट्र भक्त संस्थाओं तथा व्यक्तियों का कर्तव्य है कि वे गोमाता पर होने वाले इस जघन्यतम अत्याचार को रोकने के लिए सरकार को बाध्य करें। ★

(पृष्ठ का शेष)

विवेक महत्व है। कबीर ने लिखा —

गुरु गोविन्द दोनों खड़े
काके लागूं पाय
बलिहारी वा गुरु की
गोविन्द दियो दिखाय।

इसलिए गोविन्द की प्राप्ति के लिए अथवा मुक्ति का मार्ग सिद्ध करने के लिए पहला कर्तव्य माता पिता और आचार्य को देव समझना चाहिए।

दूसरा व्रत अग्निहोत्र है। अग्निहोत्र में भौतिक अग्नि में पदार्थों की स्वाहा शब्द के साथ होम किया जाता है। यह हवन हिंदू धर्म विरोधी पं० नेहरू के मत में भले ही मूर्खता हो परन्तु विश्व कल्याण की भावना इन अग्निहोत्रों से मनुष्यों में समाविष्ट होने के कारण ही यह हवन या अग्निहोत्र ब्रह्मचर्य गृहस्थ और वानप्रस्थ में करने का विधान है।

सबसे बाद तीसरा स्कन्ध यज्ञ अध्ययन और दान का है। यज्ञ का तात्पर्य परोपकार के कार्यों से है दान से मतलब धन विद्या और ज्ञान आदि के दान से है तथा अध्ययन का मतलब वेदादि का अध्ययन और सबसे बढ़कर अपना [illegible] एवं चरित्र सुधार का अध्ययन।

इस प्रकार यम ने बतलाया कि जिसने तीन आश्रमों में तीन व्रत किया है जिसने वेद अध्ययन और दान के कर्म किए जिसने माता पिता और आचार्य का सत्संग कर इस शिक्षा को प्रारम्भ से प्राप्त कर उस परमात्मा को जान लिया है और जो विद्वान् इस प्रकार तीन आश्रमों में नियमित रूप से अग्निहोत्र करता है और प्रभु की उपासना करता है वह निश्चित रूप से जन्म मृत्यु को तर जाता है। ★

पंजीकरण स ए ६०
आषाढ़ २९ शक १८८०(१३ जुलाई ५८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य ५६६३ तार आर्यमित्र

मनोवैज्ञानिक चर्चा

स्वप्न

[श्री राघव सेवक औषधालय बाराबंकी]

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

★ वैदिक मन्त्रों में हम प्रार्थना करते हैं तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ★ स्वप्न विज्ञान मानसिक अवस्थाओं का विश्लेषण ही है। हम अपने ★ मानसिक विचारों को जितना अधिक शुद्ध रक्खेंगे मन को अधिक शान्ति ★ मिलेगी और जितना ही वाह्य जगत् से हमारा मन संलग्न रहेगा उतना ★ ही इच्छा पूर्ति का असन्तोष बना रहेगा। स्वप्न मन की इन्हीं भावनाओं के प्रतीक होते हैं। —सम्पादक ★

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

शायद दुनिया में कोई भी व्यक्ति ऐसा न होगा जिसने सोते में अपना रुपहला संसार न बसाया हो। नींद के समय परिवेश से सम्बन्ध प्राय छूट जाता है लेकिन जो कुछ देखते हैं वह बिलकुल सच मालूम पड़ता है क्योंकि उस समय वास्तविक जगत् से उसकी तुलना नहीं की जा सकती है। स्वप्न नाटक के दृश्यों की तरह दिखलाई पड़ते हैं जो सुगठित से लगते हैं। स्वप्न की एक बड़ी विशेषता है कि वे शीघ्र भूल जाते हैं। कभी कभी तो ऐसा होता है कि स्वप्न देखते देखते हम जग उठते हैं और अपने स्वप्न को याद करते तो कुछ भी याद नहीं आता है।

स्वप्न क्यों दिखलाई पड़ते हैं? उनका हमारे जीवन में क्या सम्बन्ध है? इसी प्रश्न को लेकर आधुनिक मनोविज्ञानिकों ने काफी खोज की है। फ्रायड और युंग के नाम विशेष प्रसिद्ध हैं। फ्रायड का यह विचार था कि व्यक्ति के सभी स्वप्न उसकी किसी न किसी वासना की तृप्ति प्रच्छन्न रूप में करते हैं। हमारे स्वप्न बचपन से लेकर अब तक की दबी हुई इच्छाओं की पूर्ति के साधन होते हैं। युंग का ख्याल था कि हमारे स्वप्न हमारी वर्तमान परिस्थितियों तथा आवश्यकताओं के सूचक होते हैं। फ्रायड मानसिक रोगियों के इलाज में रोगी से पिछली रात्रि में देखे गये स्वप्नों का वर्णन करने को कहता था स्वतंत्र साहचर्य द्वारा वह उनका विश्लेषण करता था। स्वप्न के प्रत्येक बात को लेकर रोगी उस बात पर स्वतंत्र रूप से सोचता है जिससे स्वप्न का संकेत व्यक्तिगत महत्व की ओर समझा जा सके। इस प्रकार अचेतन में पड़ी हुई अतृप्त वासनायें जिन्हें सामाजिक बंधनों के कारण याद करने से डरते थे चेतना में आ जाती थीं। फ्रायड का विश्वास था कि अचेतना में पड़ी हुई हमारी अतृप्त वासनायें स्वप्न में अपनी पूर्ति करने की कोशिश करती हैं।

इसके अतिरिक्त पार्थिव और आन्तरिक शारीरिक उत्तेजनायें भी स्वप्न का निर्माण करती हैं। कई बार हम स्वप्न में देखते हैं कि हम प्यासे लगी है और पानी मिल नहीं रहा है मुंह सूख गया है। स्वप्न से जगने पर सचमुच प्यास लगी मालूम होती है। इस प्रकार के स्वप्न आन्तरिक शारीरिक उत्तेजना के कारण आते हैं। जाड़े के दिनों में पैर पर से लिहाफ हट जाय और खूब ठंडी ठंडी हवा बहती हो हम पानी पर तैरने या चलने का स्वप्न देख सकते हैं। घड़ी की टिक टिक को मधुर संगीत के रूप में सुनना आदि स्वप्न पार्थिव उत्तेजनाओं के कारण होते हैं।

सोने से पूर्व जिस प्रकार के विचार और भावनायें होती हैं स्वप्न भी प्रायः उसी प्रकार के दिखलाई पड़ते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के स्वप्न उसके अपने व्यक्तिगत चरित्र और स्वभाव से विशेष रूप में प्रभावित रहते हैं।

हमारे एक स्वप्न में हमारी अतृप्त वासनायें हमारे चरित्र स्वभाव विचार और भावनायें आन्तरिक शारीरिक उत्तेजनायें तथा वाह्य उत्तेजनायें सभी एक साथ सम्मिलित हो सकती हैं इनमें से किसी एक या दो या अधिक से भी हमारे स्वप्नों का निर्माण होता है। (शेष पहले कालम में)

[कालम ४ का शेष]

स्वप्न में मान का समय बहुत थोड़ा होता है इसलिये स्वप्न एक पद्धति में कई चीजों का घनीकरण हो जाता है और स्वप्न छोटा हो जाता है आदमी सा शरीर पत्थर के हाथ हाथी से पैर आपस में मिलकर एक प्रतीक तैयार हो जाता है।

मान लीजिये किसी परिवार में पति पत्नी में खूब झगड़ा हुआ यहां तक कि पति ने पत्नी को पीटा भी। रात को पत्नी यह स्वप्न देख सकती है कि वह अपने लड़के को पीट रही है। पत्नी किसी हालत में यह नहीं सोचना चाहती है कि वह अपने पति के साथ ऐसा व्यवहार करना है यद्यपि उसकी अचेतना में पति के प्रति विरोध का भाव मौजूद है। इस प्रकार स्वप्नों में स्थान भ्रम हो जाता है पति के स्थान पर लड़का आ गया है यह और हो सकता है।

गुण और रूप सादृश्य के आधार पर स्वप्न में बिलकुल भिन्न प्रकार की वस्तुयें आती हैं फ्रायड ने कुछ प्रतीक बनाये हैं यथा जननेन्द्रिय के लिये स्तम्भ छाता चाकू तलवार इत्यादि गुप्तांगों के लिए बक्स कमरा कन्दरा सम्भोग व्यापार के लिये घोड़ा पर्वत और पेड़ पर चढ़ना या नाचना आदि।

सभी स्वप्न एक नाटक की तरह होते हैं। पार्थिव और आन्तरिक शारीरिक उत्तेजनायें भी किसी स्वप्न में इस प्रकार से समयोचित हो जाती हैं कि हमारे स्वप्न का आवश्यक अंग प्रतीत होता है।

स्वप्न प्राकृतिक मनोवैज्ञानिक विरेचन हैं जो मानसिक स्वास्थ्य के लिये हितकर होते हैं। हमारी अतृप्त इच्छायें इनसे अनजान ही हल्की हो जाती हैं।

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ARYA आर्य मित्र MITRA

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का साप्ताहिक मुख पत्र

वार्षिक मूल्य ८) एक प्रति का २० नए पैसे	लखनऊ, रविवार, आषाढ़ २९, शक १८८० २० जुलाई १९५८ ई०	विदेश में १५ शिलिंग

'स्वराज्य' तो हो गया ! 'सुराज्य' भी शीघ्र होना चाहिए ।

धर्म के विना सुख-शान्ति सम्भव नही !

'मूढ़ता' और 'गुलामी' नागरिकता का कलंक है !

आर्य्य जनता कर्त्तव्य-पालन में अविलम्ब अग्रसर हो ।

हमारा सामयिक कार्य-क्रम

★

राज सभा प्रबन्ध से जो यथावत् प्रजा का पालन किया जाता है, वहां अच्छे प्रकार चाहे हुए सुख का करने वाला होता है। जिस देश में विद्यासभा और राजसभा मिल के राज कार्यों को सिद्ध करती हैं, वहां देश धर्म और शुभ क्रियाओं से संयुक्त हो के सुख को प्राप्त होता है। —ऋषि दयानन्द

आर्य्य समाज ने अपने आदि काल से ही, धार्मिक जगत् में, बुद्धिवाद की समुज्ज्वल ज्योति जगमगाया। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, साहित्य और शिक्षा दीक्षा का समादर तथा सम्मान करना सिखाया। समाज संशोधन क्षेत्र में तो आर्य्यसमाज ने वह कार्य कर दिखाया जो इतिहास के अमर पृष्ठों पर, सदैव स्वर्णाक्षरों में अङ्कित रहेगा। विविध दिशाओं में सबलता तथा सफलता से किए गये, आर्य्यसमाज के सेवा कार्यों की, देशी विदेशी सभी महापुरुषों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है।

जननी जन्म भूमि की पराधीनता से दुखी होकर, आज से छयासी वर्ष पूर्व, जब इस देश में, किसी राजनैतिक सभा संस्था का जन्म भी न हुआ था,—ऋषि दयानन्द लिखते हैं—

"आज भारत विदेशियों से पादाक्रान्त हो रहा है। कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। विदेशी राज्य कितना ही अच्छा क्यों न हो, पूर्ण सुखदायक नहीं होता।'

स्वराज्य तथा 'स्वदेशीयता' का समर्थन और 'एक सत्तात्मकता' के स्थान में, प्रातिनिधिक शासन प्रणाली का वैदिक विधान, सर्व प्रथम हम, ऋषि दयानन्द की ही लेखनी तथा वाणी में मिलता है। इसके पश्चात् तो देश के अन्य अनेक महान् नेताओं के नेतृत्व में, असंख्य बलिदानी वीरों ने, अपने अमूल्य प्राणों की आहुतियाँ प्रदान कर, सबल, सुदृढ तथा सच्चे देश प्रेम का प्रशस्त परिचय दिया। आर्य्यसमाज के सदस्य और सेवक भी व्यक्तिगत रूप से बहुत बड़ी संख्या में, स्वातन्त्र्य संग्राम में, सोत्साह सम्मिलित हुए। अन्ततः देश भक्तों का तप त्याग तथा पुण्य प्रताप सफल हुआ और भारत माता ने, सैकड़ों वर्षों से बिछुड़ी अपनी प्यारी स्वतन्त्रता देवी के दिव्य दर्शन किये।

'स्वराज्य' तो हो गया परन्तु 'सुराज्य' की आवश्यकता अभी बराबर बनी हुई है। राष्ट्र पिता महात्मा गांधी के शब्दों में 'सुराज्य' की परिभाषा पढ़िए। वे कहते हैं—

"'सुराज्य' का अर्थ है, अन्न वस्त्र की बहुतायत—इतनी कि उसके विना किसी को नंगा-भूखा न रहना पड़े। एक बालिका भी घोर अन्धकार में, निर्भयता के साथ, घूम फिर सके। एक दूसरे की रक्षा तथा आदर करे। स्त्रियाँ माताएँ और बहनें समझी जाएं। ऊँच नीच का भेद भाव न हो। कोई मन्त्री महलों में न रहे। किसी मन्त्री या अधिकारी को ऊँची तनख्वाहें न दी जाएं। बड़े बड़े खर्चीले तथा बर्बादी भरे सरकारी महकमे न हों। रिश्वत लेने का पाप नष्ट कर दिया जाए। शिक्षा मानसिक व्यायाम या दिमागी अय्याशी का नाम न हो बल्कि उसका अर्थ हो मानवता का विकास और जीवन यापन सम्बन्धी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक होना। 'सुराज्य' का अर्थ यह नहीं है कि मुट्ठी भर लोग तो महलों में रह कर सुख भोगें और करोड़ों बुरी तरह संकट सहें। यदि एक आदमी अपना पेट भरता जाता है, और गरीबों की परवा नहीं करता तो वह चोरी करता है। 'सुराज्य' में नीचे

(शेष पृष्ठ ८ पर)

वर्ष ६०	अवैतनिक सम्पादक— स्नातक उमेशचन्द्र एम. ए., ईश्वरदयालु आर्य, सभा मुख्य उपमन्त्री सह० सम्पादक—भगवत शरण	अङ्क २९

सिद्धान्त-विमर्श

दो शास्त्रार्थ

[श्री पं० बिहारी लाल शास्त्री]

गढ़ मुक्तेश्वर के उत्सव पर हमने दो शास्त्रार्थ पढ़े एक डीडवाना (राजस्थान) का दूसरा गढ़ मुक्तेश्वर का ही।

डीडवाने का शास्त्रार्थ पौराणिक पंडित माधवाचार्य के साथ प० बुद्धदेव जी और प० लोकनाथ जी ने किया था और गढ़ मुक्तेश्वर मे पं० लोकनाथ जी और प० अमरसिंह जी का पं० सत्यव्रत जी के साथ हुआ था। दोनों शास्त्रार्थ पौराणिको की ओर से छपे हुए मिले केवल उन्ही के आधार पर हम अपनी सम्मति लिखते हैं। डीडवाने के शास्त्रार्थ मे माधवाचार्य जी ने कहा कि अश्वमेध यज्ञ मे घोड़े का बलिदान नही होता था किन्तु अश्वगंधा औषध से काम लिया जाता था।

शिव के अंडकोश में ब्रह्मांड हैं।

यज्ञों में पशु नहीं मारे जाते थे।

उस समय पशुओं का प्राण मांस और रुधिर मे नहीं रहता था अतः उनका मांस काटने से पशु मरते नहीं थे।

अश्वमेध यज्ञ में घोड़े का वध आर्य समाज भी नहीं मानता इतने दिन बाद आर्य समाज का प्रचार सफल हुआ कि पौराणिक पडित भी हमारी धारणा की पुष्टि करने लगा पर सब कुछ अलकार मान कर भी फिर माधवाचार्य ने डुबकी लगा ली। मांस का प्रयोग यज्ञ मे नहीं होता था किन्तु अश्वगंधा औषध का प्रयोग होता था एक तरफ तो यह दावा दूसरी तरफ यह कहना कि यज्ञों मे पशु का मांस ले लेने पर भी पशु मरता न था कहाँ तक सगत है।

जब औषध प्रयोग था तो मांस का लेना व्यर्थ और जब मांस से काम चलता था तो औषध की तुक व्यर्थ। बात तो आर्य समाज की अच्छी लगती है। उससे अपने मत को मिलाना भी चाहते हैं। पर पुराण पक में पुनः फिसल जाते हैं। उस समय पशु मांस काटने से मरते न थे उनके प्राण हड्डियों में रहते थे। यदि यह ठीक है तो बाण से मृग कैसे मर जाते थे? ये कल्पनायें थोड़े से बुद्धुओं को भले ही संतुष्ट कर दे पर विचारशील जनता को प्रभावित नहीं कर सकतीं।

यज्ञों में पशु नहीं मारे जाते थे बस बात खत्म हो गई फिर यह कहना कि उनके प्राण हड्डियों मे रह जाते थे इस बात को मान लेना है कि यज्ञों में पशु विनाश न हुआ था।

शिव के अंडकोश मे सब ब्रह्मांड हैं तो शिव विवाह कल्पना प्रसूत हुआ या नहीं? शिव के नेत्र सूर्य चन्द्र अग्नि है। आदि सब कल्पनात्मक साकारता का वर्णन ही तो हुआ

तब कैलाशवासी, वृषभारूढ़, नग्न नीलकंठ एक देशवासी साकार शिव की धारणा तो समाप्त हुई? वस्तुतः शिव हुए निराकार और कवि कल्पना में साकार तो यह आर्य समाज के सिद्धान्त की विजय है या नहीं?

आपके छपाये इन शास्त्रार्थों से निष्कर्ष यही निकलता है कि आर्य समाज का प्रभाव तुम लोगों के दिमागों पर छा गया है। कुछ दिन की घिस घिस और है वह भी जाती रहेगी।

मृतक पूजादि के प्रमाण भी पौराणिक पक्ष ने पेश किये हैं पर पितर क्या हैं इसका स्पष्टीकरण पूरे शास्त्रार्थ में न मिलेगा। महीधर भाष्य में अध्याय २ मत्र ३२ श्रुति के प्रमाण से षड्वाऋतवः पितरः ऋतुओं को पितर कहा गया है।

करो ऋतुओं का श्राद्धः!!

"विशिखाः' का अर्थ माधवाचार्य ने किया है।

"विशिष्टाः शिखायेषां" "बड़ी बड़ी चोटी वाले।"

पर माधव जी के दादा महीधर और उव्वट अर्थ वही करते हैं जो आर्य पडित ने अर्थ किये हैं।

'विगताः शिखायेषां ते शिखा रहिता मुंडित मुंडा." "सर्वमुंडाः" शास्त्रार्थ मे मुकदमों का परिणाम भी छपा है जो कि श्री प० अखिलानन्द जी और श्री लोकनाथ जी के मध्य दायर हुए थे। इस समय दोनों ही पडित स्वर्गस्पष्ट है इस पर कुछ नहीं कहना पर माधव जी ने तोड़-मरोड़ कर नमक मिर्च लगाकर यह हाल छापा है जिससे तत्काल पता लग जाता है कि लेखक अपनी "खिफ़त" उतार रहा है।

पं० अखिलानन्द जी ने पं० लोकनाथ जी पर दावा किया है कि इन्होंने व्याख्यान मे मुझे बुरे शब्द कहे प० लोकनाथ जी ने लिखकर दे दिया कि मैंने बुरे शब्द नहीं कहे पं० अखिलानन्द जी ने इस पर अपना अभियोग उठा लिया। इससे लोकनाथ जी ने क्षमा माँगी और अखिलानन्द जी ने क्षमा दी यह परिणाम कहाँ से निकला? लोकनाथ जी को क्षमा प्रार्थी और अखिलानन्द जी को क्षमा दाता लिखना वंचकता है वा नहीं?

प्रथम पं० लोकनाथ जी ने अभियोग चलाया उसके उत्तर में श्री अखिलानन्द जी ने दावा दायर किया था। पं० अखिलानन्द जी ने जो दुर्वचन लोकनाथजी के लिये शास्त्रार्थ में कहे उसके लिए अखिलानन्द जी को खेद प्रकट करना पड़ा है तब क्षमा प्रार्थी कौन हुआ? और क्षमा दाता कौन? इस तरह पक्षपातपूर्ण मनोभावना से दया भी यह शास्त्रार्थ आर्यसमाज के सिद्धान्तों के विजय की घोषणा कर रहा है :—

यज्ञों मे पशु हिंसा नहीं होती थी

शिव की साकारता कल्पित है वास्तविक नहीं।

दूसरा शास्त्रार्थ गढ़मुक्तेश्वरवाला भी अजीब है पौराणिक पक्ष की ओर से शास्त्रार्थकर्त्ता पण्डित जी नव्यन्याय वेदान्त और व्याकरण के आचार्य हैं पर वेदों में ईश्वर को साकार दिखा रहे हैं। पण्डित जी महाराज यदि ईश्वर साकार है तो संयुक्त पदार्थ हुआ वा नहीं? पेड़ पाषाण आदि सब साकार पदार्थ संयुक्त है (परमाणुओं से मिलकर बने हैं) और उक्त सब पदार्थ कर्तृ जन्य हैं। तो ईश्वर भी कर्तृजन्य एवं अनित्य हुआ वा नहीं?

दूसरा पक्ष पण्डित जी का है मृतक श्राद्ध की सिद्धि का मन्त्र प्रस्तुत किया है "ये निखाता ये परोप्ता" आदि "जो पितर गाड़े गये जो जल में डाले गये आदि उन सब को हे अग्नि तू हवि खाने के लिए ला" पण्डित जी के अर्थ पर बिना ननुनच किये हम केवल ये पूछते है कि हम गाड़ा जाता है या शरीर? तो गड़ा हुआ पितर शरीर हुआ न? शरीर श्राद्ध खाने आता नहीं गड़ा पड़ा है न आपकी प्रार्थना सुनता है और जीव गाड़ा हुआ नहीं है न गड़े, न जले, न जल में बहे तो उसके लिए "निखाता" "परोप्ता" "अग्निदग्धा" आदि विशेषण नहीं आ सकते जिसके लिए विशेषण है वह खाने की क्षमता नहीं रखता और खा सकता है उसके लिए "निखाता" आदि विशेषण नहीं हैं तो आपका अर्थ असगत ही हो रहा? प्रथम अपने अर्थों को सुसंगत बनाइय तब आप प्रश्न के अधिकारी हैं।

ऐसे तर्कहीन पक्षों को लेकर न्याय और वेदान्त का आचार्य जनता में खम ठोक कर खड़ा हो, है न यह उपहास की बात?

(शेष पृष्ठ १६ पर)

भारत की गरीबी स्वराज्य की प्यासी है

स्वाधीनता का अमृत जल उससे हजारों मील दूर है

किसी प्यासे के लिए आप १० हजार मील से पानी लाकर उसे एक हजार मील की दूरी पर रख दें तो क्या उससे प्यासे की प्यास बुझ जायगी? पानी को तो प्यासे के पास पहुंचाना होगा।

अगर ग्राम स्वराज्य नहीं तो स्वराज्य किस काम का? ग्राम राज ही वास्तव में स्वराज्य कहा जा सकता है। हमारा स्वराज्य तो उस पानी की तरह है जो प्यासे से एक हजार मील की दूरी (दिल्ली) पर रक्खा है। स्वराज्य इङ्गलैण्ड से चलकर दिल्ली तो पहुँच गया पर ग्रामों तक अभी नहीं पहुँचा है। स्वराज्य तो सूर्योदय की तरह प्रत्येक झोंपड़ी के द्वार तक पहुंचना चाहिये। स्थिति तब तक न सुधरेगी, जब तक दल बन्दी में फंसे योग्य व्यक्ति जनता की सेवा के काम में न लगेंगे। आज तो देश की सेवा सरकारी मदद और चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा की जाती है।

प्रायः रचनात्मक कार्यों में लगे लोगों को मूर्ख समझा जाता है, परन्तु हमें इस ओर ध्यान न देकर दल बन्दी से दूर रहना चाहिये और अपना काम चुने हुए प्रतिनिधियों की दया पर न छोड़कर स्वयं करते रहना चाहिये। प्रतिनिधियों का शासन स्वशासन नहीं। स्वशासन तो ग्राम स्वराज्य के द्वारा ही सम्भव है।

—आचार्य बिनोवाभावे

(उस्मानाबाद १९ जून का भाषण)

वेदोपदेश

ओ३म् समानी व आकूतिः समाना हृदयानिवः ।
समान मस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥ ऋ० १०।१९१।४

हे मनुष्यों, तुम्हारे संकल्प समान हों, तुम्हारे हृदय एक हों। तुम्हारे मन एक हों। जिससे कि तुम प्रसन्नतापूर्वक परस्पर मिले जुले रहो।

सम्पादकीय

लखनऊ—२० जुलाई १९५८, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०५८

संघर्ष का स्वरूप

किसी भी संघर्ष के लिये उसके संचालकगण एक स्वरूप निश्चित कर युद्ध घोषणा करते हैं और अपने अनुयायियों को प्रेरित करते है और उनके सहयोग से सफलता की ओर बढ़ने का प्रयत्न करते है।

आर्य समाज हिन्दी के प्रश्न पर पंजाब में एक संघर्ष में रत है। कभी यह संघर्ष उग्र रूप धारण कर लेता है कभी सामान्य, सात मास तक सत्याग्रह के रूप मे हमने संघर्ष किया और छः मास से हम सत्याग्रह शास्त्र के अनुसार अपने विरोधी के हृदय परिवर्तन की समीक्षा कर रहे हैं। सत्याग्रही को कभी निराश नहीं होना चाहिये परन्तु एक संस्था या संगठन के रूप में हमे पर्याप्त निराशा अनुभव हो रही है और सम्पूर्ण परिस्थितियों पर विचार करने और कार्य मे प्रगति लाने के लिए इस बार सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति ने एक संघर्ष समिति का निर्माण कर दिया है। इस संघर्ष समिति का कर्तव्य स्पष्ट है कि वह संघर्ष की रूप रेखा का निर्णय करे और सुझाये कि संघर्ष का स्वरूप क्या हो।

सत्याग्रह का परीक्षण हो चुका उसका जन मानस पर प्रभाव भी हुआ पर महात्मा गांधी जी के सत्याग्रहों की भांति हमारा सत्याग्रह भी संघर्ष की एक सीढ़ी ही कहा जा सकता है अभी मार्ग बहुत लम्बा और कठिन दिखाई देता है इसलिए क्यों न हम अपने संघर्ष की रूपरेखा का सिंहावलोकन कर उचित परिवर्तन और संशोधन कर लें।

एक संगठन के अंग होने के नाते सबको अपने नेतृवर्ग का आदेश पालन करना चाहिये, पालन किया गया और पालन किया जायगा, परन्तु जब संघर्ष की रूप रेखा निर्धारण का समय हो तब उस सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करने की स्वतन्त्रता का भी आदर किया जाना चाहिये। इसी भावना से हम संघर्ष के स्वरूप के सम्बन्ध मे कुछ विचार प्रकट करना आवश्यक अनुभव करते हैं। आशा है संघर्ष समिति इस या इसी प्रकार के अन्य दृष्टिकोणों और सुझावों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेगी।

महात्मा गांधी जी ने जो सत्याग्रह शास्त्र के जन्मदाता माने जाते है सम्भवतः १९२१ में भारत वासियों से अपील की थी कि यदि आप लोग मेरा कहना माने तो मै स्वराज्य एक दिन मे प्राप्त करा सकता हूं। सुनने मे सबको बात बहुत अच्छी लगी परन्तु उसका क्रियात्मक पक्ष था ब्रिटिश सरकार से असहयोग, कुछ लोग सामने भी आये और गांधी जी से बोले हम आपकी असहयोग योजना से सहमत हैं परन्तु हम यह भी जानते है कि हमारे हजारो लाखों भाई हमारा स्थान भरने के लिये तैय्यार है। यदि आपके असहयोग आन्दोलन के लिये हम सरकारी नौकरियाँ छोड़कर आगे आ जांय तो स्वार्थी अवसरवादी उन स्थानों पर पहुंच जायेगे। इस प्रकार हमारा त्याग व्यर्थ हो जायगा। गांधी जी ने अनुभव किया अभी देश कमजोर है फिर भी उन लोगों से यही कहा कि बिना इस बात की चिन्ता किये कि दूसरे क्या करेंगे आप असहयोग को स्वीकार कर लें। इस असहयोग आन्दोलन का जो व्यापक प्रभाव हुआ वही भारतीय स्वाधीनता का आधार बना।

उपर्युक्त दृष्टान्त का उल्लेख करने के बाद हम अपने आन्दोलन के लिए असहयोग का प्रतिपादन करना चाहते हैं। हम असहयोग आरम्भ करने की कठिनाइयों से परिचित है परन्तु जब हम अपने को सत्य पक्ष मे अनुभव करते हैं तब नैतिक साहस के साथ इस दिशा में भी आगे बढ़ना होगा। इसलिये अबकी बार सत्याग्रह से पूर्व असहयोग की नीति पर चलना चाहिए। हमारा संघर्ष भाषा की अनिवार्यता के विरुद्ध है जिसका सीधा सम्बन्ध शिक्षण संस्थाओं से है और पंजाब की आधे से अधिक शिक्षण संस्थाओं का स्वामित्व या संरक्षण आर्य समाज के हाथ में है। अतः जिन शिक्षण संस्थाओं मे हिन्दी के ऊपर अन्याय-अत्याचार हुआ है उनसे हिन्दी प्रेमी अध्यापक-अध्यापिकाएं और छात्र छात्राएं एकदम असहयोग करें। असहयोग का यह कदम अनेक सत्याग्रहों से अधिक प्रभावकारी सिद्ध होगा ऐसा हमारा विश्वास है।

शिक्षण संस्थाओं के मोह ने आर्य समाज की प्रगति में समय समय पर बहुत बाधा पहुंचाई है पिछले सत्याग्रह मे भी हम शिक्षण संस्थाओं के मोह से मुक्त न हो सके, हम सदैव फूंक फूंक कर कदम रखते रहे कि कहीं सरकार हमारी संस्था की मान्यता पर आघात का अवसर न पा जाये। हमारी इस मनोवृत्ति का जनता पर बुरा असर पड़ा जिसे हमें दूर करना होगा। हमारी यह मनोवृत्ति ऐसी ही है जैसी मान लीजिए किसी क्षेत्र के पोस्टमैनों पर अत्याचार हो रहा है और उससे वे पीड़ित है परन्तु डाक की नौकरी रोज बजाते और अपनी तनख्वाह मारते हैं, और जनता से त्राण के लिये अपील करते है तो यह कार्य उनका ढोंग ही कहलायेगा। स्पष्ट अर्थ यह कि पोस्टमैन तो अपनी नौकरी करते रहे और दूसरे लोग उनके कारण कष्ट सहें। यदि पंजाब मे सत्याग्रह के बजाय असहयोग नीति अपनाई गयी होती तो सारी मशीनरी ठप्प हो जाती, आज भी स्थिति आपके हाथ मे है बिना शिक्षा संस्थाओं के भविष्य की चिन्ता किये आप असहयोग की घोषणा करें और उसे क्रियान्वित करें उसका व्यापक प्रभाव पड़ेगा। हमारी दुरंगी नीति कि हमारी शिक्षा-संस्थायें भी बनी रहे और हम सरकार से संघर्ष भी करते रहें आर्य समाज के प्रति जन मानस में संशय भावना को जन्म देती है जिनका निराकरण होना चाहिए। आशा है संघर्ष समिति संघर्ष की भावी रूप रेखा का निर्धारण करते हुए इस सुझाव पर भी विचार करेगी।

संघर्ष समिति ने २० जुलाई को प्रतिज्ञा दिवस, ६ अगस्त को आर्य समाज चंडीगढ़ अपमान प्रतिकार दिवस १६ अगस्त को बहु अकबरपुर दिवस और २४ अगस्त को श्री सुमेरसिंह बलिदान दिवस मनाने की घोषणा की है। समस्त आर्य जगत् मे ये दिवस उत्साह और गम्भीरता के साथ मनाये जाने चाहिये जिससे आन्दोलन की ज्योति जन मानस के हृदयों का स्पर्श करती रहे और हमें जन-बल का समर्थन प्राप्त हो।

पाक विशेषज्ञों का निर्माता अलीगढ़ विश्वविद्यालय

हमारे देश मे धर्म निरपेक्ष राज्य के नाम पर जो न हो जाय थोड़ा है। भारत के विभाजन के लिए उत्तरदायी अलीगढ़ विश्वविद्यालय धर्म निरपेक्षता के नाम पर आज भी भारत के लिए आस्तीन का सांप बना हुआ है। भारत सरकार के संरक्षण मे उसे लाखों रुपय उन्नति के लिए प्राप्त हो रहे हैं। भारत सरकार तो यह सब विश्वविद्यालय अधिकारियों और छात्रों के हृदय परिवर्तन की भावना से कर रही है पर जैसे सांप को पिलाया दूध विष ही बनता है अमृत नहीं इस विश्वविद्यालय के लिए प्रदत्त सम्पूर्ण धन राशि साम्प्रदायिकता के विष रूप मे ही परिवर्तित होती है।

किसी देश के लिए विशेषज्ञ तैयार करके भेजने में आज के अन्तरराष्ट्रीय युग में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए परन्तु कोई राष्ट्र अपने धन और साधनों से अपने विरोधियों का सृजन करे इसे उदारता कहा जायगा या आत्मघात। उक्त विश्वविद्यालय से पिछले ११ वर्षों मे उत्तीर्ण ९० प्रतिशत छात्र पाक सरकार की सेवा मे कार्य कर रहे है। इसे भारत के धन से भारत के शत्रुओं का उत्पादन ही कहा जायगा। परीक्षा के अन्तिम वर्ष मे ही अधिकांश छात्रों को पाकिस्तान मे सरकारी नौकरी के लिए निमन्त्रण भेज दिया जाता है। देश में डाक्टरों और इञ्जीनियरों की कमी के लिए नेहरू जी बार बार कहते है पर जब बने हुए विशेषज्ञ हमारे साथ देशद्रोह करें तो क्या यह स्थिति चिन्तनीय नहीं? क्या प्रधान मन्त्री उक्त विश्वविद्यालय की स्थिति और मनोवृत्ति की जांच करेंगे? हमें भय है कि सम्प्रदायवादी मुस्लिम बन्धुओं के भावनाओं के दूषित कृत्ये को आग दिखाने का साहस राजनैतिक स्वार्थ के कारण नहीं किया जायगा पर इस दिशा में उपेक्षा भारत के लिए आत्मघाती होगी। हम समय रहते नेहरू जी से इस ओर ध्यान देने को अनुरोध करते हैं। ★

हिन्दी आन्दोलन समाचार—

लखनऊ में प्रतिज्ञा दिवस की व्यापक तैयारी

पं० प्रकाशवीर शास्त्री का अभिनन्दन व भाषण

लखनऊ हिन्दी रक्षा समिति की ओर से हिन्दी आन्दोलन की व्यापक तैयारी पुनः प्रारम्भ हो गयी है। सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के आदेशानुसार २० जुलाई को प्रतिज्ञा दिवस मनाने की पूरी तैयारी हो रही है। उस दिन सायं ७ बजे झंड़ेवाले पार्क अमीनाबाद मे एक सार्वजनिक सभा होगी। नवयुवक हृदय सम्राट श्री पं० प्रकाशवीर शास्त्री एम०पी० प्रचार मन्त्री सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति २० जुलाई को प्रातः दिल्ली से पधार रहे है। लखनऊ चारबाग स्टेशन पर उनका शानदार स्वागत किया जायेगा और सायंकाल अमीनाबाद की सार्वजनिक सभा मे उनका सार्वजनिक अभिनन्दन करके उनको मानपत्र भेंट किया जायेगा। उस समय उनके ओजस्वी भाषण द्वारा आपको हिन्दी आन्दोलन तथा अन्य बातों की विशेष जानकारी मिलेगी। नगर की जनता को अधिकाधिक संख्या मे उपस्थित होना चाहिए।

इस बार आर्य समाज चौगामा १०१ सत्याग्रही तथा ५०००) रु० देगा

आर्य समाज चौगामा, मेरठ के अधिकारियों ने सूचित किया है कि पंजाब हिन्दी आन्दोलन के लिए इस बार आर्य समाज चौगामा १०१ सत्याग्रही तथा ५०००) रु० देगा। गत वर्ष भी इस आर्य समाज ने २२००) रु० एकत्र किया था और ५१ सत्याग्रहियों का जत्था भेजने वाला था अब तक आन्दोलन स्थगित हो गया। समाज का कहना है कि इस बार आन्दोलन को तीव्रगति से चलाना चाहिए। पिछला बलिदान व्यर्थ नहीं जायेगा। पंजाब मे राष्ट्र भाषा की रक्षा अवश्य होगी।

आर्य देवी की आवश्यकता

मेरे एक अग्रवाल वैश्य मित्र के लिए (जिनकी अवस्था ३५ वर्ष है। पहली पत्नी से एक कन्या २ वर्ष की है) एक आर्य विधवा की आवश्यकता है, सम्बन्ध वैश्य मात्र में हो सकता है। महिला साधारण परिवार की एवं साधारण पढ़ी लिखी होनी चाहिए।

प्रेम फार्मेसी श्रीनगर रोड, अजमेर

आवश्यकता है

भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस के लिए एक योग्य अनुभवी टेकेदार की। प्रार्थी का आर्यसमाजी होना आवश्यक है। शीघ्र लिखें अथवा मिलें।

—फूलनसिंह मन्त्री
आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

वैदिक संस्कार समाचार—

—आ०स० बसन्तीखेड़ा के कोषाध्यक्ष श्री रामऔतार जी के एक बच्चे का नामकरण संस्कार और एक बच्चे का मुण्डन संस्कार वैदिक रीत्यानुसार श्री रामनारायण शास्त्री ने कराया। प्रधान श्री गंगासागर जी की पुत्री का मुण्डन संस्कार तथा श्री रामस्वरूप जी की बहन की शादी भी वैदिक रीत्यानुसार उक्त पंडित जी ने कराया।

—श्री देवदत्त जी के ज्येष्ठ पुत्र चन्द्रकान्त का यज्ञोपवीत संस्कार व कनिष्ठ पुत्र का नामकरण संस्कार ससमारोह १५ जून को सम्पन्न हुआ। नाम सूर्यकान्त रखा गया। आचार्य विश्वश्रवाः ने संस्कार कराया। स्वामी अभेदानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी आदि महात्मा भी उपस्थित थे।

—श्री बाबूराम सिधौल निवासी की कन्या कुमारी वेदमती का शुभ-विवाह कानपुर निवासी श्री राजकुमार आर्य के साथ सम्पन्न हुआ।

—आ०स० मगहर के श्री शिवकुमारप्रसाद जी का यज्ञोपवीत संस्कार पिछले दिनों सम्पन्न हुआ।

—४ जुलाई को भरवारी में श्री राघोराम साहु के पुत्र मदनमोहन का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ।

—आ० स० समरैन के श्री किशोरीलाल जी की कन्या का विवाह संस्कार सानन्द सम्पन्न हुआ। मन्त्री समाज तथा श्री चन्द्रप्रकाश शर्मा के यज्ञोपवीत संस्कार भी हुए। समाज का साप्ताहिक अधिवेशन पुनः प्रारम्भ हो गया है।

—११ जुलाई को श्री तारिणी कुमार भक्त, लवरहा, अमहा, सहर्षा, का विवाह संस्कार रौजा छपरा निवासी श्री लालजीप्रसाद की पुत्री गीताकुमारी के साथ सम्पन्न हुआ।

शोक समाचार—

—आ०स० हल्दौर ने श्री टीकाराम जी के निधन पर शोक प्रकट किया।

—श्री रामकृष्ण वर्मा एम० ए०, उप मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश के निधन पर आ०स० गुना ने शोक प्रस्ताव पास किया।

आपके निधन पर आर्य समाज महूछावनी म०प्र० ने भी शोक प्रस्ताव पास किया।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

[आचार्य श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, ज्वालापुर]

आदरणीय सभा प्रधान श्री प० हरिशंकर जी शर्मा की अपील के बाद आर्य जगत् के प्रसिद्ध लेखक आचार्य नरदेव शास्त्री ने भी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के इतिहास के रूप मे सभा की उस गम्भीर समस्या की ओर प्रान्त की आर्य जनता का ध्यान आकर्षित किया है। क्या प्रान्त की आर्य जनता इसे पढ़कर कुछ हिलने डुलने का यत्न करेगी ? —सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा का भी अपना एक महत्त्वपूर्ण इतिहास है। इस सभा की स्थापना २९ दिसम्बर सन् १८८६ ई० में अजमेर मे हुई और द्वितीय अधिवेशन मेरठ मे हुआ। मुन्शी लक्ष्मण स्वरूप, प० रामदुलारे लाल बाजपेय, प० बिहारी लाल जी, बा० ज्वाला प्रसाद जी आदि ने इसकी स्थापना में बड़ा योग दिया। श्री मुन्शी नारायण प्रसाद जी, श्री प० भगवानदीन जी आदि ने उसके विकास में प्रारम्भ मे यथेष्ट सहयोग दिया। पहिले यह था कि जहाँ के प्रधान अथवा मन्त्री चुने जाते थे वहीं दफ्तर चला जाता था। वर्षों तक यह प्रतिवर्ष स्थान बदलौअल चली आती रही। प्रतिनिधि सभा का केन्द्रीय कार्यालय मेरठ, सहारनपुर, लखीमपुर, बुलन्दशहर, फर्रुखाबाद, अलीगढ़, आगरा वृन्दावन आदि स्थानों मे रहा। बुद्धिमान् कार्यकर्ताओं को यह बात खटकती रही। अन्त मे स्व० श्री प० रामचन्द्र जी रिटायर्ड इञ्जीनियर के उद्योग से प्रतिनिधि सभा को लखनऊ में वर्तमान स्थान मिला उन्होंने ही रुपये पैसे की मदद की। यह मदद ऋण के रूप में थी—जिसे श्री प० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय ने वर्षों तक अनवरत प्रयत्न करके उतार डाला।

जब से सभा लखनऊ आया तभी से वह यहाँ स्थिर है। स्व० सेठ मदन मोहन, प० रासबिहारी तिवारी, प० रामदत्त शुक्ल आदि का पुरुषार्थ प्रशंसनीय है। आर्यमित्र तथा आर्य मित्र प्रेस भी लखनऊ में है। सब कुछ यहीं है। जब से प्रतिनिधि सभा लखनऊ आया है तब से आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन प्राय लखनऊ में ही होते है। नहीं तो जहाँ से निमन्त्रण आता और जिसको अन्तरङ्ग सभा स्वीकार कर लेता वहाँ अधिवेशन हो जाता है।

सभा का चुनाव प्रति वर्ष होता है। अभी नया चुनाव हुआ कि दो चार मास काम समझने में लगते है—जहाँ काम समझकर तीन चार मास काम किया कि दूसरा चुनाव सामने दिखलायी पड़ने लगता है, कोई स्थिरता से क्या काम करे।

इस वर्ष उत्तर प्रदेश प्रतिनिधि सभा की प्रधानता एक साहित्यिक महारथी के गले में पड़ गयी है। सयोग से यह अच्छा हुआ कि उन्हे उपप्रधान और मन्त्री उपमन्त्री आदि भी अच्छे कार्यकर्त्ता मिले है। निश्चय ही उनको इनसे यथेष्ट सहयोग प्राप्त होगा। इसलिए श्री कविरत्न पण्डित हरिशङ्कर शर्मा द्वारा सभा की गाड़ी अच्छी तरह चलनी चाहिए। कठिनता तो यह है कि जो पुराने अधिकारी



जाते है वे नये अधिकारियो के सुभीते का ध्यान नहीं रखते। नये अधिकारी आकर जब देखते है कि कोश मे कुछ नहीं, आर्यमित्र भी घाटे मे चलता है, उपदेशक मण्डली भी एक प्रकार से स्वतन्त्र चलती है क्योकि उनके मासिक वेतन के भुगतान का कोई प्रबन्ध नहीं जब उनका वेतन भी अपने आप निकलना पड़ता है। स्वय मागकर वेतन निकाले, प्रतिनिधि सभा के कोश में देवे, और आज्ञा पालन करे अधिष्ठाता उपदेश विभाग का। कैसी विचित्र दशा है उपदेशकों की। स्थिरता नहीं, उनका पता नहीं कि मन्त्री जी न जाने कब जवाब दे दे। ऐसी दशा में काम क्या हो। कर्मचारियों की भी यही चिन्ता है।

प्रतिनिधि सभाओं को अपने अपने प्रदेश की पूर्ण स्वामिनी है। स्वामी के पास (१) कोश हो (२) अच्छा मुद्रणालय हो (३) उत्तम समाचार पत्र हो (४) हाथ पैर अर्थात् उपदेशक प्रचारक, भजनोपदेशक महानुभाव योग्य हों (५) सिर अर्थात् प्रधान बुद्धिमान् दक्ष हो (६) मन्त्री भी दक्ष हो (७) अन्तरङ्ग अर्थात् कार्यकारिणी भी प्रधान तथा मन्त्री के अनुकूल हो ये सात अङ्ग ठीक हो तो कार्य चले।

जहाँ तक मैं समझता हूं सभा के कोश में पर्याप्त धन नहीं है। मुद्रणालय काम चलाऊ है बढ़ने नहीं पाता। आर्यमित्र सुन्दर पत्र है पर इसको इतने बड़े प्रान्त में ५००० पक्के ग्राहक भी नहीं मिले—वैसे यह आर्य जगत का एक मात्र अच्छा प्रमुख पत्र है। सभा के हाथ पैर ठीक काम नहीं करते। प्रधान पद पर अच्छे अच्छे बुद्धिमान् पुरुष आये पर जब हाथ पैर कांपते रहते है तो प्रधान भी करे क्या ? अन्तरङ्ग प्रधान और मन्त्री के अनुरूप रहे तो शान्ति से काम चलते है। जिस उत्तर प्रदेश की प्रतिनिधि सभा के प्रधान कन्धा पकड़ो मिलाकर एक सहस्र से अधिक आर्य समाजें हो, जिसमे आर्य समाजो का एक जालसा बिछा हो—जिसमे इतने विभाग हों कि यदि सब विभाग ठीक ठीक काम करें तो इतना बड़ा काम हो कि जिसका अनुमान नहीं कर सकते। जिस प्रदेश में आर्यों की सबसे अधिक संख्या हो—मेरे विचार से आर्य विचारों के तीस लाख नर नारी इस प्रदेश में रहते हैं उस प्रदेश की प्रतिनिधि सभा कोश आदि के बिना सूखी चलती रहे तो यह आश्चर्य एवं दुःख है। जिसका गुरुकुल सदा धनाभाव के कारण ऋण के दबाव में पड़ा रहता हो वह प्रतिनिधि सभा करे तो क्या करे ? यह एक विचारणीय प्रश्न है। हमारे वर्तमान प्रधान श्री पण्डित हरिशङ्कर शर्मा को प्रधान पद मिला इससे हमको हर्ष है। प्रधान पद तो सुशोभित हो गया। आश्चर्य तो यह है कि अब के बार एक सीधा सादा सरल प्रकृति का साहित्यकार और भावुक कवि प्रधान बन सका।

अस्तु आर्यो से चाहते हैं कि कुछ हिले डुले, उत्साह दिखलावें जिससे प्रधान जी भी उत्साहित होकर सभा का कायापलट कर सकें। प्रतिवर्ष नया ईंट और नया मकान वाला यत्न हो जाता है। यदि प्रतिवर्ष कोई नया मकान बनाये तो कब तक। यह गम्भीर समस्या है। इसकी पूर्ति नये प्रधान ही कर सकते है क्योंकि हमारे नये नवीन उच्च कोटि के भावुक कवि भी हैं। प्रधान जी चले फिर आपकी समस्या पूर्ति होगी। समस्या यह है—

बिगाड़ों को बिगाड़ेगा।
सुधारों को सुधारेंगे॥

क्या सच आंचल में दूध और आंखों मे केवल पानी है ?

ऐ ! अबला नारी के जीवन क्या तेरी यही कहानी है ?
क्या सच आंचल मे दूध और आंखो मे केवल पानी है ?
अबला ही सबला नारी है, पर मेरा तो यह कहना है।
वह स्वयं सृजन का केन्द्र और विधि की पहली रचना है।
तेरे आंचल में दूध कि जिसमे सीमित धरती का बल है।
तेरे आंचल मे दूध कि जिससे गर्वित अचल हिमाचल है।
तेरे आँसू और दूध में भारत का इतिहास छिपा है।
इसमे रोदन छिपा हमारा हास और उल्लास छिपा है।
सच है तेरे नूपुर में छम छम की प्रिय झनकार छिपी।
पर संघर्षमयी जीवन की भी इसमें हुंकार छिपी॥
तेरे नयनो में मदिर मनोहर प्रियतम का शृङ्गार छिपा।
पर उसमे भी प्रलय अग्नि सा धधक रहा अंगार छिपा।
तेरे अधरों में कुसुमो का कोमल अविकल मृदुहास छिपा।
तेरे अधरो में चपला है वह अन्य दिवा का हास छिपा।
तुझमे प्राची का अरुणोदय, तुझमें वह स्वर्ण विहान छिपा।
तुझमें सन्ध्या का पतन और प्रात का सा उत्थान छिपा।
आ ! मातृशक्ति सीता बनकर तूने आंसू जब गिराये।
लङ्का में जाकर रामचन्द्र युद्ध के तब संघर्ष मचाये॥
और द्रौपदी बनकर तूने कहा "कृष्ण मुरारी आओ आओ"
मेरी जाती लाज आज बांसुरी बजाने वाले आओ।
और डबडबाई आंखों से अश्रु बिन्दु जब ढुलक पड़े थे।
तुम्हें बचाने स्वय कृष्ण सब काम छोड़कर दौड़ पड़े थे।
एक बार चित्तौड़ भूमि पर तूने आंसू बिखराये थे।
सौन्दर्यवती पद्मिनी देव बन अश्रु जलद बरसाये थे।
वैरी दल पर गोरा बादल ने अपना जीवन आहुति दे दी।
जौहर के होने से पहले जौहर ज्वाल प्रज्ज्वलित कर दी।
धू धू करके जली चितायें लपटें बढ़कर धूम बन गई।
किन्तु वीर गाथायें उनकी व्यापक विस्तृत व्योम बन गई।
फिर भी नारी के जीवन की क्या इतनी शेष कहानी है।
मत कहना आंचल में दूध, और आंखो मे केवल पानी है।

—वेद प्रकाश आर्य, लखनऊ विश्वविद्यालय
प्रचार मन्त्री आर्य वीर दल मध्य उ० प्र०

सुझाव और सम्मतियाँ

गोरक्षा--सब रोगों की चिकित्सा

सभा के अन्तरंग सदस्यों से निवेदन

इस समय देश म असाधारण महगाई भ्रष्टाचार और करो की भर मार से जो सकट उपस्थित हो गया है जिसके कारण किसी भी धर्म कम वेद शास्त्र को ज़रा सुनने की जनता की अरुचि हो गई है इसी कारण आय समाज क प्रचार और प्रभाव की गति भी मन्द हो गई है और उत्तेजना देने पर भी जनता इस ओर ध्यान नहीं देती। यदि आप लोग इस विषय पर गम्भीरता से विचार करेंगे तो आप इस परिणाम पर पहुँचगे कि इस सबका चिकित्सा आर्यसमाज के पास है और हमारे आचार्य ऋषि दयानन्द जी महाराज ने एक छोटी सी पुस्तक

गोकरुणानिधिः

के भीतर उसे निहित कर दिया है। गौ संसार के लिए कितना उपयोगी है इसके सम्बन्ध म प्राचीन ऋषि मुनि वेद शास्त्र और आधुनिक विद्वानों के दो मत नहीं है। हमारा देश कृषि प्रधान होने के कारण गौ के ऊपर ही निर्भर है। परन्तु दुर्भाग्य से उसकी अवस्था हमारे देश म इतनी खराब है कि एक ओर अंग्रेजी काल से अधिक उसका वध हो रहा है और दूसरी ओर उसकी रक्षा करने का दम भरने वाले अज्ञान और लाभ वश रक्षा के नाम पर उसका दम घोट रहे हैं। इन सबका परिणाम यह हुआ है कि अंग्रेज़ न भारत छोड़ते समय जितने दूध का उत्पादन देश म छोड़ा था, आज उसका उत्पादन उससे आधा रह गया है। इस समय महगाई की नवीन लहर इसी के फल स्वरूप है। आपकी सभा न अपने यहाँ वर्षों से एक कृषि विभाग खोला हुआ है जो यदि अपने कर्त्तव्य का पालन करता तो कम स कम उत्तर प्रदेश म दूध घी और अन्न की यह अवस्था न होती। जहा तक हम ज्ञात हुआ है किसी भी समाज म एक भी ऐसी गौशाला नहीं है जहा गोवंश सुधार और दुग्ध उत्पादन का कार्य ऋषि प्रणाली के अनुसार होता हो। आप कितना ही या तो वैदिक धर्म प्रचार और सुधार का बनाव जब तक जनता का भोजन पवित्र न होगा विचार पवित्र नहीं बन सकते। इस समय भी देश म ३ हजार गौशालाए हैं जिनमें ६ लाख पशुओं पर सात करोड़ रुपया वार्षिक व्यय होता है, परन्तु आर्ष प्रणाली पर कार्य न होने के कारण दूध का उत्पादन नाम मात्र नहीं के बराबर है। यदि हम प्रत्येक स्थान पर गौ कृष्यादि रक्षिणी सभा बना कर इन गौशालाओं को सुधार लें, और जहाँ ऐसा न हो सकने पर नवीन गौशालाएं खोलकर जनता में गोदुग्ध वितरण कर सकें, तो जहाँ हम अपने प्रचार कार्यार्थ उपजाऊ भूमि बना सकेंगे वहाँ देश सकट मिटाकर देशवासियों को आर्यसमाज के शुद्ध रूप का दर्शन कराकर उनके विचारों को बदल सकेंगे और इस प्रकार हम सरकार म किसी सत्य बात के लिए अपोजिशन के स्थान मे आर्य समाज का वह पोजीशन प्राप्त कर सकेंगे जो वैदिक काल म एक ऋषि सन्यासी अथवा सच्चे त्यागी ब्राह्मण का होता था। मै आशा करता हू कि आप लोग मेरे इन थोडे से शब्दों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे कोई ऐसी योजना इसी अन्तरंग म जो २०७५८ को होने वाला है बनावेंगे जिससे हम इसी वर्ष के भीतर या तो उत्तर प्रदेश म स्थित २०३ गौशालाओं म "गोकरुणानिधि के अनुसार गोवंश सुधार और दुग्धोत्पादन का कार्य करा सकें, अथवा हर स्थान पर जनता के सहयोग से नवीन गौशालाएं स्थापित कराकर इस कार्य को सम्पन्न कर सकें यह तब हो सकता है जब सभा के अधिकारी उपदेशक महानुभाव और सदस्यगण इस कार्य को इस वर्ष अपने जीवन का मुख्य अङ्ग बना ले। एक बार कार्य नियम पूर्वक प्रारम्भ कराने के पश्चात् सभा का अधिक कार्यभार न रहेगा। किन्तु उसे अपने अन्य कार्यों म इम कार्य से पूर्ण सहयोग मिलेगा। जिसके लिए आप सार्वदेशिक गौ कृष्यादि रक्षिणी सभा आर्य सम्मेलन के लखनऊ की योजना से सहायता ले सकते हैं।

—डा० फुन्दनलाल अग्निहोत्री एम डी प्रधान सचालक गौ कृष्यादि रक्षिणी सभा आर्य समाज चौक लखनऊ

मास्टर तारासिंह भारतीय विधान का आदर करें

पंजाब की भाषा समस्या बंगाल आदि प्रान्तों से भिन्न है

अपनी ७४ वीं वर्ष गाठ पर दिल्ली में आयोजित स्वागत समारोह म अकाली नेता श्री मा० तारासिंह जी ने पंजाबी भाषा का पक्ष लेते हुए निम्न शब्द कहे अर्थात् वह पंजाब म पंजाबी का वही स्थान चाहते हैं कि जो बंगाल म भाषा का बंगाल म और अन्य प्रान्तीय भाषाओं का प्रान्तों मे है। मै यह कहने का साहस तो नहीं कर सकता हू कि श्री मास्टर जी को सम्भवत अन्य प्रान्तों और पंजाब की स्थिति का सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है, परन्तु उन जेसे नेता के मुह से इस प्रकार अवैधानिक विचार सुनकर आश्चर्य अवश्य हो रहा है

पंजाब और बम्बई प्रान्तों की स्थिति भारत के अन्य प्रान्तों से भिन्न है। अन्य लगभग सभी प्रान्तों मे वहाँ की प्रान्तीय भाषा भाषियों की सख्या ८० प्रतिशत म लगाकर ९० प्रतिशत है जबकि पंजाब और बम्बई प्रान्तों म ऐसा नहीं है। बम्बई म मराठी और गुजराती भाषा भाषियों की सख्या म थोडा बहुत ही अन्तर है और पंजाब म हिन्दी भाषा भाषियों की सख्या ७० प्रतिशत है जबकि पंजाबी भाषा भाषियों का सख्या केवल ३ प्रतिशत है। यदि मास्टर जी का पंजाब प्रान्त से तात्पर्य समूचे पंजाब से है तो फिर वह किस विधान और नियम के अनुसार पंजाब की ७० प्रतिशत हिन्दी भाषा भाषी जनता पर पंजाबी लादेंगे। भारत य विधान ही नहीं प्रजातन्त्र के पक्षपाती संसार भर के किसी भी राष्ट्र मे ऐसा नियम नहीं है। यहाँ तक कि सकीर्ण साम्प्रदायिकता, तानाशाही तथा धर्मान्धता की साक्षात प्रतिमा पाकिस्तान भी अपने पूर्व पाकिस्तान की बंगला भाषा भाषी मुस्लिम जनता पर अपनी उर्दू लादने का साहस न कर सका। इसके अतिरिक्त जब मास्टर जी स्वय क्षेत्रीय फार्मूला स्वीकार कर चुके हैं कि जिसके अनुसार हरियाना म हिन्दी क्षेत्रीय भाषा होगी तो फिर वह उसी के विरुद्ध बोलने का किस प्रकार साहस करते है।

यदि पंजाब प्रान्त से श्री मास्टरजी का तात्पर्य पंजाब के जालन्धर क्षेत्र से है तो वहा भी हिन्दी भाषा भाषियों की सख्या ४५ प्रतिशत है। भारतीय विधानानुसार किसी भी प्रान्त म जब ३० प्रतिशत या इससे अधिक अल्पसंख्यक भाषा भाषियों बच्चों को अपनी मातृ भाषा म शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार है तो फिर मास्टर जी किस कानून के अनुसार जालन्धर क्षेत्र म पंजाबी भाषा को वहाँ के ४५ प्रतिशत हिन्दी भाषा भाषियों पर लादेंगे? उन्हें विदित होना चाहिए कि जालन्धर क्षेत्र को स्वतन्त्र प्रान्त बन जाने पर भी वह ऐसा न कर सकेंगे। ऐसा करने के लिए उन्हें भारतीय विधान को बदलना होगा।

—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी
प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्यवीरदल

श्री कालीचरण जी आर्य्य के सम्बन्ध में —
मेरा वक्तव्य

मेरठ निवासी श्री कालीचरण जी आर्य्य, इस वर्ष उत्तरप्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा के, एक 'उपप्रधान' निर्वाचित हुये हैं। सभा के उपप्रधानों को कार्य विभाजित करते हुए श्री कालीचरण जी को भी कुछ कार्य सौंपे गये हैं, जिनमे धन संग्रह और सभा कार्यालय की देखभाल मुख्य है। इस सम्बन्ध में मेरे पास, सीतापुर आर्य्यसमाज के मन्त्री श्री वीरेन्द्र कुमार जी का एक विस्तृत पत्र आया है, जिसका अभिप्राय यह है कि जिन श्री कालीचरण द्वारा दैनिक आर्य्य मित्र प्रकाशित होने के कारण सभा को घोर घाटा हुआ, उन्हे ऐसे उत्तर दायित्वपूर्ण कार्य क्यो सौंपे गये है। विशेषकर उस अवस्था मे, जब सभा की अन्तरङ्ग सभा ने भी अपने एक निश्चय द्वारा, श्री कालीचरण जी के उपर्युक्त कार्य की निन्दा की।

सीतापुर आर्य्यसमाज के मन्त्री महोदय तथा उनके से विचार रखने वाले अन्य महानुभावो से, इस सम्बन्ध में, मेरा निम्नलिखित निवेदन है— श्री कालीचरण जी ने स्वेच्छापूर्वक दैनिक आर्यमित्र नहीं प्रकाशित किया। सभा के तत्कालीन प्राय सभी अधिकारियो और अधिकाश अन्तरङ्ग सदस्यों के सबल समर्थन द्वारा ही उन्होंने दैनिक 'मित्र' निकाला। यदि ऐसा न होता तो अकेले श्री कालीचरण जी अपनी इच्छा मात्र से यह काम कैसे कर सकते थे। मैं स्वय तथा मुझसे सहमत चार छह अन्तरङ्ग सदस्य, इस परिस्थिति में दैनिक मित्र निकालने के बड़े विरोधी थे। वृन्दावन तथा मथुरा में (एतदर्थ आयोजित सभा की अन्तरङ्ग सभाओं में) मैंने तथा मेरे स्वल्प संख्यक साथियों ने दैनिक मित्र निकालने का विरोध किया था। देश के बड़े बड़े पत्रकारो के पत्र प्रस्तुत किये गये थे कि यदि उस परिस्थिति मे 'आर्य्यमित्र' दैनिक हुआ तो उसे हजारो का घाटा बरदाश्त करना पड़ेगा। परन्तु उत्साह की आंधी और भावुकता के भूचाल में, हम अनाड़ियो की कोई सुनने वाला न था। हमारी सारी युक्तियां 'अरण्यरोदन' सिद्ध हुई। सभा के अधिकारियो तथा अधिकाँश अन्तरङ्ग सदस्यो ने दैनिक 'मित्र' प्रकाशित करने के पक्ष में ही मतदान दिया अतएव दैनिक निकाला गया और उस समय तक वह निकलता रहा, जब तक कि दैनिक के लिए संगृहीत, सारा धन समाप्त नहीं हो गया। इतना ही नहीं दैनिक की अन्त्येष्टि के लिए, सभा की अन्य निधियो से भी द्रव्य लिया गया। उन दिनों जो व्यक्ति दैनिक के पक्ष में विचार प्रकट करता वह तो ठीक था और विरोध में कुछ कहने वाला 'स्वार्थी' तथा 'अनाड़ी'। श्री कालीचरण जी स्वयम् पत्रकारिता के अनुभव से शून्य थे, ऐसे ही उत्साही और भावुक भक्त भी उन्हें मिल गये। फिर उन्हें हमारी युक्ति युक्त विनती पर विचार करने की आवश्यकता ही क्या थी।

कारण कुछ भी हो परन्तु दुःख तो यह है कि दैनिक का परिणाम घन घोर घाटा रहा, जिसने सभास्थ सब विभागो को दरिद्र बनाकर, उसकी आर्थिक दृढता की कमर तोड़ दी। इस भयंकर घाटे की जिम्मेदारी पड़ी अकेले श्री कालीचरण आर्य्य पर। उनके ही विरुद्ध अन्तरङ्ग सभा ने एक प्रस्ताव भी पारित किया। जब कि इस घाटे का उत्तरदायित्व उन सब अधिकारियो और अन्तरङ्ग सदस्यो पर भी है, जिन्होंने दैनिक आर्य्य मित्र का समर्थन कर उसे आग्रहपूर्वक प्रकाशित कराया। ऐसी दशा में श्री कालीचरण जी, सभा के उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य करने से क्यो पृथक रखे जाएं। सभा को तो उन महानुभावो की सेवाओं से भी वंचित् रहना चाहिए जिन्होंने दैनिक 'मित्र' प्रकाशन के लिये सहमति तथा अनुमति दी और घोर घाटा कराया। यह ठीक है तो हम सभा के गत वृहदधिवेशन में सम्पन्न हुए निर्वाचनादि कार्य कलाप पर बड़ी व्यापकता और गम्भीरता से दृष्टिपात करना होगा। यह देखना पड़ेगा कि दैनिक मित्र के घाटे का उत्तरदायित्व वैधानिक रूप से अकेले श्री कालीचरण जी पर ही है अथवा सभा के अन्य अन्तरङ्ग सदस्यो तथा अधिकारियो पर भी। जो हो।

यहाँ यह बात दृढतापूर्वक कही जा सकती है कि दैनिक मित्र प्रकाशित करने में श्री कालीचरणजी की सद्भावना और निःस्वार्थ बुद्धि थी। उससे उनका कोई स्वार्थ सिद्ध नहीं हुआ। और न उन्होने स्वार्थ सिद्धि की कुछ भी चेष्टा की। हाँ, दैनिक सम्बन्धी अनुभवहीनता, अज्ञता और भावुकता उनके मार्ग में अवश्य बाधक हुई। यदि उन्हे साथियो का सबल समर्थन न प्राप्त हुआ होता तो दैनिक मित्र उस परिस्थिति में कभी न निकलता और फिर घोर घाटे की घाटी से टकराकर उसके चूर चूर हो जाने का तो कोई प्रश्न ही न था। मेरी सम्मति मे अकेले श्री कालीचरण जी आर्य्य ही घाटे के जिम्मेदार नहीं समझे जा सकते, उनके साथी, समर्थक सहायक एवम् सलाहकार सदस्य भी उत्तरदायी हैं। ऐसी दशा में मैंने श्री कालीचरण जी को धन संग्रह और सभा कार्यालय की देखभाल का कार्य सौंपकर सर्वथा उचित किया है। निश्चय ही वह धन संग्रह करेंगे, परन्तु धन का व्यय अथवा उपयोग अन्तरङ्ग सभा के आदेश से ही होगा। आशा है मान्य अन्तरङ्ग सदस्य गण धन व्यय की अनुमति देते समय दैनिक आर्य्यमित्र की सी घटना को दुहराने का अवसर न आने देंगे।

श्री कालीचरण जी का जीवन आर्य्यसमाज की सेवा का जीवन रहा है। उन्होने निःस्वार्थ भाव से ही सेवा की है। और अब भी अपना सारा समय सभा के लिए ही समर्पित कर चुके है। ऐसे कर्मण्य व्यक्ति की सेवाओं से सभा को वंचित् रखना बार बार, विचारने पर भी मेरी समझ में नहीं आता। अपने सम्बन्ध में मैं यह बात स्पष्ट निवेदन कर देना चाहता हूं कि मेरा किसी पार्टी विशेष से सम्बन्ध नहीं है। सभा और समाज की सेवा ही मेरा ध्येय है। यही कारण है कि दैनिक 'आर्य्यमित्र' के सम्बन्ध में श्री कालीचरण जी से अब तक अत्यन्त असहमत होता हुआ भी उनकी कार्य शक्ति सद्भावना और प्रयत्नशीलता का समर्थक हूं। इस लिए सभा ने कुछ कार्य उनको सौंप दिए हैं। जिस दिन मेरे लिए पक्षपात पक्ष या दलबन्दी के दलदल में फँसने का कुअवसर आएगा उसी क्षण मैं सभा के प्रधान पद का त्याग कर, दूसरे किसी महानुभाव के लिये स्थान रिक्त कर दूंगा।

हरिशङ्कर शर्म्मा
प्रधान
आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

'नैतिकता' ही 'मानवता' की माता है—धर्म के बिना सुख-शान्ति नहीं

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

से नीचे और ऊंचे से ऊंचे आदमी को आगे बढ़ने का समान अवसर मिलना चाहिए। न किसी का शोषण किया जाए और न करने दिया जाए। लेखनी और वाणी दोनों स्वतन्त्र रहें।"

महात्मा गांधी ने अपनी उपर्युक्त पंक्तियों में, समता, स्नेह, सहयोग, सदाचार, सद्भावना, सुरक्षा तथा सुख सुविधा-सम्पन्न 'सुराज्य' की कैसी विशद् एवम् विमल व्याख्या की है। परन्तु आज उनकी इन भद्र भावनाओं पर ध्यान कहाँ दिया जाता है। भारतीय विधान-सभाएं तो वाचनिक प्रहार और कानूनी कोड़ों की मार से ही, भ्रष्टाचार के भेड़ियों को भगाना चाहती है। हृदय-परिवर्तन के प्रश्न पर तो उनमें अणु मात्र भी ध्यान नहीं दिया जाता। धर्म और सदाचार का तो मानो सर्वथा बहिष्कार ही कर रखा है। जब कि महात्मा गांधी कहते हैं—

"मेरे नजदीक धर्महीन राजनीति कोई चीज़ नहीं है। धर्म के मानी वहमों और गतानुगतिकता के नहीं है। द्वेष करने वाला और लड़ने वाला धर्म नहीं; बल्कि विश्व-व्यापी सहिष्णुता का धर्म। मैं धर्म से भिन्न राजनीति की कल्पना भी नहीं कर सकता। वास्तव में धर्म तो हमारे हर एक काम में व्यापक होना चाहिए। धर्म का अर्थ 'कट्टर पन्थ' नहीं; उसका अर्थ है—विश्व की राजनैतिक सुव्यवस्था। बाहर की अपेक्षा भीतरी पवित्रता की ज्यादा जरूरत है। भीतर अगर घुन लगा हो तो, उस पर बनाया हुआ, सर्वथा दोषहीन राज-विधान भी सफेद कब्र-सा होगा। हमें आत्म तुष्टि और आत्म-त्याग की भावना बढ़ानी होगी। चरित्र के बिना सारा ज्ञान बुराइयों की जड़ है। नीति, सदाचार और धर्म एक ही बात है। इनके बिना मनुष्य-जीवन, बालू पर खड़े किये गये मकान की तरह है।"

जिस 'धर्म' या 'सदाचार' पर महात्मा गांधी ने इतना बल दिया है, उसे भारतीय संविधान से सर्वथा बहिष्कृत कर देना कितने दुःख और दुस्साहस की बात है। महात्मा गांधी ने 'सुराज्य' की जो परिष्कृत परिभाषा की है, और जिन विशेषताओं को वे 'सुराज्य'-संविधान में सम्मिलित करना-कराना चाहते थे, आज उनकी ओर संकेत मात्र भी, 'साम्प्रदायिकता', 'संकीर्णता' और 'अराष्ट्रीयता' का द्योतक समझा जाता है। किसान, मज़दूर, तथा सर्वसाधारण जनता घोर संकट में हैं। आर्थिक कठिनाइयों ने सबको त्रस्त-ग्रस्त कर रखा है। बेकारी की विभीषिका का ठिकाना नहीं रहा। शिक्षा-प्रणाली का जो बेढंगा ढचरा 'स्वराज्य' से पूर्व था, वही बल्कि उससे भी बुरा आज है। उपाधि व्याधियों के बण्डल बगल में दबाए, सैकड़ों-सहस्रों नवयुवक, पेट पूर्ति के लिये दिन-रात मारे-मारे फिर रहे हैं। जिस स्वराज्य में स्नेह, सद्भावना, समता, सहयोग, सुरक्षा और सुख-सुविधाओं का श्रवण-सुखद संगीत सुनाई देना चाहिए था, उसमें आज पद-प्रभुता अधिकार-लिप्सा, दमन, गोली काण्ड, लूट-मार, भुखमरी, हड़ताल, रिश्वत, अनशन, बिरादरीवाद, स्वार्थ-सिद्धि, चोर बाज़ारी, स्वजन-पक्ष-पोषकता, निरुद्यमता आदि की प्रचण्ड चण्डी चिंघाड़ रही है। भ्रष्टाचारिता के भौंड़े भोंपू भयंकर 'भांय-भांय' करते फिरते हैं। योजना युवतियाँ स्वर्णिम झूलों में झूल रही हैं; विलास-वृत्तियाँ आनन्द मग्न हो उत्साह से उछल रहा है, और 'मनोमुखताएं' सफल मनोरथ होकर मारे खुशी के फूल रहा हैं। देश की दशा दिशाओं में कर-भार भुजंग फुंकारता फिरता है और व्यर्थ व्ययों का प्रबल प्रहार भूखी जनता का उदर विदारता फिरता है। क्या भारत के लिये सचमुच ऐसे ही 'सुराज्य' या 'स्वराज्य' की कल्पना की गयी थी? क्या इसी 'सुराज्य' के लिये वीर देश-भक्तों ने अपने अमूल्य प्राणों की आहुतियाँ दी थीं? क्या इसी 'स्वतन्त्रता' के निमित्त अगणित त्यागी तपस्वी जन हँसते हँसते बलि-वेदी पर चढ़े थे? इन प्रश्नों के उत्तर हमें, और किसी से नहीं, स्वयम् अपने अन्तरात्मा से मांगने चाहिएं।

वस्तुतः बात यह है कि देश में धार्मिक सम्प्रदाय तो क्षीण हो रहे हैं, परन्तु राजनैतिक सम्प्रदायवाद का बल बढ़ रहा है। इन राजनैतिक सम्प्रदायों के ही महन्त-मठाधीशों में से कुछ प्रवीण पुंगव जन सत्तादेवी के पण्डे-पुजारी बन, अपना प्रबल प्रभुत्व या अद्भुत आतङ्क स्थापित करते रहते हैं। इन का आदर्श गांधीवाद न रहकर, विदेशीय शासन-परम्परा का अन्धानुसरण करना बन गया है। वे अपने कृपा-कटाक्ष से, निमेष मात्र में, देश-विरक्त को देश-अनुरक्त और देश-अनुरक्त को देश-विरक्त—यानी सोने को पीतल और पीतल का सोना बना डालते हैं। सीधी-सादी और भोली-भाली जनता को आशाओं का 'सब्ज़बाग' दिखाकर, अपने मनो-मोहक माया-जाल में फाँस लेना, उनके बांए हाथ का खेल बन जाता है। आज केवल 'गांधीजी की जय' बोल कर, गांधी जी का उच्च आदर्श संसार के सामने उपस्थित किया जा रहा है। परन्तु न गांधीजी द्वारा निर्दिष्ट धर्ममय राजनीति है और न उनका मनचाहा 'सुराज्य'। सच पूछिए तो 'स्वराज्यसत्ता' कुछ कुशल राजनैतिक नेताओं के संकेतों पर नाचने वाली एक 'कठपुतली'-सी बन गया है।

महात्मा गांधी कहते हैं—" 'लोकतन्त्र' में लेखनी तथा वाणी स्वतन्त्र होनी चाहिए। रचनात्मक और विवेक पूर्ण आलोचना ही गणतन्त्रीय सरकार का भोजन है। भेड़ों के झुण्ड की भाँति बिना सोचे, बिना इधर उधर देखे, आगे बढ़ना प्रगति नहीं है। विचार, वाणी और आचार में सत्य होना ही सत्य है।" महात्माजी का यह आदेश और उपदेश होते हुए भी, आज राजनैतिक सम्प्रदायवाद में, विचार-स्वातन्त्र्य के स्थान नहीं है। कैसी ही सद्भावना से कोई कितनी ही अच्छी बात क्यों न कहे, परन्तु यदि वह राजनैतिक महन्त मठाधीशों की गुटबन्दी के विरुद्ध है तो बेचारा कहने वाला तुरन्त 'अनुशासन की तोप' से दाग़ दिया जाएगा।

सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो आज 'गणतन्त्र' नहीं, 'दल-तन्त्र' है—यानी पार्टी विशेष का शासन। इस सम्बन्ध में गांधीवाद के प्रमुख मर्मज्ञ सन्त विनोबा कहते हैं—

"आज की स्थिति क्या है, मान लो सौ वोटर्स (मतदाता) हैं। इनमें से साठ लोगों ने वोट दिये; चालीस ने नहीं। इनमें तीस वोट जिसे मिल गये हैं, वह पार्टी राज चलाती है और बाकी तीस वोट भिन्न पक्षों में बँट जाते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि तीस लोगों की सत्ता सब पर चलेगी। इस पर बोगस जनतन्त्र चलता है।"

इतना ही नहीं सन्त विनोबा पुनः लिखते हैं—

"जैसे बेवकूफ़ बादशाह और उसका वज़ीर विद्वान् और ज्ञानी होता है न। बादशाह की चोटी और दाढ़ी जो भी हो, वह वज़ीर के हाथ में ही रहेगी। वह बादशाह तो नाममात्र का ही है, क्योंकि यह मूढ़ है। भले ही उसे सिंहासन पर बिठा दिया गया हो, फिर भी वह भेड़ासन है। नाम-मात्र का बादशाह; पर गुलाम होकर बैठा है। हिन्दुस्तान की जो डिमोक्रेसी (लोकतन्त्र) है, उसकी हालत ऐसे ही बादशाह की सी है। इसलिये सारे देश का दारोमदार—उसका उद्धार करना या डुबाना-आज चन्द लोगों के हाथों में है। यानी हमने डिमोक्रेसी के नाम पर सारी सत्ता चन्द लोगों के हाथ में दे दी है। और 'डिमोक्रेसी' डिक्टेटर शाही बनी हुई है।"

महात्मा गांधी और उनके प्रधान आध्यात्मिक शिष्य सन्त विनोबा के उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि देश में स्वराज्य तो हो गया, परन्तु 'सुराज्य' नहीं हो पाया। स्वराज्य-संविधान में धर्म या सदाचार को कोई स्थान नहीं दिया गया। 'गणतन्त्र' के स्थान में 'दलतन्त्र' की स्थापना हुई है। भारतीय जनता इतनी 'मूढ़' और 'गुलाम' है कि उसके चुने हुए प्रतिनिधि ही देश के सर्वेसर्वा बन गये हैं और मनमाने कर-भारों से उसे बुरी तरह लाद दिया है। केवल वोट बटोरते समय तो मीठी-वाणी में, जनता से सम्पर्क स्थापित किया जाता है, परन्तु काम निकल जाने पर, बेचारी परित्यक्ता पत्नी की भांति उपेक्षा के गहरे गर्त में डाल दी जाती है। फिर तो जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि गण, सारे वचन-वायदे भूल सत्ता के सेवक, सहायक और समर्थक बन जाते हैं और वे ही अपने को सारी सुख-सुविधाओं एवं स्वराज्य भावना का सर्वश्रेष्ठ ठेकेदार समझने लगते हैं।

इस अनौचित्य का कुपरिणाम स्पष्ट है। देश में स्वराज्य के साथ-साथ स्वार्थ-सिद्धि की कुभावना भी भयंकर रूप से बढ़ रही है। अपराधों अथवा भ्रष्टाचारों का बोल बाला है। बेकारी और बेबसी का ठिकाना नहीं। मुट्ठी भर लोगों को छोड़कर, शेष सारी जनता, खान-पान और रहन-सहन सम्बन्धी घोर कष्ट सह रही है। "छप्पनियाँ साल" के अकाल में जो बुरा हाल था उससे चौगुनी दुर्दशा आज 'स्वराज्य' में है? छप्पन के साल में रुपये के आठ सेर गेहूं मिलते थे और अब दो सेर आते हैं? महात्मा गांधी के सारे 'स्वराज्य-स्वप्न' हवा हो गये? विनोबा का विमल वाणी बहरे कानों सुनी जाती है। प्रतिनिधियों को चुनने वाली जनता तो 'मूढ़' और 'गुलाम' है, और उसके चुने हुए प्रतिनिधि शासक, सरदार, सर्वेसर्वा यानी सब कुछ हैं। ऐसी दशा में आवश्यकता है कि जनता को उसके वास्तविक स्वरूप का बोध कराया जाय। नागरिक जीवन में आत्म सम्मान की भव्य भावना भरी जाय। लोकमत को विमल और सबल बनाया जाय। जनता का नैतिक स्तर ऊंचा किया जाय जिससे उसमें, निर्भयता, निष्पक्षता, विशुद्धता एवं प्राञ्जल प्रवृत्ति का प्रकाश हो। 'स्वराज्य' में सुराज्य सूर्य की प्रचण्ड ज्योति जग-मगाए और 'दलतन्त्र' 'गणतन्त्र' का रूप धारण कर सके। सुख-सुविधाएं और समृद्धि-शांति कुछ सत्ताधारियों के लिए ही सीमित न रहकर, जन-जनता को प्राप्त होने लगें।

हम चाहते हैं कि आर्य्यसमाज समष्टि, जन-जनता की सुख-समृद्धि के लिए संगठित रूप से नैतिक उत्थान सम्बन्धी व्यापक आन्दोलन प्रारम्भ करे और शीघ्र से शीघ्र वैयक्तिक, व्यावहारिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा साहित्यिक भ्रष्टाचार को दूर करने की ओर अग्रसर हो। प्रत्येक आर्य्यसमाज की ओर से सार्वजनिक सभाएं बुलाई जाएं और उनमें उपर्युक्त लक्ष्य की पूर्ति के लिए विवेकपूर्ण तथा प्रभावशाली भाषण कराए जाएं। इन सार्वजनिक सभाओं में वे सब लोग सम्मिलित किये जाएं जो भ्रष्टाचार-भावना या राजनैतिक गन्दगी दूर करने के उद्देश्य से सहमत हों। जिस संलग्नता और निर्भयता से आर्य्यसमाज ने समाज-संशोधन का कार्य किया, उसी उत्साह और दृढ़ता से उसे यह आन्दोलन भी करना होगा। इससे जहाँ राजनैतिक क्षेत्र की गन्दगी दूर होकर, नागरिकता को गति, मति तथा प्रगति प्राप्त होगी, वहाँ जनमत भी विमल और सबल बनेगा, जिसकी कि देश की सुख-समृद्धि और सुराज्य सम्बन्धी इष्ट सिद्धि के लिये अत्यन्त आवश्यकता है। 'स्वराज्य' और 'स्वतन्त्रता' का यह भी तो अर्थ है कि हम अपनी दुर्वासनाओं पर संयम या नियंत्रण रखें, जिससे हमारा मन और इन्द्रिय-समूह कुमार्ग गामी न होने पावे। सबसे बड़ा-'स्व'-'तन्त्रता' यह है कि हम अपने आप अर्थात् मन पर संयम करना सीखें और उसे अनौचित्य की ओर कदापि अग्रसर न होने दें; दृढ़ता पूर्वक वश में रखें।

हम भले प्रकार जानते हैं कि आर्य्यसमाज में, किसी समय जो क्रान्तिकारिणी शक्ति थी, वह अब प्रायः शिथिल-सी हो चुकी है। साप्ताहिक सत्संगों में एकत्र होकर कुछ लोग कथा-वार्त्ता और सन्ध्या-हवन अवश्य कर लेते हैं। कोई विशेष कार्यक्रम या ठोस पुरोगम उनके आगे नहीं है। स्वराज्य-सत्ताधीशगण तो अब ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज का कहीं कुछ उल्लेख करने में भी, अपना 'अ-गौरव' समझते हैं। यानी जो आर्य-समाज कभी क्रान्ति का केन्द्र था, वह स्वराज्य-सूर्य उदित होते ही, अगण्य-नगण्य-सा बन गया। अस्तु; अब समय आ गया है कि आर्य्यसमाज लोकमत को विमल तथा सबल बनाकर, एक बार पुनः अपनी क्रान्ति-कारिणी शक्ति का प्रत्यक्ष परिचय दे। स्वयम् उसमें जो पदलोलुपता, अधिकार-लिप्सा, शिथिलता एवम् अकर्मण्यता आगयी है, उसे त्यागकर, कार्य-क्षेत्र में अग्रसर हो। न उसे विधान-सभाओं के लिये अपने प्रत्याशी (उम्मेदवार) खड़े करने हैं और न राजनैतिक सम्प्रदायवाद का अंग बनना है। वह तो निष्पक्ष, निर्मम, और निर्भय भाव से भ्रष्टाचार दूर करेगा। फिर यह भ्रष्टाचार कैसा ही क्यों न हो। किसी सिद्धान्त के प्रचार का अर्थ यह होता है कि उसकी विशेषता, समीचीनता, उपयोगिता और विवेकपूर्णता सार्वजनिक रूप से सबको समान रूप से सुनाई-समझाई जाए और उस पर श्रोतागण तथा प्रचारक जन दोनों समान रूप से सदनुष्ठान अर्थात् अमल करें। तभी सफलता प्राप्त होती है। इस आन्दोलन का उद्देश्य स्वराज्य को सुदृढ़, सुख सुविधा-सम्पन्न, सर्वजनोपयोगी और अनुकूल मंगलमूल बनाना है, अतः हमारी विनम्र विनती है कि उत्तरप्रदेशीय समस्त आर्य्यसमाजों की ओर से एतदर्थ अनेक सार्वजनिक सभाएं बुलाई जाएं और उनमें नैतिक उत्थान यानी आचार उठाने सम्बन्धी भाषण हों। आचार से बढ़कर कोई धर्म नहीं माना गया। आचार क्या है? विचारों का क्रियात्मक रूप। कहा भी है —"विचाराचार संयोगः सदाचारस्य लक्षणम्।" सद्विचारों को क्रिया में परिणत करना ही आचार है।

पूर्ण आशा है कि उत्तरप्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभास्थ "नैतिक उत्थान" विभाग, इस दिशा में बड़ी उत्साहशीलता, संलग्नता तथा दृढ़ता से काम करेगा और प्रत्येक आर्य्यसमाज में पृथक् पृथक् यह विभाग स्थापित कराकर, सब की संगठित शक्ति द्वारा राजनैतिक भ्रष्टाचार दूर करने एवम् नागरिकता की समुज्ज्वल ज्योति जगाने में अवश्य सफल सिद्ध होगा।

विनीत—

निजी पता—
लोहामण्डी, आगरा

हरिशङ्कर शर्म्मा
प्रधान
आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ

सभा की सूचनाएं

अन्तरङ्ग सूचना

सभास्थ अन्तरङ्ग सदस्यों की सेवा में दिनांक २७, २८ जुलाई १९५८ का विज्ञापन आज दिनांक १२।७।५८ को प्रमाण पत्र (अण्डर पोस्टल सार्टिफिकेट) लेकर भेज दिया गया है। सर्वसदस्य गण नियत समय पर बुलन्दशहर आर्य समाज मन्दिर में पहुंचने की कृपा करें।

अन्तरङ्ग सभा के आवश्यक निश्चय

(दिनांक १७।५।५८ लखनऊ)

१—निश्चय सं० २ के अनुसार नवीन समाज सभा में निम्न प्रकार प्रविष्ट हुए—

नाम समाज	पोस्ट	जिला	कोटिधन
१ आ०स० ऑर्डनेन्स फैक्टरी स्टेट रायपुर देहरादून	खास	देहरादून	१००)
२ सहार	”	इटावा	१००)
३ स्त्री समाज बरौठा	हरदुआगंज	अलीगढ़	कोटिधन से मुक्त
४ ” ” गढ़मुक्तेश्वर	खास	मेरठ	”
५ गहरौली	”	हमीरपुर	१००)
६ चन्द्रनगर	आलमबाग	लखनऊ	१००)

२—निश्चय सं० ३ सार्वदेशिक धर्मार्य सभा में सभा के योग्य उपदेशक भी प्रतिनिधि रूप में नियुक्त करके भेजे जाया करें यह विषय स्वीकार हुआ और निर्वाचन के समय ध्यान रखा जावेगा।

३—नि० सं० १० के अनुसार दयानन्द जनता स्वावलम्बी विद्यालय चांदपुर (बिजनौर) सभा में सम्बद्ध की जावे।

४—निश्चय सं० १२ के अनुसार उत्तर प्रदेश में गौकृष्यादि रक्षिणी सभाएं स्थान स्थान पर खोली जावें और गौशालाएं स्थापित कराने के लिए प्रयत्न किया जावे।

प्रस्ताव भेजिए

समस्त आर्य समाजों एवं सभास्थ अन्तरङ्ग सदस्यों से निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा दि० १७।५।५८ में 'सार्वदेशिक दशम आर्य महा सम्मेलन, देहली के श्री संयोजक जी का पत्र प्रस्तुत हुआ। अन्तरङ्ग सभा ने अपने निश्चय सं० ३१ के अनुसार निश्चय किया कि इस सम्बन्ध में प्रदेशीय सभा के अन्तरङ्ग सदस्यों से निवेदन किया जावे कि पत्र में लिखे अनुसार अपने अपने सुझाव प्रस्ताव रूप में शीघ्र भेजने की कृपा करें। तथा समस्त प्रदेशीय आर्य समाजों से प्रार्थना की जाती है कि अपनी अपनी आर्य समाज की अन्तरङ्ग इस पत्र को प्रस्तुत करके २० जुलाई १९५८ तक प्रस्ताव (सम्मति) भेजने का कष्ट करें।

पत्र की लिपि

आगामी सार्वदेशिक दशम आर्य महा सम्मेलन में आर्य समाज के भावी कार्य-क्रम के सम्बन्ध मे विचार विमर्श के लिए अनेक विध प्रस्तावों के सुझाव व्यक्तिगत रूप से प्राप्त हो रहे है। जिनके विषय मुख्यतया निम्न लिखित हैं—

१—आर्य समाज तथा राजनीति।

२—भारत में बढ़ते हुए ईसाई प्रचार के प्रतिरोध के उपाय—

३—आर्य समाज की वर्तमान प्रचार—शैली में क्या परिवर्तन किये जावें जिससे प्रचार के प्रभाव में स्थायित्व उत्पन्न हो और आर्य समाज के प्रति जन साधारण के साथ साथ शिक्षित नवयुवकों में आकर्षण बढ़े।

उल्लिखित विषयों की महत्ता तथा उपयोगिता असंदिग्ध है और समय एवं परिस्थितियों की मांग है कि इस सम्बन्ध में आर्य जगत् के समक्ष ठोस कार्य-क्रम प्रस्तुत किया जाय। अभी समय पर्याप्त है और इन गम्भीर विषयों पर पर्याप्त चिन्तन तथा मन्थन अपेक्षित है।

अतः प्रार्थना है कि अपनी अन्तरङ्ग सभा द्वारा कुछ विशिष्ट महानुभावों की एक उप समिति इस निमित्त नियुक्त कर दीजिये जो पूर्ण विचार विनिमय करके उल्लिखित विषयों के सम्बन्ध में प्रस्तावों की रूपरेखा बनाकर सुझाव के रूप में प्रस्ताव अवश्य भेजदें।

निरीक्षक कार्य विभाजन

सभा द्वारा नियुक्त मुख्य निरीक्षक सूची आर्यमित्र दिनांक २९ जून १९५८ के पृष्ठ ८ पर प्रकाशित हो चुकी है। कार्य की सुविधा के लिए मुख्य निरीक्षक महानुभावों को निम्न प्रकार कार्य क्षेत्र जिला, कमिश्नरी वार विभक्त कर दिया गया है। कृपया तदनुसार कार्य करने का कष्ट करें।

१—कुमायूं कमिश्नरी एवं जिला बिजनौर—गढ़वाल, नैनीताल, अल्मोड़ा, टेहरी तथा बिजनौर—श्री ईश्वर दयालु जी आर्य, बिजनौर

२—फैजाबाद कमिश्नरी एवं जिला इलाहाबाद, फतेहपुर, कानपुर—फैजाबाद, गोंडा, बहराइच, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, बाराबंकी, इलाहाबाद, फतेहपुर, कानपुर—श्री मा० मातागुलाम जी, कटरा प्रयाग

३—वाराणसी कमिश्नरी—वाराणसी, जौनपुर, मिर्जापुर, गाजीपुर, बलिया —श्री राजितसिंह जी, वाराणसी

४—गोरखपुर कमिश्नरी—गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़ तथा बस्ती—श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार, गोरखपुर

५—रुहेलखण्ड कमिश्नरी जिला बिजनौर छोड़कर—बरेली, बदायूं, मुरादाबाद रामपुर, पीलीभीत, शाहजहाँपुर—श्री रामचन्द्र जी रि० पो० मा०, पूर्व कोषाध्यक्ष सभा, बदायूं

६—लखनऊ झांसी कमिश्नरी—लखनऊ, उन्नाव, हरदोई, सीतापुर, खेरी, रायबरेली, झांसी, उरई, हमीरपुर, बांदा महाराजपुर—श्री पं० विश्वम्भर नाथ जी त्रिपाठी, कानपुर

७—मेरठ कमिश्नरी—मेरठ, देहरादून, सहारनपुर, मुजफ्फर नगर तथा बुलन्द शहर—श्री रघुनन्दन स्वरूप जी एडवोकेट, सदर मेरठ

८—आगरा कमिश्नरी एवं जिला इटावा, फर्रुखाबाद—आगरा, मथुरा, एटा, अलीगढ़, इटावा, फर्रुखाबाद—श्री श्री देव वानप्रस्थी जी, ज्वालापुर

टिप्पणी—मुख्य निरीक्षक श्री पं० ब्रह्मदत्त स्नातक जी आयुर्वेदशिरोमणि— पूर्वी क्षेत्र के समाजों का समयानुसार पूर्ववत निरीक्षण करते रहेंगे।

१—इस वर्ष निरीक्षण के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के हेतु विशेष रूप से यह प्रबन्ध व्यवस्था की गई है।

२—जिलेवार जहाँ जहाँ निरीक्षक नियुक्त किये गये हैं उसके साथ साथ ६ ७ जिलों के ऊपर एक मुख्य निरीक्षक नियुक्त किये गये है। और उत्तर प्रदेश के लिए प्रसंशित कार्यकर्त्ता श्री कालीचरण जी आर्य सभा उप प्रधान की 'अध्यक्षता' मे एक निरीक्षण विभाग ही सभा कार्यालय में स्थापित कर दिया गया है। आशा की जाती है कि वर्ष के अन्तर्गत अर्थात ३१ दिसम्बर १९५८ तक प्रदेश की सभी आर्य समाजों एवं संस्थाओं की निरीक्षण कार्य हो जाना चाहिए।

—फूलनसिंह
सभा मन्त्री

समाजों को सूचना

—जिला अल्मोड़ा एवं नैनीताल की समस्त आर्य समाजों के मन्त्री गण कृपया नोट करलें कि श्री बांकेलाल जी आर्य हल्द्वानी, रामनगर, काशीपुर, रुद्रपुर भवाली तथा सुल्तानपुर आर्य समाजों का निरीक्षण करेंगे तथा श्री इन्द्रवर्मा एम०ए० अल्मोड़ा, रानीखेत, जसपुर, नैनीताल, ताड़ीखेत, रामगढ़, तथा मिन्तोगांव कोटा का निरीक्षण करेंगे। सम्पूर्ण समाजें इन्हें निरीक्षण करने में सहयोग दें, प्राप्तव्य धन दें एवं अपनी अपनी समस्याओं का निवारण भी कर लें। —सभा मुख्य उपमन्त्री

बाल-विनोद

सन्त वाणी

किसी ने सन्त से पूछा,
किसे सम्मान है मिलता ?
"जो गिरकर खड़ा होता
वही सम्मान है पाता।"

* * *

किसी ने सन्त से पूछा
कि किस के फूल खिलते हैं ?
"कहाँ खिलते कमल उनके
कपट छल से जो डरते हैं।"

* * *

किसी ने सन्त से पूछा
कि किसका दीप जलता है ?
कहा जो स्वार्थ को तज कर
हृदय से काम करता है।"

* * *

किसी ने सन्त से पूछा
किसका दीप है बुझता ?
"कहा उसका दिखावे को
जो जग में काम है करता।"

* * *

किसी ने सन्त से पूछा
कि किन के घर उजड़ते है ?
"कहा हित प्रेम को तजकर
जो लड़ते और झगड़ते है।"

पहेलियाँ

तीन अक्षर का मेरा नाम
जिसमें करते हो आराम
पहला अक्षर कट जाने पर
आता हूं सुनने के काम

* * *

काला हूं पर कौआ नहीं
महाबली पर नहीं राम,
जल्द बताओ कौन हूं
करूं नाक से काम।

* * *

तीन अक्षर का मेरा नाम
उल्टा सीधा एक समान
बूझो बच्चों मेरा नाम
आता नेताओं के काम।

—हरिओं वर्मा, गोंडा

रोज रोज मैं घिसता रहता
हर मनुष्य के घर में रहता
पानी को मुंह तक पहुंचाता
दो अक्षर का मैं कहलाता।

* * *

तीन अक्षर का मेरा नाम
उल्टा सीधा एक समान
यदि खींचो तो बढ़ जाऊं
छोड़ो तो मैं फिर घट जाऊं

उत्तर—(१) मकान, (२) हाथी, (३) जहाज, (४) लोटा, (५) रबर

देश भक्त की मां से

क्या ढूंढ़ रही हो ?
—गिरा हुआ वह नन्हा मोती
जो था इन नयनों की जोती
जिसे देखकर
जिसे चूमकर
हर्ष से झूम उठता मेरा मन,
क्या खोज रही हो ?
उसे
जिसने जग के
सुन्दर पथ का
निर्माण किया
भू देवी का
उस माता का
निज लोहू से
शृंगार किया
बलिदान हुआ
जननी के लिए
इन्सान हुआ
मरने के लिए
फिर क्यों रोना
मिट्टी के लिये
जो आज नहीं कल जायेगी।
यह शरीर
तो है नश्वर
सबको मरना ही पड़ता
अवसान वही है कहलाता
जो पर हित में है तन देता
बस शांत रहो
और धीर बनो
वीर पुत्र की ऐ माता
जिसने सत पथ पर
देश भक्ति की
बलिवेदी पर
नश्वर तन बलिदान किया।

—जयप्रकाश, कानपुर

चुटकुले

(एक मनुष्य ने डाक्टर को फोन किया)

मनुष्य—'मेरा बच्चा मेरी अठन्नी निगल गया है, जल्दी आइए।'

डा०—'एक घंटा बाद आऊंगा।'

मनुष्य—'तब तक मैं क्या करूं ?'

डाक्टर 'किसी पड़ोसी से उधार ले लो।'

—भरतसिंह वर्मा

* * *

मुन्ना (मां से)—मां रामू के पिता बहुत गरीब हैं।'

मां—'तुम्हें कैसे मालूम ?'

मुन्ना—'रामू एक पैसा निगल गया है जिसके लिये वे बहुत परेशान हैं।'

* * *

एक मुसाफिर (रिक्शे वाले से—'चांदनी चौक का कितना किराया लोगे ?'

रिक्शा वाला—चांदनी चौक क्या मेरे बाप का है जो किराये पर लगाऊंगा।

—शशिकुमार चौरसिया

* * *

वनिता विवेक

आम की उपयोगिता

[श्री विजेश्वर दयाल सक्सेना, बहराइच]

आरम्भ मे आम का फल छोटा होता है जिसमे खटाई का अंश होता है। इस समय इसका उपयोग चटनी आदि बनाने मे होता है। इन्हीं को काट कर व छील कर सुखा लेने से आम की खटाई तैयार हो जाती है। इन्ही कच्चे आमो का साग अथवा लौंजी बनाने के लिए आमोंको धोकर ऊपर का नक्कू निकाल दीजिए फिर काट कर गुठली निकाल कर इसे घी या तेल मे हींग का छौंक लगा कर डाल दीजिए। गल जाने पर नमक, मिर्च, धनिया आदि सभी मसाले इसमे डाल दीदिए अब देखिये यह कितना स्वादिष्ट हो जाता है।

पकी हुई दाल को अधिक स्वादिष्ट बनाने के लिए उसमे कच्चे आमो को छीलकर डाल देते हैं। कच्चे आमो का गुड़म्बा, कलौंजी अथवा नमकीन व मीठा मुरब्बा भी अधिक स्वादिष्ट होता है। इन्हीं कच्चे आमों से सोठ भी तैयार की जाती है। जो कि लू आदि के लग जाने मे प्रयोग किया जाता है। इसके लिए कच्चे आमो को आग की हल्की आंच मे भून लीजिए फिर उसको छीलकर पानी मे भिगो कर उसको निचोड़ लीजिए फिर इसमे नमक, भुना हुआ पिसा जीरा, कालीमिर्च और पोदीना सूखा पिसा हुआ डाल दीजिए फिर इसको काम मे लाइये।

थोड़े समय पश्चात् गुठली पर जाली पड़ जाता है किन्तु अभी आम कच्ची ही दशा मे होता है। ऐसी दशा में कच्चे आम का अचार व मुरब्बे बनते हैं।

इन्हीं कच्चे आमों से नौरत्न चटनी तैयार करने के लिए एक सेर कच्चे आम लेकर धोवे छीलकर चाकू से गूदा उतार लेवे फिर सेंधा नमक, सांभर नमक छटांक छटांक भर, धनिया एक तोला, बड़ा जायफल, जावित्री व दालचीनी एक एक माशा, पोदीना डेढ़ तोला व अदरख छिली कटी आधी छटांक डालकर चटनी पीस लीजिए फिर छीला बादाम एक तोला, पिस्ता छः माशा, किशमिश आध पाव इन सबको तनिक घी मे भून लो, आधा पाव कटे व उबले छुहारे, आधा सेर शक्कर की चाशनी करके सब चीज खूब मिलाइये व उतार कर ठण्डी कर लीजिए यह बहुत ही स्वादिष्ट बनता है।

अब तक हमने कच्चे आम की उपयोगिता का वर्णन किया है अब हम पके आम की उपयोगिता पर प्रकाश डालेंगे।

पका आम अधिकतर खाने के काम आता है ऐसे समय मे कुछ मनुष्य केवल आम पर ही आश्रित रहते हैं। कभी कभी आम आवश्यकता से अधिक हो जाता है अतः आम का रस निकाल कर सुखा लेते हैं। उसे अमरस अथवा अमावट कहते हैं। यह खानें में अधिक स्वादिष्ट व रुचिकर होता है।

पके आमों की सब्जी भी तैयार की जाती है। इसके लिए पके रसदार आमों का रस निकालिये व गुठली उसी में डाल दीजिए इसमे शक्कर व नमक खटास व मिठास के अन्दाज से डालिए। पतीली मे घी, जीरे का छौंक तैयार कर यह रस उसमें डालिए थोड़ी लाल मिर्च, पानी व हल्दी डालिए। पक जाने पर उतार दीजिए व खाने के काम मे लाइये।

पके आमों की बर्फी अत्यन्त स्वादिष्ट होती है। मीठा कलमी आम जैसे लगड़ा या दसहरी लेकर छीलकर छोटी छोटी फांक कीजिए। सेर भर दूध को तीन चार बार उबाल कर उतार लीजिए व ठंडा कर पाव भर शक्कर मिलाइये। अब इसमें आम के टुकड़े डाल कर जमाइये बस स्वादिष्ट बर्फी तैयार हो गई।

पके आमों की गुठली भी अत्यं[illegible] प्रयोग में आती है। कुछ लोग इ[illegible] उबाल कर खाते हैं। भारत के कु[illegible] भागों मे आम का गुठली का आट[illegible] पीसा जाता है।

स्वास्थ्य-सुधा

आम के गुणों का वर्णन

कच्ची अमियां

कसैली व खट्टी, गर्म होती हैं। खार के साथ होने से रुचिकारक, मल रोकने वाली, वात, पित्त व कफ वर्धक होती हैं। रुधिर के विकारो को उत्पन्न करती है। कण्ठ के रोग, फोडे फुन्सी आदि हो जाते है।

अमचुर

खाने मे खट्टा व स्वादिष्ट होता है कसैला होने के साथ साथ कफ व वात दूर करने के लिए बडा लाभकारी होता है।

पका हुआ आम

खाने मे सुगन्धित मीठा व मधुर होता है। स्निग्ध, वीर्य वर्धक बल वधक होता है इसके खाने से सुख मिलता है। वात का नाश होता है, हृदय का शक्ति मिलती है। शरीर का रंग गोरा हो जाता है, अग्नि व कफ वर्धक होता है। उसके खाने से शरीर में मास व बल बढता है व शरीर की थकावट दूर होती है। पित्त की वृद्धि होती है।

पाल में पका आम

पित्त का नाश करता है। इसमे खटाई का अश न होने से अत्यन्त मीठा मालूम होता है। स्वादिष्ट,मीठा बल वर्धक, वीर्य वर्धक व खाने मे हल्का व शीतल होता है। बहुत शीघ्र पचता है, वात पित्त का नाश व दस्तावर होता है।

अमावट अथवा अमरस

प्यास को शात करता है। कै को लाभ होता है। वात पित्त मे लाभ दायक है। कुछ दस्तावर भी होता है। सौन्दर्य व कान्ति प्रदान करता है।

आम की गुठली

किञ्चित खट्ट कसैली व सोंधी होती है। वमन अतिसार व हृदय दाह मे लाभ कारक है।

मधु के साथ आम

राजयक्ष्मा प्लीहा, वात व श्लेष्मा का नाश करता है।

घृत के साथ आम

वात का नाश अग्नि वर्धक व बल वधक होता है।

दूध के साथ आम

वात पित्त का नाश करता है। आम के सब दुर्गुणों का नाश करता है व बलवधक होता है।

आम के दोष, खट्टे आम क खाने से ही दूर होते हैं। मीठा आम कभी हानि नहीं करता मीठा आम नेत्र हितकारी व अधिक गुणकारी होता है।

इस प्रकार हम देखते है कि आम का फल छोटी अवस्था से लेकर पकने की अवस्था तक प्रत्येक दशा म कितना अधिक लाभकारी होता है। "आम के आम व गुठली के दाम" पूर्णतया सत्य है। गुठली भी रोटी के लिए व अनेको पेट रोगो म लाभकारी होता है।

वास्तव में आम बहुत उपयोगी फल है।

संयुक्त परिवार प्रथा को वैदिक धर्म विरुद्ध कहना अन्याय है

(—श्री डा० कुन्दनलाल जी अग्निहोत्री एम०डी० सगत, शाहगज लखनऊ)

१—'सहृदयम् सवदय', 'समानी प्रपा' इत्यादि अनेकों वेद मन्त्र और 'पितृभिर्भ्रातृभिश्चैता पतिभिर्देवरैस्तथा' मनुवाक् और ऋषि दयानन्द महाराज का गृहाश्रम प्रकरण और वानप्रस्थ लेने पर स्त्री को पुत्रो के पास छोडने का आदेश सभी ऐसे स्पष्ट प्रमाण हैं जो सयुक्त परिवार की प्रेरणा करते है चारों वेदो और ऋषि दयानन्द के सारे साहित्य मे एक भी वाक्य ऐसा नहीं मिलता जिसमें संयुक्त परिवार का विरोध किया गया हो फिर उसे वैदिक धर्म विरुद्ध कहना कहाँ तक उचित है ?

२—भारत का प्राचीन इतिहास इस बात का साक्षी है कि राम, लक्ष्मण भरत इत्यादि सयुक्त परिवार मे रहते हुये पूर्ण उन्नति कर सके, और महा भारत मे परस्पर भाई से भाई कौरव पाण्डव जब पृथक् हुए तब देश का नाश हो गया। इस समय भी अनेको उदाहरण सयुक्त परिवार की उन्नति के और पृथक्ता से अवनति के विद्यमान हैं। पीलीभीत के राजा लालताप्रसाद और हर प्रसाद जी वन पय त सयुक्त परिवार मे इतने प्रसिद्ध हुये कि साधारण धनवान वैश्य से उत्तर प्रदेश के विशेष रईस बन गये उनकी सन्तान बटवारा करके इस गति को प्राप्त हो गई है कि नगर म उनकी जायदाते बिक रहीं हैं। प्रतिनिधि सभाएं उप प्रतिनिधि सभायें सभी संयुक्त परिवार का समर्थन करती हे अत यह कहना कि हिन्दुओ की अवनति का धारतम कारण सयुक्त परिवार है घटनाओ के विरुद्ध है।

३—पृथक् परिवार की भावना की जड स्वार्थ है जिन वशो ने इसके वशीभूत होकर पृथक परिवार की रीति चलाई है वे इतने स्वार्थी बन चुके हैं कि ससार को अशात बना रखा है और स्वय भी अशात रहते हैं। भारत और पाकिस्तान के बटवारे का फल तो दोनो देश इस समय भी भोग रहे हैं।

४—कानून कुदरत के विरुद्ध सयुक्त परिवार को बताना उपहास जनक है। पशु पक्षी भी सयुक्त परिवार मे एकत्रित रहते हैं। जैसे कौवे, बन्दर हिरण। वह अपनी सब शक्ति से मनुष्य पर विजय प्राप्त कर लेते है। आप एक बन्दर का पकड लीजिए या कौवे को मार डालिए, घर का रहना कठिन हो जावेगा। गाय जगल मे सयुक्त परिवार द्वारा शेर जैसे शक्तिशाली पशु का भी भगा देती है और अपने बच्चो की रक्षा कर लेता है। परन्तु अकेली गाय को शेर सुगमता से खा जाता है। पशुओ मे कुत्ता सयुक्त परिवार का पसद नही करता अत जहाँ जाता है दुतकारा और पीटा जाता है।

वर-कन्या पृथक परिवार बसावें

६ जुलाई के आर्यमित्र मे श्री उपाध्याय जी का 'सयुक्त परिवार और आर्यसमाज' शीर्षक लेख देखा मेरी सम्मति में उनकी विचार धारा आधुनिक युग के अनुकूल बुद्धिपूर्वक, युक्तिपूर्ण अनुभूत एव उपादेय है। उनकी ६ युक्तियों म सार है। विवाह के लाजाहुति के मन्त्र सप्तपदी के मन्त्र और मधुपर्क की विधि, शिलारोहण, ध्रुव और अरुन्धती दर्शन सभी अङ्ग इस बात के सूचक हैं कि वर और कन्या अपना एक अभिनव परिवार बसावें।

—आचार्य प्रभामित्र विद्या वारिधि' शाखा साहित्यानन्द दानकरण वैदिक पाठशाला उ०मा० विद्यालय फैजाबाद



विश्वकर्मा वंशज बालकों को ७०००) का दान

श्री भवानीलाल गजूलाल जी शर्मा स्थिरनिधि



१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न स्व० श्रीमती तिजोदेवी भवानीलाल शर्मा कोकास की पुण्यस्मृति म श्री भवानीलाल जी शर्मा अकबरपुर जिला कानपुर वर्तमान अमरावती (विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वशीय बालको के हितार्थ ७०००) की धनराशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद स० २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को प्रस्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक व्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वशज गरीब असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओं के शिक्षण मद म व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि म आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुक। को।) के स्टाम्प भेजकर सभा से छपे फार्म मगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

४—दान दाता की इच्छानुसार विश्वकर्मा वशीय मनु, मय, त्वष्टादि ५० आ० बालक बालिकाओं के लिए प्रथम सहायता दी जायगी

५—उपर्युक्त सम्पूर्ण योजना आर्यमित्र पत्र म उनमें हाथ अधिकार सूचनार्थ प्रतिमास सचित्र प्रकाशित होती रहेगी और दान दाता को 'मित्र' पत्रके प्रत्येक अङ्क बिना मूल्य मिलते रहेंगे।

——मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

अन्यान्य समाचार

"वैदिक सौत्रामणि यज्ञ"

वैरा फिरोजपुर जिला बुलन्दशहर निवासी यज्ञों के परम भक्त श्री भगत बालमुकुन्द जी जो कि अपने जीवन में ४ बार चतुर्वेद पारायण यज्ञ करा चुके हैं, की यह चिर कामना थी, कि मैं किसी प्राचीन श्रौत यज्ञ को कराऊं उनकी यह चिरकामना पूरी हुई तथा १३ मई से २८ मई सन् १९५८ तक वैदिक सौत्रामणि यज्ञ उनके ग्राम में बड़ी धूमधाम से किया गया। इस यज्ञ का देवता इन्द्र है तथा यह यज्ञ राष्ट्र में शक्ति लाने के लिए एवं अनीति को दूर करने के लिए किया जाता है। इसकी पद्धति विशेष रूप से तैयार की गई थी। समय आने पर वह पद्धति प्रकाशित की जायेगी। इस यज्ञ के आचार्य श्री पं० हरिदत्त जी शास्त्री एम० ए० डी० फिल०, ऋत्विजो में श्री डा० रमेशचन्द्र जी शास्त्री एम० ए० पी० एच० डी०, श्री डा० नरेन्द्रदेव जी शास्त्री एम० ए० पं० गिरिवर प्रसाद जी शास्त्री, श्री पं० रामजीलाल जी उपाध्याय थे। यज्ञ में ७००) के लगभग व्यय हुआ, यज्ञ के अनन्तर प्रतिदिन उपस्थित जनता को प्रसाद दिया जाता था। रात्रि के समय दो घण्टे विविध आध्यात्मिक विषयों पर प्रवचन होता था जिससे जनता को बड़ा लाभ हुआ यज्ञ के अन्त में २५०) विविध संस्थाओं को प्रदान किये गये।

भगवान् से प्रार्थना है कि भगत जी को चिरायु प्रदान करें, जिससे लुप्त यज्ञों का स्वरूप जनता के समक्ष उपस्थित किया जा सके।

—रामचन्द्र त्यागी
मंत्री आर्य समाज, वैरा फिरोजपुर

स्वामी अभेदानन्द जी छोटा नागपुर में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रीयुत स्वामी अभेदानन्द जी महाराज आजकल छोटा नागपुर, रांची तथा बिहार राज्य में ऐसे अन्य स्थानों का दौरा कर रहे है जो विदेशी ईसाई मिशनरियों की कूट नीतिक गतिविधियों के केन्द्र बने हुए हैं। श्री स्वामी जी महाराज इसी दौरे में ईसाई प्रचार निरोध एवं शुद्धि संगठन कार्य को व्यापक रूप देने के लिए भी प्रयत्न शील हैं। श्री स्वामी जी महाराज ने धर्मनिष्ठ आर्य हिंदू जनता के लिये ईसाई प्रचारकों के बढ़ते हुये प्रभाव को एक भयंकर खतरा बताया है। इस दौरे में आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के उपप्रधान श्री आचार्य रामानंदजी शास्त्री भी श्री स्वामी जी महाराज के साथ ही यात्रा पर हैं।

आर्यमित्र की सहायता कीजिए

आर्यमित्र आर्य जगत् का सर्वश्रेष्ठ पत्र है। जब से मैंने सुना है कि यह पत्र घाटे में चल रहा है तभी से मैंने प्रतिज्ञा कर ली है कि आर्यमित्र की अधिकाधिक सहायता करूंगा। मैं प्रयास में हूं कि आर्यमित्र के अधिकाधिक ग्राहक हों। यह शर्म की बात है कि उ० प्र० सबसे बड़ा प्रान्त होते हुए, यहाँ इतने आर्य समाजियों के रहते हुये, दानी धर्मात्माओं के होते हुये भी आर्यमित्र इस स्थिति मे चले। यह एक अच्छा, सच्चा हितैषी, उपदेश देने वाला समाचार पत्र है। सभी बहनों और भाइयों को इसका ग्राहक बनना और बनाना चाहिए। इसका वार्षिक मूल्य आठ रुपया है और ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से प्रकाशित होता है।

—सरदारसिंह तूफान
आर्य प्रचारक सांकरौद, लेकड़ा, मेरठ

दुद्धी (मिरजापुर) में आर्य समाज

गढ़वा आर्य समाज के संयोजन में ६-७-८ जून १९५८ को दुद्धी मे आर्य समाज का प्रथम वार्षिकोत्सव वृहद् रूप से मनाया गया। प्रति दिन लगभग एक एक हजार की उपस्थिति होती रही जिसमे हमारे मुसलमान और ईसाई भाइयों की भी अधिक संख्या में उपस्थिति होती रही। सभा से आये हुए श्री पं० विष्णु स्वरूप जी विद्यार्थी एवं श्री खेमचन्द्र जी आर्य भजनोपदेशक तथा मिरजापुर आर्य समाज के श्री घनश्यामदास जी शास्त्री एवं नगर उटारी के मन्त्री श्री जोखन राम जी भजनोपदेशक आदि ने सभा को पूर्ण सफल बनाया।

साहित्य-समीक्षण

समालोचनार्थ पुस्तकों की कृपया दो प्रतियाँ ही भेजें—सम्पादक

मीरा

सम्पादक—प्रो० रामावतार अग्निहोत्री एम.ए., प्रकाशक—मीरा साहित्य मन्दिर ७४।२१७ धनकुट्टी कानपुर मूल्य—एक रुपया, पृष्ठ सं० ८० ।

मीरा साहित्य मन्दिर कानपुर के मीरा सम्बन्धी इस प्रकाशन को हम एक शुद्ध साहित्यिक व आध्यात्मिक रचना कह सकते हैं जो सर्वत्र भक्ति-रस से सराबोर और प्रभु प्रेम से ओत प्रोत है। नि.सन्देह इस पुस्तक में विभिन्न साहित्यिक महारथियों के मीरा सम्बन्धी विचारों का सुन्दर संकलन व चयन करके प्रो०अग्निहोत्री ने हिन्दी साहित्य की भक्ति जगत को एक नई वस्तु दी है, एक नई प्रेरणा दी है। सम्पादन भी बड़े ढंग से और सुलझे मस्तिष्क से किया गया है। इस मीरा साहित्य से अध्यात्म चिन्तन करने वाले सज्जन पुरुषों को बड़ी सहायता मिलेगी ऐसा मेरा विश्वास है।

पुस्तक के प्रारम्भ में केवल चार पद्य पंक्तियो मे ही राष्ट्र कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने मानो पुस्तक का सम्पूर्ण सार रख दिया है जिसकी अन्तिम पंक्ति है :—

'नचा गई नटनागर को भी,
नाची तो बस मीरा।'

डा० मुन्शीराम शर्मा एम० ए०, डी० लिट० कानपुर के लेखानुसार "मीरा ने प्रभु को हृदय में बांध लिया था" पर इस पुस्तक में डा० साहब का प्रथम लेख 'मीरा' ने शेष सारी रचनाओं को हृदय में बांध लिया है। श्री लक्ष्मीशङ्कर मिश्र निशंक एम० ए० के अनुसार मीरा अनुभूति की प्रतिमा थी। मीरा के संबंध में श्री शिशुपाल सिंह शिशु लिखते हैं—"आने कौन सा मर्म मीरा थी लगाये हुए, नैन मूंद के भी घनश्याम देख लेती थीं"। सम्पादक प्रो० अग्निहोत्री ने मीरा को 'अमर सुहागिन' कहा है। मीरा के शब्दों में ही मीरा की उच्चतम भक्ति भावना देखिए—"मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई।" "हे री मैं तो प्रेम दिवानी मेरा दर्द न जाने कोय"—"दरस बिना मोहि कछु न सुहावे जकन पड़त है आंखड़िया" इसी भावना को भक्त कबीर ने यूं लिखा है—"आंखड़ियां झांई पड़ी पन्थ निहार निहार, जिभड़ियां छाले पड़े नाम पुकार पुकार।" इन्हीं कारणों से श्री वृन्दावन लाल वर्मा ने मीरा की गिनती परम सन्तों में की है।

वास्तव में मीरा की भक्ति अत्यंत प्रेरणादायक है। कुछ भजन तो हृदय को झकझोर देते है और आँखों में बरसात ला देते है। इस पुस्तक के लेखक व प्रकाशक दोनों ही धन्यवाद के पात्र हैं। ऐसी रचनाओं से हिन्दी साहित्य और समृद्ध होगा। ऐसी ही रचनाओं की आज आवश्यकता है।

—भगवत शरण

आर्य-जगत

सभा उपप्रधान श्री कालीचरण आर्य
का

भ्रमण पुरोगम

१६ जुलाई सर्हला
२० ,, हरदोई
२१ ,, शाहाबाद व पूरनपुर
२२ ,, शाहजहाँपुर
२३ ,, मुहम्मदी
२४ ,, गोलागोकरननाथ
२५ ,, पूरनपुर व पलीभीत

सभा मुख्य उप मन्त्री

श्री ईश्वर दयालु जी का भ्रमण पुरोगम

२३ जुलाई—आर्य समाज रामपुर
२४ ,, ,, धमोरा, रामपुर
२५ ,, ,, मिलक, रामपुर

नोट—आर्य समाजो का चाहिए कि उन्हे वेद प्रचारार्थ प्रचुर मात्रा में धन से सहायता करें।

—फूलनसिंह
सभा मन्त्री

गुरुकुल समाचार

—गुरुकुल सिकन्दराबाद मे अग्रेजी, हिन्दी, सस्कृत के साथ शास्त्री तक की पढाई की व्यवस्था है इस वर्ष का परीक्षाफल ७५ प्रतिशत रहा।

—सदाशिव गुरुकुल महा विद्यालय रणखण्डी, सहारनपुर नि शुल्क शिक्षा केन्द्र है। यहाँ से राजकाय सस्कृत कालेज बनारस की परीक्षाए दिलाई जाती हैं। १०) भोजन शुल्क लिये जाते है। पत्र व्यवहार करे।

—गुरुकुल अयोध्या का शाखा गुरुकुल टाडा वानप्रस्थाश्रम म विद्यार्थियों का प्रवेश प्रारम्भ है। प्रवेशार्थी शीघ्रता करे।

—कन्या गुरुकुल हरद्वार मे कन्याओ को आयुर्वेद की शिक्षा नि शुल्क दी जाती है। डा० राधा कृष्णन द्वारा शिलान्यासित तथा कविराज श्री योगेन्द्रपाल शास्त्री द्वारा सचालित यह गुरुकुल बहुत प्रगति कर रहा है। छात्रावास का सुन्दर प्रबन्ध है और आचार्यक की शिक्षा की व्यवस्था है। लाठी तलवार, कटार, तथा व्यायाम की शिक्षा भी दी जाती है। २०) रु० मासिक छोटी कन्याओ से और २५) रु० मासिक आयुर्वेद वाली छात्राओ से पोषण व्यय के लिए लिये जाते हैं। शिक्षा नि शुल्क है। दाखला चालू है।—चन्द्रावती देवी शास्त्री, आचार्या कन्या गुरुकुल, कनखल, हरद्वार।

उत्सव समाचार—

—आ०स० भोंग, फतेहपुर का वार्षिकोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ। डा० प्रकाशवती, प० विनायक प्रसाद, प० ब्रह्ममित्र जी, स्वामी शिवानन्द जी आदि के भाषण हुए।

चुनाव समाचार—

—आ०स० तिलहर, शाहजहाँपुर मे श्री कृष्णचन्द्र चोपडा प्रधान, ठाकुर वीर पालसिंह ठेकेदार मन्त्री व श्री कुन्जबिहारीलाल कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आ०स० बसन्ती खेडा मे श्री गगासागर जी प्रधान, श्री लक्ष्मी नारायण जी मन्त्री और श्री रामअवतार जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आ०स० शाहपुरा मे श्री राजा साहब सुदर्शनदेव जी प्रधान, श्रीराम स्वरूप जी मन्त्री और श्री रामजीवन जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आ० स० सुल्तानपुर मे श्री रामअभिलाष जी प्रधान, श्री केदार नाथ जायसवाल मन्त्री और श्री जगबहादुरसिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आ० स० चतरा, बिहार के चुनाव मे डा० काशीनाथ सिनहा प्रधान व कोषाध्यक्ष तथा श्री महावीर प्रसाद मन्त्री चुने गये।

—आ०स० भोगपुर, बिजनौर के चुनाव मे श्री दयावीरसिंह शास्त्री प्रधान, श्री बलवीरसिंह मन्त्री और श्री गुरुदत्तसिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आ० स० कसबा, पूर्णिया के चुनाव म श्री मुशीलाल जी प्रधान, श्री दौलतप्रसाद मन्त्री और श्री मोहर लाल जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आ० स० सदर बाजार बरेली छावनी—डा० हकीकतराय प्रधान, श्री दीनानाथ वैद्य मन्त्री, श्री बाबूराम जी कोषाध्यक्ष।

—आ०स० रुडकी—श्री ब्रजभूषण शरण बी० ए० एल० एल० बी० आनरेरी मजिस्ट्रेट प्रधान, श्री चन्द्रकिरण आयुर्वेदालकार मन्त्री, श्री रामचन्द्र जी कोषाध्यक्ष।

—आ० स० तिलहर—श्री कृष्णचन्द्र चोपडा प्रधान, श्री वीरपालसिंह मन्त्री, श्री कुन्जबिहारीलाल कोषाध्यक्ष।

—आ० स० तरौंदा—श्री शिवराम सिंह जी प्रधान, श्री भोलासिंह मंत्री, श्री गजराजसिंह कोषाध्यक्ष।

—आ० स० खटीमा नैनीताल—प्रधान प० रामयाशम वशिष्ट, मन्त्री डा० रामगोपाल शर्मा। इस समाज के अन्तर्गत एक आर्य कन्या पाठशाला भी १७५८ से प्रारम्भ हो गया है जिसके मैनेजर श्री सुन्दरलाल जी व मन्त्री डा० रामगोपाल शर्मा चुने गये हैं।

आर्यवीर दल समाचार

—पश्चिमी उत्तरप्रदेश आर्य वीर दल की कार्यकारिणी का चुनाव २०-७५८ का आ०स० अमरोहा, मुरादाबाद म श्री पुरुषार्थी जी की अध्यक्षता मे होगा। बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, नैनीताल, अल्मोडा, गढ़वाल, देहरादून, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ टेहरी, बुलन्दशहर, बदायू आदि जिलो के मण्डलपति, मन्त्री, व नगरनायक अवश्य पधारें। अगले वर्ष में दल को प्रगति करने पर विशेष रूप से विचार किया जायगा। श्री रामजीप्रसाद गुप्त सचालक प्रान्तीय आर्यवीर दल उ०प्र० भी इस बैठक में पधारेंगे।

—इस वर्ष ग्रीष्मावकाश में आर्य वीर दल के शिविर निम्न स्थानो में सफलता पूर्वक लगे—विदिशा (म०प्र०) लखनऊ, कलकत्ता, वाराणसी, उमरी (कानपुर) मुरलीपुर (कानपुर), नौनापुर (कानपुर) इन शिविरो मे ५८५ आर्यवीरों ने शिक्षा प्राप्त किया। प्रिन्सपल भारत भूषण त्यागी एम० ए०, श्री अवध बिहारी लाल एम० ए०, श्री निरजन लाल शर्मा, श्री रामजी प्रसाद गुप्त सचालक आर्य वीर दल उत्तर प्रदेश श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी प्रधान सचालक, श्री काशीनाथ शिक्षक व्यायाम विशारद, श्री रामसिंह शिक्षक आदि ने इन शिविरो को सफल बनाया तथा शारीरिक व बौद्धिक शिक्षण दिया। इन शिविरों मे विशेष रूप से चरित्र निर्माण पर बल दिया गया। श्री पुरुषार्थी जी ने समस्त आर्य वीरों को विदाई देते हुए उन्हे राष्ट्रहित के लिए कार्य करने की प्रेरणा दी।

आर्य वीर दल सीतापुर—नगर नायक श्री रमाशकर जी, मन्त्री श्री राजेन्द्र कुमार साह अखिन्द, शिक्षा नायक श्री रामबहादुर आर्य।

—प्रान्तीय आर्य वीर दल उ०प्र० के समस्त उप सचालकों की एक बैठक प्रान्तीय आर्य वीर दल कार्यालय नारायणस्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ में रविवार ३ अगस्त ५८ को प्रात. ८ बजे से होगी।

—आर्यवीर दल उमरी में श्री राजकुमार जी शाखानायक और श्री सजीवन लाल जी शिक्षा नायक चुने गये।

—आर्य वीर दल तरौंदा कानपुर—श्री गजराजसिंह शाखानायक, श्री मूलेन्द्रसिंह शिक्षानायक।

आर्यकुमार सभा समाचार

—प्रान्त के समस्त आर्य कुमार सभाओ को चाहिए कि वे अपने यहाँ के प्रतिनिधियो के नाम लौटती डाक से भेज दें।—वेदश्रवा, ६६ मोतीलाल बाजार बरेली।

—आर्य कुमार सभा, गुरुकुल भैंसवाल कला रोहतक—प्रधान ब्र० प्रतापसिंह, मन्त्री ब्र० दयाव्रत जी। प० देवव्रत जी एम० ए० की अध्यक्षता मे सभा का प्रथम अधिवेशन भी हुआ। यहाँ के ब्रह्मचारियों को आर्य वीर दल की शिक्षा भी दी जाती है।

—आर्य कुमार सभा शाहदरा देहली—प्रधान श्री प्रीतम दास जी, मन्त्री श्री उमेशचन्द्र शास्त्री, कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्रपाल जी।

—आर्य कुमार सभा सिरसो ने १४, १५, जून को ३ स्थानो पर आर्य समाज की स्थापना की जिसमे अनेको लोगो के भाषण हुए। गावों मे १० यज्ञोपवीत सस्कार भी हुए। आलमपुर मे समाज खुला जिसके प्रधान श्री इच्छाराम व मन्त्री श्री मनोहर सिंह चुने गये। दूसरा समाज अडौला मे खुला जिसके प्रधान श्री फकीरचन्द और मन्त्री श्री छत्रसाल सिंह हुए। तीसरा समाज हरथला वेला मे खुला जिसके प्रधान श्री बाबूराम जी और मंत्री श्री बेनीराम जी हुए। तीनों समाजों को ११११ किताबे आर्य कुमार सभा ने दान दी।

—आर्यकुमार सभा उमरी के चुनाव मे श्री राजकुमार आर्य प्रधान, श्री उदयनारायण आर्य मंत्री और श्री सजीवन लाल आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

अमेठी समाचार—

—आ०स० रामनगर की ओर से ३० जून को स्व० राजकुमार श्री रणवीरसिंह की जन्म तिथि गुरुकुल अयोध्या के स्वामी जगदानन्द शास्त्री की अध्यक्षता मे मनायी गई जिसमे राजकुमार श्री रणजयसिंह एम०एल०सी० व श्री रामकिशोर शास्त्री ने स्व० राजकुमार जी के आदर्श चरित्र पर प्रकाश डाला।

नारी रक्षा समाचार—

—आर्यसमाज मगहर ने प्यारी देवी नामक एक विवाहित महिला को आत्महत्या करने के लिए घर से निकल गई थी, को उसके पति का पता लगाकर, उन्हे बुलवाकर और उचित ढग से समझाकर तथा उनसे प्रतिज्ञा-पत्र लिखवा कर उन्हें उनकी धर्म पत्नी को सौंप दिया।

सामयिक समस्याएँ

ईसाई प्रचार निरोध के लिए कदम बढ़ाइये

[श्री लाला देवीचन्द एम०ए०, प्रधान दयानंद साल्वेशन मिशन, होशियारपुर]

भारत की सभ्यता तथा संस्कृति पर जब कुठाराघात हो रहा था और हिन्दुओं को अपने धर्म से पतित किया जा रहा था ठीक उसी समय महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज का जन्म हुआ। उन्होंने आर्य जाति पर ईसाइयत की ओर से बोले गए हल्ले तथा आक्रमण का घोर विरोध करते हुए हिन्दू जाति को सावधान करने का भरसक प्रयत्न किया। भारत के हिन्दू सम्भले और ईसाई मिश्नरियों की गतिविधि में महर्षि का स्थापित आर्य समाज हिमाचल बन कर प्रबल रूप में बाधक हुआ। ईसाई मिश्नरियों की पकी खड़ी खेतियां कटने लगीं और ईसाई मत में दीक्षित लोग पुनः शुद्ध किया जा कर हिन्दू जाति का अंग बनाये जाने लगे। आर्य समाज के विद्वानों ने ईसाई पादरियों को शास्त्रार्थ के लिए भी ललकारा परन्तु वह उनके सम्मुख आने से घबराते थे। आर्य समाज तथा उसके प्रवर्तक ने यदि भारत में ईसाई मत की इस बाढ़ को रोकने का प्रयत्न न किया होता तो करोड़ों की संख्या में भारतीय जनता ईसाई मत का शिकार हो गई होती और हमारी सभ्यता तथा संस्कृति का नाम तथा निशान मिट जाने में कोई संदेह नहीं था। आर्य समाज ने शुद्धि का बिगुल बजा दिया और वह ईसाई पादरियों की दृष्टि में खटकने लगा।

[राष्ट्र को ईसाइयत के बढ़ते हुए प्रचार से बचाने का दायित्व सर्वाधिक आर्यों पर है। इस लेख के लेखक ईसाई प्रचार निरोध के क्षेत्र में माने हुए कार्यकर्ता हैं। उन्होंने समय रहते हुए हमें चेतावनी दी है और संगठित प्रयत्न के लिए आह्वान् किया है। हमें इस समस्या की गम्भीरता को अनुभव करना चाहिये।]

—सम्पादक

स्वतन्त्र भारत में ईसाई मिश्नरियों का षड्यन्त्र

स्वतन्त्र भारत में ईसाई मिश्नरियों की राष्ट्र विरोधी तथा जाति घातक सरगर्मियाँ भारत सरकार और हिन्दू जाति के लिए एक चुनौती है। आवश्यकता इस बात की है कि भारत सरकार मध्य प्रदेश में नियुक्त सरकारी कमिशन के प्रधान डा० एम० बी० नियोगी रिटायर्ड चीफ जज नागपुर हाई कोर्ट तथा मध्य भारत सरकारी कमिशन के प्रधान जस्टिस रेगे की रिपोर्टों का ध्यान पूर्वक अध्ययन करे। उन्होंने विदेशी ईसाई मिश्नरियों की प्रचार शैली पर कड़ी समालोचना की है और उसको भारत की स्वतन्त्रता के लिए अत्यन्त हानिकारक बतलाया है। गत ८-९ वर्षों में ९० करोड़ से भी अधिक रुपया विदेशी ईसाई मिश्नरियों को अमरीका, इङ्गलैंड, इटली, हौलैण्ड, डेन्मार्क इत्यादि देशों से भारत की जनता के धर्म परिवर्तन के लिए प्राप्त हुआ है। जिससे आसाम, उड़ीसा, बिहार, दक्षिण भारत इत्यादि प्रान्तों में नवीन ईसाई विद्यालय तथा आश्रम स्थापित किए गए हैं। पूना इत्यादि अनेक स्थानों पर मिश्नरी तैयार किए गए हैं और गिरजाघर बनवाए जा रहे हैं। उसके अतिरिक्त नवीन मिशनों की भी स्थापना की जा रही है। हमारे स्कूलों तथा कालेजों के विद्यार्थियों में बिना मूल्य ईसाई मत प्रचार सम्बन्धी साहित्य वितरण किया जा रहा है। पत्र व्यवहार द्वारा भी उन्हें नाना विधि प्रभावित किया जा रहा है। यह एक प्रकार का षड्यन्त्र है जो भारत मे स्थित विदेशी ईसाई मिश्नरियों ने हमारी स्वतन्त्रता तथा हमारी प्राचीन आर्य सभ्यता तथा संस्कृति को नष्ट करने के लिए रच रखा है।

आर्य समाज का कर्तव्य

इस गम्भीर परिस्थिति को देखते हुए दयानन्द के वीर सैनिक चुप साध कर बैठे नहीं रह सकते। आर्य समाज के बिना अन्य कोई सभा अथवा समाज ऐसा नहीं दीख पड़ता जो भारत के दलित वर्ग, आदि वासियों तथा पिछड़ी जातियों को ईसाई मत के इस भयानक षड्यन्त्र तथा आक्रमण से बचा सके। स्वतन्त्रता प्राप्त होने के पश्चात ईसाई मतावलम्बियों की सख्या मे लगभग २५ लाख की वृद्धि हुई बतलाई जा रही है। १९५१ की जन गणना मे उनकी संख्या ८५७७६५

(शेष पृष्ठ १६ पर)

सिंहावलोकन

उर्दू स्वतः कोई भाषा नहीं

[श्री भवानी प्रसाद वकील, मन्त्री संस्कृत प्रसार समिति आजमगढ़]

पूर्व-विभाजन कालीन हिंदी-उर्दू विवाद ने पुनः शिर उठाया। हिन्दी राज-भाषा के पद पर आसीन हुई और इस विवाद का अन्त तदैव और तत्रैव हो जाना चाहिए था किन्तु ज्ञायते यत् उर्दू हिन्दी का पीछा नहीं छोड़ना चाहती। खेद विषयः यत् अन्तर्स्रोत में स्राव अद्य पर्यन्त विद्यमान है और थम थम कर स्रोत में ज्वार भी आ जाती है। विस्मरामः वयम् अत्र यत् उर्दू हमारी दासता का चिह्न शेष है और उसको अल्पतम् क्षेत्र में भी मान्यता देना देश का अराष्ट्रीयकरण करना है। एवं अद्य अपि सरकार एक गलत नीति को अपना कर उर्दू को अत्यधिक उन्नयन देती चली आती है।

उर्दू एक विदेशी शब्द है और विदेशी लिपि में लिखी भी जाती है। उर्दू को भारतीय कहना मूलतः अशुद्ध है। उर्दू स्वतः कोई भाषा नहीं। हिंदी का ही इतर नाम उर्दू है। फारसी लिपि में परिलिखित हिन्दी ही प्रसंगेण एक अयुक्त नाम से उर्दू कहाने लगी। व्युत्पत्तितः उर्दू का अर्थ है 'लशकरगाह व लशकर'। लशकर में विदेशी मुसलमानी सिपाहियों और भारतीय सिपाहियों के परस्पर सम्पर्क से फारसी शब्दों का हिन्दी भाषा मे समावेश प्रारम्भ हुआ। गच्छत्सु कालेषु हिंदी ने अनेक फारसी शब्दों को आत्मसात् कर लिया। किसी भी भाषा में बाह्य शब्दों के मिलावट से वह भाषा अपना नाम नहीं त्यक्त कर देती और न इतर भाषा बन जाती है। हिन्दी भाषा मे बहुत से अंगरेजी शब्द भी मिल गये हैं। यथा स्टेशन, बस, मोटर, साइकिल, टाइप, टायर, ट्यूब आदि। यही अङ्गरेजी शब्दों से मिश्रित हिन्दी यदा कदा रोमन लिपि में परिलिखित होती है किन्तु अनेन हेतुना वह हिन्दी से बदल कर कोई भिन्न भाषा नहीं हो जाती।

उर्दू के उपासकों ने अपत्ति जो ला खड़ी कर दी है उससे किसी भी भारतीय का ध्यान अतीत की ओर प्रत्यावर्तित हो सकता है और उसके मन में भावना उठ सकती है कि उर्दू को भारतीय भाषा की पंक्ति में स्थान देकर संविधान सभा ने एक महान् भूल किया। राष्ट्रीय लिपि के टाट पर विदेशी लिपि को कदापि न बैठने देना चाहिए था। राष्ट्र-निर्माण के मार्ग में उर्दू यदि कांटा बनी रही तर्हि नास्ति सन्देहः अत्र यत् एकस्मिन् दिने उर्दू को सम्विधान के अष्टम् शेड्यूल से निकाल कर राष्ट्र को निष्कण्टक करना होगा। शोभनम् भवेत् यदि उर्दू के पुजारी उस दिन को आह्वान न देवें।

भारत धर्मनिरपेक्ष राज्य है यत्र धर्मतन्त्राय स्थानम् नास्ति। उभय दिशि चलाने की वार्ता विभाजन के साथ गई। अद्य सभी को समान अवसर प्राप्त है। योग्यता ही कसौटी है। पद की निर्दिष्ट और सरकारी सेवा का वितरण पूर्व विभाजन कालीन रेखा पर नहीं हो सकता। एतस्मिन् विषये किसी अपवाद या छूट की अभियाचना करना राष्ट्र को पुनः साम्प्रदायिकता की ओर लौटा लाना है। त्वचा बदल देने से कोई अन्तर न हो जायगा। बीच के आंकड़े के अवलोकन से बहुसंख्या कह सकती है कि शिखरीय पदों के निर्दिष्ट में अल्पसंख्या के साथ अति उदारता बर्ती गई। राष्ट्र रक्षा की दृष्टि से भी सरकार की नीति को यत्र तत्र साक्षात चुनौती दी जा सकती है।

प्रतीयते यत् पं० जवाहर लालः नेहरू का कर्ण भरण पूर्वतः हो रहा था। नेहरू जी के हृदय में व्यथा उठी और मन में राजनैतिक विरक्ति अंकुरित हुई। उनके प्रधान-मन्त्रित्व से अवकाश की वार्ता मात्र ने दलीय जनों पर एक प्रकार वैद्युत् आघात पहुंचा दिया और वे शून्य हो गये। इप्सित पदार्थ की प्राप्ति का इससे श्रेष्ठतर अवसर फिर कहाँ मिलता जानती अपि व अजानती एवं कांग्रेस कार्य समिति ने अल्पसंख्या को तु[ष्ट] करने के हेतु उर्दू आदि सम्बन्ध प्रस्ताव पारित करके साम्प्रदायिकता का पुराना गड़ा झगड़ा उखाड़ कर खड़ा कर दिया। राष्ट्र पर इसका ब[ड़ा]

(शेष पृष्ठ १६ पर)

पंजीकरण सं. ए. ६०
आषाढ़ २६ शक १८८०(२० जुलाई५८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष्य : ५६६२ तार : 'आर्यमित्र'

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

सामयिक समस्याएं

(पृष्ठ १५ का शेष)

तक जा पहुंची थी और अब तक यह संख्या एक करोड़ तक पहुंच गई होगी। स्वतन्त्रता प्राप्त होने से पूर्व भारत में विदेशी ईसाई मिश्नरियों की संख्या १७०० थी परन्तु अंग्रेजों के भारत से प्रस्थान करने के पश्चात् यह संख्या ५००० तक पहुंच गई है और यदि देशी पादरियों की संख्या को इसमें सम्मिलित कर लिया जाय तो वह संख्या २० सहस्र तक जा पहुंचती है। अनेकों ईसाई संस्थाओं के अतिरिक्त नाना प्रकार के प्रलोभनों द्वारा भी हमारे भाईयों का धर्म परिवर्तन किया जा रहा है। जिसको आज्ञा कदापि नहीं दी जानी चाहिए।

आर्य समाज के पास वह विस्तृत साधन नहीं जिनसे वह उनका यथोचित विरोध कर सके। यदि हम भारत की स्वतन्त्रता तथा अपनी पुरातन सभ्यता तथा संस्कृति की रक्षा चाहते हैं तो हमें भी अपनी प्रचार शैली में परिवर्तन लाना होगा और स्थान स्थान पर पिछड़े हुए प्रान्तों मे शिक्षा का प्रबन्ध स्वयं करना होगा या शासन को हरकत में लाना होगा। इस प्रकार भिन्न भिन्न प्रान्तों मे प्रचार का प्रबन्ध करने के लिए एक उपदेशक मण्डल का निर्माण करना अत्यावश्यक है। इसके लिए हमारे पास प्रचारकों की ट्रेनिंग के लिए एक विद्यालय की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य को सन्मुख रखते हुए अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन की ओर से २५ लाख रुपयों की अपील की गयी है देखना है कि आर्य हिन्दू जनता कहाँ तक इस चेतावनी और अपील पर ध्यान देती है। यदि उसका रक्त ठण्डा नहीं पड़ गया तो वैदिक कालीन शंकराचार्य की भान्ति शुद्धि का सुदर्शन चक्र हाथ में लेकर ईसाई प्रचार विरोधार्थ अवश्य अग्रसर होकर तन मन धन से हमारे उत्साह को बढ़ाती हुई पुण्य तथा यश की भागी बनेगी।

सिंहावलोकन

(पृष्ठ १५ का शेष)

दुष्प्रभाव पड़ेगा। शासन संचालन में कुव्यवस्था फैल जाने की आशंका है। आलोचना हो सकती है कि यह सब यदि विशुद्ध साम्प्रदायिकता नहीं है तो इसके राजनीति मिश्रित साम्प्रदायिक होने में तो कसर नहीं। 'एकोक्शनम् चिरंजीवेत्' सदृश बौछार भी आ सकती है। अस्तु। बहुसंख्या ने घोर कष्ट सहकर देश को स्वतन्त्र किया और कांग्रेस को सर्वस्व सौंप दिया। यह बहुसंख्या भारत में और भारत के लिए जीती मरती हैं और इसके लिए संसार में अन्यत्र कोई ठिकाना नहीं। कांग्रेस की सारी महत्ता इसी बहुसंख्या की बदौलत है। गद्दी भी इसी बहुसंख्या के आधार पर टिकी है। इतने पर भी यदि इस बहुसंख्या की भावना की अवहेलना होती है और भारत के राष्ट्रीयता को ठेस लगती है तो महान् कष्ट की वार्ता है। स्मर्तव्यम् यत् इयं बहुसंख्या महत्शक्तिशालिनी वर्तते।

उपयुक्तम् भविष्यति अत्र यदि कांग्रेस और सरकार का ध्यान 'संस्कृत कमीशन' के प्रतिवेदन की ओर आकर्षित किया जाय। भाषा सम्बन्धी समस्या का मूल यह है कि संस्कृत को राजभाषा बनाई जावे। इसी के शासन के अन्तर अन्य भाषायें भी मिलजुल कर पनप सकेंगी। देश में शांति देवी विराजेगी और समय पाकर राष्ट्र चमक उठेगा। ★

सिद्धान्त विमर्श

(पृष्ठ २ का शेष)

मतवाद ने सारी विद्या व्यर्थ कर दी।

दर्शन द्वय के आचार्य की ऐसी बातें केवल पुराण तमसाछन्न बुद्धि के कारण हुई हैं। माधवाचार्य आदि साधारण पण्डित ऐसी बातें कहें तो उपेक्षा है पर श्री पं० सत्यव्रत जी जैसे प्रकांड पंडित को ऐसे अयुक्त दावों से दूर रहना ही अच्छा है। ये पौराणिक कल्पनाओं के स्थान पर उन्हें तो गूढ़ दार्शनिक गुत्थियों को सुलझाने में समय लगाना चाहिये।

आर्य भाइयों !

इस समय माधवाचार्य आदि २-४ पण्डितों ने अपने मरे पक्ष को गोबर सुंघाना शुरू किया है। अन्धविश्वासों के समर्थन से ये लोग फिर राष्ट्र को पथ भ्रष्ट कर रहे हैं। आपको सुस्ती छोड़कर ऐसे मिथ्यावादों के खण्डन में सचेत रहना चाहिये। सत्य आपकी ओर है। आपकी विजय अवश्य होगी। ★



सत्याग्रह माहिमा

सत्याग्रह यदि यथार्थ मे सत्याग्रह ही हा तो उसमें सफलता निश्चित और अनिवार्य है। सत्य के लिए जो आग्रह किया गया है और उस आग्रह के हेतु जा नाना प्रकार के कष्ट, आपत्तियों और सकट सहर्ष झेले गये हैं वह सत्याग्रही एव जिसके प्रति सत्याग्रह किया गया है दानों का ही नैतिक उत्थान करता है और सत्य के लिए निष्ठा का निर्माण करता है। सत्याग्रह जीवन की निराशा, कायरता एव भीरुता को भगाकर तत्काल ही आशा पुरुषार्थ एव निर्भीकता का सचार करने लगता है। सत्याग्रह अन्यायी अत्याचारी, दुराग्रही के हृदय में भी न्याय नीति और सदाचार की रेखाओं का निर्माण करन लगता है और समय पाकर वह रेखायें प्रबल हो जाती हैं और हृदय परिवर्तित कर डालती हैं।

सत्याग्रह की सफलता का रहस्य सत्याग्रहियों की सख्या म नहीं उनकी पात्रता मे निहित रहता है। तपस्वी, त्यागी, सत्यनिष्ठ एक भी सत्याग्रही विरोधी के हृदय को दहला देता है उसके दल में खलबली और कम्पन पैदा कर देता है और अन्याय, अनीति, अनाचार का व्यवहार करने समय विरोधी के हृदय म भय, शका, लज्जा का विशेष रूप से जागृत कर देता है।

सत्याग्रह वह अमोघशस्त्र है जिसका प्रयाग अनादि काल से सत्यनिष्ठ मानव अन्याय, अनीति, अनाचार के विरुद्ध करते आए है और इसके द्वारा समाज में न्याय नैतिकता एव सदाचार की रक्षा और विस्तार का कार्य सदा किया है। सत्याग्रह निश्चय ही अहिंसात्मक अशोक शस्त्र है और इसके महत्व एव पवित्रता की रक्षा करना आर्य अर्थात श्रेष्ठ मानवों का धर्म है।

—शिवदयालु

दिक प्रार्थना

...वस वात प्राणापानौ चक्षुः... ...। दिशोयस्य... प्रज्ञानी... ... नमः ॥

अथर्व० १०।७।३४

... जिसका प्राण, अपान है, प्रकाश ... जिसकी आँखें हुई, जिसने ... व्यवहार का साधन करने वाली ... उसी सबसे बड़े ब्रह्म को नमस्कार

सम्पादक—
शिवदयालु, सभामन्त्री
सह० सम्पादक—
अक्षय शरण

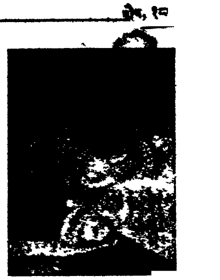
इस अंक के आकर्षण

एक प्रति का | प्रकाशन: रविवार २२पौष शक १८७९ | विदेश में

आर्यमित्र का भी अपना इतिहास है

(संस्मरण)

(लेखक—आचार्य श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ ज्वालापुर)



—लेखक—

५ जनवरी १९५८ के अंक के साथ ही आर्यमित्र का ६० वाँ वर्ष प्रारम्भ हुआ। गत ५९ वर्षों मे इसने जो कुछ काम किया उस पर दृष्टि डालना उचित ही होगा जिससे 'आर्यमित्र' के प्रेमी यह जान सकें कि क्या-क्या हुआ, कैसे कैसे चला, क्या-क्या नीच-ऊँच देखे, क्या क्या विपत्तिएं झेलीं इत्यादि।

मैं मुरादाबाद से ही क्यो न चलूं जब स्व०ठा०मशालसिंह आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान थे और मन्त्री थे मुंशी नारायणप्रसाद (जो पीछे, सन्यास लेने के पश्चात नारायण स्वामी हुए। सन्यासी होने के पूर्व वे वानप्रस्थ भी रहे रामगढ़ मे) आर्यमित्र बहुत छोटे आकार मे निकाला गया। स्व० ठा० मशालसिंह उसके सपादक रहे। चार छोटे पन्ने का 'आर्यमित्र' जैसे तैसे चलता रहा। फिर प्रतिनिधि सभा का कार्यालय बुलन्दशहर पहुँचा। स्व० मदन मोहन सेठ प्रधान मन्त्री हुए—श्री हरिशङ्कर शर्मा उपमन्त्री के रूप मे काम करते रहे, यही से इनका सार्वजनिक जीवन चलता है प्रतिनिधि सभा के मन्त्री थे स्व० रामप्रसाद शर्मा वकील। फिर प्रतिनिधि सभा पहुची आगरे और यहीं आर्यमित्र ने अपना रूप बदला। बा० पूर्णचन्द्र जी प्रेस तथा आर्यमित्र के वर्षों अधिष्ठात रहे। बा० पूर्णचन्द के पूर्व बा० सालिग्राम वकील के अधिष्ठातृत्व मे आर्यमित्र प्रेस और 'आर्यमित्र चलता रहा।' सपादक थे सपादकाचार्य प० रुद्रदत्त शर्मा रामपुर निवासी। आर्यमित्र मे आने के पूर्व आप बिहार मे 'सरपच' निकालते रहे। जब ये आर्यमित्र छोड़कर चले गये तब दारागज प्रयाग के स्व० पण्डित लक्ष्मीधर वाजपेयी सपादक बनाये गये। आप साहित्यिक व्यक्ति थे। इन्होंने अपना नाम सर्वानन्द रख लिया और उसी नाम से सपादन करते रहे। रुद्रदत्त सपादकाचार्य के समय मे, उनके विनोदी स्वभाव के कारण आर्यमित्र लोकप्रिय हो चला था। अधिष्ठाता के साथ मतभेद होने के कारण उनको आर्यमित्र छोड़ना पड़ा। इसके पश्चात् बा० पूर्णचन्द जी अधिष्ठाता हुए और श्री मदन मोहन सेठ जी ने श्री हरिशंकर शर्मा को सपादक बनाया। तब मे आर्यमित्र प्रेस और आर्यमित्र चमक निकला। जो बेपरवाही सपादकाचार्य रुद्रदत्त शर्मा और सर्वानन्द जी मे थी वह श्री हरिशङ्कर शर्मा मे नही थी। इन्होंने सावधान रहकर आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त की रीति नीति को सुरक्षित रखा और आर्यमित्र का आर्यजगत् मे अपना एक खास स्थान बनाया। श्री हरिशङ्कर जी कवि भी हैं, लेखक भी हैं, सम्पादन कला भी जानते हैं, साहित्य सेवियो और लेखको से मेल जोल भी रखते थे इसलिए इनके समय मे विविध विषयक लेखो की कमी नही रहती थी। कविताओ की भी कमी नही रहती थी इनकी सिद्धहस्तता सपादन मे थी। आदि से लेकर एक एक अक्षर देख जायेंगे, जरा कोई सन्देहयुक्त शब्द दीख पड़े तो उसको काटेंगे। कोई कठोर शब्द नहीं आने देंगे। लेखो का सग्रह रखेंगे डिपाजिट मे। आर्यमित्र को आदि से अन्त तक पढ़ जाइये तो ज्ञात होता था कि एक ही हाथ एक ही कूची से काम किया गया है और अधिक क्या लिखें अच्छे, सफल, नामी, यशस्वी, मनस्वी सपादक रहे। आपने ही आर्यमित्र को दैनिक करने का ऐलान किया था पर आगरा और लखनऊ की रस्साखेंच मे आर्यमित्र लखनऊ जाकर दैनिक हुआ। इसके विषय मे आगे कहेंगे। बीच मे एकबार पण्डित हरिशङ्कर जी ने त्याग पत्र भी दिया था क्योंकि नये अधिष्ठाता की नीति उनको पसन्द नही थी। उस समय प्रेस और आर्यमित्र की बागडोर बा० पूर्णचन्द जी के हाथ मे नही थी। एक नये ही व्यक्ति थे।

हाँ मैं भूलता हू श्री धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री वृन्दावन से स्नातक होने के पश्चात् एक वर्ष आर्यमित्र के सपादक रहे फिर चले गये। उस समय प्र०नि० सभा के प्रधान थे स्व० हुकमसिंह जी (नारायण पो० बलदेव जि० मथुरा निवासी) उनके पश्चात फिर प० हरिशङ्कर शर्मा ने आर्यमित्र को हाथ मे लिया—

जब आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यालय लखनऊ पहुँचा तब अपरिहार्य था कि आर्यमित्र भी वहीं पहुँचता—श्री हरिशङ्कर जी कुछ काल तक आगरे से ही सपादन करते रहे—

फिर नये सपादक आये श्री भारतेन्द्रनाथ इनके समय मे आर्यमित्र दैनिक हुआ—हल्ला खूब रहा पर घाटा बढ़ने लगा, घाटा इतना बढ़ा कि साप्ताहिक भी रहेगा, चलेगा कि नही सन्देह होने लगा, तब विवश होकर दैनिक बन्द हुआ और किसी प्रकार साप्ताहिक चलने लगा। भारतेन्द्रनाथ दूरदर्शी नहीं थे। वे किसी की भी नही सुनते थे, अनुभव भी नहीं था। श्री भारतेन्द्रनाथ चले गये तो श्री भगवत शरण साप्ताहिक आर्यमित्र का सम्पादन करते रहे। इन्होने 'आर्यमित्र' को अच्छी तरह संभाला—दो वर्ष पूर्व जब आर्य प्रतिनिधि सभा के नये चुनाव हुए तब सभा ने यही निश्चय किया कि सभा मन्त्री ही 'आर्यमित्र के सपादक रहें। सो दो वर्ष से श्री शिवदयालु जी मन्त्री ही आर्यमित्र के पदेन सम्पादक है।

श्री भगवतशरण जी बी० ए० यद्यपि सहायक रूप मे काम करते है तो भी उनकी लेखनी चमकती ही रहती है—रीति नीति श्री शिवदयालु जी की रहती है। अब जाकर आर्यमित्र साप्ताहिक अपने पूर्व स्थान पर आ गया है, दैनिक के दिनो मे साप्ताहिक आर्यमित्र का तो लगभग नाम मिट सा ही गया था।

इतना लिखने के पश्चात् मैं यह बिना सकोच लिख सकता हू कि आर्यमित्र का आर्य जगत् मे विशिष्ट स्थान है। भारत मे तथा भारत के बाहर आर्यसमाजो मे सर्वत्र जाता है। यद्यपि यह उत्तर प्रदेश की प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र है तो भी आर्य जगत् का ही मुखपत्र माना जाता है। आर्य समाज मे और भी हिन्दी पत्र है सही पर आर्यमित्र जैसा साप्ताहिक पत्र नहीं। इस समय लगभग १०००० आर्य इसे पढ़ते है। सार्वदेशिक मासिक है, सार्वदेशिक सभा का मुख पत्र रहते भी अभी उसको १००० से अधिक ग्राहक नहीं मिले है। एक एक समाज एक एक प्रति लेवे तो भी कम से कम २५०० ग्राहक होने चाहिएं—'गुरुकुल पत्रिका' कांगड़ी गुरुकुल से बधी हुई है। केवल ५०० ग्राहक है। कैसी सुन्दर पत्रिका है। "आर्यशक्ति" मासिक है और वह बम्बई प्रान्त मे सीमित है। 'आर्यसेवक' मासिक है, मध्यप्रदेश का। 'आर्य' है साप्ताहिक मुखपत्र आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का, वर्षों से घाटे मे चल रहा है। 'आर्यजगत्' है आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख पत्र, जैसे तैसे वीरतापूर्वक जीवन व्यतीत रहा है। इस प्रकार हम देख रहे है कि आर्यों के पत्र ग्राहको के अभाव मे स्वावलम्बी नही बन पाये है। इनके पीठ पर पूंजीपति सेठों का वरदहस्त भी नहीं है।

आर्यमित्र जैसा भी है उसका अपना एक स्थान है—आर्य संपादकों को वेतन की दृष्टि से भी अति हीनता के साथ जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है। स्व० रुद्रदत्त सपादकाचार्य जब मरे तब कफन के लिए इनके पास पैसे नहीं निकले। एक भक्त को करुणा आयी और श्मशान संस्कार का सब खर्च उसने दिया। श्री स्व० सर्वानन्द जी भी इतने अच्छे साहित्य महारथी होते हुए दरिद्रावस्था में ही चल बसे। श्री प० हरिशङ्कर शर्मा ने अपनी छोटी मोटी ५० ६० पुस्तके रचकर अपनी एक स्वतन्त्र स्थिति बना ली है, इसलिए वे निश्चिन्त से हैं। नहीं तो केवल आर्यमित्र के भरोसे क्या उनकी गाड़ी चल निकलती? क्या वे अपनी मनस्विता को स्थिर रख सकते थे? श्री भारतेन्द्रनाथ इसी सपादकीय महत्वाकांक्षा मे नष्ट हो गये और अब गाजियाबाद मे दवाएं बेचकर गुजारा कर रहे हैं। श्री धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री एम० ए० आदि होकर मेरठ कालेज मे प्रोफेसरी कर रहे हैं और वहाँ उनकी अच्छी प्रतिष्ठा है। निर्वाह के लिए आर्य समाज पर निर्भर नहीं हैं।

यहाँ तक लिखे लेखकों व ग्रन्थकारों का यही हाल है। अब तो आर्य समाज के प्रचार युग जैसे सैद्धान्तिक ग्रन्थ निकलते ही नहीं, निकले तो छपते भी नहीं। कोई क्या लिखे साराश आर्य समाज मे साहित्यकार, पत्रकार, ग्रन्थकार का जीवन कुछ है ही नही—इस विषय मे और अधिक लिखता किन्तु सस्मरणो का कलेवर बढ़ता जा रहा है इसीलिए आज यहीं समाप्त।

★

ओ३म्

वर्ष ६०

आर्य मित्र

अङ्क २

लखनऊ-रविवार २२, पौष शक संवत् १८७९, माघ कृ० ७, २०१४ वि०(१२ जनवरी १९५८) दयानन्दाब्द १३३ सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०५८

सम्पादकीय

सत्याग्रह की सफलता के बाद

★

हिन्दी रक्षा आन्दोलन की शानदार विजय के उपरान्त हम भूलकर भी विजय के मद का शिकार नहीं होना है। वह सभी भाई और बहिनें जिन्होंने इस आन्दोलन में किसी भी प्रकार का सहयोग दिया है धन्यवाद के पात्र हैं। इस सत्याग्रह आन्दोलन में आर्यसमाज ने एवं आर्यजाति ने अपना सामूहिक शक्ति का परिचय दिया है। इसकी सफलता का श्रेय केवल आर्यसमाजियों का नहीं केवल आर्यसमाज का नहीं अपितु समस्त आर्य जनता का है जिन्होंने एक मन होकर इसमें सहयोग प्रदान किया है।

सफलता के उपरान्त हम हर्ष और उल्लास में इतना मग्न न हो जाना है कि जिससे हम राष्ट्रभाषा के प्रति अपने आगे का कर्तव्य भुला बैठें। राष्ट्रभाषा के प्रति हमें अभी बहुत कुछ करना है और साधक बनकर सतत प्रयत्नशील रहना है।

आर्यसमाज अपने जन्मकाल से आर्य जाति के पथ प्रदर्शक रूप और देश धर्म जाति तथा भाषा की रक्षा के लिए निरन्तर अग्रगत भूमि में अग्रसर रहा है। इस आगे भी अनेक महत्वपूर्ण कार्यों को करना है। राष्ट्र को शक्तिशाली बनाना राष्ट्र के अङ्ग का भार और गौओं आदि का विदेशियों की दासता से मुक्त करना तथा भारतीय संस्कृति मर्यादाओं एवं परम्पराओं के आधार पर भारत का नव निर्माण करना है। अङ्ग्रेजियत की मानसिक दासता से डटकर लोहा लेना है। छूतछात और जात पात के रूढ़िवादियों का सक्रिय रूप से निराकरण करना है, मिथ्याभिमान और दम्भ के कारण करोड़ों बिछुड़े हुवे भाइयों का भारतीय करण करना है। देश में फैली हुई मतान्धता और अन्ध विश्वासों से पूरी टक्कर लेना है। भारत के कोने कोने में दयानन्द के दिव्य सन्देश को पहुंचा कर आर्य समाज का सुदृढ़ संगठन निर्माण करना है तथा भारत के बाहर विभिन्न देश देशान्तरों में वैदिक मिशन का विस्तार करना है।

आर्यसमाज के प्रत्येक सदस्य के अब कर्मठ बनाने का युग हम लाना है तब ही हम अपनी इस विजय का सही उपयोग करने वाले माने जा सकेंगे।

नागा प्रदेश के पदचिन्हों पर केरल

नागा प्रदेश के अन्दर विदेशी मिशनरियों ने जो ईसाइयत का जाल बिछाया हुआ है और वहां की भोली जनता को भारत राष्ट्र के प्रति विद्रोह करने के लिए उकसाया उसका दृश्य हमारे सामने है। नागा प्रदेश का विद्रोह अभी तक शांत नहीं हुआ जब कि भारत सरकार ने नागाओं की मांग के आधार पर नागा प्रदेश का एक स्वतन्त्र क्षेत्र तक घोषित कर दिया है और [illegible] अब भी चालू है और [illegible] असफल हो चुके हैं।

इधर दक्षिण भारत में अब केरल [illegible] कि ईसाइयों ने भी विद्रोह का [illegible] संगठन का निश्चय कर लिया प्रतीत होता है।

ईसाई जो बनाना की सेना मिशन के आधार संगठन की जा रही है। हमारी दृष्टि में यह ईसाइयों की सेना भारतीय मुसलमानों के खाकसार और हैदराबादी मुसलमानों के रजाकारों के पद चिन्हों पर ही बनाई जा रही है। भारत सरकार को किसी भी साम्प्रदायिक अथवा राजनैतिक वर्ग के सैनिक व अर्ध सैनिक संगठन को एक क्षण के लिये भी चलने नहीं देना चाहिए ऐसे संगठनों को गैर कानूनी घोषित कर तुरन्त कुचल डालना चाहिए सामाजिक सेवा करने वाले शुद्ध राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक दलों को ही कहीं मान्यता दी जानी चाहिए यदि यह केरल का समाचार सत्य है तो भारत सरकार को आगे कड़ा कदम उठाना चाहिए नहीं तो नागा प्रदेश की भांति बाद में भारतीय सेना को वहां भेजना पड़ेगा जब तक भारत में विदेशी मिशनरी हैं और विदेशी कायम हैं तथा विदेशों से करोड़ों रुपया प्रति वर्ष यहां हिन्दुओं को ईसाई बनाने के लिए आ रहा है देश ईसाइयों का किसी भी प्रगति का सहन नहीं किया जा सकता।

अफ्रीका एशिया सम्मेलन

मिश्र की राजधानी काहिरा में अफ्रीका और एशिया के लगभग ४५ देशों के प्रतिनिधियों का सम्मेलन कई दिनों से हो रहा है।

यूरोप एवं अमरीका के साम्राज्यवाद के विरुद्ध अनेक भाषण एवं प्रस्ताव पारित किये हैं। एशिया अफ्रीका में अमरीका ब्रिटेन फ्रान्स पुर्तगाल आदि पाश्चात्य देशों के अड्डों को उखाड़ फेंकने का वातावरण निर्माण किया जा रहा है भारत में पुर्तगाल का [illegible] गोआ आदि में है उसका भी बड़ा विरोध किया गया [illegible] हम [illegible] [illegible] सफलता चाहते [illegible] [illegible] [illegible] नाना माता [illegible] मगर इस शक्ति का निर्माण हो।

राजा जी की अकड़

श्री राजगोपालाचार्य ने दक्षिण भारत में राष्ट्रभाषा हिन्दी के विरुद्ध और दासता की द्योतक विदेशी भाषा अंग्रेजी के पक्ष में नारा लगाने का श्रीगणेश आरम्भ कर दिया है। प्रधान मन्त्री नेहरू जी ने अब राजा जी को इस ढंग की भर्त्सना की तो वह बजाय गम्भीरतापूर्वक सोचने के और बहकी बहकी बात करने लगे हैं और प्रजातन्त्र तथा उदारता के नाम पर अंग्रेजी का राग अलापते चले जा रहे हैं। आप कहते हैं कि यदि हिन्दी को दक्षिण पर लादा गया तो ये चय दक्षिण भारत विद्रोह पथ का अनुसरण करेगा।

इस प्रकार देश के विभाजन करने की चर्चा को अथवा साधारण के खुले अपमान एवं विरोध को हम किसी भी अवस्था में सहन नहीं कर सकते। राजा जी कितने भी बड़े हों किन्तु राष्ट्र के सामने उनका कोई मूल्य नहीं। उनकी इस प्रकार की बहक को बन्द करने के लिये सरकार को तुरन्त समुचित कार्यवाही करना चाहिये।

मास्टर जी की बहक

आर्य समाजियों को जेल से छोड़ा जाना उनके जुर्माने वापस किये जाने तथा उनकी मांगों को स्वीकार करने का आश्वासन श्री पंत जी तथा माननीय प्रधान मन्त्री जी द्वारा दिया जाना अकाली नेता मास्टर तारा सिंह को सह्य नहीं है। [illegible] [illegible] [illegible] अटपट [illegible] [illegible] कहते हैं कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] याकर आर्य समाज [illegible]। और यह भी कह [illegible] कि [illegible] हिन्दू साम्राज्य से टक्कर लेने के लिये तयार हो जाना चाहिये।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] फसता वह भी जानते हैं।

[illegible] [illegible] [illegible] नास [illegible] एवं संस्कृति की रक्षा [illegible] किया था तथा [illegible] संरक्षण एवं विस्तार करना उनका [illegible] से हिन्दुओं से प्रथक नहीं मानते और गुरुओं की वाणी को [illegible] ही समझते हैं।

किन्तु अब [illegible] कूटनीति के शिकार बनकर सिक्खों ने अपने को हिन्दुओं से प्रथक संगठित करने की जो भयंकर भूल की [illegible] परिणाम यह अविश्वास द्वेष दुराग्रह और द्रोह है जिसका प्रचार अकाली नेता मास्टर तारासिंह कर रहे हैं। हम तो प्रभु से यही प्रार्थना करेंगे कि वह मास्टर जी और उनके चेलों को सद् बुद्धि प्रदान करे।

(शेष अगले पृष्ठ पर

अणुवृत आन्दोलन

(पिछले पृष्ठ का शेष)

जैनियों के तेरापन्थी सम्प्रदाय के आचार्य श्री तुलसी जी ने लगभग १० या १२ वर्ष हुए इस अणुव्रत आन्दोलन का जन्म दिया था। आपने आचार्य विनोवा भावे की भाँति भारत के अनक भागो मे ७ वर्ष तक पैदल यात्रा करके इस आन्दोलन को प्रसारित किया है। तेरा पन्थी सम्प्रदाय से सम्बन्धित होते हुए भी आपका दृष्टिकोण उदार एव व्यापक है। आप साम्प्रदायिकता से ऊपर उठकर धर्म को यथार्य स्वरूप म जनता के सामने प्रस्तुत करते हैं ऐसा लोगो का मत है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य शौच, सेवा, उपकार आदि मानव जीवन का उत्थान करने वाले सनातन नियमो को ही आप धर्म मानते हैं।

अणुव्रत से आपका तात्पर्य जीवन को उन्नत करने वाले विधि निषेधात्मक वह छोटे छोटे व्रत और सकल्प हैं जिनको मानव सुगमता से धारण कर सकता है।

इस आन्दोलन को प्रगति देने के लिये अभी पिछले दिनों देहली में एक विशेष सम्मलन भी हुआ था जिसम देश के प्रमुख प्रमुख नेताओ ने भी उपस्थित होकर सहयोग दान किया था।

आन्दोलन को प्रगति देने के लिये कलकत्ता से एक हिन्दी पाक्षिक पत्रिका 'अणुव्रत' के नाम से प्रकाशित की जाती है। उस पत्रिका का निर्माण अक हमारे सामने है। अक का सम्पादन सुन्दर ढग से किया गया है और उसम अनेक उपयोगी गम्भीर लेखो का समह विद्यमान है।

यह आन्दोलन आर्य समाज के चरित्र निर्माण आन्दोलन से मिलता हुआ ही है।

सत्याग्रह स्थगित करने के बाद

२७ दिसम्बर ५७ को सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के अध्यक्ष श्री घनश्यामसिंह गुप्त ने पजाब हिन्दी सत्याग्रह स्थगित कर दिया है। स्थगित करन स पूर्व उनको इस बात का पूर्ण विश्वास हो गया कि केन्द्रीय सरकार के उच्चाधिकारियों का वास्तविक रूप म हृदय परिवर्तन हो गया है और भारत के प्रधान मन्त्री श्री प० जवाहरलाल नहरु जी ने चण्डीगढ़ के अपने भाषण मे जो ६० प्रतिशत आर्य समाज की मागें सरकार द्वारा मान ली गई हैं की घोषणा की थी वह भी यथार्थ में सत्य है।

दिनांक ५ जनवरी सन् १९५८ को देहली में पजाब हिन्दी रक्षा समिति तथा सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की सयुक्त बैठक हुई थी जिसमें सर्व सम्मति से अपने अध्यक्ष श्री गुप्त द्वारा सत्याग्रह स्थगित करने सम्बन्धी पग की सम्पुष्टि की गई।

भारत सरकार की प्रेरणा पर सत्याग्रहियो की जेलो से सामूहिक मुक्ति एव अर्थ दण्ड की वापसी की घोषणा ने वातावरण की क्षुब्धता को दूर हटा दिया और शासन के हृदय परिवर्तन का वास्तविक प्रमाण दिया है इस पर समिति का सन्ताष एव हर्ष है। आशा है पजाब सरकार अविलम्ब सबके जुर्माने वापिस करेगी और जो कुर्कियाँ आदि की गई है उनका सब सामान भी तुरन्त लौटा देगी।

नगरपालिकाओं आदि के जिन सदस्यो का तथा सरकारी कर्मचारियो को आन्दोलन मे भाग लेने के आरोप मे पृथक किया गया है उनको भी शीघ्र बहाल कर दिया जायेगा।

जिन शिक्षा सस्थाओ के अनुदानादि रोक दिये गये हैं उनको फिर से चालू कर दिया जायगा।

श्री प० जवाहरलाल नेहरू जी के अभी हाल के अपने भाषण द्वारा जिस में उन्होंने कहा है कि हम क्षेत्रीय फारमूले मे कोई परिवर्तन करने को तैयार नहीं है, जनता में कुछ भ्रम हो गया है सो वास्तव में वह भ्रम मात्र ही है।

आर्य समाज की मागों का सबध क्षेत्रीय फारमूले से नहीं अपितु सच्चर फारमूले की कतिपय धाराओ से है जिनमे परिवर्तन करना सरकार को अभीष्ट है।

माननीय घनश्यामसिंह जी से सुलह समझौते की बातें चल रही हैं और आशा है कि जनवरी की समाप्ति तक उनका अभीष्ट परिणाम निकल आवेगा।

यदि दुर्भाग्यवश परिणाम उचित, सुन्दर और सन्तोषप्रद न निकला तो आर्यसमाज अपने ध्येय की सिद्धि मे पुन त्याग और बलिदान के पथ का अनुशरण कर सकता है। आर्यसमाज को एक सैनिक के नाते जब तक युद्ध समाप्ति की विधिवत् घोषणा न हो जाय अपनी कमर खोलनी नहीं चाहिये।

साथ ही इस बीच मे कोई कार्य ऐसा भी नहीं करना चाहिये जिससे उतावले पने का आरोप आर्यसमाज पर लगाया जा सके।

★

भील भिलाले आदिवासी क्यों?

[श्री मुनिदेव उपाध्याय आर्यसमाज धार (म० भा०]

मालव निमाड की मध्यवर्ती सीमा और निमाड मालव सयुक्त क्षेत्र में सहस्रों की सख्या म भील भिलाले बसते हैं। इन्दौर, धार, ग्वालियर, झाबुआ, अलिराजपुर, जोबट आदि इन राज्यो की सीमा अन्तर्गत निवास होने से इन राज्यों का अनुशासन और इन्हीं राज्यों की राज्य व्यवस्था के आधीन सग्राम चलता रहा। भिन्न भिन्न काल और कालचक्र मे इनकी उन्नत और अवनत दशा का झूला ऊपर नीचे होता रहा। बनवासी होने के कारण इनकी मुख्य जीविका अनेक स्थानो पर बनस्थ उत्पन्न पदार्थ लकडी, कोयला, इन्धन, अनिन्धन गृहोपयोगी काष्ठ, बास, पाट, शाकटी आदि तथा महुआ, टोली, चमडा, चिरोंजी, मूसली, सीताफल, मधुकरज आदि वस्तुओ का क्रय विक्रय और पशुपालन आदि इनकी जीविका के मुख्य साधनो पर जब तक प्रतिबन्ध विशेष रूप से नहीं थे, तब तक इनकी दीन हीन और इतनी दरिद्र दशा न थी, राज्यों की दुर्व्यवस्था और अशिक्षितता ही इनकी दीन हीन दशा और दरिद्रता का कारण है।

ये बनस्थ जातियां सर्वदा से ही ऐसी पिछड़ी हुई नहीं थी। भारतीय इतिहास काल में, रामराज्य काल अति प्राचीन काल था। आदि कवि श्री वाल्मकी जन श्रुति और वैष्णव आख्यायिकाओं से तो इसी कुल से उत्पन्न हुए थे।

सम्प्रति भी जो वाल्मिकी रामायण है, उसमें मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चन्द्र जी और ईश्वर भक्ति परायण तपस्विनी शबरी का सवाद मिलता है, और आर्य मर्यादानुकूल शबरी ने श्री राम का वन में शबरी आश्रम पर आतिथ्य सत्कार किया, जिसका वर्णन इस प्रकार है।

पाद्यमाचमनीयन्व सर्व प्रददाव यथाविधिम्, तामुवाच ततो राम् शबरीं धर्म्मसंस्थिताम्।

पाद्यजल, आसन, पीने का पानी तथा सर्व शब्द से भोजनादि की व्यवस्था फिर वह चाहे अन्न की हो या कन्द फल मूल की किन्तु उसके आतिथ्य को सादर ग्रहण किया।

तामुवाच ततो राम. शबरी धर्म्म सस्थिताम् से स्पष्ट है कि द्विज आर्य के समान धर्मानुष्ठान का पूर्ण अधिकार उसे प्राप्त था। उस काम में धर्म की परिभाषा 'आश्रमविहित अनुष्ठान था' स्व कर्म स्वाश्रम हितविनुष्ठानम् (कपिलसूत्र) जिससे स्पष्ट है कि ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास का अधिकार वनस्थ जातियो को था। ब्रह्मचर्याश्रम वेदाध्ययन ये एक दूसरे मे सापेक्ष रखते हैं और एक दूसरे के साथ इनका समन्वय है।

वानर शबर आदि शब्द प्राचीन काल में हीनता द्योतक नहीं थे अपितु वनवासी द्योतक अवश्य थे, दुख है कि पौराणिक काल में अर्थव्यन्जना से ये शब्द अन्यथा प्रयुक्त किये गए, जिससे एक आर्य जाति खण्ड खण्ड में अनेक रूपों में विभक्त हो गई।

पौराणिक काल के शब्द प्रयोग अर्थव्यन्जना व घटना स्थल पर नहीं मिलती है इनकी भाषा में ९० प्रतिशत शब्द सस्कृत से अपभ्रंशित मिलते है। यवन काल म राज्य के सम्पर्क मे अधिक रहने वाली जातिया और उनकी भाषा पर जैसे उर्दू, फारसी व अरबी का प्रभाव पड़ा और भाषा मे विकल उत्पन्न हुआ वैसा इनकी भाषा मे नहीं हो पाया।

इनका धर्म विश्वास धर्मानुष्ठान ज्योतिष, खगोलज्ञान व तारों सूर्य से वृष्टि का गर्भ धारणा इत्यादि से सब आर्यों के अनुकूल एव सदृश ही है।

विवाह में शाखानुकूल गोत्रो का उपयोग करते हैं। इनके नाम मगलिया, बुढा, सोमा, दापा, गोपालिया, रामा इस प्रकार उपयोग करते हैं। इनके या तो केश जटिल होते हैं या काटने पर शिखा अवश्य रखते हैं।

इनके गोत्रों में समानता है, अर्थात् इनमे गोत्रोच्चार की परिपाटि राजपूतो की सी मिलती जुलती है।

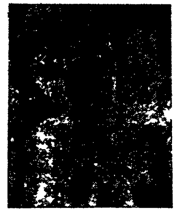
मैं विश्वास के साथ निवेदन करता हू कि भील एव भीलालों की भाषा सस्कृत अपभ्रंशित कुछ विकृत और कुछ अविकृत मात्र है, इससे भी सिद्ध है कि वे आर्य जाति के ही अश हैं, अग हैं भिन्न नहीं।

महर्षि दयानन्द ने १८५७ मे जब सब घोर निद्राग्रस्त पड़े थे, सबसे प्रथम क्रान्ति को जगमगाया, शख फूका, सम्पूर्ण कुरीतियो, एव अविद्या के अन्धकार को अपने तपोबल से मिटाया। जाति और राष्ट्र को प्रकाश के मार्ग का सन्देश दिया, उनका भी यह मत और विश्वास था कि आर्य लोगों ने आकर ही इस देश को बसाया इससे पूर्व कोई इस देश में नहीं था। अत महर्षि दयानन्द का भी विवेचन यही था कि भील आदि वर्ग आर्येतर नहीं किन्तु आर्यों का ही अङ्ग हैं। (शेष पृष्ठ १३ पर)

वैदिक समष्टिवाद ही साम्यवाद है

[श्री प० सत्यमित्र शास्त्री वेदतीर्थ विद्यावारिधि महो०आ०प्र०सभा, उत्तरप्रदेश]

आज मुझे वर्तमान अर्थ व्यवस्था के सम्बन्ध में कुछ विचार करना है। मानवीय जीवन क्षेत्र में अर्थ का ही सम्बन्ध है। अथवा मानव समाज को इसके अतिरिक्त अन्य पदार्थों की भी आवश्यकता है। सर्व प्रथम मुझे यह सोचना चाहिये कि मानव किसे कहते हैं। मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति इति मानव अर्थात् जो विचार मनन कर कर्मों को सीता है उसे मानव कहते हैं ऐसा निरुक्ताचार्य का मत



है। वेद भगवान का आदेश है कि मनुर्भव अर्थात् मानव बन। यदि विचार किया जावे तो आज सम्प्रदाय वादी न बनकर हम मानव बनने का उद्योग करें तो अति श्रेयस्कर हो। आज देश की अशान्ति का कारण सोचा जावे तो मानव न बनना ही है। मनुष्य का नित्य जीवन में चार पदार्थों की परमावश्यकता है। निरुक्तकार ने कहा है कि—धर्मार्थकाम मोक्षाणां यस्यैकापि न विद्यते। अजा गलस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम्। धर्म अर्थ काम मोक्ष ये चार पदार्थ है। अब हम सोचना है कि धर्म किसे कहते हैं। क्या मन्दिरों में बैठकर घंटा शंख बजा बजा कर पत्थर प्रतिमा को रिझाना व भोग लगाना धर्म है। अथवा पांच काल की नमाज मस्जिद में बन्दना धर्म है। चर्च में जाकर रोटी मांगना धर्म है। बस तो प्रत्येक सम्प्रदाय की दृष्टि से धर्म का स्वरूप भिन्न भिन्न है। किन्तु वास्तविक लक्षण है यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धि सधर्मः। जिससे अभ्युदय सर्वतो भावेन कल्याण तथा मोक्ष सम्प्राप्त हो उसी को धर्म कहते हैं। धर्म को यदि पहिचानना है तो हम प्रत्येक धर्मात्मा के जीवन को देखना चाहिये। उसका जीवन मानव समाज के लिये कितना हितकारी है। जैसे सूर्यदेव का प्रकाश अखिल ब्रह्माण्ड के लिये है। जब सूर्य का प्रकाश प्रत्येक प्राणी को मिलता है तो वह कितना आनन्द मनाता है। बिना सूर्य के प्रकाश से वनस्पतियाँ अन्नादि जड पदार्थों को जीवन शक्ति नहीं मिल सकती है। उसी प्रकार यदि पूजा पाठ करने से स्वजीवन से अपना तथा मानव समाज का कल्याण नहीं हुआ तो वह धर्म नहीं अधर्म है। प्रदीप में तैल वर्तिका है किन्तु वह बाह्य वायु के झकझावात से शान्त हो गया तो अन्धकार को कैसे नष्ट कर सकता है। इसी प्रकार पूजापाठ सब है किन्तु अपने कर्म अन्धकार युक्त है तो वह धर्मात्मा कैसा—इसका यह अर्थ नहीं कि पूजा पाठ की कोई आवश्यकता नहीं है। वह तो अपने जीवन प्रदीप के लिये वत्ती और तैल है। इस लिये शास्त्र कारो ने कहा है परोपकार पुण्याय पापाय परपीडनम्। परोपकार ही धर्म है। परपीडा ही अधर्म है। गोस्वामी जी ने कहा है—परहित सरिस धर्म नहिं भाई। परपीडा सम नहिं अधमाई॥ वेद ने कहा है यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति। अर्थात् सर्व प्राणि समान को मनुष्य को ही नहीं अपितु जितने भी जीव हैं सबको इस ज्ञानी साम्ययोगी मानव को आत्मवत् समझना चाहिये। इसी को सत्यं प्रियमात्मनः साक्षात् धर्मस्य लक्षणं कहा है। आज जो राजनैतिक जगत में अखिल राष्ट्र में महात्मा है और प्रत्येक सम्प्रदाय में धर्मात्मा है किन्तु आज उनका विद्या धन शक्ति जीवन नर सहार के लिये है। ५६ लाख साधु आज भारत माता के पुत्र बनकर अपने माता की ही संस्कृति ज्ञान मिटाने को तैयार है। सम्प्रति मुझे केवल जीवन के दो पहलुओं पर ही विचार करना है। उसको मैं इस प्रकार से लेता हूं। विशेषत मानव को चार पदार्थो की परमावश्यकता है। १ आश्रय पदार्थ २ अनुगति पदार्थ आश्रय पदार्थ चार है। १ वेद २ आहार ३ आच्छादन ४ चिकित्सा। सर्व प्रथम मानवीय जीवन में वेद अर्थात् ज्ञान की परमावश्यकता है। आज विद्या पढ लिखे भी मुल्लों से धन याचना कर रहे हैं। अरबों का धन गंगा और मक्के के नाम से फूंका जा रहा है। अस्थियों मूर्तियों के पीछे लाखों की सम्पत्ति नष्ट की जा रही है। यह क्या है इसी को अज्ञान कहते है। इसलिये मानवीय जीवन के लिये सच्चे आध्यात्मिक वैदिक ज्ञान की तथा कला कौशल कृषि आदि विद्याओं की आवश्यकता है। जिससे हमारा भौतिक जीवन भी पवित्र हो। वेद ने भी कहा है। विद्यया मृतमश्नुते विद्या से मानव अमरत्व को प्राप्त होता है। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में ज्ञान की स्तुति है। अग्निमीडे पुरोहित अर्थात ज्ञान विज्ञान कला कौशल ही सबका पुरोहित है। २ आहार शरीर निमित्त विशुद्ध सात्विक आहार की आवश्यकता है। जिससे सात्विक विचार उत्पन्न हो अतएव गीताकार ने कहा है—युक्ताहार विहारस्य अर्थात् युक्ताहार विहार ही मानवीय बुद्धि में विकाश तथा प्रेम जनन शान्ति मंगल अनामय जीवन का उत्पन्न करता है। ३ आच्छद परिधानार्थ वस्त्रादि की भी आवश्यकता है। दुग्ध सुवासा परीत आगात् यजुर्वेद। ४ चिकित्सा रोग निवारणार्थ औषधियों की आवश्यकता है। ये चार आश्रय पदार्थ तो सब मानवों को चाहिए। अब रहे अनुगति पदार्थ—अर्थात उच्चकोटि का संगीत भवन सुस्वादु भोजनादि यदि ये नाना पदार्थ राष्ट्र में प्रत्येक मानव को प्राप्त हो जावें तो आदर्श व्यवस्था है। इसी आदर्श व्यवस्था का वर्णन यजुर्वेद के ३० वें अध्याय में है। विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधस अर्थात् नरश्रेष्ठ मानवों में सर्व श्रेष्ठ उस मानव को चुनना चाहिये जो मानवता से नानाविध पदार्थों को उत्पन्न कर मानव समाज में यथा योग्य विभाजक हो। इस समय लाखों मनुष्यों का भूखा मरना यह बतला रहा है कि आज का वितरण श्रेष्ठ नहीं है। वेद ने कहा है न वा उ देवा क्षुधमिद्वधं ददु। देवों ने यह नियम बनाया है कि भूखा कोई न मरे। जब आश्रय पदार्थों का वितरण उचित नहीं है तो अधिकारों का वितरण कैसे ठीक होगा। सम्प्रति वितरण करने वाले दो प्रबल पक्ष हैं। एक जन्माधिकारवाद और २ श्रमाधिकार वाद जन्माधिकार वादियों का कहना है कि जो जिस कुल में जन्म लिया है उसी को अपने जन्म के कारण अपने पिता तथा अपने पूर्वजों की सम्पत्ति भोगने का पूर्ण अधिकार है। यह सिद्धान्त केवल भारत में ही प्रच लित नहीं है। अपितु रूस को छोडकर सारे विश्व में है। यह बात सत्य है कि भारत में यह सिद्धान्त अपने परा काष्टा तक पहुँच चुका है। यहाँ राजा से लेकर भंगी तक सभी अधिकार तथा कर्तव्य जन्म सिद्ध हैं। किन्तु अमरीका आदि देशो में भी सम्पत्ति पर उत्तराधिकार केवल जन्म के आधार पर ही माना जाता है। एक फेलर के पुत्र को सम्पत्ति का अधिकार इसलिए है कि वह एक फेलर का पुत्र है। इस जन्माधिकार वाद के विषय में क्या कहा जावे। सारी विपत्तियों का मूल कारण यही है। उन्नति के दो मूलमंत्र हैं। एक भय दूसरा उत्साह किन्तु एक फेलर के पुत्र को यह भय है ही नहीं कि मैं सम्पत्ति का नाश करूं तो सम्पत्ति छीन ली जायेगी और चमार के लडके को न उत्साह है कि वह अच्छा काम करे तो समाज में उसका भी स्थान है, उन्नति कैसे होगी। जब कि सम्पत्ति और प्रतिष्ठा का अधिकार जन्म के आधार पर है। यही कारण है कि आज विश्व में श्रम जातियों का झंडा उठ खडा हुआ। और उनके दृढ संगठन तथा अध्यव साय जागरूकता के कारण श्रमजीवी वर्ग आज पूंजीपति पद पर पहुँचा है। तथा करोडों की सम्पत्ति समु पार्जित कर दान द्वारा अपने राष्ट्र को उच्च स्थल पर ले चले हैं। उनकी सम्पत्ति कुछ कट्टरपंथी साम्यवादी ईर्ष्यालुलोगों को छोडकर किसी को नहीं अखरता। कट्टरपंथी हिन्दू मुसल मान ईसाई जो भी हो। वह सत्य को छिपाना चाहता है। किन्तु जो सत्य को शाब्दिक में ऊपर समझने है वह सत्य का गला घोटने नहीं है और उन्नति पथ पर अग्रसर होते हुए किसा से दबते नहीं है। इसके साथ ही साथ उपार्जन का भी आवश्यकता है इसको इस प्रकार से कि ज्ञान अर्थ न्याय उपार्जन इनकी आवश्यकता है तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। प्राचीन आर्यों ने इसका वर्ण धर्म पर बांधा था। मानव समाज में गुण कर्म स्वभाव के आधार पर चार वर्ग किए थे। १ ब्राह्मण २ क्षत्रिय ३ वैश्य ४ शूद्र। ज्ञान का प्रतीक ब्राह्मण, संरक्षण न्याय का प्रतीक क्षत्रिय व्यापार का प्रतीक वैश्य, और उपार्जन का प्रतीक शूद्र थे चारों राष्ट्ररूपी समाज का रक्षा करते थे। इसका वर्णन ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद इस यजुर्वेद के मंत्र में मिलता है। शरीर के तुल्य सबको ज्ञान प्रदान करने वाला ब्राह्मण मुख तुल्य संरक्षण न्यायकर्ता क्षत्रिय बाहुवत अर्थ का संवितरण कर्ता वैश्य उरू तुल्य सबका उपार्जन कर्ता शूद्र पादवत्। अज्येष्ठासो अकनिष्ठासो सर्वे सम्भ्रातर वावृधु सौभगाय यह मंत्र समष्टिवादी साम्यवाद को सिद्ध करता है कि समाज कार्य में न कोई बडा है और न कोई छोटा है सबके सब भ्रातृवत् सुख समृद्ध करें। इस सिद्धान्त का समानी प्रपा सहवोन्नभागः समाने योक्त्रे सहवो युनज्मि, तथा सगच्छध्वं एवं समानीमन्त्र आदि मंत्र स्पष्ट सिद्ध करते हैं। मार्क्स लेनिन आदि जब पैदा न हुए थे उस समय वैदिक समष्टिवाद का जन्मदाता वेद था। वर्तमान साम्यवादी सिद्धान्त ईश्वर की सत्ता नहीं मानता चूंकि वह

[शेष अगले पृष्ठ पर]

जन्म लेने के बाद के संस्कार

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम०ए०, एल० टी० डी० बी० कालेज, गोरखपुर]

जब बच्चे का जन्म हो जाता है उसी समय से उसके मानस पटल पर आदर्श विचारों का संस्कार डालने के लिए वैदिक संस्कृति प्रयत्नशील हो जाती है। सबसे पूर्व सोने की शलाका से उसकी जीभ पर 'ओ३म्' लिखा जाता है और उसके कानों में कहा जाता है कि तू 'वेदोऽसि' (वेद है) अश्माभव-परशुर्भव। तू पत्थर के समान दृढ़ हो परशु के समान दुष्ट भावों का संहारक बन। इस ससार में कोमल चित्त होना बुरा नहीं पर संघर्षों का सामना करने के लिए पत्थर तथा कुल्हाड़े की क्षमता आनी चाहिए। अन्यथा दुष्ट जन मिश्री की डली के समान निगल जायेंगे। इसे जात कर्म संस्कार कहा जाता है। इसके बाद नाम करण संस्कार का क्रम आता है। जन्म लेने के बाद ११ वें अथवा १०१ वें दिन नामकरण संस्कार किया जाता है। यह नाम केवल पुकारने के लिए ही नहीं होता। इस नाम में बालक के जीवन एवं व्यक्तित्व के निर्माण के लिए उच्च भावनाओं का भी स्थापन किया जाता है। बालक के सामने जीवन में जैसा लक्ष्य रखना चाहते हैं वैसा नाम उसे देते हैं। नाम रख देने का अभिप्राय है जीवन में रुच के लिए, जाने अनजाने एक विशेष प्रकार का संस्कार डालते रहना। सत्य स्वरूप यदि असत्य बोले तो लोग उसे लजायेंगे इसके बाद चौथे मास में निष्क्रमण, छठे मास में अन्न प्राशन, तीसरे वर्ष में चूडाकर्म, पांचवे वर्ष में कर्णवेध संस्कार किए जाते हैं। इन सब संस्कारों का सम्बन्ध शरीर से है और प्रति समय बालक के अंगों के विकास के लिए माता पिता का ध्यान आकृष्ट करना भी इसके पीछे छिपी भावना है।

इसके बाद उपनयन और वेदारंभ संस्कारों का नम्बर आता है। उसका अर्थ है समीप 'नयन' का अर्थ है ले जाना। इस समय बालक को गुरु के समीप ले जाया जाता है। गुरु और शिष्य के कर्तव्यों का विधान इस संस्कार में बताया जाता है। शिष्य गुरु को लक्ष्य करके कहता है 'ब्रह्मचर्य यागाम् उपमानयस्व' मैं अब ब्रह्मचर्य धारण करने के लिए आया हूं। वैदिक संस्कृति के अनुसार आचार्य का स्थान माता पिता से कम नहीं माना गया। लिखा है 'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव' माता को देवता समझ कर पूजने वाला हो, पिता को देवता समझ कर पूजने वाला हो और आचार्य को देवता मानकर पूजने वाला हो। जिस प्रकार माता बच्चे को ९ मास तक अपने गर्भ में रखती है वैसे ही आचार्य भी बालक को तीन रात्रि तक अपने गर्भ में रखता है। 'आचार्यः उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः। तं रात्रीस्तिस्र उदरे बिभर्ति तं जातं द्रष्टुं अभिसम्यन्ति देवाः।' आचार्य उसके सब प्रकार के अन्धकारों को दूर करता है। इसके साथ ही वेदारंभ संस्कार होता है उसके अनुसार ब्रह्मचारी को शिक्षायें दी हैं और बालक को कहा जाता है कि आज से तू ब्रह्मचारी है। शुद्ध रहने के लिए जल का पूर्ण सेवन करना, कभी खाली मत रहना क्योंकि खाली मन में दुष्ट भावनाएं आती हैं, आलसी मत होना, दिन में मत सोना वेदों का अध्ययन करना, बुरी संगति में मत पड़ना। इसी प्रकार इस संस्कार के समय विद्यार्थी के कर्तव्य आदि का उल्लेख किया गया है उसकी दिनचर्या बतलाई गई। यदि उस शिक्षा के अनुसार समाज निर्माण हो तो आज विद्यालयों में जो अनुशासन की कमी दृष्टिगोचर हो रही है वह समाप्त हो जायगी। इसके बाद दीक्षान्त संस्कार या समावर्तन संस्कार की बारी आती है। इस संस्कार द्वारा विद्यार्थी को अपने विद्यालय से भेजता हुआ गुरु उसे भविष्य जीवन की महत्ता तथा कर्तव्य बतलाता है। अब तक उसके कार्यों का भार गुरु पर था पर आगे जाने पर यह भार गुरु पर न रह कर अपने ऊपर ही हो जाता है। अतः गुरु उसे सत्य बोलने, धर्म का आचरण करने तथा स्वाध्याय से कभी विमुख न होने का उपदेश देता है।

इसके बाद गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रमों का क्रम आता है। सन्यास आश्रम में पहुँच कर सन्यासी कहता है 'पुत्रैषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा' यथा परित्यक्ता। अतः सर्व भूतेभ्यः अभयमस्तु' मैंने पुत्र, धन की इच्छा छोड़ दी। अब मुझ से किसी व्यक्ति को द्वेष करने की, भय करने की आवश्यकता नहीं। इस प्रकार दिन रात विश्व के कल्याण में अपनी आयु के चौथाई भाग को बिताकर जब जीवन समाप्त हो जाता था तब अन्तिम संस्कार अन्त्येष्टि क्रिया होती थी और तब जाकर यह आत्मा संस्कारों की उस जकड़न में से जिसमें वह बंधी हुई थी छुटकारा पा लेती है।

इस प्रकार यह सोलह संस्कार करने का विधान भारतीय संस्कृति मे किया गया है। इससे मनुष्य को इतनी प्रेरणा और स्फूर्ति मिलती है कि सचमुच एक नव मानव का निर्माण कर देते थे। यह है संस्कारों का महत्व स्वामी जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश तथा संस्कार विधि मे इन्हीं भावनाओं को ध्यान मे रखकर इनके विधान का उल्लेख किया है। संस्कार विधि मे आए मन्त्रों में निहित भावों को देखने से पता चलता है कि सचमुच यदि हम मानव का, सच्चे मानव का निर्माण करना चाहते हैं तो हमे संस्कारों की यह प्रथा प्रचलित करनी पड़ेगी।

आ० स० गोरखपुर

मैं आर्य जगत को गोरखपुर की आर्य समाज के इस कार्य की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूं कि श्री कन्हैयालाल जी प्रधान तथा श्री द्विजराज जी के प्रयत्नों के फलस्वरूप हम लोग पारिवारिक यज्ञ और संस्कारों के लिए प्रत्येक घर में पहुँचने का प्रयत्न कर रहे हैं। संस्कारों द्वारा जहाँ पारिवारिक सपर्क से पारस्परिक प्रेम बढ़ेगा वहाँ नवमानव निर्माण में भी सहायता मिलेगी। —सुरेशचन्द्र

वैदिक समष्टिवाद……

[पिछले पृष्ठ का शेष]

चारवाक का शिष्य है जो प्रकृतिवादी है किन्तु जड़वादी सिद्धान्त विकाशवाद एवं तम् जन्म अर्थवाद आज विनाश का कारण है आज सर्वोदय वाले कहते हैं हमारा सिद्धांत गांधीवाद के आधार पर है किन्तु ये सारे सिद्धान्त अधूरे हैं वेदों में १८५ सिद्धान्तों का वर्णन मिलता है त्रैतवादी दार्शनिक सिद्धान्तों के द्वारा अथवा वेद द्वारा समष्टिवाद ही वैदिक साम्यवाद है। वैदिक राज्यनीति मे सबका समन्वय है। वर्तमान युग के क्रान्तिकारी महर्षि ने वेद के उन ऋचाओं का दिग्दर्शन हमें कराया था वैदिक सिद्धान्त एकदेशीय नहीं है। इसे साम्प्रदायिकता अनैक्यता नास्तिकता अनैतिकता इन सारे दोषों का शमन वेदों के द्वारा करना है।

गुरुद्वारों में सिगरेट फैंकने की घटना निन्दनीय

आर्य समाज का इनसे कोई सम्बन्ध नहीं

समाचार पत्रों में वर्णित अमृतसर के प्रमुख गुरुद्वारे में तथा श्री मास्टर तारासिंह जी के मकान के सामने सिगरेट के बक्स फैंके जाने की घटनायें सचमुच निन्दनीय हैं, श्री मास्टर जी के पत्र 'प्रभात' में इन घटनाओं का दोषी महाशयों से तात्पर्य आर्य समाजियों से है तो मैं श्री मास्टर जी को स्पष्ट बतला देना चाहता हूं कि यह बातें पूर्ण सत्य है कि अन्याय, अत्याचार, पाखण्ड, अज्ञान आदि के रहते आर्यसमाज चुप नहीं रह पाता और वह पूरी शक्ति के साथ इनका विरोध करता है, परन्तु यह विरोध सदैव अहिंसात्मक और खुले रूप में रहा है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि आर्यसमाज के नेताओं व कार्यकर्ताओं ने अपने कर्तव्य पालन में सदैव लाठी, पत्थर, छुरे, गोली सहर्ष सहन किये हैं और इनका उत्तर अपने बलिदान और धैर्य से दिया है कायरों की भांति छिपकर लड़ना या दूसरों के धर्म मन्दिरों को अपवित्र करना आर्यसमाज की परम्परा के सर्वथा विपरीत है। पंजाब में कैरो सरकार के अमानवीय कुकृत्यों के सम्मुख लगातार सात मास तक जिस धैर्य व अहिंसा का परिचय आर्यसमाज ने दिया है मास्टर जी की भ्रांति दूर करने के निमित्त यथेष्ट है। इसके अतिरिक्त जब आर्यसमाज के पास किसी भी संकट का सामना करने और उसे इस प्रकार के ओछे हथियार प्रयोग में लाने की आवश्यकता ही क्या है। अतः मास्टर जी इस बात को सदैव के लिए गांठ बांध लें कि जब आर्यसमाज को लड़ने के लिए विवश होना ही पड़ेगा तो वह छिप कर नहीं अपितु दिन दहाड़े सामने उपस्थित होगा।

गुरुद्वारों में सिगरेट फैंकने व फिकवाने का कुकृत्य उन्हीं लोगों के हो सकते हैं कि जो हिन्दू सिख के झगड़ने में ही अपनी नेतागिरी सुरक्षित समझते हैं और उनके द्वारा अपनी राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति देखते हैं। मुझे पूर्ण आशा है कि सिख जनता इन घटनाओं को राजनैतिक षड्यन्त्रों का एक अङ्ग समझे और इसका शिकार न बनें सरकार का भी कर्तव्य है कि वह अपराधियों का पता लगाकर उन्हें कड़ा दण्ड दे।

—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी
प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्यवीरदल

मारिशस में हिन्दी

(वेणीमाधव, मारिशस)

आज से लगभग ३४ वर्ष पहले भारत ने कमिशन के रूप में कुंवरसिंह महाराज को मारिशस भेजा था। वह यहाँ के भारतीय प्रवासियों की स्थिति की जांच करने आये थे। भारत से मारिशस के लिए कुली की आवश्यकता है या नहीं इस विषय में रिपोर्ट तैयार करके भारत सरकार के सामने प्रस्तुत करना कुंवरसिंह महाराज का मुख्य कार्य था। उनकी ही रिपोर्ट के अनुसार मारिशस में कुली का आना अवरोध हुआ। कुली प्रथा बड़ी दुर्नाम समस्या थी लेकिन कुंवरसिंह महाराज की व्याख्या बड़ी ऊंची थी और [illegible] समय [illegible] हल होने [illegible] से कर दिया।

[illegible] नहीं था [illegible] और अकृष्ट हुआ [illegible] मारिशस सरकार [illegible] यहां पूर्वीय भा[illegible] [illegible] मारिशस सरकार ने पूर्वीय भाषा [illegible] और [illegible] फलस्वरूप सरकार [illegible] स्कूलों [illegible] तमिल [illegible] पाठशाला [illegible] इन भाषाओं के अध्यापक सरकार द्वारा नियुक्त किये गये थे उनमें से [illegible] दो ढाई या पाँच घंटे से अधिक समय तक पढ़ाई नहीं होती थी। सरकार ने इस शिक्षा का नाम [illegible] रक्खा था।

मारिशस में अङ्गरेजों का राज्य है लेकिन उन दिनों फ्रेंचों की ही प्रभुता थी वे सरकार से जो चाहते करवा लेते थे धारा सभा में फ्रेंचों [illegible] और अङ्गरेजों का आधिपत्य था अधिकार व शक्ति रहने पर भी फ्रेंचों ने कौंसिल में यह आवाज नहीं उठाई कि पूर्वीय भाषा को स्कूलों में स्थान नहीं मिलना चाहिए जहां यह कहने का अभिप्राय नहीं कि कुंवरसिंह महाराज के आगमन से पूर्व यहाँ हिन्दी की शिक्षा बिलकुल नहीं दी जाती थी। आर्यपरोपकारिणी सभा के शाखा समाजों में सर्वत्र हिन्दी की शिक्षा दी जाती थी और इस समय तो ८० से अधिक पाठशालायें हैं।

यह आठवां वर्ष चल रहा है जब कि मारिशस सरकार ने भारत सरकार की मार्फत प्रोफेसर रामप्रकाश जी एम० ए० को हिन्दी प्रशिक्षण के लिए बुलवाया। प्रोफेसर रामप्रकाश हिन्दी अङ्गरेजी उर्दू संस्कृत आदि अनेक भाषाओं के प्रकाण्ड विद्वान हैं, संस्कृत में गम्भीर ज्ञान रखते हैं मारिशस के चोटी के विद्वानों में अङ्गरेजी भाषा में भारतीय संस्कृति पर जब उनका भाषण होता है तो प्रत्येक मुंह उनकी श्लाघा करने लगता है। प्रोफेसरजी [illegible] में पूर्वीय भाषा का प्रशिक्षण [illegible]

[illegible] अध्यापक तैयार [illegible] चार साल से सरकारी और [illegible] सरकारी प्राथमिक पाठशाला [illegible] अध्यापक [illegible] [illegible] सरकार [illegible] मुसलमान [illegible] शिक्षा [illegible] अध्यापकों [illegible] अध्यापकों [illegible] सरकारी [illegible] सरकार [illegible] [illegible] कथाओं [illegible] अपने [illegible] शालाओं [illegible]

जिस पाठशाला में हिन्दू बच्चों की संख्या अधिक है उसमें हिन्दी अध्यापक जिसमें मुसलमान बच्चों की तादाद ज्यादा है उसमें उर्दू अध्यापक नियुक्त किया गया है। इसी प्रकार [illegible] पाठशालाओं में शिक्षक [illegible] पाठशाला [illegible] [illegible] शिक्षा [illegible] [illegible] समय [illegible] [illegible] समय में [illegible] और [illegible]

है लेकिन फिर भी जब धारा सभा में पूर्वीय भाषा की शिक्षा का विषय प्रस्ताव के रूप में प्रस्तुत हुआ फ्रेंचों ने भी इसे स्वीकार किया। भाषा के सम्बन्ध में इस उपनिवेश में किसी प्रकार का विवाद नहीं है अङ्गरेजी फ्रेंच यहां की अनिवार्य भाषा है और यह अनिवार्यता अङ्गरेजी [illegible] प्रारम्भिक काल से चलती आ रही है [illegible] [illegible] सहानुभूति रखता है इस महान् यज्ञ की पूर्ति के लिए आर्य सभा ने [illegible] अपील निकाली है।

इस उपनिवेश में अङ्गरेजी राज्य है यहां भी [illegible] अङ्गरेजी सरकार ने किसी भी भाषा [illegible] पर आघात नहीं पहुंचाया बड़ी सरलता से [illegible] पूरा कर रहे हैं। भारत में अपना राज्य है हिन्दी [illegible] राष्ट्रभाषा बनने [illegible] आर्यसमाज [illegible] कर रहा है पुनः क्या [illegible] का अन्याय से [illegible] जा रहा है हम प्रवासी भारतीय [illegible] क्या [illegible] हम [illegible] रहे हैं।

हिंदी की ललकार

अगणित रत्नों से भरा खजाना हिन्दी का।
स्वर में आ कर बस गया तराना हिन्दी का॥
रे पक्षी! तू भी मोड़ परों की गति अपने।
हो गया हिन्द आजाद जमाना हिन्दी का॥

यह मिटी नहीं मुगलों के तेग कटारों से
यह टरी नहीं गोरों के अत्याचार से॥
बरछी भाला गोलों में सीना तान चली।
यह झुकी नहीं फांसी के फंदे द्वारों से॥
जब तक रवि शशि नक्षत्र गगन में घूम रहे।
तब तक न घटेगा सम्मान पुराना हिन्दी का॥

परवाह नहीं फूलों की शूल चुभाने की।
परवाह नहीं आहत आंसू पी जाने की॥
उनके अगणित अत्याचारों पर ध्यान नहीं।
चिंता है केवल अपनी टेक निभाने की॥
जब तक तन में है प्राण प्राण में है तड़पन।
दुहरायेगा हर सांस फसाना हिन्दी का॥

हम दीपक सा तिल तिल गल कर देंगे प्रकाश।
रे निशा! करेगी तू कब तक मेरा विनाश॥
ले सम्भल साधना मेरी जगने वाली है।
होगा टुकड़े टुकड़े तेरा यह दम्भ पाश॥
घन घेर न पायेंगे इस निर्मल आभा को।
आसान नहीं निर्मान छिपाना हिन्दी का॥

—श्याम मनोहर वर्मा विमल फैजाबादी

आवश्यकता

एक रोजगार में लगे हुए—सुन्दर स्वस्थ [illegible] वर्षीय राजपूत विधुर के लिए एक सुन्दर सुशील स्वस्थ पत्नी की आवश्यकता है दुहेजी [illegible] को विशेषता दी जायगी। निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें —

[illegible]लगारसिंह लखपाल
ग्राम बाढ़यावाला पो० जसपुर
(नैनीताल)

ब्रह्मकुमारी-प्रश्नोत्तरी

(श्री पं० शिवदयालु जी मन्त्री, आ० प्र० सभा, उत्तरप्रदेश)

जब से भारत में बुद्धिवाद एवं मानववाद का ह्रास हुवा नानाप्रकार के मत, पन्थ और सम्प्रदायों ने सर उठाना आरम्भ कर दिया। जिधर देखो गुरुडम का जाल बिछा था जब महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज का इस देश मे आगमन हुवा।

महर्षि दयानन्द ने मतान्धता और अन्धविश्वासों के गढ़ो पर सफल प्रहार किया और इन नवीन पन्थों की बाढ़ रुक गई तथापि यत्र तत्र कुछ नए पन्थ बन ही गये और इसका कारण आर्यसमाज का जागरुक होकर देश के कोने-कोने मे वैदिक सिद्धान्तो का प्रचार न करना ही है।

हमारे देश में स्थान स्थान पर ब्रह्मकुमारियो की चर्चा सुनने मे आती है। कोई इन्हे मस्ती सम्प्रदाय की प्रचारिकाएं मानते ह। इनका प्रचार पर्दे की आट मे चलना है। यह अपना साहित्य भा सर्वथा गुप्त रखते है। हमे इनके सम्बन्ध मे इनके ही साहित्य के आधार पर जो कुछ जानकारी हुई है उसे इस प्रश्नोत्तरों के रूप में प्रकाशित करते हैं :—

प्रश्न १--यह ब्रह्मकुमारिया कौन है?

उत्तर—यह हिन्दुओं के बल्लभ सम्प्रदाय की भांति एक नवीन पन्थ की प्रचारिकाएं हैं। इस सम्प्रदाय का केन्द्र बाम्बरन हाउस, आबू पर्वत बतलाया जाता है।

प्रश्न २—इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक कौन है ?

उत्तर–कोई अग्रेजी और टूटी फूटा हिन्दी जानने वाले बाबू है जो अपना असली नाम छिपाये हैं वैसे अपने को बाबा त्रिमूर्ति परमात्मा सदाशिव ब्रह्म कहते हे। पत्रिकाओ मे इनको प्रिय परमात्मा ब्रह्म कह कर संकेत किया जाना है।

प्रश्न ३–इस पन्थ का धर्म ग्रन्थ कौन सा है ?

उत्तर–यह पन्थ किसी धर्म ग्रन्थ को नहीं मानता। वेद-शास्त्र उपनिषद आदि की स्पष्ट निन्दा करना है। और 'पी' बाबा की बेसिर पैर की अटपटी बातों को ही इस पन्थ का सार समझना चाहिये। आर्य, बौद्ध, जैन,सिख धर्मों की निन्दा यत्र तत्र की गई है अन्यों की नहीं।

२४ अवतारों का खण्डन किया गया है और प्रत्येक कल्प में एक अवतार का होना माना गया है। अवतार साधारण नर तन मे आता है और इस कल्प का अवतार अपने को प्रमाणित करने का प्रयत्न किया गया है। इस पन्थ में पुरुषों अथवा नवयुवकों को दीक्षा प्रायः नहीं दी जाती। कुमारी लड़कियों को ही दीक्षा देने की प्रथा है। इन लड़कियों का श्रृङ्गार समाप्त कर स्वेत वस्त्र धारण करने का आदेश दिया जाता है और इन दीक्षित कुमारियों को ब्रह्मकुमारी कहा जाता है जो 'पी' प्रिय परमात्मा की गोद में बैठती है।

प्रश्न ४–इस पन्थ के मूल सिद्धांत क्या है ?

उत्तर—ससार के और विशेष कर भारत के मानवो को निधणी(अनाथ) मानना जैसे ईसाई सारा गैर ईसाई पुत्रियों को काफिर मानते हैं। जैसे ईसा पर ईमान लाने पर मानव को स्वर्ग मिलने की बात कही जाती है वैसे हा'पी'पर ईमान लानेपर निधणी (अनाथ) धणी (सनाथ) बन जाता है। इस मत मे राम कृष्णादि को न तो अवतार माना जाता है और न देवता और उनको श्री शब्द से भी विभूषित करने का निषेध है।

यह मनु की काल व्यवस्था के भी विरोधी है। इस समय कलि और सतयुग की सन्धि बेला मानते हैं।

प्रश्न ५–दीक्षा का क्या प्रकार है?

उत्तर—जो लड़कियां बाबा सदाशिव त्रिमूर्ति 'पी' ब्रह्म की शरण में आ जाती हैं अथवा लाई जाती है उनका श्रृङ्गार हरण कर निधणी से धणी बनाया जाता है। 'पी' ब्रह्म ही उनके त्राता और पिता और पति माने जाते हैं। दीक्षा के साथ उनको ब्रह्म कुमारी की उपाधि दी जाती है।

इन लड़कियों के प्रार्थना पत्र तथा फोटो आबू केन्द्र को भेजे जाते हैं और शिवरात्रि को उन्हे यह प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है।

प्रश्न ६–इस पन्थ का क्या कोई साहित्य भी है ?

उत्तर—साहित्य प्रायः नहीं है जो कुछ ट्रैक्ट,विज्ञप्तियां आदि है अत्यन्त गुप्त रखी जाती हैं। हमने "कृष्ण और वैकुण्ठ" नामक उर्दू का एक ट्रैक्ट देखा है तथा "परमात्मा का अवतरण" नामक हिन्दी का ट्रैक्ट भी देखा है जिसमें पन्थ के तथाकथित 'ब्रह्म' का चित्र भी तीन रूप मे अंकित हैं। "बेहद की हिस्ट्री और जाग्रफी', तथा 'निधणी के धणी' नामक दो विज्ञप्तियां भी पढ़ने का अवसर मिला है।

प्रश्न ७–इस पन्थ की शाखायें कितनी और कहां २ हैं ?

उत्तर–इनके लिखे अनुसार १६ शाखायें हैं। उत्तरप्रदेश में लखनऊ, कानपुर, मेरठ, सहारनपुर, हापुड़ आदि में इनकी शाखायें हैं।

सूचना

प्रान्तस्थ समस्त जिलोपसभाओं, आर्यसमाजों तथा हिन्दी समिति के मन्त्रियों को सूचित किया जाता है कि आप अपने यहां के सत्याग्रह मे जाने वाले वीरों की सूची, तथा प्रान्तीय हिन्दी रक्षा समिति निमित्ति प्राप्त धन का सम्पूर्ण हिसाब तैयार रखें। इस सम्बन्ध मे हमारे प्रचार मन्त्री श्री राजबहादुर जी विद्यारत्न आपके यहां पहुंच रहे है उन्हें आप निरीक्षण कराने तथा शेष धन देने की कृपा करें।

–शिवदयालु सभामन्त्री

आ० स० पुन पुन, पटना

इस समाज का वार्षिकोत्सव ८, ९, १०, ११ जनवरी ५८ को मनाया जायेगा जिसमें बिहार के प्रमुख आर्य नेता पधारेंगे।

सन् ५७ की प्रमुख घटनाएं (भगवत शरण)

(गताङ्क से आगे)

जुलाई

१—पंजाब हिन्दी सत्याग्रह चलता रहेगा।

२—काश्मीर में पाकिस्तानी बारूद पकड़े गये।

३—आसाम और नेफा में भूकम्प

४—कागनोविच, मोलोटोव, सेपिलोव और मेलेन्कोव रूसी साम्यवादी दल से निष्काषित।

५—उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी में विवाद।

६—दो और रूसी नेता निष्काषित

७—ख्रुश्चेव द्वारा निष्काषित नेताओं की निन्दा।

८—केरल का नया शिक्षा बिल प्रकाशित।

९—काश्मीर में पाकिस्तान द्वारा गड़बड़ी।

१०—विश्व शान्ति चाहता है—नेहरू ने हेग में कहा।

११—समाजवादी व प्रजासमाजवादी दल की एकता के लिए लोहिया द्वारा श्री जयप्रकाश नारायण का निमन्त्रण स्वीकार।

१२—नेहरू नासिर छः घण्टे वार्ता, आगा खां की मृत्यु।

१३—२०० सत्याग्रहियों द्वारा चण्डीगढ़ में सत्याग्रह।

१४—काश्मीर बम विस्फोट में पाकिस्तान का हाथ।

१५—नेपाल में सरकार बनाने के लिए श्री के० आई० सिंह को निमंत्रण।

१६—डाक तार विभाग के कर्मचारियों द्वारा हड़ताल का नोटिस जारी।

१७—नेहरू नन्दा श्रम वार्ता

१८—केन्द्रीय मन्त्री मण्डल द्वारा श्रम समस्या पर विचार।

१९—शास्त्री द्वारा डाक तार कर्मचारियों से हड़ताल न करने की अपील

२०—उत्तर प्रदेश विधान परिषद् में ११ करोड़ रुपये घाटे का बजट प्रस्तुत।

२१—संसद सदस्य कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी नहीं हो सकते-अखिल भारतीय कांग्रेस का निश्चय।

२२—अकबर खाँ द्वारा काश्मीर सरकार को बरबाद कर देने के षड्यन्त्र का भण्डाफोड़।

२३—ओमन में अमेरिकी अस्त्रों से युद्ध जारी।

२४—पश्चिमी एशिया की स्थिति भयानक।

२५—ओमन में बमबारी।

२६—ट्यूनिसिया गणतन्त्र घोषित

२७—गुलाम मुहम्मद बक्शी द्वारा काश्मीर के मुख्य मन्त्री पद का सपथ ग्रहण।

२८—डाक तार कर्मचारियों द्वारा हड़ताल की पूरी तैयारी।

२९—जमुना का पानी खतरे की बिन्दु तक।

३०—जहाँगीर का हीरा भारत को वापिस।

३१—रोहतक में हिन्दी सत्याग्रह का दूसरा मोर्चा प्रारम्भ।

अगस्त

१—नई दिल्ली मे म्यूनिसिपल कर्मचारियों पर गोली वर्षा-एक मरा दो घायल।

२—भारत द्वारा पाकिस्तान को नहरी पानी विवाद सम्बन्धी कड़ी चेतावनी।

३—केन्द्रीय सरकार डाक विभाग की भावी हड़ताल से भयभीत।

४—हरियाना के कांग्रेसी विधान सभाइयों द्वारा कैरों मन्त्रि मण्डल में परिवर्तन की मांग।

५—चण्डीगढ़ और रोहतक मे हिन्दी सत्याग्रह मोर्चा तेजी पर।

६—रोहतक में हिन्दी सत्याग्रहियों पर भीषण लाठी चार्ज व अश्रु गैस का प्रयोग।

७—चण्डीगढ़ और रोहतक मे भयानक पुलिस अत्याचार।

८—डाक तार विभाग हड़ताल जारी।

९—चण्डीगढ़ और रोहतक मे पुनः भीषण लाठी चार्ज।

१०—पंजाब गवर्नर द्वारा वार्ता के लिए हिन्दी रक्षा समिति के नेताओं का आमन्त्रण।

११—राजस्थान के विद्यार्थियों का आन्दोलन स्थगित।

१२—स्वामी आनन्द भिक्षु की गिरफ्तारी पर आर्य जगत में क्षोभ।

१३—राज भाषा आयोग की रिपोर्ट प्रकाशित।

१४—उत्तरी बिहार के ५०० गांव जलमग्न।

१५—पंजाब भाषा विवाद पर वार्ता प्रारम्भ।

१६—पन्द्रह अगस्त को सैकड़ों कैदी विभिन्न जेलों से रिहा।

१७—पंजाब में साम्प्रदायिक झगड़े।

१८—अलमोड़ा में भयंकर भूमि धसान, ३९ मरे।

१९—स्वामी आत्मानन्द जी द्वारा सद्भावना का आन्दोलन प्रारम्भ करने की घोषणा।

२०—डा० गोपीचन्द भार्गव को पंजाब मन्त्री मण्डल में लिए जाने को आशा।

२१—चण्डीगढ़ में ५०७ सत्याग्रहियों द्वारा प्रदर्शन।

२२—केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के लिए वेतन आयोग स्थापित

२३—केन्द्रीय सरकार द्वारा बाढ़ की स्थिति रोकने का यत्न।

२४—मेनन द्वारा गोवा समस्या सुलझाने की आशा।

२५—फिरोजपुर सेन्टल जेल में हिन्दी सत्याग्रहियों पर भीषण लाठी चार्ज, १ मरा, २५० घायल, ६० बेहोश।

२६—पश्चिमी पाकिस्तान मे अकाल।

२७—३६०००) रु० की आय पर कर।

२८—रूस द्वारा अन्तर्महाद्वेशीय अस्त्रों का परीक्षण।

२९—झेलम की बाढ़ से ५ लाख व्यक्ति पीड़ित।

३०—महाशय कृष्ण और उनके पुत्र वीरेन्द्र जी गिरफ्तार।

३१—मलाया स्वतन्त्र घोषित।

सितम्बर

१—पंजाब के १० जिलो में धारा १४४ लागू।

२—दिल्ली मे कांग्रेस अधिवेशन जारी।

३—लोक सभा मे भारतीय विदेश नीति स्वीकृत।

४—नई दिल्ली में पंजाब भाषा विवाद पर उच्चस्तरीय वार्ता।

५—व्यय कर बिल लोक सभा मे स्वीकृत।

६—भारत द्वारा पाकिस्तान से नहरी पानी के नकद मूल्य की मांग।

७—जार्डन मे अमेरिकी अस्त्र भेजे जाने की सम्भावना।

८—पंजाब विवाद से भार्गव अशान्त।

९—श्री नगर मे पुनः बम विस्फोट दो मरे।

१०—पंजाब मे भारी संख्या में गिरफ्तारियाँ जारी।

११—करनाल में हिन्दी सत्याग्रह का तीसरा मोर्चा खुला।

१२ श्री नेहरू चण्डीगढ़ जाने को तैयार।

१३—श्री नगर में नेहरू का स्वागत

१४—नन्दा नेहरू द्वारा द्वितीय योजना पर बल।

१५—जगाधरी में हिन्दी सत्याग्रह का मोर्चा गर्म।

१६—केन्द्रीय सरकार द्वारा सहकारिता कृषि पर बल।

१७—हिन्दी रक्षा समिति के नेताओं द्वारा श्री नेहरू को पंच मानने से इंकार।

१८—भारतीय भूमि पर विदेशी सैनिक अड्डे देखने के लिए भारत सरकार तैयार नहीं - मेनन।

१९—अमृतसर में हिन्दी सत्याग्रह का चौथा मोर्चा खुला।

२०—दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ घोर दुर्व्यवहार।

२१—राष्ट्र संघ में चीन को रखवाने का प्रयास विफल।

२२—शिक्षा मन्त्रियों द्वारा निःशुल्क शिक्षा पर एक मत।

२३—भारत द्वारा विश्व न्यायालय हेग के गोवा सम्बन्धी निर्णय को चुनौती देने की तैयारी।

२४—नेहरू और नागा नेताओं की वार्ता।

२५—सयुक्त राष्ट्र सघ मे काश्मीर विवाद पर वार्ता प्रारम्भ।

२६—कोहिमा सम्मेलन के अनुसार सरकार और नागा नेता एकमत

२७—ब्रिटिश कानूनी नेता ने विश्व न्यायालय हेग में कहा कि पुर्तगाल द्वारा गोवा की मांग अन्तर्राष्ट्रीय कानून के प्रतिकूल है।

२८—श्री नेहरू द्वारा माई थान बांध का उद्घाटन।

२९—आंध्र मद्रास सीमा विवाद समाप्त।

३०—गोवा और काश्मीर विवाद सुलझने की आशा—पन्त

अक्टूबर

१—पंजाब हिन्दी सत्याग्रह मे विद्यार्थी भी भाग लेने लगे।

२—गांधी-जयन्ती की धूमधाम।

३—पूर्वी बंगाल द्वारा पुनः हिंदुओं को निष्कासित करने का षड्यन्त्र।

४—हिन्दी आन्दोलन से नेहरू जी परेशान।

५—जापान मे नेहरू जी का स्वागत।

६—रूस द्वारा प्रथम उपग्रह छोड़ा गया। ५६० माल की ऊंचाई पर १७००० प्रति मील की गति से उड़ने लगा।

७—अणुपरीक्षण बन्द हो—नेहरू ने टोकियो में कहा।

८—पाक अधिकृत काश्मीर मे भी विदेशी सेना का प्रवेश करना भारत सहन नहीं करेगा।

९—अगले मार्च तक नागा प्रांत बनने की सम्भावना।

१०—पाकिस्तान द्वारा जारिग रिपोर्ट का गलत प्रयोग।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

११ काश्मीर बम विस्फोटों मे पाकिस्तानी नेताओ का हाथ।

१२—पाक प्रधान मन्त्री सुहरावर्दी द्वारा त्याग पत्र।

१३—डा० भार्गव त्याग पत्र देने को तैयार।

१४—भारत और जापान के प्रधान मन्त्रियो का टोकियो मे सयुक्त घोषणा

१५— पाकिस्तान मे प्रधान मन्त्री पद के लिए भारी विवाद।

१६—नन्दा द्वारा पत्रकारो को वेतन बोर्ड के निर्णय लागू किये जाने का आश्वासन।

१७—श्री डलेस ने वाशिंगटन म कहा कि लडाई की काइ सम्भावना नहीं।

१८—चुन्द्रीगर पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री निर्वाचित।

१९—२३ व्यक्तियो का पाक मत्री मण्डल निमित।

२०—हडताल सहन नहा किया जायगा—बगाल सरकार की घोषणा

२१—उत्तर प्रदेश लिपि सुधार सम्मेलन।

२२—पूर भारत म द पावली का उत्सव।

२३—नेहरू द्वारा हिन्दी आदोलन की निन्दा।

२४—लडाई न होने देने म नेहरू का हाथ।

२५—सयुक्त राष्ट्र सघ म काश्मीर पर बहस।

२६—भारत ग्राहम के प्रस्ताव को मानने को तैयार नहीं। लखनऊ मे विद्यार्थियो की व्यापक हडताल और प्रदर्शन।

२७—नागा बन्दी छोडे गये।

२८—नेहरू द्वारा लखनऊ हडताल की निन्दा।

२९—नेहरू द्वारा पुन लखनऊ हडताल की निन्दा।

३०—हिन्दी सत्याग्रह और तेज करने का निर्णय।

३१—टर्नी के विरुद्ध जाच समिति की स्थापना।

नवम्बर

१—विदेशी मुद्रा सम्बन्धी कष्ट दूर करन का बिल पेश।

२—दक्षिण अफ्रीका अपनी रग भेद की नीति छोड दे, न्यूयार्क म २६ राष्ट्रों के राजनैतिक सम्मेलन के प्रस्ताव

३—कोलम्बो योजना के अन्तर्गत कनाडा की ओर से भारत को ७० लाख डालर के गेहू मिलने की आशा

४—रूस द्वारा द्वितीय उपग्रह छोड़ा गया।

५—नव नवम्बर को पूरे पजाब मे हडताल का निश्चय।

६—पजाब के लिए क्षेत्रीय समितिया।

७—ख्रुश्चेव द्वारा 'युद्ध नहीं' का एलान।

८—नई दिल्ली रेडक्रास सम्मेलन मे २९ राष्ट्रो के प्रतिनिधियो द्वारा बहिर्गमन।

९—समाचार पत्र देश का नैतिक स्तर उठाने म सहयोग दे—नेहरू।

१०—पूरे पजाब म नेहरू के आगमन पर आम हडताल।

११—हिन्दी राज्य भाषा का प्रश्न शांति से हल किया जाय—नेहरू

१२—केन्द्रीय सरकार की आय का कुछ भाग प्रान्तीय सरकार को मिलने का निश्चय।

१३—देश की एकता विरोधी कोई भी प्रस्ताव भारत को स्वीकार नहीं होगा—मेनन ने सुरक्षा परिषद म कहा

१४—मानव जाति नाश की ओर जा रही है नेहरू

१५—केन्द्रीय सरकार द्वारा राज्य सरकारो को ४७ करोड रुपये अतिरिक्त राशि स्वीकृत।

१६—भारत एकला अमेरिकन ... तैयार नहीं।

१७ ... फिलिपाइन्स ब्रिटेन और अमरीका द्वारा ग्राहम की काश्मीर भेजने पर बल।

१८—धार्मिक और आध्यात्मिक अधिकार सुरक्षित रहे—डा० राजेन्द्र प्रसाद ने सर्व धर्म सम्मेलन म कहा।

१९—भारत ने ग्राहम मिशन को ठुकरा दिया।

२०—भारत द्वारा सुरक्षा परिषद का प्रस्ताव अन्तिम रूप से अस्वीकृत।

२१—पाक मन्त्रि मण्डल म पुन सकट।

२२—लोक सभा म नौसेना विधेयक पास।

२३—रूसी प्रतिनिधि सोबोलोव ने सुरक्षा परिषद म कहा कि वह काश्मीर विवाद पर अपने वीटो (निषेधाधिकार) का प्रयोग करेगा।

२४—बम्बई के समीप कलकत्ता मेल दुर्घटनाग्रस्त।

२५—कलकत्ता मेल दुर्घटना मे तोड फोड वाले दल का हाथ।

२६—लोक सभा म नागा प्रशासन एकाई बिल सर्व सम्मति से स्वीकृत।

२७—विश्व अदालत हेग द्वारा भारतीय चार सूत्री प्रस्ताव का विरोध अस्वीकृत।

२८—ट्यूनिसिया मे फ्रान्सिसी और ट्यूनिसियाई सैनिको मे युद्ध।

२९—भारत ग्राहम से काश्मीर वार्ता पर बाते करने को तैयार नहीं —नेहरू

३०—नेहरू द्वारा द्वितीय योजना की सहायतार्थ जनसाधारण से अपील

आवश्यक निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश दिनांक २९.१२.५७ स्थान सीसामऊ आर्यसमाज कानपुर के आवश्यक निश्चय निम्नप्रकार प्रकाशित किये जाते हैं।

१—इस बैठक मे वैदिक धर्म के सुयोग्य प्रचारक तैयार करने की दृष्टि से "दयानन्द उपदेशक विद्यालय" स्थापित करने का निश्चय किया गया। विद्यालय की विस्तृत योजना बनाने के लिए एक उपसमिति बना दी गई है जिसके सयोजक श्री प० शिवदयालु जी सभा मन्त्री है।

२—सभा का ७० वा वार्षिक अधिवेशन दिनाक २० व २१ अप्रैल १९५८ को नारायण स्वामी भवन लखनऊ मे करना निश्चित हुआ है। अधिवेशन के साथ प्रान्तीय आर्य सम्मेलन तथा उत्तरप्रदेशीय सत्याग्रही सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष का अधिवेशन गत वर्ष की अपेक्षा और अधिक समारोह के साथ होगा।

३—निम्न लिखित ७ आर्यसमाज सभा म प्रविष्ट किये जाते।

		स्थापन तिथि	कोटिधन
(१)आ स० सुभाषनगर १३८ (अ) प्रयाग	जि० इलाहाबाद	२१.८.५६	१००)
(२) आ०स०भगवन वाला	, बिजनौर	४.४.५५	१००)
(३) गुणसिला पट्टा कौडिया	,, गढवाल	१९२८	१००)
(४) सिमल्या पट्टा डबरालस्य	,,	२३.११.५५	१००)
(५) फ...काट पट्टातला उदपुर		१०.१. ४५	१००)
(६) ... गैन पट्टा डबरालस्य	,	२६.१.४६	१००)
(७) , ...पुर लालपुर भाभर	,	१.५६	१००)

—शिवदयालु, सभा मन्त्री

दिसम्बर

१—विश्व विद्यालय बोद्धिक कठिनाइयो को दूर करने म सहायक बने—देशमुख

२—लुधियाना मे हिन्दी सत्याग्रहियो पर लाठी चार्ज और अश्रु गैस का प्रयोग।

३—गणतन्त्र का आधार माननीय स्वतन्त्रता है राजेन्द्र प्रसाद

४—राष्ट्र सघ का सशोधित प्रस्ताव भी भारत को अमान्य।

५—द्रविड कषगम आन्दोलन की सर्वत्र निन्दा।

६—ग्राहम मिशन पूर्णतया असफल होगा—जम्मू काश्मीर राष्ट्रीय सम्मेलन का प्रस्ताव।

७—नागाओ की समस्या किसी तरह पूरी की जायगी—नेहरू

८—पूर्वी पाकिस्तान म अलग मतदान पर विवाद।

९—नेपाल हिन्दी आन्दोलन मे वी० पी० कोइराला गिरफ्तार।

१०—लोक सभा में नजरबन्दी कानून का तीव्र विरोध।

११—नजरबन्दी कानून की अवधि तीन वर्ष और बढ़ी।

१२—पाक मन्त्रि मण्डल का त्याग पत्र—चुन्द्रीगर मन्त्रि मण्डल बनायेगे।

१३—पश्चिमी इरियन पर भारत द्वारा इन्डोएशिया का समर्थन।

१४—केवल भारतीय विदेश नीति ही व्यावहारिक है—नेहरू

१५—अणु परीक्षण बन्द हों—नेहरू

१६—अणु परीक्षण पर प्रतिबन्ध हो—नेहरू

१७ पश्चिमी राष्ट्र शान्ति के लिए रूस म समझौता करने को तैयार

१८—नेहरू द्वारा आइसन हावर बुलगानिन शान्ति प्रयास की सराहना

१९—अमेरिका से सात आठ लाख टन गेहू मगवाने की नई व्यवस्था

२०—यूरोप म आणविक शस्त्रास्त्र तथा राकेटों का सग्रह—पेरिस न्यूज

२१—नजरबन्दी कानून राजसभा म भी पास।

२२—शान्ति के लिए पूर्वी और पश्चिमी देशो के नेताओ का सम्मेलन हो—ख्रुश्चेव

२३—अखिल भारतीय मोमिन सभा द्वारा भारत सरकार की काश्मीर नीति का समर्थन।

२४—भाषा सम्बन्धी पजाब विवाद सुलझने की आशा।

२५—दक्षिण मे हिन्दी विरोधी आन्दोलन की नेहरू द्वारा निन्दा।

२६—शान्ति स्थापना के लिए रूस की सात सूत्रीय योजना।

२७—काहिरा में अफ्रिका एशियाई देशो का सम्मेलन शुरू।

२८—पजाब का सात मास हिन्दी सत्याग्रह सरकार के आश्वासन पर स्थगित।

२९—उ० प्र० कॉंग्रेस मे फूट चरम सीमा पर—पदाधिकारियो का चुनाव भी नहीं हो सका।

३०—देश का विभाजन असह्य—हिन्दी ही राज्य भाषा योग्य उपयुक्त —नेहरू जी

३१—नेहरू जी द्वारा प्रगति की ओर चलने का सन्देश।

आर्य्य-कुमार-संघ

विनय

★

विनय विद्या का भूषण है। विनय के अभाव में विद्या उसी प्रकार शोभित नहीं होती जैसे बिना सुगन्धि का सुमन। विद्या विनय विहीन ब्राह्मण भी विद्या विनय सम्पन्न शूद्र से तुच्छ होता है, किन्तु—

विद्या विनय सम्पन्ने,
ब्राह्मणे, गवि, हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके,
पण्डिताः समदर्शिना॥

जैसे एक आम्र लतिका फलों को धारण करके नतमस्तक हो जाती है वैसे ही महात्मा जन विद्या प्राप्त करके विनय युक्त हो जाते हैं। विनय के आ जाने से न केवल शिष्टता ही आती है, अपितु उससे आत्मशुद्धि भी होती है, अहकार, क्रोध, हिंसा आदि दुर्गुणों का नाश हो जाता है।

जब मनुष्य में विनय का समावेश होगा, तो वह कभी गर्व नहीं करेगा, अपने को सर्वोत्तम सिद्धि करने का प्रयास नहीं करेगा, जिससे वह अहकार दुर्गुण से मुक्त हो जावेगा। वह कभी कटुवचनों के द्वारा किसी को दुखित नहीं करेगा, वरन् नम्र बातो से सदा सबको प्रसन्न रक्खेगा, इस प्रकार उससे हिंसा का नाश हो जावेगा। क्रोध तो विनय का विलोम ही है, अर्थात् जहां विनय वहाँ अक्रोध और जहाँ क्रोध वहां विनय नहीं। क्रोधाग्नि को शान्त करने के लिए विनय शीतल जल है। विनय के द्वारा न केवल मित्र पर अपितु शत्रु पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है।

सोरों में एक बार महर्षि दयानन्द सरस्वती विशाल जन-समूह को उपदेशामृत का पान करा रहे थे। उसी समय एक हृष्ट पुष्ट जाट पहलवान एक मोटा सोटा कन्धे पर रखे सभा सरोवर को चीरता हुआ स्वामी जी की ओर बढ़ा। उसका चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था, आखें रक्तिम थीं और भृकुटियां तनी हुई थीं। होठो को चबाता और दांतों को पीसता हुआ वह बोला—"अरे साधु! तू ठाकुर-पूजा का खण्डन करता है, और श्री गंगामैया की निन्दा करता है, देवताओं के विरुद्ध बोलता है? झटपट बता तेरे किस अग पर यह सोटा मार कर तेरी समाप्ति कर दूं?" स्वामी जी ने बिना भय या क्रोध के विनीत भाव से मुस्कराते हुये उत्तर दिया, "भद्र! यदि तेरे विचार मे मेरा धर्म प्रचार करना कोई अपराध है तो इस अपराध का प्रेरक मेरा मस्तिष्क ही है, यही मुझे खण्डन की बातें बताता है। सो यदि तू अपराधी को दण्ड देना चाहता है तो मेरे शिर पर सोटा मारकर इसी को दण्डित कर।'

इन वाक्यों के साथ ही स्वामी जी ने अपनी दृष्टि को उसकी आंखों में डालकर देखा। जैसे दहकता हुआ अगारा शीतल जल को पाकर शान्त हो जाता है, वैसे ही वह व्यक्ति भी तत्काल शान्त हो गया। महर्षि के चरण कमलों मे अविरल अश्रु मोचन करता हुआ अपना अपराध क्षमा करने की याचना करने लगा।

इस प्रकार विनय के द्वारा स्वामी जी ने सहज मे अपनी रक्षा भी कर ली और उस दुष्ट के हृदय कपाटो को खोलकर क्रोध का पर्दा भी हटा दिया। प्यारे आर्यकुमारों! हम सब को भी विनीत बनकर रहना चाहिये, अपने सम्बन्धियों, मित्रो और शत्रुओ से भी विनय भाव से बोलना चाहिये, इससे हमारा सर्वत्र आदर होगा। हमें सब गुरुजन प्रेम दृष्टि से देखेंगे, और हम मे अक्रोध, सहनशीलता, अपरिग्रह आदि सद्गुण आ जायेंगे। तब हम आदर्श आर्य कुमार बन जायेंगे क्योंकि विनय चरित्रता की पहली सीढ़ी है।

—प्रतापकुमार सि०रत्न, द्वारा श्री महाराज बहादुर सक्सेना, रिटायर्ड फारेस्ट रेन्जर, नानपारा, बहराइच।

संघ के नये सदस्य

३४०—सुश्री उषावती सिनहा, राजपुतानी, रुरकी, ३४१—श्री रोहताश कुमार आर्य, जेवर, बुलन्दशहर, ३४२—श्री दामोदर प्रसाद सिंह, बलैठा, डुमरीघाट, मुंगेर, विहार, ३४३—श्री ब्र० मुकुन्द, सर्वोदय गुरुकुल आश्रम बैरगनियाँ, मुजफ्फरपुर विहार, ३४४—श्री योगेशचन्द्र आर्य, चन्दौसी, ३४५—सुश्री कमलादेवी जी कपूरथला हाउस बहराइच, ३४६—श्री जगदीश्वरदयाल सिंह बहराइच, ३४७—श्री राजेन्द्र कुमार आर्य, दलसिंह सराय, दरभगा ३४८—श्री कपूर राय आर्य, ३४९—श्री शिवराम आर्य, ३५०—श्री गोवर-धन आर्य, ३५१—श्री कस्तूर साह दलसिंहसराय, दरभंगा, ३५२—श्री रविदत्त शर्मा, दुहापुर, टांडा अफजल मुरादाबाद।

आर्य्य महिला मण्डल

स्त्री—शिक्षा

★

ससार की दौड़ मे आज स्त्रियां कितने वेग से बढ़ी हैं इसका पता उनकी केवल ७० ७५ वर्ष पुरानी हीनावस्था से लगानी चाहिए। आज से कुछ साल पहले समस्त ससार मे कोई भी देश व धर्म ऐसा न था जिसम स्त्रियो को पुरुषो के गुलाम से अधिक कुछ समझा जाता हो।

उनको तरह तरह से घृणा सूचक एव निन्दनीय सज्ञायो मे पुकारा गया। स्वतन्त्रता ले लिया गया। उनको सर्वथा सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक व शिक्षा आदि आदि उपयोगी विषयो से पृथक् रखा गया। यह दुःख की बात है। ऐसे छोटे काम को करने वाले केवल मूर्ख ही होते तो दुःख की बात न थी। वल्कि बड़े बडे लेखको कवियो ने भी इस दिशा मे अपना कदम बढ़ाया है।

देखिए, मैं यहां उदाहरणार्थ दो, चार कवियो एव लेखको की समति दे रहा हू—

भारत के प्रसिद्ध कवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा—"ढोल, गवांर, शूद्र, पशु, नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी।"

अब सन्तवर कवीरदास जी का कथन सुनिए, वे ऐसा लिखकर "स्त्री की छाया पड़त अन्धा होत भुजग।' अपमान किया। तो किसो ने 'स्त्री शूद्रौ नाधीयतामिति श्रुतेः।" अर्थात् स्त्री और शूद्र न पढ़े यह श्रुति है लिखा।

अब आप यहां से बाहर (विदेश) की ओर भी देखें—

सेन्ट पीटर ने स्त्रियो को "मनुष्य जाति का अभिशाप' कहा है। सेन्ट एन्थनी ने स्त्री को "शैतान का हाथ" और स्त्री की आवाज को 'सांपिनी की आवाज' कहा है। सेन्ट साइपियन कहता है कि 'स्त्री वह हथियार है जिसके द्वारा शैतान हमारी आत्माओ पर अधिकार करता है।' सेन्ट जेरोम कहता है—"स्त्री जाति शैतान का प्रवेश द्वार और बिच्छू के डक के सदृश है।" सेन्ट जोहन डेमेस्कीन का कहना है—"स्त्री जाति झूठ की बहन है, नरक की सन्तरी है, शान्ति की दुश्मन है। भयंकर से भयकर जानवर से अधिक भयंकर है।" सेन्ट जार्ज दिमेंट लिखता है—"स्त्री जाति अजगर की तरह नरभक्षिणी और परदार सांप की तरह जहरीली है।"

आंग्ल कवि मिल्टन ने तो ईश्वर भक्ति और पूजा करने का अधिकार भी स्त्रियों से छीन लिया था। आपका कहना था—यदि स्त्री परमात्मा को प्रसन्न करना चाहे, तो पुरुष द्वारा ही वह ऐसा करे।

इस प्रकार से अनेक लोगो ने स्त्रियो को सदा महानीच, अपवित्र समझा।

उनकी दृष्टि मे विश्व की पहली सता पार्वती, सती साध्वी महारानी सीता, उर्मिला, गन्धारी, अनसूइया आदि का आदर्श ही न सूझा। पुराणों मे आया है पार्वती ओंकार सहित वेदों का पाठ करती थी। बाल्मीकिय रामायण म आया है—हनुमान लका मे जाकर सोचते है किस प्रकार से महारानी सीता से मिलू। अन्त मे निर्णय करते है—अच्छा इस सरोवर पर बैठता हू अगर यहाँ सीता होगी तो अवश्य सन्ध्या करने आवेगी।" भला, अब बतलाइये बिना पढ़ लिखे कौन वेदो का पाठ कर सकती है? कौन सध्या कर सकती है?

अत. वैदिक काल का साहित्य स्त्रियो की उन्नत अवस्था एव शिक्षा का साक्षी है। देखिए, भास्कराचार्य की पुत्री लीलावती बचपन मे ही विधवा हो गयी थी, बाद मे उसके पिता ने गणित और दर्शन की शिक्षा उसे दी। गणित सम्बन्धी आविष्कार अब भी उसका विश्व विख्यात है। प्राचीन भारत का प्रसिद्ध ज्योतिषी वार्षमित्र एक स्त्री का ही शिष्य था। महाभारत मे राजा प्रधान की विदुषी लड़की सुलभा की कहानी आती है। उसे अपने समान कोई विद्वान् ही नहीं मिला इसलिए उसने विवाह ही नहीं किया। स्कन्द पुराण मे मन यावती की स्त्री का जिक्र आता है। यह दुर्वासा को शिष्या थी। एक और मलयावती सम्राट शालिवाहन की पत्नी, जो भाषा विज्ञान की विदुषी थी। सघमित्रा अशोक की आज्ञा से सीलोन गई थी, और वहाँ उसने दर्शन शास्त्र पढ़ाने के लिए कालेज खोला था। मण्डन मिश्र की पत्नी 'भारती' की विद्वता का परिचय किसको नहीं है जो शकराचार्य के टक्कर मे आयी थी। अभी अभी रजिया बेगम, चादबीबी, इन्दौर की अहिल्याबाई तथा झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम भला कौन भूल सकता है?

उपर्युक्त प्रमाणों को देकर मैं स्त्री शिक्षा और उनके विकाश का निषेध करने वालो से यह पूछता हूं कि वे कृपया बतलावें कि उपर्युक्त स्त्रिया शिक्षिता थीं या मूर्खा? यदि कहो कि शिक्षिता थी, तो पुन स्त्री शिक्षा निषेध तुम क्यों करते हो?

—राम एकबाल शर्मा, चतुर्भुजबरांव शाहबाद, विहार

सत्याग्रह समाप्त होते होते सात वीर और शहीद हो गये

पंजाब की रणचण्डी अभी और बलिदान चाहती है

पंजाब में हिन्दी सत्याग्रह में पिछले सात मासों में आठ वीर बलिदान हो चुके थे और सोल्लास सद्भावना पूर्ण वातावरण में सत्याग्रह समाप्ति की ओर जा रहा था। कल पहली जनवरी को ढाई सौ सत्याग्रहियों का अन्तिम जत्था अम्बाला जेल से छूटकर प्रातः कालीन पैसेन्जर गाड़ी से देहली आ रहा था। अम्बाला के निकट मोहरी स्टेशन पर हुई भयंकर ट्रेन दुर्घटना मे जिन व्यक्तियों की मृत्यु हुई है उनमें सात हिन्दी सत्याग्रही भी संसार से चल बसे। छूटते समय अद्भुत उत्साह और प्रसन्नता सबके चेहरों पर नाच रही थी। पर किसी को क्या पता था पंजाब की रणचण्डी अभी प्यासी है। आठ वीरों की बलि लेकर भी वह तृप्त नहीं हुई

सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के प्रचार मन्त्री श्री प्रकाशवीर शास्त्री जो समाचार मिलते ही समिति के कार्यकर्ता प्रधान श्री प० नरेन्द्र जी और श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी एव आचार्य वाचस्पति जी आदि महानुभावों सहित घटना स्थल पर पहुँचे उन्होंने अपने वक्तव्य मे कहा यदि कैरों सरकार ने समिति के प्रधान श्री घनश्यामसिह जी गुप्त की सत्याग्रह स्थगित होने की घोषणा के अविलम्ब बाद ही सब सत्याग्रही रिहा कर दिये होते तो यह वीभत्स कांड न होता, चार बजे प्रात. गाड़ी चलते समय अम्बाला स्टेशन पर ब्रह्ममुहूर्त मे हुई जय-जयकार कुछ मील आगे बढ़ते ही हाहाकार में बदल गई। मध्यप्रदेश और राजस्थान के सात बड़े हृष्ट पुष्ट युवक जो आगे बैठे थे बुरी तरह कुचल कर समाप्त हो गये सत्तरह अधिक घायल है जिनमें दो की स्थिति चिन्ताजनक है। घायलों को देखने भाषा स्वातन्त्र्य समिति के प्रधान श्री घनश्यामसिह जी गुप्त भी आज अम्बाला गये है अब इस तरह पंजाब सत्याग्रह मे १५ वीर बलिदान हो गये, जनवरी को सारे भारत मे मृतात्माओं की सदगति के लिये प्रार्थनाये होगी।

—प्रकाशवीर शास्त्री
प्रचार मन्त्री
सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति

आर्य समाज मरधना

प्रधान—डा० रघुवीरसिंह
उप प्रधान—श्री विद्यावती जी
उप „ श्री रघुवीरसिंह
मन्त्री—श्री प्रियव्रत शास्त्री
उप मंत्री— श्री विमलादेवी
कोषाध्यक्ष—श्री अतरसिंह
उप „ आनन्द प्रकाश

अम्बाला रेल दुर्घटना

अम्बाला के निकट रेलवे की भयंकर दुर्घटना के दुःखद समाचार आर्य जनता को अब तक प्राप्त हो गये होंगे। समस्त आहतों और मृतकों के परिवारों के प्रति हमारी हार्दिक सहानुभूति है, इस दुर्घटना में हमारे ७ सत्याग्रही वीरों की जानें गई और १७ आहत हुए। अम्बाला से दुर्घटना ग्रस्त पेंसेन्जर से लगभग २०० सत्याग्रही जेल से मुक्त होकर आ रहे थे। परमात्मा की कृपा से उपर्युक्त को छोड़ कर शेष सब सुरक्षित है और आहत भी खतरे से बाहर है जिनकी अम्बाला के अस्पतालो मे चिकित्सा हो रही है। मृत बन्धुओं का दिनांक १-१-५८ को सायकाल वैदिक पद्धति से दाह-संस्कार कर दिया गया। संस्कार के समय हजारो आर्य नरनारी हिन्दी प्रेमी तथा अन्यान्य जन उपस्थित थे। संस्कार सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के कार्यकर्ता प्रधान, श्री पं० नरेन्द्र जी, प्रचार मन्त्री श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री, सार्वदेशिक आर्य वीरदल के प्रधान सेनापति श्री ओम्प्रकाश जी पुरुषार्थी, अद्भुत पं० वाचस्पति जी शास्त्री, अम्बाला के प्रिंसिपल भगवान दास जी आदि आदि आर्य नेताओ की देख रेख मे सम्पन्न हुआ। ये चारो महानुभाव घटना की सूचना मिलते ही दिल्ली से टैक्सी द्वारा घटना स्थल पर पहुँच गये थे। आहतों से भी मिले और उन्हे सान्त्वना दी।

समस्त आर्य समाजों को अपने अपने साप्ताहिक सत्सगों में मृत सत्याग्रहियो के प्रति श्रद्धांजलि प्रस्तुत करनी चाहिए और आहतो के शीघ्रातिशीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिए सामूहिक प्रार्थना करना चाहिए।

—राम गोपाल
मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नया बाजार, दिल्ली—६

देश के कोने-कोने में श्रद्धानंद बलिदान दिवस

२५ दिसम्बर को देश के कोने-कोने मे अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस समारोह सहित मनाया गया। इस अवसर पर प्रभात फेरी, जलूस, सभा इत्यादि आयोजित किए गए। प्रमुख स्थानों के नाम निम्न हैं।

१ आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली
२ „ चन्द्रनगर लखनऊ
३ „ सम्भल मुरादाबाद
४ „ गया, बिहार
५ „ नारा० स्वामी भवन, लखनऊ
६ „ गवां, बदायू
७ „ भमुआ, बिहार
८ „ आजमगढ़

दान के सुपात्र और कुपात्र

—ऋषि दयानन्द

जो ब्रह्मचारी, जितेन्द्रिय, वेदादि, विद्या के पढ़ने पढ़ाने वाले सुशील, सत्यवादी, परोपकारप्रिय, पुरुषार्थी, उदार, विद्या, धर्म की निरन्तर उन्नति करने वाला, धर्मात्मा, शांत निन्दा स्तुति में हर्ष शोक रहित, निर्भर, उत्साही, योगी, ज्ञानी, सृष्टिक्रम-वेदाज्ञा ईश्वर के गुण कर्म स्वभावानुकूल व्यवहार करने वाले, न्याय की रीतियुक्त, पक्षपातरहित सत्योपदेश और सत्य शास्त्रों के पढ़ने पढ़ाने वाले के परीक्षक, किसी की लल्लो चप्पो न करें, प्रश्नों के यथार्थ समाधानकर्त्ता, अपने आत्मा के तुल्य अन्य का भी सुख-दुख, हानि लाभ समझाने वाले अविद्यादि क्लेश हठ दुराग्रह रहित, अमृत के समान अपमान और विष के समान मान को समझने वाले सन्तोषी, जो कोई प्रीति से जितना देवे उतने ही से प्रसन्न, एक वार आपत्काल में भी मांगे (पर) न व वर्जने पर भी दुःख व बुरी चेष्टा न करना, वहाँ से झट लौट जाना, उस की निन्दा न करना, सुखी पुरुषों के साथ मित्रता, दुखियों पर करुणा, पुन्य आत्माओं से आनन्द, और पापियों से उपेक्षा, सत्यमार्गी, सत्यवादी सत्यकारी निष्कपट, ईर्ष्या द्वेष रहित, गम्भीराशय, सत्यपुरुष धर्म से युक्त और सर्वथा दुष्टाचार से रहित, अपने तन मन धन को परोपकार मे लगाने वाले. पराये सुख के लिए अपने प्राणों को भी समर्पितकर्ता आदि सुपात्रों को परोपकारियों को परोपकारार्थ सोना. चांदी, हीरा. मोती, माणिक अन्न. जल, स्थान, वस्त्रादि दान करना अवश्य उचित है।

किन्तु जो छली, कपटी, स्वार्थी, विषयी, काम क्रोध लोभ मोह से युक्त पर हानि करने वाले, मिथ्यावादी अविद्वान्, कुसंगी. आलसी, जो कोई दाता हो उससे बार बार मांगना, सन्तोष न होना, जो न दे उसकी निन्दा करना, शाप और गाली आदि देना, अनेक वार सेवा करे और एक वार न करे उसका शत्रु बन जाना, साधु का भेष बना कर लोगों को ठगना, सबको फुसलाकर स्वार्थ सिद्ध करना, रात दिन भीख मांगने में ही प्रवृत्त रहना, निमन्त्रण पर भंग आदि मादक द्रव्य खा पीकर बहुत सा पराया धन व्यर्थ करना, पुनः उन्मत्त होकर प्रमादी होना सत्यमार्ग का विरोध और झूठ मार्ग में अपने प्रयोजनार्थ चलना, वैसे ही अपने चेलों को केवल अपनी ही सेवा करने का उपदेश करना जगत के व्यवहार अर्थात स्त्री, पुरुष, माता, पिता, संतान, राजा, प्रजा, इष्ट मित्रों में अप्रीति करना कि ये सब असत्य है और जगत् भी मिथ्या है। इत्यादि दुष्ट उपदेश कर्ता कुपात्रों को कभी दान न देना चाहिए।

—विजेश्वर दयालु, [illegible]

"समाजें सावधान रहें"

दिनांक ३०-१२-५७ को एक आदमी यहाँ समाज में आया जिसका रंग काला, कद कुछ लम्बा सा है। अपना नाम हरीसिंह बताया, उसने कहा कि मैं हिन्दी सत्याग्रह में जेल गया था और फिरोजपुर जेल में मुझको चोट लग गई थी। मैं अस्पताल में इलाज कराता रहा। अच्छा होने पर अपने घर बिहार जा रहा था। परन्तु रास्ते में मेरी जेब से मेरे रुपये निकल गये। अतः मुझे सहायता दी जावे। उसकी बाईं बाह में चोट थी और उसके पास दो टाइप किये हुये प्रमाण पत्र भी थे, एक श्री रामगोपाल जी मन्त्री सार्वदेशिक का और दूसरा मन्त्री आर्यसमाज अम्बाला का था, दोनों पर उसका फोटो लगा था और मुहर लगी हुई थी। अतएव सहायता के रूप में उसको शिकोहाबाद से कानपुर तक का टिकट खरीद कर दे दिया गया परन्तु ट्रेन आने पर वह उसमें सवार नहीं हुआ और बहाना करके रह गया। बाद को बुकिंग क्लर्क के पास पहुँचा और टिकट वापिस करके दाम लेकर चम्पत हो गया। ऐसा जान पड़ता है कि उसके पास प्रमाण पत्र जाली है, और वह समाजों को ठगता फिरता है, अतः सब समाजें उससे सावधान रहें।

—सरदारसिंह
मंत्री आर्य जिला उप सभा मैनपुरी

सत्याग्रही लापता

श्री अभेदचन्द्र गर्ग उर्फ सतीशचन्द्र पिता का नाम बाबू देवकीनन्द गुप्ता हेड मास्टर नजीबाबाद जिला बिजनौर उम्र २१ वर्ष जो हिन्दी सत्याग्रह मे भाग लेने के लिए बिजनौर से १२ नवम्बर १९५७ को गए थे उनका अभी तक कुछ पता नहीं चला कि वे किस जेल में रहे। अभी तक घर भी नहीं आए। अतः इनके सम्बन्ध मे जिस आर्य बन्धु को पता चले वे बाबू देवकीनन्द नजीबाबाद के पते पर सूचित करें। —श्री प्रकाशचन्द्र शास्त्री
प्रधान, आर्य समाज
विनय नगर नई दिल्ली।

आ० स० सिरसी

प्रधान—श्री ओम्प्रकाश आर्य
उप „ श्री बनारसीदास
मन्त्री—श्री यशपाल शरण
उप „ श्री वृजानन्द जी
कोषाध्यक्ष०—श्री मन्नुलाल
पुस्तका०—अभयपाल जी

[पृष्ठ ४ का शेष]

भील भिलाला

गत निर्वाचन क्षेत्र से भील तथा भिलालों को आदिवासी मानकर प्रायः भील क्षेत्र से भीलाले इच्छुक व्यक्ति खड़े हुए थे और शासकों द्वारा भीलाले इच्छुकों को स्वीकृति दी गई तथा निर्वाचन विजित इनको घोषित किया गया है।

जैसे भीलों की संस्कृति, समानता आर्यों से मिलती है, उससे भी कहीं अधिक अंश में भीलालों की संस्कृति आर्य संस्कृति से बनी है, ऊपर जिस प्रकार से आर्य भाषा आदि से भीलों की संस्कृति बतलाई है, वे सारे गुण व आचार निष्ठा भिलाला जाति में वर्तमान हैं। इसमें अनेकानेक मौलिक सामन्त हैं, और वे स्वयं भी अपने आपको राजपूतों का आवान्तर भेद प्रकट करते हैं। इनके गोत्र राजपूती थे केवल कथन मात्र के लिए ही नहीं रहे किन्तु इन भीलालों सामन्तों के विवाह सम्बन्ध गुजरात के राजपूतों से हो चुके हैं और इनको राजपूतों का आवान्तर भेद मात्र माना है। हिंदुओं के सब विश्वासों के साथ साथ महादेव अर्थात् शिव प्रतिमा पूजन की परम्परा विश्वासधारा आज भी इनमें विद्यमान हैं।

इनके महादेव को ये ओंकारेश्वर के नाम से सम्बोधित करते हैं, जो वेदशास्त्र और उपनिषदों से अनुमोदित मुख्य नाम ईश्वर का ओम् है, उसी ओम् के ये उपासक हैं, प्रतिमा पूजन जो भी पौराणिक काल की कल्पना है, किन्तु ओंकार का जय, तप, नाम स्मरण, प्राचीन वेद मर्यादा है। ये जब कभी परस्पर मिलते है, "जै ओंकार की ही करते हैं" बोलते है इनका इष्ट देव, ओंकारेश्वर महादेव, नर्मदा नदी के किनारे महू स्टेशन से बड़वाय को जाने वाली लाइन पर है, बड़वाय से ६ मील दूर, इधर मोरटक्का स्टेशन से २२ मील दूर ओंकारेश्वर महादेव का मन्दिर है, और शनैः शनैः उपचारित गाँव का नाम भी ओंकारेश्वर पड़ गया है, जो कि नर्मदा तट पर बसा हुआ है, वहां जाकर नर्मदा तट पर एक भव्य पुलिन है, और उस पुलिन में श्री ओंकारेश्वर देव का मन्दिर नीचे के खण्ड मे और द्वितीय उपरी खण्ड में महाकालेश्वर की शिव प्रतिमा है, उज्जैन में नीचे के खण्ड में महाकालेश्वर और ऊपर के खण्ड में ओंकारेश्वर की मूर्ति स्थापित है।

ओंकारेश्वर मन्दिर नर्मदा तट पर की मूर्ति स्थापना काल प्राचीन है यह मन्दिर भील भिलाला जाति की निज स्थापना व स्वामित्व का प्रतीक माना जाता है, इस ग्राम और मन्दिर की आय वहां के भिलाले कुलोत्पन्न सामन्तों के आधीन हैं। किसी समय राजा का पद इनको था, तात्पर्य यह है कि काशी के विश्वनाथ, गुजरात के सोमनाथ, और अवन्तिकापुरी के महाकालेश्वर के समान ही यह ओंकारेश्वर तीर्थ हिंदुओं में आदर और पूज्य बुद्धि से देखा जाता है। महाराणा उदयपुर की परम्परा स्थापित एक लिंग महादेव जी की मूर्ति उदयपुर से हल्दी घाटी जो कि वहां से ३३ मील दूर है उसके मध्य में बसा हुआ है। इन सब महादेवों की स्थापना का काल कुछ कुछ ही अन्तर से होना चाहिये।

इतने काल से परम्परागत हिन्दू संस्कृतियों के अभिमानियों को हिंदुओं से पृथकिय करण की कल्पना अतुक्त है।

ये कल्पना कि ये आदिवासी और आर्य बाहर से आये हुए विदेशी थे, अंग्रेज विदेशी इतिहासकारों की ही है और तथ्य प्रमाण इसमें कुछ भी नहीं है। सन् १२ और १४ की जनगणना के अध्यक्ष मि० गेट दलित जातियों को हिंदुओं से भिन्न मानकर अङ्ग-भङ्ग करना करवाना चाहते थे। वैसी ही भूल यह भयंकर होगी कि हम भील एवं भीलालो को हिन्दू इतर घोषित करें।

आज इतर जाति और आदिवासी भिन्न घोषित करने का विषमय और घातक परिणाम यह हो रहा है कि नीमाड़ प्रांत में भील भीलाले अकाल ग्रस्त होने के कारण ईसाई डाक्टर रोटियों के पंजों से ग्रसित हो रहे है। क्रिश्चियनटी के प्रचार के ही कारण अहिंदू होने का प्रमाण शासन व्यवस्था से देते है। जो कभी कालान्तर मे जाकर एक महान् विष वृक्ष का रूप न बन जांवे।

अतः वेद भक्तों एवं राष्ट्रहितेच्छुकों से नम्र प्रार्थना है कि इन्हे हिन्दू इतर घोषित करने और आदिवासी उच्चारित शब्दों का व्यवहार करने से पूर्व न्याय ऐतिहासिक सत्यता वर्तमान आचार, व्यवहार का विचार अवश्य कर लें।

द्वारा हिन्दी का विरोध एक राजनैतिक चाल है

भारत के प्रसिद्ध मान्य राजनैतिक नेता राजगोपालाचार्य द्वारा राष्ट्र भाषा हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी को भारत की राष्ट्र भाषा बनाने के निमित्त एक संघर्ष समिति की स्थापना का समाचार पढकर आज देश का प्रत्येक देशभक्त आश्चर्य चकित एवं दुःखी हो रहा है। उनकी समझ मे नहीं आ रहा है कि जिस व्यक्ति ने एक बार दक्षिण में हिन्दी के प्रचारार्थ बडा ही प्रशंसनीय सहयोग प्रदान किया था वही आज इसके विपरीत क्यो है? उन्हे ज्ञात होना चाहिए कि वर्तमान भौगवादी आर्थिक युग मे धर्म, सत्यता व सत्याचरण की बात सोचना व करना कोरा मूर्खता है। राज्यो व प्रान्तों के आपसी सम्बन्धो की तो बात दूर आज माता पिता, भाई, बहिन आदि मानवीय सम्बन्ध भी अर्थ पर आधारित हो गए है। श्री राजाजी भी यदि राष्ट्र भाषा हिन्दी की आड मे उत्तरी भारत का दक्षिण पर साम्राज्य देख रहे है तो इसमे आश्चर्य की कौन सी बात है। मेरी दृष्टि मे श्री राजाजी ने निम्न कारणो से हिन्दी विरोधी नीति अपनाई है

१ श्री रामस्वामी नायकर जी के नेतृत्व मे द्राविड कलघम नामक संस्था ने दक्षिण के ब्राह्मणो को उत्तरी भारत के एजेण्ट बतलाकर उनके विरुद्ध जहाद बोल रखा है। अत ब्राह्मण होने के नाते राजाजी ने दक्षिण भारत के ब्राह्मणो की रक्षार्थ यह नया स्वांग खेला है। हिन्दी भाषा का विरोध करके वे द्राविड कलघम के सदस्यो को सिद्ध करना चाहते है कि उत्तरी भारत का विरोध करने मे दक्षिण के ब्राह्मण भी उनके साथ है। ... आशा है कि ... द्राविड कलघम के लोग ब्राह्मणो के विरुद्ध अपने जहाद ... भूलकर साथ मिल ... और केवल उत्तर भारत के विरुद्ध जहाद का नारा लगायेंगे।

२—राजाजी का विचार है कि यदि हिन्दी राष्ट्र भाषा हो गई तो उत्तरी भारत के लोग केन्द्रीय सरकारी नौकरियो की प्राप्ति मे दक्षिण के लोगो से अग्रसर हो जायेंगे।

३—राजाजी प्रारम्भ से ही राष्ट्र की एकता के विरोधी है। आप ही भारत के वह प्रथम व्यक्ति है कि जिसने सर्वप्रथम मि० जिन्ना की पाकिस्तान सम्बन्धी माग का समर्थन किया था। अनुमानत आप चाहते है कि भारत भिन्न भिन्न क्षेत्रो मे विभाजित हो जाय और केन्द्र मे एक संघीय सरकार का निर्माण हो। इस आधार पर आपकी अभिलाषा है कि समूचे दक्षिण भारत की एक सरकार हो और वह कुछ बातो मे पूर्ण स्वतन्त्र हो जाय। हिन्दी के विरोध के पीछे उनकी यही भावना काम कर रही है। अत राजाजी की दृष्टि मे भारतीय राष्ट्र की एकता व सुरक्षा नही अपितु केवल दक्षिण भारत के कुछ राजनैतिक स्वार्थ है।

मैं राजाजी से करबद्ध प्रार्थना करना चाहता हू कि उन्हे अपने को दक्षिण भारत का नेता न मानकर समूचे भारत का नेता समझकर ही सोचना विचारना व आचरण करना चाहिए। प्रत्येक देश की अपनी संस्कृति होती है और उसके प्रचार व प्रसार का एक मात्र साधन होता है उस देश की भाषा। भारत की भी एक संस्कृति है और प्रचार व प्रसार का साधन है संस्कृत व हिन्दी भाषा। अंग्रेजी किस प्रकार भारत की संस्कृति का वाहन बन सकती है मेरी समझ मे नहीं आया। इसके अतिरिक्त प्रजातन्त्र के अनुसार भारत मे केवल २ प्रतिशत ही लोग अंग्रेजी जानते है फिर अंग्रेजी किस प्रकार देश की राष्ट्र भाषा बन सकती है।

दक्षिण भारत के लोग केन्द्रीय नौकरियो मे उत्तरी भारत के लोगो से पिछड जायेंगे यह भी आपकी कोरी निराधार है। दक्षिण के लोगो की भाषा संस्कृतमय है अत हिन्दी भाषा उनके लिए कठिन नही। मेरा दृढ विश्वास है कि शीघ्र ही वह दिन आयेगा जबकि दक्षिण के लोग अंग्रेजी की भांति हिन्दी मे भी उत्तरी भारत के लोगो से अग्रसर हो जायेंगे। अत राजाजी केवल कुछ राजनैतिक स्वार्थों के लिए देश की एकता सुरक्षा व ... मे बाधक न बने और न ... उनसे ऐसी आशा ...

—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी
प्रधान संचालक
मार्गदर्शक आर्य वीर दल जिला

सीतामढी मे हिन्दी सत्याग्रह की सभा

स्थानीय आर्य समाज की ओर से यहाँ हिन्दी सत्याग्रह के सम्बन्ध मे एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमे हिन्दी रक्षा समिति विहार के उप मंत्री श्री नारायण शास्त्री का ओजस्वी भाषण हुआ। यहा की जनता ने हिन्दी सत्याग्रह के लिए शास्त्री जी का ५०५) की थैली भेंट की।

—ब्रह्मदेव नारायण

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज सीतामढी ने एक प्रस्ताव द्वारा उन सात हिन्दी सत्याग्रहियो के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट किया जो १जनवरी को अम्बाला के समीप ट्रेन दुर्घटना मे परलोक सिधार गये।

आ० स० नारायण स्वामी भवन, लखनऊ तथा हिन्दी रक्षा समिति लखनऊ ने भी इस सम्बन्ध मे एक प्रस्ताव द्वारा उन बलिदानियो के आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना किया।

आ० स० फैजाबाद

प्रधान—श्री महावीरसिंह जी
उप प्रधान—श्री मदनमोहन वर्मा
„ श्री रामइकबालसिंह
„ श्री दिनेश वर्मा
मन्त्री—श्री जगदीश्वरीप्रसाद
उप मन्त्री—श्री कन्हैयालाल
„ श्री केदारनाथ
„ श्री चितरंजन नरेश
कोषाध्यक्ष—श्री सूर्यप्रसाद वर्मा
पुस्तकाध्यक्ष श्री मंगली प्रसाद
निरीक्षक श्री भगवती प्रसाद

'रामचरित मानस' में वर्णित कथा के अनुसार जब भगवान राम और लक्ष्मण विश्वामित्र जी के साथ जनकपुर के लिए प्रस्थान कर रहे थे उस समय विश्वामित्र जी ने भगवान रामचन्द्र से आदर पूर्वक समझा कर कहा कि एक चरित्र का अवलोकन कर देखिये।

तब मुनि सादर कहा बुझाई।
चरित्र एक देखिए प्रभु जाइ॥
धनुष यज्ञ सुनि रघुकुल नाथा।
हर्षि चले मुनिवर के साथा॥

उन्होंने मार्ग में एक आश्रम देखा जहाँ कोई खग मृग जीव जन्तु नहीं थे। विश्वामित्र जी ने भगवान राम से बताया कि शापवश गौतम ऋषि की स्त्री अहल्या शिला बनकर पड़ी हुई है वह आपके चरण कमल की रज चाहती है आप कृपा कर उसे चरण रज दीजिए।

गौतम नारी शापवश
उपल देह धरि धीर।
चरण कमल रज चाहत
कृपा करहु रघुवीर।

आगे की कथा से ... भगवान रामचन्द्र के पावन चरण के रज के स्पर्श से वह पत्थर की शिला से रूप में परिवर्तित हो गई। ... साहित्य की ... रचनाओं में अहल्या की कथा किसी न किसी रूप में मिलती ... अहल्या का चरित्र गया ... हम वाल्मीकि रामायण में ... की कथा पर ... करते हैं तो ... है कि वह अपने पति ... शिला न बनकर ... थी और अपने ... राम के आगमन तक ... था।

वातभक्षा निराहारा ... भस्मशायिनी अदृश्या सर्वभूतानामाश्रमेऽस्मिन् वसिना

राम के आश्रम से शाप की अवधि समाप्त हो गई अहल्या अतिथियों का स्वागत करने बाहर निकली। उसे देखकर राम और लक्ष्मण ने उसके पैर छुये।

शापस्यान्तमुपागम्य
तथा दर्शनम् गता।
राघवौ तु तदा तस्या
पादौ जगृहतुर्मुदा॥

जैसा रामचरितमानस से उदाहरण देकर हमने पहले ही वर्णन कर दिया है क्रमश अहल्योद्धार की कथा में परिस्थिति के अनुकूल शनै शनै परिवर्तन होता गया और अहल्या शाप वश शिला बनकर राम पद रज के पुण्य प्रसाद से पुन स्त्री रूप में परिवर्तित हो गई। अहल्या की कथा

वह सती-साध्वी अहल्या जिसके तपमय जीवन ने उसे शिला बना दिया

(श्री नानकप्रसाद एम०ए० बी०टी० साहित्यरत्न प्रधान आ० स० गया)

का यह रूप सब प्रथम रघुवंश में पाया जाता है आगे चल कर नृसिंह पुराण स्कन्दपुराण पद्मपुराण आनन्द पुराण गीतावली तथा सत्योपाख्यान ... ग्रन्थों में भी यही कथा दृष्टिगोचर होती।

अध्यात्म रामायण में ... के शिला बन जाने का ... नहीं प्राप्त होता। वह ... होकर ... पर वहाँ होकर परमात्मा का ध्यान करती हुई ... भगवान राम में शिला का ... स्पर्श करते ... राम की स्तुति करती है। इस प्रकार अध्यात्म रामायण की कथा में साक्षात नारायण राम की स्तुति का महत्व दिया गया है ... प्रारम्भ में ही संकेत किया ... राम चरित मानस के काल तक अहल्या वास्तव में शिला बन गई।

... राम कथाओं में ... का वर्णन राम के बनवास ... समय किया गया है। ... महानाटक में अगस्त्य आश्रम से चल जाने के पश्चात राम ने अहल्या का उद्धार किया। ... रामायण में अरण्यकाण्ड के प्रारम्भ में भगवान राम ने सीता से अहल्या का परिचय कराया। ... रामायण में अहल्योद्धार ... रूप प्राप्त होते हैं प्रथम अध्यात्म रामायण के अनुसार राम के मिथिला जाते समय और ... राम ... समय। इसमें अहल्या ... के शाप से ... हो गई थी।

... स्थान अहल्या गौतमशापत ... रामेण भ्रमतारण्य ...

स्कन्दपुराण की कथा में ... सम्प्रदाय का प्रभाव ... पड़ता है। ... अंगुष्ठ ... हाथ से शिला को छूकर अहल्योद्धार किया। साथ ही ... तथा ... यात्रा करने का आदेश भी दिया। ... ने ऐसा ही किया भी और अनेक तीर्थों की यात्रा किया

नाटककारों ने अहल्योद्धार ... कथा में बड़ा फेर बदल कर दिया है। जानकी परिणय में सीता स्वयम्वर के पूर्व एक माया सीता के प्राण का संकट में देखकर भगवान राम के आत्महत्या करते समय उनके स्पर्श से एक चट्टान से प्रकट होकर अहल्या ने राम को राक्षसी माया से परिचित कराया।

अहल्या की कथा ... एक दूसरा रूप भी प्राप्त होता है ... उसके अनुसार ... गौतम तथा अहल्या को पत्नी माना ... अपने ... छिपाना ... गौतम ने ... दिया ... अपनी ... शाप ... दिया

... सरस्वती ने ... कथा ... सूर्य ... रात्रि ... तथा चन्द्रमा ... यहाँ रात्रि ... के समान रूपक ... चन्द्रमा अपनी स्त्री रात्रि से सब प्राणियों को आनन्दित करता है ... अर्थात् ... रात्रि ... मनोरूप ...

और रात्रि भी साथ साथ रहते हैं। चन्द्रमा का नाम गौतम इसलिए है कि वह अत्यन्त वेग से चलता है और रात्रि का अहल्या इसलिये कहते हैं कि उसमें दिन लय हो जाता है। सूर्य रात्रि को निवृत कर देता है। इसलिए वह उसका जार कहा जाता है।

यह है अहल्या गौतम इन्द्र सम्बन्धी कथा का ... स्वरूप ... में निहित है। सम्भवत इस सूत्र ने ही ... कल्पना ... के आधार पर ... में कथा का परिवर्तन ... कर लिये ... हमारी समझ में राम काल में भी गौतम ऋषि थे जिनकी स्त्री अहल्या थी परन्तु किसी कारण वश वह परित्यक्ता थी। भगवान राम द्वारा ... तपमय अथवा कष्टमय जीवन ... तथा ... दान द्वारा ... और वह ... संसार में ... भगवान राम मर्यादापुरुषोत्तम ... महान् ... उस ... समय में ... समय ... जीवन ... था। पर ... शिला ... बना ...

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष : ५११३ तार : 'आर्यमित्र'

आ० स० सिकन्दराबाद

२३ १२ ५७ को श्री छेदालाल जी के यहाँ एक चूडाकर्म संस्कार सम्पन्न हुआ ।

आ० स० बेतिया, चम्पारण

प्रधान—श्री गम्भीरसिंह शिक्षक
उपप्रधान—श्री कन्हैयालाल जायसवाल
मन्त्री—श्री रतिराम इन्दोरिया
स० मन्त्री—श्री पारसनाथ गुप्त
स० मन्त्री—मजनलाल झुनझुनवाला
कोषा०—जानकी राम

आ० स० इगलास

इस समाज का ४६ वां वार्षिकोत्सव २५, २६, २७ जनवरी ५८ का मनाया जायगा ।

आ० स० बाजपुर

प्रधान—श्री लक्ष्मीनारायण
मन्त्री—,, प० गगाप्रसाद परमार्थी
कोषा०—,, प्रेमराज

आ० स० सतना

प्रधान—श्री तीरथराम जी
उपप्रधान—श्री धर्मदास जी सिंधी
,, —श्री मती राजरानी देवी
मन्त्री—श्री जवाहरलाल सर्राफ
उपप्रधान—श्री जगन्नाथ जी आर्य
कोषा०—श्री शिवप्रसाद केसरवानी
निरीक्षक—श्री सूरजदेव जी

समाजों का निरीक्षण

श्री विश्वनाथ आर्यवीर ने आर्य समाज खतौली, जनसठ तथा कैराना का निरक्षण किया ।

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित ।

हिन्दी भाषा की सार्वभौमिकता

(श्याम प्रकाश आर्य लखनऊ)

राष्ट्र एव राष्ट्रभाषा की उन्नति एक मुद्रा के दो पार्श्व के समान है क्योंकि किसी देश की उन्नति एव विकास के लिए मूल एकता की आवश्यकता होती है एकता को स्थापित रखने के लिए उनके मूल विचारों का एक होना आवश्यक है मूल विचारो की एकता के सूत्र मे गठबन्धन करने के लिये एक स्वदेशीय राष्ट्रभाषा का होना अति आवश्यक है तथा इसी के बल पर राष्ट्र उन्नति कर सकता है।

राष्ट्रभाषा के नाम पर मर मिटने वाले शहीदों ने उसकी रक्षा का तो भरसक प्रयत्न किया पर उन्नति के उपाय पर अभी कोई ध्यान नहीं दिया गया। आर्थिक विकास योजनाओं की भाँति उन्हे चाहिये कि वे भाषा के क्षेत्र को विस्तृत करने की योजनाये तैयार करे केवल साहित्य गोष्ठी, उत्सव व चाय पार्टी से काम नहीं चल सकेगा।

पचवर्षीय योजनाओं मे यह तय कर लेना चाहिये कि प्रत्येक कार्यकर्ता कितना कार्य करेगा तथा इससे अधिक कार्य करने वाले को यह पुरस्कार दिया जायगा इस तरह से कार्यकर्ताओ मे स्पर्धा का होना भी आवश्यक है। योजनाओ म बगाल, मद्रास, आन्ध्र, मैसूर, केरल तथा असाम इन राज्यों के लिये अलग अलग शिविरो का निर्माण किया जाय तथा प्रत्येक राज्य के लिये एक प्रधान कार्यालय बनाया जाय और प्रत्येक राज्य मे कम से कम सौ कार्यकर्ता अवश्य रखे जाये। प्रत्येक क्षेत्र के कार्यकर्ताओ को चाहिये कि वे दस दस की टोलिया बनाकर अपना अपना क्षेत्र चुन लेवे और उस क्षेत्र मे अधिक से अधिक लोगों को हिन्दी सिखाने का प्रयत्न करे। अपने कार्य को उन लोगों को शिक्षित क्षेत्र से प्रारम्भ करना चाहिये तथा उनके सम्मुख गुरु के रूप में न आकर शिष्य के रूप मे आने का कष्ट करें उनसे कहे कि श्रीमान जी मैं आपके प्रदेश की भाषा को सीखने आया हूं इस प्रकार जब आपको कुछ उस प्रदेश की भाषा का ज्ञान हो जाय तो फिर अशिक्षित क्षेत्र और बर्गो पर भी अपने सफल प्रयोग को प्रारम्भ करें परन्तु कठिनाई में विचलित न होइये।

अब कुछ प्रतिशत व्यक्ति हिन्दी सीख जावे तो वहाँ पर एक पुस्तकालय और विद्यालय का निर्माण करिये तथा समस्त राज्यों के लिए एक परीक्षा योजना को कार्यान्वित करें तथा उसमें अधिक से अधिक परीक्षार्थियों को सम्मिलित करने का प्रयत्न करें। जिस कार्यकर्ता के क्षेत्र से अधिक परीक्षार्थी परीक्षा में सम्मिलित हों उसको भी पुरस्कार आदि मिलना चाहिये। अहिन्दी भाषियो के लिए वाक् प्रतियोगिता निबन्ध एव कहानी प्रतियोगिता का प्रबन्ध भी अधिक सहायक सिद्ध होगा इसके साथ उनकी मातृभाषा को कुछ बढ़ावा देना एवं प्रोत्साहन देना भी अधिक लाभकर सिद्ध होगा।

इस विशद कार्य के लिए धन की बहुत आवश्यकता पडेगी वह हिन्दी प्रेमियो विद्यार्थियो तथा जनता से प्रारम्भ मे याचना करने में बहुत अधिक संख्या में [illegible] आवेगी। पुस्तकालय तथा विद्यालय के लिए उस क्षेत्र के सम्पन्न प्रभावशाली तथा पालिकाओं की सहायता से काम चल जायगा और उन्ही लोगो की कार्यकारिणी भी नियुक्त की जाय तो और भी उपयुक्त होगा। जब योजना सुचारुरूप से चालू हो जायगी तो चन्दे की आवश्यकता भी नहीं पड़ेगी क्योंकि पुस्तको की बिक्री परीक्षा के शुल्क तथा पुस्तकालय एव विद्यालय के शुल्क से अधिक सहायता मिलेगी इस विशालकाय कार्य के लिये महिला तथा पुरुष समाज की समान रूप से आवश्यकता पडेगी।

साहित्यकारो एव अनुवादकों को चाहिये कि प्रत्येक क्षेत्रीय भाषा के ग्रन्थ का उनके मौलिक रूप मे अनुवाद करने का प्रयत्न करें साथ ही उनके साहित्य के शब्दों को अपनावें। यही नहीं बल्कि विदेशी भाषाओं में केवल अंग्रेजी चश्मा न पहिन कर दूसरों के साहित्य का भी रूप निहारें और अपने साहित्य के भण्डार को भरने का कष्ट करें तथा उनके शब्दों को भी अपनी भाषा में मिलाने का पूर्ण प्रयत्न करें। साथ ही एक ऐसे शब्दकोष का निर्माण करें जिससे हिंदी के माध्यम से विश्व की प्रत्येक भाषा के शब्दों को जाना जा सके। इससे हमारा मान और भी बढ़ जायगा।

*

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



आर्यमित्र

शांति-प्रकरण

पुस्तकालय

ओ३म् शं नो वातः पवतां शंनस्तपतु सूर्यः ।
शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु ॥१५॥

वायु के झोंके हम शीतलता तथा पवित्रता प्रदान करने हारे हों। सूर्य का ताप और प्रकाश हमारी समृद्धि का महान् विधाता हो। गर्जन करते हुए सुहावने मेघ हमारे लिये सदा सौख्य एवं समृद्धि के विधायक हों।

ओ३म् अहानि शं भवन्तु नः शं रात्रीः प्रतिधीयतां
शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः ।
शं न इन्द्रा वरुणा रातहव्या ।
शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ।
शमिन्द्रा सोमा सुविताय शंयोः ॥१६॥

दिन हमारे कल्याण के विधाता हों तथा रजनियाँ सुख शान्ति की सरसाने वाली हों। मेघ और उनके गर्जन हमें सुख और समृद्धि का दान करें। विद्युत और वर्षा हमारे लिये निश्चय समृद्धि का विधान करें। प्रकाश और वायु सदा अभीप्सित शान्ति और सुख सम्पदा का दान करें। सूर्य और चन्द्र देव सांसारिक वैभव की प्राप्ति में सदा सर्वदा हमारे सहायक हों।

शं नो देवीरभिष्टये, आपो भवन्तु पीतये, शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥१७॥

दिव्य गुणों के आगार जड़ चेतन विश्व में अभिव्याप्त होने वाले परमात्म देव हमारे सत्य संकल्पों को पूर्ण कर हमें शान्ति प्रदान करें तथा सब ओर से सुख समृद्धि की हम पर वर्षा करें।

—शिवदयालु

वैदिक प्रार्थना

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ यजु० १६।४१

सांसारिक सुख देने वाले और मोक्ष के आनन्ददाता परमेश्वर को नमस्कार हो, कल्याण कर्ता और परमानन्ददाता प्रभु को नमस्कार हो, कल्याण स्वरूप और परम [illegible] को नमस्कार हो।

सम्पादक—
शिवदयालु, सभामन्त्री
सह० सम्पादक—
[illegible] शरण

एक प्रति का २० नये पैसे [illegible] वार्षिक

लखनऊ, रविवार २० माघ शक १८७६
[९ फरवरी १९५८]

विदेश में

इस अंक के आकर्षण

हवन यज्ञ और नेहरू जी

[श्री डा० कुन्दनलाल अग्निहोत्री, एक्स मेडिकल आफिसर टी०बी०सेनेटोरियम नगर, शाहगंज, लखनऊ]

स्वतंत्र भारत न केवल धन धान्य मे किन्तु कला-कौशल, विज्ञान और समस्त विद्याओं में भी सर्वदा संसार में सब देशों का शिरोमणि रहा है। ऐसे देश के प्रधान मन्त्री के मुख से हवन यज्ञ जैसे वैज्ञानिक और आध्यात्मिक कृत्य का उपहास सुनकर मुझे न केवल दुख किन्तु आश्चर्य भी हुआ। पर श्री नेहरू जी बुद्धिवाद के पक्षपाती हैं अत: मैं आशा रखता हूं कि वह हवन जैसे विश्वव्यापी कृत्य की वैज्ञानिकता पर विचार करके अपना मत बदल लेवेंगे ताकि इस विज्ञान के विशेषज्ञ भारत के प्रधान मन्त्री का उपहास न उड़ावें। यज्ञ से आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही प्रकार के लाभ होते है। पर आज भारत में जिस प्रकार के दूषित भोजन का प्रचार बढ़ रहा है उसको विष मानता में आध्यात्मिक लाभ को समझने की शक्ति रखने वालों की संख्या बहुत थोड़ी है अत: उसको छोड़ते हैं। यज्ञ से समय पर वर्षा कराकर अपेक्षाकृत अधिक गुणदायक वनस्पति और अन्न उत्पन्न किया जा सकता है। दृढ़ सेना और अस्त्र शस्त्र तैयार करके श्रेष्ठ पुरुषों की रक्षार्थ संसार को हानि पहुंचाने वाले राक्षसों का नाश किया जा सकता है और विश्व में सच्ची शांति स्थापित की जा सकती है। इस विद्या के पूर्ण परिचित न होने के कारण हम इस विषय पर भी लेखनी नहीं चलाते। हम यहाँ पर केवल वह लाभ बतलायेंगे जिसके परीक्षण हम ५४ वर्ष से स्वय करके यज्ञ विज्ञान की सत्यता को हृदय से अनुभव कर रहे हैं। हमारे परीक्षण का अनुमोदन वेद, शास्त्र, ऋषि, मुनि और कुछ आधुनिक वैज्ञानिक भी मुक्त कण्ठ से कर रहे हैं। साथ ही उसके लाभ से जीवन दान पाए हुए अनेकों निराश रोगी यज्ञ के साथ हमारा भी गुण गान करते नहीं थकते। बात यो है कि सन् १९०४ ई० में क्षय रोग (टी० बी०) की अचूक चिकित्सा खोजने का मुझे चसका लग गया जिसके लिए मैंने अनेको चिकित्सा विधियों की छानबीन की पर कोई विधि मुझे सन्तुष्ट न कर सकी। अत को आयुर्वेद की प्रसिद्ध पुस्तक 'चरक' के संकेत पर अथर्ववेद का स्वाध्याय प्रारम्भ किया जहाँ हवन को क्षय रोग के कठिन से कठिन रोगी की महौषधि बताया गया है, साथ ही क्षय नाशक सामग्री, गऊघृत, पर्वत पर स्वास्थ्यगृह बनाना आदि बातो पर एक साथ प्रकाश डाला गया है। अत इसके परीक्षण भी आरम्भ हुए। साधन हीन होने के कारण पूर्ण विधि से तो आज तक परीक्षण न हो सके पर अधूरे साधनो से ही अब तक के आरोग्य हुए रोगियो का परिणाम ८० प्रतिशत तक रहा है। साथ ही न तो किसी रोगी का कोई परिचारक संक्रमण से रोग ग्रस्त हुआ न एक भी रोगी यज्ञ चिकित्सा लेने टोरियम में मरा जिससे यज्ञ चिकित्सा सेनेटोरियम ने संसार भर के सेनेटोरियमो का रिकार्ड मात कर दिया है।

इस चिकित्सा विधि की वैज्ञानिकता तथा विधि पर प्रकाश डालने वाली लगभग ३५० पृष्ठ की पुस्तक 'यज्ञ चिकित्सा' मैंने श्री रेगे साहब आई० सी० एस० कमिश्नर जबलपुर और रोगियो की प्रेरणा पर लिख दी जिससे अनेकों रोगी लाभ उठा चुके हैं और उठा रहे हैं। यदि श्री नेहरू जी चाहे तो सरकारी चिकित्सालयों मे किसी विशेषज्ञ द्वारा परीक्षण कराके यज्ञ की महिमा को देख सकते हैं। यह वह विद्या है जिसके द्वारा विदेशों को अपना शिष्य बनाया जा सकता है। आधुनिक काल के कई अन्य विद्वानों से भी हमारे सिद्धान्त की पुष्टि होती है। जैसे—

१—फ्रांस के डाक्टर हेफकिन साहब जो चेचक टीके के आविष्कारक हैं, लिखते हैं कि घी जलाने से रोग के कृमि मर जाते हैं।

२—डाक्टर टाटलिट साहब ने मुनक्का, किशमिश आदि सूखे फलों को जला कर देखा है और मालूम किया है कि इसके धुए से टाइफायड ज्वर के कीटाणु केवल आधे घण्टे में और दूसरे रोगों के कुछ अधिक समय मे समाप्त हो जाते है।

३—फ्रांस के विज्ञानवेत्ता प्रो० टिलवर्ट साहब का कहना है कि जलती हुई खाण्ड के धुए मे वायु शुद्ध करने की बड़ी शक्ति है। इससे हैजा, तपेदिक (टी० बी०) चेचक इत्यादि का विष शीघ्र नष्ट होता है।

४—मद्रास के सेनटरी कमिश्नर डा० कर्नल किंग आर० एम० एस० ने अंग्रेजी काल मे कालिज के विद्यार्थियो को प्लेग से सुरक्षित रखने के लिए अग्नि मे केसर, चावल और घी जलाने का उपदेश दिया था।

५—स्वर्गीय प० सीताराम जी शास्त्री रावलपिण्डी जो अपने समय के बड़े प्रसिद्ध विद्वान् वैद्य थे, लिखते हैं, "मैंने कई वर्षों के अनुभव से निश्चय किया है कि जो रोग औषधि भक्षण करने से दूर नहीं होते वे यज्ञ चिकित्सा से दूर हो जाते हैं।"

६—अभी तो अमेरिका से आए एक डाक्टर ने अपने भाषण में बम्बई में कहा था कि हम लोग सैकड़ों वर्ष से इस खोज में थे कि फेफड़े की टी० बी० गैस सुंघाने से अच्छी की जा सके। अब हम इसमें सफल हो गए हैं और इस चिकित्सा का परिणाम सब प्रचलित चिकित्साओं से बेहतर रहा है। (देखो 'लीडर' इलाहाबाद तारीख ६।४।१९५५ ई० पृष्ठ ३ कालम ५, शीर्षक "New cure for T. B. of Lungs.")

बुद्धिवाद भी हमारे पक्ष मे है क्योंकि—

१—विज्ञान का सिद्धान्त है कि किसी वस्तु का नाश नहीं होता केवल रूप बदल जाता है। जायफल इलायची इत्यादि वस्तुओं को जलाकर वैज्ञानिक परीक्षण किये गये तो ज्ञात हुआ कि इसके उपयोगी भाग ज्यों के त्यों सूक्ष्म हो जाते हैं। पहले इनसे सुगन्धित तेल गैस बनकर निकलते हैं जिसकी सुगन्धि निकट बैठा प्राण शक्ति रखने वाला हर प्राणी प्रत्यक्ष अनुभव करता है। फिर अग्नि इनको गैस बना देती है और उड़ने वाले तेलों के परमाणु १/१०,००० से १/१०,००,००,००० तक सेण्टीमीटर व्यास वाले देखे गये हैं, जो श्वाँस द्वारा सीधे रोगी के फेफड़ों में पहुँच कर अपना क्षत भरने वाला प्रभाव उसके क्षत (Cavity) पर करते हैं। एक्सरे के फोटो ने भी इस बात को प्रमाणित किया है, जिसके कुछ उदाहरण हमारे पास सुरक्षित हैं और ऐसे आरोग्य हुए रोगी भी अब तक जीवित हैं।

२—यह भी विज्ञान का सिद्धान्त है कि स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म मे अधिक शक्ति है। इसी आधार पर आयुर्वेद मे औषधियों की घुटाई करके उनकी शक्ति बढ़ाई जाती है। ऐलोपैथी मे औषधि सूक्ष्म करके इंजेक्शन बनाए जाते हैं और होम्योपैथी मे पोटेन्सी तैयार की जाती है। इसी सिद्धान्त का दुरुपयोग एटम बम बनाने मे किया गया है। इसी सिद्धान्त के आधार पर हवन गैस अपने प्रभाव में बड़ी शक्तिशाली हो जाती है।

३—विज्ञान का यह भी सिद्धान्त है कि अग्नि में जलाने से बढ़कर किसी और ढंग से औषधि के परमाणु इतने सूक्ष्म नहीं हो सकते। एक मिर्च जलाकर इसका परीक्षण प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है। जो मिर्च एक व्यक्ति सुगमता से खा सकता है उसी को आग में डालने से दूसरे व्यक्ति खाँसने लगते हैं। एक बटलोई दाल में रत्ती भर हींग कोई नहीं के बराबर प्रभाव रखती है। पर वही हींग आग में भूनकर छौंकने से सारी दाल को सुगन्धित और स्वादिष्ट बना देती है।

४—अग्नि जलाने से रोग नाश का ज्ञान हमारे यहाँ तो आदि सृष्टि से है, आधुनिक युग के विद्वान मैक्स मूलर साहब ने अपनी पुस्तक 'फिजीकल रिलीजन' मे लिखा है कि यवन देश के विज्ञान वेत्ता (प्लूमकी) आग को वायु शोधक मानते थे। आग जलाने की रीति गत शताब्दी तक स्काटलैण्ड मे पाई जाती थी। आयरलैण्ड और दक्षिणी अमेरिका में महामारी के लिए अग्नि जलाने की प्रथा प्रचलित रह चुकी है। जापान और चीन मे होम को 'गोम' कहते हैं और मन्दिरो मे धूप जलाते हैं। जर्मनी में 'लेवेंडर' की बत्ती जलाई जाती है। ईरान के पारसी लोग हवन को हिंदुओं की तरह उत्तमता से करते है।

यज्ञ के अन्य गुणो के साथ इन स्वास्थ्यवर्द्धक गुणों का ज्ञान कर ही ऋषियों ने ३३ देवताओं के साथ इसे भी एक देवता माना है और जिस स्थान पर अधिक जन इकट्ठे होवें वहाँ यज्ञ अनिवार्य माना है। इस समय कुछ विद्वानों का ऐसा मत है कि अंग्रेजी का शब्द 'हाईजीन' 'यज्ञ' का ही अपभ्रंश है। इस युग के सबसे बड़े विद्वान्, बुद्धिवाद के घोर पक्षपाती पूज्य महात्मा गांधी जी के भी गुरुओं के गुरु जगद्गुरु महर्षि दयानन्द जी महाराज ने भी इसे नित्य न करने वाले को पापी माना है। प्रत्यक्ष देखने मे आता है कि जिस घर मे नित्य यज्ञ नहीं होता वहाँ रोग निवास करते है। ऐसी अवस्था में बुद्धिवाद के पक्षपाती श्री नेहरू जी का बतौर प्रधान मन्त्री के कर्तव्य है कि लोकहित की दृष्टि से दस पाँच लाख रुपया व्यय करके देश के बढ़ते हुए टी० बी० को भगाने के लिए ही हवन यज्ञ के परीक्षण कराके हमारे परीक्षणों की सत्यता की जाँच करें। यदि उन्होंने हमारे निष्काम भावना से लिए इस परामर्श पर ध्यान दिया तो वह दिन दूर नहीं जब देश का डाक्टरों और औषधियों पर खर्च होने वाला रुपया तो बहुत अंश तक बच ही जावेगा। साथ ही विज्ञान के हर विभाग में हम ऐसे आविष्कार कर सकेंगे कि विदेशी भी प्राचीन समय की भाँति हमारे शिष्य बनने मे अपना गौरव अनुभव

[शेष पृष्ठ १५ पर]

आर्य्य जगत में सब से अधिक छपने वाला आर्य्य प्रतिनिधि स॰ उत्तर प्रदेश का मुख्य प॰

ओ३म्

आर्य्य मित्र

वर्ष ६०   अङ्क ६

लखनऊ—रविवार माघ २०, शक संवत १८७९, फल्गुन कृ० ६, वि० २०१४ (९ फरवरी १९५८) दयानन्दाब्द १३३ सृष्टिसंवत् १९७२९४९०५८

सम्पादकीय

आचार्य चाणक्य के ६ अद्भुत सूत्र

आचार्य चाणक्य ने अपने अर्थ शास्त्र के अन्तिम भाग में राजनीति एवं नीति शास्त्र सम्बन्धी लगभग ६०० अद्भुत सूत्र लिखे हैं। इन सूत्रों का अधिक से अधिक ज्ञान भारतीय जनता को कराना भारतीय शासन एवं भारत की राजनैतिक संस्थाओं का कर्तव्य है। इस लेख में आरम्भ के ६ सूत्रों की विवेचना करना मात्र हमारा अभीष्ट है।

सुखस्य मूलं धर्मः ।।१।।

पहला सूत्र है कि सुख का मूल है धर्म। सुख से अभिप्राय ज्ञानेन्द्रियों कर्मेन्द्रियों एवं मन का स्वस्थ होना और निरन्तर शुभ कर्मों के अनुष्ठान में लगा रहने से है। यदि इनमें विकार है इनकी शक्ति क्षीण हो रही हैं और यह अशुभकर्मों में रत हैं तो लाख सम्पदा हो जीवन में हर्ष उत्साह और आनन्द की हिलोरें उठ नहीं सकतीं। अतः स्वास्थ्य प्राप्ति और शुभ कर्मों के अनुष्ठान का बोध कराना धर्म का काम है।

अनादि सत्यों एवं मानव जीवन को दिव्य बनाने वाले श्रेष्ठतम नियमों एवं कर्मों के अनुष्ठान का नाम ही धर्म है। और इस धर्म का ज्ञान एक मात्र वेदों द्वारा ही विश्व को हुवा और हो सकता है। अनादि सत्यों में पूर्ण आस्था रखना और सत्य नियमों तथा श्रेष्ठ कर्मों का अनुष्ठान करना ही धर्म कहाता है। अतः धर्म से विमुख हो कर मानव कभी सुख की प्राप्ति नहीं कर सकता।

धर्मस्य मूलमर्थः ।।२।।

धर्म का आधार अर्थ है। अर्थ से तात्पर्य भूमि, मकान, वस्त्र, भोजन, द्रव्य आदि से है। इनके अभाव में न इन्द्रियाँ स्वस्थ रह सकती हैं और न श्रेष्ठ कर्मों की ओर मानव की प्रवृत्ति ही हो पाती है। जीवन की इन आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन और उनका यथा योग्य वितरण समाज और राष्ट्र के चरित्र को ऊचा उठाने वाला है। इनके अभाव में मानव चिन्ताओं एवं दुष्प्रवृत्तियों का शिकार बनने लगता है। इनके उत्पादन मात्र से भी धर्म का अनुष्ठान नहीं हो सकता जब तक इनका यथा योग्य वितरण और त्याग पूर्वक भोग की भावना समाज में सर्वत्र घर नहीं कर जाती। जीवन की आवश्यकताओं के बढ़ाने में सुख नहीं वह तो इनको नियन्त्रित करने में ही है।

अर्थस्य मूलं राज्यम् ।।३।।

इन सब जीवनोपयोगी वस्तुओं के उत्पादन करने इनको आयात करने तथा इनके सरक्षण करने के लिए शासन की आवश्यकता है। शासन सूत्र के सचालक यदि रक्षक से भक्षक बन जांय, स्वार्थ साधना के धनी बन जांय तो राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था कभी बन वा सुधर नहीं सकती। इसलिये योग्यतम व्यक्तियों के हाथों में सत्ता का होना नितान्त आवश्यक है। जो व्यक्ति पूर्ण राष्ट्र भक्त हों राष्ट्र के कण कण में जिनकी श्रद्धा हो, शास्त्रों के ज्ञाता हों, शूरवीर हों अर्थात् कर्तव्य पालन में भीरुता और कायरता के कभी शिकार न बनते हों ध्येय में पूर्ण निष्ठा रखते हों, और कुलीन हों वही शासक में मान्यता पाने के अधिकारी है। विदेशी कभी स्वदेश में शासक बनने के स्वभावतः ही पात्र बन नहीं सकते।

राज्यस्य मूलमिन्द्रियजयः ।।४।।

सुन्दर सुखद राज्य का मूल इन्द्रियों पर काबू पाने में है। जो शासक इन्द्रियों के दास है जिनकी इन्द्रियाँ विषयलोलुप है जो काम क्रोध लोभ मोह आदि असुरों के प्रभाव में आने वाले है वह कभी राज्य का संचालन नहीं कर सकते। राजा का आत्मवान् होना आचार्य वृहस्पति ने भी अनिवार्य ठहराया है। अर्थात् जो शासक प्रकृति का दास न होकर आत्म तत्व का सम्यक् ज्ञाता और आत्मा के गुणों के विकास करने में तथा परमात्मदेव की उपासना करने का अभ्यासी है वही यथार्थ में शासन की नौका का चतुर खिवैय्या हो सकता है। दुष्ट, दुराचारी व्यभिचारी स्वार्थी शासक राष्ट्र का घात ही सदा किया करते है। इसलिये शासकों का इन्द्रिय जयी होना नितान्त आवश्यक है।

इन्द्रियजयस्यमूलं विनयः ।।५।।

इन्द्रियों पर जय पाने के लिये अपने आपे को तप संयम और त्याग के सांचे में ढालना होगा। विशेष प्रकार के व्रत बन्धनों में अपने को जकड़ना होगा। साधनाओं से युक्त जीवन ही मानव को इन्द्रियजयी बना सकता है। केवल ज्ञान के होने से मानव का उत्थान नहीं हो सकता। अपितु ज्ञान के साथ साथ साधना का भी उसको धनी बनाना होगा।

इन साधनाओं की भट्टी में तपने का नाम ही विनय है। शासकों का विनयशील बनना इसीलिये आचार्य चाणक्य ने अनिवार्य ठहराया है।

विनयस्य मूलं वृद्धोपसेवा ।।६।।

विनय की साधना आदर्श साधक एवं सिद्ध पुरुषों का नित्य नियम से सत्सग करने से ही हो सकती है। तपोधनी, विद्वान, तत्त्ववेत्ता सन्तों का समागम ही मानव के जीवन को ऊचा उठा सकता है। ऋषि, मुनि, साधु, सन्त, योगी की सेवा करने से ही जीवन सुन्दर बना करता है। यदि इन महानुभावों का प्रत्यक्ष साथ न होता हो तो इनकी कृतियों का अध्ययन अर्थात् आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय द्वारा मानव उच्च बन सकता है। अर्थापत्ति से क्रूर, कुकर्मी, दुष्ट एवं खलों का सग भूल कर भी शासक को नहीं करना चाहिए। संक्षेप में सत्संग, स्वाध्याय, आत्मचिन्तन, संयम एवं साधनाओं द्वारा ही मानव अपने जीवन को वास्तविक सुख से परिपूरित कर सकता है।

ब्रह्मकुमारियों का वेद द्रोह

हमारे सामने 'वेद वेदान्त और गीता' नामक एक ट्रैक्ट विद्यमान है जिस पर लेखक का नाम नहीं दिया गया है। इसका प्रकाशक भी कोई व्यक्ति विशेष नहीं है। नीचे "ब्रह्म कुमारियाँ" केवल छपा हुआ है अतः उन्हीं को प्रकाशक के स्थान पर माना जा सकता है।

इस ट्रैक्ट का आशय वेद और वेदान्त की निन्दा करना है और गीता का आश्रय लेकर बाबा त्रिमूर्ति परमात्मा शिव को इस युग का अवतार सिद्ध करना है। इस ट्रैक्ट का सार निम्न प्रकार है—

"वेद, उपनिषद्, दर्शनादि सनातन धर्म के ग्रन्थ नहीं है और न गीता वेद उपनिषदों का सार ही है अपितु वेदों से सर्वथा भिन्न है, और वह ही केवल भारतीय धर्म का माना हुआ ग्रन्थ है, और ईश्वरीय ज्ञान भी वही है। वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानने से भारत का अधःपतन हुआ है और जब से वेद को ईश्वरीय ज्ञान बतलाने वाला मत (आर्यसमाज) चला है तब ही से देश रसातल को जा रहा है।

इनके मत में वेदों का परमात्मा सर्व व्यापी है और गीता का भगवान एक देशी है। वेदों का भगवान अव्यक्त है और अज्ञेय है और गीता का भगवान् अव्यक्तमूर्त है। वेद आत्मा और परमात्मा में भेद नहीं मानता उसके मत में आत्मा स्वयं परमात्मा है किन्तु गीता का मत इससे भिन्न है।

यूरोपवासी यादवों से स्वतन्त्रता दिलाने के लिये भारत के बापू महात्मा गांधी ने कांग्रेसियों की सहायता की और उन्होंने हठयोग के साधन भी किये। स्वराज्य तो ले लिया किन्तु यहां न तो 'स्व' अर्थात् मन पर विजय प्राप्त की और न राज्य अर्थात् राजा-रानी की स्थापना हुई।

लोकप्रिय बापू की शुभाभिलासा को अपूर्ण हुआ देख अथवा अपनी जन्मभूमि भारत में अत्यन्त धर्म ग्लानि देख गीता में वर्णित भगवान् त्रिमूर्ति परमात्मा शिव (इस मत के प्रवर्तक) ब्रह्मा के साधारण वृद्ध मनुष्य तन में अवतरित हो सच्चे स्वराज्य की पुनः स्थापना करा रहे हैं।

वह सहज योग द्वारा मन जीत बना जगत जीत राजा रानी अथवा नर से नारायण और नारी से श्रीलक्ष्मी बनाने का अलौकिक कर्तव्य भारत माता की शक्तियों द्वारा करा रहे हैं।"

(शेष अगले पृष्ठ पर)

(पृष्ठ ३ का शेष)

इस प्रकार से सिर पैर की दम्भ और मूर्खतापूर्ण बातों का प्रसार करना ही इस पन्थ का सार समझना चाहिये। हम कलयुगी ब्रह्मा बाबा को आवाहन करते है कि वह पर्दे की ओट में शिकार करना छोड़कर खुले मैदान में आवें।

ईसाई समस्या का हल

विदेशी पैसा, पादरी और प्रचारक संघों पर पाबन्दी

भारत मे ईसाइयत का प्रचार भारतीय संस्कृति के विनाश, भारतीय गौरव, मर्यादाओं एवं परम्पराओं का लोप, जातीय सगठन के ह्रास, पाश्चात्य देशों के उपनिवेशों की स्थापना एवं भारत की सुरक्षा को निर्बल करने की दृष्टि से ही निरन्तर किया जा रहा है।

दासता के युग में ईसाइयत के प्रचार मे शासन की ओर से नाना प्रकार की सुविधाएं दी जाती थीं। राज्य कोष से धन की सहायता भी पूरी-पूरी की जाती थी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त सुविधा और सहायता मे तो एक रूप मे पर्याप्त कमी हो गई है किन्तु शासन के उच्च अधिकारियों तथा कांग्रेसी नेताओं के प्रशंसा प्रमाणपत्र तथा अनुचित उदारता दूसरे रूप में ईसाइयत के प्रचार में बराबर सहायक हो रही है।

हमारे पड़ोसी राष्ट्र चीन ने स्वतंत्रता प्राप्ति के ठीक उपरान्त विदेशी मिशनों का राष्ट्रीय करण कर डाला, २१००० विदेशी मिशनरियों को चीन की भूमि से जैसे भी बना निकाल कर बाहर कर दिया। विदेशों से ईसाइयत के प्रचार के लिये आने वाले धन पर कड़ी पाबन्दी लगा दी। ईसाइयों की शिक्षा संस्थाओं को अपने हाथ मे ले लिया और इस प्रकार अपनी सभ्यता, संस्कृति, सुरक्षा आदि की पूर्णतया रक्षा कर ली। किन्तु थोथी प्रशंसा और कायरता रूपी उदारता के चक्कर में फंसकर हमने चीन, रूस तथा अन्य साम्यवादी देशों से खदेड़ गए मिशनरियों को यहां पनाह दी, उनको अपने नए-नए अड्डे आसाम नागा प्रदेश, छोटा नागपुर मध्यप्रदेश, तथा मद्रास आदि मे बनाने का अवसर दिया, विदेशो से भारत के हिन्दुओं को ईसाई बनाने के लिये करोड़ों रुपया प्रतिवर्ष आने दिया।

देश मे इस खतरे के विरुद्ध आर्य समाज तथा अन्य सुधारवादी राष्ट्रीय दलों की ओर से जो आन्दोलन किया गया उसकी सरकार ने सर्वथा उपेक्षा की। मध्यप्रदेश तथा मध्य भारत की सरकारों ने जो नियोगी कमीशन तथा रेगे कमीशन ईसाइयों के अनुचित, अन्यायपूर्ण एवं राष्ट्र विरोधी कार्यों की जांच करने के लिये बैठाए, उनकी रिपोर्ट भी तैयार होकर छप गई, किन्तु ऊपर की सरकार ने उन्हें सम्भवतः रद्दी की टोकरी में फेंक दिया है नहीं तो अब तक कुछ न कुछ आवश्यक पग अवश्य उठाया जाता।

केरल प्रदेश की साम्यवादी सरकार ने ईसाइयों की शिक्षा संस्थाओं को अपने नियंत्रण में लेने के लिये एक कानून पास किया किन्तु उस पर राष्ट्रपति की मोहर आज तक न लग सकी। वह भी सम्भवतः सर्वोच्च न्यायालय को भेजकर लटका दिया गया है।

आर्य समाज के आन्दोलन की उपेक्षा करना सम्भवतः सरकार अपना गौरव समझती है और उस को विवश करती है कि वह अपने आन्दोलन को उग्ररूप प्रदान करें। आर्यसमाज इस अत्यावश्यक कार्य की पूर्ति के लिए आवश्यक त्याग और बलिदान करने के लिए सन्नद्ध है। आन्दोलन की तीव्रता अनावश्यक कटुता को जन्म देगी और शासन के लिए परेशानियाँ पैदा होंगी। इसको विचार मे रखते हुये आर्यसमाज प्रथम उन सब साधनों को ही प्रयोग मे लाना चाहता है जिससे शासन सावधान होकर अपने कर्तव्य पालन करने मे अग्रसर हो जाये और यदि शासन की ओर से अवहेलना, उपेक्षा हो निरतर बरती जाती रही तो अन्ततोगत्वा आर्य समाज को अगला पग बढ़ाना ही पड़ेगा।

काश्मीर का विलय अन्तिमरूप में सम्पन्न शेख, अब्दुल्ला देशद्रोही हैं

श्री कृष्ण मेनन की शेख जी को फटकार

भारत के स्वरक्षा मंत्री श्री कृष्ण मेनन ने ३१ जनवरी के अपने बम्बई के भाषण मे शेख अब्दुल्ला के हाल में प्रकट किए उद्गारो की चर्चा करते हुये स्पष्ट शब्दो मे यह घोषणा की है कि जो लोग काश्मीर के विलय को अन्तिम नहीं मानते हैं उनको चाहिये कि वह काश्मीर से बाहर जाकर हमारे दुश्मनो के साथ स्पष्टरूप मे मिल जाएं, अब किसी भी कीमत पर काश्मीर के विलय के सम्बन्ध में कोई चर्चा सहन नहीं की जा सकती। जो इस प्रकार की आशंका भरा चर्चा करते है वह स्पष्टरूप से देश के साथ गद्दारी करते है।

हम श्री कृष्ण मेनन के इस वक्तव्य का समर्थन करते है और उनके इस वीरता पूर्ण भाषण की सराहना करते है। हम भारत के प्रधान मंत्री श्री पं० जवाहरलाल जी नेहरू से यह अनुरोध करते हैं कि वह शेख जी के साथ अपनी व्यक्तिगत् मैत्री को तुरन्त ताख में रखकर उनके विरुद्ध देशद्रोह का अभियोग चलावें और इस देशद्रोही को जो कठोर से कठोर दंड हो सकता है, वह दिया जाए। और शेख जी के सिरफिरे अनुयाइयों की भी अक्ल ठीक करने के लिये कड़ा पग उठाया जाय।

भारत की राष्ट्र भाषा समस्या

हमारे कानों में यह ध्वनि आ रही है कि भारत की राष्ट्र भाषा एक नहीं चौदह हैं। यह एक विचित्र और अनोखी ध्वनि है जो अब बड़े आदमियों के मुख से सुनी जाने लगी है। अब तक तो हम यही मानते थे कि एक राष्ट्र की एक संस्कृति, एक ध्वज एवं एक भाषा का होना ही राष्ट्र की एकता एवं दृढ़ता का सूचक है और आज तक भी इसी सिद्धान्त पर दृढ़ हैं किन्तु हमारे राष्ट्रपति एवं प्रधान मन्त्री इसके विपरीत बोलने लगे है।

संविधान में हिन्दी को राजकाज के निमित शासकीय भाषा स्वीकार किया गया है। आसेतु हिमाचल भारत राष्ट्र में अब विदेशी भाषा अंग्रेजी को अर्ध चन्द्र देकर उसके स्थान पर भारत राष्ट्र की ५५ प्रतिशत जनता की बोलचाल की भाषा हिन्दी को प्रतिष्ठित किया जायगा। इसके अतिरिक्त भारत के विभिन्न भागों में बोली जाने वाली १३ अन्य भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है। मान्यता प्रदान करने का अभिप्राय यही है कि इन भाषाओं को भारत के विभिन्न प्रदेश अपने अपने क्षेत्र में शासकीय स्तर पर प्रयुक्त कर सकते हैं अन्य किसी भाषा अथवा उप भाषा को नहीं।

हम १३भाषाओं को राष्ट्रीय भाषा कहना भ्रम मूलक समझते हैं। इस कथनका एक मात्र अर्थ यही हो सकता है जो हमने ऊपर दिया है। राष्ट्र भाषा हिन्दी की भांति इनका प्रान्त के बाहर शासकीय स्तर पर प्रयोग करना सर्वथा अवांछनीय है।

भाषा के प्रयोग में स्वतन्त्रता

२६ जनवरी को भारतीय स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति एवं प्रधान मन्त्री महोदय ने अपने भाषणों में यह कहा है कि भारत में किसी भी भाषा के सीखने में जबरदस्ती नहीं की जावेगी। इस कथन का विश्लेषण हमारी दृष्टि मे यही हो सकता है कि जिस भाषा को भारत के प्रतिनिधियों ने प्रसन्नता पूर्वक राष्ट्रभाषा स्वीकार किया है उसको सीखना भारत का प्रत्येक नागरिक अपना राष्ट्रीय कर्तव्य समझेगा। उसके सीखने सिखाने में जबर का प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता इसी प्रकार जिस प्रदेश के प्रतिनिधियों ने अपने प्रदेश के लिए १४ में से किसी एक भाषा को राजभाषा बनाने का निर्णय किया है, उत्तरप्रदेश वासी के लिए उस भाषा के सीखने सिखाने में भी जबर का प्रश्न उत्पन्न नहीं होता। तथा जिस प्रदेश ने अपने यहाँ दो भाषाओं को राज भाषा अंगीकार किया है और अपने प्रदेश के प्रत्येक नागरिक को उनमें किसी एक को सीखने की छूट दी है वहाँ भी जबर का प्रश्न उत्पन्न नहीं होता।

जबर का प्रश्न वहां ही केवल उत्पन्न होता है जहाँ जनता के प्रतिनिधियों से पूछे बिना अल्प संख्यक वर्ग को खुश करने के लिए उसकी किसी मान्य भाषा को प्रदेश वासी बहु संख्यक वर्ग पर वह भाषा थोपदी गई है। यह स्थिति भारतवर्ष में केवल पंजाब मे उपस्थित की गई है जहाँ २८ प्रतिशत सिखों की भाषा पंजाबी को गुरुमुखी लिपि में सीखना ७२ प्रतिशत हिन्दू वर्ग पर उनकी इच्छा के सर्वथा विपरीत थोपा गया है। इसी शासकीय अन्याय के विरुद्ध पंजाब मे आर्यसमाज की सरक्षता में ऐतिहासिक सत्याग्रह लड़ा गया है जो सत्याग्रह इस समय स्थगित है। आशा है भारत सरकार इस पंजाबी की अनिवार्यता का तुरन्त अन्त करेगी और इस निमित स्पष्ट शब्दों मे घोषणा करेगी।

—शिवदयालु

जालंधर में विराट हिंदी रक्षा सम्मेलन

८, ९ फरवरी ५८ को

८, ९ फरवरी ५८ को जालन्धर में विराट हिन्दी रक्षा सम्मेलन होने जा रहा है जिसकी पूरी तैयारी हो चुकी है। सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के अध्यक्ष श्री घनश्यामसिंह गुप्त करेंगे, ८ फरवरी को अपराह्न २ बजे से जालन्धर स्टेशन से जिनका जलूस निकाला जायेगा। सम्मेलन सेनदास हाई स्कूल के मैदान में होगा। इस अवसर पर एक बृहद महिला हिन्दी सम्मेलन भी होगा। प्रबन्ध के लिए सैकड़ों स्वयसेवक भर्ती किये जा चुके हैं।

❀ विदेशी विद्वानों की दृष्टि में गौ की महिमा ❀

★

१—होवर्स हेरीमैन-अमेरिका का एक प्रसिद्ध पत्रकार—

"गौ हमारे दुग्ध-भवन की देवी है। वह भूखों को भोजन देती, नंगों को आच्छादन और बीमारों को स्वास्थ्य प्रदान करती है।"

२—सर विलियम वैडरबर्न—

"मैं इसकी कल्पना कर सकता हूं कि किसी राष्ट्र के बिना भी गौ हो सकती है किन्तु मैं यह स्वप्न मे भी अनुमान नहीं कर सकता कि कोई राष्ट्र बिना गौ के भी रह सकता है।"

३—श्री वाल्टर ए० डामर—अमेरिका के प्रसिद्ध लेखक—

"गौ के सौम्य रूप मे वास्तव में देवत्व भरा है। उसमें एक महानता और भव्यता है जो ग्राम देवता के अनुरूप हैं। उसमें शत प्रतिशत मातृत्व है और उसका मनुष्य जाति से निश्चय माता का सम्बन्ध है।"

४—फिजिकल कल्चर अमेरिका के सम्पादक—

"कोई जाति बिना गौ पालन के समृद्धिशाली नहीं हो सकती। गौ सबसे उत्तम भोजन मानव को प्रदान करती है। घास खाकर अमृत का दान करती है। जहाँ गौ की अच्छी सेवा की जाती है वहाँ की भूमि उपजाऊ, सभ्यता उच्च और जाति अधिक स्वस्थ और बलवान् होती है। गौ का दूध ससार में अमूल्य पदार्थ है। गोबर और गोमूत्र का खाद भूमि के लिये अक्सीर है।"

५—डाक्टर ए० मेक डोनर्स—

"भारतीय जीवन और विचार धारा का गौ इतना अधिक अंग बन गई है कि यदि उसके प्रभाव का आदि काल से पूर्ण वर्णन करे तो मानवी सभ्यता के इतिहास का एक आश्चर्यजनक अध्याय बन जावेगा।"

६—डाक्टर ई० बी० मैकालम अमेरिका—

"जिन लोगों ने संसार में कुछ नाम कमाया है, जो अत्यन्त बली और वीर हुए हैं जिनके समाज में बाल मृत्यु की संख्या बहुत घट गई है, जिन्होंने व्यापार धन्धों पर अधिकार प्राप्त किया है, जो साहित्य एव संगीत कला का आदर करते है तथा जो विज्ञान और मानव बुद्धि की प्रत्येक दिशा में प्रगतिमान है वे ऐसे लोग है कि जिन्होने गौ के दूध और दूध के बने पदार्थों का स्वच्छन्दता से उपयोग किया है।"

यही डाक्टर साहब आगे क्या ही सुन्दर एव भव्य विचार गो माता के प्रति व्यक्त किये हैं। देखिए—

महाकवि "होमर" ने युद्ध; 'वरजिल' ने आयुध, "होरेस" ने प्रेम "दान्ते" ने नरक और मिल्टन ने स्वर्ग का गीत गाया परन्तु मुझ में यदि इन सिद्ध कवियों की सम्मिलित प्रतिभा होती और मेरे हाथ मे हजार तारों का तान पूरा होता तथा सारा संसार श्रोता बन कर सुनता तो मैं अपना हृदय खोलकर गौ का गीत गाता, उसके गुण बखानता और उसकी महिमा का गान यावच्चन्द्र दिवाकर अमर कर देता। यदि मैं मूर्तिकार होता और सङ्गमरमर पत्थर मे टनकी से अपने विचार मूर्तिमान कर सकता तो संसार की पत्थर की सब खानें छान कर विमलतम, शुभ्रतम संगमरमर की पट्टियां ढूंढ लाता और चन्द्र ज्योत्सना से पूर्णांकित निरभ्रनील प्रकाश से मण्डित किसी मनोहर बन में निर्मल जल के समीप पक्षियों के मधुर गुंजार के बीच बैठ कर अपने प्रेम धर्म के पवित्र कर्म में लग जाता। उस शीतल शुभ्र संगमरमर का सारा खुरदरापन अपनी छेनी से छील कर उसे इतना कोमल बना लेता कि उसमे से मेरे मन की गौ की मूर्ति निकल आती। उसके विशाल करुणामय नेत्र होते वह अपने उभरे स्तनों में से भरा हुआ पुष्टकर दूधपान कराने की प्रतीक्षा में खड़ी होती और प्रेम से उस अमृत के लेने वालों का सुख आरोग्य एवं बल का आशीर्वाद देती हुई देख पड़ती। गउ बिना ताज की महारानी है। उसका राज्य समस्त समुद्र व समस्त पृथ्वी है। सेवा उसका विरद है। जो कुछ वह लेती है उसे चौगुना करके देती है। यदि आज संसार की सब गौएं मर जावें या ठंढ हो जावें तो कल ही मानव-जाति पर भयानक सङ्कट आ पड़े। रेल की सड़कें, बैंक व कपास की फसल, इन सब के बिना हम लोग मजे में अपना काम चला सकते है पर गौ के बिना मानव जाति रोग, क्षय, और अन्त में विनाश को प्राप्त होगी। गौ का हम वह सन्मान करें जिस के वह योग्य है। मुझे आशा है कि ज्यों ज्यों हम लोग ज्ञान के क्षेत्र मे आगे बढ़ेंगे, क्रूरता और स्वार्थ परता छोड़ेंगे त्यों त्यो उनकी हत्या करना और उनका मांस खाना भी त्याग देंगे जो हमे बल देती सुख पहुँचाती और हमारे बच्चों के प्राण बचाती है।" (राष्ट्रोत्थान की कुंजी से)

१९५७ का स्वातन्त्र्य संग्राम

—वेदप्रकाश आर्य, बी०ए० लखनऊ विश्वविद्यालय १६६ हसनगंज पार लखनऊ—

एक शताब्दी पूर्व सन् १८५७ मे भारत ने क्रांति की अंगड़ाई ली थी; राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए बलिदानों का धधकती भट्टी में अपने को उत्सर्ग कर देने के लिए भारतीय जनता मचल उठी थी, वह हमारा स्वतन्त्रता सग्राम था, यदि १८५७ मे राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए महान् सग्राम हुआ तो सौ वर्ष बाद १९५७ मे राष्ट्र भाषा की स्वाधीनता के लिए एक सग्राम हुआ, जिसे भारत के लोग हिन्दी रक्षा आन्दोलन के नाम से पुकार कर सदियों याद रखेगे। सन् १८५७ गया तो वह जोरों से चिल्लाता गया कि मुझे लोग राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम के नाम से स्मरण रखेंगे। कोई सुने या न सुने, सन् १९५७ पुकार पुकार कर जाते हुए घोषणा करता गया है कि मुझे राष्ट्र भाषा स्वातन्त्र्य सग्राम के नाम से इतिहासकार इतिहास के पृष्ठों परस्मरण करेंगे।

जिस मेरठ के जिले से उस क्रांति का सूत्रपात हुआ था उसी मेरठ के जिले ने इस क्रांति मे भाग लेने के लिए यह घोषणा की थी कि प्रत्येक घर से एक आदमी और एक रुपया सत्याग्रह के लिए दें। यह उधर की जनता का जन आन्दोलन था। मई मास में उस संग्राम की चिनगारियां चमकी थी; सरकार के कितना रोकने से भी मई महीने में इस संग्राम के अगार धधक ही तो उठे। जिस पंजाब की जनता ने सन् १८५७ में उस संग्राम को सहयोग न दिया था। इस संग्राम में बड़े से बड़ा त्याग, बलिदान करके अपने मस्तक पर लगी हुई उस कलंक कालिमा को धो दिया। कश्मीर से कन्याकुमारी तक फैली हुई आर्य संस्कृति ने पुकार पुकार कहा, 'देश की जनता नहीं सहेगी, हिन्दी भाषा का अपमान। देश का बच्चा-बच्चा होगा, हिन्दी भाषा पर बलिदान।।'

मुझे स्मरण है, कितने गौरव का था वह दिन जब गाड़ी हाव हाव करती हुई भागी जा रही थी; और डिब्बे के ऊपर फहर रहा था आर्य रक्त का प्रतीक वह ओ३म् का झण्डा जो हमने कभी हैदराबाद के अन्दर अनाचारी गढ़ पर गाड़ा था, और डिब्बे के आगे बड़े बड़े अक्षरों में लिखा था – 'मध्य उत्तरप्रदेशीय आर्य वीर दल और विद्यार्थी हिन्दी रक्षा समिति लखनऊ का आर्य सत्याग्रही जत्था।' जिस स्टेशन पर गाड़ी रुकती एक ओर तो स्टेशन की दीवारें कांपती थीं जब नारे लगते थे, 'वैदिक धर्म की जय हो। हिन्दी माँ की लाज बचाने, चलो चलो पंजाब चलो।' लोग उत्सुकता पूर्वक कहते थे, हिन्दी प्रेमी आ गए। ज्यों ज्यों देहली के निकट बढ़ते गए पता चलता था यह सत्याग्रह वास्तव मे जनता का है। आज जनता और आर्य समाज में कोई अन्तर नहीं। लोकप्रियता कभी कांग्रेस ने प्राप्त की थी, आज वही आर्यसमाज ने। गाड़ी के एक डिब्बे से हम कहते थे—'हिन्दी के बन्धन' तो दूसरे डिब्बे से नन्हे नन्हे बच्चे तक चिल्लाते थे 'कट के रहेंगे कट के रहेंगे।' रोहतक मे जब सत्याग्रह करते हुए हम आवाजे लगाते थे, दमन और जुल्म के बावजूद भी बच्चे उछलते कूदते कहते थे 'कैरों शाही नहीं चलेगी।' प्रो० शेरसिंह का जब स्वागत हुआ दीवान हाल मे तो एक एक फुट तक दीवान हाल की धरती फूलों से बिछ गई थी। उन्हें गिरफ्तार किया गया तो मीलों तक फैली हुई असंख्य जनता पुकारती थी 'आर्यसमाज, अमर है।'

पंजाब सरकार की ईंट मे दमन जुल्म की कालिमा लगी है। पंजाब साम्राज्य की नींव रक्त से प्लावित है। और प्रतापसिंह कैरों, चुल्लू भर पानी ढूढ़ रहा है आत्म हत्या करने के लिए क्योंकि वह जिस मोर्चे को सात दिन में समाप्त करना चाहता था वह सात महीने चला। आर्य वीरो ने आंसू गैस के आगे आंखें, और लाठियो. गोलियों के आगे सीने खोल दिये। मैंने अपनी आँखों से देखा है अतः मैं कह सकता हूं कि जो अत्याचार पंजाब मे हुए है उनका शतांश भी आप अनुमान नहीं लगा सकते। परन्तु दयानन्द के सेनानियों के बलिदानों के आगे आज वह पन्त हाथ जोड़ता है जिसने कभी कहा था, हम नहीं जानते जाओ तारासिंह के दरवाजे खट खटाओ।

१९५७ के इस भाषा स्वातन्त्र्य सग्राम को आगे आने वाली पीढ़ियाँ इतिहास के पन्नों पर सुनहरे अक्षरों मे लिखेंगी और याद रखेंगी कि नेहरू राज मे एक जलियानवाला बाग का हत्याकाण्ड हुआ। और पंजाब का वह भगतसिंह हरियाणा का हीरा, भारत माँ की गोदी सूनी कर गया था। कैरों को रावण के नाम से स्मरण किया जायगा। शेष पृष्ठ १२ पर

आर्य समाज ?

आती है धरती पर दौड़ी महानाश की ज्वाल कराल।
आर्य समाज बढ़ो तुम आगे मानवता की करो संभाल।
इस धरती पर कौन बढ़ेगा हमें बता दो ? आर्य समाज ॥
सोखी धरती ध्वस्त स्वरों में भारत खोलो अपना कान।
मांग रही है मानवता फिर सुखद शान्ति का छाया दान।
ध्यान धारणा कौन धरेगा हमें बता दो ? आर्य समाज ॥
घूम रहा है अन्तरिक्ष पर साम्यवाद का विकट विमान।
बांध रहा साम्राज्यवाद भू मण्डल को देकर अनुदान।
धरा शान्त यह कौन करेगा हमे बता दो ? आर्य समाज ॥
आज धरा पर फिर होना है आर्य कुमारों का बलिदान।
अरुण रक्त से धो देना है माँ का कुटिल कलङ्क महान।
रक्त राग यह कौन सुनेगा हमें बता दो ? आर्य समाज ॥
शक्ति-भक्ति अनुरक्ति-युक्ति से मिले विश्व को सम-सम्मान।
व्यक्ति व्यक्ति का कर्म धर्म हो प्राची से लेकर वरदान।
कर्म-भावना कौन भरेगा हमें बता दो ? आर्य समाज ॥
आर्यावर्त से भारतीय बन होकर हिन्दू हिन्दुस्तान।
फिर वे हिन्दू बने मुसल्मां पृथक हुए ले पाकिस्तान।
इन्हें शुद्ध अब कौन करेगा हमे बता दो ? आर्यसमाज ॥
बर्मा, लङ्का, जावा, बोला, स्याम, मलाया, चीन, अनाम।
सभी बृहत्तर भारत मे थे अफ्रीका तिब्बत सुरनाम।
इन्हे रख अब कौन करेगा हमें बता दो ? आर्यमाज ॥
देखा वीरो आज इधर बढ़ रहा शून्य मे भौतिकवाद।
त्रैत्यवाद फिर बढ़े जगत् में नित्य ज्ञान का वैदिकवाद।
इस प्रपञ्च से कौन लड़ेगा हमे बता दो ? आर्यसमाज ॥
अर्थ काम के आदि अन्त में धर्म मोक्ष का हो परिधान।
मृत मानव, जीवित मानव हो मिटे सकल जग का व्यवधान।
अडिग धर्म पर कौन रहेगा हमें बता दो ? आर्य समाज ॥
गूंज उठे फिर तीनों यह भू, द्यावा, औ द्यू लोक महान।
अश्वमेध से उठे धूम फैले फिर जग में वैदिक विज्ञान।
सङ्कट जग का कौन हरेगा हमें बता दो ? आर्य समाज ॥
उमड़ रहा हो बड़वानल भीषण गति से आँधी तूफान।
कड़क रहा हो धरती अम्बर, शैल उखड़ता हो अनजान।
हिम शिखरों पर कौन चढ़ेगा हमें बता दो ? आर्यसमाज ॥

—आर्यभक्त शास्त्री

माटी के दीपक

★

सखि, दीप नेह के इतने आज जलाओ तुम,
ज्योतित हो धरती का कण-कण फिर जाग उठे।
ममता की ऐसी बाती डालो दीपक में;
सब स्वप्न मुखर हों नई जिन्दगी मुस्काए।
कुछ ऐसी ममता की लौ निकले बाती से,
यह भेद भाव की काली रेखा शरमाए।
वसुधा भर उठे मनुजता के उजियाले से,
खुदगर्जी मिटे, दासता का साम्राज्य उठे।
जहरीला धुंआ गगन मे जो भर रहा आज,
यह छाया महाप्रलय की बढ़ती आती है।
कुछ ऐसा तेल दीप मे जीवन का डालो,
मानव मिट जाय मृत्यु की, जो गहराती है।
हमदर्दी का जादू तुम ऐसा भरो आज—
इस गहन तिमिर से नई किरन फिर जाग उठे।
गिर जाय पसीना श्रम का वहीं बने सोना,
शोषण की जंजीरें हों शिथिल, टूट जॉयें।
भू पर हर घर को मिले रोशनी दीपक की—
फिर घृणा प्यार के आँचल मे मिल खो जाए।
कुछ ऐसा नेह भरो माटी के दीपक में,
समता-ममता की एक नई आवाज उठे।

—श्यामलाल वशिष्ठ 'अकिंचन' एम० ए०

सुख

सुख हित करता कर्म सब,
सुख की अविरत प्यास।
मृग समान जग में फिरूं,
कर सुख जल की प्रास ॥
सुख इच्छा नहिं आज की,
यह बचपन से साथ।
जब से आया जगत् में,
पकड़ रही यह हाथ ॥
हुआ स्नेह जब देह से,
अलग हुआ भगवान्।
सुख इच्छा से हूं तृषित,
करूँ दु:ख का पान ॥
मैं पन जब से देह में,
पास नहीं भगवान।
फिरूँ भटकता जगत में,
चिर सुख किया न पान ॥
जब से मैं मम भाव है,
विसर गया जगनाथ।
हो पीड़ित फिरता विकल,
लगे न चिर सुख हाथ ॥
सुख अनुभव अनुकूलता,
दुःख भाव प्रतिकूल।
सुख जगती का है क्षणिक,
जगत् दुःख का मूल ॥
वहाँ शांति सुख भी मिले,
जहाँ दुःख अत्यन्त।
सच्चा सुख तो प्रभु मिलन,
जहाँ दुःख का अन्त ॥
अपने भीतर शांति सुख,
कहाँ खोजने जाय।
सुख का स्वयं स्वरूप तू,
कैसे बाहर पाय ॥
इष्ट वस्तु संयोग सुख,
एवं दुःख वियोग।
सुख अवलम्बित त्याग पर,
दुःख मूल है भोग ॥

उसे त्याग सकते नहीं,
जिस पर निज अधिकार।
त्याग योग्य पर-वस्तु जो,
अपनी रहे विचार ॥
जन्म सिद्ध अधिकार है,
सुख पर अपना जान।
सुख ही अपनी वस्तु है,
हो न सके जो दान ॥
पर पदार्थ को जिस समय,
अपना लिया विचार।
निज पदार्थ सुख छिप गया,
हुआ दुःख का वार ॥
अपने नहिं हैं अहंपन,
ममता एवं स्वार्थ।
तीनों के होते हुए,
सिद्ध न हो परमार्थ ॥
अपनाने पर अहन्ता,
ममता आवे धाय।
पीछे रहे न स्वार्थ भी,
निज सुख तब लुक जाय ॥
करे स्वार्थ का त्याग जब,
ममता कम हो जाय।
छेदन करें ममत्व तब,
अहकार दब जाय ॥
अहंकार हो जब शिथिल,
बहिर विषय ठुकराय।
निज स्वरूप का ज्ञान कर,
अहंकार मिट जाय ॥
नहीं रहा जब मैं पना,
निज स्वरूप हो भान।
दर्शन कर भगवान तब,
सुखानन्द कर पान ॥
निज स्वरूप का ज्ञान,
जब तक तू करता नहीं।
नहीं मिले भगवान,
नहीं मिले चिरकाल सुख ॥

—मुन्शीलाल गुप्त, वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर (सहारनपुर)

दिव्य नौका

सुत्रामाणं पृथिवीद्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसम स्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ॥

हमारे जीवन का जलयान
भवसागर में बहे शान्ति से अस्रवंत द्युतियान्
त्राणकारी निरुपद्रव सुन्दर
अदिति अनागस शांत सुविस्तर
भली भांति से जिसका शिवकर पूर्ण हुआ निर्माण
चढ़ें ज्ञान की दिव्य नाव पर
स्वरित्त शान्ति के हित निशिवासर
पवन बहे अनुकूल निरन्तर कुशल करे भगवान
सोम मित्र हो सौम्य मित्रगण
ध्रुव अरुंधती दो शुभ शासन
मगलमय हो मरुत चिरन्तन इन्द्र वरुण पवमान
सुन्दर त्राणकारी विस्तीर्ण अदोष अखंड परम द्युतिमान।
भली भांति निर्दोष भाव से जिसका पूर्ण हुआ निर्माण ॥
असंवत उत्तम चप्पू से युक्त अनागस जो जलयान।
स्वस्ति हेतु हम उसी दिव्य पर हों आरूढ़ सदा भगवान ॥

—रामनिवास एम० ए० फजलपुर सुन्दर नगर (मेरठ)

जीन्द में ६ व ७ फरवरी को

दो भारी सम्मेलन

जीन्द में ६ फरवरी वीरवार को दिन के दस बजे रामलीला ग्राउण्ड में हिन्दी रक्षा सम्मेलन तथा ७ फरवरी शुक्रवार को गऊ रक्षा सम्मेलन बड़े समारोह के साथ होगा। इस अवसर पर नीचे लिखे महान नेता तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं.—स्वामी रामेश्वरानन्द जी द्वितीय सर्वाधिकारी हिन्दी रक्षा आन्दोलन, श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती (अध्यक्ष), श्री अटल बिहारी जी बाजपेई मेम्बर पारलियामेण्ट देहली, वीर यज्ञदत्त शर्मा सेक्रेटरी पजाब प्रदेश जनसघ, आचार्य रामदेव जी प्रधान पञ्जाब प्रदेश जनसघ, प्रिन्सपल भगवानदास जी, ला० रामगोपाल शालवाले, चौ० धर्मसिंह राठी पानीपत, चौ० बाबूराम, डा० मङ्गलसेन रोहतक (जनसघ) मेम्बरान असेम्बली पजाब, ला० हरदेव सहाय जी, प्रकाशवीर शास्त्री, प० रघुवीरसिंह शास्त्री, डा० कृष्ण गोपाल करनाल, ला० साधुराम बॉसल मोड़, श्री रामपाल शास्त्री आर्यविद्यालय निडाना, मास्टर बीरबलदास गुप्त नरवाना।

इस अवसर पर अपने इलाका के वीर सत्याग्रहियो का स्वागत किया जायगा और रेलवे दुर्घटना में शहीद होने वाले वीर अमरसिंह तथा वीर सौरनसिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की जावेगा।

रात को सत्याग्रहियों की फिल्म दिखाई जावेगी ६ फरवरी को साढ़ दस बजे दिन मे अध्यक्ष का जलूम जुड़ी ज्वाल माला से चलेगा।

समाजों की सूचना

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजो को सूचित किया जाता है कि सभा की अवैतनिक उपदेशिका श्रीमती जगधात्रीदेवी जी एटा निवासी जहाँ कहीं भी प्रचारार्थ पहुचे, समाजे उन से प्रचार कराने की कृपा करे।

—शिवदयालु मंत्री

आ.स. सहालकी किशनपुर सहारनपुर

इस समाज का वार्षिकोत्सव २८ फरवरी और १, २, मार्च ५८ को होगा।

उपदेश विभाग की सूचना

उत्तर प्रदेश में दयानन्द सप्ताह एवं समाजों के उत्सव

मास फरवरी के पुरोगम

१ प० ओमप्रकाश जी शास्त्री—८ से ११ फरवरी उत्सव आर्यसमाज अकबरपुर (कानपुर) १४ से १६ फरवरी आ० समाज थाना भवन।

२ प० रुद्रदत्त जी शास्त्री—१ से १६ फरवरी दयानन्द सप्ताह आ० स० मेरठ शहर, २१ से २४ उत्सव आ० स० गवां (बदायू)

३ प० सत्यमित्र जी शास्त्री—१० से १६ फरवरी दयानन्द सप्ताह आर्य समाज मैनपुरी, २७ फरवरी से २ मार्च उत्सव आ० स० फतेहपुर।

४ प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री—उत्सव आ० स० गहरौली (हमीरपुर) ५ से ८ फरवरी तक।

५ श्री श्रवणसिंह जी—१४ से १६ उत्सव आ० स० थाना भवन।

६ श्री भद्रपाल जी—१० से १६ दयानन्द सप्ताह आ० स० अलीगढ़, २१ से २४ उत्सव गुरुकुल विद्यालय सिरसागज (मैनपुरी)

७ श्री धर्मदत्त जी आनन्द—१० से १६ दयानन्द सप्ताह आ० स० बहजोई।

८ श्री गजराजसिंह जी—१४ से १६ उत्सव आ० स० थाना भवन।

९ श्री सर्वगुणप्रसाद जी—१६ से १८ उत्सव आ० स० उतरौला (गोंडा)।

१० श्री धर्मराजसिंह जी—१० से १६ दयानन्द सप्ताह आ० स० मऊनाथ भजन

११ श्री महेशचन्द्र जी—विवाह सस्कार १५, १६ फरवरी (गुरुसहायगज)।

१२—श्री महिपालसिंह जी—८ से ११ उत्सव आ० स० अकबरपुर (कानपुर) १५ से १७ आ० स० स्थापना गगापुर।

१३—श्री प्रकाशवीर जी—१६ से १८ मेला रठौडा आ० स० रामपुर द्वारा।

—शिवदयालु, अधिष्ठाता उपदेश विभाग

आर्य साधु आश्रम, लाडवा कानपुर

हर वर्ष आर्य साधु आश्रम लाडवा (करनाल) मे वैदिक धर्म का प्रचार शहीदी मेला तथा धार्मिक मेला के नाम से होता है ?

पूर्व वर्षों की भाति इस वर्ष भी वसन्त पचमी के शुभ अवसर पर वितीय वार्षिक शहीदी मेला बाल हकीकत राय की स्मृति मे २४ से २६ जनवरी ५८ तक (तीन दिन) मनाया गया, जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर के महोपदेशक प० मुनीश्वर देव जी सिद्धान्त शिरोमणि और भारतीय जनसघ जि० करनाल के मुख्य कार्यकर्ता डा० कृष्ण गापाल जी के प्रवचनो के साथ म० ओम प्रकाश म० कपूरचन्द चौ० नथासिह जी और स्वामी बेधडक जी के भजन हुये।

इस अवसर पर २ दिन ऋषि लगर जारी रहा सहस्र के लगभग स्त्री पुरुष बच्चो ने भोजन पाया और रात्रि को लाडवा मण्डी म प्रचार से जनता ने लाभ उठाया ?

धामिक मेला का तासरा वार्षक उत्सव ४ अप्रल स ७ अप्रैल अर्थात २१ चैत्र स २४ चत्र तक आश्रम के समीप वाली भूमि म मनाया जायगा।

गोरखपुर में स्वामी अभेदानन्द

आर्य जगत् के सर्वोच्च नेता स्वामी अभेदानन्द जी महाराज ने गोरखपुर से हिन्दी रक्षार्थ सत्याग्रह म जाने वाले वीरो को आशार्वाद देते हुए समस्त हिन्दू जनता से अपील की कि वह आर्यसमाज का सहयोग करके राष्ट्रहित म हाथ बटाय। इस समाराह म श्रा द्विजराज शर्मा, मन्त्रा जिला उपसभा गारखपुर, श्रा रामप्रसाद जी घडासाज, उपप्रधान आर्यसमाज गोरख पुर, श्रा बच्चन शर्मा, श्रा भगवती प्रसाद वश्य, श्रा फुल्लालाल, श्रा विश्वनाथ शुक्ल एव तान अन्य सत्या ग्रहियो न भाग लिया इन सत्याग्रही वीरो का स्वागत जिला उपसभा के उपप्रधान वयावृद्ध नत श्रा हातालाल श्री इन्जानियर तथा गारखपुर समाज क अधिकारियो न भा किया।

आर्यसमाज पंचपुरी गढ़वाल

प्रधान—श्री धमचन्द्र जी आर्य
उपप्रधान—श्री बचाराम जी आर्य
मत्रा—श्री शातप्रकाश जा 'प्रेम' प्रभाकर
उपमत्रा—श्री भुवनश प्रसाद जा
कोषा०—श्रा चन्द्रसिंह जी बिष्ट

आर्य प्रातनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए श्रा शान्तिप्रकाश जी प्रेम और श्रा धर्मचन्द्र जी आर्य प्रति निधि निर्वाचित किये गये।

१९५७ का स्वातन्त्र्य संग्राम

(पृष्ठ ५ का शेष)

अब भी समय है, कि सरकार आर्य समाजी तूफान से न खेले। १९५७ के इस सग्राम के आगे नत मस्तक होकर सद्भावना पूर्ण वातावरण का सृजन करे अन्यथा ५७ को पुन ५८ मे परिणत किया जा सकता है। जितने सत्याग्रही सात मास मे गये अब वह सात दिन मे जायेगे। जेलो की दीवारे आर्य वीरो के वियोग म आसू बहाता होगी अब वहाँ स्वाहा सुधा की वह पवित्र वेदध्वनिया कहाँ? पुन वह जेले मुस्करा उठेगी। कही फिर हमे न कहना पडे—"उस नेहरू से ललकार के कह दो, पजाब की भाषा हिन्दी है।

गोरखपुर जिला-सम्मेलन

श्री होतीलाल जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ, जिसमे १२ समाजो के प्रतिनिधियो ने सर्वसम्मति से निश्चय किया कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के आज्ञानुसार जिले के सगठन को सुन्द बनाया जाय और सभी समाजे अपना अधिवेशन प्रत्यक रविवार का ८ बजे प्रात हा करे इस वर्ष शिवरात्रि पर्व गारखपुर मे सम्मिलित रूप से मनावे तथा अपने अपने क्षेत्र मे ७ दिन प्रभातफेरी एव यज्ञ का सुन्दर कार्यक्रम बनावे। सर्वसम्मति स यह भो निश्चय हुआ कि प्रत्येक समाज २५ रुपया प्रति वर्ष जिला उप सभा को सहायतार्थ शाघ्र भेज दे। जिले की समाजो के रक्षार्थ एक समिति भा गठित का गइ जा शीघ्र ही कार्यक्रम बनाकर अपना कार्य प्रारम्भ कर दगा।

आ० म० गोरखपुर

प्रधान—श्री हातीलाल जा
उपप्रधान—श्रा रामप्रसाद घडीसाज
मन्त्री—श्री नरसिंह सहाय
उपमत्रा—श्रा रामाप्रसाद
कोषा०—श्री सूर्यबला प्रसाद
पुस्तका०—श्रा कन्हयालाल आर्य
सहा० पुस्तका०—श्री प्यारेलाल
आय व्यय निरा०—श्रा ठा० रामराजसिंह



आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण के प्रस्ताव

२४ जनवरी को आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद की अन्तरङ्ग सभा में निम्न आशय के प्रस्ताव पास किये गये:—प्रथम प्रस्ताव में सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति द्वारा उठाये गये हिंदी सत्याग्रह सम्बन्धी कदम का समर्थन किया गया और आन्दोलन के नेता श्री घनश्यामसिंह गुप्त पर पूर्ण विश्वास प्रकट करते हुए उन्हें कुशल नेतृत्व के लिए बधाई दी गई। दूसरे प्रस्ताव में हिन्दी सत्याग्रह में शहीद व अधिक घायल सत्याग्रहियों के परिवारों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए अज्ञात दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि भेंट की गई। तीसरे प्रस्ताव में हिन्दी सत्याग्रह में भाग लेने तथा कष्ट सहने वाले लोगों को धन्यवाद दिया गया। चौथे प्रस्ताव में शहीद सुमेरसिंह के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पांचवें प्रस्ताव में पं० नरेन्द्र जी प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण की हिन्दी आन्दोलन सम्बन्धी सेवाओं के लिए धन्यवाद दिया गया, उनकी प्रशंसा और उनके दीर्घायु होने की प्रार्थना की गई। छठे प्रस्ताव द्वारा उन आठ दिवंगत आत्माओं के प्रति शोक प्रकट किया गया जो २२ जनवरी को औद्योगिक प्रदर्शनी में हाइड्रोजन गैस सिलेन्डर फट जाने से मरे थे। सातवें प्रस्ताव में पं० मनोहरलाल जी संयोजक हिन्दी रक्षा समिति हैदराबाद की रिपोर्ट स्वीकार की गई और उनके उत्साहपूर्ण कार्यों की प्रशंसा की गई। —सत्यनारायण

आ० स० मुजफ्फरपुर

आ० स० मुजफ्फरपुर बिहार का ३४ वां वार्षिकोत्सव २० से २३ फरवरी ५८ को होगा। पुस्तक विक्रेता अधिक संख्या में वैदिक साहित्य लेकर पहुँचे।

वेद धर्म प्रचार केन्द्र

वेद धर्म प्रचार केन्द्र, सोनपुर, विहार में स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और गणतंत्र दिवस पर भाषण किया।

आ० स० करहल, मैनपुरी

प्रधान—श्री छोटेलाल द्विवेदी
उपप्रधान—श्री श्यामलाल महाशय
मन्त्री—श्री हरिशंकर कुलश्रेष्ठ
उपमंत्री—श्री श्याम स्नेहीलाल
कोषा०—श्री डा० उजागर लाल

आ०स० देवबन्द

प्रधान—पं० देवदत्त शर्मा वकील
उपप्रधान—श्री नरसिंहदास, बद्रीप्रसाद
मंत्री व पुस्तका०—श्री वीरेन्द्रसिंह
उपमंत्री - श्री विश्वम्भरदेव शास्त्री
कोषा०—श्री बाबूराम जी
प्रतिनिधि—प० देवदत्त शर्मा वकील

आ० स० इटावा

प्रधान—श्री महेश्वरी दयाल रायजादा
उपप्रधान—श्री नारायण गुप्ता, तथा भगवतदयाल दुबे
मन्त्री—श्री छेदालाल सक्सेना
उपमन्त्री—श्री कनौजीलाल दिग्विजय सिंह तथा उमाशंकर जी
कोषा—श्री चन्द्रनारायण दीक्षित
पुस्तका०—चन्द्रनारायण पुखरायण
प्रतिनिधि—श्री नारायण गुप्ता, छेदालाल, महेश्वरी दयाल

जिला सभा अलीगढ़

अलीगढ़ जिले से जो सहयोग धन जन द्वारा जिन व्यक्तियों ने पंजाब हिन्दी सत्याग्रह में दिया उन्हें जिला सभा अलीगढ़ने बधाई दिया। फिरोजपुर लाठीचार्ज व अम्बाला ट्रेन दुर्घटना तथा अन्य स्थानों पर जो सत्याग्रही दण्डित किये गये या दिवंगत हुए उन्हें इस सभा ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

जिला आर्य वीर दल उन्नाव

(१) २५ जनवरी को यहां ससमारोह बसन्तोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर दल की एक नई शाखा खोली गई जिसमें हिन्दुओं के अतिरिक्त मुसलमान बच्चे भी सोत्साह भाग लेते है। शाखा का चुनाव :—

पर्वनायक—श्री प्रतापसिंह
ग्रामनायक—श्री देशराजसिंह
शाखानायक—श्री रामअवतारसिंह
शिक्षा नायक—श्री अखिलेशप्रताप
मन्त्री—श्री इन्द्रस्वरूप

२—मण्डलसमिति का चुनाव निम्न प्रकार से हुआ :—

मण्डलपति—श्री जयपालसिंह
उपमण्डल पति—श्री रामचन्द्र जो
मन्त्री—श्री रविशकर शर्मा
प्रचारक—श्री रामऔतारसिंह
निरीक्षक—श्री राजबहादुरसिंह
कार्या०—श्रीनगर, पो०हसनगंज (उन्नाव)

आ० स० इकौना, बहराइच

प्रधान—श्री पूरणचन्द्र जी
उपप्रधान—श्री रामलाल जी
मन्त्री—श्री रामचन्द्र आर्य
उपमन्त्री—श्री कृष्णलाल जी
कोषा०—श्री रामविलास जी

पुस्तक-परिचय

[समालोचनार्थ पुस्तकों की दो प्रतियां भेजें। एक प्रति भेजने पर समालोचना नहीं—केवल पुस्तक प्राप्ति को सूचना मात्र प्रकाशित हो सकेगी। —सम्पादक

वैदिक बन्दन

लेखक और प्रकाशक—स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक, वेदानुसन्धान सदन. आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर सहारनपुर।

पुस्तक मिलने का पता—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्रद्धानन्द बलिदान भवन, दिल्ली ६। मूल्य ५॥) रु० पृष्ठ स० ४३६। कागज सफेद। छपाई साफ और सुन्दर। सजिल्द आवरण पृष्ठ सहित।

प्रभु बन्दना से आध्यात्मिक उन्नति होती है और बन्दन के लिए इस पुस्तक में १५० उपयोगी वेद मन्त्रों की बड़ी सरल और सुन्दर व्याख्या की गई है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे वन्दना द्वारा आर्य जनों की आध्यात्मिक उन्नति करना ही इस पुस्तक का उद्देश्य है। ईश्वर, जीवात्मा, मन, मोक्ष, ध्यान, अभ्यास, वैराग्य आदि आध्यात्मिक विषयों पर ही चुने हुए वेदमन्त्रों की व्याख्या इस पुस्तक में की गई है। अतः इसका नाम वैदिक वन्दन सर्वथा उचित है। दैनिक स्वाध्याय और अध्ययन के लिए यह पुस्तक उपयोगी है। प्रत्येक आर्य समाज के पुस्तकालयों मे यह पुस्तक हो तो अच्छी बात होगी।

गांधी जी की विचित्र अहिंसा

लेखक—भक्त रामशरण दास
प्रकाशक—हिन्दू प्रकाशन, पिलखुवा मेरठ

मूल्य आठ आने—पृष्ठ सं० ४८

पुस्तक का भाव नाम से ही स्पष्ट है जिसमें गांधी जी की अहिंसा सम्बन्धी कुछ विचित्र सिद्धान्तों की आलोचना की गई है। लेखक के अनुसार गांधी जी की अहिंसा में चार विचित्र बाते हैं—

१—अण्डा फल है मांस नहीं।
२—बन्दरों को मारना हिंसा नहीं।
३—गो वध बन्दी कानून अन्याय है।
४—राम और कृष्ण हिंसक व पथ भ्रष्ट थे।

ये चारों बाते ऐसी है जिन पर विश्वास नहीं होता कि गांधी जी जैसे महात्मा भी ऐसी बातें कह सकते थे पर यदि यह सत्य है तो निःसन्देह सर्वथा निन्दनीय है। लेखक ने अपने पक्ष को प्रमाणित करने के लिए गांधी जी के लेखों से अनेकों प्रमाण भी दी है पर हमें सन्देह है कि लेखक को कहीं कहीं गांधी जी के विचारों व परिस्थितियों को समझ कर उनके लेखों का उचित अर्थ करने में धोखा हुआ है। जो भी हो विद्वद्वर्ग को इस पर विचार करना चाहिए। —स० सम्पादक

आ० स० पुसद

२४ १-५८ को श्री विश्वकर्मा सा मिल का उद्घाटन श्रीमान् ध्रुवनारायण बगड़े द्वारा हुआ। सर्वप्रथम स्थानिक आर्यसमाज की ओर से हवन का कार्यक्रम हुआ। पश्चात् डा० भगवानसिंह का ओजस्वी भाषण हुआ।

आ० स० सूरजमई दुगमई

प्रधान—श्री जीवाराम यादव
उपप्रधान—श्री केशवदेव
मन्त्री—श्री शीतलप्रसाद
उपमन्त्री—श्री छत्रपालसिंह
कोषा०—श्री दयालसिंह
पुस्तका०—श्री ज्वालाप्रसाद
निरीक्षक—श्री रामवीरसिंह

आ० स० बहादराबाद

इस समाज का वार्षिकोत्सव २५ से २७ जनवरी ५८ तक बडे समारोह सहित सम्पन्न हुआ। श्री ओम्प्रकाश शास्त्री का प्रभावशाली भाषण हुआ। निर्वाचन निम्नप्रकार हुआ—

प्रधान—श्री लाला न्द्राजसिंह

उपप्रधान—श्री चौ० मूलसिंह

मन्त्री—श्री बुद्धेश्वर गुप्त

उपमन्त्री—श्री हृदयराम

कोषा—श्री काशीराम

आ०स० मेस्टन रोड,कानपुर

आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर का वार्षिकोत्सव १५, १६, १७, १ फरवरी ५८ को होने जा रहा है। इ अवसर पर अनेको विद्वान् पधारें और कई सम्मेलन होंगे।

आ० स० मोगांव

प्रधान—श्री सच्चिदानन्द आर्य

मन्त्री—श्री सदानन्द जी

कोषा०—श्री रामकिशोर

पंजाब में आर्य महासम्मेलन और हैदराबाद में राष्ट्र भाषा हिंदी सम्मेलन का आयोजन

निकट भविष्य मे ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से अखिल भारतीय स्तर पर पजाब मे आर्य महासम्मेलन होने वाला है। तैयारियाँ प्रारम्भ हो गई हैं। विशेष सूचना समय समय पर आर्य जनता को दी जाती रहेगी। दोनों ही सम्मेलन बडे शानदार और विराट होंगे।

आ० स० सहतवार

२५ जनवरी को यहाँ चार सदस्यों (श्री कृष्ण प्रसाद, रामसिंहासन राम, रामेश्वर प्रसाद और जगन्नाथप्रसाद) का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। श्री सुदर्शनसिंह मन्त्री ने संस्कार कराया सायकाल प्रीतिभोज हुआ जिसमें २५ व्यक्तियों ने भाग लिया। चुनाव —

प्रधान—श्री केदार प्रसाद
उपप्रधान—श्री रामसिंहासन राम
मन्त्री—श्री सुदर्शन सिंह
उपमन्त्री—श्री रामेश्वर प्रसाद
कोषा०—श्री हीरा प्रसाद
पुस्तका०—श्री जगन्नाथ प्रसाद
निरीक्षक—श्री शिवशकर

मन्दिर निर्माण कमेटी का भी निर्वाचन हुआ, श्री सुदर्शनसिंह के प्रयत्न से यहाँ आर्य वीर दल भी स्थापित हो गया है जिसके प्रधान श्री रामानन्दसिंह, मन्त्री श्री बिहारीसिंह और कोषा० श्री कृष्णप्रसाद हैं।

आर्य वीर दल शाहगंज, जौनपुर

आर्यवीरदल शाहगज ने अम्बाला ट्रेन दुर्घटना में दिवगत सात हिन्दी सत्याग्रहियों के लिए शोक प्रस्ताव पास किया।

दयानन्द कालेज ज्योति में आग

दिनाक २० जनवरी को शाम के चार बजे छुट्टी के उपरान्त दयानन्द इन्टर कालेज ज्योति, मैनपुरी मे किसी व्यक्ति ने आग लगा दिया जिससे विद्यालय का समस्त फरनाचर, पुस्तकालय तथा आफिस रेकर्ड जल कर राख हो गया। विद्यार्थी तथा अध्यापक जो कि अपने घरो का जा चुके थे आग देख कर तुरन्त लौट पडे। सबो ने बडे परिश्रम से आग बुझाने का प्रयत्न किया जिसम उनका चोट भी आई।

—वीरेन्द्रनाथ भारतीय, कालेज मैनेजर

आ० स० सिकन्दराबाद

प्रधान—श्री दानमल सर्राफ
उपप्रधान—श्री भगवानदास जी
मन्त्री—श्री आनन्द प्रकाश जी
उपमन्त्री—श्री हरपालसिंह
उपमन्त्री—श्री किशोरालाल जी
कोषा०—श्री छदम्मीलाल जी
पुस्तका०—श्री ब्रजकिशोर जी

आर्यवीर दल सम्भल

नगरनायक—श्री रामावतार वर्मा
उपनगरनायक—श्री बाबूराम अग्रवाल, ब्रजकिशोर
मन्त्री—श्री नरेन्द्र प्रकाश
उपमत्री—श्री उमेशचद्र, ओम वर्मा
अर्थनायक—श्री नवलकिशोर जी
बौद्धिकनायक—श्री सत्यवीर जी

आ० स० इन्दौर

प्रधान—श्री हरिसिंह जी
उपप्रधान—श्री ज्ञानेशचन्द्र, बाबूराम
मन्त्री—श्री धर्मेन्द्रनाथ
उपमन्त्री—श्री जयप्रकाश, वेदप्रकाश
कोषा०—श्री चन्द्रशेखर जी
पुस्तका०—श्री रामकुमार जी

शहीद सुमेरसिंह का चित्र

अनेकों आर्य बन्धु मुझसे मेरे पुत्र शहीद सुमेरसिंह का चित्र मागते हैं। मेरे पास सुमेरसिंह का अब कोई चित्र नहीं है। मैंने सुमेरसिंह के जन्म से चिता तक के सभी चित्र श्री आशानन्द भजनीक आ० स० नया बास, दिल्ली को दे दिया है वे मैजिक लैन्टर्न द्वारा प्रचार करते हैं। अत आर्य बन्धु सुमेरसिंह का चित्र उन्हीं से मगावे या सार्वदेशिक सभा को लिखें।—प्रभुदयाल (सुमेरसिंह का पिता)

जालन्धर मे विशाल हिन्दी रक्षा सम्मेलन

श्री अजीतसिंह सत्यार्थी ने सूचित किया है कि ९ फरवरी ५८ को जालन्धर म एक विशाल हिन्दी रक्षा सम्मेलन किया जायेगा जिसकी अध्यक्षता श्री घनश्यामसिंह गुप्त अध्यक्ष सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति करेंगे। इस सम्मेलन द्वारा सरकार पर यह दबाव डाला जायेगा कि वह जल्दी हिन्दी रक्षा समिति की मागो को स्वीकार करे। इससे पूर्व भी पजाब में दो बडे बडे हिन्दी रक्षा सम्मेलन हो चुके हैं। हिन्दी प्रेमी जनता को एक बार और जोर लगाने की आवश्यकता है।

हरचन्दपुर में आर्य समाज

हरचन्दपुर, रायबरेली म स्वामी इष्टानन्द जी ने अनेकों स्थानों पर चार दिनों तक प्रचार किया फल स्वरूप आर्यसमाज को स्थापना हुई श्री फतेह बहादुर जी प्रधान और श्री राजकिशोर जी मन्त्री चुने गये। प्रत्येक रविवार को सत्य समाज का साप्ताहिक सत्सग लगना निश्चय हुआ।

आ० स० बैरिया, चम्पारण

इस समाज के प्रधान श्री ढोका साह का निधन हो गया और वैदिक रीत्यानुसार उनकी अन्त्येष्टि कराई गई।

यज्ञ और नेहरू जी

[पृष्ठ २ का शेष]

करेंगे और मनु महाराज का यह वाक्य फिर दोहराया जा सकेगा—

'एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन ।
स्व स्व चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवा ॥'

यज्ञ का वैज्ञानिकता का अधिक विस्तार से समझने के लिए 'यज्ञ चिकित्सा' पुस्तक का अवलोकन श्रेयस्कर है। सरकार ने भी इस पुस्तक पर पुरस्कार देकर और पचायतराज के पुस्तकालयो के लिए स्वीकार करके इस पुस्तक की उपयोगिता को स्वीकार किया है।

सभा प्रधान विजयी



आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान राजकुमार श्री रणजयसिंह जी। विगत १७ जनवरी को आप लखनऊ स्थानीय निकायो के निर्वाचन क्षेत्र से, जिसमे लखनऊ, हरदोई, उन्नाव, सीतापुर, खीरी लखीमपुर, रायबरेली, फैजाबाद गोंडा, बहराइच बाराबकी, सुल्तानपुर तथा प्रतापगढ के जिले सम्मिलित है विधान परिषद् (उ०प्र०) के सदस्य निर्वाचित हुए हैं। आपको सर्वाधिक मत मिले है। आर्यप्रतिनिधि सभा आपकी इस अद्वितीय विजय पर बधाई देती है।

—सभा मन्त्री

अमेठी समाचार

१—श्री रणवीर जू० हा० स्कूल रामनगर मे नेता जी बोस की जयन्ती मनाई गई श्री राजकुमार रणजयसिंह एम० एल० सी०, सभा प्रधान, श्री रामकिशोर शास्त्री बी० ए० आदि के भाषण हुए।

२—एम० एल० सी० के चुनाव मे विजयी होने पर अमेठी राज्य द्वारा सचालित समस्त विद्यालयों के छात्रों व अध्यापको ने श्री राजकुमार रणजय सिंह जी को बधाई देते हुए अभिनन्दन पत्र भेट किये।

३—श्री गुरुप्रसाद सिंह एम० एल० ए० की अध्यक्षता म एक कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलन हुआ जिसम राजकुमार रणजयसिंह तथा अन्य लोगो ने अपने विचार रखे।

४—२६ जनवरी को रामनगर और अमेठी म बडे समारोह के साथ गणतन्त्र दिवस मनाया गया। छात्रों के खेलकूद, कुश्ती सभा, श्रमदान, टेनिस मैच, नाटक कविसम्मेलन, आदि हुए।

५—राजकुमार जी की अध्यक्षता मे एक शोक सभा हुई जिसमे बाबा राघवदास, आचार्य चन्द्रबली पाडेय, तथा ज्योतिषाचार्य नागेश अध्यापक के असामयिक निधन पर शोक प्रकट किया गया।

पंजीकरण सं. ए. ६०

२० माघ १८७४ (६ फरवरी ५८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, [illegible] मार्ग, लखनऊ
दूरभाष : [illegible] तार : 'आर्यमित्र'

पंजाब सत्याग्रह का इतिहास तैयार होगा,

सामग्री एकत्रीकरण का कार्य आरम्भ

आर्यसमाज द्वारा पजाब में चलाये भाषा स्वातन्त्र्य सग्राम का इतिहास तैयार करने की योजना आरम्भ हो गई। यह इतिहास आर्य समाज की ही नहीं हिन्दू जाति की अमूल्य वस्तु होगा। सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के कार्यालय से देश की समस्त समाजों और हिन्दी रक्षा समितियों को सत्याग्रह सम्बन्धी आवश्यक सामग्री चित्र एव वृत्तान्त आदि भेजने के आदेश जारी किये गए हैं। दो फरवरी को सार्वदेशिक सभा की होने वाली अन्तरङ्ग सभा मे इसके लिए एक उपसमिति का भी निर्माण किया जाना है। आशा की जाती है कि मार्च तक यह इतिहास तैयार हो जायगा।

तहसील बागपत जि. मेरठ में

क्षेत्रीय वेद-प्रचार मडल की स्थापना

दि० १६ १ ५८ दिन रविवार को जाट वैदिक डिग्री कालिज बड़ौत के प्रिन्सिपल श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री के मकान पर समस्त तहसील के प्रतिष्ठित आर्य विचारों के भद्र पुरुषो तथा आर्य समाज के कर्मठ-कार्यकर्ताओं ने एकत्रित होकर वेद प्रचार कार्य को बल देने के लिए परामर्श किया, और भावी कार्यक्रम को क्रियात्मक रूप देने के लिए एक क्षेत्रीय वेदप्रचार मण्डल बड़ौत की स्थापना की गई, जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारियो का निर्वाचन सर्वसम्मति से हुआ।

प्रधान—श्री घासीराम जी
उपप्रधान—श्रीअमनसिंह जी सूबेदार
तथा श्री मनाराम जी
मन्त्री—श्री सुखवीरसिंह शास्त्री
उपमन्त्री—अशोकवर्धन शास्त्री बी० ए०
कोषाध्यक्ष—श्री माधवसिंहजी प्रिंसिपल
जाट इण्टरकालेज बड़ौत

आर्यसमाज पहासू

१६ १ ५८ को आर्य समाज पहासू का जल्सा ठाकुर होतीसिंह जी मुखिया तथा सत्याग्रही हिन्दी रक्षा आन्दोलन के प्रयत्न से ग्राम कुमारपुर म मुन्शी नरायनसिंह जी के प्रधानत्व मे हुआ। जिसमे देववाणी विद्यालय की छात्राओं ने भाषण दिय, और भी सज्जनो के भाषण तथा भजन हुये। प्रभाव अच्छा रहा। ठाकुर गोकुलसिंह जी ने प्रभावित होकर जल्दी अमावस्या का जल्सा अपने ग्राम अर्जीजाबाद में रखा इस जल्से म आसपास के हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सत्याग्रहियो को भी आमन्त्रित किया गया जिनका फूल माला से खूब स्वागत किया गया, मन्त्री समाज ने उनको धन्यवाद तथा आर्शीवाद दिया और प्रेरणा की कि भविष्य में भी जब कभी आवश्यकता हो समाज के आवाहन पर बलिदान होने को तैयार ई।

रामप्रसाद मन्त्री आर्यसमाज पहासू

हैदराबाद वापसी पर पं० नरेन्द्र जी, का भव्य स्वागत

हैदराबाद, २२ जनवरी। आज प्रात साढे सात बजे प० नरेन्द्र जी, कार्यकर्ता प्रधान सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति दिल्ली और प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण पजाब हिन्दी आन्दोलन म विजय प्राप्त करने के बाद रेल द्वारा दिल्ली से नामपल्ली स्टेशन पहुँचे। स्टेशन पर एक विशाल जनसमूह ने जिसकी सख्या लगभग दो हजार थी नारो की गूंज म प०जी का भव्य स्वागत किया। जैसे ही प० जी डिब्बे से बाहर आये जन समूह ने उनको फूलो से लाद दिया।

पडित जी को स्टेशन पर माला पहनाने वालों में उल्लेखनीय सर्वश्री प० विनायकराव जी विद्यालङ्कार एम० पी०, बी० किशनलाल जी मेयर हैदराबाद, प० मनोहरलाल जी, प० मदनमोहन जी, ए० बाल रेड्डी जी आदि प्रमुख थे।

स्टेशन के बाहर पडित जी को केशव मेमोरियल हाईस्कूल के स्काउट ने गार्ड आफ आनर पेश किया।

पडित जी का स्टेशन से खुली मोटर गाडी मे जलूस निकाला गया।

सिकन्दराबाद रेलवे स्टेशन पर भी पडित जी का आर्यसमाज सिकन्दराबाद और सीताफल मण्डी की ओर से भव्य स्वागत किया गया।

आ०स० सुन्दरनगर फजलपुर

इस समाज का ३१ वा वार्षिकोत्सव १, २, ३, ४ फरवरी ५८ को होगा। बड बडे विद्वान पधारेगे।

आर्य नेताओं का पंजाब व्यापक दौरा

फरवरी में कई समारोह

पजाब में सात मास से चल रहे हिन्दी सत्याग्रह के सफलतापूर्ण वातावरण में समाप्त होने और भारत भर के सत्याग्रहियों के सकुशल अपने घर लौट आने पर सत्याग्रह का एक महत्वपूर्ण अध्याय समाप्त हो गया है। अब शीघ्र ही सरकारी पक्ष की ओर से भी घोषणा हो जानी है। आर्य समाज के चोटी के कुछ आर्य नेता फरवरी में पजाब का भ्रमण करेंगे। कई स्थानों पर क्षेत्रीय सम्मेलन भी होंगे। सारे पजाब में अभी से अपने नेताओं के आगमन का समाचार सुन कर हर्ष की लहर दौड गई है। बडे उत्साह से उनके स्वागत आदि की तैयारियाँ चल रही हैं। मार्च में होने वाले अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन मे भी पजाब निवासी भारत के विभिन्न प्रान्तो से आने वाले आर्यों का जी खोलकर अभिनन्दन करने का प्रोग्राम बना रहे हैं। अनुमान है इस सम्मेलन मे एक लाख से ऊपर व्यक्ति बाहर के पहुँचेंगे। फरवरी के पहले सप्ताह में सम्मेलन का स्थान निश्चित हो जायगा।

दो सुझाव

१—सार्वदेशिक सभा ने शहीद सत्याग्रही बहिन भाइयो के स्मारक बनाने का जो निश्चय किया है मेरी राय म उनका मूर्ति रूपी स्मारक न बनाया जावे ताकि हम महर्षि दयानन्द जी के बताये सिद्धान्त से विचलित न हो—स्मारक म हिन्दी पाठशाला, हिन्दी पुस्तकालय, बालक्रीडा स्थल, औषधालय, पाक, यज्ञशाला आदि उनके नगरों अथवा निकटवर्ती आर्य समाज मन्दिरों के सम्पर्क मे ऐसी चीजें बनाई जावें।

२—अम्बाला ट्रेन दुर्घटना में जो व्यक्ति स्वर्ग सिधारे उनके विषय में एक बडे पत्थर पर विवरण खुदवा कर अम्बाला स्टेशन के प्लेटफार्म पर लगा दिया जावे जैसा कि महारानी लक्ष्मीबाई की ग्वालियर में समाधि के [illegible] हुआ है। इसी [illegible] डा०[illegible] की [illegible] के [illegible] जावे।

—[illegible]
मन्त्री आ०स०, [illegible]

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा देहली

धार्मिक परीक्षाओं की तिथि मे परिवर्तन

सार्वदेशिक सभा देहली द्वारा सचालित धार्मिक आर्य सिद्धान्त सम्बन्धी परीक्षायें इस वर्ष अब बसन्त पचमी पर न होकर २३ फरवरी १६५८ रविवार को होगीं। प्रत्येक आर्य विद्यालय तथा आर्यसमाज में केन्द्र होना आवश्यक है। छात्रों तथा सदस्यों को आगामी महर्षि दयानन्द सप्ताह में परीक्षा ग्रन्थों का विशेष स्वाध्याय कर अपनी योग्यता के अनुरूप परीक्षा में सम्मिलित होकर लाभ उठाना चाहिए। परीक्षायें महर्षिकृत पच महायज्ञ विधि, व्यवहार भानु आर्योद्देश्य रत्नमाला, सत्यार्थप्रकाश, सस्कार विधि और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ग्रन्थों म होंगी।

नियमावली तथा फार्म शीघ्र मगाइये। सक्षिप्त विवरण निम्नप्रकार है—

परीक्षा		पत्र	पूर्णाङ्क	शुल्क	परीक्षा दिनाङ्क
आर्य सिद्धान्त विशारद		१	१००	१)	२३–२–५८
„	भूषण	२	२००	२)	„
„	रत्न	३	३००	३)	२३ तथा २४ फरवरी ५८

अधिकारियों से प्रार्थना है कि केन्द्र स्थापित कर फार्म और शुल्क शीघ्र भेजें। फार्म स्वीकार करने की अन्तिम तिथि १० फरवरी १६५८ है।

[illegible] —
वीरेन्द्र [illegible] एम० ए० आचार्य
मन्त्री सार्वदेशिक विद्यार्य सभा, [illegible]

[illegible] आर्ट प्रेस [illegible] प्रेस, ५ [illegible] मार्ग, लखनऊ में मुद्रित तथा प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् ओ३म्

आर्यमित्र

इसी शिवरात्रि के पावन पर्व पर—



बालक मूलशंकर को वह सत्य ज्ञान प्राप्त हुआ था जिसका विश्व में प्रचार करके वे महर्षि दयानन्द बने।

वैदिक प्रार्थना

ओं अहं भुवं वसुनः पूर्व्यस्पतिरहं धनानि सं जयामि शश्वतः । मां हवन्ते पितरं न जन्तवोऽहं दाशुषे विभजामि भोजनम् ॥

परमेश्वर कहता है : मैं सब प्रकार के धनों का सबसे पहला स्वामी हूं, मैंने ही सब प्रकार के धनों को सनातन से वश में किया हुआ है, सब जीव मुझे ही पिता की नाईं पुकारते हैं, मैं दान देने वाले को भोगने योग्य पदार्थ देता हूं। ऋ० १०।४८।१

ऋषि बोध अंक

सम्पादक—
शिवदयालु, सभामन्त्री

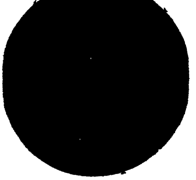
सह० सम्पादक—
भगवत शरण

एक प्रति का [illegible] नये पैसे | लखनऊ, रविवार २७ माघ शक १८७९ [१६ फरवरी १९५८] | विदेश में

इस अंक के आकर्षण

महर्षि दयानन्द की कितनी कठोर साधना थी ?

(श्री विश्वम्भरसहाय प्रेमी)



महर्षि दयानन्द सरस्वती

शिवरात्रि के अवसर पर हमे आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के जीवन पर चिन्तन करने का अवसर प्राप्त होता है। साधारणतया हमे इस प्रश्न पर भी विचार करने का अवसर मिलता है कि हम आर्यसमाज के कार्य को किस प्रकार गति प्रदान करें। यहाँ पहिले मैं महर्षि दयानन्द के जीवन पर कुछ विचार करना आवश्यक समझता हू। हमे देखना यह है कि स्वामी दयानन्द ने कितनी कठोर साधना की।

महर्षि दयानन्द जिस समय अपने परिवार को छोड़कर सच्चे शिव की खोज मे निकले तो उन्होंने सच्चे गुरू का खोज की। उस खोज का एक लम्बा प्रसंग महर्षि के जीवन वृत्तान्त मे आता है। अभी गत दो तीन वर्षों मे मुझे टिहरी गढ़वाल तथा गढ़वाल जिले के अनेक स्थानो मे जाने का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने इधर टिहरी, उत्तरकाशी और गगोत्तरी तक की यात्रा की। टिहरा कई बार जाना हुआ। स्वामी दयानन्द महाराज न टिहरी के वन पर्वतो मे काफी विचरण किया था। भगीरथी के तट पर वे सच्चे साधु महात्माओ की खोज मे भटकते रह। यहाँ तक कि उनका कभा कभा निराहार ही रहना पड़ा। टिहरी का उस घटना का स्मरण भा हा आता ह जब दो पहाड़ा मास काट रह थे और स्वामा जी इस क्रिया को देखकर वापिस लौट गये थे।

इसमे भी कठिन यात्रा और साधुओ की खोज का वह प्रसग है जो अलखनन्दा के नीरव निषीथ बीहड़ बन मे स्वामी दयानन्द के विचरण करने से सम्बन्ध रखता है। मैंने उस युग मे यात्रा की जबकि ऋषिकेश से केदारनाथ, त्रियुगी नारायण, बद्रीनाथ तक का मार्ग बहुत उन्नत और सुगम हो गया है। दूसरे मनुष्यों का गमनागमन भी बढ़ गया है। फिर भी कई बार ऐसी दुर्गम घाटियों और तग पगडंडियों से मार्ग पूरा करना पड़ा जहाँ जरा सी असावधानी मे जान को जोखिम पहुँच सकती थी। यह तो बात हुई बीसवीं शदी की। स्वामी दयानन्द ने तो अब से एक शदी पूर्व इस क्षेत्र के इन विकट मार्गों मे विचरण किया था जहाँ मनुष्य का दर्शन भी कभी कभी दुर्लभ हो जाता था।

एक बार स्वामी जी बदरीनाथ से भी आगे माना की ओर गये। यह स्थान ११००० फिट से अधिक ऊचाई पर है। वहाँ वे मार्ग भूल गये। अलखनन्दा की धारा को पार करते समय नोकीली बर्फ की चट्टानो ने उनके पैरो मे घाव कर दिये। वे जीवन मरण से टक्कर लेते हुए किसी न किसी प्रकार बदरीनाथ लौटे। स्वामी जी ने स्वय इसका वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है—

"एक दिन सूर्य के निकलते ही मैं बदरीनाथ के मन्दिर के बाहर निकला और पर्वत के नीचे चलने लगा। अन्त मे अलखनन्दा के तट पर जा पहुंचा। मैंने पहाड़ के नीचे नीचे जो मार्ग जाता था उसे पकड़ लिया और मैं वन की ओर अलखनदा के साथ साथ चलने लगा। पर्वत और पर्वत के नीचे का मार्ग सब ही बर्फ से ढका हुआ था। इस कारण मैंने बहुत ही कष्ट से उस दुर्गम मार्ग का अतिक्रमण किया और जो स्थान अलखनन्दा का उत्पत्ति स्थान प्रसिद्ध है, वहाँ पहुँच गया। वहाँ मैंने देखा कि मेरे चारों ओर ही गगनभेदी पर्वत माला खड़ी है।"

इससे आगे के वृत्तान्त मे आता है कि जब मार्ग का चिह्न भी न रहा तो स्वामी दयानन्द किस तरह से अलखनन्दा को पार करके लौटे। उन्होंने लिखा है "अलखनन्दा को पार करने के लिए मैं जल मे उतरा। उसका जल कहीं बहुत ही गहरा था और कहीं बहुत कम था। उसकी नली छोटे छोटे बर्फ के टुकड़ों से भरी हुई था। उन तीक्ष्ण धार वाले बर्फ क टुकड़ो के सघर्षण से मेरे नगे तलवे क्षत विक्षत हा गये क्षत विक्षत स्थानो से लाहू चूना आरम्भ हो गया था। मेरे पैर डगमगाने लगे। उस समय मेरे मन मे यह विचार उठने लगा कि सम्भवतः अलखनन्दा के इस असहनीय शीतल गर्भ मे गिरकर बर्फ में जमकर मेरा जीवन जायगा।"

स्वामी जी ने पैरो पर पट्टियां बांधी ज्यों त्यों करके वे उस सकट से निकल कर बदरीनाथ पहुँचे। इस प्रकार की और भी घटनायें उनके जीवन में आई हैं परन्तु यह घटना सबसे अधिक हृदय विदारक दृश्य प्रस्तुत करती है। स्वामी जी ने इस प्रकार की कठोर साधना को ज्ञानानुशीलन का मार्ग समझा था। ज्ञान प्राप्ति के लिए वे निरन्तर प्रयत्नशील रहे। नर्वदा तट की यात्रा भी बड़ी सकट पूर्ण यात्रा थी। स्वामी दयानन्द निर्जन वन मे मार्ग की खोज करते रहे। उन्होने स्वय लिखा है—

"एक बहुत काला रीछ मेरे सामने आकर खड़ा हो गया। वह गरजकर अपनी पिछली टांगो पर खड़ा हो गया और उसने मुझे खाने के लिए मुंह खोला। मैं उस समय कुछ क्षण तक स्पन्दनहीन अवस्था मे खड़ा रहा और धीरे धीरे अपनी लाठी उसके मुंह पर मारने को उठाई। मेरी लाठी देखकर न जाने वह रीछ किस कारण से हट कर चला गया।"

वसे तो महर्षि दयानन्द का सारा जीवन ही विपदाओं से परिपूर्ण रहा परन्तु यौवनावस्था में वे शिव, ज्ञान और सच्चे गुरू की खोज मे किस प्रकार एक महान् साधना पथ पर अग्रसर रहे इसका सक्षिप्त विवरण मैंने यहां प्रस्तुत करने का यत्न किया है।

सत्य पर अटल--

स्वामी दयानन्द का जीवन उन सत्य तथ्यो की खोज मे परिपूर्ण रहा जिनके द्वारा वे सच्चे शिव को प्राप्त कर लेना चाहते थे। उन्होने वैदिक ज्ञान को प्राप्त करके कल्याणकारी शिव की अपनी आत्मा मे खोज की। जीवन पर्यन्त वे ईश्वर को पाने के लिए साधना, तप और योग मे तल्लीन रहे।

यह तो उनके अपने आत्मिक विकास की बात रही। सब से महत्व पूर्ण बात यह थी कि वे अपने ज्ञान से ससार के मानवों को भी लाभान्वित करना चाहते थे। उनका जीवन सब मनुष्यों के हित के लिये बना। उन्होंने गिरते हुए मानवो को उठाया १८५७ की क्रांति के कारण जिन व्यक्तियों मे साहस स्वाभिमान एवं स्वधर्म की चेतना नहीं रही थी, उनमें पुनः प्राण संचार किया।

स्वामी दयानन्द ने पद दलित भारत में नई चेतना उत्पन्न की। जिस समय स्वामी दयानन्द मार्च १८६६ ई० में हरिद्वार कुम्भ के अवसर पर हरिद्वार पहुँचे, इसी समय से उनका प्रचार कार्य प्रारम्भ हुआ। उन्होंने बड़े बड़े प्रलोभनों पर ठोकर मार दी। वे इस यत्न में रहे कि दीन हीन भारत का कल्याण हो। वे भारत के अज्ञान को दूर करके फिर से ज्ञान की ज्योति जलाना चाहते थे। उनका प्रचार कार्य वेदों पर आधारित था। वेद को स्वामी जी ईश्वरीय ज्ञान मानते थे, उन्होंने इस बात का यत्न किया कि अनेक देवता वाद के स्थान में मे एक ईश्वर की पूजा हो। इसी कारण वे मूर्ति पूजा का बराबर खण्डन करते रहे और इस प्रश्न पर वे तनिक भी नहीं झुके।

आज मानव समाज मे वास्तविक शान्ति का अभाव है। स्वामी जी चाहते थे कि भारतवासी कल्याणकारी मार्ग पर चलकर परस्पर प्रेम, विश्वास और सहानुभूति की भावना उत्पन्न करें। इसके लिए स्वामी दयानन्द जीवन पर्यन्त प्रयत्न करते रहे। उनका कहना था कि चरित्रवान मनुष्य ही किसी समाज को उन्नत कर सकते हैं।



—लेखक—

इसके लिए उन्होने उपदेश दिया कि मनुष्य को सच्चरित्र हो कर परमात्मा का स्मरण करना चाहिए।

शिवरात्रि के अवसर पर हम सभी को महर्षि दयानन्द के जीवन का अध्ययन करना चाहिए। हमें इस बात का भी चिन्तन करना चाहिए कि आर्य समाज वर्तमान समय मे किस प्रकार मानव समाज का कल्याण कर सकता है। स्वामी दयानन्द के जीवन का जितना भी हम अध्ययन करेंगे, उतना ही हमें यह बोध होगा कि वह महान् आत्मा विश्व कल्याण के लिए जीवन भर प्रयत्न करती रही। हमे यह भी सोचना चाहिए कि इस नैतिक स्तर को उन्नत करने के लिए आर्य समाज के प्रचार की बड़ी आवश्यकता है।

आर्य्य जगत में सब से अधिक छपने वाला आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

ओ३म्

आर्य्य मित्र

वर्ष ६०

अङ्क ७

लखनऊ—रविवार माघ २७, शक संवत् १८७९, फाल्गुन कृ० १३, वि० २०१४ (१६ फरवरी १९५८) दयानन्दाब्द १३३ सृष्टिसंवत् १९७२९४९०५८

सम्पादकीय

महामानव दयानन्द का बोध-पर्व

★

शिव चतुर्दशी वह ऐतिहासिक तिथि है कि जिसमे १०० वर्ष से अधिक हुआ कि टकारा के एक नव युवक मूल शकर भावी महर्षि स्वामी दयानन्द के विचारों मे महती क्रान्ति का जन्म हुआ। नगरो के बाहिर भगवती डमी नदी के तीर श्री कुबेर नाथ का वह ऐतिहासिक शिव मन्दिर आज भी उस घटना की साक्षी देने के लिये खड़ा हुआ है जहा वश परम्परा के अनुसार मूलशकर अपन पूज्य पिता जी के साथ शिव पूजन निमित्त शिवरात्री को पधारे थे।

पार्थिव शिव का अर्चन कर उनकी आत्मा सन्तुष्ट न हुई घटघट व्यापी चैतन्य शिव की अर्चना करने की भावना बलवती हो उठी। उस चैतन्य शिव का यथार्थ बोध और उसकी प्राप्ति के साधनो की खोज म घर बार छोड़कर मूलशकर न वन पर्वतों का रास्ता लिया।

नर्मदा, गगा के तटो पर और उत्तराखण्ड की गुफाओं मे योगियो की खोज मे विचरने लगे। अनेक प्रकार की साधनाओं को करते हुए तथा नाना ग्रन्थो का अध्ययन करते हुए ज्ञान के आदि स्रोत वेद का सम्यक् बोध प्राप्त करने के निमित्त किसी महान् ज्ञानी गुरु के चरणो मे उपस्थित होने की कामना मूलशकर जी में जो इस समय सन्यास आश्रम मे प्रवेश कर चुके थे और दयानन्द सज्ञा प्राप्त कर चुके थे मथुरा मे दण्डी वृजानन्द जी के चरणो म पहुँचे।

गुरु धाम मे वेदों का सच्चा मर्म जानकर और वेद धर्म का प्रचार जीवन पर्यन्त करने के व्रती बनकर दयानन्द कार्य क्षेत्र मे अवतीर्ण हुए।

सर्वथा विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी ऋषिवर ने अदम्य साहस से वैदिक क्रान्ति का शखनाद पवित्र भूमि भारत में गुजारित किया। देश के कोने कोने म पहुँच कर मतान्धता और अन्धविश्वासो से टक्कर ली, वेद ज्ञान के सूर्य की रश्मियो से भारत की सुषुप्त आत्मा को जाग्रत किया। सास्कृतिक, सामाजिक, नैतिक एव शैक्षणिक क्षेत्रो मे भारी क्रान्ति ऋषि राज ने अपने जीवन मे की और अनेक अद्भुत ग्रन्थो का निर्माण किया तथा अपने मिशन को आगे बढाने के लिये और उस देश देशान्तरो तथा द्वीपद्वीपान्तरो तक पहुचाने के लिये आर्य समाज की स्थापना की।

आज उस ऋषि द्वारा सस्थापित महान् क्रान्तिकारी सगठन आर्य समाज को ८२ वर्ष व्यतीत हो चुके ह। इस दीर्घ काल मे आर्य समाज न अपने देश भारत म तथा भारत से बाहर एशिया महाद्वीप तथा यूरोप आदि म वैदिक मिशन का कितना आगे बढ़ाया है, आर्यों म कितनी कर्तव्य निष्ठा, श्रद्धा तप और स्वाध्याय की भावना बढी है आज इस पावन पर्व के अवसर पर उसे हमने जाचना है। व्यक्तिगत और समष्टिगत इसकी हम पड़ताल करनी है। आओ आत्मा की नम्रता म हम सब ऋषि दयानन्द के ऋणी अन्तर्मुखी होकर इसकी जाच करे।

उस महामानव दयानन्द का स देश हा ससार की सब जातियो और राष्ट्रो का भारत का एकमात्र अमर सन्देश है देखे इस अमर सन्देश को देश क गाव गाव म और भारत से बाहिर अरबों मानवों स बसा वसुन्धरा में कौन कौन सुनाने का व्रत आज धारण करता है।

—शिवदयालु

अन्तरंग अधिवेशन की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग सभा का साधारण अधिवेशन ९ मार्च १९५८ दिन रविवार को समय १२ बजे मध्यान्होत्तर स्थान आर्यसमाज मन्दिर बिहारीपुर बरेली शहर मे होगा। कृपया सर्व अन्तरङ्ग सदस्य अवश्यमेव नियत समय स पूर्व पधार कर कृतार्थ करे।

सभा मन्त्री

दण्ड के बदले पुरस्कार

सत्य, न्याय और अहिंसा की ढोग रचने वाली इस कांग्रेसी सरकार के राज्य मे आए दिन इन तीनो ही बातो का किस प्रकार खून किया जाता है, इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है पजाब के अत्याचारी और अन्यायी मुख्य मन्त्री श्री प्रतापसिंह कैरो को केन्द्रीय कांग्रेस कार्य समिति मे रख लेना। जिस व्यक्ति ने अपने राज्य मे जलियान वाले बाग काड को भी मात करने वाला हत्याकाड फिरोजपुर सेन्ट्रल जेल मे कराया, जिस व्यक्ति के इशारे पर ग्राम बहु अकबरपुर (रोहतक) की निर्दोष जनता पर क्या-क्या अत्याचार न किये गये, जिसके राज्य मे अनेकों बार निहत्थे सत्याग्रहियों पर लाठी चार्ज हुए, जिसके पापपूर्ण अत्याचार से तीन मास के बच्चे भी नहीं बच सके, जिसकी साम्प्रदायिकता से आर्य मन्दिरो को अपवित्र किया गया और पूज्य सन्यासियों का अपमानित किया गया, ऐसे अन्यायी और अत्याचारी व्यक्ति को केन्द्रीय कांग्रेस कार्य समिति मे लेकर कांग्रेस हाई कमान ने न केवल सत्य और न्याय का गला घोटा है बल्कि पजाबियो तथा जनमत की भावना का बहुत बड़ा तिरस्कार किया है। चाहिए तो यह था कि उपरोक्त कुकृत्यो के लिए कांग्रेस हाइकमान द्वारा उस व्यक्ति का कठोर नम दड दिया जाता पर हम अत्यत खेद है कि आज पचशील के गायक नहरू के राज्य म इतने बड़े अत्याचारी का इस प्रकार पुरस्कृत किया जा रहा है। हम पूछना चाहते ह कि क्या ऐसा करके कांग्रेस हाइकमान अत्याचार और अराजकता को बढ़ावा नहीं दे रहा है?

पता चला है कि ससदीय कांग्रेस दल के मन्त्री श्री अलगूराय शास्त्री सदस्य लोक सभा कांग्रेस अध्यक्ष श्री ढेबर से पूछने वाले हैं कि सरदार प्रतापसिंह कैरो को कांग्रेस कार्य समिति मे सम्मिलित करने की क्या आवश्यकता आ पड़ी थी और कैरो ने कौन से अच्छे कार्य किये हैं जिनके लिए कांग्रेस उन्हे यह पुरस्कार दे रही है।

श्री शास्त्री जी अपने हाइकमान से चाहे यह पूछें या न पूछें पर पजाब की जनता अवश्य पूछेगी और हाइकमान को इस प्रश्न का उत्तर देना ही होगा।

मौन जलूस या धमकी

हम विश्वास के साथ कह सकते है कि ९ फरवरी को दिल्ली म अकाली सिखो का जो विशाल मौन जलूस निकला, वह वास्तव मे मौन जलूस नही था बल्कि एक धमकी थी जो अकालियो ने मास्टर तारासिंह के नतृत्व मे केन्द्रीय सरकार को दी है, इस उद्देश्य स कि हिन्दी सत्याग्रह की सफलता से प्रभावित होकर सरकार हिन्दी रक्षा समिति की मॉगो को कहीं स्वीकार न कर ले। साथ ही उनका यह भी उद्देश्य है कि नई दिल्ली म रहने वाले विदेशी राजदूत उनसे प्रभावित हो और उन्हे यह विश्वास हो जाय कि पजाब म कांग्रेस सरकार सिखो के प्रति अत्याचार कर रही है, विदेशो म इसकी चर्चा चले और आर्यसमाज का मागे न माना जॉय।

निश्चय ही अकाली नेता वही चाल चल रहे ह जो उन्होने १९५४ ५५ म नहरू को प्रभावित करने के लिए किया था। अत हम भारत सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट करते हुए कहना चाहते ह कि सरकार ऐसे साम्प्रदायिक और अराष्ट्रीय शक्तियो को बढने न दे अन्यथा इसका परिणाम पूरे देश के लिए आहतकर होगा। इस जलूस द्वारा आर्यसमाज के नताओ को भी सिखो ने एक प्रकार से ललकारा है और अब आर्यसमाज को भी अवसरोचित कर्य करने के लिए पुन तैयार हो जाना चाहिए।

—भ० शरण

महर्षि दयानन्द

(ले०—प्रो० मुन्शीराम शर्मा एम० ए० पी० एच० डी०, डी० लिट्०)

★

मानव शरीर मे कभी कभी कुछ ऐसे विशुद्ध सत्व, सस्कृतमन, महाप्राण व्यक्तित्व दिखाई दे जाते है, जिनकी उपस्थिति सहस्रों नर नारियों की आंखो को आकर्षित करती है, जिनका आर श्रद्धा सवलित मन अर्ध्य प्रदान के लिए स्वत चल पड़ते है और जो किसी धरातल के जनवर्ग के हृदयो म युग युग तक निवास किया करते ह। इन महापुरुषो की दैवी गुण सम्पदा मानवता के वक्षस्थल पर एसी गहरी छाप छोड़ जाती है जिसे कराल काल के निदारुण नख भी मिटा सकने म असमर्थ हो जाते ह। महर्षि दयानन्द एसे ही महापुरुषो मे से एक हैं।

स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र का अध्ययन करन स ज्ञात होता है कि वे जैसे बाहर से विशालकाय थे, वैसे ही अन्दर से भी। उनका बाह्य शारीरिक वैभव आन्तरिक शरीर की प्रतिच्छवि मात्र था। वे जैसा दृढ शरीर रखते थे, वैसा ही दृढ सकल्प भी। सत्य के प्रति उनका आग्रह अनुभव करते ही बनता है। असत्य के परित्याग और सत्य के ग्रहण करने मे वे जी जान से जुट जाते हैं। शिवलिंग जब तक उनकी दृष्टि में प्रभु का प्रतीक रहा, तब तक वे उसके पूजन में निरत रहे, पर जैसे ही उसका जड पार्थिव रूप उनके मानस चक्षुओं के समक्ष प्रकट हुआ वैसे ही वे उसकी पूजा से विरत हो गये। शिवलिंग पर चढ़े हुए प्रसाद को चाटते हुए मूषिक की मुद्रा ने उन पर कुछ ऐसा प्रभाव डाला, एक ऐसे आध्यात्मिक प्रकाश का उद्घाटन किया, जो उनके जीवन में आराध्य और अनाराध्य के विवेक की कुंजी बन गया। मूलशंकर का का शुद्ध चैतन्य के रूप मे यह परिवर्तन उनके जीवन का केन्द्र बिन्दु है।

पार्थिवता से चेतनता विशिष्ट है। पार्थिवता अनाराध्य है, चेतनता आराध्य है। एक साधन है, दूसरा साध्य है। हमें साधन को साधन ही समझना चाहिए, साध्य नहीं। जो व्यक्ति अथवा जाति साधन को साध्य मान लेती है, उसके जीवन मे विकृतियाँ आरम्भ हो जाती हैं। जीवन रक्षा के लिए भोजन करना साधन है, किसी पथ का अस्तित्व कतिपय विशेष आदर्शो की रक्षा के लिये साधन है, पर यदि हम भोजन को साध्य और जीवन को साधन मान लें, पंथ को साध्य और आदर्शों को साधन समझ ले, तो क्या परिणाम होगा, मानवता कहाँ पहुँचेगी, इसकी कल्पना करना भी अत्यन्त क्लेश कारक है। विश्व का इतिहास इसके अनेक उदाहरण प्रस्तुत करता है। पथ को धर्म समझ कर जो जहाद खड़े किये गए हैं और उनमे मानव अपने ही बन्धु मानव के खून का भेड़िये के समान कितना प्यासा बना है, इसे इतिहास वेत्ता भली भाँति जानते हैं। भोजन के कारण जीवन का बलिदान करने वाले मानव भी इस धराधाम पर देखे गये और देखे जाते ह।

महर्षि ने पार्थिवता के समग्र रूपो को साधन और आत्मा को साध्य माना है। प्रकृति का अस्तित्व और उसका उपभोग आत्म साक्षात्कार के लिये है। महर्षि ने देखा, जो आर्य जाति आध्यात्म प्रिय थी, वह आकार प्रिय बन गई है, जो आत्मा की पूजा करती थी, वह प्रकृति की पूजा कर रही है, जो पत्थरो से मकान बनाती थी, वह मन्दिरो मे अर्चनार्थ प्रस्तर प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा कर रही है। महर्षि के हृदय को धक्का लगा। वे सोचने लगे महान् आर्य वश का इतना पतन !! वे इस पतन को देख नहीं सके, सह नहीं सके। जिस जाति के मनीषी खुले आकाश में, पर्वतों के शिखर पर, सरिताओं के संगम पर अथवा पूत तपोभूमियों में बैठकर प्रभु की आराधना करते थे और उसकी सर्वव्यापकता तथा सर्वशक्तिमत्ता को हृदयङ्गम करते थे, उनके वंशज सकीर्ण सीमाओं में अपने आराध्य देव को बांध लें, उसे चेतन के स्थान पर जड समझ बैठें, यह प्रभु प्रदत्त प्रकाश की, मानव बुद्धि की विगर्हणा है, उसका शोचनीय ह्रास है। महर्षि ने यही सोचकर अपना समस्त जीवन प्रकृति के ऊपर आत्मतत्त्व को प्रतिष्ठित करने में लगा दिया।

स्वामी दयानन्द ने आर्य जाति का ध्यान जैसे ही बाहर से अन्दर की ओर खींचा, प्रकृति से हटाकर आत्म तत्त्व की ओर लगाया, वैसे ही यह आंखे मलती हुई खड़ी हो गई। इस चेतना ने उसे मानसिक दासता से ही मुक्त नहीं किया, राजनैतिक पराधीनता के पाशो को छिन्न भिन्न करने के लिए भी उद्यत कर दिया। महर्षि के जीवन काल में और उसके उपरान्त आर्य जाति ने अपने बाह्याभ्यन्तर उद्धार के लिए जो सामूहिक प्रयत्न किये, वे इसी चेतना के परिणाम थे। स्वतन्त्रता की जो परिभाषा महर्षि ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में

'शिवरात्रि' का शुभ सन्देश

भ्रष्टाचार दूर करो

(पं० हरिशंकर शर्मा, आगरा)

★

शिवरात्रि का दिन बड़ा शुभ है। इस दिन मूलशंकर को बोध हुआ था, ऐसा बोध जिसने भारत को जीर्ण शीर्ण जनता के जर्जर शरीर मे नव जीवन सचार कर दिया और उसे सत् पथ का बोध कराया। महर्षि दयानंद ने राजनैतिक क्रांति का भी सूत्रपात किया था सबसे पहले उन्होंने ही कहा था—

"कोई कितना ही कहे परन्तु जो स्वदेशीय होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। कृपा, न्याय, दया, के साथ भी विदेशियो का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है।"

ऋषि के उक्त कथन के बीस वर्ष बाद यही बात इग्लैण्ड के प्रधान मन्त्री श्री हेनरी केम्प बेल बैनर मैन ने कही थी—Good Government is no Substitute for self Government

"स्वराज्य" और "प्रजातन्त्र" का समर्थन और साम्राज्य' एव एक सत्तात्मक राज्य प्रणाली का विरोध सबसे प्रथम हमें महर्षि दयानन्द की ही विमल वाणी मे पाते ह।

आज भारत 'स्वतन्त्र' है 'स्वराज्य' की स्थापना हो चुकी है। परन्तु यह 'स्वराज्य' सर्वसाधारण की सुखसुविधा का स्वराज्य नहीं कुछ लोगों की सुख समृद्धि का 'स्वराज्य' है। 'स्वराज्य' होगया, परन्तु अभी 'सुराज्य' की आवश्यकता बराबर बनी हुई है। स्वराज्य सूर्य की किरणों के साथ साथ भ्रष्टाचार की भयङ्करता और स्वार्थ सिद्धि की प्रचरता उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है इस राजनैतिक गन्दगी को दूर करने के लिए आर्यसमाज को निरीह और निःस्वार्थ भाव से कार्य क्षेत्र मे अवतरित होना पड़ेगा। अर्थात् जिस प्रकार उसने सामाजिक दूषण दूर करने के लिए प्रशंसनीय प्रयत्न किया उसी प्रकार उसे राजनैतिक भ्रष्टाचार अथवा 'स्वराज्य' की गन्दगी दूर करना होगा। आज से ३३ वर्ष पूर्व अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा था—

'जहाँ धार्मिक और सामाजिक उन्नति क्षेत्र में भारत को दयानन्द के पीछे चलकर ही कल्याण मार्ग सूझा है, वहाँ राजनैतिक क्षेत्र मे भी भारतवासियो को ऋषि दयानन्द के बतलाये मार्ग पर ही चलना पड़ेगा, क्योंकि वास्तविक सफलता का निर्दिष्ट मार्ग यही है।

सत्यार्थ प्रकाश में लिखी, वह कालान्तर मे राष्ट्रीय कांग्रेस के लिए प्रकाश-स्तम्भ सिद्ध हुई, इसे हम सभी जानते हैं।

महर्षि की दया ने आर्यावर्त में आनन्द की वर्षा की, इसे आज इस स्वाधीन देश का बच्चा बच्चा अनुभव कर रहा है। कोई माने या न माने पर यह तथ्य है कि महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायियों ने ही आज का यह सुदिन लाने के लिए सर्व प्रथम तपश्चर्या प्रारम्भ की थी अब हम स्वाधीन हैं और विश्व की महान् जातियों के समक्ष अपना शिर गौरव से ऊंचा किये हुए हैं, पर इस स्वाधीनता की जड़ में जो वीर नींव की शिला बने पड़े हैं, उन्हें कौन जानता है ? राष्ट्र की वेदी पर आत्माहुति देने वाले उन प्रथम श्रेणी के वीरों में लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, श्री श्यामकृष्ण वर्मा, प्रसिद्ध क्रांतिकारी नेता प० रामप्रसाद बिसमिल', सभी आर्य समाजी थे। महात्मा गांधी का समस्त प्रोग्राम आर्य समाज का प्रोग्राम था और

(शेष पृष्ठ १४ पर)

यही नहीं गांधीवाद से महान् मर्मज्ञ सन्त विनोबा भावे ने भी हाल में यही कहा है—

"सात्विक लोगों को एकांत छोड़ना चाहिए और बाजार में आना चाहिए जबतक धर्म बाजार मे नहीं आएगा और मन्दिर, मठ, मस्जिद मे ही बन्द रहेगा, तब तक धर्म की शक्ति नहीं बनेगी। इधर तो दान, धर्म चलता है पर बाजार में धोखा-धड़ी चलती है। धर्म डरपोक बनकर मन्दिर में बैठा रहता है। अब उसको आक्रमण करना चाहिए याने बाजार मे, व्यवहार में, राजनीति मे आना चाहिए और वैसे सेवक भी तैयार होने चाहिए" ("भूदानयज्ञ' ८ नवम्बर ५७) उपर्युक्त सार कथन का अभिप्राय यह है कि यदि 'स्वराज्य' को 'सुराज्य' का रूप देना है तो धर्म को निर्भयता पूर्वक आगे बढ़ना होगा। उस राजनैतिक क्षेत्र से गन्दगी मिटानी पड़ेगी, भ्रष्टाचार भगाना होगा शिवरात्रि का यही सन्देश है। स्व० स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने भी यही बात कही है। और आज का महान् सन्त विनोबा भी धर्म से यही पवित्र, शुभ एवं कल्याणकारी काम कराना चाहता है।

हम चाहते हैं कि आर्य समाज इस सन्देश को ध्यान पूर्वक सुने और सैद्धान्तिक दृष्टि से राजनैतिक क्षेत्र मे भी अवश्य अवतरित हो।

सत्य

—श्री वासुदेवशरण अग्रवाल
(काशी विश्वविद्यालय)

वैदिक परिभाषा में सृष्टि का आविर्भाव अग्नि और सोम इन दो कारणों से हुआ है। मूल में एक प्राण तत्व शीत और उष्ण इन दो रूपों मे प्रकट होता है। अग्निसोमात्मक जगत् यही विश्व की विज्ञान सम्मत रचना है। इनमे सोम की धारा ऋत और अग्नि की सत्य कही आती है ऋत और सत्य ही सर्वप्रथम किसी अभीद्ध तप या महतो महत् उष्ण तत्व से प्रकट हुआ करते हैं।

ऋत का स्वरूप वह है जिसमे कोई केन्द्र न हो। जो शक्ति का सर्व व्यापक रूप है वह ऋतात्मा है। उस शक्ति-समुद्र मे जब मन्थन उत्पन्न होता है, जब सृष्टि के लिए क्षोभ आरम्भ होता है तब वह बलात्मक अभिव्यक्ति जिस बिन्दु पर प्रकट होती है उसे सत्यात्मक केन्द्र कहते हैं। बल की अभिव्यक्ति का जो सस्थान बनता है वही त्रयी विद्या कहलाता है। ऋक् यजु साम की सज्ञा त्रयी विद्या है। इनमें ऋक् वस्तु का विस्कम्भ या परिणाह या व्यास कहलाता है, साम उस पिण्ड या सस्थान की परिधि या मण्डल कहा जाता है। यह परिभाषा *तैत्तरीय ब्राह्मण मे पाई जाती है।

ऋग्भ्यो जाता सर्वशो मूर्तिमाहु,
सर्वा गतिर्याजुषी है व शश्वत्।
सर्वं ते जा साम रूप हशश्वन्,
सर्वं हा द ब्रह्मणा है व सृष्टम॥

ऋक्तत्व=व्यास या मूर्ति का निष्कम्भ
सामतत्व=परिधि, तेजो मण्डल।

ऋक् और साम मिलकर एक आयतन बनाते हैं। इनके सम्मिलन स एक छन्द, पात्र बनता है। इसे वैदिक भाषा मे 'वसट्कार पात्र भी कहा जाता है। वाक् पाच भौतिकतत्व इस पात्र म ही सगृहीत हाता है। 'ऋक् सामे वै इन्द्रस्य हरी' अर्थात् ऋक् साम वे अश्व हैं जो इन्द्र के वाहन का काम करते हैं। इन्द्रतत्व मध्यप्राण की सज्ञा है। इन्द्र वह है जो प्रत्येक वस्तु के केन्द्र मे स्थित प्राणतत्व है जो वहाँ जलता इन्धन करता हुआ, उसके जीवन का कारण बनता है। शतपथ ब्राह्मण म छवे काण्ड के आरम्भ मे इन्द्र शब्द और मध्य प्राण का इस विद्या की व्याख्या की है। असज्ञ अन्त सज्ञ, ससज्ञ इन तीन प्रकार की सृष्टि मे सर्वत्र इन्द्रतत्व ही प्रधान है। जितने मूत भौतिक पदार्थ हैं सबके केन्द्र बिन्दु पर या हृदय मे इन्द्रतत्व या प्रज्ञात्मा प्राण विद्यमान है अन्त सज्ञ वृक्ष वनस्पति मे भीतर ही विद्यमान है, बहार इन्द्रियों के रूप मे स्फुट भाव में नहीं आता। असज्ञ सृष्टि मृत्तिका, पाषाण आदि मे विराट मन की सत्ता है, प्रातिस्विक केन्द्र मे इन्द्र तत्व की अभिव्यक्ति वहाँ नहीं है किन्तु प्राण और मन से विहित सृष्टि का एक परमाणु भी नहीं है,

ऋक नाम के आयतन या सीमा में, या पात्र मे या छन्द मे जो रस तत्व सगृहीत होता है वह यजु कह लाता है। यह यजु क्या है? ऊपर कहा है कि—सर्वा गतिर्याजुषी हैव शश्वत। जितना गतितत्व है उसी की सज्ञा यजु तत्व है। इसी उपनिषदो म यजु का परिभाषा करते हुए कहा है कि यजु शब्द म दो स्वरूप है—एक यत् या गतितत्व दूसरा जू अर्थात् आकाश या स्थितितत्व वैदिक साहित्य मे आकाश स्थिति भाव का सूचक है और वायु गतिभाव का प्रतीक है। स्थिति और गति इनकी समुचित सज्ञा यजु है। प्रत्येक गति के लिए स्थिति के धरातल की आवश्यकता होती है। जहा स्थिति नहीं वहाँ गति की विद्यमानता हो ही नहीं सकती। गतिभाव ही सृष्टि है। जब प्रशान्त शक्ति के समुद्र या सरोवर मे क्षोभ उत्पन्न होता है अर्थात् गति उत्पन्न होती है वही सृष्टि का आविर्भाव होने लगता है। सूक्ष्म शक्ति तत्व का स्थूल भूत रूप मे प्रकट हाना यही सृष्टि है। गति के दो रूप है—गति और उससे सापेक्ष आगति। शक्ति का केन्द्र से परिधि की ओर प्रवाह, धन से ऋण विद्युत् तक जाना यह गति है। उसी का अपनी सीमा पर पहुचने के बाद पुन केन्द्र में लौटना आगतिभाव है। इसी स्पन्दन का नाम गति है। प्राण शक्ति है। प्राण की सर्वोत्तम वैज्ञानिक परिभाषा यही है।

प्राणो वै समञ्चन प्रसारणम् (शतपथ ८ ४ १ १०) प्रत्येक गति का मूल सकोच प्रसार भाव ही है, यही प्रजापति का स्पन्दन ब्रह्म चक्र म प्रकट हो रहा है, हृदय विद्या मे यही प्रकट हो रहा है, इसी से सवत्सर का जन्म होता है। सूर्य पर आश्रित सवत्सर अग्नि सोम, या शीत उष्ण के सको चन प्रसारण पर ही निर्भर है, स्थिति गति आगति की समष्टि को वैदिक परिभाषा म हृदय विद्या कहते हैं। हृदय का तात्पर्य केन्द्र से ही है। हृदय विद्या की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि हृदय तत्व एक अक्षर है। अक्षर नाम है प्राण का। प्राण ही शक्ति है। उसका स्पन्दनात्मक रूप हृदय बल है। उसमें शक्ति की अभि व्यक्ति इस प्रकार समझनी चाहिए।

(१) ह—आहरण, बाहर से भीतर लाना।

(२) द—अवखण्डन, भीतर केन्द्र से शक्ति का बाहर की ओर जाना।

(३) य—इन दोनो का नियमित करना।

'ह' आगति है। (द) गति है। 'य' स्थिति है। य सकेन हैं। इनके एक साथ मिलने से हृदय बनता है और यही गति आगति स्थिति का त्रिक शक्ति की अभिव्यक्ति मात्र का मूल है। हृदय का ही केन्द्र कहते हैं। वेद म केन्द्र शब्द नही है। पर केन्द्र का ही उस समय हृदय उक्थ, मनु गर्भ गुहा आदि शब्दो स अभिहित करते थे।

इस प्रकार ऋक यजु साम अर्थात व्यास परिधि और यजु अर्थात् गति के मिलन से प्रत्येक सस्थान या वृत्त का आस्तत्व है। प्रत्यक भौतिक पिण्ड म उसका केन्द्र बल या हृदय बल ही मूल सचालक है। यह भीतर स्पन्दन शील रहकर बाहर के ऋत तत्व से या शक्तिसचय से भीतर शक्ति का आक र्षण करता है उसी से प्राण द्वारा भूत सृष्टि सम्भव होता है।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

महा मानव

क्यों महामानव उतारे?
एक विधु तम को हरे, यों तो गगन में लाख तारे॥
मानधाता से महिष जब मेदिनी मद मस्त रहे थे।
दुष्ट दुर्दम दैत्य दल जब देव दल को दल रहे थे॥
स्वर्ग में बैठे हुए जब इन्द्र उग्र उबल रहे थे।
तब तपस्वी ऋषि दधीचि सुभूमि भाग बदल रहे थे॥
अस्थि दान महान् दे बलिदान, सुर मानव उबारे।
क्यो महामानव उतारे॥१॥

जबकि रावण ने किये मुनि मानवों के मान मर्दित।
राक्षसो के अनय अत्याचार से वसुधा विकम्पित॥
कौन त्रेता म विजेता नीति का नेता सुनिश्चित।
कौन मर्यादा नरोत्तम राम सा आदर्श कश्चित्॥
कौन कृष्ण महान् सा मानव धरा म जन्म धारे?
क्यो महामानव उतारे॥२॥

जबकि हिंसा का धरा पर बोलबाला हो रहा था।
धर्म जो मरुभूमि म वा 'ब्लक सी' में सो रहा था॥
यज्ञ की पावन अनल में रक्त आहुत हो रहा था।
जाति के जलपान को जब अश्व अथाह डुबा रहा था॥
तब तथागत बुद्ध ने महिमूढ मानव लाख तारे।
क्यो महामानव उतारे॥३॥

चान म कन्फूशियस का शान्ति का सन्देश देना।
देश फारस न जना जरदुश्त सा फरजन्द पना॥
ईस का आदेश अरि से भी नहीं प्रतिशोध लेना।
विश्व को जीता अशोक महान् न बिनु शस्त्र सेना॥
शान्ति के थ दूत मानव प्रेम के मधुमय पिटारे।
क्या महामानव उतारे॥४॥

सन्त तुलसी सूर नानक नरसिं भक्त कबीर केते?
विश्व वर बन्धुत्व के नित जा रहे उपदेश देते॥
ऋषि दयानन्द दिव्य गाथा से धरा पर जन्म लेते।
ज्ञान दे बलिदान देते पर न मानव भाग चेते॥
है कहाँ सुकरात शकर सत्य के समुदित सितारे।
क्यो महामानव उतारे॥५॥

आज का विज्ञान दानव मृत्यु बनकर आ रहा है।
एच बम, अणु बम प्रलय भारी भयकर ला रहा है॥
यह धरा क्या, चन्द्र तक राकेट से घबरा रहा है।
त्रस्त मानव आर्तस्वर मे फिर पुकार मचा रहा है॥
स्वर्ग का सन्देश लेकर कोई पुण्यात्मा पधारे।
क्या महामानव उतारे॥६॥

—डा० सूर्यदेव शर्मा, साहित्यालङ्कार, एम० ए० डी लिट, अजमेर

अन्यों के लिए साधारण परन्तु महर्षि दयानन्द के लिए बाल्यावस्था में ही एक महत्वपूर्ण घटना हो गयी। शैव पिता ने चाहा शिव भक्ति मे वृद्धि हो, व्रत रखवाया। वास्तविक कल्याणकारी शिव का अन्वेषण प्रारम्भ हो गया। जड़ तथा चेतन का रहस्य प्रकट हो गया। महाबोध हुआ। परम पिता की प्राप्ति का सकल्प उत्तरोत्तर दृढ होता गया। दो और घटनाए ऐसी हुई कि अमरत्व की खोज करते करते



अजर अमर सर्वशक्ति सम्पन्न परमेश्वर का पूर्ण परिचय पा गये। योगाभ्यास तथा विद्याभ्यास के फलस्वरूप त्रिकालदर्शी मन्त्रद्रष्टा महर्षि हो गये। अपने तपोबल से ससार का उपकार करने का लक्ष्य निर्धारित किया। महाबोध का पथ प्रदर्शन किया। नाना प्रकार के विरोध हुए, विष का प्याला पी लिया परन्तु कभी भय तथा लाभ के वशाभूत न हुए। न्याय मार्ग से विचलित न हुए, निर्भीकतापूर्वक सत्यार्थका प्रकाश किया।

महाशिवरात्रि को हम लोग ऋषि बोधोत्सव मनाते हैं। महर्षि ने जहाँ यह घोषणा की कि वे किसी नवीन मत की स्थापना नहीं कर रहे हैं, उनका मत वही है जो ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त ऋषि मुनियों का था, वहाँ [illegible] अपने से सम्बन्धित [illegible] आहार भी नहीं बनाया। अन्यान्य महात्माओं की भाँति केवल [illegible] महाशिवरात्रि [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] मनाने की प्रथा प्रचलित [illegible] हैं। [illegible] लोग हैं [illegible] के जन्म दिन पर स्वार्थ सिद्ध करना मात्र रहता है। महापुरुषों का वे गुण गान तो करते हैं किन्तु अनुकरण तनिक भी नहीं।

महर्षि दयानन्द में चतुर्मुखी प्रतिभा थी। सुधार का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जिसमे वे अग्रणी न रहे हों। [illegible] शिक्षा को उन पर छाया

म हा बो ध

(राजकुमार रणञ्जयसिंह एम० एल० सी०, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०)

तक नहीं थी। वे प्राचीन आर्य सस्कृति के प्रतीक थे। प्राणिमात्र का कल्याण चाहते थे। पूर्ण गवेषणा के उपरान्त इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

महर्षि ने इस वेद से सिद्ध किया और मनुष्यमात्र की शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति के सब द्वार खोल दिये। ससार के उपकार को मुख्य उद्देश्य मानकर आर्य समाज की स्थापना की। वेद विद्या का लोप हो रहा था कितने ही लोग थे जो कहते थे वेद मानते हैं यद्यपि जानते नहीं थे, वेद लोक के लिए नहीं अपितु केवल परलोक के लिए समझे जाने लगे थे। वेदो की नियुक्ति तथा निघण्टु के अनुसार सस्कृत एवम् आर्य भाषा (हिन्दी) में टीका करके उनकी उपयोगिता पुन बढ़ा दी। सायण और महीधर के भाष्यों से जो भ्रम फैला हुआ था उसका निवारण किया। पाश्चात्य विद्वानों के नेत्र खुलने लगे। वेदो पर श्रद्धा हुई आर्य विद्वान् वैदिक साहित्य के अनुसन्धान मे तत्पर हुए।

आर्य समाज ने ऐसे ऐसे परोपकार पूर्ण कार्य किए जो सदा स्वार्णाक्षरो मे अंकित होने योग्य है। जन्म गत जाति पाँति के बखेड़ो को हानिकारक एवम् शास्त्र विरुद्ध बतलाकर गुण कर्म, स्वभावानुसार वास्तविक वैदिक वर्ण व्यवस्था की व्याख्या की। जिन्हे दलित समझा जाता था, जो मनुष्यत्व के अनेक अधिकारो से वंचित रखे जाते थे उन्हे प्राचीन पठन पाठन पद्धति में समानता प्रदान करके शास्त्री ही नहीं वेदालङ्कार तक बना दिया।

[illegible] उपदेश देकर [illegible] का निषेध किया, सदाचार समाज सुधार अनाथ तथा विधवा [illegible] की रक्षा का प्रबन्ध किया। गुरुकुल आदि [illegible] खोलकर [illegible] तथा [illegible] की योजना बनाई। सत्यासत्य निर्णय के लिए सु[illegible] साहित्य का सृजन किया तथा शास्त्रार्थ किये भारत भक्ति भरकर देश को स्वतन्त्र करने में प्रमुख भाग लिया।

इतना सब होते हुए फिर आर्य जन दूसरों के पीछे कैसे चलने लगे? क्या आलस्य में आकर सोचा कि और लोग बढे, हम भी साथ मे लगे रहे। सिद्धान्तो पर अटल न रह कर, आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन तथा मनन शिथिल कर दिया।

हमे गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए, आज हम कहाँ, क्या कर रहे हैं? सत्य सनातन वैदिक धर्म का निनाद करने वाले ऋषि बोधोत्सव ही मनाते हैं अथवा वेदों के पठन पाठन में भी सलग्न हैं। हमारे विद्यालयो विशेषतया ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुलों की क्या दशा हो रही है? जो बड़े गर्व से गाया जाया करता था कि—"वेदों का डङ्का आलम में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।" अथवा—"आयेगे सत अरब से, उनमें लिखा यह होगा, गुरुकुल का ब्रह्मचारी हलचल मचा रहा है"

उनमें कितना तत्व रह गया है। वेदों का कितना वास्तविक प्रचार हो रहा है? 'भारत भारतीयों का है' आंग्ल शासन काल में इसे महर्षि दयानन्द ने ही सर्व प्रथम घोषित किया तथा तदनुसार कार्य हुआ परन्तु धीरे धीरे हम भूलने चले जा रहे हैं। स्वतन्त्रता के उत्सवो के समय अधिकतर यही देखा जाता है कि कोई महर्षि का नाम तक नहीं लेता। जो सनातन धर्मी कभी शास्त्रार्थों में कहते थे कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ऋषि नहीं थे, वे तो उन्हे महर्षि मानने लगे हैं अखिल भारतीय सनातन धर्म पण्डित महा सभा के प्रधान काशी के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री गोपाल शास्त्री दर्शन केसरी तो अपने भाषणों में महर्षि दयानन्द के उपकारों की प्रशसा करते हुए उन्हे अवतार तक स्पष्ट बतलाने लगे हैं।

मैंने स्वय दानवीर सेठ युगल किशोर बिड़ला जी के दिल्ली तथा मथुरा के लक्ष्मीनारायण एव गीता मन्दिरो में धार्मिक आचार्यों के साथ महर्षि दयानन्द के चित्र अंकित देखे हैं और आर्य समाज के कई प्रतिष्ठित सज्जनो के यहाँ मैंने देखा है, अन्यान्य नेताओं के चित्र सुसज्जित हैं परन्तु महर्षि का चित्र दृष्टिगोचर नहीं होता कितने ही ऐसे [illegible] देखे हैं जो अपने बालको को ईसाइयों की पाठशालाओं में शिक्षा प्राप्त करा[illegible] [illegible] हैं किन्तु गुरुकुलों में नहीं। कितने ही आर्य बन्धु सत्य के [illegible] और असत्य के छोड़ने में उद्यत रहने का दम भरते हुए एक दूसरे के प्रति प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार [illegible] [illegible] दल बन्दियों में फसे हुए मिलते हैं।

कितने ही आर्यबन्धु यह समझ कर कि अब तो अपनी सरकार है, नशाबन्दी आदि करके आर्यसमाज के ही कार्य कर रही है, प्रसन्न हैं। मैं पूछता हूँ कि नशाओं के सेवन पर जहाँ सरकारी प्रतिबन्ध लगे हैं, क्या वहाँ नशाओं का प्रसार कम हो गया है? क्या कानून बन जाने पर भी बाल विवाह पूर्वापेक्षा अधिक नहीं हो रहे हैं? क्या कानून द्वारा भ्रष्टाचार बन्द हो रहा है अथवा अन्य कानूनों का पूर्ण रूपेण सर्वत्र पालन हो रहा है?

अच्छे-अच्छे कानून बनने चाहिए यह ठीक है परन्तु जब तक मनोभाव पवित्र नहीं होते तब तक वे कुरीतियाँ कदापि दूर नहीं हो सकती। प्रचार करके अन्त करण शुद्ध करने का कार्य आर्यसमाज का है। आर्य समाज ही शासक और शासित के विचारो में वसुधैव कुटुम्बकम्' तथा आर्यत्व का भद्र भाव भर सकता है 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उच्च उद्देश्य आर्यसमाज ही पूर्ण कर सकता है।

आर्य जनो ने सत्याग्रह आन्दोलनो मे जो दृढ़ता दिखलायी है यदि अन्य रचनात्मक कार्यों मे भी उसी प्रकार वे दत्तचित्त हो जाय तब तो बेड़ा पार हो जाय।

उत्थातव्य जागृतव्य योक्तव्य भूत कर्मसु

[पिछले पृष्ठ का शेष]

इस हृदय विद्या का ही त्रयी विद्या कहते हैं। इसी का दूसरा नाम 'सत्य' है क्योकि इसी के आधार पर वस्तु मात्र का सत्ताभाव सिद्ध होता है। उदाहरण के लिए सूर्य इस ब्रह्माण्ड में त्रयी विद्या का और 'सत्य' का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण है। सूर्य के लिए कहा जाता है—सैसा त्रयी विद्या तपति। कल्पना कीजिए जब पूर्व युगों में शक्तिसाम्यावस्था में स्थिर था। तब उसमें गति या स्पन्दन उत्पन्न हुआ और उस स्पन्दनात्मक क्षोभ के कारण अपरिमिति काल विस्तार में सूर्य के महान् अग्निमय पिंड का अविर्भाव या चितिभाव हुआ। वह एक विराट चयन यज्ञ था जो विश्व कर्ता प्रजापति की शक्ति से सम्पन्न हुआ। उसी के कारण यह रोदसी ब्रह्माण्ड अस्तित्व में आया। सूर्य ऋक यजु साम के सत्यात्मक सस्थान का ही एक विशिष्ट रूप है। सूर्य के आन्तरिक प्रत्येक भौतिक सस्थान का यही त्रयी विद्यात्मक या सत्यात्मक रूप हम देख रहे हैं। सूर्य के भीतर शक्ति का एक केन्द्र है। उस केन्द्र के चारो ओर ही [illegible] की शक्ति परिभ्रमण करते हैं। यह सूर्य का हृदय बल है। यह बल सूर्य के भीतर का प्रथम केन्द्र है जो कभी प्रकट हुआ होगा। यही सत्य था। शक्ति का जो सर्व व्यापक रूप था उसी के भीतर वह सत्यात्मक केन्द्र अस्तित्व में आया। मन्त्र ऐसा ही होता है त्रयी विद्या ही सत्य है। यही सृष्टि का मूल हेतु है। यह मौलिक वेदतत्व ही सृष्टि का विज्ञान है। वेद सत्य विद्या की ही सज्ञा है।

'शिव-शंकर-दयानन्द'

[श्री पं० वीरसेन जी वेदश्रमी, महारानी रोड, इन्दौर]

आज महाशिवरात्रि है। निस्सन्देह यह महाशिवरात्रि अपने नाम के अनुकूल अत्यन्त कल्याणकारिणी और मंगलमयी भी सिद्ध हुई। यदि महर्षि दयानन्द को इस रात्रि में बोध न हुआ होता तो यह शिवरात्रि नहीं अपितु अ-शिवरात्रि ही रह जाती और मानव जाति महान् अन्धकार के गर्त में निमग्न रह जाती।

मंगलमयी, कल्याणकारिणी यह शिवरात्रि दयानन्द की बोध रात्रि है। देश में सर्वत्र उनके ज्ञान जन्म दिवस को जनता बड़े उल्लास से मना रही है। मैंने भी सबको उल्लास में देखकर यह पूछना प्रारम्भ किया—'महर्षि दयानन्द क्या थे?' सब कहने लगे "वे महान् थे! महान् थे!! महान् थे!!!

मैंने एक एक से पूछना प्रारम्भ किया। जंगल के पेड़ और पौधों से पूछा, लता और गुल्मों से पूछा तुमने महर्षि को देखा था। तुमने अपनी शीतल हवा के झोंकों से उनका स्वागत किया था। तुमने उनकी क्षुधा की निवृत्ति के लिए फल, फूल एवं पत्र भेंट किये थे। रात्रि में, दिन में, इन निर्जन वनों में जब वे एकाकी विचरण करते थे तब तुम्हीं उनके साथी थे वीर प्रहरी थे। तुम्हारे ही अव्यक्त शब्दों को वे सुना करते थे और उन्हीं ने तुम्हें अपना गम्भीर, प्रेम पूर्ण प्रणवनाद-प्रभु का नाम सुनाया था। मधुर वेद मन्त्रों की ध्वनि और सामवेद का मधुर गायन भी सुनाया था। तुमने उन्हें योग साधन में रत देखा था। तुमने उनको समाधिस्थ भी देखा था। कटकाकीर्ण झाड़ियों से घिरे हुए स्थानों जहां कोई भी मार्ग नहीं था उनमें अपना मार्ग निकाल कर जाते हुए उस महर्षि के शरीर को कांटों से भी बींधा था और उनके दिव्य शरीर को रक्त रंजित किया था। इस प्रकार से तुम में से अनेक वृक्ष लतादि उनके रक्त से सिंचित एवं परिवर्तित भी हुए थे। कहीं तुमने उनको मार्ग भी दिया, कहीं तुम उनका मार्ग भी रोक कर के खड़े खड़े थे। कभी तुमने उनको धूप से आतपित होने पर छाया में सुख पूर्वक विश्राम भी दिया था। तुम बताओ कि वे क्या थे।

* * *

मेरी बात सुनकर वे विह्वल हो गए। तीव्र हवा के झोंकों से कोई नत मस्तक हुए, कोई इधर उधर झूमने लगे और कोई शब्द करने लगे। एक ने कहा वे हम से बड़े थे, दूसरे ने कहा, तीसरे ने कहा और सब ही कोलाहल करने लगे। फल वाले वृक्षों ने फल गिरा कर, पुष्प वाले वृक्षों ने पुष्प और पराग बिखेर कर अपनी स्वीकृति प्रकट की। फिर वे कहने लगे उस महर्षि ने हमारा जीवन सफल कर दिया। तुमने मनुष्य जीवन लेकर उनके उपदेशों को भुला दिया। उनके तेजस्वी शरीर को देखकर भी उन्हें विस्मृत कर दिया। परन्तु जहां पवन का झकोरा भी नहीं पहुँचता था जहाँ रवि की रश्मियाँ भी न पहुँचती थी और जहाँ मानव के दर्शन की स्वप्न में भी संभावना न हो सकती थी, जहाँ कोई स्थान ऐसा नहीं था कि एक पग भी रखा जा सके, ऐसे दुर्गम अभेद्य एवं कटकाकीर्ण स्थलों में आकर उन्होंने पथ का निर्माण किया और हमारे मध्य में मानव के आगमन का मार्ग प्रशस्त किया। हम मानव के दर्शन के लिए सैकड़ों और हजारों वर्षों से लालायित थे। उन्होंने हमें दर्शन देकर हमारी तपस्या फलीभूत की और मानव जाति से हमारे सम्पर्क का मार्ग सदा के लिए खोल दिया। वह सब के अवरुद्ध मार्गों को खोलने आया था। यह क्या उस परम कृपालु महर्षि की हमारे प्रति दया नहीं थी? उन्होंने इस प्रकार हमारा उद्धार किया। इसलिये हम उन्हें महान् मानते हैं। पूज्य मानते हैं और श्रद्धा से नत मस्तक होते हैं।

* * *

पास के फूल से मैंने पूछा तुम बड़े महक रहे हो। अनेक अलि वृन्दों के बसन्त गीत तुमने सुने हैं। अनेक सुन्दर उषाओं के साथ तुमने परिहास किया है क्या तुमने भी मेरे उस महर्षि को देखा था?

वह पुलकित एवं स्मित वदन हो किंचित् बधोमुख से ऊर्ध्व मुख हुआ। अपनी ग्रीवा लम्बी करके समीप के पुष्पों को निहारने लगा। मैंने पूछा क्यों चुप हो। वह बोला मेरा मौन क्यों भंग करते हो? तुम्हारी वाणी ने मेरी मूक समाधि भंग कर दी है। मैं तो महर्षि की सामवेद की उस ध्वनि को सुनकर अलि वृन्दों के उन प्रणय गीतों को भुला चुका था। प्रभु की जो वाणी मानवों को भी दुर्लभ थी, वह हमें जड़ जीवन में भी उन्हीं की कृपा से सुनने को मिली। क्या करें, हम तो निरिन्द्रिय हैं, साधन हीन हैं। तुम्हारे सदृश हमें ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियाँ नहीं हैं। हमारे पास तुम्हारी सी विवेक बुद्धि नहीं है और हमारे पास पुरुषार्थ के साधन नहीं हैं।

हम गड़े हुए थे चल फिर नहीं सकते थे और उछल कर उनके गले में लिपट न सकते थे नहीं तो हम उनके साथ चल देते और उनसे शिक्षा प्राप्त कर उपदेश ग्रहण कर संसार को पुष्पवाटिका के तुल्य सुन्दर और सौरभ युक्त बना देते। संसार में अपना प्रेम पराग फैला कर प्रभु के प्रेम में सबको विभोर कर देते और अपने मधु की मधुरिमा से 'मधुनक्त-मुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः" ऋचा को चरितार्थ कर देते।

तुम तो मानव हो, साधन सम्पन्न हो, विवेक युक्त हो, तुमने अवश्य उनसे मनोहारी साम सुने होंगे। एक बार तो फिर उन सामों को सुना दो। एक बार फिर उस प्रभु के आदि नाम का घोष करके हमारे जीवन को सफल कर दो और प्रसन्नता से मुकुलित होने दो।

मैं शर्म से चल दिया, मैं साम गान नहीं जानता था और प्रभु का का नाम भी लेना न आता था। कुछ दूर चल कर पीछे मुड़ कर मैंने देखा तो वह पुष्प निराश हो अधोमुख होकर गिर पड़ा था। उसके अन्य साथियों का क्या हाल हुआ, मैं नहीं जान सका। फिर वह सुन्दर वाटिका रही या उजड़ी इसका पता न लगाया।

* * *

कुछ आगे चला नदी मिली विशाल पर्वत खण्डों के साथ आलिंगन करती हुई गाती और नाचती, रेती में रमण करती हुई प्रमत्त सी बह चली जा रही थी। मैंने कहा नर्मदा जरा ठहर। अपना कल्लोल बन्द कर। तेरी परिक्रमा उस महर्षि ने की थी। तीन वर्ष वे तेरे साथ निरन्तर रहे। तेरी अमर और अनादि संगीत धारा के साथ उन्होंने साधना की थी। तेरा आदि, मध्य और अन्त ढूंढने की तपस्या में उन्होंने अनेकों कष्ट सहे। अनेक सिंह, व्याघ्रादि पशुओं के झुंडों में भी निर्भय होकर तेरी साधना में रत रहे। अनेक पर्वतों को लांघते हुए भयावह स्थानों में भी तेरी साधना में लगे रहे। तेरी लम्बाई, चौड़ाई और गहराई बहुत प्रख्यात है। क्या तूने उस महर्षि की महानता मापी थी।

वह बोली मेरी मूक सेवा सैकड़ों वर्षों से सहस्रों देव और दा[illegible] लगे हैं। ऋषि महात्माओं को [illegible] आश्रय देती हूं और चोर डाकू त[illegible] प्राणियों को भी। दोनों ही मेरे अ[illegible] मय जल से जीवन प्राप्त करते है[illegible] नित्य मेरे पास आते हैं। उन[illegible] प्रतिबिम्ब मुझ में पड़ता है और मह[illegible] नील आकाश का भी पड़ता है। इस[illegible] मैं सबकी महानता के माप दण्ड [illegible] से हूं।

मैं उस महर्षि के दिव्य शरीर [illegible] शीतल जल से नित्य स्नान करा[illegible] थी। उनको स्वच्छ निर्मल ज[illegible] पिलाती थी। अनेक योग क्रिया[illegible] के साधन के लिए सुरम्य स्थान [illegible] साधन प्रदान किया करती थी। उन[illegible] तपस्या को परिपक्व करने के लि[illegible] अनेक सिद्ध एवं योगीजनों से उन[illegible] भेंट कराती थी। मैं उनकी तपस्या [illegible] प्रसन्न थी। उनकी विचारों से गर्वि[illegible] थी और उनकी ब्रह्मचर्य व्रत साध[illegible] से उन्नत भाल कर रही थी। पां[illegible] सहस्र वर्ष पश्चात् ऐसे महात्मा, सि[illegible] एव महर्षि को मैंने देखा था। अने[illegible] साधु, सन्यासी, महात्मा मेरी से[illegible] में आये। कोई केवल विद्वान् था, क[illegible] केवल ज्ञानी ही था, कोई के[illegible] योगी ही था और कोई केवल तप[illegible] ही था। परन्तु ज्ञान, तप एवं य[illegible] से पवित्र एवं उन्नत, सर्व गुण सम्[illegible] परोपकारी तथा प्राणिमात्र का हितै[illegible] महर्षि के सिवाय कोई दृष्टिगो[illegible] नहीं हुआ। इसी से मैंने उसे मह[illegible] माना। निस्सन्देह वह महान् ही थ[illegible]

नर्मदा के दोनों किनारों पर [illegible] सजग प्रहरी अमरकंटक और पर्व[illegible] से भी मैंने पूछा कि तुमने भी तो [illegible] गुरुदेव को अपनी गुहाओं औ[illegible] कन्दराओं में आश्रय दिया था। उन[illegible] तुमने अनेक तत्वज्ञानियों एव योगि[illegible] से मिलाया था। अनेक बार समा[illegible] की साधना में निमग्न कराने के लि[illegible] ऋषि, महर्षियों की तपस्याओं [illegible] परिपूत स्थलों को तुमने प्रदान कि[illegible] था। तुम्हारे उत्तुंग शृङ्गों पर चढ़ [illegible] उस महर्षि ने चतुर्दिक विस्तृत वसुंध[illegible] के सौंदर्य का निरीक्षण किया था औ[illegible] उस छवि में प्रभु के दर्शन किये थे[illegible] प्रभु के दर्शन की मस्ती में मस्त हो[illegible] मेरे महर्षि निर्भय होकर तुम्हा[illegible] उपत्यकाओं में विचरण करते फि[illegible] थे। क्या तुम उनके बारे में आ[illegible] अपना मौन भंग करते हुए कु[illegible] बतलाओगे कि वह महर्षि क्यों मह[illegible] थे।

वे दोनों पुलकित हो गये। उनके पुलकित होते हो उनके नेत्रों से प्रेमा[illegible] रूपी अनेक निर्झर झर्झरित हो[illegible]

(शेष अगले पृष्ठ पर)

शिव-शंकर-दयानन्द''

(पिछले पृष्ठ का शेष)

र शब्द करने लगे। रोमांच रूप न पर्वतों के शैल शिखर रूप में ो बढ़ कर उन्नत रूप हो गये कुछ मृतिका भी उभर कर गिरी। ां के उभर आने और मृत्तिका के ने से अनेकों गुफाएं दीखने लगीं व साक्षी रूप से बोलने लगीं वह र्षि महान् तपस्वी था। वह महान् ी था, वह महान् 'युग पुरुष' था। खों वर्षों से ही नहीं अपितु अनेक ां का इतिहास हमारे ही अंक में मित होता रहा है। राग द्वेष बुद्धि रे में नहीं है। हमारी भित्तिकायें ार्थ चित्रण की साक्षी है। इन ्दराओं में प्रवेश करके महर्षि ने नी हृदय गुहा में उस प्रभु के र्गों देवस्य धीमहि' का साक्षात्कार ा था। प्रभु के परम तेजस्वी तेज प्राप्त कर उन्होंने हमारे युगों के कार को दूर किया था और प्रभु दिव्य प्रकाश की छटा से हमें ोकित किया था।

अब वह महर्षि कहाँ हैं ? वे हमारे ाकार को दूर कर मनुष्यों की हृदय के अन्धका'' '' नष्ट करने के ल्प से चल पड़ थे। क्या वे फिर इन कन्दराओं में आवेंगे ? ' नहीं, तो तुम्हीं आओ, तुम ज्ञान ' हो, नेत्रवान हो, और हृदय युक्त तुमने उनके उपदेशों को सुना ा। तुमने उनकी वाणी का अपने ' से अध्ययन किया होगा और ने विशाल हृदय में उसको स्थान ा होगा। मेरी गुहा यद्यपि ्हारी हृदय गुहा से बहुत बड़ी है तु उसमें विश्व नहीं समा सकता। महर्षि ने इन गुहाओं में प्रवेश के अपनी हृदय गुहा में विश्व को ा दिया था। यहाँ तो गागर में र था। इस प्रकार हमें उन्होंने विश्व विशालता से भी विशाल बना ा था। यही तो उस महर्षि की ानता थी।

यदि तुम भी अपने हृदय को ाालता से हमें महान् बना सकने तो आओ तुम्हारा स्वागत् है। अपने को उनका शिष्य कहते हो, ओ अपने गुरू के पवित्र स्थान मे ाओ। परन्तु मेरा हृदय संकुचित उसमें विश्व समा नहीं सकता। घोर अन्धकार था। इसलिए कन्दराओं में घुसने का साहस न ा।

* * *

झरने वाले हमारा जल पीकर ्होंने विश्व को तृप्त किया था और ने हृदय से विशाल ज्ञान रूपी ना प्रवाहित किया था। क्या तुम ने उसमें स्नान करके अपने को पवित्र कर लिया है। यदि नहीं तो जाओ, यहाँ से अतृप्त ही जाओ। हमसे तृप्त हो कर यदि तुम विश्व को तृप्त नहीं कर सकते तो हमारा निर्भरण व्यर्थ है। ऐसा कह कर, क्रमशः एक एक निर्भर सूख चला। शैल शिखर संकुचित हो गये, गुहायें बन्द हो गई। चारों ओर सूखे ठूठ दीखने लगे। तीव्र गर्मी पड़ने लगी। मैं अपने प्राणों को बचाने के लिए भागा। अनन्त समुद्र की ओर दौड़ा।

* * *

विशाल एवं अनन्त समुद्र की तरंगों से पूछा तुम इस किनारे विहार करती हुई, वायु से विलोडित होती हुई, सूर्य को किरणों से विविध वर्णों से आलोकित होती हुई, चन्द्र एवं तारागणों के प्रतिविम्ब से सुन्दर, सुसज्जित परिवान युक्त होकर सुदूर देशों मे भी जाती हो। अनेक देशों और संस्कृतियों का तुमने निरीक्षण किया है। तुम्हारे वक्षस्थल पर युगों की स्मृतियों और इतिहासों के परिधान हैं। तुम उस महर्षि के बारे मे क्या अनुभूति रखती हो।

तरंगे वेग से उठीं दौड़ दौड़ कर मेरे पास आने लगीं और जाने लगीं मानों वे मुझ से कह रहीं थी यदि उस महर्षि की विशालता देखनी है और समझनी है तो आओ हमारे मध्य में आओ। समुद्र की विशालता और गम्भीरता से भी विशाल तथा गम्भीर वह महर्षि था। मैं उन तरंगों के साथ चल न सकता था। मेरी विवशता देखकर वे बोलीं :

हम एक देश से दूसरे देश, एक द्वीप से दूसरे द्वीप और एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप गई हैं। सातों समुद्रों का मन्थन किया है। हर द्वीप के किनारे हम अहर्निश नाचती, उछलती और कौतुक करती रहीं। हम ने देखा कि महर्षि दयानन्द ने जो ज्योति भारत मे उत्पन्न की है उसका प्रकाश हमें सुदूर द्वीपों मे भी दीखा। अफ्रीका, मारीशस, ट्रिनिडाड, फीजी, न्यूजीलैंड, अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रान्स, जर्मनी, अरब, इराक बरमा, स्याम आदि देशों में उनकी विजय पताका फहराती हुई देखी। इससे हम कहती है कि दयानन्द महान् थे। उनकी महानता समुद्र नहीं नाप सकता। समुद्र की सामर्थ्य से बाहर है।

तुम पृथिवी एवम् अन्तरिक्ष में विचरण करने वाले वायु से पूछो। अग्नि की प्रचण्ड ज्वालाओं से पूछो जो किसी न किसी रूप में सब के गृहों में वास करता है और अपनी व्यापक शीतलता से एक एक स्थान के शब्द और रूप को सर्वत्र प्रसारित एवं व्याप्त कर देती है।

मैंने वायुदेव से पूछा, अग्निदेव से पूछा। उन्होंने भी कहा कि उसकी महानता कैसे प्रकट करूं ! सर्वत्र दयानन्द की महिमा का यशोगान हो रहा है और उनके सत्य+अर्थ+प्रकाश से अज्ञानान्धकार भागता जा रहा है। जिनके हृदय एवं बुद्धि में युगों से जड़ता और अन्धकार घुसा हुआ था, वहां भी महर्षि की ज्ञान रश्मियों से उन मिथ्या विश्वासों का अन्त होता जा रहा है। समस्त विश्व उनके ज्ञान आलोक से आलोकित हो रहा है। उसकी महानता अपार है, अनन्त है।

पांच सहस्र वर्षों से हम दोनों का शुद्ध स्वरूप नष्ट हो गया था। लोग आहवनीयाग्नि को भूल गये थे। हमें सुगन्धित, पुष्टिकारक, एवम् आरोग्यवर्धक आहुतियां तथा यथेच्छ केशर कस्तूरी युक्त घृत पान करने को पूर्व काल में प्राप्त होता था। नाना प्रकार के मिष्टान्न, मोहन भोग एवं स्थालीपाक द्वारा हम दोनों को तृप्त किया जाता था जिससे हम दोनों परिपुष्ट होकर विश्व को आरोग्यता, सुवृष्टि एवं बलेश्वर्य से सम्पन्न कराने रहते थे। "परस्परं भावयन्तःश्रेयः परमवाप्स्यथ" यह हमारी अमोघ प्रतिज्ञा थी और आशीर्वाद था। उस समय भोजन से पूर्व हमारे द्वारा बलिवैश्वदेव यज्ञ होता था और बिना आहुति दिये कोई भोजन ग्रहण नहीं करता था। बिना यज्ञ का भोजन चोरी और पाप का समझ कर अग्राह्य समझा जाता था। पूर्व काल में ऐसी हमारी प्रतिष्ठा और पूजा थी।

परन्तु जब से उपरोक्त प्रकार से हमारी पूजा अर्थात सेवा नष्ट हो गई तो हमें भोजन मिलना बन्द हो गया और हमारा परिमालन नष्ट हो गया। इसके विपरीत अभक्ष्य मांसादि की आहुतियां दी जाने लगीं। इस प्रकार हमें अपवित्र कर दिया गया। परिणाम स्वरूप विश्व महामारी, प्लेग और क्षयादि रोगों से आक्रान्त हो गया। ऐसे समय में महर्षि ने आकर मेरे आहवनीय स्वरूप को यज्ञ करना सबका अधिकार घोषित करके पुनः हमारी प्रतिष्ठा कराई और वायु को भी शुद्ध होने का अवसर दिया। इस प्रकार हम दोनों का महर्षि ने उद्धार किया। क्या यह उसकी महानता न थी।

वह देखो नगाधिराज हिमालय, शुभ्र हिम से आच्छादित, जब से सृष्टि उत्पन्न हुई है, खड़े हैं। उन्होंने सब को देखा है और देख भी रहे हैं। हमारे वायु के झोंके वहां विलीन हो जाते हैं। अग्नि वहां शीतल पड़ जाती है। आदि सृष्टि में वहां मानव ने जन्म लिया है। इन्द्र और शिव, विष्णु और नारद वहीं विहार करते थे। ऋषि मुनि वहीं वेदों की ऋचाओं का साक्षात्कार करते थे। मुनि और तपस्वी वहीं अपने तप की साधना करते थे। वह महर्षि वहां भी तपस्या करने गया था—उनसे भी पूछना।

* * *

यह सुन मैं उनके भी पास गया और पूछा—हे नगाधिराज ! तुमने अपनी शरण में अनेक ऋषि मुनियों को रखा। क्या तुम मेरे महर्षि को अधिक काल तक न रख सके। तुमने अलखनन्दा को पार करते हुए उस तपस्वी को अपने हिम खंडों के प्रहारों से क्षार-क्षार क्यों न कर दिया था। तुमने अपने मार्ग शून्य, कंटकाकीर्ण, सिंह, व्याघ्रादि पशुओं से संकुल निर्जन वनों में उसे क्यों भटकाया था। तुमने क्षुधा और तृषा से व्याकुल कर, उसे मूर्छित करके उसके प्राण लेने का क्यों प्रयत्न किया था।

हिमालय बोला—मैं शान्त हूं, शीतल हूं, मुझमे क्रोध नहीं। द्वेष नहीं। सृष्टि के प्रारम्भ से ही सब को अपनी गोद में लिये बैठा हूं। उनको सर्व प्रकार की भोज्य सामग्री दे रहा हूं। तप के लिये मेरा शान्त, शीतल स्थान सदा से विख्यात है। महर्षि दयानन्द भी अन्यों की भांति तपस्या करने आये थे। उनकी तपस्या के तेज से मेरी शीतलता नष्ट होने की प्रतीक्षा में भी। मेरा हिम परिधान शुष्क होने की संभावना में था। मैंने धर्मराज युधिष्ठिर को भी अपने हिम में विलीन कर दिया था। महा बलिष्ठ भीम को भी हिमावृत करके सदा के लिये शांत कर दिया था। अत्यन्त पराक्रमी अर्जुन को भी हिमसात् कर दिया था। अलखनन्दा के हिम प्रवाह में मेरा और उनका तपस्या मे साम्मुख्य था। मैं अपनी महानता के आगे किसी को नहीं मानता था। इसलिये अलखनन्दा मे मैं उन्हे विलीन कर देना चाहता था।

परन्तु वे मेरे प्रहारों को सहते ही रहे और मुझे अपनी पराजय स्वीकार करनी पड़ी। इसी से मैं कहता हूं वे महान् थे। भू मंडल पर आज तक ऐसा पुरुष नहीं हुआ। ससार आज माने या न माने परन्तु आगे के युगों में मानव उसके महत्व का समझेगा। मैंने तो उन्हें परखा था। मैं उसकी महानता को भली-भाँति जानता और पहचानता हूं। मैंने उन्हें अपना आशीर्वाद निम्न शब्दों में दिया है—

यावदादित्यस्तपति यावद्भ्राजति चन्द्रमा। यावद्वायु प्लावयति ताव-ज्जीव जया जय॥

इसलिये देखो, कलकल निनादिनी गंगा और यमुना, झेलम और

(शेष पृष्ठ १० पर)

''वह समय कभी नहीं आयेगा— वह समय कभी नहीं लौटेगा''

आचार्य श्री नरदेव शास्त्री, वेदतीर्थ

वह मेरे शब्द नहीं हैं—

यह श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी कहते हैं अपने एक लेख में। इतना ही नहीं, वे यह भी कहते हैं कि— "बहुत प्राचीन समय के लौटने की बात तो दूर रही, अब से दो सहस्र पूर्व का समय भी कभी नहीं लौटेगा कभी नहीं लौटेगा"—

मैं बहुत विचार करने पर भी, बाल्यावस्था से अब तक आर्य समाज की गतिविधि देखते रहने, उसके साथ बहने, काम करते रहने पर भी इस निर्णय पर पहुँचा हूं कि जब तक आर्य पद्धति का स्वराज्य स्थापित नहीं होता, जब तक वैदिक राज्य प्रणालिका प्रस्थापित होकर यथारीति प्रचलित नहीं होती आर्य समाज के सिद्धान्त पूर्णरूपेण तो कभी नहीं प्रचलित होंगे, कभी नहीं स्थिर होंगे, कभी पनपेंगे नहीं। पूर्णरूपेण तो क्या आंशिक रूप में भी संसार का उद्धार न हो सकेगा।

एक तो वैदिक शिक्षा को ही लीजिए

किसी धर्म को अथवा उसके अङ्गों को प्रचलित होने के लिए उसके ऊपर उस धर्म का पालक, पोषक, संचालक राज्य होना आवश्यक है। जब भारतवर्ष दासता की शृंखला में बंध गया और ऊपर उसका पोषक, रक्षक, मर्यादा पालक वैदिक पद्धति का राज्य नहीं रहा तब भी जो वैदिक प्रणाली जीवित रही उसका मुख्य कारण उसकी रक्षा करने वाली एक प्रबल परम्परा देश में जीवित रही और अविच्छिन्न रूप से जीवित रही—वह परम्परा ब्रिटिश शासन काल के प्रारंभ तक जोर पकड़ी रही। जब उनके पद्धति की शिक्षा-दीक्षा चली और दृढ़मूल हो गई तब वैदिक प्रणालिका के पोषक वर्ग ढीले पड़ने लगे, उनकी मर्यादाएं ढीली पड़ने लगीं और ब्रिटिशों के यहाँ से जाने तक वह परम्परा छिन्न विच्छिन्न हो गई—क्योंकि उस परम्परा की रक्षा करने वाला वर्ग अंगरेजी शिक्षा-दीक्षा से प्रभावित हो गया और पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही विद्या कहीं-कहीं किन्हीं किन्हीं कुलों में अथवा किसी-किसी वर्ग में शेष रही। जैसे—

ऋग्वेद—ऋग्वेदियों में, यजुर्वेद—यजुर्वेदियों में, सामवेद—सामवेदियों में सीमित हो गये। दर्शन भी इसी प्रकार सीमित हुए। वेदों के षडङ्गों की भी यही दशा हुई। यहाँ तक कि कई प्रकार का कर्मकाण्ड भी श्रौत और स्मार्त रूप में उस-उस वर्ग में सीमित हो गया, और तो और उपनिषद् भी सीमित हो गये। और उस-उस वेद के मानने वालों के साथ हो गये अर्थात् ऋग्, यजु, साम, अथर्व इनके साथ उपनिषदें भी बंट गईं।

जब स्वामी दयानन्द आये तब उन्होंने देखा, आश्चर्य से देखा कि वैदिक शिक्षा मुरझा गई है तब उसका जोरों का प्रचार कर गये और शिक्षा प्रणाली बतला गये।

जब

आर्य समाज का सुन्दर, प्रभावशाली प्रचार युग समाप्त हुआ तब अनुभव होने लगा कि वैदिक धर्म के प्रचार के लिए, उसकी रक्षा के लिए अपने ढंग की शिक्षा-दीक्षा देकर विद्वान् तैयार किये बिना आर्य सिद्धांत प्रचलित न हो सकेंगे तब गुरुकुलों की स्थापना हुई।

अब

इन गुरुकुलों को चले ६०-७० वर्ष हो रहे है। काम बहुत हुआ, वेदों का नाम बहुत हुआ, और संसार चकित होकर देखने लगा कि यह कौन सी शिक्षा-दीक्षा आयी।

बड़ी कठिनता से

हम वेदों के समीप-समीप पहुंचे ही थे कि इतने में—

भारतवर्ष में

एक बड़ी क्रान्ति हो गई—अंग्रेज चला गया। हम स्वतन्त्र हुए, हमारा स्वराज्य हुआ, चला, और अब जोर पकड़ रहा है—पर यह वैदिक पद्धति का स्वराज्य नहीं है, पाश्चात्य प्रणालिकाओं की पचमेल खिचड़ी है। यह एक निर्धर्मी राज्य प्रणाली है, इसका अर्थ यह नहीं कि सर्वथा धर्मशून्य राज्य है। हमारे धर्म के अनेक ऊँचे नीतितत्व भी इसमें हैं पर यह राज्य सर्वथा वैदिक नहीं इसलिए यही ढग रहा तो यह राज्य वैदिक शिक्षा पद्धति का पोषक कभी नहीं होगा वैसे हमारा राज्य है तो क्या पर सर्वाङ्ग में हमारे धर्म, हमारी शिक्षा-दीक्षा नीति-रीति संस्कृति सभ्यता का पोषक नहीं है। स्पष्ट शब्दों में कहा जा सकता है कि इस राज्य का अपना कोई विशिष्ट धर्म नहीं है—

इधर अब अपना राज्य हो गया, अब क्या है, यह समझ कर गुरुकुल वाले ढीले पड़ गये—ढीले पड़ते जा रहे हैं। उनकी वह, त्याग तपस्या स्वावलम्बन की दृढ़ भावना खण्ड-खण्ड हो चली है और अब राज्य-शासन की ओर परमुखापेक्षी होकर उनके सामने हाथ फैला रहे हैं। उनके ढंग अपना रहे हैं—अर्थात् पिछले ६० ७० वर्ष की पूंजी नष्ट होने को है। इसलिए—

इस शिवरात्रि

के अवसर पर सावधान रहने अथवा बनने की घण्टी बजाने की आवश्यकता पड़ रही है—

यदि

हमारे सिर पर हां हमारे ही वैदिक धर्म के तत्वों का पोषक, पालक राज्य रहता तो कब तक वैदिक शिक्षा-प्रणाली देश और प्रदेशों में फैल जाती—

अब तो

दो चार गुरुकुलों को छोड़कर जो किसी प्रकार हिम्मत बाँधे हुए है स्कूल रूप में परिणत हो गये है। जो दो चार बचे है उनके संचालकों का भी दम घुट रहा है—उन पर किङ्कर्तव्य-विमूढ़ता सी छा रही है—

यह शिवरात्रि

आर्यों का आत्मनिरीक्षण दिवस है- इसी दिन हमारे प्रवर्तक स्वामी दयानन्द को दिव्य दृष्टि मिली थी और वे घर से सच्चे महादेव की खोज में चल पड़े थे।

स्वामी जी के पश्चात्

स्वामी दयानन्द के निर्वाण के पश्चात जितनी भी शिवरात्रियाँ आई वे सब हमको किसी न किसी प्रकार का प्रबोध दे गईं, पर स्वराज्य के पश्चात् जितनी भी शिवरात्रिएं आईं उन सबमें हम अबोध से खड़े देख रहे हैं। क्या करें, क्या कहें, कहाँ जांय, कोई मार्ग नहीं सूझ रहा है, ऐसी गति हो रही है, इसलिए

इस शिवरात्रि पर

एक कड़े आत्म निरीक्षण की आवश्यकता आ पड़ी है—

हम ही हमारे शत्रु हो रहे है, हम ही अपने काम बिगाड़ रहे है—

यदि हमारी वैदिक शिक्षा

न चली तो फिर संस्कृति, सभ्यता की बात दूर ही चली जायगी। इसीलिए हम कहते हैं सावधान! सावधान!! सावधान!!!

आर्य समाज का संगठन

वैसे दृढ है, उतना तो नहीं जितना १०-२० वर्ष पूर्व था—पर यह संगठन अपने तत्वों का पोषक न रहकर दूसरों का पोषक हो रहा है—यह रजोगुण चुंगल में फंस रहा है।

अब एक ही उपाय है

बचने का, उठने का, अपने पर चलने का—

यदि

आर्य समाज में ऐसे १०((दश सहस्र) व्यक्ति भी निकलें यह प्रतिज्ञा करें कि हम अपनी सं को वैदिक शिक्षा ही देंगे उसके त्याग-तपस्या का घोर अनुष्ठान क करायेंगे चाहे परिणाम कुछ भी न हो तब देखिए गुरुकुल कैसे उठते

क्यों मुरझा रहे हैं ये गुरुकुल

(१) अच्छे ब्रह्मचारी एकोदि निष्ठ, नहीं मिल रहे हैं।

(२) अच्छी संख्या मे नहीं मि रहे हैं।

(३)पर्याप्त धन नहीं मिल रहा

(४) त्यागी तपस्वी दृढ़ भाव वाले गुरू नहीं मिल रहे हैं।

(५) हम वैश्य होते जा रहे बनना चाहिए ब्राह्मण—हमने धर्म व्यापार बुद्धि बना ली है।

ये सब दिक्कतें दूर होंगी य दस सहस्र आर्य अपना अच्छा अच्छी बुद्धिमान् सन्तान को गुरुकुल को इसी भाव से अर्पण करेंगे कि ले यह ब्रह्मचारी आपका है गुरु जो जैसा चाहे करें। धन-धान्य से ह गुरुकुल भर देंगे। उसकी चिन्ता कीजिए।

धर्म के तीनों अङ्ग ढीले

काम कैसे चले

धर्म के तीन अङ्ग है—

१ यज्ञ २ अध्ययन ३ दान

यदि वाच का अध्ययन अध्याप ठीक चले तो, न यज्ञयागों की कम रहेगा न दान की। यदि वैदिक पद्धति की शिक्षा गई तो समझिए आर समाज गया। क्योंकि वेद और आर समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

वेद तो आर्य समाज के विन जीवित रहेंगे प्रकाश भी देते रहेंगे पर वेदों के बिना आर्य समाज की न कोई मति, न कोई गति, न कोई स्थिति रहेगी।

हे शिवरात्रि, तेरा स्वागत है, तू हमारी बुद्धि को ठीक करजा। ◄

तब की भावनायें

(श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय)

★



मेरा आर्य समाज से सम्बन्ध १८ ई० के आरम्भ मे हुआ था। ो से मेरा आर्यसमाज से निकटस्थ पर्क रहा है, मुझे याद नहीं कि युग मे शिवरात्री मनाई जाती थी नहीं। सन् १८७५ ई० मे जब यसमाज की नीव पडी तब तो गो को चूहे का कहानी भी शायद ज्ञात हो परन्तु उस युग की भावना क्या थी ? एक भजन गाया जाता 'हों सभासद् इस सभा के सबके । धर्मात्मा" मेरे देखते देखते गों के भाव उदार हुवे और भजन पहला परिवर्तित रूप यह हुआ "हा ग्रासी देश के हम सबके सब र्तात्मा ।" फिर उदारता आगे बढी र हम गाने लगे 'विश्व भर के ा होवे सबके सब धर्मात्मा ।' यह उदातभाव । गुरुकुल कागडा म एक ान बनाया गया "स्वदेश देश दश वेदो के ने सुना ' मैं इसको गाया ा था। एक तबन्नीला के साथ ा मे था फले फूल ससार म यह ा बाटिका (अर्थात् गुरुकुल कागडी) । 'म' के स्थान म 'की' करके उस सार्वजनिक बना लिया था, "फूले । सत्कार की एक रम्य बाटिका ।" भावना थी। समाज के पास न ा था न धेला केवल भावनाये थीं हीं के बल पर जीते थे। बडे बडे न न थे, न दिल्ली का दीवानहाल कलकत्ते का १६ कार्नवालिस ेट, न नैरोबी का भवन न लाहौर । गुरुदत्त भवन न कालेजो की शाल इमारत। जमान बिछौना आर ासमान ओढना फिर भा मस्त थे ावना यह थी कि दूसरा तक वेद का देश पहुँच। प० लेखराम का मृत्यु ई हमने गाना आरम्भ किया।

तसनाफ का समान के
फैला आ हरतरफ।
उपदेश वेद पाक का,
पहुँचा आ हर तरफ ॥

तब हम निर्बल थे नगे थे। ले थे, परन्तु स्वतन्त्र थे। किसी ातिक या धार्मिक सस्था के साथ क्ट या समझौता न था किसा मे ेष न था किसी के लिए पक्षपात न ा कडी से कडी आलोचनाये करते े अपनों की भा और परायो की भी ाह केवल उनके हित के लिए। अपने ला नहीं, पराया तो का था हा नहीं ऋषि की भावनाये थीं ा्ापुर में मेला हुआ, ऋषि भा पहुँ ोर मौलवी और पादरी। सत्य के ान के लिए एक मौलवी आये और कहने लगे पडित साहेब, हम और आप एक ही देश के बाशिंदे ह, ईसाई बाहरी हैं। हम दोनो मिलकर इनको निकाल दे। ऋषि ने कहा कि मेरा पराया कोई नहीं आप भी मेरे और यह भी मेरे प्रश्न सच्चाई का है, अत बात सिद्धान्तों पर कीजिए उस यु म सव धर्मों का बडा कडा आलोचन ये होती था, कहते भा थ और सुनते भी थे। परन्तु हमारे मचो से आजाद या उनका दादी या जवाहर लाल और उनके काट की आलोचना के लिए काई स्थान था हमारा प्रेस अमृतकौर के लिए खुला न था। हमारी गाडी किसा नैतिक सस्था की मोटरकार के पीछे घसिटती न थी। कृण्वन्तो विश्वमार्यम मन्त्र का उस समय के लोगो को पता न था परन्तु भावन ये यही थीं। 'श्री श्यामजी कृष्णवर्मा' को ऋषि ने इगलेंड इसालिए भेजा था कि वेद का प्रचार हा। मैक्समूलर न दयानन्द के विषय म लिखते हुए वर्मा जा के प्रति ऐसा आशा प्रकट की है।

परन्तु वह भावनाये कहा चली गई ? ऋषि दयानन्द लिखते ह "यह मसार का स्वाभाविक प्रकृति है कि जब बहुत सा धन असख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य पुरुपार्थ रहितता, ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढता है आर्यसमाज के पास असख्य धन तो नहीं है परन्तु जिस प्रयोजन मे हम सलग्न हैं उससे कहीं अधिक है, हमारी सस्थाये जो स्वामी दयानन्द के नाम पर चलती ह बडे बन्दियो के केन्द्र ह। हमारे मदिर दुर्ग हैं। और हमारी ओ३म् पताकाये ाजय पताकाये, दयानन्द की दुहाई और भावनाये हमारी विदेशो म बहुत स आर्यसमाज है जो पहल नहीं थे। नये भारतीय आन्दोलनो के लिए भ महस्रा रुपय आते ह परन्तु ास को, मा न नहीं न साहित्य न प्रचार जिससे उन देशों की अभारतीय जनता से सम्पर्क हों सके इस समय हमारे भक्त हमको इतना पैसा दे देते हैं कि हम अपने धडे चला सकते हैं और बडे से बडे स्वतन्त्र प्रचारक की स्वतन्त्रता को मुट्ठी गर्म करके निरस्त कर सकते है, यह हाल तो आज है। यदि कहीं वह वैभव प्राप्त हो गया जिसके लिए हमारे नेता झपपटा रहे ह तो राम के पोपो और इस्लाम के खलाफो के इतिहास फीके पड जायेंगे इसम भूल जनता की नहीं है। साधारण दासता म त्याग भा है और श्रद्धा भा, परन्तु ऐसा ता ससार भर की जनता का हाल है। प्रश्न डिब्बों का नही रेल के इ जन का है जनता विचारी सूक्ष्म बातो को क्या समझे। ईश्वर से प्रार्थना करो कि 'धियो यो नः प्रचोदयात्' नहु हमारी बुद्धि तलवार की धार के समान पैनी कर जिससे कोई चालाक व्यक्ति अथवा सघ हमारी श्रद्धा और हमारी विनय शीलता का दुरुपयोग करके हमको हमार मुख्य कर्तव्य से विचलित न कर सके। ★

(पृष्ठ ८ क
गंगा, सिंधु और ब्रह्मपुत्र नदियां उसी का यशोगान करती हुई भारत पर विचरण कर रही हैं। पक्षीगण अपने कलरवों से उसी महर्षि का यशोगान कर रहे हैं और नगर नगर प्रान्त प्रान्त, देश विदेश मे आर्य समाजे अपना उन्नत मस्तक किये हुए उनकी धवल कीर्ति दिग दिगन्त मे व्याप्त कर रहा ह। यद्यपि आज उनका पच भौतिक शरार ससार मे नहीं है परन्तु उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज ससार म त्तरात्तर उनकी
अमर क

गुरुकुल वृन्दावन में श्री घनश्यामसिंह गुप्त का दीक्षान्त भाषण

★

सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के प्रधान श्री माननीय घनश्यामसिंह गुप्त ने दि० ४-२-५८ को गुरुकुल वृन्दावन के दीक्षान्त समारोह के अध्यक्ष पद से, स्नातकों को विदाई देते हुए, अपना दीक्षान्त भाषण प्रारम्भ किया। उन्होने बताया कि इससे पूर्व भी वे १९३९ में हैदराबाद सत्याग्रह की समाप्ति पर गुरुकुल वृन्दावन में दीक्षान्त भाषण देने आये थे और इस बार पुन. हिन्दी सत्याग्रह की समाप्ति पर उन्हे इसी गुरुकुल मे दीक्षान्त भाषण देने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। अत. ऐसा प्रतीत होता है कि सत्याग्रहो की समाप्ति पर ही इस गुरुकुल के दीक्षान्त भाषण देना मेरे हिस्से में आया है और हो सकता है, यदि मैं जीवित रहा, तो आगे भी किसी अन्य सत्याग्रह की समाप्ति पर इस गुरुकुल का दीक्षान्त भाषण देने आऊँ।

आगे श्री गुप्त जी ने नवस्नातकों को सम्बोधित करते हुए अपने भाषण मे बताया कि हमारे देश को तीन प्रकार की गुलामी का सामना करना पड़ा है :-

१—प्रथम गुलामी प्लासी के युद्ध के बाद हमारे देश के सामने आई जिसमे राजनतिक रूप से हमारा देश गुलाम हुआ।

२—दूसरा गुलामी लार्ड मैकाले की नीति द्वारा हमारे देशवासियो पर थोपी गई जबकि बौद्धिक दृष्टि से हमारा देश गुलामी शृङ्खलाओं मे जकड़ दिया गया।

३—तीसरी गुलामी हमारी सामाजिक कुरीतियो के द्वारा हिन्दू जाति को मिली।

प्रथम प्रकार की गुलामी का अन्त सन् १९४७ मे हो चुका है और यह उल्लेख करते हुए हम गौरव अनुभव होता है कि देश की राजनीतिक गुलामी के बन्धन काटने मे आर्य समाज ने अपने गौरव के अनुरूप ही योग दिया।

दूसरी प्रकार की बौद्धिक गुलामी से हमारा देश अभी मुक्त नहीं हुआ इसे दूर करने मे हमारे गुरुकुलो के स्नातकों का प्रमुख हाथ होना चाहिए जैसा कि अब तक आपसे पूर्व स्नातको की परिपाटी रही है। देश को भाषाई दासता से मुक्ति दिलाने के लिए आपके सामने विशाल क्षेत्र पड़ा है।

तीसरे प्रकार की सामाजिक गुलामी से लड़ने के लिए तो आर्य समाज का जन्म ही हुआ है और उसकी गत ८० वर्ष की सेवा किसी से छिपी नहीं है। सच तो यह है कि हिन्दू समाज को सामाजिक कुरीतियो से मुक्त करने में आर्यसमाज को घोर द्वन्द करना पड़ा है। और आर्यसमाज ने हिन्दू मात्र मे ही नहीं समस्त भारतीय समाजों मे एक ऐसी मानसिक क्रान्ति को जन्म दिया जिसके फलस्वरूप ही भारत स्वतन्त्र हुआ। स्वतन्त्रता संग्राम मे अपने नर रत्नो का बलि देने के साथ साथ इस मानसिक क्राति के करने मे भी आर्यसमाज का सबसे बड़ा योग रहा है। आप सब को आगे भी आर्यसमाज का इस परम्परा को इसी रूप मे अक्षुण्ण बनाये रखना है।

श्री गुप्त जी ने अपना जारी रखते हुये आर्यसमाज की सस्थाओ और विशेषकर गुरुकुलो के सचालको को सम्बोधित करते हुए कहा कि राजनैतिक दासता के समय हमारे गुरुकुलो ने संस्कृत के प्रसार का जो सराहनीय कार्य किया वह भुलाया नहीं जा सकता जब हम उन बाधाओ असहयोगो को याद करते हैं जो अंग्रेजी शासन के कारण संस्कृत प्रचार में हमारे गुरुकुलो के सामने दिन प्रति दिन आते थे और हम बिना किसी सरकारी सहायता के अपने पथ पर अडिग रूप से आगे ही आगे बढ़ते जाते थे तो हमें अपने प्रयत्नो पर गर्व अनुभव होता है। किन्तु आज जब हम राजनैतिक दासता से मुक्त हो गए हैं, देश में हमारी अपनी सरकार है तो हम अपने संस्कृत प्रसार के प्रयत्नो मे पिछड़ रहे हैं। इस कमी को कैसे पूरा करना है इस पर आप खूब विचार करें।

आवश्यकता

सुसभ्य प्रतिष्ठित बीसा अग्रवाल आर्य घराने की सुन्दरता सुशीलता, सौम्यता, नम्रता, सुशिक्षा, शिष्टाचार आदि गुणों से युक्त, गृहकार्यों मे सुदक्षा, उत्तम डिवीजन मे हाईस्कूल पास, मार्च सन् ५८ मे होने वाली इण्टर फाइनल परीक्षा देने वाली सोलह वर्षीया छात्रा के लिए किसी अच्छे पद पर प्रतिष्ठित अथवा किसी सुयोग्य व्यवसायी बारोजगार वर का आवश्यकता है। विवाह सादा दान दहेज रहित तथा सभी वैश्यो मे। कृपया वर के पूरे हालात पहिले पत्र में ही लिखें और दान दहेज के अभिलाषी सज्जन कष्ट न करें।

नं० १४ "आर्यमित्र" लखनऊ।

'ऋषि बोधोत्सव के दिन व्रतधारी बनो'

[प्रिंसिपल भगवानदास एम० ए० पंजाब]

★

पिछले वर्ष ऋषि बोधोत्सव के सुअवसर पर हमारे आर्य नेताओ ने हमे सचेत करने का यत्न किया था। पर हम अपने स्वार्थ वश अपने ही पात्र कटने देखकर भी चेतन न हुए। उसका परिणाम यह हुआ कि अपनी ही पवित्र भूमि मे हमारी वह दुर्दशा हुई जो शायद आज तक किसी काल मे तथा देश मे समाज की न हुई होगी। हमारे पर जो जो अत्याचार हुए, उनमे से कुछ यह हैं—

(क) हमारी प्यारी मातृभाषा हिन्दी की पढ़ाई तथा प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगा तथा हमारे बच्चो भाइयो, देवियो को अनेकों अपमान तथा घृणात्मक बर्ताव सहने पड़े। क्या किसी देश की राष्ट्र-भाषा को अपनी मातृभाषा मानने के लिए ऐसा कहीं सुना अथवा देखा ? क्या हिन्दी पंजाब की क्षेत्रीय भाषा नहीं ? क्या गुरुमुखी ही सरकार का प्यारी है ?

(ख) हमारी मातृभाषा (जिसके अपनाने मे हमने विदेशी सरकार के कई कष्ट सहे तथा जान तक लड़ाई मे अपमानित करके हमें हजारो की सख्या मे जेलो मे डाला गया, लाठी प्रहारो अनुचित व्यवहारो से हमारी पीठ तोड़ने का यत्न किया गया, हमारे पवित्र 'ओ३म्' ध्वज को फाड़ा गया, पूजनीय देवियो को पिटवाया, घरो की नीलामियां हुईं। जेलो से गिरे हुए तीसरे दर्जे के बर्ताव किये गये, गुंडो से पिटवाया गया, हमारे सन्मान योग्य सन्यासियो तथा नेताओं को पिटवाया तथा अपमानित किया गया। तथा हमारे पवित्र स्थानो का अपवित्र किया गया, यज्ञो तथा धर्म कार्यों मे विघ्न डाला गया। हजारो तथा हथकड़ियो से बांध कर गन्दी तथा कीटाणुओ से भरी अंधेरी कोठरियो मे बन्द किया गया। अनेकों वीरो को हथकड़िया लगा कर कड़कती धूप मे सड़कों पर लिटाया गया अथवा आधी रात को जंगलों मे छोड़ा गया। जेलो मे हवन सामग्री तक ले जाने से रोका गया, हमारे निर्भीक समाचार पत्रो को आर्थिक कष्टों मे डाला गया। निरपराध मित्रों पर झूठे तथा मनगढ़त आरोप लगा कर जेलो मे ठोसा गया तथा हमारे ऊपर प्रहार करने वालों हिंसा का प्रचार करने वालों का प्रोत्साहन देकर हमें तग कराने का प्रयत्न किया। सरकारी कर्मचारियो पर झूठे आरोप लगाकर उनका साम्प्रदायिक सकीर्णता का निशाना बनाया गया। इसलिए कि सरकार हमे गुरुमुखी पढ़ाना चाहती थी। यह है गणतन्त्र की करतूतें तथा समाजवाद के चिह्न। क्या सचमुच हम इस नादिरशाही के अधिकारी थे। क्या मातृभाषा से प्रेम पाप है ? क्या धार्मिक स्वतन्त्रता पाप है ? अगर है तो किस देश तथा काल से यह पाप था तथा किस धारा के अनुसार ?

(ग) क्या हम इस देश के वासी नहीं है ? क्या इस पवित्र मिट्टी पर हमारा अधिकार नहीं ? क्या राज्य चलाने के लिये हम सहयोग तथा धन नहीं देते ? तो फिर हमारा अपमान क्यो ? तो फिर फीरोजपुर जेल का हत्या काण्ड क्यो ? बहु अकबरपुर तथा अन्य ग्रामो तथा नगरों में नादिरशाही क्यो ? तो हमारी आर्य समाज मन्दिर पर प्रहार क्यो ? हमारे भाइयो पर अत्याचार क्यो ? क्या हमारा अधिकार नहीं कि, हम मांग करें कि अत्याचारी साम्प्रदायिक, निर्दयी सरकारी कर्मचारियो को दण्ड दिया जावे ? इसमे क्या पाप है ?

जो बर्ताव पंजाब सरकार ने हमसे किया है क्या पंजाब सरकार टूटे दिलो को जोड़ने का यत्न करेगी ? यह एक माम की दिखाई गई सद्भावना को क्या सरकार समझ रही है कि सन्देह ही है ? अगर ऐसा है तो ऋषि बोधोत्सव पर हम सब व्रतधारी बने तथा मांग करें कि —

(१) सबन्दुत किए गये सरकारी कर्मचारियो को अपने स्थान पुनः दिये जावे।

(२) फीरोजपुर जेल हत्याकांड के अपराधियो को दण्ड दिया जावे तथा सत्याग्रहियो को उचित आर्थिक सहायता दी जावे।

(३) सरकार के अभियोग वापिस लिये जावे तथा जुर्माने वापिस हो। म्यूनिसिपल कमिश्नरो, ईपुओ तथा लाइसैंसों को लौटाया जावे।

आर्य समाज मन्दिर चण्डीगढ़ [illegible] सनातन धर्म मन्दिर [illegible] भावना पर [illegible] करने वालों को दण्ड दिया जाय।

(५) हमारा सत्य मांगो को स्वीकार किया जाय।

भारत में हलचल

मचा देन वाली ८४ पृष्ठ की रहस्यमय पुस्तक 'जौहरे मुल्क' एक कार्ड पर १५ भिन्न भिन्न स्थानो के सज्जनो के पते लिखकर मुफ्त मे मगावे। फिर ॥) लगेंगे जल्दी करे।

इण्डियन स्टोर्स (६०जगाधरी (ई०पी०)

महर्षि दयानन्द का महान् कार्य

(प्रो० भीमसेन शास्त्री एम०ए०,एम०ओ०एल० अ०स० किशनपोल बाजार, जयपुर)

★

जगद्गुरू महर्षि दयानन्द का बाल्य नाम मूलशंकर (उपनाम दयाराम) था। उनका शुभ जन्म, टंकारा (काठियावाड़) में, सं० १८८१फाल्गुन वदि १०, शनि (१२-१-१८२५) को हुआ था। उन्होंने पाँचवे वर्ष में (संभवतः सं० १८८६, वसन्त पंचमी शुक्र २९-१-१८३० को) देवनागरी अक्षर सीखने प्रारम्भ किये थे। आठवें वर्ष में (संभवतः सं० १८८९ के चैत्र वा वैशाख मास में=अप्रैल १८३२ में) श्री मूलशंकर का उपनयन संस्कार हुआ था।

सं० १८९४ फाल्गुन व० १० सोम (२३-२-१८३८) को बालमुनि मूल शंकर ने चतुर्दश वर्ष में पदार्पण किया था। वे इस समय तक इसस्वर सहित यजुर्वेद सहिता को कण्ठस्थ कर चुके थे। अन्य वेदों के भी विशिष्ट स्थलों (संभवतः कर्मकाण्ड आदि संबाद कुल परम्परा में पठितव्य विशिष्ट स्थलों) का पाठ भी पूर्ण हो चुका था, और संभवतः सम्पूर्ण सामवेद का नियमित अध्ययन प्रारम्भ हो चुका था। [महर्षि दयानन्द साम गान के उत्कृष्ट ज्ञाता थे। उन्होंने स० १९२६ ज्येष्ठ में श्रृङ्गीरामपुर (जिला फर्रुखाबाद) में एक सामवेदी ब्राह्मण के वेद पाठ में अशुद्धि बतलाई थी। यह उसने सहर्ष मानली थी। ऋषि का कुल सामवेदी था ही। प्रतीत होता है कि दयानन्द ने बाल्यकाल मे ही सामवेद पढ़ा था] छोटे छोटे व्याकरण ग्रन्थ भी पढ़ चुके थे। तीन दिन पश्चात् गुरुवार (२२-२-१८३८) को शिवरात्रि थी। निष्ठावान् शैव पिता, श्री कर्षण जी की प्रेरणा से त्रयोदश वर्षीय मूलशंकर, शिवरात्रि के कठिन व्रत को सोत्साह तत्पर हो गए। शिवरात्रि का जागरण उन्होंने अपने पितृचरण के बनवाए, कुबेरनाथ के मन्दिर में [अनेक जीवनी लेखकों का यह कथन कि 'यह जागरण मूल शंकर ने जडेश्वर के मन्दिर मे किया था', विशुद्ध भ्रम मात्र है। निश्चय ही यह जागरण कुबेरनाथ के मन्दिर में हुआ था] जो टंकारा नगर के बाहर ही स्थित है, किया था। उस रात उन्हें वह दिव्य बोध प्राप्त हुआ, जिसने सारे संसार की धार्मिक मान्यताओं की काया पलट की नींव रख दी। इस दिन, मूलशकर जी के मन से मूर्ति पूजा के प्रति आस्था सदा के लिये लुप्त हो गई।

इस वर्ष सं० २०१४ मे महर्षि दयानन्द की जन्म तिथि फाल्गुन वदि १० गुरुवार (१३-२-१९५८) को आ रही है। यह महर्षि का १३४ वाँ जन्म दिवस होगा। इसके तीन दिन पश्चात् रविवार (१६-२-१९५८) को शिवरात्रि है। यह १२१ वीं बोधरात्रि होगी। अर्थात् इस दिन से १२० वर्ष पूर्व दयानन्द को मूर्तिपूजा की असारता का ज्ञान हुआ था। इस दिन से, वे सदा पौराणिक परम्पराओं को विचिकित्सा तुला पर तौलते रहे।

महर्षि कृष्ण-द्वैपायन वेदव्यास ने हमारे वाङ्मय की अपूर्व सेवा की है पर महर्षि व्यास; पाराशर जैसे महान् ज्ञानी मुनि के सुपुत्र थे। उस काल में ऊंचे ऊंचे योगी तथा ज्ञानी पर्याप्त संख्या में सुलभ थे। सपूर्ण प्राचीन वाङ्मय शुद्ध रूप में उपलब्ध था। ज्ञान परम्परा विशुद्ध रूप में सुप्राप्य थी। महर्षि व्यास हुए भी सुदीर्घजीवी थे। उनको सौभाग्य से अनेक सुयोग्य शिष्यों का सहयोग भी प्राप्त था।

जगद्गुरू महर्षि दयानन्द की परिस्थिति इससे सर्वथा विपरीत थी। मूल वेद तक मुमुक्षु शिरोमणि को बड़ प्रयास से मिल सके थे। वेद इतने दुर्लभ थे कि प्रायः ब्राह्मण तक स्त्रियों के विवाह की गालियों को अथर्ववेद कहने लगे थे और यवन निर्मित अल्लोपनिषद् को ईश्वरोपदिष्ट वैदिक उपनिषद् मानते थे। अज्ञान इतना बढ़ा हुआ था कि मुसल्मानों के गोवध को वेद प्रतिपादित सिद्धांत बनाकर उसका समर्थन करने वाले, हमारे मध्य मे, महर्षि दयानन्द के के बाद तक, हरिद्वार जैसे तीर्थस्थलों मे भी थे। [देखो इन्द्र वाचस्पति लिखित 'आर्य समाज का इतिहास' प्रथम भाग पार्ध्व १८७-१८८] दुर्लभ वेदों के अतिरिक्त सारे ग्रन्थ प्रक्षेपों से भर चुके थे। महाभारत तो मूल का दसगुना या बारह गुना तक हो गया था। गीता जैसा मान्य ग्रन्थ भी परस्पर विरोधी सिद्धान्तो का आश्रय स्थल बन चुका था। एक भी धार्मिक सिद्धान्त के शुद्ध रूप का पता विद्वानों तक को न चलता था। अहिंसा के साथ ही गोघात तक यज्ञों मे वैध माना जाता था। कैसी विडम्बना है कि गोवध निषेधक मन्त्र भाग 'मा गामनागामदितिं वधस्व' को उच्चारण करते हुए हमारे देश में गौ पर खांडे का वार किया जाता था। [देखो पारस्कर गृह्य सूत्र प्रथम काण्ड, तृतीय कण्डिका, सूत्र २६-३०] भवभूति ने उत्तर राम चरित्र के चतुर्थ अङ्क मे लिखा है 'वाल्मीकि ने गाय की बछड़ी के मांस से वसिष्ठ का अतिथ्य किया था।' यह तो ज्ञान की स्थिति थी।

योगी भी अत्यन्त दुर्लभ थे। मूल शंकर की बहिन की मृत्यु सं० १८९८ की ग्रीष्म में हुई थी। उस घटना को देखकर मूल जी के मन में तीव्र वैराग्य का उदय हो गया था। तभी से मुमुक्षु वर्य मृत्यु विजयार्थ योगियों को खोजने लगे थे। संवत् १९०३ के आरम्भ होते ही, घर छोड़ने पर तो योग गुरू का अनुसंधान उनके जीवन का मुख्य लक्ष्य बन गया था पर योग पिपासु साधक दयानन्द को योग गुरू बड़ी बड़ी देर मे और बड़ी कठिनता से मिले। सायला, व्यासाश्रम, चाणोदकर्णाली, अहमदाबाद, आबू, हिमालय और विन्ध्याचल पर हम मोक्षाभिलाषी दयानन्द को विविध योगियों की कुटियाएं छान कर सं० १९१३ के उत्तरार्ध तक योग के मोती प्राप्त करते देखते हैं और संभव है कि उन्हें सं० १९१७ के उत्तरार्ध तक अन्य भी योग गुरु उपलब्ध होते रहे हों।

ज्ञान संबन्ध में तो उन्हें सर्वश्रेष्ठ गुरू विरजानन्द मिले थे। उनसे विद्याध्ययन सं० १९१९ के अन्त में समाप्त हो गया था। पर वेदों की खोज व मनन तो इसके अनेक वर्ष बाद तक चलता रहा था। विरजानन्द से पढ़ने के पर्याप्त समय पश्चात् तक दयानन्द रुद्राक्ष धारण को वैदिक प्रथा समझते थे। 'ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं हैं' यह निश्चय उन्होंने काशी शास्त्रार्थ (स० १९२६, कार्तिक शुक्ला १२, भौम १६-११ १८६९) के अनन्तर किया था। जड़ सूर्य की उपासना का निषेध भी बाद की बात है। 'मुक्ति सात है' यह निर्णय तो महर्षिवर्य ने स० १९३६ के अन्त के लगभग किया था। इन सब घटनाओं से सिद्ध है कि वेदों की खोज तथा वैदिक सिद्धांतों का निर्णय स्वयं महर्षि ने बड़ी तपोमय खोज से धीरे-धीरे किया था। ग्रन्थ व ज्ञान की परम्परा पूर्णतया विध्वंस हो चुकी थी। महर्षि का कार्य महान् और अत्यद्भुत है। हम जानते हैं कि व्यास को अनेक उद्भट विद्वान् शिष्यों का विना व्यय सहयोग जीवन भर प्राप्त रहा, इधर महर्षि को वेतन भोगी शिष्य तक सदा धोका देते रहे। इस कष्ट परिस्थिति मे भी जगद्गुरू ने यह सारा महतो महीयान् वदर्थ ५८ वर्ष की अल्प आयु तक कर डाला था।

आर्य समाज ने भी यद्यपि महर्षि के पद चिह्नों पर चलते हुए अनन्य साध्य महान् कार्य किया है, पर अपने लक्ष्य को देखते हुए यह कार्य अति स्वल्प है। अपनी दुरवस्था को कहते भी लज्जा अनुभव होती है। हमारे बड़े बड़े वेदाचार्यों के लिए महर्षि का वेद भाष्य अनबूझी पहेली मात्र है, और रच रहे हैं नए नए वेदभाष्य। अब तक हम अतीव पथभ्रष्ट भी हैं। हमारी अन्ध परम्परा भक्ति का एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा कि हम मकर सक्रांति २२ दिसम्बर के स्थान में १४ जनवरी को मना रहे हैं, और सौर संवत् को २२ मार्च के स्थान में १४ अप्रैल को प्रारम्भ कर रहे हैं, और अपनी इस भयंकर भूल को हमारे बड़े बड़े विद्वान् भी नहीं जानते। अत्यन्त आवश्यक है कि आर्यसमाज अपने अज्ञान तथा शिथिलता को त्वरित तिरोहित करे। 'दयानन्द का काम पूरा करेंगे' की प्रतिज्ञा इस अनीहा से अपूरणीय है। इसके लिये महत्तम अध्यवसाय अनिवार्यतः अपेक्षित है।

सम्पादक के पत्र

शिक्षा निर्देशक उ० प्र० से

मान्यवर सम्पादक जी,

आपके सम्मानित पत्र द्वारा मैं डाइरेक्टर आफ एजूकेशन उत्तर-प्रदेश के समक्ष कुछ तथ्य रखना चाहता हूं कि अनूपशहर में आर्य कन्या पाठशाला सन् १९२० ई० से स्थापित है जिसका संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, आर्यसमाज अनूपशहर के द्वारा करती है। इस पाठशाला को सन् १९३९ ई से आठवीं कक्षा तक स्थायीरूप से मान्यता प्राप्त है। इस वर्ष पाठशाला ने बोर्ड आफ हाई स्कूल एण्ड इण्टरमीडिएट एजूकेशन उत्तर प्रदेश को विधिवत समय के अन्दर हाई स्कूल की मान्यता प्राप्त करने के लिए प्रार्थना पत्र प्रेषित कर दिया है और मान्यता के लिए आवश्यक सभी बातो की पूर्ति कर ली है। परन्तु इसी साल स्थापित एक नवीन कन्या विद्यालय के प्रबन्धक श्री गोविन्दराम को मरणासन्न बतलाकर शिक्षा विभाग से आग्रह कर रहे है कि इस नवीन पाठशाला को आप अपने विशिष्ट अधिकार द्वारा हाई स्कूल की मान्यता तुरन्त दें दे। इस प्रकार से नवीन पाठशाला के प्रबन्धक आर्य कन्या पाठशाला की मान्यता के अधिकारों का हनन करना चाहते है।

आपसे मेरा यही निवेदन है कि आप कोई भी अपने अधिकारों को प्रयुक्त करने से पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश द्वारा संचालित ४० वर्ष पुरानी आर्य कन्या पाठशाला के हित को अवश्य अपने सामने रक्खेंगे।

—कान्ती प्रकाश

उप प्रधान, आर्यसमाज अनूपशहर


सिद्ध मकरध्वज
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
सब प्रकार की कमजोरियों को
दूर करता है।

जालंधर में गोली काण्ड

कैरोशाही का नग्न नृत्य है

पंजाब में राष्ट्रपति शासन अविलम्ब स्थापित किया जाय

सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के अध्यक्ष माननीय बाबू घनश्याम सिंह जी गुप्त के शान्त जलूस पर ८ फरवरी को गुरुद्वारे के सामने जो गुरुद्वारे से पथराव किया गया है और शान्त जलूस पर पुलिस ने गोलियाँ बरसाई हैं जिससे दो व्यक्तियों की मृत्यु हो गई और २८ आहत हुये है, विदित होता है कि पूर्व योजना के अनुसार यह सब राक्षसी कृत्य किया गया है। पजाब के वातावरण को यदि भयकर रूप में क्षुब्ध होने से बचाना है और खून खच्चर मारकाट से उसे बचाए रखना है तो तुरन्त राष्ट्र पति का शासन वहा स्थापित किया जाय और जांच का कार्य अविलम्ब पूरा कर अपराधियो को उचित दण्ड दिया जाय।

शिवदयालु मन्त्री
हिन्दी रक्षा समिति उत्तरप्रदेश, लखनऊ

नवम सार्वदेशिक आर्य महा-सम्मेलन १९, २०, २१ अप्रैल ५८ को

भारत की राजधानी देहली में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग सभा ने दि० २ फरवरी का अपनी ऐतिहासिक बेठक म जिसमे पजाब के अनेक प्रतिष्ठित नेता भी विशेष रूप से आमन्त्रित थे सर्व सम्मति से यह फैसला किया है कि आगामी (१९-२०-२१) अप्रैल का भारत का राजधानी देहली म विशाल पैमाने पर नवम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन किया जाय। इस सम्मेलन म भारत के कोने कोने स भारी सख्या में प्रतिनिधियोंके पधारने की पूरी पूरी सम्भावना है और इसके अनुरूप ही बडे पैमाने पर तैयारियां आरम्भ कर दी गई हैं। विदेशों से भी पर्याप्त सख्या में प्रतिनिधि पधारेंगे। ऐसा भी अनुमान है चाहे सम्मेलन का समय अत्यन्त निकट का ही निर्धारित किया है।

सम्मेलन मे सबसे अधिक बल आर्यसमाज को देश और विदेशो मे प्रचार कार्य को सगठित करने पर दिया जायगा। आर्यसमाज के प्रेस और प्लेटफाम का सुदृढ़ बनाने के लिए निर्णय लिये जायेंगे।

भारत के सामाजिक एव सास्कृतिक सुधार कार्यों की दिशा मे ठोस पग उठाने विदेशी ईसाई मिशन मिशनरी एव मनी (धन) के विरुद्ध कडा कार्यवाही करने तथा भारत की राजनीति को भारतीय मर्यादाओं एव परम्पराओं के पावन आलोक में नया मोड़ देने की दिशा में ठोस कदम उठाने के सम्बन्ध में भी विचार किया जायगा।

दक्षिण आदि भागों में राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रसार कार्य को पूरी-पूरी प्रगति देने की दिशा में भी व्यावहारिक दृष्टिकोण को सामने रख कर निर्णय इस सम्मेलन मे लेने हैं।

सम्मेलन अनेक दृष्टियों से अत्यावश्यक महत्त्वपूर्ण एव ऐतिहासिक होगा। सम्मेलन को सफल बनाने की दिशा मे प्रत्येक आर्य भाई एव आर्य समाज को लग जाना चाहिये।

(पृष्ठ ४ का शेष)

उनके साथ काम करने वाले अधिकाशत आर्य समाजी थे। हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने का कार्यक्रम सर्व प्रथम महर्षि की दिव्य दृष्टि मे ही आया था। आर्य समाज के कार्यकर्ताओ ने उसे क्रियात्मक रूप दिया और अपने उपदेशों तथा भजनो द्वारा हिन्दी का देश के कोने कोने मे पहुचा दिया। आर्य समाज के प्रचार ने हिंदी के साथ इस देश का भी विशाल भारत का रूप दिया है। अफ्रीका, इङ्गलैंड, श्याम, फिजी ट्रिनीडाड, मौरीशश आदि जिन जिन प्रदेशो मे आर्यसमाजी गये, वहाँ वे अपने साथ इस देश की लिपि भाषा और सस्कृति का भी लेते गये। आर्य समाज ने प्रान्तीयता मतान्धता एव प्रतिगामिता का निराकरण करने में भी अभूत पूर्व कार्य किया है। उसने तास्सुबी साम्प्रदायिकता से डटकर मोर्चा लिया है और सकीर्ण पन्थाईपन के साथ अथक सघर्ष किया है। मिथ्या जाति भेद की ऊच नीच एव छूत अछूत की विभेदक भीत पर भी उसने सख्त प्रहार किया है और देश का एकता के सूत्र में बाधा है। जिस स्वस्थ एव सबल वातावरण का सृजन आर्य समाज ने किया है, वह भारत ही नहीं समग्र विश्व के लिए कल्याण कारी है।

मानवता का पालना वेद विज्ञान का आदि गुरू, सदाचार का उपदेष्टा, नाना मणि रत्नों का निधान यह भारतवर्ष स्वाधीन तथा गौरवान्वित बना रहे—आर्य समाज के सामने यह पुनीत लक्ष्य रहा है। उसके संस्थापक महर्षि दयानन्द भौतिक शरीर से हमारे बीच नहीं है, पर उनकी तेजस्वी विचारधारा, उनका वेद प्रेम उनकी स्वदेश प्रियता, सत्यनिष्ठा, आर्ष भावना, बलिदानी प्रेरणायें आज भी हमारे हृदयो म जीवित हैं और विश्व के इस वातावरण म गूज रही हैं। वे यश शरीर से अमर है और सदैव अमर रहेंगे। हम उनके पद चिह्नों का अनुसरण कर सकें, उनके बताये पथ पर चलते रहें। यही देवाधिदेव प्रभु से हमारा विनीत प्रार्थना है।

भारतीयों की भाषा सम्बन्धी कठिनाइयाँ

मारिशस वासी भारतीय प्रवासी की तीन लाख सतानों को वहाँ बसते बहुत दिन हो गए। हमारे भारतीय पूर्वज वहां आकर बहुत कष्ट झेले किन्तु अटूट परिश्रम और त्याग से भारी प्रगति की। शताब्दी बाद भी हम अपनी सस्कृति, भाषा और धर्म को कायम रखे हुए हैं।

मारिशस एक ब्रटिश उपनिवेश होने पर भी वहाँ हम हिन्दी भाषा की उपयोगिता समझते हुए इसी भाषा म बोलते हैं। सरकारी पाठशालाओ से लेकर छोटी-छोटी कुटियो तक हम हिन्दी पढ़ते और पढ़ाते है। यहा के निवासी अग्रेज, फ्रेंच, क्रयोग, तामिल, तेलगू, मराठा, बगाली, उड़िया, चिनी आदि सभी हिन्दी समझते हैं और इनमे अधिकाश आपस मे बोलचाल भी करते ह।

यहा के आर्य समाज और हिंदी प्रचारिणी सभा की ओर से हिंदी की प्रगति के लिए भारी परिश्रम किया जा रहा है। हिन्दी का स्तर यहा इतना ऊंचा है कि अग्रेजी राष्ट्र भाषा होने पर भी लोग हिन्दी से ज्यादा काम लेते हैं। परन्तु भारत की अवस्था इतनी खराब है कि लेखनी उठाते समय हाथ काप जाता है। भारत मे भाषा का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि सोच कर हमे खेद उत्पन्न हो जाता है कि जिस देश मे इतनी भाषाये हो और उनमें से एक को न लेकर मुसलमानी समय मे उर्दू, अग्रेजी जमाने में अग्रेजी और स्वतत्र होने पर भी चहु ओर अग्रेजी को कायम रखने की आवाज आ रही है। मद्रास प्रान्त के श्री राजगोपालाचार्य जो गवर्नर जनरल थे महात्मा गांधी के साथ सविधान तैयार करके १९६५ मे हिंदी को राष्ट्रभाषा चालू करने के लिये घोषित किए, आज वही अनिश्चित समय तक के लिए अग्रेजी को ही भारत की मुख भाषा होना माग रहे ह।

इग्लैंड से अग्रेजी भाषा विशेषज्ञ मगाकर इस भाषा को प्रोत्साहन दिया जा रहा है और अपनी भारतीय भाषा हिन्दी जो अधिकाश लोगो का बोलचाल की भाषा है कोई प्रकार का बढ़ावा न देकर चहु ओर से विरोध की आवाज बुलन्द किया जा रहा है।

बहुत अरसे से भारतीय भाषिक राज्य और प्रान्तीय भाषा का प्रश्न दिनोदिन भारत को सकुचित कर रहे हैं। क्या भारतीयों ने भारतीय भाषा को सार्वभौम का प्रयत्न किया है? यदि हा तो हिन्दी को ही वह स्थान दिया गया है, फिर कार्य रूप में परिणत करने में इतनी देर क्यों? भारतीयों के अपने शुष्क बैर, जलन और अपने भाइयों के प्रति सद्भावना न होने के कारण ही ये सारी कठिनाइयाँ आकर सामने खड़ी हो जाती हैं।

हम आप भारतीयो से यही प्रार्थना करते हैं कि शीघ्रातिशीघ्र आपस के द्वेष त्याग कर सारे अड़चनो को दूर करते हुए इस पवित्र हिन्दी को जो सरल और सविधान की मानी हुई भाषा है प्रोत्साहन दिया जाय।

अपनी प्रान्तीय भाषा को कायम रखते हुए हिन्दी को सार्वभौम भाषा बनाकर सारे भारतीय इसी भाषा म बोलचाल कर अपने राष्ट्र और जाती यता की मर्यादा रखे।

हम भारत से दूर बसे हुए भारतीय प्रवासी भारत का कल्याण इस लिए चाहते हे क्योकि हमारा धार्मिक सास्कृतिक तथा भाषा से गाढ़ सबध हैं। हम आशा करते ह कि शीघ्र ही हिन्दी को वह उचित स्थान देकर भारतीय अपना तथा हमारी मर्यादा बढ़ायेंगे।

—मोतीतोरल, न्यूग्रोव
ग्रैंड पोर्ट, मारिशस

आर्य समाज इगलास

आर्यसमाज इगलास (अलीगढ़) का ४७ वाँ वार्षिकोत्सव बसन्त पचमी पर ता० २५, २६, २७ जनवरी ५८ ई० को सानन्द समाप्त हुआ। उत्सव मे श्री स्वामी योगानन्द जी महाराज, श्री तर्क शिरोमणि प० रामदयालु जी शास्त्री, प० इन्द्रजीत जी शास्त्री, श्री ईश्वरदास जी वानप्रस्थी के प्रवचन व उपदेश और श्री ज्ञानेन्द्र जी आर्य मुसाफिर, श्री किशोरीलाल जी मथुरा व श्री जयपालसिंह जी, श्री महेन्द्रपाल सिंह जी, श्री लाला बाबू निर्भय के मनोहर भजन हुए। उत्सव मे प्रान्तीय सरकार द्वारा इस वर्ष की छुट्टियो मे बसन्त पचमी तथा शिवरात्रि पर्व पर छुट्टी नहीं दिए जाने पर अत्यन्त रोष व दुख प्रकट किया गया और प्रस्ताव पास हुआ कि ये छुट्टियाँ अविलम्ब दी जावे इस सम्बन्ध म जो प्रस्ताव पास हुआ उसकी एक प्रतिलिपि प्रान्तीय सरकार को भेज दी गई।

आर्य वीर दल काशी

का वार्षिकोत्सव १६-२-५८ को प्रात काल ६॥ बजे से चेतगज म्युनिसिपैलिटी के मैदान स्थित शाखा स्थान पर मनाया जाएगा। उक्त अवसर पर नगर के विभिन्न शाखा के सैनिकों द्वारा प्रदर्शन का आयोजन किया गया है।

अमेठी समाचार

समाज शिक्षा समारोह

शिक्षा प्रसार उत्तर प्रदेश के आदेशानुसार श्री रणवीर जू० हा० स्कूल रामनगर की ओर से कटरा ग्राम में सास्कृतिक कार्यक्रम दिवस राजकुमार श्री रणजयसिंह एम० एल० सी० की अध्यक्षता म मनाया गया।

श्री रणवीर निधन तिथि

अमेठी राज्य के आदर्श मनस्वी राजकुमार स्वर्गीय श्री रणवीरसिंह जी की निधन तिथि आर्यसमाज रामनगर का ओर से २-२-५८ को तथा श्री रणवीर इण्टर कालेज की ओर से ३-२-५८ को राजकुमार रणजयसिंह के सभापतित्व म मनाई गई।

सभा प्रधान भव्य स्वागत

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान राजकुमार श्री रणजयसिंह एम०एल० सी० गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या पधारे। आपके साथ सभा मुख्य उपमन्त्री श्री रामजीप्रसाद गुप्त भी पधारे। आप लोगोंने गुरुकुल का निरीक्षण किया। और उसके प्रबन्ध एव आर्थिक स्थिति पर विचार किया। कुलवासियो ने आपका भव्य स्वागत किया। प्रधान महोदय ने ब्रह्मचारियो को उपदेश देते हुये महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रणीत शिक्षा प्रणाली की बड़ी प्रशसा की और अनेक उपयोगी बातों पर प्रकाश डाला।

हिन्दी सत्याग्रह का इतिहास तैयार हो रहा है

पजाब हिन्दी सत्याग्रह के एक विस्तृत इतिहास का लेखन कार्य श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री ने आरम्भ कर दिया है। समस्त प्रांतीय सभाओं हिन्दी रक्षा समितियो और समाजों को सत्याग्रह मे किये गए उनके कार्य का विवरण भेजने के लिए लिखा जा चुका है। बहुत से स्थानो से विवरण प्राप्त हो चुके ह। जिन्होने अभी तक विवरण नहीं भेजे हो शीघ्र ही भिजवाने का कष्ट करे।

आ० स० कमाठीपुरा, बम्बई

प्रधान—श्री धर्मप्रकाश नरसिंह बगा
उपप्रधान—श्री एस० बी० कृष्णा जी
मन्त्री—श्री मलय्या राजय्या आगादी जी
उपमन्त्री—श्री बेंकट राजय्या
किष्टय्या चौकी
कोषा०—श्री के० नारायण जी
पुस्तका०—श्री के० नरसिंह जी
स० पुस्तका०—श्री बाल मलैय्या थेसेय्या
श्री गादी जी
निरीक्षक—श्री नरेन्द्र शिवलाल गुप्ता जी

कहानी प्रतियोगिता का आयोजन

कलकत्ता, डाक से। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण, 'विषमता' और निराशा के विरुद्ध नैतिक धरातल पर नये निर्माण की दिशा सकेत के लिए 'अणुव्रत' पाक्षिक द्वारा कहानी प्रतियोगिता का एक विशाल आयोजन किया गया है, जिसम पुरस्कृत कहानियो पर दो सौ रुपये का नकद पुरस्कार दिया जायगा। इसके लिए कोई प्रवेश शुल्कादि नहीं है। विशेष जानकारी अणुव्रत कार्यालय, कलकत्ता—७ को पत्र लिखकर मगायी जा सकती है।

आगरा की डायरी

नगर आर्य समाज आगरा में ९-२-५८ को समाज के साप्ताहिक अधिवेशन म श्री प० भूदेव जी शास्त्री १६-१-५८ को श्री परमेश्वरी सहाय जी के ओजस्वी भाषण हुए और अमावस्या का पाक्षिक महल श्री ठाकुर लज्जाराम जी अवकाश प्राप्त सिविल सर्जन के गृह पर सम्पन्न हुआ श्री म० पूर्णचन्द्र का भाषण हुआ अतिथियो का मोहनभोग से स्वागत किया गया। दि० २५-१-५८ को बसन्त पचमी और वीर हकीकतराय दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया कविताए और अन्य विद्वानो के उपरोक्त दोनों पर्वों पर भाषण हुए। २६-१-५८ को स्वतन्त्रता दिवस, श्री वैद्यनाथ सैक्सारया आय कन्या विद्यालय में समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर बालकाओं ने एक नाटक का भी आयोजन किया।

—मोहन लाल आर्य मन्त्री

विद्यापरिषद शाखा गुरुकुल मिलौठा

सरक्षक—श्री सूर्यमित्र गौतम
प्रधान—श्री कर्ममित्र जी
उपप्रधान—श्री सहोमित्र जी
मन्त्री—श्री सुविद्यामित्र जी
उपमन्त्री—श्री ओम्प्रकाश जी
सयायक—श्री निकाशमित्र जी
उपसहायक श्री भद्रमित्र जी
कोषा०—श्री हरिराम जी
निरीक्षक श्री प० दृशमित्र जी

लखनऊ में दयानन्द बोधोत्सव मनाने की विशेष तैयारी

इस वर्ष लखनऊ जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा की ओर से १६-२-५८ शिवरात्रि के दिन महर्षि दयानन्द बोधोत्सव पर्व को अच्छे पैमान पर मनाने के लिए विशेष तैयारी की जा रहा है। उस दिन एक विशाल जलूस निकलेगा और सायकाल अमीनाबाद मे सार्वजनिक सभा होगी जिसमें ऋषि दयानन्द और आर्य समाज से सम्बन्धित विषयो पर विद्वानों के भाषण होंगे।

पंजीकरण सं. ए. ६०

२७ माघ १८७९ (१६ फरवरी ५८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष : २५५२ तार : 'आर्यमित्र'

संस्कार और प्रचार

श्री रामकौशिक जी उपदेशक शर्मा ने बिहारीगढ़ में संस्कार कराया और प्रचार किया। निम्न लोगों ने सभा को निम्न दान दिये—

श्री कुन्दनलाल जी १०)
श्री सुगनचन्द जी १०)
श्री चौधरी बलवन्त सिंह और देवदत्त त्यागी ३०)
भीमसेन सच्चर ११)

पूर्वी उ०प्र० आर्य वीर दल काशी

पूर्वी उ० प्र० आर्यवीर दल काशी की कार्य समिति की एक आवश्यक बैठक १६-२-५८ को आ० स० मन्दिर गुलामसरा में अपराह्न २ बजे से होगी। प्रत्येक स्थानों के नगर नायक और दलपति शीघ्र ही अपनी वार्षिक रिपोर्ट भेज दें। —उमाकान्त

आर्य समाज हापुड़

प्रधान—श्री ला० रामनारायण जी
उपप्रधान—,, ,, सागरमल जी
,, , प० द्वारिकानाथ शर्मा
मन्त्री—श्री विजयेन्द्र जा अग्रवाल
उपमन्त्री—श्री ला० भवानीप्रसाद जी
,, श्री घासीराम जी
कोषाध्यक्ष—श्री ला० भगवतप्रसाद जी
पुस्तकाध्यक्ष—न्यादरसिंहजी

काशीपुर नैनीताल

प्रधान—श्री हरगोपाल शर्मा
उपप्रधान—श्री रूपकिशोर जी
मन्त्री—श्री राजेन्द्रकुमार सक्सेना
उपमन्त्री—श्री रामकुमार "आर्य"
कोषाध्यक्ष—श्री शान्तिप्रसाद गोयल
पुस्तका०—श्री राजेन्द्रपाल आर्य
निरीक्षक—श्री हरिश्चन्द्र जी
प्रतिनिधि—श्री जिनेन्द्रनाथ जी मुख्तार

आर्य समाज मुरादाबाद

प्रधान—श्री शिवनारायण जी
उपप्रधान—श्री धर्मवीर जी वैद्य
,, —श्री तुलसीरामजी ठेकेदार
मन्त्री—श्री पुरुषोत्तम जी (हकीम)
उपमन्त्री—श्री रामनिवासजी बी०ए०
,, —श्री विनोदकुमार जी
कोषाध्यक्ष—श्री प० विनोदकुमारजी
पुस्तकाध्यक्ष—,, सुमेरसिंह जी

इस वर्ष हिन्दी आन्दोलन की सफलता के पश्चात आर्य बन्धुओं मे अधिक उत्साह है। वैदिक धर्म प्रचार को अधिक प्रोत्साहन मिल रहा है। ६ फरवरी से १६ फरवरी तक ऋषि बोधोत्सव सप्ताह मनाने की योजना जोरों पर है जिसमें प्रभातफेरी यज्ञ कथा आदि का आयोजन होगा।

आ० स० बलरामपुर

प्रधान—श्री द्वारिकाप्रसाद
उप प्रधान—डा० भगवती प्रसाद
श्री सालिग्राम
मन्त्री—श्री बैजनाथसिंह
उप मन्त्री—रामदुलारे मिश्र,
श्री कृष्णदत्त
कोषाध्यक्ष—कृष्ण बलदेव सहाय
पुस्तका०—श्री भृगुनारायण जी
स० पुस्तका०—श्री राजकिशोर जी
प्रांतीय प्र०—श्री सुन्दरलाल,
श्री बैजनाथसिंह
श्री शिवनारायण जी

आ० स० चौक, प्रयाग

प्रधान—श्री दयास्वरूप जी
उप प्रधान—डा० सीताराम मलिक,
ईश्वरप्रसाद, ताराचन्द
सुखदेवलाल
मन्त्री—श्री मूलचन्द अवस्थी
उप मंत्री—डा० मुरलीधर गुप्त
राधेमोहन, लक्ष्मी नारायण
विनयकुमार
कोषाध्यक्ष—ओम्प्रकाश
पुस्तका०—कन्हैयालाल श्रीवास्तव

गुरुकुल झज्झर रोहतक

इस गुरुकुल का वार्षिकोत्सव १५ १६ फरवरी ५८ को ससमारोह मनाया जायेगा। आर्य जगत के अनेकों प्रसिद्ध विद्वान और नेता पधार रहे हैं। महोत्सव से १० दिन पूर्व ऋग्वेद से महायज्ञ प्रारम्भ होगा और १६ फरवरी को इसकी पूर्णाहुति होगी। नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश भी इसी समय होगा।

समाजों का निरीक्षण

श्री विश्वनाथ आर्य वीर ने आर्य समाज पाली, सरधना और जीतपुर का निरीक्षण किया और प्रत्येक स्थानों पर स्थानीय लोगों को आर्यवीर दल स्थापित करने की प्रेरणा दिया।

आ० स० ज्वालापुर

प्रधान—डा० बालमुकुन्द शर्मा
उप प्रधान—डा० कृष्णदत्त शर्मा
मन्त्री—श्री सत्यपाल आर्य
उप मन्त्री—श्री सरदारसिंह
कोषाध्यक्ष—श्री मिट्ठनलाल
पुस्तका०—श्री राजकुमार शर्मा

इस समाज का ४६ वां वार्षिकोत्सव २८, २६, ३० मार्च ५८ को मनाया जाएगा। आर्य समाज के बड़े-बड़े विद्वान, प्रचारक, उपदेशक, संन्यासी पधारेंगे।

आ० स० ग्वालियर

इस समाज का ३२ वां वार्षिकोत्सव १५, १६, १७, १८ फरवरी ५८ को होने वाला है जिसमें श्री पं० श्यामसिंह गुप्त, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री वाचस्पति शा.जी, श्री शिवकुमार शास्त्री, श्री ब्रह्मचारी सत्यप्रिय व्रती, श्री वेदप्रकाश बी० ए० लखनऊ, और श्री सुरेन्द्र शर्मा आदि पधार रहे हैं।

आवश्यकता

एक प्रधानाध्यापिका की आर्य विचार सगीत तथा कटाई सिलाई जानने वाली सादी जीवन उच्च-विचार ग्रामीण जीवन निर्वाह कर सके प्रार्थना-पत्र शीघ्र भेजें। कम से कम ६ क्लास भलीभांति पढ़ा सके वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा।

मन्त्री आर्यसमाज अगराना, (अलीगढ़)

दिल्ली में ४, ५, ६, अप्रेल को आर्य महा सम्मेलन

१—दिनांक ४ से ६ अप्रेल तक दिल्ली में अखिल भारतीय आर्य महा-सम्मेलन होगा।

"सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा दिल्ली की अन्तरङ्ग सभा का एक आवश्यक अधिवेशन २-२-५८ को श्रीयुत स्वामी अभेदानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे दिल्ली मे हुआ जिसमें अन्तरङ्ग सदस्यों के अतिरिक्त पञ्जाब के लगभग २२ प्रमुख आर्यों ने सभा के निमन्त्रण पर भाग लिया।

सभा ने देश में द्रुतगति से होनें वाले सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को दृष्टि मे रखते हुए देश का समुचित मार्ग प्रदर्शन करने के निमित्त जिसकी आज देश को बड़ी आवश्यकता है दिल्ली में ४, ५, ६ अप्रैल १९५८ को अखिल भारतीय आर्य महा सम्मेलन करने का निश्चय किया है जिसमें कार्यक्रम निर्धारित किया जायगा।

२—सभा ने आगामी वर्ष अपना स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाने का निश्चय किया है।

३—सभा एक उच्चकोटि का अपना साप्ताहिक पत्र शीघ्र से शीघ्र निकालने का भी विचार कर रही है।

४—हिन्दी आन्दोलन का सर्वाङ्ग पूर्ण इतिहास प्रकाशित करने और हिन्दी आन्दोलन के हुतात्माओं का स्मारक स्थापित करने के कार्य को आगे बढ़ाने का भी निश्चय किया गया है। इस स्मारक का एक स्वरूप समस्त आर्य जगत् का एक उच्चकोटि का उपदेशक विद्यालय निश्चित किया जा रहा है जिसमें उच्चकोटि के उपदेशक तैयार किये जायेंगे।

—रामगोपाल
प्रधान मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

आ० स० चौबेरा

इस समाज का पांचवां वार्षिकोत्सव, २२, २३, २४ फरवरी को मनाया जाएगा। एक प्रस्ताव द्वारा इस समाज ने शहीद सुमेरसिंह के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की और हिन्दी आन्दोलन मे दिवंगत अन्य १४ आर्य-शहीदों की आत्माओं की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना की।

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

ARYA

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

MITRA

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का साप्ताहिक मुख पत्र

वार्षिक मूल्य ८) एक प्रति का २० नए पैसे | लखनऊ, रविवार, श्रावण ५, शक १८८० २७ जुलाई १९५८ ई० | विदेश में १५ शिलिंग

लखनऊ में प्रतिज्ञा दिवस की गूञ्ज

पंजाब हिंदी आंदोलन ने भारत को पुनः खण्डित होने से बचा लिया

इस बार का हिन्दी सत्याग्रह और उग्र होगा

लखनऊ की १५००० जनता की विशाल सार्वजनिक सभा में पण्डित प्रकाशवीर शास्त्री एम. पी. का ओजपूर्ण भाषण और

भव्य अभिनन्दन



लखनऊ २० जुलाई। "सन् १९५७ की सबसे बड़ी घटना पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन है जिसने खण्डित पंजाब को अखण्ड पंजाब चाहे भले नहीं बनाया पर पंजाब को पुन: खण्डित होकर दूसरा पाकिस्तान (खालिस्तान) बनने से सदा के लिए रोक दिया। केन्द्रीय सरकार द्वारा हिन्दी आन्दोलन के नेताओं के साथ विश्वासघात किये जाने के बाद इस बार का जो पंजाब हिन्दी सत्याग्रह होगा वह प्रथम सत्याग्रह मे अधिक उग्र होगा।" लखनऊ हिन्दी रक्षा समिति की ओर से "प्रतिज्ञा दिवस" के अवसर पर ससमारोह आयोजित लगभग १५००० उपस्थित जनता की विशाल सार्वजनिक सभा मे भाषण करते हुए हिन्दी आन्दोलन और आर्य समाज के वरिष्ठ नेता श्री पण्डित प्रकाशवीर शास्त्री ने झण्डेवाले पार्क अमीनाबाद मे उक्त विचार रखे।

अपने सवा घण्टे के भाषण मे पंजाब हिन्दी आन्दोलन की पृष्ठ भूमि व इसकी वर्तमान स्थिति पर पूरा प्रकाश डालते हुए आपने जन साधारण को बताया कि इस आन्दोलन के उद्देश्य दो थे। एक तो यह कि कांग्रेसी नेताओं की गलती से पुनः देश में दूसरा पाकिस्तान (खालिस्तान) न बनने पावे और दूसरा यह कि किसी भी राज्य मे किसी भी भाषा पर किसी भी स्थिति मे किसी प्रकार का कोई प्रतिबन्ध नही रहे। इसी लिए आन्दोलन की शिरोमणि समिति का नाम सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति रखा गया है जिसने अपने काम को हल्का करने के लिए अब एक संघर्ष समिति बना दी है जिसके अध्यक्ष पंजाब के भूतपूर्व मन्त्री प्रो० शेरसिंह जी हैं।

आपने कहा कि अपने प्रथम उद्देश्य में तो हम पूर्णतया सफल हुए हैं और अब खालिस्तान की नींव सदा के लिए गिर गई है। दूसरे उद्देश्य को पूर्ति के लिए समिति पुन. सत्याग्रह अवश्य करेगी यदि सरकार ने अधिक टाल मटोल करने की चेष्टा की। इस प्रकार हमारा आन्दोलन आधा सफल हो गया है और आधे के लिये हम प्रयत्नशील हैं।

आपने बताया कि प्रधान मन्त्री नेहरू और गृह मन्त्री पन्त ने एक दो नहीं अनेको बार व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक रूप से हमारी बाते मानने का हमें आश्वासन दिया पर समय आने पर मुकर गये। नेहरू जी ने तो चण्डीगढ़ मे यहाँ तक कहा था कि आर्य समाज की ९० प्रतिशत मांगे स्वीकार कर ली गयीं है और

[शेष पृष्ठ ४ पर]

अवैतनिक सम्पादक—
स्नातक उमेशचन्द्र एम. ए., ईश्वरदयालु आर्य, सभा मुख्य उपमन्त्री
सह० सम्पादक—[illegible]वत शरण

सिद्धान्त-विमर्श

देव और असुर प्रवृत्तियां

[श्री कृष्ण स्वरूप विद्यालङ्कार, इस्लाम नगर, बदायूं]

> इस सृष्टि में देव और असुर प्रवृत्तियों में युद्ध तो पग-पग पर हम देखते हैं। ध्यान हमें यह रखना है कि गिरने के साथ उठने का प्रयत्न सदा करते रहें क्योंकि गिरे रह जाना तो अशक्ति और मृत्यु का चिन्ह है।
>
> —सम्पादक

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरण पृथिव्यां सर्व मानवाः। मनुः

इस भारत भूमि के ऋषि मुनि, संन्यासी महात्माओं ने ही सारे संसार को चरित्र की शिक्षा दी थी। यह भारत भूमि देव भूमि है। 'म्लेच्छ देशास्त्वतः परे' इस आर्यावर्त भारत भूमि के बाहर म्लेच्छ देश हैं। ऐसा अपने प्राचीन ग्रन्थों में पढ़ते आये हैं। परन्तु अब समय के प्रभाव से यह आर्यावर्त भी म्लेच्छप्राय हो गया है। देव और असुर दोनों में ही अग्नि होत्र च वेदाश्च राक्षसानां गृहे गृहे। दया सत्य च शौचं च राक्षसानां न विद्यते ॥

अग्नि होत्र और वेदपाठ तो राक्षसों के भी घर घर होता है। परन्तु राक्षसों असुरों में 'दया' जो कि अहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहाः 'यमाः' यम का उपलक्षण है तथा 'शौच' जो कि शौच सन्तोस तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमाः' नियम का उपलक्षण है; इत दया, सत्य, शौच अर्थात् यम नियम का अभाव होता है। स्पष्ट है कि जिन मनुष्यों में यम नियम का अभाव हो, वह राक्षस, असुर म्लेच्छ कोटि के व्यक्ति हैं।

गीता की दृष्टि में भी असुर, राक्षस वह है कि जो प्रवृत्तिं न निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः। न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते ॥
अ० १६।७

शास्त्र द्वारा निर्दिष्ट प्रवृत्ति मार्ग, अथवा शास्त्र विहित व शास्त्र निषिद्ध धर्माधर्म को नहीं जानते, नहीं मानते, नहीं आचरण करते। और जिनमें शौच (नियमों) आचार, सत्य (यमों) का अभाव होता है।

'देव' के लक्षणों में ब्राह्मण ग्रन्थ कहते है कि परोक्ष प्रियाः हि देवाः प्रत्यक्ष द्विजः।' अर्थात् जो प्रत्यक्ष इन्द्रिय भोगों व भौतिक सुखों से द्वेष करते है; और परोक्ष आत्मा, परमात्मा व निवृत्ति मार्ग के सुखों से प्रेम करते है वही देव है। अर्थामत्रि से स्पष्ट है कि जो प्रत्यक्ष इन्द्रिय भोगों, भौतिक शारीरिक सुखों से प्रेम करते है, और परोक्ष आत्मा परमात्मा व निवृत्ति मार्ग के सुखों से द्वेष, घृणा, उपेक्षा करते हैं वही राक्षस व असुर होते हैं। असून्प्राणान् राति आददाति आकार्यनीति वा असुरः' जो अपने परिवार धन, वैभव, यशादि जिनको कि वह प्राणों की तरह मानता है, उनकी प्राप्ति व पोषण के लिए दूसरों के प्राण परिवार, धन, वैभव, यशादि का अपहरण करता है या नष्ट करता है वह असुर है। आम बोल चाल की व्यवहार की भाषा में यदि इसे कहा जावे तो इस प्रकार कह सकते हैं कि जो मनुष्य जितना ही स्वार्थ प्रधान है उतना ही बड़ा 'असुर' है। और जो मनुष्य जितना ही परोक्ष परमार्थ प्रधान है वह उतना ही बड़ा 'देव' है।

मनुष्य जाति को ही क्या सारे संसार को प्राचीन शास्त्रों ने सत्व, रज, तम के आधार पर बांटा है। मनुस्मृति, गीता, चरक, सुश्रुत आदि सभी ग्रन्थों में इनका विस्तृत वर्णन है। मनु भगवान कहते है कि—

देवत्वं सात्विकाः यान्ति, मनुष्यत्वं च राजसाः। नियर्क्त्वं तामसा नित्यमित्येषा त्रिविधाः तनिः ॥

सात्विक वृत्ति के मनुष्य देवत्व को प्राप्त होते हैं। रजोगुणी, मनुष्यत्व को प्राप्त होते है और तमोगुणी नीच जाति को प्राप्त होते हैं। तमोगुणी, शूद्र, म्लेच्छ, निन्दित कर्म करने हारे, भाट, चारण, दाम्भिक पुरुष अर्थात अपने सुख के लिए अपनी प्रशंसा करने हारे राक्षस जो हिंसक, पिशाच, अनाचारी अर्थात् मद्यादि के आहार कर्त्ता, और मलिन रहते हैं। देखो सत्यार्थ प्रकाश समु० ९

इन सब देव, मनुष्य, राक्षस, पिशाच, भाट, चारण, गन्धर्व, किन्नर यक्ष दैत्यादि में केवल मात्र स्वभाव चरित्र का ही भेद है। 'चरित्र' शब्द 'चर—गति भक्षणयोः' से बना है। चरित्र, आचरण आचार्यादि शब्द भी इसी धातु से बने हैं। 'त्रतैत्रयोरर्थः ज्ञानं गमन प्राप्तिश्चेति।' गति शब्द का प्रयोग ज्ञान गमन प्राप्ति तीन अर्थों में होता है। इसलिए ज्ञानेन्द्रिय कर्मेन्द्रियों के व्यापार तथा इनसे प्राप्त होने वाले परिणाम सुख दुःखादि और इन्द्रियों के व्यापार तथा इनसे प्राप्त होने वाले परिणाम सुख दुःख आदि और इन्द्रियों के भोग, उपभोग यह सभी चरित्र शब्द के अन्तर्गत हैं।

निरुक्त की प्रक्रिया व भावना के अनुसार 'चरित्रं, चरितं वा त्रायते इति चरित्रम्' संसार में व संसार के विषयों में विचरण करती हुई इन्द्रियों की, उनके आचरणों का, अथवा विचरण करते हुए मनुष्य की व संसार की रक्षा करने वाला यह चरित्र ही है। यह चरित्र ही मनुष्य की पापों से नीच गति से रक्षा करता है। और यह चरित्र ही संसार को सुखमय दुःखमय बनाता है। वर्तमान समय में मार काट, दुःख, अशांति, लड़ाई, झगड़ों का कारण केवल मनुष्य और जातियों का चरित्र ठीक न होना ही है।

यजुर्वेद अ० ६ मं० में जहां मनुष्य की सब इन्द्रियों को शुद्ध करने की प्रार्थना की गई है, वहाँ चरित्र पादों को भी पवित्र करने की प्रार्थना 'चरित्रं ते शुन्धामि' से की गई है। उपनिषद् कहती है कि विराट ब्रह्म की द्युलोक पीठ है, अन्तरिक्ष लोक उदर है पृथ्वी पादस्थानीय है 'द्यौः पृष्ठमन्तरिक्षमुदरं पृथिवी पादस्यम्।' एवं पद्भ्यां पृथिवी ह्येणएवं भूतान्तरात्मा'। भगवान् की पादस्थानीय यह पृथ्वी है कि जिस पर भगवान् का उदर और पीठ मूर्धा आदि रुका हुआ है। और पृथ्वी स्थित प्राणियों के पाद स्थानीय यह चरित्र है कि जिसके आधार पर यह प्राणिमात्र रुके हुए हैं, जीवित हैं और सुख दुःख भोग रहे हैं। बिना इसको शुद्ध किये यह ब्रह्माण्ड कैसे शांति पूर्वक चल सकता है। क्या पांव से कमजोर लंगड़ा लूला प्राणी कभी भी दौड़ में आगे बढ़ सकता है? क्या कोई भी चरित्रहीन व्यक्ति, जाति परमार्थ उन्नति की दौड़ में आगे बढ़ सकती है?

यह चरित्र सच्चरित्र और दुश्चरित्र रूप से दो प्रकार का है। रामायण का यदि आध्यात्मिक अलंकार में मनन करें तो राम देवताओं सच्चरित्रों का और रावण राक्षस असुर दुश्चरित्रों का प्रतीक है। देवताओं से माननीया (पत्नी) सभ्यता ही राम की पत्नी सीता है; जिसे आसुरी सभ्यता का प्रतिनिधि राक्षस राज दैत्येन्द्र रावण चुराले गया था। उसी को देवताओं का प्रतिनिधि राम, यमराज की दक्षिण दिशा से युद्ध करके वापिस लाया था। इस सीता=सभ्यता का अपहरण क्यों हुवा? उत्तर यह है कि जब इस निवृत्ति प्रधान देव सभ्यता सीता पत्नी की, आंख के विषय सुन्दर रूप में मारीच की मृग छाला में, चर्म में, आसक्ति हुई। और फिर देवताओं के प्रतीक राम भी उन इन्द्रियों की इच्छा पूर्ति के अपने विवेक ज्ञान को दूर करके जीव हिंसा को, (मृग चर्म के लाने को, अपनी पत्नी की नाजायज इच्छा को पूर्ण करने के लिए चल दिये।

सीता=सभ्यता को वापिस लाकर राम को फिर यह देखना पड़ा कि इस सभ्यता में कुछ विषय विकार तो नहीं मिल गया है। इसीलिए उसने उस सीता सभ्यता को 'तप' रूप अग्नि में में बैठाया, तपाया। अग्नि=तप द्वारा शुद्ध करके अंगीकार किया और आर्यावर्त के केन्द्र अयोध्या में लाया कि जहाँ उस सभ्यता पर प्रहार नहीं हो सकता। (अयोध्या=युधि-संप्रहारे न योध्या=अयोध्या)।

जब देवता भी अपने चरित्र से भ्रष्ट होकर मुसीबतों में पड़ सकते हैं, पाराशर व ऋषि विश्वामित्र से तपस्वी मुनियों को जरा सी असावधानी चरित्र भ्रष्ट कर सकती है, तो हम साधारण मनुष्यों को तो कितना सतर्क और सचेष्ट रहना चाहिए। उठना गिरना और फिर उठने का प्रयत्न करना ही जीवन का चिन्ह है। गिरे रह जाना ही कमजोरी अशक्ति, मृत्यु का चिन्ह है। आइये—हम अपने को, अपनी जाति को अपने देश को अपने विश्व को ऊंचा उठाने का और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के आदर्श को पूरा करने का प्रयत्न करें। ★

ओम् सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्योऽन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या॥
अथर्व० ३।३०।१

हे मनुष्यों, मैं तुम्हें समान हृदय वाला, समान मन वाला और एक दूसरे से द्वेष न करने वाला रहने का उपदेश करता हूं, जैसे गौ उत्पन्न हुए अपने बच्चे के पास दौड़ी आती है वैसे ही तुम भी एक दूसरे के पास प्रेम से जाओ।

आर्यमित्र

लखनऊ—२७ जुलाई १९५८, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०५८

नैतिक उत्थान आन्दोलन

आर्यसमाज की स्थापना जिस नैतिक जीवन और उसके परिणाम स्वरूप नैतिक समाज रचना के लिए हुई थी उस दिशा में आज आर्य समाज की आवश्यकता पहले से भी अधिक अनुभव की जा रही है। आज देश का बुद्धिवादी वर्ग राजनीति के पंक में निमग्न है और येन-केन प्रकारेण सत्ता प्राप्ति ही सब का लक्ष्य बन गया है और एक प्रकार से भारत अराजकता की ओर बढ़ रहा है। वर्तमान भारत के अनैतिक जीवन का विस्तृत विवरण देते हुए आर्य समाज के वयोवृद्ध नेता श्रद्धेय पं० हरिशङ्कर शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने आर्य जनता से नैतिक उत्थान आन्दोलन का नेतृत्व करने की अपील की है। उनकी अभिलाषा है कि प्रत्येक आर्यसमाज में नैतिक उत्थान विभाग स्थापित हो और संघटित शक्ति द्वारा सर्वत्र व्याप्त भ्रष्टाचार और अनैतिक जीवन के विरुद्ध आर्यसमाजों की ओर से सार्वजनिक सभाएं बुलाई जाएं और जनमत को जागृत किया जाय। आर्य समाज के मनस्वी नेता के रूप में पण्डित जी ने जो विचार प्रकट किये हैं हम उनका हार्दिक समर्थन करते हैं और समस्त आर्यजगत् से अपील करते हैं कि राष्ट्र का विषम परिस्थितियों से उद्धार करने के लिए वह अपने कर्तव्य को पहचाने और कार्यक्षेत्र में आगे आवे। आर्यसमाज के कार्यक्रम में नवीनता का समावेश कर संव्याप्त शैथिल्य को हमें समाप्त करना होगा। अब आर्यसमाज की आवश्यकता नहीं रही इस प्रकार की मिथ्या धारणाओं का निराकरण हमें अपनी कर्तव्य परायणता द्वारा करना होगा। आर्यसमाज का जन सम्पर्क इस आन्दोलन के द्वारा बढ़ेगा और हमें जनता तक अपने विचारों को पहुँचाने का अवसर प्राप्त होगा। दूसरी राजनैतिक पार्टियों द्वारा जब सरकारी भ्रष्टाचारों और अनैतिक कार्यों का भण्डाफोड़ किया जाता है तब यह समझा जाता है कि वे सत्ता प्राप्ति के लिए इस प्रकार के आक्षेप कर रहे हैं परन्तु आर्यसमाज के सम्बन्ध में इस प्रकार के आक्षेप की सम्भावना नहीं होगी क्योंकि हमारी नीति स्पष्ट है न हमें राज्य चाहिये न जनता के अधिकारों का दमन, हम तो संस्था के रूप में कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम् चाहते हैं। हमारी इन पवित्र भावनाओं के साथ आरम्भ होने वाले इस आन्दोलन को अवश्य सफलता प्राप्त होगी। जब सभी स्वार्थी हों तब क्या हमारा अकेला संघटन इस मायावी जीवन को समाप्त करने में सफल हो सकेगा, इस विषय में हमें चिन्तित नहीं होना चाहिये। ऋषि दयानन्द अकेले थे पर अन्त में उन्हें विजय प्राप्त हुई, वेद का प्रेरणा सूत्र "चरैवेति चरैवेति" हमें आगे बढ़ने और अज्ञान, अन्याय तथा अभाव के भ्रष्टाचार और अनैतिक जीवन के विरुद्ध सिंहनाद करने के लिए प्रेरित कर रहा है। हम अपने कर्तव्य को पहचानें यही समय की मांग है, हमारी परीक्षा है।

शतांश की नैतिकता

हम राष्ट्र के नैतिक अभ्युत्थान के लिए व्यापक आन्दोलन छेड़ने का निश्चय कर रहे हैं। ऐसे समय हमें अपनी कमजोरियों को भी दृढ़तापूर्वक दूर करने का सत्साहस करना होगा। आदर्श आर्य वही है जिसके जीवन में कोई त्रुटि न हो और जो अपनी पवित्रता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए सतत जागरूक बना रहे। आर्य जन अपने स्वीकृत नियमों का कहां तक पालन करते हैं यही हमारी नैतिकता का मापदण्ड होना चाहिये। अपने इस कथन को स्पष्ट करने के लिए हम एक व्यावहारिक प्रश्न की ओर सबका ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं और वह है आर्यों के चन्दे का नियम। ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज के उपनियमों में प्रत्येक सदस्य को अपनी आय का शतांश आर्यसमाज को देना चाहिये ऐसा आदेश दिया है। अन्य सभा समितियों की भांति कोई धन राशि नियत नहीं की है। क्योंकि वे जानते थे कि आमदनियां सदैव घटती बढ़ती रहती हैं इसीलिए आय का एक भाग देना उन्होंने निर्दिष्ट किया। हम वर्तमान में देखते हैं कि इस नियम पालन में बहुत ही उपेक्षा की जाती है। चन्दा देना खाना पूरी के लिए आवश्यक समझा जाता है समाज के हित की भावना से बहुत कम लोग स्वेच्छापूर्वक शतांश चन्दा देते है।

एक वृद्ध आर्य सज्जन एक बार की घटना सुना रहे थे जब वहां की समाज में शतांश चन्दे का प्रश्न आया तब एक प्रतिष्ठित सज्जन ने सभा में कहा कि आप शतांश चन्दा देने के लिए बाध्य करेंगे तो लोगों की वास्तविक आय का पता इन्कम टैक्स वालों को लग जायगा और उन्हें उसी आय पर टैक्स देना पड़ेगा। क्या कोई सच्चा आर्य इस युक्ति का समर्थन कर सकता है? जो व्यक्ति अपनी आय को राज्य से छिपाता है वह कैसे देश भक्त हो सकता है? उसका नैतिक पतन तो तो तभी आरम्भ हो गया जब उसने चन्दे के लिए अपनी आय कम बतायी। इस प्रकार का चन्दा देकर आर्यसमाज के पदों पर बने रहने वालों से आर्यसमाज के नैतिक आन्दोलन का सफल संचालन किये जाने की आशा मृग तृष्णा ही समझी जानी चाहिये। अतः यदि हम दूसरों से सत्य का पक्ष लेने और व्याप्त भ्रष्टाचार का विरोध करने की अपील करने के लिए आगे बढ़ते हैं तो पहले हमें अपने व्यक्तित्व को भी कसौटी पर कसना होगा। हम समझते है कि शतांश चन्दे की नैतिकता की रक्षा के किए जाने से हमारे आन्दोलन को पर्याप्त बल मिलेगा और हम साहस के साथ आगे बढ़ सकेंगे। इस आदर्श के पालन से समाज की आर्थिक कठिनाइयां भी दूर हो सकेंगी ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है। आशा है आर्य समाज के कर्णधार इस सम्बन्ध में गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे। हम उनके विचारों की प्रतीक्षा करेंगे।

आपका गुरुकुल

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन उत्तरप्रदेश के आर्यों द्वारा संस्थापित राष्ट्र की प्रसिद्ध शिक्षा संस्था है। आधी शताब्दी से अधिक समय से शिक्षा क्षेत्र में यह संस्था आदर्श कार्य कर रही है। इस संस्था की उन्नति से हम सब गर्व अनुभव करते हैं। अपनी संस्था होने के कारण गुरुकुल के प्रति उत्तरप्रदेश के आर्यों का विशेष दायित्व है। गुरुकुल का नवीन सत्र आरम्भ हो चुका है और अध्ययन-अध्यापन का क्रम यथानियम चल रहा है। हम सबका कर्तव्य है कि अपने अपने क्षेत्रों से गुरुकुल में ब्रह्मचारी प्रवेश के लिए भेजें और भिजवायें। गुरुकुल की आर्थिक सहायता करना भी हम सब का कर्तव्य है। छात्रों को अधिक सख्या में प्रविष्ट करा और प्रबन्धकों को आर्थिक सहायता देकर हम सब गुरुकुल की उन्नति में सहयोग दे सकते हैं। आशा है आर्य जन अपने गुरुकुल के प्रति अपने कर्तव्यों का सदैव पालन करेंगे।

आनन्द स्वामी जी द्वारा असहयोग नीति का समर्थन

हमने पिछले लेख में संघर्ष की रूप रेखा क्या हो इस सम्बन्ध में विचार व्यक्त करते हुए सुझाव दिया था कि इस बार सत्याग्रह से पूर्व असहयोग की नीति स्वीकार की जानी चाहिए। हमें प्रसन्नता है कि इसी प्रकार के विचार आर्य समाज के प्रख्यात नेता आनन्द स्वामी सरस्वती प्रधान आ० प्र० नि० सभा पंजाब ने व्यक्त किये हैं और उन्होने अपने एक सहयोगी को पत्र मे लिखा है कि इस बार समस्त आर्य कालेजों और स्कूलों के अध्यपक और छात्र एक ही दिन सत्याग्रह करें। हमने यही लिखा था कि इस बार उन शिक्षण संस्थाओं की ओर से कदम उठाया जाना चाहिए जिन पर अन्याय पूर्वक भाषा नीति थोपी जा रही हो। हम समझते है कि यदि उक्त शिक्षा संस्थाओं के छात्र और अध्यापक भाषा नीति के विरोध में असहयोग का मार्ग अपना लें तो हमारा पक्ष अधिक प्रबल हो जायगा, इस सामूहिक असहयोग का व्यापक प्रभाव पड़ेगा और सरकार को समस्या के समाधान के लिए विवश होना पड़ेगा।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

श्री गङ्गाप्रसाद जी रि. चीफ जज का अभिनन्दन

(पिछले पृष्ठ का शेष)

आर्य समाज का इतिहास सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का इतिहास है। इस इतिहास के निर्माण में जिन व्यक्तियों का रचनात्मक सहयोग रहा हो या है वे सभी आर्य जनता के लिए श्रद्धेय हैं। श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी रि०चीफ जज पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा आर्यसमाज के अग्रणी नेताओं में से हैं उनका सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज की सेवा में संलग्न रहा है। सरकारी सेवा में रहते हुए भी उन्होंने निर्भयता पूर्वक आर्य समाज के सांस्कृतिक एवं सामाजिक, धार्मिक, सभी आन्दोलनों में सक्रिय सहयोग दिया है। आर्य समाज के वर्तमान वैधानिक संघटन में भी उनका सहयोग सदैव स्मरणीय रहेगा। आज भी वे वृद्धावस्था में आर्य सिद्धान्तों के सम्बन्ध में समय समय पर लिखते रहते हैं और हमारा मार्ग दर्शन करते हैं। उनकी सेवाओं के प्रति आभार प्रदर्शन करना हम सबका कर्तव्य है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की आगामी अन्तरङ्ग की बैठक में आदरणीय जज साहब के अभिनन्दन का विषय प्रस्तुत है। हम इस अभिनन्दन आयोजन का हार्दिक स्वागत करते हैं और आर्य जनों से अपील करते हैं कि इस अभिनन्दन कार्य के लिए अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें। आशा है हम अपने आदरणीय नेता का सम्मान करेंगे और उनके प्रति कृतज्ञता प्रकाश कर अपने कर्तव्य का पालन करेंगे।

भारत सरकार और उर्दू

भारत सरकार धर्म निरपेक्षता के नाम पर समय समय पर विचित्र नीतियों का अवलम्बन करती रहती है। प्रजातन्त्र व्यवस्था होने के कारण भारत सरकार इस समय कांग्रेस दल की नीति का पालन कर रही है। कांग्रेस कार्य समिति ने पिछले दिनों उर्दू के सम्बन्ध में जो नीति निर्धारित की भारत सरकार ने उस नीति का अपनी विज्ञप्ति में स्पष्टीकरण किया है।

इस विज्ञप्ति के अनुसार जिन बच्चों के मां बाप यह घोषणा करें कि उनकी मातृ भाषा उर्दू है उन्हें प्राथमिक स्तर पर शिक्षा और परीक्षा की सुविधाएं उर्दू भाषा में दी जानी चाहिए।

अब तक उर्दू भाषा के स्वरूप के सम्बन्ध में विद्वान् एक मत न हो अंब इस प्रकार का आदेश राजनैतिक स्वार्थों से प्रेरित होना ही कहा जा सकता है। एक बार को उर्दू भाषा भाषा के अस्तित्व को हम मान भी लें और उसके लिए सुविधाओं का समर्थन भी कर दें तो हम भारत सरकार से यह पूछना चाहते हैं कि इतनी उदार भाषा नीति रखते हुए पंजाबमें हिंदीके साथ जबरदस्ती क्यों की जा रही है? क्या भारत सरकार के एक आदेश में उर्दू शब्द हटाकर हिन्दी शब्द प्रयुक्त कर इस आदेश को पंजाब में लागू किया जा सकता है? यह साहस भारत सरकार में नहीं है। इस दुरंगी नीति का आधार है साम्प्रदायिक मनोवृत्तियों का तुष्टीकरण, पंजाब में सिक्खों का समर्थन प्राप्त करने के लिए हिन्दी पर प्रतिबंध और अन्य स्थानों पर मुस्लिमों का समर्थन पाने के लिए उर्दू को प्रोत्साहन।

भारत सरकार की इस दुरंगी और साम्प्रदायिक तुष्टीकरण नीति का हम विरोध करते हैं। आशा है साम्प्रदायिकता का तथा कथित विरोध करने वाले इस नीति का परिष्कार करेंगे।

प्रेमचन्द दिवस

हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार स्व० मुन्शी प्रेमचन्द का स्मृति दिवस आगामी ३१ जुलाई को सम्पूर्ण भारत में मनाया जाना निश्चित हुआ है। राष्ट्र भाषा हिन्दी के महान् लेखक और सामाजिक क्रान्ति की हमारी (आर्यसमाज की) विचारधारा के सन्देश वाहक होने के कारण हमें यह दिवस बड़े समारोह के साथ मनाना चाहिए। विदेशों में दूसरे लोग हमारे साहित्यकारों की जयन्तियाँ मनायें और हम उनके प्रति मौन रहें इससे अधिक कृतघ्नता और क्या होगी? आशा है सभी राष्ट्र-भाषा प्रेमी प्रेमचंद दिवस समारोह पूर्वक मनाकर अपने कर्तव्य का पालन करेंगे।

विश्व शान्ति को खतरा

ईराक की रक्तरंजित राज्य क्रान्ति और लेबनान में अमरीकी सेनाओं का प्रवेश होने से विश्व आज युद्ध के कगार पर खड़ा है। विश्व में स्वाधीनता के लिए संघर्ष का दम्भ भरनेवाले अमेरिकन अपनी साम्राज्यवादी मनोवृत्ति का नग्न प्रदर्शन कर रहे हैं। अमरीका की सेनाओं को शीघ्र लेबनान से लौटना चाहिये अन्यथा रूस आदि की ओर से जवाबी कार्यवाही आरम्भ होने पर विश्व युद्ध छिड़ जायगा। मानवता के शुभचिंतक परेशान हैं। प्रभु मानवता की रक्षा करे और विश्व का युद्ध से (विनाश से) बचावे।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

शेष १० प्रतिशत मांगे शांतिपूर्वक बैठकर तय कर ली जावेंगी। पन्त जी ने भी करनाल, लुधियाना आदि स्थानों में अनेकों आश्वासन दिये और सत्याग्रहियों को बिना शर्त छोड़ कर सरकार की ओर से सद्भावना दिखाया पर यह सब राजनीतिक चाल थी यह हमें अब पता चला है। आप ने सरकार को यह चेतावनी देते हुए कहा कि हमने सत्याग्रह स्थगित किया था बन्द नहीं किया था, यह सरकार को मालूम होना चाहिए। पिछली बार यदि ७ महीने में १३००० सत्याग्रही गये थे तो इस बार ७ महीने में ५०००० सत्याग्रही जेल जायेंगे।

(तालियां)

आपने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच कहा कि हमारे पंजाब के अकाली भाई यदि दो नदियों वाले पंजाब को पांच नदियों वाला पंजाब बनाने के लिए कोई आन्दोलन खड़ा करते तो महर्षि दयानन्द का एक एक सिपाही इस आन्दोलन की आग में कूद पड़ता और पंजाब को पूर्ववत पंचनद-पंजाब बना देता पर खेद है कि अकाली बन्धु पंजाब के और भी टुकड़े करना चाहते हैं। इससे भी अधिक खेद इस बात पर है कि हमारी केन्द्रीय सरकार अपने स्वार्थ के कारण ऐसे अन्यायी व साम्प्रदायिक लोगों की पीठ ठोक रही है।

आपने कहा कि अब हम भी चुप नहीं बैठेंगे। आर्यसमाजी प्रचारक होने के नाते देश भर के शहर-शहर के चौराहों पर खड़े होकर और संसद सदस्य होने के नाते संसद भवन में भी सरकार का पोल खोल खोल कर जनता को सुनाया करेंगे। (जोरों की तालियां)

इससे पूर्व प्रातः ८ बजे चारबाग रेलवे स्टेशन पर आपका भव्य स्वागत किया गया और सायंकाल सार्वजनिक सभा में बड़े समारोह के साथ नगर की सभी संस्थाओं की ओर से आप का शानदार अभिनन्दन किया गया। हिन्दी रक्षा समिति की ओर से आप को श्री भगवतशरण जी ने अभिनन्दन पत्र भेंट किया। प्रतिज्ञा दिवस की प्रतिज्ञा दुहराई गई और सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव भी पास हुआ कि केंद्रीय सरकार अब आर्यसमाज की अधिक परीक्षा न लेकर इसकी मांगों को स्वीकार करे अन्यथा इससे उत्पन्न विषम स्थिति की जिम्मेदारी केन्द्रीय सरकार पर होगी। सभा की अध्यक्षता श्री सीताराम शुक्ल एम०एल०ए० ने की।

कांग्रेसी एम०एल०ए० होते हुए भी आपने अध्यक्ष पद से कहा कि कांग्रेस जान बूझ कर हिन्दी को दबाती है। आपने कांग्रेसी नेताओं की इस उक्ति का भी खण्डन किया कि हिन्दी आन्दोलन से हिन्दी का अहित होता है। वास्तविकता तो यह है कि हिन्दी आन्दोलन से ही हिन्दी को अब तक इतना स्थान मिल चुका है अन्यथा कांग्रेसी नेता हिन्दी को स्वेच्छा से कभी स्वीकार नहीं करते। इस सार्वजनिक सभा और पं०प्रकाशवीर शास्त्री के भाषण की शहर भर में खूब चर्चा है। ★

'वीर संदेश'

"वीर संदेश" मासिक आर्यवीर दल का एकमात्र पत्र है जो बहजोई (मुरादाबाद) के कुछ उत्साही आर्य युवकों द्वारा प्रकाशित हो रहा है। पत्र देखने में सुन्दर है और पाठ्यसामग्री भी नवयुवकों के लिए अच्छी मिलती है। स्वाध्याय के योग्य कुछ लेख भी इसमें मिल जाते हैं। आर्यवीरदल की गतिविधि के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए यही एक पत्र है। आर्य वीर दल के कार्य को आगे बढ़ाकर दल के सैनिकों द्वारा राष्ट्र की सेवा किया जाना इस पत्र का उद्देश्य है। कुछ ही दिनों से प्रकाशित होने वाला यह पत्र बहुत जल्दी आर्य जगत् में लोक प्रिय बनता जा रहा है। हम चाहेंगे कि आर्य जगत के लोग इस पत्र के अधिकाधिक संख्या में ग्राहक बन जांय। ★

अध्यात्मधारा

आत्मा का आनन्द

[श्री ओमप्रकाश शर्मा मन्त्री,वैदिक दैनिक आर्य सत्सग, नखाबाजार, सहारनपुर]

आत्मिक आनन्द की जिस सचाई की ओर से विमुख होकर आज का समाज कष्ट भोग रहा है, उसी कष्ट से उसे मुक्त करने को पवित्र भावना से समाज के सर्व साधारण लोगों का ध्यान आज हम उस सचाई की ओर आकर्षित करना चाहते हैं जिसकी चर्चा इस लेख में की गई है। स०

जिसे आत्मा के आनन्द का अनुभव है वह विषय के आनन्द म क्यों फसेगा! जो जानता है कि भोग में रोग और शोक का भय है वह क्यो भोगा सक्त होगा! फिर भी वह अल्पज्ञ जीव भोगों में मस्त है और र र है। हे जीव, ससार तो तेरे लिये हो बना, किन्तु उसका उपभाग करना सीख, लिप्त न हो ससार के भोगों मे, उन्हे त्यागपूर्वक और कर्त्तव्य की दृष्टि से भोग। अरे भोले, कभी विचार किया है कि तू ससार मे क्यो आया है और तेरी मजिल क्या है?

क्या यही हमारा उद्देश्य है कि हम यदि वकील, मुन्शी और मुवक्किल है तो दिन-रात केवल मुकदमो का हो काम करते रहें, यदि मजिस्ट्रेट, जज, कर्मचारी या अधिकारी हैं तो रात दिन केवल फाइलों को ही उलटते पलटते रहें, यदि डाक्टर या कम्पाउडर हैं तो हर रोग मे इन्जेक्शन दे देकर धन कमाते रहें, यदि व्यापारी या दूकानदार हैं तो आधी रात तक दूकानदारी हो करते रहे, यदि दरोगा या सिपाही हैं तो कारगुजारी के लिए उलटे सोधे मुकदमे ही ही बनाते रहें और यदि नेता हैं तो अपने स्वार्थ के लिए भाषण ही देते रहे? यदि मनुष्य सारी आयु अपनी स्वार्थ सिद्धि,खान पान और विषयों में आनन्द समझ कर वासना मे फसा रहा तो उसे क्या मिला? शरीर का परिणाम तो है राख 'भस्मान्त शरीरम्' (वेद) कमाई तो सब यहीं रह गई। असली कमाई की ओर तो ध्यान नहीं दिया। नाशवान वस्तुए नित्य जीव के साथ कैसे जाए? हाँ धर्म है नित्य 'नित्योधर्म' (महाभारत) अत. हे मनुष्य, धर्म और पुरुषार्थ से जितना कमा सकता है कमा, क्योंकि भूखा आदमी न अपने आप को ठीक रख सकता है न इस ससार का कल्याण कर सकता है। लेकिन धन तो मजिल नहीं, साधन है। अकबर इलाहाबादी के शब्दों मे—

क्या कहे अहबाब क्या कारेनुमायाँ कर गए।
बी० ए० पढे, नौकर हुए पेन्शन मिली और मर गए।

यदि सारी आयु धन के सग्रह में लगे रहे तो अन्त समय में शान्ति नहीं मिल सकती। अत हे जीव, क्षणिक आनन्द के लिए अपने आपका मृत्यु का ग्रास न बना।

विष दृष्ट्वामृत दृष्ट्वा विष त्यजति बुद्धिमान्।
आत्मानमतिदृष्ट्वाहमनात्मान त्यजाम्यहम्॥ (आ०प्र०)

अर्थात्, जैसे बुद्धिमान पुरुष विष तथा अमृत को देख कर विष का त्याग करता है, वैसे परमात्मा को देखकर मैं अनात्मा (विषयों) का त्याग करता हू। इस प्रकार से बार बार विवेक और वैराग्य द्वारा ससार के विषयों की क्षण भंगुरता पर विचार करके मन को विषयों से हटाना चाहिए। हमें युवावस्था ही से प्रभु की शरण में आने का अभ्यास करना चाहिए क्योकि उनकी शरण में ही कल्याण है। मनुष्य जीवन का परम उद्देश्य है आनन्दमय भगवान को प्राप्त करना।

परख बैठा हू कसौटी पर सकल ससार को,
आप की ही शरण मे बस समझता कल्याण हू।

महाराज भर्तृहरि के अनुसार जब तक यह शरीर रूपी घर निरोग है, जब तक बुढ़ापा दूर है, इन्द्रियों में शक्ति है तब तक मनुष्य को चाहिये कि वह अपने कल्याण का पूर्ण यत्न कर ले, क्योंकि घर में आग लगने पर कुआ खोदने से फिर वह उद्योग व्यर्थ ही है। इसी प्रकार बुढ़ापा और रोग होने पर कुछ साधना नहीं की जा सकती। अग्नि में डाले हुए मनुष्य के पीछे तो केवल उसका बुरा या भला कर्म ही जाता है, इसलिए मनुष्य को धीरे धीरे यत्नपूर्वक धर्म का सग्रह करना चाहिये। विषयों का परिणाम मृत्यु है और सयोग का वियोग। हे जीव, मन को विषयों से अलग करने का प्रयत्न कर, नहीं तो यह मन रेशम के कीड़े की तरह वासना रूपी रेशम के धागे मे फंस जाएगा। जीव नित्य है और चेतन भी, किन्तु आनन्द की खोज में भटक रहा है। उसे आनन्द की प्यास लग रही है, जल मिलते ही शान्त हो जाएगी। प्यासे को कोई भोजन या कपड़ा दे तो वह नहीं लेगा। प्यास नहीं बुझी, प्राण जाते दिखाई दिए, थोड़ा सा कहीं से जल मिल गया, जाना जीवन वापस आ गया। इसीप्रकार ससार ताप से झुलसे हुए जीव के लिए, परमात्मा जल के समान जीवन देने वाला है। करोड़ो रुपया कमाया, परन्तु शान्ति और आनन्द नहीं मिला। शान्ति और आनन्द प्रकृति मे कहा? जो जिसका गुण होता है वह उसी से मिलता है। प्रकृति तो जड वस्तु है और सत्य है, जीव सत्य और चेतन है और परमात्मा ही सत्य चित और आनन्द (सच्चिदानन्द स्वरूप) है। उसी की दिव्य ज्योति सर्वत्र जगमगा रही है। महात्मा और साधू जन यम, नियम, आसन, प्राणायाम प्रत्याहार, धारणा ध्यान और समाधि आदि विविध उपायो से उसी की आराधना मे सलग्न रहकर साधना द्वारा ससार को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। योगी लोग ससार के सब पदार्थों की तमन्ना को छोडकर उस प्रभु की ही मस्ती में रहकर अपने आपको धनवान और भाग्यवान समझ रहे हैं। कण कण उसकी ज्योति से चमक रहा है। रग बिरगे फूल पत्ते, लहलहाते हुए वृक्ष, झूमती हुई लताए, वनस्पतिया, महान् पर्वत, विशाल समुद्र, सूर्य चन्द्रमा, लोक-लोकान्तर, पशु पक्षी और मनुष्य आदि ये विलक्षण रचनाए दिन रात उसी की महिमा को बता रहे हैं। वह सब का प्रियतम हा घट घट वासी और अन्तर्यामी है। भक्त लोग सध्या, स्तुति, प्रार्थना, श्रवण, मनन और निदिध्यासन द्वारा उसी के आनन्द की खोज में लगे हुए हैं। इसलिए आनन्द का खोजी प्रभु के प्रेम में मग्न हो उसकी आज्ञाओं का पालन करता है। उस परमानन्द को प्राप्त करके सब ताप सन्ताप मिट जाते हैं। ससार के सब रस, सुख, और आनन्द उस परम रस, परमसुख और परम आनन्द को पाकर सर्वथा फीके लगने लगते हैं। इस लिए आओ, उस प्रभु के रग मे रग जाए।

कितने ही रगों से मैंने आज तक रगा इसे,
पर वे सारे फीके निकले तू ही गाढ़ा रग रे।
मै तो जानूगा तभी तेरी ये रगअदालिया,
जितना धोऊ उतना चमके जब तू ऐसा रग रे।

धन से मनुष्य कभी तृप्त नहीं हो सकता। भोग की प्राप्ति से भोग की कामना का और भी विस्तार होता है, इसलिए कठोपनिषद् में नचिकेता ने यम को कहा—

श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्त के तत्सर्वेन्द्रियाणा जरयन्ति तेजा

अर्थात् ससार के जितने विषय हैं वे सब अनित्य हैं स्थिर नहीं हैं और मरण धर्मा मनुष्य की सब इन्द्रियो के तेज को परमात्मा के विधानानुसार वे नष्ट करते रहते है। इससे सब इन्द्रिया क्षीण और दुर्बल हो जाती है। इस प्रकार नचिकेता ने मृत्यु के बाद आत्मा की अवस्था और ब्रह्मविद्या के ज्ञान के अतिरिक्त और किसी पदार्थ को नहीं मागा। धन के सम्बन्ध मे नचिकेता ने कहा -

"न वित्तेन तृप्ति मनुष्यो."

अर्थात् कोई मनुष्य चाहे कितना ही धन क्यो न प्राप्त कर ले, वह कभी तृप्त नहीं हो सकता। कामनाओं की कभी तृप्ति नहीं होती।

बाल अवस्था खेल गवाई, जब जवानी तब नारि तनारे।
जाके कारण माल गवायी,अजहु न गई मन की तृष्णा रे। (कबीर)

सुझाव और सम्मतियाँ

आश्रम व्यवस्था का आधार गुण कर्म स्वभाव हो आयु नहीं

मनु का यह वचन ठीक ही है कि लिंगधर्म का कारण नहीं। लिंग, लिंग है। जब वह कारण का पर्याय समझ लिया जाता है तो वह कारण तो बन ही नहीं सकता, अपना लिंगत्व भी खो बैठता है, जैसे वर्तमान काल का यज्ञोपवीत। यज्ञोपवीत अनावश्यक या अनुपयोगी नहीं परन्तु है तो लिंग ही। जब वह कारण का पर्याय बन गया तो इसकी भी वही गति होगी जो सन्यास या वानप्रस्थ की हुई। क्योंकि अब लिंगत्व भी नष्ट हो गया।

याद रखिये कि यदि खींचातानी करके अपने अव्यवहार्य नियमों का समाज पर लादने का प्रयत्न किया तो व्यवस्था नहीं रह सकती। हां आशंका, अनुचित आलोचना, आडम्बर विडम्बना का साम्राज्य हो सकता है। जैसे गुण कर्म स्वभाव वर्ण व्यवस्था का आधार भी गुण, कर्म और स्वभाव ही होने चाहिए आयु नहीं। आयु तो केवल जन्म के ही आधार पर होती है।

—गंगाप्रसाद उपाध्याय एम०ए०
(प्रयाग)

राष्ट्र भाषा का अनादर

स्वतन्त्र भारत के नवनिर्मित संविधान में हिन्दी को राष्ट्र भाषा का पद प्राप्त हुआ, परन्तु क्या भारत सरकार की मनोवृत्ति में आज भी कुछ परिवर्तन हुआ है? शायद नहीं इसीलिए हिन्दी का सब जगह अनादर किया जाता है। भारतीय प्रशासन सेवा के सुयोग्य संचालकों, परीक्षकों एवं अधिकारियों की दृष्टि में हिन्दी आज भी वर्नाकुलर जैसी गिरी तथा पिछड़ी भाषा है।

हिन्दी का साहित्य समृद्ध है अथवा नहीं बिना इस विवाद में उलझे ही देखा जा सकता है कि प्रतिवर्ष इस भाषा में शोध कार्य समाप्त कर अनेक डाक्टर बन रहे हैं, परन्तु अखिल भारतीय प्रशासकीय परीक्षा में (जिसमें हिन्दी भाषा भाषी क्षेत्रों के भी छात्र बहुसंख्या में सम्मिलित होते हैं) हिन्दी अनिवार्य विषय तो दूर एक ऐच्छिक विषय भी नहीं है। हिन्दी को आवश्यक विषय बनाना, दक्षिण के कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को खटक सकता है या अंग्रेजी प्रेमियों की दृष्टि में दुराग्रह हो सकता है परन्तु क्या हिन्दी साहित्य इतना पिछड़ा हुआ है कि उसे अंग्रेजी साहित्य की भांति एक ऐच्छिक विषय भी नहीं बनाया जा सकता?

अंग्रेजी की महत्ता तो इस बात से स्पष्ट है कि अंग्रेजी को आवश्यक विषय माना गया है तथा उसके दो पत्र हैं। सामान्य ज्ञान (जनरल नालेज) के प्रश्न पत्र में भी अंग्रेजी साहित्य पर प्रश्न पूछे जाते हैं।

भारतीय विद्यार्थी से अपेक्षा की जाती है कि वह हार्डी, गेटे फिल्डिंग, स्काट, इलियट और शा की कृतियों का सामान्य ज्ञान अवश्य रखे, परन्तु यह कभी नहीं पूछा गया कि रामायण की महत्ता क्यों है, प्रेमचन्द्र के प्रमुख उपन्यास कौन से हैं, या जय शंकर 'प्रसाद' अपने किस महाकाव्य के कारण प्रसिद्ध हुए? भारतीय विद्यार्थी के साधारण ज्ञान के माप दण्ड के स्तर से शायद इसे बहुत नीचे की चीज वे लोग समझते हैं।

यह देखकर और भी अधिक दुख एवं आश्चर्य होता है कि अरबी, फारसी, चीनी, फ्रेंच भाषाएं तो ऐच्छिक विषय के योग्य मानी गयीं पर हिन्दी की इतनी भी पूछ नहीं? कितनी पिछड़ी है हमारी हिन्दी और कितना उदार दृष्टिकोण है हमारे लोक सेवक अधिकारियों का?

दिल्ली की मोटी गद्दियों पर ऊंघने वाले तथाकथित हिन्दी हितैषियों एवं प्रचारकों की कुम्भकर्णी निद्रा कब टूटेगी? जागते रहने वालों का दावा करने वालों की बन्द आँखों को देखकर दुख होता है। शायद इसीलिए राष्ट्र भाषा हिन्दी के इस राष्ट्रीय अनादर से आंख मूंद हिन्दी के महारथी सोचते हैं कि कोई करिश्मा होगा, और रात में हम सोयेंगे, सुबह हिन्दी सारे भारत की राष्ट्र भाषा के रूप में व्यवहृत तथा समादृत होने लगेगी? यह मृग मरीचिका जितनी जल्दी समाप्त हो जाय उतना ही अच्छा होगा।

—रामप्रकाश कपूर, वाराणसी

वैदिकवाद

गांधीवाद, समाजवाद आदि वाद जहाँ एकांगी है, वहां वेद सर्वांग पूर्ण हैं। गांधीवाद में सज्जन दुर्जन सब के लिए एक ही नुस्खा है—'अहिंसा' वेद में 'शासद्व्रतान्' व्रत रहित दुराचारियों के शासन दण्ड है।

समाजवाद में एक ही वर्ग है जो अस्वाभाविक है, मानवी प्रवृत्तियों के प्रतिकूल है। कम्यूनिज्म में तो परिवार तक भी नहीं। ये वाद मानवी मनोवृत्तियों में सामञ्जस्य स्थापित नहीं कर सकते, परन्तु वेदों का वर्णा श्रम धर्म, संग्रह में त्याग, बल में दया आदि का उपदेश देकर विष को भी शोध कर अमृत बना देता है।

गांधीवाद में (हिन्द स्वराज्य पुस्तक के आधार पर) यन्त्रादि को कोई स्थान नहीं, समाजवाद में पूंजी को ही सब अनर्थों की जड़ माना गया। वैदिक धर्म में न वैज्ञानिक यन्त्र उपद्रवकारी हैं, न पूंजी अनर्थ कारिणी है। केवल मनुष्य का मन ही सब उपद्रवों का मूल और सब सुख शान्ति का भी प्रसारक है। उस मन को ही शिव संकल्प बनाने के लिए जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त उपाय करते रहना ठीक ठीक वेद बताता है। विविध संस्कार यज्ञ वर्णाश्रम के धर्म इसीलिए हैं कि मनुष्य का मन शिव संकल्प हो जावे। इसीलिये ऋषि दयानन्द ने वेदों को मानने पर जोर दिया है।

—श्री ईश्वरीप्रसाद प्रेम, एम०ए०
(मथुरा)

श्रद्धा और भक्ति से शून्य समाज

श्रद्धा और भक्ति शून्य समाज आज जा किधर रहा है? जब किसी भी सोसाइटियों से आर्य समाज का संगठन अच्छा है, और विपक्षी भी लगभग सभी शान्त हो गये हैं, फिर भी आन्तरिक दशा बिगड़ती जा रही है। कारण, श्रद्धा भक्ति का अभाव ही है। कोरे तर्क से संसार नहीं चलता।

पौराणिकों की श्रद्धा और भक्ति के कारण ही भारत के पर्व मेले उत्सव त्योहार, व्रत, अनुष्ठानादि सजीव बने हुए हैं। इसका इसमें शतांश सहस्रांश भी होती जो आरम्भ में थी तो आज यह रोना न होता। फिर इस पर सोचने विचारने का प्रयत्न भी नहीं करते, कि श्रद्धा चली कहाँ गई, और आ सकती है तो कहाँ से।

हमारे मुसलमान भाई अपने टूटे फूटे मजहब से कितनी दृढ़ता से चिपटे हैं। इसका कारण यह है कि उनके यहाँ धर्म के मूल तत्वों को आंख मींच कर मान लेने की आज्ञा है। इसमें तर्क के लिये कोई स्थान नहीं है। पर हम लोग तो वेद को भी तर्क की कसौटी पर रखकर तब स्वीकार करना चाहते हैं। हमारा धर्म सर्व श्रेष्ठ होते हुए भी श्रद्धा भक्ति से दूर है। बताइये फिर बिचारी श्रद्धा किसके आश्रित रहे? तर्क की दुधारी तलवार यदि सीखे हुए सैनिक के हाथ में हो, तो लाभ है किन्तु अबोध बच्चे के हाथ में हो तो वह अपने हाथ पैर काटने के और क्या कर सकता है। श्रद्धा जब तक ज्ञान पूर्वक नहीं होती, तब तक अन्धविश्वास ही रहती है। यवनों, पौराणिकों, ईसाइयों की श्रद्धा ऐसी ही है। सोचना है कि हमारे पास श्रद्धा उत्पन्न करने और सुरक्षित रखने का क्या साधन है। आर्य समाज में साधारण व्यक्ति भी बड़े से बड़े विद्वान् का उपहास करता है। कभी भी नहीं सोचता कि मनुष्य में कमियाँ होती हैं, उन्हें न देख गुणों का अवलोकन कर अपने को समझावें। हमारे यहाँ धर्म व ज्ञान का बहुमत तय करता है। ऐसी दशा में श्रद्धा कैसी। मुसलमानों में शासन मुल्लाओं का, पौराणिकों में पण्डितों का, ईसाइयों में पादरियों का इसी प्रकार अन्यों का भी कानून विद्वानों के द्वारा होता है, परन्तु आर्य समाज में पण्डित अर्थ के वशी होकर लाचार हैं। श्री स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज के शब्दों में बाबू वकीलों के हाथ में समाज का शासन है। जब तक यह त्रुटि पूर्ण शासन रहेगा, श्रद्धा भी हमसे दूर ही रहेगी। श्रद्धा के बिना भक्ति कैसी? इस प्रजातन्त्र या लोकतन्त्र के दोषों को देखकर ही अनेक देश एकतन्त्र का राग चला रहे हैं। धर्म व ज्ञान तो पुरातन से डिक्टेटरों के हाथों में रहे हैं, एक प्रकार से रशिया की तरह। भय व लोभ से सद्गुण का नाश हो जाता है। हम लोग इन्हीं के द्वारा श्रद्धा भक्ति का बीज बो रहे हैं। यदि हम चाहते हैं कि आर्य समाज में श्रद्धा भक्ति का संचार हो, तो मूढ़ता को भगाकर विद्वानों के प्रति आस्था बनायें। हम लोग वंचक व्यापार से विद्वानों को भी वंचक बनने को बाध्य करते हैं। इन कुचक्रों के कारण ही विद्वानों की विद्या कुण्ठित हो जाती है और हवा का रुख देख कर भिन्न मत का अनुसरण करते हैं। या तो इन उत्पातों को देखें या करें नहीं, अन्यथा आंख बन्द कर लेते हैं। हम इसे विचार कर दुर्दशा को जानें और इससे निकल कर बचने का उपाय करें, तभी आर्य समाज जीवित रह सकेगा। वेद धर्म से कोई जाति संसार में दुखी नहीं हो जाती, जब तक उसका विधिवत पालन न करें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री,
महोपदेशक, ...

पण्डित हरिशङ्कर शर्म्मा

(श्री फतहचन्द शर्म्मा, 'आराधक', दिल्ली)

हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक पण्डित हरिशंकर शर्मा को हाल ही में उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का अध्यक्ष चुना गया है। श्री शर्मा जी पिछले जीवन के अड़सठ वर्षों में लगभग ४८ वर्ष से अवश्य ही हिन्दी सेवा के समान आर्यसमाज की सेवा करते चले आ रहे हैं। आर्यसमाज की सेवा मे प०हरिशङ्कर शर्मा का जितना समय बीता है उसमें कुछ समय मिलाने से लगभग ८० वर्ष के श्री शर्मा जी और उनके गोलोक वासी



—लेखक—

पूज्य पिता प० नाथूराम शर्मा शंकर आर्यसमाज की सेवा में लगे रहे। इस तरह से श्री हरिशंकर शर्मा और उनके परिवार की आर्यजगत में जो सेवाए हैं उनका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। श्री शर्मा जी हिंदी साहित्य मे और हिन्दी पत्रकारिता मे अपना विशेष स्थान रखते हैं। हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में उन्होंने श्री हरिशङ्कर शर्मा को साहित्यकार और पत्रकार बनाने मे जहा उनके पूज्य पिता नाथूराम शर्मा शङ्कर का हाथ रहा है वहा उन्होंने देश के और भी साहित्यकारो के स्नेह और आशीर्वाद से साहित्य सेवा के लिए सहयोग पाया। जब यह बचपन मे हरदुआगंज रहते थे उस समय देश भर क पत्र पत्रिकाए उनके पिता जी के पास आया करती थीं जिन्हें बड़े चाव से पढ़कर वे साहित्य के प्रति बाल्यकाल से ही आकर्षित हो रहे थे। वेङ्कटेश्वर समाचार जो बम्बई से पिछले बासठ वर्ष से प्रकाशित हो रहा है वह भी इनके पिता के पास हरदुआगंज मे आता था। वेंकटेश्वर समाचार मे यह तो कुछ पढ़कर नहीं समझ पाते थे उस पर चिन्ह लगाकर अपने पूज्य पिता श्री नाथूराम शर्मा शङ्कर से पूछा करते थे। इसी प्रकार सरस्वती और आर्यमित्र, भारत आदि पत्रों की प्रेरणा से इनके हृदय में साहित्यसेवी होने की भावना उत्पन्न हुई। इसके अतिरिक्त समय समय पर हरदुआगंज में भारत के प्रसिद्ध साहित्य सेवियों के आगमन से भी पं० हरिशङ्कर जी को प्रेरणा मिली। हरिशङ्कर जी के पिता श्री नाथूराम शर्मा शंकर हरदुआगंज में रहने के कारण शायद ही कोई दिन ऐसा बीतता रहा हो जिस दिन वहाँ साहित्यकारों का जमघट न रहता हो। श्री नाथूराम शर्मा शङ्कर के प्रति आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी स्वर्गीय जगन्नाथदास रत्नाकर, सम्पादकाचार्य श्री रुद्रदत्त शर्मा, हास्यरसावतार श्री जगन्नाथ चतुर्वेदी, सम्पादकाचार्य प० पद्मसिंह शर्मा आदि का अत्यन्त स्नेह था। इसलिए उक्त साहित्यकार समय समय पर वहाँ आया करते थे। उनकी उपस्थिति में जो साहित्य चर्चा होती उसका लाभ प० हरिशङ्कर शर्मा को मिला। प० हरिशङ्कर शर्मा ने उनका स्नेह पाया और उन साहित्यकारों को हृदय से पहचाना। इस प्रकार बाल्यकाल से ही साहित्य और समाज सेवा के प्रति श्री हरिशङ्कर शर्मा का ध्यान आकृष्ट हुआ और आज वह अपनी इस सेवा के द्वारा अपने स्वनामधन्य पिता के सुपुत्र कहलाने के सुयोग्य अधिकारी हुए। उनके साहित्य से जहा हिन्दी ससार ने उनके ग्रन्थ पाये वहाँ उनके फुटकर निबन्धो से हिन्दी ससार की पत्र पत्रिकाए भी गौरवान्वित हुई। हिन्दी ससार मे उन्होंने जिस प्रकार से समय समय पर देश का उद्बोधन किया है उसके प्रति हिन्दी ससार सदैव उनका कृतज्ञ रहेगा।

हरिशङ्कर शर्मा साहित्यकार, पत्रकार और काव्य स्रष्टा त्रिगुणात्मक शक्ति के विधायक हैं। उनके तीनो रूप में आप कहीं भी ऐसा दोष नहीं पाए गे जिससे उनकी कर्तव्यनिष्ठा की आलोचना की जा सके। पत्रकारिता में वह आर्यमित्र के सम्पादन के लिए आगरा गये थे तब से आगरा में ही बस गये और आगरे वाले कहलाने लगे। बहुत कम ही लोग यह जानते होंगे कि हरिशङ्कर शर्मा हरदुआगंज या अलीगढ़ी हैं। अब तो उनका नाम लेते ही कहा जाता है कि आगरे वाले हरिशङ्कर जी।

श्री हरिशङ्कर शर्मा के साहित्य में व्यंग की पुट विशेष रहती है। उन्हें यह गुण पैत्रिक प्रतिभा क रूप में मिला है। श्री शर्मा जी ने कई पुस्तकें लिखीं जिनका देश भर मे पर्याप्त सम्मान हुआ है। श्री शर्मा जी के घास पात पर "देव पुरस्कार" भी मिला है। इनका "पिंजरापोल" हास्य व्यंग का अपने ढग का हास्य और व्यंग मे महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। आपने राजनैतिक ग्रन्थ भी बड़े शिष्ट और मार्मिक लिखे हैं।

श्री शर्मा जी का नाम आर्यमित्र के सम्पादन काल में विशेष रूप से प्रसिद्ध हुआ। आर्यमित्र के सम्पादन में श्री शर्मा जी ने विशेष कार्य किया। वैसे तो आर्यमित्र के अतिरिक्त "सैनिक", गुलदस्ता आदि अनेक पत्रों का उन्होने सफलता से सम्पादन किया है किन्तु आर्यमित्र के आर्य समाज का पत्र होने के बाद भी उसमे साहित्यिक सुरुचि उत्पन्न करने का काम आप ही कर सके। इस सम्बन्ध मे महा प० श्री राहुल साकृत्यायन का कहना है कि शर्माजी के सम्पादन काल में आर्यमित्र को उन्होने सुपाठ्य बना दिया था। आर्यमित्र की सामग्री चैन और सम्पादन करने मे उन्होने विशेष काम किया जिससे आर्यमित्र जनता मे अधिक लोकप्रिय हुआ।

बाबू गुलाबराय जी एम० ए० के शब्दो मे शर्मा जी एक अच्छे कोषकार भी हैं। कोषकारिता उनकी विशेषताओं मे से ही है। इसमे उनका में सस्कृत और उर्दू फारसी का ज्ञान सहायक हुआ है। प० जी हिन्दी के हिमायती अवश्य हैं साथ ही उर्दू के भी कद्रदा हैं। इसी प्रकार उत्तरप्रदेश के सुप्रसिद्ध राजनैतिक तथा प्रसिद्ध हिन्दी पत्रकार श्री कृष्णदत्त पालीवाल का भी हरिशङ्कर शर्मा के सम्बन्ध में कहना है कि श्री हरिशङ्कर शर्मा केवल उच्चकोटि के कवि, पत्रकार और साहित्यकार ही नहीं हैं वरन् बड़े सरल सज्जन भी हैं।

सच्चे और पक्के आर्यसमाजी होते हुए भी आप कभी आर्यसमाज की सकीर्णता, कट्टरता और असहिष्णुता से अभिभूत नहीं हुए। आर्यमित्र के सम्पादक की हैसियत से उन्होने गोस्वामी तुलसीदास की भी प्रशसा की यद्यपि आर्यमित्र मे गोस्वामी तुलसीदास की प्रशसा करने पर उनसे जवाब तक तलब किये जाने



—श्री प० हरिशङ्कर जी शर्म्मा—

की नौबत आई तब भी वह अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए। पालीवाल जी के शब्दो मे शर्मा जी में नाम, व्यय और प्रतिफल की सभी इच्छा न करने की भावना रही है। हमारे इस विशाल देश में ऐसे स्वाभिमानी विरले ही लोग होंगे।

श्री हरिशङ्कर शर्मा अपनी पत्रकारिता क आदर्शों के लिए बहुत बार सघर्ष करते रहे ह। उनके जीवन में लक्ष्मी और सरस्वती का बैर रहा है और वह कभी उससे हतोत्साहित नहीं हुए और अपने काम को आगे चलाते रहे। आर्यसमाज से आर्यमित्र आदि के सम्बन्ध मे उनका कई बार पूर्ति विषयक मतभेद रहा है किन्तु उन्होने कभी आर्यसमाज का ठुकराया नहीं और जब कभी भी उनके सहयोग की आवश्यकता हुई और उनसे अनुरोध किया गया तब वह अस्वस्थ होते हुए भी सहयोग देते रहे।

आदर्श पत्रकारिता

शर्मा जी उन आदर्श पत्रकारो मे से एक ह जो चादी के सिक्को से न खरीदे जा सकते है और न तोले जा सकते है। उनके सामने कुछ वर्ष पूर्व दिल्ली के एक सुप्रसिद्ध दैनिक पत्र के प्रधान सम्पादक पद पर नियुक्त किये जाने का प्रस्ताव आया था और इस सम्बन्ध मे उन्हे पत्र के स्वामी से

[शेष पृष्ठ १३ पर]

जीवन-ज्योति

सभा मन्त्री की लेखनी से

संकल्प लीजिये अभियान रुकेगा नहीं !

२२ जून के आर्यमित्र के मुख पृष्ठ पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मान्य प्रधान श्री पूज्य स्वा०अभेदानंद जी तथा श्री पं० हरिशंकर शर्मा प्रधान सभा का प्रेरणाप्रद संदेश आर्य जनता के नाम प्रकाशित हुआ है। हमें संदेश की प्रत्येक पक्ति पढ़कर ऐसा प्रतीत हुआ कि प्रधान जी की लेखनी आज आर्य समाज के भविष्य निर्माण की आधार शिला रख रही है। गम्भीरता पूर्वक मनन कर विचार किया जावे तो ज्ञात होगा कि आर्य समाज के सबल नेतृत्व की मानव जाति को आज जितनी आवश्यकता है उतनी पूर्व मे सम्भवतः कभी भी न रही हो। विश्व के ताप पाप नष्ट कर अशांति के मूल कारणों को समाप्त करने का कार्य सिवाय आर्यसमाज के और कर भी कौन सकता है ? जिस समय महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की थी उनके सम्मुख भी उन करोड़ों मनुष्यों का करुण क्रन्दन गूंज रहा था जो अज्ञान अंधकार म भटक, अपने जीवन लक्ष्य को विस्मृत कर दुःखों के झूलों मे झूल रहे थे। अतः यह ऐतिहासिक सत्य है कि आर्य ,समाज विश्व की वह पहिली महान् संस्था है जो विश्व के समस्त मानव समुदाय के कल्याण के उदात्त लक्ष्य को लेकर स्थापित की गई थी। और यह भी प्रकट सत्य है कि अपने सौ वर्ष के जीवन काल में आर्य समाज ने भारत के उत्थान और निर्माण मे जो योग दिया है उसकी तुलना किसी महान् रचनात्मक क्रांति से की जा सकती है।

किन्तु आज जब धरती का सारा सतुलन विचलित हो रहा है, मानव जीवन प्रत्येक पग पर नया मोड़ ले रहा है, नया युग नयी समस्यायें लेकर करवट बदल रहा है, तब क्या हम आर्य, महर्षि दयानन्द के उत्तराधिकारी, किंकर्तव्य विमूढ़ हो शान्त बैठे रहेंगे या अपने कर्तव्य को पहिचान उस महान् पथ पर निरन्तर अबाधगति से चलने का सकल्प लेंगे। जिस पथ का निर्देशन महर्षि दयानन्द ने किया था। यह एक गम्भीर समस्या है जिसका निणय जीवन के लिए सभी आर्यों को करना होगा।

हम सोचना है कि जो भौतिकवाद आज जीवन को नष्ट प्रायः करता हुआ अबाध गति से चारों ओर अपना जाल फैलाता जा रहा है हम उसे फलने दें और चलने दें महानाश की चक्रपुरी शक्ति से या फिर एक टक्कर ल इस तीव्र लहर से, इसलिए कि धरती पर मानवता का, प्यार का, जीवन का, हर्ष अस्तित्व स्थिर रह सके।

हमें विचारना है कि—

कला और संस्कृति के नाम पर नग्नता और अश्लीलता का जो प्रदर्शन आज सभ्यता का अंग बन गया है उसे ही हम आदर्श मान लें और आत्म हनन की नींव पर जीवन का भवन तैयार होने दें या अपने पूरे बल से हम पुकारें कि जिस कला और संस्कृति को आज प्रदर्शित किया जा रहा है वह न कला है न संस्कृति, अपितु पशुता का, विलासिता का, कामुकता का ऐसा लज्जास्पद प्रदर्शन है वह, जिसके होते हुए मनुष्य को और भले ही कुछ बनने की प्रेरणा मिलती रहे लेकिन वह मनुष्य कभी न बन सकेगा।

साथ ही हमें चिंता करना होगी उन मजहबों की, जो मनुष्य मनुष्य के बीच दीवार बनकर खड़े हो आज भी करोड़ों को अंधविश्वास मनुष्य पूजा और भ्रमवादों के चक्करों मे भटका रहे है।

इस प्रकार हमारा लक्ष्य हमें भौतिकवाद व सम्प्रदायवाद को नष्ट कर मनुष्य निर्माण की प्रेरणा कर रहा है। हम आर्य धरती को स्वर्ग बनाने के लिए संकल्प लें, मनुष्य निर्माण का। धरती के वैभव विलास की वृद्धि के लिए तो समस्त देशों का सारा बल लगा हुआ है ही किन्तु इस वैभव का उपयोग करने वाले मानव का कार्य केवल आर्य समाज ही कर सकता है। आर्य समाज की तुलना आप उस डाक्टर से कर सकते हैं जिसके पास रोगी को स्वास्थ्य प्रदान करने की अमोघ औषधि हो किन्तु यदि वह डाक्टर अपनी औषधि का प्रयोग न कर उसे आलमारी में बन्द करदे तो क्या यह अपराध न होगा ठीक इसी प्रकार विश्व की बिलबिलाती मानव जाति के रोग का उपचार केवल आर्य समाज के पास है। किन्तु यदि वह औषधि रोगी को देता नहीं तो कितना बड़ा अपराधी बनेगा वह, सोचिए और निर्णय कीजिए अपने कर्तव्य का।

मैं निवेदन करता हूं अपने प्रान्त के समस्त आर्य बन्धुओं से कि वे समय की गति को पहिचाने और अधिक नहीं तो कम से कम उत्तर-प्रदेश के प्रत्येक नागरिक तक वैदिक विचार धारा पहुंचाने का निश्चय करें। भले ही हमारे पास साधनों का अभाव हो किन्तु फिर भी यदि हम दृढ़ संकल्प होकर कुछ करने का निश्चय करेंगे तो कोई शक्ति हमारे मार्ग की बाधा न बनेगी। इस वर्ष मेरी और सभा के मान्य प्रधान जी की यह हार्दिक इच्छा है कि उत्तर-प्रदेश के आर्य कुछ ऐसा करें जिससे आर्य समाज आगे बढ़े। केवल लकीर पीटते रहने से हम सन्तोष भले ही कर लें पर अपने कर्तव्य का पालन हम न कर सकेंगे। अतः मैं अपने विद्वानों से, साथियों से और प्रांत के प्रत्येक आर्य से सहयोग की प्रार्थना करता हूं। इस सम्बन्ध में आप हमें अपने विचार और योजनायें भेजें। हम उन पर विचार करेंगे और लाभ उठायेंगे।

सौभाग्य से इस वर्ष हमें प्रसिद्ध साहित्यिक और विचारक पं०हरिशंकर जी शर्मा का नेतृत्व प्राप्त हुआ है। अतः यह निश्चित है कि यदि सभी ने थोड़ा थोड़ा योग दिया तो हम प्रांत की गति विधि में नवजीवन लाने में अवश्य सफल होंगे।

मेरे विचार में इस वर्ष के लिये मुख्य कार्य (रचनात्मक) यह हैं :—

(१) प्रत्येक व्यक्ति का वैदिक विचार धारा के अनुसार निर्माण !

(२) नागरिकों का नैतिक स्तर ऊंचा करने का यत्न !

(३) वर्तमान राजनीति को गंदी दल दल से सर्वथा पृथक करते हुए राज्य सचालन के मौलिक सिद्धान्तों का प्रसार !

(४) सम्प्रदायवाद प्रांतीयता और भौतिकवाद की समाप्ति का यत्न !

(५) धर्म के सम्बन्ध मे फैली भ्रांतियों को दूर कर सच्चे धर्म की मौलिक बातों का प्रसार !

यह पांच सूत्री कार्यक्रम है। जिस की पूर्ति का यत्न हमारा कर्तव्य होना चाहिए। प्रत्येक कार्यक्रम की पूर्ति के लिए हमें किन उपायों का अवलम्बन लेना चाहिए वह मैं क्रमशः लिखूंगा। अन्य विद्वान् भी इन पर यदि अपने विचार प्रकट करें तो अति उत्तम होगा।

आर्य बन्धुगण, निराशा छोड़ आइये हम आगे बढ़ने का सकल्प लें, विश्वास रखिए सफलता आपके स्वागत मे खड़ी है। आवश्यकता केवल यह है कि आप हृदय से इस बात का निश्चय करें कि धरती के प्रत्येक मनुष्य के हृदय और मस्तिष्क पर वेद ज्ञान की पावन पताका लहराये बिना हमारा अभियान रुकेगा नहीं।

—फूलनसिंह

श्रावणी पर्व पर

आर्यमित्र का 'शिक्षांक'

प्रकाशित होने जा रहा है

★ लेखकों से

निवेदन है कि वे वर्तमान शिक्षा प्रणाली के दोषों का निराकरण करने के लिए उपयुक्त सुझावों सहित अपनी उत्कृष्ट रचनायें शीघ्र भेजना आरम्भ कर दें।

★ पाठकों और एजेन्टों से

निवेदन है कि वे अपनी प्रतियों की सुरक्षा के लिए अभी से अपने आदेश पत्र भेजना आरम्भ कर दें।

★ विज्ञापन दाताओं से

निवेदन है कि वे अपनी वस्तुओं के प्रचार के लिए इस विशेषांक में विशेष विज्ञापन भेजकर लाभ उठावें और अपने विज्ञापन के लिए स्थान सुरक्षित करा लें।

—अधिष्ठाता

सा० आर्यमित्र आर्य प्र० नि० सभा उत्तर-प्रदेश

संस्था-परिचय

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

[श्री नरदेव स्नातक, एम०पी०, मुख्याधिष्ठाता]

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन भारत की एक प्रमुख राष्ट्रीय शिक्षा-संस्था है जो आधी शताब्दी से भी अधिक लम्बे समय से अपनी विशिष्ट शिक्षा पद्धति द्वारा देश की सेवा कर रही है। उस समय जब कि सारा वातावरण विदेशीय आदर्शों और भावनाओं से अनुप्राणित हो रहा था और देश के शिक्षण क्षेत्र में राष्ट्रीय चेतना का उद्भव भी नहीं हुआ था भारत में प्रचलित विदेशीय शिक्षा प्रणाली के प्रति विद्रोह कर भारत की प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति के आधार पर देश के सम्मुख राष्ट्रीय



—श्री नरदेव स्नातक एम० पी०—

शिक्षा के आदर्श को क्रियात्मक रूप में उपस्थित करने की भावना से आर्य समाज के नेताओं ने इस संस्था की स्थापना की थी। आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द वैदिक संस्कृति के अनन्योपासक तथा उसके पुनरुज्जीवन के लिए कृत संकल्प थे। उनकी यह समुचित धारणा थी कि मानव जीवन के कल्याण के लिए आवश्यक समस्त भावनाओं का समावेश प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में किया गया है। इसलिए देश के बालकों के चरित्र निर्माण, उनकी सर्वांगीण उन्नति एवं देश कल्याण के लिए गुरुकुल शिक्षा पद्धति को पुनरुज्जीवित करना अत्यन्त आवश्यक है। इसी भावना से महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों से प्रेरणा पाकर उनके अनुयायी आर्य समाज के नेताओं ने इस संस्था को स्थापित करने का निश्चय किया था।

स्वामी दर्शनानन्द ने १९०१ में सिकन्दराबाद में इस युग में सबसे पहले गुरुकुल की स्थापना की थी। १९०५ में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने इस संस्था को अपने संरक्षण में ले लिया और दस सहस्र धन राशि संग्रह करके गुरुकुल को आगे बढ़ाया। १९०७ में सभा ने फर्रुखाबाद में उपयुक्त स्थान उपलब्ध होने पर गुरुकुल को वहां परिवर्तित कर दिया, पाठकों को ज्ञात होगा कि महर्षि ने फर्रुखाबाद में उसी स्थान पर अपने जीवनकाल में एक संस्कृत पाठशाला चलायी थी। इस प्रकार गुरुकुल ऋषि की परम्परा से सम्बद्ध हो गया। १९११ में देशभक्त राजा महेन्द्रप्रताप द्वारा उस समय के मूल्य में १५०००) की सम्पत्ति (भूमि और वाटिका) दान दिये जाने पर सभा ने गुरुकुल को वृन्दावन के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक स्थान में परिवर्तित कर दिया। तब से वृन्दावन में यह गुरुकुल राष्ट्र निर्माण के रचनात्मक कार्य में एक साधक तपस्वी की भांति संलग्न है। १९३० में गुरुकुल के रजत जयन्ती और १९५५ में स्वर्ण जयन्ती समारोह मनाये जा चुके हैं, प्रति वर्ष का गुरुकुलोत्सव तो आर्य जगत् में वार्षिक मेले के रूप में प्रसिद्ध ही है। संस्था का संचालन भार आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा निर्मित विद्या-सभा करती है। आर्य समाज के स्वर्गीय कर्मठ नेता श्रद्धेय नारायण स्वामी जी का इस संस्था के साथ आजीवन अभिन्न सम्बन्ध रहा, यह कहा जाय कि यह संस्था उनका सामाजिक शरीर थी और वे इस शरीर के प्राण थे तो अनुचित नहीं। श्री पं० भगवानदीन जी का अनन्य प्रेम और उनकी अथक सेवाएं भी इस संस्था को प्राप्त रहीं। इनके अतिरिक्त आर्यसमाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ताओं का सक्रिय सहयोग इस संस्था को मिलता रहा है और उन्हीं लोगों के प्रयत्नों से यह संस्था अपना जीवन विकास कर सकी है। श्री ज्वालाप्रसाद जी एम० ए०, श्री हुक्मसिंह जी, श्री पं० गंगाप्रसाद जी रि०चीफ जज, श्री पं०शिवनारायण जी शुक्ल वकील, श्री डा० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री तर्कशिरोमणि एम० ए०, पी० एच० डी०, श्री बाबू श्रीराम जी, श्री बाबू घासीराम जी एम०ए०, श्री विष्णुदत्त जी एम० ए० श्री पं० बृहस्पति जी शास्त्री वेद शिरोमणि एम०ए०, श्री चेतरामसिंह जी, श्री करणसिंह जी, श्री पं० द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि, नरदेव स्नातक एम० पी० आदि इस संस्था का संचालन आर्यजनता की ओर से करते रहे हैं। स्वर्गीय पं० रामदत्त जी शुक्ल एम०ए०, श्री प्रि० महेन्द्रप्रताप शास्त्री एम०ए०, श्री आचार्य विश्वश्रवा, श्री आचार्य विश्वेश्वर जी सि० शिरोमणि एम० ए० आदि प्रसिद्ध विद्वान् प्रस्तोता और आचार्य आदि पदों पर रहते हुए शिक्षा क्षेत्र में इस संस्था की सहायता करते रहे हैं।

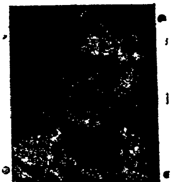
इस प्रकार यह गुरुकुल आर्य समाज के उच्चकोटि के विद्वानों तथा कर्मठ कार्यकर्ताओं के सहयोग का अधिकारी रहा है।

प्रवासी भारतीयों के बालकों की शिक्षा व्यवस्था में इस गुरुकुल ने जो सहायता पहुंचाई है वह सदैव स्मरणीय रहेगी। फीजी, ब्रिटिश गायना, बैंकोक (थाईलैंड) आदि से आनेवाले प्रवासी भारतीय छात्रों के लिए गुरुकुल एक आदर्श संस्था रही और है। गुरुकुल के अध्यापक श्री गोपेन्द्र नारायण जी आज भी फीजी में प्रवासी भारतीयों में भारतीय संस्कृति का प्रचार कर रहे हैं अनेक छात्र और स्नातक यहां से उनके बीच जाकर कार्य कर रहे हैं। स्वर्गीय श्री सी० एफ० एण्ड्रूज व श्री भवानीदयाल सन्यासी ने अपनी पुस्तकों में गुरुकुल की सेवाओं और उसके प्रभाव का विस्तृत वर्णन किया है।

गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली से प्रभावित और सहमत होकर आगरा विश्वविद्यालय ने गुरुकुल के शिरोमणि परीक्षोत्तीर्ण स्नातकों को एम० ए० परीक्षा में बैठने की सुविधा प्रदान की हुई है। इसी प्रकार की सुविधा दिल्ली विश्वविद्यालय ने भी प्रदान कर दी है। गुरुकुल की अधिकारी परीक्षा यू०पी०बोर्ड की मैट्रिक परीक्षा के समकक्ष स्वीकृत है और अधिकारी परीक्षा के पश्चात् गुरुकुल छोड़ कर इण्टर में प्रविष्ट हो सकते हैं। गुरुकुल के स्नातक इण्टर में हिन्दी व संस्कृत के प्राध्यापक पद पर नियुक्ति के अधिकारी हैं। गुरुकुल की आयुर्वेद शिक्षा भी अपनी विशेषता रखती है। उसके अनेकों स्नातक सफल वैद्य के रूप में चिकित्सा क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं।

गुरुकुल का वर्त्तमान प्रबन्ध नरदेव स्नातक एम०पी० मुख्याधिष्ठाता, श्री आचार्य विश्वेश्वर सि०शिरोमणि एम० ए० श्री आचार्य बृहस्पति शास्त्री वेदशिरोमणि एम०ए० उपकुलपति की देख रेख में चल रहा है। स्वाधीनता से पूर्व जमींदारों, राजाओं आदि से आर्थिक सहायता प्राप्त करने में गुरुकुल संचालकों को सफलता मिल जाती थी कुछ लोगों ने अपनी जायदादें भी गुरुकुल को भेंट की थीं पर आज की विषम आर्थिक परिस्थितियों में वह सहयोग समाप्त हो चुका है और नवीन स्रोतों का अभाव है। इस स्थिति में संस्था अपनी योजनाओं को आगे बढ़ा सके यह एक विषम समस्या है। इसका समाधान समस्त आर्यजनता को अपने सहयोग द्वारा ही करना होगा। संस्था में श्रीधर वैदिक अनुसन्धान विभाग और दर्शन पीठ की स्थापनायें हो चुकी हैं फिर भी एक विश्वविद्यालय के रूप में गुरुकुल को विकसित करने के लिए अभी बहुत कुछ किया जाना चाहिये।

गुरुकुल के स्नातक आर्यजगत् और शिक्षा एवं चिकित्सा क्षेत्र में गुरु



—श्री आचार्य बृहस्पति जी शास्त्री—

कुल गौरव की स्थापना में सफल हुए हैं। आर्यजगत् का कर्तव्य है कि वह अपने गुरुकुल की सर्वतोमुखी उन्नति में अपना अधिकतम सहयोग प्रदान करे, गुरुकुल की उन्नति आर्यजगत् की उन्नति है उसका गौरव है।

आशा है नवीन सत्र के प्रारम्भ में आर्यजन अपने बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट करा इस संस्था की उपयोगिता से लाभ उठायेंगे और संस्था के संचालकों को आर्थिक सहयोग प्रदान कर चिन्ताओं से मुक्त करेंगे।

संयुक्त परिवार की व्यवस्था आवश्यक है

[श्री रणजीतसिंह वैद्य, प्रधान जिलोपसभा, पीलीभीत]

श्री गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने ६ जुलाई के आर्यमित्र पत्र में संयुक्त परिवार और आर्यसमाज शीर्षक से संयुक्त परिवार के विरोध में जो निम्न हेतु दिये हैं वह यह हैं :—

१—संयुक्त परिवार प्रथा वैदिक धर्म के विरुद्ध है :—

२—कुदरत के कानून के विरुद्ध है।

३—जीवन शास्त्र के विरुद्ध है।

४—हिन्दुओं की अवनति का घोरतम कारण रही है।

५—जिन देशो ने इसे त्यागा उन्होंने इस त्याग का बहुत अच्छा फल उठाया।

६—वैदिक विवाह पद्धति संयुक्त परिवार की विरोधिनी है।

इसके विपरीत मेरा दावा है कि—

१—संयुक्त परिवार पद्धति सर्वथा वैदिक आज्ञा के अनुकूल है।

२—यह पद्धति समाज शास्त्र के अनुकूल और मानवता की प्रतीक है तथा यज्ञीय कर्म है।

३—यह पद्धति जीवन शास्त्र का प्रदर्शन करती, सर्वथा प्राकृतिक है।

४—जब तक हिंदुओं में संयुक्त परिवार पद्धति रही वे परस्पर संगठित रहे।

५—जिन देशों मे संयुक्त परिवार पद्धति न रही मानवता वहां से कूच कर गई।

६—वैदिक विवाह पद्धति इसी प्रथा की अनुमोदिनी है।

युक्ति और प्रमाण—

१—संस्कार विधि में विवाह प्रकरण मे मन्त्र है :—

ओं समानी श्वशुरे भव
　　सम्राज्ञी श्वश्र्वां भव।
ननान्दरी सम्राज्ञी भव
　　सम्राज्ञी अधिदेवृषुस्वाहा ॥

इस वेदमन्त्र का अर्थ ऋषि दयानन्द जी के शब्दों मे निम्न है—

हे वरानने ! तू (श्वसुरे) मेरा पिता जो कि तेरा श्वसुर है उसमे प्रीति करके (सम्राज्ञी) सम्यक् प्रकाशमान चक्रवर्ती राजा की रानी के समान पक्षपात छोड़ के प्रवृत्त (भव) हो (श्वश्र्वाम्) मेरी माता जो तेरी सासु है उसमें प्रेम युक्त हो के उसी की आज्ञा में (सम्राज्ञी) सम्यक् प्रकाशमान (भव) रहो (ननान्दरी) जो मेरी बहिन और जो तेरी ननन्द है उसमे भी (सम्राज्ञी) प्रीतियुक्त और (देवृषु) मेरे भाई जो तेरे देवर और जेष्ठ अथवा कनिष्ठ हैं उसमें भी सम्राज्ञी प्रीति से प्रकाशमान (अधि भव) अधिकार युक्त हो अर्थात् सबसे अविरोधपूर्वक बरता कर।

जब विवाह के अनन्तर उपाध्याय जी के कथनानुसार दम्पति पशु पक्षियो के समान उड़कर अन्यत्र गृहस्थी बसाने संयुक्त परिवार से मुक्त हो चले जावे तो उक्त वेदाज्ञा द्वारा पत्नी किसकी साम्राज्ञी होगी। ऋषि स्पष्ट कहते हैं— "सबसे अविरोधपूर्वक प्रीति से बरता कर"। जब सब संयुक्त हों तभी तो उक्त प्रकार बरतने की आज्ञा पालन कर सकेगी।

मानव एक सामाजिक प्राणी है समग्र समाज शास्त्र का निर्माण मानव के हेतु ही हुआ है क्योंकि मानव एकाकी सम्यक जीवन यापन नहीं कर पाता वह समाज के बिना रह नहीं सकता है। वेद कहता है :—

समानी प्रथा सहवोऽन्न भागः।
समाने योक्त्रे सहवो युनज्मि।
सम्यञ्चोऽग्निम् सपर्यतारा
नाभि मिवाभितः ॥

यह गृहाश्रम प्रकरण मे ऋषि दयानन्द जी महाराज ने संस्कार विधि में लिखा है इसका अर्थ ऋषि के शब्दों मे ही देखिए :—

अर्थ—हे गृहस्थादि मनुष्यो ! मुझ ईश्वर की आज्ञा से तुम्हारा (प्रपा) जलपान स्नानादि का स्थान आदि व्यवहार (समानी) एक सा हो (व) तुम्हारा (अन्न भाग) खानपान (सह) साथ हुआ करे (व.) तुम्हारे (समाने) एक से (योक्त्रे) अश्वादि यान को जोते (सह) संगी हो और तुमको मैं धर्मादि व्यवहार मे भी एकीभूत करके (युनज्मि) नियुक्त करता हू जैसे (अर.) चक्र के ओर (अभित) चारो ओर से (नाभिमिव) बीच के नाल रूप काष्ठ मे लगे रहते हैं अथवा जैसे ऋत्विज लोग और यजमान यज्ञ में मिलकर (अग्नि) अग्नि आदि सेवन से जगत् का उपकार करते हैं वैसे (सभ्रस्थ.) सम्यक प्राप्ति वाले तुम सब मिलके धर्म युक्त कर्मों को (सपर्यत) तथा एक दूसरे का हित सिद्ध किया करो।

जिस प्रकार याज्ञिज यजमान, अध्वर्यु, उद्गाथा ब्रह्मादि विभिन्न योग्यता वाले मिलकर यज्ञ सम्पादन करते है जिस प्रकार रथ नाभि में लगे विभिन्न अरे रथ वाहन करने में समर्थ होते हैं उसी प्रकार परिवार के विभिन्न घटक मिलकर परिवार का सम्यक संचालन करते हैं और ईश्वराज्ञा से समान प्रपा तथा सह अन्न भाग वाले होवें।

मानव शरीर मे जीवन शक्ति उत्पन्न करने के लिए हाथ थाली मे से ग्रास तोड़कर लाता है मुख में पहुचाने से पूर्व आखें उसका निरीक्षण करती हैं नासिका सुगन्धि बोध से उचित अनुचित की आज्ञा देती रसना रस ज्ञान का बोध कराती है दन्त चबाकर अन्न [?]चढ़त को बाहर फेंककर ग्रहणकृत को आमाशय में पिष्टकर पहुंचाते हैं। आमाशय आमाशयिक रस मिश्रित कर द्रवरूप कर अग्न्याशय को पहुचाता है। अग्न्याशय अपने रसों को मिश्रित कर अन्त्र को देता है अन्त्र उसका मल भाग पृथक कर मलाशय और मूत्राशय को भेजता है और रस भाग यकृत को रञ्जन करने को देता है यकृत से हृदय, हृदय से फुप्फुस से हृदय का ग्राहक कोष्ठ पूरित हो अङ्ग प्रत्यङ्ग की नस-नाड़ियों में यहां तक कि छोटी कोरिकाओं तक रक्त पहुचाता है और रक्त के सार भाग से मांस मेदा अस्थि मज्जा शुक्रादि धातुयें निर्मित होती हैं। जिस प्रकार प्रत्येक अङ्ग अपना अपना भाग डाल और अपना अपना कर्म कर इस शरीर को जीवन शक्ति प्रदान करते हैं उसी प्रकार परिवार का प्रत्येक अङ्ग अपना-अपना भाग डाल और अपना अपना कर्म कर परिवार मे जीवन शक्ति संचालित करते हैं जो सर्वथा प्राकृतिक है।

वेद में मन्त्र है—इमां त्वमिन्द्र मीढ्व सुपुत्रा सुभगा कृणु। दशास्यां पुत्रानाधेहि पतिमेका दशाकृधि ॥

जब वेद आज्ञानुकूल एक गृहस्थ को दश पुत्रों तक सन्तान उत्पन्न करने का अधिकार है। २५ वर्ष ब्रह्मचर्य के अनन्तर विवाह २॥ २॥ वर्ष का एक एक सन्तान के अन्तर से २५ वर्ष में १० सन्ताने होती हैं ५० वर्ष की आयु में वानप्रस्थी की आज्ञा है ५० वे वर्ष बड़े पुत्र का विवाह करता है और मनु की इस आज्ञानुकूल—

गृहस्थस्तु यदा पश्येद् वली पलितमात्मनः।
अपत्यस्यैव चापत्यं तदारण्यं समाश्रयेत्

जब सन्तान की सन्तान हो जाने के बाद गृही को वानप्रस्थी होने का आदेश है और विवाहित सन्तान उपाध्यायजी के आदेशानुसार वियुक्त हुआ अन्य घर बनाये हुये हैं तो शेष छोटी सन्तानों को और भार्या को किस पर डाले ?

उपाध्यायजी लिखते हैं जिन देशों ने इस संयुक्त परिवार पद्धति को त्यागा उन्होने बहुत अच्छा फल उठाया। उपाध्याय जी उन देशों में परिवार में माता या पिता के आने पर उनके खाने का बिल पेश करा दिया जाता है इसे आप अच्छा फल समझें परन्तु आर्य संस्कृति उनका यह व्यवहार मानवता की हीनता मानती है। उन देशों में "मातृमान् पितृमान्, आचार्यमान्, पुरुषो वेद" का ज्ञान नहीं वह उनके प्रति अपने कर्तव्य को नहीं जानते भौतिकवाद उनके जीवन का चरम लक्ष्य होता है।

उपरोक्त वेद के उद्धरणों से स्पष्ट है कि संयुक्त परिवार पद्धति वेदानुमोदित है और स्वाभाविक है भला जिन गरीब माता पिता ने अपनी सन्तान को योग्य बनाने के लिए अपना खून पसीना एक किया हो वह सन्तान विवाह के बाद अपनी पत्नी को ले जाकर अलग घर बसावे यह क्या मातृ पितृमान्पन है और क्या पितृ ऋण से उऋण होता है यह तो केवलमात्र अंग्रेजी सभ्यता का दूषित अनुकरण है।

आशीष

वनिता विवेक

दहेज प्रथा-समाज का घुन

[कुमारी सरोजिनी, एम० ए० एल०टी०, गोरखपुर]

दहेज प्रथा को यदि समाज का घुन कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी। इसके कारण सामाजिक शान्ति की सुदृढ़ दीवारें आज खोखली होती जा रही हैं। हिन्दू परिवारों का व्यस्त जीवन व्याकुलता और आशंकाओं से ग्रस्त होता जा रहा है। दहेज के कारण विवाह एक समस्या बन गई है, इसका दूषित प्रभाव पारिवारिक शान्ति पर तो पड़ता है, सामाजिक उत्थान के लिए भी यह घातक है, यह मानना ही पड़ेगा।

मध्यम वर्गीय परिवारों की स्थिति इस दृष्टि से विशेष विचारणीय है। एक ओर कन्या के माता पिता हैं—कितने ही घरों के द्वार खटखटाने पर भी उनकी दीनता पर तरस खाने वाला कोई नहीं मिला, कन्या उनके लिए अभिशाप बन गई—जिससे छुटकारा लिये बिना सम्भवत उन्हें शान्ति नहीं। दूसरी ओर हैं लड़के के माता पिता—जो इस प्रतीक्षा में हैं कि शायद कोई ऐसा ग्राहक आ जाए जो अधिकाधिक धनराशि उनके लड़के पर न्यौछावर कर दे। व्यवसाय चल पड़ा है—युवकों की नीलामी हो रही है, अपनी कन्या दीजिये, अतुल धन दीजिये और फिर भी यह निश्चय नहीं कि इतनी तपस्या के बाद आप जो एक नया घर बसाने में योग दे रहे हैं उसमें आपकी आत्मजा की सुकुमार भावनायें, उसकी अभिलाषायें, विकसित हो भी पायेंगी या नहीं। आप सोचते हैं लड़की के पीले हाथ कर देने पर समाज में आपकी नाक बच जायगी उसके बाद चाहे वह दुःख और निराशा, आत्मप्रवंचना और असीम व्यथा का जीवन बिताती रहे—कभी कभी इस सत्य की ओर से आप आंख बन्द कर लेते हैं यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता। इतना तो निश्चित है कि धन की चकाचौंध मे रमने वाली आँखें गुण की पारखी नहीं हो सकतीं। जीवन की सुख शांति के लिए धन इतना आवश्यक नहीं है जितना पारस्परिक प्रेम, और वह प्रेम का अंकुर परस्पर गुणों पर मुग्ध हृदय की रसधार से पल्लवित हो सकता है। जहाँ आरम्भ से ही धन का मूल्य अधिक हो, सोचिये आपकी गुणवती कन्या जब उस घर में वधू बनकर आयेगी तब उसे धनलोलुप वातावरण के मध्य अपनी उपेक्षा देखकर कितनी आत्म वेदना होगी। आपने इस नवीन सम्बन्ध के लिए अनेक कष्ट झेले, लाञ्छना और तिरस्कार सहा, आत्म-गौरव को भुलाकर घर घर अपने दैन्य का प्रदर्शन करते फिरे और फिर अपनी चिरसंचित पूंजी को विवाह में लगाकर कंगाल बन गये—इन सबको आप कभी नहीं भूल सकते। आपकी दुहिता पराये घर में गृहलक्ष्मी बन कर गई पर आपके घर की श्री समाप्त हो गई—यह कटु अनुभव आपको सदा याद रहेगा। उधर आपकी कन्या आत्मग्लानि से सदैव पीड़ित रहेगी कि उसी के कारण उसके जनक एवं जननी को यह दिन देखना पड़ा। ऐसी अनेक घटनायें सुनने में आती हैं कि माता पिता को विवाह की परेशानी से मुक्त करने के लिए लड़की ने आत्म हत्या कर ली। प्रेम से ग्रहण की हुई वस्तु का मूल्य और होता है; क्रय विक्रय के पश्चात् लायी हुई वस्तु अधिक दिनों तक आनन्द का संचार नहीं कर सकती।

फिर आप यह कैसे विश्वास कर लेते है कि विपुल धनराशि के बदले में लाये हुए युवक के साथ आपकी लड़की सदा सुखी रह सकेगी। वास्तव मे धन का अवलम्ब लेकर स्थापित किए हुए सम्बन्ध सूत्र प्रायः चिरस्थायी नहीं रहते और यदि रहते भी हैं तो पारिवारिक जीवन कभी सुख समृद्धि से परिपूर्ण नहीं हो पाता।

आज भी अधिकांश परिवारो मे स्त्री शिक्षा के प्रति उदासीनता दिखाई देती है। माता पिता सोचते हैं कि कन्या को उच्च शिक्षा दिलाने से कोई लाभ नहीं क्योंकि शिक्षा पर इतना धन व्यय करने के पश्चात् भी दहेज के रूप में उन्हें अतुल धन देना ही पड़ेगा; इससे तो अच्छा यही है कि शिक्षा पर अपना धन बर्बाद न करें। दहेज की इस बढ़ती हुई मांग को देखकर ऐसी भावना उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। पर इस घुन में सबसे अधिक पिसती है नारी। शिक्षा बल ही उसका बल है। शिक्षित स्त्रियाँ ही समाज का उत्थान कर सकती हैं। शिक्षा का सम्बन्ध विवाह से नहीं जीवन के विकास एवं प्रगति से है। जीवन की सुख शान्ति के लिए विवाह इतना आवश्यक नहीं है कि उसके कारण शिक्षा जैसे पुनीत कार्य की भी अवहेलना की जाय। समाज की प्रगति के दृष्टिकोण से भी स्त्री शिक्षा महत्वपूर्ण है।

शिक्षा से विवाह की समस्या भी सुलझ सकती है। उच्च शिक्षिता लड़कियाँ अपनी विकसित आयु एवं अनुभव वृद्धि, विवेक आदि के कारण अपना भला बुरा समझने योग्य हो जाती हैं। विवाह की समस्या को सुलझाने में वे माता पिता को अपना भी योग दे सकती हैं। प्राचीन काल की स्वयम्बर प्रथा को याद कीजिये जबकि कन्याये पर्याप्त शिक्षित होती थीं और गुण रूप का विवेचन सुन लेने के पश्चात ही वे अपने विवेक के बल पर उपयुक्त जीवन साथी चुनती थीं। कुछ कारणों से वह प्रथा यद्यपि आज ज्यों की त्यो उपयोग मे नहीं लायी जा सकती, किन्तु उससे विवाह के अनुष्ठान को पूर्ण करने के लिए प्रेरणा तो ली ही जा सकती है। आप अपनी कन्या को अपने सामर्थ्य के अनुसार उच्च शिक्षा दिलाइये, जिससे कभी संकट पड़ने पर वह जीविका निर्वाह कर सके, और उसकी मनोभावनाओं, दृष्टिकोण आदि का मूल्यांकन करते हुए किसी सुयोग्य पात्र के हाथों में उसे सौंप दीजिये। दहेज की प्रथा अन्तर्जातीय विवाह से भी हल हो सकती है। लकीर के फकीर मत बनिये—यदि वह युवक आपकी जाति का न हो तो कोई हानि नहीं, हानि तो तब होगी जब आप अपनी कन्या की इच्छा के विरुद्ध उसके स्वभाव, मनोकांक्षाओं, जीवन उद्देश्य आदि की अवहेलना करते हुए धन के बल पर उसे किसी के साथ बांध देते हैं, और लड़की को यह सब चुपचाप सहन करना पड़ता है केवल इसलिए कि उपेक्षित नारी जाति में जन्म लिया है। उसे अपनी इच्छाओं को प्रकट करने का भी अधिकार नहीं विवाह बलिवेदी नहीं है, जहाँ आप कन्या के भार से मुक्त होने के लिए उसकी इच्छाओं की भी बलि चढ़ा दें। अन्तर्जातीय विवाह से आप अपनी कन्या के लिए उपयुक्त जीवन साथी तो ला ही सकेंगे, दूसरा लाभ यह भी होगा कि दहेज की माग करने वाले माता पिता को अपने सुपुत्र के लिए वधू मिलना कठिन हो जायेगी। क्योंकि अब अपनी जाति में ही विवाह करने का बन्धन होता है तब विवश होकर वरपक्ष के सारे अत्याचार सहने ही पड़ते हैं। जाति बन्धन जब नहीं रहेगा तो दहेज मागने वालों का मूल्य घट जायेगा, धीरे धीरे यह प्रथा लुप्त होती जायेगी। यद्यपि सामाजिक परम्पराओं के विरुद्ध चलने मे कठिनाइयाँ अवश्य आयेंगी, पर इस कुप्रथा के विरुद्ध क्रान्तिकारी सक्रिय आन्दोलन तो करना ही पड़ेगा, इसके विरोध मे आवाज उठाने मात्र से कुछ नहीं होगा।

यह तो युवकवर्ग के लिये भी बड़ी लज्जाजनक बात है कि विवाह जैसे पुनीत कार्य के लिए भी उनका क्रय विक्रय हो। धन के नाम पर खुले-आम उनका पुरुषार्थ बिक रहा है, उनके रक्त में आज इतना साहस और शौर्य नहीं रह गया है कि वे इस कुरीति के वैभव का सृजन अपने बाहुबल से करें। उसकी प्राप्ति के लिये उनकी दृष्टि दूसरे के धन पर रहती है। देश कर्णधार कहलाने वाले ये युवक धन के दास होकर समाज की जीवन नौका को अपने दुर्बल हाथो से लेने में समर्थ हो सकेंगे या नहीं यह विचारणीय प्रश्न है। दहेज के कारण प्राय. न तो लड़की को मन पसन्द जीवन साथी मिल पाता है और न युवक को मनोनुकूल जीवन-संगिनी। नये सम्बन्ध में आबद्ध दो परिवारो मे तो स्नेह हो ही नहीं पाता, नवदम्पति के गार्हस्थ्य जीवन में भी वैमनस्य का बीज प्रविष्ट हो जाता है और उनमें जो प्रेम, सहानुभूति, सहयोग की भावना होनी चाहिए वह धन की दीवार बीच में आ जाने के कारण आरम्भ में ही छिन्न भिन्न हो जाती है। उनका घर कलह-स्थल बन जाता है जहाँ कभी स्नेहामृत-वर्षण नहीं होता, एक दूसरे को उत्साहित

(शेष पृष्ठ १३ पर)

> यह तो युवक वर्ग के लिए बड़ी लज्जाजनक बात है कि विवाह जैसे पुनीत कार्य के लिए भी उनका क्रय विक्रय हो रहा है। क्या आज के नवयुवकों में इतना साहस और शौर्य नहीं है कि वह अपनी पुरुषार्थ को बिकने से रोक सकें, अपनी बहनों को पददलित होने से बचा सकें और समाज को इस कोढ़ से मुक्ति दिला सकें? एक बहन की इस आवाज पर क्या देश के नौजवान कुछ विचारने को तैयार हैं?
>
> —सम्पादक

बाल-विनोद

एक मेरा प्रश्न उत्तर चाहता हूँ ?

मैं जब कभी देखता हूं
अपने पडोसी को।
सदा रोता—बिलखता
नजर पड़ता है।
पूरी गृहस्थी को
खुद ही चलाता है।
सुबह से शाम तक,
उदर भरने के लिए—
कुछ पाप भी करता है।
कमाता है वही—
जो मैं कमाता हूं।
हम चैन की बंशी बजाते
मगर वह
और उसके फूल से बालक
पेट पकड़े,
दबाये भूख अन्दर मे
दुख होता है मुझको
उसकी कम अक्ली पर।
घर में सब भूखे रहते है
अपनी कमियों के कारण।
लेकिन—
ईश्वर का कोप समझ
मन्दिर मे जाता है,
घी के अनगिनती दीप जलाता है,
सेरों दूध चढ़ाता है,
तब—
इतना सब कैसे पाता है ?
यदि ईश्वर को खुश करना है,
क्या श्रद्धा बहुत नहीं होगी ?
जब ईश्वर का खुश करना है,
क्या दो फूल भक्ति के बहुत नहीं ?
क्या कभी आज तक सोचा है—
हम दूध व्यर्थ फैलाते क्यो ?
घी को व्यर्थ गवाते क्यो ?
ऐसा करना ही है तो—
फिर भूख भूख चिल्लाते क्यों ?

—रजनीश ६४५, अशोक मार्ग, हाथरस

दस तक गिनती

एक दो तीन
रहो न मलीन
दो तीन चार
सीखो सदाचार
तीन चार पाँच
बोलो सदा साच
चार पांच छ
सबसे मिलकर रह
पांच छः सात
मीठी कहो बात
छः सात आठ
करो याद पाठ
सात आठ नौ
माता की है गौ
आठ नौ दस
गिनती करो बस

—[illegible]

चयनिका

१—पवित्र, विचित्र, ज्येष्ठ और सर्व श्रेष्ठ परमात्मा को पहचानो और उसकी ही उपासना करो।

२—प्रति दिन उपासना के अनन्तर उससे उसको ही मांगो नान्यत्।

३—परमात्मा सदा सबको प्राप्त है। सदोष अन्त.करण में उसकी प्रतीति नहीं।

४—शुद्ध मन से अल्प समय भी परमेश्वर का स्मरण सर्व सांसारिक सुखों से अच्छा है।

५—जो उस उपास्य का उपासक हो जाता है फिर समस्त ससार उसको अपनाता है।

(वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी)

—मोहन गोपाल

पढ़ो और हंसो

(१) लड़का—माँ क्या राम हरे हैं ?
माँ—बेटा नहीं तो
लड़का—पर तुम तो कहती हो हरे राम ! हरे राम !

(२) अध्यापक बालकों से— शीत काल मे किस प्रकार नहाना चाहिये, जिससे सर्दी न लगे ?
एक बालक—जी कोट पहन कर

(३) अध्यापक राजीव से—राजीव चार रुपये के आने बनाओ।
राजीव—मास्टर साहब जरा धीरे से बोलिए।
अध्यापक—क्यो ?
राजीव—कहीं पुलिस हमें नकली सिक्के बनाने के अभियोग मे गिरफ्तार न कर ले !

(४) जज अपराधी से—तुम जेल भाग क्यों गये थे ?
अपराधी—जी मेरे भाई की शादी थी।
जज—किसके साथ ?
अपराधी—एक औरत के साथ
जज—तो क्या कभी आदमी के साथ भी शादी होती है।
अपराधी—जी हाँ, अभी मेरी बहिन की शादी एक आदमी के साथ हुई थी।

(५) शशी—"दादी ! तुम यह चश्मा क्यो लगाती हो ?"
दादी—"बेटा ! इस चश्मे से छोटी चीज बड़ी दिखाई देती हैं"
शशी—"तो दादी ! जब मुझे तुम कोई मिठाई दिया करो तो यह चश्मा उतार लिया करो।"

—आर्य कुमार रजनी कान्त, लखनऊ

स्वास्थ्य-सुधा

इन्हें मत फेंकिए

[श्री विजेश्वर दयाल सक्सेना, बहराइच]

सच मानिए ! मैं तो आपको यही सलाह दूंगा कि इन्हें फेंकिये नहीं। बड़े काम की वस्तुएं हैं। आप सोचते होंगे, कि क्या मूर्खता की बात है भला ये तुच्छ वस्तुएं किस काम की हैं। व्यर्थ का कूड़ा इकट्ठा करना है। लेकिन ऐसा नहीं है। वास्तविकता कुछ और ही है। इन साधारण, तुच्छ एवं नगण्य वस्तुओं के अनेको लाभ हैं। लोग इन्हे फेक कर उस स्थान को गन्दा करते हैं। और अपने भोजन की मुख्य वस्तु को नष्ट कर देते हैं। इसलिए मैं आपसे कहता हूं कि इन्हे मत फेंकिये। ये वस्तुएं आपके बहुत काम की हैं। जब आप इनके सेवन की विधि जान सकेंगे तभी आपको यह लाभप्रद सिद्ध हो सकेगी। इसलिए फिर से सुन लीजिए कि प्रत्येक वस्तु को सोच समझ कर फेंकिये। निम्न वस्तुएं फेकिये नहीं :—

आम की गुठली व छिलका।
नींबू का छिलका।
नीम की पत्ती।
चाय की बची पत्ती।

हिन्दुस्तान में आम फलों का राजा माना जाता है। यह अनेकों किस्म का होता है। इसको गरीब अमीर बड़े ही शौक से खाते हैं। वह क्या खाते हैं, केवल आम का गूदा, शेष छिलका व गुठली उठा कर फेंक दी छिलका तो जानवर खा गये। गुठली ही बच रही। यदि गुठली के लाभ लोग जानने लगें तो उसको कदापि न फेंके। अच्छा अब इनके लाभ सुनिए। यदि गुठली को स्वच्छ करके उसको उबाल या आग मे भून लिया जाय फिर उसका छीलकर अंदर का गूदा तो खाइये कितना स्वादिष्ट है। लोग तो इसको पीसकर आटें की जगह इस्तेमाल करते हैं। यदि आप गुठली के गूदे को महीन करके काला नमक मिलाकर खायें तो आपको पेट का कोई भी रोग कभी न होगा। इसी तुच्छ एवं नगण्य वस्तु को गरीब लोग जलाकर अपना भोजन तैयार करते हैं। अब आइये छिलकों पर, यह शहरों में बहुत सी घटनाओं का कारण होते हैं। आम के छिलकों को स्वच्छताई से सुखा कर यदि किसी चिकनाई (घी, तेल) में भूनकर खाया जाय तो वह बड़े ही स्वादिष्ट मालूम होते हैं। यदि आप इतना न कर सकें तो किसी जानवर को ही दे दें तो उसका भला हो जावे। इसलिए प्रत्येक वस्तु को आप सोच समझ कर ही फेंके।

नींबू भी मनुष्य के लिए बड़ा ही लाभप्रद फल है। लेकिन सब लोग इसको ठीक से उपयोग में नहीं लाते हैं। इसका रस तो निचोड़ कर काम में ले आये और छिलका फेक दिया। मैं इसके छिलके का इस्तेमाल भी बताता हूं जो कि मनुष्य के लिए बहुत ही लाभ प्रद है सुनिए, कुछ छिलको को थोड़े से पानी मे खूब अच्छी तरह औटा लीजिए। फिर उससे सिर धोइये तो बाल आपके कभी सफेद न होंगे। यदि आखें धोइये तो आपकी आँखें अच्छी रहेंगीं। और यदि शरीर पर रगड़िये तो आपके शरीर की त्वचा कोमल और स्वच्छ हो जावेंगी, इसलिए नींबू का छिलका भी आपके बड़े काम की वस्तु है। सम्हाल कर रखकर इसको प्रयोग में लाइये।

अधिकतर लोग नीम के गुणों को तो जानते ही होंगे। इसके हरएक चीज कितने काम की होती है। शाखाएं दातून के काम आती है। इसी प्रकार तना, फल आदि सब काम आ जाते हैं। लेकिन पत्ती लोग फेंक देते हैं। यदि पत्ती को सुखा कर जलाया जावे तो घर मे मच्छरों का वास नहीं रहता है। यदि इसकी पत्ती को महीन पीस कर मेंहदी की तरह शरीर पर लगायी जाय तो न फुंसियाँ निकलती हैं न खुजली होती है और त्वचा कोमल और स्वच्छ हो जाती है। पत्ती की कोपलों को खानें से शरीर के बाहरी भाग में कोई रोग नहीं होता है। इसलिए मैं चाहता हूं कि इन तुच्छ वस्तुओं को फेंक कर आप अपना सब कुछ नष्ट न करें।

अब आपकी बची चाय की पत्ती। चाय बनाने के बाद बची पत्ती में तो कुछ रहा नहीं।

पर आप सोचते होंगे कि क्या मूर्खता की बात है कि आम की गुठली, नींबू का छिलका, नीम की पत्ती तो ठीक है परन्तु अब चाय की पत्तियाँ कहाँ तक बचाई जावें। इसमें भी कुछ छिपा हुआ लाभ है। यदि आप बची पत्ती को सुखा कर उसको जलायें तो उस स्थान की मक्खियाँ भाग जायेंगी जिससे कि हैजा होने का डर न रहेगा। इसलिए आप हमेशा प्रत्येक वस्तु को सोच समझ कर फेंकें।

जीवन-ज्योति

[पृष्ठ ७ का शेष]

दिल्ली में मिलने भी गये किन्तु जब पत्र उद्योग में उनसे नीति आदि के सम्बन्ध में अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया तब श्री शर्मा जी ने लगभग १०००) रुपया मासिक वेतन का मोह छोड़कर खुले शब्दों मे कहा कि पत्र सम्पादन तब ही किया जा सकता है जबकि मुझे पत्र सम्पादन में अपनी नीति चलाने का पूर्ण अधिकार और स्वतन्त्रता हो। पत्र का मालिक कार, कोठी, स्वतन्त्रता सब कुछ देने को तैयार था किंतु वह सम्पादन सम्बन्धी नीति का अधिकार देने को तैयार न था। इसलिए श्री शर्मा जी ने सारी बातचीत तय हो जाने पर भी इतने बड़े लाभ को ठोकर मार दी।

श्री शर्मा जी में एक सबसे बड़ा गुण यह है कि वह उपेक्षित साहित्यकारों, पत्रकारों एवं दिवंगत साहित्यिक महापुरुषों को स्मरण करने की दिशा में विशेष प्रयत्नशील रहते हैं। समय समय पर उन्होंने इस दिशा में कार्य किये हैं। इस सम्बन्ध में स्वर्गीय साहित्याचार्य प० पद्मसिंह शर्मा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कि श्री शर्मा जी के प्रयत्न से स्वर्गीय पद्मसिंह जी का आधुनिक तथा सैनिक आदि पत्रों में समय समय पर विशेष स्मृति के रूप में साहित्य प्रकाशित किया गया और श्री शर्मा जी ने बड़ी मेहनत से अपने मित्र श्री पं० बनारसीदास चतुर्वेदी के साथ मिलकर स्वर्गीय पं० पद्मसिंह शर्मा के पत्रों का सम्पादन किया जो पिछले दिनों दिल्ली के सुप्रसिद्ध प्रकाशक ने पं० पद्मसिंह शर्मा के 'पत्र' नाम से उस ग्रन्थ को प्रकाशित किया।

श्री हरिशङ्कर शर्मा विशिष्ट कोटि के साहित्यिक तपस्वी हैं। उन्होंने निःस्वार्थ भाव से राष्ट्र सेवा, तथा साहित्य और हिन्दी पत्रकारिता की सेवा की है राष्ट्र सेवा के निमित्त श्री शर्मा जी जेल भी गये हैं। पर उन्होंने कभी भी जेल जाने का पुरस्कार नहीं मांगा। उन्होंने उसको अपना कर्तव्य मानकर पूरा किया।

श्री शर्मा जी के उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष पद पर चुने जाने के सम्बन्ध में भारत के सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री बनारसीदास जी चतुर्वेदी संसद सदस्य ने एक बधाई पत्र भेजते हुए लिखा था कि महामननीय श्रीनिवास शास्त्री से मैंने पूछा था कि बापू इस समय जेल में हैं और कुछ कांग्रेस वाले आशा करते हैं कि आप संकट के समय में उनका नेतृत्व करें। तब श्री शास्त्री ने उत्तर दिया कि कांग्रेस वाले पूरे अनुदार हैं और वह मेरा नेतृत्व उस रूप में स्वीकार नहीं करेंगे जिस तरह से महात्मा गांधी का नेतृत्व स्वीकार करते हैं। यही बात आपकी उत्तरप्रदेश के आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बनने पर मुझे याद आ गई।

श्री चतुर्वेदी ने इस बात पर सन्देह प्रकट किया है कि आर्यसमाज के लोग आपके नेतृत्व को स्वाधीनता दे सकेंगे। इस पत्र में श्री चतुर्वेदी ने आर्यसमाज के क्षेत्र में अपनी सेवाओं की चर्चा करते हुए इस बात पर खेद प्रकट किया है कि आर्यसमाज के क्षेत्र में साहित्यिक पहलू बड़ा कमजोर होता जारहा है। आर्यसमाज ने जैसे प्रभावशाली लेखक पहिले उत्पन्न किये थे जैसे स्वर्गीय हरिश्चन्द्र जी, पं० इन्द्रविद्यावाचस्पति, श्री देवचन्द्र, चन्द्रगुप्त, वंशीधर, कर्णेन्द्रकुमार सत्यदेव, और सत्यकेतु तथा श्री रामगोपाल आदि विद्यालङ्कारों को साहित्यिक क्षेत्र में पैदा किया। अब नई पीढ़ी मे वह रूप नहीं दिखाई दे रहा है और निरन्तर आर्यसमाज मे साहित्यिक सुरुचि का अभाव होता जा रहा है। इस सम्बन्ध में आपने श्री हरिशङ्कर शर्मा की दिवंगत उन आर्य महापुरुषों का स्मरण करने के लिए पदक पुरस्कार आदि चलाने की चर्चा की है, जिन महापुरुषों ने आर्यसमाज की साहित्य साधना में अपना जीवन व्यतीत किया।

श्री हरिशङ्कर शर्मा उत्तर प्रदेश आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर रहकर कहां तक सेवा कर सकेंगे यह एक विवादग्रस्त प्रश्न है किन्तु इतना सत्य है कि श्री शर्मा के इस पद पर चुने जाने से पहिले की अपेक्षा साहित्य सुरुचि की दिशा में आशापूर्ण वातावरण तैयार होगा। और यह आशा है कि जिस तरह से पहिले बाधाएं आती रहीं वह इस बार श्री शर्मा जी के मार्ग में उत्पन्न नहीं होंगी। इसका उपाय यह है कि आर्यसमाज में जो नई विचारधारा के लोग प्रवेश कर रहे हैं उनमें कट्टर संकीर्णता नहीं दिखाई देती। इसलिए आशा है कि शर्मा जी के नेतृत्व में उत्तरप्रदेश की आर्यसमाजें अपने प्रदेश के सांस्कृतिक गौरव को स्थाई बनाने में प्रयत्न करती रहेंगी। स्वाधीनता के बाद उत्तरप्रदेश की स्थिति जिस ढग से गतिशील रही है उसमें आर्यसमाज ही पूर्णरूप से समर्थ है। उत्तरप्रदेश के आर्य गण शर्मा जी की सेवाओं का ध्यान करते हुए उनका अधिक से अधिक सहयोग प्रदान करके आर्य समाज को केवल किसी स्वार्थपूर्ति का साधन न बनने देंगे।

✱

सभा की सूचना

वेद-प्रचार-सप्ताह

(२९ अगस्त से ६ सितम्बर तक)

प्रदेशीय समस्त आर्य समाजों को विदित हो कि इस वर्ष वेद प्रचार सप्ताह श्रावण शु० १५ से भाद्रपद कृ० ८ सं० २०१५ वि० तदनुसार दि० २९ अगस्त से ६ सितम्बर १९५८ तक मनाया जाना निश्चित हुआ है। इस वर्ष वेद प्रचार सप्ताह को बड़े धूमधाम और उत्साह के साथ मनाने का आयोजन करने की कृपा करें। कार्यक्रम आगामी अङ्क मे प्रकाशित किया जायगा।

दान सूची

आर्यमित्र के गतांक के पश्चात् निम्न धन सभा को और प्राप्त हुआ वह सधन्यवाद प्रकाशित किया जाता है :—

सभा मन्त्री श्री फूलनसिंह जी द्वारा प्राप्त—

१—आ०स० बेवर (मैनपुरी) ३१)
२— " " गाजियाबाद (मेरठ) ३०१)

यह धन श्री प्रो० रतनसिंह जी एम० ए० की प्रेरणा और परिश्रम से सभा को प्राप्त हुआ—

३-आर्यमित्र के तीन नवीन ग्राहक बनाये २४)
४-गुरुकुल वृन्दावन प्रयोगशाला १००)
५-श्रीकृष्ण बल्देव जी शृंगारनगर लखनऊ अन्तरङ्ग सदस्यता ११५)
६--श्री कृष्ण बल्देव जी स० कोषा० सभा ने मित्र के २१ नवीन ग्राहक बनाये १६८)
७-श्री विश्वेश्वरनाथ जी वर्मा लखनऊ अन्तरङ्ग सदस्यता के १००)

सभा उपप्रधान श्री कालीचरण जी आर्य अध्यक्ष डेपूटेशन, मन्त्री श्री फूलनसिंह जी तथा श्री प्रो० रतनसिंह जी एम० ए० द्वारा प्राप्त धन की सूची :—

१—आ० स० मंसूरी १००)
२— ,, ,, देहरादून २५१)
३— ,, ,, डोई वाला ५१)

टि०-कार्यवश श्री मन्त्री जी गुरुकुल चले गये—

४—आ० स० कैराना ५१)
५— ,, ,, थाना भवन २०) ला. सीताराम जी १०) ३०)
६—आ०स० देवबन्द ५१)
७— ,, ,, सनौली ३१)
८— ,, ,, मशाना (मेरठ) ४१)
९—श्री मुरलीधर आर्य ट्रस्ट म. १०)
१०—श्री भारतसिंह जी मशानां २१)
११—श्री आ.स. लालकुर्ती मेरठ ५१)
१२—आ०स० लालकुर्ती मेरठ ६१)

उपर्युक्त दानी सज्जनों को सभा धन्यवाद देती है।

फूलनसिंह
सभा मन्त्री

(पृष्ठ ११ का शेष)

करके आगे बढ़ने की सजगता नहीं दिखाई देती। पारिवारिक जीवन जैसा आदर्शमय बनना चाहिए था वैसा नहीं हो पाता। उनकी अशान्ति का प्रभाव समाज पर भी पड़ता है। इस समस्या के निराकरण के लिए कम से कम यह तो किया ही जा सकता है कि सभी शिक्षित युवक युवतियाँ यह व्रत ले लें कि वे धन का आश्रय लेकर विवाह सम्बन्ध कभी स्वीकार नहीं करेंगे, और माता पिता को भी यह दृढ़ निश्चय कर लेना चाहिए कि अपनी कन्या को धनलोलुप परिवार में कभी नहीं भेजेंगे चाहे वह अविवाहित ही क्यों न रह जाय और इसके लिए उन्हें कितनी ही लांछना क्यों न सहनी पड़े। गाय को कसाई घर में भेज कर बेमौत मरने के लिए छोड़ देने से तो यही अच्छा है कि उसे अपने खूंटे से ही आजीवन बांधे रखा जाय। इसके लिए सभी को किसी न किसी प्रकार का त्याग तो करना ही पड़ेगा। इस दिशा मे आर्य समाज सक्रिय कदम उठा सकता है, धार्मिक कुरीतियों को दूर करने मे इसका सदैव बड़ा हाथ रहा है। आज जब कि दहेज भीषण रूप धारण करके मानवता पर आघात कर रही है इसके ध्वंसकारी स्वरूप की सत्ता मिटाने के लिए सभी का सहयोग अपेक्षित है।

✱

हमारी भिक्षा-यात्रा

[श्री प्रो० रत्नसिंह जी एम० ए०, गाजियाबाद]

इस वर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक साधारण अधिवेशन के अवसर पर आठ नौ जून को देहली में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के सुयोग्य मंत्री श्री फूलनसिंह जी से सभा सम्बन्धी अनेक विषयों पर वार्तालाप करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उत्तर प्रदेशीय आर्य



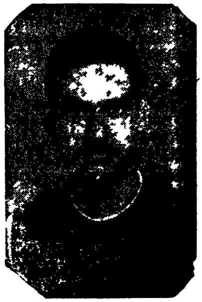
श्री बाबू कालीचरण जी

प्रतिनिधि सभा की वर्तमान शोचनीय आर्थिक स्थिति से आप अत्यधिक चिंतित थे। चिंतित होना स्वाभाविक ही था। 'न हि वन्ध्या विजानाति कदाचित् प्रसववेदनाम्' अर्थात् प्रसव की वेदना का अनुभव वन्ध्या स्त्री नहीं कर सकती उस कष्ट को वही जानती है जिसने बच्चा जना है। सभा का मंत्री पद ग्रहण करने पर क्या क्या बीतता है इसे तो वही जाने जिसने कभी इस पद को सुशोभित किया है। सभा की गाड़ी आगे कैसे चलेगी, यही एक चिंता मंत्री जी को बार बार परेशान कर रही थी। विचार विमर्श के पश्चात् निश्चय हुआ कि प्रान्त की विभिन्न आर्य समाजों में पहुंच कर आर्यों के सम्मुख सभा की वर्तमान स्थिति रक्खी जाय और उसे सुदृढ़ करने के निमित्त उनसे प्रार्थना की जाय। दिल्ली से उत्तर प्रदेश में प्रविष्ट होते समय उत्तर प्रदेश का सर्व प्रथम नगर गाजियाबाद है। गाजियाबाद की इस भौगोलिक स्थिति को ध्यान मे रखकर सभा मंत्री जी ने निश्चय किया कि सभा हेतु धन संग्रह का कार्य गाजियाबाद से ही आरम्भ किया जाय। उनके इस निश्चय के आधार पर मंत्री जी और मैं दोनों रात्रि की ट्रेन से गाजियाबाद आए। प्रातः काल आर्य समाज गाजियाबाद के प्रमुख कार्य कर्ताओं की एक बैठक बुलाई गयी जिसमें मंत्री जी ने संक्षेप में सभा की वर्तमान स्थिति का परिचय कराया। उसी समय बैठक में उपस्थित कार्य कर्ताओं ने मंत्री जी की सेवा में ३०१) रुपए की तुच्छ परिभेंट की।

दो दिन पश्चात् सभा मंत्री जी को सभा कार्यालय लखनऊ मे आवश्यक कार्यवश उपस्थित होना था। मुझे भी आर्य समाज नैनीताल से वार्षिकोत्सव मे सम्मिलित होने के लिए वहा १३ जून को पहुंचना था अतः धन संग्रह का कार्य आगे न बढ़ सका। १० जून के मध्याह्नोत्तर मंत्री जी गाजियाबाद से प्रस्थान कर गए। नैनीताल से लौटकर मैं १९ जून को मेरठ में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उप प्रधान श्री बा० कालीचरण जी आर्य की सेवा मे उपस्थित हुआ। सभा के प्रति की गयी आपकी अमूल्य सेवाओं तथा समस्त प्रान्त मे आपके व्यापक प्रभाव को दृष्टि मे रख इस वर्ष सभा के प्रधान श्रद्धेय श्री प० हरिशंकर जी शर्मा ने आपको सभा के लिये धन संग्रह करने तथा नवर्थ प्रतिनिधि महल बनाने का कार्य सौंपा है। अपने उस अधिकार के आधार पर आपने तीन व्यक्तियों का एक डेपुटेशन निर्माण किया और यह निश्चय किया कि सम्प्रति देहरादून, सहारनपुर, मुजफ्फर नगर और मेरठ जिलों की कतिपय बड़ी बड़ी आर्य समाजों तक पहुंच कर वहा से सहायता प्राप्त की जाय। इस कार्यक्रमानुसार सभा मंत्री श्री फूलनसिंह जी आर्य २६ जून को प्रातः काल गाजियाबाद पधारे और वहा से हम दोनों उसी वक्त ट्रेन द्वारा सहारनपुर के लिये चल दिये। मेरठ स्टेशन पर श्री बा० कालीचरण जी को भी हमारे साथ सम्मिलित हो जाना था परन्तु उस दिन वे अत्यधिक कार्यवश आगरा चले गये। हमारी ट्रेन रात्रि के साढे आठ बजे सहारनपुर रेलवे स्टेशन पहुची। रेलवे स्टेशन के सामने ही देहरादून जाने वाली बस तैयार खड़ी थी। यह बस नौ बजे सहारनपुर से चल कर ग्यारह बजे देहरादून पहुच गयी।

हमारे सभा मंत्री श्री फूलनसिंह जी की आयु इस समय ५९ वर्ष है। सिर पर कार्यभार अधिक रहता है। नारायण डिग्री कालिज शिकोहाबाद की मैनेजिंग कमेटी के आप मंत्री हैं। घर का भी कार्य कम नहीं है। अब सभा के कार्य ने आपका कचूमर ही निकाल दिया है। आज शिकोहाबाद है तो कल लखनऊ। विश्राम करने का समय आपको रेलवे ट्रेन के अतिरिक्त अन्यत्र मिल ही कहा सकता है। इसका प्रत्यक्ष अनुभव मैंने आपके साथ गाजियाबाद से सहारनपुर तक की रेलवे यात्रा मे किया। गाजियाबाद रेलवे स्टेशन से ट्रेन के चलते ही आप निद्रा की गोद म जा पहुचे। पैसेंजर ट्रेन थी प्रत्येक स्टेशन पर रुक रुक उसे चलना था। ट्रेन की गड़गड़ाहट और गार्ड की सीटी बार बार हमारे मंत्री जी की निद्रा मे विघ्न डालने का असफल प्रयत्न करती रही। मुजफ्फर नगर पहुचकर मन्त्री जी ने हार स्वीकार की और सचेत होकर अपनी सीट पर बैठ गये।

देहरादून में बस स्टैंड से हम सीधे आर्य समाज पहुँच गये और रात्रि भर वहीं विश्राम किया। अगले दिन प्रातः नित्य कर्मों से निवृत्त होकर हम दोनों बस द्वारा मसूरी जा पहुचे। देहरादून से मसूरी २२ मील है। राजपुर तक मैदानी मार्ग है और उससे आगे पन्द्रह मील का मार्ग पर्वतीय है। जहा सड़क सर्पिणी की भाँति टेढे मेढे बल खाती हुई चलती है। मसूरी मे आर्य समाज मन्दिर पहुँचे वहा से आर्य समाज के मन्त्री श्री परमात्मा शरण जी की दुकान पर गये। श्री परमात्मा शरण जी आर्य समाज मसूरी के प्राण हैं। आप एक उत्साही नवयुवक कार्यकर्ता हैं बड़े सौम्य तथा सुशील हैं। सभा मंत्री जी का आपसे लगभग डेढ़ घंटे तक वार्तालाप हुआ। मसूरी आर्य समाज को हमारी आर्य प्रतिनिधि सभा से पर्याप्त असन्तोष है। मंत्री जी ने उसे बड़े धैर्य से सुनते हुए श्री परमात्मा शरण जी को आश्वासन दिया कि भविष्य में उन्हें सभा से कोई असंतोष न होगा। इस आर्य समाज के प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के भूतपूर्व मन्त्री कविराज हरनामदास जी हैं। आजकल आपका निवास मसूरी म है। उस दिन दुर्भाग्यवश वे वहा पर उपस्थित न थे और उनके बिना आर्थिक सहायता



—लेखक—

प्राप्त होना असम्भव था अतएव निश्चय हुआ कि हम देहरादून लौट चले और वहाँ से २९ जून को प्रातः फिर मसूरी आवें क्योंकि उस समय तक कविराज जी मसूरी में उपस्थित हो सकेंगे। उसी समय हम देहरादून आ गये। देहरादून मे श्री आचार्य बृहस्पति जी के सहयोग से देहरादून आर्य समाज से २५०) रुपये की सहायता प्राप्त हुई। आर्यमित्र के भी कई नये ग्राहक बनाये। अगले दिन प्रातः देहरादून से डोईवाला गये और वहां से २१) रुपये प्राप्त किये। वहाँ से लौटकर हम फिर देहरादून आ गये श्री मन्त्री जी देहरादून ठहर गये और मैं सायंकाल मसूरी जा पहुँचा। मसूरी आर्य समाज मंदिर में आज कल आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान सन्यासी पूज्यपाद स्वामी ब्रह्ममुनि जी ठहरे हुए हैं। आप महर्षि भारद्वाज कृत यन्त्र सर्वस्व ग्रन्थान्तर्गत वैमानिक प्रकरण पर अनुसन्धान कर रहे हैं। स्वामी जी ने अथक परिश्रम कर इस पुस्तक की हस्तलिखित प्रतियाँ पूना बंगलौर और बड़ौदा से प्राप्त की हैं। स्वामी जी का अनुसंधान संसार के समस्त वैज्ञानिकों को चकित करने वाला सिद्ध होगा। स्वामी जी के दर्शन तथा उनसे वार्तालाप कर मेरे मस्तिष्क मे बार बार यह विचार चक्कर काटता रहा कि हमने अपने विद्वानों की कद्र करना सीखा ही नहीं।

अगले दिन प्रातः रविवार होने के कारण आर्य समाज मंदिर म

(शेष पृष्ठ १६ पर)

सिंहावलोकन

पंजीकरण सं. ए. ६०
श्रावण ५, शक १८८०(२७ जुलाई८८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष्य : ४११३ तार : 'आर्यमित्र'

हमारी भिक्षा-यात्रा

[पृष्ठ १५ का शेष]

साप्ताहिक सत्संग की कार्यवाही सम्पन्न हुई। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं से परिचय प्राप्त हुआ। और उसी समय आर्य समाज की ओर से सभा के लिये सौ रुपये की सहायता प्राप्त हुई। मंसूरी से मैं देहरादून वापिस चला आया वहाँ आकर पता चला कि श्री बा० कालीचरण जी कल सायं यहाँ पहुँच चुके थे और आज मन्त्री जी के साथ सहारनपुर चले गये हैं। देहरादून से सहारनपुर पहुंचकर मैं भी उन दोनों के साथ हो गया। सहारनपुर में हम तीनों दो दिन ठहरे, स्थानीय सभी समाजों में पहुँचे। वहाँ से हमें कुल २३०) रुपये प्राप्त हुए। सहारनपुर से श्री मंत्री जी हमसे पृथक हो गये। क्योंकि २ जुलाई को गुरुकुल विद्या सभा की बैठक में उन्हें सम्मिलित अवश्य होना था और सभा सम्बन्धी आवश्यक कार्यवश लखनऊ लौट आना पड़ा। लखनऊ से काशी आर्य विद्या सभा की बैठक दि० ११, १२, १३ में होना था। अब मैं और श्री कालीचरण जी दो ही रह गये। सहारनपुर से १ जुलाई को बस द्वारा हम तीन भिन्न-भिन्न स्थानों। (नकुड़,अम्बेहटा, और गंगोह) का भ्रमण कर वहां से क्रमशः २१ रुपये १०१) रुपये व ५१) रुपये की सहायता प्राप्त की। अम्बेहटा और गंगोह आर्य समाजों के पास विशाल मन्दिर हैं भव्यता की दृष्टि से अम्बेहटा का आर्य समाज मंदिर दर्शनीय है। मन्दिर की विशालता के अनुरूप वहां के आर्यों का हृदय भी विशाल है। गंगोह में रात्रि के समय एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें माननीय श्री बा० कालीचरण जी का प्रेरणात्मक व्याख्यान हुआ। २ जुलाई को प्रातः गंगोह से चलकर हम सहारनपुर आ पहुँचे यहाँ से बा० कालीचरण जी मुजफ्फरनगर चले गये और मैं रुड़की आ पहुंचा। रुड़की आर्य समाज के अधिकारी सभा से बहुत असन्तुष्ट हैं। मेरे पहुँचने से पूर्व ही अन्तरङ्ग सभा की बैठक बुलाकर वहाँ सभा को सहायता न करने का निश्चय किया जा चुका था। वहाँ से प्रयत्न करने पर भी सभा के लिये कोई आर्थिक सहायता न मिल सकी।

रुड़की से मैं मुजफ्फरनगर आकर श्री कालीचरण जी से मिला। यहाँ से १७५) रुपये प्राप्त हुए। यहाँ प्रमुख आर्य समाजें दो हैं। इनमें से शहर आर्य समाज शिथिल अवस्था मे है। आर्य समाज नई मन्डी में अच्छा उत्साह है। ४ जुलाई को कार्य क्रमानुसार शामली पहुँचे। इस समाज की स्थिति बहुत अच्छी है सभी कार्यकर्ता उत्साही व श्रद्धालु हैं। यहाँ से १०१) रुपये भेट किये गये। शामली के आस पास लगभग बारह मील की दूरी पर कैराना व थाना भवन की आर्य समाजें हैं। जहाँ से हमें क्रमशः ५१) और ०३)रुपये प्राप्त हुये। वहाँ रात्रि में एक सार्वजनिक सभा में श्री बा० कालीचरण जी का आध्यात्मिक उपदेश हुआ। ६ जुलाई को प्रातः देववंद से ४॥ बजे ट्रेन से चलकर मैं तो गाजियाबाद आ गया और श्री बा० कालीचरण जी खातोली उतर गये। ७ जुलाई को प्रातः हम दोनों हापुड़ पहुँचे फिर वहाँ से मेरठ। मेरा ग्रीष्म अवकाश समाप्त होने के कारण मैं मेरठ से गाजियाबाद लौट आया।

मेरठ और हापुड़ दोनों स्थानों पर श्री बा० कालीचरण जी का प्रयत्न अभी जारी है और विश्वास है कि इन दोनों स्थानों से शीघ्र ही अच्छी राशि प्राप्त हो सकेगी।

दो सप्ताह की इस यात्रा से मुझे एक व्यक्तिगत लाभ अवश्य हुआ श्री बा० कालीचरण जी से मेरा परिचय पुराना है। मेरे पूज्य पिता श्री रामचन्द्र जी लगभग तीस वर्ष से बाबू जी से परिचित हैं। आप कई बार प्रचारार्थ हमारे गांव में भी हो आये हैं परन्तु अब तक इतने दीर्घ समय तक इतने निकट से आपको देखने का अवसर पहिले कभी प्राप्त नहीं हुआ। वस्तुतः किसी व्यक्ति के गुण दोष का बोध उसके निकट रहने से ही होता है। शारीरिक दृष्टि से बाबू कालीचरण जी इतने दुबले पतले है कि उनके प्रथम दर्शन से कोई अच्छा प्रभाव शायद ही पड़े। वार्तालाप करने में भी आप शुष्क व हृदयहीन प्रतीत होते हैं परन्तु बाहर से आप जितने हृदयहीन प्रतीत होते हैं भीतर से उससे कई गुना अधिक सहृदय हैं। उच्चकोटि के अन्तर्मुखी विचारशील व्यक्तियों के जीवन में यह विरोधाभास प्रायः देखने को सर्वत्र मिलता है।

स्वर्गीय स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज, श्री पं० गणपति शर्मा, प्रो० रामदेव जी, श्री पं० चमूपति जी आदि पुराने आर्य विद्वानों के जीवन चरित्र व उनके सिद्धांत यदि आप जानना चाहते हों तो कुछ समय श्री बा० कालीचरण जी का सत्संग कीजिए। पूर्ण जानकारी आपको उनसे सहज ही प्राप्त हो जायगी।

बाबूराम भारती द्वारा अमवार्द्धन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग

ARYA MITRA

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का साप्ताहिक मुखपत्र

5'
5-4-58

वार्षिक मूल्य ८) एक प्रति का २० नए पैसे	लखनऊ, रविवार, श्रावण १२, शक १८८० ३ अगस्त १९५८ ई०	विदेश में १५ शिलिंग

उर्दू को पृथक् संरक्षण देना भारतीय एकता के लिए घातक सिद्ध होगा

उत्तर प्रदेश सरकार ने भी कांग्रेस की उर्दू नीति के सामने आत्म समर्पण किया

विश्व के रंग मंच पर जहाँ विश्व युद्ध की काली घटायें मंडरा रही हैं, प्रत्येक राष्ट्र अपनी प्रजा में एकता और संघटन की उदात्त भावनाओं को विकसित कर राष्ट्र रक्षा के लिए प्रयत्नशील है वहाँ हमारी भारत सरकार अपनी घोषणाओं द्वारा भाषा के सम्बन्ध में पृथकता की नीति पर चलकर भारतीयों में भाषावाद और उसके द्वारा सम्प्रदायवाद की भावनाओं को प्रबुद्ध बना रही है। उर्दू के सम्बन्ध मे कांग्रेस कार्य समिति के प्रस्ताव के आधार पर भारत सरकार ने उर्दू को पृथक् संरक्षण देने की घोषणा की है। उर्दू हिन्दी की एक शैली मात्र है, भाषा विज्ञान के सिद्धान्तो के अनुसार आज तक इस मान्यता का खण्डन नहीं हो सका है। साम्प्रदायिक संघर्षों के समय हिन्दी उर्दू का जो संघर्ष चला करता था, भारत सरकार की इस घोषणा ने उसे पुनरुज्जीवित कर दिया है। कहने को प्रधान मन्त्री यही कहते हैं कि उर्दू मुस्लिमों की भाषा नहीं है, वह भारत की भाषा है परन्तु भारत सरकार की विज्ञप्ति मे उर्दू को अल्प संख्यकों की भाषा घोषित किया गया है। घोषणा में कहा गया है कि एंग्लो इण्डियनों को उनकी भाषा अंग्रेजी होने के कारण अंग्रेजी के लिए जैसे विशेष सुविधायें हैं उसी प्रकार उर्दू से सम्बन्धित अल्प संख्यकों को उर्दू सम्बन्धी सुविधायें प्रदान की जायेंगी। इस घोषणा के भारतीय इतिहास में दूरगामी प्रभाव पड़ेंगे।

भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति के रहते हुए उसकी शैलियों को पृथक् भाषा के रूप में विकसित करना और संरक्षण देकर एक विशेष सम्प्रदाय के व्यक्तियों को सन्तुष्ट करना कहाँ तक न्याय संगत होगा, इसका निर्णय आने वाली पीढ़ियाँ ही करेंगी।

उत्तर प्रदेश सरकार ने आरम्भ में तो कांग्रेस की उर्दू नीति के सम्बन्ध मे दृढ़ता पूर्वक मतभेद प्रकट किया परन्तु अब वह भी अपना आत्म समर्पण कर चुकी है। उत्तर प्रदेश सरकार की इस समर्पण नीति का परिणाम होगा उर्दू के पृथक् स्कूलों की स्थापना और साम्प्रदायिक पृथकता की भावनाओं की अभिवृद्धि। भाषा द्वारा राजनैतिक समर्थन के लिए साम्प्रदायिक भावनाओं को प्रोत्साहन भारत की एकता को एक बार पुनः खण्डित करने का कारण बन जायगा इसमें सन्देह नहीं रहना चाहिए। विदेशी और धार्मिक भावनाओं के आधार पर उर्दू के भाषावाद को पुनरुज्जीवित कर राजनीतिज्ञ लोग मुस्लिम अल्प संख्यकों का समर्थन प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं परन्तु यह सामयिक राजनैतिक सफलता राष्ट्र की एकता के विखण्डन में ही समाप्त होगी।

क्या इस भयावह स्थिति का निराकरण करने की सामर्थ्य किसी में नहीं है? हम तो जन मत में विश्वास रखते हैं और हमें विश्वास है कि राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रबल पक्ष इस साम्प्रदायिक तुष्टीकरण का परिमार्जन कर राष्ट्र की एकता को सबल और सुदृढ़ बनाने में सदैव सचेष्ट रहेगा और सफल होगा।

अवैतनिक सम्पादक —
स्नातक उमेशचन्द्र एम. ए., इकबालदयालु आर्य, सभा मुख्य उपमन्त्री
सह० सम्पादक — भगवत शरण

सिंहावलोकन

सार्वभौम चक्रवर्त्ती प्रजा

[श्री पं० बुद्धदेव विद्यालंकार, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब]

ऋषि दयानन्द ने सार्वभौम चक्रवर्त्ती साम्राज्य की जिस कल्पना का उल्लेख किया है उसकी सफलता विश्व बन्धुत्व की भावना से अनुप्राणित विश्व प्रजा द्वारा ही सम्भव है। आज विश्व विनाश के कगार पर खड़ा है। न जाने कब विश्व युद्ध छिड़ जाय और मानवता नष्ट हो जाय। इस अवस्था से विश्व को बचाने का एक ही उपाय है, प्रजा में संतुलित राष्ट्रवाद का प्रचार हो और विश्व मैत्री की भावना उद्बुद्ध हो। इस महान् दायित्व को पूर्ण कौन कर सकता है इस विषय में विद्वान् लेखक के विचार समस्त आर्य जगत् के लिए सन्देश दे रहे हैं। आशा है आर्य जन गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे।

—सम्पादक

सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में ऋषि दयानन्द लिखते हैं और वे सब राजसभा महाराज सभा अर्थात् सार्वभौम चक्रवर्त्ती महाराज सभा में सब भूगोल की वर्तमान स्थिति जनाया करें।

इस समुल्लास के आरम्भ में—

इमन्देवा उपसपाने सुवध्वम्

(यजु ९ ४०)

इस मन्त्र का प्रमाण देकर ऋषि लिखते है–हे विद्वानों! राज प्रजाजनों तु (इमम्) इस प्रकार के पुरुष को (असपाने सुवध्वम्) सम्मति करके सर्वत्र पक्षपात रहित पूर्ण विद्या विनय युक्त सबसे मित्र सभापति राजा को सर्वाधीश मान के सब भूगोल को शत्रु रहित करो।

इस मन्त्र में (सुवध्वम्) यह पद ध्यान देने योग्य है। यह शब्द सु प्रसवैश्वर्ययोः इस धातु से बना है। इस मन्त्र में इसका प्रयोग ऐश्वर्य अर्थ में हुआ है। इससे स्पष्ट है कि राष्ट्र में सम्पूर्ण शासन सत्ता का मूलाधार 'देवाः' अर्थात् विद्वान् राज प्रजाजन हैं, वही राजा को बनाते है, और वही उसे शत्रु रहित करते है, इसीलिए इन को यजु० १०।१० में राजस्व; कहा है। इसी से राजसूय यज्ञ का नाम बना है।

अब आज हम यह स्पष्ट देख रहे हैं कि इस भू मण्डल में एक सार्वभौम चक्रवर्त्ती राजा के प्रजा द्वारा तुरन्त चुने जाने की आवश्यकता है नहीं तो मत्स्य न्याय के कारण बड़े बड़े अमेरिका रूस सरीखे राष्ट्र छोटे राष्ट्रों को तथा एक दूसरे को खा जावेंगे। यदि आज रूस तथा अमेरिका का परस्पर युद्ध हो जावे तो यह दो महान् राष्ट्र तो नष्ट होंगे ही किन्तु छोटे राज्य भी बच न पावेंगे। जिस प्रकार दो मेंढ़ों के युद्ध में चींटियाँ तो यों ही पिस जाती है इसी प्रकार छोटे छोटे राष्ट्र या तो जबरदस्ती युद्ध में घसीटें जावेंगे या युद्ध की क्रीडास्थली बन कर तटस्थ रहने पर भी दोनों ओर के शस्त्रास्त्रों के प्रयोग से विध्वस्त हो जावेंगे। इसलिये आवश्यक है कि विश्व का एक राष्ट्रपति हो।

यहाँ प्रश्न हिंसा अथवा अहिंसा का नहीं अहिंसात्मक भूख हड़ताल आदि शस्त्रों का भी स्वार्थी लोग उतना ही दुरुपयोग करते हैं जितना हिंसात्मक शस्त्रों का और प्रजाहितकारी राजा के हाथ में पड़कर ऐटम बम और हाइड्रोजन बम भी कल्याण के साधन बन सकते है। इसलिए इस युग की सबसे प्रबल राजनैतिक आवश्यकता है सार्वभौम चक्रवर्त्ती राजा।

किन्तु प्रजातन्त्र के युग में राजा को तो प्रजा नियत करती है। इसलिए सच पूछो तो वस्तुतः इस समय सार्वभौम चक्रवर्त्ती प्रजा की आवश्यकता है जो सार्वभौम चक्रवर्त्ती राजा को नियत करे, वह प्रजा है कहां? इस समय तो सब खण्डवर्त्ती पर खण्ड द्रोही प्रजा है चक्रवर्त्ती प्रजा नहीं रूस चीन जापान अमेरिका इङ्गलैण्ड फ्रांस सब देशों को अपनी अपनी पड़ी है। शेष दुनिया भांड़ में जाय।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

काव्य-कानन

मैं कण कण में फिर

★कुमारी सरोजिनी एम०ए०, गोरखपुर

जो दे जाती ऊषा अपना स्वर्णिम अंचल,
दिनकर नित अपना नूतन वैभव दे जाता,
सन्ध्या लाती अरुणाई रजनी-स्वप्न-सजल,
नभ अपना जगमग दीपों का जग दे जाता,
तो मैं अल्हड़ दुलहिन का रूप सजा जाती,
जो दे जाती कलियाँ अपना कोमल सौरभ,
भंवरा गीतों का मादक राग सुना जाता,
चंचल लहरें ले आतीं पायल की रुनझुन,
कोई बेसुध वीणा में मधु स्वर भर जाता,
तो मैं भूले राही को आज बुला लाती,
जो पथ के शूलों में भी बसता प्रेरक मन,
अङ्गारों में रमता पावन अनुरोध सदा,
निःश्वासों को थपकी दे जाता मलयानिल,
नयनों में बसता जीवन का अनुराग सदा.
मैं सोयी सांसों को सन्देश सुना आती,

पत्थर ही भगवान नहीं है

★ वेद प्रकाश आर्य, लखनऊ

यह कैसे हो सकता है, पत्थर में भगवान नहीं हो—
पर अपना तो यह विचार है, पत्थर ही भगवान नहीं है.
रङ्ग बिरङ्गी वसुन्धरा में, जीवन की उद्दाम उमंगे।
जिसके वैभव की प्रतीक है, सागर की उत्ताल तरंगे॥
महा असंभव होगा यदि, मन्दिर मे भगवान नहीं हो—
पर अपना तो यह विचार है, मंदिर ही भगवान नहीं है।
बादल बूंदों के सबल बाण से, शोक धरा का हर लेता है–
वसुधा के सूखे आंगन को शस्य श्यामला कर देता है
कौन कह रहा भला यहाँ पर, अम्बर में घनश्याम नहीं है।
पर अपना तो यह विचार है, अम्बर ही घनश्याम नहीं है।
सरिताओं के नीलम नभ पर, लहर-लहर तिरती रहती है—
जलनिधि के चंचल अंचल में, छहर छहर गिरती रहती है।
यह कैसे हो सकता है, सागर पर जलयान नहीं हो—
पर अपना तो यह विचार है, सागर ही जलयान नहीं है।

वर्षा गीत

★ श्यामलाल वशिष्ठ, एम० ए०

आज सावन, मैं तुम्हें मानूं कि जब तुम,
इस धरा पर प्यार की बरसात लाओ!
जिन्दगी के हाट में जो स्वप्न कवि के—
बिक रहे, फिर से सपन बन जगमगायें!
खो गई जो कल्पना, वह फिर मुखर हो—
हर डगर पर स्नेह—दीपक मुस्करायें!
बूंद में संगीत प्राणों का सजग हो—
इस तरह की आज तुम सौगात लाओ!
आज का इन्सान खुद में बंध चुका है,
देख पाता वह नहीं बाहर स्वयं से!
आज उजड़ा घर मनुजता का, घरौंदा—
ढ़ह गया, इन्सान हारा अब स्वयं से!
इस तरह बरसो कि खुदगर्जी दफन हो—
प्यार का उपवन हंसे वह गीत गाओ
मेघ जो नभ में समर के फिर रहे, यह—
धूल जो आकाश में छाई कहर की!
तुम इसे समता, मनुजता की नमी से, प्यार—
से भर दो, मिटे गर्मी जहर की!
घृणा का मौसम खतम हो, प्यार जागे—
आज तुम कुछ इस तरह से गुनगुनाओ!

वेदोपदेश

ओं अनुव्रतः पितु. पुत्रो माता भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाच वदतु शान्तिवाम्॥
अथर्व० ३।३०।२

पुत्र पिता का आज्ञाकारी और माता के समान मन रखने वाला हो। पति से पत्नी मीठी और शान्ति देने वाली वाणी बोले।

आर्यमित्र

लखनऊ—३ अगस्त १९५८, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि सवत् १९७२९४९०५८

आर्य महा सम्मेलन बुलाया जाय

सार्वदेशिक सभा से आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०की माँग

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की अन्तरङ्ग सभा (बुलन्दशहर दि० २८ जुलाई ५८) ने एक प्रस्ताव द्वारा सार्वदेशिक सभा से यह मांग की है कि अबकी बार हिन्दी आन्दोलन को व्यापक रूप देने से पूर्व एक आर्य महा सम्मेलन अवश्य बुलाया जाय जिसमें समस्त देश के आर्यसमाजों व सभाओं के प्रतिनिधि, हिन्दी प्रेमी जनता, आर्य जनता, साहित्यकार आदि सम्मिलित हों और वहां सम्मिलित रूप से जिस नीति का निर्णय हो, उसी का पालन किया जावे।

उक्त आर्य महा सम्मेलन मे आर्य जनता, हिन्दी व साहित्यकारो को विशेषरूप से निमन्त्रित किया जाय और हिन्दी आन्दोलन के पुन प्रारम्भ होने से पूर्व जन एवं विद्वत् समर्थन प्राप्त करने का सफल प्रयत्न किया जाय। अन्तरग सभा का प्रस्ताव सक्षेप में इस प्रकार है —

"यह सभा पजाब मे हिन्दी के प्रति हो रहे अन्याय और अत्याचारो का घोर विरोध करती है और सार्वदेशिक सभा से यह मांग करती है कि आन्दोलन को दुबारा व्यापक रूप देने से पूर्व एक आर्य महा सम्मेलन बुलाया जाय जिसमे हिन्दी प्रेमी जन और साहित्यकार भी निमन्त्रित हों। महा सम्मेलन के निर्णयों का सावदेशिक सभा की अन्तरग की पुष्टि मिलने के बाद ही यह सभा उसमे सक्रिय भाग लेगी।"

नैतिक उत्थान आन्दोलन

कार्यक्रम की रूपरेखा

आर्यसमाज का शीर्ष नेतृत्व आज इस सर्वसम्मत निणय पर पहुच चुका है कि राष्ट्रव्यापी नैतिक पतन से राष्ट्र की रक्षा का दायित्व आर्यसमाज पर है। आर्यसमाज मानव सस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाली सस्था है। अतः यदि देश के जीवन में नैतिक ह्रास हो रहा हो तो वह मानव सस्कृति के लिए घातक ही होगा। मानव संस्कृति के सत्य स्वरूप का निर्धारण एवं प्रसारण करने का हमने व्रत लिया। अतः आज की अवस्था मे आर्य बन्धुओं का दायित्व और भी अधिक हो जाता है। अपने इस दायित्व को स्वीकार कर लेने के पश्चात् अब हमे उसकी रूप रेखा पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिये। वैसे तो आर्य समाज का सारा कार्यक्रम नैतिक जीवन निर्माण के केन्द्र विन्दु से सम्बद्ध है हां परन्तु आज जब व्याधि महामारी का रूप धारण कर चुकी है हमें अपनी शक्ति और सेवा भावना का अधिक सक्रिय परिचय देना होगा। पिछले अङ्कों मे हम आर्यसमाज के वरिष्ठ नेता श्री प० हरिशङ्कर शर्मा के इस सुझाव का स्वागत कर चुके हैं कि आर्यसमाज नैतिक उत्थान आन्दोलन को अपनी सम्पूर्ण गतिविधियो का केन्द्र बनाले और उसके लिए प्रत्येक आर्यसमाज मे नैतिक उत्थान विभाग की स्थापना की जाय। इस विभाग की स्थापना के बाद प्रश्न कार्यक्रम की रूपरेखा का है। वैसे तो उसके बीज प्रधान जी के वक्तव्य में हैं, फिर भी व्यावहारिक रूप मे श्री फूलसिंह सभामन्त्री ने जो रूपरेखा प्रस्तुत की है वह हम सबके लिए विचारणीय है। (१) प्रत्येक व्यक्ति का वैदिक विचारधारा के अनुसार निर्माण (२) नागरिकों का नैतिक स्तर ऊचा करने का यत्न (३) वर्तमान राजनीति को गन्दे दल दल से सर्वथा पृथक करते हुए राज्य सचालन के मौलिक सिद्धातो का प्रसार (४) सम्प्रदायवाद, प्रांतीयता और भौतिकवाद की समाप्ति का यत्न (५) धर्म के सम्बन्ध में फैली भ्रांतियों को दूरकर सच्चे धर्म की मौलिकता का प्रसार। इस पंचसूत्री कार्यक्रम मे अधिकांश वे ही बाते हैं जिनका आर्य समाज की वेदी से सदैव प्रचार किया जाता है। आवश्यकता इस बात की है कि अब इस दिशा मे पूरी शक्ति लगाई जाय, सफलता अवश्य मिलेगी और राष्ट्र सकट से पार उतर सकेगा। यह बात अवश्य है कि हमे अपनी बाते समझाने के लिए उपयुक्त क्षेत्रो को चुनना होगा। आज तक हम जो कार्य करते रहे हैं और जो बाते कहते रहे हैं उसमे कम सफलता होने का कारण आदरणीय बाबू पूर्णचन्द एडवोकेट के शब्दो मे हमारा सारा कार्य ऊसर मे बीज बोने के समान ही रहा है। इस कथन मे अतिशयोक्ति हो सकती है पर यह है काफी अनुभव की बात। आदरणीय बाबू जी के प्रयत्न भी इस आन्दोलन की दिशा मे प्रशसनीय हैं। उत्तरप्रदेशीय प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा में नैतिक उत्थान विभाग के अधिष्ठाता बनकर उन्होंने एक महान् दायित्व स्वीकार किया है। उनके उत्साह और उनकी योजनाओं का आर्यजगत् आदर करेगा, एक बार व्यापक रूप से इस आन्दोलन को आरम्भ कर दिया जाय तो समस्त राष्ट्र आर्यसमाज के महत्व को अनुभव करेगा। प्रत्येक आर्य का नैतिक कर्त्तव्य है कि इस आन्दोलन को सफल बनावे और राष्ट्र के आदर्श निर्माण में सहायक बने।

धार्मिक स्थानों की पवित्रता

आर्यसमाज जीवन में धार्मिकता का समर्थक है अतः एक धार्मिक सस्था है। धार्मिक अधिकारो की रक्षा और धर्म स्थानों की पवित्रता पर आर्यसमाज सदैव बल देता रहा है। यद्यपि आर्यसमाज का जन्म पाखण्ड खण्डिनी पताका के प्रणेता ने धार्मिक मतवादो की शुद्धि के लिए किया था परन्तु इसका यह अर्थ नहीं था कि आर्यसमाजी दूसरे के धर्म स्थानो को अपवित्र करते और आर्यसमाज के सारे इतिहास मे इस बात का उदाहरण ढूंढे नहीं मिलेगा कि आर्यसमाज की ओर से किसी ने धार्मिक स्थान की पवित्रता नष्ट की है। मूर्तिपूजा मे विश्वास न रखते हुए भी आर्यसमाज ने हिंदुओं के मन्दिरो की रक्षा के लिए आन्दोलन किये, हैदराबाद में धार्मिक स्थानो की पवित्रता और धार्मिक अधिकारो की रक्षा के लिए धर्मयुद्ध किया। यह कितनी असगत और अन्याय युक्त बात है कि उसी आर्यसमाज के चण्डीगढ़ आर्यसमाज की पवित्रता को पंजाब की धर्म निरपेक्ष सरकार की पुलिस ने ६ अगस्त ५७ को भंग किया, जूते पहन कर यज्ञ वेदी को अशुद्ध किया गया और यह सब हुआ राजनीतिक स्वार्थान्धता और साम्प्रदायिक असहिष्णुता के कारण।

इस अनुचित एवं अनैतिक अत्याचार का विरोध करने के लिए श्री आनन्द भिक्षु जी व श्री आनन्द स्वामी जी को अनशन की घोषणा भी करनी पड़ी परन्तु गांधी जी के सत्य अहिंसा के सिद्धान्तों की दुहाई देने वाली सरकार ने उन महानुभावों को पकड़कर कैद कर दिया। चडीगढ़ आर्यसमाज की अपवित्रता सम्बन्धी कृत्यों पर पजाब सरकार ने कभी खेद भी प्रकट नहीं किया अतः एक वर्ष पश्चात हम सरकार के उस कृत्य के प्रति विरोध प्रकट करना अपना कर्तव्य समझते हैं। आशा है सरकार इतने समय पश्चात् भी अपनी भूल का सुधार कर लेगी और जनता मे धर्म स्थानों की पवित्रा के महत्व को स्थापित कर सकेगी। ६ अगस्त को इस दिवस की स्मृति में प्रस्तावादि करके हमे अपनी भावनायें सरकार तक पहुंचानी चाहिए।

आर्यसमाज और विश्वशांति

आर्य समाज विश्व शांति का सन्देश वाहक रहा है। हमारे सम्पूर्ण आन्दोलन की परिसमाप्ति सर्वेभवन्तु सुखिन. के आदर्श पर होती है, वसुधैव कुटुम्बकम और यत्र विश्वभवत्येक नीडम के महान् आदर्शों की स्थापना ही हमारे कार्यक्रम का सार है। अहर्निश प्रार्थना मन्त्रों के साथ हम शान्ति पाठ करते समय विश्व शांति की कामना करते है और शान्ति के लिए कृतसंकल्प बनने की प्रतिज्ञा लेते हैं। इस प्रकार शान्ति के प्रबल समर्थक होने के नाते आज की

[शेष पृष्ठ ४ पर]

प्रेमचंद स्मारक योजना

[श्री लक्ष्मण नारायण गर्दे]

प्रेमचन्द भारतीय साहित्य के प्रतिनिधि के रूप में आज हमारा मस्तक विश्व में उन्नत कर रहे हैं। उनके स्मारक की योजना में सहयोग करना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है। —सम्पादक

काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने हिन्दी के सर्व श्रेष्ठ उपन्यासकार श्री प्रेमचन्द जी का स्मारक बनाने का कार्य उठा लिया है। इससे सबको बड़ी प्रसन्नता हुई होगी। विचार यह है कि एक लाख पचीस हजार रुपया लगाकर प्रेमचन्द की जन्मभूमि लमही में उनके उपयुक्त एक भव्य स्मारक बनाया जाय।

यों तो प्रेमचन्द जी का नाम ही उनका सबसे बड़ा और चिरस्थायी स्मारक है, क्योंकि इस नाम में उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व, चरित्र और उनकी महती साहित्यकृति संनिविष्ट है। सहस्रो पाठक-पाठिकाओ के हृदयों मे उनकी स्मृति अखण्ड दीपवत प्रज्ज्वलित है। हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भारतीय साहित्य क्षेत्रों पर भी उनके नाम का प्रकाश पड़ रहा है।

उनके सेवा सदन, प्रेमाश्रम, निर्मला, रंगभूमि, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान आदि उपन्यास एक से एक बढ़ कर हैं। इन सबने समाज में आशा, विश्वास और आत्मबल का सचार कर राष्ट्र के उत्थान में बहुत बड़ा काम किया है। प्रेमचन्द जी की अपनी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सचाइयों का प्रकाश हो,—जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाये नहीं ....प्रेमचन्द जी के उपन्यासों ने यही काम किया है—समाज में अपनी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक दुःस्थिति की अकर्मण्य दशा से हटाकर समुन्नत होने की बेकरारी पैदा की है—साथ ही कोई न कोई आदर्श सामने रखा है जो समुन्नति की प्रेरणा देता है। प्रेमचन्द जी केवल यथार्थवादी नहीं थे, प्रकृति का केवल एक नग्न चित्र सामने रखना उन्हे नहीं भाता था, प्रत्युत किसी आदर्श की संस्कृति से वे उसे सुसस्कृत और सुसज्जित करते थे। इस नाते वे आदर्शवादी थे। उन्होंने स्वयं कहा है, कहानी में वस्तु ज्यों की त्यों रखी जाय तो वह जीवन चरित्र हो जायगी। शिल्पकार की तरह साहित्यकार का यथार्थवादी होना आवश्यक नहीं, वह हो भी नहीं सकता। साहित्य की सृष्टि मानव समुदाय को आगे बढ़ाने-उठाने के वास्ते ही होती है। ... ...आदर्श हो, पर यथार्थ को न भूले तो वह श्रेष्ठ है। ....हमें तो सुन्दर आदर्श भावनाओं को चित्रित करके मानव हृदय को ऊपर की ओर उठाना है। नहीं तो साहित्य की महत्ता और आवश्यकता क्या रह जायगी? प्रेमचन्द जी के औपन्यासिक आत्म-चरित की कुछ झलक इन वाक्यों से मिलती है। उनके उपन्यासों ने यथार्थवाद और आदर्शवाद का यह समन्वय साधा है। इसीलिये उनके उपन्यास केवल मनोरञ्जन नहीं करते, कुछ दे भी जाते हैं। वह चीज स्थायी होती है, उससे ऊपर उठने की प्रेरणा होती है।

एक लेखक ने बहुत ठीक लिखा है कि, "प्रेमचंद की पुस्तकों को पढ़ते हुए ऐसा अनुभव होता है कि भारत माता ने हमें अपनी गोद में उठा लिया है। हम प्रेमचद जी की आवाज में अपने दिल की धड़कनों को सुनते हैं, भारत के आंसू, भारत की हसी, भारत का मिजाज, उसका सुख-दुःख उसका भाग्य, उसका सुहाग, प्रेमचद जी के जादू भरे पृष्ठों में हमें जैसा मिलता है वह अन्यत्र नहीं मिलता। यही कारण है कि हिंदी और उर्दू के अपने सम-सामयिकों मे एकमात्र प्रेमचंद केवल राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुके हैं।"

प्रेमचंद का नाम अपना संपूर्ण कीर्तिगाथा के साथ मरणोत्तर अमर रहेगा। यह अमर जीवन असंख्य लोगों को जीवन-दान देने का काम करता रहेगा।

पर हमारा आपका भी कुछ कर्तव्य है।

हमारे ऊपर प्रेमचद जी का एक ऋण है जिसे चुकाना होगा। हम अपनी भाषा की सुविधा के लिये साहित्यिक ऋण कह सकते हैं। प्रेमचद जी ने जो साहित्य सृष्टि की उसके पीछे उनकी जीवन भर की तपस्या है। बचपन से अन्त तक उन्होंने दरिद्रता के बहुत कष्ट सहे। पर वे अपनी

[शेष पृष्ठ १४ पर]

[पृष्ठ ३ का शेष]

अशांत परिस्थिति के प्रति आर्यसमाज चिन्ता प्रकट करता है। विश्व तृतीय विश्व-युद्ध के कगार पर खड़ा है। अमेरिका-रूस की अहंकार वृत्तियाँ विश्व को किसी भी समय संकट में डाल सकती हैं। प्रसिद्ध दार्शनिक रसेल के शब्दों में ख़ुश्चेव और डलेस दोनों ही मानव जाति के लिए खतरा हैं। सन्त विनोबा के शब्दों में ख़ुश्चेव व आइक की मति मारी गयी है। ऐसी अवस्था में विश्व जनमत की शान्ति की सच्ची भावना और उसके लिए ईश्वर के सहयोग की प्रार्थना ही विश्व को संकट से पार उतार सकेगी। हम वेद के शब्दों में यही प्रार्थना कर सकते हैं 'धियो योनः प्रचो दयात्' प्रभु संकट से विश्व की रक्षा करें।

राजा जी की अंग्रेजी भक्ति

श्री राजगोपालाचार्य ने एक बार फिर अंगरेजी को भारत की भाषा और राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार किये जाने का आग्रह किया है, जो सर्वथा अराष्ट्रीय तथा अनुचित मांग है। उनकी यह मांग भारतीय संविधान का अपमान है और उन्होंने इस मांग को दुहराकर लार्ड मैकाले की उस कल्पना को सिद्ध कर दिया है कि मैं अंगरेजी द्वारा भारत के लोगों को विद्वान् नहीं अपितु काला अंगरेज बनाना चाहता हूं। राजा जी का पिछला इतिहास चाहे कितना ही आदर्श रहा हो परन्तु आज का उनका चलन गलत नेतृत्व ही कहा जायगा, उनके इस आन्दोलन ने भारत को एकता के स्थान पर उत्तर और दक्षिण के भेदों में विभक्त करने में सहायता पहुंचायी है। हम राजा जी की इस माँग का घोर विरोध करते हैं।

आर्य समाज और युवक

समय समय पर इस प्रकार की चर्चा सुनी जाती है कि आर्य समाज में युवक नहीं आ रहे या युवकों का अभाव है इस कथन की सत्यता को हम स्वीकार करते हैं परन्तु हम यह भी बताना आवश्यक समझते हैं कि आज के आर्य समाज में युवकों की विशाल शक्ति विद्यमान है और वह शक्ति आर्यसमाज के शैथिल्य को समाप्त करने के लिए कटिबद्ध है। युवकों को आर्य समाज की ओर आकृष्ट करने की दिशा में सक्रिय प्रयत्न अवश्य किये जाने चाहिए और साथ ही यह भी आवश्यक है कि जो युवक इस समय आर्यसमाज के आंदोलन में संलग्न हों उन्हें अपने हाथ से न जाने दिया जाय। क्योंकि कार्य महान् है और योग्य उत्तराधिकारियों के हाथ में ही उसे सौंपा जाना चाहिए। इस प्रकार आर्यसमाज के युवक आन्दोलन को इस रूप में ग्रहण किया जाना चाहिए कि (१) जो युवक आर्य समाज में सक्रिय हैं उन्हें अधिकाधिक प्रोत्साहन प्राप्त होता रहे और वे अपनी शक्तियाँ आर्य समाज की सेवा में लगाते रहें। उनके लिए अवसर प्रदान किये जांय और उन्हें यह अनुभव कराया जाय कि उनकी शक्तियों का उपयोग करने के लिए हम सदैव आतुर हैं। (२) इसी प्रकार युवकों के दूसरे वर्ग को जो आर्यसमाज से बाहर है, आर्य सिद्धांतों की ओर आकृष्ट करने के शिक्षा-संस्थाओं से सम्पर्क स्थापित किये जांय। आर्य विद्वानों की भाषण मालाओं का केन्द्रीय सभाओं द्वारा व्यापक कार्यक्रम बनाया जाय। युवकों तक वैदिक साहित्य को पहुंचाकर उनके अन्दर बौद्धिक जागरण उत्पन्न किया जाय, ताकि वे पाश्चात्य की मिथ्या मान्यताओं के विरुद्ध भारतीय सिद्धान्तों को समझने के लिए उत्सुक हों। आशा है आर्य नेता और विचारक इस दिशा में गम्भीर चिन्तन करेंगे, हम उनके विचारों की प्रतीक्षा करेंगे।

[पृष्ठ १२ का शेष]

लश्कर, म० प्र०

आ० स० की एक सार्वजनिक सभा में यहाँ की जनता ने सोत्साह प्रतिज्ञा दिवस मनाया। अनेकों प्रमुख आर्य नेताओं के भाषण हुए।

अमरोहा, मुरादाबाद

आ० स० अमरोहा, मुरादाबाद में ससमारोह प्रतिज्ञा दिवस मनाया गया।

औरैया, इटावा

आ० स० औरैया इटावा ने तन मन धन से हिन्दी आन्दोलन की सहायता करने की प्रतिज्ञा की।

बहराइच

आ० स० बहराइच की जनता ने भी हिन्दी रक्षार्थ शासन के साथ संघर्ष करने का निश्चय किया।

कांठ मुरादाबाद

आ० स० कांठ की सार्वजनिक सभा ने निश्चित प्रतिज्ञा प्रारूप को स्वीकार करके सरकार को इसकी प्रतिलिपि भेजी।

दिवानहाल, दिल्ली

आ० स० दिवान हाल दिल्ली में बड़े समारोह से प्रतिज्ञा दिवस मनाया गया। हिन्दी की रक्षार्थ सबों ने प्रतिज्ञा की। आन्दोलन के नेता श्री पं० नरेन्द्र जी हैदराबाद का ओजपूर्ण भाषण हुआ।

[शेष अगले अङ्क में]

संयुक्त परिवार प्रथा उचित या अनुचित

उचित—

उचित और आवश्यक

मैं संयुक्त परिवार के पक्ष में हूं। मेरे विचार में यह ऋषियों की देन है और इसका आधार निष्काम व तपस्वी जीवन पर है। इससे परिवार में ब्रह्मचर्य के पालन में भी सहायता मिलती है। असहयोग प्रथा प्रकृति वादियों ने नकल की है जो जनतंत्र राज्य में सफल नहीं हो सकती। आर्य समाज जो सारे संसार का उपकार करने को बना है वह अपने परिवार में केवल अपना ही स्वार्थ देखकर किसी को कैसे निकम्मा रहने देगा और यदि दैवयोग से कोई रोगी हो जावे तो उसका त्याग करना स्वार्थ और नास्तिकता है।

तलाक् मेरे अपने विचार में वर्तमान सरकार की इस समाज की बहुत बड़ी देन है। मेरा अपना तीस वष का अनुमान है और मैंने ऐसी सैकड़ों देवियों की रक्षा का जिनके पतियों ने दूसरा विवाह कर लिया और वह गुण्डों के पास बहक कर चली गई। इस तलाक से मातृ शक्ति की बहुत रक्षा हुई।

—गंगाराम आर्य
सदर बाजार, झांसी

संयुक्त परिवार की प्रथा लाभप्रद है

मेरे विचार में संयुक्त परिवार की प्रथा वैदिक है। वरवधु को माता-पिता की आज्ञा के उपरान्त ही सब कुछ करना चाहिए। शादी के बाद पृथक परिवार बसाना कहीं नहीं लिखा। मिल जुलकर रहने से उन्नति होती है। वर वधु को माता पिता को कभी छोड़ना नहीं चाहिये। यह कृतघ्नता है। इसी कृतघ्नता के विषय में शेक्सपियर ने लिखा है—

Blow, Blow thou winter wind,
Thou art not so unkind as wan's
Ingratitude.

संयुक्त परिवार प्रथा वैदिक है

विवाह संस्कार के एक मन्त्र में लिखा गया है कि नववधू ससुर के लिए महारानी हो, सास के लिए महारानी हो, ननद के लिए महारानी हो, देवर के लिए महारानी हो, परिवार के अन्य लोगों के लिए महारानी हो। इससे यह सिद्ध है कि सयुक्त परिवार की प्रथा पूर्णतया वैदिक है। विद्वान् लेखक पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय ने लिखा है कि विवाह के अवसर पर कन्या के पिता द्वारा कन्या और वर को पृथक वस्त्र, वर्तन आदि देना यह संकेत करता है कि वे अपना नया परिवार बसावें, पर मेरे विचार से यह सब लौकिक है, वैदिक नहीं है। यह व्यवस्था आपत्कालिक हो सकती है कि यदि किसी कारणवस नव दम्पति को परिवार से पृथक होना पड़े तो उनके लिए सारी व्यवस्था ठोक रहती है। पृथक परिवार से परिवारों की आर्थिक स्थिति भी खराब हो जायेगी। अतः पृथक परिवार प्रथा ठोक नहीं है।

—वेदव्रत वेदोपदेशक
वेदकुटीर, शेरकोट, बिजनौर

लेखकों से निवेदन

लेखकों से निवेदन है कि वे कृपया निम्न शीर्षकों पर अपने संक्षिप्त लेख आर्यमित्र में प्रकाशनार्थ भेजें :—

१—कालमार्क्स और महर्षि दयानन्द। २—विश्व का महान् ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश
३—निरन्तर संघर्ष और तूफानों में अडिग—अजेय महापुरुष दयानन्द।
४—विकासवाद समीक्षा। ५—देव दयानन्द के लिए श्रद्धांजलि।
६—आर्यसमाज का सैद्धान्तिक दृष्टिकोण क्या है ?
७—मानव मात्र का उद्धारक दयालु दयानन्द।
८—वेदोद्धारक दयानन्द। ९—महर्षि दयानन्द के सपनों का आदर्श राज्य।
१०—जीवन के उत्कर्ष का प्रतीक दयानन्द। ११—महर्षि दयानन्द क्या चाहते थे
१२—आर्यसमाज और शुद्धि। १३—ऋषि दयानन्द की आध्यात्मिक देन।
१४—महर्षि दयानन्द द्वारा निर्देशित समाज व्यवस्था।
१५—सत्यं स्वर्गस्य सोपानम्। १६—वेद ज्ञान की महत्ता।
१७—मिट्टी के क्या दीप जलाऊँ ? १८—ऋषि दयानन्द की विशेषताएं।
१९—वैदिक संस्कृति का मूल आधार। २०—गहरे पानी पैठ।

आर्यमित्र में प्रकाशनार्थ सभी रचनाओं की स्वीकृति की सूचना एक सप्ताह के अन्दर ही भेज दी जाती है। स्वीकृति पत्र न मिलने पर लेख को अस्वीकृत समझना चाहिए। अस्वीकृत रचनाएं भविष्य में लौटायी नहीं जायेंगी।

—सम्पादक

अंगरेज जाति की उन्नति का कारण पृथक परिवार व्यवस्था नहीं है बल्कि उसका देश प्रेम, परिश्रम, विद्याभ्यास, संगठन, युवा विवाह आदि है।

—रामानन्द सि० शास्त्री
इटावा

संयुक्त परिवार की व्यवस्था उपयोगी है

मेरी सम्मति में सयुक्त परिवार के लोगों को जितनी ममता अपने परिवार के व्यक्तियों के प्रति होती है, उतनी स्वतन्त्र अंग के दूसरे परिवार पर नहीं होता है। संयुक्त परिवार की उन्नति भी स्वतन्त्र अग से कहीं ज्यादा होती है। क्योंकि परिवार के सभी सदस्य कई किस्म के उद्योग में लग सकते हैं लेकिन परिवार के स्वतंत्र अंग केवल एक उद्योग करते हैं जिससे कि वे अन्य तरह की उन्नति नहीं कर पाते हैं। संयुक्त परिवार से घर के छोटे बच्चे जो आगे होनहार हैं वे भी परिवार के संगठन को देखकर आगे जीवन में संगठन से रहने का शिक्षा ग्रहण करते है। अतः संयुक्त परिवार की व्यवस्था उपयोगी है।

—उदयशंकरसिंह, बखरीदोआ,
खाजिमपुर डुमरिया, मुजफ्फरपुर

अनुचित—

संयुक्त परिवार प्रथा अहितकर है

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान्

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय का यह कहना ठीक है कि संयुक्त परिवार प्रथा अहितकर है। भारत के लोग अपनी आराम तलबी के लिए प्रसिद्ध हैं। क्या आप नहीं देखते कि अपने देश में प्रत्येक परिवार में एक कमाने वाला है तो चार खाने वाले है। उन पर परिवार की कोई चिन्ता ही नहीं। बड़े भाई कमाते हैं और चार छोटे भाई इधर-उधर समय बिताया करते हैं इससे परिवार की दशा खराब हो जाती है। यही कारण है कि आज अधिकांश आराम तलब व्यक्ति अपने परिवार का बोझ बन गये हैं। यदि पृथक परिवार की व्यवस्था होती तो उन्हें भी परिश्रम करके कमाना पड़ता। राष्ट्र से कमजोरी और आलस्य तथा आरामतलबी दूर हो जाती और समाज का आर्थिक स्तर ऊंचा उठ सकता था। अन्य देशों मे पृथक परिवार व्यवस्था को बड़ा महत्व दिया जाता है। अतः वे सुखी हैं। इसका अर्थ आपसी वैमनस्य कदापि नहीं है। हम चाहेंगे कि आर्य समाज के व्यक्ति उदार होकर और भावुकता छोड़कर, अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से इस प्रश्न पर विचार करें। अब कोरे आदर्शवाद का समय नहीं रहा। इस युग में कुछ करना हो तो व्यावहारिक बनना ही पड़ेगा। अतः उपाध्याय जी की उक्ति वैदिक और न्याय संगत है।

—राजेन्द्र कुमार, लखनऊ

पारिवारिक उन्नति में बाधक है

आदर्शवाद और भारतीय परम्परा के नाम पर चाहे जो कुछ भी कहा जाय भावुकता और पारिवारिक मोह के चक्कर में पड़कर चाहे कोई अपना निर्णय जो भी करले, एकता और प्रेम का चाहे मनमाना जो भी अर्थ कोई लगाये पर उपाध्याय जी की इस उक्ति में बल है और यह सत्य दीखता है कि भारत के लिए संयुक्त परिवार की व्यवस्था अहितकर है। यह वैदिक है या नहीं, यह मैं दावे से नहीं कह सकता पर यदि यह अहितकर है तो निश्चय रूप से अवैदिक है क्योंकि वैदिक प्रथाएं अहितकर नहीं हो सकती। आज हम देख रहे हैं कि साधारण आमदनी के परिवारों में अशान्ति और दुख है। इसका कारण संयुक्त परिवार से उत्पन्न अर्थाभाव है और दूसरे पर निर्भर रहने की गलत भावना है। संयुक्त परिवार व्यवस्था ही इस भावना की जननी है।

—राजीव रंजन, दिल्ली

सुझाव और सम्मतियाँ

आर्य वीर दल क्यों ?

विश्व के इतिहास में जितनी भी क्रांतियाँ हुईं, आन्दोलन हुए या संघर्ष हुए इसका आधार अज्ञान, अन्याय, अथवा अभाव ही रहा है। इससे प्रकट है कि यह समाज के तीन शत्रु अशान्ति के कारण हैं तथा इनका उन्मूलन अनिवार्य है। हम संगठन शक्ति द्वारा एक व्यापक सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्रांति करना चाहते है इस क्रांति का क्षेत्र कोई देश अथवा वर्ग न होकर अखिल संसृति एवं पूर्ण मानवता है। अतः इसके सम्पादन हेतु विश्व के मानव मात्र का हम आह्वान करते हैं। एक विशाल सार्वभौमिक संगठन की आवश्यकता है जिसके सदस्य समय पड़ने पर किसी भी प्रकार के त्याग एवं बलिदान से मुख न मोड़ें। इस योजना का साकार रूप आर्यवीर दल ही है।

आर्य वीर दल एक मानवीय क्रांति का सम्पादन करना चाहता है अतः उसका उद्देश्य मानव मानव में एकता एवं प्रेम के भाव जागृत करना है। जैसे जैसे मनुष्य जाति आर्य वीर दल की इस क्रांति की रूप रेखा समझती जायगी वैसे ही वैसे वह स्वार्थ, साम्प्रदायिकता एवं उग्र राष्ट्रवाद का परित्याग करके प्रेम एवं एकता के सूत्र में बंधती जायगी। साथ ही इस संगठन द्वारा युवा शक्ति को वर्ग विशेष, साम्प्रदायिक, संकीर्णता एवं मार्क्सवाद द्वारा प्रतिपादित घोर भौतिकवाद की प्रवंचना से भी बचाया जा सकता है।

इस समय विश्व को सत्य, शिव एवं सुन्दर मार्ग पर लाने वाली एक मात्र संस्था आर्य समाज ही है। इसके पास उच्च आदर्श, व्यवस्थित कार्यक्रम एवं सत्य की रक्षा हित आध्यात्मिक प्रेरणा सन्निहित हैं। परन्तु इन सबको व्यवहार मे लाने के लिये विशाल जन शक्ति विशेष कर युवक शक्ति की आवश्यकता है जिसकी पूर्ति का साधन आर्य वीर दल ही है। अपने आन्दोलनों को सबल एव सफल बनाने के लिए भी आर्यसमाज को पूर्ण वेग से इस सगठन को व्यापक बनाने मे जुट जाना चाहिए। हिन्दी रक्षा आन्दालन को सफल बनाने के लिये भा आर्य वीर दल का जागृत करना अधिक महत्व रखता है।

उपर्युक्त विचारों के आधार पर मैं समस्त आर्य समाजों एवं आर्य प्रतिनिधि सभाओं से अपील करता हूं कि वे आर्य वीर दल के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के सहयोग से दल संगठन का कार्य पूर्ण वेग एवं लगन से प्रारम्भ करें। इसके लिए निम्न लिखित सुझाव सेवा में प्रेषित हैं—

१—प्रत्येक आर्य समाज सप्ताह में एक दिन विशेष रूप से आर्य वीर दल की बौद्धिक गोष्ठी का आयोजन करें जिससे समाज के सब सदस्य अपने परिवार के युवकों एवं बालकों के साथ आवें। इसमें अन्य कार्य क्रमों के साथ दल की विचार धारा के सम्बन्ध में एक व्याख्यान अवश्य हो।

२—दैनिक शाखाओं का आयोजन किया जाय। कार्यकर्ता तैयार करने के हेतु प्रत्येक आर्य समाज एक शिक्षण शिविर का आयोजन प्रतिवर्ष करे।

३—आर्य समाज का प्रत्येक सभासद कुछ आर्थिक सहायता दल संगठन के लिए दे तथा आर्य समाजें अपने बजट में इस कार्य के लिए निश्चित राशि स्वीकृत करें।

४—प्रत्येक आर्यसमाज के पुस्तकालय में आर्य वीर दल की पुस्तकों के कम से कम दो सेट सार्वदेशिक आर्य वीर दल दीवान हाल दिल्ली से मंगा कर रखे जाँय।

५—आर्य प्रतिनिधि सभायें अपने अन्तर्गत आर्यसमाजों को दल सगठन के लिए आदेश पत्र भेजें।

६—आर्य प्रतिनिधि सभायें शिक्षण कार्य के लिए कुछ शिक्षकों की वैतनिक रूप से नियुक्ति करें।

७—आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी जिस समाज में जाँय वहाँ के कार्यकर्ताओं को दल संगठन के लिये प्रेरित करें।

—आदित्य किशोर आर्य
मन्त्री मध्य उ० प्र० आर्यवीर दल
न्यू सिविल लाइन्स, हरदोई

दर्शन की क्षमता

विज्ञान ने आज देश और काल की दूरी बहुत हद तक हटा दी है, हजारों मील की दूरी को आज विज्ञान ने कुछ ही घण्टों में तय करने के साधन प्रस्तुत कर दिए हैं। आँख और कान के लिए आज बहुत हद तक दूर और समीप का भेद नहीं रहा परन्तु यह तथ्य है कि देश काल की दूरी पर विजय पाने वाला मानव दूसरे मानव से पहले की अपेक्षा अधिक दूर होता जा रहा है। इस दूरी को हटाने की क्षमता विज्ञान में नहीं दर्शन में ही है।

—श्री धर्मदेव शास्त्री, दर्शनकेसरी

गुरुकुल वृन्दावन में नये ब्रह्मचारियों का प्रवेश

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन बालकों की शिक्षा के लिए एक उत्तम शिक्षा संस्था है जो स्वल्पतम निर्वाह व्यय में उच्चतम निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करती है। शिक्षा के साथ-साथ वह ब्रह्मचारियों के चरित्र निर्माण पर विशेष बल देती है। गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने वाले बालकों को आश्रम में ही रहना होता है इसलिए उनको अपने गुरुजनों के साक्षात सम्पर्क का अधिकाधिक लाभ उठाने का अवसर मिलता है। गुरुकुल की अधिकारी तथा शिरोमणि परीक्षाएं क्रमशः हाई स्कूल तथा बी० ए० के बराबर मान्य हैं।

ग्रीष्मावकाश के बाद १ जुलाई से गुरुकुल के नवीन शिक्षा-सत्र का कार्य प्रारम्भ हो जायगा। इसी अवसर पर नवीन बालकों का प्रवेश होगा। आठ से दस वर्ष तक की आयु के बालक प्रविष्ट हो सकते हैं भोजन तथा व्यवस्था व्यय मिलाकर २५) रु० मासिक व्यय लिया जाता है। जो महानुभाव अपने बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट कराना चाहें वह पत्र द्वारा सूचना देकर प्रवेश-पत्र मंगा ले और स्थान सुरक्षित करा लें।

हरिशङ्कर शर्म्मा	नरदेव स्नातक एम. पी.
प्रधान	मुख्याधिष्ठाता
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश	गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

पाखण्ड खण्डनी महोत्सव

वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर का प्रस्ताव

'सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि आर्य विरक्त (वानप्रस्थ सन्यास) आश्रम ज्वालापुर की अन्तरङ्ग सभा आज दिनांक २ जुलाई सन् ५८ को निश्चय करती है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा तथा अन्य आर्य प्रतिनिधि सभाओं का ध्यान इस ओर आकर्षित किया जाए कि सन् १८६८ ई० में आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने हरिद्वार में कुम्भ पर्व के अवसर पर पाखण्ड खण्डनी पताका फहराई थी और अवैदिक मतमतान्तरों का खण्डन विशेष रूप से आरम्भ किया था अतः इस पुण्य ऐतिहासिक घटना का शताब्दी उत्सव १९६८ ई० में अथवा निकटवर्ती कुम्भ पर्व पर हरिद्वार में मनाया जाना चाहिए। और हरिद्वार में आर्य समाज के एक भव्य मन्दिर का निर्माण भी इससे पूर्व हो जाना इस सभा की दृष्टि में परमावश्यक है। अतः प्रान्तीय एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से प्रार्थना की जाय कि वे इस दिशा में प्रयत्न शील हों।

—श्री देव वानप्रस्थी

हिन्दी रक्षा आन्दोलन के अधिकारियों से

यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई है कि पंजाब में राष्ट्र भाषा हिन्दी के उद्धारार्थ आप लोग पुनः हिन्दी रक्षा सत्याग्रह का बिगुल बजाने वाले हैं। इस सूचना को सुनकर सोई हुई आत्मा जग गई है। मेरी सम्मति है कि इस बार यह सत्याग्रह चण्डीगढ़ में न करके दिल्ली में ही प्रधान मन्त्री पं० जवाहर लाल नेहरू की कोठी पर हो क्योंकि इसी दुर्योधन ने द्रोपदी रूपी राष्ट्र भाषा हिन्दी माता का अपमान दुःशासन रूपी कैरों से पंजाब में करवाया है। नहीं तो कैरों जैसे नादान का क्या अधिकार या साहस कि राष्ट्र भाषा हिन्दी का अपमान पंजाब में कर कराकर कोटि कोटि हिन्दी प्रेमी जनता को मार्मिक ठेस पहुँचाता। जबकि संविधान द्वारा राष्ट्र भाषा हिन्दी स्वीकृत है। दिल्ली में सत्याग्रह करने से भांति भांति की सुविधाएं हैं। यह अनुभव की बात है क्योंकि गत वर्ष मैं तीन बार चण्डीगढ़ में सत्याग्रह कर चुका हूं।

हिन्दी भाषा का शुभचिन्तक
वेदव्रत वाचस्पति,
स्वाध्याय मण्डल, पारडी, (सूरत)

आर्य देवी की आवश्यकता

मेरे एक अग्रवाल वैश्य मित्र के लिए (जिनकी अवस्था ३५ वर्ष है। पहली पत्नी से एक कन्या २ वर्ष की है) एक आर्य विधवा की आवश्यकता है, सम्बन्ध वैश्य मात्र में हो सकता है। महिला साधारण परिवार की एवं साधारण पढ़ी लिखी होनी चाहिए।

प्रेम फार्मेसी श्रीनगर रोड, अजमेर

मुण्डा जाति एवं ईसाई मिशनरी

[श्री पं० रामानन्द शास्त्री, उपप्रधान, बिहार सभा]

●

बिहार राज्यान्तर्गत रांची जिले में मुण्डा जातियों के बीच ईसाई मिशनरियों का सम्प्रति घोर जाल बिछा हुआ है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी अभेदानन्द जी महाराज इन दिनों इस क्षेत्र का दौरा कर रहे हैं। आर्य जगत् को सामूहिक रूप से इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए अन्यथा लेखक के शब्दों में रामकृष्ण के वंशज विधर्मी हो जायेंगे।

—सम्पादक

बिहार के रांची जिला में 'मुण्डा' नामक एक आदिम जाति(तथाकथित) निवास करती है। यह देखने में सौम्य स्वस्थ एवं सुन्दर है। इस जाति के पुरुषों एवं स्त्रियों के होठोंपर हमेशा मुस्कान रहती है, बातें करने में इनके मोती के समान दांत चमकते रहते हैं। इनको बालों से बहुत शौक है। जिस दिन हटिया (बाजार) लगता है उस दिन अपने केशों को विशेष सजाते हैं नवयुवती स्त्रियां केशों को बांध कर, जूड़ा में पुष्पों का विन्यास करती है। पुष्पों से इनको विशेष प्रेम है। इस लिए विविध पुष्पों का अनेक विध आभूषण बनाकर इनकी लड़कियां ऋषि कन्याओं के समान पहने निर्भय होकर वनों और पहाड़ों में विचरती हैं। सदाचार इनका धन है। इनकी आवश्यकतायें बहुत कम हैं। अतः वे केवल नमक भात खाकर प्रसन्न रहते हैं। हँड़िया (एक प्रकार का भात से बनाया गया हल्का शराब) इनका सोम रस है। इसके बिना कोई मुण्डा रह नहीं सकता है।

मुण्डा लोगों की अपनी भाषा है जिसे मुराडारी कहते हैं। इस भाषा के सुन्दर पुष्पों में ये सर्वदा नदी, पहाड़ों के गीत गाते है। मुण्डा अपने को सूर्यवंशी कहते है,अतः अपने भगवान राम के वंशज होने का गौरव करते हैं। दिनांक ११ जुलाई १६५८ की मुण्डा सभा में भाषण करते हुए श्री वीरसिंह मुण्डा एम० एल० ए० ने कहा कि हम ही भगवान राम के वंशज है। क्योंकि हमारे आदमी अपने कन्धे पर बाणों के तूणीर तथा हाथ में धनुष धारण करते है। हमारी जाति की अनेकों सीता अभी वनों में लवकुश लेकर वाल्मीक (बेंम्रट) का सेवन कर रही हैं। इस बात पर मुण्डा लोगों ने करतलध्वनि से इसका स्वागत किया। इन पंक्तियों का लेखक उस समय वहीं उपस्थित था। आगे चलकर पुनः श्री वीरसिंह जी ने कहा कि हम ही कृष्ण के वंशज है क्योंकि हमारे लड़के अभी वनों में गाय चराते हुए वंशी की ध्वनि टेरते हैं उनकी आकृति आगे पीछे पैर तीसी पुष्प के समान श्यामरंग वासुदेव कृष्ण की मुरली की याद दिलाते हैं।

मुण्डा अपने मृतक शव को जलाते हैं, अब तो गाड़ने की भी परिपाटी चल पड़ी है, लेकिन पहले मुख में आग की बत्ती दे देते हैं। यह गाड़ने वाली प्रथा गरीबी के कारण चल पड़ी है। मुण्डा जाति देशभक्त है। इसी जाति ने १८५७ में विरसा मुण्डा को पैमाल किया। जिसने अपनी जाति को उभाड़ कर अंग्रेजों के विरुद्ध खड़ा किया इसलिए अंग्रेज हमेशा इन्हें सतर्क दृष्टि से देखते थे तथा इन्हें निर्बल बनाने की कोशिश करते थे। अंग्रेजों के काल में इनका बड़ा शोषण हुआ। अब इनमें गरीबी सीमित क्रान्त हैं। ईसाई अमेरिकन रोमन कैथोलिक मिशनरियाँ इनकी गरीबी से पूरा लाभ उठा रही है। ईसाइयों ने इस क्षेत्र में बैंक खोल रखा है। इस बैंक से मुण्डाओं को ऋण देते है, सम्पूर्ण रुपया सूद में वसूल कर मूल हमेशा उनके सिर पर रखते हैं तथा कहते हैं कि ईसाई हो जाओ तो तुम्हें माफ कर देंगे। सैकड़ों मुण्डा इस प्रलोभन के कारण क्रिस्तान हो जाते हैं। इस समय बिहार में अकाल पड़ा हुआ है विदेशी मिशन इससे पूरा लाभ उठा रहा है, वह मुफ्त में गेहूं चावल तथा दूध का पाउडर बाँटकर क्रिस्तान बना रहा है। ईसाई पादरी इनके बच्चों को स्कूल में ही फुसलाकर क्रिस्तान बनाने का यत्न करते हैं। मुण्डा ईसाइयों के इस षडयन्त्र से परेशान हो गये हैं। मुण्डा महासभा ने एक स्वर से यह नारा लगाया कि ईसाई पादरी छोटा नागपुर छोड़ दें।

मुण्डा नेता श्री मुचीराय मुण्डा वकील (खूंटी) तथा श्री श्यामचरण तुबिद् (हो) ने सरकार से कहा है कि सरकार बहुत जल्द इन अमेरिकन पादरियों को हटा ले। इनका कोई अधिकार नहीं है कि वे स्कूल की सीमा मे गिरजाघर बनवावें। यदि धर्म निरपेक्ष राज्य के स्कूल में गिरजा घर बनता है तो शिव मन्दिर तथा कृष्ण मन्दिर क्यों नहीं बन सकता है?

बन्दगांव (सिंहभूमि) के विष्णु मुण्डा ने १८-४-५८ को एक केश फादर नेंश के विरुद्ध में दायर किया कि फादर नेंश हमारे नाबालिग बच्चों तथा मेरी लड़की को फुसलाकर ईसाई बनाते है तथा हमारे धर्म को गाली देते है। इस केश की पूरी जांच हुई। दोनों ओर से गवाहियों एव बहस के बाद कोर्ट ने फादर नेंश को दोषी पाया तथा डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर के न्यायालय ने भी यही फैसला किया। इतना होते हुए भी हमारी वर्त्तमान भारत सरकार इस पर कार्यवाही नहीं करती है यह दुर्भाग्य का विषय है।

सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान श्री स्वामी अभेदानन्द जी इन क्षेत्रों का दौरा कर रहे है। आशा है आर्यजगत् का ध्यान इधर जायेगा। पहले इधर श्रद्धानन्द ट्रस्ट के कार्यकर्ता काम करते थे किन्तु इस समय उनका काम ठप पड़ा हुआ है। अब यह कार्य प्रारम्भ करना चाहिये।

अब आर्यजगत् को पुनः एक बार 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की दुन्दुभि इधर बजानी चाहिये। अन्यथा राम, कृष्ण के वंशज विधर्मी हो जायेंगे।

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा देहली की धार्मिक परीक्षायें

प्रत्येक आर्य समाज तथा प्रत्येक आर्य विद्यालय में अनिवार्य रूप से केन्द्र रहे और पूरा यत्न किया जावे कि प्रत्येक आर्य सदस्य तथा प्राइमरी से ऊपर की कक्षाओं के छात्र और छात्राएं इनमें से किसी न किसी परीक्षा में सम्मिलित हों।

परीक्षा श्रावणी (रक्षाबन्धन) तथा अगले दिनों में दि० २६ अगस्त १६५८ को दिन में १० से १ बजे तक होगी। परीक्षार्थी सूची और शुल्क नीचे लिखे पते पर १ अगस्त १६५८ तक अवश्य आ जाने चाहिए। पुस्तकें भी यहाँ से भेजी जा सकती हैं।

नियमावली

(सन् १६५७ से पुनः परिवर्तन पर्यन्त)

१—किसी भी परीक्षा में कोई भी बैठ सकता है किन्तु मुख्यतः ये परीक्षाएं छात्र छात्राओं एवं आर्य सदस्यों के लिए हैं।

२—कम से कम ५ परीक्षार्थी होने पर किसी विद्यालय के आचार्य या आर्य समाज के प्रधान की अध्यक्षता मे केंद्र स्थापित किया जा सकता है।

३—परीक्षाएं प्रति वर्ष श्रावणी पूर्णिमा तथा शिवरात्रि पर ली जावेगी। आवेदन-पत्र शुल्क सहित साधारणतः एक मास पूर्व भेजना चाहिए।

४—परीक्षाएं आर्य सिद्धान्त विषय में होंगी। परीक्षाओं की उपाधि, शुल्क आदि का विवरण निम्नलिखित है।

नाम उपाधि	शुल्क	प्रश्न-पत्र
आर्य सिद्धांत विशारद	१)	१
आर्य सिद्धांत भूषण	२)	२
आर्य सिद्धांत रत्न	३)	३

५—उत्तीर्ण छात्रों को उपाधि तथा प्रमाण पत्र सभा की ओर से सार्वदेशिक सभा के प्रधान के हस्ताक्षरों से युक्त प्रदान किये जायेंगे। सर्वप्रथम परीक्षार्थी को विशेष पुरस्कार के अतिरिक्त प्रत्येक केन्द्र के सर्वोत्तम परीक्षार्थी को भी विशेष पुरस्कार दिया जायेगा।

६—प्रत्येक प्रश्नपत्र का पूर्णाङ्क १००, उत्तीर्णाङ्क तृतीय श्रेणी म ३३ से ४४ तक, द्वितीय श्रेणी में ४५ से ५६ तक, प्रथम श्रेणी मे ६० से १०० अङ्क तक।

७—परीक्षा का माध्यम हिन्दी होगा। आवश्यकतानुसार अन्य भाषाओं के लिए विशेष अनुमति लेनी चाहिए।

पाठ-विधि

१—आर्य सिद्धांत विशारद (१ प्रश्न पत्र पूर्णांक १००)

[१] पंचमहायज्ञविधि (सन्ध्या अर्थ सहित तथा हवन मत्र दैनिक)

[२] आर्योद्देश्यरत्न माला [३] व्यवहारभानु

[४] महर्षि का स्वकथित जीवन चरित्र

२—आर्य सिद्धांत भूषण (२ प्रश्न पत्र पूर्णाङ्क २००)

प्रथम प्रश्न पत्र—सत्यार्थप्रकाश पूर्वार्द्ध

द्वितीय प्रश्न पत्र—सत्यार्थ प्रकाश उत्तरार्द्ध

तृतीय प्रश्न पत्र—आर्य सिद्धान्त पर निबन्ध

—मन्त्री, सार्वदेशिक विद्यार्य सभा
रायबरेली

राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रचार

मद्रास विश्वविद्यालय में हिन्दी की लोकप्रियता

[श्री एस० शंकर राजू नायडू, अध्यक्ष हिंदी विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय]

आज राष्ट्रभाषा हिन्दी की लोकप्रियता और मान्यता के सम्बन्ध में दक्षिण भारतीयो के विरोध का उल्लेख किया जाता है और कहा जाता है कि मद्रास के लोग हिन्दी को नहीं चाहते, प्रस्तुत लेख में विद्वान् लेखक ने मद्रास में हिंदी की ओर जनता का आकर्षण का एक चित्र प्रस्तुत किया है। मद्रास विश्वविद्यालय की हिन्दी के प्रति आरम्भ की गई उपर्युक्त सेवाओं के लिए वह हम सबकी बधाई और प्रशसा का पात्र है। आशा है इन सेवाओं के द्वारा दक्षिण की जनता हिन्दी के सच्चे एवं राष्ट्रीय स्वरूप का दर्शन कर सकेगी और राष्ट्रीय एकता की समृद्धि के लिए हिन्दी को वहाँ के लोग अपना सकेंगे।

—सम्पादक

मद्रास विश्वविद्यालय ने १९२३-२४ में पहली बार हिन्दी के विषय में परीक्षा प्रारम्भ की। यह परीक्षा इण्टर मीजिएट की थी। इसके बाद १९२९-३० में बी०ए० खण्ड २, १९३९-४० में बी०ए० खण्ड ३, १९३५-३६ में प्राच्य उपाधि तथा १९४९-५० में बी० ए० आनर्स व एम०ए० की परीक्षायें आरम्भ की गई। इस समय ५४ कालेजों में हिन्दी की विभिन्न कक्षायें चल रही हैं। इसके अलावा बहुत से प्राइवेट विद्यार्थी भी हिन्दी की परीक्षाओं में बैठते हैं। यह उल्लेखनीय है कि विश्वविद्यालय मे पढ़ाई जाने वाली भाषाओं में हिन्दी ही सबसे लोकप्रिय हुई है।

मार्च १९५६ मे हिन्दी की परीक्षाओं में बैठने वाले विद्यार्थियों की संख्या इस प्रकार थी :—

इण्टरमीजिएट खण्ड २	११७२
" " ६ उच्चतर	७
" " ३ निम्नतर	१८
बी० ए० खण्ड २	३८३
बी० ए० खण्ड ३	८
बी० काम	६५२
प्राच्य उपाधि डाइटिल (ओरिएंटल डिग्री)	१०
एम०ए०	१०

इस प्रकार हिन्दी की विभिन्न परीक्षाओं मे कुल २५४५ विद्यार्थी बैठे और १११८ उत्तीर्ण हुए।

हिन्दी के अध्ययन विशेषकर हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओ के तुलनात्मक अध्ययन का महत्व बढ़ता जा रहा है। इसे ध्यान में रख कर मद्रास विश्वविद्यालय ने ४ अप्रैल १९५५ को हिन्दी मे शोध के लिए प्राच्य गवेषणा-संस्थान में एक पृथक विभाग खोला है। मद्रास मे हिन्दी शिक्षा और अध्ययन को इससे बहुत बढ़ावा मिला है।

'तिरुवकुरल' (दूसरी सीता) और 'कम्ब रामायणम्' (बारवीं शती) तामिल के दो गौरव ग्रन्थ हैं। 'शिलप्य दिकारम' की खोज पहली शताब्दी में हुई और यह तामिल का पहला महाकाव्य माना जाता है। अतः हिन्दी विभाग ने इसके अध्ययन और संस्कृत तथा हिन्दी के महाकाव्यों से इनकी तुलना पर विशेष ध्यान दिया है। 'तिरुवकुरल' नीति के उपदेशों का भण्डार है। इसकी सूक्तियों की तुलना कालीदास की सूक्तियों तथा बिहारी और हिन्दी के अन्य कवियों की सूक्तियों से की गई हैं।

तुलसोक्त 'रामचरित मानस' की तुलना तामिल को 'कम्ब रामायणम्' से की गई है। रामचरित मानस और 'कम्ब रामायणम्' दोनों में अनेक स्थल बाल्मीकीय रामायण से भिन्न हैं। यह उल्लेखनीय है कि 'रामचरित मानस' और कम्ब रामायणम्' दोनों में 'बाल्मीकीय रामायण की कथा से प्रायः एक से विचार लिये गये हैं। इससे इन दोनों महाकवियों की समान विचार धारा का पता चलता है। सबसे अधिक समानता विवाह के पूर्व राम और सीता के प्रेम के चित्रण में है। विभाग के पहले प्रकाशन में दोनों महाकाव्यों के ऐसे उद्धरणों का तुलनात्मक अध्ययन है। विभाग ने 'शिलप्य दिकारम का हिंदी सारांश प्रकाशित किया है। तामिल की 'आंडाल' और हिन्दी की 'मीराबाई' के तुलनात्मक अध्ययन की काफी गुन्जाइश है, क्योंकि दोनों ही कृष्ण भक्त हैं। अतः 'आंडाल' और 'मीराबाई' पर विभाग में खोज हुई है और प्राच्य शोध-विभाग की पत्रिका में इस पर निबन्ध भी छपे हैं।

तामिल साहित्य का संक्षिप्त इतिहास और उसकी आधुनिक प्रवृत्तियाँ, भक्ति सम्प्रदायों का विकास विशेषतः दक्षिण भारत में और शैव दर्शन तथा शैव सन्त, आदि इस विभाग की शोध के मुख्य विषय हैं। बुन्देलखंडी और छत्तीस गढ़ी हिन्दी की इन दो बोलियों पर भी भाषा शास्त्रीय शोध की जा रही है। महाकवि चन्द्रवरदाई भूषण और सूरदास का भी विशेष अध्ययन हो रहा है।

हिन्दी शोध विभाग में भारत सरकार से वृत्ति पाने वाले एक जर्मन छात्र हिन्दी और जर्मन व्याकरणों का तुलनात्मक अध्ययन कर रहे हैं। एक शोध छात्र आंडाल और मीरा का तुलनात्मक अध्ययन कर रहा है। आशा है कि शोध छात्रों की संख्या बढ़ेगी और शीघ्र ही विश्वविद्यालय में हिंदी एम० ए० की नियमित कक्षायें लगने लगेंगी।

मद्रास विश्वविद्यालय से अब तक इतने प्रकाशन हुए हैं :—कम्बर और तुलसी अथवा 'रामायण में राम सीता पूर्व राम, तिरूवल्लुवर और हिन्दी के सूक्तिकार (छप रही है) तिरूवकुरल कबीर से तुलना (तामिल के पयिरम छन्द का हिन्दी के समवृत्त सहित) एनलस आफ ओरिएन्टल रिसर्च, तिरुवकुरल और बिहारीलाल का प्रेम वर्णन, तथा आंडाल और मीरा एनलेस आफ ओरिएन्टल रिसर्च। इस प्रकार मद्रास विश्वविद्यालय राष्ट्र के नवनिर्माण काल में राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में प्रशंसनीय सहयोग कर रहा है।

चयनिका

आनन्द

सुख और आनन्द ऐसे इत्र हैं जिन्हें जितना अधिक दूसरों पर छिड़कोगे उतनी ही सुगन्ध तुम्हारे भीतर आयेगी। —इमर्सन

अनुभव

स्वयं अपने को लेकर मैं प्रतिदिन यही अनुभव करता हूं कि मेरे भीतर और बाहरी जीवन के निर्माण में कितने अगणित व्यक्तियों के श्रम और कृपा का हाथ है। इस अनुभूति से उद्दीप्त मेरा अन्तःकरण कितना छटपटाता है कि मैं कम से कम इतना तो दुनिया को दे सकूं जितना कि मैंने उससे अभी तक पाया है। —आइंस्टीन

अग्रणी

अग्रणी वही हो सकता है जिसका अपना हित दूसरों के हित कार्य में ही हमेशा सन्निहित हो। —महाभारत

हंसी

यदि कोई कहे कि भूमि मेरी सम्पत्ति है तो भूमि हंस देती है। कंजूस को देखकर धन हंस पड़ता है और रण से डरने वाले को देखकर काल अट्टहास कर उठता है। —तेलगू सन्त कवि वेनम्ना

चंचलता

पानी जैसी चंचलता से मनुष्य ऊंचा नहीं उठ सकता। —बर्क

ठोकर

ठोकरें सिर्फ धूल उड़ाती हैं जमीनसे फसलें नहीं। —रवीन्द्रनाथ टैगोर

मन्थन या संघर्ष

'मैं मन्थनवादी बनूंगा संघर्षवादी नहीं।'

'जीवन में विरोधी तत्वों के साथ मन्थन होना चाहिए संघर्ष नहीं।'

'मन्थन से निर्माण होता है संघर्ष से विनाश।'

'मन्थन से मक्खन निकलता है संघर्ष से स्वाहा (राख) होता है।'

'मन्थन निस्सार को पृथक् कर दही को सारांश विशुद्ध नवनीत में परिणत कर देता है।'

निर्णय करो-जीवन में किसको अपनाओगे, संघर्ष को या मन्थन को।

—मुनि श्री पुष्पराज जी

—संग्रहकर्ता रामगोपाल त्यागी

रत्न कण

विद्वान् की स्याही शहीद के खून से अधिक कीमती होती है। —बाइबिल

\+ + +

व्यवहार एक दर्पण है जिसमें प्रत्येक अपना प्रतिविम्ब देखता है। —गेटे

\+ + +

जो तुम से घृणा करे तुम उसकी भलाई करो। —ईसा मसीह

\+ + +

जो अपने ऊपर शासन नहीं करेगा वह हमेशा दूसरों का गुलाम रहेगा। —गेटे

\+ + +

पुरुषार्थी वह है जो भाग्य की रेखायें भी मिटा देता है। —शीलानाद

\+ + +

गर्व की भावना से देवता दानव बन जाते है और विनय से मानव देवता। —अगस्टाइन

\+ + +

पाप छिपा नहीं रहता वह मनुष्य के मुख पर लिखा रहता है। —महात्मा गांधी

\+ + +

हृदय के उस स्वाभाविक झुकाव को मित्रता कहते हैं जो दो मनुष्य के बीच पारस्परिक हित और आनन्द की वृद्धि के लिए होता है। —एडिसन

सामयिक समस्याएँ

वैदिक शासन का स्वरूप

[आचार्य—श्री पं० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ]

वैदिक राज्य व्यवस्था के व्यावहारिक स्वरूप के सम्बन्ध में पूर्व लेख में कुछ विचार प्रकट कर चुका हूं। उसी प्रकरण में कुछ प्रश्नों द्वारा यहां विश्लेषण किया जाता है जिससे वदिक शासन को समझने में सहायता मिलेगी। विधर्मियों के संसर्ग से आज हमारे देश की व्यवस्था में अनेक दोष आ गये हैं। वैदिक शासन पद्धति के कारण ये संसर्ग दोष दूर हो सकेंगे।

प्रश्न—धर्म परिवर्तन के सम्बन्ध में क्या रहेगा ?

उत्तर—स्वेच्छा से कोई भी अपना धर्म परिवर्तन कर सकेगा पर अत्याचार न सहा जा सकेगा।

प्रश्न—शुद्धीकरण का क्या होगा?

उत्तर—जो जिस धर्म में आयगा वह उस धर्म के नियमों के अनुसार उसमें प्रविष्ट होगा।

प्रश्न—यदि वैदिक शासन रहेगा तो क्या अन्य धर्मी अथवा विधर्मियों के ऊपर जबरदस्ती वैदिक धर्म तो नहीं लादा जायगा

उत्तर—कभी नहीं, कभी नहीं, जब हमारे प्राचीन पूर्वजों का शासन था तब भी शासन धर्म सहिष्णुता के नियमानुसार उदार रहा। राजनीति में भी वह उदार रहा। उसने विजय यात्राएं तो कीं पर विजय हो जाने के पश्चात् जिसका राज्य था उसी को सौंप दिया। इसका साम्राज्य तो था पर ब्रिटिश शासन जैसा अन्यों के राज्यों को अपने राज्य में मिलाकर स्वराज्य को विस्तार करने का साम्राज्य नहीं था। इसी साम्राज्य लालसा के कारण वर्तमान राष्ट्रों को बड़ी बड़ी सेनाएँ रखनी पड़ती थीं जिन पर असंख्य धन व्यय होता था।

प्रश्न—यदि भारत पर कोई आक्रमण करे तो ?

उत्तर—स्व राष्ट्र स्वार्थ लड़ेंगे, शत्रु को परास्त करगे और वशवर्ती हो जाने पर क्षमा कर देंगे किन्तु जैसे पाश्चात्य राष्ट्रों ने जर्मनी की दशा की ऐसा नहीं करेंगे।

प्रश्न—व्यापार में कैसी नीति रहेगी ?

उत्तर—स्वार्थवश संरक्षण नीति रखनी पड़ती है। हमारा व्यापार मुक्त द्वार और स्वतन्त्र रहेगा।

प्रश्न—विदेशी नीति कैसी रहेगी?

उत्तर—धर्मानुसार रहेगी न हम अत्याचार करेंगे, न सहेंगे। प्रत्येक राष्ट्र के साथ न्याय नीति से बर्तेंगे।

प्रश्न—आपके वैदिक धर्मी राज्य का संविधान कैसा रहेगा ?

उत्तर—सर्वथा पौरस्त्य पद्धति का, उसमें धर्म शून्य कुछ नहीं रहेगा, सब कुछ धर्मानुसार होगा।

प्रश्न—शिक्षणालयों में धार्मिक शिक्षा दी जायगी क्या ?

उत्तर—अवश्य।

वैसे तो वैदिक पद्धति की धर्म शिक्षा रहेगी। मुख्य शिक्षणालयों विद्यापीठों को हिदायत रहेगी कि विद्यापीठों में जिन जिन धर्म के छात्र पढ़ते उन उन धर्मियों के धर्म ग्रन्थों का भी ध्यान रहे। सब धर्मों के मुख्य मुख्य तत्वों को जान सकें ऐसी व्यवस्था रहेगी। विधर्मी अपनी विशेष धर्म शिक्षा देना चाहें तो अपने स्वतंत्र शिक्षालय विद्यापीठ खोलें, राज्य की ओर से कोई किसी प्रकार का प्रतिबन्ध न रहेगा। वर्तमान युग के अनुसार ऐसी व्यवस्था अपरिहार्य है। इस प्रकार ये मोटी मोटी बातें रहेंगी वैदिक स्वराज्य अथवा वैदिक शासन में।

सच्चा मित्र वही है जो साहस के साथ हमारी भूलों को बताता है। वह बुद्धिमान है, क्योंकि वह हमारे उन अवगुणों को जानता है, जिन्हें हम स्वयं अनुभव नहीं कर सकते। वह विश्वासी है क्योंकि वह खुशामद में नहीं भूलता, साफ साफ कह डालता है। —फेल्थम

\+ + +

मित्र बनाते समय जल्दी नहीं करनी चाहिए और मित्र बन जाने पर उसे स्थाई बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। —सुकरात

—सं० क० विद्युत्प्रभा

कहानी-कुञ्ज

सुधारवादी कथा

धांधू

[श्री राजेन्द्रनाथ तिवारी 'तृषित' सम्पादक 'साहित्य दूत' कानपुर]

फलित ज्योतिष और ग्रह पूजा के चक्कर में पड़कर आज भी हजारों व्यक्ति अपने तथा अपने परिवार को परेशान कर रहे हैं। इसी का एक चित्रण इस कहानी में पढ़िए।
—सम्पादक

चार वर्ष पूर्व के मुनीम ज्वालाप्रसाद उर्फ धाँधू को आज सभी भूल गये। वे दिन भी थे, जब मुनीम ज्वालाप्रसाद को धन्धे से फुरसत ही न मिलती थी। दो-दो जगह काम करते थे और खुशहाल थे। मित्रों की कमी न थी। शत्रु भी मित्र बन गये थे। स्थिति यह थी कि आज यहाँ दावत कल वहाँ, दिन इसी प्रकार बीत रहे थे।

मुनीम ज्वाला प्रसाद एक दिन अपने एक परम मित्र के घर से दावत के बाद लौट रहे थे। रात्रि के लगभग साढ़े बारह का समय था। रिक्शा द्वार पर खड़खड़ाता हुआ आ रुका। मुनीम ज्वाला प्रसाद डगमगाते कदमों से नीचे उतरे, और एक रुपये का नोट फेंकते हुए आगे बढ़ गये, रिक्शे वाला चला गया।

अभी आगे बढ़कर जीने की सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे, कि एकाएक पेट में गुल्म उठा, और वे बेचैन हो पेट पकड़कर वहीं बैठ गये। पीड़ा के कारण आवाज भी न निकलती थी अब पीड़ा कुछ कम हुई तो आगे बढ़े और द्वार थपथपाया।

द्वार खुला अन्दर गये, और आकर चारपाई पर लेट गये, तो उठना कठिन हो गया। दो दिन बीते, और फिर सप्ताह हुआ, इसी प्रकार बीत गये तीन महीने। मुनीम ज्वालाप्रसाद बीमारी के कारण सूखकर पीले हो गये। तीन महीने की बीमारी में डाक्टरों ने उन्हे खोखला कर दिया। नौकरी भी जाती रही, और अब स्थिति यहाँ तक उपस्थित हुई कि खाने पीने तक के लाले पड़ने लगे।

लगभग एक माह तक इधर-उधर से कर्ज लेकर काम चलाया। बड़ी कठिनाइयों के बाद चालिस रुपये माहवार की एक नौकरी मिली। कार्य करने लगे। थोड़े ही दिनों में कर्ज निपट गया, और मुनीम ज्वालाप्रसाद के दिन फिर से अच्छे बीतने लगे।

उनका एक बेटा था लगभग छः वर्ष से लापता था। एक दिन अचानक लौटकर आ गया। ज्वालाप्रसाद के हर्ष का ठिकाना न था बेटे को देखकर। दिन अच्छे बीत रहे थे। थोड़े ही दिनों बाद बेटे को भी एक पचास रुपये की नौकरी मिल गई। और अब तो मुनीम ज्वाला प्रसाद बड़े-बड़े स्वप्न देखने लगे।

बेटा नई रोशनी में पला था। उसने घूम फिर कर बहुत कुछ देखा था नव जवान था। रङ्ग-बिरंगे सुनहरे स्वप्न देखा करता था उड़ने लगा उन्हीं में धीरे-धीरे।

मुनीम ज्वाला प्रसाद के हाथ-पैर थक चले थे, फिर अब आँखों से दिखाई भी कम देता था। चश्मा तो बहुत दिनों से लगाते थे, पर लगता था जैसे चश्मा भी अब काम न देगा, और हुआ भी यही।

एक दिन वे काम कर रहे थे। हिसाब मे भूल हो गई यह आज उन की पहली भूल न थी। कई बार भूलें कर चुके थे, परन्तु इस बार की भूल ने इनकी रोजी पर ही आघात किया और नौकरी से हाथ धोना पड़ा।

मुनीम ज्वाला प्रसाद अब बेटे की रोटियों पर दिन गुजारने लगे। थोड़ा सा, धन बचा पाये थे किसी प्रकार उसे बुढ़ापे के लिए छोड़ रक्खा था।

नई रोशनी और नये समाज में पले हुए बेटे के पास कुछ खर्च अपना भी निजी था, वह न दबा सका उसे और बाप-बेटों में अनबन रहने लगी, बेटे के कदम बहक चले, रात-रात उसका पता न रहने लगा।

मुनीम ज्वाला प्रसाद ने बेटे के पैरों मे बेड़ियां पहना उसे रास्ते पर लाने का विचार किया, और धूम-धाम से बेटे का विवाह हुआ, बचाया हुआ धन भी समाप्त हो गया।

वधू घर आई। दिन बीतने लगे आपका साधन पुराना, वस वही पचास रुपया माहवार और व्यय नित नये-नये, आज यह नहीं, कल वह नहीं दिन दिन उलझन और कलह बढ़ने लगी, और फिर एक दिन वह चुपचाप घर छोड़कर पत्नी के साथ चला गया, इस कलह की दुनियाँ से दूर। जिसने भी सुना उसा ने भला-बुरा कहा।

मुनीम ज्वाला प्रसाद को रोटियों के अब फिर लाले पड़ने लगे। आज भोजन मिल गया तो दो दिन तक कोई ठिकाना नहीं। कहीं कुछ थोड़ा सा काम करते तो रोटी मिलती, अन्यथा बैठे हैं। फिर वे अकेले न थे, अस्सी वर्ष की बूढ़ी माँ का पोषण भी उन्हें करना पड़ता था। पत्नी की मृत्यु हुये आज बीस वर्ष होने को आये, अच्छा तो यही हुआ कि उन्होंने अपना दूसरा विवाह न किया, अन्यथा आज न जाने क्या गुजरती।

ऐसी स्थिति में मकान किराया चार महीने का छत्तीस रुपया ऊपर चढ़ गया, और मकान छोड़ना पड़ा। मकान काफी समय से था इसलिए किराया कम था, पर छोड़ना ही पड़ा पास पैसा था नहीं, कि मुकदमा ही लड़ते।

बेकार, कोई सहारा नहीं और विवश हो बीस रुपये माहवार का मकान लेना ही पड़ा। अब समस्या यह है कि किराये तथा खाने के भी लाले, पर काम का कोई सहारा नहीं, और न कोई रास्ता ही।

समस्याओं में उलझे बैठे थे। एक दिन विचार आया गृह नक्षत्र आदि ही दिखाऊं किन्हीं पंडित जी को, सम्भव है कोई रास्ता निकल आये।

पंडित जी के पास कुंडली लेकर गये, एक सिपारिशी साथ में होने की वजह से दक्षिणा देने से तो बच गये, पर पंडित जी बड़े सोच विचार के बाद बोले साढ़े साती शनिश्चर है आपके ऊपर और फिर शास्त्री जी बड़ी ही गम्भीर मुद्रा में बोले आप शनीचर देवता को प्रसन्न करने के उपाय कीजिए, आपका संकट दूर हो जायगा।

दिन बीतने लगे, किसी प्रकार शनि ग्रह को प्रसन्न करने में समय, शक्ति और धन का व्यय करते रहते हैं मुनीम ज्वाला प्रसाद आजकल। और बस, कर्ज बढ़ रहा है दिनों दिन।

धीरे-धीरे मकान किराया आठ महीने का। और शनि की मनौती के लिए कर्ज, कुल मिलाकर साढ़े चार सौ का कर्ज सिर पर सवार हो गया आज।

सब्र की भी एक सीमा होती है, और धीरे-धीरे कर्ज देनदार उनके आश्वासनों से ऊब गये, और एक दिन मुनीम ज्वाला प्रसाद के पास कचहरी में हाजिर होने का कागज आ गया। मुकदमा चला, और खर्चे सहित नौ सौ पैंतीस रुपये की डिग्री हो गई। यह मिला उस काम अपने का फल।

बरतन, कपड़े, चारपाई आदि सभी सामान कुर्क कर लिया गया, फिर भी रुपया पूरा न हुआ।

बारी आई अब जेल जाने की, तब आँखों से अंधकार का काला पर्दा हटा और अपनी भूल उन्हें मालुम हुई। पर अब क्या? अब तो समय बीत चुका था, और वे सिर झुकाये सींखचों की ओर बढ़ चले।

यह मिला शनि की उपासना का प्रसाद कि आज वह भोजन की चिंता से मुक्त हो गये, और बेकार नहीं हैं। अब वे जेल की रोटियां खाते हैं, और बगीचे की क्यारियाँ सींचा करते हैं, पर कब तक? बस पचीस दिन शेष हैं, और फिर वही समाज होगा, वही लड़ाई होगी उससे पेट के लिए उन की, पर अब उनकी आँखें खुल चुकी हैं, फलित ज्योतिष के ग्रहपूजा आदि कर्मकाण्डों को वह ढकोसला समझने लगे है और ग्रह पूजा के सस्ते नुस्खे के स्थान पर शारीरिक श्रम में उनका विश्वास दृढ़ हो गया है परन्तु लोग मुनीम ज्वाला प्रसाद उर्फ धांधू को भूल चुके हैं।

बाल-विनोद

बच्चों की कहानियां

[संसद् सदस्य, श्री महावीर त्यागी]

★

१४ जुलाई, १६५८ को अकाशवाणी दिल्ली से संसद् सदस्य, श्री महावीर त्यागी ने बच्चों की कहानियां कैसी होनी चाहियें, इस पर अपने विचार प्रकट किये, जो यहां लेख के रूप में प्रस्तुत हैं। —सम्पादक

"स्टेशन मास्टर साहब, पापा आज नहीं जायेंगे, तुम अपनी रेल को जल्दी जल्दी छोड़ देना" टेलीफोन पर कोई ऊटपटांग नम्बर मिलाकर ४ वर्ष के नाती नानू ने उपरोक्त वाक्य कहकर टेलीफोन रख दिया, और मुझ से आकर बोला, "पापा मैंने रेलवालों को बोल दिया है कि पापा को देर हो जाएगी, तुम रेल को रोके रहना, अभी तुम धीरे धीरे खाना खाओ और फिर कुछ देर आराम करके स्टेशन आना" अनिल ने पहली बार इतने बड़े जाल बट्टों का खेल खेला। मुझे रात को, गाड़ी से देहरादून जाना था, सीट बुक हो चुकी थी, और बिस्तरा बंध रहा था। उन्हें मेरा बाहर जाना पसन्द नहीं है, क्योंकि रोज रात को मेरे पास सोते हैं और कहानी सुनते हैं, दिन में कई बार अपनी अम्मा की शिकायत लगाकर जिद करते हैं कि "पापा, अम्मा को डांटो मैं झूठ-मूठ—खबरदार मेरे नानू को तंग करा तो" कह देता हूं, फिर उसके मुंह को देख कर कहते हैं, "पापा इतने जोर से डाटो कि अम्मा को रुला दो" वह झूठ मूठ रो देती है। हमारा सब का ख्याल था कि घर भर में यह मुझको सबसे ज्यादा प्यार करते हैं। आज मैंने परीक्षा ले ली, पूछा कि नानू तुम मेरे साथ देहरादून जाओगे या अम्मा के साथ दिल्ली रहोगे, दोनों की ओर बारी-बारी से देखा और अम्मा की गोद की ओर बढ़ते हुए बोले—मैं अम्मा के पास। वैसे तो मैं जानता था कि खून पसीने से गाढ़ा होता है फिर भी जरा मलाल हुआ कि कैसे छलिया है वह, कागज तो मेरे फाड़ते है, दिन रात बन्दर के बच्चे की तरह मेरे पीछे-पीछे लगे रहते हैं पर सचमुच वह प्यार करते हैं अपनी अम्मा का।

फिर उसकी टेलीफोन वाली बात याद करके तो मुझे सचमुच अपने से ग्लानि होने लगी। क्योंकि वास्तव में दोषी मैं ही हूं। उसने आज तक जो कुछ भी सीखा है, मुझसे सीखा है। मैं ही हूं कि जो अपने दुधमुहे निर्दोष नाती के मानसिक विकास में जहर भरे इन्जेक्शन लगा रहा हूं। कहने को हम सब बड़ी उमर वाले, बच्चों को बुलाते हैं, पर जैसा कि मेरे एक मित्र ने बताया वास्तव में हम बच्चों को खिलाने के बजाय खुद उनसे खेलते हैं। वह हमारे खिलौने हैं, उनसे जी बहलाते हैं और उनके बहाने हम चाहे जितना नाचें, गायें खेल करें, कुत्ते की बोली बोलें या बिल्ली की, दुनियां हमारी हसी भी नहीं उड़ाती "वह देखो बिल्ली आई" कौए, अनिल का कान पकड़ के इसे पेड़ पर ले जा" "मत खाना कौए, पापा मुझे पकड़ के अपनी जेब में छिपा लेंगे, फिर रोते फिरोगे, हाँ, कभी मुट्ठी में पैसे छिपाकर छूमन्तर, काली कलकत्ते वाली, कह कर चीजों को छिपाने लगा। मैं मजे ले रहा हूं। रात को रोज कहानी सुनानी पड़ती है। कहां तक नित नयी कहानियां सुनाऊं। झूठ मूठ की मनगढ़न्त सुनानी पड़ती है वह भी चोर उचक्के, भूत-प्रेत, बकतरे, ठग, शराबी, पागल और तीतर बटेर की। जो भी हमें स्वयं प्रिय लगती है, उसी विषय की सुनाते हैं और उसी स्तर की खिलवाड़ भी करते हैं। ठीक उन्हीं दिनों में कि जब उसके भावी चरित्र और भाग्य की नींव पड़ रही है। यानी दो वर्ष की आयु से सात वर्ष की आयु तक। हम अपनी सन्तान के मन में स्वार्थ, भय, लालच, चोरी, जालसाजी, कतल, खून और बदमाशी के संस्कार ऐसे कूट-कट कर भर देते हैं कि जैसे किसी विशाल भवन की नींव कूटी जाती है। इन बुनियादी विषैले संस्कारों का उपचार बड़े हो जाने पर ऊंची से ऊंची धर्म शिक्षा भी नहीं कर सकती। इसी तरह अपने हाथों से अपनी सन्तान को चरित्रहीन बना कर हम उमर भर रोते हैं। मेरा विश्वास है कि हर व्यक्ति के चरित्र में अपने बचपन की झलक अवश्य मिलती है। इसी वास्ते बड़ों ने कहा है कि "पूत के पांव पालने में ही दीख जाते हैं।"

एक डाक्टर को जो २० वर्ष से विलायत में काम करते है, और जो कुछ दिनों के लिए दिल्ली आये थे, मैंने उनकी मुस्कराहट से पहचान लिया कि वह श्री राजगोपालाचार्य के निकट सम्पर्क में रहे होंगे। उन्हें आश्चर्य हुआ, क्योंकि जैसा उन्होंने बताया वह बचपन में राजा जी के साथ खेले और पढ़े थे। जिनके स्कूल मास्टर पढ़ाते हुए "यू सी", "यूसी" कहते हैं वे विद्यार्थी बूढ़े होने तक "यू सी" कहते हैं।

हमारी सरकार भारत के उत्थान के लिए तरह तरह की योजना बना रही है, और आर्थिक संकटों का सामना भी कर रही है, पर हमें आर्थिक विज्ञान, उद्योग और व्यवसाय की वृद्धि से क्या लाभ होगा यदि हमारा नैतिक स्तर ऊंचा न हो सका। खुली आंखों हम अपनी सन्तान का ह्रास देख रहे हैं। यह ह्रास केवल स्कूल कालेज के बच्चों को अनुशासन की शिक्षा देने से नहीं रुकेगा इसके लिए हमें मां के पास सोते हुए उन बच्चों को पकड़ना होगा कि जो कहानी सुनाने के लिए उतावले हो रहे हैं। वास्तव में ये कहानियां नैतिक उत्थान की राम-बाण गोलियाँ हैं। आज किसी मां को भी चरित्र उत्थान की कहानियाँ याद नहीं है और किसी को यह अधिकार नहीं है, (चाहे वह माँ ही क्यों न हो) कि भारत की भावी संतति के संस्कारों को आजन्म रोगी बना दे।

सरकार को चाहिये कि वह मनोविज्ञान के पण्डितों का एक ऐसा बोर्ड बिठाये कि जो एक प्रतियोगिता की घोषणा कर दे कि जिससे भारत की तमाम भाषाओं के लेखक अच्छी से अच्छी कहानियाँ लिखें, और उनमें से जो कहानियाँ "अबोध शिक्षा कोष" के लिए स्वीकार हो जाएं, उनको प्रति कहानी के लिए कम से कम १००)रु० पुरस्कार दिया जाए। फिर इस प्रकार इकट्ठी की हुई सारी कहानियाँ बुद्धि के विकास के अनुसार २ वर्ष से ७ वर्ष के बच्चों के लिए ६ पुस्तकों के रूप में हर भाषा में छपवा दी जाएं। और उनकी करोड़ों प्रतियाँ हर घर में मुफ्त बाँट दी जाएं। इन कहानियों के द्वारा हम छूत-अछूत, जात-बिरादरी और भाषा-प्रदेश आदि के भेदभाव को सदैव के लिए मिटा सकते हैं। इन्हीं कहानियों द्वारा हम भावी भारत का भविष्य उज्ज्वल कर सकते हैं। हम अपनी सन्तान को तेजस्वी और बलवान बना सकते है।

मेरी यह भी सलाह है कि रोज रात्रि को साढ़े आठ बजे कम से कम एक कहानी रेडियो पर बच्चों को हर भाषा में सुनाई जाए। यदि भारत को उठाना है तो उसकी नींव मजबूत करनी पड़ेगी।

★

पुस्तक परिचय

चरित्र स्वच्छता और शिक्षा दर्पण

लेखक व प्रकाशक—श्री काशीनाथ शर्मा गार्ड, मंडी रामदास, गली पातीराम, मथुरा। पृष्ठ सं० ११०, मूल्य १ रुपया २ आना।

सुनागरिकता का प्रचार और भ्रष्टाचार का निरोध, ये दो आज की आवश्यक बातें है जिन पर अधिकाधिक बल देने की आवश्यकता है। प्रस्तुत पुस्तक में इन्हीं दोनों बातों पर बल दिया गया है। समाज में फैले हुए वर्तमान भ्रष्टाचार की बड़ी तीव्र आलोचना की गयी है और इसे दूर करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

सुनागरिकता के सुलक्षण सिखाने के लिए यह एक अच्छी पुस्तक है। इस पुस्तक का यह सन्देश है कि आज समाज के नवयुवक अपना चरित्र लक्ष्मण जसा उच्च व श्रेष्ठ बनावें, साथ ही साथ यह भी सन्देश दिया गया है कि भ्रष्टाचार रूपी लंका को जलाने के लिए हमें हनुमान बन जाना चाहिए। समाज के दैनिक जीवन में व्यवहृत होने वाली बहुत सी बातों की बड़ी सुन्दर चर्चा इस पुस्तक में की गयी है जिससे आज के बालकों व नवयुवकों को सीख लेनी चाहिए।

—भगवत शरण

हिन्दी आन्दोलन समाचार

देश के कोने-कोने में हिन्दी प्रतिज्ञा दिवस की धूम

सर्वत्र सार्वजनिक सभाएं, जलूस, प्रस्ताव आदि

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति व इसकी सघर्ष समिति के आदेशानुसार आर्य समाजों व हिन्दी रक्षा समितियो द्वारा २० जुलाई को देश के कोने कोने में पजाब हिन्दी आदोलन सम्बन्धी प्रतिज्ञा दिवस ससमारोह मनाया गया जिसमे सर्वत्र सार्वजनिक सभाए हुई, जलूस निकाले गये और प्रस्ताव पास करके सरकार तथा प्रेस को भेजे गये। हिन्दी प्रेमियो ने सार्वजनिक रूप से यह प्रतिज्ञा की कि वे पजाब हिन्दी आन्दोलन को सफल बनाने के लिए तन मन धन से सदा तैयार रहेगे।

शाहदरा, दिल्ली

आ०स०शाहदरा की ओर से एक समारोह में प्रतिज्ञा दिवस सबधी निश्चित प्रस्ताव पास किया गया।

मुजफ्फरनगर

आ० स० व हिन्दी रक्षा समिति शहर मुजफ्फर नगर की सार्वजनिक सभा में हिन्दी प्रेमियो ने प्रतिज्ञा की कि पजाब मे हिन्दी की रक्षा के लिए शासन से हमारा सघर्ष जारी रहेगा।

कमालगज, फर्रुखाबाद

आर्यसमाज कमालगज की हिंदी प्रेमियों ने हिन्दी की रक्षा के लिए व्रत लिया।

केरात, जौनपुर

बड़े समारोह के साथ यहा प्रतिज्ञा दिवस मनाया गया। आ० स० के उत्साही लोगो ने भाग लिया।

पाथौली, मेरठ

आ० स० पाथौली, मेरठ मे भी सोत्साह प्रतिज्ञा दिवस मनाया गया और निश्चित प्रस्ताव पास हुआ।

गया, बिहार

आ०स० गया की सभा मे जनता ने बड़े जोरदार शब्दों मे सरकार की भाषा नीति की निन्दा की और पजाब मे हिन्दी की रक्षा के लिए तैयार रहने की प्रतिज्ञा की।

नगीना, बिजनौर

सार्वजनिक सभा मे हिंदी प्रेमियों ने पजाब मे हिन्दी की रक्षार्थ सब कुछ त्याग करने की प्रतिज्ञा की।

ग्वालियर, म० प्र०

आ० स० ग्वालियर नगर की ओर से भी सार्वजनिक सभा में प्रतिज्ञा दिवस मनाया गया।

जयपुर, राजस्थान

जयपुर, राजस्थान की जनता ने भी पजाब हिन्दी आन्दोलन में सहयोग देने की प्रतिज्ञा की।

कलकत्ता

नगर की कई आय समाजों ने सम्मिलित रूप से प्रतिज्ञा दिवस मनाया और इसमे हर प्रकार से सहयोग करने का व्रत लिया।

अम्बाला, पंजाब

नगर की हिन्दी प्रेमी जनता ने बड़े समारोह के साथ हिंदी के रक्षार्थ प्रतिज्ञा दिवस मनाया और प्रस्ताव पास करके सरकार तथा प्रेस को भेजा।

जालन्धर

शहर में हिन्दी आन्दोलन की सभा में यहा के लोगों ने हिन्दी की रक्षा के लिए प्रतिज्ञा की।

आरा, बिहार

यहाँ की जनता ने भी सोत्साह पजाब हिन्दी आन्दोलन का प्रतिज्ञा दिवस मनाया।

इसी उत्साह के साथ ६ अगस्त को आर्य समाज मन्दिर चण्डीगढ़ के अपमान का प्रतिकार-दिवस भी मनाइए—

दिनाङ्क ६-८-५८ की मीटिंग के लिए प्रस्ताव का प्रारूप

· की हिन्दुओं और आर्यों की यह विराट् सभा गतवर्ष सत्याग्रह के काल में ६ अगस्त ५७ को पजाब राज्य की पुलिस द्वारा हुए आर्य समाज मन्दिर चण्डीगढ़ के अपमान का अभी तक समुचित प्रतिकार न होने पर रोष और क्षोभ प्रकट करती है और केन्द्रीय सरकार को प्रेरणा करती है कि वह अपराधियों को समुचित दण्ड देकर और आर्य समाज का बलात् उठाया हुआ सामान लौटाकर इस पाप का प्रायश्चित करे और ऐसा प्रबन्ध करे कि भविष्य मे इस प्रकार की दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति करने के लिए किसी को साहस न हो सके।

—रघुवीर सिंह शास्त्री, मन्त्री, संघर्ष समिति

गाजियाबाद

यहा की सार्वजनिक सभा मे प्रो शेरसिंह प्रधान सघर्ष समिति, श्री रघुवीरसिंह शास्त्री मंत्री सघर्ष समिति श्री रामगोपाल जी मन्त्री सार्वदेशिक सभा, प्रो० रतनसिंह उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा आदि के भाषण हुए और प्रतिज्ञा प्रस्ताव पास हुआ।

ज्वालापुर, सहारनपुर

आर्य वानप्रस्थ सन्यास आश्रम ज्वालापुर की ओर से स्वामी अथर्वानन्द जी की अध्यक्षता में यह दिवस ससमारोह मनाया गया और प्रतिज्ञा प्रस्ताव पास हुआ।

महतवार, बलिया

यहा जलूस भी निकला और सार्वजनिक सभा मे भाषण के पश्चात निश्चित प्रस्ताव पास हुआ।

जगतपुर, बरेली

इस समाज ने एक सार्वजनिक सभा मे निश्चित प्रस्ताव पास किया और उपस्थित लोगो ने हिन्दी आन्दोलन मे सहयोग देने का व्रत लिया।

गोरखपुर

डी० ए० वी० कालेज गोरखपुर मे सार्वजनिक सभा हुई जिसमे उपस्थित लोगो ने पजाब हिन्दी आन्दोलन की सहायता करने का व्रत लिया। श्री ज्ञानेन्द्र सूफी, कन्हैया लाल आदि के भाषण हुए।

कायमगंज, फर्रुखाबाद

यहा की जनता ने तन मन धन से हिन्दी आन्दोलन की सहायता करने का तब तक के लिए प्रतिज्ञा की जब तक पजाब म हिन्दी को उचित स्थान न मिल जाय।

हरदोई, उ० प्र०

हिन्दी रक्षा समिति हरदोई की ओर से प्रतिज्ञा दिवस म श्री आग्नित्य किशोर आर्य का भाषण हुआ।

खड़गपुर

हिन्दी रक्षा समिति खड़गपुर ने पजाब म हिन्दी की रक्षा के लिए शासन से लोहा लेने की प्रतिज्ञा की। आ० स० खड़गपुर की ओर से भी प्रतिज्ञा दिवस मनाया गया।

पाटण, बम्बई

बड़े समारोह के साथ यहा प्रतिज्ञा दिवस मनाया गया। हिंदी आदोलन के नारो से पडाल गूज गया। भगवान देव गुरुकुलीय पाटण ने भी प्रतिज्ञा दिवस मनाया।

बम्बई

बम्बई नगर मे कई स्थानों पर आर्य समाजों व हिंदी रक्षा समितियों की ओर से प्रतिज्ञा दिवस मनाया गया।

हैदराबाद

हैदराबाद में पजाब हिंदी आन्दोलन के लिए बहुत उत्साह देखा गया। ससमारोह प्रतिज्ञा दिवस मनाया गया।

लखनऊ

यहाँ की १८ समाजें, हिन्दी रक्षा समिति, जिला सभा, आर्य वीर दल आदि सबो ने मिलकर बड़े ऊचे पैमाने पर प्रतिज्ञा दिवस मनाया जिस में प० प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी० का भाषण हुआ।

कानपुर

कानपुर की आर्य समाजों मे बड़े जोश और उत्साह के साथ प्रतिज्ञा दिवस मनाया गया और सबों ने निर्धारित प्रतिज्ञा दुहराये।

फैजाबाद

आ० स० फैजाबाद की जनता ने यह व्रत लिया कि वे पजाब हिन्दी आन्दोलन की हर प्रकार से सहायता करेंगे।

रायबरेली

पजाब में हिन्दी को उचित स्थान दिलाने के लिए आ० स० रायबरेली के लोगों ने सरकार से सघर्ष करते रहने का निश्चय किया।

बिसौली, बदायूं

आ० स० बिसौली, बदायू की जनता ने सोत्साह प्रतिज्ञा दिवस मनाया।

मखौली, कानपुर

हिन्दी आन्दोलन की सफलता के लिये सब कुछ त्याग करने की प्रतिज्ञा यहा की जनता ने की।

[शेष पृष्ठ ४ पर]

(पृष्ठ ४ का शेष)

साहित्य-साधना से कभी विचलित नहीं हुए न उसे भुला कर किसी लाभ में फंसे। उन्होंने कष्टों को कष्ट नहीं समझा, दरिद्रता की कोई परवा नहीं की, अपने साहित्य की सृष्टि में लगे रहे, उसी के रसास्वादन में वे मस्त रहे। साहित्य साधना उनकी अनन्य थी। ग्रामों में रहने वाली सामान्य जनता के हृदय के साथ उनका हृदय इतना समरस था कि उसी के सुख-दुख के चिंतन और चरित्र-चित्रण में ही उन्हें सर्वोपरि आनन्द आता था। वे जब जहां रहे हों, रहते थे अपने उपन्यासों के चलते फिरते नजर आने वाले पात्रों में ही, मानों वे उन्हीं से बातें करते थे। इन बातों को छोड़कर अलवर-नरेश का निमंत्रण स्वीकार कर उनके वहां ऐश-आराम का जीवन व्यतीत करने वे नहीं गये। बल्कि इससे पहले महात्मा गांधी की पुकार पर असहयोग आन्दोलन में उन्होंने सरकारी नौकरी भी छोड़ दी थी और दरिद्रता के उन्हीं कष्टों को बुला लाये थे जिनसे इस नौकरी से राहत मिली थी। ऐसे तपोमय जीवन से उनके तेजोमय साहित्य की सृष्टि हुई है। इस साहित्य को और इसके पीछे जो तप है उसको हम अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करें, केवल मौखिक नहीं, प्रत्युत ऐसी क्रिया से जो प्रेमचंद जी के तप और साहित्यिक दान के उपयुक्त हो।

प्रेमचंद जी का जन्म हुआ काशी से चार मील पर लमही ग्राम में। हिंदी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार प्रेमचंद जी की यह जन्मभूमि है। इस नाते यह एक महान् साहित्यिक तीर्थस्थान है। बचपन में पिता के साथ और पीछे अपनी नौकरी और अन्य कार्यों से वे काशी, गोरखपुर, कानपुर, लखनऊ आदि अनेक स्थानों में रहे। पर उनकी सबसे प्रियभूमि लमही ही थी। बचपन में यहीं वे खेले-कूदे, यहीं उन्होंने अपने उपन्यासों के पात्रों का, तथा अपने प्रिय ग्रन्थों का अध्ययन किया और यहीं अपनी साहित्यसृष्टि की नींव दी। इस नाते भी यह साहित्यिक तीर्थ स्थान है। इस साहित्यिक साधनपीठ के दर्शनाभिलाषी साहित्यिक यात्रियों की संख्या बहुत होगी और जो लोग वहां जाकर देखेंगे कि इस घर में प्रेमचन्द जी का जन्म हुआ था यहाँ बैठकर वे पढ़ते थे अथवा यहां बैठकर उन्होंने अपने अमुक उपन्यास या कहानियाँ लिखीं। उनका समय और परिश्रम चरितार्थ होगा। उन्हें नवसाहित्य सृष्टि की प्रेरणा मिलेगी। जीवन के शून्य को भरने वाली कोई चीज सब को मिलेगी। प्रेमचन्द जी का जो साहित्यिक ऋण है वह यही है कि हम उनके जन्म स्थान, अध्ययन और लेखन का स्थान ऐसा बना दें जो उनके प्रति अपनी आन्तरिक श्रद्धा का द्योतक हो और वहां ऐसी सामग्री जुटा दें जो प्रेमचन्द जी के साहित्यिक दान का विस्तार करें।

इसीलिए काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने लमही ग्राम में प्रेमचन्द जी का भव्य स्मारक निर्माण करने का निश्चय किया है और सर्वत्र इस निश्चय का स्वागत हुआ है अब तक हमारे पास १०,०००) आ भी गये हैं। यह लेमकर अल्पारम्भ है। पर १,२५,०००) हमें जुटाने हैं। अतः सबसे हमारी यह विनय है कि यथाशक्ति इस कार्य में दान देकर इसे पूरा करें और प्रेमचन्द जी के साहित्यिक कार्य को आगे बढ़ाने में सहायक होकर उनके ऋण से मुक्त हों। हिन्दी के लिए यह गौरव की बात नहीं है कि प्रेमचन्द जी का स्वर्गवास हुए २० वर्ष बीत गये, पर अभी उनका स्मारक नहीं बना। आशा है, सब लोग अब दान द्वारा इस कार्य मे सहायक होंगे और यह कार्य पूरा होगा।

सभा की सूचनाएं

श्री सर्वगुण प्रसाद अपना पता दें

सभा के प्रचारक श्री सर्वगुण प्रसाद जी को सूचित किया जाता है कि वह जहाँ कहीं भी हों, शीघ्र सभा कार्यालय को अपने पते से सूचित करें।

उपदेशकों एवं प्रचारकों से निवेदन

सभा के निम्न उपदेशकों एवं प्रचारकों से प्रार्थना है कि वह जहाँ कहीं भी हों शीघ्र अपने निश्चित जिलों में प्रचारार्थ पहुँचकर सभा को सूचित करें।

श्री धर्मदत्त जी आनन्द—फैजाबाद
„ सर्वगुणप्रसाद जी—गोरखपुर
„ धर्मराजसिंह जी—मैनपुरी
„ श्रीपालसिंह जी—बनारस
„ प्रकाशवीर जी—कानपुर
„ महिपालसिंह जी—मथुरा
„ रामनिवास जी—इलाहाबाद
„ सत्यपाल जी—बुलन्दशहर
„ जयपालसिंह जी—बदायूं
„ रामचन्द्र जी—शाहजहाँपुर
„ राजाराम जी—मुरादाबाद

आर्योपप्रतिनिधि सभाओं के मन्त्री महोदयों से निवेदन

प्रचार को सुव्यवस्थित करने के उद्देश्य से मैंने यह प्रार्थना की थी कि अपने अपने जिलों की आर्य समाजों के क्रम बद्ध पुरोगम बनाकर सभा कार्यालय में भेजें परन्तु इस ओर किसी उपसभा ने ध्यान नहीं दिया। अतः पुनः निवेदन है कि वह शीघ्र ही पुरोगम बनाकर सभा कार्यालय में भेजदें, ताकि उसके अनुसार उपदेशकों एवं प्रचारकों को प्रचारार्थ भेजा जा सके।

आशा है ७ अगस्त तक उत्तर प्रदेशीय सभी उप सभायें अपने जिले का पुरोगम बनाकर एवं भेजकर प्रचार में सहयोग प्रदान करेंगी।

—फूलनसिंह
सभा मन्त्री

अन्यान्य समाचार—

—अणुव्रत पाक्षिक कलकत्ता का विशेषांक "सयम अङ्क" के रूप मे श्री सत्यनारायण मिश्र के सम्पादकत्व मे शीघ्र ही छपने जा रहा है।

—१३ जुलाई की रात में प० बिहारीलाल शास्त्री महोपदेशक सुभाष नगर बरेली के घर में चोरी हो गयी और चोर सारा माल लगभग ५०००) रु० का उठाकर ले गये। आप उत्सवों पर बाहर गये थे। आर्यसमाज मे आपकी सेवाओं को ध्यान में रखते हुए आर्य जनता को चाहिये कि श्री प० जी भविष्य में जिस उत्सव पर जावें तो समाजे उन्हे पर्याप्त दक्षिणा देकर उनके दुख मे सहानुभूति दिखाने का कष्ट करे। —विद्याभास्कर शास्त्री
मन्त्री जिला आर्योप सभा बरेली

—जिला सभा लखनऊ ने सम्प्रति नगर की १ दर्जन समाजो मे रविवार के साप्ताहिक अधिवेशन में प्राय प्रत्येक रविवार को अपने अवैतनिक प्रचारक भेजना प्रारम्भ किया है जिसका अच्छा प्रभाव हो रहा है। स्थानीय आर्यसमाज के स्वाध्यायशील सज्जनो से प्रार्थना है कि वे प्रति मास एक दो रविवार का प्रातःकालीन अपना समय जिला सभा को स्थानीय समाज प्रचार के लिए अवश्य दे।
—प्रधान जिला सभा, लखनऊ

—विजयादशमी के अवसर पर वीर सन्देश मासिक, बम्बई का एक विशेषांक प्रकाशित होगा जिसमे आर्य वीर दल के सम्बन्ध मे अनेक लेख, इसका इतिहास तथा अन्य पाठ्य सामग्री होगी। इसका मूल्य १) होगा ग्राहको को वार्षिक मूल्य मे ही यह दिया जायगा। अन्य व्यक्ति अपनी प्रतियां शीघ्र ही सुरक्षित करा लें और जल्दी तीन रुपये भेजकर इस के ग्राहक बन जाय। —चन्द्रपाल आर्य
सम्पादक

—नगर आर्यसमाज आगरा—
१ जुलाई को महाशय शिवनारायण जी के घर पर पूर्णमासी का यज्ञ हुआ। ६ जुलाई को समाज के साप्ताहिक अधिवेशन मे श्री चमनलाल जी और १३ जुलाई को डा० नरेन्द्रदेव सिंह शास्त्री एम० ए० डी० फिल० का भाषण हुआ। २६ जून से १४ जुलाई तक श्री कमलसिंह भजनोपदेशक ने नगर के भिन्न भिन्न स्थानो पर प्रचार किया। १६ जुलाई को प्रो० हरिश्चन्द्र जी के यहा अमावस्या का यज्ञ हुआ। स्वामी करुणानन्द मुमुक्षु का भाषण हुआ।

—आर्यसमाज गया के समाज मन्दिर निर्माण के लिए कु० रामरेई तथा कु० वीरेन्द्रसिंह जी ने भूमिदान दी है। स्थानीय समाज की ओर से उन्हें धन्यवाद है।

आर्य-जगत

—श्रीमती तारकेश्वरी सिनहा, वित्त उप मन्त्री भारत सरकार ने वैदिक पुस्तकालय पुनपुन, पटना का निरीक्षण करके हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त किया। पुस्तकालय की ओर से आप का स्वागत किया गया।

—हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की स० २०१५ की परीक्षाए २६.१०.५८ से होगी। सशुल्क आवेदन पत्र स्वीकार करने की अंतिम तिथि ३१ अगस्त ५८ है। १) रु० अतिरिक्त देने पर ५ सितम्बर तक फार्म स्वीकार होंगे। केन्द्र व्यवस्थापकों को सशुल्क आवेदन पत्र १० सितम्बर तक भेज देना चाहिये। आवेदन पत्र केन्द्रों पर १९ नए पैसों के मिलेंगे। कार्यालय से २७ नये पैसों के मिलेंगे। विवरण पत्रिका का मूल्य ११) और केन्द्र तालिका का मूल्य ।।) है जो मन्त्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से मगाये जा सकते है।
—रमाप्रसाद घिल्डियाल पहाड़ी
रजिस्टार

आचार्य मदनमोहन विद्यासागर वेदालङ्कार का अफ्रीका-प्रस्थान

पण्डित जी आर्यसमाज के एक सफल वक्ता, हस्तकुशल लेखक और सफल आर्य प्रचारक है। आपका सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज की सेवा मे व्यतीत हुआ। आपने जीवन ही सेवामय बना लिया है।

आप जब से गुरुकुल कांगड़ी से स्नातक बने तदा प्रभृति आर्यसमाज का ही प्रचार करते है। आप महर्षि दयानन्द के दिवाने भक्त है। आपके हृदय मे सदा आर्य धर्म प्रचार की ही लग्न लगी रहती है।

आपने सारे दक्षिण भारत मे तेलगु भाषा सीखकर लगातार २० वर्ष प्रचार किया। बीच मे ब्रह्मा देश मे भी लगभग एक वर्ष प्रचार किया।

अब बडे हर्ष का विषय है कि आप ७ जून को आर्यसमाज के प्रचारार्थ अफ्रीका चले गये है।

जिलोपसभा लखनऊ द्वारा दो नए आर्यसमाजों की स्थापना

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के प्रधान तथा महोपदेशक श्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री के प्रयास से तेलीबाग लखनऊ में एक नये आर्यसमाज की स्थापना हुई जिसमे वहाँ के सभी प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने बड़ा उत्साह दिखाया। श्री महाराजदत्त जी प्रधान, श्री लाला सरयू प्रसाद जी उपप्रधान, श्री डा० जे०बी० सिंह मन्त्री श्री राजेन्द्रमोहन उपमत्री, श्री गोपीलालजी प्रिंसिपल कोषाध्यक्ष, और डा० यमुनाप्रसाद वैश्य पुस्तकाध्यक्ष चुने गये।

दूसरा आर्यसमाज ग्राम कबीरपुर, पो० कटरा बकास जि० लखनऊ मे स्थापित हुआ जिसके प्रधान श्री रामदास जी, उपप्रधान श्री रामदीन जी, मन्त्री श्री मैकूलाल जी, उपमन्त्री श्री रघुनाथप्रसाद जी और कोषाध्यक्ष श्री रामपाल जी चुने गये।

शेरे दिल रामचरण लाल की वीरता

२६ जून को रात के १० बजे ग्राम महमूदनगर थाना डिलारी, मुरादाबाद मे जो कि कई हजार मुसलमानो की बस्ती है, कसाई अपने घरों मे गाय काट रहे थे सूचना मिलते ही श्री रामचरणलाल जी अकेले ही वहाँ पहुच गये और कसाइयो के घर मे घुस गये। कसाइयों ने उन्हे बहुत लालच दिया पर वे नहीं डिगे और अपने प्राण पर खेलकर धर्म पर कुर्बान होने को तैयार हो गये। कटी हुयी गायो को वहा से गाडी भरकर थाना ले गये और कई कसाइयो का चालान कराया। याद रहे कि डिलारी थाने मे इससे पूर्व भी अनेको गोहत्या के केस पकडे जा चुके है। मुरादाबाद जिले मे ऐसे अनेको स्थान है जहाँ गोहत्या होती है। ईद के दिनों मे तो यहाँ बहुत सी गाये काटी गयीं। सरकार और पुलिस की गद्दारी और रिश्वतखोरी के कारण ही ये सब दुर्घटनाये हो रही है। इस क्षेत्र की हिन्दू जनता मे इससे बहुत रोष और क्षोभ फैल रहा है। सभा यही कहती है कि यह सरकार बेईमान है, स्वार्थी है और ढोंगी है। क्या इस क्षेत्र के एम०एल०ए० विधान सभा मे ऐसा प्रश्न कर सकेंगे कि गोहत्या निषेध कानून के बाद मुरादाबाद जिले मे गोकशी इतनी अधिक क्यों हो रही है?

—बलवन्तसिंह
आ०स० सरकड़ा, डिलारी, मुरादाबाद

आर्यसमाज शिकोहाबाद में सभा मंत्री ठा० फूलनसिंह का भव्य स्वागत

आर्यसमाज शिकोहाबाद मे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री ठा० फूलनसिंह जी का धूमधाम से स्वागत हुआ। इस उपलक्ष्य में एक सभा का आयोजन किया गया जिसमे श्री श्यामगोपाल जी मुख्तार श्री ठा० दुर्गासिंह जी, श्री मा० सरदार सिंह, श्री प० दयाराम जी, श्री मोहनलाल जी चड्ढा ने उनके जीवन पर प्रकाश डाला। सब महानुभावों ने कहा कि ऐसे कमठ, विद्वान् समाज सेवी, सत्यनिष्ठ, निष्काम सेवा करने वाले तथा हर समय आर्य समाज की उन्नति के लिए निरन्तर प्रयत्न करने वाले मन्त्री की छत्र छाया मे हमारी प्रतिनिधि सभा दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करेगा। प्रभु उनको शक्ति दे। सब ने अपनी तथा आर्य जनता की ओर से इस बात का विश्वास दिलाया कि आर्य समाज शिकोहाबाद आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रत्येक सेवा और सहायता करने को सदैव तत्पर रहेगा।
—वैद्य गुरुदत्त शर्मा मन्त्री
आर्यसमाज शिकोहाबाद

शोक समाचार

आर्य जगत् को यह जानकर दुख होगा कि बैन (बदायू) निवासी श्री नेकरामसिंह पेंशनर मुन्सरिम जजी का ६० वर्ष की आयु मे दि० ३.७.५८ को स्वर्गवास हो गया है। उक्त सज्जन आर्यसमाज के अनन्य भक्त थे। उन्होंने लगातार ६० वर्ष से आर्यसमाज की तन, मन, धन से सेवा की, अपने ग्राम बैन में भी आर्यसमाज की स्थापना की। आपने आ०प्र० सभा उत्तरप्रदेश को एक बसीयतनामा द्वारा कुछ धन राशि दान स्वरूप दी है आप जिसका प्रबन्ध श्री रामचन्द्र जी रिटायर्ड डि० पोस्ट मास्टर द्वारा किया जायगा। उनका दाह कर्म संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार श्री दर्शनलाल व प० रघुवीर जी शास्त्री द्वारा सम्पन्न हुआ। उनकी मृत्यु मे सभा परिवार दुखी है और दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये भगवान से प्रार्थना करता है।
— फूलनसिंह सभा मन्त्री

पंजीकरण सं. ए. ६०
श्रावण१२, शक १८८० (३ अगस्त५८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष्य ५११३ तार 'आर्यमित्र'

प्रचार समाचार—

—आ० स० रुड़की में स्वामी विद्यानन्द जी व स्वामी स तोषान द जी के मनोहर उपदेश व भजन हुए।

—आ०स० मलेवी में श्री केशव देव जी ने पूर्वार्द्ध यजुर्वेद से यज्ञ कराया। जिसमें ४००० आहुतियां दी गयीं।

—जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ की ओर से इन दिनों श्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री महोपदेशक सम्पूर्ण जिले में आर्यसमाज का प्रचार और नये समाजों की स्थापना कर रहे हैं। आप ३१ जुलाई तक लखनऊ जिले म प्रचार करगे।

—आ० स० चौक, लखनऊ म ७, ८, ६ जून को प्रचार कार्य हुआ। स्वामी कृष्णानन्द जी के भाषण व श्री कृष्णगोपाल जो के भजन हुए।

—श्री आ० स० सदर लखनऊ में एक सप्ताह तक पिछले दिना वैदिक धर्म का प्रचार हुआ।

—आ०स० कुल पहाड़ हमीरपुर मे श्री रघुनन्दन शर्मा न प्रचार करके इस समाज का पुन स्थापना का। लागो म उत्साह आया।

—श्री विश्वनाथ आर्य वीर मेरठ ने आ स जीतपुर तथा अर्जुपुर मे प्रचार किया। ईसाई निरोध सम्बन्धी पुस्तक वितरत का। ५ यज्ञोपवीत संस्कार कराये और आर्य वीर दल का स्थापना पर बल दिया।

—श्री रघुवीर चन्द मेहता बान प्रस्थी प्रधान हिन्दी रक्षा समिति लखनऊ ने जिला सभा की ओर से २० जुलाई का आयसमाज ऐशबाग के साप्ताहिक अधिवेशन म भाषण दिया जिसका प्रभाव अच्छा पड़ा। गत सप्ताह भी आपन इस समाज म भ षण दिया था।

सिंहावलोकन

(पृष्ठ २ का शेष)

आवश्यकता तो इस बात की है कि जिस प्रकार हर देश के लोग अपने कुटुम्ब अपने जिले और अपने प्रान्त के हित को सामने रखते हुए भी राष्ट्र हित को सर्वोपरि रखते हैं इसी प्रकार सब राष्ट्रों की प्रजा अपने अपने राष्ट्र के हितों को ध्यान में रखते हुए भी विश्व राष्ट्र या मानव राष्ट्र के हित का सर्वोपरि रखना सीखे। इस प्रकार की शिक्षा पाई हुई प्रजा का नाम होगा सार्वभौम चक्रवर्ती प्रजा यह 'सार्वभौम चक्रवर्ती प्रजा' ही सार्वभौम चक्रवर्ती राजा का चुनाव करेगी। अब प्रश्न यह है कि ऐसी प्रजा है कहाँ? इसका उत्तर है ऐसी प्रजा छिपी पड़ी है आर्य समाज के नियमों की छठी धारा के गर्भ में। धारा इस प्रकार है—ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

हे सार्वभौम चक्रवर्ती प्रजा को जन्म देने वाली छठो धारा, तू इस प्रजा का शीघ्र जन्म दे जिससे तेरे दो ह्त्र सार्वभौम चक्रवर्ती राजा के दर्शन शीघ्र हो सकें नहीं तो सर्वनाश है। देखें किस का जय पहिले बुलाई जाती है,हाइड्रोजन बम की या वैदिक धर्म की, छठा आर्य पुरुषों, सम्पूर्ण राष्ट्रों के देव जनों का इकट्ठा करके सार्वभौम चक्रवर्ती प्रजा को जन्म दो। तब ही सार्वभौम चक्रवर्ती राजा के दर्शन होंगे, यही युग की माग है।

—आ०स० सावनी की ओर से ३ जुलाई का श्री आशानन्द जी भजनोपदेशक द्वारा मैजिक लैन्टर्न से हिंदी आ दोलन का प्रचार हुआ।

श्री ईश्वर दयालु जी,

(मुख्य उप मन्त्री सभा द्वारा प्राप्त धन की सूची)

राजकुमार श्री रणञ्जयसिंह जी अमेठी	१००)
आर्य समाज ग्वालगाँव पट्टी चवरालस्यू P ० देवीखेत गढ़वाल	११२)
आर्य समाज देवरामपुर	२१)
श्री चौधरी श्रीरामसिंह जी रघुनाथपुर निवासी मैनेजर राजगढ़ा फार्म अफजलगढ़ अपने सुपुत्र के विवाह संस्कार मे वेद प्रचारार्थ सहायता	३१)
आर्य समाज कोटद्वार गढ़वाल	१०१)
आर्यसमाज ग्वालगांव गढ़वाल आर्यमित्र का वार्षिक शुल्क	८)
आर्य समाज जुवा पट्टी सीला P ० दुगड्डा गढ़वाल	१५)
आर्य समाज बस्यूरा पो० दुगड्डा गढ़वाल	१०)
,, , उखरेल गाव पा० कौडाखाल गढ़वाल	५)
, ,, ग्वालगाव पो० देवीखेत गढ़वाल	१०)
, ,, भैंसगाव पो० हनुमन्ती गढ़वाल	१०)
,, ,, सिमलिया पो० चेलू सैण गढ़वाल	१०
,, ,, अमेली पो० डाडा मडी गढ़वाल	१५)
,, कोटला मैंशोली पो० जहरीखाल गढ़वाल	१५)
,, ,, जहरीखाल P o लाय गढ़वाल (लैन्सडौन) गढ़वाल	१०)
श्री रामचन्द्र जी लैन्सडौन	५)
श्री ठा० नारायणसिंह जी शाह लैन्सडौन	२)
,, ला० मोहनलाल जी वर्मा लैन्सडौन	१)
,, उमरावसिंह जी लक्ष्मीनारायण जी लैन्सडौन	१)
,, कन्हैयालाल जी मन्त्री आर्य समाज लैन्सडौन	५)
,, लक्ष्मीनारायण जी लैन्सडौन	१)
,, भैरवदत्त जी धूलिया सम्पादक कर्मभूमि लैन्सडौन	५)
,, नेत्रसिंह जी बिष्ट लैन्सडौन	
,, नत्थीलाल जी लैन्सडौन (दुगड्डा) गढ़वाल	१)
, जगदीश प्रसाद जी अग्रवाल दुगड्डा	५)
,, किशन दयाल जी अध्यक्ष नोटिफाईड ऐरिया कमेटी दुगड्डा (गढवाल)	५)
,, गेन्दामल गोपीनाथ जी दुगड्डा	१०)
, रामसहाय शिव दयाल जी दुगड्डा	५)
,, जवाहर मल गेंदालाल जी दुगड्डा	२)
,, रामकिशोर जी बजाज दुगड्डा	२)
,, जयन रायण महादेव राय जी दुगड्डा	१)
,, भैरवदत्त दत्तराना जी बजाज दुगड्डा	२)
,, भगवती प्रसाद जी दुगड्डा	१)
,, राधेश्याम जी बजाज दुगड्डा	१)
,, भागामल श्रीराम जी दुगड्डा	५)
,, जुगलकिशोर प्रभुदयाल जी दुगड्डा	२)
,, हंसराज जी अग्रवाल दुगड्डा	५)
,, खुशहालसिंह जी चौहान दुगड्डा	२)
,, बुद्धराम होरालाल जी दुगड्डा	१)
,, सरनीमल मोहनलाल जी दुगड्डा	१)
,, ओंकारसिंह फतेहसिंह जी दुगड्डा	१)
,, ला० खजान मल ठेकेदार दुगड्डा	२)
,, शेरसिंह जी भरत स्टोर दुगड्डा	२)
,, भगत राम एन्ड सन्स दुगड्डा	१)
,, लालचन्द ग्यारलीवार दुगड्डा	२)
, चेतराम बनवारी लाल जी दुगड्डा	१)
,, राधेश्याम जी दुगड्डा	१)
,, बाबूराम दयानन्द जी दुगड्डा	१)
आर्य सत्संग मडल रेलवे कालोनी पी०ओ० नजीबाबाद जि० बिजनौर आर्यमित्र का १ वर्ष का शुल्क	८)
आर्य समाज पुरानी मडी सहारनपुर	५१)
माननीय श्री बलदेवसिंह आर्य सभा सचिव उत्तर प्रदेश सरकार	२१
योग	६४२)

बाबूराम भारती द्वारा ४ ५ नन्दन आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ में मुद्रित तथ प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ARYA आर्य मित्र MITRA

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का साप्ताहिक मुखपत्र

वार्षिक मूल्य ८) | एक प्रति का २० नए पैसे — लखनऊ, रविवार, श्रावण १६, शक १८८० | १० अगस्त १९५८ ई० — विदेश म १५ शिलिंग

नैतिक उत्थान आन्दोलन की सफलता के लिए

सभा प्रधान श्री पं० हरिशङ्कर शर्म्मा को ५००) की थैली भेंट

बुलन्दशहर में आर्य नेताओं का भव्य स्वागत

आर्यसमाजें आर्यसमाज बुलन्दशहर का अनुकरण करें और कार्यक्रम को सफल बनावें



विगत २७, २८ जुलाई को आर्यसमाज बुलन्दशहर मे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरङ्ग सभा की बैठक सम्पन्न हुई। अन्तरङ्ग के विज्ञापित विषयो के अतिरिक्त अन्तरङ्ग सदस्यो में हिन्दी आन्दोलन की भावी रूपरेखा एवं सभा के नैतिक उत्थान आन्दोलन की विशेष चर्चा रही।

इस अवसर पर बुलन्दशहर जिले का सभी समाजो के प्रतिनिधि एकत्र थे और उन्होंने प्रान्त के अभ्यागत अतिथियो का जिस आदर भावना के साथ स्वागत किया वह सदैव स्मरणीय रहेगा। इसी अवसर पर आयोजित 'नैतिक उत्थान सम्मेलन' सभा प्रधान की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। प्रान्तीय नेताओ के गम्भीर भाषण हुए। इसी अवसर पर बुलन्दशहर आर्यसमाज के प्रधान श्री शिवलाल जी ने सभा प्रधान को नैतिक उत्थान आन्दोलन की सफलता के लिए ५००) की थैली आर्यसमाज बुलन्दशहर की ओर से भेंट की। यदि इसी प्रकार प्रान्त की बड़ी समाजे सभा को आर्थिक सहयोग प्रदान करे तो सभा को अपने कार्यक्रम पूर्ण करने मे बड़ी सहायता मिलेगी।

सभा प्रधान श्री पण्डित हरिशङ्कर शर्म्मा ने बुलन्दशहर की आर्य जनता और आर्यसमाज के अधिकारियों को उनके निमन्त्रण तथा भव्य स्वागत के लिए धन्यवाद दिया और उपस्थित जन समूह तथा प्रान्तीय प्रतिनिधियो से अपील करते हुए कहा कि—

"राष्ट्र का नैतिक सकट हम सबको उत्थान के लिए पुकार रहा है। प्रत्येक आर्य यह प्रतिज्ञा लेकर कार्य क्षेत्र मे पदार्पण करता है कि वह स्वयं को मनसा वाचा कर्मणा पवित्र बनाता हुआ राष्ट्र को नैतिक भावनाओ से ओत प्रोत बनायगा। स्वाधीनता के ग्यारह वर्ष पश्चात भी देश में अनैतिकता की महामारी व्याप्त है और अधिकाधिक सक्रामक रूप धारण करती जा रही है। इस सक्रामकता से देश और जाति के जीवन को सुरक्षित रखने के लिए हमें स्वयं आदर्श बनना होगा और अन्यों को आदर्श बनाना होगा। आर्य होने के नाते हम पर सबसे अधिक उत्तरदायित्व है, क्या हम अपने उत्तरदायित्व को पहचानेगे? सभा ने नैतिक उत्थान आन्दोलन की योजना प्रसारित की है। सम्पूर्ण शक्ति से उसको सफल बनाने मे जुट जाइए मुझे दृढ़ विश्वास है कि उत्तर प्रदेश के आर्यजन इस आन्दोलन को सफल बनाकर देश की बिगड़ी दशा को सुधारने मे सम्पूर्ण राष्ट्र का नेतृत्व प्राप्त करेगे। वेद का सन्देश है—कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः"

सभा मन्त्री श्री फूलनसिंह जी ने भी आन्दोलन की योजना और सभा की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए सहयोग की अपील की और बुलन्दशहर की आर्य जनता व समाज के अधिकारियों को सभा की ओर से हार्दिक धन्यवाद दिया।

वर्ष ६० — अवैतनिक सम्पादक— स्नातक उमेशचन्द्र एम. ए., ईश्वरदयालु आर्य, सभा मुख्य उपमन्त्री — सह० सम्पादक — भगवत शरण — अङ्क ३०

वैदिक साहित्य चर्चा

वेदों के शुद्ध संस्करण की आवश्यकता

(श्री वीरसेन जी वेदश्रमी, वेद सदन, ७२, महारानी रोड, इन्दौर, (म० प्र०)

'सार्वदेशिक' के जुलाई अंक में एक नोट श्री प्रो० परमात्माशरण जी एम० ए० का आर्य समाज के पास वेद की शुद्ध प्रति के अभाव के बारे में प्रकाशित हुआ है। प्रत्येक आर्य, आर्य समाज, प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक सभा को भी इस न्यूनता या अभाव की ओर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए और वर्तमान समय में उपलब्ध संहिताओं की पुस्तकों में जो जो स्खलन, त्रुटियाँ, दोष और असौन्दर्य आदि दोष हैं उसको शीघ्र ही संशोधित एवं विशुद्ध कराकर अत्यन्त शुद्ध सुन्दर एवं आकर्षक वेद की प्रतियाँ सर्व साधारण जनता के समक्ष उपस्थित करने का अविलम्ब प्रयत्न किया जाना चाहिए।

आर्य समाज का आधार वेद है। जब आधार की ही उपेक्षा होगी तो आधेय की स्थिति क्या होगी? यदि हम शुद्ध एवं सस्वर मन्त्रों के उच्चारण में अपना असमर्थता अनुभव करते है तो कम से कम उसे शुद्ध एवं सुन्दर छापने मे तो आलस्य उपेक्षा और प्रमाद न करें? प्रकाशन की अशुद्धियों से वेद मन्त्रों के उच्चारण में और भी अशुद्धियाँ उत्पन्न होती जाती हैं। इस प्रकार वेद के प्रति उच्चारण दोष और प्रकाशन की अशुद्धियाँ उत्तरोत्तर चक्र रूप में वृद्धि को प्राप्त होती हुई परम पवित्र वेदाज्ञा को अधःपतन में घसीट ले जायेंगी। इस प्रकार विकृत आधार भित्ति पर हमारे ज्ञान विज्ञान का भण्डार तथा सब सत्य विद्याओं का भण्डार स्थिर नहीं रह सकेगा। यह स्थिति आर्य समाज की प्रतिष्ठा तथा अस्तित्व के लिए भी महान् घातक होगा। अतः हमें गम्भीरता से वेदों के शुद्ध एवं सुन्दर मुद्रण की ओर अपना ध्यान सब ओर से हटा कर इस ओर विशेष श्रद्धा पूर्वक केन्द्रित करना होगा।

वेद के मुद्रित ग्रन्थ जो वर्तमान में उपलब्ध हैं उनके प्रकाशकों का यह प्रयत्न अवश्य है कि यथा सम्भव वेद ग्रन्थों का शुद्ध ही मुद्रण हो तथापि उसकी उस शुद्धता एवं सौन्दर्य पर नहीं पहुँच पाते जिस स्थिति मे अन्य धर्म ग्रन्थों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। इसके कई कारण हैं। उनमें से एक प्रमुख कारण तो यह है कि वेद ग्रन्थो के संशोधन का कार्य वैदिक विद्वानो के हाथ से होना चाहिए। वैदिक विद्वानों से तात्पर्य है जिन्हें वैदिक स्वरों का अभ्यास है, वेद सस्वर जिन्हें कण्ठ है तथा जिन्होंने वेदों के शिक्षा ग्रन्थ एवं प्रति शाख्यादि ग्रन्थों का भी अध्ययन किया है। बिना ऐसी योग्यता के वेदों का शुद्ध मुद्रण नहीं हो सकता है।

अतः ऐसी योग्यता वाले २३ विद्वान् मिल कर संशोधन करेंगे तभी वेदों के शुद्धमुद्रण मे सफलता प्राप्त होगी। एक व्यक्ति के संशोधन से कतिपय अशुद्धियाँ रह जाना सम्भव ही है।

जिनको वेद गुरु परम्परा से कंठ हैं या जिन्होंने गुरु सम्मुख वेद पाठ करके एतत्सम्बन्धी अपने ज्ञान को पवित्र कर लिया है और अपनी वाणी व स्वरों को अभ्यास को भी वेद की आवृत्ति द्वारा पुष्ट कर लिया है ऐसे व्यक्ति संशोधन कार्य मे परम उपयोगी व सहायक होंगे। केवल शास्त्रीय विद्वानों से संशोधन में पूर्णता नहीं आ सकती है।

उदाहरणार्थ यजुर्वेद के प्रथम अध्याय के ११ वें मन्त्र को '.......... सुर्वन्तरिक्षमन्वेमि। पृथिव्यास्त्वा...' इस प्रकार प्रायः प्रकाशित किया जाता है। निर्णय सागर के उव्वट महीधर युक्त भाष्य को शुक्ल यजुर्वेद की प्रति ने, स्वाध्याय मण्डल, वैदिक यन्त्रालयादि द्वारा प्रकाशित संहिता ग्रन्थों की प्रतियों में भी यही पाठ मुद्रित है। शास्त्रीय विद्वान् इसमे क्या त्रुटि है यह पता नही लगा सकते है। परन्तु वैदिक विद्वान् जिसको सस्वर वेद कण्ठस्थ होगा वह तुरन्त त्रुटि बतादेगा कि यहाँ पर मध्य मे विराम चिह्न नहीं है। दूसरी अशुद्धि स्वर की दृष्टि से यह भी है कि यदि 'मन्वेमि' के पश्चात् विराम भी मान लें तो 'पृथिव्या.' शब्द पर इस प्रकार सस्वर प्रदर्शित करना अशुद्ध होगा, वहाँ पर 'पृथिव्या.' इस प्रकार स्वर प्रदर्शित करना चाहिए था। अतः यहाँ स्वर दोष है। मध्य मे विराम न होने की दशा में 'पृथिव्याः' इसी प्रकार स्वर प्रदर्शित करना उचित है। इत्यादि प्रकार के अनेक दोषों का ज्ञान वैदिक विद्वानो के साहाय्य से ही सम्भव है और इस प्रकार के विद्वानों से सहयोग प्राप्त किये बिना अनेक प्रकार के दोष वेद संहिताओं के मुद्रण मे रह जाते है।

एक बार निर्णय सागर के उव्वट महीधर भाष्ययुक्त यजुर्वेद के प्रथम

[शेष पृष्ठ १६ पर]

सिहावलोकन

आर्य समाज में साहित्य संगीत

[श्री पण्डित बिहारीलाल शास्त्री]

आर्य समाज में कोई न कोई दोष देखना ही जिन लोगों ने अपना परम धर्म बना रखा है, ऐसे लोगों की तरफ से एक यह भी प्रभाव फैलाया जाता है कि आर्य समाज में संगीत और साहित्य के जानकार नहीं, और आश्चर्य है कि आर्य समाजी भी इसी भुलावे में पड़कर आत्मग्लानि का अनुभव करने लगते है। यह बात प्रायः हमारे भजनीकों को लक्ष्य मे रख कर कही जाती है, और इस बात को बिलकुल दृष्टि से ओझल कर दिया जाता है कि पिंगल पर पूर्णाधिकार रखने वाले कविता कामिनी कान्त स्वर्गीय श्री नाथूराम 'शङ्कर' शर्मा जी भी आर्यसमाज के रत्न थे, और समालोचक शिरोमणि, सहृदय सम्राट, सरल-गद्य के अद्वितीय लेखक श्री प० पद्मसिंह जी एक आर्य सामाजिक विद्वान् ही थे। मंगला प्रसाद पारितोषिक पाने वालों में भी आर्य समाजियो की संख्या ही अधिक है। मर्यादा पूर्ण हास्य रस के एकमात्र लेखक श्री पं० हरिशङ्कर शर्मा भी तो पक्के आर्यसमाजी ही हैं।

हमारे भजनीकों को ही उदाहरण में रखने वालों को जरा श्री नाथूराम जी के संगीत और श्री राधेश्याम जी की रामायण पर भी नजर डालनी चाहिए।

वस्तुतः आर्य समाज के भजनीको को जिस तरह का काम करना पड़ता है, जिन लोगों को धर्म का सन्देश, जाति की दशा और मातृभूमि की दुख गाथा सुननी पड़ती है, उन लोगों की योग्यता को लक्ष्य में रखकर आर्य भजनीकों को कविता और गायन की उपयोगिता को देखना चाहिए। आर्य समाज के भजनीकों को देश की बहुसंख्यक ग्रामीण जनता को अन्धकार से निकालना पड़ता है। अतः उन्हीं की भाषा में उन्हीं की रुचि को लक्ष्य में रख सुधार-सुधा की वर्षा करनी पड़ती है। आर्य समाज के भजनीकों का ही प्रताप है कि आज देहात के कृषक भी बड़े सुधारक से भी अधिक अच्छे विचार प्रकट कर सकते हैं और दार्शनिक चर्चा को समझ सकते हैं।

पण्डित बस्तीराम की "धन्य तेरी कारीगरी करतार" 'ईश्वर को लोगों करम प्यारे हैं" भजन जिस समय करतालों पर होते है उस समय उपनिषद् और गीता से कम प्रभाव जनता पर नहीं पड़ता। चौधरी तेजसिंह के "समय है कैसा यह परिवर्तनशील" के गायन मे इतिहास की अच्छी जानकारी प्रगट होती है। "जगत में है घूंसा बलवान" और "ना रही अहिंसा की पहिचान" मे इस राजनीति का चित्र खींच दिया है। भिखारिन की टेर में' काव्य का यह लक्षण ठीक है तो आर्य समाजी भजनीकों की तुकबंदी कविता की श्रेणी मे बैठ सकती है। उससे पढ़े बेपढ़े सबको परिलुप्त हमने स्वयं देखा है। झूमते लोट पोट होते जनता को आप देख सकते हैं। कुंवर सुखलाल सिंह जी की कविता पर हमने उर्दू के शायरों तक को तड़फते फड़कते पाया है। जनता तो उस समय तन्मय हो जाती है। कुंवर साहब का जब गद्य पद्य मिश्रित वाक् पीयूष प्रवाहित होता है उस समय पढ़े और बे पढ़े सब ही उसकी तरगों पर झूमते हैं। जनता को हंसाना, रुलाना, तड़पाना, धड़काना आपके हाथ मे होता है, और साथ ही आप भी भावों के वशीभूत हो विदेह बन जाते हैं। प० बस्तीराम जी और चौधरी तेजसिंह जी की कविता को पिंगलादि कविता के नियमों मे कसना सहज नहीं। वह गांव की सीधी सादी परन्तु हृष्ट पुष्ट जाटिनी के समान हाव भाव अलंकारादि शून्य है। माली के कांट छांट न की हुई बन लता समझिये। पर कुंवर सुखलाल जी की कविता खद्दर की साड़ी जम्फर से सुशोभित पढ़ी लिखी शिक्षित महिला के समान हो निडर हो चलने वाली है, परन्तु स्वाभाविक सौन्दर्य सम्पन्न है। असल में देश के दुख दर्द से पीड़ित कविता को शृंगार का अवकाश कहां? देश के दुख में बहे आंसू उसे मुक्ताहारों से भी अधिक सुन्दर बना रहे हैं। देशोद्धार के जोश का लाली, अत्याचारों के प्रति क्रोध का आवेश, राग रंजन क्रिया की आवश्यकता नहीं रहने देते। इनके अतिरिक्त हमारे एक और भजनोप-

[शेष पृष्ठ १६ पर]

वेदोपदेश

ओम् मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा ।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ॥
अथर्व० ३।३०।३

भाई भाई से, बहिन बहिन से, भाई बहिन से, और बहिन भाई से द्वेष न करें, एकत्र होकर और एकसा उद्देश्य रखते हुए कल्याणकारी वाणी बोलें।

आर्यमित्र

लखनऊ—१० अगस्त १९५८, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०५८

आर्य महा सम्मेलन की आवश्यकता

★

आर्य समाज के कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आर्य महा सम्मेलनों की परम्परा स्थापित हो चुकी है। आर्य समाज का जब कभी किसी से संघर्ष करना पड़ा है तब उसके कर्णधारों ने आर्य जनता का सहयोग प्राप्त करने के लिए आर्य महासम्मेलनों का आयोजन किया। इस प्रकार के आयोजनों से समय समय पर होने वाले आन्दोलनों को पर्याप्त बल मिला और कार्य आगे बढ़ा। हैदराबाद सत्याग्रह से पूर्व शोलापुर में आर्य महासम्मेलन किया गया, सारे देश की आर्य जनता ने उसमें सम्मिलित होकर आर्य नेताओं की योजना को स्वीकार किया और समर्थन और सहयोग का वचन दिया। इतिहास ने देखा कि आन्दोलन किस शान के साथ चला और अन्त में आर्य समाज की विजय प्राप्त हुई।

आज देश स्वाधीन है। आर्य समाज का काम और दायित्व पहले से अधिक बढ़ गया है। हमारे सांस्कृतिक दृष्टिकोण के साथ वर्तमान राजनीतिज्ञ सहमत नहीं हैं और वे भारत की पचरंगी संस्कृति के गीत गाने में अपने को गौरवशाली समझते हैं और इसी का परिणाम है कभी किसी तथाकथित संस्कृति के लोग सिर उठाते हैं कभी किसी संस्कृति के लोग और परिणाम स्वरूप उनकी मांगों को स्वीकार करने के लिए राष्ट्र के राजनीतिज्ञ तुष्टीकरण नीति का अवलम्बन करते हैं।

ईसाइयत के प्रचार को रोकने में हमारे राजनीतिज्ञ इसलिए सकुचाते हैं कि ईसाई संस्कृति के लोग अप्रसन्न हो जायेंगे। राज्य कमीशन की बृहत्पंजाब योजना को स्वीकार करने के लिए वे इसलिए तैयार नहीं होते हैं कि उससे सिक्ख संस्कृति के लोग और उनकी पंजाबी भाषा व गुरुमुखी का अस्तित्व संकट में हो जायगा। इसी प्रकार हिन्दी की एक शैली मात्र होने पर भी धर्मनिरपेक्षता के नाम पर उर्दू को विशेष सुविधायें देने के लिए हमारे राजनीतिज्ञ विवश हैं। दक्षिण के भाषावादी आन्दोलन और द्रविड़ के संस्कृत के नारों के आगे विधान द्वारा स्वीकृत हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने की नीति पर चलना उनके लिए कठिन बन गया है।

इस प्रकार के अनेक सांस्कृतिक प्रश्न हैं जिनके विरुद्ध आर्य समाज का अपना दृष्टिकोण है। इन सब प्रश्नों पर आज गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाना चाहिए।

ऊपर की बातें प्रसंगत लिखी गयी हैं। इस समय आर्य समाज का पंजाब में भाषा नीति के सम्बन्ध में जो आन्दोलन है उसके कारण ही आर्य महासम्मेलन की सामयिक उपयोगिता सिद्ध हो जाती है।

आन्दोलन का प्रथम अध्याय मई ५७ से दिसम्बर ५७ तक रहा। सांस्कृतिक एकता की विशुद्ध भावना से प्रेरित होकर आर्यसमाज के नेतृत्व में पंजाब का आन्दोलन चला। जिस रूप में वह चला और जिस प्रकार उसे स्थगित किया गया वह यहाँ विचार का विषय नहीं है उस पर पर्याप्त चर्चा हो चुकी है, और अब दुबारा उस आन्दोलन की गूंज कानों में आने लगी है। सरकार के कर्णधार अपने रुख को समय के अनुसार बदल रहे हैं पर आर्य समाज अपनी मांगों की सत्यता को दुनिया से मनवा चुका है। इसलिए अब आन्दोलन की पुनः चर्चा हो तो हम अपना मत व्यक्त करना उचित समझते हैं कि इस बार आन्दोलन बड़ी संजीदगी और पूरी तैयारी के साथ किया जाय। इसके लिए सर्वोत्तम उपाय यही है कि इस विषय पर विचार करने के लिए सार्वदेशिक सभा आर्य महासम्मेलन बुलावे, उसमें जो निर्णय हो और जो रूपरेखा तैयार हो उसका पालन करना प्रत्येक आर्य का कर्तव्य होगा। इस बार आन्दोलन का नेतृत्व आपतस्थिति में सार्वदेशिक सभा को अपने हाथों में लेना पड़ा था परन्तु अब तो समय काफी है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरङ्ग सभा ने एक प्रस्ताव द्वारा सार्वदेशिक सभा से मांग की है कि आर्य महासम्मेलन बुलाकर ही आन्दोलन की नीति घोषित की जाय। हम इस मांग का समर्थन करते हैं। सार्वदेशिक सभा की ओर से अप्रैल ५८ में इस प्रकार के सम्मेलन की योजना थी परन्तु वह स्थगित हो गया। इससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि सभा स्वयं इस प्रकार के सम्मेलन के पक्ष में है। हमारा कथन यही है कि आन्दोलन के पुनः आरम्भ किये जाने से पूर्व इस प्रकार का सम्मेलन अवश्य बुलाया जाय।

हमारा विश्वास है कि आर्य समाज की एकता और आन्दोलन के लिए व्यापक जन सहयोग के लिए आवश्यक है कि इस प्रकार का सम्मेलन सर्वाधिक सहायक होगा। हिन्दी की समस्या के साथ साथ अन्य सांस्कृतिक, राष्ट्रीय धार्मिक सभी प्रकार के ज्वलन्त प्रश्नों पर आर्य जनता को अपने विचार प्रकट करने का अवसर भी मिल सकेगा। आशा है शिरोमणि सभा के अधिकारी इस प्रश्न पर आवश्यक विचार कर आर्य महासम्मेलन बुलाने का निर्णय करेंगे।

शाही शान शौकत या जनसेवा

हाल ही में जयपुर के राज्य भवन की सजावट पर २॥ लाख रुपया व्यय हुआ है। राज्यपाल महोदय का दिल बहलाने के लिए ७ रेडियो सैट खरीदे गये हैं, एक रेडियोग्राम और फोनोग्राफ भी। उनकी सवारी स्टूडीबेकर कार है और एक नई लायड मास्टर व एक बढ़िया डाज कार और एक बिल्ली स्टेशन वैगन, इन सब पर ८० हजार व्यय हुआ है। २६८०८) रुपये की कीमत से आठ कमरों को ठण्डा रखने वाली मशीन खरीदी गई है। बाग में जो छतरियाँ लगायी गयी हैं उन पर १७००) रुपया व्यय हुआ है। क्लाक और टाइमपीस घड़ियों पर २१००) रुपया लगा, ३५००) के झाड़ फानूस आये। क्राकरी पर २०२००) रुपये व्यय हुए हैं। पर्दों पर २६०० रुपया खर्च हुआ। व्यक्तिगत उपयोग के लिये २५००) रुपये के कम्बल खरीदे गये। २०००) का खेल कूद का सामान आया, स्टेशनरी का बिल ३०००) का है। बिजली के पंखे और अन्य सामान २१००) रुपये का आया। चांदी के बरतनों और फरनीचर पर २०००) व्यय हुआ।

ये आंकड़े अपनी कहानी स्वयं कह रहे हैं। इन पर किसी प्रकार की टिप्पणी करना विज्ञ पाठकों के लिये हम आवश्यक नहीं समझते पर इतना कहना चाहते हैं कि एक ओर जन सेवकों का यह जीवन स्तर जो अंग्रेजों की शान को भी मात करता है, और दूसरी ओर भूख के सताए गरीब भारतवासी जो खाद्यान्न के अभाव में संत्रस्त हैं, दोनों में से किसे भारत का वास्तविक स्वरूप माना जाय।

आर्यसमाज बुलन्दशहर का सराहनीय सहयोग

आर्य प्रतिनिधि सभा के गत वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर ही आर्यसमाज बुलन्दशहर के प्रधान श्री शिवलाल जी सभा प्रधान को बुलन्दशहर में अन्तरङ्ग के लिए निमंत्रित कर गये थे। गत २७-२८ जुलाई को अन्तरङ्ग सभा की बैठक वहां विशेष उत्साह के साथ सम्पन्न हुई। आर्यसमाज बुलन्दशहर की ओर से ५०१) की थैली सभा प्रधान को भेंट की गई। आर्यसमाज बुलन्दशहर का यह सराहनीय सहयोग प्रान्त की आर्यसमाजों के लिए अनुकरणीय है। इस सहयोग के लिए सभा आर्यसमाज बुलन्दशहर का धन्यवाद करती है।

सभा की नवीन योजनाएं

जैसा कि मित्र के पिछले अङ्कों में हम लिख चुके हैं कि सभा की योजनाएं हिन्दी आन्दोलन के कारण स्थगित रहीं अब उन पर विचार होना चाहिये। सभा की अन्तरङ्ग की बैठक में इस कार्य के लिए १६ व्यक्तियों की एक उपसमिति का पुनर्गठन कर दिया गया है जो "आर्यमित्र जयन्ती, गंगा प्रसाद उपाध्याय तथा गंगाप्रसाद रि० चीफ जज अभिनन्दन" का सम्पन्न करने की योजना प्रस्तुत करेगी और आयोजनों को पूर्ण करेगी, उपसमिति के सभी सदस्य आर्यजगत् के प्रसिद्ध

(शेष अगले पृष्ठ पर)

आर्य्य महासम्मेलन शीघ्र बुलाया जाय

सत्याग्रह तब तक स्थगित रहे

अन्तरङ्ग सभा का सर्वसम्मत निश्चय

आर्य्य जनता ध्यान से पढ़े

(सभा प्रधान श्री पं० हरिशङ्कर शर्म्मा)

पंजाब सरकार द्वारा, पंजाब प्रदेश में, राष्ट्र भाषा-हिन्दी के साथ जो अन्याय और अत्याचार किया गया है, उसके विरोध में, भाषा स्वातन्त्र्य समिति ने, अहिंसात्मक सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ किया, जो कई महीनों तक बड़े उत्साह से चलता रहा। आर्य्य जनता ने उसके लिए यथेष्ठ आर्थिक सहायता दी तथा दिखाई। सहस्रों हिन्दी प्रेमी आर्य्य भाई बहन कारागारों मे गये और उन्होंने पुलिस के प्रहार तथा कारागारों के कठोर कष्ट सहे। कई वीरो ने तो अपने अमूल्य प्राणों की आहुतियाँ तक दीं।

अन्ततः यह उत्तरोत्तर बढ़ता-चढ़ता सत्याग्रह, भारत सरकार के गृहमन्त्री श्री प० गोविन्दवल्लभ पन्त से वार्त्तालाप करने के पश्चात् सहसा स्थगित कर दिया गया। गत जून मास मे, सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक बृहदधिवेशन के अवसर पर, भाषा स्वातन्त्र्य समिति की बैठक मे, सत्याग्रह-स्थगन के सम्बन्ध मे विचार हुआ तो अध्यक्ष श्री घनश्याम सिंह गुप्त ने अपने भाषण में स्पष्ट कहा कि अब वे सत्याग्रह की पुनरावृत्ति के पक्ष में नहीं हैं। उस समय और कई सत्याग्रही नेताओं के मुखों से भी ऐसे ही शब्द सुने गए। परन्तु पीछे समाचार पत्रों में पढ़ा कि ग्यारह सदस्यों की एक 'संघर्ष समिति' नियुक्त हुई है जो सत्याग्रह आन्दोलन के सम्बन्ध मे विचार करेगी।

अब उक्त 'संघर्ष-समिति' की ओर से पुनः शीघ्र ही सत्याग्रह करने की घूंज गर्जना सुनाई दे रही है। परन्तु प्रश्न तो यह है कि इतने जन धन और बल विक्रम का उपयोग करके, पंजाब प्रदेशीय हिन्दी समस्या हल करने में, कितनी सफलता प्राप्त हुई। देश-प्रदेश के सहस्रों सत्याग्रही वीरो ने तो पजाब के हिन्दी प्रश्न पर, अपने अमूल्य प्राणों की बाजी लगाई, परन्तु वहाँ के हिन्दी हितैषी अध्यापक प्राध्यापक गण, उन शिक्षा संस्थाओं की सेवा मे सर्वात्मना सलग्न रहे, जिनमे हिन्दी-हित पर घोर अत्याचार हुआ बताया जाता है। इन संस्थाओं के सचालकगण भी,सरकारी सहायता प्राप्त (एड) के मोह-पाश मे पड़े, निरन्तर हिन्दी विरोधी सरकार के सहायक और समर्थक बने हुए हैं। [illegible]

अधिकांश हिन्दी शिक्षणालय आर्य्य समाजों और आर्य्य संस्थाओं द्वारा संचालित हैं। हिन्दी प्रेमी माता-पिताओं और अभिभावकों ने भी ऐसी शिक्षा संस्थाओं में अपने बालक बालिकाओं को शिक्षार्थ भेजने में कोई हानि नहीं समझी। इसका स्पष्ट अर्थ यह हुआ कि पंजाब प्रान्तीय हिन्दी प्रेमियों का एक बड़ा और प्रभावशाली समुदाय तो पंजाब सरकार की हिन्दी विरोधी नीति का सहायक समर्थक बना रहेगा। हाँ, दूसरे लोग आएं और पंजाब में 'सत्याग्रह' की मशाल जलाएं। जेल जाएं और भयङ्कर आपत्तियाँ उठाएं। यदि इन अध्यापकों, प्राध्यापकों और संचालकों तथा अभिभावकों ने, हिन्दी हित रक्षक के रूप में कुछ दिन भी असहयोग नीति का आश्रय लिया होता तो यह समस्या प्रारम्भ में ही हल हो गयी होती। परन्तु आर्थिक कारण वश यह पग नहीं उठाया गया। तब नहीं तो अब असहयोग-नीति का अवलम्बन कर, इस दिशा में बड़ी सफलता प्राप्त की जा सकती है। यदि वे पजाबी भाई कुछ काल के लिये स्वार्थ त्याग करने को तैयार हों।

हिन्दी 'सत्याग्रह' पुनः प्रारम्भ किया जाय या नहीं, इस प्रश्न पर उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा ने, गत २८ जुलाई को, बुलन्दशहर में आयोजित अपने अधिवेशन में, कई घण्टों तक बड़ी गम्भीरता से विचार विमर्श करने के पश्चात्, सर्व सम्मति से, इस आशय का प्रस्ताव पारित किया है कि सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा देहली में या जहाँ उचित समझे वहाँ शीघ्र ही अखिल भारतवर्षीय आर्य्य महा सम्मेलन का आयोजन करे और इस में सम्मिलित होने के लिये देश के सभी हिन्दी नेताओं, साहित्यकारो, साहित्यिकों और प्रेमियों को निमन्त्रण दे, इस महा सम्मेलन में, सत्याग्रह करने न करने पर, बड़ी गम्भीरता से विचार किया जाय और जो निर्णय हो उसी के आधार पर सार्वदेशिक सभा अपने अधीनस्थ सभाओं तथा समाजों को आदेश दे, जो सबको सर्वथा मान्य एवम् शिरोधार्य होगा। हिन्दी हितैषी और हिन्दी समर्थक केवल आर्यसमाज ही नहीं है,अतः इस [illegible]

(पिछले पृष्ठ का शेष)

कार्यकर्ता हैं साथ ही साहित्यिक कार्य होने के कारण हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् तथा पत्रकार श्री बनारसीदास चतुर्वेदी एम० पी० को भी सदस्य बनाया गया है। इस प्रकार उपर्युक्त कार्यों की सफलता के लिए सभा पूर्ण सचेष्ट है उपसमिति को अधिकार है कि वह जिन व्यक्तियों को उचित समझे सदस्य बना ले। इस अवसर पर हम उपसमिति से निवेदन करना चाहेंगे कि वह इन आयोजनों के सम्बन्ध में जनता की सम्मतियां प्राप्त करना आरम्भ कर दे और शीघ्र ही योजना प्रकाशित कर दी जाय। यदि दोनों आयोजन दिसम्बर में सम्पन्न होने हैं तो समय बहुत कम है और कार्य महान्, इसी को ध्यान में रखते हुए कार्य में प्रगति आनी चाहिये।

लोकमान्य तिलक की स्मृति

लोक मान्य बाल गगाधर तिलक भारत माता के भाल के तिलक थे उन्हे जन्म देकर भारत भूमि कृतकृत्य हुई। उनकी पावन स्मृति हमे सदैव राष्ट्रभक्ति और कर्मयोग की प्रेरणा देती रहेगी। हो सकता है उनके सिद्धान्त एवं राजनैतिक विचारों से सब सहमत न हों या रहे हों पर उनकी राष्ट्र भक्ति और विद्वत्ता भारत के लिये सदैव गौरव का कारण रहेगी। सारे राष्ट्र ने तिलक जयन्ती मनाकर उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है, पर हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही हो सकती है कि हम आज भी राष्ट्र भक्ति की उसी प्रकार शपथ लें जैसी विदेशी दासता से मुक्ति आन्दोलन के समय लिया करते थे। तिलक जी ने जिस कर्मयोग का सन्देश हमें दिया स्वतन्त्रता के पश्चात् उसकी पहले से अधिक आवश्यकता है। आज योग का त्याग कर राष्ट्र भोग की ओर बढ़ रहा है, तिलक जयन्ती का राष्ट्र को यही सन्देश है। राष्ट्र निर्माण के कार्य में अपने कर्तव्य का पालन करो।

अगस्त क्रान्ति

भारत छोड़ो आन्दोलन ८ अगस्त ४२ में आरम्भ हुआ था। भारतीय स्वाधीनता के इतिहास में इस दिवस का अपना गौरवपूर्ण स्थान है। भारत की स्वाधीनता का उदय भी १५ अगस्त को हुआ इस प्रकार भारत छोड़ो आन्दोलन ५ वर्ष मे अपना पूर्ण फल प्राप्त कर सका। विदेशी दासता से तो आज हम मुक्त हैं परन्तु अभी हमारे दिमाग गुलामी से भरे हुए हैं, हम अपने राष्ट्र के मस्तिष्क को विदेशी गुलामी से मुक्त बना सकें यही अगस्त क्रान्ति का हमारे लिये सन्देश है। क्या हुआ यदि हमारा शरीर बन्धन से मुक्त हो पर मस्तिष्क विदेशी कीटाणुओं से विषाक्त हो। भारतीय मस्तिष्क की शुद्धि ही हमारे प्रयत्नों का लक्ष्य होना चाहिए। अगस्त क्रान्ति के शहीदों के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए सभी प्रतिज्ञा करें कि हम तब तक चैन से नहीं बैठेंगे जब तक राष्ट्र के मस्तिष्क को भी विदेशी दासता से मुक्त कर उसमें स्वस्थ भारतीय चिन्तन की धारा न बहने लगेगी।

संस्थाओ और हिन्दी नेताओं से परामर्श कर लेना आवश्यक है। इससे सबका सहयोग प्राप्त होगा। और तब यदि 'सत्याग्रह' ही करना निश्चित हुआ तो वह बहुत बलिष्ठ बन जाएगा और सत्ताधारी लोग, लोकमत के आगे नतमस्तक हुए बिना न रहेंगे [illegible]

हिन्दी क्षेत्र में पंजाबी की अनिवार्यता

पजाब के हिन्दी रीजन के विधान सभा-विधान परिषद् के सदस्यों की क्षेत्रीय बैठक मे हिन्दी क्षेत्र मे प्राइमरी व सेकेन्डरी कक्षाओं मे पजाबी की अनिवार्यता के विरुद्ध प्रस्तुत प्रस्ताव दलीय अनुशासन के कोड़े की मार के कारण गिर गया। हिन्दी क्षेत्र की भाषा समस्या के लिये रीजनल फार्मूले के नाम पर कांग्रेसी सदस्यों को अपनी अन्तरात्मा की आवाज को दबाने के लिये विवश होना पड़ा इसे प्रजातन्त्र का अभिशाप ही कहा जायगा। इस निर्णय ने आर्य समाज के पक्ष को संसार के सामने स्पष्ट रूप में रख दिया है। हमें आशा है जिन लोगों को यह भ्रान्ति थी कि पजाब में हिन्दी पर कोई खतरा नहीं है उनका भ्रम दूर हो जायगा और वे आर्यसमाज के पक्ष की सत्यता को समझेंगे।

केरल का छात्र आन्दोलन

केरल की साम्यवादी सरकार के निर्णय के विरुद्ध छात्रों ने तीव्र आँदोलन किया, सरकार को गोली चलानी पड़ी ५ व्यक्ति मारे गये। पिछले डेढ़ वर्ष के शासनकाल में केरल सरकार को पहली बार गोली चलानी पड़ी हम इस गोली काण्ड की निन्दा करते हैं और चाहते हैं कि उत्तेजना के अवसरों से सदैव बचा जाय। केरल का छात्र आन्दोलन समाप्त हो गया है। हम आशा करते हैं कि अब वहाँ ऐसी दुर्घटना की पुनरावृत्ति न होगी।

राजनैतिक दलों ने इस छात्र असन्तोष का लाभ उठाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। जो दोष दूसरे राज्यों में साम्यवादियों पर लगाया जाता है वही आज केरल में दूसरी पार्टियों पर है। क्या इस प्रकार से स्वस्थ प्रजातन्त्र का विकास सम्भव हो सकेगा?

पौरस्त्य और पाश्चात्य गणतन्त्र का

मुख्य दोष 'फूट'

(आचार्य श्री नरदेव शास्त्री, वेदतीर्थ ज्वालापुर हरिद्वार)

"भेद से गणराज्य नष्ट हो जाते हैं" क्या महाभारत के इस उपदेश से शिक्षा व प्रेरणा लेकर भारतीय गणराज्य के वर्तमान अधिकारी राष्ट्र की स्थिति पर कुछ सोचने का कष्ट करेंगे ? 'लोभ और अमर्ष' के वशीभूत होकर हमारे नेता राष्ट्र को अधोगति की ओर ले जा रहे है—जनता मे इस बढ़ती हुई विश्वास को दूर करने के लिए क्या हमारे नेता कुछ त्याग का परिचय देंगे ?

—सम्पादक

"भिन्नास्तु वै मनुजेन्द्र परावंशे,
न विद्यते किंचिदन्यद्विनाशाम्"
(महात्मा विदुर)

महाभारत के पूर्व तथा महाभारत के समय में गणतन्त्र राज्य थे किन्तु वे गण किस प्रकार बनते थे और वे गण मिलकर किस प्रकार शासन करते थे, केन्द्र राज्य में कैसे उनका प्रतिनिधित्व रहता था इस बात का पता नहीं चलता। किन्तु गणतन्त्र के एक भारी दोष-"फूट" पर शान्ति पर्व में अच्छा प्रकाश डाला है और उससे बचने का प्रबल अनुरोध है।

युधिष्ठिर—मैं गणतन्त्र की बात सुनना चाहता हूं। वे गण राज्य कैसे बढ़ते हैं, वे शत्रुओं को कैसे जीतते हैं वे अपने मित्रों व सहायकों को कैसे प्राप्त कर लेते हैं और उनमें फूट क्यों पड़ जाती है, इत्यादि सुनना चाहता हूं।

संघ बद्ध राज्यों के विनाश का मुख्य कारण भेद है। इतने बहुतों में मंत्र गुप्ति—(जो कि राज्य शासन का मुख्य अङ्ग है)—रह नहीं सकती ऐसा मैं मानता हूं। हे पितामह ऐसा कोई उपाय बतलाइये जिससे गणराज्यो मे भेद न पड़ा करे।

भीष्मपितामह—गणों मे तथा कुलों में भेद पड़ने के दो ही कारण है १—लोभ, २—अमर्ष, पहिले किसी में लोभ आ जाता है और वह दूसरे का भाग हड़पना चाहता है। इसको देखकर दूसरा भी उभड़ता है क्योंकि उसको यह बात सहन नहीं होती यही अमर्ष है। ये ही परस्पर विनाश के कारण बन जाते हैं और इस लोभ और अमर्ष से प्रभावित व्यक्ति और समुदायो के भेदभाव से जन-धन की बड़ी हानि हो जाती है। और अपनी अपनी पृथक् मन्त्रणा चल पड़ती है—परस्पर का भेद लेने के लिए गुप्तचर लगाये जाते हैं। फिर साम दाम भी चल पड़ता है। अपार धनराशि का व्यय करते है—परस्पर जन संहार भी हो जाता है किसी न किसी उपाय से अथवा उपायो से एक दूसरे को दुर्बल करने कराने मे जुट जाते हैं—सङ्घबद्ध होकर जीवन-निर्वाह करने वाले गणराज्यो के सैनिको मे फूट पड़ जाती है। फूट पड़ने पर परस्पर के भाव दूषित हो जाते हैं और परस्पर भय और आशङ्काओं के कारण शत्रुओं के वश में हो जाते हैं।

भेद से गणराज्य नष्ट हो जाते हैं क्योंकि जब इनमे भेद पड़ जाय तो बड़ी सुलभता से जीते जा सकते है। इसलिए गणराज्य के लोग संघबद्ध होकर विजय के लिए प्रयत्नशील रहें।

जब ये मिलकर रहते हैं तब इनको समस्त अपेक्षित सहायता मिल जाती है जन की, धन की, मित्रों की। दूसरे लोग भी इनसे मैत्री करते हैं।

ज्ञानी लोग ऐसे गणराज्य की प्रशंसा करते हैं। संघबद्ध लोगों में परस्पर दुर्भावना नहीं होती। वे परस्पर की शुश्रूषा करते हैं परस्पर सहायक रहते हैं और सुखी रहते हैं।

गणराज्य के श्रेष्ठ नागरिक परस्पर धार्मिक व्यवहार रखते हैं और सबको यथोचित, यथायोग्य दृष्टि से देखने के कारण, उन्नति की दिशा मे अग्रसर रहते हैं।

गणराज्य के श्रेष्ठ नागरिक इष्ट-मित्र बन्धु बान्धवो को, यदि वे कुमार्ग पर चले तो दण्ड दे देते हैं। उनको सब प्रकार की शिक्षा देते रहते हैं और जब वे योग्य हो जायं तब वे उनका यथायोग्य सत्कार करते हैं इसीलिए वे उन्नति करते जाते हैं।

संघराज्य के सदस्य स्थिर पौरुष उत्साही विद्वानो और शूरों का सम्मान करते हैं इसी से गणराज्य दृढ़ होते हैं।

गणराज्य के सभी नागरिक धनवान् शूरवीर, अस्त्र शस्त्र के ज्ञाता होते हैं। वे विपत्ति मे पड़े हुए लोगो का उद्धार करते हैं। किंकर्तव्य विमूढ़ो को मार्ग बतलाते हैं।

गणराज्य क्यो नष्ट हो जाते हैं ? परस्पर व्यर्थ के क्रोध, भेद (फूट) भय व्यर्थ कैद दण्ड, दूसरों को धनादि के अपहरण से दुर्बल बनाने की वृत्ति अथवा बन्धन मे डालने की वृत्ति के कारण ये गणराज्य शीघ्र ही शत्रुओ के वश मे पड़कर तत्काल नष्ट हो जाते हैं।

इसलिए गणराज्य के प्रमुख प्रमुख अधिकारियो का आदर सम्मान करना चाहिए क्योंकि लोक यात्रा का महान् भार इन्हीं प्रमुख पुरुषो के ऊपर रहता है।

गणराज्य के लिए लोग गुप्त मन्त्रणा तथा गुप्तचरों की नियुक्ति का का कार्य उन्हीं मुख्य पुरुषों का है।

गणराज्य के प्रमुख प्रमुख व्यक्तियों को चाहिए कि वे मिलकर कार्य करें ऐसे कार्य करें जिनसे गणराज्य का हित सधता तथा बनता हो। यदि गणों में फूट पड़कर पृथक् पृथक् दलों का विस्तार हो जाता है, तो उनके सभी कार्य बिगड़ जाते हैं, अनेक अनर्थ उत्पन्न हो जाते हैं।

जब इस प्रकार के भेद पड़ जांय और दल बढ़ जांय, तब भिन्न भिन्न दलों के नेता अथवा बुद्धिमान् जन एकदम इस प्रवृत्ति को रोकने का प्रयत्न करें। समय पर प्रतीकार न किया गया तो विनाश तो अवश्यम्भावी है।

कुलो मे अथवा महाकुलों मे जो झगड़े खड़े हो जाते हैं और कुल के वृद्ध अथवा महावृद्ध पुरुष उदासीन होकर देखते रहते हैं, गोत्रों का नाश हो जाता है और गणराज्यो मे भेद डालते हैं।

भीतरी भय से रक्षा करना चाहिए और बाहरी क्षुद्रभयों से भी सावधान रहना चाहिए।

परस्पर क्रोध मोह के कारण, स्वाभाविक लोभ के कारण जब एक दूसरे के साथ बोलना बन्द कर देते है, परस्पर के साथ सब व्यवहार बन्द हो जाते हैं तब समझो कि हारने के समान इकट्ठे हो गये, और पराजय का समय समीप आगया।

जाति और कुल मे सभी एक समान हो सकते हैं किन्तु बुद्धि उद्योग रूप सम्पत्ति मे एक सा होना दूभर है। शत्रुगण गणराज्य के लोगो मे बुद्धि भेद उत्पन्न करके और कुछ लोगों को ले देकर वश मे कर लेते हैं और इस तरह समूचे संघ अथवा गणों मे फूट पड़ जाती है और विनाश हो जाता है। इसलिए संघबद्ध रहना गण राज्यो के नागरिकों का परम कर्तव्य है।

इन गणराज्य के प्रतिनिधि कैसे चुने जाते थे यह पता नहीं चलता पर इतना तो स्पष्ट ही है कि इन गण राज्यों के प्रधान पुरुष प्रायः धार्मिक प्रवृत्ति के ही रहते थे—धर्म हीन नहीं रहते थे, धर्म से उदासीन भी नहीं रहते थे, धर्म निरपेक्ष भी नहीं होते थे।

जिस समय की बात भीष्मपितामह ने कही उस समय वैदिक धर्मी ही राज्य थे—प्रायः एक अथवा समान धर्मी राज्य थे, इसलिए उस समय के गणराज्यों में वर्तमान समय के गणराज्य अथवा गणतन्त्र के दोष नहीं थे।

अब तो गणतन्त्र बनाने में अज्ञ-विज्ञ अतिविज्ञ विद्वान, अतिविद्वान, अविद्वान, मूर्ख महामूर्ख, शूरवीर, भीरु, धर्महीन, धर्म निरपेक्ष, धर्मसापेक्ष, शास्त्रज्ञ और शास्त्रगन्ध हीन सबको अधिकार प्राप्त है। "सब धान एक पसेरी" की मतदान पद्धति है।

दो बड़े देशव्यापी महाचुनाव हम देख चुके है—और दस वर्ष तक इस पद्धति का अनुभव भी मिल चुका है।

देखने को यह पद्धति आपातरम्य (ऊपर ऊपर से रमणीय) प्रतीत होती है पर इस पद्धति में पाश्चात्य प्रजातंत्र पद्धति का अनुकरण होने से इसमें भारतीय पद्धति का अथवा भारतीय संस्कृति का लेश भी नहीं है अंगरेजो को यहां से निकाल कर स्वतन्त्रता प्राप्ति अथवा स्वराज्य प्राप्ति के लिए यह उपाय भले ही अच्छा रहा हो पर इस वर्तमान संविधान से भारतीय पद्धति और संस्कृति की रक्षा नहीं हो सकती। संस्कृति का नाम लेते ही वर्तमान कार्यकर्ताओ को चिढ़ सी लगती है—कहते हैं संस्कृतियाँ आती रहती है, जाती रहती हैं, बदलती रहती हैं। प्राचीन संस्कृति को बैलगाड़ी की उपमा देकर कहते हैं कि इस विज्ञान युग में बैलगाड़ी की संस्कृति का क्या काम ? यह नहीं जानते कि जब शीघ्रगामी मोटर के कल पुर्जे बिगड़ जाते है, मोटर ठप हो जाती है तब उसको स्वस्थान पर पहुंचाने मे बैल ही काम देते है।

ऐसा प्रतीत होता है कि ये मोटर गाड़ी, हवाई जहाज और राकेटों की संस्कृति वाले विज्ञान के बल पर, धर्मशून्य समाजवाद के आश्रय से भारतवर्ष मे प्राचीन नाम की कोई वस्तु नहीं रहने देंगे। सब कुछ बदल डालेंगे वे इसी प्रयत्न मे सर्वात्मना संलग्न है—प्राचीन धर्म, रीति नीति तथा संस्कृति के उपासकों के सम्मुख बड़ा जटिल प्रश्न है ? हमारी अपनी धारणा है कि एक बार अब उलट पलट होकर रहेगा और अन्त मे ऐसा समय आसकता है, आयेगा, जब वर्तमान संविधान को भारतीय ढांचे मे ढालना पड़ेगा। तभी भारतवर्ष पूर्ववत् संसार का गुरु बन सकेगा नहीं तो भारत मे केवल पाश्चात्य गणतन्त्र के अनुसार राज्य साम्राज्य भले ही चले और इसको हम स्वराज्य और स्वतन्त्रता के नाम से चाहे भले ही पुकारते रहें, भारत का भारतीयत्व नष्ट ही समझिए।

★

वेद-विवेचन

आत्मिक आनन्द

[श्री ओम्प्रकाश शर्मा वैदिक दैनिक आर्य सत्सग, नया बाजार सहारनपुर]

विश्वाहि मत्यत्वना अनुकामा शतक्रतो।
अगन्म वज्रिन आगस ॥
—ऋग्वेद ८। ९२।१३

अर्थात् हे महान् शक्तिशाली प्रभू हमें ऐसा विवेक दीजिए कि जिससे हम अपनी नाना प्रकार की अनुचित और क्षुद्र कामनाओ का ज्ञानपूर्वक उन्मूलन कर सके। यह कामनाये तृप्त नहीं होतीं। जब इनकी तृप्ती करना चाहता हू तो ये जैसे घी के अग्नि पर डालने से अग्नि तृप्त नहीं होती बल्कि बढ़ती ही जाती है इसी प्रकार से ये बढती रहती है। इसी कारण हम अमरता को प्राप्त नहीं कर सकते और मरण धर्मा बने हुए हैं।

इसीलिए तो यमाचार्य से नचिकेता ने प्रार्थना की कि महाराज जितना धन भोग में है वह मिल ही जायेगा। कर्मानुसार परमात्मा ने जितना जीवन निश्चित किया है वह भी मिल ही जायेगा। आप तो मुझे केवल वही वर, अर्थात् मरने के बाद आत्मा को दशा और जाव और ब्रह्म का बोध कराने वाली ब्रह्म विद्या दीजिए। यह है आर्य जाति के अमर बालक का बुद्धि। प्रलोभनो पर भी अपने मार्ग से विचलित नहीं हुआ। वास्तव म हम भोगो को भोगना चाहते है किन्तु स्वय ही भोगे जाते हैं। आज मनुष्य इतना आलसी हो गया हैं कि प्रात काल के अमृत वेला में उठ भी नहीं सकता। इसी वेले के लिए तो कवियो ने कहा है।

"हर रात के पिछले पहरे म,
इक दौलत लुटता रहती है।
जा जगत हैं वो पाते हैं,
जा सोते है सा खाते हैं।"

आज मनुष्य धन, पद, यौवन आदि के नश म चूर है। वह नहीं जानता कि यौवन पहाड़ की नदी के वेग के समान है। आज के युग म लोगो का कहना है कि जसे भी हो रुपया बनाओ। किन्तु क्या यह ही हमारा लक्ष्य है ' रुपया साधन है जिससे हम दान द्वारा दूसरा की सेवा कर सकते हैं। यदि हम स धन और मार्ग को ही मंजिल समझ ले ता कैसे अभीष्ट स्थान पर पहुचा ? स्व कुछ रुपया तो नहीं है और न ही सब कुछ रुपया प्राप्त करा सकता है।

वास्तव में जब तक मनुष्य विषयों के ज्वर और तृष्णा के जाल मे फसा हुआ है तब तक उसे धर्म कर्म या चरित्र निर्माण की बात अच्छी नहीं लगती, जसे जिस व्यक्ति का सर्प ने डस लिया हो उसे कड़वी वस्तु मीठो और मीठो कड़वी लगती है, वैसे ही विषय और पाप रूपी सर्प से काटा हुआ मनुष्य सच्चा और धर्म की बात का कड़वी और पाप और अधम और झूठ बातो को मीठी समझता है। विषयो के चिन्तन से ही किस प्रकार हानि हो सकती है। गीता के शब्दो म इस प्रकार है —

ध्यायतो विषयान्पुंस सगस्तेषूपजायते।
सगात्सजायते काम कामात्क्रोधोऽभि जायते ॥ क्रोधाद्भवति समोह समोहात्स्मृतिविभ्रम । स्मृति भ्र शाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

अर्थात्—विषयो का चिन्तन करते हुए पुरुष की उन विषयो मे आसक्ति हो जाती है, आसक्ति से राग उत्पन्न हो जाता है राग से क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध मे अविवेक होता है अविवेक से स्मृति म विकार स्मृति के नाश से बुद्धि का नाश और बुद्धि के नाश से सब कुछ नष्ट हो जाता है।

विषय विष से भी अधिक विष वाले हैं। विष तो एक बार ही अपना प्रभाव दिखलाता है लेकिन विषयी का प्रभाव ता जन्म जन्मान्तरो तक नहीं जाता। अत योगीराज कृष्ण के निम्न शब्द गीता मे कितने उत्तम हैं-

राग द्वेष विमुक्तैस्तु
विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यै विधेयात्मा
प्रसादमधि गच्छति ॥

अर्थात्-राग और द्वेष से पृथक की हुई और अपने वश मे की हुई इन्द्रियो से विषयों का सेवन करता हुआ विनीत आत्मा निर्मलता को प्राप्त करता है।

★

संयुक्त परिवार समस्या

(पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय)

इस लेख का सम्बन्ध आर्यमित्र के कई पिछले अङ्कों से है। अतः पाठक उन्हें भी देखने का कष्ट करें। —सम्पादक

२७ जुलाई १९५८ के आर्यमित्र में श्री वैद्य रघुवीरसिंह जी, प्रधान जिलोपसभा पीलीभीत का जो लेख छपा है उसके लिए मैं श्री वैद्य जी का कृतज्ञ हूं कि उनके इस लेख ने मुझे विस्तार से अपने विचार प्रकट करने का अवसर दिया। ६ जुलाई के लेख में मैंने श्री जज साहब के विचारों की पुष्टि में सूत्रवत कुछ कहा था। उन्हीं ६ बातों की समालोचना श्री वैद्य जी ने की है।

संयुक्त परिवार प्रथा और विभक्त परिवार प्रथा में भेद क्या है ? परिवार तो संयुक्त ही होता है, एक पुरुष या एक स्त्री जो अलग अलग रहते हैं उनको हम परिवार नहीं कह सकते। वह गृहस्थ भी नहीं हैं, सन्यासी हों, योगी हों या गृह विहीन फक्कड़ हो, परिवार तो तभी बनेगा जब एक पुरुष और एक स्त्री विवाह पद्धति के अनुसार संयुक्त हो जाय और संयुक्त रहे। इसलिये परिवार का संयुक्तता निर्विवाद है, मुझे भी माननीय है और आपको भी। यही गृह है। यही गृहस्थ बनाता है। बच्चे होंगे वह भी जन्मते ही अलग नहीं किये जा सकते। वह साथ रहेंगे अतः वह भी संयुक्त परिवार ही हुआ। इसमें भी विवाद नहीं गृह एक इकाई है। उस इकाई में सब अङ्ग स्वतन्त्र नहीं हैं। उसके प्रधान अङ्ग हैं दम्पती 'पत्नी च पतिश्च पती, दमस्य पती= दम्पती' वही घर के संचालक हैं, अन्य अङ्ग गौण हैं। वह कमाने वाले नहीं, खाने वाले हैं। नेता नहीं, नेतृत्व का अनुसरण करने वाले हैं। यह है 'संयुक्त परिवार का व्यवस्था' और यह आवश्यक है। अतः आपके लेख का शीर्षक मेरे पक्ष में भी उतना ही सार्थक होता है जितना आप के पक्ष में।

परन्तु मतभेद 'संयुक्तता' के अर्थों पर नहीं सीमा पर है। उस सीमा को दृष्टि में रखकर दो पद्धतियाँ बन गईं एक को संयुक्त परिवार पद्धति कहते हैं और दूसरी को 'विभक्त परिवार पद्धति' कह सकते हैं। झगड़ा 'नाम' या उसकी व्युत्पत्ति पर नहीं है। झगड़ा है 'अर्थ' पर यही हम दोनों के प्रकृत दो लेखों में भिन्नता उत्पन्न करता है। इसी पर श्री पं० नरदेव जी शास्त्री ने चिन्ता प्रकट की थी और मैंने तथा जज साहेब ने सन्तोष।

हम इस विषय पर तीन प्रकार से विचार कर सकते हैं। एक 'व्यवहार' की अपेक्षा से, दूसरे 'युक्ति' की दृष्टि से तीसरे शास्त्रीय प्रमाणों से। पहले व्यवहार को लीजिये। आजकल व्यवहार यह है कि संयुक्त परिवार प्रथा टूट रही है, यदि कहीं-कहीं है तो केवल नाम के लिए और जबरदस्ती। जहाँ चार भाई कमाने के योग्य हुए वह अलग अलग रहना चाहते हैं। और अलग अलग हो जाते हैं। अर्थात् जो परिवार अब तक संयुक्त था वह विभक्त हो गया। अपना अपना कमाना और अपनी अपनी गृहस्थी का भार अपने ऊपर लेना 'एक भाई की गृहस्थी की जिम्मेवारी दूसरे भाई पर नहीं' अधिक कमाया अधिक व्यय किया। कम कमाया कम व्यय किया। कहीं कहीं घर के बूढ़े परिवार के विभाजन में बाधा डालते हैं और लोकलाज से परिवार संयुक्त बना रहता है। परन्तु विभाजन की इच्छा भीतर भीतर सुलगती रहती है और अवसर पाकर फूट निकलती है। मैं और श्री वैद्य जी दोनों भारत में रहते हैं और अपने घरों के हाल को जानते हैं। मेरा तीन चौथाई सदी का तजर्बा है कि ऐसे संयुक्त परिवारों में द्वेष, कलह, लड़ाई झगड़े नित्य बने रहते हैं, मुकदमे भी होते हैं और कभी कभी इससे भयानक बातें भी हो जाती हैं। कहीं कहीं बुद्धिमान बुजुर्ग अपनी आंख के सामने विभाजन कर देते हैं और प्रायः इसका फल अच्छा ही देखा गया है।

अपना थोड़ा सा हाल लिख दूं। मेरे पिता की मृत्यु के समय मैं १० वर्ष का था। हमारे दो चाचा थे जो अलग अलग रहते थे। हम लोग विभक्त थे और विभक्त ही रहे। मैं आरम्भ से ही सोचता था कि मुझे स्वयं ही घर चलाना है। इस प्रेरणा ने मुझे स्वावलम्बी बना दिया। यदि परिवार संयुक्त होता या पीछे से संयुक्त हो जाता तो मुझे अत्यन्त कठिनाइयां होतीं और मैं उन्नति न कर सकता। मेरे छोटे भाई जब कमाने लगे, अलग हो गये। मेरे चार लड़के भी इसी पद्धति के अनुसार अलग अलग रहते हैं। चारों की आयें भी भिन्न भिन्न हैं। कहीं कहीं अन्तर बड़ा है। उनके व्यय भी उन्हीं आयों के अनुकूल हैं। उनमें किंचित् भी ईर्षा या द्वेष नहीं है, पूर्ण स्वतन्त्रता है। भेद शायद इतना हो कि मुझे सन्तोष है क्योंकि मेरा सिद्धान्त भी यही था और मेरी इच्छा भी यही थी। जो लोग प्रत्येक भारतीय भावना को सिद्धान्त समझते हैं, उनको शिकायत हो जाती है, परन्तु वह कुछ कर नहीं पाते, ऐसे वृद्ध आपको हर गांव और मुहल्ले में मिलेंगे।

अब लीजिये 'युक्ति'। बुद्धि यही कहती है कि जो जितना कमाये उतना व्यय करे। परिवार और समाज का संगठन तभी चल सकता है। कम्यूनिज्म का सिद्धान्त है कि हर पुरुष को उसकी 'आवश्यकता' के अनुसार मिलना चाहिए। सिद्धान्त कहता है कि हर पुरुष को उसके 'काम' के अनुसार मिलना चाहिए। मैंने अपनी हिन्दी पुस्तक 'कम्यूनिज्म' में इस बात को स्पष्ट किया है कि कम्यूनिष्ट देशों में भी वह अपने सिद्धान्त के पालने में समर्थ नहीं हुए और 'आवश्यकता' के स्थान में 'काम' को प्रधानता देनी पड़ी। क्योंकि 'आवश्यकता' तो एक अनिश्चित शब्द है, उसकी सीमा बांधी नहीं जा सकती। उसका पालन तो एक सीमा तक उसी समय हो सकता है जब लड़के नाबालिग हों, और विभाजन का प्रश्न भी न उठे।

हर प्रथा को जो समाज संगठन से सम्बन्ध रखती है दो दृष्टियों से देखना चाहिए। एक तो हर व्यक्ति की बीज शक्तियों का पूरा विकास हो दूसरा द्वेष के लिए कम से कम सम्भावना हो। यह दोनों बातें तभी सम्भव हैं जब हर बालिग पुरुष या स्त्री की यह मनोवृत्ति हो कि मुझे किसी अन्य के आसरे नहीं रहना। अपना जीवन स्वयं बनाना है। जिस संयुक्त परिवार की पुष्टि श्री वैद्य जी कर रहे हैं उसमें इन दोनों बातों में बाधा पड़ती है। एक भाई बड़े पद पर है। अन्य भाई उसी पद के अनुसार रहना चाहते हैं। वह प्रायः पढ़ने में परिश्रम नहीं करते। आलसी और प्रमादी हो जाते हैं और ईर्षा का बीज धीरे धीरे उगना आरम्भ हो जाता है। हर भाई के स्त्री और बच्चे होते हैं। कितना ही बड़ा पद हो उसकी आय इतनी नहीं होती कि सब स्त्रियों, सब बच्चों को एक स्तर पर रक्खा जा सके। यह तो इतनी स्पष्ट बातें हैं कि बड़ी खोज की आवश्यकता नहीं। यदि इन सब भाइयों को यह मालूम हो कि प्रथा के अनुसार विवाह करने पर उनको अपनी स्त्री और बच्चों के पालन, शिक्षण आदि का बोझ स्वयं ही उठाना पड़ेगा तो वह प्रयत्नशील भी होते और ईर्षा भी न करते। ईर्षा का न होना ही प्रेम है।

मैंने जीवन शास्त्र का एक उदाहरण दिया था। वह सूत्रवत् था। उस के स्पष्टीकरण की आवश्यकता है। एक माली को अमरूद का बाग लगाना है। वह पहले एक छोटी सी क्यारी में बहुत से बीज बो देता है। पौध खड़ी हो जाती है। पचासों पौधे एक छोटी सी क्यारी में पास-पास उगते हैं। एक दूसरे के प्ररोहण और परिरक्षण में सहायक होते हैं। यदि वह बीज अलग अलग बोये जाते तो माली को देखभाल में भी कठिनाई होती और उनके उगने में भी बाधा पड़ती। परन्तु जब पौध बड़ी हो गई तो वह माली उन पौधों को उखाड़-उखाड़कर दूर दूर लगाता है। क्योंकि बड़ा होने पर उनकी खुराक भी बढ़ जाती है और छोटी सी क्यारी उन सब को आवश्यक भोजन नहीं दे सकती। यदि उनको समय पर विभक्त न किया गया तो पौधे एक दूसरे की खोराक को खाने लगेंगे और उनमें परस्पर ईर्षा उत्पन्न हो जायगी और वह सब नष्ट हो जायेंगे। जिन घरों में एक कमाता है और दस खाते हैं उनकी वृद्धि इसीलिए रुक जाती है। एक निश्चित आयु के पश्चात् हर व्यक्ति को विभक्त होना ही है। वह कब तक संयुक्त रहेंगे ? जो माता बच्चे को नौ मास तक अपने पेट के भीतर रखती है और उत्पन्न होने पर कई मास तक अपने पेट से चिपकाये फिरती है वह भी बच्चे के बड़ा होने पर उसे अलग सुलाने लगती है। जो बच्चे कई वर्ष तक गोद में रहते हैं वह पंगु हो जाते हैं। अतः संयुक्तता से आरम्भ होकर एक समय तो विभाजन करना ही पड़ता है। और विभाजन की सबसे उचित सीमा यही है कि यह व्यक्ति खाने कमाने के योग्य हो जाय। अन्यथा—

तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणाः
क्षारं जलं कापुरुषाः पिबन्ति।

मैंने लिखा था कि "हिन्दुओं की अवनति का घोरतम कारण यही है" क्या इस सिद्ध चीज को भी साध्य कोटि में लाने की आवश्यकता है, हिन्दुओं का पौराणिक काल का इतिहास साक्षी है। यदि वैदिक काल में आर्य संयुक्तता के जाल में फसे होते तो वह दूर देशों में जाकर जावा, बाली आदि द्वीपों में सभ्यता का प्रचार न कर सकते। और यदि पौराणिक काल के हिन्दू घर से चिपके न रहते तो अफ्रीका आदि देशों में उनका अभाव या अप्रधानता न होती। यूरोप के लोगों में अन्य कितने दोष हों और मैं कब कहता हूं कि नहीं हैं,

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सुझाव और सम्मतियाँ

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के नियमों में संशोधन

गत कुछ मास से मैं यह विचार कर रहा था कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के नियमों में संशोधन हेतु अपने कुछ सुझाव आर्य जनता एवं सभा के पदाधिकारियों के सम्मुख प्रस्तुत करूं, किन्तु अब तक समयाभाव के कारण ऐसा करने में असमर्थ ही रहा। गत १७ व १८ मई को जब सभा का वृहदधिवेशन डी०ए०वी० कालेज लखनऊ में हुआ तो मेरी प्रबल इच्छा थी कि मैं इन सुझावों को सभा में सभी प्रतिनिधियों के सम्मुख विचारार्थ रक्खूं, किन्तु कुछ विशेष परिस्थितियां एवं वातावरण के कारण मैं ऐसा करने में असमर्थ ही रहा। उन्हीं दिनों मैंने श्री चन्द्रनारायण जी एडवोकेट बरेली (अधिष्ठाता भू सम्पत्ति-विभाग) से उक्त संशोधनों पर सम्मति मांगी। आपने उन्हें पढ़ा और शीघ्र सभा में भेजने की सम्मति प्रकट की। सभा मन्त्री श्री फूलनसिंह जी ने मेरे सुझावों को आगामी अन्तरंग की विषय सूची में अंकित कर लिया है।

अतः अपने सुझाव मैं आर्यमित्र में प्रकाशनार्थ भेज रहा हूं ताकि प्रत्येक आर्य सभासद् इन पर गंभीरता पूर्वक विचार करलें ? और साथ ही सभा के पदाधिकारी भी जब सभा में उपस्थित हों तो उसकी एक प्रतिलिपि उनके पास हो। आर्य सदासद् इस बात का ध्यान रक्खें कि जो भी सम्मति वे देना चाहें, कष्ट करके अपने जिले के अन्तरग सदस्य के द्वारा सभा में भेजें ताकि सभा को पत्र व्यवहार की झंझट में न पड़ना पड़े।

मेरे विचार में आवश्यक परिवर्तन सम्बन्धी सुझाव क्यों आये ? इसका एक बड़ा सरल सा उत्तर तो यही है कि समय एवं परिस्थितिवश परिवर्तन होना आवश्यक होता है। आज हमें सभा का संगठन प्रबल बनाना है, प्रान्त की सम्पूर्ण आर्य समाजों को एक सूत्र में बांधना है, समाजों की शिथिलता को दूर करना है, समाजों के विवादों को शान्त करना है और प्रसन्नता से मिल जुल कर अपने धर्म का प्रचार एवं उन्नत करनी है। इसी दृष्टिकोण से मैंने यह आवश्यक समझा कि वर्तमान नियमों में आवश्यक संशोधन किये जांय। नियम सं० १८ को जब कभी आपने पढ़ा होगा तो आपने पाया होगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा को यह अधिकार है कि वह किसी भी समाज को पृथक कर सके मैं नहीं समझता कि पृथक करने का प्रश्न ही क्यों उठता है। क्या ऐसा करने से उसमें शिथिलता न आ जावेगी। तब फिर सभा उसे पृथक क्यों करे, क्यों न उसे अपने हाथ मे ले और उसके कार्य को चलाये। इसी प्रकार नियम सं० ६३ में है, कोई भी आर्य समाज क्यों असम्बद्ध हो, सभी समाजें सम्बद्ध क्यों न मानी जावें। यदि कोई आर्य समाज असम्बद्ध है तो उसे कोई निर्णय क्यों मान्य होगा। जब आर्य समाज जैसी कोई संस्था प्रान्त में बन गई तो, क्यों न उसे स्वाभाविक रूप से सम्बद्ध माना जाय। मैं जो नियम संख्या ७२ प्रस्तुत कर रहा हूं उससे हम लोगों की बहुत सी समस्यायें हल हो जावेंगी और निश्चय ही हमारा संगठन प्रबल हो सकेगा। इसी प्रकार से कुछ छोटी छोटी बातें हैं जिनमें संशोधन करना अनिवार्य समझ मैंने अपने सुझाव प्रस्तुत किये हैं।

संशोधन सम्बन्धी मेरे सुझाव

१—नियम सं० १८ को निम्न प्रकार संशोधित कर दिया जाय—

(१८) किसी आर्यसमाज या आर्य उप प्रतिनिधि सभा को निम्न दशाओं में अन्तरंग सभा द्वारा अपने अधिकार में ले लिया जावेगा और उसके कार्य को सुचारु रूप से चलाने हेतु किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों को सभा द्वारा नियुक्त कर दिया जावेगा। (भाग [१], [२], [३], उसी प्रकार रहेंगे)।

२—नियम सं० ६३ में निम्न प्रकार संशोधन कर दिया जाय—

(६३) किसी सम्बद्ध आर्यसमाज का समासद् अथवा आर्य समाज जिसके विरुद्ध अन्तरंग सभा ने कोई निश्चय किया हो, निर्णय की तिथि से तीन मास की अवधि के भीतर अपील कर सकेगा।

३—नियम सं० ७२ और बढ़ा दिया जाय—

(७२) इस नियम के पास होने की तिथि से प्रान्त की प्रत्येक समाज संस्था अथवा उप-प्रतिनिधि सभा जिसके प्रथम 'आर्य' शब्द जुड़ा होगा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत समाज, संस्था अथवा सभा मानी जावेगी, और भविष्य में भी कोई समाज, संस्था अथवा सभा यदि इस नाम से बनेगी तो वह स्वतः आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत मानी जावेगी और उसकी सम्पत्ति (चल अचल) का कानूनी स्वामित्व आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को होगी।

४—नियम सं० ५५ में निम्न संशोधन कर दिया जाय—

(५५) सभा की निज, स्थावर या जंगम सम्पत्ति तथा प्रान्त की आर्य समाजों की सम्पत्ति अथवा इस प्रकार के अन्तर्गत आर्य समाजों की संस्थाओं की सम्पत्ति का कानूनी स्वामित्व सभा को ही प्राप्त होगा।

आशा है आर्य जन संगठन की सुदृढ़ता को दृष्टि में रखते हुए इन सुझावों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे।

—इन्द्र वर्मा एम.ए.

गुरुकुल वृन्दावन में नये ब्रह्मचारियों का प्रवेश

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन बालकों की शिक्षा के लिए एक उत्तम शिक्षा संस्था है जो स्वल्पतम निर्वाह व्यय में उच्चतम निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करती है। शिक्षा के साथ-साथ वह ब्रह्मचारियों के चरित्र निर्माण पर विशेष बल देती है। गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने वाले बालकों को आश्रम में ही रहना होता है इसलिए उनको अपने गुरुजनों के साक्षात सम्पर्क का अधिकाधिक लाभ उठाने का अवसर मिलता है। गुरुकुल की अधिकारी तथा शिरोमणि परीक्षाएं क्रमशः हाई स्कूल तथा बी० ए० के बराबर मान्य हैं।

ग्रीष्मावकाश के बाद १ जुलाई से गुरुकुल के नवीन शिक्षा सत्र का कार्य प्रारम्भ हो जायगा। इसी अवसर पर नवीन बालकों का प्रवेश होगा। आठ से दस वर्ष तक की आयु के बालक प्रविष्ट हो सकते हैं भोजन तथा व्यवस्था व्यय मिलाकर २५) रु० मासिक व्यय लिया जाता है। जो महानुभाव अपने बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट कराना चाहें वह पत्र द्वारा सूचना देकर प्रवेश पत्र मंगा ले और स्थान सुरक्षित करा लें।

हरिशङ्कर शर्म्मा
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

नरदेव स्नातक एम. पी.
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

आर्यसमाज और राजनीति पर पुनर्विचार

आर्य समाज का इतिहास यद्यपि बहुत पुराना नहीं है तथापि इसने अल्प समय में ही बड़े उतार चढ़ाव देखे हैं। जहाँ इसमें हमारी शानदार सफलताएं विद्यमान हैं वहां कुछ ऐसी भूलें भी हैं जिन पर यदि पुनर्विचार न किया गया तो आर्य समाज का जीवन संकट में पड़ सकता है।

इतिहास बताता है कि संसार का कोई भी धर्म राजसत्ता का आश्रय लिये बिना नहीं पनप सका। बौद्ध धर्म उस समय तक पाटलिपुत्र और सारनाथ के इर्द गिर्द चक्कर काटता रहा जब तक कि उसे अशोक का सहारा न मिला। ईसाइयत भी कौन्टेन्टाइन पर सवार होकर ही संसार में फैली और इस्लाम तो स्पष्ट ही राजसत्ता का परिणाम है। पर यह कितनी विडम्बना है कि हम केवल नारेबाजी से कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के स्वप्न देख रहे हैं। ऐसी अवस्था में इस विश्वास से बैठे रहना कि हमें भी कोई अशोक मिल जायगा केवल मृगमरीचिका है। क्योंकि समय बदल गया है, राज सत्ताएं समाप्त हो चुकी हैं, और आज प्रजातन्त्र का युग है।

आर्य नेताओं ने आर्य समाज के राजनैतिक स्वरूप के बारे में कई बार सोचा और वे इसी परिणाम पर पहुँचे कि आज की इस भ्रष्ट राजनीति में आर्य समाज को पृथक ही रहना चाहिये। पर केवल ऐसा सोचने मात्र से तो समस्या हल नहीं हो जाती। इसका दूसरा पहलू भी तो है। इस प्रकार कब तक आर्य समाज दूसरी पार्टियों को आबाद करता रहेगा और अपनी मूल पूंजी को दूसरों के लुटाता रहेगा। अभी तक तो कांग्रेस का ही प्रश्न था पर अब हिन्दू महासभा, जनसंघ प्रजा समाजवादी दल आदि अनेक दल हमारी शक्ति का प्रयोग करने के लिये प्रयत्नशील हैं। पुराने आर्यसमाजियों का रुख कांग्रेस की ओर था अब नई पीढ़ी जनसंघ की ओर भागी जा रही है। इसी प्रकार अन्य दलों की ओर भी झुकाव बढ़ रहा है।

किसी भी समस्या पर अच्छी तरह से विचार करना बुरा नहीं है पर अनुभव बताता है कि जो लोग केवल विचारों के जाल में फंस गये वे फिर निकल न सके। आवश्यकता विचारों को कार्य रूप में परिणत करने की होती है।

अभी पिछले गुड़गांव के चुनाव ने

(शेष पृष्ठ ९ पर)

काव्य-कानन

यह क्या ?—

—कुंवर हरिश्चन्द्र देव वर्मा 'चातक' कविरत्न
शान्ति निकेतन अतरौली जाफराबाद फर्रुखाबाद

रात भर अन्धकार से लड़ा अरुण वीर—
देखो ! रक्त रंजित हो आया शत्रु वक्ष चीर !
विश्व भी प्रकाश में नवीन स्नान कर खिला—
चकवाकी से भी हंसकर चक्रवाक मिला।
रंग-रंग के हैं फूल परिधान धार उठे—
वीणा लेके भृंग गण भी हैं झनकार उठे।
प्रकृति में सभी विजयोत्सव मनाते है—
तो भी हम मानव को दीन हीन पाते हैं?

तट का निकट ही है ध्येय उस वीचि का—
व्यर्थ ही प्रलोभन है स्वर्ण का मरीचिका।
स्वर्ण जाल जाके यह फेंको अन्यत्र कहीं—
'वीर-व्रता वीचि वह विपथगा बनेगी नहीं !
सौ-सौ बार टूटकर तट तक जायेगी—
लघु वीचि तो भी निज दृढ़ता निभायेगी।
पर हाय ! मानव ही ध्येय-ध्यान भूला है—
और बना सर्वश्रेष्ठ ! अपने में फूला है !!

अस्त होते सूर्य विश्व-अनुराग मे सने—
प्रेमी कमलों के वर्ण के ही या कि है बने ?
नहीं ! नहीं !! जिस श्री के साथ सूर्य भगवान—
आये थे—गये भी साथ लेके वही कानन !
और फिर कल उसी श्री के साथ आयेंगे—
जीने मरने का पाठ जग को पढ़ायेंगे।
खेद ! फिर मानव ही जाते हुए रोता है—
क्यों न वह सूर्य-सा प्रकाशमान होता है ?

जीवन की मुस्कान

—सावित्री रस्तोगी, मेरठ

जीवन वह है जो दुख की बदली मे मुस्काता है।
यौवन वह, जो कण्टक पथ पर बढ़ता जाता है।

कवि वह है जो निज रचना से युग परिवर्तन कर दे।
लेखक वह जो मानव के भावों में जीवन भर दे।।
उठा लेखनी कवि ने जग को दो कुछ ऐसी हाला।
जीवन की सोई सांसों में गूंजा राग निराला।।

बीत चली जब रैन पुरानी, दिवस नया आता है।
जीवन वह है जो दुख की, बदली मे मुस्काता है।।

वीर वही जो भेंट चढ़ा दे, चढ़ती हुई जवानी।
शूर वही जो रणांगण में, भरे भाव तूफानी।।
सुनते ही हुंकार जिन्होंने खोल दिये भुज बन्धन।
सुनते ही टंकार जिन्होंने तोड़ दिये गठ बन्धन।

आज उन्हीं की अमर कीर्ति की, जग गाथा गाता है।
जीवन वह है जो दुख की बदली मे मुस्काता है।।

जिनके आनन पर रहती है, मधुर हास्य की रेखा।
कभी किसी ने कठिन समय मे, जिन्हें न व्यग्र कुछ देखा।।
स्वयं सफलता आ उनको, गोदी में खेला करती।
विजय श्री उनके मस्तक पर, तिलक लगाया करती।।

उनके चरण चूमने नभ से चांद उतर आता है।
जीवन वह है जो दुख की बदली में मुस्काता है।।

सत्य साधना की डगरी पर कदम न जिनके रुकते।
जीवन पथ पर बढ़ते जाते प्रतिपल हंसते हंसते।।
निर्मम शूलों की शैया पर मचल मचल जो गाते।
मंगल दान समझ सुख दुख को आगे बढ़ अपनाते।।

उन्हें न जग में कोई भी नत मस्तक कर पाता है।
जीवन वह है जो दुख की बदली में मुस्काता है।।

(पृष्ठ ७ का शेष)

परन्तु वह विभाजन से नहीं डरते अतः वह भूमण्डल पर छाये हुए हैं। पिछले पांच सौ वर्ष के यूरोप के इतिहास पर दृष्टि डालिये और उसी काल के हिंदू-इतिहास मे उसकी तुलना कीजिये।

अब थोड़ा सा प्रमाणों पर विचार कीजिए। श्री वैद्य जी ने दो मंत्र दिये हैं "सम्राज्ञी" इत्यादि और "समानी प्रथा"। मुझे आश्चर्य हुआ कि श्री वैद्य जी द्वारा उद्धृत अर्थ जो दोनों पक्षों पर लागू हो सकता हो या दोनों पक्षों को बराबर काटता हो उस प्रमाण को देने का किसी पक्ष को अधिकार न हो। विभक्त परिवार की प्रथा के लोग यह कब कहते हैं कि कोई स्त्री अपने सास, ससुर, देवर, ननद से प्रीति न करे, मेरा कहना तो यह है कि यह प्रीतिपूर्वक व्यवहार संभव ही तब है जब प्रत्येक व्यक्ति अपना अपना घर अलग चलाता हो और ईर्षा द्वेष के मूलकारण जो संयुक्त परिवार की वर्तमान प्रथा में हो सकते हैं वह जड़ मूल से नष्ट कर दिये जायं। श्री वैद्य जी के पक्ष का खण्डन तो वेद मंत्र के ही तीसरे पाद में दिया है शायद श्री वैद्य जी की दृष्टि उस पर पड़ी नहीं। लिखा तो उन्होंने भी है 'ननान्दरि सम्राज्ञी भव" इसके अर्थ मे भी दिया है "जो मेरी बहिन और जो तेरी ननद है।" बालिग ननद तो संयुक्त परिवार का अङ्ग न होगी। वह विवाह करके दूसरे परिवार को बनायेगी फिर भी पति अपनी नव विवाहिता वधू को प्रेरणा करता है कि तुम उससे प्रीतिपूर्वक व्यवहार करना। वस्तुतः यह मंत्र "संयुक्त परिवार प्रथा" से कोई सम्बन्ध नहीं रखता, "समानी प्रथा" वाला मंत्र तो परिवार से किसी प्रकार भी सम्बन्धित नहीं है। वहां तो मनुष्य मात्र के लिये उपदेश है। समाज के मंच और प्रेस से भी सर्वत्र यही अर्थ लिया जाता है कि सब के साथ रोटी बेटी का व्यवहार हो। हिन्दुओं में जो जन्म परक जाति भेद है वह मिट जाय, श्री वैद्य जी इसको संयुक्त परिवार प्रथा पर कैसे घटा बैठे? इतनी संयुक्तता तो न श्री वैद्य जी को स्वीकार होगी न सम्भव ही है। "सबसे अविरोधपूर्वक प्रीति निर्वाहकर" यह तो उपदेश सभी पर लागू होता है। क्या वही लोग "अविरोध पूर्वक प्रीति से" बरतते हैं जो संयुक्त परिवार के हैं ? क्या सभी मित्र संयुक्त परिवार के होते हैं ? क्या विभक्त परिवारों में मित्रता नहीं होती या न होनी चाहिये?

रही वृद्ध माता पिता की सेवा की बात। पितृयज्ञ तो इसीलिये एक गृहस्थी का कर्तव्य है। जो स्वतंत्र गृहस्थी नहीं वह पंच यज्ञ भी कैसे करेगा ? चार भाइयों के अलग अलग स्वतंत्रता से रहने से उनके पितृ यज्ञ करने का कर्तव्य दूर नहीं हो सकता। संयुक्त परिवार में तो एक भाई पितृ-यज्ञ के कर्मेष्ठि से उदासीन भी रह सकता है। विभक्त परिवार में नहीं।

आपने किसी पाश्चात्य देशी का उदाहरण दिया है जिसने अपने माता पिता के आने पर बिल पेश कर दिया था। ऐसे उदाहरण तो अपवाद मात्र हैं और उन पर किसी सिद्धान्त का निश्चय नहीं हो सकता। क्या भारत के हिन्दुओं में ऐसे उदाहरण नहीं हैं जिनके विषय में कहा गया है—

जियत पिता से दंगम दंगा।
मरे पिता पहुंचाये गंगा।।

पाश्चात्य देशों में भी ऐसे लोग हैं जो न केवल माता-पिता की ही सेवा करते है अपितु मित्रों, पड़ोसियों और मेहमानों का सत्कार करते हैं और कभी बिल पेश नहीं करते।

श्री वैद्य जी अलग गृहस्थी बसाने वालों की उपमा पशु पक्षियों से देकर एक गम्भीर प्रश्न की खिल्ली उड़ाना चाहते हैं। जो व्यक्ति विवाह रूपी पवित्र यज्ञ को करके 'दम्पती' बनते है वह पशु पक्षी तो नहीं, न कीड़े मकोड़े हैं। उन्होंने एक गृहस्थ का भार अपने ऊपर लिया है। वह आज से गृहपति और गृहपत्नी बने हैं। विवाह के मंत्रों का अधिक वर्णन करना प्रसंग से बाहर जाना होगा।

(पृष्ठ ८ का शेष)

तो यह स्पष्ट बता दिया कि यदि हमारा व्यक्ति योग्य हो तो जनता उसे अवश्य अपनाएगी। आर्यसमाज कोई मामूली संस्था नहीं है। इसका निश्चित उद्देश्य है। इसकी सेवायें हैं इसके पास शानदार आदमी हैं। फिर निराशा का कोई विशेष कारण नहीं प्रतीत होता।

इस समय संसार पर एक भयंकर संकट आया हुआ है। कुछ समय पूर्व साम्यवाद रूपी आंधी जो पश्चिम से उठी थी उसके झोंके भारत मे भी आ पहुँचे है। इस आंधी को केवल व्याख्यानों के बल पर तो रोका नहीं जा सकेगा क्योंकि यह जीवन की मूलभूत समस्याओं को लेकर चली है जिसमें आज संसार का एक बहुत बड़ा भाग फंसा हुआ है। इसका प्रतिकार तो वैदिक व्यवस्था का व्यावहारिक समानान्तर रूप प्रस्तुत करके ही किया जा सकता है। अतः आर्यसमाज को स्वयं कुछ करना पड़ेगा। दूसरी पार्टियों से यह आशा करना व्यर्थ है।

यह निश्चित है कि यदि आर्य समाज आज की भांति संशय के झूले में झूलता रहा और कोई क्रियान्वित पग न उठा सका तो कालान्तर में यह हवन यज्ञ करने वालों की एक निर्जीव जमातमात्र रह जायगी। युवक और क्रांतिकारी वर्ग सदैव के लिये इसका साथ छोड़ देगा।

—शिवचन्द्र वेदालङ्कार एम ए.

चयनिका

अनमोल बोल

संसार मे भरोसा ही जीवन का साधन है, बिना भरासे के मनुष्य को क्षण भर भी स्थिर रहना कठिन हो जाता है।—गोस्वामी बिन्दु जी महराज

संसार में न कोई वस्तु अच्छी है न बुरी काल और पात्र के अनुसार व्यवहार करने की भावना से वह बुरी हो जाती है। —प्रभुदत्त ब्रह्मचारी

वाक स्वतन्त्रता के बिना शिक्षा एक भयानक व्याधि है। —स्वामी सत्यदेव

रूप का आकर्षण केवल बाहरी आँखो के लिए है ज्ञानियो की निग ह में उनका कोई मूल्य नहीं।—प्रेमचन्द्र

जो बुद्धि जीवी हैं उन्ह किसी भी तरह अपने को श्रमजीवियो से श्रेष्ठ न समझना चाहिए। —राजगोपालाचार्य

\+ + +

स० क० —इन्द्रदेव प्रसाद, पटना

शरीर जल से पवित्र होता है, मन सत्य से, आत्मा धम से, बुद्धि ज्ञान से। —मनु

आन्तरिक विकास ही मानव जीवन का सम्पूर्ण अर्थ और सार है। —अरविन्द

चाहे धन मान, कुटुम्ब और प्राणो का त्याग हो जाय, परन्तु सत्य अहिंसा का त्याग कभी न किया जाय यही सब धर्मों का सार है। —गांधी जी

फूल चुनने के लिए ठहरो मत, आगे चलो, तुम्हारे मार्ग म निरन्तर फूल खिलते रहेंगे। —रवीन्द्रनाथ ठाकुर

\+ + +

स० क० —मदनमोहन शर्मा ग्वालियर

क्या देना अच्छा है? भोजन।
क्या न देना अच्छा है? गाली।
क्या खाना अच्छा है? गम।
क्या न खाना अच्छा है?
अनादर का धन! —शास्त्र

हाथ का बिछुड़ा दाथा का नहीं। —शेक्सपियर

नारी पुरुष की अर्धांगिनी है, उसकी सबस बड़ी मित्र है। धम, अर्थ काम का मूल है। जो उसका अपमान करता है, काल उसे नष्ट करता है। —महाभारत

मनुष्य की तीन ही किस्म हैं। पीछे जाने वाले, जहाँ के तहाँ खड़े रहने वाले, और आगे बढ़ने वाले। —वाल्टेयर

सच्चे सुख की इमारत के लिए सचाई और भलाई की नींव आवश्यक है। —कालरिज

सच्चा सज्जन उस व्यक्ति को कहते हैं जिसका स्वभाव सर्वोत्तम शिष्टाचारों के अनुकरण से बना हो। —अज्ञात

युद्ध का गुण गान करने वाली कोई भी पुस्तक मेरे दृष्टिकोण से उतनी ही समाज विरोधी और अश्लील है जितनी अनुचित प्रेम का गुणगान करने वाली पुस्तक।—जे एस हालडेन

दान, पछतावा, संयम, सन्तोष, नम्रता, सचाई और दया ये सात साधन स्वर्ग के हैं। —हितोपदेश

\+ + +

स० क०—बाबूलाल विनोद पटना

क्या आप जानते हैं?

संसार म आधे से अधिक प्राणी दिन म तीन बार चावल खाते हैं।

× × ×

सफेद हीरा यदि रेडियम की किरणों के सामने रख दिया जाय तो सदा के लिए हरा हो जायगा।

× × ×

मुर्गियों का असली जन्म स्थान बरमा टर्कियों का अमरीका और गिनी फाउल का अफ्रीका है।

× × ×

समान द्वीप म पुरुष लम्बे बाल रखते हैं और स्त्रियाँ छोटे रखती हैं।

× × ×

संसार की एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले शहरों में से १० म से ७ शहर या तो नदी किनारे या समुद्र तट पर स्थित हैं।

× × ×

संसार मे प्रतिदिन ४४,००० आँधियों का औसत पड़ता है।

—स क० निर्मलाकुमारी, दिल्ली

× × ×

दुनियाँ म चितकबरे आदमी भी होते हैं। ये आदमी दक्षिण अफ्रीका मे प्यूरस के किनारो पर और वाडीस के कुछ भागों म पाये जाते हैं।

× × ×

संसार मे सबसे बड़ा पुस्तकालय फ्रांस की राजधानी मे है।

× × ×

निद्रावस्था म मस्तिष्क छोटा हो जाता है।

× × ×

गुरदासपुर में एक ऐसी दीवार है जो झूलती है।

× × ×

संसार म सबसे बड़ा मोती बेरेसफोर्ड होम पर्ल है।

× × ×

संसार मे सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन न्यूयार्क ग्राण्ड सेन्टल टरमिनस है, जिसने ४८ प्लेटफार्म हैं।

× × ×

स्वस्थ मनुष्य प्रति मिनट अठारह बार सांस लेता है।

—स० क० रतनकुमार सिलीगुडी

वनिता विवेक

नारी और उसकी शिक्षा

[सुश्री उमा रायजादा, प्रयाग]

वर्तमान काल में स्त्री की शिक्षा एक विवाद का प्रश्न बन गया है। प्राचीन विचारधारा के मानने वाले स्त्री शिक्षा के विरोध में हैं। उनका कहना है स्त्री को पढ़ाना और बन्दर के हाथ में छुरी देना, दोनों समान हैं। किन्तु मैं इस मत के पक्ष मे नहीं हू। अब मैं कुछ उन तथ्यो पर प्रकाश डालने का प्रयास करूगी जिनसे यह सिद्ध हो जायगा कि स्त्री की शिक्षा उतनी ही आवश्यक है जितनी एक पुरुष की। नारी के लिए शिक्षा परमावश्यक है। वास्तव मे प्रभु ने नारी और पुरुष दोनों को ही समान बनाया है। नारी भी शिक्षा प्राप्त करने के योग्य है। वह भी महान् कार्य कर सकती है। जैसा कि फ्रान्स के एक विद्वान् का कथन है "एक लड़के का पढ़ने से एक ही व्यक्ति शिक्षित बनता है, परन्तु एक लड़की के पढ़ाने से कुटुम्ब शिक्षित बन सकता है।"

प्राचीन काल मे सीता, सावित्री जैसी महान नारियां थीं। प्रकाण्ड विद्वान भगवान शंकराचार्य को हराने का श्रेय एक नारी का ही है। आधुनिक काल में श्रीमती सरोजिनी नायडू और श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित आदि महान स्त्रियां हुई।

नारियां राष्ट्र का निर्माण करती हैं। यदि वे शिक्षित हैं तो उनके द्वारा जिस राष्ट्र का निर्माण होगा वह महान् होगा। वास्तव में राष्ट्र की महत्ता उनके ही हाथों में है। उन्हे जीजाबाई की तरह बनाया जाय। जिन्होंने वीर शिवा जी जैसे महान पुरुष को उत्पन्न किया, जिसने स्वतन्त्रता के लिए जीवन पर्यन्त कार्य किया। यदि वे अशिक्षित होगी, तो वे अपनी सन्तान को महान् कार्य करने के लिए प्रोत्साहित नहीं कर सकेंगी। अंग्रेजी में कहा गया है कि—

"A good mother is worth a hundred school Master"

नैपोलियन ने एक बार कहा था कि "मुझे शिक्षित बुद्धिमान मातायें दीजिए, तो मैं आपको अच्छा राष्ट्र दूंगा।" बालको को सुयोग्य बनाने में माता का जितना हाथ है, उतना पिता का नहीं। अत उन्हें अवश्य शिक्षा देनी चाहिए।

नारी को किस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए? नारी का जीवन क्षेत्र परिवार है, घर है। अत उन्हे सर्व प्रथम परिवार सम्बन्धी शिक्षा देनी चाहिए। यदि उन्हे किसी अन्य प्रकार की शिक्षा दी जाती है, जिनका उनके घरेलू जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं तो उनका पारिवारिक जीवन कभी सफल नहीं होगा। उन्हे पारिवारिक विज्ञान, कढ़ाई, सिलाई हाईजिन और नर्सरी की शिक्षा देनी चाहिए। आगे चलकर उनको अपने जीवन मे इन्हीं विद्याओं का सहारा लेकर अपना गृहस्थ जीवन सुखमय बनाना है। यही विषय उन्हे उनकी पारिवारिक समस्याओंके समाधान मे उचित सहयोग प्रदान करते हैं।

यदि वे पढ़ी लिखी है तो सन्तान की प्रारम्भिक शिक्षा उचित प्रकार से घर पर ही हो जायगी। शिक्षित माता को सन्तान की प्रारम्भिक शिक्षा के लिए कठिनाइयो का सामना नहीं करना पड़ता।

शिक्षित नारी अपने घर का हिसाब आदि उचित प्रकार से कर सकती हैं। अर्थशास्त्र के नियमों के अनुसार यदि वह अपने घर का खर्च चलाती है तो उसे अधिक लाभ होगा, और निश्चित धन मे ही वह अपना खर्च ठीक प्रकार से चला सकेगी। आर्थिक कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर अपने जीवन को सुखमय बना सकेगी।

शिक्षित नारी अपने पति के विचारो को भली भांति समझ सकेगी वह उनकी प्रत्येक रुचि को ठीक प्रकार से पूरा कर सकेगी। बुद्धिमान नारी यह भली प्रकार समझती है कि पति की किस रुचि के समय उसे किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए। पुरुष को विपत्ति मे किस प्रकार सान्त्वना एवं साहस देना चाहिए एक शिक्षित नारी भली भांति जानती है। उसके हसमुख चेहरे तथा मधुर वाणी द्वारा पति का महान् से भी महान् कष्ट दूर हो जाता है।

शिक्षित नारी को कभी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दूसरों के सामने लाचार नहीं होना पड़ता। वास्तव मे विद्या से जितने लाभ पुरुष को होते है उतने ही स्त्री को। दोनो विद्वान् होने से दोनों के विचारो मे कम अन्तर रह जाता है। जब स्त्री अपने पति के अनुसार कार्य करेगी तब उनमे कभी लड़ाई नहीं होगी। लड़ाई न होने से घर मे आनन्द वास करेगा। आनन्द के वास से दोनों प्रसन्न रहेगे और प्रसन्नता से गृहस्थी की गाड़ी सफलता के मार्ग पर सुगमता से चलेगा। ★

बाल-विनोद

अभिमानी देश

यह देश बड़ा अभिमानी है,
सागर मे चरण धुलाये।
हिमगिरि का मुकुट लगाये,
गङ्गा का हार बनाये॥
इसने अगणित दुःख झेले।
पर आन न अपनी छोड़ी,
सहकर औरों का कष्ट तमाम,
सम्पदा न अपना जोड़ी॥

निर्माण गीत

हम बाध कारखाने जहाज
टैक्टर निर्माण करेगे।
जिनसे स्वदेश खुशहाल बने,
हम वही विधान रचेंगे॥
सब बने स्वस्थ, निर्भीक, सबल
रह जाय न कोई दुखिया
बच्चे बच्चे के मुंह में हो,
मिसरी माखन की टिकिया
—शामित

महापुरुषों की दृष्टि मे बालक

जीवन की महत्त्वाकांक्षाये बालकों के रूप मे आती है —महाकवि रवीन्द्र

बालक मानव का जनक है।
—वर्डसवर्थ

बालक ही भविष्य का निर्माता है, इसलिए ईश्वर ने अपनी सृष्टि उनके हाथो में छोड़ दी है। —अज्ञात

जिस प्रकार प्रभात दिनका आभास कराता है उसी प्रकार बाल्यावस्था मनुष्यता का। —मिल्टन

थोड़े ही बालक असाधारण प्रतिभा लेकर उत्पन्न होते है किन्तु हर बालक उचित रूप से रहने मे समर्थ होता है। —अज्ञात

बालकों की कर्तव्यशीलता ही सब गुणों की नींव है। —सिसरो

ओ! बालक तेरे चेहरे पर मैं भोली इच्छाये देख रहा हूं। तुझे देख कर मुझे अपना समस्त खुशियां और मुस्कराहट याद आती है।
—विलियम ब्लेक

संग्रहकर्ता-श्री रामदुलार यादव

आविष्कार और आविष्कारक

साइकिल का आविष्कारक ड्रेस था।

घड़ी का आविष्कारक हेरिसन था

अणुबम का आविष्कारक ओपेन हाइमर था।

रेल का आविष्कारक जेम्सवाट था

थर्मस का आविष्कारक प्रो० डिवर था।

पेनसिलीन का आविष्कारक फ्लेमिंग कार्य कल था।

बिजली की घण्टी का आविष्कारक जानमारेण्ड था।

रेडियो का आविष्कारक मारकोनी था।

बिजली बल्ब का आविष्कारक एन्डर्सन था।

दूरबीन का आविष्कारक गैलेलियो था।

सकलनकर्त्ता-श्री चन्द्रप्रकाश चन्दानी

बूझो तो जानें

आप जले और मोम जलाये,
उसका जलना मन को भाये।
धूम धाम से भई तैयारी,
देख देख के टपके लार।

× × ×

एक पेड़ मे ऐसा देखा
फूल के ऊपर पत्ता

× × ×

एक सौ आठ मन का बोझ उठावे
दो अंगुल का लड़का।

[illegible]

—नलिनेश

चुटकुले

माँ—बेटा मुझे खट्टी डकारें आ रही हैं जरा सा चूरन दे दे।"

बेटा—माँ चूरन तो खट्टा होता है इससे तो खट्टी डकारें ही आएंगी, थोड़ी सी मिठाई खालो तो मीठी डकारें आने लगेंगी।

× × ×

राजू—मास्टर साहब, सोना कहाँ से निकलता है?

मास्टर—कान से (खान से) अस्पष्ट ध्यान

राजू—अच्छा अब समझा, तभी आप हम सबके कान खींचा करते हैं।

—उमा तनमा हल्द्वानी

विज्ञान-वार्ता

बिना धुएं का कोयला

अब गृहणियों को कोयले के धुएं के कारण आंसू नहीं बहाने पड़ेंगे। बील गोडा की केन्द्रीय ईंधन गवेषणा शाला ने घटिया कोयले को कोयले के चूरे की ईंटों से ऐसा कोयला तैयार किया है जो धुआं नहीं देता। इतना ही नहीं इस कोयले का कार्बन मुक्त करने में जो गैस निकलेंगी वे भाप बनाने चूना या ईंट पकाने और सीमेंट के भट्ठे सुलगाने के काम आयेंगी।

जील गोडा में प्रशिक्षण के तौर पर सस्ता सा एक यन्त्र लगाया गया है जिससे प्रतिदिन १० टन धुआं रहित कोयला बनाया जाता है। इसी यन्त्र से इस तरह का और भी अधिक कोयला बनवाया जा सकता है। यह कोयला शक्ल सूरत में लकड़ी के कोयले की तरह होता है और सॉफ्ट कोक से अधिक आग देता है।

धूप से ताड़ का रस पकाने का यन्त्र

भारत और विदेशों में धूप या सूर्य की शक्ति का उपयोग करने के पिछले १० वर्षों में अनेक प्रयत्न हुए हैं। हाल में ही नई दिल्ली की राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला में धूप की गर्मी से ताड़ के रस को पकाने का एक यन्त्र बनाया गया है।

यह यन्त्र कई ऐसे परावर्तकों (रिफ्लेक्टर) को मिलाकर बनाया गया है जो लगाये और हटाये जा सकते हैं। परावर्तक चौखूंटे या आयताकार हैं जिनमें २६ x ३८ शीशे हैं जिनके पीछे और लकड़ी का चौखटा है। ये शीशे इस ढंग से लगाये गये हैं कि उन सबकी चमक या गर्मी एक ही बिन्दु पर पड़ता है। धानू का ताड़ गुड़ प्रशिक्षणशाला में इस यन्त्र से जो आरम्भिक परीक्षण किये गये हैं उनका परिणाम संतोषजनक है। परीक्षण में ताड़ के रस को पकाने के लिए आम के पत्तों का ही उपयोग किया गया फिर भी इससे आम ईंधन की अपेक्षा ३८ प्रतिशत अधिक काम हुआ। इस विधि में लकड़ी कोयले आदि से उतनी गर्मी प्राप्त नहीं होती। वस्तुतः भारत के कई क्षेत्रों में ताड़ के पेड़ बहुत हैं लकड़ी या कोयला अधिक नहीं मिलता और ताड़ रस को पकाने के लिए सूखे पत्ते और टहनियां जलाई जाती हैं। मुरारी मिशन का भट्ठा अनेक या कोयला बनाया जाता है। सौभाग्य से ताड़ वृक्षों के सारे क्षेत्र में धूप खूब रहती है इसीलिए यहां इस यन्त्र का काफी उपयोग हो सकता है।

कमला के तेल से रंग रोगन

पूना की राष्ट्रीय रसायनिक प्रयोगशाला में कमला के तेल से रंग रोगन वार्निश आदि बनाने की विधि निकाली गई है। देश में कमला बहुत पैदा होता है लेकिन इसके तेल में एक खराबी है कि अन्य सूखने वाले तेलों की अपेक्षा यह सूखने पर अधिक कड़ा हो जाता है और इस प्रकार वार्निश या रोगन के लिए यह अच्छा नहीं रहता।

पूना की गवेषणा शाला के वैज्ञानिकों ने कमला के तेल की इस कमी को दूर करने का प्रयत्न किया और वे इसमें सफल हो गये हैं। वजान और मद्यसार (अलकोहल) के प्रयोग से कमला के तेल का यह अवगुण दूर हो जाता है और यह वस्तु वार्निश या रोगन बनाने से काम आ सकता है।

मकानों के गिरने का खतरा दूर

काली मिट्टी नमी और खुश्की के साथ ऊपर नीचे या इधर उधर होती रहती है इसलिए इस मिट्टी पर बने मकान प्रायः तिड़क जाते हैं। इधर कुछ वर्षों से मध्य प्रदेश तथा अन्य क्षेत्रों से इस तरह की बहुत सी शिकायतें आईं और इंजीनियरों तथा वैज्ञानिकों को इस समस्या ने काफी परेशान कर दिया था। रुड़की की वास्तु गवेषणा शाला में इस समस्या को सुलझाने और मकानों को गिरने के खतरे को दूर करने के प्रयत्न किये गये और एक विधि निकाली गई जिसमें मकान के नींव हर मौसम में स्थिर और अविचल रहे। विधि इस प्रकार है। मकान का मजबूत कुर्सी कंक्रीट के खम्भों पर बनाई जाती है। कंक्रीट के खम्भे बनाकर १० फुट की गहराई पर पहुंचा जाते हैं और फिर एक विशेष यन्त्र द्वारा इनके नीचे से चारों ओर फैला दिया जाता है। यह यन्त्र रुड़की की वास्तु गवेषणा शाला में तैयार किया गया है। इस तरह की नींव पर नीचे की मिट्टी की हरकत का कोई असर नहीं पड़ता।

मध्य प्रदेश में इटारसी में एक एक कमरे के तीन मकान इसी विधि के अनुसार बनाकर देखे गए हैं। दो साल में ये मकान ठीक ठाक खड़े हैं।

स्वास्थ्य-सुधा

चिकित्सा अनुसन्धान की देन

[श्री चन्द्र आयुर्वेद शिरोमणि]

मानव प्राकृतिक व्याधियों से अपने सुरक्षित रखने और उसके कारणों को दूर करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहा है। विज्ञान की चिकित्सा शाखा ने पिछले ५० वर्षों में मानव हितकारी अनुसन्धानों द्वारा मानव शरीर की सुरक्षा के रहस्य की खोज में पर्याप्त सफलता प्राप्त की है। सफलता की इस परम्परा से हम सभी परिचित हो सकें इस उद्देश्य से यहाँ संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जाता है।

विषाणुओं का विश्लेषण

प्रत्येक व्यक्ति वर्षों में ४ से ६ बार [illegible] के कारण बीमार पड़ता है और प्रत्येक व्यक्ति अपनी आयु का [illegible] प्रतिशत भाग विषाणुओं से उत्पन्न होने वाले उन रोगों से पीड़ित होकर बिताता है जो मनुष्यों को अक्सर हो जाते हैं। किन्तु चेचक पीत ज्वर पागल कुत्ते का काटना इन्फ्लुएंजा और शिशु पक्षाघात इन रोगों की रोकथाम की जा सकती है। विषाणुओं से उत्पन्न होने वाले किसी भी रोग का कोई निश्चित उपचार नहीं है। कीटाणु नाशक औषधियों का प्रभाव स्थाई और सुनिश्चित नहीं होता।

फिर भी नये एवं आशाप्रद औपचारिक साधन मालूम कर लिये गये हैं और अब [illegible] के तौर पर प्रयोग में लाये जा रहे हैं [illegible] के सम्बन्ध में किये गये अनुसंधानों से पता चलता है कि [illegible] मिश्रण जिनमें [illegible] यूरिलाइक एसिड शामिल है [illegible] के भीतर विषाणुओं की शक्ति को रोकते हैं और इस प्रकार रोग का खात्मा कर देते हैं। इसलिए अनुसंधान वैज्ञानिक अब भविष्यवाणी कर रहे हैं कि विषाणुओं से उत्पन्न होने वाले रोगों की रोकथाम की जा सकती है और निकट भविष्य में नयी चिकित्सा और उपचार होने लगेगा।

इस शताब्दी के पूर्वार्द्ध में चिकित्सा के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण प्रगति यह की गई है कि रोगाणु नाशक औषधियों तथा रसायनिक द्रव्यों की सहायता से रोगाणुजन्य रोगों पर विजय के रूप में प्राप्त की गई है। निमोनिया उपदंश क्षय मस्तिष्क की नाड़ियों की सूजन तथा विषाणुओं से उत्पन्न होने वाले अन्य बहुत से अब तक असाध्य समझे जाने वाले रोग वैज्ञानिक उपचारों से ठीक हो जाते हैं।

कैन्सर के विषाणु

कैन्सर के विषाणुओं का विश्लेषण करने के लिए एक नये यन्त्र का विकास किया जा रहा है। इसका प्रयोग करके १।। सेकिंड में १० हजार जीव कोषों की जांच की जा सकती है यदि जीव कोषों की घनता अथवा आकार में परिवर्तन हो जाता है तो यन्त्र द्वारा इसका पता चल जाता है और तब निदान शाखा अन्तिम निदानों का निश्चय कर सकते हैं।

इस प्रकार १।। सेकिंड में एक यन्त्र अब वह कार्य कर सकता है जिसे करने के लिए प्रशिक्षित वैज्ञानिकों को कई घण्टों तक कठोर परिश्रम करके जांच पड़ताल करना पड़ता था इस नई मशीन के कारण अब विस्तृत पैमाने पर कैन्सर का पता लगाने के कार्य कार्यान्वित करना सम्भव हो गया है।

आइसोटोपों विषाणुओं तथा रासायनिक द्रव्यों के सम्बन्ध में जो अनुसंधान जारी हैं उनके फलस्वरूप अन्धकार के परदे को भेद कर ज्ञान के प्रकाश की प्रखर किरणें निकल रही हैं। प्रयोगशालाओं से जीव कोषों के विकास आदि के लिए नये साधन उपलब्ध हुए हैं। २८ रासायनिक तत्व जिनमें १३ एमिनो [illegible] तथा ८ विटामिन हैं जीव कोषों की वृद्धि के लिए आवश्यक हैं। इसका यह अर्थ हुआ कि यह कार्य सूक्ष्म कोषों तथा जीव कोषों तक ही सीमित नहीं है बल्कि समस्त जीवित कोषों के सभी भागों के सम्बन्ध में किया जा सकता है। ऐसा ज्ञान कैन्सर के विरुद्ध किये जा रहे संघर्ष के लिए सूत्र रूप से उपयोगी है।

आशा है कि निकट भविष्य में रक्तचाप और वृक्कशोथ (गुर्दे की सूजन) की बीमारियों का इलाज भी निकल आयेगा। यह भविष्यवाणी 'चिकित्सा अनुसन्धान का भविष्य' विषयक विभाग के चिकित्सा वैज्ञानिकों ने की है।

चिकित्सा क्षेत्र में क्या क्या सफलतायें प्राप्त की गई हैं, नये अनुसंधान के सम्बन्ध में कौन कौन सी बाधायें उपस्थित हैं और कौन सी बाधायें

(शेष पृष्ठ १३ पर)

आवश्यकता

आवश्यकता है एक योग्य आर्य भजनीक की जो, आर्य समाज का प्रचार कर सकें। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। प्रार्थनापत्र २० अगस्त तक आने चाहिये।

—विजयेन्द्र अग्रवाल मन्त्री
आर्य समाज, हापुड़ (मेरठ)

अध्यापक की आवश्यकता

स्थानीय आर्य समाज द्वारा संचालित वैदिक विद्यालय कचौरा को १ सितम्बर से एक आर्य समाजी, अनुभवी अध्यापक की आवश्यकता है। जो बनारस की व्याकरण शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण हों अधिक अनुभवी को प्राथमिकता दी जावेगी। निवास की सुविधा तथा वेतन योग्यतानुसार दिया जावेगा। प्रार्थनापत्र में उत्तीर्ण परीक्षाओं के नाम, किन संस्थाओं में कितने वर्ष कार्य किया तथा वेतन आदि का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिये। प्रार्थनापत्र निम्न पते पर २५ अगस्त तक रजिस्ट्री डाक से भेजना चाहिये।

पता—पन्नालाल वैद्य मन्त्री
वैदिक विद्यालय कचौरा, (अलीगढ)

आवश्यकता

देहरादून आर्य समाज के लिये एक कर्मठ और सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है जो संस्कारादि भली प्रकार करा सकता हो भाषण दे सकता हो और भजन आदि भी गाना जानता हो। वेतन ८०) मासिक तक दिया जा सकता है। रहने के लिये आर्य समाज मन्दिर में ही स्थान दिया जायगा। इच्छुक महाशय मन्त्री आर्य समाज देहरादून से पत्र व्यवहार करें।

—रामचन्द्र, मन्त्री
आर्य समाज देहरादून

(पृष्ठ १२ का शेष)

भविष्य में उपस्थित हो सकती हैं, इस सम्बन्ध में वैज्ञानिक यह भविष्य वाणी करते हैं कि निकट भविष्य में हृदय रक्त वाहिनी धमनियों तथा रक्त प्रवाह सम्बन्धी घातक रोगों के उपचार के सम्बन्ध मे महत्व पूर्ण उन्नति की जायेगी।

पशुओं पर प्रयोग

पशुओं के सम्बन्ध में नई नई प्रक्रियाओं का विकास किया गया है। किसी भ्रूण मे पशु के जीव कोषों का पैवन्द लगाया जा सकता है। इसी तरह किसी पशु पर दूसरे पशु की चमड़ी जोड़ी जा सकती है। उदाहरण के तौर पर काली चुहिया की सफेद चमडी का जा सकती है अथवा सफेद चूजो के काले पख किये जा सकते हैं।

अब केवल एक व्यक्ति की अपनी ही त्वचा लेकर अथवा उसके भाई बहन की त्वचा लेकर त्वचा मे पैवन्द लगाया जा सकता है। दूसरे व्यक्ति से काटी हुई त्वचा पैवन्द लग जाने के बाद एक सप्ताह अथवा १० दिन तक जीवित रहती है। अनुसन्धान विषयक इस नई जानकारी से यह पता लगाया जा सकेगा कि ऐसा क्यों होता है और आशा है कि इस समस्या का हल भी मालूम किया जा सकेगा। ऐसा करके किसी जीवित व्यक्ति की त्वचा काटकर दूसरे रोगी की त्वचा में पैवन्द लगाने में सफलता प्राप्त की जा सकेगी।

पुराने रोगों की चिकित्सा

अब १७ पुराने रोगों की रोकथाम की जा सकती है। इनमें प्राचीन काल की चिकित्सा सम्बन्धी प्रमुख समस्याये भी है। जैसे मधुमेह, घातक, रक्ताल्पता, उपदंश और मलेरिया। अन्य २० पुराने रोगों जैसे क्षय, जन्म जात हृदय रोग, सन्धिवात ज्वर आदि की आंशिक रूप में रोकथाम की जा सकती है। आशा है कि इन घातक एवं अपंग कर देने वाले रोगों का भी शीघ्र पूर्ण रोकथाम की जा सकेगी।

शोक समाचार

—जिला सभा गोरखपुर के मन्त्री श्री द्विजराज शर्मा की पुत्री के निधन पर आर्यसमाज गोरखपुर, स्त्री समाज गोरखपुर, व जिला सभा गोरखपुर ने शोक प्रकट किया।

—आ० स० नारायण स्वामी भवन, लखनऊ के कोषाध्यक्ष व सभा के एकाउन्टेन्ट श्री ईश्वरशरणजी की माता जी के निधन पर इस समाज ने शोक प्रकट किया और दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना की।

साहित्य-समीक्षण

समालोचनार्थ कृपया पुस्तकों की दो प्रतियां भेजिए —सम्पादक

प्रार्थना पुस्तक

सम्पादक व प्रकाशक—अवध बिहारीलाल एम०ए०बी०एस० साहित्याचार्य, वेदतीर्थ, प्रधानाध्यापक, दक्षिण कलकत्ता आर्य विद्यालय। ३७।१ ए० गरचारोड, कलकत्ता—१९, पृष्ठ स० १४८, मूल्य १)

यह एक ऐसी पुस्तक है जिसमें एक ही स्थान पर दैनिक तथा सामाहिक एवं अन्यान्य अवसरों पर काम में आने वाले सभी मन्त्रों का हिन्दी भाषानुवाद सहित सुन्दर सङ्कलन कर दिया गया है। प्रार्थना, हवन, सन्ध्या, स्वस्तिवाचन, शान्ति प्रकरण आदि सभी मन्त्रों के सरलार्थ इस पुस्तक में दिये गये हैं। सन्ध्या, हवन से लाभ और इसकी उपयोगिता तथा आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला गया है। राष्ट्र गान, ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त, यजुर्वेद के ३१ वें व ४० वें अध्याय के मन्त्र, पौर्णमासी तथा अमावस्या के मन्त्र, प्रात स्मरण मन्त्र, साप्ताहिक सत्सग विधि, आ० स० के नियम आदि भी अर्थ सहित दिये गये है। अन्त मे लगभग ७० भजन भी दिये गये हैं। इस प्रकार यह पुस्तक प्रत्येक अवसर के लिए उपयोगी है, साथ ही साथक होने के कारण स्वाध्याय के लिए भी सुन्दर है। प्रत्येक आर्य समाजी का उतने मन्त्रों का अर्थ तो ब नना ही चाहिए जितने मन्त्र इस पुस्तक म दिये गये है। उपयोगिता के हिसाब से मूल्य भी अधिक नहीं है। आर्य वीर दल के हिन्दी राष्ट्र गान व ध्वज गान संस्कृत के ध्वज गान तथा तनुपाग्नेऽसि व तेजोऽसि तेजोमयि' मन्त्र भी याद इस पुस्तक म सङ्कलित कर लिये जाते तो इसकी उपयोगिता और बढ़ जाती। मन्त्रों के अर्थ संक्षिप्त होते हुए भी सरल हैं। यत्र तत्र प्रूफ की अशुद्धियाँ अवश्य हैं पर क्षम्य हैं। इस उपयोगी व आवश्यक प्रकाशन के लिए सम्पादक प्रकाशक महोदय धन्यवाद के पात्र है।

आर्ष रत्न मंजूषा

सम्पादक, प्रकाशक, प्राप्ति स्थान वही उपरोक्त। पृष्ठ स० ५२, मूल्य आठ आने।

प्रथम पुस्तक के समान ही यह पुस्तक भी मुख्यत बालकों के लिए व सामान्यत अन्यान्य लोगों के लिए बहुत उपयोगी है। इसमे मनु,बाल्मीकि व्यास, विदुर आदि महर्षियो के सुभाषित रत्नों का सुन्दर सङ्कलन है जिसका हिन्दी अनुवाद भी साथ ही साथ दिया गया है। प्राचीन ऊंची संस्कृति का ज्ञान बालकों का कराने के लिए यह पुस्तक बहुत अच्छी है। एक बार इस पुस्तक का आद्योपान्त पढ़ लेने के बाद अपने देश की प्राचीन गौरव को याद कर मस्तक, गर्व से ऊंचा उठ जाता है। विविध उपदेश के रूप म अमूल्य शिक्षा इस पुस्तक मे दी गयी है जिसका पालन करके मनुष्य स्वय ऊंचा उठकर समाज और राष्ट्र को भी ऊंचा उठा सकता है। प्रारम्भ स ही बालकों को इसकी शिक्षा दी जानी चाहिए। सम्पूर्ण पुस्तक मोटे अक्षरों म प्रकाशित की गई है जिससे बालक इसे सुविधा पूर्वक पढ सके। अपने प्राचीन धर्म ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त कराने के लिए सम्पादक महोदय का यह प्रयास सफल है।

अन्यान्य समाचार

—२७ जुलाई का रानी का सराय बाजार जिला आजमगढ म वली मुहम्मद व साबीद जुलाहा गोमांस बेच रहे थे। तलाशी लेने पर बालादीन चुडिहारा के घर स गोमांस बरामद किया। दोनों को पुलिस पकड कर ले गयी। —नन्दूराम, मन्त्री आ०स० रानी का सराय आजमगढ

—चान्दरई (दवरिया) नाम का एक लडका अपने परदेश रहने वाले पति का खोज म भटकते हुई आर्य समाज मगहर (बस्ती) म पहुंची। उसके सुसराल का पता लगाकर उसको समझा बुझाकर लडकी उसके अभिभावक का लिखापढी के बाद सौंप दी गया।

आर्यकुमार सभा समाचार

—आर्य कुमार सभा मेरठ नगर का ५३ वाँ वार्षिकोत्सव २८ जुलाई से ३० जुलाई तक मनाया गया। भजन व्याख्यान, वाक सघर्ष प्रतियोगिता, नाटक एव पारितोषिक वितरण आदि हुए।

—आर्यकुमार सभा पालीभीत न २३जुलाई का सोत्साह तिलक जयन्ती मनाया। लोकमान्य तिलक के जीवन पर भाषण हुए

सभा की सूचनाएँ

सभा के समस्त उपदेशकों एवं प्रचारकों को आदेश

सभा ने दि० १५ अगस्त से १७ अगस्त सन् ५८ तक के लिये सभा के समस्त उपदेशकों तथा प्रचारकों का एक सम्मेलन सभा भवन लखनऊ में बुलाने का निश्चय किया है,जिसमें आपका सम्मिलित होना अत्यन्त आवश्यक है, अत आप दि० १५ अगस्त को प्रात:काल सभा भवन में पधारने का कष्ट करें और धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक विषयों में से किसी भी एक विषय पर १५मिनट की संक्षिप्त तथा प्रभावशाली भाषण तैयार करके लावें, जिसे उस सम्मेलन मे बोलना होगा।

इसके अतिरिक्त अपने साथ सभा सम्बन्धी समस्त कागजात एवं रसीदबही और अपनी आयु तथा योग्यता सम्बन्धी प्रमाणपत्र भी लेते आवे। सूचना को पढ़ते ही लौटती डाक से अपने लखनऊ पधारने की सूचना सभा को भेजें।

नोट—यदि आप उक्त तिथि पर पधारने का कष्ट न करेंगे, तो सभा यह समझने के लिये बाध्य होगा, कि आपने अपना सम्बन्ध सभा से विच्छेद कर लिया है। —अधिष्ठाता उपदेश विभाग

सभा कोषाध्यक्ष श्री गुप्त जी

द्वारा प्राप्त धन की सूची

सभा कोषाध्यक्ष श्री रामजीप्रसाद गुप्त अधिष्ठाता आर्यवीर दल उ० प्र० दि० १७७५८ से २६७५८ तक प्रान्त के पश्चिमी जिले की समाजों के दौरे पर रहे। समाजो ने सभा को निम्न सहायता दी है। हम उनका धन्यवाद करते हैं।

आ० स० सुभाष नगर बरेली २५)
,, चन्दौसी ०५)+(८) आर्यमित्र
, बहजोई ०१)+१००)सभाप्रसभासदे
,, सम्भल ५०)+१०) आर्यवीर दल
,, अमरोहा ०५) आर्यवीर दल
, हसनपुर १६)
,, धनौरामडी ७५)+०५)आर्यवीरदल
, गढ मुक्तेश्वर २१)
,, हापुड़ ०१)
श्री घासीराम जी पूर्व अ०सदस्य १०)

सम्पूर्ण योग ४९८)

-सभा मन्त्री

फुटकर समाचार

—आ०स० बैरगनिया, मुजफ्फरपुर, बिहार—श्री अयोध्या लाल वानप्रस्थी प्रधान, बालेश्वर सिंह आर्यवीर मन्त्री।

—आ०स० रामगढ़ नैनीताल—श्री बचीराम आर्य प्रधान, श्री यशवन्तसिंह मन्त्री,श्री बहादुरराम आर्य कोषाध्यक्ष।

—वाग्वर्धिनी सभा गुरुकुल सूर्य कुण्ड बदायूं—श्री नन्दकिशोर शास्त्री अध्यक्ष, श्री नरेन्द्रदेव मन्त्री, श्री ब्रह्मचारी धर्मदेव कोषाध्यक्ष।

—आर्यवीर दल गाजियाबाद का कार्य श्री वेदप्रकाश नगरनायक व श्री रणवीरसिंह उपनगरनायक की देख रेख मे सुचारू रूप से चल रहा है। पिछले दिनो श्री रामजी प्रसाद गुप्त प्रांतीय सचालक व श्री नेपालसिंह क्षेत्रीय सचालक ने इसका निरीक्षण किया।

लेखकों से निवेदन

लेखकों से निवेदन है कि वे कृपया निम्न शीर्षकों पर अपने संक्षिप्त लेख आर्य मित्र म प्रकाशनार्थ भेजें —

१—कम्युनिज्म और महर्षि दयानन्द। २—विश्व का महान् ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश
३ निरन्तर सघर्ष और तूफानों म अडिग—अजेय महापुरुष दयानन्द।
४—विकासवाद समस्या। ५—देव दयानन्द के लिए श्रद्धाञ्जलि।
६—आर्यसमाज का सैद्धान्तिक दृष्टिकोण क्या है ?
७—मानव मात्र का उद्धारक दयालु दयानन्द।
८—वेदोद्धारक दयानन्द। ९—महर्षि दयानन्द के सपनों का आदर्श राज्य।
१०—जीवन के उत्कर्ष का प्रतीक दयानन्द। ११—महर्षि दयानन्द क्या चाहते थे
१२—आर्यसमाज और शुद्धि। १३—ऋषि दयानन्द की आध्यात्मिक देन,
१४—महर्षि दयानन्द द्वारा निर्देशित समाज व्यवस्था।
१५—सत्य स्वर्गस्य सोपानम्। १६—वेद ज्ञान की महत्ता।
१७—भिक्षा के क्या दोष बताऊँ ? १८—ऋषि दयानन्द की विशेषताए।
१९—वैदिक संस्कृति का मूल आधार। २०—गहरे पानी पैठ।

आर्यमित्र म प्रकाशनार्थ सभी रचनाओं की स्वीकृति की सूचना एक सप्ताह के अन्दर ही भेज दी जाती है। स्वीकृति पत्र न मिलने पर लेख को अस्वीकृत समझना चाहिए। अस्वीकृत रचनाएं भविष्य में लौटाया नहीं जायेंगी। —सम्पादक

आर्य-जगत

आर्य वीर दल समाचार—

—२० जुलाई को श्री रामजीप्रसाद गुप्त संचालक आर्य वीर दल उ० प्र० की अध्यक्षता में आर्य वीर दल की एक बैठक आ०स० अमरोहा में हुई जिसमें बिजनौर, मुरादाबाद, मेरठ, बदायूं आदि जिले के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। पश्चिमी क्षेत्र के लिए निम्न अधिकारी बनाये गये :—श्री सन्तोषकुमार जिला संचालक मेरठ मन्त्री, श्री शम्भोलाल शर्मा जिला संचालक मुरादाबाद कोषाध्यक्ष, श्री महाराज नारायण टण्डन मुरादाबाद निरीक्षक। प्रान्तीय संचालक श्री गुप्त जी ने बताया कि श्रीरामसिंह को प्रान्तीय शिक्षक के स्थान पर रखा गया है जो पूरे प्रान्त में जोर शोर से दल का कार्य करेंगे।

—आर्य वीर दल सम्भल मुरादाबाद-श्री शान्तिवीर आर्य अध्यक्ष, श्री सत्यदेवशरण नगरनायक, श्री प्रमोद कुमार मन्त्री, श्री सुरेन्द्रप्रकाश कोषाध्यक्ष, श्री सत्यवीर बौद्धिकाध्यक्ष।

—१३ जुलाई को श्री नेपालसिंह उप संचालक आर्य वीर दल पश्चिमी उत्तरप्रदेश की अध्यक्षता में आर्य वीर दल मेरठ मण्डल के कार्यकर्ताओं की एक बैठक गाजियाबाद में हुई जिसमें दल की उन्नति के लिए एक स्थायी प्रचारक रखना निश्चय हुआ तथा अन्य आवश्यक प्रस्ताव भी पास हुए।

—आर्य वीर दल पूर्वी उत्तरप्रदेश के कार्यालय का पता-मेयालाल आर्य मन्त्री आर्यवीरदल पूर्वी उत्तरप्रदेश, प्रभात प्रेस, दीनानाथ की गोला वाराणसी।

—श्री ओम्प्रकाश आर्य को मिरजापुर जिले के आर्य वीर दल का मण्डलपति बनाया गया है। जिले के आर्य समाजों के अधिकारियों को चाहिये कि उन्हें सहयोग दें।

—आर्य वीर दल पश्चिमी उ० प्र० के कार्यालय का पता—सन्तोषकुमार मन्त्री, आर्य वीर दल पश्चिमी उ०प्र० आ०स० गाजियाबाद, मेरठ।

—श्री नेपालसिंह उप संचालक आर्य वीर दल पश्चिमी उ०प्र० शीघ्र ही अपने क्षेत्र में आर्य वीर दल के संगठन के लिए व्यापक दौरा करने वाले हैं।

—उत्तरप्रदेशीय आर्य वीर दल के चारों खण्डों, १३ केन्द्रों और ५२ मण्डलों के अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि वे प्रान्तीय आर्य वीर दल के नए संचालक व अधिष्ठाता श्री रामजीप्रसाद गुप्त की हर आज्ञा का पालन करें और सोत्साह आर्य वीर दल के कार्य को आगे बढ़ायें। —सुखदेवसिंह शास्त्री, शिक्षाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य वीर दल

—१८ अगस्त से २९ अगस्त ५८ तक सल्याणा में (पठानकोट जोगेन्द्र नगर रेलवे लाइन के पंचरूखी रेलवे स्टेशन के पास) आर्य वीरों का एक साधना शिविर कांगड़ा की रमणीय घाटी में लग रहा है। व्यायाम, संगीत, सन्ध्या, हवन, स्वाध्याय, भाषण कला, लेखन कला, आदि की शिक्षा देकर आर्य वीरों को ईमानदार और चरित्रवान साहसी नागरिक यहां बनाया जायेगा। पं० त्रिलोक चन्द शास्त्री बी०ए०, पं० सुखदेव शास्त्री शिक्षाध्यक्ष, श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी प्रधान संचालक, स्वामी कृष्णानन्द श्री वीरेन्द्र एम० ए०, सम्पादक वीर अर्जुन, पूज्य महात्मा आनन्दस्वामी, आदि महानुभावों को निमन्त्रित किया गया है। शिविर शुल्क १३) है। १५ वर्ष से अधिक के वीर लिए जायेंगे। अपने साथ खाकी निकर, सफेद कमीज, धोती, लोटा, थाली कटोरी, ऋतु के अनुसार बिस्तरादि वस्त्र, नोटबुक, पेन्सिल, सत्यार्थप्रकाश आदि लेकर १७ अगस्त के शाम तक सल्याणा पहुंच जांय।

—सुन्दर लाल आर्य संयोजक

—उन्नाव जिला आर्य वीर दल के मण्डलपति श्री जयपाल जी ने हसनगज तहसील का भ्रमण किया और आर्य वीर दल का रैली में भाषण दिया। आपने हिन्दी आन्दोलन के लिए सैनिकों को तयार रहने के लिए भी कहा।

चुनाव समाचार—

—आ० स० चिरार-श्र रामकुमार जी प्रधान, श्री प्यारेलाल मन्त्री, श्री भद्रगुप्त कोषाध्यक्ष।

—आ० स० सिहोर-श्री विष्णुदत्त मिश्र प्रधान, श्री छोटेलाल आर्य मन्त्री, श्री जगन्नाथप्रसाद कोषाध्यक्ष।

—आ० स० सुशील मुजफ्फरपुर-प्रधान श्री जलेश्वरप्रसाद सिंह, मन्त्री श्री मोहनप्रसाद सिंह, कोषाध्यक्ष श्री साधु शरण सिंह।

—आ० स० आरा, विहार-प्रधान श्री इन्द्रदेव नारायण ऐडवोकेट, मन्त्री सेठ बख्तावन राम, पुस्तकाध्यक्ष श्री सचीकान्त गुप्त।

—आ० स० शहर मुजफ्फरनगर-पं० शेरसिंह काश्यप प्रधान, श्री चन्द्रगुप्त वकील मन्त्री, श्री रणजीतसिंह मुख्तार कोषाध्यक्ष।

—आ० स० मखौली, कानपुर-श्री रामचन्द्र जी प्रधान, श्री रघुवंशीसिंह मन्त्री, श्री शिवशंकर लाल कोषाध्यक्ष।

—गढ़वाल आ० स० नई दिल्ली-श्री राजेन्द्रप्रसाद बी० एम० सी० प्रधान, श्री बालमसिंह मन्त्री।

—आ० स० उन्नाव श्री रघुवीर सिंह प्रधान, श्री गंगादयाल मन्त्री, श्री सुखदेवप्रसाद कोषाध्यक्ष।

—आ०स० समस्तीपुर दरभंगा-श्री अयोध्या साह वैद्य प्रधान, श्री रामप्रसाद साह मन्त्री श्री वीरसिंह कोषाध्यक्ष।

—आ०स० दिल्ली शाहदरा—श्री हरिदास आर्य प्रधान, श्री निर्मल कुमार मन्त्री, श्री श्यामसुन्दर जी कोषाध्यक्ष।

—आ०स० मानपुर, गया, विहार श्री भगवत राय आर्य प्रधान, श्री चुन्नीलाल आर्य मन्त्री, श्री उदयप्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष।

—आ० स० पीरो, शाहाबाद, विहार—श्री विश्वनाथ प्रधान, श्री राम एकबाल शर्मा मन्त्री, श्री शिव जगराम कोषाध्यक्ष।

—आ० स० पूर्णियां, विहार—श्री नित्यानन्द आर्य एडवोकेट प्रधान श्री नाजूलाल आर्य मन्त्री श्री जयराम चौहान कोषाध्यक्ष।

वैदिक संस्कार समाचार—

—श्री प्रसन्नारायण जी एम० ए० एल० एल० बी० अतर्रीपुर के पुत्र का नामकरण संस्कार १९ जुलाई को हुआ। पुत्र का नाम अमृतेश कुमार रखा गया।

—आ० स० निन्दरी विहार के सदस्य श्री महेन्द्रप्रकाश गोयल के पुत्र का नामकरण हुआ। शिशु का नाम सुधीर रखा गया।

—श्री रामरतीलाल त्यागी आ० स० करोंडी, सहारनपुर ने अपने पिता जी की अन्त्येष्टि वैदिक रीत्यानुसार की और अन्त्येष्टि संस्कार की वेदी बनाने के लिए इस समाज को १००) दान दिया।

प्रचार समाचार—

—ग्राम चौबेपुर तहसील घाटमपुर जिला कानपुर में ३० जून से २५ जुलाई तक कठोपनिषद् और ईशोपनिषद की कथा प० सुरेन्द्रनाथ अवस्थी प्रधान आ०स० के यहाँ प० रामगोपाल त्रिपाठी द्वारा हुई।

—आ० स० सीमेन्ट फैक्टरी सवाई माधोपुर राजस्थान की ओर से १४ जुलाई से गायत्री महायज्ञ प्रारम्भ है जिसकी पूर्णाहुति रक्षा बन्धन के दिन २९ अगस्त को होगी। यज्ञ के अतिरिक्त सन्ध्या, उपदेश, कीर्तन, प्रार्थना, आदि का भी प्रबन्ध है।

—जिला सभा लखनऊ ने शहर के अतिरिक्त, तेलीबाग, कबीरपुर मोहनलाल गंज, निगोहां, मलिहाबाद गढ़ी, पहाड़पुर, सिथौली, बक्सी तालाब आदि स्थानों में मास जुलाई में श्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री महोपदेशक द्वारा जिला प्रचार कराया जिसमें दो स्थानों पर नये समाज स्थापित हुए।

—आ०स० गोविन्दनगर कानपुर में १९ जुलाई से स्वामी कृष्णानन्द जी और २४ से २८ जुलाई तक पं० ज्ञानेन्द्र सूफी द्वारा प्रचार कार्य हुआ प्रभाव अच्छा रहा।

—आ० स० कायमगंज के श्री उमाशंकर जी की पुत्री का नामकरण संस्कार हुआ और उसका नाम सौभाग्यवती रखा गया।

—२६ से २८ जुलाई तक श्री मंगलसेन जी मन्त्री आ० स० जानी खुर्द व श्री विश्वनाथ आर्य वीर उप प्रधान जिला सभा मेरठ ने आ० स० जानी, खानपुर और धौलड़ी में प्रचार किया तथा आर्य वीर दल की आवश्यकता पर बल दिया।

गुरुकुल समाचार—

—गुरुकुल वृन्दावन में जिन छात्रों को प्रवेश पाना हो, वे शीघ्रता करें। शिक्षा प्रारम्भ है।

—गुरुकुल ज्वालापुर में अब प्रवेश बन्द हो गया है। छात्रों की संख्या १९५ हो गयी है। आयुर्वेद विद्यालय में जिनको प्रवेश पाना हो, वे शीघ्रता करें।

—गुरुकुल अयोध्या में प्रवेश पाने वाले छात्रों को अब शीघ्रता करनी चाहिए। अध्यापन प्रारम्भ हो चुका है।

—वैदिक विद्यालय कचौरा अलीगढ़ में अपने होनहार बच्चों को शिक्षा के लिए भेजिए। बालकों को भारतीय संस्कृति की शिक्षा देकर उन्हें यहाँ क्रियाशील नागरिक बनाया जाता है। प्रथमा, पूर्व मध्यमा, हिंदी संस्कृत, अंग्रेजी, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, गणित आदि की शिक्षा यहां दी जाती है।

पंजीकरण सं. ए. ६०
श्रावण १६, शक १८८० (१० अगस्त ५८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष्य . ४६६३ तार . 'आर्यमित्र'

वैदिक साहित्य

[पृष्ठ ७ का शेष]

व द्वितीय अध्यायों के संहिता मन्त्रों का अवलोकन किया गया तो प्रथमाध्याय में २८ और द्वितीयाध्याय में १२ अशुद्धियाँ वर्ण स्वर एवं विरामादि के स्खलन की दृष्टि गोचर हुईं। इस प्रतीति का कारण एक मात्र स्वर कण्ठस्थ वेद का अभ्यास ही था। बिना कण्ठस्थ वेद पाठ के अशुद्धियों का सरलता से ज्ञान होना अत्यन्त कठिन है।

सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास के प्रथम दोनों मन्त्रों में स्वर की अशुद्धियाँ चली आ रही हैं। जब तक उन अशुद्धियों का ज्ञान नहीं और उसको शुद्ध करने का ज्ञान नहीं तब तक वे अशुद्धियाँ परम्परागत चलती ही रहेंगी। श्री स्वामी वेदानन्द जी के प्रयत्न से जो स्थूलकाय सत्यार्थ प्रकाश छपा है उसमें भी वे अशुद्धियाँ हैं तथा जो छप रहे हैं या जिन अन्यों ने भी सत्यार्थ प्रकाश छापे हैं उनमें भी वही अशुद्धियाँ विद्यमान हैं। एक दो बार प्रकाशकों का ध्यान आकृष्ट किया परन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। यहाँ तक कि पत्रों का उत्तर देना भी उचित नहीं समझा। अतः प्रकाशकों की उपेक्षा भी वेद को हानि पहुँचा रही है और असह्य है।

दूसरा प्रमुख कारण प्रकाशकों का यह लक्ष्य है कि वैदिक पण्डितों का सहयोग लेकर वेद छपाया जावेगा तो उसमें व्यय अधिक पड़ेगा। व्यय की अधिकता के कारण प्रकाशन महँगा हो जायगा। महँगा प्रकाशन होने की दशा में ग्राहक हमारे प्रकाशन को न खरीद कर अन्य सस्ते प्रकाशन खरीद लेंगे तथा दूसरे प्रकाशक हमारे प्रकाशित शुद्ध ग्रन्थ के अनुसार छपा लेंगे तो उनका व्यय कम और लाभ विशेष होगा। प्रकाशकों की इस मनोवृत्ति से वेद के अशुद्ध प्रकाशन का प्रोत्साहन प्रथम होता है और हमारे प्रकाशनों की प्रतिष्ठा और प्रामाणिकता गिरती जा रही है।

इसके अतिरिक्त प्रकाशकों ने यह भी समझ रखा है कि ग्राहक शुद्ध अशुद्ध ग्रन्थ प्रकाशन को अधिक महत्व न देकर सस्ते मूल्य के संस्करण को महत्व देते हैं। अतः प्रकाशन का लक्ष्य शुद्धता न होकर सस्तापन हो गया है।

एक प्रकाशक का संस्कार विधि को देखा तो उस सामान्य प्रकरणों के भाग में भी ४० के लगभग अशुद्धियाँ थीं। एक प्रकाशक द्वारा मुद्रित सन्ध्या हवनादि की पुस्तक देखी तो उसमें ४८ के लगभग स्वर एवं वर्णों की अशुद्धियाँ थीं। जब हमारे छोटे मोटे प्रकाशनों में भी इतनी अशुद्धियाँ होती हैं तो उन पुस्तकों के आधार पर जो भी मन्त्र पाठ या सन्ध्या हवन कण्ठस्थ करेंगे उनको भी अशुद्ध ही मन्त्राभ्यास होगा और इस प्रकार अशुद्ध प्रकाशित पुस्तकों से अशुद्ध मन्त्र पाठ का ही प्रचार होता रहेगा। पुनः अशुद्ध पाठ की परम्परा भी चलती रहेगी।

उदाहरणार्थ कई प्रकाशकों ने यज्ञादि की पद्धतियों में 'अश्मपनेन' मन्त्र को भी प्रकाशित किया है। वे उसमें 'द्विपदेश चतुष्पदे' ऐसा पाठ छापते हैं। मालूम नहीं उन्होंने 'श' इस पद को किस आधार पर बढ़ा दिया। यहाँ पर 'द्विपदं चतुष्पदे' यही पाठ शुद्ध है इसी प्रकार 'आब्रह्मन्' मन्त्र में 'पर्जन्यो अभिवर्षतु' ऐसा पाठ भी कई बार दैनिक कार्यों की पुस्तकों में छपा था। मैंने उन प्रकाशकों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया और 'पर्जन्योवर्षतु' इसी पाठ को प्रकाशित करने के लिए लिखा जैसा कि वेद में है। इत्यादि अनेक प्रकार से हमारे सन्ध्या हवन आदि की छोटी छोटी पुस्तकों में भी अत्यधिक अशुद्धियाँ होती रहती हैं और उनके कारण अशुद्ध मन्त्र पाठ का प्रचलन बढ़ता जाता है। इस प्रकार वैदिक ग्रन्थों का अशुद्ध मुद्रण हमारे परम धर्म के प्रति अपनी उपेक्षा, उदासीनता व अज्ञानता का परिचय करा रहा है।

महर्षि याज्ञवल्क्य ने छः प्रकार के अधम अर्थात् निकृष्ट पाठक बतलाये हैं, उनमें से एक प्रकार के अधम पाठकों का लक्षण यथा "लिखित पाठक" किया है। अर्थात् जो गुरु के समीप अध्ययन न करके पुस्तक के द्वारा ही जैसा अशुद्ध शुद्ध लिखा या छपा है उसको वैसा ही पढ़ता है, ऐसे व्यक्तियों की गणना अधम पाठकों में की गई है। आजकल प्रायः जो ब्रह्मा, ऋत्विज, पुरोहित, आचार्य पद पर वेद पाठियों का आसन सुशोभित करने वाले विद्वान् दिखाई पड़ते हैं न तो कम कण्ठस्थ पाठी ही हैं न गुरुकुल के समीप अध्ययन किये हुए हैं। अशुद्ध पुस्तकों से मन्त्र पाठ करने के कारण उन्हें शुद्ध और अशुद्ध का बोध नहीं हो पाता अतः उनका पाठ भी दोषपूर्ण रहना स्वाभाविक है। यदि ऐसे अवसरों पर कोई कण्ठस्थ पाठी वैदिक विद्वान् उन पुस्तकों से मिलान कराकर उसमें संशोधन कर दें तो किञ्चित् सुधार हो सकते हैं। अतः आवश्यकता है कि शुद्ध वेद का मुद्रण प्रकाशन होना अत्यन्त आवश्यक है।

वेद के नाम पर आर्य समाज, आर्य प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक सभा, गुरुकुल तथा अन्य आर्य संस्थाओं, उत्सव एवं वेद प्रचार की अपील करके वेद के नाम पर ही धन संग्रह करती हैं परन्तु वह राशि वेद तक वास्तव में नहीं पहुँच पाती है। वेद प्रचार के नाम पर भजन प्रचार हुआ है और प्रवचन के नाम पर सामयिक समस्याओं पर धुंआधार व्याख्यान होते रहे। अब समय आ गया है कि हम वास्तविक वेद प्रचार की दिशा में आगे बढ़ें उसके लिए शुद्ध वेद के शुद्ध संस्करण की नितान्त आवश्यकता है। क्या इस मौलिक कमी को दूर करने में आर्य समाज सफल होगा?

सिंहावलोकन

[पृष्ठ २ का शेष]

देशक श्रेणी में ही विराजमान सुकवि हैं। काव्य कलाधर, संगीत सुधाकर श्री प० प्रकाशचन्द्र जी। आज अजमेर में रहते हैं और वहीं के समाज के आधीन काम करते हैं।

प्राचीन परिपाटी पालने वाली किन्तु नवीन शिक्षा से सम्पन्न रूप वाली देवी के समान आपकी कविता है। कोमल कान्त अनुप्रासमय पदावली, सरस भाव, पवित्र प्रेम का सन्देश आपकी कविता के अंग हैं। संगीत कला में भी आप निपुण हैं, और नृत्य द्वारा भावों का चित्र खींच सकते हैं। आप स्वभाव सिद्ध ही 'संगीत साहित्य कला प्रवीण हैं।'

इस प्रकार इस लेख में हमने आर्य समाज के क्षेत्र में साहित्य संगीत की सेवा करने वालों का संक्षिप्त विवरण देने का प्रयत्न किया है उपर्युक्त नामों के अतिरिक्त अनेक आर्य बन्धु साहित्य संगीत के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। आर्य समाज के प्रख्यात नेता श्री प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार और उनके भाई श्री विनयचन्द्र जी निःसन्देह संगीत क्षेत्र में भी ने तो अपनी श्रव्य संगीत रचनाओं द्वारा संगीत में अश्लीलता के घनान्धकार को भेदन कर प्रशंसनीय सेवा की है। आचार्य प० विश्वनाथ शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि गुरुकुल वृन्दावन भी संगीत की सेवा में संलग्न हैं उनका हृदयंगम संगीत प्रेमियों की निधि बन चुकी है। श्री ... उनकी पत्नी श्रीमती प्रभावती जी भी अपनी विद्वतापूर्ण रचनाओं द्वारा संगीत के माधुर्य का प्रसार करने में संलग्न हैं। इन तथा इसी प्रकार के अन्य अनेकों आर्य भाइयों ने साहित्य संगीत के क्षेत्र में आर्य समाज को गौरवान्वित किया है। इन लोगों से प्रेरणा प्राप्त कर हमें आर्यसमाज द्वारा संगीत शास्त्र की शुद्धि और उन्नति में सहायक बनने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना चाहिए।

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ARYA आर्य मित्र MITRA

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का साप्ताहिक मुखपत्र

[illegible] वि० २०११ | [illegible] १६ सितम्बर

भारत की स्वाधीनता की सुरक्षा एवं गौरव वृद्धि के लिए राष्ट्र को कठोर साधना करनी है

भारतीय आत्मा को सुरक्षित रखने का दायित्व हमें पूर्ण करना है

भारतीय स्वाधीनता का पुण्य पर्व [illegible] आज हम सबके लिए एक नव सन्देश लेकर आया है। सहस्रों वर्षों के [illegible] दुर्बल [illegible] टक्कर [illegible] हम स्वतन्त्र हुए, शरीर मुक्त हुआ [illegible] राजनैतिक [illegible] स्वाधीनता मिल [illegible] पर क्या राष्ट्र मानसिक दासता से मुक्त है? यह प्रश्न है जिसका उत्तर [illegible] है और [illegible] उत्तर [illegible] उसको पूरा करने का दायित्व हमारे कन्धों पर है।

स्वाधीनता ने हम [illegible] भौतिकवाद की ओर मोड़ दिया है [illegible] प्रत्येक भारतीय [illegible] के मान्य [illegible] अपनी सफलता [illegible] है। भारत का [illegible] भारत [illegible] अमर [illegible] की [illegible] ऋषियों के तप [illegible] पावन उच्चविचार की आदर्श [illegible] प्रेरणा [illegible] मानव एकता के [illegible] आदर्श [illegible] लुप्त हो रहे हैं, समाप्त हो रहे हैं [illegible] रक्षा [illegible] परम्परा [illegible] गौरवान्वित अनुभव करते [illegible] हम [illegible] भारतीय स्वतन्त्रता [illegible] उस [illegible] का महत्व [illegible] आज हमारा [illegible] हम [illegible] स्वाधीनता [illegible] गौरव के बिना अपूर्ण है [illegible] भारत के गौरव के रक्षक [illegible] भारत [illegible] उस महान गौरव को संसार में सुरक्षित बनाये रख सका क्या उस महान गौरव को हम भारतीय स्वयं अपने हाथों से नष्ट होने दें? आज आवश्यकता इस बात की है कि भारतीयता के [illegible] प्रचार एवं प्रसार करने के लिए भारतीय [illegible] सजग हों, सचेष्ट हों और भारतीय आत्मा की रक्षा के [illegible] आन्तरिक तथा बाह्य सभी आक्रमणों का सामना किया जाय।

मानव निर्माण चरित्र [illegible] इस दिशा में हमारे अन्तर्निहित [illegible] हो सकते हैं। आज के राष्ट्रीय [illegible] और भौतिकवादी उपासना के मूल में सच्चे [illegible] का अभाव है। जिस भवन के निर्माण में कच्ची और कमजोर ईंटें लगी होंगी वह भवन ऊपर की टीपटाप या पालिश से भले ही सुन्दर दिखाई दे पर [illegible] एक ही आघात में, एक ही प्रकम्पन में भूमिसात हो जायगा। यही हाल राष्ट्र का है। राष्ट्र मन्दिर यदि [illegible] व्यक्तियों के संगठन से निर्मित हो तो वह कब तक अपना अस्तित्व कायम रख सकेगा। राष्ट्र मन्दिर का गौरव और सुरक्षा चरित्रवान व्यक्तियों के निर्माण द्वारा ही सम्भव है। राष्ट्र मानव का चरित्र उन्नत हो, नैतिक मान्यतायें बलशाली हों फिर चाहे राष्ट्र में आर्थिक कमियाँ भी हों, राष्ट्र अमर बना रहेगा। राष्ट्र की अमरता एवं स्वाधीनता के चिरस्थायी गौरव के लिये आज हम प्रतिज्ञा लेना है। राष्ट्र मानव का निर्माण करें, यही स्वाधीनता पर्व का सच्चा अभिनन्दन होगा, यही भारत मां की वन्दना होगी।

वर्ष ६०

[illegible] सम्पादक—
स्नातक उमेशचन्द्र एम. ए., ईश्वरदयालु आर्य, सभा मुख्य मन्त्री
सह सम्पादक—भगवत शरण

अङ्क [illegible]

सामयिक समस्याएँ

दयानन्द विश्वविद्यालय

(प्रो० श्री प्रकाश एम० ए०, डी० ए० वी० कालेज कानपुर)

दयानन्द विश्वविद्यालय समय की मांग है और आर्यों का युगधर्म है। आर्य समाज के शिक्षा कार्य को सगठित रूप देकर इस विश्व-विद्यालय के द्वारा आज से अधिक राष्ट्र धर्म और संस्कृति की सेवा हम कर सकेंगे। आज अपनी शिक्षा संस्थाओं को दूसरों के पाठ्य क्रमों द्वारा हमें शिक्षित करना पड़ता है तब क्यों न हम संगठित होकर अपने स्वतन्त्र विश्वविद्यालय का निर्माण करें और स्वतन्त्र पाठ्य क्रम निर्धारण कर राष्ट्र को वर्तमान शिक्षा के दोषों से मुक्त करने का प्रयत्न करें। दयानन्द विश्वविद्यालय राष्ट्र की सेवा के साथ साथ आर्य समाज के गौरव को स्थायी बनाने मे सहायक होगा। आर्य विद्वान और संस्थाओं के कार्यकर्ता गण इस दिशा में सचेष्ट हों तभी कुछ सफलता मिल सकती है।

—सम्पादक

आर्यमित्र के पिछले अङ्क में सम्पादकीय लेख मे दयानन्द विश्व विद्यालय की योजना प्रस्तावित की गई है। शिक्षा क्षेत्र में आर्यसमाज ने अपूर्व कार्य किया है। प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक का प्रसार देश के कोने कोने में स्थापित सहस्रों विद्यालयों द्वारा आर्य समाज कर रहा है। गुरुकुलों की स्थापना करके प्राचीन वैदिक शिक्षण पद्धति की ओर देश का ध्यान आर्य समाज ने ही आकर्षित किया। शिक्षा आंदोलन में सर्वप्रथम रहने पर यह संगत ही है कि आर्य समाज में दयानन्द विश्व विद्यालय की स्थापना करने की चर्चा हो और ऐसे विश्वविद्यालय की स्थापना करने की योजना बने। वैसे डी० ए० वी० कालेज लाहौर आज से ११ वर्ष पूर्व इतना विशाल था कि उसे विश्वविद्यालय ही समझा जाता था। आज भी कानपुर के डी०ए०वी० कालेज की समता किसी भी विश्व विद्यालय से की जा सकती है। जिस कालेज मे लगभग ६००० विद्यार्थी हों और ३०० अध्यापक हों, वह किस विश्वविद्यालय से कम है। गुरुकुल कांगड़ी व गुरुकुल वृन्दावन तो विश्व-विद्यालय हैं ही जिनकी कि अपनी परीक्षायें होती हैं और इन परीक्षाओं को सरकारी मान्यता भी प्राप्त है।

दयानन्द विश्वविद्यालय का रूप क्या हो यह एक विचारणीय प्रश्न है यह पंजाब या आगरा विश्वविद्यालयों सदृश परीक्षण संस्था हो या अलीगढ़ व बनारस विश्वविद्यालयों की भांति केवल शिक्षण संस्था ही हो, या इसमें गोरखपुर विश्वविद्यालय की भांति दोनो कार्यों का समावेश हो। दोनों प्रकार की सस्थाओं की अपनी अपनी उपयोगिता है। परीक्षण विश्वविद्यालय शिक्षा को व्यापक बनाने में सहायक होता है। शिक्षण विश्वविद्यालय शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाने में सफल होता है।

दयानन्द विश्वविद्यालय में किस शिक्षण प्रणाली को अपनाया जाय, यह भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। आर्य समाज द्वारा दो प्रकार की शिक्षण संस्थायें चल रही हैं और दोनों प्रणालियो में पृथक् पृथक् आर्य समाज ने सफलता प्राप्त की है। प्राचीन वैदिक पद्धति के अनुगामी गुरुकुलों ने शिक्षण जगत् में अपना स्थान बना लिया है। सामान्य प्रचलित प्रणाली पर चल कर डी० ए० वी० स्कूलों, डी० ए० वी० कालेजों व आर्य कन्या पाठशालाओं आदि ने प्रशंसनीय कार्य किया है और आर्य समाज की ये संस्थायें अन्य संस्थाओं से कार्य व स्तर में कम नहीं हैं।

दयानन्द विश्वविद्यालय में जिस किसी भी प्रणाली का उपयोग हो, उस प्रणाली का आधुनिक मनो-वैज्ञानिक व शिक्षण सिद्धान्तों पर आधारित होना, अत्यावश्यक है। इसका यह अर्थ नहीं कि पुरातन प्रणाली का परित्याग कर दिया जाय

[शेष पृष्ठ १६ पर]

काव्य-कानन

क्या यही प्रगति है ?

राम और कृष्ण का, बुद्ध और गांधी का,
स्वामी दयानन्द का, श्री श्रद्धानन्द का,
गंगा सा निर्मल यह,चन्द्रांशु सा उज्ज्वल अति,
परम पुनीत शुभ्र पावन विशेष है,
भारत यह देश है ॥

इसकी गुण गरिमा की त्याग और प्रतिभा की
वंदन अभिनन्दन की, नूतन परिवर्द्धन की,
दुन्दुभी बजी है आज ॥

विश्व के जन जन मे, रूस के प्रांगण में।
फ्रांस अमरीका में, लन्दन में एशिया में।
भारतीय संस्कृति का विश्व अब पुजारी है।
भारतीय गौरव की आज धूम भारी है।
किन्तु ज्यों दीपक जग को प्रकाश देता है।
और तले उसके सदैव तम रहता है।
ऐसे ही आर्य जन भूले स्वकर्म को
गौरव को, निष्ठा को, और सद्धर्म को।

यद्यपि हम आज भी अमित गीत गा गाकर।
"संस्कृति की रक्षा का बीड़ा उठाते हैं"
भाषण देते हैं और लेख लिखते हैं खूब।
मंच पर आकर नारे प्रगति के लगाते हैं
किन्तु क्या मानव का मूल मन्त्र पहिचाना॥
नित्य ही मानवता गलियों में बिकती है
होती है नीलामी नित्य पावनता की।

नित्य ही धज्जियां बिखरती बाजारों में।
प्यार की, त्याग की, स्नेह की, ममता की।
नित्य ही चीर हरे जाते ललनाओं के।
और बन्द कमरों से हम झांका करते हैं।
नित्य ही अनेकों शिशु गङ्गा में खोते हैं।
और चन्द टुकड़ों को मुंह ताका करते हैं।

फिर भी हम कहते हैं "हम प्रगतिशील हैं"
क्या यही प्रगति है ? क्या यही समता है ?
यही संस्कृति है ? यही मानवता है
आज हमारा ध्येय निज स्वार्थ साधन है।
आज हमारा इष्ट पर-धन शोषण है।
प्रेम माधुर्य की शाखायें सूख गईं—

कितनी ही वृहत्, विशाल, रूपरेखायें।
भारत के निर्माण की हम बना डालें पर—
जब तक न मानव का मानव से प्यार होगा,
जब तक न तत्व मनुष्यत्व का उभार लेगा,
जब तक न पूजा हम सिक्कों की छोड़ेंगे,
तब तक न समता का किंचित प्रसार होगा।

राष्ट्र निर्माण के इस महान् यज्ञ में।
यदि सभी मिलकर कुछ आहुतियां दे सकें।
श्रम की, श्रमिकों की, श्रमजीवी की पूजा हो।
अन्तस्तल उज्ज्वल हों सत्य प्रतिपादित हो।
तभी पूर्ण होगी पूज्य ऋषिवर की कामना।
तभी मूर्तिमान होगी बापू की योजना।

—सुश्री सावित्री रस्तोगी, मेरठ



स्वाधीनता-अंक

लखनऊ—रविवार, श्रावण २६, शक संवत् १८८०, श्रावण शु० ३, वि० २०१५ (१७ अगस्त १९५८) दयानन्दाब्द १३४ सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०५८

वेदोपदेश

ओ येन देवा न वियन्ति नोच विद्विषते मिथ । तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे सज्ञान पुरुषेभ्य ।। अथर्व ३।३०।४

/ सम्पादकीय

स्वाधीनता का अभिनन्दन

नव सन्देश

पन्द्रह अगस्त का पुनीत पर्व सम्पूर्ण भारत मे बारहवीं बार मनाया जा रहा है। पर्वों की प्रथा जातीय एव राष्ट्रीय सघटनो को दृढ करने और अपनी प्रगति का सिंहावलोकन करने की भावना से आरम्भ हुई था और इसी भावना से हम स्वाधीनता दिवस को उत्साह के साथ मनाने का प्रयत्न करते ह।

हम आज सन् ४७ से ग्यारह वर्ष आगे बढ़ चुके हैं इस काल म राष्ट्र ने एक नई अगड़ाई ली है और अनेक नये परिवर्तन हो रहे हैं। एक पच वर्षीय योजना समाप्त कर आज राष्ट्र द्वितीय योजना की सफल सम्पन्नता मे सलग्न है। राजनैतिक स्वाधीनता के बाद हमें आर्थिक स्वाधीनता भी प्राप्त करनी है और सदैव दुनिया के सामने हाथ नहीं पसारना है। इसके लिए राष्ट्र को कठोर परिश्रम करना है। स्वाधीनता का पर्व हमें नव निर्माण का सन्देश दे रहा है। राष्ट्र निर्माण की ओर बढ़े, यही इस पर्व की सफलता है।

स्वतन्त्रता अपूर्ण है

हमने स्वाधीनता सघर्ष काल में सदैव प्रतिज्ञा दुहराते हुए कहा था कि म राजनैतिक आर्थिक एव सास्कृतिक स्वाधीनता के लिए सघर्ष कर रह हैं और इन स्वतत्रताओं की प्राप्ति तक हम विश्राम न लेग। आज राजनैतिक स्वाधीनता के ग्यारह वर्ष बाद भी राष्ट्र का सास्कृतिक स्वाधीनता नहीं प्राप्त हो सका है। अपितु आज र ष्ट्र सास्कृतिक स्वाधीनता के विषय म विभक्त होता दृष्टिगोचर हो रहा है

हम बड़े उत्साह और उल्लास के साथ भारत माता की जय के नारे लगाते ह पर क्या हमने सच्चे और ठडे दिल से दिमाग से कभी सोचा है कि जिस भारत माता का हम जय बोल रहे हैं वह कौन है। भारत का भौगोलिक खण्ड और उसम रहनेवाले हम सब लोग भारत माता के पार्थिव अश है। भारत का आत्मा तो उसकी परम्परा मे व्याप्त ओत प्रोत मानव सस्कृति ही है। भारतीय सस्कृति शब्द एक व्यावहारिक अर्थ में प्रयुक्त होता है वास्तव मे ससार के विद्वान भारतीय सस्कृति को मानव सस्कृति का पर्याय मानते है। ऐसी दशा म भारत का आत्मा सास्कृतिक पुनरुत्थान द्वारा ही अपने अभीष्ट को प्राप्त कर सकता है।

आज देश जिस तेजी से प्रगति कर रहा है उसमे विदेशी विचारधारा (जो भौतिक प्रधान है) रहन सहन, आचार विचार को प्रमुखता प्राप्त है। और महाजनो येन गत सपन्था के अनुसार सब साधारण उन्हीं का अनुगमन करता है। इस प्रकार गाधी जी ने जिस भारत राष्ट्र की कल्पना की थी और कहा था कि नवभारत धार्मिक नैतिक विश्वासों के ऊपर आधारित होगा। उनके स्थान पर हमारे बड़े और उनका अनुगामिनी जनता भौतिक वाद की चकाचौंध के चमत्कार से चमत्कृत होने म आवक गौरव अनुभव करती है। अपनी इस मान्यता को हम कुछ उदाहरणों से स्पष्ट करेंगे।

(१) विदेशी दूतावासो का जीवन स्तर अभारत य है भारतीयता के अनुरूप नहीं है। हमारे राजदूत गाधीवादी न होकर सामान्य प्रशासक होते ह जिनका जीवन वाल डाम परम्परा म लिप्त रहता है (२) वे भारत के आदर्शवाद का क्या और किस प्रकार सन्देश द सकते हैं। भारत का शीर्ष नेतृत्व प्रधान मन्त्री से लेकर राज्या ध्यक्ष एम० एल० ए० तक तथा सभी उच्च राज्याधिकारी भारतीय प्राचीन गौरव से अपनी सन्तानो को शिक्षित दीक्षित नहीं कर रहे हे। उन्ह सन्तानो का विदेशी करण अभीष्ट है, विदेशी

(शेष पृष्ठ ४ पर)

राष्ट्रीय गान

जन गण मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता
पजाब सिन्ध गुजरात मराठा द्राविड उत्कल बग
विन्ध्य हिमाचल यमुना गगा उच्छल जलधि तरग
तव शुभ नामे जागे तव शुभ आशिस मागे
गाहे तव जय गाथा
जन गण मगल दायक जय हे भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे जय जय जय जय हे।
अहरह तव आह्वान प्रचारित शुनि तव उदार वाणी
हिन्दू बौध सिख जैन पारसिक मुसलमान ख्रिस्तानी
पूरब पश्चिम आशे तव सिंहासन पाशे
प्रेम हार जय गाथा
जन गण ऐक्य विधायक जय हे भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे जय जय जय जय हे।
पतन अभ्युदय बधुर पथा युग युग धावित यात्री
हे चिर सारथि तव रथ चक्र मुखरित पथ दिन रात्री
दारुण विप्लव माझे तव शख ध्वनि बाजे
सकट दुख त्राता
जन गण पथ परिचायक जय हे भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे जय जय जय जय हे।
घोर तिमिर घन निविड निशीथे पीडित मूर्छित देशे
जाग्रत छिल तव अविचल मगल नत नयने अनिमेष
दु स्वप्ने आतके रक्षा कर ले अके
स्नेह मयी तुमि माता
जन गण दुख विनाशक जय हे भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे जय जय जय जय हे।
रात्रि प्रभातिल उदित रविच्छवि पूर्व उदय गिरि भाले
गाहे विहगम पुण्य समीरण नव जीवन रस ढाले
तव करुण रूप रागे निद्रित भारत जागे
तव चरणे नत माथा
जय हे जय हे जय राजेश्वर भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे जय जय जय जय हे।

(पिछले पृष्ठ का शेष)

भाषा और परम्परा अभीष्ट है (३) विदेशी भाषा की दासता ने तो हमारे दैनिक जीवन पर भी अधिकार जमा रखा है और उससे पीछा छुड़ाना चाहें तो भी नहीं छुटा पा रहे और हमारे यहां म स कुछ उसे भारत स अभिन्न मानने लगे हैं। (४) यद्यपि मद्यपान आदि मर्यादा के विरुद्ध ह परन्तु राष्ट्रीय अर्थ शास्त्र के आकड़े सिद्ध करते ह कि हमशराबी इस दिशा मे पहले की अपेक्षा कितने अधिक आगे बढ़े हुए हैं।

ये तथा इसी प्रकार का अनैतिक एव अराष्ट्रीय प्रवृत्तियाँ हमारे राष्ट्रीय चरित्र क पतन का कारण बन रही हैं। पुरानी आचार विचार की मान्यताएं उपहास का पात्र हो रही ह हम पुरातन के अन्ध समर्थक नहीं पर नवीनता के अन्धानुकरण का भी समर्थन नहीं कर सकते। राष्ट्रीय चरित्र के पतन के मूल म य समस्याए हैं।

स्वाधीनता का पवित्र पर्व हमें यही नवीन सन्देश दे रहा है कि हम अपनी सफलताओं पर प्रसन्नता प्रकट करें पर इतने गर्वित न हो जांय कि हम अपने कर्तव्य को भी स्मरण न रक्खे। इस पवित्र पर्व पर प्रत्यक भारतीय को राष्ट्र के सांस्कृतिक नव निर्माण की प्रतिज्ञा लेनी चाहिये और वर्ष भर इस दिशा मे सतत प्रयत्नशील रहना चाहिये।

भारत की स्वाधीनता के लिए जिन ज्ञात अज्ञात शहीदोंने आहुतियां दी उन सबको श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए हम राष्ट्र को स्मरण कराना चाहते हैं कि अभी स्वाधीनता अपूर्ण है। दयानन्द, तिलक, अरविन्द, गांधी, सुभाष, पटेल, आदि महापुरुषों ने जिस भव्य भारत की, सुखी स्वराज्य और आदर्श राष्ट्र की कल्पना की थी वह अभी बहुत दूर है उस दिशा म हमारा योगदान अपेक्षित है। हमारे राष्ट्रीय कर्तव्य की पुकार है क्या स्वाधीनता के अमरत्व के लिए हम आत्मबलिदान से प्रज्वलित करेंगे? स्वाधीनता पर्व का यही वास्तविक अभिनन्दन होगा।

१०१) की थैली

'आर्य्यमित्र' के गत अङ्क मे सभा प्रधान श्री हरिशङ्कर शर्म्मा का, बुलन्दशहर आर्य समाज द्वारा, १०१) की थैली भेंट करने की सूचना तो प्रकाशित हुई है किन्तु यह सूचना भूल म प्रकाशित नहीं हो सकी कि वहाँ के ही आर्य्य समाज ने भी सभा प्रधान जी को एक सौ एक रुपये की थैली २८ जुलाई ५८ को भेंट की। इसके लिए बुलन्दशहर की आर्यसमाज को सभा की ओर से हार्दिक धन्यवाद दिया जाता है।

— फूलनसिंह, सभा मन्त्री

मुख्य मन्त्री का स्वतन्त्रता दिवस सन्देश

उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री, डा० सम्पूर्णानन्द ने स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर निम्नलिखित संदेश दिया है—

प्रतिवर्ष पंद्रह अगस्त के प्रत्यावर्तन पर आयोजित यह उत्सव समारोह एक पिटे-पिटाये ढग से मना लिया जाने वाला त्योहार मात्र नहीं है। इस दिवस का महत्व केवल विदेशी शासन से राष्ट्र को स्वाधीनता अर्जित करने तक ही सीमित नहीं। यह हिंसा और शस्त्रबल पर आत्म बलिदान एवं अहिंसा की विजय का प्रतीक है। वस्तुतः यह एक ऐसा प्रेरणा मय दिवस है जो सभी देशों की शोषित और प्रताड़ित जनता के लिए शक्ति, साहस और आशा का सन्देश प्रदान करता है



स्वतन्त्रता से एक ऐसे वातावरण का सृजन होता है जिसमे व्यक्ति और राष्ट्र को पूर्ण विकास का अवसर मिलता है। इसलिए हमसे यह अपेक्षा की जाती है कि जो स्वतन्त्रता हमने अपने लिए अर्जित की है उससे प्रेरित होकर हम अपने अधिकार और उत्तरदायित्व की अनुभूति करते हुए राष्ट्र का सर्वांगीण विकास करने मे कुछ उठा न रक्खेंगे।

हर्ष सूचना

आर्य नेताओं द्वारा प्रबल प्रमाणित ऋतु अनुकूल सुगन्धित रोग-नाशक हवन सामग्री से ही नित्य यज्ञ करें। धर्म, अर्थ काम और मोक्ष को प्राप्त करें।

मेवा-युक्त हवन सामग्री का भाव ८०) मन है। नं० २ सुगन्धित हवन सामग्री का भाव ५०) मन है। एक मन या इससे अधिक मंगाने वाले ग्राहकों को रेल किराया माफ होगा।

भू मंडल की सभी आर्य समाजों से निवेदन है कि आर्य हवन सामग्री का ही नित्य प्रयोग करें।

निवेदक—वेदपथिक धर्मवीर आर्य
झड़ावाली उपदेशक
अध्यक्ष—आर्य हवन सामग्री
निर्माणशाला—अहाता ठाकुरदास
सरायरूहेला देहली ५

भारतीय स्वाधीनता के प्रमुख सेनानी



श्री स्वामी दयानन्द जी



श्री महात्मा गांधी जी

भारत का संविधान

(एक प्रतिज्ञा)

हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व संपन्न लोक तंत्रात्मक गणराज्य बनाने

तथा

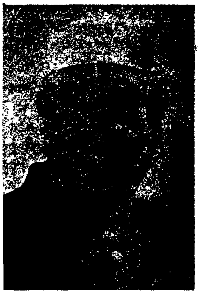
उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक, न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने

तथा

उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुरक्षित करने वाली बन्धुता बढ़ाने के लिए

दृढ़ संकल्प होकर

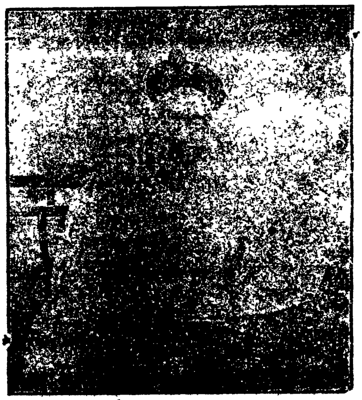
अपनी इस संविधान सभा में एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।



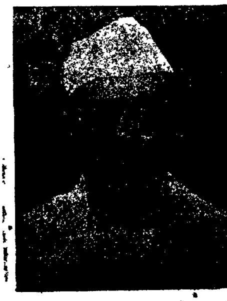
श्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू



श्री डा० राजेन्द्र प्रसाद जी



लोकमान्य श्री बालगंगाधर तिलक



श्री नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

हिंदी काव्य में राष्ट्र चिन्तन

कुमारी मजिता कुमारी

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। राष्ट्र की स्वाधीनता के पश्चात् राष्ट्र के नव निर्माण का दायित्व भी हिन्दी पर है। हिन्दी कवियों की वाणी इस दिशा मे कितनी जागरुक और चिन्तित है इसकी एक सकलित झाकी यहाँ प्रस्तुत की जा रही है। —सम्पादक

सदियों व्यापी घोर तमिस्रा।
हटी मिटे युग के क्रन्दन॥
टूटी शोषण की हथकड़िया।
कटे गुलामी के बन्धन॥

—गिरजा कुमार माथुर

आज की उषा नवीन आज की दिशा नवीन।
आज की किरण बिखर ले रही प्रभा नवीन॥
आज श्वास है नवीन आज की पवन नवीन।
प्राण पुलक रहे लेकर स्पन्दन नवीन॥

—सोहनलाल द्विवेदी

परन्तु कवि सावधान करता है—

ओ विप्लव के थके साथियो, विजय मिली विश्राम न समझो,
जब तक सुख के स्वप्न अधूरे तब तक पूरा काम न समझो।

—बलवीरसिंह रग

इसलिये त्याग की प्रेरणा है—

कुछ दिन और बिताओ सीकर फटे आचल को।
कुछ दिन और आसुओ से बहलाओ प्यासे मन को।
बदल रहा है युग, अब ऐसे दिन आने वाले हैं।
जब समान विश्वास मिलेगा जन २ के जीवन को।

—रूपनारायण त्रिपाठी

कुरुक्षेत्र का कवि सन्देश दे रहा है—

ढीली करो धनुष की डोरी, तरकस का कस खोलो।
किसने कहा और मत वेधो हृदय वह्नि के शर से॥
भरो भवन का अङ्ग कुसुम से कुकुम से केसर से?

—रामधारी सिंह दिनकर

कवि चिन्तित है और देशवासियों से कहता है—

कुछ ऐसा लगता है जैसे बन्दी जीवन के।
केवल बन्धन बदले, कारागार वही है॥
बदल मन की आशा लेकिन जीवन का विश्वास न बदला,
क्या बदला जब मानवता को पीड़ा का इतिहास न बदला,
बदल गया है कुछ लोगों का जीवन,
लेकिन आसू पीनेवालो का ससार वही है,
केवल बन्धन बदले कारागार वही है,

जनता के करुण जीवन से द्रवित हो कवि माग करता है—

दिनकर की किरणे पर्वत के ऊपर रुकी हुई।
ढूढ रही है धूप शीत से कमरे झुकी हुई॥
रवि का किरणो! झोपड़ियो का भी उजियाला दो।
अन्धकार मे सत्य खो गया देव दिया ला दो॥

—रघुवीर शरण मित्र

कवि जनता का गरीबी और दूसरी ओर चल रहे भोग विलास का चित्रण कर जनता के प्रति सहानुभूति प्रकट कर रहा है—

सकल देश मे हालाहल है, दिल्ली मे हाला है।
दिल्ली मे रोशनी, शेष भारत में अधियाला है॥
मखमल के परदों के बाहर, फूलो के उस पार।
ज्यो का त्यों खड़ा है मरघट सा ससार॥
देख जहाँ का दृश्य अभी तक अतस्तल हिलता है।
मा का लज्जावसन और शिशु को न क्षीर मिलता है॥
पूछ रहा है जहाँ चकित हो, जन जन देख अकाज।
कह बस हो गये बीच मे अटका कहा स्वराज॥

—रामधारी सिंह दिनकर

भारतीय आत्मा इन शब्दों में पुकार रही है—

चलती है ठाट बाट से मिल की दुकानें।
रोता है बस माया कारी, रहमत धुनिया॥

दिल्ली के आँखें नहीं और कानों में है अब चोंच भरा।
यह ग्राम निवासी इधर गिरा, वह जगलवासी उधर गिरा॥

—माखनलाल चतुर्वेदी

इसलिए कवि नव युवको को ललकार रहा है—

एक नया अध्याय प्रेम से लिख दो, अभिनव इतिहासों में।
प्राण फूक दो जीवन भर दो, युग के दुखमुख निश्वासों में॥

—छैलबिहारी दीक्षित कटक

मानव-निर्माण योजना

(सम्पत्ति साधन हो साध्य नहीं)

—श्री बाबू पूर्णचन्द जी एडवोकेट—

[मु० उप प्रधान आ० प्र० सभा उत्तरप्रदेश व अधिष्ठाता नैतिक उत्थान विभाग]

आज राष्ट्र में निर्माण का कार्य चल रहा है, पर जिसके लिये निर्माण हो रहा है उसकी ओर किसी का ध्यान नहीं। वास्तविक आवश्यकता मानव निर्माण की है और उसका आधार वैदिक विचारधारा ही हो सकती है। विद्वान् लेखक ने सक्षेप पर बड़ा गम्भीरता के साथ इस ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। आशा है पाठक मनन करेगे। —सम्पादक

आज यह देखने में आता है कि मनुष्य जितना पदवी में बड़ा और धन की मात्रा म बड़ा होता जाता है उतना ही ईश्वर का भूलता जाता है। उसे दुनियाँ के इतने काम लगे रहते हैं कि उसके पास ईश्वर का नाम लेने और ईश्वर का ध्यान करने की फुरसत नहीं रहती। वह ईश्वर का ध्यान नहीं करता केवल धन की ओर ध्यान करता है अपने पद के नशे में मस्त रहता है और परिणाम स्वरूप सब कुछ होते हुए भी दुखित और चिन्तित रहता है। पेट भरने का सामान रहता है परन्तु भूख के लिए तड़फता है। कपड़ों का ढेर है परतु अपने का नगा अनुभव करता है। ७ मजिल की हवेली में रहता हुआ भी दूसरे की ८ मजिल देखकर यह अनुभव करता है कि उसके रहने के लिए मकान नहीं है। यदि प्राचीन वैदिक शिक्षा के आधार पर हम धन कमाते समय, धन जमा करते समय और धन को व्यय करते समय ईश्वर, इन्द्र और परमात्मा का ध्यान रखें तो धन साधन रूप में होकर हमारे जीवन को पवित्र बना देगा। इस निर्माण के युग में यहा अनेक प्रकार की योजनाये बन रही हैं, खाद्य पदार्थ अधिक उपजाओ, अधिक पेड़ लगाओ, पानी को जमा करो, बिजली की शक्ति को बढ़ाओ, यह सब उत्तम लाभदायक योजनायें हैं परन्तु सबसे अधिक आवश्यक है मानव निर्माण। यदि मानव का भी निर्माण होता गया उसकी शारीरिक एव मानसिक शक्ति के साथ उसकी आध्यात्मिक शक्ति के विकास की ओर ध्यान दिया गया तो उसकी आत्मा बल युक्त होगी और आत्मिक बल के सहारे वह अपने शारीरिक बल और मानसिक बल का न केवल विकास करेगा परन्तु उसका सदुपयोग भी करेगा। हमारी राष्ट्रीय सरकार अधिक कर लगाकर, विदेशों से सहायता लेकर, विदेशों से ऋण लेकर, देश मे ऋण योजनायें बनाकर आय के बढ़ाने के उपायों पर बल दे रही है और इस आय बढ़ाने की चिन्ता में कोई उपाय छोड़ा नहीं गया है। हम राष्ट्र सरकार के विधाताओ से अपने समान प्रजाजन से और सबसे यही अनुरोध करेगे कि वह आय और व्यय को एक साथ अपने सामने रखें। प्रत्येक व्यक्ति को अपने अपने जीवन पर बजट बनाना चाहिये। ईश्वर की ओर से उसे जो अवसर प्राप्त है उससे पूरा लाभ उठाना है और यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी आय को बढ़ाते हुए अपने अपने व्यय को भी मर्यादित करता जाये तो कभी दिवाला निकलने का अवसर नहीं आयेगा और नित्य प्रति आनन्द के रूप म दीवाली ही रहेगा, और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने सम्बन्ध म सायकाल और प्रात काल विचार करना होगा। यदि वह शीशा देखे तो अपनी सुन्दरता परखने के लिए नहीं परन्तु यह विचार करे कि मैं कौन हू क्या हू मैं मुह दिखाने काबिल हू या नहीं। मेरे मुह पर कोई ऐसा दाग या धब्बा तो नहीं है जिसको देखकर जनता मेरी निंदा करे और मेरे अपमान का कारण बने।

हमें चाहिए कि हम अपनी चाह का निर्धारित करते समय केवल अपनी चाहना को ही नहीं बल्कि इस बात पर भी ध्यान करें कि हमें क्या चाहिए। हमारे लिए क्या उचित हैं।

अहिंसक जीवन और विज्ञान

[सन्त विनोबा भावे]

आज विज्ञान को संहारक शक्ति के रूप में ही स्वीकार किया जाता है और यन्त्रवाद को मानवता के लिए हानिकर बता उसकी निन्दा की जाती है। प्रसिद्ध चिन्तक विनोबा जी ने अपने इस लेख में विज्ञान को सही रूप में स्वीकार करने की प्रेरणा दी है। उनकी मान्यता है कि विज्ञान अहिंसक जीवन में भी उतना ही उपादेय है जितना हिंसा के वर्तमान जीवन में। प्राचीन भारतीय विचारधारा विनोबा जी की विचारधारा का समर्थन करती है।

—सम्पादक

अक्सर माना जाता है कि विज्ञान और यन्त्र एक ही चीज है। किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। विज्ञान से बड़े यन्त्र भी बनते हैं और छोटे यन्त्र भी। विज्ञान से विकेन्द्रित औजार पैदा हो सकते हैं और केन्द्रित भी। विज्ञान से छोटा घड़ा भी बन सकता है और बड़ा इंजन भी। जैसे आत्म ज्ञान एक स्वच्छ एवं शुद्ध विचार है और उसी के अनुसार सोचना पड़ता है कि जीवन में उसका किस तरह से प्रयोग किया जाय, वैसे ही विज्ञान भी एक स्वच्छ विचार है, जिससे हम सृष्टि शरीर आदि का ज्ञान होता है। उसका यन्त्र युग के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। यन्त्रीकरण में भिन्न व्यवस्था हो तो उसमें भी विज्ञान सहायता देगा। अणुशक्ति बिजली से अधिक विकेन्द्रित हो सकती है। अगर अणु शक्ति ज्यादा परिमाण में उपलब्ध हुई और उसका उपयोग रचनात्मक काम में किया जाय तो धीरे धीरे छोटे औजार बनाये जायेंगे, जिनका उपयोग मनुष्य अपने स्थान में ही कर सकेगा इसलिए इस भ्रम में मत रहिये कि विज्ञान यन्त्र युग है।

जिस प्रकार हमारी मांग होगी, उसी के अनुसार विज्ञान की दिशा तय होगी। मान लीजिए कल मानव शास्त्र की ऐसी मांग हुई कि हम अधिक से अधिक पोषण हवा से ही मिले, तो विज्ञान वैसी ही खोज कर सकता है। अगर हवा से पोषण प्राप्त करने की तरकीब ढूंढ निकाली जाय तो आज की जीवन पद्धति में इतना फर्क पड़ेगा, कि उसका बिल्कुल रूप ही बदल जायगा। फिर यह भी माना जायगा कि मनुष्य रात दिन खुले आसमान में रहे यही उसके जीवन के लिए लाभदायी है। फिर आज जैसे मकान नहीं बनाये जायेंगे। बल्कि ऐसे मकान बनेंगे जिनमें ठंढ, धूप, बारिश आदि से थोड़ा सा बचाव हो, फिर मनुष्य अधिक समय खेत में ही बितायेगा। मान लीजिए कि कल विज्ञान के कारण मनुष्य को ऐसी शक्ति प्राप्त हो जाय कि उसे साक्षात् स्पर्श से जो आनन्द होता है, वही दर्शन से हासिल हो, यह तो मैं अपने अनुभव से कह रहा हूं, यद्यपि विज्ञान का अभी यह खोज करना बाकी है। उपनिषदों में लिखा है कि देव खाते नहीं, पीते नहीं, केवल दर्शन से ही तृप्ति हो जाती है, अगर यह हो जाय, तो आज के जैसी संतान प्रेरणा नहीं रहेगी। विज्ञान के कारण मनुष्य का जीवन पेचीदा बनता जायगा, यह ख्याल गलत है। वह पेचीदा भी बन सकता है और सादा भी। विज्ञान को किस दिशा में ले जाना है इस पर हम सोचना होगा। जैसे जैसे विज्ञान आगे बढ़ेगा, आज के जैसे बड़े बड़े शहर नहीं टिकेंगे, क्योंकि वह चाहेगा कि घनी बस्ती न हो। आज विज्ञान का उपयोग केन्द्रित व्यवस्था के लिए किया जा रहा है, लेकिन कल विकेन्द्रित व्यवस्था के लिए किया जायगा। फिर हर घर के पास एक छोटा सा खेत होगा और घर दूर दूर रहेंगे। मान लीजिए कि कल अगर हम यहां बैठे बैठे दिल्ली वालों के साथ बातचीत करेंगे उनका रूप भी देख सकेंगे तो हम नाहक रेल में बैठ कर दिल्ली क्यों जाय? फिर तो मनुष्य अपने स्थान पर ही बैठकर विराट का अनुभव कर सकता है इसलिए विज्ञान के गर्भ में क्या क्या भरा है कोई कह नहीं सकता।

आज विज्ञान पूंजीवाद के साथ जुड़ा हुआ है, लेकिन उससे भिन्न विकेन्द्रित जीवन की आवश्यकता पैदा होगी तो उसे वैसी ही दिशा मिलेगी। आज जन संख्या बढ़ रही है और उस पर इलाज यह किया जा रहा है कि नपुंसक मनुष्य बढ़ाओ। आज विज्ञान नपुंसक मनुष्य बनाने में सहायता दे रहा है। क्योंकि मनुष्य की वैसी मांग है। भगवान भी मनुष्य को वही वरदान देता है जो मनुष्य चाहता है। कल अगर मनुष्य यह मांग करे कि हमें एक ही संतान में तृप्ति हो जाय, और उसके पालन पोषण, रक्षण, दर्शन आदि में ही हमारा जीवन बीते, तो विज्ञान उसमें भी मदद करेगा। विज्ञान के साथ पेचीदा रचना जुड़ी हुई है, ऐसी बात नहीं है। जैसे आत्म ज्ञान बढ़ने पर मनुष्य का जीवन सादा बनेगा, वैसे विज्ञान बढ़ने पर भी बन सकता है। सादे जीवन का मतलब यह नहीं कि पुरानी मुसीबतें कायम रहें। जीवन में सहूलियतें जरूर हों पर सादगी साथ हो।

इस दृष्टि से जब हम सत्याग्रह को विज्ञान के साथ जोड़ देते हैं तो हमें एक नया ही दर्शन मिलता है, कि सत्याग्रह की खोज विज्ञान के क्षेत्र में भी करनी है। पुराने जमाने के वैद्यक शास्त्र में भी ऐसी दवा की आवश्यकता थी, जिससे शस्त्र क्रिया करने में तकलीफ न हो, उन दिनों इस दवा के अभाव में मनुष्य को ढोरों के समान बांधकर शस्त्र क्रिया किया करते थे और वह बड़ी ऊपरी ऊपरी थी। लेकिन अब क्लोरोफार्म की खोज होने से शस्त्र क्रिया बड़ी आसानी से की जा सकती है। क्लोरोफार्म की खोज ठीक अहिंसा की दिशा में है। उससे मानव के दुःख मिटाने का एक बड़ा साधन हाथ में आया है। वैसे ही सत्याग्रह की खोज के लिए जिसकी जरूरत है, उस दिशा में विज्ञान काम करेगा।

मेरा मानना है कि सर्वोदय के लिए विज्ञान बहुत उपयोगी है इसलिए मैं बार-बार कहता हूं कि विज्ञान हमारी शक्ति है प्रतिपक्षी की नहीं, आज जिन लोगों ने हिंसा बढ़ाई है उन्हीं के पास विज्ञान है। फिर भी विज्ञान की शक्ति हमारे पक्ष में है। विज्ञान अहिंसा के पक्ष में अत्यन्त सुरक्षित है विज्ञान हिंसा के पक्ष में चला जाय तो मानव को खतरा है और विज्ञान को भी खतरा है। अगर हम चाहते हैं कि दोनों को खतरा न हो, और विज्ञान वेरोकटोक आगे बढ़े इसलिए हम कहते हैं कि विज्ञान हमारे साथ है।

हमारे चिन्तन में विज्ञान की कमी नहीं होनी चाहिए। लेकिन मैं देख रहा हूं कि हमारे मित्रों में यह कमी है। वे सोचते हैं कि छोटे छोटे औजार अच्छे हैं, अम्बर चरखे से छोटा चरखा अच्छा है, चरखे से तकली अच्छी, तकली से अंगुलियां अच्छी हैं। यह सारा गलत चिन्तन है। हम यह नहीं चाहते कि हम इस तरह आगे बढ़ें जिससे समाज में उथल पुथल हो बेकारी बढ़े, परन्तु जहां तक विज्ञान का ताल्लुक है, हम विज्ञान का ... करते हैं ... छोटे नियम बनाते हैं और ... खो जाते हैं।

... अच्छा है परन्तु हम लोग उसका नियम बनाते हैं समाज में वह विचार समझते नहीं और अपने व्रत पालन की तरकीब निकालते हैं। जो लोग वैसे नियम नहीं बनाते तो सर्वोदय विचार के नहीं हैं ऐसा मानते हैं। यह सब गलत धारणा है। क्या अमेरिका इंग्लैंड के लिए सर्वोदय नहीं हो सकता है? क्या हम वहां जाकर उन लोगों से यह कहेंगे कि तुम अपनी मशीनरी खत्म कर दो और छोटे छोटे औजार बनाओ तभी अहिंसा आयगी अन्यथा नहीं आयेगी? हम तो उनसे यही कहेंगे कि आज तुम डर खाते हो (परस्पर डर के लिए) जो सारा खर्च कर रहे हो वह मत करो और वही पैसा दुनिया की सेवा के लिए खर्च करो तभी अहिंसा आयेगी।

मैं मानता हूं कि जीवन की विकसित दृष्टि आयेगी, तो हर मनुष्य कुदरत के साथ सम्बन्ध रखेगा। फिर नगर रचना भी ऐसी बनेगी कि घर बैठे सामने खेत आसमान दिखाई देते हैं। जीवन का कुछ न कुछ अंश राष्ट्र की सेवा में रहे। इस तरह सोचने पर हम अमरीका को भी समझायेंगे कि यदि आज संभव न हो तो भी तुम शहर ज्यादा क्यों बढ़ाते हो? छोटे छोटे शहर बनाओ तो अच्छा है। लेकिन यह आगे की बात है। आज हम उनसे यह नहीं कहेंगे कि अहिंसा के लिए शहर तोड़ना जरूरी है, हम उनसे सिर्फ इतना ही कहेंगे कि तुम अपना उत्पादन डर के लिए खर्च करने के बजाय सेवा के लिए करो। उसके बाद प्राकृतिक जीवन की प्रधानता ध्यान में आने पर आप अपने जीवन में फर्क कर सकते हो।

आज न्यूयार्क के कुछ लोग सप्ताहान्त के लिए गांव में जाते हैं। लेकिन सबके लिए यह संभव नहीं है। लेकिन जब यह सबको आवश्यकता महसूस होगी, तब स्वाभाविक ही बड़े शहर टूटेंगे यह सब धीरे धीरे होगा। लेकिन आज यह जरूरी नहीं कि अहिंसा के लिए छोटे छोटे औजार अपरिहार्य हैं। आज की हालत में भी यूरोप, अमेरिका वाले अहिंसक बन सकते हैं, और दुनिया की सेवा कर सकते हैं।

✱

चरित्र के अभाव में स्वाधीनता लड़खड़ा जायगी

(श्री प० हरिशङ्कर शर्म्मा, प्रधान आ० प्र० सभा, उत्तरप्रदेश)

[भारतीय स्वाधीनता के पुण्य पर्व पर राष्ट्र की वास्तविक समस्या पर विचार विमर्श किया जाना चाहिये। विद्वान लेखक ने राष्ट्र के चरित्र पतन की ओर सकेत करते हुए चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया है। आज राष्ट्र में खाद्यान्न या अर्थाभाव के सकट है पर सबसे मुख्य सकट चरित्र सकट है। भारतीय स्वाधीनता की आधारशिला चरित्र द्वारा दृढ की जानी चाहिये। यदि राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण हो जाय तो सब समस्याए स्वयमेव हल हो जायगी स्वाधीनता पर्व के अवसर पर इस लेख म चरित्र निर्माण की प्रेरणा हम प्राप्त हो रही हैं। इस दिशा म हमारा कोई भी काय सच्ची राष्ट्र भक्ति होगा।]

—सम्पादक



भारतीय स्वातन्त्र्य सूर्य आज से ११ वर्ष पूर्व १५ अगस्त का बडी साज सज्जा से उदय हुआ था। उस दिन सारे देश में आनन्द का सागर उमड़ पड़ा था और उसम उत्साह का उत्ताल तरगे उठी थीं। स्वतन्त्र राष्ट्र का ससार में जो सम्मान मिलना चाहिए वह आज भारत को भी प्राप्त है। जिस अहिंसात्मक आदोलन द्वारा हम स्वतन्त्र हुए उसे देख कर अखिल विश्व अचम्भे में पड़ गया था। कुछ राष्ट्रों को तो यह चिंता थी कि दासता की जजीरो म जकडा हुआ अनुभव शून्य भारत अपने राज्य कार्य को कसे समाल सकेगा? किस प्रकार इतनी बडी जनता के शासन म समर्थ होगा? परन्तु हमारे सुयोग्य शासको ने इस दिशा म भी ससार को चकित कर दिया। इसम सन्देह नहीं कि राष्ट्र पिता महात्मा गांधी जैसा स्वराज्य चाहते थे वैसा अभी नहीं हो पाया, परन्तु देश के नताओं का इस पुण्य पथ की ओर पूरा लक्ष्य है, अतएव निराशा की कोई बात नहीं है।

भारतीय स्वतन्त्रता सत्य अहिंसा तप त्याग और बलिदानो की विभूति द्वारा प्राप्त हुई है। मारक सहारक साधनो से उसका सम्बन्ध नहीं रहा जो स्वतन्त्रता आध्यात्मिक आधार पर उपलब्ध है, उसका सरक्षण और विकास भी उसी तत्व द्वारा सम्भव है। अर्थात् सत्ता और शक्ति में सत्य अहिंसा तथा त्याग तपस्या का समावेश हुए बिना काम न चलेगा। शासक और शासित दोनो के जीवन जब तक सयत न होगे तब तक गांधी वाद की दृष्टि से, गणतन्त्र सफल और सुदृढ नहीं बन सकता। सयम तथा सयत जीवन का अर्थ यह है कि देश म कोई कुपथगामी, स्वार्थान्ध या भ्रष्टाचारी न हो। चाणक्य ने स्पष्ट कहा है—'राजस्य मूल जितेन्द्रियता' अर्थात् शासक के लिए सयम यानी मन आदि इन्द्रियो पर काबू रखने की अत्यन्त आवश्यकता है। लोकतन्त्र म जनता का भी महान उत्तरदायित्व है। वह अपने द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों से शासन या राज्य व्यवस्था का काम लेती है। ये चुने हुए प्रतिनिधि जितने सुयोग्य, सयत और विनम्र होते हैं शासन व्यवस्था उतनी ही श्रेष्ठ बन जाती है। प्रतिनिधियो का उचित चुनाव न होने से तन्त्र में अनेक दोष प्रवेश कर जाते हैं, और वह केवल कुछ लोगो के लिए स्वार्थ सिद्धि का साधन बन जाता है।

प्रसिद्ध विद्वान् जान स्टुअर्ट मिल ने ठीक कहा है कि यदि जनता बुद्धिमान कुशल और ईमानदार प्रतिनिधियों का चुनाव करने म असमर्थ रहती है, तो गणतन्त्र असफल हो जाता है। अतएव गणतन्त्र के साफल्य का सारा उत्तरदायित्व जनता लोक या गण पर है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारतीय ससद और विधान सभाओ के दो बडे चुनाव हो चुके हैं।

इनमें कहीं कहीं तो दल बन्दी बिरादरीवाद और साम्प्रदायिकता की बडी बुरी स्थिति दिखाई दी। यह एक बडे दुख की बात है और इसका अन्त होना चाहिये।

गणतन्त्र की सफलता नदी, नाले कारखाने, राजपथ, या भवन निर्माण आदि कार्यों तक ही सीमित नहीं है। इसके लिए सबसे बडी आवश्यकता जनता को सुखी, सुरक्षित, स्वस्थ और सच्चरित्र बनाने की है। विकास और उन्नति के लिए सर्व साधारण को समान अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है। महात्मा गाँधी ने इस विषय में स्पष्ट कहा है—

"वही राष्ट्र सच्चा लोकतन्त्रात्मक है, जो अपने कार्यों को बिना हस्तक्षेप सुचारु और सक्रिय रूप से चलाता है। किसी के जान माल को नुकसान न पहुचे। नीचे से नीचे और ऊचे से ऊचे आदमी को आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त हो। हर मनुष्य को सुख समृद्धि पाने का मौका मिले। हम आत्म त्याग और आत्म सिद्धि की भावना बढानी होगी। चरित्र बलवान नहीं है तो केवल पठन पाठन से कोई लाभ नहीं।"

याने जहा सर्व साधारण की सुख सुविधा के लिए उद्योग हों, वहा उसके चरित्र निर्माण पर भी ध्यान दिया जाये। कानून के कोड़े से सुधार नहीं हुआ करते बल्कि चरित्र बल से ही सुधार उद्धार होता है। बापू ने स्पष्ट कहा है कि—

'अगर लोगों को कानून कायदे की रस्सी से बाधकर ईमानदार रहना सिखाया जायेगा तो लोकशाही ह टूट जायगी। लोकशाही चरित्रमूलक विश्वास पर ही कायम रह सकती है।

शिक्षा की सार्थकता पोथा पढ़ने या उपाधि प्राप्ति म नहीं है। शिक्षा वह है जो मनुष्य को मनुष्य बनाती है जीवन म पवित्रता लाती और उसमे विशुद्ध चरित्र बल भरती है। शिक्षा का उद्देश्य मानवता है, नौकरी करना या दासानुदास बनना नहीं। जिस राष्ट्र म वास्तविक शिक्षा का जितना ही प्रचार प्रसार होगा, उतना ही वह उच्च प्रभावशाली सुदृढ और सफल समझा जायेगा। लोकतन्त्र की आधार शिला समता, स्वतन्त्रता और बन्धुभावना पर रखी गई है। अतएव शासक और शासित के मध्य मे इसी विचारधारा का प्रचार होना चाहिये। अर्थात् सब का उद्देश्य सरलता, सादगी, सदभावना, समता, स्नेह शीलता, सहयोग, सहानुभूति और सयम हो।

गणतन्त्र की सफलता के लिए लेखनी और वाणी का सर्वथा और सर्वदा स्वतन्त्र होना परम आवश्यक है। जिस शासन मे विचारक विद्वान् सत्य कहने में डरते झिझकते हैं, उसका अभ्युदय नहीं हो पाता। विचार स्वातन्त्र्य का अर्थ उच्छृङ्खलता, प्रलाप या किसी के विरुद्ध विष वमन करना नहीं है बल्कि वह स्थिति है, जब लोक हित दृष्टि से शिष्टता और सच्चाई के साथ कोई निर्भय भावना प्रकट की जाती है। लोक कल्याणकारी विचारो को स्वार्थ, भय अथवा अन्य किसी कारण से व्यक्त न करना पतन की पराकाष्ठा है। अनुशासन बहुत जरूरी है, इसके बिना काम नहीं चल सकता

अनुशासन का अर्थ है सयम या नियम पालन। जो लोग अनुशासन का अभिप्राय स्वतन्त्र सम्मति प्रकाशन त्याग कर अपना जमाने के 'राय साहब' राव बहादुर या अमन सभाई मम्बर बन जाना समझते हैं वे चापलूसी और खुशामद पसन्दी के पुतले हैं।

शासन और जनता दोनो के स्वार्थत्यागी सयमी सच्चरित्र, सच्चासेवक, सहयोगी और कर्तव्य परायण बनने से ही गणतन्त्र सुदृढ और सफल बन सकता है। गणतन्त्र का अग या व्यक्ति अपनी ही सुख सुविधा और स्वार्थ सिद्धि की बात न सोचे बल्कि सारे राष्ट्र की सुख समृद्धि को अपना सुख समृद्धि समझे। स्वय सुखी सुरक्षित रहे और दूसरो के लिए भी वैसा ही चिन्तन तथा उद्योग करे। इसी म सार्थकता है।

सर्वे भवन्तु सुखिन
सर्वे सन्तु निरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत।

तीन विचार

सभा के हित में एक प्रश्न

[श्री पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०]

मैंने आर्य्यमित्र में प्रोफेसर रत्नसिंह जी द्वारा लिखित भिक्षा-यात्रा का वर्णन पढ़ा। मुझे इसको पढ़कर अपनी उस यात्रा की याद आ गई जो मैंने १७ वर्ष पूर्व अपनी प्रधानता मे सभा-भवन का ऋण चुकाने के लिए की थी। श्री बाबू कालीचरण जी ने मेरे साथ भी कई जिलो में भ्रमण किया था और तभी उनके साथ मेरा अधिक सम्पर्क भी हुआ। श्री रत्नसिंह जी यह ठीक कहते हैं कि इतने सम्पर्क होने पर ही हम उत्कृष्ट पुरुषों के गुणों को जान सकते हैं, हम लोग सभाओं में बहुत से लोगों को बीसियों वर्षों से जानते है, परन्तु वस्तुतः एक दूसरे के विषय में कुछ भी नहीं जानते। कभी-कभी तो केवल इतना ही जानते हैं कि अमुक सज्जन अमुक दल से सम्बन्ध रखते है और उनमें वही गुण या दोष होगे जो हमने अपनी कल्पना मे उस दल के विषय में सोच रक्खे है।

मुझे अपनी यात्रा मे एक बात का अनुभव हुआ था जो श्री रत्नसिंह जी के लेख से भी टपकता है। उत्तर प्रदेश में आर्य्य समाज का प्रचार अधिकतर पश्चिमी जिलों से आरम्भ हुआ। बुलन्दशहर, आगरा, अलीगढ़, सहारनपुर, मेरठ के आन्तरिक भागों मे जितना समाज का प्रचार है उतना पूर्वी जिलों में नहीं। परन्तु साथ ही यह बात भी स्पष्ट है कि इन जिलो के समाजों मे उत्तर-प्रदेशीय प्रतिनिधि सभा के प्रति इतना प्रेम नहीं। यह क्यों है, इसके कारणो पर मैं विचार करना नहीं चाहता। बहुत सी छोटी-छोटी घटनायें है जो मेरी आशङ्काओं को प्रविष्ट करती है। यह बात नहीं कि इन जिलो से सभा को सहायता नहीं मिलती या मुझे नहीं मिली, यह बात भी नहीं कि इन जिलों के सज्जनों की सभा के उच्च अधिकारियों म प्रतिनिधित्व नहीं, फिर भी उनकी भावनायें कुछ ऐसी है कि सभा के साथ उनका घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं।

सम्भव है कि मेरी आशङ्कायें सर्वथा निर्मूल हों या थोड़ी सी सचाई हो, यदि ऐसा है तो मुझे अपनी गलती देखकर सन्तोष होगा परन्तु प्रदेशीय सभा को प्रबल बनाने के लिए इस बात को सर्वथा दृष्टि से ओझल नहीं किया जा सकता, आशा है कि उन जिलो के अधिकारी भी इस बात को सोचेंगे।

राष्ट्र को अर्थ नहीं मानव चाहिए

[डा० रघुवीर, संसद सदस्य]

भारतवर्ष स्वतन्त्र हो गया। स्वतन्त्रता के पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अपनी ऊंची स्थिति बनाई। आर्थिक उन्नति के लिए दूसरी पंचवर्षीय योजना चल रही है।

भारत प्राचीन देश है इसलिए इसको अपने गौरव की अनुभूति है। देश के नेताओं का यत्न है कि प्राचीन गौरव के समान वर्तमान और भविष्य में भी भारत गौरवान्वित हो। यह सम्भव होने के लिए भारत को रूस, जर्मनी, जापान अमरीका आदि विकसित देशों के समकक्ष बनना होगा। अभी तो भारत इनसे सौ वर्ष पीछे है।

आर्थिक विकास के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन स्तर मे भी विकास होना परमावश्यक है। यदि एक-एक व्यक्ति ऊपर न उठा तो देश के ऊपर उठने का कोई अर्थ न बनेगा।

हमारी पिछली पंचवर्षीय योजना पूरी हो चुकी है दूसरी चल रही है। इसके पश्चात् तीसरी चौथी और पांचवीं योजनाएं आयेगी। २७ वर्ष मे जनता की आय दुगनी हो पायेगी। यह हमारे योजनाकारों की गणना है। २७ वर्षों में तो शेष संसार बहुत आगे बढ़ जाएगा और हम जितने पीछे है उससे भी अधिक पीछे रह जायेंगे।

वर्तमान योजनाएं विशाल योजनाएं हैं। इन योजनाओं की आवश्यकता है। इनसे देश को लाभ हुआ है और होगा। इनके साथ साथ एक एक व्यक्ति के विकास की योजना अवश्य चाहिए नहीं तो नई खानों और नये कारखानों के बनने से देश के श्रमिकों और जनसाधारण का जीवन अहमदाबाद और कानपुर के नरक समान जीवन का प्रतिबिम्ब होगा।

हमने इस विषय में निरन्तर वर्षों तक विचार और अध्ययन किया है। एशिया और यूरोप के साम्यवादी तथा असाम्यवादी विकासशील तथा प्रगतिकारी देशों का अनेक बार भ्रमण किया है। मानव विकास किस प्रकार होता है यह प्रत्येक देश में हमने अनुभव और विश्लेषण किया है। हमारे देश में क्या न्यूनता है और उस न्यूनता की पूर्ति किस प्रकार हो सकती है इसका चिन्तन और मनन किया है।

हमारे देश की आवश्यकताएं अधिक है। देश बड़ा है। जनता अंधकार मे है और योजना बनाने वाले जनता की आवश्यकताओं को नहीं समझ रहे है राष्ट्र निर्माता चारित्रिक उत्थान की ओर जब तक ध्यान न देंगे राष्ट्र उन्नति न करेगा।

"राष्ट्र निर्माण क्या है?"

[श्री पण्डित किशोरीदास जी बाजपेई]

आत्म निर्माण, व राष्ट्र निर्माण की नींव अपने आपको बनायें। भारतीय परम्परा में आत्म कल्याण, आत्म सुधार आदि पर ही जोर दिया जाता है। आजकल अपना सुधार नहीं, दूसरों के सुधार के लिये लोग मर रहे हैं राष्ट्र के सब लोग आत्म निर्माण कर ले, राष्ट्र निर्माण बड़ी चीज है। उसके बिना वह जड़ निर्माण कुछ नहीं। भ्रष्टाचार इसी तरह बढ़ता गया तो यह सब निर्माण क्षण मे 'धराशायी' हो जायगा। रुपये के लिए लोग देशद्रोह करके शत्रु देश तक से मिल जाते है। व्यक्तित्व निर्माण की ओर राष्ट्र नायक ध्यान नहीं देते। कभी नहीं कहते कि ईमानदारी का सन्तोष पूर्ण जीवन बनाना चाहिए। बांध, सड़क, पुल आदि का निर्माण, निर्माण नहीं है, व्यक्तित्व का निर्माण राष्ट्र निर्माण है।

साहित्य-समीक्षण

पंजाब हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का 'रजत जयन्ती-स्मृति ग्रन्थ'

(श्री हरिशङ्कर शर्म्मा,)

सम्पादक—श्री पं० भीमसेन विद्यालङ्कार, प्रधान मन्त्री, पञ्जाब हिन्दी साहित्य सम्मेलन, निकलसन रोड, अम्बाला छावनी। आकार २०×३० अठपेजी। पृष्ठ—संख्या २६०। मूल्य—छै रुपये। छपाई—सफाई सुन्दर।

यह 'रजत जयन्ती-स्मृति ग्रन्थ' पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के रजत जयन्ती-महोत्सव के उपलक्ष्य में, ६ अप्रैल १९५८ ई० को, प्रकाशित हुआ है। इसमें हिन्दी सेवकों के पच्चीस चित्र तथा हिन्दी सम्बन्धी विविध विषयों पर उनासी लेख है, जो कि विद्वान् लेखकों, कवियों, कार्यकर्त्ताओं, प्रचारकों आदि की लेखनियों से लिखे गये हैं। कई कविताएं भी हैं। पञ्जाब के पुराने एवम् प्रभावशाली साप्ताहिक, मासिक और दैनिक पत्रों से भी, हिन्दी सम्बन्धी कुछ लेख उद्धृत किए गए हैं। कुछ पुस्तकों की आलोचनाएं भी प्रकाशित हुई हैं। इन आलोचनाओं की इस स्मृति ग्रन्थ में क्या आवश्यकता थी यह बात हमारी समझ में नहीं आई। अस्तु 'स्मृति ग्रन्थ' के प्रायः सब ही लेखों से, पंजाब में हिन्दी की गति प्रगति पर कुछ न कुछ प्रकाश अवश्य पड़ता है। पञ्जाब में पैदा हुए और पञ्जाब से सम्बन्ध रखने वाले प्रायः सब ही मुख्य मुख्य हिन्दी लेखकों, कवियों, कथाकारों, नाटक रचयिताओं, पत्रकारों, पुस्तक प्रकाशकों आदि का संक्षिप्त परिचय इस स्मृति ग्रन्थ के लेख पढ़ने से प्राप्त हो जाता है। पंजाब में प्रारम्भ में हिन्दी की क्या अवस्था थी और अब क्या है, यह बात भी इस ग्रन्थ से भली भांति जानी जा सकती है। जो पंजाब हिंदी की दिशा में कभी बड़ा पिछड़ा हुआ था, उसने किस शीघ्रता और सफलता से हिन्दी को अपनाया, इस प्रश्न को समझने में भी यह ग्रन्थ बहुत सहायक सिद्ध होगा। पंजाब में जो हिन्दी प्रचार हुआ है, उसमें आर्य नेताओं का बहुत बड़ा हाथ है। आर्य्य समाजों और डी० ए० वी० संस्थाओं ने भी इस दिशा में खूब काम किया है। स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा हंसराज जी, लाला लाजपत राय जी आदि की हिन्दी सेवाएं कैसे भुलाई जा सकती है। इस 'रजत जयन्ती स्मृति ग्रन्थ' में जिन विद्वानों और विदुषियों के लेख है, उनमें सर्व श्री स्वा० सत्यदेव, चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार, अवनीन्द्र कुमार विद्यालङ्कार, इन्द्र विद्यावाचस्पति, बुद्धदेव विद्यालङ्कार, भीमसेन विद्यालङ्कार, नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, सन्तराम जी, सुमित्रा देवी जी, लज्जावती जी आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। स्मृति ग्रन्थ में हमें जो एक बड़ी कमी खटकी वह है, फिल्लौर निवासी पं० श्रद्धाराम जी के सम्बन्ध में विस्तृत और खोज पूर्ण लेख का अभाव। जिन दो चार लेखों में, प्रसंगवश पण्डित जी का कुछ जिक्र किया भी गया है, उनमें जानकारी का उथलापन है। पण्डित श्रद्धाराम जी और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी दोनों सम सामयिक थे। दोनों ही हिन्दी के प्रबल प्रचारक और सबल समर्थक रहे। श्रद्धाराम जी का कार्यक्षेत्र पञ्जाब रहा। उन्होंने हिन्दी में कई महत्त्व पूर्ण ग्रन्थ लिखे। वे कवि भी थे—'सत्य धर्म्म मुक्तावली' उनकी कविताओं का संग्रह प्रायः सत्तर वर्ष पूर्व प्रकाशित हो चुका है। 'जय जगदीश हरे' आरती इसी कविता संग्रह की पहली गीति है। पण्डित जी का जीवन-वृत्त भी उनके सुयोग्य शिष्य पण्डित तुलसी देव ने पौनशती पूर्व प्रकाशित की थी। ये दोनों पुस्तकें हमें अपने स्वर्गीय पिता जी के पुस्तकालय में पढ़ने को प्राप्त हुईं। और भी कई पुस्तकें—'सत्यामृत प्रवाह' तथा 'भाग्यवती'। पं० श्रद्धाराम जी सनातन धर्मी थे, महर्षि दयानन्द से उनका शास्त्रार्थ भी हुआ था। ऐसे सुप्रसिद्ध विद्वान्, विचारक और हिन्दी प्रचारक पर कोई शोध कार्य न होना था इस 'रजत जयन्ती स्मृति-ग्रन्थ' में सविस्तार उल्लेख भी न किया जाना, अवश्य ही आश्चर्य की बात है। अस्तु,

पंजाब के जिस हिन्दी प्रश्न को लेकर गत वर्ष सत्याग्रह हुआ, उसका उल्लेख भी ६ अप्रैल १९५८ को प्रकाशित होने वाले, पंजाब हिन्दी साहित्य सम्मेलन के इस 'रजत-जयन्ती स्मृति ग्रन्थ' में नहीं है। हाँ! एक लेख में नीचे लिखी पंक्तियाँ अवश्य हमें पढ़ने को मिलीं—

'पंजाब के लिए उस दिन से अधिक बुरा दिन और कोई नहीं हो सकता, जिस दिन हिन्दी और पंजाबी का विवाद उठा। किसी भी दृष्टिकोण से देखा जाये, यह विवाद केवल नितान्त अनावश्यक और सर्वथा अस्वाभाविक ही नहीं है अपितु घोर हानिकर और अत्यन्त घिनौना भी है। हिन्दी और पंजाबी में यदि मां और बेटी का रिश्ता मानने में, किसी को आपत्ति हो भी तो कम से कम यह स्वीकार करने में, किसी को इन्कार नहीं हो सकता कि दोनों का उद्भव भाषाओं की भाषा संस्कृत से हुआ है। हिन्दी अपने गुणों और स्वभाव के कारण समूचे देश में लोकप्रिय हो गई है और पंजाबी अन्य प्रादेशिक भाषाओं की तरह अपने देश में फलती फूलती रही।....सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक किसी भी दृष्टिकोण से देखें, हिन्दी और पंजाबी का झगड़ा अनावश्यक और अस्वाभाविक सिद्ध होगा।"

'तनाव का कारण यह है कि भाषा के प्रश्न को राजनैतिक दाव पेचों में उलझा दिया गया है। भाषा की आड़ में सत्तालोलुप अपना खेल खेल रहे हैं। मिथ्याप्रचार और मिथ्या शंकाओं से ऐसी मनोवृत्ति पैदा कर दी गयी है कि जन साधारण वास्तविक प्रश्न भूलकर पत्तों को जड़ें समझने लगे है। यह तनाव हिन्दी साहित्य के विकास में ही बाधा नहीं बन रहा, अपितु इसमें राष्ट्रीयता का भी भारी अहित हो रहा है।'

ये पंक्तियाँ भाष्य या व्याख्या की अपेक्षा नहीं रखतीं। स्मृति ग्रन्थ में सत्याग्रह का उल्लेख तक न किया जाना, किया गया तो उपर के रूप में, इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि पंजाब हिन्दी साहित्य सम्मेलन की दृष्टि में पंजाब की हिन्दी समस्या ऐसी, गम्भीर या भयंकर नहीं, जैसी कि समझी जा रही है। फिर यह बात कैसे मान ली जाये कि पंजाब हिन्दी साहित्य-सम्मेलन हिन्दी का हितैषी नहीं है। पंजाब हिन्दी साहित्य-सम्मेलन ही क्यों, देश की किसी भी हिन्दी साहित्य सभा या संस्था ने पंजाब के हिन्दी प्रश्न को इतना भयानक और गम्भीर नहीं समझा, अतएव सत्याग्रह में सहयोग भी नहीं दिया। हिन्दी का कोई नेता भी इस ओर प्रवृत्त नहीं हुआ। यहाँ तक कि पंजाब के हिन्दी प्रेमी अध्यापक, प्राध्यापक और संस्था संचालक गण उन शिक्षण संस्थाओं से निरन्तर सहयोग करते रहे और कर रहे हैं, जिनमें हिंदी के हत की हत्या हुई बताई जाती है। जो हो पंजाब हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के रजत जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रकाशित यह 'स्मृति ग्रन्थ' अनेक दृष्टियों से उपयोगी है, अतएव संग्रह करने योग्य है। हम इसके सुन्दर सम्पादन के लिये श्री पण्डित भीमसेन जी विद्यालंकार को हार्दिक बधाई देते है।

जीवन यात्रा

(उतार चढ़ाव, फूल और कांटे)

लेखक—कविराज श्री हरनामदास बी० ए० दिल्ली।

प्रकाशक—सुखदाता प्रकाशन, चांदनी चौक, दिल्ली।

पृष्ठ सं० २८० पुस्तकाकार, मूल्य १॥), कागज सफेद, छपाई साफ, सजिल्द।

पुस्तक का नामकरण प्रत्येक दृष्टि से सार्थक है। वास्तव में मानव जीवन अनेकों उतार चढ़ाव तथा फूल व कांटों से परिपूर्ण है और इन्हीं बातों का बड़ा सहृदय चित्रण इस पुस्तक में किया गया है। इन घटनाओं के चित्रण के पीछे लेखक का उद्देश्य समाज सुधार का है। इस सम्बन्ध में लेखक ने अपने सम्पूर्ण अनुभव को एकत्रित करके लोक कल्याण की भावना से यहां रख दिया है।

पुस्तक की विशेषता यह है कि इसे चाहे किसी भी उम्र के पाठक पढ़ें, चाहे वे कम पढ़े लिखे हों या बहुत विद्वान हो, प्रत्येक वर्ग के लोगों के लिए यह पुस्तक समान रूप से उपयोगी और लाभदायक है। घटनाओं के चित्रण में बड़े विनोदपूर्ण ढंग से गंभीर शिक्षण भरने का काम लेखक ने बड़ी सफलता से इस पुस्तक में किया है। स्थान स्थान पर बड़े तीक्ष्ण व्यंग भी है जो पुस्तक को सजीव बना देते हैं।

"जीवन यात्रा" की घटनाएं ऐसी हैं, जिन्हें पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि ये घटनाएं अपने ही जीवन की हैं। इसे हम लेखक की सफलता और घटना की वास्तविकता तथा चित्रण की सजीवता मानते हैं।

इस पुस्तक को हम उपन्यास भी कह सकते हैं, जीवन चरित भी कह सकते हैं और कहानियों का संग्रह भी कह सकते हैं। प्रत्येक दृष्टि से यह उपयोगी है। एकबार पढ़ना प्रारम्भ करने पर स्वभावतः प्रत्येक पाठकों की इच्छा यही होगी कि इसे अन्त तक पढ़कर ही तो अन्य काम में लगीं। यह भी लेखक की सफलता का प्रमाण है। पढ़ते-पढ़ते पाठक कहीं रोयेगा, कहीं हसेगा, कहीं आश्चर्य करेगा,

★ शेष पृष्ठ १२ पर

सभा की सूचनाएं

निरीक्षण सम्बन्धी सूचना

१—सभास्थ निरीक्षक महानुभावों को विदित हो कि समाज निरीक्षण कार्य शिथिल अवस्था म चलता हुआ प्रतीत हो रहा है। अत: जिन जिन सज्जनों ने कार्य प्रारम्भ न किया को उन्हे चाहिए कि शीघ्र प्रारम्भ करदें।

२—कार्य की सुविधा के लिए सूचित किया जाता है कि जिन निरीक्षक सज्जनों के पास सभा की रसीद बही एव फार्म निरीक्षण के न पहुचे हों वे सभा कार्यालय से यथा शीघ्र मगा लेवें।

३—कार्य के विचार से निम्न निरीक्षक और नियत किये गये हैं। उनके पहुचने पर समाज एवं सस्थाओ का निरीक्षण कराने में सहयोग प्रदान करें।

१—श्रीमती शिवदेवी जी पीलीभीत जिला।
२—श्री क्षेमचन्द्र जी मथुरा जिला।
३—श्री रामकिशोर जी शास्त्री,प्रतापगढ, सुलतानपुर

उपदेशक सम्मेलन

सभास्थ उपदेशक, प्रचारक महानुभावो का विदित हो कि सभा के निश्चयानुसार दिनाक १५ से १७ अगस्त १९५८ अर्थात् तीन दिन 'उपदेशक सम्मेलन' नारायण स्वामी भवन, लखनऊ में होना निश्चित हुआ है। सभा कार्यालय से प्रत्येक उपदेशक, प्रचारक की सेवा में दो दो बार पत्र भेजकर प्रार्थना की गई है। कृपया लखनऊ पधार कर सम्मेलन में सम्मिलित होने का कष्ट करें। प्रत्येक दशा में आपका आना अनिवार्य है। सभा भवन म निवासादि का उत्तम प्रबन्ध किया जा रहा है।

अन्तरङ्ग सभा दिनाक २७, २८ जुलाई ५८ के निश्चयानुसार नियम उपनियम सशोधन, उपदेश विभाग का योजना, उत्तर प्रदेश का प्रचार का दृष्टि से विभाजन, आदि तथा आर्यमित्र 'हीरक जयन्ती' एव अभिनन्दन समारोह प्रबन्धक समिति, काष बैलेंस शीट और अर्थ सग्रहात व सभा भवन निर्माण समितियों की बैठकें भी १५ से १७ अगस्त १९५८ का सभा भवन लखनऊ में होगी। सभा कार्यालय से विज्ञापन भेज दिये गये हैं। कृपया सदस्य गण नियत तिथि पर पधार कर कृतार्थ करेंगे।

—फूलनसिह
सभा मन्त्री

भूल सुधार

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा की परीक्षा नियमावली

आर्यमित्र के गत ३ ८ ५८ के अङ्क मे पृष्ठ ७ पर छपी सार्वदेशिक विद्यार्य सभा देहली की परीक्षा नियमावली में आर्य सिद्धान्त भूषण (२ प्रश्न पत्र पूर्णांक २००) के पश्चात् निम्नलिखित पक्तियाँ छूट गई हैं। कृपया पाठक सुधार लें—

प्रथम प्रश्नपत्र—सत्यार्थ प्रकाश पूर्वार्ध
द्वितीय „ सस्कार विधि

इसके पश्चात तीन पक्तियो मे जो पाठ्यक्रम छपा है वह आर्य सिद्धान्त रत्न (३ प्रश्न पत्र, पूर्णांक ३००) का है।

—वीरेन्द्र शास्त्री

वेद—प्रचार—सप्ताह

वि० श्रावण शु० १५, स० २०१५ वि० से भाद्रपद कृ० ८ स० २०१५ वि०
तदनुसार २९ अगस्त १९५८ से ६ सितम्बर १९५८ तक।

मान्यवर महोदय, नमस्ते!

इस वर्ष 'वेद प्रचार सप्ताह' मिति वि० श्रावण शुक्ला १५ से भाद्रपद कृष्ण अष्टमी सम्वत् २०१५ वि० तदनुसार दिनाक २९ अगस्त से ६ सितम्बर १९५८ तक मनाया जायगा। कार्यक्रम निम्न प्रकार प्रस्तुत है।

आर्यसमाजों को अभी से इस सप्ताह को सफल बनाने का भरसक प्रयत्न आरम्भ कर देना चाहिये। स्त्री समाज,आर्यकुमार सभा,आर्यवीर दल तथा आर्योपदेश का सस्थाओ आदि का पूर्ण सहयोग प्राप्त करना चाहिये

श्रावणी पर्व का महत्व—आर्यसमाज के प्रवर्त्तक, वैदिक ज्ञान के अद्वितीय विद्वान्, वेद धर्म महान प्रचारक, ससार के मानवों को मतान्धता एव अन्धविश्वासों के अन्धकूप से निकालकर बुद्धिवाद एव मानववाद के शुद्ध वातावरण में श्वास लेने की पुनीत प्रेरणा के दाता, आध्यात्मिक एव आधिभौतिक स्वतन्त्रता के महान सूत्रधार तथा राष्ट्र धर्म का प्रबल प्रेरणा देने हार महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के उच्च व्यक्तित्व को समझने और श्रद्धा समन्वित हो उस महात्मा के चरण चिह्नों पर चलने की चेतना देना इस पर्व का महान् उद्देश्य है।

योगीराज दयानन्द ने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण मनुष्य को पशुता से मुक्त कर मानव बनाने मे व्यतीत किया है और ससार के मानवो का आर्यत्व का पावन पाठ पढ़ाया है। ऋषिराज दयानन्द ने मानवों के उत्थान का एकमात्र साधन वेद ज्ञान ही बतलाया है। अत इस सप्ताह में हमें यह देखना है कि क्या हमने आर्ष ग्रन्थो के पठन पाठन का यथार्थ रूप म पालन किया है। यदि आज तक नहीं किया है तो आओ इस वर्ष इस पर्व पर श्रावणी के दिन हम इस निमित्त शुभ सङ्कल्प धारण करने वाले बनें।

कार्यक्रम

पारिवारिक यज्ञ—श्रावणी (रक्षाबन्धन) के दिन प्रत्येक आर्य परिवार प्रात पारिवारिक यज्ञ करे।

प्रात ७॥ बजे से समस्त आर्य नर नारी, युवक तथा बालक, बालिकाए आर्य मन्दिर मे उपस्थित होकर पुनीत पर्व मनाय। वेद की पावन ऋचाओ का पाठ किया जाय। तत्पश्चात् "आर्य पर्व पद्धति" में विहित पर्व विधान किया जाय। यज्ञ की समाप्ति पर समस्त आर्य नर नारी गम्भीरतापूर्वक वेद तथा वेदानुकूल शास्त्रों के स्वाध्याय का पावन व्रत धारण करें। व्रत के उपरान्त सुमधुर आध्यात्मिक गान एव प्रवचन किये जाय तत्पश्चात् श्रावणी पर्व एव स्वाध्याय के महत्व पर भाषणो का व्यवस्था का जाय।

रात्रि का आर्य मन्दिरो म वेद कथा का भी विशेष आयोजन किया जाना चाहिये।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

६ सितम्बर भाद्रपद कृष्णाष्टमी आर्य राजनीति के धुरन्धर विद्वान् योगविद्या के प्रवीण ज्ञाता,पतनोन्मुख भारत के महान् त्राता, तथा महान् भारत के निर्माता आचार्य अङ्गिरस घोर के शिष्य महात्मा कृष्ण का शुभ जन्म दिवस है। आज ही के दिन मथुरा नगरी के कारागार मे माता देवकी की कोख से भारत के इस महापुरुष का जन्म हुआ था। हमे आज के दिन आत्मा की अमरता का पावन सन्देश देने वाले भारत के महान् नेता कृष्ण के व्यक्तित्व पर विशेष प्रकाश डालने वाले सफल आयोजन नगर नगर और गाँव-गाव में करने चाहिये। और पौराणिकों और विदेशियो द्वारा उनके पावन चरित्र पर पोती हुई कालिमा को धोने का भी पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए।

कार्यक्रम

प्रात —७॥ बजे से आर्य मन्दिरों मे "आर्य पर्व पद्धति" के अनुसार विशेष यज्ञ किया जाय। तथा रात्रि को आर्य मन्दिरों में अथवा सार्वजनिक स्थानो मे योगीराज कृष्ण के जीवन पर व्याख्यान तथा कृष्ण के गीता ज्ञान और कर्मयोग का बखान किया जाना चाहिये।

नोट—सप्ताह के आरम्भ में आर्य मन्दिर पर नया आर्यध्वज लगाना चाहिये।

२९ अगस्त से ६ सितम्बर तक का कार्यक्रम

प्रतिदिन प्रातः—सूर्योदय बेला में दैनिक सत्सग का आयोजन किया जाय, और इस सत्सग को निरन्तर प्रतिदिन चालू रखने की इस सप्ताह मे प्रतिज्ञा भी यथासम्भव करनी चाहिये।

मध्याह्न—वैदिक साहित्य का विक्रय तथा आर्यसमाज के नवीन समासद् बनाने का विशेष रूप से प्रयत्न किया जाय। समासद् बनाते समय जातिवाद, अस्पृश्यता एव प्रान्तीयता के भावो को सर्वथा भुला देना चाहिये। और विशेषकर 'नैतिक उत्थान' का कार्य किया जाना चाहिये।

रात्रि—मन्दिरो म वेद कथा का विशेष आयोजन किया जाय। वेदो के आधार पर विश्वबन्धुत्व मानव वाद, बुद्धिवाद, साम्यवाद, समाजवाद एव राष्ट्र धर्म आदि विषयो पर विशेष व्याख्यान' का आयोजन किया जाय। वेदो की अपौरुषयता एव वेदभाष्य का नैरुक्तिक शैली जिसका प्रतिपादन इस युग म महर्षि दयानन्द जी ने करके मानव जाति का परम कल्याण किया है, आदि की भी विशेष चर्चा इस सप्ताह मे होना चाहिये।

शारीरिक व्यायाम प्रदर्शन एवं वाक सघर्ष—सप्ताह मे आर्य वीर दल एव आर्यकुमार सभाओं को शारीरिक व्यायामोंके प्रदर्शन तथा वक्तृत्वकला को विकसित करने की दृष्टि से विशेष आयोजन भी करने चाहिए।

वेद प्रचार निधि

उत्तरप्रदेश जिसकी जनसख्या लगभग ६॥ करोड है और जिसमे ५१ जिले हैं, में आर्यसमाज के प्रचार कार्य को व्यवस्थित करने के लिए सवा लाख रुपया प्रति वर्ष चाहिये। प्रान्त का एक हजार से ऊपर आर्य समाजें हैं। यदि इनका प्रत्येक सदस्य एक एक रुपया वेद प्रचार के लिए इस श्रावणी पर्व पर सभा को प्रदान करना अपना कर्तव्य समझ ले तो वेद प्रचार की समस्या बहुत कुछ हल हो सकता है। वेद प्रचार के लिए जो धन सग्रहीत किया जाय, वह शीघ्र सभा के कार्यालय म भेज दिया जाना चाहिये।

—फूलनसिंह, मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

प्राचीन भारत में लोकतन्त्र की झलक

गणराज्यों की विशेषताएं

इस उल्लेख के आधार पर हम वर्तमान गणराज्यों की समीक्षा करना होगा। आज हमें गणराज्य की परम्परा का ध्यान रखना चाहिए। सब दायित्व भावनाएं और प्रान्तीयता तथा अन्य अनेक शक्तियाँ प्रभाव डाल रही हैं। इन सबसे हमारा गणराज्य सुरक्षित रहे और उन्नति करे यही हमारी कामना है हम सबकी कामना होनी चाहिए। —सम्पादक

भारत आज एक गणराज्य है पहले भी था। प्राचीन काल में गणराज्यों की क्या विशेषताएं थीं उनका वर्णन महाभारत के शान्ति पर्व में किया गया है। प्रस्तुत अंश में युधिष्ठिर के प्रश्नों का उत्तर देते हुए भीष्म कहते हैं—

गणानाच कुलानाच राज्ञा भरत सत्तम्
वैरसन्दीपनावेतौ लोभमर्षौ नराधिप॥
लोभमेको हि वृणुते ततोऽमर्षमनन्तरम्।
तौ क्षयव्ययसंयुक्तावन्योन्यञ्च विनाशिनौ॥
चारमन्त्रबलादानैः सामदानविभेदनैः।
क्षयव्ययभयोपायैः कर्षयन्तीतरेतरम्॥
तत्रादानेन विद्यन्ते गणाः संघातवृत्तयः॥
भिन्ना विमनसः सर्वे गच्छन्त्यरिवशं भयात्॥
भेदे गणा विनश्येयुर्भिन्नास्तु सुजयाः परैः।
तस्मात् संघातयोगेन प्रयतेरन् गणाः सदा॥
अर्थाश्चैवाधिगम्यन्ते संघात बलपौरुषैः।
बाह्याश्च मैत्रीं कुर्वन्ति तेषु संघातवृत्तिषु॥

हे राजन्! गणों में और राजकुलों में भी शत्रुता की आग लगने के दो प्रमुख कारण हैं—लोभ और ईर्ष्या। जब कोई गण या राजकुल लोभ का वरण करता है तब ईर्ष्या उसका अनुगमन करती है। ये दोनों अवगुण क्षय और व्यय को जन्म देकर विनाश का मार्ग प्रशस्त करते हैं। ऐसी स्थिति में गण एक दूसरे का भेद लेने वाले गुप्तचरों और सेना की सहायता से तथा साम दाम और भेद नीति का अनुशीलन करके अथवा क्षय व्यय और भय के अन्य उपायों द्वारा तंग करते हैं। एक संघ में शामिल गण इन साधनों द्वारा विभाजित हो जाते हैं। विभाजित होकर वे सामूहिक लक्ष्य के प्रति अन्यमनस्क हो जाते हैं, और अन्त में भय द्वारा शत्रु के वश में हो जाते हैं। इस प्रकार विभाजित होने पर गणों का नाश निश्चित है। एक दूसरे से पृथक् हो जाने पर शत्रु के लिए उनको पराजित करना सरल हो जाता है अतः संघबद्ध होकर गणों को अपना प्रभाव बनाये रखना चाहिए। संघबद्ध सेना के पुरुषार्थ द्वारा समृद्धि प्राप्त होती है। बाहरी लोग भी संघ शक्ति की मैत्री प्राप्त करना चाहते हैं।

ज्ञानवृद्धाः प्रशंसन्ति शुश्रूषन्तः परस्परम्।
विनिवृत्ताभिसन्धानाः सुखमेधन्ति सर्वशः॥
धर्मिष्ठान् व्यवहारांश्च स्थापयन्तश्च शास्त्रतः।
यथावत् प्रतिपश्यन्तो विवर्द्धन्ते गणोत्तमाः॥
पुत्रान् भ्रातॄन् निगृह्णन्तो विनयन्तश्च तान् सदा।
विनीतांश्च प्रगृह्णन्तो विवर्द्धन्ते गणोत्तमाः॥
चारमन्त्रविधानेषु कोषसंनिचयेषु च।
नित्ययुक्ता महाबाहो वर्द्धन्ते सर्वतो गणाः॥
प्राज्ञान् शूरान् महोत्साहान् कर्मसु स्थिरपौरुषान्।
मानयन्तः सदा युक्तान् विवर्द्धन्ते गणा नृप॥

उत्तम गुणों में ज्ञानवृद्ध लोग पारस्परिक सेवा भावना को प्रोत्साहन देते हैं। उत्तम गण ... न स्वार्थ के साथ आपस में व्यवहार करके सर्वत्र सुख प्राप्त करते हैं। उत्तम गण सम्पन्न होते हैं क्योंकि वे शास्त्रों के अनुसार धर्मिष्ठ व्यवहारों की स्थापना करते हैं और एक दूसरे के साथ उचित व्यवहार करते हैं। उत्तम गण इसलिए भी उन्नति करते हैं कि वे अपनी सन्तानों और अपने भाइयों (सदस्यों) को अनुशासित रखते हैं और उन्हें प्रशिक्षित करते हैं। वे केवल उन्हीं को स्वीकार करते हैं जो विनीत और प्रशिक्षित रहते हैं। हे महाबाहु! उत्तम गण सर्वतोमुखी समृद्धि इसलिए प्राप्त करते हैं कि वे सदैव गुप्तचर सेवा की क्रियाशीलता पर नीति और विधान सम्बन्धी बातों पर, और कोष संचय पर ध्यान रखते हैं। उनकी समृद्धि का एक कारण यह भी है कि वे सदैव अपने उन अधिकारियों का ... सम्मान करते हैं जो

मान ... न

मानव अभी तक दास है

देश है आजाद पर मानव अभी तक दास है
मुक्त है सरिता, सरोवर मुक्त हिमगिरि का शिखर
मुक्त है नद, कूप नाले मुक्त यमुना का लहर
मुक्त ... वन ... मुक्त ... का ...
मुक्त है तरु पुष्प कलिका, मुक्त शबनम बूंद भर
हारता है ... का शृंगार कण कण का नया
मुक्त ... के चरणों पर व्योम का सिर झुक गया
सृष्टि का आंचल चतुर्दिक जगमगाता है मगर
प्राण के ... लौ में धुएं का ... है
आज भी मानव पुरातन रूढ़ियों से ग्रस्त है
आज भी बीते युगों की अर्चना में व्यस्त है
आज भी मुर्दा प्रथाओं में मनुज संत्रस्त है
आज भी नव जागरण से चिर तिमिर विध्वस्त है
तन हुआ आजाद तो क्या, शेष मन की दासता
बन्द है नव भावनाओं का अभी तक रास्ता
गीत खुशियों के अधर से फूटते तो हैं मगर
कण्ठ में कम्पन लरज अवरुद्ध हर उच्छ्वास है
भेदकर तिमिरावरण को उर अजिर ज्योतित करो
चेतना की रश्मियों से युग युगों का तम हरो
आज मेहनत के स्वयंवर में बढ़ो! भू को वरो
देश की नूतन प्रगति के पथ पर दृढ़ पग धरो
तोड़ दो! जर्जर, पुरातन रूढ़ियों की शृंखला
मुक्त हो! मुर्दा प्रथाओं को झटक कर मसल ...
गूंजता जय हिन्द का उद्‌घोष चहुंदिश है मगर
आज नव युग के अधर पर देश का उपहास है
—श्री धर्मपाल गुप्त शलभ

(पृष्ठ (का शेष)

कहीं पश्चात्ताप करेगा इस प्रकार "जीवन यात्रा" के पृष्ठ उलटते जायगे और अन्तिम पृष्ठ पर पहुँच कर प्रत्येक पाठक सन्तोष का सांस लेगा।

पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल और सुपाठ्य तथा सुगम्य है। स्थान स्थान पर उर्दू तथा फारसी के शायरों से रचना में अधिक सजीवता आ गयी है। शैली धाराप्रवाह चलती हुई है और बीच ... रोचकता बनी रहती है।

हमारा ऐसा विश्वास है कि इस पुस्तक ... लाखों के लिए भी उपयोगी होगी।

कुविचारों और कुरीतियों का उन्मूलन करने में यह पुस्तक प्रसिद्ध विद्वान प० विष्णुशर्मा द्वारा रचित अमर ग्रन्थ पंचतन्त्र के सदृश ही उपयोगी होगी ऐसा हम कह सकते हैं। कविराज जी वैसे भी सिद्धहस्त लेखक हैं। इनकी इस रचना की तुलना प्रेमचन्द तथा बंकिम साहित्य से की जा सकती है।

स्थान स्थान पर प्रूफ की अशुद्धियां अवश्य हैं पर विषय की दिलचस्पी के कारण उधर ध्यान नहीं जाता। लेखक व प्रकाशक दोनों इस उपयोगी रचना के लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

धार्मिक परीक्षाओं में सम्मिलित हूजिए

पाठक अगले अङ्क में सार्वदेशिक विद्या सभा देहली की धार्मिक परीक्षाओं का विवरण पढ़ेंगे। हमारी प्रार्थना है कि इन परीक्षाओं में अधिक से अधिक आर्य छात्र छात्राएं और आर्य सज्जन सम्मिलित होकर बड़े उत्साह से सम्मिलित हों। ऐसा करने से जहां आप ग्रन्थों का गम्भीरता से पढ़ने का अवसर मिलेगा वहां स्वाध्याय की प्रबल भावना भी जाग्रत होगी। फिर उत्तीर्ण होने पर उपाधियां जो अपने नाम के साथ संयुक्त करने के लिए सार्वदेशिक सभा की ओर से उपाधियां भी मिलेंगी। अभी पर्याप्त समय है। इन पाठ्य ग्रन्थों को पढ़ना हो परीक्षा शुल्क और फार्म भरकर कार्यालय को भेज देने चाहिए और परीक्षा की तैयारी में पूरी तरह जुट जाना चाहिए। आशा है आर्य भाई बहन इस ओर अपना कर्त्तव्य पालन करने में कोई ढील या शिथिलता से काम न लेंगे —हरिशंकर शर्मा

प्रधान आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश

श्रावणी पर्व पर

आर्यमित्र का 'शिक्षांक'

७ सितम्बर ५८ को प्रकाशित होगा

★ लेखकों से

निवेदन है कि वे वर्तमान शिक्षा प्रणाली के दोषों का निराकरण करने के लिए उपयुक्त सुझावों सहित अपनी उत्कृष्ट रचनायें शीघ्र भेजना आरम्भ कर दें।

★ पाठकों और एजेन्टों से

निवेदन है कि वे अपनी प्रतियों की सुविधा के लिए अभी से अपने आर्डर पत्र भेजना आरम्भ कर दें।

★ विज्ञापन दाताओं से

निवेदन है कि वे अपनी वस्तुओं के प्रचार के लिए इस विशेषांक में विशेष विज्ञापन भेजकर लाभ उठावें और अपने विज्ञापन के लिए स्थान सुरक्षित करा लें।

पृष्ठ सं० ६४, मूल्य ।≈), साइज२०×३०अठपेजी

—अधिष्ठाता
सा० आर्यमित्र आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

लेखकों से निवेदन

लेखकों से निवेदन है कि वे कृपया निम्न शीर्षकों पर अपने संक्षिप्त लेख आर्य मित्र में प्रकाशनार्थ भेजें —

१ कल ... शिक्षा ... ... मन्त्र ... शिक्षा
३ ... ... निर्माण में ... ... नाद।
४ ... ... ५ ... ... जाल।
६ ... ... तक ... ?
७ ... ... अनुसार।
८ वेद द्वारा ... ९—... ... सर्वोदय राज्य।
१० ... ... क्या चाहते थे
११ आत्मज्ञान और शुद्धि। १३—... ... आध्यात्मिक देन।
१४ ... ... द्वारा ... समाज व्यवस्था।
१५ ... ... —... ... की महत्ता।
१७ ... ... क्या ... ? १८—... ... का विश्लेषण।
१९—वैदिक संस्कृति का मूल आधार। २० ... पैठ।

इस सम्बन्ध में प्रकाशन व सभी रचनाओं की स्वीकृति की सूचना एक सप्ताह के अन्दर ही भेज दी जाती है। स्वीकृत पत्र न मिलने पर लेख को अस्वीकृत समझ लेना चाहिए। अस्वीकृत रचनाएं भविष्य में लौटायी नहीं जायेंगी।

—सम्पादक

गीत

(श्री सोहनलाल द्विवेदी)

मुक्ति के नूतन दिवस को आज नूतन वन्दना है।
धन्य यह दिन, धन्य रजनी,
बनी बन्धन हीन जननी,
आज के दिन पर निछावर, युगों की तप साधना है।
यह अमर हो दिवस अपना,
जब बना साकार सपना,
यह अमर क्षण अमर बलियों की मधुरतम कल्पना है।
युगों की सुलझी समस्या,
वह शहीदों की तपस्या,
यह स्वराज शिखर, उन्हीं की नींव पर उठकर बना है।
राष्ट्र के अभिमान जागो,
राष्ट्र के बलिदान जागो,
आज नव निर्माण की फिर उठ रही जब सजना है।
मुक्ति का मणि मुकुट अनुपम,
मलिन कर पावे न तमभ्रम,
देश की तुमको शपथ, यह देश की आराधना है।

दान सूची

सभा उप प्रधान श्री कालीचरण जी आर्य मेरठ १५ जुलाई ५८ को सभा भवन लखनऊ आ गये। १६ तक कार्यालय के कार्य एवं निरीक्षण करने के पश्चात् २० जुलाई से २६ जुलाई १९५८ तक सभा के निमित्त वेद प्रचारार्थ भ्रमण में रहे, आपने धन संग्रह के साथ साथ समाजों का भी निरीक्षण किया और भाषण भी दिये। आप को जिस जिस स्थान से धन प्राप्त हुआ है उस की सूची निम्न प्रकार दी जाती है। सभा दानी सज्जनों को हार्दिक धन्यवाद देती है।

१—आर्य समाज हरदोई २५)
२—श्री मुक्ताप्रसाद जी हरदोई ५)
३—श्री छेदालाल जी गुप्त „ ५)
४—आ० स० उधरनपुर „ ६०)
५—आ०स०रजि० शाहजहांपुर २१)
६—आ० स० पूरनपुर १००)
७—श्री भगवतशरण कैलाश चन्द्र जी पालाभात ५१)
८—श्री नन्दू... गणेशप्रसाद पीलीभीत २१)
९—मूल्य आ० स्त्री समाज लालकुर्ती मेरठ ८)
१०—श्री रामबहादुर जी पूरनपुर द्वारा ७५रु०३५नयेपै०
११—आ० स० नैनीताल मनी आर्डर द्वारा ४५रु० २५नयेपै०
१२—आ० स० जसपुर द्वारा श्री इन्द्रवर्मा जी ४४)
१३—माता श्री प्रेम सुखभावतीजी रामगढ़ १०)
१४—आ० स० फरीदपुर २०)
१५—श्री जगनन्दन लाल जी एडवोकेट आ०स० प्रयाग १००)
१६—श्री रामावतार जी अन्तरंग सदस्य जौनपुर १०१)
१७—आ० स० सदर मेरठ द्वारा श्री रघुनन्दन स्वरूप एडवोकेट १०१)

—फूलनसिंह सभा मंत्री

उत्तर-प्रदेशीय आर्यवीर दल की गतिविधि

लखनऊ में प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठक

ईश प्रार्थना से आज दि० ३,८,५८ को नारायण स्वामी भवन, आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश में प्रांतीय आर्यवीर दल के प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठक सभा कोषाध्यक्ष श्री रामजी प्रसाद गुप्त, संचालक एव अधिष्ठाता आर्यवीर दल उत्तर-प्रदेश की अध्यक्षता में प्रातः ८ बजे प्रारम्भ हुई, सचालक जी ने प्रान्त में दल के कार्य को प्रगति देने के हेतु समस्त प्रदेश को ४ भागों में विभाजित कर ४ उप सचालकों तथा उनके क्षेत्रीय समिति के सदस्यों की नियुक्ती कर दी है, और प्रधान संचालक आर्य वीर दल श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी के परामर्श के अनुसार प्रान्तीय समिति का सगठन भी कर दिया है। सूची निम्न प्रकार है।

१—प्रत्येक क्षेत्र से दल सम्बन्धी प्राप्त सूचना पढ़ी गई और सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि ३ माह के अन्तर्गत प्रान्त के सभी जिलो म जहाँ कहीं अब तक दल का कार्य नहीं है कम से कम १ स्थान पर आवश्यक कार्य प्रारम्भ कर दिया जावे।

२—समाजो का दल के साथ पूर्ण सहयोग हो इस हेतु प्रधान तथा मत्री प्रान्तीय सभा एव सार्वदेशिक से एक विशेष विज्ञप्ति निकलवाने के निमित्त पत्र व्यवहार किया जावे।

३—आर्यवीर दल का एकमात्र पत्र "वीर सन्देश" जो बहजोई (मुरादाबाद) से प्रकाशित होता है उसकी ग्राहक सख्या बढ़ाने हेतु आन्दोलन किया जावे, प्रत्येक क्षेत्र के उप सचालक महोदय कम से कम १०० ग्राहक अपने-अपने क्षेत्र में बनाने का कार्य तत्काल प्रारम्भ कर दें, जिससे पत्र आर्थिक संकट से मुक्त रहे।

४—सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि प्रान्तीय कार्यकर्त्ता शिविर एवं सम्मेलन एक सप्ताह का विजया दशमी के अवसर पर दि० १६, १०, ५८ से २२, १०, ५८ तक लगाया जावे, स्थान की सूचना पश्चात् दी जावेगी।

५—दल दक्षिणा तथा सदस्य आन्दोलन से प्राप्त आय निम्न प्रकार विभाजित किया जावे।

स्थानीय २० प्रतिशत, मडल २० प्रतिशत, क्षेत्र २० प्रतिशत, प्रान्त २० प्रतिशत, सार्वदेशिक २० प्रतिशत।

समय दल दक्षिणा ' विजयादशमी २२, १०, ५८

सदस्यता आंदोलन १, १२, ५८ से ३१, १२, ५८ तक (एक माह)

टिप्पणी:—प्रत्येक जिले में कम से कम १०० सदस्य अवश्य बनाये जावें।

६—वार्षिक बजट—१।१।५८ से ३१।१२।५८ तक

आय		व्यय	
१००)	दल दक्षिणा	वेतन मुख्य शिक्षक (३५ रु० प्रतिमास)	४२०)
२००)	सदस्यता आंदोलन	स्टेशनरी (पैड, रसीदबही, इत्यादि	५०)
५००)	अधि० जी द्वारा एकत्रित	पोस्टेज (डाक व्यय)	५०)
२००)	शिक्षक जी ,,	मार्ग व्यय अधिष्ठाता जी	२००)
१०००)		वार्षिक सम्मेलन	२५०)
		मिश्रित	३०)
		योग	१०००)

७—प्रान्त मे प्रत्येक दीक्षित आर्य वीर को कम से कम सन्ध्या अर्थात् ब्रह्मयज्ञ प्रति दिन दोनो समय नियमित रूप से करना चाहिए, व्यायाम के साथ ही स्वाध्याय का भी अभ्यास डाला जावे, वयस्क आर्यवीरों को अपने निकटतम आर्यसमाज से अपने को सम्बन्धित रखना चाहिए।

पदाधिकारी तथा सदस्य परामर्श दात्री समिति आर्य वीर दल, उत्तर-प्रदेश

१—श्री रामजीप्रसाद गुप्त, मुगलसराय प्रधान (अधि. एवं सचा० आ०वी०द०)
२—,, रामरंजन जी, कानपुर (दक्षिणी क्षेत्र) उप संचालक
३—,, देवीप्रसाद जी आर्य (उत्तरी क्षेत्र) उपसंचालक तथा मत्री आ.वी.द. उ.प्र.
४—,, अवध बिहारी लाल, बनारस (पूर्वी क्षेत्र) उप संचालक
५—,, नैपालसिंह बिजनौर (पश्चिमी क्षेत्र) ,,
६—,, फूलनसिंह जी (सभा मन्त्री) सदस्य शिकोहाबाद
७—,, कृष्णबल्देव जी सभा स० कोषाध्यक्ष सदस्य लखनऊ
८—श्री देवव्रत जी लखनऊ, शिक्षाध्यक्ष
९—,, सुरेन्द्रनाथ जी मित्तल एम० ए० अमरोहा सदस्य
१०—,, सुखदेव जी शास्त्री, (बौद्धिकाध्यक्ष) सहारनपुर
११—, भगवत शरण जी बी० ए० आनर्स, लखनऊ, सदस्य
१२—, डा० वंशीलाल, जी अर्थाध्यक्ष, कानपुर

नोट—१३, १४ तथा १५ संख्या के स्थान पर आर्य प्रतिनिधि सभा के ३ प्रतिनिधियों के नाम अंकित नहीं है, सभा से नाम आने पर पुनः प्रकाशित कर दिया जावेगा।

पदाधिकारी तथा सदस्य परामर्श दात्री समिति

आर्यवीर दल पूर्वी क्षेत्र

(बनारस, गोरखपुर कमिश्नरी)

१—श्री अवध बिहारी जी लाल	प्रधान	
२—,, उमाकान्त जी कुशवाहा	उपप्रधान	
३—,, मेवालाल जी आर्य	मन्त्री	
४—,, कृष्णनारायण सिंह	दलपति	गोरखपुर
५—,, कृष्णकान्त जी	,,	जौनपुर
६—,, अमरनाथ जी वर्मा	,,	गाजीपुर
७—,, बेचनराम जी आर्य	कोषाध्यक्ष	
८—,, ओ३म् प्रकाश जी आर्य, मिर्जापुर	सदस्य	
९—,, सत्यदेव जी शास्त्री, बनारस	,,	
१०—,, रामचरण जी, आजमगढ़	,,	
११—,, हरदेवसिंह जी, बलिया	,,	

पदाधिकारी तथा सदस्य परामर्श दात्री समिति

आर्यवीर दल पश्चिमी क्षेत्र,

(मेरठ, कुमायूं तथा बरेली कमिश्नरी)

१—श्री नैपालसिंह जी	प्रधान
२—,, सन्तोषकुमार जी, गाजियाबाद	मन्त्री
३—,, शन्नूलाल जी	कोषाध्यक्ष
४—,, विश्वनाथ आर्यवीर, मेरठ	दलपति
५—,, चन्द्रभाल जी, मुरादाबाद	दलपति
६—,, राममोहन जी	उपप्रधान
७—,, जगन्नाथ जी सिंघल	सदस्य
८—,, विद्याशंकर जी अनिलेश, बरेली	दलपति
९—,, धर्मेन्द्र जी आर्य, बिजनौर	सदस्य
१०—,, आनन्दप्रकाश जी बिजनौर	,,
११—,, वीरेन्द्र जी, अमरोहा	,,

पदाधिकारी तथा सदस्य परामर्शदात्री समिति

आर्य वीर दल उत्तरी क्षेत्र

(लखनऊ, फैजाबाद कमिश्नरी)

१—श्री देवीप्रसाद जी	प्रधान
२—,, आदित्यकिशोर जी, हरदोई	मन्त्री
३—,, कुन्दनलाल जी	कोषाध्यक्ष
४—,, रघुनाथसिंह सीतापुर	दलपति
५—,, भगवतीप्रसाद जी गोंडा	,,
६—,, आदर्शमित्र जी लखनऊ	,,
७—,, जयपाल जी, उन्नाव	सदस्य
८—,, जगदीश्वरीप्रसाद जी, फैजाबाद	उपप्रधान
९—,, देशमित्र जी, सुल्तानपुर	सदस्य
१०—,, भोलानाथ जी, बहराइच	,,
११—,, वेदप्रकाश जी, लखनऊ	,,

शेष पृष्ठ १६ पर)

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
श्रावण २६, शक १८८०(१७ अगस्त ५८)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ५११३ तार · 'आर्यमित्र'

(पृष्ठ १५ का शेष)

पदाधिकारी तथा सदस्य परामर्शदात्री समिति

आर्य वीर दल दक्षिणी क्षेत्र

(आगरा, इलाहाबाद तथा झांसी कमिश्नरी)

१—श्री रामरतन जी, कानपुर	प्रधान
२—,, बाबूलाल जी दीक्षित एम० ए० अतरौली (अलीगढ़)	उपप्रधान
३—,, श्याम सुन्दर जी	मन्त्री
४—,, शिवप्रसाद जी	कोषाध्यक्ष
५—,, ब्रह्ममित्र जी शास्त्री,	दलपति
६—,, ईश्वरीप्रसाद जी प्रेम, मथुरा	,,
७—,, ऋषिपाल सिंह जी, सीपरी बाजार, झांसी,	,,
८—,, दयास्वरूप जी, इलाहाबाद	सदस्य
९—,, लाखनसिंह जी, मैनपुरी	,,
१०—,, कालीचरण जी आर्य फर्रुखाबाद	,,
११—,, रामनारायण जी शास्त्री, बिन्दकी, (फतेहपुर)	,,

—रामजीप्रसाद गुप्त
प्रान्तीय संचालक, आर्य वीर दल उ०प्र०
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

गुरुकुल वृन्दावन में नये ब्रह्मचारियों का प्रवेश

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन बालकों की शिक्षा के लिए एक उत्तम शिक्षा संस्था है जो स्वल्पतम निर्वाह व्यय में उच्चतम निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करती है। शिक्षा के साथ साथ वह ब्रह्मचारियों के चरित्र निर्माण पर विशेष बल देती है। गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने वाले बालकों को आश्रम में ही रहना होता है इसलिए उनको अपने गुरुजनों के साक्षात सम्पर्क का अधिकाधिक लाभ उठाने का अवसर मिलता है। गुरुकुल की अधिकारी तथा शिरोमणि परीक्षाएं क्रमशः हाई स्कूल तथा बी० ए० के बराबर मान्य हैं।

ग्रीष्मावकाश के बाद १ जुलाई से गुरुकुल के नवीन शिक्षा सत्र का कार्य प्रारम्भ हो गया है। तभी से नवीन बालकों का प्रवेश हो रहा है। आठ से दस वर्ष तक की आयु के बालक प्रविष्ट हो सकते हैं। भोजन तथा व्यवस्था व्यय मिलाकर २५) रु० मासिक व्यय लिया जाता है। जो महानुभाव अपने बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट कराना चाहें वह पत्र द्वारा सूचना देकर प्रवेश पत्र मगा लें और स्थान सुरक्षित करा लें।

हरिशङ्कर शर्म्मा
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

नरदेव स्नातक एम. पी.
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

(पृष्ठ २ का शेष)

आवश्यकता इस बात की है कि इन दोनों प्रणालियों का अध्ययन करके एक बीच का मार्ग निकाला जाय क्योंकि शिक्षण विज्ञान के आधुनिक अनुसन्धानों की भी अवहेलना नहीं की जा सकती। दयानन्द विश्व विद्यालय में उस प्रणाली पर शिक्षण आधारित हो जो कि विद्यार्थी के शारीरिक, मानसिक, सांस्कृतिक विकास में सहायक हो और विद्यार्थी उनसे वास्तविक लाभ प्राप्त कर सके।

दयानन्द विश्वविद्यालय का पाठ्य क्रम क्या हो इस पर मनन करना भी आवश्यक है। पाठ्य क्रम ही विश्व विद्यालय का प्राण होता है और पाठ्य क्रम के चयन के समय अधिक सजग रहना चाहिए। देश में शिक्षा की जो दुर्दशा हो रही है उसका एक मात्र कारण अनुपयोगी पाठ्य क्रम ही है। पाठ्य क्रम बनाते समय तीन बातों का ध्यान रखना चाहिए—पाठ्य क्रम विद्यार्थी के व्यक्तिगत विकास में सहायक हो, पाठ्य क्रम देश की आवश्यकताओं की पूर्ति करता हो और पाठ्य क्रम का व्यावहारिक मूल्य हो।

दयानन्द विश्वविद्यालय की योजना को यदि कार्यान्वित करना है तो कार्य अभी से आरम्भ कर देना होगा। देश के प्रमुख शिक्षा विशेषज्ञों में अनेक आर्य बन्धु हैं उन सबका सक्रिय सहयोग हमें प्राप्त करना होगा। इनके मार्ग निर्देशन से ही हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अपने प्रान्त में श्री कालका प्रसाद भटनागर (वाइस चांसलर आगरा विश्वविद्यालय) डाक्टर बाबू राम सक्सेना, डा० धीरेन्द्र वर्मा, डा०सत्य प्रकाश, डा० बनारसी प्रसाद सक्सेना डा० धर्मेन्द्र नाथ शास्त्री, डा० हरिदत्त शास्त्री, प्रिं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री, डा० वासुदेव शरण अग्रवाल, डाक्टर भगवद्देव शास्त्री, डा० सूर्यकान्त जी, आचार्य बृहस्पति जी, आचार्य नरदेव शास्त्री, प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति, प्रिंसिपल शारदा प्रसाद सक्सेना, डा० रामनारायण सक्सेना आदि अनेक ऐसे आर्य हैं जिन्होंने कि विश्वविद्यालय के क्षेत्र में प्रमुख कार्य किया है और जिनको विश्व विद्यालयों के संचालन का पूर्ण अनुभव है। श्रद्धेय लाला दीवान चन्द व डा० ब्रजेन्द्र स्वरूप जैसे वृद्ध शिक्षा विशेषज्ञों से भी इस कार्य में उचित सहयोग मिल सकता है। पंजाब के प्रिंसिपल सूर्यभान, प्रिं० भगवान दास न्यायमूर्ति महाजन आदि के सम्मिलित प्रयत्न से इस दिशा में शीघ्र सफलता मिल सकेगी।

आवश्यकता इस बात की है कि दयानन्द विश्वविद्यालय समिति की अविलम्ब स्थापना की जाय जो कि इस कार्य को अपने हाथ में ले और आगे बढ़ाये। विश्वविद्यालय के आरम्भ करने में अधिक धन की आवश्यकता होती है। आर्य समाज की महान् शक्ति इस कार्य के लिए धन संग्रह करने में सदैव समर्थ है और उसे अपने कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। दयानन्द विश्व विद्यालय आर्य समाज का वर्तमान पीढ़ी की देन होगा। आवश्यकता है कार्य के आरम्भ करने की, कार्य में लगन की और मिशनरी जोश की।

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ARYA

आर्यमित्र

MITRA

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का साप्ताहिक मुखपत्र

वार्षिक मूल्य ८) | एक प्रति का २० नए पैसे

लखनऊ, रविवार, भाद्र २३, शक १८८०, भाद्र शुक्ल १, वि० २०१५
१४ सितम्बर १९५८ ई०

विदेश में १२ शिलिंग

उत्तर प्रदेश के आर्यजन अपना कर्तव्य पालन करें

हमें आर्य जगत् के सम्मुख उदाहरण प्रस्तुत करना है

इस वर्ष सभा की ओर से जो योजनाएं और कार्यक्रम प्रसारित हुए हैं, उन सबके द्वारा इस बात का प्रयत्न किया गया है कि आर्यजन अपने कर्तव्यों को समझें और उनको पूर्ण करने में जागरूक और सचेष्ट बनें।

राष्ट्र व्यापी नैतिक पतन की महामारी से राष्ट्र का उद्धार करने के लिए नैतिक उत्थान आन्दोलन का सन्देश, कार्यक्रम तथा लेखकों के विचार प्रस्तुत कर इस बात की आशा की गई है कि प्रान्तीय आर्यबन्धु बड़े उत्साह के साथ व्यापक नैतिक पतन के विरुद्ध सक्रिय आन्दोलन आरम्भ कर सकेंगे। इस दिशा में बहुत सी आर्य समाजों तथा आर्य बन्धुओं की उत्साह वर्धक एवं प्रशंसनीय सूचनाएं हमें प्राप्त हो रही हैं परन्तु जो स्थिति और प्रगति हम चाहते थे वह अभी नहीं हो सकी है। प्रान्त के सभी आर्य बन्धुओं से विनम्र अपील है कि नैतिक उत्थान आन्दोलन की दिशा में वे सक्रिय बनें और अपने सम्पर्क की जनता का पथ प्रदर्शन करें।

सामाजिक कार्यक्रमों के सुव्यवस्थित प्रचार के लिए अपने पत्र को सुदृढ़ बनाना भी आपका ही कर्तव्य है। निरन्तर साठ वर्ष से मित्र आपका सन्देश वाहक रहा है। इस वर्ष हीरक जयन्ती मनाकर उसे समर्थ और प्रभावशाली बनाने का निश्चय किया गया है। अर्थाभाव के कारण आपका पत्र मिशन के कार्य को सफलता पूर्वक नहीं कर पाता। जैसा चाहिए वैसा बनाने में आप सबका सहयोग ही सहायक हो सकता है। पांच हजार ग्राहक संख्या बनाने के लक्ष्य में सबका सक्रिय सहयोग अविलम्ब प्रार्थनीय है। हीरक जयन्ती निधि के नोट छप रहे हैं, उनके द्वारा कार्यारम्भ हो जाना चाहिए।

आर्य विद्वानों (श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, श्री पं० गंगाप्रसाद रि० चीफ जज) का अभिनन्दन समारोह उत्तर प्रदेश के आर्यों के गौरव की बात होगी। उत्तर प्रदेश को इन विद्वानों को जन्म देने का गौरव प्राप्त है और अब हम अभिनन्दन समारोह की सफलता द्वारा यह सिद्ध करना है कि हम अपने विद्वानों और पथ प्रदर्शकों का सम्मान करना भी जानते हैं। अभिनन्दन समारोह सफलता के लिए भी आर्थिक सहयोग अपेक्षित है।

ऋषिवर दयानन्द के आदर्श गुरु विरजानन्द की पाठशाला भूमि पर स्मारक की योजना भी इस वर्ष सभा की ओर से पूर्ण होनी है। श्री गुरु विरजानन्द स्मारक का अखिल आर्य जगत् से भावनात्मक सम्बन्ध है। समस्त आर्य जगत् की भावनाओं को पूर्ण करने का दायित्व आपको पूर्ण करना है।

इस प्रकार सभा की सभी योजनाओं की सफल सम्पन्नता के लिए आशा है उत्तर प्रदेश के आर्य जन महान दायित्व को समझेंगे और पालन करेंगे।

—फूलनसिंह, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

अवैतनिक सम्पादक—
स्नातक उमेशचन्द्र एम. ए., ईश्वरदयालु आर्य, सभा मुख्य उपमन्त्री
सह० सम्पादक—भगवत शर्मा

अङ्क २५

कल्याण-पथ पर अग्रसर होना अनिवार्य है !

नैतिकता ही सुख-शांति की वर्षा करती है !

'मानवता' के बिना मनुष्य पशु से भी बुरा है!

सामयिक कार्य-क्रम में जुट जाइये !

स्वयं जागकर जनता को जगा दो !

आर्य्य समाजों से अभ्यर्थना !

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य-प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध, आर्य्यसमाजों का सामयिक कार्य क्रम क्या हो, यह बात हाल मे ही सभा प्रधान की एक विज्ञप्ति द्वारा, विस्तारपूर्वक बतायी जा चुकी है। यह विज्ञप्ति समास्थ सब आर्य्य समाजो की सेवा मे भेजी गयी, 'आर्य्यमित्र' मे प्रकाशित हुई और २८ जुलाई १९५८ को सभा की अन्तरग सभा द्वारा भी मान्यता प्राप्त कर चुकी है। उक्त विज्ञप्ति में उल्लिखित, सामयिक कार्य-क्रम का स्वरूप, उस पर दिये, निम्नलिखित चार शीर्षको से भले प्रकार आका जा सकता है—

१—'स्वराज्य' तो होगया 'सुराज्य' की शीघ्र आवश्यकता है,
२—धर्म्म के बिना सुख-शान्ति सम्भव नहीं है,
३—'नैतिकता' ही 'मानवता' की माता है,
४—'मूढता' और 'गुलामी' नागरिकता का कलक है।

उपर्युक्त चारो शीर्षक महर्षि दयानन्द, महात्मा गाधी और सन्त विनोवा भावे की उन विवेक वाणियो के आधार पर दिये गये है, जो उस 'विज्ञप्ति' में उद्धृत हैं। अर्थात् देश मे सुख सम्पन्नता, सदाचार और सतीत्व की वृद्धि हो। स्नेह, सहयोग, सहिष्णुता, समता, सरलता, शुचिता, सच्चरित्रता, सुरक्षा, सद्भावना आदि सद्गुणों की ज्योति जगे। आत्म तुष्टि और त्याग तप के भव्य भावो का प्रसार हो और आन्तरिक पवित्रता का पूरा पूरा ध्यान रखा जाए।

जनता में वास्तविक नागरिक चेतना जागे, लोग अपने अधिकारो और कर्तव्यो को ठीक-ठीक समझ कर तदनुसार आचरण करे, अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के सकेत पर, 'गुलाम' और 'मूढ़' न बनें। भेड़ों की भेड़ की तरह न हाँके जाय। अपने विवेक को विमल तथा सबल बनावें और यह समझें कि जनता के राज्य का नाम ही 'गणतन्त्र' है अत: चुने हुए प्रतिनिधि जनता के शासक नहीं, सेवक हैं। सब नागरिकों को मत-दान करना चाहिए, जिससे 'गणतन्त्र' 'दलतन्त्र' न बनकर सच्चा 'गणतन्त्र' बने। जो जनता का नि स्वार्थ और वास्तविक सेवक है, उसी को प्रतिनिधि चुनना, स्वराज्य की सफलता का मूल मन्त्र है। जनता इस का पूर्ण ध्यान रखे कि उसका निर्वाचित प्रतिनिधि पद मद पीकर, जन हित के विरुद्ध कोई काम न करे। वह स्वेच्छाचारी बन स्वार्थान्धता का शिकार न हो। इत्यादि,

महापुरुषों की उपर्युक्त भावनाओं को दृष्टि-पथ में रखकर ही, हमें यह आन्दोलन चलाना है, जिससे धार्म्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक और वैयक्तिक शुभ गुणों का विकास हो और भ्रष्टाचारिता, अनैतिकता, अपराध-प्रवृत्ति, अधिकार-लिप्सा, पदलोलुपता, अवसरवादिता, अनुशासन-हीनता, स्वार्थान्धता, चोरी-जारी, हिंसा, द्यूत, रिश्वत, कम नाप-तोल, वस्तु-मिश्रण, बिना भाड़े यात्रा आदि दुर्गुणों का विनाश हो। लोकमत में विमलता तथा सबलता आए।

आर्य्य समाजों के अधिकारियों और सदस्यों का कर्त्तव्य है कि वे इस परम उपयोगी आन्दोलन को आगे बढ़ावें। अपने ग्रामों तथा नगरों के विविध महल्लों और स्थानों में सार्वजनिक सभाएँ करें। उनमें वे सब लोग सम्मिलित किए जाए, जो इस नैतिक उत्थान आन्दोलन से सहमत हों। विचारशील वक्ताओं के भाषण तथा प्रवचन कराए जाए। पग यात्राए की जाए। विज्ञप्तियाँ वितरित हों। किसी सिद्धान्त के प्रचार का अर्थ यह होता है कि उसकी उपयोगिता, युक्तियाँ एवम् प्रमाण देकर, सर्व साधारण को बड़ी सरलता से समझाई जाएँ। इन सिद्धान्तो पर श्रोता और वक्ता दोनों ही समान रूप से सम्यक् आचरण या अमल करें।

इस आन्दोलन का उद्देश्य 'स्वराज्य' को सुख शान्ति सम्पन्न 'सुराज्य' बनाना है, उसमें नैतिकता लाना और नागरिक अधिकारों एवम् कर्त्तव्यो को उचित रीति से समझना समझाना है। जिससे देश की प्रतिकूल परिस्थिति अनुकूल एवम् मगन मूल बने और कोई व्यक्ति दुखी, दरिद्र, दीन या चरित्रहीन न रहे। आशा है, आर्य्य जनता अन्य साथी सज्जनों का सहयोग प्राप्त कर, इस पवित्र और परमोपयोगी पथ पर सोत्साह अग्रसर होगी और इस 'पुरोगम' को देश हित के लिए महत्त्व पूर्ण तथा परम आवश्यक समझेगी।

हरिशङ्कर शर्म्मा
प्रधान

पूर्णचन्द एडवोकेट
अधिष्ठाता,नैतिक उत्थान विभाग

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

परिमल—पराग

तर्क शक्ति से मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है, सत्य से वह मन की शान्ति पाता है और मन की शान्ति से उसका दुख दूर होता है।

—योग वाशिष्ठ

× × ×

आसुरी वृत्ति के विरुद्ध युद्ध करने से इन्कार करना नामर्दी है। —गाधी

× × ×

आदमी गूदे की अपेक्षा छिलके पर ज्यादा झगड़ते हैं। —जर्मन कहावत

× × ×

जिन पर असत्य और पाखण्ड का मैल चढ़ गया है, वह इतना सूक्ष्म है कि दूर करना बड़ा कठिन है। किसी को अस्पृश्य गिन सकते है तो असत्य और पाखण्ड से भरे हुए लोगों को।

—गाधी

× × ×

ठोकरें सिर्फ धूल उड़ाती हैं, जमीन से फसलें नहीं उगातीं।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

× × ×

अगर चाहते हो कि दुख दुबारा न आए, तो फौरन सुन लो कि वह क्या सिखा रहा है। —बर्क

× × ×

जो मनुष्य घर में बैठा रहता है उसका भाग्य बैठ जाता है, जो खड़ा रहता है उसका भाग्य खड़ा हो जाता है जो सोया रहता है। उसका भाग्य सो जाता है,और जो चलता फिरता है उसका भाग्य भी चलने फिरने लगता है। —एतरेय ब्राह्मण

+ × +

जो हर्ष के अवसर पर अत्यन्त आह्लादित और विपत्ति मे अत्यन्त दुखित नहीं होता, और जो पदार्थों की प्राप्ति की उत्कट इच्छा नहीं रखता और जिसने कर्म के शुभ और अशुभ फल मन से त्याग दिए हैं, वह भक्तिवान पुरुष मुझे प्रिय है।

—भगवान श्रीकृष्ण

× × ×

जो समझता है, कि मैं सब कुछ जानता हु, वह कुछ नहीं जानता। और जो समझता है कि मैं अज्ञानी हुं, वह सब कुछ जानता है।

—स्वामी विवेकानन्द

× + ×

सच्चरित्रता और सत्य-व्यवहार के लिए आर्य जाति चिरकाल से विश्व में प्रसिद्ध है। —मेगास्थनीज

× × ×

वेदोपदेश

ओं समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्य्यत तारा नाभिमिवाभितः॥ अथर्व० ३।३०।६

तुम्हारा पानी पीने का स्थान एक हो, अन्न का भोजन साथ साथ हो, मैं तुम्हें साथ साथ एक ही बन्धन में जोड़ता हूं। जिस प्रकार पहिए की नाभि में अरे जुड़े रहते हैं उस प्रकार परस्पर मिलकर अग्नि (ज्ञान व प्रकाश स्वरूप परमेश्वर, विद्वान्, ज्ञानी, गुरू और यज्ञाग्नि) की सेवा करो।

सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की २५-८-५८ की बैठक का निश्चय

सार्वदेशिक सभा हिन्दी रक्षा के प्रश्न पर आवश्यक बैठक बुलावे

इस समिति की राय है कि शासन की ओर से अभी तक जो उदासीनता पञ्जाब को भाषा समस्या हल करने के बारे मे रहा, वह निराशा जनक है, अतः यह समिति सार्वदेशिक सभा से सिफारिश करती है कि आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकृत व्यक्तियों एवं अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों की एक बैठक इस विषय पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने के लिए बुलाई जाए।

—घनश्याम सिंह गुप्त
प्रधान सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति

आर्यमित्र

लखनऊ—१४ सितम्बर १९५८, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि सवत् १९७२९४९०५९

महान् कार्य के लिए महान् प्रयत्न

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की योजनाएं गताङ्कों द्वारा आर्य जगत् के सम्मुख पहुंच चुकी हैं। आशा है सभी क्षेत्रों में उन कार्यक्रमों की चर्चा हुई होगी। यद्यपि उत्तर प्रदेश आ० प्र० नि० सभा ने कार्यक्रम घोषित किये हैं, तदपि हमारा विश्वास है पाठकगण उन सभी कार्यक्रमों की व्यापकता को स्वीकार करेंगे। समस्त आर्य जगत् के साथ इन कार्यक्रमों, समारोहों का अभिन्न सम्बन्ध है। आर्यमित्र सभा के नियन्त्रण सचालन और संरक्षण में निकलता हुआ आर्य समाज के अग्रदूत का कार्य विगत साठ वर्षों से करता आ रहा है। आर्य जगत् के समाचारों तथा आर्य सिद्धान्तों की समीक्षा के लिए ऐसा कौन आर्य है, जो आर्यमित्र का सहयोग प्राप्त न करता रहा हो। मित्र भविष्य में भी अधिक उन्नत हो और आर्य समाज की सेवा कर सके, इसके लिए प्रत्येक आर्य बन्धु का सहयोग अपेक्षित है। मित्र की हीरक जयन्ती एक ऐसा सुअवसर है, जब सारा आर्य जगत् ऋषि मिशन की सुदृढ़ प्रचार व्यवस्था के लिए 'मित्र' को आदर्श रूप प्रदान कर सकेगा। योजनाएं केवल सोचने और कागज पर उतर आने से ही सफल नहीं हो जातीं उनकी पूर्ति के लिए कर्मठ और योग्य व्यक्तियों के अमूल्य सहयोग की आवश्यकता होती है। हीरक जयन्ती आपके कर्तव्य को जगाने आई है। यदि आप चाहते हैं कि "मित्र" की स्थिति सुदृढ़ हो और वह आज के आर्थिक संकटों का सामना करता हुआ साहस पूर्वक निर्भीक आलोचना कर सके और राष्ट्र को सन्मार्ग का वैदिक ऋषि सन्देश सुना सके तो आपको मित्र की 'जयन्ती निधि' में यथा शक्ति आहुति डालनी होगी। आशा है आर्य जगत् के सजग और कर्मठ कार्यकर्ता आज की पत्रकारिता पर पूंजीवाद के आक्रमण को भली-भांति समझते होंगे और इस पूंजीवादी युग में मिशनरी भावना के मित्र जैसे पत्रों की स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सहायक होंगे।

उत्तर प्रदेश के आर्य बन्धुओं पर अन्यों की अपेक्षा अधिक दायित्व है। सारा आर्य जगत् आपसे आशाएं रखता है और प्रेरणा प्राप्त करता है। आपके कार्यों और योजनाओं की सफलता का साधन एकमात्र आर्यमित्र है। आज अवसर आया है कि साठ वर्ष से आपकी सेवा करने वाले 'मित्र' की आप भी थोड़ी सेवा करें।

मित्र की सेवा जयन्ती निधि के लिए धन संग्रह कर, ग्राहक बना, विज्ञापन भेज और भिजवा कर की जा सकती है। सम्प्रति हमने ५००० ग्राहक संख्या का लक्ष्य निर्धारित किया है, जो अत्यल्प है, परन्तु एक मिशनरी पत्र के लिए आवश्यक संख्या है। हम प्रान्त के आर्य भाइयों को उनके इस महान् दायित्व का समय रहते स्मरण करा रहे हैं। यह स्मरण रखिए आर्यमित्र की सफलता आपकी सफलता है और आपकी सफलता आर्य जगत् की सफलता है। आशा है उत्साही आर्य बन्धु हमारी इस प्रार्थना पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे और उत्साह के साथ कार्य आरम्भ कर देंगे।

आर्यमित्र जयन्ती के साथ श्री उपाध्याय जी व श्री गंगाप्रसाद रि० चीफ जज के अभिनन्दन समारोह की योजना भी समस्त आर्य जगत् के गौरव की योजना है। दोनों विद्वानों की आर्य समाज के प्रति महान सेवाएं है। साहित्यिक रचनाओं के अतिरिक्त उपाध्यायजी उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान व सार्वदेशिक सभा के मंत्री रहे, विदेश प्रचार-यात्राएं भी सफलता पूर्वक कीं। आदरणीय जज साहब आर्य समाज के सघटन कर्ताओं मे सर्वाग्रणी रहे, सार्वदेशिक सभा के प्रधान रह कर आपने सम्पूर्ण आर्य जगत् को नेतृत्व प्रदान किया है। ऐसे समाज सेवक आर्य विद्वानों का जितना भी और जिस प्रकार भी सम्मान किया जाय थोड़ा होगा। आर्य जगत् ने उनके सम्मान समारोह की सराहना की है। दक्षिण हैदराबाद प्रति नि० सभा के प्रधान श्री प० नरेन्द्र जी का प्रेरणाप्रद पत्र हमें प्राप्त हुआ है, अन्य भी पत्र आ रहे हैं।

इसी प्रकार श्री गुरु विरजानन्द स्मारक मथुरा के शिलान्यास की योजना भी सार्वदेशिक महत्व की है। ऋषि दयानन्द जी को ज्ञानचक्षु देने वाले स्वामी विरजानन्द जी की पाठशाला वाली भूमि अनेक प्रयत्नों के बाद आर्य समाज को प्राप्त हो सकी है। उसमें आर्य समाज के गौरवानुरूप स्मारक (पुस्तकालय भवन) का निर्माण सम्पन्न होना है। इस भूमि की प्राप्ति के लिए १९२४ से प्रयत्न किये जाते रहे, अब सफलता मिल सकी है। अतः अब हमें उत्साह और श्रद्धा के साथ इस कार्य को सम्पन्न करना चाहिए।

आशा है आर्य जनता उपर्युक्त आयोजनों की सामयिकता, उपयोगिता और महत्ता पर विचार करेगी तथा सफलता के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करेगी। इन कार्यक्रमों के सम्बन्ध में सम्मतियाँ और सुझाव आमन्त्रित हैं।

आर्य महासम्मेलन के प्रस्ताव का समर्थन

२८ जुलाई को आ० प्र० नि० सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरङ्ग ने एक सर्व सम्मत प्रस्ताव द्वारा सार्वदेशिक सभा से प्रार्थना की थी कि हिन्दी रक्षा आंदोलन की वर्तमान परिस्थिति और भावी योजना के सम्बन्ध में गम्भीरतापूर्वक विचार करने के लिए शीघ्र ही आर्य सम्मेलन बुलाया जाय।

हमें हर्ष है कि सभा और मित्र के इन विचारों का आर्य जगत् में स्वागत हुआ है। प्रसिद्ध आर्य नेता श्री नरदेव जी का लेख इसी अङ्क में पाठक पढ़ेंगे, श्री महाशय कृष्ण जी ने भी वीर अर्जुन मे इस मांग का समर्थन किया। हमारे कार्यालय में प्रतिदिन इस सम्बन्ध मे पत्र आ रहे है। प्रसन्नता की बात है कि सा० भा० स्वा० समिति ने भी इसी भाव का परामर्श प्रस्ताव सार्वदेशिक सभा को भेजा है। आशा है सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग शीघ्र ही इस दिशा मे आवश्यक निर्णय करेगी।

गुमनाम विज्ञप्तियों के लेखक भर्त्सना के पात्र हैं

पिछले दिनों आर्य जगत् में कुछ गुमनाम पत्र और विज्ञप्तियां प्रसारित की गईं जिनमें हिन्दी आन्दोलन से सम्बन्धित आर्य नेताओं पर स्वार्थ सिद्धि और धन दुरुपयोग के घृणित आक्षेप किये गये थे और उन्हें तथा अप्रत्यक्ष रूप में आर्य समाज को बदनाम करने का दुस्साहस किया गया था। लेखकों ने बड़ी सद्भावना का दम्भ भरा था, पर नाम न देना ही उनकी कायरता को सिद्ध कर रहा था। अब तो सार्वदेशिक सभा की

(शेष पृष्ठ ४ पर)

भ्रम-निवारण

सार्वदेशिक सभा का प्रस्ताव

सभा प्रधान श्री स्वामी अभेदानन्द जी तथा श्री घनश्यामसिंह के वक्तव्य

कुछ समय पूर्व दो गुमनाम पत्रों द्वारा कुछ आर्य नेताओं के सम्बन्ध में हिन्दी रक्षा आन्दोलन के धन का दुरुपयोग करने के आक्षेप लगाये गये थे।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी अभेदानन्द जी ने एक वक्तव्य में सूचित किया है कि सार्वदेशिक सभा ने उन सभी आक्षेपों को जांच करने पर निराधार पाया है। सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग ने २४-८-५८ को इस सम्बन्ध में निम्न प्रस्ताव पारित किये हैं —

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग

दिनांक २४-८-५८ के निश्चय

१—इस सभा का ध्यान दो गुमनाम परिपत्रों—'आर्य समाज की रक्षा कीजिए" 'सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के प्रधान श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त के नाम पत्र"—की ओर आकृष्ट किया गया है जो आर्य जगत् में अभी हाल में प्रचारित किये गये हैं और जिनमें असत्य एवं भ्रम पूर्ण बातें लिखकर आर्य समाज के कई उत्तरदायित्व पूर्ण प्रतिष्ठित पदाधिकारियों पर अत्यन्त निन्दनीय आरोप लगाए गये हैं। यद्यपि इस प्रकार के परिपत्रों का विचारशील आर्य जनता की दृष्टि में कोई मूल्य नहीं होता और वे स्वयं निन्दित होते हैं तथापि जन साधारण में इनसे भ्रम फैलता है। ये दोनों परिपत्र आर्यसमाज के संगठन और उसकी प्रतिष्ठा के लिए घातक हैं अतः यह सभा इनका प्रबल विरोध करती है और अपना नाम छिपाकर आर्य समाज के संगठन को हानि पहुँचाने वाले निन्दनीय प्रवृत्ति के लोगों के प्रति घृणा प्रकट करती है। यह सभा सर्वसाधारण जनता को चेतावनी देती है कि वे इस प्रकार के असत्य एवं द्वेष पूर्ण प्रचार से सावधान रहें।

२—यह सभा, सभा मन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी, सभा उपमन्त्री श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री, सभा उपप्रधान तथा कार्यकर्ता प्रधान सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति श्री प० नरेन्द्र जी तथा सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी की कर्मठता, परिश्रम शीलता, लगन, आर्य समाज के प्रति हितभावना तथा उनकी सद्भावना का आदर करती और उन पर अपना पूर्ण विश्वास प्रकट करती है।

(ख) श्री प० अलगूराय जी शास्त्री के प्रस्ताव तथा श्री बालमुकुन्द जी आहूजा के अनुमोदन पर यह भी निश्चय हुआ कि इन परिपत्रों के लिखने तथा प्रचार करने वालों का तथा प्रेस का पता लगाया जाय और उनके विरुद्ध उचित कार्यवाही की जाय। सभा प्रधान को अधिकार दिया जाय कि वे इस कार्य के निमित्त एक उपसमिति नियुक्त कर दें।

३—आडिट हुआ आय व्यय का लेखा प्रस्तुत होकर आडिट नोट के साथ पढ़ा गया। आडिट नोट की आपत्तियों पर कार्यालय का समाधान सूचक विस्तृत नोट भी पढ़ा गया। सर्वसम्मति से हिसाब स्वीकृत हुआ।

(ख) निश्चय हुआ कि उक्त परिपत्रों में सभा के अधिकारियों के विरुद्ध हिसाब सम्बन्धी जो आरोप लगाये गये थे वे नितान्त असत्य एवं द्वेष पूर्ण सिद्ध हुए हैं अतः यह सभा अपने अधिकारियों और कार्यकर्ताओं के प्रति पुनः विश्वास प्रकट करती है।

(ग) निश्चय हुआ कि सभा के आडिटर श्री नारायण दास कपूर चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट महोदय ने जिस विस्तार और परिश्रम से हिसाब आडिट किया है उसके लिए उन्हें धन्यवाद दिया जाय।

सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के प्रधान श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त का नोट

मैंने अपने निम्नलिखित मित्रों के सामने और उनकी तथा कार्यालय के कर्मचारियों की सहायता से आय व्यय लेखा के उन आंकड़ों को ध्यान से देखा जिनके बारे में एक अज्ञात पर्चे में आक्षेप थे। इस बात को अन्य जनता के सामने तथा अपने शुभचिन्तकों के सामने घोषित करते हुए मुझे परम हर्ष और संतोष होता है कि मैं और ये सब मित्र इस स्पष्ट परिणाम पर पहुँचे हैं कि वे आक्षेप निर्मूल हैं।

दुःख के साथ मैं यह भी लिखना चाहता हूं कि जिस किसी ने भी वह पर्चा छाप कर बांटा है उसने आर्य समाज को महान क्षति पहुंचाई है।

१—श्रीयुत रघुवीरसिंह जी शास्त्री, २—श्रीयुत रामनाथ जी भल्ला ३—श्रीयुत ओम्प्रकाश जी त्यागी, ४—श्रीयुत प्रकाशवीर जी शास्त्री, ५—श्रीयुत रघुनाथप्रसाद जी पाठक-कार्यालयाध्यक्ष, ६—श्रीयुत प्रेमचन्द जी-एकाउन्टेन्ट

घनश्यामसिंह गुप्त
प्रधान सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति

[पृष्ठ ३ का शेष]

अन्तरंग के निश्चयों से विज्ञप्तियों का मिथ्यात्व भी सिद्ध हो गया है। सा० दे० सभा के निश्चय पाठक इसी पृष्ठ पर देखेंगे और उन्हें स्थिति का स्पष्ट परिज्ञान हो सकेगा।

हम इस अवसर पर सम्बन्धित आर्य नेताओं (श्री ला० रामगोपाल जी मन्त्री सार्वदेशिक सभा, श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री उप मन्त्री सा० सभा, श्री प० नरेन्द्र जी उ० प्र० सा० दे० सभा, का० क० प्रधान सा० दे० भा० स्वा० समिति, श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी प्रधान संचालक आर्य वीर दल, श्री बालमुकुन्द आहूजा कोषा० सा० दे० सभा) को उनकी सेवाओं के लिए हार्दिक बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि वे इस प्रकार की कार्यवाहियों से अपने मनों में किसी प्रकार की उदासीनता और शैथिल्य न आने देंगे।

जिन लोगों ने यह अनुचित कार्य किया है उनकी जितनी भी भर्त्सना की जाय थोड़ी होगी। ★

नेपाल प्रचार के लिए कार्यकर्ताओं की आवश्यकता

नैपाल राज्य, तराई के क्षेत्र में बैरगनिया, चपारन आदि में एक पाठशाला तथा औषधालय चल रहे थे और काठमाडू रेडियो स्टेशन से वेद प्रवचन करने का अवसर मिल जाता था। जो सज्जन यह कार्य कर रहे थे उनका देहान्त हो जाने के कारण नैपाल राज्य में वैदिक धर्म का प्रचार बन्द हो गया। सार्वदेशिक सभा उक्त कार्य को पुनः जारी करना चाहती है और राज्य में विधर्मियों के प्रचार कार्य के निराकरण करने के लिए विचार कर रही है। अतः जो मिशनरी भाव रखने वाले सुयोग्य सज्जन प्रचार का कार्य करने के लिए तैयार हों, वे अपने अपने प्रार्थनापत्र सभा को भेजने की कृपा करें। सभा यथाशक्ति उनके कार्य में आर्थिक और नैतिक दोनों प्रकार का सहयोग देने पर विचार करेगी। सभा मन्त्री

दान सूची

आर्यमित्र दिनांक १७।८।५८ के पृष्ठ सं० १४ पर प्रकाशित सूची के उपरान्त प्राप्त धन की सूची ३१।८।५८ तक की निम्न प्रकार प्रकाशित की जाती है। दाता सज्जनों को यह सभा धन्यवाद देती है।

११) श्री सोनपाल जी बरौला (अलीगढ)
३१) श्रीमती सावित्री देवी जी अन्तरङ्ग सदस्या मेरठ
२५) आ० स० फैजाबाद द्वारा श्री मदन मोहन जी वर्मा
१०१) आ० स० शहर मेरठ द्वारा श्री श्यामलाल जी आर्य, सभा उपप्रधान श्री कालीचरण जी आर्य द्वारा
२३) आ० स० रानी मण्डी प्रयाग
१५०) आर्य रक्षा समिति आर्यसमाज चौक प्रयाग सभा श्री प्रधान जी द्वारा।
५०१) आर्य समाज बुलन्द शहर
१०१) श्री आर्य समाज बुलन्दशहर
५०॥) मंत्री जी जिलोपसभा मैनपुरी श्री फूलनसिंह जी सभा मंत्री द्वारा आर्यमित्र के लिए
१००) आर्यसमाज मगराहा (मिर्जापुर)
२५) डा० शिवदत्त जी कानपुर अन्तरंग सदस्य
१२५) श्रीमती सुशीलादेवी जी जौहरी अंतरङ्ग सदस्य लखीमपुर

आवश्यक सूचना

वेद प्रचार सप्ताह समाप्त हो चुका है। आशा है प्रान्त की समस्त समाजों ने इस पर्व को बड़े उत्साह से मनाया होगा और इस अवसर पर वेद प्रचारार्थ संग्रह किया जाने वाला धन भी १) प्रत्येक सदस्य से प्राप्त करने का प्रयत्न किया होगा। जिन समाजों ने धन संग्रह कर लिया है उनको चाहिए कि वह सभा की आर्थिक दशा को ध्यान में रखते हुए सभा को भेजने की कृपा करें और जिन्होंने अभी संग्रह नहीं किया है उनको उचित है कि वह धन संग्रह अवश्य करें और ज्यों ज्यों धन संग्रह होता जाय त्यों त्यों सभा कार्यालय को भेजते जाय।

उपदेश विभाग की सूचना

श्री पं० ब्रह्मदत्त शास्त्री जी अगराना (अलीगढ) के सम्बन्ध में आर्यमित्र दि० २४-८-५८ में प्रकाशित हुआ है कि वह सभा के द्वारा कार्य करना स्वीकार कर लिया है। परन्तु अनिवार्य कारणों से सभा तथा उक्त शास्त्री जी के बीच समझौता की जो बातचीत चल रही थी वह तय न हो सकी। अतः वे सभा के उपदेश विभाग द्वारा कार्य नहीं कर रहे हैं। उनको सभा, प्रबन्ध धन न दिया जावे।

—फूलनसिंह सभा मंत्री

सामयिक समस्याएँ

आर्य लोग परिस्थिति का पूर्ण अध्ययन करें तब बढ़ें

दुबारा हिंदी सत्याग्रह चले तो ऐसा चले

'न भूतो न भविष्यति'

(आचार्य श्री नरदेव शास्त्री, ज्वालापुर)

★

आदरणीय शास्त्री जी आर्य समाज के सम्मानित विद्वान , कार्यकर्ता और हितैषी के रूप में आर्य समाज की गतिविधियों की सूक्ष्म समीक्षा करते रहते हैं। प्रस्तुत लेख में आपने हिन्दी आन्दोलन के भावी स्वरूप के लिए आर्य महासम्मेलन के आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए उसकी सामयिक आवश्यकता सिद्ध की है।

—सम्पादक

दुबारा हिन्दी सत्याग्रह चलाने की भाषा सर्वत्र बोली जा रही है। इस विषय मे आर्य समाचार पत्र अभी से गरमागरम होते जा रहे है। आर्य समाज के प्लैटफार्म भी फिर जोर से उबल पड़े हैं। या तो पहिले सत्याग्रह को इतनी जल्दी मे स्थगित नहीं करना चाहिये था, उसे चलते रहने देते। अब जब एकबार तवा ठण्डा हो गया तो अबकी बार कम से कम दो वर्ष तक तवा बराबर गरम रहे ऐसा प्रबन्ध होना चाहिए। और काम सबकी सम्मति से होना चाहिए ऐसा न हो कि एक प्रदेश गरम, एक प्रदेश नरम रहे और कोई प्रदेश चुप रहे इसलिए—

उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा का (ता० २८ जुलाई का बैठक का निर्णय) उचित जान पड़ता है जिसमे सार्वदेशिक सभा को सुझाव दिया गया है कि आर्य महा सम्मेलन का अधिवेशन बुलाकर उसमे शान्त गम्भीर विचार द्वारा निर्णय किया जावे।

यह कार्य ऐसा नहीं है कि सहसा शीघ्रता की जावे। मुख्य बात है पंजाब की। क्या यह बात सत्य नहीं है कि जब पंजाब सत्याग्रह मे जलता रहा तब आर्यों के स्कूल वैसे ही ठण्डे पड़े रहे जैसे मानो कुछ हुआ ही नहीं। पंजाब के लोग स्वयं मुझसे कहते रहे, जो सत्याग्रह के समय पंजाब मे थे, कार्यकर्ता रूप मे थे, कि पंजाब के लोग पैसा तो खूब देते रहे,पर सत्याग्रहियों की अधिक संख्या बाहर की ही थी। जैसे पंजाब पैसा देता रहा है एवं ही सत्याग्रही भी देता रहे तो काम बने।

अब की बार सत्याग्रहियों पर बड़ी सख्तियाँ होंगी, जुरमाने होंगे, कुड़कियाँ होंगी, लम्बी लम्बी सजाएं होंगी, वह भी सख्त। और यह भी संभव है कि बाहर वालो को पंजाब के भीतर जाने नहीं दिया जायगा और पंजाब के सत्याग्रहियो को भीतर ही कुचल दिया जाय बुरी तरह से–

काम अधकचरा नहीं होना चाहिए, सोच समझ कर पूरे प्रयत्न और बल के साथ होना चाहिए। इसके लिए एकता आवश्यक है।

किया हुआ कर्म कभी निष्फल नहीं जाता, समय पर फल मिलता ही है चाहे वह भले ही देर मे हो– जिन्होंने पिछले सत्याग्रह का संचालन किया, बड़ी योग्यता से किया, यद्यपि उसके आदेशों का पूर्णतया पालन नहीं किया गया। यह क्या सफलता रही कि आर्य समाज सजग हो उठा, और भी बहुत लाभ हुए, सत्याग्रह निरर्थक नहीं गया, यदि संचालकों ने धोखा खाया तो धोखा खाना बुरी बात नहीं, धोखा देना बुरी बात है। आर्य समाज का उद्देश्य भी पवित्र था और साधन भी पवित्र थे। सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ हिन्दी के प्रश्न पर और स्थगित होते होते वह प्रश्न बन गया आर्यसमाज के गौरव का। यदि जैसा कि आदेश था कि आर्य समाज के अधिकारी एक एक करके सत्याग्रह मे आवें, कहाँ आये, यदि वे आदेश पालन करते तो सत्याग्रह का रूप ही और होता। चन्दा तो खूब करते रहे, पर भेजते रहे सत्याग्रह मे औरों को ही,इत्यादि बाते बड़ी सोचने की हैं—

इस पर यह भी बात सोचने की है कि म[illegible] के नेताओं के दो दल हो गये है। मास्टर तारासिंह फिर "राज करेगा खालसा" का उद्घोष करने वाले हैं। फिर तो पंजाब एक प्रकार से रण संकुल भूमि बन जायगी। प्रश्न केवल हिन्दी रक्षा का नहीं रहेगा।

ये सब बाते विचारणीय है—पता नहीं सत्याग्रह प्रारम्भ होने तक पंजाब मे क्या होता है—सत्याग्रह के लिए आवश्यक है उस प्रदेश मे एक साथ कई सत्याग्रह न चले,एक ही सत्याग्रह चले, सर्वत्र वातावरण अनुकूल रहे सम्भव है ऐसे संकुल समय मे कुछ काल के लिये धैर्य रखना लाभदायक हो। ★

राष्ट्र-भाषा हिन्दी के लिए प्रयत्न कीजिए

(१४ सितम्बर हिन्दी दिवस का संदेश)

[श्री सत्यपाल बी० ए० भट्ट, (म० प्र०)]

हिन्दी भाषा अपने विशिष्ट गुणो के आधार पर आज राष्ट्र भाषा के उच्च पद पर आसीन होने का गौरव प्राप्त कर सकी है। इस पद पर आसीन होते ही जहा एक ओर उसका महत्व बढा है वहीं दूसरी ओर उसके सम्मुख कई कठिनाइयां और समस्याए भी उपस्थित हुई है। अत इस समय यह आवश्यक है कि हम इन कठिनाइयो को सुलझाकर उसकी उन्नति में प्रयत्न शील रहें।

हिन्दी साहित्य को उन्नत एव वैभवशाली बनाने के लिये यह अति आवश्यक है कि उसे तीव्र गति प्रदान की जाय। आज देश मे अहिन्दी भाषी हिन्दी को राष्ट्र भाषा तो स्वीकार करते है, लेकिन वे हिन्दी या उसके साहित्य को भारतीय भाषाओं मे सबसे अधिक उन्नत नहीं मानते हैं। उपर्युक्त बात हम कुछ कटु अवश्य लगता है किन्तु उसमे सत्यता का अंश भी विद्यमान है। आज इस अंश को ही अप्रमाणित करने के लिए हिन्दी के प्रत्येक लेखक, आलोचक, प्रकाशक, कवि, पत्रकार और साहित्यकार का कर्तव्य है कि वह इसके अपूर्ण अंगो को यथाशीघ्र पूर्ण करें।

आज हिन्दी साहित्य के सम्मुख सबसे जटिल प्रश्न यह है कि हिन्दी भाषा मे अन्य भाषाओं के शब्दों को अपना लेना चाहिए या नहीं? यह सब विदित है कि हिन्दी मे प्रान्तीय भाषाओं के अनेक शब्दों के अतिरिक्त अंग्रेजी, फारसी, पुर्तगाली और तुर्की आदि शब्दो का भी समावेश है। विद्वानो का रुझानानुसार हम और भी अधिक अहिन्दी शब्दों को स्वीकार कर लेना चाहिए। क्योंकि ऐसा न करने से जहाँ उसकी उन्नति मे बाधा उपस्थित हो, रही है वहां उसका शब्द भंडार भी कदापि नहीं बढ़ सकेगा। ऐसी अवस्था मे वह निश्चय ही एक निर्जीव भाषा हो जायगी। अत हमे हिन्दी को व्यापक, सुलभ एवं व्यवहारोपयोगी बनाने के हेतु उन्हें स्वीकार करने मे कोई संकोच नहीं करना चाहिये और यही उदार दृष्टिकोण हमे अन्य भाषाओं के अनुवाद सम्बन्धी आदान प्रदान के लिये भी अपनाना चाहिये।

आज हिन्दी साहित्य में नाटक, उपन्यास और कहानियों की भी कई समस्याए हैं। हमारे साहित्य में अधिकतर ऐसे नाटक हैं, जो रंगमंच के उपयुक्त नही है, उपन्यास व कहानियो आदि के सम्बन्ध मे कहा जाता है उनमे हास्य की बहुत कमी है। कुछ विद्वानो का यह भी मत है कि हिन्दी मे उच्च शिक्षा प्राप्त करने वालो के लिये कोई श्रेष्ठ उपन्यास ही नहीं है। इन अपूर्ण अंगो के अतिरिक्त एक अन्य अभाव भी बहुत खटकता है और वह है हमारे साहित्य मे नारी और बाल साहित्य की अत्यन्त कमी। इन अभावों के साथ आज टेक्नीकल आदि विषयो की पुस्तकों के अभाव की विकट समस्या है, वह भी किसी से छिपी नहीं है। यद्यपि हिन्दी प्रेमियो व शासन का ध्यान इस ओर है किन्तु अभी प्रगति बहुत धीमी है।

आज आवश्यकता है कि हमारे लेखक और विभिन्न धाराओं या वादों के चक्कर मे न पड़े। आज प्रत्येक साहित्यकार का ध्येय अपनी मौलिक रचनाओं के द्वारा हिन्दी साहित्य को चिरस्थायी बनाना होना चाहिए। इस ध्येय की प्राप्ति के लिये उसे अपनी कृति मे सत्य शिव और सुन्दर का समावेश करना होगा।

देश के सभी प्रान्त जब यह अनुभव करते हैं कि आज नहीं तो निकट भविष्य मे हमे हिन्दी अपनानी ही है तो क्यों न उसे आज ही अपना ले और आने वाली पीढ़ी की सहायता हेतु हम कुछ कठिनाई उठा ले। आज हमारे सामने हिन्दी का प्रश्न,—शुद्ध राष्ट्रीयता का प्रश्न है। इसे किसी भी प्रकार के संकुचित क्षेत्र मे सीमित रखने का विचार हमारी दुर्बल राष्ट्रीयता का परिचायक होगा। अत अहिन्दी भाषियो को राष्ट्र भाषा हिन्दी का विरोध न करते हुए यथाशीघ्र इसे अपनाकर सच्ची राष्ट्रीयता का परिचय देना चाहिए।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सुझाव और सम्मतियाँ

दयानन्दाश्रम द्रोणसागर (काशीपुर)

१३ जौलाई के 'मित्र' मे इन्द्र वर्मा एम० ए० का लेख 'महर्षि दयानन्द चतुर्थ मास आश्रम द्रोण सागर तीर्थ काशीपुर (नैनीताल)' पढ़ा। वास्तव में यह स्थान बड़ा रमणीक है। इस स्थान पर दयानन्द आश्रम बनाना ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी अत्यन्त आवश्यक है। आर्य समाज काशीपुर ने ४ अप्रैल १९५४ को उस आश्रम का स्थापना दिवस बड़े धूम धाम से मनाया था और तभी से वहाँ भवन निर्माण का कार्य जारी है। आर्य समाज काशीपुर के सभी सदस्यों की प्रबल इच्छा है कि सभा का सहयोग लेकर इस भवन का निर्माण कार्य जारी रखा जाय। श्री इन्द्रवर्मा के विचारानुसार यदि इसके लिए एक समिति बनादी जाय तो वास्तव में यह एक प्रशसनीय कार्य होगा। साथ ही मेरा भार भी कम हो जायेगा। क्योंकि इससे सभी के कन्धो पर थोड़ा थोड़ा बोझ आ जायेगा। मेरी अपनी राय में इसके अधिष्ठाता व सहायक अधिष्ठाता तो सभा के द्वारा नियुक्त हो, किन्तु प्रबन्धक व कोषाध्यक्ष काशीपुर आर्य समाज की वर्तमान समिति मे से निर्वाचित हों, तो अति उत्तम होगा। आर्य समाज काशीपुर अब तक इस योजना के अन्तर्गत एक कमरे का निर्माण करवा चुका है एवं काफी भाग की सफाई करवा चुका है। इस समय यज्ञशाला बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। अब तक इस स्थान पर लगभग १२०० रुपया व्यय हो चुका है।

—यमुना प्रसाद
संयोजक महर्षि दयानन्द आश्रम
काशीपुर (नैनीताल)

गुरुकुलोन्नति कैसे हो

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की महत्ता के विषय में श्री बाबू पूर्णचन्द जी का लेख २२ जून के मित्र मे पढ़ा और २७ जुलाई के अंक मे श्री नरदेव जी स्नातक एम० पी० का गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन परिचय लेख व सम्पादकीय टिप्पणी आपका गुरुकुल' भी पढ़ने का अवसर मिला। शिक्षांक मे गुरुकुल प्रणाली समर्थक लेख भी देखे। गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का स्नातक होने के नाते मैं गुरुकुलोन्नति की कठिनाइयों को भली भांति अनुभव करता हूं फिर भी मेरी सम्मति है कि इस दिशा मे हमारी सबसे बड़ी कमी यह है कि जितना हम कहते हैं उसका थोड़ा भी हम करके नहीं दिखाते, स्वयं नहीं करते। मुझे पूर्ण विश्वास है कि समस्या की गम्भीरता को समझकर यदि सच्चाई और लगन के साथ इस प्रश्न को हल करना चाहे तो वह बड़ी सरलता से हल हो सकता है। इस दिशा में मेरा निजी सुझाव है कि—

गुरुकुल मे विद्यार्थियो तथा धन की कमी सदा रहती है। अत. उसके लिए आर्य प्रतिनिधि सभास्थ सभी समाजे कम से कम एक विद्यार्थी अवश्य भेजें और उसके वार्षिक व्यय का भी प्रबन्ध करें। इस प्रकार के ब्रह्मचारी स्नातक बनने के पश्चात् उस समाज के क्षेत्र मे आर्य समाज के मिशनरी बनकर कार्य करेंगे।

उत्तर प्रदेश मे एक हजार से अधिक आर्य समाजे हैं। यदि ५०० भी अपना दायित्व अनुभव करें तो गुरुकुल की छात्र सख्या बढ़ सकती है। साथ ही उनके पूर्ण व्यय का दायित्व भी जब समाजों पर होगा तब गुरुकुल में धन का अभाव न रहेगा। इसके साथ ही प्रत्येक आर्य समाज का प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान और उसके सदस्य अपनी सन्तानो को एवं पौत्रियों को गुरुकुलो मे अनिवार्यत. पढ़ावें।

मुझे आशा है गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में विश्वास रखने वाले आर्य जन और गुरुकुल की स्वामिनी सभा के अधिकारी गण इस प्रश्न पर गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे और आवश्यक निर्णय करेंगे। जब अधिकारियों की सन्ताने गुरुकुल में होगी तभी गुरुकुल की उन्नति होगी और जनता में आस्था उत्पन्न होगी।

—शिवदत्त स्नातक एम० ए०
बरकुही परासिया (मध्य प्रदेश)

गति है प्रगति कैसे हो

आर्य समाज मे गति तो है पर प्रगति नहीं है। यह क्यो? इसी प्रश्न पर विचार करना है। इसके कुछ कारण हैं।

१—प्रथम जो ऋषि ने हमें कार्य सौंपा था वह कांग्रेस शासन, भारत सेवक समाज, महिला समाज, हरिजन कल्याण विभाग, मद्यनिषेध विभाग द्वारा हल्ला मचा कर किया जा रहा है।

२—शुद्धि आन्दोलन को हिन्दू महा सभा, जनसंघ, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ आदि अपने कार्यक्रम का अंग बना चुके हैं। इस प्रकार हमारा कार्य दूसरों के द्वारा हो रहा है। अतः हमारा कार्य कम जान पड़ता है।

और हमारे व्यक्ति (आर्य जन) अपने घर में (समाज में) वही कार्य न कर राजसत्ता के लोभ मे यत्र-तत्र करते फिरते हैं। वर्ष में आर्य समाज का उत्सव हो गया। कार्य पूर्ण हुआ समझिए। आज भी कार्यकर्त्ता ऐसा अवश्य है जो महान् कर्मठ है। उससे कार्य लेने की जरूरत है। उसका भी एक ढग है और वह है, प्रान्तीय सभा अपनी योजनाएं, जिला सभाओ को दे और प्रत्येक जिला सभा अपने पास प्रचारक रखकर प्रचार करावे। उस स्थानीय व्यक्ति का अपने क्षेत्र में, प्रभाव है अतः धन कमिश्नरियो म फिर जिलेवार वहीं से तहसीलवार विभक्त हो। उनकी व्यवस्था उन्हीं पर छोड़ी जाय और सभा द्वारा सचालन हो। सभा के अधिकारी प्रान्त का भ्रमण करें। साथ ही समाजों पर सभा कार्य को चलाने के लिए उचित धन राशि निश्चित हो जो कि वर्ष में प्राप्त की जाय।

प्रत्येक प्रान्त के महान् विद्वान् व सन्यासी ऋषि दयानन्द जी महाराज गांधी और विनोबा आदि की तरह पद यात्रा करें, एक प्रांत से दूसरे प्रान्त में और स्थानीय व्यक्ति उनके प्रचार से लाभ लें, क्या हमारे विद्वान् श्री विनोबा जी से भी दुर्बल हैं, नहीं? यदि इस प्रकार प्रत्येक विचारक कर्तव्य समझ कर कार्य करें तो अवश्य ही गति में प्रगति होगी। इस प्रकार रोज रोज का रोना भी बन्द हो जायगा और धन भी अधिक खर्च नहीं होगा। साथ ही आर्य विचार के राजनैतिक कार्य कर्त्ताओं को इस प्रेरणा से, इस कार्यक्रम से प्रेरणा मिलेगी और उन्हे पुनः अपने ही द्वार पर आना पड़ेगा।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

"दयानन्द योगाश्रम"

आर्यमित्र के २२ जून वाले अङ्क मे प्रकाशित दयानन्द योगाश्रम संबधी मेरे प्रस्ताव पर निम्न आर्य विद्वानों ने सम्मतियां भेजी है। आशा है आर्य जन उनके विचारानुसार इस कार्य की आवश्यकता पर विचार करेंगे तथा भक्त जन आर्थिक सहायता द्वारा इस पवित्र कार्य को सम्पन्न करेंगे।

श्री आचार्य बृहस्पति जी शास्त्री वेद शिरोमणि एम० ए० कुलपति गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन—श्री कन्हैयालाल जी 'मुमुक्षु' के ऋषि स्मारक दयानन्द योगाश्रम बनाने के शुभ विचार से मैं पूर्ण सहमत हूं। आश्रम के प्रश्न को उठाकर 'मुमुक्षु' जी ने एक बहुत ही आवश्यक प्रश्न की ओर ध्यान आकर्षित किया है। आवश्यक इसलिए है कि ऋषि दयानंद जी द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों के अनुसार और ऋषि की प्रमुख घटनाओं से एकमात्र यही निष्कर्ष निकलता है कि मानव जीवन का चरम लक्ष्य कैवल्यमोक्ष अथवा परम आनन्द की प्राप्ति करना ही है। और उस लक्ष्य की प्राप्ति का सर्वोत्कृष्ट साधन योग विद्या ही को ऋषि ने तथा अन्य सभी उपनिषत्कार दर्शनकार आदि आध्यात्म ज्ञानी ऋषि महर्षियो ने स्वीकार किया है। अतएव आर्य समाज का परम कर्तव्य है कि इस प्रकार के आश्रम के लिए उपयुक्त स्थान आदि का विचार करके नि.शुल्क ऋषि स्मारक स्थापित करने का संघटित प्रयत्न करे। आशा है दानी ऋषि भक्त इस ओर ध्यान देकर साधक जिज्ञासु मुमुक्षुओ का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

श्री प० नरदेव जी शास्त्री वेदतीर्थ कुलपति महा वि० ज्वालापुर—आप के विचार जाने, आर्य जगत् में ऐसा अध्यात्म योग विद्या का केन्द्र कोई नहीं है, ऐसे काम बड़ी सभाओं को उठाने चाहिये।

श्री प० बिहारी लाल जी शास्त्री सुभाषनगर बरेली—यह आपका विषय बड़ा सुन्दर, आवश्यक और आकर्षक है। मैं इससे पूर्ण सहमत हूं। योगाश्रम अध्यात्मवाद तथा योग विद्या के प्रचार तथा उन्नति के लिये वस्तुतः आर्य जगत् को इस प्रकार के आश्रम की बड़ी आवश्यकता है।

—कन्हैयालाल 'मुमुक्षु' सिद्धान्त शास्त्री
(मन्त्री उप सभा रामपुर)
ग्राम सलोमपुर विष्णु पो० मिलक
जि० रामपुर

(पृष्ठ ५ का शेष)

आज हम देखते हैं कि कई विदेशी भारत मे आकर राष्ट्र-भाषा हिन्दी का उपयोग कर देश का गौरव बढ़ाते हैं तो फिर कोई कारण नहीं कि हम भारतीय उस भाषा को (जो हमारी अपनी है) सीखने मे तनिक भी उनसे पीछे रहें।

राष्ट्रभाषा की प्रगति में ही देश की सच्ची एकता, अखण्डता एवं सर्वतोमुखी उन्नति संभव है। अतः हमें हिन्दी साहित्य के अभावों को दूर कर, उसकी समस्याओं को सुलझाकर उसे अधिकाधिक वैभवशाली बनाने का सद्प्रयत्न—अविराम गति से करना चाहिये। ✱

गुरुकुलीय विश्वविद्यालय संगठन उपसमिति प्रश्नावली

यह किसी से छिपा नहीं है कि अधिकतर गुरुकुलों जैसी संस्थाओं की वर्तमान स्थिति पूर्णतया संतोषजनक नहीं है। न तो वहां की शिक्षा का स्तर जैसा चाहिये वैसा है, न वहाँ से निकलने वाले स्नातकों को अपनी योग्यता के आधार पर विभिन्न दिशाओं में उन्नति का समुचित अवसर मिल रहा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के अनन्तर राष्ट्र की परिवर्तित परिस्थिति में निस्सदेह यह खेद जनक है। इस परिस्थिति का एक प्रधान कारण यही कहा जा सकता है कि न तो उक्त संस्थाओं में किसी प्रकार का परस्पर संगठन है और न उसके संचालन में एक सूत्रता है। इसलिए स्पष्टतः उनकी सबसे पहली आवश्यकता उनका संगठन है।

इसी लक्ष्य को सम्मुख रखकर **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली** ने एक **'गुरुकुलीय विश्वविद्यालय संगठन उपसमिति'** की स्थापना की है। उसकी ओर से उसके सिपुर्द किए हुए विचारणीय विषयों के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नावली आपकी सेवा मे भेजी जाती है। इस पर विचार कर दि० ३०-९-५८ तक अपनी सम्मति निम्न पते पर भेजने की कृपा कीजिये। आशा है कि आपके बहुमूल्य विचारों से समिति को अपने निश्चयों तक पहुँचने में अवश्य सहायता मिलेगी।

१—आर्यसमाज द्वारा संचालित गुरुकुलों जैसी संस्कृत-प्रधान संस्थाओं के साथ डी०ए० वी० कालिजों जैसी सस्थाओं का परस्पर सगठन वांछनीय और साथ ही सम्भव है अथवा नहीं ? यदि नहीं, तो क्या केवल गुरुकुल जैसी संस्थाओं का ही संगठन किया जाना चाहिये ?

२—उक्त दोनों अवस्थाओं मे क्या यह वांछनीय तथा सम्भव है कि उस सगठन को विधान द्वारा स्वीकृत (चार्टर्ड) विश्वविद्यालय का रूप दिया जावे ?

३—आपकी दृष्टि मे इस संगठित विश्वविद्यालय की अन्य विश्वविद्यालयों की अपेक्षा क्या क्या अपनी विशेषताएं होनी चाहिये ?

४—आपकी सम्मति मे उक्त विश्वविद्यालय का ऐसा व्यापक आधार अथवा आदर्श क्या होना चाहिये जिससे आर्यसमाज से बाहर की शिक्षा-संस्थाएं भी उससे सम्बद्ध हो सकें ?

५—यह संगठित विश्वविद्यालय प्रान्तीय विधान के आधार पर बनना चाहिये अथवा केन्द्रीय विधान के आधार पर ?

६—यह वि० वि० कार्यक्षेत्र की दृष्टि से अखिल भारतीय होगा। इस अवस्था में उसके संगठन में क्या क्या बाधायें हो सकती हैं और उनका निराकरण कैसे किया जा सकता है ? उक्त संगठन में तत्तत् प्रान्तीय तथा प्रान्तों के अन्तर्गत संस्थाओं का, प्रबन्ध तथा शासन की दृष्टि से, उसके साथ कैसा सम्बन्ध रहना चाहिये ?

७—उक्त विश्वविद्यालय के संगठन में सम्मिलित होने में वर्तमान गुरुकुलों, डी०ए०वी० कालेजों आदि अन्य संस्थाओं को क्या क्या आपत्तियां हो सकती हैं, और उनका समाधान क्या हो सकता है ?

८—विश्वविद्यालयीय सगठन के लिए निम्नलिखित दृष्टियों से अनेक आवश्यकताएं होंगी। इस सम्बन्ध में आपके ज्ञान में आर्य शिक्षा संस्थाओं की वर्तमान परिस्थिति क्या है ?

(क) आर्थिक दृष्टि से,

(ख) स्थान (भूमि तथा भवन) की दृष्टि से,

(ग) छात्र संख्या की दृष्टि से,

(घ) शिक्षा के प्राथमिक, माध्यमिक, विश्वविद्यालयीय स्तर की दृष्टि से

(ङ) पाठ्य विषयों के विभाग की दृष्टि से,

(च) अनुसन्धान के लिए उपलब्ध सुविधाओं की दृष्टि से, और

(छ) अध्यापकों की योग्यता की दृष्टि से,

९—यदि आपके विचारों में उक्त संगठन को शासन द्वारा स्वीकृत विश्वविद्यालय का रूप दिया जाना वांछनीय अथवा सम्भव नहीं है तो उस संगठन का क्या रूप होना चाहिए ?

(क) ऐसे सगठन का संचालन किस प्रकार होना चाहिए?

(ख) ऐसे संगठन में पाठ्यक्रम की एकरूपता कहाँ तक और किस प्रकार लाई जा सकती है ? क्या उसमें कई विकल्पों का समावेश भी किया जा सकता है ?

(ग) ऐसे सगठन में उपाधियों की एकरूपता का होना कहाँ तक आवश्यक है।

(घ) ऐसे संगठनों में छात्रों के आकर्षण का आधार क्या होगा?

कृपया अपने उत्तर नीचे लिखे पते पर भेजिये—

पुस्तक परिचय

समालोचनार्थ पुस्तकों की दो प्रतियां भेजें। —सम्पादक

★

आर्यवीर, मासिक, जालन्धर

सम्पादक श्री मेहरचन्द शर्मा, आर्यवीर कार्यालय, अड्डा होशियार पुर, जालन्धर। साइज २०×३० अठ-पेजी, वार्षिक मूल्य ६) एक प्रति का ॥), पृष्ठ स० ६०

यह वही "आर्यवीर" पत्र है जो पिछले २२ वर्षों में जालन्धर नगर से उर्दू में प्रकाशित हुआ करता था पर राष्ट्र भाषा की उन्नति के लिए पंजाब जैसे प्रान्त मे समय की मांग को देखते हुए इसके प्रबन्धकों ने इसका प्रकाशन अब मासिक पत्र के रूप मे हिन्दी मे प्रारम्भ कर दिया है। पंजाब हिन्दी आन्दोलन के बाद, पत्र के व्यवस्थापक और सम्पादक दोनों का यह प्रयास अत्यत साहसपूर्ण उत्साह-पूर्ण तथा सराहनीय है।

हम यहाँ अगस्त मास के (चौथे) अङ्क के सम्बन्ध मे लिख रहे हैं। अब इस पत्र के द्वारा पूर्व की भांति न केवल वैदिक धर्म और संस्कृति का प्रचार होगा बल्कि राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार में भी उचित सहयोग प्राप्त होगा। प्रस्तुत अङ्क मे हर प्रकार के लेख हैं जो विचार-पूर्ण हैं और स्वाध्याय योग्य हैं। सामयिक समस्याओं पर कुछ लेख बड़े स्पष्ट और निर्भीक शब्दों में लिखे गये हैं जिसकी प्रायः प्रत्येक पत्रों मे इन दिनों हम कमी पाते है। पर वास्तव में पत्रकारिता की यही स्पष्टवादिता और निर्भीकता जनता और देश की सच्ची सेवा है। लाला यशराज जग्गा एडवोकेट फिरोजपुर, पं० सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार गोरखपुर, पं० बुद्धदेव विद्यालङ्कार जालन्धर आदि विद्वानों के लेख इसके उदाहरण हैं। आध्यात्मिक सन्तोष, सामाजिक सुधार, दार्शनिक विचार, सैद्धान्तिक प्रचार, सांस्कृतिक खोज, सामयिक समस्याएं आदि के सम्बन्ध मे भी इस अङ्क मे सुन्दर लेख प्रकाशित हुए है। कविताओं का भी अभाव नहीं है।

इस प्रकार 'आर्यवीर' आर्य जगत् की अच्छी सेवा कर रहा है। अङ्क का मुद्रण साफ और सुन्दर है। विज्ञान जगत्, बाल जगत्, और महिला जगत् आदि स्तम्भों को भी यदि इस पत्र में स्थान मिले, तो यह और उपयोगी सिद्ध हो सकता है। कहीं-कहीं प्रूफ की कुछ अशुद्धियाँ भी हैं जिनका सन्तोषजनक परिमार्जन अपेक्षित है। आशा है आर्य जगत् इस पत्र को नये मासिक के रूप में सोत्साह अपनाएगा।

छात्रों की दुर्दशा

सम्पादक तथा प्रकाशक—स्वामी आनन्द तीर्थ, आर्य समाज भर्थना इटावा, मूल्य एक आना, पृष्ठ सं० १६।

अनेकों नेताओं व विद्वानों के लेखों व वक्तव्यो के आधार पर इस पुस्तिका मे सम्पादक महोदय ने यह दर्शाने का सफल प्रयास किया है कि आज पूरे देश में धार्मिक शिक्षा (कर्तव्य शिक्षा) के अभाव में छात्रों की दुर्दशा हो रही है। विद्या धर्म से शोभा पाती है, अधर्म से नहीं। आज की शिक्षा प्रणाली तो एक बला है। वास्तविकता यह है कि शिक्षा प्रसार के नाम पर आज या तो कालेजों के द्वारा व्यापार किया जा रहा है या टट्टी की ओट मे शिकार किया जा रहा है। अतः इस शिक्षा प्रणाली को प्रारम्भ करना चाहिए। यह इस पुस्तिका का सार है।

गीता में ईश्वर का स्वरूप

लेखक—पं० अमरसिंह जी, अरनियाँ, बुलन्दशहर। प्रकाशक-स्टूडेन्ट बुकडिपो, नयी सड़क दिल्ली। पृष्ठ स० १८, मूल्य =)

पुस्तक छोटी अवश्य है पर वेदादि सत्शास्त्रों से अनेकों उद्धरण देकर काफी विद्वतापूर्ण ढग से लिखी गई है। विद्वान लेखक ने गीता के आधार पर ही बड़ी सफलतापूर्वक यह सिद्ध किया है कि गीता मे योगीराज श्री कृष्णचन्द्र जी ने निराकार ईश्वर का ही प्रतिपादन किया है, साकार का नहीं। सामान्यतया लोग ऐसा समझते है और पौराणिक व धुओं की ओर से भी इस प्रकार का प्रचार किया जाता है कि गीता में साकार

(शेष पृष्ठ ८ पर)

टिप्पणी—उत्तर देते समय कृपया प्रत्येक प्रश्न का सख्या पृथक पृथक लिख कर उनका उत्तर स्पष्ट रूप में शीघ्र प्रेषित करें।

निवेदक—

पता—श्री वीरेन्द्र शास्त्री एम० ए०
मंत्री सार्वदेशिक विद्यार्य सभा
रायबरेली (यू० पी०)

—मंगलदेव शास्त्री एम०ए०डी०फिल
अध्यक्ष गुरुकुलीय विश्वविद्यालय
सगठन उपसमिति
सार्वदेशिक विद्यार्य सभा, देहली
निजी पता—वैदिक स्वाध्याय मंदिर
इंग्लिशिया लाइन, बनारस कैंट

(पृष्ठ ७ का शेष)

ईश्वर का प्रतिपादन किया गया है पर लेखक ने इस विचार का खंडन करके गीता में भी निराकार ब्रह्म का वर्णन होना सिद्ध किया है। अपने पक्ष की पुष्टि में लेखक ने जो प्रमाण दिये हैं, वे अकाट्य हैं। स्वाध्यायशील पाठकों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये।

तपोभूमि

(वेद परिचयाङ्क)

सम्पादक—श्री ईश्वरी प्रसाद प्रेम एम॰ ए॰, वार्षिक मूल्य ४॥) इस प्रति का ॥), पृष्ठ संख्या १०४ पुस्तकाकार।

तपोभूमि आर्य उप प्रतिनिधि सभा मथुरा का मासिक पत्र है जो पिछले ५ वर्षों से सुन्दर विचार देकर आर्य जगत की सेवा करता आ रहा है। प्रस्तुत अंक ६ ७ (जुलाई अगस्त ५८) वेद परिचयाङ्क के रूप में पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ है।

इस अंक का उद्देश्य है सर्वसाधारण को सत्यज्ञान वेदों से सुपरिचित कराना और वेदों के सम्बन्ध में फैली हुई भ्रांतिपूर्ण पौराणिक तथा पाश्चात्य धारणाओं को दूर कराना। हम विश्वास पूर्वक कह सकते हैं कि सम्पादक महोदय इस उद्देश्य में सफल हुए हैं।

वेदों की क्या आवश्यकता है वेद किस प्रकार प्रकट हुए वेद का महत्व क्या है इत्यादि विषयों पर इस अंक में सुन्दर प्रकाश डाला गया है साथ ही यह भी प्रमाणित किया गया है कि वेदों पर आधारित वैदिक धर्म (आर्य समाज जिसका प्रचार करता है) विश्व के सभी मतों की उत्तमताओं का केन्द्र है।

वेद सम्बन्धी जानकारी के लिए यह एक उपयोगी प्रकाशन है।

सभा की सूचनाएं

सूचना

जि॰ अलीगढ़ की समस्त समाजों को सूचित किया जाता है कि श्री ठा॰ श्रवणसिंह प्रचारक सभा समाजों में पहुंचेंगे। समाज इनसे प्रचार का कार्य लें और सं॰ ५७ तक का समस्त सभा प्राप्तव्य धन इन्हें प्रदान करने की कृपा करें तथा रसीद प्राप्त करें।

लेखक का स्वप्न

रामराज्य का विधान

रचयिता—मनीषी धर्मबन्धु आर्य दौताई मेरठ। मूल्य २० नये पैसे, पृष्ठ सं॰ १६।

इस लघु पुस्तिका में लगभग एक दर्जन भजन हैं, जो समाज सुधार, राष्ट्रोन्नति तथा वेद प्रचार के मार्ग में सहायक हो सकते हैं।

माननीय श्री प्रधान जी का भ्रमण प्रोग्राम

सभा के माननीय श्री प्रधान जी श्री पंडित हरिशंकर शर्मा जी आगरा निवासी फर्रुखाबाद नगर में १६ सितम्बर १९५८ को पहुंच रहे हैं। साथ में सभा के उप प्रधान श्री जगनन्दनलाल जी एडवोकेट एवं श्री कालीचरण जी आर्य भी आ रहे हैं। वे फर्रुखाबाद आर्य समाज तथा आर्य कन्या इण्टर कालेज का पुराना विवाद शान्त कराने का यत्न करेंगे। तत्पश्चात् फर्रुखाबाद समाज एवं भोलेपुर, फतेहगढ़ तथा आर्यकुमार सभा आदि में भ्रमण करेंगे। अतः समाजों को चाहिए कि उक्त श्री प्रधान जी का भव्य समारोह पूर्वक स्वागतादि करने की कृपा करें और सभा के लिए पुष्कल धन राशि भेंट करें।

निरीक्षण सूचना

जिलान्तर्गत अलीगढ़ की समस्त आर्य समाजों के मंत्री महोदय एवं आर्य संस्थाओं के संचालकों से निवेदन है कि जिला अलीगढ़ के सभा निरीक्षक एवं उप सभा के मंत्री श्री पं॰ सुवर्णसिंह जी आर्य सिद्धान्त मनीषी ने जिले के समाजों में भ्रमण प्रारम्भ कर दिया है। आप जिस समाज या सभा में निरीक्षण को पहुंचें उनको उचित है कि निरीक्षण कराने में पूर्ण सहयोग प्रदान करें और मृत समाजों के जाग्रत कराने में भी सहायता करें। समयानुसार उक्त निरीक्षक महोदय के भाषणादि की भी व्यवस्था और सभा प्राप्तव्य धन देकर रसीद प्राप्त करने की कृपा करें।

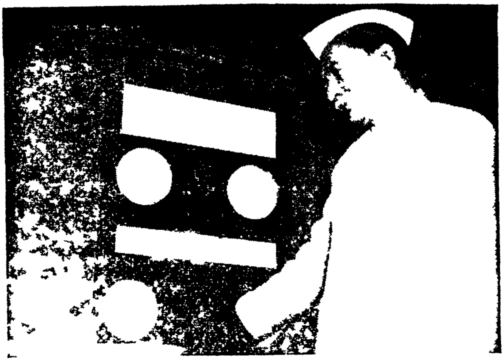
उपदेश विभाग की सूचना

एटा निवासिनी श्री माता जगधात्री देवी जी आर्या ने सभा के द्वारा अवैतनिक रूप से वैदिक धर्म प्रचार कार्य करना प्रारम्भ कर दिया है। उक्त माता जी जिस किसी समाज अथवा महिला समाज में पहुंचें तो उनके भाषणों का आयोजन करने की कृपा करें और मार्ग व्ययादि की व्यवस्था भी किया जावे।

शोक समाचार

सभा के वयोवृद्ध उपदेशक श्री पं॰ सोमदत्त जी शर्मा का दि॰ १८-८-५८ को स्वर्गवास हो गया। उन्होंने लगभग २२ वर्ष सभा की सेवायें कीं। सभा परिवार इस दुःख में उनके परिवार के साथ दुःखी है। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगतात्मा को सद्गति तथा उनके परिवार को शान्ति प्रदान करे।

—सभा मन्त्री



पंजाब राज्य में नांगल के समीप राष्ट्रपति डा॰ राजेन्द्र प्रसाद गंगुवाल पावर हाउस का उद्घाटन कर रहे हैं।



भारतीय हवाई सेना के २७ वें वार्षिक अधिवेशन का चित्र जिसमें वैसक टैनर एयर क्राफ्ट की पंक्ति दिखायी गयी है।

आर्य-जगत

चुनाव समाचार—

—आ०स० भोजपुर,मेरठ चौधरी कंचनसिंह प्रधान धर्मपालसिंह मन्त्री, नवाबसिंह कोषाध्यक्ष।

—आ० स०पुवाया शाहजहांपुर श्री नारायण जी प्रधान, वैद्य गदाधर वर्मा मन्त्री, श्री सतीशचन्द्र गुप्त कोषाध्यक्ष।

—केन्द्रीय आर्य सभा दिल्ली—प्रधान डा० डी० एल० दत्त, मन्त्री श्री रामनाथ भल्ला, कोषाध्यक्ष श्री लालानन्द किशोर जी।

—आ० स० खान आलमपुरा सहारनपुर—प्रधान श्री निहालचन्द जी, मन्त्री श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य, कोषाध्यक्ष श्री रामचन्द्र जी।

—आ० स० दातागंज बदायूं—प्रधान श्री स्वामी वेदानन्द जी, मन्त्री श्री देवेन्द्रनाथ, कोषाध्यक्ष श्री रामेश्वर दयाल गुप्ता।

—आ० स० दानापुर पटना—प्रधान श्री रघुनाथ सिनहा, मन्त्री श्री रामवल्लाप्रसाद आर्य, कोषाध्यक्ष श्री रामप्रसाद बिहारी।

—आ० स० ग्रेजूएट कालोनी नैनीताल—श्री नत्नसिंह जी बी०एस० सी० प्रधान, श्री जगदीश शरण जी बी० एस० सी० मन्त्री, श्री यशपाल सिंह जी बी० एस० सी० कोषाध्यक्ष, श्री रामचन्द्र जी भजनोपदेशक सभा के प्रयास से २१ अगस्त को इस समाज की स्थापना हुई।

—आ० स० प्यारपुर दरभंगा—श्री मिश्रीलाल जी प्रधान, डा० राजेन्द्र प्रसाद सिंह मन्त्री, श्री भवनारायण जी कोषा०।

—दयानन्द पुस्तकालय मानपुर गया—प्रधान श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी, मन्त्री श्री गोपाल प्रसाद आर्य, कोषाध्यक्ष श्री कैलाश शाहू।

—आ० स० शिवाजी चौक खण्डवा—प्रधान श्री रघुनाथसिंह वर्मा, मन्त्री श्री गिरधारी लाल शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री रामनिवास सेठ।

प्रचार समाचार—

—श्री बलवीर सिंह वेदक मेरठ जिले में आर्य समाज का प्रचार कर रहे हैं। भोजपुर में उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की। वहां १० यज्ञोपवीत संस्कार भी कराये।

—जिला सभा लखनऊ की ओर से श्री वेदप्रकाश आर्य प्रचार मन्त्री आर्य वीरदल का ऐशबाग में भाषण हुआ।

—आ० स० मझोला, पारिउना, तहसील घाटमपुर, जिला कानपुर की ओर से २६ जून को प्रचार हुआ। १५ से १९ जुलाई तक ग्राम प्रचार हुआ। २० जुलाई को प्रतिज्ञा दिवस मनाया गया। समाज का नया चुनाव हो गया जिसके मन्त्री श्री रघुवंश सिंह चुने गये हैं।

—जिला सभा गोरखपुर और आ० स० की ओर से राप्ती नदी के तट पर हनुमान गढ़ी मन्दिर में एक मास तक वृहद हवन यज्ञ तथा वेद प्रचार की सुन्दर व्यवस्था की गयी। १५ अगस्त को पूर्णाहुति हुई। इन्हीं समाजों के मन्त्रियों के उपदेश हुए।

—आ० स० सावेर की ओर से १६ जुलाई से १५ अगस्त तक एक महीना वेद और उपनिषदों की कथा हुई। महिलाओं ने विशेष रूप से भाग लिया।

—आ० स० खान आलमपुरा सहारनपुर में प० सुखदेव शास्त्री द्वारा नित्य वेद की कथा होती है।वेद प्रचार सप्ताह में विशेष रूप से उनकी कथा हुई।

—स्वामी जगदीश्वरानन्द परिव्राजक बिहार ने फतुहा,परसा, पटना, लोहानीपुर, बारसलीगंज आदि स्थानों पर वैदिक धर्म का प्रचार किया। श्री धीरेन्द्र शर्मा का भजन भी हुआ।

—आ० स० विधूना इटावा में श्री प्रभुदयाल जी वानप्रस्थी के आ जाने से नियमित रूप से अब सभा कार्य होने लगा है। समाज मन्दिर निर्माणार्थ श्री गंगाचरण सर्राफ ने २५) दान दिया। समाज के लिए ७५ सदस्य बनाये जा चुके हैं। श्री वानप्रस्थी जी फिरोजपुर सेन्ट्रल जेल में बहुत यातनाएं सह चुके हैं।

—आ० स० मोहमदी में श्री महावीर जी भजनोपदेशक द्वारा प्रचार किया गया।

—जिला सभा वाराणसी की ओर से आ० स० जैतपुरा के अन्तर्गत नागकुआं में १९-८-५८ को प० गोपाल शास्त्री दर्शन केसरी, प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प० देवदत्त आचार्य, प० विधानन्द शर्मा आदि के भाषण हुए।

—प० जातेन्द्र शर्मा वानप्रस्थी ने १० दिनों तक वेद कथा द्वारा आ० स० सीतामढ़ी, बिहार में प्रभावशाली प्रचार किया।

—श्री रघुवीर चन्द मेहता वानप्रस्थी ने जिला सभा लखनऊ की ओर से आ० स० नरही में भाषण दिया।

—१५ से १९ अगस्त तक आर्य समाज चौबेपुर, दिवल, मझौली आदि स्थानों में प० रामगोपाल त्रिपाठी ने प्रचार किया। श्री मधुसूदन सरस्वती में उनका शास्त्रार्थ हुआ। वहां श्री दयानन्द बा० प० कृत एक नकली सत्यार्थ प्रकाश पकड़ा गया। श्री मधुसूदन जी के २६ प्रश्नों का उत्तर प० रामगोपाल जी ने दिया पर उनके एक ही प्रश्न पर श्री मधुसूदन जी भाग खड़े हुए। प० रामगोपाल जी को विजय पदक दे कर पुरस्कृत किया गया। फिर मझौली में २८,२९ अगस्त को श्री ज्ञानेन्द्रनाथ अवस्थी व प० सुरेन्द्रनाथ अवस्थी के भाषण हुए।

—आ० स० शाहपुरा द्वारा दयानन्द पाठशाला एवं छात्रावास की स्थापना की गयी। स्वामी शामानन्द जी द्वारा यहां ४ रोज तक 'मानवता' विषय पर भाषण हुआ।

गुरुकुल समाचार—

—गुरुकुल वैद्यनाथ धाम का शिक्षा सत्र प्रारम्भ हो गया है और नये ब्रह्मचारियों का प्रवेश जारी है। गुरुकुल की शाखा जैसीडीह में अभी ५० स्थान शेष हैं वे ब्रह्मचारी जिन्हें गुरुकुल में प्रवेश पाना हो शीघ्रता करें।

—स्वामी दर्शनानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुलों को सूचित किया जाता है कि गुरुकुल ज्वालापुर की हीरक जयन्ती वैशाख मास में मनाई जायेगी। इस अवसर पर निःशुल्क विद्यालयों का सम्मेलन होगा। अतः सभी गुरुकुल अपना सचित्र संक्षिप्त विवरण जयन्ती इतिहास में प्रकाशनार्थ भेज दें। —नन्दकिशोर शास्त्री

मुख्याधिष्ठाता

—गुरुकुल ज्वालापुर की जयन्ती पर स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती का विस्तृत जीवन चरित्र प्रकाशित किया जायेगा। उनके जीवन सम्बन्धी घटनाएं जिन्हें स्मरण हों, प्रकाशनार्थ भेजें। जिनके पास उनके मुद्रित या अमुद्रित शास्त्रार्थ हों वे भी नकल करने के लिए शीघ्र भेज दें। उपयोग के बाद लौटा दिया जायेगा।

—संयोजक, इतिहास समिति

महाविद्यालय, ज्वालापुर

—गुरुकुल अयोध्या की विद्या परिषद का ३३ वां वार्षिकोत्सव २८, २९, ३० अगस्त को मनाया गया। स्वामी त्यागानन्द जी महाराज पिछले नव महीने से रुग्ण हैं। वे सम्प्रति राजकीय सिनेटोरियम भुवाली में हैं और स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

शुद्धि समाचार—

—एक मुसलमान गुंडा अहमदाबाद से एक २२ वर्षीय गुजराती हिन्दू विधवा को ३॥ वर्ष पहले भगा लाया था। ग्राम मकरा, तहसील राजगढ़, जिला अलवर में उसे रखा था। राजगढ़ समाज के मन्त्री श्री इन्द्रगौड़ आर्य वकील ने उस विधवा को गुंडों के पंजे से छुड़ाया और १५ अगस्त को उसकी शुद्धि की क्योंकि वह मुसलमान बनायी जा चुकी थी। फिर १२५) रु० मासिक पाने वाले एक स्वस्थ सुन्दर नवयुवक से उसकी स्वेच्छानुसार उसकी शादी करा दी गयी।

—२४-८-५८ को उप सभा मेरठ की ओर से ग्राम जगठा में ४० ईसाई परिवारों की शुद्धि हुई तथा ग्राम में आ० स० की स्थापना हो गयी जिसके प्रधान श्री अतरसिंह जी, मंत्री श्री तेजपालसिंह और कोषाध्यक्ष श्री मेघराज जी चुने गये।

—श्री बाबूराम कामका एक ब्राह्मण जो अलीगढ़ का निवासी था, बहकावे में आकर मुसलमान हो गया था, २४ अगस्त को आ० स० ठाठया के मन्त्री श्री जगदम्बाप्रसाद चतुर्वेदी के प्रयास से पुनः ससमारोह शुद्ध किया गया। श्री जगदीश चन्द्र शास्त्री ने शुद्धि कराया।

—भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा दिल्ली ने ग्राम जगेठी जिला मेरठ में २४ अगस्त को एक विशाल शुद्धि समारोह आयोजित करके १३१ ईसाइयों को शुद्ध करके पुनः उन्हें स्वधर्म में दीक्षित किया। सर्व श्री मेलाराम जी नारायण दास कपूर, प० शिव दयालु आशानन्द, दर्शनानन्द, दीपचन्द, सत्यपाल शास्त्री, रोहताश जी, जगन्नाथ जी, तेजपालसिंह, दीनानाथ, हरीप्रसाद, प्रेमगिरि आदि महानुभावों के भाषण हुए।

उसी दिन सभा की ओर से ग्राम आमदपुर में भी ९ मुसलमानों की शुद्धि की गयी। प० हरदत्त शर्मा ने शुद्धि करायी। संस्कार में २९५ लोगों ने भाग लिया। सायंकाल एक सहभोज भी हुआ। ठाकुर लोकपाल सिंह, हतसिंह, प० पुत्तूलाल, दामोदर स्वरूप, वेलासिंह, ज्ञानसिंह आदि ने समारोह में भाग लिया।

उत्सव समाचार—

—आर्य समाज कोटद्वार का उत्सव ५, ६, ७ अक्टूबर को होगा। प० प्रकाशवीर शास्त्री संसद सदस्य का भाषण होगा।

—आ० स० पानीपत का उत्सव ३, ४, ५ अक्टूबर को होगा। इसके ५ रोज पूर्व से वेदकथा होगी। उत्सव पर स्वामी रामेश्वरानन्द जी प० प्रकाशवीर जी, प० रामचन्द्र देहलवी आदि पधारेंगे।

वैदिक संस्कार समाचार—

—१० अगस्त को श्री लालाराम श्री गज हुकवारा का पुनर्विवाह आ० स० मन्दिर में हुआ। वर पक्ष ने ५१) आर्यसमाज का तथा स्त्री पक्ष ने ११) रु० स्त्री समाज का दान दिया श्री सहदेव शास्त्री व तीन अन्य पौरोहित पंडितों ने वैदिक रीति से संस्कार कराया।

—श्रावणी के अवसर पर ६आर्य बन्धुओं ने आ० स० शाहपुरा में यज्ञोपवीत संस्कार कराये।

—कठघर पचपेड़ा मुरादाबाद के श्री ओमप्रकाश आर्य एम० ए० द्वि० वर्ष, एल० एल० बी० प्र० वर्ष, का विवाह संस्कार कुमारी सरोज रस्तोगी बी० ए०, एल० टी० मुरादाबाद के साथ पं० गोपीनाथ जी की अध्यक्षता में २ सितम्बर को सानन्द सम्पन्न हुआ।

आर्य वीर दल समाचार—

—समस्त आर्य वीर दलों के अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि वे अपने अपने यहां विजया दशमी उत्सव मनाने की तैयारियां अभी से प्रारम्भ कर दें। विभिन्न प्रतियोगिताएं करके विजेताओं को पारितोषिक दें। श्रद्धानुसार सभी दल को दान दें और दिलावें। नियमानुसार संग्रहीत धन को चार भाग करके यथास्थान (जिला, प्रान्त, केन्द्र) भेजवा दें।

—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी, प्र० संचालक

—आर्य वीर दल के समस्त दीक्षित आर्यवीरों को एक परिवार के रूप में संगठित करने के लिए सार्वदेशिक आर्य वीर दल समिति ने एक योजना बनायी है जिसके अनुसार प्रधान केन्द्र दिल्ली से उन्हें समय समय पर दल सम्बन्धी सूचना, साहित्य, निर्देश आदि भेजा जाया करेगा। अतः सभी दीक्षित आर्यवीर अपना पूरा पता दल के प्रधान कार्यालय—दयानन्द भवन, रामलीला ग्राउंड नयी दिल्ली १ को शीघ्र भेज दें।

—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी प्र० संचालक

—आर्यवीर दल कानपुर—मंडलपति मास्टर नवल किशोर, नगर नायक—श्री ब्रह्ममित्र शास्त्री कार्यालय मन्त्री सुन्दरश्याम कोषाध्यक्ष शिव प्रसाद जी।

—श्री यदुनन्दन दीक्षित हसनगंज पार के निवास स्थान पर आर्य वीर दल लखनऊ की ओर से पारिवारिक यज्ञ हुआ।

—आर्य वीर दल बगहा मीरजापुर—श्री बैजनाथसिंह शाखा नायक, श्री रामदुलारसिंह मुख्य शिक्षक, श्री दयाराम सिंह मन्त्री।

—आर्य वीर दल हसनगंज उन्नाव—पर्व नायक श्री रामशंकर जी शाखानायक श्री गोपीकृष्ण जी, शाखा नायक श्री राजबहादुर जी।

—आर्य वीर दल मीरजापुर के मंडलपति श्री ओम्प्रकाश जी ने हामनपुर बगहा, चुनार आदि स्थानों में भ्रमण करके दल का प्रचार किया। २५ अगस्त को आपने एक विवाह संस्कार भी कराया।

—आर्यवीर दल हसनगंज तहसील जिला उन्नाव—श्री राजबहादुर सिंह प्रधान, श्री चन्द्रधर जी मन्त्री, श्री शिवकुमार बाजपेई कोषाध्यक्ष श्री प्रतापसिंह तहसील नायक।

—आर्य वीर दल पूर्वी क्षेत्र उ० प्र० के उप संचालक श्री अवधबिहारी जी ने मिरजापुर में दल की गतिविधि पर प्रचार किया। मिरजापुर में एक सम्मेलन करना निश्चय हुआ। १९-१० को मीरजापुर में दल की बैठक होगी।

—आर्य वीर दल लवपुरी—श्री फेरनसिंह नगर नायक, श्री चन्द्रभान शर्मा मन्त्री, श्री श्यामबिहारी आर्य कोषाध्यक्ष।

आर्यकुमार सभा समाचार—

—आर्य कुमार सभा कोटद्वार का उद्घाटन श्री रामावतार जी ने किया। श्री राममोहन जी मुरादाबाद के प्रयास से यहां कुमार सभा की स्थापना हुई। अक्टूबर में यहां प्रान्तीय सम्मेलन भी होगा।

—श्री छोटेलाल जी प्रधान आर्य कुमार सभा गढ़ मुक्तेश्वर जहां कहीं भी हों शीघ्र अपने घर आ जाय। परिवार के लोग बहुत दुखी हैं।

—आर्यकुमार सभा कनवरीगंज अलीगढ़—प्रधान श्री दयाशंकर आर्य, मन्त्री श्री मित्रसेन शास्त्री।

—आर्य कुमार सभा गोहाना रोहतक—प्रधान श्री हरिवंश लाल जी, मन्त्री श्री सतीशकुमार जी, कोषाध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र जी।

स्वाधीनता दिवस

१५ अगस्त को निम्न स्थानों पर स्वाधीनता दिवस मनाया गया—श्री आ० स० पूरनपुर गुरुकुल कांगड़ी सहारनपुर, जिला सभा लखनऊ, गुरुकुल अयोध्या, गुरुकुल घटकेश्वर।

हिन्दी आन्दोलन समाचार

बहुअकबरपुर दिवस

पूर्व प्रकाशित स्थानों के अतिरिक्त निम्न स्थानों से पुनः १६ अगस्त को बहुअकबरपुर दिवस मनाने का समाचार मिला है—आ० स० कमालगंज फर्रुखाबाद, धर्मार्थ औषधालय कमालगंज फर्रुखाबाद, आ० स० सीतापुर, आ० स० भनवाल, आ० स० शिकोहाबाद शांति आश्रम लोहारदग्गा बिहार आर्य समाज बिरला लाइन्स दिल्ली आ० स० शेरकोट, आर्य वीर दल उन्नाव, आ० स० फैजाबाद, आ० स० बिधूना इटावा, आ० स० डोईवाला देहरादून आ० स० बैरगनिया मुजफ्फरपुर बिहार आ० स० जौनपुर, आ० स० प्यारेपुर दलसिंह सराय दरभंगा, आ० स० बिन्दकी फतहपुर, आ० स० फतहपुर, बिश्नोई मुरादाबाद आ० स० शाहपुरा।

शहीद सुमेरसिंह बलिदान दिवस

२४ अगस्त को निम्न स्थानों पर सोत्साह शहीद सुमेरसिंह बलिदान दिवस मनाया गया—आर्य उप सभा लखनऊ, आ० स० मेस्टन रोड कानपुर केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर, आ० स० सीतापुर, आ० स० पूरनपुर, आ० स० हरदोई आ० स० धनबाद बिहार, आ० स० शिकोहाबाद, आ० स० दीवानहाल दिल्ली, आर्य वीर दल लखनऊ आ० स० कायमगंज, आ० स० हलद्वानी, आ० स० बिरला लाइन्स दिल्ली, आ० स० शेरकोट, आर्य वीर दल उन्नाव, आ० स० फैजाबाद, दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय, वैदिक साधना आश्रम यमुना नगर अम्बाला, आर्य वीर दल बाखौदा, आ० स० बिसौली बदायूं आ० स० ग्वालियर नगर, आ० स० पूना, आ० स० काशी, आ० स० कांठ मुरादाबाद, आ० स० बिधूना इटावा, आ० स० डोईवाला देहरादून, आ० स० बैरगनिया बिहार, आ० स० गया, आ० स० सदर झांसी, आ० स० चन्दौसी मुरादाबाद, हि० र० स० आर्यसमाज चौक इलाहाबाद, आ० स० जौनपुर, आ० स० गोरखपुर, स्त्री आ० स० गोरखपुर, जिला सभा गोरखपुर, आ० स० जगतपुर बरेली, आ० स० कोशी कलां मथुरा, आ० स० कमालगंज फर्रुखाबाद आ० स० प्यारेपुर दलसिंह सराय दरभंगा आ० स० ठठिया फर्रुखाबाद, आ० स० सासनी अलीगढ़ शांति आश्रम लोहरदग्गा रांची, आर्यकुमार सभा स्टेशनरोड पीलीभीत, आ० स० बुलन्दशहर, आ० स० बिन्दकी फतहपुर, आ० स० शाहदरा दिल्ली, आ० स० फतहपुर बिश्नोई मुरादाबाद, आ० स० शाहपुरा, आर्य वीर दल दादरी बुलन्दशहर।

सार्वदेशिक सभा की सूचना

श्री स्वामी विद्यानन्द जी विदेह अजमेर की पत्रिका में प्रकाशित सूचना के आधार पर विदेश की आर्य जनता में एक बड़ा भ्रम फैल गया है और वह यह कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज ने गत वर्ष अजमेर में आयोजित उनके साधना शिविर की अध्यक्षता करना स्वीकार करली थी परन्तु हिन्दी आन्दोलन के कारण वे उसमें भाग न ले सके। श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज ने साधना शिविर की अध्यक्षता करने की कोई स्वीकृति किसी को नहीं दी थी। आर्य जनता को उपर्युक्त भ्रम में न पड़ना चाहिए। श्री विद्यानन्द जी विदेह पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने जो प्रतिबन्ध लगाया था वह अभी भी स्थिर है। —रामगोपाल सभा मन्त्री

आर्यमित्र हीरक जयन्ती

को

सफल बनाइए

आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और संघटन की सुदृढ़ता

के लिए

एकमात्र साधन 'आर्यमित्र' है

जो साठ वर्षों से निरन्तर मौन साधक के रूप में समाज, राष्ट्रभाषा हिन्दी, साहित्य, धर्म, राष्ट्र और मानव संस्कृति आदि सभी क्षेत्रों में वैदिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने में संलग्न रहा है। सभी क्षेत्रों में आदर्शों की स्थापना ही उसका एक मात्र उद्देश्य रहा है।

यदि आप चाहते हैं कि भविष्य में भी

'आर्यमित्र'

- ★ आर्य समाज के प्रचार
- ★ वैदिक संस्कृति समुद्धार
- ★ सिद्धान्त समर्थन
- ★ नैतिक उत्थान
- ★ निर्भीक आलोचना
- ★ आदर्श पत्रकारिता
- ★ समाज-सुधार
- ★ राष्ट्रभाषा हिन्दी सेवा
- ★ राष्ट्र नव-निर्माण
- ★ विश्व बन्धुत्व
- ★ विश्व शान्ति
- ★ मानव संस्कृति

आदि सभी क्षेत्रों में सामाजिक चेतना जागृत करता रहे तो

आर्यमित्र को समर्थ बनाने में अपना सहयोग प्रदान कीजिए।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती की सफलता आपके सहयोग पर ही निर्भर है। पचास हजार रु० की जयन्ती निधि में अपनी सामर्थ्यानुसार सहायता कीजिए और इष्ट मित्रों से सहायता दिलवाकर पुण्य के भागी बनिए।

आर्यमित्र की उन्नति के इस यज्ञ में पड़ी हुई प्रत्येक आहुति मानवता के नव-निर्माण में सहायक होगी।

संयोजक—'आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति' लखनऊ

सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षायें-सिद्धान्त भूषण, सिद्धान्त विशारद, तथा सिद्धान्त वाचस्पति की उपाधियां दी जायंगी

सार्वदेशिक आर्यवीर दल समिति ने निश्चय किया है कि नवयुवकों में धार्मिक रुचि व ज्ञान उत्पन्न करने के निमित्त डाक द्वारा सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षायें चालू की जांय। सत्यार्थ-प्रकाश के चौदह समुल्लासों से संबंधित कुल चौदह परीक्षायें होंगी। चार समुल्लासों पर चार परीक्षायें पास कर लेने पर परीक्षार्थी को "सिद्धान्त भूषण" दस समुल्लासों पर दस परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने पर "सिद्धान्त विशारद" तथा चौदह समुल्लासों पर सम्पूर्ण चौदह परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने पर परीक्षार्थी को 'सिद्धांत वाचस्पति' की उपाधियां दी जायगी।

परीक्षार्थी की प्रार्थना पर प्रश्न-पत्र प्रधान कार्यालय, दिल्ली से डाक द्वारा भेज दिये जायंगे। परीक्षार्थी अपनी सुविधानुसार सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करके प्रश्न-पत्र के उत्तर लिखकर परीक्षा केन्द्र दिल्ली को भेज देगा। परीक्षा में उत्तीर्ण अनुत्तीर्ण होने की सूचना उसे केन्द्र द्वारा पहुंचा दी जायगी।

परीक्षाओं में प्रत्येक देश, जाति, वर्ग व समुदाय का व्यक्ति भाग ले सकता है। आर्य वीर दल के अधिकारियों व सदस्यों का कर्तव्य है कि वह स्वयं इन परीक्षाओं में भाग लें और अन्यों को भाग लेने के निमित्त प्रोत्साहित करें। इस सम्बन्ध में पत्र व्यवहार परीक्षा मन्त्री श्री जगदेव जा एम० ए०, साहित्य रत्न से दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली के पते पर करें।

—ओम्प्रकाश त्यागी
प्रधान संचालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
भाद्र २३, शक १८८० (१४सितम्बर५८)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ५११३ तार . 'आर्यमित्र'

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

ARYA MITRA
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
ओ३म्
आर्यमित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का साप्ताहिक मुखपत्र

आ० स० की प्रगति साहित्य और प्रेस की उन्नति पर निर्भर

आर्य साहित्य निर्माता विद्वानों का सम्मान कीजिए

प्रेस और पत्र को उच्चकोटि का आदर्श और साधन सम्पन्न बनाइए

राष्ट्र के नव निर्माण और मानव जाति के समुद्धार के वैदिक सन्देश का प्रसार करने में आज भी आर्य समाज से अधिक व्यापक कार्य अन्य कोई संस्था नहीं कर रही है और न अन्य किसी के पास आर्य समाज से श्रेष्ठ कार्यक्रम है, फिर भी यह अनुभव किया जाता है कि हमारे व्यापक प्रचार प्रसार और प्रभाव की जनता को पूरी जानकारी नहीं मिल पाती है और जानकारी के अभाव में आर्य समाज जैसी रचनात्मक संस्था के महत्त्व का राष्ट्रवासी, विश्ववासी उचित मूल्याङ्कन नहीं कर पाते हैं। इस वर्तमान अवस्था में परिवर्तन लाने की भावना से इस वर्ष सभा ने साहित्य और प्रेस को आदर्श बनाने की योजना आर्य जगत् के सम्मुख प्रस्तुत की है।

आदरणीय श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम०ए० और श्री पं० गंगाप्रसाद एम० ए० (रि० चीफ जज) ने आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए अनेकों अमूल्य रचनाएं भेंट की हैं। इन विद्वानों का सम्पूर्ण जीवन लेखनी और वाणी द्वारा आर्यसमाज का सन्देश प्रसारित करने में ही बीता है। उन्होंने अपने जीवनों को आर्यसमाज के निमित्त मौन समर्पण कर आर्य मात्र के लिए सन्देश दिया है, अन्तिम क्षण तक जीवन में चरैवेति चरैवेति का पालन करो।

स्वर्गीय श्री पं० लेखराम और श्री पं० चमूपति जी के पश्चात् आर्य साहित्य सृजन में इन दोनों महारथियों ने सर्वाधिक योग दान किया है। आर्य जन वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार के लिए साहित्य निर्माण के महत्व को समझ सकें और प्रेरणा प्राप्त कर सकें, इसके लिए दोनों विद्वान आर्य नेताओं का अभिनन्दन एक उचित और सामयिक पग है। अभिनन्दन योजना वास्तव में आर्य साहित्य निर्माण योजना के रूप में ही सफल हो सकेगी। श्री उपाध्याय जी ने इस दिशा में विदेशी भाषाओं में अनुवाद का प्रस्ताव भी आर्य जगत् के सम्मुख प्रस्तुत किया है। क्या हम वास्तविक साहित्य प्रचार की भावना से प्रेरित होकर अभिनन्दन आयोजन को सफल बनाने में सहायक बनेंगे या बन रहे हैं? इस प्रश्न का उत्तर ही योजनाओं के प्रति आपकी उत्सुकता को प्रमाणित करेगा। वैदिक साहित्य निर्माण की प्रेरणा और उसके लिए सम्मिलित प्रयत्न ही वास्तव में आर्य विद्वानों का सच्चा अभिनन्दन होगा।

आर्य समाज की गति विधियों, योजनाओं, कार्यक्रमों और कार्य कलापों आदि का सन्देश पहुंचाने तथा सभी प्रकार की समस्याओं पर आर्य सामाजिक दृष्टिकोण से विचार विमर्श करने, अनुचित नीतियों का विरोध करने तथा जनता का सत्य पथ प्रदर्शन करने के लिए 'आर्यमित्र' निरन्तर साठ वर्ष से मौन सेवा करता रहा है। आर्यसमाज का पत्र इतना व्यापक हो कि उसके विचार विश्व के कोने-कोने तक पहुंच जाय, आर्यमित्र के द्वारा आर्यसमाज की नीतियों की सर्वत्र जन जन में चर्चा हो, तब आर्यसमाज की चहुमुखी उन्नति सम्भव हो सकेगी।

यदि इच्छामात्र से सब कार्य हो जाते तो संसार में परिश्रम, त्याग तपस्या की आवश्यकता न होती परन्तु अपनी शुभ भावनाओं, कल्पनाओं और योजनाओं की पूर्ति के लिए सब तमना जुट जाने से ही सफलता मिल सकती है। आर्यमित्र हीरक जयन्ती ऐसा ही सुअवसर है जब हम अपनी इच्छाओं को साकार रूप देने में सफल हो सकते है।

यद्यपि योजनाएं व्यापक हैं और समस्त आर्य जगत् से सम्बद्ध है तदपि उत्तर प्रदेश के आर्यों का दायित्व बहुत अधिक बढ़ जाता है। आवश्यकता है लगन, योग्यता और सामर्थ्य को एकत्र कर कार्य में जुट जाने की। देखें पचास हजार रु० की जयन्ती निधि में कौन पहल करता है और अग्रगामी होने का गौरव प्राप्त करता है।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती पृष्ठ

आर्यमित्र हीरक जयन्ती तथा श्री पंण्डित गगाप्रसाद उपाध्याय व श्री पण्डित गंगाप्रसाद रि० चफ जज अभिनन्दन और श्री गुरु विरजानन्द स्मारक मथुरा का शिलान्यास सम्बन्धी विचार और सुझाव प्रकाशित करने के लिए यह पृष्ठ निर्धारित कर दिया गया है। आर्य विद्वानों तथा जनता के विचारों का हम सहर्ष स्वागत करेंगे। —सम्पादक

आर्यमित्र की हीरक जयन्ती

किस प्रकार मनायी जाय

(श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, ज्वालापुर)

श्री शास्त्री जी ने जो सुझाव दिए हैं, वे बहुत उपयोगी हैं, आशा है सम्बन्धित अधिकारीगण जयन्ती की सफलता के लिए उनसे लाभ उठावगे। सम्पादक

इसमें स देह नहीं है कि आर्यमित्र आर्य जगत् का सबसे पुराना प्रख्यात साप्ताहिक पत्र है और इसके द्वारा आर्य समाज के सिद्धान्तो का प्रचुर प्रचार हो चुका है और हो रहा है—केवल आर्य समाज का ही प्रचार नहीं हुआ, अपितु हिन्दी प्रचार क्षेत्र में भी इसने बडा काम किया है—इस दृष्टि से विचार किया जाय तो मैं सुझाव दू गा कि आर्यमित्र की हीरक जयन्ती निम्न प्रकार से मनायी जावे—एक सुन्दर सचित्र बृहत्काय विशेषाङ्क प्रकाशित हो।

(१) प्रारम्भ से लेकर अब तक जितने सपादक हुए हैं उनके सक्षिप्त सचित्र जीवन चरित्र (जो दो दो पृष्ठ से अधिक न हों) छपाये जावें।

(२) आर्यमित्र के गत स ठ वर्षों मे जितने प्रकाशक, अधिष्ठाता हो चुके हैं उनके सक्षिप्त परिचय दिए जावें (एक एक पृष्ठ का)।

(३) पिछले साठ वर्ष के आर्यमित्र के प्रत्येक वर्ष के उच्चकोटि के एक-एक दो दो लेख छाँटकर उनके सक्षेप लेखक के नाम के साथ दिये जायें।

(४) गत साठ वर्षों में आर्यमित्र का जिन्होंने सबस अधिक सेवा की है उनके लेखा के निर्देश के साथ नामोल्लेख किये जावे सचित्र।

(५) पिछले साठ वर्षों म जितनी उच्चकोटि की कविताएँ छपी हे उनको दिया जावे।

(६) आर्य समाज के तथा आर्य समाजेतर क्षत्र के विद्वान्, लेखक, सपादकों का आर्यमित्र की सेवाओं के विषय में सम्मतिए मगा कर इस विशेषाङ्क में छापी जाय (समात ५ पक्तियो स अधिक न हों)।

(७) आर्य समाज ने जब जब सत्याग्रह किया तब-तब के विवरण (८८ पृष्ठ से अधिक न हो) रहें।

(८) बीच बीच म आर्यमित्र ने जब विशेष अथवा दैनिक रूप धारण किया उसका सक्षिप्त विवरण भी रहे इसके अतिरिक्त—

इस विशेषाङ्क की यह विशेषता रहे कि

आर्य समाज के वर्तमान उत्कृष्ट लेखको के और कवियों के उत्तम लेख और कविता (एक एक, विषय पर, लेख जो १०० पक्तियों से अधिक न हो—कविता २० पक्ति से अधिक न रहे, भिन्न भिन्न विषय पर) जैसे—

१—आर्य समाज और वैदिक धर्म
२—आर्य समाज और दश नियम
३—आर्य समाज के मन्तव्य
४—आर्य समाज और स्त्रीशिक्षा
५—आर्य समाज और सस्कृत विद्या,
६—आर्य समाज और ससार का उपकार।
७—आर्य समाज और देशभक्ति
८—आर्य समाज और हिन्दी प्रचार
९—आर्य समाज और हिन्दी साहित्य
१०—आर्य समाज का भविष्य
११—आर्य समाज का वर्तमान
१२—आर्य समाज का भूत
१३—आर्य समाज में कालकृत दोष
१४—आर्य समाज और राजनीति

पृथक् पृथक् एक एक लेख ५० ५० पक्ति का।

इस प्रकार चुने हुए विषय हो। लेख किसी भी दशा म १०० पक्ति से अधिक न हो।

इसके अतिरिक्त भारतवर्ष के समस्त प्रमुख विद्वान् तथा भिन्न भिन्न सप्रदायों के प्रमुखों की सम्मतिए (आर्य समाज के विषय मे) मगा कर छपाई जाँय अविकल रूप में, चाहे उनमे आर्य समाज की निन्दा हो अथवा स्तुति हो अथवा आक्षेप हो। उनको लिखा जाय कि वे स्पष्ट रूप में सम्मति लिखें, अवश्य छापेंगे।

इसके अतिरिक्त

आर्य समाज के अर्थात् जगत् के दिवगत महानुभावों के चित्र (दो दो लाइन म विशेष गुणोल्लेख के साथ) रहें।

इसके अतिरिक्त

आर्य जगत की प्रमुख सस्कृतोद्धारक सस्थाओं का परिचय रहे—कागडी, वृन्दावन, महाविद्यालय ज्वालापुर, देहरादून, सासनी आदि। साराश इस प्रकार से आर्यमित्र की हीरक जयन्ती मनायी जाय कि जनता आर्यमित्र की ओर आकृष्ट होकर उसकी स्थायी सख्या कम से कम ५००० तो हो ही जाय।

भविष्य के लिए

इस प्रकार निर्धारित किया जाय कि आर्यमित्र प्रचार रूप मे जिस रूप म अब निकलता है, निकलता रहे पर आर्यमित्र (मासिक) साहित्यिक तथा सैद्धान्तिक रूप में भी सर्वोत्कृष्ट ढग का निकले। उसमे प्रचार का ढग तनिक भी न रहे। वह विद्वानों का मासिक रहे। ऐसे मासिक के बिना आर्य समाज जैसे समाज मे विद्वत्ता का अभाव सा लगता है।

इस प्रकार जो जो विचार मुझे सूझ रहे हैं लिख रहा हु। आगे आर्यमित्र हीरक जयन्ती की समिति विचार करे।

यद्यपि आर्यमित्र आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का प्रमुख पत्र है तथापि वह जिस दशा मे भी चल रहा है, जैसा भी चल रहा है आर्य जगत् का माना जाता है। उसको सच्चे अर्थों में आर्य जगत् का प्रमुख पत्र बनाए रखने का प्रयत्न होना आवश्यक है। ★

प्रकाशित होने वाले साहित्य की रूपरेखा के विषय में हीरक जयन्ती तथा अभिनन्दन उप समिति का निश्चय

विषय सं० ७

आर्यमित्र विशेषाक, अभिनन्दन ग्रन्थ और गुरु विरजानन्द स्मारक साहित्य के स्वरूप पर विचार।

निश्चय सं ७

निश्चय हुआ कि सभी आयोजन उच्चस्तर पर हो तथा सम्बन्धित साहित्य उच्चकोटि का तैयार किया जाना चाहिए।

(अ) आर्यमित्र—

आर्यमित्र का हीरक जयन्ती विशेषाक निकाला जाय जिसमे आर्यमित्र का इतिहास, उसकी हिन्दी तथा सामाजिक सेवाए, आर्यमित्र के लिए भावी योजनाए आर्यसमाज के नवीन कार्यक्रम और सिद्धात सम्बन्धी लेख हों।

अभिनन्दन ग्रन्थ—

(आ) श्री पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय एम. ए.

जीवनी, परिवार परिचय, आर्य समाज, आर्य साहित्य तथा हिन्दी सेवाओं आदि का उल्लेख करते हुए विद्वानों की सम्मतियां और आर्य सिद्धान्तो सम्बन्धी लेखों से युक्त अभिनन्दन ग्रन्थ का निर्माण कराया जाय।

(इ) श्री पं० गगाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज

जीवनी, परिवार परिचय, आर्य समाज, आर्य साहित्य सम्बन्धी सेवाओं का उल्लेख करते हुए विद्वानों की सम्मतियों और आर्य सिद्धान्तो से युक्त अभिनन्दन ग्रन्थ का निर्माण कराया जाय।

(ई) श्री गुरु विरजानन्द स्मारक

श्री गुरु विरजानन्द व ऋषि दयानन्द दोनों के मथुरा जीवन सम्बन्धी सस्मरण सकलन, उनके आदर्श गुरु शिष्य सम्बन्ध, भावी भारत के निर्माण के लिए उनके पवित्र सन्देश सम्बन्धी साहित्य तथा स्मारक सम्बन्धी सुझावो से युक्त प्रचार साहित्य का निर्माण कराया जाय।

सयोजक

आर्यमित्र हीरक जयन्ती अभिनन्दन तथा विरजानन्द स्मारक उप समिति

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

वेदोपदेश

सध्रीचीनाम् व: समनसस्कृणोम्येकश्नुष्टीन्त्संवननेन सर्वान्।
देवा इवामृतं रक्षमाणा सायं प्रात: सौमनसो वो अस्तु ॥
—अथर्व० ३।३०।७

मैं तुम सबको परस्पर मिलकर चलने वाले (मित्र) एक मन रखने वाले, एक दूसरे की सहायता करने वाले, होने का प्रेम के साथ उपदेश करता हूं। विद्वानों के समान अमरत्व (मोक्ष मार्ग) की रक्षा करते हुए तुम सायकाल और प्रात काल (एक दूसरे के प्रति) अच्छे मन वाले (प्रेम करने वाले) रहो।

आर्यमित्र

लखनऊ—२१ सितम्बर १९५८, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि सवत १९७२९४९०५९

खाद्यान्न समस्या और नैतिकता

आज सारे भारत में खाद्यान्न समस्या ने एक विषय परिस्थिति उत्पन्न कर दी है। जब उत्तर प्रदेश जैसे राज्य मे अन्न के भाव २५ से ३०) रु० मन तक चढ़ जाय तो कमी वाले राज्यों की क्या अवस्था होगी, स्वय अनुमान किया जा सकता है।

समस्या को सुलझाने के लिये सरकार और जन नेताओ की ओर से प्रयत्न आरम्भ हो रहे हैं। विरोधी इस सम्बन्ध म सरकार का नीति का विरोध करने के लिए आन्दोलन भी कर रहे हैं, राष्ट्रपति और प्रधान मन्त्री राष्ट्र के नाम घोषणाओ द्वारा जनता से सहयोग की अपील भी कर चुके ह।

जहाँ तक हम स्थिति का मूल्याकन कर सके हैं हमारा विचार और अनुमान है कि यदि प्रशासन ने तत्परता और जन हित भावना का परिचय दिया तो समस्या अस्थायी रूप से कुछ समय के लिए सुलझ जायगी जिसमे जनता अपने जीवन की आशा रख सकेगी। समस्या के सुलझाने में जो भी सहायक हों वे सभी जनता जनार्दन बधाई के पात्र होंगे।

इस अवसर पर हम समस्या को एक दूसरी दृष्टि से देखने का आग्रह करेंगे। आशा है हमारे पाठक उस रूप पर विचार करेंगे। क्या खाद्य समस्या प्राकृतिक या कृत्रिम, क्या राज्य और केन्द्र की परस्पर परमुखापेक्षिता की भावना इस परिस्थिति के लिए उत्तरदायी नहीं है?

क्या हमारा चरित्र पतन इस समस्या का मूल कारण है? उपर्युक्त प्रश्न चिन्हों का उत्तर खोजने के लिए हमें राष्ट्र के चरित्र की मीमांसा करनी चाहिए। हम तो वर्तमान परिस्थिति को कृत्रिम मानते हैं और इस कृत्रिमता का अर्थ हमारे व्यापारी वर्ग में जमाखोरी की स्वार्थ भावना है। इसी प्रकार जिन लोगों को सस्ते गल्ले की दुकानों का लाइसन्स दिया गया है उनकी चोर बाजार की मनोवृत्ति तथा भ्रष्टाचारी अफसरों का प्रश्रय इस समस्या का कारण है।

इस सक्षिप्त विवेचन से हम इसी परिणाम पर पहुचते हैं कि हमारे व्यापारी, लाइसैन्स होल्डर और सरकारी अफसर सब मिलकर जनता की लाश पर रोम के नीरो बने हुए ऐश की वशी बजा रहे ह। वे ऐसा करने का साहस क्यो और कैसे कर सके हैं इसका उत्तर एक शब्द मे यही है कि आज हमारा जीवन दर्शन भोगवादी भौतिकवादी बन चुका है। इस सबका कारण दूषित शिक्षा और पश्चिम का अन्धानुकरण है। यदि इस ओर राष्ट्र चिन्तक राष्ट्र निर्माता ध्यान दे तो समस्या का स्थायी हल हो सकेगा। देश मे उत्पादन वृद्धि की योजनाए सफल होंगी, जन सख्या भी बढ़ेगी पर साथ ही स्वार्थपरता और अनैतिकता भी बढ़ेगी। यदि राष्ट्र इस बाढ़ को रोक सके तो प्राकृतिक खाद्याभाव सकटों का एक नहीं अनेकों बार सामना कर सकेगा। आशा है इस समस्या के नैतिक पक्ष पर अधिक गम्भीरता पूर्वक विचार किया जायगा। आर्य समाज जैसी नैतिकोत्थान के लिए प्रयत्नशील संस्था इस दिशा में राष्ट्र को नेतृत्व प्रदान करे। इस भावना से उपर्युक्त विचार प्रस्तुत किये गये हैं।

हैदराबाद आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, आर्य नेता
श्री पं० नरेन्द्र जी का उत्साह वर्द्धक-पत्र

[सभा की हीरक जयन्ती और अभिनन्दन आदि की योजनाओ का आर्यजगत् मे जिस प्रकार स्वागत किया जा रहा है यह पत्र से स्पष्ट है। उत्तर प्रदेश के आर्य बन्धु अन्य प्रान्तो के उत्साह और समर्थन को देखते हुए अपने कर्तव्य पालन में जुट जाय और योजना को सफल बनाए। यही इस पत्र से प्रेरणा लेनी चाहिए।
—सम्पादक]

उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० हरिशङ्कर शर्मा के एक पत्र के उत्तर में आर्य प्रतिनिधि सभा (मध्य दक्षिण) आन्ध्र प्रदेश हैदराबाद के प्रधान कर्मवीर कर्म केसरी श्री प० नरेन्द्र जी ने सभा की योजनाओं का हार्दिक स्वागत करते हुए हाल ही में निम्नलिखित उत्साह वर्द्धक दूसरा पत्र लिखा है —

"आर्यमित्र की हीरक जयन्ती और आर्य विद्वानो के अभिनन्दन इन दोनो कार्यों के निमित्त हमारी सभा की ओर से बराबर आर्थिक सहयोग दिया जायगा। इस सम्बन्ध में हमने अपनी सभा मे सम्बद्ध समस्त समाजो को परिपत्र भेज दिए हैं और हम इस दिशा में पूर्ण उद्योग करेंगे।

सर्वश्री माननीय गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय तथा श्री गङ्गाप्रसाद जी (रिटायर्ड चीफ जज) ने आर्यसमाज की अनगिनत सेवाए की ह। साहित्य क्षेत्र म इनके द्वारा की गई सेवाए सदा आर्यजगत में चिर स्मरणीय रहेगी। इनकी सेवाओं का मान सम्मान यथोचित होना ही चाहिए।

आर्यमित्र साप्ताहिक प्रारम्भ से ही सम्पूर्ण आर्यजगत् की सेवा कर रहा है, इसमें सन्देह नहीं है। आर्यमित्र आर्यजगत् का एक बहुत ही पुराना और लोकप्रिय प्रसिद्ध पत्र है। उसकी सेवाए कभी भी भुलाई नहीं जा सकतीं।

मैं पूरा पूरा प्रयत्न कर उचित राशि आपकी सेवा में भेजने की व्यवस्था करूगा।"

स्वर्गीय श्री पं० वस्तीराम जी

हमारा दुर्भाग्य है कि पुरानी पीढ़ी के कर्मठ आर्य हमारे बीच से शनै शनै उठते जा रहे हैं। सम्पूर्ण आर्य जगत् में यह समाचार शोक के साथ सुना जायगा कि आर्यसमाज के यशस्वी एव वयोवृद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री प० वस्तीराम जी (हरियाणा निवासी) अब इस ससार में नहीं रहे। उनका जन्म १८९८ विक्रमी स० में हुआ था अर्थात् मृत्यु के समय आजकल वे ११६ वर्ष के थे। आदरणीय पडित जी ने ऋषि दयानन्द के दर्शन किये थे और उनसे शकाओं का समाधान किया था। आर्य बन्धुओं को स्मरण होगा कि मथुरा जन्म शताब्दी के अवसर पर उन्होंने ऋषि के साथ वार्तालाप के सस्मरण सुनाये थे। जीवन पर्यन्त वे आर्य समाज के विचारो का अपने भजनो और क्रियात्मक जीवन द्वारा प्रचार करते रहे। सारा आर्य जगत् उनकी दीर्घ कालीन सेवाओं के लिए उनका सदैव ऋणी रहेगा। दिवगत आत्मा के प्रति मित्र परिवार की ओर से श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए उनकी सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

उपाध्याय जी की जयन्ती उपाध्याय जी के शब्दो में

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के निश्चयानुसार आर्य जगत् के यशस्वी विद्वान श्री प० गगाप्रसाद उपाध्याय जी की जयन्ती आगामी गुरुकुलोत्सव पर वृन्दावन मे (सम्भवत दिसम्बर या जनवरी में) मनायी जायगी। सभा की ओर से तैयारियाँ आरम्भ हो गई हैं। इसी बीच श्री उपाध्याय जी ने अपने विचार आर्य जगत् के सामने प्रस्तुत किये हैं (पृष्ठ १९ पर देखिये) और चाहा है कि उनकी जयन्ती १९६१ म मनायी जाय साथ ही उसका लक्ष्य सत्यार्थ प्रकाश के पूर्वार्ध का किसी एक विदेशी भाषा मे अनुवाद प्रकाशन हो।

श्री उपाध्याय जी ने एक विरक्त भावना के साथ अपने अभिनन्दन का समर्पण ऋषि साहित्य के लिए करना चाहा है।

हम उपाध्याय जी की इस भावना का पूर्ण समर्थन और आदर करते हैं कि सत्यार्थप्रकाश का विदेशी भाषाओं में अनुवाद अवश्य और शीघ्र कराया जाय। हमारी सम्मति मे उपाध्याय जी के आयोजित अभिनन्दन समारोह से पूज्य उपाध्याय जी की इस भावना

(शेष अगले पृष्ठ पर)

सभा की सूचनाएं

सभास्थ अन्तरङ्ग सदस्यों की सेवा में नम्र-निवेदन

सभास्थ अन्तरङ्ग सभासदों तथा निरीक्षक महानुभावों एवं उपदेशक प्रचारकों से निवेदन है कि वेद प्रचार सप्ताह अभी समाप्त हुआ है। इस सप्ताह में सभा की ओर से भ्रमणपत्रिका भेजकर प्रार्थना की गई थी कि इस वर्ष सभा की आर्थिक अवस्था को देख कर वेद प्रचार की सहायतार्थ धन संग्रह करके सभा में भेजने की कृपा करें। सभा को यह ज्ञात कर प्रसन्नता हुई है कि कुछ समाजों ने इस ओर विशेष ध्यान दिया और सभा को पर्याप्त धन संग्रह करके भेजा है। अतः आप सब सदस्यों से प्रार्थना है कि यह धन शीघ्र से शीघ्र अपने क्षेत्र की समाजों से एकत्रित करके सभा में भिजवाने का प्रयत्न करेंगे। अभी तक जिन सदस्यों ने स्वयं अथवा धन संग्रह करके १००) रुपये नहीं भिजवाए हैं वे कृपया अपने अपने क्षेत्रों में भ्रमण करके रुपया संग्रह कर सभा कार्यालय को भेजकर अपना कोटा पूरा करने का कष्ट करें।

निरीक्षक महोदयों से प्रार्थना है कि वे शीघ्र से शीघ्र अपने प्रान्त के समाजों का निरीक्षण करके और हिन्दी रक्षा निधि तथा वेद प्रचार निधि व सन् १९५७ तक का शेष दशांश सूक्ष्मादि आदि प्राप्तव्य धन जिनकी सूची उनके पास भेजी जा चुकी है, भेजने की कृपा करें।

अब तक जिन सदस्यों तथा पदाधिकारियों द्वारा धन प्राप्त हो चुका है—उनके नाम इस प्रकार हैं।

१—श्री पं० हरिशङ्कर शर्मा जी आगरा सभा प्रधान।
२—श्री युवराज रणञ्जयसिंह जी पूर्व प्रधान सभा।
३—श्री कालीचरण जी आर्य सभा उप प्रधान, ४—+श्री पूर्णचन्द्र जी सभा उप प्रधान, श्री जगनन्दनलाल जी सभा उप प्रधान।
५—श्री फूलनसिंह जी सभामन्त्री, ६—श्री ईश्वरदयालुजी मुख्य उपमन्त्री सभा, ७—श्री रामजीप्रसाद जी गुप्त कोषाध्यक्ष। ८—श्री कृष्णबलदेव जी स०कोषाध्यक्ष
९—श्री रघुनन्दन स्वरूप जी सहा० पुस्तकाध्यक्ष मेरठ।
१०—श्री रामावतार जी जौनपुर, ११—श्री श्यामलाल जी मेरठ
१२—श्री शिवलाल जी आर्य बुलन्दशहर। १३—श्री रतनसिंह जी गाजियाबाद
१४—श्री विश्वेश्वरनाथ जी वर्मा लखनऊ, १५—श्रीमती सुशीलादेवी चौधरी लखीमपुर, १६—श्री मोहनलाल जी आर्य आगरा, १७—श्री रामबहादुर जी पूरनपुर, १८—+श्री दयाराम जी, १९—+श्री कृष्णमुरारी लाल जी, २०—+श्री विश्वनाथ प्रसाद जी, २१—+श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री जी, २२—+श्री डा० शिवदत्त जी, २३—+श्री मदनमोहन वर्मा जी २४—+श्री चौ० तेज सिंह जी, २५—+श्रीमती सावित्री देवी जी।

टि०—+ ऐसे निशान लगे सदस्यों का आंशिक धन ही प्राप्त हुआ है।

आशा है कि जिन अधिकारियों अथवा अन्य सदस्यों ने कुछ भी सहायता नहीं की है, वे इस मास में अपने अपने क्षेत्रों में भ्रमण करके १००) १००)रु० की राशि को पूरा करने का पूर्ण प्रयत्न करेंगे और जिनका आंशिक रूप में धन प्राप्त हुआ है वे भी कृपया शेष धन भेजने का कष्ट करेंगे।

हमको पूर्ण आशा है कि इस वर्ष कोई भी ऐसा अन्तरङ्ग सभासद् नहीं रहेगा जिसके नाम के आगे रिपोर्ट में निश्चित धन राशि अङ्कित न हो।

—फूलनसिंह सभा मन्त्री

उत्तरप्रदेश में वेद प्रचार

वेदप्रचार सप्ताह में सभा के उपदेशक तथा प्रचारक प्रदेश की विभिन्न समाजों में प्रचार कार्य करते रहे हैं। भविष्य में सितम्बर मास में उनका प्रोग्राम निम्न प्रकार है।

स०	नाम उपदेशक	किस स्थान में	कब से कब तक
१—	श्री ओम्प्रकाश जी शास्त्री	आ०स० मसूरी	१४ से १७ सितम्बर
२—	,, राजाराम जी शास्त्री	,, सिरसा	१० से १५ ,,
३—	,, भद्रपाल जी प्रचारक	,, मसूरी	१४ से १७ ,,
४—	,, धर्मदत्त जी आनन्द	,, किरतपुर	१० से १७ ,,
५—	,, धर्मराजसिंह	,, सिरसी	१० से १५ ,,

शेष प्रचारक व उपदेशक विभिन्न जिलों में प्रचार कार्य पर नियत हैं।

—अधिष्ठाता उपदेश विभाग

भ्रमण पुरोगम

सभा मन्त्री श्री ठा० फूलनसिंह जी के भ्रमण पुरोगम इस प्रकार प्रकाशित किये जाते हैं। समाजों को चाहिए कि उनका स्वागत करें और सभा के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करें। साथ में श्री जगनन्दन लाल जी एडवोकेट सभा उप प्रधान एवं श्री कृष्ण मुरारीलालजी अन्तरङ्ग सदस्य प्रयाग भी होंगे।

२६ सितम्बर सन् ५८ जौनपुर
२७-२८ सितम्बर—बनारस
२९— ,, ज्ञानपुर
३०— ,, इलाहाबाद
१—अक्टूबर लखनऊ

—प्रेमचन्द्र शर्मा सभा उपमन्त्री

सभा श्री कोषाध्यक्ष जी रुग्ण हैं!

आर्यजगत को यह ज्ञात कर दुःख होगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कोषाध्यक्ष श्री रामजी प्रसाद गुप्त मुगलसराय (वाराणसी) में फायलेरिया रोग से अकस्मात गत मास में रुग्ण हो गये थे। प्रभु की दया से इस रोग से मुक्त तो हो गये हैं। किन्तु निर्बलता बहुत अधिक आ गई है—अभी एक मास तक विश्राम करने के लिए डाक्टरों ने परामर्श दिया है। अतः इस कारण वेद प्रचार तथा आर्य वीर दल के कार्यों में नहीं आ सके हैं। आगामी मास में भ्रमण की प्रतीक्षा करें।

निरीक्षण कार्य

सभा की मुख्य निरीक्षिका श्री हेमलता देवी जी आर्योपदेशिका मास सितम्बर ५८ के अन्तिम सप्ताह में निम्न लिखित आर्य की समाज एवं संस्थाओं का निरीक्षण एवं प्रचार कार्य करेंगी। उनके पहुँचने पर निरीक्षण कार्य में सहयोग और प्रचार कराने की उचित व्यवस्था करने की कृपा करें।

सीतापुर, लखीमपुर, गोला, पूरनपुर, पीलीभीत, बरेली (बिहारीपुर मूढ़) चन्दौसी, बहजोई तथा अतरौली

—सभा मन्त्री

मैं पूर्ववत प्रसन्न हूँ

१२ जुलाई को मेरे घर चोरी हो गयी थी। बरतन, जेवर, कपड़े, नेशनल सेविंग सार्टिफिकेट आदि सब करीब ५ हजार रुपये का माल चला गया। इस पर मेरे किसी प्रेमी मित्र ने इस समाचार के साथ आर्यमित्र में यह भी छपवा दिया था कि आर्य जन मेरी समुचित सहायता करें। पर ऐसी अपील तो दीन दुखियों के लिए की जाती है। मेरे ऊपर इस चोरी काण्ड का कोई प्रभाव नहीं है। मैं पूर्ववत सानन्द और निश्चिन्त हूं। मैं मानवी दया का प्रार्थी नहीं हूं। मुझे ईश्वर पर विश्वास है। चाहे सब कुछ चला जाय बुद्धि ठीक रहनी चाहिए। सहानुभूति दर्शाने वाले बन्धुओं को हार्दिक धन्यवाद है। —बिहारीलाल शास्त्री

[पिछले पृष्ठ का शेष]

का व्यापक प्रचार होगा और सबका ध्यान इस ओर आकृष्ट हो सकेगा और इस सम्बन्ध में धन संग्रह आरम्भ कर विदेशी भाषाओं में अनुवाद का कार्य आगे बढ़ाया जा सकेगा। एक महान् साधक और ऋषि भक्त के रूप में उपाध्याय जी ने जो प्रस्ताव रक्खा है उसके साहित्यांश की पूर्ति का पूर्ण प्रयत्न शीघ्र आरम्भ होना चाहिए और इसी लक्ष्य की पूर्ति की दृष्टि से हम पूज्य उपाध्याय जी से भी प्रार्थना करेंगे कि वे आयोजित अभिनन्दन के समय को बढ़ाने का आग्रह न करें। हम तो समझते हैं उपाध्याय जी का जितना भी अभिनन्दन किया जाय थोड़ा होगा।

इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप में उत्तर प्रदेश के आर्यों के ऊपर अपने महान् दार्शनिक विद्वानों की भावनाओं का आदर करने और उन्हें सफल बनाने का महान् दायित्व आ पड़ा है। आशा है वे अपने कर्तव्य का पालन करेंगे।

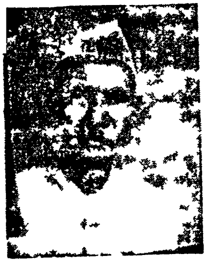
आर्य जन आलस्य छोड़ें

सभा की योजनाओं की घोषणा हो चुकी और कार्य आरम्भ कर दिया गया है पर अभी तक जिस रूप में और जिस जोश के साथ कार्य आरम्भ होना चाहिए था, नहीं हो सका है। हम लोगों का कुछ स्वभाव ऐसा बनता जा रहा है कि किसी कार्य के लिए ऐन मौके तक सोये पड़े रहते हैं और वक्त आ पड़ने पर हड़बड़ा कर जागते हैं और दौड़ धूप आरम्भ करते हैं।

कोई बहुत बड़ी समस्या नहीं है। योजनाओं के लिए पचास हजार धन संग्रह की अपील की गई है। प्रत्येक जिले पर एक हजार से भी कम पड़ता है और कई जिले तो इतने अच्छे हैं कि काफी अधिक सहयोग कर सकते हैं। प्रत्येक जिले या क्षेत्र के अन्तरङ्ग सदस्य अपने जिले और क्षेत्र में प्रेरणा करें, थोड़ी दौड़ धूप करें, सभा के अधिकारियों का प्रोग्राम बनावें तो कार्य बड़ी सरलता से सम्पन्न हो सकता है। आवश्यकता है अपने अपने व्यक्तिगत दायित्वों को समझने और उन्हें पूरा करने की।

आशा है उत्तर प्रदेश के आर्य बन्धु आयोजित महान् कार्य के लिए अपने अमूल्य समय का समर्पण कर उत्तर प्रदेश के गौरव की रक्षा करेंगे और आर्य जगत् का मार्ग दर्शन कर नेतृत्व का गौरव प्राप्त कर सकेंगे।

वैशेषिक दर्शनकार ने बतलाया है कि द्रव्य गुण और कर्म सामान्य विशेष और समवाय का सम्बन्ध का समझना आवश्यक है। इसको समझ कर भय और भ्रम से पृथक रह कर मनुष्य सिद्धान्त को समझ सकता है असमवाय सम्बन्ध का समवाद और समवाय का इस बात



(श्री बाबू कालीचरण जी आर्य)

मान लेने से अर्थ का अनर्थ और सिद्धान्त हानि हो जाती है। कर्म सिद्धान्त में भी विचारकों ने यही भूल की है कि जहां कर्ता का कर्म का सम्बन्ध जिस फल (भोग) के साथ समवाय सम्बन्ध है वहां अन्य कर्म का जो साधन मात्र है अन्य के साथ समवाय जोड़कर सिद्धान्त हानि की है। कर्म का फल के साथ समवाय सम्बन्ध है परन्तु फल का साधन के साथ समवाय सम्बन्ध नहीं है वह असमवाय सम्बन्ध है। मनुष्य बिना कर्म के दुःख या सुख प्राप्त नहीं कर सकता। प्रत्येक सुख अथवा दुःख के लिए कर्म आवश्यक है परन्तु कर्म फल भोग में साधन कोई भी हो सकता है। किसी निश्चित साधन का उसके साथ कोई सम्बन्ध नहीं। इसलिए कर्ता का कर्म के साथ और कर्ता के कर्म का सुख दुःख के साथ समवाय सम्बन्ध है। बिना निश्चित कर्म के कोई निश्चित सुख और निश्चित दुःख नहीं भोग सकता। साथ ही यह भी सत्य है कि कि हर कोई अपने ही किये कर्मों का फल सुख और दुःख भोगता है। और जो दूसरे के कर्म का सुख दुःख भोगता दृष्टिगोचर होता है वह साधन रूप होकर असमवाय सम्बन्ध से है।

कुछ विचारकों ने कर्म फल और कर्म प्रभाव को एक ही मान कर कर्म सिद्धान्त के साथ न्याय नहीं किया है फल और प्रभाव में बहुत अन्तर है कर्म का फल केवल कर्ता को ही मिलता है परन्तु कर्म का प्रभाव कर्ता और द्रष्टा को भी होता है। कर्म फल तुरन्त कर्म करते ही नहीं होता परन्तु

कर्म मीमांसा

कर्मफल अगले जन्म या जन्मों में

(श्री बाबू कालीचरण जी आर्य ...)

आर्य जगत के ... सामाजिक संघटन कार्यों में ... व्यस्त रहते हुए भी ... के आगम मत ... ऋषि वाक्य का पालन करते रहते हैं। कर्मफल के सम्बन्ध में उन्होंने अपने विचार इस लेखमाला में प्रस्तुत किये हैं। उनके विचारों से सर्वथा सहमत न होने वाले विचारकों को भी अपना पक्ष प्रस्तुत करने का अवसर दिया जायगा और बाद में आर्य विद्वानों की सम्मति से वैदिक पक्ष का निर्णय घोषित किया जायगा। —सम्पादक

कर्म प्रभाव तुरन्त कर्म को करते ही होता है। कर्म फल निश्चित रूपेण एक ही होगा अर्थात् शुभ कर्म का फल सुख और दुष्ट कर्म का फल दुःख परन्तु कर्म प्रभाव भिन्न होता है और हो सकता है। उदाहरणार्थ ऋषि दयानन्द के उपदेशों का फल ऋषि को सुख ही मिलेगा परन्तु प्रभाव श्रोताओं पर भिन्न पड़ता रहा। कोई प्रभावित होकर प्रशंसा करता जाता और कोई गाली देता जाता था यह दोनों तुरन्त होते थे और भिन्न होते थे। कर्म अपने फल को प्रारब्ध द्वारा कर्ता को प्राप्त करा कर स्वयं समाप्त होता है परन्तु कर्म का प्रभाव तुरन्त है और कर्म को समाप्त नहीं करता इसी प्रकार सर्वत्र समझ लें। कुछ लोगों का विचार है कि मेरी यह अपनी मान्यता है तथा युक्ति और ऋषि दयानन्द के विरुद्ध है। ऋषि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ ४०० पर लिखा है किया हुआ कर्म निष्फल कभी नहीं होता परन्तु जिस समय कोई कर्म करता है उसी समय फल नहीं होता पुनः देखिए पृष्ठ २०३ केवल पाप करने वाला ही पापी होता है' और देखिए पृष्ठ ५५५ परमेश्वर के आधीन से जीव पुण्य भोगता है इसी के आधार पर मेरा विचार है कि इस जन्म के कर्मों का फल अगले जन्म में अथवा जन्मों में मिलेगा इस ही जन्म में कदापि नहीं वेदवाणी वर्ष अंक १० के पृष्ठ ४१ पर मेरे उपर्युक्त विचार को केवल मेरी मान्यता और प्रमाण शून्य कहा गया है ऋग्वेद में १ प १६४ मं ४२ दोखिये यस्मिन्वृक्षे मध्वदः सुपर्णा निविशन्ते सुवते चाधि विश्वे। तस्येदाहुः पिप्पलं स्वाद्वग्रे तन्नोन्नशद्यः पितरं न वेद' जिस पर समस्त संसार रूपी वृक्ष के ऊपर मधुर कर्म फलों के उपभोग करने वाले सुन्दर पक्ष (कर्म) वाले जीवात्मा निवास करते हैं सन्तान उत्पन्न करते हैं मेधावी गण कहते हैं कि उस ही फल को आगे कोई उस समय तक नहीं पाता जब तक इस शरीर को छोड़ दूसरे को प्राप्त नहीं कर लेता। तब तक कर्म फल नहीं मिल सकता है। ऋषि दयानन्द ने भी स्पष्ट लिखा कि कर्म फल तुरन्त नहीं मिलता और भी ऋषि सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ ३८ ३८३ पर लिखते हैं क्योंकि जो मनुष्य वैदिक धर्म का अनुष्ठान करता है वह इस लोक में कीर्ति और मर कर सर्वोत्तम सुख को प्राप्त होता है ऋषि ने स्पष्ट कर दिया कि कर्म के फलरूप भोग १ प्रभाव या संस्कार जो इस ही जन्म में इसमें ईश्वर की व्यवस्था नहीं यश कीर्ति देने वाले स्वतन्त्र हैं ... कोई कोई बुराई भी कर दे यह सब भिन्न है कोई भले ही भी अधिक कर कोई कम कर यह सब प्रभाव की बात है कौन और कितना प्रभावित होता है इसमें ईश्वर व्यवस्था क्या नहीं परन्तु दूसरा जो कर्म फल है वह मनुष्य को मर कर ही अगले जन्म में सुख को प्राप्त होगा यह मत मनु का है जिसको ऋषि ने स्वीकार कर उद्धृत किया है अब युक्ति सुनिये ऋषि ने ... कर्म तीन प्रकार का है १—क्रियमाण २—सञ्चित ३ प्रारब्ध का परम्भ ... जो पूर्व किये हुए कर्मों के सुख दुःख रूप फल को भोग किये जाते ... उसको प्रारब्ध कहते हैं अर्थात् भोग में प्रारब्ध कर्म होते हैं न कि क्रियमाण या सञ्चित ... लेकर ही प्रारब्ध बनता है और प्रारब्ध स्वयं नहीं बनता बनाया जाता है। ... बनता है इसी को पुनः सत्यार्थ प्रकाश में ... स० ८ पर करते हैं कि पुरुषार्थ प्रारब्ध से इसलिए बड़ा है कि पुरुषार्थ (क्रियमाण) से सञ्चित और प्रारब्ध बनते हैं ... परमात्मा की व्यवस्था से बनता है सञ्चित में से जितने कर्मों का प्रारब्ध बनना उचित लाभकारी जीव को कल्याणकारी समझा जाता है उतने कर्म प्रारब्ध में जाते हैं उस ही प्रारब्ध के अनुसार परमात्मा जन्म देते हैं जितने समय में जीवात्मा प्रारब्ध को भोग सकता है उस समय तक उस जन्म (योनि) में रखते हैं समाप्त होने पर पुनः सञ्चित से प्रारब्ध बनाते हैं तब वह किस प्रकार मान लिया जावे कि क्रियमाण कर्म बिना प्रारब्ध में आये फलित हो सकता है यदि यह कहा जाय कि इस जन्म के कर्मों का तुरन्त सञ्चित में जाने और तुरन्त प्रारब्ध बनने में क्या आपत्ति होगी तो आपत्ति यह है कि जन्म लेने से पूर्व परमात्मा ने जो प्रारब्ध बनाया उसके अनुकूल ही आयु दी अर्थात् भोग के लिए समय दिया वह प्रारब्ध अभी समाप्त नहीं हुआ जिसके भोग के लिए न केवल समय दिया आयु उसमें ही अनुकूल जाति भी दी अब नवीन कर्मों के भोग के लिए प्रारब्ध बना कर उस आयु में और जाति के लिए प्रकार जाति और आयु में परिवर्तन सम्भव है मनुष्य प्रति दिवस कर्म करता है क्या प्रभु प्रति दिवस उसका प्रारब्ध बनाते रहें और उसकी आयु जाति और भोग में ... परिवर्तन करते रहें ... सिलसिला ... होगा ... मानना पड़ेगा कि ... बार ... हो जावे ... बनेगा। (अपूर्ण)

मेरा देश जाग

जहां मस्तिष्क में कोई भय नहीं
और—
मस्तक गर्वोन्नत है
जहां ज्ञान मुक्त है और
जहां विश्व तंग घरेलू दीवारों से
खण्डित नहीं हुआ है
जहां वाणी सत्य गहराई से
निकलती है
जहां विचार शक्ति का स्वच्छ झरना
रूढ़ि के मरुस्थल में नहीं खो गयी है
और जहां मस्तिष्क
विचार तथा पुरुषार्थ से
आगे बढ़ता है—
हे पिता! उस स्वातन्त्र्य स्वर्ग में
मेरा देश जाग

—महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर

विदेश-वार्ता

मोंगोल देश की यात्रा के संस्मरण

(डाक्टर शारदारानी, साहित्यरत्न, एम० ए०, डी० लिट्०)

आदरणीया डाक्टर शारदा बहन आर्य विदुषी हैं और भारतीय साहित्य और संस्कृति का अनुसन्धान ही उनके जीवन का ध्येय है। उन्होंने अपनी मंगोल देश की यात्रा के संस्मरण आर्यमित्र के पाठकों के लिए लिखे हैं आशा है भारतीय संस्कृति और साहित्य के विषय में विदेशों में कितनी दिलचस्पी और आदर है इस बात की जानकारी पाठकों को मिल सकेगी।

—सम्पादक

हम भारत से पश्चिमी योरोप में अनुसन्धान सम्बन्धी वस्तुएं एकत्रित करने गए। योरोपीय जाति अपने निरन्तर परिश्रम और अथक लगन के लिए प्रसिद्ध है। इटली, स्विट्जरलैंड, जर्मनी, फ्रान्स हालैण्ड, इंग्लैण्ड के आक्सफर्ड केम्ब्रिज, चेकोस्लोवाकिया तथा रूस इत्यादि बहुत से देशों में घूमकर वहां के विशाल पुस्तकालय और कद्रुमुद्रागार देखे। वास्तव में इन भाण्डागारों में प्राच्य अध्ययन के लिए अनन्त अमूल्य निधियाँ भरी पड़ी हैं।

जब हम हालैण्ड में थे तब हमें मोंगोल शासन का निमन्त्रण मिला। हमारी प्रसन्नता का पारावार न रहा। मोंगोल देश के दर्शन हमारे लिए अति सुखकारी होंगे, इस प्रकार सोचते सोचते वह दिन भी आ पहुंचा जब हम मास्को से उलान्बातर के लिए चले। कई घण्टे की उड़ान के पश्चात् हमारा विमान तातार गणतन्त्र की राजधानी काजान् में उतरा। तत्पश्चात् स्वेर्द्लोव्स्क, ओम्स्क, नोवोसिबिर्स्क (साइबेरिया की राजधानी) क्रास्नोयार्स्क नगरों में रुकते हुए पूरे ४८ घण्टे पश्चात् इर्कुत्स्क पहुंचे। यह नगर रूस और मोंगोल सीमा पर स्थित है। यहाँ हम विमान में चीनी विमान में बैठ आ पेकिङ् जा रहा था। पेकिङ् के मार्ग में ही मोंगोल देश की राजधानी उलान्बातर है। हमारा विमान सारा साइबेरिया पार करता जा रहा था। साइबेरिया को वहाँ के निवासी शिबिर कहते हैं। साइबेरिया अंग्रेजी उच्चारण है। यहां के निवासी तम्बुओं में रहते हैं। शिबिरवासियों की भूमि का नाम शिबिर देश उचित ही है। विमान से मरुभूमि ही मरुभूमि दिखाई देती था। ठण्ड के कारण वृक्ष नहीं के समान थे। केवल नगरों में कुछ हरियाली दिखाई देता था। इर्कुत्स्क नगर के विमान क्षेत्र पर चीन के प्रधान मन्त्री और राष्ट्रपति के रंगीन तैलचित्र लगे हुए थे। यहाँ का समय पेकिङ् समयानुसार मास्को से पाँच घण्टे आगे था। हमारा विमान अब बैकाल झील के ऊपर था। २०-मील लम्बी यह झील हिमावृत था। ऐसा लगता था मानो हम श्वेत चद्दर के ऊपर उड़े जा रहे हैं। बैकाल झील के पूर्व में अङ्गारनदी थी, वह भी हिमाच्छादित थी। अब नीचे हिममय पर्वत शिखर और ऊपर कांच में से छन कर धूप की उष्मा हमें कुछ उष्णता पहुंचा रही थी। बैकाल झील और अङ्गार नदी के तट तक भारतीय आचार्य और पण्डित जाया करते थे। मानसरोवर के समान बैकाल झील पुण्यतीर्थ थी। इतने भयङ्कर जलवायु में उष्ण जलवायु के अभ्यस्त भारतीय किस प्रकार यहाँ आते होंगे, कल्पना करके भी रोमाञ्च हो जाता है। विमान परिचारिका ने बताया कि ४० कला में हम उलान्बातर पहुँचने वाले हैं, तब हमारी प्रसन्नता का कोई ठिकाना न रहा। सारी थकान उत्साह में परिणत हो गई। इतने दिन का स्वप्न आज साकार होने जा रहा है। विमान ने भूमि स्पर्श की और हम उठ खड़े हुए। खिड़की से ही सारा दृश्य बड़ा सुन्दर लग रहा था। हमारे स्वागतार्थ गाण्डङ् विहार के लामा, एक बहुत बड़े विद्वान् श्री रिंछिन् और उनकी पत्नी श्रीमती, लोन्स इ् वन्द्रन विज्ञान समिति के साथ आठ अन्य व्यक्ति आए थे। चार वहित्र (कार) हमें लेने आई थी। आल्ताइ होटल में हमारे ठहरने का प्रबन्ध था। दूसरे दिन अमावस्या थी। मोंगोल देश में तिथियों की गणना भारत के समान होती है। वही अपनी एकादशी, द्वादशी, पूर्णिमा, अमावस्या इत्यादि, अर्थात् चन्द्रमा की गति के अनुसार पञ्चाङ्ग बनाया जाता है। लामा गाम्बोदो ने हमें अपना मन्दिर दिखाने के लिए एर्देनेपील (मुख्य लामा) का निमन्त्रण दिया। अमावस्या और पूर्णिमा के दिन यहां संगीतमय पाठ का महोत्सव होता है। दूसरे दिन प्रातः से हम बड़ी उत्सुकता से वहां जाने की प्रतीक्षा में थे। हमारा दुभाषिया आया और हम चल पड़े। आज गाण्डङ् विहार में सारे पुजारी तथा अनेक दर्शनार्थी उपस्थित हैं। गाण्डङ् का अर्थ है तुषित विहार। मन्दिरों पर बाहर की ओर संस्कृत, मोंगोल और भोट में लकड़ी के पट्टों पर नाम लिखे हुए हैं। मन्दिर में चढ़ाने के लिए हम भारत से कुछ धूप बत्तियां और सुवर्णिम वस्त्र लाए थे। जब हम सुवर्ण वस्त्र चढ़ा रहे थे तो एक पुजारी ने पूछा क्या यह काशिक है। हमने कहा—हां, यह काशी का बना है। प्राचीन समय में भी काशी से कौशेय इन सुदूर देशों में जाया करता था। काशी के वस्त्र की प्रसिद्धि बहुत पुरानी है।

गाण्डङ् विहार के प्रवेश द्वार पर दो सिंह बने हैं जो विहार के रक्षक के रूप में सुशोभित हैं। तत्पश्चात् प्राङ्गण है। यहां पर कई अलग अलग भवन दृष्टिगोचर होते हैं। हरी और लाल छतों पर सुवर्ण मण्डित ऊपर को उठे शिखर भारत के सुवर्णमय शिखरों का स्मरण दिलाते हैं। प्राङ्गण में प्रवेश करते ही मुख्यद्वार पर धर्मचक्र और उसके दोनों ओर दो शान्तमुख मृग। आज इनके सुवर्ण रंग का वैभव अन्दर से फूट रहा है। घुसते ही तीन भवन हैं। इनके मध्य में विशाल धूमपात्र है जिस पर मोंगोल, भोट और चीनी लेख हैं। एक ओर ईंटों का मञ्च है। मुख्य तीन भवन ये हैं—चइनजोबो-भवन, वज्रधर-भवन, पूजा-भवन। मन्दिर का अपना एक विशाल पुस्तकालय है। उसका भवन पृथक् है। यहां सब धार्मिक पुस्तकें रखी हुई हैं। इनमें से एक बड़े भवन में पूजा होती है। इसका संस्कृत नाम भारतीय अक्षरों में लिखा है—तुषित. महायानद्वीप। शीर्षक के चारों ओर शङ्ख, चक्र, मीन आदि के चित्र बने हैं। पूजा भवन के विशाल काष्ठ द्वारों पर विश्ववज्र और प्रसादपूर्ण पत्रों के चित्र सुकलात्मक बने हैं। ह्क्ष्म्ल्व्र्य्‌ का गुम्फित रूप और उसके पार्श्व में धर्मचक्र तथा मृग से द्वार की शोभा द्विगुणित हो उठी है। भवन के अन्दर घुसते ही चौकियों पर पुजारियों के लिए गुदगुदे आसन बिछे हैं। इनकी चार पंक्तियां हैं। मध्यस्थित दो पंक्तियों में २४ आसन हैं। मुख्य मूर्ति के समीप दोनों पंक्तियों में प्रमुख लामाओं के बैठने के आसन कुछ ऊंचे हैं। उभरे हुए नागालङ्कृत विशाल ढोल बैठे बैठे ही बजाए जाते हैं। इनको बजाने के लिए विशेष दण्ड होता है। दाईं ओर की भित्ति एक विशाल पटचित्र (थंका) से आवृत है। इस थंका पर उभरे हुए भगवान् बुद्ध, ध्यानिबुद्ध, अवलोकितेश्वर और स्वर्ग का मनोहारी दृश्य उपस्थित किया गया है। हाथ का बना हुआ है। चीन, मोंगोल और तिब्बत में कौशेय के ऊपर रंगीन चित्र बनाने की प्रथा है। मन्दिरों को इन्हीं कौशेय चित्रों से सजाते हैं।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

❋ प्रश्नोत्तर ❋

[श्री कुँवर हरिश्चन्द्र देव वर्मा 'चातक' कविरत्न]

"पथ तू! सबको है अपने घर पहुँचाता—
पर अपने घर क्या कभी पहुँच है पाता?
"मानव तुम भी क्या पहुँच गये निज घर हो?
या जिससे पहुँचोगे पा गये डगर हो?"

× × ×

दर्पण तू! सबको निज में रहा दिखाता—
पर सच कह निज को कभी देख क्या पाता?
'मानव क्या तुमने देख लिया अपने को—
सच कहो कि या तुम देख रहे सपने को?"

× × ×

"रे शलभ! दीप पर व्यर्थ जला तू जाता—
वह तो जलता है स्वयं न शान्ति-प्रदाता।"
'मानव मैं जलता एक बार ही जग में—
पर तुम्हें जलाता द्वेषानल पग-पग में"

× × ×

"रे शुक! तेरी यह पराधीनता गन्दी—
छोटे से बन्दीगृह में तू है बन्दी!"
'मानव तुम भी हो बन्द न सोचा उर में
उस बहुत बड़े बाहर के बन्दी घर में!"

जीवन-ज्योति

आर्यसमाज और हिन्दी के महाकवि 'शंकर'

[श्री रामस्वरूप शास्त्री, काव्यतीर्थ]

श्री शास्त्री जी ने आदरणीय महाकवि शंकर जी के सम्बन्ध में निजी और आर्य समाज सम्बन्धी संस्मरण देते हुए आर्य जगत् को महाकवि के प्रति कर्तव्य पालन की प्रेरणा दी है। उनकी आर्य समाज तथा ऋषि दयानन्द सम्बन्धी सभी कविताओं का संग्रह आर्यसमाज के लिए उपयोगी होगा। इस कार्य द्वारा हम महाकवि के प्रति श्रद्धा व्यक्त कर सकेंगे। आशा है आर्य समाज के अधिकारी महाकवि के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करेंगे।

—सम्पादक

आर्यसमाज के महान् यशस्वी कवि सम्राट श्री प० नाथूराम शंकर का जन्म चैत्र सुदि पंचमी संवत् १९१६ वि० को हुआ था। अब संवत् २०१६में चैत्र सुदि पंचमी १३ अप्रैल को उनके जन्म के पूरे १०० वर्ष हो जावेंगे। दैवयोग की बात है कि जिस मास और तिथि में श्री शङ्कर जी महाराज का जन्म हुआ था उसी मास और उसी तिथि यानी चैत्र सुदि पंचमी को ही महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती महाराज ने सर्वप्रथम बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी। श्री शङ्कर जी महाराज अपने जीवनकाल में इस दिवस को बड़ी धूमधाम से मनाते थे। और उन्हें इस बात का बड़ा अभिमान तथा गौरव था कि उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती के दर्शन किये थे और उनके व्याख्यान भी सुने थे। वे अपने जीवन काल में प्राय सभी से यह बात कहा करते थे कि उनके जीवन के मुख्य दो फल हैं, पहला तो यह है कि उन्होंने महर्षि के दर्शन किये हे और उनके व्याख्यान सुने हैं, दूसरा यह है कि उन्हें कुछ तुकबन्दी करनी आती है। वे उच्चकोटि के कवि होते हुए भी बड़े उदार और निरभिमानी थे इसलिए अपनी अमृतरसवर्षिनी स्यन्दिनी कविता को तुकबन्दी के नाम से ही पुकारा करते थे। महर्षि दयानन्द का यशोगान करने मे उनकी लेखनी थकती न थी और इसे अपना महाभाग्य समझते थे। आप यदि ध्यानपूर्वक देखेंगे तो उनकी अधिकांश कविताएं ऋषि गुणगान परक ही मिलेंगी। सम्भवत ऋषि की यशोगाथा को उनसे अच्छी कविता में किसी ने नहीं गाया है। स्वर्गीय श्री मदनमोहन सेठ जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा से पहली बार अवकाश ग्रहण करते हुए एक छोटी सी पुस्तिका "मेरी सभा सेवा" के नाम से प्रकाशित कराई थी। पुस्तक की पाण्डुलिपि उन्होंने अंग्रेजी में लिखी थी और उसका हिन्दी अनुवाद करने के लिए वह उन्होंने माननीय भाई श्री प० हरिशङ्कर जी शर्मा (वर्तमान प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश तथा श्री शङ्कर जी के तृतीय पुत्र भूतपूर्व सम्पादक आर्यमित्र) के पास भेज दी। अनुवाद करने के अवसर पर उन्होंने पूज्य पिता जी से प्रार्थना की कि कोई सुन्दर पद्य इस पुस्तिका के मुख पृष्ठ के लिए चाहिये। श्री शङ्कर जी महाराज ने उस पर यह छप्पय पद्य लिखा :—

जो न हटा मुख फेर,
बढ़ा जीवन भर आगे।
जिसका साहस देख,
विघ्न,भय,संकट भागे।
सबल सत्य की हार,
अनृत की जीत न होगी।
ऐसे प्रबल विचार,
सहित विचरा जो योगी॥
उस दयानन्द मुनिराज का,
प्रकृत पाठ जनता पढ़े।
प्रभु शङ्कर आर्यसमाज का,
वैदिक बल गौरव बढ़े॥

सन् १९१५ की बात है, लाहौर से आर्य गजट नामक साप्ताहिक पत्र निकलता था, उसके सम्पादक थे श्री खुशहालचन्द जी खुरसन्द (वर्तमान में आनन्द स्वामी) उन्होंने शिवरात्रि के पवित्र पर्व पर आर्य गजट के ऋषि बोधाङ्क के लिए श्री शङ्कर जी से कविता मांगी। श्री शङ्कर जी उर्दू और फारसी के धुरन्धर विद्वान् थे तब भी उन्होंने श्री खुरसन्द जी को यह लिख दिया कि आपका पत्र उर्दू में है और मैं कविता आर्यभाषा में लिखूंगा। श्री खुरसन्द जी ने लिखा कि आप कविता भेजिए। आपकी कविता नागरी अक्षरों में ही छपवाकर ऋषि बोधांक में लगाई जायगी। तब श्री शङ्कर जी महाराज ने एक सुन्दर और लम्बी कविता लिखकर भेजी थी जिसकी दो पंक्तियां इस प्रकार हैं :—

कब सत्य सनातन धर्म आप अपनाते
यदि दयानन्द गुरुदेव उदार न आते॥

कहने का तात्पर्य यह है कि गुरुदेव दयानन्द श्री शङ्कर जी की कविता के धर्म इष्ट देव थे।

आनन्द सुधासार दया कर पिला गया।
भारत का दयानन्द दुबारा जिला गया॥

इस राजगीत को गाते-गाते आज आर्य जन नहीं थकते। इस गीत के अगले पदों में सांग,परम्परित और निरंगरूपक की भरमार है। इस राजगीत की तुलना ही नहीं की जा सकती।

अब कौन दयानन्द यती के समान है।
महिमा अखण्ड ब्रह्मचर्य की महान् है॥

इत्यादि पद्यों में उन्होंने भारत के पांच प्रसिद्ध ब्रह्मचारियों में महर्षि का स्थान रक्खा है। कहने का अभिप्राय यह है कि श्री शङ्कर जी के रोम रोम में महर्षि का गुरुत्व रमा हुआ था। ऋषि का चरित्र वर्णन करते हुए वे गद्गद हो जाते थे। यदि ऋषि की गौरव गाथा के उनके पद्यों का संग्रह किया जाय तो एक बड़ा पोथा तयार हो जायगा। मेरी तो अपनी राय है कि सार्वदेशिक सभा को अथवा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश को उन सब कविताओं को एकत्र कराके उनका संग्रह पृथक् प्रकाशित कराना चाहिये। उस पुस्तक का सम्पादन श्रीमान भाई हरिशङ्कर जी शर्मा से अच्छा और कौन कर सकेगा। यदि यह सेवा मुझे सौंपी जायगी तो मैं इसे अपना महाभाग्य समझूंगा, किंतु यह होगा तभी जब सार्वदेशिक सभा अथवा आर्य प्रतिनिधि सभा उसके प्रकाशन का भार अपने ऊपर ले। सार्वदेशिक सभा एक सर्क्यूलर जारी करे कि प्रत्येक आर्यसमाज के पुस्तकालय मे वह पुस्तक अनिवार्य रूप से संग्रह समझा जाय।

आर्यमित्र के इस ६० वर्ष के जीवन काल मे जितने भी 'ऋष्यङ्क' निकले है, उन सब मे प्राय उनकी कविता पढ़ने को मिलेगी। ऋषि दयानन्द की जन्म शताब्दी का यह पद्य तो बड़ा ही मनोहर और उत्कृष्ट कोटि की कविता का एक नमूना है जिसमे रूपकालङ्कार की भरमार है:—

धारणा धरा पै ज्ञान,
भानु का प्रकाश पड़े,



(महाकवि नाथूराम शंकर)

अज्ञता गिरावे न,
अंधेरा मतिमन्द का।
सत्य का सनेहा,
मन भृङ्ग अनुरागी बने,
प्रेम—पुण्डरीक के,
प्रमाद मकरन्द का।
जीवन—कुमुद फूले,
सभ्यता सरोवर में।
नीति-रजनी में हो,
उजाला न्याय चन्द का
सामाधिक ध्यान में,
विराजे भक्ति शङ्कर की,
तारे उपदेश गुरुदेव दयानन्द का॥

इन पंक्तियों का लेखक जो कुछ भी है वह श्री शंकर जी महाराज के अनुग्रह से ही है। मुझसे भी वह श्री भाई हरिशङ्कर जी के समान ही स्नेह करते थे, इतना ही नहीं उन्होंने आर्यमित्र के मथुरा जन्म शताब्दी अङ्क में यह पद्य लिख भेजा कि —

सम्पादक हैं आर्यमित्र के,
हरिशङ्कर शर्मा कविरत्न।
यादव रामस्वरूप शास्त्री,
लेख लिखें कर पूर्ण प्रयत्न॥
मन से भिन्न नहीं है दोनों
केवल तन में न्यारे हैं।
नारायणस्वामी ! शङ्कर के,
पुत्र, मित्र सुत प्यारे हैं॥

यह पद्य आर्यमित्र के शताब्दी अङ्क में छपा था। उस समय में भी आर्यमित्र का सहकारी सम्पादक था। महर्षि की जन्म शताब्दी पर जो विराट् कवि सम्मेलन हुआ था उसके सभापति श्री शङ्कर जी महाराज ही तो थे। श्री प० हरिशङ्कर जी शर्मा उस सम्मेलन के संयोजक थे। मैं भी उनके चरणों में बैठा हुआ इस कार्यवाही में भाग ले रहा था। वृन्दावन गुरुकुल के भी दो तीन उत्सवों के कवि सम्मेलनों के भी वे सभापति थे। वास्तव में बात यह है कि वे अनेक जगहों पर सभापति निर्वाचित किये जाते थे किंतु अपनी प्रवास भीरुता के कारण वे जाते आते कम थे। प्रारम्भ

[शेष पृष्ठ १० पर]

सिद्धान्त-विमर्श

(आर्य समाज के अनेकों विद्वान् और उपदेशक अपने भाषणों और लेखों में गीता की चर्चा किया करते हैं। श्री उपाध्याय जी ने अपने लेख में आर्य सिद्धान्त "गीता" के विचारों से कितने मिलते हैं और कहां सूक्ष्म विरोध है आदि बातों की समीक्षा की है। आशा है आर्य विचारक इस लेख द्वारा गीता के सम्बन्ध में आर्य समाज के दृष्टिकोण को भली भांति समझ सकेंगे।

—सम्पादक)

गीता और आर्य समाज

[श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०]

प्राचीन भारतीय साहित्य मे श्रीमद्भगवद्गीता का मान ससार भर मे सबसे अधिक है, और लगभग एक शताब्दी से तो इसका मान इस देश में और देश के बाहर सबसे अधिक हुआ है। इसमे सबसे बड़ा श्रेय मिसेज बीसेण्ट को है। इन्होने लगभग साठ वर्ष हुए गीता का एक अगरेजी अनुवाद गुटके के रूप मे निकाला था। इसकी भाषा सरल और सरस थी। केवल दो आने दाम थे अग्रेजी जानने वाले जगत् के सभी देशो मे इसका बहुत प्रचार हुआ। थियोसोफिकल सोसायटी ने इस काम को चार चांद लगा दिये। लोकमान्य तिलक ने गीता रहस्य लिखकर राजनतिक जगत् का ध्यान इस ओर खींचा, और महात्मा गांधी ने गीता को एक नया रूप दे दिया। इस प्रकार इस शताब्दी मे गीता साधुओ और पुरानी चाल के पण्डितो के चुंगल से निकल कर एक विस्तृत आकाश मण्डल में देदीप्यमान हो गई। और आजकल तो गीता ने अनेक रूप धारण कर लिए है। एक ऐसे भी सज्जन हैं जो एलोपैथी और होमियोपैथी के समान गीतापैथी को भी रोगो की चिकित्सा का एक साधन समझते है।

ऐसी प्रसिद्ध पुस्तक के विषय मे जो सस्कृत साहित्य रूपी समुद्र का एक अमूल्य मोती समझा जाता है, आर्य समाज जैसी बौद्धिक सस्था के लिए यह प्रश्न हो जाता है कि इसका दृष्टिकोण क्या होना चाहिए।

साहित्य की दृष्टि से तो यह प्रश्न बड़ा सुस्पष्ट है, काव्य सुन्दर, भाषा मधुर, शैली हृदय ग्राहक। पढ़ते जाइये छोड़ने को जी नहीं चाहता, जो विद्या प्रिय सज्जन किसी एक विशेष मत से सम्बन्ध नहीं रखते और ससार के साहित्योद्यान में स्वच्छन्द विचरना चाहते हैं, वह तो गीता पर मुग्ध हुए बिना नहीं रहेंगे। परन्तु आर्य समाज की एक विशेष दृष्टि है। उसने ससार के साहित्य को तीन भागों मे बाट रक्खा है। एक स्वत प्रमाण जिससे आप प्रत्यक्ष रूप मे जीवन के आध्यात्मिक तत्त्वों का ज्ञान ग्रहण कर सकते हैं। इस कोटि मे वेद माने जाते हैं और वह भी केवल मन्त्र सहिता में ही अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। दूसरी कोटि परतः प्रमाण की है। इसमे उपनिषदें, दर्शन, मनुस्मृति तथा ऋषि दयानन्द के अपने ग्रन्थ हैं। जो वेदानुकूल होन से मान्य हैं। तीसरी कोटि में समस्त अन्य ग्रन्थ हैं। उनमें बहुत से बहुत उत्कृष्ट, कुछ साधारण और अनेक त्याज्य हैं। प्रश्न यह है कि गीता इनमे से किस कोटि मे आती है। मेरा विचार है कि गीता पहली दो कोटियो मे से किसी में नहीं आती। न स्वत प्रमाण है, न परतः प्रमाण, इन दो कोटियो का अलग रख दिया जाय तो गीता साहित्य का एक उत्कृष्ट ग्रन्थ है। गीता महाभारत का एक भाग है। महाभारत मे कई गीतायें हैं। 'भगवद्गीता' जिस गीता का आजकल नाम है, वह उन कई गीताओं में से एक है। महाभारत एक बहुत बड़ा ग्रन्थ है। एक विशाल और अति विस्तृत जाति के पिछले पाच सहस्र वर्ष के माठे और कड़वे हर प्रकार के अनुभवो का एक रामकहानी है जिनमें स्वच्छ निर्मल प्रचण्ड मार्तण्ड की सब प्रकाशक छाया के अतिरिक्त अमावस्या का घोर अन्धकार भी ओतप्रोत है। महाभारत को आप दर्शपौर्णमास दृष्टि की प्रतीक समझ सकते हैं जिसकी मैमासिक तुलना इस लेख का विषय नहीं है। ऐसी पुस्तक का एक अङ्ग अर्थात् गीता भी उसी लक्षण से लक्षित है। उन सब विद्या-जिज्ञासियो के अनेक परिश्रमो को दृष्टि मे रखते हुये भी जो गीता के अनेक प्रकार के भाष्यो में गीता की सहस्रमुखी शिक्षाओ को सहस्र प्रकार से वर्णित करने मे होते रहे हैं यह कहना ही पड़ेगा कि—

डोर है उलझी हुई इसका सिरा मिलता नहीं।

शायद इसीलिए महर्षि दयानन्द के ग्रन्थो में गीता के विषय में एक दो श्लोकों से अधिक नहीं मिलता। जिस प्रकार वह चाणक्य नीति आदि के आकस्मिक उद्धरण देते हैं उसी प्रकार गीता के। क्योंकि वह समझते होंगे कि उलझी हुई डोर का सिरा ढूंढने का प्रयत्न निरर्थक है। परन्तु बहुत दिनों से आर्य समाज में विचार स्वातन्त्र्य की कुछ कमी हो रही है। हम वर्तमान भारतीय भावनाओं और वैदिक सिद्धान्तों में भेद नहीं कर सकते। पहले हम 'आर्य' थे। अब हिन्दू आर्य हैं। इसीलिये यह प्रश्न उठ खड़ा होता है कि गीता को कौन सा स्थान देवें। अर्थात् जब किसी संदिग्ध विषय का निर्णय करना हो तो गीता के कथनो को कहां तक प्रामाणिक माना जाय। जो असंदिग्ध बाते है वहाँ तो आप गीता को मान ही सकते है और इसी प्रकार सैकड़ो अन्य ग्रन्थो को सीधी सड़क पर इशारों (signal) की आवश्यकता नहीं होती। जहाँ कई मार्ग एक दूसरे को काटते हैं वहाँ समझ मे नहीं आता कि यह उपादेय है और यह त्याग। यदि ऐसी अवस्था हो तो गीता आपको सहायता नहीं दे सकती। जो फल आपके विनोद और प्रमोद का साधन है वही आपकी औषधि का काम नहीं दे सकते। गीता सैर करने का बाग है किसी आयुर्वेदज्ञ की वनस्पति शाला नहीं।

अच्छा, आइये हम गीता पर एक समालोचक दृष्टि डालें। गीता का आरम्भ रणभेरी से होता है। अर्जुन के मन मे शङ्का उत्पन्न हो जाती है। उसने युद्ध के परिणामो का एक सच्चा चित्र खींचा है।

कुलक्षयकृत दोषं मित्र द्रोहे च पातकम्।
कुलक्षये प्रण पश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः।
धर्मेनष्टे कुल कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युतः॥
अधर्माभिभवात् कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्ण सकरं॥
दोषरेतैः कुलघ्नाना वर्णसकरकारकैः।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्चशाश्वताः॥ (अध्याय १।३।८ इत्यादि)

युद्धो के यही परिणाम हुआ करते है। और महाभारत के भी यही हुए। गत पाँच सहस्र वर्ष का भारतीय सस्कृति का क्रमशः ह्रास अर्जुन की भविष्य वाणी का ठीक ठीक द्योतक है। श्री कृष्ण ने इसका खण्डन नहीं किया उत्तर था भी क्या? बात तो सच थी। परन्तु युद्ध तो करना ही था। अतः श्री कृष्ण ने केवल भावुकता की अपील की।

अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन।
क्लैब्य मास्मगमः पार्थनैतत्त्वय्युपपद्यते॥

यह शङ्का का समाधान था। एक बात तो ठीक है। अर्जुन सिपाही था। उसका काम युद्ध के औचित्य, अनौचित्य के सोचने का नहीं था। अर्जुन को हम कहीं नीतिज्ञों के समान इस पर विचार करते नहीं पाते। युद्ध के उत्तरदाता कोई और ही थे। श्री कृष्ण का भी उसमें हाथ रहा होगा। परन्तु आज युद्ध के पश्चात् यह कहना कठिन है कि युद्ध न होता तो पाण्डवों के अतिरिक्त जगत् का समष्टि रूप से या वैदिक सस्कृति की क्या हानि होती। प्रायः युद्ध प्रिय लोगों का हम श्रीकृष्ण के 'अनार्यजुष्ट' आदि शब्दो को दुहराते हुये सुनते हैं परन्तु यह शब्द हैं युद्ध क्षेत्र के ही योग्य। नागरिक जीवन मे यह मनोवृत्ति जन सामान्य का अकल्याण ही करती है। मैंने एक पुस्तक में पढ़ा था कि—Preparations of war are more pleasant than the war itself अर्थात् युद्ध की तैयारी में अधिक मजा आता है। इतना युद्ध मे नहीं। मै इसमे एक वाक्य और जोड़ता हूं Talking about war is still more pleasant अर्थात् युद्ध की बातें करना तो और भी अधिक मजेदार चीज है। यही कारण है कि हम सर्व साधारण मे प्रति क्षण युद्ध की बातें सुनते है। इनसे वीरता तो नहीं आती। हाँ, लड़ाकूपन आ जाता है। अतः जो उपदेश केवल रणक्षेत्र के ही योग्य हैं उनके प्रयोग मे सावधानी की आवश्यकता है।

अब श्रीकृष्ण महाराज के आत्मा की अमरता के विषय में वह अनमोल वचन सुनिये जिनके लिये गीता प्रसिद्ध है।

न जायते म्रियते वा कदाचिन्
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।

(शेष पृष्ठ १० पर)

सुझाव और सम्मतियाँ

आर्य महा सम्मेलन या हिन्दी सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने २८ जुलाई को एक प्रस्ताव द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से माग की है कि वह इस बार पजाब मे हिन्दी आन्दोलन को पुन प्रारम्भ करने के पूर्व एक विराट आर्य महा सम्मेलन बुलाए और उसके निर्णय के द्वारा आन्दोलन की रूप रेखा नियत की जाय। माग सर्वथा सामयिक और औचित्य पूर्ण है। इससे हैदराबाद सत्याग्रह के पूर्व हुए शोलापुर आर्य महा सम्मेलन की सुखद स्मृति हो जाती है। कोई भी बड़े कार्य और युद्ध बिना पूर्व योजना के निर्धारित किये बिना सफल नहीं हुआ करते। तदनुसार महा सम्मेलन तो होना ही चाहिए।

किन्तु इस सम्बन्ध मे हमारा सुझाव यह है कि यह महा सम्मेलन हिन्दी महासम्मेलन के रूप मे होना चाहिए। इसमे सनातनी जैनी जनसघी तथा हिन्दू महासभाई कांग्रेसी तथा उन सभी हिन्दी प्रेमियों को भी सादर आमन्त्रित किया जाना चाहिए और उनकी सम्मति सुननी चाहिए जो कि हिन्दी के प्रति सर्वस्व समर्पित करने की मनोवृत्ति अपनाकर गत आदोलन को सबल स्वरूप प्रदान करने मे योग दान दे चुके हैं।

मेरी सम्मति मे आन्दोलन को आर्य समाज के जीवन मरण का नहीं वरन् हिन्दी हितैषी मात्र के जीवन मरण का प्रश्न बनाने की चेष्टा की जानी चाहिए। उसके लिए इस सम्मेलन का आयोजन तो सार्वदेशिक सभा ही करे उसके सचालक व्यवस्था पक आदि भी सार्वदेशिक सभा ही निश्चित करे किन्तु इस महासम्मेलन का नाम आर्य महासम्मेलन के स्थान पर हिन्दी महासम्मेलन रखा जाना चाहिए।

मेरी सम्मति मे हिन्दी महासम्मेलन पजाब के जालन्धर या अम्बाला नगर में रक्खा जाये जिससे हिन्दी की ज्वलन्त समस्या स्थान के द्वारा भी अपना प्रभाव वक्ताओं की वाणी पर कर सके। पजाब को ही आन्दोलन का केन्द्र न रख कर दिल्ली का शिक्षा मन्त्रालय भी आन्दोलन के कार्य क्षेत्र के अन्तर्गत लिया जाना चाहिए। यह सब निर्णय हिन्दी महा सम्मेलन के माध्यम से कराए जाए तो बहुत व्यापक प्रभाव इसके प्रस्तावो मात्र से ही सरकार पर स्थापित हो सकेगा। उस महासम्मेलन की सफलता और उसके प्रभाव क्षेत्र की व्यापकता के लिए यह भी आवश्यक है कि सम्मेलन विधियों मे पूर्व ही हिन्दी समर्थकों का एक शिष्ट मण्डल सम्पूर्ण ससद सदस्यों से सम्पर्क स्थापित करने के निमित्त सबल प्रयास करे। सम्मेलन के आयोजन का विराट रूप देने के लिए भारी प्रचार किया जाए। विभिन्न प्रातो की विपुल सख्या आमन्त्रित की जाय। देश भर के प्रत्येक जिले से २० प्रतिनिधि अपने अपने नियत वेश ध्वजाए साथ लिए उस अवसर पर पहुचे। देश गूज उठे उस सम्मेलन की माग से। विचारको का अभिमत यह है कि ऐसा ठोस पग उठाने से देश की समझौतावादी सरकार निश्चित रूप मे अपने जन्म जात अभ्यास के अनुसार समझौता करने पर अवश्य उतारू हो उठेगी। तब आन्दोलन बिना चलाये ही हिंदी की रक्षा के लिए वह महान् काय सम्पन्न हो जाएगा जो कि पजाब के लिए देश भर चाहता है। अत यह सम्मेलन अवश्य किया जाना चाहिए किन्तु आर्य महा सम्मेलन के स्थान पर हिन्दी सम्मेलन के नाम से.

—योगेन्द्रपाल शास्त्री हरिद्वार

यज्ञोपवीत का उद्देश्य

प्रत्येक आर्य बालक को द्विज बनने के लिए यज्ञोपवीत धारण करके व्रती बनना पड़ता है। यह भाव यज्ञोपवीत के तीन धागो मे निहित है—ज्ञान कर्म, उपासना यही यज्ञोपवीति बालक का मुख्य उद्देश्य है, जिससे गुरुकुल मे त्रयी विद्या का वह अभ्यास करता है। परन्तु कई आर्य विद्वान् इस यज्ञोपवीत का प्रयोजन केवल देव पितृ, ऋषि ऋण से उऋण होना बताते हैं।

कुछ मेरी तुच्छ सम्मति मे ऋण वाली बात असगत सी प्रतीत होती है। क्योंकि अल्पवयस्क बालक पर ऋण चढ़ना कैसे सम्भव हो सकता है फिर अध्ययन काल मे ऋण कैसे उतरेगा। जीवन मे ज्ञान, कर्म, उपासना ही जीवन लक्ष्य को सूचित करना त्रिसूत्री यज्ञोपवीत का लक्ष्य है। विवाह सस्कार के पश्चात् ही गृहस्थ होने पर तीन ऋणों की बात सम्भव है।

कई विद्वानों मे विचार विमर्श होने पर इस बात की पुष्टि होगी। मेरे इस कथन पर विद्वान अपनी सम्मति प्रदान करने की कृपा करें।

—स्वामी 'बेधड़क'
आर्य समाज हिसार (पजाब)

प्रश्न

१—राष्ट्रीय पर्वोत्सव मनाने के लिये क्या आर्य समाज का यही ध्येय है कि उत्सवावसर पर राष्ट्रीय झंडा न आरोपण कर सिर्फ अपना ही झंडा आरोपण किया जावे।

२—क्या आर्य समाज मंदिर मे कोई भी राजनैतिक सस्था अपनी सभा व अपना झंडा आरोपण कर सकती है।

३—क्या किसी भी उत्सव पर सभा मे दिये गये भाषणो मे राज्य सरकार की निन्दा करना और उन व्यक्तियों को जो कि उस उपर्युक्त निन्दा की आलोचना करे या करना चाहे तो उन्हे भाषण देने की आज्ञा नहीं देनी चाहिए कहाँ तक न्याय सगत है ?

४—उत्सव तथा पर्व पर जो भाषण दिये जावे वह या तो तत् सम्बन्धी नहीं होने चाहिए या उसमे राज्य सरकार की नीति की आलोचना करना ही मूल ध्येय होना चाहिये तथा किसी एक व्यक्ति ही की निन्दा करना कहा तक उचित है ?

प्रश्न कर्ता—लक्ष्मीचन्द्र गुप्त अध्यक्ष
आर्यकुमार सभा, पीलीभीत

उत्तर

आर्य समाज की नीति स्पष्ट है। कई बार घोषणा हो चुकी है कि वेदी की पवित्रता की रक्षा अवश्य होनी चाहिए। आर्य समाज की वेदी से राजनैतिक सस्था की बुराई व भलाई नहीं करनी चाहिए। केवल ऋषि दयानन्द की प्रतिपादित नीति का ही प्रचार होना चाहिए। और केवल राष्ट्रीय पर्व पर ही राष्ट्रीय झंडे का प्रदर्शन किया जा सकता है। उस दिन भी उसके साथ ओ३म् का झंडा लगाना आवश्यक होगा।

—पूर्णचन्द, उप प्रधान सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के नियमों में संशोधन

'आर्यमित्र' के १० अगस्त १६५८ के अंक में इन्द्र वर्मा एम०ए० ने आर्य प्रतिनिधि सभा के नियमो में सशोधनात्मक कुछ सुझाव प्रस्तुत किये हैं मैंने वर्मा जी द्वारा प्रस्तुत सशोधनो पर विचार किया और उनका पूर्णतया अनुमोदन करता हू। सशोधन इस प्रकार है —

नियम स० ७० म जो सशोधन प्रस्तुत है उसमे इस बात की माग की गई है कि प्रान्त की प्रत्येक समाज सस्था अथवा प्रतिनिधि सभा जिसके प्रथम 'आर्य' शब्द जुड़ा होगा आर्य सभा मानी जायगी और भविष्य मे भी कोई समाज सस्था अथवा सभा यदि इस नाम से बनेगी तो वह स्वत आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत मानी जावेगी और उसकी सम्पत्ति (चल अचल) का कानूनी स्वामित्व आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को होगा। इसके साथ ही नियम स० ५५ मे भी इसी प्रकार के सशोधन की माग है कि सभा की निज (चल अचल) सम्पत्ति तथा प्रान्त की अन्य आर्य समाजों की सम्पत्ति का कानूनी स्वामित्व सभा को प्राप्त होगा।

उपरिलिखित सशोधनो के आशय के अनुसार नियम बना देने से आर्य समाज के सगठन मे दृढ़ता और कार्य क्षमता उत्पन्न होगी तथा वैयक्तिक रूप मे सम्पत्ति का दुरुपयोग बन्द हो जायगा।

उपर्युक्त सुझावो मे यह भी है कि जिस सभा सस्था के आगे 'आर्य' शब्द जुड़ा है वह आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत मानी जाय, मुझे कानूनी दृष्टि से कमजोर जचता है क्योंकि सभा ने 'आर्य' शब्द की रजिस्ट्री नहीं करा ली है। मेरे विचार से कुछ शाब्दिक परिवर्तन सापेक्ष होगा।

इस सम्बन्ध में कानून जानने वाले महानुभावो से मेरा निवेदन है कि वह भी अपनी सम्मति प्रस्तुत करें क्योंकि उससे लाभ होगा और कानूनी दृष्टिकोण भी सामने आ जायगा।

—प्रो० रमेशचन्द्र अवस्थी, एम० ए०
डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ

(पृष्ठ ८ का शेष)

अजो नित्य शाश्वतोऽय पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ।
वेदाविनाशिन नित्य य एनमजमव्ययम्
कथ स पुरुष पार्थ क घातयति हन्ति कम् ।
वासासि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि सयाति नवानि देही ।
नैन छिन्दन्ति शस्त्राणि नैन दहति पावक ।
न चैन क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत ॥ (अ० २)

परन्तु यह भी रणस्थली मे ही उपयुक्त बैठता है । वीर सिपाही को मौत से डरना नहीं चाहिये, क्योकि जीव मरता नहीं । परन्तु यदि सर्व साधारण इस बात को जीवन का नियम बनाले 'क घातयति हन्तिकम् ।" कौन किसको मारता है, तो ससार मे हत्या और हिंसा की सीमा न रहे । जीव के अमर होने पर भी ससार का यह सिखाने की आवश्यकता है कि जीव मरता तो नहीं परन्तु पीड़ित तो होता ही है । अमेरिका वालो से पूछो कि हिरोशिमा मे तुमने क्या किया । और अगर वह कहे कि 'क घातयति हन्तिकम्' तो आज जगत् का क्या हाल होगा । सैकड़ो कसाई प्रतिदिन कहते हैं "कौन किसको मारता है । जीव अमर है ।" इन पक्तियों के साथ गीता के उस सदुपदेश की भी सगति मिलानी है ।

शुनि चैव श्वपाके च पण्डिता समदर्शिन ॥

दो प्रवृत्तिया भिन्न भिन्न हैं । रणक्षेत्र की प्रवृत्ति और सामान्य नागरिक जीवन की प्रवृत्ति । जब इन दोनो का भेद ठीक ठीक समझा नहीं जाता तो जगत् में अहितकर शक्तियों की उत्पत्ति हो जाती है । गीता मे इन दोनो प्रवृत्तियों को मिलाकर उलझन मे डाल दिया गया है । और अज्ञो के बहक जाने की पर्याप्त सभावना है ।

गीता मे जीव और ब्रह्म के विवेक के लिये बहुत कम सामग्री है । 'न जायते म्रियते वा कदाचित्' यह ब्रह्म के विषय मे है या जीव के ? नित्य, अजम्, अव्ययम्, यह दोनो पर घट सकते है । प्रकरण से क्या ज्ञात होता है । इस मे भी उलझन है । ईश्वर तो सचमुच न मरता है, न जन्म लेता है । परन्तु वह तो प्रसङ्ग की बात नहीं है, यदि जीव के विषय में यह कथन है, तो जन्म और मृत्यु के तत्त्व को उलझन मे डाल दिया गया है । सिपाही के प्रति तो यह उपदेश ठीक है, परन्तु तत्त्वज्ञ के लिये यह एक पहेली रहती है । और गीता इस उलझन को स्पष्टतया सुलझाती नहीं । यही कारण है कि अद्वैतवादी शकर, विशिष्टाद्वैतवादी रामानुज, भेदाभेद वादी निम्बार्क तथा अनेक वादो के प्रभेदो तथा अनुयायी दार्शनिकों ने गीता का यथाक्रम क्रीडास्थली बना डाला । गीता को हम दार्शनिक पहेलियों का सम्मिश्रण कह सकते हैं । या यो कहिये कि यह एक दर्पण है जिसमे हर दार्शनिक अपना ही चित्र देखता है । यह गुण है या अवगुण यह सोचने की चीज है ।

न जायते म्रियते वा' कहकर भी गीता ईश्वर के अवतारवाद का पोषक है आप कितनी ही व्याख्या करने की कोशिश क्यों न करें, गीता के कतिपय श्लोक उस समय के लिखे प्रतीत होते है जब श्री कृष्ण को ईश्वर का अवतार माना जा चुका था । 'यदा यदाहि धर्मस्य' वाले प्रसिद्ध श्लोक के प्रकरण से अलग करके कुछ ही अर्थ क्यों न हो सकते हो फिर भी यदि पूर्वा पर मिलाया जाय तो यह है अवतार । हम से छुटकारा पाना कठिन है, विराट् रूप वाले श्लोक तो और भी सदेह मे डाल देते है । बाल की खाल खींची जा सकती है परन्तु गीता के सभी स्थलो को वेदानुकूल सिद्ध नहीं किया जा सकता । हा यह मानना पड़ेगा कि गीता वेदो का मान करती है ।

य शास्त्रविधि मुत्सृज्य वर्तते कामकारत ।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुख न परागतिम् ॥
तस्माच्छास्त्र प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ ।
ज्ञात्वा शास्त्र विधानोक्त कर्म कर्तुमिहार्हसि ॥ (अ० १६, श्लो० १३,२४)

यहा शास्त्र का अर्थ वेद' ही है । और वेद के अनुकूल आचरण करने पर ही यहां बल दिया गया है ।

एक छोटे लेख मे गीता की विस्तृत समालोचना कठिन है । यहा कुछ सकेत से कह दिया गया है । लेख अपूर्ण ही प्रतीत होगा । आर्य समाजियों के लिये तो यह एक गभीर विषय है क्योकि दूसरो के प्रति वैदिक धर्म का तात्त्विक स्वरूप रखने मे गीता का कितना आश्रय लिया जाय, इस विषय मे उलझनें आरम्भ हो जाती है । ★

[पृष्ठ ७ का शेष]

में तो प्रवास में उनके साथ श्रीमान् प० राधावल्लभ जी शर्मा जाया करते थे पीछे कई बार इन पक्तियों का लेखक भी उनके सेवक के रूप मे—नहीं, नहीं पुत्र के रूप में—उनके साथ गया था । दिल्ली मे अखिल भारतवर्षीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के साथ ही अखिल भारतवर्षीय हिंदी कवि सम्मेलन भी हुआ था । उसके सभापति श्री शङ्कर जी महाराज ही थे । उस समय मैं ही उनकी सेवा कर रहा था । श्री प०पद्मसिंह जी शर्मा भी वहा उपस्थित थे । कवि सम्मेलन बड़ी शान का हुआ था, किंतु उसमे जो समस्या दी गई थी वह बहुत टेढ़ी थी । उसकी पूर्ति श्री शङ्कर जी और श्री रूपनारायण जी पाण्डेय के सिवा अन्य किसी से न बन पड़ी । यहा इस बात की आवश्यकता नहीं कि उस समस्या पूर्ति को लिखकर उसका प्राकृतार्थ और वृद्धों के नाम समझाये जाय, हा इस प्रसङ्ग की एक बात उल्लेखनीय अवश्य है ।

जैसा कि आमतौर पर हुआ करता है श्री शकर जी महाराज की वार्द्धक्य में दृष्टि कमजोर हो गई थी । उन दिनो दिल्ली का सिविल हस्पताल आंखो के इलाज के लिए प्रसिद्ध था, भाग्यवश आँखों के ही वार्ड में अपने गाँव के ही प० राम सहाय जी शर्मा डिस्पेंसर थे, उनके द्वारा बड़े इत्मीनान के साथ डाक्टर साहब को श्री शकर जी की आंख दिखलाई गयी । डाक्टर साहब ने अच्छी तरह परीक्षा कर बतलाया कि एक आँख तो ठीक हो जायगी किंतु दूसरी की आशा नहीं है । यह सुनते ही आशुकवि श्री शकर जी के मुख से अनायास ही यह कविता प्रस्फुटित हुई कि —

बूढे शकर से कहती है,
हाथ जोड़ कविता बाला ।
होकर सूर भजो ईश्वर को,
लेकर तुलसी की माला ॥

डाक्टर साहब इस कविता को सुनकर भौचक्के से हो गये । तब उन्हे बतलाया गया कि यह महाकवि शङ्कर हैं और यहा दिल्ली मे अखिल भारत वर्षीय कवि सम्मेलन का सभापतित्व करने आये हैं ।

सामयिक समस्याएँ

हमारी शिक्षा समस्या

[आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री एम०ए०, अधिष्ठाता शिक्षा विभाग आ०प्र०स०, उ०प्र०]

★

विद्वद्वर शास्त्री जी ने वैदिक शिक्षा के आदर्श का चित्रण कर उसकी सामयिकता और उपयोगिता पर विशेष बल दिया है। आशा है पाठक उनके विचारों पर मनन करेंगे। —सम्पादक

शिक्षा का लक्षण करते हुए महर्षि दयानन्द ने 'व्यवहार भानु' में लिखा है—

"जिससे मनुष्य विद्या आदि शुभगुणों की प्राप्ति और अविद्यादि दोषों को छोड़ के सदा आनन्दित हो सके वह शिक्षा कहाती है।"

इस प्रकार विदित होता है कि शिक्षा एक व्यापक शब्द है जिसके अन्तर्गत विद्या, ब्रह्मचर्य आदि अनेक गुणों की प्राप्ति आ जाती है।

अथर्ववेद काण्ड १२, अनुवाक ५ के प्रथम दो मन्त्रों में शिक्षा के लक्ष्य तथा साधनों का बड़े सुन्दर रूप में प्रतिपादन किया है—

श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्तऋते श्रिता ॥ सत्येन वृता श्रिया प्रावृता यशसा परीवृता. ॥

भाव यह है कि उसी शिक्षा से मनुष्यों को ऐश्वर्य, सम्पत्ति, शोभा, तथा कीर्ति प्राप्त हो सकती है जिसमें 'श्रम' अर्थात् प्रयत्न पुरुषार्थ और उद्यम भी अङ्ग रूप में हो। इस प्रकार 'श्रमदान' वैदिक शिक्षा का प्रथम अङ्ग है।

दूसरा अङ्ग 'तप' अर्थात् धर्मानुष्ठान में कष्ट सहन है। इसी सिद्धान्त के आधार पर गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों का तपस्वी होना आवश्यक समझा गया।

तीसरा अङ्ग 'ब्रह्म' अर्थात् विद्या (वेद और ईश्वर का ज्ञान) तथा अन्न है। शिक्षार्थी को 'श्रमी' तथा 'तपी' होने के साथ 'ब्रह्मचारी' भी होना आवश्यक है।

चौथा अङ्ग 'ऋत' अर्थात् समस्त सत्य विद्याओं का ज्ञान है। इन चारों के होने पर ही शिक्षार्थी को सत्य, श्री और यश की प्राप्ति होती है।

वैदिक शिक्षा सिद्धान्तों में उपनयन (गुरु के समीप रहकर अध्ययन) और ब्रह्मचर्य (बालकों और बालिकाओं के पृथक् पृथक् स्थान पर रहकर नियम पालन पूर्वक अध्ययन) का सबसे अधिक महत्व है। ८ वर्ष की अवस्था से ही शिक्षा का आरम्भ अवश्य हो जाना चाहिये। अक्षरों की शिक्षा तो ५ वर्ष की अवस्था से ही प्रारम्भ कर दी जानी चाहिये।

गुरुकुल अथवा नगर से दूर अच्छे आश्रम छात्रावास में न रहकर जो छात्र नगर के गन्दे वातावरण में गृहस्थ माता पिता आदि के साथ रहकर पढ़ते हैं उनका अध्ययन का क्रम और छात्र जीवन पूर्णतया श्रेष्ठ नहीं हो सकता।

इसी प्रकार सहशिक्षा भी वर्तमान काल में छात्र जीवन का कैसा अभिशाप है यह तो अब किसी से छिपी बात नहीं। महर्षि दयानन्द ने इसके विरुद्ध तीव्र आलोचना की। खेद है कि जब संसार के बहुसंख्यक शिक्षा विशेषज्ञ सहशिक्षा के विरोध में हैं और इसका कटु परिणाम अनुभव कर रहे हैं, आर्य समाज के पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित कुछ विद्वान् तथा कुछ डी० ए० वी० कालेजों के अधिकारी सहशिक्षा को अपनाने में कोई आपत्ति और संकोच का अनुभव नहीं करते। ईश्वर उन्हें सुबुद्धि प्रदान करे।

आचार्य को अधिकार

पतञ्जलि ने महाभाष्य में वर्णन किया है—

सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः। लालनाश्रयिणो दोषास् ताडनाश्रयिणो गुणाः ॥

अर्थात् सच्चे गुरु छात्रों को अमृत संयुक्त हाथों से ताड़ना करते हैं, विष संयुक्त हाथों से नहीं, क्योंकि लाड़ करने से दोष उत्पन्न होते हैं और उचित ताड़ना से गुण। आज इस ताड़ना के अधिकार को कानून द्वारा छीन लिया गया है।

दक्षिणा पद्धति

वैदिक शिक्षा का सिद्धान्त है उसका निःशुल्क होना। यह कार्य अधिकतर वानप्रस्थियों के अधीन होना चाहिये, जिन्हें वेतन की आवश्यकता नहीं। जब वेतन नहीं तो फीस की भी आवश्यकता नहीं। इस प्रकार वैदिक सिद्धान्तानुसार विद्यार्थी अथवा शिष्य अपनी शक्ति और श्रद्धा के अनुसार गुरु के लिये अधिक से अधिक दक्षिणा दे और गुरु अपनी आवश्यकता के अनुसार कम से कम स्वीकार करे। इस विषय में कबीर ने क्या ही सुन्दर कहा है—

शिष्य को ऐसा चाहिये,
गुरु को सब कुछ देय।
गुरु को ऐसा चाहिये,
शिष्य से कछु न लेय ॥

इस वैदिक सिद्धान्त के न मानने का परिणाम आज कैसा भयंकर हो रहा है। आचार्यगण प्रायः धन को ही सब कुछ समझने लगे हैं और शिक्षण गण अध्यापकों को अपना क्रीत दास।

प्राचीन शिक्षा का कैसा सुन्दर क्रम है—जैसे जैसे आयु बढ़ती जाए और बुद्धि पुष्ट होती जाए वैसे वैसे विद्यार्थी कठिन विषयों की ओर अग्रसर होता जाए। यह नहीं कि आजकल की भांति कक्षा ६, ७ आदि में ही विद्यार्थी को पढ़ने के लिये साइन्स लाद दी जाए और गणित के कठिन प्रश्नों में उलझा दिया जावे।

अन्त में यही कहना है कि वेद या ईश्वर के हृदय तक पहुंचने वाले वैदिक शिक्षा सिद्धान्तों को स्वीकार कर कार्य रूप में परिणत करने से ही मानव कल्याण सम्भव है। इन सिद्धान्तों के विरुद्ध आचरण करने से वास्तविक शिक्षा का उद्देश्य कदापि पूर्ण नहीं हो सकता।

प्रधान सभा की अपील पर बैंकोक (थाइलैंड) के आर्य बन्धुओं का उत्साहवर्धक उत्तर

"आर्य जनता अपने कर्तव्य का पालन करे"

[आशा है उत्तरप्रदेश के आर्य जन प्रवासी आर्य बन्धु से कर्तव्य पालन की प्रेरणा प्राप्त करेंगे। —सम्पादक]

१३ जुलाई १९५८ के आर्यमित्र में श्रद्धेय पं० हरिशङ्कर जी ने जनता से आर्यमित्र के घाटे की पूर्ति, वेतन का भुगतान गुरुकुल की रक्षा के निमित्त मार्मिक शब्दों में अपील किया है। आर्यसमाज क्या है? आर्यसमाज वैदिक धर्मियों का समाज है, जिसे स्वामी दयानन्द जी ने सन् १८७५ ई० में बम्बई में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ स्थापित किया था। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि तथा सब की उन्नति में अपनी उन्नति, और विश्व का उपकार करना स्वामी जी का अभिप्राय था। आज उत्तरप्रदेश में एक हजार से अधिक आर्यसमाजें हैं। भारत से बाहर भी ३०० के लगभग आर्यसमाजें हैं। परन्तु जब से मैं समाचार पत्र को पढ़ा हूं तभी से शिर मारे शर्म के नीचे हो जाता है। आर्यमित्र घाटे में चल रहा है, प्रचार करने वाले विद्वानों का वेतन कई कई मास का भुगतान करना है, गुरुकुल और कन्या गुरुकुल की दशा अत्यन्त शोचनीय है। आर्यसमाज में विद्वानों तथा दानियों की न्यूनता नहीं है। तो फिर इस संस्था की ऐसी दशा क्यों हो रही है? आर्य बन्धुओं को अपना सारा बल, तन, धन, सहयोग बल्कि जीवन तक अर्पण कर दो। किन्तु श्रद्धेय प० हरिशङ्कर शर्मा की प्रार्थना व्यर्थ न जाने पाये। यह गौरव और हर्ष का विषय है कि आर्यसमाज के पुराने तपे तपाये कर्मठ विद्वान् शर्मा जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश का संचालन सूत्र अपने हाथ में लिया है। क्या आर्य विद्वान् और दानी महानुभाव प० शर्मा जी की आज्ञा न मानकर उनका अनादर कर सकते हैं? नहीं, कदापि नहीं। जिसने अमृतमय स्नेह तथा आदर्शों से आर्यों के जीवन में आह्लाद भर दिया है, जिसने आर्य समाज के उत्थान और प्रगति के लिए सेवा करने का व्रत लिया है, क्या ऐसे सुयोग्य लेखक और विद्वान् को रुपये की कमी हो सकती है? यदि हम लोगों ने आर्थिक सहयोग नहीं दिया तो उनके त्याग और प्रेम के आकार को कितना मर्मान्तक आघात पहुँचेगा। यदि स्वामी जी का सिद्धान्त विश्व का उपकार करना है और हम लोग सचमुच उनके बतलाये हुए मार्ग पर चलते हैं तो तीस हजार क्या कई लाख रुपये एकत्र हो सकते हैं। विवेकशील विद्वानों का सहयोग ही आर्य-समाज को समृद्धिशील बना सकता है। मैं स्थानीय आर्यसमाज, तथा भारत से बाहर और भीतर रहने वाले आर्य कार्यकर्ताओं, शुभचिंतकों तथा दानी महानुभावों से विनम्र प्रार्थना है कि वह इस शुभ कार्य में हृदय खोल कर हाथ बटायें और आर्थिक सहयोग दें, जिससे प्रधान जी सुचारुरूप से कार्य संचालन करने में समर्थ हो सकें। प्रधान जी की अपील के उत्तर में शीघ्र ही थाईलैण्ड के आर्य बन्धु एक अच्छी राशि भेंट करेंगे। —सत्येन्द्र नाथ आर्य, आ० स० बैंकोक

(पृष्ठ ६ का शेष)

ये चित्र अत्यन्त सुन्दर हैं। इनका रंगन सुन्दर उत्तम व सुरक्षा और चार्ली का प्रयोग किया जाता है। हरे लाल पीले नीले रंग भी स्वाभाविक सा बनाए जाते हैं। भारत में भित्तिचित्र आज भी बनते हैं, इन देशों में भी भित्ति पर चित्र बनते हैं। मन्दिर की प्रवेश कक्षा में अनेक भित्तिचित्र बने हुए हैं। मन्दिर के अन्दर मूर्तियों के सम्मुख धूप और धूप वातावरण में पवित्रता माधुर्य और प्राण भर रहे हैं।

दूसरा भवन अजगर की विशाल मूर्ति से सुशोभित है। भवन के सम्मुख एक विशाल धूपपात्र है और दण्डवत् प्रणाम करने के लिए दो काष्ठफलक पड़े हैं जिन पर दर्शनार्थी दर्शन से पूर्व दण्डवत् प्रणाम करके अपनी श्रद्धा अभिव्यक्त करते हैं। प्रवेश कोष्ठ में चार लोकपालों के चित्र बने हैं। छत सुनहरे लहराते हुए नागों से अलङ्कृत है। नेपाल से आई स्रोन् चन् गम्पो (तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रवर्तक प्रथम सम्राट) के समय की अवलोकितेश्वर की मूर्ति है। यह नानाविध सहस्रों छोटी मूर्तियों से घिरी है। इस भवन में कञ्जूर का नार्थाङ् संस्करण दोनों पार्श्वों में रखा है। इस भवन में हमने अपने साधुओं के दण्ड भी देखा। पूछा तो पता लगा कि १७ वीं शताब्दी में तारानाथ के प्रथमावतार के समय अश्मगुप्ति और एक अन्य आचार्य भारत से आए थे। उन्होंने वहां रहकर संस्कृत ग्रन्थ भोगों में अनुवाद किए। विक्रमादित्य और राजा भोज की कथाएं सुनाईं। उन्हीं का यह दण्ड है। अश्मगुप्ति आचार्य ने भारतीय भोजन बनाना भी सिखाया। आज भी लामा बताशे को बाताश कहते हैं। एक रजत मण्डित श्वेत शंख हम देख ही रहे थे कि एक लामा ने सुवर्ण मण्डित नेपाल से आया हुआ दूसरा शंख बजाकर हमें आश्चर्यचकित कर दिया। पास बैठे पूर्व इस विहार में ताडपत्र पर लिखे संस्कृत के ग्रन्थ थे। भवन से बाहर निकलते समय लकड़ी और भोट में लिखा एक धारणी दृष्टिगोचर हुई। वह इस प्रकार है—ओं नमो भगवते भैषज्यगुरुवैडूर्यप्रभराजाय तथागताय अर्हते सम्यक्सम्बुद्धाय तद्यथा। ओं भैषज्ये भैषज्ये महाभैषज्ये भैषज्ये। राजसमुद्गते स्वाहा॥

क्रमशः

मेरी जयन्ती

"आर्यमित्र" २१ अगस्त के मुख पृष्ठ पर कुछ अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के साथ साथ मेरी जयन्ती मनाने का प्रस्ताव भी है। अपने मित्रों द्वारा अपने को सम्मानित पाते हुए किसको हर्ष नहीं होता? और मैं अपने को बधाई देता हूं कि मैं अपने प्रान्त के आर्य भाई बहिनों के सम्मान का पात्र समझा गया। कुछ वर्षों से यह प्रस्ताव किसी न किसी रूप में जनता के समक्ष आता रहा है। श्री प० हरिशङ्कर जी शर्मा का इस विषय में विशेष आग्रह था। और अब प्रधान होने के कारण उन्होंने इसको अधिक गम्भीरता से हाथ में लिया है। मैं उनका आभारी हूं। एक बार उन्होंने मुझसे पूछा था कि जयन्ती का रूप क्या होना चाहिये। याद नहीं कि मैंने उस समय इसका क्या उत्तर दिया। परन्तु आज कल की मेरी भावनाएं यह हैं —

१—मेरी जयन्ती इस वर्ष न मनायी जाय। इसको ६ सितम्बर सन् १९६१ या भाद्र शुक्ल १३, सम्वत् २०१८ को मनाया जाय, जब मेरे ८० वर्ष पूरे होंगे।

२—इसका रूप यह हो कि उस तिथि को सत्यार्थप्रकाश के पूर्वार्द्ध का एक किसी विदेशी भाषा में अनुवाद तैयार करके प्रस्तुत किया जाय। अरबी, फारसी, रूसी या पूर्वी एशिया की किसी एक भाषा में ३ वर्षों में यह काम हो सकता है। यदि अभी से इस काम को गम्भीरता और तत्परता से आरम्भ कर दिया जाय। एक वर्ष पूर्व मुझे आशा थी कि श्री गोविन्दराम स्वामी द्वारा यह काम सम्पन्न हो सकेगा परन्तु उनके देहान्त के पश्चात् यह आशा नहीं रही। यदि मेरे पास १ लाख रुपया होता, तो मैं १० भाषाओं में यह काम करा सकता था। परन्तु अब मैं अपनी निर्बलताओं के कारण इस काम को नहीं कर सकता। आजकल के वातावरण में सबसे प्रमुख कार्य यह है कि ऋषि की भावनायें देश-देशान्तर के लोगों के समक्ष आ सकें। आर्यसमाज के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। अन्य सब गौण हैं।

३—यदि मेरा देहान्त पहले हो जाय तब भी कोई चिन्ता नहीं। जयन्ती पीछे भी मनाई जा सकती है। जब मैं यह प्रयत्न वायुमण्डल में देखूंगा, तो मेरे आत्मा को प्रसन्नता होगी।

४—जो मित्र मेरी जयन्ती के उत्सुक हैं, वह तीन तीन पुस्तकों का व्यय वहन करें। एक प्रति अपने लिए और दो अन्य देशों में वितरण के लिए।

५—किसी बड़े भारी समारोह की आवश्यकता नहीं। वह धन पुस्तक पर व्यय किया जाय।

—गङ्गाप्रसाद उपाध्याय

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू—



विज्ञान भवन के उद्घाटन से पूर्व सम्पन्न होने वाले यज्ञ में बैठे हुए प्रधान मन्त्री जवाहरलाल जी नेहरू



गुरुकुल द्वारा आयोजित सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए नेहरू जी

आर्य-जगत

उत्सव समाचार—

—आ० स० कोटद्वार गढ़वाल का उत्सव ४, ५, ६ अक्टूबर को होगा जिसमें प० प्रकाशवीर शास्त्री, प० रामचन्द्र देहलवी, महात्मा आनन्द स्वामी आदि पधारेंगे।

—आ० स० नगीना बिजनौर का वार्षिकोत्सव १५ से १८ नवम्बर ५८ तक होना निश्चित हुआ है।

—आ०स० ऐशबाग, लखनऊ का वार्षिकोत्सव २ नवम्बर ५८ को होगा तैयारियाँ प्रारम्भ हैं।

—आ० स० केसरगंज अजमेर का ७२ वा वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ ११ से १६ अक्टूबर ५८ तक मनाया जायेगा।

—आ० स० हरदोई का ७४ वा वार्षिकोत्सव २०, २१, २२ अक्टूबर को होगा।

—आ० स० मसूरी का उत्सव १४, १५, १६, १७ सितम्बर को हुआ जिसमे स्वामी अभेदानन्द जी, श्री नरदेव शास्त्री, स्वामी रामेश्वरानन्द, प्रो० रत्नसिंह, प० प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी०, श्री भद्रपाल जी भजनोपदेशक आदि पधारे थे।

आ०स० लखीमपुर खेरी का उत्सव २१ से २४ नवम्बर तक होगा।

शोक समाचार—

—आर्य जगत् के वयोवृद्ध सन्यासी पूज्य स्वामी आनन्द तीर्थ जी महाराज (पूर्व नाम मास्टर मुरली धर जी) का १९ अगस्त की रात्रि मे स्वर्गवास हो गया था। आपकी आयु ७५ वर्ष की थी। आपको अचानक हैजा हो गया था। आप गत ३० वर्ष से विरक्त होकर वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे थे। अजीतमल, इटावा आर्य समाज ने जिसके आप संस्थापक थे आपके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया जहाँ आपकी जन्म भूमि थी। मृत्यु से पूर्व आपने अपनी कई हजार पुस्तके आर्ष गुरुकुल एटा को दे दी। हिन्दी सत्याग्रह में आप जेल भी गये थे जहा पुलिस की लाठी से आपका एक हाथ टूट गया था। आपने गुरुकुल वृन्दावन तथा भरथना इन्टर कालेज की भी सेवा की थी। २० अगस्त को प्रात आपकी अन्त्येष्टि हुई। निम्न समाजों ने आपके निधन पर शोक प्रकट किया —आ० स० भरथना, इटावा।

—आ० स० औरंगाबाद, सहारनपुर ने अपने समाज के कर्मठ सदस्य श्री मास्टर दिलाराम जी के असामयिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया।

—आ० स० बकेवर, इटावा ने अपने समाज के मन्त्री श्री सूर्यपाल शर्मा की धर्मपत्नी के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया।

—आ० स० चठिया हरदोई ने श्री प० सोमदत्त शर्मा के निधन पर शोक सभा आयोजन किया।

—श्री अयोध्याप्रसाद आर्य एम० एस० ए०, देवरिया जिला के प्रमुख आर्य कार्यकर्त्ता के पिता श्री नकछेदी साह का ७० वर्ष की आयु में २५ अगस्त को देहावसान हो गया।

—स्वामी दयानन्द जी महाराज के दर्शनों से लाभ उठाने वाले ११८ वर्षीय वयोवृद्ध हरयाणा के दादा प० बस्तीराम जी का २६ अगस्त को खरखोदा गाव में देहावसान हो गया। दयानन्द मठ रोहतक की ओर से दाह संस्कार किया गया। वहीं पर उनका स्मारक बनाया जा रहा है। दानी महानुभावों का सहयोग प्रार्थनीय है।

—आचार्य भगवान देव

—श्री गोपालसिंह जी के निधन पर आ० स० चोपड़ा कोट ने हार्दिक शोक प्रकट किया।

—श्री मोहन लाल जी चड्ढा की धर्म पत्नी के निधन पर आ० स० शिकोहाबाद ने शोक प्रस्ताव पास किया।

श्रावणी उपाक्रम (रक्षाबन्धन) वेदप्रचार सप्ताह और श्री कृष्ण जन्मोत्सव समारोह

निम्न स्थानों से श्रावणी उपाक्रम (रक्षाबन्धन) २९.८.५८, वेद प्रचार सप्ताह ३०.८.५८ से ५.९.५८ तक, तथा श्री कृष्ण जन्मोत्सव ६.९.५८ का ससमारोह मनाये जाने का समाचार मिला है—

आ० स० नरही, नारायण स्वामी भवन लखनऊ, आ० स० गणेशगंज लखनऊ, आ० स० चन्द्रनगर, सिंगार नगर लखनऊ, आ० स० शिवाजी चौक खलखवा, आ०स०सदर लखनऊ, आ० स० चौक लखनऊ, आ० स० शाहपुरा, आ० स० मुजफ्फरनगर, आ० स० सिन्दरी बिहार, आ० स० सुरजननगर मुरादाबाद, आर्यवीर दल गाजियाबाद मेरठ आर्य वीर दल दादरी बुलन्दशहर, आर्य वीर दल रूपपुरी महाराजपुर, आ०स० कायमगंज फर्रुखाबाद, शान्ति आश्रम कोहरदम्मा रांची, आ० स० छिबरामऊ, आ० स० भरथना इटावा, आ० स० नवाबपुर बरेली, आ०स० सिरोली फर्रुखाबाद, आ० स० ज्ञान आश्रम पुरा सहारनपुर आ० स० गोरखपुर, लो आ० स० गोरखपुर, आ० स० डालटेनगंज पालामू बिहार, आ० स० भौंचबहादुर नगर बुलन्दशहर, आ० स० नजीबाबाद बिजनौर, आ० स० अलमोड़ा, आ० स० पूरनपुर पीलीभीत आ० स० घुघचाई पीलीभीत, आ० स० मुजफ्फरपुर बिहार, आर्य वीर दल पिपराइच गोरखपुर, आर्य वीर दल मीरजापुर आ० स चुनार मीरजापुर, आ० स० सदर बलिया, आ०स० सुगर मिल खतौली मुजफ्फरनगर, आ० स० बाकनर अलीगढ़, आ० स० मेस्टन रोड कानपुर, आ० स० लखीमपुर खीरी, आ० स० चादकोट गढ़वाल, आ०स० हरदोई, आ० स० रामनगर अमेठी, आ० स० आजमगढ़ आ० स० सिन्दरी मान भूमि बिहार, लो आ० स० कटरा प्रयाग आ०स० तालग्राम फर्रुखाबाद, आ०स० इटावा, आ०स० २ कार्नवालिस स्ट्रीट कलकत्ता, केन्द्रीय आर्य समिति मऊसो, आ० स० बाह आगरा, आर्य स० बिसौली बदायू, आ०स० डहाना मेरठ, आ० स० इकौना बहराइच, आ० स० सकराक फर्रुखाबाद, आ० स० सौरिख फर्रुखाबाद आ० स० सिमरिया हरदोई, आ० स० खैरुद्दीनपुर हरदोई, आ० स० दिलदार नगर गाजीपुर, आ० स० केराकत जौनपुर, आ० स० अमरोहा मुरादाबाद।

चुनाव समाचार—

—आ० स० नजीबाबाद बिजनौर-प्रधान श्री लक्ष्मण प्रसाद जी, मन्त्री श्री चन्द्रप्रकाश जी, कोषाध्यक्ष श्री कान्तिकुमार जी।

—आ० स० डहाना मेरठ-प्रधान श्री होशियार सिंह जी, मन्त्री श्री हरस्वरूप शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री शिवचरण जी।

प्रचार समाचार—

—४ सितम्बर को ग्राम सरइया, वाराणसी में श्री रामनाथसिंह चतुर्वेदी चार्य ने वैदिक धर्म का प्रचार किया तथा चार यज्ञोपवीत संस्कार कराये।

—प० महादेव प्रसाद जी दो सप्ताह से आ० स० पूरनपुर में वाल्मीकि रामायण की कथा कह रहे हैं। इससे स्थानीय सज्जन लाभ उठा रहे हैं।

आर्यकुमार सभा समाचार—

—आर्य कुमार सभा गाजियाबाद मेरठ-प्रधान श्री कृष्ण जी, मन्त्री श्री सत्यप्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष श्री चरणसिंह जी।

आर्य वीर दल समाचार—

—आर्यवीर दल मीरजापुर के मंडल पति श्री ओम्प्रकाश जी ने राम गढ़ में आर्यवीर दल खोलने के लिए दौरा किया। मीरजापुर मे दल का कार्य ठीक चल रहा है। वीरेन्द्रप्रकाश आर्य बी० ए० कार्यालय मन्त्री आर्य वीर दल मीरजापुर के पते से पत्र व्यवहार करें।

सुमेरसिंह बलिदान दिवस

निम्न स्थानो पर मनाये जाने का पुन समाचार मिला है—

आ०स० उमरी कानपुर, आ०स० केराकत जौनपुर, आ०स० बीकानेर।

अन्यान्य समाचार—

—आर्य समाज अमरोहा, की ओर से पाच पुस्तके बिना मूल्य भेजी जायेगी। जिन्हें आवश्यकता हो ८ नए पैसे के टिकट भेजकर वहा से मगा ले।

—वैदिक साधन आश्रम यमुना नगर अम्बाला का साधना शिविर २३ से २७ अक्टूबर तक लगेगा। बड़े बड़े साधु सन्यासी व विद्वान् पधारेंगे।

—स्वामी ईश्वरानन्द जी (कानपुर वाले) जहाँ कहीं भी हो शीघ्र आ० स० पुवाया पहुच जाय।

—लाहौर का उपदेशक महा विद्यालय अब यमुनानगर अम्बाला में आ गया है। इसकी आर्थिक दशा अभी सुदृढ़ नहीं है। अत देश के दानी महानुभावों का ध्यान इधर आकृष्ट किया जाता है।

—ग्राम दौताई जिला मेरठ में दूध, दवा, बिस्कुट आदि बाट कर ईसाई प्रचारक भोले भाले गरीब लोगो को ईसाई बना रहे है। अनेकों भंगी चमारो को ईसाइ बनाया जा चुका है। क्या राष्ट्र के कर्णधार इस ओर ध्यान देंगे। —धर्मबन्धु आर्य दौताई मेरठ

—श्री सोहनलाल बजाज मन्त्री आ० स० छिबरामऊ बुलन्दशहर की अध्यक्षता में एक सभा म निश्चय हुआ कि यहा ६०००) रु० चन्दे से एकत्रित करके उससे मोटे अनाज की दो दुकाने यहा खोली जाय और प्रति रुपया २ सेर १२ छटांक के हिसाब से अन्न वितरित किया जाय ताकि गरीबों का त्राण हो सके।

अन्यान्य समाचार—

—स्व० स्वामी चन्द्रानन्द जी द्वारा लिखित 'सृष्टि की कहानी' सभी आर्य सस्थाओं को ६१ न० पै० भेजने पर रजिस्टर्ड बुक पोस्ट द्वारा भेज दी जायेगी। —प्रबन्धकर्ता, शारदा पुस्तकालय, शारदा भवन, अजमेर

—कैराना नगर जिला मुजफ्फर नगर म एक वैदिक उपदेशक महा विद्यालय खोला गया है जहा वैदिक धर्म के उपदेशक तैयार किये जायेंगे। १२ से १८ वर्ष के अविवाहित छात्र ही लिये जायेंगे। योग्यता मैट्रिक अथवा सस्कृत के प्रथमा होना आवश्यक है। इच्छुक जन शीघ्र पत्र व्यवहार करे। छात्रों का आवश्यकीय व्यय विद्यालय वहन करेगा।

—ब्र० दयानन्द आर्य, देवाश्रम तालाब, कैरानानगर, मुजफ्फरनगर।

— आ० स० चौरिख की ओर से गोरक्षा सम्मेलन चौधरी प्यारेलाल की अध्यक्षता में ससमारोह मनाया गया। ग्राम राजापुर मे मुहर्रम के दिन मुसलमानों ने एक गाय का वध किया था जिसका इस सभा में घोर विरोध किया गया।

—आ० स० पिपराइच गोरखपुर में एक १६ वर्षीय गोरी महिला कहीं से भूलकर पहुच गयी है। पुलिस में इसकी सूचना दे दी गयी है। उक्त महिला के अभिभावक आकर प्रमाण देकर उसे ले जाय।

—केदारनाथ गुप्त मन्त्री

—शिवदेवी नाम की एक ब्राह्मणी विधवा दुर्भाग्य से गुडो के हाथ लग गई थी। आ० स० लखीमपुर खीरी ने उस विधवा को गुडों से छुड़ा कर उसका विवाह श्री पुत्तूलाल नामक एक नवयुवक आर्य स करा दिया।

—शिवनारायण मत्री

—श्रीमती कमला नाम की एक मद्रासी महिला को श्री गगाराम आर्य आदि ने गुडो के चगुल से छुडाकर आश्रम में दाखिल करा दिया। गुडे उक्त महिला को वेश्या के रूप म रखे थे। पता चला है कि मद्रासी वेश्यालयों में अभी और भी कई कुमारिया इसी कार्य के लिए रखी गयी हैं। सरकार का इस ओर ध्यान देना चाहिये।

—बिहार राज्य के प्रसिद्ध आर्योपदेशक प० श्रीकृष्ण शर्मा सूयगढा, मुगेर जुलाई स रुग्न हैं। आर्य जगत् को चाहिए कि उनकी इस विपत्ति में हर प्रकार से सहायता करे।

—आ० स० शेरपुर कला पल्ली म त के भवन निर्माण के लिए श्री मक्खनलाल जी ने ५०) रू० की अपनी जमीन दान दी है। वे धन्यवाद के पात्र हैं।

—शिक्षा विभाग तथा अन्य विभागो का ध्यान देना चाहिए कि हमारी सरकार द्वारा गरीबो की सहायता के लिए जो राशि किसी न किसी रूप मे वितरित की जाती है वह काफी मात्रा में धनी तथा कुपात्रों के हाथ लग जाती है। झूठी सस्थाओं की मोहर बन कर सरकारी सहायता प्राप्त की जा रही है। गरीब यो ही रह जाते हैं। —लक्ष्मण प्रकाश मन्त्री आ० स० चोपडा कोट गढवाल

—शान्ति आश्रम लोहरदग्गा राची में इस समय १३ छात्र हैं। आश्रम का खर्च अपनी भूमि के फसल से चलता है। स्वामी शिवानन्द तीर्थ का नित्य यहा उपदेश होता है।

—आ०स० सिरौली फर्रुखाबाद की ओर से जन्माष्टमी के रोज वैदिक पुस्तकालय तथा वाचनालय की स्थापना हो गयी।

—श्री रामप्रसाद जी चढ़ीसाज उप प्रधान आ० स० गोरखपुर ने श्री आ० स० गोरखपुर के मन्दिर के लिए स्थानीय चित्रकूट मन्दिर दे दिया। इसके लिए सब ने उन्हें धन्यवाद दिया। उसी दिन उसी मन्दिर मे स्त्री समाज का अधिवेशन श्रीमती सावित्री देवी स्नातिका, प्रधाना समाज की अध्यक्षता में रात को देर तक सोत्साह होता रहा।

—श्री ठाकुर भवणसिंह जी भजनोपदेशक सभा का स्वास्थ्य खराब है। नाक से खून आ रहा है। समाजें उनकी सहायता करें और उत्सवों पर उन्हें बुलाने का कष्ट न करे।

—जिला सभा अलीगढ़ के निरीक्षकों को चाहिए कि वे शीघ्र ही अपना निरीक्षण कार्य प्रारम्भ कर दें।

—स्व० महाकवि शकर जी की जन्म शताब्दी मनायी जायेगी, समाजें यथा सम्भव सहायता करें।

—जिला सभा अलीगढ

विशेष समाचार—

स्वामी त्यागानन्द जी का स्वास्थ्य

पूज्य स्वामी त्यागानन्द जी इन दिनो भुवाली सेनिटारियम मे स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। सरकारी अधिकारियो से सम्पर्क स्थापित करके उन्हें वहा अधिक से अधिक सुविधा व आराम दिलाने का प्रयास किया गया है। उनके फेफड़ों की दशा सुधर रही है और डायबेटिज में भी काफी लाभ हुआ है। दुर्भाग्य से पेशाब बन्द हो जाने के कारण उन्हें काफी कष्ट हुआ, नली से पेशाब कराया गया फिर छोटा आपरेशन भी हुआ। अब वे बहुत कमजोर और दुर्बल हो गये हैं। उपचार अच्छा से अच्छा हो रहा है। आ० स० नैनीताल की ओर से समुचित सेवा का प्रबन्ध है। —धर्मपाल

अन्तरङ्ग सभा के आवश्यक निश्चय दि. २७-७-५८

१—नि० स० २ श्री प्रधान जी की विशेष आज्ञा से निम्नप्रकार शोक प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

'अन्तरङ्ग सभा का यह साधारण अधिवेशन श्रीयुत स्व० शम्भूनाथ जी की धर्म पत्नी श्रीमती रामेश्वरी देवी जी सीतापुर, विद्याभास्कर श्रीयुत् रामावतार शास्त्री जी रतनगढ़ (बिजनौर) श्री ठा० नेकरामसिंह जी पेन्शनर मुन्सिफ जज्जी (बदायू) निवासी जिन्होंने अपनी वसीयत द्वारा सभा को सम्पत्ति प्रदान की है तथा श्री रामकृष्ण जी वर्मा एम० ए० उप मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश, आ० स० बुलन्दशहर के कार्यकर्त्ता श्री प्रह्लाद स्वरूप जी के ज्येष्ठ भ्राता श्री पूर्णचन्द्र जी एडवाकेट के हृदयगति रुक जाने के कारण असामयिक देहावसान पर हार्दिक दुख और शोक सहानुभूति प्रकट करती हुई प्रभु से प्रार्थना करती है कि वह दिवगत आत्माओं को सद्गति और उनके दुखित परिवार तथा इष्ट मित्रों को धैर्य प्रदान करे।"

२-नि० स० ३ के अनुसार निम्नलिखित समाज सभा म प्रविष्ट हुए।

१—आ०स० उखरेलागाव	पो० कालाखाल	जि० गढ़वाल
२— " खाजपुरा (नयागांव)	" बुलन्दशहर	" बुलन्दशहर
३— " मुडिया	" धाचरा	" बरेली
४— " खलासीलाइन प्रेम नगर	" खास	" सहारनपुर
५— " खगल्या पट्टी दोगी	" गूलर	" टेहरी गढ़वाल

३—नि० स० ६८ के अनुसार 'आर्यमित्र' की हीरक जयन्ती व श्री प० गगा प्रसाद जी उपाध्याय प्रयाग व श्री प० गगाप्रसाद जी एम० ए० रि० जज जयपुर की सेवाओं के उपलक्ष्य में 'अभिनन्दन' तथा श्री विरजानन्द दण्डी धाम स्मारक का उद्घाटन समारोह महोत्सव आदि कार्यों को सम्पादित करने के लिए समिति बनाई गई।

४—निश्चय स० ३० के अनुसार चरित्र निर्माण विभाग के स्थान पर "नैतिक उत्थान विभाग" नाम रखना स्वीकार हुआ, तथा क्रियात्मक कार्य करने का निश्चय हुआ।

५—निश्चय स० ३२ के अनुसार कर्णवास (बुलन्दशहर) की सम्पत्ति इत्यादि के सम्बन्ध मे एक समिति बनाई गई जिसके सयोजक श्री शिवलाल जी आर्य हैं।

भ्रमण सूचना

सभा मन्त्री श्री ठा० फूलनसिंह जी जबलपुर से वापिस होते समय अकस्मात् प्रयाग पहुँचे। सभा उपप्रधान श्री जगनन्दन लाल जी एडवोकेट प्रयाग से सभा सम्बन्धी वार्तालाप के प्रसग में सभा के वेद प्रचार के लिए भी बातचीत होने लगी। अत प्रशसित श्री उप प्रधान जी की प्रेरणा से तथा श्री कृष्णमुरारी लाल जी के उद्योग से वेद प्रचार के लिए निम्न प्रकार सभा के लिए धन प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त चौक, आर्यसमाज के उत्साही कार्यकर्त्ताओ द्वारा १३४) शीघ्र भेजकर अपना ५ १) वेद प्रचार की सहायता का वचन दिया तथा सभा आडीटर जी जिन्होन अब तक ४०) दिये है और ६०) शीघ्र भेजने का वचन दिया।

१७) श्री मन्त्री जी आयसमाज चौक प्रयाग ५१) पूर्व आ चुके हैं।
१७) " " रानी मण्डी " २३) पूर्व आ चुके हैं और ६०) का वचन
श्री कृष्णमुरारी लाल जी अन्तरङ्ग समासद् द्वारा
३०) श्री कमलापति वर्मा मन्त्री आर्यसमाज कटरा प्रयाग
२५) श्री मन्त्राणी जी स्त्री आ०स० कटरा प्रयाग द्वारा
२०) श्री कृष्णमुरारीलाल जी आर्य कटरा प्रयाग
२०) मनी आर्डर द्वारा श्रीमती माता कलादेवी ने उसी रोज श्री आर्यसमाज
——इलाहाबाद से भिजवा दिये हैं।
१२६)

श्री उपाध्याय जी का स्वास्थ्य अच्छा है। सभामन्त्री जी ने उनसे भेंट कर, सभा सम्बन्धी अनेक बातों पर विचार किया।

विकास वाद समीक्षा

विकासवाद की सामाजिक बुराईयां

[श्री उमाकान्त उपाध्याय एम० ए०, ६ कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता ६]

यद्यपि विज्ञान अपने को प्रगतिशील मानता है पर अभी तक वह डार्विन के विकासवाद की रूढ़ियों से आगे नहीं बढ़ सका है। सृष्टि के विकास सम्बन्धी वैज्ञानिक पक्ष के अतिरिक्त समाज व्यवस्था पर भी विकासवाद का प्रभाव पड़ा है। प्राचीनता के प्रति घृणा और योग्यतम (बलवान) की विजय के सिद्धान्त मानवता को पतन की ओर ले जाने मे ही अधिक सहायक सिद्ध हुए हैं। लेखक ने इसी सामाजिक पक्ष की समीक्षा की है।

—सम्पादक

कोई भी सिद्धान्त जब मान्य स्थान पा लेता है तो उसका प्रभाव जाति के आचार विचार म शनै शनै मूक रूप से घर बनाने लगता है। कुछ काल के पश्चात् वही आचार विचार जातीय स्वभाव या राष्ट्रीय गुण के रूप मे देखे जाने लग जाते हैं, विकासवाद के प्रवर्तक डार्विन एक पाश्चात्य वैज्ञानिक थे। उनके विचारो ने पश्चिम जगत् की प्राचीन मान्यताओ का तिरस्कार किया। नयी पीढ़ी में नये विचार उगने लगे। इन विचारों से लोगों के संस्कारों मे परिवर्तन हुआ और समाज मे भी परिवर्तन हुए। इन नूतन सामाजिक मान्यताओ का क्या प्रभाव रहा, यही प्रस्तुत पंक्तियों का विषय है।

यहाँ हम डार्विन की दो मौलिक मान्यताओ को लेते हैं—

(१) "क्रमोन्नति का सिद्धान्त" (Doctrine of Evolution)

(२) "योग्यतम का रक्षण" Survival of the Fittest

"क्रमोन्नति" के सिद्धात का सर्वाधिक प्रभाव यह रहा कि प्राचीन विद्या बुद्धि पर से नवीन पीढ़ियों की आस्था उठ गई। पढे लिखे लोग भी समझने लगे कि पूर्व पुरुष मानव की प्रारम्भिक स्थिति मे थे। अत उनम विचारो की प्रौढ़ता, अनुभव की प्रचुरता तथा सत्य की सन्निकटता नहीं हो सकती। उदाहरण के लिये 'वेद' संसार के सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ हैं। विकासवाद की मान्यता के अनुसार इन प्रारम्भिक ग्रन्थों मे मानव के प्रारम्भिक विचार और प्रारम्भिक अनुभवो का संकलन है। इसी का अभिप्राय यह है कि 'वेद' जैसी पुरानी पुस्तकों के अध्ययन और मनन की अब क्या आवश्यकता है ? अब तो विज्ञान बहुत अधिक उन्नति कर गया है। विकासवाद का प्रथम फल यह हुआ कि बहुत अधिक मनुष्य ऋषि महर्षियों के ज्ञान से वंचित रह गये, परमात्मा की 'कल्याणी वाणी' की उपादेयता से लाभ न उठा सके।

प्राचीन विचारो के प्रति आस्था हीन हो जाने का एक और फल हुआ प्राचीन विचार धर्म की मान्यताओ से अनुप्राणित हैं। उनम सदाचार की महत्ता अधिक है। करुणा दया जैसे गुणो को आदर की दृष्टि से देखा जाता है। किन्तु विकास के प्रभाव ने मनुष्य की 'सदाचार सम्बन्धी मान्यताओं' का उपहास किया। कदाचित आचरण मे सापेक्षवादी सिद्धान्त Doctrine of Relativity को स्थान देने का प्रयास विकासवाद के आभाव म सफल न हो पाता।

"There was a time when the word 'Starik' (old person) was a term of almost disgrace" Mother Russia by Maurice Hindus Page 105

क्रान्ति के दिनो म रूस के लोग प्राचीनता से इतने ऊब गये थे कि उन्हें पुराने पन से ही चिढ़ हो गई थी, मौरिशहिन्डस ने लिखा है—

अर्थात् एक समय था जब "वृद्ध जन" शब्द एक तिरस्कार, यहा तक कि घृणा का शब्द बन गया था।

निस्सन्देह इस धारणा के पीछे राजनैतिक कारण भी थे, किन्तु विकासवाद को आँखो से ओझल नहीं किया जा सकता।

विकासवाद की दूसरी मान्यता है—

"योग्यतम का रक्षण (Survival of the Fittest)

इसका अर्थ यह है कि जो शक्तिशाली होता है उसी की जीत होती है अथवा "निर्बल को जीने का अधिकार नहीं है।" यूरोप ने जिस निर्दयता का व्यवहार 'उपनिवेश युग' में किया है, उसके पीछे उनकी यही धारणा थी। श्री बाबू देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय ने महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र की भूमिका म लिखा है।

"योग्यतम की जय" का नाम लेकर तू (यूरोप) सहज मे ही दुर्बल के मुह से भोजन का ग्रास निकाल लेता है, सैकडो मनुष्यो को अन्न से वंचित कर देता है, एक एक करके सारी जाति को निगृहीत, निपीडित और निस्सहाय कर देता है। जब तू बिजली के प्रकाश से प्रकाशित कमरे में संगमरमर से मण्डित मेज के चारो ओर अर्धनग्ना सुन्दरियों को लेकर बैठता है उस समय यदि तेरे भोजन, सुख और सम्भाषण के लिए दस मनुष्यो के सिर काटने की भी आवश्यकता हो तो अनायास ही तू उन्हें काट डालेगा, क्योंकि तेरी शिक्षा यही है कि "योग्यतम की जय होती है।"

इस सिद्धान्त के प्रतिकूल वेद कहता है, "मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्" अर्थात् मित्र की दृष्टि से सम्पूर्ण संसार को देखो। मित्र की दृष्टि बना लेने पर तो संसार को दबाया नहीं जाता अपितु उन्हें सहारा दिया जाता है। प्राचीन साहित्य में ऐसी कितनी सूक्तियाँ हैं—

दरिद्रे दीयते दानं सफलं पाण्डुनन्दन
दरिद्रान् भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरे धनम्'
व्याधितस्यौषधं पथ्यं नीरुजस्य किमौषधैः

हिन्दी के कवि भी 'परपीड़ा सम नहिं अधमाई' जैसे पदों को लिखकर इसी सत्य की ओर संकेत कर रहे हैं कि निर्बल हमारे पालनीय हैं दण्डनीय नहीं। हम अपने बल से निर्बल की रक्षा करनी चाहिए। विकास वाद के सिद्धान्त का फल यह है कि हमें निर्बलों की निर्बलता से लाभ उठाकर अपने को बलवान् बना लेना चाहिए।

यूरोप का सारा आर्थिक सिद्धान्त निर्बलता का असमर्थता से लाभ उठाने के ऊपर खड़ा है। प्रतियोगिता Competetion) और आर्थिक योग्यता (Economic efficency) के पीछे निर्बलों के कल्याण की बात कदापि नहीं है। हमारे यहाँ भृत्य का अर्थ "भर्तुं योग्य" पालन किया जाने योग्य है पर वहाँ श्रम जीवियों को जीवन निर्वाह का साधन भी सुलभ न था।

इसलिए हम कह सकते हैं कि विकासवाद का सामाजिक पक्ष अत्यन्त दोषपूर्ण रहा है। इसने मानव समाज को जो हानि की है वह शीघ्र मिटने नहीं जा रही है, और विकास वाद के इन प्रभावो को अस्वीकार करना इतिहास से मुख मोडना है। ★

हैदराबाद के आर्य बन्धु श्री उपाध्याय जी व श्री जज साहब के अभिनन्दन और आर्यमित्र हीरक जयन्ती

की

सफलता की कामनाएं करते और आर्थिक सहयोग का अभिवचन देते हैं

प्रधान सभा के नाम हैदराबाद के आर्य नेता श्री नरेन्द्र जी का पत्र

ओ३म्

स्थापना ४४३१ — टेलीफोन न० ४८७७

रजि० ६,५७ — आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण आन्ध्र प्रदेश

सुल्तान बाजार, हैदराबाद

पत्र स० ७३१०,५८ — दि० ७८ ८ ५८, दयानन्दाब्द १३४

श्री प्रधान जी,

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश नमस्ते

आर्यमित्र साप्ताहिक दि० २८ ८ ५८ के मुख पृष्ठ पर यह समाचार पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि सभा ने श्री प० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय तथा श्री प० गंगाप्रसाद जी रि० चीफ जज का अभिनन्दन और आर्य मित्र का हीरक जयन्ती समारोह गुरुकुल वृन्दावन के महोत्सव के अवसर पर करने का निश्चय किया है। आर्य जगत म आर्यमित्र की सेवाएं सदा स्मरणीय रहेंगी, दोनों आर्य विद्वान् महानुभावों का महान् व्यक्तित्व समस्त आर्य जगत् के लिए गौरव की बात है।

इन समारोहो के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण की ओर से यथा शक्ति आर्थिक रूप मे सहायता करने का मैं आपको अभिवचन देता हू। सभा की ओर से समारोहो की सफलता के लिए शुभकामनाओं के साथ।

नरेन्द्र, प्रधान सभा

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
आद्र ३०, शक १८८० (२१ सितम्बर ५८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ५११३ तार 'आर्यमित्र'

…शास्त्री द्वारा भगवानदास आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

वेदोपदेश

ओ३म् वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वनो घर्मोऽसि विश्वधा असि। परमेण धाम्ना दृंहस्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत् ॥ यजु० १।२

हे यज्ञ, तू पवित्र करने वाला है, प्रकाशक है विस्तृत है, वायु को शुद्ध करने वाला है और विश्व का धारक है। तू परम धाम द्वारा दृढ़ हो। तू कुटिल न हो, यजमान भी कुटिल न हो।

आर्यमित्र

लखनऊ—२८ सितम्बर १९५८ दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०५९

आवश्यक निवेदन

धन-संग्रह की योजना में सहयोग दें

"आर्यमित्र" हीरक जयन्ती, उपाध्याय व जज साहब अभिनन्दन समारोह तथा गुरु विरजानन्द स्मारक के लिए धन संग्रह का कार्य आरम्भ कर दिया गया है। समस्त आर्य बन्धुओं, सभा के अवैतनिक उपदेशकों, तथा सभा के अन्तरङ्ग सदस्यों से निवेदन है कि वे धन संग्रह कार्य के लिए जिस प्रकार और जितना समय देना चाहें मुझे सूचित करें। आर्य अध्यापक बन्धु दशहरा दिवाली अवकाशों के कार्यक्रम के सम्बन्ध में सूचित करें, जिससे पारस्परिक परामर्श से धन संग्रह का कार्य योजना के साथ सम्पन्न किया जा सके। एक ही क्षेत्र में अधिक लोग बारबार आते रहें इससे उत्तम यह होगा जहां आवश्यकता हो वहां लोग योजनानुसार पहुँचें।

—कालीचरण आर्य
उप प्रधान सभा
संयोजक अर्थ समिति, आर्यमित्र हीरक जयन्ती

पहली बात

पहली बात जो आज हम सामान्य रूप से देश की सर्व साधारण जनता से और मुख्य रूप से आर्य बन्धुओं से निवेदन करना चाहेंगे, वह यह कि प्रत्येक नागरिक सुधार के कार्यों में अब अपना पग आगे बढ़ाये। हमारा अभिप्राय नैतिक उत्थान सम्बन्धी कार्यों से है।

सरकारी गैर सरकारी सभी विभागों, सामाजिक राजनैतिक तथा शिक्षा संस्थाओं एवं राष्ट्र के अन्यान्य सभी वर्गों के लोगों की यह शिकायत है कि आज देश में नैतिकता का अभाव है। इसमें भी दो मत नहीं है कि राष्ट्रोन्नति के लिए आज सबसे अधिक आवश्यकता नैतिकता की है। फिर भी बजाय इसके कि नैतिकता का प्रचार हो, हम देखते हैं कि अनैतिकता और बढ़ती हो जा रही है और नैतिकता तो केवल अब पुस्तक की वस्तु हुई जा रही है। यह ठीक नहीं है, ऐसा नहीं होना चाहिए, यह सभी कहेंगे पर प्रश्न यह है कि मैदान में आकर पहले काम करने के लिए कौन तैयार हो?

सामान्य जनता सोचती है कि यह काम सरकार का है, हमें क्या करना है, सुधारवादी संस्थाओं में अब पहले जैसी कर्मठता रही नहीं, कुछ संस्था वाले तो यह सोचने लगे हैं—हमें कौन सा वोट लेना है जो इतना परिश्रम करें, वोट लेने वाले राजनैतिक संस्थाओं को दलगत गन्दी राजनीति के दांवपेंच से फुरसत नहीं है, हमारी सरकार को अपनी कुर्सी बचाने व योजना बनाने से अवकाश मिलता नहीं, व्यापारी तथा नौकरी पेशे वाले लोगों को सुधार की विशेष चिन्ता इसलिए नहीं है कि उनके पास पैसे हैं, फिर नैतिक उत्थान आन्दोलन चलाकर सुधार करने के लिए आगे आए तो कौन?

अतः अब यदि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर, एक संस्था दूसरी संस्था पर या सरकार जनता पर व जनता सरकार पर इस जिम्मेदारी को टालती आती है तो समाज की स्थिति और भी दुखद और भयावह हो सकती है। इसलिए अब अधिक सोचने का और टाल मटोल करने का समय नहीं रहा। अब तो आवश्यकता इस बात की है कि समय रहते ही प्रत्येक नागरिक को इस नैतिक उत्थान के कार्य में जुट जाना चाहिये।

यह मत सोचिए यह किसका काम है, किसकी जिम्मेदारी है। याद रहे कि देश स्वतन्त्र है, और यहाँ जनतन्त्र की सरकार है, जनता ही सरकार चलाती है, ऐसा समझना चाहिए और प्रत्येक कार्य में सरकार को सहयोग करना चाहिए, सरकार यदि तैयार न हो तो उसे बाध्य करना चाहिए। अतः नैतिक उत्थान के कार्य को अपना कार्य और अपनी जिम्मेदारी समझकर अब प्रत्येक नागरिक को सुधार कार्य के लिए मैदान में आना चाहिए।

इस विचारधारा और इस भावना के अधिकाधिक प्रचार की आज आवश्यकता है। यदि आर्य समाज इस कार्य में अग्रणी बने तो सुधार सम्भव है। अतः आइये, हम सब स्वनिर्माण, आत्मसुधार की ओर चलें। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने आपका निर्माण व सुधार करे और फिर समाज व राष्ट्र का सुधार स्वयमेव हो जायेगा।

दूसरी बात

दूसरी बात जो हम अपने मान्य आर्य नेताओं और योग्य आर्य कार्यकर्ताओं से निवेदन करना चाहेंगे वह है लिखने, बोलने और करने के सम्बन्ध में।

साधारणतया हम देखते हैं कि हम बोलते अधिक हैं, लिखते अधिक हैं, पर काम बहुत कम करते हैं। शायद हमने अधिक बोलना और अधिक लिखना ही अपना कर्तव्य समझ लिया है। वेदप्रचार की बात को ही ले लीजिए। हम वेदों पर भाषण दे देते हैं और लेख लिख देते हैं पत्रों में, पर इसीसे तो काम चलेगा नहीं। आज की जनता लिखने व बोलने के साथ कुछ ठोस कार्य भी सामने देखना चाहती है, अन्यथा हमारे ओजस्वी भाषणों को सुनकर और उपयोगी लेखों को पढ़कर जनता केवल यही कहती है—"अच्छा बोला है, अच्छा लिखा है"। भाषणों व लेखों की शिक्षा का ग्रहण कोई नहीं करता।

वाणी और लेखनी प्रचार के दो बड़े जबर्दस्त साधन हैं। हमारा अभिप्राय उसका विरोध करना नहीं है। हम केवल यह निवेदन करना चाहते हैं कि 'लिखना बोलना कम कीजिए और काम अधिक कीजिए।'

आंग्ल भाषा के प्रमुख विद्वान् श्री लांगफेलो ने एक स्थान पर लिखा है कि—'अपने कान सबको दो, पर अपनी वाणी बहुत कम को, सबकी बात कान को सुना दो पर अपना निर्णय गुप्त रखो।' अर्थात् यहाँ कम बोलने, अधिक सुनने और अधिक काम करने का उपदेश है।

हमें विश्वास है कि हम जितना बोलते और लिखते हैं, उसी हिसाब से यदि काम भी करने लग जाय तो अल्प समय में ही समाज को बहुत आगे ले जाकर खड़ा कर दे सकते हैं।

तीसरी बात

तीसरी बात में स्वयं तीन बातें हैं, तीन निवेदन हैं। आर्य जनता के सम्मुख ये तीनों बातें आ चुकी हैं, कार्य आगे बढ़ चुका है और निवेदन भी किया जा चुका है, पर इस सम्बन्ध में तो हमें तब तक निवेदन करते रहना है जब तक ये तीनों समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न न हो जाय और जब तक इनकी सम्पन्नता के लिए ५० हजार रुपये की धनराशि एकत्रित न हो जाय। ये तीन बातें हैं—आर्यमित्र की हीरक जयन्ती, श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, व श्री पं० गंगाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज का अभिनन्दन।

आर्यमित्र ने पिछले ६० वर्षों में किस प्रकार आर्य जगत् की सेवा की है, यह बात किसी से छिपी नहीं है। इसमें दो मत नहीं है कि आर्यमित्र आर्य जगत् का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक पत्र है। श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय व पं० गंगाप्रसाद जी रि० चीफ जज ने अपनी वाणी और लेखनी तथा सत्साहित्यों के द्वारा आर्य समाज की जो सेवा की है और वैदिक धर्म के लिए जितना कार्य किया है वह भी सर्व विदित है। ये दोनों ही महानुभाव हमारे मान्य हैं और उनके कार्य अनुकरणीय हैं।

ये समारोह गुरुकुल वृन्दावन के वार्षिकोत्सव के अवसर पर अखिल भारतीय स्तर पर मनाये जायेंगे। देश की आर्य जनता का यह कर्तव्य है कि वह इस पुनीत कार्यों में सहयोग करे और प्रान्त की आर्य जनता को तो अब तन मन धन से इस कार्य को सफल बनाने में अविलम्ब जुट जाना चाहिए।

*

केरल में ईसाई प्रचारकों के घृणित कृत्य

(ले० श्री देवीचन्द्र एम० ए०, प्रधान मन्त्री, अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन, होशयारपुर)

अभी निकट वर्तमान काल मे ही केरल की कम्युनिस्ट सरकार ने वहाँ रोमन कैथोलिक मिशन के पादरियों ने किस प्रकार हिन्दुओं के एक मुख्य तीर्थ स्थान को नष्ट करने का जो घृणित तथा असभ्य कर्म किया है उसको प्रकट किया है जिसके विरुद्ध केरल की हिन्दू जनता गत ८ वर्ष पर्यन्त रोष प्रकट करती रही। केरल सरकार ने श्री के० केशवा मैनन डिप्टी इन्सपेक्टर जेनरल पोलीस को हिन्दुओं के उस सुप्रसिद्ध तीर्थ स्थान के अय्यावन मन्दिर को अपवित्र करने तथा उसको नष्ट भ्रष्ट करने का उत्तरदायित्व किस पर है, इसकी जाच के लिए नियुक्त किया था जिन्होंने अपनी रिपोट मे इस निन्दनीय कार्यवाही के लिए वहाँ के रोमन कैथोलिक मिशन को दोषी ठहराया है। बम्बई के समाचार पत्र ब्लिटज़ ने कुछ मास हुए उक्त रिपोर्ट पर अपना एक नोट प्रकाशित किया था। उससे वहाँ की स्थिति पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

उन्होने इसने लिखा है कि उक्त मन्दिर तथा उसके देवता के लिए वहाँ के हिन्दुओं मे अगाध श्रद्धा की भावना थी जो ईसाई मिश्नरियो के मार्ग में हिन्दुओ का ईसाई मत की दीक्षा देने म एक स्थाई बाधा प्रतीत होती था। वह उस रुकावट को दूर करना चाहते थे। यह सत्य है कि इतिहास अपने आपको दोहराता है। केरल के रोमन कैथोलिक पादरियों ने सबरीमाला के इस तीर्थ स्थान तथा उसके मन्दिर को नष्ट भ्रष्ट करके तथा उसको अपवित्र करवाने मे जो अनुचित तथा असभ्य व्यवहार किया है उससे उनके ऐतिहासिक अत्याचारो तथा कुकृत्यो में एक और वृद्धि हो गई है। ऐसा करने म उनका उद्देश्य केवल यही था कि 'न होगा बास न बजेगी बासरी' जब मन्दिर और उसके देवता का ही समाप्त कर दिया जायगा तो वहाँ कौन पूजा के लिए आएगा। इस देव स्थान का नष्ट भ्रष्ट करवाने के लिए इन दम्भी ईसाइयो ने दुश्चरित्र लोगो तथा चोरो से भी काम लिया है। इस सरकारी लम्बी रिपोट में श्री मैनन ने ईसाई मिश्नरियो की इस निन्दनीय कार्यवाही का कारण वर्णन करते हुए स्पष्टतया यह भी लिखा है कि उक्त तीर्थ स्थान के चारों ओर का जगली प्रदेश रोमन कैथोलिक ईसाइयों के बाग बगीचों से घिरा हुआ था और उन्हे लाखो की संख्या मे हिन्दुओं के इस तीर्थ स्थान पर एकत्रित होना असहनीय प्रतीत होता था। वह उसे अपने मत के प्रचार के मार्ग में एक भारी बाधा समझते थे इसी कारण उन्होंने सदैव के लिए उसे समाप्त कर देने का दृढ़ निश्चय किया था और अत्यन्त दुख की बात यह है कि प्रदेश कांग्रेस के प्रमुख स्तम्भ (कार्यकर्त्ता) इस अत्यन्त घृणित तथा असभ्य कार्य में उन लोगो की पीठ पर रहे।

डिप्टी इन्सपेक्टर जेनरल पोलीस ने अपनी इस रिपोर्ट मे ईसाई पादरियों की इस अत्यन्त घृणास्पद तथा निन्दनीय कार्यवाही की निन्दा करते हुए इस सत्य को भी प्रकट किया है कि उक्त देव स्थान के निकट ही इन लोगों ने अपना कोई पुराना गिरजा इस लिए निकाल डाला जिससे हिन्दू यात्रियो को मार्ग में ही बलात उसकी ओर आकर्षित किया जा सके और उन्हे उस अपने मन्दिर अय्यावन की ओर जाने से रोका जाये।

पुराने विचार के हिन्दू वनवासी जनता तथा पशुओं के चोर तथा डाकू होने पर भी अपने देवता के भक्त ही समझते है इसलिए वह उनका विरोध करने का साहस नहीं करते।

वर्तमान समय प्रकाश का युग कहा जाता है। इसके अतिरिक्त अब भारत की गणना एक स्वतन्त्र प्रजातन्त्र देशो मे हो रही है और इस देश में अब हमारा अपना शासन है। मुझे यह देखकर अत्यन्त खेद तथा आश्चर्य होता है कि इस समय भी विदेशी ईसाई पादरियो को इस प्रकार की अत्यन्त अनुचित तथा निन्दनीय कार्यवाहियों से हमारी सरकार रोक नहीं सकती और उन्हे अब भी यह साहस प्राप्त है कि वह एक स्टेट में एक हिन्दू देव स्थान को अपमानित करके उसके अस्तित्व को मिटा सकते हैं और भोले भाले हिन्दुओ को बलात् गिरजाघरो मे लाकर प्रलोभन तथा भय देकर ईसाई बना सकते है और भारत सरकार उसका कोई नोटिस नहीं लेती।

केरल का कम्युनिस्ट सरकार से भी हम यह जानना चाहते हैं कि उसने श्री मैनन की रिपोर्ट पर उन ईसाई मिश्नरियो के विरुद्ध क्या कार्यवाही की है जो सबरीमाला मे अय्यावन मन्दिर के नष्ट भ्रष्ट करने के दोषी ठहराया गया है। सरकार ने इस प्रकार की घटनाओं की जिन से भारतीय हिन्दुओं की भावनाओं को भारी ठेस लगती है रोक थाम के लिए यदि शीघ्र कोई प्रभावशाली पग न उठाया और अपराधी ईसाई पादरियों को उचित दण्ड न दिया गया तो न केवल भारत के हिन्दू इसके विरुद्ध तीव्र आन्दोलन करने के लिए बाधित होंगे प्रत्युत विदेश में रहने वाले हिन्दू भी रोष प्रकट करने में उनके साथ होंगे।

चयनिका

जैसे भेड़ के बच्चे की दुखभरी आवाज पर भेड़िए को दया नहीं आती, उसी प्रकार क्रूर मनुष्य का हृदय दूसरों का दुख देख कर नहीं पसीजता। —अज्ञात

जो दूसरों पर दया दिखाता है, मानों वह खुद को दूसरो की करुणा का पात्र बनाता है। लेकिन जो करुणा शून्य है वह दूसरों की दया का अधिकारी नहीं। —अज्ञात

—जब तक तुम घास के बिछौने पर लेटे हो, तब तक तुम्हें बड़ी गहरी नींद आयेगी। किन्तु जब गुलाब के फूलों का बिछौना सोने को मिलेगा, तो काटो से बचने की चौकसी करनी पड़ेगी। —अज्ञात

—यदि कोई मुझ से कहे, कि किस देश के आकाश के नीचे मनुष्य के अन्तःकरण को पूर्णता प्राप्त हुई तो मैं कहूगी, कि वह देश भारतवर्ष है। —एनी बिसेंट

—क्रोध के आदि में मूर्खता व अन्त में पश्चाताप है। —मोन्डर

—सुखों का त्याग करने से वे, आप ही, आपके पीछे पीछे चलते हैं। —फ्रैंकलिन

—नेत्रों को, संकटों को देखने की आदत हो जाय, तो बहुत सा भय कम हो जाता है। —बर्क

कार्य करो, ससार का सार काम है। कीर्ति की प्राप्ति काम करने ही से होती है। —रोनाल्ड्स

—सबसे प्रेम करो और दूसरों पर बहुत कम भरोसा रक्खो। परन्तु किसी के साथ बुराई न करो। —शेक्सपीयर

—धोखा खाने की अपेक्षा धोखा देना बुरा है। —अज्ञात

—मित्रता मानव जीवन का रत्न है। मित्रहीन मनुष्य बड़े दया के पात्र है। विशेष कर इसलिए कि ऐसी दशा उनकी अपने ही दोष से हुई है। —लिली

—मनोविनोद के जितने काम हैं उनमें व्यायाम सम्बन्धी क्रीडा प्रशसनीय है। —सर जेम्स पैगट

—मुझे खुश रहना पसन्द है, पर लाख रुपये का मालिक बनकर भी उदास रहना पसन्द नहीं। —ह्यूम

—अपनी जीभ को बन्द और ओठों को सी कर रखो। ऐसा न हो, कि तुम्हारे मुंह से ही निकले शब्द तुम्हारी शान्ति को भग कर दें। —अज्ञात

—जो कुछ काम करो, उसको पूरे उद्योग और उत्साह से करो। उद्योग उत्साह और धीरज में बड़ी भारी शक्ति है। —मदनमोहन मालवीय

—मनुष्य का गौरव इसमें है कि वह अपने से छोटो के साथ प्रेम और सभ्यता का बरताव करे, और अपने से बड़े के लिए उसके अन्दर आज्ञा पालन और मान का भाव हो। —लाला लाजपतराय

यदि झूठ बोलकर तुम्हे लाख रुपये भी मिलें, तो तुम उन्हे खाक समझो। यदि किसी की बेजा खुशामद करके तुम्हें उच्च पद मिलता हो तो ऐसे पद से पदहीन रहना अच्छा समझो। धर्म और न्याय से कमाया हुआ एक पैसा चोरी और पापाचार के सैकड़ों रुपयों से अच्छा है। —काबेट

स्वस्थ शरीर मे स्वस्थ मन से बढ़ कर कोई आनन्द नहीं है। जिसका शरीर नीरोग व मन स्वस्थ है, वह अवश्य सुखी है। —लार्ड बेकन

जिस मनुष्य का बच्चों से प्रेम नहीं, जिसका हृदय बच्चों के मीठे स्वर से गद्गद् नहीं हो जाता, वह मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है। —ईसा

तरुणावस्था मे मनुष्य थक जाते है, उनका उत्साह कम होकर, उनके हाथ से जैसा चाहिए, वैसा काम नहीं हो सकता। इसका कारण यह है, कि उन्हे ज्यादा खाने की आदत लगी रहती है, परन्तु वे व्यायाम करते ही नहीं। —एडीसन

जब तक बात तुम्हारे मुह से नहीं निकली है, तब तक वह तुम्हारे वश मे है। ज्योंही वह मुह से निकल गई, कि तुम उसके वश में हो गये। —सुकरात

जो मूर्ख अपनी मूर्खता को जानता है, वह धीरे धीरे सीख सकता है। पर जो मूर्ख अपने को बुद्धिमान समझता है, उसका रोग असाध्य है। —अफलातून

जीवन का बड़ा अन्त सुख नहीं, कर्म है। —हक्सले

हसी कोई बुरी बात नहीं अपितु पराकाष्ठा से बाहर होना बुरी है। —अज्ञात

सुन्दर वही है जो सुन्दरता से परिपूर्ण कार्य करे। —गोल्ड स्मिथ

एक एक व्यक्ति विकास-योजना

(लेखक —श्री डाक्टर रघुवीर, संसत्सदस्य)

आज सर्वत्र निर्माण की चर्चा है। कुछ खण्डहरों का सुधार कर निर्माण के पक्ष में हैं और कुछ नये सिरे से आदर्श रचना करना चाहते हैं। लेखक ने भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल एक एक व्यक्ति विकास-योजना की कल्पना की है। पाठक उनके गम्भीर विचारों से लाभ उठा सकें, इस भावना से उनकी समग्र योजना प्रस्तुत की जा रही है। आशा है पाठक इन विचारों से व्यावहारिक योजना का निर्माण कर सकेंगे। —सम्पादक

एक नया विचार है।

राष्ट्रीय योजनाएं विशाल योजनाएं हैं। इनका प्रयोजन राष्ट्र की औद्योगिक शिक्षा का न्यास है। इनका प्रयोजन है कि बड़ी बड़ी निर्माणियां बनाई जांय। बिजली और लोहा महती मात्रा में उत्पादन किया जाय, जलयान बनें, विमान बनें, यन्त्र बनाने वाले यन्त्र बनें। किंतु इन योजनाओं का यह प्रयोजन नहीं कि व्यक्ति भी महान् बनें। इन योजनाओं से व्यक्ति को लाभ अवश्य पहुंचेगा किन्तु इनके द्वारा एक एक व्यक्ति के जीवन की न्यूनताओं की पूर्ति न होगी, उसको सुन्दर घर न मिलेगा, उसके गांव का रूपान्तर न होगा, उसकी आय अठगुनी व दसगुनी न बढ़ेगी।

यह काम 'एक एक व्यक्ति विकास योजना' का ध्येय है। इस योजना द्वारा व्यक्ति के विकास के मार्ग से राष्ट्र का विकास होगा। प्रत्येक परिवार का जीवन-स्तर वैसे ही ऊंचा उठता जायेगा जैसे कि संसार के अन्य समृद्ध देशों में।

विचार नया है। इसको समझाने के लिए सहृदयता की परम आवश्यकता है। यह विचार किस प्रकार क्रियारूप में परिणत होगा इसकी प्रारम्भिक रूपरेखा अगली पंक्तियों में देने का प्रयत्न किया गया है।

साम्यवादी तथा असाम्यवादी सभी प्रकार के देशों तथा उनकी योजनाओं का साक्षात दर्शन, निरन्तर अध्ययन तथा चिरकाल तक मनन करने के पश्चात् लेखक ने कुछ विचार बनाये हैं। भारत की दरिद्रता, कलाहीनता और जनता की विवशता से हृदय पिघल जाता है। जनता का उत्थान हो, देश का कल्याण हो, इस विशुद्ध भावना से प्रेरित होकर 'एक एक व्यक्ति विकास योजना' का प्रादुर्भाव हुआ है। एक ओर यह स्वप्न है, दूसरी ओर यह व्यावहारिक सत्य है। अन्य देशों में जनता का स्तर ऊंचा उठ रहा है, और यहाँ भी उठेगा। अन्य देशों में राष्ट्रीय योजना के द्वारा और उससे भी अधिक वैयक्तिक बुद्धि, कौशल और परिश्रम द्वारा धूलि से उठकर जनता महलों में पहुंचा है। भारत में भी एक ओर राष्ट्र की योजना और दूसरी ओर स्वातन्त्र्यपूर्वक वैयक्तिक उद्योग से जनता का कल्याण अवश्यंभावी है।

देशों के उत्थान और पतन के इतिहास को हमने देखा है। भारत का उत्थान हुआ फिर पतन हुआ। अब नेमिचक्र पुनः उत्थान की ओर है। सारा राष्ट्र अपना प्रयास और बुद्धि लगा देवे तभी तो नेमिचक्र ऊपर की गति से जा सकेगा और पुनरपि भारत सभ्य और शक्तिशाली देशों की प्रथम श्रेणी में अपना स्थान ले सकेगा।

ग्रामों का पुनर्निर्माण और पुनर्निर्माण से पूर्व यह निश्चय करना आवश्यक होगा कि आधुनिक सभ्य जीवन को निभाने के लिए ग्राम की जनसंख्या कितनी हो।

ग्रामों के निर्माण का ग्रामीण के घर से बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। आधुनिक ग्रामीण घर ग्रामीणों के बनाये हुए हैं। ये प्रायः कच्चे हैं। गलियां टेढ़ी मेढ़ी हैं। गलियों को सीधा करने तथा घरों को सुखमय बनाने के लिये कच्चे घर टूटेंगे और नये घर बनेंगे।

- नये घर, नई गलियें और नए नगरों का निर्माण
- शिक्षा और चिकित्सा, आमोद तथा प्रमोद
- नए उद्योगों में दीक्षा
- आय के नये साधन तथा आय की वृद्धि
- स्वस्थ और समृद्ध जीवन

खेतों में भी पुनर्निवेशन की आवश्यकता है। एक ही व्यक्ति के खेत के प्रायः अनेक टुकड़े हैं जो ग्राम में भिन्न स्थानों पर स्थित हैं। इन सब खण्डों को इकट्ठा करते समय खेतों की सीमा रेखाएं भी सीधी कर दी जाएं और खेत वर्गाकार अथवा आयताकार बना दिये जाएं, तो एक ओर सीमा के बहुत से झगड़े समाप्त हो जायेंगे और दूसरी ओर हलयंत्रों के प्रयोग में सुविधा होगी।

यदि देश में गृह निर्माण, सड़क निर्माण, उद्योग आदि चलने लगें तो ७० प्रतिशत जनता आज जो खेती में लगी है वह घट कर साठ पचास पच्चीस प्रतिशत रह जायगी।

अब हम यह विचार करें कि आधुनिक खेती और आधुनिक उद्योगों को ठीक प्रकार चलाने के लिए कौन से साधन आवश्यक हैं।

(क) अच्छे बीजों के खेत। आजकल किसान सर्वोत्तम बीजों का प्रयोग नहीं करता। किन्तु मध्यम श्रेणी के बीजों का प्रयोग करता है। यदि सर्वोत्तम बीजों का प्रयोग किया जाए तो खेती की उपज में वृद्धि हो जायगी। सर्वोत्तम बीजों के लिए वैज्ञानिक रीत से खेतों का बनना आवश्यक है। किन्तु ये वैज्ञानिक खेत ४० ५० घर वाले गांव के लिये नहीं बनाये जा सकते।

(ख) भूसेचन। भारत के बहुत थोड़े विभागों में भूसेचन का पूर्ण प्रबन्ध है। अधिकांश खेती वर्षा पर निर्भर है। अन्नोत्पादन जीवन का आधार है। अन्नोत्पादन करने वाले व्यक्तियों के जीवन को समृद्ध करने के लिये उनको पूरे साधन मिलने चाहिए। इन साधनों में भूसेचन का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। कुछ तो नहरें दूर से आयेंगी और कुछ सिंचाई का प्रबन्ध स्थानीय होगा। स्थानीय प्रबंध के लिये ४० ५० अथवा ३०० ४०० घर पर्याप्त नहीं। बिजली के कुएं अथवा तालाबों का बनाना अथवा छोटे छोटे नदी नालों को बांध लेना, ये काम कुछ अधिक बड़ी जनता के करने के हैं।

(ग) हलयंत्र। यदि देश की आय बढ़ाना आवश्यक है, यदि देश की उपज बढ़ाना आवश्यक है, तो हलयंत्रों का प्रयोग आवश्यक होगा। हलयंत्र की सहायता से किसान अधिक भूमि सम्भाल सकता है। जिन देशों में हलयन्त्रों का प्रयोग है, वहां प्रत्येक किसान की भूमि की मात्रा अधिक है। जितनी भूमि की मात्रा अधिक होगी उतनी ही मात्रा में आय बढ़ जायगी। हलयन्त्रों का प्रयोग सिखाने के लिए, उनको यान्त्रिक दृष्टि से ठीक रखने के लिये, सौ डेढ़ सौ हलयन्त्रों के स्थान बनेंगे। इनके द्वारा ४० ५० सहस्र एकड़ भूमि जोती जा सकेगी।

(घ) पशु-चिकित्सालय तथा पशुओं की जाति सुधारने के केन्द्र।

अभी बहुत वर्षों तक हलयंत्र पूर्ण रूप से खेती में प्रयोग न हो पायेंगे। बहुत वर्षों तक हमें बैलों की आवश्यकता होगी। हमारे बैल दुर्बल और मध्यम श्रेणी वाले हैं। इनकी जाति में सुधारने के लिए भी विशेष प्रकार के केन्द्रों की आवश्यकता है। बैलों के साथ साथ दूध दही और मक्खन के लिए अधिक दूध देने वाली गायों की आवश्यकता है।

(ङ) खेती में सुधार तभी होगा जब स्थान स्थान पर खेती के विद्यालय बनेंगे। यदि सब किसानों को नहीं तो उनके बच्चों को खेती विद्यालयों में शिक्षा अवश्य दी जाएगी। अनपढ़ किसान आधुनिक विज्ञान को जाने बिना आधुनिक खेती में सफल नहीं हो सकता। वह नई बातों से घबराता है। घबराने का कारण सन्देह है, अनिश्चय और अनसमझी है। वह प्रयोगों को नहीं समझता। खेती की उच्च शिक्षा संस्थाओं के लिये छोटे-छोटे गांव उपयुक्त नहीं हो सकते। वहां इतने विद्यार्थी ही न मिलेंगे कि प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्चशिक्षा तक के विद्यालय चलाये जा सकें।

(च) प्रत्येक स्थान पर विशेष स्थानीय कठिनाइयां आती हैं। इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए छोटे मोटे अनुसंधान केन्द्रों की आवश्यकता रहती है। यदि बस्ती पर्याप्त बड़ी हो तो स्थान स्थान पर ये केन्द्र बन सकते हैं।

खेती के समान उद्योगों को चलाने के लिए कई आधारभूत आवश्यकताएं हैं। यथा—

(क) बिजली
(ख) यातायात के समुचित साधन
(ग) आधुनिक यन्त्रशालाएं
(घ) विशेष शिक्षण संस्थाएं

सब प्रकार से गणना करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यदि हमारी बस्तियों की जनसंख्या पचास सहस्र, साठ सहस्र के लगभग हो तो उनमें उतनी क्षमता होगी कि आधुनिक खेती और उद्योगों को चलाया जा सके। इस बस्ती में इतनी शक्ति होगी कि वह शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली चिकित्सालय, सब प्रकार की सामान्य पूर्ववर्णित आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

(क्रमशः)

भारतीय संस्कृति के मूल तत्व

(श्री पं० सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम.ए.एल.टी. डी०ए०वी० कालेज, गोरखपुर)

विद्वान् लेखक ने बड़ी सरल भाषा में भारतीय संस्कृति के मौलिक आधारों की व्याख्या की है। भारत में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपने पूर्वजों की विचारधारा और थाती (धरोहर) से परिचित रहना चाहिए और उसके संरक्षण और सम्प्रसारण में सहायक बनना चाहिए। —सम्पादक

जब हम भारतीय संस्कृति शब्द का प्रयोग करते हैं उस समय हमारा तात्पर्य यह होता है कि भारतीय विचारधारा का विश्व में एक महत्व पूर्ण स्थान बन रहा है। लन्दन के वृद्ध पुरुषों का कहना है कि यूरोप में मौसम में काफी परिवर्तन हो गया है। भारत के समान ही अब यूरोप में भी अल्पाधिक मात्रा में छहों ऋतुओं का प्रभाव होने लगा है। सूर्य भी अब अधिक समय तक प्रकाश देने लगा है। ठीक यही दशा पश्चिमी संस्कृति की भी है। जिस प्रकार मौसम परिवर्तित होकर भारतीय होने लगा है वैसे ही वहां की संस्कृति भी शनैः शनैः रूप बदल कर भारतीय होता जा रहा है। संस्कृति के भारतीय होने का मतलब यह है कि क्या पं० नेहरू की मिश्रित संस्कृति ही भारतीय संस्कृति है अथवा अन्य? ऐसी दशा में हमें पता लगता है कि भारतीय संस्कृति से हमारा तात्पर्य वैदिक संस्कृति से है। वैदिक संस्कृति की विशेषताएं निम्नलिखित हैं—

(१) तपस्या (२) सत्यनिष्ठा (३) त्यागभाव (४) आस्तिकता (५) शान्ति की भावना।

भारतीय संस्कृति का आधार या केन्द्र बिन्दु व्यक्ति है। व्यक्ति के विकास के लिए तपस्या के बिना कुछ नहीं होता। तपस्या से ही मनुष्य में सत्य की, सत्य से बुद्धि की और बुद्धि से आत्मा की प्राप्ति होती है। और आत्मा पर जिसने विजय प्राप्त कर ली वह संसार को जीत लेता है। परमात्मा ने तपस्या के द्वारा ही विश्व का निर्माण किया है। (तपसोऽध्य जायत) वास्तव में तपस्या के द्वारा मनुष्य आत्म निर्माण करता है और आत्म निर्माण करने पर विश्व उनके अनुसार चलने लगता है। वह विश्व विजयी हो जाता है।

भारतीय संस्कृति का दूसरा तत्व सत्य निष्ठा है। दशरथ ने सत्य की रक्षा के लिए राम को वन भेजा। राम ने सत्य की रक्षा के लिए पिता की आज्ञा का पालन किया। उपनिषदों ने सत्य, ब्रह्म और परमात्मा को समानार्थक बतलाया। बुद्ध भगवान ने अपने शिष्य आनन्द को मरते समय बताया कि एकमात्र सत्य बात अमर होती है। सत्य ही निरन्तर रहने वाला धर्म है। सत्य को दीपक के समान दृढ़ हाथ से पकड़ना। तुलसीदास जी ने भी सत्य की महिमा बतलाते हुए लिखा है 'साच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप। जाके हृदय सांच है, ताके हृदय आप॥'

महर्षि दयानन्द ने जिस सत्य को जीवन का ध्येय समझा और जिसके लिए अपने प्राणों का बलिदान किया उसी सत्य को मानवमात्र की भलाई के लिए सत्यार्थ प्रकाश में प्रकट किया। उनके शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने इसी सत्य की रक्षा के लिए अपना जीवन अर्पित किया और अभी महात्मा गान्धी ने भी उन्हीं का अनुकरण किया। इस प्रकार भारतीय संस्कृति का नाद है कि 'सत्येनोत्तभिता भूमि, सत्येनोत्तभिता द्यौ' अर्थात् यह भूमि, यह द्यौ इत्यादि लोक सत्य पर ही आश्रित है। और हमारा विश्वास है कि 'सत्यमेव जयते नानृतम।''

भारतीय संस्कृति का तीसरा तत्व त्याग है। जिस व्यक्ति ने तपस्या से सत्य की प्राप्ति कर ली वह सत्य के ज्ञान द्वारा अपने और पराए की भावना दूर कर दूसरों के लिए अपना सर्वस्व प्रदान करने को सदा तत्पर रहेगा। ईशोपनिषद् में त्याग से भोग भी करने का आदेश दिया है। लिखा है 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' इस कारण वैराग्य भाव से भोग करो। भोग का आदेश देते हुए भी त्याग कहना कुछ विचित्र सी बात लगती है। पर भोग दो प्रकार के होते हैं। एक 'भोग से भोग' और दूसरा 'त्याग से भोग'। भोग से भोग का मतलब है स्वयं भोगना। जैसे स्वयं भक्षण करना स्वयं उत्तमोत्तम वस्त्र पहनना आदि। 'भोग से भोग' पर परमात्मा ने स्वयं प्रतिबन्ध लगा दिया है। आपके घर में मन भर लड्डू बने हैं पर आप ४५ से अधिक नहीं खा सकते, सैकड़ों जोड़े जूते हैं, कपड़े हैं पर सब आप इकट्ठे नहीं पहन सकते। पर वास्तव में जो आनन्द 'त्याग से भोग' में है वह आनन्द भोग से भोग में नहीं। त्याग से भोग प्रत्येक कार्यक्षेत्र में आनन्दमय हो सकता है। इसका

[शेष पृष्ठ १२ पर]

आर्य समाज क्या है, और उसने क्या किया ?

(श्री ललिता प्रसाद, डी० ए० वी० कालेज, कानपुर)

आर्य समाज की लोकप्रियता, व्यापकता और आवश्यकता का अनुमान इस लेख को पढ़कर लगाइए। —सम्पादक

आर्यसमाज, जैसा कि उसके नाम से ही प्रकट है, वैदिक धर्मियों का समाज है जिसे श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज ने अप्रैल १८७५ ई० में बम्बई नगर में वैदिक धर्म प्रचार और संसार के उपकारार्थ स्थापित किया था। आर्य समाज का विस्तार जो लगभग सम्पूर्ण विश्व में है, उसे संग्रहीत करके यहाँ प्रस्तुत किया जाता है, जिससे पाठकों को भली भांति ज्ञान हो जायगा कि आर्य समाज क्या है और उसके संगठन का विस्तार कितना है।

१—सम्पूर्ण भारतवर्ष में ३००० के लगभग आर्य समाजें हैं।

२—इङ्गलैंड, जर्मनी, असीरिया, अफगानिस्तान, अरब, फारस, बगदाद, डचगायना, सिंगापुर, बर्मा, स्याम, अनाम, कम्बोडिया, हांगकांग, अमेरिका आदि देशों में भी आर्य समाज का प्रचार कार्य हो रहा है।

३—भारत के बाहर पूर्वी अफ्रीका, दक्षिणी अफ्रीका, मौरिशस और फीजी द्वीप आदि देशों में ३०० सौ के लगभग आर्य समाजें हैं।

४—प्रान्तीय तथा जिला आर्य प्रतिनिधि सभायें व उपसभायें ४०० सौ हैं।

५—भारत, नेपाल और अफ्रीका आदि देशों में आर्य वीर दल की ५२४ शाखायें स्थापित हैं, जिनमें लाखों आर्य युवक धर्म की शिक्षा ग्रहण करते हैं।

६—सम्पूर्ण भारतवर्ष में आर्य कुमार सभा की लगभग ५०० शाखायें हैं।

७—२६० कालेज और हाई स्कूल हैं, जिनमें समस्त भारतवर्ष में दयानन्द कालेज कानपुर का सबसे बड़ा है, जिसमें लगभग ६००० विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं, २२५ प्रोफेसर, ६० क्लर्क १०६ कर्मचारी कार्य करते हैं, जिनका मासिक वेतन ६३००० तिरसठ हजार रुपय है।

८—२००० प्राइमरी और मिडिल स्कूल बालक और बालिकाओं के लिये हैं।

९—६० गुरुकुल और कन्या गुरुकुल हैं।

१०—२०० संस्कृत विद्यालय और धर्मार्थ औषधालय हैं।

११—४०० अछूतों के लिए पाठशालायें।

१२—२०० अनाथालय, वनिताश्रम, और गोशालायें हैं।

१३—२००० सन्यासी, व्याख्याता, भजनोपदेशक, प्रचार कार्य में संलग्न हैं। जो कि वेदों का सन्देश घर घर पहुंचाते हैं।

१४—५०० अतिथि भवन और व्यायाम शालायें हैं।

१५—३०० प्रेस, पत्र, पत्रिकायें, वाचनालय, पुस्तकालय हैं।

१६—परोपकारिणी सभा, विरजानन्द वैदिक संस्थान, रामलाल कपूर ट्रस्ट, वानप्रस्थाश्रम, दयानन्द मठ, श्रद्धानन्द स्मारक ट्रस्ट, दयानन्द साल्वेशन मिशन, विशेश्वरानन्द वैदिक संस्थान, श्री गुलराज गुप्त चैरिटी ट्रस्ट तथा आर्य युवक संघ दिल्ली व दयानन्द रक्षा मण्डल लखनऊ आदि विभिन्न संस्थायें हैं।

प्रान्तीय प्रतिनिधि सभायें

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, मध्य भारत, मध्य प्रदेश, बिहार, बंगाल, बम्बई, हैदराबाद (मध्य दक्षिण), सिन्ध।

इसी प्रकार विदेशों की आर्य प्रतिनिधि सभायें निम्नलिखित हैं

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका, पूर्वी अफ्रीका, मौरिशस, पोर्ट लुईस, फिजी, दक्षिणी अमरीका डच गायना।

नोट—ये पांच आर्य प्रतिनिधि सभायें विदेशी हैं, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली, में समस्त देश व विदेश की सभायें संगठित हैं।

प्रिय पाठको! इन थोड़े से शब्दों में आर्य समाज का जो विस्तार है, वह आर्य लोगों के समक्ष उपस्थित किया है। यदि आप इन कामों पर विचार करेंगे तो आपकी सहानुभूति, आर्य समाज की ओर बिना हुए न रहेगी। क्योंकि आर्य समाज का एक मात्र उद्देश्य वैदिक धर्म दिवाकर के सुप्रकाश द्वारा संसार भर से अशान्ति, अविद्या, व दुराचार के अन्धविश्वास को दूर करना है। स्वामी दयानन्द का यही अभिप्राय था इसीलिए उन्होंने अपना सारा तप, विद्या, बल, बल्कि जीवन तक अर्पण कर दिया। ईश्वर उनके तप तथा परिश्रम को सफल करे, और उस बाल ब्रह्मचारी की मनोकामना पूरी हो, वेदों का प्रकाश हो, अवैदिक मतों का संहार हो, विद्या का प्रचार हो, सदाचार की वृद्धि हो, आर्य जाति का अभ्युत्थान हो, सत्य का प्रकाश हो, और पाखण्ड का नाश हो। आर्य समाज अमर रहे।

जीवन-ज्योति

महाकवि शंकर जन्म शताब्दी

[श्री रामस्वरूप शास्त्री, रेवाड़ी]

प्रथम पीढ़ी के जिन आदर्श आर्य समाजियों ने आर्य समाज की नींव को अपने तप त्याग एवं विद्वत्ता से सुदृढ़ बनाने का प्रयत्न किया उनमें महाकवि स्व० पं० नाथूराम शङ्कर शर्मा का नाम सदैव सम्मान के साथ लिया जायगा। साहित्यिक क्षेत्र में तो आर्य समाज उन जैसा व्यक्तित्व उत्पन्न नहीं कर सका, प्रचार और सिद्धान्तनिष्ठा में भी वे अद्वितीय थे। लेखक ने महाकवि की आगामी १३ अप्रैल १६५६ चैत्र सुदी पंचमी सं० २०१६ विक्रमी को उनकी सौवीं वर्षगांठ जन्म शताब्दी के रूप में मनाने की प्रेरणा आर्य जनता को दी है। अपने महान् पुरुषों के उपकारों का सम्मान उनके स्मृति दिवस और जयन्तियाँ मनाकर करने की भारतीय परम्परा के अनुसार महाकवि शङ्कर जी की जन्म शताब्दी का आयोजन अवश्य किया जाना चाहिए। —सम्पादक

(गतांक से आगे)

शङ्कर कितने अच्छे आशुकवि थे इसके एक नहीं सैकड़ों उदाहरण हैं। एक बार का प्रसङ्ग है मैं महाविद्यालय ज्वालापुर में पढ़ता था, किसी कार्य वश घर आया था, चलते समय मैं महाकवि को प्रणाम करने उनके घर पहुंचा, इक्का तैयार था और मेरा सामान भी इक्के में रखा जा चुका था। श्री शङ्कर जी बोले अच्छा तुम जा रहे हो तो श्री पं० पद्मसिंह जी शर्मा के लिये एक पत्र तो लिये जाओ। मैंने कहा कि लिख दीजिए। लगभग १० मिनट में उन्होंने पत्र लिखा होगा। आचार्य प्रवर श्री पं० पद्मसिंह जी शर्मा ने उनसे प्रार्थना की थी कि स्वर्गीय पं० गणपति जी शर्मा के असमय वियोग वज्रपात पर कोई कविता लिखकर भेजिये। उस पत्र में तत्काल ही नमूने की कविता का एक पद्य उन्होंने लिखकर दिया था। पाठक इसका रसास्वादन करें—

भारत का रत्न भारती का
बड़ भागी भक्त,
शङ्कर प्रसिद्ध सिद्ध
सागर सुमति का।
मोह तम हारी,
ज्ञान भूषण प्रतापशील,
दूषण विहीन शिर भूषण
विरति का॥
लोक हितकारी पुण्य
कानन विहारी वीर,
धीर, धर्मचारी अधिकारी
शुभगति का।
देख लो विचित्र चित्र,
बाँच लो चरित्र मित्र,
नाम लो पवित्र स्वर्ग गामी
गणपति का॥

यह इतनी उत्कृष्ट कोटि की कविता केवल ५ मिनट में लिखी गयी थी, शेष ५ मिनट में पत्र की अन्य बातें लिखी गयी थीं। ऐसे थे महान् कवि श्री शङ्कर जी महाराज जिन पर आर्य समाज और साहित्य समाज समुचित गर्व कर सकता है। वास्तव में देखा जाय तो आर्य समाज ने हिन्दी जगत् को दान साहित्य सेवा एवं दिये जिनकी कोटि का साहित्यिक दुनिया में न तब था और न अब है। परन्तु दुःख है कि आज कल के हिन्दी के ठेकेदार लेखकों ने उनकी सर्वथा उपेक्षा कर रक्खी है। हिन्दी साहित्य के जो विविध इतिहास लिखे गये हैं वे इतने अपूर्ण तथा पक्षपात पूर्ण हैं कि उन्हें पढ़कर मन ग्लानि से भर जाता है। सम्पादकाचार्य श्री पं० रुद्रदत्त जी शर्मा उस समय मातृ भाषा हिन्दी की सेवा कर रहे थे जब कि आधुनिक इतिहास लेखक पालने में झूल रहे होंगे। साथ ही वह हास्य और व्यङ्ग के उच्चकोटि के लेख लिखने में अत्यन्त सिद्धहस्त थे। वह आर्य समाजी थे इसलिये हिन्दी साहित्य के इतिहास में उनका नामोल्लेख तक नहीं हुआ। इसी प्रकार आचार्य प्रवर पं० पद्मसिंह जी शर्मा और महाकवि श्री शङ्कर जी के विषय में भी इन अल्पज्ञ इतिहास लेखकों ने अनेक भ्रमात्मक बातें लिख मारी हैं। तीनों ही महानुभाव ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त आर्य समाजी सज्जन थे, इसका ही दण्ड इतिहास लेखकों ने उन्हें दिया है। इधर आर्य समाज वह संस्था है जो इस बात की भी परवाह नहीं करता कि उसके सेवकों ने आर्य समाज के लिए क्या क्या बलिदान नहीं किये। इस विषय की एक दो घटनाएं सुनिये—

श्रीमान् माननीय भाई पं० हरिशङ्कर जी शर्मा छोटे ही बालक रहे होंगे, मैं भी नितान्त अबोध बच्चा था जब हरदुआगंज में केवल श्री शङ्कर जी महाराज के ही सतत प्रयत्नों से आर्यसमाज चल रहा था। समाज का उत्सव होना था, पौराणिकों ने अधिकारियों से मिलकर नगर कीर्तन बन्द करा दिया था। उस समय उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वर्गीय श्री पं० भगवानदीन जी थे। वह भी उत्सव में भाग लेने के लिए आये थे। अब याद नहीं कि उत्सव हुआ या नहीं हुआ, किन्तु उसका प्रत्यक्ष परिणाम यह हुआ कि पौराणिक लोगों ने सारी बिरादरियों को इकट्ठा कर एक पंचायत की और उस पंचायत में चार आर्य समाजी सज्जन बिरादरी से पृथक् किये गए। १—श्री शङ्कर जी महाराज, २—मेरे पूज्य पिता जी श्री चौ० जौहरमल जी, ३—श्री पं० राधावल्लभ जी शर्मा और चौथे श्री पं० गोविन्दराम जी शर्मा। इसी पंचायत को लेकर श्री शङ्कर जी ने निम्न पद्य लिखा था—

हिल मिल पोंगा पंच
कर्तै व्रत निच्चे जाने।
हम हिन्दू न असत्त
आरिया मत को माने॥

× × ×

तू छेको शङ्कर जाति ने
बाल नमसते दूर हो॥

बिरादरी से पृथक् करने के बाद कुछ लोगों ने उनसे जाकर निवेदन किया कि आर्य समाज का त्याग दो और पंचों से क्षमा प्रार्थना कर लो तो पुनः बिरादरी में सम्मिलित किये जा सकते हो, इस पर महाकवि सच्चे भक्त के उद्गार सुनिये—

एक जगदीश की उपासना करेंगे नित,
वेद के विरोधिन की गैल न गहेंगे हम
कीरति कमायेंगे रचायेंगे अनूठे याग,
मानी मूढ़ मंडल में अब न रहेंगे हम॥
सम्पति मिली तो सुख भोग में बिताय दिन
आपदा पड़ी तो सब सङ्कट सहेंगे हम
शङ्कर से पक्षपाती लोगन के आगे जाय
कबहूँ न दीनता के वचन कहेंगे हम॥

कहने का तात्पर्य यह है कि आर्य समाज की सेवा करते हुए श्री शङ्कर जी महाराज ने क्या क्या मुसीबतें नहीं सहीं, किन्तु धन्य है उस धीर वीर साहसी महान् पुरुष को वह अपने ध्येय से रत्ती भर भी विचलित नहीं हुए, बल्कि दूने उत्साह से आर्य समाज की सेवा में जुट गये। उनके प्रयत्न से हरदुआगंज आर्य समाज के लगभग सारे ही विद्वान् पधारे थे। आर्य पथिक पं० लेखराम जी भी आर्य समाज के उत्सव में व्याख्यान देने आये थे। पौराणिक पण्डितों से और मुसलमानों से भी शास्त्रार्थ हुए थे जिससे आर्य समाज का बल बहुत बढ़ गया था और अलीगढ़ इलाके में आर्य समाज के प्रचार का श्रेय श्री शङ्कर जी महाराज का ही है।

यहाँ पर एक घटना का और उल्लेख करना पड़ेगा जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और आर्य सामाजिक जगत् को उनकी अनुपम देन है। श्री पं० पद्मसिंह जी शर्मा उन दिनों ज्ञान मण्डल काशी में काम कर रहे थे। बा० शिवप्रसाद जी गुप्त के वह अत्यन्त निकट सम्पर्क में थे। प्रशंसित बाबू जी समस्त संसार की यात्रा का विचार कर रहे थे और अन्त में वह विचार निश्चय की सीमा को पहुंच गया। यात्रा के लिए उन्हें एक ऐसे प्राइवेट सेक्रेटरी की आवश्यकता थी जो इङ्गलिश और हिन्दी का पूर्ण जानकार हो और दोनों भाषाओं में यात्रा का विवरण लिख सके। इस विषय में उन्होंने आचार्य प्रवर श्री पं० पद्मसिंह जी शर्मा से भी परामर्श किया। आचार्य जी ने उनके सामने श्री पं० हरिशङ्कर जी शर्मा का नाम प्रस्तुत कर दिया जो बाबू जी ने स्वीकार ही नहीं कर लिया प्रत्युत श्री पं० हरिशंकर जी को शीघ्रातिशीघ्र बुलाने के लिये अत्यन्त उत्सुकता के साथ पूज्य शर्मा जी से आग्रह करने लगे। श्री शर्मा जी ने श्री पं० हरिशङ्कर जी शर्मा को लिखा कि संसार की सैर करने का तुम्हारे लिए यह अलभ्य अवसर है। तुमको ३००) मासिक मिलेगा और समस्त व्यय (भोजन छादन आदि भी) बाबू जी का होगा। इस अवसर को मत चूको और तुरन्त बिस्तर बांधकर काशी के लिए चल पड़ो। समस्त संसार की यात्रा मुफ्त हो जायगी, अनुभव बढ़ेगा, ज्ञान बढ़ेगा और परिवार का पालन भी ३००) मासिक में होता रहेगा। इष्ट मित्रों को भी यह समाचार मिला और उनमें प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। यात्रा की तैयारी होने लगी कि इतने में ही सेठ मदन मोहन जी और पं० घासीराम जी का आदेश पहुंच गया कि 'आर्यमित्र' की अवस्था बहुत बिगड़ गयी है और दिनोंदिन बिगड़ती जा रही है जल्द आगरा पहुंच कर आर्य मित्र का उद्धार करो। कहना न होगा कि समस्त इष्ट मित्रों ने श्री पं० हरिशङ्कर

(शेष अगले पृष्ठ पर)

महाकवि शङ्कर

(पिछले पृष्ठ का शेष)

जी से स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि सेठ जी को कोरा जवाब दे दो। 'आर्यमित्र' में क्या रक्खा है। वेतन थोड़ा और भविष्य उज्ज्वल नहीं, इसलिए इसे छोड़कर तुरन्त काशी के लिए प्रस्थान करो और संसार की यात्रा का अवर्णनीय दृश्य देखो। किन्तु 'मेरे मन कुछ और है विधना के कुछ और' वाली कहावत यहाँ पूर्ण रूप से चरितार्थ हुई। राम ने भी तो कहा था—

यान्चिन्तितं तदिह दूरतरं प्रयाति,
यच्चेतसाऽपि न कृतं तदिहाभ्युपैति।
प्रातर्भवामि वसुधाधिप चक्रवर्ती।
सोऽहं व्रजामि विपिने जटिलस्तपस्वी॥

जो सोचा था वह नहीं हो रहा और जिसकी कल्पना भी नहीं थी वह बात सामने आ गयी। प्रातःकाल चक्रवर्ती राज्य का स्वामी होने का लक्ष्य था, वह अब मैं जटा बांध कर तपस्वी बनकर वन को प्रस्थान कर रहा हूं।

यहां भी यही बात हुई। उस दिन चैत्र सुदि पंचमी थी, श्री शङ्कर जी का जन्म दिवस और आर्य समाज की स्थापना तिथि। घर में आमोद प्रमोद और मङ्गल मनाया जा रहा था। हवन की तयारी हो रही थी। सब स्नान से निवृत्त हो चुके थे और श्री शङ्कर जी से आग्रह कर रहे थे कि वह जल्द ही क्षौर करा कर स्नान कर लें किन्तु वे एक ओर गुमसुम बैठे थे, न क्षौर कराने को ही उद्यत थे न कुछ फिर स्नान की तो बात ही क्या। लोगों ने उनसे कारण पूछा किन्तु किसी को कुछ न बतलाया। अन्त में श्री प० हरिशङ्कर जी शर्मा ने भी उनसे प्रार्थना की कि आप कारण तो बतलावें, क्या बात है जो इस मङ्गल के अवसर पर आप उदास हैं? उन्होंने उत्तर दिया बेटा! इस आर्य समाज की सेवा के लिये मैंने बड़े बड़े कष्ट सहे हैं, मेरे जीवन का व्रत भी यही है, अपनी सन्तान से भी मैं यही अपेक्षा रखता हूं कि वह भी ऋषि निर्दिष्ट मार्ग को अपना कर आर्य समाज की सेवा में ही अपना तन, मन, धन लगा दे। एक ओर तेरे सामने संसार की यात्रा का प्रलोभन है और अच्छा वेतन है, दूसरी ओर 'आर्यमित्र' की सेवा का कण्टकाकीर्ण मार्ग है। यदि मेरी आज्ञा मानते हो तो ऋषि ऋण को चुकाओ और 'आर्यमित्र' को ही सम्हाल कर आर्य समाज की सेवा में जुट जाओ। जब तक तुम मुझे यह वचन नहीं दे दोगे तब तक मैं नहीं उठूंगा। लोग एकत्र हो गये सबने प्रार्थना की कि आप श्री प० हरिशङ्कर जी के जीवन को न बिगाड़ें उन्हें उन्नति करने दें, ऐसे अवसर जीवन में बार बार नहीं आते, किन्तु श्री शङ्कर जी अडिग थे और अन्त में उन्होंने श्री प० हरिशङ्कर जी से जब यह प्रतिज्ञा करा ली कि वह 'आर्यमित्र' की सेवा के लिये कल ही चले जायेंगे और काशी नहीं जायेंगे तब उन्होंने उस पर्व को मनाया। क्या आज कोई ऐसा ऋषि का भक्त है, जो इस प्रकार अपनी सन्तान से स्वार्थ त्याग कराकर उसे आर्य समाज की सेवा के लिये भेंट चढ़ा दे। श्री प० हरिशङ्कर जी ने उसके बाद बरसों तक "आर्यमित्र" की सेवा की, उसे उन्नति की चरम सीमा पर पहुंचाया, बड़े बड़े साहित्यिकों ने आर्यमित्र के सम्पादन की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। उपन्यास सम्राट श्री प्रेमचन्द जी ने तो अपने भाषण में भी यह कहा था कि 'आर्यमित्र' के समान हिन्दी का अन्य कोई साप्ताहिक पत्र नहीं है। श्री प० हरिशङ्कर जी तभी से अपने व्रत को निभा रहे हैं और आज भी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान की हैसियत से आर्यसमाज की सेवा में संलग्न हैं। यह था श्री शङ्कर जी का आर्य समाज में अनुपम अनुराग।

इस प्रकार की अन्य भी घटनाएं हैं उनका कहां तक सङ्कीर्तन किया जाय। इन सबके लिखने का तात्पर्य केवल यही है कि श्री शङ्कर जी के लिये आर्यसमाज ही सर्वस्व था। और जीवन के अन्त तक वह समाज की सेवा करते रहे, उनके आर्यसमाजी होने के कारण ही हिन्दी साहित्य के ठेकेदारों ने उनकी कविता का समुचित आदर नहीं किया और हिन्दी साहित्य के इतिहास में उनके अनुरूप उन्हें स्थान नहीं दिया गया। भारतेन्दु काल से लेकर अब तक हिन्दी साहित्य सेवियों में सबसे बढ़ चढ़कर तीन आर्यसमाजी ही थे और उनके चारित्रोल्लेखन में ही लेखकों ने न्याय से काम नहीं लिया, श्री सम्पादकाचार्य प० रुद्रदत्त जी शर्मा का तो कहीं जिक्र भी नहीं है। श्री प० पद्मसिंह जी शर्मा और श्री शङ्कर जी का जिक्र तो करना पड़ा किन्तु विकृत रूप में। एक कालिज के इतिहास लेखक प्रोफेसर को तो श्री प० हरिशङ्कर जी शर्मा ने चैलेन्ज तक दिया था कि वह मैदान में आकर अपनी बात को सिद्ध तो करें। यही बात श्री प० हरिशङ्कर जी शर्मा के विषय में है। समाचार पत्रों में नवीन साहित्य सेवियों के विषय में यदि कुछ उल्लेख होता है तो हम देखते हैं कि ऐसे व्यक्तियों का ही उनमें सङ्कीर्तन किया जाता है जिन्हें अभी कलम पकड़ने का भी शऊर नहीं है और श्री प० हरिशङ्कर जी जैसे हास्य और व्यङ्ग्य के प्रकाण्ड लेखक तथा कविता के क्षेत्र में देव पुरस्कार के विजेता का नाम इसलिये नहीं लिया जाता क्योंकि वे आर्य समाजी हैं। इस दिशा में आर्य विद्वानों को सोचना पड़ेगा और इन साहित्यिक गुट बन्दियों के विरुद्ध आवाज उठानी पड़ेगी। आज हिन्दी की प्रगति जिस दिशा में हो रही है वह सर्वथा चिन्तनीय है, जिस प्रकार नकटे सम्प्रदाय को भगवान् के दर्शन हो रहे थे उसी प्रकार आजकल के कालिजों के अध्यापक भी पढ़ाते पढ़ाते उस निरर्थक कविता की सराहना करते नहीं अघाते जिनका कि अर्थ स्वयं लेखक नहीं समझा सकते। आज छायावाद और रहस्यवाद के नाम से हिन्दी में जो वितण्डावाद चल पड़ा है वह क्या है? मैं तो यहाँ तक कहने को तयार हूं कि उसे कविता का नाम देना कविता का अपमान करना है। कालिज में विद्यार्थियों को भले ही बहका लिया जाय किन्तु विद्वान् मण्डली में वह चीज चल नहीं सकती। अस्तु—

इन सब बातों के लिखने का तात्पर्य यह है कि भारतेन्दु काल के कवियों में श्री शङ्कर जी का सर्वोच्च स्थान था। राजा लक्ष्मणसिंह ने उन्हें "भारत प्रज्ञेन्दु" की उपाधि दी तो ज्वालापुर महाविद्यालय की आर्य विद्वत्सभा ने उन्हें "कविता कामिनी कान्त" कहा। जगद्गुरु श्री शङ्कराचार्य, श्री भारती कृष्णतीर्थ जी महाराज ने उन्हें "कवि शिरोमणि" की उपाधि से विभूषित किया। निखिल शास्त्र निष्णात, पदवाक्य प्रमाण पारावरीण श्री गुरुवर काशीनाथ जी महाराज तो उन्हें "सरस्वती" का अवतार ही कहते थे। इतना महान् कवि आर्य समाजी था, यही उसका अपराध था।

उपर्युक्त विवेचन के पश्चात् अब आर्य समाज के नेताओं की सेवा में नम्र निवेदन करना कर्तव्य समझते हैं कि चैत्र सुदी पंचमी सं० २०१६ तदनुसार १३ अप्रैल सन् १९५९ ई० को उनकी सौवीं वर्षगांठ आ रही है। साहित्य सेवियों का सुझाव है कि उनकी जन्म शताब्दी धूम-धाम से मनायी जाय। सबसे पहले सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा मन्त्री का कर्तव्य है कि वह इस विषय में सभा के सदस्यों से राय लेकर कुछ काम प्रारम्भ करें। उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा को तो इस सम्बन्ध में अधिक से अधिक कार्य करना चाहिये। परन्तु यहाँ एक भारी अड़चन है। इस वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० हरिशङ्कर जी शर्मा हैं। वे अपने पूज्य पिताजी के सम्बन्ध में प्रतिनिधि सभा को कुछ कहें, यह उचित प्रतीत नहीं होता। मैं उनके स्वभाव से परिचित हूं, वह इस विषय को एजेण्डा में भी नहीं आने देंगे किन्तु अन्य सदस्यों को चाहिये कि वे इस ओर सभा का ध्यान आकृष्ट करें और शताब्दी को सुन्दर ढङ्ग से मनाने के लिये सभा में उत्सव की रूपरेखा भी तय्यार करने पर बल दें। जिस प्रतिनिधि सभा के लिये श्री शङ्कर जी ने अपने सुपुत्र का जीवन दान कर दिया और जिस प० हरिशङ्कर जी शर्मा ने प्रतिनिधि सभा का लगभग दस हजार का काम मुफ्त कर दिया वह समाज आज क्या कृतघ्नता का कलङ्क अपने सिर पर लेगा। मुझे विश्वास है कि ऐसा कदापि नहीं होगा। शताब्दी मनायी जायगी और सार्वदेशिक सभा तथा उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा उसमें पूर्ण सहयोग प्रदान करेगी। मैं अपनी सेवाएं प्रस्तुत कर रहा हूं मुझसे जो चाहे काम ले लिया जाय। आर्य समाज, ऋषि दयानन्द और शङ्कर जी सम्बन्धी साहित्य को यदि दोनों सभाओं में से कोई भी सभा प्रकाशित करना चाहेगी तो मैं उसमें पूर्ण सहयोग देने के लिये तैयार हूं। मैं हरदुआगंज का निवासी हूं, कविवर शङ्कर जी से मेरा निकट सम्पर्क रहा है, इसलिए यदि सभा चाहेगी तो मैं संयोजक बन कर भी सभा के आदेशानुसार काम करने को प्रस्तुत हूं। प्रस्ताव के रूप में आर्य नेताओं से मैंने यह सब कुछ निवेदन किया है, आर्य नेता अपने अपने सुझाव दें और सहयोग दें तो यह कार्य हो सकेगा। शताब्दी की रूपरेखा क्या [illegible] विद्वानों के परामर्श की इस विषय में आवश्यकता है। आर्य जनता का कर्तव्य है कि आर्य समाज के महान कवि की जन्म शताब्दी के अवसर पर वह तन, मन और धन से अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर अपनी कृतज्ञता प्रकट करे।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) के जन्म से लेकर अब तक के तथा गत ५९ वर्ष के कार्य का कोई साक्षी है तो वह आश्रम में स्थित महा आम्रवृक्ष है जिसकी आयु इस समय होगी सौ वर्ष की—खड़ा था बेचारा जगल में नहर के पास। किसी को इसकी परवाह नहीं थी, कोई इसको ओर देखता भी नहीं था—हां ज्वाला पुर और सीतापुर आदि के किसान जब खेत में हल चलाने के हेतु इधर निकल आते थे और जब कड़ी धूप पड़ती थी तब इसकी छाया में आकर विश्राम पा सुख पाते थे। वर्षा ऋतु में भी कृषकगण वर्षा से बचने के लिए इसका आश्रय लेते थे। किसी को क्या पता था कि इसी महावृक्ष की छाया में एक महाविद्यालय खुलने वाला है जो उत्तर भारत की एक नामी संस्था होगी—जिसमें ब्रह्मचारीगण विद्याध्ययन करेंगे, इसी महावृक्ष के पास एक यज्ञशाला बनेगी जिसमें सायं प्रातः यज्ञ हवन, वेद ध्वनि हुआ करेगी।

हे महावृक्ष ! तू स्वयं क्या नहीं बोलता—सुना महाविद्यालय की रामकहानी इस वृद्ध महावृक्ष की जबानी—

"मैं जङ्गल में ही पचास वर्ष अकेला तपता रहा—किस किसान के हाथ से कब यहां गुठली पड़ गई मैं नहीं जानता, उसी से मेरा अङ्कुर फूटा—ईश्वर का ही आश्रय था, यहां मेरी परवाह करने वाला कौन था, अब मैं बड़ा हुआ और फल लगने लगे तब किसानों के बालक लाठी के तथा पत्थरों के प्रहारों से फलों को गिराकर आनन्दित हो उठते—इन बालकों को क्या पता था कि उनके लाठाकाष्ठ तथा पाषाण प्रहारों से मेरी क्या गति बनती थी, हम वृक्षों का जन्म इसीलिए है—इस प्रकार के प्रहार सहन करना और प्रहार करने वाले तथा आतप पीड़ित आश्रयार्थियों को छाया और फल देकर सन्तुष्ट करते रहना—कितना कठिन कार्य है हमारा"—

"कर्म धर्म संयोग से इस बगीचे के मालिक श्री बा० सीताराम जी को हरिद्वार स्टेशन पर एक दिन स्व० श्री स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती के दर्शन हो गये। गंगा जी को लाना था भगीरथ का यश लेना था। स्वामी जी निःशुल्क गुरुकुल खोलना चाहते थे पर स्थान नहीं मिल रहा था। बा० सीताराम जी के पास भूमि थी पर थे निःसन्तान। स्थान का करते क्या ? बाबू जी ने गुरुकुल खोलने के लिए स्वामी जी को यह स्थान समर्पण कर दिया—"

संस्था-परिचय

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर

यह महावृक्ष स्वयं बोल रहा है

[ले० श्री पं० नरदेव शास्त्री, कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर]

★

'यहां क्या देर थी थे तो स्वामी जी औलिया फ़ट महाविद्यालय खुल गया और गणेशकूप के पास आम के ७८ वृक्ष थे वहीं प्रारम्भिक उत्सव मनाया गया—उपस्थिति हो गई कोई सौ नर नारियों की—उस उत्सव के साक्षी अब एकमात्र स्वामी आनन्द बोध तीर्थ हैं जिनकी आयु इस समय ९० के लगभग है और जो वर्षों से रुग्ण हैं—उस समय के अन्य साक्षी सब के सब दिवंगत हैं—'

'कोई शुभकार्य हो उसमें प्रारम्भ में, मध्य में विघ्न आते रहते हैं—इस बात पर घोर विरोध खड़ा हो गया कि इतने समीप दो गुरुकुल नहीं होने चाहियें-स्वामी जी ने इस विरोध की तनिक परवाह नहीं की और एक छोटी सी कमेटी बना डाली महाविद्यालय की—"

'सबसे पहिले स्व० पं०दिलीपदत्त उपाध्याय महाविद्यालय के मुख्याध्यापक बने, फिर इनके गुरु श्री पं० भीमसेन शर्मा आगरा निवासी और कुछ काल के पश्चात् आचार्य श्री पं०गङ्गादत्त शास्त्री पधारे। अमृतसर निवासी चौधरी जयकृष्ण जी, मैंगवाल (हुशियारपुर) के बा० प्रतापसिंह जी अहलूवालिया पधारे और महाविद्यालय की गाडी चल निकली, यह है १९०७ की बात, महाविद्यालय सभा की रजिस्टरी भी इसी वर्ष हुई'—

'बड़ा विरोध रहा, पर विरोधियों की कुछ न चली और इसका बड़ा शानदार प्रथम महोत्सव १९०८ की हालिय की छुट्टियों में हुआ—जो भी पार कांगड़ी का उत्सव देखकर आता था, वह यहां से होकर जाता था—पहिला पहिला उत्सव, कोई उपस्थिति होगी ४-५ सहस्र की, दान भी पांच सहस्र आया, स्व० मा० आत्माराम राज्यरत्न (बड़ौदा), श्री पं० गणपति शर्मा चुरू, श्री पं० अखिलानन्द शर्मा कविरत्न आदि के व्याख्यान तथा पं० वासुदेव शर्मा आदि के भजनों ने जनता को मुग्ध कर डाला"—

सबसे पहले मन्त्री थे एक चित्रकार (नागपुर के) फिर मन्त्री बने पं० परमानन्द, फिर मन्त्री बने श्री पं० भीमसेन शर्मा आगरा निवासी। प्रधान थे चौ० महाराजसिंह मानकपुर झबरेड़ा—अब तो उन पुराने कार्यकर्ताओं में से कोई शेष नहीं।'

'इस प्रथम उत्सव के पश्चात् यथानियम चुनाव हुआ—जिसके अनुसार पं० गङ्गादत्त शास्त्री आचार्य, श्री पं० भीमसेन शर्मा, मुख्याध्यापक, श्री पं० पद्मसिंह शर्मा मन्त्री, लेखक पं० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ (रावजी) मुख्याधिष्ठाता आदि चुने गये। महाविद्यालय का एक मुखपत्र भी निकाला गया जिसका नाम था भारतोदय। पं० पद्मसिंह शर्मा ही उसके सम्पादक रहे थे। १९०८ में महाविद्यालय की जो गाड़ी जोर से चल निकली वह १९१५ तक बेरोक टोक चलती रही।"

१९१५ में बड़ी क्रान्ति हुई और यह संस्था बा० ज्योतिस्वरूप जी वकील देहरादून पं० बलदेव सहाय (गुजराती), श्री डा० शिवदत्त भिषगाचार्य जी आदि के हाथों में गई—३४ वर्ष इनका जोर रहा, फिर यह संस्था पुराने लोगों के हाथों में आई और पं० रविशङ्कर शर्मा मुख्याधिष्ठाता और चौ० रघुराजसिंह प्रधान रहे।

'इस प्रकार यह गाड़ी चलती ही रही, विरोध होता ही गया और संस्था बढ़ती ही गई और १९१३ में तो इसमें २५० ब्रह्मचारी हो गये थे।"

१९४४-४५ में फिर एक बार की क्रान्ति हुई और तब से बराबर महाविद्यालय की गाड़ी को महाविद्यालय के स्नातक ही चला रहे हैं। इस संस्था द्वारा सहस्रों निर्धन एवं होनहार छात्रों का उद्धार हो चुका है। इस महाविद्यालय के सैकड़ों विद्याभास्कर, विद्यारत्न आयुर्वेद भास्कर, शास्त्री

> (आर्य समाज द्वारा सचालित गुरुकुल शिक्षा प्रणाली आन्दोलन में)
> (जिन संस्थाओं ने महत्वपूर्ण योग दिया है और निःशुल्क शिक्षा के भारतीय)
> (आदर्शों की पुनः स्थापना की है उनमें ज्वालापुर महाविद्यालय का नाम)
> (विशेषरूप से उल्लेखनीय है। १९५९ में महाविद्यालय की स्वर्ण जयन्ती)
> (मनाई जा रही है। आर्य जनता को इस संस्था की उन्नति में प्रत्येक संभव)
> (सहयोग देना चाहिए। —सम्पादक)



आचार्य, तीर्थ निकल चुके हैं—कुछ दिवंगत हो गये, कुछ कालेजों विश्वविद्यालयों में महोपाध्याय हैं कुछ देश और धर्म सेवा में संलग्न हैं—कुछ गुरुकुल महाविद्यालय का कार्यभार सम्भाले हैं।

'महाविद्यालय का मुख्य भाव यह रहा कि इसके पास स्थायी फण्ड (कोष कभी नहीं रहा—महाविद्यालय का यही एक बड़ा गुण रहा कि इसके पास स्थायी फण्ड न होते हुए भी पचास वर्ष से चल ही रहा है—

अब क्या हाल है ?

अब स्वराज्यकाल में महाविद्यालय एक विचित्र परिस्थिति में से गुजर रहा है। जब भारत का मानचित्र ही बदल गया तब भारतवर्ष की दशा के साथ भारतीय संस्थाओं की दशा भी बदल गई—सरकार नई प्रजातन्त्र का पोषक और पालक बन गई—नया संविधान बना, 'नई ईंट और नया मकान' वाली कहावत हो गई—इस की शिक्षा पद्धति वही है जो ब्रिटिश काल में थी-स्वराज्य होने की भावना के कारण आर्यसमाज की संस्थाओं, सच लक्षों, स्वामिनी सभाओं, गुरुओं शिष्यों का ध्यान ही बट गया—धर्म का प्रश्न गौण होकर पेट का प्रश्न सम्मुख आया और उभरूप में आया जमींदारी प्रथा नष्ट होने के कारण जमींदार और किसानों ने हाथ खेंच लिये, नहीं तो मुख्यतया महाविद्यालय अपनी स्थिति के लिए जमींदार किसानों पर ही निर्भर रहा। १९४७ तक फिर दशा पलट गई—दान कम आने लगा—अब तो सरकार दान कर भी लगा रहा है। इत्यादि कारणों में यह उपकारी संस्था चल तो रही है पर जिस वेग और जिस ढंग से चलनी चाहिये नहीं चल पाती—महाविद्यालय के प्रेमी प्राचीन संस्कृत विद्या के हितैषी तथा महाविद्यालय के संचालकों के सम्मुख यही जटिल प्रश्न है—दान में कमी होने के कारण सभा को विवश होकर ब्रह्मचारियों से भोजन शुल्क लेना पड़ रहा है जो कि नियमों के विपरीत है। (शेष पृ०७/५ पर)

विदेश-वार्ता

मंगोलिया में भारतीय संस्कृति की झलक

(डा० शारदारानी एम० ए०, पी० एच० डी०)

मंगोलिया मे भारतीय विद्वानों ने जो अध्यात्म सन्देश पहुंचाया था, उसका वहाँ कितना स्वागत हुआ और वहाँ के जीवन मे वह सन्देश कितना ओतप्रोत है इसका प्रत्यक्ष वर्णन विदुषी लेखिका ने प्रस्तुत किया है। आशा है एशिया में भारतीय सन्देश का विवरण पाठकों के ज्ञान वर्धन मे सहायक होगा। —सम्पादक

(गताङ्क से आगे)

तृतीय भवन मे चन्दनजोवो की मूर्ति का भव्य प्रतिकृति है। प्रवेश करते ही गुम्बज पर हृदय हृत्सुमेरुय के दर्शन होते हैं। प्रवेशगोष्ठ की छत पर धर्मचक्र बने हैं, और छत पर पद्मनाभ मे बीजमन्त्र लिखे हैं। प्रथम युद्ध से पूर्व की पोलैंएड निर्मित मूर्तियाँ भी इस कोष्ठ मे विद्यमान हैं। १९११ में जब मोंगोल देश चीनी आधिपत्य से स्वतन्त्र हुआ तब मोंगोल लामाओं ने पोलैंएड से एक लाख मूर्तियां बनवाई थीं। स्वर्गद्वारों और मूर्तियों से अलकृत नवनीत मेरु मडल बना है। मक्खन और सत्तू से बने इस स्तूप पर मध्य मे बना वज्र अत्यधिक आकर्षक है। यह तार्मा है। चन्दनजोवो की मूर्ति के बाईं ओर पोलैंएड की मूर्तियों का वैभव है और दाईं ओर चोखापा की अनेक मूर्तियों के मध्य मे मौक्तिकालिखित "ओं मणिपद्मे हूं" है।

चतुर्थ भवन पुस्तकालय है। इसका संस्कृत नाम इस प्रकार लिखा है—तुषित महायानद्वीपस्य पुस्तिकगज। भोट, चीना, मोंगोल मे भी शीर्षक लिखा है। पुस्तकालय मे अनेक सुम्बुम् हैं। मोंगोल भाषा मे गंजिमार्ग आदि और काल्मुक हस्तलिखित ग्रन्थ भी हैं। इसमें काल्मुक लिपि के आविष्कर्ता जय पंडित नमखसागर का चित्र भी था। भोट और मोंगोल में सचित्र भद्रकल्पिकासूत्र, तथा स्वयंभू, लाञ्छा और भोट लिपियों मे मंजुश्रीनामसंगीति आदि ग्रन्थ थे।

पुस्तकालय मे केवल पुस्तकें ही नहीं, मन्दिर भी हैं। यहां हमारी भेंट उपमुख्य लामा से हुई। आपका नाम कर्मासाद्ध है। पुस्तकालय के मध्य में स्थित प्रधान मन्त्र वस्त्र नवरत्न से जड़ा हुआ है—मध्य मे स्वस्तिक, चारों ओर श्रीवत्स, मीन गण धर्मचक्र विश्ववज्र, पद्म, कलश और छत्राग। जब हम एक भवन से दूसरे भवन मे जा रहे थे तब हमारी आँखें लम्बी पंक्ति नील गगन मे उड़ती जा रही थी। हमारा दुभाषिया बोला यह शुभशकुन है। एक लामा बोले कि आपका हमारे मन्दिर मे आना हमारे लिए अतिशुभकारी सिद्ध होगा। इनके यहाँ हंस शुभ पक्षियों मे गिना जाता है।

स्वागत भवन मे जाने से पूर्व हम एक बार पुन पूजा भवन मे गये और साष्टांग दण्डवत् किया। वाद्य कितने गम्भीर और उनके बीच मन्त्रों की ध्वनि इतनी कर्णमधुर लग रही थी कि हर्षाश्रु रोकने मे कठिन प्रतीत हो, ... । बूढ़ा [illegible] माला फेर रहे ... । ... पता चला कि हम भारत से आये हैं तो वे हमारे साथ साथ चलने लगीं ... व्याकुल हो गई। उनका स्नेह उनकी आँखों से झर रहा था। परिक्रमा करते समय वे कुछ न कुछ प्रश्न हमसे कर ही लेती थीं। मुख्य पुजारी से हमने आशीर्वाद लिया—आशीर्वाद में उसने मन्त्र पढ़कर कुछ चावल हमारे हाथों मे दे दिये। मन्त्रों की कुछ भस्म भी हमे मिली। आज महाकाल का पाठ हो रहा था। वाद्यों की गूंज के बीच कभी कभी "महाकाल कालरूप" आदि कुछ शब्द सुनाई दे जाते थे। महाकाल की बड़ी मूर्तियां यहाँ भयानक मुद्राओं में खड़ी हैं। मोंगोलिया मे बौद्धधर्म तान्त्रिक धर्म से मिश्रित होकर आया है। जैसे हमारे यहां शिव और शक्ति की पूजा होती है उसी प्रकार यहाँ अनेक देवता अपनी अपनी शक्तियों के साथ सुशोभित हैं। प्रवेशद्वार पर भयानक आकृति का देवमुख बना रहता है, यह अमंगल को नाश करने के हेतु लगाया जाता है, जिससे मन्दिर पर कोई विघ्न या कष्ट न आये और केवल कल्याण का ही प्रवेश हो। जब हम परिक्रमा कर चुके तो एक अन्य लामा हमारे मार्गदर्शक आये और वे हमें स्वागत कोष्ठ मे ले गये। स्वागत कोष्ठ एक छोटे से फाटक वाला गोल तम्बू था। इस तम्बू को ये लोग गेर कहते हैं। एक लामा बोला कि संस्कृत मे गृह और मोंगोल मे गेर कितना साम्य है। यह गेर नमदे का बना होता है। जितनी अधिक ठंड बढ़ती जाती है नमदे का उतना ही स्तर उस पर लपेटते जाते हैं। छत लकड़ी के डण्डों पर मोटे नमदे से आच्छादित कर देते हैं। यह तम्बू ३० कदम मे गाड़ा जाता है नीचे भूमि पर ५-६ कालीन एक के ऊपर एक बिछे रहते हैं जिससे भूमि का शीत ऊपर सर्वथा नहीं आता। इस तम्बू मे हमने प्रवेश किया। यहाँ मे घुसते ही पूजा का स्थान और छोटी छोटी [illegible] मूर्तियां छोटे छोटे काष्ठ मन्दिरों मे सुशोभित थीं। इनके आगे निरन्तर मक्खन के दीप जल रहे थे। तम्बू की भित्ति से सटे साथ साथ मूर्तियों के पट्ट लगे थे, छोटी छोटी बुद्ध मूर्तियां, सहस्रबाहु अवलोकितेश्वर, हरिततारा श्वेततारा, आदि अपने सुनिश्चित स्थान पर विराजमान थे। लामा गोम्बोदो (नाथवज) बुद्ध जयन्ती पर भारत आये थे। इन्होंने तम्बू मे हमारा स्वागत किया और गद्दियों से युक्त चौकियां हमे बैठने को दीं। दिल्ली मे जब लामा गोम्बोदो आये थे तब हमने भी इन्हें अपने घर बुलाया था। हमारे स्वागत का स्मरण करके लामा गोम्बोदो हमे अपना घर स्मरण दिला रहे थे। इन्होंने हमारे लिए अनेक प्रकार की भारतीय शैली की भोज्य सामग्री उपस्थित की। मक्खन और लवण वाली चाय, दही, मालपुवा, मीठी मठरी, चावल की खीर बताशे, दूध की दानेदार बर्फी इत्यादि। यहाँ १३ के लगभग लोग थे। एक बहुत बड़े पकवान का नाम गाञ्चुयिन् दुगुई अर्थात् उपाध्याय चक्र था। जब लामा गोम्बोदो दिल्ली आये थे तब उन्होंने कहा था "कि हमारे देश मे ५०० वर्ष पूर्व गङ्गाजल लाया था। जिसका उपयोग हम प्रतिदिन की चाय मे करते आ रहे हैं। अर्थात् कुछ बूंद प्रतिदिन की चाय मे डाल देते हैं। अब मैं भारत आया हूं तो मेरे सहलामाओं ने मुझे पुन गङ्गाजल लाने को कहा है और मेरी स्वयं पुण्यतीर्था गङ्गा दर्शन की उत्कट इच्छा है।' यह बात जब हमारे पूज्य पिता जी ने सुनी तो उनका हृदय मोंगोल देश के स्नेही लामाओं के प्रति प्रेम से उमड़ आया। उसी दिन एक बड़ी गाड़ी का प्रबन्ध किया और हृषीकेश मे जाकर पुण्यदा गङ्गा में इनका स्नान कराया। गङ्गाजल भरकर इन्हें मोंगोलिया के लिए दिया। विमान से यह गङ्गाजल गाण्डन् पहुँचा। आज उस दिन की स्मृति लामा गोम्बोदो के मुख पर स्पष्ट झलक रही थी। लामा की यह पवित्र तीर्थ दर्शन की चिरकाल से इच्छा थी। उन्हें कभी स्वप्न मे भी आशा नहीं थी कि वे कभी बुद्ध की पवित्र भूमि शस्यश्यामला भारत के दर्शन करेंगे और उसमें बहने वाली पवित्र नदी को देख सकेंगे। हर्ष के कारण वे उस समय भी गद्गद कण्ठ हो गये। इलाहाबाद लौट कर उन्होंने सब सहलामाओं को गङ्गाजल बांट दिया और कुछ एक कूपी में उठाकर सदा के लिए रख लिया। उस दिन जब हम इन सबके बीच तम्बू में बैठे थे, भारत के संस्मरण लामा गोम्बोदो ने सुनाये। वे कहते थे मेरी भारत आने की पुन बड़ी इच्छा है। आपके यहाँ आने से मुझे भारतवर्ष का आभास हो रहा है।

यहाँ के लामा संस्कृत जानते हैं। वे सब ही देवी देवताओं के नाम संस्कृत मे बता रहे थे। ये सारस्वत व्याकरण पढ़ते हैं और इनकी भारत आने की उत्कट इच्छा है। हमने गेर से बाहर निकल कर कुछ रंगीन चित्र लिए और सब लामाओं के नाम पूछे। ये सब नाम संस्कृत से अनूदित हैं। आद् सुर्=धर्मरश्म। रिंछेन् दर्जे=रत्नवज। ताश्चिन् आद् सेर्=धर्मप्रभ। दम् छोइ=सद्धर्म। लामाछव्=गुरुशरण। लाब्साङ्। आगवाङ्=सुमतिवागिन्द्र। गाम्बादोर्जे=नाथवज।

भारत के आचार्य साइबेरिया में स्थित ९०० माल लम्बी झील के उत्तर तक जाते थे। उस समय घोड़ा ही आवागमन का साधन था। बुर्यात् मंगोलिया मे भी अनन्त अमूल्य निधियां भरी पड़ी हैं। एक चन्दन निर्मित बुद्ध की अति विशाल मूर्ति उलान् उदे मे है। उलान् उदे का अद्भुतालय दर्शनीय है।

जिस देश मे मई मास मे हिमाच्छादित पर्वत थे और हिमवर्षा होती रहती थी, गर्व हड्डियों तक को कंपा देने वाली तीक्ष्ण वायु चलती थी उस देश मे भारत की उष्ण जलवायु के अभ्यस्त पण्डित आचार्य किस दिव्य शक्ति से प्रेरित होकर जाते होंगे। टेढ़े मेढ़े भूल भुलैया वाले पर्वतीय मार्ग दुर्गम वन, आवागमन के साधनों की विहीनता-क्या इनको निरुत्साहित नहीं करती थी। उनमें कैसी शक्ति थी, कैसी अदम्य प्रेरणा थी। उनके हृदय मे निरन्तर आध्यात्मिक ज्वाला जलती होगी। धर्मप्रेम की यह अटूट प्रज्वलित ज्वाला का दीपक ही उन्हें इतने दुर्गम्य देशों में जाने का साहस देता होगा। इन्हीं प्राचीन आचार्यों ने नृशंस जातियों को सभ्यता और धर्म का पाठ पढ़ाया। बर्बर नर पशु को मानव बनाया, न केवल मानव किन्तु देव-पुरुष बना दिया। चीन की सीमा पर स्थित कुम्बुम् महाविहार में योद्धा

(शेष पृष्ठ १५ पर)

आदर्श शिक्षा की आवश्यकता

[श्री राजकुमार रणञ्जयसिंह, एम० एल ए०]

श्रद्धेय राजकुमार जी एक गम्भीर चिन्तक के रूप में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर प्रकाश डाला है। स्वयं आर्य सस्कृति भी अपने गौरव को रखा में असफल है, इस सकेत के साथ हम शिक्षा में प्राचीनता के प्रचार की उनकी भावना का आदर करते हैं। —सम्पादक

त्रिकालदर्शी योगी थे। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर वर्त्तमान तथा भविष्य को देखते हुए उन्होंने पथ प्रदर्शन किया था। उन्होंने हमारे नेत्र खोल दिए थे। जहां उन्होंने विकराल अग्रेजी शासनकाल में सबसे प्रथम घोषणा की थी कि 'भारत' भारतीयों का है और भारतीय भाषा, भेष, भूषा का महत्व समझाया था, वहीं उन्होंने शिक्षा सम्बन्धी सर्वाङ्ग योजना भी प्रस्तुत कर दी थी। महर्षि ने देश काल अनुसार प्रत्येक दृष्टि से पूर्ण विचार किया था।

आर्यसमाज ने लार्ड मैकाले के दुष्प्रभाव को दूर करने में प्रशंसनीय कार्य किया था। शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज के कार्य की मुक्त कण्ठ से सराहना करते हुए बंगाल के एक विद्वान गवर्नर लार्ड रोनाल्डशे ने दि हार्ट आफ आर्यावर्त' नामक अपने गवेषणापूर्ण ग्रन्थ में स्वीकार किया था कि सरकार के पश्चात् देश में आर्य समाजिक शिक्षण संस्थाएं सर्वाधिक हैं।

प्राचीन पठन पाठन पद्धति का विरोध बिना समझे हुए ही किया जाता है। पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त विद्वान तक सादगी की ओर झुक रहे हैं। खुले व युमण्डल और एकान्त में पठन पाठन की महिमा समझकर कृत्रिमता से दूर रहना, शिक्षा दीक्षा के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक है। यही महर्षि दयानन्द ने बतलाया था और आज इसी की हमारे महामान्य राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, तथा प्रधान मन्त्री महोदय स्पष्ट घोषणा कर रहे हैं।

इस प्राचीन पठन पाठन पद्धति का पुनः प्रशस्त प्रचार करना प्रमुख प्रयत्न करना है। उसी में वास्तविक मनुष्यत्व प्राप्त होगा। आज कल मनुष्य के सुख के लिए तो नाना प्रकार की भौतिक यन्त्र निर्मित की जा रही हैं, परन्तु हम यह न भूलना चाहिए कि उनसे अधिक आवश्यक मनुष्यत्व प्राप्ति की योजना है। आर्य समाज ही इसे सफलता से कर सकता है। सुशिक्षा के प्रसार में ही संसार

(शेष अगले पृष्ठ पर)

शिक्षा सम्बन्धी सुधार के लिए अनेक विख्यात विद्वानों की समितियां अनेक बार बनीं परन्तु सन्तोष न हो सका और निरन्तर यही सुनने में आया कि स्तर गिरता जा रहा है। विद्या प्राप्त करके विद्यार्थी शब्द को सार्थक करने की अपेक्षा लड़के लड़क पन को अधिक अपनाने लगे हैं।



इसका कारण क्या है, हमें उस पर विचार करके उसका निराकरण करना चाहिए। क्योंकि आज स्वतन्त्रता के नाम पर स्वच्छन्दता, उच्छृङ्खलता अथवा उद्दण्डता का तथा अनुशासन हीनता का प्रसार हो रहा है, साथ ही भक्ष्याभक्ष्य का विचार दूर हो जाने से मस्तिष्क पर उसका प्रभाव पड रहा है। शुद्ध दूध, घी का सेवन करने वाले विद्यार्थी में और मांस, मद्य अथवा डालडा आदि तामसी पदार्थों के खाने पीने वाले विद्यार्थी में अन्तर होना अवश्यम्भावी है। ब्रह्मचर्य का पालन नहीं, शृङ्गार रस तथा अश्लील साहित्य एवं चित्रों की भरमार, वह प्रचारकों की धूम, कला के नाम पर भले घरों की कन्याओं तक का सार्वजनिक नृत्य गान और वह भी सांस्कृतिक कार्यक्रमों में। इनके निराकरण पर विचार तक न किया जाय और केवल मौखिकरूप से चरित्र की दुहाई दी जाय, तब तो सफलता के स्वप्न तक भी सम्भव नहीं प्रतीत होते। वास्तव में देखा जाय तब आज शिक्षा के दो रूप स्पष्ट हैं, बाकी वाले अस्पष्ट एवं अधूरे हैं। वे दो रूप हैं, नवीन और प्राचीन। नवीन के स्रष्टा हैं लार्ड मैकाले और प्राचीन के पथ प्रदर्शक हैं महर्षि दयानन्द।

मैं स्वयं भी अंग्रेजी शिक्षा का विरोधी नहीं, हां अंग्रेजी की उस शिक्षा का घोर विरोधी हूं जो हम दासता की शृङ्खला में आबद्ध रखने के लिए प्रचारित की गयी थी। मैं अंग्रेजी को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में कदापि नहीं पसन्द कर सकता।

महर्षि दयानन्द इस युग के सर्वश्रेष्ठ महान् सुधारक थे। वे आदर्श

भारत की नवीन नाप-तोल पद्धति

(मेट्रिक प्रणाली की कुछ जानने योग्य बातें)

दुनिया के ७७ देशो ने मैट्रिक प्रणाली को कानूनन लागू किया है। १६ देशो मे इसके साथ दूसरी प्रणालियां भी चलती हैं और ४ देशों ने इसे मान्यता दी है।

भारत मे सर्व प्रथम सन् १८७१ में मेट्रिक प्रणाली लागू करने के लिए कानून पास किया गया था, किन्तु उस समय की भारत सरकार इसे लागू न कर सकी।

१८ वीं शताब्दी के अन्त मे, फ्रास में मेट्रिक प्रणाली का आविष्कार हुआ। किन्तु १८४० तक फ्रांस मे मेटिक प्रणाली पूरी तौर पर लागू न की जा सकी। जब फ्रास ने मेट्रिक प्रणाली अपनायी तो पड़ोसी देश भी इसे अपनाने लगे। १८७२ में जर्मनी ने इसे अपनाया, यद्यपि उस समय फ्रांस के साथ उसके सम्बन्ध अच्छे नहीं थे।

यद्यपि अमेरिका और ब्रिटेन मे यह प्रणाली चालू नहीं है, किन्तु क्रमशः १८६६ और १८६४ में दोनों देशों ने कानून द्वारा इसको मान्यता दी। फिर भी अमेरिका मे गज मीटरों में और पौण्ड क्लिोग्राम मे ही चलता है।

ब्रिटेन ने १६५१ में हांगसन समिति नियुक्त की। इसने जाच के बाद सुझाव दिया कि ब्रिटेन को अमेरिका तथा राष्ट्र मण्डल के देशों के साथ व्यापार सम्बन्ध बनाये रखने के लिए २० साल के भीतर मेट्रिक प्रणाली अपना लेनी चाहिए। ब्रिटिश सरकार ने इस सुझाव को अस्वीकार कर दिया, क्योंकि बाटों के परिवर्तन पर बहुत खर्च उठाना पड़ता।

ब्रिटिश वैज्ञानिक संघ ने सर ह्यू बीमर की अध्यक्षता मे एक समिति बनायी है, जो ब्रिटेन मे मेटिक प्रणाली अपनाने की आवश्यकता, उसका राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव और वर्तमान व्यवस्था को बदलने मे होने वाले खर्च पर अपना रिपोर्ट देगी।

भारत मे नेशनल सम्पल सर्वे विभाग ने १६५१ म १,००० गावों का सर्वे किया। जिससे पता चला कि इन गांवो मे १४२ तरह के बाट चलते थे। इस रिपोर्ट म एक जगह बताया गया है कि परिणाम के १५० पमाने और समान नापने के १८० पमाने मौजूद है।

आजकल देश में १०० तरह के मन चलते हैं। य २८० तोले से लेकर ८,३२० तोले तक के होते ह, जबकि स्टैण्डर्ड मन ३,२०० तोले तक का होता है। इसी तरह सेर भी ८ तोले से लेकर १६० तोले तक का चलता है। स्टैण्डर्ड सेर ८० तोले का होता है।

मीटर ध्रुव वृत्त के चौथाई का करोड़वां हिस्सा है। किलोग्राम ०१ के घन मे समाने वाले पानी के भार के बराबर होता है। इतने पानी के भर परिमाण को एक लीटर कहेंगे।

मेट्रिक प्रणाली में नाप-तोल की परिवर्तन तालिका

इस तालिका मे पौण्ड मन, सेर को किलोग्राम मे दिखाया गया है। आधे किलोग्राम तक का हिसाब लगाया गया है।

पौण्ड	मन	सेर	किलोग्राम
१००	१	८ ५	४५ ५
११०	१	१३ ५	५०
१२०	१	१८ ५	५४ ५
१३०	१	२३	५९
१४०	१	२८	६३ ५
१५०	१	३३	६८
१६०	१	३८	७२ ५
१७०	२	२ ५	७७

इस तालिका मे फुट और इंच को मीटरों और सेंटीमीटरो मे बदला गया है।

फुट और इंच	मीटर
४—१०	१ ४७
५— ०	१ ५२
५— २	१·५८
५— ४	१·६३
५— ६	१·६८
५— ८	१ ७३
५—१०	१·७८
६— ०	१ ८३

(पृष्ठ ११ का शेष)

के उपकार का उसका उच्च उद्देश्य पूर्ण होगा।

अन्त में एक प्रार्थना और कर दू। 'दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे, दयानन्द का काम पूरा करेंगे' उद्घोषित करने वाले कर्मठ विद्वानो के मुख से जब शुद्ध संस्कृत के दयानन्द जैसे चार अक्षर तथा वैदिक जैसे तीन अक्षर के स्थान पर अंग्रेजी का अक्षर डी० तथा वी० सुनता हू तब ये मुझे बहुत खटकते हैं। वैदिक संस्कृति के परम पुजारी, संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित एव भक्त महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती आज होते तब क्या अपने प्रातः स्मरणीय शुभ नाम के स्थान पर अंग्रेजी की 'डा०' और पुनः वैदिक शब्द के स्थान पर 'व ०' के प्रयोग कभी पसन्द करते ?

आलस्यवश डा ० तथा वी० को इस प्रकार स्मरण कर लिया गया है। मैंने कई बार इसके लिए प्रार्थना की परन्तु खेद है कि हमारे कतिपय आर्य बन्धुओं का आदत ऐसी पड़ गयी है जो छूटती नहीं। जो अपनी ही आदत ठीक नहीं कर पाते वे अन्यो की क्या सुधारेंगे। शिक्षण संस्थाओं का दयानन्द तथा वैदिक शब्दों से जो गौरव है वह डी० तथा वी० से नहीं। डी० तथा वी० से शिक्षार्थियों पर दयानन्द तथा वैदिक के समान प्रभाव नहीं पड सकता है।

(पृष्ठ ६ का शेष)

आनन्द भी सात्विक आनन्द है। 'त्याग से भोग' का आनन्द सहस्र गुणित होता है। यह भोग ही मानव धर्म है। भोग से भोग दुःखदायक त्याग से भोग आनन्द दायक है। सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शब्दों मे त्याग की भावना आत्म शुद्धि के लिए आवश्यक थी। प्राचीन भारत में त्याग की भावना को जागृत रखने के लिए सर्वमेध यज्ञ का विधान था। बुद्ध भगवान् ने जन समाज के कष्टो का दूर करने के लिए सर्वमेध यज्ञ किया था।

चौथा तत्व आध्यात्मिकता है। आज विश्व मे जड़वाद या भौतिकवाद की ओर ही सबकी दृष्टि लगी हुई है और भौतिक सम्पत्ति तथा साधनों से सम्पन्न राष्ट्र आदर के पात्र समझे जाते हैं। पर भारतीय संस्कृति के अनुसार धन की अपेक्षा आध्यात्मिकता एव नैतिक संयम को प्रधान माना गया है। चतुर्वर्ण व्यवस्था मे ब्राह्मण का स्थान मानने के पीछे भी उसके त्याग एव आध्यात्मिक जीवन का होना ही है। बृहदारण्यक उपनिषद् मे एक कथा आती है कि जब याज्ञवल्क्य वन को जाने लगे तब उन्होने अपनी सम्पत्ति मैत्रेयी को देनी चाही पर उसने कहा 'येनाहं नामृतास्या किमहं तेन कुर्याम्' अर्थात् उस वस्तु को लेकर मैं क्या करूंगी, जिससे मुझे अमरत्व नहीं मिलेगा।

वैदिक संस्कृति को छोड़कर ऐसी आध्यात्मिकता अन्य कहीं नहीं, इसी कारण विदेशियो के आक्रमण और पराजय का हम पर कुछ प्रभाव न पड़ा। आर्थिक हानियो, पराजयों और कष्टों के बावजूद भी उसकी आत्मा विजय रही।

इन उपर्युक्त तत्वों का सार और उद्देश्य शांति की भावना हमारी संस्कृति का अन्तिम तत्व है। शांति की विजय को युद्ध की विजय से कम गौरवशाली नहीं माना गया। शान्ति की भावना इतनी उग्र और सच्ची थी कि उपनिषदों मे, कर्मकाण्ड मे सर्वत्र मन्त्र की समाप्ति 'ओ३म् शान्ति' के उच्चारण के साथ होती है और प्रार्थना की जाती है कि आकाश, पृथ्वी, जल, वनस्पतियो, वृक्षो और हृदयों में सर्वत्र शान्ति व्याप्त हो।

कठोपनिषद् में लिखा है कि 'बुद्धिमान् व्यक्ति को चाहिए कि वह वाणी को मन मे, मन को बुद्धि मे और महान् 'स्व' को शान्ति मे विलीन कर दे।

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति महान् है। योगी अरविन्द के शब्दो मे "महान भविष्य का महान् भूतकाल का अनुगमन करना चाहिए।"

आगरा नगर द्वारा उड़ीसा में ईसाई प्रचार निरोधार्थ दान

१३८।) आ० स० नामनेर प्रतापपुरा आगरा
१७०) आ०स० नाई की मडी आगरा
१११) आ०स० नगर फ्र गज, आगरा
१२१) आ०स० राजामडी, आगरा
४०) आ०स० मालरोड कत्र, आगरा

५३०)

इसके अतिरिक्त सभी समाजो द्वारा ५००) रु० के वस्त्र दिये गये। श्री महाशय राम नारायण जी, फर्म त्रियालाल एन्ड सन्स फोटो ग्राफर्स प्रतापपुरा आगरा ने ४०) रुपये की कीमत का एक नया केमरा प्रदान किया। इसके लिए सभी समाजों के अधिकारी व सदस्य धन्यवाद के पात्र हैं।

—ब्रह्मानन्द सरस्वती
वेदव्यास वैदिक आश्रम
पो० पानपोष, जिला सुन्दरगढ़, उत्कल

सभा की सूचनाएं

आवश्यक सूचना

समस्त महानुभावों की सेवा में निवेदन है कि दशहरा अवकाश निकट आ रहा है, जो महानुभाव आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए अपना समय प्रदान करने की कृपा कर सकें, वह मुझे कार्यालय के पते पर सूचित कर अनुगृहीत करें।

कार्य इस समय सभा की आर्थिक परिस्थिति को सुधारना है और आर्यमित्र की हीरक जयन्ती व श्री पण्डित गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय तथा श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी रि० चीफ जज, इन दोनों महानुभावों के अभिनन्दन समारोहों के लिए धन एकत्रित करना है। सूचना प्राप्त होने हर सभा कार्यालय से कार्यकर्ताओं के लिए क्षेत्र निश्चित कर दिए जायेंगे। जिसकी सूचना सम्बन्धित समाजों को पत्र द्वारा तथा आर्यमित्र द्वारा प्रकाशित करा दी जावेगी। यदि कार्यकर्त्ता महानुभाव अपना क्षेत्र स्वयं चुन लेने की कृपा करेंगे, तो उत्तम होगा और कार्यालय का भार भी हल्का हो जावेगा।

मुझे आशा है कि सभा प्रेमी इस ओर अवश्य ध्यान देने की कृपा करेंगे।

कालीचरण आर्य
उप प्रधान सभा

सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश लखनऊ की अन्तरङ्ग सभा की बैठक अक्तूबर के चौथे सप्ताह में होने की सम्भावना है। अतः जो सज्जन अन्तरङ्ग के एजेण्डा में कोई विषय रखवाना चाहें तो वे, २ अक्तूबर तक लिखकर भेज दें, जिससे वह एजेण्डा में छप सके।

—फूलनसिंह मन्त्री सभा

सभास्थ निरीक्षकों से नम्र निवेदन

सभा मुख्य निरीक्षकों, निरीक्षकों से प्रार्थना करती है कि निरीक्षण कार्य यदि प्रारम्भ न किया हो तो कृपाकर यथाशीघ्र प्रारम्भ करने का कष्ट करें। इसके साथ साथ निम्न बातों की ओर विशेष रूप से ध्यान देने का कष्ट करें—आर्य समाजों की शिथिलता को दूर कर, उन्हें पुनर्जीवित करना, वहां के नवीन निर्वाचन ठीक-ठीक कराना, सभा के समाचार पत्र आर्यमित्र के ग्राहक बनाना घासीराम प्रकाशन विभाग की पुस्तकों को बिकवाना, उन आर्यसमाजों का उत्सव नियत कराना जो नहीं हो रहे है, के अतिरिक्त सबसे बड़ा कार्य यह है कि सभा से भेजे गये वार्षिक प्रतिनिधि चित्र ठीक ठीक भरवा कर सभा का प्राप्तव्य धन भिजवाना, तथा समाज के प्रतिनिधियों को सभा के आगामी वृहदधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित करना।

खेद की बात है कि उत्तर प्रदेश मे ११ सौ से अधिक समाज तथा ३७ उप प्रतिनिधि सभाओं के होते हुए भी सभा मे प्रतिनिधियों की संख्या ५०० कभी भी नहीं हो पाती। जिस सभा के आधीन इतने समाज, उप प्रतिनिधि सभाएं हों, जो कि सैकड़ों संस्थाओं द्वारा भिन्न-भिन्न रूप म प्रदेश मे समाज सेवा कार्य कर रही हैं और जिनका एक विशाल सुदृढ़ सगठन प्रदेश मे फैला हो और करोड़ों की सम्पत्ति हो, उस सभा की अवस्था इतनी शोचनीय हो जाय जिसके कारण आगे प्रगति न हो सके। अतः यह निश्चय किया गया है कि इस वर्ष प्रदेश को ८ भागों मे निरीक्षण कार्य के लिये विभाजित करके और उनके सहायक के रूप में प्रत्येक जिले में निरीक्षक नियत करके ऐसी योजना बनाई गई है कि उत्तर प्रदेश के सभी आर्य समाजों का निरीक्षण हो जावे। हमें आशा है कि निरीक्षक गण अपने-अपने भ्रमण का प्रोग्राम बनाकर कार्यालय मे भेज दें जिस से कार्यालय आर्यमित्र में प्रकाशित करा सके।

—फूलनसिंह सभा मंत्री

शुभ सूचना

भवनों के फोटोज़ भेजिये

सार्वदेशिक सभा देहली के लिए उत्तर-प्रदेश की सभा से सम्बद्ध मुख्य मुख्य आर्य समाजों तथा संस्थाओं के भवनों के फोटोज व ब्लाकों की अत्यंत आवश्यकता है। जिन २ समाजों के ब्लाक फोटो भवन (मन्दिरों) के तैयार हों, वह कृपा कर इस सभा कार्यालय में शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करें और जिन जिन के तैयार न हों वे यथा शीघ्र तैयार कराकर भेज दें: चित्रों को एक पुस्तक रूप में प्रकाशित करने का विचार है।

—प्रेमचन्द्र शर्मा उपमंत्री
आ० प्र० सभा उ० प्र०

निरीक्षण सूचना

हरदोई जिलास्थ आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि हरदोई जिला के आर्य समाजों के लिए निरीक्षक पद पर श्री पं० अनन्तराम जी शर्मा किरतियापुर,हरपालपुर (हरदोई) को और नियुक्त किया गया है। उनके पहुँचने पर समाज एवं संस्था का निरीक्षण कराया जावे और प्राप्तव्य धन उनको दिया जावे। —सभा मंत्री

आर्य-जगत

चुनाव समाचार—

—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब—प्रधान श्री आचार्य रामदेव जी, मन्त्री पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती।

—आ० स० भरथारी—प्रधान श्री अविनाशचन्द्र वैद्य वाचस्पति, मन्त्री श्री द्वारकाप्रसाद आर्य, कोषाध्यक्ष श्री सगमलाल।

—आ० स० रोशनगंज गया—प्रधान श्री जयनारायणसिंह, मन्त्री श्री नन्दकिशोर प्रसाद, कोषाध्यक्ष श्री द्वारकाप्रसाद। श्री शिवधर जी भजनोपदेशक बिहार सभा के प्रचार से यहां इस नए आर्य समाज की स्थापना हुई।

—आ०स० आदर्शनगर में जूण्ट कालोनी नैनीताल—श्री जगदीश शरण मन्त्री, श्री यशपालसिंह निरीक्षक, श्री एस०आर० वर्मा कोषाध्यक्ष।

उत्सव समाचार—

—श्री सवदानन्द साधु आश्रम अलीगढ़ का वार्षिकोत्सव २२, २३, २४ नवम्बर ५८ को मनाया जावेगा।

—आ० स० समसाबाद जिला आगरा का वार्षिकोत्सव २२, २३, २४ अक्टूबर को होगा।

—आ० स० कोटद्वार गढ़वाल का चतुर्थ वार्षिकोत्सव ४, ५, ६ अक्टूबर को होगा। पं० प्रकाशवीर शास्त्री का विशेषरूप से व्याख्यान होगा और उन्हीं के द्वारा कन्या पाठशाला के भवन का शिलान्यास होगा।

—आ० स० पानीपत का वार्षिकोत्सव ३, ४, ५ अक्टूबर को होगा। स्वामी रामेश्वरानन्द, आचार्य भगवानदेव, प्रो० शेरसिंह, पं० रामचन्द्र देहलवी, पं० शान्तिप्रकाश जी आदि पधारेंगे।

आ० स० किरतपुर बिजनौर का उत्सव १० से १७ सितम्बर ५८ तक मनाया गया। पं० रामचन्द्र देहलवी, पं० श्याम जी पराशर के सारगर्भित भाषण हुए। अन्य विद्वानों के भी भाषण हुए।

प्रचार समाचार—

—पं० रामचन्द्र शर्मा वानप्रस्थी आर्य गुरुकुल एटा द्वारा १० से १५ सितम्बर तक औरैया, गावगंज दयालपुर आदि स्थानों में वैदिक धर्म का सुन्दर प्रचार किया।

आर्य कुमार सभा समाचार—

—आर्य कुमार सभा दानापुर कैन्ट बिहार—प्रधान श्री रामबली प्रसाद आर्य, मन्त्री श्री सूरज नारायण साह, कोषाध्यक्ष श्री महेश्वरप्रसाद आर्य।

—रोहतक में आर्यकुमार सभा की शाखा सुन्दर ढंग से चल रही है।

आर्य वीर दल समाचार—

—हिमाचल प्रदेश आर्यवीर दल का शिक्षण शिविर १६ अगस्त से २६ अगस्त तक सन्धावा जिला कांगड़ा में लगा—संयोजक श्री मुरलीलाल जी आर्य तथा कविराज केवलराम जी थे। शिविर में ४१ वीरों ने शिक्षा प्राप्त की। शिक्षण कार्य श्री रामसिंहजी तथा श्री रामगोविन्द जी आर्य ने किया। शिविर में शारीरिक व्यायाम के अतिरिक्त बौद्धिक में संस्कृति का भी परिचय कराया गया।

—ब्रिटिश गायना (दक्षिणी अमरीका) में माहिकोनी नदी के सुरम्य तट पर मार्टिस ग्राम में १० अगस्त से १७ अगस्त तक श्री उषर्बुध जी की अध्यक्षता में आर्य वीर दल का एक सांस्कृतिक शिविर लगा। शिविर में ब्रिटिश गायना के भिन्न भिन्न भागों से ५७ आर्य वीरों ने भाग लिया। शिविर में वैदिक धर्म और वैदिक संस्कृति की विशेषताओं पर श्री ब्रह्मचारी जी के भाषण हुए और नित्य सन्ध्या हवन तथा स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमपूर्वक चला। शिविर में प्रतिदिन कुछ घण्टों के अतिरिक्त सभी वीरों ने पूर्ण मौन धारण किया।

शिविर में भोजन आदि की व्यवस्था ग्राम निवासियों तथा वहाँ की देवियों ने बड़े ही सुन्दर ढङ्ग से की। भोजन की सभी सामग्री दान के रूप में प्राप्त हुई है।

—यदि आर्य वीर दल के लिए अवैतनिक शिक्षक की आवश्यकता हो तो श्री बालकृष्ण आर्य त्यागी, ग्राम चन्दा का पुरवा, पो० बरईगढ़ जिला कानपुर को केवल मार्गव्यय और भोजन पर बुलावें।

—उन्नाव जिला आर्य वीर दल की ओर से १४ सितम्बर को बांकीपुर में और १६ सितम्बर को हसनगंज के मेले में दल का प्रचार किया गया।

—आर्य वीर दल नगर समिति भवानीपुर नार्दर्न पार्क शाखा कलकत्ता सभापति श्री जयनारायणसिंह, मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र मिश्र, शाखानायक श्री पीताम्बर यादव।

—आर्य वीर दल दानापुर कैन्ट बिहार—प्रधान श्री रामबली प्रसाद आर्य, मन्त्री श्री राजेन्द्र [illegible] सूरी, शिक्षानायक श्री ओंकारमल पटवारी, बौद्धिकनायक श्री देवनन्दन प्रसाद।

—रोहतक में आर्य वीर दल की शाखा सुन्दर ढंग से चल रही है।

—आर्य वीर दल मध्य प्रदेश ने प्रान्तीय आर्य वीर दलों को सशक्त बनाने के लिए निश्चय किया है कि विजयादशमी के अवसर पर दल सहायता के रूप में प्रत्येक प्रान्तीय दल अधिकारी अपनी वार्षिक आय का १६ वां भाग, प्रत्येक मण्डल अधिकारी अपनी वार्षिक आय का ३२ वां भाग और प्रत्येक नगर अधिकारी अपनी वार्षिक आय का ४८ वां भाग दल सहायता कोष में अवश्य दें। सदस्य अपनी सामर्थ्यानुसार देंगे। क्या अन्य प्रान्तीय दल इस निश्चय का अनुकरण करेंगे?

ओम्प्रकाश त्यागी प्रधान सञ्चालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

—आर्य वीर दल लखनऊ की ओर से पारिवारिक सत्संग व प्रचार का रोचक कार्यक्रम श्री देवीप्रसाद जी उप सञ्चालक म०पू० उत्तरप्रदेश आ० वी० दल की देखरेख में सुचारुरूप से चल रहा है।

वैदिक संस्कार समाचार—

—आर्य समाज पुरानी मंडी सहारनपुर के एक सेवक का नाम तुगलसिंह था। रक्षा बन्धन के दिन पुन उसका नामकरण संस्कार करके उसका नाम सुरेन्द्र कुमार रखा गया।

वेद प्रचार सप्ताह—

निम्न स्थानों से वेद प्रचार सप्ताह व कृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाये जाने का समाचार पुन प्राप्त हुआ है—

आ० स० बिन्दकी फतेहपुर, आ० स० भरथारी, आ० स० सर्फपुर, आ० स० मसेवी मुरादाबाद, आर्य वीर दल रोहतक, आर्य कुमार सभा रोहतक, आ० स० कालिज विभाग रोहतक, आर्य वीर दल सम्भल मुरादाबाद, आ० स० औरैया इटावा।

शोक समाचार—

—ब्रह्मचारी हेमसिंह ब्रह्मचर्य के निधन पर आ० स० पाली मेरठ ने शोक प्रस्ताव पास किया।

—आ० स० मसेवी मुरादाबाद ने श्री [illegible] श्रीवास्तव की पत्नी के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया।

—आ० स० महुआ अलीगढ़ ने श्रीमती आनन्दी देवी (धर्मपत्नी पं० धर्मस्वरूप जी महोपदेशक पंजाब सभा) के निधन पर शोक प्रकट किया।

—पं० सच्चिदानन्द शास्त्री महोपदेशक सभा की एक वर्षीया पुत्री के निधन पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, आर्यमित्र व प्रेस के समस्त कर्मचारियों ने शोक प्रकट किया।

—पं०बालीराम जी भजनोपदेशक पंजाब के निधन पर आ०स० कायमगंज ने शोक प्रस्ताव पास किया।

अन्यान्य समाचार—

—९ सितम्बर को देहरादून में गढवाली आर्य समाजियों की ओर से श्री लक्ष्मण प्रकाश तिवारी की अध्यक्षता में श्री जयानन्द भारतीय का स्मृति दिवस मनाया गया।

—गुरुकुल अयोध्या के कुलपति श्री स्वामी त्यागानन्द जी महाराज इन दिनों भुवाली में रुग्ण पड़े हैं। अत दानी महानुभावों को गुरुकुल की सहायता करनी चाहिए।

हिन्दी दिवस समाचार—

—१४ सितम्बर को निम्न स्थानों पर हिन्दी दिवस मनाया गया—आ० स० हरदोई म० प्र० हिन्दी रक्षा समिति लखनऊ, आ० कुमार सभा बादशाह नगर लखनऊ।

आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के कोष कार्यालय के लिए एक सुयोग्य एकाउटेन्ट जिसकी योग्यता कम से कम बी० काम० और हिसाब रखने की दक्षता तथा अंग्रेजी भाषा का टाइप भी जानते हों, की आवश्यकता है। किसी भी आर्यसमाज का सदस्य होना अनिवार्य है। प्रार्थना पत्र स्थानीय आर्यसमाज के प्रधान या मन्त्री के प्रमाण पत्र सहित ५ अक्तूबर १९५८ तक निम्न पते पर आने चाहिये। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा।

प्रेमचन्द्र शर्मा उपमन्त्री
आ०प्र० सभा उत्तरप्रदेश
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आवश्यकता है

एक अनुभवी एच० टी० सी० अध्यापक की जो दो वर्ष का किसी आर्यसमाज का आर्य सभासद अवश्य हो और [illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा से योग्यता प्राप्त हो आवश्यकता है। प्रार्थना पत्र ५ [illegible] ५८ ई० तक आना अनिवार्य है। —[illegible] गुप्त प्रेमपाठशाला (आर्यसमाज) [illegible]

सिंहावलोकन

नेपाल में आर्य समाज का प्रवेश

(आचार्य श्री रामानन्द शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, बिहार)

नेपाल में आर्य समाज के प्रवेश की कहानी ही वास्तव में नेपाल में प्रजातन्त्र की स्थापना की कहानी है, जिसके मूल में आर्य समाजी नेता श्री शुक्रराज शास्त्री का बलिदान है, मास्टर गुरुदयाल जी बी० ए० का खून है एवं श्री माधवराव जोशी की तपस्या है। अतः नेपाल की जनता आज आर्य समाज की ओर ताक रही है। विद्वान् लेखक के इस खोज पूर्ण लेख को पढ़कर क्या भारत के आर्य बन्धु वैदिक धर्म के प्रचार के लिए नेपाल की ओर प्रयाण करेंगे, जहाँ आज ईसाई मिशनरियाँ अपना कुचक्र चला रही हैं?—प्र०सम्पादक

नेपाल देशीय आर्य समाज के इतिहास जानने के पहले वहां की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि समझना भी नितान्त आवश्यक है। नेपाल प्रदेश २६—३० आक्षांश तथा ८० ८८ देशान्तर में स्थित है। क्षेत्रफल ५४००० वर्गमील है। इसके पूर्व में दार्जिलिङ्ग, पश्चिम अल्मोड़ा, दक्षिण पीलीभीत, गोरखपुर, चम्पारण, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया एवं सहरसा जिले हैं। यह देश ५२० मील लम्बा एवम्, १४०, कहीं १५० तथा कहीं ९० मील चौड़ा है। यहां की आबादी ७० ८० लाख के करीब है। यहां प्रायः हिन्दू प्रजा ही निवास करती है। इनमें भी मुख्यतः दो भेद हैं—गोरखा एवम् नेवा। नेवा को ही नेवार कहते हैं। लेकिन शुद्ध नेवा ही है। नेवा यहां की पुरानी जाति है। कुछ इतिहासकारों ने तो यहां तक लिखा है कि नेवा शब्द से ही नेपाल शब्द की उत्पत्ति हुई है। नेवा लोगो का प्रथम शासन था। उनमे कई राजा हो चुके हैं। शिला लेखों एवं प्रशस्तियों से विदित होता है कि वे राजा बहुत ही प्रभाव शाली हुये है। विक्रम सम्वत् १८२४ में श्री पृथ्वीनारायण शाह ने नेपाल पर चढ़ाई कर वहां के शासन अपने हाथ में कर लिया। तब से ९ राजा नेपाल में हुये जो प्रश्री के नाम से प्रसिद्ध हैं। तब से गोरखा शासन नेपाल में प्रारम्भ हुआ। प्रधान मन्त्री श्री जगबहादुर राणा हुये। इन्होंने अपनी वीरता तथा नीति से प्रधान मन्त्रित्व का पूर्ण अधिकार हाथ में ले लिया तथा महाराजा से सब अधिकार हाथ मे ले लिया इन्होंने ही अपने को राणा की उपाधि से विभूषित किया तभी से इनकी सन्तान राणा कहलाती है। राजा का कुछ भी अधिकार नहीं था, सब कुछ प्रधान मन्त्री ही नेपाल क्रान्ति के पहले करते थे। राणाओं ने नेवार जाति को कुचलना प्रारम्भ कर दिया। वहां उनकी शिक्षा दीक्षा भी बन्द कर दी गयी। नेपाल ही एक ऐसा देश है जहाँ पर आज से ७ वर्ष पूर्व प्राइमरी स्कूल खोलने की भी मनाही थी। ८० लाख आबादी वाले देश में केवल राजाओं के लिए एक हाई स्कूल काठमाण्डू में था। सामाजिक कुरीतियों ने नेपाल को जर्जर कर दिया था। शिक्षा के बिल्कुल अभाव के कारण नेपाल की भोली भाली जनता नागरिक अधिकार से भी वंचित है। विशेषतः पीड़ित नेवार जाति है। क्योंकि वे लोग राणाओं के समय से ही प्रशासन सम्बन्धी कार्यों से पृथक रखे जाते हैं। उस समय राणा लोग इनसे भयभीत रहते थे कि कहीं ये पुनः राज्य सत्ता को न हथिया लें।

इसी नेवा जाति में १९१६ विक्रम सम्वत् में माधवराव जोशी का जन्म हुआ। जोशी जी के पिता वीर थे। वीरता के कारण ही उन्हें सरकारी ओहदा मिला था। माधवराव जोशी भी बहुत ही प्रतिभाशाली एवं सद्गुण सम्पन्न थे। यही कारण है कि राना लोग इनसे बहुत अधिक प्रेम करते थे तथा अपने पास रखते थे। राज्य कर्मचारियों के साथ रहते हुये माधवराव जोशी को अपनी जाति की कारुणिक अवस्था का ज्ञान हुआ। लेकिन बेचारे कर ही क्या सकते थे। माधवराव जोशी फलित ज्योतिष के बड़े विद्वान् थे। कुण्डली बना कर अपनी जीविका चलाते थे। धार्मिक प्रवृत्ति के कारण उन्होंने जगन्नाथ की भी यात्रा की थी। यह यात्रा उनकी तब हुई जब कि उत्तरीय विहार में रेलगाड़ी भी नहीं आयी थी। उन्हे बहुत मार्ग पैदल चलकर बिताना पड़ा था। वहां से वे विक्रम संवत् १९३३ में काशी में गये। वहाँ उन्होने ऋषि स्वामी दयानन्द जी महाराज का दर्शन किया तथा उनसे सत्सङ्ग कर बहुत सी शङ्काओं का समाधान भी कराया। तभी से उनके जीवन की काया पलट हुई। वे सत्सग द्वारा बहुत व्यसनों से मुक्त हो गये। तब तक उन्हें सत्यार्थ प्रकाश नहीं मिला था। एकबार वे नेपाल में ही चिनिया वैद्य नाम से प्रसिद्ध एक चिकित्सक के पास गये। वहीं उनको सत्यार्थ प्रकाश का दर्शन हुआ जो किनारे रद्दी चीजों में फेंका गया था। उस पुस्तक को प्राप्त करते ही उन्हें वैदिक धर्म का पूर्ण परिचय हो गया। वे अब लोगों को समझाने लगे। बैठकर उपदेश देने लगे। इनके उपदेशों से नेपाल देशीय प्रजा में विशेष सुधार होने लगा। नेवा जाति तो धड़ाधड़ अपने दुर्व्यसनों तथा दुर्गुणों को छोड़ने लगी। श्री माधवराव जोशी ने विक्रम सम्वत् १९५५ पौष शुक्ल पंचमी को नेपाल के पाटन नामक स्थान में आर्यसमाज की स्थापना की तथा लोगों को उपदेश देना प्रारम्भ कर दिया। जोशी जी के पिता जी का जब देहान्त हुआ तो उन्होने वैदिक रीति से उनका अन्त्येष्टि संस्कार किया। माधवराव जोशी के कार्यों की खबर राणा को जब मिलने लगी तो राणा घबड़ाये कि कहीं हमारे हाथ से शासन न चला जाय। तब वे बाधा पहुंचाने लगे। माधवराव जोशी पकड़ कर दरबार में बुलाये गये। उनसे पूछा गया कि तुम प्रजा में धार्मिक विद्रोह क्यों करते हो? सनातन से श्राद्ध में मांस खिलाया जाता था, तुमने क्यों नहीं उस विधि का पालन किया? जोशी जी ने कहा, यह वैदिक धर्म के सिद्धान्त के विपरीत है। पण्डितों से व्यवस्था ली गयी। पोप पण्डितों के स्वार्थवश यह फैसला दिया कि—इनका सम्पूर्ण काय धर्म विरोधी है—अतः इनको पीटकर जेल भेज दिया गया तथा २॥ वर्ष के लिए सश्रम कारावास की सजा सुनाई गई तथा पैर में बेड़ी डालकर जेल दिया गया।

इस प्रसंग में पंजाब निवासी श्री मास्टर गुरुदयाल जी बी० ए० का नाम नहीं भुलाया जा सकता है। जिसे वैदिक धर्म के सिद्धान्त को नेपाल में प्रचार करने के हेतु दण्ड मिला तथा चार सिपाहियों द्वारा पकड़वा कर नेपाल से बाहर छोड़ आने का आदेश दिया गया। लेकिन वे क्या हुए इसका पता बाद में न चला। नेपाल के अमर शहीद शुक्रराज शास्त्री जिन्हें वैदिक धर्म के प्रचार के कारण फांसी हुई जो माधवराव जोशी के प्रथम पुत्र थे उन्होंने अपनी आत्म कथा में श्री मास्टर गुरुदयाल बी० ए० के सम्बन्ध में लिखा है।

हे पञ्जाब! तुम वीर प्रसू हो, श्रीमान् मास्टर गुरुदयाल बी० ए० जैसे सन्तानों को जब तक तुम उत्पन्न करोगे तब तक तुम्हारे नामों को सुन कर बड़े बड़े घमण्डी राक्षसों के छक्के छूट जायेंगे।......। श्री शुक्रराज शास्त्री आगे चलकर पुनः लिखते हैं। 'आप ही सच्चे माता पिता के सपूत है जिन्होंने चिरपरिचित न होने पर भी अन्त तक पिता जी का साथ दिया और प्रज्ज्वलित आग मे कूद पड़े। मास्टर जी तब से आपकी क्या गति हुई हम मालूम नहीं, अहा भगवन्! ऐसे धर्मात्मा पुरुष को आप सद्गति दें उन्हें मोक्ष, सुख दें, आपसे हमारी यही प्रार्थना है।' श्री शुक्रराज शास्त्री ने गुरुदयाल जी का बहुत पता लगाया था, लेकिन कुछ भी पता न चला। कुछ लोगों का अनुमान है कि नेपाल से लाने के समय उन्हें मार्ग में ही मार कर कहीं फेंक दिया गया कि भारत में आ कर यह नेपाल के सम्बन्ध मे प्रचार न करे। आज आर्य समाज के इतिहास मे हम मास्टर गुरुदयाल बी० ए० का नाम नहीं पढ़ते हैं, यह हमारा दुर्भाग्य है। अस्तु।

श्री माधव राव जोशी जेल में ही आर्य समाज का प्रचार करने लगे तब उन्हे फांसी की सजा देने की बात सोची जाने लगी। अत: वे जेल से किसी प्रकार भाग कर अपने बच्चों तथा स्त्री को लेकर भारत की सीमा मे आये। उनकी यह यात्रा बहुत मार्मिक हुई। भारत में उन्होंने भ्रमण किया। आर्य समाज गोरखपुर, आर्य समाज गणेशगंज लखनऊ आदि के सदस्यों ने आर्थिक सहायता दी। इन्होंने अपने दो पुत्रों श्री शुक्रराज शास्त्री एवं वाकपतिराज शास्त्री को गुरुकुल सिकन्दराबाद मे पढ़ाया। श्री पं० शुक्रराज शास्त्री पंजाब से शास्त्री एवं अंग्रेजी मे बी० ए० थे। उनका संस्कृत भाषण धारा प्रवाह होता था। उन्होंने दार्जिलिङ्ग में रहकर नेपाली प्रजा के बीच प्रचार किया था। उनके प्रचार से तथा हिन्दू जाति की सेवा से प्रभावित होकर श्री मालवीय जी ने

(शेष पृष्ठ १९ पर)

वेदोपदेश

ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि॥ यजु०

हे व्रतपालक ईश्वर! मैं व्रत का आचरण करूंगा। मैं इसमें समर्थ होऊं। मेरा व्रत सिद्ध हो। अब मैं असत्य को छोड़कर सत्य को प्राप्त होता हूं।

आर्यमित्र

लखनऊ—१२ अक्टूबर १९५८ दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि सवत् १९७२९४९०५९

बाढ़ का व्यापक आतंक

सम्प्रति बाढ़ के व्यापक आतंक से पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, आसाम इस प्रकार समस्त उत्तर भारत की लगभग आधी जन संख्या पीड़ित है। हम पंजाब से चलते है।

पंजाब में बाढ़ का पानी कई जिलों को प्रभावित कर चुका है, लाखों एकड़ भूमि पानी मे डूब गयी। फसल, धन सम्पत्ति नष्ट होने तथा कुछ जानवर व एकाध व्यक्ति के मरने का समाचार मिला है। अमृतसर, जालंधर, रोहतक, गुड़गांव आदि जिलों की स्थिति चिन्तनीय है। मुख्य मन्त्री श्री प्रताप सिंह कैरो ने जनता के नाम बाढ़ पीड़ितो की सहायता की अपील निकाली है।

दिल्ली के चारों ओर उत्तर प्रदेश तथा पंजाब के सीमा क्षेत्रो मे बाढ़ का साम्राज्य है। दिल्ली वालो को कभी पानी दुर्लभ हो जाता है कभी मकानो मे पानी घुस आता है।

उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलो के निवासी तो प्रति वर्ष बाढ़ के आतंक से परेशान हो जाते है पर इस वर्ष पश्चिमी जिलो की भी दशा चिन्तनीय हो गयी हैं। मेरठ, मुरादाबाद, शाहजहापुर, रामपुर, बरेली, मुजफ्फरनगर, आगरा, मथुरा, कानपुर, लखनऊ आदि जिलो में सैकड़ों मकान गिरने तथा पचासों लोगों के मरने के समाचार की पुष्टि की जा चुकी है। फसल और सम्पत्ति की क्षति का सहज ही अनुमान किया जा सकता है। कुछ पूर्वी जिलों में भी पानी भरा ही पड़ा है।

उत्तरी बिहार के चम्पारण, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, दरभंगा आदि जिलों में बाढ़ का व्यापक आतंक है। इसी प्रकार बंगाल तथा आसाम के भी कुछ जिलो के व्यक्ति बाढ़ से संकट मे है।

इस प्रकार कई करोड़ व्यक्ति आज बाढ़ से कष्ट भुगत रहे हैं। भारत सरकार तथा प्रान्तीय सरकारें इस सम्बन्ध मे कुछ सहायता कार्य कर तो अवश्य रही है पर जो व्यापक क्षति हुई है उसको ध्यान मे रखकर वर्तमान सरकारी सहायता को किसी भी प्रकार न तो समुचित कहा जा सकता है और न पर्याप्त। उत्तर भारत में जबकि बाढ़ प्रत्येक वर्ष के लिए एक साधारण सी बात हो गयी है और सरकार को पूर्व विदित है कि बाढ़ आयेगी ही, तो फिर पूर्व से ही इसे रोकने की समुचित व्यवस्था क्यों नहीं की गयी, यही खुला प्रश्न है? हम भारत सरकार की सीमित साधनों और कठिनाइयो तथा मजबूरियो को पता है, पर पूछा यह जाता है कि प्रति वर्ष भारत सरकार की ओर से जो अनेकों उच्च शिक्षार्थी विदेशो मे बाढ रोकने के साधन व क्रिया सीखने जाया करते है जिन पर भारतीय जनता की गाढ़ी कमाई के हजारों रुपये व्यय होते हैं, उससे भारतीय जनता को क्या लाभ है जबकि उन विशेषज्ञो के होते हुए यहाँ की जनता मृत्यु को प्राप्त हो रही है? क्या १२ वर्ष का समय भी इस कार्य के लिए पर्याप्त नहीं है?

प्रधान मन्त्री की मनमानी

प्रधान मन्त्री नेहरू पर सभी वर्ग व संस्थाओं के व्यक्तियों द्वारा प्रायः यह आरोप लगाया जाता है कि वे शासन की व्यवस्था में जनतान्त्रिक प्रणाली का खून करके मनमानी किया करते हैं और यदि उनके मार्ग में कठिनाई आती है तो घुड़की और धमकी से भी काम लेते हैं। पिछले दिनों नयी दिल्ली में पधारे हुए पाक प्रधान मन्त्री को उनके द्वारा यह आश्वासन दिया जाना कि पश्चिमी बंगाल के कूच बिहार और जलपाईगुड़ी जिले के कुछ भागो को पूर्वी पाकिस्तान मे मिला दिया जायगा ताकि भारत पाक सीमा विवाद समाप्त हो जाय उनकी मनमानी का एक ज्वलन्त उदाहरण है।

माना कि देश मे प्रधान मन्त्री का बहुत ऊंचा स्थान है, पर किसी भी जनतन्त्र मे यह अधिकार तो राष्ट्रपति को भी नहीं होना चाहिए कि देश की संसद की सम्मति के बिना स्वदेश का कोई भाग विदेश को सौंप दिया जाय। फिर झगड़ा (सीमा विवाद) तय करने का यह कितना गलत तरीका है। पाकिस्तान तो बात बात पर भारत से विवाद खड़ा करेगा ही, यह निश्चित है, तो प्रत्येक बार उसे देश का एक एक भाग सौंप कर सुलह करना और दुम दबाकर भागना कहां की बुद्धिमानी और कैसा न्याय है? क्या इसे ही समझौता और वार्ता कहा जा सकता है? पाकिस्तान सम्पूर्ण पंजाब और बंगाल लेकर भी सन्तुष्ट होगा, इसमे भी सन्देह है, पर यदि यह ठीक भी हो, तो क्या प्रधान मन्त्री ये दोनों प्रान्त पाकिस्तान को सौंप देंगे?

भारतीय प्रधान मन्त्री के इस वायदे को कलकत्ता हाईकोर्ट ने चैलेंज किया है और भारतीय विदेश विभाग तथा पश्चिमी बंगाल सरकार से इसका स्पष्टीकरण मांगा है। हम कलकत्ता हाईकोर्ट के चैलेंज का समर्थन करते है और देश की जनता को सम्प्रति 'ठहरो और देखो' (वेट एण्ड वाच) की नीति अपनाने की राय देते है। यदि निकट भविष्य मे कुछ परिणाम नहीं निकला तो बंगाल इस निर्णय के विरुद्ध व्यापक आन्दोलन करने को बाध्य होगा और समस्त देश बंगाल के साथ होगा।

अरब संघ का उदय

आज से कुछ वर्ष पूर्व सोवियत संघ मे जो स्थान मार्शल स्टालिन को प्राप्त था वही स्थान आज मिश्र मे कर्नल नासिर को प्राप्त है, इसमे कोई सन्देह नहीं है। अरब संघ का उदय इसका एक गम्भीर प्रमाण है, जिसकी चर्चा पूर्वी देशों व मध्य पूर्वी देशों मे चाहे भले कम हो पर पश्चिमी राष्ट्र इससे भयभीत हैं। वे जानते हैं कि यह एक क्रान्तिकारी कदम है, अत्यन्त अन्तर्राष्ट्रीय साहसिक प्रयास है और यदि एक बार अरब संघ के सभी छोटे बड़े राष्ट्र एक साथ मिल गये तो एशिया व अफ्रिका में पश्चिमी राष्ट्रों का सूर्य अस्त हो जायेगा।

कर्नल नासिर के मस्तिष्क मे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का नक्शा चाहे जो भी हो पर यह कदम निर्माण के लिए है, एशियाई अफ्रीकी राष्ट्रों की सुरक्षा के लिए है, ऐसा हम विश्वास पूर्वक कह सकते हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति चाहेगा कि सम्पूर्ण अरब राष्ट्र मिलकर एक संयुक्त अरब संघ (गणतन्त्र) बन जाय।

दिगाल की अल्जीरियायी पंचवर्षीय योजना

फ्रांस के प्रधान मन्त्री जेनरल दिगाल ने अल्जीरिया की दशा सुधारने के लिए एक पंचवर्षीय योजना बनाकर प्रस्तुत किया है। यदि वास्तव में जेनरल दिगाल के हृदय में वर्षों से परेशान हो रहे तथा मुसीबत ढोने वाले अल्जीरियायी बन्धुओं के लिए कोई स्थान है तो अब उनकी सुधार के लिए पंचवर्षीय योजना प्रस्तुत करने का अवसर नहीं रहा। अब तो समय की मांग है कि फ्रांस अल्जीरिया को पूर्णतया स्वतन्त्र कर दे। बेचारे राष्ट्रवादी अल्जीरियायी अनेकों वर्षों से आजादी की लड़ाई लड़ रहे हैं और इसकी कोई गिनती नहीं है कि फ्रांस की सेना ने कितने हजार अल्जीरियायियों को मौत के घाट उतार दिया। आश्चर्य है कि एक ओर तो फ्रांस अपने को सभ्य और उच्च राष्ट्र कहकर स्वतन्त्रता, मानवता और विश्व बन्धुत्व का ढोल पीट रहा है, और दूसरी ओर अल्जीरिया मे भीषण दमन चक्र चला रहा है। दिगाल की प्रशंसा इसी मे है कि समय की चाल को पहचान करके अल्जीरिया को स्वतन्त्र घोषित करे।

आर्य समाज का साप्ताहिक अधिवेशन

आर्य समाज की प्रगतिशीलता बनी रहे समाजों मे जीवन और प्राण रहे, इसका संगठन सुदृढ़ हो वेद का प्रचार होता रहे और आम जनता में आर्यसमाज तथा आर्यसमाजियो का एक सुरक्षित स्थान बना रहे इसके लिए जहां वेद प्रचार, वार्षिकोत्सव, लोक सेवा कार्य, वैदिक संस्कार प्रचार, कथाएं, गोष्ठी, पत्र प्रकाशन, सम्मेलन व साहित्यादि की आवश्यकता है वहां समाजों के साप्ताहिक अधिवेशनों में विशेष जीवन लाना अत्यधिक आवश्यक है क्योंकि आर्यसमाजों में मूल रूप से यही वह उद्गम [illegible] है जहां से हम संगठन तथा [illegible] की प्रेरणा आसानी से ले [illegible] है। यही स्थान हमारे संगठन [illegible] का मापदण्ड है, यही [illegible] का आधार है, [illegible] हमारे साधनों का [illegible] इसी

(शेष [illegible])

सभा की सूचनाएं

समितियों की बैठक

१—आ० प्र० सभा की अन्तरङ्ग के साथ-साथ सभा भवन समिति, नियम संशोधन समिति तथा कोष विभाग बैलेंशशीट ठीक करने के लिये उप समितियों की बैठक २५, २६ अक्टूबर ५८ को आर्य समाज हलद्वानी में होगी।

२—आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति की बैठक भी हलद्वानी मे रखी जा रही है।

३—सभा की अन्तरङ्ग के साथ साथ गुरुकुल विद्या सभा वृन्दावन की बैठक भी रखी जा रही है। कृपया सदस्यगण नोट करने का कष्ट करें और समय पर पधारने की कृपा करें।

कानपुर जिले की समाजों का निरीक्षण

श्री विश्वम्भरनाथ तिवारी कानपुर १२ १० ५८ से जिले के आर्यसमाजों का निरीक्षण प्रारम्भ करेंगे। सभी समाजें उनके निरीक्षण कार्य में सहयोग दें और सभा का प्राप्तव्य धन सूदकोटि दशांश आदि उन्हें देने का कष्ट करें। साथ ही अपनी समाजों की व्यवस्था को ठीक करके नियमित साप्ताहिक अधिवेशन आदि करें जहां नहीं होता हो। आर्यमित्र के लिए ग्राहक बनाने में भी समाजों को उनका सहयोग करना चाहिये। उनका प्रोग्राम निम्न प्रकार है :—

आ०स० नवाबगंज—१२ १०-५८
" ग्वालटोली "
" अरमापुर स्टेट १९ १० ५८
" गोविन्दनगर—२०-१० ५८
" शास्त्रीनगर—२१-१०-५८
" दर्शनपुरवा—२६ १० ५८
" अकबरपुर—२ ११ ५८

भ्रमण-पुरोगम

आ. प्र. सभा के सुयोग्य उत्साही उप मंत्री श्री प० प्रेमचन्द्र शर्मा जी एम० एस० सी० हाथरस निवासी ने अपना बहु मूल्य समय देकर सभा के वेद प्रचारार्थ निम्नलिखित आर्य समाजो मे भ्रमण करने का पुरोगम बनाया है। समाजों को चाहिए कि उनके पधारने पर स्वागत निवास स्थान की व्यवस्था तथा सभा के लिये पुष्कल धनराशि भेंट करने का कष्ट करें, साथ में प० रामप्रसाद जी आर्य रहेंगे।

हाथरस	१०	अक्टूबर
मैन्डू	११	"
मुरसान	१२	"
सासनी	१३	"
फरौली	१४	"
सिकन्दराराऊ	१५	"
कौड़ियागञ्ज	१६	"

सूचना

श्री बा० जगनन्दन लाल जी एडवोकेट इलाहाबाद उपप्रधान सभा, श्री कर्णसिंह जी ठाकर व श्री चन्द्र नारायण जी सभा उप मन्त्री तथा श्री ईश्वर दयालु जी सभा मुख्योप मन्त्री कुछ दिनों से अस्वस्थ थे, अब भगवान् की दया से उन्होने स्वास्थ्य लाभ कर लिया है और अपने कार्य में लग गये हैं।

—सभा मन्त्री

विशेष समाचार

श्री हरिशङ्कर जी शर्म्मा द्वारा स्व० पद्मसिंह जी शर्म्मा के चित्र का अनावरण

ता० २०-९-५८ को डी० ए० वी० इण्टरकालिज फिरोजाबाद की ओर से आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० हरिशङ्कर जी शर्म्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश द्वारा स्व० आचार्य प० पद्मसिंह शर्मा के चित्र का अनावरण बड़े धूमधाम के साथ कराया गया। इस अवसर पर श्री माननीय प्रधान जी ने स्व० आचार्य जी के साहित्यिक जीवन की विस्तृत व्याख्या करते हुए कहा कि आचार्य जी आधुनिक युग के समस्त साहित्यिक महारथियों के सहयोगी मित्र एवं पथ-प्रदर्शक थे।

श्री प्रधान जी के भाषण के बाद कालिज की ओर से उन्हें विशेष सम्मानित करने के लिए ५१) रु० की थैली श्री प्रधानाचार्य महोदय जी के द्वारा भेंट की गई। तदनन्तर उनके सम्मान में स्वल्पाहार तथा कविगोष्ठी की सुन्दर मधुर व्यवस्था की गई।

—कुसुमाकर

सभा उपप्रधान का स्वागत

दि० २६ सितम्बर को सभा के उप प्रधान श्री कालीचरण जी आर्य एवं आर्यमित्र के सम्पादक श्री स्नातक उमेशचन्द्र जी एम० ए० का रामनगर आर्य समाज के मन्त्री द्वारा स्वागत किया गया। आर्यमित्र हीरक जयन्ती के हेतु आर्यसमाज के मन्त्री श्री इन्द्र वर्मा एम०ए० ने आर्यसमाज रामनगर की ओर से ५१) भेंट किये।

निर्वाचन एवं समाज जीवित

सभा के सुयोग्य भजनोपदेशक श्री प० बालकृष्ण शर्मा जी धनुर्धर दि० २७-९-५८ को शिवगढ़ (इलाहाबाद) पधारे। यहां पर २७ से ३० सितम्बर तक प्रभावशाली प्रचार हुआ जिसका परिणाम यह हुआ कि वहां की जनता में वैदिक धर्म के प्रति उत्साह उत्पन्न हो गया और लगभग १५ वर्षों से आर्यसमाज शिथिल अवस्था मे था वह पुनर्जीवित हो गया जिसके अधिकारी निम्न प्रकार निर्वाचित हुए।

१—प्रधान श्री अमृतलाल आर्य
२—मन्त्री श्री सूयनारायणलाल जी
३—उप मन्त्री श्री मेवालाल आर्य
४—पुस्तकाध्यक्ष—श्री बल्देव प्रसाद

(पिछले पृष्ठ का शेष)

स्थान की सुदृढ़ता में हमारी सम्पूर्ण शक्ति निहित है, यही हमारे ठोस संगठन का परिचायक है। अतः आज आवश्यकता है कि इस ओर हम विशेष ध्यान दें। यदि समाजों के साप्ताहिक अधिवेशन सफलतापूर्वक होने लग जांय तो हम जो चाहें कर सकते हैं। हम सुनते हैं कि अमुक प्रान्त में अमुक समाज के साप्ताहिक अधिवेशनों में इतनी उपस्थिति होती है कि एक छोटे-मोटे उत्सव जैसा उसका रूप हो जाता है। क्या कारण है कि सभी समाजों में ऐसा नहीं होता। हमारा आग्रह है कि आर्य बन्धु इस ओर विशेष रूप से सचेष्ट हों।

संक्षिप्त समाचार

—आ० स० सुल्तानपुर नैनीताल में २६ सितम्बर ५८ को एक मुस्लिम परिवार की शुद्धि की गई जिसमे ५ व्यक्ति है। प० शान्तिस्वरूप शास्त्री ने शुद्धि कराई। इस अवसर पर एक सहभोज भी हुआ।

—गत २६ अगस्त को कोटला (आगरा) में श्रीमती प्रेमवती विधवा का विवाह श्री कमलप्रसाद जी बतरा निवासी के साथ आर्यसमाज के प्रधान श्री पं० जगन्नाथप्रसाद जी शर्मा वैद्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। गाँव के लगभग १५० स्त्री पुरुषों ने वर वधू को आशीर्वाद दिया। श्री कमलप्रसाद जी ने २१) आर्यसमाज कोटला को और ५) आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश को दान मे दिये। —मन्त्री

—वीर सन्देश मासिक, हरदोई (आर्य वीर दल का एकमात्र मासिक पत्र) का विजय दशमी विशेषांक सज धजकर निकलेगा। इसका मूल्य १) होगा। वार्षिक मूल्य ३) भेजने पर यह अङ्क मुफ्त मिलेगा। —चन्द्रपाल

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा बिजनौर गढ़वाल के अन्तर्गत प्रचार करने वाले अवैतनिक प्रचारकों से निवेदन है कि वे प्रत्येक मास का कार्य विवरण व प्रगति रिपोर्ट कार्यालय को भेजें। अन्यथा वार्षिक रिपोर्ट में उनके कार्य का अंकन नहीं हो सकेगा।

उपदेश विभाग की सूचना मास अक्टूबर ५८

श्री ओ३म् प्रकाश जी शास्त्री महोपदेशक ७ से १३ तक कलकत्ता, २५ से २८ तक उत्सव आ० स० शाहजहांपुर।

श्री सदनदेव जी वेद शिरोमणि, २५ से २८ तक उत्सव आ०स० शाहजहाँपुर

" पं० रुद्रदत्त जी शास्त्री महोपदेशक, २३ से २६ तक उत्सव आ० स० कोसीकलां मथुरा।

श्री भद्रपाल जी स०वि० प्रचारक, ५ से ९ तक उत्सव आ. स. कलनडा अल्मोड़ा

" " " १९ से २२ तक उत्सव गु० कांगड़ी

" रामचंद्र जी शर्मा, १२ से १४ तक उत्सव आ० स० शमसाबाद

" धर्मदत्त जी आनन्द, २२ से २६ तक उत्सव आ० स० कोसीकलां मथुरा

" धर्मराजसिंह, २० से २३ तक उत्सव आ० स० सिकन्दरपुर बलिया, २५ से से २८ तक उत्सव आ० स० शाहजहाँपुर, ३१ से २ नवम्बर तक आर्य समाज रम्भनपुरा प्रयाग।

—अधिष्ठाता उ० विभाग

सिद्धान्त-विमर्श

कर्मफल अगले जन्म या जन्मों में

[श्री बाबू कालीचरण जी आर्य, उप प्रधान आ० प्र० सभा उ०प्र०]

★

आदरणीय बाबू जी सामाजिक संगठन कार्यों में अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी वैदिक सिद्धान्तों को आत्म सात करने के लिए 'स्वाध्यायान्मा प्रमद' के ऋषि वाक्यों का पालन करते रहते हैं। कर्मफल के सम्बन्ध में उन्होंने अपने विचार इस लेखमाला में प्रस्तुत किए हैं। उनके विचारों से सर्वथा सहमत न होने वाले विचारकों को भी अपना पक्ष प्रस्तुत करने का अवसर दिया जायगा और बाद में आर्य विद्वानों की सम्मति से वैदिक पक्ष का निर्णय घोषित किया जायगा। —सम्पादक

(२१ सितम्बर से आगे)

एक और बात बड़ी मजेदार कही है कि जब कर्म बिना फल दिये जन्मान्तरों तक पड़े रह सकते हैं तो शीघ्र फल मान लेने में क्या आपत्ती है उदाहरण दिया है कि जिस प्रकार कटहल १०,१२ वर्ष में फल देता है उसी प्रकार पालक पौधा आदि २ मास में फल दे देते हैं ठीक इसी तरह यदि किसी कर्म का फल बहुत देर में अर्थात् जन्मान्तरों में होता है तो कुछ का इस ही जन्म में होना बुद्धिग्राह्य है। मेरा कहना है कि चाहे कितना ही कम समय किसी फल के लिए मानो वह कम से कम समय यदि आप का २ मास है तो मेरा कर्म फल के लिये सबसे कम समय अगला जन्म है अधिक के लिये जन्मान्तर हैं। दूसरी बात यह तो सब ही मानते हैं कि कोई बीज बोरी बाद पड़ा १-२ मास क्या हजारों वर्षों तक भी फल नहीं दे सकता जब तक कि नियमानुसार गर्भ में न आवे गर्भ में ही जाकर कर्मों के अनुसार मनुष्य कर्म भी फलीभूत हो सके हैं जिस प्रकार बटवृक्ष के बीज में बट का वृक्ष है परन्तु भूमि के गर्भ में ही उसके लिये अन्कुर निकलना आरम्भ होगे बाहर नहीं, इसी प्रकार मनुष्य के कर्म भी माता के गर्भ में ही जाकर अंकुर निकलेंगे बाहर नहीं, कर्म भी प्रत्येक योनी जाति के बीज ही है, उनके लिए उपयुक्त भूमि चाहिये और वह माता का गर्भ ही है, अतः कोई कर्म भी जब तक कि वह गर्भ में जाकर अगला जन्म प्राप्त नहीं करता फल नहीं दे सकता, उसी लेख में इस जन्म के कर्म का इस जन्म में भी फल मिलता है और युक्ति लिखते हैं कि यतः मनुष्य की प्रवृत्ती शीघ्र फल प्राप्ति की है अतः क्यों न मान लें कि इस जन्म के कर्म का फल इस ही जन्म में मिल जाता है। उत्तर—मनुष्य की प्रवृत्ति तो कम कर्म करके अधिक फल प्राप्ति की भी हैं और बिना कर्म किये भी फल प्राप्ति की है और ऐसे ही विचारों के आधीन संसार में आप नहीं देख रहे काशी दूर रह कर गंगा नाम लेने से जन्म जन्मांतरों के पाप दूर हो जाते हैं, एक बार तोबा कर लेने से गुनाह मुआफ हो जाते हैं तो आप की युक्ति तो संसार के लिये सरल नुसखा बन जायगा और यही सिद्धान्त हो जायगा कि मनुष्य की प्रवृत्ति और सिद्धान्त एक ही बात है। अब किसी को सिद्धान्त जाने या बनाने या निर्णय करने के लिये न्याय या अन्य दर्शनों अथवा वेद को पढ़ने की क्या आवश्यकता रहेगी, जन समूह की प्रवृत्ति देख ली सिद्धान्त निर्णय हो गया यह है असम्भव, किसी सिद्धान्त का भी निर्णय इस प्रकार नहीं हो सकता बहुत से पुरुष ऐसे भी है जो कर्मफल की अभिलाषा ही नहीं करते, बहुत से अगला जन्म बनाने की ही इच्छा से कर्म करते हैं तो क्या सब की भिन्न प्रवृत्तियों होने से सिद्धान्त भिन्न होगा एक न हो सकेगा। अतः यह किसी प्रकार भी नहीं हो सकता कि मनुष्य की प्रवृत्ति है अतः कर्मफल इस जन्म में भी मिले, इसी मानवीय प्रवृत्ति के लिए कुछ उदाहरण भी दिये हैं जो भ्रान्ति में पड़ कर अपनी कल्पित मान्यता को सिद्ध करने के लिए उपस्थित किये गये हैं जैसे विद्यार्थी से कहा जाता है परिश्रम करो उत्तीर्ण भी हो जाओगे ब्रह्मचर्य रखो जीवन बनेगा, शराब न पियो नशा में फंस जाओगे झूठ न बोलो विश्वास खो बैठोगे। एक बात यह भी कि कर्म वही है जो प्रारब्ध बनाने वाला हो परन्तु बच्चों ने श्रम किया प्रभाव हुआ कि उत्तीर्ण हो गया या नहीं हुआ, कर्म समान यह प्रारब्ध बनाने वाला नहीं, ब्रह्मचर्य रखा शरीर में बल आ गया या नहीं यह प्रारब्ध न बनायेगा। इस प्रकार के उदाहरण सिद्धान्त पर कोई प्रभाव नहीं डालते—

उत्तर—मैंने आरम्भ में लिखा है कि यह सब कर्म प्रभाव की बातें है न कि कर्मफल की। कर्मफल निश्चित समवाय सम्बन्ध रखता है परन्तु इन सब बातों में प्रभाव दीखता है जो असमवाय सम्बन्ध है। बच्चा श्रम करता है और अनुत्तीर्ण होता है, ब्रह्मचर्य रखता है शीघ्र मर जाता है शराब पीता है प्रसन्न रहता है और रोग से मुक्त रहता है, झूठ बोलता है किसी का (झूठ बोलकर) अत्यन्त निकट का मित्र बन जाता है, लाखों रुपया कमा लेता है बेगुनाह को फाँसी दिला देता है गुनाहगार को फाँसी से बचा लेता है क्या परमात्मा की यही व्यवस्था सम्भव है कि इतने और विरोधी कर्म फल हो सकें कदापि नहीं, यह सब प्रभाव हैं जो उल्टे सीधे सब प्रकार के होते है हो सकते हैं और हुए हैं और होंगे भी परन्तु कर्म फल ईश्वर की व्यवस्था कभी कर्म के विपरीत नहीं हो सकी, सदा सर्वदा तीनों कालों में पाप का फल दुख ही होगा, तुरन्त जो होता दीखता है वह, प्रभाव ही है न कि फल को नहीं जानता कि मनुष्य आनन्द प्राप्ति के लिए ही व्यभिचार करता है और आनन्द का अनुभव भी करता है और बार बार करता है और अपना सब कुछ बरबाद करके भी आनन्द उठाता है तो क्या वैदिक सिद्धान्त यह बन जायगा कि व्यभिचार पाप नहीं है पुण्य है। डाकू अनेक हत्या कर अभीष्ट फल प्राप्त कर आनन्दित होता है तो क्या यह प्रत्यक्ष के कर्म फल माने जायेंगे और वैदिक सिद्धान्त की घोषणा होगी कि यतः डाकू को आनन्द मिला अतः डाका डालना हत्या करना पुण्य है, कदापि नहीं, कर्म फल अगले जन्म में ही मिलेंगे तुरन्त जो व्यभिचार या हत्या से आनन्द मिलता है यह इस जन्म के कर्म साधन रूप होकर पूर्व जन्म के कर्मों का फल है, इस जन्म का व्यभिचार और डाका साधन है कार्य है और अगले जन्म में दुःख देगा, जहाँ जनता फल और प्रभाव के न समझने में भूल करती है वहाँ कारण और साधन के न समझने में भूल करते हैं। जैसे मोहन ने झगड़ू की हत्या की जन साधारण तुरन्त कह देते हैं कि झगड़ू के मरने में मोहन कारण है ...ने वालों को किंचित भी वैदिक सिद्धान्त हानि का ध्यान नहीं—पूछा जाता है कि झगड़ू के मरने में अर्थात् झगड़ू को दुख प्राप्त होने में झगड़ू को जो कष्ट हुआ यदि इसका कारण मोहन है तो दो आपत्तियाँ हैं उनका क्या समाधान है एक तो यह कि झगड़ू को बिना कर्म के फल मिला जो असम्भव, दूसरा यह कि कर्म मोहन का फल झगड़ू को मिला यह भी असम्भव क्योंकि बिना कर्म फल नहीं हो सकता और जो करता है वही फल भोगता है। वेद में यही बतलाया है देखो ऋ० १० अध्याय २ मन्त्र २८ ऋषि भाष्य—जो करता है वही भोगता है अतः यदि साधन और कारण में अन्तर कर ले तो कोई बाधा नहीं अर्थात् झगड़ू को अपना पूर्वजन्म का कर्म था उसका फल मृत्यु हुआ, मोहन साधन मात्र है, मोहन ने स्वतन्त्रता से वध किया है इसका फल मोहन अगले जन्म में पावेगा तो कोई आपत्ति नहीं रहता परन्तु प्रत्यक्षवादियों को तो परोक्ष में जाना ही पसन्द नहीं, हाँ एक आपत्ति इस पर उठाई जा सकती है कि यदि झगड़ू अपने पूर्व जन्म के कर्मानुसार मारा गया तो अब मोहन अपराधी क्यों? उसको अगले जन्म में दण्ड क्यों मिलेगा, समाधान यह है कि साधन का सम्बन्ध जैसा मैं पूर्व लिख चुका हूं समवाय सम्बन्ध नहीं है, वह असमवाय सम्बन्ध है यदि समवाय होता तो अवश्य मोहन निर्दोष होता मोहन ने स्वतन्त्रता से झगड़ू को मारा मोहन का कोई अधिकार न था कि झगड़ू को उसके कर्म का फल देता, मोहन ने अनाधिकार कार्य किया है अतः मोहन अपराधी है जैसे यदि किसी को ज्ञात हो कि झगड़ू को ३ सितम्बर १९५८ को प्रातः ६ बजे फांसी होगी और वह जिसको ज्ञात है स्वयं जाकर झगड़ू को कतल कर दे और कह दे कि इसको फांसी तो होनी थी मेरा कोई अपराध नहीं तो न माना जायगा अतः तुरन्त प्रत्यक्ष में कर्म का प्रभाव देखकर या कर्म फल देखकर विचारें कि यह कर्मफल किसके कर्म का है और परिणाम है तो वह फल है या प्रभाव। इन दो समस्याओं के अतिरिक्त एक और समस्या भी है उसको यहां उल्लेख कर देना विषय के लिए लाभदायक ही होगा। वह है कर्म और भोग का समझना। यूं तो प्रत्येक गति दार्शनिक दृष्टि से कर्म है परन्तु कर्म फल की दृष्टि से जो परिभाषा महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की है वह विचारणीय है।

क्रमशः

एक एक व्यक्ति विकास-योजना

[गतांक से आगे]

(लेखक—श्री डाक्टर रघुवीर, संसत्सदस्य)

❀ नये घर, नई गलियें और नए नगरों का निर्माण
❀ शिक्षा और चिकित्सा, आमोद तथा प्रमोद
❀ नए उद्योगों में दीक्षा
❀ आय के नए साधन तथा आय की वृद्ध
❀ वस्थ और समृद्ध जीवन

प्रत्येक नगर की योजना में आवश्यकतानुसार विभिन्नता होगी।

इन आदर्श नगरों में एक ओर ग्राम-निवास के सभी सुख मिलेंगे और दूसरी ओर नगर निवास के। पांच छः जन के प्रत्येक परिवार में दो तीन कमाने वाले होंगे। खेती और घरेलू पारिवारिक सस्थाएं होंगी। पति पत्नी और १४ वर्ष के अधिक आयु के बच्चे इनमें काम करेंगे। घर के लोग अपने घर की खेती और उद्योग के लिए प्रेम और परिश्रम से पूर्ण शक्ति लगाकर काम करते हैं। इसलिए यह निश्चित है कि परिवार धीरे धीरे उन्नति करते जाएंगे।

आदर्श नगरों में खेत आज की अपेक्षा कुछ बड़े होंगे। इन नगर निवासियों को अन्य काम मिलने के कारण अधिकांश जनता खेती में न लगेगी। जो संख्या खेती से लगी रहेगी उसके पास खेत की मात्रा अधिक रहेगी और तदनुसार उनकी आय भी अधिक होगी। मध्य रूप से एक किसान परिवार के पास बंगाल, बिहार, केरल आदि में जहां भूमि थोड़ी है और जन सख्या अधिक है वहाँ एक परिवार के पास दस दस एकड़ भूमि और मध्य प्रदेश आदि प्रान्तों में जहां भूमि अधिक है वहाँ एक किसान परिवार के पास मध्य रूप से २० एकड़ भूमि होगी। अच्छे बीज, अच्छी सिंचाई, और बुद्धिपूर्वक काम करने पर किसान परिवार की न्यूनतम वार्षिक आय ३ सहस्र और ६ सहस्र के बीच में होगी।

आदर्श नगरों में धनोपार्जन करने वालों की संख्या ४०-४५ प्रतिशत होगी। अर्थात् २४ और २७ सहस्र के बीच में, इनमें ४० प्रतिशत के लगभग स्त्रियां होंगी।

पच्चास प्रतिशत अथवा तीन सहस्र परिवार किसानों के होंगे। इन परिवारों में लगभग छः सहस्र काम करने वाले होंगे।

पच्चास प्रतिशत अथवा छः परिवारों के १२ सहस्र जन छोटे और बड़े उद्योगों में लगेंगे। इनमें से सबसे अधिक आवश्यक उद्योग सड़कें बनाना सिंचाई के लिए नहरें खोदना, कुएं खोदना अथवा तालाब बनाना तथा सार्वजनिक और पारिवारिक आवश्यकताओं के लिए गृहों का निर्माण करना होगा। सड़क गृहादि-निर्माण उद्योग इतने होंगे कि कोई भी समर्थ व्यक्ति बिना काम के न रहेगा। जिस देश में नये घर बनते हों उस देश की समृद्धि निश्चित है। उस देश में सभी प्रकार के दूसरे धन्धे और उद्योग भी फलते फूलते हैं।

शेष २५ प्रतिशत अथवा ३ सहस्र परिवार भिन्न भिन्न सेवाओं में लग जाएंगे। स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन, व्यापार आदि। अनिवार्य शिक्षा होने पर अनेक अध्यापकों की आवश्यकता होगी। गृह निर्माण आदि में, गाड़ियों ट्रकों के बनाने और चलाने आदि में सैकड़ों लोग लगेंगे। इस प्रकार व्यापार में भी बहुत लोगों की खपत होगी।

शासन कार्य में दो प्रतिशत अर्थात् १२०० से अधिक लोगों की आवश्यकता न होनी चाहिए, प्रशासन कार्य सीधा क्रियाशील होना चाहिए। जिस प्रयोजन के लिये कोई कार्यालय बनता है वह प्रयोजन सीधा ही सिद्ध होना चाहिये। आजकल का प्रशासन तन्त्र बहुत जटिल बना हुआ है। इस जटिलता के कारण काम में विलम्ब होता है, जनता को कष्ट होता है। भ्रष्टाचार के साथ साथ अत्याचार भी बढ़ता है।

आदर्श नगर के प्रथम व्यय

१—भूमि मापन और सार्वजनिक, वर्यालक, व्यापारिक, उद्योगों तथा कृषि के प्रयोजनों के लिए भूमि का सीमांकन। व्यय पांच लाख रुपये।

२—सड़कें

(क) पक्की तीस मील १८ लाख रुपये

(ख) कच्ची १५० २०० मील (२५००रु० प्रति मील) ५ लाख रुपये

३—(ग) स्वच्छ जल का प्रबन्ध ५ लाख रुपये

४—स्थानीय बिजलीघर

यदि बाहर से आने वाली बिजली अपर्याप्त हो अथवा सर्वथा ही न मिलती हो तभी इसकी आवश्यकता पड़ेगी। यह बिजली कोयले से अथवा स्थानीय नदी से बनाई जा सकेगी। २० लाख रुपये।

५—स्थानीय भूसेचन

यदि वर्षा पर्याप्त न हो, यदि बाहर से नहर का पानी न मिलता हो, यदि स्थानीय भूमि में से नल कूप लगाए जा सकें अथवा वर्षा के पानी को तालाबों में बांधा जा सके, तो स्थानीय भूसेचन का प्रबन्ध आदर्श नगर को स्वयं अथवा आसपास के नगरों को साथ मिलाकर कर लेना होगा। उदरपूर्ति और विकास दोनों के लिए खेती आधार है। नये नगर खेती में अधिकतम प्रयत्नशील रहेंगे। जहाँ सम्भव हो सकेगा वहाँ वर्ष में दो खेती का भरसक प्रयत्न करेंगे।

व्यय २५ लाख से ५० लाख तक।

६—शिक्षा संस्थाएं

छोटे बालक जिनको आठ वर्ष तक अनिवार्य शिक्षा दी जाये और बड़े बालक जो उच्च विद्यालयों अथवा औद्योगिक शिक्षालयों में विद्या प्राप्त करें उनकी अधिकाधिक संख्या ३० प्रतिशत अर्थात् १८ सहस्र होगी। इसमें सभी लड़के और लड़कियां सम्मिलित होंगे। ३० बालकों के लिए एक कोष्ठ के अनुसार ६०० कोष्ठों की आवश्यकता होगी। प्रत्येक कोष्ठ का परिमाण १८ फुट चौड़ा और २० फुट लम्बा होगा।

सावधानी से व्यय करने पर एक कोष्ठ की लागत २००० रु० होगी। ६०० कोष्ठों पर १२ लाख रु०, प्रत्येक विद्यार्थी के लिये आसन्दी-टेबल आदि के पचास रुपये ९ लाख रुपये पुस्तकालय और प्रयोगशालाएं ४ लाख रु० योग २५ लाख रुपये।

यह शिक्षा का प्रबन्ध सामान्य रूप से ऊंचे स्तर का प्रबन्ध होगा। जो प्रबन्ध आजकल केवल बड़े नगरों में मिलता है वह प्रबन्ध इन छोटे नगरों में होगा। इस प्रकार से प्रत्येक ग्रामीण बालक जीवन के आरंभकाल से ही ऊंचा उठेगा।

७—अन्धे, बहरे, गूंगे, तथा लूले लंगड़े व्यक्तियों के लिए अलग आश्रम होंगे। इनमें रहना सहना, खाना पीना, शिक्षा, चिकित्सा तथा जो भी जिसके योग्य कार्य हो, उसका प्रबंध होगा। आज भारतवर्ष में इन लोगों की देखभाल के लिए कोई प्रबंध नहीं है। ये राष्ट्र के अङ्ग हैं। इनका सुचारु प्रबन्ध करना राष्ट्र का कर्तव्य है। ये लोग भीख मांगें और उसके द्वारा अपना निर्वाह करें यह लज्जा की बात है। इनमें से अधिकांश ऐसे हैं जो कुछ न कुछ काम कर सकते हैं और उसके द्वारा इनका आंशिक निर्वाह भी चल सकता है। इनके लिए आश्रम के निर्माण का व्यय १ लाख रुपया।

८—चिकित्सालय

चिकित्सालयों में सब प्रकार के रोगों के निदान और उपचार का प्रबन्ध होगा। क्षरश्मि (एक्सरे), नेत्र रोग, उदर-रोग, बाल-रोग, शल्य कर्म आदि के लिये विशेषज्ञ होंगे, ५० ६० रोगियों के लिये चिकित्सालय में बिस्तरों का प्रबन्ध होगा।

चिकित्सालय का भवन	१ लाख रु०
यंत्र और औषधियाँ	५ लाख रु०
योग	६ लाख रु०

९—पशुचिकित्सालय १ लाख रु०

१०—प्रशासन के कार्यालय

सामान्य प्रशासन, न्यायालय, डाक, तार, पुलिस आदि १ लाख रु०

११—नृत्य, संगीत तथा सार्वजनिक उत्सवों के लिए महाकोष्ठ ६० फुट चौड़ा १०० फुट लम्बा होगा। इसमें आसन्दियों और पर्दों आदि का पूरा प्रबन्ध होगा।

लागत	२ लाख रुपये
चलचित्र-भवन	१ लाख रुपये

खुला नाटक मण्डल जिसमें खेल कूद हो सके तथा नगर की समस्त जनता इकट्ठा हो सके। २ लाख रुपये

१२—वाटिका और क्रीड़ाभूमि

६०० सौ एकड़ (अर्थात् प्रति सौ व्यक्ति के लिए एक एकड़ भूमि) ५ लाख रुपये तैरने के लिए तालाब आदि।

१३—पूजा स्थान और आश्रम

इनका भार प्रत्येक धर्मावलम्बी जनता पर होगा, शासन पर नहीं इनको भूमि नगर की ओर से मिलेगी। ५ लाख रुपये व्यय।

१४—व्यापार-केन्द्र दुकानें आदि।

आरम्भ में १२ फुट चौड़ा तथा १६ फुट लम्बी १०० दुकान पर्याप्त होंगी।

व्यय २ लाख रुपये

पीछे व्यापारी स्वयं अपनी आवश्यकतानुसार निर्माण करेंगे।

क्रमशः

सफलता की कुंजी

—'रजनीश'

कोई भी व्यक्ति चाहे पूर्ण रूप से मूर्ख, गंवार हो फिर भी वह अपने आप को ऐसा कभी नहीं समझेगा। आपको चाहिए कि उसकी निन्दा न करें। आप उसे समझने का प्रत्यन कीजिए। अगर कोई बेवकूफ व्यक्ति उसकी बुराई करे, करने दीजिए। जो दूसरे व्यक्ति को समझने का प्रयत्न करता है वही बुद्धिमान, सहनशील एवं अलौकिक व्यक्ति कहलाता है।

किसी व्यक्ति से बातचीत करते समय यदि आप सफलता प्राप्त करना चाहते हैं तो सदा उस व्यक्ति के दृष्टिकोण को सहानुभूति के साथ जानने का प्रयत्न कोजिये।

मैंने वर्षों तक अपना मनोरंजन पड़ोस के एक बाग में घूम फिर कर या घुड़ सवारी करके किया है। फ्रांस के प्राचीन पुरोहितों की भाँति मैंने सदा ही सिन्दूर के पेड़ की पूजा की। अतः मैं उन नये पेड़ों और झाड़ियों को देखने के लिए सदा लालायित रहता था निरर्थक आग से जला दिए गए थे। यह आग धूम्रपान करनेवालों की लापरवाही से नहीं लगी थी। यह सब उन लड़कों द्वारा हुआ जो इस पार्क में आकर किसी वृक्ष के नीचे अण्डे या नरम पक्षी को पकाने के लिए आग जलाते थे। कभी कभी तो यह आग इतनी प्रचण्ड हो उठती थी कि आग विभाग को इस आग के विरुद्ध लड़ने को बुलाया जाता था।

पार्क के एक ओर पर ऐसा चिह्न था जो सूचित करता था कि यदि किसी व्यक्ति ने पार्क मे आग लगाई तो वह जुर्माना और दण्ड पाने का अधिकारी होगा। यह चिह्न पार्क के एक ऐसे असामान्य स्थान पर था जिसे कुछ ही लड़कों ने कभी देखा हो एक पुलिस जवान इस पार्क की रक्षार्थ नियुक्त था। परन्तु उसने अपने कर्तव्य का पालन कभी भी सतर्कता से नहीं किया। इसलिए आग मौसम मौसम में फैलती रहती थी। एक बार मैं एक पुलिस जवान के पास दौड़ा गया और उसे उस आग के बारे मे सूचित किया जो बड़ी तेजी से पार्क में फैल रही थी और मैंने उससे चाहा कि वह आग विभाग को इसकी सूचना दे दे। परन्तु उसने बड़ी उदासीनता से उत्तर दिया कि यह उसका काम नहीं क्योंकि यह उसकी सीमा में नहीं आता। मैं बड़ा निराश हुआ। मैं स्वयं ही घुड़सवारी करता हुआ तथा एक स्वयंसेवक की भाँति कार्य किया जिससे जनता किसी नुकसान से बच सके। मैं प्रारम्भ में इतना डरा कि मैंने लड़कों के दृष्टिकोण का पता न लगाया। जब मैंने एक पेड़ के नीचे जलती हुई आग देखी तो मैं इतना दुखी हुआ और सही कार्य करने को इतना इच्छुक हुआ कि मैं गलत काम कर बैठा। मैं उन लड़कों के पास तक जा सकता था और उन्हे सावधान कर सकता था कि आग जलाने के अपराध में उन्हे सजा दी जा सकती है, उन्हे गिरफ्तार किया जा सकता है, एक अधिकारी की भांति आदेश दे सकता था और यदि वे इन्कार करते तो मैं गिरफ्तार कराने की धमकी भी दे सकता था। परन्तु मैंने कुछ करने से पहिले उन लड़कों के विचारों को जानना चाहा।

परिणाम क्या हुआ ? लड़कों ने बड़ी उदासीनता और ईर्ष्या से मेरी आज्ञा का पालन किया। तत्पश्चात् मैं पहाड़ियों पर चला गया और सम्भवतः उन्होने पुनः आग जलाई और सारे पार्क का जलने के लिए छोड़कर चले गये।

कई वर्ष बीत गये। मैंने सोचा कि अब मैंने मनुष्य सम्बन्धी काफी ज्ञान अर्जित कर लिया है, कुछ अधिक तर्क, वे, किसी दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण से किसी अन्य वस्तु को देखने की एक जबरदस्त प्रवृत्ति भी पाली है। तब मैं जलती आग के पास गया और कुछ इस प्रकार शुरू किया :—

समय अच्छा है लड़को ? तुम रात्रि के भोजन मे क्या बनाओगे ? मैं जब छोटा था, मैं भी इसी प्रकार के मनोरंजन किया करता था और अब भी करता हूं। लेकिन उसे पता है ऐसा पार्क में करना खतरनाक है। मैं जानता हूं कि तुम्हारा इरादा कोई हानि पहुँचाने का नहीं है लेकिन अन्य लड़के इतनी सावधानी नहीं बरतते। वे आकर जब देखते हैं कि तुमने एक आग प्रज्ज्वलित कर रखी है तो वे भी एक स्थान पर आग जला लेते हैं, लेकिन घर वापस लौटते समय वे उसे बुझाते नहीं, तब वह आग सूखी पत्तियों, सूखी झाड़ियो में फैल जाती है और इस प्रकार आग से पेड़ भी नष्ट हो जाते हैं। यदि हम सावधानी से काम न लें तो इस पार्क में हमको कोई भी पेड़ पौधा न मिलेगा। तुम आग जलाने के अपराध में जेल भी भेजे जा सकते हो। मैं तुम्हारे मनोरंजन में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करना चाहता और न तुम्हारे सामने कोई दीवार खड़ी करना चाहता। मैं तुम्हें मनोरंजन करते देखना चाहता हूं। तुम्हे कोई आग जलाने से पहिले उसके आस पास की सूखी सारी पत्तियां आदि दूर इकट्ठी कर देना चाहिये जिससे आग लगने का भय कम हो सके। सिर्फ इतना ही काफी नहीं है बल्कि इस बात की सावधानी भी बरतनी पड़ेगी कि इन पत्तियों के ढेर को मिट्टी से भली प्रकार ढंक दें। साथ ही पार्क को छोड़ने से पहिले आग को चारों ओर मिट्टी से ढक दो जिससे फिर आग लगने का तनिक भी भय न रहे। और अगली बार तुम्हे कोई मनोरंजन करना हो तो किसी चोटी के ऊपर बालू में गड्ढा बना कर उसमें आग जला सकते हो। वहां कोई भी नुकसान नहीं हो सकता। तुमको बहुत बहुत धन्यवाद, बच्चों। जाओ समय का लाभ उठाओ।

इस प्रकार की बातों ने कैसा असर किया ! ऐसा लगा कि बच्चे सहयोग चाहते हैं। कोई चिढ़चिढ़ापन नहीं, कोई क्रोध ईर्ष्या नहीं उनमें। उन्हें आज्ञा पालन के लिए विवश नहीं किया गया। अपनी मुसीबतों से स्वयं को बचा लिया। उनको अच्छा अनुभव हुआ और मुझे भी क्योंकि मैंने उन लोगों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए स्थिति को सम्भाल लिया।

अतः यदि तुम किसी व्यक्ति को बिना उत्तेजित किये, ईर्ष्या किये बदलना चाहते हो तो सदा ध्यान में रखो—

किसी भी कार्य को करने से पहिले बहुत ईमानदारी के साथ दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण (विचारों) को जानने का प्रयत्न करो।

(डैले कार्निज के एक लेख का संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर)

विदेश-वार्त्ता

मंगोलिया में भारतीय संस्कृति की झलक

(डा० शारदारानी एम० ए०, पी० एच० डी०)

(गतांक से आगे)

हम लोग ९ मई को मध्याह्न में उलान्बातर से एर्देनिदूजू के लिए चल पड़े। यह ४५० किलोमिटर की दूरी पर है। दो वाहन साथ थे। दो चित्रकार, एक विज्ञान समिति का प्रतिनिधि, एक पुरातत्त्ववेत्ता, एक दुभाषिया, तथा दो चालक। मार्ग बहुत ही भयंकर था। कभी वाहन किसी टीले पर चढ़ता तो कभी नीचे घाटी में उतरता। कोई निश्चित सड़क बनी हुई न थी। केवल दिशा देखकर चालक जिधर चाहता वाहन घुमाकर ले जा रहा था। सामान्य चालक ऐसे स्थान पर चलाने में असमर्थ रहेगा। कभी कभी तो ऐसा लगता था कि अब हम खड्ड में गिरे, बस समाप्त हुए, परन्तु चालक अत्यन्त पटु और धैर्यवान् था। दिन भर चलने के पश्चात् रात्रि को हम एक स्वास्थ्य केन्द्र में सोए। यह अभी बना है और इसकी प्रत्येक वस्तु नई है। भित्तियों पर पद्म और श्रीवत्स चित्रित हैं। इस बात को भी दृष्टान्तर जाति के समान कला से बड़ा प्रेम है। कलाविहीन वस्तु इन्हें अच्छी नहीं लगती। दूसरे दिन प्रातः ६ बजे एर्देनिदूजू के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में ६८ उईगूर् समाधियां देखीं। इनमें एक को दो चाकों सहित बनाई गई थी। लगभग डेढ़ घण्टे चलने के पश्चात् एर्देनिदूजू पहुँचे। मार्ग पर्वतों से परिपूर्ण था। पुरातत्त्ववेत्ता ने बतलाया एर्देनिदूजू १५८६ में स्थापित किया गया। दूर से ही चौकोर श्वेत स्तूप दिखाई देने लगे। विहार की भित्ति पर्याप्त ऊंची है और इसमें १०८ स्तूप बने हैं। स्तूपों की दशा जीर्ण थी। किसी के ऊपर का भाग टूट गया था, किसी का शिखर टेढ़ा होकर झूल रहा था। किसी समय इन पर सुन्दर रङ्ग रहा होगा और शिखर सुवर्णलेप के कारण धूप में चमकते होंगे। आज इस भव्य विहार के दर्शन करके हृदय को दुःख सा हुआ। किन्तु यह सोचकर संतोष कर लेना पड़ा कि हम सौभाग्यशाली हैं जो इसके दर्शन तो हो गये। ये १०८ स्तूप माला के १०८ मनकों के प्रतीक हैं। इस स्तूपमाला के अन्दर प्रवेश करने पर तीन विशाल मन्दिरों के भग्नावशेष दिखाई देते हैं। कई विशाल पक्के मंच दिखाई देते हैं। इनके पास ही पत्थर और पकी मिट्टी की अनेक टूटी फूटी कलाकृतियां पड़ी हैं। यह पत्थर का टुकड़ा कभी किसी मूर्ति का अंग रहा होगा। दूसरा किसी मकरमुख का अवशेष था तीसरा किसी अलंकरण का भाग रहा होगा ऐसी कल्पना करते करते पर्याप्त अंदर चले गये और लाल रङ्ग की खपरैलों की बनी छतें किसी समय धूप में बड़ी चमकती होंगी।

मन्दिर के परिसर में एक विशाल धूपपात्र बना हुआ है। दो विशाल शिलाओं पर लांछा, मोंट, मोंगोल में ओं मणिपद्मे हूं खुदा हुआ है। एक पर चीनी भी है।

मकरमुख से विभूषित प्रवेशद्वार है। फाटक में प्रवेश करते ही तीन मन्दिर दिखाई देते हैं। प्रथम मन्दिर की छत में अनेक तारा देवियां चित्रित हैं। छत के मध्य गहरा भाग में मंडल बना हुआ है। सामने ही तीन सुवर्णमण्डित मूर्तियाँ हैं। इन मूर्तियों के सामने मंच पर अनेक छोटी सुवर्णमयी मूर्तियाँ रखी हैं। छोटे छोटे चैत्य भी हैं। पूजा सामग्री अनेक पात्रों में भरी है। मोरपंख कम्भों से लटकाये हुए हैं, समस्त भित्ति एक अतिविशाल थंका से आवृत थी। थंका कलापूर्ण और प्राचीन लगता था। दाईं ओर पुस्तकें रखी थीं। बाहर की ओर भित्ति पर लगातार स्वयं भू लिपि में संस्कृत लिखी थी। छत के ऊपर सुवर्ण स्तूप और धर्मचक्र बने थे।

द्वितीय मन्दिर की भूमि ऊंची है, इसके प्रवेश द्वार पर ज्वाला मण्डल में स्थित चण्डमहारोषण की मूर्ति है। यहां संस्कृत में सुवर्णाक्षरों से पट्टे पर लिखा है 'ओं चण्डमहारोषण हूं फट्' सुवर्णलिखित दृक्कर्णा भी टंगा हुआ है। दाईं ओर लकड़ी का छोटा सा मंदिर है। इसमें किसी गुरु महाराज की प्रतिमा स्थापित थी। सामने तीन विशाल सुवर्ण की मूर्तियाँ हैं जो कि श्रद्धालु भक्तजनों के भेंट किये वस्त्र खण्डों को पकड़े हुए हैं। मूर्ति के मध्य में ऊर्णा बनी थी। पूजासामग्री में सुपारी, गेहूं, दालें, जौ, चावल और लाल रत्तियाँ हैं। दाईं और बाईं ओर महाकाल की काली विशालकाय दो मूर्तियाँ खड़ी हैं। महाकाल रक्षक के रूप में हैं, अमंगलकारी वस्तुओं का पोषण करते हैं। मन्दिर के चारों ओर परिक्रमा करने के लिए दीर्घा बनी हुई है। परिक्रमा करके हम ऊपर गये। यहां विशाल बोधिवृक्ष सहस्र बुद्धों की मूर्तियां सुशोभित हैं।

तृतीय मंदिर में चारों ओर संस्कृत के मन्त्र लिखे हैं। इसमें प्रवेश करते ही काश्यप, शाक्यमुनि, और मैत्रेय भविष्य में होने वाले बुद्ध के रूप में हैं। यहाँ द्वार पर नवरत्न बने हैं। द्वार पर लांछा लिपि में 'ओं बलि बलि महाबलि स्वाहा' लिखा है, मंदर के फाटक पर 'ओं पद्मोष्णीषविमले हूं फट्' लिखा है। हमने इन सब वस्तुओं के चित्र लिए हैं। मन्दिर के खम्भों पर सोने के चमकते हुए नाग पड़े हैं। इन तीन विशाल मन्दिरों के पार्श्व में कई छोटे छोटे भवन हैं। यहां हमें कुछ मूर्तियां उपहारस्वरूप मिलीं। खण्डहर में पड़े संस्कृत के मन्त्रों से युक्त छोटे छोटे अनेक स्तूप हमने ढूंढ निकाले, मिट्टी की कुछ छापें भी हमें मिल गईं।

एर्देनिदूजू विहार के बाहर कुछ दूर पर मोंगोल खानों की राजधानी काराकोरम् की भित्ति बनी है। पत्थर का एक अतिविशाल कछुआ एर्देनिदूजू के फाटक के बाहर पड़ा है। यह कछुआ दीर्घ जीवन का प्रतीक है।

१२ मई को हम उलान्बातर से चल पड़े। विमान क्षेत्र पर बहुत लोग आये थे। हम वहाँ से चल तो पड़े परन्तु हमारा मन तो वहीं रमा हुआ था। इच्छा होती थी कि इस पवित्र मोंगोल देश में कुछ वर्षों तक रहें और कुछ पुण्यार्जन करें किन्तु दूसरी ओर अपनी मातृभूमि की ममतामयी पुकार थी। मंगोलिया की तीर्थयात्रा करके हमारा जीवन कृतार्थ हो गया। मोंगोल शासन के अति सौहार्द से हमें जो अनन्त साहित्यिक सांस्कृतिक सामग्री मिली उसका सम्पादन और प्रकाशन करना हमारा परम कर्त्तव्य है।

चलने से एक दिन पूर्व प्रधान मंत्री त्सेदेन्बल् का निमन्त्रण मिला। मोंगोल प्रधान मन्त्री बड़े प्रेम से हमसे संसद्-भवन में मिले। चाय और मिठाई से हमारा आतिथ्य किया मोंगोल देश में हमारी सुखसुविधा के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न किये। हमने अपने कार्य का कुछ परिचय दिया और संस्कृत का शान्ति पाठ गाकर सुनाया। शान्ति-गीत सुनने के लिए वे तुरन्त खड़े हो गये और जब तक वह पूरा न हुआ तब तक खड़े रहे। उनके मुखमण्डल से भारत के प्रति प्रेम और सद्भावना फूटी पड़ती थी।

सार्वदेशिक सभा की विज्ञप्ति

१४-८-५८ के आर्य सन्देश (बड़ौदा) में दयानन्द स्मारक टंकारा सम्बन्धी पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति की एक अपील छपी है जो उन्होंने २५-१-५६ को सार्वदेशिक सभा के प्रधान के रूप में प्रचारित की थी। टंकारा ट्रस्ट को २० हजार रुपये का ऋण देने का विषय सार्वदेशिक सभा के सम्मुख आया। इस पर सभा की अन्तरङ्ग सभा २२-१-५६ ने कुछ शर्तें रखीं। जैसे—ट्रस्ट में सार्वदेशिक तथा प्रान्तीय सभाओं का प्रतिनिधित्व होना, ट्रस्ट टूटने पर सार्वदेशिक सभा का उस पर अधिकार होना, सभी सदस्यों की स्वीकृति के बिना ट्रस्ट पत्र में कोई परिवर्तन न होना, सलाहकार की सम्मति मानने के लिए बाध्य न होना आदि। वे शर्तें अभी तक नहीं मानी गयीं। इधर ट्रस्ट ने पं० इन्द्र जी की पुरानी अपील प्रकाशित कर दी कि ट्रस्ट का प्रबन्ध सार्वदेशिक सभा को सौंपा जाय।

ट्रस्ट ने एक प्रस्ताव भी पास किया पर उसमें सभा की शर्तें नहीं मानी गयीं। अतः सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग द्वारा निश्चित शर्तों को माने बिना ही २॥ वर्ष पुरानी पं० इन्द्र जी की अपील का छापा जाना उचित नहीं। यह अपील सार्वदेशिक सभा के निश्चय के सर्वथा विपरीत है। अतः आर्य जनता इस अपील को सार्वदेशिक सभा की अपील न समझकर सावधान रहे।

—रामगोपाल, सभा मन्त्री

विज्ञान-वार्ता

भारतीय वैज्ञानिकों की रूस यात्रा

(डा० एस० भगवन्तम्)

★ रूस की विज्ञान अकादमी के निमन्त्रण पर हाल ही में १५ भारतीय वैज्ञानिकों का एक दल २१ दिन के लिए रूस गया था। उसमें डा० एस० भगवन्तम भी शामिल थे। वहाँ उन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में जो कुछ खास खास बातें देखीं, इस लेख में उन्हीं का वर्णन है जिससे पाठक रूस की वैज्ञानिक उन्नति के रहस्य को समझ सकेंगे। —सम्पादक ★

रूस की यात्रा करते समय मेरे सामने कुछ प्रश्न थे और वहां यात्रा के दौरान में तथा वैज्ञानिकों से बात करते समय मैंने उन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने का प्रयत्न किया। वे प्रश्न ये थे—(१) ३० साल की अवधि में ही रूस में विज्ञान संस्थाओं की संख्या कुछ सौ से बढ़कर तीन हजार से भी अधिक कैसे हो गयी (२) इसी अवधि में वैज्ञानिकों की संख्या भी कुछ हजार से बढ़ कर २ लाख २४ हजार किस प्रकार हुई। (३) रूस की संस्थाएं किस प्रकार प्रतिवर्ष ८,००० छात्रों को विज्ञान में ऊंची शिक्षा दे रही हैं; और (४) ४० साल से भी कम समय में रूस में शिल्प विज्ञान और विज्ञान की इतनी उन्नति कैसे हुई। आज वहां अनेक अणुशक्ति केन्द्र हैं, उनके उद्योगों में उत्पादन काफी बढ़ गया है, वहां के लोगों का रहन सहन बढ़ा है और आज रूस संसार में विज्ञान के क्षेत्र में सबसे उन्नत देश माना जाता है।

अपने इन प्रश्नों का उत्तर ढूंढते समय मुझे वहाँ अनेक नये अनुभव प्राप्त हुए और नयी जानकारी मिली।

विज्ञान-संगठन

रूस में चार संगठन हैं :—

(१) विज्ञान अकादमी, (२) विश्वविद्यालय, (३) विदेशी साहित्य के लिए प्रकाशन गृह, और (४) यन्त्र औजार आदि बनाने और उनका निर्माण बढ़ाने के लिए संगठन।

रूस में केवल एक विज्ञान अकादमी है। यह पूर्ण अधिकार प्राप्त संस्था है और किसी एक मन्त्री के अधीन नहीं है। उसका अध्यक्ष मन्त्रि परिषद के सदस्य के बराबर माना जाता है। अकादमी के आठ विभाग हैं :—(१) भौतिक शास्त्र और गणित (२) रसायन शास्त्र, (३) भूगर्भ शास्त्र और भूगोल, (४) प्राणी शास्त्र, (५) शिल्पिक विज्ञान, (६) इतिहास, (७) अर्थ शास्त्र, दर्शन शास्त्र और कानून तथा (८) साहित्य और भाषा।

व्यापक क्षेत्र

यह उल्लेखनीय है कि रूस में विज्ञान का क्षेत्र इतना व्यापक माना जाता है कि अर्थ शास्त्र, इतिहास, साहित्य और भाषा जैसे विषय भी उसके अन्तर्गत आ जाते हैं। देश भर में अकादमी के सदस्यों की संख्या २०० से भी कम है। जो व्यक्ति अकादमी का सदस्य बन जाता, उसे काफी वेतन मिलने लगता है। इसके अलावा वह अकादमी की किसी संस्था में भी अच्छे पद पर होता है और वहाँ से भी उसे अच्छा वेतन मिलता है।

विज्ञान अकादमी की अपनी अनेक संस्थाएं, प्रयोगशालाएं, संग्रहालय, वेधशालाएं और पुस्तकालय हैं। विश्व विद्यालय में आरम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी स्नातकोत्तर शिक्षा के लिए अकादमी की प्रयोगशालाओं में आते हैं। अकादमी छात्रों को उपाधि (डिग्री) भी देती है जो विश्वविद्यालयों की डिग्रियों से भिन्न मानी जाती है। अकादमी में शिक्षा का स्तर भिन्न है और परीक्षा लेने का तरीका भी अलग है। अकादमी विज्ञान में जो उपाधि और डाक्टर की डिग्री देती है, वह मोटे तौर पर हमारे देश के विश्वविद्यालय की पी०एच०डी० और डी० एस सी० डिग्री के बराबर होती हैं।

विशेष अध्ययन

अकादमी की जो संस्थाएं हैं, उनमें से कोई एक ऐसी संस्था नहीं है, जिसमें बंगलोर की भारतीय विज्ञान संस्था की तरह एक विषय की सभी शाखाओं का अध्ययन होता हो। वहां अलग अलग शाखाओं के लिए अलग अलग संस्थाएं हैं। उदाहरण के लिए वहाँ का भौतिक शास्त्र और गणित विभाग लीजिए। वहां भौतिक शास्त्र के लिए एक संस्था नहीं है, बल्कि भौतिक-शास्त्र की विभिन्न शाखाओं स्फटिक शास्त्र (क्रिस्टलोग्राफी) रेडियो शिल्प और इलेक्ट्रोनिक्स आदि के लिए अलग अलग संस्थाएं हैं। यहाँ तक कि साहित्य विषयों मे भी एक संस्था नहीं है। कला सम्बन्धी इतिहास की अलग संस्था है और इसी प्रकार इतिहास की अन्य शाखाओं की भी अलग-अलग संस्थायें हैं। इस तरह वहां एक संस्था में एक विशेष प्रकार का अध्ययन-अध्यापन होता है और उसमें विशेषता प्राप्त की जाती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि रूस की विज्ञान अकादमी सुव्यवस्थित संगठन है और देश में विज्ञान की प्रगति में उसका प्रमुख हाथ है।

विश्वविद्यालय

रूस में लगभग ३५ विश्वविद्यालय हैं। उनमें से मास्को विश्वविद्यालय सबसे बड़ा है। यह विश्वविद्यालय लगभग २०० वर्ष पहले आरम्भ किया गया था। उसमें अब २५,००० छात्र पढ़ते हैं, जिनमें से लगभग २००० छात्र स्नातकोत्तर कक्षाओं में हैं। विश्वविद्यालय की इमारत ३७ मंजिली है। उसके पुस्तकालय में लगभग ५५ लाख पुस्तकें हैं।

भौतिक शास्त्र विभाग

मैं वहाँ का भौतिक शास्त्र विभाग देखने गया था। वहाँ भौतिक शास्त्र की ४० विभिन्न शाखाओं की पढ़ाई होती हैं। वहाँ लगभग २,००० छात्र पढ़ते हैं और ४०० अध्यापक हैं, जिनमें से ७५ प्रोफेसर और १२५ सहायक प्रोफेसर हैं। अर्थात् वहां प्रति ५ छात्रों के पीछे एक अध्यापक है। वहाँ प्रायः मौखिक परीक्षा ही होती है, लिखित नहीं।

छात्रों को अपने विषय के अलावा एक विदेशी भाषा और कुछ समाज शास्त्र या राजनैतिक दर्शन शास्त्र भी पढ़ना पड़ता है।

डाक द्वारा पढ़ाई

यह उल्लेखनीय है कि रूस में विज्ञान और शिल्प के ऐसे भी छात्र हैं, जो डाक द्वारा पढ़ाई करते हैं। अनेक ऐसे लोग हैं, जो कम उम्र में ही उद्योगों में काम करने लगते हैं। ऐसे लोग डाक द्वारा पढ़ाई करते हैं। कारखाने उन्हें विश्वविद्यालय की परीक्षा के लिए प्रयोगशालाओं में प्रयोगात्मक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता देते हैं।

यह ठीक है कि शिल्पिक शिक्षा का स्तर नहीं गिरना चाहिये, फिर भी हम अपने देश में भी उन व्यक्तियों को इस तरह उच्च शिक्षा दे सकते हैं, जो कम उम्र में ही उद्योगों में काम करने लगे हैं।

विदेशी भाषाओं से अनुवाद

रूस में विदेशी भाषाओं का प्रकाशन गृह एक दिलचस्प स्थान है। वहां रूसियों ने साबित कर दिया है कि अपनी ही भाषा में विज्ञान की ऊंच से ऊंच शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। उसके लिए विदेशी भाषाएं जानना जरूरी नहीं है।

प्रकाशन-गृह में १६ विभाग हैं। वहां लगभग ४० भाषाओं से अनुवाद किया जाता है। विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित विज्ञान सम्बन्धी लेखों का शीघ्रता तथा शुद्धता के साथ रूसी भाषा में अनुवाद किया जाता है और उसकी प्रतियां प्रयोगशालाओं को भेज दी जाती हैं। इस प्रकार जो वैज्ञानिक अंग्रेजी, फ्रांसीसी या जर्मन भाषा नहीं जानते, उन्हें भी विदेशी भाषाओं में प्रकाशित विज्ञान सम्बन्धी लेख पढ़ने का अवसर मिल जाता है। विदेशी भाषाओं की विज्ञान सम्बन्धी कीमती पुस्तकों का भी रूसी भाषा में अनुवाद किया जाता है और उसका मूल्य मूल पुस्तक के मूल्य का लगभग पांचवां भाग होता है।

विज्ञान का सामान

रूस के विज्ञान-क्षेत्र में एक उल्लेखनीय बात यह भी है कि वहां विज्ञान का सामान बनाने के लिए एक सुव्यवस्थित संगठन है। जो लोग १५-२० साल पहले रूस गए थे, उन्होंने बताया कि उस समय रूस की प्रयोगशालाओं में अधिकतर अमेरिका या ब्रिटेन के यंत्र आदि होते थे। रूस के बने यन्त्र आदि वहां बहुत कम पाए जाते थे। परन्तु बाद में रूस ने विज्ञान का सामान बनाने की ओर विशेष ध्यान दिया और आज वहां सभी प्रयोगशालाओं में रूस का ही सामान रहता है। विदेशों से यन्त्र आदि आयात नहीं किए जाते।

यदि हमें भी विज्ञान में प्रगति करनी है तो हमें विदेशों से वैज्ञानिक और विज्ञान का सामान मंगाना बन्द करना होगा। देश में जो वैज्ञानिक यंत्र आदि बनायेंगे, उन्हें इतना अनुभव हो जायगा कि वे दूसरों को भी यंत्र आदि बनाने की शिक्षा देने योग्य हो जायेंगे।

रूस में एक केन्द्रीय विभाग है उसी की देखरेख में यन्त्र आदि बनाए जाते हैं और प्रयोगशालाओं को भेजे जाते हैं। वे अपना काम बहुत शीघ्रता से तथा सुव्यवस्थित ढंग से करते हैं।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

सुझाव और सम्मतियाँ

संस्कृत भाषा की महत्ता

हमारी भारतीय संस्कृति का तत्व ज्ञान एव धार्मिक ग्रन्थ सस्कृत भाषा में होने से ही उसका अध्ययन अध्यापन आवश्यक नहीं अपितु वह विश्व भाषाओं की जननी होने से किसी भी भाषा का सम्यक् परिज्ञान कराने के लिए सस्कृत का परिचय अत्यावश्यक है। भारत एव भारतीय सस्कृति सम्बन्धी ज्ञान सस्कृत भाषा से अनभिज्ञ रहने पर अधूरा ही रहेगा। परमपिता परमेश्वर ने वेदों का प्रकाश भी सस्कृत भाषा में ही कराया है। ऋषि दयानन्द जी ने वेदो का पढ़ना पढ़ाना, और सुनना सुनाना परमधर्म बतलाया है। इसलिए भी सस्कृत का अध्ययन परम आवश्यक है।

सस्कृत को मातृभाषा कहने का आज एक फैसन सा ही बन गया है। बडे बडे विद्वानो की यह धारणा है कि सस्कृत मातृ भाषा है। किन्तु कुछ गहरा अध्ययन करने के परचात् यह धारणा पूर्णत निर्मूल प्रतीत होती है। प्राचीन भारत मे वेदकाल से बुद्धोत्तर काल तक सस्कृत ही राष्ट्र भाषा रही है। सब भारतीय भाषाएं सस्कृत से ही निकली है। सब प्रादेशिक भाषाए एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी को सस्कृत भाषा की सहायता से ही पुष्ट एव सम्पन्न बनाया जा रहा है। किसी भी भाषा से सस्कृत के सब शब्द निकालने के परचात् वह 'भाषा' ही नहीं रहेगी। ऐसा स्थिति मे सस्कृत को मातृभाषा सम्बन्धित कहना क्या बुद्धि का दिवालियापन नहीं है ? आज प्रत्येक आय का जीवन से लेकर मृत्यु तक के सस्कार में सस्कृत से सम्बन्ध आता है। किसी भी साधारण हिन्दू का भी कम से कम विवाह सस्कार के समय तो सस्कृत से अवश्य सम्बन्ध आता है। हमारे धार्मिक ग्रन्थ, उच्चकोटि के साहित्यक ग्रन्थ, आयुर्वेद के ग्रन्थ सस्कृत भाषा मे है। सस्कृत भाषा भारत की अद्वितीय सम्पत्ति है ऐसा इसलिए प० नेहरू ने कहा है। सस्कृत भाषा के भण्डार में ऐसे बहुमूल्य रत्न हैं जो किसी भी भाषा मे उपलब्ध नहीं हो सकते।

विदेशी शासको ने यहाँ की भाषाओं की प्रगति को कुण्ठित करके अपना स्वार्थ सिद्धि के लिए अंग्रेजी को यहा की जनता पर बलात थोपा, आज भारत में स्वतन्त्र होकर १२ वर्ष की अवधि समाप्त होन पर भी भारतीय भाषाओ का यथेष्ट प्रोत्साहन नहीं मिल रहा है। सरकार की तो बात क्या कहे, आर्य शिक्षा सस्थाओं में भी जिनकी स्थापना का उद्देश्य ही सस्कृत का सागोपाग अध्यापन अन्वेषन है सस्कृत की अपेक्षा अङ्गरेजी का अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है। यह सब परिस्थिति बदल कर सस्कृत की उचित शिक्षा का प्रबन्ध, प्रोत्साहन एव अन्वेषण करने की दिशा मे ठास रचनात्मक पग उठाने का समय आ गया है।

—देवदत्त तुगार,
उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद

अन्न संकट दूर करने का सरल उपाय
तम्बाकू की खेती बन्द हो

खाद्य समस्या को हल करने के लिये भारत सरकार अपन दृष्टिकोण म परिवर्तन करे सरकार अपनी नीति ढग से निर्धारित करे ऐसा कदम उठाये कि तम्बाकू की खेती बन्द करवा कर अनाज पैदा किया जाय जिससे जो अन्न की हाय हाय मची हुई है वह बन्द हो जावे और सरकार जो लाखों रुपया का अन्न बाहर से विदेशों से मगवाती है वह भी परेशानी से बचे और देश का पैसा भी देश मे रहे जिससे अन्न और चारे का कमी नहीं रहेगी और सब मनुष्य व जानवर अपना जीवन सुखमय बितायेगे। दूसरे देश को करोडो रुपयों की विदेश से अन्न मगाने म हानि हो रही है। तम्बाकू पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिये जिससे इस धन की बचत हो सके यदि कानून द्वारा तम्बाकू की खेती पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाय तो लाखो एकड़ भूमि म जहा आज तम्बाकू जैसी नशीली जहरीली और हानिकारक चीज बोई जाती है गेहू, जौ चना आदि बोया जाय जिससे देश की अन्न की समस्या बहुत कुछ हल हो सकेगा।

सिगरेट बीडी का प्रचार रोका जाय तम्बाकू का खेती बन्द हो तम्बाकू से बच्चो बूढा जवानो का बीड़ी सिगरेट पीने की जो बुरी आदत पड़ गई है जो मनुष्य के लिये बडी हानिकारक चीज है वह छूट जाय। आज देश में बीड़ी सिगरेट का प्रचार बहुत बढ़ रहा है जिससे नवयुवकों का स्वास्थ्य गिरता है और खर्चा बढ़ता है लाखों रुपयों की हानि होती है। आगे बीड़ी के प्रचारको का जगह जगह पर लाउडस्पीकरों द्वारा नाच गाकर प्रचार करने पर प्रतिबन्ध लगाया जाय ताकि बच्चे उसके बुरे परिणामो से बच सकें।

—रामचन्द्र आर्य सिद्धान्त रत्न
आर्य समाज कायमगज

गुरुकुलीय विश्व विद्यालय निर्माण योजना

सार्वदेशिक सभा देहली के अन्तर्गत सार्वदेशिक विद्यार्य सभा देहली ने २ मार्च सन् १९५८ के अधिवेशन में गुरुकुलों का व्यापक सगठन तथा विश्व विद्यालय निर्माण की योजना बनाने के लिये निम्न लिखित सदस्यों की एक उप समिति बनाई है—

(१) डा० मगलदेव शास्त्री एम० ए० डी० फिल वाराणसी [अध्यक्ष]
(२) आचार्य प्रियव्रत जी गुरुकुल कागड़ी
(३) आचार्य विश्वेश्वर जी गुरुकुल वृन्दावन
(४) प्रो० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति देहली
(५) श्री घनश्यामसिंह गुप्त दुर्ग मध्य प्रदेश
(६) श्री भ मसेन विद्यालकार अम्बाला
(७) डा० सूर्यकान्त जी एम० ए० बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी
(८) श्री विनायक राव विद्यालकार हैदराबाद दक्षिण
(९) आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री एम० ए० रायबरेली [सयोजक मन्त्री]

इस उप समिति की एक बैठक ७ जून १९५८ को देहली में हुई जिसमें निम्नलिखित निश्चय किये गये—जिनकी पुष्टि सार्वदेशिक विद्यार्य सभा देहली की कार्यकारिणी तथा साधारण सभा ने ७ ६ ५८ के अधिवेशन में की है—

१—इस समिति के विचाराधीन विषय [टर्म्स आफ रिफरेन्स] निम्नलिखित होंगे—

(१) आर्य समाज द्वारा सचालित गुरुकुलों तथा अन्य शिक्षा सस्थाओं का सगठन किस रूप मे किस प्रकार हो सकता है ?
(२) यदि उक्त सगठन हो सकता है तो उसको विधान द्वारा स्वीकृत [चार्टर्ड] विश्व विद्यालय का रूप दिया जा सकता है या नहीं ?
(३) यदि दिया जा सकता है तो उसकी क्या क्या आवश्यकताये होंगी ?
(४) यदि चार्टर्ड विश्वविद्यालय का रूप नहीं दिया जा सकता तो उस सगठन का क्या रूप हो सकता है ?

२—उप समिति के अध्यक्ष तथा सयोजक द्वारा बनाई गई प्रश्नावली सब सदस्यों के समक्ष उपस्थित कर अन्तिम रूप देकर प्रकाशित की जावे तथा उसे आर्य समाज की विशिष्ट शिक्षा सस्थाओ, विशिष्ट विद्वानों, गुरुकुलों के विशिष्ट स्नातको, और आर्य सामाजिक शिक्षा पद्धति से सहानुभूति रखने वाले अन्य शिक्षा विशेषज्ञों के पास सम्मत्यर्थ भेजा जावे।

३—प्रश्नावली के उत्तरों को ध्यान में रखते हुए उप समिति अथवा उसके कुछ प्रतिनिधि विशिष्ट आर्य शिक्षा सस्थाओ मे जाकर विचार विनिमय करे।

४—उपसमिति अथवा उसके प्रतिनिधि देश के विशिष्ट शिक्षा विशेषज्ञों से मिलकर विचार विनिमय तथा परामर्श करे।

५—शान्ति निकेतन जैसी अन्य विशिष्ट शिक्षा सस्थाओ को भी आवश्यकतानुसार उप समिति अथवा उसके प्रतिनिधियों द्वारा देखा जावे

वीरेन्द्र शास्त्री एम० ए०
मन्त्री सार्वदेशिक विद्यार्य सभा [कार्यालय रायबरेली]

(पिछले पृष्ठ का शेष)

विज्ञानपुरी

साइबेरिया मे एक विज्ञानपुरी बनायी जा रही है। वहा विभिन्न क्षेत्र के लगभग २०,००० व्यक्तियों को बसाने का विचार है। उनमें से ४,००० अच्छे वैज्ञानिक होगे। यह रूस का एक साहसिक कार्य है।

रूस ने विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में विशेषता प्राप्त करने के लिए योजना बनायी, वहाँ की सरकार ने देश की प्रगति में वैज्ञानिकों और विज्ञान को काफी ऊचा स्थान दिया, सबको काम देकर बेकारी दूर की और विदेशी वैज्ञानिकों को बुलाना तथा यत्र आदि मगाना बन्द करके आत्म निर्भर बनने का प्रयत्न किया। यही कुछ बातें हैं, जिनके कारण रूस आज विज्ञान के क्षेत्र मे इतना उन्नत देश माना जाता है।

आदर्श नागरिक श्री विश्वेशरैय्या

(जिनकी ६६ वीं वर्षगांठ २१ सितम्बर को मनाई गयी)

जीवन की सफलता के लिए १२ सूत्र उन्होंने अपने दीर्घ जीवन के अनुभव के आधार पर प्रस्तुत किए हैं। जीवित महान् व्यक्तियों के अनुभव हमारे जीवन में शीघ्र परिवर्तन ला सकते हैं क्योंकि उनका क्रियात्मक जीवन हमारे सम्मुख होता है। श्री विश्वेशरैय्या के प्रस्तुत १२ सूत्री सन्देश को हम हृदयङ्गम कर सकें उनकी जयन्ती की यही सफलता होगी। प्रभु राष्ट्र की इस विभूति को चिरजीवी करें, मित्र परिवार की यही मंगल कामना है। —सम्पादक

१—प्रत्येक व्यक्ति को यथा सम्भव शीघ्र ही कोई न कोई उपयुक्त कार्य प्रारम्भ कर देना चाहिए, जिससे जीवन में स्थायी रूप से अर्थ सम्बन्धी निश्चिन्तता उत्पन्न हो सके।

२—प्रत्येक वयस्क व्यक्ति को प्रति दिन काम करने का समय निश्चित कर लेना चाहिए। प्रतिदिन ६ घण्टे से लेकर ८ घण्टे तक अर्थात् प्रति सप्ताह (रविवार को छोड़कर) ३६ घण्टे से लेकर ४८ घण्टे तक जमकर काम करना चाहिए।

३—केवल व्यक्ति ही नहीं पूरे समाज को अनुशासित और नियमित रूप से निर्धारित समय में काम करने की आदत डालनी चाहिए।

४—परिवार के मुखिया का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वह प्रतिदिन इस बात का ध्यान रक्खे कि परिवार के सभी सदस्य निर्धारित समय तक काम करते हैं या नहीं। इसके लिए परिवार की स्त्रियों को भी अपवाद न माना जाय। निर्धारित समय तक काम करने की आदत के लिए आरम्भ में घड़ी का प्रयोग उचित रहेगा।

५—प्रत्येक नागरिक कर्मचारी और कार्यकर्ता को अपने कार्य के परिष्करण में दत्तचित्त रहना चाहिए जिससे परिवार और देश की उन्नति रहेगी।

६—प्रत्येक व्यक्ति को अपने समय का पाबन्द होना चाहिए। यदि मिलने भेंटने आदि के लिए किसी व्यक्ति से समय निश्चित किया गया है तो उस समय का पूरा पूरा पालन होना चाहिए। दिये हुए वचन की पूर्ति होनी चाहिए। इस बात का प्रयत्न सतत् किया जाना चाहिए कि ईमानदारी, सचाई, कार्य कुशलता और स्वामी भक्ति में वृद्धि होती रहे।

७—दूसरे लोगों से मिल जुल कर काम करने की भावना का विकास होना चाहिए। अपने से उच्चाधिकारियों, सहकर्मियों और अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ मिलकर काम करने की आदत होनी चाहिए।

८—किसानों मजदूरों आदि को विशेष रूप से स्वावलम्बन और कार्य कुशलता का महत्त्व समझाया जाए। प्रत्येक पाठशाला में स्वावलम्बन की शिक्षा छोटी अवस्था से दी जाए।

९—व्यापार व्यवहार, सामाजिक भावना और अनुशासन की प्रणालियों को यथा सम्भव इस ढंग से निर्धारित किया जाए कि समय और अर्थ का बचत हो।

१०—प्रत्येक नागरिक को सप्ताह में अनिवार्य रूप से संसार की वर्तमान स्थिति और अपने व्यवसाय से सम्बन्धित नई जानकारी प्राप्त करने के लिए कुछ समय अवश्य खर्च करना चाहिए। इस बात का ध्यान रहे कि हम केवल भरण पोषण के लिए ही काम नहीं करते अपितु हम अपने देश की ख्याति और समृद्धि में भी योग देते हैं।

११—समय समय पर मनुष्य को अपने काम की तुलना अन्य साथियों के कार्य से भी करनी चाहिए।

१२—ऊपर जो सूत्र दिये गए हैं उनमें प्रति पांचवें वर्ष या प्रतिवर्ष अनुभव के आधार पर आवश्यक संशोधन परिवर्धन किये जा सकते हैं।

जीवन-ज्योति

आर्योपदेशक ठाकुर श्रवणसिंह जी

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के आर्योपदेशक श्री ठाकुर श्रवणसिंह जी आज कल अपने ग्राम पहड़ौली, पा० हरदुआगञ्ज (अलीगढ़) में रुग्ण हैं। आपको 'हाई ब्लड प्रेशर' रोग हो गया है। ठाकुर साहब गत पचास वर्षों से वैदिक धर्म की संलग्नता पूर्वक सेवा कर रहे हैं। आपकी आयु ६४ वर्ष के लगभग है बाल्य काल से ही आपने आर्य समाज के प्रचार में सहयोग देना आरम्भ कर दिया था, आपके पिता स्व० श्री ठाकुर रामचन्द्र सिंह जी बड़े कर्मठ आर्य कार्यकर्ता थे। आपने आज से पचास साठ वर्ष पहले शुद्धि आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। जिन दिनों लोग शुद्धि का नाम सुनकर घबराते थे उन दिनों ठाकुर रामचन्द्र सिंह जी ने बड़ी निर्भयता से अपने परिवार में बथरा (इटावा) आदि स्थानों के शुद्ध शुद्धों के सम्बन्ध किये कराये। श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के साधु आश्रम की स्थापना में भी ठाकुर साहब ने तन मन, धन से सहायता दी। सुप्रसिद्ध कर्ण कवि आपके ही परिवार के थे। स्व० कर्ण कवि जी कवि सम्राट स्व० नाथूराम शंकर शर्मा के सुयोग्य शिष्य थे।

ठाकुर श्रवणसिंह जी ने १९०७ में हिन्दी मिडिल पास किया और तब ही से वैदिक धर्म प्रचार में लग गए। प्रारम्भ में अमरोहा की एक हरिजन पाठशाला में अध्यापक रहे जो उस समय की दृष्टि से बहुत प्रगतिशील कदम था, अमरोहा के बाद कुछ काल मुजफ्फर नगर में कार्य किया और फिर प्रेम महाविद्यालय वृन्दावन की ओर से प्रचार कार्य किया, प्रेम महाविद्यालय एक क्रान्तिकारी संस्था मानी जाती थी उसका प्रचार करना सच्चे राष्ट्र भक्त का ही कार्य था और ठाकुर साहब ने उसे निर्भीकता के साथ सम्पन्न किया। सन् १९२२ में आप उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा में प्रचारक नियुक्त हुए। सभा के आदेश से आपने कुछ काल तक हैदराबाद दक्षिण में भी सफलता पूर्वक प्रचार किया, फिर तो सभा के आदेशानुसार यत्र तत्र सर्वत्र निरन्तर प्रचार करते रहे। प्रचार के साथ साथ आपने सभा की योजनाओं के लिए समय समय पर धन-राशि एकत्र कर योजनाओं की सफलता में सहयोग दिया। भागलपुर (बिहार) में भी आपने प्रचार किया। उस समय वहाँ के राणा रामजन्म सिंह ने आपकी प्रचार विधि से प्रसन्न होकर आपको सम्मानार्थ एक सेहरा तथा अन्य वस्तुएं भेंट कीं। प्रचारक से कोई प्रसन्न होता है तो कोई उससे अप्रसन्न, जहाँ भागलपुर में आपका सम्मान हुआ वहां जोधपुर में जब आप प्रचार करने गये तो वहाँ के राज्याधिकारियों ने आपके प्रचार पर १४४ लगाकर आपको गिरफ्तार कर राज्य से बाहर कर दिया।

अलीगढ़ जिले की सामाजिक उन्नति के आप प्राण हैं। अलीगढ़ के ग्राम ग्राम में आर्यसमाज का सन्देश पहुंचाकर वहाँ आपने आर्य समाज की शक्ति को दृढ़ बना दिया है। साधु आश्रम हरदुआगञ्ज, कन्या गुरुकुल सासनी (अलीगढ़) और गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन जैसी संस्थाओं से आपको विशेष प्रेम है और उनकी उन्नति में सदैव सहयोग देते रहते हैं।

हाल ही में ठाकुर श्रवणसिंह जी सभा द्वारा आयोजित उपदेशक सम्मेलन में लखनऊ सम्मिलित होने गये थे। वहाँ से आते ही सख्त बीमार हो गये। एक मास से अधिक समय से चारपाई पर पड़े हैं। सुयोग्य चिकित्सकों की चिकित्सा हो रही है। अलीगढ़ आर्य समाज के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार जी भी आपको देखने गये थे और सभा प्रधान श्री हरिशंकर शर्मा के अनुरोध पर ठाकुर साहब को अपने समाज द्वारा २५०) की सहायता भी प्रदान की गयी।

परमात्मा ठाकुर श्रवणसिंह जी को शीघ्र ही स्वस्थ करें, यही आर्य जगत् की ओर से प्रार्थना है।

ईसाइयों की बाईबिल परीक्षाओं से सावधान

(श्री ललिता प्रसाद जी, डी० ए० वी० कालेज, कानपुर)

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

★ भारतीय जनता की गरीबी और अज्ञानता से अनुचित लाभ उठाकर ईसाइयत का प्रचार करने वाले ईसाई प्रचारकों और उनकी "बाईबिल परीक्षाओं" का बहिष्कार करने के लिए क्या आर्य बन्धु इस लेख को पढ़कर तैयार हो सकेंगे ? —स० सम्पादक ★

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

आजकल बाईबिल-परीक्षाओं के द्वारा हिन्दुओं को ईसाई बनाने के विचित्र हथकंडे प्रयोग में लाये जा रहे हैं। ईसाइयों ने हिन्दुस्तानियों को ईसाई बनाने के लिये कई श्रेणियों को अपनाया हुआ है, बाईबिल की परीक्षा का ढोंग रचकर ईसाइयों ने हिन्दुओं को ईसाई बनाने का विचित्र जाल फैलाया हुआ है। इनके द्वारा बड़े २ प्रलोभन दिये जाते हैं। इन परीक्षाओं का कच्चा चिट्ठा "आर्यमित्र" के पाठकों के सम्मुख रक्खा जाता है ताकि ईसाइयों के जाल से सावधान रहें। निम्नलिखित सात परीक्षाओं का मुझे भलीभांति ज्ञान है !

१—लेंडोर बाईबिल इन्स्टीट्यूट, इक्सटेनशन डिपार्टमेन्ट, लेंडोर, मसूरी जिला देहरादून, उत्तर प्रदेश।

२—जीवन प्रकाश, बाईबिल स्कूल, झांसी, उत्तरप्रदेश।

३—वर्ड आफ ट्रुथ, बाईबिल, कौरेस्पौंडेन्स कोर्स, बाक्स ६५४५ बम्बई २६।

४—जीवन का पानी, बाईबिल स्कूल, आर्य नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश।

५—बाईबिल स्कूल, लालबाग, लखनऊ उत्तर प्रदेश।

६—बाईबिल टेस्ट, ए. एच. ३१ कनाट सरकस, न्यू देहली १।

७—वायस आफ प्राफेसी, बाईबिल पत्र व्यवहार विद्यालय, पो० बाक्स ३७, पूना १।

नोट—इन सातों परीक्षाओं में पूना वालों का कार्य सबसे अधिक बढ़ा है—और इनका जाल भी विचित्र है। जिनको अपने धर्म, सिद्धान्त का ज्ञान नहीं है वे इन परीक्षाओं के द्वारा शीघ्र ही ईसाइयों के चंगुल में फंस जायेंगे।

वायस आफ प्राफेसी वालों का जाल निम्नलिखित है:—

१—१७४९ गिरजाघर हैं। २—१७३१३ पादरी और प्रचारक हैं।
३—१८६८४ संस्थाओं के कार्यकर्ता हैं। ४—२९४ पत्र पत्रिकाएं मुद्रित करते हैं।
५—८३ मुद्रणालय हैं। ६—१९७४ मुद्रणालय के कर्मचारी हैं।
७—३९४२ कालेज व स्कूल हैं। ८—९१७७ शिक्षक हैं।
९—१६५८७ सब्बत स्कूल चलते हैं। १०—१७९ अस्पताल और स्वास्थ्यगृह हैं।
११—३५९ उच्च शिक्षित डाक्टर हैं। १२—२२३६ नर्स परिचारिकाएं हैं।
१३—७६३८ औषध सम्बन्धी कार्यकर्ता हैं।
१४—३१४१ डोरकस और हित कारिणी सभायें चलाते हैं।

नोट.—परीक्षा का अन्तिम और वास्तविक उद्देश्य उनके "परीक्षा पत्र ३२ वां पाठ में स्पष्ट ज्ञात हो जाता है जो कि नीचे दिया जाता है"।

परीक्षा पत्र ३२ वाँ पाठ, व्यक्तिगत साक्षी।

आप इस कोर्स के अन्तिम पाठ तक आ गये हैं। हमें आशा है आपने अपने अध्ययन का पूर्ण रूप से आनन्द उठाया है।

इन पाठों के अध्ययन के परिणाम स्वरूप, जो बड़ी आशीष और प्रेरणा मिली है उसके विषय में हमारे हजारों विद्यार्थियों ने हमें लिखा है। हमें भरोसा है कि आपको भी इसी प्रकार से लाभ पहुंचा होगा, और इसके बारे में हमें लिखने के लिए हम आपको निमंत्रण देते हैं। कृतज्ञता प्रकट करते हुए आप जो कुछ हमें लिखना चाहेंगे और इसके अलावा आपसे अन्तिम उत्तर के तौर पर निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पाकर हम बहुत खुश होंगे। हम चाहते हैं कि आप अपना जवाब अपने हृदय की निश्चलता से दें।

"ऐसे उत्तर गुप्त रक्खे जायेंगे"

१—क्या आपको विश्वास है कि पवित्र शास्त्र बाईबिल मानव जाति के लिए ईश्वर प्रेषित पुस्तक है ?

२—क्या आप विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र था ?

३—क्या इन उपरोक्त पाठों के अध्ययन द्वारा आप यीशु मसीह को पाप से एकमात्र उद्धार कर्ता कहकर ग्रहण करने के लिए तैयार हैं ?

४—सप्ताह के सातवें दिन 'शनिवार' को प्रभु का विश्राम वार मानते हुए क्या आपने प्रभु (यीशु मसीह) के पद चिन्हों पर चलने के लिये ठान लिया है ?

५—क्या आप हमारे प्रतिनिधि से जो अपने खर्च से आपके पास आ सकते हैं, भेंट करना चाहते हैं ? ताकि जो आपने बाईबिल की बातों पर दिल चस्पी ली है, उस पर बातचीत करें और आगे को अध्ययन कर सकें ?

धार्मिक परीक्षाएं

(श्री पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०)

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि सार्वदेशिक सभा की ओर से धार्मिक परीक्षाओं का उपक्रम होने लगा है। बीसियों वर्षों से मैं इस आवश्यकता का अनुभव करता था। इसके मुख्य कारण यह थे।

(१) सार्वदेशिक द्वारा दिये हुए प्रमाण पत्रों का जो मान हो सकता है वह छोटी संस्थाओं द्वारा प्रदत्त प्रमाण पत्रों का नहीं।

(२) सार्वदेशिक द्वारा जितनी अच्छी व्यवस्था हो सकती है उतनी अन्यत्र नहीं।

(३) परीक्षाओं पर जो हर प्रकार का नियन्त्रण हो सकता है वह अन्यत्र नहीं।

(४) अनिष्ट व्यक्तियों या कल्पित संस्थाओं का जितना साहस छोटी संस्थाओं के साथ स्पर्धा करने का हो सकता है उतना सार्वदेशिक सभा के साथ नहीं।

इसलिए मैं सार्वदेशिक सभा की विद्यार्य सभा के मन्त्री महोदय को बधाई देता हूं कि उनकी प्रेरणा से ऐसे शुभ कर्म का आरम्भ हुआ है। यदि पूरा आर्य समाज मंडल दलबल के साथ इस छोटे से कार्य में सहयोग दे तो प्रति वर्ष लाखों विद्यार्थी इस परीक्षा से लाभ उठाकर वैदिक धर्म के मौलिक सिद्धान्तों से भिज्ञता प्राप्त कर सकते हैं और यह परीक्षा पटल सार्वदेशिक सभा का एक महत्वपूर्ण भाग बन सकता है। इसके लिए न तो धन के लिए अपील करने की आवश्यकता है न किसी विशेष त्याग या तपस्या की, केवल व्यवस्थित रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है।

इस सम्बन्ध में मुझे एक सुझाव देना है। परीक्षायें विद्यार्य सभा की न कहलाकर सीधा सार्वदेशिक सभा की कहलानी चाहिए। प्रबन्ध तो एक पटल के ही आधीन रखना पड़ेगा चाहे उसको विद्यार्य सभा कहो, या उसका अङ्ग या सार्वदेशिक का सीधा अङ्ग।

दूसरा सुझाव यह है कि परीक्षाओं का उद्देश्य होना चाहिए सिद्धान्तों का सार्वभौमिक प्रचार। उसको हिन्दी या किसी एक भाषा विशेष का अङ्ग न बनाना चाहिए। आरम्भ स्वभावतः तो हिन्दी से ही होगा। परन्तु उन युवकों को भी पर्याप्त प्रोत्साहन मिलना चाहिए जो हिन्दी भाषा के अभ्यस्त नहीं हैं। इस बात में हम ईसाई संस्थाओं के कार्यक्रम से कुछ लाभ उठा सकते हैं। आशा है कि सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान और मन्त्री जी का भी ध्यान इस ओर आकर्षित होगा।

अब "आर्यमित्र" के पाठक वृन्द ईसाइयों की चाल को भली भांति समझ गये होंगे। यदि किसी हिन्दू परीक्षार्थी ने इन प्रश्नों का उत्तर स्वीकारात्मक दे दिया तो उसके उत्तर को गुप्त रखकर उनका प्रतिनिधि "बपतिस्मा" देने के लिए पूना से परीक्षार्थी के पास आ जायगा। इनका प्रतिनिधि कोई अंग्रेज मिशनरी होगा या कोई श्वेतांगी महिला होगी, यह तो वही लोग जानें।

"अन्य प्रलोभन"

नवयुवक नवयुवतियों को अधिक से अधिक संख्या में आकर्षित करने के निमित्त मिशनरी लोग बड़े ही घृणित उपायों का आश्रय लेते हैं जो निम्न प्रकार हैं:—

१—परीक्षा पास करने के बाद विद्यार्थी को मिशन कहीं न कहीं अवश्य नौकरी दिला देगा।

२—बाईबिल का स्नातक बन जाने पर इसका विवाह करा दिया जायगा।

३—अन्तिम परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाने पर विद्यार्थी को बम्बई, पूना, आदि नगरों की सैर कराई जायगी।

४—पादरियों का प्रेम पात्र बन जाने पर उसे विदेश जाने की भी सुविधा दी जायगी !

५—विद्यार्थी को पढ़ाई के लिए छात्र वृत्ति भी दी जा सकती है !

इन प्रलोभनों को पढ़कर पाठक गण स्वयं अनुमान लगायें कि भारत की गरीबी अज्ञानता, तथा अन्य कमजोरियों का लाभ किस प्रकार उठाया जा रहा है। इस प्रकार लाखों विद्यार्थी प्रति वर्ष इन परीक्षाओं के द्वारा ईसाइयत के दलदल में फसाये जा रहे हैं। लाखों रुपया प्रति वर्ष मिशनों द्वारा इन परीक्षाओं पर खर्च किया जा रहा है।

कुछ वर्ष पूर्व ये परीक्षायें केवल बड़े २ नगरों तक सीमित थीं, परन्तु अब इनका विस्तार बड़ी तीव्र गति से गाँवों में भी हो रहा है। अतः सभी आर्यों को इन परीक्षाओं का बहिष्कार करना चाहिए, और सदैव ईसाई पादरियों से सावधान रहना चाहिए।

सासाहिक समाचार समीक्षा

(हमारे समाचार समीक्षक द्वारा)

ग्रामों में निवास करने वाले उन आर्य बन्धुओं के लिए जिन्हें दैनिक समाचार पत्र नहीं प्राप्त होते, हमने यह स्तम्भ पुनः आरम्भ कर दिया है।

—सम्पादक

देशीय समाचार—

दूसरी योजना के लिए

यह आशा की जाती है कि भारत सरकार को दूसरी योजना के लिए एक अरब डालर की विदेशी सहायता निश्चित रूप से मिल जायेगी और सरकार की दूसरी योजना सफलता से पूरी हो जायगी। वित्त मन्त्री श्री मुरार जी के विदेश से वापस आने के बाद श्री बी० के० नेहरू भावी कर्ज के लिए वार्ता करने आगामी मास वाशिंगटन जायेंगे। जनवरी ५९ से ही तीसरी योजना के लिए कर्ज प्राप्त करने का प्रयास आरम्भ हो जायेगा। सरकारी वर्ग में इस समाचार से प्रसन्नता है पर देश के कुछ विचारशील नेताओं का विचार है कि भारत के सिर पर इस प्रकार से विदेशी कर्जभार को लदाना उचित नहीं है। इसका परिणाम एक दिन भारत को भुगतना होगा।

पश्चिमी उ०प्र० में घोर वर्षा

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पिछले दिनों घोर वर्षा लगातार कई दिनों तक हुई जिससे अनेकों जिलों में सैकड़ों मकान गिर गये और अनेकों पशु तथा पचासों व्यक्तियों के मरने का समाचार भी प्राप्त हुआ है। निरन्तर वर्षा से खड़ी फसल नष्ट हो गयी। मेरठ, मुरादाबाद, रामपुर, शाहजहाँपुर, बरेली, बुलन्दशहर आदि जिलों को बहुत क्षति पहुंची है।

सीमा समझौता को चुनौती

कलकत्ता हाईकोर्ट ने भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय और पश्चिमी बंगाल सरकार से पूछा है कि किस अधिकार से भारत और पाकिस्तान के प्रधान मन्त्रियों के इस निर्णय को कार्यान्वित किया जा रहा है कि पश्चिमी बंगाल के जलपाईगुड़ी और कूच बिहार जिलों के कुछ प्रदेशों को पूर्वी पाकिस्तान में मिला दिया जाय। अनेकों क्षेत्रों से यह आवाज उठ रही है कि प्रधान मन्त्री नेहरू की यह मनमानी ठीक नहीं है कि वे अपने देश का जब जितना भाग चाहें विदेश को सौंप दें। आशा है आने वाले समय में इस निर्णय का जोरदार व सक्रिय विरोध किया जायेगा।

श्री गुरुमुखसिंह मुसाफिर

विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि कांग्रेस हाईकमान ने पंजाब कांग्रेस के अध्यक्ष श्री गुरुमुख सिंह मुसाफिर को प्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे देने को कहा है। इससे स्पष्ट है कि पंजाब कांग्रेस की फूट अभी शान्त नहीं हुई है बल्कि पुनः वहां नये गुल खिलने वाले हैं।

श्री इन्दुलाल याज्ञिक रिहा

महागुजरात जनता परिषद के अध्यक्ष श्री इन्दुलाल याज्ञिक संसद सदस्य को ३ अक्तूबर को साबरमती जेल से ४४ दिन साधारण कारावास के बाद रिहा कर दिया गया। आपने स्मारक सत्याग्रह के प्रथम जत्थे का नेतृत्व किया था।

अंग्रेजी की जगह हिन्दी

दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के नवें वार्षिक अधिवेशन में सभापति पद से भाषण करते हुए प्रसिद्ध साहित्यकार एवं संसद सदस्य श्री रामधारीसिंह दिनकर ने कहा कि अब भारत में अविलम्ब अंग्रेजी की जगह हिन्दी को स्थान दिया जाना चाहिये। आपने कहा कि किसी कारणवश कोई वर्ग इसका विरोध भले करे पर याद रहे कि यह राष्ट्रभाषा है और इसी में भारत की राष्ट्रीयता है क्या हिन्दी विरोधी दिनकर जी के शब्दों पर विचार करेंगे?

वर्षा से पंजाब में भारी क्षति

अमृतसर, जालन्धर, फिरोजपुर, आदि जिलों में भीषण वर्षा से भारी क्षति हुई है और बाढ़ के कारण लाखों एकड़ भूमि पानी से भर गया है। मुख्य मन्त्री कैरों ने जनता से अपील की है कि वह बाढ़ पीड़ितों की सहायता करे।

राष्ट्रपति जापान से लौटे

५ अक्तूबर को सायंकाल ७ बजे राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद अपनी यात्रा से वापस होकर पालम हवाई अड्डे पर पहुंचे जहाँ उप राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री तथा अन्य लोगों ने आपका शानदार स्वागत किया। राष्ट्रपति ने कहा कि भारत की जनता को जापान से बहुत कुछ सीखना है। हवाई अड्डे से लेकर राष्ट्रपति भवन (६ मील) तक खड़ी जनता ने पुष्प वर्षा करके राष्ट्रपति का स्वागत किया। श्री नेहरू भी दो रोज पूर्व भूटान यात्रा से वापस आ गये थे।

खाद्य आन्दोलन समाप्त

उत्तरप्रदेश का खाद्य आन्दोलन अब समाप्त हो गया है और विरोधी दलों के अधिकांश सत्याग्रही अब छोड़ दिये गये हैं जो लगभग ४००० से अधिक संख्या में गिरफ्तार किये गये थे। उत्तरप्रदेश जनसंघ ने भी खाद्य आन्दोलन समाप्ति की घोषणा कर दी है। प्रत्येक वर्ग में इससे सन्तोष है।

सर्वोच्च न्यायालय का क्षेत्र

श्रीनगर का समाचार है कि डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फ्रेंस की कश्मीर प्रान्तीय समिति ने पुनः यह मांग दुहराई है कि भारतीय चुनाव आयोग तथा सर्वोच्च न्यायालय का अधिकार जम्मू काश्मीर तक बढ़ा दिया जाय। प्रत्येक राष्ट्रीय व्यक्ति कान्फ्रेंस की इस मांग का समर्थन करेगा। भारत सरकार को अविलम्ब इस ओर विचार करना चाहिए।

विदेशीय समाचार—

रूस और स्पुतनिक छोड़ेगा

प्रसिद्ध रूसी वैज्ञानिक श्री ब्लागोनरवाव ने रेडियो टेलिविजन पर बताया कि सोवियत संघ इस वर्ष और स्पुतनिक छोड़ेगा। आपने कहा कि आज या कल हम मानव को अन्तरिक्ष में ले जाने वाला स्पुतनिक छोड़ने में सफल हो जायेंगे।

राष्ट्र संघ और परमाणु परीक्षण

सोवियत संघ ने राष्ट्र संघ के सम्मुख एक प्रस्ताव रखा है कि संघ परमाणु परीक्षण को शीघ्र ही बन्द कराये। ३१ अक्तूबर से जिनेवा में इस प्रश्न पर वार्ता होने वाली है। स्मरण रहे कि सोवियत संघ ने ३१ मार्च ५८ से ही अणु परीक्षण बन्द कर रखा था पर उसने पुनः परीक्षण इसलिए प्रारम्भ कर दिया कि पूर्व निश्चयानुसार ब्रिटेन और अमेरिका ने अपने परीक्षण बन्द नहीं किये जिससे रूस की सुरक्षा का खतरा है। प्रत्येक विचारशील व्यक्ति अमेरिका और ब्रिटेन की इस चालाकी को अन्तर्राष्ट्रीय धोखेबाजी की संज्ञा देगा।

क्विमोय मात्सु पर गोलाबारी बन्द

साम्यवादी चीन ने एक सप्ताह के लिए क्विमोय मात्सु पर गोलाबारी करना स्थगित कर दिया है। इस अवधि में कुमितांग चीन क्विमोय को जहाजों द्वारा रसद भेज सकेगा, मानवीय आधार पर यह गोलाबारी स्थगित की गया है। इधर समझौते के लिए वार्ता की अपील भी की गई है। युद्ध की यह चिनगारी जितना जल्द बुझे उतना ही सन्तोष मानव समाज को होगा।

अल्जीरियाई सुधार

फ्रांस के प्रधान मन्त्री जेनरल दिगाल ने अल्जीरिया के सुधार के लिए पंचवर्षीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। राष्ट्रवादी आन्दोलन को शान्त करने का प्रयास करते हुए उन्होंने कहा है कि निवास, भूमि तथा शिक्षा की दृष्टि से शीघ्र ही अल्जीरिया में सुधार किया जायेगा। प्रश्न यह है कि स्वतन्त्रता के इस युग में फ्रांस इस प्रकार अल्जीरिया पर आधिपत्य जमाये रखना क्यों चाहता है। आज मानवता की माँग है कि फ्रांस राष्ट्रवादी अल्जीरियाई आन्दोलन को पूर्णरूप से स्वतन्त्र कर दे।

एशियाई देशों को जापानी सहायता

जापान इस बात के लिए प्रयास कर रहा है कि सम्पूर्ण एशिया के सभी देशों में एकता स्थापित हो जाय। इस के लिए जापान ने निश्चय किया है कि एशिया के अविकसित देशों को जापान आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता देगा। जापानी विदेश मन्त्री श्री फूजियामा ने भारतीय पत्रकारों को बताया कि इस कार्य के लिए जापान २ अरब डालर का एक कोष स्थापित करेगा। जापान को विश्वास है कि वह इस कार्य में सफल होगा। इस सुन्दर विचार को सफलता मिले सभी भारतवासी भी यही चाहेंगे।

राष्ट्रसंघ में भारतीय प्रस्ताव

भारत ने एक प्रस्ताव द्वारा राष्ट्र संघ से पुनः यह माँग की है कि वह परमाणु परीक्षण बन्द कराये। भारतीय प्रतिनिधि मण्डल ने राष्ट्र संघ के वृहद सभा को उक्त आशय का प्रस्ताव पेश किया। रूस ने भी राष्ट्र संघ से इस प्रकार की मांग की है।

पाकिस्तान में मार्शल ला

पाकिस्तान की वर्तमान सरकार, संसद, विधान, आदि सब भंग करके राष्ट्रपति इसकन्दर मिरजा ने मार्शल ला की घोषणा कर दी है। सेनाध्यक्ष जेनरल आयूब को मुख्य सैनिक प्रशासक नियुक्त किया गया है। यह पाक मन्त्रिमंडल के मतभेद का परिणाम है।

आर्य-जगत

उत्सव समाचार—

—गुरुकुल वृ॰ द्री का ५८ वा वार्षिकोत्सव १९ से २२ अक्तूबर तक होगा। आर्यजगत् के अनेकों प्रसिद्ध विद्वान पधारेंगे। वेद सम्मेलन, सरस्वती सम्मेलन, राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन, स्वास्थ्य सम्मेलन, समाज सुधार सम्मेलन आदि का आयोजन है। "अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत ग्रन्थ प्रदर्शनी" इस वर्ष के उत्सव की विशेषता होगी वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीतादि पर प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानो के अनुवाद व व्याख्या ग्रन्थों का प्रदर्शन होगा। समस्त राजदूतों को इस दिशा में सहयोग करने को लिखा गया है। आर्य बन्धुओं के पास भी जो प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ हों या किसी विदेशी या प्रान्तीय भाषा में उनके अनुवाद हों तो वे कृपया लेकर उत्सव पर पधारें। इसकी सूचना पूर्व भेज दें। आचार्य प्रियव्रत

—आ॰स॰ सुल्तानपुर नैनीताल का वार्षिकोत्सव २७-२८ अक्तूबर को सुल्तानपुर में सोत्साह मनाया जायेगा

—आ॰ स॰ सीसामऊ कानपुर का २४ वाँ वार्षिकोत्सव २७, २८ २९, ३०, नवम्बर ५८ का होगा। अनेकों प्रसिद्ध विद्वान् पधारेंगे।

—आ॰ स॰ शाहजहांपुर का वार्षिकोत्सव २५ से २८ अक्तूबर ५८ तक मनाया जायेगा। इस अवसर पर जिला सभा का अधिवेशन भी होगा। जिले की समाजें अवश्य सम्मिलित हों।

प्रचार समाचार—

—आ॰ स॰ रामनगर ने १४ से २३ सितम्बर तक रामनगर तथा निकटवर्ती ग्रामों में श्री रामचन्द्र जी उपदेशक उप प्रतिनिधि सभा अल्मोड़ा व नैनीताल में वेदप्रचार कराया और उप सभा को ३०) दान दिया।

—आ॰ स॰ सीतामढ़ी जिला मुजफ्फरपुर बिहार की ओर से २० सितम्बर से ४ अक्तूबर तक गाँधी चौक मन्दिर पर नित्य दो घण्टे रात्रि में प॰ जितेन्द्रनाथ शर्मा वानप्रस्थी द्वारा वेद की कथा हुई।

—महादेवनारायण सिनहा, स॰ मन्त्री

—शाहजहाँपुर को दोनों आर्य समाजों तथा श्री आर्यसमाज द्वारा सम्मिलित रूप से वेद प्रचार सप्ताह सोत्साह मनाया गया।

चुनाव समाचार—

—श्री रामपालसिंह प्रचारक के प्रयत्न से आ॰ स॰ ठकेमा आजमगढ़ पुनः संगठित हो गया। चुनाव में श्री जगन्नाथ मिश्र प्रधान, श्री सीताराम गुप्त मन्त्री, व श्री रघुनाथ जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आ॰ स॰ अकरौली मुरादाबाद श्री रामलाल आर्य प्रधान, श्री ब्रजकिशोर जी मन्त्री, श्री राजाराम जी कोषाध्यक्ष।

शोक समाचार—

—आ॰ स॰ सतना रीवा राज्य ने श्री डा॰ भगवान दास भारत रत्न तथा अपने समाज के उप प्रधान श्री धर्मदास जी के चाचा के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया।

—आ॰स॰ अकरौली मुरादाबाद ने अपने समाज के मन्त्री जी के पिता जी के निधन पर शोक प्रकट किया।

आर्य वीर दल समाचार—

—आर्य वीर दल केराकत ने सोत्साह विजयादशमी पर्व मनाना व दल सहायता करने का निश्चय किया

—२०-२१ सितम्बर ५८ को श्री सन्तोषकुमार जी जिला सचालक आर्य वीर दल मेरठ ने आर्य वीर दल मवाना को पुनः संगठित किया और निम्न नियुक्तियाँ कीं। श्री प्रकाशचन्द्र जी नगरनायक, श्री चतुरसिंह मन्त्री, श्री नन्दलाल आर्य कोषाध्यक्ष, श्री जगदीश जी बौद्धिकाध्यक्ष।

मेरठ जिले में आर्य वीर दल के शिक्षक श्री देवव्रत शास्त्री का पुरागम निम्न प्रकार है—१-१०-५८ से १७-१०-५८ तक मेरठ, १८-१०-५८ से ३१-१०-५८ तक बड़ौत। नगरनायकों को उन्हें सहयोग देना चाहिये और दल सहायता आन्दोलन को सफल बनाना चाहिए। —मुरारीलाल

आर्यकुमार सभा समाचार—

—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज ने एक सन्देश में कहा है कि आर्य समाज की प्रगति के लिए आर्य कुमार सभाओं व आर्य वीर दलों के संगठन की प्रत्येक स्थानों पर नितान्त आवश्यकता है।

—आर्य कुमार सभाओं को सुदृढ़ बनाने के लिए भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् ने हर प्रान्त में कमिश्नरी आर्य कुमार सम्मेलन करने तथा धार्मिक परीक्षाओं पर बल देने का निश्चय किया है। इस दृष्टि से १९ १० ५८ को बरेली में रुहेलखण्ड कमिश्नरी आर्य कुमार सम्मेलन श्री ईश्वरदयालु आर्य मुख्यउपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की अध्यक्षता में होगा। बरेली, बदायूं पीलीभीत, शाहजहांपुर, रामपुर, मुरादाबाद, बिजनौर जिले के आर्यकुमार प्रतिनिधि वहां अवश्य पधारें। धार्मिक परीक्षाओं के लिए परीक्षा मन्त्री, भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद, आर्यसमाज अमरोहा, मुरादाबाद को लिखें।

—राम अवतार

अन्यान्य समाचार—

—आ॰स॰ रेलवे रोड अम्बाला नगर के ५५ वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर एक प्रस्ताव द्वारा श्री विष्णु प्रभाकर की लिखी पुस्तक 'निशिकान्त' नामक उपन्यास में आर्यसमाज के सिद्धान्त अछूतोद्धार तथा शुद्धि आन्दोलन आदि पर किये गये उपहास के लिए रोष और विरोध प्रकट किया गया साथ ही स्वामी दयानन्द पर किये गये घृणित आरोपों की निन्दा की गई। पंजाब विश्व विद्यालय से आग्रह किया गया कि वह इस पुस्तक को बी॰ए॰ की परीक्षा से हटा दे और भविष्य में ऐसी भावनाओं को प्रोत्साहन देकर आर्यसमाज को नीचा दिखाने का प्रयास न करे।

—महेन्द्रनाथ

—यमुना नगर अम्बाला में २६ सितम्बर से लगातार बारिश हो रही है, चारों ओर पानी भर गया है। अत: २३ से २७ अक्टूबर तक लगने वाला वैदिक साधनाश्रम यमुना नगर का शिविर स्थगित कर दिया गया है।

—एक भूली हुई १० वर्षीय हिंदू बालिका को बहका कर एक मुसलमान स्त्री अपने घर लिए जा रही थी जिसे छुड़ाकर श्री रामसुन्दर प्रसाद ने मन्त्री आ॰ स॰ मगहर बस्ती को सौंप दिया। ३४ दिन के बाद लड़की के चाचा जी समाज में आये और सही प्रमाण प्राप्त करके उन्हें लड़की दे दी गयी। लड़की ग्राम कटसहरा, जिला गोरखपुर की थी। —मन्त्री

—आ॰ स॰ दीवान हाल दिल्ली में २८ सितम्बर को स्व॰ श्री लाला दीवानचन्द जी का जन्म दिवस महाशय कृष्ण जी की अध्यक्षता में मनाया गया। दिवंगत लाला जी की पत्नी श्रीमती प्रकाशवती जी ने आ॰ स॰ दीवान हाल को १०००) दान दिया। डा॰ गोकुल चन्द नारंग, पि॰ ईश्वरदास, प॰प्रकाशवीर शास्त्री, प॰ शिवदत्त शास्त्री, श्रीचरणदास पुरी लाला हंसराज गुप्त तथा महाशय कृष्ण आदि महानुभावों ने स्व॰ लाला जी के जीवन पर प्रकाश डाला तथा उनके उदार कार्यों की प्रशंसा की।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती पृष्ठ

आर्यमित्र आर्य जगत् का गौरव है

आर्यमित्र हीरक जयन्ती के विषय में श्री नरदेव जी शास्त्री के सुझाव दिनांक २१ सितम्बर ५८ के आर्यमित्र में पढ़ें। मैं आर्यमित्र को बचपन से ही देखता आया हूं। उस समय के इसके आकर्षक पृष्ठ और सुन्दर लेख मेरी बचपन की स्मृतियों से सम्बन्ध रखते हैं। मैं आर्यमित्र को आर्यजगत् का एक मात्र पत्र समझता रहा हूं। यह प्रसन्नता की बात है कि आर्यमित्र ने पिछले ६०वर्ष बड़े गौरव से बिताये हैं। शास्त्री जी ने हीरक जयन्ती पर अपने बड़े व्यापक विचार रखे हैं उनकी सराहना करते हुए, उन्हीं में मैं निम्नलिखित कड़ियाँ जोड़ देना चाहता हूं—

(१) महर्षि दयानन्द से आज तक आर्यसमाज के नेतृत्व से जनता को अवगत कराया जावे और नेताओं एवं कर्णधारों के चित्र भी प्रकाशित किये जावें।

(२) आर्य समाज की स्थापना के बाद से आर्य जगत ने कब कब करवटें बदलीं और आर्यमित्र ने इन घटनाचक्रों में किस प्रकार हाथ बंटाया, संक्षिप्त इतिहास दिया जावे।

(३) देश के या कम से कम उत्तर प्रदेश की सभी आर्य समाजों से निवेदन किया जाय कि वह उस दिन आत्म चिन्तन करें और भविष्य में आदर्श संस्था के प्रति निष्ठा की प्रतिज्ञा लें।

(४) महर्षि ने जिस-जिस दिशा में सुधार के लिए कदम बढ़ाया उन सभी विषयों पर कम से कम एक-एक विद्वत्तापूर्ण लेख छापे जांय-विषय चाहे राजनैतिक हो, सामाजिक अथवा धार्मिक। अछूतोद्धार, बाल-सुधार अथवा शिक्षा-सम्बन्धी लेख भी प्रकाशित किये जावें।

(५) अन्त में यह भी न भूलें कि आर्यसमाज की दृष्टि में महिलाओं का भी कम महत्व नहीं, अतः उनकी सामग्री को भी प्रकाशित किया जावे तथा इस बृहत्काय विशेषांक में कम से कम एक चौथाई सफे महिला जगत् के लिए निर्धारित रखे जांय।

जयन्ती के पश्चात्

विशेषांक के अतिरिक्त स्थाई रूप में मेरा सुझाव है कि आर्यमित्र को अधिक आकर्षक बनाया जावे और ग्राहकों की संख्या बढ़ाई जावे। मैं निम्नांकसुझाव दे रहा हूं—

(१) पृष्ठों की संख्या अधिक की जावे और अधिक से अधिक पाठ्य सामग्री पाठकों को पहुंचाई जावे फिर चाहे मूल्य ४ आने कर दिया जावे।

(२) आर्य कुमार तथा महिला जगत् के लिये भी अधिक स्थान दिया जाना उचित है।

(३) एक पृष्ठ पाठकों के शंका समाधान के लिए भी रखा जावे।

(४) विभिन्न समाजों की ही नहीं प्रान्तों की समाजों की भी प्रमुख सूचनायें सक्षेप में 'आर्य जगत्' के पृष्ठ में दी जावें।

उपर्युक्त सुझाव मैंने इसी कामना से दिये हैं कि हमारा आर्यमित्र सदैव की भांति युगों तक आर्य जगत् का पथ प्रदर्शन करता रहे और आज के अन्धकार और भ्रमपूर्ण अवस्था में आर्य जगत को प्रकाश देवे।

—लक्ष्मीकान्त गुप्त बी॰ए॰
अन्तरङ्ग सदस्य आ॰ स॰ कोटा

आर्यमित्र हीरक जयन्ती विशेषांक के लिए सुझाव

२४ अगस्त ५८ के आर्यमित्र में आर्यमित्र हीरक जयन्ती की घोषणा पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई। सभी आर्य बन्धुओं का कर्तव्य है कि अधिकाधिक सहयोग प्रदान कर मित्र की जयन्ती तथा अन्य आयोजनों को सफल बनावें। हम सबका प्रयत्न ऐसा होना चाहिए कि सभा को किसी प्रकार की आर्थिक हानि भी न उठानी पड़े और सभी कार्यक्रम सफलतापूर्वक सभा के गौरवानुरूप सम्पन्न हो जाय।

आर्यमित्र विशेषांक (हीरक जयन्ती अंक) की रूपरेखा के सम्बन्ध में मेरे सुझाव निम्न प्रकार हैं।

सुझाव

(१) इस अवसर पर आर्यमित्र के विशेषांक में आर्यमित्र का पूर्ण इतिहास, अवनति तथा उन्नति सहित अवश्य दिया जाय। पत्र के मौजूदा ग्राहकों की सूची दी जावे तथा पिछले ६० वर्षों मे प्रतिवर्ष कितनी ग्राहक सख्या रही इसको भी स्पष्ट किया जावे।

(२) आर्यमित्र मे जिन महानुभावों का तन, मन अथवा धन से अत्यधिक सहयोग रहा हो उनका विवरण अवश्य दिया जाय।

(३) जिस सज्जन ने आर्यमित्र के हेतु आज तक सबसे अधिक आर्थिक सहयोग स्वयं के धन से तथा जिस सज्जन ने सबसे अधिक धन संग्रह करके दिया है, उनके नाम सचित्र पत्र में दिये जांय।

(४) विदेशों मे आर्यमित्र के प्रथम ग्राहक का नाम तथा परिचय दिया जाय।

(५) आरम्भ से आज तक के सम्पादकों, अधिष्ठाताओं के नाम संक्षिप्त परिचय सहित सचित्र दिये जांय।

(६) आर्यसमाज के सम्पूर्ण आन्दोलनों का परिचय दिया जाय।

(७) आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत संचालित सम्पूर्ण शिक्षा संस्थाओं, कालेजों अथवा पाठशालाओं का संक्षिप्त विवरण हो। आर्य समाज की शिक्षा नीति के सम्बन्ध में कुछ आवश्यक लेख जो कि उच्च श्रेणी के हों अवश्य दिये जाँय।

(८) देश का महान् आत्माओं के सदेश जो कि समय समय पर प्राप्त होते रहे है, दिये जाँय।

(९) आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, सार्वदेशिक सभा, दोनों सभाओं का स्पष्ट और सूक्ष्म परिचय पूर्ण विवरण सहित अवश्य दिया जाय।

(१०) आर्य समाज की विदेश-प्रचार व्यवस्था और स्थिति सम्बन्धी लेख भी हों।

(११) आर्य समाज की भावी नीति और कार्यक्रम की रूपरेखा स्पष्ट करने वाले लेख भी हों।

—इन्द्र वर्मा एम॰ ए॰
मन्त्री आ॰ स॰ रामनगर, निरीक्षक
नैनीताल अल्मोड़ा

सभा की योजनाओं के लिए महात्मा आनन्द स्वामी द्वारा १००) का दान

उत्साहवर्धक पत्र और प्रेरणाप्रद सन्देश

★

श्रद्धेय महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती तपोवन देहरादून ने सभा की चार योजनाओं की महत्ता व आवश्यकता पर बल देते हुए तथा इनकी सफलता की कामना करते हुए सहायता रूप में १००) का दान भेजा है। आर्य जनों के उत्साह के लिए स्वामी जी महाराज का पत्र हम यहाँ सधन्यवाद प्रकाशित कर रहे हैं।

—सम्पादक

आज से पूरे बावन वर्ष पूर्व की बात है जब मैं १९०६ में आर्य गजट लाहौर का उप सम्पादक बना था तो कार्यालय में जो पत्र आते थे, उनमें से सबसे पूर्व मैं आर्यमित्र ही को पढ़ता था, तब मेरी आयु २३ वर्ष की थी, आर्यसमाज के लिए कार्य तथा सेवा करने की नई उमगें मेरे अन्दर पनप रही थीं, आर्यमित्र से मुझे नई प्रेरणा प्रति सप्ताह मिलती थी, और उनके अनुसार मैं अपनी लेखनी चलाता था, तब से निरन्तर मुझे आर्यमित्र से प्यार रहा, अब जब मैं वैदिक आश्रम ऋषिकेश पहुँचा तो ज्ञात हुआ कि आर्यमित्र की 'हीरक जयन्ती मनाने की तय्यारी हो रही है और इसके लिए जो योजना बनाई गई है वह भी बहुत लाभदायक है। आर्यसमाज के दो माननीय वृद्ध कर्णधार श्री पं॰ गङ्गाप्रसाद जी रिटायर्ड जज तथा श्री प॰गंगाप्रसाद उपाध्याय एम.ए. के लिए अभिनंदन ग्रन्थ तैयार होंगे, सुन्दर नया साहित्य भी बनेगा। और आर्यमित्र को अधिक उपयोगी बनाया जायेगा, परन्तु माया के इस युग मे धन के बिना कोई योजना सफल नहीं होती, अतएव हर एक प्रतिनिधि सभा का हर एक आर्यसमाजी का यह कर्तव्य है कि इसमें सहायक बनें। मैं एक नन्हा सा सन्यासी हूं तो भी एक सौ रुपया इन सुन्दर योजनाओं को फल बनाने के लिए अर्पण करता हूं। आर्यमित्र की ६० वर्षीय सेवायें इतनी महान् हैं कि उनके लिए कुछ तो कृतज्ञता प्रकट करनी ही चाहिये। ऐसे समयों पर ही दुनियां देखती है कि यह समाज अपने सेवकों के लिए कितनी श्रद्धा प्रकट करता है। इस हीरक जयन्ती को सफल बनाने के लिए सबको जुट जाना चाहिए। पं॰ गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय के सारे पुस्तकों की एक पूरी सूची आर्यमित्र में प्रकाशित कर देनी चाहिए, और भारत तथा विदेश की लगभग चार हजार आर्य समाजें इन तमाम पुस्तकों का एक एक सैट खरीद लें, जो आर्य समाज इतनी शक्ति नहीं रखती, उनके लिए सारा सैट आधी कीमत पर दिलाने की व्यवस्था कर दी जाये। आर्यमित्र का एक मासिक संस्करण भी "कल्याण" के स्तर पर निकलने लगे। भगवान आर्यों में नये उत्साह उल्लास तथा श्रद्धा भक्ति का संचार करें। १००) अलग ड्राफ्ट द्वारा भेज रहा हूं।

—आनन्द स्वामी सरस्वती
तपोवन—देहरादून

वेदोपदेश

ओम् कस्त्वा युनक्ति सत्वा युनक्ति कस्मै त्वा युनक्ति तस्मै त्वा युनक्ति। कर्मणे वां वेषाय वाम् ॥ यजु० १।६

तुमको कौन नियुक्त करता है ? वह ईश्वर तुम्हारो नियुक्त करता है। वह तुमको किसके लिए नियुक्त करता है ? वह तुमको इस व्रत के लिए नियुक्त करता है। तुम दोनों (ऋत्विक और यजमान) को कर्म (यज्ञ) तथा व्याप्ति के लिए नियुक्त करता है।

आर्यमित्र

लखनऊ—१९ अक्टूबर १९५८, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०५९

विजयदशमी पर्व

विजयदशमी आर्य जाति का एक प्रमुख त्योहार है जिसे सर्व साधारण जनता दशहरा के नाम से पुकारती है। सम्पूर्ण देश के कोने कोने में यह पर्व बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है और महीनों पूर्व से ही इसकी तैयारियां होने लग जाती हैं। इस वर्ष भी २२ अक्टूबर को यह पर्व सारे भारतवर्ष में मनाया जायेगा।

यह वीरता, उल्लास और प्रसन्नता का एक पर्व है जिस दिन विशेषकर क्षत्रिय पर आम तौर से सभी भारतवासी अपने अन्दर जोश और स्फूर्ति का अनुभव करते हैं। प्राचीन काल में इसी दिन भारतवासी अपने हथियारों तथा अस्त्र शस्त्रों को साफ किया करते थे और इसका प्रदर्शन किया करते थे। आज भी हम देखते हैं कि दशहरे के दिन प्रायः अधिकांश स्थानों पर मलयुद्ध या शस्त्र प्रदर्शन का आयोजन होता है। इस प्रकार यह प्राचीन परम्परा किसी न किसी रूप में जीवित है।

दशहरा का सम्बन्ध राम रावण युद्ध से भी जोड़ा जाता है जिसका आधार लेकर उत्तर भारत के अधिकांश नगरों में रामलीला का आयोजन होता है पर इस बात को सत्यता पर अभी हम कोई प्रकाश डालना नहीं चाहते किन्तु आज भी हर बड़े शहरों में 'रामलीला ग्राउण्ड' का होना इस बात का प्रमाण है कि हिन्दू जाति इस पर्व को अपने जीवन का एक अङ्ग मानती है।

इस पर्व की और भी विशेषतायें हैं जिनकी चर्चा न कर हम अभी यह कहना चाहेंगे कि प्रत्येक भारतीय त्योहारों का मुख्य उद्देश्य है पारस्परिक मेल-मिलाप, भेद भाव दूर करना एक दूसरे की सुख दुख में सहायता करना, बन्धुत्व की भावना का प्रचार करना तथा राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ रखना। यही कारण है कि आज भी कुछ पर्वों पर मेला का रूप हो जाता है। वास्तव में विजयदशमी का यही उद्देश्य है और समस्त भारतवासियों को भी ऐसा ही समझ कर यह पर्व सोत्साह मनाना चाहिए। इन पर्वों को मना कर ही आर्य जाति करोड़ों वर्षों तक जीती आई है।

अपने कर्तव्य का निर्णय कीजिये

आर्यमित्र के पाठक हीरक जयन्ती निधि के सम्बन्ध में सभाधिकारियों के कार्यकलापों और प्रगतियों से परिचित ही हैं। श्री बाबू कालीचरण जो आर्य उप प्रधान सभा योजना निधि के लिये प्रान्त के तूफानी दौरे पर निकल चुके हैं। आगरा, फर्रुखाबाद, रामनगर, काशीपुर हलद्वानी (नैनीताल) आदि स्थानों पर सितम्बर के अन्तिम सप्ताह में वे दौरा कर चुके हैं। यह अंक जब पाठकों के सम्मुख होगा तब तक वे अन्य स्थानों पर भी दौरा पूर्ण कर चुकेंगे। वे जहाँ भी पहुंचे आर्य बन्धुओं ने उनका और योजना का हार्दिक स्वागत किया है और सहायता के आकर्षक अभिवचन दिये हैं। हम उन सभी समाजों और आर्य बन्धुओं का धन्यवाद करते हैं जो किसी भी प्रकार योजना की सफलता में सहयोग दे और दिला रहे हैं। साथ ही हम प्रान्त के अन्य सभी आर्य नर नारियों से सामह अनुरोध करना चाहते हैं कि इस योजना की सफलता के लिए सब लोग कटिबद्ध हो जांय। आर्य समाज का पुराना और हिन्दी आन्दोलन तक का इतिहास इस बात का साक्षी है कि आर्यों की कोई योजना अपूर्ण नहीं रहती असफल नहीं होती। इस योजना के सम्बन्ध में भी हमें इसी भावना से कार्य करना होगा, उत्तर प्रदेश के आर्यों का आयोजन उत्तर प्रदेश के आर्यों के पारस्परिक सहयोग और उत्साह से ही पूर्ण होना चाहिए इसी में उत्तर प्रदेश का गौरव है, सभा का सम्मान है और इसी में आर्य जगत के नेतृत्व का गौरव सन्निहित है।

सभा की योजना के अन्तर्गत जिन महान् दायित्वों की पूर्ति होनी है योजना की सफलता से आर्य समाज में जिस उत्साह और प्रेरणा का प्रवाह प्रवाहित होना है उसकी कल्पना कीजिये और उसकी सफलता के लिए अपने अमूल्य सहयोग का दायित्व पूर्ण कीजिए।

आर्य समाज के प्रगति रथ को गति देने और ऋषि के प्रति प्रत्येक आर्य अपना कर्तव्य कहाँ तक पूर्ण कर रहा है, हीरक जयन्ती इस बात का निर्णय करने आई है, परीक्षा लेने आई है। आर्य समाज के प्रचार साधनों की सबलता विद्वानों के प्रति श्रद्धा की भावना और साहित्य निर्माण व प्रचार की सफलता, विरजानन्द स्मारक के रूप में प्राचीन गुरु शिष्य परम्परा के आदर्श का समर्थन, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रति अपनी आस्था, इस प्रकार सभी बातें इस हीरक जयन्ती कार्यक्रम के अन्तर्गत आ गई हैं। हमें यह सिद्ध करना है कि हम अपने कार्य क्रम की सफलता के लिए प्रचार युग के अनन्यतम साधन पत्र के रूप में 'आर्यमित्र' को आदर्श उच्चकोटि का पत्र बनाये रखने में समर्थ हैं। हमे यह भी सिद्ध करना है कि हम अपने मनीषी कर्मठ विद्वानों का समादर करना भी भली भांति जानते हैं और गुरुओं के प्रति भी हमारी श्रद्धा किसी से कम नहीं है, हम गुरुडम के विरोधी हैं, आदर्श गुरुओं के तो सच्चे उपासक हैं।

अपनी योजनाओं, अभिलाषाओं और स्वप्नों की सफलता के लिए हमें त्याग मार्ग पर चलना होगा। हम सभी आर्य बन्धुओं से अपील करते हैं, बुद्धि देने वाले विचार और सुझाव दें, तन देने वाले अपना समय दान करें और धन वैभव वाले अपनी अर्जित धरोहर को पुण्य कार्य के लिए समर्पित करें। जो जिस योग्य है वह अपना कर्तव्य पालन करने में जुट जाय, योजना सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई रक्खी है। आशा है प्रान्त के आर्यजन अपने कर्तव्य का निर्णय करेंगे।

ऋषि की राष्ट्र भक्ति पर अनुचित आक्षेप

साहित्य समाज का दर्पण होता है और साहित्यकार उस दर्पण के निर्माता, विचार स्वातन्त्र्य साहित्य का प्राण है। इस स्थिति में किसी साहित्यकार को अपने विचार साहित्य में स्थापित करने का पूर्ण अधिकार होता है और होना चाहिए परन्तु साहित्यकार इतिहास के व्यक्तियों को अपनी भावनाओं के अनुसार परिवर्तित नहीं कर सकता, न उसका चित्रण अपने विचारों के अनुसार किया जा सकता है और न उस पर लेखक के विचारों का विरोधी होने का दोष थोपा जा सकता है।

हिन्दी के साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर महोदय ने अपने उपन्यास 'निशिकान्त' में ऋषि दयानन्द जैसे ऐतिहासिक व्यक्ति के विषय में गलत वर्णन प्रस्तुत कर उनके व्यक्तित्व का अपमान किया है। उन्होने लिखा है—

'अंग्रेज सरकार के आदेशानुसार स्वामी दयानन्द ने हिन्दू धर्म को भ्रष्ट किया और उन्हें जोधपुर में इसलिए विष दिया गया कि वे अपने अंग्रेज आकाओं से मुंह मोड़ चुके थे।'

लेखक ने आर्य समाज के शुद्धि, हरिजनोद्धार और विधवा आन्दोलनों का भी उपहास किया है। हो सकता है इन कार्यों के प्रति लेखक अपने विचार स्वातन्त्र्य अधिकार का संरक्षण प्राप्त करलें परन्तु एक क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी ऐतिहासिक व्यक्ति पर गलत और लज्जाजनक आरोप लगाने के अपराध से वे कदापि मुक्त नहीं हो सकते।

जिस महान् व्यक्ति की राष्ट्रीयता के सम्मुख अरविन्द, टैगोर, गांधी, सुभाष, पटेल, आजाद, नेहरू सभी नतमस्तक हैं उसके सम्बन्ध में उपर्युक्त शब्द लिखना स्वस्थ मस्तिष्क की सूचना नहीं देते।

लेखक ने जो कुछ किया किया, पंजाब विश्वविद्यालय को क्या हो गया है जो उसने इस पुस्तक को बी० ए० की परीक्षा के पाठ्यक्रम में निर्धारित कर रक्खा है।

हम विश्वविद्यालय के अधिकारियों से मांग करेंगे कि वे अविलम्ब इस पुस्तक को पाठ्यक्रम से निकाल दें और हम लेखक महोदय से उपर्युक्त शब्दों को पुस्तक से पृथक करने और ऋषि दयानन्द का व्यक्तित्व शुद्ध रूप में चित्रित करने की मांग करते

(शेष पृष्ठ ४ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

हैं। आशा है समय रहते इस प्रकार की अशुद्धि का परिमार्जन कर लिया जायगा और विरोध का और अधिक मौका न दिया जायगा। लेखक आर्य समाज से मतभेद रखने में स्वतन्त्र हैं और स्वस्थ मतभेद का हम सदैव आदर करते हैं और करेंगे पर महान् और आदरणीय व्यक्तियों के चरित्रों पर लांछन कभी भी किसी भी दशा में सह्य नहीं हो सकता।

डा० बाबूराम सक्सेना पर आक्रमण एक निन्दनीय कृत्य

सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री डा० बाबूराम सक्सेना एम० ए० डी० लिट् अध्यक्ष संस्कृत विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय पर अकस्मात आक्रमण कर आहत कर दिया गया और इस समय तक वे अस्वस्थ हैं। एक उच्चकोटि के सम्मानित विद्वान् प्रसिद्ध आर्य समाजी व्यक्ति होते हुए भी जब उनके प्रति ऐसा क्रूर व्यवहार हो सकता है तब सुरक्षा की भावना खतरे में है। हम आदरणीय डा० साहब पर हुए आक्रमण की तीव्र निन्दा करते हैं और रोष प्रगट करते हुए ऐसे दुष्कृत्य का साहस करने वालों को कठोर दंड दिए जाने की मांग करते हैं।

आदरणीय डा० साहब के दुख में आर्य जगत् एवं मित्र परिवार की ओर से सहानुभूति प्रगट करते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु उन्हें शीघ्र स्वस्थ करें।

स्व० श्री केदारनाथ जी भट्ट

हिन्दी का दुर्भाग्य है कि उसके उच्चकोटि के विद्वान् और सेवक शनैः शनैः हमारे मध्य से उठते जाते हैं। स्वर्गीय रूपनारायण पांडेय का वियोग भी अभी हम सह नहीं पाये थे कि हम से पण्डित केदारनाथ जी भी विलग हो गये। उनके जीवन में एक अजीब मस्ती थी, निश्चिन्तता थी और साहित्य में सरल एवं निर्भीक समालोचना के वह साकार स्वरूप, बनकर हमारे बीच रहे, उन्होंने निस्वार्थ भाव से आलोचना कर नीर-क्षीर विवेक के आदर्श का पालन किया। हिन्दी सेवा के साथ उनका अभिन्न पारिवारिक सबंध था जिसे उन्होंने अन्त तक निभाया 'नोंक झोंक" के रूप में हिन्दी में हास्य रस की अभिवृद्धि करते हुए उन्होंने हिन्दी में हास्य रसाभाव की पूर्ति में सहयोग दिया। आगरा की प्रत्येक साहित्यिक गतिविधि में उनका सदैव सहयोग रहा। आर्यमित्र परिवार के साथ जब वह आगरा में प्रकाशित होता था तब और उसके बाद आज तक भी उनका बड़ा स्नेहपूर्ण सम्बन्ध रहा, मित्र की उन्नति के लिए वे सदैव अपने सुझाव वर्तमान सभा प्रधान श्री पं० हरिशंकर जी द्वारा सभाधिकारियों तक पहुंचाते रहे।

वे आर्यसमाजी न थे फिर भी किसी भी आर्य समाजी से कम मित्र के शुभचिन्तक नहीं थे उनकी एक ही अभिलाषा थी हिन्दी की वास्तविक उन्नति हो।

मित्र परिवार के परम हितैषी भट्ट जी को खोकर हम अत्यधिक दुखी हैं पारिवारिकों के प्रति समवेदना प्रकट करते हुए हम प्रभु से दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करते हैं। हिन्दी इतिहास में भट्ट जी अपनी सेवाओं के लिए सदैव स्मरणीय रहेंगे।

कन्या गुरुकुल सासनी अलीगढ़ पर वर्षा का दैवी प्रकोप

कन्या गुरुकुल सासनी (अलीगढ़) आर्य समाज की प्रसिद्ध की शिक्षा-संस्था है जो गत २८ वर्ष से शिक्षा क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य करती रही है उत्तर प्रदेश से बाहर की आर्य जनता की भी इस संस्था द्वारा सेवा होती रही है और हो रही है। निःशुल्क शिक्षा के प्रबन्ध के लिए ही संस्था के अधिकारी धन येन केन प्रकारेण संग्रह कर पाते हैं परन्तु इस वर्ष वर्षा के दैवी प्रकोप से गुरुकुल की पुरानी चार दिवारी और भण्डार की इमारत गिर चुकी है जिस कारण कन्याओं के संरक्षण और भोजन व्यवस्था में अत्यधिक कठिनाइयां हो रही हैं। सभी आर्य बन्धुओं, दानी महानुभावों आर्य समाजों से हम अपील करेंगे कि इस दैवी संकट में संस्था की सहायतार्थ धन दें और दिलायें। इस प्रकार के दैवी संकटों में हम परायों की भी सहायता करते हैं तब अपनी संस्थाओं की तो सहायता हमें करनी ही चाहिए आशा है आर्यजन गुरुकुल की सहायता कर संस्था के संकट को दूर करेंगे।

श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार को मंगलाप्रसाद पुरस्कार

हिन्दी के उच्चतम पुरस्कार मंगलाप्रसाद पुरस्कार की घोषणा इस वर्ष श्री प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार के पक्ष में की गई। इस उच्च पुरस्कार के विजेता के रूप में हम उनका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक तथा पूर्व मुख्याधिष्ठाता होने के अतिरिक्त वे उच्चकोटि के विद्वान हैं और उन्होंने वैदिक साहित्य की व्याख्या बड़ी विद्वत्ता के साथ हिन्दी भाषा में प्रस्तुत की है। आर्य विद्वान के इस सम्मान से हम अपने को गौरवान्वित समझते हैं, आर्य समाज के गौरव में इस कार्य द्वारा वृद्धि हुई है। मंगलाप्रसाद पारितोषिक पाने वाले बहु संख्यक आर्य विद्वान ही हैं, उस परम्परा में प्रो० साहब ने सम्मानित होकर एक कड़ी और जोड़ी है। मित्र परिवार की ओर से हम आदरणीय आर्य विद्वान् को इस सफलता के लिए हार्दिक बधाई देते हैं।

आर्यवीर दल और विजय दशमी पर्व

आर्य वीर दलों के लिए विजय दशमी पर्व का महत्व अन्य सभी पर्वों से बढ़कर है क्योंकि यह आर्य वीरों का ही पर्व है। इस वर्ष भी समस्त आर्य वीर दलों को सार्वदेशिक आर्य वीर दल की ओर से यह आदेश दिया जा चुका है कि वे २२ अक्टूबर को सोत्साह सम्मिलित रूप से विजय दशमी पर्व मनाने तथा राष्ट्रगान, ध्वजारोहण, व्यायाम प्रदर्शन, प्रतिज्ञा दोहराना, दल सहायता, पुरस्कार वितरण, अवलगाम, विशेष ओजों के भाषण आदि का प्रबन्ध करें। इस पर्व पर ही आर्यवीर व्यक्तिगत और सामूहिक रूप में अपने गत वर्ष के कार्य पर दृष्टिपात करके नये वर्ष का कार्यक्रम बनाते हैं। इस पर्व से ही सदस्यता आन्दोलन प्रारम्भ होता है और दल की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए दल सहायता होती है। दीक्षित और पुराने सभी आर्यवीर अपनी प्रतिज्ञा को दुहराते हैं और दल की केन्द्रीय शक्ति को सुदृढ़ करने की योजनाएं बनाते हैं।

आज आर्यवीर दलों के सुदृढ़ संगठन की कितनी आवश्यकता है यह बात किसी से छिपी नहीं है। और दल को सुदृढ़ करने का समय भी अब आ गया है। आर्यवीर दलों को चाहिए कि सोत्साह इस पर्व को मनायें और नयी प्रेरणा लेकर फिर से अपने महान कार्य में जुट जांय। साथ ही आर्य समाजों को भी चाहिए कि वह हर संभव उपाय से आर्यवीर दलों की सहायता करें तथा ऐसा प्रयास करें कि इस अवसर पर प्रत्येक समाज में दल की शाखा की स्थापना हो जाय।

कर्मफल अगले जन्म या जन्मों में

[श्री बाबू कालीचरण जी आर्य, उप प्रधान आ० प्र० सभा उ०प्र०]

आदरणीय बाबू जी सामाजिक सघटन कार्यों में अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी वैदिक सिद्धान्तो को आत्म सात करने के लिए 'स्वाध्यायान्मा प्रमद' के ऋषि वाक्यों का पालन करते रहते हैं। कर्मफल के सम्बन्ध मे उन्होंने अपने विचार इस लेखमाला में प्रस्तुत किए हैं। उनके विचारों से सर्वथा सहमत न होने वाले विचारकों को भी अपना पक्ष प्रस्तुत करने का अवसर दिया जायगा और बाद में आर्य विद्वानों की सम्मति से वैदिक पक्ष का निर्णय घोषित किया जायगा। —सम्पादक

(गतांक से आगे)

ऋषि ने आर्योद्देश्य रत्नमाला में जो कर्म की परिभाषा की है वह निम्न लिखित है "जो मन इन्द्रिय और शरीर में जीव चेष्टा विशेष करता है वह कर्म कहाता है जो शुभ, अशुभ और मिश्र भेद से तीन प्रकार का है।"

इसमें शब्द विशेष विचारने योग्य है अर्थात् जो कर्म शुभ, अशुभ, और शुभ अशुभ का मिश्रन न हो वह कर्म नहीं है। जितनी गति मनुष्य करता है उससे यदि किसी का लाभ या हानि नहीं होता तो वह कर्म नहीं है। दूसरे शब्दों में जो कर्म प्रारब्ध न बनाए वह कर्म नहीं है इसके अतिरिक्त जो कर्म भोग के साधन हैं, वह भोगरूपी कर्म हैं यत. भोग बिना कर्म के भोगे नहीं जाते, अतः वह समस्त कर्म जो भोग में साधन हैं जिनसे किसी के शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक उन्नति या अवनति में कोई सहायता नहीं मिली वह कर्म नहीं भोग रूपी कर्म है। एक उदाहरण से स्पष्ट हो जायगा। एक सेठ जिनके पास ऐश्वर्य का कमी नहीं वह सायकाल मोटर मगाकर सवार होकर हवा खाने जाते हैं और १ घटे पश्चात् लौट आए, जाते आते कोई घटना नहीं घटी, परन्तु इस भ्रमण में आनन्द या सुख का अनुभव किया यह समस्त कर्म उनका भोग रूपी कर्म हुआ समस्त भोग ही था। एक दिन मार्ग में उन्हें एक रोगी मिल गया जिसको अस्पताल जाना था, वहां कोई यातायात का साधन न था, सेठ जी ने अपनी मोटर रुकवाकर उस रोगी से पूछा आपको मेरी सहायता अपेक्षित है उत्तर मिला धन्यवाद ! मैं अस्पताल जाना चाहता हूं। सेठ जी ने उस रोगी को सवार कर अस्पताल पहुचा दिया और उसको १०) भी दिए ताकि वह उससे दवादि ले सके लौट कर घर आए। आज और दिन से अधिक प्रसन्न थे। आज उन्होंने समझा कि मैंने कोई कर्म किया है। अपना भोग भी हुआ और नवीन कर्म भी, यह कर्म उनका प्रारब्ध बनाएगा। इस अन्तर के भेद को न समझकर भी कह देते हैं कि मैंने रोटी खाई पेट भर गया वह यह नहीं समझते कि रोटी खाना भोगरूपी कर्म है अर्थात् रोटी खाकर पेट भरना भोग ही है कर्म कुछ नहीं। इसी प्रकार धन प्राप्त करना उसके साधन भिन्न भिन्न भोग में आते हैं वह सब भोग रूपी कर्म हैं, साधन तो बहुत जुटाते हैं परन्तु ऐश्वर्य (धनादि) उनको प्राप्त नहीं होता। आप लिखते हैं अनाथ-कगाल, सुखी-दुखी कर्मों का ही फल है, देखो सत्य धर्म विचार पृष्ठ ८४७, देखो सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ३६८ "बिना पाप के दारिद्रादि दुःख और बिना पूर्व संचित पुण्य के राज्य धनाढ्यता उसको क्यो दी, इनसे स्पष्ट है कि धनाढ्यता व दरिद्रता पूर्व जन्म के संचित कर्मों के बिना सम्भव नहीं मैंने ऊपर बतलाया है कि कर्म क्या है? भोग क्या है? यदि एक मनुष्य अपने ऐश्वर्य को प्राप्त करता साधन जुटाता है तो कर्म क्या हुआ जो प्रारब्ध बनाएगा। कर्म फल तो यह स्वयं है कि धन प्राप्त करे यह भोग प्राप्त करना भी यदि कर्म हो गया तो सुख व दुख भोगना भी आप कर्म कहेगे क्योकि यह भी तो स्वतन्त्रता पूर्वक विचार कर भोगा जाता है।

यदि मान भी ले कि इस जन्म का कर्म धन प्राप्ति के लिए किया हुआ धन दिलाता है और धन प्राप्ति का साधन और धन मिल जाना कर्म फल है तो जैसा मैंने लिखा है कि कर्म फल का समवाय सम्बन्ध होता है तो ससार के प्रत्येक व्योपारी को जो भी साधन जुटाता है मालदार हो जाना चाहिए, समस्त कर्मचारी जो समान रूप से परिश्रम करते है समान मालदार हों, जितने वकील हैं सबकी दुकान एक सी चले, साधन समान ज्ञान समान, परन्तु फल इतना असमान कि कोई सीमा नहीं, एक करोड़ों का बन जाय, दूसरे को रोटी भी न मिले यदि कर्मफल था तो यह भेद क्या? केवल इसलिए कि यह भोग है जो पूर्व जन्म का है, पूर्व जन्म के कर्म भेद इस जन्म मे भोगों मे भेद उत्पन्न करेंगे ही इसमें कुछ सन्देह नहीं, भोग का कर्म मान लेने से सिवाय सिद्धांत हानि के लाभ नहीं। एक व त विचार करने की और भी है, राज्य और धनाढ्यता शुभ कर्म का फल है तो आज देश में भ्रष्टाचार और ४२० करने वाले जो महापाप कर रहे हैं यहां तक कि दवाओं में भी मिलावट कर रहे हैं वह मालदार कैसे, रिश्वत लेने वाले लाखों के मालिक हैं वह कैसे, क्या यह भी सिद्धान्त हो गया है कि अशुभ कर्म का फल सुख और धनाढ्यता होगा, अतः किसी प्रकार विचारें, यह मानना ही पड़ेगा। युक्ति यही कहती है, प्रमाण यही कहते हैं कि पूर्व जन्म के कर्मों का फल इस जन्म मे और इस जन्म के समस्त कर्मों का फल अगले जन्म व जन्मो मे होता है।

वेदवाणी मे अपनी पुष्टि मे योग का एक सूत्र उपस्थित किया है मैं भी उसको अपनी पुष्टि मे उपस्थित करता हूं सूत्र यह है "क्लेश मूलः कर्माऽशयो दृष्टा दृष्ट जन्म वेदनीयः जिसके स्पष्ट अर्थ हैं कि कर्म के २ फल हैं, एक कर्म प्रभाव दूसरा कर्म फल पहिला इस जन्म में दूसरा अगले में—

दूसरा सूत्र जो उपस्थित किया है वह यह है—

सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगः

अर्थ कर्मों के विपाक तीन जाति (योनि) आयु, भोग जो इस जन्म मे असम्भव सब प्रथम विपाक में जाति वह कितने दिन इस ससार में रहेगी आयु हुआ उसमे क्या-क्या सुख दुःख भोगने का है यह भोग, आदि मरकर ही मिलेगी कभी किसी ने न देखा न सुना होगा कि इस ही जन्म मे मनुष्य घोड़ा या घोड़ा मनुष्य बन गया हो।

लेख मे पुनः उनही जैसी बातो को दोहरा दिया, कृषि एक कर्म है अन्न का उत्पत्ति फल है, चोरी एक कर्म है, सजा उसका फल है उत्तर पहिले समझा कर लिख चुका हूं पुनः लिख दूं, यदि कृषि और चोरी कर्म हैं और अन्न की उत्पत्ति तथा सजा उनका फल हैं तो अनिवार्य रूपेण समस्त कृषकों के घर समान अन्न आता और दण्ड के समस्त चोर पकड़े जाकर सजा पाते क्योंकि कर्म का फल लाजमी है कोई कर्म फल से बच नहीं सका। अतः कृषि अपने भोग प्राप्त करने का साधन है, भोग रूपी कर्म है भोग जितना भाग्य में होता मिलता है, नहीं होता नहीं मिलता चोरी कर्म है, भोग प्राप्ति का अनुचित साधन है इससे दूसरे को हानि पहुंचाकर अपना भाग्य प्राप्त करना है, इसलिए साधन भी है कर्म भी है, परन्तु सजा उसका फल नहीं, सजा तो उसके पूर्व जन्म कृत किसी कर्म का फल है और इस जन्म की चोरी रूपी कर्म का फल अगले जन्म में पायेगा अन्यथा यदि इसी चोरी का फल सजा होता तो कोई चोर बिना पकड़े जाने के और सजा पाने से बच न सकता परन्तु अनेक तो पकड़े भी नहीं जाते और अनेक पकड़े जाकर छूट जाते हैं, दूसरा विचार फल बिना प्रारब्ध मे आए किसी कर्म का नहीं होता। चोर ने चोरी की मौके पर पकड़ा गया तो क्या, उसी समय प्रारब्ध बन गया और जो चोर पकड़ा नहीं गया उसका प्रारब्ध नहीं बना? दो किसानो ने बीज बोया दोनों के प्रारब्ध बीज बोते समय बन गए या फल मिलते समय बनेंगे या एक का जिसके खेत मे अन्न हो गया तुरन्त बन गया और दूसरे का अगले जन्म में बनेगा। जैसे जो चोर पकड़ा गया उसका तो उसी समय बन गया जो नहीं पकड़ा गया उसका अगले जन्म में अर्थात् भाग्य या प्रारब्ध बनाना भी प्रभू के हाथ मे नहीं। यदि इत्तफाक से घर मे सब लोग जग गए। सिपाही मौके पर आ गए तो परमात्मा ने भाग्य या प्रारब्ध बना दिया अन्यथा नहीं बनाया या नहीं बना सकता। क्यो साहब चोर पकड़ा भी नहीं गया और ५००००) का धन ले गया यह कर्मफल है या नहीं और आपके लेखानुसार कर्म फल होने से कर्म भी समाप्त हो गया। अगला जन्म या अगले जन्म में भी इसका फल न मिलेगा। क्या ठीक होगा? यह बात बुद्धि की लगती है? नहीं कदापि नहीं, सुनो चोरी कर्म है साधन है कर्म फल अगले जन्म में साधन का प्रभाव इस जन्म मे यदि पकड़ा गया तो पूर्व जन्म के कर्म भोग का और धन प्राप्त हुआ तो भी पूर्व जन्म के कर्म भोग का साधन ही रहेगा। इस जन्म का चोरी रूपी कर्म कभी समाप्त न होगा। अगले जन्म मे आकर भोगना ही पड़ेगा। तब ही कर्म की समाप्ति होगी।

चोर ने चोरी की, पकड़ा गया। यह फल यदि इसी चोरी को मानोगे तो उस नास्तिक के कहने में भी कोई दोष नहीं जो कहता है कि परमात्मा कर्म फल दाता नहीं, शराब पी और नशा हो गया कर्म ने स्वयमेव फल दे दिया। आप भी चोर के तुरन्त पकड़े जाने को कर्म फल मानते हैं नास्तिक भी शराब का नशा फल मानता है यद्यपि आप भी मानते हैं कि "जो फल हम इस जन्म मे भोगते हैं वह सब हमारे पिछले कर्मों से होंगे" अर्थात् कर्म और भाग्य में समय अपेक्षित है। आपका कहना है कि भोग

[शेष पृष्ठ ११ पर]

एक एक व्यक्ति विकास-योजना

[गतांक से आगे]

(लेखक—श्री डाक्टर रघुवीर, संसत्सदस्य)

१५—औद्योगिक संस्थान

छोटी और मध्यम श्रेणी की सौ निर्माणियों के लिए, जिन में पचास से लेकर २०० तक श्रमिक काम कर सकें, भवनों का प्रबन्ध करना होगा। माध्यम रूप से प्रत्येक निर्माणी पचास फुट चौड़ी और ८० फुट लम्बी होगी। सौ निर्माणियों का व्यय (प्रत्येक पर २० सहस्र के अनुसार) होगा। २० लाख रुपये।

१६—उधार देने के लिये अधिकोश (बैंक)

खेती, व्यापार, उद्योग को आवश्यकतानुसार छोटे छोटे उधार देने के लिये अधिकोश की बहुत आवश्यकता होगी। यह उधार प्रायः कुछ मास में ही लौटा दिये जायेंगे। कृषि के उधार खेती पकने पर और व्यापार के उधार माल बिकने पर। २५ लाख रुपये।

१७—अच्छे बीजों के खेत

खेती की उपज को बढाने के लिए किसानों को अच्छे बीज मिलने चाहिए। इस प्रयोजन के लिए प्रत्येक आदर्श नगर में विशेष बीज क्षेत्र लगाये जायेंगे। अधिक से अधिक पांच सौ एकड़। १ लाख रुपये

१८—हलयन्त्र केन्द्र

यन्त्रों को रखने तथा उनकी देखभाल आदि करने की विशेष संस्था होगी। यह संस्था चाहे नगर की हो अथवा व्यक्तिक। इस संस्था में सौ डेढ सौ यन्त्र रहेंगे। ये यन्त्र किसानों को भाड़े पर दिये जायेंगे। भाड़ा न्यूनतम होगा। हल यन्त्रों के प्रयोग से हल गहरा चलेगा और उपज अधिक होगी। जो किसान आज दो एकड़ भूमि को सम्भाल सकता है वह कल दस पन्द्रह एकड़ भूमि सम्भाल सकेगा। किसान का बहुत सा समय बचेगा और वह उस समय को अन्य आर्थिक, सामाजिक और शिक्षा कार्यों में लगा सकेगा।

हल यन्त्र तथा औद्योगिक यन्त्रों का मूल्य धीरे धीरे दिया जाएगा। इस पद्धति से चाहे यन्त्र कुछ महंगे मिलें किन्तु व्यक्तियों पर भार न पड़ेगा। जैसे जैसे यन्त्रों के प्रयोग से आय बढ़ेगी वैसे वैसे आय का विशेष निश्चित अंश मूल्य के रूप में चुकाया जाता रहेगा।

१९—फलोद्यान

हमारे ग्रामीणों को पर्याप्त मात्रा में फल नहीं मिलते। इसलिए प्रत्येक आदर्श नगर की स्थापना के साथ फलोद्यान की स्थापना होगी। इनमें फलों, औषधोपयोगी जड़ी बूटियों, झाड़ियों, लताओं तथा वृक्षों का रोपण होगा। इससे नगर निवासी अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के अतिरिक्त इनको बाहर भेजकर कुछ आर्थिक लाभ भी उठा सकेंगे। ५०० एकड़ २ लाख रु०

२०—जहां भूमि उपजाऊ न हो वहाँ जंगल लगाना चाहिए। जंगल में वे वृक्ष होने चाहिए जो किवाड़, खिड़की, आसन्दीपटल आदि बनाने के काम में आ सकें। जंगलों का सान्निध्य नगर के जलवायु के लिये बहुत उपकारी है। जंगल चाहे ५०० एकड़ का हो चाहे पांच सहस्र एकड़ का, पर होना अवश्य चाहिए। परिणाम के अनुसार १ लाख से दस लाख तक रुपया।

❀ नये घर, नई गलियें और नए नगरों का निर्माण

❀ शिक्षा और चिकित्सा, आमोद तथा प्रमोद

❀ नए उद्योगों में दीक्षा

❀ आय के नए साधन तथा आय की वृद्धि

❀ स्वस्थ और समृद्ध जीवन

ऊपर लिखित समस्त व्यय १८० से २१३ लाख रुपये तक बनता है। सामान्य रूप से हम कह सकते हैं कि आदर्श नगर की स्थापना करने के लिए प्रारम्भिक व्यय दो करोड़ रुपये होगा। इसमें से ८० प्रतिशत रुपया भारतवर्ष में ही रहेगा और जैसे जैसे भारत में यन्त्रों का निर्माण बढ़ता जायेगा वैसे वैसे अधिकाधिक रुपया भारत में ही व्यय होगा। और इसमें से पर्याप्त जनता को श्रम के प्रतिफल रूप में मिलेगा।

प्रतिवर्ष समस्त भारत में यदि साढे तीन सौ आदर्श नगरों की स्थापना की जाय तो सात सौ करोड़ के प्रारम्भिक व्यय से ७ करोड़ दस लाख व्यक्तियों को वर्तमान दुर्दशा से निकाल कर सभ्य नागरिक जीवन में प्रवेश करा दिया जायेगा। १५ सोलह वर्ष में समस्त देश एक नए जीवन स्तर पर आ जाएगा।

पारिवारिक आय और आदर्श नगर निर्माण में प्रत्येक परिवार का योगदान होगा। पांच छः जनों के परिवार में दो तीन काम करने वाले होंगे। चाहे किसी प्रकार का भी कौशलहीन काम क्यों न हो, किसी भी श्रमिक को दो रुपये से न्यून नहीं मिलेगा। इसका अर्थ यह होगा कि प्रत्येक परिवार की जिसमें दो श्रमिक होंगे चार रुपये दैनिक आय होगी। नगर निवेश और गृह निर्माण के होते हुए नगर के प्रत्येक व्यक्ति को काम मिलेगा। इस लिए काम ढूंढना समस्या न रहेगी।

जो श्रमिक राज, बढ़ई, लोहार, मिस्त्री, गाड़ी चलाना, ट्रक चलाना रंग रोगन करना आदि विशेष काम सीखेंगे उनकी आय ३ रुपये से लेकर ६ रुपये दैनिक तक होगी और दो व्यक्ति वाले परिवार की आय ८ रुपये से न्यून न होगी।

छोटी श्रेणी के शिक्षा प्राप्त व्यक्ति, जैसे प्रारम्भिक पाठशालों के अध्यापक, लिपिक (कर्ल्क) आदि का वेतन भी १०० रुपये मासिक से कम न होगा। आज इनकी स्त्रियाँ काम नहीं करती। यदि स्त्रियों को भी कोई न कोई काम सिखा दिया जाए तो इनकी कमाई से परिवार के जीवनस्तर में वृद्धि होगी। मध्यम वर्ग और उच्च वर्ग की स्त्रियाँ काम करने को हीन समझें यह उचित नहीं। एक ओर तो यह मनोवृत्ति दूषित है दूसरी ओर देश के उत्पादन में न्यूनता पड़ती है, तीसरी ओर पारिवारिक आय घटती है। केवल जिन घरों में बच्चे छोटे हों और अधिक हों तथा उनकी देखभाल का अच्छा प्रबन्ध न हो सके, तभी स्त्रियों को घर में रहना चाहिए। निर्माणियों (फैक्ट) में अथवा बड़ी संस्थाओं में काम करने वाली स्त्रियों के बच्चों की देखभाल की व्यवस्था शिशुगृहों में की जा सकती है। और जब काम से लौटीं तो बच्चों को अपने साथ ले आईं। शिशुगृहों में बच्चों के भोजन, क्रीड़ा, शयन आदि सभी प्रकार का प्रबन्ध होगा।

ऊंची श्रेणी के शिक्षित वर्ग, जैसे प्रोफेसर, डाक्टर, इंजीनियर और विशेषज्ञ इनका वेतन सामान्य रूप से ३०० रुपये से ५०० रुपये मासिक तक होगा। दो काम करने वालों के परिवार में अधिकतम आय एक सहस्र मासिक होगी।

किसानों की आय भी मध्यम के लोगों की अपेक्षा थोड़ी न होगी। जिस परिवार में दस एकड़ भूमि हो तो उस परिवार की आय २००-२५० रुपये मासिक पर आना कठिन न होगा।

व्यापार और उद्योग में आय मध्यम वर्ग तथा उससे अधिक होनी चाहिए। जब चारों ओर विकास हो रहा हो प्रत्येक स्त्री और पुरुष काम में लगा हो, जब उनकी आय आज की अपेक्षा डेढ गुनी दो गुनी अथवा अधिक हो जाए तो यह कठिन नहीं होगा कि नगर के विकास के लिए चतुर्थांश आय के स्रोत से ही संग्रह कर लिया जाए। इस चतुर्थांश का विशेष प्रयोग शिक्षा, स्वास्थ्य, तथा सड़कों और गृह निर्माण के लिए होगा। एक पद्धति यह है कि प्रत्येक परिवार धीरे धीरे अपनी आय में से कुछ रुपये बचाता जाये और जब पर्याप्त रुपये हो जाय तो स्वयं अपनी आवश्यकतानुसार तथा अपनी सामर्थ्य के अनुसार छोटा मोटा घर बना लेवे। दूसरी पद्धति जिसकी यहां चर्चा की जा रही है यह है कि प्रत्येक परिवार की आय का चतुर्थांश लेकर प्रत्येक परिवार के लिए सुन्दर खुले एक समान सभ्य घरों का निर्माण हो। दस बारह वर्षों में सबके लिए घर बन जाय, सड़कें बन जाय तथा नगर के अन्य वार्षिक व्ययों की पूर्ति हो जाए।

पारिवारिक आय की चतुर्थांश की संयुक्त राशि कितनी होगी इसका अनुमान भी देते हैं।

प्रत्येक आदर्श नगर में १२ सहस्र परिवार होंगे। इनमें से आधे परिवार चार रुपये दैनिक आय वाले ६ सहस्र होंगे। वर्ष में काम करने के ३०० दिन होते हैं। तदनुसार प्रत्येक परिवार का चतुर्थांश तीन सौ रुपये प्रति वर्ष होगा अर्थात् ६ सहस्र परिवारों का १२ लाख।

दूसरे वर्गों में दो रुपये प्रति दिन चतुर्थांश देने वाले तीन सहस्र परिवारों का योगदान १८ लाख रुपये।

आठ रुपये प्रतिदिन लेने वाले एक सहस्र परिवारों का योगदान २४ लाख रुपये।

समस्त योग—५४ लाख रुपये

इस राशि से नगर दृढ़ और वर्षानुवर्ष सुविकसित होते जायेंगे।

क्रमशः

अध्यात्म चर्चा

आत्मविद्या



[सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम० ए० एल० टी०, डी० वी० कालेज, गोरखपुर]

आज हमारे जीवन पर भौतिक शक्तियों ने अधिकार कर लिया है। समस्त मानव जाति मानवात्मा के रहस्य को भूल भौतिक जीवन की मृग मरीचिका में फंसी हुई है। भारतीय अध्यात्म रहस्य की प्रेरणा देने वाली नचिकेता की कहानी जीवन के अन्धकार में अमरता का प्रकाश दे रही है। लेखक ने बड़े सरल शब्दों में उपनिषद् की अध्यात्म जिज्ञासा को प्रस्तुत किया है। —सम्पादक

ब्रह्मविद्या के प्रति तीव्र आग्रह भावना से नचिकेता ने यमाचार्य से पूछा था कि—

> ये य प्रेतविचिकित्सा मनुष्ये,
> ऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।
> एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं
> वराणामेष वरस्तृतीयः ॥

अर्थात् मनुष्य के मरने पर (अयम) यह आत्मा बाकी रहता है (इति) ऐसा (एके) कुछ लोग (च) और (न) नहीं (अस्ति) रहता (इति) ऐसा भी (एके) कुछ लोग मानते हैं। (या) जो (इयम्) यह (विचिकित्सा) सन्देह है (त्वया) आपसे (अनुशिष्ट) उपदेश किया हुआ (अहम्) मैं (एतत्) इस (विद्याम्) विद्या को जानूं (वराणाम्) वरों में (एष) यह (तृतीय) तृतीय (वर.) वर है।

नचिकेता के प्रश्न का भाव यह था कि इस संसार में सदा से दो विचारधारायें जीवात्मा के विषय में प्रचलित रही हैं। कुछ लोगों का यह मत है कि मृत्यु के पश्चात् जीवात्मा नहीं रहता अर्थात् शरीर के नाश के साथ जीवात्मा का नाश हो जाता है। इस मत का तात्पर्य यह है कि जीवात्मा शरीर से पृथक् कोई वस्तु नहीं। दूसरे लोगों का यह मत है कि शरीर का नाश होने पर भी जीवात्मा का नाश नहीं होता। यह तो पुराने कपड़ों को छोड़कर जैसे मनुष्य नये वस्त्रों को धारण करता है उसी प्रकार पुराने शरीर को छोड़कर नए शरीर को धारण करता है। नचिकेता का यह प्रश्न सुनकर यम ने यह परीक्षा करने के लिए कि नचिकेता वास्तव में ब्रह्म विद्या का जिज्ञासु है या नहीं उसे इस प्रश्न के उत्तर से टरकाना चाहा। उसने कहा कि नचिकेता इस आत्म विद्या के सम्बन्ध में प्राचीन काल में बड़े बड़े विद्वानों ने अनेकों शंकायें उत्पन्न की हैं। कोई कहता है कि जीवात्मा नहीं है। इस आत्म विद्या के विषय में यम ने कहा कि यह अत्यन्त सूक्ष्म विद्या है अतः तुम इसके विषय में प्रश्न मत पूछो। नचिकेता ने कहा "इस विषय पर विद्वानों ने बहुत विचार किया है और आपने भी इसको सोचा है जिससे यह बात ज्ञात होती है कि आत्मा का विषय अत्यन्त आवश्यक है। और आप से बढ़कर इस विषय का ज्ञाता अन्य कोई दुर्लभ है अतः आप मुझे अवश्य ही यह भेद बता दूए।

नचिकेता ने जब इस विद्या को जानने का पुनः आग्रह किया तो यम ने उससे कहा कि नचिकेता १०० वर्ष जीने वाले पुत्र और पौत्रों को, पशु, घोड़े, हाथी, स्वर्ण, पृथ्वी, सार्वभौमिक राज्य मांग ले। तू जितने वर्ष जीवित रहना चाहे उतनी आयु मांग ले। सदा की आजीविका मांग ले। इतना ही नहीं इस संसार में जितनी दुर्लभ कामनाएं हों वह सब मैं तुम्हारी पूरी कर दूंगा। यदि तू चाहे तो मैं तुझे सुन्दर से सुन्दर स्त्रियां, युवतियां दूं, तू उनसे अपनी सेवा करा। पर आत्मा के विषय में मुझसे प्रश्न न कर।

यम के प्रश्न को सुनकर नचिकेता ने कहा महाराज, संसार के जितने विषय भोग हैं, जितनी सम्पत्ति है, धन दौलत यह सब क्षणिक है। इस सब में आनन्द नहीं। वास्तव में संसार में मनुष्य की स्थिति बड़ी विचित्र है। महाभारत में एक कथा आती है कि एकबार जंगल में एक आदमी का एक शेर ने पीछा किया। वह मनुष्य शेर से बचने के लिए भागा। पर शेर और मनुष्य का क्या मुकाबला? वह बचने का कोई चारा न देख एक कुए में कूदने को तैयार हुआ। कदम उठ चुका था। पीछे से शेर का भय लगा हुआ था। जब वह कुए में जा रहा था उसे दिखाई दिया कि कुए में पानी नहीं और नीचे एक अजगर मुंह खोले बैठा है। उसने सोचा बड़ी मुसीबत में पड़े। ऊपर शेर और नीचे सांप। कुए के बीच में बरगद की एक डाल उग आई थी। उसने हाथ से वह पकड़ ली और बीच में लटक गया। पर इस विपत्ति से उसे छुटकारा न मिला। उसने देखा कि बरगद की डाल की जड़ में दो चूहे एक सफेद और दूसरा काला बैठे हैं और डाल को कुतर रहे हैं। वह डरा। पर हाय रे मानव, विचित्र है तेरी गति। इतनी भयंकर परिस्थिति के होने पर भी जब उसने देखा कि डाल में एक शहद का छत्ता है जिसमें से शहद टपक रहा है तो वह इस भयानक परिस्थिति को भूल गया और शहद चाटने में लग गया। इस दृष्टान्त का दार्ष्टान्त यह है कि मनुष्य के चारों ओर मृत्यु है, शेर और सांप के रूप में उसे निगलने को वह मृत्यु सदा मुंह बाए है। वह आयु रूपी बरगद की डाल पर लटका हुआ है और उस डाल को दिन और रात रूपी सफेद और काले चूहे कुतर रहे हैं पर इस भयंकर परिस्थिति में भी विषय कामना रूपी शहद उसे अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है और मनुष्य मृत्यु को भुलाकर उसी में रम जाता है। वह अमर बनने का, इस जन्म और मरण के बन्धन से छूटने का कोई उपाय नहीं करता। पर जो मनुष्य बुद्धिमान् होते हैं जिन्होंने भोग विलासों के माधुर्य की सत्यता को समझ लिया होता है वे मृत्यु से बचने के लिए इन भोग विलासों से मुख मोड़ कर प्रभु की ओर अपनी वृत्तियों को लगाते हैं। अपनी आत्मा को जानने का प्रयत्न करते हैं। यदि यह आत्मा सचमुच शरीर के साथ ही नष्ट हो जाने वाली हो तो हमें अधिक चिन्ता की आवश्यकता नहीं। उस दशा में येन केन प्रकारेण इस जीवन को सुखी बनाना मनुष्य का उद्देश्य होना चाहिए। इस सिद्धान्त को मानने वाले भौतिकवादी या चार्वाकों का यही मत है कि 'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्" अर्थात् 'Eat drink and be merry' अर्थात् 'खाओ पीओ और मौज उड़ाओ" पर यदि मृत्यु के बाद भी इस आत्मा को रहना है तब तो इसकी उन्नति भी विचारणीय है। और इसकी उन्नति के लिए विषय भोगों का सहारा ठीक नहीं। क्योंकि "न जातु कामः कामानामुपभोगेन—

हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते।

स्वामी रामतीर्थ ने कहा है कि यदि सांसारिक सुखों के पीछे भागोगे तो वे तुमसे वैसे ही दूर भागते चले जायेंगे जैसे परछाई के पीछे भागने से परछाई दूर भागती चली जाती है। परछाई को पकड़ने का सीधा उपाय यह है कि आप उससे मुख मोड़कर चल दीजिए तो वह आपके पीछे भागेगी।

इसलिए सांसारिक भोग विलासों को निस्सार समझ कर नचिकेता ने यम से आत्म विद्या को जानने का प्रश्न किया और सब प्रलोभनों को उसने लात मार दी। इस प्रकार नचिकेता ने भौतिकवाद की व्यर्थता प्रमाणित कर अध्यात्म जीवन की ओर एक महान् और शाश्वतिक प्रेरणा का दिग्दर्शन किया और अमर बन गया।

जनम व मरण

किशोरीलाल गुप्त एम ए.

"मानव न तुझको जनम है न मरण रे—
जनम मरण तो बस एक तेरा वरण है।
एक दिन जमीं पर फूल खिल गया,
और दूसरे दिन वहीं मुरझा गया,
तो जनम मरण बस यही खिलन और मुरझन है।
देखो, आकाश में एक क्षण सितारा टिमटिमाने लगा,
और दूसरे क्षण वहीं दूर छुपने लगा,
तो जनम और मरण बस यही टिमटिमन और छुपन है।
एक को भूल से पैसा कहीं खो गया,
दूसरे को प्रयास से वही मिल गया,
तो जनम और मरण बस यही मिलन और खोवन है।
शाम जो दिया जला प्रात वही बुझ गया,
प्रात जो दिया बुझा शाम वही जल गया,
तो जनम और मरण बस यही जलन और बुझन है।
मानव न तुझको जनम है न मरण रे—
जनम मरण तो बस एक तेरा वरण है।"

शुद्धि और राष्ट्रीयता

(श्री वीरसेन आर्य, मन्त्री नगर आर्य समाज, लखनऊ)

आर्यसमाज भारतीय राष्ट्रवाद की स्थापना मे सर्वाग्रणी रहा है। राष्ट्रवाद का प्रचार उसके कार्यक्रम का अभिन्न अङ्ग रहा है। 'शुद्धि' आन्दोलन को भ्रमवश साम्प्रदायिकता से सम्बद्ध किया जाता है पर उसकी अन्तर्हित भावना एकमात्र राष्ट्रीय है। भारत के निवासी भारतीय परम्परा को, भारतीय महापुरुषो को, रीति रिवाजों को अपनाये रहे उनके प्रति अश्रद्धा या निन्दा के भाव न रक्खे, यही वास्तविक शुद्धि है। शुद्धि आन्दोलन साम्प्रदायिक नहीं विशुद्ध भारतीयकरण का आन्दोलन है। भारत राष्ट्र की स्वस्थ प्रगति और शान्ति के लिए इस दिशा में एक निष्ठा के साथ प्रत्येक राष्ट्रीय व्यक्ति को सहयोग देना चाहिए। आर्यसमाज इस आन्दोलन का नेतृत्व कर अपने राष्ट्रीय दायित्व का सदैव पालन करता रहेगा। —सम्पादक

१५ अगस्त सन् १९४७ को हमारे स्वाधीन राष्ट्र का जन्म हुआ। यह नवजात शिशु साम्प्रदायिकता की भयकर ज्वाला से चारों ओर से झुलस गया। येन केन प्रकारेण जीवन रक्षा की जा सकी। दानो के प्रयत्नों से किसी प्रकार आग की लपटों पर काबू पाया गया, फिर भी यह आग पूर्णरूप से बुझ न सका। अरबों की सम्पत्ति, लाखो के प्राण और करोड़ों के आश्रय को स्वाहा करके भी यह ज्वाला शांत न हुई किन्तु विचित्र ज्वलन शक्ति को लेकर काश्मीर के हिमाच्छादित प्रदेश को भी भयकर रूप से सन्तप्त करने लगी और वहाँ स्थायी रूप से अपना घर बनाकर बैठ गई, जहाँ से किसी समय भी देहली और कराची को भस्म करने मे समर्थ हो सकती है।

यदि हमें अपने राष्ट्र का जीवन बचाना है तो साम्प्रदायिक भावो को सर्वथा मिटाना होगा। साम्प्रदायिकता का नाश सैकुलर स्टेट की घोषणा मात्र से नहीं होगा, किन्तु हमे साम्प्रदायिकता के कारण और उनके स्वरूप को भलीभाँति जानकर ही उस पर विजय पाने की आशा करनी चाहिए।

साम्प्रदायिक भावनाये क्यो पैदा हुई ? विदेशी आक्रमणकारियों ने अपने राज्य के विस्तार की इच्छा से जहाँ हथियारो का प्रयोग किया वहां मजहब को अपनी जीत के लिए हथियारों की भांति प्रयुक्त किया। जिस किसी को भी डरा, धमका या फुसला कर वे अपने वश मे कर सके उसे मजहब के नाम पर भारत के वेष भूषा रीति रिवाज, आचार, चरित्र तथा इतिहास से अलग कर अपने गोल में उन्होंने मिला लिया। इसलाम और ईसाई धर्मों के भारत मे फैलने का यही इतिहास है। दोनो ही मजहब दु:खित आत्माओ को शांति देने के लिए नहीं किन्तु साम्राज्य विस्तार की इच्छा से ही हमारे देश मे फैलाये गये। नहीं तो क्या कारण है कि महावीर प्रसाद अगर इस्लाम को स्वीकार करता है तो उसको अपना महावीर नाम छोड़कर अरबी नाम अब्दुल्ला रखना पड़ता है। धोती छोड़कर पायजामा पहनना पड़ता है। होली, दिवाली, दशहरा छोड़कर उसे ईद, बकरीद मनाना पड़ती है। उसे राम कृष्ण से दूर हटकर अरब के इतिहास से नाता जोड़ना पड़ता है। इसलिए वह हसन हुसैन का मातम मनाता है। गङ्गा की जगह आबे जमजम, पीपल की जगह खजूर और कोयल की जगह बुलबुल से भावुकता जोड़ता है। अपने पुरुषों को अपना नहीं समझता किन्तु अरब के बुजुर्गों को ही अपना समझता है। जहाँ वह पहिले अपने को विदेशियो से अच्छा समझता था वहां अब अरब ईराक के लोगों को अपने से अच्छा रूवा और भाग्यशाली समझता है। यहीं उसमें पराधीनता के भाव पैदा होते हैं। जबतक वह महावीर था तो भारत का राष्ट्रीय था, किन्तु अब्दुल्ला बनते ही भारतीय राष्ट्र का एक एक चिन्ह उस पर से उतार कर फेक दिया गया। यही हाल ईसाइयत का है। वहां भी महावीर से जोसफ, धोती से पतलून और अपने तीन त्यौहारो से अलग, चौके की जगह मेज कुर्सी, अङ्गरेजी सीखने की प्रबल इच्छा, यूरोपीय आचार चरित्र में श्रद्धा होने के कारण वहां के निवासियो का दासानुदास होने की भावना जगती है। अन्य देशों में चाहे कुछ भी हो पर हमारे देश में तो इसलाम और ईसाई धर्म, साम्राज्यवादियों के द्वारा साम्राज्य विस्तार के लिए ही आये। इसीलिए हमारे देश मे ईसाई और मुसलमानो के रूप मे विदेशियों ने पृथक राष्ट्र ही बना या। भारत मे इस्लाम का प्रचार प्राय भय से और ईसाइयत का लोभ से अधिक हुआ। यहाँ के लोगो ने आत्मतुष्टि के लिए दार्शनिक रूप मे ईसाई या इस्लाम धर्म को कभी स्वीकार नहीं किया। यदि राष्ट्रीयता का विरोध न होता तो समन्वय शील भारतीय दर्शन अवश्य ही उनका संग्रह भी अपने अन्दर कर लेता और वैष्णव लोग बुद्ध की तरह ईसा तथा मुहम्मद को भी अवतार मानकर अपनी सूची का विस्तार कर लेते।

वे विरोधी क्यों बने ?—जिन लोगों ने इस्लाम या ईसाइयत के रूप मे विदेशी राष्ट्रीयता को अनजाने में स्वीकार कर लिया था उनका जब स्वराष्ट्र भावना ने जोर मारा तो वे फिर से अपने समाज मे आने के लिए बेचैन हो उठे, किन्तु जैसे ही अपने पुराने घर मे प्रवेश करना चाहा वैसे ही धर्म भीरु हिन्दुओं ने जाति पांति के किले के फाटक बन्द कर लिए कुछ समय तक तो वे दया के लिए अनुनय विनय करते रहे, किन्तु जब कोई परिणाम न हुआ तो उस किले को नष्ट करने की प्रतिक्रिया की भावना से भरी हुई विदेशी राष्ट्रीयता को कड़वी घूट की तरह पी गये। कुछ समय तक तो वे विवशता मे विदेशी भावनाओ को अरुचिपूर्वक स्वीकार करते रहे, किन्तु अरब के मौलवी और यूरोप तथा अमेरिका के पादरियों ने अपने कठिन परिश्रम से विदेशी भावनाओं मे इनकी रुचि उत्पन्न कर दी।

आज वे अपने भारतीय विरोधी विचारो पर पूरे दृढ है और इसी राष्ट्र में पृथक राष्ट्र निर्माण का प्रयत्न मन वचन तथा कर्म से करते रहते हैं। अनुदार हिन्दुओं ने पहले अपने फाटक इनके लिए बन्द कर दिए और अब उनको विदेशी तथा धर्म विरोधी समझ कर उनसे घृणा करते हैं। ये भी अपने पुराने राष्ट्र प्रेम के भावों को भुलाकर अपनी भावुकता विदेश से जोड़ बैठे हैं और अरब तथा यूरोप के राष्ट्रों का स्वप्न और भारतीय राष्ट्र को निर्बल बनाने की चेष्टा करते रहते हैं।

इस भयकर विनाश से राष्ट्र को बचाने का एक मात्र उपाय है 'शुद्धि' यह 'शुद्धि' दोनों ओर की होनी है। हिंदुओं के हृदय मे अपनो ही को विदेशी तथा विधर्मी समझ कर जो घृणा उत्पन्न हो गई है उसके स्थान पर प्रेम तथा सहानुभूति के भाव पैदा होने चाहिये और ईसाई तथा मुसलमानों के अन्दर स्वराष्ट्र की भावना जागृत हो जिससे वे यहां के वेष, भाषा संस्कृति, तीज, त्यौहार, इतिहास, पशु



—लेखक—

पक्षी, वनस्पति और नदी पर्वतो को अपना समझ कर प्रेम करने लगे। ऐसा होने से ईसाई मुसलमानों को बहुमत का भय न रहेगा और हिंदुओं को पथमार्गी दल का भय न सतायेगा। शताब्दियों के पश्चात् अपने अपने से मिल जायेंगे। यह मिलन भारतीय राष्ट्र को शक्तिशाली और सुदृढ़ बनायेगा। तब हम पूर्व के नेतृत्व, एशिया महाद्वीप के नेतृत्व अथवा विश्व के नेतृत्व का स्वप्न यथेच्छ देख सकेंगे।

आर्य समाज ने इस कार्य में अपने को अग्रसर किया है। हर समझदार भारतीय का यह कर्तव्य है कि इस पवित्र कार्य में तन, मन, धन से सहयोग दे।

देशदर्शन

सिद्धान्त-विमर्श

सम्राज्ञी शब्द का महत्व

[श्री पण्डित गङ्गाप्रसाद जी, एम० ए०]

★

आदरणीय उपाध्याय जी ने नारी जाति का आर्य परिवार में जो महत्व पूर्ण स्थान है उसकी व्यावहारिक समीक्षा प्रस्तुत कर आर्य परिवारों को उस रहस्य को समझने तथा परिवारों को आदर्श बनाने की प्रेरणा दी है। आशा है आर्यजन सम्राज्ञी शब्द के रहस्य को समझेंगे और उसका सम्मान करेंगे। —सम्पादक

ऋग्वेद का एक मन्त्र है—

सम्राज्ञी श्वशुरे भव, सम्राज्ञी श्वश्र्वा भव ।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधिदेवृषु ॥ (ऋग्वेद १० ८५ ४६)

इस मन्त्र का विनियोग यह है कि पति विवाह के समय पत्नी को 'सम्राज्ञी' होने के लिए प्रार्थना करता है। सास, ससुर, ननद और देवर पति के परिवार के मुख्य व्यक्ति हैं जिनका उस परिवार में भिन्न भिन्न प्रकार का अधिकार है, पत्नी अब तक दूसरे परिवार से सम्बन्ध रखती थी। वह पिता के लोक को छोड़कर पति के लोक में आती है। विवाह से पहले वह अपने बाप के परिवार में थी। उसको कुछ अधिकार वहाँ प्राप्त थे, पति का लोक उसके लिए 'अजनबी' था। विवाह होने पर उसने अपने पिता के परिवार को छोड़ दिया, बाप को छोड़ा, मा को छोड़ा, भाई को छोड़ा, बहन को छोड़ा. प्रश्न यह है कि उसको बदले में मिला क्या? क्या वह पति के पैर की जूती है? क्या वह सास, सुसर की टहलनी है? पति इस मन्त्र द्वारा उसको सान्त्वना देता है कि हे देवी मेरे घर चलने में तुझे कोई घाटा नहीं है। तू सास, सुसर, देवर और ननद की 'सम्राज्ञी' होगी। 'सम्राज्ञी' का क्या अर्थ? 'सम्राज्ञी' स्त्री लिंग है 'सम्राट्' का। 'सम्राट्' शब्द बना है 'सम्' और 'राट्' से। 'राज् दीप्तौ' धातु का अर्थ हैं प्रकाशवान् होना। 'सम्राट्' का अर्थ है साथ-साथ चमकना। 'सम्' का अर्थ है 'संयुक्त रूपेण'। 'सम्राट्' को सम्राट् इसलिए नहीं कहते कि वह समस्त प्रजा को जैसे चाहे दबा सकता हो अपितु इसलिए कि उसके द्वारा समस्त प्रजा प्रकाशित हो उठती है। उसक भौतिक और आत्मिक अन्धकार दूर हो जाता है, अन्धकार द्वेष का कारण है। प्रकाश प्रीति की प्रतीक है, जिस साम्राज्य में प्रीति का प्राबल्य होगा वहां समता का आधिक्य होगा और विषमता दूर होगी। साधारण पुरुष जब सम्राट् हो जाता है तो उसका सम्बन्ध राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति से पहले की अपेक्षा अधिक प्रत्यक्ष हो जाता है। लोग उसके निकटतम हो जाते हैं वह लोगों के निकटतम हो जाता है, यही सम्राट् का वैदिक लक्षण है। और 'सम्राज्ञी' शब्द का प्रयोग करके पति ने पत्नि को आश्वासन दिया है। अर्थात् जो अधिकार मेरे घर में अन्यों को प्राप्त हैं वे सब अधिकार तुझको प्राप्त होंगे। श्वशुरे, श्वश्र्वां, ननान्दरि, देवृषु यह चारों सप्तम्यन्त शब्द हैं, अधिकरण अर्थ में। मन्त्र में 'अधि' शब्द भी इसी अर्थ का द्योतक है। स्वामी जी महाराज ने संस्कार विधि के फुटनोट में 'अधि' का अर्थ 'अधिकार युक्त' किया है। इसलिए 'सम्राज्ञी' का अर्थ है पारिवारिक अधिकारों को प्राप्त करने वाली। साथ साथ चमकने वाली (Co-shinner) अर्थात् समान अधिकारिणी (Co ruler)।

'सम्राज्ञी' का यह अर्थ नहीं है कि तू सास, ससुर, देवर, ननद के ऊपर हुकूमत करेगी। क्योंकि यदि ऐसा अर्थ हो तो दो तीन पुत्र वधुयें आ कर मा बाप का नाक में दम कर सकती हैं। सम्राट् का वैदिक भाव हुकूमत नहीं अपितु प्रकाश है, और प्रकाश भी ऐसा जो एक दूसरे को प्रकाशित करता हो, सभा के लक्षण यह हैं—

न सा सभा यत्र न भाति कश्चित्।
न सा सभा यत्र विभाति चैक. ॥
सभा तु सैवास्ति यथार्थ रूपा।
परस्पर यत्र विभान्ति सर्वे ॥

जो सभा का हाल है वही साम्राज्य का। सम्राट् उसका अधिपति है। वही परिवार का क्योंकि स्त्री सम्राज्ञी है।

जब एक देश का निवासी दूसरे देश की नागरिकता प्राप्त करता है तो वह अपने देश के अधिकार और कर्तव्यों से मुक्त होकर दूसरे देश के अधिकारों और कर्तव्यों को ग्रहण करता है, उसी प्रकार से वधू दूसरे परिवार के अधिकारों और कर्तव्यों का भार अपने ऊपर लेती है।

इस मन्त्र में 'स्त्री' की महत्ता दिखाई गई है जो उसको पत्नीत्व के नाते प्राप्त है। 'सम्राट्' का मुख्य कर्तव्य यह भी है कि वह प्रजा के कल्याण की बात सोचा करे। इसी प्रकार पत्नी (गृहपत्नी) का भी कर्तव्य है कि वह पञ्च-यज्ञों द्वारा उन सबका हित कामना करती रहे जिनसे उसका सम्बन्ध है। पितृ यज्ञ द्वारा सास ससुर की बलि यज्ञ द्वारा पशु आदि तथा निशाचर, दिवाचर आदि चौकीदारों और दिन में सेवा करने वालों की, अतिथि यज्ञ द्वारा साधु सन्यासी या महात्माओं की। इत्यादि इत्यादि। यह कर्तव्य उसको अधिकारों के कारण प्राप्त है वह गृह स्वामिनी है। अत. उसी अनुपात से उसका उत्तरदायित्व है।

विजय-पर्व

★ मोहनलाल द्विवेदी

विजयोत्सव के पुण्य पर्व में, जागे हिन्दुस्थान हमारा।
इसी पुण्य बेला में रघुपति ने रण का सन्धान किया था,
इसी पुण्य बेला में रघुपति ने अमर प्रयाण किया था,
इसी पुण्य बेला में रघुपति ने जन गण का त्राण किया था,
भस्म हुई रावण की लंका, गूंजा जय-जय गान हमारा।
विजयोत्सव के पुण्य पर्व में, जागे हिन्दुस्थान हमारा॥

यह वह मंगल घड़ी, अमंगल जब भय ले थे दूर भगाये,
यह वह मंगल घड़ी कवच सज, जब हमने रणशंख बजाये,
यह वह मंगल घड़ी कि प्रण पर, जब हमने थे प्राण चढ़ाये,
बजा दिया विजय का डंका, फहरा, नभ में विजय निशान हमारा।
विजयोत्सव के पुण्य पर्व में, जागे हिन्दुस्थान हमारा॥

घेर रहा है दसों दिशा से, आज राक्षसों के दल का दल,
घेर रहा है दसों दिशा से, आज राक्षसों के छल का बल.
घेर रहा है दसों दिशा से, आज नाश का नव दावानल,
कोटि कोटि चरणों की ध्वनि में, गरजे जय अभियान हमारा।
विजयोत्सव के पुण्य पर्व में, जागे हिन्दुस्थान हमारा॥

जागो वीर जाति के गौरव, जागो जननी के अभिमानी,
जागो वीर यहाँ के पौरुष, जागो प्राणों के बलिदानी,
जागो शिव, प्रताप, कहाँ हो, जागो झांसी वाली रानी,
कोटि कोटि कण्ठों की ध्वनि में, जागे फिर अभिमान हमारा।
विजयोत्सव के पुण्य पर्व में, जागे हिन्दुस्थान हमारा॥

जागो हे पांचाल निवासी, जागो हे गुर्जर मद्रासी,
जागो बंग भंग के द्रोही, जागो मध्य प्रदेश के वासी,
जागो क्षत्रिय, सिक्ख मरहठे, जागो रण प्रांगण के अभ्यासी,
कोटी बाहु के कोटी खड्ग में चमके अभ्युत्थान हमारा।
विजयोत्सव के पुण्य पर्व में, जागे हिन्दुस्थान हमारा॥

कमलिनि ! मलिनी करोषि चेत
किमिति बकरव हलिताऽनभिज्ञे ।
परिणत मकरन्द मार्मिकास्ते
जगति भवन्तु चिर युषा न लन्दा ॥
× × ×

'निगाह काबिल। पर,
पड ही जाती है जमाने की।
कहीं छिपता है "अकबर"
फूल पत्तों म निहा होकर।'

"आर्यमित्र" के पाठको आर्य समाज के कर्णधार विद्वान् नेताओ से लेकर साधारण स साधारण आर्य समाजो को यदि हम स्वर्गीय कविराज श्री प० नाथूरामशकर शर्मा "शकर" के परिचय देने का प्रयत्न करें, तो वह धृष्टता ही होगी। आर्यसमाज जैसी विश्व कल्याणकारी जीवित जागृति सस्था के किसी सदस्य को उनके विषय में बताने का प्रश्न ही नहीं उठता। ऐसा कौन आर्य होगा जिसे महाकवि शकर के नाम पर गर्व न हो, गर्व मात्र से हम उनके उपकारों से उऋण नहीं हो सकते, हिंदी काव्य जगत् म कविराज श्री शकर जी का क्या स्थान है ? यह एक अविवादास्पद विषय है। द्विवेदी युग में श्री शकर जी का कवियों में सर्वोपरि स्थान था। वे कवि शिरोमणि, कवि सम्राट, कविता कामिनी-कान्त थे। मात्रिक छन्दों की वर्णित वृत्त में रचना करना—छन्द शास्त्र के इस कठिन नियम को सहज ही सफलतापूवक निभाना-शकर जी के सिवा न तो यह हिन्दी के किसी भी पूर्ववर्ती कवि ने किया और न उनके पश्चात् ही काई कर सका (अभी तक किसी हिन्दी कवि ने इस नियम का पालन किया हो ऐसा हमारे देखने मे नहीं आया है बताए) हिन्दी साहित्य के लिए कविराज शकर जी की यह अपूर्व देन था। व्यग काव्य रचना म श्री शकर जी के समान किसी हिन्दी कवि का लिखते हुए नहीं सुना, हा, उर्दू म महाकवि अकबर का नाम लिया जा सकता है। आज अपने को हिन्दी इतिहास का ठेकेदार समझने वाले स्कूल और कालेजो के प्राफेसर तथा अध्यापक कार्स की किताबों म चाहे उनका नाम न लें, काई चिन्ता की बात नहीं "विशाल भारत' के यशस्वी सम्पादक श्री प० श्रीरामजी शर्मा के शब्दों में—"हिन्दी साहित्य का यह दुर्भाग्य है कि इस प्रचार युग में रुपये पैसे को ही सब कुछ समझने वालो के कारण शकर जी का मूल्याकन नहीं हो पाया जो होना चाहिये था परन्तु इससे उनकी कविता की श्रेष्ठता में न तो कोई हीनता आती है और न किसी त्रुटि का आभास होता है। वह तो सुन्दर, सुहावना, चमत्कृत, प्रभाव शालिनी और आनन्ददायिनी बनी हुई है—बन रहेगी।"

जीवन-ज्योति

'शङ्कर शताब्दी-समारोह' आर्यसमाज द्वारा आयोजित हो

[श्री अम्बादत्त शर्मा "अम्ब' सम्पादक 'राजनीति" अलीगढ़]

आर्यसमाज और हिन्दी के सच्चे सेवक और हितैषी ही नहीं, महान् गौरव स्वरूप श्री शङ्कर जी का शताब्दी समारोह आर्यसमाज की ओर से आयोजित किये जाने पर अविलम्ब विचार किया जाना चाहिए। —सम्पादक

हा, तो अपनी अनुपम काव्य रचना द्वारा हिन्दी का महान् गौरव बढाने वाले महाकवि शकर जी की आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों ने क्यों उपेक्षा की, इसका एक प्रमुख कारण यह भी है कि श्री शकर जी अपनी सरस कविता में आर्य समाज की सेवा और ऋषि-गुण गान के समक्ष अन्य किसी भी क्षेत्र की परवाह न करते थे। उन्होने महर्षि दयानन्द के साक्षात् दर्शन किये थे, वे अपने सम्पूर्ण जीवन की काव्य साधना से ऋषि दर्शन की समता किया करते थे। कविता और स्वामी जी के दर्शन अपने जीवन के उन्होंने यही दो पुण्य फल मान थे अस्तु उनसे जो जीवन भर बन सका, आर्यसमाज के लिए सब कुछ किया, अब आर्यसमाज का भी उनके प्रति क्या कुछ कर्तव्य है ? यह आर्यसमाज के कर्णधार स्वय सोचे।

इस समय हम आर्य समाज से यह शिकायत भी करने नहीं बैठे कि उसने महाकवि शकर का अनूठी और उत्तम कविता से लाभ न उठा कर तुकबन्दियो से ही प्रचार कार्य किया, आर्यसमाज ने श्री शकर जी की ऐतिहासिक वैदिक रचनाओं के प्रचार और प्रसार म भी कुछ योग नहीं दिया, महाकवि शकर की आगामी अप्रैल मास म चैत्र सुदी ५ को होने वाले शताब्दि समारोह का आरम्भ भी आर्यसमाज के द्वारा ही होना सर्वथा उचित था। जिन स्व० कविराज शकर जी ने आर्यसमाज को अपना सम्पूर्ण जीवन ही अर्पण कर दिया। आज भी हिंदी जगत् में हास्य रस के सर्वोत्कृष्ट कलाकार, देव पुरस्कार विजेता श्री प० हरिशङ्कर जी शर्मा कविरत्न प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश जिनकी देन है, क्या सार्वदेशिक सभा आदि आर्य समाजों संस्थाओं का यह पुनीत कर्तव्य नहीं था कि वे अब से बहुत पहले 'शकर शताब्दी समारोह' मनाने की बात सोचतीं, कहती और करतीं। अब हिंदी साहित्य क्षेत्र में यह चर्चा चल पडी है और आशा है समारोहपूर्वक सम्पन्न भी होगी ही—अब तो आर्य समाज के नेता अपना उचित कर्तव्य स्वय निर्धारित करे, दो बाते तो हमारे ध्यान म आई है—जिन्हें निवेदन कर देना हम आवश्यक समझते हैं—

१—सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा, पजाब आर्य प्रादेशिक सभा, आदि जितना भी बड़ी आर्य सस्थाए सम्मिलित हो सकें—इस अवसर पर मिलकर अखिल भारतीय आर्य महा सम्मेलन का आयोजन करे जिसम लाखों आर्य भाग ले, श्री शङ्कर जी का श्रद्धाजलि समर्पण करने के साथ ही उनके उत्थान सम्बन्धी रचनात्मक कार्यक्रम भी वहीं निश्चित करें।

२—महाकवि शङ्कर जी की समस्त रचनाओं का एक सस्ता सुलभ सस्करण प्रचुर परिमाण म प्रकाशित हो (जिसका मूल्य प्रचारार्थ २) से अधिक न हो, जिससे लाखों कविता प्रेमी महानुभाव लाभ उठा सके।

आशा है, हमारी विनीत प्रार्थना पर आर्य विद्वान् और नेतागण अवश्य ध्यान देगे।

साहित्य-समीक्षण

(समालोचनार्थ पुस्तकों की कृपया दो प्रतियां भेजें ।—सम्पादक)

अनुभूतियाँ

लेखक—स्वामी सत्यदेव परिव्राजक प्रकाशक—सत्यज्ञान प्रकाशन, ज्वालापुर, सहारनपुर, पृष्ठ स० ८८ पुस्तकाकार मूल्य १।), सजिल्द, कागज सफेद छपाई सुन्दर ।

प्रस्तुत पुस्तक में विद्वद्वर स्वामी जी महाराज ने अपने जीवन की ३४ अनुभूतियों का वर्णन किया है जो कविताओं में समहीत हैं और इन्हें समझने के लिए साथ में स्थिति परिस्थिति सम्बन्धी टिप्पणी भी पृथक से दी गयी है । देश विदेश के भ्रमण मे विद्वान लेखक व विचारक स्वामी जी ने जो अनुभव किये, उन्हें बड़े ललित काव्य म उन्होंने यहां सक्षपतः रखने का प्रयास किया है। इन अनुभूतियों मे पाठक प्रभु की भक्ति, देश भक्ति मर्म, मानव जन्म दर्शन, महापुरुष के लक्षण, राष्ट्र निर्माण, अध्यात्म चिन्तन, सात्विक राजनीति, व्यायाम के लाभ, समाज शास्त्र का ज्ञान, भावी भारत का स्वरूप, भारतीय सस्कृति, अनीति के फल आदि विषयो की चर्चा पायेंगे जिन्हें पढ़कर प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को सतोष होगा ।

राइन नदी के सुन्दर दृश्य, लाल सागर, कोलोनका कार्नवाल आदि की अनुभूतियो में स्वामी जी के विदेश का अनुभव है। स्वामी जी ने परमात्मा को वैद्यराज की सज्ञा दी है जिनके सम्बन्ध में कुछ पद्यों को गाते गाते आप आत्म विभोर हो जाते हैं। इस प्रकार इस पुस्तक में प्रत्येक विषय के सम्बन्ध मे हम कुछ न कुछ चर्चा पाते हैं, साथ ही काव्य का आनन्द भी लेते हैं। इन अनुभूतियो से जन-साधारण को लाभ उठाना चाहिए। इस सुन्दर पुस्तक के प्रकाशन के लिए श्रद्धेय स्वामी जी वस्तुतः धन्यवाद के पात्र हैं ।

साहित्य दूत, पाक्षिक

सम्पादक—राजेन्द्रनाथ तिवारी सुचित, कानपुर । वार्षिक चन्दा ३॥), एक प्रति का नये सात पैसे । साइज १७×२७, एक चार ।

साहित्य दूत एक पाक्षिक पत्र है जो कानपुर से श्री राजेन्द्रनाथ तिवारी द्वारा सम्पादित होता है। द्वितीय वर्ष का प्रथम अङ्क हमारे पास समालोचनार्थ उपस्थित है। हिन्दी साहित्य को अभय देना इस पाक्षिक का उद्देश्य है। हिन्दी जगत् के सन्देशवाहक के रूप में हिन्दी की प्रचार तथा उन्नति के लिए यह पाक्षिक सुन्दर कार्य कर रहा है। प्रस्तुत अंक के इस सम्पादकीय विचार का हम समर्थन करते हैं कि श्री नेहरू उर्दू के असफल वर्कल हैं ।

"उर्दू हिन्दी की ही एक शैली मात्र है, उर्दू का न निज का कोई शब्द है और न व्याकरण. महाकवि गालिब ने भी हिन्दी मे शायरी की है।' ये शब्द है आर्य जगत के प्रसिद्ध नेता तथा मान्य हिन्दी पत्रकार व साहित्यकार श्री प० हरिशङ्कर शर्म्मा के जिन्हें इस प्रस्तुत पाक्षिक-अक के सम्पादक ने हिन्दुस्तान साप्ताहिक दिल्ली मे २८ सितम्बर ५८ के अक मे प्रकाशित उनके एक लेख से इस अङ्क के प्रथम पृष्ठ पर उद्धृत किया है जिससे प्रस्तुत अक का प्रथम पृष्ठ काफी सजीव हो गया है। "साहित्य दूत" हिन्दी साहित्य की सेवा मे सर्वथा सफल हो, यही हमारी कामना है ।

भारतीय राजनीति का इतिहास

(प्रथम भाग, रामायण काल)

लेखक—स्वामी विद्वतानन्द, प्रकाशक—श्री राजबहादुरसिंह चन्देल वकील हरदोई । मिलने का पता—रामकुमार एन्ड ब्रादर्स, बुक सेलर्स, मुरादाबाद पृष्ठ स० १९२, मूल्य ३॥), साइज २०×३०, १ १६, छपाई स्पष्ट फुटनोट सहित ।

पुस्तक का विषय तो नाम से ही स्पष्ट है। पुस्तक को लिखने व प्रकाशित कराने में विद्वान लेखक का उद्देश्य यह है कि आमतौर से आज अंगरेजी पढ़े लिखे व्यक्तियो मे यह विश्वास फला हुआ है कि प्राचीन भारत में न तो कोई ऊची राजनीति थी और न उस समय के भारतीय राजनीतिज्ञ थे, उनका यह विश्वास दूर हो जाय। आपने अनेको प्रमाणों और उदाहरणो द्वारा इस पुस्तक मे प्रमाणित किया है कि प्राचीन भारतीय उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ थे और उस समय की भारतीय राजनीति अत्यन्त प्रसिद्ध थी ।

केवल रामायण काल की राजनीति से ही लेखक ने भारतीय युवकों को अपने पूर्वजों की कुशल राजनीति का बड़ा सुन्दर परिचय दिया है। वैसे तो लेखक ने भारतीय राजनीति को रामायण काल, महाभारत काल, बुद्धकाल, शकर काल, मध्य काल, मुस्लिमकाल, ब्रिटिशकाल और नेहरू काल इन आठ भागो म बाटा है। प्रस्तुत पुस्तक में केवल प्रथम काल की चर्चा है। देशकाल और परिस्थितियों के अनुसार भारतीय राजनीति मे समय समय पर जो परिवतन हुए हैं, इसकी चर्चा भा लेखक ने यहा का है। आदि सविधान मनुस्मृति के सम्बन्ध मे भी स्वामी जी ने सप्रमाण टिप्पणी दी है। इस प्रकार प्राचीन भारतीय राजनीति को एक आदर्श और विश्व व्यापी तथा उच्चकोटि की प्रभाव शाली राजनीति प्रमाणित करने मे स्वामी जी महाराज सर्वथा सफल हुए हैं। एक इतिहास के रूप मे इन प्रमाणो को स्वामी जी ने बडे सुन्दर ढग से लिखा है। भारतीय राजनीति का भी अपना एक इतिहास है, इसी बात से भारतीय राजनीति की महत्ता सिद्ध हो जाती है। इस प्रकार पुस्तक बहुत उपयोगी है पठनीय है साथ ही अपनी प्राचीन सभ्यता व सस्कृति का प्रसारक है। अत. भारतीय जनता को चाहिए कि स्वामी जी की इस पुस्तक को अपनाकर उनके प्रयास को सफल बनावे । —स० स०

(पृष्ठ ५ का शेष)

से पहिले इस जन्म का कर्म भी हो सकता है। परन्तु चोर चोरी कर रहा है, करते करते पकड़ा गया। समय बीच में कुछ न था यह क्या और कैसे ?

'वेद वाणी' मे एक नया और अनोखा विचार लेखक महोदय ने उपस्थित किया है कि हम कर्म फल को बदल सकते हैं, लिखा तो यही है परन्तु अभिप्राय उनका एक को कम व अधिक करने से है। अस्तु इसको सिद्ध करने के लिए एक उदाहरण दिया मुझे ४)की मिठाई लेनी है यदि मैं मूल्य में कमी आधिक्य कर दू तो मिठाई में कमी व आधिक्य हो जायगा—आप मानते तो हैं कि कर्म भाग से पहिले हो जाता है फल पीछे मिलता है। जब हम मूल्य ४) पहिले जमा कर चुके तब मिठाई कम ज्यादा क्यो ? लिखते ह कि यदि ४) मे कमी या आधिक्य हो जाय तो कम या अधिक मिठाई हो जावेगी। परन्तु क्या यह सम्भव है कि किया हुआ कर्म कम या अधिक हो सकता है। ऋषि ने लिखा है सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ३०२ देख ।

"अपने सामर्थ्यानुकूल कर्म करने में जीव स्वतन्त्र परन्तु जब वह पाप कर चुका है तब ईश्वर की व्यवस्था में पराधीन होकर पाप के फल भोगता है इसलिए पाप के फल दुख भोगने में परतन्त्र होता है।"

अर्थात् मनुष्य को कर्म कर चुकने के पश्चात स्वतन्त्रता नहीं कि न्यून अधिकार कर सके। अत कर्म में कोई कमी या आधिक्य न हो सकने से फल में कोई अन्तर न हो सकेगा।

उसी पृष्ठ अर्थात् ३०२ पर ही ऋषि ने लिखा है कि "सब कर्मों का फल यथावत देना ही ईश्वर का काम है" जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है और ईश्वर की व्यवस्था में परतन्त्र अतः यह विचार कि कर्म कर चुकने के पश्चात उसका और उसके फल को बदल सकते है किसी प्रकार भी ठीक नहीं, अन्त मे मैं इस विचार के सज्जनों से यह निवेदन करूगा (जो इस जन्म के कर्मों का फल इस जन्म में भी मानते है) कि क्या कोई ऐसी भेदक रेखा वह खींच सकते हैं कि किस प्रकार के कर्मों का फल इस जन्म में मिल जाता है, जैसे वेद-वाणी के लेख मे कि चोरी एक कर्म है, सजा उसका फल यहीं हो गया, इसी प्रकार और कितने कर्म हैं और क्या चोरी का कर्म अगले जन्म के लिए प्रभू रोक नहीं लेते और क्या उन समस्त कर्मों को जो वह बतलाते वह स्वय देखें कि क्या सबका फल यहीं निश्चित मिल जाता है ।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में भी ऋषि ने एक मन्त्र का भाष्य करके यही बतलाया है कि जो पूर्व जन्म में किए हुए पाप पुण्य के फलों का भोग करने के स्वभाव युक्त जीवात्मा है..

जो जीव ईश्वर ने जैसे वेदों में सत्य भाषण की आज्ञा दी है वैसा ही यथावत् जान के बोलता है और धर्म ही मे यथावत् स्थिर रहता है वह मनुष्य योनि म उत्तम शरीर धारण करके अनेक सुखों का भोगता है ।

वनिता विवेक

शिशु पालन

बच्चे की देखभाल करने का काम मां का अपना काम है। इस काम को मां को दूसरों पर यानी आया आदि पर नहीं छोड़ना चाहिए। बच्चा पैदा होने के महीने दो महीने बाद तक तो मां को उसकी देखभाल के लिए सहायता की आवश्यकता है ही। परन्तु यह ध्यान मां को ही रखना चाहिए कि कोई जुकाम खांसी वाला मनुष्य बच्चे के पास न फटकने पाये।

बच्चे के मुंह तथा हाथ पैर की भी मां को देखभाल करनी चाहिए। सब उसे चूमने न पाये। इससे ही रोगों के कीटाणु फैलते हैं तथा बच्चे के चेहरे का तेज नष्ट होता है।

छोटे बच्चे के कमरे का तापमान न कम और न ज्यादा ही होना चाहिए। प्रायः सरदियों में कमरा बन्द करके अंगीठी रख लेते हैं। बच्चे के लिये यह हानिकारक है। उसे तो एक सा वातावरण चाहिए।

दो तीन महीने तक के बच्चे का सिर नहीं टिकता। उसे सहारा चाहिए। जब उसे दूध आदि पिलाने के लिए गोद में लें तो सिर के नीचे हाथ रखना न भूलें।

बच्चे को कैल्शियम तथा विटामिन पर्याप्त मात्रा में मिलते रहने चाहिए। इनसे बच्चा स्वस्थ रहेगा तथा उसका शारीरिक विकास सुन्दर तथा सुदृढ़ होगा। दांत समय पर तथा मजबूत निकलेंगे। बच्चे को जहां तक सम्भव हो अपना स्तनपान कराना ही उत्तम है, क्योंकि संसार में इससे बढ़कर बच्चे के लिये कोई शुद्ध, ताजा, तथा पौष्टिक पदार्थ नहीं है।

मां को बच्चे की देखभाल में यह बात ध्यान रखने योग्य है कि वह उसके शारीरिक तथा मानसिक विकास की ओर सचेत रहे। उसका अन्धा गूंगा, अन्य बच्चों से किसी बात में बहुत पिछड़ा तो नहीं है, यदि है तो क्यों, इसका उत्तर जानने का प्रयत्न करना चाहिये।

महीने भर का बच्चा तो प्रायः ज्यादा समय सोता ही रहता है। वह स्तनपान करने तथा नहाने के लिए ही जागता है।

बच्चे का विकास

दो तीन महीने का बच्चा सोना कुछ कम कर देता है तथा प्रतिदिन कुछ देर लगातार यानी घंटा दो घंटा जरूर जागता रहेगा। वह प्रायः समय निर्धारित कर लेता है और उसके नियम का पालन कराना मां पर निर्भर है। इसी अवस्था से यदि मां प्रयत्न करती है, तो सदैव ही उसके बच्चे को निर्धारित समय पर सोने तथा जागने की आदत पड़ती है। इसी समय बच्चा हंसना सीख जाता है और थोड़ा सा सिर उचकाना भी। इस अवस्था में बच्चे के जांघ बगल आदि की सफाई ठीक से कर देनी चाहिये अन्यथा उनके लग जाने का भय रहता है, जिससे बच्चे को परेशानी होती है। इस अवस्था में ही बच्चे के सिर पर मैल सा जम जाता है जिसे छुड़ाने का सबसे आसान तरीका यह है कि थोड़ा सा मक्खन जहां जहां पर मैल है लगा दें और घन्टा दो घन्टा लगा रहने दें फिर उसे सिर में मल दें, सब मैल छूट जायेगा। या कन्घी से बाल निकाल दें तब भी सब मैल छूट जायेगा।

ध्यान रखें कि कन्घे के दांत तेज न हों और बच्चे की कोमल त्वचा को न रगड़ दें।

चार पांच महीने का बच्चा, दिन में दो बार और रात को १० ११ घन्टे अवश्य सोता है। बच्चा अपना सिर सम्हालना सीख जाता है तथा झुनझुना आदि खिलौना भी पकड़ने लगता है। उसके पलंग के पास से कोई गुजरे तो देखने लगता है तथा, हां, हू और बहुत से बच्चे तो मां तक कहने लगते हैं।

सात आठ मास का बच्चा भी दिन में दो बार सोता है। लेकिन उसका सोने का समय कम हो जाता है। वह बैठना सीख जाता है और सरकने की कोशिश करता है। प्रायः इस अवस्था में स्वस्थ बच्चे का वजन १५ से लेकर २० पौण्ड तक होता है। इससे एक दो पौंड कम और ज्यादा भी हो सकता है। पैदा होने के समय जो वजन होता है उससे प्रायः दुगुना ही होता है। छः महीने के बच्चे के प्रायः दांत निकलने शुरू हो जाते हैं।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

बाल-विनोद

सदा याद रक्खो

तीन बातों से बचो—(अ) अपनी प्रशंसा से, (ब) दूसरों की निन्दा से, (स) परदोष दर्शन से।

तीन बातें ध्यान में रखो—(अ) प्रभु की याद, (ब) दूसरों का सम्मान (स) अपना दोष।

तीन का आदर करो—(अ) वृद्ध का, (ब) साधु का, (स) गरीब का।

तीन प्रकार के मनुष्यों से बचो—(अ) विश्वासघाती से, (ब) जुआरी से, (स) नास्तिक से।

तीन बातों पर सदा चलो—(अ) सत्य पर, (ब) अहिंसा पर, (स) जन सेवा पर।

तीन पर सदा दया करो—(अ) अनाथ पर, (ब) अबला पर, (स) राह भूले हुए पर।

तीन के सदा बस में रहो—(अ) प्रभु के, (ब) धर्म के, (स) गुरु के।

तीन के कभी बस में न रहो—(अ) लोभ के, (ब) क्रोध के, (स) मोह के।

तीन प्रकार के बनो—(अ) सरल, (ब) नम्र, (स) सत्यवादी।

—रतनलाल मनचन्दा

चुटकुले

डाक्टर, क्या आप मेरे कुत्ते की दुम काट सकेंगे ?

"हां। पर क्यों ?"

"कल मेरा साला आने वाला है और मैं नहीं चाहता कि उसके आने पर कोई भी स्वागत का चिह्न मौजूद रहे।"

× × ×

"जब मैंने अपने पिता को बताया कि तुम कवि हो तो वे बड़े प्रसन्न हुए।"

"पर मैं तो कोई कवि नहीं हूं।

"कोई बात नहीं। पिछली बार जिस लड़के को उन्होंने मार कर निकाल दिया था उसे मैंने पहलवान बता दिया था।"

× × ×

अध्यापक—"राम, यदि तुम्हें एक बैरोमीटर दिया जाय और एक ऊंची इमारत नापने को कहा जाय तो तुम उसका कैसे उपयोग करोगे ?

राम—"पहले एक बड़े धागे में बांध कर बैरोमीटर को छत से जमीन तक लटका देंगे। फिर खींचकर स्केल से उस धागे को नाप लेंगे।

× × ×

पिता महात्मा जी के सामने अपने बच्चे की बड़ी तारीफ कर रहे थे। बोले "यह रोज रात को प्रार्थना करके सोता है ?'

महात्मा जी ने बच्चे के सिर पर हाथ फिराते हुए पूछा "क्यों बेटे तुम रोज प्रार्थना करते हो।"

बच्चे ने उत्तर दिया—हां ! ऐसा कभी कभी ही होता है कि मुझे ईश्वर से कुछ भी न मांगना हो।"

बलवान भैया

रमेश भाई रमेश भाई।
मैंने कविता एक बनाई॥
टूटे फूटे शब्द हैं मेरे।
रख दिये हैं आगे तेरे॥
मुझको आती नहीं दिखाई।
जोड़ दो शब्दों को भाई॥
बाल भारत में छाप दो भाई।
दूंगी तुमको लाख बधाई॥
तुम तो हो बड़े बलवान।
करते रहते सबका ध्यान॥
केला कच्चा चबा जाते हो।
खीर चावल को खा जाते हो॥
मुक्का मार बताशा फोड़ो।
मेरी कविता के तुक जोड़ो॥

—पीलकमल बतरा

सस्ता पान

वैसे तो हम कभी-कभी बाजार से ही पान लेकर खाते थे परन्तु एक दिन की बात है कि मेरे सभी छोटे और बड़े भाई-बहनों ने निश्चय किया कि पान की आवश्यक वस्तुएं घर में ही मंगा ली जायें और यहीं पान लगाकर खाए जायें क्योंकि इस प्रकार पान भी सस्ता पड़ जायेगा। सो ऐसा निश्चय होते ही सब वस्तुएं मंगा ली गईं। इससे पहले हमने कभी भी पान घर नहीं लगाये थे परन्तु बाजार में लगाते देखा अवश्य था। चूना, कत्था आदि बनाया गया। फिर क्या था सबके अपना अपना पान लगाया। किन्तु ढंग न जानने के कारण सभी ने चूना बहुत ज्यादा लगा लिया। परिणाम यह हुआ कि कुछ ही समय के पश्चात् हमारे सबके गले में छाले पड़ने से सूजन हो गई। सभी को दो-तीन पेन्सलीन के इन्जेक्शन लगे तब जाकर कहीं इस बीमारी से छुटकारा पाया और पानों के सस्तापन का भी अनुभव हुआ। अब भी पान खाते समय वह घटना याद आ जाती है।

—सत्यपाल वर्मा, लखनऊ

प्राचीन भारत में विज्ञान

[ले०—श्री वेदश्रवाः प्रचार मन्त्री भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्]

आदि सृष्टि के इतिहास से लेकर समस्त बुद्धिमान समाज में विज्ञान का प्रयोग रहा है। हमारे चारों वेद विज्ञान के मुख्य केन्द्र हैं जिससे प्रतीत होता है कि ईश्वर ने भी विज्ञान के प्रयोग की अनुमति दी है, अन्यथा वेदों में विज्ञान की शिक्षा ईश्वर न देता। ऋग्वेद में मन्त्र आता है—

विद्युद्रथा मरुता ऋष्टिमन्तः।

अर्थात् बिजली से चलने वाले रथ।

अनश्वो रथस्त्रिचक्रः परिवर्तते रजः।

अर्थात् तीन पहियों वाला रथ आकाश में घोड़ों के बिना चलता है।

इस प्रकार सब वेद विज्ञान से परिपूर्ण हैं। इसीलिये प्राचीन आर्य लोग विज्ञान की सहायता से बड़े उपयोगी कार्य कर रहे हैं, जो बिना विज्ञान के कभी सम्भव नहीं थे।

महर्षि विश्वामित्र ने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्र जी महाराज को एक मानवास्त्र सिखाया था जिसमें यह गुण था कि लड़ाई के मैदान में जहां हजारों व्यक्ति लड़ रहे हों उनमें यदि किसी एक व्यक्ति को हम किसी कारण से न मारना चाहें तो मानवास्त्र मारकर उस एक को बाहर हजारों मील दूर उठाकर इस ढंग से फेंका जा सकता था कि वह मरे भी नहीं और वहां से हटाया भी जा सके। रामायण में लिखा है श्रीराम ने मानवास्त्र मार कर मारीचि को युद्धस्थल से हटाया और वह मरा भी नहीं। श्रीराम भाई लक्ष्मण से कहते हैं—

पश्य लक्ष्मण शीतेषुं मानवं मनुसंहितम्।

मोहयित्वा नयत्येनं न च प्राणैर्वियुज्यते॥

इसी प्रकार महाभारत का सभा भवन जो मय नाम के दानव का बनाया हुआ था, विज्ञान का अद्भुत चमत्कार था जिसमें यह दृश्य था कि जहां पानी हो, वहां पृथ्वी दिखाई दे और जहां पृथ्वी हो वहां पानी दिखाई दे। इसी प्रकार जहां फाटक हो वहां रास्ता हो और जहां रास्ता दीख रहा हो वहां फाटक हो और दीखे नहीं।

भगवान कृष्ण ने महाभारत के युद्ध में जयद्रथ वध के समय दिन में रात करके दिखाई थी वह भी विज्ञान का ही चमत्कार था, ऐसा वर्णन एक प्राचीन ग्रन्थ विमान शास्त्र में आता है। उसके 'चन्द्र नक्षत्र विज्ञान' अध्याय में मुचुकुन्द भैरवी आदि वस्तुओं के प्रयोग का वर्णन है जिनके प्रयोग से दिन में रात दिखाई जा सकती है।

राजा भोज के राज्य में एक ऐसे यन्त्रों से बने घोड़े का वर्णन है जो एक घण्टे में ५५ मील दौड़ता था बिजली के पंखे भी भोज के युग में थे जैसा वर्णन मिलता है—

घटचैकया, क्रोशदशैकमश्वः, सुकृत्रिमो गच्छति, चारुगत्या।

वायुं ददाति व्यजनं सुपुष्कलं, विना मनुष्येण चलत्यजस्त्रम्॥

रामायण में जो समुद्र का पुल बांधा गया था वह विज्ञान का ही चमत्कार था। वालिद्वीप में सुग्रीव के राज्य में ऐसी मशीनें थीं जो पहाड़ों को उखाड़ती थीं और ऐसी भी मशीनें थी जो उन उखड़े हुये पहाड़ों के बड़े बड़े पत्थरों को समुद्र तक उठाकर ले जाती और समुद्र को पाटकर पुल बांधती थीं जैसा रामायण में लिखा है—"यन्त्रैः परिवहन्ति च"

और भी देखिये—

उज्जैन के राजा उदयन कौशाम्बी के राजा चण्डप्रद्योत को पकड़ना चाहते थे पर पकड़ न सके। तब उस देश के लोगों ने एक हस्तियन्त्र बनाया जो देखने में सफेद हाथी लगता था। उस हाथी को कौशाम्बी के जंगलों में छोड़ दिया गया। राजा चण्डप्रद्योत को हाथी के शिकार का बहुत शौक था। वह हाथी जंगल में भागा और उसने राजा पर हमला किया। इस प्रकार चण्ड प्रद्योत एक बहुत बड़े घने जंगल में पहुँच गया हाथी रुक गया। राजा ने उस पर हमला किया, अचानक उस हाथी का पेट खुला और उसमें से ६० योद्धा निकले और राजा को पकड़ लिया, कितना अद्भुत विज्ञान का चमत्कार है।

प्राचीन काल में राजकुमारों को जानवर मार मार कर शिकार खेलना नहीं सिखाया जाता था, क्योंकि प्राचीन आर्य अहिंसावादी थे और मांस भक्षक नहीं थे अतः वे यन्त्रों के बने सुअर शेर और मृगों पर जो बनावटी होते थे, उन पर निशाना सिखाते थे और बनावटी जानवरों पर ही शिकार की परीक्षा करते थे जैसा महाभारत में लिखा है—

लौहैः वराहैः य त्रनिर्मितैः और

कृत्रिमं भासमारोप्य, वृक्षाग्रे शिल्पिभिः कृतम्।

अविज्ञातं कुमाराणां, लक्ष्य मूलमुपादिशत्॥

सम्भव है संसार का मध्ययुग विज्ञान से शून्य रहा हो। पर भारत का प्राचीन युग इतना विज्ञानमय था कि आज भी वैसे आविष्कार नहीं हो सके हैं जो आविष्कार प्राचीन काल में हो चुके थे। प्राचीन आर्य जहां संहार करना जानते थे वहां उस संहार का प्रतिसंहार करना भी जानते थे। आज का वैज्ञानिक जापान पर एटम बम डालकर उसे भस्म तो कर सकता है पर उसे फिर ठीक नहीं कर सकता। प्राचीन आर्य जहां संहार करना जानते थे, वहां निर्माण करना भी जानते थे। हम आर्यों के पास ऐसे शस्त्र थे जिनके द्वारा समस्त पृथ्वी को भस्म किया जा सकता था जैसा द्रोणाचार्य और विश्वामित्र के पास ब्रह्मशिर अस्त्र था जिसके बारे में वर्णन मिलता है कि—

अस्त्रं ब्रह्मशिरो नाम तद् दहेत पृथिवीमपि।

पर भारत के समझदार वैज्ञानिकों ने संसार का अहित कभी नहीं किया। किन्तु आज के सभ्य कहलाने वाले अमरीका जर्मन रूस आदि के वैज्ञानिकों की संसार संहार कारिणी शक्ति किससे छिपी है।

इसी प्रकार विश्वामित्र की सिखाई बला अतिबला विद्या जो राम ने सीखी और जिससे उनका रूप वृद्धावस्था तक नहीं बदला और बिना सोये बिना खाय बिना पिये वे अनेक दिन उसके कारण रह सकते थे। जैसा वर्णन है कि—

क्षुत पिपासे नहे राम विवाधेते कथं चन,

न ज्वरो न श्रमो वा हे न रुपस्य विपर्ययः।

इस प्रकार हमें इस बात का सदैव गर्व होना चाहिए कि प्राचीन भारत में विज्ञान बहुत उन्नत था और हमारे पूर्वजों ने विज्ञान का सदैव मानवता के हित में प्रयोग किया विनाश के लिए नहीं।

(पृष्ठ १२ का शेष)

नौ मास के बच्चे के प्रायः चार या छः दांत निकल आते हैं। बच्चा खूब घुटनों के बल चलता है और सहारा लेकर खड़ा हो जाता है। मा-मा, दा दा आदि कह लेता है। बच्चों के साथ खेलना पसन्द करता है। दिन में अब भी दो बार सोता है।

साल भर का बच्चा, बहुत तरक्की कर लेता है। प्रायः बच्चा इस अवस्था में चलना सीख जाता है। उसके ६ या ८ दांत निकल आते हैं। मामा आ जा आदि तक कह लेता है। बच्चे का वजन जो कि उसका उत्पन्न होते समय था, उससे तिगुना हो जाता है और उसका कद २७ से से लेकर ३१ इंच के बीच में होता है। बच्चे को खड़ा करके ही नापना चाहिए। जागते समय बच्चा बराबर तोड़ाफोड़ी करने में ही मस्त रहता है। इस समय पर मां को बहुत सावधान होकर उसकी देखभाल करनी चाहिए। सब टूटने फूटने वाली चीजें बच्चे से दूर रखनी चाहिए। बच्चा तो नासमझ होता है। उसे इस बात का भी ज्ञान नहीं होता कि घर का नुकसान होगा या उसके चोट लगेगी। बच्चा दिन में एक बार सोता है और रात में उसे यही १०-११ घण्टे सोना चाहिये। इस अवस्था में उसकी देखभाल करने की विशेष आवश्यकता होती है, क्योंकि वह चलना सीखता है या सीख जाता है और बहुत गिरता पड़ता है। सीढ़ियों, खिड़कियों आदि के दरवाजे बन्द रखने चाहिए।

मां को चाहिए कि बच्चे के अच्छे स्वास्थ्य व चरित्र निर्माण के लिए उसकी देखभाल का काम आदि बहुत दिलचस्पी पूर्वक खुशी खुशी स्वयं करें। इससे बच्चा बहुत से रोगों तथा रोजमर्रा की अकारण चोटों के लग जाने से बचा रहेगा। चोरी तथा ईर्ष्या आदि के भाव से दूर रह सकेगा। बराबर मां की देखभाल में रहने वाला बच्चा ही मां का प्यार पाता है।

—लीला प्रेमनारायण अग्रवाल

आर्य-जगत

उत्सव समाचार—

—आ०स० गोविन्द भवन सब्जी मंडी दिल्ली का उत्सव २, ३, ४, ५ अक्टूबर को सोत्साह मनाया गया जिसमें श्री स्वामी अभेदानन्द जी, स्वामी रामेश्वरानन्द जी स्वामी आनन्दभिक्षु, स्वामी विज्ञानानन्द जी, आचार्य रामदेव जी, लाला रामगोपाल जी, प०शिवकुमार शास्त्री, पं० प्रकाशवीर शास्त्री, पं० मुनीश्वर देव जी, प० शान्तिप्रकाश जी व श्री बलराज जी के भाषण हुए। कवि सम्मेलन, स्त्री सम्मेलन, दहेज सुधार सम्मेलन आदि हुए तथा प्रस्ताव पास हुए।

—आ० स० अल्मोड़ा का उत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ। स्वामी अमृतानन्द जी, प० वाचस्पति जी, श्री भद्रपाल जी, श्री रामचन्द्र जी, श्री उमेशचन्द्र स्नातक, श्री विद्यारत्न जी वकील श्री माता सुखदादेवी आदि के भाषण हुए।

—आ०स० हल्द्वानी का वार्षिकोत्सव २५, २६, २७ अक्तूबर को होगा। आर्यजगत् के सिद्ध विद्वान और नेता सम्मिलित होंगे। यू० पी० सभा की अन्तरङ्ग भी इसी अवसर पर होगी। हीरक जयन्ती के लिए थैली भी भेंट की जायेगी।

—गुरुकुल काँगड़ा का उत्सव १८ से २२ अक्तूबर तक होगा। शिक्षा मन्त्री श्री माली दीक्षान्त भाषण करेंगे। एक संस्कृत पुस्तक प्रदर्शनी भी होगी।

—आ०स० धामपुर बिजनौर का वार्षिकोत्सव १८, १९, २० नवम्बर ५८ को होगा जिसमे अनेकों दिग्गज विद्वान् पधारेंगे।

—आ०स० ऐशबाग लखनऊ का वार्षिकोत्सव २ नवम्बर को होगा जिसमे अनेकों विद्वानों के भाषण होंगे।

—आर्यसमाज बड़ा बाजार कलकत्ता का ३३वां वार्षिकोत्सव मुहम्मद अली पार्क मे २५, २६, २७, २८ अक्तूबर ५८ को होगा। स्वामी रामेश्वरानन्द जी, प० बुद्धदेव विद्यालङ्कार, प० प्रकाशवीर शास्त्री संसद सदस्य, कुंवर सुखलाल जी आदि पधारेंगे। सम्पूर्ण सामवेद द्वारा बृहद् यज्ञ भी होगा। शंका समाधान का भी आयोजन है।

—आ० स० रुड़की का ७८ वां वार्षिकोत्सव ८, ९, १०, ११ नवम्बर को होगा जिसमें अनेकों विद्वान् पधारेंगे।

—आ० स० दर्शनपुरवा कानपुर का वार्षिकोत्सव व प्रचार १४ से २३ नवम्बर ५८ तक होगा। प० ओ३म् प्रकाश शास्त्री, स्वामी वेदानन्द जी, श्री रामचन्द्र शर्मा, आदि पधारेंगे।

आर्य वीर दल समाचार—

२२ अक्तूबर को समस्त आर्य वीर दल सोत्साह विजयदशमी पर्व मनायें तीन रोज का प्रोग्राम बनाये। व्यायाम, खेल, भाषण, वाद विवाद, लेख आदि मे प्रतियोगिता करें तथा दल सहायता पर विशेष बल दें। कार्यक्रम निम्न प्रकार से हो—राष्ट्रगान, ध्वजा रोहण, व्यायाम प्रदर्शन, कोरस, प्रतिज्ञा दोहराना, दल सहायता, प्रतियोगिताओं मे विजयी वीरो को अध्यक्ष द्वारा पुरस्कार वितरण, अध्यक्षीय भाषण, ध्वजगान, विकिर। दल सहायता को सफल बनाने पर विशेष बल देना चाहिये। एकत्रित धन के चार भाग करके थानीय, जिला, प्रांतीय तथा केन्द्रीय कार्यालय का पहुँचा देना चाहिये। भवदीय—

रामजी प्रसाद गुप्त प्रान्तीय सचालक
देवीप्रसाद आर्य ,, मन्त्री

—आर्य वीर दल के समस्त सदस्य तथा अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत विद्यार्थी सभा ने धार्मिक परीक्षाएं चलाना प्रारम्भ किया है। इन परीक्षाओं के द्वारा आर्य सिद्धान्तो से आर्य वीरों को परिचित कराना है। अत प्रत्येक आर्य वीर इन परीक्षाओं को पास करे अपने यहा परीक्षा केन्द्र स्थापित करने का प्रयास करे और इस सम्बन्ध में श्री वीरेन्द्रशास्त्री से रायबरेली के पते पर पत्र व्यवहार करे। इस वर्ष की परीक्षाएं फरवरी १९५९ मे होंगी।

—ओम्प्रकाश त्यागी प्रधान सचालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

—१९ १० ५८ को आर्य वीर दल कानपुर का उत्सव बाबूपुरवा ३३० ब्लाक के सामने वाले पार्क में समारोह होगा। आर्य वीरों का प्रदर्शन भी होगा। श्री ओम्प्रकाश शास्त्री महोपदेशक के पधारने की आशा है।

—पश्चिमी उ०प्र० आर्यवीर दल के अधिकारियो को सूचित किया जाता है कि वे विजयादशमी के रोज अपने नगर की सभी शाखाओं को सम्मिलित रूप से लगाये, प्रदर्शन प्रतियोगितादि करें और दल सहायता का कार्य हो। एकत्रित धन के पाँच भाग करके एक भाग स्थानीय, एक भाग मण्डल, एक भाग क्षेत्रीय, एक भाग प्रान्तीय और एक भाग केन्द्र को भेजें।

—सन्तोषकुमार

सभा की सूचनाएं

पुरोगम सभा श्री मंत्री जी

१९, २० व २१।१० बरेली के सर्व समाज, २२ रामपुर मिलक आदि, २३ नैनताल, २४, २५, २६ हल्द्वानी, २७ को बुलन्दशहर, २८ को शिकोहाबाद।

—सभा उपमंत्री

प्राप्त दान सूची

मास १ सितम्बर ५८ से ३०।९।५८ तक सभा कार्यालय में जो नकद धन प्राप्त हुआ है वह प्रकाशित किया जाता है। दानी सज्जनो को धन्यवाद।

आ०स० आगरा नगर	१०)
,, ,, पौंदकोक (गढ़वाल)	२१)
डा० ज्ञानस्वरूप शर्मा लखनऊ द्वारा श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री जी	२५)
श्री कालीचरण जी आर्य उप प्रधान सभा द्वारा गढ़वाल आ० स० नई देहली	१०)
मनीआर्डर द्वारा	
आ० स० लैंसडौन गढ़वाल	५)
,, ,, अफजलगढ़ बिजनौर	५)
श्री मानसिंह व कुबेरसिंह फतेहपुर गयन्द (हरदोई)	५)
सभा मंत्री श्री फूलनसिंह जी द्वारा आ० स० चौक प्रयाग	१७)
आ० स० रानी मंडी प्रयाग	१७)
,, ,, कटरा प्रयाग	३०)
स्त्री आ० स० कटरा प्रयाग	२५)
श्री कृष्ण मुरारी लाल जी अन्तरङ्ग सदस्य प्रयाग	२०)
स्त्री आ० स० अतरसुय्या प्रयाग	२०)
श्री प्रधान जी आ स शिकोहाबाद, कोषा जिलोपसभा मैनपुरी	१२५)
श्री क्षेमचन्द्र जी आर्य कोसी कला (मथुरा)	११)
मनीआर्डर द्वारा श्री कुन्दनलाल	२)
श्री राधेश्याम गुप्त सरकेला (सुन्दरगढ़)	२०)
आ० स० फलावदा (मेरठ)	१०)
श्री नरोत्तमचन्द्र मन्त्री आ० स० फर्रुखाबाद द्वारा श्री कालीचरण जी आर्य	३५)
आ० स० खानआलमपुरा सहारनपुर	१०)
श्री सुभद्रा कुमारी शास्त्री कन्या गुरुकुल हाथरस	५)
आ० स० टेहरी गढ़वाल	५)
श्री विश्वम्भर दयाल वर्मा महमूदाबाद (सीतापुर)	१५)
आ० स० चौक प्रयाग	४६)

जिला आर्य सम्मेलन

उत्तरप्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि समाजों के उत्सव प्रारम्भ हो गये हैं। अतः प्रत्येक प्रमुख आर्यसमाज अपने अपने वार्षिकोत्सव के सुअवसर पर "जनपद आर्य सम्मेलन" का आयोजन अवश्य रखने की कृपा करें और उस अवसर पर सम्मेलन का उद्घाटन सभा के मान्य पदाधिकारी द्वारा कराया जावे। जिले के समाजों के प्रतिनिधियों को आमन्त्रित किया जाय। और वेद प्रचार की शैली क्या हो, इस पर गम्भीरता से विचार विनिमय किया जावे।

आशा है समाजों के अधिकारी इस ओर विशेष रूप से ध्यान देकर सभा को अनुगृहीत करेंगे।

अन्तरङ्ग सभाके साधारण अधिवेशन की सूचना

सभास्थ अन्तरङ्ग सदस्यों को विदित हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की अन्तरङ्ग सभा का साधारण अधिवेशन दि० २५ अक्तूबर ५८ को आर्यसमाज हल्द्वानी (नैनीताल) में होगा।

अन्तरङ्ग का विज्ञापन सर्वसदस्यों की सेवा मे नियमानुसार भेज दिया गया है। जिसके पास न पहुँचा हो वह कार्यालय से मगाने की कृपा करें और समय से पूर्व उपस्थित होने का कष्ट करें।

२—अन्तरङ्ग सभा के साथ उपसमितियों की बैठक भी होगी।

आर्यमित्र हीरकजयन्ती की बैठक २६ अक्तूबर को हल्द्वानी में होगी। सदस्यगण कृपया पधारें।

श्री इन्द्र वर्मा जी निरीक्षक सभा

अल्मोड़ा १७, नैनीताल १९, रामगढ़ २१, सुल्तानपुर २३, रुद्रपुर २४ हल्द्वानी २५। यह उनका प्रोग्राम है।

घुघिचहाई आर्यसमाज पुनर्जीवित

वेदप्रचार सप्ताह के सुअवसर पर श्री धर्मवीर जी व श्री रामचन्द्र जी आर्य भजनोपदेशक ने एक सप्ताह लगातार वैदिकधर्म का प्रचार किया। परिणामस्वरूप आर्यसमाज की पुनः स्थापना हुई और निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ —

श्री जसवन्तसिंह प्रधान
श्री हरनामचरणसिंह मन्त्री
श्री जगदीशप्रसाद शर्मा कोषाध्यक्ष

उपर्युक्त समाज के प्रधान श्री जसवन्तसिंह जी ने आर्यसमाज घुघिचहाई के मन्दिर के लिए भूमिदान में देने का वचन दिया। और समाज की सेवा तन मन धन से करने का वचन दिया।

—फूलनसिंह सभामन्त्री

आर्य समाज टिहरी का संगठन

[श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी]

गत दो वर्षों में मुझे अनेक बार टिहरी जाने का अवसर प्राप्त हुआ। वैसे मैं सबसे पहिली बार १९५५ मे गया था। अभी सितम्बर मास में तो मुझे दो बार टिहरी आना पड़ा। इस बार आर्यसमाज मन्दिर को देखकर मन कुछ प्रसन्न हुआ। इसका मुख्य कारण यह है कि अब इसकी मरम्मत पुताई आदि हो जाने से मन्दिर का रूप कुछ सुन्दर बन गया है जबकि अब से तीन चार मास पूर्व इसकी दशा अच्छी नहीं थी। खिड़कियों और दरवाजो की लकड़ियां तक गल चुकी थीं परन्तु अब वे सब बदल दी गई हैं। उन पर रंग-रोगन भी करा दिया गया है।

इस बार आर्यसमाज टिहरी के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री सत्यशरण अग्रवाल ने मुझे बताया कि वे अब नियमित रूप से आर्यसमाज का कार्य चलाना चाहते हैं। इस कार्य में उन्होंने पुस्तकालय और वाचनालय भी सम्मिलित किया है। वे चाहते हैं कि आर्यसमाज में पढ़ने योग्य पुस्तकों का अच्छा संग्रह रहे। परन्तु इस समय समाज के पास एक भी पुस्तक नहीं। पहिले कुछ धार्मिक पुस्तकें थीं परन्तु उन सब को एक व्यक्ति ने अपने अधिकार मे ले लिया। या यों कहना चाहिये कि वे अपने साथ आर्य समाज की समस्त सामग्री ले गये। आर्य समाज की स्थिति ऐसी नहीं है कि वह पुस्तकों पर कुछ धन व्यय कर सके। मैंने श्री अग्रवाल जी को विश्वास दिलाया है कि दीपमालिका तक मैं उनके पास कुछ पुस्तकें भेजूंगा। मैंने अपने कई मित्रो से अनुरोध भी किया है कि वे ऐसे शुभ कार्य मे योग दें।

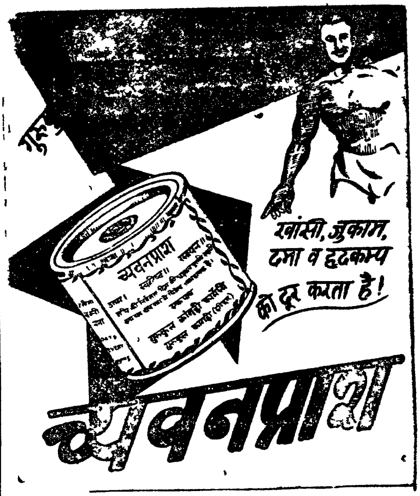
मैं चाहता हूं कि वैदिक धर्म के सम्बन्ध में सभी आवश्यक पुस्तकें टिहरी के पुस्तकालय में पहुंच जाँय। वहां इस बात की भी आवश्यकता है कि कुछ छोटी छोटी धार्मिक पुस्तकें भेजी जांय जिनका छात्र एवं छात्रायें उपयोग कर सके।

यहां इस बात का उल्लेख कर देना भी आवश्यक है कि श्रद्धेय बाबू गङ्गाप्रसाद जो रिटायर्ड चीफ जस्टिस टिहरी के प्रयत्न से यह समाज मन्दिर बना था। उन्होंने कुछ धनराशि आर्य समाज टिहरी की सहायता के लिए बैंक में भी जमा कराई हुई है जिसके ब्याज का आर्यसमाज लाभ उठा सकता है। परन्तु फिर भी इस समय आर्यसमाज के कार्य को प्रगति देना आवश्यक है। श्रद्धेय बाबू गंगाप्रसाद जी ने मुझे गत वर्ष दो पत्र भी लिखे थे कि मैं इस विषय में टिहरी आर्य समाज की वास्तविक स्थिति उनके सम्मुख रक्खू।

मैंने टिहरी के कुछ पुराने आर्य भाइयों से भी वार्तालाप किया था। इस समय टिहरी गढ़वाल जिले मे आर्यसमाज द्वारा सामाजिक उत्थान का काफी कार्य हो सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि जो कार्य एक बार अस्त व्यस्त हो गया है, वह फिर से संगठित हो। मेरे विचार से टिहरी के उत्साही कार्यकर्त्ता अपने कार्य को फिर से प्रारम्भ कर सकते हैं यदि उनकी कुछ सहायता की जाय और उनको समय समय पर परामर्श दिया जाय।

टिहरी का आर्यसमाज मन्दिर नगर के मध्य में बना है। उसके समीप से ही टिहरी का मुख्य बाजार प्रारम्भ होता है। उसके पास मे सुमन चौक है जहां स्व० देवसुमन की स्मृति में एक सुन्दर पार्क भी बनाया गया है। समाज का हाल काफी बड़ा है। उसमे साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त बड़ी सभाये भी हो सकती हैं।

मैं अन्त में अपने भाइयो से यही निवेदन करूंगा कि वे टिहरी की आर्य समाज को साहित्य भेज कर उनका उत्साह बढ़ायें। नवम्बर मास में मैं फिर टिहरी जाने का विचार रखता हूं। मेरा प्रयत्न है कि श्रद्धेय बाबू गङ्गाप्रसाद जी के अभिनन्दन से पूर्व टिहरी की आर्य समाज एक जीवित जागृत समाज का रूप धारण कर ले। वहां के लिए कुछ समाचार पत्रों की भी व्यवस्था कराई जायगी।



आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण नं ए. ६०
आश्विन२७,शक१८९० (१९अक्टूबर१९६८)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष्य ४११३ तार 'आर्यमित्र'

दैनिक स्वाध्याय के ग्रन्थ

(१) ऋग्वेद सुबोध भाष्य—मधु छन्दा, मेधातिथी, शुन' शेप कण्व, वामगोतम, हिरण्यगर्भ, नारायण, बृहस्पति, विश्वकर्मा, सप्त ऋषि व्यास आदि, १८ ऋषियों के मन्त्रों के सुबोध भाष्य मूल्य १६) डाक व्यय १।।)

ऋग्वेद का सप्तम मण्डल (वसिष्ठ ऋषि)—सुबोध भाष्य। मूल्य७) डाक व्यय १)

यजुर्वेद सुबोध भाष्य अध्याय १—मूल्य १।।), अष्टाध्यायी मू० २) अध्याय ३६, मूल्य ।।) सबका डाक व्यय १)

अथर्ववेद सुबोध भाष्य—(सम्पूर्ण १८ काण्ड) मूल्य २६) डाक व्यय ५)

उपनिषद् भाष्य—ईश २), केन ।।), कठ १।।), प्रश्न १।।), मुण्डक १।।) माण्डूक्य ।।), ऐतरेय ।।।) सबका डाक व्यय २।)

श्रीमद्भगवतगीता पुरुषार्थ बोधनी टीका—मूल्य१२।।)डाक व्यय२)

वैदिक व्याख्यान—अग्नि में आदर्श पुरुष, [२] वैदिक अर्थ व्यवस्था [३] स्वराज्य, [४] सौ वर्षों को आयु, [५] व्यक्तिवाद और समाजवाद [६] शाति शाति शाति, [७] राष्ट्रीय उन्नति, [८] सप्त व्याहृति, [९] वैदिक राष्ट्रनीति, [१०] वैदिक राष्ट्र शासन, [११] वेद का अध्ययन अध्यापन, [१२] भागवत में षड दर्शन, [१३] प्रजापति का राज्य शासन, [१४] त्रत, द्वैत, अद्वैत, [१५] क्या विश्व मिथ्या है ?, [१६] वेदो का सरक्षण ऋषियों ने कैसे किया ?, [१७] आप वेद रक्षण कैसा कर रहे हैं ?, [१८] देवत्व प्राप्ति का अनुष्ठान, [१९] जनता का हित करने का कर्तव्य, [२०] मानव की सार्थकता, [२१] राष्ट्र निर्माण [२२] मानव की अद्भुत शक्ति, [२३] वेदोक्त विविध प्रकार के शासन। प्रत्येक का मूल्य ।=) डाक व्यय पृथक। आगे व्याख्यान छप रहे हैं।

ये ग्रन्थ सब पुस्तक विक्रेताओं के पास मिलते हैं।

पता—स्वाध्याय मण्डल किल्ला पारडी, जिला सूरत

आर्यमित्र हीरक जयन्ती

को

सफल बनाइए

आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार और संघटन की सुदृढ़ता

के लिए

एकमात्र साधन 'आर्यमित्र' है

जो साठ वर्षों से निरन्तर मौन साधक के रूप में समाज, राष्ट्रभाषा हिन्दी, साहित्य, धर्म, राष्ट्र और मानव सस्कृति आदि सभी क्षेत्रों में वैदिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने में सलग्न रहा है। सभी क्षेत्रों में आदर्शों की स्थापना ही उसका एक मात्र उद्देश्य रहा है।

यदि आप चाहते हैं कि भविष्य में भी

'आर्यमित्र'

★ आर्य समाज के प्रचार
★ सिद्धान्त समर्थन
★ निर्भीक आलोचना
★ समाज-सुधार
★ राष्ट्र नव निर्माण
★ विश्व शान्ति
★ वैदिक सस्कृति समुद्धार
★ नैतिक उत्थान
★ आदर्श पत्रकारिता
★ राष्ट्रभाषा हिन्दी सेवा
★ विश्व बन्धुत्व
★ मानव सस्कृति

आदि सभी क्षेत्रों में सामाजिक चेतना जागृत करता रहे तो आर्यमित्र को समर्थ बनाने में अपना सहयोग प्रदान कीजिए।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती की सफलता आपके सहयोग पर ही निर्भर है। पचास हजार रु० की जयन्ती निधि मे अपनी सामर्थ्यानुसार सहायता कीजिए और इष्टमित्रों से सहायता दिलवाकर पुण्य के भागी बनिए।

आर्यमित्र की उन्नति के इस यज्ञ में पड़ी हुई प्रत्येक आहुति मानवता के नव निर्माण में सहायक होगी।

संयोजक—'आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति' लखनऊ

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

ARYA MITRA

आर्यमित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा-उत्तर प्रदेश का साप्ताहिक मुखपत्र

वार्षिक मूल्य ८) एक प्रति का २० नए पैसे

लखनऊ, रविवार, कार्तिक ४ शक १८८०, आश्विन शुक्ल १४, वि० २०१५
२६ अक्टूबर १९५८ ई०

विदेश में १५ शिलिंग

आर्यमित्र हीरक जयन्ती की सफलता

आर्य जगत् की प्रगति की परिचायक होगी

आर्य समाज के आन्दोलन की दिव्य ज्योति के प्रचार और प्रसार के लिए आवश्यक है कि हम अपनी संस्थाओं और प्रचार मेशीनरियों (साधनों) का सिंहावलोकन करते रहे। आर्य समाज के व्यापक सिद्धान्तों का मीमांसा, उसके सामाजिक सुधार कार्यों तथा अन्य सभी प्रगति सन्देशों आदि को "आर्यमित्र" विगत साठ वर्ष से एक साधक के रूप में मौन भावना से प्रसारित करता रहा है और इस प्रकार वह आर्य समाज का अभिन्न अंग बन चुका है।

आज वह सुअवसर आया है कि हम अपने प्रिय "मित्र" के जीवन और इतिहास पर भी गम्भीरता से विचार करें। आर्य समाज के कार्य को सर्व साधारण तक सुगमतापूर्वक पहुंचाने, सांस्कृतिक विचार विमर्श करने तथा राष्ट्र एवं समाज की सामयिक नीतियों के औचित्य अनौचित्य पर प्रकाश डालने के लिए एक सक्षम पत्र की आवश्यकता सभी स्वीकार करते हैं। आर्यमित्र की उपयोगिता उसके साठ वर्षीय जीवन से स्वतः सिद्ध है। प्रश्न यह है कि क्या आज के अर्थ प्रधान युग में आर्थिक संघातों को सहता हुआ कोई पत्र कब तक आगे बढ़कर जीवित रहकर नेतृत्व प्रदान कर सकता है। अर्थ युग की इस आपत्ति को दूर करने का एक ही उपाय है कि अपने पत्र को आर्थिक दृष्टि से इतना अधिक सुदृढ़ बना दिया जाय कि वह अपने मिशन की पूर्ति में दृढ़ता के साथ प्रगति करता रह सके। आज के युग में जब गांधी जी की विचारधारा के प्रसारक 'हरिजन सेवक' आदि मिशनरी पत्र जीवित न रह सके तब भी "आर्यमित्र" का जीवित रहना और ऐतिहासिक उत्थान पतनों के होते हुए भी आर्य जगत् की सेवा में संलग्न रहना एक महान् आश्चर्य ही कहा जा सकता है। इस प्रकार आर्यमित्र के साठ वर्षीय जीवन की सेवा आर्य जगत् से आकांक्षा रखती है कि आर्य जगत् उसके स्थायित्व और उत्थान के अपने कर्तव्य का पालन करे।

सभा द्वारा आयोजित आर्यमित्र हीरक जयन्ती समारोह किसी एक व्यक्ति (आर्यमित्र मात्र) का समारोह न होकर समस्त आर्य जगत् की भावनाओं की जयन्ती का समारोह समझा जाना चाहिए। निरन्तर साठ वर्षों में आर्य जगत् की जिन भावनाओं ने समाज का पथ प्रदर्शन किया, राष्ट्र को नेतृत्व दिया और मानव जाति को वैदिक दिव्य सांस्कृतिक सन्देश दिया आर्यमित्र हीरक जयन्ती उन सभी भावनाओं की जयन्ती है।

इस महान् कार्य की सफलता का दायित्व सभा के अधिकारियों, अन्तरङ्ग सदस्यों, प्रतिनिधियों, समाजों के अधिकारियों, सदस्यों और सम्पूर्ण आर्य जनता पर है। यदि आर्य जगत् अपने इस मानस पुत्र का जयन्ती समारोह सफलता पूर्वक मना सका तो यह राष्ट्र के लिए, हिन्दी के लिए और स्वयं पत्रकार कला के लिए एक गौरव की चीज होगी। पूंजीपति व्यक्तियों के व्यक्तिगत पत्रों ने भी भारत में इतना दीर्घ जीवन अभी प्राप्त नहीं किया है और फिर मित्र तो एक सामाजिक संस्था के पत्र के रूप में साठ वर्ष का इतिहास पूरा करने जा रहा है। एक मिशनरी संस्था के मिशनरी पत्र की इस सफलता के पीछे आर्य जगत् का महान् विश्वास और सम्बल छिपा है वही मित्र की सफलता का रहस्य है।

सभा की अन्तरङ्ग की बैठक हल्द्वानी (नैनीताल) में होने जा रही है हम उसमें सम्मिलित होने वाले सभी सम्मानित व्यक्तियों से प्रार्थना करेंगे कि वे मित्र जयन्ती की सफलता के लिए गम्भीरता पूर्वक विचार करें और अपना कर्तव्य निर्धारण करें। मित्र जयन्ती की सफलता हल्द्वानी बैठक के निर्णयों और सदस्यों के उत्साह एवं पथ प्रदर्शन पर ही अवलम्बित है। साथ ही मित्र जयन्ती की सफलता में ही आर्य समाज के प्रचार और प्रसार का भविष्य भी निहित है।

वर्ष ६०

अवैतनिक सम्पादक—
स्नातक उमेशचन्द्र एम. ए., ईश्वरदयालु आर्य, सभा मुख्य उपमन्त्री

अंक

यह आर्यमित्र हीरक जयन्ती का पृष्ठ है

कार्य तीनों ही श्रेष्ठ हैं

आर्यमित्र जयन्ती, श्री गङ्गाप्रसाद उपाध्याय व श्री गङ्गाप्रसाद चीफ जज महोदयों का अभिनन्दन तथा विरजानन्द कुटी निर्माण

आर्यमित्र में अनेक विद्वानों ने आर्यमित्र हीरक जयन्ती, दो विद्वानों के अभिनन्दन तथा विरजानन्द कुटी के निर्माण के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये है। आर्य प्रतिनिधि सभा के विद्वान् प्रधान पं० हरिशङ्कर शर्मा जी के भी कई पत्र इस सम्बन्ध मे प्राप्त हुये। उनका सबल हृदय चाहता है कि ये तीनों कार्य बड़े सुन्दर रूप मे सम्पन्न हों। वे इन तीनों कार्यों को प्रान्त के लिए आवश्यक कार्य समझ रहे हैं और मेरा विश्वास है कि वे इन तीनों कार्योंको श्रेष्ठ रूप मे सम्पन्न करना चाहते हैं जिसके लिए धन की आवश्यकता है।

जहां तक मेरी जानकारी है, मैं यह कह सकता हूं कि सभा की स्थिति १९५६-५७में जैसी थी वैसी भी१९५७-५८ में न रही। जो धन प्रयत्न करके समह किया जाता है उससे सभा का वार्षिक कार्य कठिनता से चल पाता है। फिर पिछले ऋण को चुकाने का भी प्रश्न हर समय बना रहता है। ऐसी दशा में ये तीनों कार्य तभी उत्तम प्रकार से सम्पन्न हो सकते हैं जब सभा का आर्थिक भार कुछ कम हो। सभा वार्षिक व्यय की पूर्ति के लिए आत्मनिर्भर हो जाय और जो धन आर्यमित्र की जयन्ती, अभिनन्दन तथा विरजानन्द कुटी निर्माण के लिए एकत्र हो, वह सब इन्हीं मदों में व्यय हो।

मैंने आर्थिक प्रश्न का विश्लेषण इस विचार से किया है कि आर्य प्रतिनिधि सभा के सचालकों तथा आर्य समाजों के सुयोग्य कार्यकर्ताओं के सम्मुख अपनी स्थिति का कुछ आर्थिक स्वरूप आ जाय। मैं इतना और कह देना आवश्यक समझता हूं कि मैंने इस सम्बन्ध में कुछ सुझाव अपने स्नेही और सभा के प्रधान श्री हरिशंकर जी शर्मा की सेवा मे भेजे थे और उन्होंने मुझे बहुत स्पष्ट शब्दों में लिखा है "इन अच्छे कार्यों के लिए धन की आवश्यकता है।" उन्होंने यह भी संकेत किया है कि 'धन संग्रह पर ही इन कार्यों की सफलता निर्भर करती है।" ऐसी दशा मे यह बात निर्विवाद है कि आर्यमित्र की जयन्ती दो विद्वानों का अभिनन्दन तथा विरजानन्द कुटी का निर्माण प्रांत की उन समाजों पर अधिक निर्भर करता है जो इन कार्यों के लिए धन समह में सहायता प्रदान करें।

जहां तक योजनाओं का प्रश्न है, वे भी इतनी उत्तम और लाभकारी होनी चाहिये कि इनमें लगे पैसे का पूर्णरूप में सदुपयोग हो। जहां तक आर्यमित्र की जयन्ती का प्रश्न है, उस बारे में आचार्य नरदेव जी शास्त्री ने काफी विस्तार के साथ एक रूपरेखा प्रकाशित कराई है। उस रूपरेखा में कुछ संशोधन करके आर्यमित्र का एक सुन्दर विशेषांक प्रकाशित किया जा सकता है। परन्तु उसकी छपाई सुन्दर होनी चाहिये। सामग्री ऐसी चुनी जाय जिसका आज के युग में भी कुछ मूल्य और लाभ हो। इस कार्य को करने में इस बात का पूरा ध्यान रक्खा जाय कि आर्यसमाज के कुछ सैद्धान्तिक और आध्यात्मिक विषय भी आ जायं। आर्यमित्र का विशेषांक रिपोर्ट जैसा न बने किन्तु आज के समय की अनेक आवश्यकताओं की विवेचना से युक्त हो।

जहां तक दो विद्वानों के अभिनन्दन का प्रश्न है, मैं दोनों ही के प्रति अपार श्रद्धा रखता हूं, श्रद्धेय बाबू गङ्गाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज के सम्पर्क में आने का मुझे काफी अवसर प्राप्त हुआ है और उनकी प्रेरणा से १९२० में मैंने अखिल भारतीय आर्य कुमार परिषद् का कार्यभार सम्भाला था जिसका १९२१ मे एक विशाल अधिवेशन स्वर्गीय भाई परमानन्द जी की अध्यक्षता में हुआ था। इस पुरानी बात को इसलिए दोहराया है कि श्रद्धेय गङ्गाप्रसाद जी की आर्य समाज को बड़ी देन है। इसी प्रकार से प० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय आर्य समाज के विद्वान् लेखकों और पथ प्रदर्शकों मे से हैं। इन दोनों विद्वानो के प्रति आर्यसमाजों को अपनी श्रद्धा व्यक्त करनी ही चाहिये।

मेरा सुझाव है कि जिस प्रकार नारायण स्वामी जी महाराज को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया था उसी प्रकार इन दोनों विद्वानों को किया जाय। सम्पादन के लिए तीन व्यक्तियों की सम्पादन समिति होनी चाहिये। अभिनन्दन ग्रन्थ में विद्वानों के विभिन्न विषयों पर सारगर्भित लेख होने चाहिये। जीवन परिचय अत्यन्त संक्षिप्त रूप में हो।

जहां तक विरजानन्द कुटी का प्रश्न है, वह तो अब बननी ही चाहिये मैं वर्ष में कई बार मथुरा जाता हूं। मुझे छोटी सी टूटी कुटिया के स्थान को देखकर खेद होता है। वहां यद्यपि कोई बड़ा स्मारक तो बन ही नहीं सकता परन्तु जो भी छोटा सा स्मारक बनेगा उसके लिए कुछ धन तो चाहिए उसकी व्यवस्था अब हो ही जानी चाहिये। वैसे तो यह प्रश्न ऐसा था कि कोई एक दानी भी अपने नाम से उसे बनवा सकते थे परन्तु आर्यसमाज मे इस प्रकार के उदार दानियों की कुछ कमी हो रही है। वैसे समय पड़ने पर दानदाता निकल ही आते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा को अब इस बात का यत्न करना चाहिये कि जो धन जिस कार्य के लिए आय, वह उसी मद मे पूर्णरूप से सुरक्षित रखा जाय। मुझे यह ज्ञात हुआ है कि इन कार्यों के लिए धन समह में श्री कालीचरण जी ने अपना सारा समय लगा रक्खा है। मैं फिर अपनी बात को दोहरा रहा हूं कि कार्य तीनों ही श्रेष्ठ है। इनको सम्पन्न करने में सभी को सहायता प्रदान करनी चाहिये। —विश्वम्भरसहाय प्रेमी, मेरठ

ग्राहक बढ़ाओ आन्दोलन चलाइये

मैं आर्यमित्र का कई वर्ष से ग्राहक हूं, मुझे आर्यमित्र से इतना अधिक प्रेम है, कि इसकी वर्षों पुरानी फाइलों को खोज कर मैंने पढ़ा है। आर्य जगत् के प्रमुखतम तथा हिन्दी के प्राचीनतम पत्र के रूप में आर्यमित्र की हीरक जयन्ती सम्बन्धी समाचार को पढ़कर कौन ऐसा मित्र का पाठक होगा, जिसे आनन्द न हुआ होगा।

इस उपलक्ष में मैं भी अपनी शुभेच्छा प्रगट करते हुए, निम्नलिखित सुझाव रखता हूं।

(१) सभा के भूतपूर्व मन्त्री श्री प० शिवदयालु जी अपने एक अग्रलेख में यह विचार प्रगट किये थे कि मित्र की पृष्ठ संख्या को सोलह से बीस (२०) कर दिया जायेगा लेकिन इसके लिए ५०००) पांच हजार ग्राहक बनाने की आवश्यकता पर आपने बल दिया। उस लेख का समर्थन करते हुए वर्तमान मान्य सभा अधिकारियों से नम्र निवेदन करता हूं कि पृष्ठ संख्या बीस करके (ग्राहकबढ़ाओ) आन्दोलन आरम्भ किया जाय, तथा ५००० ग्राहक जयन्ती तक बना लिए जांय। केवल इसी कार्य के लिए ही दो तीन व्यक्ति नियुक्त कर दिया जाय जो प्रान्त और समस्त भारत का दौरा करें।

(२) इसी बीच आर्य जगत् के विद्वानों से पत्र व्यवहार कर एक-एक विषय पर लेख मांगे जांय और उन लेखों को क्रमानुसार प्रकाशित किया जाय तो इस प्रकार करने में कुछ व्यय अधिक होगा परन्तु मित्र युगोपयोगी हो जायेगा आशा है इस पर सभा के माननीय अधिकारी गण विचार करेंगे।

—रामनगीना पांडेय
अन्तरङ्ग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा बंग आसाम

आर्यमित्र प्रत्येक शिक्षित के पास पहुँचा दें

उत्तरप्रदेश आर्यसमाज का सदैव नेतृत्व करता रहा है। आर्यमित्र द्वारा उत्तरप्रदेश सभा ने आर्य सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार किया है। अतः प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि आर्यमित्र के जयन्ती समारोह तक कम से कम १०००० हजार ग्राहक बनाने के लक्ष्य में जुट जांय, जिससे आर्यमित्र हिन्दी जगत् में एक सफल पत्र बन जाय।

जिस प्रान्त में १००० आर्यसमाजें हों उस प्रतिनिधि सभा का सम्मानित पत्र भला घाटे में चले? आर्यमित्र ही एक ऐसा पत्र है जो ६० वर्षों से साप्ताहिक रूप में आर्य समाज की सेवा करता आ रहा है अब जब इसकी हीरक जयन्ती मनाने की तैयारी की जा रही है तो आर्यमित्र का प्रत्येक शिक्षित समुदाय तक पहुँचा देना चाहिये। उत्तरप्रदेश भारत का हृदय है। यहां लगभग छः करोड़ जनसंख्या है, आर्यसमाज भी जाल सा सारे प्रान्त में बिछा हुआ है। ऐसे प्रदेश में सभा का मुख्य पत्र आर्यमित्र १०००० हाथों तक नहीं पहुँचा तो बहुत लज्जा की बात होगी।

आशा है प्रधान जी जो योग्यता और अनुभव के साकार मूर्ति है उनकी योजना का आर्य जन स्वागत करेंगे और उसे पूर्ण कर कर्मठता का आदर्श प्रस्तुत करेंगे। बिहार के आर्य बन्धु इस योजना मे यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करने में गौरव अनुभव करेंगे।

—उदयशंकरसिंह
बखरी दोआ, सालिमपुर (डुमरांवा)
मुजफ्फरपुर (उत्तर बिहार)

वेदोपदेश

ओम् प्रत्युष्ट ँ रक्षः प्रत्युष्टाऽअरातयो निष्टप्त ँ रक्षो निष्टप्ताऽअरातयः। उर्वन्तरिक्ष मन्वेमि ॥ यजु० १।७

दुष्ट भाव नष्ट हो गया है, अदान शीलता नष्ट हो गयी। दुष्ट भाव दग्ध हो चुका है, अदानशीलता भी दग्ध हो गयी। अब मैं उन्नति के विस्तृत आकाश को प्राप्त हो गया हूं।

आर्यमित्र

लखनऊ—२६ अक्टूबर १९५८, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०५९

जयन्ती की सफलता के लिए

सभा की योजनानुसार इस वर्ष आर्यमित्र हीरक जयन्ती की घोषणा पढ़कर प्रत्येक आर्य के हृदय में उत्साह और उल्लास उमड़ रहा है। आर्यमित्र और आर्य जगत् एक दूसरे के पर्यायवाची बन चुके हैं, इस घनिष्ठता की अब साठ वर्ष पुरानी हैं। आर्यसमाज की प्रगतियों, नीतियों को अग्रसर करने में आर्यमित्र सदैव मीमांसक और प्रचारक का कर्तव्य पालन करता रहा है। साठ वर्ष की लम्बी तपस्या के पश्चात् आर्यमित्र अपने विषय में जनता की भावनाओं को जानने और उनका आदर करने के लिए प्रयत्न शील हुआ है। इस दिशा में सबके सम्मिलित सहयोग से ही सफलता मिल सकती है।

जयन्ती की सफलता के लिए सभा की ओर से प्रचार और धन-संग्रह का कार्य आरम्भ हो चुका है पर सभा की सम्पूर्ण और बलवती शक्ति आर्य जनता में निहित है, जनता के विशाल हाथों में ही योजना की सफलता छिपी हुई है। मित्र द्वारा जयन्ती का सन्देश आप तक पहुंच रहा है अब आपको निर्णय करना है कि आप अपना कर्तव्य कैसे पालन करते हैं।

जयन्ती की रूपरेखा के विषय में भी गम्भीरता पूर्वक विचार किया जा रहा है इस सम्बन्ध में आर्य बन्धुओं के सुझावों के अनुसार अभी तक जो विचार बन सके हैं वे संक्षेप में इस प्रकार हैं—

(१) जयन्ती की सफलता इस बात में होगी कि "आर्यमित्र" एक उच्चकोटि का स्वावलम्बी पत्र बन सके इसके लिए "आर्यमित्र" एक स्वतन्त्र संस्था के रूप में कार्य करे। इसकी एक स्वतन्त्र परामर्शदात्री और प्रबन्ध कर्त्री सभा हो जिसे अखिल भारतीय आर्य पुरुषों की सदस्यता से युक्त किया जाय। साम्पत्तिक और नीति संबंधी अधिकार प्रत्येक दशा में आ०प्र० नि० सभा उत्तर प्रदेश को ही रहेंगे।

(२)मित्र की आर्थिक सुदृढ़ता के लिए एक स्थायी कोष की स्थापना की जावे जिसकी आय से मित्र के स्तर की उन्नति की जा सके और उस उन्नति को स्थिर बनाया जा सकेगा। इस की स्थापना के लिए जयन्ती निधि तथा आर्यमित्र प्रकाशन लिमिटेड के शेयर होल्डरों के प्राप्तव्य धन को प्राप्त कर (मित्र के लिए दान में प्राप्त कर) धन की व्यवस्था की जा सकती है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि शेयर होल्डर्स अपने प्राप्तव्यांशों को मित्र के लिए सहर्ष भेंट कर देंगे।

(३) जयन्ती समारोह किस प्रकार हो यह जयन्ती निधि संग्रह पर अवलम्बित है। यदि निधि-उदधि पूर्ण प्लावित्त हो सके तो कई साहित्यिक सांस्कृतिक एवं अखिल भारतीय आयोजन किये जा सकते हैं यथा अखिल भारतीय हिंदी पत्रकार सम्मेलन,राष्ट्रभाषा सम्मेलन (जिसमें हिंदी समस्या पर आर्यसमाज के दृष्टि से भी विचार हो सकेगा)इसी प्रकार अ०भा०नैतिकोत्थान सम्मेलन आदि हो सकते हैं।

हिन्दी पत्रकार कला प्रदर्शनी का आयोजन भी सामयिक और उपयोगी रहेगा।

(४) इसी अवसर पर हिन्दी पत्रकार कला के एक बड़े अभाव की पूर्ति के लिए गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में 'हिन्दी पत्रकार विद्यालय' की स्थापना भी की जा सकती है। आर्य प्र० नि० सभा उत्तर प्रदेश की ओर से इस दिशा में ४-५ वर्ष पूर्व श्री पं० बनारसीदास चतुर्वेदी एम० पी० और वर्तमान सभा प्रधान श्री पं० हरिशङ्कर शर्म्मा के प्रयत्न से विचार विमर्श भी आरम्भ किया गया था।

(५) इसी अवसर पर दो विद्वान आर्य नेताओं का अभिनन्दन भी सम्पन्न होगा। दोनों ही महानुभाव सभा के सम्मानित व्यक्ति रहें हैं और गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के कुलपति और आचार्य रह चुके हैं। इस अवसर पर गुरुकुल की ओर से (आर्य जगत् की ओर से) दोनों नेताओं के अभिनन्दन को स्थायी बनाये रखने के लिए वैदिक सिद्धान्त सम्बन्धी उपाधियाँ प्रदान की जानी चाहिए। आर्य विद्वानों के अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट आदि के व्यापक कार्यक्रम के साथ-साथ यह बात भी उसका एक अङ्ग हो।

(६) इसी समारोह के साथ ही गुरु विरजानन्द स्मारक शिलान्यास का भी मथुरा में आयोजन किया जाना है। इस अवसर पर गुरु शिष्य प्रणाली के आदर्श की स्थापना के उद्देश्य से उच्चकोटि के शिक्षा विशेषज्ञों का एक सम्मेलन बुलाया जाय और सन्यास के वास्तविक स्वरूप और आदर्शों का प्रचार करने के लिए सन्यासी मण्डल की ओर से एक विशेष साधु सम्मेलन हो सके तो और भी अधिक उत्तम रहेगा। जनता शिक्षा के वास्तविक स्वरूप और परिव्राजक जीवन के उच्चतम आदर्शों को समझ सकेगी, इसी प्रकार गुरु विरजानन्द और ऋषि दयानन्द की भावनाओं का हम उचित सम्मान और प्रसार कर सकेंगे।

(७) जयन्ती की सफल परिस्थिति के लिए देश के ख्याति प्राप्त सांस्कृतिक व्यक्तियों को निमन्त्रित किया जाय और आर्यसमाज के व्यापक स्वरूप का प्रदर्शन किया जाय। उदारता का परिचय दिया जाय। ये और इसी प्रकार के अन्य बहुत से विचार जयन्ती के आयोजकों के सम्मुख विचाराधीन हैं परन्तु इन सब कार्यों की सफलता सबके सम्मिलित प्रयत्न से ही हो सकती है। सभा के अधिकारी जयन्ती प्रचार की दृष्टि से मित्र के वर्तमान स्वरूप को पृष्ठ संख्या बढ़ाकर आदर्श और लोक प्रिय बनाने के प्रश्न पर भी विचार कर रहे हैं पर सब कुछ सहयोग भावना और उद्योग पर ही अवलम्बित है। अब समय आ गया है अब प्रत्येक आर्य को जयन्ती के प्रति अपने कर्तव्य का निर्णय कर लेना चाहिए और उसमें जुट जाना चाहिए।

अन्तरङ्ग सदस्यों से

मित्र का यह अंक जब सभा के अन्तरङ्ग सदस्यों के हाथ में पहुंचेगा वे हल्द्वानी की बैठक में सम्मिलित होने की तैयारियों में लगे होंगे। हम अन्तरङ्ग सदस्यों को उनके कर्तव्य का स्मरण कराते हुए निवेदन करना चाहते है कि नवीन निर्वाचन हुए छठा मास आरम्भ हो रहा है। एक वर्ष के लिए जो उत्तरदायित्व उन्होंने स्वीकार किया था उसका आधा समय पूरा हो रहा है पर क्या जिन आशाओं और भावनाओं उत्साह और उमंगों के साथ अन्तरङ्ग सदस्यों ने अन्तरङ्ग सदस्यता स्वीकार की थी या वे अन्तरङ्ग सदस्य बने थे या सभा के अधिकारी चुने गये थे उनकी पूर्ति में अपने कर्तव्यों का वे पालन कर सके हैं? इस प्रश्न का उत्तर हल्द्वानी की अन्तरङ्ग बैठक उनसे मांगना चाहती है। जिन सदस्यों ने सभा की उन्नति व आर्थिक परिस्थिति सुधारने में, प्रचार व्यवस्था के सुधार में सहयोग दिया है वे धन्यवाद के पात्र हैं पर जो भाई अभी तक अपने निर्धारित उत्तरदायित्वों को पूर्ण करने में किन्हीं कारणों से प्रयत्नशील नहीं हो सके उन्हें इस अन्तरङ्ग में पहुँच कर अपने कर्तव्य पालन का परिचय प्रस्तुत करना चाहिए। १००) प्रति सदस्य की धनराशि भी अभी बहुत से भाई नहीं भेज या भिजवा सके। आर्यमित्र जयन्ती के लिए कौन क्या कर सकेगा इसका निर्णय भी हल्द्वानी में होना है। हम अपने सम्मानित सभा अधिकारियों व अन्तरङ्ग सदस्यों को इस अवसर पर उनके कर्तव्यों को स्मरण कराना अपना कर्तव्य समझते हैं। आशा है इस बार सभी सदस्य सभा की सक्षमता एवं गौरव वृद्धि में योगदान प्रदान कर अपने कर्तव्य का पालन करेंगे।

वैदिक विज्ञान द्वारा विमान निर्माण

भारतीय सभ्यता पर गर्व करने वाला प्रत्येक व्यक्ति रामायण और महाभारत की कथाओं में आग्नेयास्त्रों और विमानादि के प्रयोग पढ़कर प्रसन्नता अनुभव करता है। क्या वे सब वर्णन कपोल कल्पित ही हैं या वास्तविक, इस सम्बन्ध में बहुत समय तक लोगों में भ्रान्ति बनी रही है और आज भी है पर जिन लोगों ने प्राचीन वैदिक वाङमय की खोज को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया हो उन्हें यह रहस्य मिलना ही था। ऋषि दयानन्द ने तो वेदों के वैज्ञानिक अर्थ

[शेष अगले पृष्ठ पर]

[पिछले पृष्ठ का शेष]

कर भारतीय गौरव की घोषणा की थी और अपने शिष्यों को भारतीय विज्ञान के विकास के लिए प्रेरित किया था। समय समय पर इस दिशा में विद्वानों के लेख और प्रयत्न भी पढ़ने मे आते रहे हैं और अब इस दिशा में क्रियात्मक सफलता भी मिली है।

'आर० टी० कालेज अकोला के प्रोफेसर श्री हनुमान शास्त्री ने ऋग्वेद और अन्य प्राचीन शास्त्रों में वर्णित विधि से हवाई जहाज बनाकर सफलता प्राप्त की है। उन्होंने यह प्रयोग विश्वायतन योगाश्रम नई दिल्ली में कुछ दिन पूर्व करके दिखाया था। उनका बनाया हुआ विमान पारे और गन्धक से संचालित किया गया था और ७० फुट ऊचा गया था। उनका कहना है कि पारा बार-बार काम में लिया जा सकता है इसलिए उसमें खर्च कम आता है।

शास्त्री जी ने यह सफलता १० वर्ष के प्रयोग के बाद प्राप्त की। एक मास के अन्दर वे पुनः नया प्रयोग दिखायेंगे।

(हिन्दुस्तान १५ अक्तूबर ५८)

इस सफलता के लिए हम शास्त्री जी को भारतीय सभ्यताभिमानियों की ओर से हार्दिक बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि वे अपने परीक्षणों में और भी अधिक सफलता प्राप्त करेंगे। प्रभु उन्हें सफलता प्रदान करें। यदि प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक विचार धारा को प्रोत्साहन प्राप्त हो सके तो प्राचीन आग्नेयास्त्रों ब्रह्मास्त्रों पाशुपतास्त्रों आदि के रहस्य भी स्पष्ट हो सकते हैं और तब हम विज्ञान की प्रगति मे भी गर्वोन्मत हो सकते हैं। भारत सरकार को इस दिशा मे अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

अजमेर में ऋषि मेला

ऋषि दयानन्द के निर्वाण को आगामी दीपावली पर ७५ वर्ष पूर्ण हो जायेंगे। आज से २५ वर्ष पूर्व १९३३ मे अजमेर मे ऋषि निर्वाण अर्द्ध शताब्दी मनायी गयी थी, मथुरा की जन्म शताब्दी के बाद शायद यही सबसे बड़ा समारोह हुआ था, अच्छा होता यदि २५ वर्ष बाद पुनः उसी प्रकार का आयोजन किया जा सकता परन्तु समय के अभाव मे अब वह सम्भव नहीं।

ऋषि की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री म०कृष्ण ने आर्य जनता के नाम निमन्त्रण प्रकाशित किया है कि सभा की ओर से आगामी दीपावली पर १०, ११, १२ नवम्बर को अजमेर में ऋषि मेला लगाया जायगा। आर्य बन्धु उसमें सम्मिलित होवें।

इस शुभ आयोजन के लिए हम मित्र परिवार की ओर से सभा के अधिकारियों का धन्यवाद करते हैं और समारोह की सफलता के लिए शुभ कामनाएं प्रस्तुत करते हैं। आशा है आर्य जनता इस समारोह में अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर लाभ उठायेगी।

आपका गुरुकुल महान् हो

उत्तर प्रदेश के आर्यों द्वारा संचालित गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन आर्य जगत् का गौरव है। विजयादशमी के सुअवसर पर गुरुकुल का ५३ वाँ जन्म दिवस मनाया गया। गुरुकुल अपने आदर्शों पर आगे बढ़े और शिक्षा तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में आर्य समाज की विचार धारा का प्रचारक प्रसारक बनकर सफल हो महान बने यही आर्य जनता को मंगल कामना है। मित्र परिवार की ओर से हम कुल वासियों को इस जन्मोत्सव पर हार्दिक बधाई देते हैं और कुल की उन्नति की कामना करते हैं।

चन्द्रलोक की ओर

अमेरिका द्वारा चन्द्रलोक की ओर प्रेषित राकेट आधुनिक विज्ञान की प्रगति का परिचायक है। यद्यपि परीक्षण पूर्ण सफल नहीं हो सका फिर भी मनुष्य आगे बढ़ा है और उसे प्रोत्साहन मिला है। वैज्ञानिक अपनी प्रगति में सफल हों, पर यह प्रगति मानवता के कल्याण में सहायक बने विनाश का कारण नहीं, यही प्रभु से प्रार्थना है। हम लोगों के शांति पाठ में पृथ्वी में शान्ति के साथ द्यौ और अन्तरिक्ष लोकों का उल्लेख आज प्रत्यक्ष है, इसी से वैदिक ज्ञान की महत्ता स्वीकार की जानी चाहिए। राकेट द्यौ और अन्तरिक्ष में भी शांति बनाये रक्खे, वेद का आज के मानव को यही सन्देश है और चन्द्रमा तो शान्ति का सन्देश स्वयं दे रहा है।

पाकिस्तान में परिवर्तन और प्रजातन्त्र

वृहत्तर भारत के खण्डित अङ्ग पाकिस्तान मे ग्यारह वर्ष के सत्ता संघर्षों के पश्चात् ७ अक्तूबर को जो परिवर्तन हुआ वह जिस नाटकीय ढग से हुआ उसके औचित्य अनौचित्य एवं उसकी वैधानिकता और राजनीतिज्ञता के सम्बन्ध मे काफी समय तक चर्चा होती रहेगी। हम इस परिवर्तन के मूल कारणों की मीमांसा करें तो यही अनुभव करते हैं कि वहां जनता और शासकों के मध्य सम्पर्क समाप्त हो चुका था और वहाँ प्रजातन्त्र के लिए संघर्ष के स्थान पर स्वार्थ तन्त्र के लिए संघर्ष चल रहा था। श्री इस्कन्दर मिर्जा और जनरल आयूब खाँ ने इस परिवर्तन द्वारा पाकिस्तान की जनता को राहत पहुंचाने का प्रयत्न किया है परन्तु उद्देश्य अच्छा होते हुए भी साधनों की पवित्रता विचारणीय होनी चाहिए।

प्रजातन्त्र के समुचित विकास में आने वाली बाधाओं को अवश्य नष्ट किया जाना चाहिये स्वार्थी दम्भी और सत्तालोलुप व्यक्तियों को अवश्य दण्डित किया जाना चाहिये पर प्रजा के सच्चे हितैषियों को विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता से वंचित कर जेलों में डालना प्रजातन्त्र की निर्मम हत्या ही कही जायगी। खान अब्दुल गफ्फार खां गाँधी, अब्दुल समद खां गांधी, मौलाना भशानी आदि जैसे स्वतन्त्र विचारक और जन हितैषी नेताओं को सीखचों में बन्द रखने वाला शासन पाकिस्तान में अधिक दिन लोकप्रिय न रह सकेगा। दैनिक जीवन की मौलिक सामग्रियों में सस्तापन और सुविधा, जीवन रक्षा की गारण्टी आदि बातें शासन की सर्वप्रियता के लिए आवश्यक हैं पर आत्मा की विचार स्वतन्त्रता भौतिक सुखों से ऊपर है और उसी के लिए पाकिस्तान की जनता ने अंग्रेजों से संघर्ष किया था और अब भी जनता इस स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए तड़फड़ा उठेगी और अपना अधिकार प्राप्त करके रहेगी। यदि मिर्जा और आयूब पाकिस्तान की सच्चे हृदय से उन्नति और ख्याति चाहते हैं तो उन्हें अपनी प्रजातन्त्र सम्बन्धी नीति को स्पष्ट करना होगा और यदि वहां दो व्यक्तियों की सरकार ही रही तो पाक जनता इस अन्याय का विरोध करके ही रहेगी और उसी संघर्ष मे पाकिस्तान में प्रजातन्त्र के अस्तित्व का सम्भावित निर्णय हो सकेगा। भारत की वर्तमान राजनीति के लिए यह घटना एक महान चेतावनी और शिक्षा है।

भारत १९५८ प्रदर्शनी

दिल्ली में भारत १९५८ प्रदर्शनी का विधिवत् उद्घाटन हो चुका है और दो मास तक वह खुली रहेगी। भारत की ग्यारह वर्षीय प्रगति को जानने और समझने के लिए यह एक सामयिक उपयोगी आयोजन है और व्यवस्था आदि की दृष्टि से प्रशंसनीय है। इस पक्ष के होते हुए भी प्रदर्शनी में हिन्दी की उपेक्षा अखरने वाली और राष्ट्रीय स्वाभिमान पर आघात करने वाली चीज है। राष्ट्रभाषा को स्थान न देना और देना भी तो अंग्रेजी के नीचे देना ऐसा कार्य है जो भारतीय मस्तिष्क की दासता का प्रदर्शन कर रहा है। आगन्तुक विदेशी अतिथियों की भावनाओं का हमें ध्यान रखना चाहिये पर आत्म-गौरव उससे भी बड़ी वस्तु है। स्वाधीनता के ग्यारह वर्ष बाद इस गौरव गरिमा को अच्छी प्रकार समझना और मानना चाहिये। राष्ट्रभाषा को सरकारी भाषा के रूप मे प्रचारित प्रसारित करने का दायित्व रखने वाली केन्द्रीय सरकार हिन्दी का इस प्रकार उपेक्षा करे तो वह अन्य राज्यों को क्या कह सकती है? इसके साथ ही अंग्रेजी से अनभिज्ञ बहुमत के लिए हिन्दी परिचय के अभाव में यह सब व्यर्थ हो जायगा, हां खेल तमाशे की रौनक भले ही खूब रहे पर ज्ञान वर्धन में सफलता न मिलेगी। आशा है इस ओर शीघ्र ध्यान दिया जायगा।

दान-सूची

(मास अक्टूबर ५८) दानी सज्जनों को यह सभा धन्यवाद देती है

श्री श्रीदेव वानप्रस्थी जी मुख्य निरीक्षक सभा द्वारा प्राप्त दान—

आ० स० मर्बना २०) आ० स० इटावा १०) आ० स० कालेज इटावा २६) आ० स० शिकोहाबाद २०) श्री मद्दयानन्द उच्चतर विद्यालय फिरोजाबाद २६) आ० क० पा० फिरोजाबाद १८) वैदिक प्रा० पा० चन्दवार गेट फिरोजाबाद ८) दयानन्द बे० प्रा० पाठशाला फिरोजाबाद ८) आ० स० फिरोजाबाद ११) दयानन्द वैदिक कालेज मैनपुरी २६) आ०स० मैनपुरी ५) अनि० आ० इन्टर वि० एटा २६) आ० स० एटा ५) आ० स० कासगज ३) आ० स० गजडुंडवारा १५) आ० स० अलीगज ७) आ० क० पाठशाला सिकन्दराराऊ १५)आ०स० सिकन्दराराऊ ३०) आ०स० अलीगढ़ ५) आ० क० पा० हा० स्कूल माईथान आगरा १०) श्री सेकसरिया आ०क० पा०हा० स्कूल बेलन गंज आगरा २) ना० छ० वै० इण्टर कालेज आगरा छावनी३८) आ० स० नगर आगरा ११) बे० वैदिक जू०हा० स्कूल बालुगंज आगरा १०) आ०स० नामनेर आगरा छावनी ६२) आ० क० विद्यालय सुल्तानपुरा १२) डी० ए० वी० स्कूल गोवर्धन २) आ० क० विद्यालय मथुरा १४) आ० स० गोवर्धन १२) डी० ए० वी० जू० हा० स्कूल मथुरा १८) आ०स० चौक मथुरा १४॥) श्रीमती सुशीलादेवी मलिक हैम्पीयर नगर मथुरा १०) आ० स० मथुरा ११)।

श्री माता हेमलतादेवी जी मुख्य निरीक्षिका द्वारा दान—

स्त्री आ० स० अलीगढ़ २)

" " " लखनऊ नगर१२)+२॥)

" " " शिकोहाबाद ८=)

" " " आगरा छावनी १३॥)

" " " सिटी आगरा १३)

श्री पं० प्रेमचन्द्र जी शर्मा उप मंत्री सभा द्वारा—

आ० स० मैन्डू ३१) हाथरस५१) सासनी ११) सिकन्दराराऊ २१) मुरसान ११) —सभा मन्त्री

सिद्धान्त-विमर्श

कर्म सिद्धान्त पर मेरा मौलिक मतभेद

[श्री गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०]

★ प्रस्तुत लेख मे श्री उपाध्याय जी ने कर्म सिद्धान्त सम्बन्धी विवेचन किया है और श्री बाबू कालीचरण जी की मान्यताओं से मतभेद स्पष्ट किया है। हम इस विषय पर विद्वानों के दृष्टिकोण का स्वागत करेंगे जिससे सिद्धान्त मन्थन द्वारा रहस्य का उद्घाटन हो सके।—सम्पादक ★

२१ सितम्बर १९५८ के आर्यमित्र में कर्मफल अगले जन्म या जन्मों में इस शीर्षक का एक लेख श्री बाबू कालीचरण जी ने दिया है। उससे मेरा मौलिक मतभेद है। श्री बाबू जी मेरे घनिष्ठ मित्र हैं और अधिकांश बातों में मेरा मत वही है जो उनका है। इस लेख में भी मुझे उनकी अनेक प्रतिपत्तियां स्वीकार हैं। जैसे—

१—कर्ता का कर्म के साथ और कर्ता के कर्म का सुख दुःख के साथ समवाय सम्बन्ध है।

२—हर कोई अपने ही किये कर्मों का फल सुख दुःख भोगता है। और जो दूसरे के कर्म का सुख दुख भोगता दृष्टिगोचर होता है वह साधन रूप हो कर असमवाय सम्बन्ध से है।

३—फल और प्रभाव में बहुत अन्तर है। कर्म का फल केवल कर्ता को ही मिलता है। परन्तु कर्म का प्रभाव कर्ता और द्रष्टा को भी होता है।

४—कर्मफल निश्चित रूपेण एक ही होगा अर्थात् शुभ कर्म का फल सुख और दुष्ट कर्म का फल दुःख। परन्तु कर्म प्रभाव मिश्र होता है और हो सकता है। मुझे यह चारों बातें स्वीकार हैं। इसके साथ ऋषि दयानन्द के यह वचन भी जिनको श्री बाबू जी ने उद्धृत किया है अर्थात्—

५—किया हुआ कर्म निष्फल कभी नहीं होता।

६—केवल पाप करने वाला ही पापी होता है।

७—परमेश्वर के भोगाने से जीव दुःख भोगता है।

यहाँ तक तो हुआ 'मतैक्य'। परन्तु भेद तो मौलिक है। श्री बाबू जी के लेख का शीर्षक होना चाहिए था 'किसी कर्म का फल इस जन्म मे नहीं मिल सकता।'

श्री बाबू जी लिखते है—'इसी के आधार पर (अर्थात् पिछली ७ प्रतिपत्तियों के आधार पर) मेरा विचार है कि इस जन्म के कर्मों का अगले जन्म में अथवा जन्मों में मिलेगा इस ही जन्म मे कदापि नहीं।' इस वाक्य के पहले अंश को मैं आंशिक रूप से मानता हूं। दूसरे अर्थात् पिछले अंश को कदापि नहीं। मुझे आश्चर्य है कि जिन ७ प्रतिपत्तियों को श्री बाबू जी ने अपने मत का आधार माना है उनमें एक में भी ऐसी विशेषता नहीं कि मेरे मत का विरोध होता हो। मेरा अपना मत ऐसा है—

१—सब शुभ या अशुभ कर्म एक ही कोटि के नहीं होते और न उनके फल देने में बराबर समय ही लगता है। कुछ जल्दी फल लाते हैं। कुछ देर में, एक मोटा दृष्टान्त यह है कि पालक का साग दो मास में फल लाता है। कटहल का वृक्ष सात आठ साल में।

२—अतः कुछ कर्मों का फल इस जन्म में भी मिलता है। कुछ का अगले जन्म में और कुछ का कई अगले जन्मों में। जन्म कर्मों या फलों के निर्णायक नहीं। समवाय सम्बन्ध है कर्मों और फलों में न कि जन्म में और फलों मे।

श्री बाबू जी इतना तो मानते हैं कि कुछ कर्मों का फल अगले जन्म मे मिलेगा और कुछ का अगले कई जन्मों में। अतः यह सिद्ध है कि सब कर्मों के फल बराबर काल की अपेक्षा नहीं रखते। उनके फल लाने में भिन्न भिन्न समय लग सकते हैं। फिर क्या आपत्ति है कि हम वर्तमान जन्म की सर्वथा उपेक्षा करें। और जैसे मुसलमान या ईसाई मानते हैं कि कयामत से पहले किसी कर्म का फल मिल ही नहीं सकता और हम उन पर 'दौरा सुपुर्द' का आक्षेप करते हैं उसी प्रकार हम भी माने कि किसी छोटे या बडे शुभ कर्म के फल के लिए हम को अपनी मृत्यु के समय तक की प्रतीक्षा आवश्यक है। जो कारण कर्मों के कई जन्मों में फलित होने के लिए उपस्थित हैं वही कारण कुछ कर्मों के फलों को जल्दी अर्थात् इसी जन्म में भुगाने के लिए भी पर्याप्त हैं। यदि एक कर्म के विपाक में दो जन्म, दूसरे के विपाक में तीन जन्म, तीसरे के विपाक में चार जन्म लग सकते हैं तो यह भी क्यों न माना जाय कि किसी कर्म के विपाक में एक वर्ष, किसी के में पन्द्रह वर्ष, किसी के में बीस वर्ष लगेंगे।

अमर जीव के अमर जीवन में जन्म और मृत्यु साधारण कारण हैं निमित्त नहीं। यह तो परिस्थितियों के परिवर्तन का ही नाम है। सुख और मरण का कितना हाथ है यह है मौलिक प्रश्न। यदि आप जन्म और मरण को कर्म का निमित्त नहीं मानते तो फल का भी निमित्त नहीं मान सकेंगे। फिर जन्म और मरण का कर्मों और उनके फलो के साथ केवल आनुषाङ्गिक सम्बन्ध रहेगा। सो प्रभाव के साथ मे भी है। प्रभाव और फल मे श्री बाबू जी ने भेद मान ही लिया है। ऋग्वेद १।१६४।२२ (यस्मिन् वृक्षे) में न तो मूल मे कोई एक भी शब्द है, न स्वामी जी के शब्दार्थ मे, न भावार्थ में और न हिन्दी के अनुवाद मे, जिसमे यह अर्थ निकलता हो कि कोई भी ऐसा शुभ या अशुभ कर्म नहीं जिसका फल इसी जन्म मे मिल सके। देखिये—

अन्वयः—हे विद्वांसो। यस्मिन् विश्वे वृक्षे मध्वद-सुपर्णा जीवा निविशन्तेऽधिसुवते च तस्येत् पिप्पलमग्रे स्वाद्वाहुः। तन्नोन्नशत्। य: पितर न वेद स तन्न प्राप्नोति।

भावार्थ—अत्र रूपकालङ्कारः। अनाद्यनन्तात् कारणादिदं विश्वं जायते विनश्यति जीवा जायन्ते म्रियन्ते च। अत्र जीवैर्यादृशं कर्माचरित तादृमेवावश्यमीश्वर न्यायेन भं ञ्यमस्ति कर्म जीवयोरपि नित्यः सम्बन्धः। ये परमात्मान तद्गुणकर्मस्वभावानुकूलाचरण चाविदित्वा यथेष्टमाचरन्ति ते सतत पीडयन्ते येऽतो विपरीतास्ते सदानन्दन्ति ॥

यहाँ 'वृक्ष' शब्द का अर्थ है जगत् जन्म नहीं। 'अग्रे' शब्द का अर्थ है—आगे। 'पितर' का अर्थ है ईश्वर ईश्वर की व्यवस्था से फल मिलता है इतना हो तो कहा है। यह कहाँ कहा कि इस जन्म मे फल नहीं मिलता? जो ईश्वर की व्यवस्था पालक के बीज को दो मास मे पका सकती और कटहल के बीज को आठ वर्ष में पकाती है वही व्यवस्था कुछ शुभ कर्मों को इस जन्म मे और कुछ को कई जन्मों म पका सकती है इसमें आपत्ति ही क्या है। क्रियमान, संचित और प्रारब्ध का सिद्धान्त तो इस जन्म मे फल देने का खण्डन नहीं करता। दो वर्ष संचित रहे वह भी संचित है और दो जन्म में संचित रहे वह भी 'संचित'। 'संचित' तो कड़ी है क्रियमान और प्रारब्ध के बीच का। यह कड़ी कितनी लम्बी है यह प्रश्न तो केवल न आपके मत मे ही लागू होता है न हमारे मत का खण्डन ही करता है। आप यह तो कह नहीं सकते कि सभी कर्मों के बीच मे कड़ी की लम्बाई समान है।

एक और प्रकार देखिये। कल्पना कीजिये कि मोहन और गोपाल ने २५ वर्ष की आयु में एक ऐसा शुभ कर्म किया जिसका फल लगभग एक सा होता है। कल्पना कीजिये कि मोहन २८ वर्ष की आयु मे मर गया और गोपाल ९० वर्ष का होकर मर गया तो आपके मत के अनुसार मोहन को तीन चार वर्ष बाद ही फल मिल सकेगा और गोपाल को ७० वर्ष प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। यह तो बड़ा अनर्थ होगा। यदि यह मान लेवें कि कुछ कर्मों का फल इस जन्म में भी मिल सकता है तो यह आपत्ति दूर हो सकती है।

अब स्वामी जी के एक वचन को लीजिये—

'जो मनुष्य वेदोक्त धर्म का अनुष्ठान करता है वह इस लोक में कीर्ति और मरकर सर्वोत्तम सुख को प्राप्त करता है।' इसमें 'वेदोक्त धर्म का अनुष्ठान' समुच्चय बोधक है। विशेष कर्मों को अलग अलग गिनाया नहीं है। यहाँ दो फल बताये एक कीर्ति और दूसरा सर्वोत्तम सुख। सर्वोत्तम सुख तो मोक्ष है क्योंकि मोक्ष से उत्तम और कोई सुख नहीं। यह मोक्ष तो मरकर ही मिल सकती है। शरीरधारी और मुक्त दोनों परस्पर विरोधी हैं। रही 'कीर्ति'। आपने इसको संस्कार या प्रभाव मे कैसे गिन लिया? कीर्ति संस्कार नहीं, न प्रभाव है। यह भी सुख है। मोक्ष के बराबर न सही परन्तु है तो कर्म का फल।

यह कैसे माना या कैसे जाना कि संचित से प्रारब्ध बनने का आरम्भ दूसरे जन्म मे ही होता है? इसके लिए न युक्ति है न प्रमाण। क्रियमाण कर्म संचित तो होंगे ही। परंतु कितनी अवधि तक? जब तक कि विपाक के कारण उनका प्रारब्ध आरम्भ न हो।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

वैदिक विधान और चरित्र निर्माण

(मानव जीवन का उद्देश्य)

(श्री बाबू पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट, माईथान आगरा)

मानव जीवन का उद्देश्य सुख प्राप्त करना है, सुख का सम्बन्ध इन्द्रियों की तृप्ति से है, स्वस्ति सुख और कल्याण का द्योतक है, सुख की दशा को वास्तविक और स्थाई रूप देने के लिए शान्ति की भावना आवश्यक है, यदि सुख प्राप्त होता रहे परन्तु शान्ति प्राप्त न हो तो सुख की प्राप्ति इच्छाओं की वृद्धि का कारण बनेगी और सुख के स्थान मे दुख की वृद्धि का कारण बन सकती है। हमारे यहां प्रत्येक यज्ञ और शुभ कार्य के आरम्भ मे स्वस्तिवाचन और शान्ति प्रकरण का विधान किया गया है। स्वस्तिवाचन में जिन मन्त्रो का सकलन है उसमें अन्य मन्त्रों के साथ चारो वेदो के पहले पहले मन्त्रो का भी सम्मिलित किया गया है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है, मानव के लिए आदेश और विधान है। मनुष्य का जीवन ससार के रचित पदार्थों का प्रयोग मे लाते समय उसका सम्पर्क अन्य प्राणियो मे आवश्यक होता है, जिस प्रकार एक मनुष्य पदार्थों की इच्छा करता है और उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है, उसी प्रकार दूसरे मनुष्य और प्राणी भी इच्छा करते हैं। एक सी इच्छा रखने वाले प्राणियो का एक से पदार्थों को प्राप्त करने के लिए एक दूसरे के सम्पर्क में आना भी आवश्यक है और सम्पर्क मे आते समय मतभेद और स्वार्थ मे ठेस लगने के कारण सघर्ष भी बहुधा अनिवार्य सा हो जाता है। प्राणियों का आपस मे सम्पर्क मर्यादित हो और सघर्ष की सम्भावना भी कम से कम हो और यदि हो भी तो उस सघर्ष के समाधान की विधि प्रचलित होना आवश्यक है, और यदि हम मनोविज्ञान और विश्लेषण की दृष्टि से देखें तो मानव के लिए यह दोनो बाते अति आवश्यक हैं कि वह जब रचित पदार्थों को प्रयोग मे लाने लगे तो उसके रचयिता को लक्ष्य मे रक्खे। प्रत्येक वस्तु का एक स्वामी है। ससार का कोई पदार्थ ऐसा नहीं जिसका कोई न कोई स्वामी न हो। जिसकी व्यवस्था से पदार्थ रूप धारण करते हैं और जिसकी व्यवस्था से वे पदार्थ प्राणियों को कम या अधिक मात्रा मे प्राप्त होते हैं वह स्वामी है उसको ही ईश्वर कह सकते हैं क्योंकि उसका ही ऐश्वर्य है मानवों ने ईश्वर के प्रदत्त बुद्धि के सहारे ससार के नैसर्गिक पदार्थों के सहारे से पदार्थों को अपनी इच्छा के अनुसार नया रूप दे दिया है। और जहाँ तक नया रूप देने का सम्बन्ध है वह उस समय तक उसके अधिपति या स्वामी अपने को समझ सकते हैं और कहलाये जा सकते हैं।

परन्तु इस प्रकार रूप देने वालों को भी यह बात ध्यान में रखनी है कि रूप देने में सबसे अधिक सहायक बुद्धि है और वह बुद्धि भी अपनी नहीं है।

दूसरे के द्वारा ही प्राप्त होती है और अन्तिम रूप से उस बुद्धि का आदि स्रोत एक सर्वज्ञ, सर्वज्ञाता, सर्व व्यापक, शक्ति है। यदि बुद्धि भी हो और नैसर्गिक पदार्थ न हो, अग्नि न हो, जल न हो, वायु न हो, अन्न न हो, वन वृक्ष न हो खानो में लोहा इत्यादि न हो तो बुद्धि भी कुछ काम न कर सकेगी। सामग्री और बुद्धि अथवा ज्ञान दोनो अनिवार्य और आवश्यक हैं। स्वस्ति के लिए यह आवश्यक है कि बुद्धि का प्रयोग करते समय यह बात ध्यान मे रखी जावे कि बुद्धि का आधार और आदि स्रोत कौन है, कहां है यदि बुद्धि के समय बुद्धि के आदि स्रोत का ध्यान न रहेगा तो बुद्धि का प्रयोग इस अंश मे दूषित हो जावेगा कि आदि स्रोत की आज्ञा को और विधान को भुला कर बुद्धि का मनमाना काल्पनिक प्रयोग हो जायेगा। इसका यही परिणाम होगा जो ससार मे अन्य क्षेत्रों में मनमानी के कारण होता है। कानून को जानना और मानना दोनो आवश्यक हैं, उसका पालन करना भी आवश्यक है परन्तु किसी को यह अधिकार नहीं है कि वह कानून को अपने हाथ मे ले ले। "डू नाट टेक दि ला इन योर ओन हैन्ड्स" अर्थात् कानून के साथ मनमानी न करो, यह एक प्रचलित और प्रसिद्ध आदेश है। जिस प्रकार बुद्धि के प्रयोग के समय बुद्धि के आदि स्रोत को लक्ष्य मे रखना आवश्यक और अनिवार्य है उसी प्रकार ससार के पदार्थों को अपनी अर्थ की सिद्धि और कामना की पूर्ति मे साधन बनाते समय प्रयोग मे लाते समय यह आवश्यक है कि हम आदि मूल का ध्यान अवश्य रखें। दूसरे शब्दों मे वैदिक मर्यादा यह बताती है कि प्रत्येक कार्य करने से पूर्व यह आवश्यक है कि आदि स्रोत और आदि मूल का न भूला जाये, न केवल स्मरण ही किया जाये उसका ठीक रूप मे याद किया जावे। ठीक रूप मे याद करने का अभिप्राय उस आदि मूल और आदि स्रोत के गुण, कर्म और स्वभाव को जानना, मानना और प्रयोग में लाना आवश्यक है। उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के नियम निर्धारित करते समय सबसे पहले नियम में आदि मूल की भावना पर बल दिया है। इस नियम में जहाँ तक सत्य विद्या और सत्य ज्ञान का सम्बन्ध है वहाँ आदि मूल का अर्थ और प्रयोजन आदि मूल है, और जहां तक पदार्थों की रचना का प्रश्न है वहाँ आदि मूल का अभिप्राय रचयिता या रचना के निमित्त कारण से है, यह नियम अन्य नियमो के साथ आर्यों और श्रेष्ठों के लिए हैं। यह भले आदमियों के लिए नियम है यह सार्वजनिक नियम है। इसका किसी देश, काल, जाति, लिंग, रङ्ग रूप, हाव, भाव से कोई सम्बन्ध नहीं है। नियम को पालन करने की योग्यता प्राप्त हो और स्थाई रूप से प्राप्त हो उसके लिए स्वस्ति वाचन की विधि है और स्वस्ति वाचन मे जीव को दूसरे शब्दो मे शरीरधारी मानव के लिए सन्देश है कि जब वह ससार में जीवन निर्वाह करे तो वह ससार के सामने आते समय ही उसके सम्पर्क मे आते ही यह बात ध्यान में ले आवे कि उसका संसार से क्या सम्बन्ध है और ससार के अन्य प्राणियो से क्या सम्बन्ध है और यह सम्बन्ध किस आधार पर निर्धारित होता है। यदि ससार के पदार्थों से और ससार के प्राणियो से एक मानव प्राणियों से एक मानव प्राणी का अर्थात् एक व्यक्ति का सम्बन्ध एक सार्वजनिक स्थाई रूप मे स्थापित हो जाये तो वह सुरक्षित और मर्यादित रह सकेगा। ऋग्वेद के सबसे पहले मन्त्र में यह आदेश है कि जब मनुष्य ने जगत् को देखा तो वह पुकार उठा कि अग्नि रूप परमात्मा सब प्रकाशो का प्रकाश, सबका हितकारी इस ससार रूपी यज्ञ का रचयिता है। सारा ससार उसकी मर्यादा मे चल रहा है। ससार के रत्न अर्थात् मूल्यवान से मूल्यवान पदार्थ उसके ही आधार पर हैं और ससार मे अवस्था का परिवर्तन अर्थात् समय समय पर भिन्न भिन्न ऋतुओ का आना उसकी व्यवस्था से हैं। देश और काल उसके आधीन हैं देश और काल के चक्र में सारा जड़ और चेतन जगत् है और यदि प्राणी यह अभ्यास डाल ले कि जब ससार को देखे तो तुरन्त स्वभाव से यह कहने लगे कि मैं उस आदि अग्नि की, उस आदि मूल और आदि स्रोत की आराधना करता हूं। ऋग्वेद के पहले मन्त्र में इसी सत्य भावना का प्रकाश, प्रचार और विस्तार है। इसी लिए महर्षि दयानन्द ने स्वस्तिवाचन में सबसे पहिले ऋग्वेद के पहिले मन्त्र को लिया है। इस मन्त्र में यह उपदेश और निर्देश है कि जो आदेश और विधान है वह मानव जीवन के लिए मौलिक आधार है। Fundamental Direction है। अर्थात् मौलिक आदेश है। यह सबसे आरम्भिक सत्य है और सत्य का अन्तिम और परिष्कृत रूप भी यही है। यदि प्राणी अपने को समझता जावे अपनी ज्ञान की वृद्धि के साथ, ज्ञान के मौलिक आधार को लक्ष्य में रखे और ससार मे पदार्थों को देखते हुए उनके असली स्वरूप को समझता जावे तो जो आरम्भिक सत्य है वही अन्तिम सत्य होगा। सारा ज्ञान पदार्थ विद्या का विज्ञान रूप ज्ञानों का विश्लेषण, उनका मनन, सारा तत्व ज्ञान दूसरे शब्दों मे सारी साइन्स और तत्व ज्ञान इस अन्तिम और आरम्भिक सत्य को सिद्ध करने मे स्थाई रूप देने में सहायक होंगे और यदि मानव अपने कल्याण के लिए ऊपर लिखे उद्देश्य से स्वस्ति वाचन का अभ्यासी हो तो उसका जीवन कल्याणमय होगा सामयिक रूप से नहीं परन्तु स्थाई रूप से। कल्याण के स्थाई रूप का नाम शान्ति की प्राप्ति है। ऋग्वेद का उद्देश्य और लक्ष्य मुख्यतया ज्ञान की प्राप्ति है। ऋग्वेद का सम्बन्ध विशेष रूप से इस ऋग्वेद के लिये उस ज्ञान से प्रकाशित कर्म को मर्यादित करना है और मर्यादित कर्म का ही नाम चरित्र है।

(विज्ञप्ति सं० ५, नैतिक उत्थान विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित)

क्या कहते हैं नेहरू महान् ?—(१)

[आचार्य श्री प० नरदेव शास्त्री, वेदतीर्थ कुलपति महाविद्यालय, ज्वालापुर, हरिद्वार)





> आज सभ्य समाज के आकर्षण के लिए श्रमिकों और कृषकों के प्रलोभन के लिए समाजवादी समाज रचना का नारा वायु मण्डल में गूंज रहा है। पर वह समाजवाद क्या और कैसा होगा इसकी व्याख्या आज तक अस्पष्ट है। भारतीय वर्ण व्यवस्था भारतीय समाजवाद की व्याख्या है और उसकी महत्ता पर सदय विचार किया जाना चाहिए। साम्यवाद की हिंसा को निकाल देने के बाद त्याग की जिस भावना को विकसित किया जाना चाहिए वर्ण व्यवस्था उसी त्याग की भित्ति पर खड़ी है और उसी के विकास में सहायक है। आवश्यकता है उसे व्यापक भारतीय दृष्टिकोण से देखने की। विद्वान् लेखक ने इस लेख में इसी की समीक्षा की है। —सम्पादक

सामयिक समस्याएँ

"समाजवादी दृष्टिकोण में ही देश की प्रगति होगी। पूंजीपति पद्धति से नहीं"—ऐसा कहा है श्री नेहरू जी ने कांग्रेस के पत्र "इकनामिक्स रिव्यू" के गत अङ्क में। यह लेख कुछ दिन पूर्व भारत की कांग्रेस कमेटियों और कांग्रेस कार्यकर्ताओं में बटा था। इसमें श्री नेहरू जी के अपने मनोगत विचार स्पष्टरूप में आये हैं, इसलिए इस लेख का महत्व है।

इस लेख में यद्यपि कोई नई बात नहीं है तथापि भारत किस मार्ग का अवलम्बन करेगा तो उसकी प्रगति होगी इस विषय में श्री नेहरू जी का सन्तुलित मत इस लेख में व्यक्त होता है, इसीलिए इस लेख का महत्व बढ़ गया है।

इस लेख के लेखक नेहरू कौन ?

इस लेख का नेहरू वह नेहरू है जिसकी आयु के तीस वर्ष स्वतन्त्रता प्राप्ति के आन्दोलन में व्यतीत हुए और स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी जो अनवरत ग्यारह वर्ष भारत का प्रधान मन्त्री रह कर रात दिन भारत का हित चिन्तन करता रहा है। ऐसे उज्ज्वल नेता के विचारपूर्वक लिखे हुए अथवा निकाले हुए निष्कर्ष या सिद्धान्त इस लेख में मिलते हैं इसीलिए इस लेख का महत्व विशेष है।

उन्होंने कई बार प्रेस कान्फ्रेन्स में भी कहा है कि "यदि देश में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाना है तो पूंजी का उपयोग मनुष्य समुदाय के हित के लिए करना चाहिए और उसको नाना गुणों से सपन्न करना चाहिए। स्वतन्त्र भारत के प्रौढ़ नागरिकों का (सारे के सारे), केवल साक्षर बनने से काम नहीं चलेगा। वे सच्चे अर्थों में शिक्षित होने चाहिए" इत्यादि—

आजकल शिक्षा का प्रचार बड़े वेग से हो रहा है तो भी योग्यता का स्तर नीचे ही नीचे खिसक रहा है। मनुष्यों के मनों को सुसंस्कृत बनाने में, अथवा जीवन की उलझनों को सुलझाने के लिए जो गुण अपेक्षित हैं, जैसे धैर्य, नैतिकता, सामाजाभिमुखता, इत्यादि गुणों का परिपोष जिसमें हो सकता है ऐसी शिक्षा दीक्षा आजकल कहाँ मिलती है ? स्वार्थ की अपेक्षा समाजहित को महत्व देने की वृद्धि व्यक्तियों में क्यों नहीं दीखती। हमारी उक्ति और कृति में देश प्रेम की मात्रा क्यों कम रहती है ? हम अपने कर्तव्यों के विषय में इतने उदासीन क्यों रहते हैं और कर्तव्य और अधिकार की बात आती है तो अधिकार के लिए मरते हैं।"

इन समस्त अथवा इन जैसे प्रश्नों के उत्तर ढूंढते हैं तो हमें ऐसा प्रतीत होता है कि, इस देश की वैचारिक परम्पराओं में से उदय हुआ और आधुनिक जीवन की नव नवीन ज्ञान का परिचय प्राप्त करा देने वाला तत्व ज्ञान (यथार्थ ज्ञान) लोगों के सामने नहीं है। इसीलिए जनता देश प्रेम अथवा स्वयं स्फूर्ति से भारत को समुन्नत करने वाली किसी योजना में भाग नहीं ले रही है—जनता और योजना में बड़ा अन्तर पड़ता अथवा बढ़ता जा रहा है। इसीलिए योजना केवल कागजी योजनाएं बनती जा रही हैं और हमारे नेता उन्हीं योजनाओं के विषय में कोरा विलाप करते रहते हैं।

"यदि जनता अपने उत्तरदायित्व को समझ कर कष्ट सहकर भी आगे बढ़ने की चेष्टा करेगी अथवा करती रहेगी तो समाज की अवनति शीघ्र दूर हो सकेगी"—ऐसा नेहरू कहते हैं। वे यह भी सूचित कर रहे हैं कि "जनता की कष्ट सहन करने की योग्यता ही नष्ट हो रही है"—

हमारी समझ में श्री नेहरू जी की यह बात नहीं आ रही है। अपने सब बौद्धिक और शारीरिक बल को लगाकर कष्ट सहकर भी किसी कार्य में जुटने वाले बहुत कम मिलेंगे। इसका कारण यह है कार्य कराने अथवा कार्य सम्पादन करने की पद्धति में अनुशासनहीनता ही मुख्य कारण है।

कर्तव्य और अधिकार

हमारे नेता यत्र तत्र सर्वत्र भाषणों में तथा कृति में प्रत्यक्ष अथवा अनजाने में इसी बात पर बल देते चले आये हैं कि कर्तव्य की अपेक्षा अधिकार बड़ा है। फल यह हुआ कि लोग अधिकार के लिए जितना सचेष्ट रहते हैं, उतना कर्तव्य पालन के लिए नहीं। जहाँ देखो यही शिकायत है कि लोग कर्तव्य का पालन नहीं करते हैं। इस तरह मजदूरों की भी वही बात है और वे अधिकार पर मरने के लिए तैयार रहते हैं पर उत्पादन बढ़ाने की ओर उनका ध्यान नहीं है। इस तरह उनकी उत्पादन बढ़ाने की शक्ति क्षीण हो रही है। सरकारी नौकरों के विषय में भी यही शिकायत प्रतिदिन सुनी जा रही है, की जा रही है—

इन सबका एकमात्र कारण कार्य करने की पद्धति में कार्य लेने की पद्धति में, अनुशासन का अभाव ही है। और दूसरा कारण नहीं है।

१९५५ से १९५७ इन तीन वर्षों में रेलवे में ८८ अपघात हुए। उनमें केवल एक अपघात (एक्ट ऑफ गॉड) ऐसा था जिस पर मनुष्य का वश नहीं था। शेष ८४ एक्स टेण्टो का कारण कार्यकर्ताओं की उदासीनता, बेपरवाही, अनवधानता, इत्यादि थे। इन सबका उपाय अनुशासन ही था। इस अनुशासन का जन्म कर्तव्य परायणता और देश प्रेम में से होना चाहिए था, न कि पूंजीमद, अधिकार मद में से होता—अनुशासन के अभाव में अपघातों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती ही जा रही है। जब अधिकारियों से पूछा जाता है तब निस्तेज की भांति कोई न कोई असम्बद्ध उत्तर दे डालते हैं और एक प्रकार से अपनी विवशता को स्वीकार करते जाते हैं। दृढ़ता से अनुशासन पद्धति चलाने की शक्ति इनमें नहीं है।

पण्डित जी को साम्यवादियों के साधन संयत नहीं लगते। कम्यूनिज्म और पूंजीवाद पर उन्होंने स्पष्ट कहा है कि—"रशिया में जिस ढंग से बच्चों से लेकर सब साधारण जनता के विषय में चिन्ता की जाती है, उनकी शिक्षा-दीक्षा की, उनकी आरोग्यता की, वह प्रशंसनीय है" परन्तु "रशिया में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के अपहरण की बात" उन्हें पसन्द नहीं।" शिक्षा की सर्वाङ्गीण प्रगति के कारण भविष्य में लोग अपने स्वतन्त्रता के अपहरण को सहन नहीं करेंगे ऐसा भी समय आ सकता है, ऐसा वे मानते हैं।

कम्यूनिज्म और हिंसावाद इन दोनों का साहचर्य पूंजी अब पसन्द नहीं। वे चाहते हैं कि भारत में प्रगतिशील समाजवाद की स्थापना हो किन्तु ऐसा समाजवाद लाने में लक्ष्य के स्थान हिंसात्मक साधनों का प्रयोग वे नहीं चाहते या नहीं पसन्द करते। साम्यवादियों की भाषा हिंसकों की

(शेष पृष्ठ ८ पर)

क्या कहते हैं नेहरू महान्

(पृष्ठ ७ का शेष)

भाषा रहती है। उनकी विचार पद्धति में से हिंसक सिद्धान्त निकलते हैं। प्रगतिशील समाजवाद को लाने में इस प्रकार के हिंसक, हुक्मशाही, एकतन्त्री प्रकार पण्डित जी को पसन्द नहीं। वे तो यह सब काम शान्त रीति से, लोगों का विचार बदल कर करना चाहते हैं, वे इसमें रूस जैसे दमन अथवा उग्रनीति को अपनाने के पक्ष में नहीं हैं।

श्री नेहरू जी को रूस के कम्यूनिज्म की हिंसक प्रथा सर्वथा असंगत तथा तर्क शून्य प्रतीत होती है। इस हिंसक प्रथा में उनको जंगलीपन का भी आभास हो रहा है।

इसकी अपेक्षा

पण्डित नेहरू को प्राचीन भारत की आचार विचार परम्परा में व्यक्त हुई सहनशीलता और श्रद्धा का तत्व ज्ञान अधिक पसन्द है पर आश्चर्य है कि यह सहनशीलता और यह श्रद्धा जिस धार्मिक विचारों का अंश है वह धर्म इनको मान्य नहीं है।

यद्यपि पण्डित जी को कम्यूनिज्म की हिंसा पद्धति मान्य नहीं है तो भी वे कम्यूनिज्म की प्रशंसा करते हैं ऐसा भास होता है। केवल हिंसात्मक साधन प्रयोग उनको पसन्द नहीं। जिस तर्क पद्धति से वे कम्यूनिज्म के हिंसात्मक साधनों का खण्डन करते हैं, उसी विशुद्ध तार्किक पद्धति से वे कम्यूनिज्म अर्थात् साम्यवाद का विश्लेषण करते तो रूस के साम्यवाद में भी उनको अनेक मूलभूत दोष दिखलायी पड़ते।

भिन्न भिन्न आर्थिक परिस्थिति वाले समुदाय के गुण भी विशिष्ट विशिष्ट प्रकार के ही होते हैं, उनके विषय में कोई त्रिकालाबाधित कोई निश्चित निष्कर्ष निकल सकते हैं यह कार्लमार्क्स का सिद्धान्त कालबाह्य तथा कालातीत है अर्थात् अब उसका समय गया।

साम्यवादियों की फिलासफी (तत्वज्ञान) और उनकी क्रूर, अनुदार, अविवेकी, असहिष्णु वृत्ति, इन दोनों का मेल कोई कैसे बिठाये? कार्लमार्क्स का आविष्कार यत्र तत्र तथा रूस में किस प्रकार हुआ, यह तो स्पष्ट ही है।

व्यक्तिमात्र का भीतरी और बाहरी (अन्तर्बाह्य) सुधार करके उसको अधिक अधिक स्वतन्त्र बनाने के स्थान में दण्डशाही के जोर पर उसको खास प्रकार के साँचे का आदमी (साँचे बन्द आदमी) बनाने की रूस की संस्कृति की करामात (चमत्कार) हम देख चुके हैं। आज जो रूसी शासन में बच्चे से लेकर आदमी तक की इतनी चिन्ता की जा रही है, इसका रहस्य भी यही है कि वह विशाल शासन तन्त्र अथवा विशाल शासन यन्त्र अबाधित रूपेण, अव्याहत गति से चलता रहे। इसके सिवाय और क्या हो सकता है।

इसीलिए हम कह रहे हैं कि जैसे पूंजीवाद का आश्रय लेने से हमारे देश का कल्याण नहीं हो सकता, इसी प्रकार साम्यवादी रूस की पद्धति का अन्धानुकरण भी हमारा कल्याण नहीं कर सकेगा।

हमारे देश का तत्वज्ञान

हमारे देश की उन्नति का तत्वज्ञान हमारी भारत भूमि और हमारी भारतीय जनात्मा में से ही उत्पन्न होना चाहिए। सहस्रों वर्षों से चली आयी हुई विचार परम्परा रूपी वृक्ष पर विदेशी विचार परम्परा की कलम चढ़ाने की तनिक आवश्यकता नहीं। आधुनिक विज्ञान युग के महत्व को समझना और नाना विध उत्कर्ष अपकर्षों का परिचय और अभ्यास आवश्यक है।

किन्तु

विशाल भारतीय समाज, उसमें प्रचलित नानाविध भेद, नाना विध रंगों से रंगे हुए उसके, प्रादेशिक इतिहास तथा इन नानाविध अनेकता में भी प्रसरित एक सूत्रता की ओर दुर्लक्ष्य करने से भी काम नहीं चलेगा। इनका अवश्य ध्यान रखना पड़ेगा।

लोगों को सहभागी करो

सामाजिक सत्ता, आर्थिक समता, शैक्षणिक उत्कर्ष, सर्वाङ्गीण सुगमता, सुख्यता, सुभीता चाहते हो तो सरकार को चाहिए कि प्रत्येक कार्य में जनता को सहभागी बनाये—इसके बिना, अर्थात् यह बात जनता तक पहुँचे बिना आपकी समस्त योजनाएं अधूरी रहेंगी, कभी पूर्ण न होंगी।

सरकार और जनता का अन्तर जितना कम होगा उतनी सफलता और जितना अन्तर बढ़ेगा उतनी विफलता रहेगी। इसी आधार पर हमारी भावी जटिल समस्याएं सुलझेंगी। आजकल सत्ता सर्वथा केन्द्रित हो रही है। वह विकेन्द्रित होकर नीचे जनता तक पहुंचेगी तभी भारत का कल्याण है—

नेतृत्व का अर्थ यह नहीं

नेतृत्व का अर्थ यह नहीं कि सब सत्ता एक के ही हाथ में रहे, अथवा सत्ता विशिष्ट समुदाय के ही हाथ में रहे—सच्चा नेतृत्व वही है जिसमें सब सहभागी अथवा सहकारी होते हैं। सच्चा नेता वही है जो सबको साथ लेकर चलता है और प्रत्येक कार्य में सबको यथाशक्ति सहभागी बनाता है ऐसा करते हुए भी जो अपने हाथ का सूत्र सुसंघटित रूप में अपने हाथ से नहीं खिसकने देता वही सच्चा नेता और राज्यकर्ता है।

मद्रास की अवादि कांग्रेस में समाजवाद की घोषणा की गई थी। वह समाजवाद किस प्रकार का होगा इस विषय में यही खुलासा किया गया था कि यह समाजवाद यूरोप अथवा अमरीका अथवा रूस के ढंग का न होकर भारतीय वातावरण के अनुरूप भारतीय ढंग का होगा इत्यादि—

ऊपरी नेताओं ने, (उनके मन में क्या था और क्या है ईश्वर जाने) इस समाजवाद की अपने अपने ढंग की व्याख्या की थी। पर उनके अधूरे अस्पष्ट वक्तव्यों, भाषणों और लेखों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि इन नेताओं को स्वयं पता नहीं कि यह समाजवाद की रूप रेखा किस प्रकार की होगी।

केवल गोलमाल शब्दों में यह कहने से काम न चलेगा कि "सब सम-समान होंगे, कोई नीच नहीं रहेगा, कोई गरीब और कोई अमीर नहीं रहेगा। सबकी उन्नति का मार्ग खुला रहेगा, इस कार्य में जातिभेद बाधक नहीं रहेगा, इत्यादि"

यह समाजवाद की व्याख्या भले ही सुन्दर भले ही हो, किन्तु इस समाजवाद की स्पष्ट रूप रेखा जनता के सम्मुख आना चाहिए—

यह भी ध्यान रखना चाहिए कि अनन्त काल से भारतीयों का अपना समाजवाद चला आ रहा है चाहे वह इस समय कितना भी विश्रृंखलित हो गया हो पर उसकी रूप रेखा अब भी विस्पष्ट है। नये समाजवाद को लाते समय उस अति प्राचीन समाजवाद के तत्वों का भी ध्यान रखना होगा।

विजय दशमी

हृदय के शुभ भावों को जगाती है विजय दशमी।
सफलता के लिए आगे बढ़ाती है विजय दशमी॥
कभी शोभा नहीं देता अनय के सामने झुकना।
यह सुन्दर नीति मानव को सिखाती है विजय दशमी॥
कथा श्रीराम रावण की हमें फिर याद आ जाती।
महा नैतिक पतन से दिल हटाती है विजय दशमी॥
गऊ अबला अनाथों की सुरक्षा का न व्रत भूलें।
नई पुट शक्ति साहस की दिलाती है विजय दशमी॥
कोई विद्वान पंडित हो अगर अनुचित करे बातें।
उसे रोकें सभी मिलकर बताती है विजय दशमी॥
सुरुचि स्वाध्याय सतसंग की सुदृढ़ होती स्वयं लगती।
सुखद श्रुति घूंट अमृतमय पिलाती है विजय दशमी॥
विजय मन पर करें अपने निभाकर यम नियम सुन्दर।
बनाएं यज्ञमय जीवन सुझाती है विजय दशमी॥

—धर्मचन्द्र वर्मा 'धर्म' लखनऊ

❀ आर्य हवन सामग्री ❀

हर्ष सूचना

विश्व की समस्त आर्य समाजों को तथा अन्य सभी यज्ञ-प्रेमी भाई बहनों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि हम सुगन्धित सर्व रोगनाशक हवन सामग्री का निर्माण करते हैं।

विश्व की विख्यात विभूतियों ने तथा वैज्ञानिकों ने हमारी हवन सामग्री की मुक्तकण्ठ से भूरि भूरि प्रशंसा की है।

अमेरिका आदि राष्ट्रों में हमारी एजेंसियाँ स्थापित हो चुकी हैं।

एजेंटों व विक्रेताओं की आवश्यकता सभी नगरों में है।

समस्त मानसिक रोगों के लिए, तपेदिक, कोढ़ और पागलपन जैसे असाध्य रोगों के लिए यज्ञ ही रामबाण औषध है। हमारी सर्वरोग नाशक हवन सामग्री का ही नित्य प्रयोग करें और सर्व रोगों से बचकर अपनी इस जीवन यात्रा को सुखी व सफल बनायें।

१—मेवा युक्त सामग्री का भाव ८०) मन, २—सुगन्धित हवन सामग्री का भाव ५०) मन है।

एक मन या अधिक मंगवाने वाले ग्राहकों को रेल किराया माफ होगा। नित्य यज्ञ करें। धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करें।

वेदपथिक धर्मवीर आर्य
ब्रह्मचारी उपदेशक
अध्यक्ष—आर्य हवन-सामग्री
निर्माणशाला, अहाता ठाकुरदास
सराय रुहेला, देहली ५

—।

एक एक व्यक्ति विकास-योजना

[गतांक से आगे]

(लेखक—श्री डाक्टर रघुवीर, संसत्सदस्य)

व्यय किन बातों पर होगा अब इसका ब्योरा देते हैं।

१—शिक्षा

शिक्षा भवनो का निर्माण तो आदर्श नगर की स्थापना के साथ ही प्रारम्भिक दो करोड़ में सम्मिलित कर लिया गया है। शिक्षा भवन बनाने के पश्चात् वार्षिक व्यय में से प्रमुख व्यय अध्यापकों का वेतन तथा पुस्तकालय, प्रयोगशालाओं आदि पर होगा। जैसा कि पहले लिखा जा चुका है आठ सहस्र मे से विद्यार्थियो की अधिकतम सख्या १८ सहस्र होगी। ३० के लिए एक अध्यापक होगा। अर्थात् अध्यापकों की सख्या ६०० होगी।

३०० अध्यापक, एक सौ रुपये मासिक, अर्थात् १२०० रु० वार्षिक ३ लाख ६० सहस्र।

१०० अध्यापक, एक सौ पचास रु० मासिक, १८०० रु० वार्षिक १ लाख ८० सहस्र।

१०० अध्यापक, दो सौ रुपये मासिक, २४०० रु० वार्षिक २ लाख ४० सहस्र।

५० अध्यापक, तीन सौ रुपये मासिक, ३६०० रु० वार्षिक १ लाख ८० सहस्र।

५० अध्यापक, पाच सौ रुपये मासिक, ६००० रु० वार्षिक ३ लाख।

पुस्तकालय और प्रयोगशालाओ में वार्षिक वृद्धि ३ लाख ४० सहस्र।

समस्त १६ लाख रुपये

२—चिकित्सालय

दस डाक्टर, पाच सौ रुपये मासिक, ६००० रु० वार्षिक ६०,००० रु०।

दस डाक्टर, तीन सौ रुपये मासिक, ३६०० रु० वार्षिक ३६,००० रुपये।

पचास परिचारिकाएं और सहायक, २०० रु० मासिक २४०० रु० वार्षिक—योग १ लाख २० सहस्र।

तीस अन्य कर्मचारी, १०० रुपये मासिक, १२०० रुपये वार्षिक, ३६ सहस्र।

वार्षिक औषध, यन्त्र आदि २ लाख ४८ सहस्र।

समस्त योग ५ लाख रुपये।

३—पशु चिकित्सालय

दो डाक्टर, दो सहायक, आठ कर्मचारी, सबका माध्यम २०० रु० मासिक।

२४०० रु० वार्षिक २८ सहस्र ८०० रु०।

वार्षिक औषध और यन्त्र आदि ११ सहस्र २०० रु०

समस्त योग ४० सहस्र रुपये

४—प्रति वर्ष एक सहस्र परिवार के लिए एक सहस्र गृह निर्माण।

पांच सहस्र रुपये प्रतिगृह ५० लाख रुपये।

बारह वर्ष में प्रत्येक परिवार के पास पक्का सुन्दर घर होगा।

५—प्रति वर्ष आठ मील पक्की सड़क (पचास सहस्र रुपये प्रति मील) ४ लाख रुपये कुछ ही वर्षों में नगर की सब सड़के पक्की हो जायेगी।

६—नगर के अन्य वार्षिक व्यय ५ लाख रुपये।

समस्त योग ८०लाख ५० सहस्र

इस प्रकार उत्साह, विश्वास और सामूहिक प्रयत्न से ३६० नगर प्रति वर्ष बसाते हुए १५ वर्षों मे समस्त भारत का कायाकल्प हो जाएगा। केवल पहाड़ों, जगलो और मरुभूमि में कुछ ग्राम और छोटे नगर रह जाएगे। इनका स्तर भी आज की अपेक्षा ऊचा उठ जाएगा।

आदर्श नगरों में पहले वर्षों में खेती, भूमेचन, तथा सार्वजनिक भवनों का निर्माण प्रधान कार्य होगे। अगले वर्षो मे जनता के रहने के घरो के निर्माण मे प्रत्येक नगर की समस्त शक्ति लग जाएगी। सब व्यापार और उद्योग गृह निर्माण के ही साधन होगे। नगर के बाहर से ईटों के भट्टों के लिए कोयला आएगा। सीमेट आएगा। रेता और चूना आएगा। लकडी एव काच और लोहे के कील, पेच और छतो के लिये लोहे की सलें, इन आवश्यकताओ को पूरा करने के लिए बड़े उद्योग सहायक होंगे। जो सीमेट लोहे काच आदि के बड़े उद्योग आज विद्यमान हैं उनका प्रसार होगा, सीमेंट, लोहा और कोयला ढोने के लिए ट्रकों की अधिक आवश्यकता पड़ेगी। इसलिए ट्रकों के निर्माण के उद्योग का भी बहुत विस्तार होगा। भारतवर्ष म लकड़ी थोड़ी है इसका प्रबन्ध करना होगा। घर बनाने के साथ साथ घरो मे आवश्यक वस्तुओ का निर्माण भी करना पड़ेगा। इस प्रकार से गृहनिर्माण का अर्थ नवो द्योग निर्माण और पुराने उद्योगों की वृद्धि होगा। सभ्य घरो में रहने वालो की आवश्यकताए भी तदनुकूल होगी।

यह निश्चित है कि पक्के सुन्दर और खुले घरों के बिना जीवन का स्तर ऊचा न उठेगा। घर आधार है। जो लोग इस घर मे रहेंगे उनको नये दैनिक जीवन की भी शिक्षा देगे। प्रत्येक बच्चे के घर म जाकर माता पिता से सम्पर्क करना उनके ज्ञान को बढाना तथा स्वच्छता और सौन्दर्य की देखभाल करना शिक्षकों का ही कार्य होगा।

आजकल गाव के घरो मे उपस्कर (फर्नीचर) का अभाव है। टूटा फूटा चारपाई के स्थान म अच्छी दृढ़ चारपाई और चारपाई पर मसहरी होगी, आज भारत के ग्रामीणों के जीवन के अनेक दिन मलेरिया म जाते हैं। स्वच्छ घरों और मसहरी के प्रयोग से ये दिन बच जाएगे। बच्चो के पेट फूले हुए दिखाई न पड़ेगे। शरीर में शक्ति होगी। शक्ति मे उल्लास होगा। बैठने के लिए चटाई, मूढे और चौकिया होगी। मिट्टी के बरतनो के स्थान मे रसोई मे पीतल के बर्तन होगे बिजली का प्रकाश होगा। कपड़ो के लिए लोहे की इस्त्री और ग्रीष्म ऋतु के लिए एक अथवा दो बिजली के पखे।

आकाशवाणी का सन्देश, सगीत और नाटक, ज्ञानचर्चा और कीर्तन सुनने के लिये छोटे आकाशवाणी यत्र होगे। आरम्भ मे सबमे न सही थोड़ों मे सही। यह धीरे धीरे सब घरों में हो जाएगे। आकाशवाणी के यत्र भारतवर्ष मे बहुत महगे हैं यदि ये बहुत सख्या में बनेगे तो सस्ते हो जाएगे।

घर की स्त्री के लिए सीने का यत्र बहुत आवश्यक है। यह भी सस्ते और छोटे आकार का होना चाहिए। पश्चिमी देशों में आजकल सीने के यन्त्र बहुत छोटे हल्के और सस्ते बन रहे हैं।

सभ्य देशों के सभ्य घरों में अपनी सवारी अनिवार्य है, पहले समय में घोड़ा था। आज उसके स्थान पर लोहे का घोड़ा बाइसिकल है, बाइसिकल के होने से घर का धनार्जक व्यक्ति पांच छः मील जा आ सकता है, अपने देश में बाइसिकल बहुत महगे बनते हैं। उद्योग बढ़ने पर सस्ते होने चाहिये और प्रत्येक कार्यकर्ता के पास, चाहे किसान हो चाहे श्रमिक, पुरुष हो अथवा स्त्री, एक बाइसिकल उपयोगी होगा। यह पहले वर्षों में सबके लिए सम्भव न होगा किन्तु धीरे धीरे यह असम्भव भी न रहेगा।

जिन परिवारों का कार्यक्षेत्र सार्वजनिक है और दैनिक कार्यक्रम व्यस्त है, उनको दूरभाष्य (टेलीफोन) की आवश्यकता होगी, आज यह चिन्त्य है। कल को यह सामान्य वस्तु बन जाएगी।

धीरे धीरे किन्तु निश्चित रूप से जीवन समृद्धिशाली बनेगा। प्रत्येक व्यक्ति की आय बढ़ेगी और वह सुख सामग्री का, भोजन और वस्त्रों का, तथा छोटे छोटे यन्त्रों का सग्रह कर सकेगा। तभी तो देश में उद्योग की वृद्धि होगी। उद्योग का आधार जनता की सग्रहशीलता है। यदि जनता सग्रहशील न हो, सभी जनता सन्यास धर्म का पालन करे और अपरिग्रह की भक्त बन जाये तो उद्योगो से क्या प्रयोजन, विश्व के सघर्ष में खड़े होने का प्रश्न ही नहीं उठता। ★

❀ नये घर, नई गलियें और नए नगरों का निर्माण
❀ शिक्षा और चिकित्सा, आमोद तथा प्रमोद
❀ नए उद्योगों में दीक्षा
❀ आय के नए साधन तथा आय की वृद्धि
❀ स्वस्थ और समृद्ध जीवन

सिंहावलोकन

आश्रम व्यवस्था का मूलाधार

[श्री डा० महावीरसिंह जी प्रधान आ०प्र० सभा मध्यभारत, गवालियर]

आश्रम व्यवस्था का मूलाधार आयु है या गुण कर्म स्वभाव (प्रवृत्ति) इस विषय पर श्री उपाध्याय जी का दृष्टिकोण प्रकाशित हो चुका है हम इस विषय की गम्भीरता को अनुभव करते हुए विद्वानों के उभयपक्षी दृष्टिकोण प्रकाश में लाना चाहते है जिससे आश्रम व्यवस्था के व्यावहारिक स्वरूप का निर्णय हो सके। नविक्रम धर्म कारण और मानव का सामाजिक उपयोग दोनों पक्षो को दृष्टि में रखते हुए विद्वाना की सम्मतियाँ आमन्त्रित है जिसमे इस विषय पर गम्भीर मन्थन हो सके। सम्बन्धित विषय पर प्रकाशित होने वाले लेख विचार विमर्श की श्रेणी में माने जाने चाहिये। हमारा मत सुरक्षित रहेगा जो बाद में घोषित किया जायगा। —सम्पादक

उपर्युक्त शीर्षक से 'आर्यमित्र' के ५ अक्तूबर के अङ्क मे प्रसिद्ध आर्य विद्वान् श्री प० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय का एक लेख प्रकाशित हुआ है, जिसमे श्री उपाध्याय जी ने यह प्रतिपादन करने का प्रयत्न किया है कि आश्रम व्यवस्था का मूलाधार गुण कर्म स्वभाव है न कि देश काल। अर्थात् यह कहना भ्रम मूलक है कि आयु के प्रथम चरण २४ वर्ष को ब्रह्मचर्य, २५ से ५० तक द्वितीय चरण को गृहस्थ काल, ५० से ७५ तक तृतीय चरण को वान प्रस्थ और ७५ से १०० वर्ष तक के काल को सन्यास कहना चाहिये। यह तो ठीक है कि काल सब कुछ नहीं है अन्यथा घर बैठे सभी ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थी और सन्यासी बन जाते। किंतु आश्रम व्यवस्था मनुष्य जीवन को भले प्रकार व्यवस्थित करने के लिए और अन्तिम ध्येय तक पहुंचाने के लिए एक प्रोग्राम है जिसमे चार पड़ाव बनाये गये हैं। इनके समुचित पालन करने से इहलोक और परलोक दोनों भले प्रकार निभ सकते हैं।

यह माना कि गुण, कर्म, स्वभाव आश्रम के अनुकूल होने ही चाहिये लेकिन गुण, कर्म स्वभाव ऐसी चीजे तो नहीं हैं जो स्वयमेव बनते चले जाते हैं या स्वयमेव बदलते जाते हैं। मनुष्य बनता है पैतृक संस्कारो से, पूर्व जन्म के संस्कारों से, परिस्थितियों से तथा स्वतन्त्र इच्छा शक्ति और प्रयत्न से। यद्यपि पहली तीन बाते हमारे सामर्थ्य से परे है उन पर हमारा नियन्त्रण नहीं फिर भी इनको अच्छा बुरा बनाने का सामर्थ्य समाज के आधीन अवश्य है, समाज यदि सावधान है तो इन तीनो को प्रभावित कर सकता है। अच्छा बना सकता है। प्राचीन काल मे ऐसा ही होता था और आधुनिक रूस, चीन जापान आदि देशो मे ऐसा हो भी रहा है। इनके अतिरिक्त मनुष्य की स्वतन्त्र इच्छा शक्ति भी एक प्रबल प्रेरक कारण है। समाज नियम बनाता है व्यक्ति और समाज के हित की दृष्टि से। उन पर आचरण करने से ही व्यक्ति ऊंचा उठ सकता है और समाज सुखी बना रह सकता है। यदि व्यवस्था न हो तो व्यक्ति और समाज दोनों ही अस्त व्यस्त रहेगे।

सुश्रुत मे बतलाया है कि पचविंशे ततोवर्षे पुमानारी तु षोडशे।
समत्वा गतवीर्यो तौ जानीयात्कुशलो भिषक ॥

यह सामान्य नियम बतलाया। श्री उपाध्याय जी कहते हैं कि पचीस वर्ष पर भी जवानी न आवे तो टाल देवे, क्या इसके मानी यह भी हैं कि आज कल के युग में जब १५, १६ वर्ष की आयु मे लड़के और १३ वर्ष की लड़कियाँ युवा बन जाती हैं जो आज कल की यह शिक्षा और सिनेमा का कुपरिणाम है तो क्या इसलिए १३, १४, १५ की आयु में विवाह कर देने ठीक होगे—चूं कि उन्हें जवानी आ गई है। ऋषि दयानन्द श्री महाराज ने तो ब्रह्मचर्य की अवधि पुरुष के लिए ४८ तक और स्त्री के लिए २४ वर्ष तक की बतला दी है। और यदि विशेष अवस्था मे कोई आजीवन ब्रह्मचारी रह सके तो उसमें काल का कोई बाधा नहीं है, हां यह समान्य व्यवस्था नहीं है। गौण है।

उपाध्याय जी का यह कहना समझ म नहीं आता कि स्वामी दयानन्द प्रवृत्ति से विवाह के अयोग्य थे। श्री उपाध्याय जी का प्रवृत्ति शब्द व्याख्या चाहता है। यदि प्रवृत्ति का अर्थ Instinct है तो इससे सहमति नहीं हो सकती। काम, क्रोध, लोभ, मोह सभी प्रवृत्तियां हैं। ज्यों ज्यों इन प्रवृत्तियों के ऊपर मनुष्य अधिकार करता जाता है—उन्हें जीत कर काबू में करता जाता है वैसे ही वैसे वह जीवन मे उच्चतर स्थान प्राप्त करता जाता है। काम के स्थान मे इन्द्रिय और मन पर अधिकार करके सयमी बनता है। क्रोध के स्थान मे अक्रोध, शान्त, लोभ के स्थान मे उदारता परोपकार, मोह के स्थान मे त्याग का धारण करने मे ही मनुष्य जीवन की सफलता समझी जाती है।

प्रवृत्तियाँ बदली जा सकती हैं और उन्हे बदलने के लिए जब तक किसी निश्चित कार्यक्रम पर अमल न किया जावे—तब तक आयु की साधारण अवधि मे मनुष्य उनको बदल नहीं सकता और न निर्दिष्ट लक्ष्य को पा सकता है। यूनीवर्सिटी ने तीन वर्ष का बी० ए० का कोर्स रखा है पश्चात् पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स दो वर्ष का रखा है। प्रोफेसर्स नियत समय में इन कोर्सों को समाप्त कराने का लक्ष्य रखते हैं और विद्यार्थी भी ऐसा ही करने के लिए पुरुषार्थ करते हैं। ऐसा करने मे काल कारण तो नहीं—पर प्रेरक अवश्य है यदि समय न बांधा होता तो विद्यार्थीगण विद्यार्थी जीवन का आनन्द त्याग कर यूनीवर्सिटी छोड़कर कभी जाना ही न चाहते। इसी प्रकार गृहस्थ जीवन के सुस्वाद भोजन, शैया, भार्या पुत्र, पौत्रों प्रपौत्रों और सेवकों की सेवा तथा घर बगीचे का आनन्द लेते लेते ही जीवन समाप्त होगा—आश्रम मर्यादा मे बधे हुए जीवन का लक्ष्य है, आरम्भ मे घोर तप करके विद्या, विज्ञान स्वास्थ्य की उपलब्धि फिर थोड़े काल तक ससार का भोग भोगना, उत्तम संतान बनाना साथ ही त्याग का लक्ष्य सामने हमेशा रखना—तेन त्यक्तेन भुंजीथा का नित्य पाठ याद रखना—पचास वर्ष पूरे होने को हैं। लगाव कम करना है। वानप्रस्थी और फिर सन्यासी बनकर निकलना है। यह सब तभी सम्भव है जब काल का कोड़ा सिर पर हो—और हर एक पड़ाव (आश्रम) का लक्ष्य हो। इसीलिए काल की अवहेलना नहीं की जा सकती।

हम समझते हैं कि आश्रम व्यवस्था केवल व्यक्तिगत व्यवस्था ही नहीं है वह एक सामाजिक सुव्यवस्था भी है। जिसके उचित प्रकार पालने से समाज सुखी बना रह सकता है। और उसमें अव्यवस्था आने से सारा समाज दुखी हो जाता है। इसी से जो नियम समाज ने निर्धारित किये हैं, उनका पालन भी कठोरता पूर्वक होना चाहिए। व्यक्ति को यह जानने का अधिकार अवश्य है कि उसकी भलाई किस में है। जब यह समझ लिया कि आश्रम व्यवस्था व्यक्ति और समाज दोनों के लिए हितकर है फिर पालन न करने में व्यक्ति दोष का भागी होगा और साथ ही समाज भी।

सुझाव और सम्मतियाँ

समय की पुकार

बड़े हर्ष की बात है कि इस वर्ष आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश के कार्यक्रम में कुछ एक बड़ी महत्वपूर्ण योजनाओं का आयोजन करने का निश्चय हुआ है, उनमें से एक नैतिक उत्थान आन्दोलन भी है। हमारी सभा के वर्तमान प्रधान जी तथा मन्त्री जी व अन्य उनके सहयोगी इस कार्य के लिए प्रशसा के पात्र हैं जो उन्होने ऐसा महत्वपूर्ण पग उठाया। वास्तव मे यह निश्चय समयानुसार बहुत ही उपयुक्त है जबकि सम्पूर्ण राष्ट्र में आज नागरिको का नैतिक जीवन पतन के गर्त मे गिरता चला जा रहा है और राष्ट्र की उन्नति के लिए एक अभिशाप बन चुका है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने आर्य समाज की स्थापना भी इसी विचार से की थी कि जब भी राष्ट्र के अन्दर कोई भी ऐसी स्थिति उठ खड़ी हो जिससे राष्ट्रीय जीवन मे धार्मिक सामाजिक अथवा चारित्रिक विश्रृङ्खलता उत्पन्न हो जावे तभी आर्य समाज इस समस्या का उचित समाधान कर राष्ट्रीय जीवन को सही मार्ग पर लाने का प्रयत्न करे। आज भी यही अवस्था और आर्य समाज को इस मामले मे अग्रणी होना ही चाहिए। इस कार्य को पूरा करना और किसी भी संस्था के बस का रोग भी नहीं है। अतः हम सभी आर्य बन्धुओं का महान उत्तरदायित्व है कि सभा द्वारा आयोजित इस महान यज्ञ काय मे अपना पूरा पूरा सहयोग देकर जुट जावे। ऋषि ऋण को पूरा करने का यही सुयोग है सुअवसर है।

[illegible] की शुद्धि से पहले हमे (आर्य समाज को) अपनी आंतरिक शुद्धि भी करनी होगी। जब तक आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य कि अधिकारी ही बनूं इस भाव को छोड़कर समाज का भाव ग्रहण नहीं करेगा कार्य की सफलता सदिग्ध रहेगी।

आर्य समाज की आंतरिक शुद्धि करने के लिए आवश्यक है कि आर्य समाज के रजिस्टरों में केवल सदस्यो की सख्या बढ़ाने का ही विचार छोड़ दिया जावे। आर्य सदस्यता के लिए आवश्यक हो कि प्रत्येक आर्य सदस्य पंच महायज्ञों में पूर्ण आस्था रखता हो तथा यथासम्भव व्यावहारिक रूप से भी उन पर आचरण करता हो जबकि आज ऐसी कोई भी व्यवस्था नहीं चल रही है। केवल कोई भी व्यक्ति आवेदन पत्र पर इतना लिख कर दे देवे कि मैं वैदिक सिद्धान्तों और आर्य समाज के नियम उपनियमो में पूर्ण आस्था रखता हूं मैं।) चार आना मासिक चन्दा देना स्वीकार करता हूं बस वह आर्य सभासद् बन जाता है आगे चाहे उसे सन्ध्या मत्र भी याद न हो उसकी सदस्यता मे कोई बाधा खड़ी नहीं होती। इस प्रकार के सदस्यों से यह आशा करना कि वे आर्य समाज के सघटन के लिए उन्नति का साधन बनेगे आत्म प्रवचना नहीं तो और क्या है? इसलिए यह आवश्यक है कि आय सदस्य को आर्य सभासद् बनाने के लिए एक विशेष मापदड होना चाहिए जिस के अन्दर चल कर पहले वह अपनी दृढ़ता का परीक्षा दे पश्चात् आर्य सभासद् बनाया जावे। जब ऐसे सिद्धान्तवादी तथा दृढ़ आर्य सभासदों की संख्या आर्य समाज मे बढ़ेगी तभी आर्य समाज द्वारा सचालित नैतिक उत्थान आन्दोलन के सफल होने की संभावना की जा सकेगी अन्यथा नहीं।

आशा है आर्य जन इन सुझावो पर विचार करेंगे तथा विशेष रूप से आ० प्र० सभा का अधिकारी वर्ग इस समस्या पर गम्भोरता पूर्वक विचार कर यथोचित पग उठायगा।

—यशपाल गुप्त 'आर्य'
मन्त्री आर्य समाज जगतपुर
पुराना शहर बरेली

वैदिक उपासना ही सर्वश्रेष्ठ है

विचारशील पाठक वृन्द, यह तो सर्वथा निश्चित ही है कि अन्य सिद्धान्तो के समान ईश्वर उपासना भी हमारी ही प्राचीन है, ऋषि ने पूर्वजो द्वारा प्रतिपादित पद्धति आर्य समाज के लिए निश्चित की है। क्योंकि लगभग ५५० वर्षों से पूर्व सिक्खो के गुरु और उनका बनाया ग्रन्थ भी न था, तब उनके गुरुद्वारे और उपासना का प्रकार भी कैसे होता। अतः यह प्रश्न होता है कि गुरुओं के पूर्वज ईश्वर की भक्ति किस प्रकार करते थे? इसी प्रकार १४०० वर्षों से पूर्व 'हजरत मुहम्मद' साहिब भी न थे, और उनका कुरान तथा मस्जिदें भी न थीं, तो नमाज रोजा आदि भी न थे, पुनः मुस्लिम पैगम्बर

(शेष पृष्ठ १३ पर)

मनसा परिक्रमा

(श्री प० शिवदयालु जी)

सन्ध्या यज्ञ मे अघमर्षण अर्थात् दृढ़ सकल्पो द्वारा अपनी पाप वृत्तियो का निराकरण करने के उपरांत मनसा परिक्रमा का विनियोग आता है। मनसा परिक्रमा से तात्पर्य मन के द्वारा अपने चहुँ ओर ऊपर और नीचे परमात्म देव की सत्ता की अनुभूति, उनके विभिन्न गुणों का करते हुए, लेनी है।

ध्यान योग की यह परिपाटी अत्यन्त प्राचीन है। मन्दिरो मे अपने इष्टदेव की परिक्रमा करना, सूर्य व चन्द्र को अर्घ देते समय परिक्रमा करना इस वैदिक परिपाटी का अत्यत विकृत रूप है।

समावर्तन एवं विवाह सस्कारो मे मधुपर्क के छओ दिशाओं मे छींटे लगाना याज्ञिक विनियोग भी इससे मिलता जुलता है। विवाह सस्कारो मे गार्हपत्याग्नि की परिक्रमा करना भी याज्ञिक विनियोग है, जिसका इससे मिलान करना चाहिए।

किन्तु योग मार्ग मे यह परिक्रमा मन द्वारा ही की जाती है। अथर्व वेद के तृतीय काण्ड में विहित प्राचीदिगग्निः आदि ६ मन्त्रों के द्वारा पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर ऊर्ध्व तथा अध: दिशाओ में परमात्म देव को अग्नि, इन्द्र, वरुण, सोम विष्णु तथा बृहस्पति नामों से क्रमशः स्मरण किया जाता है और इन ६ नामो द्वारा प्रभु के जिन गुणो का ज्ञान होता है उनका चिन्तवन किया जाता है। परमात्मा ही सब दिशाओ का अधिपति है और वह ही रक्षिता भी है। महर्षि स्वामी दयानन्द को यही अभीष्ट है। पचयज्ञविधि में स्वामी जी ने केवल प्रथम मन्त्र के रक्षितः "असितः" की व्याख्या की है असित शब्द को परमात्मा के बन्धन रहित स्वरूप को बोधक बतलाया है। किन्तु पच यज्ञविधि के हिन्दी अनुवादक ने "तिरश्चिराजी" आदि रक्षिताओं के अर्थ स्वामी जी के अभीष्ट के विपरीत किये है, विद्वज्जनो को इस सम्बन्ध मे विचार करना चाहिए।

पूर्व—सामने
दक्षिण—सीधे हाथ
पश्चिम—पीठ
उत्तर—बाएं हाथ
ऊर्ध्व—शीर्ष

अधः—पाद की ओर यह अर्थ किये जावेगे।

६ दिशाओं के "इषवः" अर्थात् बाण के साधन निम्न प्रकार हैं:— आदित्यः (सूर्य की रश्मियाँ) पितरः (ज्ञानी लोक), अन्न (पृथिवी आदि) अशनिः (विद्युत), वीरुधः (वृक्षादि) तथा वर्ष (वर्षा) यह अर्थ पच यज्ञविधि के हिन्दी भाग के अनुकूल हैं। इन इषुओं के अर्थों पर भी विशेष मनन करने की आवश्यकता है, स्वामी आत्मानन्द जी महाराज ने मन्त्र का का अर्थ पृथिवी आदि न करके खाद्य पदार्थ किया है, तथा वीरुध का अर्थ बल्ली किया है।

महात्मा बुद्ध के काल मे भी यह दिशा वन्दन चलता था। उपासक लोक ६ दिशाओ की ओर हाथ जोड़ कर नमस्कार कर लेते थे। महात्मा बुद्ध ने इसका खण्डन किया है और यह उपदेश दिया है कि दिशा वन्दन से पूर्व हिंसा, चोरी, व्यभिचार तथा असत्य दुःखरूप कर्मों और निरकुश द्वेष, भय एवं मोहरूप चार पापकारक बातो को त्याग देना चाहिए। और साथ ही सम्पत्ति नाशक निम्न ६ कर्मों से भी बचना चाहिए—नशा, रात्रि भ्रमण, तमाशे, व्यसन जुआ तथा कुसंगति इन कुकर्मों का त्याग ही अघमर्षण है जिसका अभ्यास सन्ध्या योग का उपासक करता है।

महात्मा बुद्ध ने दिशा वन्दन की व्याख्या करते हुए बतलाया है कि माता पिता को पूर्व दिशा समझना चाहिए और उनकी सेवा सुश्रूषा, सत्कार आज्ञापालनादि करना ही पूर्व दिशा का वन्दन कहलाता है।

गुरु आचार्य को दक्षिण दिशा, स्त्री (धर्मपत्नी) को पश्चिम दिशा, भृत्य सेवक गण को अधोदिशा तथा साधु सन्त जनो को ऊर्ध्व दिशा मानना चाहिए।

महात्मा बुद्ध की यह शिक्षा वैदिक है, भले ही सन्ध्या योग के मन्त्रों से इनकी सगति लेश मात्र भी न लगती हो, दिक वन्दन की बुद्धि-शून्य अवैदिक प्रथाओ की उपेक्षा यह अच्छी भी है।

वैदिक धर्मावलम्बियों को मार्जन एवं अङ्ग स्पर्श में सकेत कायिक वाचिक एवं मानसिक पापों का मर्षण करते हुए ईश्वर की सर्वत्र अनुभूति मनसा परिक्रमा के द्वारा लेने का प्रयत्न चाहिए तब ही हमारा सन्ध्या योग सार्थक सिद्ध हो सकता है।

★

वनिता  विवेक

आज की भारतीय नारी

(श्री आनन्दकुमार, मन्त्री आर्यकुमार सभा रुद्रपुर, (देहरादून)

हमारे देश में पूर्व से ही वेदपाठी और प्रतिभाशाली नारियां रही हैं। हमारे देश में महारानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगना जिसका अंग्रेजों ने लोहा मान लिया था और लोपामुद्रा गार्गी जैसी बुद्धिमती नारियां थीं जिनका प्राचीनकाल में वेद विज्ञान में कोई मुकाबला न कर सका, लेकिन आज हमारे देश की अवस्था विचित्र है।

आज हमारे देश में नारियों को वासना पूर्ति का साधनमात्र समझा जाता है। आज उनकी वह प्राचीन प्रतिष्ठा करना पुरुष समाज भूल गया है। आज पुरुष ने स्वार्थवश होकर माता सम इन कुलांगनाओं का बहिष्कार कर दिया है। यह पुरुष की अमानवीय ज्यादती है। पुरुष ने स्व-कल्याण के हेतु इन नारियों को घर तक ही सीमित कर दिया है। अब बाहरी जीवन में इनके लिए पदार्पण करना वर्जित है अब ये घरेलू कार्यों में ही लगी रहती हैं। यह पुरुष समाज की भारी भूल है कि वह नारी को बन्धन में रखना चाहता है इन्हें अब स्वतन्त्र करना ही होगा।

एक समय था जब गार्गी जैसी विदुषियां यज्ञशाला में बैठ कर पुरुषों से शास्त्रार्थकर उन्हें हराया करती थीं। एक समय था जब महारानी लक्ष्मी-बाई और दुर्गावती सम नारियां थीं जो शत्रुओं के छक्के छुड़ाया करती करती थी और उस समय नारियां स्वपति को रण से भाग आने पर धिक्कारती थीं तब उनकी प्रेरणा से वह जीतते थे पर दुर्भाग्य है आज समय इसके बिलकुल विपरीत है। आज कालेजों की शिक्षित नारियों ने भारतीयता और वीरता को सर्वथा भुला दिया। कालेजों के दूषित जीवन ने नारियों की महत्ता को धक्का पहुँचाया है, आज कालेजों में शिक्षा पाने वाली लड़कियों को तितलियाँ कहा जाता है उन्हें फिर भारतीय संस्कृति की ओर लौटना चाहिये। वे आज अपनी प्राचीन वैदिक संस्कृति से बहुत दूर भाग गई हैं, वे स्वपथ से कर्तव्य विहीन होकर मार्ग भ्रष्ट हो पतन की ओर जा रही हैं। यह है हमारी पाश्चात्य संस्कृति का हमारी नारी जाति पर कुप्रभाव।

दुर्भाग्यवश धर्म के ठेकेदार पौराणिक पण्डितोंने नारी जाति को प्राचीन वेद आदि सद् ग्रन्थों से विमुख कर दिया। एवं गायत्री पाठन पर प्रतिबन्ध लगा दिया। हमारे इन धर्म के ठेकेदारों ने स्त्री जाति को शूद्र बना, स्त्री जाति के साथ घोर अन्याय किया है तथा वैदिक संस्कृति को अग्रसर होने से रोका। महर्षि दयानन्द की अनुपम दया से स्त्री जाति को उठने का मौका मिल सका है, आज की भारतीय नारी को चाहिए कि अब वह उत्थान की ओर अग्रसर हो तथा अपनी प्राचीन संस्कृति की ओर लौटें, पुन. विदुषी गार्गी की तरह बुद्धिमती और महारानी लक्ष्मीबाई की तरह वीरांगना बनें जिससे वैदिक संस्कृति की पुण्यपताका चहुँदिशि में फैले सर्वत्र इसकी सर्वतोमुखी प्रतिभा फैले और भारत फिर जगद्गुरु कहा सके।

राष्ट्र बनता है भावी नागरिकों से और भावी नागरिक बनते हैं माताओं की गोद से। संक्षेप में राष्ट्र का उत्थान और पतन माताओं पर निर्भर है ये चाहें तो राष्ट्र को बिगाड़ दें, ये चाहें तो राष्ट्र को बना दें, इन्हें चाहिए अपनी सन्तान को इस नारकीय शिक्षा पद्धति से बचाकर प्राचीन वैदिक संस्कृति के पोषक गुरुकुलों में पढ़ाकर अभिमन्यु समवीर महात्मा गांधी जैसे योगी और कृष्ण जैसे राजनीतिज्ञ बनायें जिससे देश उत्थान की ओर अग्रसर हो। देश का उत्थान माताओं पर निर्भर है, माताओं की गोद में राष्ट्र बनता एवं बिगड़ता है इसके लिए प्रथम माताओं को गार्गी, दुर्गावती और महारानी लक्ष्मीबाई जैसा होना पड़ेगा। महर्षि दयानन्द ने स्त्री जाति की ओर ध्यान देकर मानव जाति का महान् उपकार किया है। पुरुषों ने इस जाति पर बड़े बड़े अत्याचार करके इन्हें पतन की ओर धकेला था अब इन्हें उठने का अवसर देकर राष्ट्र को उन्नति की ओर अग्रसर करना चाहिये।

बाल-विनोद

चुटकुले

[१] पिता—(लड़के से) राम कल मैंने आलमारी में चार केले रखे थे, उनमें से यहाँ आज दो ही रह गये ?

लड़का—पिता जी अन्धेरे में दो केले हाथ नहीं आये।

× × × ×

[२] मास्टर—(एक लड़का रोज देर से आता था) तुम कल अपने पिता जी को बुला के लाना।

लड़का बोला—मास्टर साहब मेरे पिता जी ठेकेदार हैं। क्या आपका मकान टूट गया है इसलिये ठीक कराने को मैं उन्हें स्कूल में ले आऊं।

× × × ×

[३] एक यात्री दूसरे यात्री से—क्यों भाई डेढ़ बजे की ट्रेन कब आती है ?

दूसरा यात्री—जी महोदय वह ट्रेन १ बज कर ३० मिनट पर आता है।

पहला यात्री—स्टेशन वालों को रोज रोज टाइम बदलने में क्या आनन्द आता है ?

× × × × ×

यदि चाहते हो तो…………

मारना चाहते हो तो—बुरी इच्छाओं को मारो
जीतना ,, ,, ,, —बुरी तृष्णाओं को जीतो।
पहिनना ,, ,, ,, —नेकी का जामा पहिनो।
छोड़ना ,, ,, ,, —पाप और अत्याचार छोड़ो।
तोलना ,, ,, ,, —बात को तोलो और ठीक तोलो।
देखना ,, ,, ,, —अपने को देखो।
सुनना ,, ,, ,, —ईश्वर की प्रशंसा और दीनों की पुकार सुनो
बोलना ,, ,, ,, —सत्य और मीठे वचन बोलो।
खाना ,, ,, ,, —गुस्से को खाओ।
पीना ,, ,, ,, —ईश्वर चिन्तन का शर्बत पियो।
लेना ,, ,, ,, —आशीर्वाद लो।
जाना ,, ,, ,, —तीर्थ स्थानों को जाओ।
आना ,, ,, ,, —दुखियों की सहायता को आओ।

❀ महा पुरुषों के अवसान ❀

रामचन्द्र जी—सरयू नदी में जल समाधि द्वारा।
कृष्ण जी—व्याध के वाण द्वारा।
सुकरात—विषपान द्वारा।
ईसा—फाँसी द्वारा।
हजरत हुसैन—प्यास से तड़प कर।
मंसूर—सूली द्वारा।
गुरु गोबिन्द जी के पुत्र—दीवार में चुने जाने से।
स्वामी दयानन्द जी—विष दिये जाने से।
स्वामी रामतीर्थ जी—जल समाधि द्वारा।
सरदार भगतसिंह—फाँसी द्वारा।
सरदार पटेल—हृदय गति बन्द होने से।
महात्मा गांधी—गोली द्वारा।

—अमरकान्त, इन्द्रानी

मौलिक मतभेद

(पृष्ठ ५ का शेष)

यह प्रारब्ध इस जन्म में आरम्भ हो ही न इसके लिए कोई कारण नहीं।

यह ठीक है कि परमपुरुषार्थ तो मोक्ष के लिए ही है। यह परमफल है, सर्वोत्तम सुख है। परन्तु परम पुरुषार्थ से नीचे अन्य अवान्तर पुरुषार्थ भी तो हैं जिनकी गणना शुभ कर्मों में है, और साथ ही अपुरुषार्थ या कुपुरुषार्थ भी हैं जिनकी गणना अशुभ या पाप कर्मों में है। इन सबका फल दूसरे जन्म के लिए ही क्यों रुका रहे? परम फल अर्थात् मोक्षफल वह तो सम्भव है पचास जन्मों तक भी रुका रहे। यह एक जटिल चीज है। दृष्ट पुरुषार्थों के दृष्टफल होते हैं। इस दृष्ट सम्बन्ध को जो कर्म और फल के बीच समवाय सम्बन्ध है आप कैसे रद्द कर सकते हैं? यह ठीक है कि जब दृष्ट पुरुषार्थ का वाञ्छित फल न मिले तो समझना चाहिए कि या तो वह पुरुषार्थ अभी पका नहीं या कोई अन्य अपूर्व बाधक हो रहा है, परन्तु सर्वत्र यह न होता है न होना चाहिए।

आपके मत से सदाचार की प्रवृत्ति का भी ह्रास होगा। मनुष्य बहुत से शुभ कर्म इसी इच्छा से करता है कि उसको थोड़े ही दिनों में फल मिल जायगा। वह दूसरे जन्म की बात सोचता भी नहीं, शुभकर्म में मनुष्य की प्रवृत्ति इसीलिए होती है कि वह इच्छा की आंख से फल को देख सकता है। अशुभ कर्म से भी, इसीलिए बचता है कि उसके दुःख रूपी फल से उसे भय लगता है। जन्मान्तर के सुख या दुःख का परिज्ञान तो केवल ज्ञानियों को ही होता है। जन्मान्तर साधारण लोगों की कल्पना से अतीत की चीज है, फिर भी उन लोगों के लिए शुभ कर्म के करने और अशुभ कर्म से बचने के लिए प्रेरणा चाहिए। आपके मत में इस प्रेरणा का सर्वथा अभाव होगा।

कर्म मीमांसा में कुछ काम्य कर्म बताये गये हैं। जैसे 'प्रजाकामः यजेत' और कुछ परम कर्म हैं जैसे 'स्वर्गकामः यजेत'। काम्य कर्मों का फल तो इसी जन्म में मिल सकना चाहिए।

आप योग के दो सूत्रों पर विचार करें—

(१) क्लेश मूलः कर्माशयो दृष्टा दृष्ट जन्म वेदनीयः।

(२) सति मूले तद्विपाको जात्या युर्भोगाः॥

इनके ऊपर आप व्यास-वृत्ति और भोजवृत्ति पढ़ें। दृष्ट और अदृष्ट जन्मों से तात्पर्य इस जन्म से भी है और अगले जन्मों से भी। यदि अशुभ कर्म का फल दुःख दृष्ट जन्म और अदृष्ट जन्म दोनों में होता है तो शुभ कर्म का फल सुख भी वैसा ही होगा।

प्रायः 'जात्यायुर्भोगाः' यह समस्त पद लोगों को भ्रम में डाल देता है। परन्तु इस भ्रम के लिये प्रबल कारण नहीं। अगले सूत्र से स्पष्ट हो जाता है कि जाति, आयु और भोग (अर्थात् भोग के साधन) पुण्य और पाप के कारण सुख और दुःख रूपी फलों को उत्पन्न करते हैं। (ते ह्लादपरिताप फलाः पुण्यापुण्य हेतुत्वात्—योग सूत्र साधक पाद सूत्र ११, १२, १३) इन सूत्रों में केवल इतना ही तो है कि सति मूले, तद्विपाके अर्थात् यदि कर्म का बीज विद्यमान नहीं और उस बीज का बीज विपाक नहीं हुआ तो कोई फल न मिल सकेगा।

मेरे पास एक प्रश्न का कोई उत्तर नहीं। वह यह कि कुछ पुरानी धारणायें हैं। बहुत से विद्वानों ने उन धारणाओं की पुष्टि की है। आज भी यदि वोट लिये जायें तो शायद बहुमत मेरे विरुद्ध हो। परन्तु यदि प्रबल युक्ति और प्रमाण मिलें तो उनसे क्यों चिपटा रहूं यह मेरे लिए कठिन काम है।

सुझाव सम्मतियाँ

(पृष्ठ ११ का शेष)

के पितामह आदि किस प्रकार ईश्वर की भक्ति करते थे, तथा २००० वर्ष से पूर्व 'ईसामसीह' भी न थे, तथा ईसाई भी न थे, और गिरजाघर न थे, तब ईसाईयों का भक्ति करने का प्रकार भी कैसे होता। लगभग ३००० वर्ष से पूर्व जैनों के तीर्थङ्कर भी न थे, तो उनके मन्दिर और मूर्ति भी कैसे बनते। उस समय तीर्थङ्करों के पूर्वज ईश्वर की पूजा कहाँ और कैसे करते थे, तथा ५००० वर्ष से पूर्व कृष्ण जी भी न थे, तो उनकी मूर्ति और कृष्ण मन्दिर भी कैसे बनते, अतः प्रश्न होता है कि श्री कृष्ण जी के पूर्वज ईश्वर की उपासना किस प्रकार करते थे, एवमेव जब राम न थे, तो उनके पूर्वज तथा महादेव जी के पूर्वज किस प्रकार ईश्वर की भक्ति करते थे? क्योंकि राम एवं महादेव के मन्दिर तथा मूर्ति तो पश्चात् ही बनने सम्भव हैं इत्यादि सभी प्रश्नों का एक ही उत्तर है कि जब ये मत और मतों के सञ्चालक न थे, तब एक ही निराकार ईश्वर की उपासना की जाती थी, जैसे कि आज भी वैदिक धर्मी करते हैं, इससे यह स्पष्ट सिद्ध है कि ईश्वर प्राप्ति का सर्वोत्तम एवम् सर्व प्राचीन प्रकार वैदिक धर्म में ही है।

—स्वामी रामेश्वरानन्द, आचार्य
गुरुकुल घरौण्डा (पंजाब)



आर्य जगत

प्रचार समाचार—

—१३ अक्टूबर को आ० स० रामनगर नैनीताल के मन्त्री श्री इन्द्र वर्मा एम० ए० ने निकटवर्ती ग्रामों में ईसाई प्रचार निरोधक प्रचार किया फल स्वरूप ईसाई मिशनरियों ने वहा से अपना अड्डा हटा लिया।

—शिकारपुर जिला बुलन्दशहर में ४, ५ तारीख को श्री घनानन्द शर्मा ने प्रचार किया। ५ तारीख को आ० स० के ११ सदस्य बनाये गये और निर्वाचन हुआ। श्री शिवचरण दत्त वैद्य प्रधान, लाला किशोरी लाल मन्त्री और श्री बनवारी लाल कोषाध्यक्ष चुने गये। लाला रामचन्द्र लाल बम्बई वालों ने अपना मकान आर्य समाज के लिए दान कर दिया है जिसके लिए उन्हें धन्यवाद है।

—आ० स० हरदुआगंज में दयानन्द विद्या मन्दिर खोला गया है जिसमें श्री स्यालीराम बी० ए० द्वारा १ से १० तक की कक्षाओं की शिक्षा का प्रबन्ध है।

—आ० स० जलालाबाद, शाहजहाँपुर की ओर से श्री लक्ष्मणदेव उपदेशक द्वारा २१, २२ सितम्बर को प्रचार हुआ और समाज ने उन्हें ५४) दिया।

—ढूठोवारी गोरखपुर म श्री मुन्नी प्रसाद जी ने प्रचार किया, आ० स० की स्थापना हुई। श्री लक्ष्मीचन्द जी प्रधान, डा० पशुपतिनाथ मन्त्री और श्री निवास जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आ० स० बिसौली की ओर से इन दिनों महल्ला प्रचार और प्रवचन का कार्य चल रहा है।

—ग्राम दतौली मे आर्यसमाज सहतवार बलिया की ओर से एक नये आर्य समाज की स्थापना हुई। श्री कन्हैयासिंह प्रधान, श्री विजय शंकर सिंह मन्त्री और श्री सुखरामसिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

उत्सव समाचार—

आर्य समाज रामनगर नैनीताल फरवरी ५९ में समाज का वार्षिकोत्सव करना चाहता है जिसमें महिला प्रचारकों की विशेष आवश्यकता है। अत जिस उपदेशिका के पास अवकाश हो वह कृपया श्री इन्द्र वर्मा मन्त्री के पते से पत्र व्यवहार करे।

—आ० स० रायबरेली का वार्षिकोत्सव २०,२१, २२, २३ नवम्बर ५८ को हुआ जिसमें उच्चकोटि के विद्वान् पधारे।

—आ० स० हरदोई का ७४ वा वार्षिकोत्सव २०, २१, २२ अक्टूबर ५८ को हुआ। राष्ट्र भाषा सम्मेलन, मद्यनिषेध सम्मेलन, युवक सम्मेलन, जिला आर्य सम्मेलन तथा सांस्कृतिक प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। विशिष्ट आय विद्वान् भाग लिए।

—गुरुकुल चित्तौड़गढ का रजत जयन्ती महोत्सव ८, ९, १०, ११ जनवरी ५९ को होगा। इस अवसर पर अनेकों विद्वानो के भाषण होगे। गोपालक शिविर व प्रदर्शनी का भी आयोजन है।

—आ० स० ऐशबाग लखनऊ का वार्षिकोत्सव जो ७ नवम्बर का होने वाला था अब वह २३ नवम्बर ५८ को होगा।

—आ० स० पनेका गोरखपुर का वार्षिकोत्सव १०, ११, १२, नवम्बर को होगा। प० रामानन्द शास्त्री, इन्द्रदेवसिंह आदि पधारेगे।

—आ० स० ढूठोवारी गोरखपुर का वार्षिकोत्सव १४ १५ १६ नवम्बर को होगा। बिहार तथा उ० प्र० के प्रमुख विद्वान पधारेगे।

आ० स० पानीपत का ६५ वा वार्षिकोत्सव जो ३, ४, ५ अक्टूबर को होने वाला था अब १४, १५, १६ नवम्बर ५८ को होगा। पंजाब के अनेकों प्रमुख विद्वान् पधारेगे। इस समाज ने १५ अक्टूबर से प० इन्द्रजीत जी को अपने समाज मे पुरोहित नियुक्त किया है।

संस्कार समाचार—

—आ०स० कासगंज के श्रीराम रक्षपाल जी अग्निहोत्री की पुत्री का नामकरण संस्कार श्री प० रामेश्वर दयाल द्वारा वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ।

—आ० स० बिसौली के मंत्री श्री वेदप्रकाश आर्य के पुत्र का नामकरण संस्कार १५ अक्टूबर को हुआ।

शुद्धि समाचार—

—ग्राम असारा जिला मेरठ में ५ अक्टूबर को एक विशाल सार्वजनिक सभा में ५९४ ईसाइयों की शुद्धि हुई। सभा की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी अभेदानन्द जी महाराज ने की तथा उन्होंने एक सारगर्भित भाषण दिया। अन्य अभ्यागतो में श्री नारायणदास कपूर, श्री जगन्नाथ जी, श्री आशानन्द जी, श्री गोपीचन्द जी, आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। शुद्धि संस्कार प० हरिप्रसाद जी ने कराया। मेरठ जिले के दर्जनों विशेष कार्यकर्ता व नेता उपस्थित थे। शुद्धि समारोह भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, सब्जी मण्डी देहली के [illegible] से हुआ।

शोक समाचार—

—कु० हरिश्चन्द्र देव शर्मा चातक कविरत्न की भाभी श्रीमती सूर्यकुमारी जी (धर्मपत्नी बाबू शंकर बक्शसिंह) का पिछले दिनो निधन हो गया। उनकी स्मृति में सूर्यकुमारी प्रकाशन मन्दिर की योजना की जा रही है। प्रभु दिवंगत आत्मा को शांति दे और उनके पुत्र प्रो० राजेन्द्रदेव सिंह एम० ए० (द्वय) एल० टी० को धैर्य प्रदान करे।

—आ० स० बरौठा ने श्रीमती गुलाब देवी (धर्मपत्नी पूर्व समाज मन्त्री श्री हरिशंकर जी) के निधन पर शोक प्रकट किया।

—आ०स०चन्दौसी ने प्रमुख समाज सेवी लाला मुकुट बिहारी लाल शर्राफ के निधन पर हार्दिक दुख व्यक्त किया।

—आ० स० मसेनी मुरादाबाद ने स्थानीय समाज के मन्त्री की धर्मपत्नी के निधन पर शोक प्रकट किया।

—आ० स० गोंडा ने श्री चन्द्रधारी शरण सिनहा सब रजिस्ट्रार की माता जी के निधन पर शोक प्रकट किया।

अन्यान्य समाचार—

—स्वामी प्रणवानन्द जी पुनपुन वाले जहा कहीं भी हों, आर्य समाज दिलदार नगर को कृपया अपने पते की सूचना देने का कष्ट करे।

आवश्यकता है

रामप्यारी आर्य कन्या पाठशाला चन्दौसी के लिए—

(१) एक मुख्याध्यापिका बी० ए० बी० टी० जो गणित, सामान्य ज्ञान तथा सामाजिक विषय में विशेष योग्यता रखती हो।

(२) एक ज०टी०सी० अध्यापिका जो हिन्दी, संस्कृत तथा भूगोल में विशेष योग्यता रखती हो। (मध्यमा अथवा साहित्य रत्न हो तो अच्छा है)

(३) एक अध्यापिका एच०टी०सी० प्राइमरी कक्षाओं के लिये।

प्रार्थना पत्र ५ नवम्बर ५८ तक आ जाने चाहिये।

आवश्यकता

सम्भ्रान्त आर्य परिवार की गृह कार्य मे दक्ष, इण्टरमीडिएट तक शिक्षित ब्राह्मण पुत्री के लिए योग्य आर्य वर की खोज है। पत्र व्यवहार श्री मन्त्री जी, आर्य समाज, मेस्टन रोड कानपुर द्वारा।

सभा की सूचनाएँ

अन्तरङ्ग सदस्यों के लिए सूचनार्थ

हल्द्वानी में मौसम सुहावना है रात्रि में रजाई की आवश्यकता होती है, कृपया प्रबन्ध करके आवें।

प्रचार सूचना

श्री स्वामी कृष्णानन्द जी साधना आश्रम उपदेशक विद्यालय यमुनानगर जगाधरी वाले ने नवम्बर मास का समय सभा की ओर से उत्तरप्रदेश मे प्रचारार्थ दिया है। जो समाजे उनसे लाभ उठाना चाहे सभा कार्यालय से पत्र व्यवहार करें।

निरीक्षक सूचना

श्री माता हेमलता देवी जो मुख्य निरीक्षिका अलीगढ़ निवासिनी जिला मुजफ्फरनगर, सहारनपुर तथा देहरादून के महिला आर्यसमाजों में प्रचारार्थ एव निरीक्षणार्थ पहुंच रही हैं। उनके पधारने पर उनका स्वागत तथा प्रचार और निरीक्षण कराने की कृपा करें और सभा का प्राप्तव्य धन देने का कष्ट करें।

प्रशंसनीय कार्य

वर्षा के कारण अलीगढ़ प्रदेश में धन संग्रह के लिए बड़ी कठिनता हो रही है और जल के कारण मार्ग बन्द सा है। फिर भी सभा के उत्साही उपमंत्री श्री प० प्रेमचन्द्र जी शर्मा और सभा के अन्तरङ्ग सदस्य श्री प० रामचन्द्र जी आर्य के प्रयत्न से ४ समाजो से १२५) रु० सभा के लिए वेद प्रचारार्थ प्राप्त हुए। अन्य समाजो के प्रोग्राम स्थगित करने पड़ें। मार्ग ठीक हो जाने पर जिले के प्रत्येक समाज में जाने का प्रोग्राम बनाया जा चुका है। समाजों को सहयोग करना चाहिए। —फूलसिंह [illegible] सभामन्त्री

जयन्ती-सूचना

१—आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति के सदस्यों को सूचित किया जाता है कि समिति की बैठक आ०स०हल्द्वानी में दि० २५ २६ अक्तूबर १९५८ को हो रही है। समिति के सभी सदस्यों की सेवा में विज्ञापन भेजा जा चुका है। कृपया नियत समय पर पधार कर कृतार्थ करें और समिति के सभासद महानुभावों से निवेदन है कि अपनी अपनी रिपोर्ट भी कृपया बनाकर साथ लावें।

२—हीरक जयन्ती समिति की रसीदें नोट्स ।।), १), २), ५), १०) वाले प्रकाशित किये जा रहे हैं। वह आपको अन्तरङ्ग के समय धन संग्रहार्थ हल्द्वानी में दिये जायेंगे।

—संयोजक समिति

आर्य जगत् के शेष समाचार

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का परिपत्र

सार्वदेशिक आर्य वीरदल समिति ने यह निश्चय किया है कि भारत के समस्त दीक्षित आर्य वीरों को एक पारिवारिक सूत्र में बांधा जाय ताकि वह एक दूसरे के मित्र बन सुख-दुख में परस्पर सहयोग व सहानुभूति रख सकें। दूसरा निश्चय यह हुआ है कि प्रधान केन्द्र दिल्ली की ओर से ऐसा प्रयास किया जाय कि समस्त दीक्षित आर्य वीर अपनी शारीरिक, मानसिक व सामाजिक उन्नति के लिए एक प्रेरणा व सहयोग प्राप्त कर सके और उनके उत्साह में निरन्तर वृद्धि होती रहे। इसके लिए निम्न बातों पर ध्यान देना निश्चित हुआ कि:—

१—दीक्षित आर्य वीरों के पास समय समय पर विज्ञप्तियां, ट्रैक्ट तथा दल सम्बन्धी साहित्य पहुंचना चाहिए।

२—दीक्षित आर्य वीरो के लिए कोई चिह्न निश्चित किया जाय कि जिसे वह नित्य धारण कर सकें और जहाँ वह जांय उसे अन्य दीक्षित आर्य वीर पहिचान सकें।

३—एक नगर के समस्त दीक्षित आर्य वीरों को सप्ताह में एक दिन अवश्य एकत्रित होना चाहिए और ज्ञान वृद्धि के लिए एक भाषण तथा सामूहिक सन्ध्या अनिवार्य रूप से हो।

४—प्रत्येक दीक्षित आर्य वीर अपने पास एक डायरी रखे जिसमें वह व्यायाम, स्वाध्याय सन्ध्या तथा सेवा के सम्बन्ध में अपनी दैनिक स्थिति नित्य अंकित करे।

५—दीक्षित आर्य वीरों की ज्ञान-वृद्धि के लिए [illegible] द्वारा धार्मिक तथा सांस्कृतिक [illegible]ाएं भी चालू की जां[illegible]ओं में उत्तीर्ण आर्य वी[illegible] पत्र भी दिये जायं।

[illegible]क दीक्षित आर्यवीर प्रधान [illegible] का आर्य वीर दल की सहा[illegible] २) दो रुपये विजय दशमी पर्व के अवसर पर भेजेगा। जो आर्य वीर अकारण सहायता नहीं भेजेगा उसका नाम दीक्षित आर्य वीरों की सूची में से हटा दिया जायगा और उपरिलिखित सुविधाएं भी उसे नहीं दी जायगी।

७—दीक्षित आर्य वीरों के नामों का पते सहित एक सूची-पत्र तैयार किया जाय ताकि आर्य वीर उनके साथ अपना सम्पर्क स्थापित कर सकें।

८—दीक्षित आर्य वीर स्वभावतः आर्य वीर दल की शाखा में सम्मिलित हों और सक्रिय सहयोग दें।

आशा है आप समिति के उपरिलिखित निर्णयों का स्वागत कर अपना पता, अपने सुपात्र तथा अपना वार्षिक शुल्क पहली नवम्बर ५८ तक कार्यालय, सार्वदेशिक आर्य वीर दल दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, दिल्ली—१ के पते पर भेज देंगे। पहली नवम्बर से उपरिलिखित कार्यक्रम प्रारम्भ हो जायगा।

—ओम्प्रकाश त्यागी
प्रधान संचालक, सार्व० आर्यवीर दल

—आर्य वीर दल मवाना, मेरठ के कार्य को श्री देवव्रत जी शिक्षक सुन्दर ढंग से संगठित कर रहे हैं। अधिक वर्षा से यहां बाढ़ हो गई है, कई मकान गिर गये तथा कुछ लोग भी मर गये। स्थानीय दल कार्यकर्ता श्री सुरेन्द्र कुमार, भुवनेश कुमार, विनोदकुमार आदि ने दो दिनों तक सेवा कार्य करके कई लोगों की जानें बचाई जिनकी प्रशंसा श्री एस० डी० एम० महोदय ने भी की।

—श्री विश्वनाथ आर्य वीर प्रचार मन्त्री आर्य वीर दल मेरठ दल के कार्य को संगठित करने के लिए दौरा कर रहे हैं। आ०स० फलावदा ने इस कार्य के लिए आपको १९) दिया। अन्य समाजों को भी यथोचित सहयोग करना चाहिये।

—१२ १०-५८ को श्री काशीनाथ जी शास्त्री प्रधान शिक्षक सार्वदेशिक आर्य वीर दल की अध्यक्षता में आर्य वीर दल वाराणसी के प्रमुख कार्यकर्ताओं की एक बैठक हुई जिसमें प्रान्तीय आर्य वीर दल के अधिष्ठाता व संचालक श्री रामजीप्रसाद गुप्त का दल के विकाश के सम्बन्ध मे भाषण हुआ।

—आर्य वीर दल वगहा मिरजापुर की ओर से ५ अक्टूबर को वृक्षारोपण और श्रमदान का कार्य हुआ। २ नवम्बर को आर्य वीर दल सम्मेलन करना भी निश्चित हुआ है।

—५ १० ५८ को आ० स० मरर मेरठ के दैनिक सत्सग मे श्री धर्मवीर आर्य भण्डारी का भाषण हुआ। उन्होंने कहा कि मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति है।

—आ०स० आदर्शनगर नैनीताल में २७-९ ५८ को प० देवशर्मा पुरोहित द्वारा विशेष यज्ञ कराया गया और श्री भूपशरण जी भजनोपदेशक द्वारा सुन्दर प्रचार हुआ।

—आ०स०जालना—श्री ओम्प्रकाश जी प्रधान, श्री कचरूलाल जी मक्कड़ मन्त्री, श्री मोहनलाल जी कोषाध्यक्ष।

—स्वामी विद्यानन्द जी सन्यासी का ए/२ आर्यनगर लखनऊ मे श्री भगवान देवजी के निवास स्थान पर ३० ९ ५८ से ९ ११ ५८ तक नित्य सायं ८ से ९ तक योग विद्या पर प्रभावशाली प्रवचन हुआ। अन्तिम दिन वृहद् यज्ञ भी हुआ। नगर के अनेकों प्रमुख आर्य बन्धु उपस्थित थे। सैकड़ो नरनारियो ने नित्य उनके प्रवचन से लाभ उठाया। इस समय उनकी कथा श्री हुक्मचन्द खन्ना रेलवे गवर्नमेण्ट फारेस्ट कन्ट्राक्टर, ऐशबाग रोड लखनऊ के निवास स्थान पर हो रही है जो २६ अक्टूबर तक चलेगी।

—१६ से २० सितम्बर तक दोयज मेला मे आ० स० हल्दौर, बिजनौर की ओर से प्रचार हुआ। जिसमे श्री सत्यपाल शास्त्री, श्री धर्मदत्त आनन्द, श्री ईश्वरदयालु आर्य, स्वामी सुखानन्द, स्वामी अमृतानन्द, स्वामी [illegible]नन्द, श्री सुखराम जी, नरेन्द्रसिंह, श्री जयदत्त शर्मा, श्री गुलाबसिंह, ब्र० बालकराम आदि के भाषण हुए। मद्य निषेध सम्मेलन और कवि सम्मेलन भी हुआ। इससे पूर्व सोत्साह वेद प्रचार सप्ताह भी मनाया गया।

—औरङ्गाबाद, गया मे श्री शिवधर जी प्रचारक के प्रयास से एक नये आर्यसमाज की स्थापना हुई। श्री शिवनन्दन प्रसाद जी प्रधान, श्री भोलानाथ जी मन्त्री और श्री लक्ष्मण साह जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आ० स० वर्धा [illegible] की ओर से पं० रामचन्द्र शर्मा ने २४ सितम्बर से ५ अक्टूबर तक अनेकों स्थानों पर प्रचार किया। १५ व्यक्तियों के यज्ञोपवीत संस्कार कराये जिन्होंने मादक द्रव्य निषेध की प्रतिज्ञा की।

—नगर आर्य समाज आगरा की की ओर से २८।९।५८ को श्री लक्ष्मण प्रसाद आर्य के घर पर पाक्षिक यज्ञ हुआ। २९ ९ को समाज के साप्ताहिक अधिवेशन मे पं० वाचस्पति शास्त्री का और ५ १० को श्री बाबू पूर्णचन्द जी का ओजस्वी भाषण हुआ।

—आ० स० बेवर मैनपुरी में श्री ब्रह्मदत्त शास्त्री ने २८, २९ अगस्त व ६ से ८ सितम्बर ५८ तक वेद प्रचार किया।

—आ० स० काकड़वाड़ी बम्बई ४—का ८३ वां वार्षिक अधिवेशन ५।१० ५८ को हुआ। नये वर्ष के लिए ४२ हजार रुपये का बजट स्वीकार हुआ। प० विजयशङ्कर जी प्रधान, श्री अमृतलाल क० पटेल मंत्री, तथा श्री दीनुभाई भट्ट जे० पी० कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आ०स० चन्दौली वाराणसी—श्री कृष्णदत्त वर्मा प्रधान, श्री गंगाधर जी मन्त्री, श्री मुन्नीलाल जी कोषाध्यक्ष

—गुरुकुल कुरुक्षेत्र में नये ब्रह्मचारियो का प्रवेश अब बन्द हो गया है। सभी स्थान भर गये। नया प्रवेश मार्च ५९ में उत्सव पर हो सकेगा। पिछले दिनों सेठ कृष्णकुमार बिड़ला यहाँ पधारे। आपने गुरुकुल की व्यवस्था से प्रसन्न होकर कुल को २००८) दान दिया और ५०) ब्रह्मचारियों को मिठाई खाने के लिए दान दिया। कुल की ओर से आपको धन्यवाद है।

—प्रियव्रत आचार्य

सदाशिव गुरुकुल रणखंडी सहारनपुर को प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री सरदारसिंह जी मैनेजिंग डायरेक्टर रोहाना मिल्स ने छात्रवृत्ति के लिए ३२६) दान दिया है। अतः गुरुकुल की ओर से उन्हें धन्यवाद है।

—विजयेन्द्र ब्रह्मचारी

—आ०स० सोथरा के श्री अर्जुन सिंह जी के पुत्र का नामकरण संस्कार २८ सितम्बर को हुआ।

—आ० स० सिकन्दराबाद ने श्री बस्तीराम जी भजनोपदेशक के निधन पर शोक प्रकट किया।

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ ने श्री हरिसिंह जी अन्तरङ्ग सदस्य के भ्राता श्री हेमचन्द जी प्रज्ञाचक्षु के निधन पर दुख प्रकट किया।

—आ० स० बेवर मैनपुरी ने श्री विश्वनाथ सिंह मन्त्री पंचायत केन्द्र के निधन पर शोक प्रस्ताव पास किया।

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा वाराणसी ने २० ९।५८ को डा० भगवानदास जी की मृत्यु पर शोक प्रकट किया।

—आ० स० याकूत गंज फतेहगढ़ ने अपने सदस्य श्री नाथूराम जी के निधन पर दुख प्रकट किया।

—११, १२ नवम्बर ५८ को दीपावली के अवसर पर अजमेर में ऋषि मेला का आयोजन हो रहा है। मेले का प्रबन्ध ऋषि की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा करेगी। खेल कूद, मनोरंजन, यज्ञ, दिवाली, वेद-कथा, भजन व्याख्यान विभिन्न प्रतियोगिताएं, दंगल आदि कार्यक्रम होंगे।

—२७ अक्टूबर को आ० स० सुहेलनगर, चित्तौरा बहराइच में स्वामी सुहेलगिरि द्वारा दमे की औषधि मुफ्त बांटी जायेगी।

—पता चला है कि श्री बलवीर सिंह वर्तमान नाम दय चंद ने अनेकों गुरुकुलों तथा आर्य संस्थाओं को धोखा देकर कैराना में एक उपदेशक महाविद्यालय खोल लिया है और स्वयं उसके आचार्य बन गये हैं। आर्य जनता उक्त महाशय के चक्कर में न आवे और अपने बच्चों को भी बचाये। —विजयेन्द्र ब्रह्मचारी

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण नं. ए. ६०
कार्तिक ४ शक१८८० (२६अक्टूबर५८)

आर्य्य मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष्य : ४११३ तार : 'आर्यमित्र'

आर्यमित्र हीरक जयन्ती

को

सफल बनाइए

आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार और संघटन की सुदृढ़ता

के लिए

एकमात्र साधन 'आर्यमित्र' है

जो साठ वर्षों से निरन्तर मौन साधक के रूप में समाज, राष्ट्रभाषा हिन्दी, साहित्य, धर्म, राष्ट्र और मानव संस्कृति आदि सभी क्षेत्रों मे वैदिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने में संलग्न रहा है। सभी क्षेत्रों में आदर्शों की स्थापना ही उसका एक मात्र उद्देश्य रहा है।

यदि आप चाहते हैं कि भविष्य में भी

'आर्यमित्र'

★ आर्य समाज के प्रचार
★ सिद्धान्त समर्थन
★ निर्भीक आलोचना
★ समाज-सुधार
★ राष्ट्र नव निर्माण
★ विश्व शान्ति
★ वैदिक संस्कृति समुद्धार
★ नैतिक उत्थान
★ आदर्श पत्रकारिता
★ राष्ट्रभाषा हिन्दी सेवा
★ विश्व बन्धुत्व
★ मानव संस्कृति

आदि सभी क्षेत्रों में सामाजिक चेतना जागृत करता रहे तो आर्यमित्र को समर्थ बनाने में अपना सहयोग प्रदान कीजिए।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती की सफलता आपके सहयोग पर ही निर्भर है। पचास हजार रु० की जयन्ती निधि मे अपनी सामर्थ्यानुसार सहायता कीजिए और इष्टमित्रों से सहायता दिलवाकर पुण्य के भागी बनिए।

आर्यमित्र की उन्नति के इस यज्ञ में पड़ी हुई प्रत्येक ... मानवता के नव निर्माण में सहायक होगी।

संयोजक—'आर्यमित्र हीरक जयन्ती स... ...ऊ

बाबूराम माथुर द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

आर्य्य जगत में सब से अधिक छपने वाला आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

ओ३म्

आर्य्य मित्र

वर्ष ६० | अङ्क ४२

लखनऊ–रविवार कार्तिक ११ शक १८८०, कार्तिक कृष्ण ६, वि२०१५ (२ नवम्बर ५८) दयानन्दाब्द १३४, सृष्टिसंवत् १९७२९४९०५९

वेदोपदेश

ओम् धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्वं तं योऽस्मान्धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः।
देवानामसि वह्नितमꣳ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥ यजु० १।८

तू नाशक है। हिंसक का नाश कर, उसका नाश कर जो हमारा नाश करता है। उसका नाश कर जिसका हम नाश करते हैं। तू देवों का सबसे बड़ा वहन करने वाला है। सबसे बड़ा शुद्धिकारक है। सबसे बड़ा पूरक है। सबसे अधिक प्रिय है और देवों का सबसे बड़ा आह्वान करने वाला है।

दयानन्द कौन थे

लोचन में न्याय सत्य और जिन तेज भास,
चित्त वेद धर्म और हाथ वेद ग्रन्थ था।
नासिका में थी स्वतन्त्र वायु की सुगन्ध प्रिय,
तृषित श्रोत्र में नीर एक वेद मन्त्र था॥
रोम रोम में था व्याप्त जिसके परोपकार,
पायन को सूझता सदैव सत्पन्थ था।
सत्यार्थ प्रकाश ज्ञान जिसके था वाक् मध्य,
उसी पूज्य आत्मा का नाम दयानन्द था॥

—धर्मेन्द्रनाथ 'अलिन्द' हल्दौर (बिजनौर)

सम्पादकीय—

शिक्षा में गुरुकुलीय तत्व

भारत सरकार के सम्माननीय शिक्षा मंत्री श्री कालूराम श्रीमाली ने गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव के अवसर पर नव स्नातकों को दीक्षान्त देते हुए गुरुकुल शिक्षा पद्धति की प्रशंसा में में जो गौरवपूर्ण शब्द कहे हैं उनसे भारतीय संस्कृति अभिमानी प्रत्येक व्यक्ति को हार्दिक प्रसन्नता और गर्व का अनुभव हो रहा है। आर्य समाज भारत की प्राचीन संस्कृति की गौरव पूर्ण स्वरूप की रक्षा के लिए जिस निष्ठा के साथ कार्य करता रहा है गुरुकुल उसका एक प्रतीक है। अर्धशताब्दी के दीर्घकाल में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ने भारतीय शिक्षा में अपना जो वैशिष्ट्य स्थापित किया है उसे आज प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति स्वीकार करता है और चाहता है कि मेरी सन्तानों में भी विनय, श्रद्धा, भक्ति अनुशासन के उच्चगुण गुरुकुल के स्नातकों की भांति ही हों परन्तु चाहने मात्र से ही कोई कार्य सम्पन्न हो जाय तो भारत में कोई गरीब न रहता। क्योंकि गरीब रहना कोई नहीं चाहता, इसी प्रकार उपर्युक्त सभी शिक्षात्मक सभी गुण एक साधना के ही परिणाम हो सकते हैं जो अन्य पद्धतियों की अपेक्षा गुरुकुल पद्धति द्वारा ही उचित रूप में प्राप्त किये जा सकते हैं गुरुकुल शब्द के साथ गुरु का अभिन्नत्व ही प्रणाली की जान है, इसी पर शिक्षा मन्त्री ने विशेष बल दिया है और छात्रों में अनुशासन और आदर्श नागरिकता के लिए गुरुकुलों के कार्य की प्रशंसा की है और उन्हें अनुकरणीय बताया है।

हम शिक्षा मन्त्री के शब्दों का आदर करते हुए भारत सरकार की प्रचलित शिक्षा नीति का सिंहावलोकन करना चाहते हैं और समझना चाहते हैं कि जब शिक्षा मन्त्री और प्रधान मन्त्री नेहरू जी तक राष्ट्र का प्रत्येक नेता गुरुकुलों के तपोवनों में गुरुकुलों के सांस्कृतिक संरक्षण के कार्यों की सराहना करते हैं फिर गुरुकुलों के आर्थिक दायित्वों से सरकार क्यों बचना चाहती है? प्राचीन वैदिक सांस्कृतिक वातावरण की पुनःस्थापना का सराहनीय कार्य करने पर भी गुरुकुलों के कार्य में धर्मनिरपेक्ष सरकार किस प्रकार साम्प्रदायिकता की गन्ध पा जाती है?

इसके अतिरिक्त शिक्षा की स्वाधीनता का भी एक गम्भीर प्रश्न गुरुकुलों के प्रश्न के साथ सम्बद्ध है। गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर आदि संस्थाएं अर्ध शताब्दी के दीर्घकाल से अपनी शिक्षा द्वारा क्रान्तिकारी विचारधारा को प्रोत्साहित करती रही हैं। राष्ट्रीय जागरण में इन संस्थाओं का हाथ किसी संस्था से कम नहीं है जब कि आज विश्वविद्यालय का सम्मानित गौरव रखने वाले कई विश्वविद्यालय काफी समय तक अंगरेजों के दिमागी गुलामों का निर्माण करने और चाटुकारिता में ही जीवित रहे साथ ही भारतीय संस्कृति के गौरव के स्थान पर विदेशी भौतिक जीवन दर्शन का प्रचार एवं प्रसार करने के एकमात्र केन्द्र बने रहे आज राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों का गौरव और सम्मान पा रहे हैं वहाँ गुरुकुल प्रणाली को अपने सम्मान और विश्वविद्यालय स्वरूप को स्थिर रखने के मार्ग में कानूनी रुकावटें स्वतन्त्र भारत सरकार के कानून उत्पन्न कर रहे हैं। हम भारत सरकार के शिक्षा मंत्री के इस दीक्षान्त भाषण में एक उदार भावना का संकेत पाते हैं। सम्भव है वह उन्होंने गुरुकुल पद्धति की सेवाओं और अतीत के गौरवपूर्ण इतिहास का सिंहावलोकन करने के पश्चात् अब बना ली हो और भविष्य में सरकार की नीति उससे प्रभावित हो।

शिक्षा मंत्री के भाषण ने गुरुकुल पद्धति के महत्व को बहुत आगे बढ़ा दिया है और हम उनके भाषण पर उन्हें धन्यवाद देते हुए भारत सरकार की शिक्षा नीति के लिए वह ही सूत्र ढूंढ सके हैं और वह यह है कि "भारत के विश्वविद्यालय गुरुकुल बनें। आशा है शिक्षा शास्त्री इस सूत्र को भारतीय शिक्षा का मूल मन्त्र मानकर शिक्षा का विकास करेंगे और हम राष्ट्र को विश्वास दिलाते हैं कि राष्ट्र की अनैतिकता, अनुशासनहीनता, ईर्ष्या, द्वेष, भौतिक मनोवृत्ति, सभी बुराइयों का निराकरण हो सकेगा और एक दिन फिर भारत समितराणिः श्रोत्रीयं ब्रह्म निष्ठम का गौरव बढ़ाने वाला सिद्ध होगा। भारत की समस्त बुराइयों का समाधान शिक्षा में है और शिक्षा का केन्द्र विन्दु गुरुकुल पद्धति है।

खेदजनक घटना

पंजाब के सम्मानित वित्त मन्त्री श्री भार्गव के साथ रेवाड़ी की सभा में जो अमानवीय व्यवहार हुआ वह प्रजातन्त्र के लिए कलंक बन गया है। हमारा कांग्रेस या कांग्रेस के मन्त्री होने के कारण डा० भार्गव से कोई सम्बन्ध नहीं है फिर भी एक मानवीय व्यवहार के नाते और विचार स्वाधीनता के उन्मुक्त विकास के लिए आवश्यक है कि रेवाड़ी में डा० भार्गव के साथ जो घटना घटी है उसकी तीव्र निन्दा और भर्त्सना की जाय। पुलिस का व्यवहार भी इस घटना के समय एक शासकीय गम्भीरता का प्रश्न बन गया है। जब पुलिस राज्य के मन्त्री को इस प्रकार अपमानित होते सहन कर सकती है तब जनता की वह रक्षा कैसे कर सकती है, या जनता में अपनी रक्षा के लिए पुलिस के महत्व का विश्वास कैसे उत्पन्न हो सकता है? इन बुनियादी प्रश्नों पर इस घटना के प्रकाश में विचार किया जाना चाहिए।

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में दीक्षान्त-भाषण

द्वारा

श्री कालूलाल श्रीमाली, शिक्षा मन्त्री, भारत सरकार

गुरुकुल की स्थापना हुए ५० वर्ष से ऊपर हो गये हैं। उस समय से बड़ी आवश्यकता यह थी कि हमारी संस्कृति के जो विशिष्ट मूल्य हैं उनको कायम रखा जावे। इनको कायम रखने का एक बहुत बड़ा साधन शिक्षा पद्धति है। हमारे पूर्वजों ने जिस शिक्षा पद्धति का निर्माण किया वह उस समय के सामाजिक जीवन के अनुकूल थी। उस समय जीवन का मुख्य उद्देश्य आत्मा की अनुभूति करना था। इसलिए गुरुकुलों में विद्यार्थी का सारा जीवन और दिन चर्या ऐसा बनाई जाती थी जिससे वह इस लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सके। आश्रम का सादा और संयमित जीवन, गुरुजनों के प्रति श्रद्धा, धर्म शास्त्रों का अध्ययन इन सबका एक ही प्रयोजन था और वह यह कि पुरुष अपना असली रूप पहिचाने और समझे कि उसका व्यक्तित्व परमात्मा से भिन्न नहीं अपितु उसी का एक अंग है। विद्यार्थी अपने आपको गुरु की सेवा में समर्पित कर देता था। आत्मानुभूति का इससे अधिक सच्चा और सही मार्ग क्या हो सकता था। उपनयन संस्कार द्वारा गुरु विद्यार्थी को पुनर्जन्म प्रदान करता था इस लिये वह द्विज कहलाता था। गुरुकुल की शिक्षा पद्धति में केवल शास्त्रों के अध्ययन तथा बुद्धि द्वारा ज्ञान उपार्जन करना ही शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य नहीं था, श्रवण और मनन के अलावा शिक्षा का तीसरा सीढ़ा निदिध्यासन था जिसके द्वारा व्यक्ति को आत्मा और सत्य का साक्षात्कार होता था।

पर जहाँ पहले गुरुजनों और वयोवृद्ध लोगों के प्रति श्रद्धा की भावना थी, आज का विद्यार्थी उनके साथ समानता का व्यवहार करता है। कहीं कहीं तो यहाँ तक दिखाई देता है कि युवक वयोवृद्ध लोगों को प्रतिक्रियावादी समझता है और उनका अपमान करने में उसे कोई संकोच नहीं होता। आध्यात्मिक जीवन से हटकर मनुष्य आज भौतिक जीवन को अधिक प्रधानता देता है। आज मनुष्य को दिन रात यही चिन्ता रहती है कि वह अपने जीवन का भौतिक स्तर कैसे ऊंचा करे और उसके सांसारिक सुख कैसे बढ़ें। प्रकृति के जितने भी साधन हैं आज वे इसीलिए जुटाये जाते हैं कि मनुष्य के सुख की वृद्धि हो। मनुष्य स्वयं सारे विश्व का केन्द्र बन गया है। सारे संसार को वह इस माप दण्ड से देखता है कि उसको कितना सुख पहुंच रहा है। इस प्रकार हम देखेंगे कि प्राचीन और आधुनिक भारत में शिक्षा के ध्येयों में काफी अन्तर हो गया है।

जब हमारे महापुरुषों ने यह देखा कि भारतवर्ष भी अपनी पुरातन संस्कृति से विमुख हो रहा है तब उन्होंने गुरुकुल जैसी संस्था स्थापित करके हमें यह याद दिलाया कि हमारी संस्कृति का आधार आध्यात्मिक है, भौतिक नहीं। इस समय हम इस परिस्थिति में पहुंच गये हैं कि हमें यह निश्चय करना पड़ेगा कि किस हद तक हमें अपने सांस्कृतिक मूल्यों को कायम रखना है और किस हद तक पश्चिमी सभ्यता को जो विज्ञान और तकनीक पर आश्रित है स्वीकार करना है। यदि हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों को खो देते हैं तो हमारा अस्तित्व ही नष्ट हो सकता है। पश्चिम के देश भी अब धीरे धीरे यह समझने लगे हैं कि मनुष्य की भलाई इसी में है कि वह विज्ञान और तकनीक का सेवक नहीं उसका स्वामी बने और स्वामी बनकर ही वह मानव समाज को ऊपर उठा सकता है।

विज्ञान और तकनीक से हम विमुख नहीं हो सकते और न ही हमें होना चाहिए। ये हमारे जीवन के अंग हैं। आवश्यकता इस बात की है कि आज मनुष्य को शिक्षा इस प्रकार की मिले कि वह आध्यात्मिक जीवन और विज्ञान में सन्तुलन ला सके। यह तब ही सम्भव है जब मनुष्य अपने सही रूप को पहिचाने और उसकी शिक्षा द्वारा ऐसा विकास हो कि वह अपने आपको मानव समाज से पृथक नहीं अपितु उसका एक अंग समझे। गुरुकुल में इस बात का प्रयत्न किया जा रहा है कि एक तरफ तो विद्यार्थियों का जीवन आध्यात्मिक बने और दूसरी तरफ वह आधुनिक विज्ञान और कला कौशल से निपुण हो जिससे वे समाज के स्वावलम्बी नागरिक बन सकें। संसार की सबसे बड़ी आवश्यकता आज यही है कि मानव अपने जीवन में ऐसा सन्तुलन प्राप्त कर सके जिससे वह विज्ञान की खोज करते हुए भी आध्यात्मिक जीवन से विमुख न हो।

गुरुकुल की शिक्षा पद्धति की सब से बड़ी देन यह है कि इसने गुरु और शिष्य के एक आदर्श सम्बन्ध की तरफ हमारा ध्यान दिलाया है। आज हमारे विद्यार्थियों में अनुशासन हीनता बढ़ गई है और उसने समाज के सामने एक बहुत बड़ी समस्या पैदा कर दी है। विद्यार्थी अपने गुरुजनों और आचार्यों के प्रति अभद्र व्यवहार करते हैं और कहीं कहीं तो हिंसा तक उतर आते हैं। विद्यार्थियों की इस अनुशासन हीनता का मूल कारण यह है कि उनके जीवन में आज अपने गुरुजनों के प्रति कोई श्रद्धा की भावना नहीं। बिना श्रद्धा के जीवन में आदर्श नहीं बनते और बिना आदर्शों के जीवन निरर्थक हो जाता है। निरर्थकता की भावना ही अनुशासन हीनता और उच्छृंखलता की जड़ है। इसलिये यदि हम विद्यार्थियों में अनुशासन लाना चाहते हैं तो उसका एक ही उपाय है और वह यह कि विद्यार्थियों में गुरुजनों के प्रति श्रद्धा की भावना जाग्रत करें। श्रद्धा का मतलब अन्धविश्वास नहीं। यह केवल एक मानस वृत्ति है जिसके आधार विनय और आदर हैं जिनके बिना सच्चे ज्ञान का उपार्जन नहीं हो सकता है। आदर्शहीन होने के कारण आजकल के विद्यार्थी पतझड़ के वृक्षों के पत्तों की भांति हवा के झोकों से इधर उधर डोलते रहते हैं। उनके चरित्र में स्थिरता लाने के लिये इस बात की आवश्यकता है कि उनको आदर्शों का सहारा मिले और यह सहारा बिना व्यक्तिगत श्रद्धा जो विद्यालयों में ही पनप सकती है, नहीं मिल सकता है। हम लोगों का यह सौभाग्य है कि हमारे गुरुकुलों में इस सम्बन्ध में अच्छी परम्परा रही है। उसे पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। विद्यार्थी और शिक्षक दोनों ज्ञान के मार्ग पर साथ चलने वाले हैं और दोनों में सहयोग होना चाहिये।

गुरुकुल में विद्यार्थियों को जो स्वावलम्बन सिखाया जाता है वह भी हमारे आधुनिक विश्वविद्यालयों के लिये अनुकरणीय है। गुरुकुल के ब्रह्मचारी विद्याभ्यास के साथ साथ आश्रम में काम करते हैं। गुरुजनों को आश्रम चलाने में पूरा सहयोग देते हैं। आजकल विद्यार्थी जब तक विश्वविद्यालयों में रहते हैं तब तक अपने माता पिता पर आश्रित रहते हैं। पश्चिम में कई देश ऐसे हैं जहाँ हाई स्कूल से उत्तीर्ण होने के बाद विद्यार्थी स्वावलम्बी हो जाते हैं और विद्या उपार्जन के साथ साथ कुछ समय के लिये अपने निर्वाह के लिये कुछ धंधा भी कर लेते हैं। विद्यार्थी और बातों में जो अपना समय नष्ट करते हैं उसकी अपेक्षा वे कुछ धंधे में लगे रहें तो वे समाज के लिये अधिक उपयोगी होंगे और उनमें आत्म विश्वास बढ़ेगा।

गुरुकुलों का आध्यात्मिक आधार और सामाजिक जीवन हमारे विश्व विद्यालयों के लिये अनुकरणीय है। हमारे देश की यह विशिष्ट शिक्षण पद्धति है। यदि हम अपनी संस्कृति को कायम रखना चाहते हैं तो हमें इस शिक्षण पद्धति को कायम रखना होगा। यह अवश्य है कि ब्रह्मचारी गुरुकुल से निकल कर समाज के लिये उपयोगी बन सकें इसके लिये हमें एक विस्तृत पाठ्यक्रम बनाना पड़ेगा। वेदों और धर्मशास्त्रों के अध्ययन के साथ साथ आधुनिक विज्ञान और तकनीक के विषयों का सम्यक् ज्ञान कराना पड़ेगा जिससे वे आधुनिक युग की समस्याओं को समझ सकें और उनका ठीक प्रकार से हल निकाल सकें। हमारे शिक्षालयों का सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन गुरुकुल पद्धति पर हो और उसके साथ-साथ उनमें पाश्चात्य विज्ञान और तकनीक को सिखाने का पूरा प्रबन्ध हो तभी विद्यार्थी भारतीय संस्कृति के सच्चे प्रतीक हो सकेंगे।

मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि यह गुरुकुल फले फूले और इससे निकले हुए छात्र देश के कोने कोने में जा कर देश का नेतृत्व करें। अन्ततोगत्वा आपके स्नातकों को समाज केवल डिग्रियों से नहीं आंकेगा बल्कि यह देखेगा कि उनमें अपने चरित्र से समाज की सेवा करने की और उसको नेतृत्व देने की योग्यता है या नहीं। यदि यहाँ के स्नातक सच्चरित्र और सदाचारी होंगे और सामाजिक जिम्मेदारियों को समझने वाले होंगे तो मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह इस गुरुकुल की हमारे देश को बहुत बड़ी देन होगी और हमारी शिक्षा और संस्कृति की जो परम्परा है उसको कायम रखने में यह सहायक होगी। आप जीवन में सफल हों और समाज के सच्चे सेवक बनें, यही मेरी कामना है। ★

शङ्का-समाधान

विवाह संस्कार पर कुछ प्रश्न और उनके उत्तर

[श्री स्वा० मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती, आर्यसमाज हापुड़]

प्रस्तुत लेख मे विद्वान् लेखक ने विवाह संस्कार सम्बन्धी कुछ शंकाएं और उनके उत्तर प्रस्तुत किए हैं। इस प्रकार के शंका समाधान से वैदिक कर्म काण्ड व्यवस्था आदि के सम्बन्ध में स्थिति स्पष्ट होती है। इस प्रकार के लेखों को स्थान देने की भावना से हम चाहेंगे कि आर्य विद्वान् ऐसी शंकाओं के विषय में अपने सुझाव भेजें तथा इसी प्रकार अन्य संस्कारों आदि के सम्बन्ध में विचार विमर्श किया जाय। —सम्पादक

श्री प्रो० रत्नसिंह जी के पूज्य पिता म० रामचन्द्र जी ने विवाह संस्कार पर होने वाले कुछ प्रश्न मेरे पास भेजे और लिखा कि इनका उत्तर आर्यमित्र या सार्वदेशिक में प्रकाशित करा देवें। तदनुसार उत्तर सहित प्रश्न आर्यमित्र के पाठकों की सेवा में उपस्थित कर रहा हूं।

प्रश्न (१)—स्वामी जी ने संस्कार विधि में लिखा है कि वधू वर अपने-अपने स्थान पर ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना स्वस्ति वाचन शान्ति प्रकरण करें। अग्न्याधान समिदाधान-इतना लिख कर पृ० २४-२५ में लिखे प्रमाणे स्थाली पाकादि वेदी के समीप रखे, फिर वर भी ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना कर वधू के घर को आने का ढंग करे। यज्ञ हवन नहीं लिखा। इसलिए बतलाइए कि जब (वर वधू के घर को प्रस्थान करे तब) हवन करे या नहीं?

उत्तर—आपकी लिखी भाषा में और संस्कार विधि की भाषा में थोड़ा अन्तर है। यदि आप वहाँ की भाषा उसी रूप में पढ़ें तो आपके प्रश्न का उत्तर वहीं मिल जावेगा। अस्तु, महर्षि लिखते हैं कि वधू वर स्नान कर पश्चात् वधू उत्तम वस्त्रालंकार धारण करके उत्तमासन पर पूर्वाभिमुख बैठे तत्पश्चात् पृ० ४-१६ तक लिखे प्रमाणे ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना स्वस्ति वाचन शान्ति प्रकरण करे तत्पश्चात् पृ० २४ २५ में लिखे प्रमाणे अग्न्याधान समिदाधान पृ० २८ में लिखे प्रमाणे स्थाली पाकादि यथोक्तकर वेदी के समीप रखे। वैसे ही वर भी एकान्त अपने घर में जाके उत्तम वस्त्रालंकार धारण करके यज्ञशाला में आ उत्तमासन पर पूर्वाभिमुख बैठके पृ० ४-८ में लिखे प्रमाणे ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना कर वधू के घर को जाने का ढग करे। संस्कार विधि विवाह प्रकरण पृ० १२९ १३० वैदिक यन्त्रालय अजमेर ११ वाँ संस्करण।

इस लेख में स्पष्ट वर्णन है कि वर अपने घर से प्रस्थान से लेकर वधू के घर पहुंचने तक यज्ञ नहीं करेगा। दूसरे वधू-वर के विवाह मण्डप में आने से पूर्व विवाह वेदी में समिदाधानान्त कर्म कर चुकेगी। पश्चात् वर के आगमन के साथ ही विवाह की अगली क्रिया प्रारम्भ हो जावेगी।

प्रश्न (२)—स्वामी जी ने विवाह का समय घण्टे मात्र रात्रि जाने पर लिखा, फिर लिख दिया कि मध्याह्नोत्तर भी कर सकते हैं अतः निश्चित समय क्या हो?

उत्तर—महर्षि ने विवाह संस्कार के उक्त दो समय निश्चित कर दिए हैं। आप इन दोनों में से किसी भी समय में अपनी सुविधानुसार संस्कार कर करा सकते हैं।

प्रश्न (३)—परिक्रमा क्यों? और चार ही क्यों? और लोग तो तीन बार कन्या को आगे और एक बार वर को आगे करते हैं, और आप बतलाते हैं चारों बार लड़के को ही आगे रखना। प्रमाण सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर—जैसे दो राष्ट्र पारस्परिक समझौते एवं मित्रता की दृढ़ता के लिए आजकल अपनी-अपनी मुद्रा (मोहर) लगाते हैं, वैसे ही वैदिक संस्कृति में पाणिग्रहण तथा पाणिग्रहण पूर्वक यज्ञाग्नि की परिक्रमा करना पारस्परिक समझौते एवं सख्य भाव की दृढ़ता के लिए मुद्रा (मोहर) समझा जाता है। चाहे वह समझौता किसी प्रकार का हो। हाँ उसमें अवान्तर भेद हो सकता है। बाल्मीकि रामायण में श्री रामचन्द्र जी और सुग्रीव के समझौते का वर्णन करते हुए लिखा है कि—

संप्रहृष्टमनाहस्तं पीडयामास पाणिना॥ किष्कि० काड ५ १२

ततोऽग्निंदीप्यमानं तौ चक्रतुश्च प्रदक्षिणम्॥ किष्कि० कांड ५।१५

अर्थात् रामचन्द्र जी ने प्रसन्न मन से अपने हाथ से सुग्रीव का हाथ पकड़ा और पश्चात् राम तथा सुग्रीव दोनों ने प्रदीप्त यज्ञाग्नि की प्रदक्षिणा की।

विवाह भी दो स्त्री पुरुषों का पारस्परिक सामाजिक समझौता ही है, जिसके पश्चात् दो शरीर जीवन भर के लिए अभिन्न हृदय सखा और सुख दुःख के साथी हो जाते हैं। "भार्याश्रेष्ठ तमः सखा" यह स्मृति वचन भी इसी उपरोक्त कथन की पुष्टि करता है। अस्तु। रही परिक्रमा की संख्या—सो विवाह का उद्देश्य है, स्त्री पुरुषों का परस्पर मिलकर धर्म अर्थ और काम इस फलत्रय की प्राप्ति करना। जैसा कि "जायात्वर्धं शरीरस्य नृणां धर्मादि साधने"। इस वचन मे वर्णन किया है कि धर्म अर्थ और काम इनके सिद्ध करने में जाया पुरुष का आधा शरीर होती है। तथा पत्नी धर्मार्थ कामानां कारण प्रबलं नृणाम्।' अर्थात् धर्म अर्थ और काम के उपार्जन एवं उपभोग के लिए पत्नी प्रधान कारण है। इस प्रकार पता चला कि वैवाहिक समझौता और सख्य भाव धर्म अर्थ और काम इन तीन पदार्थों के प्राप्त्यर्थ होता है। इसलिए विवाह की लाजा होम युक्त मुख्य परिक्रमा भी तीन ही होती हैं। सब गृह्य सूत्रों में भी ऐसा ही लेख मिलता है।

उक्त रीति से तीन बार क्रिया पूरी हुए पश्चात् यज्ञ कुण्ड के पश्चिम भाग में पूर्वाभिमुख वर वधू खड़े रहें। संस्कार विधि

त्रिः परिणयज्जपति॥ आश्वलायन गृह्य सूत्र।

एवं द्विरपरं लाजादि॥ पारस्कर गृह्य सूत्र।

एवं त्रिः॥ गोभिल गृह्य सूत्र।

इतिहास में भी ऐसा ही आचरण मिलता है यथा—त्रिरग्निं ते परिक्रम्य ऊहुर्भार्या महौजसः। बाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ७३।३९। रामादिकों ने सीतादिकों के साथ अग्नि की तीन प्रदक्षिणा करके विवाह विधि को सम्पन्न किया।

पाणिग्रहण की क्रिया "गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तम"—यहाँ से आरम्भ होकर "भगाय स्वाहा" यहाँ पर समाप्त होती है। इस क्रिया में लाजा होम से पूर्व और पाणिग्रहण के मन्त्रों के पश्चात् वर वधू एक प्रदक्षिणा करते हैं। इस प्रकार एक पाणिग्रहण वाली और तीन लाजा होम युक्त मुख्य परिक्रमा जिन्हें लांवां भी कहते हैं, कुल मिल कर चार ही परिक्रमा बनती हैं। न्यूनाधिक नहीं। इन्हीं चार परिक्रमाओं को फेरों के नाम से कहा जाता है, अन्यों को नहीं।

अब रही यह बात कि परिक्रमा करते समय वर वधू में से कौन आगे रहे और कौन पीछे। सो जहां-जहां पर भी वर वधू अग्नि की परिक्रमा करेंगे, वहाँ वहाँ सर्वत्र वधू पीछे और वर आगे रहेगा। संस्कार विधि का विवाह संस्कार तथा अन्य सब गृह्य सूत्रों में वर्णित विवाह प्रकरण इसमें प्रमाण है। परिणेता सर्वत्र आगे रहता है। लेख बहुत लम्बा होता जा रहा है, अतः विस्तार भय से मूल प्रमाण नहीं लिख रहा हूं। संस्कार विधि तथा किसी भी गृह्य सूत्र में ऐसा लेख नहीं है कि तीन परिक्रमाओं में वधू और एक में वर आगे रहे।

प्रश्न (४) सप्त पदी में सात ही पैर क्यों हों? वर वधू के वस्त्र की गांठ क्यों दें? और पैसे, सरसों, हल्दी, चावल आदि गांठ में बांधें या नहीं।

समाधान—सप्तपदी का अर्थ ही सात कदम वाली क्रिया है। विवाह संस्कार में वर वधू ने सप्त पदी तक जो जो क्रियाएं की हैं, यह क्रिया उन सब का उपसंहार है। भिन्न-भिन्न अवसर पर अब तक वर वधू ने सब मिलाकर सात बार अग्नि की प्रदक्षिणा की है। तद्यथा (१) कन्यादान एवं वस्त्र परिवर्तन के पश्चात् एक (२) पाणिग्रहण के पश्चात् एक (३) लाजा होम के अवसर पर तीन (४) वेणी मुंचन के अवसर पर एकान्त में जाते समय अग्नि की प्रदक्षिणा करके जावेंगे एक यह (५) सूर्यावलोकन के समय यज्ञ मण्डप से बाहर जाने के लिए अग्नि की प्रदक्षिणा करके ही जाएंगे, एक यह। इस प्रकार सप्त पदी में उन सब क्रियाओं की मौलिकता पर एक बार फिर वधू को समझाता है, और कहता है कि जैसे इस संस्कार की प्रदक्षिणाओं में तू मेरी अनुव्रता अर्थात् पीछे २ रही है, इसी प्रकार भविष्य में धर्म, अर्थ, और काम के मूल आधारभूत "इष, ऊर्ज, रायस्पोष, मयः प्रजा, ऋतु अनुकूल व्यवहार, और सख्य के सम्पादन में मेरी अनुव्रता रहना।

रही बात ग्रन्थी देने की। सो यह तो लोक प्रसिद्ध है कि दो वस्तुओं को एक करने के लिए गांठ अर्थात् जोड़ ही दिया जाता है। इसी प्रकार वर वधू जो गोत्रादि के विचार से अब तक अलग अलग थे, उन्हें विवाह मण्डप में विद्वान जन इस गंठजोड़े की गाँठ के द्वारा एकत्र कर देते हैं।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

सुझाव और सम्मतियाँ

गुरुकुलों की पवित्रता

आधुनिक गुरुकुल संस्थाओं को इस बात की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए कि शिक्षा संस्थाओं के आहाते के अन्दर कोई भी गृहस्थी वास न करे। बहुधा देखा जा रहा है कि गुरुकुलों के अन्दर ही कर्मचारियों के परिवार द्रुतगति से निवास करते आ रहे हैं। यदि इसी प्रकार दिनों दिन गुरुकुलों में गृहस्थियों का निवास लगातार रहा तो गुरुकुल गुरुकुल न रहेंगे। वहाँ गृहस्थियों के नगर बन जायेंगे और वे सारे नियम भंग हो जायेंगे जो स्वा० दयानन्द ने प्रदर्शित किये थे। गृहस्थियों के निवास के अतिरिक्त कई गुरुकुल संस्थाएं गुरुकुल के अन्दर ही नाना प्रकार के केन्द्र स्थापित कर रहे हैं जो कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में बाधक हैं। यदि शिक्षा संस्थाओं में अन्य विषयों के केन्द्र खुलते जायेंगे तो गुरुकुल की ठोस शिक्षा मन्द पड़ जायेगी। यदि सामयिक प्रगतियों को लक्ष्य में रखकर कुछ कार्यक्रम केन्द्र स्थापित करना उचित भी जान पड़े तो उन्हें गुरुकुल के एक निश्चित क्षेत्र से बाहर ही (समीप ही) बनाना चाहिए।

यदि इस ओर ध्यान दिया जाय तो किसी को यह कहने का अवसर न मिलेगा कि यह गुरुकुल है अथवा गड़बड़? अतएव गुरुकुलों के वातावरण आदि के सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द का आदेश निर्देश स्पष्ट है। गुरुकुलों के अधिकारियों को सत्यार्थ प्रकाश के शब्दों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए और ब्रह्मचर्यमय वातावरण की सृष्टि करने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि इस वातावरण की स्थापना सम्भव नहीं तो गुरुकुल नाम का उपयोग प्रयोग बन्द किया जाना अधिक अच्छा होगा।

हमें आशा है कि स्वतन्त्र भारत में भी आर्थिक कठिनाइयों का सामना करते हुए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पूर्ण वैदिक, ऋषि दयानन्द के बताये मार्ग पर दिन दिन उन्नति करती जायेगी।

—अमर प्रभाकर
आर्य समाज, कनखल

गोहत्या का निरोध करें

सरकारी अधिकारी गोरक्षा कानून पर अमल कराने के लिए सरकार को सहयोग दें। उत्तर प्रदेश गोवध निवारण संशोधन विधेयक १९५८ पर ७ अक्तूबर को राज्यपाल महोदय ने स्वीकृति दे दी है। इस कानून और सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को दृष्टि में रखते हुए, किये गए संशोधन के अनुसार उत्तर प्रदेश में किसी भी आयु की अपंग और बीमार भी गाय, बछड़े, बछड़ी की तथा बीस वर्ष तक की आयु के और उपयोगी सांड और बैलों की हत्या करना अपराध माना जावेगा। यह प्रतिबन्ध भी है कि स्थायी अयोग्यता या अनुपयोगिता जान बूझ कर उत्पन्न न की गई हो। जिसके लिए दो वर्ष कैद और एक हजार रुपये तक जुर्माने की सजा हो सकेगी। रेलवे तथा हवाई जहाज के स्टेशनों पर बन्द डिब्बों के अतिरिक्त इन पशुओं का मांस बेचना, लाना, लेजाना भी अपराध होगा। और उसके लिए एक वर्ष की कैद और दो सौ रुपये जुर्माना हो सकेगा। इन अपराधों में पुलिस चालान कर सकेगी।

निश्चित स्थान के अतिरिक्त अन्य जगह कतल नहीं किया जा सकेगा। कतल की स्वीकृति देने का अधिकार केवल पशु डाक्टर को नहीं, साधिकार समिति के सदस्यों को होगा। कतल की स्वीकृति मिलने पर भी असन्तुष्ट कसाई, कोई गोभक्त या अन्य व्यक्ति इस स्वीकृति के विरुद्ध राज्य सरकार के पास अपील कर सकता है।

मैं उत्तर प्रदेश के सम्बन्धित अधिकारियों की सेवा में प्रार्थना करता हूं कि वह कानून का आदर करते हुए इस पर सख्ती से अमल करें करावें। जो सरकारी अधिकारी साम्प्रदायिकता या रिश्वत लेने के कारण गोहत्यारों को पकड़ने और सजा देने दिलाने के बारे में उपेक्षा करे उसके विरुद्ध तुरन्त कार्यवाही की जावे। उत्तर प्रदेश की जनता और सार्वजनिक संस्थाओं से भी नम्र निवेदन है कि वह इस कानून को सफल बनाने के लिए गोहत्यारों को पकड़वा कर सरकार को सहयोग दें। अखिल भारतीय कांग्रेस द्वारा प्रकाशित कांग्रेस जनों के लिए रचनात्मक कार्यक्रम पुस्तिका १९५३ की आज्ञा के अनुसार कांग्रेस जनों का विशेष कर्तव्य हो जाता है कि वह इस कानून को सफल बनाने पर विशेष ध्यान दें।

—हरदेव सहाय
मन्त्री गोहत्या निरोध समिति
३, सदर थाना रोड, दिल्ली ६

आ. स. और शारीरिकोन्नति

आर्य समाज को स्थापित हुए बड़ा लम्बा समय बीत चुका है। समाज ने इस लम्बे काल में बहुत अच्छे अच्छे कार्य किये हैं, जिनकी उपयोगिता को कोई अस्वीकार नहीं करता। स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज मन्दिर, केवल संध्या और यज्ञ करने, वेद और उपनिषद् पाठ पढ़ने, तथा आर्य सिद्धान्तों पर व्याख्यान झाड़ने, अथवा वाद विवाद करने, इत्यादि के लिए ही नहीं स्थापित किये थे। ये कार्य तो देश की पण्डित समाज अथवा मूर्तियों के मन्दिर, पहिले से ही करते आ रहे थे। दयानन्द ने राजस्थान का भ्रमण केवल इसलिए ही नहीं किया था कि लोग केवल वेद उपनिषदों का पठन पाठन मात्र कर अपने कर्तव्यों की इति श्री समझलें। उन्होंने तो आर्य जाति की निर्बलता को परखा और उन्हें आर्यों में वीरता की लहर फूंकने के उद्देश्य से राजा महाराजाओं के द्वार खटखटाने पड़े, यद्यपि अपने इस उद्देश्य में वे सफल न हुए तथा वहीं उन्हें अपना बहुमूल्य जीवन भी होम देना पड़ा। हम आर्य यह बात न भूल जांय, कि हमारे महान् गुरू का बलिदान वेदों को रक्षा करने के साथ साथ आर्य जाति की रक्षा करने में भी हुआ। बात भी ठीक है, यदि आर्यों का अस्तित्व ही नहीं रहेगा तो वेदों की रक्षा करेगा भी कौन? हमें आज यही विचारना है कि हमने अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए क्या किया है? आर्य समाजों में बड़े बड़े व्याख्यान सिद्धान्तों के ऊपर झाड़े जाते हैं, पर युवकों को यह नहीं बताया जाता कि तुम पुष्टिकारक भोजन करो तैरना सीखो, मल्ल युद्ध का अभ्यास करो, घूंसेबाजी (बाक्सिंग) सीखो, घुड़सवारी करो और आग्नेयास्त्र (बंदूक इत्यादि) चलाना सीखो। आर्य कुमार सभाएं स्थापित हैं, परन्तु कितने आर्य कुमार बन्दूक चलाने अथवा लक्ष्य पर गोली मारने के अभ्यासी हैं? जो निर्धन हैं उनके लिए तो लाचारी है, परन्तु दुःख उन हवेलियों और मोटर रखने वालों पर होता है जिनके पास सर्व साधन विद्यमान हैं। उनके धन की रक्षा सारे संसार भर का पुलिस और सेना भी नहीं कर सकती जो अपने धन और जन की रक्षा स्वतः नहीं कर सकते। छोटे छोटे रक्षा कार्य के लिए पुलिस का द्वार खटखटाना आर्य कहलाने वाली वीर जाति के युवकों को शोभा नहीं देता। फिर पुलिस भी तो उन्हीं की रक्षा करती है जो अपनी रक्षा आप करते हैं।

हम राग तो अलापते हैं अहिंसा और सत्याग्रह का और उदाहरण देते हैं राणा प्रताप, शिवाजी और गुरू गोविन्द सिंह का कैसा अनमेल है! कोई समझे हमारे उपर्युक्त वीर अहिंसक और सत्याग्रही ही तो थे। जिनकी भुजाओं में बल है, अरे उनके सत्याग्रह क्यों? क्या इस सत्याग्रह के द्वारा ही हम पाकिस्तानियों को कश्मीर में प्रवेश करने से रोक सकते हैं? ये सूखे सूखे शरीर वाले हमारे सिनेमा प्रेमी युवक बन्दूक का लक्ष्य कभी न चूकने वाले सरहदी पठानों के आगे कितनी देर ठहर सकेंगे? किसी एक भारतीय युवक का (फोटो) किसी यूरोप निवासी युवक के प्रतिबिम्ब के पास रखकर तनिक दोनों में अन्तर देखिये। भारतीय की निर्बल प्रतिभा शून्य आकृति निरख के छाती में घूंसा सा लगता है। अहिंसा का सच्चा अर्थ आततायियों पर शस्त्र प्रहार कर के आर्य जाति और वेदों की रक्षा करना है, न कि आततायियों के सम्मुख घुटने टेक देना? विदुर कहते हैं—

राजानं चाविरोद्धारं, ब्राह्मणंचा प्रवासिनम्। तावुभौग्रसते भूमि, सर्पो बिलशयानिव॥

अर्थात् जो राजा (शासक, राष्ट्र नायक इत्यादि) अन्यायी अत्याचारी से लोहा लेने में पीछे रहता है और जो ब्राह्मण भोगवादी बन कर देश देशान्तरों में धर्म प्रचारार्थ प्रवास नहीं करता, उन दोनों को यह भूमि ऐसे निगल जाती है जैसे बिलों में पड़े हुए चूहों आदि को सर्प निगल जाता है।

गुरुकुलों में हमारा अपना बनाया कार्यक्रम होता है, वहाँ हमें बालकों को स्नातक बनाने के पहिले बन्दूक चलाना, घूंसेबाजी, लड़ना, अश्व सवारी करना और तैरना आदि साहसिक कार्य सिखाने पर विशेष बल देना चाहिए। हमारे युवक बलवान बनें, साहसी बनें हमारी शक्ति इस विचारधारा के प्रचार में लगनी चाहिए तभी शिक्षा क्षेत्र में हमारा प्रयत्न कुछ सफल हो सकेगा। आत्मिक और मानसिक उन्नति के साथ साथ शारीरिक उन्नति पर भी आर्य समाज को ध्यान देना चाहिए।

—काशीनाथ शर्मा गौड़, एन० आर०
टूण्डला, (आगरा)

क्या कहते हैं नेहरू महान्?—(२)

[आचार्य नरदेव शास्त्री, वेदतीर्थ, कुलपति महाविद्यालय, ज्वालापुर, हरिद्वार]

आज सभ्य समाज के आकर्षण के लिए श्रमिकों और कृषकों के प्रलोभन के लिए समाजवादी समाज रचना का नारा वायु मण्डल में गूंज रहा है। पर वह समाजवाद क्या और कैसा होगा इसकी व्याख्या आज तक अस्पष्ट है। भारतीय वर्ण व्यवस्था भारतीय समाजवाद की व्याख्या है और उसकी महत्ता पर सदैव विचार किया जाना चाहिए। साम्यवाद की हिंसा का निकाल देने के बाद त्याग की जिस भावना को विकसित किया जाना चाहिए वर्ण व्यवस्था उसी त्याग की भित्ति पर खड़ी है और उसी के विकास में सहायक है। आवश्यकता है उसे व्यापक भारतीय दृष्टिकोण से देखने की। विद्वान् लेखक ने इस लेख में इसी की समीक्षा की है। —सम्पादक

(गताङ्क से आगे)

यही न ? कि 'समाजवादी दृष्टि कोण से ही देश की प्रगति होगी, पूंजीवाद की पद्धति से नहीं होगी" मुख्य बात यही कही है। रूस दण्डा शाही से उस प्रकार का समाजवाद ला रहा है यह उनको पसन्द नहीं। श्री नेहरू भारतवर्ष में उन साधनों का उपयोग न करेंगे जिसका रूस के साम्यवादियों ने उपयोग किया है।

वे तो विचार विनिमय द्वारा शान्तिपूर्ण रीति अथवा नीति से उस प्रकार का समाजवाद लाना चाहते हैं पर वे अपने विचार को स्थिर नहीं कर सके हैं कि भारत के लिए किस प्रकार का समाजवाद उपयुक्त होगा—वे गोल शब्दों में इतना ही कहते हैं कि इस समाज-वाद के लाने में किसी पाश्चात्य देश का अनुकरण नहीं करेंगे। यदि यह बात है तो फिर वे भारत में भारतीय ढंग का समाजवाद लाना चाहते हैं। वे जिस प्रकार के समाजवाद का स्वप्न देख रहे हैं इसका अनुमान लगाना कठिन कार्य है पर जैसे कि उनके विचार हैं यदि वे उन विचारों को परिणत करने में स्वतन्त्र हों तो वे अवश्य ही कोई मिश्रित समाजवाद लाना चाहते हैं जो कि न तो भारतीय ही हो न पाश्चात्य ही हो।

क्या भारत में समाजवाद नहीं था ?

भारत में अनन्त काल से एक समाज व्यवस्था चला आ रहा है—चाहे सम्प्रति उसका कुछ अवशेष हो क्यों न दिखलाया पड़ता हो—पर वह एक प्रकार की अनूठा व्यवस्था थी यह मानना ही पड़ेगा नहीं तो वह अनन्त काल से अब तक अव्याहत रूप में कैसे प्रचलित रही ?

वह है वेदों में प्रतिपादित वर्ण व्यवस्था 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्' वाली व्यवस्था। श्री नेहरू जी इस समाज व्यवस्था को कभी नहीं मानेंगे। क्योंकि वे इस व्यवस्था में जातिपांति की गन्ध देखते हैं और जाति पांति से उन्हें है सख्त घृणा।

समाज व्यवस्था में निम्नलिखित सिद्धान्तों का ध्यान अवश्यमेव रखना पड़ेगा—

(१) वह "स्वभाव" पर आधारित हो।

(२) वह जहां तक बने अधिक से अधिक काल तक चिरस्थायी हो सके। प्रतिदिन बदलने की वस्तु न हो।

(३) उसमें ऊपर से नीचे आने का और नीचे से ऊपर जाने का मार्ग खुला हो। उसमें उन्नति का मार्ग बिना किसी भेदभाव से सबके लिए खुला हो।

(४) वह धर्मानुसारिणी हो।

(५) उसमें आध्यात्मभाव अथवा अध्यात्म सम्बन्ध जुड़ा हुआ हो।

कोरे भौतिकवाद की आधारशिला पर उठायी हुई समाज व्यवस्था आपातरम्य अर्थात् ऊपर ऊपर से भले ही सुहावनी दिखलायी पड़े पर परिणाम में सुख सवादिनी न हो सकेगी। वैदिक समाजवाद की वर्ण व्यवस्था में उपर्युक्त सभी सिद्धान्त ओतप्रोत हैं। इस लिए भगवान् कृष्ण ने स्पष्ट कहा है—

चातुर्वर्ण्यं मयासृष्टं
गुण कर्म विभागशः—

गीता में "स्वभाव" पर बड़ा बल दिया है। जब हमारा राज्य था और जो प्रचलित राज्य प्रणाली जो कि हमारी वर्ण व्यवस्था की पोषक पालक थी तब समाज व्यवस्था जो प्रचलित थी, उसका रूप निम्न प्रकार का था—

सिंहावलोकन

ब्राह्मण—शिक्षा दीक्षा के लिए।

क्षत्रिय—राज्य सञ्चालन अथवा रक्षण के लिए, धर्मानुसार प्रजापालन के लिए, प्रजा को धर्म मर्यादा में चलाने के लिए।

वैश्य—कृषि गोरक्षा वाणिज्य आदि के लिए।

शूद्र—सेवा के लिए।

आज भी समस्त संसार में मनुष्य समुदाय के चार मुख्य विभाग दिख लाई पड़ रहे हैं, चाहे वे विभाग ब्राह्मणादि शब्द से भले ही व्यवहृत न होते हों—

एक एक समुदाय एक एक विशेष मुख्य कार्य को लेकर उसका वंश परम्परा से चलता जाय तो उन उन कर्मों के जो आनुवंशिक संस्कार पड़ेंगे वे ही स्वभाव रूप में प्रकट होंगे। यह अपरिहार्य है। मनुष्य प्रकृति का पुतला है, प्रकृति तीन गुणों की पुतली है इसीलिए मनुष्य भी तीन गुणों का पुतला है—सत्व, रज, तम—इन तीन गुणों का पुतला है, इसीलिए मनुष्य समुदाय भी तीन गुणों का पुतला है—कोई व्यक्ति इन तीन गुणों के पंजे से मुक्त नहीं है—इसलिए जो व्यक्ति अथवा समुदाय जिन गुणों वाले कर्म का अभ्यास रखेगा, वह व्यक्ति अथवा समुदाय उस गुणवाला होगा, कहा जायगा—यही हमारी समाज व्यवस्था अथवा वर्ण व्यवस्था का बीज है। इस वर्ण व्यवस्था में स्वभाव का प्राधान्य रहता है—

"स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते"—गीता

इसमें कोरा भौतिकवाद काम नहीं कर सकता, अध्यात्म भावशून्य यह व्यवस्था चिरकाल तक टिक नहीं सकती—

इसलिए वेदप्रतिपादित वर्ण व्यवस्था पर आधारित अथवा स्वभाव की आधार शिला पर स्थापित समाजवाद ही भारत की संस्कृति के अनुरूप रहा है और रहेगा।

हमारे वर्तमान संविधान में हमने पाश्चात्य प्रजातन्त्र प्रणाली को स्वीकृत किया है। यह प्रजातन्त्र शासन प्रणाली धर्म निरपेक्ष है। ऐसी अवस्था में यह शासन ऐसा समाजवाद स्थापित नहीं कर सकता जिसका किसी धर्म विशेष अथवा संस्कृति विशेष से सम्बन्ध हो।

इस प्रजातन्त्र शासन में हिन्दू हैं, आर्य हैं, सिक्ख हैं, जैन हैं, बौद्ध हैं, पारसी हैं, ईसाई हैं, मुसलमान हैं। प्रत्येक का अपना अपना धर्म और अपनी अपनी संस्कृति है। श्री नेहरू जी ऐसा कोई समाजवाद नहीं ला सकेंगे जो इन सब पर समान रूप से लागू हो। तो फिर यह प्रश्न है कि आवादि कांग्रेस में उद्घोषित वह कौन सा समाजवाद है जिसको ये लाना चाहते हैं—एक ओर हमने अपने संविधान में उद्घोषित किया है कि प्रत्येक को अपने धर्म कर्म विश्वासानुसार अपने धर्म के पालने की स्वतन्त्रता रहेगी, दूसरी ये ऐसा समाजवाद लाना चाहते हैं जो धर्म शून्य होगा तो भारतीय जनता ऐसे नये समाजवाद को क्या मानेगी ? सबको समान बनाने का नया समाजवाद एक थोथा सा प्रयास है जान पड़ता है—कर्म फिलासफी के विरुद्ध है।

यदि श्री नेहरू महान् की चल सकती और उनमें शक्ति होती तो अब तक वे भारत की अनेक बातों में यूरोप अथवा अमरीका की नकल डालते। और भारतीय धर्म और संस्कृति को बैलगाड़ी की उपमा देने वाले नेहरू जी भारत में मोटरगाड़ी की सभ्यता देखकर बड़े प्रसन्न होंगे—वे पाश्चात्यों के विज्ञान बल पर अत्यन्त मुग्ध हैं पर यह नहीं सोचा कि धर्म शून्य वह विज्ञान कैसे संसार नाशक अथवा संसार संहारक बन रहा है। इस संहारक अथवा महती अनिष्ट को रोकने के लिए श्री नेहरू भारतीय पंचशील सिद्धान्त की दुहाई दे रहे हैं। आश्चर्य और परम आश्चर्य है कि श्री नेहरू जी को प्राचीन हिन्दुओं अथवा आर्यों का पंचशील तो अच्छा लगता है पर उस पंचशील का जिस धर्म से सम्बन्ध है वह आर्य धर्म अच्छा नहीं लगता अथवा नहीं भाता—हम इस विषय को नहीं समझ सकते हैं—विलक्षण पाठक स्वयं सोचें, विचारें, पर अन्त में प्रश्न उठता है कि वैदिक स्वरूप के बिना वैदिक समाजवाद के भी प्रचलित होने की कौन सी आशा है ?

आर्यसमाज के पुस्तकालय सुव्यवस्थित बनें

आर्य पुस्तकालयों का संचालन और आर्य पुस्तक वर्गीकरण पद्धति

[श्री विश्वनाथ शास्त्री, एम०ए०, डी० एल० एस० सी० सहायक पुस्तकाध्यक्ष, सागर विश्वविद्यालय]

आर्यसमाज ही एक ऐसी सार्वजनिक सांस्कृतिक संस्था है जिसमें उसकी प्रत्येक इकाई को अपना पुस्तकालय अनिवार्य रूप से रखना पड़ता है और इस कार्य के महत्व को दृष्टि में रखते हुए ही आर्यसमाज के पदाधिकारियों में पुस्तकाध्यक्ष का सम्मानित पद है। ऋषि चाहते थे कि समाज का प्रत्येक सदस्य स्वाध्यायशील हो और ज्ञान की पिपासा को शान्त करे। आर्य पुस्तकालयों की आदर्श व्यवस्था के लिए इस लेख में पुस्तकालय विज्ञान के अधिकारी व्यक्ति के रूप में विद्वान् लेखक महोदय ने जो सुझाव और रूपरेखा प्रस्तुत की है उस पर विचार कर आर्य पुस्तकालयों को तदनुरूप बनाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। —सम्पादक

आर्य समाज के संगठन में पुस्तकालय का होना अनिवार्य है। आर्य समाज के उपनियमों के अनुसार अधिकारियों में एक पुस्तकाध्यक्ष भी होता है। आर्य समाजों में प्रायः सर्वत्र छोटे मोटे पुस्तकालय भी होते हैं। परन्तु अभी तक आर्य पुस्तकालयों के सुचारु रूप से संचालन के लिए हमारा ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट नहीं हुआ है। इसी उद्देश्य को समक्ष रखकर कुछ एक पंक्तियां पाठकों के समक्ष रखी जा रही हैं।

पुस्तकालय पाठक, पुस्तकें और पुस्तकाध्यक्ष इन तीन वस्तुओं से मिल कर बनता है। आर्य पुस्तकालयों में पाठक तो प्रायः आर्य समाज के सभासद होंगे। पुस्तकाध्यक्ष आर्य समाज के सदस्यों द्वारा निर्वाचित अधिकारी होगा। पुस्तकें आर्य समाज के कोष में से खरीदी जाएंगी और कुछ दान में प्राप्त होंगी। ये पुस्तकें अधिकतः धार्मिक व आर्य संस्कृति के सम्बन्ध में होंगी।

आर्य पुस्तकालयों के संचालन के लिए हमें निम्न लिखित कार्यक्रम बनाना होगा।

१—पुस्तक विक्रेताओं से खरीद कर अथवा दानियों से प्राप्त करके पुस्तकें संग्रह करना।

२—पुस्तकों को पाठकों के व्यवहार योग्य बनाना।

३—पुस्तकों को पाठकों को पढ़ने के लिए जारी करना।

पुस्तकें खरीदते समय पुस्तकाध्यक्ष खरीदने योग्य नई पुस्तकों की सूची को पुस्तकालय में पहले से संग्रहीत पुस्तकों की सूची के साथ मिलाकर देखले कि इस नई सूची की कोई पुस्तक पहले ही से तो पुस्तकालय में नहीं है। दान में प्राप्त पुस्तकों को बड़ी सावधानी के साथ स्वीकार करना चाहिए। ऐसी पुस्तकें प्रायः जीर्ण शीर्ण और पुरानी होती हैं। केवल उपयोगी पुस्तकें ही स्वीकार करनी चाहिए। पुस्तकें संग्रह करने के पश्चात् उनको प्राप्ति पंजिका में दर्ज करना चाहिए। इस रजिस्टर में निम्नलिखित खाने होने चाहिए। तिथि, प्राप्ति संख्या, ग्रन्थकार, शीर्षक, भाग, प्रकाशन स्थान व प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष, पृष्ठ संख्या, मूल्य, पुस्तक विक्रेता व दाता का नाम, विवरण। यह रजिस्टर मोटे, टिकाऊ कागज व लैजर पेपर का बनवाना चाहिए इसके पूरे दो पृष्ठों पर पच्चीस रेखाएं होनी चाहिए।

कई पुस्तकें दो तीन अथवा इससे भी अधिक भागों में प्रकाशित होती है। और कई बार पुस्तकालय एक ही पुस्तक की कई प्रतियां मंगवा लेते हैं। इन दो प्रकार की पुस्तकों को एक ही प्राप्ति संख्या अथवा नम्बर दे देते हैं। परन्तु यह ठीक नहीं है। उदाहरण के लिए आपके पुस्तकालय में १०० पुस्तकें पहले दर्ज हो चुकी हैं। अब आपने देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय द्वारा रचित महर्षि दयानन्द जी का जीवन चरित्र दो भागों में मंगवाया। पहले आप प्रथम भाग को दर्ज करेंगे और उसको १०१ प्राप्ति संख्या देंगे और फिर द्वितीय भाग को अलग दर्ज करेंगे और उसको १०२ प्राप्ति संख्या देंगे। रजिस्टर के भाग के खाने में १०१ नम्बर के आगे भाग १ और १०२ नम्बर के आगे भाग २ लिख देंगे। दूसरा उदाहरण लीजिए। आप ने सत्यार्थ प्रकाश की दो प्रतियां खरीदीं। पहले आप एक प्रति को दर्ज करेंगे और उसको १०३ नम्बर देंगे। फिर दूसरी प्रति को अलग दर्ज करेंगे और उसको १०४ नम्बर देंगे। एक और बात स्मरण रखने योग्य है कि यदि कोई पुस्तक गुम हो जाय या जीर्ण शीर्ण हो जाय और पुस्तकालय में संग्रह योग्य न रहे तो विवरण के खाने में गुम गई, जीर्ण हो गई, खारिज कर दी गई आदि लिख देना चाहिए। कई पुस्तकाध्यक्ष गुम हुई पुस्तक की प्राप्ति संख्या नई पुस्तक को दे देते हैं, यह ठीक नहीं। इसी भांति कई लोग स्टाक निरीक्षण के समय यदि कुछ पुस्तकें गुम हो गईं तो सब पुस्तकों को फिर से नया नम्बर दे देते हैं यह भी ठीक नहीं इस भांति एक पुस्तक को कई नम्बर मिल जाते हैं और जब गुम हुई पुस्तकें मिल जाती हैं तो बड़ी गड़बड़ी हो जाती है।

पुस्तकों को दर्ज कर लेने के पश्चात् पुस्तक के टाइटिल की पीठ पर ऊपर से दो इंच स्थान छोड़कर मध्य में स्याही से प्राप्ति संख्या लिखे। जिन पुस्तकालयों में वर्ग संख्या देने का भी नियम हो वे प्राप्ति संख्या के ऊपर पैंसिल से वर्ग संख्या भी देदें। इसके बाद पुस्तकाध्यक्ष प्रत्येक पुस्तक में दो स्थानों पर पुस्तकालय की मोहर लगाने की व्यवस्था करे। टाइटिल की पीठ पर प्राप्ति संख्या के नीचे पुस्तकालय की मोहर लगावे। दूसरा नियम यह है कि प्रत्येक पुस्तकालय अपना एक गुप्त पृष्ठ नियत कर लेता है। यह पृष्ठ संख्या सम नहीं विषम होनी चाहिए। यह संख्या ५१, ७१, १०१ आदि हो ५०, ८०, १०० न हो। उदाहरण के लिए आपके पुस्तकालय का गुप्त पृष्ठ ५१ है। आप अपने पुस्तकालय की प्रत्येक पुस्तक के ५१ वें पृष्ठ पर नीचे की तरफ भी मोहर लगा देंगे और मोहर के बीच में पुस्तक की प्राप्ति संख्या भी लिख देंगे। यदि किसी पुस्तक के ५१ से कम पृष्ठ है तो पहला अंक ५ ही लिया जायेगा और पुस्तक के पांचवे पृष्ठ पर मोहर लगा दी जायेगी। सावधान पुस्तकाध्यक्ष बहुमूल्य सचित्र पुस्तकों में चित्रों की पीठ पर भी मोहर लगा देते हैं। इतना कर लेने के पश्चात् पुस्तकाध्यक्ष जिन पुस्तकों पर जिल्द न हो उन पर जिल्द बंधवा लें।

पुस्तकाध्यक्ष अब पुस्तकों पर लेबल लगाने की व्यवस्था करें। कागज का बना हुआ लगभग एक इंच साइज का गोल अथवा चौकोना लेबल पुस्तक की पीठ पर नीचे से १॥ इंच स्थान छोड़ कर लगाया जाता है। इस पर प्राप्ति संख्या लिखी जाती है। यदि वर्ग संख्या देने का नियम हो तो वह इससे ऊपर लिखी जाती है। यदि पुस्तकालय को अधिक सुव्यवस्थित बनाना हो तो पुस्तक की जिल्द के बाईं ओर के आवरण के अन्दर बाईं ओर ऊपर की तरफ पुस्तक प्लेट लगाई जाती है। यह छपी होती है। इसके ऊपर पुस्तकालय का पूरा नाम होता है और नीचे वर्ग संख्या और प्राप्ति संख्या के खाने बने रहते हैं। यह चिपकाकर इस पर दोनों संख्याओं का उल्लेख कर दिया जाता है।

अब पुस्तकाध्यक्ष पुस्तकों को जारी करने की व्यवस्था करे। पुस्तकें जारी करने के लिए एक वितरण पंजिका चाहिए। इस पर इस प्रकार खाने बनाले—तिथि, प्राप्ति संख्या, ग्रन्थकार शीर्षक, सदस्य का नाम सदस्य के हस्ताक्षर, लौटाने की तिथि, पुस्तकाध्यक्ष के हस्ताक्षर। छोटे पुस्तकालयों के संचालन के लिए इतना कार्यक्रम पर्याप्त है।

अब हम सुव्यवस्थित पुस्तकालयों के लिए एक विशेष आयोजन का उल्लेख करना चाहते हैं। समस्या यह है कि पुस्तकों को आलमारियों में किस क्रम से रखा जाय। पुस्तकों को रजिस्टर में दर्ज करते समय उनको प्राप्ति संख्या दी जाती है और पीठ पर कागज के लेबल पर यह संख्या लिखी भी जाती है। प्रायः इन्हीं संख्याओं के क्रम से पुस्तकों को आलमारियों में रखा जाता है। परन्तु बड़े पुस्तकालयों में यह क्रम पाठकों के लिए उपयोगी न होगा। प्रायः पाठक विषय की दृष्टि से ही पुस्तकें पढ़ना चाहेंगे। यदि एक पाठक वैदिक साहित्य पढ़ना चाहता है तो उसके सामने पुस्तकालय में संग्रहीत सम्पूर्ण वैदिक साहित्य आ जाना चाहिए। इसी प्रकार यदि कोई पाठक विज्ञान का व्यसनी है तो उसके सामने विज्ञान की सब पुस्तकें आ जानी चाहिए। इसी उद्देश्य को सामने रखकर पुस्तकालयों में वर्गीकरण की प्रथा है और पुस्तकों को विषय की दृष्टि से ही आलमारियों में रखा जाता है।

पुस्तकों का वर्गीकरण भी एक महत्वशाली कला है। इस समय संसार में मेल्विल ड्यूई की दशमलव वर्गीकरण पद्धति सर्वाधिक है। अंग्रेजी पुस्तकालयों के लिए यह पद्धति उपयोगी है। इसमें एक हजार मुख्य वर्ग हैं। पुनः इन हजार भागों के साथ दशमलव चिह्न लगाकर कई हजार सूक्ष्म भेद कर दिए गए हैं। इसी पद्धति के आधार पर श्री सतीशचन्द्र गुह ने संस्कृत पुस्तकों के वर्गीकरण

(शेष पृष्ठ १० पर)

राष्ट्र का ज्वलन्त प्रश्न

गोरक्षा के लिए प्रयत्न कीजिए

[डा० कुन्दनलाल जी अग्निहोत्री एम० ए०]

सब ही विचारशील सज्जन इस परिणाम पर पहुंच जाते हैं कि इस समय देश की भूखमरी, बीमारी, भ्रष्टाचार, वैमनस्य और मूर्खता को दूर करने का एकमात्र उपाय यह है कि देश में शुद्ध गोदुग्ध प्रत्येक भारत वासी को भरपेट मिले। पर देश की अवस्था यह है कि सन् १९४७ ई० में जितने दूध का उत्पादन अंग्रेज ने छोड़ा था आज उससे भी आधा रह गया है, और इतनी चीख पुकार मचाने और कुछ प्रान्तों में गोवध निषेध कानून बनने पर भी गोवध बराबर बढ़ ही रहा है। कारण यह है कि दुर्भाग्य से हमारे शासक इस विषय को राष्ट्रीय नहीं साम्प्रदायिक दृष्टि से देखते हैं, राजहठ प्रसिद्ध ही है फिर 'गोरक्षा कैसे होवे ?' और 'गोदुग्ध कैसे बढ़े ?' यह बड़ी जटिल समस्याएं हैं जिनसे हर राष्ट्रवादी गो भक्त दुखी है। पर एक कवि का वचन है कि कोई कठिनाई ऐसी नहीं है जिसका कोई न कोई निराकरण न हो। वीर पुरुष वह है जो किसी भी कठिनाई में हिम्मत नहीं हारता। ऐसे वीर पुरुष हमारे आचार्य ऋषि दयानन्द जी महाराज थे जिन्होंने भारत में गोवध जारी करने वाले अंग्रेज के सामने भी हिम्मत नहीं हारी और 'गोकरुणानिधि' पुस्तक में ऐसी योजना प्रस्तुत की जिसके अनुसार यदि आज भी कार्य किया जावे तो देश गो वंश से भरपूर होकर जनता को धन धान्य से पूर्ण कर सकता है। इस योजना में गोवंश सुधार प्रथम दिन से ही होता है और इतना प्रभावशाली होता है कि दो सेर दूध देने वाली गऊ कई ब्यात पश्चात् अठारह सेर दूध आज रुद्रपुर जि० नैनीताल में दे रही है। वाह रे ऋषि दयानन्द का मस्तिष्क !

अब यदि हमें देश को इस गो हत्या के महान् पाप और सर्वनाश से बचाना है तो उसके लिए तुरन्त करने का—

रचनात्मक कार्य

यह है कि हर स्थान पर सब काम छोड़कर एक 'गोकृष्यादि रक्षिणी सभा' स्थापित की जावे जिसका पूरा विधान महर्षि प्रणीत 'गोकरुणानिधिः' पुस्तिका में दिया हुआ है। इस सभा में राष्ट्र हित रखने वाले हर गो भक्त को सम्मिलित किया जाए। आर्य समाजी, सनातन धर्मी, जैनी, सिक्ख आदि का कोई प्रश्न नहीं। गऊ भक्त और राष्ट्र हितैषी सदाचारी होना चाहिए।

सभा स्थापित होने पर यह देखा जावे कि वहाँ कोई गऊशाला पूर्व से है या नहीं। यदि है तो उसके प्रबन्धकों से मिलकर उनमें ऋषि प्रदर्शित प्रणाली से गोवंश सुधार तथा अधिक से अधिक गोदुग्ध का उत्पादन कराया जाय। बूढ़ी गऊ माताओं को गो सदन में सुखपूर्वक रखने का प्रबन्ध किया जाय तथा युवा से दूध और वंश को बढ़ाया जाय।

दूध बढ़ जाने पर गौशाला में एक साधु आश्रम खोला जावे जिसमें विद्वान, कर्मशील, साधु, सन्त योगी, महात्मा, वानप्रस्थी, सन्यासी व अवकाश प्राप्त धर्म प्रेमी गृहस्थ रखे जावें जो सदाचार और गऊ रक्षा का विशेष प्रचार करें तथा हर स्थान पर ऐसी ही गऊशाला व आश्रम स्थापित करावें। साथ ही नगर के युवकों व विद्यार्थियों के सहयोग से एक 'गोरक्षक दल' की योजना प्रसारित की जावे जो विशेष रूप से संसार भर में गऊ पर से अन्याय मिटाने का प्रयत्न करे। इन सबको गऊशाला अपने दूध से सींचे ताकि वह अपने मिशन में सफल हो।

इस समय देश में तीन हजार गऊशालाएं एवं पिंजरापोल (गो सदन) हैं। इनमें छः लाख से अधिक गऊएं हैं और इन पर लगभग सात करोड़ रुपए वार्षिक व्यय होता है। पर इनमें से बहुत थोड़ी ही उन्नत अवस्था में हैं। शेष में प्रबन्ध की कमी के कारण दूध का उत्पादन नाम मात्र है। जो सूची हमारे पास है उसके अनुसार अधिक से अधिक तीन पाव तथा कम से कम सवा छटांक दूध नित्य एक गाय का होता है। पर ऐसी भी गोशालाएं हैं जहाँ एक माशा भी दूध नहीं होता। इन सबमें सुधार की आवश्यकता है। इस समय जनता में प्रत्येक व्यक्ति को गऊ की उपयोगिता बताने की आवश्यकता है अतः जिस गऊशाला में साधु आश्रम और दल की स्थापना न हो सके वह राष्ट्र हित नहीं कर सकती।

जहाँ सुधार न हो सके अथवा पूर्व से गऊशाला न हो वहाँ नवीन स्थापित करनी चाहिए। अपने सब कार्य की सूचना 'सार्वदेशिक गो-कृष्यादि रक्षिणी सभा, आर्य समाज चौक, लखनऊ' को देनी चाहिए ताकि हम सब गोशालाओं और गो भक्तों को संगठित कर सकें। यह कार्य अब तुरन्त ही प्रारम्भ करना होगा अन्यथा गोवंश के नाश से देश का नाश हो जायगा। पूज्य महात्मा गाँधी जी ने भी लिखा है—

'भारत की सुख समृद्धि गऊ और उसकी सन्तान की समृद्धि के साथ जुड़ी हुई है।"

उपासना और नवरात्र

[श्री रमेशचन्द्र जी हिन्दी बाजार गोरखपुर]

भारतीय ऋतुमूलक विज्ञानानुसार ऋतुएं छः भागों में विभक्त हैं परन्तु सभी ऋतुएं प्रधानतः उष्ण और शरद ऋतुओं के अन्तर्गत हो जाती हैं। उष्णता का आरम्भ चैत्र में तथा शीत का आश्विन मास से होने लगता है। अतः ऋतुमूलक वसन्त पक्ष चैत्र मास से तथा शरद पक्ष आश्विन मास से प्रारम्भ होता है।

प्रत्येक आस्तिक अपनी प्रत्येक क्रिया तथा कार्य के आदि में मानसिक चेतना, शारीरिक स्फूर्ति एवं व्यावहारिक कुशलता प्राप्त्यर्थ परम तत्व की उपासना अवश्य करता है इस प्रकार साल में दो बार उपर्युक्त नूतन वर्षारम्भ के आदि में नव नव दिवसों तक उपासना अत्यन्त श्रद्धा तथा अतिशय उत्साह के साथ अनिवार्य रूप से की जाती है।

उपासना काल उपर्युक्त मासों की शुक्ल पक्षीय प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त काल नवरात्र कहलाता है। चैत्र मासीय उपासना काल को 'वासन्त नवरात्र' तथा आश्विन मासीय उपासना काल को "शारदीय नवरात्र" कहा जाता है।

"नवरात्र" का नूतनार्थक शब्द 'नव' ऋतुमूलक शारदीय तथा वासन्त सम्वत्सरों का प्रारम्भ इंगित करता है तथा 'नव' के दूसरे संख्या वाचक अर्थ से प्रभुशक्ति की नव दिवस उपासना करने का भाव भी सुसंगत प्रतीत होता है।

आज देश के बहुत बड़े भाग में नवरात्र के अवसर पर देवी की पूजा प्रचलित है जो उपर्युक्त भावना का विकृत रूप ही है। कहा जाता है कि देवी की उपासना करने से परम सिद्धियां प्राप्त होती हैं। मारण, वशीकरण, मोहन, स्तम्भन और उच्चाटन सिद्धियां शीघ्र और सुगमता से प्राप्त हो जाती हैं।

इन सिद्धियों के स्वरूप के विषय में हमारा मतभेद स्पष्ट है। वास्तव में मानव जीवन के विकास के लिये साधना सिद्धि आवश्यक है पर उसका रूप तमोगुणी न होकर सात्विकता की है। काम, क्रोध, लोभ और मोह, जैसी दूषित गुणों को दूर वृद्धि करनेवाला होना चाहिए एवं आत्मकल्याण विरोधी निकृष्ट प्रवृत्तियों का निराकरण ही 'मारण' सिद्धि है। मन बड़ा ही चंचल है अतएव उसे वश में करना ही 'वशीकरण' सिद्धि का अभिप्राय है। अपनी श्रद्धा और भक्ति द्वारा प्रभु को आकर्षित करना ही 'मोहन' सिद्धि का भाव है। संयम नियम द्वारा इन्द्रियों के विषय वासनाओं के प्रति उपरति एवं ब्रह्मचर्य ही 'स्तम्भन' सिद्धि का यथार्थ रूप है और महाशक्ति के साक्षात्कार एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए बेचैनी तथा छटपटाहट ही 'उच्चाटन' सिद्धि का भाव है।

इस प्रकार हम अनुभव करते हैं कि नवरात्र की महत्ता प्राचीन समय में भी प्रचलित होगी और मानव विकास के लिए सामयिक प्रेरणा का कारण बनती रही होगी पर अन्धकार युग की तान्त्रिक एवं वाम मार्गी कुप्रथाओं ने इस काल की पवित्रता और महत्ता को नष्टकर वर्तमान रूप धारण कर लिया होगा। आज पूजा उपासना में अन्धश्रद्धा और अन्धानुकरण की जो प्रवृत्ति व्याप्त है उसे देखकर कौन ऐसा प्रभु भक्त होगा जो इस नाटकीय स्वरूप को देखकर दुखी न होता होगा। नवरात्र के शुद्ध स्वरूप को लोग हृदयङ्गम कर सकें, इसके लिए विशेष प्रयत्न किया जाना चाहिए।

★

आवश्यकता है

रामप्यारी आर्य कन्या पाठशाला चन्दौसी के लिए—

(१) एक मुख्याध्यापिका बी० ए० बी० टी० जो गणित, सामान्य ज्ञान तथा सामाजिक विषय में विशेष योग्यता रखती हो।

(२) एक जे०टी०सी० अध्यापिका जो हिन्दी, संस्कृत तथा भूगोल में विशेष योग्यता रखती हो। (मध्यमा अथवा साहित्य रत्न हो तो अच्छा है)

(३) एक अध्यापिका एच०टी०सी० प्राइमरी कक्षाओं के लिये।

प्रार्थना पत्र ५ नवम्बर ५८ तक आ जाने चाहिये।

पुस्तकालय सुव्यवस्थित

(पृष्ठ ८ का शेष)

के लिए प्राच्य वर्गीकरण पद्धति का निर्माण किया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने हिन्दी पुस्तकों के वर्गीकरण के लिए श्री प्रभात कुमार मुखोपाध्याय तथा श्री भूपेन्द्रनाथ बन्द्योपाध्याय द्वारा रचित हिन्दी दशमिक वर्गीकरण का प्रकाशन किया। इन दोनो पद्धतियों में सौ मुख्य वर्ग है और फिर दशमलव चिह्न लगाकर अनेक भेद कर दिये गए हैं। भारतीय हिन्दी प्रमुख पुस्तकालयों के लिए ये दोनो पद्धतियाँ उपयोगी हैं। परन्तु इतना स्मरण रखना चाहिए कि ट्रेन्ड और सुशिक्षित व्यक्ति ही इन पद्धतियों के अनुसार पुस्तकों का वर्गीकरण कर सकता है। एक और बात यह है कि इनमें आर्य समाज और वैदिक धर्म को साधारण-सा ही स्थान दिया है। इसी बात को हृदय में रखकर 'आर्य पुस्तक वर्गीकरण पद्धति' पाठकों के समक्ष रखी जा रही है। इसमें केवल १० वर्ग हैं। इनमे प्रधानता आर्य समाज, वैदिक धर्म और हिन्दी को दी गई है।

वर्गीकरण प्रतीक संख्याओं पर निर्भर है। प्रत्येक वर्ग का विषय के लिए कोई चिह्न रखा जाता है। ड्यूई दशमलव पद्धति में मुख्य वर्गों के लिए तीन अंकों की प्रतीक संख्या विज्ञान का और ३३० यह तीन अंकों की प्रतीक संख्या अर्थ शास्त्र का बोध कराती है। इसी प्रकार प्राच्य वर्गीकरण पद्धति और हिन्दी दशमिक वर्गीकरण जो ड्यूई पर निर्भर है दो अंकों की प्रतीक संख्याओं का प्रयोग करते है। कुट्टाकर का मराठा पद्धति अक्षरों पर निर्भर है। इसमें (ड) हिंदू धर्म को और जी वनस्पति शास्त्र को प्रकट करता है। हमने अपनी पद्धति में प्राच्य वर्गीकरण पद्धति और हिन्दी दशमिक वर्गीकरण के समान दो अंकों की ही प्रतीक संख्याएँ रखी है। पद्धति इस प्रकार है —

संक्षिप्त रूप

(१०) आर्य धार्मिक साहित्य वेद, उपनिषद, स्मृति, रामायण, महाभारत, गीता।

(२०) आर्य समाज

(३०) अन्य धार्मिक साहित्य हिंदू धर्म, जैन, ईसाई, मुसलमान।

(४०) दर्शन, तत्त्वज्ञान, मनोविज्ञान, नीति।

(५०) हिंदी भाषा और साहित्य।

(६०) अन्य भाषाएं और साहित्य

(७०) कला, समाज शास्त्र शिल्प, भूगोल, जीवनी, इतिहास, राजनीति, अर्थ शास्त्र।

(८०) विज्ञान, गणित पदार्थ विज्ञान, रसायन चिकित्सा इन्जीनियरिंग कृषि।

(९०) सर्वसाधारण ग्रन्थ सूची, शब्दकोष पत्र पत्रिकाएं रिपोर्टें आदि

पूर्ण पद्धति

(१०) आर्य धार्मिक, साहित्य सर्व साधारण ग्रन्थ।

(११) वेद मूल संहिता, भाष्य, टीका तथा अन्य पूरक साहित्य जैसे पाद पाठ, अनुक्रमणी, देवता ऋषि आदि।

(१२) ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक ग्रन्थ।

(१३) सूत्र साहित्य, वेदांग, कल्प श्रौत सूत्र गृह्य सूत्र, शुल्व सूत्र शिक्षा व प्रातिशाख्य निरुक्त निघण्टु छन्द वैदिक मन्त्र व्याकरण (वैदिक मात्र) ज्योतिष (वैदिक मात्र)

(१४) उपनिषद

(१५) धर्म शास्त्र स्मृति, संस्कार आचार, वर्णाश्रम।

(१६) रामायण

(१७) महाभारत

(१८) गीता

(१९) पुराण तथा तन्त्र, स्मार्त्त सम्प्रदाय शैव वैष्णव आदि।

(२०) आर्य समाज सर्वसाधारण ग्रन्थ।

(२१) दयानन्द साहित्य, स्वामी दयानन्द द्वारा रचित तथा उनके सम्बन्ध मे लिखा गया साहित्य, जीवनी आदि।

(२२) आर्य नेताओं की जीवनी।

(२३) आर्य समाज के सिद्धान्त ग्रन्थ।

(२४) आर्य काण्ड, सन्ध्या, हवन भजन आदि।

(२५) आर्य समाज का प्रचार वैदिक धर्म प्रचार, शुद्धि, दलितोद्धार हैदराबाद सत्याग्रह।

(२६) आर्यसमाज का खंडनात्मक साहित्य, अन्य धर्मों की ओर से आर्य समाज की समीक्षा।

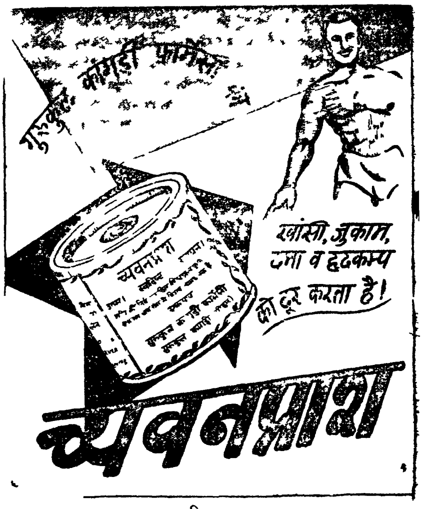
(२७) आर्य समाज का सर्वजन हितकारी व सामाजिक कार्य अकाल पीड़ित सहायता, अनाथ रक्षा, कुरीति निवारण विधवा विवाह आदि।

(२८) आर्य समाज का शिक्षा सम्बन्धी और सांस्कृतिक कार्य गुरुकुल स्कूल कालेज हिन्दी रक्षा, गो रक्षा आदि, हिंदी का सत्याग्रह आर्य समाज और राजनीति।

(२९) आर्य समाज का अंग्रेजी, उर्दू आदि भाषाओं में साहित्य।

(३०) अन्य धार्मिक साहित्य, सर्व साधारण ग्रन्थ आस्तिक नास्तिक वाद तुलनात्मक धर्म, धर्म और विज्ञान।

(शेष अगले अङ्क में)



संस्था-परिचय

वेदव्यास वैदिक आश्रम

पो० पानपोष जि० सुन्दरगढ़ (उत्कल)

सेवा में निवेदन है कि मैं आगरे से मई १६५४ में उत्कल प्रदेश में गया। वहाँ तब से पानपोष मे केन्द्र खोलकर प्रचार कर रहा हूं।

उड़ीसा मे सुन्दरगढ़, सम्भलपुर, बलांगिर, कलाहांडी, कोरापुट, गञ्जाम, कटक, बालेश्वर और केन्दुझर ६ जिलों में ईसाइयों का बड़ा प्रचार है। खास कर सुन्दरगढ़ जिला ईसाइयों के प्रचार का मुख्य केन्द्र है जिसकी जनसंख्या ३ लाख २० हजार है जिसमे से २० साल के अन्दर १ लाख ८५ हजार ईसाई बनाये जा चुके हैं और कुल उड़ीसा प्रदेश में ३ लाख ईसाई किये जा चुके है। उड़ीसा के कुल प्रदेश में १३ जिले हैं जिनसे उपर के ६ जिलों में से केवल सुन्दरगढ़ जिले मे १३ केन्द्र ईसाइयो के प्रचार के हैं, बाकी जिलों मे १४ केन्द्र और हैं। प्रत्येक केन्द्र मे एक हाईस्कूल, एक दातव्य औषधालय और ५० से १०० तक गिर्जे हैं। हर गिर्जे में एक एक प्राथमिक पाठशाला व एक एक प्रचारक पादरी कार्य कर रहा है। कुलगा जिला सुन्दरगढ़ मे ५०० ईसाई आदि वासो कन्याएं नर्सिंग, टेकरिंग तथा प्रचार उपयोगी शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

पाँच साल की शिक्षा प्राप्त करके यह लड़कियाँ भारत के भिन्न भिन्न भागो मे प्रचार के लिए भेजी जाती हैं और उनकी जगह नई लड़कियाँ भरती की जाती हैं।

ईसाई मिश्नरियों के इस प्रकार [...]त्तर में आर्य समाज की ओर से उपर्युक्त आश्रम की स्थापना श्री स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने की है। स्वामी जी आगरा से इस कार्य के लिए गये थे और अब वहीं कार्य कर रहे हैं। उनके प्रयत्न से चार साल के अन्दर २५०० ईसाई नर नारियों को शुद्ध करके वैदिक धर्म में प्रविष्ट करा लिया गया है। इस कार्य के लिए सार्वदेशिक सभा देहली से एक, दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर से दो और श्री आयसमाज भवानीपुर (कलकत्ता) से एक प्रचारक प्राप्त है। इस समय वैदिक आश्रम के साथ साथ सम्भलपुर में आर्यसमाज हीराकुद भी ईसाई प्रचार निरोध मे सहायता कर रहा है एक होम्योपैथिक दातव्य औषधालय तथा ३ प्राथमिक विद्यालय चल रहे हैं। यह सब सार्वदेशिक सभा देहली के अन्तर्गत हैं।

उड़ीसा प्रान्त में ईसाइयों का जाल फैला हुआ है। वहाँ पर दो चार प्रचारक क्या कर सकते हैं। इस प्रचार कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए प्रचारक, प्रचारोपयोगी, साहित्य मैजिक लालटेन मय स्लाइड, पाठशालाएं, दातव्य औषधालय आदि का विशेष प्रबन्ध होना चाहिए। आश्रम की ओर से नदी किनारे एक सुरम्य स्थान मे एक गुरुकुल स्थापित किया गया है जिसमे कुछ स्थान बना दिया है जहाँ २० ब्रह्मचारियों के पढ़ने का प्रबन्ध हो रहा है। और हीराकुद में १० हजार की लागत पर आर्य समाज का स्थाई भवन बन गया है। इस कार्य के लिए भी जन व धन की विशेष आवश्यकता है। उपरोक्त स्थान बनाने में व अन्य कार्यों की पूर्ति में आश्रम पर एक हजार रुपये का देना हो गया है।

उपरोक्त सहायता के अतिरिक्त वहाँ पर ४००) मासिक और अधिक व्यय करना पड़ रहा है जिसकी पूर्ति बड़ी मुश्किल से होती है।

इस कारण जितनी अधिक सहायता दी जायगी उतना ही अधिक शुद्धि का कार्य तीव्रता से किया जा सकेगा और भविष्य में ईसाइयों की प्रगति रोकने व जो ईसाई हो चुके हैं उनको वापिस लाने में आसानी होगी आर्य जनता इस दिशा में अधिक सहयोग दे यही आश्रम की प्रार्थना है आशा है ईसाई प्रचार निरोध के लिए आर्य जनता अपनी भावनाओं के अनुरूप आश्रम के कार्य को सफल बनाने में सहायक होगी। इस क्षेत्र की भोली भाली जनता आर्य समाज से बड़ी आशाएं रखती है।

जीवन-ज्योति

श्री गहलोत जी

(प्रो० भीमसेन शास्त्री एम ए० आर्यसमाज किशनपोल बाजार जयपुर)

यह समाचार आर्य जगत् में बड़े दुःख से सुना जायगा कि सुयोग्य ऐतिहासिक विद्वान् श्री जगदीशसिंह जी गहलोत का सं० १६१५ भाद्र ३१ (२२ सितम्बर) को जोधपुर में स्वर्गवास हो गया।

आपका जन्म एक साधारण कुल मे स० १६५२ माघ वदी ३०, भौम (१४।१।१८६६) को हुआ था अभी कुछ मास पूर्व १४ जनवरी १६५८ से आपकी पेन्सन हुई थी। आपने अलवर, उदयपुर, जोधपुर, जयपुर आदि राजस्थान के बड़े बड़े अद्भुतालयों (म्यूजियमों) के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया था।

वदी १६५२ में श्री गहलोत जी जोधपुर अद्भुतालय के अध्यक्ष थे तब उन्होंने राष्ट्रीय नेता-वीथी (National Leaders Gallery) का प्रारम्भ किया था। अनन्तर वे जयपुर व उदयपुर भेज दिये गये। १६५६ में वे पुनः जोधपुर गये तो उन्होंने इस प्रारब्ध नेतृ वीथी को सुविकसित किया।

इस वीथी में महर्षि दयानन्द सरस्वती, नाना साहब पेशवा, प० श्याम जी कृष्ण वर्मा, लोक मान्य तिलक, पंजाब केसरी लाला लाजपत राय, विपिन चन्द्रपाल सरदार भगत सिंह, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, मदन मोहन मालवीय, हरदयाल माथुर, ढींगरा, बीजोलिया, श्री विजयसिंह पथिक, श्री केसरीसिंह बारहट, श्री अर्जुनलाल सेठी, खरवा के रावगोपाल सिंह राठौर के विशाल तैलचित्र बनवा कर लगवाये थे।

महामहोपाध्याय गौरीशंकर हीराचन्द ओझा तथा सरदार पटेल के चित्र भी लगाने की योजना थी, पता नहीं वह कार्यान्वित हो पाई या नहीं।

भारत भर में ऐसी नेतृ वीथी केवल जोधपुर अद्भुतालय में है और इसका श्रेय श्री गहलोत जी को है।

आपने 'राजस्थान का इतिहास' आदि तीन दर्जन से अधिक पुस्तकों का प्रणयन किया था। आप राजस्थान और राजपूतों के इतिहास के मर्मज्ञ थे। आप ऐतिहासिक सामग्री के संचय पर निजी व्यय प्रचुर परिमाण मे करते थे। आपने ग्रन्थों, शिलालेखों, सिक्कों तथा ताम्र पत्रों का मथन करके बहु संख्यक अमूल्य लेख भी समय समय पर लिखे थे।

आप महर्षि दयानन्द की जीवन-घटनाओं और आर्य समाज के इतिहास के अच्छे ज्ञाता थे। आप नगर आर्य समाज जोधपुर के मन्त्रि पद को तथा किशनपोल आर्यसमाज जयपुर के उप प्रधान पद को सुशोभित करते रहे। अब रिटायर होने पर राजस्थान की आर्य समाजों का इतिहास लिखने का सकल्प धारे हुए थे। उनकी यह इच्छा उनके साथ गई और राजस्थान को अब ऐसा इस ग्रन्थ का लेखक न मिल सकेगा। आपने आर्य समाज की विविध सेवा की और की बहुत आशाएं थीं पर कराल काल पर किसका वश चला है।

आप कई मास से सतत रुग्ण चल रहे थे, पर हमें रोग की इस भीषणता का आभास कभी न मिला था। भगवदिच्छा बलीयसी। भगवान् दिवंगतात्मा को अच्छा जन्म तथा पीछे छूटे परिवार को शान्ति प्रदान करें।

श्री गहलोत जी ने कई पुत्र छोड़े हैं। ये अच्छे पदों पर कार्य कर रहे हैं, एक शिक्षार्थ जापान गये हैं।

बाल-विनोद

हाथी आया

हाथी आया, हाथी आया,
देखो, कैसी आफत लाया !
नए शहर में हाथी आया,
सब में घोर अचम्भा छाया,
सारे बच्चे टोला वाले,
नाटे - लम्बे, गोरे - काले;
छोटा मोटू, मोटा तोंदू,
सबसे नट-खट छोटा छगू,
मुन्ना - मुन्नी, चुन्ना - चुन्नी,
शोभा, मोहन सोहन, बिन्नी;
कासिम, रमजानी औ' अहमद
बांधे रहते हरदम तहमत;
कसरत का शौकीन हकीकत,
पढ़ने मे तल्लीन महीपत,
कुल्लू, बुल्लू, चुल्लू, मुल्लू,
औ' कैलाश, बिहारी, फुल्लू;
शैल छबीला, मैला छैला,
लेकर जो चलता है थैला;
ये सब अपने काम छोड़कर,
अपने - अपने धाम छोड़कर,
सब चिल्लाते दौड़े आए,
सबको साथ बुलाते लाए।
कौतूहल सबमें छाया है,
गलियों मे हाथी आया है !
पेड़ दबाए हाथी आया,
डाल चबाए हाथी आया !
भारी भरकम दानव आया,
हाथी आया, आफत लाया !

—शिवचरण लाल गर्ग, प्रयाग

चुटकुले

मां अपने बच्चे को इङ्गलैण्ड के बारे मे सुना रही थी। उसने कहा—"यद्यपि नाम बादशाह का होता है परन्तु सारा अधिकार पार्लियामेन्ट के हाथ मे है।"

बच्चे ने कहा—"बस बस मैं समझ गया, इस घर के बादशाह तो बाबू जी हैं, परन्तु पार्लियामेन्ट हैं आप !"

× × ×

पार्लियामेण्ट के एक उम्मीदवार ने घोषित किया—"इस इलाके के किसानों को गेहूं अधिक पैदा करना चाहिए।"

उपस्थितगण में से एक ने पूछा—"घास के बारे में क्या आज्ञा है।"

उम्मीदवार ने उत्तर दिया—"मैं मनुष्यों के भोजन का जिक्र कर रहा हूं—परन्तु तुम्हारे लिए भी कुछ व्यवस्था करूंगा।"

× × ×

मुनीम जी ने सेठ जी से पूछा—"कुछ पुराने पत्र पड़े हैं। वे बिलकुल रद्दी हैं, यदि कहें तो उन्हें जलवा दूं?"

सेठजी ने कहा—"हां, जलवा दो मगर उन सब की नकल ले लेना। न जाने किस समय कैसी आवश्यकता पड़ जाए।"

—विजय

× × ×

हीरे-मोती

वास्तविक महान व्यक्ति वह है, जो न किसी का शासक है, न किसी से शासित।

× × ×

वे कहते हैं—बुलबुल जब एक मोहब्बत का नगमा गाती है, वह अपने सीने मे एक कांटा चुभो लेती है।

यही हम सब करते हैं। नहीं तो भला हम गा सकते हैं।

× × ×

जीवन न्याय के प्रति मैं कैसे आस्था खो सकता हूं, जबकि मखमल पर सोने वालों के सपने, जमीन पर सोने वालों के सपनों से ज्यादा खूबसूरत नहीं होते।

× × ×

शासन तंत्र मेरे और तुम्हारे बीच एक समझौता है। मैं और तुम अक्सर गलत होते हैं।

× × ×

उन्होंने हमारे सामने अपना बेश कीमती सोना, चांदी, हाथीदांत और आबनूस बिखेर दिया और हमने उनके सामने अपना हृदय और अपनी आत्मा बिखेर दी।

इस पर भी उन्होंने अपने को बेजबान समझा और हमको मेहमान।

× × ×

आश्चर्य कि हम सब अपने 'गलत' की रक्षा उससे कहीं अधिक जोश से करते हैं, जितने अपने 'सही' की।

× × ×

वे मुझे पागल समझते हैं, क्योंकि मैं अपने दिन सोने से नहीं बेचूंगा। और मैं उन्हें पागल समझता हूं क्योंकि उनके विचार में मेरे दिनों का मूल्य है।

× × ×

मनुष्यों में सबसे अधिक दयनीय वह है, जो अपने सपने सोने और चांदी मे बदल देता है।

—खलील जिब्रान

वनिता विवेक

परिहास-प्रियता का महत्व समझें

जीवन को सरस बनाए रखने के लिए पति पत्नी में परस्पर परिहास-प्रियता, जिसे अंग्रेजी में 'सेंस आफ ह्यूमर' कहते हैं भी होनी चाहिए। परस्पर ठठोली और हंसी मजाक से जीवन में रंगत आ जाती है। वाक्य-पटु और विनोदप्रिय व्यक्ति हमेशा परिवार तथा समाज में आदर पाता है। यह जरूरी नहीं है कि पति पत्नी दोनों ही बातचीत में चतुर हों। एक अच्छा वक्ता और दूसरा धीरवान श्रोता हो तभी पटरी अच्छी बैठती है। बातूनी आदमी प्रायः साफ दिल के होते हैं। वे दो बातें कह भी लेते हैं तो दो बातें सह भी लेते हैं। प्रेम को ताजा रखने के लिए थोड़े दिनों का वियोग भी अच्छा समझा गया है। विशेष कर पत्नी हरदम घर गृहस्थी के कार्य भार से थक जाती है। उस का कभी कभी पीहर जाना आवश्यक है। इस से उसे आराम और परिवर्तन दोनों मिल जाते है। पर सब बच्चों को उस के साथ नहीं भेजना चाहिए। प्रेम को सजीव रखने के लिए यह जरूरी है कि कभी कभी केवल पति पत्नी ही विवाह की वर्षगांठ मनाने या वायु परिवर्तन के लिए बाहर कुछ दिन के लिए जाएं। दिन मे भी कुछ क्षण वे एकान्त मे, एक दूसरे की समीपता का अनुभव करते हुए शांति से बिताएं। इस के अतिरिक्त कोई मनोरंजक कार्य (हौबी) ऐसा चुनें जिसमें दोनों को दिलचस्पी हो। अपने अवकाश के समय और वृद्धावस्था मे भी जब कि बच्चे बड़े होकर अपने अपने घर चले जाएंगे, वह 'कामन हौबी' उन दिनों की दिलचस्पी का आधार बनी रहेगी। हमारे यहां पति पत्नी चौथेपन मे एक दूसरे से इसलिए भी दूर पड़ जाते हैं कि बच्चों के घरों मे न रहने से उन्हें एक सूत्रता में बांधने वाला कोई आधार नहीं रहता।

अब पति पत्नी एक दूसरे के स्वभाव को समझलें, तब एक दूसरे की सलाह और आलोचना का उन्हें स्वागत करना चाहिए। आखिरकार दोनों का एक ही ध्येय है—परिवार का कल्याण। इसलिए बच्चे, गृह व्यवस्था, व्यय और खर्च स्वास्थ्य आदि को लेकर जो सुझाव या आलोचना की जाए, उसे तटस्थ हो कर समझने और तोलने की चेष्टा करनी चाहिए। अधिकांश पति पत्नी एक दूसरे की आलोचना के प्रति असहनशील होते हैं और वे न केवल असहयोग ही दिखाते हैं परन्तु बुरी तरह एक दूसरे की भर्त्सना करने और दोष निकालने लगते हैं। इससे परिवार के हित की बड़ी हानि होती है। मेरे व्यक्तिगत मामले में तुम्हें बोलने का कोई अधिकार नहीं है। तुम अपना काम सम्हालो। मैं तुमसे अधिक परिवार का हित अहित समझता हूं। पति को ऐसा कह कर पत्नी को चुप कराने की चेष्टा सरासर भूल है। यदि पत्नी के दिल मे यह बात बैठ जाए कि मैं घर मे केवल दासी की हैसियत रखती हूं, अधिक महत्वपूर्ण मामलों में मेरी सलाह अनसुनी कर दी जाती है तो उसे पति को पूर्ण सहयोग देने की प्रेरणा नहीं मिलेगी। पति को हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

कुछ नित्योपयोगी वस्तुओं की सफाई

हर प्रकार की गन्दी बोतलें गर्म पानी मे सज्जी मिट्टी डाल कर बनाये घोल से धोने से साफ हो जाती है।

जिन बर्तनों में प्याज की बदबू आ रही हो, उन्हें पहले नमक से खूब मलिए और फिर गर्म पानी से धो डालिए। प्याज की बदबू निकल जाएगी।

खाने का सोडा पानी मे मिलाइए। (१ पाव मे एक चम्मच) इस पानी मे आलमारियां धो पोंछ डालिए वे खूब साफ हो जाएंगी।

मेथ लेटेड स्पीरिट से भीगे कपड़े मे पहले गन्दे पर्दे को खूब रगड़िए फिर एक साफ और सूखे कपड़े [illegible] रगड़ दीजिए। पर्दे साफ और [illegible] दार हो जाएंगे।

बहुत दिन हो जाने पर फाउन्टेन-पेन के निब इत्यादि पर स्याही जम जाती है। अतः फाउन्टेनपेन साफ करने के लिए नमक मिले पानी को बार बार उसमें भरकर निकालिए। एक बार निकला हुआ पानी फिर नहीं भरना चाहिए। जब रंगीन पानी निकलना बंद हो जाये तब साफ नमकीन पानी फिर पांच मिनट तक भरा रहने दीजिए और उसे फिर निकालिए जब साफ साफ पानी निकलने लगे तब निब और जीभ को निकाल कर कपड़े से रगड़ लीजिए और फिर लगा लीजिए।

— भंवरलाल सर्राफ

शङ्का समाधान

(पृष्ठ ५ का शेष)

जो फिर आजीवन एकत्र ही रहते हैं।

पैसे, हल्दी, सरसों, चावल आदि ग्रन्थी में रखना लोकाचार है। शास्त्र विहित नहीं हैं। इसलिए इनके रखने से विशेष कोई लाभ नहीं होता और न रखने से कोई हानि नहीं होती। मेरी सम्मति में तो न रखना ही अच्छा है।

प्रश्न (५)—मधु पर्क से चारो दिशाओं में छींटे क्यों दिये जाय इससे तो दही खराब होती है।

उत्तर—पिता, पितामह, प्रपितामह आदि वृद्धो, विद्वानो, अतिथियो तथा आश्रितो को प्रथम भोजन करा कर फिर गृहस्थ को भोजन करना चाहिए। ऐसा शास्त्र है। इसलिए वर के गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते समय शास्त्र आज्ञा पालनार्थ यह क्रिया की जाती है। क्योंकि विवाह संस्कार के अवसर पर जबकि वर स्वय मधुपर्क भक्षण कर रहा है उक्त वृद्धादि जनो का भोजन कराना आदि सारी क्रिया सम्भव नहीं, इसलिए वर चारो दिशाओं और उपर को छींटे देकर इस आदर्श की पूर्ति करता है। इस महान् उद्देश्य की पूर्णता के लिए छींटे देने से दही खराब नहीं होती अपितु इससे क्रिया में सार्थकता, और सौन्दर्य सम्पादन करते हुए वर एक बहुत बड़े आदर्श की रक्षा करता है। किसी भी आदर्श की रक्षा के लिए किया गया व्यय कभी अपव्यय नहीं होता।

प्रश्न (६)—खील व शमी पत्र की आहुतियो से क्या तात्पर्य है?

उत्तर—विवाह संस्कार के साथ ही कन्या गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट हो रही है, तथा अपने माता पिता के परिवार को छोड़ पति के परिवार में जा रही है, जहां उसे जीवन भर रहना होगा। कन्या अपने जीवन के इस सन्धिकाल में अपने परिवार, पति तथा स्वय के लिए कुछ मंगल कामना करती है। इसी पवित्र कार्य के लिए शमीपत्र युक्त खील की आहुतियां देती है। मन्त्रार्थ से भी यही भाव निकलता है। कन्या कहती है—मेरा पति आयुष्मान् हो मेरे परिजन समृद्धिशाली हो, हे पतिदेव! यह लाजाएं मैं आपके और अपनी समृद्धि के लिए अग्नि में डाल रही हूं। शमीपत्र और खीलो के पड़ते ही जैसे यह अग्नि विविध ज्वालाओं से वृद्धिगत होता है, ऐसे ही हम दोनो गृहस्थाश्रम में पुत्र पौत्र, गौ आदि पशु और धन धान्य से समृद्ध हो। यदि जीवन में किसी प्रकार की कठिनाइयां आए तो उन्हें इन खिली हुई खीली के समान हंसते हुए सहन करें तथा जिस प्रकार शमी वृक्ष सर्वथा सूखे में भी हरा भरा और लहलहाता रहता है उसी प्रकार हम भी दुःख दारिद्र आदि की दशा में प्रसन्न मन से मुस्कराते रहें। यदि किसी कारण विशेषवश स्वगृह छोड़ दूसरे स्थान या दूसरे देश में जाना पड़े तो वहां भी धान्यवत् खूब फलें फूलें और शमी की भांति सारयुक्त बनते जावें और यदि प्रभु कृपा से जीवन में प्रभूत समृद्धिशाली हो जावें तो शाली की भांति अतिनम्र (झुकेहुए) तथा कोमल वृत्ति युक्त अभिमान रहित रहें। जैसे आज इस विवाहाग्नि में यज्ञसमिद्रूप शमीपत्र और समग्र स्थानीय खीलो का डाल कर यज्ञ कर रहे हैं वैसे ही सर्वदा हर्ष शोक में शुभ कर्म करते रहें। जैसे शमीपत्र और लाजा अर्थात् समिद् तथा सामग्री दोनो मिलकर यज्ञाग्नि को प्रदीप्त करते हैं, वैसे ही हम दोनो पति पत्नी मिल कर गृहस्थाश्रम को प्रकाशित करें अर्थात् गृहस्थ को सुन्दर और सुखद बनावें। इत्यादि शिक्षा ग्रहणपूर्वक मगल आश्वासन ही शमी पत्र और खील की आहुतियों का तात्पर्य है।

सभा की सूचनाएं

दान वेद प्रचारार्थ शाहजहांपुर से श्री लक्ष्मणदेव जी उपदेशक द्वारा

मन्त्रिणी आ० स० पुवायां	५)
मन्त्री आ० स० जलालाबाद	५४)
प्रधान ,, ,, खुदागंज	५१)
मन्त्री ,, ,, कटरा मीरानपुर	१५)
प्र० पुरुषार्थी सत्सगसभा कैलगंज	२१)
प्रधाना स्त्री आ० स० कटियाटोला	२५)
प्रधान आ० स० कटिया टोला	२४)
,, ,, ,, सदर बाजार	२५)

उपदेश विभाग की सूचना मास नवम्बर १९५८

१—श्री प० ओ३म् प्रकाश जी शास्त्री महोपदेशक ७ से ११ तक आ० स० देहरादून १६ से २३ तक आ० स० दर्शनपुरवा कानपुर, २४ से २६ तक आ० स० टाण्डा फैजाबाद

२—श्री रुद्रदत्त जी शास्त्री महोपदेशक २२ से २४ तक आ० स० लखीमपुर

३—श्री प० सत्यमित्र शास्त्री महोपदेशक २७ से ३ दिसम्बर तक आ० स० टाडा फैजाबाद

४—श्री प० राजाराम जी शास्त्री ६ से ११ तक आ० स० देवबन्द सहारनपुर

५—श्री भद्रपाल जी स० सि० प्रचारक २ से ८ तक आ०स० बदायूं, ६ से १२ तक आ० स० देहरादून, १५ से १७ तक आ० स० धामपुर बिजनौर, २७ से ३० तक आ० स० सीसामऊ कानपुर

६—श्री रामचन्द्र जी शर्मा १६ से २३ तक आ० स० दर्शनपुरवा कानपुर

७—श्री धर्मदत्त जी आनन्द १४ से २६ तक आ०स० प्रतापगढ़, २७ से ३० तक आ० स० सीसामऊ कानपुर

८—श्री गजराज सिंह १ से ८ से १३ से ३१ तक जिला मुजफ्फर नगर, ६ से ११ तक उत्सव आ० स० मेरठ शहर

९—श्री धर्मराज सिंह ८ से ११ तक उत्सव आ०स० कटरा प्रयाग, २३ नवम्बर से ३ दिसम्बर तक आ० स० टाडा फैजाबाद

१०—श्री प० मुकुन्दराम जी शर्मा बरेला, २० से २३ तक आ०स० दर्शनपुरवा कानपुर

११—श्री प्रकाशवीर जी २० से २४ नवम्बर तक आ० स० लखीमपुर

१२—श्री महेशचन्द्र जी १५ से १७ तक आ०स० अतरौली (अलीगढ़)

—सभा मन्त्री

आर्यमित्र हीरक जयन्ती

(धन-संग्रह योजना)

उत्तरप्रदेश के समस्त आर्यसमाज, समाजस्थ अन्तरङ्ग सदस्य, जिलाप्रतिनिधि सभाएं एवं अवैतनिक उपदेशक महानुभावों तथा सभास्थ उपदेशक प्रचारको को विदित हो कि आर्यमित्र हीरक जयन्ती, श्री प० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय व श्री प० गङ्गाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज अभिनन्दन समारोह, गुरु विरजानन्द दण्डीधाम स्मारक उद्घाटन महोत्सव गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दाबन (मथुरा) नगरी में मनाना निश्चित हो गया है। महोत्सव शिवरात्रि के अवकाश दि० ६, ७, ८, ९ मार्च सन् १९५९ में बड़े धूमधाम के साथ करने का आयोजन हो रहा है। आर्य जनता से विनम्र निवेदन है कि उपर्युक्त महोत्सव को तिथियां नोट करें और वृन्दावन नगरी में पहुंचने की तैयारियां प्रारम्भ करने की कृपा करें।

सभा के उपर्युक्त कार्यों के सम्पादन करने के लिए धन संग्रह के रसीद नोट्स ॥), १), २), ५), तथा १०) के प्रकाशित कराये गये हैं। अतः धन संग्रहार्थ सभा कार्यालय से इस सूचना के पढ़ते ही नोट मंगाने की कृपा करें।

—कालीचरण आर्य
सभा उप प्रधान

आर्य-जगत

उत्सव समाचार—

—आ० स० सुलतानपुर का वार्षिकोत्सव १५, १६, १७, १८ नवम्बर को सम्पन्न होगा जिसमें अनेकों दिग्गज विद्वान् आ रहे हैं।

—आ० स० पुवाया का वार्षिकोत्सव १, २, ३, नवम्बर को होना निश्चित हुआ है।

—वैदिक दैनिक आर्य सत्सग सहारनपुर का प्रथम वार्षिकोत्सव कथा के रूप में २९ सितम्बर से १२ अक्टूबर तक हुआ। महात्मा आनन्द स्वामी, स्वामी मुनीश्वरानन्द, श्री जगदीशचन्द्र शास्त्री, श्री विश्वबन्धु शास्त्री, स्वामी मेधानन्द आदि के उपदेश हुए।

—आ०स० सुलतानपुर नैनीताल वार्षिकोत्सव २९ ३०, ३१ अक्टूबर को मनाया गया। अनेकों विद्वानों के भाषण हुए।

—आ० स० बाजपुर नैनीताल का वार्षिकोत्सव २७, २८ अक्टूबर को हुआ जिसमें प्रभावशाली भाषण हुए।

—आ० स० हनुमान रोड नयी दिल्ली का वार्षिकोत्सव प्रारम्भ है। ३ नवम्बर ५८ तक चलेगा महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की मनो हर कथा हो रही है।

—आ० स० हरदोई का वार्षिकोत्सव २०, २१, २२ अक्टूबर को हुआ। सभा की अध्यक्षता डा०पूर्णदेव जी एम०बी०बी-एस ने की। प्रा० सत्याचरण, स्वा० अमृतानन्द स्वा० विशुद्धानन्द, प० बिहारीलाल शास्त्री, श्री वेद प्रकाश, स्वा० भ ष्म आदि के व्याख्यान हुए। इस अवसर पर युवक सम्मेलन और जिला सम्मेलन भी हुआ। प० सामदत्त शर्मा चठिया, श्री सालिग्राम शर्मा कुढ़ौली तथा श्री विष्णु नारायण माला के निधन पर शोक प्रस्ताव पास किया गया।

—आ० स० और आर्य वीर दल बगहा, का ५ वां वार्षिकोत्सव २ नवम्बर ५८ को होगा। प० विद्यानन्द जी, ठाकुर महानन्द सिंह आदि पधारेंगे। आर्यवीर दल का एक विशेष सम्मेलन भी होगा।

शोक समाचार—

—आर्य समाज मोगलसराय के कर्मठ कार्यकर्ता श्री महाशय केदार नाथ आर्य का १५ अक्तूबर को हृदय गति रुक जाने के कारण निधन हो गया। आपके शव जलूस में बनारस व मोगलसराय के लगभग २००० नागरिकों ने भाग लिया। पूरे बनारस जिले में आपके निधन पर शोक मनाया गया। आप एक त्यागी, उत्साही, दानी, सदाचारी, कर्मशील तथा लोकप्रिय आर्य पुरुष थे। आपके ४ लड़के आज भी गुरुकुल में पढ़ते हैं। दिवगत आत्मा की शाति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गयी। निम्न आर्य समाजो ने आपके निधन पर विशेष रूप से शोक प्रकट किया—जिला उप सभा बनारस, आ०स० मोगलसराय, आ०स० खोजवा, आ०स० बुलानाला काशी, आ० स० लल्लापुरा काशी, आ०स० भोलेपुर वाराणसी, आ०स० भोजूवीर, आ०स० बनारस छावनी।

—आ०स० चन्दौसी के प्रमुख व्यक्ति साहू मुकुटविहारीलाल सर्राफ के निधन पर गुरुकुल ज्वालापुर ने शोक प्रकट किया।

—श्री बी० एन० पाल मैजिक लन्टर्न प्रचारक सदर लखनऊ के नव जात पुत्र का पिछले दिनो निधन हो गया। प्रभु दिवगत आत्मा को शाति प्रदान करे।

अन्यान्य समाचार—

—श्री डा० राजेन्द्रप्रताप सिंह छत्रि मन्त्री आ० स० प्यारेपुर, दलसिंह सराय दरभगा द्वारा पितृपक्ष मे तर्पण व श्राद्ध न करने के कारण उनके अनुजों को बहकाकर रामअवतार सिंह लालना सिंह शम्भूप्रसाद सिंह राज नारायण सिंह, अनिरुद्ध सिंह युगल किशोर दुबे आदि ने ७।१०।५८ को उनके परिवार में बटवारा करा दिया और परिवार की सम्पत्ति का केवल १/४ भाग ही उन्हें मिला। इसी प्रकार गत वर्ष भी श्राद्ध व तर्पण न करने के कारण श्री राजेन्द्र जी को बिरादरी से बहिष्कृत कर दिया गया था।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का साप्ताहिक मुखपत्र

[illegible] लखनऊ, [illegible] कार्तिक कृष्ण १३, वि० २०१५ [illegible]
नवम्बर [illegible]

14-11-58

दिव्य दयानन्द



तुम [illegible] मन्त्रधार
[illegible]
[illegible]
[illegible]

तुम [illegible]
[illegible]
तुम आर [illegible]
[illegible]

तुम [illegible]
[illegible] ब्रह्मचार [illegible]
[illegible]
[illegible]

तुमने [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
तुमसे [illegible]
[illegible] भारत [illegible]

—हरिशंकर शर्मा

सम्पादक—
स्नातक उमेशचन्द्र एम ए

वर्ष [illegible]

अङ्क ४३

दयानन्द की जय

[बाबू पूर्णचन्द जी एडवोकेट, आगरा]

★

महर्षि के निर्वाण दिवस पर हमें यह विचार करना है कि महर्षि को अपने उद्देश्य की पूर्ति में कहां तक सफलता हुई है। —स० सम्पादक

राजनीति में

महर्षि ने सबसे पूर्व राजनीति को धर्म का आवश्यक अंग निर्धारित किया। दूसरे शब्दों में राजनीति की सफलता के लिए धार्मिक भावना को आवश्यक समझा। जब तक राष्ट्रीय महासभा ने १८८५ से लेकर १९१९ तक धर्म की अवहेलना की और केवल बाहर की दृष्टि से स्वराज्य के लिये आन्दोलन किया कोई सफलता नहीं मिली। महात्मा गांधी ने १९१९ में अपने आंदोलन में धर्म का पुट दिया सत्य अहिंसा पर बल दिया, अपनी आत्मा की आवाज सुनने का अभ्यास किया और महात्मा गांधी का आंदोलन सफल हुआ, स्वराज्य के दर्शन हुए। स्वराज्य प्राप्त होने के बाद भी जो विधान बना है उसमे जहाँ तक उजाला है वह सब महर्षि के प्रभाव के कारण है। जिस अंश तक महर्षि की अवहेलना की जा रही है उसी क्षेत्र मे असफलता है और अशान्ति है।

(१) हिन्दी राष्ट्र भाषा ऋषि के प्रभाव से मान ली गई है।

(२) गऊ रक्षा का प्रस्ताव स्वीकार हो गया है और आज विधान का अग है। पूर्ण रूप से मांस भक्षण का निषेध नहीं हुआ है और इसके कारण अनेक प्रकार की कठिनाइयां हैं। यदि पूर्ण रूप से गऊ वध का निषेध हो जाये और मांस भक्षण बन्द हो जाये तो सारे राज्य मे न केवल पुरुषों को परन्तु प्राणि मात्र को अभय दान प्राप्त हो जाये।

(३) मद्यपान निषेध सबसे पूर्व महर्षि ने आरम्भ किया और आज विधान का अग है। परन्तु अभी तक पूर्ण रूप से शराब बन्दी नहीं हुई है और इसलिए देश का नाश हो रहा है।

(४) महर्षि ने अछूत उद्धार का कार्य आरम्भ किया और आज अछूत उद्धार विधान का अग है। अभी तक भावनायें मर्यादित नहीं हुई हैं और इसलिए अभी तक अछूत पन का चलन दूर नहीं हुआ है। महर्षि का आधार धर्म और प्राचीन सभ्यता थी आज केवल सामाजिक आधार पर प्रयत्न किया जा रहा है और समस्या उलझती जाती है।

(५) महर्षि ने जन्म के आधार पर जाति का खण्डन किया और यह आज विधान का अंग है परन्तु क्रियात्मिक रूप से अभी तक जन्म के आधार पर जातिवाद का निराकरण नहीं हुआ है और इसलिए भेद भाव बढ़ता जा रहा है।

(६) शिक्षा के जगत् में महर्षि ने मौलिक परिवर्तन किया, शिक्षा माता के गर्भ से आरम्भ हो, मातृ भाषा द्वारा हो, निशुल्क हो, अनिवार्य हो, सर्वांगपूर्ण हो, धार्मिक व नैतिक शिक्षा का अंग हो। प्राचीनता पर बल हो। यह सब सिद्धान्त रूप से स्वीकार हो चुके हैं। जिस सीमा तक इनका पालन हो रहा है, देश सुखी है। सह शिक्षा के सम्बन्ध की बात महर्षि की नहीं मानी जा रही है और इसलिए देश तबाह हो रहा है।

(७) निर्वाचन मे महर्षि ने प्रजातन्त्र प्रणाली का समर्थन किया और आज यह प्रणाली प्रचलित है परन्तु महर्षि ने प्रजातन्त्र प्रणाली का जो रूप बताया था वह यह था कि केवल सदाचारी को ही मत देने का अधिकार हो और १० धार्मिक विद्वानों की बात मानी जाये १०० मूर्खों की नहीं। इस चेतावनी की ओर ध्यान नहीं दिया गया और आज प्रजातन्त्र के नाम पर जो दलबन्दी, आपस की फूट, खेंचातानी, आपा धापी, हो रही है वह सब इसका ही परिणाम है।

सामाजिक उन्नति के क्षेत्र में

महर्षि की समाज निर्माण व्यवस्था समान्यता, योग्यता, और न्याय पर आश्रित थी। सामान्यता को माना जा रहा है परन्तु योग्यता और न्याय पर ध्यान नहीं है और इसका ही यह परिणाम है कि साम्यवाद का तूफान उठा हुआ है। अन्धेर नगरी चौपट राजा टके सेर भाजी, टके सेर खाजा की कहावत चरितार्थ हो रही है।

धार्मिक जगत् में

महर्षि ने धार्मिक क्षेत्र में प्राचीनता, तर्क, और क्रियात्मिक जीवन पर बल दिया आज धर्म को केवल रूढ़ि के रूप मे माना जा रहा है और क्रियात्मिक जीवन से इसका सबंध नहीं माना जाता इसलिए धार्मिक जगत् में भी लोक सम्बन्धी, और पर लोक सम्बन्धी पाखण्ड प्रचलित है। यदि धर्म का वह स्वरूप जो महर्षि ने निर्धारित किया जीवन का आधार बन जाये तो आज सारा देश सुखी हो जाये।

विज्ञान के क्षेत्र में

महर्षि ने बढ़ते हुए ज्ञान को ईश्वर की सत्ता मे विश्वास के साथ आवश्यक समझा। आज विज्ञान बढ़ रहा है परन्तु ज्ञान के आदि मूल की ओर ध्यान नहीं है इसलिए विज्ञान नाश का कारण है, सुख का नहीं। इसी प्रकार सब क्षेत्रों में यदि जांच की जाये तो विजय ऋषि की है और पराजय उनकी जो ऋषि की नहीं मानते।

दयानन्द का दिव्य संदेश

[श्री धर्मवीर आर्य ब्रह्मचारी]

★

इस लघु लेख में दयानन्द के दिव्य सन्देशों की चर्चा है—पर इससे लाभ तो तब होगा जब आर्यजन इन पर आचरण करेंगे। —स० सम्पादक

विश्व के मानव समाज के नाम आज दीपावली महर्षि दयानन्द का दिव्य, नूतन, प्राणप्रद संदेश लेकर आई है।

इस दीपमालिका के दिन जब जगमग जगमग एक आलौकिक ज्योति का प्रकाश हो रहा था, उन्हीं क्षणों में महर्षि दयानन्द जी ने अमरत्व प्राप्त किया और मुख से प्रसन्न वदन असह्य वेदना मे भी प्यारे प्रभु को धन्यवाद दिया कि हे प्रभु तेरी इच्छा पूरी हो।

महर्षि दयानन्द के वैदिक मन्तव्यों को पूर्ण करने का बीड़ा आर्य समाज ने उठाया हुआ है।

आओ, इस दिव्य दीपावली पर हम महर्षि दयानन्द जी के प्रेरणाप्रद मूक शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनकर अखिल विश्व में वैदिक स्वराज्य स्थापित करने का सत्य सकल्प करें।

इस धन्य धरा पर पुनः हमारा चक्रवर्ती वैदिक साम्राज्य स्थापित हो। वेद की पवित्र ऋचाओं का दशों दिशाओं मे पुनः गान हो।

आत्म उन्नति में विश्व के नर नारी लगें। वैदिक जीवन की अनुपम आभा का एक स्वर्ण सुप्रभात हो।

विश्व में बन्धुत्व की भावना का प्रबल प्रकाश हो।

आज के दिन मानव-मात्र के नाम महर्षि दयानन्द का यह संदेश है कि वेद पढ़ो, आर्य बनो, और अखिल विश्व को आर्य बनाओ।

आज विश्व का मानव समाज अत्यंन्त व्याकुल और व्यथित है। इसका मूल कारण यह है कि हम वेद और ईश्वर को भूल चुके हैं।

जिस समय वेद और ईश्वरीय आज्ञाओं का पालन हम करने लग जायेंगे उस समय आत्मिक आनन्द की लहर से हम हर्ष विभोर हो उठेंगे। विश्व का मानव समाज, विश्व वंदनीय महर्षि दयानन्द का ऋणी है। आओ! महर्षि के ऋण से उऋण होने के लिये आज हम संकल्प धारण करें।

विश्व की समस्त आर्यसमाजों के सदस्य अपनी आर्यसमाजों में दैनिक संध्या, हवन व वेद पाठ तथा सत्संग उपदेश आदि का कार्यक्रम चलाने का व्रत धारण करें।

प्रत्येक आर्य समाज की यज्ञशालाओं मे अखंड अग्नि स्थापित होनी चाहिए।

प्रतिदिन वेद मंत्रों का स्वाध्याय हो। हवन नित्य हो।

जहां सनातन धर्म के मंदिरों पर फूल बिकते है उस स्थान पर प्रत्येक समाज में हम सुगन्धित हवन सामग्री, यज्ञ-प्रेमियों को देने की व्यवस्था करें। इस प्रकार लोगों को यज्ञमय जीवन बनाने की प्रबल प्रेरणा का सचार कर सकते है।

यज्ञ रहित जीवन भी क्या जीवन है? उस मनुष्य का जीवन पशुवत है और भार स्वरूप है जो नित्य प्रभु चिंतन या संध्या हवन नहीं करते।

आर्य समाज मंदिरों का उपयोग तभी सार्थक होगा जब हम उन्हें एक वेद विद्यालय का रूप देंगे। आओ! महर्षि दयानन्द जी की आज्ञाओं का पालन करके हम विश्व की काया पलट दें।

नर संहार के काले बादलों को हम छिन्न भिन्न करके वैदिक जीवन का निर्माण करके वैदिक युग के स्वर्ण प्रभात को लायें।

आज दीपावली के परम पवित्र दिवस पर महर्षि दयानन्द जी का मूक संदेश सभी मनुष्यों के नाम यह है कि हम अपनी आत्मा की अमरता को जानकर आत्मा और परमात्मा को जान कर अमर बनें।

आओ! हम सच्चे कर्मवीर और धर्मवीर बनकर महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार बनाकर वैदिक युग का निर्माण करके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करके इस दुर्लभ मानव जीवन यात्रा को सफल बनायें।

वेदोपदेश

ओम् अहुतमसि हविर्धान दृ ꣳ हस्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत। विष्णुस्त्वा क्रमतामुरू वातायापहत ꣳ रक्षो यच्छन्तां पञ्च ॥ यजु० १ ९

हे यज्ञ, तू हवि का अविचल आधार है। दृढ़ हो कुटिल न हो। तेरा यज्ञपति कुटिल न हो। विष्णु तुझे वायु के लिए प्रसारित करे। विघ्न नष्ट हो गये। पंच लोग तुझे ग्रहण करें।

सूचना (१)

हीरक जयन्ती अंक की तैयारी के कारण इस वर्ष हम ऋष्यङ्क की पूरी सामग्री नहीं प्रकाशित कर सके। पाठक कृपया इस अङ्क को ही ऋष्यङ्क समझें। भविष्य में इस अभाव की पूर्ति कर दी जायगी।

—अधिष्ठाता, आर्यमित्र

सूचना (२)

दीपावली अवकाश के कारण आर्यमित्र कार्यालय तथा आर्य भास्कर प्रेस बन्द रहेगा। अतः अगला अङ्क (१६ ११-५८ का अङ्क) बन्द रहेगा। अब आपकी सेवा में २३ ११ ५८ का अङ्क पहुंचेगा। पाठक व एजेन्ट कृपया नोट करले।

—अधिष्ठाता, आर्यमित्र

आर्यमित्र

लखनऊ—९ नवम्बर १९५८, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०५९

ऋषिराज तेज तेरा चहु ओर छा रहा है

भारत भूमि आदि काल से महापुरुषों की जन्म भूमि रही है। महापुरुषों की गौरवशाली परम्परा ने ही भारत के अतीत की रक्षा और नव निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया है। जब पराधीन भारत माता राजनैतिक सामाजिक धार्मिक रूढ़ि बन्धनों में आबद्ध हो करुणा पूर्ण नेत्रों से अपने समुद्धारक को खोज रही थी उस समय टंकारा भूमि से अज्ञान, अन्याय, अभाव को नष्ट करने की टंकार करते हुए ऋषि दयानन्द प्रकट हुए। विदेशी दासता और विदेशी सभ्यता के व्यापक और अहर्निश बढ़ते हुए प्रभाव को देख उनकी आत्मा प्रकम्पित हो उठी और वे द्रवित हो गौरवशाली भारत भू के अतीत की रक्षा के लिए चिन्तित हो उठे। गुरु विरजानन्द का सामीप्य उनकी भावनाओं के लिए वरदान सिद्ध हुआ और उनसे आशीर्वाद प्राप्त कर वे कर्मक्षेत्र मे उतर पड़े। यदि वे चाहते तो अपने मोक्ष सुख के लिए हिमालय की कन्दराओं की ओर कदम बढ़ा सकते थे पर उन्होंने निश्चय किया कि भारत माता की स्वाधीनता वेद माता के उद्धार तथा भारतीय संस्कृति के संरक्षण में ही मुझे मोक्ष सुख की अनुभूति होगी।

कर्म क्षेत्र में पदार्पण करने के बाद से जीवन के अन्तिम क्षण तक उन्होंने अपने ध्येय की प्राप्ति के लिए जो महान् साधना की वह हमारे गौरव का स्वर्णिम पृष्ठ है।

भारत ही नहीं विश्व के समस्त मानवों और प्राणियों के समुद्धार की चिन्ता ही उनकी भक्ति और सफलता थी। आर्यसमाज के नियमों में 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है' लिखकर उन्होंने अपने जिस विश्व व्यापी दृष्टिकोण की स्थापना की उससे संसार आश्चर्य चकित रह गया। गुजरात का सन्यासी गुजरात की चिन्ता करता, भारत के नेता के रूप में वह भारत के उपकार की चिन्ता करता और अपने अनुयायियों को उसके लिए प्रयत्न करने का उपदेश देता, परन्तु नहीं, ऋषि दयानन्द विश्वात्मा थे अपने को 'यत्र विश्व भवत्येकनीडम्' का आदर्श बना चुके थे और इसलिए उन्होंने संसार का उपकार करना अपने मिशन का उद्देश्य घोषित किया।

भारत पर विदेशी शासन के विरुद्ध उनका आन्दोलन 'विदेशी राज्य चाहे कितना ही अच्छा हो पर स्वदेशी राज्य से कभी अच्छा नहीं हो सकता।' इस सूत्र से आरम्भ हुआ और उनके अनुयायियो ने स्वाधीनता आन्दोलन में सम्मिलित होकर उसे सफल बनाया। राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के शब्दो मे 'गांधी जी व हम लोगों ने ऋषि दयानन्द के सूत्रों की व्याख्या की जो राष्ट्र को आजाद कर गया है।'

सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत बन ऋषि ने अछूत समस्या, विधवा विवाह, बाल विवाह, और अशिक्षा के प्रश्नों का समाधान किया।

धार्मिक क्षेत्र में पाखण्ड और पोप लीला का भण्डाफोड़ कर ईश्वर के नाम पर चल रहे अनाचार को समाप्त कराया और शुद्ध आस्तिकता की स्थापना का प्रयत्न किया।

स्वदेश, स्वभाषा, स्वसंस्कृति के गौरव की भावना को उत्पन्न करने में ऋषि दयानन्द का योग दान सर्वाधिक रहा। आज देश में इनके सबध में जो राष्ट्रीय दृष्टिकोण है उस सबके मूल में ऋषि की प्रेरणा व्याप्त है।

ऋषि के कार्यों और उनकी सफलताओं का संक्षिप्तोल्लेख करते हुए हमें गर्व और आत्म प्रशंसा में निमग्न नहीं हो जाना चाहिए और ऋषि निर्वाण के ७५ वर्ष बाद हमें गम्भीरता पूर्वक सोचना चाहिए कि ऋषि के दायित्वों को पूर्ण करने मे हम कहाँ तक प्रयत्नशील हैं, हममे क्या कमियाँ हैं, और हमारी मंजिल अभी कितनी दूर है।

ऋषि निर्वाण की स्मृति हमें अपने कर्तव्यों की याद दिलाने आई है। हमारे आचार्य का सन्देश महान् है मार्ग दुर्गम है और साधना की अपेक्षा रखता है। ऋषि निर्वाण के अवसर पर हमे प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि हम महान् गुरु के महान सन्देश पर आचरण करेंगे।

ऋषि का सन्देश विश्व के कोने कोने में गूंज उठे, इसके लिए प्रत्येक आर्य को साधना द्वारा तप्त कुन्दन बनाना होगा। क्या हमारे जीवन उस महान् लक्ष्य की ओर बढ़ने में समर्थ हैं, यही प्रश्न है जिसके उत्तर में ऋषि का गौरव और हमारा भविष्य निहित है।

हमने दयानन्द के वीर सैनिक बनने की प्रतिज्ञा बार बार दोहराई है पर केवल प्रतिज्ञा दोहराने से ही वह पूर्ण नहीं हो जाती, अत. हमें उसके लिए साधना भी करनी होगी। जीवन में उसके अनुरूप त्याग करना होगा। जो आर्य इस ओर दृढ़ प्रतिज्ञ हैं और जीवन मे प्रतिज्ञा पूर्ति के लिए सक्रिय हैं वे धन्य हैं और हमारे गौरव हैं। हम सभी ऋषि निर्वाण से प्रेरणा लेकर अपने को आदर्श बनायें तभी ऋषि-रथ प्रगति कर सकेगा।

आज पुनः इस बात की गम्भीरता को स्वीकार किया जाने लगा है कि भारत के अभ्युत्थान और विश्व के नेतृत्व के लिए ऋषि दयानंद के संदेश और आर्य समाज की अत्यधिक आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति आर्य जन ही कर सकते हैं और तब हम कवि के शब्दो मे 'ऋषिराज तेज तेरा चहु ओर छा रहा है' गाकर ऋषि को गौरवान्वित करते हुए स्वयं भी महान् गौरव के अधिकारी बनेंगे।

ऋषि-सन्देश

(श्री पं० हरिशङ्कर शर्म्मा)

भारतीय भावना के सुन्दर शरीर पर,
पश्चिम की सभ्यता का ठप्पा ठुकने न दो।
कर्म्म वीरता के सच्चे सेवक सिपाही बनो,
धर्म्म धीरता की ध्रुवधारा रुकने न दो।
तेज बल धारो, वैरियों को ललकारो कभी,
हिम्मत न हारो, शक्ति कोष चुकने न दो।
डट जाओ, कट जाओ, पैर पीछे न हटाओ,
वैदिक किलों का प्यारा झण्डा झुकने न दो।

जयन्ती के लिए आपका कर्तव्य

आर्यमित्र हीरक जयन्ती, अभिनन्दन व स्मारक शिलान्यास समारोह सम्बन्धी योजना हल्द्वानी की अन्तरग मे अन्तिम रूप धारण कर चुकी है और हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आर्य बन्धुओं के असीम उत्साह के कारण योजना अवश्य पूरी होगी। योजना की व्यापकता और महत्ता को दृष्टि मे रखते हुए एक लाख रुपये का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। अन्तरग में उपस्थित भाइयों का हृदय चाहता था कि जयन्ती मधुरा शताब्दी के अनुरूप ही होवे। सम्पूर्ण आर्य जगत् इस अव-

[शेष अगले पृष्ठ पर]

[पिछले पृष्ठ का शेष]
सर पर एकत्र हो एक विशाल आर्य मेला लग जाय। गुरुकुल की पवित्र तपोभूमि ६० वर्षीय आर्यमित्र और वयोवृद्ध आर्य नेताओं के स्वागत के लिए आपको निमन्त्रित करती है। इसी अवसर पर गुरुधाम के शिलान्यास का समारोह भी मथुरा मे सम्पन्न होगा। कौन आर्य है जो गुरु विरजानन्द को श्रद्धांजलि न भेंट करेगा। इस सम्पूर्ण योजना के आकर्षण को देख और समझ कर प्रत्येक आर्य और आर्य समाज को अपने कर्तव्य का निर्णय करना चाहिए। आर्यसमाज हल्द्वानी (नैनीताल) ने ५०१) की भेंट देकर इस योजना यज्ञ की आहुति आरम्भ कर दी है। हिमालय से गंगा बह चली है आप भी अपने स्थानों से इस विशाल योजना गंगा में अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करना आरम्भ कीजिए। आर्य अपना प्रण पूर्ण करते हैं और सफल होते हैं। उत्तर प्रदेश के आर्य प्रतिनिधि भाइयों ने प्रतिज्ञा ली है। उसकी पूर्ति में समस्त आर्यजगत् का सहयोग प्रार्थनीय है। जयन्ती की सफल परिणति आर्य समाज की शक्ति को दृढ़ करेगी, कार्यक्रम को आगे बढ़ायेगी और कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के सन्देश के लिए मार्ग प्रशस्त करेगी। आवश्यकता है उत्साह के साथ योजना की सफलता के लिए जुट जाने की। प्रभु हम सबको शक्ति दें जिससे यह महान् कार्य पूर्ण हो सके।

स्वर्गीय भाई विजयशंकर जी

आर्य जगत् मे यह समाचार बड़े शोक और दुख के साथ सुना जायगा कि बम्बई के प्रसिद्ध आर्य नेता कर्मवीर श्री पं० विजयशंकर जी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई, अन्तरंग सदस्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, बम्बई मे आर्य समाज की गतिविधियों के प्राण) का स्वर्गवास २३ अक्टूबर को हृदयगति रुक जाने से बम्बई में हो गया।

भाई विजयशंकर जी की आर्य समाज सम्बन्धी सेवायें एक क्षेत्र या काल मे सम्बन्धित नहीं है। उनका क्षेत्र बम्बई से बाहर भी व्याप्त था। वे आर्य समाज के प्रत्येक कार्यक्रम को चाहे वह हैदराबाद का सत्याग्रह हो या पंजाब का हिन्दी सत्याग्रह या अन्य कोई ईसाई निरोध, गो-रक्षा विषयक कार्य, सभी कार्यों मे सदैव अग्रणी सहयोगी रहे। आर्य समाज के गौरव की रक्षा में वे सूक्ष्म विवेचक थे। आर्य समाज के इतिहास को वे विशुद्ध रूप में प्रस्तुत करने के प्रबल पोषक थे और इस सम्बन्ध में उन्होंने जून ५८ में सार्वदेशिक सभा के अधिवेशन मे प्रस्ताव भी पारित कराया था।

उनके निधन से आर्य जगत् को विशेष क्षति पहुंची है, विशेष कर बम्बई जैसे शिक्षित प्रदेश में आर्य सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार करने वाला एक महान कर्मठ हमसे जुदा हो गया।

मित्र परिवार की ओर से हम आर्य नेता के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करते है। प्रभु दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें। पारिवारिकों के प्रति सहानुभूति और समवेदना प्रकट करते हुए प्रभु से प्रार्थना है कि वे हम सबको शक्ति दें कि उनके छोड़े हुए कार्य को पूर्ण कर सकें।

श्री जगजीवनराम की चिन्ता

हैदराबाद में आन्ध्र प्रदेश के हरिजन कार्यकर्ताओं के प्रतिनिधि सम्मेलन मे भाषण करते हुए भारत सरकार के मन्त्री श्री जगजीवनराम ने हरिजनो के सामूहिक रूप से ईसाई बनाये जाने के कार्य पर गम्भीर चिन्ता व्यक्त की है। अंग्रेजों के समय इस प्रकार का कार्य एक राजनैतिक और सांस्कृतिक दुरभि सन्धि का कार्य था पर आज इस प्रकार का कार्य एक अपराध माना जाना चाहिये। कोई व्यक्ति विचारपूर्वक धर्म परिवर्तन करे इसमें हमें और जगजीवन रामजी को कोई आपत्ति नहीं परन्तु सामूहिक रूप से भेड़ बकरियों की तरह हांककर धर्म परिवर्तन करना कराना दोनों अनैतिक कार्य हैं।

हम माननीय मन्त्री महोदय की चिन्ता का अनुभव करते है और उनकी भावनाओं का आदर और समर्थन करते हुए नम्रनिवेदन करना चाहते हैं कि धर्म परिवर्तन की दिशा मे आज स्वतन्त्रभारत में जो कुछ भी हो रहा है उसका एकमात्र कारण भारत सरकार की धर्मनिरपेक्ष नीति की गलत व्याख्या है। स्वयं भारत सरकार के मन्त्री जब इस व्याख्या में एक मत नहीं हैं तब जो इससे लाभ उठा रहे हैं उन्हें कौन और कैसे रोक सकता है। एक बार संसद में प्रस्ताव आया था कि धर्म परिवर्तन सम्बन्धी कानूनी नियम हों और परिवर्तन से १५ दिन पूर्व मजिस्ट्रेट को प्रार्थना पत्र देना अनिवार्य हो। इस छोटी सी मांग मे भी उदार सरकार ने संकीर्णता के कीटाणु ढूंढ लिए और नियम नहीं बनाये। नियोगी रिपोर्ट और श्री जगजीवनराम जी के वक्तव्य से आर्य समाज के ईसाई प्रचार निरोध आंदोलन की वास्तविकता, उपयोगिता और राष्ट्रीयता स्वत: सिद्ध है।

माननीय मन्त्री महोदय इस दिशा में जो भी प्रयत्न करें आर्य समाज उसका पूर्ण और प्रबल समर्थन करेगा।

श्रीमद्दयानन्द श्रद्धाञ्जलिः

(कविः विश्वमित्रः)

यथैव 'मित्रो' भुवनस्य चक्षुः स्वतेजसा दर्शयते हि।
तथा वेदेन तथा महर्षिस्तपस्वी दयानन्द यतिः सुधर्मम्।

× × × × ×

नानाज्ञानेन विस्मृत्य स्वकीयं तु जना इह।
स्मृता वै "हिन्दव" इति संज्ञा तेषां शुभां ददौ॥
वेद शास्त्रौ सदाहृत्य स्वार्यं इत्यार्य केसरी।
उत्तिष्ठतेत्यगर्जीच्च यूयं नृहरयः स्वयम्॥

× × × ×

विहाय विपुलं वित्तं, पैतृकं विविधं ययौ।
सत्यं मृगयमाणोऽसौ दर्शनार्थं विभोर्वनम्॥
समर्पयन् स्वकीयन्तु चायुर्विश्वोपकारके।
वेद प्रचार कार्येषु त्यागादर्शं न्यदर्शयत्॥

श्री पं० शिवदयालु जी से

२६ अक्टूबर के आर्यमित्र के पृष्ठ ११ पर श्री प० शिवदयालु जी का 'मनसा परिक्रमा' के सम्बन्ध में एक छोटा सा लेख छपा है उसमें महात्मा बुद्ध के किसी उपदेश की ओर संकेत है 'मुझे यह संकेत प्रिय और रोचक प्रतीत हुआ। कृपा करके श्री शिवदयालु जी महात्मा बुद्ध के समय का या उपदेशों का वह प्रकरण मूल सहित विस्तार से लिखें कि किस पुस्तक में किस स्थल पर क्या क्या कहा है। मैं कृतज्ञ होऊगा। मैं बहुत दिनों से इस प्रकार के प्रमाण की तलाश में हूं। अन्य सज्जनों से भी यही प्रार्थना है।

—गङ्गाप्रसाद उपाध्याय

आ.स. नेपाल राज्य का पत्र

शताब्दियों से सनातनी ब्राह्मण पोपशाही से पिस रही नेपाल की जनता को उठाने का प्रयास हुआ। कुछ सफलता भी मिली जिससे आज आर्य समाज की पुनःस्थापना हो पाई। पहले राणाशाही के राजगुरु पोपों ने समाज के प्रथम प्रचारक श्री माधवराव जोशी को बड़ी यातना दी थी उसके बाद उनके पुत्र श्री शुक्रराज शास्त्री को गीता का व्याख्यान करने और आर्यसमाजी होने के कारण फाँसी दी गई। आज प्रजातन्त्र के सूत्रपात होते ही वहां बचे खुचे राणाओं की सहायता पाकर धर्म स्वतन्त्रता के नाम पर ईसाई मिशनरियां नेपाली जनता की गरीबी, अशिक्षा से लाभ उठाकर ईसाइयत का प्रचार करने लगी हैं इसलिए हमने फिर से आर्यसमाज की स्थापना कर ली। सरकार और ब्राह्मण पोप लोग तो इससे सन्तुष्ट नहीं किंतु वे सतर्क है। हमारे किसी कार्य मे सहयोग देने के बजाय बदनाम करने और धमकी दिखाने में व्यस्त हैं। इसलिए हम भारत के आर्य महानुभावों से बड़े आशान्वित हैं। —हरिहरप्रसाद
मन्त्री, आ०स० नेपाल राज्य, काठमांडू

श्री पं० विजयशङ्कर जी का निधन

आर्य जगत् में यह समाचार बड़े शोक के साथ सुना जायगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के अन्तरङ्ग सदस्य और बम्बई प्रान्त मे आर्य समाज की गतिविधियों के प्राण श्री पं० विजय शङ्कर जी का गत बृहस्पतिवार दिनांक २३.१०.५८ को अचानक हृदय की गति रुक जाने से प्राणान्त हो गया।

उनकी सेवायें बम्बई राज्य में चिरस्मरणीय रहेंगी। वे आर्य समाज के प्रभावशाली कार्यकर्ता और कर्मठ आर्य पुरुष थे। उनकी अन्य सेवाओं के साथ साथ हैदराबाद आर्य सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन के समय की विशेष सेवायें भुलाई नहीं जा सकती।

इनके निधन से आर्य जगत् को विशेष क्षति पहुंची है। हम समस्त आर्य जगत की ओर से ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं उनके वियोग में सन्तप्त परिवार एवं बम्बई तथा बाहर के उनके सहयोगियों को धैर्य प्रदान करे। —प्रकाशवीर शास्त्री
उप मन्त्री सार्वदेशिक सभा

दयानन्द और भारत

(प्रो० रमेशचन्द्र अवस्थी एम० ए०, डा० ए० वी० कालेज लखनऊ)

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

★ आज अपने देश में हम जो कुछ भी सामाजिक या राजनैतिक प्रगति ★ देखते हैं उसमे स्वामी दयानन्द के प्रयास का नि स न्देह हम बुनियादी ★ पत्थर कह सकते है। भारतोद्धार के निमित्त ऋषि द्वारा अपनाये गये ★ सामाजिक और राजनतिक दो पहलुओ म से प्रथम तो पूर्ण हुआ पर ★ राजनतिक पहलू का कार्य अब भावी सन्तति के लिये सुरक्षित हो गया ★ है। इस लख से प्रेरणा प्राप्त करके क्या आज के नवयुवक इस दिशा म ★ कुछ सक्रिय कार्य कर सकेंगे ? ★

—स- सम्पादक ★

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

महर्षि दयानन्द सरस्वती की गणना विश्व के उन ऐतिहासिक महापुरुषों मे से है जिन्होंने समय एव देश के गलत दिशा की ओर बहते हुए प्रवाह को दूसरी ओर बदल दिया।

उन्नीसवीं शताब्दि के अर्धांश तक भारत में ब्रिटिश साम्राज्य ने अपने रक्त रंजित पजे का पूर्ण रूप से जमा लिया था तथा धर्म प्रचारको के रूप में सारे देश में ईसाई मिशनरी फैल गये थे। इन प्रचारको का केवल एक उद्देश्य था। वह था यहा की प्राचीन आध्यात्मिकता को नष्ट करके गिरते हुए समाज की ओर उगली उठाकर क्रिश्चियन धर्म का प्रचार। उस समय की हमारी रूढगत अवैदिक भावनाय, धार्मिक सकीर्णताए तथा अकेन्द्रित एव असगठित वैमनस्य पूर्ण भारतीय नरेशों की शक्तियाँ इस नवीन उदय होने वाले ईसाई धर्म के लिए खाद का काय कर रही थी। एक फ्रेंच ईसाई मिशनरी के अभिलेख द्वारा इस विषय पर बड़ा ही अच्छा प्रकाश पडता है और इसकी पुष्टि होती है। स्वर्गीय एब्बे जी० ए० डयू बोस ने अपनी फ्रेंच भाषा मे लिखित पुस्तक Hindu Manners, Customs and Ceremonies मे जो कुछ लिखा उसका हिन्दी रूपान्तर निम्न प्रकार से है—

(हम सर्व शक्तिमान प्रभु से प्रार्थना करते है कि वह कृपा करके उस प्रदेश को जो कि गङ्गा जल से सिंचित होता है अपने सत्य के प्रकाश से जग मगा दे। नि स देह अभी वह दिन बहुत दूर है जबकि कुण्ठित एव रूढिग्रस्त हिन्दू सत्य ग्रहण के लिए नेत्र खोलेगा और अन्ध नाधवित कुमान्यताओं को फेंक कर देगा। हम निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि एक दिन वह भी आयेगा जब कि भारत के मन्दिरों के ऊपर क्रास का चिन्ह अंकित होगा जैसा कि कुछ विशेष स्थानों पर अब है।)

[illegible] पहिले के लिखे [illegible] वर्ष था जिस वर्ष दयानन्द जी सरस्वती का जन्म हुआ प्रभु ने इस ईसाई साधु की प्रार्थना को सुन लिया और गङ्गा के पवित्र जल से सिंचित इस भारत भूमि म आगे चल कर सत्य का प्रकाश 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वारा फैल गया। शताब्दियों से अन्धकार पूर्ण रीति रिवाजो से मसित कुण्ठित हिन्दू जाति विद्रोह कर उठा और जहा इस मिशनरी ने क्रास चिन्ह देखने की लालसा प्रकट की थी वहाँ पर 'ओ३म्' अंकित आर्य ध्वजा फहरा उठी। प्रभु की गति पर किसका नियन्त्रण है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती निस्सदेह एक गति-शील शक्ति (Dynamic force) थे इतिहास का गम्भीर [illegible] अध्ययन हम बताता है कि जब इस शक्ति का उदय हुआ उस समय भारतीय मस्तिष्क अन्धकाराच्छन्न एव भ्रमित था, समाज के सगठन म गहरी दरार थी महर्षि ने जहाँ हम प्राचीन गौरव से अवगत कराया वहीं भविष्य के लिए राज्य क्रान्ति असफल हुई थी और अगरेज मजबूती से जम गये थे। अधिकाश देश वासी इस्लामी तथा छोटे छोटे देशी रजवाड़ो के निष्ठुर एव निष्प्राण शासन से मुक्ति पाने के कारण इस नवीन आंग्ल शासन को वरदान मान बैठे थे। महर्षि को यह भी नव जन्म भ्रम दूर करना था, अतएव उन्होने स्वदेशी राज्य के प्रति सकेत किया, परन्तु राजनैतिक क्रान्ति पहिले सामाजिक क्रान्ति चाहती थी इसी उद्देश्य और मन्तव्य को अग्रसर कर महर्षि ने पहिले सामाजिक क्रान्ति का जयघोष किया। विरोध के सकीर्ण मार्ग के बीच से निकलने का प्रयत्न किया। ब्रिटिश शासन भी समझ गया कि आर्य समाज के धार्मिक सगठन के पीछे वह आग भी सुलग रही है जो उस जला सकती है। अतएव विदेशी शासन की आर्य समाज के प्रति वक्र दृष्टि रहे समाज की कार्य विधियों का सशंकित रूप से देखा जाने लगा।

महर्षि ने सामाजिक क्रान्ति का स देश सुना कर उसे कार्य रूप म परिणित करके राजनैतिक सगठन का कार्य क्रम निर्धारित किया। उनकी दृष्टि राजस्थान के नरेशो की ओर गई तथा उनके सगठन का प्रयत्न किया, परन्तु खेद वह सब निष्प्राण थे और विलासता मे डूबे अपने नैतिक स्तर को कब का खो चुके थे। [illegible] जगाने का प्रयत्न महर्षि कर रहे थे कि उनकी इह लौकिक लीला समाप्त हो गई, उनका सकल्पित कार्य अधूरा रह गया और राजनैतिक सगठन अपना रङ्ग न दिखा सका। इसलिए इस अपूर्ण कार्य की साध लिए हुए अन्तिम समय म ऋषिवर के मुख से यह शब्द निकला 'प्रभु ! तेरी इच्छा पूर्ण हो'।

भारत के उद्धार के लिए [illegible] पहलुओ में सामाजिक [illegible] पूर्ण हुए [illegible] शूद्रों, मोह तथा अस्पृश्यता एव रूढि ग्रस्त विचारो की स्थिति बदल गई परन्तु राजनैतिक पहलू का कार्य भावी सन्तति के लिए एव जनता को तयार करने के लिए महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के आठवे समुल्लास म निम्न पंक्तिया लिख दी "आर्यावर्त' मे भी आर्यों का अखण्ड स्वतन्त्र-स्वाधीन निर्भय राज्य इस समय नहीं है जो कुछ भी है। वह भी विदेशियो के पदा क्रान्त हो रहा है। दुर्दिन जब आता है तब देश वासियो को अनेको प्रकार के दुःख सहना पडता है। कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि और उत्तम होता है, मत मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराय का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं।"

ऋषिवर की उपरोक्त पंक्तियाँ कितनी मार्मिक वेदना से पूर्ण हैं, देश प्रेम की कितनी प्रबल अग्नि उनके अन्दर सुलग रही थी, भारत को अखण्ड स्वतन्त्र राजनैतिक शक्ति के अन्तर्गत वह बंधा हुआ देखना चाहते थ। अधूरा कार्य आगे चलकर महात्मा गाधी के सफल नेतृत्व म पूर्ण हुआ। उनकी इच्छानुसार भारत स्वतन्त्र हुआ परन्तु कुछ विकल्पों के साथ इस प्रकार ऋषिवर के सामाजिक एव राजनैतिक उद्देश्य बहुत कुछ पूर्ण हुए।

आज हमारे देश की जो कुछ रूप रेखा है, जो कुछ सामाजिक और राजनैतिक चेतना है, उसके निर्माण में महर्षि का योगदान पूर्ण रूप से है। अत आज के नव भारत के निर्माण का उन्हे हम बुनियादी पत्थर कह सकते हैं।

महर्षि की कल्पनाओं में से पूर्ण होने म यदि किसी की कमी रह गई है तो वह है हमारे अन्दर नैतिकता की कमी जिसके कारण ही आज समाज मे अशान्ति है। इस दिशा की ओर हमें पूर्ण शक्ति के साथ प्रयास करना है। खेद है कि आज आर्य समाज इस कमी को पूर्ण करने में उतनी लगन और तत्परता नहीं दिखा रही है जितनी अपेक्षित है।

महर्षि दयानन्द के स्वप्नों का आदर्श राज्य

[श्री सतीश कुमार भारतीय, अलीगढ़]

★

ऋषि दयानन्द मानव समाज के लिए जिस आदर्श राज्य व्यवस्था की कल्पना करते थे उसका संक्षिप्त रूप लेखक ने इस लेख में प्रस्तुत किया है। ऋषि के राष्ट्रवादी और राजनीतिज्ञ स्वरूप की व्याख्या सदव की आना चाहिए। —सम्पादक

महर्षि दयानन्द की सर्वतोमुखी प्रतिमा क आगे सबको नत हाना पड़ता है। वे हमारे सामने नीति शास्त्री, सुधारक, दार्शनिक, वेदज्ञ, एव प्रमुभक्त आदि अनेक रूपों मे आते हैं। यह ही नहीं वे हम महान् शिक्षा शास्त्री, क्रान्तिकारी, लेखक, कवि, मनीषी, राजनीतिज्ञ एव अर्थ शास्त्री के रूप म भी दृष्टिगोचर होते हैं। इनका यह विविध रूप ससार को आश्चय म डाल देता है। उन्होंने जीवन के प्रत्येक भाग पर प्रकाश डाला है। उन्होंने ऐसे ही राज्य की कल्पना की है जिसमें प्रजा सुखी, सदाचारी धनी एव शिक्षित हो। उन्होंने लिखा है--

राष्ट्रमेव विश्याहन्ति तस्माद्राष्ट्री विशघातुक। विशमेव राष्ट्रायाद्या करोति तस्माद्रा राष्ट्रा विशमत्ति न पुष्ट पशुमन्यत् इति। शतपथ का १३। प्र० २। ब्रा० ३। क० ७।८॥

अर्थात् जो प्रजा से स्वतन्त्र स्वाधीन राजवर्ग रहे तो (राष्ट्रमेव विश्याहन्ति) वह राज्य म प्रवेश करके प्रजा का नाश किया करें, इसलिए अकेला राजा स्वाधीन होकर (राष्ट्राविशघातुक) प्रजा का नाशक हाता है। जैसे सिंह वा मांसाहारी हृष्ट पुष्ट पशु का मार कर खा लेते हैं, वैसे (राष्ट्रीविशमत्ति) स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है।

उनके अनुसार राष्ट्र म विद्वान् एवं धार्मिक पुरुषों की तीन सभायें धर्मसभा, विद्यासभा, राजसभा हो। इनका सभापति बहुत ही विद्वान्, तेजस्वी, पराक्रमी, योग्य एव कुशल राजनीतिज्ञ हो। इन्हीं तीन सभाओं क सम्मति से राज नियम (कानून) बन जो प्रजा के लिये हितकर एव धर्मयुक्त हो। इन सभाओं के सदस्य कम से कम ३ और अधिक से अधिक १० हो। यह वानप्रस्थी और गृहस्थ हों इनका पद वतनिक हो। राज सचालन के लिए एक महाराज सभा (सार्वभौमिक चक्रवर्ती महाराज सभा) हो। जिसमें राजा, मुख्य सेनापति, मुख्य राज्याधिकारी, मुख्य न्यायाधीश और उक्त सभापति हो। वास्तव म सभापति ही सर्वेसर्वा होता है।

मन्त्रिमण्डल के निर्माण का अधिकार राजा का हो परन्तु सभापति का परामर्श आवश्यक है। प्रत्येक मन्त्री स्वदेश मे उत्पन्न वेदादि शास्त्रों का ज्ञाता, शूरवीर एव कुलीन हो। मन्त्रियों की सख्या ७ से ३० तक हो। राजा को इन मन्त्रियों का परामर्श, सधि, विग्रह, स्थान, समुदाय, गुप्त रक्षा, विशेष प्रश्नों के विषय म लेना अनिवार्य है।

इसके अतिरिक्त राजसत्ता को इस प्रकार बाँटा जाय कि ग्राम इसकी छोटी इकाई हो। उसम एक प्रधान पुरुष हो तथा दश ग्रामों की दूसरी इकाई हो, उसम दूसरा प्रधान पुरुष हो, इसी प्रकार बीस तीस सौ, सहस्र ग्रामों के समुदाय के क्षेत्र बनाकर क्रमश तीसरे, चौथे, पाचवे, छठे, प्रधान पुरुष हों। प्रधान पुरुष का यह कर्तव्य है कि वह नित्य अपने से उच्चतर प्रधान पुरुष का राजकीय सूचनायें दे। इस प्रकार सार्वभौमिक चक्रवर्ती सभा में देश का सम्पूर्ण विवरण पहुचे। वर्तमान समय मे यही वर्गीकरण दूसरे रूप म दृष्टिगोचर होता है।

महर्षि द्वारा राज्य सत्ता के वर्गीकरण एव कार्यकारिणी के ढाचे से प्रतीत होता है कि उनका इप्सित राज्य अरस्तू के राजतन्त्र, कुलीनतन्त्र और लोकतन्त्र का अद्भुत सुन्दर समन्वय है।

अब राज शासन किस प्रकार चले इसके लिये वह कहते हैं कि राजा को चाहिये कि वह आप्त पुरुषों द्वारा कर ग्रहण करे। कर, सन्यासियों, ब्रह्मचारियों मुमुक्षुओं और पढ़ो लिखी स्त्रियों से न ले। उस कर का अधिकांश भाग धर्म प्रचार और शिक्षण म लगाये। राष्ट्र का रक्षा के लिए सेना भी रखे और युद्ध करे। सेना का सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्र, व्यूह इत्यादि की शिक्षा देकर कुशल सैनिक बनाया जाय। सेना तीन प्रकार—जल, थल, नभ की हो। यदि युद्ध में राजा जीत जाय तो विजय का १६ वाँ भाग सेना म बाटे और सैनिक अपने प्राप्त धन का १६ वाँ भग राजकीय कोष मे जमा करे। पराजित राजा के राज्य का धर्म युक्त प्रबन्ध करे, उसकी प्रजा का न सताये और उस राजा से मित्रता का व्यवहार करे, उसका अपमान न करे।

'दण्ड धर्म विदुर्बुधा' के अनुसार स्वामी दयानन्द ने भी दण्ड का प्रमुख स्थान रखा है। वह कहते हैं कि दण्ड ही देश मे शान्ति रख सकता है। देश के चोरों, डकैतों, लुटेरों का कड़ा दण्ड दिया जाय। दण्ड में आर्थिक और शारीरिक दोनों प्रकार की व्यवस्था है। जिस इन्द्रिय से अपराधी ने अपराध किया हो, उसी इन्द्रिय को बेकार कर दिया जाय। दण्ड देने का अधिकार मन्त्रियों एव न्यायाधीशों के हाथ में हो। न्यायाधीश का यह कर्तव्य है कि वह दण्ड को जान बूझ कर दे और मनुस्मृति को ही वैधानिक म पदण्ड माने। चारों प्रकार—१ निंदा २ धिक्, ३ आर्थिक, ४ वध का दण्ड दिया जा सकता है।

व्यापार के ऊपर राजा का सरक्षण हो। राजा का कर्तव्य है कि वैश्य की रक्षा करे और उसके माल की रक्षा चोर और लुटेरों से करे। यदि उसका धन लुट जाये तो अपने निजी कोष से दे। व्यापार की उन्नति का ध्यान रखे क्योंकि व्यापार ही देश को समृद्ध बनाता है। व्यापार आन्तर और बाह्य दोनों प्रकार का हो परन्तु बाह्य (विदेशी) व्यापार में विशेष सावधानी बरते।

मार्क्स ने कहा है 'राज्य पृथ्वी पर शासक जातियों का अधिकार है।' शोफर ने कहा है कि 'राज्य पृथ्वी पर ईश्वर की छाया है।' एक अन्य विद्वान् ने लिखा है कि 'राज्य एक निश्चित भू भाग पर जनसख्या का सगठित समुदाय है।' परन्तु महर्षि दयानन्द का कथन है कि 'राज्य पृथ्वी पर जनता के लाभ एव रक्षा का साधन है और ईश्वरीय आज्ञा के अनुकूल है। देखिये—

इमन्देवा असपत्नꣳसुवध्व महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय॥ यजु० अ० ९ म० ४०॥

अर्थात् हे (देवा) विद्वानो राज प्रजाजनो तुम (इमम्) इस प्रकार के पुरुष को (महते क्षत्राय) बड़े चक्रवर्ती राज्य (महते ज्यैष्ठ्याय) सबसे बड़े होने (महते जानराज्याय) बड़े बड़े विद्वानों युत राज्य पालन (इन्द्रस्येन्द्रियाय) परम ऐश्वर्य युक्त राज्य और धन पालने के लिए (असपत्नꣳसुवध्वम्) सम्मति करके सर्वत्र पक्षपात रहित पूर्ण विद्या विनय युक्त सबके मित्र सभापति राजा को सर्वाधीश मानकर सब भूगोल शत्रु रहित करो।

साराश यह कि महर्षि ने जैसे राज्य की कल्पना की है वह व्यवहार युक्त एव बहुत ही सुन्दर कल्पना है। यह कोरी कल्पना ही नहीं वरन् प्राक्रयात्मक भो है। वर्तमान समय में भी हम उसका विकृत रूप देख रहे ह। इसके अतिरिक्त महर्षि ने प्रत्येक सत्ताधारी के लिए सदाचारी होना अनिवार्य कहा है तथा श्री पाल ब्यूरो के अनुसार 'भविष्य उन्हीं राष्ट्रों का है जो सदाचारी हैं।'

काश! महर्षि का स्वप्न पूरा हो गया होता।

आर्यसमाज के पुस्तकालय सुव्यवस्थित बनें

आर्य पुस्तकालयों का संचालन और आर्य पुस्तक वर्गीकरण पद्धति

[श्री विश्वनाथ शास्त्री, एम०ए०, डी० एल० एस० सी० सहायक पुस्तकाध्यक्ष, सागर विश्वविद्यालय]

आर्यसमाज ही एक ऐसी सार्वजनिक सांस्कृतिक सस्था है जिसमे उसकी प्रत्येक इकाई को अपना पुस्तकालय अनिवार्य रूप से रखना पड़ता है और इस कार्य के महत्व को दृष्टि में रखते हुए ही आर्यसमाज के पदाधिकारियों में पुस्तकाध्यक्ष का सम्मानित पद है। ऋषि चाहते थे कि समाज का प्रत्येक सदस्य स्वाध्यायशील हो और ज्ञान की पिपासा को शान्त करे। आर्य पुस्तकालयों की आदर्श व्यवस्था के लिए इस लेख में पुस्तकालय विज्ञान के अधिकारी व्यक्ति के रूप में विद्वान् लेखक महोदय ने जो सुझाव और रूपरेखा प्रस्तुत की है उस पर विचार कर आर्य पुस्तकालयों को तदनुरूप बनाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। —सम्पादक

(गतांक से आगे)

(३१) हिन्दू धर्म।

(३२) रामकृष्ण मिशन,विवेकानंद

(३३) अरविन्द साहित्य।

(३४) हिंदू धर्म के अन्य संप्रदाय ब्रह्म समाज, राधा स्वामी, देवसमाज आदि।

(३५) सिक्ख पंथ।

(३६) बौद्ध, जैन।

(३७) ईसाई।

(३८) मुसलमान।

(३९) अन्य धर्म।

(४०) दर्शन सर्वसाधारण ग्रन्थ।

(४१) भारतीय दर्शन, मूल संस्कृत ग्रन्थ व टीका वैशेषिक, न्याय, सांख्य योग मीमांसा तथा अन्य अर्वाचीन दर्शन ग्रन्थ।

(४२) वेदान्त मूल संस्कृत व टीका

(४३) भारतीय दर्शन हिन्दी में लिखे आधुनिक ग्रन्थ।

(४४) बौद्ध व जैन दर्शन।

(४५) पाश्चात्य व अन्य विदेशी दर्शन।

(४६) तर्क विद्या, हिन्दी में लिखे आधुनिक ग्रन्थ।

(४७)मनो विज्ञान स्मरण शक्ति, मैस्मरेज्म, स्वप्न विज्ञान, परलोक विद्या, भूत प्रेत, शकुन, सामुद्रिक, फलित ज्योतिष।

(४८) नीति शास्त्र, सयम, ब्रह्मचर्य, कुटुम्ब नीति, समाज नीति, कर्त्तव्याकर्त्तव्य, व्यवहार, धैर्य, शिष्टाचार, सत्य, परोपकार, मद्यनिषेध।

(४९) अहिंसा, गांधी साहित्य, विनोबा साहित्य, सर्वोदय साहित्य।

(५०) हिंदी भाषा और साहित्य।

(५१) उपन्यास।

(५२) कथा।

(५३) काव्य।

(५४) नाटक।

(५५) साहित्य निबन्ध,साहित्यिक भाषण आलोचना, एक लेखक की आलोचना, अनेक लेखकों की एक ग्रन्थ में आलोचना।

(५६) सर्म या शास्त्र विभिन्नवाद, उपन्यास, कथा, काव्य, नाटक, निबंध आलोचना का उद्भव व विकास, अलंकार, छन्द।

(५७) हिंदी साहित्य का इतिहास

(५८) हिन्दी भाषा, भाषा विज्ञान मुहावरा, व्याकरण रचना, हिन्दी सीखने को पाठशालाएं।

(५९) उपभाषाएं, बांगरू, ब्रज, कन्नौजी, बुन्देली, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी,बिहारी (भोजपुरी,मैथिली, मागधी) राजस्थानी, मालवी, डिंगल, गढ़वाली, नेपाली, इत्यादि।

(६०) अन्य भाषाएं तथा साहित्य सर्वसाधारण ग्रन्थ।

(६१) संस्कृत साहित्य, काव्य, नाटक, कथा, गद्य आदि।

(६२) संस्कृत भाषा, भाषा विज्ञान व्याकरण, अलकार, छन्द, अनुवाद पुस्तकें, पाठकथाएं।

(६३) पाली, प्राकृत, मागधी, अपभ्रंश।

(६४) गुजराती।

(६५) मराठी।

(६६) बंगला।

(६७) पंजाबी।

(६८) अन्य भारतीय भाषाएं,उर्दू आसामी, उड़िया, दक्षिणी, भाषाएं।

(६९) अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाए।

(७०) कला सर्वसाधारण ग्रन्थ।

(७१) समाज शास्त्र,मानव विज्ञान समाज के रीति रिवाज, वस्त्र भूषा, पर्व, जन्म मरण विवाह आदि की रीतियां।

समाज सेवा, परोपकार संस्थाएं, सेवा समिति, अनाथ, अन्ध बधिर आश्रम, औषधालय, बीमा आदि।

सामाजिक निरीक्षण, सामाजिक सुधार।

(७२) ललित कलाएं तथा मनो रंजन, शिल्प कला मूर्ति कला चित्र-कला, फोटोग्राफी, सगीत, सिनेमा, थियेटर आदि मनोरंजन।

(७३) शिक्षा शास्त्र शिक्षा, शास्त्र शिक्षा,व्यायाम,खेले,योगासन आदि।

(७४) स्त्रियोपयोगी शिक्षा और साहित्य।

(७५) भूगोल, नकशे, एटलस।

(७६) जीवनी संस्मरण।

(७७) इतिहास, संस्कृति, स्थल वर्णन, यात्रा वर्णन।

(७८) राजनीति, नागरिक शास्त्र शासन, विधान, सविधानी।

(७९) अर्थ शास्त्र, वाणिज्य, व्यापार संगठन, बहीखाता, रोजगार।

(८०) विज्ञान सर्वसाधारण ग्रन्थ।

(८१) गणित।

(८२) ज्योतिष, नक्षत्र विद्या।

(८३) पदार्थ विज्ञान।

(८४) रसायन शास्त्र, रसायनिकशिल्प

(८५) भूगर्भ विज्ञान

(८६) जीव विज्ञान—वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान

(८७) आरोग्य शास्त्र, चिकित्सा विज्ञान

(८८) इन्जीनियरिंग

(८९) कृषि

(९०) सर्वसधारण ग्रन्थ

(९१) ग्रन्थ सूचियां

(९२) पुस्तकालय शास्त्र

(९३) शब्दकोष, ज्ञानकोष

(९४) अनेक विषयों पर एक ग्रन्थ मे लिखे निबन्ध, स्मारक ग्रन्थ,जयन्ती ग्रन्थ, भाषण।

(९५) नियत कालिक साहित्य—पत्रिकाएं, वर्षबोध, डायरेक्टरी

(९६) सभाओं के विवरण, नियम आदि, वस्तु प्रदर्शनालय(अजायबघर)

(९७) दैनिक व साप्ताहिक समाचार पत्र, पत्रकारिता

(९८) विशेष सीरीज ग्रन्थ, विशेष समह

(९९) हस्तलिखित ग्रन्थ

जो पुस्तकालय छोटे हों वे सक्षिप्त पद्धति का उपयोग कर सकते हैं और अपने समह को केवल ९ विभागों में ही विभाजित करे। जो पुस्तकालय कुछ बड़े हों वे पूर्ण पद्धति को उपयोग में ला सकते हैं। जो पुस्तकालय पुस्तकों को विषय क्रम से जमाना चाहें वे पुस्तकों के ऊपर और खाना जैसे पहले लिखा जा चुका है वर्ग संख्या लिखा करे और वर्ग के अनुसार ही अलमारियों में रखे।

यह आर्य पद्धति आर्य समाजों, आर्य सस्थाओं, गुरुकुलों, और स्कूलों के लिए एक समान उपयोगी सिद्ध होगी। कालेजों और सार्वजनिक पुस्तकालयों में हिन्दी और संस्कृत के समह का वर्गीकरण करने के लिए भी यह उपयुक्त रहेगी।

पुस्तकालय में संग्रहीत पुस्तकों की जानकारी प्राप्त करने के लिए एक सूची का होना अत्यन्त आवश्यक है। छोटे-छोटे संग्रहालयों में तो प्राप्ति पजिका ही सूची का काम दे सकती है। अथवा प्राप्ति पंजिका के आधार पर पुस्तकों का विषय या वर्ग क्रम से रजिस्टर तैयार किया जा सकता है। इस रजिस्टर में प्रत्येक वर्ग के लिए कुछ पन्ने छोड़ देने पड़ेंगे ताकि भविष्य में आने वाली पुस्तकें इनमें दर्ज हो सके। अथवा सूराख वाले कागजों का रजिस्टर या कापी बनाई जा सकती है। इसमें जब चाहें पन्ने पिरोये जा सकते हैं। इसके ऊपर वर्ग संख्या रहेगी। और नीचे तीन खाने रहेंगे—प्राप्ति संख्या, ग्रन्थकार, शीर्षक यह वर्गीकृत सूची कहलाएगी। इसी प्रकार ग्रन्थकार सूची व शीर्षक सूची भी आकारादि से बनाई जा सकती है। इनका तैयार करना श्रम साध्य है। बड़े-बड़े पुस्तकालयों में ये सूचियां कार्डों पर बनाई जाती हैं।

प्राप्ति पजिका, वितरण पंजिका और सूची-पजिका इन तीन रजिस्टरों को यदि आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्य पुस्तक विक्रेता व पुस्तकालय स्टेशनरी विक्रेता हिन्दी में छपवाकर रखें तो आर्य पुस्तकालयों को बड़ा लाभ होगा।

विश्व का महान ग्रंथ



[श्री विद्याभूषण त्रिवेदी, बी० एस० सी०, अमेठी सुलतानपुर]

विश्व मे उन्नीसवीं शताब्दि की श्रेष्ठतम कृति सत्यार्थ प्रकाश है, यद्यपि विश्व मे प्रत्येक विषय पर उत्कृष्ट ग्रन्थो का सृजन किया जा चुका है, किन्तु सत्यार्थ प्रकाश में जिन मौलिक तथ्यों का निरूपण किया गया है वह अन्यत्र पाना दुर्लभ है। इस ग्रन्थ के द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने विश्व को जो आलोक प्रदान किया है वह लाख प्रयत्न करने पर भी धूमिल नहीं हो सकता।

सर्व प्रथम हमको विचार करना चाहिए कि महर्षि ने इस ग्रन्थ को क्यों लिखा? ग्रन्थ बनाने के मुख्य उद्देश्य को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वयं सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में निम्न शब्दों मे व्यक्त किया है—

"मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान मे असत्य और असत्य के स्थान मे सत्य का प्रकाश किया जाय। किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहलाता है।"

इससे स्पष्ट है कि महर्षि संसार के समक्ष सत्य का स्वरूप इस ग्रन्थ द्वारा रखना चाहते थे। इस ग्रन्थ के सृजन के पूर्व भारत मे नाना प्रकार के आडम्बर फैले हुए थे, अनेक कुकृत्य वेदों के नाम पर किए जाते थे, वेदो के ज्ञान से जनता अपरिचित होने लगी थी, समाज मे अनेक कुरीतियाँ आ गई थीं। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द ने धर्म तथा समाज की परिस्थिति का सच्चा स्वरूप संसार के सम्मुख रक्खा, तथा सत्य मार्ग का प्रदर्शन किया।

यह ग्रन्थ स्वामी जी ने केवल आर्यों अथवा हिन्दुओं के मार्ग प्रदर्शनार्थ ही नहीं लिखा अपितु समस्त मत व सम्प्रदायों के लिए लिखा, स्वामी जी समस्त मानव समाज का कल्याण चाहते थे। उनका उद्देश्य किसी [illegible] न वह कोई नवीन मत ही चलाना चाहते थे। उन्होने स्वयं लिखा है कि "मेरा कोई नवीन कल्पना व मत मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है, किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।"

सत्यार्थप्रकाश मे समुल्लासो का चयन मनोवैज्ञानिक विधि से किया गया है। पूर्वार्ध मे दश समुल्लास मण्डनात्मक है तथा उत्तरार्ध मे चार समुल्लास खण्डनात्मक। मनुष्य की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह अपने दोष देखना नहीं चाहता, हमे उसके दोष दिखाने के निमित्त पहले उसका दृष्टिकोण बदलना होता है। सत्यार्थ प्रकाश मे ऐसा ही किया गया है। पूर्वार्ध मे मण्डनात्मक विषय रख कर मानव मस्तिष्क को विकसित करने का प्रयास किया गया है तथा उत्तरार्ध मे विभिन्न मत मतान्तरो का खण्डन करके उनके दोषों का निरूपण किया गया है।

इस ग्रन्थ मे किसी सम्प्रदाय का पक्षपात नहीं किया गया है। स्वामी जी जन्मना कर्मणा ब्राह्मण थे किन्तु उन्होंने तत्कालीन ब्राह्मणो के दोषो का भली भाँति वर्णन किया और यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि आज के ब्राह्मण अपने उच्चादर्शों से च्युत हो गये है। जब तक ब्राह्मण आदर्श न बनेंगे, धर्म और राष्ट्र की उन्नति न होगी और उन्होंने कर्मणा ब्राह्मण वाद की स्थापना पर बल दिया। वह स्वयं आर्य तथा वैदिक मतावलम्बी थे किन्तु उस समय आर्यों (हिन्दुओं) में जो अनेक दोष आ गये थे, उन्होंने पहले उन्हीं का निवारण किया।

स्वामी जी ने किसी का चित्त दुखाने के लिए खण्डन नहीं किया अपितु वह मत मतान्तरो मे गुण दोष दिखाकर समस्त मानव समाज को सन्मार्ग पर लाना चाहते थे। सत्यार्थप्रकाश के चतुर्दश समुल्लास की अनुभूमिका मे लिखा है कि "यही सज्जनो की रीति है कि अपने व पराये दोषो को दोष और गुणों का गुण जानकर गुणोका ग्रहण और दोषों का त्याग करें, और हठियो का दुराग्रह दूर करें करावें क्योकि पक्षपात से क्या क्या अनर्थ जगत् मे न हुए और न होते हैं। यह उल्लेख इस दुराग्रह ईर्ष्या द्वेष वाद विवाद और विरोध घटाने के लिए किया गया है न कि इनको बढ़ाने के लिए।"

सत्यार्थ प्रकाश की तर्क शैली अकाट्य है। इससे पूर्व के ग्रन्थो में इस प्रकार की तर्क शैली उपलब्ध नहीं होती। यह ग्रन्थ संसार के सभी मुख्य मत मतान्तरो के विषय मे ज्ञान कराता है, इसे एक प्रकार से धार्मिक विश्व कोष कहा जा सकता है।

वास्तव मे सत्यार्थ प्रकाश एक क्रान्तिकारी ग्रन्थ है। इसमे सामाजिक धार्मिक तथा राजनैतिक तीनो क्रान्तियो का समर्थन किया गया है। वास्तव मे उक्त तीनो क्रान्तियो के बिना मानव समाज उन्नति नहीं कर सकता। इस ग्रन्थ के अध्ययन तथा मनन करने वाले व्यक्ति को संसार के पाखंडी ठग नहीं सकते। अपितु इस ग्रन्थ का स्वाध्यायी व्यक्ति प्रत्येक आडम्बर तथा पाखण्ड प्रचारक व्यक्ति का डट-कर लोहा ले सकता है। इस ग्रन्थ में जीवन के प्रत्येक अङ्ग पर प्रकाश डाला गया है।

भारत मे स्वतन्त्रता की ध्वनि सर्व प्रथम सत्यार्थ प्रकाश द्वारा सुनी गई, सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा है कि अच्छे से अच्छे विदेशी राजा की अपेक्षा बुरे से बुरा स्वदेशी राजा अच्छा होता है। सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास से विदित होता है कि महर्षि प्रजातन्त्र के पोषक थे। उन्होंने सर्वोच्च शासक को पूर्ण स्वतन्त्रता नहीं दी है। छठे समुल्लास मे राजनीति की अत्यन्त विशद् व्याख्या की गई है।

समाज सुधार की प्रायः सभी बातों का इस ग्रन्थ मे सन्निवेश है स्त्री शिक्षा, अछूतोद्धार युवावस्था में विवाह आदि सभी विषयों पर इस ग्रन्थ मे प्रकाश डाला गया है। उक्त सभी सुधारों के विषय मे महर्षि दयानन्द ने सर्व प्रथम आवाज उठाई था। यह बात ऐतिहासिक तथ्यो और उल्लेखो से स्वतः सिद्ध है कि स्वामी जी के बाद अभी तक कोई ऐसा सुधारक नहीं हुआ जिसने सत्यार्थ प्रकाश मे वर्णित सुधारों से बढ़कर किसी सुधार को जनता के समक्ष रक्खा हो।

सत्यार्थ प्रकाश ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार मे भी बड़ा योग दिया है। पंजाब मे हिन्दी का जो कुछ प्रचार है वह सत्यार्थ प्रकाश के कारण है। अन्यथा पंजाब मे कोई हिन्दी पढ़ता भी न था।

वास्तव मे सत्यार्थ प्रकाश विश्व का एक महान् ग्रन्थ है। जीवन के समुचित विकास के लिए इस ग्रन्थ का पढ़ना तथा प्रचार करना अत्यन्त आवश्यक है। इसकी विवेचना करने में स्वयं एक बड़ा ग्रन्थ बन सकता है, इसको जितनी बार पढ़ा जावे, उतनी ही ज्ञान मे वृद्धि होती है। यह उन कतिपय ग्रन्थो मे से है जिनका हिन्दी से संस्कृत मे अनुवाद हुआ है। इसके देशी तथा विदेशी कई भाषाओं मे अनुवाद हुए हैं जिससे इस ग्रन्थ की महत्ता तथा लोकप्रियता स्पष्ट है। अतः हम सबको पक्षपात रहित होकर कम से कम एक बार सत्यार्थ प्रकाश अवश्य पढ़ना चाहिए जिससे हमारे मस्तिष्क का विकार दूर हो सके।

★

> ऋषि दयानन्द ने अपनी विचारधारा को सत्यार्थप्रकाश द्वारा संसार के सम्मुख रक्खा, स्वार्थियों के मस्तिष्क भयभीत हो उठे और धर्म की दुहाई देने लगे पर पांच हजार वर्ष से सोई आर्य जाति सत्यार्थप्रकाश की बाल रश्मियों मे जीवनामृत पान कर जाग उठी, ऋषि की वह दिव्य देन हम सदा प्रेरणा और नवालोक प्रदान करती रहेगी। —सम्पादक

कहानी-कुञ्ज

इक्केवाला

[श्री राममिलन द्विवेदी उन्मत्त, ३०९ छावनी बाजार, बहराइच]

गिरे हुए व्यक्तियों को उठाना और निःसहाय व्यक्तियों की सहायता करना, यही सबसे बड़ा धर्म है। इस कहानी की इस प्रेरणा से प्रेरित होकर कितने लोग क्रियात्मक रूप से ऐसा करते हैं, बस यही देखना है। वास्तव में मानवता की इसी कसौटी पर समाज की उन्नति निर्भर है। —स० सम्पादक

उस गन्दे मुहल्ले में एक रुपये महीने की कोठरी लेकर वह रहता था। पास पड़ोस वाले उसे कमलू के नाम से जानते थे। घर में पांच व्यक्तियों का परिवार था। उसके माता पिता और पत्नी व पांच वर्ष का बालक तथा स्वयं। कमलू की अवस्था लगभग ३५ वर्ष की रही होगी, परन्तु देखने में वह अस्सी वर्ष से कम प्रतीत नहीं होता था। धनुषाकार उसका शरीर, चेहरे पर पड़ी हुई झुर्रियां और सिर के बाल सन की तरह सफेद हो चुके थे।

अम्बर से जब अन्तिम तारा बच रहता, तभी वह उठकर घोड़े को दाना खिलाता। स्वयं भी पानी पीकर इक्के में घोड़े को लगाता और बाजार की ओर चल पड़ता। उसके गाँव से नगर तीन मील दूर पड़ता है। सूर्य निकलते निकलते वह स्टेशन पहुंच जाता। किसी-किसी दिन प्रातः काल सात बजे आने वाली गाड़ी पर दो एक सवारी पा जाता और कभी कभी खाली ही बाजार तक आना पड़ता।

आज भी जब वह प्रतिदिन की भांति स्टेशन पहुंचा, गाड़ी प्लेटफार्म छोड़कर जा चुकी थी। गाड़ी से उतरे हुए यात्री अपनी अपनी मंजिल की ओर जा चुके थे। एक भी सवारी न पाकर कमलू का मन रो उठा और खिन्न-मन से घोड़े को ऐड़ लगायी। वह पत्थर की सड़क पर बढ़ चला। परन्तु जैसे जैसे इक्के का पहिया नाचता आ रहा था, उसी तरह उसकी अन्तरात्मा उससे चीख चीखकर कह रही थी—'कमलू! आज तुम्हें अपने माता पिता के लिए दवा ले जाना है। बच्चे के लिए पुस्तकें और परिवार का पेट भरने के लिए अनाज के दाने और बेचारे इस घोड़े के लिए भी तो कुछ लेना ही होगा।' इसी चिन्ता में वह उलझा हुआ था और न जाने कब तक उलझा रहता। अचानक ही किसी की ध्वनि सुनकर चौंक पड़ा कोई कह रहा था 'अबे देखकर इक्का नहीं चलाते हो। ऐसा लगता है, जैसे पहली बार इक्का चला रहा हो। मस्ती छायी है, सारी मस्ती निकाल दूंगा। जैसे यह इसी के बाप दादों ने यह सड़क बनवाई है।' कमलू ने सिर उठा कर देखा स्पार्कगंज के चौराहे पर खड़ा हुआ ड्यूटी वाला पुलिस कह रहा था। बस बेचारे ने इक्का रोकते हुए विनय भरे स्वर में कहा—'सरकार भूल हो गई माफ करना।'

'इसी तरह किसी के सिर पर चढ़ा दो और फिर कहो माफ कर दो। तुम्हीं बताओ कि तुम सबको कहां तक माफ करता फिरूं। जितना ही तुम सबको छोड़ता जा रहा हूं उतनी ही तुम सबकी हरकतें आये दिन बढ़ती जा रही हैं'—उसने कहा।

'सरकार! अब कभी ऐसा न होगा'—कहते कहते कमलू के नेत्रों से आंसू की बूंदें टपक पड़ीं, परन्तु ड्यूटी पर खड़े हुए पुलिस ने कहा—'अबे रहने दे। बकवास बन्द कर अपना नाम पता बता।'

'सरकार' गिड़ गिड़ाकर विनय भरे स्वर में कमलू बोला। सरकार के बच्चे नाम बता। अब तक अनेक लोग उस स्थान पर एकत्रित हो चुके थे। उन इकट्ठा हुए लोगों के मध्य में से कुछ आवाजें सुनाई पड़ीं—छोड़ दो बेचारे को, निधन एव वृद्ध है। साथ ही सीधा साधा व्यक्ति है। इस समय आपदाओं से घिरा प्रतीत होता है। अतएव इससे जो कुछ न हो जाय कम है। फिर इस समय तो इसने कोई अपराध भी नहीं किया है।' खड़े हुए लोगों की बातों के आगे उसे झुकना ही पड़ा, अतएव उसने अपनी झेंप मिटाने के लिए उससे कहा—'अब आगे देखकर इक्का चलाया करना, लापरवाही न करना।'

कमलू सभी को दुआ देता हुआ पुनः इक्का लेकर चल पड़ा। इस बक झक में अधिक समय व्यर्थ जा चुका था। दिन अधिक चढ़ आया था। जिस समय वह बाजार में घण्टाघर के पास पहुंचा भीड़ बाजार में बहुत ही कम हो चली थी। बड़ी देर तक खड़े रहने के पश्चात् उसे तीन सवारी अली नगर की मिली वह बैठा कर चल पड़ा। इक्का आगे बढ़ रहा था, परन्तु उसका मस्तिष्क कुछ देर पहले घटित घटना पर विचार कर था कि आज उसमें इतनी शिथिलता आ गई। ऐसा तो आज तक कभी नहीं हुआ था।

इक्का अलीनगर के चौराहे पर पहुंच चुका था। अतएव इक्का रोक दिया। बैठी हुई सवारियां इक्के से उतर पड़ीं। उतरने वाले व्यक्तियों में से एक ने पाकेट से दो रुपये का नोट निकाल कर कमलू के हाथों में देते हुए कहा—'लो, यह अपना किराया।'

दो रुपये का नोट देखकर कमलू ने कहा—'बाबू जी, दो रुपये के पैसे मेरे पास नहीं हैं। क्योंकि अभी सुबह से कुछ नहीं मिल सका है।'

'पैसे वापस तुमसे कौन मांग रहा है?'

'तो क्या दोनों रुपया आप हमीं को दे रहे हैं?'

'हाँ क्योंकि तुम्हारा किराया है।'

'बाबू जी, एक गरीब, वृद्ध से इस तरह खिलवाड़ क्यों कर रहे हैं?'

'खिलवाड़ नहीं, सच कह रहा हूं' उसने कहा।

'नहीं बाबू जी, कुल नौ आने पैसे हुए। अधिक एक पैसा नहीं लूंगा।'

उन तीनों व्यक्तियों ने बहुत दबाव डाला परन्तु कमलू ने जो एक बार कह दिया था उसी पर अडिग रहा। अन्त में उन व्यक्तियों के हृदय में इसके प्रति विशेष स्नेह उमड़ आया। अतएव तीनों में से एक ने सहज एव मधुर स्वर में कहा—'तुम इतने निधन होते हुए भी रुपये क्यों नहीं लेते?'

'बाबू जी, मैंने आपको इक्के पर बैठाया है। अपना इमान नहीं बेचा है।'

'अच्छा, इक्का खड़ा करके मेरे पास आओ।' कमलू ने इक्के से घोड़े को अलग कर दिया और इक्का पीपल के पेड़ के नीचे खड़ा करके उन लोगों के पीछे चल पड़ा। दस मिनट चलने के पश्चात वे लोग एक दूकान में घुस गए। वह बाहर ही खड़ा रह गया। बड़ी देर तक उसी अवस्था में खड़े रहने के पश्चात् कमलू ने दर्द भरे स्वर में पुकारा—'बाबू जी।'

'क्या है' अन्दर से आवाज आयी।

'पैसे मिल जाता तो अपनी मां के लिए दवा ले जाता।'

'क्या कहा तुम्हारी मां बीमार है?

'मां ही नहीं, बल्कि बीबी और पिता जी भी।'

'किसी डाक्टर को दिखाया नहीं?'

'डा० को दिखाने के लिए पैसे चाहिए, परन्तु मेरे पास इतने पैसे कहां से आते। हाँ, हमारे पड़ोस में एक महोदय रहते हैं, जो यदा कदा आकर देख लेते हैं और अपने पास से दवा नहीं करते। कल उन्होंने देखा था और पुर्जा लिख दिया था उसे ही खरीदना है।'

'चिन्ता न करो, मैं स्वयं तुम्हारे घर वालों को देखने चलता हूं। तुम्हें किसी प्रकार की परेशानी उठाने की आवश्यकता नहीं है। इतना कह कर बैग उसके हाथ में देते हुए कहा—'इसे इक्के पर रखो, अभी आता हूं।'

कमलू ने हाथ बढ़ाकर बैग ले लिया और इक्के के पास चला आया अभी वह इक्का तैयार करके खड़ा ही हुआ था, तभी वह व्यक्ति आकर जो नगर के ख्याति प्राप्त डा० माथुर थे, इक्के पर बैठ गए इक्का बढ़ चला।

आध घण्टे तक चलने के पश्चात् इक्का रुका। डा० माथुर ने इक्के से उतरते हुए कहा—'इतने गन्दे में रहते हो, तभी तो बीमारी नहीं छोड़ती।'

'साहब, इससे अच्छी जगह हम सबके भाग्य में कहाँ लिखी है जो मिल सकती है। अगले जन्म के बारे में नहीं कह सकता।' उसके स्वर में व्यथा भरी हुई थी, परन्तु फिर भी वह एक टक डा० के मुख की ओर देख रहा था।

डा० माथुर ने मरीजों का निरीक्षण करने के पश्चात् कमलू की ओर संकेत करते हुए कहा—'घबड़ाने की कोई आवश्यकता नहीं है। सब ठीक हो जायगा, परन्तु यह स्थान छोड़ना पड़ेगा।

कमलू जैसे चलते चलते अचानक गिर पड़ा हो। उसने गिड़ गिड़ाते हुए कहा—'डा० साहब हम इस स्थान को छोड़कर कहां जांय? कोई अन्य ठिकाना भी तो नहीं है और न मेरे पास पैसा ही है कि किसी दूसरे स्थान पर मकान लेकर रह सकूं?

'खैर परेशान न हो। हाँ तुम्हारा

(शेष पृष्ठ १० पर)

कहानी....

(पृष्ठ ९ का शेष)

लड़का किस दर्जे में पढ़ता है ?'

'अब इस वर्ष हाई स्कूल की परीक्षा में बैठ रहा है।'

'ठीक है चलो, तुम सब हमारे घर रहो। तुम्हारा लड़का पक्कू पढ़ेगा और हमारे साथ रहकर काम सीखेगा। उसके एवं तुम्हारे काम के बदले में मैं तुम्हें वेतन दिया करूंगा बोलो, तुम्हें मन्जूर है।' उसके उत्तर को (जैसा आप उचित समझें) पाकर डा० माथुर ने कहा—'अपने सामान एवं परिवार सहित शाम तक मेरे घर आ जाना और इस समय चल कर हमें भेज आओ। वहाँ तुम्हारे पहुंच जाने पर ही तुम्हारे परिवार की दवा हो सकेगी।' कह कर कोठरी से बाहर निकले और इक्के पर बैठ गये। कमलू उन्हें उनके निवास स्थान तक पहुंचा कर अपने घर वापस लौट आया।

उसी दिन शाम को कमलू अपने परिवार एवं सामान सहित डा० साहब के निवास स्थान पर पहुँच गया। उसे रहन के लिए एक मकान मिल गया। उसके बीमार परिवार की दवा होने लगी। कुछ ही दिनों में परिवार का स्वास्थ्य ठीक हो गया। कमलू डा० साहब के बच्चों की देखभाल करता और बाजार से घर का सामान लाना उसी के उत्तरदायित्व पर निर्भर था। कमलू का पुत्र पक्कू कालेज जाता और वापस आने पर 'डिस्पेंसरी' का कार्य देखता एवं सब सीखता भी जा रहा था।

× × ×

संसार में हर समय परिवर्तन होता ही रहता है। समय भी परिवर्तन शील है। दिन के बाद रात और रात के बाद दिन का आवागमन लगा रहता है। इस प्रकार एक एक वर्ष बीतते जा रहे थे। धीरे धीरे दस वर्ष की लम्बी अवधि समाप्त हो गयी।

आज कमलू का पुत्र जिसे बचपन में वह पक्कू कहकर पुकारता था वही, प्रकाश चन्द्र वर्मा, एम० बी० बी० एस० सिविल सर्जन के पद पर नियुक्त होकर उसी शहर में आया है।

आते ही सर्व प्रथम डा० माथुर के पास आया। भेंट होते ही वह उनके चरणों पर गिर पड़ा। डा० माथुर ने उसे चरणों से उठाकर गले से लगा लिया और गद्गद् स्वर में उन्होंने कहा—'बेटा! आज तुम समाज की दृष्टि में एक उच्च स्थान पर हो। परन्तु तुम कहीं इस उच्च स्थान के वैभव में डूबकर अपने कर्तव्य को न भूल जाना क्योंकि यही तुम्हारे जीवन का विशेष ध्येय है। अतएव उसी पर चलना।'

'नहीं बाबू जी। यह आप क्या कह रहे हैं, सेवा मेरा प्रथम कर्तव्य होगा। गिरे हुए व्यक्तियों को उठाना और निःसहाय व्यक्तियों की सहायता करना यही सबसे बड़ा धर्म है। बस, केवल आपका आशीर्वाद चाहिए।

'मेरी शुभ कामनायें सदा तुम्हारे साथ रहेंगी, परन्तु आशीर्वाद तो तुम्हें अपने पिता से लेना आवश्यक है, क्योंकि यह अधिकार मेरा नहीं बल्कि उन्हीं का है। अतएव अपने पिता का आशीर्वाद लेकर अपने ध्येय में अपने को डूबो दो।'

'ऐसा ही होगा बाबू जी।' कह कर वह कमरे से बाहर चला गया।

शाम को जब कमलू डा० माथुर से मिला तो चेहरे पर प्रसन्नता की रेखायें थी। अचानक ही कमलू बोल पड़ा—'बाबू जी एक साधारण इक्के वाले का पुत्र इतना आगे बढ़ जायगा, स्वप्न में भी आशा नहीं थी।'

'प्रयत्न करने पर सब कुछ हो सकता है—कहकर डा० साहब जोरों से हंस पड़े, साथ ही कमलू भी हंस पड़ा। सारा कमरा हंसी के वातावरण से गूंज उठा। ★

ऋषि दयानन्द के उपकार

(ललिताप्रसाद, डी० ए० वी० कालेज, कानपुर)

ऋषि दयानन्द के निर्वाण दिवस के अवसर पर प्रत्येक आर्य का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वह ऋषि के उपकारों का स्मरण करके उनके प्रति आभार और कृतज्ञता प्रकट करे तथा उनके सपनों को पूर्ण बनाने के लिए उन के बताए हुए वेद मार्ग पर चलकर मानव जाति का कल्याण करे।—स० सम्पादक

संसार में अनेकों सुधारक आये, जिनमें से बहुतों ने अपने को ब्रह्म का अवतार बताया, किसी ने ईश्वर का भेजा हुआ दूत अपने को बताया, किसी ने ईश्वर से साक्षात् बातें करने वाला अपने को सिद्ध करने का यत्न किया, किसी ने ईश्वर से कुश्ती लड़ने वाला कहा, किसी ने अपने को ईश्वर का पुत्र कहा। कोई यह कहता हुआ आया कि मैं आकाशों को पार करके ईश्वर से मिल आया हूं, मेरे साथ फरिश्ते हैं, मैं ईश्वर का प्यारा हूं, यदि मैं न होता तो संसार ही उत्पन्न नहीं होता। कोई अपने को यीशु मसीह बताता हुआ आया। परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इन बातों में से एक भी नहीं की। केवल वेद और ईश्वर के दृढ़ विश्वास पर सारे संसार को हिला दिया। बड़े बड़े वेद निन्दकों के सिर वेदों के सामने झुकवा दिये। घोर नास्तिकों को कट्टर आस्तिक बना दिया। न मौजिजो (चमत्कार) से काम लिया न फरिश्तों से, न तलवार चलाई न छल किया, केवल 'सत्योपदेश' से ही संसार को मोहित कर लिया। आदर्श ब्रह्मचारी बन कर जगत् को ब्रह्मचर्य की शिक्षा दे गये। सत्य के बल से डूबती हुई आर्य जाति की नौका को पार लगा गये। नाना प्रकार के पाखण्डों को हटा कर एक ईश्वर के सामने सब के सिर झुकवा गये। महर्षि ने आर्य जाति पर बड़े बड़े उपकार किये, जो संक्षेप में निम्न लिखित हैं—

१—एक ईश्वरोपासना। एक सन्ध्या।
२—वेदों का प्रचार तथा इसका सर्वोच्च स्थान।
३—स्त्री जाति का सुधार।
४—शुद्धि का द्वार खोल देना।
५—अछूतों का उद्धार।
६—विधवाओं का पुनरुद्धार।
७—संस्कृत विद्या का प्रचार।
८—जातीय प्रेम तथा सहानुभूति।
९—वैदिक संस्कारों की एकता।
१०—स्वदेश प्रेम और भक्ति।
११—बाल विवाह का रोकना।
१२—देश की स्वतन्त्रता की सदिच्छा।
१३—उत्साह, उद्योग और आशा का भाव।
१४—प्राचीन आर्ष ग्रन्थों से प्रेम।
१५—आर्य जाति के सङ्गठन का विचार सब को देना।

'मित्र' के पाठक गण व आर्य भाई उपरोक्त विषयों पर अपने अपने विचार प्रकट करने का प्रयत्न करें जिससे लोगों को 'ऋषिवर' के उपकार भली भाँति ज्ञात हो जावें। वेदों पर लगे हुये कलङ्क को मिटाकर ३० अक्तूबर सन् १८८३ ई० को दीपावली के दिन स्वामी जी परम पिता परमात्मा की गोद में जा विराजे।

साहित्य-समीक्षा

(समालोचनार्थ पुस्तकों की कृपया दो प्रतियां भेजें ।—सम्पादक)

★

गीता उपदेश

लेखक—श्री जगदीशचन्द्र विद्यार्थी विद्यावाचस्पति, प्रकाशक—आर्यकुमार सभा किंग्सवे, दिल्ली पृष्ठ सं० २८, मू० ५० नए पैसे, पुस्तकाकार छपाई सुन्दर

गीता पर सैकड़ों प्रकार की पुस्तकें आज बाजार में उपलब्ध हैं पर इस पुस्तिका की अपनी अलग विशेषता है। सबसे प्रधान बात तो यह है कि इसमें गीता के केवल ७० प्रामाणिक श्लोकों को ही लिया गया है। शेष प्रक्षिप्त श्लोकों को छोड़ दिया गया है।

वर्तमान गीता में ७०० श्लोक हैं पर प्रारम्भ में इसमें केवल ७० श्लोक ही थे, इस बात की पुष्टि इस प्रमाण से होती है कि जावा के निकट वाली द्वीप से एक पुरानी गीता प्राप्त हुई है जिसमें केवल ७० श्लोक हैं। इस सम्बन्ध में और भी प्रमाण उपलब्ध हैं।

इन ७० श्लोकों में वर्णित गीता वास्तव में शुद्ध गीत है जो योगिराज कृष्ण ने अर्जुन के मोह को दूर कर उन्हें युद्ध में प्रवृत्त होने के लिए आज से लगभग ५००० वर्ष पूर्व गाया गया था। गीता का सार उपदेश यही है कि आत्मा अमर है, कर्म करो फल की आकांक्षा मत करो, कायरता का त्याग कर अर्जुन की भांति विजेता बनो। विद्वान् लेखक ने ७० श्लोकों के इन्हीं सिद्धान्तों को यहां सरल हिन्दी भाषा अनुवाद के रूप में सर्व साधारण के सम्मुख प्रस्तुत किया है। निःसन्देह ऐसा करके लेखक ने हिन्दू समाज में फैले एक बहुत बड़े भ्रम और अन्धविश्वास को दूर करने का प्रयास किया है। इसीलिए अखिल भारतीय आर्य विद्या परिषद् अजमेर ने विद्या वाचस्पति परीक्षा के पाठ्यक्रम में अब इसे निर्धारित कर लिया है।

गीता के शुद्ध ज्ञान का घर घर में प्रसार हो, लेखक का प्रयास सफल हो, यही हमारी हार्दिक इच्छा है।

वीर सन्देश, मासिक

(विजयदशमी विशेषांक)

सम्पादक—श्री दरबारीलाल जी, प्रधान आर्यसमाज बहजोई, मुरादाबाद वार्षिक मूल्य ३), इस अङ्क का १), पृष्ठ सं० १८० साइज २०×३० एक पेज। छपाई साफ सुन्दर और रंगीन आर्ट पेपर का तिरंगा आवरण पृष्ठ। कागज सफेद

वीर सन्देश आर्यजगत् में प्रकाशित होने वाले पत्रों में से सबसे नया है जो केवल सात अङ्क प्रकाशित होने के बाद आठवें अङ्क में १०० पृष्ठ के एक विशेषांक के रूप में आर्यजगत् के सम्मुख उपस्थित हुआ है। यह द्योतक है वीर सन्देश की निरन्तर प्रगति का इसकी लोकप्रियता का तथा इसकी आवश्यकता का। प्रस्तुत अङ्क में कुल ५७ रचनाएं हैं जिनमें से कुछ निःसन्देह बहुत प्रेरणाप्रद तथा उपयोगी हैं। आर्यजगत् के अनेकों उद्भट विद्वानों की रचनाएं प्राप्त करने में भी सम्पादक महोदय सफल हो सके हैं। अङ्क के कुछ लेख राष्ट्रीय विचार से ओत प्रोत हैं, कुछ भारतीय संस्कृति के प्रबल प्रचारक हैं, कुछ वीर रस से परिपूर्ण हैं, कुछ समाज सुधार की प्रेरणा देने वाले हैं, कुछ ऐतिहासिक तथा साहित्यिक हैं और कुछ आर्य वीर दल के सम्बन्ध में सुन्दर परिचय प्रस्तुत करने वाले हैं। इस प्रकार इस विशेषांक में विभिन्न विषयों पर चर्चा हो गई है। विजयदशमी सम्बन्धी कुछ विशेष रचनाओं की कमी अवश्य है।

अल्पतम साधन होते हुए भी वीर सन्देश के प्रबन्धकों ने जिस रूप में इस विशेषांक को प्रस्तुत किया है, वह अत्यन्त सराहनीय है साथ ही यह एक साहसिक प्रयास है। नये पौधों के अनेकों नवयुवकों की सहयोग की ओर ध्यान आकृष्ट करने में इस विशेषांक के पर्याप्त पृष्ठ लगे हैं, यह एक शुभ लक्षण है नव साहित्य रचना के मार्ग में। सम्पादक मण्डल ने अङ्क को सुन्दर बनाने का भरपूर प्रयत्न किया है। सफेद कागज, रंगीन छपाई विविध ब्लाक तथा कलात्मक ढङ्ग से पृष्ठों की बनावट द्वारा अङ्क पर्याप्त सुन्दर बन गया है। प्रूफ सम्बन्धी तथा अन्य त्रुटियां भी अवश्य हैं जिनकी चर्चा करना इसलिए हम अच्छा नहीं समझते कि सम्भवतः इस नये पत्र की प्रगति में यह बाधक हो। वैसे प्रयास सुन्दर है और इसका फल भी अच्छा ही होगा। वीर सन्देश परिवार के वे समस्त व्यक्ति धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने अपना समय लगाकर इस विशेषांक को सुन्दर बनाने का यत्न किया है।

—सं० सम्पादक

सभा की सूचनायें

सूचना उपदेश विभाग
मास नवम्बर ५८

१—श्री ओ३म् प्रकाश जी शास्त्री महोपदेशक दि० ८ से ११ तक उत्सव आ० स० देहरादून, दि० १२ से १४ तक उत्सव आ० स० बिहारीपुर बरेली, १५ से १८ तक उत्सव आर्य समाज नगीना बिजनौर, १९ से २३ तक दर्शन पुरवा कानपुर, २४ से २६ तक उत्सव आ० स० टाडा फैजाबाद, २८ नवम्बर से १ दिसम्बर तक उ०आ० स० गाजीपुर।

२—श्री प० रुद्रदत्त जी शास्त्री महोपदेशक दि० ३ से ६ तक उ०आ० स० पूरनपुर पीलीभीत, ८ से ११ तक उ० आ० स० चन्द्र नगर लखनऊ, १५ से १८ तक आ० स० सुल्तानपुर २० से २४ तक उ० आ० स० लखीमपुर।

३—श्री सत्यमित्र जी शास्त्री महोपदेशक दि० ३ से ६ तक आ० स० पूरनपुर पीलीभीत, १४ से १६ तक आ० स० रणवीरपुर उन्नाव २० से २३ तक आ० स० रायबरेली, २७ नवम्बर से ३ दिसम्बर तक आ० स० टाडा फैजाबाद।

४—श्री राजाराम जी सि० शा० ९ से ११ तक आर्य समाज देवबन्द सहारनपुर।

५—श्री रामनारायण जी विद्यार्थी दि० १४ से १८ तक आ० स० टूढावारी गोरखपुर।

६—भद्रपाल जी स० वि० २ से ८ तक आ०स० बदायूं, ९ से १२ तक आ० स० देहरादून।

७—रामचन्द्र जी शर्मा दि० १४ से २३ तक आ० स० दर्शन पुरवा कानपुर, दि० २८ नवम्बर से १ दिसम्बर तक आ० स० गाजीपुर।

८—श्री धर्मदत्त जी आनन्द दि० ५ से ७ तक आ० स० उरई दि० १४ से २६ तक आ०स० प्रतापगढ़, २७ से ३० तक आ० स० सासामऊ कानपुर।

९—श्री गजराजसिंह १५ नवम्बर से १५ जनवरी ५९ तक जिलापसभा मुजफ्फर नगर द्वारा प्रचार।

१०—श्री धर्मराज सिंह जी दि० ३ से ६ तक आ० स० पूरनपुर पीली भीत, ८ से ११ तक आ० स० कटरा प्रयाग, २० से २३ तक आ०स० राय बरेली, २४ नवम्बर से ३ दिसम्बर तक आ० स० टाडा फैजाबाद।

११—श्री मुकुन्द राम जी शर्मा १४ से २३ तक आ० स० दर्शन पुरवा कानपुर।

१२—श्री सर्वगुण प्रसाद १४ से १८ तक आ० स० सुल्तानपुर।

१३—श्री प्रकाशवीर जी १६ से १८ तक आ० स० नगीना बिजनौर, २१ से २४ तक आ० स० लखीमपुर।

१४—श्री महेशचन्द्र जी १५ से १७ तक आ०स० अतरौली अलीगढ़।

—सभा मन्त्री

—आ०स० लश्कर मध्यप्रदेश का ५७ वा वार्षिकोत्सव ८ से १२ नवम्बर ५८ तक समारोह हो रहा है। स्वामी अभेदानन्द जी, प० प्रकाशवीर शास्त्री श्री विश्वबन्धु प० शिवकुमार शास्त्री, श्री पन्नालाल पीयूष आदि पधार रहे हैं।

आर्य जगत् के अन्यान्य समाचार

★

—आ०स० रायबरेली का वार्षिकोत्सव २०, २१, २२, २३ नवम्बर ५८ को मनाया जायेगा जिसमें अच्छे विद्वानों के पधारने की आशा है।

—गुरुकुल ज्वालापुर का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव ६ से १५ अप्रैल १९५८ तक होगा। नित्य प्रातः बृहद् यज्ञ होगा और १५ अप्रैल को इसकी पूर्णाहुति होगी। आर्यजगत् के विशिष्ट विद्वान् पधारेंगे। वेद सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, गुरुकुल सम्मेलन, कवि सम्मेलन, महिला सम्मेलन, आयुर्वेद सम्मेलन, संगीत सम्मेलन आदि भी होंगे। १४ अप्रैल को दीक्षान्त समारोह होगा।

—नन्दकिशोर मुख्याधि०

—आ०स०बिरला लाइन्स दिल्ली का वार्षिकोत्सव ६, १०, ११ नवम्बर ५८ को होगा। श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द जी वेदकथा करेंगे।

—आ०स० ऐशबाग लखनऊ में १७ से २२ नवम्बर ५८ तक स्वामी विज्ञानन्द जी द्वारा वेदकथा तथा श्री बी० एन० पाल द्वारा मैजिक लैन्टर्न प्रचार का सायं ६॥ से ८॥ तक प्रबन्ध है। वार्षिकोत्सव २३ नवम्बर को प्रातः ७ से ११ तक व सायंकाल ६ से १०॥ तक होगा।

—आ० स० चन्द्रनगर लखनऊ का वार्षिकोत्सव ६, १०, ११ नवम्बर ५८ को होगा। आ० ज० के विशिष्ट व्यक्ति पधारेंगे।

—स्वामी शिवानन्द जी कानपुर द्वारा आ०स० आसा में २२ से २७ अक्तूबर ५८ तक वेदप्रचार सोत्साह हुआ।

—श्री धर्मवीर आर्य झण्डाधारी ने आर्य समाज के प्रचार के लिए आज़मगढ़ तथा बलिया जिले के बहुत से स्थानों का दौरा किया।

—स्वामी विद्यानन्द जी महाराज द्वारा पिछले दो महीने से लखनऊ के विभिन्न स्थानों तथा आर्य बन्धुओं के यहां कथा द्वारा प्रचार किया जा रहा है। लखनऊ के आर्य समाजों तथा नगर के लोग स्वामीजी के आध्यात्मिक प्रवचन से लाभ उठा रहे हैं। स्वामी जी महाराज नवम्बर मास भर अभी लखनऊ में ठहरेंगे।

—नगर आर्य वीर दल वाराणसी का विजयोत्सव २६-१०-५८ को नगर पालिका के मैदान में श्री कृष्णानन्द, प्रिंसिपल दयानन्द डिग्री कालेज की अध्यक्षता में मनाया गया।

—आर्य वीर दल उन्नाव जिला ने २२-१०-५८ को हसनगंज में विजय दशमी पर्व ससमारोह मनाया। ठा० राजबहादुरसिंह ने सभा की अध्यक्षता की। श्री जयपालसिंह मंडलपति का भाषण हुआ।

—सार्वदेशिक आर्य वीर दल के नाम से जो भी राशि मनी आर्डर, पोस्टल आर्डर द्वारा भेजी जाय वह किसी व्यक्ति विशेष के नाम से न भेजकर केवल मन्त्री, सार्वदेशिक आर्यवीर दल दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली १ के पते पर ही भेजे।

—जगदेव एम०ए० मन्त्री

—सार्वदेशिक आर्यवीर दल का परिपत्र जिसमें ८ वर्ग हैं और जो आर्यमित्र के २६ अक्तूबर ५८ के अंक में पृष्ठ १५ पर प्रकाशित हुआ है, उस सम्बन्ध में सार्वदेशिक आर्य वीर दल को सुझाव तथा पतादि भेजने की तिथि १ नवम्बर से बढ़ाकर ३० नवम्बर ५८ तक कर दी गई है।

—ओम्प्रकाश त्यागी

—आर्यवीर दल गाजियाबाद की ओर से १२-१०-५८ को दल सहायता व विजयोत्सव ससमारोह मनाया गया जिसमें श्री नेपालसिंह उप सचालक आर्य वीर दल पश्चिमी क्षेत्र उत्तरप्रदेश का भाषण हुआ।

—केन्द्रीय आर्य सभा दिल्ली के तत्वावधान में दिल्ली तथा नयी दिल्ली के समस्त आर्यसमाजों की ओर से सम्मिलित रूप में १०-११-५८ को प्रातः ८ से ११ बजे तक रामलीला मैदान नयी दिल्ली में ऋषि निर्वाणोत्सव पूज्य स्वामी अभेदानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में मनाया जायेगा जिसमें महाशय कृष्ण, प० प्रकाशवीर शास्त्री संसद सदस्य, प० रघुवीर सिंह शास्त्री, प्रो० रतनसिंह, आचार्य विश्वश्रवाः आदि ऋषि दयानन्द के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

—रामनाथ भल्ला

—मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ ने महिला ग्राम विद्यापीठ की ग्राम विनोदिनी परीक्षा (पत्रचार अंग्रेजी के साथ) को अपनी हाई स्कूल परीक्षा के बराबर मान्यता प्रदान की है। इस परीक्षा को देहली और बनारस विश्वविद्यालयों तथा देहली बोर्ड आफ हायर सेकेन्डरी एजूकेशन व आसाम सरकार आदि द्वारा पूर्व से ही मान्यता प्राप्त है।

—इन्दौर निवासी पं० वीरसेन वेदश्रमी ने २५ व २८ अक्तूबर को विरक्त वानप्रस्थ सन्यास आश्रम ज्वालापुर में सस्वर वेद पाठ किया। लोगों ने भूरि भूरि प्रशंसा की।

आर्य-जगत

उत्सव समाचार—

—आ० स० दर्शनपुरवा कानपुर का वार्षिकोत्सव १४ से २३ नवम्बर ५८ तक होगा। प० ओम्प्रकाश शास्त्री स्वामी वेदानन्द जी, श्री रामचन्द्र शर्मा, श्री मुकुन्दराम आदि पधारेगे।

—श्री सर्वदानन्द साधुआश्रम हरदुआगञ्ज का वार्षिकोत्सव २२, २३ २४ नवम्बर को होगा। स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी, प० सुरेन्द्र शर्मा गौर, प० शिवकुमार शास्त्री, प० प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी०, प० ज्ञानेन्द्र जी आदि महानुभाव पधारेगे।

—आ०स० कटरा प्रयाग का ५८ का वार्षिकोत्सव ८ से ११ नवम्बर ५८ तक कनलगञ्ज थाना के सामने मनाया जायेगा। महात्मा आनन्द स्वामी, प० अयोध्याप्रसाद, श्री रामनारायण शास्त्री, प० देशराज जी, ठाकुर धर्म राजसिंह आदि पधार रहे है।

—आ०स० अमरोहा का वार्षिकोत्सव ३० अक्तूबर से ४ नवम्बर ५८ तक हुआ। प्रथम तीन रोज ब्रह्मचारी सत्यप्रिय व्रती का उपदेश हुआ। स्वामी अभेदानन्द जी, प० रामनारायण शास्त्री, प्रभृति विद्वान् व वक्ता पधारे।

—आ०स० ऐशबाग लखनऊ का वार्षिकोत्सव २३ नवम्बर ५८ को होगा।

प्रचार समाचार—

—श्री सुवर्णसिंह मन्त्री जिला सभा अलीगढ़ ने निम्न समाजो मे भ्रमण करके मौलिक प्रचार किया—आ०स० इनायतपुर, बजहेडा, अमरपुर कोंडरा, बाढ़ोन, कैथवारी, मवीगढ, धनसारी, बरौली, दादो, औरिहा, नगौला। आपने २५ समाजो में प्रचार किया। आ०स० छर्रा म प्रभाव शाली भाषण किया।

शुद्धि समाचार—

—भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा दिल्ली की ओर से १६ १० ५८ को ग्राम हेवा (मरठ) में पूज्य स्वामी अभेदानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में एक विशाल शुद्धि सभा हुई जिसमें २१० हरिजन ईसाइयो को शुद्ध किया गया। स्वामी जी ने गायत्री मन्त्र से उनको शुद्ध करके हिन्दू धर्म में दीक्षित किया। अनेको महानुभावो के भजन और व्याख्यान हुए। श्री जगन्नाथ जी स्वामी धर्मानन्द जी, श्री हरिप्रसाद जी, श्री ब्रह्मप्रकाश जी, श्री महेन्द्र प्रताप शास्त्री, श्री श्यामलाल जी, श्री अर्जुनसिंह जी, श्री विश्वेश्वर शास्त्री, श्री महावीरसिंह, श्री रिछपालसिंह, श्री ब्रह्मसिंह शास्त्री, श्री ताराचन्द, श्री दलीप सिंह चौधरी रतिराम जी आदि पधारे थे।

संस्कार समाचार—

—आ०स० देवरी प्रहलादपुर के उपप्रधान श्री लाखनसिंह के पुत्र का नामकरण संस्कार १८ १० का सम्पन्न हुआ।

—आ० स० कायमगंज में श्री जीवाराम जी शर्मा भजनोपदेशक के पुत्र का नामकरण संस्कार वैदिक रीत्यानुसार २३ ७ ५८ को सम्पन्न हुआ।

—प० ज्ञानेन्द्र जी प्रचारक दवथला की बाल विधवा पुत्री लज्जावती देवी का पुनर्विवाह प० रतनलाल शर्मा विसुरखा निवासी के साथ वदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। पंडित जी के पुत्र का नामकरण संस्कार भी सम्पन्न हुआ।

—आ० स० कायमगंज के श्री रामस्वरूप जी आर्य के नाती का अन्न प्राशन संस्कार सानन्द हुआ।

शोक समाचार—

—आ०स० नगौला अलीगढ़ ने श्री लखपतसिंह के असामयिक निधन पर तथा ठाकुर नेत्रपाल सिंह के स्वर्ग वास पर हार्दिक शोक प्रकट किया।

आर्यकुमार सभा समाचार—

—बरेली मे कमिश्नरी आर्य कुमार परिषद का प्रथम अधिवेशन १६-१० का आ० स० बिहारीपुर मे श्री चन्द्रनारायण जी एडवोकेट स्वागताध्यक्ष की अध्यक्षता म हुई। सायकाल श्री फूलनसिंह जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की अध्यक्षता म आर्यकुमार सम्मेलन हुआ। मन्त्री महोदय ने छात्रो का राजनीतिक दल दल से दूर रहने का सलाह दी। सम्मेलन म जातीयता, प्रान्तीयता दहेज आदि के विरोध म तथा नैतिक उत्थान आन्दोलन के पक्ष में प्रस्ताव पास किये गये। आचार्य बारेन्द्र शास्त्री श्री रामअवतार जी, श्री अरुण कुमार जी आदि उपस्थित थे। निर्वाचन निम्न प्रकार से हुआ—श्री चन्द्र नारायण जी प्रधान, श्री सत्यप्रकाश स्वरूप कार्यकर्ता प्रधान, श्री अरुण कुमार जी मन्त्री, श्री लक्ष्मीचन्द जी प्रचार मन्त्री, श्री नारायणदास शर्मा कोषाध्यक्ष।

—आर्यकुमार सभा सेवा समिति सदर बाजार लखनऊ की ओर से दशहरा मेले मे श्री बी० एन० पाल प्रचारक द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार किया गया।

चुनाव समाचार—

—श्री सुवर्णसिंह मन्त्री जिला सभा अलीगढ़ ने आर्य प्रचार से अलीगढ़ जिले की अनेको आर्यसमाजो को पुनर्जीवित किया तथा कुछ स्थानो पर नए समाज की स्थापना की जिसमें से निम्न प्रमुख हैं—

आ०स० दवथला—प० बहोरीदत्त प्रधान प० बहारीलाल किंकर मन्त्री, प० ज्ञानेन्द्र जी कोषाध्यक्ष।

—आ स० जहलालपुर बुलन्दशहर प० शिवदत्त जी प्रधान, श्री भूदेव प्रसाद मन्त्री लाला गुलजारीलाल कोषाध्यक्ष।

—आ० स० पिलौना—श्री रतन सिंह प्रधान श्री रामप्रसाद मन्त्री, श्री रामप्रतापसिंह कोषाध्यक्ष।

—आ०स० छलमर—श्री रणवीर सिंह प्रधान, श्री मुरब्बरसिंह मन्त्री, श्री देवीराम कोषाध्यक्ष।

—आ० स० तालिबनगर—पंडित रामस्वरूप प्रधान, प० विद्याप्रकाश मन्त्री प० मुन्शीलाल कोषाध्यक्ष।

—आ० स० साथा—श्री लाखन सिंह प्रधान, श्री यशपालसिंह मन्त्री, श्री सूबेदारसिंह कोषाध्यक्ष।

—आ०स० मदापुर—श्री डोरीलाल प्रधान श्री हरनारायण सिंह मन्त्री, श्री कन्हैयालाल कोषाध्यक्ष।

—आ०स० बरला—श्री मोतीलाल प्रधान, श्री जयप्रकाश जी मन्त्री, सेठ गणेशीलाल कोषाध्यक्ष।

आर्य वीर दल समाचार—

आर्य वीर दल मंडल वसौदा—मण्डलपति श्री दयाशंकर चतुर्वेदी मन्त्री, श्री जानकी प्रसाद द्विवेदी, मुख्य नायक श्री निरंकार जी, बौद्धिक नायक श्री हरिनारायण जी, अग्रनायक श्री चिरौंजी लाल जी। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के मंत्री श्री जगदेव जी एम० ए० ने दल का निरीक्षण किया और यहाँ की व्यवस्था की प्रशंसा की।

१९-१० को प्रान्तीय आर्य वीर दल म० प्र० की एक बैठक हुई सार्वदेशिक आर्य वीर दल के मन्त्री श्री जगदेव जी ने भी इसमें भाग लिया। सबकी ओर से उनका स्वागत किया गया। उन्होंने एक भाषण दिया सभी व्यक्ति ग्राम मसूदपुर मे प्रचार करने गये और वहाँ आर्य वीर दल की स्थापना की। स्वामी रामचन्द्र वानप्रस्थी गुरुकुल एटा ने भी भाषण दिया।

—२२ अक्टूबर को नार्दर्न पार्क अमरबाजार भावानीपुर कलकत्ता मे प्रांतीय आर्य वीर दल बंग आसाम के तत्वाधान म विजय दशमी समारोह का आयोजन हुआ जिसम श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी प्रधान सचालक का भाषण हुआ।

—आर्य वीर दल नारायण पेठ—नगरनायक श्री रामनाथ जी कदमाजी मन्त्री श्री बुग्प्पा जी आलेलूर।

—आर्य वीर दल दानापुर केन्ट बिहार ने अपना विजयोत्सव २२ १० ५८ का डी० ए० वी० स्कूल मे श्री नवल किशोर भा एम डी ओ की अध्यक्षता म मनाया। प० रामनारायण शास्त्री मन्त्री बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा ने उत्सव का उद्घाटन किया। व्यायाम खेल लाठी, तलवार आदि का प्रदर्शन भी हुआ।

—श्री रामकुमार जी मन्त्री पश्चिमी उ० प्र० आर्य वीर दल का प्रचार निम्न स्थानो पर हुआ।

२ नवम्बर ५८—कानपुर
३ ,, ,, —मिरजापुर
५ ,, ,, —मुगलसराय
७ ,, ,, —बनारस

चन्द्रभानु जी का भ्रमण—

२ नवम्बर ५८—गाजियाबाद
३ ,, ,, —मवाना, मेरठ
५ ,, ,, —दादरी

उक्त स्थानो के आर्य वीरों ने इन्द्र सहयोग दिया।

—देवीप्रसाद आर्य मन्त्री आ० वी० द० उ० प्र० लखनऊ

—श्री बाल दिवाकर हंस, उप प्रधान सचालक, सार्वदेशिक आर्यवीर दल का भ्रमण पुरोगम निम्न प्रकार रहा—

७ ११ ५८ चांदपुर
३ ११ ५८ स्योहारा
४ ११ ५८ बिजनौर
५ ११ ५८ किरतपुर
६ ११ ५८ नजीबाबाद
७ ११ ५८ कोटद्वार
८ ११ ५८ धामपुर

—आर्य वीर दल करौकत की ओर से विजय दशमी पर्व सोत्साह मनाया गया। श्री बैजनाथ जी व श्री महेश नारायण मिश्र का भाषण हुआ। प्रतियोगिताए भी हुई।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
वर्ष ६० अंक १८, शाक १८८०(६ नवम्बर ५८)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता— 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष्य : ५६६३ तार : 'आर्यमित्र'

—आर्य वीर दल पश्चिमी उ०प्र० की एक आवश्यक बैठक २६ ११ ५८ को १ बजे दारानगर गज कैम्प गंगा मेला बिजनौर में श्री बाल दिवाकर हंस की अध्यक्षता में होगी। अनेकों आवश्यक विषयों पर विचार किया जायेगा। जिला भर के आर्य वीर दल के कार्यकर्ता अवश्य पधारें।

—सन्तोष कुमार

—२२-१० को आर्य वीर दल एटौना में विजय दशमी पर्व सोत्साह मनाया गया।

अन्यान्य समाचार—

—विजयदशमी पर्व पर हैदराबाद व सिकन्दराबाद नगर की आर्यसमाजों एवं आर्यवीरदलों का एक वृहद् जलूस निकला जिसमे लगभग डेढ़ दो लाख व्यक्ति सम्मिलित हुए। जलूस के आगे श्री प० प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी० हाथी पर सवार होकर चल रहे थे। सायकाल श्री विनायकराव विद्यालङ्कार एम० पी० की अध्यक्षता में सभा हुई जिसमें प० प्रकाशवीर जी का ओजस्वी भाषण हुआ। जलूस का सचालन पं० नरेन्द्र जी प्रधान सभा व श्री ए० बालरेड्डी मन्त्री सभा कर रहे थे। विभिन्न समाजों व संस्थाओं की ओर से प०प्रकाशवीरजी का अभिनन्दन किया गया और उन्हें एक मानपत्र भेंट किया गया। उत्तर में आपने एक अत्यन्त ओजपूर्ण व प्रभावशाली भाषण किया।

—सत्यनारायण

—स्वामी शिवानन्द जी पचायती धर्मशाला गंज वाले जहा कहीं भी हों १५ से १८ नवम्बर ५८ तक आर्यसमाज भगीवा के वार्षिकोत्सव पर अवश्य पधारें।

—हरदोई जिला के समस्त आर्य बन्धुओं से अपील है कि कृपया वे उत्साह से समाज के पुनःसंगठन में हमारा साथ दें तो विश्वास है कि शीघ्र ही जिले की मृत आर्यसमाजे सगठित हो जावेंगी।

—आदित्यकिशोर मन्त्री
जिला आ०स०सगठन समिति हरदोई

—रामनगर तथा अमेठी में विजयदशमी पर्व सोत्साह मनाया गया जिसमें राजकुमार श्री रणजयसिंह का भाषण हुआ। रामायण की बहुमूल्य शिक्षाओं पर आपने प्रकाश डाला।

—चौधरी सरदार सिंह तूफान, ग्राम सांकरौद, पो० सेकड़ा, जि० मेरठ सूचित करते हैं कि १६ १० ५८ को कुछ मुसलमानों ने यहा एक गाय का वध कर दिया। प्रांतीय रक्षा दल तथा पुलिस ने मौके से पहुंचकर ५ मुसलमानों को रंगे हाथ पकड़ लिया। करीमबक्श नामक एक कसाई किसी प्रकार भाग निकला। जांच करने पर मुसलमानो के घर से गऊ मास निकला कुल ६ व्यक्ति पकड़े गये। सरकार को मुजरिमों पर सख्त कार्यवाही करनी चाहिये।

—मृतक श्राद्ध सम्बन्धी विवाद को लेकर औरैया के पौराणिक पडित आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं पर बौखला उठे थे पर जब जवाबी परचे बांटे गये और आर्यसमाज की ओर से उन्हें शास्त्रार्थ के लिए ललकारा गया तो सभी मैदान छोड़ कर भाग गये। अभी आ०स० औरैया की ओर से जोरदार प्रचार व व्याख्यान हो रहा है।

—२७-१० को साय ५ बजे गुरुकुल अयोध्या में दमा की दवा श्री ब्रह्मानन्दजी द्वारा नि शुल्क बांटी गयी।

—आ०स० अजीतमल इटावा ने एक प्रस्ताव द्वारा निश्चय किया है कि जिन सभासदों को सन्ध्या अग्निहोत्र के मन्त्र कठाग्र हों, समाज के कार्यों में सदा तत्परता दिखाते हों, जो सदाचारी हों, साप्ताहिक अधिवेशनों में यथासम्भव उपस्थित रहते हों, आर्य पर्वों में भाग लेते हों, गत वर्ष का पूरा चन्दा दे चुके हो, ऐसे ही व्यक्ति को आर्य सभासद समझा जाय।

—मैं अब स्वस्थ हो गया हूं। जो समाजें अपने उत्सव पर मुझे बुलाना चाहे वह प्रतिनिधि सभा को लिखें।

—सत्यमित्र शास्त्री

—आ०स० कायमगज में सोत्साह विजय पर्व मनाया गया।

—लखनऊ नगर के साहित्यकारों ने एक सभा मे निश्चय किया है कि नवम्बर मास में लखनऊ नगर में राष्ट्र भाषा हिंदी का एक विराट सम्मेलन किया जाय जिसमें अखिल भारतीय स्तर के साहित्यकारो को आमन्त्रित किया जाय।

—जिला उपसभा अलीगढ़ की अन्तरङ्ग सभा की बैठक २१ ११ ५८ को सर्वदानन्द साधुआश्रम पुलकाली नदी हरदुआगज मे १ बजे से होगी। इसी समय आश्रम का उत्सव भी होगा।

—श्री भवणसिंह प्रचारक सभा अब स्वस्थ हो गये हैं और घूमने फिरने लगे हैं।

—२ नवम्बर ५८ को पंजाब हिंदी रक्षा समिति की एक बैठक अम्बाला में हुई।

—देव दयानन्द, हिन्दी आंदोलन तथा अन्य महापुरुषों के सम्बन्ध में सैकड़ों चित्र देखने व भजनों द्वारा प्रचार कराने के लिए श्री आशानन्द जी भजनीक आर्य समाज नयाबांस दिल्ली को लिखें।

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई [illegible] लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ARYA MITRA

आर्यमित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा-उत्तर प्रदेश का साप्ताहिक मुख पत्र

२५-११-५८

वार्षिक मूल्य ८) | एक प्रति का २० नए पैसे

—लखनऊ, रविवार, अग्रहायण २ शक १८८०, कार्तिक शुक्ल १२, वि० २०१५
२३ नवम्बर १९५८ ई०

विदेश में १५ शिलिंग

आर्य जनता में हीरक जयन्ती के प्रति अपार उत्साह—प्रधान सभा की अपील का सर्वत्र स्वागत

नैनीताल के पश्चात् आगरा, अलीगढ़ और मैनपुरी जिलों की ओर से २५००), २५००) जयन्ती के लिए प्रदान करने का निश्चय

मेरठ, मुजफ्फर नगर, सहारनपुर, लखनऊ के कार्यकर्ता भी जयन्ती के लिए सक्रिय

फीजी, मारीशस, थाइलैण्ड, अफ्रीका के प्रवासी भारतीयों में जयन्ती और विरजानन्द स्मारक के लिए अपूर्व श्रद्धा

उत्साहपूर्ण पत्र और स्मारक के लिए धन भेजने का आश्वासन

आर्य जनता अपने कर्तव्य का निर्धारण करे और जयन्ती योजना की सफलता में जुट जाय

आर्य बन्धुओं के नाम अपील प्रकाशित करते हुए आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री पं० हरिशङ्कर शर्म्मा ने साग्रह अनुरोध किया है कि आर्यमित्र हीरक जयन्ती, विद्वानों के अभिनन्दन, श्री गुरु विरजानन्द स्मारक आदि समारोहों की सफलता के लिए तन, मन, धन सभी प्रकार का सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

आर्यमित्र के साठ वर्षीय सेवा काल ने पत्रकारिता के क्षेत्र में सफल मिशनरी पत्र की ऐतिहासिक महत्ता स्थापित कर दी है और भविष्य में मित्र आर्य जगत् का सुव्यवस्थित और सुदृढ़ सन्देश वाहक बन सके इसके लिए सबकी शुभ कामनाएं और सहयोग अपेक्षित है।

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम० ए० और श्री गंगाप्रसाद एम० ए० रि० चीफ जज के अभिनन्दन द्वारा हम उनकी सेवाओं के प्रति कृतज्ञता प्रकाशन और भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा प्राप्त कर सकेंगे।

गुरु विरजानन्द स्मारक आर्य जनता की चिर अभिलाषाओं का साकार स्वरूप ही होगा।

इन सबकी सफलता के लिए जयन्ती निधि में धन देकर और आगामी ऋषि बोधोत्सव ६, ७, ८, ९ मार्च १९५९ को कुरुभूमि वृन्दावन में पहुंचने का निश्चय कर योजना को सफल बनावें। स्मरण रखिये कि आर्यमित्र हीरक जयन्ती समारोह आर्य समाज के इतिहास में अद्वितीय और चिरस्मरणीय समारोह होगा।

वर्ष ६०

सम्पादक—
स्नातक उमेशचन्द्र एम. ए.

अङ्क ४४

जोधपुर राज्य का वैदिक धर्म प्रचार में योग

(श्री प० भवानीलाल 'भारतीय' एम० ए०)

★ जोधपुर राज्य ने वैदिक धर्म के प्रचार में कितना योग दिया, इसी का वर्णन इस लेख मे किया गया है। आर्य जन इस लेख को पढे और महाराजा प्रतापसिंह की इस उक्ति— "मैं आय समाज का चपरासी बन कर काय करने में अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करू गा" को ध्यान में रखकर जरा विचार करें कि आज आर्य समाज में कितने लोगों की भावना ऐसी है। —स० सम्पादक ★

अभी हाल ही में आर्य समाज के सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ विद्वान् श्री जगदीशसिंह गहलात का जोधपुर म स्वर्गवास हा गया। स्वर्गीय गहलोत जी इतिहास के ममज्ञ विद्वान् थे। वे अपने जीवन म आर्य समाज और उसके प्रवर्तक महर्षि दयानद के सबध में पुरावृत्त सामग्री सग्रहीत करते रहे। महर्षि के जीवन का अन्तिम भाग जोधपुर में व्यतीत हुआ। यहाँ उन्हे विष दिया गया, जो उनकी मृत्यु का कारण बना। महर्षि के अनुयायी जाधपुर नरेश महाराजा जसवन्त सिंह और उनके अनुज सर प्रतापसिंह ने महर्षि के निर्वाण के पश्चात् आर्य समाज के सिद्धान्ता और मन्तव्यो के प्रचार और प्रसार क लिए जो कुछ सरकारी रूप से यागदान दिया उसका



—लखक—

विस्तृत विवरण स्व० गहलोत जी ने एकत्रित किया था, जो उनकी मृत्यु के पश्चान् उनके उत्तराधिकारियों से इन पक्तियों के लेखक का प्राप्त हुआ, जा आय महानुभावा की जानकारी के लिये नाचे प्रकाशित किया जाता है।

इन तथ्यो स यह स्पष्ट हा जायगा, कि ऋषि की क्रान्तकारी शिक्षा और उनके प्रगतिशाल विचारों की छाप देशी राजाओं पर कितनी गहरी अंकित हुई थी। आज धर्म निरपेक्ष राज्य के वातावरण म जावित रहकर हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि वैदिक धर्म का भा राजाश्रय प्राप्त हुआ था। अस्तु।

महर्षि के अस्वस्थ हा जाने के कारण उनकी जाधपुर स विदाइ की वेला म जाधपुर नरश न ५००) रु० वेदभाष्य क लिए प्रदान किय यह उल्लेख तो ऋषि के जीवन चरिता म मिलता ही है इसके पश्चात् का आर्थिक यागदान निम्न प्रकार है—

महर्षि का स्मृति म निर्मित डा० ए० वी० कालज लाहौर का जून १८८६ ई० म जाधपुर नरश महाराजा जसवत सिंह द्वारा १ ००) रु० प्रदान किये गये।

लन्दन म आर्य समाज की स्थापना जून १८८६ म पजाब के श्री लक्ष्मीनारायण और बैरिस्टर रोशन लाल के प्रयत्नो से हुई। जोधपुर राज्य के खर्चे से स्वामी भास्करानन्द को फरवरी १८८६ में वैदिक धम के प्रचार थं यूराप और अमेरिका भेजा गया। ये लगभग १ वर्ष पश्चात् १८९८ ई० में अपना प्रचार यात्रा के पश्चात् भारत लौटे। इनका सारा आर्थिक उत्तर दायित्व राज्य ने वहन किया।

जाधपुर राज्य की ओर स वैदिक धर्म के प्रचाराथ अनेक वतनिक उपदेशक भी रक्खे गये जिनका विवरण इस प्रकार है —

(१) प गणेश रामचद्र (दक्षिणी) ×× फरवरी १८९ का ४०)रु० मासिक पर उपदेश नियुक्त किय गये।

(२) राजपूत रामदयाल सिंह पडा ३१ मार्च १८९१ से ५०) रु० मासिक पर प्रचारक नियत किये गये।

(३) प० रामावदास (सम्भवत चारण उमरदान कवि) ×× फरवरी १८९० से ३०) रु० मासिक पर प्रचारक नियुक्त हुए।

(४) प० ठाकुर प्रसाद शर्मा व्याकरणाचार्य जा प्रयाग जिले के निवासी थे का १५) रु० सवारी का भत्ता दना स्वीकार हुआ। इनका वतन ७५) रु० मासिक था और ये १× मार्च १८९३ से काय कर रहे थ। इनका लिखी हुई पुस्तक राष्ट्रीय भाव नाओं से अ त प्रोत ह जिनम स्वदेशी वस्त्रों का धारण करना आय पुरुषो के लिए अनिवार्य बताया गया है। इन का एक पुस्तक लखक क मित्र और आर्य समाजी ग्रन्थ पुस्तक एव सामग्री के अच्छे सग्रहकर्ता जाधपुर निवासी श्री भैरवसिंह जी के सग्रह म विद्यमान है।

(५) १२ मार्च १८९३ को प० अचलेश्वर शर्मा २५) रु० मासिक पर नियुक्त किये गये।

(६) १२ मार्च १८९३ से स्वामी प्रकाशानन्द को २०) रु० मासिक घोडा एलावेन्स दिया गया।

(७) स्वामी अच्युतानद १ सितम्बर १८९३ से ६०) रु० मासिक पर उपदेशक नियत हुए।

(८) प लालचन्द्र विद्याभास्कर (पुष्करणा ब्राह्मण पुरोहित) १० अगस्त १८९४ से १००) रु० मासिक पर उपदेशक रक्खे गये।

(९) प०करणसिंह ३०)रु० मासिक पर ७ सितम्बर १८९४ स उपदेशक नियुक्त हुए।

(१०) प० विश्वेश्वरनाथ शर्मा जो सयुक्त प्रान्त के निवासी थे, २५) रु० मासिक पर राजकीय वैदिक पाठशाला मे जो 'गुरा के तालाब' पर चलती थी अध्यापक नियुक्त किये गये २३ जनवरी १८९६ से।

सर प्रताप गुजरात की ईडर रियासत के स्वामी बने। उन्होंने डी ए वी कालेज का ५०००) रु० प्रदान किया तथा ×३ अप्रैल १९०५ की डी ए वी कालेज के आधार शिला रक्खी। उन्होंने अपने दो पुत्रों राव राजा हनूतसिंह और सगतसिंह को १९१३ १४ म और रावराजा अभयसिंह को १९१५ १६ म इस कालेज म भर्ती करवाया। कालेज भवन म सर प्रताप सिंह ने २ कमरे बनवाये और घुड़सवारी सिखाने के लिये कालेज के छात्रो के लिए उत्तम कोटि के घोडे प्रदान किय।

१९×५ में मनाई गई ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा म जोधपुर राज्य की ओर से १०००) रु० प्रदान किया गया और १९३४ की ऋषि निर्वाण अर्द्ध शताब्दी अजमेर में २०००) रु० प्रदान किया गया।

उपर्युक्त आकडो से यह स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि जाधपुर के राजघराने म महर्षि की शिक्षा कितनी गहराई से असर कर गई थी। विशेष रूप से महाराजा प्रतापसिंह तो आजन्म ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के ऋणी बने रहे। उन्होंने डा० ए० वी० कालज का उद्घाटन करते हुये कहा, "मैं आर्य समाज का चपरासी बन कर कार्य करने में अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करूगा।" यह था आर्य समाज का विगत गौरव और उसका स्वर्णिम अतीत।

सिंहावलोकन

ईसाई प्रचार की समस्या

यह एक तथ्य है कि देश के विभाजन के पश्चात् ईसाई पादरियों की कुचालें पहले से अधिक हो गई हैं। इसका कारण भारत का धर्म निरपेक्ष राज्य है। ईसाई पादरी प्राय अनपढ़ निर्धनों, हरिजनों तथा आजीविका से रहित नवयुवकों में ईसाइयत का प्रचार करके उनको अपने चगुल में फसा लेते हैं। सारे भारत में आर्यसमाज एक ऐसी सस्था है जो हिन्दू सिक्ख तथा हरिजन भाइयों को इनसे सुरक्षित रखती है। आर्यसमाज के पास जनशक्ति तो है पर धन शक्ति का अभाव है। अत शुद्धि का काम धीरे से चल रहा है किन्तु ईसाइयों के पीछे यूरप तथा अमेरिका का धन है। आप पढकर आवाक होगे कि हरियाना प्रान्त के ग्रामों में ईसाई अभाव के समान हैं। परन्तु नगरों और कस्बों में ईसाई बढ रहे हैं क्योंकि नगरों और कस्बों में उसके लिए कोई रुकावट नहीं। यही अवस्था रोहतक की है। १५ परिवारों को शुद्ध कर पाए हैं। धन की कमी है यदि सहायता मिले तो सफलता पाँव चूमती है।

—अधिष्ठाता स्वतन्त्रतानन्द देवनागरी महाविद्यालय दयानन्द मठ, रोहतक

एक सुझाव

आर्यमित्र हीरक जयन्ती विशेषांक के सम्बन्ध में एक मेरा सुझाव यह है कि आर्य समाज के विद्वानो द्वारा अन्य मतावलम्बी पण्डितों से जो शास्त्रार्थ हुए हैं, इसका सक्षिप्त विवरण अवश्य रहे ताकि इस सम्बन्ध में सब साधारण को पूरी जानकारी हो सके और अपनी शक्ति का भी पता चल सके। —देवी सहाय गुप्त मन्त्री आ०स० जहाँगीराबाद, बुलन्दशहर

आगामी आर्य महासम्मेलन आर्यमित्र हीरक जयन्ती के अवसर पर होने की सम्भावना

आर्यजगत में यह समाचार जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति के प्रस्ताव के आधार पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने आगामी आर्य महासम्मेलन को जयन्ती के अवसर पर निमन्त्रित करना स्वीकार कर लिया है और यदि सार्वदेशिक सभा ने इस अवसर पर आर्य महा सम्मेलन करने की स्वीकृति दे दी तो जयन्ती समारोह का महत्व और भी अधिक बढ़ जायगा। सम्भवत सार्वदेशिक सभा की आगामी २३ नवम्बर की बैठक में इस सम्बन्ध मे निर्णय हो सकेगा। इस प्रकार आर्य महासम्मेलन के सम्बन्ध में आर्य जनता की चिरकालीन अभिलाषा भी पूर्ण होगी और जयन्ती समारोह मे जनता सम्मिलित हो सकेगी।

अभिनन्दन ग्रन्थों की तैयारी आरम्भ

श्री प० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम० ए० व श्री प० गङ्गाप्रसाद एम० ए० रि० चौ० जज, अभिनन्दन ग्रन्थों के सम्पादक श्री प्रि० महेन्द्र प्रताप शास्त्री एम० ए० वैदिक डिग्री कालेज बड़ौत (मेरठ) ने एक निवेदन में आर्य जनता से प्रार्थना की है कि दोनों विद्वान् आर्य नेताओं की जीवन सम्बन्धी और सार्वजनिक कार्यों विषयक घटनाओं, आर्य समाज के हित मे कृत कार्यों का विवरण जो भी किसी को ज्ञात हो उस सबका उल्लेख घटना सहित अविलम्ब भेजने की कृपा करें जिससे दोनो महानुभावो की सेवाओं का क्रमबद्ध परिचय सङ्कलित किया जा सके और अभिनन्दन को पूर्ण और प्रेरणाप्रद बनाया जा सके। दोनों विद्वानों के प्रति शुभकामनाये भेजते समय उनके आर्य सिद्धान्तों सम्बन्धी कार्यों का विशेष उल्लेख किया जाना चाहिए। आर्य सिद्धान्तो व आर्यसमाज की प्रगति सम्बन्धी लेखों को भी ग्रन्थों मे स्थान प्राप्त हो सकेगा।

उत्तर प्रदेश के सभी प्रमुख जिलों में आर्यमित्र हीरक जयन्ती के प्रति उत्साह

आगरा, अलीगढ़, मैनपुरी के कार्यकर्ता धन-संग्रह योजना में संलग्न हो गये हैं

अन्तरङ्ग सभा के हल्द्वानी अधिवेशन से लौटते ही प्रान्त के कर्मठ कार्यकर्ताओं मे जयन्ती के प्रति अपना कर्तव्य पालन करने की भावना व्याप्त हो उठी है। आगरा क्षेत्र के सम्मानि सदस्य कर्मठ कार्यकर्ता श्री मोहनलाल आर्य ने आर्यमित्र के १०० नवीन ग्राहक बनाने व आगरा जिले से जयन्ती निधि के लिए २५००) की राशि शीघ्र ही संग्रहीत करके भेजने का आश्वासन दिया है।

मैनपुरी जिला सभा की विशेष बैठक में आर्यमित्र जयन्ती के लिए धन संग्रह के प्रश्न पर विचार विमर्श के पश्चात् निश्चय किया गया कि २०००) का निर्धारित कोटा शीघ्र संग्रहीत करके भेजा जाय। फर्रुखाबाद, शिकोहाबाद आदि प्रमुख आर्य समाजों की ओर से ५०० से अधिक और सहायता मिलने के आशाप्रद सन्देश प्राप्त हुए है। मैनपुरी सभा के प्रधान मन्त्री श्री ठा० फूलनसिंह का क्षेत्र है। इस कारण इस वर्ष इस क्षेत्र के आर्यों म योजना के लिए विशेष उत्साह पाया जा रहा है।

अलीगढ़ उत्तर प्रदेश म आर्यसमाज का प्रमुख गढ़ है। अलीगढ़ जिलोप सभा के प्रमुख कार्यकर्ता श्री बाबूलाल दीक्षित, श्री प० रामप्रसाद, श्री प्रेम चन्द्र उपमन्त्री सभा आदि ने सासनी गुरुकुल में भेंट के अवसर पर आर्यमित्र सम्पादक श्री उमेशचन्द्र स्नातक को जयन्ती के लिए अलीगढ़, हाथरस आदि स्थानों से जिले के लिए निर्धारित कोटे के २५००) राशि से अधिक धन शीघ्र ही संग्रहीत कर भेजने का आश्वासन दिया।

मेरठ मे बहन श्रीमती शकुन्तला गोयल व श्री बाबू कालीचरण उप प्रधान सभा ने जयन्ती नोटो द्वारा धन संग्रह का कार्य आरम्भ कर दिया है।

सभा प्रधान श्री प० हरिशङ्कर जी, श्री नरदेव स्नातक एम० पी०, श्री प्रि० महेन्द्र प्रताप शास्त्री, श्री बाबू कालीचरण जी आदि जयन्ती का सन्देश लेकर शीघ्र ही सम्पूर्ण भारत के दौरे पर रवाना होने वाले हैं।

विदेशो से आने वाले प्रवासी भारतीय आर्य बन्धुओ मे आर्यमित्र और गुरु विरजानन्द स्मारक के लिए अपार उत्साह पाया जाता है। विदेशो मे श्रद्धाञ्जलि रूप धन भेंट मे भेजने के भी आश्वासन प्राप्त हो रहे हैं।

प्रत्येक आर्य बन्धु का कर्तव्य है कि इस पवित्र यज्ञ म श्रद्धानुरूप भेंट प्रदान कर यज्ञ की सफलता न सहायक बने और अन्यों को कर्तव्य पालन की प्रेरणा दे।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती, श्री गङ्गाप्रसाद उपाध्याय व श्री गङ्गाप्रसाद रि. ची. जज का अभिनन्दन तथा स्वामी विरजानन्द धाम के शिलान्यास के लिए

सभा मंत्री श्री फूलनसिंह जी की अपील

आर्य जगत् को यह जान कर हर्ष होगा कि आगामी ऋषिबोधोत्सव के पुनीत अवसर पर, ६ मार्च सन १९५९ से १० मार्च १९५९ तक गुरुकुल वृन्दावन में "आर्यमित्र" की हीरक जयन्ती मनाई जायेगी। उसी अवसर पर विद्वद्वर श्री गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय, श्री गङ्गाप्रसाद जी रि० चीफ जज को उनकी महान् सेवाओ के उपलक्ष्य मे एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेट किया जायेगा तथा स्वामी विरजानन्द दण्डी धाम का शिलान्यास किया जायेगा।

देश के नवनिर्माण मे आर्यसमाज का जो योग रहा है, उसे देखते हुए स्वतन्त्र भारत म उसका उत्तरदायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है। इस देश को समृद्ध, शक्तिशाली तथा फिर से जगद् गुरु बनाने के लिए ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों के प्रचार की महती आवश्यकता है इस महान् उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए ही उपरोक्त आयोजन किये जा रहे हैं।

आर्यजन ऐसे सुअवसरों पर सदैव ही अपने कर्तव्य का पालन करते आये हैं। अतएव आशा है कि वे उपरोक्त आयोजनो को सफल बनाने के लिए यथा सम्भव प्रयत्न करेंगे। समस्त आर्य समाजों से मेरी प्रार्थना है कि वे इस पुनीत अवसर के लिये अधिक से अधिक धन संग्रह का प्रयत्न करे, जिससे यह समारोह सफल हो सके।

आर्य शिक्षा संस्थाओं से मेरी प्रार्थना है कि प्रति विद्यार्थी कम से कम दो आने संग्रह करने का प्रयत्न करें, तथा इन संस्थाओं मे कार्य करने वाले अध्यापक भी इस सम्बन्ध मे अपना कर्तव्य पालन करने की चेष्टा करे।

समय अल्प है, कार्य बहुत अधिक है, अतएव सभी आर्य जनो को अभी से सचेष्ट होने की आवश्यकता है। पारस्परिक सहयोग और सद्भावना से गुरुतर कार्य भी सरल हो जाते हैं। यदि बढ़ती हुई भौतिकवाद की लहर को रोकना है भ्रष्टाचार को समाप्त करना है, तथा देश को नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से उच्च बनाना है, तो प्रत्येक आर्य का यह कर्तव्य है कि वह अपने बहुमूल्य समय का कुछ भाग आर्य समाज के कार्य के लिये प्रदान करे। आज समाज के प्रति हमारी निष्ठा कसौटी पर है। इन आयोजनो का सफल सचालन ही यह सिद्ध कर सकेगा, कि आर्य जन आज भी अपने कर्तव्य पालन के लिए कटिबद्ध हैं।

अन्त मे मैं पुन सभी सम्बन्धित व्यक्तियों से प्रार्थना करता हू कि वे उपरोक्त आयोजनों को सफल बनाने का भरसक प्रयत्न करें।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती (धन संग्रह योजना)

उत्तर प्रदेश के समस्त आर्य समाज, सभास्थ अन्तरङ्ग सदस्य, जिलोपप्रतिनिधि सभाए एवं अवैतनिक उपदेशक महानुभावों तथा सभास्थ उपदेशक, प्रचारकों को विदित हो कि आर्यमित्र हीरक जयन्ती, श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय व श्री प० गङ्गा प्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज अभिनन्दन समारोह, गुरु विरजानन्द दण्डीधाम समारोह उद्घाटन महोत्सव गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन (मथुरा) नगरी मे मनाना निश्चित हो गया है। महोत्सव शिवरात्रि के अवकाश दि० ६, ७, ८ ९ मार्च सन् १९५९ में बड़े धूमधाम के साथ करने का आयोजन हो रहा है। आर्य जनता से विनम्र निवेदन है कि उपर्युक्त महोत्सव की तिथियां नोट करने और वृन्दावन नगरी म पहुचने की तैयारियां प्रारम्भ करने की कृपा करे।

सभा के उपर्युक्त कार्य के सम्पादन करने के लिए धन संग्रहार्थ रसीद नोट्स ॥) १), २), ५), तथा १०) के प्रकाशित कराये गये हैं अतः धन संग्रहार्थ सभा कार्यालय से इस सूचना के पढ़ते ही नोट मंगाने की कृपा करें।

—कालीचरण आर्य संयोजक अर्थ समिति
सभा उपप्रधान

बंगाल और आसाम के आर्यों में आर्यमित्र हीरक जयन्ती के लिए उत्साह और श्रद्धा

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल व आसाम के उप प्रधान का उत्साहवर्धक पत्र

श्री संयोजक जी,
आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति, लखनऊ
सादर नमस्ते !

जयन्ती सम्बन्धी योजनाओं के लिए अपनी ओर से ५१) रु० का चेक भेज रहा हूं जो इस पत्र के साथ संलग्न है। आर्य समाज ने प्रेस को उचित महत्व अब तक नहीं दिया है परन्तु मौखिक प्रचार का कार्य होता है अत्यधिक संकुचित और सीमित। प्रेस का क्षेत्र देश और काल दोनों ही दृष्टि से असीम और व्यापक है। विश्व के दूर देशों मे और मानव समुदाय के प्रत्येक स्तर मे यदि आर्य समाज का सदेश पहुचाना है तो वह पत्रो द्वारा ही सभव है। उस अवस्था मे आर्यमित्र ही आर्य पत्रों का अग्रगन्ता होगा। अपनी लम्बी आयु के कारण अपने व्यापक दृष्टिकोण के कारण, सारे आर्य जगत् का श्रद्धा-भाजन होने के कारण। अतएव विश्व के-विशेषतः भारत के-समस्त आर्य समाजों और आर्य नर नारियो का कर्तव्य है कि आर्यमित्र को विश्व के उच्च कोटि के पत्रो मे महत्वपूर्ण स्थान दिलाने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा दें।

पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एव पं० गगाप्रसाद जी रि० चीफ जज बड़ी आयु, प्रकाण्ड पांडित्य एवं अथक सेवाओ के कारण आर्य जगत् के सर्वथा वन्दनीय हैं, आर्य जाति वृद्धो की उपासक जाति प्रसिद्ध है। इसकी प्राचीन मान्यता है—

अभिवादन शीलस्य नित्य वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्॥

आर्य समाजी इन पडित युगल के अभिनन्दन को इनके गौरव के अनुरूप बनाकर विश्व को यह दिखा देवें कि वे जो कहते हैं वही करते भी हैं।

भवदीय—
अवधविहारी लाल
सम्पादक आर्यसमाज व आर्य भारती मासिक
उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल व आसाम

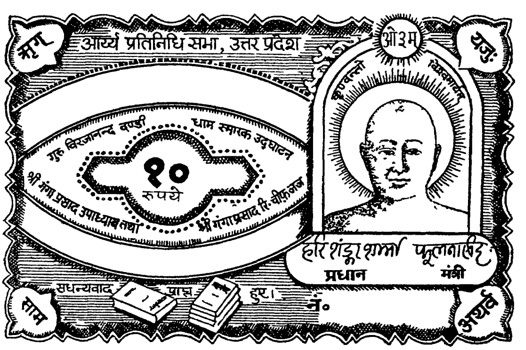
आवश्यकता

प्राइमरी आर्य कन्या पाठशाला नानपारा के लिए एक योग्य आर्य विचारों वाली अध्यापिका की आवश्यकता है। न्यूनतम योग्यता हिन्दी मिडिल है। वेतन योग्यतानुसार दिया जावेगा। प्रार्थना पत्र निम्न पते से १५ दिसम्बर ५८ तक भेजें।

पता—मैनेजर, आर्य कन्या पाठशाला
नानपारा (बहराइच)

धन संग्रहार्थ नोट्स मंगायें

आर्यमित्र हीरक जयन्ती तथा अभिनन्दन आदि समारोह के उपलक्ष्य में निम्न प्रकार का ब्लाक तैयार कराया गया है



इस प्रकार के नोट्स ॥), १), २), ५) तथा १०) वाले प्रकाशित कराये गये हैं। अतः आर्य समाजों से प्रार्थना है कि धन संग्रह के लिए सभा कार्यालय से नोट्स मंगाने की कृपा करें। धन सग्रह का कार्यारम्भ कर दें।

—संयोजक अर्थ समिति

वेदोपदेश

ओम् देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूषणो हस्ताभ्याम् ।
अग्नये जुष्टं गृह्णाम्यग्नीषोमाभ्यां जुष्टं गृह्णामि ॥ यजु० १।१०

सुखों के दाता तथा जगत् के उत्पादक परमात्मा द्वारा बनाये जगत् में मैं सूर्य चन्द्र की दो प्रकार की किरणों से समन्वित तथा वायु के प्राण और अपान रूपी दो हाथों से युक्त अग्नि तथा अग्निसोम के लिए जो कि प्रीतिकर हैं, तुम्हें यज्ञ को ग्रहण करता हूं ।

आर्यमित्र

लखनऊ—२३ नवम्बर १६५८, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १६७२६४६०५६

हीरक जयन्ती सफल बनाइये

आर्यसमाज के इतिहास में अनेक बार स्मरणीय और उत्साहवर्धक कार्य हुए हैं जो एक जीवित जागृत समाज के द्योतक है । उसी श्रृंखला में निकट भविष्य में ही एक नया अध्याय लिखे जाने का निश्चय किया गया है। हमारी सम्मति में यह भावी आयोजन पूर्व के सभी आयोजनों से अधिक चिरस्मरणीय और प्रेरणाप्रद सिद्ध होगा।

उत्तर प्रदेश के आर्यों ने आगामी ऋषिबोधोत्सव (शिवरात्रि) पर अपने मानस पुत्र, हिन्दी के प्राचीन तम पत्र और आर्य जगत् के सन्देशवाहक "आर्यमित्र" के साठ वर्षीय जीवन की सफल सम्पन्नता के उपलक्ष्य में उसकी हीरक जयन्ती मनाने का निश्चय किया है। एक मिशनरी पत्र के रूप में आर्यमित्र का साठ वर्षीय जीवन पत्रकारिता के इतिहास में विशेषकर भारतीय व हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास मे अद्वितीय उदाहरण है। जिस दृढ़ता और साहस के साथ मित्र अपने मिशन में संलग्न रहा है उससे अन्यों को सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी।

आर्य बन्धुओं के साथ मित्र के सम्बन्ध को दृष्टि में रखते हुए मित्र की हीरक जयन्ती की सफलता का दायित्व सबसे अधिक आर्य बन्धुओं विशेषकर उत्तर प्रदेश के आर्य बन्धुओं पर है।

आर्य जगत् के दोनों सम्मानित विद्वानों के (श्री पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम० ए० व श्री पं० गङ्गाप्रसाद एम० ए० रि० चीफ जज) अभिनन्दन का कार्यक्रम भी आर्य जगत् के इतिहास मे प्रेरणा प्रद अनुकरणीय कार्यक्रम होगा। दोनों विद्वानो ने आर्य समाज और वैदिक साहित्य की जो महान् सेवाएं की है उनसे उऋण होना आर्य समाज के लिए कभी सम्भव न होगा। अपने महान् विद्वानों का सादर अभिनन्दन कर हम उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन कर सकेंगे। इस प्रकार हम वर्तमान पीढ़ी के अन्य आर्य विद्वानों को आर्य समाज की सेवा के लिए प्रोत्साहित करते हुए नई पीढ़ी को अपने पूज्यों का समादर करने की प्रेरणा कर सकेंगे।

गुरु विरजानन्द स्मारक शिलान्यास समारोह के महत्वपूर्ण कार्य के पीछे आर्य जनता की प्राचीन भावनाएं छिपी हुई हैं। मथुरा जन्म शताब्दी के अवसर पर आर्य जनता ने स्मारक स्थल को प्राप्त करने की भावनाएं व्यक्त की थी। एक लम्बे समय के प्रयत्न के पश्चात् आज स्मारक स्थली आर्य जनता की सम्पत्ति बन चुकी है। अब वहाँ भव्य स्मारक बन सके इसके लिए समस्त आर्य जनता का सहयोग अपेक्षित है। आर्य जनता के सहयोग पर स्मारक की उत्कृष्टता और भव्यता अवलम्बित है। इस महान् स्मारक के निर्माण में सहयोग प्रदान कर ऋषि और उनके पूज्य गुरुवर के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करना प्रत्येक आर्य का पुनीत कर्तव्य है। प्रवासी भारतीय बन्धुओं का इस ओर उत्साह प्रशंसनीय है। उन्होंने कार्य आरम्भ कर दिया है।

जयन्ती समारोह के संचालकों ने आर्यमित्र हीरक जयन्ती विशेषाङ्क और भविष्य में मासिक संस्करण की योजना को अन्तिम रूप दे दिया है।

दोनों विद्वानों के अभिनन्दन ग्रन्थों के सम्पादन का कार्य आरम्भ हो चुका है।

विरजानन्द स्मारक का कार्य भी योजनानुसार आगे बढ़ रहा है। भवन का नक्शा तैयार हो चुका है तथा आवश्यक कार्यवाहियाँ की जा रही हैं।

उपर्युक्त सभी कार्यों की सफलता के लिए एक लाख रुपये की अपील सभा की ओर से प्रकाशित की गयी है। कार्यों की महत्ता के देखते हुए यह धन अपर्याप्त ही होगा फिर भी आप सबके सहयोग से निधि की निर्धारित राशि पूर्ण हो जायगी और समाज के जीवन में एक नवीन उत्साह उत्पन्न हो सकेगा। इस आशा से जयन्ती समिति ने अपील प्रकाशित की है। आपसे प्रार्थना है कि आप अपील को पूर्णकर अपने कर्तव्य का पालन करे।

निर्णय से पूर्व

पंजाब में हिन्दी का प्रश्न एक बार पुनः अखिल भारतीय स्तर पर विचारार्थ प्रस्तुत है। आगामी आर्यन कन्वेन्शन में आर्य जगत् के चुनींदा प्रतिनिधि गण इस प्रश्न की वर्तमान स्थिति और भावी रूपरेखा के सम्बन्ध मे विचार विमर्श करेंगे।

विगत २७ दिसम्बर को आर्य समाज द्वारा सत्याग्रह स्थगन की घोषणा के पश्चात् से अब तक हिन्दी के प्रश्न पर आर्य समाज और सरकारी दोनों क्षेत्रों में चाहे जो भी विचार विमर्श हुआ हो परन्तु सार्वजनिक रूप से आज हम वहीं हैं जहाँ ७ जून १६५७ को थे।

हमारी प्रारम्भिक मध्यकालीन और स्थगन कालीन सभी सद्भावनाओं का जो उपहास पूर्ण स्वागत हुआ है उसने आर्य समाज की स्थिति और गौरव को भ्रान्त पूर्ण बना दिया है।

आर्य समाज की शालीनता और कार्य पटुता की यद्यपि उसके विरोधियों तक ने प्रशंसा की परन्तु राजनीति के रंगीन चश्मे से उसकी मांगों को समझने और देखने वाले सत्ताधारियों ने अपना हठधर्मिता का त्याग कर स्थिति को निष्पक्ष दृष्टि से देखने का साहस अभी तक नहीं दिखाया है।

सात मास के दीर्घ संघर्ष से परेशान होकर जिस सरकार ने हजारों सत्याग्रहियों के व्ययभार को घटाने के लिए शान्ति के वातावरण में बातचीत करने की अपील की, जिस सरकार के प्रधान मन्त्री स्वयं घोषणा कर गये कि आर्य समाज की ६० प्रतिशत मांगे स्वीकार हो चुकी हैं १० प्रतिशत भी वार्तालाप से सुलझ सकती है, आज वही सरकार इस मास से समस्या के समाधान के प्रति उदासीन है। जब राष्ट्रीय सरकार के नेताओं का ऐसा व्यवहार हो तब राष्ट्र में आश्वासनों और घोषणाओं का क्या नैतिक अस्तित्व हो सकता है?

शहीद सुमेरसिंह तथा अन्य अनेकों बलिदानों और महिलाओं व साधु सन्यासियों की कष्ट परम्पराओं की ऐतिहासिक घटनाओं से युक्त स्मृतियाँ आज प्रत्येक आर्य के हृदय से प्रश्न करती है कि या तो हमारे उद्देश्यों में कोई कमी थी या कार्य प्रणाली सदोष थी, अन्यथा इतने बलिदानों के बाद भी हम लज्जित क्यों हैं लांछित क्यों हैं?

आज ऐतिहासिक दुरभिसन्धियों की मीमांसा त्यागकर हमे अपने पक्ष और तत्सम्बन्धी नीति पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए।

पंजाब में भाषा के आधार पर क्षेत्रीय विभाजन आर्यसमाज की दृष्टि में सांस्कृतिक मौलिक अधिकारों का अपहरण है।

आर्य समाज यह भी मानता है कि उपर्युक्त विभाजन भाषायी संरक्षण की नीति के आधार पर नहीं बल्कि साम्प्रदायिक तुष्टीकरण के राजनैतिक दृष्टिकोण से किया गया है।

इस प्रकार मौलिक अधिकारों का अपहरण और साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन ये दो दोष राष्ट्रीय एकता और मानवीय अधिकारों की विश्व व्यापी रक्षा के लिये चिन्तित हमारे प्रधान मन्त्री की स्वीकृति से पंजाब में पुष्पित पल्लवित हो रहे हैं।

ऐसी स्थिति में आर्य समाज असहयोग और सत्याग्रह आन्दोलनों का सहारा लेने का निर्णय करता है तो वह कोई अनुचित और अनुत्तरदायित्व पूर्ण कार्य कैसे हो सकता है। परन्तु निर्णय से पूर्व हमारे भी दायित्व है।

यदि एक ओर हम सरकार से पंजाबी भाषा का जबरन पढ़ाई के प्रति विरोध और सत्याग्रह करने जा रहे है तो हमें सर्व प्रथम कदम अपने घर से उठाना होगा पंजाब में आर्य समाज की प्रत्येक शिक्षा संस्था की ओर से घोषित कराया जाय कि उसमें पंजाबी की अनिवार्य शिक्षा नीति के अनुसार पंजाबी की पढ़ाई न होगी। प्राथमिक स्तर की आर्य पाठशालाओं में होने वाली इस जबरदस्ती के विरोध में लोग, हिन्दी छात्र, अध्यापक अपनी हड़ताल करने या त्याग पत्र देने की घोषणा करें और अभिभावक गण स्वय इस विरोधात्मक असहयोग में सम्मिलित हों, तब हमारा अनुमान ही नहीं विश्वास है कि हमारे पक्ष की सत्यता को स्वीकार कर सरकार गतिशील हो उठेगी और १० मास से जिस ... पूर्ण ... का उसे आभास नहीं हो सका उसका उसे ज्ञान होने लगेगा। (शेष पृष्ठ ४ पर)

(पृष्ठ ३ का शेष)

इस प्राथमिक परीक्षण के द्वारा ही हम अपने पक्ष की प्रबलता सिद्ध कर देंगे और यदि इसमें कोई कमी रही तो सत्याग्रह के पक्ष पर भी विचार किया जा सकेगा। इस बार सत्याग्रह की रूपरेखा नवीन ढंग से ही बनानी पड़ेगी। पूर्व पद्धति सर्व विदित है और सरकार उसके तरीकों को अब हमें अमल में न लाने देगी।

एक बात इस अवसर पर निवेदन कर देना अप्रासङ्गिक न होगा। यद्यपि आर्य समाज का दायरा अत्यधिक व्यापक है तदपि इस एक राज्योय प्रश्न को अखिल भारतीय रूप देने और हिन्दी के नाम पर हिन्दी प्रेमियों का सहयोग प्राप्त करने के लिए हम जिस प्रक्रिया का अवलम्बन करना चाहिये उसे ध्यान में रक्खा जाय।

पिछली बार जिन अवस्थाओं में हिन्दी रक्षा आन्दोलन को अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान किया गया था वह आपत्ति स्थिति इस समय नहीं है। इस समय शान्ति और गम्भीरता पूर्वक सारी परिस्थिति पर विचार विमर्श किया जाना चाहिए और यदि आन्दोलन को सक्रिय रूप देने का ही निर्णय हो तो हम सार्वदेशिक सभा का ध्यान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरङ्ग सभा ९८।७।५८ के उस प्रस्ताव की ओर आकृष्ट करना चाहेंगे जिसमें पंजाब में हिन्दी के प्रश्न पर अन्तिम निर्णय करने से पूर्व आर्य महासम्मेलन बुलाकर उसमें निर्णय किये जाने और सार्वदेशिक अन्तरङ्ग द्वारा उसके पुष्ट होने पर ही उस आन्दोलन में भाग लेने का निश्चय व्यक्त किया गया है।

हिन्दी के प्रश्न पर हिन्दी के अधिकारी विद्वानों और सम्पूर्ण आर्य जनता की सहमति के इस प्रयत्न के पश्चात् हम पूर्व और वर्तमान की अपेक्षा अधिक सङ्गठित और सुदृढ़ होंगे। हमारी अनकूल की घोषणा का जो अवसर इस बार हमारे प्रतिपक्षियों को मिला है किसी भी दशा में भविष्य में उन्हें प्राप्त नहीं रहना चाहिए। हिन्दी प्रेमियों और आर्य जगत् की एकता ही वर्तमान युद्ध में विजय का मूलमन्त्र है, जब तक यह न होगा हमारी सफलता सन्दिग्ध बनी रहेगी। इसी आधार पर प्रस्तुत समस्या पर विचार और निर्णय होना चाहिए।

राज्यपाल गाडगिल अपने गरेवां में झांकें

पंजाब के राज्यपाल श्री काका गाडगिल ने पंजाब की भाषायी समस्या के सम्बन्ध में जो विचार व्यक्त किये हैं उनमें यद्यपि दमन की भाषा गूंज रही है तदपि उनकी दो एक बात ऐसी जिनका दायित्व स्वयं उन्हें ही स्वीकार करना होगा।

(१) 'दुनिया की ऐसी कोई कठिनाई नहीं जो आपसी समझौते व प्रेम से दूर न की जा सके।'

(२) 'प्रजातन्त्र भी मन की एक प्रवृत्ति है यदि आज कोई सहमत नहीं तो हो सकता है कि कल वह सहमत हो जाय।'

(३) 'यदि कोई व्यक्ति पंजाबी भाषा बोल लेता है और अच्छी तरह समझ लेता है और उस भाषा को देवनागरी लिपि में लिख लेता है तो क्या फर्क पड़ता है?'

(४) 'इसी तरह यदि हिन्दी गुरुमुखी लिपि में लिखी जाती है तो इसमें किसी को एतराज नहीं होना चाहिए।'

(५) किसी भी भाषा के लिए पक्षपात अब अतीत की चीज हो जायगा।'

उपर्युक्त शब्द दैनिक हिन्दुस्तान देहली १०।११।५८ पृष्ठ ५ पर प्रकाशित उनके वक्तव्य से उद्धृत किए गए है—

(१) इस विषय में आर्य समाज की स्थिति सदैव स्पष्ट रही है। आन्दोलन से पूर्व एक वर्ष तक आर्य समाज शान्ति मिशन लेकर घूमता रहा।

अब भी दस मास से शान्ति और न्याय की मांग सद्भावना पूर्वक कर रहा है। जहाँ तक आपसी समझौते का प्रश्न है इसका उत्तरदायित्व क्षेत्रीय फार्मूला निर्माताओं पर है वे ही इसकी व्यवस्था करें। आर्यसमाज के पहल करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

(२) प्रजातन्त्र की मानसिक प्रक्रिया का अनिश्चित समय तक प्रतीक्षा करना अपने सांस्कृतिक और राष्ट्रीयदायित्वों के प्रति पलायनवादी बनना ही कहा जायगा।

(३) आर्य समाज तो इस विचार में कोई आपत्ति नहीं करता पर मास्टर तारासिंह इस बारे में बात सुनने को भी तैयार नहीं है। गाडगिल साहब अपनी बात उन्हें नहीं सुनाते।

(४) आर्यसमाज को हिन्दी के अन्य लिपियों में लिखे जाने पर कोई आपत्ति नहीं है। आवश्यकतानुसार आर्यसमाज आर्यसमाज के सिद्धान्त प्रचार और विचार धारा प्रसार के लिए हिन्दी को फारसी रोमन आदि लिपियों में मुद्रित कर प्रचारित करता रहा है।

विरोध तो अनिवार्यता का है पंजाबी गुरुमुखी में ही हो, हिन्दी देवनागरी में ही हो इस आग्रह भावना में ही कट्टरता और संघर्ष के कीटाणु व्याप्त हैं।

यद्यपि लिपियों की वैज्ञानिक समीक्षा द्वारा नागरी लिपि की श्रेष्ठता सुविदित और सर्वसम्मत है तदपि आर्य समाज इस बात के लिए सहमत होगा कि हिन्दी को गुरुमुखी में भी लिखा जाय परन्तु इसके साथ ही पंजाबी को नागरी लिपि में लिखे जाने की सरकारी मान्यता भी अङ्गीकार करनी और करानी होगी।

यदि समस्या भाषा विज्ञान और लिपि विज्ञान तक सीमित होती तो कभी की हल हो गयी होती। काका साहब को भी माथापच्ची न करनी पड़ती, परन्तु राष्ट्र के कर्णधारों ने समस्या को साम्प्रदायिक तुष्टीकरण द्वारा राजनैतिक सत्ता साधने के लिए प्रयुक्त किया है और अल्पमतों के लिए बहुमतों के अधिकारों का बलात् अपहरण किया है।

(५) यदि काका साहब चाहते हैं कि किसी भी भाषा के लिए पक्षपात अतीत की चीज बन जाय तो उन्हें सिद्धान्त निष्ठा का परिचय देना होगा और विवेक और निष्पक्षपातता के साथ पंजाब की समस्या को सुलझाना होगा। आर्य समाज तो अपने धैर्य का परिचय दस मास तक चुप रहकर दे चुका। अब सरकार के कर्तव्य पालन की बारी है।

सस्वर वेदपाठ की लोकप्रियता

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री प० वीरसेन जी वेदश्रमी (इन्दौर) ने वेदों के सम्बन्ध में जो कठोर परिश्रम और साधना की है उसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी होगी। तीन वेदों को कण्ठाग्र रखने की क्षमता आपने अर्जित की है और प्राचीन परिपाटी के अनुसार सस्वर वेद पाठ को व्यावहारिक बनाने के लिए आप सचेष्ट हैं।

सागर विश्वविद्यालय, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लखनऊ अधिवेशन, गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के महोत्सव व गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में आप सस्वर वेदपाठ का कार्यक्रम प्रस्तुत कर चुके हैं। महाविद्यालय ज्वालापुर की आगामी स्वर्ण जयन्ती पर आपके निर्देशन में सस्वर वेदपाठ शिविर की योजना है। गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के तो वे प्रतिष्ठित स्नातक ही हैं, वहाँ भी आगामी 'आर्यमित्र हीरक जयन्ती' समारोह के अवसर पर सस्वर वेदपाठ शिविर का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

इस प्रकार आर्य जगत् में सस्वर वेदपाठ के प्रति प्रदर्शित सम्मान और स्वागत को देखकर हम कह सकते हैं कि आर्य जनता प्राचीन परिपाटियों की रक्षा के लिए प्रयत्नशील और सचेष्ट दिखाई देती है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरङ्ग सभा ने एक प्रस्ताव द्वारा आर्य जनता, आर्य समाजों, आर्यशिक्षा संस्थाओं आदि से सस्वर वेदपाठ योजना को प्रोत्साहन देने और शिविरादि आयोजित करने का आग्रह किया है। आशा है इस कार्यक्रम को अपना कर हम वेद रक्षा के महत्व पूर्ण कार्य के विषय में अपने उत्तर दायित्व को पूर्ण करने की दिशा में प्रगति करेंगे।

बाल दिवस के नायक नेहरू चिरायु हो

१४ नवम्बर को संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से विश्व भर में बाल दिवस मनाया गया। यही दिन हमारे प्रधान मन्त्री श्री प० जवाहरलाल नेहरू के ६९ वें जन्म दिवस के रूप में सारे भारत और विदेशों में मनाया गया। बालकों के साथ चाचा नेहरू के रूप में नेहरू जी का अनन्य स्नेह होने के कारण बाल दिवस नेहरू जयन्ती का वास्तविक स्वरूप बन गया है। हमारे प्रधान मन्त्री चिरायु हों, उनके संरक्षण में बाल भारत उन्नत हो, तथा भारत महान् अपने यशस्वी गौरव को चिर स्थायी बनाये, इन शुभकामनाओं के साथ हम आशा करते हैं कि भावी भारत के अभ्युत्थान के लिए हमें चिरकाल तक नेहरू जी का नेतृत्व प्राप्त रहेगा।

लाजपतराय जयन्ती

१७ नवम्बर को भारत के स्वाधीनता संग्राम के अग्रणी नायक स्वर्गीय लाला लाजपतराय जी की जयन्ती मनायी गयी। आर्यसमाज आर्य जाति और भारत के साथ लाला जी का जो अभिन्न सम्बन्ध रहा उसके कारण उनकी महान् सेवाओं को कभी नहीं भुलाया जा सकता। साइमन कमीशन के विरोध में उन्होंने लाठियां खाकर भी राष्ट्र की स्वाधीनता की ओर आगे बढ़ाया, उनके उस साहस की घटना उन्हें सदैव के लिये अमर बना गयी।

भारत माता के गौरव की रक्षा, स्वाधीन जीवन, आदर्श शिक्षा महिला उद्धार हरिजनोद्धार, संस्कृति और भाषा की उन्नति आदि उसके ऐसे कार्य हैं जिनके लिए उनका जीवन हम सदैव प्रेरणा देता रहेगा।

लाला जी का यश यावच्चन्द्र दिवाकरौ व्याप्त रहेगा और हमें भारत के नव निर्माण की प्रेरणा देता रहेगा। कीर्तिर्यस्य स जीवति।

जीवेम शरदः शतम्

[श्री नानकप्रसाद एम०ए०,बी०टी०,साहित्यरत्न लेक्चरार टामसन कालेज,गोंडा]

★

आज के वैज्ञानिक युग में सौ वर्ष तक जीवित रहना मनुष्यों के लिए कठिन बन गया है पर विद्वान् लेखक ने बताया है कि हमारे पूर्वज चार सौ वर्ष तक जीवित रहते थे। "जीवेम शरद शतम्" से प्रेरणा प्राप्त करके तथा तदनुसार आचरण करके हम भी सौ वर्ष की आयु प्राप्त करें, इसके लिए आवश्यक है कि हम वेदों की ओर लौटें और अपने पूर्वजों के पदचिह्नों पर चलें।

—स० सम्पादक

वेद का एक मन्त्र है —

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरद शत जीवेम् शरद शत छशृणुयाम शरद शत प्रब्रवाम शरद शतमदीना स्याम शरद शत भूयश्च शरद शतात् ॥ य० अ० ३६।म० २४॥

इस मन्त्र मे परमेश्वर से केवल सौ वर्ष तक ही जीने की प्रार्थना नहीं की गयी है अपितु उससे भी अधिक जीने, सुनने, देखने और अधीन न रहने की भी प्रार्थना की गई है। इस मन्त्र की विशेषता यह है कि प्रभु से केवल जीने की ही प्रार्थना नहीं की गई वरन् ऐसे जीवन के प्रदान करने की प्रार्थना की गई है जो स्वस्थ,पवित्र तथा वाञ्छनीय भौतिक और पारलौकिक सुख समृद्धि और महानता का प्रदान करने वाला हो।

प्राचीन भारतवर्ष में सभी मनुष्य दीर्घायु होते थे। 'मनु संहिता" के अनुसार मनुष्यों की आयु सतयुग में चार सौ वर्ष, त्रेता में तीन सौ वर्ष, द्वापर मे दो सौ वर्ष और कलयुग मे सौ वर्ष की मानी गई है। सतयुग में चार सौ वर्ष की आयु होने के कारण मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक और कामना पूर्ण था। कालान्तर मे शनै शनै, रोगो की वृद्धि हुई और पूर्ण कामना की न्यूनता से मनुष्यों की आयु भी क्षीण होने लगी। उपलब्ध प्रमाणों से हम महाभारत काल के प्रसिद्ध पुरुषों की आयु का विवरण प्राप्त होता है। द्रोणाचार्य ने चार सौ वर्ष की आयु पाई थी। उनके सबंध मे 'महाभारत' मे निम्नलिखित श्लोक प्राप्त है।

'आकर्णपलित श्याम,
वयसाशीति पचक।
रणा पर्यचरद् द्रोणो,
वृद्ध षोडशवर्ष वत् ॥"

इस श्लोक के अनुसार द्रोणाचार्य के केश कानो तक अत्यन्त श्वेत हो गये थे, उनका रङ्ग कुछ श्यामल था आयु मे वे पाँच अस्सी अर्थात् चार सौ वर्ष के थे। इतने वृद्ध होने पर भी वे सोलह वर्ष के बालक के समान स्फूर्ति से युद्ध कर रहे थे। पचाल नरेश द्रुपद की आयु द्रोणाचार्य से कुछ न्यून थी। आचार्य कृप अत्यन्त वृद्ध थे। उनकी आयु भी द्रोणाचार्य की अपेक्षा कुछ कम थी प्राग्ज्योतिष नरेश महाराज भगदत्त की आयु दो सौ वर्ष की थी। महाराज वाह्लिक की अवस्था महाभारत के युद्ध के समय एक सौ पच्चासी वर्ष की थी। भीष्म पितामह युद्ध के समय लगभग एक सौ आठ वर्ष के थे। धृतराष्ट्र एक सौ अट्ठारह वर्ष जीवित थे। युद्ध के समय श्रीकृष्ण की आयु नवासी वर्ष की थी। उसके पश्चात् वे छत्तीस वर्ष जीवित रहे। युद्ध के समय श्रीकृष्ण की अवस्था भीष्म पितामह के समान थी। महाभारत युद्ध मे कर्ण की आयु पचहत्तर वर्ष से अधिक थी, युधिष्ठिर की अवस्था उस समय बहत्तर वर्ष की थी तथा उन्होंने छत्तीस वर्ष राज्य कर एक सौ आठ वर्ष की आयु प्राप्त की। भीम युद्ध के समय उन्नासी वर्ष के थे और एक सौ पाँच वर्ष जीवित थे। दुर्योधन की मृत्यु उनहत्तर वर्ष की आयु मे हुई। युद्ध के समय अर्जुन लगभग छाछठ वर्ष के थे और वे एक सौ दो वर्ष जीवित रहे। बल्देव कृष्ण से ज्येष्ठ थे। उन्होंने एक सौ अट्ठारह वर्ष की आयु प्राप्त की। महाभारत युद्ध मे अश्वत्थामा की आयु पचहत्तर वर्ष की थी।

इस निबन्ध के प्रारम्भ मे ही वेद मन्त्र का प्रमाण देते हुए हमने बतलाया है कि ईश्वर से सौ वर्ष से भी अधिक जीवित रहने की प्रार्थना की गई है। अत इस प्रकार के आयु विवरण को केवल काल्पनिक नहीं कहा जा सकता। जैसे जैसे वैज्ञानिक आविष्कार होते जाते हैं, भारतवर्ष की प्राचीन काल्पनिक कही जाने वाली बातें सत्य का रूप धारण कर हमारे सामने आती जाती है। प्राचीन ऋषि मुनि समाधि लगाते थे और उसी अवस्था मे उनके सैकड़ों वर्ष जीवित रहने का वर्णन हमे प्राप्त होता है। उनके इस दीर्घ जीवन का आधार, उनका आत्म विश्वास, उनके योग क्रिया तथा उनका स्वास्थ्य तो था ही साथ ही साथ उसका कारण प्रभु की कृपा भी थी। परमेश्वर की कृपा की अवहेलना नहीं की जा सकती। उसकी इच्छा और कृपा चाहे मनुष्य के कर्मानुसार ही क्यों न हो पर उसका महत्व कम नहीं है। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपनी मृत्यु के समय इस विचार धारा की पुष्टि की है। मृत्यु के समय उन्होंने कहा था—प्रभु तेरी यही इच्छा थी, तेरी इच्छा पूर्ण हो। इस लेख के प्रारम्भ में दिये हुए वेद मन्त्र में भी परमेश्वर की कृपा ही प्राप्त करने की प्रार्थना की गई है।

नेशनल हेराल्ड २१ अक्टूबर ५८ में प्रकाशित लन्दन का एक समाचार कहता है कि बर्फ की सहायता द्वारा असीमित समय तक मनुष्य जीवित रखा जा सकता है। उसका स्वास्थ्य भी पूर्ण रूप से अपरिवर्तित बना रहेगा। इस अवस्था मे मनुष्य नक्षत्रो तक की यात्रा सुरक्षित रूप से कर सकता है। यह प्रकाशित समाचार समाधि द्वारा प्राचीन ऋषियो के सैकड़ो वर्ष जीवित रहने की कथाओं को निश्चय ही सत्य का रूप दे देता है। नेशनल हेराल्ड मे प्रकाशित उस समाचार का भाव इस प्रकार है—बहुत से मनुष्य स्वेच्छा से अपने ऊपर एक अत्यन्त आश्चर्य प्रद प्रयोग कराने को प्रस्तुत हो गए हैं, जिसके द्वारा मनुष्यों का शरीर असीमित समय तक बिना जीवन शक्ति नष्ट किये हुए सुरक्षित रखे जा सकते है और पुन उन शरीरो को रूपान्तरित किया जा सकता है सिद्धान्त रूप मे बर्फ के आधार पर स्त्रियो और पुरुषो का बहुत वर्षों तक अपने स्वास्थ्य को किंचित मात्र भी बिना नष्ट किये हुए रखे जा सकने का विचार विद्यमान था। यह प्रयोग आंशिक रूप में प्रयोगशाला के पशुओं पर किया जा चुका और मनुष्यो के, भविष्य मे, अन्तरिक्ष भ्रमण में सहायता पहुचाने के लिए उसका परीक्षण हो रहा है। नक्षत्रो की यात्रा के लिए जिसमे अनेक वर्षों के लगने की सम्भावना है, यात्रियो को समय के प्रभाव से लिए सम्भवत जमा दिया जाय और इस प्रकार अन्तरिक्ष के उड़ान में उन्हे आक्सीजन भोजन तथा पानी की आवश्यकता न पड़ेगी और सूर्य की हानिकारक किरणों से भी वे बहुत कुछ सुरक्षित रहेंगे।

प्राचीन भारतवासियो ने यदि इसी प्रकार के साधनों द्वारा चन्द्रलोक अथवा दूसरे नक्षत्रों का ज्ञान प्राप्त किया हो तो असम्भव नहीं है। जिस चन्द्रमा तक इस समय पहुचने के निरन्तर वैज्ञानिक प्रयत्न हो रहे हैं, उसके विषय में प्राचीन भारतीय साहित्य में अनेक तथ्य प्राप्त होते हैं, जैसे 'चन्द्रमा अपने नक्षत्रों सहित दीर्घायु वाला है और हम भी दीर्घायु प्रदान करता है, चन्द्रमा पृथ्वी का शिशु है, चन्द्रमा का कृष्ण भाग पृथ्वी का हृदय है, सूर्य ही प्राण है और रयि चन्द्रमा है। इन बातों से यह प्रतीत होता है कि भारतीयो को चन्द्रमा इत्यादि के विषय मे ज्ञान था।

हाँ तो हम 'जीवेम शरद शतम्' के विषय मे लिख रहे थे। ऐसा विश्वास किया जाता है कि ईश्वर की प्रार्थना मे कष्ट निवारण और सफलता प्रदान करने की असाध शक्ति है। यदि तर्क और बौद्धिकता के आधार पर प्रार्थना तथा प्रभु के इस सीधे सम्बन्ध पर न भी विश्वास किया जाय तो भी मन की तथा इच्छा शक्ति पर विश्वास करना ही पड़ेगा। मनुष्य अपने विचारों और मन की शक्ति के अनुरूप अपना निर्माण कर सकता है। ऋग्वेद में निम्नलिखित मन्त्र आता है—

त्रयम्बक यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्
उर्वा रुकमिन बन्धनान् मृत्यार्मुक्षिया ऽमृतात् ॥

यह वह मन्त्र है जो 'मृत्युञ्जय' मन्त्र के नाम से प्रसिद्ध है। पौराणिक पण्डितो के मतानुसार इस मन्त्र के जप के द्वारा मृत्यु का निवारण होता है और रोगी स्वास्थ्य लाभ करता है। इस मन्त्र के अर्थ कई प्रकार से किये गए हैं पर हमे इतना तो मानना ही पडेगा कि इस मन्त्र मे सर्व शक्तिमान परब्रह्म जो ससार की उत्पत्ति, तथा प्रलय का करने वाला है, और जिसका यश सुगन्ध के समान सर्वत्र फैला हुआ है और जो इस ससार मे प्रत्येक वस्तु को पुष्ट करने वाला है, उससे प्रार्थना की गई है कि जिस प्रकार खरबूजा पक कर अपनी बेल से स्वय अलग हो जाता है उसी प्रकार से मनुष्य भी वृद्धावस्था तक जीवन धारण करते हुए इस ससार का त्याग ... यदि मन के शक्ति का प्रभाव होता है, तो चाहे उपर्युक्त मन्त्र का प्रार्थना रूप मे जप द्वारा कोई फल न हो परन्तु मन और इच्छा शक्ति प्रबल होने से तो इस मन्त्र का प्रभाव होना चाहिये और मनुष्य की सौ वर्ष अथवा इससे अधिक जीने की इच्छा पूर्ति होनी चाहिये।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है और इस कारण यदि लोगो का यह विश्वास है कि वेद मन्त्रो में एक छिपी हुई शक्ति स्वाभाविक रूप मे स्थित है, तो इसमें कोई अनौचित्य नहीं प्रतीत होता। यह सब अनुसन्धान के विषय हैं और इन पर मनन की आवश्यकता है।

★

बैंकोक (थाइलैण्ड) के आर्य बन्धुओं का प्रशंसनीय उत्साह

सभा प्रधान के नाम कर्तव्य पालन की प्रतिज्ञा करते हुए पत्र

समाज द्वारा दशांश के स्थान पर चतुर्थांश भेजने का अनुकरणीय दान

आर्यमित्र के ८२ ग्राहकों का मूल्य प्रदत्त-अन्य सहायता का अभिवचन

भारत की आर्यसमाजें अनुकरण करें

सेवा मे—श्रद्धेय प० हरिशंकर जी शर्म्मा
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
लखनऊ

आर्यसमाज २/१ जानावा
पा० ७९९, बेंकोक
२२ ९।५८

श्रीमन्नमस्ते !

विदित हो कि स्थानीय आर्य समाज की अन्तरङ्ग सभा ने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की आर्थिक स्थिति सम्बन्धी आप की मार्मिक अपील पर विचार विमर्श करते हुए यथा शक्त सहायता देना निश्चय किया है।

हमारी अन्तरङ्ग सभा ने सभा सदस्यों से मासिक चन्दे में वृद्धि करने की अपील की है और दशांश के जगह चतुर्थांश आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश तथा एक चतुर्थांश सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली को ईसाई निरोध निमित्त भेजते रहने का निश्चय किया है।

स्थानीय आर्य समाज बंकाक साप्ताहिक आर्यमित्र की ४० प्रतियां प्रचारार्थ मंगा रहा है तथा सार्वदेशिक आर्य पत्रिका की ४५ प्रतियां गोरखपुर के विभिन्न ग्रामों में सम्बन्धित आर्य परिवारों को भेज रहा है साथ ही ईसाई निरोध के निमित्त आर्यसमाज चनरा हजारीबाग को ५०) पचास रुपया मासिक सहायता प्रदान कर रहा है। यदि उत्तर प्रदेशीय समाज अपने सदस्यों के चन्दे मे कुछ वृद्धि कर दें और इस बढ़ोत्तरी रकम को ईसाई निरोध तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के सहायतार्थ अलग खर्च करे तो सभा काफी प्रगति कर सकती है। अगर समाजें थोड़ा भी ध्यान दें तो ऐसे उत्साही सदस्य मिल जायेंगे जो सहर्ष आर्यमित्र खरीदने को उद्यत हो सकते हैं। ऐसा करने से आर्यमित्र आर्थिक संकट से मुक्त होकर समाज की अच्छी सेवा करने मे समर्थ होगा। आर्यमित्र को साधारण जनता सुरुचि से अपनावे इसके लिए आवश्यक है कि विशेष समाचार सामग्री का समावेश हो। सम्प्रति आर्य जगत् पुरानी लीक पर धीरे धीरे चल रहा है। आर्य जगत् को ठीक प्रगति के लिए आवश्यक है कि विद्यार्य सभा–धर्मार्य सभा व राजार्य सभा इन तीन सभाओं को अखिल भारतीय स्थान दिया जाय। इन ३ विषयों के योग्य विद्वानों को इनका भार सौंपा जाय और उन्हें काम करने में आर्य जगत् का सहयोग प्राप्त हो। राजार्य सभा के संगठन के प्रति आर्य नेता उदासीन हैं। राज शक्ति के अभाव में विद्या सभा व धर्म सभा पूर्ण प्रगति नहीं कर सकती अतएव राजार्य सभा के संगठन पर अविलम्ब ध्यान देने की आवश्यकता है। हम राष्ट्र की उन्नति के लिए चुनाव में भाग लेना चाहिए।

आप लोगों की धर्म निष्ठा निस्वार्थ सेवा तथा अपने अभीष्ट के प्रति सतत् प्रयत्न सराहनीय है और निश्चय ही सफलता आपका अनुसरण करेगी। एतदर्थ प्रभु से आप लोगों के स्वास्थ्य व दीर्घायु होने की हम सब लोग कामना करते हैं।

—बाबूलाल आर्य
उप प्रधान आर्य समाज जानावा बैंकाक (थाइलैण्ड)

श्री राम चरित्र जी भोगन जमीदार—



पिछले दिनों गुडलम (मौरीशस) में मौरीशस उत्तर प्रान्तीय आर्य सम्मेलन हुआ था। उसके आप स्वागताध्यक्ष थे।

ऋषि दयानन्द की विशेषताएं

[श्री प्रभामित्र विद्यावारिधि आचार्य, फैजाबाद]

महर्षि दयानन्द इस युग के ब्रह्मा थे। उनकी चतुर्मुखी क्रान्ति यही सिद्ध करती है। उन्नीसवीं शताब्दी के इस सुधारक के समान कार्यक्रम, वैदिक साहित्य का प्रखर और प्रकांड अध्येता, भारतीय परम्परा से प्राप्त अष्टांग योग का साधक, ब्रह्मचारी, शरीर और आत्मा से सुसंस्कृत सर्वाङ्ग पूर्ण व्यक्तित्व, कोई और दृष्टिपथ में नहीं आता। अत्यन्त संक्षेप से उनकी विशेषतायें मेरे विचारानुसार अधो लिखित हैं—

१—आरम्भ में मृत्युंजय बनने की, और ईश्वर के सच्चे स्वरूप की जिज्ञासा (जिसको हृदय और मस्तिष्क दोनों समान रूप से स्वीकार कर सकें) इस तत्वज्ञान के प्राप्ति की उत्कट कामना थी।

२—भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम में परोक्ष रूप से कार्य करने के कारण तथा बहुत से भारतीय नरेशों को स्वतन्त्रता के संग्राम में परोक्ष रूप से प्रेरणा देने वाले श्री विरजानन्द जी के शिष्य होने के कारण, आर्यावर्त की स्वतन्त्रता के वे महान् इच्छुक थे। इसके लिए उन्होंने वेदों और वैदिक साहित्य का देखा; मुक्ति की कामना ने उन्हें मानव मात्र को दासता से छुटकारा देने वाला अग्रदूत बना दिया। जिसके फलस्वरूप श्याम जी कृष्ण वर्मा को विदेश भेजा जो भविष्य में सशस्त्र क्रांति के नेता बने।

३—सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और संस्कार विधि के निर्माण द्वारा वे वेद को केन्द्र बनाकर शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति का शंख मानव मात्र को सुना गये। शंकर की प्रस्थानत्रयी (गीता, उपनिषद्, वेदान्त) के समान ही महर्षि की ये ३ प्रस्थानत्रयी हैं। जिसमें समस्त संसार के सर्व विधि समस्याओं का सन्तोषजनक तार्किक समाधान करने का प्रयत्न किया है। साथ ही देवनागरी लिपि को वे आर्यावर्त की लिपि और आर्य भाषा को राष्ट्र भाषा के रूप में देखना चाहते थे।

४—वे विशुद्ध आर्ष शिक्षा पद्धति चाहते थे। जिससे संसार में पुनः ऋषि, मुनि, राजर्षि तैयार हो सकें, परन्तु साथ ही कला कौशल, शिल्प, यन्त्रकला, हस्तकला, भूगर्भ, विमान, तार आदि विद्याओं से स्वदेश को परिपूर्ण करने के इच्छुक एवं तदर्थ प्रयत्नशील थे। जैसा कि उनके पत्र व्यवहार और रचित ग्रन्थों से पता चलता है।

५—उनके आकर्षक प्रभावशाली व्यक्तित्व ने लेखराम, गुरुदत्त, श्रद्धानन्द, लाजपतराय, रानाडे जैसे लोगों पर जादू सा असर किया। उनकी शारीरिक और आत्मिक शक्ति महान् थी। काम, क्रोध और लोभ पर उन्होंने पूर्ण विजय प्राप्त की थी। गुण कर्म स्वभावानुसार वर्ण व्यवस्था, आश्रम धर्म का पुनः प्रतिष्ठापन, वेदों की स्वतः प्रामाणिकता, निर्भ्रान्तता और वे सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ हैं इसका पुष्टीकरण वेद नर और नारी सबके लिए हैं, इस सत्य का उद्घाटन त्रैतवाद की उद्घोषणा, चक्रवर्ती साम्राज्य की कामना, १६ संस्कारों से ही मानवों को उत्कृष्टता होगी, इत्यादि विचारों का प्रचार, आर्य समाज का वैधानिक संघटन, सभी मतों में तार्किक तत्व एवं तथ्यान्वेषण का दृष्टि ये सभी ऋषि दयानन्द की विशेषतायें हैं। वे एक साथ कुशल वक्ता, लेखक और प्रचारक थे। गौ आदि पशुओं की रक्षा और कृषि की समुन्नति का भी ध्यान उन्हें था। इसलिये गोकृष्यादिरक्षिणी सभा और गो करुणा निधि की उन्होंने प्रतिष्ठा और रचना की। पाखण्ड खण्डन और प्रतिमा पूजन खण्डन से वे मतवादियों को एकता के अधिक निकट लाये। इनके स्थान पर पंच महायज्ञ का वे प्रतिष्ठापन चाहते थे। नारियों को भी ब्रह्मचर्य धारण, यज्ञोपवीत वेदाध्ययन का अधिकार है। इसके वे प्रवर्तक थे। दया, क्षमा, विद्या विनय, निराभिमानता आदि सद्गुणों के वे मूर्त रूप थे। कहाँ तक लिखें। कालिदास के शब्दों में—

त वेधा विदधे नूनं महाभूत समाधिना। तथा हि सर्वे तस्यासन् परार्थैक फला गुणाः॥

★

सामयिक समस्याएँ

आर्यसमाज का विदेश प्रचार

[श्री विजयेन्द्र शर्मा, साहित्यालङ्कार, फीजी]

★

फीजी निवासी भाई ने प्रस्तुत लेख में जो भावनायें व्यक्त की हैं वे आर्यों के महान् दायित्व को स्मरण करा रही हैं। आर्य समाज का उद्देश्य संसार का उपकार करना है और उसके लिए साधन है भारतीय वैदिक धर्म। भारत से गए हुए प्रवासी बन्धु इस सांस्कृतिक सन्देश के लिए आर्य समाज की ओर महान आशा भरी दृष्टि से देखते हैं और उनमें आर्य समाज के प्रति महान् श्रद्धा भावना है। आर्य समाज के लिए विदेश प्रचार की समस्या सार्वजनिक समस्या में भी महत्वपूर्ण होनी चाहिए। आशा है आर्य नेता विदेश प्रचार की समस्या की ओर ध्यान देंगे। —सम्पादक

★

युवक विद्वान् श्री उषर्बुध जी का लेख "भारतेतर देशों में प्रचार की समस्या" (आर्यमित्र १३ अप्रैल १९५८) श्री विश्वबन्धु वेदालंकार एम० ए० का" युग की पुकार (२५ ५ ५८) और श्री गंगाप्रसाद जी एम०ए० (२५ जून ५८) का लेख "आर्यसमाज और विदेश प्रचार" यहां फीजी में मैंने आज अगस्त दिनांक१५ को मनन किया। इन विद्वानों ने आर्य जगत् का ध्यान एक ऐसी समस्या की ओर आकृष्ट किया है जिसको सुलझाना नितान्त आवश्यक है। हमारे गुरु श्रेष्ठ महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज और परोपकारिणी सभा की स्थापना इसीलिए की थी कि इनके द्वारा 'वैदिक प्रकाश' का ज्ञान देश विदेश में होगा; परन्तु इस विश्व में सैकड़ों ऐसे देश हैं जहां आज तक वैदिक धर्म के सम्बन्ध में एक शब्द भी न तो कहा ही गया है और न साहित्य के द्वारा ही आर्य समाज का प्रचार किया गया है। जब तक विशेष रूप से विदेशों में प्रचार करने योग्य प्रचारकों को तैयार नहीं किया जाता तब तक कुछ हो भी सकेगा, ऐसी आशा नहीं। जो आर्य विद्वान् भारत से बाहर आते हैं वे इस बात का भलीभांति अनुभव करते हैं।

संसार के सभी देशों में ईसाई मिशनों का अच्छा प्रचार है। उनका सभी काम नियमपूर्वक, विधिवत होता है। एक नहीं अनेक केन्द्र ऐसे हैं जहां उनके प्रचारक तैयार होते हैं और अज्ञानान्धकार को बढ़ाने के लिए उनके द्वारा लगातार साहित्य का प्रकाशन होता रहता है। यहां भी (फीजी में) ईसाइयों के बहुत केन्द्र हैं। कई केन्द्रों में प्रचारक तैयार होते हैं। 'रामकृष्ण' मिशन का भी काम अच्छी तरह चलता है। प्रशान्त महासागर स्थित द्वीपों के आदि वासी जो कभी भूत प्रेत और मूर्तिपूजक थे आज सबके सब अधिकांश ईसाई हैं। ईसाई साहित्य उनके लिए उन्हीं की भाषाओं में उपलब्ध है। आप चाहे जिस भाषा में बाइबिल खरीद लीजिए; सुन्दर से सुन्दर, अत्यन्त सस्ते दामों में सचित्र। प्रशान्त महासागर में लाखों द्वीप हैं, इनमें से एक आध को छोड़कर बाकी द्वीपों में न तो आर्य समाजी हैं और न आर्य समाज के सम्बन्ध में व यहां के निवासियों ने एक भी शब्द सुना है। फीजी में भी एक भी आदिवासी आर्य समाजी नहीं, प्रत्युत सैकड़ों भारतीय भाई ईसाई हो चुके हैं. कहां तक लिखूं?

आर्य जगत् के नेताओं को समझना चाहिए कि भारत से बाहर एक बहुत बड़ा संसार है' और इस संसार में वेदों के पावन उपदेश को पहुंचाना अनिवार्य है।

आर्य जगत के पास ऐसे संस्थान होने चाहिए जिनमें देश विदेशों के लिए उच्चकोटि के प्रचारक बनें और विभिन्न भाषाओं में साहित्य का प्रकाशन निरन्तर होता रहे। यह एक अति आवश्यक और महान् कार्य होगा। मैं स्वयं इस समय आर्थिक संकट में फंसा हूं परन्तु तो भी अपने एक जून के भोजन में भी कमी करके ऐसे संस्थान के लिए चन्दा भेजने का संकल्प कर चुका हूं।

जिन प्रचारकों में "मिशनरी भावना" हो, जो आदर्श जीवन बिता सकें और जो "धन लोलुप" न हों उन्हें ही विदेशों में प्रचार करने के लिए भेजा जाना चाहिए। स्वार्थी और धनलोलुप लोगों से हानि ही होती है लाभ नहीं। अगर विभिन्न देशों के निवासियों में से ही चुन-चुन कर कुछ प्रचारक तैयार किए जायें तो और भी अच्छा हो। चीन में प्रचार करने के लिए चीनी और भारतीय दोनों हों। अमरीका में कार्य करने के लिए दो चार अमरीकनों को भी तैयार किया जाना चाहिए। अगर आर्य समाज के पास ऐसा कोई केन्द्र होता तो अब तक काफी सफलता मिल जाती। अब भी कार्य असम्भव नहीं है। जो आर्यसमाज

(शेष पृष्ठ १० पर)

महर्षि दयानन्द और वैदिक विचारों की मांग

[श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी, पत्रकार, मेरठ]

> ऋषि के जीवन स्तर का सार 'चरित्र' शब्द में निहित है। उनका महान जीवन चरित्र एक आदर्श व्याख्या है। प्रत्येक व्यक्ति चरित्र में महान् बनकर ही राष्ट्र की सच्ची सेवा कर सकता है। उपासना की पद्धतियों और धार्मिक विश्वासों के सम्बन्ध में आग्रह की अपेक्षा सर्व प्रथम चरित्र विकास को प्रधानता दी जानी चाहिए। राष्ट्र के वर्तमान नैतिक विकास के लिए ऋषि का चरित्र एक आदर्श प्रकाश स्तम्भ है और सदैव बना रहेगा।—सम्पादक

उन्नीसवीं शताब्दी में हमारे देश में एक ऐसी पवित्र आत्मा ने जन्म लिया जिसके कठोर परिश्रम से यह देश अपनी प्राचीन संस्कृति का पुनर्जीवित करने में समर्थ बना। वह आत्मा ऋषि दयानन्द के नाम से इस लोक में विख्यात हुई। उन्होंने अपना समस्त जीवन इस देश की उन्नति में अर्पण कर दिया।

ऋषि दयानन्द ईश्वर में पूर्ण विश्वास रखते थे। उनका कहना था कि आप ज्ञान का संसार भर में प्रचार हो। वे वेदों के द्वारा मानव समाज [illegible] करना चाहते थे। वे [illegible] का प्रचार जब तक न होगा तब तक मानव ज्ञान [illegible] कार के गहरे गर्त में न निकल पायेगा। उनका यह विश्वास था कि आप ज्ञान [illegible] ही मानव [illegible] का मुख्य आधार है। उनके जीवन की यह विशेषता रही कि वे समस्त मानवों का हित चिन्तन करते थे।

ऋषि दयानन्द अपने ध्येय की पूर्ति में जीवन भर लगे रहे। उन्होंने अपने ध्येय में सफलता पाई। सफलता भी ऐसी कि विदेशी विद्वानों को भी वैदिक विचारों ने प्रभावित किया। सारे देश के विद्वानों में यह उथल पुथल मच गई कि 'यह दयानन्द कौन है जो ईश्वर में अटूट श्रद्धा और वेदों में अटल विश्वास रखता है।' ऋषि दयानन्द ने निर्भयता पूर्वक उन विचारों को जनता और विद्वानों के समक्ष रखा जिनकी प्रायः सभी धर्म अवहेलना कर रहे थे।

सोचना और देखना यह है कि इतने महान् कार्य के लिए किन किन बातों की आवश्यकता थी। यह सब कार्य साधारण व्यक्ति द्वारा कदापि सम्पन्न नहीं हो सकते थे। ऋषि दयानन्द ने साधना की। उन्होंने घोर तपस्या में अपने शरीर को कुन्दन जैसा बना लिया था। उन्होंने समय का सदुपयोग [illegible] उठाया। जीवन के प्रारम्भिक भाग में वे सच्चे संन्यासियों की खोज में हिम से ढके पर्वतों में भटकते फिरे। इस समय मैं हिमालय में सन्तों की खोज के वह स्थल पढ़ता हूं जो स्वामी दयानन्द के प्रारम्भिक जीवन से सम्बन्ध रखते हैं तो मैं आश्चर्य चकित हो जाता हूं। मुझे टिहरी गढ़वाल के उन अनेक स्थलों में घूमने का अवसर मिला है जिनमें स्वामी दयानन्द महात्माओं की खोज के लिए रहे। आज से सौ वर्ष पूर्व हमारे देश में यातायात के ऐसे साधन नहीं थे जैसे आज हैं। उस समय स्वामी दयानन्द जैसे तपस्वी को बीहड़ वनों में अनेक आपत्तियों का सामना करना पड़ा। बद्रीनाथ के आगे अलकनन्दा पार करते समय तो उन्हें मृत्यु के साथ एक प्रकार का संघर्ष करना पड़ा।

यहां मैं इस बात का उल्लेख कर देना भी आवश्यक समझता हूं कि स्वामी दयानन्द के इस जीवन वृत्तान्त का समुचित संग्रह नहीं हुआ जो इन वन पर्वतों की घटनाओं से सम्बन्ध रखता है। मैं गत पांच वर्षों में कई बार बद्रीनाथ गया। इधर टिहरी तो मुझे अनेक बार जाने का अवसर मिला। बहुत से वृद्ध पण्डों से भी मैंने स्वामी दयानन्द के बारे में बात की परन्तु इससे अधिक कुछ भी पता नहीं चल सका कि दयानन्द नाम के एक साधु केदारनाथ व बद्रीनाथ की तरफ आये थे। इतना पता तो स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र से भी चल जाता है।

मैंने प्रारम्भ में बताया कि स्वामी दयानन्द ने आर्ष ज्ञान के प्रचार के लिए अपना जीवन अर्पित किया। उन्होंने आर्ष ग्रन्थों की खोज की और आर्य समाज की स्थापना करके वैदिक धर्म के प्रचार का महान् कार्य किया। यह सब कार्य यद्यपि उस समय के धर्म गुरुओं को अप्रिय लगा परन्तु वे स्वामी दयानन्द से टक्कर न ले सके। धीरे धीरे भारत भर में आर्य समाजों की स्थापना हुई। ऋषि दयानन्द के विचारों ने मानव समाज में एक महान् क्रान्ति उत्पन्न कर दी। इसका परिणाम यह हुआ कि जनता के विचारों में परिवर्तन होने लगा। वे मिथ्या धर्माडम्बर से हटने लगे और उन्होंने बहुत सी बातों को धर्म की कसौटी पर जांचना आरम्भ कर दिया।

ऋषि दयानन्द का मार्ग एक कठोर मार्ग था। उस मार्ग का समझना [illegible] और उस पर आचरण करना दूसरी बात। आर्य समाज के प्रचार ने जनता के विचारों में तो परिवर्तन उत्पन्न कर दिया परन्तु उस पर अमल कुछ ही व्यक्तियों ने किया। इसका परिणाम आज हमारे सम्मुख विद्यमान है कि आज हमारे देश का नैतिक स्तर काफी गिर चुका है। स्वामी दयानन्द चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति आर्य बने। आर्य से उनका अभिप्राय श्रेष्ठ व्यक्ति से था। हम उस श्रेष्ठता की ओर कहां तक बढ़े यह एक विचारणीय प्रश्न है।

इस समय सभी चाहते हैं कि देश का चरित्र बने। सभी की इच्छा है कि देश में ईमानदारी ही ईमानदारी पर दृष्टि पड़े परन्तु देखना तो यह है कि चरित्र बने तो कैसे बने। हम दूसरों को सत्यवादी देखना चाहते हैं, हम दूसरों को ईमानदार देखना चाहते हैं परन्तु यह तो तभी सम्भव है जब हम स्वयं सत्य का आचरण करें और साथ ही ईमानदारी भी बरतें।

इस प्रकार के चरित्र को बनाने का यत्न ऋषि दयानन्द ने किया था। परन्तु आपने उसे अपनाया नहीं। अधिक गहराई में न जाकर इस समय हम फिर आर्य समाज की ओर ही इस ढंग के चरित्र निर्माण के लिए देखना होगा। आर्य समाजों को भी ऐसे कार्य अपनाने होंगे जो सत्य, ईमानदारी और नैतिकता से परिपूर्ण हों। ऐसा करने की शक्ति आज भी आर्य समाज में है, परन्तु उस शक्ति का संचालन करने वाले व्यक्ति की भी तो आवश्यकता है। इस समय इस बात की आवश्यकता है कि जो मार्ग ऋषि दयानन्द ने प्रदर्शित किया था उस पर कोई जनता को ले जा सके। आचरण के बिना तो कुछ होने वाला नहीं। आज आचरण की सही मार्ग पर ढालने वाला व्यक्ति सामने आना चाहिए।

ऋषि दयानन्द प्रत्येक व्यक्ति से कुछ न कुछ त्याग चाहते थे। वह त्याग क्या था? यही कि जीवन में वह मिथ्याचरण को कदापि स्थान न दे। परन्तु इस समय ऐसा त्याग करने वाले कितने व्यक्ति हैं? मानव समाज का जीवन स्तर उन्नत करने में केवल आज की भौतिक उन्नति और राजनीति कुछ न कर सकेगी। इसके लिए धार्मिकता की आवश्यकता है। इस धार्मिकता को लाने का कार्य ऋषि दयानन्द ने आर्यों को सौंपा था। आज इस बात की आवश्यकता है कि आर्य समाज जन साधारण में धार्मिक भावना उत्पन्न करे। आर्य समाज में काम करने वाले व्यक्ति कष्ट उठाकर भी अपने चरित्र को निर्मल बनाए रखने का प्रयत्न करें। वे भौतिक प्रलोभनों से बचें और साधारण जीवन को ही आनन्दमय समझ कर वैदिक धर्म के प्रचार में सहायक बनें। इस समय आर्य समाजों को जन प्रिय कार्यक्रम बना कर ऐसे कार्यों को हाथ में लेने की आवश्यकता है जिनसे मानव समाज का उत्थान हो। ★

आर्यमित्र हीरक जयन्ती आदि समारोह उ० प्र० के आर्यों के गौरवानुरूप ही संपन्न होना चाहिए

प्रान्तीय अन्तरंग सदस्यों व कार्य कर्ताओं मे सभा प्रधान श्री प० हरिशङ्कर शर्म्मा व सभा मन्त्री ठा० फूलनसिंह तथा श्री बाबू कालीचरण की प्रार्थना

आगामी शिवरात्रि ६, ७ ८ ९ मार्च १९५९तक का समय हमारो शक्ति उत्साह उमगो का पूर्ति के लिए स्वर्ण अवसर है प्रत्यक आर्य इस यज्ञ म अपनी सामर्थ्य के अनुरूप भाग दकर याजना का सफल बनावे।

हल्द्वाना (ननाताल) म गत २५, २६ अक्टूबर का अ तरग सभा का बैठक जिस उत्साहपूर्ण वातावरण में आरम्भ हुई उसका कारण सभा का याजनाओ के प्रति सदस्या म अपूर्व उत्साह हा था आर्य मित्र हीरक जय ता अभिन दन स्मारक याजना का विषय हा अ तरग का सर्वप्रमुख विषय थ। सदस्या न बड उत्साह पूर्ण वातावरण म जय ता या न का प्रगति पर उप समिति को रिपोट का सब सम्मति से स्व कार करते हुए अपन कर्तव्य का पालन किया और आ थक सहयाग का आश्वासन दान हान लगे।

जयन्ती के लिए एक लाख रू० की अपील

उप समिति व अ तरग सभा न याजना के महत्व तथा काय क गुरुत्व का दृष्टि म रखत हुए जय ता आदि समाराहा के लिए १ लाख रु या सग्रह करन का निश्चय किया है।

याजना के चार मुख्य अङ्ग ह—

(१) आर्यमित्र हीरक जय ता समाराह।

(२) श्री प०गगाप्रसाद उपाध्याय एम ए० (प्रयाग) के लिए अभिन दन ग्रन्थ।

(३) श्री प० गगाप्रसाद एम० ए० रि० चीफ जज (जयपुर) के लिए अभिनन्दन ग्रथ।

(४) स्वामी गुरु विरजानन्द के स्मारक "गुरुधाम" का शिलान्यास व निर्माण

सभी याजनाओ के महत्व पर प्रकाश डाला जा चुका है। गुरुधाम की योजना समस्त आर्य जगत् के आकषण का केन्द्र है और स्मारक निर्माण के लिए सबस अधिक धन का आवश्यकता हागा। आर्य बन्धुओ का (प्रा त य राष्ट्रीय, प्रवासी, विदेशी) सहयाग इस काय का सफल सम्पन्नता म सहायक हागा।

आर्यसमाज विश्व को नैतिक विकास का सन्देश दता ह
—श्री प० हरिशङ्कर शर्म्मा

आस्तिकता के अभाव में ही विश्व दुखी ह।
—श्री स्वामी अमृतान द जी

चरित्र की पवित्रता ही राष्ट्र की उन्नति क केन्द्र बिन्दु ह।
—श्री डि० मह न्द्र प्रताप शास्त्री

जीवन का नैतिक समन्वय ही मानव जीवन की सफलता का रहस्य ह।
—श्री बाबू पूर्णच द्र एडवाकेट

महर्षि दयानन्द की आर्य भावना ने भारतीयता की रक्षा की।
—श्री डा० इन्द्रसेन एम ए० पी एच डी बलिन

आर्य समाज हल्द्वानी ने प्रा तीय अ तरग सभा की बैठक के साथ साथ अपना वार्षिकोत्सव भी सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। आर्यसमाज क उच्च कोटि क विद्वानो के भाषणो द्वारा जनता तक वैदिक धर्म का सन्देश पहुच या गया। श्री स्वामी अमृतान द जी महाराज, श्री प० हरिशङ्कर शर्म्मा श्री डि० महेन्द्रप्रताप शास्त्री एम० ए०, श्री बाबू पूर्णचन्द्र एडवोकेट, श्री डा० इन्द्रसेन एम० ए० पी० एच० डी० (बर्लिन) श्री ठा० देशराज श्री शरसिंह कश्यप श्री रामचन्द्र श्री हेमच द्र आदि के अ जस्वी भाषण व भजन हुए। प्रथम दिन समागत आर्य नेताओ का नगर में विशाल जलूस निकाला गया।

सभा की याजनाओं का सफलता के लिए प्रधान सभा का हल्द्वानी समाज की ओर से ५ १) की थैली भेंट कर जय ती याजना म सर्व प्रथम आहुति भेट क गयी। हल्द्वानी आर्यसमाज के प्रधान श्री म० विद्यारत्न वकील न थैली भेंट करत हुए कुमायू का जनता का ओर स याजना का सफलता क लिए शुभकामनाए प्रकट की और आश्वासन दिया कि कुमायू क्षेत्र याजना का सफल सम्पन्नता म किसी स पीछे न रहेगा।

सभा का अ तरग और हीरक जय ती समिति की बैठक म स्थान वाय सभा नाय अतिथियो का ह द्व न स्वागत किया ग जो आदर्श आतिथ्य किया उसके प्रशसा प्रत्येक सदस्य द्वारा का जा रहा है।

सभा मन्त्री ठाकुर फूलनसिंह श्री बाबू जगन्नाथ लाल एटवोकेट श्री बाबू कालीचरण आर्य उपप्रधान सभा व श्री नरेन्द्र रत्न एम ए श्री मोहनलाल आर्य आदि न भी आर्य समाज के वार्षिकोत्सव का आशीर्वाद दिया।

श्रीमती शकुन्तला गायल उपप्रधान सभा की अध्यक्षता म महिला सम्मेलन हुआ। इस प्रकार प्रान्त के सभी नेताओ ने पधार कर उत्सव का सफल बनाया।

जयन्ती-अभिनन्दन

[डा० सूर्यदेव शर्मा साहित्यालङ्कार एम० ए०, डी० लिट्०, अजमेर]

★

अपने महान् विद्वानों का अभिनन्दन करना समाज के लिए कल्याणकारी तो है ही पर आर्यमित्र हीरक जयन्ती के अवसर पर 'ग्राहक बढ़ाओ आन्दोलन" चलाना सबसे ठोस सेवा कार्य होगा—विद्वान् लेखक के इस लेख का सार यही है। —स० सम्पादक

संसार में यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है कि किसी भी राष्ट्र के अथवा समाज के लिए उसके महापुरुष ही पथ प्रदर्शक होते हैं, अन्य लोग तो उनके चरणचिह्नों पर चल कर जीवन लाभ प्राप्त करते हैं। भगवान कृष्ण ने गीता में ठीक ही कहा है—

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥

श्रेष्ठ पुरुष के कार्यों का अनुकरण ही सामान्य लोग किया करते हैं उन महापुरुषों के जीवन ही संसार सागर में भ्रमित जीवन जलयानों के लिए "प्रकाश स्तम्भों" का काम दिया करते हैं। अंग्रेजी कवि लांगफेलो ने भी कहा है :—

Lives of great men all remind us
We can make our lives sublime.

उन महान् जीवनादर्शों को देखकर ही हम अपने जीवनों को महान् बनाने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं; इसी लिए ऐसे महापुरुषों की जयन्तियां मनाना अथवा उनका अभिनन्दन समारोह एवं सत्कार करना राष्ट्र तथा समाज के लिए कल्याणकारी सिद्ध होता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा आर्यजगत् के दो शिरोमणि मूर्धन्य विद्वानों श्री प० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय तथा श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी रि० चीफ जज का अभिनन्दन समारोह आगामी शिवरात्रि पर आयोजन करना एक सुप्रयास है। सौभाग्य की बात है कि इन विद्वानों के अभिनन्दन का जहाँ तक मुझे स्मरण है, सर्वप्रथम विचार श्री पूज्य पं० हरिशंकर शर्मा के ही मस्तिष्क में प्रस्फुटित हुआ था और वे ही इस समय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर समासीन हैं। पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी जी की प्रेरणा भी इसके मूल में रही और आर्यजगत ने इसका हार्दिक स्वागत किया और अब वह प्रेरणा फलीभूत होने जा रही है। श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय की मेरे जिला एटा में जन्मस्थली है। अतः मेरे जीवन के प्रारम्भ से ही मेरे लिए तथा मुझ जैसे अनेक आर्य बन्धुओं के लिए वह एक प्रेरणा के स्रोत एवं अनुकरणीय आदर्श रहे हैं। इसी प्रकार श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी चीफ जज के साथ मुझे गुरुकुल वृन्दावन में कुछ समय तक कार्य करने का अवसर मिला है। अतः इस सान्निध्य से मैं जानता हूं कि उपरोक्त दोनों महानुभावों के हृदयों में आर्यसमाज के कार्य की एवं धर्म प्रचार की कैसी अनवरत ज्वाला प्रदीप्त होती रही है जिससे शतसहस्रों आर्य युवकों को सद्प्रेरणा प्राप्त होती रही है। फिर उन्होंने तो अपना समस्त जीवन ही आर्यसमाज के प्रचार एवं साहित्य सृजन में समर्पण कर दिया है जिससे दीर्घकाल तक आर्य जनता उनका स्मरण करती रहेगी। फिर हम लोग जो सौभाग्य से उनके समकालीन हैं उनका अभिनन्दन कर अपने को धन्य क्यों न बनावें ?

साथ ही "आर्यमित्र" की हीरक जयन्ती मनाने का निश्चय तो सोने में सुगन्धि है। आर्य जगत् में अनेक समाचार पत्र एवं मासिक पत्र प्रादुर्भूत हुए और कुछ काल के पश्चात् गत प्राण भी हो गये। उनमें से बहुतों ने अच्छा कार्य किया लेकिन निरन्तर ६० वर्ष तक उच्चावच सुख दुःख, हीन पीन, उन्नति अवनति की विविध घाटियों एवं आर्थिक मरुस्थलों में से गुजरता हुआ यह "आर्यमित्र" ही एक ऐसा संघर्षशील वीर पत्र है जो आर्य जगत् में एक पत्र का ही नहीं, एक स्थायी साहित्य का स्थान प्राप्त कर गया है। भला जिस पत्र पादप को साहित्य महारथी प० पद्मसिंह शर्मा, सम्पादकाचार्य प० रुद्रदत्त शर्मा सम्पादक शिरोमणि प. हरिशंकर शर्मा कविरत्न, प० सदानन्द आदि दिग्गज महारथियों ने पालित पोषित किया हो वह क्यों न पुष्पित पल्लवित होकर अनेक सतप्त मानव हृदयों को ज्ञानामृत दायिनी शीतल छाया प्रदान करने में समर्थ होगा ?

मुझे स्मरण है कि जब मैं एक छोटे क्लास का विद्यार्थी था तो मेरे ग्राम बरना में प० रामचन्द्र शर्मा जी के पास "आर्यमित्र" आता था। उसको पढ़ने के लिए मैं सप्ताह भर उत्सुक रहता था क्योंकि ग्राम में आर्य सामाजिक साहित्य का तो अभाव था केवल 'आर्यमित्र' ही मेरे साथियों के लिये धार्मिक पिपासा की शान्ति करने का एक मात्र साधन था। इस प्रकार न जाने मेरे जैसे कितने आर्य बन्धुओं का पथ प्रदर्शन करने में "आर्यमित्र" सहायक बना होगा ? अतः उसकी हीरक जयन्ती मनाना न केवल उत्तर प्रदेश के आर्यों के लिये, किन्तु समस्त आर्य जगत् के लिए एक गौरवपूर्ण पावन कर्तव्य है जो साहित्यिक एवं धार्मिक दोनों दृष्टियों से सम्पन्न किया ही जाना चाहिये।

इस अवसर पर "आर्यमित्र" का "हीरक जयन्ती अङ्क" तो निकलेगा ही और उसमें भी पूज्य पं० नरदेव शास्त्री जी द्वारा प्रदर्शित सुझावों के लिए स्तम्भ और सामग्री रहेगी ही. मेरी सम्मति में सबसे बड़ा ठोस सेवा का काम तो यह होगा कि अभी से समस्त आर्य भाई "आर्यमित्र" की ग्राहक संख्या बढ़ाने में जुट जांय।

महान् पथ के पथिक बनो

(श्री सत्यप्रिय सिद्धान्त शिरोमणि, यमुना नगर, अम्बाला)

ऋषि दयानन्द के प्रादुर्भाव से भारत में सत्यज्ञान एवं नैतिक उत्थान का प्रबल प्रेरणा स्रोत उमड़ा, पतझड़ जैसी भारत की दुर्दशा को नवबसन्त जैसी सुस्थिति में परिणत करता हुआ आचार्य दयानन्द भारत में निर्भीक सिंह की भांति विचरने लगा। परन्तु भारत के अनेक अज्ञानी जनों ने उस हितकारी देवता को शत्रु रूप में देखा दूरदर्शी देव दयानन्द ने भी अपनी तीव्र दृष्टि से इसको भांप लिया। इसीलिए अपने उत्तराधिकारी रूप में आर्यसमाज का बीजारोपण किया।

आखिर संसार के उस महान् संत को भारत के इन अबोध प्राणियों ने यमलोक का राही बना ही तो दिया। वह महापुरुष अपने प्यारे प्रभु से मिलने गया लेकिन साथ ही साथ भारतवासियों की मूर्खता पर अफसोस तथा प्रभु ने जिस उद्देश्य के लिए उसे भेजा था उसकी पूर्ति के लिए अन्तर्यामी प्रभु से प्रार्थना करता गया पुनः अमरता के अमर डगर पर चल पड़ा उस महान् दीपक के बुझते ही दीपावली के ये नन्हे-नन्हें दीपक अपना मुख उठाकर भारतवालों के भोले पन पर अट्टहास कर रहे थे। महर्षि दयानन्द अपना सम्पूर्ण कार्य भार आर्यसमाज पर डाल कर चले गये। जिस प्रकार आचार्य दयानन्द प्रभु की राह के राही बने, यदि आर्य लोग भारत को उन्नत देखना चाहते हैं तो आर्यों को अपने आचार्य के पथ का पथिक बनना होगा ही। आर्यों को आज "सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं" अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के इन शब्दों को समक्ष रख कर देशोद्धार में जी जान से जुटना होगा।

महर्षि द्वारा पूना नगर के अंतिम व्याख्यान के अन्त में कहे "आर्य धर्म की उन्नति के लिए मुझ जैसे बहुत से उपदेशक आपके देश में होने चाहियें" इन शब्दों को सम्मुख रखकर महर्षि के सिद्धान्तों का प्रचार हमें करना ही पड़ेगा। मसीह के मत को उसके घसियारे तथा मछियारे शिष्यों ने विश्व भर में फैला दिया। इसी प्रकार मुहम्मद मत के अनुयायी भी आज कई देश हैं। परन्तु आर्यो ? तुम्हें तो बाल ब्रह्मचारी, वेदज्ञान का उद्भट व्याख्याता दयानन्द सा आचार्य मिला है। आज आर्यों को समस्त विश्व में अपने सत्य सिद्धान्तों का सिक्का जमाना होगा। तुम भारत के उन महापुरुषों की सन्तति हो जिन्होंने सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य किया था जो कि विश्व भर के आचार्य कहलाते थे। तुम भी उनकी तरह विश्वविजेता बन सकते हो। परन्तु उसके लिए जैसे तुम्हारे आचार्य दयानन्द प्रभु के पवित्र पथ के पथिक बने वैसे ही तुम भी आज से उस दिव्य दयानन्द के दिव्य मार्ग पर द्रुतगति से प्रयाण करो।

अतः हे शक्ति के पुञ्ज आर्यो, ऋषि का तुम्हारे लिए एक ही सन्देश है—

"उत्तिष्ठत जाग्रतः प्राप्य वरान्नि बोधत"

[पृष्ठ ७ का शेष]

ब्रिटिश सरकार और वर्तमान भारत सरकार से टक्कर ले सकता है क्या उस समाज के लिए एक प्रचारक विद्यालय और साहित्य प्रकाशन केन्द्र चलाना कुछ कठिन है ? भारतवर्ष में आर्य समाज के पास शक्ति है, संगठन है, बड़े-बड़े मन्दिर और विद्यालय हैं, परन्तु विदेशों में प्रचार करने की क्या योजना है ? प्रवासी भारतीयों की ओर से मैं अपने सम्मानित आर्य नेताओं से इस प्रश्न का उत्तर चाहता हूं। आशा है 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के लिए कृत संकल्प आर्यसमाज के कर्णधार इस उपेक्षित प्रश्न का व्यावहारिक हल प्रस्तुत करेंगे।

सभा की सूचनाएं

दान सूची

वेद प्रचार मद में सभा को प्राप्त धन—दान सूची १ अक्टूबर ५८ से निम्न प्रकार प्रकाशित की जाती है। दानी महानुभावों को हार्दिक धन्यवाद।

आ० स० बिलसंडा [पीलीभीत] ५)
श्री सभा मन्त्री जी द्वारा आ.स. शिकोहाबाद ४)
आ.स. बैंकोक (स्याम) दशांश५) ५)
आ०स० पुरवा (उन्नाव) दशांश १०) चार आना फे० ५)
आ०स० कोटला [आगरा] ५)
आ.स. औरंगाबाद (सहारनपुर) ५)
,, ,, फेराहेडी कोट ,, १०)
श्री रामचन्द्र जी पूर्व सभा कोषाध्यक्ष बदायू द्वारा किराया मकान चेतनदेवी २३०।।)
श्री धर्मेन्द्रनाथ अध्यापक मु०ग० प्राविधिक विद्यालय हाथरस १०)
श्री कालीचरण जी आर्य सभा उपप्रधान द्वारा आ० स०
आ०स० रामनगर [नैनीताल] ५१)
आ०स० रामपुर २५)
,, ,, फर्रुखाबाद ११)
श्री रामावतार जी अन्तरंग सदस्य द्वारा आ०स० केराकत [जौनपुर]दशांश१०)कोटिघन सूद ३) ।) फड २१) नि०शु० २) ३६)
आ० स० शाहगंज [जौनपुर] दशांश १०) सूद ३) नि० शु० २) वेद प्रचार ६=) २१)
मनीआर्डर से श्री कु० पुष्पावती जी रुड़की १५)
श्री यज्ञदत्त जी द्वारा आ० स० मुहम्दी [खीरी] ४-)
श्री फकीरचन्द्र आर्य जहाँगीराबाद १)
श्रीकृष्ण लाल जी एडवोकेट सहारनपुर १०)
श्री अवध बिहारीलाल जी प्रधान आ० प्र० सभा बंगाल आसाम कलकत्ता जयन्ती हेतु ५१)
श्री सत्यपाल सिंह अलीनगर [गोरखपुर] ५)
श्री इन्द्र वर्मा जी निरीक्षक सभा रामनगर द्वारा २५।)
सभा श्री मन्त्री जी द्वारा—
श्री आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली दशांश २०) वे० प्र० ५)
आ०स० जगतपुर बरेली वे० प्र० २५)
,, ,, चन्दौसी (मुरादाबाद) २५)
,, ,, नैनीताल २१)
श्री चन्द्रनारायण जी सभा उप मंत्री द्वारा—
श्री डा० रामरक्षा द्वारा आ० स० बरेली ५१)
आ० स० सुभाष नगर बरेली ११)
श्री रामबहादुर जी अन्तरंग सदस्य द्वारा—
श्री हरिश्चन्द्र गुप्त पूरनपुर वे०प्र० ५)
,, रामबहादुर जी मुख्तार पूरनपुर वे० प्र० ५)
,, दिलेरामसिंह पूरनपुर ,, २)
,, सियाराम पूरनपुर ,, २)
,, गडाराम जी पूरनपुर ५)
,, नौबतराम पूरनपुर २)
,, जुगलबिहारी लाल जी पूरनपुर ५)
,, आ० स० मुहम्मदी (खीरी) ४)
आ० स० गोला गोकरन नाथ २।।)
श्री मैनेजर आ०क०पा०पीलीभीत १३)
आ० स० पूरनपुर २०)
माता श्री हेमलतादेवी जी सभा मुख्य निरीक्षिका द्वारा—
श्री आ० स० अलीगढ़ २)
,, ,, ,, लखनऊ नगर दशांश १०) वे० प्र० २)
,, ,, ,, २।।)
,, ,, शिकोहाबाद ८।।।)
,, ,, आगरा छावनी ११)
,, ,, ,, २।।)
,, ,, आगरा सिटी १३)
श्री कालीचरण जी आर्य द्वारा—
श्री जैदयाल कपूर कागज के व्यौपारी लखनऊ ५)
श्री शिवदयालु जी द्वारा श्री सोहन लाल जी साकेत मेरठ शहर ५१)
आर्यमित्र के लिए श्री मोहनलाल जी आर्य आगरा द्वारा नवीन ग्राहकों का मूल्य मनीआर्डर से १६०)
श्री फूलचन्द्र जी गुप्त इन्जीनियर देवरिया ५) वे० प्र०, ११) ही० ज०
श्री शेरसिंह काश्यप अन्तरङ्ग सदस्य द्वारा श्री मैनेजर वैदिक पुत्री पाठशाला नईमंडी मु०नगर १२)
श्री मंत्री जी आ० स० शहर मुजफ्फरनगर २५)
श्रीमान् महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज देहली मिलाप नई दिल्ली=जयन्ती के लिए १००)

उपर्युक्त दानी महानुभावों को सभा धन्यवाद देती है।

श्री श्रीदेव वानप्रस्थी द्वारा सभा के लिए धन-संग्रह तथा निरीक्षण

श्री श्री देववानप्रस्थी जी (श्री देवीप्रसाद जौहरी भूतपूर्व अधिष्ठाता शिक्षा विभाग तथा सहायक मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा) वर्तमान मन्त्री आर्यवानप्रस्थ सन्यास आश्रम,ज्वालापुर, ने लगभग ५ सप्ताह सभा की सेवा के लिए दिए। जिसमें से पूर्व एक मास दि० २२ अगस्त से २२ सितम्बर तक जिलों में भ्रमण कर आर्यसमाजों तथा स्थानीय शिक्षण संस्थाओं का निरीक्षण किया और सभा के लिए धन संग्रह किया एवं वैदिक धर्म का प्रचार भी व्याख्यानों द्वारा किया। जिन स्थानों के आर्य समाजों का निरीक्षण किया अथवा स्थानीय शिक्षण संस्थाओं का निरीक्षण किया उनके नाम निम्नांकित है —

१—इटावा, भरथना, मैनपुरी, शिकोहाबाद, एटा, कासगंज, गंज दुन्डवारा, अलीगंज, अलीगढ़, सिकन्दराराऊ, आगरा, फीरोजाबाद, मथुरा, गोवर्धन।

इस प्रकार से १७ आर्य समाजों तथा १८ आर्य शिक्षण संस्थाओं का निरीक्षण किया और लगभग ३५ व्याख्यान दिये। श्री वानप्रस्थी जी का कहीं कहीं भव्य स्वागत गार्ड आफ आनर बालचरों द्वारा स्वागत गान द्वारा अथवा पुष्पों द्वारा उचित प्रकार से किया गया और५१२।) आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए धनसंग्रह किया। दानदाताओं की सूची 'आर्यमित्र' में प्रकाशित की जा चुकी है। उक्त धन के अतिरिक्त ५४) प्रशंसित वानप्रस्थी जी ने आर्यमित्र रजतजयन्ती व अभिनन्दन आदि के लिए ज्वालापुर वानप्रस्थ आश्रम के निवासियों से संग्रह करके सभा को भेजे। सभा श्री श्रीदेव वानप्रस्थी जी का बहुत आभार मानती है। —सभा मन्त्री

निरीक्षक महोदयों की सेवा में

सभास्थ मुख्य निरीक्षक एवं अन्य पद निरीक्षक महानुभावों की सेवा में निवेदन है कि सभा का वर्ष समाप्ति पर है। अब वर्षा भी समाप्त हो गयी जिले का मार्ग भी अब सरल हो गया है और ऋतु भी अनुकूल आ गई है। अतः आप कृपया अपने अपने जिले के आर्य समाजों एवं संस्थाओं का निरीक्षण करने का कष्ट कीजिये साथ ही सभा का प्राप्तव्य धन भी प्राप्त करने का कष्ट कीजिए। निरीक्षण रिपोर्ट और फार्म सभा कार्यालय में कार्य की समाप्ति पर शीघ्र भेज दें।

निरीक्षण के साथ साथ आप कृपा कर जहां जहां भी जावें वहां की आर्य जनता को आर्यमित्र हीरक जयन्ती महोत्सव में सम्मिलित होने की प्रेरणा करें। महोत्सव वृन्दावन नगरी में ६, ७, ८ तथा ९ मार्च१९५९ को शिवरात्रि के अवकाश पर बड़े धूम धाम के साथ मनाया जायगा। आर्यमित्र हीरक जयन्ती महोत्सव को सफल बनाने और उसके लिए आवश्यक व्यय के निमित्त सभा ने ।।), १), २), ५) तथा १०) रु० के नोट्स (रसीद) प्रकाशित कराये हैं। उनको बिकवाने के लिए समाजों को उत्साहित कीजिए।

सभा की सूचना

१—सभा के नियम सं० ५० के अनुसार सभा प्रधान (कुलपति के आदेशानुसार तीन वर्ष के लिए श्री आचार्य बृहस्पतिशास्त्री जी वेद शिरोमणि एम० ए० देहरादून निवासी गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के उपकुलपति पद पर पुनर्निर्वाचित हुये हैं।

२—श्री रामजीप्रसाद जी गुप्त मुगलसराय निवासी ने सभा के कोषाध्यक्ष पद से त्याग-पत्र दे दिया और अन्तरंग सभा दि० २६ अक्टूबर ५८ में त्याग पत्र स्वीकार हो गया। उनके रिक्त स्थान पर सर्व सम्मति से श्री विश्वेश्वर नाथ जी वर्मा लखनऊ निवासी सभा कोषाध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए। अतः कोष सम्बन्धी सर्व प्रकार का पत्र व्यवहार श्री वर्मा जी के नाम से किया जावे।

अन्तरंग सदस्य का स्थान रिक्त हो जाने पर श्री रामजीप्रसाद जी गुप्त सर्व सम्मति से सभा के अन्तरंग सदस्य पद पर निर्वाचित हुए।

—फूलनसिंह
सभा मंत्री

सभास्थ अन्तरङ्ग सदस्यों से निवेदन

आर्यमित्र द्वारा आपको यह तो विदित हो ही गया होगा कि आर्यमित्र हीरक जयन्ती के मनाने का निश्चय हो चुका है जिसकी तिथियां ६ से ९ मार्च ५९ तक है। शिवरात्रि के अवकाश में गुरुकुल भूमि वृन्दावन (मथुरा) में बड़े धूमधाम के साथ मनाया जायेगा। महोत्सव को सफल बनाने के लिए सभा की ओर से नोट्स रसीद छपकर तैयार हो गयी हैं। कृपया सूचित करें कि आपके पास कितने धन के नोट्स विक्रयार्थ भेजे जावें। पत्रोत्तर शीघ्र दें।

—कालीचरण
संयोजक अर्थ समिति आर्यमित्र हीरक जयन्ती

बाल विधवा चाहिए

२८ वर्षीय आर्य गोयल गोत्र सम्पन्न व्यापारी को पुनर्विवाह के लिए बाल विधवा चाहिए।

२५ द्वारा आर्यमित्र
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आवश्यकता

एक आर्य परिवार की २४ वर्षीय ग्रैजुएट साधारण सुन्दर वैश्य कुमारी (जो १७०) माह पर नियुक्त है) के लिए ३५ वर्ष तक के एक जात बन्धन रहित अविवाहित या विधुर ग्रैजुएट वर की आवश्यकता है। वैश्य मात्र को विशेषता होगी। विवाह बहुत सादगी से होगा। —एन० सी० वैश्य
पो० ज्याती, जि० मैनपुरी (५ रा०)

आर्य-जगत

प्रचार समाचार—

—२९.१०.५८ को माता जगधात्री देवी ने आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिसौली बदायूं में स्त्री शिक्षा पर भाषण दिया।

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा शाहजहांपुर की ओर से मेला ढाई-घाट पर २१ से २८ नवम्बर तक आर्यसमाज का प्रचार किया जायेगा।

—१८,१९ अक्तूबर को आ०स० सोनपुर छपरा बिहार की ओर से ठाकुर महानन्दसिंह व श्री रामनारायण जी द्वारा समारोह सहित वैदिक धर्म का प्रचार किया गया।

—आ० स० बिसौली बदायूं के मन्त्री श्री वेदप्रकाश आर्य के मकान पर १, २ नवम्बर को माता जगधात्री देवी का प्रभावशाली प्रचार महिलाओं के बीच हुआ। कुछ स्त्रियों को यज्ञोपवीत भी दिए गये।

—३१-१०-५८ को आर्य समाज चोपड़ाकोट गढ़वाल देहरादून की एक सार्वजनिक सभा श्री मनोहरलाल जी के सभापतित्व में हुई। श्री बालकराम श्री हरदयाल जी, श्री चन्द्रमोहन जी, श्री मनोहरलाल जी आदि के भाषण और उपदेश हुए।

—श्री शिवस्वामी ने आर्यसमाज खच्छोखेड़ा, पो० बिजौली, जिला फतेहपुर में एक सप्ताह ठहरकर स्थानीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को सार्वदेशिक सभा की धार्मिक परीक्षाओं की शिक्षा दी और विद्यालय के अध्यापक श्री चन्द्रकिशोर निगम का यज्ञोपवीत संस्कार भी कराया।

—ऋषि निर्वाण पर्व के अवसर पर ९, १०, ११ नवम्बर को नित्य प्रातः और सायं आर्यसमाज चन्द्र नगर लखनऊ में वेद कथा और व्याख्यान का आयोजन हुआ। पं० रुद्रदत्त शास्त्री महोपदेशक सभा के विशेष रूप से भाषण हुए। समाज के सदस्यों ने हर प्रकार से इस प्रचारोत्सव को सफल बनाने का यत्न किया। आर्यसमाज सिंगारनगर लखनऊ के सदस्यों ने भी इस प्रचार में भाग लिया।

उत्सव समाचार—

—आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली का वार्षिक महोत्सव २८, २९, ३० नवम्बर ५८ को होगा जिसमें अनेकों साधु महात्मा और विद्वान् पधारेंगे। २३ नवम्बर को नगरकीर्तन निकलेगा २३ से २८ नवम्बर तक महात्मा आनन्दस्वामी कथा करेंगे।

—आर्यसमाज और आर्य वीर दल बगहा मीरजापुर का ५८ वां वार्षिकोत्सव २ नवम्बर को श्री विजयनारायण सिंह के सभापतित्व में मनाया गया। डा० सत्यदेव शास्त्री, ठाकुर महानन्दसिंह, श्री अवध विहारी खन्ना आदि के भाषण हुए। मंडल आर्यवीर दल मीरजापुर की बैठक व रैली भी श्री खन्ना की अध्यक्षता में हुई।

—आर्य समाज मैनपुरी का ७७ वां वार्षिकोत्सव २३ से २६ नवम्बर तक होगा। २३ को नगर कीर्तन होगा। प्रसिद्ध विद्वान् पधार रहे हैं।

—नगर आ०स० गुलाब सागर जोधपुर का वार्षिकोत्सव १०, ११, १२ नवम्बर ५८ को हुआ। अनेकों विद्वानों के भाषण हुए।

—आ०स० शहर झांसी का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव १४ से २१ नवम्बर ५८ तक मनाया गया। आर्य जगत् के विशिष्ट विद्वान पधारे।

—आ०स० नया बाजार लश्कर के ५७ वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर ९-११-५८ को श्री जगन्नाथपसाद जी मिलिन्द की अध्यक्षता में राष्ट्रभाषा सम्मेलन हुआ। जिसमें पं० प्रकाश वीर शास्त्री एम० पी०, बाबूलाल गुप्त, भारतभूषण त्यागी, डा० रामप्रकाश डा० महावीरसिंह आदि ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर चार महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किये गये।

—आ०स० गंगोह का वार्षिकोत्सव २४, २५, २६ नवम्बर ५८ को होगा। अनेकों प्रसिद्ध विद्वान् पधारेंगे।

शुद्धि समाचार—

—भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा दिल्ली की ओर से २८.१०.५८ को ग्राम औला मुजफ्फर नगर मे ४५८ हरिजनों का तथा २९-१०-५८ को ग्राम निरपुड़ा, मुजफ्फरनगर में ६७ हरिजन ईसाइयों को शुद्ध किया गया आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने विशेष सहयोग दिया। कुछ प्रमुख नेताओं के भाषण भी हुए।

—९-११-५८ को पुनः शुद्धि सभा दिल्ली ने ग्राम सूजती, मेरठ म १०१ हरिजन ईसाई भाइयों को शुद्ध किया।

—२ ११ ५८ को ग्राम चांदनहेड़ी पो० छपरौली जिला मेरठ में पुनः इस सभा ने १५० हरिजन ईसाई बन्धुओं को शुद्ध कर उन्हें हिन्दू धर्म की दीक्षा दी। —नारायणदास कपूर

संस्कार समाचार—

—आ० स० लोहरदग्गा जिला रांची के प्रधान डा० यमुनाप्रसाद के पौत्र का नामकरण संस्कार २६-१०-५८ को स्वामी शिवानन्द तीर्थ ने कराया। बालक का नाम आनन्द घन रखा गया।

—विजयदशमी के रोज आ०स० शहर मुजफ्फरनगर में श्री शेरसिंह कश्यप ने सुश्री फूलारानी और श्री बिशनप्रकाश बी० ए० का विवाह संस्कार बिना दहेज के वैदिकरीत्यानुसार कराया। कन्या पक्ष ने समाज को २०) दान दिया।

—७-११-५८ को श्री प्रभावती (विधवा) पुत्री श्री सुन्दरलाल अष्ठाना जिला कृषि अधिकारी वाराणसी का पुनर्विवाह श्री रमेशचन्द्र जी अष्ठाना इन्जीनियर पावर हाउस देहली के साथ आ०स० आजमगढ़ में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। श्री सुन्दरलाल जी ने समाज को २५) दान दिया।

आर्य वीर दल समाचार—

—आर्य वीर दल बांगरमऊ उन्नाव—नगर नायक श्री रश्मिमोहन अग्निहोत्री, शाखानायक श्री ब्रज विहारी लाल, मन्त्री श्री रामकृष्णजी, श्री जयपालसिंह मंडलपति ने इस दल का निरीक्षण किया।

—आर्य वीर दल पूर्वी उत्तरप्रदेश के अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि वे २४ नवम्बर तक अपना संक्षिप्त रिपोर्ट अवश्य भेज दें तथा ७ दिसम्बर का बैठक में अपना विवरण अवश्य लावें। —उमाकान्त
स० उप सचालक

—श्री ओम्प्रकाश जी के टूंडला चले जाने के कारण श्री वंचनराम आर्य को मीरजापुर मण्डल का मंडलपति नियुक्त किया गया है। ग्राम बगहा, पो० चुनार, जिला मीरजापुर के पते पर उनसे पत्र व्यवहार करें।

—पूर्वी उ० प्र० आर्य वीर दल केन्द्र काशी की कार्यकारिणी की बैठक ७ दिसम्बर को भारत माता मन्दिर बनारस में दोपहर को १ बजे से होगी। सम्बन्धित व्यक्ति अवश्य पधारें। —उमाकान्त

शोक समाचार—

—आ० स० शहर मुजफ्फर नगर ने उप प्रधान श्री सीताराम जी की धर्मपत्नी के निधन पर शोक प्रस्ताव पास किया।

—आ० स० यमकार्जुनपुर ने श्री लालसिंह वानप्रस्थी के निधन पर शोक प्रकट किया।

—आ० स० सोबरा ने अपने प्रधान श्री सोवरणसिंह की पत्नी के निधन पर शोक प्रकट किया। वैदिक रीत्यानुसार उनकी अन्त्येष्टि हुई।

अन्यान्य समाचार—

—आर्य विरक्त वानप्रस्थ सन्यास आश्रम ज्वालापुर की एक बैठक २-११ ५८ को पं० शिवदयालु जी अध्यक्ष आश्रम की संरक्षता में हुई। वैशाखी के अवसर पर आश्रम का ३२ वां वार्षिकोत्सव करने का निश्चय हुआ। आश्रम का ३२ वर्ष का इतिहास भी प्रकाशित करने का निश्चय हुआ। यह भी निश्चय हुआ कि आश्रम के कुछ कार्यकर्ता वैदिक धर्म के प्रचारार्थ समय समय पर बाहर जावेंगे। आश्रम का एक चित्र जिसमें अब तक बने हुए समस्त भवन अंकित होंगे, तैयार कराने का निश्चय हुआ।

—दयानन्द उपदेशक महा विद्यालय वैदिक साधन आश्रम यमुनानगर अम्बाला में प्रवेश चाहनेवाले विद्यार्थी अपना प्रार्थनापत्र ३० नवम्बर तक भेज दें। मैट्रिक, मध्यमा, विशारद, शास्त्री आदि अपने प्रमाणपत्रों को किसी आ० स० के मन्त्री द्वारा प्रमाणित कराकर भेजें। प्रवेश शुल्क ३५) है। भोजनादि का प्रबन्ध विद्यालय की ओर से होता है। प्रशिक्षण काल पांच वर्ष का है।
—वेदानन्द मुख्याध्यापक

—३ से १० दिसम्बर ५८ तक केवलानन्द निगमाश्रम गंज मे सामवेदीय ब्रह्मपारायण महायज्ञ होगा और स्वामी अभेदानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में साधना शिविर भी लगेगा। आर्य बन्धुओं को इससे लाभ उठाना चाहिये।

—दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर अम्बाला को प्राप्त दान—सेठ घूंघरमल जी २००) की एक गाय, लाला बरकतराम जी १००), धर्मवीर टाकनराम मन्त्री आर्यसमाज गुधाना १०) मासिक, बेणी प्रसाद लाडवा १५) मासिक छात्रवृत्ति। उक्त दानदाताओं को हार्दिक धन्यवाद है। —वेदानन्द शास्त्री



आर्य जगत् के शेष समाचार

—आ०स० अडींग मथुरा की ओर से एक हायर सेकेन्डरी स्कूल खाला जा रहा है। आगामी वसन्त पचमी को इसका शिलान्यास होगा। दानी महानुभावों से धन की अपील है। इसी अवसर पर आर्यसमाज का वाषिकात्सव भी हागा।

—रामस्वरूप वानप्रस्थी प्रधान

—स्वामी त्यागानन्द जी कुलपति गुरुकुल अयोध्या की ७५ वीं वर्षगाठ २१ नवम्बर को गुरुकुल भूमि म हीरकजयन्ती के रूप में मनाई गयी। इस अवसर पर नवीन ब्रह्मचारियो का उपनयन सरकार और स्नातक सम्मेलन भी हुआ।

—मैं शीघ्र ही गोंडा जिले की समाजो का निरीक्षण करन वाला हु। मर साथ श्री रामगुलाम सक्सना भी होगे। समाजों के अधिकारी कृपया अपन सभी रकार्ड ठीक रख।

—नानकप्रसाद एम०ए०

—श्री प० वीरसेन वेदश्रमी १ मास से उत्तर भारत मे वेदप्रचार यात्रा कर रहे हैं। आपन गुरुकुल कागड़ी के उत्सव पर सस्वर वेद पाठ सुनाया। इसस पूर्व गुरुकुल ज्वालापुर और वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर म आपका कार्यक्रम हुआ। आ०स० देहरादून तथा रुड़की म भी आपका वेदपाठ व भाषण हुआ। इस समय दिल्ली के भिन्न भिन्न स्थानो पर आप सस्वर वेदपाठ सुना रहे हैं।

—श्री यज्ञनारायण सिंह उपमन्त्री आयसमाज हासापुर न ग्राम भगीरथपुर म प्राचीन सत्यनारायण की कथा कही।

—आय समाज राऊलकला म १० ११ ५८ का एक नि शुल्क आय विद्यालय का स्थापना का गयी। यहा ५ वा कक्षा तक शिक्षा दी जाती है।

— नम्न समाजा न १० नवम्बर ५८ को सा साह ऋ ष नि र्वाणात्सव मनाया —आ० स नारायणस्वामी भवन लखनऊ आ० स० चन्द्रनगर लखनऊ आ०स० गणेशगज लखनऊ आ स० हासीपुर आ० स० ऐशबाग लखनऊ आ०स० राऊलकला बीकानेर की सभी समाज।

—आ० स० हासीपुर के मन्त्री की नानी का अन्त्येष्टि सस्कार वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ।

—६ ७ ८ नवम्बर को आ०स० सीतामढ़ी बिहार म प० रामनारायण शास्त्री का प्रभावशाली भाषण व श्री रामनारायण सिंह का भजन हुआ। बिहार का सभा को इस समाज ने ३५) दिये।

—आ०स० सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर बिहार का वार्षिकोत्सव ७ ८ ६ दिसम्बर ५८ को हागा। बिहार के प्रसिद्ध विद्वान् प० रामानन्द शास्त्री प० रामनारायण शास्त्री प० गङ्गाधर शास्त्री आदि अच्छे भजनोपदेशकों सहित पधारेंगे।

—श्री सर्वदानन्द साधुआश्रम हरदुआगज अलीगढ़ का वार्षिकोत्सव २३ से २६ नवम्बर ५८ तक समाराह पूर्वक मनाया जायेगा। आर्यजगत् के अनेकों प्रसिद्ध विद्वान् पधारेंगे।

—कन्या गुरुकुल सासनी अलीगढ का २८ वा वार्षिकोत्सव ३०, ३१ दिसम्बर ५८ व १ जनवरी ५६ का समाराहपूर्वक सम्पन्न हागा। १ जनवरी को नव स्नातिकाओं का दीक्षान्त हागा।

—आर्यकुमार सभा नया बास दिल्ली—प्रधान श्री देवीदयाल आर्य, मन्त्री श्रीराम आय, काषाध्यक्ष श्री वीरेन्द्रकुमार।

—दिल्ली प्रान्तीय आय कुमार परिषद-श्री हरिदास आर्य प्रधान श्री देवीदयाल आय मन्त्री।

—दिल्ली प्रान्त म निम्न स्थानों पर कुमार सभाए नियमपूर्वक चल रही हैं—दीवानहाल सीतारामबाजार नया बास, शाहदरा, लाजपत नगर, दरियागज पाटौदी हाउस सब्जीमण्डी बस्ती हरफूलसिंह डी० ए० वी० स्कूल दरियागज ड ०ए०वी०स्कूल वेयडरोड, डी० ए० वी० स्कूल चित्रगुप्त रोड।

दयानन्द स्मारक ट्रस्ट की अपील

श्री सेठ नानजी भाई कालीदास मेहता पारबन्दर द्वारा प्रदत्त लाखों रूपये के शाहादान से दयानन्द स्मारक टस्ट ने टकारा म मारवी महाराजा का नव लाख रुपये का भव्य राजमहल खरीद लिया है जो स्वामी दयानन्द की जन्म भूमि है। इस स्थान पर दयानन्द स्मारक के रूप में पुस्तकालय, यज्ञशाला, अन्वेषण केन्द्र हाई स्कूल आदि का निर्माण किया जायेगा। आर्य जगत से इन कार्यों की पूर्ति के लिए पाच लाख रुपये की अपील की गयी है। सब साधारण से प्रार्थना है कि इस योजना की पूर्ति के लिए सभी व्यक्ति अखिल भारतीय स्तर पर स्मारक की सहायता करें। परोपकारिणी सभा अजमेर ने ५००००) रु० दान दिया है। आगामी शिवरात्रि पर स्मारक का भव्य उद्घाटन हागा।

प० आनन्दप्रिय ज मन्त्री
महर्षि दयानन्द सरस्वत स्मारक टस्ट टकारा, आत्माराम रोड
बड़ौदा ४

शुद्धि की ऐतिहासिकता

(श्री ललिताप्रसाद डी०ए० वी० कालेज, कानपुर)

शुद्धि के सम्बन्ध में प्रायः यही कहा जाता है कि यह आर्य समाज की ओर से साम्प्रदायिक भावनाओं को प्रोत्साहित करने के लिए आरम्भ की गई परन्तु आर्यसमाज का शुद्धि सन्देश विचार परिवर्तन के आदि सिद्धान्त का समर्थक है और सदैव व्यक्ति अपने विचारों को बदल कर शुद्ध विचारों को स्वीकार करते रहे हैं। इस प्रकरण में लेखक द्वारा अनुसन्धान की गयी घटना हमारी इस धारणा को और भी अधिक पुष्ट करती है। वास्तव में ऋषि दयानन्द ने शुद्धि मन्त्र द्वारा भारतीयों में बौद्धिकता और दृढ़ विश्वास की भावना को जागृत किया। शुद्धि के सामाजिक एवं राष्ट्रीय पक्ष की महत्ता आज सभी स्वीकार करते हैं।

—सम्पादक

९ अक्तूबर सन् १९५८ ई० को कानपुर में 'फूलबाग' के मैदान में श्रीयुत मौलाना अलीमउद्दीन साहब व्याख्यान दे रहे थे कि शुद्धि का करना स्वामी दयानन्द जी व आर्य समाज ने एक नवीन प्रथा चालू की है। इससे पहिले कभी शुद्धि नहीं होती थी, कोई हिन्दू विधर्मी को अपने में सम्मिलित करने को प्रस्तुत नहीं होता था, यदि किसी भाई ने कहीं पढ़ा हो तो प्रमाण पेश करे।

उस समय मेरे साथ कुछ आर्य भी उपस्थित थे, उन्होंने मुझसे कहा कि आप मौलाना को इसका उत्तर दें, मौलाना साहब भी उत्तर सुनने को राजी हो गये, जो प्रमाण मैंने मौलाना साहब को "फूलबाग" के मैदान में दिया वह "आर्यमित्र' के पाठकों के सम्मुख रखता हूं। यों तो शुद्धि पर कई पुस्तकें तथा सैकड़ों लेख आर्य समाज ने प्रकाशित किये हैं किन्तु जो घटना मैं आज लिखना उचित समझता हूं वह आर्यसमाजी व किसी आर्य ने नहीं लिखा। एक मुसलिम विद्वान् की पुस्तक से प्रमाण मैंने फूलबाग के मैदान में सुनाया, जो निम्नलिखित है —

एक पुस्तक "दबिस्तान मजाहब" नाम का है जो फारसी में लिखी गई थी और उसका उर्दू में अनुवाद सन् १८८२ में किया गया। इस समय वह अनुवाद मेरे पास है। उसके ३८८ पृष्ठ पर "हुकूमत के अकायद" शीर्षक देकर उनके सिद्धान्तों का वर्णन किया है। और अन्त में कुछ विद्वानों (हकीमों) के जीवन दिये हैं। पृष्ठ ४१५ पर "कामरान" नामक हकीम का चरित्र लिखा गया है। जिसमें पता लगता है कि उस समय विधर्मी आर्य धर्म में सम्मिलित होते थे। उस पुस्तक में जो लिखा है मैं उसका भावार्थ लिखूंगा, क्योंकि उर्दू को नागरीलिपि में लिखने से पाठकों को समझने में कठिनाई होगी।

महोदय कामरान शीराजी मशाइयों के अनुयायी थे और पूर्ण विद्वान् थे। वे हिन्द में आये, उन्होंने राजाओं से परिचय किया, हिन्दू धर्म को स्वीकार किया और हिन्दू शास्त्र ब्राह्मणों से पढे। उन्होंने १०५० हिजरी में अकबराबाद के समीप फर्रुखनगर में शरीर छोड़ा और जो सामग्री पास थी, उसको रुग्णावस्था में ही इस भांति बटवारा कर दिया — नगद माल वैष्णव ब्राह्मणों को दिया। क्योंकि वह जीवों को कष्ट नहीं देते थे। वस्त्र महमूद को दिये और कहा कि मार्ग में जो (दरवेश साधु हैं) उन्हें दे देना, पुस्तकें हुशयार महाशय को दी गई, ताकि वे अधिकारियों को बांट दें। महोदय कामरान नबूवत को नहीं मानते थे और कहते थे कि बुद्धिमानों ने नियम बनाये थे, और उन पर चलने से व्यवस्था ठीक रहती थी, झगड़े नहीं होते थे। पश्चात् लालची और भोगप्रिय मनुष्यों ने सत्यता को ढाप दिया और उनमें से किसी ने अपने सम्बन्धियों के बल से और किसी ने धोके से और किसी ने रसायनादि चतुराई से मूर्खों को अपने आधीन किया, और जब इनका दल बढ़ गया, तो विद्वान् भी परास्त हो गये। क्योंकि यह—शक्ति सम्पन्न थे। साधारण लोगों ने उन्हें अपना मुखिया स्वीकार किया उससे जगत् में विवाद बढ़ गया। इस लेख से प्रतीत होता है कि ११ वीं सदी हिजरी में भी "कामरान' जैसे विद्वान् हिन्दू धर्म में सम्मिलित हुये थे। जो सज्जन कहते हैं, शुद्धि नूतन है वह सोचें।

आशा है वे इस लेख से लाभ उठाकर अपने विचार बदलने का यत्न करेंगे। उपरोक्त प्रमाण को सुन कर मौलाना अलीमउद्दीन अवाक् रह गये फिर मौलाना से कोई उत्तर न बन पड़ा और खामोश रहे चारों ओर से आवाजे आने लगीं "आर्य समाज अमर रहे।"

★

ऋषि ने द्वार खोल दिए

(श्री ज्ञानेश्वरानन्द जी वानप्रस्थी)

ऋषि जीवन का प्रकाश आर्य जाति के मार्ग दर्शन के लिए "यावच्चन्द्र दिवाकरौ" कार्य करता रहेगा। ऋषि के आगमन से पूर्व राष्ट्र के प्रगति द्वार अवरुद्ध थे, राष्ट्र की और मानवता की गति संकीर्ण हो चुकी थी। ऋषि ने प्रगति द्वारों का उद्घाटन किया और राष्ट्र को आगे बढ़ाया। हम स्वयं ऋषि के मार्ग पर चलें और राष्ट्र का पथ प्रदर्शन करें, यही आज की अनिवार्य आवश्यकता है।

—सम्पादक

महर्षि दयानन्द ने गुजरात प्रान्त में जन्म लिया, उन्हें एक तनिक सी घटना ने ही जागृति दी। और तब वह उस कल्याणकारी शिव की खोज करने के लिये गृहत्याग का निश्चय कर बैठे, इसी बीच में उनकी छोटी भगिनी और पूज्य चाचा जी की मृत्यु ने आन घेरा, उन दोनों की जुदाई ने एक और नया विचार भी खड़ा कर दिया कि वह कहाँ चले गये? कहाँ से आये थे? यह क्या जुदा हो गये? अब इन दोनों ही प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए वह घर से निकल पड़े। और घूमते घूमते १८५७ में जब भारत में अंग्रेज साम्राज्य के विरुद्ध विप्लव उठा था, उसके कुछ ही दिनों पश्चात् दयानन्द ने दण्डी स्वामी विरजानन्द की ड्योढ़ी पर जाकर खटखटाहट की, अन्दर से पूछा गया, कौन? मैं यही तो जानना चाह रहा हूं, कि मैं कौन हूं? कृपया आप द्वार खोल कर मुझे यह बताने का कष्ट करें। तब द्वार खुले और दण्डी जी के कुछ प्रश्नों का उत्तर दयानन्द ने और इनके कुछ प्रश्नों का उत्तर विरजानन्द ने भी सुना। तब दयानन्द ने आज तक के पढ़े हुए सभी ग्रन्थों के ज्ञान तथा कागजी पुस्तकों को यमुना की लहरों में भेंट चढ़ाया, और अब भी विरजानन्द के चरणों में २॥ वर्ष तक सत्य ज्ञान की प्राप्ति की तब दयानन्द के सभी बन्द द्वार खुल गये। वेदोक्त मार्ग के बन्द द्वारों के खुलने पर वेद के पवित्र ज्ञान सागर में गहरी डुबकी लगाकर गुरु जी द्वारा अनमोल रत्नों की प्राप्ति कर ली, अब दयानन्द को ज्ञान हुआ कि मैं कौन हूं? कहां से आया हूं मुझे कहां जाना है? लोप हुए वेद ज्ञान की मर्यादा का ज्ञान होते ही दयानन्द ने उसके पुनरुत्थान करने का संकल्प किया, उसका कार्यक्रम बना लिया गया। दयानन्द ने प्रत्येक प्राणी का उत्थान के मार्ग पर सत्य मार्ग पर ला खड़ा करने के लिये यह दर्शाया, कि भारत के बन्धुओ! वेद मार्ग के बन्द द्वार मैंने पूज्य श्री गुरुवर श्री स्वामी विरजानन्द के आदेश से पूर्णतया खोल दिये हैं।

आओ इस पवित्र मार्ग से गमन करो इस पथ पर चलने से ही रामराज्य के शुभ समय के दर्शन करने का पुनः अवसर प्राप्त हो सकता है।

ऋषि दयानन्द ने फिर कहा कि भारत निवासी आर्यो! सुनो सब प्रथम उस जगनियन्ता प्रभु परमेश्वर के सच्चे भक्त बनो, ईश्वर विश्वास ही संसार में सब कामनाओं की सिद्धि होने के लिये आवश्यक है। उसके पश्चात् माता पिता और आचार्य की पूजा करो, अपने पूज्यों के नित्य ही श्रद्धापूर्वक सेवा करो, नारी जो नर रत्न की जन्म दात्री, नर की खान, उस मातृ शक्ति नारी की पूजा करो उसी की सदैव पूजा करने से ही तो देश में देवताओं का निवास होगा, अन्यथा देवता नहीं राक्षसों का वास हो जायेगा, देश की संस्कृति की रक्षा चाहते हो तो स्वराज्य की स्थापना करो, स्वराज्य की स्थापना हो जाय तो विदेशियों को यहां से पृथक कर दो, विदेशी राज्य कितना भी अच्छा क्यों न हो परन्तु अपने अर्थात् स्वराज्य से उसकी तुलना नहीं हो सकती, एकबार स्वराज्य प्राप्त हो जाये तो उसे सुराज्य अर्थात् उत्तम आर्यों का राज्य जिसे रामराज्य कहते हैं वैसा बनाने का अवसर आ सकता है। ऐसे रामराज्य की स्थापना के लिये देश के प्रत्येक बालक बालिका को सदाचारी बनाने की चेष्टा करनी पड़ेगा, उन्हें शुद्धाचारी बनाने के लिये शुद्ध आर्य भाषा देवनागरी वेद की भाषा हिंदी संस्कृत का पवित्र ज्ञान प्राप्त करना होगा। देश के प्रत्येक नर नारी के हृदय से छुआ छूत के भूत को भगा दो, हम सब आर्य हैं, हमारा एक विचार हो, एक आहार हो, हमारी भाषा भी एक प्रकार हो, प्रभु परमेश्वर हो हमारे एक आधार हो, स्त्री जाति का कहीं पर तिरस्कार न हो, तो वैदिक धर्म का फिर पुनरुद्धार हो जाये, यही रामराज्य की स्थापना हो जावे।

ऋषिवर दयानन्द जब इस प्रकार सभी द्वार खोल चुके तो अन्त में दान-

(शेष अगले पृष्ठ पर)

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
अग्रहायण २ शाक १८८० (२३नवम्बर ५८)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

तार — 'आर्यमित्र'
... मार्ग लखनऊ
दूरभाष ... तार : 'आर्यमित्र'

आर्यमित्र हीरक जयन्ती

को

सफल बनाइए

आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार और संघटन की सुदृढ़ता

के लिए

एकमात्र साधन 'आर्यमित्र' है

जो साठ वर्षों से निरन्तर मौन साधक के रूप में समाज, राष्ट्रभाषा हिन्दी, साहित्य, धर्म, राष्ट्र और मानव संस्कृति आदि सभी क्षेत्रो में वैदिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने में संलग्न रहा है। सभी क्षेत्रों में आदर्शों की स्थापना ही उसका एक मात्र उद्देश्य रहा है।

यदि आप चाहते हैं कि भविष्य में भी

'आर्यमित्र'

★ आर्यसमाज के प्रचार
★ सिद्धान्त समर्थन
★ निर्भीक आलोचना
★ समाज-सुधार
★ राष्ट्र नव निर्माण
★ विश्व शान्ति
★ वैदिक संस्कृति समुद्धार
★ नैतिक उत्थान
★ आदर्श पत्रकारिता
★ राष्ट्रभाषा हिन्दी सेवा
★ विश्व बन्धुत्व
★ मानव संस्कृति

आदि सभी क्षेत्रों में सामाजिक चेतना जागृत करता रहे तो आर्यमित्र को समर्थ बनाने में अपना सहयोग प्रदान कीजिए।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती की सफलता आपके सहयोग पर ही निर्भर है। पचास हजार रु० की जयन्ती निधि में अपनी सामर्थ्यानुसार सहायता कीजिए और इष्टमित्रों से सहायता दिलवाकर पुण्य के भागी बनिए।

आर्यमित्र की उन्नति के इस यज्ञ में पड़ी हुई प्रत्येक आहुति मानवता के नव निर्माण में सहायक होगी।

संयोजक—'आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति' लखनऊ

ऋषि ने द्वार खोल दिए

[पिछले पृष्ठ का शेष]

यहाँ के तिमिराच्छादित घनघोर अमावस्या की रात्रि में वहां चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश कराते हुए अपनी जीवन ज्योति के समाप्त होने से पूर्व उन्होंने आदेश दिया कि इस भुवन के सब बन्द द्वार खोल दो। मेरे भारत रूपी भुवन में कहीं अन्धकार का लेश मात्र भी न रहे, चारों ओर ज्योति ही ज्योति हो, ज्योति का पता चले, ज्योति दिखाई दे, अत आओ हम सब मिलकर उस ज्योति पुञ्ज से ज्योति प्राप्त कर ज्योतिर्मय हो जावें।

★

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ में मुद्रित तथा प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

ARYA MITRA

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का साप्ताहिक मुखपत्र

वार्षिक मूल्य ८)
एक प्रति का २० नये पैसे

लखनऊ, रविवार, अग्रहायण ९ शक १८८०, अग्रहायण कृ० ४, वि० २०१५
३० नवम्बर १९५८ ई०

विदेश ८
शिलिंग

आर्य समाज अब भी सद्‌भावना का स्वागत करेगा—सरकार पंजाब में अपना कर्तव्य पालन करे

यदि सरकार ने समस्या हल न की तो

आर्य महासम्मेलन में निर्णय होगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा दि० २३-११-५८ की बैठक में पारित प्रस्ताव

जिन परिस्थितियों में आर्य समाज का सत्याग्रह स्थगित किया गया था वह साधारण जनता और विशेषत सुविज्ञ आर्य जगत को ज्ञात ही है। हमारे सत्याग्रहियों की बिना शर्त रिहाई की गई, तब इस सम्बन्ध में यह स्पष्टीकरण मांगा गया कि क्या यह शासन की ओर से सद्‌भावना का द्योतक है? इस पर स्पष्ट रूप से उत्तर मिला कि यह सद्‌भावना का ही द्योतक है और सब समस्याओं के समाधान के लिए प्रारम्भिक पग है। साथ ही शासन के उत्तरदायी नेताओं ने सार्वजनिक एवं व्यक्तिगत रूप से पंजाब की भाषा समस्या के समाधान के लिए आश्वासन देते हुए कहा कि सद्‌भावना के परिणाम स्वरूप सारी बातें अनुगत होंगी। आर्य समाज की परम्परा को देखते हुए इसमें सभी सहमत थे कि सद्‌भावना का उत्तर हमारी ओर से सद्‌भावना ही होना चाहिए और परिणाम स्वरूप सत्याग्रह स्थगित किया गया।

परन्तु इसका अत्यन्त खेद है कि सत्याग्रह स्थगन के अनन्तर सद्‌भावना के परिणाम स्वरूप शासन के उत्तरदायी महानुभावों द्वारा घोषित जो अनुवर्ती पग उठाये जाने चाहिये थे वे नहीं उठाये गये। अत इसकी स्वाभाविक प्रतिक्रिया यह हुई कि जनता में निराशा एवं अविश्वास की भावना दिनों दिन बढ़ती गई और अपनी माँगों की पूर्ति के लिये पुन आन्दोलन करने की माँग तीव्र हो गई। इसी के फलस्वरूप पंजाब हिन्दी रक्षा समिति के २ नवम्बर वाले अम्बाला अधिवेशन का प्रस्ताव समक्ष आया। यह सभा इस प्रस्ताव की भावना का पूर्ण आदर करती है और यह भी अनुभव करती है कि उसमें पंजाब की जनता के विचारों का वास्तविक चित्रण है।

यह सभा सब बातों पर विचार करके इस परिणाम पर पहुँची है कि यदि आर्य समाज को सत्याग्रह करना पड़े तो सत्यता और सद्‌भावना के नाते उसका सिर राष्ट्र के सभी विचारशील तत्वों एवं परमात्मा के समक्ष ऊंचा रहेगा और इसके कटु परिणामों का उत्तरदायित्व केवल शासन पर होगा। परन्तु आर्य समाज एक धार्मिक तथा सांस्कृतिक संस्था है जो सदा शान्ति का उपासक रहा है और राष्ट्र की सुरक्षा अभिवृद्धि तथा उन्नति का पोषक रहा है। अतः समय की परिस्थितियों और विशेषतः पंजाब के राज्यपाल श्री एन० वी० गाडगिल के यत्नों एवं वक्तव्यों को दृष्टि मे रखते हुए इस सभा की राय है कि आगामी पग उठाने से पूर्व उनके प्रयत्नों के परिणाम की प्रतीक्षा की जाय और यदि तीन मास के पश्चात् भी कोई सन्तोषजनक बात न हुई तो अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन बुलाकर सत्याग्रह का अन्तिम निर्णय किया जाय।

सम्पादक—
स्नातक उमेशचन्द्र एम. ए.

यह आर्यमित्र हीरक जयन्ती [illegible] है

आर्यमित्र हीरक जयन्ती पर आर्यसमाज के इतिहास का सिंहावलोकन हो

'आर्यमित्र' हीरक जयन्ती के लिए मेरे दो सुझाव मुख्य हैं। एक यह कि स्मृति ग्रन्थ का प्रकाशन किया जाय जिसमें एक लेख में तो 'आर्यमित्र' का इतिहास तथा उसके द्वारा की गई जनता की सेवाओं का वर्णन हो। दूसरा यह कि उसमें अधिकारी विद्वानों से आर्य समाज के इतिहास पर लेख लिखाकर प्रकाशित कराये जांय। इन लेखों में आर्य समाज द्वारा विभिन्न क्षेत्रों मे देश की सेवाओं का पूरा सुन्दर वर्णन एव चित्रण हो। आपको स्मरण होगा, आर्य समाज ने अंग्रेजी राज्य में भी कई बार सरकार तथा समाज विरोधी तत्वों से मोर्चा लेने के लिए कदम उठाये थे। एक बार बाजे के प्रश्न पर, जिसका आर्य समाज से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था, कदम उठाया था। उसे रामबहादुर, मशालसिंह ने गवर्नर से मिलकर ठप्प करा दिया था। फिर दिल्ली में आर्य कान्फ्रेंस हुई थी। श्री नारायण स्वामी सभापति थे। इन बातों को आज कितने आदमी जानते हैं और इनसे पूर्व की घटनाओं को? यह स्मृति ग्रन्थ पुस्तकाकार हो और प्रत्येक आर्य समाज को इसकी १०-२० प्रतियां अवश्य खरीदनी चाहिए। मेरा मतलब है कि आय समाज के इस सजीव इतिहास को आर्य समाजियों को खरीदना चाहिए। इस कार्य मे आर्य समाज यह करे कि उसके लिए ग्राहक बनायें। इस ग्रन्थ के पढ़ने से आर्य समाज मे अवश्य चेतना पैदा होगी, ठीक उसी प्रकार जैसे अपने अतीत के गौरवमय इतिहास को पढ़कर होती है।

तीसरा सुझाव यह है कि उत्तर प्रदेश में तथा राज्य के बाहर मे समाजें अपने यहाँ इस जयन्ती को अवश्य मनावें।

—शिवचरण लाल शर्मा, पत्रकार

अभिनन्दन समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश अपने विश्वविश्रुत साप्ताहिक 'आर्य मित्र' की हीरक जयन्ती मनाने जा रही है और उसी अवसर पर आर्य जगत् की दो महती विभूतियों को—स्वनाम धन्य पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम०ए० गंगाप्रसाद (जो चीफ जज के नाम से प्रख्यात हैं) को अब पूजा देने जा रही है। दोनों आर्यजगत्—वन्दित महानुभावों का अभिनन्दन किया जायगा। यद्यपि महाभागों की जन्मभूमि उत्तर प्रदेश की ही पुण्य है इस नाते उत्तर प्रदेश की प्रतिनिधि सभा ने यह काम अपने ऊपर लिया है परन्तु विद्या और सेवा की दृष्टि से ये दोनों ही महापुरुष देश और काल की क्षुद्र सीमाओं से सर्वथा ऊपर उठे हुए हैं। अल्पबुद्धि मनुष्य साधारणतः मुर्दों का पुजारी हुआ करता है। वह किसी के गुणों को उसके वियोग में ही आंका करता है। जीवित पितरों से दगमदगा करने वाला मनुष्य भी उनकी मृत्यु पर उनकी स्मृति में अपने घर द्वार बेच कर भी मुक्खड़ों और भोजन भट्टों के पेट भरता है। परन्तु हम आर्य हैं। हम तो जीवितों का ही श्राद्ध मानते है। कम से कम कहते तो ऐसा ही। तो क्यों न हम विश्व को यह दिखा दें कि हम जो कहते हैं वही करते हैं? आप आज न मानें आपकी आने वाली सन्ताने मानेंगी और हजारों वर्षों तक नहीं भूलेंगी पण्डित युगल की आर्य जगत् की सेवाओं को जो इन्होने इसे अमर साहित्य देकर की हैं। जज साहिब की लिखी 'धर्म का आदि स्रोत' या उपाध्याय जी की लिखी आस्तिकवाद, अद्वैतवाद, जीवात्मा, दयानन्द की फिलासफी आदि आदि पुस्तकें विश्व के ग्रन्थागारों की अमर निधियाँ बनकर रहेंगी। हमारे प्रचार की कमी है नहीं तो मास्को और शिकागो, लन्दन, पेरिस और बर्लिन आदि महानगरियां इन पुस्तकों को अपने विशाल पुस्तकालयों में रख कर अपने को गौरवान्वित समझेंगी। वह समय आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों आने वाला है। इसमें हमें जरा भी सन्देह नहीं है। उस समय भावी सन्तान हमें गुण ग्राहकता से शून्य समझ कर हमारा उपहास न करे इसलिए अपनी गुणग्राहकता का हम अवश्य परिचय देवें। हम अपना कर्तव्य समझें। हमें अपने विद्या वयोवृद्ध इन मनीषियों की—पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एव पं० गंगाप्रसाद जी की पूजा को जिसका आयोजन किया जा रहा है सफल और अभिनन्दन को अभिनन्दनीय बनाने के लिए समय रहते जुट जाना चाहिए। ढालों और खरतालों पर वार्षिकोत्सवों के नाम पर ग्रामों कस्बों और नगरों में एक स्थान पर हम दो चार या दस हजार रुपये प्रति वर्ष खर्च कर बैठते हैं। क्या क्षति है यदि हम इन आवश्यक कार्यों का एक वर्ष व्यय बन्द कर विद्वानों के अभिनन्दन समारोहों को ही अभिनन्दनीय बना देवें।

—अवधबिहारीलाल
सम्पादक आर्य समाज, कलकत्ता

कर्तव्य की पुकार

अमर शहीद रामप्रसाद 'बिस्मिल' की बहन का पत्र

शहीद की बहन स्वराज्य में फांके कर रही है

—श्री बनारसीदास चतुर्वेदी—

अभी हमें जिला मैनपुरी (उत्तर प्रदेश) से काकोरी केस में फांसी पाने वाले शहीद "बिस्मिल" की बहन श्रीमती शास्त्री देवी का एक पत्र मिला है। उसे हम ज्यों का त्यों दे रहे हैं —

कोसमा
मैनपुरी

श्रीमान् प्रिय भाई साहब बनारसीदास जी नमस्ते स्वीकार हो। आपका पत्र आया मिला। मैंने आपके पहिले पत्र जो आया था उसका जवाब फौरन दिया था। कुछ बातें भी दी थी। बैरंग पत्र भेजा था, आपको न मिला क्या वजह हुई। मैं अपने भाई की बात क्यों न जानूंगी। मेरे से ४ साल बड़े थे। मेरे सहारे कई गुप्त काम किए। हथियार रियासत ग्वालियर से मेरे ही सहारे आते थे। उनके जीवन चरित्र में सब लेख अपने हाथ से लिखी है। मैंने शाहजहांपुर में सबसे विनती की, मेरी तन पेट की किसी ने मदद नहीं की। अब मेरी बहुत हालत खराब है। भाई ओंकारनाथ ने मुझे ५) रु० दिए, एक धोती ले दी। बिल्कुल दशा खराब थी। कोसमा में वर्षा बहुत हुई। सिवा पानी के कुछ नहीं दीखता। मेरा मकान भी गिर गया, खाने को अन्न नहीं मिला। फाका हो रहा है। ज्यादा लिखा नहीं जाता। अगर मेरे लड़के की कहीं नौकरी लग जाती तो अच्छा होता।

आपकी बहन,
शास्त्री देवी

१९ दिसम्बर सन् १९२७ को 'बिस्मिल' को फांसी हुई थी और उनकी पूज्य माता जी सन् १९४७—यानी पूरे बीस वर्ष भूखी मरती रहीं। तत्पश्चात् ७८ वर्ष उन्हें साठ रुपये महीने की पेंशन उत्तरप्रदेश सरकार से मिली। पिता जी चल बसे, उनका छोटा भाई रमेश क्षय रोग मे स्वर्गवासी हुआ और अब बिस्मिल की बहन की बारी है। माता जी के स्वर्गवास के बाद दो वर्ष से 'बिस्मिल' की यह विधवा बहन घोर आर्थिक संकट का सामना कर रही हैं।

जनता का यह पवित्र कर्तव्य है कि वह उनकी भरपूर सहायता करे। पैसा इस पते पर भेजा जा सकता है—श्रीमती शास्त्री देवी, कोसमा, जिला मैनपुरी। 'बिस्मिल की आत्मकथा' से (जो अभी प्रकाशित हुई है) स्वतन्त्रता संग्राम के उस वीर सैनिक के त्याग और बलिदान का पता लग सकता है।

बिस्मिल यावज्जीवन आर्यसमाजी रहे और उन्होंने 'विश्वानि देव' के मन्त्र का जप करते हुए अपने प्राण फांसी के तख्ते पर दे दिये। यही नहीं उन्होंने अपनी अन्तिम इच्छा (पृ० १३२ आत्मकथा में) इस प्रकार प्रकट की थी—परमात्मा से मेरी यही प्रार्थना होगी कि वह मुझे इसी देश में जन्म दे ताकि मैं उसकी पवित्र वाणी, (वेदवाणी) का अनुपम घोष मनुष्यमात्र के कानों तक पहुंचाने में समर्थ हो सकूं।

इन बिस्मिल जी की बहन (हमारी बहन) फाके करें यह बात दरअसल हम सबके लिए लज्जाजनक है।

वेदोपदेश

ओम् भूताय त्वा नारातये स्वरभिविख्येष दृ ठ्ठ हन्ता दुर्या पृथिव्यामुर्वन्तरिक्ष मन्वेमि । पृथिव्यस्त्वा नाभौ सादयम्यदित्याऽउपस्थेऽग्ने हव्यठ्ठरक्ष ॥

यजु० १-११

अदानशीलता के निमित्त नहीं प्रत्युत विभूति के लिए तुझ यज्ञ या दिव्य ज्योति को सर्वत्र देखू।पृथिवी मे निवास स्थान दृढ़ हों। विस्तृत अवकाश क्षेत्र को प्राप्त होऊ। तुझको पृथिवी का नाभि (केन्द्र) तथा अदिति (प्रकृति) के अङ्क में स्थापित करता हू । हे अग्नि, तू इस हव्य की रक्षा कर।

बङ्गाल सभा के प्रधान श्री मेहरचन्द्र जी धीमान का उत्साहवर्धक आश्वासन

आर्यन कन्वेन्शन देहली के अवसर पर बगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मेहरचन्द्र जी धीमान ने श्री प्रि० महेन्द्रप्रताप शास्त्री सम्पादक अभिनन्दन ग्रन्थ व उमेशचन्द्र स्नातक सम्पादक आर्यमित्र से कहा—उत्तरप्रदेश के आर्यों की योजना बड़ी सुन्दर है और मै व्यक्तिगत व सामाजिक सभी प्रकार से इस योजना में सहयोग दू गा। मैं चाहता हू योजना की सफलता के लिए आप लोग कलकत्ता पधारें।

सम्पादकीय

लखनऊ—३० नवम्बर १९५८, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि सवत १९७२९४९०५९

विवेक पूर्ण निर्णय

आर्य समाज के सम्मुख पजाब की भाषा समस्या को लेकर जो दायित्व उपस्थित हुआ है उसकी गम्भीरता और उस सम्बन्ध में उठाये जाने वाले पग की दूरगामिता को दृष्टि मे रखते हुए २२ २३ नवम्बर को आर्य कन्वेन्शन व सार्वदेशिक अन्तरङ्ग सभा ने जो प्रस्ताव पारित किया है उसे आर्य समाज की हित दृष्टि, सद्भावना और राष्ट्र की वर्तमान गम्भीर परिस्थितियो को देखते हुए उचित और विवेक पूर्ण निर्णय कहा जाना चाहिए। प्रस्ताव की गम्भीर शब्दावली व्यापक और उदार दृष्टिकोण से युक्त होते हुए भी आर्य समाज के कर्तव्य के प्रति सतर्कता से परिपूर्ण है।

आर्य जनता में पजाब के प्रश्न को लेकर जो जोश और उत्साह है वह एक सच्ची कर्तव्य निष्ठा का परिचायक है परन्तु नेतृत्व की दृष्टि से जोश का उपयोग होश के साथ ही किया जाना चाहिए। क्योंकि केवल जोश से ही सफलता प्राप्त नहीं हो सकती अत प्रस्ताव ने जो प्रेरणा दी है तदनुसार हम सरकार को एक और अवसर देते हुए अपनी शक्ति का सचय करते रहना चाहिए।

आर्य समाज ने राष्ट्र के समक्ष सद्भावना का उत्तर सद्भावना द्वारा देकर जो आदर्श उपस्थित किया उसकी सर्वत्र प्रशसा हुई आज भी आर्य समाज अपने गौरव का अनुभव करता है। वह सद्भावना को परा काष्ठा तक पहुचा देना चाहता है, कि जिससे कल यदि दुर्भाग्य से कोई सघर्ष करना ही पड़े तो राष्ट्र आर्य समाज को किसी प्रकार दोषी न ठहरा सके। इसीलिए प्रस्ताव मे राष्ट्र नेताओ के व्यक्तिगत और सार्वजनिक वक्तव्यो का स्मरण कराते हुए उनके कर्तव्य पालन न करने पर खेद प्रकट किया गया है और उन्हे कर्तव्यानुरूप अनुवर्ती पग उठाने की प्रेरणा देते हुए एक और अवसर दिया गया है। आशा है अपना कर्तव्य पालन करने मे राष्ट्र कर्णधार इस अवसर का लाभ उठावेंगे और अपने दिये वक्तव्यो के अनुरूप उच्च नेतृत्व के स्तर को कायम रख सकेगे। पजाब के नवीन राज्य पाल श्री गाडगिल के प्रयत्नो को हम परीक्षा का एक अवसर देते हुए अपने धैर्य का प्रदर्शन करने जा रहे है क्योकि एक उच्चस्तरीय व्यक्ति ने जब इस समस्या को अपने हाथ मे लेकर प्रयत्न आरम्भ किया है, तब यदि हम उसको कुछ दिनों प्रतीक्षा न कर कुछ मनवाना चाहें तो यह बुद्धिमत्ता पूर्ण कार्य न होगा। राज्यपाल कितने स्वतन्त्र और सामर्थ्यवान होते हैं यह तो भविष्य ही बतायेगा परन्तु शान्ति के उपासक आर्य समाज का दृष्टिकोण स्पष्ट है। यदि कोई प्रयत्न किया है या किया जा रहा है तो वह उसमे बाधक न होकर सहायक ही बनना चाहता है।

प्रतीक्षा की तीन मास की अवधि तक तो प्रस्ताव दूसरों के कर्तव्य की ओर सकेत करता रहा है पर अन्तिम पक्तियो मे आर्य जनता के प्रति कर्तव्य की दृष्टि से आर्य महासम्मेलन बुलाये जाने की माग को स्वीकार किया गया है और वहीं आर्य समाज के भावी पग अथवा सत्याग्रह के सम्बन्ध मे अन्तिम निर्णय किया जायगा।

यहा हम आर्य महासम्मेलन की महत्ता के सम्बन्ध में कहना चाहते हैं कि सम्पूर्ण आर्य जगत् की एकता और सुसम्बद्ध परम्परा व अनुशासन भावना को व्याप्त बनाये जाने की दृष्टि से आर्य महासम्मेलन बुलाकर ही आन्दोलन आरम्भ करने का निर्णय किया जाना चाहिए, इस परम्परा को कभी भी भग न होने दिया जाय। आर्य समाज की व्यापकता और सघटन दोनो दृष्टियो से यह आवश्यक है कि प्रत्येक निर्णय आर्य समाज के सार्वदेशिक स्वरूप और हित की दृष्टि से किया जाय।

राज्य नेताओं को कर्तव्य पालन के लिए प्रदत्त अवसर और आर्य महासम्मेलन बुलाने की अनिवार्यता के मध्य का समय आर्य जनता और कर्मठ कार्य कर्ताओ के लिए भी एक गम्भीर दायित्व सौंपता है और वह यह है कि हम जनता और देश के सम्मुख अपने केस को सुन्दरतम ढङ्ग से प्रस्तुत करते रहें और जन मानस को आर्य समाज के दृष्टिकोण से सहमत बनाने का प्रत्येक सम्भव और उचित प्रयत्न जारी रक्खें।

कुछ भाइयों को प्रस्ताव की उदार और गम्भीर भाषा मे निराशा की झलक की भ्रान्ति न हो इसलिए यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि यह निर्णय आर्य समाज के उच्चतम प्रतिनिधियो द्वारा सर्व सम्मति से किया गया है (सार्वदेशिक सभा के सभी प्रान्तीय प्रतिनिधि सदस्य अन्तरङ्ग सदस्य, भाषा स्वातन्त्र्य समिति के सदस्य इस बैठक मे उपस्थित थे) अत किसी प्रकार की निराशा की भावना का अनुभव न करते हुए हमें इस निर्णय की गम्भीरता को स्वीकार करना चाहिए और आर्य महासम्मेलन व उसके आगे की सम्भावित परिस्थितियो के लिए शक्ति सचय मे जुट जाना चाहिए। क्योकि हमारी बुद्धि और शक्ति के प्रदर्शन से समस्या प्रभावित होगी। और यदि हम आर्य महासम्मेलन तक प्रतीक्षा करते रहे और तब तक कुछ न किया अर्थात् समस्या की महत्ता का स्पष्टीकरण व शक्ति सचय न किया तो रातो रात हम सत्याग्रह का निर्णय करके भी अपने को सकट मे पायेंगे। अब आर्य नेताओ को प्रयत्न जारी रखने देकर हम अपनी शक्ति सचय करें और उत्साह मे कोई कमी न आने दें यही हमारी धैर्य परीक्षा होगी। सम्भावित परिस्थितियो के लिए पूर्व से तैयार व्यक्ति या समुदाय ही सफलता प्राप्त करते है। यह प्रस्ताव एक अवसर देते हुए हमें तैयार रहने का सकेत कर रहा है, आशा है आर्य जनता इसी भावना से इस प्रस्ताव का स्वागत करेगी व अपने कर्तव्य का पालन करेगी।

जयन्ती की प्रगति और आपका कर्तव्य

आर्य जनता विशेषकर उत्तरप्रदेश की आर्य जनता ने जिस महान कार्य की घोषणा की है उसके लिए समय अल्प है कार्य अधिक। तीन मास से कम समय मे आर्यमित्र हीरक जयन्ती समारोह की सफलता हमारी कर्तव्य निष्ठा की परीक्षा है।

हमारे पास आने वाले पत्रों में योजना का स्वागत करते हुए जिस उत्साह का उल्लेख किया जाता है उसके लिए हम आर्य बन्धुओ का आभार मानते है और उन्हे विश्वास दिलाते है कि समारोह उनकी भावनाओ के अनुरूप बनाने का पूर्ण प्रयत्न किया जायगा।

इस अवसर पर सबसे अधिक उत्तर दायित्व आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के अन्तरङ्ग सदस्यो व प्रतिनिधि सदस्यो पर आ पड़ा है। हम आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास करते है कि अन्तरङ्ग सदस्य व प्रतिनिधि भाई और सभा जिला सभाओं व स्थानीय आर्य समाजो के अधिकारीगण अपने कर्तव्य मे कभी उदासीन न रहेंगे और जयन्ती की सफलता व गुरु विरजानन्द स्मारक के महान यज्ञ की पूर्ति मे आदर्श सहायक बनेंगे।

जयन्ती के लिए जो नोट प्रकाशित किये गये है उनको बहुत से भाइयो ने मगाना आरम्भ कर दिया है। जिन भाइयो ने अभी तक नोट नहीं मगाये है वे शीघ्र मगाकर कार्य आरम्भ कर दें और जहा उचित समझें सभाधिकारियो व जयन्ती कार्यकर्ताओ को निमन्त्रित कर सहयोग प्राप्त करें।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

(पृष्ठ ३ का शेष)

हम एक कठिन व्रत ले चुके हैं जो कुछ हो चुका है उससे भी दुगने-चौगुने उत्साह से हमें अब अपने कार्य में जुट जाना चाहिये। यही समय है जब हम अपनी श्रद्धा, दृढ़ता और कर्तव्य परायणता का परिचय दे सकेंगे। आशा है आर्य बन्धु जयन्ती के प्रति अपने कर्तव्य को स्मरण रखते हुए उसके पालन में तन मन-धन सर्वात्मना जुट जायेंगे।

कालिदास जयन्ती

भारत ने विश्व साहित्य को जो महान् देन दी है उसमे महाकवि कालिदास का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी कृतियों ने भारतीय गौरव और परम्पराओं को विश्व व्यापी बनाने में प्रशंसनीय योग दिया है। जर्मन कवि गेटे ने उनके शाकुन्तल की जो प्रशंसा की है विदेशों मे उनके नाटकों की जो लोक प्रियता है इसी प्रकार उच्चकोटि के विश्व-साहित्य में मेघदूत तथा उनकी अन्य कृतियों का सम्मान है उसे जान कर ऐसा कौन भारतीय होगा जिसका हृदय गर्व से न भर आता होगा। हम अपने साहित्य महारथियों का स्वागत सम्मान जितनी बार और जितना अधिक करेंगे उतना ही साहित्य की ओर और उनके द्वारा उच्चादर्शों की ओर जन-मानस प्रेरित होता है। इस दृष्टि से भारत के सभी बड़े स्थानों और विशेषकर उज्जयिनी में कालिदास जयन्ती समारोह का किया जाना और राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद जी द्वारा उसका उद्घाटन महत्वपूर्ण घटना है। आशा है अंग्रेजी भाषा और सभ्यता के अन्धभक्त शेक्सपियर के मुकाबले कालिदास को जानने और समझने की ओर प्रेरित होंगे और भारतीय गौरव को अपने हृदय में अंकित कर सकेंगे। कालिदास अमर हैं उन्हीं के शब्दों में उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित है—कीर्तिर्यस्य सजीवति।

निकाल दिया गया

आर्य जनता को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि पंजाब विश्वविद्यालय ने आर्य जनता की भावनाओं का सम्मान करते हुए 'निशिकान्त' पुस्तक को बी० ए० के पाठ्यक्रम से निकाल दिया है। पुस्तक के विषाक्त और अनैतिहासिक दृष्टिकोण के कारण राष्ट्र के महापुरुष ऋषि दयानन्द की राष्ट्रभक्ति सन्देह जनक हो जाती थी जिस महान् व्यक्ति ने विदेशी राज्य से बुरे से बुरे स्वदेशी राज्य को अच्छा माना हो, उसके बारे में इस प्रकार का उल्लेख कर लेखक ने महान् अज्ञता का परिचय दिया था। हम विश्वविद्यालय के अधिकारियों को इस निर्णय के लिये धन्यवाद देते हैं और भविष्य मे पुस्तकों का चयन करते समय अधिक सावधान रहने का परामर्श देते हैं। शिक्षा द्वारा अपने राष्ट्र के महापुरुषों के गुणों व आदर्शों का प्रचार होना चाहिये उनके चरित्रों की महत्ता ही राष्ट्र को आगे ले जा सकती है। आर्य जनता भी इस अवसर पर बधाई का पात्र है कि उसकी सतर्कता के कारण ऋषि के महान् जीवन की पवित्रता की रक्षा हो सकी।

जयन्ती धन-संग्रह के लिए कार्यारम्भ

अनेक सज्जनों ने डैपूटेशन के लिए समय दिया

श्री बाबू कालीचरण जी आर्य—जयन्ती तक समय
श्री नरदेव स्नातक जी एम. पी. १५ दिन दिसम्बर १ मास जनवरी
श्री आचार्य बृहस्पति शास्त्री जी १० दिन दिसम्बर, १ मास जनवरी
श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री ७ दिन दिसम्बर-७ दिन जनवरी या फरवरी में
श्री बाबू पूर्णचन्द्र जी १ मास

अन्य बन्धु भी अपने समय-दान की सूचना दें

१५ दिसम्बर से जयन्ती कार्यालय गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में खुल जायगा

आर्यमित्र हीरक जयन्ती समारोह की सफल और शानदार सम्पन्नता के लिए श्री ठा०पूलनसिंह जी सभा मंत्री की देखरेख मे जयन्ती कार्यालय गुरुकुल में खुल रहा है श्री मन्त्री जी जयन्ती तक कार्यालय का सचालन करने के लिए गुरुकुल में ही अपना मुख्य कैम्प रक्खेंगे। समारोह सम्बन्धी सुझाव और पत्र व्यवहार के लिए १५ दिन के बाद गुरुकुल ही लिखना चाहिये।

श्री गङ्गाप्रसाद एम. ए., रिटायर्ड चीफ जज तथा श्री गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम.ए. अभिनन्दन ग्रन्थ समिति

(आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश)

आर्य जनता को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश की ओर से आगामी शिवरात्रि के सुअवसर पर आर्य जगत् के प्रतिष्ठित विद्वान श्री पं० गङ्गाप्रसाद एम० ए०, रिटायर्ड चीफ जज, भूतपूर्व प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली तथा श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय, एम०ए० (प्रयाग) भू०पू० प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश तथा भू० पू० प्रधान मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली की सेवा में एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का निश्चय किया।

श्रद्धेय महानुभावों के अभिनन्दन को उनकी विद्वता एवं सेवाओं के अनुरूप उच्चकोटि का बनाने के लिए आपसे प्रार्थना है कि उसके लिए वैदिक धर्म अथवा आर्यसमाज के किसी सिद्धान्त या किसी सामाजिक,वैज्ञानिक,आर्थिक राजनीतिक विषय पर या ऋषि दयानन्द अथवा अन्य किसी महापुरुष के जीवन या सिद्धान्तों पर अपना एक लेख भेजने की कृपा करें। यह लिखने की आवश्यकता नहीं कि लेख स्थायी साहित्य के स्तर का हो। वह संस्कृत, हिन्दी अंग्रेजी किसी भी भाषा में हो सकता है। यदि अपने विचार पद्य के रूप में लिखना चाहें तो वैसा भी कर सकते हैं।

ग्रन्थ प्रकाशन व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए आपसे प्रार्थना है कि लेख एक मास के अन्दर भेजने की कृपा करें। लेख के अतिरिक्त यदि उक्त महानुभावों के सम्बन्ध में अपने संस्मरण, श्रद्धांजलि अथवा वैयक्तिक विचार भी लिख सकें तो वह भी भेजने की कृपा करें।

—महेन्द्रप्रताप शास्त्री
प्रधान सम्पादक, अभिनन्दन ग्रन्थ

उत्तर प्रदेश में बृद्धावस्था पेंशन की योजना

सत्तर वर्ष से अधिक उम्र के निराश्रित बृद्धों को
जीवन यापन की सुविधाएं प्रदान करने के उद्देश्य से

पेंशन देने का निश्चय

राज्य में सामाजिक सुरक्षा की दृष्टि से
अभिनव और अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

पेन्शन पाने वालों की उम्र निर्धारण सम्बन्धी कठिनाइयों के कारण
तथा
वितरण करने के लिए सीमित धन राशि उपलब्ध होने पर भी
योजना की प्रगति सामाजिक न्याय के
उज्जवल भविष्य की ओर संकेत करती है।

आज ४००० से भी अधिक बृद्ध स्त्रियाँ
और पुरुष इस योजना से लाभ उठा रहे हैं

प्रत्येक बृद्ध के लिए
सामान्यतः हर तिमाही की समाप्ति पर
४५ रुपयों का प्रबन्ध किया जाता है

जिससे वे अपने जीवन यापन की अनिवार्य आवश्यकताओं के लिए
चिन्ता विमुक्त हो गये हैं।

साधनों की बृद्धि के साथ-साथ
इस योजना का विस्तार होता जायगा

संख्या १५

आर्य जनता से विनम्र अपील

योजना सफल बनाइए !

'आर्यमित्र-हीरक जयन्ती'

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम० ए० अभिनन्दन, श्री पं० गंगाप्रसाद एम० ए० (रि० चीफ जज) अभिनन्दन,
श्री गुरु विरजानन्द-धाम-स्मारक शिलान्यास-समारोह

महत्वपूर्ण आयोजन

स्थान—गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन (मथुरा)
तिथि—ऋषि बोध पर्व शिवरात्रि तारीख ६, ७, ८ तथा ९ मार्च १९५९

सेवा में—सर्व श्री अधिकारिगण व अन्तरंग सदस्य आ० प्र० सभा, प्रतिनिधि सदस्य गण, आर्य सन्यासी मण्डल, वैतनिक-अवैतनिक उपदेशक प्रचारक वृन्द, समस्त आर्यसमाजों के मन्त्री, समस्त आर्य शिक्षा व अन्य संस्थाओं के अधिकारी व कार्यकर्तागण तथा आर्यबन्धु गण

मान्यवर महोदय,

सादर नमस्ते !

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की ओर से आगामी शिवरात्रि ऋषि बोध पर्व के सुअवसर पर फाल्गुन वदी १२, १३ १४, १५ तदनुसार शुक्र, शनि, रविवार सोमवार ६, ७, ८, ९ मार्च १९५९ ई० को आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध एवं हिन्दी के प्राचीनतम पत्र "आर्यमित्र" की ६० वर्षीय सेवाओं के उपलक्ष्य में 'हीरक जयन्ती' समारोह मनाने का निश्चय किया गया है। इसी अवसर पर आर्यजगत् के मनीषी आर्य विद्वान् वयोवृद्ध श्री प० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम० ए० भू०पू० प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश तथा पूर्व प्रधान मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली एवं श्रद्धेय विद्वान् आर्य नेता श्री पं० गङ्गाप्रसाद रि० चीफ जज (टेहरी) व भू०पू० प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली द्वारा आर्यसमाज एवं वैदिक साहित्य सम्बन्धी को गयी सेवाओं के उपलक्ष्य में दोनों विद्वानों का सादर अभिनन्दन किया जायगा।

इसी सुअवसर पर आर्य जनता की चिर अभिलाषा के अनुरूप श्री विरजानन्द कुटी (मथुरा) स्थल पर बनने वाले स्मारक का शिलान्यास भी सम्पन्न होगा।

आर्यसमाज के अतीत वर्तमान और भविष्य के साथ इन सभी कार्यों के घनिष्ठतम सम्बन्ध को दृष्टि में रखते हुए प्रत्येक आर्य बन्धु का कर्तव्य है कि इस समारोह की सफलता के लिए अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करे।

आर्यमित्र हीरक-जयन्ती—आर्यमित्र को आदर्श साप्ताहिक स्वरूप मे विकसित करने और उसका मासिक संस्करण प्रकाशित करने की योजना जयन्ती से आरम्भ की जा रही है। आर्यमित्र का हीरक जयन्ती विशेषांक की तय्यारियां आरम्भ हो चुकी हैं, जिसमें आर्यमित्र के साठ वर्षीय इतिहास, कार्यकर्ताओं के सहयोग, आर्यसमाज को सेवाओं आदि का सचित्र विवरण देते हुए आर्यसमाज के भावी कार्यक्रम सम्बन्धी लेखों का संकलन किया जायगा। आर्यमित्र के सम्बन्ध में अपनी सम्मति, विशेष जानकारी और उत्तम लेखादि भेजकर विशेषांक को आकर्षक तथा सफल बनाने में आप सहयोग प्रदान कर सकते हैं। इसी प्रकार नवीन ग्राहकों के लिए प्रयत्न भी आपका महान् सहयोग होगा जिससे ५००० ग्राहक सख्या के न्यूनतम लक्ष्य शीघ्र पूर्ण हो सकेगा।

विद्वानों का अभिनन्दन—आर्यजगत् के उपर्युक्त दोनो आदरणीय विद्वानों के सम्मानार्थ अभिनन्दन ग्रन्थों के निर्माण का कार्य आरम्भ हो चुका है। उनके सम्बन्ध में आप अपनी जानकारी, संस्मरण और अभिनन्दन भेजकर सहयोग प्रदान करने की कृपा करें। दोनों मनीषी आर्य विद्वानों के कार्यों की प्रशसा और आर्यसमाज सम्बन्धी सेवाओं का संकलन आर्यसमाज के अतीत और वर्तमान की स्वर्णिम भेंट होगी।

गुरुविरजानन्द स्मारक—आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द के महान् गुरु श्रद्धेय स्वामी विरजान द दण्डी की मथुरा पाठशाला वाली भूमि एक लम्बे प्रयत्न के पश्चात् अब आर्य जनता की सम्पत्ति बन चुकी है। मथुरा जन्म शताब्दी के अवसर पर आर्य जनता ने इस पवित्र भूमि के संरक्षण की जो भावनाएं व्यक्त की थीं आज वह साकार रूप धारण कर चुकी हैं। ऋषि दयानन्द की उस पुण्य शिक्षास्थली में अब एक आदर्श स्मारक निर्माण करने का निश्चय किया गया है जिसमें वैदिक भावनाओं के प्रसारार्थ वृहद् यज्ञशाला, आदर्श सार्वजनिक वाचनालय एवं पुस्तकालय, वैदिक अनुसन्धानशाला और स्वाध्याय सदन आदि विभागों की स्थापना की जायगी और गुरुविरजानन्द तथा ऋषि दयानन्द की आदर्श गुरु-शिष्य परम्परा का प्रसार किया जायगा। आशा है, आर्य बन्धु इस योजना के महत्व को हृदयङ्गम करते हुए स्मारक के लिए अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

एक लाख रुपये की विनम्र अपील

उपर्युक्त सभी योजनाओं की पूर्ति के लिए न्यूनतम धनराशि एक लाख रुपया निश्चित की गयी है। आर्यजनता की बहुसख्या द्वारा इस धनराशि का संग्रह होना कोई कठिन बात नहीं है। प्रत्येक आर्य यदि अपनी एक दिन की आय इस महायज्ञ के लिए देना निश्चय कर ले तो निधि अविलम्ब पूर्ण हो सकती है। आर्य जन एक बार जो निश्चय कर लेते हैं उसे पूर्ण करके ही छोड़ते हैं, अतीत की इस गौरवमयी परम्परा को हमे आज भी निभाना होगा। प्रत्येक आर्य अपनी सामर्थ्य के अनुसार इस भिक्षा झोली में जो भी सहयोग प्रदान करेगा उसका सहर्ष स्वागत किया जायगा। स्वयं देकर और अन्यों से दिलाकर इस झोली को भरना आप और हम सबका परम कर्तव्य है। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि विदेशों के प्रवासी आर्य बन्धुओं ने उदारतापूर्वक सहयोग देना आरम्भ कर दिया है और देते रहने का आश्वासन दिया है। उत्तर प्रदेश और भारत में रहने वाले आर्य बन्धु अपने कर्तव्य पालन में कभी पीछे नहीं रहे हैं। आशा है इस बार भी वे अपने गौरव की रक्षा करने में सफल होंगे।

हम कर्तव्य का पालन करें—कार्य की महत्ता और समय की अल्पता को ध्यान में रखते हुए शीघ्र ही कार्य में लग जाना चाहिए। यदि हम सब मिलकर उत्साहपूर्वक एक लाख की निश्चित धन राशि संग्रह करने में अभी से जुट जायें तो कार्य बड़ी सरलता से सम्पन्न हो सकता है। धन-संग्रह कार्य में सुविधा हो इस बात को ध्यान में रखते हुए जयन्ती समिति की ओर से १०) रु०, ५) रु०, २) रु०, १) रु०, ।।) तक के आकर्षक नोट छपा लिए गये हैं। उनके द्वारा धन-संग्रह में पर्याप्त सुविधा रहेगी। अतः कार्यालय को अविलम्ब सूचित कर नोट मंगवा लें और अपने क्षेत्र में कार्य आरम्भ कर दें।

ऋषि निर्वाण से ऋषि बोध पर्व तक—यद्यपि योजना काफी विस्तृत है और समय थोड़ा है तथापि ऋषि दयानन्द के वीर सैनिकों के लिए ऋषि-निर्वाण-दिवस प्रेरणा का सन्देश लेकर आया है और ऋषि-बोध पर्व तक हमें उस प्रेरणा के अनुरूप कार्य करके दिखाना होगा। आशा है, आर्य बन्धु उत्साहपूर्वक अपने कर्त्तव्य-पालन में दोनों पर्वों से प्रेरणा प्राप्त करेंगे और कार्य में जुट जावेंगे।

कुल-भूमि सादर निमन्त्रित करती है—'आर्यमित्र' के सफल संचालन के पश्चात् अब पत्रकार-कला-विद्यालय स्थापना की दृष्टि से दोनों आर्य विद्वानों के गुरुकुल के कुलपति और आचार्य पदों के महत्व और गुरु शिष्य परम्परा की व्यवहार स्थली व गुरु विरजानन्द धाम की निकट पवित्र शिक्षा स्थली आदि कारणों से गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का स्थान समारोह के लिए चुना गया है। इसी अवसर पर गुरुकुल के स्नातकों का दीक्षान्त संस्कार व राष्ट्र की सांस्कृतिक सामाजिक धार्मिक एवं भाषा सम्बन्धी समस्याओं पर आय महासम्मेलन के रूप में विचार-विमर्श भी किया जाय०.। आर्य जन समारोह में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने का निश्चय करें और पहुंच कर जयन्ती को सफल बनावें। आशा है, सबके सहयोग से जयन्ती समारोह ऐतिहासिक आयोजन के रूप में सफल हो सकेगा।

सहयोग के अभिलाषी—

हरिशंकर शर्मा प्रधान, सभा	**फूलनसिंह** मन्त्री, सभा	**उमेशचन्द्र स्नातक,** संयोजक, जयन्ती	**कालीचरण आर्य** अर्थ संयोजक, जयन्ती
महेन्द्रप्रताप शास्त्री सम्पादक, अभिनन्दन ग्रन्थ	**कर्णसिंह, शिवदयालु** संयोजक, गुरुधाम	**नरदेव स्नातक** प्रबन्ध संयोजक, जयन्ती	**विश्वम्भर सहाय प्रेमी** प्रचार मन्त्री, जयन्ती

(आर्यमित्र हीरक जयन्ती विद्वदभिनन्दन गुरुधाम स्मारक समारोह समिति)

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ

सिंहावलोकन

विदेह कृत वेदभाष्य एक समीक्षा

[श्री भवानीलाल भारतीय एम०ए० सदस्य, सार्वदेशिक धर्मार्य सभा, जोधपुर]

★

वेदों के सम्बन्ध में समीक्षा और भाष्य करने के लिए जिस साधना और योग्यता की आवश्यकता होती है उसे प्राप्त किये बिना ही वेदों पर भाष्य करने लगना आज फैशन बन गया है। इसी प्रकार के एक तथा कथित वेद भक्त श्री विदेह जी के सम्बन्ध में उनकी कार्य प्रणाली का परिचय देते हुए लेखक ने इस लेख में समीक्षा की है। पूर्व के वैदिक विद्वानों की उपेक्षा करना वैदिक परम्परा को दूषित करना है और विदेह जी जैसे वेद भक्त अपने अहंभाव में इसी उपेक्षा मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं। —सम्पादक

आर्य समाज से सैद्धान्तिक मत-भेद हो जाने के कारण तथा कथित आचार्य और अब स्वामी विद्यानन्द विदेह को समाज के संगठन से पृथक होना पड़ा। अपने ग्रन्थों की जिन भूलों को विदेह जी ने धर्मार्य सभा के सम्मुख स्वीकार किया था, उन्हें जन-साधारण के समक्ष स्वीकार करने और तदनुकूल आवश्यक संशोधन करने में विदेह जी को लज्जा आती थी तथा उनके अहं को ठेस लगती थी। तत्पश्चात् उन्होंने स्वरचित वेदभाष्य को प्रकाशित करने की एक विस्तृत योजना जनता के समक्ष प्रस्तुत की। सार्वदेशिक सभा ने विदेह जी के वेद-भाष्य के लिए आर्य जनता द्वारा सहायता किये जाने की निषेधाज्ञा प्रचलित की। १६५६ मे विदेह जी ने चारों वेदों के प्रथम सूक्तों का भाष्य प्रकाशित किया और उसकी भूमिका के रूप में वेद के अर्थ के विषय में अपनी विचारधारा को प्रस्तुत किया।

अपने आपको ऋषि दयानन्द का अनुचर मानने वाले विदेह जी की सबसे बड़ी कृतघ्नता तो इसी बात से प्रकट होती है कि आपने अपनी इस भाष्य रचना में ऋषि दयानन्द का कहीं भी स्मरण नहीं किया है। वेदार्थ के क्षेत्र में महर्षि द्वारा जो एक युग परिवर्तनकारी क्रांति का सूत्रपात किया गया था, उसका उल्लेख भी न करना सर्वमान्य वेदाचार्य दयानन्द के प्रति अपनी घोर कृतघ्नता का परिचायक है। अस्तु।

अब हम विदेह जी की कुछ मौलिक उद्भावनाओं पर विचार करेंगे। भोली भाली जनता पर अपनी योग सिद्धि की धाक जमाने के लिये विदेह जी ने आबू शैल पर अपरिचित सन्यासियों के मिलने और उनके द्वारा वेदार्थ करने के लिये प्रेरित किये जाने की अनेक कपोलकल्पित कहानियाँ गढ़ ली हैं जो उपन्यास का सा मजा देती हैं, परन्तु जिनमें वास्तविकता कुछ भी नहीं।

विदेह जी की दर्पोक्ति का कुछ ठिकाना नहीं। आप लिखते हैं—"२८ वर्ष का होते २ मैंने संस्कृत, अंगरेजी और हिन्दी में उपलब्ध वेदों के समस्त भाष्यों का अनुशीलन समाप्त कर लिया।" पुनः वेदार्थ में सहायक ऋषि कृत ग्रन्थों का अध्ययन करने के अनन्तर आपने यह निष्कर्ष निकाला कि केवल निरुक्त और ब्राह्मण ग्रन्थ ही वेदार्थ में सहायक हो सकते हैं। साथ ही आपको एक नया इलहाम यह भी हुआ कि वेद के मन्त्र-मन्त्र सूक्त-सूक्त और अध्याय की संगत लगाने में इन ग्रन्थों का कुछ भी उपयोग नहीं है और विदेहावतार तो मानो वेद के मन्त्रों की परस्पर संगति लगाने के लिये ही हुआ है।

विदेह जी का यह अभियान मिथ्या ही है कि चारों वेदों के समस्त मन्त्रों की परस्पर संगति लगा लेने का कार्य प्रथम बार उन्हीं के द्वारा सम्पन्न हुआ है। प्रथम तो उनका यह संगति लगाने का विचार ही नितान्त दोषपूर्ण है। उदाहरणार्थ यदि वेद का एक अध्ययन अपने विषय नियोजन के अनुसार आध्यात्म विद्या का प्रतिपादन करता है और उसका अगला अध्याय भौतिक विज्ञान विषयक उपदेश प्रदान करता है तो यह आवश्यक नहीं है कि हम खींचतान कर दोनों अध्यायों में बलात् से कोई संगति स्थापित करें। वेद को सर्व ज्ञान का भण्डार कहा गया है और ऋषि दयानन्द के शब्दों में "सर्वेषां वेदानां तात्पर्यमस्तीश्वरस्य खलु सर्वेभ्यः पदार्थेभ्यः प्रधानत्वात्।" तो वेदों का परम तात्पर्य परमात्मा का वर्णन करने में ही है, अतः चारों वेद परम सुसम्बद्ध और सुसंगति लगाई है यह उनकी स्वकल्पित है और उसके लिए वे कोई शास्त्रीय प्रमाण नहीं जुटा पाये हैं।

वेद मन्त्रों की असंगति को दूर करने के प्रसंग में विदेह जी को एक और नई बात सूझी। असम्बद्धता का कारण आप बताते हैं मन्त्रार्थ की अनिश्चितता और अनेकार्थता। सच बात तो यह है कि मन्त्रार्थ की अनिश्चितता का आक्षेप वेदद्वेषी कौत्स या चर्वाक जैसे नास्तिक ही कर सकते हैं। "अनर्थका हिमन्त्राः" का नारा कौत्स का था जिसे निरुक्तकार ने अपने ग्रन्थ में उद्धृत किया है। रह जाती है बात अनेकार्थता की। यह आक्षेप सीधा दयानन्द पर है क्योंकि उन्होंने ही निरुक्तादि के आधार पर त्रिविध अर्थ प्रक्रिया को पुनरुज्जीवित किया था। विदेह जी का दावा यह है कि मन्त्रों का जो अर्थ उन्होंने किया है, वही उसका एकमात्र सुनिश्चित अर्थ है। हम इसका सर्वांश में प्रतिपादन करते हैं। प्रसंग और प्रकरण के अनुकूल वेदों के त्रिविध अर्थ की प्रणाली नितान्त निर्दोष है। 'चत्वारि-शृंगा त्रयोऽस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त-हस्तासोऽस्य' आदि मन्त्रों के जो याज्ञिक और व्याकरण मतानुसार अर्थ भिन्न२ ऋषियों ने किये हैं, हमारी दृष्टि में वे सभी सत्य हैं और विदेह जी का अपने अर्थ को ही एकमात्र सत्य कहना, दम्भ के अतिरिक्त और क्या है?

सत्य वेदार्थ के बाधक स्वरूप आपने जिन व्युत्पत्तिवाद, प्रमाणवाद, विनियोगवाद, यज्ञवाद, इतिहासवाद और गाथावाद की आलोचना की है, उसमें विदेह जी की कुछ भी मौलिकता नहीं है। वेदों की याज्ञिक, ऐतिहासिक और गाथापरक व्याख्या के विरुद्ध आवाज उठाने का सर्व प्रथम प्रयत्न तो स्वामी दयानन्द ने ही किया था। परन्तु सत्य तो यह है कि विदेह जी का वेदभाष्य वेद के विषय में उनकी स्वरचित धारणाओं के अतिरिक्त कुछ भी मौलिकता नहीं रखता।

वेदार्थ के विषय में उस अज्ञात-नामा सन्यासी ने विदेह जी को पुराण, कुरान और बाइबिल पढ़ने और उनकी वेदानुकूल व्याख्या करने का आदेश भी दिया। सम्भवतः अपने इस गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य कर अब विदेह जी पुराण आदि अनार्ष और कुरान, बाईबिल आदि सभी मजहबी ग्रन्थों को वेदानुकूल सिद्ध करने की धुन में हैं। यह भी दयानन्द द्वारा प्रदर्शित प्रशस्त राज मार्ग से स्खलित होकर इधर उधर साम्प्रदायिक वन बीहड़ कान्तार में किंकर्तव्य विमूढ़ की तरह भटकने के तुल्य ही है। हम उस दिन की प्रतीक्षा में हैं जब विदेह जी पुराणों को वेदानुकूल सिद्ध करने के प्रयास में सफल होंगे। परन्तु हमें तो उनकी यह दुराशा ही प्रतीत होती है। पुराणों के जिस १/३ भाग (भागवत, विष्णु, मारकण्डेय, शिव मत्स्य और वायु) का हमने अध्ययन किया है, उससे तो हम यह निश्चय पूर्वक कह सकते हैं कि इस जन्म में तो क्या कई जन्मों में भी पुराणों की वेदानुकूलता सिद्ध नहीं की जा सकती। जब एतद्देशीय पुराणों का यह हाल है तो कुरान और बाईबिल की तो कथा ही क्या।

अपने वक्तव्य की समाप्ति में वेद-भाष्य में ऋषि देवता, छन्द और स्वरों की आवश्यकता प्रतिपादित की है और उन्हें बादाम के छिलके के तुल्य बतलाया है और जनसाधारण के लिए अनुपयोगी। विदेह जी की इस भ्रान्त धारणा का युक्तियुक्त खण्डन आर्य जगत् के चोटी के विद्वानों यथा स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज और आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री आदि महानुभावों ने विस्तारपूर्वक कर दिया है। अतः उसकी समीक्षा करना आवश्यक नहीं है।

अन्त में विदेह जी ने अपनी वेद-व्याख्याओं से विश्व में एक महान् क्रान्ति हो जाने की कल्पना की है। आपको यह भी आशा है कि इनके वेद व्याख्या ग्रन्थों के विश्व की समस्त भाषाओं में अनुवाद हो जायेंगे। विदेह जी की यह साध कब पूरी होगी, यह तो आने वाला समय ही बतायगा परन्तु हमारा तो यह निश्चित मत है कि यदि विदेह जी आर्य समाज और स्वामी दयानन्द के संरक्षण में रहकर अनुशासित ढग से वेद और आर्य जाति की सेवा करते तो निश्चय ही उनका यह कार्य अधिक लोकोपकारी होता। परन्तु आडम्बर और गुरुडम का आकर्षण भी तो कम नहीं है। बहुत कम लोग इससे बच पाये हैं। विदेह जी बेचारे कहाँ के अपवाद ठहरते।

जीवन-ज्योति

एक वेद भक्त की कथा

वेद हमसे कैसे छूटा फिर कैसे मिला

[आचार्य श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, ज्वालापुर]

हमारे प्राचीन पूर्वजों की परंपरा ऋग्वेदियों की ही थी। परम्परा से ऋग्वेद ही चला आ रहा था, समय बदलते, परम्परा के समाप्त होते क्या देर लगती। हमारे पूर्वजों मे से, उस समय के नवयुवकों में से किन्हीं की रुचि सरकारी नौकरी में आने की हुई और फिर वे अपनी परम्परा को छोड़ कर सरकारी नौकरी में प्रविष्ट हुए। इस प्रकार ऋग्वेद की परम्परा बड़े बूढ़ों में रही और नवयुवकों का ध्यान सरकारी नौकरी में रहा। जैसे जैसे बड़े बूढ़े समाप्त होते गये वैसे वैसे ऋग्वेद छूटता गया। नौकरी पेशा वालों की सन्तान नौकरी मे ही लगी रही। घर मे सब काम काज कर्म काण्ड ऋग्वेदियों का सा चलता रहा पर घर से बाहर नौकर, सरकारी नौकर बन चले–इनका आदि से अन्त का इतिहास खोजना व्यर्थ है, खोजे तो भी मिलने वाला नहीं है। पर जहाँ से कुछ पता चलता है, वह यही, और इतना ही कि सरकारी नौकरी करके हमारे पूर्वजों के नामों के साथ "राव" अथवा "रावसाहेब" पदवी जुड़ने के पूर्व हमारी प्राचीन पूर्वज परम्परा मे "आचार्य" जैसे राघवाचार्य आदि पद लगता रहा। नौकरी पेशे में प्रविष्ट होने के पश्चात् हमारे घरों का कर्मकाण्ड और भट्ट पुरोहित सभालने लगे। इस तरह वेद छूटा। हमारे पूर्वज निजाम राज्य में नौकरी करने लगे थे अच्छे-अच्छे पदों पर पहुंचे थे : कलेक्टर (तालुकेदार) डिप्टी कलेक्टर (मामलेदार) तहसीलदार पद पर विराजते रहे। हमारे बाबा राघवेन्द्रराव हमारे ताऊ हनुमन्तराव हमारे पिता रावसाहेब श्री निवासराव सब अच्छे विभागों और अच्छे पदों पर रहे। घर मे जब कोई शुभ कृत्य होता था तब हमारे भट्ट पुरोहित जब संकल्प कराते थे तब हमारे पूर्वजो के गोत्रादि का पता चल जाता था।

"वत्स गोत्रोत्पन्नोऽहम्"

हम वत्सगोत्र मे उत्पन्न हुए हैं, हमारे पच प्रवर है, जैसे—१–आप्लव, २—और्व, ३—च्यवन, ४—पाराशर ५—जामदग्न्य इत्यादि बातों का पता चल जाता था।

जब मेरी मौञ्जीबन्धन मुञ्ज अर्थात् मेरा यज्ञोपवीत संस्कार पूने में हुआ था तब हमारे गुरु कृष्णाचार्य २॥ मास तक मुझे सन्ध्यादि रटाते रहे और प्रतिदिन गोत्र प्रवर आदि का उच्चारण कराते रहे। सन्ध्या भी वह चर्चा समय की "गोविन्दाय नमः केशवाय नमः" इत्यादि स्वरूप की रही। मुझे स्मरण है कि मुझे ३०–४० आचमन करने पड़ते थे।

पूने से मैं लाहौर भेजा गया। वहां ५-६ वर्ष अंगरेजी पढ़ने के पश्चात् विपत्तियों की सेना ने आ घेरा—कैसे इत्यादि मत पूछिए। लिखने का अवसर भी नहीं, लिखने का काम भी नहीं, लिखने में लाभ भी नहीं—न मुझे, और न ही सुनने वालों को।

अंगरेजी छूटी विवशता अथवा दवी गति ऐसी ही थी, इसलिए हम संस्कृत विद्या की ओर प्रवृत्त हुए। १९०२ मे पंजाब की शास्त्री दी, डिप्लोमा लिया। उस समय सर चार्लस रिवाज पंजाब के गवर्नर थे। उसके पश्चात् जब काशी आदि में पढ़कर संस्कृत क्षेत्र मे अच्छी तरह आये तब कलकत्ते के प्रसिद्ध वेद, विद्वान्, फेलो एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल और वैदिक साहित्य सम्बन्धी सौ से अधिक ग्रन्थों के लेखक, श्री आचार्य सत्यव्रत सामश्रमी जी द्वारा संपादित "उषा" मासिक पत्रिका हमारे हाथ लगी। उसकी संस्कृत इतनी ललित, इतनी मनोहारी, लेखनशैली ऐसी सुन्दर कि उसने हमारा ध्यान उनकी ओर आकृष्ट किया। विचार उठा कि ऐसे विद्वान् के पास कुछ काल रह कर उनके चरणों मे बैठकर कुछ वैदिक विषयो का अध्ययन करना चाहिए। पत्र व्यवहार होता रहा (संस्कृत में ही) एक वर्ष पश्चात् उन्होंने हमें कलकत्ते आने की अनुमति दी—पर वहां जाने पर विदित हुआ कि श्री पण्डित जी सामवेद परम्परा के हैं २॥ वर्ष तक उनके पास, उनकी सेवा में एकनिष्ठ भाव मे रहे और वेद चतुष्टय का साधारणतया और ऋग्वेद का विशेषतया ज्ञान प्राप्त किया—पर वहां समुद्र में क्या पता चलता। वैदिक साहित्य की गहनता देखकर मैं चकित सा रह गया। मैंने कलकत्ता संस्कृत कालेज की (संस्कृत ऐसोसियेशन द्वारा संचालित) वेदतीर्थ परीक्षा देने का निश्चय किया। वह भी ऋग्वेद में। इसके लिए ऋग्वेद के संपूर्ण दो अष्टक, ऐतरेय ब्राह्मण (सम्पूर्ण) ऐश्वलायन श्रौत्र और गृह्यसूत्र, निरुक्त (सम्पूर्ण), यजुर्वेद का परिचय (क्योंकि ऋग्वेद की परीक्षा में यजुर्वेद के भी दो प्रश्न आते थे तथा सामश्रमी जी के अन्य ग्रन्थ वेदत्रयी परिचय, ऐतरेयालोचन) ये सब पढ़ने पड़े। १९०६ में हम ऋग्वेद मे वेदतीर्थ हुए। तब से आर्य समाज के क्षेत्र के शिक्षा क्षेत्र में उलझे हुए हैं।

हमें बड़ी प्रसन्नता हुई कि हम वेदतीर्थ हुए और इस बात से अधिक प्रसन्नता हुई कि वहाँ की संस्कृत परीक्षा मे हमही पहिले पहिले 'वेदतीर्थ' थे। उसके पश्चात् गुरु जी की कृपा से हम वेद की तीर्थ, वेद मध्यमा और वेद प्रथमा के कई वर्ष परीक्षक भी रहे। श्री गुरुवर सामश्रमी जी कई वर्ष कलकत्ता विश्व विद्यालय में वेद व्याख्याता की गद्दी पर विराजते रहे। जब वे सेवा निवृत्त हुए तब उस स्थान के लिए उन्होंने श्री आशुतोष मुकर्जी (उप कुलपति) को मेरा नाम सुझाया कि इस स्थान पर मुझे बुला लेवें। उनकी प्रेरणानुसार मेरे पास बुलावा भी आया, पर मैं न जा सका, ज्वालापुर के धक्के जो खाने थे। फिर इस स्थान पर इटावे के स्व० पण्डित भीमसेन शर्मा (उस समय के स्वा० दयानन्द के परम शिष्य) रखे गये। यदि मैं उस समय चला जाता तो पता नहीं आज कहाँ होता अस्तु इस प्रकार हमारे पूर्वजों के पूर्वजों के पूर्वजों से छूटा हुआ ऋग्वेद मुझसे आ मिला—

आर्य समाज में वेदों का हल्ला तो बहुत रहता है पर गुरुमुख से साङ्गोपाङ्ग वेदो के पढ़ने पढ़ाने वाले कहाँ मिलते है—और आगे वेद परम्परा भी कहाँ मिलती है।

इधर दैव की प्रेरणा देखिए कि हमको आर्य समाज के कार्य क्षेत्र के साथ राजनैतिक क्षेत्र का कार्य भी करना पड़ा उसमें सर्वात्मना संलग्न होना पड़ा। अब तो अस्सीवें वर्ष के लपेट मे हैं—

अस्तु यह जो कुछ हुआ सो हुआ पर मैंने वेदों का जितना भी, जिस रूप में स्वाध्याय किया है मैं इसी निश्चय पर पहुंचा हुआ हूं कि—

"भूत भव्य भविष्य च
सर्वं वेदात्प्रसिद्धयति ॥ (मनु)

अर्थात् वेदो मे सब कुछ है। देखने वाला चाहिए और बार बार वही वेदमन्त्र आँखो के सम्मुख आता है कि—

"यस्तन्न वेद किं ऋचा करिष्यति"

जिसने वेद को पढ़कर उसके तत्व को न जाना उसने फिर जन्म लेकर किया ही क्या ?

> आर्य समाज का नियम है वेद पढ़ना पढ़ाना आर्यों का परम धर्म है परन्तु आज कितने आर्य वेद के प्रति अपने कर्तव्य का पालन कर रहे श्रद्धेय शास्त्री जी का जीवन वेद के लिए समर्पित जीवन रहा है और हमारे वर्तमान व भविष्य के लिए उनकी वेद-भक्ति महान् प्रेरणा की स्रोत बनी रहेगी। वैदिक परम्परा की सुरक्षा में संलग्न वरेण्य तपस्या की जीवन घटनाओं को उन्हीं की लेखनी में पढ़िये।
>
> —सम्पादक

सुझाव और सम्मतियाँ

अन्नाभाव समस्या का हल गाय

आज भारत में अन्न के लिए चारों ओर से हाहाकार सा मचा हुआ है और हमारी पंचवर्षीय योजनाओं में अधिक अन्न उपजाओ आन्दोलन के लिए अभियान चल रहे हैं। इन अभियानों को सफल करने के लिए हमारी सरकार पूर्णरूप से यत्न कर रही है तथा भारत की वास्तविक स्थिति का अध्ययन सभी वैज्ञानिकों ने किया और उसके लिए प्रयत्न कर रहे हैं किन्तु मूल की ओर अभी तक किसी ने ध्यान नहीं दिया है। भारत कृषि प्रधान देश होते हुए भी आज हमें अन्न के लिए दूसरे देशों की ओर देखना पड़ता है। कौटिल्य के समय कभी भारत में अन्न के भाव इस प्रकार थे। चावल –) मन, तेल ।।) मन, घी ।।।) मन, दाल –) मन, नमक)।। मन, शक्कर ।।=) मन, कपड़ा –) के ५ थान। तो आज हम उस समय और इस समय में कितना अन्तर देखते है। अगर हम इतिहास पर पूर्ण दृष्टि डालकर देखें तो हमें ज्ञात होगा कि कौटिल्य के समय मे देश में गाय के प्रति जो अन्न की जननी है, कितना आदर था।

इस अधिक अन्न उपजाओ आंदोलन को सफल करने वाली गाय की ओर हमारा ध्यान अभी तक नहीं गया। अगर हम अपनी योजनाओं को गांव में बैठकर बनावें तो हमें आर्थिक ढांचे का पता चल सकता है, कि खाद के बिना जमीन से अधिक अन्न पैदा नहीं हो सकता। वास्तव मे गाय ईश्वर की ओर से हमारे लिए वरदान है, उसकी प्रत्येक वस्तु भारत भूमि के लिए उपयोगी है। हमने इस तत्व की ओर तो ध्यान नहीं दिया किन्तु विदेशों से भिन्न भिन्न प्रकार के खाद और यन्त्रों (ट्रैक्टरों) को खरीद कर भारत में ला रहे है, जो कि भारत भूमि के लिये उपयोगी सिद्ध न हुए न आगे होंगे। हम जो योजनाएं बनाते हैं, वे योजनाएं अगर एक छोटे ग्राम मे बैठकर बनाते और वहां के लोगों से जानकारी प्राप्त करें तो प्रत्येक व्यक्ति के मुख से यही आवाज निकलेगी, कि आज खेतों मे खाद की कमी है। इस खाद की कमी है। इस खाद की पूर्ति करने के लिए गाय व बैल के सिवाय भारत में अन्य साधन नहीं हैं।

—इन्द्रदेव विद्याभूषण
गुरुकुल चित्तौड़गढ़

रायगढ़ में ईसाई प्रचार निरोध की आवश्यकता

मध्यप्रदेशान्तर्गत रायगढ़ जिले के मुख्य क्षेत्र रायगढ़ में ईसाई मिशनरियों का कार्य सिर्फ एक वर्ष से आरम्भ हुआ है, बढ़ा है एक कार्येल स्कूल तथा दूध डब्बों का वितरण अत्यन्त ही बड़े पैमाने से हो रहा है। यह क्षेत्र सदियों से स्थानीय राजाओं द्वारा शोषित रहा है अतः यहां के ग्रामीण निवासियों की अवस्था अत्यन्त ही दयनीय है जिसके कारण ईसाइयों का प्रलोभन अत्यन्त ही सफल हो रहा है।

अधिकृत रूप से ज्ञात हुआ है कि प्रायः ५००० से ऊपर आदिवासी हरिजन आदि, ईसाई धर्म मे परिवर्तित हो चुके है। स्मरण रखने की बात है कि राजाओं के राजत्व काल मे इस तरह का धर्म परिवर्तन कानूनन निषेध था।

इसी जिले के जसपुर सबडिवीजन मे ईसाइयों का अत्यन्त ही बहुमत है ५४प्रतिशत। उधर से भी ईसाइयों का जाल प्रचण्डरूप से फैलता हुआ अत्यन्त ही तीव्र गति से अन्य इलाकों में प्रसारित हो रहा है।

इस क्षेत्र में आर्यसमाज का कार्य शिथिल है जिसके द्वारा उसका कुछ प्रतिकार किया जा सकता था। अतः आर्य बन्धुओं से इस पिछड़े क्षेत्र में ईसाई प्रचार निरोध कार्य को गति शील बनाने की प्रार्थना करते हुए सार्वदेशिक और प्रान्तीय सभाओं से इस कार्य को पूरे जोर शोर के साथ अपने हाथ में लेने की अपील करता हूं।

—विष्णुचरण गुप्त
केनसरा, तेतला, रायगढ़
(मध्यप्रदेश)

शंका

आर्य विद्वान् मेरी निम्न शंकाओं का कृपया उचित समाधान करने का कष्ट करें—

१—आर्य लोगों के लिए वैसे सोलह संस्कार करवाने आवश्यक हैं, पर हम आर्य लोग कोई कोई संस्कार कर लेते है, जैसे नामकरण,यज्ञोपवीत, विवाह और सीमन्तोन्नयन इत्यादि इत्यादि।

प्रश्न होता है कि कई परिवारों में एक बार ही सीमन्तोन्नयन संस्कार करते है। वास्तव मे जब जब इस प्रकार का प्रसंग हो तब तब करना चाहिए। शास्त्रों में इसका क्या विधान है? संस्कार चन्द्रिका मे लिखा है 'जब जब स्त्री गर्भिणी होगी तब तब उसका सीमन्तोन्नयन होना चाहिए।' कृपया इस पर प्रकाश डालिये।

२—सन्ध्या के अन्तिम मन्त्र में 'शिवतर' शब्द का प्रयोग है जिसका अर्थ अति आनन्द मंगल स्वरूप दाता इत्यादि करते है। शिवतरायच जैसे है वैसे कहीं 'शिवतम' भी आता है क्या? कृपया प्रकाश डाले।

३—हम बिना संकोच के धर्म शब्द पिता, माता, भ्राता, बहिन आदि के साथ उपयोग मे कर लेते है—जैसे धर्म पिता, धर्म बहिन आदि इसे सम्मानार्थ लेते है। फिर पत्नी के साथ 'धर्म' शब्द अन्य लगा सकता है? यदि नहीं तो क्यों नहीं?

—प्रतापचन्द्र पण्डित
प्रधान, नगर आर्यसमाज,बड़ौदा

नई पीढ़ी के लिए प्रोत्साहन और कुछ सुझाव

आज चारों ओर से यही पुकार सुनाई दे रही है कि आर्य समाज मे युवक वर्ग प्रवेश नहीं कर रहा। आर्य समाज के उच्च कोटि के विद्वान् एवं सन्यासी आज धीरे धीरे उससे, काल वशीभूत होकर छिने जा रहे है। ऐसे समय मे यदि नई पीढ़ी ने इस ओर अग्रसर होने की उत्कण्ठा न दिखलाई तो आर्य समाज का यह उद्देश्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' कैसे फलीभूत होगा? इन्हीं बातों को दृष्टिगत रखते हुए एवं स्वयं एक नवयुवक होते हुए, नवयुवकों में आर्य भावना को डालने के लिए कुछ सुझाव रखता हूं।

१—सम्भवतः एक बार आर्य समाज के क्षेत्र में यह निश्चय हुआ था कि आर्यबन्धु अपने नाम के साथ 'आर्य' लिखें। जिससे आर्य समाज की व्यापकता के साथ साथ उसके उद्देश्य को भी प्रोत्साहन मिले। परन्तु इस ओर आर्य बन्धुओं ने कोई विशेष रुचि नहीं दिखलाई। वे शायद यह नहीं जानते कि उनके अपने नाम के साथ आर्य लिखने से क्या क्या लाभ हो सकते हैं। अपने नाम के साथ आर्य लिखने के साथ ही वे अपने बच्चों के नाम के साथ भी आर्य लिखें। उन्हें स्कूल में प्रवेश करवाएं तो उनके नाम के साथ आर्य लिखवाएं। यूनिवर्सिटी की परीक्षा में प्रविष्ट करें तब भी उनके नाम के साथ आर्य लिखवाएं तथा इसी प्रकार कालेज में भी आर्य शब्द उनके नाम के साथ प्रयोग में आने लगेगा। जब एक नवयुवक बी०ए० या एम०ए० कि उपाधि लेकर सांसारिक क्षेत्र में पग रखेगा तो उसे अपने नाम के साथ प्रमाण पत्र के अनुसार आर्य लिखना पड़ेगा। जिससे उसके मन में आर्य समाज के प्रति अवश्य आकर्षण रहेगा, यह प्राकृतिक बात है। तथा जब इस आयु मे ऊपर लिखित कार्य करने के साथ साथ उसमें आर्य संस्कृति के भाव भर दिए जाएंगे तो आर्य समाज मे एक नई स्फूर्ति आ जाएगी। इसलिए सभी आर्य बन्धुओं, आर्य समाज के एवं सभा के अधिकारियों तथा सदस्यों को प्रेरणा की जाए कि जहाँ वे अपने नाम के साथ आर्य लिखें वहाँ अपने बच्चों एवं धर्मपत्नी के नाम के साथ भी आर्य लिखें।

२—आर्य समाज में उत्सवों का रंग ढंग बहुत फीका रहता है। कम से कम दो पर्व 'ऋषि बोधोत्सव' एवं 'आर्य समाज स्थापना दिवस' बड़ी धूमधाम से मनाए जाएं। उस दिन सभाएं हों, प्रभात फेरियाँ हों तथा हवन यज्ञ इत्यादि हों। इसके साथ ही आर्य बन्धुओं में इन दिनों में परस्पर 'बधाई पत्रों' 'बधाई कार्डों' इत्यादि का आदान प्रदान हो। सार यह है कि यह दिन अत्यन्त उत्साह एवं चहल पहल से मनाएं जाया करें।

३—सरकार की ओर से आर्य समाज स्थापना दिवस पर सरकारी छुट्टी करवाई जावे तथा शिवरात्रो के साथ ऋषि बोधोत्सव एवं दिवाली के साथ ऋषि निर्वाण दिवस लिखाया जाए। क्योंकि सरकारी छुट्टियों मे आर्य समाज की किसी भी छुट्टी का उल्लेख नहीं है।

४—जानकार आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि कृपया वे इस बात का पता देने का कृपा करें कि समस्त विश्व में आर्य बन्धुओं की कितनी जनसंख्या है। Joseph gaer लिखित How the great religions began पुस्तक में आर्य बन्धुओं की जन संख्या सात करोड़ बताई गई है। क्या यह ठीक है?

आशा है ऊपर दिए गए सुझावों पर आर्य जन विचार करेंगे।

—चन्द्र शेखर आर्य
बाजार टोकरियाँ अमृतसर

ग्राम जीवन

उत्तर प्रदेश में ग्रामीण अर्थ व्यवस्था का पुनर्गठन

[श्री नलिनी रंजन]

अंगरेजों के आने से पहले भारत के गांव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर लिया करते थे। विदेशी शासन काल में उनकी यह आत्म निर्भरता धीरे धीरे समाप्त हो गयी। इसका गांव वालों की आर्थिक दशा पर बुरा असर हुआ। बाह्य प्रतिस्पर्धा के कारण ग्रामीण उद्योग धन्धों का क्रमिक ह्रास तो हुआ ही बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप खेती बाड़ी के धन्धे की पुनर्स्थापना भी नहीं की जा सकी। उत्तर प्रदेश की वर्तमान सरकार ने शासन भार संभालते ही गांवों की चतुर्दिक उन्नति के लिये प्रयास आरम्भ कर दिया था। प्रयत्न की सफलता के लिये सरकार ने यह आवश्यक समझा कि गाँवों को फिर से आत्मनिर्भर बनाया जाय।

ग्रामीण उद्योगों की विकास योजना का परिचलन उक्त नीति को ध्यान में रखते हुये प्रशंसनीय है। योजना का कार्यान्वन मुख्यतः प्रदेश के गाँवों में प्रशिक्षण एवं उत्पादन केन्द्र खोल कर किया जा रहा है। सम्भवतः यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि कृषि पर दबाव कम करने तथा गांव वालों को पूरे वर्ष पर्यन्त रोजगार दिलाने के लिए यह आवश्यक है कि लोगों को विभिन्न उद्योग धन्धों की शिक्षा प्रदान की जाय। किन्तु इस सम्बन्ध में कौन कौन से धन्धों की शिक्षा को प्राथमिकता दी जाय, यह प्रश्न अवश्य विचारणीय है। इतना तो स्पष्ट है कि ग्रामवासियों के जिनमें अधिकांश खेतीहर हैं ऐसे उद्योग धन्धों का महत्व कम है जिनकी स्थापना उनके गांवों से दूर विशेष स्थानों पर ही हो सकती है अथवा जिनमें काम पाने के लिए उन्हें विशेष शिक्षा प्राप्त करने की जरूरत हो। उनके लिए ऐसे धन्धों की शिक्षा अधिक लाभप्रद हो सकती है जिनका खेतीबाड़ी से किसी न किसी रूप में लगाव हो तथा जिनकी स्थापना वे थोड़े से व्यय से कर सकें। वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए दूसरे प्रकार के उद्योग धन्धों का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। अतः योजना के अन्तर्गत स्थापित किये जा रहे प्रशिक्षण एवं उत्पादन केन्द्रों मे तेल पेरने, धान कूटने, आटा पीसने, साबुन बनाने आदि की शिक्षा दी जा रही है। खादी उत्पादन को विशेष महत्व दिया जा रहा है। कशीदाकारी, सिलाई आदि की भी शिक्षा प्रदान की जा रही है। इन धन्धों को गांवों की हर जनता खेती के काम में बिना किसी प्रकार का व्यवधान लाये कर सकती है। उनकी स्थापना के लिए दूर जाने की आवश्यता नहीं है। स्वयं रोजगार की तलाश में उन्हें अपने गांवों से दूर जाने की आवश्यकता तो दूर रही स्वयं रोजगार उनके दरवाजों तक लाया जा सकेगा। ऐसा करना उद्योगों के स्थानीयकरण (लोकेलाइजेशन) के आधुनिक सिद्धान्त के भी अनुरूप होगा।

आज इस योजना का विस्तार प्रदेश के १३८८४ गाँवों में हो चुका है। ये गाँव राज्य में स्थापित ११५ सामुदायिक विकास खण्डों के कार्य-क्षेत्र में हैं। सब मिलाकर लगभग ५८ लाख ग्रामीण जनता योजना के अधीन प्रदान किये जा रहे प्रशिक्षण से लाभ उठा रही है। यह संख्या प्रदेश की ग्रामीण आबादी का १५ प्रतिशत है। अब तक कुल २२९ प्रशिक्षण एवं उत्पादन केन्द्र खोले जा चुके हैं। इनमें, जैसा कि पहले कहा जा चुका है कुटीर उद्योगों तथा अन्य प्राविधिक व्यवसायों से सम्बन्धित ३० प्रकार की दस्तकारियों की शिक्षा दी जा रही है। इसके अतिरिक्त महिलाओं के लिए कशीदाकारी, सिलाई आदि की ट्रेनिंग की व्यवस्था भी रखी गयी है। इधर जो सूचनाएं प्राप्त हुई हैं उनसे पता चलता है कि साढ़े चार हजार से भी कुछ अधिक ग्रामीण विभिन्न प्रकार के धन्धों के लिए प्रशिक्षित किये जा चुके हैं। द्वितीय पंचवर्षीय योजना के जो तीन वर्ष और शेष बचे हैं उनमें कम से कम ३६०० और व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने का विचार है। इसका अर्थ यह हुआ कि अगले तीन वर्षों तक प्रति वर्ष १२०० व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार की दस्तकारियों की शिक्षा प्रदान की जायगी। अब तक जैसी प्रगति रही है उसको देखते हुए यह आशा की जाती है कि सफलता निर्धारित लक्ष्य से भी अधिक मिलेगी।

ज्ञातव्य है कि प्रशिक्षण एवं उत्पादन केन्द्रो में प्रशिक्षण काल में ही अनेक वस्तुओं के उत्पादन की व्यवस्था रखी गयी है। इन उत्पादित वस्तुओ की बाद मे बिक्री भी की जाती है। यह उल्लेखनीय है कि सन् १९५७-५८ में इन केन्द्रों में १ लाख ८१ हजार २६६ रुपयों के मूल्य की वस्तुओं का उत्पादन हुआ और १ लाख ३५ हजार रुपयों के मूल्य की वस्तुयें बेची गयीं।

इस सिलसिले में एक प्रशिक्षणोत्तर कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रशिक्षार्थियों को औद्योगिक सहकारी समितियों के रूप में संघटित किया जाता है। प्रत्येक समिति की सदस्य संख्या के आधार पर अनेक वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। सरकार का उद्योग विभाग इन समितियों को प्राविधिक परामर्श और वित्तीय सहायता देता है। अभी तक इस प्रकार की १४२ समितियों का संघटन किया जा चुका है। सरकार ने इन समितियों भूतपूर्व प्रशिक्षार्थियों आदि को ७ लाख ३८ हजार रुपये ऋण तथा अनुदान के रूप मे देने की व्यवस्था की है। जहाँ तक द्वितीय योजना में इस कार्यक्रम पर आने वाले सम्पूर्ण व्यय का प्रश्न है, अनुमान लगाया गया है कि कुल १ करोड़ १३ लाख ६२ हजार रुपयों का खर्च आयेगा। अखिल भारतीय खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग ने भी इस धन राशि का कुछ भाग देना स्वीकार कर लिया है। आशा है इन कार्यक्रमों की सफलता प्रदेश के गाँवो को फिर से आत्म-निर्भर बनाने में सहायक होंगी।

सत्य वक्ता दयानन्द

सत्य धर्म का प्रचार करने की अभिलाषा मन में धारे।
एक बार मेवाड़ उदयपुर, दयानन्द ऋषिराज पधारे॥
सत्य सनातन वेद धर्म का किया पूर्ण प्रतिभा से मण्डन।
भ्रममूलक मिथ्यापंथों का किया प्रबल निर्भय हो खण्डन॥

सुन उपदेश सुखद सुन्दर, मेवाड़ नृपति भी हुए प्रभावित।
बोले यों ऋषिवर से सविनय, पक्षपात से होकर प्रेरित॥
प्रधान मठ के महन्त बनिए लाखों की जागीर लीजिए॥
चाहे जो कीजे पर प्रतिमा पूजन का खण्डन न कीजिए।

बोले ऋषिवर यों मुसकाके, सुनकर ये बातें नृपवर की॥
तेरी आज्ञा मानूं या न मानूं उस जगदीश्वर की॥
तू रूठे तेरी नगरी से कहीं तुरन्त निकल जाऊंगा।
प्रभु रूठे, तो उनकी विस्तृत नगरी से कहाँ निकल पाऊंगा॥

हम रहते हैं मग्न, सत्य के प्रचार प्रिय भगवन्त भजन में।
बांध न बाबा हम अलमस्तो को तू माया के बन्धन में॥
सोचो राजन् मलिन कांच को उज्ज्वल हीरा कैसे कह दूं।
क्षुद्र कोयले ही को मैं बहुमूल्य ममीरा कैसे कह दूं॥

जीवन नाशक विष को मैं अमृत सुखराशी कैसे कहदूं।
जड़ प्रतिमा को मै चेतन ईश्वर अविनाशी कैसे कहदूं॥
संकट विघ्न सभी जगती के मैं हँसते हँसते सह लूंगा।
भय, लालचवश किन्तु सत्य पर आंच कदापि न आने दूंगा॥

दयानन्द की उंगली उंगली भी बाती की भांति जलेगी।
दयानन्द के मुख से फिर भी निर्भय सत्य बात निकलेगी॥

—प्रकाशचन्द्र कविरत्न अजमेर

ईसाई प्रचार निरोध आन्दोलन

पापियों के परित्राता स्वामी दयानन्द

[श्री पं० ललिता प्रसाद जी, डी० ए० वी० कालेज, कानपुर]

दशहरे की छुट्टियों में मैंने जौनपुर से लौटते हुए "अयोध्या" स्टेशन पर चार अमरीकन पादरियों को हिन्दी में एक-एक पैसे में पुस्तकें बेंचते देखा, कुछ किताबें मैंने भी मोल ली, जिसमें इस लेख के लिखते वक्त मेरे सामने एक पुस्तक भजनों की है वह भी उर्दू में है, जिसका नाम 'मन लगन भजन' है। इसमें केवल ४० भजन हैं। मैं अपने 'आर्यमित्र' के पाठकों को उस पुस्तक के बारे में कुछ जानकारी कराना चाहता हूं ताकि आर्य भाई ईसाइयों के साहित्य से सदैव सावधान रहें। सारे उत्तर भारत में केवल 'आर्यमित्र' आर्यों का एक साप्ताहिक पत्र ही ऐसा है जो कि अन्य मतों की निर्भीक आलोचना करता है और सदैव हिन्दू जाति को सावधान करता रहता है। चालीस भजनों में से पहला भजन निम्नलिखित है—

जय प्रभु यीशु जय प्रभु यीशु,
जय जय यीशु नवामी।
नर तन धारि लिया अवतारा,
तज सुन्दर दिवधामी ॥ इत्यादि

१० वां भजन है-सूरज निकला हुआ सवेरा, अब तक तू क्यों सोता है..............।

ज्ञानी पंडित ज्ञान विचारे,
वेद पढ़े जस तोता है।
('मन लगन भजन' पृष्ठ ७)

एक गजल निम्नलिखित है—

मसीह का तसव्वर जो करते है दिल में
जनाबे इलाही को हम देखते हैं
मसीह के सिवा कोई शाफी नहीं है,
खुदा की खुदाई में हम देखते हैं।
(पृष्ठ २६)

फिर एक दोहा है—

परमेश्वर पावन परम, स्वर्गहि जाको धाम। प्रेम रूप अवतार ले, यीशु ख्रीष्ट सुनाम ॥ (पृष्ठ ३१)

नोट—इस छोटी सी पुस्तक के अन्त मे हम लिखा पाते है कि—

"जो कोई प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करके उसके नाम से जल संस्कार लेवे उसको पवित्रात्मा का दान मिले, चाहिये कि सारे भारत खण्ड के निवासी दयालु मुक्ति दाता का ग्रहण करें और अपना परलोक बनायें।"

नोट—पुस्तक छापने वाली सस्था का नाम है—दी नार्थ इन्डिया क्रिश्चियन ट्रैक्ट एन्ड बुक सरविस, इलाहाबाद।

उपरोक्त पुस्तक को देखकर ईसाई मिशनरियों की कौन बड़ाई न करेगा; जो कि सारे भारतवर्ष को यीशु मसीह की भेड़ों में "बपतिस्मा" देकर ईसाई बनाना चाहते हैं। कितना साहस है? आज सारे संसार में जितना पाप व अनाचार फैल रहा है उसका मुख्य कारण यह है कि अमुक नाम का कलमा पढ़ लो उस पर विश्वास ले आओ और फिर जी भर कर पाप कर लो 'जन्नत' के दरवाजे उसके लिये खुले हैं। स्वामी दयानन्द जी से किसी ने यही कहा था, ऋषिवर का उत्तर सुनिये।

मुगल सराय में पादरी लाल बिहारी ने धर्म चर्चा करते हुए कहा—'देखिये ईसाई धर्म कैसा उत्तम है प्रभु यीशुमसीह सब लोगों के पापों को लेकर चले गये।' स्वामी जी महाराज का उत्तर सुनिये—

'पाप का प्रायश्चित उनके फल भुगते बिना नहीं हो सकता यह बात तो मनुष्यों को पाप करने पर और भी उद्यत कर देती है, भला जब लोग यह विश्वास करें कि मसीह पर विश्वास लाने से ही उनके पाप दूर हो जायंगे तो वह पाप करने पर और भी प्रवृत्त क्यों न होंगे?

ऋषि ने थोड़े से शब्दों मे पापों के फैलने का कारण बता दिया और स्पष्ट डंके की चोट घोषणा कर दी जो जैसा करेगा उसको वैसा ही फल मिलेगा। यहाँ पर वेद के शब्दों में एक मन्त्र लिखे देता हूं—

'न किल्विषमत्त ना धारोस्ति,
न यन्मित्रैः सममान एति।
अनून पात्रं निहितं न एतत,
पक्तारं पक्व पुनराविश गति ॥
(अथर्व वेद.कांड १२ सूक्त ३ मत्र ४८)

इस मन्त्र का भाव यह है कि ईश्वर की न्याय व्यवस्था दोष रहित है जिसमे कोई शिफारिस नहीं चल सकती। ईश्वर ने प्रत्येक जीव के साथ मन रूपी पात्र लगाया है। जो उसमें हर अच्छे बुरे कर्मों का सस्कार सुरक्षित रखता है। उसके अनुसार फल देना ईश्वरीय नियम है। जैसा कोई बीज बोता है वैसा फल काटता है। ईश्वर की इस न्याय व्यवस्था में रत्ती भर भेद नहीं आता।

इसी प्रकार जीवों की कर्मानुसार गति विषयक वेद की भावना अन्य कई स्थानों पर स्पष्ट है—

१—'जब यह जीव शरीर को छोड़कर सब पृथ्वी आदि पदार्थों में भ्रमण करता, जहां तहां प्रवेश करता और इधर उधर जाता हुआ कर्मानुसार ईश्वर की व्यवस्था से जन्म पाता है तब ही प्रसिद्ध होता है।' (यजुर्वेद अ० ३९ मन्त्र ६)

२—'हे मनुष्यों! जब ये जीव शरीर को छोड़ते हैं तब सूर्य, प्रकाश आदि पदार्थों को प्राप्त होकर कुछ काल भ्रमण कर अपने कर्मों के अनुकूल गर्भाशय को प्राप्त हो शरीर धारण कर उत्पन्न होते हैं तभी पुण्य पाप कर्म से सुख दुःख रूप फलों को भोगते हैं। (यजुर्वेद अ० ३९ मन्त्र ७)।'

ऋषि द्वारा स्पष्ट इस दृष्टिकोण को देखकर मैं सोचता हूं और बार बार विचार करता हूं कि क्या पापियों के परित्राता वह हैं जो लोगों को पाप के लिये यह कह कर प्रोत्साहन दिला रहे हैं कि 'आओ हमारी शरण मे आओ हम तुम्हें बचा लेंगे।' या पापियों के परित्राता स्वामी दयानन्द हैं जिन्होंने पापियों को चेतावनी देकर पाप कर्मों से बचाया और वेदों से स्पष्ट सिद्ध कर दिया कि प्रत्येक प्राणी मात्र को कर्मानुसार ही फल मिलेगा।

हर्ष सूचना

विश्व शिरोमणि, धर्म प्राण, महर्षियों की जन्मभूमि आर्यवर्त की विश्व के मानव समाज को एक अनुपम देन

❀ आर्य हवन सामग्री ❀

विश्व के मानव समाज को सहर्ष सूचित किया जाता है कि हम सर्वरोग नाशक सुगन्धित आर्य हवन सामग्री का निर्माण करते हैं। तपेदिक, क्षय, कोढ और पागलपन जैसे असाध्य रोगो के लिए यज्ञ ही रामबाण औषध है।

विश्व के समस्त राष्ट्रो मे तथा भारत के प्रत्येक नगरो म आर्य हवन सामग्री के एजेन्टों व विक्रेताओं की अविलम्ब आवश्यकता है।

अमेरिका तथा मोरिशस आदि राष्ट्रों में हमारी एजेन्सिया स्थापित हो चुका हैं। यज्ञ सम्बन्धी प्रत्येक वस्तुओ का निर्माण हम करते है।

न० १ मेवा युक्त हवन सामग्री का भाव ८०) मन

न० २ सुगन्धित हवन सामग्री का भाव ५०) मन है।

यदि आप धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करना चाहते हैं तो नित्य यज्ञ करने का शुभ सकल्प करे।

वेदपथिक धर्मवीर आर्य
झडाधारी उपदेशक
अध्यक्ष—आर्य हवन सामग्री
निर्माणशाला, अहाता ठाकुरदास
सराय रुहेला देहली ५

गुरुकुलीय विश्वविद्यालय के संबंध में सार्वदेशिक सभा के मंत्री का वक्तव्य

गुरुकुल आदि समस्त आर्य शिक्षा सस्थाओं को एक सगठन में आबद्ध कर एक विशाल विश्वविद्यालय के निर्माण की आवश्यकता का अनुभव कर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने डा० मगलदेव शास्त्री एम० ए० डी० फि० भूतपूर्व प्रिंसिपल गवर्नमेंट सस्कृत कालेज बनारस की अध्यक्षता मे एक उपसमिति का निर्माण किया है जिसे इस सम्बन्ध मे पूर्ण विचार कर अपनी रिपोर्ट देने का कार्य सौंपा गया है। इस समिति में श्री इन्द्र जी विद्या वाचस्पति श्री घनश्यामसिंह गुप्त, श्री विनायक राव जी विद्यालकार आदि ९ व्यक्ति सदस्य हैं। समिति की ओर से प्रश्नावली प्रकाशित कर सर्वत्र भेजी जा चुकी है।

समस्त आर्य शिक्षा सस्थाओ, उनके सचालको तथा आर्य शिक्षा विशेषज्ञो और आर्य नेताओ से प्रार्थना है कि वे इस समिति के साथ पूर्ण सहयोग करें और प्रश्नावली के उत्तर इस समिति के मन्त्री "आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री एम० ए० रायबरेली उत्तर प्रदेश' के पास प्रेषित करने की कृपा करें।

—प्रकाशवीर शास्त्री उप मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

सभा की सूचनाएँ

नये उपदेशक की नियुक्ति

प्रान्त की समस्त समाजों को सूचित किया जाता है कि विद्याभूषण श्री उमेशचन्द्र जी को सभा ने प्रचारार्थ उपदेशक पद पर नियुक्त कर लिया है। सम्प्रति उनका क्षेत्र आगरा कमिश्नरी होगा। अतः उक्त उपदेशक महोदय जिन समाजों मे पहुँचें वहां के अधिकारी गण उनके प्रचार का प्रबन्ध करें और सभा सम्बन्धी समस्त धन स० ५७ तक वेद प्रचारार्थ अधिक से अधिक देने की कृपा करें तथा सभा की रसीद प्राप्त करें।

—अ० उ० विभाग

उपदेश विभाग की सूचना

मास दिसम्बर सन् १९५८

१—श्री प० ओ३म् प्रकाश जी शास्त्री महोपदेशक ४ से ७ तक उत्सव आ० स० लल्लापुरा-काशी। ३१ से ३ जनवरी ५९ तक उत्सव आर्य समाज फैजाबाद।

२—पं० सत्यमित्र जी शास्त्री १ से ३ तक उत्सव आर्य समाज टांडा फैजाबाद।

३—श्री धर्मराजसिंह १ से ३ तक उत्सव आ० स० टांडा फैजाबाद, ३१ दिसम्बर से ३ जनवरी तक उत्सव आ० स० फैजाबाद।

४—श्री गजराज सिंह १ दिसम्बर से १५ जनवरी तक जिलोप सभा मुजफ्फरनगर।

५—"सर्वगुण प्रसाद ४ से ७ तक उत्सव आ०स० लल्लापुरा काशी।

६—श्री जयपालसिंह मानव १ से २० तक आर्यनगर (बदायूं)

२० से ३१ दिसम्बर तक जिलोप-सभा बदायूं —अ०उ० विभाग

सभा का वर्ष

१—समास्थ मुख्य निरीक्षक, जिलास्थ निरीक्षक, उपदेशक, प्रचारक एवं समस्त अन्तरङ्ग सदस्य महानुभावों को सूचित किया जाता है कि सभा के वर्ष के ४-५ सप्ताह शेष रहे हैं अपना अपना कार्य समाप्त करने की कृपा करें। और वर्ष समाप्त पर अपना अपना आय-व्यय हिसाबादि शीघ्र कोष कार्यालय मे जमा खच के लिये भेज दें।

२—प्रत्येक के समाजों का निरीक्षण करने की कृपा करें और निरीक्षण कार्य रिपोर्ट शीघ्र सभा में भेजने का कष्ट करें।

३—आर्यमित्र हीरक जयन्ती के लिए नोटिस बिकवाने के लिए समाजों को प्रेरणा की जावे।

४—समहीक धन सभा मे शीघ्र भेजा जावे।

शुभ सूचना

आर्य समाज हरैया जिला बस्ती का नवीन मन्दिर बनकर तैयार हो गया है। सभा के नाम रजिस्ट्री कराने के लिए सभा के अन्तरङ्ग सदस्य श्री निरंकार प्रसाद जी बस्ती प्रयत्न कर रहे हैं।

मंदिरों के फोटो चित्र भेजिये

आर्यमित्र द्वारा प्रदेशीय समस्त आर्य समाजों से दो बार प्रार्थना की जा चुकी है कि अपने अपने समाज मंदिरों के फोटो चित्र भेजने की कृपा करें। किन्तु अब तक ४ आर्य समाज बदायूं, अमरोहा, जौनपुर तथा गोला गोकरननाथ के ही चित्र प्राप्त हुए है। प्रदेश की शेष समाजों ने ध्यान नहीं दिया अतः प्रार्थना है कि फोटो यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें।

प्रस्ताव भेजने की कृपा करें

सर्व समाजों को विदित हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिसम्बर मास मे होने वाला है। तिथियाँ नियत होने पर पुनः सूचित किया जायगा। यदि कोई समाज वा अन्तरग सदस्य सभा मे कोई प्रस्ताव सभा के हितार्थ विचारार्थ भेजना चाहे तो इस मास के अन्त तक भेजने की कृपा करें।

कृपया वृहदधिवेशन के लिए निमंत्रण पत्र भेजिये

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्य समाजों को विदित हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का आगामी साधारण अधिवेशन (वृहदधिवेशन) सन् १९५९ मे होना निश्चित हुआ है। सभा के नवीन नियम सं० १५ के अनुसार यह विषय आगामी अन्तरंग सभा में निर्णयार्थ रखा जायगा। यदि कोई आर्य समाज अपने यहां सभा के वृहदधिवेशन को निमंत्रित करना चाहें तो कृपया अपनी आर्य समाज की अन्तरङ्ग में इस विषय को प्रस्तुत कर, सभा कार्यालय में १० दिसम्बर ५८ तक निमंत्रण-पत्र भेजने का कष्ट करें। सभा आये हुए निमंत्रण पत्रों पर विचार करेगी।

—फूलनसिंह मंत्री
आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश

भारतीय तार सेवा

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

★ भारतीय तार प्रणाली को संसार में दूसरा स्थान प्राप्त है। सबसे ऊचा तारघर और सबसे ऊंची तार की लाइन भी भारत में ही हैं। पिछले ९ वर्षो से भारत के बड़े बड़े नगरों से हिन्दी में तार भेजने की व्यवस्था है पर अभी तक केवल १२५० तारघर ऐसे हैं जहाँ से हिन्दी में तार भेजे जाते हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी के समर्थक क्या इस दिशा में कुछ ठोस कार्य कर या करा सकेंगे? —स० सम्पादक ★

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

१—नवम्बर १९५८ में भारतीय तार व्यवस्था को चालू हुए १०७ साल पूरे हुए हैं।

२—भारतीय तार व्यवस्था का शताब्दी समारोह नवम्बर १९५३ मे मनाया गया। इस समय यह संसार की सबसे बड़ी तार प्रणालियों मे है। भारत में सरकार संचालित यह दूसरा सबसे बड़ा विभाग है। इसमे २ लाख २० हजार कर्मचारी और लगभग १ हजार अधिकारी काम करते हैं।

३—भारतीय तार प्रणाली संसार की सबसे बड़ी तार प्रणालियों में दूसरी है। अमेरिका के बाद सबसे अधिक तार भारत में ही दिये जाते हैं।

४—संसार का सबसे ऊचा तार घर भूटॉग मा यहाँ है। यह समुद्र की सतह से १३ हजार ५०० फुट ऊचा है। इसे सिक्किम पर चढ़ाई के समय सन् १८८७ में बनाया गया था। संसार की सबसे ऊंची तार की लाइन भी यहीं है। यह सिक्किम के सम्भाजोन नामक स्थान पर है। जो समुद्र की सतह से १७ हजार ५०० फुट ऊचा है।

५—पहली पचवर्षीय योजना में ५ हजार जनसंख्या के हर शहर में तार घर खोलने का लक्ष्य था। इसके साथ ही सब परगनों के सदर और पुलिस थानों में भी, चाहे वे कितने ही छोटे हों, तार घर खोलने की योजना थी।

६—दिसम्बर १९५७ तक नेफा के १ शहरों को छोड़कर बाकी ३२२ जिला केन्द्रों में, १३ को छोड़कर बाकी ४८२ परगना केन्द्रों मे और १४५ को छोड़कर बाकी १३६६ तहसीलों मे तार घर खुल चुके थे।

७—दूसरी पचवर्षीय योजना में १,४०० नये तार घर खोले जाएंगे। इसके साथ ही पिछले इलाकों मे भी २०० तारघर खोले जाएंगे। योजना मे तार की व्यवस्था मे सुधार टेलेक्स और प्रिन्टरग्राम चालू करने और कलकत्ता, मद्रास तथा नयी दिल्ली के तारघरों के आधुनिकीकरण की भी व्यवस्था है।

८—हिन्दी में तार भेजना १ जून १९४९ को, इन ९ शहरों मे शुरू किया गया आगरा, इलाहाबाद, गया, जबलपुर, कानपुर, लखनऊ, नागपुर, पटना और वाराणसी। इस समय १,२५० तारघरों मे हिन्दी तार दिये जा सकते हैं। इनमे ४१ तारघर रेलों के हैं। १९५८-५९ मे २० और तारघरों मे हिन्दी तार भेजने की व्यवस्था हो जाएगी। इनमे से कुछ आंध्र प्रदेश, आसाम और उड़ीसा मे भी होंगे।

दुःख है कि हिन्दी मे तार भेजने की व्यवस्था होते हुए भी आज अधिकांश व्यक्ति अङ्गरेजी मे ही अपने तार भेजते हैं। राष्ट्र भाषा को प्रोत्साहन देने के लिए अब से भी इधर समुचित ध्यान देने की आवश्यकता है।

वर की आवश्यकता

एक सुप्रतिष्ठित परिवार की सुशिक्षित, स्वस्थ, सुन्दरी कन्या के लिए सुयोग्य वर की आवश्यकता है। कन्या बी०ए०, बी० टी० है। क्षत्रिय-गहलौत-कुल मे जन्म हुआ है। संबध में जाति-पाँति या बिरादरी का कोई विचार नहीं किया जायगा। आर्य्य मात्र में, सुयोग्य वर के साथ, विवाह हो सकेगा। "स्वदेश"
द्वारा आर्य्यमित्र ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ

आर्य-जगत

उत्सव समाचार—

—आ०स० देवबन्द का वार्षिकोत्सव ८ से १२ नवम्बर ५८ तक सोत्साह सम्पन्न हुआ। सर्वश्री स्वामी भीष्म जी, अमृतानन्द जी, पं० रमेशचन्द्रजी कालीचरण जी, पावरपति जी, अभय राम जी, मामचन्द जी, गेन्दाराम जी आदि के ओजस्वी भाषण व भजन हुए।

—आ० स० नगीना का २६ वां वार्षिकोत्सव १५ से १८ नवम्बर ५८ तक सोत्साह मनाया गया। स्वामी अभेदानन्द जी, स्वामी शिवानन्द जी पं०सुखदेव जी, श्री ईश्वरदयालु आर्य श्रीमती प्रभावती जी, श्री सत्यदेव जी, श्री सुगनचन्द जी आदि के भाषण हुए।

—आ०स० मनियर बलिया का २५ वां वार्षिकोत्सव श्री शिवकुमार सिंह की अध्यक्षता में १२, १३, १४ नवम्बर ५८ को होगा। श्री इन्द्रदेव सिंह, प० ब्रह्मदेव मिश्र, श्री शिवदर्शन सिंह आदि के भाषण व भजन हुए।

—आ०स० नेपाल का वार्षिकोत्सव काठमांडू में २० से २७ नवम्बर ५८ तक हुआ। बड़े उत्साह व जोश के साथ सभी कार्यक्रम हुए। बिहार प्रतिनिधि सभा के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य रामानन्द शास्त्री, पं० रामनारायण शास्त्री, श्री बैजनाथप्रसादजी आदि के प्रभावशाली व ओजस्वी भाषण हुए। साथ में श्री नन्दलालजी भजनोपदेशक वैदिक मिशनरी के वीरतापूर्ण भजन हुए। सम्प्रति नेपाल में चारों ओर आर्यसमाज के प्रचार की चर्चा है। जनता में उत्साह है।

—हरिहर प्रसाद प्रधान
आर्यसमाज नेपाल

—आ० स० सासामऊ कानपुर का २४ वां वार्षिकोत्सव २७ से ३० नवम्बर ५८ तक मनाया गया। उत्सव से पूर्व २० से २६ नवम्बर तक प्रतिदिन वेद कथा हुई। आचार्य प्रियव्रत जी, स्वामी अभेदानन्द जी, पं० गङ्गा प्रसाद उपाध्याय, प० शिवकुमार शास्त्री, स्वामी विशुद्धानन्द, डा०मुन्शी राम शर्मा, श्री भद्रपाल जी, श्री धर्मदत्त आनन्द, श्री अमरनाथ जी, डा० हरिदत्त शास्त्री आदि के भाषण व भजन हुए।

आ० स० ऐशबाग लखनऊ का पहला वार्षिकोत्सव १७ से २३ नवम्बर ५८ तक हुआ। प्रथम ६ दिन तीन विभिन्न स्थानों पर दो दो रोज स्वामी विद्यानन्द जी द्वारा उपनिषदों की कथा हुई और श्री बी० एन० पाल मैजिक लैन्टर्न प्रचारक सदर लखनऊ द्वारा स्लाइड चित्रों से प्रचार किया गया। अन्तिम दिन एक विशाल सुसज्जित पंडाल में दिन भर का पुरोगम हुआ। पं० नरेन्द्रनाथ शास्त्री, प्रो० भगवान प्रसाद जी, श्री शिवप्रसाद जी, श्री कुलेन्द्रपाल भजनोपदेशक हरदोई, श्री पृथ्वीराज वरमानी आदि के भाषण व ओजस्वी भजन हुए। स्थानीय सभी आर्य समाजों के प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे। सारा कार्य सोत्साह हुआ।

चुनाव समाचार—

—आर्यसमाज सिन्दरी बिहार—प्रधान श्री हरिश्चन्द्र तनेजा, मन्त्री श्री नरेन्द्रदेव कौशल,कोषा०श्री तुलसीराम

आर्य वीर दल समाचार—

—आर्यवीर दल वाराणसी का वार्षिकोत्सव ७दिसम्बर ५८ को भारत माता मंदिर के प्रांगन में प्रातः ६ से ८ तक होगा जिसमें दल के प्रधान संचालक श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी का भाषण होगा। उसी मैदान में लल्लापुरा आर्य समाज के जलसे में आर्य वीर दल सम्मेलन भी होगा।

—आ० स० पठानकोट के वार्षिकोत्सव पर स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में एक आर्य वीर दल सम्मेलन हुआ जिसमें कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किये गये। प्रस्तावों के विषय चारित्रिक उन्नति, राष्ट्रोन्नति, सामाजिक उन्नति और आर्यवीर दल की स्थापना सम्बन्धित रहे।

गुरुकुल समाचार—

—१४ नवम्बर को शाखा गुरुकुल गिलौला बहराइच में गुरुकुल स्थापना दिवस समारोह मनाया गया। गुरुकुलीय विद्या परिषद का निर्वाचन निम्नप्रकार हुआ:—निरीक्षक प० यज्ञमित्र, संरक्षक पं० सूर्यमित्र, प्रधान ब्र० सहोमित्र, मन्त्री ब्र० भद्रमित्र, संयोजक ब्र० सुविधामित्र।

—गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में सम्प्रति २०० छात्र हो गये हैं। अब अधिक छात्रों के लिए स्थान नहीं है। अतः भविष्य में नवीन छात्रों का प्रवेश नहीं होगा। प्रवेशार्थी छात्रों को महाविद्यालय में आने से पूर्व अब स्वीकृति प्राप्त कर लेना आवश्यक है। गुरुकुल स्वर्ण जयन्ती के पश्चात् फिर सूचना दी जायेगी। स्वर्ण जयन्ती महोत्सव ६ से १५ अप्रैल ५८ तक है।

प्रचार समाचार—

—१० नवम्बर को सायं आ० स० मगहर बस्ती में यज्ञ के पश्चात् भजन तथा उपदेश हुआ। इससे पूर्व उसी दिन प्रातः नगर के अनेकों व्यक्तियों के घरों पर यज्ञ हुआ तथा दो यज्ञोपवीत संस्कार भी कराये गये।

—दीपावली के दिन रामलीला मैदान दिल्ली के धार्मिक मेले में श्री धर्मवीर ब्रह्मचारी ने विभिन्न महानुभावों को अमृतवाणी का उपहार महर्षि दयानन्द के चित्र सहित भेंट किया।

—आ० स० सोरों में शेरकोट निवासी श्री वेदव्रत वानप्रस्थी ने वेद कथा द्वारा एक सप्ताह तक प्रचार किया।

—रामपुर में आर्य जनता की ओर से ८ ११ ५८ को एक वृहद् हवन यज्ञ प० सूर्यप्रकाश आर्य भजनोपदेशक ने कराया जिससे ग्राम में फैले कालरा का प्रकोप उसी दिन से घटने लगा।

—ब्र० पं० कृष्ण आचार्य ने पं० नरदेव स्नेही भजनोपदेशक आ० प्र० सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद के साथ १ से १७ नवम्बर तक प्रान्त के विभिन्न स्थानों का दौरा किया और प्रत्येक स्थानों पर प्रभावशाली प्रचार किया। अभी आपका प्रचार चल रहा है और अभी १५ दिसम्बर ५८ तक चलेगा। दिसम्बर में आप दोनों गुंजोटी, कल्याणी, चिटगोप्पा, गुलबर्गा, यादगीर, रायपूर, नारायणपेठ आदि स्थानों का दौरा करेंगे। सिकन्दराबाद में एक सप्ताह आपका प्रवचन होगा।

विदेश प्रचार और संस्कार

तथा स्वा० ध्रुवानन्द जी का त्याग

आर्य समाज दार्गी मौरिशश के सभासद श्री बाबूराम जी आलिप्यर के गृह पर पूज्य श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज ने यज्ञोपवीत संस्कार कराया। श्री आलिप्यर जी ने संस्कार के उपलक्ष्य में निम्नलिखित प्रकार से दान दिया।

५०) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली।

२५) रु० आर्य सभा मौरिशश।

१०) रु० आर्य समाज दार्गी।

श्री रूपलाल जी भूतपूर्व कोषाध्यक्ष आर्य समाज मारनी के पुत्र प्रिय वेदव्यास का मुण्डन संस्कार भी पूज्य स्वामी जी महाराज ने कराया। संस्कार की दक्षिणा में श्री रूपलाल जी ने १२५) रुपया दक्षिणा दिया। स्वामी जी महाराज ने उस रुपये को इस प्रकार से बांट दिया।

५०) रु० सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली।

२५) रु० आर्य सभा मौरिशश।

१५) रु० श्री गयासिंह अनाथालय आर्य सभा मौरिशश।

१०) रु० दक्षिणा। यह दक्षिणा का रुपया भी आर्य सभा के कोष विभाग में जमा कर दिया।

बाबूराम
मंत्री आर्य समाज
दार्गी, मौरिशश

शोक समाचार—

—आ० स० रूदमुली आगरा ने श्री अमृतानन्द जी के निधन पर शोक प्रकट किया। १७ ११ को हृदयगति रुक जाने से उनका निधन हो गया।

—श्री मोहनलाल अग्रवाल तथा श्री लल्लूप्रसाद अग्रवाल के असामयिक निधन पर आर्य समाज आजमगढ़ ने हार्दिक शोक प्रकट किया।

अन्यान्य समाचार—

—आ० स० हरैया बाजार ने अपना समाज मन्दिर बना लिया है, वेद प्रचार हो रहा है। मेंहदावल, मुंडेरवा, ऊंचडीह, डुमरियागंज, बांसी आदि आर्य समाजों का निरीक्षण किया गया। समाजों के संगठन के लिए श्री शिवनारायण जी वेदपाठी को बुलाया जा रहा है।

—निरंकार प्रसाद,
अन्तरङ्ग सदस्य सभा

—डी० ए० वी० स्कूल सोरों में लाजपतराय निधन दिवस मनायागया।

—आ० स० जगतपुर पुराना शहर बरेली में १२ नवम्बर से दयानन्द वैदिक रात्रि पाठशाला खोली गयी है जहां बालकों को वैदिक धर्म की शिक्षा दी जाती है।

साहित्य-समीक्षण

(समालोचनार्थ पुस्तकों की कृपया दो प्रतियां भेजें ।—सम्पादक)

जन नायक

लेखक—श्री फतहचन्द्र शर्मा आराधक सह सम्पादक, नवभारत टाइम्स दिल्ली। प्रकाशक—सर्वोदय प्रकाशन मन्दिर, १६८२, नयी सड़क दिल्ली। पृष्ठ सं० २०४, पुस्तकाकार सजिल्द ! कागज मोटा सफेद, छपाई साफ और सुन्दर। मूल्य २॥)

श्री आराधक जी जो पत्रकार प्रवर पं० बनारसीदास चतुर्वेदी के शब्दों में मूलतः एक पत्रकार हैं, ने प्रस्तुत पुस्तक में भारत के राष्ट्रीय नेताओं, समाज सुधारकों, वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, क्रान्तिकारियों एवं महान् महिलाओं की जीवन झांकियों का संकलन किया है।

इस संकलन कार्य में वे पूर्णतया सफल हुए हैं—ऐसा हम इसलिए कह सकते हैं कि श्री आराधक जी ने बड़े व्यापक दृष्टिकोण से अपने जननायकों के चरित्रों को चित्रित किया है। इसमें कहीं भी दलगत या साम्प्रदायिक भावना नहीं आने पायी है।

इस संकलन की अपनी और भी कुछ विशेषताएं हैं। वह यह कि पुस्तक की भाषा आद्योपान्त अत्यन्त सरल और प्रवाह युक्त है। जन नायकों के चरित्रों और गुणों पर लेखक ने विशेष बल दिया है। उनके जीवन में कब कौनसी घटना घटी, इसमें उलझकर लेखक ने समय नहीं गंवाया है। इसलिए गुण प्रधान होने के कारण यह पुस्तक राष्ट्रीय उन्नति में योग देने वाली कही जा सकती है।

प्रस्तुत संकलन में लेखक ने कुल ३१ जन नायकों को चुना है जिन्हें आपने ६श्रेणियों में बांटा है। राष्ट्रीय नेता की कोटि में ८, सत सुधारक ६, महान् वैज्ञानिक ३, दार्शनिक एवं शिक्षा शास्त्री ६, बलिपथ के राही ४, और महान् महिलाएं ४। इन ३१ नेताओं के नाम निम्न हैं :—

तिलक, लाजपतराय, गांधी, पटेल, राजेन्द्र बाबू, आजाद, नेहरू, जय प्रकाश ये ८ राष्ट्र नेता। नानक, दयानन्द, रामतीर्थ, भगवानदास, टण्डन, विनोबा ये ६ सन्त सुधारक। बसु, रमन, भटनागर—ये ३ महान वैज्ञानिक। श्रद्धानन्द कर्वे, रवीन्द्र मालवीय, राधाकृष्णन, नरेन्द्रदेव—ये ६ दार्शनिक एवं शिक्षा शास्त्री। तात्यां टोपे, सुभाष, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह—ये ४ बलिपथ के राही। कस्तूरबा, नायडू, विजयलक्ष्मी, कमला नेहरू—ये चार महान महिलाएं।

इन जननायकों के जीवन से हमें एक प्रकाश मिलता है और एक प्रेरणा मिलती है तथा हमारे मन की भी यह इच्छा होती है कि हम कुछ करें। पाठकों की इसी चाह में लेखक की सफलता है। अतःइस संकलन के लिए श्री आराधक जी वस्तुतः धन्यवाद के पात्र हैं।

सोवियत संघ में कृषि समस्या किस तरह हल की गयी

लेखक—श्री डी० एस० कोल्पाकोव, प्रकाशक–सूचना विभाग, सोवियत दूतावास, २५ बाराखम्भा रोड नयी दिल्ली, पृष्ठ सं० ७३, मूल्य २० नये पैसे, छपाई साफ व सुन्दर, कागज सफेद व चिकना, आर्ट पेपर का रंगीन आवरण पृष्ठ।

पुस्तक का विषय नाम से ही स्पष्ट है। अपने देश की कृषि समस्या को रूस ने जिस परिश्रम, योजना, वैज्ञानिक ढङ्ग तथा नये साधनों द्वारा हल करके आज रूस को एक अत्यन्त उन्नत राष्ट्र बना दिया है, उसी बात की चर्चा लेखक ने इस पुस्तक में की है। सोवियत दूतावास ने बड़े सुन्दर ढङ्ग से इस पुस्तक को अनेकों भारतीय भाषाओं में बहुत सस्ते मूल्यों पर प्रचारार्थ प्रकाशित किया है।

आर्य वीर, मासिक जालंधर

(ऋषि अंक)

सम्पादक—श्री मेहरचन्द शर्मा। वर्ष २२, अङ्क ७। नवम्बर १९५८। वार्षिक मूल्य ६), एक प्रति तथा इस प्रति का ।।) पृष्ठ सं० ७२। साइज २०×३० एक चार।

जालन्धर का यह "आर्य वीर" जबसे अपना उर्दू चोला बदल कर हिन्दी में मासिक प्रकाशित होने लगा है तबसे इसने आर्यजगत् में एक नयी स्फूर्ति उत्पन्न कर दी है। आर्य वीर मासिक के अब तक जितने भी अङ्क निकल चुके हैं सभी विशेषांक के बराबर हैं। प्रस्तुत अङ्क तो ऋष्यङ्क है ही और इसमें जिस प्रकार की सामग्री होनी चाहिये थी, वह पर्याप्त मात्रा में है। अङ्क की छपाई साफ और सुन्दर है। लेखों और कविताओं का चयन बुद्धिमत्तापूर्वक किया गया है। लेखों में प्रकाशित विचार मनन करने योग्य हैं। आर्य वीर दिन दिन प्रगति करेगा—ऐसा हमारा विश्वास है।

आर्य साप्ताहिक, जालन्धर

(ऋषि निर्वाण अङ्क)

सम्पादक–श्री जगदेवसिंह सिद्धांती शास्त्री। वर्ष ३८,अंक ८१ ८२इस प्रति का मूल्य ५० नये पैसे। पृष्ठ संख्या ८८। साइज २०×३० एक चार। रंगीन व सचित्र, आर्ट पेपर का सुन्दर आवरण सहित।

"आर्य" आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का साप्ताहिक मुख पत्र है। प्रस्तुत अंक में आर्य जगत् के विशिष्ट विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं। अधिकांश लेख स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध में ही हैं। सभी लेखों को पढ़ कर कोई भी नया व्यक्ति स्वामी जी के सम्बन्ध में काफी कुछ जानकारी प्राप्त कर सकता है। स्थानस्थर ऋषि जीवन सम्बन्धी चित्र भी हैं जिससे अङ्क सजीव बन गया है। प्रारम्भ में विषय सूची का अभाव अवश्य खटकता है। सब मिला जुलाकर अंक अच्छा बन गया है। छपाई साफ हुई है। अङ्क पठनीय व संग्रहनीय है।

आर्य जगत् साप्ताहिक जालन्धर

(ऋषि निर्वाण विशेषांक)

सम्पादक–श्री अजीतसिंह सत्यार्थी वर्ष १८, अंक ४०। वार्षिक मूल्य ६) एक प्रति १३ नये पैसे। इस प्रति का ३७ नये पैसे। पृष्ठ संख्या ५०। साइज २०×३० एक चार। रंगीन आवरण पृष्ठ।

यह पत्र आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा पिछले १८ वर्षों से प्रकाशित हो रहा है जो इस बार ऋषि दयानन्द निर्वाण स्मारक विशेष अंक के रूप में प्रकाशित हुआ है। इस अंक के लेखों में विद्वान लेखकों ने स्वामी दयानन्द के उपकार, उनकी राष्ट्रीयता, उनकी सेवाएं, आर्य समाज का कार्य क्रम आदि विषयों पर सुन्दर प्रकाश डाला है। हिन्दी आन्दोलन के संबंध में भी कुछ चर्चा इस अंक में है। ऋषि का सुन्दर सन्देश इस अंक के कई लेखों में स्वयं प्रकाशित हो रहा है। 'तलवार कटार के वार सहे' शीर्षक इस अंक की कविता सबको पसन्द आने वाली है।

आर्य प्रेमी मासिक अजमेर

(दीपावली विशेषांक)

सम्पादक—श्री मोहनलाल वैद्य। वर्ष ६, अंक ६। वार्षिक चन्दा १॥), एक प्रति १२ नए पैसे, पृष्ठ सख्या४०, साइज २०×३० एक चार। रंगीन आवरण पृष्ठ। नवम्बर १९५८।

वेदों का प्रचार और "स्वास्थ्य धन" की वृद्धि व रक्षा करना आर्य प्रेमी का प्रारम्भ से ही उद्देश्य रहा है। इसी उद्देश्य पर आज भी आर्य प्रेमी चल रहा है। समालोचनार्थ आगत इस दीपावली विशेषांक में उच्चकोटि के लेखकों के विचार प्रकाशित हुए हैं जो मुख्यतः स्वामी दयानन्द जी के सम्बन्ध में हैं। मृत्युंजय दयानन्द के सम्बन्ध में अजमेर के जो संस्मरण इस अंक के २० वें पृष्ठ पर प्रकाशित हुए हैं, वे पढ़ने योग्य है। आर्य प्रेमी की यही शुभ कामना—शीर्षक कविता से इस पत्रिका का उद्देश्य स्पष्ट हो जाता है। आर्य प्रेमी के उदार विचार का उदारता के साथ सर्वत्र स्वागत होना ही चाहिए।

आर्य कलेण्डर १९५९

वेदपथिक श्री धर्मवीर आर्य झंडाधारी, आर्य हवन सामग्री निर्माणशाला, अहाता ठाकुरदास, सराय रुहेला देहली५द्वारा प्रकाशित। साइज १५×२० इंच, एक प्रति का मूल्य ।=)

श्री झंडाधारी जी ने आर्ट पेपर पर सुन्दर ढग से इस कलेन्डर को छपवाया है। बीच में युग प्रवर्तक ऋषि दयानन्द का रंगीन चित्र है। नीचे १९५९ के १२महीनों की तिथियाँ अंकित हैं। बायीं ओर कुछ अनमोल वचन अमृतवाणी के रूप में व दायीं ओर आर्य समाज के १० नियम बार्डरों के बीच आकर्षक रूप में प्रकाशित किये गये है। "आर्य हवन सामग्री निर्माण शाला" इसका शीर्षक है। छपाई साफ और सुन्दर है। कलेन्डर म छुट्टियाँ भी अंकित हैं। हवन सामग्री के साथ आर्य विचार धारा का प्रचार भी इस कलेण्डर द्वारा हो जाता है।

—स० सम्पादक

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
अमहायनबा.शक१८८० (३०नवम्बर५८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष : २११३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्यमित्र हीरक जयन्ती

को

सफल बनाइए

आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार और संघटन की सुदृढ़ता

के लिए

एकमात्र साधन 'आर्यमित्र' है

जो साठ वर्षों से निरन्तर मौन साधक के रूप में समाज, राष्ट्रभाषा हिन्दी, साहित्य, धर्म, राष्ट्र और मानव संस्कृति आदि सभी क्षेत्रों में वैदिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने में संलग्न रहा है। सभी क्षेत्रों में आदर्शों की स्थापना ही उसका एक मात्र उद्देश्य रहा है।

यदि आप चाहते हैं कि भविष्य में भी

'आर्यमित्र'

★ आर्यसमाज के प्रचार
★ सिद्धान्त समर्थन
★ निर्भीक आलोचना
★ समाज-सुधार
★ राष्ट्र नव निर्माण
★ विश्व शान्ति
★ वैदिक संस्कृति सम्प्रसार
★ नैतिक उत्थान
★ आदर्श पत्रकारिता
★ राष्ट्रभाषा हिन्दी सेवा
★ विश्व बन्धुत्व
★ मानव संस्कृति

आदि सभी क्षेत्रों में सामाजिक चेतना जागृत करता रहे तो आर्यमित्र को समर्थ बनाने में अपना सहयोग प्रदान कीजिए।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती की सफलता आपके सहयोग पर ही निर्भर है। पचास हजार रु० की जयन्ती निधि में अपनी सामर्थ्यानुसार सहायता कीजिए और इष्टमित्रों से सहायता दिलवाकर पुण्य के भागी बनिए।

आर्यमित्र की उन्नति के इस यज्ञ में पड़ी हुई प्रत्येक आहुति मानवता के नव-निर्माण में सहायक होगी।

संयोजक—'आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति' लखनऊ

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम के नाम पर नेपाली बौद्ध बन्धु की भारतीय आर्यों से अपील

नेपाल को ईसाइयत के चक्र से बचाइये

[श्री धर्मरत्नमणि पूर्व उपमन्त्री, नेपाल सरकार]

भगवान् बुद्ध ने आर्य धर्म को ही चलाया था। पाली साहित्य में जगह जगह पर "अरियो धम्म" का ही प्रयोग हुवा है जिसका अर्थ आर्य धर्म है। भगवान बुद्ध ने बोधि वृक्ष के नीचे जो बुद्धत्व वा सम्यक सबोधि पाई थी, वे हैं चार सत्य बातें, जिनको बुद्ध ने चतुर्य्य सत्य कहा है। निर्वाण तक पहुंचाने के जो आठ सम्यक् मार्ग बताये है उन्हे भी "आर्य अष्टाशिक मार्ग" कहा है। बुद्ध ने अपने धर्म को "एस धम्मो सनात्तनो" कहा है अर्थात् यह धर्म ही सनातन कहा है। इसलिए बुद्ध धर्म अनार्य या अभारतीय धर्म नहीं है, अपितु विशुद्ध आर्य धम है। भारतीय धर्म है पीछे पौराणिक पोप पर्चों ने बुद्ध को दानवों को मोहित करने के लिए अवतरित विष्णु का अवतार कह कर बद नाम किया, जिसमें भारतवासी बुद्ध को विष्णु का अवतार मानते हुए भी घृणा करने लग गए। बौद्ध धर्म, विदेशी, विधर्मी बन गया। किन्तु आज युग बदल गया है, सत्य जो ढंका हुआ था वह प्रकट हुवा है। भारतवासी समझदार बन गए, स्वामी दयानन्द जैसे आर्य धर्म अन्वेषक एव प्रचारक तथा सुधारक पेदा हो गए, जिससे मुट्ठी भर ब्राह्मणो के लिए "रिजर्व" किया गया वेद उपनिषद् सब के लिए उपलब्ध हो गया है। मैं नेपाल का एक बौद्ध हूं। श्री राजालाल आर्य द्वारा मुझे आर्य ग्रन्थ देखने का मौका प्राप्त हुवा जिससे मैं यह कहने को निभय हुवा हूं कि "विश्व को आर्य बनाओ" का जो नारा वेद में दिया है, उसे भगवान बुद्ध ही साकार रूप से सक्रिय करके दिखा गए।

बुद्ध के निर्वाण के बाद बौद्ध धर्म जो कि आर्य धर्म ही है का विदेशों मे फैलाने का उपक्रम सम्राट अशोक ने ही किया था। उसके बाद सम्राट कनिष्क ने किया। फिर क्या था भारत का आर्य धर्म बौद्ध धर्म का जामा पहन कर या नाम से भारत से भी बढ़कर विदेशों मे फैल गया। पाश्चमी देश फारस अफगान तुर्किस्तान तुर्क देश, यूनान, मिश्र, सीरिया सम्पूण अरब देशो तक मे जब तक बौद्ध धर्म ही व्याप्त था। आज वहां भग्नावशेष के रूप मे ही आर्य बौद्ध धर्म के चिन्ह रह गये है। किन्तु उत्तर में साइबेरिया से लेकर दक्षिण मे लङ्का तक और पश्चिम मे काश्मीर से लेकर पूव प्रशान्त महासागर के हवाई द्वीपो तक और दक्षिण पूर्व बर्मा, मलाया, स्याम कबोज चंपा (वियतनाम) लाओस, चीन जापान सभी आर्य धर्मानुयायी हैं। इस तरह हम आर्य धर्मानुयायी सब एक हो जाएं तो एक अरब जनसमूह हो जाता है। क्या इस प्रकार की सधार्मिकता इन देशों के मानवों के हृदय मे एकता की गौरवपूर्ण भावना को दृढ़ न करेगी और कृण्वन्तो विश्वमार्यम" सार्थक न बन जायगा ?

"शूद्राय मतिम् न द द्यात्" इत्यादि वाक्य को साक्षी देकर ब्राह्मण का ही पोपों ने कल तक आर्यावर्त भारतवासियों को भी आर्यधर्म से वंचित रखा, जिसको बुद्ध के बाद स्वामी दयानन्द ने ही तोड़ा सबके लिए उपलब्ध बताया।

सक्षेप मे यहां यह बता देना अप्रासगिक न होगा कि आज बौद्ध देशों में भारत के प्रति क्या भावना है और वे आर्य शब्द का कितना सम्मान करते हैं।

आर्य को तिब्बती भाषा 'फाग् पा' कहता है। यही बुद्ध के लिए भी प्रयुक्त होता है। चीनी भाषा में बुद्ध को फो कहते हैं, वही फो आर्य के लिए भी उपयोग किया जाता है। बर्मी भाषा में भी बुद्ध को फाया कहते हैं। इन सब शब्दो में "फ" अक्षर उच्चारित हुआ है। तिब्बती लोग भारत को फाग्यायुल या "आर्य देश" कहते हैं। चीनवासी फाइ तो भी कहते हैं जिसका अर्थ बुद्ध भारत या आर्य भारत होता है। इतना ही नहीं संपूर्ण बौद्ध देशवाशी जो बुद्ध होने के अभिलाषी हैं, वे सब भारत भूमि में ही आकर जन्म लेना चाहते हैं इसलिए मरते वक्त भारत भूमि में ही जन्म लेने की कामना करते हुए मरते हैं। मरते-मरते शिर के बाल भारत भूमि में जला देने के लिए रख देते हैं और भारत तीर्थ यात्री के हाथ भेज देते हैं। महायानी बौद्ध देशों में तो एक प्रकार की प्रातः प्रार्थना है जिसका प्रारम्भ "भारतीय महा पंडितगण इस देश के लिए महा कारुणिक है।" इस वाक्य से प्रारम्भ करते हैं। महायान के ग्रन्थों के आगे आर्य शब्द जुड़े हुए हैं जैसा आर्य प्रज्ञापारमिता ग्रन्थ आर्यधारणी ग्रन्थ" आय नाम संगिनी ग्रन्थ" आदि, और देव देवी के नाम के आगे भी आर्य शब्द जोड़ा जाता है जैसे कि आर्य तारा आर्य अवलोकितेश्वर बोधिसत्व "आर्य मैत्रेय बोधि सत्व" इत्यादि : महायानियों ने तो सात्विक होम या यज्ञ को भी अपनाया हुआ है। महायानी बौद्धों के मंत्र सभी संस्कृत भाषा मे ही उच्चरित होते है। थेरवादी बौद्ध॰.ण पाली भाषा मे उनका प्रयोग करते है जो संस्कृत से दूर नहीं है। जैसे कि धर्म को धर्म, सत्य को सच्च, कर्म को कम्म के रूप मे। बौद्ध धर्म के दर्शन और बाह्य आचार विचार मे प्रचलित भारतीय धर्म जैसे ही है जिसको सामूहिक दृष्टि से हिन्दू धर्म कहा जाता है। उसमे और बौद्ध धर्म में ज्यादा फरक नहीं है। ईश्वर अनीश्वर आत्मा निरात्मा सासत्ववादी क्षणिक वादी इत्यादि बातो मे बौद्ध और हिंदू धर्म मे कुछ-कुछ हो फरक है। वैसे तो बुद्ध धम बुद्धिवादी धम है जिसको हिन्दू लोग भी नहीं मानते ऐसा नहीं कहा जा सकता है, वास्तव में बौद्ध धर्म हिन्दू धम की शाखा ही है। इसलिए हम एक है, हमारा धर्म एक है क्योंकि हम सब आर्य धर्म को मानने वाले हैं। नेपाल ने तो इस एकता को आज तक भी जीवित रखा है किन्तु आज हमारे नेपाल मे भी कृष्टान (ईसाई) धर्म प्रचारक देश को ईसाई बनाने के नाम पर ईसाइयत फैला रहे है, जिसको ऋषि दयानन्द ने भारत मे रोका था। इसलिए इस आर्य धर्म को बचाने का भार आज के भारतीय आर्यों के ऊपर सबसे ज्यादा है। हम तो शताब्दी शताब्दी से सामतों द्वारा दलित हैं। हमारे पुरोहित स्वार्थी है। उनको धन मिले। इति। जय आर्य धर्म !

सामयिक समस्याएँ

बौद्ध धर्म आर्य विचारधारा की एक शाखा है। बौद्ध ग्रन्थ और बौद्ध धर्मानुयायी इस सत्यता को मुक्त कण्ठ से स्वीकार करते रहे हैं और यही कारण है कि एशिया के विविध देशों में रहने वाले बौद्धों के प्रति भारतीयों में एकता और समानता की भावना विद्यमान है। लेखक ने भारत बाह्य बौद्धों में भारत के प्रति श्रद्धा व्यक्त किया है कि वे भी कृण्वन्तों विश्वमार्यम् के झण्डे की साया में सुरक्षा अनुभव करते हैं। आज ईसाइयत का प्रचार चक्र बौद्ध देशों में विशेष कर नेपाल में बढ़ रहा है। वहां के एक सम्भ्रान्त नागरिक के रूप में लेखक ने नेपालवासियों की भावना व्यक्त की है। वास्तव में नेपाल में ईसाई प्रचार निरोध का दायित्व भारतीय आर्यों को स्वीकार करना चाहिये, तभी हम कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के प्रसार मे व्यावहारिक दृष्टि से सफल हो सकेंगे। –सं०

मानव

है हितैषी जगज्जन का, दोष जो नहिं देखता,
है न ईर्षा भाव जिसमें, राग द्वेष न पोषता।
इन्द्रियाँ आधीन जिसके, निःस्पृही और शान्त है,
है वही मानव सही, यह सत्य और निर्भ्रान्त है ॥१॥

देह वाणी और मन से, दुख प्राणी को न दे,
निर्विकारी अल्पतोपी, जीव को सुख शान्ति दे।
सज्जनों का मित्र हो, जो दूर दुर्जन से रहे,
सत्कथा सुनता सुनाता, जग उसे मानव कहे ॥२॥

सात्विकी हो बुद्धि जिसकी, भक्त जन का भक्त हो,
सत्यहित मित वाक्य बोले, दूर पापो से रहे।
हो सदा ग्राहक गुणों का, मेल दुर्गुण से न हो,
स्वात्मसम समझे सभी को, है वही मानव अहो ॥३॥

भिन्न अरि मे भावना हो, एक सी जिसकी सदा,
निंद्य कर्मों मे न होवे, कामना जिसकी कदा।
देख सुख वैभव पराया, हर्ष मनमें मानता,
चाहता जग का भला, मानव' उसे जग मानना ॥४॥

रात दिन प्रभु ध्यान मे जो, नम्र होकर लीन हो,
दुख दुःखियों का मिटाने, मे सदा तल्लीन हो।
लालसा जिसको न छूए, गर्व से जो परे रहे,
उस मनुज के हेतु जग में, प्रेम का झरना बहे ॥५॥

—श्री कृष्णलाल एस० बजाज 'प्रदर्प'

वेदोपदेश

ओम् पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। देवी रापोऽअग्रे गुवोऽअग्रे पुवोऽग्रऽइममद्य यज्ञं नयताग्रे यज्ञपति ७ सुधातुं यज्ञपतिं देवयुवम्॥ यजु० १-१२

जगत् के उत्पादक परमात्मा के बनाये इस संसार में पवित्र करने वाले यज्ञ सम्बन्धी दो साधन हैं। निरन्तर पवित्र करने वाले वायु तथा रश्मि रूप उन दोनों साधनों से तुम दिव्य जलों को पवित्र करता हूं। समुद्र की ओर जाने वाले तथा समुद्र से वाष्परूप में उठे हुए मेघ मण्डल से बरसने वाले जल आज इस यज्ञ की शक्ति को आगे ले जावें—वृद्धियुक्त करें और यज्ञपति यजमान को शुक्र आदि सुन्दर धातु तथा दिव्य गुणों से युक्त करें।

आर्यमित्र

लखनऊ—७ दिसम्बर १९५८, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०५९

जयन्ती यज्ञ की आहुति

एक दिन और उसकी आय

आर्य बन्धुओं के नाम जयन्ती की अपील प्रकाशित कर जयन्ती आयोजकों ने जो आशा और विश्वास प्रकट किया है आर्य जनता को अब उसे पूर्ण करना होगा।

प्रजातन्त्र के नियमानुसार अपने चुने हुए अधिकारियों और कार्यकर्ताओं को उनकी योजनाओ मे सहयोग देना प्रत्येक सदस्य का नैतिक और वैधानिक कर्तव्य होता है। कोई भी योजना आपके (सदस्य मात्र के) सहयोग से ही सफल हो सकती है। सम्बन्धित अधिकारी कार्यकर्ता के रूप मे अलख जगा सकते हैं पर सदस्य मात्र का सहयोग ही योजना घट को पूर्ण कर सकता है। इसी आशा से जयन्ती की अपाल आर्य बन्धुओं के नाम भेजते हुए आयोजकों ने यज्ञ की पूर्ति के लिये प्रत्येक आर्य से एक दिन की आय की भिक्षा मांगी है। लाखों की संख्या में आर्य नर नारी आर्य समाज के महान् मिशन की सफलता में संलग्न हैं। हीरक जयन्ती का आयोजन भी उसी व्यापक प्रचार शैली का एक अङ्ग बन कर आपके सम्मुख उपस्थित है। आर्य समाज का प्रेस सुदृढ़ और सुगठित हो और आज के अर्थ प्रधान युग मे आर्य विचारों का प्रचार किया जा सके इसके लिए प्रेस मजबूत बनाये बिना काम नहीं चल सकता। इसी प्रकार अपनी पूर्व पीढ़ी के विद्वानों का सन्मान और अभिनन्दन करके भी हम आर्य जनों में वैदिक साहित्य और आर्य समाज के प्रति कर्तव्य भावना जागृत करने का सफल प्रयास करने जा रहे हैं। गुरु विरजानन्द धाम स्मारक का शिलान्यास भी प्राचीन वैदिक आर्ष भावना प्राचीन व्याकरण पद्धति, भारतीय गुरु परम्परा के उत्तम आदर्श तथा नवीनतम दृष्टिकोण के साथ अनुसन्धान कार्य आदि के लिये एक सुवर्ण संयोग उपस्थित हुआ है। इस स्मारक द्वारा . न ज्ञान प्रका। के उस महान् कार्य को चिरजीवी बना सकेंगे जो प्राचीन परम्परा ने प्राप्त कर गुरु विरजानन्द जी ने ऋ र दयानन्द जी तक पहुंचाया और फिर हम आलोकित हो रहे हैं। उस प्रकाश स्तम्भ से सदैव प्रकाश मिलता रहे यही स्मारक की सफलता होगी। कुछ बन्धुओं के मन में भ्रम हुआ है कि वहाँ स्मारक मे मूर्ति स्थापना होने जा रही है, इस मिथ्या भ्रम को समाप्त कर दिया जाय क्योकि गुरु विरजानन्द ने भारतीय संस्कृति की सुरक्षा के लिए जो आदर्श पथ प्रदर्शन किया उसके कारण वे अमर हो गये हैं जब भी जहाँ भी भारतीय संस्कृति सभ्यता, साहित्य की चर्चा होगी स्वामी विरजानन्द वहाँ सदैव स्मरण किये जाते रहेंगे। 'कीर्तिर्यस्यसजीवति'। इस स्मारक के निर्माण में आर्य विचारों के प्रचार प्रसार में सुविधा हो सके प्राचीन वाङ्मय के अनुसन्धान का कार्य किया जा सके और वर्णाश्रम धर्म की स्थापना की प्रेरणा मिलती रहे इसी एकमात्र उद्देश्य से इस कार्यक्रम को जयन्ती योजना का अङ्ग बनाया गया है। मथुरा जन्म शताब्दी के अवसर पर इस स्थान की प्राप्ति को इच्छा व्यक्त का गइ थी यह स्थान उसी भावना से प्रेरित होकर ही प्राप्त किया गया है। उस स्थान को खंडहर पड़े रहने देना या उसे आदर्श स्मारक बना देना यह आपके कर्तव्य पालन पर निर्भर है। आर्य जनता इस स्मारक के लिए जो कुछ भी करेगी उसका स्वागत किया जायगा और सबके सम्मिलित सहयोग से ही उसे पूर्ण किया जायगा। मथुरा का स्थान उत्तर प्रदेश में है, उत्तर प्रदेश के आर्यों ने इस स्थान को प्राप्त कर अपनी कर्तव्य भावना और सतर्कता का परिचय दे दिया है और स्मारक निर्माण में भी उसका पूरा सहयोग रहेगा। आशा है अन्य प्रान्तों और क्षेत्रों के आर्य बन्धु भी इस ओर अपना भाग प्रदान कर इस कार्य को अवश्य पूरा करने में सहायक होंगे।

परन्तु इतना महान् कार्य कर्तव्य पालन की भावना जागृत होने पर ही पूर्ण हो सकता है। यदि आप यह अनुभव करते है और मानते है कि यह आयोजन उचित है और सफल होना चाहिए तो आपको पहले अपनी भेंट देनी होगी और वह है न्यून से न्यून अपनी एक दिन की आय। धन देकर ही आप अपना कर्तव्य समाप्त न समझ लें दूसरों को प्रेरित करने के लिए आपको अपना कम से कम एक दिन का समय भी इस कार्य के सहयोग में लगाना होगा। आप विश्वास रखिये जब आप सदुद्देश्य से धन सग्रह करने निकलेंगे आपको अवश्य सफलता मिलेगी। आर्य जनता के सहयोग की पूर्ण आशा के साथ ही यह आयोजन आरम्भ किया गया है। आशा हा नहीं पूर्ण विश्वास है कि आर्य जनता अपने नेताओं, काय कर्ताधिकारियों के इस विश्वास को पूर्ण करेगी और आर्य समाज की प्रगति मे सहायक बन योजना को सफल बनायगी।

सदस्यता की पवित्रता

हमारे पास प्रायः शिकायते आती हैं कि समाजो मे चवन्नी सदस्यता बढ़ाकर प्रजातन्त्र का ताण्डव किया जाता है। यह दृष्टिकोण और कार्य सर्वथा निन्दनीय है। आर्य समाज के नियमों मे ही यह विशेषता है कि उसका सदस्य चन्दा देने और उपस्थिति पूर्ण करने के साथ साथ सदाचारी भी हो। आर्य समाज के सदस्य के लिए सदाचार की मुख्यता का अपना महत्त्व है। क्या हुआ यदि प्रजातन्त्र की आंधी में हमने सदस्य बढ़ा लिए पर उनमें एक भी सदाचारी न हुआ। इसलिए आज दृष्टिकोण में इस प्रकार का परिवर्तन होना चाहिए कि चाहे हमारे सदस्य थोड़े ही हो पर सदाचारी हों दूसरों पर उनके जोवन का असर पड़ सकता हो। आज आवश्यकता अधिक संख्या की नहीं योग्य संख्या को है। आशा है इस संकेत पर आर्यजन गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे और वर्तमान दशा का परिशोधन करेंगे।

आर्य समाज और विदेश प्रचार

आर्य समाज का आदर्श वाक्य है "कृण्वन्तो विश्व मार्यम्" और हमने संपूर्ण संसार को उपकृत करने का दायित्व अपने कन्धों पर स्वीकार किया है। तब हमें गम्भीरतापूर्वक सोचना चाहिये कि हम भारत से बाहर प्रचार और उपकार का कार्य कब और कैसे आरम्भ कर सकेंगे। आज भारत से बाहर आर्य समाज के नाम से जो कुछ हो रहा है वह इतना न्यून है कि उस पर सन्तोष करना आत्म प्रवंचना ही कहा जायगा पिछले एक अंक में फीजी के एक आर्य भाई ने हमारे दायित्व का स्मरण कराते हुए हमें प्रेरणा दी थी कि हम विदेश प्रचार की ओर विशेष ध्यान दें। यदि हम आज की भांति ही उदासीन रहे तो प्रवासी भारतीय थोड़े समय के पश्चात् राष्ट्र को दृष्टि से विदेशी और संस्कृति व सभ्यता की दृष्टि से ईसाई बन जायेंगे। अतः आगामी आर्य महा सम्मेलन में इस प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाना चाहिये और उचित और स्थायी कदम उठाये जाने चाहिये।

आर्य समाज और युवक

यह प्रश्न प्रत्येक समाज और सभा के साथ सम्बद्ध रहता है कि उसमें युवक कैसे आये या युवकों का उस समाज या सभा मे क्या स्थान हो। आर्य समाज एक ऐसी संस्था है जो जीवन को एकांगी न मानकर जीवन के सर्वाङ्ग विकास में विश्वास रखती है। जैसे जीवन की बाल्य, युवा, वृद्धावस्था सभी का पूर्ण विकास आवश्यक है। उसी प्रकार समाज के अन्तर्गत बालकों, युवकों, वृद्धों सभी का विकास होना चाहिये या सभी को विकास का अवसर मिलना चाहिये। इस दृष्टि से आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को युवकों की समस्याओं और उनके दृष्टिकोणों को समझने तथा उनका वैदिक दृष्टिकोण से समाधान करने की ओर अधिक ध्यान देना चाहिये। शुष्क सिद्धान्तवाद या व्यवहार शून्य आदर्शवाद आज के युवकों को प्रभावित नहीं कर सकता। हमे उन्हें प्रभावित और आकृष्ट करने के लिये अधिक सावधानी और गम्भीरता से काम लेना होगा तभी हम उनसे सम्पर्क बना उन्हें अपनी बात सुनने के लिए प्रेरित कर सकेंगे। आज हमें अपनी शैली को इसी दृष्टिकोण से ढालने का प्रयत्न करना चाहिये।

★

आर्य नेता महाशय कृष्ण जी द्वारा जयन्ती योजना का स्वागत और सहयोग का आश्वासन

तीन महत्वपूर्ण काम

उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा ने तीन महत्वपूर्ण काम करने का निश्चय किया है और तीनो शुभ है। वह अपने साप्ताहिक पत्र "आर्यमित्र" की हीरक जयन्ती मना रही है, दो आर्य विद्वानों—प० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय और टिहरी गढ़वाल के अवकाश प्राप्त मुख्य न्यायाधीश प० गङ्गाप्रसाद को, जिनकी सारी उम्र आर्यसमाज की सेवा मे व्यतीत हुई है, अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट कर रही है और गुरु विरजानन्द की पाठशाला पर जहाँ ऋषि दयानन्द ने शिक्षा-दीक्षा ली, एक भवन खड़ा करना चाहती है। इन तीनो कामों के लिए उसने एक लाख रुपया एकत्र करने का निश्चय किया है। ये तीनो काम बहुत उत्साह से आगामी शिवरात्रि—६ से ९ मार्च १९५९ तक पूरे किये जायेंगे। सारे भारत की एक एक आर्य सभा इस निश्चय का हार्दिक स्वागत करेगी और इसे पूर्ण करने के लिए यथासम्भव सहयोग देगी। मैं भी इस स्वागत मे हृदय से सम्मिलित हू।

कन्या गुरुकुल सासनी के उत्सव तिथि में परिवर्तन

उत्सव २३. २४, २५ दिसम्बर को होगा

आर्य जनता को सूचनार्थ निवेदन है कि कन्या गुरुकुल सासनी के उत्सव की पूर्व निर्धारित तिथियो ३०, ३१ दि० १ जनवरी के स्थान पर अब उत्सव २३, २४, २५ दिसम्बर का करना निश्चित हुआ है। आर्य जन नोट कर ले और उक्त तिथियो मे गुरुकुल पधारने की कृपा करे। —रामप्रसाद आर्य

प्रधान कन्या गुरुकुल सासनी

श्री बाबू कालीचरण जी का भ्रमण पुरोगम दिसम्बर ५८

रायबरली ५, अमेठी ६, प्रतापगढ़ ७, सुल्तानपुर ८, फैजाबाद ९, अकबरपुर टांडा १०, शाहगञ्ज, खेतासराय ११, केराकत १२, जौनपुर, चोक जौनपुर, मीरगञ्ज १३,१४, आजमगढ़ १५, मऊनाथभञ्जन १६, बलिया १७, १८, गाजीपुर १९, २०, बनारस २१, २२, फतेहपुर २३, कन्या गुरुकुल सासनी २४,२५।

हीरक जयन्ती समिति की सदस्यता

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरङ्ग सभा २८।७।५८ के निश्चयानुसार हीरक जयन्ती उपसमिति का निर्माण करते समय उपसमिति को अधिकार दिया गया था कि आवश्यकतानुसार सदस्यों को सहयुक्त कर लिया जाय और अब यह निश्चय किया गया है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के सभी अन्तरङ्ग सदस्य जयन्ती समिति के भी सम्मानित सदस्य होंगे। सभी अन्तरङ्ग सदस्यों से सहयोग की प्रार्थना है।

—संयोजक, आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति

स्वामी अमृतानन्द जी की कथा

आर्यसमाज के प्रतिष्ठित विद्वान सन्यासी श्री स्वामी अमृतानन्द जी महाराज आज कल उत्तर प्रदेश मे विविध स्थानों पर उपनिषद् कथा का कार्यक्रम सम्पन्न कर रहे है। अल्मोड़ा आर्यसमाज मे चार मास लगतार कथा के पश्चात् आर्यसमाज हरदोई और लखीमपुर मे अमृत वर्षा कर आपने जनता को अध्यात्म सन्देश दिया। आर्यसमाज हल्द्वानी के उत्सव पर भाषणो द्वारा और उसके बाद कथा सप्ताह मे आपने विद्वत्तापूर्ण रोचक भाषा में उपनिषद् रहस्य को हृदयङ्गम कराया। जनता मे आपकी कथाओं से आर्यसमाज के प्रति श्रद्धा बढ़ रहा है और लोग आर्यसमाज के आध्यात्मिक स्वरूप को समझने लगे हैं। सम्प्रति एक मास से स्वामी जी आर्यसमाज हल्द्वानी मे ही निवास कर रहे है।

ओ३म् शब्द की व्यापकता

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम० ए०, एल० टी०, डी०बी० कालेज, गोरखपुर]

○ चारों वेद जिसका वर्णन करते हैं—तप और नियमादि जिसका कथन करते हैं—जिसकी प्राप्ति के लिए ब्रह्मचर्यादि व्रतों का पालन किया जाता है—वही पद 'ओ३म्' है। आइए, प्रस्तुत लेख में 'ओ३म्' शब्द की व्यापकता पर हम विचार करें। ○

—स० सम्पादक

कठोपनिषद् में कथा आती है कि जब यमाचार्य ने मृत्यु के बाद आत्मा कहां जाती है, इस प्रश्न का उत्तर देने से पूर्व नचिकेता की परीक्षा लेनी चाही और उसने उसके सामने संसार के सभी प्रलोभन रखे फिर भी नचिकेता ने यम से वही आत्म ज्ञान सम्बन्धी प्रश्न ही पूछे और सांसारिक भोग विलासों को ठुकरा दिया तो यम उससे बहुत प्रसन्न हुआ और उसने कहा परलोक पथ प्रदर्शन बहुत थोड़े होने हैं। यह मार्ग कठिन है। इसलिए बहुत तो इसे जानना ही नहीं चाहते और जो जानना भी चाहते हैं उनमें से बहुतों के यह समझ में ही नहीं आता। इतना ही नहीं अवक (अश्रेष्ठ) अर्थात् जो स्वयं श्रेय मार्ग का अनुकरण नहीं करते वे किसी को वह मार्ग दिखा नहीं सकते और जो ईश्वर भक्त होते हैं, वह इस परमात्मा को निदिध्यासन (आत्मा से ग्रहण करने योग्य) का विषय होने से जिज्ञासु को उसका मूल मन्त्र बता देते हैं और जिज्ञासु तर्क कुतर्क को छोड़कर निदिध्यासन द्वारा इस परमात्मा को जान सकता है। अनेक गुणों से भूषित ब्रह्म को जानकर संसार के द्वन्द्व मय सुख और दुःख दोनों को धीर पुरुष छोड़ और अभ्यास तथा वैराग्य से उस ब्रह्म को प्राप्त किया जा सकता है। नचिकेता ने पूछा कि गुरु महाराज वह तो पद मैं जानना चाहता हूं जो मनुष्य के कर्तव्याकर्तव्य, कृत्याकृत्य और तीनों कालों से पृथक् है और जिसका वर्णन समस्त वेद करते हैं और जिसकी प्राप्ति के लिए ब्रह्मचर्यादि व्रतों का पालन करता है। यम ने इसका उत्तर दिया और कहा—

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति, तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत् ॥

अर्थात् चारों वेद जिसका वर्णन करते हैं, तप और नियमादि जिसका कथन करते हैं और जिसकी प्राप्ति के लिए ब्रह्मचर्यादि व्रतों का पालन किया जाता है वह ओ३म् पदवाच्य है और वही अविनाशी तथा सर्वाधार है और उसी के जानने से मनुष्य उच्च गति प्राप्त किया करता है।

'ओ३म्' यह परमात्मा का मुख्य नाम है। आज कल जैसे एन० ई० आर० (नार्थ ईस्टर्न रेलवे) आदि संक्षिप्त नाम कहने की प्रथा है वैसे ओ३म् यह छोटा सा शब्द परमात्मा के सभी गुणों एवं उसकी व्यापकता की भावना का सूचक है। यह एक संक्षिप्त नाम है। उपनिषद् काल में भी बहुत बड़ी बड़ी शिक्षाओं का संक्षेप में कहने की प्रथा प्रचलित थी। यथा ऋषि को दान दो, इन्द्रियों का दमन करो और दया करने का उपदेश क्रमशः मनुष्यों देवताओं और असुरों को देना है तो ऋषि द द द कहकर अपने उपदेश और शिक्षा को उनके सामने प्रस्तुत कर देता था। इसी प्रकार का संक्षिप्त नाम 'ओ३म्' है। 'ओ३म्' शब्द की व्याख्या करना आसान नहीं। 'ओ३म्' शब्द का धात्वर्थ है 'रक्षा करने वाला'। इस रक्षा की भावना को ध्यान में रखते हुए ही वेदों में, उपनिषदों में, गुरुग्रन्थ में, पुराणों में और यहाँ तक कि तन्त्र शास्त्रों में भी 'ओ३म्' के बिना कोई कार्य नहीं हुआ। तन्त्र वालों ने अनेक मन्त्र बनाए पर 'ओ३म्' को नहीं छोड़ा। भगवान् बुद्ध ने ईश्वर पर विचार नहीं किया पर 'ओ३म्' को उन्होंने भी नहीं छोड़ा। पूज्य आनन्द स्वामी जी महाराज ने लिखा है कि गंगोत्री के रास्ते में 'वृषल' नाम का एक गांव है। एक छोटा सा बुद्ध मन्दिर वहां बना है। उसकी एक एक ईंट पर ओ३म् मणि पद्मासने हाम' लिखा हुआ है। श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी वाणी का आह्वान एक ओंकार से किया है। गुरु जी की वाणी में आता है—

हरि जी सदा ध्याय
तू गुरमुख एक ओंकार
ओंकार ब्रह्मा उत्पत्त
ओंकार वेद निर्माए।
जल थल, महा थल
पूर या स्वामी सिरजन हार
अनेक भांति हुई पसरया
नानक हर ओंकार।

गोपथ ब्राह्मण के एक ऋषि ने आदेश दिया है कि आत्मा के दुःखों की चिकित्सा 'ओ३म्' है। आत्मा के मोक्ष का द्वार 'ओ३म्' है। 'ओ३म्' की धुन से एक महान् ओंकार उत्पन्न होती है। वेद ने उसको आत्मा का सहारा कहा है। इस प्रकार 'ओ३म्' शब्द का धात्वर्थ रक्षण है।

सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में स्वामी जी महाराज ने 'ओ३म्' शब्द की व्याख्या करते हुए उसकी व्यापकता बतलाई है। 'ओ३म्' शब्द 'अ उ म्' से बना है। माण्डूक्योपनिषद् में लिखा है कि 'अकार प्रथमा मात्रा, आप्तेः आदिमत्वाद्वा। उकारो द्वितीया मात्रा, उत्कर्षात् उभयत्वाद्वा। मकारः तृतीया मात्रा, मितेः अपीतेर्वा।

उपनिषद् की इस व्याख्या का सरल भाव यह है कि 'ओ३म्' शब्द का 'अ' 'आप्लृ व्याप्तौ' धातु के 'आ' का अथवा 'आदि' शब्द के 'आ' का ह्रस्व मात्रिक रूप है। 'उ' शब्द उत्कर्ष शब्द के आदि का उ है या उभय शब्द के आदि 'उ' है और 'म्' 'मा' धातु का हलरूप है अथवा अपीति का 'प' 'म' में परिवर्तित होकर 'ओ३म्' बन गया है। अर्थात् 'ओ३म्' शब्द के 'अ' का अर्थ आप्त होना या आदि वाला होना, 'उ' का अर्थ ऊपर खिंचना, निकलना या दो का होना और 'म्' का अर्थ है ज्ञानवान् होना या लीन होना।

इन्हीं अर्थों को ध्यान में रखकर हम सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित 'ओ३म्' में से प्रत्येक अक्षर के तीन तीन अर्थ स्वामी जी महाराज द्वारा प्रदर्शित समझ सकते हैं। आइए इस पर विचार करें।

अकार से–विश्व, विराट्, अग्नि
उकार से–तैजस हिरण्यगर्भ वायु
मकार से–प्राज्ञ, ईश्वर, आदित्य इन नामों का श्रेणी विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है। विश्व, तैजस और प्राज्ञ प्रथम श्रेणी के नाम हैं। यह नाम शरीर के साथ परमात्मा के सम्बन्ध को बतलाते हैं। शरीर की तीन अवस्थायें होती हैं। जागृत, स्वप्न सुषुप्ति। जागृत अवस्था का नियामक होने से परमात्मा नाम तैजस है। स्वप्नावस्था में सूर्यादि ज्योतियाँ काम नहीं देतीं उस समय आन्तरिक ज्योति काम देती है इसलिए इस अवस्था को ज्योति प्रधान या तेज प्रधान कहा जाता है। शरीर सुषुप्ति अवस्था का नियामक होने से परमात्मा को प्राज्ञ कहते हैं। प्राज्ञ शब्द का अर्थ कुछ विद्वान् कगन रहित करते हैं। उनका कहना है कि उस समय अर्थात् सुषुप्ति की अवस्था में जीवात्मा जागृत और सुषुप्ति की अवस्था से अपरिचित रहता है। सुषुप्ति में जीव को सांसारिक या मानसिक कोई कष्ट नहीं होता। उसकी प्रज्ञा सब सांसारिक दुःखों से रहित होकर केवल मात्र आनन्द रूप से परिचित हो रही होती है।

इन नामों का 'अ उ म्' के अर्थों से भी सम्बन्ध है। अर्थात् विश्व, विराट् और अग्नि का सम्बन्ध 'अ' के साथ 'उ' के अर्थों का सम्बन्ध तैजस हिरण्यगर्भ और वायु के साथ और म्' के अर्थ ज्ञान और लय का सम्बन्ध प्राज्ञ, ईश्वर और आदित्य के साथ पूरी तरह चरितार्थ होता है। कस, यह विस्तारभय से इस लेख में न बताकर हम जिज्ञासु पाठकों से प्रार्थना करेंगे कि वह मेरे पूज्य बड़े उपाध्याय श्री पं० विश्वनाथ जी विद्यालंकार की गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित सन्ध्या रहस्य पढ़ने का कष्ट करें।

आर्य कन्वेन्शन की भावनाओं को दृष्टि में रखते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग द्वारा आर्य जनता का मार्ग दर्शन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की दि० ७४-८-५८ की अन्तरङ्ग तथा सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की दि० २५-८-५८ की बैठकों में निश्चय हुआ था कि हिन्दी आन्दोलन सम्बन्धी भावी पग पर विचार करने के लिए शीघ्र से शीघ्र एक आर्य कन्वेन्शन बुलाया जाय। तदनुसार यह कन्वेन्शन दि० २२-११-५८ को दयानन्द भवन दिल्ली मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्रीयुत स्वामी अभेदानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में मध्याह्नोत्तर २ बजे से प्रारम्भ होकर सायंकाल ७ बजे तक हुआ। सम्मेलन में सार्वदेशिक सभा, सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति तथा हिन्दी रक्षा समिति पंजाब के समस्त सदस्य, प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारी तथा प्रतिनिधि एवं अन्य विशिष्ट आर्य महानुभाव आमन्त्रित किए गए थे। पंजाब, उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल, मध्यप्रदेश आन्ध्र आदि प्रायः प्रत्येक प्रान्त के चोटी के आर्यों ने लग भग २०० की संख्या में कन्वेंशन में भाग लिया जिनमें सर्वश्री घनश्यामसिंह गुप्त, श्री डा० गोकुलचन्द नारंग, श्रीयुत पं० विनायकराव विद्यालङ्कार (भूतपूर्व मन्त्री हैदराबाद राज्य) श्रीयुत पं० नरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद, श्री डा० महावीर सिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत, श्री मिहिरचन्द जी धीमान-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल-आसाम, श्रीयुत इन्द्रसेन जी प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब, श्री प्रकाश वीर जी शास्त्री एम०पी०, श्री नरदेव स्नातक एम०पी०, श्री ला०रामगोपाल जी प्रधान मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री प्रो० रत्नसिंह जी एम०ए०, श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री मन्त्री भाषा स्वातन्त्र्य समिति, श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी प्रधान हिन्दी रक्षा समिति पंजाब, श्री एन० डी० ग्रोवर जी मन्त्री हिन्दी रक्षा समिति पंजाब, श्री आचार्य भगवानदेव जी, श्री आचार्य रामदेव जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती प्रधान मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी प्रधान सचालक आर्य वीर दल, श्री प्रो० शेरसिंह जी एम० एस० ए०, श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार, श्री बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट कार्यवाहक प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, श्री फूलनसिंह जी प्रधान मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, श्री बाबू कालीचरण जी आर्य, श्री बाबू जगनन्दन लाल जी एडवोकेट, श्री प्रि० भगवानदास जी, श्री प्रिंसिपल महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री, श्री प्रि० लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित, श्री भगवतीप्रसाद जी आर्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक सम्पादक "आर्यमित्र" श्री वीरेन्द्र जी "प्रताप" जालन्धर, श्री प्रो० रामसिंह जी एम० ए०, श्रीमती विमला कोहली, श्रीमती माता सुखदादेवी हल्द्वानी, श्रीमती शकुन्तला देवी गोयल मेरठ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

कन्वेंशन मे सत्याग्रह के स्थान के समय से लेकर अब तक कि स्थिति पर सिंहावलोकन और भावी पग के विषय में गम्भीरतापूर्वक विचार किया गया। कन्वेशन में यह भावना उग्र रूप में प्रतिलक्षित हुई कि सत्याग्रह को स्थगित हुए १० मास से अधिक समय हो चुका है, आर्य समाज ने सद्भावनापूर्वक वातावरण को शान्त बनाने में सरकार को पूरा-पूरा योग दिया है फिर भी सरकार ने अपने आश्वासनों को पूरा करने की दिशा में न केवल कोई पग ही नहीं उठाया अपितु आर्यसमाज की कठिनाइयां बढ़ा दी हैं। सत्याग्रहियों, सत्याग्रह से सहानुभूति रखने वालों तथा उसके लिए सक्रिय काम करने वालों के साथ प्रतिशोधात्मक दुर्व्यवहार हो रहा है। ऐसी अवस्था में अपनी मांगों की स्वीकृति के लिये आर्यसमाज के समक्ष सत्याग्रह को पुनः चालू करने के सिवा और कोई मार्ग नहीं रहा है। कन्वेंशन म पंजाब के राज्यपाल श्री गाडगिल महोदय के प्रयत्नों की भी चर्चा हुई जो भाषा समस्या के समाधान के लिए संलग्न है। उनके प्रेस वक्तव्यों पर भी विचार होता रहा। हिंदी रक्षा समिति पंजाब द्वारा आयोजित अम्बाला कन्वेंशन का प्रस्ताव भी विचारार्थ प्रस्तुत हुआ जिसमें सत्याग्रह को दो मास के पश्चात् पुनः जारी करने का निश्चय प्रकट किया गया था। कन्वेंशन में सार्वदेशिक सभा के कार्यालय की ओर से भी एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया जो अन्त में विचार का विषय बना कन्वेशन के भावी पग के निर्देशार्थ अन्तिम निर्णय सार्वदेशिक सभा की अन्तरग सभा पर छोड़ दिया जो ३१-११-५८ को प्रातः ८ बजे दयानन्द भवन मे हुई। अन्तरंग सभा ने पंजाब के राज्यपाल के प्रयत्नों का मार्ग प्रशस्त बनाने के उद्देश्य से ३ मास तक और प्रतीक्षा करने का निश्चय किया और यदि इन तीन महीनों के बाद भी निराशा की वर्तमान स्थिति बनी रही तो सत्याग्रह का अन्तिम निर्णय करने के लिए आर्य महासम्मेलन बुलाया जायगा।

दि० २३-११-५८ को सायंकाल ३ बजे सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की बैठक हुई जिसमें मुख्यतया पंजाब सरकार द्वारा नियुक्त सद्भावना समिति "श्री प्रि० जोधसिंह जी तथा श्री प० जयचन्द्र जी विद्यालंकार" के निमंत्रण पर मिलने के लिए शिष्ट मंडल के सदस्यों की नियुक्ति हुई। यह शिष्ट मंडल २४-११-५८ को दिल्ली में श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त की अध्यक्षता में मिल चुका है। शिष्ट मण्डल के सदस्य हैं—(१) श्री प्रो० रामसिंह जी (२) श्री बाबू जगनन्दन लाल जी ऐडवोकेट (३) श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री (४) श्री प्रो० शेरसिंह जी (५) श्री वीरेन्द्र जी।

सुझाव और सम्मतियाँ

चरित्रवानों का आदर ही अनैतिकता का समाधान है

आर्यमित्र के प्रायः प्रत्येक अंक में नैतिकता के प्रति कुछ न कुछ विचार छपते रहते हैं, अन्य धार्मिक पत्र भी इस विषय पर लेख लिखते रहते हैं, संस्थाओं के नेता भी चाहे वह धार्मिक राजनैतिक व सामाजिक हों, इसका प्रयत्न करते हैं कि हमारी संस्था का प्रत्येक व्यक्ति चरित्रवान् हो, आदर्श हो, परन्तु होता इसके विपरीत है, और देश बराबर अवनति की ओर ही जा रहा है, चरित्रहीनता बढ़ती जा रही है। नेता और चुनाव विजेता, समाचार पत्र और प्रचारक इसके मूल कारण को नहीं खोजते। जब तक विष वृक्ष की जड़ें न उखाड़ दी जावें, अथवा जब तक ऐसा प्रबन्ध न किया जावे कि उसकी जड़ों को भूमि से रस न मिले, तब तक विष वृक्ष सूख नहीं सकता। इस नैतिक पतन व चरित्रहीनता की जड़ें तृष्णा, धनलिप्सा, भोग व भोगेच्छा हैं। वैदिक संस्कृति के निर्माण करने वाले धार्मिक ग्रन्थों व नीति ग्रन्थों में कहीं भी अर्थ, काम की धन व भोग की आचरण व चरित्र से प्रधानता नहीं दी गई है परन्तु अन्यों की बात क्यों कहें आज हमारी भी यही दशा है।

आर्य समाज भी इस रोग से अछूता नहीं है। इसमें भी धन व धनी की प्रधानता हो गई है। हम धनवान को ही प्रधान का पद देना चाहते हैं, कि जिससे वह प्रसन्न होकर हमें कुछ दान देता रहे। हर काम में उसी को आगे रखते हैं चाहे वह सबसे बड़ा काला बाजार, चोर बाजार करने वाला, रिश्वतखोर, धोखा देने वाला हो, परन्तु हो मालदार। उसके मुकाबले हम चरित्रवान की प्रतिष्ठा और आदर करने में कतराते हैं फलतः साधारण व्यक्ति भी जिसका चरित्र बलवान् नहीं है, धन की प्रतिष्ठा को देखकर, आचरण, चरित्र की निष्ठा को भूलकर किसी भी तरह अच्छे या बुरे साधनों से धन की ही ओर दौड़ता है और स्वयं पाप पंक में गिरता है औरों को गिराता है, अड़ोसी-पड़ोसी को दुःखी करता है विश्व को गन्दा करता है। इस प्रकार हमारा गलत व्यक्ति को महत्व देना सामाजिक बुराई में सहायक होता है।

आर्य समाजों की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक सभा व आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से निवेदन है कि वह धन को महत्व विद्या, आचरण शुभ गुणों के मुकाबले में न देने की भावना बढ़ावे।

आर्य समाजों को प्रेरणा की जाय कि वे सदाचारी के मुकाबिले व्यसनी धनी को पद न दें। मुख्य पद उसी को दें कि जो गरीब होते हुए भी "सर्वभूत हितेरताः" का आचरण वाला हो। आर्य समाज इस्लामनगर ने इसी आदर्श को सामने रख कर अपनी समाज का प्रधान पद गरीब, चन्दे से मुक्त आर्य सभासद वेदान्तनिष्ठ, वृद्ध श्री भजनलाल जी को सर्व सम्मति से दिया है। परन्तु आर्य समाज जनतन्त्र बहुमत को मानकर चलने वाली संस्था है, इसलिए पार्टीबन्द दुश्चरित्र अनार्य व्यक्ति भी इसमें जीतकर ऊपर आ सकते हैं। इसका उपाय भी सोचना ही होगा

—कृष्णस्वरूप विद्यालंकार
इस्लाम नगर (बदायूं)

क्या इस जन्म के किसी कर्म का फल इस जन्म में नहीं मिल सकता?

[श्री प० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय, एम० ए०]

★ श्री बाबू कालीचरण जी का कर्मफल सम्बन्धी लेखमाला की समाप्ति पर श्रद्धेय श्री उपाध्याय जी ने अपने विचार प्रस्तुत लेख में प्रकट किये हैं जिनसे उत्पन्न प्रश्नों पर दूसरा दृष्टिकोण सामने आ रहा है। आशा है पाठक उत्पन्न प्रश्नों का समाधान इस लेख में पा सकेंगे। —सम्पादक ★

इस विषय पर मेरा और श्री बाबू कालीचरण जी का सम्वाद (विवाद नहीं) कुछ दिनों से चल रहा है पाठक वृन्द नोट कर लें कि मैं और श्री बाबू जी घनिष्ठ मित्र हैं मेरे और उनके विचार अधिकतर एक ही हैं। भेद एक दो मौलिक बातों में है, यह विमर्श प्रतिद्वन्द्विता के रूप में नहीं है। अत पाठकों को हम दोनों के व्यक्तित्व की उपेक्षा करके केवल प्रमाण और युक्तियों पर ही ध्यान देना चाहिए।

भेद का वर्तमान विषय यह है श्री बाबू जी का सिद्धान्त यह है कि इस जन्म के किये किसी कर्म का फल इस जन्म में नहीं मिल सकता प्रत्येक कर्म का फल इस जीवन की मृत्यु के पश्चात् दूसरी योनि या जन्म में ही प्राप्त होगा। फिर मेरा सिद्धान्त यह है कि इस जन्म में भी बहुत से कर्मों का फल मिलता है और बहुत से अगले जन्मों (एक या अनेक) के लिए स्थगित हो जाते हैं।

पहले मेरा भी विचार वही था जो श्री बाबू जी का है यही विचार पूज्य स्वामी दर्शनानन्द जी का था मैंने इस विषय में उनके मुख से युक्तियां सुनी थीं और मुझ पर उनका प्रभाव था वह रोग में दवा नहीं खाते थे। रोग में कोई हानिकारक चीज खिला दी तो खा लेते थे उनका विश्वास था कि रोग की पीड़ा पूर्व जन्म के ही कर्मों का फल है। अन्य आर्य विद्वान उनसे सहमत नहीं होते थे कभी कभी शास्त्रार्थ भी हो जाते थे। परन्तु उनकी युक्तियों का काटना सरल न था श्री बाबू जी ने भी अधिकतर वही युक्तियाँ

कहीं नई युक्तियां भी हैं। मैंने जो इधर कर्म के सिद्धान्त पर वेदवाणी की लेखमाला लिखी वह भी श्री बाबू जी के एक लेख की प्रेरणा थी। श्री स्वा० दर्शनानन्द जी यह कहा करते थे कि किसी के आयु की अवधि सांसों की संख्या द्वारा निश्चित होती है, इसी विषय पर श्री बाबू जी ने किसी पत्र में कुछ गणित का हिसाब लगाकर इसकी पुष्टि की थी। इससे बीसियों वर्ष पहले प्रबल युक्ति और प्रमाणों के आधार पर मेरे विचार बदल चुके थे मैं नहीं समझ सका कि यदि शुभ कर्मों का फल सुख है और अशुभ कर्मों का दुःख तो इस सिद्धान्त का समन्वय सांसों की गिनती से किस प्रकार हो सकता है। श्वास तो जीवन की अनेक क्रियाओं में से एक है, यह अनेक शारीरिक घटनाओं का कारण तो है परन्तु सुख दुःख का माप दण्ड

तो नहीं न साधा कारण या साधन है। इसी भ्रान्ति को दूर करने के लिए मैंने लेखमाला लिखी और विद्वानों से विचार भी मांगे। परन्तु श्री बाबू जी को छोड़ कर अन्य किसी ने इस विचार में सहयोग देने की कृपा नहीं की। इसलिये श्री बाबू जी मेरे तथा जनता के धन्यवाद के पात्र हैं। उन्होंने अपने पक्ष की पुष्टि में जो युक्तियां दी हैं वह विचार करने योग्य हैं और मैंने उन पर स्वतन्त्रता से विचार किया है।

स एतेन यागेन कुर्यादिति नात्रतद् गम्यते इह जन्मनि सम्भवतीति। यथा नन्तरं नोपलभ्यते। तत्र प्रत्यक्षानुमानाभ्यां न गम्यते। शब्देन त्वस्त्येव गतिः। यज्ञ कालान्तरेऽन्यत्कारणाभावात् नैष दोषः। अप्यदोष भविष्यति एतदपि। यत्वामुष्मै कामाय यज्ञा आह्रियन्त इति। अत्रोच्यते एवमस्य श्रूयते। इहास्य फलं तेन त्वां न याजयामि। यस्यामुत्र फलं तेन त्वा याजयिष्यामीति। तस्मादेतत् परिहृत मिति।

सिद्धान्त-विमर्श

यही प्रश्न कर्म मीमांसा (पूर्व मीमांसा) में महर्षि जैमिनि ने अध्याय ४ पाद ३ अधिकरण ११ के सूत्र २७ और २८ में उठाया है। पूर्व पक्ष है

सत्रसर्वेऽवशेषात् (सू० २७)

२८ वां सूत्र है ... सिद्ध ... र्थोऽयस्त्र प्रत्ययसयोगित्वात् (सू० २८)

शबर स्वामी ने पूर्व पक्ष को इस प्रकार लिखा है कि इस जन्म में कर्मों का फल नहीं मिलता। इसका एक प्रमाण दिया है कैकयो यन्न विवत्सन दाल्भ्य मुवाच, अनया स्वराष्ट्र प्रतिपादन य येष्टया याजयेति। (कैकय ने दाल्भ्य से कहा कि स्वराष्ट्र देने वाले यज्ञ को मुझ से कराइये) दाल्भ्य ने उत्तर दिया न वै सौम्य राष्ट्रप्रतिपादनं वेत्थ अमुष्मै कामाय यज्ञा आह्रियन्ते इति जन्मान्तर फलतां दर्शयति हे सौम्य मत समझो कि यज्ञ से राष्ट्र का प्रतिपादन होगा। यज्ञ तो परलोक के लिये किये जाते हैं) इस उत्तर से स्पष्ट है कि फल जन्मान्तर में ही मिलता है यह था पूर्व पक्ष। इसका उत्तर २८ वें सूत्र में है, इसका भाष्य देखिये।

इहैवैषा सिद्धिर्योगस्य। उत्पत्त्या यागो न सम्भवति। य परन् कामयते

काम्य यज्ञों का फल इसी जन्म में मिलता है ऐसा न मानोगे तो इस का यह अर्थ कदापि नहीं कि इस जन्म में फल न मिलेगा। पूर्वपक्ष ने यह आक्षेप किया कि फल मिलता प्रतीत नहीं होता इसका उत्तर यह है कि प्रत्यक्ष और अनुमान से न भी मालूम हो परन्तु श्रुति तो इसको बताती है। यदि कहो कि कालान्तर में फल का अन्य कारण भी हो सकता है तो हम कहेंगे कि हो सकता है। परन्तु यह भी तो हो सकता है अब कैकय दाल्भ्य का उत्तर तुम समझे नहीं दाल्भ्य का यह तात्पर्य नहीं था कि काम्य यज्ञों का फल इस जन्म में होता ही नहीं ऋषि का तात्पर्य यह था कि मैं ऐसा यज्ञ नहीं कराऊँगा जिसका फल इस इस जन्म में मिले मैं ऐसा यज्ञ कराना चाहता हूँ कि तुम्हारा दूसरा जन्म भी सुधर जाय इन सूत्रों का अधिकरण भी यही है कि काम्येष्टिषु इह का मुष्मिकफलत्वाधिकरणम्। काम्यानामैहिकामुष्मिक फलत्वाधिकरणम्) काम्य कर्मों का फल इस जन्म में भी मिलता है और अन्य जन्मों में भी मेरा पक्ष यही है।

वस्तुतः पूर्व मीमांसा का यह प्रसिद्ध नियम है कि जब तक दृष्ट फल का पता चलता हो अदृष्ट फल की कल्पना नहीं करनी चाहिये अर्थात् यदि किसी विहित शुभ कर्म का शुभ फल प्रत्यक्ष दीखता हो या अशुभ निषिद्ध कर्म का अशुभ फल प्रत्यक्ष दीखता हो उस समय यह कल्पना नहीं करनी चाहिये कि अमुक कर्म के अदृष्ट फल होगा। अदृष्ट (पारलौकिक या आयुष्मिक) फल की कल्पना तभी की जाती है जब फल दृष्टिगोचर न हो न अनुमान से सिद्ध हो।

यही सिद्धान्त पातञ्जल योग दर्शन या उसके भाष्यकार व्यास का है।

क्लेशमूलः कर्माशयो दृष्टादृष्टजन्म वेदनीयः।

(योगदर्शन साधनपाद सू० १२)।

व्यास जी लिखते हैं —

तत्र पुण्यापुण्यकर्माशयः कामलोभ मोहक्रोधभवः। स दृष्टजन्मवेदनीय श्चादृष्टजन्मवेदनीयश्च

भोजवृत्ति में लिखा है —

अस्मिन्नेव जन्मनि अनुभवनीयो दृष्टजन्मवेदनीयः जन्मान्तरानुभव नीयोऽदृष्टजन्मवेदनीयः।

जिस फल का अनुभव इस जन्म में होता है वह दृष्ट जन्मवेदनीय है। जो जन्मान्तर में अनुभव हो वह अदृष्ट जन्म वेदनीय है।

व्यास वृत्ति में योगदर्शन के अगले (१३ वें) सूत्र का भाष्य करते हुए अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में इसी शास्त्र में इसी सिद्धान्त का वर्णन किया है।

तस्माज्जन्मप्रायणान्तरे कृतः पुण्यापुण्यकर्माशयप्रचयो विचित्रः प्रधानोपसर्जनभावेनावस्थितः प्रायणाभिव्यक्त एक प्रघट्टकेन मरणं प्रसाध्य सम्मूर्छित एकमेव जन्म करोति। तच्च जन्म तेनैव कर्मणा लब्धायुष्कं भवति। तस्मिन्नायुषि तेनैव कर्मणा भोगः सम्पद्यत इति।

इसलिये जन्म और मरण के बीच में किये शुभाशुभ कर्मों का संचय बड़ा ही विचित्र है। कोई उनमें प्रधान कर्म हैं जो शीघ्र फल देते हैं। कोई उपसर्जन भाव से उपस्थित होते हैं। जो विलम्ब से फल देने वाले होते हैं इस प्रकार अनेक कर्म एक जन्म के कारण होते हैं। वे प्राणी के मरण समय कर्माशय में संचित होकर जन्म का कारण होते हैं। उन्हीं के अनुसार आयु मरण की व्यवस्था होती है। इत्यादि।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

हम सविनय निवेदन करेंगे कि जिज्ञासु वर्ग पूरे प्रकरणों को पढ़ें। श्री बाबू जी ने महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों से जो उद्धरण दिये हैं वे कोई भी इस सिद्धान्त का खण्डन नहीं करते। विषय के दो भाग हैं (१) कुछ कर्मों का फल इस जन्म में भी मिलता है। (२) कुछ कर्मों का फल अगले एक या अनेक जन्मों में मिलता है। दूसरा भाग हम दोनों का स्वीकार है। अतः जो युक्तियाँ या प्रमाण दूसरे भाग को ही पुष्ट करते हैं उन पर विचार अनावश्यक और अप्रासंगिक है। प्रमाण ऐसे चाहिए जो पहले भाग का स्पष्ट शब्दों में खण्डन करते हैं।

अब कुछ युक्तियों को लीजिये। कर्मों का फल तो कर्मों के पश्चात् ही मिलेगा 'पश्चात्' शब्द में इस जन्म का शेष भाग भी शामिल है। सब कर्मों के फलीभूत होने में समानकाल तो लगता नहीं। असमान काल में इस जन्म का शेष भाग सर्वथा क्यों छोड़ दिया जाय इसके लिए प्रबल कारण होना चाहिये। मैंने पालक और कटहल का दृष्टान्त दिया था। कोई बीज दो मास में फलता है कोई आठ वर्ष में यह केवल दृष्टान्त था फल आने के काल की असमानता का। इस पर श्री बाबू जी लिखते हैं—"मेरा कहना है कि चाहे कितना ही कम समय किसी फल के लिये मानो वह कम से कम समय यदि आपका दो मास है तो मेरा कर्म फल के लिये सबसे कम समय अगला जन्म है।" (देखो आ० मि० १२ अक्टूबर ५८ पृष्ठ ५, कालम १, पंक्ति १६ १८)

(समीक्षा) मैंने दो मास का दृष्टान्त कम से कम समय बताने के लिये नहीं दिया था। कोई नहीं बता सकता कि कम से कम कितना समय लगता है और अधिक से अधिक कितना। कुछ कर्मों का फल अति शीघ्र मिल सकता है कुछ का कई जन्मों में मिलेगा। यह तो कर्मों की निज प्रकृति के आश्रित है। आपने कम से कम 'अगला जन्म' किस आधार पर बताया? अगले जन्म की तो कोई निश्चित अवधि है ही नहीं। ४ वर्ष भी और ९० वर्ष भी। वर्ष होंगे सूर्य और पृथिवी की चाल की नाप से। कर्म के फल का उन ग्रहों या उपग्रहों की चाल से क्या सम्बन्ध? कल्पना कीजिये कि मोहन ने २५ वर्ष की आयु में एक शुभ कर्म किया। वह ३० वर्ष की आयु में मर गया। और उनका उसे ५ वर्ष में फल मिल गया। दामोदर ने भी उसी २५ वर्ष की आयु में ठीक वैसा ही शुभ कर्म किया और उसकी मृत्यु ८५ वर्ष की आयु में हुई तो उस के कर्म को फलीभूत होने के लिये ६० वर्ष क्यों लगें? "मृत्यु ही यहां अच्छी है जीना नहीं अच्छा।"

(बाबू जी) जिस प्रकार वटवृक्ष के बीज में वट का वृक्ष है परन्तु भूमि के गर्भ में ही उसके लिये अंकुर निकलने आरम्भ होते हैं बाहर नहीं इसी प्रकार मनुष्य के कर्म भी माता के गर्भ में ही आकर अंकुर निकालेंगे बाहर नहीं। कर्म भी प्रत्येक योनी जाति के बीज ही हैं उनके लिये उपयुक्त भूमि चाहिये और वह माता का गर्भ ही है।

(मेरा निवेदन) यह युक्ति और दृष्टान्त दोनों की अछूतें हैं। मैंने स्वामी दर्शनानन्द से भी इन को नहीं सुना था। दलील बिलकुल नई है। परन्तु संगीत समझ में नहीं आई। बाबू जी स्वयं मान चुके हैं कि कर्मों का फल तो सुख या दुःख के रूप में ही होगा। फिर माता के गर्भ में कौन सी ऐसी विशेषता है कि कर्म को पकने के लिए माता के गर्भ की भट्ठी अत्यन्त आवश्यक है ही। और क्या सभी कर्म अंकुरित होंगे कि एक दो। यदि सब अंकुरित हो गये तो उनका फल गर्भ से बाहर आकर एक साथ मिलना चाहिये। शेष जन्म में जो भोग होंगे उनको आप किन कर्मों का फल कहेंगे। सोचिये तो सही। घड़े में रक्खे रक्खे अंकुर निकलते तो मैंने देखा। वस्तुतः दृष्टान्त इतना विषम है कि विषमता खोजने के लिए प्रयास करने की भी आवश्यकता नहीं।

मैंने अपने किसी लेख में लिखा था कि प्रवृत्ति ऐसी होती है कि यदि फल बहुत दिनों में मिलने वाला हो तो उसके करने की प्रबल इच्छा नहीं होती। बाबू जी ने यह ठीक ही लिखा है कि प्रवृत्ति तो कम काम करके अधिक फल की भी होती है। अर्थात् केवल हमारी इच्छाओं पर कर्म का फल आधारित नहीं है। परन्तु आप यह तो कह ही नहीं सकते कि फल प्राप्ति की इच्छा कर्म की प्रवृत्ति को कोई प्रेरणा देती ही नहीं। बिना इच्छा के काम नहीं किया जा सकता, केवल अगले जन्म के फल की प्राप्ति की संभावना केवल मुमुक्षु को ही प्रेरक हो सकती है जिसका आप सब श्रेष्ठ कर्म कह सकते हैं। परन्तु कर्मों के शुभ और अशुभ होने की मात्रायें तो अनेक हैं। हमारी प्रवृत्ति दूषित भी हो सकती है। परन्तु प्रवृत्ति मर्यादित भी तो होती ही है। दूषित प्रवृत्ति से किया हुआ कर्म अशुभ होगा। उस अशुभ कर्म का भी तो फल मिलेगा ही। क्या उस अशुभ कर्म के करने के लिये भी चिरकाल पीछे मृत्यु के पश्चात् माता का गर्भ ही चाहिये। माता का गर्भ केवल शरीर बनाने की फैक्टरी है। फल तो शरीर के अतिरिक्त और भी होंगे एक और बात है माता के गर्भ में आना भी तो किसी पिछले कर्म का फलरूप ही होगा (देखिये जात्यायुर्भोगः)। यह कर्म कब पका? माता के गर्भ में आने से पूर्व के जीवन में। यह पहले जन्म के समय पहली माता के गर्भ में? फिर उस पर वही प्रश्न कीजिये और अवस्थादोष का चक्कर बना बनाया है।

एक मजेदार बात है। जिन कर्मों का फल मुक्ति है वह तो वे पके ही रह जायेंगे क्योंकि उनको माता का गर्भ नसीब न होगा। जीवन-मुक्ति की मृत्यु तो होगी। पुनर्जन्म नहीं। इस पर श्री बाबू जी ने एक लम्बा पैरा लिखा है उसमें कुछ विनोद भी है। परन्तु उसकी मीमांसा सिद्धान्त विमर्श से सम्बन्ध नहीं रखती।

मैं मानता हूं कि प्रभाव और फल में भेद है। परन्तु इतना ही नहीं जितना आप समझते हैं, हर एक फल प्रभाव नहीं है। मनुष्य जन्म भर अनेक भोग-भोगता है और उसकी प्राप्ति के लिये कर्म भी करता है यदि उन सब कर्मों को भोग मान लिया जायगा तो कर्म और भोग में कोई भेद न रहेगा। क्योंकि जो कुछ शुभ या अशुभ कर्म किये जायेंगे उनका कोई न कोई दूरस्थ या समीपस्थ सम्बन्ध फल से होगा।

यह ठीक है कि "जनता जहां फल और प्रभाव के न समझने में भूल करता है वहां कारण और साधन के न समझने मे भी भूल करती है।" इसका एक कारण है। इन दोनों में इतना सादृश्य है और यह इतने मिले जुले पाये जाते हैं कि दूध और पानी का अलग अलग देख सकना कठिन हो जाता है। परन्तु मैं बड़ी नम्रता से यह कहने का साहस करूंगा कि यह भूल आप भी कर रहे हैं। कोई तो साधन को कारण समझ लेते हैं आप हर कारण को साधन समझ रहे हैं और हर फल का प्रभाव। आप का लेख इसी उलझन से भरा पड़ा है। आप अपने इन शब्द पर पुनर्दृष्टि डालने की कृपा करें—"इस जन्म का व्यभिचार और डाका साधन है। कार्य है और अगले जन्म में दुःख देगा।" अर्थात् इस जन्म में नहीं। यहां आपने उस समस्त मापदण्ड को समाप्त कर दिया जो मनुष्य का नित्य शुभ और अशुभ कर्म की पहचान कराया करता है। कर्म के सिद्धान्त पर यह बड़ा भारी आघात है। यदि व्यभिचार और डाका कार्य्य और साधन हुये तो आपके लेखानुसार "वह समस्त कर्म उनका भोगरूपी कर्म ही हुआ। समस्त भोग ही हुआ" (अङ्क १९ अक्टूबर पृष्ठ ५, कालम १ पंक्ति ३०)। अब भोग है तो कर्म नहीं। यदि कर्म नहीं तो 'अगले जन्म में दुःख' क्यों होगा? क्या भोग का भी भोग होता है? यदि भोग है तो इसका अर्थ यह हुआ कि व्यभिचार और डाके का फल न इस जन्म में दुःख है न अगले किसी जन्म में, इस जन्म में इसलिये नहीं कि वह कर्म नहीं 'साधन और कार्य' है। अगले जन्म में भी नहीं क्योंकि वह कर्म की कोटि में नहीं आता, यदि आप के सिद्धान्त को साध्यकोटि में भी मान लें तो भी परिणाम तो भयङ्कर ही दीखता है।

आपने १९ अक्टूबर के अङ्क में अनेक ऐसे दृष्टान्त दिये हैं कि अशुभ कर्म करने वालों को समृद्धि और शुभ कर्म करने वालों को दुःख की प्राप्ति हुई। परन्तु आपने उन दृष्टान्तों को सर्वथा भुला दिया जहां शुभ कर्मों को करने से सुख और अशुभ कर्मों को करने से दुःख मिला। यदि आप सूक्ष्म दृष्टि से विशाल जीवन जगत् को देखेंगे तो आपको पहली कोटि की घटनायें कम मिलेंगी और दूसरी कोटि की अत्यधिक। संसार टिका ही इस नियम पर है। अतः यथार्थ सिद्धान्त वह है जो अल्प संख्यक और बहुसंख्यक दोनों प्रकार की घटनाओं की व्याख्या कर सके और सिद्धान्त यही है जिसका मीमांसा दर्शन में प्रतिपादन किया है अर्थात् जब तक प्रत्यक्ष फल दृष्ट पड़े अदृष्ट की कल्पना न की जाय। आपके यह दृष्टान्त उस समय सुसंगत होते जब मैं पूर्व जन्म को मानता ही न होता। अशुभ कर्म करने वालों को समृद्धि और शुभ कर्म करने वालों के दुःख केवल इतना ही सिद्ध करते हैं कि पुराने जन्म के कोई ऐसे बलवान कर्म हैं जो इस जन्म के कर्मों के फलीभूत होने में बाधा डालते हैं, जैसे यदि कोई ऋणी है तो उसका परिश्रम से धनोपार्जन भी उसको उतना सुख नहीं दे पाता जितना उस समय होता जब वह ऋणी न होता। यही तो सिद्धान्त है जिसके विषय में ऋषि दयानन्द ने लिखा है—"सब कर्मों का फल यथावत् देना ही ईश्वर का काम है।" इस वाक्य में कौन सा शब्द है जो मेरे पक्ष का खण्डन करता है? 'यथावत्' का अर्थ न तो "यथाक्रम" है अर्थात् उसी क्रम से फल दिये जांय जिस क्रम से कर्म किये गये हों। 'क्रम' गौण है मुख्य नहीं। मुख्य तो कर्म की निजशक्ति है, और न 'यथावत्' का यह अर्थ है कि कई कर्म संयुक्त होकर एक या अनेक

(शेष पृष्ठ १० पर)

अध्यात्म चर्चा

महर्षि दयानन्द प्रणीत वैदिक संध्या की व्याख्या

[श्री मदनजीत आर्य, फीरोजपुर शहर]

महर्षि दयानन्द के शुभागमन से पूर्व इस भारतवर्ष देश में प्रभु पूजन की कई विधियाँ प्रचलित थीं जो कि एक दूसरे से विभिन्न थी और उनका कोई उत्तम विनियोग भी न था। यह श्रेय स्वामी जी को ही प्राप्त है कि उन्होंने समाज वा जाति को एक सगठन माला में पिरोने के हेतु एक अत्यन्त युक्ति युक्त और हृदय ग्राही सध्या प्रार्थना विधि को प्रचलित किया।

उपासक के मन में यह विचार उठता है कि 'मैं ईश्वर का भजन क्यों करू' उसका सुन्दर उत्तर महर्षि ने सध्या के पहले मन्त्र में दे दिया कि शारीरिक नोरोगता, मानसिक स्थिरता तथा आत्म पवित्रता की प्राप्ति के हेतु चहु ओर से सर्व प्रकार की शान्ति की सुखद वर्षा हो। उस मनोवाछित शान्ति को देने वाला आप जल और जल सदृश सर्व व्यापक शान्ति और आनन्द का स्रोत परम पिता दिव्य गुण युक्त परमात्मा है। सध्या का शब्दार्थ भी यही है—भली भान्ति कार्यों का चिन्तन करना। अत पहला आचमन मन्त्र प्रभु भक्ति के लिए तैयारी की चेतना देता है। योगी अरविन्द ने लिखा था कि—आध्यात्मिक जीवन और योगाभ्यास का उद्देश्य है दिव्य शक्तियों का विकास और जागरण करते हुए उसमे आध्यात्मिक प्रवृत्ति को बढ़ाना, जिससे मानवी जीवन पवित्र और गहन तथा गम्भीर हों और उसकी अपूर्णतायें दूर हो और वह यशस्वी हो। आचमन मन्त्र के सकेत से जल धारायें वास्तव में शान्ति प्रसारक धारायें बन जाती हैं। इस प्रकार जल स्पर्श से मनुष्य का बाहर भीतर सर्वथा शुद्ध शान्त और स्फूर्तिमय हो उठता है। और उपासना की मनोवाछित (अभिष्ट) कामनायें पूर्ण होना प्रारम्भ हो जाता है।

वैदिक सध्या का दूसरा मन्त्र अङ्ग स्पर्श है। योग दर्शन मे वर्णित अष्टाग योग मे जो स्थान यम नियम पालन का है, योग की सप्त भूमिका में जैसे इनको प्रथम स्थान प्राप्त है वैसे ही ऋषि दयानन्द ने अङ्ग स्पर्श क्रिया को प्रमुखता प्रदान की है। ओ३म् वाक् वाक् से ओ३म् करतल कर पृष्ठे तक उपासक को इन्द्रिय सयम की यह शिक्षा मिलती है कि मुख से जो उच्चारण करो उसे आचरण मे भी लाओ। जैसी कथनी वैसी करनी। किसी कवि ने सत्य ही कहा है कि—

कहना करना दोनों भाई
करने की है धन्य कमाई
कहन्दा कहन्दा आवे थक
काना पहुंचे मजिल तक

उपासक को इन्द्रियों पर मन और आत्मा का राज्य स्थापित करना ही अभीष्ट होना चाहिए। अङ्ग स्पर्श के साथ साथ आत्मा का दिव्य भावो से अनुभव होने लगता है इस प्रकार अङ्ग स्पर्श साधक की छत्त पर चढने में सीढी का काम देता है।

सध्या रूपी वाटिका का तीसरा चुना हुआ सुन्दर पुष्प 'मार्जन मन्त्र' है। यह मन्त्र बल और यश की स्थिरता के पश्चात् उनके सदुपयोग से पवित्र आचरण की सुगन्धि बखेर रहा है। ऐसा लगता है, मानो मानव हृदय में दिव्यता का अवतरण हो रहा है। उपासक के विवेक की परीक्षा हो रही है कि वह इन्द्रियो के सदुपयोग वा दुरुपयोग का ज्ञान रखता है अथवा नहीं। इस प्रकार अष्टाग योग के आसन को व्यावहारिक रूप मिलने लगा।

माला में चौथा 'प्राणायाम' का मन का हेर साधक अब आगे तप की भट्टी म से गुजरने लगा। प्राणायाम का अर्थ है प्राणो का आना और जाना उन पर नियन्त्रण करके उनको रोक कर वश म करना। नियम पूर्वक प्राणायाम का अभ्यास दीर्घ जीवन और मानसिक स्थिरता का कारण होने से दैवी भावो के सचार मे सहायक होता है। पाठक सध्या के प्रत्येक मन्त्र पाठ के साथ साथ अष्टाग योग की परिभाषाओ का समन्वय भी करते जावें। इस वैदिक सध्या पद्धति का पाचवा पुष्प अघमर्षण मन्त्र पापो को दूर भगाने और विषयो से उपराम होने का भाव प्रदर्शित करता है। यह तभी सम्भव है जब हम महान् प्रभु की अद्भुत सृष्टि रचना का दृश्य सामने रखकर उसकी महिमा को हृदयगम करें। योग की परिभाषा मे ऐसी साधना को 'प्रत्याहार कहते हैं। देवो के देव महादेव का सृजन शक्ति का भान हुआ साधक उसको सर्व व्यापकता और सर्व शक्ति मत्ता का परिचय पाता है। प्रभु से भयभीत होकर वह कुमार्ग से हट जाता है। पापी पाप तभी करता है जब वह सर्व व्यापक भगवान को भूलकर उसे अनुपस्थित मानने लगता है।

योग का अगला अङ्ग धारणा आता है और सध्या में मनसा परिक्रमा के ६ मन्त्र आते है। इनमें पहला मन्त्र आध्यात्मिक उन्नति के पथ पर। अग्रसर साधक अग्नि नाम प्रभु की शरण मे जाता है। सूर्य के प्रकाश मे वह अपने अज्ञान अधकार का नाश करता हुआ उन्नति के पथ पर आरूढ़ हो जाता है। पुन दक्ष बनने के लिए इन्द्र नामक परमात्मा का आश्रय ढूढता है। टेढ़ी चाल से बचने के लिये पितरों की सरक्षता आवश्यक है। इसी भान्ति आत्म निरीक्षण करता हुआ वह आत्मा के मन्दिर म वरुण नामक भगवान की उपासना करता है। काम विकारों की मार से बचता हुआ सतोगुणी अन्न का आहार करता है। क्रमश उत्तरोत्तर उठता वह सोम नाम वाले शान्तम् शिवम् सुन्दरम् की प्राप्ति का अधिकारी हो जाता है। आदमी धारणा को सुदृढ़ करता हुआ पुन विष्णु नामक सर्व व्यापक प्रभु का भजन करता है और अन्तत सासारिक विषय वासनाओ से विरक्त होकर सबके गुरु और सबसे महान् बृहस्पति प्रभु में ही अपने आपको लीन कर देता है। किसी कवि ने ठीक कहा है—

राग दूर होता है वैराग्य से
द्वेष दूर होता है अभ्यास से

मन की चचलता का नाश और चित्त की वृत्तियो का निरोध अभ्यास और वैराग्य से ही सम्भव है। पाप से बचने के लिए ईर्ष्या, द्वेष की अग्नि से दूर रखते हुए अपने आपको प्रभु के अर्पण कर देने से देव लोक के पथगामी यात्री का मार्ग सुगम हो जाता है। सध्या के उपस्थान मन्त्र योग के 'ध्यान' याद का ही प्रतिबिम्ब मात्र है यही आध्यात्मिक क्षेत्र में देव लोक की छाया के नीचे बैठना कहाता है। इच्छा द्वेष से मन को पृथक् कर उपासना मन्त्रो द्वारा इसकी सिद्धि हो रही है। उस दिव्य ज्योति को देखता हुआ धार्मिक जीवन अपनाने की साधना करता है और प्रभु के निकट होता जा रहा है। साधक प्राकृतिक जीवन से ऊपर उठ कर अन्य स्रोत में स्नान करता है। वह निर्भय, स्वतन्त्र, स्वाधीन अदीन स्वस्थ हो जाता है।

अब गायत्री वेद माता की पवित्र स्नेहमयी गोद में साधक आत्म समर्पण कर वह 'सविकल्प समाधि' की अवस्था को पहुच जाता है। यह देव लोक गति के तुल्य स्थिति है, अन्त में समाविस्त उपासक देवता का धन्यवाद देता है और जिस आत्म शान्ति की कामना से सध्या का प्रारम्भ किया था उसी की पुनरावृत्ति से उपसहार करता है और परम कल्याणमयी शांति को प्राप्त करता है।

संस्था-परिचय

चरित्र निर्माण अत्यावश्यक

बड़ौदा विश्वविद्यालय में श्री देशमुख का दीक्षांत भाषण

१७ नवम्बर को महाराजा सयाजी राव बड़ौदा विश्वविद्यालय के आठवे दीक्षान्त समारोह के अवसर पर भाषण करते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, श्री चिंतामण द्वारकानाथ देशमुख ने छात्रो के चरित्र निर्माण पर जोर देते हुए विश्वविद्यालय के स्नातको को उनके चारित्रिक विकास पर बल दिया और बताया कि विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग ने ऐसे विश्वविद्यालयों की स्थापना के विचार की सबसे अधिक प्रशसा की थी जिनसे अन्य कालेज सम्बद्ध न हो और छात्र वहीं रहते हो। लकिन धन की कमी के कारण यह सन्देहजनक है कि इस प्रकार के विश्वविद्यालयों की सख्या इतनी बढ सकेगा कि उनमे सभी छात्र शिक्षा प्राप्त कर सके। लगभग ५००० छात्रो वाले इस प्रकार के एक विश्वविद्यालय की स्थापना पर लगभग १ करोड़ रु० खर्च होते है और इस समय हमारे देश मे उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे लगभग १० लाख छात्रों के लिए इस प्रकार के कम से कम २०० विश्वविद्यालयो की आवश्यकता होगी। इस समय इनकी सख्या लगभग ४ है। इस गणना से स्पष्ट है कि नये विश्वविद्यालयो के लिए लगभग १६० करोड रु० की आवश्यकता होगा जबकि १९६१ तक इस कार्य के लिए ४ ५० करोड रु० ही उप[illegible]।

एक विश्वविद्यालय मे छात्रो की सख्या लगभग ५००० होनी चाहिए। सख्या बहुत बढ जाने से कई लाभ जाते रहते है और कभी कभी तो काफी गुण्डागर्दी भी हो जाती है जैसा हमारे एक बडे विश्वविद्यालय मे हुआ।

यह अजीब सी बात मालूम होती है कि विश्वविद्यालय की शिक्षा मे चरित्र निर्माण को कोई ऐसी प्रमुखता नहीं दी जाती और न ही छात्र जीवन के लगभग १५ वर्षों की शिक्षा ने उनके चरित्र का कितना विकास किया है, इसे जानने की ही कोई कोशिश की जाती है। चरित्र सन्तोषजनक न रहने पर भी छात्रो से विश्वविद्यालय शिक्षा की सुविधा छीनने के लिए कोई कदम नहीं उठाया जाता। हाल ही मे एक राज्य मे कुछ चिकित्सा विज्ञान के छात्रो ने एक दूसरे विभाग के छात्रो पर धावा कर मार पीट की। डाक्टर बनने के इच्छुक किसी भी छात्र से दया और दूसरो के दुख दूर करने की आशा की जाती है, किसी को जान बूझकर चोट पहुचाने की नहीं। यदि इन छात्रों से दृढता से कह दिया जाता कि आप डाक्टर बनने के लायक नहीं है तो उनका और समाज दोनो का ही भला होता। डाक्टरी और इजीनियरी शिक्षा के लिए भी छात्रो को भरती करने के लिए कोई व्यक्तित्व परीक्षा नहीं ली जाती। यह बडी भारी कमी है जिसे दूर किया जाना चाहिये।

हमारे देश मे उच्च शिक्षा के लिए भरती केवल पिछली परीक्षा मे मिले नम्बरो को ही देखकर की जाती है। यदि इसके साथ ही उनके पुराने अध्यापको द्वारा दी गयी आचरण सम्बन्धी रिपोर्ट भी ध्यान मे रखी जाय तो अच्छा होगा। बहुत से ऐसे शिक्षक भी नियुक्त हो जाते हैं जिनके आचरण पर यदि विचार किया जाय तो उन्हे कभी भी इस धन्धे मे नहीं लिया जाता। बहुत सी बुराइयो की जिम्मेदारी इन अध्यापको पर भी है।

वास्तव मे छात्र जीवन समाप्त होने के साथ ही आदमी की शिक्षा समाप्त नहीं हो जाती न ही विश्वविद्यालय का जीवन समाप्त होते ही चरित्र निर्माण का कार्य समाप्त होता है। विश्वविद्यालयों से निकलने वाले छात्र चरित्र निर्माण के मौलिक प्रश्न को अच्छा बनाने की कोशिश करेगे। उन्हे 'उपार्जन' बनने की कोशिश करनी चाहिए। स्त्रियों की उन्हे इज्जत करना सीखना चाहिये जो नैतिकता का पहला भाग है हर स्त्री माता के समान है।

१९४९ मे गांधी जी ने कहा था कि आन्दोलन आदि उनके लिए है जो अपनी शिक्षा समाप्त कर चुके है। शिक्षार्जन काल मे छात्रो का एकमात्र कार्य ज्ञानार्जन होना चाहिए। उसी वर्ष उन्होने फिर कहा था कि छात्र का कर्तव्य उन समस्याओ का अध्ययन करना है जिनके हल की आवश्यकता है। उन पर कार्य करने का समय शिक्षा समाप्त होने के बाद आता है। आशा है आधुनिक शिक्षा सस्थाओ मे इस प्रश्न की गहनता को स्वीकार किया जायगा।

साहित्य-समीक्षण

(समालोचनार्थ पुस्तकों की कृपया दो प्रतियां भेजें।—सम्पादक)

आर्यसमाज के मुख्य मन्तव्य

लेखक व प्रकाशक—कविराज हरनामदास बी० ए०, चांदनी चौक दिल्ली। साइज २०×३०—१ ३२, पृष्ठ स० १६, मूल्य ४॥) सैकडा।

कविराज जी ने इस लघु ट्रैक्ट मे आर्यसमाज के मुख्य मन्तव्यो की चर्चा अत्यन्त सक्षेप से की है। आर्य समाज क्या चाहता है और क्या नहीं चाहता है इसीका विवरण इस ट्रैक्ट मे किया गया है। सक्षेप मे आ० स० को समझने के लिए यह ट्रैक्ट छप योगी है। आर्यसमाजो को चाहिये कि प्रचारार्थ इसे मगाकर नि शुल्क बाटे। आ०स० मसूरी ने इस ट्रैक्ट को ५००० की सख्या मे बाटा है।

मेट्रिक मापतौल, द्वैमासिक

प्रकाशक—पब्लिकेशन्स डिवीजन भारत सरकार ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली ८। मूल्य ४० नये पैसे, पृष्ठ स० २० खड १ अङ्क २, सितम्बर ५८

मेट्रिक मापतौल एक द्वैमासिक पत्रिका है जो भारत सरकार के पब्लिकेशन डिवीजन ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली की ओर से प्रकाशित होता है। अभी इसके दो ही अङ्क प्रकाशित हुए है। इसका उद्देश्य है जनसाधारण को मेट्रिक माप तौल की नयी प्रणाली से सब प्रकार अवगत कराना। सम्पूर्ण पत्रिका आर्ट पेपर पर बडे सुन्दर ढग मे प्रकाशित की गई है। इसमे सरकार के प्रमुख सम्बन्धित अधिकारियो के विचार और लेख प्रकाशित हुए है। सर्वप्रथम लेख प० अलगूराय शास्त्री, सदस्य उत्तरप्रदेश विधान परिषद का "मीटर प्रणाली देश मे एकरूपता उत्पन्न करेगी" शीर्षक से प्रकाशित हुआ है जिसमे उन्होने "एकचते दश चते शतचते सहस्र चते कल्पयामि" वेद मन्त्र द्वारा यह बताया है कि दशमिक प्रणाली का उल्लेख तो वेदो मे भी हुआ है। १ अक्तूबर ५८ से यह बाट प्रणाली चालू हो गयी है। पुराने बाट भी चालू है जो धीरे धीरे समाप्त कर दिये जायगे।

A CONCISE HISTORY OF MAURITIUS

By Esnoo Baba jee

Publisher Hind Kitabs Limited, 32 34 Veer Nariman Road, Bombay 1 Page No 120, Price Rs 3 Fair printing white paper

Several books have been published which speak on the history of Mauritius, but this particular book of Esnoo Baba jee is a book of its own type, which I am sure will open new vistas not only to the Mauritians but also to the foreigners The speciality of this book lies in the fact that it has tried to give a correct report of any thing and has also successfully tried to remove away the errors committed by so many foreign historians regarding the factual and actual history of Mauritius The other speciality of the book is this that it is brief still every thing is clear and easily understandable Some appendixes given by the author at the end of the book serve as foot notes comments and explanations to understand things Esnoobaba jee wrote this history of Mauritius after consulting a good number of books, the names of which are given in Appendix E as bibliography I earnestly hope this book to be very populor particularly among the Mauritians and generally among those who are desirous to know some thing of Mauritius

– B Sharan

(पृष्ठ ८ का शेष)

फल नहीं देते। 'यथावत्' का तो यही अर्थ है कि फल देने मे किसी कर्म की उपेक्षा नहीं की जायगा। इसी प्रकार पूर्व जन्म के कर्मों का भोगने का जहा उल्लेख है वहा उसका यह तात्पर्य कदापि नहीं कि इस जन्म के कर्मो मे से किसी का फल इस जन्म मे मिलना ही नहीं। स्वामी जी के ग्रन्थो मे सैकडो वाक्य ऐसे मिलेगे कि ऐसे कर्म करो तो तुमको ऐसा फल होगा। इसी जन्म मे न कि अगले जन्म मे। यह तो प्रकरण से स्पष्ट विदित हो जायगा।

मेरा यह लेख तो २६ अक्टूबर के अक मे छपा है वह श्री बाबू जी के २१ सितम्बर के लेख के उत्तर मे उसी दिन का लिखा हुआ है। मुझे ज्ञात नहीं था कि लेख अभी चल रहा है। १२ अक्टूबर और १९ अक्टूबर में बाबू जी की लेखमाला समाप्त हुई अत मैंने यह लेख फिर लिखना आवश्यक समझा। इस लिये एक दो बातो की पुनरुक्ति हो गई है।

बाल-विनोद

आर्यसमाज और बाल-कल्याण

[प्रो० श्री प्रकाश, मन्त्री बाल निकुञ्ज, डी०ए० वी० कालेज, कानपुर]

आर्यसमाज की अधिकांश शक्ति शिक्षा संस्थाओं के सचालन में लगी हुई है और वह भी दूसरों द्वारा निर्धारित शिक्षा-प्रणाली का प्रसार करने में अतः हम जितना श्रम करते हैं सफलता उसके मुकाबले में बहुत कम है। बालकों की शिक्षा और उनके कल्याण कार्यों की ओर ध्यान देकर आर्यसमाज अपना संगठित शक्ति का उचित उपयोग कर सकता है। लेखक का कथन विचारणीय और स्वीकरणीय है कि हम यदि चाहते हैं कि राष्ट्र का बाल मस्तिष्क ईसाई मिशनरियों के दूषित अभारतीय सस्कारों से बचाया जाय तो हम पूरी शक्ति और सतर्कता के साथ बाल कल्याण के उपयोगी कार्य को अविलम्ब अपने हाथ में लेना होगा। आशा है आर्यसमाज के शिक्षा शास्त्री इस दिशा में गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे। —सम्पादक

लगभग दो माह हुये "आर्यमित्र" में आर्यसमाज के नवीन कार्यक्रम के विषय में एक लेख प्रकाशित हुआ था जिसमें यह निवेदन किया गया था कि आर्य समाज को बाल कल्याण आन्दोलन मे सक्रिय भाग लेना चाहिये और बाल-कल्याणकारी योजनाओं का अपने कार्यक्रम में समावेश कर लेना चाहिये। प्रसन्नता है कि इन विचारों का आर्यजगत में थोड़ा सा स्वागत हुआ है और इस विषयक मेरे पास कई पत्र भी आये हैं। आर्यसमाज सीसामऊ कानपुर ने इस कार्य को कार्यान्वित करना भी आरम्भ कर दिया है और प्रत्येक शनिवार को सायंकाल छोटे छोटे बालक वहां एकत्रित होते है और श्री लक्ष्मणकुमार जी शास्त्री व अन्य कार्यकर्ताओं की सरक्षता म क्रीड़ा करते हैं कुछ उपदेश सुनते हैं और उपयोगी ढंग से अपना समय व्यतीत करते हैं। यह एक सुन्दर प्रयास है जिससे कि अन्य आर्यसमाजों को अपना लेना चाहिये।

समय की मांग है कि आर्य नेता और आर्यसमाज के कर्णधार राजनैतिक दल-दल से निकल कर एक स्थान पर एकत्रित हों और आर्यसमाज के भावी कार्यक्रम की ओर भी ध्यान दें। महर्षि ने आर्यसमाज के सम्मुख दो प्रकार के कार्य रक्खे थे। धार्मिक व सामाजिक। यह अति आवश्यक है कि आर्यसमाज अपने सामाजिक कार्यक्रम में उचित परिवतन लाये और उसे देश के लिए अत्यन्त ही उपयोगी बना सके। बाल कल्याण का समावेश इस कार्यक्रम में बहुत ही उचित रहेगा और यदि आर्यसमाज ने इस दिशा मे थोड़ा सा भी काम किया उसके द्वारा देश की सच्ची सेवा हो सकेगी।

बालक राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति है। बालक पर ही राष्ट्र का भविष्य निर्भर है। यही हमारे भावी कर्णधार हैं और इनका उचित ढङ्ग से निर्माण ही देश को उन्नति की दिशा में ले जायगा। शैशव काल मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण काल है। क्योंकि इसी काल में जीवन की नींव गढ़ी जाती है। कितना विचित्र बात है जब हम अपने भवन का निर्माण करने चलते हैं नींव की ओर हम विशेष ध्यान देते हैं। हम उसे अत्यन्त ही मजबूत बनाने की चेष्टा करते हैं। नींव मजबूत होगी तो उस पर खड़ा भवन भी मजबूत होगा। लेकिन हम अपने जीवन की नींव को उतना नहीं महत्व देते जितना कि हम देना चाहिये। बचपन को तो खेल और कूद के ही दिन मानते हैं। हम भूल जाते हैं कि बचपन में बालक अपने भावी जीवन की नींव गढ़ता है और यह वह समय है जब कि हमारा पूर्ण ध्यान उसकी ओर होना चाहिये। यह आवश्यक है कि हम इस दिशा मे कुछ कार्य करें और बालक का उसके समुचित विकास में मदद करें।

बालक अपने समान समाज मे ही विकसित होता है। वयस्कों के बीच उसका विकास उतना नहीं हो पाता जितना कि समवयस्कों के बीच होता है। बालक बालक से ही सीखता है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि हम बालकों के लिए बालकेन्द्र या बालघर बनायें। ऐसा स्थान बनायें जहां कि बालक एकत्रित हों स्वतन्त्र वातावरण में खेलें कूदें और कुछ सीखें भी और इसके लिए उचित निर्देशन भी हो। एक समय था जब आर्यसमाज ने अपने मन्दिरों में अछूत पाठशालाओं के लिए स्थान दे रक्खा था। यह क्या सम्भव नहीं है कि हम आर्यसमाज मन्दिरों मे आर्य समाज के निर्देशन में ही बाल केन्द्रों का सचालन करें? यहां पर बालक प्रतिदिन एकत्रित हों और शिक्षणात्मक मनोरञ्जन प्राप्त करें।

हमें ईसाइयों से विरोध है कि वे बाल संस्थाएं प्रति दिन खोलते चले जा रहे हैं और इनके द्वारा अपने मत का प्रचार कर रहे हैं। हमने कभी-कभी इसके विरोध में प्रस्ताव भी पास किये हैं और लम्बे लम्बे भाषण भी दिये हैं पर इस दिशा में हमने कोई ठोस कार्य नहीं किया है। बच्चे विकसित होना चाहते हैं यदि हमारा समाज उन्हें ऐसा अवसर नहीं देता और दूसरा वर्ग ऐसा अवसर दे देता है तो स्वभावतः बच्चे उस अवसर से लाभ उठाने चल देंगे। हमारा भी कर्तव्य है कि हम इस दिशा में कुछ कुछ कार्य करें। यदि हमारी ऐसी संस्थाएं सस्थापित हो जायेंगी तो हम बच्चों को ईसाइयों के केन्द्रों मे जाने से रोक सकेंगे। आशा है कि आर्य समाज के कार्यकर्ता इस सुझाव पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे।

अपराधी बालकों के सुधार का सफल प्रयत्न

क्या परिस्थितियों और वातावरण के कारण ही अपराध किये जाते हैं? और क्या अच्छा बर्ताव करने से ऐसे बच्चे भी सुधारे जा सकते हैं जिन्होने खून जैसे भीषण अपराध किए हों?

इन दोनों ही प्रश्नों का उत्तर है— हां; और यह उत्तर प्रदेश ने साबित करके दिखा दिया है। अन्य राज्यों की तरह, उत्तरप्रदेश में भी बाल सुधार का काम करने वालों का विश्वास है कि चित्त क्षोभ के कारण अपराध करता है और बिना किसी बन्धन के अच्छा जीवन बिताने का अवसर देने से वह सुधर सकता है।

बाल अपराधियों को पढ़ाने और कारीगरी सिखाने के लिए बरेली में किशोर-सदन खोला गया। इसमें आजकल १८० बाल अपराधी हैं। सदन के अन्दर उनके लिए जूनियर स्कूल है, परन्तु ऊंची पढ़ाई के लिए वे बाहर भी पढ़ने जा सकते हैं। इस समय वहां के ४ लड़के कालेज में और ३ लड़के हाईस्कूल में पढ़ रहे हैं।

सदन में बच्चे कारीगरी सीखने के साथ-साथ पैसा भी कमाते हैं, जो उन्हें सदन छोड़ते समय दे दिया जाता है। इस धन की सहायता से वे सदन के बाहर अपना नया जीवन आरम्भ करते हैं। उन्हें रोजगार दिलाने का भी प्रयत्न किया जाता है।

सदन में बच्चों को स्काउट ट्रेनिंग भी दी जाती है और वे विभिन्न केन्द्रों की रैली में भाग लेने जाते हैं। उनका बैंड बाजा इस समय देश के सबसे अच्छे बैंड बाजों मे माना जाता है।

बच्चों के लिए शिविर भी लगाये जाते हैं, जिससे उन्हें मिलजुल कर रहने और खेलकूद, संगीत आदि में भाग लेने का अवसर मिलता है। उनके साथ कोई निगरानी करने वाला नहीं होता, फिर भी अब तक किसी भी बच्चे ने भागने की कोशिश नहीं की।

उनका एक नाटक-क्लब भी है। वे विभिन्न स्थानों पर जाकर रामायण आदि महाकाव्यों को संगीत और नृत्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं। मसलन १३ नवम्बर को उन्होंने राष्ट्रपति भवन में, राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद और प्रधान मन्त्री, श्री जवाहरलाल नेहरू के सामने 'साकेत' प्रस्तुत किया।

किशोर सदन के इस प्रयोग से बाल अपराधियों में सुधार हो रहा है और लोगों में विश्वास पैदा होता जा रहा है कि अपराधी वृत्ति स्थायी नहीं होती, वह दूर की जा सकती है।

सचित्र ज्ञान



"भारत १९५८ प्रदर्शन दिल्ली का एक विहगम दृश्य। यह प्रदर्शनी १२३ एकड में लगी हुई है। विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय औद्योगिक उन्नति की जानकारी कराने वाली सरकार द्वारा आयोजित यह प्रथम राष्ट्रीय प्रदर्शन"



१—प्रदर्शन ... क ... पर लयन पर एक महिला ... म बन पौटर का प्रशसा कर रहा है।
२—... तथा मिलाई ... दुर्गापुर इस्पात उद्योग सम्बन्धी कुछ उपयोगी उपकरणों व यन्त्रों के नमूने
३—सिन्दरी फर्टिलाइजर फैक्टरी और कालोनी बिहार का ... दृश्य।
४—लघु उद्योग ... पर निपुण महिला ए रशम के धागे का ... कर कपडा बुनने योग्य बना रही है।

कार्यालय से पत्र व्यवहार के स

अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखें

सभा की सूचनाएं

अन्तरङ्गाधिवेशन की सूचना

सर्व अन्तरङ्ग सदस्यों को विदित हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरङ्ग सभा का साधारण अधिवेशन दि० २४, २५ दिसम्बर ५८ स्थान कन्या गुरुकुल हाथरस जिला अलीगढ़ के महोत्सव के साथ साथ होना निश्चित हुआ है। अतः अन्तरङ्ग सदस्य गण कृपया तिथियां नोट करने का कष्ट करें और समय पर पधारें।

विशेष सूचना

आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज के विख्यात वक्ता और विद्वान् पं० विश्वनाथ जी त्यागी बी० ए० एल० एल० बी० अभी कुछ समय के लिये दक्षिण अमेरीका नहीं जा रहे हैं; सभा के सुझाव पर उन्होंने भारत के ही विभिन्न प्रान्तों, विशेषतया अहिन्दी प्रान्तों, के मुख्य मुख्य नगरों में वैदिक धर्म के प्रचार करने का निश्चय किया है। आपके व्याख्यान शिक्षित जनता के लिये प्रभावशाली, एवं रोचक होते हैं। अतः आर्य समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वे उक्त प० जी को अपने वार्षिकोत्सवों तथा अन्य अवसरों पर निमन्त्रित करके आर्य्य सिद्धांतों पर व्याख्यान करावें। एतदर्थ उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ से सीधा पत्र व्यवहार करें।

आगरा जिले में मोहनलाल जी आर्य का तूफानी भ्रमण

सभा के अन्तरङ्ग सदस्य एवं सहकारी अर्थ संयोजक समिति, आगरा निवासी श्री मोहनलाल जी आर्य, आर्यमित्र हीरक जयन्ती एवं जिले की आर्य समाजों में धन संग्रहार्थ सभा की ओर से नियुक्त करके भेजे जा रहे हैं। उनके पधारने पर उक्त श्री आर्य जी का स्वागत, विश्राम की व्यवस्था करने का कष्ट करें और उक्त कार्यों के निमित्त धन संग्रह कराने में पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

मंदिरों के फोटो चित्र भेजिये

आर्यमित्र द्वारा प्रदेशीय समस्त आर्य समाजों से दो बार प्रार्थना की जा चुकी है कि अपने-अपने समाज मंदिरों के फोटो चित्र भेजने की कृपा करें। किन्तु अब तक ४ आर्य समाज बदायूं, अमरोहा, जौनपुर तथा गोला गोकरननाथ के ही चित्र प्राप्त हुए हैं। प्रदेश की शेष समाजों ने ध्यान नहीं दिया अतः प्रार्थना है कि फोटो यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें। सभा मंत्री

आर्यमित्र हीरक जयन्ती तथा सभा की अन्यान्य योजनाओं व समारोह के उपलक्ष में ३ माह के लिए

घासीराम प्रकाशन विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रकाशनों में भारी रियायत

शीघ्र ही अधिकाधिक संख्या में आर्डर भेजिए

नाम पुस्तक	नाम लेखक	मूल्य
	निम्न पुस्तकों पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा—	
यजुर्वेद संहिता १ भाग	वैदिक संस्थान	२)
,, २ भाग	,,	२।।)
गायत्री उपनिषद्	श्री पं०रामदत्त जी शुक्ल एम०ए०	।।)
ओंकार दर्शन	,, स्वामी अमृतानन्द जी	।।)
विरजानन्द चरित	,, स्वर्गीय देवेन्द्रनाथ जी	।।-)
मन की लहर	,, प० रामप्रसाद जी बिस्मिल	।।।)
वैदिक निघन्टु	,, पं० रामदत्त जी शुक्ल एम०ए०	।=)
वेद सुधा	,, पं० घासीराम जी	।)
Ishopanishad	Shri Mahatma Narain Swami	0-4-0
ब्रह्मवेद का रहस्य	,, प० प्रियरत्न जी	≶)
पचकोष सूक्ष्म जगत	,, पं० गङ्गाप्रसाद जी जज	=)
आत्म शारीरिकोपनिषद्	,, प० रामदत्त जी शुक्ल एम०ए०	=)
ईसा मसीह	,, प० शिवदयालु जी	-)
गोरे पादरी	,, मदन गोपाल जी	-)
	निम्न पुस्तकों पर ३३ प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा—	
ऋग्वेद रहस्य	,, पं० कालूराम शास्त्री जी	५)
भक्ति सोपान	,, प० घासीराम जी	१।।)
सत्यनारायण व्रत कथा	,, वासुदेव शरण अग्रवाल	।।)
	निम्न पुस्तकों पर ५० प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा—	
इंगलैन्ड का इतिहास	,, पं० ब्रजमोहन शर्मा जी	१)
स्त्री ज्ञान दर्पण	,, देवपालसिंह कटियार	।।)
जीवनोद्देश्य	,, ,,	।।)
सुखमय जीवन	,, ,,	।।)
मद्यपान महापाप	,, प० शिवशर्मा जी	।।)
कलावती उपन्यास	,, पं० दामोदर प्रसाद जी	।≶)
आर्यों का प्राचीन गौरव	,, पं० कालीचरण शर्मा	।=)
Papers read at the First Arya Education Conference, Kanpur	,, Parmatma Saran M. A.	0-6-0
भौतिक विज्ञान	,, पं० ब्रह्मानन्द जी	।=)
जन्म शताब्दी उपहार	श्रीमती सुनीतिदेवी जी	।-)
ज्योतिष चन्द्रिका	श्री प०गंगाप्रसाद जी रि० जज	।)
पिण्डारी हिम प्रवाह	,, प्रो० धर्मेन्द्रनाथ जी	।)
पिप्लाद संहिता हिन्दी	,, पं०रामदत्त जी शुक्ल एम०ए०	≶)
आर्य पर्व परिचय	,, पं० शिवदयालु जी	=)
कैथोलिक ईसाइयों का नग्न चित्र	,,	=)
मनुष्य समाज	,, पं० गंगाप्रसाद जी रि० जज	-)
सूर्य सप्ताश्व	,,	-)
अविद्या के तीन अंग	,, प० कृपाशंकर जी	-)
नवसस्येष्ठि यज्ञ	,, प० शिवदयालु जी	-)
Indian Influence on Early Western thought	,, Shishir Kumar Mittra	0-1-3
Problems of Life	,, Pt. Ganga Prasad M. A.	0-1-0
Problems of Universe	,,	0-1-0
Sanskrit A living language	,, Pt. Shyam ji Krishna Varma	0-1-0
Piplad Sanhita	,, Pt. Ram Dutta Shukla M.A.	0 3-0
Christ Versus Chrishtianity	,, Pt. Shiva Dayalu	0-1-0
Agnihotra	,, Prof. Tarachand M. A.	0-1-6
A Few hints in favour of A Vegetarian diet	,, Madan Mohan M.A.	0-1-0

बी. एन. वर्मा

अधिष्ठाता, घासीराम प्रकाशन विभाग

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

उत्सव समाचार—

—आ०स० पानीपत का ६१ वां वार्षिकोत्सव १४, १५, १६ नवम्बर को बड़े समारोह के साथ हुआ। स्वामी रामेश्वरानन्द जी, पं० रघुवीरसिंह शास्त्री, प्रि० भगवानदास, आचार्य भगवानदेव जी, श्री जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती, प्रो० शेरसिंह आदि के भाषण हुए। समाज की ओर से श्री सिद्धान्ती जी मन्त्री पंजाब सभा को वेद प्रचारार्थ ७००) रु० भेंट किए गये।

—आ०स० रायबरेली का ६३ वां वार्षिकोत्सव २० से २३ अक्तूबर ५८ तक हुआ। आचार्य विश्वश्रवा, पं० विद्यानन्द, पं० विद्याभिक्षु, पं० रुद्रदत्त शास्त्री, स्वामी इष्टानन्द, पं० श्याम शर्मा, श्री धर्मराजसिंह, श्री अभिमन्युसिंह, श्री कृष्णलाल आदि के भाषण व भजन हुए।

—आ०स० अरमापुर स्टेट कानपुर का वार्षिकोत्सव २५ से २८ दिसंबर ५८ तक होना निश्चित है। अनेकों प्रसिद्ध विद्वान पधारेंगे।

—आ०स० बस्ती का स्वर्णजयन्ती महोत्सव २० से २३ फरवरी ५९ तक होगा। जिले के सभी समाजों व कसबों में वेद प्रचार की व्यवस्था होगी। गोरक्षा, शुद्धि, महिला, कवि, आर्य, आर्य वीर दल, राष्ट्र भाषा आदि सम्मेलन भी होंगे। एक विशाल प्रदर्शनी भी होगी। १०० स्वयंसेवक और ५०००) रु० की मांग की गयी है। —रामचरित वैद्य

प्रचार समाचार—

—आ०स० बांकनेर अलीगढ़ में स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती ने तीन रोज तक प्रचार किया।

—श्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री महोपदेशक सभा ने २९-३० अक्तूबर को आर्यसमाज औरैया की ओर से फूलगंज के मैदान में शास्त्रार्थ व भाषण किया। सन्तोषजनक उपस्थिति मे प्रभावशाली प्रचार हुआ।

चुनाव समाचार—

—आ० स० नैनीताल—प्रधान श्री शंकरलाल जी, मन्त्रिणी—श्रीमती शान्ता कोयर एम०ए०, कोषाध्यक्ष—श्री देवीलाल शर्मा।

—वेदप्रचार मण्डल कोटा डिवीजन—श्री जियालाल वर्मा प्रधान, श्री लक्ष्मीकान्त गुप्त मन्त्री, श्री चिरंजीलाल गुप्त कोषाध्यक्ष।

आर्य-जगत

आर्य वीर दल समाचार—

—आर्यवीर दल बगहा की ओर से २२-११-५८ को एक बालशाखा की स्थापना हुई। श्री बेंचनराम सिंह नगर नायक ने अध्यक्षता की।

—श्री मुन्नालाल जी मण्डल पति आर्य वीर दल जौनपुर ने केराकत की प्रातः शाखा, शाहगंज की सायं शाखा और खेता सराय आदि स्थानों का दल के प्रचार व संगठन के लिए दौरा किया।

आर्यकुमार सभा समाचार—

—दिल्ली प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद् ने निश्चय किया है कि २५-१२-५८ को दिल्ली के सभी आर्य कुमार सभाओं का श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर एक जलूस निकाला जाय, १४-१२-५८ को आ० स० मन्दिर नया बांस में आर्य कुमार सम्मेलन हो, और २१-१२-५८ को आ० स० मन्दिर २ अन्सारी रोड दरियागंज दिल्ली में दिल्ली प्रान्त के आर्य कुमारों की भाषण प्रतियोगिता आयोजित की जाय। —देवीदयाल आर्य

ऋषि निर्वाण उत्सव—

—निम्न आर्य समाजों की ओर से भी ऋषि निर्वाणोत्सव मनाने का समाचार प्राप्त हुआ है—

आ० स० चोपड़ाकोट गढ़वाल, आगरा नगर की समस्त आर्यसमाजें।

अन्यान्य समाचार—

—एक स्त्री जो विधर्मियों के चंगुल में फंस गयी थी, उसकी रक्षा आर्य समाज उस्का बाजार बस्ती ने की और उसकी शुद्धि करके उसके पिता को सौंप दिया।

—लखनऊ नगर में १९-२०-२१ दिसम्बर ५८ को अखिल भारतीय हिन्दी राष्ट्र भाषा महा सम्मेलन का आयोजन किया गया है जिसमें श्री टंडन, दिनकर, डा० धीरेन्द्र वर्मा, पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी, श्री घनश्याम सिंह गुप्त, पं० प्रकाशवीर शास्त्री, स्वामी रामेश्वरानन्द आदि को आमन्त्रित किया गया है। कवि सम्मेलन के लिए प्रमुख कवियों को भी आमन्त्रित किया गया है। डा० राधेश्याम तिवारी इस आयोजन के संयोजक हैं।

—हिन्दू विद्यार्थी सभा का प्रान्तीय अधिवेशन ६-७ दिसम्बर को आ० स० गणेशगंज लखनऊ में समारोह सहित सम्पन्न हुआ।

—आ० स० मिलक, रामपुर की अन्तरंग सभा दिनांक २३-११-५८ ने श्री काशीराम जी को तीन वर्ष के लिए आ० स० की सदस्यता से पृथक कर दिया है। उन पर समाज का अहित करने तथा समाज की सम्पत्ति को नष्ट-भ्रष्ट करने का आरोप है।

—नत्थाराम आर्य, मंत्री

—आ० स० पूना में लाला लाजपतराय की जयन्ती मनायी गयी।

—आ० स० बांकनेर अलीगढ़ के सदस्य श्री नत्थीलाल जी गाना, ढोलक व तबला सब जानते हैं। उनकी आर्थिक दशा खराब है। कोई उपदेशक यदि सवैतनिक उन्हें अपने साथ रख ले तो अच्छा हो।

—विजयपालसिंह

—महिला आ० स० गोरखपुर की ओर से गोरक्षार्थ एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमे स्वामी ओंकारानन्द व श्रीमती मोहनदेवी के भाषण हुए। पारित प्रस्ताव राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री आदि को भेजे गये।

—आ० स० चोपड़ाकोट गढ़वाल ने श्री लक्ष्मण प्रकाश तिवारी की अध्यक्षता में एक सभा की और सर्व सम्मति से निम्न प्रस्ताव पास हुए—

(क) आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० गढ़वाल की ९० आर्य समाजों को पृथक जिला उप सभा बनाने की अनुमति दे और बिजनौर की ३९ समाजों से मिलाकर गढ़वाल जिले की सामाजिक प्रगति को न रोके।

(ख) टेहरी गढ़वाल की सभा लोअर गढ़वाल और अपर गढ़वाल दोनों की उन्नति का समान ध्यान रखे।

(ग) यह सभा गढ़वाल उप सभा पर पूर्ण आस्था रखती है।

—मंत्री आ० स० चोपड़ाकोट

शोक समाचार—

—आ० स० औरैया ने श्री मंगली प्रसाद के पिता के निधन पर शोक प्रकट किया। स्वामी पूर्णानन्द ने अन्त्येष्टि संस्कार कराया।

आगरा की डायरी

—आ० स० राजामंडी व मालवीकुंज का वार्षिकोत्सव २ से ५ नवम्बर तक मनाया गया। श्री लालबाबू, यशवन्तसिंह, भोजदत्त जी के भजन और श्री उमेशचन्द्र जी, विश्वबन्धुजी श्री प्रकाशवीर जी, श्रीमती शान्ति शर्मा आदि के भाषण हुए।

—नगर समाज में ९-११-५८ को साप्ताहिक अधिवेशन में श्री शिवनारायण जी का भाषण हुआ।

—१०-११-५८ को नगर समाज में सोत्साह ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया।

—१६-११-५८ को पं० ओम्प्रकाश शास्त्री का भाषण हुआ।

—आ०स० बलकेश्वर कालोनी का प्रचार निरन्तर तीन दिनों तक ऋषि निर्वाण के अवसर पर हुआ।

—२३-११-५८ को श्री रामशरण जी का भाषण हुआ और पं० श्याम विहारी जी की कथा हुई।

—नगर समाज आगरा ने आर्य मित्र हीरकजयन्ती के लिए १०००)रु० देना निश्चय किया है।

—मोहनलाल आर्य
प्रधान, नगर आ० स० आगरा

शेष समाचार—

—आ० स० बैरगनियां, विहार का वार्षिकोत्सव ४, ५, ६, ७ दिसम्बर ५८ को हुआ। आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वानों के भाषण हुए।

—आ०स० लल्लापुरा काशी का १४ वां वार्षिकोत्सव भारत माता मन्दिर के मैदान में ४ से ७ दिसम्बर तक हुआ। विहार, उत्तरप्रदेश तथा दिल्ली के प्रसिद्ध आर्य विद्वान पधारे।

—दयानन्द आर्य विद्यालय लश्कर म०प्र० में श्री जगदीशचन्द्र बोस की जयन्ती मनाई गई।

—आ० स० जगतपुर बरेली ने मेला गङ्गास्नान चौबारी घाट पर २६ नवम्बर ५८ को प्रचार किया। श्री भूपनारायण जी, मास्टर रामस्वरूप जी, पूर्णचन्द्र जी, राजाराम शास्त्री, सत्यस्वरूप जी, अश्विनीकुमार जी रामस्वरूप वानप्रस्थी आदि के भाषण हुए।

—आ०स० गणेशगंज लखनऊ, आर्यवीर दल लखनऊ तथा दयानन्द रक्षा मण्डल लखनऊ ने २६ नवम्बर को गोमती मेले में प्रचार तथा सेवा का कार्य किया जिसकी उपस्थित अनेकों लोगों ने सराहना की।

१ अक्तूबर से भारत सरकार ने नये माप तौल प्रचलित किये है, इस पद्धति का व्यवहार मेट्रिक प्रणाली के नाम से चल रहा है। पहले गज, फीट, इंच, मन, सेर, छटाँक आदि के नाम से माप तौल चलता था अब नई प्रणाली के अनुसार मीटर और ग्रामों के नाम से व्यवहार किया जायेगा। उदाहरणार्थ कुछ माप तौल यहाँ लिख रहा हू—

माप

१० मिलिमीटर=१ सेंटीमीटर=३६३ च
१०सेंटीमीटर=१डेसीमीटर=३ ६४३ च
१०डेसीमीटर=१मीटर=३६ ३७३ च
१० मीटर=१ डेकामीटर
१० डेकामीटर=१ हेक्टोमीटर
१०हेक्टोमीटर=१किलोमीटर लगभग ५ फर्लाङ्ग

तौल

१० मिलिग्राम=१ सेण्टीग्राम
१० सेण्टीग्राम=१ डेसाग्राम
१० डेसाग्राम=१ ग्राम
१० ग्राम=१ डकाग्राम
१० डेकाग्राम=१ हेक्टाग्राम
१० हेक्टोग्राम=१ किलाग्राम=२ २पौंड

इसी प्रकार १३ च=२५ ४०मिली मीटर। १ गज=६१ मीटर। १एकड़=० ४० हेक्टामीटर। १ मील=१ ६१ किलामीटर के बराबर होगा। इसी भान्ति १ तोला=११ ६६ ग्राम। १ सेर=६३ किलाग्राम। १ मन=३७ किलाग्राम के समान समझा जायगा।

हमारी सरकार ने यह नई प्रणाली हिसाब की सरलता के लिए प्रचलित की है। जिस प्रकार अप्रल ५७ मे नये पैसे चलाकर आने पाई के झंझट को समाप्त करके हिसाब करने मे अत्यधिक सुविधा कर दी गई है उसी प्रकार नये माप तौल चालू हो जाने पर लेन देन का व्यवहार सर्वथा सुगम हो जायगा। किन्तु माप तौल की नई पद्धति मे एक कठिनता अवश्य है, वह नामों की। नये मापों के नाम मिलिमीटर, सेण्टीमीटर, डेसीमीटर,मीटर, डेकामीटर आदि रखकर हमारे नेताओं ने भारतीयता का परिचय नहीं दिया।

यह तो ठीक वैसी ही उपहासास्पद बात है जैसा कि भारत मे उत्पन्न हुए बालकों का विदेशीय ढङ्ग से नामकरण किया जाये। जो बालक हमारे घर मे उत्पन्न हुआ है उसका नाम रखने के लिए हम विदेशों का अनुकरण क्यों करें? हम अपनी सुविधा के अनुसार अपनी संस्कृति और सभ्यता के अनुरूप नाम रखना चाहिए।

इस नई माप तौल पद्धति को मीटर प्रणाली न कहकर इसकी अन्वर्थ संज्ञा दशमिक प्रणाली होनी चाहिए। क्योंकि इस पद्धति में, दश दश के हिसाब से ही व्यवहार चलेगा

दशमिक प्रणाली

नये माप तौल

(श्री वेदव्रत सिद्धान्त शिरोमणि, गुरुकुल झज्झर, रोहतक)

भारत में १ अक्तूबर ५८ से लागू की गई नापतौल के दशमिक प्रणाली का सर्वत्र स्वागत किया जाना चाहिये क्योंकि इस पद्धति से समस्त देश के लेन देन, व्यवहार व मापतौल मे एकरूपता आ जायेगी। खटकने वाली बात केवल यह है कि नए मापों के नाम अंग्रेजी मे है जो आमतौर से एक तो सभी भारतवासी समझ नहीं सकते दूसरे यह भारतीयता विरोधी है। ऐसा मालूम होता है जैसे हमारे नेता स्वदेश मे जन्मे भारतीय पुत्रों का नाम अंग्रेजों के समान रखना चाहते हैं। इसका विरोध किया जाना उचित है। अतः चाहिए यह कि सरकार इन नामो पर पुनर्विचार करे। —स० सम्पादक

जैसा कि ऊपर आप माप तौल की सूची मे पढ़ चुके है।

यह दशमिक प्रणाली वास्तव मे वेद से निकाली गई शुद्ध वैदिक माप तौल प्रणाली है। जैसा कि श्री अलगू राय शास्त्री ने भी अपने एक लेख मे लिखा है कि 'दशमिक प्रणाली का उल्लेख तो वेदों मे भी हुआ है।'

यजुर्वेद अध्याय १७ का द्वितीय मन्त्र इस प्रणाली के वेद निःसृत होने मे प्रमाण है—

'इमा मे इष्टका धेनवः सन्त्वेका च दश च दश च शतं च शतं च सहस्रं च सहस्रं चायुतं चायुतं च नियुतं च नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तश्च परार्धश्चैता मे अग्न इष्टका धेनवः सन्त्वमुत्रामुष्मिंल्लोके ॥'

इस मन्त्र का भाष्य करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी लिखा है कि इष्टका आदि के दृष्टान्त से गणित विद्या का उपदेश किया है इस मन्त्र के भावार्थ मे महर्षि ने लिखा है– मनुष्यैरेका संख्या दशवार गुणिता सती दश संज्ञां लभते, दश दशवार संख्याता शतं, शतं दशवार संख्यातं सहस्रं, सहस्रं दशवार संख्यातमयुतमयुतं दशवार संख्यातं नियुतं, नियुतं दशवार संख्यातं प्रयुतं, प्रयुतं दशवार संख्यातं कोटिः, कोटिर्दशवार संख्याता दशकोटयः, ता दशवार संख्याता खर्वं, खर्वो दशवार संख्यातो निखर्वः निखर्वो दशवार संख्यातो महापद्मः महापद्मो दशवार संख्यातः शङ्कुः, शङ्कुर्दशवार संख्यातः समुद्रः, समुद्रो दशवार संख्यातो मध्यं, मध्यं दशवार संख्यातमन्तः, अन्तो दशवार संख्यातः परार्द्धः एता संख्या उक्ता उक्तैरनेकैश्चकारैरन्या अपि अङ्क बीज रेखा प्रभृतयो यथावद् विज्ञेया।

(यजुर्वेद भाष्य १७।२)

लेख का कलेवर बढ़ा न करने के विचार से इसका हिन्दी अनुवाद नहीं किया गया। इस मन्त्र मे दशमिक प्रणाली का कितना स्पष्टतया वर्णन किया है। इसी प्रकार के अन्य भी मन्त्र वेदों मे विद्यमान हैं।

हमारा सुझाव यह है कि यह दशमिक प्रणाली जनता के हित के लिए बनाई गई है अतः इसके नाम इतने सरल प्रचलित और अन्वर्थक होने चाहिये कि प्रत्येक भारतीय भली भान्ति उनको स्मरण रख सकें। इसके लिये हमें अपने वैदिक वाङ्मय का आश्रय लेना चाहिए और दशक द्विदशक, त्रिदशक आदि सार्थक नाम नये माप तौलों के रखने चाहिये। स्वतन्त्र भारत का गौरव और भारतीय संस्कृति की रक्षा भी इसी मे है कि हम अपने व्यावहारिक नाम वैदिक संस्कृति और सभ्यता के अनुकूल ही रखें।

मैं आशा करता हू कि नई माप तौल प्रणाली के अधिकारी महानुभाव मेरे सुझाव पर विचार कर अपने ही ढंग के नाम नये माप तौलों के रखकर जनता की कठिनाई को दूर करेंगे।

साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
अग्रहायण१६शक१८८० (७दिसम्बर५८)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष : ५११३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्यमित्र हीरक जयन्ती

को

सफल बनाइए

आर्यसमाज के चार-प्रसार और संघटन की सुदृढ़ता

के लिए

एकमात्र साधन 'आर्यमित्र' है

जो साठ वर्षों से निरन्तर मौन साधक के रूप में समाज, राष्ट्रभाषा हिन्दी, साहित्य, धर्म, राष्ट्र और मानव संस्कृति आदि सभी क्षेत्रों में वैदिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने में संलग्न रहा है। सभी क्षेत्रों में आदर्शों की स्थापना ही उसका एक मात्र उद्देश्य रहा है।

यदि आप चाहते हैं कि भविष्य में भी

'आर्यमित्र'

- ★ आर्यसमाज के प्रचार
- ★ सिद्धान्त समर्थन
- ★ निर्भीक आलोचना
- ★ समाज-सुधार
- ★ राष्ट्र नव निर्माण
- ★ विश्व शान्ति
- ★ वैदिक संस्कृति समुद्धार
- ★ नैतिक उत्थान
- ★ आदर्श पत्रकारिता
- ★ राष्ट्रभाषा हिन्दी सेवा
- ★ विश्व बन्धुत्व
- ★ मानव संस्कृति

आदि सभी क्षेत्रों में सामाजिक चेतना जागृत करता रहे तो आर्यमित्र को समर्थ बनाने में अपना सहयोग प्रदान कीजिए।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती की सफलता आपके सहयोग पर ही निर्भर है। पचास हजार रु० की जयन्ती निधि मे अपनी सामर्थ्यानुसार सहायता कीजिए और इष्टमित्रों से सहायता दिलवाकर पुण्य के भागी बनिए।

आर्यमित्र की उन्नति के इस यज्ञ में पड़ी हुई प्रत्येक आहुति मानवता के नव निर्माण में सहायक होगी।

संयोजक—'आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति' लखनऊ

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

आर्यमित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का साप्ताहिक मुखपत्र

गुरुकुल भूमि आर्यमित्रनगर के रूप में परिवर्तित होने लगी

जयन्ती कार्यालय कुलभूमि में

बृहद्यज्ञ, अनेकों सम्मेलनों, प्रदर्शनियों, वाक् एवं क्रीडा प्रतियोगिताओं आदि के प्रयत्न आरम्भ

कुलभूमि आर्य जनता को सादर निमन्त्रित करती है

अभी से गुरुकुल वृन्दावन पहुंचने का निश्चय कीजिये और जयन्ती की सफलता में जुट जइये

गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता तथा जयन्ती समारोह के प्रबन्ध संयोजक

श्री नरदेव स्नातक एम. पी. व श्री आचार्य बृहस्पति शास्त्री एम. ए.

उपकुलपति गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन की

आर्य जनता से विनम्र अपील

आर्यमित्र द्वारा जयन्ती के प्रबन्ध संयोजक के नाते श्री नरदेव स्नातक जी व श्री आचार्य बृहस्पति जी ने आर्य जनता को कुलभूमि में पधारने का सादर निमन्त्रण देते हुए अपील की है कि आर्य बन्धु आगामी जयन्ती समारोह के लिये कुलभूमि में पधार कर हमें स्वागत का अवसर प्रदान करें और हमें अनुगृहीत करें। जयन्ती समारोह का आयोजन विशाल उच्च स्तर पर किया जा रहा है जिससे उसे आर्य समाज के इतिहास में अपूर्व समारोह के रूप में सदैव स्मरण किया जा सके।

अनेकों सम्मेलनों, प्रदर्शनियां, परिषदों, अखिल भारतीय वाक् एवं क्रीडा प्रतियोगिताओं आदि के आयोजन के लिये सम्बन्धित क्षेत्रों में प्रगति हो रही है।

कुलभूमि आर्यमित्र नगर में शनै शनै परिवर्तित हो जायगी। जयन्ती कार्यालय १५ दिसम्बर से सभा मन्त्री श्री ठा० कृष्णसिंह जी के निरीक्षण में गुरुकुल में खुल रहा है। आर्यमित्र नगर का स्वरूप, विरजानन्द द्वार, दयानन्द मार्ग, आर्य नेताओं के नाम पर मण्डपों और शिविरों की रचना बाजारों का निर्माण, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हैदराबाद, राजस्थान आदि प्रान्तों के पृथक क्षेत्रों आदि का विशाल पैमाने पर निर्माण शीघ्र ही आरम्भ हो जायगा जिससे जयन्ती काल तक कैम्पों और बाजार आदि की व्यवस्था पूर्ण हो सकेगी।

गुरुकुल में इस अवसर पर पधारने के लिये निमन्त्रित करते हुए कुलवासियों को विशेष हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। आर्य जनता की सभी सुख सुविधाओं का दायित्व स्वीकार करते हुए हम आपको सादर निमन्त्रित करते हैं।

"गुरुकुल चलो" "जयन्ती सफल बनाओ", यही आज प्रत्येक आर्य का नारा होना चाहिये।

वर्ष	सम्पादक—	अङ्क
६०	स्नातक उमेशचन्द्र एम. ए.	४७

अध्यात्म-धारा

श्रेय और प्रेय मार्ग

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम० ए०, एल०टी०, डी० बी० कालेज, गोरखपुर]

में श्रेय और प्रेय मार्गों का दुराहा भ्रम उत्पन्न करता है। शास्त्रों ने प्रेय के आकर्षण से बचने और श्रेय को अपनाने का सन्देश दिया है। उपनिषद् की कथा के आधार पर विद्वान् लेखक ने विषय को सरल बना दिया है।

—सम्पादक

मनुष्य के जीवन का उद्देश्य सुख और शांति प्राप्त करना है। इसके लिए मनुष्य भटकता है, घूमता है और अपने लिए अलग अलग मार्ग चुनता है। परन्तु उसे शान्ति नहीं मिलती, सुख नहीं मिलता। वासना और विचार के पुतले इस दुर्बल मानव को यह परम शांति किस प्रकार प्राप्त होगी यही तो विचारणीय विषय है। कठोपनिषद् में यमराज ने नचिकेता को आत्मज्ञान विषयक प्रश्न के उत्तर में लम्बी आयु, संसार के सब सुख, भोग, स्त्रियां, राज्य आदि देने का प्रलोभन दिया परन्तु नचिकेता ने यम से पूछा कि 'क्या इन सब वस्तुओं को प्राप्त कर मैं सुखी हो जाऊंगा, मैं आराम से अपना जीवन बिता लूंगा। यमराज को उसने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि इन विनश्वर वस्तुओं को, उन वस्तुओं को जिन्हें प्राप्त कर मुझे शांति नहीं मिल सकती मैं लेकर क्या करूंगा। तब यम हृदय से प्रसन्न हुआ और उसने श्रेय तथा प्रेम मार्ग में से श्रेय मार्ग को चुनने पर नचिकेता को बधाई दी। प्रश्न उठता है यह श्रेय और प्रेय मार्ग है क्या? जगत में दो प्रकार के कर्म हैं। एक वह जिनके आरम्भ में कोई कष्ट नहीं मालूम होता, किन्तु बहुत ही मनोहर मालूम होते है परिणाम जिसका ठीक नहीं इसको प्रेय मार्ग अर्थात् लोको न्नति का मार्ग, या प्रवृत्ति का मार्ग कहा जा सकता है। दूसरा वह मार्ग जिसके प्रारम्भ में कोई सुख नहीं मिलता किन्तु विशेष दुःख भोगना पड़ता है परन्तु अन्त में महासुख प्राप्त होता है जिसे मोक्ष कहते हैं। मोक्ष का अर्थ है स्वतंत्रता, आनन्द। मोक्ष का अर्थ है दुःख से, चिन्ता से छुटकारा। मोक्ष का अर्थ है परम सुख केवल शान्ति। कठोपनिषद् में इन मार्गों के प्रसंग में एक मंत्र आया है—

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्य मेतस्तौ सम्परीत्यविविनक्ति धीरा। श्रेयोहि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते, प्रेमो मन्दो योगक्षेमाद्‌वृणीते॥

अर्थात् संसार में श्रेय और प्रेय दोनों मार्ग मनुष्य को प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान् उन दोनों को प्राप्त होकर विचार करता है। विद्वान् निश्चय ही प्रवृत्ति मार्ग से निवृत्ति मार्ग को स्वीकार करता है मूर्ख सांसारिक सुख के प्राप्त करने और उनको रक्षित रखने के विचार से प्रेय मार्ग को स्वीकार करता है। प्रेय मार्ग में इन्द्रियां का अपने विषयों से मिलाप होता है कुछ समय के लिए तृप्ति भी होती है इसी लिए यह हरा भरा, आराम देने वाला प्रतीत होता है। और श्रेय सूखी पगडंडी है। प्रलोभनों से निरन्तर युद्ध करने का मार्ग है। यह संयम और अनासक्ति का मार्ग है। प्रेम मार्ग पर चलने वाले अपने आपको बड़ा भाग्यवान् और सुखी समझते हैं पर अन्त में खाल्य के सौश्री मुनि की तरह यही कहने पर बाधित होते हैं कि इस मार्ग पर चलने वालों के लिए कोई सतुष्टि नहीं, शांति नहीं, विश्राम नहीं

सोलोमन के जीवन से भी ऐसा ही ज्ञात होता है। इसका सारा जीवन राजकीय विलासता का जीवन था, सात सौ स्त्रियां थीं, अब देखिए कि इसके पास धन, दौलत राज्य, शक्ति कितनी महान् होगी परन्तु उसके आत्मिक शब्द ये थे —

"Vanity of All Vanities, All is Vanity

क्या केवल भोग से शांति मिलेगी? यह मनुष्य भोग भोगते समय हंसता भोग लेने पर रोता है। भोग में सच्चा सुख नहीं है। अनिबन्ध, अमर्याद भोग में सुख नहीं। विधिहीन, संयमहीन, व्रतहीन भोग रुलाता है। वह हमको भी रुलाता है और समाज को भी। भोग भोगने का प्रयोग समाज ने करके देख लिया है। ययाति राजा लगातार भोग का प्रयोग करके देखा। वह बार बार तरुण बन जाता था। अपने पुत्र की तरुणता ले लेता और भोग भोगता था लेकिन अन्त में बेचारा घबरा गया। हजारों वर्ष तक प्रयोग करके उसने मानव जाति को यह सिद्धान्त दिया —

'न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति' यदि वर्षों तक काम का उपयोग किया जाय तो भी वह शांत नहीं होता। अग्नि में आहुति डालने से वह बुझती तो नहीं किन्तु अधिकाधिक प्रज्वलित ही होता है।

तब यह प्रयोग असफल हो गया तो क्या करें? इन्द्रियां तो भोग के लिए ललचाती रहती है।

ईश्वर ने हमें बनाया दास इन्द्रियों का, हम इन्द्रियों के गुलाम हैं। हम एकदम इन्हें किस प्रकार अपने काबू में करें? यदि इन्हें हम बिल्कुल भोग न दें तो ये अपनी जबान लपलपाने लगती हैं और मौका देखते ही उच्छृङ्खलता बन जाती हैं। इन्हें भूखा रखना, इन्हें जबरदस्ती मनुष्यता सिखाना कठिन है। इन्हें बन्धन मुक्त स्वतन्त्र बनाना भी विनाशकारक है अतः उपनिषद्‌कार ने बतलाया प्रवृत्ति मार्ग से निवृत्ति मार्ग को स्वीकार करो।

मनुष्य भोग का जीवन व्यतीत करे या त्याग का, दुनिया में रहे या इससे भागने की चिन्ता करे। ऋषियों ने ईशोपनिषद् के 'ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्, तेनत्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्' हे मानव! संसार का सम्पूर्ण भोग्य पदार्थ तेरे पिता परमात्मा का है। यह वैभव उसका है, उसको समझकर इसका उपभोग कर जैसे तुझे मिला है वैसे किसी दिन तुझ से छूट भी जाना है—यह समझकर इसे अपना न समझकर भोग कर, त्याग पूर्वक उपभोग कर, निवृत्ति पूर्वक प्रवृत्ति कर, जब छोड़ने की घण्टी बजे तब छोड़ने के लिए तैयार रह कर उपभोग कर। इसी का तात्पर्य है प्रेय से श्रेय मार्ग की ओर जाना।

इसको हम सरल शब्दों में इस प्रकार कह सकते हैं कि आत्मा को प्रेय मार्ग अर्थात् प्रकृति के पांच भूतों और उनके गुणों में ही फसे कहना है कि इनसे छुटकारा पाकर परमात्मा से मिलना है। यदि प्रभु मिलन की चाह है तब तो प्रेम मार्ग को छोड़कर श्रेय मार्ग पर चलना होगा। प्रेम मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति यद्यपि अपनी अज्ञानता को नहीं समझते परन्तु उनकी स्थिति ऐसी होती है जैसे 'अन्धेनैव नीयमाना यथान्धा' अर्थात् अन्धे से ले जाए जाते हुए जैसे अन्धे व्यक्ति गड्ढे में गिरते हैं वैसे ही प्रेय मार्ग वालों की हालत होती है। यह ठीक है कि—

आश्चर्योऽस्य वक्ता कुशलोऽस्य लब्धाऽऽश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः।

अर्थात् श्रेय मार्ग कठिन है अतः बहुत तो इसे जानना ही नहीं चाहते और जो जानना भी चाहते हैं इनमें से बहुतों को यह समझ में ही नहीं आता और इस मार्ग को बतलाने वाले भी बहुत कम व्यक्ति हैं। यदि इससे परिचित होना चाहते हो तो स्वामी दयानन्द जी के अनुसार यह है कि अपनी अन्तरात्मा की आवाज सुनो। प्रत्येक व्यक्ति को परमात्मा अपना आदेश देता है परन्तु स्वार्थी सुनता हुआ भी नहीं सुनता, कुमार्ग पर चलने लगता है, फिर भी अन्तरात्मा से आवाज आती है, 'क्या कर रहे हो सम्भलो, पतित न हो जाओ, गिरो नहीं, उठो।'

यह आवाजें जो सुन लेता है और उसके अनुसार चलता है वह कुकर्म से बच जाता है, वह प्रेय से श्रेय मार्ग की ओर बढ़ जाता है वह स्वयं इन तत्वों से ऊपर उठ जाता है और उस लोक को प्राप्त होता है जहां न कष्ट है, न चिन्ताएं, जहाँ न दुःख है न शोक—जिसे मोक्ष कहते हैं। इसलिए यम ने नचिकेता से कहा 'तूने हे नचिकेता, प्रिय रूप विषयों का विवेचन करते हुए छोड़ दिया, इस भोग सम्पत्तिमय शृंखला को तूने स्वीकार नहीं किया, जिसमें बहुत मनुष्य मग्न हो जाते हैं—फंस जाते हैं इसलिए तू इन अनित्य साधनों से नित्य आत्मा को नहीं प्राप्त किया जा सकता इस तत्व से परिचित हो गया है इसलिए तुझे वह चिरकालिक सुख ब्रह्म प्राप्ति का आनन्द मिल जायगा। संसार की भोग कामनाएं अल्पकालिक और सामयिक हैं। यह ब्रह्म प्राप्ति का मार्ग अब तेरे लिए खुला है।

इस प्रकार श्रेय और प्रेय मार्ग का अन्तर समझा कर नचिकेता को श्रेय मार्ग का अधिकारी यम ने माना और उस श्रेय मार्ग पर चलने का आदेश दिया।

वेदोपदेश

ओम् शर्मास्यवधूतंꣳरक्षोऽवधूताऽअरातयोऽदित्यास्त्वगसि प्रतित्वादितिर्वेत्तु । अद्रिरसि वानस्पत्यो ग्रावासि पृथुबुध्नः प्रति त्वादित्यास्त्वग्वेत्तु ॥ यजु० १।१४

हे यज्ञ, तू सुखकारक एवं आश्रयणीय है। तुझमे रोग विनष्ट होते हैं तथा रोगों के उत्पादक कीटाणु भी नष्ट होते हैं। तू पृथिवी की त्वचा की भांति रक्षक है। वह तुझे उक्त रूप में स्वीकार करे। तू वनस्पतिमय पर्वत के समान है। विस्तृत अन्तरिक्ष में होने वाले वर्षाभिमुख मेघों के समान है। पृथ्वी पर त्वगूरूप से वर्तमान वायु तुझको रक्षक तथा शोधक रूप में स्वीकार करे।

आर्यमित्र

लखनऊ—१४ दिसम्बर १९५८, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०५९

जयन्ती का निमन्त्रण

हिन्दी जगत्, आर्य समाज और शायद भारत में यह पहला अवसर होगा जब एक साप्ताहिक पत्र एक विशाल समारोह सम्मेलन आदि के रूप मे जयन्ती उत्सव मनाने जा रहा है। आर्यमित्र की हीरक जयन्ती योजना भी एक क्रान्तिकारी पग के रूप में स्मरण की जायगी क्योंकि पत्रकारिता के क्षेत्र में उसका यह आयोजन नवीन प्रेरणाओं से ओत प्रोत होगा।

सामान्यतया जो पत्र जिस स्थान से निकलता है और उसके मालिक जिस स्थान से सम्बन्धित होते हैं उन पत्रों की जयन्तियां आदि उन्हीं स्थानों पर मनाई जाती हैं परन्तु आर्यमित्र का अपना एक इतिहास है और है एक अपनी विशेष परम्परा। मुरादाबाद, आगरा, लखनऊ आदि विविध स्थानों से प्रकाशित होना, कभी दैनिक अर्द्ध साप्ताहिक रूपों में भी प्रकट होना उसकी प्रगतियां रही हैं। स्थान विशेष में छपने आदि के कारण भी वह स्थान विशेष का न होकर वह सम्पूर्ण आर्य जगत् का ही पत्र रहा है। उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य जनता के विचारों और सिद्धान्त प्रचार के लिए उसके संचालन का दायित्व लिया हुआ है पर मित्र का व्यापक दृष्टिकोण आर्यों में अपनत्व का रूप धारण कर चुका है। कभी कभी तो मित्र कार्यालय में उत्तर प्रदेश से बाहर के ही पत्र और लेख आने लगते हैं। इस प्रकार किसी स्थान विशेष का न होने और किसी एक सभा से सीमित न रहने आदि के कारण मित्र की आज जो व्यापक स्थिति है उस सब पर गम्भीरता पूर्वक विमर्श के पश्चात् यह निश्चय किया गया कि आर्यमित्र की हीरक जयन्ती सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रम होने के नाते गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में मनायी जाय।

एक सहोदर संस्था होने के नाते गुरुकुल का मित्र के साथ निकटतम सम्बन्ध है और सम्पूर्ण आर्य जगत् को अपने समान वयस्क भाई का स्वागत करने के लिए अपने स्थान पर निमन्त्रित करने का निर्णय करके गुरुकुल ने जिस उदारता सहृदयता और बन्धुत्व का परिचय दिया है उस भावना का स्वागत किया जाना चाहिए।

मित्र के स्वागत समारोह में आने वाली सम्पूर्ण जनता के स्वागत आतिथ्य का भार गुरुकुलवासियों ने स्वीकार किया है। गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता एवं जयन्ती समारोह के प्रबन्धक श्री नरदेव स्नातक एम० पी० व श्री आचार्य बृहस्पति उप कुलपति ने आर्य जनता को मित्र जयन्ती में गुरुकुल पधारने का निमन्त्रण भेजते हुए जो अपील की है मित्र परिवार उसके लिए उनका हार्दिक आभार मानता है और चाहता है कि आर्य जनता इस समारोह को 'न भूतो न भविष्यति, के रूप मे सफल बनावे।

आर्य समाज के सम्मुख आज जितनी समस्याएं हैं सांस्कृतिक, धार्मिक, राष्ट्रीय, शिक्षा और समाज नैतिकोत्थान आन्दोलन, शुद्धि और ईसाई प्रचार निरोध, वेद अनुसन्धान और वेद प्रचार सभी विषयों पर गुरुकुल के शान्त वातावरण में गम्भीरता पूर्वक विचार हो सकेगा। हमारा प्रयत्न होगा कि यह समारोह मथुरा जन्म शताब्दी, अजमेर अर्द्ध शताब्दी आदि के समान आर्य समाज के इतिहास में स्मरणीय और प्रेरणाप्रद समारोह बन सके।

जयन्ती समारोह की सफलता के लिए दो प्रकार के दायित्व हैं एक प्रबन्धकों का और दूसरा जनता का। प्रबन्धकों ने अपनी गति विधियां आरम्भ कर दी हैं। योजना प्रकाशित हो चुकी, व्याख्या भी हो चुकी अब सब कार्य व्यवस्थित करने का दायित्व शेष है।

दूसरा दायित्व जनता का है और हमे यह लिखते हुए प्रसन्नता है कि उस ओर भी आर्य जन व आर्य समाजें सचेष्ट है और हमें उत्साह वर्द्धक सूचनाएं मिल रही हैं। योजना की एक लाख की अपील मे आपकी एक दिन की आय तथा जयन्ती अवसर पर आपकी उपस्थिति ये दो ही बातें हैं जो आपके उत्साह की परिचायक होंगी और आपके अधिकारियों को आर्यसमाज का कार्य आगे बढ़ाने मे सहायक होंगी। आप अभी से अपने कर्तव्य का निर्धारण और पालन आरम्भ कर दें। आपका उत्साह दूसरों को भी प्रोत्साहन देगा और महान् यज्ञ सबके सहयोग से पूर्ण हो सकेगा।

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के आर्यों का विशेष दायित्व है। पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, बिहार, हैदराबाद, बंगाल, मध्य प्रदेश, केरल, नैपाल, फीजी, थाइलैण्ड, अफ्रीका मारीशस सभी स्थानों से आर्यों ने जयन्ती पर अपने पहुंचने की सूचनाएं भेजकर हमें प्रोत्साहित किया है। उन सबकी आशाओं को सफल बनाना और उनके आर्योचित स्वागत का दायित्व उत्तर प्रदेश के आर्यों पर सबसे अधिक है। आशा है आर्य परिवार के गौरव तथा आतिथ्य की भारतीय परम्परा को ध्यान मे रखते हुए प्रान्त के आर्य भाई इस कार्य को सफल बनाने में पूर्ण उत्साह से लग जायेंगे और अपने प्रयत्न से आर्य समाज को नवीन प्रेरणा दे सकेंगे।

देर आयत दुरुस्त आयत

भारत सरकार ने एक आज्ञा द्वारा अशोक होटल में भारतीय भूषा के प्रति जो प्रतिबन्ध था उसे हटाने का आदेश दे दिया है। आदेश में होटल के स्टाफ से कहा गया है कि वे "किसी भी ऐसे व्यक्ति को, जो स्वच्छ वस्त्रों मे हो प्रवेश करने दिया करें। किसी भी विशेष प्रकार की वेषभूषा पर जोर देना निषिद्ध है।"

सरकार को सुबुद्धि आयी देर से ही सही उसके लिये उसे बधाई देते हैं आशा है ऐसे सभी मामलों में जिनका राष्ट्रीय और सांस्कृतिक भावनाओं से अभिन्न सम्बन्ध हो दिमागी गुलामी से मुक्त होकर विचारने और निर्णय करने का ध्यान रक्खा जायगा। इस अवसर पर हम उन सभी को हार्दिक बधाई देना चाहेंगे जिन्होंने अशोक होटल में भारतीय वेशभूषा पर प्रतिबन्ध के विरुद्ध विरोध और रोष प्रकट कर सरकार को अपनी भूल-सुधारने के लिये विवश किया।

साहित्यकार का सम्मान

आगरा विश्व विद्यालय के दीक्षान्त अवसर पर हिन्दी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री डा० वृन्दावनलाल वर्मा जी को डाक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया है। विश्वविद्यालय इस शुभ कार्य के लिये बधाई का पात्र है। मित्र परिवार की ओर से इस शुभावसर पर सम्मानित विद्वान् वर्मा जी के प्रति हर्ष और शुभकामनाएं प्रकट करते हैं। आदरणीय वर्मा जी हिन्दी के उपन्यास सम्राट श्री प्रेमचन्द्र जी के अभाव की पूर्ति का सफल प्रयत्न कर रहे हैं। प्रभु हिन्दी की सेवा के लिये सरस्वती पुत्र वर्मा जी को दीर्घायु प्रदान करें और हमारा साहित्य उनको यशः सुरभि से सदैव सशक्त बना रहे।

मास्टर तारासिंह जिन्ना के पथ पर

पंजाब की अशांति के एकमात्र कारण मास्टर तारासिंह शिरोमणि गुरुद्वारा कमेटी के निर्वाचन में पराजय के उपरान्त से जिस विफलता के शिकार हुए हैं उसने उनके मस्तिष्क का सतुलन समाप्त कर दिया है।

उन्होंने ३० नवम्बर के वक्तव्य में निम्न बाते कहकर अपनी साम्प्रदायिकता का नग्न नृत्य किया है—

(१) हम पंजाबी सूबे की मांग पर डटे रहेंगे।

(२) रीजनल फार्मूला समाप्त हो चुका, अकाली कांग्रेस के साथ अब बधे नहीं रहेंगे।

(३) कांग्रेस सरकार सम्प्रदायवादी है, मुझे कांग्रेस पर विश्वास नहीं और श्री नेहरू भी साम्प्रदायिक

(शेष अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

लोगों के शिकार हैं अतः वे भी मुझे मान्य नहीं है।

(४) हिन्दुओं के अतिरिक्त दूसरे किसी धर्म का व्यक्ति मुझे निर्णायक स्वीकार होगा। आदि

उपर्युक्त सभी बातें उनकी दिवालिया मनोवृत्ति की सूचक हैं।

रीजनल फार्मूला, कांग्रेस और नेहरू अपने आप उनसे निबट लें हमें तो यह तमाशा देख कर जनता के सम्मुख आर्यसमाज के पक्ष की सत्यता सिद्ध करनी है।

आज जनता निर्णय करे जिन तारासिंह के विषय मे हमारे प्रधान मंत्री ने कहा हो उनका सम्मान मेरा सम्मान है और बुला बुलाकर जिन्हें टी पार्टियां दी गयीं वे भारत के सच्चे वफादार हैं, प्रधान मन्त्री के मित्र है या आर्य समाज सच्चा है, स्वार्थहीन है और तप त्याग सहन करके भी राष्ट्र का पथ प्रदर्शन करना चाहता है। मा० तारासिंह की आज की स्थिति ने कांग्रेस उच्चसत्ता की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति की भांति ही सिक्ख तुष्टीकरण नीति को भी असफल और राष्ट्रघातक एवं साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन देने वाला प्रमाणित कर दिया है। आज भी अवसर है तुष्टीकरण की नीति से ऊपर उठकर पंजाब मे स्वस्थ वातावरण को बढ़ावा दिया जाय और राष्ट्रीयता के मौलिक तत्वों की रक्षा करते हुए एकता के लिए प्रयत्न किया जाय। पर यह तभी हो सकता है जब कांग्रेस साहस का परिचय दे यदि ऐसा। सम्भव न हुआ तो कांग्रेस ने जिस दूसरे जिन्ना का जन्म दिया है वह क्या कुछ न करा बैठे, समय रहते समझ से काम लेना ही बुद्धिमानी है। आस्तीन के सांप को बाहर निकाल कर मान मर्दित कर देना चाहिये नहीं तो फिर हाथ मलते रहना पड़ेगा।

राष्ट्रपति चिरायु हों

३ दिसम्बर को भारत के राष्ट्रपति अजातशत्रु डा० राजेन्द्रप्रसाद का जन्म दिवस सम्पूर्ण भारत में बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। मित्र परिवार की ओर से भी उन्हें बधाई भेजी गयी। भारत के प्रथम नागरिक और कर्णधार होने के नाते ही नहीं राष्ट्र गौरव और देशरत्न होने के कारण भी वे हमारी आशाओं के आधार हैं। विदेशी चकाचौंध और अंधाधुन्ध आकर्षण से स्वयं और राष्ट्र को बचाते हुए आज वे राष्ट्र का जो नेतृत्व कर रहे हैं वह हमारे हृदयों में प्रेरणा और उल्लास की तरगे प्रवाहित करता है। भारतीय संस्कृति के दूत रूप में उनका जीवन सदैव अभिनन्दनीय रहेगा। प्रभु उन्हें चिरायु करें।

श्री विश्वनाथ त्यागी जी का प्रशंसनीय उत्साह

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० विश्वनाथ त्यागी बी० ए० वैदिक मिशनरी ने जयन्ती समारोह की सफलता के लिये शुभ कामनाएं भेजते हुए प्रधान सभा को जयन्ती तक अपना सारा समय जयन्ती के कार्यो के लिये देने का अभिवचन दिया है। श्री त्यागी जी के सहयोग के लिए हम उनके आभारी है। इस महत्वपूर्ण कार्य के लिये और भी बहुत से आर्य बन्धु अपना समय प्रदान कर जयन्ती का सन्देश प्रत्येक नर नारी तक पहुँचाने में सहयोग देंगे। जयन्ती समिति इस प्रकार का सहयोग देने वाले सभी बन्धुओं का हार्दिक स्वागत करेगी।

आर्यमित्र के प्राचीनतम अङ्क प्रतियोगिता

आर्यमित्र हीरक जयन्ती के अवसर पर आर्यमित्र की प्रदर्शनी के साथ साथ एक इस प्रकार की प्रतियोगिता भी की जायगी कि किन व्यक्तियों और आर्य समाजों, पुस्तकालयों के पास प्राचीनतम अङ्क सुरक्षित हैं। सबसे प्रार्थना है कि वे अपने स्थानों पर खोजकर शीघ्र सूचना भेजें जिससे उन्हें प्रतियोगिता में सम्मिलित किया जा सके। पांच पुरस्कार भी समिति की ओर से भेंट किये जायेंगें।

—संयोजक
आर्यमित्र हीरक जयन्ती

कन्या गुरुकुल सासनी का वार्षिकोत्सव

आगामी २३, २४, २५ दिसम्बर को उत्तर प्रदेश की ही नहीं सम्पूर्ण भारत की महिला शिक्षा संस्था कन्या गुरुकुल सासनी (अलीगढ़) का २८ वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न होने जा रहा है। आर्य जनता से प्रार्थना है इस अवसर पर उत्सव में पधार कर संस्था की प्रगति से परिचित हों और संस्था को अपना आशीर्वाद प्रदान करें। कन्याओं के दीक्षान्त समारोह के लिए विशेष आयोजन किये जा रहे है। इसी अवसर पर कन्याओं का नवीन प्रवेश भी होगा।

लक्ष्मीदेवी
मुख्याधिष्ठात्री
कन्या गुरुकुल सासनी अलीगढ़

विशेषांक के लिए लेखकों से निवेदन

आपको यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज के सुविख्यात एवं हिन्दी के प्राचीनतम साप्ताहिक पत्र "आर्यमित्र" की साठ वर्षीय सेवाओं के उपलक्ष्य में स्वामिनी सभा की ओर से "आर्यमित्र की हीरक जयन्ती" मनाने का निश्चय किया गया है।

हीरक जयन्ती समारोह की तिथियां ६ से ९ मार्च १९५९ निश्चित की गई हैं और जयन्ती की स्मृति में हिन्दी पत्रकार कला विद्यालय गुरुकुल में स्थापित करने की दृष्टि से गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन [मथुरा] का स्थान समारोह के लिए निश्चित किया गया है।

जयन्ती के शुभावसर पर मित्र के इतिहास, उसकी साहित्यिक सामाजिक धार्मिक राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक सेवाओं की ऐतिहासिक समीक्षा से युक्त और उक्त सभी क्षेत्रों के लिए नवीनतम सन्देश व आदर्श विचारधाराओं से युक्त वृहत् हीरक जयन्ती विशेषांक निकालने का निश्चय किया गया है।

आप हिन्दी के यशस्वी एवं सुप्रसिद्ध लेखक हैं। इस अवसर पर हम आपसे शुभ सन्देश और लेख के लिए साग्रह अनुरोध करते हैं। आशा है आप हमारी प्रार्थना पर विचार कर इस साहित्य यज्ञ मे अपनी अमूल्य रचना भेजकर सहयोग प्रदान करते हुए पत्रकारिता की मिस्नरी भावना को प्रोत्साहित कर अनुगृहीत करेंगे।

विशेषांक सामग्री सङ्कलन का कार्य आरम्भ हो चुका है अतः अपनी कृति जितनी शीघ्र सम्भव हो सके भेजने की कृपा करें जिससे प्रकाशन व्यवस्था में सुविधा हो सके।

विनीत :—
उमेशचन्द्र स्नातक
सम्पादक
"आर्यमित्र"

ला. रामगोपालजी अबोहर में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मन्त्री श्रीयुत लाला रामगोपाल जी ७-१२-५८ को अबोहर गए। भटिण्डा और अबोहर रेल्वे स्टेशनों पर आर्य जनता ने जोरदार स्वागत किया। रेल्वे स्टेशन से अबोहर नगर मे उनका शानदार जलूस निकाला गया जिसमे सहस्रों नर नारियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। दोपहर को आर्य समाज अबोहर की ओर से श्री लाला जी का सार्वजनिक स्वागत किया गया और ५०१) की थैली भेंट की गई। इस सार्वजनिक स्वागत में नगर की सनातन धर्म सभा की संस्थाओं ने (कन्या पाठशालाओं आदि ने) भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। थैली का धन आर्य कन्या पाठशाला की सहायतार्थ दे दिया गया। रात्रि की विशाल सार्वजनिक सभा मे श्री लाला जी का भाषण हुआ जिसमें हिन्दी आन्दोलन को पुनः प्रारम्भ करने का औचित्य बताया गया तथा ईसाई प्रचार निरोध कार्य को आगे बढ़ाने की प्रेरणा की गई।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

सार्वदेशिक सभा देहली की परीक्षायें
परीक्षा शुल्क में कमी

—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली ने आर्य जनता के हित के लिए आर्य सिद्धान्त विशारद, आर्य सिद्धान्त भूषण, और आर्य सिद्धान्त रत्न परीक्षायें प्रचलित की है। अधिक जनता के लाभ की दृष्टि से इनका शुल्क अगली परीक्षाओं से कम कर दिया गया है।

विशारद ५० नये पैसे
भूषण १ रुपया
रत्न २ रुपये

अगली परीक्षाएं बसन्त पंचमी दि० १२ फरवरी १९५९ से होंगी। नियमावली तथा पाठविधि सर्वत्र भेजी जा चुकी है उसमें कोई परिवर्तन नहीं। फार्म भेजने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर १९५८ ई० है।

आर्यसमाजों और विद्यालयों से निवेदन है कि वे परीक्षार्थियों के फार्म और शुल्क शीघ्र ही नीचे लिखे पते से मंगावें और यथासमय भेजने की कृपा करें।

—धीरेन्द्र शास्त्री एम०ए०
मन्त्री सार्वदेशिक विद्यार्य सभा
रायबरेली, उत्तरप्रदेश

श्रद्धानन्द प्रदर्शनी

—२३ दिसम्बर को गुरुकुल कांगड़ी में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर श्रद्धानन्द प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। इसमें स्वामी जी के ग्रन्थ, हस्तलिखित पत्र, चित्र, वस्त्र, तथा उनके द्वारा व्यवहार में लायी गई वस्तुओं का प्रदर्शन होगा। जिन आर्य बन्धुओं के पास जो ऐसी सामग्री होवे समय से पूर्व अवश्य भेजने का कष्ट करें।

—इन्द्र विद्यावाचस्पति

साप्ताहिक आर्यमित्र हीरक-जयन्ती विशेषाङ्क की

— रूपरेखा —

हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना साठ वर्षीय जीवन पूर्ण करने के उपलक्ष्य में मित्र के 'हीरक जयन्ती विशेषांक' प्रकाशित करने की योजना प्रस्तुत है। विशेषाङ्क लगभग पांच सौ पृष्ठों का होगा और पांच भागों में विभक्त होगा। उसी आधार पर सामग्री संकलित की जा रही है। लेखकों से प्रार्थना है कि इसी रूपरेखा के अन्तर्गत अपनी कृतियां भेजने की कृपा करें।

संस्मृति—

आर्यमित्र का इतिहास—आरम्भ, विकास, और वर्तमान भावी स्वरूप

आर्यमित्र के सम्पादक, संरक्षक और संचालक

आर्यमित्र की सेवाएं—समाज, राष्ट्र, हिन्दी, वैदिक साहित्य, पत्रकारकला आदि क्षेत्रों में

आर्यमित्र और आर्यसमाज

आर्यसमाज का अग्रदूत—प्रत्येक गति विधि का परिचायक

वैदिक विचारधारा का प्रसारक—मानव निर्माण, नैतिक उत्थान, शिक्षा क्रान्ति

विश्व और आर्यसमाज—कृण्वन्तो-विश्वमार्यम् की आधार भूमि का निर्माण देश और विदेश में आर्य समाज का सन्देश

आर्यमित्र और आन्दोलन

धार्मिक संघर्ष—भारत की धार्मिक स्थिति, दयानन्द का सन्देशवाहक आर्यसमाज, पौराणिक गुरुडम, इस्लाम, ईसाइयत और नास्तिकता से संघर्ष आदि

सामाजिक क्रान्ति—बाल विवाहनिषेध, पर्दाप्रथोन्मूलन, जाति भेद निवारण और वर्णाश्रम धर्म की स्थापना, हरिजनोद्धार और शुद्धि नारी शिक्षा का प्रचार प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का प्रचार आदि

राष्ट्रीय आन्दोलन—स्वाधीनता का सन्देश वेद, दयानन्द, श्रद्धानन्द, लाजपतराय, भगतसिंह, बिस्मिल आदि को प्रेरणा देकर राष्ट्रीय चेतना का प्रयत्न

धार्मिक अधिकार रक्षा आन्दोलन—हैदराबाद का धर्मयुद्ध

राष्ट्रभाषा हिन्दी रक्षा आन्दोलन—पंजाब का हिन्दी आन्दोलन

प्रचलित आन्दोलन—(अ) राष्ट्र में नैतिक अभ्युत्थान आन्दोलन
(आ) ईसाई प्रचार निरोध आन्दोलन
(इ) गो सम्वर्धन आन्दोलन

साहित्य—

राष्ट्र भाषा हिन्दी—विकास, प्रचार और सामयिक समस्याएं

भारतीय भाषाओं के साथ—हिन्दी का सहयोग और समन्वय

राष्ट्रीय एकता और लिपि—देवनागरी लिपि की उपयोगिता और वैज्ञानिक दृष्टि से समीक्षा

हिन्दी पत्रकार कला—आरम्भ वर्तमान और भविष्य
(अ) साहित्यिक विकास में सहयोग
(आ) पत्रकारिता मिशन या व्यापार, आरम्भ और आज का अन्तर
(इ) पत्रकारिता द्वारा जनतन्त्र और नैतिकता की रक्षा

भारतीय साहित्य का विश्व में स्थान—(अ) वैदिक वाङ्मय
(ब) संस्कृत साहित्य
(स) हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व

साहित्य और कला—(क) भारतीय वाङ्मय की अमर विभूतियां
(ख) जीवन और कला
(ग) कला का भारतीय स्वरूप तथा मान्यताएं
(घ) साहित्य और कला में नैतिकता
(ङ) यथार्थ और आदर्शवाद का समन्वय

संस्कृति—

मानव संस्कृति की एकता—संस्कृति की व्याख्या और आदर्श

मानव संस्कृति की अखण्डता और व्यापकता के लिए प्रयत्न—भारतीय प्राचीन व नवीन प्रयत्न, अन्य राष्ट्रों का योग-दान

[महान् पुरुषों के सन्देश और सभी सांस्कृतिक आन्दोलनों की समीक्षा]

शिक्षा-दर्शन और समाज के विकास में—सांस्कृतिक मान्यताओं का समन्वय

संस्कृति का जीवन और विज्ञान पर नियन्त्रण—अणु-युग की विभीषिका और संस्कृति का दायित्त्व

हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों द्वारा

सम्पादन

आर्यमित्र की हिन्दी सेवा और साहित्यिक महत्व की साक्षी है

(१) श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज
(२) श्री सम्पादकाचार्य पं० रुद्रदत्त शर्म्मा जी
(३) श्री पं० हरिशङ्कर शर्म्मा जी
(४) श्री डा० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री एम. ए. तर्क शिरोमणि
(५) श्री पं० लक्ष्मीधर बाजपेयी जी
(६) श्री बनारसी दास चतुर्वेदी जी एम. पी.

आदि अनेकों हिन्दी के विद्वानों ने मित्र के सम्पादन में सहयोग दिया और देते रहे हैं। हिन्दी के अनेक वर्तमान सेवक मित्र के माध्यम से ही हिंदी में पहुंचे। उन सभी सहयोगियों पर मित्र को गर्व है।

हीरक जयन्ती के शुभावसर पर अपने सभी सहयोगियों और हितैषियों की शुभ कामनाओं के साथ मित्र का—

"हीरक जयन्ती विशेषाङ्क"

प्रकाशित होने जा रहा है

स्वराज्य और सुराज्य—

विश्व बन्धुत्व और राष्ट्रवाद, विश्व के स्वाधीनता संघर्षों का इतिहास, भारत की सफलता और विश्व में नव जागरण, राष्ट्र और राज्य का स्वरूप तथा विकास, सुराज्य की भारतीय मान्यताएं।

[राजतन्त्र, प्रजातन्त्र, एकतन्त्र, समाजवाद, सर्वोदयवाद आदि की समीक्षा]

प्राचीन वेदादि शास्त्रों के आधार पर तथा ऋषि दयानन्द, तिलक, गांधी, टैगोर अरविन्द नेहरू आदि के विचार।

विश्व के अन्य विचारक मार्क्स, लेनिन, टालसटाय, प्रिंस क्रोपाटकिन रसेल आदि।

सुराज्य-रथ की प्रगति में बाधाएं

नैतिक चरित्र का गम्भीर प्रश्न, आर्थिक अभाव, मानसिक दासता, अशिक्षा और सामाजिक रूढ़ियां, धार्मिक अन्ध विश्वास, भौतिकवादी दृष्टिकोण की प्रधानता, अध्यात्मवादी भावना का अभाव, योजनाओं की अपूर्णता (एकाङ्गिता), अनेकता की (साम्प्रदायिक भाषायी और प्रान्तवाद की) मनोवृत्तियां आदि।

सन्देश—

वैदिक मान्यताएं, मानव जाति का भविष्य, राष्ट्र के सर्वाङ्गीण विकास की कल्पना।

आर्य समाज का दायित्व और बहुमुखी कार्यक्रम

इसके अतिरिक्त विविध प्रसंगों से सम्बन्धित जीवनियों, श्रद्धांजलियों और प्रेरणात्मक कविताओं कहानियों को भी स्थान दिया जायगा। उन्हीं रचनाओं को प्रमुखता दी जायगी जो स्थायी साहित्य की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होंगी।

आर्य समाज की प्रगति और भावी कार्यक्रम सम्बन्धी रूपरेखा, पत्रकार-कला, हिन्दी विकास, राष्ट्र नव निर्माण सम्बन्धी संक्षिप्त रचनाओं पर भी ध्यान दिया जायगा।

रचनाएं संक्षिप्त, विषय सम्बद्ध, और शुद्ध एवं प्रांजल भाषा में ही आनी चाहिए जिससे विशेषाङ्क का स्तर उन्नत रक्खा जा सके।

आशा है इस व्यापक रूपरेखा के आधार पर ही रचनाएं भेजने का प्रयत्न किया जायगा जिससे रचना को समाविष्ट करना सम्भव और सरल हो सकेगा तथा कार्य में सुविधा रहेगी।

सम्पादक—आर्यमित्र हीरक जयन्ती विशेषाङ्क, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

संस्था-परिचय

जमशेदपुर की राष्ट्रीय धातुकर्म शाला

जमशेदपुर की राष्ट्रीय धातुकर्म शाला २६ नवम्बर, १९५८ को अपना ८ वाँ वर्ष पूरा कर चुकी है। देश में इस्पात उद्योग की उन्नति में इस प्रयोगशाला ने जो मदद दी है, उसका वर्णन इस लेख में है। —सम्पादक

पिछले दस साल के भीतर भारत में २१ प्रयोगशालाएं स्थापित की गयीं। राष्ट्रीय धातुकर्म शाला भी इनमें एक है। भारत १९५८ प्रदर्शनी के विज्ञान मण्डप में प्रयोगशाला ने इस्पात निर्माण की नयी विधि का—जिसे एल डी विधि कहते हैं—ज्ञान होता है।

दूसरी पंचवर्षीय योजना में इस विधि से ७ लाख ५०हजार टन इस्पात बनाने का लक्ष्य है। यह पुरानी विधि के मुकाबले तेज और सस्ती भी पड़ती है। राउरकेला के कारखाने में सबसे पहले इसका प्रयोग किया जाएगा।

इस विधि के सम्बन्ध में जमशेदपुर की राष्ट्रीय धातुकर्म शाला में प्रयोग किये जा रहे हैं। इनसे देशी लोह खनिज के रासायनिक तत्वों का पता चलेगा और यह भी मालूम होगा कि नयी विधि के इस्पात यन्त्र के लिए देशी ताप सह पदार्थ कहां तक काम देंगे।

साधनों का प्रयोग

आरम्भ से ही यह प्रयोगशाला लोहा और अलौह धातुओं की मिश्रित धातुओं को बनाने के लिए अनुसधान कर रही है। यहां प्रयोग के लिए बनाये नये नये धातु, विदेशी धातुओं की नकल मात्र नहीं हैं, वरन् देशी धातुओं के विविध मिश्रणों से बनी नया किस्म की धातु है। प्रयोगशाला ने प्रतिदिन १५ टन लोहा बनाने वाली लो शाफ्ट भट्टी बनायी है, इसमें घटिया किस्म के धातु, खनिज और कोयले आदि से लोहा बनाया जायेगा। ये घटिया पदार्थ ब्लास्ट भट्टियों में काम में नहीं आते, यद्यपि देश में इनकी अधिकता है। आशा है यह भट्टी शीघ्र ही तैयार हो जाएगी और भारत मे बहुतायत से मिलने वाली इन धातुओं और कोयले का सदुपयोग हो सकेगा।

प्रयोगशाला ने निकल रहित स्टेनलेस स्टील (बेदाग इस्पात), निकल रहित सिक्कों की धातु, इलेक्ट्रोलीटिक मेंगनीज डायोक्साइड के उत्पादन की विधि निकालने में भी प्रमुख भाग लिया है।

भारत में अभी तक करोड़ों रुपये का बेदाग इस्पात विदेशों से मंगाया जाता था, अब वह भारत में ही मिलने वाले क्रोमियम, मेंगनीज नाइट्रोजन, तांबा और धातु मिट्टी के कुछ अंशों को मिलाकर बनाया जा रहा है। यह बेदाग इस्पात घर के बर्तनों से लेकर रेलगाड़ियों की फिटिंग तक में इस्तेमाल किया जा सकता है।

प्रयोगशाला ने इलेक्ट्रोलिक मेगनीज, इलेक्ट्रोलिक मेंगनीज डायोक्साइड और ताप-सह भट्टियों के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण अनुसंधान किये हैं।

कारखानों से सम्बन्ध

प्रयोगशाला धातु उद्योगों और संस्थाओं से सम्बन्ध बनाये रखती है, जैसे भारतीय खान कार्यालय, अणु शक्ति प्रतिष्ठान, धातु अन्वेषण समिति और रेल मण्डल आदि। इनके लिये प्रयोगशाला, यूरेनियम, मैंगनीज और क्रोम खनिज के शोधन का प्रयोग कर रही है। इसके साथ ही टीन रहित कांसा और अल्प ऊषा (लो शाफ्ट) भट्टी भी बना रही है और इस सम्बन्ध की प्राविधिक जानकारी भी देती रहती है। इसने भारतीय मानक संस्था को धातु की चीजों के मानक निर्धारण में बड़ी सहायता की है।

धातु के छोटे उद्योगों पर प्रयोगशाला विशेष ध्यान देती है और उनके लिये नयी विधियां निकालती है। हाल ही मे इसने छोटे कारखानेदारों को सिखाने के लिए बिजली से कलई करने की चार विधियों का प्रदर्शन किया था। प्रयोगशाला समय समय पर गोष्ठियों का भी आयोजन करती है। अभी हाल ही में इसने ढलाई की विधियों (फाउन्ड्री टेक्नोलाजी) पर एक गोष्ठी की थी, जो काफी सफल रही।

आर्यमित्र के लेखकों से निवेदन

मित्र में प्रकाशनार्थ जो बन्धु अपनी रचनाएं भेजते हैं उनके प्रेम और उत्साह की प्रशंसा करते हुए हम निवेदन करना चाहते हैं :—

[१] साधारणतः लेख इतने अधिक होते हैं कि एक मास तक लेख प्रकाशित होने की प्रतीक्षा करनी चाहिये। बहुत से भाई इस सम्बन्ध में पत्र व्यवहार आरम्भ कर देते हैं जिसमें शक्ति का व्यर्थ व्यय होता है। उपयोगी रचना अवश्य छपेगी।

[२] लेख यथासम्भव प्रचलित स्थायी स्तम्भों के आधार पर हों और दो कालम का स्थान घेरने वाले हों तो अधिक सुविधा होगी।

[३] कविताएं शुद्ध और उच्चकोटि की होनी चाहिये यदि रचनाएं भेजने से पूर्व किसी स्थानीय साहित्यिक बन्धु से संशोधित कराकर भेज सकें तो अधिक उत्तम हो।

[४] कहानियां ४ कालम से अधिक होने पर स्थानाभाव के कारण प्रकाशित न हो सकेंगी।

[५] कोई भी रचना जो दूसरे पत्र में प्रकाशित हो चुकी हो या आपने प्रकाशनार्थ भेजी हो वह मित्र में न भेजें।

[६] कोई अस्वीकृत रचना लौटाने का नियम नहीं है। रचना भेजने से पूर्व उसकी नकल रख लेनी चाहिये। व्यर्थ पत्र व्यवहार न करें।

—सम्पादक 'आर्यमित्र'

साहित्य-समीक्षण

वायु पुराण एक अध्ययन

(श्री प० भवानीलाल भारतीय, एम०ए० जोधपुर)

★

आर्य समाज वैदिक मान्यताओं वाले ग्रन्थों को ही भारतीय दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने वाला मानता है अन्यों को नहीं। आर्य समाज ऐसा क्यों मानता है यह उन ग्रन्थों की कपोल कल्पनाओं, मिथ्या विश्वासों को सामने रखकर विद्वानों से निर्णय करने का आग्रह करता है। लेखक ने इसी भावना से वायु पुराण की समीक्षा की है। —सम्पादक

वायु पुराण अपेक्षाकृत छोटा पुराण है। इसमें ११२ अध्याय हैं, इस दृष्टि से यह विष्णु और मारकण्डेय के आकार का ही ठहरता है। पुराणों की नाम सूची में मतभेद है, इस दृष्टि से जिस सूची में शिव पुराण है उसमें वायु पुराण नहीं है और जिस सूची में वायु पुराण उल्लिखित हुआ है उसमें शिव पुराण गायब है। इस कठिनाई को दूर करने के लिए पौराणिकों ने वायु पुराण को शिवपुराणान्तर्गत या उसी का विकल्प रूप माना है, किन्तु इससे समस्या का समाधान नहीं होता। महापुराणों की संख्या १८ से बढ़कर उन्नीस हो जाती है।

वायु पुराण की गणना शैव पुराणों में की जाती है। इसे ऋषियों द्वारा किये गये किसी यज्ञ के अवसर पर वायुदेव ने सुनाया था, इसलिए इसे वायु पुराण के नाम से अभिहित किया गया है। जनमेजय के पौत्र अधिसीम कृष्ण के राज्यकाल में इस पुराण का प्रवचन हुआ है। यद्यपि यह समय पर्याप्त प्राचीन है परन्तु महाभारत काल के पश्चात का ही है जब कि पुराणों की रचना हो रही थी और भारतवासी वैदिक साहित्य से विमुख हो रहे थे।

इस पुराण के प्रथम अध्याय में अनुक्रमणिका कथन की गई है और पुराण माहात्म्य के श्लोकों में यह प्रसिद्ध श्लोक मिलता है—

इतिहास पुराणाभ्यां वेद समुपबृंहयेत्॥

साथ ही यह भी कहा गया है, जो द्विज अंगों और उपनिषदों के साथ चारों वेदों को जानता है किन्तु पुराणों को नहीं जानता है, वह चतुर नहीं हो सकता।' परन्तु यह कथन वर्तमान में उपलब्ध अठारह पुराणों के लिए तो उचित प्रतीत नहीं होता क्योंकि भागवतादि पुराण वेदार्थ के जानने में कुछ भी सहायता नहीं करते। इसके विपरीत पौराणिक और स्थापनाओं का स्वीकार कर लेने से वेद के अध्ययन में बाधा ही पड़ती है। अस्तु।

वायु पुराण के प्रारम्भिक दस अध्यायों में सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन है। यह समस्त वर्णन इतना अस्त व्यस्त, विशृंखलित और पूर्वा पर विरुद्ध है कि अत्यन्त ध्यान से पढ़ लेने पर भी सृष्टि प्रक्रिया के विषय में पुराणकार की किसी स्पष्ट धारणा का ज्ञान नहीं होता। इसके लिए केवल वायु पुराण के लेखक को ही दोषी नहीं ठहराया जा सकता, क्योंकि अन्यान्य सभी पुराणों में सृष्टि का वर्णन वायु पुराण के तुल्य ही भ्रष्ट और दुर्दशाग्रस्त है। मन्वन्तरों का वर्णन भी इसी प्रकार का है।

आगामी दस अध्यायों में पाशुपत योग और योगियों के आचारों का वर्णन है। पुराणों का यह योग विवेचन पातंजल दर्शन के तुल्य स्वच्छ और स्पष्ट नहीं है। पौराणिक विधानों और विश्वासों का समावेश यत्र तत्र दृष्टिगोचर होता है। इसी के अन्तर्गत प्रायःश्चित विधान और आरिष्ट निरूपण के प्रकरण हैं जिनमें अत्यन्त निम्न कोटि के अन्ध विश्वास के दर्शन होते हैं। अमुक अमुक वस्तु के दर्शन अदर्शन या किसी विशेष लक्षण से मनुष्य को अपनी आसन्न मृत्यु का निश्चय कर लेना चाहिए, ऐसी मिथ्या बातों पर आज कौन विश्वास कर लेगा?

कल्प निरूपण के प्रसंग में मधु कैटभ वध, दक्षशाप और दक्ष यज्ञ विध्वंस आदि की पुराण प्रसिद्ध कथायें लिखी गई है। ऋषियों, राजाओं और देवताओं के कुछ वंशों का वर्णन किया गया है। भुवन विन्यास वर्णन ने इस पुराण के अधिकांश भाग को घेर रक्खा है। लगभग २० अध्यायों में द्वीपों, दिशाओं, पर्वतों, नदियों, देशों, सागरों और विभिन्न प्रदेश वासियों के रहन सहन आचार व्यवहार आदि का विस्तृत वर्णन हुआ है। इस समस्त वर्णन में सत्यता का अंश बहुत कम है। अधिकांश वर्णन पुराणों में प्रयुक्त अतिशयोक्ति पूर्ण शैली में लिखा गया है, जिसमें सत्यता के बहुत कम दर्शन होते हैं। ज्योतिष प्रचार शीर्षक जिन चार अध्यायों में खगोल शास्त्र और नक्षत्रों का वर्णन किया है वह भी इतना ही कपोल कल्पित और उलजलूल है जितना भुवन विन्यास का वर्णन। पचासवें अध्याय के इस कथन को देखिये जिसमें कहा गया है कि भारत वर्ष का विस्तार सूर्य के विस्तृत मण्डल के समान है। सूर्य का विस्तार ९००० योजन है, एव सूर्य से चन्द्र मण्डल का विस्तार दुगुना अधिक है। इसी प्रकार की विज्ञान विरुद्ध बातें नक्षत्रों और ग्रहों की गति और ऋतु परिवर्तन के विषय में भी लिखी गई हैं। नव ग्रहों के रथों और घोड़ों का वर्णन यह सिद्ध करता है कि यह समस्त विवरण पौराणिक शैली के अनुकूल है जिसमें वैज्ञानिकता और युक्ति का सर्वथा अभाव है। सम्भव है आज पुराणों के नवीन व्याख्याकार इन बातों की भी कोई युक्ति संगत व्याख्या करने की चेष्टा करें, परन्तु जहाँ स्पष्ट ही असगत बातें मिलेंगी, वहाँ क्लिष्ट कल्पना के अतिरिक्त ऐसे लोगों के लिए और सहारा नहीं रहेगा।

५५ वें अध्याय में चारों युगों के वर्णन के प्रसग में यज्ञ प्रवर्तन का उल्लेख मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यज्ञों में पशु हिंसा का प्रचार उस युग में हो गया था, परन्तु अनेक ऋषियों की सम्मति में हिंसा मूलक पशु यज्ञ वेद विहित नहीं था। जैसा कि ५७ वे अध्याय में ऋषि गण इन्द्र से कहते हैं—'यह तुम्हारे यज्ञ की कैसी विधि है? हिंसामय धर्म कार्य करने को इच्छुक तुम यह महान् अधर्म कार्य कर रहे हो। तुम्हारे जैसे देवराज के यज्ञ में यह पशुवध कल्याणकारी नहीं है। इन तीन पशुओं की हिंसा से तुम अपने संचित धर्म का विनाश कर रहे हो। यदि तुम्हें यज्ञ करने की इच्छा है तो वेद विहित यज्ञ का अनुष्ठान करो। वेदानुदित विधि से किया गया यज्ञ अक्षय फलदायी होगा उन यज्ञ बीजों से तुम प्रारम्भ करो। जिनमें हिंसा का नाम नहीं है।' हिंसा मूलक यज्ञों के प्रति ऋषियों की सम्मति ऊपर उद्धृत की जा सकती है, परन्तु उस समय राजा वसु जैसे कुछ ऐसे व्यक्ति भी विद्यमान थे, और कालान्तर में उनका मत ही प्रचलित हुआ जो यह कहते थे कि यज्ञ का स्वभाव ही हिंसा है और मन्त्र समूह हिंसा के द्योतक हैं। पशु हिंसा समर्थक राजा वसु का मत ऋषियों को मान्य नहीं हुआ और ऋषियों का क्रोध भाजन होकर वह रसातलगामी हुआ।

ऋषि वंश वर्णन के प्रसंग में यह कहा गया है कि घोर तपस्या में निरत ऋषियों के अन्तःकरण में ईश्वरेच्छा से सभी वेद मन्त्रों की उत्पत्ति हुई। वेदोत्पत्ति का यह सिद्धान्त वैदिक धर्म की इस मान्यता के अनुकूल ही है जिसमें कहा गया है कि ईश्वरीय प्रेरणा से अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा ऋषियों के पवित्रान्तःकरणों में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का क्रमशः दर्शन हुआ। इसीलिए ऋषिगण मन्त्र द्रष्टा कहे जाते हैं, मन्त्र कर्ता नहीं। ६० वें अध्याय में वेदों की शाखाओं के प्रवर्तन का विवरण मिलता है। यजुर्वेद की तैतिरीय शाखा की उत्पत्ति के विषय में वैशम्पायन द्वारा यजुर्वेद की ऋचाओं को उगलने और ऋषियों द्वारा तीतर पक्षी बनकर उनको ग्रहण करने की जो कथा प्रचलित है, उसका उल्लेख इस पुराण के ६१ वे अध्याय में है। वेदों की शाखाओं के विषय जो विवरण इस पुराण में उपस्थित किया गया है, उस पर विचार करने की आवश्यकता है।

मनवन्तरों के वर्णन के प्रसंग में वेद और पृथु, प्रजापति वंश वर्णन और काश्यपीय प्रजा सृष्टि का वर्णन किया गया है, यह समस्त विवरण अन्य पुराणों के तुल्य ही है। ७१ से ८५ वें अध्याय तक श्राद्धों का वर्णन है। इनमें पितरों की उत्पत्ति, अग्निष्वाता आदि पितरों के भेद, श्राद्ध प्रकार और उसकी विधि, श्राद्ध में उपयोग में आने वाले भोज्य पदार्थ, जिनमे मनुस्मृति के प्रक्षिप्तांशों के तुल्य ही विविध पशुओं के मांस का श्राद्ध में विधान किया है, आदि विषयों का वर्णन हुआ है। श्राद्ध भी एक पौराणिक कर्म है और उसकी अवैदिकता तो इसी बात से जानी जाती है कि चारों वेद संहिताओं में 'श्राद्ध' शब्द का ही प्रयोग नहीं हुआ है, फिर उसकी विधि की तो बात ही क्या? श्राद्धों का आडम्बर पुराणों में ही अधिक विशद हुआ है उससे पूर्व के स्मृति आदि धर्मशास्त्र ग्रन्थों में उनका उल्लेख मात्र भी नहीं था। इस पुराण में दो अध्याय तो इसी बात पर लिखे गये है कि भिन्न भिन्न तिथियों और नक्षत्रों में श्राद्ध करने से क्या फल होता है।

आगामी अध्यायों में वैवस्वत मानव वंश, चन्द्र वंस, विष्णु वंश (यादव वंश) आदि वंशों के वर्णन

(शेष पृष्ठ ९ पर)

आश्रम व्यवस्था

दृष्टिकोण का भेद

[श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०]

२६ अक्टूबर १९५८ के आर्यमित्र में 'आश्रम व्यवस्था का मूलाधार' शीर्षक एक लेख श्री युक्त डा०महावीर सिंह जी का मेरे ५ अक्टूबर के लेख की समालोचना के रूप में प्रकाशित हुआ है। मेरी समझ में नहीं आया कि श्री डाक्टर जी तथा मुझमें क्या भेद है ? जो वह मानते हैं वही मैं मानता हूं। आश्रम व्यवस्था के औचित्य और सौंदर्य पर मुझे संदेह नहीं। न मैं यह मानता हूं कि आश्रम व्यवस्था समाजकृत नहीं या -सामाजिक नियमों का मनुष्यों के जीवन पर प्रभाव नहीं पड़ता। श्री डाक्टरजी ठीक कहते है कि "काल सब कुछ नहीं है अन्यथा घर बैठे सभी ब्रह्मचारी गृहस्थ, वानप्रस्थी और संन्यासी बन जाते। किन्तु आश्रम व्यवस्था मनुष्य जीवन को भले प्रकार व्यवस्थित करने के लिये और अन्तिम ध्येय तक पहुंचने के लिए एक प्रोग्राम है।" बहुत ठीक। बिल्कुल ठीक। मैं इतना कहूंगा कि काल अत्यन्त गौण और केवल साधारण कारण है। निमित्त कारण है व्यवस्था। जब आश्रम विभाजन के प्रोग्राम की आवश्यकता मान ली गई तो प्रश्न रह जाता है रचनात्मक और क्रियात्मक व्यवस्था का। व्यवस्था के दो भाग होंगे। एक तो समाज का वातावरण जो मनुष्य की प्रवृत्तियों को उत्कृष्ट करेगा और आश्रम-नियम चलाने के लिये योजना बनायेगा। दूसरा समाज की ओर से ऐसे नियम हों कि कोई अनाधिकारी निम्न कक्षा से उच्च कक्षा में आ न सके। वातावरण की तुलना शिक्षण से है और आश्रम उत्कर्ष की तुलना परीक्षा से। अर्थात् यदि वातावरण की प्रेरणा होते हुये भी ५० वर्ष की आयु में किसी मनुष्य की योग्यता वानप्रस्थ के प्रवेश की नहीं है तो समाज की ओर से इस प्रकार की कक्षोन्नति पर प्रतिबन्ध होना चाहिये। आजकल उलटा है। सामाजिक वातावरण ऐसा नहीं कि वानप्रस्थाश्रम की योग्यता प्राप्त करने के लिये उचित प्रेरणा मिल सके। परन्तु हर ५० वर्ष के ऊपर के व्यक्ति को वानप्रस्थ संस्कार कराने की पूरी छुट्टी है। यही नहीं जो अपनी अयोग्यता को स्वीकार करता है उसको भी लानत मलामत करके मजबूर किया जाता है कि कम से कम पीला दुपट्टा तो गले में डाल ही लो। इससे समाज में तुम्हारी कीर्ति बढ़ेगी। इसका अर्थ तो यह हुआ कि पाठ शाला कोई नहीं। शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं। परन्तु जब परीक्षा का समय आवे तो बिना परीक्षा लिये सबको कक्षोन्नति दे दी जाय। इसको आश्रम व्यवस्था तो नहीं कहते। दुर्व्यवस्था कह सकते हैं। व्यवस्था का अभाव कह सकते हैं। क्योंकि 'काल' के 'साधारण कारण' की कोटि से हटाकर नैमित्तिक कोटि में डाल दिया गया। और डिग्री की प्राप्ति के लिये 'गौन' मात्र ही पर्याप्त समझ लिया गया। सरकार के जो मंत्र हैं उनमें योग्यता का ही वर्णन है। काल तो अत्यन्त गौण है। इसीलिये तो मनु जी ने कहा है कि लिंग धर्म का कारण नहीं। न शिक्षा हो न परीक्षा और दीक्षान्त समारोह में धड़ाधड़ आयु की अवधि देखकर ही डिग्री के इच्छुकों को स्नातक होने के प्रमाण-पत्र दे दिये जांय। जो अपनी अयोग्यता स्वीकार करे और कहे कि बाबा अभी मुझ में इतना आत्मिक बल नहीं है कि अगली कक्षा में चल सकूं उसको भी डांट डपट कर कह दिया जाय कि कक्षोन्नति तो हो गई। वहां तुम को योग्यता स्वयं ही आ जायगी, क्योंकि हमारे शास्त्र में लिखा है कि २५ वर्ष विवाह और ५० वर्ष पर वानप्रस्थ और ७५ वर्ष पर सन्यास लेना ही चाहिये। यह है शास्त्र के वचनों की भ्रांतिपूर्ण व्याख्या। और आश्रम व्यवस्था की मिट्टीपलीद करना। आर्य समाज से पहले बहुत दिनों से यह होता चला आया है और आर्य समाज भी इसी धींगाधींगी को "नाकामयाबी" के साथ चला रहा है। जब तक आप काल को गौरव और योग्यता को प्रधान न मानेंगे लोगों की मनोवृत्ति ऐसी ही रहेगी। वानप्रस्थ और सन्यास की गड़बड़ी से जनता पथभ्रष्ट होगी ही।

गर हमीं मकतबस्त ईं मुल्ला।
कारे तिफ्लां तमाम ख्वाहद शुद॥

या यों कहिये—

गर हमीनस्त रहबरे कामिल।
पैरूआं रा चै हाल ख्वाहद शुद॥

(ऐसे ही अध्यापक रहे तो बच्चों की क्या दशा होगी। या यदि ऐसे ही नेता रहे तो अनुगामियों का क्या बनेगा।)

स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध में श्री डाक्टर जी ने प्रवृत्ति शब्द का स्पष्टीकरण चाहा है, उसी के आगे दो तीन पंक्तियां पढ़ने की कृपा करें। वहां पूरा स्पष्टीकरण है। भ्रांति केवल एक टुकड़े को अलग करके पढ़ने से होती है। आनुपूर्वी और प्रकरण दो से हर एक बात स्पष्ट हो सकती है, उसका मौलिक विषय से केवल आनुषाङ्गिक सम्बन्ध है। ★

सामयिक समस्याएँ

आर्यसमाज और वेद प्रचार

[श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु]

★

> श्रद्धेय जिज्ञासु जी वैदिक ज्ञान सागर में अवगाहन कर उसकी महत्ता को अनुभव करने और कराने में संलग्न वरेण्य मनीषी हैं। वेद के प्रति उनकी आस्था और तपो निष्ठा उन्हें यह कहने के लिए बाध्य कर रही हैं कि आर्य समाज ने वेद प्रचार का जो दायित्व स्वीकार किया हुआ है उस दिशा में आर्य समाज का उत्साह शिथिल होता जा रहा है। आपने शिक्षा संस्थाओं तक से वेद का नाम लुप्त होने पर दुःख प्रकट किया है जो एक वास्तविक तथ्य है। आपने वेदानुसन्धान के लिए एक संक्षिप्त योजना भी प्रस्तुत की है। आशा है आर्यजन उस सम्बन्ध में गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे। सार्वदेशिक सभा व प्रान्तीय सभाओं को अनुसन्धान का कार्य अपने हाथ में लेकर आर्य समाज के दायित्व को पूर्ण करने का प्रयत्न करना चाहिए। —सम्पादक

आर्य समाज ही एक ऐसा समाज है जो वेद को प्रमुख मान कर चला है। अतः वेद विषय को उठाना और उसके लिये कष्ट करना आर्य समाज ही कर सकता है।

आर्य समाज की संस्थाओं में आजकल वेद का पठन-पाठन

पहले भारत के स्कूल कालेजों में धर्मशिक्षा का घण्टा रहता था, आज वह भी समाप्त है। जबसे नई सरकार आयी, उसने धर्म का नाम काट ही दिया। इतना भी नहीं सोचा, या सोचने का यत्न किया, कि भला वेद किस देश या जाति की बपौती है। वेद में कोई बात ऐसी नहीं, जो किसी जाति या देश के विरोध में हो। हाँ! देव और असुरों का वर्णन है। देव भले मनुष्यों को कहते हैं, असुर पापी अत्याचारी परपीडन करने वालों को कहते हैं, जो कोई भी हो, जहां कहीं भी हो। किन्हीं देश विशेष या जाति विशेष के साथ इन शब्दों का सम्बन्ध नहीं। सार्वभौमिक नियमों का नाम धर्म है, जिसका कोई विरोधी नहीं। यह बात सरकार को क्यों समझ में नहीं आती ? आर्य समाज को साम्प्रदायिक कहना सर्वथा मिथ्या है। हमारी संस्थाएं जो पहले अंग्रेजी सरकार की कृपा पर जीवित रहती थी, अब इन्होंने वर्तमान सरकार को अपने जीवनका आधार बना लिया है। राज्य की सहायता के बिना इनका निर्वाह नहीं। इन्होंने अपने इन प्रभुओं को उनके कहने से पहले ही धर्मशिक्षा की घण्टी निकाल दी। हां अभी दयानन्द या आर्यशब्द को नहीं निकाला, सो भी आगे निकलता ही दिखलाई देता है। कह तो यह रहे थे कि इनमें धर्मशिक्षा को घण्टी भी प्रायः लुप्त हो गई। उनमें सन्ध्या वा हवन के मन्त्र तो बच्चों को सिखा देते थे और नहीं तो वेद कितने हैं, चार हैं। कौन-कौन से—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, चलो वेदों के नाम तो बच्चों को आ जाते थे। सो भी गये। अच्छा देश स्वतन्त्र हुआ।

सो इस प्रकार प्राइमरी, मिडिल, हाईस्कूल, इण्टर, बी० ए०, एम० ए० के स्कूलों और कालेजों से चाहे वे पुत्रों के हों या पुत्रियों के, वेद का नाम गया। हां! एम. ए. में संस्कृत लेने वालों को कुछ नाममात्र वेद पढ़ाया जाता है। सो उनमें भी वही सायण और उनके अंगरेजी अनुवादों के आधार पर पढ़ाया जाता है। जिससे आर्य परिवार के दृढ़ विचार का युवक भी (ठीक अर्थ की व्यवस्था न होने और उक्त ग्रन्थ ही पढ़ाई में होने के कारण) पथ विचलित हो जाता है।

अब ले देकर हमारे गुरुकुल हैं जो इस दिशा में बहुत कुछ यत्न कर रहे हैं। संसार का प्रवाह इतना प्रबल

[शेष पृष्ठ १० पर]

सुझाव और सम्मतियां

आर्य समाज और गोरक्षा

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने देश की धार्मिक, सामाजिक, नैतिक उन्नति पर ध्यान दिलाने के लिये सत्यार्थ प्रकाश लिखा। स्वामी जी यदि गोरक्षा के विषय को साधारण समझते तो गोरक्षा के विषय पर अलग पुस्तक न लिखते। सत्यार्थप्रकाश के ही किसी समुल्लास में दे देते। पर महर्षि ने गो के महत्व को दृष्टि में रखते हुए अलग गो करुणानिधि नामक पुस्तक लिखी। स्वामी जी ने किसी भी काम के लिये कोई आन्दोलन नहीं किया पर गोरक्षा के लिये देश व्यापी कार्यक्रम बनाया। गोहत्या बन्द करने के लिये सरकार के सन्मुख उपस्थित करने को लाखों लोगों के हस्ताक्षर करवाये। स्वामी जी के निर्वाण के बाद भी समय समय पर आर्य समाजियों ने गोरक्षा को अपने प्रचार का अङ्ग बनाया। पहले भी बहुत काम हुआ और पिछले दिनों आर्य समाज की केन्द्रीय संस्था सार्वदेशिक सभा ने २२-२-५३ को गोहत्यानिषेध के लिये आन्दोलन चलाने का निर्णय किया। हजारों गोभक्तों ने गोरक्षा प्रतिज्ञा पत्र भरे स्थान स्थान पर आर्य समाज की ओर से सम्मेलन और सभायें की गई। आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता श्री आनन्द स्वामी सरस्वती ने कसाईखानों पर सत्याग्रह करने की घोषणा की। २ मई १९५४ को महाशय कृष्ण जी की अध्यक्षता में परिषद् बुलाई गई, जिस में निर्णय हुआ कि सार्वदेशिक सभा का शिष्ट मण्डल श्री नेहरू जी से मिले और उनके सन्मुख आर्य समाज की गोरक्षा विषयक मांगें रखे। यदि उत्तर सन्तोष जनक हो तो बहुत अच्छा अन्यथा आर्य समाज सक्रिय आन्दोलन चलाने का निर्णय करे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने १० मई १९५४ को हैदराबाद में गोरक्षा और ईसाइयों के प्रश्न पर विचार करने के लिये देश भर के आर्यसमाजियों को निमन्त्रित करके बहुत बड़ा सम्मेलन किया। पर मामला आगे न बढ़ सका।

यह ठीक है कि व्यक्तिगत रूप से कुछ आर्य समाजियों ने गोवध निषेध कार्य को कुछ सहयोग दिया पर संस्था के नाम पर कुछ न हो सका। सरकार से पत्र व्यवहार हुआ या नहीं यह भी जनता के सन्मुख नहीं रखा गया। आर्य समाज जैसी प्रगतिशील संस्था वेद की आज्ञा, महर्षि के चलाये हुये आन्दोलन और अपने प्रस्ताव की उपेक्षा करे यह हमारा दुर्भाग्य है।

इसलिए आर्य समाज से मेरा अनुरोध है कि इस सम्बन्ध में अपने कर्तव्य पर गम्भीरतापूर्वक विचार करे और निर्णय करे।

मेरे सुझाव निम्न प्रकार हैं—

१—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के २२-२-१९५३ के प्रस्ताव को मान्यता देते हुये जब तक देश भर में गोहत्या सम्पूर्णतया बन्द न हो तब तक सक्रिय आन्दोलन को जारी रखे।

२—गोरक्षा के विषय में सरकार से जो पत्र व्यवहार हुआ है वह जनता के सन्मुख रखा जावे।

३—आर्य समाज गोहत्या निषेध को अपने कार्य का अङ्ग बनाये और स्थान-स्थान पर गोकृषि आदि रक्षिणी संस्थाओं की स्थापना करे।

४—आर्य समाज के नाम तथा सम्बन्ध से जो शिक्षा-संस्थायें चलायी जा रही हैं, उनके लिये आवश्यक संस्था में गौओं का रखना, नस्ल सुधार करना, चारे और खेती का उत्पादन बढ़ाना अनिवार्य हो। यह प्रयत्न किया जावे कि उस शिक्षा-संस्था में पढ़ने वाले प्रत्येक छात्र के लिये शुद्ध दूध की व्यवस्था हो।

—हरदेव सहाय, दिल्ली

सन्ध्या में प्राणायाम की अनिवार्यता

प्राणायाम करने से सब प्रकार के छोटे एवं बड़े रोग उत्पन्न ही नहीं होते। जो कदाचित हो भी जावें तो प्राणायाम से शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं यह अनुभूत है कि दमा, खाँसी, नजला, जुखाम, अजीर्णता, कोष्ठ बद्धता, हैजा और निमोनिया आदि भयंकर रोग भी नष्ट हो जाते हैं। तथा आत्मिक ज्ञान तो ऐसा होता है जैसे हाथ पर रक्खी हुई वस्तु का हो जाता है। प्राण के स्ववश होने पर परमात्मा तथा सूर्यादि लोक लोकान्तरों का भी यथार्थ ज्ञान हो जाता है अतएव योग दर्शन में योग के आठ अङ्गों में प्राणायाम को चौथे नम्बर पर माना है। इसलिये वैदिक संध्या में ५ वां प्राणायाम मन्त्र है जो केवल मन्त्रोचारण करते हैं और प्राणायाम नहीं करते वे संध्या भी पूर्ण नहीं करते क्योंकि प्राणायाम संध्या का ५ वां अङ्ग है: अङ्गों से मिलकर ही अङ्गी बनता है यदि अङ्ग न होंगें तो अङ्गी कैसा अतएव अनेक नर-नारी अनेक वर्षों से संध्या करते हैं किन्तु उनको स्थीरता नहीं मिली। अतः जो उपासक संध्या को साङ्गोपांग करेंगे उनको ईश्वर आदि तत्वों का यथार्थ ज्ञान होगा। और अपने आपको सफल तथा कृतकृत्य मानेंगें।

—रामेश्वरानन्द स्वामी [पंजाब]

आर्य वन्धु जन सेवक बनें

आज देशवासी अधिकांशतः युवक वर्ग पाश्चात्य सभ्यता में रङ्गकर Simple living and high thinking (सादा जीवन,उच्चविचार) को त्यागकर भुलाकर Eat drink and be merry (खाओ पीओ मौज उड़ाओ) के पीछे दीवाना हुआ जा रहा है। भ्रष्टाचार और दुराचरण से देश खोखला हुआ जा रहा है केवल बाह्याडंबर रह गया है।

देश को इस संकटापन्न स्थिति से उबारने का दायित्व आर्य समाज और उसके सदस्यों पर सबसे अधिक है। परन्तु हममें से अधिकांश, चवन्नी-अठन्नी चन्दा दे देने, अपने नाम के पीछे आर्य लगा लेने तथा यदाकदा सत्संग में सम्मिलित होने मात्र ही को आर्यत्व का लक्षण मान सन्तोष कर लेते हैं। इसके विपरीत आज देश में जो विषमता, व्याधियाँ, क्षुब्धता आदि की श्याम घटाएं छा रही हैं उन्हें धर्म दिवाकर द्वारा ज्योतिर्मय करना होगा। देश की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः सम्मानित कराकर जन-जन में स्नेह सरिता का संचार करना होगा। इसके लिये त्याग तथा उत्सर्ग की भावना होनी चाहिये। अतएव अपनी सामर्थ्यानुसार तन, मन और धन से जितनी भी अधिकाधिक सेवा बन सके करें। तभी हम सच्चे आर्य और महर्षि दयानन्द के अनुयायी तथा सन्देशवाहक कहलाने के अधिकारी हो सकते हैं।

"वही है रक्त वही है देश,
वही साहस है वैसा ज्ञान।

—कृपाराम आर्य
१००, कंडीबीन इन्दौर शहर [म०प्र०]

[पृष्ठ ७ का शेष]

के प्रसंग में भयावि का उपाख्यान आया है जो लगभग सभी पुराणों में एक सा ही मिलता है। वायु पुराण में विष्णु के अवतारों का कारण भृगु का शाप ही बतलाया गया है, न कि दुष्ट असुरों को मार कर पृथ्वी का भार उतारना जैसा कि गीता का कथन है। ममता और बृहस्पति के संयोग से दीर्घतमा की उत्पत्ति और दीर्घतमा द्वारा बलि की पत्नी सुदेष्णा में क्षेत्रज संतान उत्पन्न करने की कथा, इस पुराण में दो स्थानों पर वर्णित है। यह कथा अन्य पुराणों में तथा महाभारत में भी आती है। इस कथा से यद्यपि कोई सदाचार की शिक्षा नहीं मिलती, क्योंकि दीर्घतमा उत्पत्ति बृहस्पति के ममता के प्रति बलात्कार से हुई और दीर्घतमा ने भी जीवन भर 'पशुधर्म' का ही आचरण किया, परन्तु कथा नियोग प्रथा के प्रचार की सूचना अवश्य देती है। साथ ही सम्पूर्णतः यह कथा अत्यन्त घृणा और जुगुप्सा उत्पन्न करने वाला और अश्लील है। न जाने इन कथाओं के लेखकों का क्या प्रयोजन था? इस प्रकार यह पुराण शिक्षाप्रद होने के स्थान पर एक साधारण व्यक्ति को मति में दिग्भ्रम ही उत्पन्न करता है।

देशदर्शन

चितौड़ दिग्दर्शन

(ले०—पं० निरंजन प्रसाद शर्मा मेरठ)

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

★ महाराणा प्रताप और उनके चित्तौड़ दुर्ग का भारतीय इतिहास में अमर स्थान है। उसकी प्रेरणाप्रद झांकी प्रस्तुत करते हुए लेखक ने रोचक वर्णन प्रस्तुत किया है। चित्तौड़ मे गुरुकुल का भी अपना विशिष्ट स्थान है। उसकी रजत जयन्ती आगामी ८ से ११ जनवरी तक होने जा रहीं है। उसकी सफलता की शुभ कामना करते हुए हम पाठकों को प्रेरित करेंगे कि उक्त अवसर का दुहरा लाभ उठावें और दुर्ग का अवलोकन अवश्य करें। ★

—सम्पादक

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

पिछले दिनों श्री गुरुकुल चितौड गढ़ के रजत जयन्ती प्रचारार्थ, चितौड जाने का अनायास ही अवसर प्राप्त हुआ। अद्भुत किन्तु रम्य गिरिराज अरावली शाखा की सुन्दर तलहटी एवं गम्भीरी नदी तीर पर बसे हुए गुरुकुल पहुंच कर मैंने प्रताप की पुण्य भूमि के दर्शन किए।

गुरुकुल प्रांगण से ऐतिहासिक विशाल दुर्ग को समीप पाकर, इस वीर भूमि का पूर्ण इतिहास पुनरावृत हो उठा। दुर्ग देखने की आकांक्षा को मूर्तरूप देने के लिए आखिरकार कदम स्थिर न रह सके और बढ़ चले तीर्थराज की ओर।

शहर प्रवेश के पहिले गम्भीरी नदी पर अलाउद्दीन खिलजी का बनवाया हुआ पुल दर्शकों को प्रथम चरण में ही पद्मिनी के जौहर की स्मृति करा देता है। १६ वर्षों तक दुर्ग का घेरा डाले रहने पर सेना को नदी पार उतारने के लिए ही इस पुल का खिलजी ने निर्माण कराया था। असंख्य यवनों का भार एवं नदी के थपेडे सहकर भी यह पुल प्रत्येक के लिए अपने पथ पर डटे रहने का संकेत कर रहा है।

सारा शहर चारो ओर से परकोटे से घिरा हुआ व सघन बसा हुआ है। दुर्ग पर चढ़ने के लिए सात महापोलों (दरवाजों) की घुमावदार सड़क अद्भुत ढंग से ही तैयार की हुई है। दुर्ग की चौड़ी दीवारें एवं विशाल बुर्ज उस काल के सामरिक महत्व को दिखा रहे है, वे आज भी अपनी उसी स्थिति में गगन में मस्तक ऊंचा किये खडे हैं। ३॥ मील लम्बे एवं पौन मील चौड़े एक ही पहाड़ पर इस दुर्ग का निर्माण हुआ है, समुद्र की सतह से हजारों फीट ऊंचा होते हुए भी इन्द्रदेव की इस पहाड़ पर जल के लिए कृपा ही रही है। अनेको गोहड व बड़े बड़े तालाबों को पानी से लबालब भरा हुआ देखकर नास्तिक भी ईश्वर की शक्ति पर श्रद्धावान् बन जाता है।

वैसे तो सारा दुर्ग ही दर्शनीय है उसका एक एक पत्थर देश के नव युवकों को अपने कर्तव्य के प्रति प्रेरणा दे रहा है किन्तु कुछ विशेष दर्शनीय स्थान भी है "जय स्तम्भ", "गोमुख" पद्मिनी महल, मीरा मन्दिर, मोहर मगरी, प्रताप जन्म स्थान, बनवीर दिवाल, यवन कैद स्थान, नौलखा भण्डार, फतह प्रकाश, सास बहू कुण्ड, घी तैल की बावड़ी इत्यादि प्रमुख स्थान हैं उनका संक्षिप्त वर्णन पाठकों के लिए प्रस्तुत है।

जय स्तम्भ

मालवा व गुजरात के बादशाह बहादुरशाह को महाराणा कुम्भा द्वारा दी गई पराजय की स्मृति में, महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित ५ फीट ऊंचे व ४७ फीट चौड़े फर्श पर १४७ फीट ऊंचा ६ खण्डों मे विभक्त 'यह जय स्तम्भ अपनी कारीगरी का उत्कृष्ट नमूना है जो अनायास ही पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

गोमुख

सैकड़ों वर्षों से (अनन्तकाल से) दो गोमुखाकृतियों में से धारा प्रवाह रूप में निरन्तर अवाध गति से पड़ने वाली शीतल निर्मल जल धारा का आज दिन तक कोई पता नहीं लग पाया कि समुद्र सतह से हजारों फीट ऊंचे इस महान् दुर्ग पर पानी की इतनी प्रचुर मात्रा कहां से और कैसे सम्भव है? सचमुच ही आज के युग में यह दृश्य प्रत्यक्ष ईश्वर विश्वास का प्रभाव डाले बिना नहीं रहता', जहां प्रत्येक धर्म के व्यक्तियों को बिना किसी भेदभाव के जल पीने व नहाने धोने की सुविधा प्राप्त है।

पद्मिनी महल और जौहर स्थान

भारत की अद्वितीय सन्नारी रूपवती (लावण्यमयी) रानी पद्मिनी जिसका जौहर भारत व इसके बाहर भी श्रद्धा से स्मरण किया जाता है अपने ढङ्ग का एक अनूठा ही महल है।

दूरदर्शिता के सभी परिणामों का मन्थन करने के पश्चात् ही मेवाड़ के गौरव, इसी महल में इनकी आन बान व लाज रखने के पवित्र उद्देश्य पूर्ति के लिए ही पद्मिनी ने १४ हजार नारियों के साथ जौहर व्रत पालन किया था। आज भी इस स्थान पर पुरातत्व विभाग की ओर से अनुसन्धान रूप में खोदी जा रही चिता की राख उसी गन्ध व आदर्श स्मरण कराती है। इस स्थान पर आकर सिवाय ओम् प्रभु के, किसी के भी सन्मुख न झुकने वाला मेरा शीश इस जौहर व्रत में जली हुई, भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत, देश और धर्म पर शहीद हुई मातृ शक्ति स्वरूपा भारतीय नारी की स्मृति में नतमस्तक हो गया। नारी जाति का उच्चतम आदर्श यहीं पर देखने को मिल सकता है, चिता की राख के अणु-अणु से पद्मिनी की कर्तव्यशीलता बिखरती दृष्टिगोचर होती है।

[शेष पृष्ठ १३ पर]

[पृष्ठ ८ का शेष]

है कि इनमें भी अब वेद शिरोमणि वेदालङ्कार, वेद वाचस्पति या वेद भास्कर प्रतिवर्ष एक दो ही बनते होगे। स्वर्गीय महात्मा स्वा० श्रद्धानन्द जी महाराज व श्री नारायण स्वामी जी आदि के समय में जो बन गये सो बन गये। अब तो आयुर्वेद की ही प्रधानता प्रतीत हो रही है। वेद के नाम पर स्थापित की गई हमारी इन संस्थाओं की यह अवस्था आर्य समाज के लिये विचार का विषय बन रही है। आचार्य महानुभाव चाहते हुए भी अपनी विवशता ही प्रकट करते हैं। अर्थात् वेदवालों को वृत्ति देने पर भी छात्र वेद विषय न लेकर आयुर्वेद ही प्रायः लेते हैं, जब कि आयुर्वेद विषय मे वृत्तियाँ भी नहीं दी जातीं। वेद के अध्ययन अध्यापन की मुख्यता हमें लानी ही होगी, जिसके लिये आय जनता आशा लगाये है। वेद विषय को प्रौढ़तापूर्वक पढ़ाने की व्यवस्था हमें करनी ही होगी, यही कहना है।

शोध कार्य की आवश्यकता

हमारे उपर्युक्त सब लिखने का अभिप्राय इतना ही है कि आर्यसमाज को वेद के लिये बहुत कुछ कार्य करना होगा। पौराणिकों ने तो वेद को केवल यज्ञपरक कह कर छुट्टी पा ली, पर आर्यसमाज ऐसा नहीं कर सकता। क्योंकि आर्यसमाज ने तो वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, की घोषणा की हुई है, जिसके लिये वह मनु के 'सर्वज्ञानमयो हि सः' वेद सब ज्ञान का भण्डार है, यह प्रमाण उपस्थित करता है। सर्वविधज्ञान का भण्डार वेद है, इस बात को वर्त्तमान प्रत्यक्षवादी संसार के सामने प्रमाणित करना वा हृदय में बिठा देना कितना महान कार्य है, जो आर्य समाज के सामने है। इस कार्य में सहस्रों त्यागी आत्माओं की आहुति पड़े, विपुल साधन जुटें, और सुदीर्घ काल तक व्यवस्था बने, तब कहीं आर्यसमाज का यह स्वप्न पूरा हो सकता है। हमें तो यह कार्य असम्भव प्रतीत नहीं होता, हां, घोर तप त्याग और परिश्रम साध्य प्रतीत होता है। आवश्यकता है कि पचास योग्य विद्वानों को सर्वथा निश्चित कर दिया जावे और उनको एक साथ कम से कम बीस वर्ष के लिये ग्रन्थ आदि सर्वसामग्री सहित एक स्थान में बिठाने की व्यवस्था की जावे। इसका प्रारम्भ दस वर्ष के लिये दस विद्वानों को एक स्थान में पूरे पुस्तक संग्रह आदि साधनों सहित बिठाया जावे। कार्य की रूपरेखा पहले अति गम्भीरता से सोचनी होगी, विद्वान् भी वही लेने होगे, जिनकी वेद में पूर्णनिष्ठा, उत्कृष्ट मेधा और तीव्र रुचि वा गति होगी। किन्हीं व्यक्तियों की जीविका का प्रबन्ध कर देना मात्र ही लक्ष्य न हो। योग्यतम व्यक्तियों को लगाया जावे, जो परस्पर एक दूसरे के सहयोगी और एक दूसरे के विद्याज्ञान को बढ़ाने की भावना और क्षमता वाले हों। यदि ५० विद्वानों का प्रबन्ध हो, तब विज्ञानादि सभी आवश्यक विषयो के विशेषज्ञ भी लिये जा सकते हैं। दस विद्वानो के लिये दस वर्ष तक ५ लाख रुपये से काम चल सकता है, आगे फिर बढ़ाया भी जा सकता है। क्या आर्य जनता ५ लाख का भी प्रबन्ध नहीं कर सकती? यदि इस दिशा में कार्य आरम्भ हो तो आर्य समाज का महान् गौरव बढ़ेगा। ऋषि की आज्ञा का पालन होगा, भारत में ऋषिकृत ग्रन्थों का उद्धार एवं संस्कृत साहित्य का विस्तार होगा। तभी मानव जाति असतो मा सद्गमय! तमसो मा ज्योतिर्गमय!! मृत्योर्माऽमृतं गमयेति!!! प्रार्थना करने और प्रभु की कृपा पाने की अधिकारिणी बन सकेगी और इस उपकार के लिये आर्य समाज की चिर ऋणी होगी। ★

बाल-विनोद

विद्या ही परम धन है

[श्री हरिप्रसाद विद्यार्थी उगका]

इस संसार रूपी समुद्र से पार होने के लिये ज्ञान रूपी नौका की आवश्यकता होती है क्योंकि बिना नौका अथवा जहाज के हम समुद्र को पार नहीं कर सकते हैं उसी प्रकार बिना ज्ञान के हम मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। और विद्या को इसलिए पवित्र धन भी कहा गया है क्योंकि जैसे धन से हम इस लोक में सुख और शान्ति प्राप्त करते हैं उसी प्रकार विद्या से हम परलोक मे सुख और शान्ति प्राप्त करते हैं। विद्या धन कैसा है उसको किसी ने सस्कृत में निम्न वर्णन किया है।

'नचौरहार्यं न च राजहाय,
न भ्रातृभाज्यं नच भारकारि।
व्ययेकृते वर्धत एवं नित्यं,
विद्या धनं सर्व धन प्रधानम्॥'

अर्थात् न तो जिसको चोर हरण कर सकते हैं और न राजा ही हरण कर सकता हैं और न भाई ही विभाजित अर्थात् बांट सकते हैं और न जिसमें भार ही है और खर्च करने पर वृद्धि को प्राप्त होती है वह विद्या धन सब धनों में प्रधान (श्रेष्ठ) धन है।

परन्तु वह धन भी पवित्र होना चाहिए अर्थात् पवित्र धन वह होता है जिससे कि आत्मा मुक्त हो। इसलिए आज की शिक्षा के साथ साथ उस धन का भी संग्रह करना चाहिए। कबीरदास जी कहते हैं।

"पोथी पढ़ि पढ़ि जगमुआ,
पंडित हुआ न कोय।
एकै आखर प्रेम का,
पढ़े से पंडित होय॥"

अर्थात् आज के युग में पोथी द्वारा इंगलिश आदि भाषा हे सीख लेते हैं परन्तु आज उस महान् विद्या के भंडार के वेदादि को कोई नहीं पढ़ता है क्योंकि आज का युग भौतिक युग है धार्मिक युग नहीं परंतु ईश्वर की आराधना किये बिना कोई भी मनुष्य बिना मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता और आराधनादि का ज्ञान वेदादि सत्य पुस्तको मे है। और वैदिक साहित्य में ही नहीं समस्त मतों एवं धार्मिक सस्थाओं में भी ईश्वरीय ज्ञान की शिक्षा दी जाती है बाईबिल में कहा है। ईश्वर उसी को आशीर्वाद देता है जो उसको प्यार करते हैं। योगीराज श्रीकृष्ण जी ने गीता में इस प्रकार लिखा है :—

"परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञान मुत्तमम्। यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धि मितोगताः॥

—गीता अ० १४ श्लोक १

हे अर्जुन ज्ञानों में भी अत्युत्तम परम ज्ञान को मैं फिर भी तेरे लिए कहूंगा, कि जिसको जानकर सब मुनि जन इस संसार से मुक्त होकर परम सिद्ध को प्राप्त हो गये हैं।

"अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः। सर्वं ज्ञान प्लावेनैव वृजिन संतरिष्यसि॥ गीता अ० ४ श्लोक ३६

हे अर्जुन! यदि तू सब पापियों से भी अधिक पाप करने वाला है तो भी ज्ञान रूप नौका द्वारा निःसदेह सम्पूर्ण पापों से मुक्त होकर अच्छी प्रकार तर जायगा।

और भी देखिये ज्ञान की महिमा—"यथै धांसिसमिद्धोऽग्निर्भस्मात्कुरुते। ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मस्वत्कुरुते तथा नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्र मिह विधते। तत्स्वयं योग ससिद्धः कालेनात्मनि विन्दति॥

—गीता अ० ४। श्लोक ३७।३८

अर्थात् श्री कृष्ण जी कहते हैं कि हे अर्जुन! जैसे प्रज्वलित अग्नि ईंधन को भस्म मय कर देती है उसी प्रकार ज्ञान रूपी अग्नि सम्पूर्ण कर्मों को भस्म कर देती है। ३७।

इसलिए इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला नि.सन्देह कुछ भी नहीं है उस ज्ञान को कितने काल से अपने आप समत्व बुद्धि रूप योग के द्वारा अच्छी प्रकार शुद्ध अन्तः करण हुआ पुरुष आत्मा में अनुभव करता है। ३८।

इसलिए समस्त पुरुषों को उस परम पवित्र विद्याध्ययन का अर्जन ज्ञान कोष को संचित करते रहना चाहिये जिससे कि इस संसार रूपी महासागर से पार हो सके।

सभा मंत्री जी का मैनपुरी में भव्य स्वागत

सभा मत्री श्री ठा० फूलनसिंह जी आर्य समाज मैनपुरी के वार्षिकोत्सव के अवसर पर २५ नवम्बर सन् १९५८ को मैनपुरी पधारे जहाँ आपका भव्य स्वागत आर्य समाज की ओर से किया गया।

उत्सव में आये हुये मैनपुरी जिले के तथा स्थानीय आर्य सामाजिक अधिकारियों एवं कार्य कर्ताओं से वार्तालाप किया। आर्यमित्र हीरक जयन्ती, श्री गङ्गाप्रसाद उपाध्याय व श्री गङ्गाप्रसाद जी रिटायर्ड जज के अभिनन्दन ग्रन्थों एवं श्री विरजानन्द दण्डी धाम इत्यादि योजनाओ के सहायतार्थ २५००) रु० जिला मैनपुरी से देने का आश्वासन सभा मन्त्री जी को दिया गया। १०१) रु० आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की सहायतार्थ आर्य समाज मैनपुरी ने श्री सभा मत्री जी को भेंट किया। ढाई हजार रुपयों में से १००१) एक हजार एक रुपया मैनपुरी नगर से ही आर्यमित्र हीरक जयन्ती की सहायतार्थ दिये जाने की योजना बनाई गई आशा है अन्य जिले भी मैनपुरी का अनुकरण करेंगे।

—ईश्वरदयालु आर्य
सभा मुख्य उपमत्री

कृपया वृहदधिवेशन के लिए निमंत्रण पत्र भेजिये

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्य समाजों को विदित हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का आगामी साधारण अधिवेशन (वृहदधिवेशन) सन् १९५९ में होना निश्चित हुआ है। सभा के नवीन नियम सं० १५ के अनुसार यह विषय आगामी अन्तरंग सभा में विचारार्थ रखा जायगा। यदि कोई आर्य समाज अपने यहां सभा के वृहदधिवेशन को निमंत्रित करना चाहें तो कृपया अपनी आर्य समाज की अन्तरङ्ग में इस विषय को प्रस्तुत कर, सभा कार्यालय मे १५ दिसम्बर ५८ तक निमंत्रण-पत्र भेजने का कष्ट करें। सभा आये हुए निमंत्रण पत्रो पर विचार करेगी।

——फूलनसिंह मंत्री
आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश

कार्यालय से पत्र व्यवहार के समय
अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखें

आर्यमित्र हीरक जयन्ती विशेषांक सम्बन्धी सुझाव

श्रीमान् सम्पादक जी,

आर्यमित्र का इतिहास आर्य समाज का इतिहास है जयन्ती के अवसर पर आर्यमित्र का विशेषांक एक अपना विशिष्ट स्थान रक्खेगा। यदि हो सकें तो इसमें आर्य समाज की सभी बातों का समावेश होना चाहिए जैसे :—

(१) आर्यसमाजों की सूची।

(२) कन्या पाठशालाओं की सूची

(३) डी० ए० वी० विद्यालयों की सूची।

(४) गुरुकुलों की सूची।

(५) आर्य संसद-सदस्यों की सूची

(६) आर्य समाजी विधान सभाओं की सूची।

(७) आन्दोलन की सूची।

शिव मन्दिर, हैदराबाद, हिन्दी सत्याग्रह।

(८) सार्वदेशिक सभा के सदस्यों की सूची।

(९) प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभायें तथा उनके सदस्यों की सूची।

(१०) उपदेशकों, भजनीकों की सूची व पते।

(११) विदेशों में आर्य समाज मंदिर।

(१२) विदेशों के आर्य समाज के पदाधिकारियों की सूची।

(१३) आर्य समाज के पत्र पत्रिकाएं।

(१४) आर्यमित्र के छपे पिछले पच्चीस वर्षों के अङ्कों में जो महत्वपूर्ण फोटो रहे हों उनको छापा जावे।

(१५) ६० वर्ष पूर्व की प्रथम प्रति में पुरस्कार घोषित किया जावे।

(१६) ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों की नामावलि तथा उनका किन किन भाषाओं में अनुवाद हुआ।

(१७) यदि सम्भव हो बल्कि आवश्यक है कि आर्यमित्र सम्पादक मण्डल की क्रमबद्ध नामावली हीरक जयन्ती के अवसर पर छपे। आर्यमित्र आगरा में, आर्य समाज तथा पंडित हरिशङ्कर जी, इन दोनों का एक साथ इतिहास हो सकता है। पं० नरदेव जी शास्त्री तथा अन्यों के विचार पढ़ लिये हैं उन सभी से पूर्ण सहमत हूं। —राममोहन बा० काम० चन्दौसी

हवन सामग्री

श्रीमान् पं०प्रतापचन्द्र जी अमृतसारी बड़ौदा से लिखते हैं—श्रीमान् आर्य धर्मवीर जी आर्य भण्डाधारी उपदेशक अध्यक्ष आर्य हवन सामग्री निर्माण शाला सराय रुहेला देहली! नमस्ते

भ्राता शान्तिप्रिय जी द्वारा आपकी सामग्री का नमूना देखा।

कृपया आप अपनी एजेन्सी हमें गुजरात भर की दे देवें। चाहे नगर आर्यसमाज विजय सदन आत्माराम रोड बड़ौदा को नियुक्त कर लें।

आप एक मन सामग्री सुगन्धित रेलवे पैसिन्जर ट्रेन से भेज दें।

आपका :—

पं० प्रतापचन्द्र विजय एण्ड कम्पनी

विजय-सदन, बड़ौदा

विदेशों में यज्ञ की धूम!

आर्य हवन सामग्री की गूंज।

आर्य हवन सामग्री की मनों मांग

मोरिशस का पत्र

श्रीमान् मोती जी तोरल प्रधान मन्त्री ग्रेण्ड पोर्ट प्रान्तीय आर्य सम्मेलन सभा मौरिशस से लिखते हैं—

पूज्यवर, श्री पं० वेद पथिक धर्मवीर, आर्य भण्डाधारी उपदेशक जी! अध्यक्ष आर्य हवन सामग्री निर्माणशाला सरायरूहेला, देहली-५

कर जोड़ सादर नमस्ते!

आपका दि० १२-१०-५८ का कृपा उत्तर पत्र सानन्द प्राप्त हुआ। पढ़ने से पूर्व पत्र को हृदयालिंगन किया तब विशाल आंखों से देखना शुरू किया। इसलिए कि हमारे पूर्वजों की पावन तीर्थ भूमि से चिट्ठी आई थी। आपने जो हमारे परिवार का मंगल कामना प्रगट की है, इसके लिए कोटिशः धन्यवाद। दीपावली के स्वर्ण सुअवसर पर आपकी शुभेच्छा शिरोधार्य है। उत्तर मे परिवार इष्ट मित्र तथा भारत माता को नत मस्तक होकर भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए आपके आदर सूचक भावों को कभी नहीं भूलूंगा। दोनों सामग्रियों के नमूने दीपावली के शुभ अवसर पर उपहार स्वरूप भेज रहे है। इसके लिए हम कृतज्ञ हैं और उस सुअवसर पर यज्ञ करते समय आपके लिए यश, आनन्द, कीर्ति एवं आपके उद्योग की सफलता की एक विशेष प्रार्थना हम करेंगे। परिणाम का सुसमाचार भेजते हुए सोल एजेण्ट अवश्य बनेंगे।

आपकी प्रबल भावना यह है कि हवन यज्ञ और वेद मन्त्रों का प्रचार हो, हमारी भी ये ही अतुल इच्छा है। नमूना देखने से पूर्व हो प्रातः स्मरणीय महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुपम चित्र के साथ जो कलेण्डर है और जिसका मूल्य केवल मात्र ।=) प्रति है सौ प्रति भेजने की कृपा करें। यदि जनता की रुचि बढ़ी तो भारी संख्या में मंगवाने का प्रबन्ध करूंगा।

आपने हमारे चित्र मांगे हैं, धन्य है भारत मातेश्वरी! तू अभी तक अपनी बिखरी हुई संतानों को अपनी आंखों से देखना चाहता है। धन्य हैं श्रद्धेय पण्डित जी! पहले पत्र में ही आपको मुझे देखने की इच्छा हो गई, क्या आप जानते हैं कि मुझे भारत माता और आप जैसे देवताओं के दर्शन करने की इच्छा कब से हो रही है? किन्तु अफसोस! आज तक दुर्भाग्यवान् हूं। ईश्वर की कृपा हुई तो मरने से पूर्व भारत मां और आप लोगो के चरण कमलों की धूल ललाट पर लगाकर ही यह तुच्छ शरीर त्यागूंगा। तब तक अपने चित्र भेजने का प्रयत्न कर रहा हूं, यदि मैं नहीं तो कम से कम मेरा चित्र आप महात्माओं का दर्शन करले इसी विचार से आगामी पत्र में अवश्य भेजूंगा।

दोनों प्रकार की सामग्रियाँ एक-एक मन सौ कलेण्डर अति शीघ्र भेजने की कृपा करें, क्योंकि वैदिक यज्ञ, वैदिक सामग्रियों से हम करना चाहते हैं। पचास ५०) रुपये हम अभी भेज रहे हैं बाकी माल आने पर दिया जायेगा।

आपका शुभाशीर्वादाकांक्षी तथा
आपका कृपा भिखारी

मोती तोरल

न्यू ग्रोव २४-१०-५८

चित्तौड़ दिग्दर्शन

[पृष्ठ १० का शेष]

मोहर मगरी

दुर्ग के दक्षिण परिश्चम अन्त के सिरे पर विशाल रूप में प्रकाश-स्तम्भ बना हुआ है, जिस पर दुर्ग का ध्वज मीलों दूर से फहराता नजर आता था। इसकी प्राचीर के बाजू में ही एक मोहर मगरी स्थित है। जब किसी भी तरह दुर्ग की सुदृढ़ दीवारे टूटती न दिखाई दी तो तोप को उस स्थान पर ले जाने के लिये यवन सम्राट अकबर ने इस छोटे से टीले को गोल किन्तु ऊचे पहाड़ का मूर्तरूप देने के उद्देश्य से १ टोकरी मिट्टी इस टीले पर डालने का मेहनताना १ अशर्फी दी थी। कोई भी देशभक्त यह नहीं चाहता था, किन्तु तलवार के बल पर फैले हुए यवन साम्राज्य ने, देश की नगी भूखी अशिक्षित, असहाय जनता की मजबूरियो का लाभ उठाकर युवको का गुमराह किया। जहां चोटी व जनेऊ बिना शीश दिये नहीं उतर पाती थी, उसी वीर भूमि मे कुछ देश द्रोहियो द्वारा यह कृत्य अपनाया गया। दुर्ग के बुज पर तैनात रक्षकों की गोली अथवा तीर द्वारा प्रत्येक मिट्टी की टोकनी डालने वाला युवक टोकनी के साथ ही सदा के लिये टीले म मिल जाता था। और इस प्रकार अशर्फियो को लुटाकर भी यवन सम्राट अपने इस कार्य में सफल नहीं हो सका। यहीं महारानी कर्णावती की शूरता यवन सम्राट अकबर ने, दुर्ग को प्राचीर टूटते वक्त देखी था, जिसने कि युद्ध समय म बरसते हुए ताप के गाला म दिवाल की मरम्मत का काम जारी रखकर दुर्ग को रक्षा की था। आज भ' यह मोहर मगरी अपन महत्व का दिग्दर्शन करा रही है।

मीरा मन्दिर

प्रभु के प्रेम म तन्मय मीराबाई ने मेवाड़ के राजकुल म उच्चकोटि का भगवत प्रेम अपनाकर, राजकुल म जन्म लेकर, मनुष्य मात्र के साथ अछूतपन का भाव मिटाकर मीराबाइ ने मेवाड़ म सव प्रथम अपन गीता का रचना करके मानव का मानवीय अधिकार दिलाने का क्रान्ति कर अछूतोद्धार का श्रीगणेश किया था। इसी स्मृति म मीरा का मन्दिर बना हुआ है जो दर्शनीय कृति है।

अन्य स्थान

महाराणा प्रताप जन्म स्थान, बनवीर की दिवाल, नौलखा भंडार, यवन कैद स्थान, फतह प्रकाश, सास बहू कुण्ड, घी तेल की बावड़ी, पुराना कीर्तिस्तम सूरजपोल, चौगान, इत्यादि स्थान देखता हुआ दुर्ग की चतरग मोरी के पास वाली खिड़की से उतर कर गम्भीरी नदी को पारकर शाम तक गुरुकुल भूमि में उपस्थित हुआ। प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुपम छटा इस पहाड़ पर तो दीखती ही है, किन्तु आस पास ३४ मीलो के अन्तर पर भी अनेक प्रपातों से युक्त आकर्षक दृष्य दर्शनीय बताये जाते हैं।

चित्तौड़ और महर्षि दयानन्द

देश की दयनीय दुर्दशा पर आसू बहाते हुए, जगद्गुरू महर्षि दयानन्द जी महाराज ने, राजस्थान मे आगमन करने पर चित्तौड़ दुर्ग को देखते ही अपने शिष्य स्वामी आत्मानन्द जी से यह हृदयोद्गार प्रकट किये थे—

"ऐ आत्मानन्द, चित्तौड़ वह स्थल है, जिसको देखकर प्रत्येक मनुष्य अपने देश व धम के प्रति कतव्य पालन मे प्रोत्साहित होता है। निसन्देह यह अत्यन्त कल्याण कारक बात होगी यदि चित्तौड़गढ़ म गुरुकुल स्थापित हो जावेगा। हमारे देश के नवयुवक अपने जीवन की उन्नति के लिये सर्वोत्तम शिक्षा इसी स्थान पर प्राप्त कर सकेंगे।"

चित्तौड़गढ़ से निकली हुई चिनगारी ने देश का समय समय पर अपने कतव्य का भान कराया है, इस मे दो राय नहीं हो सकता। साथ ही इस तथ्य से इन्कार भी नहीं किया जा सकता कि सभी तीथ स्थानों के पर्यटन व दर्शन के बजाय मानव (स्त्री पुरुष) को इसी दुग के पत्थरो व खण्डहरो के दशन मात्र से ही राष्ट्र व धर्म के प्रति अपन कतव्य पालन म विशेष प्रेरणा मिलती रही है।

महर्षि दयानन्दजी के उद्देश्य पूर्ति एव राष्ट्र निर्माण मे योग देने वाले उच्चकोटि के सच्चरित्र नागरिको को उन्नतशील बनाने हेतु इसी चित्तौड़ भूमि म पूज्य स्वामी श्री व्रतानन्द जी महाराज ने, श्री गुरुकुल चित्तौड़ की स्थापना की हुई है। शिक्षण सस्थान व ऐतिहासिक दुग वैसे तो बहुत हैं— किन्तु इस चित्तौड़ दुर्ग व गुरुकुल शिक्षण सस्था का महत्व अपने ढग का अनूठा ही है।

गुरुकुल की रजत जयन्ती

श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़, जनवरी ८, ९, १०, ११ को अपनी रजतजयन्ती पूर्णरूप से, विश्व शान्ति महायज्ञ, गो सेवा सम्मेलन, राजस्थान प्रांतीय आर्य महासम्मेलन, एव अखिल भारतीय सस्कृत साहित्य सम्मेलन के आयोजन के साथ मना रहा है। इस अवसर पर प्रत्येक आर्य बन्धुओ को गुरुकुल रजत जयन्ती महोत्सव में भाग लेकर देश के इस महान् दुर्ग चित्तौड़ गढ़ का दर्शन अवश्य करना चाहिये। इस पवित्र तीर्थराज के दर्शन से प्राप्त अदृश्य रूप मे कतव्य भावना से प्रोत्साहित होकर राष्ट्र निर्माण के कार्य मे नि सकोच सहयोग देना चाहिये जिससे हमारा यह देश भारतीय सस्कृति और मर्यादा मे गौरवान्वित होकर अधिक उन्नत व ऊचा उठ सके।

आर्यमित्र प्रकाशन कं० लि० की सूचना

आर्यमित्र प्रकाशन क० लि० के भागीदारो को सूचित किया जाता है कि वार्षिक अधिवेशन (जनरलमीटिंग) ३ जनवरी १९५९दिन शनिवार को नारायण स्वामी भवन, लखनऊ मे दिन के १ बजे से आरम्भ होगा। कृपया नियत समय पर पधारकर अनुगृहीत करेंगे।

—कालीचरण आर्य
अवैतनिक व्यवस्थापक आ० मि०
प्रकाशन क० लि०

जयन्ती अर्थ संयोजक श्री कालीचरण जी का तूफानी दौरा

आर्य बन्धु सहयोग दें

आर्यमित्र हीरक जयन्ती के अर्थ सयोजक श्री बाबू कालीचरण जी प्रदेश के तूफानी दौरे पर निकल चुके हैं। रायबरेली, अमेठी, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, फैजाबाद, अकबरपुर टाडा शाहगज,खेतासराय, केराकत, जौनपुर, मीरगज आदि स्थानो की आर्य समाजो में जयन्ती का सन्देश लेकर पहुच चुके हैं। आर्य बन्धुओ म सर्वत्र उत्साह है और सभी जगह उत्साह वधक धन की सहायता देकर जयन्ती की सफलता के लिए शुभकामना व्यक्त की गई है।

उनके दौरे का भावी कार्यक्रम इस प्रकार है आजमगढ़ १५, मऊनाथ भजन १६, बलिया १७, १८, गाजी पुर १९, २०, बनारस २०, २२, फतह पुर २३ कन्या गुरुकुल सासनी २४, २५ आशा है इन सभी स्थानो के आर्य नर नारी जयन्ती के लिय उन्हे यथा शक्ति सहायता प्रदानकर अनुगृहीत करेंगे।

आर्य-जगत

उत्सव समाचार—

—श्री सर्वदानन्द साधुआश्रम हरदुआगंज का वार्षिकोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ। स्वामी भजनानन्द, अभयानन्द, रामेश्वरानन्द, पं० शिव कुमार शास्त्री, महावीर जी, आत्माराम जी, ज्ञानेन्द्र जी, ओम्प्रकाश जी, प्रेमसुखलाल जी आदि के व्याख्यान व भजन हुए।

—आ० स० टूठीवारी गोरखपुर का वार्षिकोत्सव १४, १५,१६ नवम्बर ५८ को सोत्साह हुआ। श्री सुरेन्द्रनाथ शुक्ला, नन्दलाल जी, गंगाधर शास्त्री, सत्यनामसिंह, मुन्नीप्रसाद आदि के व्याख्यान व भजन हुए।

—आ० स० शाहजहांपुर का वार्षिकोत्सव २५ से २८ अक्तूबर ५८ तक समारोहपूर्वक मनाया गया।

—आ०स० बस्ती का स्वर्णजयन्ती महोत्सव २० से २३ फरवरी ५९ तक मनाया जायगा। इस अवसर पर अनेक सम्मेलन होंगे, वृहद्यज्ञ होगा, प्रदर्शनी होगी और प्रसिद्ध विद्वानों के भाषण होंगे।

गुरुकुल रुद्रपुर तिलहर का वार्षिकोत्सव २६ से २८ दिसम्बर तक बड़े समारोहपूर्वक होने जा रहा है।

प्रचार समाचार—

—स्वामी शिवानन्द तीर्थ आचार्य शान्ति आश्रम लोहरदगा ने उड़ीसा राज्य के सम्भलपुर, हीराकुड आदि जिले में प्रचार किया और आर्य समाजों में भाषण किया।

—आ० स० नगला भजना में २० से २२ नवम्बर तक आ० स० का प्रचार हुआ। नई आ० स० की स्थापना की गयी।

—माता जगरानी देवी आर्योपदेशिका उपसभा अलीगढ़ की ओर से जिले के समाजों में प्रचारार्थ पहुंच रही हैं। समाजें उनके प्रचार तथा मार्ग व्ययादि की व्यवस्था करें।

—श्री मुन्नालाल जी आर्य गोरखपुर द्वारा नेपाल राज्य में प्रचार का कार्य जारी है। आपका परिश्रम सराहनीय है।

—आ० स० वमरौली म० प्र० की ओर से पं० रामचन्द्र वानप्रस्थी ने २८ नवम्बर से ३ दिसम्बर ५८ तक भजनोपदेश द्वारा नगर में मुहल्ले मुहल्ले प्रचार किया।

—३० नवम्बर को दौलतियापुर तथा एक दिसम्बर को ग्राम अमेना में क्रमशः श्री रामाश्रय लाल एवं श्री रामपाल जी के प्रयास से जिला सभा फतेहपुर की ओर से पं० रामनारायण शास्त्री देवी प्रसाद, शिव स्वामी, लक्ष्मी नारायण जी आदि द्वारा यज्ञ और प्रभावशाली प्रचार कार्य किया गया।

चुनाव समाचार—

—आ० स० सराय जरेलिया—प्रधान श्री टीकमसिंह मन्त्री श्री मुन्शीसिंह, कोषाध्यक्ष श्री छेदूसिंह।

—शाखा गुरुकुल गिलौला बहराइच के विद्या परिषद् का निर्वाचन निरीक्षक पं० ईशमित्र चतुर्वेदी, उत्तरदायी मन्त्री ब्र० विज्ञान मित्र तथा उप प्रधान ब्र० विकासमित्र जी।

—आ०स० इनायतपुर अलीगढ़ प्रधान श्री मनोहरसिंह आर्य, मन्त्री श्री नेत्रपालसिंह कोषा० श्री नरोत्तम सिंह।

—सर्वदानन्द साधुआश्रम हरदुआगंज—प्रधान श्री सुरेन्द्रकुमार जी मन्त्री श्री सरदारसिंह, कोषाध्यक्ष श्री कृष्णमूर्ती जी।

आर्य वीर दल समाचार—

—आर्यवीर दल कानपुर ने बाबूपुरवा में दल उत्सव मनाया। २५ से २७ नवम्बर तक उन्नाव व गंगापार मेले में प्रचार व सेवा कार्य किया। आर्य समाज दर्शनपुरवा व सीसामऊ के उत्सव पर भी सेवा कार्य किया।

—प्रान्तीय आर्य वीर दल उ०प्र० के समस्त व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि प्रान्तीय कार्यालय को भविष्य में पत्र या दल सहायता धन निम्न पते से भेजें। श्री रामजी प्रसाद गुप्त संचालक पूर्णमासी भवन मोगल सराय। अथवा श्री दयाप्रसाद आर्य मन्त्री, इलाहाबाद बैंक, हजरतगंज लखनऊ।

—गंगा स्नान पर लखनऊ के गोमती मेले में श्री देवीप्रसाद आर्य, उपसंचालक की अध्यक्षता में आर्यवीर दल लखनऊ ने एक जनसेवा शिविर लगाया जिसमें ३० आर्य वीरों ने दिन भर सेवा कार्य किया।

—बम्बई प्रान्तीय आर्य वीर दल समिति-श्री काशीप्रसादसिंह आर्य प्रोता, पं० रुद्रमित्र शास्त्री संचालक, श्री भगवानदेव गुरुकुलिया व श्री रावलदास उपसंचालक, पं०सुरेन्द्रजी बौद्धिकाध्यक्ष, ने०ए०ए० सत्येन्द्र शास्त्री लेखाध्यक्ष, श्री बल्देव भद्र आर्य अर्थाध्यक्ष।

—आर्य वीर दल लखनऊ की ओर से प्रति शनिवार को सायं ५॥ बजे से आर्य समाज गणेशगंज में आर्य वीरों की एक गोष्ठी होती है जिसमें अनेकों प्रमुख कार्यकर्ता भाग लेते हैं। नगर के अन्य आर्य वीरों को भी वहां पहुंचना चाहिये।

—देवीप्रसाद उप संचालक

—३० ११ ५८ को पेसारा, केराकत जौनपुर में आर्य वीर दल स्थापनार्थ एक सार्वजनिक सभा हुई। महत्वपूर्ण प्रोग्राम व भाषण हुए। चुनाव—संरक्षक श्री रामसूरत राय, नगरनायक प्रेमनाथ जी, शाखानायक अलखनारायण जी, शिक्षानायक टी० प्रताप नारायण शुक्ला।

—श्री बालदिवाकर हंस, श्री विश्वनाथ आर्यवीर आदि ने पश्चिमी उत्तरप्रदेश में आर्य वीर दल के संगठन के लिए दौरा किया। दादरी, मवाना, गाजियाबाद, मुजफ्फरनगर आदि स्थानों पर प्रचार का प्रबन्ध भी हुआ।

—३ १२ ५८ को मीरजापुर आर्य वीर दल के मण्डलपति श्री वचनराम सिंह ने आर्य वीर दल की स्थापना के लिए पगहा का दौरा किया। दल स्थापना के बाद श्री शिवमन्दिरसिंह नगरनायक चुने गये।

गुरुकुल समाचार—

—गुरुकुल ज्वालापुर की स्वर्ण जयन्ती महोत्सव ६ से १५ अप्रैल ५८ तक होगा। वृहद्यज्ञ प्रथम दिन से ही आरम्भ होगा। वेद, आर्य, शिक्षा, गुरुकुल, कवि, महिला, आयुर्वेद, संगीत आदि सम्मेलन होंगे। १४ अप्रैल को दीक्षान्त समारोह होगा। उत्सव के दिनों में निरन्तर दर्शनानन्द लंगर चलेगा। दानी महानुभावों का ध्यान इधर आकृष्ट किया जाता है।

—नन्दकिशोर शास्त्री

अन्यान्य समाचार—

—गुरुकुल कांगड़ी की पुरानी भूमि में १८ से २१ दिसम्बर तक साधना शिविर लगेगा। पठन पाठन गोष्ठी प्रवचन व सेवा आदि कार्यक्रम होंगे। १४ दिसम्बर तक ५) शुल्क सहित सूचना देने पर निवास, चारपाई जलादि की व्यवस्था की जा सकेगी।

उचित मूल्य पर भोजन देने की व्यवस्था भी होगी। गर्म कपड़े पर्याप्त संख्या में साथ लावें।

—धर्मपाल विद्यालंकार

—आर्य समाज सीतामढ़ी बिहार की ओर से गोरक्षा सम्बन्धी एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें पं० नारायण शर्मा व ब्रह्मदेव नारायण सिनहा के भाषण हुए। बिहार सरकार से गोवध निषेध की मांग की गयी।

—दयानन्द आर्य विद्यालय लश्कर म० प्र० ने राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी के जन्म तिथि पर उनके दीर्घायु होने की प्रार्थना की।

—तपोभूमि मथुरा का नया वृहद् विशेषांक "दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह विशेषांक" के रूप में १००० पृष्ठों का ऋषि बोधोत्सव शिवरात्रि पर प्रकाशित हो रहा है जिसमें ६० ट्रैक्ट होंगे। मूल्य ४) होगा। तपोभूमि के ग्राहकों को केवल २॥) अतिरिक्त अर्थात् रजिस्ट्री व्यय सहित ५॥) अगाऊ भेजने पर मिलेगा। ग्लेज कागज पर ६) में तथा सजिल्द के लिए ७) १५ जनवरी ५९ तक भेजें।

—व्यवस्थापक तपोभूमि,
८० कृष्णागंगा, मथुरा

—ग्राम अलीपुर, पो० खिर्वा जलालपुर जिला मेरठ में ५ वर्षों से आर्यसमाज चल रहा है। अब समाज मन्दिर बनाने की तैयारी हो रही है। दानी मानी सज्जनों को व सम्पन्न समाजों को इस ओर सहायता करनी चाहिए।

—चतराम

—विरजानन्द वैदिक संस्थान गाजियाबाद में वेदानन्द वेद पुस्तकालय की स्थापना की गयी।

—हरदोई नगर के प्रमुख आर्य समाजियों की एक बैठक पं० रामसेवक मिश्र की अध्यक्षता में १ १२ ५८ को हुई जिसमें निश्चय किया गया कि प्रत्येक रविवार को नगर के किसी भाग में यज्ञ व सभा का आयोजन किया जाय।

—जम्मू और काश्मीर विश्वविद्यालय ने महिला ग्राम विद्यापीठ प्रयाग की ग्राम विनोदिनी परीक्षा एडवांस अग्र जी के साथ अपनी हाईस्कूल परीक्षा के बराबर मान लिया है।

—गोहत्या निरोध समिति सिरसी की ओर से १५ से ३० नवम्बर ५८ तक गोपाष्टमी पक्ष मनाया गया जिसमें स्थानीय आर्य समाज और आर्यकुमार सभा ने पूरा सहयोग दिया।

—नवीन लेखक संघ आगरा ने इस वर्ष काव्य ग्रन्थ पर "हरिशङ्कर स्वर्ण पदक' देना निश्चय किया है। पुस्तकों की चार प्रतियां २८ फरवरी ५९ तक भेजें।

सिद्धान्त-विमर्श

कर्म फल प्राप्ति में 'ही' और 'भी' का भेद

(श्रीमती शकुन्तला गोयल, सिद्धान्तशास्त्री)

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

★ कर्मफल इस जन्म या अगले ही जन्म मे विषयक विचार विमर्श ★
★ में आदरणीया बहन शकुन्तला जी ने बड़ी विद्वत्ता और सुन्दरता के ★
★ साथ अपना पक्ष इस जन्म में भी कर्मफल मिलता है प्रस्तुत किया है। ★
★ —सम्पादक ★

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

कई मास से सिद्धान्त विमर्श कालम मे कर्म सिद्धान्त पर श्री बावू कालीचरण जी व श्री उपाध्याय जा की लेख माला निकल रही है। मैं भी उन्हे पढ़ रही हू। मुझे इसम ही और भी का भेद ही प्रतीत हुआ है। श्री बावू जी कहते हैं कि कर्म का फल दूसरे जन्म जन्मान्तरो म ही मिलता है और श्री उपाध्याय जी कहते हैं कि इस जन्म मे भी मिलता है और दूसरे जन्मो मे भी।

[१] महर्षि कणाद वैशेषिक के दूसरे सूत्र मे धर्म की व्याख्या करते हैं "यतो अभ्युदय निश्श्रेयस सिद्धि स धर्म" धर्म वेदोक्त कर्मों को कहते हैं। महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे वेदोक्त धर्म विषय अध्याय लिखा है अर्थात् धर्म नाम वेदोक्त कर्म करने का है। अत वेदोक्त कर्म करने पर (सिद्धि) अर्थात फल (अभ्युदय) इहलौकिक उन्नति, [निश्श्रेयस] पार लौकिक उन्नति अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति है। निष्कर्श निकला कि धम का फल इस लोक मे उन्नति समृद्धि कीर्ति सुखादि है और मरने पर मुक्ति है। यदि इस लोक मे मिलने वाला सुख जो वर्णन किया है दूसरे जन्म में मिलने की बात है तो परजन्म के लिए पुन निश्श्रेयस का कथन व्यथ हो जाता है।

[२] दो प्रकार के कर्म फलो की प्राप्ति दृष्ट, अदृष्ट का वणन ब्राह्मण ग्रन्थों से सिद्ध होता है। ब्राह्मणो म 'विध्यर्थवादनुवाद वचन विनियागात्' 'विधिर्विधायका," और 'स्तुतिनिन्दा परकृति पुराकल्प इत्यर्थवाद' इत्यादि सूत्रो से समझाया है। (परकृति) दूसरे कर्मों का दृष्टान्त व [पुराकल्प] इतिहास का उदाहरण दकर विधि का विधान किया है। (अग्नि होत्र जुहुयात्स्वर्ग काम) "जिसका सुख को इच्छा हो वह अग्निहोत्रादि यज्ञो को करे।" यदि परकृति का फल साक्षात दृष्ट नहीं है तो असाक्षात् अदृष्ट विधि के प्रति रुचि उत्पन्न होना असम्भव ही होगा। इस प्रकार शुभ कर्मों म और पुरुषार्थ में कौन प्रयत्नशील होगा।

[३] महर्षि जी ने सत्यार्थ प्रकाश के सातवे समुल्लास म प्रार्थना पर लिखते है "कि जब तक जावे कर्म करता हुआ ही जीने का इच्छा करे" क्योंकि जसे पुरुषार्थ करते हुए पुरुष का सहाय ईश्वर भा दूसरा भी करता है उदाहरण दिया। 'कि जो कोई गुड मीठा है ऐसा कहता उसको गुड़ प्राप्त व स्वाद प्राप्त कभी नहीं होता और जो यत्न करता है उसको शीघ्र व विलम्ब से गुड मिल ही जाता है।' तो यह गुडवत सासारिक वस्तु की प्राप्ति, जो शरीर मात्र के लिए आवश्यक ह क्या यह फल दूसरे जन्म म मिलेगा। यहा प्राप्ति शब्द से फल ही लक्षित होता है प्रभाव नहीं।

[४] त्र्यायुष जमदग्ने कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुष तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ॥१॥ यजु० ३। ६२॥ इस मन्त्र म प्राथना तिगुनी और चौगुनी उपदेश से जाना जाता है कि मनुष्य ब्रह्मचर्यादि उत्तम नियमो से त्रिगुण तथा चतुर्गुण आयु कर सकता है। अर्थात् चार सौ वर्ष तक भी सुख पूर्वक जी सकता है। तो क्या यह करने का फल रूप आयु दूसर जन्म मे मिलेगी या इसी जन्म म। हम देखते हैं कि मनुष्य अनियमित जीवन से रोगी हो जाता है और नियमित जीवन व पथ्य और औषधि द्वारा पुन स्वस्थ और प्रसन्न होता है। इस प्रकार इस साक्षात फल को देखकर ब्रह्मचार्यादि सुनियमो के पालन मे रुचि बढ़ती व पुरुषार्थ होता है।

[५] योगदर्शन मे योग की व्याख्या "योगश्चित्त वृत्तिनिरोध" कह कर इसका फल 'तदा द्रष्टु स्वरूपे अवस्थानम्" बताया है। तो यह स्वरूप म स्थिति का दूसरा जन्म होगी? और यदि ऐसा माने तो निर्बीज समाधि की सिद्धि कब होगी। और राजा जनक की विदेह अवस्था का वर्णन असत्य सिद्ध हो जायगा।

[६] याग दर्शन के साधन पाद में यम नियमों के पालन के पश्चात् उनका फल, लाभ वर्णन किया है। 'समाधि सिद्धिरीश्वर प्रणिधानाम्", "सन्तोषादनुत्तम सुख लाभ"।

[७] श्री नारायण स्वामी जी भी अपनी कर्मफल पुस्तक के ग्यारहवे अध्याय मे (फल की दृष्टि से कर्म दो प्रकार के) लिखते हैं "कुछ कर्मों का फल दृष्ट है जो इसी लोक और इसी जन्म में प्राप्त होते देखा जाता है परन्तु अन्य कर्मों का फल अदृष्ट है जा जन्म जन्मान्तर मे मिलता है।"

[८] याग क्यो करना? 'समाधि भावनार्थ क्लेश तनूकरणार्थश्च' जन्म व जन्मातरों मे तो मिलता ही है जो सिद्ध पक्ष है परन्तु इस जन्म म भी मिलता है। कितना यहा कितना वहाँ यह तो नियन्ता प्रभु जाने पर मिलता यहा भी है।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
अग्रहायण२३शक१८८०(१४दिसम्बर५८)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष्य : ५११३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्यमित्र हीरक जयन्ती

को

सफल बनाइए

आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार और संघटन की सुदृढ़ता

के लिए

एकमात्र साधन 'आर्यमित्र' है

जो साठ वर्षों से निरन्तर मौन साधक के रूप में समाज, राष्ट्रभाषा हिन्दी, साहित्य, धर्म, राष्ट्र और मानव संस्कृति आदि सभी क्षेत्रों में वैदिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने में संलग्न रहा है। सभी क्षेत्रों में आदर्शों की स्थापना ही उसका एक मात्र उद्देश्य रहा है।

यदि आप चाहते हैं कि भविष्य में भी

'आर्यमित्र'

★ आर्यसमाज के प्रचार
★ सिद्धान्त समर्थन
★ निर्भीक आलोचना
★ समाज-सुधार
★ राष्ट्र नव निर्माण
★ विश्व शान्ति
★ वैदिक संस्कृति समुद्धार
★ नैतिक उत्थान
★ आदर्श पत्रकारिता
★ राष्ट्रभाषा हिन्दी सेवा
★ विश्व बन्धुत्व
★ मानव संस्कृति

आदि सभी क्षेत्रों में सामाजिक चेतना जागृत करता रहे तो आर्यमित्र को समर्थ बनाने में अपना सहयोग प्रदान कीजिए।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती की सफलता आपके सहयोग पर ही निर्भर है। एक लाख रु० की जयन्ती निधि में अपनी सामर्थ्यानुसार सहायता कीजिए और इष्टमित्रों से सहायता दिलवाकर पुण्य के भागी बनिए।

आर्यमित्र की उन्नति के इस यज्ञ में पड़ी हुई प्रत्येक आहुति मानवता के नव-निर्माण में सहायक होगी।

संयोजक—'आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति' लखनऊ

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

ईसाई प्रचार निरोध आन्दोलन—

नेपाल में आर्यसमाज और बौद्ध मिलकर ईसाइयत के षडयन्त्र का सामना करेंगे

आर्य नेता श्री रामानन्द शास्त्री का नेपाल में भ्रमण और उत्साह वर्द्धक स्वागत

शीघ्र ही नेपाली आर्यबन्धु अपना शिष्ट मण्डल लेकर भारत आयेंगे

गत नवम्बर २१ तारीख का दिन ४ बजे आर्य प्रतिनिधि सभा विहार राज्य के उप प्रधान आचार्य पं० रामानन्द शास्त्री, भजनोपदेशक नन्दलालजी एवं बाबू बैजनाथ प्रसाद जी तथा तीन अन्य आर्य बन्धुओं के आगमन पर नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में आर्य समाजियों ने बड़े धूमधाम से उनका स्वागत किया।

२२ तारीख को काठमाण्डू के रंजना सिनेमा हाल में प्रसिद्ध हिंदी नेपाली और नेवारी भाषा के कवि एवं राजनीतिक नेता श्री केदारमान व्यथित जी के सभापतित्व में आचार्य पं० रामानन्द जी का भाषण हुआ उन्होंने अपने भाषण में कहा कि आज आर्य समाज और आर्य धर्म पर प्रहार करने वाले दूसरे धर्मों ईसाईयत एवं ईस्लाम में टक्कर हो रही है। आर्य समाज का आर्य विचार धारा से निकले किसी भी धर्म से विरोध नहीं है वे बौद्ध, सिख, जैन या सनातनी चाहे कोई भी क्यों न हों मौलिक एकता के कारण उन सबके साथ हमारा विचारात्मक व्यवहार है पर विदेशी मतों से विरोध है।

बाबू बैजनाथ प्रसाद जी ने भी गम्भीर और ओजस्वी भाषण किया। सभापति श्री केदारमान व्यथित जी ने सभी को धन्यवाद दिया और आर्य समाज की उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

उसी दिन २ बजे शहर के प्रसिद्ध बौद्ध विहार शाखा बहाल के प्रांगण में नेपाल के नेता श्री गणेशमानसिंह के सभापतित्व में नन्दलाल जी के ६ जोरदार भजनों के बाद सभा हुई श्री रामानन्द जी ने कहा इसी देश के सुपुत्र गौतम बुद्ध ने ही विश्वभर में आर्य धर्म को आर्य अष्टांग मार्ग और सत्य को फैलाया बौद्ध धर्म और आर्य समाज साथ-साथ सुधार एव शुद्धि को लेकर चले यही सामयिक आवश्यकता है। बाद में नेपाली नेता श्री धर्मरत्न यमि जो समाज के प्रधान परामर्श दाता भी हैं ने कहा कि विश्व की ऐतिहासिक अनेक घटनाओं में तीन घटनाएं प्रमुख हैं [१] बुद्ध भगवान का प्रादुर्भाव, [२] फ्रान्स की महाक्रान्ति एवं [३] दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव भारत में यदि बुद्ध का प्रादुर्भाव न होता तो भारत की आर्य विचारधारा विश्व में बौद्ध धर्म के रूप में नहीं फैलने पाती, वैसे ही दयानन्द स्वामी जी ने आर्य समाज स्थापित न किया होता तो भारत में आज तक कितने पाकिस्तान और ईसाईलैण्ड बन गये होते।

नेपाल के प्रजातान्त्रिक संघर्ष की सफलता में भी आर्य समाज का बड़ा योग दान रहा है आर्य समाजी शहीद श्री शुक्रराज शास्त्री के खून से ही नेपाल की सामन्त राणाशाही ढ़र सकी इसलिए आर्य समाज एवं बौद्ध साथ-साथ सुधार एव शुद्धि को लेकर चल इस विचार का मैं स्वागत करता हूं।

सभापति श्री गणेशमानसिंह जी ने कहा आर्यसमाज की सहायता यदि प्राप्त न होती तो नेपाल की क्रांति सफल नहीं होती विशेषकर आर्य शहीद श्री शुक्रराज शास्त्री का बलिदान और वर्तमान आर्य समाज नेपाल के प्रधान श्री राजालाल आर्य जी का सहयोग ही हमारी क्रांति की सफलता का कारण बने। गणेशमानसिंह जी के बाद बाबू बैजनाथ जी का भी ओजस्वी भाषण हुआ।

काठमाण्डू अंचल के प्रमुख शहर ललितपुर भक्तपुर आदि मे भी बड़े धूमधाम से भाषण भजन प्रवचन हुए। लोग बड़े प्रभावित हुए, प्रतिक्रियावादी विदेशी साम्राज्यवाद के दलालों और सामन्त पोषक पुरोहितों आदि द्वारा आर्य समाज पर लगाये गये सभी प्रकार के लांछनों को आचार्य रामानन्द जी ने साफ कर दिया। विदेशी धर्म प्रचारकों के षड्यन्त्रों से एकमात्र हिन्दूराज्य नेपाल को बचाने का भार आर्य समाज ही वहन कर सकेगा ऐसा विश्वास नेपाल की धर्म परायण जनता में उत्पन्न होने लगा है।

जगह जगह पर भजन प्रवचन एवं हवन के साथ साथ आर्य समाजो की स्थापना और पुनर्गठन करते हुए दर्शनीय मठ मन्दिरों के दर्शन के बाद शास्त्री जी अपनी मण्डली सहित २ तारीख को भारत लौट गये।

इस सभी समारोह के लिए खर्च ११२३) रु० हुआ यह सब व्यय महिला आर्य समाज की अध्यक्षा श्रीमती चन्द्रकान्ता देवी जी ने किया है चन्द्रकान्ता देवी जी आर्य समाज नेपाल की उप प्रधान भी हैं।

नेपाल के आर्य प्रतिनिधि गण भारत भ्रमण के लिए शीघ्र ही प्रस्थान करने वाले हैं जिसमें सभा के प्रधान श्री राजालाल आर्य, प्रधान मन्त्री श्री हरिहर प्रसाद एवं सभा के प्रधान परामर्शदाता श्री धर्मरत्न यात्मी भी होंगे।

ईसाई मत के प्रचार की आड़ में धोखा

२४ नवम्बर की रात को १२ बजे एक युवक द्वारा आर्यकुमार सभा सीपरी बाजार झांसी को पता लगा कि सीपरी बाजार में सेन्ट्रल होटल के पीछे ईसाई लोग मत प्रचार की आड़ में भोली भाली जनता को धोखा दे रहे हैं। श्री गंगाराम आर्य, श्री रघुनाथ चन्द्र, कृष्णसिंह एवं जगदीशचन्द्र आदि आर्यकुमार उपर्युक्त स्थान पर पहुंचे और निम्नलिखित दृश्य देखा।

(१) इस पंडाल में लगभग एक हजार नर-नारी एवं बच्चे थे।

(२) यह प्रचार मैथाडिक चर्च की ओर से था और सारे भारतवर्ष में इनका इसी प्रकार का प्रचार हो रहा है।

(३) प्रचार के मध्यान्तर उन्होंने ईश्वरीय दावा किया कि वह हर प्रकार के रोगों, जो ईसा पर ईमान लाता हो, से मुक्त कर सकता है। उसका प्रचारक जो अपने आपको एक पुलिस अधिकारी बताता है, उठ कर देवियों के समूह में गया। एक देवी को खड़ा किया, तीन-चार देवियां उसके पीछे खड़ी हो गईं। प्रथम देवी झट गिर गई और उसके पीछे खड़ी देवियों ने उसको सम्भाला। दो मिनिट के पश्चात् कथित पुलिस अधिकारी प्रचारक ने उस देवी के मुंह पर पानी का छींटा दिया और भी कुछ हवा लगाई। इसके पश्चात यह ऐलान कर दिया कि देवी का रोग दूर हो गया है। इस प्रकार कई देवियों और पुरुषों से इस प्रकार का पाखण्ड रचा गया। उन रोगियों में एक पलटन का सिख सिपाही और उसकी धर्म पत्नी भी थी (जिसका पता मेरे पास सुरक्षित है)।

वह यह भी ऐलान करते थे कि जिस किसी के पास किसी प्रकार का कोई गुरु मन्त्र, गट्टा या तावीज इत्यादि हो, उनको उतार कर ठीक करने के लिये लाये।

हम भारत की स्वतन्त्र सरकार से अनुरोध करेंगे कि वह इस पाखण्ड की पूरी-पूरी जांच करे और यदि उनका दावा सत्य है तो सरकार उनकी सहायता करे ताकि बड़-बड़े चिकित्सालय खोल कर भारत का रुपया नष्ट न हो और यदि यह ढोंग है और जो वास्तव मे है ही, तो ऐसे पाखण्ड पर प्रतिबन्ध लगाया जाये ताकि जनता ऐसे व्यक्तियों के चंगुल में फंसने से सावधान रहे।

एक विचित्र घोषणा

उनके एक उपदेशक ने घोषणा की कि कल रात अर्थात् दिनांक २५ नवम्बर को एक रोमन कैथोलिक ईसाई उपदेश सुनकर कुष्ट रोग से मुक्त हो गया और मैथाडिक चर्च का अनुयायी हो गया है।

उन्होंने यह भी घोषणा की कि जो व्यक्ति इस प्रकार ईश्वरीय चिकित्सा से चंगे हो गये हैं वह इटारसी में डा० कोटालिंगम राजकीय चिकित्सालय सेठ के समीप से पत्र व्यवहार करें।

—गंगाराम आर्य

अभिनन्दन ग्रन्थ की तैयारी

श्री गङ्गाप्रसाद एम० ए० रि० चीफ जज तथा श्री गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम० ए० की सेवा में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश जो अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट कर रही है, उसकी सामग्री एकत्रित की जा रही है। ग्रन्थ के प्रधान संपादक श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री ने विद्वानों की सेवा में जो विज्ञप्ति भेजी है उसमें कहा गया है कि लेख वैदिक धर्म अथवा आर्यसमाज के किसी सिद्धान्त या किसी सामाजिक, वैज्ञानिक, आर्थिक, राजनीतिक विषय पर होने चाहिये। ऋषि दयानन्द अथवा किसी अन्य महापुरुष के जीवन सम्बन्धी लेख भी ग्रन्थ में प्रवेश पा सकेंगे। लेख स्थायी साहित्य के स्तर के होने चाहिये। लेख संस्कृत हिन्दी अथवा अंग्रेजी किसी भी भाषा में लिखे जा सकते हैं।

विज्ञप्ति में यह भी प्रकट किया गया है कि इन दोनों विद्वानों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण संस्मरण भी दिये जा सकेंगे। लेख शीघ्र आने चाहिये जिससे सम्पादन का कार्य प्रारम्भ किया जा सके।

—विश्वम्भरसहाय प्रेमी, प्रचार मन्त्री, जयन्ती

वेदोपदेश

ओ३म् अग्नेस्तनूरसि वाचो विसर्जनं देववीतये त्वा गृह्णामि बृहद्ग्रावासि वानस्पत्य सऽइद देवेभ्यो हवि शमीष्व सुशमि शमीष्व। हविष्कृदेहि हविष्कृदेहि ॥ यजु० १-१५

हे यज्ञ, तुम अग्नि के तनुस्वरूप हो। वेदवाणी के प्रयोग स्थान हो। दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए मैं तुमको ग्रहण करता हू। तुम वनस्पतियों के सवध सवर्धन करने वाले महान् मेघ हो। देवो के लिए इस हवि को सस्कृत करो, अच्छे प्रकार सस्कृत करो। हे वाक् आओ, हे वाक् आओ।

आर्यमित्र

लखनऊ—२१ दिसम्बर १९५८, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि सवत् १९७२९४९०५९

श्रद्धा मे श्रद्धानन्द ने सीने पै खाई गोलियाँ

जब आर्य जन आर्यवीरो की शहादत का स्मरण करते हुए उपर्युक्त पक्तिया बोलते हैं तब एक श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति सबका मस्तक श्रद्धावनत हो जाता है और एक नवीन स्फूर्ति हमारे हृदयो को कर्तव्य प्रेरणा से ओतप्रोत कर देती है।

आर्य समाज के इतिहास का आरम्भ मध्य और वतमान तीना ही उस महामानव के प्रभाव से युक्त रहे हे। आरम्भकाल म त्याग वृत्ति अपना कर प्रचार क्षेत्र के अनन्य पाथक बन ेर और शिक्षा प्रणाली का नवान रूप देकर स्वामी श्रद्धानन्द जा ने नवजावन प्रदान किया। सभी प्रतिक्रिया वादी शक्तियाँ और साम्राज्य वादो ताकते गुरुकुल आन्दोलन को शका का दृष्टि से देखने लगो इस क्रान्तिकारा पराक्रम का परिणाम शीघ्र ही भारत व्यापी हो उठा और स्वदेश स्वभाषा स्वसभ्यता के प्रति आकर्षण और आस्था उत्पन्न करने वाली गुरुकुल सस्थाए राष्ट्र के कोने कोने मे स्थापित होने लगी।

आर्य समाज के सघटन को सुदृढ़ बनाने और उसके प्रभाव को स्थायो एव व्यापक बनाने की दृष्टि से स्वामी जी ने सावदेशिक सभा के निर्माण का सयोजन किया। बाद मे मथुरा में ऋषि जन्म शताब्दी के रूप मे सफल समारोह कर आर्य जगत् की एकता और व्यापकता पर इस सभा का अच्छा असर पड़ा। आज सभा जिस रूप मे आर्य जगत् का नेतृत्व कर रही है उसकी कल्पना स्वामो जी ने पहले ही कर ली थी।

आर्य समाज के शिक्षा आन्दोलन व सघटन का नेतृत्व करने के साथ हरिजनोद्धार और शुद्धि आन्दोलन के महत्वपूर्ण कार्य भी स्वामी जी के स्मरणीय कार्य रहे।

सामाजिक क्षेत्र मे कार्य करते हुए भी वे राजनीति म पृथक नहीं रहे काग्रेस के आन्दोलनो मे सक्रिय साहस प्रदर्शन व अमृतसर काग्रेस के स्वागताध्यक्ष पद का कायभार वहन कर उन्होने आर्य समाज के राजनैतिक स्वरूप का परिचय दिया।

चादनी चौक म गोरो की सगीनो के सामने छाती तानकर खडे होन तथा सत्य व राष्ट्रीय एकता के लिये जामा मस्जिद म मुस्लिम बन्धुओ के समक्ष भाषणादि देने की उनकी जीवन घटनाए भारतीय इतिहास म सदैव स्मरणीय रहेगा।

शुद्धि के अमोघ मन्त्र द्वारा उन्होने जिस राष्ट्रीय एकता के यज्ञ का आरम्भ किया था उसमे उन्हे अपनी ही आहुति देकर कीमत चुकानी पड़ी। वे शहीद हो गये है। भारत का एक महापुरुष २३ दिसम्बर को हमसे उठ गया। हम सबको उनके बलिदान की चिनगारी सदैव मार्ग दर्शन करती रहेगी।

जब हम कहते हैं कि आर्यसमाज का वर्तमान भी स्वामी श्रद्धानन्द जी से प्रभावित है तब हमारा यही अभिप्राय है कि आज के आर्य समाज के पास उनकी प्रेरणाए हैं और उनपर चलकर ही आर्य समाज आगे सफलताए प्राप्त कर सकता है। उन प्रेरणाओं को यदि क्रमबद्ध किया जा सके तो इस प्रकार अकित किया जा सकता है—

(अ) आर्य समाज अपनी शिक्षा नीति से राष्ट्र का नेतृत्व करे।

(आ) आर्य समाज शुद्धि आन्दोलन द्वारा विदेशी और विधर्मी पचमागी तत्वो का निराकरण कर राष्ट्र की एकता के लिए प्रयत्न करे विदेशी ईसाई मिशनरियो और पाकिस्तानी पचमागियो से राष्ट्र की रक्षा के लिये शुद्धि का दुधारा सदैव चलता रहना चाहिये। हमसे कोई पृथक् न हो, पृथक् हुआ हो तो हम उसे फिर मिला ले और अगर कोई हमारे सिद्धान्तो में विश्वास कर हमारे मे मिलना चाहे तो हम उसका स्वागत करे।

(इ) आर्य समाज हरिजन समस्या का उचित समाधान करे। आज देश में हरिजन वर्ग का पिछड़ापन प्रथम समस्या नहीं, हरिजनो की पृथक् वर्ग के रूप मे रहने की नीति अराष्ट्रीय एव समाज के लिये घातक है।

(ई) राष्ट्रभाषा हिन्दी को यद्यपि भारतीय सविधान म आदर का स्थान प्राप्त है (जो आर्य समाज के प्रयत्नो का ही परिणाम है) फिर भी कथनी और करनी की एकरूपता म अन्तर है। आर्य समाज हिन्दी का सजग प्रहरी बन पजाब म आर्य समाज की सक्रियता इसी आदर्श की प्रेरणा से है। स्वामी जी का आशीर्वाद हम अवश्य सफल करेगा।

(उ) आर्य समाज ही वेदो का सच्चा उद्घोषक हो सकता है अत वेद प्रचार का वादिक मन्तव्यो के प्रचार का राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय कायक्रम बनाकर हम आगे काय करना होगा। स्वामी जी सद्धर्म प्रचारक द्वारा इसी भावना को जाग्रत करते रहे।

(ऊ) गो रक्षा आन्दोलन के लिये भी स्वामी जी प्रेरणा के स्रोत हैं उनकी विचार धारा के अनुसार चल कर राष्ट्र म सुख समृद्धि का जीवन लाया जा सकता है।

उस महामानव के प्रति हम प्रति वर्ष श्रद्धाजलिया अर्पित करते हैं पर सच्ची श्रद्धाजलि तो उसी दिन होगी जब उनके आरम्भ किये सभी काय पूरे हो जायेगे। मित्र परिवार स्वामी जी के विचारों और आदर्शों से सदा प्रेरणा प्राप्त करता रहा है और उन्हे पूर्ण करने म सतत सलग्न है। शहीद की स्मृति के इस शुभअवसर पर हम मित्र परिवार की ओर से उन सभी कार्यों को जिन्हे स्वामी जी चाहते थे पूर्ण करने की प्रतिज्ञा दुहराते हैं। यही हमारी ओर से उस महा मानव के प्रति श्रद्धाजलि है। स्मरणीय, वन्दनीय स्वामी जी हमारी श्रद्धाजलि स्वीकार करें।

अवकाश सूचना

वर्षान्त-अवकाश के कारण आर्यमित्र का अगला अङ्क (ता० २८-१२-५८ का अङ्क) बन्द रहेगा। अब इसके पश्चात् नय वर्ष मे ४ जनवरी ५९ का अङ्क पाठकों की सेवा मे पहुचेगा। ग्राहक, एजेन्ट व विज्ञापनदाता कृपया नोट कर ले। —अधिष्ठाता, आर्यमित्र

भारत के लौह पुरुष सरदार पटेल अमर हैं

१५ दिसम्बर को भारत के लौह पुरुष सरदार पटेल की पुण्य स्मृति मनायी गयी। भारत का आधुनिक इतिहास जिन महापुरुषों के तप त्याग से सिंचित है सरदार उन लोगों की अग्रणी पक्ति मे हे। भारत के मानचित्र के पीले और सामन्तशाही धब्बों से भारत मा को मुक्त कर अखण्ड रूप मे एक सशक्त राष्ट्र बनाने में सरदार ने जो योगदान दिया हम सब उस महत्व को हृदयङ्गम करते हुए भाषावाद, प्रान्तवाद, सम्प्रदायवाद आदि से ऊपर उठ सके यही सरदार का सच्चा स्मरण होगा, आदर्श अभिवन्दना होगी।

महा वैज्ञानिक वसु की शताब्दी

भारत के सुप्रसिद्ध स्वर्गीय वैज्ञानिक श्री जगदीशचन्द्र वसु की शताब्दी मनाकर राष्ट्रवासियो ने उनके प्रति कृतज्ञता का प्रकाशन किया है। वैज्ञानिक वसु ने अपने प्रयोगो द्वारा भारत की प्रतिभा का उस समय विश्व म सम्मानित कराया जब भारत गुलाम था और योरप के लोगों को बतलाया गया था कि भारत के लोग असभ्य है। उनके प्रयत्नो का असहिष्णु मनोवृत्ति के साथ उपहास किया गया पर धर्य का विजय हुई। और उनकी साधना ने वैज्ञानिको को वशीभूत कर लिया। जैसे पराधीन भारत के दयानन्द, अरविन्द और विवेकानन्द ससार को अध्यात्म का सन्देश दे गये, तिलक, गाधी सुभाष और नेहरू ने राजनीति मे विश्व को मार्गदर्शन दिया, इसीप्रकार वसु महोदय के आविष्कारो ने आधुनिक विज्ञान को चामत्कारिक देने दी हैं। पराधीन भारत के होने के कारण इनके आविष्कारो को अपने नाम से प्रकट करने की दुरभिसन्धियां भी हुईं। भारत के गौरव की रक्षार्थ इस प्रकार की घटनाओ की खोज की जानी चाहिये। वसु जैसे वैज्ञानिक का सम्मान और स्मरण भारत का गौरव है।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

[पिछले पृष्ठ का शेष]

जयन्ती और अन्तरङ्ग सदस्य गण

आर्यमित्र हीरक जयन्ती आदि समारोह कार्यक्रम का विज्ञापन और प्रचार निश्चित योजनानुसार हो रहा है और अब यह अनुभव किया जाने लगा है कि योजना केवल शाब्दिक नहीं क्रिया में परिणत होने वाली भी है। समस्त आर्य जगत् ने इस योजना को आशीर्वाद देकर उत्तर प्रदेश के आर्य बन्धुओं को जहां प्रोत्साहित किया है वहीं उनके कन्धों पर महान् दायित्व भी सौंप दिया है। सारा आर्य जगत् बड़ी आशाओं के साथ उत्तर प्रदेश के आर्यों की कार्य कुशलता और कर्तव्य परायणता की ओर निहार रहा है। क्या हम आर्य जगत की आशाओं को पूर्ण कर सकेंगे? यही प्रश्न है जो आज उत्तर प्रदेश के प्रत्येक आर्य का होना है।

उत्तर प्रदेश के आर्यों का प्रतिनिधित्व करने वाले अन्तरंग सदस्य आगामी २४ २५ दिसम्बर को कन्या गुरुकुल सासनी में अन्तरंग बैठक में सम्मिलित होने पहुंच रहे हैं। बुलन्दशहर और हल्द्वाना में सदस्यों ने जो निर्णय किये थे आज उन्हें पूर्ण कर दिखाने का समय समीप आ गया है। यह समझ कर कि जयन्ती से पूर्व अन्तिम क्षणों में धन बरसने लगेगा या कोई कल्पनातीत घटना हो सकेगी अपनी पलायनवादी मनोवृत्ति का परिचय देना होगा। इसलिये आवश्यकता है कि सब अब तक के लेखे जोखे का हिसाब मिलायें और जो कुछ हो चुका उसे बहुत न मानकर आगे के लिये अपना कर्तव्य निर्धारण करें। जयन्ती निधि ही जयन्ती की सफलता का आधार होगी और उसी से पता चलेगा कि उत्तर प्रदेश में आर्य समाज की कितनी शक्ति और क्षमता है। जयन्ती निधि के लिये नोटों का प्रकाशन किया गया है बहुत से आर्यों ने उन्हें मंगाकर कार्यारम्भ कर दिया है परन्तु अभी बहुत से अन्तरङ्ग सदस्य बन्धु इस कार्य के लिये समय नहीं निकाल पाये हैं उनसे हम विनम्र निवेदन करना चाहेंगे कि वे जयन्ती को पारिवारिक कार्य मानकर उसकी सफलता के लिए जुट जाय। आर्य परिवार के अभिन्न मित्र का आज हर्षोत्सव है कौन अपने मित्र को बधाई न देगा। मित्र के लिए शाब्दिक बधाई से काम न चलेगा। उसके लिए कर्तव्य सुमन चढ़ाने होंगे आपके प्रयत्नों से मित्र सराहा हो, पत्रकार जगत् में उसे उच्च स्थान प्राप्त हो, आर्यजगत् के विद्वानों का अभिनन्दन हो और अपने गुरु की शिक्षा स्वामी आदर्श स्वामी के रूप में स्मरणीय बन सके इससे अधिक सन्तोष और सुख की बात क्या हो सकेगी। हो सकता है आज हम मानवीय कमजोरियों और साधनों की अकिंचनता के कारण हम आगे न बढ़ सके हों, पथ भ्रष्ट हुए हों पर ऋषि दयानन्द का प्रकाश स्तम्भ हमें चरैवे त चरैवेति की प्रेरणा दे रहा है। हमें आगे बढ़ना है। आइये मिलकर आगे बढ़ें और कर्तव्य का पालन करें।

कन्या गुरुकुल सासनी महोत्सव

आर्य समाज की शिक्षा संस्थाओं में कन्या गुरुकुल सासनी [अलीगढ़] का अपना विशेष महत्व और स्थान है।

नगर के दूषित वातावरण से दूर स्वच्छ वातावरण में इस आश्रम की नींव डालकर जिस दूर दर्शिता का परिचय दिया गया है वास्तव में नारी शिक्षा समस्या के साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है। नागरिक जीवन की दूषित वृत्तियां बाल जीवन में जितना शीघ्र और अधिक असर डालती हैं उनका प्रदर्शन आज की शहरी शिक्षा में स्पष्ट प्रकट हो रहा है।

नागरिक विलासता की भावनाएं शिक्षा में बढ़ रही हैं, स्वदेश स्वभाषा स्वसभ्यता प्रेम का भाव समाप्त हो रहा है और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के रूप में आज एक विचित्र दूषित वातावरण हमारी शिक्षा को ध्वस्त कर रहा है।

यदि हम अपनी वर्तमान और भावी सन्तानों को इस दूषित प्रवाह से बचाना चाहते हैं और भारत में नारी जागरण को उचित नेतृत्व प्रदान करना चाहते हैं तो इस प्रकार की संस्थाओं को अपनाना और उनको बढ़ाना हमारा कर्तव्य होना चाहिये स्नातकीय शिक्षा स्तर तक का निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था कर गुरुकुल के अधिकारियों ने जो महान् प्रयत्न किया हुआ है हम उसकी प्रशंसा करते और सफलता चाहते हैं।

२४, २५ दिसम्बर को गुरुकुल का २८ वां वार्षिक दीक्षान्त समारोह सम्पन्न होने जा रहा है। उत्सव की सफलता की कामना करते हुए आर्य जनता से उस अवसर पर पधारकर संस्था की प्रगति में सहायक बनने की प्रार्थना करते हैं। ★

कन्या गुरुकुल सासनी में श्री कमलापति त्रिपाठी

शिक्षा मन्त्री उत्तर-प्रदेश, २५ दिसम्बर को दीक्षान्त भाषण देंगे

आप सब इस अवसर पर उत्सव में पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ावें।

नवीन कन्याओं का प्रवेश भी उत्सव के अवसर पर ही होगा। इच्छुक अभिभावक कन्याओं को साथ लेते आवें।

—लक्ष्मीदेवी मुख्याधिष्ठात्री

सभा में प्रविष्ट समाज सूची

अन्तरङ्ग सभा दि० २५।१०।५८ के नि० सं० ३ के अनुसार निम्न समाज सभा में प्रविष्ट हुए।

१—भरभारी	पोस्ट खास	जिला इलाहाबाद	१००)	कोटि
२—आजूमई	„ करैनाहर्सा	„ मैंनपुरी	„	„
३—मष्टमहीश्वरालस्यू	” चैलूसेन	” गढ़वाल	”	”
४—जियालगांव पट्टा श्वरालस्यूं	” देवीखेत	” ”	”	”

आर्यमित्र हीरक जयन्ती के लिए प्राप्त धन की सूची

१२ दिसम्बर ५८ तक

दान सूची निम्न प्रकार प्रकाशित की जाती है और सभा दानी महानुभावों को धन्यवाद देती है।

१—श्री कुन्दनलाल जी, दहला [लखनऊ]	२)
२—” राधेश्याम गुप्ता, रूरकेला [उड़ीसा]	२०)
३—’ प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल आसाम	५१)
४—” जयपाल जी कपूर, लखनऊ	५)
५—” फूलचन्द गुप्ता प्र० आर्य समाज देवरिया	११)
६—” मोहनलाल जी, मेरठ शहर	२५)
७—” डा० आर० एस० लाल, नौगाँव, [छतरपुर]	५)
८—” द्वारकाप्रसाद गोयल, मेरठ शहर	१०१)
९—” व्यवस्थापक वैदिक वाचनालय, नारायण पेठ	२५)
१०—” मन्त्री आ० स० बैजनाथ पारा [रामपुर]	५०)
११—” छेदीराम आर्य, सुकहरिया [आरा]	१)
१२—” प्रधान आ० स० हल्द्वानी	५०१)
१३—” मन्त्री आ० स० रामनगर	५१)
१४—” रामकुमार आर्य चिरोर	५)
१५—” सूरजमल जी बेलारी	५)
१६—” आर्य समाज रानी मंडी अतरसुइया रोड प्रयोग	५)
१७—” कृष्णलाल एडवोकेट सहारनपुर	५)
योग	८७३)

—कालीचरण आर्य
संयोजक अर्थ समिति जयन्ती

संस्था-परिचय

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय सासनी (अलीगढ़)

(श्रीमती अक्षयकुमारी जी आचार्या कन्या गुरुकुल महाविद्यालय सासनी)

कन्या गुरुकुल सासनी आर्य जगत् की प्रसिद्ध शिक्षा संस्था है इसकी सेवाएं नारी शिक्षा आन्दोलन में सदैव स्मरणीय रहेंगी। मित्र परिवार और समस्त आर्य जनता की शुभ कामनाएं संस्था के साथ हैं।

—सम्पादक

भारतीय जागरण में आर्य समाज की सबसे बड़ी देन शिक्षा क्रांति रही है। शिक्षा संस्थाओं का जाल बिछा कर आर्य समाज ने राष्ट्र के कोने कोने में ज्ञान ज्योति का प्रकाश फैला दिया परन्तु वह ज्योति विदेशियों को भगाने ही के लिये न थी अपने अपराधों और कमियों को दूर करने के लिए भी थी। भारत का सबसे बड़ा अपराध नारी समाज को शिक्षा से वंचित कर देना था। ऋषि दयानन्द ने मातृ शक्ति के राष्ट्रीय एवं सामाजिक महत्व को समझा और नारी जागरण का कार्य आर्यसमाज ने अपने हाथ मे लिया।

आर्य समाज की गुरुकुल शिक्षा संस्थाओं के निर्माण के साथ महिलाओं की शिक्षा दीक्षा की आदर्श व्यवस्था के लिए कन्या गुरुकुलों की स्थापना का प्रश्न भी सामने आया आर्य समाज के प्रसिद्ध सन्यासी श्री स्वामी दर्शनानन्द जी के प्रयत्नों से इस शताब्दी के आरम्भ में हाथरस के सेठ श्री मुरलीधर जी ने ३०० बीघा भूमि दान दी और आश्रम का विस्तृत भवन भी निर्माण कराया जो गुरुकुल की स्थावर सम्पत्ति है जिसमे अन्य दानियो के सहयोग से और भी वृद्धि हो चुकी है। आरम्भ मे गुरुकुल अधिक सफल न हो सका पर आर्य जनता का ध्यान बराबर इस तरफ लगा रहा और एक दिन (जु० १९३१) जनता ने यह सुखद सम्वाद सुना कि महात्मा नारायण स्वामी जी के कर-कमलों से कन्या गुरुकुल का उद्घाटन कार्य सम्पन्न हुआ है। उस दिन से लेकर आज २८ वर्ष हो गये यह संस्था कन्याओं की शिक्षा दीक्षा व्यवस्था के लिये पूर्ण सक्षम और सचेष्ट बनी हुई है।

सर्व साधारण में शिक्षा का प्रचार हो इस उद्देश्य से गुरुकुल में शिक्षा निःशुल्क दी जाती है। ब्रह्मचारियो के संरक्षकों से भोजन वस्त्रादि की व्यवस्था के लिए महगाई के इस युग में भी केवल ३०) शुल्क लिया जाता है। जो सज्जन इतना धन देने मे असमर्थ समझे जाते है उनके लिए छात्र वृत्ति आदि की व्यवस्था धनी मनी दानदाताओं की ओर से कराने का प्रयत्न किया जाता है।

संस्था उत्तर प्रदेश मे स्थित है इस कारण उत्तर प्रदेश के आर्य परिवारों से संस्था का विशेष सम्पर्क होना स्वाभाविक है परन्तु संस्था राष्ट्रीय स्वरूप धारण कर चुकी है और संस्था के महत्व और उपयोगिता को अनुभव करते हुए देश की सम्पूर्ण जनता ने गुरुकुल उपयोगिता को अपना सहयोग प्रदान किया है। देश के विभिन्न भागों (मध्य प्रदेश बिहार, बंगाल, आसाम, हैदराबाद, बम्बई, सौराष्ट्र, पंजाब आदि) से आकर सहस्रों कन्यायें गुरुकुल मे शिक्षा प्राप्त करती रही हैं। प्रवासी भारतीयो ने संस्था को अपनाया और पूर्वी अफ्रीका आदि से कन्याएं यहाँ आती रही हैं। अब तक १५० के लगभग कन्याएं १२ वर्ष की शिक्षा प्राप्त कर स्नातिकाएं बन चुकी हैं।

साहित्यिक शिक्षण के अतिरिक्त सांस्कृतिक आदर्शों एवं धार्मिक विश्वासों के प्रति आस्था उत्पन्न करना संस्था की अपनी विशेषता रही है। आर्य समाज के सिद्धान्तों और उसकी गति विधियों से परिचित रखते हुए सांस्कृतिक अभिरुचियों की अभिवृद्धि के लिये संगीतादि कार्यक्रमों पर भी विशेष बल दिया जाता है। कन्याओ के मनोरंजन व स्वास्थ्य सम्वर्धन आदि के लिये बाल क्रीड़ांगन, सामूहिक व्यायाम शिक्षा और बौद्धिक विकास आदि के लिये आदर्श पुस्तकालय आदि की व्यवस्था की जाती है। आयुर्वेद की शिक्षा के लिए भी प्रयत्न आरम्भ किये गये है।

इस प्रकार गुरुकुल को भारतीय परम्पराओ के अनुसार चलने वाली आधुनिकतम संस्था बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है और गुरुकुल अखिल भारतीय स्वरूप धारण कर चुका है। राष्ट्र के प्रायः सभी उच्चकोटि के नेता समय समय पर गुरुकुल पधार कर संस्था को आशीर्वाद प्रदान करते रहते हैं। संस्था के सम्बन्ध मे कुछ नेताओं की सम्मतियां इस प्रकार है :—

[अ] मैं इस संस्था को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ, मै प्रार्थना करता हूं कि दिन दिन इसकी उन्नति हो।

का० कृ० १५, १९९२ वि स०

—मदनमोहन मालवीय

[आ] सासनी गुरुकुल देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई। श्री लक्ष्मीदेवी जी के कार्य से हम बहुत प्रसन्न हुए, मैं गुरुकुल की सफलता के लिए प्रार्थना करता हूं।

८-११-३८ —वल्लभ भाई पटेल

[इ] कन्या गुरुकुल देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई, मैं इसकी सफलता पर मुग्ध हूं।

२५।१२।५० तत्कालीन मन्त्री व्यापार विभाग केन्द्रीय सरकार

[ई] कन्या गुरुकुल की मैं उत्तरोत्तर प्रगति चाहता हूं। यहाँ कन्याओ को वैदिक साहित्य का परिचय कराया जाता है। ५।११।५१

सम्प्रति गुरुकुलों की पाठविधि को एक रूप देने की दृष्टि से गुरुकुल म उत्तर प्रदेश के सम्मानित गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन की पाठविधि (कन्याओं के लिये उपर्युक्त पाठविधि सहित) प्रचलित कर दी गयी है जिससे यहाँ से स्नातिका बनने पर कन्याओं को एम०ए० (आगरा विश्वविद्यालय) में सम्मिलित होने का अधिकार प्राप्त हो जायगा।

इसके अतिरिक्त बनारस की संस्कृत परीक्षाओं, प्रयाग बोर्ड म०वि० पीठ व साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं के लिये भी छात्राओं को सुविधाएं प्रदान की जाती है।

समाज कल्याण विभाग उत्तर प्रदेश व देहली का भी सहयोग संस्था को प्राप्त है और उनकी ओर से भी अच्छे अनुदान संस्था को प्राप्त होते रहे है सम्प्रति भी संस्था को १०००) रु० का अनुदान देने की स्वीकृति बोर्ड ने प्रदान की है जिससे कन्याओं के जीवन एवं शैक्षणिक स्तर को उन्नत बनाने का प्रयत्न किया जायगा।

राज्य सरकार की ओर से भी शिक्षा, कृषि विद्युत आदि के लिए सहायता प्राप्त करने म सफलता मिली हैं। अन्य दानी महानुभाव भी संस्था की सहायता कर प्रोत्साहित करते रहते हैं। इस वर्ष अतिवृष्टि का प्रभाव गुरुकुल की चार दीवारी और भण्डार के ऊपर विशेष रूप से पड़ा और काफी क्षति हुई है आशा है वह सब भी कुल प्रेमियो के सहयोग से पूर्ण हो सकेगी।

जो सज्जन संस्था को धनादि द्वारा सहायता दे या दिला रहे हैं, समाज कल्याण बोर्ड और सरकार से जो सहायता मिल रही है उस सबके लिए गुरुकुल सदव आभार मानता रहेगा।

गुरुकुल का आगामी वार्षिकोत्सव २३, २४, २५, दिसम्बर को सम्पन्न होने जा रहा है। देश के उच्चकोटि के विद्वान् पधार कर विचार प्रदान करेंगे। उत्तर प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री कमलापति त्रिपाठी नव स्नातिकाओं को दीक्षान्त भाषण देंगे।

शिक्षा प्रेमी समस्त जनता से प्रार्थना है कि उस अवसर पर पधार कर संस्था की प्रगति से परिचित हों और प्रोत्साहित करें।

सदैव स्मरण रखिये कि भारत की समस्या शिक्षा से हल होगी और शिक्षा की समस्या आदर्श नारी के द्वारा हल होगी। आज की नारी नवयुग के आकर्षण में अपने को सम्हाल नहीं पारही है और उसके सम्भावित परिणाम राष्ट्र की आदर्श उन्नति के लिए भयावह हो सकते हैं। यदि हम चाहते है राष्ट्र को सन्नारी और आदर्श माताएं दे सके तो उनकी आधार भूमि गुरुकुल जैसी संस्थाओं को हमें अपनाना और बढ़ाना होगा। मनु के शब्दो मे–यत्र नार्य स्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यहाँ पर यत्र का अर्थ यस्मिन् देशे मानकर हमे नारी-शिक्षा के कार्य मे सहयोग देना चाहिए।

★

वर की आवश्यकता

ईसाई मत से वैदिक धर्म में दीक्षित स्वर्गीय पं०जयदत्त शर्मा शास्त्री की सुन्दर, गौर वर्ण, सुशील, गृहकार्य मे दक्ष पुत्री के लिए एक योग्य आर्य वर की आवश्यकता है। पूर्ण विवरण तथा वर के चित्र सहित नीचे लिखे पते पर पत्र व्यवहार करें।

वीरेन्द्र शास्त्री एम०ए० अधिष्ठाता
शिक्षा विभाग आ० प्र० सभा
रायबरेली, उत्तरप्रदेश

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर एक दृष्टि

(२३ दिसम्बर जिनका बलिदान दिवस है)

[श्री ललिताप्रसाद आर्योपदेशक, डी० ए० वी० कालेज, कानपुर]

महर्षि स्वामी दयानन्द जी के बाद हिन्दू जाति का सबसे बड़ा हितैषी कोई हुआ तो वह अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द थे। स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन का विकास कार्य और उसका अन्त आधुनिक भारत के नवयुवकों के लिए एक पूर्ण आदर्श है। भारतवर्ष के विशाल गगन मण्डल में हम स्वामी दयानन्द को एक दैवी ज्योति मानें, तो स्वामी श्रद्धानन्द जी उस ज्योति के एक चमत्कारिक प्रकाश थे। उनका जीवन संघर्ष और उनका जीवनोत्सर्ग प्रकाशमय था, और उन्होंने विशाल हिन्दू जाति के अन्धकाराच्छादित हृदय और मस्तिष्क को प्रकाशित करके उसमें नवीन सहानुभूति और उदारता तथा नवीन जागृति और शक्ति उत्पन्न कर दी। निस्संदेह हिन्दू जाति अपने ऐसे महान् हितैषी रक्षक और उद्धारक की पुण्य स्मृति को महान रूप में कायम रखेगी और वह महान रूप यह होगा कि वह अपने नूतन जीवन और शक्ति के पुंज नवजवानों को श्रद्धानन्द के बलिदान पथ-पर श्रद्धा और आनन्द पूर्वक भेंट चढ़ा-देगी। और यह भेंट हिन्दू जाति को पुनः एक सुसंगठित और शक्तिशाली जाति बनाने की आधार शिला होगी।

यहां शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी की "जीवन की संक्षिप्त घटनाएं" प्रस्तुत की जा रही है जिससे पाठकों को कुछ जानकारी हो जाये।

१—जन्म, तलवन ग्राम जिला जालन्धर—फाल्गुन कृष्ण १३—सं० १९१३ वि०।

२—विद्यारम्भ, काशी में सम्वत १९२३ वि०।

३—महर्षि स्वामी दयानन्द का सत्सग—१५ श्रावण, सं० १९३६ वि०

४—आर्य समाज में प्रवेश—माघ मास सम्वत् १९४१ वि०।

५—पुत्रोत्पत्ति (हरिश्चन्द्र) २७ नवम्बर सम्वत् १८८७ ई०।

६—वकालत पास—२४ माघ स० १९४४ वि०।

७—सद्धर्म प्रचारक,पत्र का जन्म १ वैशाख स० १९४६ वि०

८—कन्या महाविद्यालय जालन्धर की स्थापना व वकालत का त्याग स० १९०२ ई०।

९—गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना व सेवा स० १९०१ से १९१७ ई० तक।

१०—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना (जो कि समस्त भूमण्डल के आर्यों का नेतृत्व करती है) सन् १९०८ ई०।

११—सन्यासाश्रम में प्रवेश—सन् १९१६ ई०।

१२—गढ़वाल अकाल पीड़ितों की सेवा—१९१७ ई०।

१३—रौलेट एक्ट आंदोलन में भाग लेना—मार्च १९१९ ई०

१४—"जुम्मा मस्जिद दिल्ली" में व्याख्यान ४ अप्रैल सन् १९१९ई०

१५-अमृतसर कांग्रेस स्वागतकारिणी के अध्यक्ष और स्वागताध्यक्षपद से हिन्दी में भाषण दिस० १९१९ ई०

१६—असहयोग आन्दोलन में भाग लेना सन् १९२१ २२ ई०।

१७—गुरु बाग के सम्बन्ध में जेलयात्रा—सन् १९२२ ई०।

१८—भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना १३ फरवरी १९२३ ई०।

१९—भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का सचालन १३ फरवरी १९२३ से १९२६ ई० तक।

२०—सर राजाराम सिंह जी के० सी० आई० ई० के द्वारा आर्य जाति को अन्तिम सन्देश २२ १२ २६ को सायं ४ बजे स्वामी जी का सन्देश निम्नलिखित है :—

"मैं फिर भारत मे जन्म लेकर शुद्धि द्वारा देश और जाति की सेवा करूंगा।"

२१—वैदिक धर्म पर बलिदान दिल्ली मे पौने चार बजे २३ दिसबर सन् १९२६ ई० का !!

आर्य बन्धुओं! यह है आदर्श सन्यासी का संक्षिप्त जीवन। आइये इस पवित्र जीवन से कुछ शिक्षा ग्रहण करें ताकि ऋषि के ऋण से हमारा उद्धार हो और हम संसार का कल्याण कर सकें।

किसी कवि ने सत्य कहा है कि—

"शहीदों की चिताओं पर,
जुड़ेंगे हर बरस मेले।
धर्म पर मरने वालों का,
यही बाकी निशां होगा।"

अमर धर्मवीर स्मरण

[१]

गुरुवर स्मरण तुम्हारा हम में
नवजीवन संचार करे।
श्रद्धा-शौर्य धैर्य साहस को,
निर्भयता को नित्य भरे॥

[२]

श्रद्धा न्यून हुई इससे ही
आत्मिक बल में ह्रास हुआ।
श्रद्धामूर्ति महात्मसंस्मरण,
निर्बलता निस्तेज हरे॥

[३]

पर उपकार हेतु तन मन धन,
अर्पित तुमने सर्व किये।
यज्ञ रूप जीवन का यतिवर,
शुभ आदर्श सदैव धरे॥

[४]

धर्म वेदि पर बलि देकर तुम,
धर्मवीरवर! अमर बने।
स्मरण तुम्हारा सब आर्यों में,
धर्मभाव उद्दीप्त करे॥

[५]

शिक्षादर्श सिखाने तप से,
तुमने था गुरुकुल खोला।
देव शक्ति दे शिष्यवर्ग को,
वह तव पथ अनुसरण करे॥

[६]

नहीं दिखाई देता तुम सा,
तेजस्वी नेता निर्भीक।
कृपा करें जगदीश तुम्हारा,
जीवन फिर नेतृत्व करे॥

[७]

गुर्खों की संगीनों सन्मुख,
तुमने निज छाती खोली।
दृश्य न अद्भुत किसके मन में,
निर्भयता संचार करे?॥

[८]

सेवा का शुभ भाव तुम्हारे,
कूट कूट हिय भरा हुआ।
वही भावना सबके मन में,
परमेश्वर दिन रात भरे॥

[९]

पी श्रद्धा की दिव्य सुधा तुम,
नित आनन्द उठाते थे।
पान कराओ वह अमृत जो,
पाप ताप अभिशाप हरे॥

[१०]

श्रद्धा हीन बने जो जीवन,
देव भक्ति उत्साह विहीन।
उनमें भी बलिदान तुम्हारा,
भव्य-भावना दिव्य भरे॥

—धर्मदेव (विद्यामार्तण्ड)

गीता और आर्यसमाज

[श्री पं० गङ्गाप्रसाद एम० ए० रि० चीफ जज]

श्री जज साहब ने गीता की आर्यसमाज के दृष्टिकोण से समीक्षा करते हुए उसकी महत्ता प्रतिपादन किया है। आपने यह भी सुझाव दिया है कि सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के विद्वन्मण्डल को चाहिये कि गीता के सम्बन्ध में तथ्य निर्णय करें और विचार विमर्श के पश्चात् जो निर्णीत विचार हों उन्हें आर्य समाज मे मान्यता दी जाय। आर्यसमाज में गीता के सम्बन्ध में जो दो प्रकार की विचारधारायें है उनका निर्णय अवश्य हो जाना चाहिये। आशा है इस लेख के आधार पर धर्मार्य सभा इस विषय को अपने विचारणीय विषयों मे सम्मिलित कर लेगी और आर्य जनों का पथ प्रदर्शन करेगी। —सम्पादक

आर्य समाज में गीता का प्रचार उतना नहीं जितना मेरी समझ में होना चाहिये। अपने सम्बन्ध की कुछ बातें लिखता हूं। सन् १९२२ से पहले मैंने गीता को कभी पूर्ण रूप से नहीं पढ़ा था। उपनिषदों में बहुत श्रद्धा थी पहले ५ या ६ लगभग कठस्थ थे। सन् १९२१ में मद्रास के प्रसिद्ध साहित्य प्रकाशक श्री नैटेसन कम्पनी ने =) प्रति मूल्य पर श्रीमती एनीबेसेण्ट का किया हुआ अंगरेजी अनुवाद प्रकाशित किया। मैंने एक रुपये की ८ प्रति मंगाईं मैं उस समय वृन्दावन गुरुकुल में आचार्य व मुख्याधिष्ठाता था। मैंने एक प्रति अपने लिये रखकर शेष ७ प्रति गुरुकुल के अध्यापकों को बांट दीं। वर्ष के अन्त में मैंने गुरुकुल से त्यागपत्र दे दिया, और मेरी नियुक्ति टिहरी गढ़वाल राज्य मे चीफ जज पद पर हो गई। २८ फरवरी सन् १९२२ को मै वृन्दावन से टिहरी के लिये रेल से चला। चलते समय पूर्वोक्त गीता की एक प्रति गुरुकुल के मुख्याध्यापक महोदय ने मुझको वापिस की। मैं लेने का इच्छुक न था। पर उनके आग्रह से मैंने लेकर अपनी जेब में रख ली, क्योंकि मेरा असबाब सब बंध चुका था। जब रेल मथुरा से चली तो मैंने गीता को निकाल कर पढ़ना आरम्भ किया, यह गीता का मेरा पहला अध्ययन था। मेरठ पहुचने तक मैंने गीता के कई अध्याय पढ़ लिये। मुझको उससे बहुत शान्ति और प्रकाश मिला। मानो मेरी अन्तर्चक्षु खुल गई। टिहरी पहुचने तक मैंने १६ अध्याय समाप्त कर लिये। उसका मेरे मन पर बहुत प्रभाव हुआ। ऐसा ही हुआ जैसा कि सन् १८८५ मे पहली बार सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने में हुआ था। मेरे विचारों की काया पलट हो गई, टिहरी पहुंचने के बाद मैं गीता का नित्य पाठ करने लगा।

गीता पर सैद्धान्तिक दृष्टि

आर्य समाजी दृष्टि से गीता पर ३ मुख्य आक्षेप हो सकते हैं। पहला यह कि गीता में श्रीकृष्ण अपने आपको सीधा ईश्वर रूप से वर्णन करते हैं। इसका समाधान मेरी समझ में महाभारत ही से हो जाता है। अश्वमेध की समाप्ति पर जब श्रीकृष्ण द्वारिका को जाने के लिये तैयार हुए तो अर्जुन ने उनसे यह प्रार्थना की कि वे गीता का दुबारा उपदेश उसको देवें। श्रीकृष्ण ने कहा कि वह उपदेश उन्होंने योग की उच्च दशा में दिया था। वे उसको फिर नहीं सुना सकते। अश्वमेध पर्व के ये श्लोक नीचे दिये जाते हैं—

"नहि शक्यः पुनर्वक्तुं शेषेण धनंजय। सहि धर्म सुपर्य्याप्तो ब्राह्मणः परिवेदने॥ न शक्य तन्मया भूयस्तथा वक्तुमशेषतः परं हि ब्रह्म कथितं योग युक्तेन तन्मया।

(अर्थ) हे अर्जुन! मैं फिर उसको अच्छी तरह नहीं कह सकता। वह उपदेश ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति के लिये सुपर्य्याप्त था। उसका फिर पूरा वर्णन करना मेरी शक्ति से बाहर है। वह बड़ा श्रेष्ठ ज्ञान था जिसको मैंने योग की ऊंची दशा मे कहा था। यह योग का निश्चित सिद्धान्त है कि योग की ऊंची अवस्था मे (अर्थात् असंप्रज्ञात समाधि की दशा मे) योगी को अपनी आत्मा का भी भास नहीं रहता। वह केवल परमात्मा ही को देखता है। यजुर्वेद की ४० अध्याय का ७ वां मन्त्र इसी आशय का है—

"यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद् विजानतः। तत्र को मोहः कः शोक एकत्व मनुपश्यतः॥

(अर्थ) जिस (असंप्रज्ञात समाधि की अवस्था मे) उच्च योगी के लिये सब भूत आत्मा ही हो गये। उस दशा में क्या मोह हो सकता है। क्या शोक हो सकता है क्योंकि तब वह एकत्व (केवल एक ब्रह्म ही) को देखता है।

इसलिये श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश योग की उच्च दशा में किया था। इसलिये अपने को ईश्वर कहने से यह परिणाम नहीं निकलता कि वे ईश्वर थे।

बहुत स्थानो पर अपने को ईश्वर रूप से वर्णन करने के साथ कहीं कहीं ब्रह्म के लिये ईश्वर शब्द का भी प्रयोग हुआ है। देखिये १८ अ० का प्रसिद्ध मन्त्र—

"ईश्वरः सर्व भूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति। भ्रामयन् सर्व भूतानि यन्त्रारूढानि मायया।" यजु०अ०४०मंत्र७

हे अर्जुन! ईश्वर सब भूतों के हृदय मे बैठा है और सब भूतों को अपनी शक्ति से इस प्रकार चला रहा है जैसा कि यन्त्र पर आरूढ़ हों। यह मन्त्र गीता के अन्तिम अध्याय मे ऐसे स्थान पर आया है कि जब गीता का पूरा उपदेश समाप्त होता है। इस से अगला मन्त्र भी विचार योग्य है—

"तमेव शरणं गच्छ सर्व भावेन भारत। तत्प्रसादात्परां शान्ति स्थान प्राप्स्य सिशाश्वतम्।"

सिद्धान्त-विमर्श

(अर्थ) हे अर्जुन! सब भाव से उसी ईश्वर की शरण को प्राप्त कर। उसके प्रसाद मे तू पूरी और नित्य रहने वाली शान्ति को प्राप्त होगा। इसी मन्त्र के आगे श्रीकृष्ण अपने सारे उपदेश का सङ्केत करके कहते हैं—"विमृश्यैतद शेषेण यथेच्छसि तथा कुरु" (अर्थ) इस पूरे उपदेश पर अच्छी प्रकार विचार करके जैसा चाहता है वैसा कर।" यहां पर सर्वनाम का बिलकुल प्रयोग न करके ईश्वर का ही वर्णन किया है। इसलिये यह आपत्ति कि कृष्ण जी अपने को 'ईश्वर' मानते थे सारहीन है। इसके थोड़ा ही आगे ७३ श्लोक में अर्जुन अपने आपको कृष्ण के समर्पण कर देता है। श्लोक यह है—

"नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्ध्वा त्वत् प्रसादान् मया च्युतः। स्थितोऽस्मि गत सन्देह करिष्ये वचनं तव।"

(अर्थ) हे कृष्ण! तेरे प्रसाद से मेरी बुद्धि प्राप्त हो गई, और मेरा मोह नष्ट हो गया। और सन्देह से निवृत होकर खड़ा हूं। तेरे वचन (या उपदेश) का पालन करूंगा। ७८ वें श्लोक के साथ गीता ही समाप्त हो जाती है।

दूसरी सैद्धान्तिक आपत्ति

यह है—गीता के अध्याय २ के ४१-४६ तक श्लोकों मे वेदों के प्रति कुछ लघुता का भाव प्रकट किया गया है। उन श्लोको को लिखने या उनका अनुवाद करने से पहले मैं यह लिख देना चाहता हूं कि उनमे वेद, वेदवाद और वेदो शब्द के स्थान में यदि वैदिक कर्मकाण्ड शब्दों का प्रयोग किया जाय तो कोई विवाद नहीं रहता। इन श्लोकों का विषय भी ऐसा ही है जैसा कि विशेषकर श्लोक ४२ से स्पष्ट हो जाता है। अब मैं सब श्लोकों को एक साथ लिखता हूं। फिर उन सब का अर्थ एक साथ लिखूंगा—

व्यवसायात्मिका बुद्धि रेकेह कुरु नन्दनः। बहु शाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ।१।

या मिमां पुष्पिता वाच प्रवदन्त्य विपश्चितः। वेद वादरताः पार्थ नान्य दस्तरिति वादिन ।२।

कामात्मानः स्वर्ग परा जन्म कर्म फल प्रदाम्। क्रिया विशेप बहुतां भोगैश्वर्य गते प्रति ।४३।

भोगैश्वर्य प्रसक्तानां तथा पहृत चेतसाम्। व्यवसायात्मिकर बुद्धि समाधौ न विधीयते ।४४।

त्रैगुण्य विषया वेदाः निस्त्रैगुण्यो भवार्जुनः। निर्द्वन्द्वो नित्य सत्वस्थो निर्योग क्षेमात्मवाना ।४५।

यावानर्थ उदपाने सर्वतः सम्पुतोदके। तावान् सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ।४६।

(अर्थ) हे अर्जुन। निश्चयात्मक लोगों की बुद्धि एक ही होती है। अनिश्चयात्मक लोगों की बुद्धि बहुत शाखा वाली और बहुत होती है (४१)

हे पार्थ। अज्ञानी कर्म का एकवाद मे लगे हुए "नहीं अन्य है" ऐसा कहने वाले, कामात्मा, स्वर्गपरायण, जब इस पुष्पित, जन्मरूपी कर्मफल दायिनी, क्रिया विशेष बाहुल्य वाली वाणी को भोगैश्वर्य की प्राप्ति के लिये बोलते हैं, उस वाणी से भोगैश्वर्य में आसक्त लोगों के चित्त मे व्यवसायात्मिक बुद्धि समाधि मे स्थिर नहीं होती। (४२-४४)

वेद त्रैगुण्य विषय हैं। हे अर्जुन! तू त्रिगुणातीत हो जा। तू निर्द्वन्द नित्य स्वस्थ, योग और क्षेम से मुक्त तथा आत्मवान् होजा। (४५)

जितना प्रयोजन कूप या छोटे जलाशय सर्वतः परिपूर्ण जलाशय मे होता है, विज्ञानवान विद्वान् का उतना ही प्रयोजन सब वेदों मे होता है। (४६)

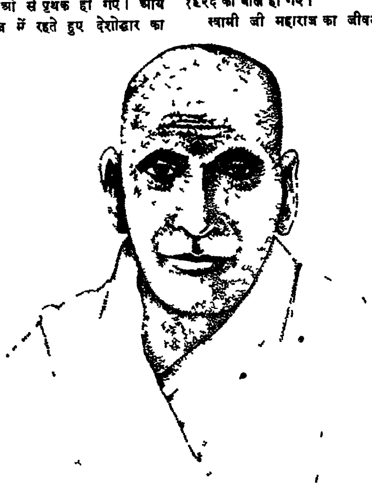
(क्रमशः)

आगामी २३ दिसम्बर को 'श्रद्धानन्द बलिदान जयन्ती' मनायी जायगी। श्री स्वा० श्रद्धानन्द जी महाराज महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन और उनके सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों का अध्ययन करने के पश्चात् आर्य समाज की ओर आकृष्ट हुए थे। आर्य समाज की सेवा की उनकी भावना यह थी कि सबसे पहले आर्य समाज का रजिस्टर्ड सदस्य होने के साथ साथ शब्द के ठीक ठीक अर्थ में 'आर्य' बना जाय, और अपने जीवन को वैदिक आदर्शों में ढाला जाय। इसके पश्चात् अपने को आर्य समाज की सेवा में सर्वात्मना लगा दिया जाय। स्वामी जी महाराज ने इस भावना को अपने जीवन में भली भांति चरितार्थ किया। वे प्रारम्भ से लेकर अन्त तक आर्यत्व का परिचय देते रहे। जिस वस्तु को बुरा समझा उसका परित्याग करने में कटिबद्ध रहे। जिसे सत्य समझा उसके परिपालन में निरत रहे। इसके लिए उन्हें बड़ा कष्ट, परिश्रम और त्याग भी करना पड़ा। उनकी इस भावना की प्रथम झांकी जीवन की त्रुटियों के परित्याग में देखने को मिलती है। शराब और मांस का परित्याग किया तो सदैव के लिए किया। ईसाईयों के स्कूलों में हिन्दू बच्चों का पढ़ाया जाना धार्मिक विकास की दृष्टि से अवांछनीय माना तो अपनी कन्याओं को वहां से हटा कर कन्या महाविद्यालय की स्थापना कर दी। वर्तमान शिक्षा पद्धति मानवीय और चारित्रिक मूल्यों की घोर उपेक्षा करती और शिक्षा की वास्तविक समस्या का समाधान प्रस्तुत नहीं करती है इस सत्य के अंकित हो जाने पर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके ब्रह्मचर्य पर आधारित वैदिक शिक्षा प्रणाली के उद्धार में संलग्न हो गए। वर्तमान जात पात अन्यान्य सामाजिक कुरीतियों और रूढ़ियों के तोड़ने का दायित्व प्रत्येक भारतवासी और उनमें भी सबसे पहले आर्य समाज के सदस्यों पर है इस सत्य का अनुभव करके अपने बच्चों का विवाह जात पात तोड़कर किया। प्रत्येक आर्य के लिए यह आवश्यक है कि वह वर्णाश्रम व्यवस्था के आदर्श का क्रियात्मक रूप देने में अग्रसर रहे। इसी भावना से प्रेरित होकर सन्यास ग्रहण किया। दलितों पतितों, पीड़ितों असहायों, अनाथों और विधवाओं की सेवा और उद्धार करना मानवीय और सामाजिक कर्तव्य है। इस भावना ने उन्हें अछूतोद्धार, शुद्धि अकाल पीड़ितों की सेवा और गिरे हुओं को ऊंचा उठाने के कार्यों में आजन्म लगाए रखा। देश के उत्थान एवं सांस्कृतिक एकीकरण की प्रक्रिया के मार्ग में विदेशी शासन तथा विदेशी आदर्शों को बड़ी भारी बाधा मानकर उनके निवारण में भरसक योग दिया। विधवा विवाह, शुद्धि एवं अछूतोद्धार के पुरोगम पर जब हिन्दू महासभा और कांग्रेस से तीव्र मतभेद हुआ तो इन दोनों संस्थाओं से पृथक हो गए। आर्य समाज में रहते हुए देशोद्धार का ध्यान रखा तो कांग्रेस आदि में रहते हुए आर्य समाज को और उसके हित को एक क्षण के लिए भी न भुलाया। उनकी मान्यता थी कि शुद्धि एवं अछूतोद्धार के कार्य का विशुद्ध जातीय महत्त्व है हिन्दू समाज की रक्षा और दृढ़ीकरण का कार्य है अतः इस विषय पर समझौते की गुन्जाइश नहीं है।

जीवन-ज्योति

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

(श्री प० रघुनाथप्रसाद पाठक)



सहस्रों मलकानों की व्यापक शुद्धि आर्य जाति की सेवा में उनकी अन्तिम महान् भेंट थी। हिन्दी को लोक प्रिय बनाने के लिए उन्होंने कम महत्त्व पूर्ण कार्य नहीं किया। हिन्दी को गुरुकुल की शिक्षा का माध्यम नियत किया। अपने पत्र 'सद्धर्म प्रचारक' को वर्षों तक उर्दू में निकालने के पश्चात् हिन्दी में निकाला। उर्दू में दिल्ली से 'तेज' और हिन्दी में 'विजय' पत्र निकाले। अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष का भाषण उस समय की परम्परा के विपरीत हिन्दी में पढ़ा। अन्त में आर्य जाति की सेवा में निरत रहते हुए धर्म की बलिवेदि पर २३ दिसम्बर १९२६ को बलि हो गए।

स्वामी जी महाराज का जीवन आर्य समाज के एक मिशनरी और अनन्य प्रेमी का त्याग, कष्ट और बलिदान से परिपूर्ण जीवन रहा। जब वे जालन्धर में वकालत करते थे तब अकेले उन्होंने उस जिले में तथा बाहर प्रचार का जितना कार्य किया उतना वैतनिक प्रचारक भी मिल कर न कर पाते। आर्य समाज पर और जाति पर जब जब आपत्ति आई वे सबसे पहले उसके निराकरण के लिए मैदान में आ डटे। पटियाला और धौलपुर के केस आर्य समाज के अस्तित्व की चुनौती लेकर आए। आर्य समाज को राजद्रोही संस्था उद्घोषित किए जाने के षड्यन्त्र रचे गए। स्वामी जी महाराज ने इन चुनौतियों को स्वीकार किया और उनका डटकर सामना किया। फलतः आर्य समाज उन परीक्षाओं के ... से गुजर कर खरा कुन्दन सिद्ध हुआ। उनके महान् व्यक्तित्व, गुरुकुल के सफल परीक्षण और 'वैदिक मेगजीन' नामक उनके पत्र ने आर्य समाज की कीर्ति को देश में ही नहीं अपितु देश से बाहर भी विस्तृत किया।

वैदिक कर्मकाण्ड को जीवन की अन्तिम घड़ियों तक अपनाए रहे। सन्यासाश्रम में यज्ञ, हवन अनिवार्य नहीं है फिर भी वे इस नित्य कर्म को अन्त तक करते रहे।

उनका व्यक्तित्व छाया हुआ व्यक्तित्व था। हृदय में दृढ़ता और उदारता थी। जीवन में तप और त्याग की आभा थी। कर्मण्यता और निर्भयता की प्रतिमूर्ति थे। अच्छे कार्य के लिए मर मिटने की धुन थी। उनका जीवन और मृत्यु दोनों ही प्रेरणामय रहे। उनका नेतृत्व आर्य समाज के लिए देन थी। उनके बलिदान के समय आर्यजनों ने अनुभव किया था कि उनके ऊपर से एक बड़ा साया उठ गया है और आर्य समाज एक परखे हुए योग्य नेता से वंचित हो गया है। आर्य समाज आज भी उनके अभाव में अपने को अकिंचन अनुभव करता है।

इन शब्दों के साथ श्रद्धा के उस महान् पुरुष के अज्ञात चरणों में हम अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हैं।

★

चयनिका

स्वराज्य सुख के लिए धैर्य

आज देश की सभी प्रबुद्ध शक्तियां राष्ट्र को आगे बढ़ाने के लिए यथाशक्ति उद्योग कर रही हैं जिसका कालान्तर में फल अवश्य मिलेगा, हमें धैर्य रखना होगा :

पहले फूल आता है फिर फल मिलता है। आजादी के पुष्प की प्रजातन्त्र रूपी सुगन्धि तो सब को मिल रही है सुख रूप फल भी मिलेगा। हम घबरायें नहीं फल के लिए सब्र से काम लें।

उज्जैन २२ नवम्बर] —राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद

युग की प्रमुख आवश्यकता

आज का संसार तथा मानवता विभिन्न राष्ट्रगत तथा अन्य अनेक भेद भावों और मतभेदों से जर्जर है। अतः मानव जाति को नया मार्ग दिखाने वाले नेता उत्पन्न करना शिक्षा का कर्तव्य है। इसलए हमें शिक्षा के स्तर को उन्नत करने की ओर विशेष ध्यान देना होगा। जिससे विद्यार्थी अपना चरित्र सम्बन्धी अधिकाधिक विकास कर सकें। शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व, मित्रतापूर्ण सहयोग तथा विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास आज के युग की प्रमुख आवश्यकता है।

रजत जयन्ती समारोह २७ ११] —उपराष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन

हिन्दी में बोलना हमारी शान का तकाजा है

सार्वजनिक अवसरों पर अंग्रेजी में भाषण देना उचित मनोवृत्ति नहीं है। हम सब लोगों को अपनी भाषा में ही भाषण देने चाहिये। हमारी शान का तकाजा है कि हम अपनी भाषा में बोलें।

कुछ लोग यह समझते हैं कि अंग्रेजी पोशाक पहनने वा अंग्रेजी में बोलने से उनकी शान बढ़ती है, ये विचार दिमागों से निकाल दिये जाने चाहिये। ये ख्याल बुनियादी तौर पर गलत हैं। जो लोग विदेशी भाषा में बोलने तथा विदेशी वेश भूषा में रहना पसन्द करते हैं वे भारत की आमजनता और अपने बीच एक दीवार खड़ी कर रहे हैं।

मानक संस्थान उद्घाटन दिल्ली २४-११] —प्रधानमन्त्री पं० नेहरू

अणु-अस्त्रों का विकल्प अहिंसा

वैज्ञानिक ज्ञान की वृद्धि के साथ साथ मानव जीवन में एक बहुत बड़ा परिवर्तन हो रहा है। जिसमें हर कदम पर सामाजिक सुरक्षा को खतरा पहुंच रहा है। यदि सुरक्षा की पुनः स्थापना करनी है तो अहिंसा द्वारा पारस्परिक स्नेह और सौहार्द का वैज्ञानिक प्रगति के साथ समन्वय होना आवश्यक है। अहिंसा संसार को विनाश से रोकने के लिए आज अत्यन्त आवश्यक है। सर्वनाशी अणु शस्त्रों का एकमात्र विकल्प अहिंसा ही है।

राजकोट २२ नवम्बर] —सन्त विनोबा भावे

अणु-शस्त्र मानव जाति के लिए विष हैं

जो राष्ट्र आज अणु आयुधों के परीक्षणों में संलग्न है वे उसी कोटि में हैं जिस कोटि में वह व्यक्ति होता जो निरीह ग्रामीणों के पीने के पानी में अपने दुष्ट अभिप्राय से विष मिला देता है।

पृथ्वी के सशक्त राष्ट्रों के शासक अपने मिथ्या गर्व में चूर होकर एक दूसरे को 'बर्बादिग्व' करने की चेष्टा करें यह मानवता को नष्ट करना ही होगा। इससे भी बुरी बात यह हो रही है वे तटस्थ राष्ट्रों की भावनाओं और उनके अधिकारों की कोई परवाह नहीं करते अणु आयुधों का समर्थन प्रत्येक दशा में मानवता के लिए संकट है।

२२ नवम्बर] —श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

भारतीय नारी तत्वनिष्ठ बनें

भारतीय समाज का आदर्श सह नागरिकत्व का आदर्श है और कौटुम्बिक भावनाओं को सामाजिक मूल्य में परिणत कर देने का काम नारी के हाथ में है अतः स्वतन्त्र भारत की नारी स्वरक्षित बने और बहनें तत्वनिष्ठ बन कर समाज निर्माण में आगे बढ़ें तथा भारतीय समाज को आदर्श बनाने में सहयोग दें।

२५ ११] —हरिभाऊ उपाध्याय समाज कल्याण मन्त्री

दर्पण

[श्री बाबू पूर्णचन्द्र एडवोकेट, आगरा]

दर्पण में अपना मुंह देखने की सबको इच्छा रहती है और यह इच्छा स्वाभाविक है। हमारी आंख संसार को देख सकती है परन्तु अपने को देखने में असमर्थ है। इस असमर्थता को दूर करने के लिए दर्पण की विधि का आविष्कार हुआ। प्रश्न यह है कि दर्पण के प्रयोग का असली अभिप्राय क्या होना चाहिए, मुंह देखने में सुन्दरता का भी भाव है, मान और शान का भी भाव है। लोक लज्जा का भी इससे बड़ा सम्बन्ध है। हमें दर्पण में अपना मुंह केवल इस अभिप्राय से नहीं देखना है कि देखने काबिल या योग्य हैं या नहीं। देखने का भाव यह होना चाहिये कि दिखाने योग्य हैं या नहीं, जिससे पाप या अपराध हो जाता है, उसको लज्जा या भय के कारण मुंह छिपाना पड़ता है। दण्ड देने वाले या न्याय करने वाले से आंख छिपानी पड़ती है। यदि दर्पण में मुंह देखते समय हमें यह ध्यान रहे कि हम अपनी दिनचर्या या किये हुए कामों पर एक दृष्टि डालकर यह जांच या ध्यान कर लें कि कोई ऐसा काम तो नहीं हुआ जिससे मुंह छिपाना पड़े, यदि दर्पण देखने के समय यह भावना रहेगी तो अपराधों व पापों से बचे रहने का स्वभाव सा बन जायेगा। यदि यह भावना न रही तो दर्पण देखने की प्रथा निष्प्रयोजन है। चेहरे या मुख के साथ बालों की सजावट या शृंगार को भी देखने की आदत है, बालों का भी बड़ा लाभ है उनका सम्बन्ध स्वास्थ्य से भी है। यह रक्षा के भी साधन है। साथ ही त्याग के भी परिचायक हैं। और सुन्दरता के भी। परन्तु यदि बालों का मोह विलासिता का रूप धारण कर लेता है तो यह ख्याल बन जाते हैं। कवि या शायर जुल्फों की बड़ी प्रशंसा करते है और विलाप भी बहुत करते हैं। गाने वाले भी बड़े शौक से गाते हैं।

'तेरे काले काले बाल, तेरे गोरे गोरे गाल"

परन्तु बालों को काम वासना या विलासिता से सम्बन्धित करना बड़ा हानिकारक है। जब हम शान व मान के लिये दर्पण देखें तो ईमान पर भी ध्यान रखना चाहिये। ईमान के बिना न शान रहता है न मान रहता है।

हाल देखने के लिये भी दर्पण की आवश्यकता है परन्तु हाल के साथ चाल पर भी ध्यान देना है। हमारा हाल हमारी चाल से सम्बन्धित है। जैसा, चाल चलन वैसी दशा होगी। अपने हाल पर दुःखित होना और चाल की ओर ध्यान न देना बड़ा हानिकारक है। हमें दुःख व सुख दोनों दशाओं में अपनी चाल पर दृष्टि रखना है।

दर्पण का सम्बन्ध तन मन धन तीनों से है पुरानी कहावत है मुखड़ा क्या देखे दर्पण में 'जाके दया धर्म नहीं मन में' मन का दर्पण हमारा चरित्र व ईमान है। धन का दर्पण हमारा व्यवहार है और व्यापार की विधि है। उसी दर्पण में मुख देखा जा सकता है जो टूटा हुआ न हो, साफ हो और हिलता न हो। आत्मा के लिए मन दर्पण है। मन को स्थिर रखना है, पवित्र रखना है, और शान्त रखना है इससे आत्मा के स्वरूप का भान होगा और आत्मा के स्वरूप में परमात्मा के स्वरूप का भान होगा। यदि दर्पण के प्रयोग में इस प्रकार का मनोविज्ञान रहेगा तो दर्पण हमारे चरित्र का आधार व भक्ति का साधन बन सकता है। यदि केवल तन की दृष्टि से दर्पण देखा गया तो मन अपवित्र हो सकता है और तन मन भी संकट में आ सकता है।

प्रातःकाल और सायंकाल दर्पण देखने की विधि प्रयोग में लानी लाभ दायक है। प्रातःकाल उठते ही और सायंकाल सोते समय दर्पण में मुंह देखना बचाइये परन्तु जैसा ऊपर दर्शाया गया है दर्पण में मुंह देखने के लिए चारित्र का निरीक्षण अनिवार्य है। प्रत्येक आर्यसमाज का चरित्र निर्माण व नैतिक उत्थान विभाग की स्थापना करना चाहिये और इस विभाग की ओर से प्रत्येक शिक्षा संस्था में दर्पण लगवा दिये जाय जिनमें एक ओर लिखा हो कि दर्पण में मुंह देखने के लिये नहीं दूसरा ओर दर्पण मुंह दिखाने के लिये देखना है।

दर्पण के ऊपर लिखा होना चाहिये, बात हो बवाल न हो। महर्षि दयानन्द का निर्माण दिवस मनाने की सबसे उत्तम विधि नैतिक उत्थान की ओर ध्यान देना है। महर्षि ने पाखण्ड खंडनी पताका लगाकर नैतिक उत्थान की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया जिस प्रकार विचारों के परिवर्तन में महर्षि को विजय प्राप्त हुई है उसी प्रकार प्रचारों के परिवर्तन में भी विजय अवश्य होगी। यदि आगामी १० वर्ष तक चरित्र निर्माण व पाखण्ड खंडन का कार्य बल पूर्वक किया जाये तो १९६८ में पाखण्ड खंडनी पताका की शताब्दि मनाई जा सकती है, ऋषि ने १८६८ में पाखण्ड खंडनी पताका फैलाई था।

—नैतिक उत्थान विभाग विज्ञप्ति सं० ८

खाद्योत्पादन बढ़ाने की एक और योजना

[श्री सदानन्द जी]

खाद्याभाव की समस्या के निदान के लिये उत्तर प्रदेश सरकार ने अनेक योजनाएं बनायी हैं। इसमें से एक योजना प्रदेश के पूर्वी भाग में और अधिक खाद्योत्पादन करने के सम्बन्ध में भी है। इस योजना पर जिसे द्वितीय पंचवर्षीय योजना के बाकी बचे तीन वर्षों में पूरा कर लिया जायगा, कुल ४० लाख रुपया व्यय होने का अनुमान है। ज्ञातव्य है कि यह योजना पूर्वी प्रदेश की ७,५३,५१००० रुपयों के व्यय से चलायी जाने वाली चतुर्दिक विकास की योजना का एक अङ्ग है।

कृषि विकास को अथवा खाद्योत्पादन बढ़ाने की किसी योजना की सफलता के लिए एक अच्छी खाद और उत्तम प्रकार के उर्वरक सुलभ होना आवश्यक है। अतः सरकार ने यह निश्चय किया है कि पूर्वी क्षेत्रों में अच्छी किस्म की खाद आदि सुलभ करने के लिए लगभग २७ लाख रुपये खर्च किये जायेंगे। अनुभव से पता चला है कि खाद पौधों के लिए बड़ी उपयोगी है। अतः पूर्वांचल में खाद बनाने के १०० केन्द्र खोले जायेंगे। प्रत्येक केन्द्र मे खाद बनाने के लिए दो यन्त्र रहेंगे जो प्रतिवर्ष १६० टन खाद तैयार कर सकेंगे। इस प्रकार आशा है कि द्वितीय योजना की समाप्ति तक कुल १६००० टन खाद तैयार की जा सकेगी। खाद उत्पादन केन्द्रों का संचालन गांव समाज अथवा सहकारी समितियों के हाथ में रहेगा और इन संस्थाओं को सरकार खाद बनाने के यन्त्रों को खरीदने तथा उनके रख रखाव के लिए ऋण प्रदान करेगी। खाद किसानों को केवल ८ रु० प्रति टन की दर दी जायगी।

जल पौधे से निर्मित यह खाद प्रदेश के पूर्वी अंचल मे बड़ी मात्रा मे सुलभ हो सकती है। वैज्ञानिक शोध से यह पता चला है कि इस तरह की खाद में दो से तीन प्रतिशत तक नेत्रजन, लगभग इतना ही फास्फोरिक एसिड और ३ से ४ प्रतिशत तक पोटाश मिला होता है। ये सभी तत्वभूमि की उत्पादन शक्ति बनाये रखने मे सहायक होते हैं। यही नहीं, प्रत्युत इस खाद को तैयार करने में बहुत से लोगों को काम भी मिल सकेगा क्योंकि इस प्रकार का पौधा तालाबों आदि की सफाई कर ही प्राप्त किया जा सकता है। इसका एक असर यह भी होगा कि गाँवों में गंदगी आदि का निराकरण किया जा सकेगा, जानवरों के लिए पीने के स्वच्छ जल की व्यवस्था की जा सकेगी तथा मत्स्योद्योग को प्रोत्साहन प्रदान किया जा सकेगा। तालाबों को साफ एवं गहरा करने के फलस्वरूप पानी के नीचे जम जाने वाली काई आदि भी काफी मात्रा में सुलभ हो सकेगी जिसे कृषि भूमि पर उपयोग के लिए वितरित किया जा सकेगा। काई आदि मे पौधों को शक्ति प्रदान करने वाले तत्व विद्यमान रहते हैं। इसके अतिरिक्त तालाबों आदि मे पहले की तुलना में अधिक पानी एकत्र हो सकेगा जिसका असर प्रदेश के सिंचाई साधनों पर अच्छा पड़ेगा। सरकार की तरफ से यह कार्य करने वालों को प्रति १०० घनफुट काई निकालने के लिए २ रु० की दर से सहायता प्रदान की जायगी। सब मिलाकर इस कार्यक्रम पर प्रतिवर्ष १ लाख रुपया खर्च करने का प्रस्ताव है।

पूर्वी क्षेत्रों की जलवायु तथा भौगोलिक स्थिति को ध्यान मे रखते हुए उपयोगी फसलों को उगाने का कार्यक्रम भी इस योजना का एक प्रमुख अङ्ग है। उदाहरण के लिये मानसून प्रारम्भ होने से पहले चीना सावन, मूंग, उर्द, मक्का तथा कुछ अन्य इसी प्रकार की मानसून के बाद मटर, लोहा, किराव और आलू (स० ४५) की बोवाई को बढ़ावा देने का निश्चय किया गया है। इनके साथ धनियां, बनारसी राई, आदि बोई जा सकती है। इसके अतिरिक्त बी १००, टा-८८, तथा जूट की फसलें भी, जो गहरे पानी मे उगाई जा सकती है, उगानी चाहिए। ज्ञातव्य है कि बी० ओ० १० तथा सी० ओ० ४५३ किस्म की गन्ने की फसलें भी गहरे पानी मे उगाई जा सकती है।

इन सभी फसलों की खेती करने के उचित ढग की व्यवस्था बड़े पैमाने पर किया जायगा। पूर्वी क्षेत्र के १५ जिलों में बीज भंडारों की स्थापना की जायगी। अनुमान है कि प्रत्येक जिले में इस कार्य पर १५००० रुपया खर्च होगा। इसके फलस्वरूप किसानों को आवश्यक मात्रा में उपर्युक्त बीज सुलभ किये जा सकेंगे। आशा है उपर्युक्त विभिन्न कार्यक्रमों के अनुसार सुचारू रूप से कार्य, किया जा सकेगा और इस प्रकार प्रदेश में खाद्योत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य की पूर्ति की जा सकेगी। ★

शिष्टाचार शिक्षा—

सभ्य व्यवहार के कुछेक माप दण्ड

[श्री भारतभूषण 'वेदसदन' जवाहरनगर, देहली]

सभ्य व्यक्ति समाज का शिरोमणि होता है; स्वयं आदर का पात्र बनता तथा अपने कुल का गौरव बढ़ाता है। सभ्यता संस्कृति की पोषिका है तथा धर्म की परिचायिका; शुभ-कर्मों की प्रेरिका तथा मानवता की संचालिका। सभ्यता में ही स्त्री का स्त्रीत्व तथा मनुष्य का मनुष्यत्व निहित है सभ्यता विद्वान को वन्दनीय बना देती है तथा मूर्ख को सहनीय, रूपवान् के रूप को द्विगुणित कर देती है तथा कुरूप की कुरूपता को हर लेती है। आइये, निष्पक्ष भाव से निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर निरीक्षण करके देखें कि हम सभ्य हैं अथवा असभ्य या हममें कितना अंश सभ्यता का है, कितना असभ्यता का ?

१—क्या हम अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों से की गई प्रतिज्ञाओं को वा दिये गये आश्वासनों को पूरा करते हैं ?

२—क्या हम मित्रों से वार्तालाप करते हुए समय, स्थान व सम्बन्ध का ध्यान रखते है ?

३—क्या भावावेश में हमारी मुखाकृति विकृत तो नहीं हो जाती तथा हम अपने हाथ मित्रों के कंधों पर तो नहीं फेंकने लगते ?

४—क्या हम चाटुकारिता, निंदा व कटु आलोचना करना तो पसन्द नहीं करते ?

५—क्या हमें लोगों से उनकी गोपनीय बातें सुनने की व अपना दूसरों को सुनाने की उत्सुकता तो नहीं बनी रहती ?

६—यदि हमारे बहुत से मित्र साथ हों तो क्या हम यह ध्यान रखते हैं कि सब के साथ समान व्यवहार हो ?

७—यदि हमसे किसी को जाने या अनजाने कष्ट पहुंचे, तो क्या हम क्षमा याचना करते सकुचाते तो नहीं ?

८—यदि हमसे कोई सहानुभूति प्रकट करे अथवा किसी प्रकार हमारी सेवा करे, तो क्या हम धन्यवाद देना तो नहीं भूलते ?

९—क्या हम केवल अपनी ही अपनी न हांक कर, दूसरों को भी अपने विचार व्यक्त करने का अवसर देते हैं ?

१०—क्या हम दूसरों के धर्म सम्बन्धी विचारों को कठोर कटुवचनों द्वारा आघात तो नहीं पहुंचाते ?

११—क्या हमें दो व्यक्तियों की बात चुपके सुनने में तो आनन्द नहीं आता ? अथवा हम बिना अनुमति उनके बीच तो नहीं आ खड़े होते ?

१२—यदि हमारे यहाँ कोई अतिथि पधारें, तो क्या हम उनका यथोचित सत्कार करते हैं ?

१३—क्या हम अपने मित्रों के घर बिना निमंत्रण व अकारण केवल समय व्यतीत करने ही जाना तो पसंद नहीं करते ?

१४—मित्र की अनुपस्थिति में क्या हम उनके सम्बन्धियों का समय तो नष्ट नहीं करते ?

१५—क्या हम किसी मित्र के घर वस्तुओं को टकटकी लगा देखते तो नहीं रहते या उनसे उनका मूल्य पूछने की धृष्टता तो नहीं करते ? व बिना अनुमति ही उन वस्तुओं का प्रयोग करना तो प्रारम्भ नहीं कर देते ?

१६—क्या हम वृद्धों से, रोगियों से, स्त्रियों से, गुरुजनों से व्यर्थ मजाक तो नहीं करते ? हमसे उनका किसी भाँति अपमान तो नहीं हो जाता। आवश्यकता पड़ने पर उनकी सहायता करने से हम चूक तो नहीं जाते ?

१७—क्या हम प्रातः और रात्रि सोते समय माता पिता को प्रणाम करना तो नहीं भूल जाते ?

१८—क्या हमें गुरुजनों तथा वृद्धों व विद्वानों के साथ सम्यक् व्यवहार करना आता है ? यथा उनके मिलने पर प्रेम पूर्वक यथोचित नमस्कार करना, उनके सदा बाईं ओर चलना, उनके हाथ में कोई बोझ हो तो स्वयं ले लेना, कभी उनकी ओर पीठ करके न बैठना आदि।

१९—हम सड़क पर चलते हुए आते जाते लोगों को घूरते तो नहीं अथवा लोगों का रास्ता रोक मित्रों से बात करने खड़े तो नहीं हो जाते अथवा बीच मे ही थूकते तो नहीं ?

२०—हम किसी सभा में देर से आकर आगे बैठने का प्रयत्न तो नहीं करते ? बैठकर समीपस्थ मित्रों से जोर से वार्तालाप तो नहीं करने लगते? व दूरस्थ मित्रों को इशारे से बुलाना प्रारम्भ तो नहीं कर देते ? सभा विसर्जित होने से पूर्व ही १०० व्यक्तियों के बीच से उठकर तो नहीं चल देते ?

नोट—प्रत्येक प्रश्न के ५ अङ्क हैं। ८० से १०० तक प्राप्तांक सराहनीय, ६० से ८० तक संतोषप्रद तथा ५० से ६० तक सामान्य हैं; इससे कम प्राप्तांक हममें एक अक्षम्य त्रुटि, न्यूनता व अभाव के द्योतक हैं जिस का निवारण हमारा परम कर्तव्य है।

★

स्वास्थ्य-सुधा

क्या आपको जुकाम है?

[श्री शिरोमणि]

साधारण तौर पर जुकाम (प्रतिश्याम) सब मौसमों में हो सकता है पर मौसम परिवर्तन के समय इसका आक्रमण शीघ्र और प्रभावकारी होता है। सर्दी में बन्द कमरे से अचानक बाहर ठण्डी हवा में आने से और गर्मियों में ठण्डे बन्द कमरे से एकदम बाहर आने पर या सर्द गर्म होने पर जुकाम लगने की पूर्ण आशंका रहती है।

गर्म खाना खाने के बाद पानी पीने से भी प्रायः गला खराब हो जाता है, जो जुकाम की भूमि तैय्यार करता है। श्वास द्वारा रज कण श्वास-नलिका में प्रविष्ट हो जाने से, मिर्च मसाला अधिक खा जाने से या तेल-खटाई के ऊपर पानी पीने से भी गला खराब हो जाता है जिससे जुकाम जल्दी लग जाता है। मिर्च मसाले की मण्डी में या जहां साफ हवा या सूरज की किरणें नहीं पहुँचतीं जुकाम का आक्रमण शीघ्र होता है। बाहर ओस मे सोने और जुकाम के रोगी के पास रहने और उसके रूमाल और तौलिये आदि से नाक मुंह का सम्पर्क होने से जुकाम की शंका, सम्भावना बढ़ जाती है।

जुकाम की पहचान

गले में जलन और खारिश-सी होने लगती है। जी चाहता है कि जीभ से तालू और गले मे खारिश की जाय। छींके आती हैं, नाक से कच्चा पानी बहने लगता है, सिर दर्द से आंखें बन्द होती जाती हैं। दाढ़ों की जड़ों में मीठा दर्द होता है मानो कोई खुजली करके उन्हें खींच रहा हो, कानों से कम सुनाई देता है और उनमें मीठी खुजली भी होती है। नाक बन्द सी होती जाती है जिससे श्वास लेने मे दिक्कत होती और बेचैनी ज्यादा बढ़ने लगती है। देह टूटती और धीमा-धीमा बुखार भी हो जाता है। इस अवस्था में नींद आनी भी मुश्किल हो जाती है, मुखाकृति फीकी पड़ जाती है और भूख नहीं लगती। दूसरे दिन जुकाम का जोर अधिक और तीसरे दिन कुछ कम हो जाता है। जुकाम दो प्रकार का होता है। एक वह जिसमे नाक बहने लगती है और दूसरा वह जिसमें नजला अन्दर ही अन्दर गले मे गिरता रहता है।

घरेलू इलाज

जुकाम में सबसे पहले गला खराब होता है। गले के लिये सुबह-शाम गर्म पानी में नमक डालकर गरारे कर लेने से गला साफ हो जाता है। इस क्रिया से गले की धूल मिट्टी भी निकल आती है।

जुकाम किस ऋतु में है इसका विचार करते हुए जुकाम की चिकित्सा की जानी चाहिये। मौसम के साथ साथ बीमार की अवस्था का भी ध्यान रहना चाहिये।

जुकाम में रात को बीदाने की कुछ पुड़ियाँ और बनफशा थोड़े पानी मे भिगोकर रख दें और सुबह मसल कर बारीक कपड़े से छानकर, चीनी डालकर रोगी को दें तो उसके गले और शरीर की बेचैनी शान्त होती है। सिर फट रहा हो, आंखें जल रही हों तो एक सिलाई अदरक के रस की भरकर आंखों में डालने से आंखों से पानी बह जाता है जिससे सिर दर्द और आंखों की जलन बहुत हल्की हो जाती है।

पेट साफ रक्खें

जुकाम में कब्ज की शिकायत रहती है अतः दो घण्टे पहले भींगे हुए ईशफगोल को फेंटकर चीनी मिलाकर गाढ़ा गाढ़ा रोगी को देने से गले और शरीर की बेचैनी कम होती है, साथ ही प्रातः पेट भी सरलता से साफ हो जाता है जिससे शरीर हल्का हो जाता है। इसके स्थान पर हल्का जुलाब लेना भी ठीक रहता है। मौसम के मुताबिक अगर कुछ गर्म देना हो तो थोड़ा बनफशा, सौंफ, छोटी इलायची, मुलहठी और गुलाब के फूलों का काढ़ा, थोड़ा सा दूध और चीनी मिलाकर रात को सोते समय रोगी को दे दीजिये। मोटा कपड़ा लपेटकर सुला दीजिये पसीना आ जायगा, बन्द नाक खुल जायगी, सबेरे दस्त साफ आयगा, और तबियत साफ हो जायगी। वास्तव मे पेट की खराबी ही सब रोगों की जड़ होती है। अतः जुकाम से बचने के लिये पेट साफ रखना अत्यधिक आवश्यक है।

गले पर घी की गर्म गद्दियां रखना या उबले हुए बनफशा को थोड़े घी में छौंक कर बांधना बहुत लाभदायक सिद्ध होता है। सफेद जीरा और कूजे की मिश्री पीसकर बनाई हुई फंकी जब तब फांकने से भी नाक का बहना कम होता है। भुने हुए गर्म चने खाने से भी नाक का पानी खुश्क हो जाता है। जुकाम में नसवार का प्रयोग भी लाभदायक होता है पर नसवार मस्तिष्क को कमजोर करती है अतः अधिक प्रयोग उचित नहीं।

भोजन व परिचर्या

जुकाम के दिनों में हल्के से हल्का भोजन करना चाहिए। फाका भी लाभदायक है। खट्टे आचार और मसालों का तो प्रयोग ही नहीं करना चाहिए। चिकनी चीजों (घी-मक्खन आदि) से परहेज करना चाहिए, इनके प्रयोग से छाती मे बलगम जमा होने का डर रहता है। अरई (घुइयां) केला आदि बलगम पैदा करने वाले हैं इनसे बलगम बढ़ता और जुकाम देर मे ठीक हो पाता है। खुश्क रोटी के एक बड़े से टुकड़े में पापड़ रखकर खाने से गले को बहुत फायदा होता है। तीसरे दिन जब नजला पक जाता है तब रोगी को गर्म "दोघी" बना कर देवें। यह आटे या बेसन से बनती है। बादाम, खसखस, पीसकर देवें। यह दिमाग को भी ताकत देती है। रोटी के बीच में पकाई हुई खसखस दोनों काम करती है। नजला भी खुश्क करती और दिमाग को भी ताकत देती है। जुकाम में रोगी को पूर्ण विश्राम करना चाहिए। खास तौर पर आँखों का काम तो बिल्कुल नहीं करना चाहिए। नजले में आँखों पर काफी प्रभाव पड़ता है और वे कमजोर हो जाती हैं, नजर कम होने का भी डर रहता है।

प्राकृतिक चिकित्सा

जुकाम के आरम्भ में यदि स्वच्छ वायु का सेवन किया जाय तो रोग वहीं समाप्त हो जाता है। उसका जोर कम हो जाता है। हरे भरे बाग मे सबेरे दौड़ना, प्राणायाम करना, गहरे सांस लेना, या व्यायाम करने से स्वच्छ वायु प्राण में जाने आदि से जुकाम प्राकृतिक रूप से ठीक हो जाता है।

जुकाम बड़े रोगों की भूमिका

जुकाम की यदि आरम्भ मे ही चिकित्सा न कर दी जाय तो जुकाम शरीर के लिए एक भयानक और स्थायी खतरा बन जाता है।

जुकाम में सारा शरीर हिल जाता है। सिर, आँखों, और दांतों पर इसका गहरा असर पड़ता है। जुकाम बार बार लगने से और ठीक इलाज न होने से और परेहज न रखने से जब बीमारी लम्बी हो जाती है तो माथा और आंखें भारी रहने लगती हैं। शरीर टूटा-सा रहता है। सिर की कमजोरी से स्मृति शक्ति कमजोर हो जाती है, बाल असमय में पकने लगते हैं, सिर की लगातार पीड़ा से आंखें कमजोर पड़ने लगती हैं। जुकाम की लापरवाही से फेफड़े भी कमजोर हो जाते हैं जिससे ब्रोंकाइटिस, क्षय और प्लूरिसी (फेफड़ों मे पानी भर जाना) आदि रोग पनप सकते है। जरा-सी असावधानी के कारण जीवन पर बन आती है और कई बार जीवन से भी हाथ धोना पड़ जाता है।

गले में गिरनेवाला जुकाम तो और भी बुरा है। इसमे पाचन शक्ति कमजोर पड़ जाती है, सिर खोखला हो जाता है। और दांतों पर असर आ जाय तो एक एक करके दांत गिरने लगते हैं। सारे शरीर में धीरे-धीरे कमजोरी आने लगती है। इस प्रकार जुकाम को आम रोग समझ कर उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। जुकाम से सावधान न रहने की उपेक्षा वृत्ति जीवन की भारी भूल बन सकती है। ★



खाँसी, जुकाम, दमा व हृदकम्प को दूर करता है।
च्यवनप्राश

सभा की सूचनाएं

सभा का वर्ष

उत्तरप्रदेश के समस्त आर्यसमाज एवं जिला उपसभाओं को विदित हो कि सभा का अपना वर्ष १ जनवरी से प्रारम्भ होकर ३१ दिसम्बर १९५८ को समाप्त होता है। इसी के साथ साथ समाजें एवं उपसभाएं भी अपना-अपना वर्ष ३१ दिसम्बर ५८ को समाप्त करने की कृपा करें।

२—निर्वाचन सभासद् सूची

सभा के उपनियम सं० १४ के अनुसार आर्यसमाजों को चाहिये कि २५ जनवरी १९५९ तक आर्य सभासदों की सूची बनाने की कृपा करें। तत्पश्चात् वार्षिक साधारण सभा निर्वाचन आदि के लिए नियमानुसार १५ दिन का विज्ञापन देकर सभा बुलाई जावे। तदुपरान्त सभा के उपनियम सं० १५ के अनुसार जनवरी व फरवरी अर्थात् २८ फरवरी १९५९ तक स्थानीय समाजों के अधिकारियों एवं अन्तरङ्ग सदस्यों आदि के निर्वाचन हो जाने चाहिये। निर्वाचन के साथ साथ प्रदेशाय आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधि सदस्यों का निर्वाचन भी किया जावे।

३—वार्षिक प्रतिनिधि चित्र जनवरी ५९ में भेजे जावेंगे। उनकी नियमानुसार खाना-पूर्ति करके फार्म भरकर मय प्राप्तव्य धन दशांशादि के साथ भेजने की कृपा करें।

४-जिला उपसभाओं का निर्वाचन अधिक से अधिक १५ मार्च तक हो जाने चाहिये।—फूलसिंह सभामंत्री

सूचना

सभास्थ अन्तरङ्ग सदस्य, निरीक्षक महानुभाव एवं उपदेशक- प्रचारक आदि को विदित हो कि सभा की कशबुक ३१ दिसम्बर ५८ को बन्द हो जायगी। अतः सम्बन्धित हिसाबादि का जमा खर्च करने के लिए तुरन्त सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें पश्चात आये हुए हिसाब के जमा-खर्च करने मे बड़ी कठिनाइयां पड़ती हैं और जिन जिन सज्जनों के पास उपचन्तादि का हिसाब है वह भी शीघ्र में भेजने की कृपा करें।

उपदेश विभाग की सूचना

अलीगढ़ जिले की समस्त की समाजों [illegible] किया जाता है कि सभा की [illegible]र्योपदेशिका श्री माता जगधात्री [illegible]वी शीघ्र ही आपके जिले का प्रचारार्थ भ्रमण करने वाली हैं। वह जहां भी पधारें उनके प्रचार का प्रबन्ध किया जावे और सभा के लिए वेदप्रचारार्थ अधिक से अधिक धन प्रदान किया जावे। —प्रेमचन्द्र शर्मा

आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति की बैठक

आगामी २४ दिसम्बर ५८ को आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग सभा की बैठक से पूर्व १२ बजे आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति की बैठक कन्या गुरुकुल सासनी (अलीगढ़) मे होगी। यदि आवश्यकतानुसार बैठक के समय में परिवर्तन करना पड़ा तो सदस्यों को वहीं सूचना दे दी जायगी।

समिति के समस्त सदस्य इस सूचना को ही पर्याप्त मानते हुए बैठक में सम्मिलित होने की कृपा करें।

विषय :—

१—गत समिति की कार्यवाही सम्पुष्टि।

२—चारों कार्यक्रमों की प्रगति सूचना संयोजकों द्वारा—

३—अन्य आवश्यक विषय प्रधान जी की अनुमति से।

—उमेशचन्द्र स्नातक, संयोजक
आर्यमित्र हीरक जयन्ती आदि
समारोह समिति

श्री बा० पूर्णचन्द जी एडवोकेट उपप्रधान सभा आगरा द्वारा चरित्र-निर्माण सम्बन्धी कार्य

१—अक्तूबर में आर्य समाज हल्द्वानी के वार्षिकोत्सव पर दो व्याख्यान दिये।

२—२ नवम्बर को आर्य समाज अलीगढ़ में व्याख्यान दिया।

३—२ और ३ नवम्बर को अलीगढ़ आर्यसमाज में गोरक्षा सम्मेलन में भाग लिया और अपराध निरोध व भ्रष्टाचार निरोध पर भाषण दिये।

४—५ नवम्बर को प्रांतीय मद्यपान निषेध समिति में भाग लिया। यह समिति प्रादेशिक सरकार की ओर से निर्माण हुई है। इसमें सारे प्रान्त में मद्यपान निषेधक कानून लगाने पर विचार हुआ।

५—आगरे में ७ नवम्बर से १४ नवम्बर तक अपराध निरोध व भ्रष्टाचार निरोध सप्ताह मनाया गया।

६—२२ नवम्बर को देहली में हिंदी रक्षा सम्बन्धी सम्मेलन में व २३ नवम्बर को सार्वदेशिक सभा की बैठक में भाग लिया।

७—२४ नवम्बर को मथुरा में गायत्री महायज्ञ की सार्वजनिक सभा मे भाषण दिया।

८—१६ नवम्बर और ३० नवम्बर को आगरे में व्यवसायियों की सभा में व्याख्यान दिये।

९—दिवाली पर जुआ निरोध सम्बन्धी नोटिस बटवाये।

१०—महात्मा गांधी के जन्म दिन को भी नोटिस बंटवाये।

११—बटेश्वर (आगरा) के प्रसिद्ध मेले में अपराध निरोध व भ्रष्टाचार निरोध सम्बन्धी नोटिस बटवाये गये।

१२—७ नवम्बर को आर्यसमाज मथुरा मे २ भाषण दिये। श्री प्रधान सभा भी उपस्थित थे।

नोट भेजे जाने की सूचना

आर्यमित्र हीरक जयन्ती आदि समारोह संबंधी नोट्स रसीदें १५ १२ ५८ तक निम्न आर्य समाज व सज्जनों की सेवा में विक्रयार्थ भेजी गई हैं। समाजों को चाहिए कि सभा कार्यालय से जिन समाजों ने नहीं मंगाई हैं, मगाने के लिए शीघ्र आदेश दीजिये।

१—श्री मोहनलाल जी आर्य, अन्तरंग सदस्य सभा प्रधान आ० स० आगरा नगर	११५०)
२—श्री जगदीश्वरी प्रसाद जी मंत्री आ० स० फैजाबाद	२७५)
३ " उमेशचन्द्र स्नातक मंत्री आ० स० हल्द्वानी (नैनीताल)	१०००)
४—" मती शकुन्तला गोयल सभा उपप्रधाना शहर मेरठ	१०००)
५—" मत्री जी आ० स० काशीपुर [नैनीताल]	५००)
६—" ,, ,, ,, अगराना [अलीगढ़]	२५०)
७—" कालीचरण जी आर्य सभा उपप्रधान [मेरठ शहर के लिए]	५०००)
८—" ओंकार दत्त आर्य मंत्री आ० स० फिरोजाबाद [आगरा]	६२५)
९—" लेखराम जी गुप्त उप मंत्री आ० स० दातागंज बदायूं	१००)
१०—" पं. चोखेलाल सत्यपाल जी अन्तरंग सदस्य सभा शाहजहाँपुर	६२५)
११—" भगवत दयालु जी मुख्तार भरथना [इटावा]	१७५)
१२—" पं. रघुवर दयालु जी भारद्वाज शास्त्री आ० स० सोरों [एटा]	३००)
१३—" फूलसिंह जी सभा मंत्री शिकोहाबाद [मैनपुरी]	२६००)
१४—" प० नरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद दक्षिण	१०००)
१५—" महेन्द्रप्रताप शास्त्री एम.ए. अन्तरंग सदस्य सभा बड़ौत मेरठ	१०००)
१६—" प० ईश्वरदयालु जी आर्य मुख्य उपमंत्री सभा बिजनौर	१०००)
१७—" पं० सच्चिदानन्द जी वकील मंत्री आ० स० सदर लखनऊ	२५०)
१८—" रामचन्द्र जी रि० पोस्ट मास्टर बदायूं	१४०)
१९—" विन्ध्येश्वरी सिंह जी नरसिंह चौतरा वाराणसी	२५०)
२०—" कृष्णबल्देव जी प्रधान आर्य उप प्रति० सभा लखनऊ	२०००)
२१—" मंत्री जी आर्य समाज हरदोई	११७५)
२२—" पं० चन्द्रमणि जी वैद्य मत्री आर्य उप प्रति० सभा लालापार सहारनपुर	२४२५)
२३—श्री मंत्री जी आर्य समाज देहरादून	५२५)
२४—" गणेश प्रसाद जी मंत्री आ० स० मिर्जापुर	५०)
२५—" रामलखन आर्य सि० शास्त्री पिरकोहर बाजार [बस्ती]	३७॥)
२६—" नानक प्रसाद जी प्रधान आ० स० गोंडा	११२॥)
२७—" मंत्री जी आर्य समाज सुल्तानपुर	५००)
२८—" रामकुमार जी आर्य फिरार [मैनपुरी]	२५०)
२९—" मती वेदवती जी माता—फगवाड़ा [कपूरथला पंजाब] द्वारा श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक	५२५)
३०—" तिनकूलाल जी उपप्रधान आ० स० शाहजहाँपुर	६७५)
३१—" मंत्री आ० स० मोंठ [झांसी]	१००)
३२—" सत्यनारायण सिंह जी ग्राम मझवारा तरास जि० मिर्जापुर	५०)
३३—" मंत्री जी आर्य समाज प्रतापगढ़	२५०)

—कालीचरण आर्य
अर्थ संयोजक

आर्यसमाजों के अधिकारियों से अनुरोध

१—प्रत्येक आर्य समाजी को अपने यहां चरित्र निर्माण सम्बन्धी प्रचार का प्रबन्ध करना चाहिये।

२—वार्षिक उत्सवों पर चरित्र निर्माण सम्मेलनों की व्यवस्था करनी चाहिये।

३—कम से कम अधिष्ठाता चरित्र निर्माण विभाग को बुलाकर एक व्याख्यान कराना चाहिये। यह माना कि मौत और मंगता को कोई नहीं बुलाता इसमे तो विचार देने का प्रश्न है और वह भी सबसे अधिक आवश्यक कार्य के लिए।

४—कार्यालय सभा से प्रतिज्ञा पत्रों के फार्म मगवा कर बंटवाने चाहिये।

—पूर्णचन्द अधिष्ठाता चरित्रनिर्माण
नैतिकोत्थान विभाग, आ०प्र० सभा
उत्तरप्रदेश

"आवश्यकता"

आर्य-जगत

उत्सव समाचार—

—आ० स० फतेहपुर का वार्षिकोत्सव २६, २७, २८ फरवरी व १ मार्च ५९ को होगा। आर्य सम्मेलन २४, २५, २६ जनवरी ५९ को पूर्व निश्चयानुसार होगा।

—आ०स० लखीमपुर खीरी का वार्षिकोत्सव सानन्द २१ से २४ नवम्बर ५८ तक हुआ। स्वामी अमृतानन्द जी व पं० सच्चिदानन्द शास्त्री के विशेष रूप से व्याख्यान हुए।

—आर्य समाज बादशाह नगर लखनऊ का वार्षिकोत्सव १९,२०, २१ दिसम्बर ५८ को मनाया गया जिसमें नगर के प्रमुख आर्य नेताओं व विद्वानों के भाषण तथा भजन हुए। उत्सव से पूर्व एक सप्ताह तक नित्य सायं स्वामी विद्वतानन्द जी द्वारा वेद कथा होती रही। बच्चों व महिलाओं के लिए भी रोचक कार्यक्रम रखे गये, प्रतियोगिताएं और पुरस्कार वितरण हुआ।

—आ०स० गणेशगंज लखनऊ का वार्षिकोत्सव २३, २४, २५ दिसंबर ५८ को डी०ए०वी० कालेज मे होगा। आर्यसमाज के अनेकों प्रसिद्ध विद्वान् व साधु सन्यासी तथा भजनोपदेशक पधार रहे है।

—आर्य समाज गांधी नगर का वार्षिकोत्सव ७, ८ दिसम्बर ५८ को सोत्साह सम्पन्न हुआ। विशिष्ट आर्य जनों के भाषण हुए।

—आ० स० गौर बाजार नेपाल तराई का द्वितीय वार्षिकोत्सव सोत्साह मनाया गया जिसमे स्वामी अभेदानन्द जी, स्वामी मनीषानन्द जी श्री नन्दलाल जी आदि के भाषण व भजन हुए।

—आर्यसमाज १९ कानवालिस स्ट्रीट कलकत्ता ६ का ७२ वां वार्षिकोत्सव २५दिसम्बर ५८ से ४ जनवरी ५९ तक मुहम्मद अली पार्क हरिसन रोड चितरन्जन एवेन्यू जंकशन दमकल के पास समारोह होगा। प्रति दिन प्रातः यजुर्वेद परायण यज्ञ होगा। २८ को नगर कीर्तन निकलेगा। महात्मा आनन्द स्वामी, आचार्य कृष्ण, पं० रामनारायण शास्त्री, श्री वाचस्पति शास्त्री, पं० अयोध्याप्रसाद, श्री इन्द्रदेव सिंह आदि पधारेंगे।

—आ० स० दीवानहाल दिल्ली का ७४ वां वार्षिकोत्सव २८, २९, ३० नवम्बर को हुआ। महात्मा आनन्द स्वामी, श्री आनन्द भिक्षु, प्रो० भारत भूषण, प्रि० ईश्वरदास, प्रो० बलराज पं० रामानन्द शास्त्री, वीर यज्ञदत्तजी, स्वामी अभेदानन्द जी, श्री वाचस्पति शास्त्री, श्री रामगोपाल जी, पं०प्रकाश वीर शास्त्री, पं० नरेन्द्र जी, पं० रामचन्द्र देहलवी, श्री ओम्प्रकाश त्यागी आदि के भाषण हुए।

—आ०स० सीतापुर का वार्षिक उत्सव १९, २० २१, २२ फरवरी ५९ को होगा। पं० प्रकाशवीर शास्त्री ने समय देना स्वीकार कर लिया है।

—आ०स० लल्लापुरा वाराणसी का वार्षिकोत्सव ५ से ७ दिसम्बर ५८ तक सोत्साह हुआ। प्रभावशाली गोरक्षा सम्मेलन हुआ। अनेकों विद्वानों के भाषण हुए।

—आ० स० सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर बिहार का वार्षिकोत्सव ७, ८, ९, १० दिसम्बर को सोत्साह हुआ। स्वामी अभेदानन्द जी, श्री हरिप्रसाद शास्त्री, श्री नन्दलाल जी, श्री वीरेन्द्र जी, श्री प्रकाशवती जी आदि के भाषण व भजन हुए। एक मुसलिम को शुद्ध किया गया। दयानन्द वैदिक विद्यालय स्थापना करने का निश्चय किया गया।

—गुरुकुल चित्तौड़गढ़ का रजत जयन्ती महोत्सव १७, १८, १९, २० जनवरी ५९ को मनाया जायेगा। इस अवसर पर अनेकों सम्मेलन और देश के प्रसिद्ध नेताओं के भाषण होंगे।

—इन्द्रदेव विद्याभूषण

प्रचार समाचार—

—आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार की ओर से देश प्रसिद्ध मेला सोनपुर मे २५ से २९ नवम्बर तक वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। सभा के अधिकांश उपदेशक, प्रचारक व अधिकारी वहा उपस्थित थे। प० गङ्गाधर शास्त्री, प० रामनारायण शास्त्री, श्री हरिप्रसाद शास्त्री, श्री वसुमित्र शास्त्री, डा० रामभजन आर्य पुरोहित, श्री रामप्रसाद जी एक्स० एम०एल०ए०, स्वामी जगदीश्वरानन्द जी, आदि के भाषण तथा श्री जयपालसिंह, श्री वीरेन्द्र आर्य, श्री रामनारायण सिंह श्री शिवधरसिंह आदि के भजन हुए।

—बिहार सभा की ओर से ही सराय बाजार मुजफ्फरपुर में ३० नवम्बर व १, २, ३ दिसम्बर को धूम धाम से प्रचार हुआ। प० हरिप्रसाद शास्त्री का भाषण और श्री जयपाल सिंह का भजनोपदेश हुआ।

—आर्यसमाज शेरकोट बिजनौर में पिछले दिनों प०बिहारीलाल शास्त्री द्वारा वेदकथा तथा श्री सुगनचन्द्र जी द्वारा भजनोपदेश नित्य प्रति होते रहे। पंडित जी के व्याख्यानों का बड़ा अच्छा प्रभाव रहा।

—आ०स० रूरकेला, हीराकुद, उड़ीसा में ८ से ११ नवम्बर ५८ तक प्रचार हुआ। प्रभातफेरी, यज्ञ, उपदेश आदि हुआ। ५ वीं कक्षा तक हिन्दी का एक विद्यालय खोला गया। कोष में ८५१) रु० जमा हो गया है। नित्य धार्मिक शिक्षा दी जाती है। प्रचार का कार्य उत्साह से चल रहा है। विद्यालय कमेटी के प्रधान श्री खुशहाल चन्द कोहली, मन्त्री श्री अमालाल, कोषा० श्री ज्वालाप्रसाद और संचालक स्वामी ब्रह्मानन्दजी हैं।

—श्री धर्म वीर झण्डाधारी की देखरेख मे देहली नगर में पारिवारिक सत्सग का कार्य सोत्साह चल रहा है।

आर्य वीर दल समाचार—

—श्री जयपाल द्विवेदी जिला संचालक आर्य वीर दल उन्नाव ने हसनपुर, सफीपुर, उन्नाव आदि स्थानों पर दल की निम्न नियुक्तियां की :-मोहान—श्री गजराजसिंह नगरनायक,—श्री झब्बूसिंह मन्त्री, बघवाकोल—श्री शिवनाथ सिंह ग्रामनायक, पैंसरा–श्री प्रतापवीर सिंह ग्रामनायक।

—आर्य वीर दल काशी का वार्षिकोत्सव ७ दिसम्बर ५८ को भारत माता मन्दिर के मैदान मे श्री ओम्प्रकाश त्यागी प्रधान संचालक आर्य वीर दल की अध्यक्षता में मनाया गया। खेल, प्रतियोगिता, पुरस्कार वितरण आदि के बाद श्री त्यागी जी का प्रभावशाली भाषण हुआ।

—बंग आसाम प्रान्तीय आर्य वीर दल की ओर से द्वितीय शिक्षण शिविर मुहम्मद अली पार्क कलकत्ता मे २५ दिसम्बर ५८ से ४ जनवरी ५९ तक लगेगा। शिविर में भाग लेने वालों के नाम पते शीघ्र ही आवेदन पत्र सहित निम्न पते से भेजें। शिविर सम्बन्धी आवश्यक बिस्तर, बर्तन, कपड़े, पुस्तकें आदि साथ लायें।

—ब्रह्मदेव सिंह, संचालक प्रान्तीय आर्य वीर दल बंग आसाम २४/२ कार्नवालिस स्ट्रीट कलकत्ता ६

—श्री जगदेव जी एम० ए० मंत्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने आ० वी० द० रोहतक का निरीक्षण किया। निम्न प्रकार दल का निर्वाचन हुआ। नगरनायक श्री भरतसिंह, शाखानायक श्री गुरुदत्त जी, मंत्री श्री ईशकुमार बी० ए०, कोषाध्यक्ष श्री जयदयाल।

आगरा समाचार—

—आगरा जिले के समस्त आर्य समाजों के मन्त्रियों को विदित हो कि ठाकुर यशवन्तसिंह, भजनोपदेशक, दयानन्द अनाथालय, आगरा जिले में प्रचारार्थ आ रहे हैं। समाजें उनके प्रचारादि की व्यवस्था करें।

—मोहनलाल आर्य

—२६ ११-५८ को नगर आ०स० आगरा की ओर से श्री नानकचन्द जी के गृह पर पौर्णमासी का यज्ञ हुआ। श्री मोहनलाल आर्य का प्रभावशाली भाषण हुआ।

—नगर समाज में ३०-११ ५८ को साप्ताहिक अधिवेशन में श्री भूदेव शास्त्री का तथा ७ १२-५८ को शंकर स्वामी का ओजस्वी भाषण हुआ।

–गत मास और इस मास में श्री ठाकुर यशवन्तसिंह जी ने पीपल मंडी बेलनगंज, नगर आ० स० आदि में प्रभावशाली भजनों द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार किया।

—भगवत स्वरूप आर्य

शोक समाचार—

—आ० स० शाहजहाँपुर ने श्री राजकिशोर और नन्दप्रकाश की माता के निधन पर शोक प्रकट किया।

—आ० स० सुल्तानपुर ने पं० राजाराम शर्मा के निधन पर शोक प्रकट किया।

—आ० स० सिरोली फर्रुखाबाद ने श्री वसन्त लाल के असामयिक निधन पर दुख प्रकट किया।

अन्यान्य समाचार—

—युवक हिन्दू सभा उ० प्र० की एक सभा में ९-१२-५८ को लखनऊ में अनेको प्रस्ताव पास किये गये जिसमें उ० प्र० के सात जिलों में उर्दू को क्षेत्रीय भाषा के रूप में लागू किये जाने का, खाद्य स्थिति पर सरकार की उपेक्षा नीति का, हिन्दू मन्दिरों के स्थानों पर मसजिद बनाये जाने का, सरकार की मुस्लिम तुष्टिकरण नीति का, पंजाब में हिन्दी की उपेक्षा का, नियोगी कमेटी की रिपोर्ट पर कार्यवाही नहीं करने का, मास्टर तारासिंह के सामने सरकार की घुटने टेक नीति आदि का घोर विरोध किया गया।

—आर्यसमाज गोविन्दपुरी मेरठ का समाज मन्दिर बन रहा है। दानी महानुभावों से कृपया इसमें सहायता करने की प्रार्थना है। सम्पन्न आर्य समाजों से निवेदन है कि हमें ५०००) रु० कर्ज स्वरूप [पर बिना सूद के] समाज मन्दिर बनाने के लिए देने का कष्ट करें। यह राशि हम किस्तों में लौटा देंगे।

—प्रधान, आ० स० गोविन्दपुरी, मेरठ

टिहरी में आर्यसमाज का संघटन

[श्री विश्वम्भरसहाय प्रेमी, मेरठ]

पर्वतीय प्रदेश की श्रद्धालु जनता की श्रद्धा को यदि आर्यसमाज के सन्देश-वाहक आर्य समाज की ओर आवृत कर सकें तो एक विशाल क्षेत्र में आर्य समाज का सन्देश पहुंच सकता है। आवश्यकता है उस प्रदेश में कार्य करने वाले मिशनरी भावना वाले व्यक्तियों की। प्रेमी जी ने जिस आवश्यकता की ओर ध्यान आकृष्ट किया है उसके प्रति सभा को अवश्य ध्यान देना चाहिये।

—सम्पादक

जिला टिहरी गढ़वाल में केवल टिहरी में ही आर्य समाज का एक सुन्दर भवन बना हुआ है। यहां श्री गङ्गाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज के उद्योग से आर्यसमाज का काफी कार्य चला परन्तु गत आठ दस वर्षों से कार्य नहीं हो रहा। पिछले वर्ष इस बात का यत्न किया गया था कि आर्य समाज टिहरी के साप्ताहिक सत्संग फिर से होने लगे। परन्तु अभी तक इस कार्य में सफलता नहीं मिली। मैं इस वर्ष तीन चार बार टिहरी गया। ४ दिसम्बर को टिहरी जाने का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने वहां के प्रमुख कार्यकर्ता श्री सत्यशरण अग्रवाल से परामर्श भी किया जिससे आर्यसमाज का कार्य चलने लगे। उन्होंने अपनी कई कठिनाइयां भी बताईं। मुख्य बात इस समय यह है कि आर्यसमाज को एक दो मास के लिये कोई ऐसा विद्वान् अथवा उपदेशक मिल जाय जो वहां रह कर साप्ताहिक सत्संग लगाने में सहायता प्रदान करे। इस समय आर्यसमाज टिहरी की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं कि वह किसी वैतनिक उपदेशक को रखकर आर्यसमाज का कार्य चला सके।

इस सम्बन्ध में मेरे विचार से किसी उत्साही व्यक्ति को कम से कम एक मास का समय दे देना चाहिये। आर्यसमाज उनके निवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था कर देगा। उस विद्वान् का मुख्य कार्य यह भी होगा कि वह विधिवत सन्ध्या या हवन करना भी सिखाये। यदि हो सके तो एक सप्ताह किसी पुस्तक के आधार पर कथा का भी कार्यक्रम रखें। मेरा ऐसा विश्वास है कि एक बार उत्साह पैदा कर देने से आर्यसमाज का कार्य ठीक प्रकार से चलने लगेगा।

यहां इस बात का उल्लेख कर देना भी आवश्यक है कि पिछली बार आर्य समाज टिहरी के मन्त्री श्री अग्रवाल ने ऐसी इच्छा प्रकट की थी कि उन्हें कुछ साहित्य दान स्वरूप मे प्राप्त हो जाय। इसका कारण यह था कि आर्यसमाज में जो भी पुस्तकें थीं उन्हें एक व्यक्ति ले गया था। मैंने अपने मित्र श्री मनोहरलाल सर्राफ तथा श्री गौतम आर्य से कुछ पुस्तकें प्राप्त कीं। कुछ पुस्तकों का मैंने स्वयं प्रबन्ध किया। इस प्रकार लगभग ७० पुस्तकें मैं इस बार दे आया हूं। मेरा प्रयत्न है कि शीघ्र ही कुछ और पुस्तकें भी वहां भेजूं। इसका लाभ यह होगा कि वहां पुस्तकालय का कार्य भी चलने लगेगा। मैं चाहता हूं कि आर्य भाई इस कार्य मे सहायता प्रदान करने की कृपा करें।

आर्यसमाज टिहरी के कार्य के सम्बन्ध मे इतना बता देना भी आवश्यक है कि पर्वतीय स्थानों मे समाज कल्याण कार्यों मे आर्य समाज के कार्यकर्ता अच्छा कार्य कर सकते हैं। इस पिछड़े जिले मे फैली कुरीतियों एवं बुराइयों को दूर करने मे भी वे बड़े सहायक सिद्ध हो सकते हैं। मैंने टिहरी के कई नवयुवक कार्यकर्ताओं से भी विचार विमर्श किया जो आर्य समाज के कार्य मे सहायता देने के लिए तत्पर हैं। इस जिले में हरिजन सेवा का कार्य भी काफी विस्तार पा सकता है। इस प्रकार के और भी अनेक कार्य हैं जो आर्य समाज के द्वारा सम्पन्न किये जा सकते हैं। मेरे विचार से आर्य प्रतिनिधि सभा को भी आर्यसमाज टिहरी की सहायता के लिए अपना कोई उपदेशक भेजना चाहिये। मैं भी इस कार्य में यथेष्ट सहायता देने को तत्पर हूं।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
अग्रहायण ३० शक १८८० (२१ दिसम्बर ५८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष्य : ५११३ तार : 'आर्य'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

दैनिक स्वाध्याय के ग्रन्थ

(१) ऋग्वेद सुबोध भाष्य—मधुछन्दा, मेधातिथी, शुन शेप कण्व, कणगौतम, हिरण्यगर्भ, नारायण, बृहस्पति, विश्वकर्मा, सप्त ऋषि व्यास आदि, १८ ऋषियों के मन्त्रों के सुबोध भाष्य मूल्य १६) डाक व्यय १।।)

ऋग्वेद का सप्तम मण्डल (वसिष्ठ ऋषि)—सुबोध भाष्य। मूल्य ७) डाक व्यय १)

यजुर्वेद सुबोध भाष्य अध्याय १—मूल्य १।।), अष्टाध्यायी मू० २) अध्याय ३६, मूल्य ।।) सबका डाक व्यय १)

अथर्ववेद सुबोध भाष्य—(सम्पूर्ण १८ काण्ड) मूल्य २६) डाक व्यय ५)

उपनिषद् भाष्य—ईश ०), केन ।।), कठ १।।), प्रश्न १।।), मुण्डक १।।) माण्डूक्य ।।), ऐतरेय ।।।) सबका डाक व्यय २।)

श्रीमद्भगवद्गीता पुरुषार्थ बोधनी टीका—मूल्य १२।।) डाक व्यय २)

वैदिक व्याख्यान—अग्नि में आदर्श पुरुष, [२] वैदिक अर्थ व्यवस्था [३] स्वराज्य, [४] सौ वर्षों की आयु, [५] व्यक्तिवाद और समाजवाद [६] शांति शांति शांति, [७] राष्ट्रीय उन्नति, [८] सप्त व्याहृति, [९] वैदिक राष्ट्रनीति, [१०] वैदिक राष्ट्र शासन, [११] वेद का अध्ययन अध्यापन, [१२] भागवत में वेद दर्शन, [१३] प्रजापति का राज्य शासन, [१४] त्रैत, द्वैत, अद्वैत, [१५] क्या विश्व मिथ्या है?, [१६] वेदों का संरक्षण ऋषियों ने कैसे किया?, [१७] आप वेद रक्षण कैसा कर रहे हैं?, [१८] देवत्व प्राप्ति का अनुष्ठान, [१९] जनता का हित करने का कर्तव्य, [२०] मानव की सार्थकता, [२१] राष्ट्र निर्माण [२२] मानव की श्रेष्ठ शक्ति, [२३] वेदोक्त विविध प्रकार के शासन। प्रत्येक का मूल्य ।=) डाक व्यय पृथक। आगे व्याख्यान छप रहे हैं।

ये ग्रन्थ सब पुस्तक विक्रेताओं के पास मिलते हैं।

पता—स्वाध्याय मण्डल किल्ला पारडी, जिला सूरत

आर्यमित्र हीरक जयन्त

को

सफल बनाइए

आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार और संघटन की सुदृढ़ता

के लिए

एकमात्र साधन 'आर्यमित्र' है

जो साठ वर्षों से निरन्तर मौन साधक के रूप में समाज, राष्ट्रभाषा हिन्दी साहित्य, धर्म, राष्ट्र और मानव संस्कृति आदि सभी क्षेत्रों में वैदिक सिद्धान्त का प्रतिपादन करने में संलग्न रहा है। सभी क्षेत्रों में आदर्शों की स्थापना ही उसका एक मात्र उद्देश्य रहा है।

यदि आप चाहते हैं कि भविष्य में भी

'आर्यमित्र'

- ★ आर्यसमाज के प्रचार
- ★ सिद्धान्त समर्थन
- ★ निर्भीक आलोचना
- ★ समाज सुधार
- ★ राष्ट्र नव निर्माण
- ★ विश्व शान्ति
- ★ वैदिक संस्कृति समुद्धार
- ★ नैतिक उत्थान
- ★ आदर्श पत्रकारिता
- ★ राष्ट्रभाषा हिन्दी सेवा
- ★ विश्व बन्धुत्व
- ★ मानव संस्कृति

आदि सभी क्षेत्रों में सामाजिक चेतना जागृत करता रहे तो आर्यमित्र को समर्थ बनाने में अपना सहयोग प्रदान कीजिए।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती की सफलता आपके सहयोग पर ही निर्भर है। एक लाख रु० की जयन्ती निधि में अपनी सामर्थ्यानुसार सहायता कीजिए और इष्टमित्रों से सहायता दिलवाकर पुण्य के भागी बनिए।

आर्यमित्र की उन्नति के इस यज्ञ में पड़ी हुई प्रत्येक आहुति मानवता के नव निर्माण में सहायक होगी।

संयोजक—'आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति' लखनऊ

वर की आवश्यकता

एक सुप्रतिष्ठित परिवार की सुशिक्षित, स्वस्थ, सुन्दरी कन्या के लिए सुयोग्य वर की आवश्यकता है। कन्या बी०ए०, बी० टी० है। क्षत्रिय गहलौत कुल में जन्म हुआ है। सम्बन्ध में जाति पाँति या बिरादरी का कोई विचार नहीं किया जायगा। आर्य्य मात्र में, सुयोग्य वर के साथ, विवाह हो सकेगा। "स्वदेश"
द्वारा आर्य्यमित्र ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।